संकेताक्षरों का विवरण

अं० = अँगरेजी भाषा

अ० = अरबी भाषा

अनु० = अनुकरण शब्द

अप० = अपभ्रंश

अल्पा० = अल्पार्थक प्रयोग

अव्य० = अव्यय

इब० = इबरानी भाषा

उप० = उपसर्ग

क्रि० = क्रिया

क्रि० अ० = क्रिया अकर्मक

क्रि० वि० = क्रिया विशेषण

क्रि० स० = क्रिया सकर्मक

क्व० = क्वचित् अर्थात् इसका प्रयोग बहुत कम होता है

गुज० = गुजराती भाषा

तु० = तुरकी भाषा

दे० = देखो

देश० = देशज

पं० = पंजाबी भाषा

पा० = पाली भाषा

पुं० = पुल्लिंग

पु० हिं० = पुरानी हिंदी

पुर्त्त० = पुर्त्तगाली भाषा

प्रत्य० = प्रत्यय

प्रा० = प्राकृत भाषा

प्रे० = प्रेरणार्थक

फ० = फरासीसी भाषा

फा० = फारसी भाषा

बँग० = बँगला भाषा

बहु० = बहुवचन

भाव० = भाववाचक

मि० = मिलाओ

मुहा० = मुहाविरा

यू० = यूनानी भाषा

यौ० = यौगिक अर्थात् दो या अधिक शब्दों के पद

लश० = लशकरी भाषा

लै० = लैटिन भाषा

वि० = विशेषण

व्या० = व्याकरण

सं० = संस्कृत

संयो० क्रि० = संयोज्य क्रिया

स० = सकर्मक

सर्व० = सर्वनाम

स्त्रि० = स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त

स्त्री० = स्त्रीलिंग

स्पे० = स्पेनी भाषा

हिं० = हिंदी भाषा

प० यह चिह्न इस बात को सूचित करता है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त
चिह्न इस बात को सूचित करता है कि इस शब्द का प्रयोग प्रांतिक है
चिह्न इस बात को सूचित करता है कि शब्द का यह रूप ग्राम्य है।

संक्षिप्त

हिंदी-शब्दसागर

अ

-संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का पहला वर। इसका उच्चारण कंठ से होता है, ससे यह कंठ्य वर्ण कहलाता है। व्यंजनों ा उच्चारण इस अक्षर की सहायता के बिना लग नहीं हो सकता; इसी से वर्णमाला में , ख, ग आदि वर्ण अकार-संयुक्त लिखे ौर बोले जाते हैं।

क–संज्ञा पुं० [सं०] १. चिह्न। निशान ाप। आँक। २. लेख। अक्षर। लिखा- ट। ३. संख्या का चिह्न, जैसे १,२,३। आँकड़ा। अदद। ४. लिखन। भाग्य। केस्मत। ५. काजल की बिंदी जो नजर े बचाने के लिये बच्चों के माथे पर लगा देते हैं। डिठौना। ६. दाग। धब्बा। ७. ा की संख्या (क्योंकि अंक नौ ही तक ोते हैं)। ८. नाटक का एक अंश जिसके अंत में जवनिका गिरा दी जाती है। ९. दस प्रकार के रूपकों में से एक। १०. गोद। अँकवार। क्रोड़। ११. शरीर। अंग। देह। १२. पाप। दुःख। १३. बार। दफा। मर्तबा।

हा०—अंक देना या लगाना = गले लगना। आलिंगन करना। अंक भरना या लगाना = हृदय से लगाना। लिपटाना। गले लगाना।

अंककार–संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध या बाजी में हार और जीत का निर्णय करनेवाला।

अंकगणित–संज्ञा पुं० [सं०] १, २, ३ आदि संख्याओं का हिसाब। संख्या की मीमांसा।

अँकटा–संज्ञा पुं० [सं० कर्कर, प्रा० कक्कर] कंकड़ का छोटा टुकड़ा।

अँकटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँकटा] छोटा अँकटा।

अँकड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० अंकुर = अँखुआ, टेढ़ी नोक] १. कँटिया। हुक। २. तीर का मुड़ा हुआ फल। टेढ़ी गाँसी। ३. बेल। लता। ४. फल तोड़ने का बाँस का डंडा। लग्गी।

अंकधारण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंकधारी] तप्त मुद्रा के चिह्नों का दगवाना। शंख, चक्र, त्रिशूल आदि के चिह्न गरम धातु से छपवाना।

अंकन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंकनीय, अंकित, अंक्य] १. चिह्न करना। निशान करना। २. लेखन। लिखना। ३. शंख, चक्र या त्रिशूल के चिह्न गरम धातु से बाहु पर छपवाना। (वैष्णव, शैव) ४. गिनती करना।

अंकपलई–संज्ञा स्त्री० [सं० अंकपल्लव] वह विद्या जिसमें अंकों को अक्षरों के स्थान पर रखते हैं और उनके समूह से वाक्य के समान तात्पर्य निकालते हैं।

अंकपाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] धाय। दाई।

अंकमाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. आलिंगन। परिरंभण। गले लगना। २. भेंट।

अंकमालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा हार। छोटी माला। २. आलिंगन। भेंट।

अँकरा–संज्ञा पुं० [सं०] एक खर जो गेहूँ के पौधों के बीच जमता है।

अँकरी–संज्ञा स्त्री० [अँकरा का अल्पा०] अँकरा।

अँकरोरी, अँकरौरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कर = कंकड़] कंकड़ या खपड़े का बहुत छोटा टुकड़ा।

अँकवार–सज्ञा स्त्री० [स० अकपालि, अंकमाल] गोद। छाती।
मुहा०—अँकवार देना = गले लगाना। छाती से लगाना। आलिंगन करना। भेंटना। अँकवार भरना=१ आलिंगन करना। गले मिलना। हृदय से लगाना। २ गोद में बच्चा रहना। सतानयुक्त होना। जैसे—बहू तुम्हारी अँकवार भरी रहे।—आशीर्वाद।
यौ०—भेंट अँकवार = आलिंगन। मिलना।

अंकविद्या–सज्ञा स्त्री० दे० "अकगणित"।

अँकाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० आँकना] १ कूत। अदाजा। अटकल। तखमीना। २ फसल म से जमींदार और काश्तकार के हिस्से का ठहराव।

अँकाना–क्रि० स० [स० अंकन] १ कुतवाना। मूल्य निर्धारित कराना। अंदाज कराना। २ परीक्षा कराना। परखाना।

अँकाव–सज्ञा पु० [हिं० आँकना] कूतने या आँकने का काम। कुताई। अदाज।

अंकावतार–सज्ञा पु० [स०] नाटक के एक अक के अत में आगामी दूसरे अक के अभिनय की पात्रा द्वारा सूचना या आभास।

अंकित–वि० [स०] १ चिह्नित। निशान किया हुआ। दागदार। २ लिखित। खचित। ३ वर्णित।

अँकुडा–सज्ञा पु० [स० अकुर] १ लोहे का झुका हुआ टेढा काँटा या, छड। २ गाय बैल के पेट का दर्द या मरोड़। ऐंचा। ३ कुलाबा। पायजा। ४ लोहे का एक गोल पच्चड जो किवाड की चूल में ठोंका रहता है।

अँकुडी–सज्ञा स्त्री० [हिं० अँकुडा का अल्पा०] १ टेढी कँटिया। हुक। २ लोहे की झुकी छड।

अँकुडीदार–वि० [हिं० अकुडा+फा० दार] जिसम अँकुडी या कटिया लगी हो। जिसमें अटकाने के लिये हुक लगा हो। हुकदार।
सज्ञा पु० एक प्रकार का कसीदा। गडारी।

अंकुर–सज्ञा पु० [स०] [क्रि० अकुरना, वि० अकुरित] १ अँखुआ। नवोद्भिद। गाभ। अँगुसा। २ डाभ। कल्ला। कनखा। कोपल। आँख। ३ कली। ४ नोक। ५ रुधिर। रक्त। खून। ६ रोयाँ। लोम। ७ जल। पानी। ८ बहुत छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय उत्पन्न होते है। अगूर। भराव।

अंकुरना, अंकुराना–क्रि० अ० [स० अकुर] अकुर फोडना। जमना।

अंकुरित–वि० [स०] अँखुआया हुआ। उगा हुआ। जिसमें अकुर हो गया हो।

अंकुरितयौवना–वि० [स०] वह स्त्री जिसके यौवनावस्था के चिह्न निकल आए हो। उभडती हुई युवती।

अंकुश–सज्ञा पु० [स०] १ हाथी को हाँकने का दो मुँहा भाला। आँकुस गजबाग। २ प्रतिबध। दबाव। रोक।

अंकुशग्रह–सज्ञा पु० [स०] महावत। हाथीवान। निषादी। फीलवान।

अंकुशदंता–वि० [स० अकुशदत] वह हाथी जिसका एक दाँत सीधा और दूसरा पृथ्वी की ओर झुका रहता है। गुडा।

अँकुसी–सज्ञा स्त्री० [हिं० अकुश + ई] १ टेढी या झुकी कील जिसमें कोई चीज लटकाई या फँसाई जाय। हुक। कँटिया। २ टेढी छड जिसको किवाड के छेद में डालकर बाहर से सिटकिनी खोलते है।

अंकोट–सज्ञा पु० दे० "अकोल"।

अँकोर–सज्ञा पु० [स० अकमाल या अकपालि, हिं० अकवार] १ अक। गोद। छाती। दे० "अँकवार"। २ भेंट। नजर। ३ घूस। रिशवत। ४ खुराक या कलेवा जो खेत में काम करनेवालो के पास भेजा जाता है। छाक। कोर। दुपहरिया।

अँकोरी–सज्ञा स्त्री० [हिं० अकोर + ई] १ गोद। अक। २ आलिंगन।

अंकोल–सज्ञा पु० [स०] एक पहाड़ी पेड़।

अंक्य–वि० [स०] चिह्न करने योग्य। निशान लगाने लायक।
सज्ञा पु० १ दागने के योग्य अपराधी। २ मृदग, तबला, पखावज आदि बाजे जो गोद में रखकर बजाए जायँ।

अँखडी†–सज्ञा स्त्री० दे० "आँख"।

अँखमीचनी–सज्ञा स्त्री० दे० "आँखमिचौली"।

अँखिया–सज्ञा स्त्री० [हिं० आँख] १ हथौड़ी से ठोंक ठोंककर नक्काशी करने का कलम या ठप्पा। † २ दे० "आँख"।

अँखुआ–सज्ञा पु० [स० अकुर] [क्रि० अँखुआना] १ बीज से फूटकर निक

टेढ़ी नोक जिसमें से पहली पत्तियाँ निकलती हैं। अंकुर। २. बीज से पहले निकली हुई मुलायम बँधी पत्ती। । कल्ला। कनखा। कोंपल।
[अंकु]आना-क्रि० अ० [हिं० अँखुआ] अंकुर फोड़ना या फेंकना। उगना। जमना।

[अंग]-संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर। बदन। देह। तन। गात्र। जिस्म। २. अवयव। अंग-भाग। अंश। खंड। टुकड़ा। ४. भेद। प्रकार। भाँति। तरह। ५. उपाय। ६. पक्ष। तरफ। अनुकूल पक्ष। सहायक। सुहृद्। पक्ष का तरफदार। ७. प्रत्यययुक्त शब्द का प्रत्ययरहित भाग। प्रकृति। (व्या०)। ८. जन्मलग्न। ९. साधन जिसके द्वारा कोई कार्य्य हो। १०. बंगाल में भागलपुर के पास पास का प्रदेश जिसकी राजधानी चंपापुरी थी। ११. एक संबोधन। प्रिय। प्रियवर। १२. छः की संख्या। १३. पार्श्व। ओर। तरफ। १४. नाटक में अप्रधान रस। १५. नाटक में नायक या अंगी का कार्यसाधक पात्र। १६. सेना के चार विभाग; यथा—हाथी, घोड़े, रथ और पैदल। १७. योग के आठ विधान। १८. राजनीति के सात अंग; यथा—स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और सेना।
मुहा०—अंग छूना = माथा छूना। कसम खाना। अंग टूटना = अंगड़ाई आना। जम्हाई के साथ आलस्य से अंगों का फैलाया जाना। अंग तोड़ना = अंगड़ाई लेना। अंग लगना = १. लिपटना। आलिंगन करना। छाती से लगना। २, (भोजन का) शरीर को पुष्ट करना। शरीर को बलवान् करना। ३. काम में आना। ४. हिलना। परचना। अंग लगाना = १.आलिंगन करना। छाती से लगाना। २. हिलाना। परचाना। अंग करना = अंगीकार करना।
वि० १. अप्रधान। गौण। २. उलटा।
अंगज-वि० [सं०] शरीर से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० [स्त्री० अंगजा] १. पुत्र। बेटा। लड़का। २. पसीना। ३. बाल। केश। रोम। ४. काम, क्रोध आदि विकार। ५. साहित्य में कायिक अनुभाव। ६. कामदेव। ७. मद। ८. रोग।
स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री।

अँगड़ाई-संज्ञा स्त्री० दे० "अंगड़ा"।
अंगड़ खंगड़-वि० [अनु०] १. बचा खुचा। गिरा पड़ा। २. टूटा फूटा।
संज्ञा पुं० लकड़ी, लोहे आदि का टूटा फूटा सामान।
अँगड़ाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० अँगड़ाना] देह टूटना। बदन टूटना। आलस से जँभाई के साथ अंगों को तानना या फैलाना।
मुहा०—अँगड़ाई तोड़ना = आलस में बैठे रहना। कुछ काम न करना।
अँगड़ाना-क्रि० अ० [सं० अंग + अटन] देह तोड़ना। सुस्ती से ऐंड़ाना। बंद या जोड़ों के भारीपन को हटाने के लिये अंगों को पसारना या तानना।
अंगण-संज्ञा पुं० [सं०] आँगन। सहन।
अंगत्राण-संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर को ढकनेवाला। अँगरखा। कुरता। २. कवच।
अंगद-संज्ञा पुं० [सं०] १. बाहु पर पहनने का एक गहना। बिजायठ। बाजूबंद। २. बालि नामक बंदर का पुत्र जो रामचंद्रजी की सेना में था। ३. लक्ष्मण के दो पुत्रों में से एक।
अंगदान-संज्ञा पुं० [सं०] १. पीठ दिखलाना। युद्ध से भागना। लड़ाई से पीछे फिरना। २. तनुदान। तनसमर्पण। सुरति। रति। (स्त्री के लिये)
अँगना]-संज्ञा पुं० दे० "आँगन"।
अंगना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अच्छे अंगवाली स्त्री। कामिनी। २. सार्वभौम नामक उत्तर दिग्गज की हथिनी।
अँगनाई-संज्ञा स्त्री० दे० "आँगन"।
अँगनैया]-संज्ञा स्त्री० दे० "आँगन"।
अंगन्यास-संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्र के मंत्रों को पढ़ते हुए एक एक अंग को छूना। (तंत्र)
अंगभंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी अवयव का खंडन या नाश। अंग का खंडित होना। शरीर के किसी भाग की हानि। २. स्त्रियों की मोहित करने की चेष्टा। अंगभंगी।
वि० जिसका कोई अवयव कटा या टूटा हो। अपाहज। लँगड़ा लूला। लुंज।
अंगभंगी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चेष्टा। २. स्त्रियों की मोहित करने की क्रिया।

अंगभाव-संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में नेत्र, भृकुटी और हाथ पैर आदि अंगों से मनोविकार का प्रकाश।

अंगभूत-वि० [सं०] १. अंग से उत्पन्न। २. अंतर्गत। भीतर। अंतर्भूत।
संज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।

अंगमर्द-संज्ञा पुं० [सं०] १. हड्डियों का फूटना। हड्डियों में दर्द। हड़फूटन रोग। २. हाथ पैर दबानेवाला नौकर। संवाहक।

अंगरक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर की रक्षा। देह का बचाव। बदन की हिफ़ाज़त।

अँगरखा-संज्ञा पुं० [सं० अंग = देह + रक्षक = बचानेवाला] एक पहनावा जो घुटनों के नीचे तक लंबा होता है और जिसमें बाँधने के लिये बंद टँके रहते हैं। बंददार अंगा। चपकन।

अँगरा†-संज्ञा पुं० [सं० अंगार] १. दहकता हुआ कोयला। अंगारा। २. बैलों के पैर का एक रोग।

अंगराग-संज्ञा पुं० [सं०] १. चंदन आदि का लेप। उबटन। बटना। २. केसर, कपूर, कस्तूरी आदि सुगंधित द्रव्यों से मिला हुआ चंदन जो अंग में लगाया जाता है। ३. वस्त्र और आभूषण। ४. शरीर की शोभा के लिये महावर आदि रँगने की सामग्री। ५. स्त्रियों के शरीर के पाँच अंगों की सजावट—माँग में सिंदूर, माथे में रोली, गाल पर तिल की रचना, केसर का लेप, हाथ पैर में मेंहदी या महावर। ६. एक प्रकार की सुगंधित देशी बुकनी जिसे मुँह में लगाते हैं।

अँगराना*-क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"।

अँगरी-संज्ञा स्त्री० [सं० अंग + रक्षा] कवच। झिलम। बकतर।
संज्ञा स्त्री० [सं० अंगुलीय] अंगुलित्राण।

अँगरेज़-संज्ञा पुं० [पुर्त्त० इंगलेज़] [वि० अँगरेज़ी] इँगलैंड देश का निवासी।

अँगरेज़ी-वि० [हिं० अँगरेज़] अँगरेज़ों का। इँगलैंड देश का। विलायती।
संज्ञा स्त्री० अँगरेज़ लोगों की बोली। इँगलैंड निवासियों की भाषा।

अँगलेट-संज्ञा पुं० [सं० अंग] शरीर की गठन। देह का ढाँचा। काठी। उठान।

अंगी-

कार करना। स्वीकार करना। २. ओढ़ना। अपने सिर पर लेना। ३. बरदाश्त करना। सहना। उठाना।

अँगवारा-संज्ञा पुं० [सं० अंग = भाग, सा(?) मता + कार] १. गाँव के एक छोटे भाग का मालिक। २. खेत की जोताई में दूसरे की सहायता।

अंगविकृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपस्मार। मृगी या मिरगी रोग। मूर्च्छा रोग।

अंगविक्षेप-संज्ञा पुं० [सं०] १. चमकना। मटकना। २. नृत्य। ३. कलाबाजी।

अंगविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] सामुद्रिक विद्या।

अंगशोष-संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें शरीर सूखता है। सुखंडी रोग।

अंगसिहरी-संज्ञा स्त्री० [सं० अंग = शरीर + हर्ष = कंप] ज्वर आने के पहिले देह की कँपकँपी। जूड़ी। कंप। कँपकँपी।

अंगहार-संज्ञा पुं० [सं०] १. अंगविक्षेप। चमकना। मटकना। २. नृत्य। नाच।

अंगहीन-वि० [सं०] जिसका कोई अंग न हो।
संज्ञा पुं० कामदेव का एक नाम।

अंगांगि भाव-संज्ञा पुं० [सं०] १. अवयव और अवयवी का परस्पर संबंध। अंश का संपूर्ण के साथ संबंध। २. गौण और मुख्य का परस्पर संबंध। ३. अलंकार में संकर का एक भेद।

अंगा-संज्ञा पुं० [सं० अंग] अँगरखा। चपकन।

अंगाकड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० अंगार + करी] अँगारों पर सेंकी हुई मोटी रोटी। लिट्टी। बाटी।

अंगार-संज्ञा पुं० [सं०] १. दहकता हुआ कोयला। आग का जलता टुकड़ा। बिना धूएँ की आग। निधूम अग्नि। २. चिनगारी।

मुहा०—अंगार उगलना = कड़ी कड़ी बातें मुँह से निकालना। अँगारों पर पैर रखना = १. जान बूझकर हानिकारक कार्य्य में अपने को खतरे में डालना। २. अभिमान से पैर न रखना। इतराकर चलना। अंगारों पर लोटना = १. अत्यंत रोष प्रकट करना। आग बबूला होना। २. दाह से ...

रथों से व्याकुल होना। लाल अंगारा = १ बहुत लाल। २. अत्यंत क्रुद्ध।

गारक–संज्ञा पु० [सं०] १ अंगारा। २ मंगल ग्रह। ३ भृंगराज। भँगरैया। भँगरा। (४) कटसरैया का पेड़।

गारधानिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] अँगीठी। बोरसी। आतिशदान।

गारपाचित–संज्ञा पु० [सं०] अंगार या दहकती हुई आग पर पकाया हुआ खाना। जैसे, कबाब, नानखताई इत्यादि।

अंगारपुष्प–संज्ञा पु० [सं०] इंगुदी वृक्ष। हिंगोट का पेड़।

गारमणि–संज्ञा पु० [सं०] मूँगा।

अंगारवल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं०] गुंजा। घुँघची या चिरमटी।

अंगारा–संज्ञा पु० दे० "अंगार"।

अंगारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अँगीठी। बोरसी। आतिशदान। २. ऐसी दिशा जिस पर डूबे हुए सूर्य्य की लाली छाई हो।

गारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा अंगारा। २ चिनगारी। † ३ लिट्टी। बाटी। अंगाकड़ा। † ४ बोरसी।

गारी–संज्ञा स्त्री० [सं० अंगारिका] १ ईख के सिर पर की पत्ती। २ गँडेरी। गड़ी। गन्ने के छोटे कटे टुकड़े।

गिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] अँगिया। चोली। स्त्रियों की कुरती। कंचुकी।

गिया–संज्ञा स्त्री० [सं० अंगिका, प्रा० अँगिया] स्त्रियों की चोली। कुरती।

गिरस–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्राचीन ऋषि जो दस प्रजापतियों में गिने जाते हैं। २ बृहस्पति। ३ साठ संवत्सरों में से छठा। ४ कटीला गोंद। कतीरा।

गिरा–संज्ञा पु० दे० "अंगिरस"।

गेठाना–क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"।

ी–संज्ञा पु० [सं०] १ शरीरी। देह-धारी। शरीरवाला। २ अवयवी। उप-कार्य। अंशी। समष्टि। ३ प्रधान। मुख्य। ४ चौदह विद्याएँ। ५ नाटक का प्रधान नायक। ६. नाटक में प्रधान रस।

गीकार–संज्ञा पु० [सं०] स्वीकार। मंजूर। कबूल। ग्रहण।

गीकृत–वि० [सं०] स्वीकृत। मंजूर। स्वीकार किया हुआ। ग्रहण किया हुआ।

अँगीठा–संज्ञा पु० [सं० अग्नि = आग + स्था = ठहरना।] बड़ी अँगीठी। बड़ी बोरसी। आग रखने का बरतन।

अँगीठी–संज्ञा स्त्री० [अँगाठा का अल्पा०] आग रखने का बरतन। आतिशदान।

अंगुर–संज्ञा पु० दे० "अंगुल"।

अँगुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।

अंगुल–संज्ञा पु० [सं०] १ आठ जौ की लंबाई। आठ यवोदर का परिमाण। २ अंश का बारहवाँ भाग। (ज्यो०)

अंगुलित्राण–संज्ञा पु० [सं०] गोह के चमड़े का बना हुआ दस्ताना जिसे बाण चलाते समय उँगलियों में पहनते हैं।

अंगुलिपर्व–संज्ञा पु० [सं०] उँगलियों की पोर। उँगली की गाँठों के बीच का भाग।

अंगुली–संज्ञा स्त्री० [सं० अङ्गुल] † १. उँगली। २ हाथी के सूँड़ का अगला भाग।

अंगुल्यादेश–संज्ञा पु० [सं०] उँगली से अभिप्राय प्रकट करना। इशारा। संकेत।

अंगुल्यानिर्देश–संज्ञा पु० [सं०] बदनामी। कलंक। लांछन। अंगुश्तनुमाई।

अंगुश्तनुमाई–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बदनामी। कलंक। लांछन। दोषारोपण।

अंगुश्तरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अँगूठी। मुँदरी। मुद्रिका।

अंगुश्ताना–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. उँगली पर पहिनने की लोहे या पीतल की एक टोपी जिसे दरजी सीते समय एक उँगली में पहन लेते हैं। २ आरसी। अड़सी। हाथ के अँगूठे की एक प्रकार की मुँदरी।

अंगुष्ठ–संज्ञा पु० [सं०] हाथ या पैर की सबसे मोटी उँगली। अँगूठा।

अँगुसी–संज्ञा स्त्री० [सं० अंकुश] १. हल का फाल। २ सोनारों की बकनाल या टेढ़ी नली जिससे दीये की लौ को फूँक कर टाँका जोड़ते हैं।

अँगूठा–संज्ञा पु० [सं० अंगुष्ठ, प्रा० अंगुट्ठ] मनुष्य के हाथ की सब से छोटी और मोटी उँगली। पहली उँगली।

मुहा०—अँगूठा चूमना = १. खुशामद करना। शुश्रूषा करना। २. अधीन होना। अँगूठा दिखाना = १. किसी वस्तु को देने से अवज्ञापूर्वक नाहीं करना। २ किसी कार्य के करने से हट जाना। किसी कार्य का करना

अस्वीकार करना। अँगूठे पर मारना = तुच्छ समझना। परवा न करना।

अँगूठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँगूठा + ई] १. मुँदरी। मुद्रिका। उँगली में पहनने का एक गहना। छल्ला। २. उँगली में लिपटाया हुआ तागा। (जुलाहे)

अंगूर–संज्ञा पु० [फा०] एक लता और उसके फल का नाम जो बहुत मीठा और रसीला होता है। दाख। द्राक्षा।

मुहा०–अंगूर का मड़वा या अंगूर की टट्टी = १. अंगूर की बेल के चढ़ने और फैलने के लिये बाँस की फट्टियों का बना हुआ मंडप। २. एक प्रकार की आतिशबाजी।

संज्ञा पु० [सं० अंकुर] १. मांस के छोटे छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय दिखाई पड़ते हैं। घाव का भराव।

मुहा०—अंगूर तड़कना या फटना = भरते हुए घाव पर बँधी हुई मांस की झिल्ली का अलग हो जाना।

२. अंकुर। अँखुआ।

अंगूरशेफा–संज्ञा पु० [फा०] हिमालय की एक जड़ी।

अँगूरी–वि० [फा० अंगूर + ई] १. अंगूर से बना हुआ। २. अंगूर के रंग का।

संज्ञा पु० हलका हरा रंग।

अँगेजना –क्रि० स० [सं० अंग = शरीर + एज = हिलना, काँपना।] १. सहना। बरदाश्त करना। उठाना। २. अंगीकार करना। स्वीकार करना।

अँगेठी–संज्ञा स्त्री० दे० "अँगीठी"।

अँगेरना–क्रि० स० [सं० अंग = देह + ईर = जाना] १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. सहना। बरदाश्त करना।

अँगोछना–क्रि० अ० [सं० अंगप्रोक्षण] गीले कपड़े से देह पोंछना। गीला कपड़ा फेरकर बदन साफ करना।

अँगोछा–संज्ञा पु० [सं० अंगप्रोक्षक] १. देह पोंछने का कपड़ा। तौलिया। गमछा। २. उपरना। उपवस्त्र। उत्तरीय।

अँगोछी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँगोछा] १. देह पोंछने के लिये छोटा कपड़ा। २. छोटी धोती जिससे कमर से आधी जाँघ तक ढक जाय।

–क्रि० स० दे० "अँगेजना"।

पुं० [देश०] मच्छर।

अँगौगा–संज्ञा पु० [सं० अग्र = अगला + अंग = भाग] धर्मार्थ बाँटने या देवता चढ़ाने के लिये अलग निकाला हुआ अन्न आदि। अँगऊँ। पुजेरा।

अँगौरिया–संज्ञा पु० [सं० अंग = भाग] वह हलवाहा जिसे कुछ मजदूरी न देकर दो बैल उधार देते हैं।

अँघड़ा–संज्ञा पु० [सं० अंघ्रि] काँसे का छल्ला जिसे छोटी जाति की स्त्रियाँ पैर के अँगूठे में पहनती हैं।

अंघस–संज्ञा पु० [सं०] पाप। पातक।

अँघिया–संज्ञा स्त्री० [देश०] आटा या मैदा चालने की छलनी। अँगिया। आखा।

अंघ्रि–संज्ञा पु० [सं०] पैर। चरण। पाँव।

अंघ्रिप–संज्ञा पु० [सं०] पेड़। वृक्ष।

अँचरा–संज्ञा पु० दे० "आँचल"।

अंचल–संज्ञा पु० [सं०] १. साड़ी का छोर। आँचल। पल्ला। छोर। दे० "आँचल"। २. देश का वह भाग या प्रांत जो सीमा के समीप हो। ३. किनारा। तट।

अँचला–संज्ञा पु० [सं० अंचल] १. दे० "आँचल"। २. कपड़े का एक टुकड़ा जिसे साधु लोग धोती के स्थान पर लपेटे रहते हैं।

अंचित–वि० [सं०] पूजित। आराधित।

अंछर–संज्ञा पु० [सं० अक्षर] १. मुँह के भीतर का एक रोग जिसमें काँटे से उभर आते हैं। २. अक्षर। ३. टोना। जादू।

मुहा०–अंछर मारना = जादू करना। टोना करना। मंत्र प्रयोग करना।

अंज–संज्ञा पु० दे० "कंज"।

अंजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुरमा। काजल। २. रात। रात्रि। ३. स्याही। रोशनाई। ४. पश्चिम का दिग्गज। ५. छिपकली। ६. एक जाति का बगला। नटी। ७. एक पेड़ जिसकी लकड़ी बड़ी मजबूत होती है। ८. सिद्धांजन, जिसके लगाने से कहा जाता है कि ज़मीन में गड़े खज़ाने दिखाई पड़ते हैं। ९. एक पर्वत। १०. कद्रु से उत्पन्न एक सर्प का नाम। ११. लेप। १२. माया।

वि० काला। सुरमई रंग का।

अंजनकेश–संज्ञा पु०[सं०] दीपक। दीया।

अंजनकेशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नख नामक सुगंध-द्रव्य।

अंजन शलाका–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंजन या सुरमा लगाने की सलाई। सुरमचू।

अंजनसार–वि० [सं० अंजन + सारण] सुरमा लगा हुआ। अंजन युक्त।

अंजनहारी–संज्ञा स्त्री० [सं० अंजन + कार] १. आँख की पलक के किनारे की फुंसी। बिलनी। गुहांजनी। अंजना। २ एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जिसे कुम्हारी या बिलनी भी कहते हैं। भृंग।

अंजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ केशरी नामक बंदर की स्त्री जिसके गर्भ से हनुमान उत्पन्न हुए थे। २ बिलनी। गुहांजनी। ३ दो रंग की छिपकली।
संज्ञा पु० एक मोटा धान।
* क्रि० स० दे० "आँजना"।

अंजनानंदन–संज्ञा पु० [सं०] अंजना के पुत्र हनुमान।

अंजनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हनुमान की माता अंजना। २ माया। ३ चन्दन लगाए हुई स्त्री। ४ कुटकी। ५. आँख की पलक की फुड़िया। बिलनी।

अंजबार–संज्ञा पु० [फा०] एक पौधा जिसकी जड़ का काढ़ा और शरबत हकीम लोग सर्दी और कफ के रोग में देते हैं।

अंजरपंजर–संज्ञा पु० [सं० पंजर] देह का बंद। शरीर का जोड़। ठठरी। पसली।
मुहा०—अंजर पंजर ढीला होना = शरीर के जोड़ों का उखड़ना या हिल जाना। देह का बंद बंद टूटना। शिथिल होना। लस्त होना।
क्रि० वि०–अगल बगल। पार्श्व में।

अंजल, अंजला–संज्ञा पु० [सं० अंजलि] दे० "अंजली"।
संज्ञा पुं० दे० "अन्नजल"।

अंजलि, अंजली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ संपुट। दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ गड्ढा। २ उतनी वस्तु जितनी एक अंजुली में आवे। प्रस्थ। कुडव। ३ एक नाप जो सोलह तोले के बराबर होती है। दो पसर। ४ हथेलियों से दान देने के लिये निकाला हुआ अन्न।

अंजलिगत–वि० [सं०] १ अँजली में आया हुआ। दोनों हथेलियों पर रखा हुआ। २ हाथ में आया हुआ। प्राप्त।

अंजलिपुट–संज्ञा पु० [सं०] अंजली।

अंजलिबद्ध–वि० [सं०] हाथ जोड़े हुए।

अँजवाना–क्रि० स० [सं० अंजन] अंजन लगवाना। सुरमा लगवाना।

अंजहा†–वि० [हिं० अनाज + हा] [स्त्री० अंजही] अनाज का। अन्न के मेल से बना हुआ।

अंजही–संज्ञा स्त्री० [हिं० अंजहा] वह बाजार जहाँ अन्न बिकता है। अनाज की मंडी।

अँजाना–क्रि० स० [हिं० अंजन] अंजन लगवाना। सुरमा लगवाना।

अंजाम–संज्ञा पु० [फा०] १ समाप्ति। पूर्ति। अंत। २ परिणाम। फल।
मुहा०—अंजाम देना = पूर्ण करना।

अंजित–वि० [सं०] अंजन लगाए हुए। अंजनसार। आँजे हुए।

अंजीर–संज्ञा पु० [फा०] एक पेड़ तथा उसका फल जो गूलर के समान होता है और खाने में मीठा होता है।

अँजुरी, अँजुली†–संज्ञा स्त्री० दे० "अंजलि"।

अँजोर†–संज्ञा पु० दे० "उजाला"।

अँजोरना†–क्रि० स० [हिं० अंजुरा] १ बटोरना। २ छीनना। हरण करना।
क्रि० स० [सं० उज्ज्वलन] जलाना। प्रकाशित करना। बालना। जैसे—दीपक अँजोरना।

अँजोरा†–वि० दे० "उजाला"।
यौ०—अँजोरा पाख = शुक्ल पक्ष।

अँजोरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० अँजोर + ई] १ प्रकाश। रोशनी। चमक। उजाला। २. चाँदनी। चंद्रिका।
वि० स्त्री० उजाली। प्रकाशमयी।

अंझा–संज्ञा पु० [सं० अनध्याय, प्रा० अनज्झा] नागा। तातील। छुट्टी।

अँटना–क्रि० अ० [सं० अट् = चलना] १ समाना। किसी वस्तु के भीतर आना। २ किसी वस्तु के ऊपर ठीक बैठना। ठीक चिपकना। ३ भर जाना। ढँक जाना। ४ पूरा पड़ना। काफी होना। बस होना। काम चलना। ५ पूरा होना। खपना।

अंटा–संज्ञा पु० [सं० अण्ड] १ बड़ी गोली। गोला। २ सूत या रेशम का लच्छा। ३ बड़ी कौड़ी। ४ एक खेल जिसे अँगरेज हाथीदाँत की गोलियों से मेज पर खेला करते हैं। बिलियर्ड।

अंटा गुड़गुड़—वि० [हिं० अंटा + गुड़गुड़] नशे में चूर। बेहोश। बेसुध। अचेत।

अंटाघर—संज्ञा पुं० [हिं० अंटा + घर] वह घर जिसमें गोली का खेल खेला जाय।

अंटाचित—क्रि० वि० [हिं० अंटा + चित] पीठ के बल। सीधा। पीठ जमीन पर किए हुए। पट और औंधा का उलटा।
मुहा०—अंटाचित होना = १. स्तंभित होना। अवाक् होना। सन्न होना। २. बेकाम होना। बरबाद होना। किसी काम का न रह जाना। ३. नशे में बेसुध होना। बेखबर होना। अचेत होना। चूर होना।

अंटाबंधू—संज्ञा पुं० [हिं० अटक + सं० बंधक] जुए में फेंकनेवाली कौड़ी।

अँटिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंटी] घास, खर या पतली लकड़ियों आदि का बँधा हुआ छोटा गट्ठा। गठिया। पूला। मुट्ठी।

अँटियाना—क्रि० स० [हिं० अंटी] १. उँगलियों के बीच में छिपाना। हथेली में छिपाना। २. चारों उँगलियों में लपेटकर डोरे की पिंडी बनाना। ३. घास, खर या पतली लकड़ियों का मुट्ठा बाँधना। ४. गायब करना। हजम करना।

अंटी—संज्ञा स्त्री० [सं० अष्ठि प्रा० अट्ठि = गाँठ] [क्रि० अंटियाना] १. उँगलियों के बीच का स्थान या अंतर। घाई। २. धोती की वह लपेट जो कमर पर रहती है। गाँठ।
मुहा०—अंटी करना = किसी का माल उड़ा लेना। धोखा देकर कोई वस्तु ले लेना। अंटी मारना = १. जुआ खेलते समय कौड़ी को उंगलियों के बीच में छिपा लेना। २. आँख बचा कर धीरे से दूसरे की वस्तु को खिसका लेना। धोखा देकर कोई चीज उड़ा लेना। ३. तराजू की डाँड़ी को इस ढंग से पकड़ना कि तौल में चीज कम चढ़े। कम तौलना। डाँड़ी मारना।
३. तर्जनी के ऊपर मध्यमा को चढ़ा कर बनाई हुई मुद्रा। डोड़ैया। डँड़ोइया। (जब कोई लड़का अंत्यज या अपवित्र वस्तु को छू लेता है, तब और लड़के छूत से बचने के लिये ऐसी मुद्रा बनाते हैं।) ४. सूत या रेशम का लच्छा। अट्टी। ५. अँटेरन। सूत लपेटने की लकड़ी। ६. विरोध। बिगाड़। लड़ाई। शरारत। ७. कान में की छोटी बाली। मुरकी।

अँटीतल—संज्ञा पुं० [हिं० अंटना] तेली के बैल की आँख का ढक्कन।

अँठई—संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टपदी] किलनी।

अंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० अष्ठि = गुठली, गाँठ] १. चीयाँ। गुठली। बीज। २. गाँठ। गिरह। ३. गिलटी। कड़ापन।

अंड—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंडा। २. अंडकोश। फोता। ३. ब्रह्मांड। लोकमंडल। विश्व। ४. वीर्य। शुक्र। ५. कस्तूरी का नाफा। मृगनाभि। ६. पंच-आवरण। दे० "कोश"। ७. कामदेव। ८. पिंड। शरीर। ९. मकानों की छाजन के ऊपर के गोल कलश।

अंडकटाह—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मांड। विश्व।

अंडकोश—संज्ञा पुं० [सं०] १. फोता। खुसिया। आँड़। बैजा। वृषण। २ ब्रह्मांड। लोकमंडल। संपूर्ण विश्व। ३. सीमा। हद। ४. फल का छिलका।

अंडज—संज्ञा पुं० [सं०] अंडे से उत्पन्न होनेवाले जीव; जैसे, सर्प, पक्षी, मछली इत्यादि।

अंडबंड—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. असंबद्ध प्रलाप। बे सिर पैर की बात। ऊटपटाँग। अनाप शनाप। व्यर्थ की बात। २. गाली। वि० असंबद्ध। बे सिर पैर का। इधर उधर का। अस्त व्यस्त। व्यर्थ का।

अँडरना—क्रि० अ० [सं० अंतरण] धान के पौधे का उस अवस्था में पहुँचना जब बाल निकलने पर हो। रेंड़ना। गभाना।

अंडवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें अंडकोश या फोता फूलकर बहुत बढ़ जाता है। फोते का बढ़ना।

अंडस—संज्ञा स्त्री० [देश०] कठिनता। कठिनाई। मुश्किल। संकट। असुविधा।

अंडा—संज्ञा पुं० [सं० अंड] [वि० अंडैल] १. वह गोल वस्तु जिसमें से पक्षी, जलचर और सरीसृप आदि अंडज जीवों के बच्चे फूटकर निकलते हैं। बैजा।
मुहा०—अंडा ढीला होना = १. नस ढीली होना। थकावट आना। शिथिल होना। २. खुक्ख होना। निर्द्रव्य होना। दिवालिया होना। अंडा सरकना = हाथ पैर हिलना अंग डोलना। उठना। चेष्टा या प्रयत्न होना अंडा सरकाना = हाथ पैर हिलाना। अं डोलाना। उठना। उठकर जाना। अंड

.. पक्षियों का अपने अंडों पर ...ने के लिये बैठना। २ घर में बैठ बाहर न निकलना।

...। देह। पिंड।

...–वि० [सं०] अंडे के आकार का। लिए हुए गोल।

...ते–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडे का ...। अंडे की शकल।

...डाकार। लंबाई लिए गोल।

...–संज्ञा स्त्री० [सं० एरण्ड] १ रेंडी। रेंड ... का बीज। २. रेंड या एरंड का ... ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

...—संज्ञा पु० दे० "अँडि"।

...ना—क्रि० स० [सं० अण्ड] बधिया ...। बछड़े के अंडकोश को कुचलना।

...ा बैल—संज्ञा पु० [हिं० अडुआ + बैल] ...बैल। बधियाया हुआ बैल। साँड़। ...ड अंडकोशवाला आदमी जो उसके ... से चल न सके। २. सुस्त आदमी।

...—वि० [हिं० अंडा] जिसके पेट में अंडे ... अंडेवाली।

...—संज्ञा पु० [सं०] [वि० अंतिम, अत्य] समाप्ति। अखीर। अवसान। इति। शेष या अंतिम भाग। पिछला अंश। ...०—अंत बनना = परिणाम अच्छा होना। ... बिगड़ना–परिणाम बुरा होना। सीमा। हद। अवधि। पराकाष्ठा। ... अंतकाल। मरण। मृत्यु। ५ परि...म। फल। नतीजा। ६. समीप। ...कट। ७. बाहर। दूर। ८. प्रलय।

...ा पु० [सं० अन्तम] १ अंतःकरण। ...दय। जी। मन। जैसे अंत की बात। २. ...द। रहस्य। गुप्त भाव। मन की बात।

...संज्ञा पु० [सं० अन्त्र] आँत। अँतड़ी।

...क्रि० वि० अंत में। आखिरकार। निदान।

...क्रि० वि० [सं० अन्यत्र, हिं० अनत] और ...जगह। दूर। अलग। जुदा।

...तक–संज्ञा पु० [सं०] १. अंत करनेवाला। नाश करनेवाला। २. मृत्यु जो प्राणियों के जीवन का अंत करती है। मौत। ३. यमराज। काल। ४ सन्निपात ज्वर का एक भेद। ५. ईश्वर, जो प्रलय में सबका संहार करता है। ६. शिव।

अंतकारी–संज्ञा पु० [सं०] अंत करने...। संहारक। मार डालनेवाला।

अंत काल–संज्ञा पु० [सं०] १ अंतिम समय। मरने का समय। आखिरी वक्त। २ मृत्यु। मौत। मरण।

अंत क्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] अन्त्येष्टि कर्म। मरने के पीछे का क्रिया कर्म।

अंतग–संज्ञा पु० [सं०] पारगामी। पारंगत। जानकारी में पूरा। निपुण।

अंतगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंतिम दशा। मृत्यु। मरण। मौत।

अंतघाई –वि० [सं० अन्तघाती] विश्वासघाती। धोखा देनेवाला। दगाबाज।

अँतड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० अन्त्र] आँत। **मुहा०**—अँतड़ी जलना = पेट जलना। बहुत भूख लगना। अँतड़ी गले में पड़ना=किसी आपत्ति में फँसना। अँतड़ियों का बल खोलना = बहुत दिन के बाद भोजन मिलने पर खूब पेट भर खाना।

अंतपाल–संज्ञा पु० [सं०] १ द्वारपाल। ड्योढ़ीदार। पहरू। दरबान। २ राज्य की सीमा पर का पहरेदार।

अंतरंग–वि० [सं०] १ भीतरी। बहिरंग का उलटा। २ अत्यंत समीपी। घनिष्ठ। ३ गुप्त बातों को जाननेवाला। जिगरी। दिली। ४ मानसिक। अंतःकरण का। संज्ञा पु० मित्र। दिली दोस्त। आत्मीय।

अंतर–संज्ञा पु० [सं०] १ फर्क। भेद। विभिन्नता। अलगाव। २ बीच। मध्य। फासला। दूरी। अवकाश। दो वस्तुओं के बीच में का स्थान। ३ मध्यवर्ती काल। दो घटनाओं के बीच का समय। बीच। ४ ओट। आड़। व्यवधान। परदा। दो वस्तुओं के बीच में पड़ी हुई चीज। ५. छिद्र। छेद। रंध्र।

वि० १. अंतर्द्धान। गायब। लुप्त। २ दूसरा। अन्य। और। जैसे, कालांतर

क्रि० वि० दूर। अलग। जुदा। पृथक्

संज्ञा पु० [सं० अन्तर] हृदय। अंतःकरण

क्रि० वि० भीतर। अंदर।

अंतरअयन–संज्ञा पु० [सं०] अंतर्गृही तीर्थों की एक परिक्रमा विशेष।

अंतर चक्र–संज्ञा पु० [सं०] १ दिशाएँ और विदिशाओं के बीच के अंतर को चार भागों में बाँटने से बने हुए भाग। २ दिग्विभागों में चिड़ियों ... कर शुभाशुभ फल बताने

विद्या। ३. तंत्र के अनुसार शरीर के भीतर माने हुए मूलाधार आदि कमल के आकार के छः चक्र। षट चक्र। ४. आत्मीय वर्ग। भाई बंधु की मंडली।

अंतरजामी†–संज्ञा पु० दे० "अंतर्यामी"।

अंतरदिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

अंतरपट–संज्ञा पुं० [सं०] १. परदा। आड़। ओट। आड़ करने का कपड़ा। २. विवाह मंडप में मृत्यु की आहुति के समय अग्नि और वर कन्या के बीच में डाला हुआ परदा। ३. परदा। छिपाव। दुराव। ४. धातु या ओषधि को फूँकने के पहिले उसकी लुगदी वा संपुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया। कपड़मिट्टी। कपड़ौरी। ५. गीली मिट्टी का लेप देकर लपेटा हुआ कपड़ा।

अंतरसंचारी–संज्ञा पु० [स०] संचारी भाव। (साहित्य)

तरस्थ–वि० [सं०] भीतर का। अंदर का। भीतर रहनेवाला।

तरा–संज्ञा पुं० [सं० अन्तर] १. अंका। नागा। वकफा। अंतर। बीच। २. वह ज्वर जो एक दिन नागा देकर आता है। ३. कोना।

वि० एक बीच में छोड़कर दूसरा।

अंतरा–क्रि० वि० [स० अन्तर] १. मध्य। २. निकट। ३. अतिरिक्त। सिवाय। ४. पृथक्। ५. विना।

संज्ञा पुं० १. किसी गीत में स्थाई या टेक के अतिरिक्त बाकी और पद या चरण। २. प्रातः काल और संध्या के बीच का समय। दिन।

अंतरात्मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जीवात्मा। २. अंतःकरण।

अंतराय–संज्ञा पु० [सं०] १. विघ्न। बाधा। २. ज्ञान का बाधक। ३. योग की सिद्धि के विघ्न जो नौ हैं।

अंतराल–संज्ञा पु० [सं०] १. घेरा। मंडल। आवृत स्थान। २. मध्य। बीच।

अंतरिच्छ–संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथिवी और सूर्यादि लोकों के बीच का स्थान। दो ग्रहों या तारों के बीच का शून्य स्थान। आकाश। अधर। शून्य। २. स्वर्गलोक। तीन प्रकार के केतुओं में से एक। ...न। गुप्त। अप्रकट। गायब।

अंतरिख, अंतरिच्छ*–संज्ञा पुं० दे० "अंतरिक्ष"।

अंतरित–वि० [सं०] १. भीतर किया हुआ। भीतर रक्खा हुआ। छिपा हुआ। २. अंतर्धान। गुप्त। गायब। तिरोहित। ३. आच्छादित। ढका हुआ।

अंतरीप–संज्ञा पु० [सं०] १. द्वीप। टापू। २. पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो। रास।

अंतरीय–संज्ञा पु० [स०] अधोवस्त्र। कमर में पहनने का वस्त्र। धोती।

वि० भीतर का। अंदर का। भीतरी।

अँतरौटा–संज्ञा पुं० [स० अन्तर + पट] साड़ी के नीचे पहनने का महीन कपड़ा।

अंतर्गत–वि० [स०] [संज्ञा अंतर्गति] १. भीतर आया हुआ। समाया हुआ। शामिल। अंतर्भूत। सम्मिलित। २. भीतरी। छिपा हुआ। गुप्त। ३. हृदय के भीतर का। अंतःकरणस्थित।

संज्ञा पुं० मन। जी। हृदय। चित्त।

अंतर्गति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मन का भाव। चित्तवृत्ति। भावना। २. चित्त की अभिलाषा। हार्दिक इच्छा। कामना।

अंतर्गृही–संज्ञा स्त्री० [स०] तीर्थ स्थान के भीतर पड़नेवाले प्रधान स्थलों की यात्रा।

अंतर्जानु–वि० [सं०] हाथों को घुटनों के बीच किए हुए।

अंतर्दशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में ग्रहों के नियत भोगकाल।

अंतर्दशाह–संज्ञा पु० [सं०] मरने के पीछे दस दिनों के भीतर होनेवाले कर्मकांड।

अंतर्द्धान–संज्ञा पु० [सं०] लोप। अदर्शन। छिपाव। तिरोधान।

वि० गुप्त। अलक्ष। गायब। अदृश्य। अंतर्हित। अप्रकट। लुप्त। छिपा हुआ।

अंतर्निविष्ट–वि० [स०] १. भीतर बैठा हुआ। अंदर रक्खा हुआ। २. अंतःकरण में स्थित। मन में जमा हुआ। हृदय में बैठा हुआ।

अंतर्बोध–संज्ञा पुं० [सं०] १. आत्मज्ञान। आत्मा की पहिचान। २. आंतरिक अनुभव।

अंतर्भाव–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अंतर्भावित, अंतर्भूत] १. मध्य में प्राप्ति। भीत...

समावेश। अंतर्गत होना। शामिल होना। २. तिरोभाव। विलीनता। छिपाव। ३. नाश। अभाव। ४. भीतरी मतलब। आंतरिक अभिप्राय। आशय। मंशा।
अंतर्भावना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ध्यान। सोच विचार। चिंता। २. गुणन फल के अंतर से संख्याओं को ठीक करना।
अंतर्भावित-वि० [सं०] १. अंतर्भूत। अंतर्गत। शामिल। भीतर। २. भीतर किया हुआ। छिपाया हुआ। लुप्त।
अंतर्भूत-वि० [सं०] अंतर्गत। शामिल। संज्ञा पु० जीवात्मा। प्राण। जीव।
[अं]तर्मुख-वि० [सं०] जिसका मुँह भीतर की ओर हो। भीतर मुँहवाला। जिसका छिद्र भीतर की ओर हो। जैसे, अंतर्मुख फोड़ा। क्रि० वि० भीतर की ओर प्रवृत्त। जो बाहर से हटकर भीतर ही लीन हो।
अंतर्यामी-वि० [सं०] १. भीतर जानेवाला। २. जिसकी गति मन के भीतर तक हो। अंतःकरण में स्थिर होकर प्रेरणा करनेवाला। चित्त पर दबाव या अधिकार रखनेवाला। ३. भीतर की बात जाननेवाला। मन की बात का पता रखनेवाला। संज्ञा पु० ईश्वर। परमात्मा। परमेश्वर।
अंतर्लंब-संज्ञा पु० [सं०] वह त्रिकोण क्षेत्र जिसके भीतर लंब गिरा हो।
अंतर्लापिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पहेली जिसका उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो।
अंतर्लीन-वि० [सं०] मग्न। भीतर छिपा हुआ। डूबा हुआ। गर्क। विलीन।
अंतर्वती-वि० स्त्री० [सं०] १. गर्भवती। गर्भिणी। हामिला। २. भीतरी। भीतर की। अंदर रहनेवाली।
अंतर्वाणी-संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रज्ञ। पंडित। विद्वान्।
अंतर्विकार-संज्ञा पु० [सं०] शरीर का धर्म। जैसे भूख, प्यास, पीड़ा इत्यादि।
अंतर्वेगी ज्वर-संज्ञा० पु० [सं०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें रोगी को पसीना नहीं आता।
अंतर्वेद-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्तर्वेदी] १. देश जिसके अंतर्गत यज्ञों की वेदियाँ हों। २. गंगा और यमुना के बीच का देश। ब्रह्मावर्त। ३. दो नदियों के बीच का देश। दोआब।
अंतर्वेदी-वि० [सं० अंतर्वेदीय] अंतर्वेद का निवासी। गंगा जमुना के दोआब में बसनेवाला।
अंतर्वेशिक-संज्ञा पुं० [सं०] अंतःपुर-रक्षक। ख्वाजा सरा।
अंतर्हित-वि० [सं०] तिरोहित। अंतर्द्धान। गुप्त। गायब। छिपा हुआ। अदृश्य।
अंतवर्ण-संज्ञा पु० [सं०] अंतिम वर्ण का। चतुर्थ वर्ण का। शूद्र।
अंतशय्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृत्युशय्या। मरनखाट। भूमिशय्या। २. श्मशान। मसान। मरघट। ३. मरण। मृत्यु।
अंतस्-संज्ञा पुं० [सं०] अंतःकरण। हृदय। चित्त।
अंतसद्-संज्ञा पु० [सं०] शिष्य। चेला।
अंतसमय-संज्ञा पुं० [सं०] मृत्युकाल। मरणकाल।
अंतस्थ-वि० [सं०] [विशे० अंतस्थित] १. भीतर का। भीतरी। २. बीच में स्थित। मध्य का। मध्यवर्ती। बीचवाला। ३. य, र, ल, व, ये चारों वर्ण।
अंतस्नान-संज्ञा पुं० [सं०] अवभृत स्नान। वह स्नान जो यज्ञ समाप्त होने पर किया जाता है।
अंतस्सलिल-वि० [सं०] [स्त्री० अंतस्सलिला] जिसके जल का प्रवाह बाहर न देख पड़े, भीतर हो। जैसे-अंतस्सलिला सरस्वती।
अंतस्सलिला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती नदी। २. फल्गू नदी।
अंतावरी-संज्ञा स्त्री० [सं० अन्त्रावलि] अँतड़ी। आँतों का समूह।
अंतावशायी-संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्राम की सीमा के बाहर बसनेवाले। २. अस्पृश्य।
अंतावसायी-संज्ञा पुं० [सं०] १. नाई। हज्जाम। २. हिंसक। चांडाल।
अंतिम-वि० [सं०] १. जो अंत में हो। अंत का। आखिरी। सबके पीछे का। २. चरम। सबसे बढ़ कर। हद दरजे का।
अंतेउर, अंतेवर-संज्ञा पुं० [सं० अन्तःपुर] अंतःपुर। जनानखाना।
अंतेवासी-संज्ञा पु० [सं०] १. गुरु के समीप रहनेवाला। शिष्य। चेला। २. ग्राम के बाहर रहनेवाला। चांडाल। अंत्यज।
अंतःकरण-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह भीतरी इंद्रिय जो संकल्प, विकल्प, निश्चय, स्मरण

अकल-वि० [स०] १. अवयव-रहित। जिसके अवयव न हों। २ जिसके खंड न हों। सर्वांगपूर्ण। समूचा। ३. परमात्मा का एक विशेषण। ४ बिना कला या चतुराई का।
वि० [स० अ=नहीं+हिं० कल=चैन] विकल। व्याकुल। बेचैन।
संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।

अकलखुरा-वि० [हिं० अकेला+फा० खोर] १ अकेला खानेवाला अर्थात् स्वार्थी। मतलबी। २. रूखा। मनहूस। जो मिलनसार न हो। ३ ईर्ष्यालु। डाही।

अकलबीर-संज्ञा पु० [स० कलवीर ?] भाँग की तरह का एक पौधा। कलबीर। चत्र।

अकवन-संज्ञा पु० [हिं० आक] आक। मदार।

अकस-संज्ञा पु० [स० आकर्ष] १ बैर। द्वेष। शत्रुता। अदावत। २ बुरी उत्तेजना।

अकसना-क्रि० स० [हिं० अकस] १ अकस रखना। बैर करना। २ बराबरी करना। होड़ करना।

अकसर-क्रि० वि० [अ०] प्राय। बहुधा। अधिकतर। बहुत करके। विशेष करके।
क्रि० वि०। वि० [स० एक+सर (प्रत्य०)] अकेले। बिना किसी के साथ।

अकसीर-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह रस या भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे। रसायन। कीमिया। २. वह औषधि जो प्रत्येक रोग को नष्ट करे।
वि० अव्यर्थ। अत्यंत गुणकारी।

अकस्मात्-क्रि० वि० [स०] १. अचानक। अनायास। एकबारगी। सहसा। २ दैवयोग से। संयोगवश। आपसे आप।

अकहु-वि० दे० "अकथ"।

अकहुआ†-वि० दे० "अकथ"।

अकांड-वि० [स०] बिना शाखा का।
क्रि० वि०- अकस्मात्। सहसा।

अकांडतांडव-संज्ञा पु० [स०] व्यर्थ की बकवाद। व्यर्थ की बकवाद। वितंडावाद।

अकाज-संज्ञा पु० [स० अ+हिं० काज] [क्रि० अकाजना, वि० अकाजी] १. कार्य की हानि। नुकसान। हर्ज। विघ्न। बिगाड़। २ बुरा कार्य। दुष्कर्म। खोटा काम।
क्रि० वि० व्यर्थ। बिना काम। निष्प्रयोजन।

अकाजना-क्रि० अ० [हिं० अकाज] १. हानि होना। २. गत होना। मरना।
क्रि० स० हानि करना। हर्ज करना।

अकाजी-वि० [हिं० अकाज] [स्त्री० अकाजिनि] अकाज करनेवाला। हर्ज करनेवाला। कार्य की हानि करनेवाला।

अकाट्य-वि० [स० अ+हिं० काटना] जिसका खंडन न हो सके। दृढ़। मजबूत।

अकाथ-क्रि० वि० दे० "अकारथ"।

अकाम-वि० [स०] बिना कामना का। कामनारहित। इच्छाविहीन। निस्पृह।
क्रि० वि० [स० अकर्म] बिना काम के। निष्प्रयोजन। व्यर्थ।

अकाय-वि० [स०] १ बिना शरीरवाला। देहरहित। २ शरीर न धारण करनेवाला। जन्म न लेनेवाला। ३. निराकार।

अकार-संज्ञा पु० "अ" अक्षर।

अकारज-संज्ञा पु० [स० अकार्य] कार्य की हानि। हानि। नुकसान। हर्ज।

अकारण-वि० [स०] १ बिना कारण का। बिना वजह का। २ जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण न हो। स्वयंभू।
क्रि० वि० बिना कारण के। बेसबब।

अकारथ-क्रि० वि० [स० अकार्यार्थ] बेकाम। निष्फल। निष्प्रयोजन। वृथा। फजूल। लाभरहित।

अकाल-संज्ञा पु० [स०] [वि० अकालिक] १. अनुपयुक्त समय। अनवसर। कुसमय। २ दुष्काल। दुर्भिक्ष। महँगी।
क्रि० प्र०—पड़ना।
३ घाटा। कमी।

अकालकुसुम-संज्ञा पु० [स०] १. बिना समय या ऋतु में फूला हुआ फूल। (अशुभ)। २ बे समय की चीज।

अकालमूर्ति-संज्ञा स्त्री० [स०] नित्य या अविनाशी पुरुष।

अकालमृत्यु-संज्ञा स्त्री० [स०] बेसमय की मृत्यु। असामयिक मृत्यु। थोड़ी अवस्था में मरना।

अकाली-संज्ञा पु० [स० अकाल+हिं० ई] नानकपंथी साधु जो सिर में चक्र के साथ काले रंग की पगड़ी बाँधे रहते हैं।

अकाव†-संज्ञा पु० दे० "आक"।

अकास-संज्ञा पु० दे० "आकाश"।

अकास दीया-संज्ञा पु० [स० आकाशदीप]

वह दीपक जो बांस के ऊपर आकाश में लटकाया जाता है।
अकास वानी–संज्ञा स्त्री० दे० "आकाश-वाणी"।
अकासबेल–संज्ञा स्त्री० [सं० आकाशवेलि] अमर बेलि। अमर बेल। अकास बोर।
अकासी †–संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश] १ चील। २ ताड़ी।
अकिंचन–वि० [सं०] निर्धन। कंगाल।
अकिंचनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दरिद्रता। गरीबी। निर्धनता।
अकिल‡–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।
अकिलदाढ़–संज्ञा पु० [अ० अक्ल+हिं० दाढ़] पूरी अवस्था प्राप्त होने पर निकलनेवाला अतिरिक्त दांत।
अकीक–संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का लाल पत्थर जिस पर मुहर खोदी जाती है।
अकीर्त्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अयश। अपयश। बदनामी।
अकुंठ–वि० [सं०] १ तीक्ष्ण। चोखा। २ तीव्र। तेज। ३ खरा। उत्तम।
अकुताना–क्रि० अ० दे० "उकताना"।
अकुल–वि० [सं०] १ जिसके कुल में कोई न हो। २ बुरे या नीच कुल का। संज्ञा पु० बुरा कुल। नीच कुल।
अकुलाना–क्रि० अ० [सं० आकुलन] १ जल्दी करना। उतावला होना। २ घबराना। व्याकुल होना। ३ मग्न होना। लीन होना।
अकुलीन–वि० [सं०] तुच्छ वंश में उत्पन्न। कमीना। क्षुद्र।
अकूत–वि० [सं० अ+हिं० कूतना] जो कूता न जा सके। बे अंदाज। अपरिमित।
अकूहल–वि० [देश०] बहुत। अधिक।
अकृत–वि० [सं०] १ बिना किया हुआ। २ बिगाड़ा हुआ। अंड बंड किया हुआ। ३ जो किसी का बनाया न हो। नित्य। स्वयंभू। ४ प्राकृतिक। ५ निकम्मा। बेकाम। ६ बुरा। मंदा।
अकेला–वि० [सं० एक+हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अकेली] १ जिसके साथ कोई न हो। बिना साथी का। तनहा। २ अद्वितीय। निराला।
यौ०–अकेला दम=एक ही प्राणी। अकेला दुकेला=एक या दो। अधिक नहीं।
संज्ञा पु० एकांत। निर्जन स्थान।
अकेले–क्रि० वि० [हिं० अकेला] १ किसी साथी के बिना। एकाकी। तनहा। २ सिर्फ। केवल।
अकोतर सौ–वि० [सं० एकोत्तरशत] सौ के ऊपर एक। एक सौ एक।
अकोसना–क्रि० स० दे० "कोसना"।
अकौआ†–संज्ञा पु० [सं० अर्क] १ आक। मदार। २ गले में का कौआ। घंटी।
अक्खड़–वि० [हिं० अड़+खड़ा] १ किसी का कहना न माननेवाला। उद्धत। उच्छृंखल। २ बिगड़ैल। झगड़ालू। ३ निर्भय। बेडर। ४ असभ्य। अशिष्ट। ५ उजड्ड। जड़। ६ खरा। स्पष्टवक्ता।
अक्खड़पन–संज्ञा पु० [हिं० अक्खड़+पन] १ अशिष्टता। असभ्यता। उजड्डपन। २ उग्रता। कलहप्रियता। ३ निःशंकता। ४ स्पष्टवादिता।
अक्खर–संज्ञा पु० दे० "अक्षर"।
अक्खा–संज्ञा पु० [सं० अक्ष=मध्य धरना] बैलों पर अनाज आदि लादने का दोहरा थैला। खुरजी। गोन।
अक्खो मक्खो–संज्ञा पु० [सं० अक्ष+मुख] दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बच्चे के मुँह पर 'अक्खो मक्खो' कहते हुए फेरना। (नजर से बचाने के लिये)
अक्त–वि० [सं०] व्याप्त। संयुक्त। युक्त। (प्रत्यय के रूप में, जैसे, विषाक्त।)
अक्रम–वि० [सं०] बिना क्रम का। अंटबंड। बे सिलसिले।
संज्ञा पु० क्रम का अभाव। व्यतिक्रम।
अक्रम संन्यास–संज्ञा पु० [सं०] वह संन्यास जो क्रम से (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ के पीछे) न लिया गया हो, बीच ही में धारण किया गया हो।
अक्रमातिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण के साथ ही कार्य्य कहा जाता है।
अक्रिय वि० [सं०] १ जो कर्म न करे। क्रियारहित। २ निश्चेष्ट। जड़। स्तब्ध।
अक्रूर–वि० [सं०] जो क्रूर न हो। सरल। संज्ञा पु० श्वफल्क का पुत्र एक यादव जो श्रीकृष्ण का चाचा लगता था।
अक्ल–संज्ञा स्त्री० [अ०] बुद्धि। समझ। ज्ञान। प्रज्ञा।

मुहा०—अक्ल का दुश्मन=मूर्ख। बेवकूफ। अक्ल का पूरा=(व्यंग) मूर्ख। खड। अक्ल खर्च करना=समझ को काम में लाना। सोचना। अक्ल का चरने जाना=समझ का जाता रहना। बुद्धि का अभाव होना। अक्ल मारी जाना=बुद्धि नष्ट होना।

अक्लमंद–सज्ञा पु० [फा०] [सज्ञा अक्लमंदी] बुद्धिमान्। चतुर। समझदार।

अक्लमंदी–सज्ञा स्त्री० [फा०] समझदारी। चतुराई। विज्ञता।

अक्लिष्ट–वि० [स०] १ कष्ट रहित। २ सुगम। सहज। आसान।

अक्ष–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० अक्षा] १ खेलने का पासा। २. पासे का खेल। चौसर। ३. छकडा। गाड़ी। ४. धुरी। ५ वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केंद्र से होती हुई उसके आर पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी गई है। ६ तराजू की डाँडी। ७ मामला। मुकद्दमा। ८ इंद्रिय। ९. आँख। १०. रुद्राक्ष। ११ साँप। १२ गरुड। १३ आत्मा।

अक्षक्रीड़ा–सज्ञा स्त्री० [स०] पासे का खेल। चौसर। चोपड़।

अक्षत–वि० [स०] बिना टूटा हुआ। अखंडित। समूचा।
सज्ञा पु० १. बिना टूटा हुआ चावल जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया जाता है। २. धान का लावा। ३ जौ।

अक्षतयोनि–वि० स्त्री० [स०] (कन्या) जिसका पुरुष से संसर्ग न हुआ हो।

अक्षता–वि० स्त्री० [स०] जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो (स्त्री)।
सज्ञा स्त्री० वह पुनर्भू स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष संयोग न किया हो।

अक्षपाद–सज्ञा पु० [स०] १ न्यायशास्त्र के प्रवर्त्तक गौतम ऋषि। २. तार्किक। नैयायिक।

अक्षम–वि० [स०] [सज्ञा अक्षमता] १ क्षमारहित। असहिष्णु। २. असमर्थ। अशक्त।

अक्षमता–सज्ञा स्त्री० [स०] १ क्षमा का अभाव। असहिष्णुता। २ ईर्ष्या। डाह। ३ असामर्थ्य।

अक्षय–वि० [स०] १ जिसका क्षय न हो। अविनाशी। अनश्वर। २ कल्प के अंत तक रहनेवाला।

अक्षय तृतीया–सज्ञा स्त्री० [स०] वैशाख शुक्ल तृतीया। आखा तीज। (स्नान दान)

अक्षय नवमी–सज्ञा स्त्री० [स०] कार्त्तिक शुक्ल नवमी। (स्नान दान आदि)

अक्षय वट–सज्ञा पु० [स०] प्रयाग और गया में एक बरगद का पेड़, पौराणिक जिसका नाश प्रलय में भी नहीं मानते।

अक्षय्य–वि० [स०] अक्षय। अविनाशी।

अक्षर–वि० [स०] अविनाशी। नित्य।
सज्ञा पु० १ अकारादि वर्ण। हरफ। २. आत्मा। ३ ब्रह्म। ४ आकाश। ५ धर्म। ६ तपस्या। ७ मोक्ष। ८ जल।

अक्षरन्यास–सज्ञा पु० [स०] १ लेख। लिखावट। २ मंत्र के एक एक अक्षर को पढ़कर हृदय, नाक, कान आदि छूना। (तंत्र)

अक्षरशः–क्रि० वि० [स०] एक एक अक्षर। बिलकुल। सब।

अक्षरेखा–सज्ञा स्त्री० [स०] वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के भीतर केंद्र से होकर दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से गिरे।

अक्षरौटी–सज्ञा स्त्री० [स० अक्षरावर्त्तन] १ वर्णमाला। २. लेख। लिपि का ढंग। ३ वे पद्य जो क्रम से वर्णमाला के अक्षरों को लेकर आरंभ होते हैं।

अक्षांश–सज्ञा पु० [स०] १ भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अंतर के ३६० समान भागों पर से होती हुई ३६० रेखाएँ जो पूर्व पश्चिम मानी गई हैं। २ वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है। ३ भूमध्य रेखा और किसी नियत स्थानके बीच में याम्योत्तर का पूर्ण झुकाव या अंतर। ४. किसी नक्षत्र के क्रांति वृत्त के उत्तर या दक्षिण की ओर का कोणांतर।

अक्षि–सज्ञा स्त्री० [स०] आँख। नेत्र।

अक्षिगोलक–सज्ञा पु० [स०] आँख का डेला।

अक्षितारा–सज्ञा स्त्री० [स०] आँख की पुतली।

अक्षिपटल–सज्ञा पु० [स०] आँख का परदा।

अक्षुण्ण–वि० [स०] १. बिना टूटा हुआ। समूचा। २ अनाड़ी।

अक्षोट–संज्ञा पुं० [सं०] अखरोट।
अक्षौनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।
अक्षोभ–संज्ञा पुं० [सं०] क्षोभ का अभाव। शांति।
वि० १. क्षोभरहित। गंभीर। शांत। २. मोहरहित। ३. निडर। निर्भय। ४. जिसे बुरा काम करते हिचक न हो।
अक्षौहिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें १, ०६, ३५० पैदल, ६५, ६, १० घोड़े, २१, ८, ७० रथ और २१, ८, ७० हाथी होते थे।
अक्स–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रतिबिंब। छाया। परछाईं। २. तसवीर। चित्र।
अक्सर–क्रि० वि० दे० "अकसर"।
अखंग*–वि० [सं० अखंड] न खँगनेवाला। न चुकनेवाला। अविनाशी।
अखंड–वि० [सं०] १. जिसके टुकड़े न हों। संपूर्ण। समग्र। पूरा। २. जो बीच में न रुके। लगातार। ३. बेरोक। निर्विघ्न।
अखंडनीय–वि० [सं०] १. जिसके टुकड़े न हो सकें। २. जिसके विरुद्ध न कहा जा सके। पुष्ट। युक्तियुक्त।
अखंडल*–वि० [सं० अखंड] १. अखंड। अविच्छिन्न। २. समूचा। संपूर्ण।
संज्ञा पुं० दे० "आखंडल"।
अखंडित–वि० [सं०] १. जिसके टुकड़े न हुए हों। अविच्छिन्न। २. संपूर्ण। समूचा। ३. निर्विघ्न। बाधारहित। ४. जिसका क्रम न टूटा हो। लगातार।
अखज–वि० [सं० अखाद्य] १. अखाद्य। न खाने योग्य। २. बुरा। खराब।
अखड़ैत–संज्ञा पुं० [हिं० अखाड़ा + ऐत (प्रत्य०)] मल्ल। बलवान् पुरुष।
अखती, अखतीज–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षय तृतीया"।
अखनी–संज्ञा स्त्री० [अ० यखनी] मांस का रसा। शोरबा।
अखबार–संज्ञा पुं० [अ०] समाचारपत्र। संवादपत्र। खबर का कागज़।
अखय–वि० दे० "अक्षय"।
अखर–संज्ञा पुं० दे० "अक्षर"।
अखरना–क्रि० स० [सं० खर] खलना। बुरा लगना। कष्टकर होना।
अखरा*–वि० [सं० अ + हिं० खरा = सच्चा] झूठा। बनावटी। कृत्रिम।
संज्ञा पुं० [सं० अक्षर = समूचा] भूसी मिला हुआ जौ का आटा।
अखरावट, अखरावटी–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षरौटी"।
अखरोट–संज्ञा पुं० [सं० अक्षोट] एक फलदार ऊँचा पेड़ जो भूटान से अफ़ग़ानिस्तान तक होता है।
अखा†–संज्ञा पुं० दे० "आखा"।
अखाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० अक्षवाट] १ कुश्ती लड़ने या कसरत करने के लिए बनाई हुई चौखूँटी जगह। २. साधुओं की सांप्रदायिक मंडली। जमायत। ३. तमाशा दिखानेवालों और गाने बजानेवालों की मंडली। जमायत। दल। ४. सभा। दरबार। रंगभूमि।
अखाद्य–वि० [सं०] न खाने योग्य।
अखिल–वि० [सं०] १. संपूर्ण। समग्र। पूरा। २. सर्वांगपूर्ण। अखंड।
अखीन –वि० दे० "अक्षीण"।
अखीर–संज्ञा पुं० [अ०] १. अंत। छोर। २ समाप्ति।
अखूट–वि० [सं० अ = नहीं + खूँटना = कम होना] जो न घटे या चुके। अक्षय। बहुत।
अखे –वि० दे० "अक्षय"।
अखैवर–संज्ञा पुं० [सं० अक्षयवट] अक्षयवट।
अखोर –वि० [हिं० अ + खोरा = बुरा] १. भद्र। सज्जन। २. सुंदर। ३. निर्दोष।
वि० [फा० आखोर] निकम्मा। बुरा।
संज्ञा पुं० १. कूड़ा करकट। निकम्मी चीज़। २. खराब घास। बुरा चारा। बिचाली।
अखोह–संज्ञा पुं० [हिं० खोह] ऊँची नीची या उभड़ खाबड़ भूमि।
अखौट, अखौटा–संज्ञा पुं० [सं० अक्ष = धुरा] १. जाँते या चक्की के बीच की खूँटी। जाँते की किल्ली। २. लकड़ी या लोहे का डंडा जिस पर गड़ारी घूमती है।
अख्खाह !–अव्य० उद्वेग या आश्चर्यसूचक शब्द।
अख्तियार–संज्ञा पुं० दे० "इख्तियार"।
अख्यान –संज्ञा पुं० दे० "आख्यान"।
अगंड–संज्ञा पुं० [सं०] वह धड़ जिसका हाथ पैर कट गया हो। कबंध।
अग–वि० [सं०] १. न चलनेवाला। स्थावर। २. टेढ़ा चलनेवाला।

संज्ञा पु० १ पेड़। वृक्ष। २ पर्वत। ३ सूर्य। ४ साप।

अगज-वि [सं०] पर्वत से उत्पन्न।
संज्ञा पु० १ शिलाजीत। २ हाथी।

अगटना†-क्रि० अ० [हिं० इकट्ठा] इकट्ठा होना। जमा होना।

अगड -संज्ञा पु० [हिं० अकड़] अकड़। ऐंठ। दर्प।

अगडधत्ता-वि० [सं० अग्रोद्धत] १ लंबा तडगा। ऊंचा। २ श्रेष्ठ। बडा।

अगडबगड-वि० [अनु०] अड बड। बे सिर पैर का, क्रमविहीन।
संज्ञा पु० १ बे सिर पैर की बात। प्रलाप। २ अड बड काम। अनुपयोगी कार्य।

अगडा†-संज्ञा पु० [देश०] अनाजों की बाल जिसमें से दाना झाड लिया गया हो। खुखडी। अखरा।

अगण-संज्ञा पु० [सं०] छंद-शास्त्र में चार बुरे गण—जगण, रगण, सगण और तगण।

अगणनीय-वि० [सं०] १ न गिनने योग्य। सामान्य। २ अनगिनत। असंख्य।

अगणित-वि० [सं०] जिसकी गणना न हो। अनगिनत। असंख्य। बहुत।

अगण्य-वि० [सं०] १ न गिनने योग्य। २ सामान्य। तुच्छ। ३ असंख्य। बेशुमार।

अगत †-संज्ञा स्त्री० दे० "अगति"।

अगति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी गति। दुर्गति। दुर्दशा। खराबी। २ मृत्यु के पीछे की बुरी दशा। नरक। ३ मरने के पीछे शव की दाह आदि क्रिया। ४ गति का अभाव। स्थिरता।

अगतिक-वि० [सं०] जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो। अशरण। निराश्रय।

अगती-वि० [सं० अगति] बुरी गतिवाला। पापी। दुराचारी।
†वि० स्त्री० [सं० अग्रत] अगाऊ। पेशगी। क्रि० वि० आगे से। पहिले से।

अगनिउ†-संज्ञा पु० [सं० आग्नेय] उत्तर-पूरब का कोना।

अगनित--वि० दे० "अगणित"।

अगनू--संज्ञा स्त्री० [सं० आग्नेय] अग्नि कोण।

अगनेउ--संज्ञा पु० [सं० आग्नेय] आग्नेय दिशा। अग्नि कोण।

अगनेत -संज्ञा पु० [सं० आग्नेय] आग्नेय दिशा। अग्नि कोण।

अगम-वि० [सं० अगम्य] १ जहां कोई जा न सके। दुर्गम। अवघट। २ विकट। कठिन। मुशकिल। ३ दुर्लभ। अलभ्य। ४ बहुत। अत्यंत। ५ बुद्धि के परे। दुर्बोध। ६ अथाह। बहुत गहरा।
संज्ञा पु० दे० "आगम"।

अगमन -क्रि० वि० [सं० अग्रवान्] १ आगे। पहिले। प्रथम। २ आगे से। पहिले से।

अगमनीया-वि० स्त्री० [सं०] जिस (स्त्री) के साथ संभोग करने का निषेध हो।

अगमानी -संज्ञा पु० [सं० अग्रगामी] अगुआ। नायक। सरदार।
† संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगमासी-संज्ञा स्त्री० दे० "अगवासी"।

अगम्य-वि० [सं०] १ जहां कोई न जा सके। अवघट। गहन। २ कठिन। मुशकिल। ३ बहुत। अत्यंत। ४ जिसमें बुद्धि न पहुँच। अज्ञेय। दुर्बोध। ५ अथाह। बहुत गहरा।

अगम्या-वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध हो। जैसे, गुरुपत्नी, राजपत्नी, सौतेली माँ आदि।

अगर-संज्ञा पु० [सं० अगुरु] एक पेड जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है।
अव्य० [फा०] यदि। जो।
मुहा०—अगर मगर करना=१ हुज्जत करना। तर्क करना। २ आगा पीछा करना।

अगरई-वि० [हिं० अगर] श्यामता लिए हुए सुनहले संदली रंग का।

अगरचे-अव्य० [फा०] गोकि। यद्यपि। बावजूदे कि।

अगरना -क्रि० अ० [सं० अग्र] आगे होना। बढ़ना।

अगरवत्ती-संज्ञा स्त्री० [सं० अगरुवर्तिका] सुगंध के निमित्त जलाने की पतली सींक या बत्ती।

अगरसार-संज्ञा पु० दे० "अगर"।

अगरा -वि० [सं० अग्र] १ अगला। प्रथम। २ बढ़कर। श्रेष्ठ। उत्तम। ३ अधिक। ज्यादा।

अगरी-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

संज्ञा स्त्री० [सं० अर्गल] लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्ले में कोंटा लगाकर डाला रहता है। ब्योड़ा।
संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र] फूस की छाजन का एक ढंग।
" संज्ञा स्त्री० [सं० अनर्गल] अडबड बात। बुरी बात। अनुचित बात।
अगरु–संज्ञा पुं० [सं०] अगर लकड़ी। ऊद।
अगल बगल–क्रि० वि० [फा०] इधर उधर। दोनों ओर। आसपास।
अगला–वि० [सं० अग्र] [स्त्री० अगली] १ आगे का। सामने का। "पिछला" का उलटा। २ पहिले का। पूर्ववर्ती। ३ प्राचीन। पुराना। ४ आगामी। आनेवाला। ५ अपर। दूसरा।
संज्ञा पुं० १. अगुआ। प्रधान। २. चतुर आदमी। ३. पूर्वज। पुरखा। (बहु-वचन में)
अगवना–क्रि० अ० [हिं० आगे+ना] आगे बढ़ना। उद्यत होना।
अगवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० आगा+अवाई] अगवानी। अभ्यर्थना।
संज्ञा पुं० [सं० अग्रगामी] आगे चलनेवाला। अगुआ। अग्रसर।
अगवाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० अग्रवाट] घर के आगे का भाग। "पिछवाड़ा" का उलटा।
अगवान–संज्ञा पुं० [सं० अग्र+यान] १ अगवानी या अभ्यर्थना करनेवाला। २ विवाह में कन्या पक्ष के लोग जो बरात को आगे से जाकर लेते हैं।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।
अगवानी–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र+यान] १ अतिथि के निकट पहुँचने पर उससे सादर मिलना। अभ्यर्थना। पेशवाई। २ विवाह में बरात को आगे से लेने की रीति।
२ संज्ञा पुं० [सं० अग्रगामी] अगुआ। नेता।
अगवार†–संज्ञा पुं० [सं० अग्र+वर] १. अन्न का वह भाग जो हलवाहे आदि के लिये अलग कर दिया जाता है। २. वह अन्न जो बरसाने में भूसे के साथ चला जाता है। ३. दे० "अगवाड़ा"।
अगवाँसी–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्रवासी] १ हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है। २. पैदावार में हलवाहे का भाग।
अगसार"–क्रि० वि० [सं० अग्रसर] आगे।
अगस्त–संज्ञा पुं० दे० "अगस्त्य"।
अगस्त्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि जिन्होंने समुद्र सोखा था। २ एक तारा जो भादों में सिंह के सूर्य के १७ अंश पर उदय होता है। ३ एक पेड़ जिसके फूल अर्द्धचंद्राकार लाल या सफेद होते हैं।
अगह–वि० [सं० अग्रह] १ हाथ में न आने लायक। चंचल। २ जो वर्णन और चिंतन के बाहर हो। ३ कठिन। मुश्किल।
अगहन–संज्ञा पुं० [सं० अग्रहायण] [वि० अगहनिया, अगहनी] हेमंत ऋतु का पहला महीना। मार्गशीर्ष। मगसिर।
अगहनिया–वि० [सं० अग्रहायणी] अगहन में होनेवाला (धान)।
अगहनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अगहन] वह फसल जो अगहन में काटी जाती है।
अगहर †–क्रि० वि० [हिं० आगे+हर (प्रत्य०)] १ आगे। २ पहिले। प्रथम।
अगहुँड़–क्रि० वि० [सं० अग्र+हिं० हुँड (प्रत्य०)] आगे। आगे की ओर।
अगाउनी–क्रि० वि० संज्ञा स्त्री० दे० "अगौनी"।
अगाऊ–क्रि० वि० [सं० अग्र+हिं० आऊ (प्रत्य०)] अग्रिम। पेशगी। समय के पहले।
वि० अगला। आगे का।
क्रि० वि० आगे। पहिले। प्रथम।
अगाड़ा†–संज्ञा पुं० [हिं० अगाड़] कछार। तरी।
संज्ञा पुं० [सं० अग्र] यात्री का वह सामान जो पहले से आगे के पड़ाव पर भेज दिया जाता है। पेशखेमा।
अगाड़ी–क्रि० वि० [सं० अग्र प्रा० अग्ग+हिं० आड़ी (प्रत्य०)] १ आगे। २ भविष्य में। ३ सामने। समक्ष। ४ पूर्व। पहले।
संज्ञा पुं० १ किसी वस्तु के आगे या सामने का भाग। २ घोड़े के गराँव में बँधी हुई दो रस्सियाँ जो इधर उधर दो खूँटों से बँधी रहती हैं। ३ सेना का पहिला धावा। हल्ला।
अगाड़ू–क्रि० वि० दे० "अगाड़ी"

अगाध-वि० [सं०] १. अथाह । बहुत गहरा । २. अपार । असीम । बहुत । ३. समझ में न आने योग्य । दुर्बोध ।
संज्ञा पुं० छेद । गड्ढा ।

अगान‡-वि० दे० "अज्ञान" ।

अगामै*-क्रि० वि० [सं० अग्रिम] आगे ।

अगार-संज्ञा पुं दे० "आगार" ।
क्रि० वि० [सं० अग्र] आगे । पहिले ।

अगास*- संज्ञा पुं० [सं० अग्र + हिं० आस (प्रत्य०)] द्वार के आगे का चबूतरा ।

अगाह*-वि० [सं० अगाध] १. अथाह । बहुत गहरा । २. अत्यंत । बहुत ।
क्रि० वि० आगे से । पहले से ।
*वि० [फा० आगाह] विदित । प्रकट ।

अगाही†-संज्ञा स्त्री० [हिं० अगाह] किसी बात के होने का पहले से संकेत या सूचना ।

अगिन*-संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि] [क्रि० अगियाना] १. आग । २. गौरैया या बया के आकार की एक छोटी चिड़िया । ३. अगिया घास ।
वि० [सं० अ = नहीं + हिं० गिनना] अगणित । बेशुमार ।

अगिन बोट-संज्ञा पुं० [सं० अग्नि + अं० बोट] वह बड़ी नाव जो भाप के एंजिन के जोर से चलती है । स्टीमर । धूआँकश ।

अगिनित*-वि० दे० "अगणित" ।

अगिया-संज्ञा स्त्री [सं० अग्नि, प्रा० अग्गि] १. एक घास या घास । २. नीली चाय । मलकुश । अगिन घास । ३. एक पहाड़ी पौधा जिसके पत्तों और डंठलों में जहरीले रोएँ होते हैं । ४. घोड़ों और बैलों का एक रोग । ५. अगिया सन कीड़ा ।

अगिया कोइलिया-संज्ञा पुं० [हिं० आग + कोयला] दो कल्पित बैताल जिन्हें विक्रमादित्य ने सिद्ध किया था ।

अगियाना-क्रि० अ० [सं० अग्नि] अंग का लप उठना । जलन या दाहयुक्त होना ।

अगिया बैताल-संज्ञा पुं० [सं० अग्नि, प्रा० अग्गि + बैताल] १. विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक । २. मुँह से लुक या लपट निकालनेवाला भूत । ३. बहुत क्रोधी आदमी ।

अगियार, अगियारी-संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि कार्य] आग में सुगंध-द्रव्य डालने की विधि । धूप देने की क्रिया ।

अगिया सन-संज्ञा पुं० [हिं० आग + सन] १. एक प्रकार की घास । २. एक कीड़ा । ३. एक चर्मरोग जिसमें झलकते हुए फफोले निकलते हैं ।

अगिला†- वि० दे० "अगला" ।

अगीठा*-संज्ञा पुं० [सं० अग्रस्थ] आगे का भाग ।

अगीत पछीत*-क्रि० वि० [सं० अग्रतः पश्चात्] आगे और पीछे की ओर ।
संज्ञा पुं० आगे का भाग और पीछे का भाग ।

अगुआ-संज्ञा पुं० [हिं० आगा] १. आगे चलनेवाला । अग्रसर । नेता । २. मुखिया । प्रधान । नायक । ३. पथदर्शक । मार्ग बतानेवाला । ४. विवाह की बातचीत ठीक करनेवाला ।

अगुआई-संज्ञा स्त्री० [हिं० आगा + आई (प्रत्य०)] १. अग्रणी होने की क्रिया । अग्रसरता । २. प्रधानता । सरदारी । ३. मार्गप्रदर्शन ।

अगुआना-क्रि० स० [हिं० आगा] अगुआ बनाना । सरदार नियत करना ।
क्रि० अ० आगे होना । बढ़ना ।

अगुवानी-संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी" ।

अगुण-वि० [सं०] १. रज, तम आदि गुणरहित । निर्गुण । २. निर्गुणी । मूर्ख ।
संज्ञा पुं० अवगुण । दोष ।

अगुताना*†-क्रि० अ० दे० "उकताना" ।

अगुरु-वि० [सं०] १. जो भारी न हो । हलका । २. जिसने गुरु से उपदेश न पाया हो ।
संज्ञा पुं० १. अगर वृक्ष । ऊद । २. शीशम ।

अगुवा-संज्ञा पुं० दे० "अगुआ" ।

अगुसरना-[सं० अग्रसर + ना (प्रत्य०)] आगे बढ़ना । अग्रसर होना ।

अगूठना†-क्रि० सं० [सं० अवगुंठन] १. तोपना । ढाकना । २. घेरना । छेकना ।

अगूठा-[सं० अगूढ़] घेरा । मुहासिरा ।

अगूढ़-वि० [सं०] १. जो छिपा न हो । २. स्पष्ट । प्रकट । ३. सहज । आसान ।
संज्ञा पुं० साहित्य में गुणीभूत व्यंग्य के आठ भेदों में से एक जो वाच्य के समान ही स्पष्ट होता है ।

अगूता-क्रि० वि० [हिं० आगे] आगे । सामने ।

अगोचर-वि० [सं०] जिसका अनुभव

इंद्रियों को न हो। इंद्रियातीत। अव्यक्त।
अगोट–संज्ञा पु० [सं० अग्र + हिं० ओट] १. ओट। आड़। २. आश्रय। आधार।
अगोटना–क्रि० स० [सं० अग्र + हिं० ओट + ना (प्रत्य०)] १. रोकना। छेंकना। २. पहरे में रखना। कैद करना। ३. छिपाना। ४. चारों ओर से घेरना।
क्रि० स० [सं० अग + हिं० ओट + ना (प्रत्य०)] १. अंगीकार करना। स्वीकार करना। २ पसंद करना। चुनना।
क्रि० अ० १. रुकना। ठहरना। २. फँसना।
अगोता‡–क्रि० वि० [सं० अग्रत] आगे। सामने।
अगोरना–क्रि० स० [सं० अग्र] १. राह देखना। प्रतीक्षा करना। २. रखवाली या चौकसी करना। ३ रोकना। छेंकना।
अगोरिया–संज्ञा पु० [हिं० अगोरना] रख-वाली करनेवाला। रखवाला।
अगौड़ा–संज्ञा पु० [हिं० आगे] पेशगी। अगाऊ।
अगौनी–क्रि० वि० [सं० अग्र] आगे।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।
अगौरा–संज्ञा पु० [सं० अग्र + हिं० ओर] ऊख के ऊपर का पतला नीरस भाग।
अगौहैं–क्रि० वि० [सं० अग्रमुख] आगे की ओर।
अग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आग। ताप और प्रकाश। (आकाश आदि पंच भूतों में से एक।) २. वेद के तीन प्रधान देवताओं में से एक। ३ जठराग्नि। पाचन शक्ति। ४. पित्त। ५. तीन की संख्या। ६ सोना।
अग्निकर्म–संज्ञा पु० [सं०] १ अग्निहोत्र। हवन। २ शवदाह।
अग्निकीट–संज्ञा पु० [सं०] समंदर नाम का कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है।
अग्निकुमार–संज्ञा पु० [सं०] कार्तिकेय।
अग्निकुल–संज्ञा पु० [सं०] क्षत्रियों का एक कुल या वंश।
अग्निकोण–संज्ञा पु० [सं०] पूर्व और दक्षिण का कोना।
अग्निक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] शव का अग्निदाह। मुर्दा जलाना।
अग्निक्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] आतिशबाजी।
अग्निगर्भ–संज्ञा पु० [सं०] सूर्यकांत मणि। आतिशी शीशा।
वि० जिसके भीतर अग्नि हो।
अग्निज–वि० [सं०] १. अग्नि से उत्पन्न। २ अग्नि को उत्पन्न करनेवाला। ३. अग्नि-संदीपक। पाचक।
अग्निजिह्व–संज्ञा पु० [सं०] देवता।
अग्निजिह्वा–संज्ञा स्त्री० [सं०] आग की लपट। (अग्नि देवता की सात जिह्वाएँ कही गई हैं—काली, कराली, मनोजवा, लोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी और विश्वरूपी।)
अग्निज्वाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] आग की लपट।
अग्निदाह–संज्ञा पु० [सं०] १. जलाना। २ शवदाह। मुर्दा जलाना।
अग्निदीपक–वि० [सं०] जठराग्नि को बढ़ानेवाला।
अग्निदीपन–संज्ञा पु० [सं०] १. पाचन शक्ति की बढ़ती। २. पाचन शक्ति को बढ़ानेवाली दवा।
अग्निपरीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जलती हुई आग पर चलाकर अथवा जलता हुआ पानी, तेल या लोहा छुलाकर किसी व्यक्ति के दोषी या निर्दोष होने की जाँच (प्राचीन)। २ सोने चाँदी आदि को आग में तपाकर परखना।
अग्निपुराण–संज्ञा पु० [सं०] अठारह पुराणों में से एक।
अग्निबाण–संज्ञा पु० [सं०] वह बाण जिससे आग की ज्वाला प्रकट हो।
अग्निबाव–संज्ञा पु० [सं० अग्नि + वायु] विली या जुड़-पित्ती नामक रोग।
अग्निमंथ–संज्ञा पु० [सं०] १. अरणी वृक्ष। २ अरणी नामक यन्त्र जिससे यज्ञ के लिए आग निकाली जाती है।
अग्निमांद्य–संज्ञा पु० [सं०] भूख न लगने का रोग। मंदाग्नि।
अग्निमुख–संज्ञा पु० [सं०] १ देवता। २ प्रेत। ३ ब्राह्मण। ४. चीते का पेड़।
अग्निलिंग–संज्ञा पु० [सं०] आग की लपट की रंगत और उसके झुकाव को देखकर शुभाशुभ फल बतलाने की विद्या।
अग्निवंश–संज्ञा पु० [सं०] अग्निकुल।
अग्निशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर

जिसमें अग्निहोत्र की अग्नि स्थापित हो।
अग्निशिखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आग की लपट। २. कलियारी।
अग्निशुद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आग लुलाकर किसी वस्तु को शुद्ध करना। २. अग्निपरीक्षा।
अग्निष्टोम–संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो ज्योतिष्टोम नामक यज्ञ का रूपांतर है।
अग्निसंस्कार–संज्ञा पुं० [सं०] १. तपाना। जलाना। २. शुद्धि के लिये अग्निस्पर्श करना। ३. मृतक का दाह कर्म।
अग्निहोत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया।
अग्निहोत्री–संज्ञा पुं० [सं०] अग्निहोत्र करनेवाला।
अग्न्यस्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अस्त्र जिससे आग निकले। आग्नेयास्त्र। २ वह अस्त्र जो आग से चलाया जाय। जैसे बंदूक।
अग्न्याधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि की विधानपूर्वक स्थापना। २. अग्निहोत्र।
अग्य–वि० दे० "अज्ञ"।
अग्यारी–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि + कार्य] १. अग्नि में धूप आदि सुगंध द्रव्य देना। धूपदान। २. अग्निकुंड।
अग्र–संज्ञा पुं० [सं०] आगे का भाग। – अगला हिस्सा।
क्रि० वि० आगे।
वि० १. प्रथम। २. श्रेष्ठ। उत्तम।
अग्रगण्य–वि० [सं०] जिसकी गिनती सबमें पहिले हो। प्रधान। श्रेष्ठ।
अग्रगामी–संज्ञा पुं० [सं०] आगे चलनेवाला। अगुआ। नेता।
अग्रज–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा भाई। २. नायक। नेता। अगुआ। ३. ब्राह्मण।
वि० श्रेष्ठ। उत्तम।
अग्रजन्मा–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा भाई। २. ब्राह्मण। ३. ब्रह्मा।
अग्रणी–वि० [सं०] अगुआ। श्रेष्ठ।
अग्रशोची–संज्ञा पुं० [सं०] आगे विचार करनेवाला। दूरदर्शी।
अग्रसर–संज्ञा पुं० [सं०] १. आगे जानेवाला व्यक्ति। अगुआ। २. आरंभ करनेवाला। ३. मुखिया। प्रधान व्यक्ति।
अग्रहायण–संज्ञा पुं० [सं०] अगहन। मास।
अग्रहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा की ओर से ब्राह्मण को भूमि का दान। २. ब्राह्मण को दी हुई भूमि।
अग्राशन–संज्ञा पुं० [सं०] भोजन का वह अंश जो देवता के लिये पहले निकाल दिया जाता है।
अग्राह्य–वि० [सं०] १. न ग्रहण करने योग्य। न लेने लायक। २ त्याज्य। छोड़ने लायक। ३ न मानने लायक।
अग्रिम–वि० [सं०] १. अगाऊ। पेशगी। २ आगे आनेवाला। आगामी। ३ प्रधान। श्रेष्ठ। उत्तम।
अघ–संज्ञा पुं० [सं०] १ पाप। पातक। २ दुःख। ३. व्यसन। ४. अघासुर।
अघट–वि० [सं० अ = नहीं + घट = होना] १. जो घटित न हो। न होने योग्य। २. दुर्घट। कठिन। ३. जो ठीक न न घटे। अनुपयुक्त। बेमेल।
वि० [हिं० घटना] १. जो कम न हो। अक्षय। २. एक रस। स्थिर।
अघटित–वि० [सं०] १. जो घटित न हुआ हो। २. असंभव। न होने योग्य। ३. अवश्य होनेवाला। अमिट। अनिवार्य। ४. अनुचित। ना-मुनासिब।
वि० [हिं० घटना] बहुत अधिक। जो घटकर न हो।
अघवाना–क्रि० स० [हिं० अघाना] १. भर पेट खिलाना। २. संतुष्ट करना।
अघमर्षण–वि० [सं०] पापनाशक।
अघाट–संज्ञा पुं० [देश०] वह भूमि जिसे बेचने का अधिकार उसके स्वामी को न हो।
अघात–संज्ञा पुं० दे० "आघात"।
वि० [हिं० अघाना] खूब। अधिक।
अघाना–क्रि० अ० [सं० अघ्रह] १. भोजन से तृप्त होना। पेट भर खाना या पीना। २. संतुष्ट होना। तृप्त होना। ३. प्रसन्न होना। खुशी होना। ४. थकना।
मुहा०–अघाकर = मन भर। यथेष्ट।
अघारि–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप का शत्रु। पापनाशक। २ श्रीकृष्ण।
अघासुर–संज्ञा पुं० [सं०] कंस का सेनापति अघ दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
अघी–वि० [सं०] पापी। पातकी।
अघोर–वि० [सं०] १ सौम्य। सुहावना। २ अत्यंत घोर। बहुत भयंकर।

संज्ञा पु० १. शिव का एक रूप । २. एक संप्रदाय जिसके अनुयायी मद्य मांस का व्यवहार करते हैं और मल मूत्र आदि से घृणा नहीं करते ।

अघोरनाथ–संज्ञा पु० [सं०] शिव ।

अघोरपंथ–संज्ञा पु० [सं० अघोरपथ] अघोरियों का मत या संप्रदाय ।

अघोरपंथी–संज्ञा पु० [सं०] अघोर मत का अनुयायी । अघोरी । औघड़ ।

अघोरी–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अघोरिन] १. अघोर मत का अनुयायी । औघड़ । २. भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करनेवाला । वि० घृणित । घिनौना ।

अघोष–संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण का एक वर्णसमूह जिसमें प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा अक्षर तथा श, ष और स भी हैं ।

अघौघ–संज्ञा पु० [सं०] पापों का समूह ।

अघ्रान*–संज्ञा पु० दे० "आघ्राण" ।

अघ्रानना–क्रि० स० [सं० आघ्राण] आघ्राण करना । सूँघना ।

अचंचल–वि० [सं०] १. जो चंचल न हो । स्थिर । २. धीर । गंभीर ।

अचंभव–संज्ञा पु० [सं० असंभव] अचम्भा ।

अचंभा–संज्ञा पुं० [सं० असंभव] १. आश्चर्य । अचरज । विस्मय । २. अचरज की बात ।

अचंभित*–वि० [हिं० अचंभा] आश्चर्यित । चकित । विस्मित ।

अचंभो*–संज्ञा पु० दे० "अचंभा" ।

अचक–वि० [सं० चक्=समूह] भरपूर । पूर्ण । खूब ज्यादः । बहुत ।
संज्ञा पु० [सं० चक्=भ्रांत होना] घबराहट । भौचकापन । विस्मय ।

अचकन–संज्ञा पु० [सं० कंचुक, प्रा० अंचुक] एक प्रकार का लंबा अंगा ।

अचकाँ–क्रि० वि० दे० "अचानक" ।

अचका–संज्ञा पु० [सं० आ=भली प्रकार + चक=भ्रांति] अनजान ।

अचगरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० अति+करण] नटखटी । शरारत । छेड़छाड़ ।

अचना*–क्रि० स० [सं० आचमन] आचमन करना । पीना ।

अचपल–वि० [सं०] १. अचंचल । धीर । गंभीर । २. बहुत चंचल । शोख ।

अचपली–संज्ञा स्त्री० [हिं० अचपल] अठखेली । किलोल । क्रीड़ा ।

अचभौन*–संज्ञा पु० दे० "अचंभा" ।

अचर–वि० [सं०] न चलनेवाला । स्थावर । जड़ ।

अचरज–संज्ञा पु० [सं० आश्चर्य] आश्चर्य । अचंभा । तअज्जुब ।

अचल–वि० [सं०] १. जो न चले । स्थिर । ठहरा हुआ । २. चिरस्थायी । सब दिन रहनेवाला । ३. ध्रुव । दृढ़ । पक्का । ४ जो नष्ट न हो । मजबूत । पुख्ता ।
संज्ञा पु० पर्वत । पहाड़ ।

अचलधृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त ।

अचला–वि० स्त्री० [सं०] जो न चले । स्थिर । ठहरी हुई ।
संज्ञा स्त्री० पृथ्वी

अचला सप्तमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला सप्तमी ।

अचवन–संज्ञा पु० [सं० आचमन] [क्रि० अचवना] १ आचमन । पीने की क्रिया । २. भोजन के पीछे हाथ मुँह धोकर कुल्ली करना ।

अचवना–क्रि० स० [सं० आचमन] १. आचमन करना । पीना । २. भोजन के पीछे हाथ मुँह धोकर कुली करना । ३. छोड़ देना । खो बैठना ।

अचवाना–क्रि० स० [सं० आचमन] १. आचमन कराना । पिलाना । २. भोजन के बाद हाथ मुँह धुलाना और कुल्ली कराना ।

अचांचक–क्रि० वि० दे० "अचानक" ।

अचाका*–क्रि० वि० [सं० आ=अच्छी तरह + चक=भ्रांति] अचानक । सहसा ।

अचान*–क्रि० वि० दे० "अचानक" ।

अचानक–क्रि० वि० [सं० अज्ञानात्] एकबारगी । सहसा । अकस्मात् ।

अचार–संज्ञा पु० [फा०] मसालों के साथ तेल में कुछ दिन रखकर खट्टा किया हुआ फल या तरकारी । कचूमर । अथाना ।
*संज्ञा पु० दे० "आचार" ।
संज्ञा पु० [सं० चार] चिरौंजी का पेड़ ।

अचारज*–संज्ञा पु० दे० "आचार्य" ।

अचारी*–संज्ञा पु० [सं० आचारी] १. आचार विचार से रहनेवाला आदमी । नित्यकर्म विधि करनेवाला । २.

न किया जाय। २. जो न जपे या भजे।
संज्ञा पु० उच्चारण न किया जानेवाला तांत्रिकों का एक मंत्र।

अजपाल—संज्ञा पु० [सं०] गड़ेरिया।

अजब—वि० [अ०] विलक्षण। अद्भुत। विचित्र। अनोखा।

अजमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रताप। महत्त्व। २ चमत्कार।

अजमाना—क्रि० स० दे० "आजमाना"।

अजमोद—संज्ञा पु० [सं० अजमोदा] अजवायन की तरह का एक पेड़।

अजय—संज्ञा पु० [सं०] १ पराजय। हार। २ छप्पय छंद का एक भेद।
वि० जो जीता न जा सके। अजेय।

अजया—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजया। भाँग।
संज्ञा स्त्री० [सं० अजा] बकरी।

अजय्य—वि० [सं०] जो जीता न जा सके। अजेय।

अजर—वि० [सं०] १ जरारहित। जो बूढ़ा न हो। २. जो सदा एक रस रहे।
वि० [सं० अ=नहीं+जृ=पचना] जो न पचे। जो न हजम हो।

अजरायल—वि० [सं० अजर] जो जीर्ण न हो। पक्का। चिरस्थायी।

अजराल—वि० [सं० अ+जरा] बलवान्।

अजवायन—संज्ञा स्त्री० [सं० यवानिका] एक पौधा जिसके सुगंधित बीज मसाले और दवा के काम में आते हैं। यवानी।

अजस—संज्ञा पु० [सं० अयश] अपयश। अपकीर्ति। बदनामी।

अजसी—वि० [सं० अयशिन्] अपयशी। बदनाम। निंद्य।

अजस्र—क्रि० वि० [सं०] सदा। हमेशा।

अजहत्स्वार्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लक्षणा जिसमें लक्षक शब्द अपने वाच्यार्थ को न छोड़कर कुछ भिन्न या अतिरिक्त अर्थ प्रकट करे। उपादान लक्षणा।

अजहद—क्रि० वि० [फा०] हद से ज्यादा। बहुत अधिक।

अजा—वि० स्त्री० [सं०] जिसका जन्म न हुआ हो। जन्मरहित।
संज्ञा स्त्री० १. बकरी। २. सांख्यमतानुसार प्रकृति या माया। ३ शक्ति। दुर्गा।

अजाचक—संज्ञा पु० दे० "अयाचक"।

[illegible] संज्ञा पु० दे० "अयाची"।

अजात—वि० [सं०] जो पैदा न हुआ हो। जन्मरहित। अजन्मा।

अजातशत्रु—वि० [सं०] जिसका कोई शत्रु न हो। शत्रुविहीन।
संज्ञा पु० १ राजा युधिष्ठिर। २ शिव। ३ उपनिषद में वर्णित काशी का एक ज्ञानी राजा। ४ राजगृह (मगध) के राजा बिंबसार का पुत्र जो गौतम बुद्ध का समकालीन था।

अजाती—वि० [सं० अ+जाति] जाति से निकाला हुआ। पंक्तिच्युत।

अजान—वि० [सं० अज्ञान] १ जो न जाने। अनजान। अबोध। नासमझ। २ अपरिचित। अज्ञात।
संज्ञा पु० १ अज्ञानता। अनभिज्ञता। जानकारी का अभाव। ('में' के साथ) २ एक पेड़ जिसके नीचे जाने से लोग समझते हैं कि बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।
संज्ञा पु० [अ० अज़ान] नमाज की पुकार जो मसजिदों में होती है। बाँग।

अजानपन—संज्ञा पु० [सं० अज्ञान+हिं० पन] अनजानपन। नासमझी।

अजामिल—संज्ञा पु० [सं०] पुराणों के अनुसार एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम पुकारने से तर गया था।

अजाय—वि० [अ=नहीं+फा० जा] बेजा। अनुचित।

अजायब—संज्ञा पु० [अ०] अजब का बहुवचन। विलक्षण पदार्थ या व्यापार।

अजायबखाना—संज्ञा पु० [अ०] वह भवन जिसमें अनेक प्रकार के अद्भुत पदार्थ रखते हैं। अद्भुत वस्तु-संग्रहालय। म्यूजियम।

अजायबघर—संज्ञा पु० दे० "अजायबखाना"।

अजार—संज्ञा पु० दे० "आजार"।

अजारा—संज्ञा पु० दे० "इजारा"।

अजिऔरा—संज्ञा पु० [हिं० आजी+सं० पुर] आजी या दादी के पिता का घर।

अजित—वि० [सं०] जो जीता न गया हो।
संज्ञा पु० १. विष्णु। २ शिव। ३. बुद्ध।

अजितेंद्रिय—वि० [सं०] जो इंद्रियों के वश में हो। इंद्रियलोलुप। विषयासक्त।

अजिर-संज्ञा पुं० [सं०] १ आँगन । सहन । २. वायु । हवा । ३. शरीर । ४. इंद्रियों का विषय ।
अजी-अव्य० [सं० अयि] संबोधन शब्द । जी ।
अज़ीज़-वि० [अ०] प्यारा । प्रिय ।
संज्ञा पुं० संबंधी । सुहृद् ।
अजीत-वि० दे० "अजित" ।
अजीब-वि० [अ०] विलक्षण । विचित्र । अनोखा । अनूठा ।
अजीरन-संज्ञा पुं० दे० "अजीर्ण" ।
अजीर्ण-संज्ञा पुं० [सं०] १ अपच । अध्यसन । बदहजमी । अन्न न पचने का दोष । २. अत्यंत अधिकता । बहुतायत । जैसे बुद्धि का अजीर्ण । (व्यंग्य)
वि० जो पुराना न हो । नया ।
अजीव-संज्ञा पुं० [सं०] अचेतन । जीव-तत्व से भिन्न जड़ पदार्थ ।
वि० बिना प्राण का । मृत ।
अजुगुत-संज्ञा पुं० दे० "अजगुत" ।
अजू-अव्य० दे० "अजी" ।
अजूजा-संज्ञा पुं० [देश०] बिज्जू की तरह का एक जानवर जो मुर्दा खाता है ।
अजूबा-वि० [अ०] अद्भुत । अनोखा ।
अजूह-संज्ञा पुं० [सं० युद्ध] युद्ध । लड़ाई ।
अजेय-वि० [सं०] जिसे कोई जीत न सके ।
अजोग-वि० दे० "अयोग्य ।
अजोता-संज्ञा पुं० [सं० अ० + हिं० जोतना] चैत्र की पूर्णिमा । (इस दिन बैल नहीं नाधे जाते ।)
अजौं-क्रि० वि० [सं० अद्य] अब भी । अब तक ।
अज्ञ-वि० संज्ञा पुं० [सं०] अज्ञानी । जड़ । मूर्ख । नासमझ ।
अज्ञता-संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्खता । जड़ता । नादानी । नासमझी ।
अज्ञा-संज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा" ।
अज्ञात-वि० [सं०] १. बिना जाना हुआ । अविदित । अप्रगट । अपरिचित । २. जिसे ज्ञात न हो । जैसे—अज्ञातयौवना ।
क्रि० वि० बिना जाने । अनजान में ।
अज्ञातनामा-वि० [सं०] १. जिसका नाम विदित न हो । २. अविख्यात । तुच्छ ।
अज्ञातवास-संज्ञा पुं० [सं०] ऐसे स्थान का निवास जहाँ कोई पता न पा सके । छिपकर रहना ।
अज्ञातयौवना-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आगमन का ज्ञान न हो ।
अज्ञान-संज्ञा पुं० [सं०] १. बोध का अभाव । जड़ता । मूर्खता । २. जीवात्मा को गुण और गुण के कार्यों से पृथक् न समझने का अविवेक । ३. न्याय में एक निग्रह स्थान ।
वि० मूर्ख । जड़ । नासमझ ।
अज्ञानता-संज्ञा स्त्री० [सं०] जड़ता । मूर्खता । अविद्या । नासमझी ।
अज्ञानी-वि० [सं०] मूर्ख । नासमझ ।
अज्ञेय-वि० [सं०] जो समझ में न आ सके । ज्ञानातीत । बोधागम्य ।
अज्यौं-क्रि० वि० दे० "अजौं" ।
अझर-वि० [सं० अ=नहीं + झर] जो न झरे । जो न गिरे । जो न बरसे ।
अटंबर-संज्ञा पुं० [सं० अट्ट + फा० अंबार] अटाला । ढेर । राशि ।
अट-संज्ञा स्त्री० [हिं० अटक] शर्त । कैद । प्रतिबंध ।
अटक-संज्ञा स्त्री० [हिं० अटक=बंधन] [क्रि० अटकना । वि० अटकाऊ] १. रोक । रुकावट । अड़चन । विघ्न । बाधा । २ संकोच हिचक । ३. सिंध नदी । ४. अकाज । हर्ज ।
अटकन-संज्ञा पुं० दे० "अटक" ।
अटकन-बटकन-संज्ञा पुं० [देश०] छोटे लड़कों का एक खेल ।
अटकना-क्रि० अ० [सं० अ=नहीं + टिक=चलना] १. रुकना । ठहरना । अड़ना । २. फँसना । लगा रहना । ३. प्रेम में फँसना । प्रीति करना । ४. विवाद करना । झगड़ना ।
अटकर-संज्ञा स्त्री० दे० "अटकल" ।
अटकरना-क्रि० स० [हिं० अटकर] अंदाज करना । अटकल लगाना ।
अटकल-संज्ञा स्त्री० [सं० अट=घूमना + कल=गिनना] १ अनुमान । कल्पना । २. अंदाज । कूत ।
अटकलना-क्रि० स०[हिं० अटकल] अटकल लगाना । अनुमान करना ।
अटकल पच्चू-संज्ञा पुं० [हिं० अटकल+

पाना (क्रि०)] मोटा अन्दाज़। कल्पना। स्थूल अनुमान।
वि० मनमाना। ऊटपटाँग।
क्रि० वि० अंदाज़ से। अनुमान से।

अटका–संज्ञा पुं० [सं० अट्ट=खाना] जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ भात और धन।

अटकाना–क्रि० स० [हिं० अटकना] १ रोकना। ठहराना। अड़ाना। २. फँसाना। उलझाना। ३ पूरा करने में विलंब करना।

अटकाव–संज्ञा पुं० [हिं० अटकना] १ रोक। रुकावट। प्रतिबंध। २. बाधा। विघ्न।

अटखट†–वि० [अनु०] अटपट। अंडबंड।

अटन–संज्ञा पुं० [सं०] घूमना। फिरना।

अटना–क्रि० अ० [सं० अट्] १ घूमना। फिरना। २. यात्रा करना। सफर करना।
क्रि० अ० [हिं० ओट] आड़ करना। ओट करना। छेंकना।

अटपट–वि० [सं० अट=चलना + पत्=गिरना] [स्त्री० अटपटी] १. विकट। कठिन। मुश्किल। २. दुर्गम। दुस्तर। ३ गूढ़। जटिल। ४. ऊटपटाँग। बेठिकाने।

अटपटाना–क्रि० अ० [हिं० अटपट] १. अटकना। लड़खड़ाना। २. गड़बड़ाना। चकना। ३. हिचकना। संकोच करना।

अटपटी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० अटपट] नटखटी। शरारत। अनरीति।

अटम्बर–संज्ञा पुं० [सं० आडम्बर] आडंबर। दर्प।
संज्ञा पुं० [सं० टम्बर=परिवार] खानदान। परिवार। कुटुंब। कुनबा।

अटर्नी–संज्ञा पुं० [अं० एटर्नी] एक प्रकार का मुख्तार जो कलकत्ता और बंबई हाईकोर्टों में मुवक्किलों के मुकदमे लेकर पैरवी के लिये बैरिस्टर नियुक्त करता है।

अटल–वि० [सं० अ=नहीं + हिं० टलना] १. जो न टले। स्थिर। २. जो सदा बना रहे। नित्य। चिरस्थायी। ३. जिसका होना निश्चित हो। अवश्यंभावी। ४. ध्रुव। पक्का।

अटवाटी खटवाटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट=खाट] खाट खटोला। साज़ सामान।
मुहा०—अटवाटी खटवाटी लेकर पड़ना = काम धन्धा छोड़ उदास होकर पड़ रहना।

अटवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वन। जंगल।
—संज्ञा स्त्री० [सं० अट्ट=[illegible]] १. अटाला। ढेर। २. फेंटा। पगड़ी।
संज्ञा पुं० [हिं० अटक] दिक्कत। कठिनाई।

अटा–संज्ञा स्त्री० [सं० अट्ट=अटारी] घर के ऊपर की कोठरी। अटारी।
संज्ञा पुं० [सं० अट्ट=अतिशय] अटाला। ढेर। राशि। समूह।

अटाउ–संज्ञा पुं० [सं० अट्ट=अतिक्रमण] १ बिगाड़। बुराई। २. नटखटी। शरारत।

अटाटूट–वि० [सं० अट्ट=ढेर + हिं० टूटना] नितांत। बिल्कुल।

अटारी–संज्ञा स्त्री० [सं० अट्टालिका] घर के ऊपर की कोठरी या छत। चौबारा। कोठा।

अटाल–संज्ञा पुं० [सं० अट्टाल] बुर्ज। धरहरा।

अटाला–संज्ञा पुं० [सं० अट्टाल] १. ढेर। राशि। २ सामान। असबाब। ३. कसाइयों की बस्ती।

अटूट–वि० [सं० अ=नहीं + हिं०=टूटना] १. न टूटने योग्य। दृढ़। पुष्ट। मज़बूत। २. जिसका पतन न हो। अजेय। ३. अखंड। लगातार। ४. बहुत अधिक।

अटेरन–संज्ञा पुं० [सं० अट्=घूमना] [क्रि० अटेरना] १. सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का एक यंत्र। ओयना। २. घोड़े को कावा या चक्कर देने की एक रीति।

अटेरना–क्रि० स० [हिं० अटेरन] १. अटेरन से सूत की आँटी बनाना। २. मात्रा से अधिक मद्य या नशा पीना।

अटोक†–वि० [सं० अ + हिं० टोकना] बिना रोक टोक का।

अट्टहास्य–संज्ञा पुं० दे० "अट्टहास"।

अट्टसट्ट–संज्ञा पुं० [अनु०] अनाप शनाप। व्यर्थ की बात। प्रलाप।

अट्टहास–संज्ञा पुं० [सं०] ज़ोर की हँसी। ठठाकर हँसना।

अट्टालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] अटारी। कोठा।

अट्टी–संज्ञा स्त्री० [सं० अट्=घूमना] अटेरन पर लपेटा हुआ सूत या ऊन। लच्छा।

अट्ठा–संज्ञा पुं० [सं० अष्ट] ताश का वह पत्ता जिस पर किसी रंग की आठ बूटियाँ हों।

अट्ठाइस–वि० दे० "अट्ठाईस"।

अट्ठाईस–वि० [सं० अष्टाविंशति] बीस और आठ। २८।

अट्ठानबे–वि० [सं० अष्टनवति] [illegible] नब्बे और आठ। ९८।

अट्ठावन–वि० [स० अष्टपचाशत] पचास और आठ। ५८।
अट्ठासी–वि० दे० "अठासी"।
अठग –सज्ञा पु० [स० अष्टाग] अष्टांग योग।
अठ –वि० दे० "आठ"। (समास में)
अठइसी–सज्ञा स्त्री० [हिं० अट्ठाइस] २८ गाही अर्थात् १४० फलों की सख्या जिसे फलों के लेन देन में सैकड़ा मानते है।
अठई–सज्ञा स्त्री० [स० अष्टमी] अष्टमी तिथि।
अठकौसल–सज्ञा पु० [हिं०आठ+अ०कौंसिल] १. गोष्ठी। पंचायत। २. सलाह। मंत्रणा।
अठखेली–सज्ञा स्त्री० [स० अष्टक्रीडा] १. विनोद। क्रीड़ा। २. चपलता। चुलबुलापन। ३. मत वाली या मस्तानी चाल।
अठत्तर–वि० दे० "अठहत्तर"।
अठन्नी–सज्ञा स्त्री० [हिं० आठ+आना] आठ आने का चाँदी का सिक्का।
अठपहला–वि० [स० अष्टपटल] आठ कोने-वाला। जिसमें आठ पार्श्व हों।
अठपाव–सज्ञा पु० [स० अष्टपाद] उपद्रव। ऊधम। शरारत।
अठमासा–सज्ञा पु० दे० "अठवाँसा"।
अठमासी–सज्ञा स्त्री० [हिं० आठ+मासा] आठ माशे का सोने का सिक्का। साव-रिन। गिनी।
अठलाना –क्रि० अ० [हिं० ऐंठ] १. ऐंठ दिखलाना। इतराना। ठसक दिखाना। २. चोचला करना। नखरा करना। ३. मदोन्मत्त होना। मस्ती दिखाना। ४. छेड़ने के लिये जान बूझकर अनजान बनना।
अठवना –क्रि० अ० [स० स्थान] जमना। ठनना।
अठवाँस–वि० [स० अष्टपार्श्व] अठपहला।
अठवाँसा–वि० [स० अष्टमास] वह गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न हो जाय।
सज्ञा पु० १ सीमंत संस्कार। २. वह खेत जो असाढ से माघ तक समय समय पर जोता जाय और जिसमें ईख बोई जाय।
अठवारा–सज्ञा पु० [हिं० आठ+स० वार] आठ दिन का समय। सप्ताह। हफ्ता।
अठहत्तर–वि० [स० अष्टसप्तति, प्रा० अट्ठहत्तरि] सत्तर और आठ। ७८।
अठाई–वि० [स० अस्थायी] उत्पाती। नट-खट। शरारती। उपद्रवी।

अठान–सज्ञा पु० [स० अ=नहीं+हिं० ठानना] १. न ठानने योग्य कार्य्य। अयोग्य या दुष्कर कर्म। २. वैर। शत्रुता। झगड़ा।
अठाना –क्रि० स० [स० अट्ट=वध करना] सताना। पीड़ित करना।
क्रि० स० [हिं० ठानना] मचाना। ठानना।
अठारह–वि० [स० अष्टादश] दस और आठ। १८।
सज्ञा पु० १. काव्य में पुराणसूचक संकेत या शब्द। २ चौसर का एक दाँव।
अठासी–वि० [स० अष्टाशीति] अस्सी और आठ। ८८।
अठिलाना–क्रि० अ० दे० "अठलाना"।
अठेल –वि० [स० अ=नहीं+हिं० ठेलना] बलवान्। मज़बूत। ज़ोरावर।
अठोठ–सज्ञा पु० [हिं० ठाट] ठाट। आडंबर। पाखंड।
अठोतरी–सज्ञा स्त्री० [स० अष्टोत्तरी] एक सौ आठ दानों की जपमाला।
अडंगा–स० [हिं० अड़ाना+टाँग] १. टाँग अड़ाना। रुकावट। २ बाधा। विघ्न।
अडंड–वि० दे० "अदंड्य"।
अड़–सज्ञा पु० [स० हठ] हठ। ज़िद।
अड़काना–क्रि० स० दे० "अड़ाना"।
अडग–वि० [हिं० डगना] न डिगनेवाला। अटल। अचल।
अडगड़ा–सज्ञा पु० [अनु०] १. बैलगाड़ियों के ठहरने का स्थान। २. बैलों या घोड़ों की बिक्री का स्थान।
अड़गोड़ा–सज्ञा पु० [हिं० अड़+गोड़] लकड़ी का टुकड़ा जिसे नटखट चौपायों के गले में बाँधते है।
अडचन–सज्ञा स्त्री० दे० "अडचल"।
अडचल–सज्ञा स्त्री० [हिं० अड़ना+चलना] अड़स। आपत्ति। कठिनाई। दिक्कत।
अड़तल–सज्ञा पु० [हिं० आड़+स० तल] १. ओट। ओझल। आड। २. शरण। ३. बहाना। हीला।
अडतालीस–वि० [स० अष्टचत्वारिंशत] चालीस और आठ। ४८।
अडतीस–वि० [स० अष्टत्रिंशत] तीस और आठ। ३८।
अड़दार–वि० [हिं० अड़ना+फा० दार (प्रत्य०)] १. अड़ियल। रुकनेवाला। २. ऐंड़दार। ३. मस्त। मतवाला।

अड़ना-क्रि० अ० [सं० अन्=वारण करना] १. रुकना। ठहरना। २. हठ करना।

अड़बंग †-वि० पु० [हिं० अड़ना + सं० वक्र] १. टेढ़ा मेढ़ा। अड़बड़। अटपट। २. विकट। कठिन। दुर्गम। ३ विलक्षण।

अडर*-वि० [सं० अ + हिं० डर] निडर। निर्भय। बेडर। बेख़ौफ़।

अड़सठ-वि० [सं० अष्टषष्टि] साठ और आठ की संख्या। ६८।

अड़हुल-संज्ञा पु० [सं० ओण्ड्र + पुष्प] देवी-फूल। जपा या जवा पुष्प।

अड़ाड़-संज्ञा पु० [हिं० आड़] १. चौपायों के रहने का हाता। खरिक। २. दे० "अड़ार"।

अड़ान-संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़ना] १. रुकने की जगह। २. पड़ाव।

अड़ाना-क्रि० स० [हिं० अड़ना] १. टिकाना। रोकना। ठहराना। अटकाना। २. टेकना। डाट लगाना। ३. कोई वस्तु बीच में देकर गति रोकना। ४. ठूँसना। भरना। ५. गिराना। ढरकाना।

संज्ञा पु० १. एक राग। २. वह लकड़ी जो गिरती हुई छत या दीवार आदि को गिरने से बचाने के लिये लगाई जाती है। डाट। चाँड। थूनी।

अड़ायता-वि० [हिं० आड़] जो आड़ करे। ओट करनेवाला।

अड़ार-संज्ञा पु० [सं० अट्टाल=बुर्ज] १. समूह। राशि। ढेर। २. ईंधन का ढेर जो बेचने के लिये रक्खा हो। ३. लकड़ी या ईंधन की दुकान।

*वि० [सं० अराल] टेढ़ा। तिरछा। आड़ा।

अड़ारना†-क्रि० स० [हिं० ढालना] ढालना। देना।

अड़ियल-वि० [हिं० अड़ना] १. अड़कर चलनेवाला। चलते चलते रुक जानेवाला। २. सुस्त। मट्ठर। ३. हठी। ज़िद्दी।

अड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़ना] १. ज़िद। हठ। आग्रह। २. रोक। ३. ज़रूरत का वक़्त या मौका।

अडलना*-क्रि० स० [सं० उत्=ऊँचा + स्तृ=फैलना] जल आदि ढालना। उड़ेलना।

अडूसा-संज्ञा पु० [सं० अटरूप] एक पौधा जिसके फूल और पत्ते कास, श्वास आदि की औषध है।

अडोल-वि० [सं० अ=नहीं + हिं० डोलना] १. जो हिले नहीं। अटल। स्थिर। २. स्तब्ध। ठकमारा।

अड़ोस पड़ोस-संज्ञा पु० [हिं० पड़ोस] आस पास। क़रीब।

अड़ोसी पड़ोसी-संज्ञा पु० [हिं० पड़ोस] आस पास का रहनेवाला। हमसाया।

अड्डा-संज्ञा पु० [सं० अट्टा=ऊँची जगह] १. टिकने की जगह। ठहरने का स्थान। २. मिलने या इकट्ठा होने की जगह। ३. केन्द्र स्थान। प्रधान स्थान। ४. चिड़ियों के बैठने के लिये लकड़ी या लोहे का छड़। ५. कबूतरों की छतरी। ६. करघा।

अढ़तिया-संज्ञा पु० [हिं० आढ़त] १. वह दुकानदार जो ग्राहकों या महाजनों को माल खरीदकर भेजता और उनका माल मँगाकर बेचता है। आढ़त करनेवाला। २. दलाल।

अढ़वना -क्रि० स० [सं० आज्ञापन] आज्ञा देना। काम में लगाना।

अढ़वायक*-संज्ञा पु० [सं० आज्ञापक] दूसरों से काम लेनेवाला।

अढ़िया-संज्ञा स्त्री० [देश०] काठ, पत्थर या लोहे का छोटा बर्तन।

अढुक-संज्ञा पु० [हिं० अढुकना] ठोकर। चोट।

अढुकना-क्रि० अ० [सं० आ=अच्छी तरह + ढौक=ठोक] १. ठोकर खाना। २. सहारा लेना।

अढ़ैया-संज्ञा पु० [हिं० अढ़ाई] १. २½ सेर की तौल या बाट। २. ढाई गुने का पहाड़ा।

अणिमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] अष्ट सिद्धियों में पहिली सिद्धि जिससे योगी लोग किसी को दिखाई नहीं पड़ते।

अणु-संज्ञा पु० [सं०] १. द्व्यणुक से सूक्ष्म और परमाणु से बड़ा कण (६० परमाणुओं का)। २. छोटा टुकड़ा या कण। ३. रजकण। ४. अत्यंत सूक्ष्म मात्रा।

वि० १. अति सूक्ष्म। अत्यंत छोटा। २. जो दिखाई न दे।

अणुवाद-संज्ञा पु० [सं०] १. वह दर्शन या सिद्धांत जिसमें जीव या आत्मा अणु माना गया हो (रामानुज का)। २. वैशेषिक दर्शन।

अणुवादी-संज्ञा पु० [सं०] १. नैयायिक।

वैशेषिक शास्त्र का माननेवाला। २. रामानुज का अनुयायी।
अणुवीक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूक्ष्मदर्शक यंत्र। ख़ुर्दबीन। २. बात की खाल निकालना। छिद्रान्वेषण।
अतंक.-संज्ञा पु० दे० "आतंक"।
अतंद्रिक-वि० [सं०] १. आलस्यरहित। चुस्त। चंचल। २. व्याकुल। बेचैन।
अतः-क्रि० वि० [सं०] इस वजह से। इसलिये। इस वास्ते।
अतएव-क्रि० वि० [सं०] इसलिये। इस हेतु से। इस वजह से।
अतद्गुण-संज्ञा पु० [सं०] एक अलंकार जिसमें एक वस्तु का किसी ऐसी दूसरी वस्तु के गुणों को न ग्रहण करना दिखलाया जाय जिसके कि वह अत्यंत निकट हो।
अतनु-वि० [सं०] १. शरीररहित। बिना देह का। २. मोटा। स्थूल।
संज्ञा पुं० अनंग। कामदेव।
अतर-संज्ञा पु० [अ० इत्र] फूलों की सुगंधि का सार। निर्यास। पुष्पसार।
अतरदान-संज्ञा पु० [फा० इत्रदान] इत्र रखने का चाँदी का बरतन।
अतरसों-क्रि० वि० [सं० इतर+श्वः] १. परसों के आगे का दिन। आनेवाला तीसरा दिन। २. परसों से पहिले का दिन। तीसरा व्यतीत दिन।
अतरिख*-संज्ञा पु० दे० "अंतरिक्ष"।
अतर्कित-वि० [सं०] १. जिसका पहले से अनुमान न हो। २. आकस्मिक। ३. बे सोचा समझा। जो विचार में न आया हो।
अतर्क्य-वि० [सं०] जिस पर तर्क वितर्क न हो सके। अनिर्वचनीय। अचिंत्य।
अतल-संज्ञा पुं० [सं०] सात पातालों में दूसरा पाताल।
अतलस-संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
अतलस्पर्शी-वि० [सं०] अतल को छूनेवाला। अत्यंत गहरा। अथाह।
अतसी-संज्ञा स्त्री० [सं०] अलसी।
अतवार-संज्ञा पुं० दे० "रविवार"।
अता-संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रदान।
अताई-वि० [अ०] १. दक्ष। कुशल। प्रवीण। २. धूर्त। चालाक। ३. जो किसी काम को बिना सीखे हुए करे
अति-वि० [सं०] बहुत। अधिक।
संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज़्यादती।
अतिकाय-वि० [सं०] स्थूल। मोटा।
अतिकाल-संज्ञा पुं० [सं०] १. विलंब। देर। २. कुसमय।
अतिकृच्छ्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत कष्ट। २. छः दिनों का एक व्रत।
अतिकृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] पचीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।
अतिक्रम-संज्ञा पुं० [सं०] नियम या मर्य्यादा का उल्लंघन। विपरीत व्यवहार।
अतिक्रमण-संज्ञा पु० [सं०] हद के बाहर जाना। बढ़ जाना। उल्लंघन।
अतिक्रांत-वि० [सं०] १. हद के बाहर गया हुआ। २. बीता हुआ। व्यतीत।
अतिचार-संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रहों की शीघ्र चाल। एक राशि का भोगकाल समाप्त किए बिना किसी ग्रह का दूसरी राशि में चला जाना। २. विघात। व्यतिक्रम।
अतिजगती-संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।
अतिथि-संज्ञा पु० [सं०] १. घर में आया हुआ अज्ञातपूर्व व्यक्ति। अभ्यागत। मेहमान। पाहुन। २. वह संन्यासी जो किसी स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरे। ३. अग्नि। ४. यज्ञ में सोमलता लानेवाला।
अतिथिपूजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिथि का आदर सत्कार। मेहमानदारी। पंच महायज्ञों में से एक
अतिथियज्ञ-संज्ञा पुं० [सं०] अतिथि का आदर सत्कार। अतिथिपूजा।
अतिदेश-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक स्थान के धर्म्म का दूसरे स्थान पर आरोपण। २. वह नियम जो और विषयों में भी काम आवे।
अतिधृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] उन्नीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।
अतिपात-संज्ञा पुं० [सं०] १. अतिक्रम। अव्यवस्था। गड़बड़ी। २. बाधा। विघ्न।
अतिपातक-संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष के लिये माता, बेटी और पतोहू के साथ और स्त्री के लिये पुत्र, पिता और दामाद के साथ गमन।

ति वरवै–संज्ञा पुं० [सं० अति + हिं० बरवै] एक छंद।
तिबल–वि० [सं०] प्रबल। प्रचंड।
अतिबला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्राचीन युद्धविद्या जिसके सीखने से श्रम और ज्वर आदि की बाधा का भय नहीं रहता था। २. कँगही या कवही नाम का पौधा।
अतिमुक्त–वि० [सं०] १. जिसकी मुक्ति हो गई हो। २. विषयवासना-रहित।
अतिरंजन–संज्ञा पुं० [सं०] बढ़ा चढ़ाकर कहने की रीति। अत्युक्ति।
अतिरथी–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अकेले बहुतों के साथ लड़ सके।
अतिरिक्त–क्रि० वि० [सं०] सिवाय। अलावा। छोड़कर।
वि० १. शेष। बचा हुआ। २. अलग। जुदा। भिन्न।
अतिरिक्तपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] अखबार के साथ बँटनेवाली सूचना या विज्ञापन। क्रोड़पत्र।
अतिरोग–संज्ञा पुं० [सं०] यक्ष्मा। क्षयी।
अतिवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. सच्ची बात। २. कड़ुई बात। ३. डींग। शेखी।
अतिवादी–वि० [सं०] १. सत्यवक्ता। २. कटुवादी। ३. जो डींग मारे।
अतिविषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अतीस।
अतिवृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] ६ ईतियों में से एक। अत्यंत वर्षा।
अतिव्याप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] न्याय में किसी लक्षण या कथन के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने का दोष।
अतिशय–वि० [सं०] बहुत। ज्यादा।
संज्ञा पुं० प्राचीनों के अनुसार एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की उत्तरोत्तर संभावना या असंभावना दिखलाई जाय।
अतिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें भेद में अभेद, असंबंध में संबंध आदि दिखाकर किसी वस्तु को बहुत बढ़ाकर वर्णन करते हैं।
अतिशयोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "अनन्वय"।
अतिसंध–संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा या आज्ञा का भंग करना।
[illegible] पुं० [सं०] १. अतिक्रमण। २. विश्वासघात। धोखा।
अतिसामान्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह बात जो इतने अधिक सामान्य रूप में कही जाय कि पूरी पूरी सब पर न घटे। (न्याय)
अतिसार–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ अँतड़ियों में से पतले दस्तों के रूप में निकल जाता है।
अतिहसित–संज्ञा पुं० [सं०] हास के छः भेदों में से एक जिसमें हँसनेवाला ताली पीटे और उसकी आँखों से आँसू निकलें।
अतींद्रिय–वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो। अगोचर। अव्यक्त।
अतीत–वि० [सं०] [क्रि० अतीतना] १. गत। व्यतीत। बीता हुआ। २. पृथक्। जुदा। अलग। ३. मृत। मरा हुआ।
क्रि० वि० परे। बाहर।
संज्ञा पुं० संन्यासी। यति। साधु।
अतीतना–क्रि० अ० [सं० अतीत] बीतना। गुजरना।
क्रि० स० [सं०] १. बिताना। व्यतीत करना। २. छोड़ना। त्यागना।
अतीथ–संज्ञा पुं० दे० "अतिथि"।
अतीव–वि० [सं०] बहुत। अत्यंत।
अतीस–संज्ञा पुं० [सं०] एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ दवाओं में काम आती है। विषा। अतिविषा।
अतीसार–संज्ञा पुं० दे० "अतिसार"।
अतुराई–संज्ञा स्त्री० [सं० आतुर] १. आतुरता। जल्दी। २. चंचलता। चपलता।
अतुराना–क्रि० अ० [सं० आतुर] आतुर होना। घबराना। जल्दी मचाना।
अतुल–वि० [सं०] १. जिसकी तौल या अंदाज न हो सके। २. अमित। असीम। बहुत अधिक। ३. अनुपम। बेजोड़।
संज्ञा पुं० १. केशव के अनुसार अनुकूल नायक। २. तिल का पेड़।
अतुलनीय–वि० [सं०] १. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। २. अनुपम। अद्वितीय।
अतुलित–वि० [सं०] १. बिना तौला हुआ। २. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। ३. असंख्य। ४. अनुपम।
अतुल्य–वि० [सं०] १. असमान।

असदृश। २ अनुपम। बेजोड़।
अतूथ –वि॰ [स॰ अति+उत्थ] अपूर्व।
अतूल–वि॰ दे॰ "अतुल"।
अतृप्त–वि॰ [स॰] [सज्ञा अतृप्ति] १. जो तृप्त या संतुष्ट न हो। २ भूखा।
अतृप्ति–सज्ञा स्त्री॰ [स॰] मन न भरने की दशा।
अतोर–वि॰ [स॰ अ+हिं॰ तोड़] जो न टूटे। अभंग। दृढ़।
अतोल–वि॰ [स॰ अ+हिं॰ तोल] १ बिना अंदाज किया हुआ। २ बहुत अधिक। ३ अनुपम। बेजोड़।
अतौल–वि॰ दे॰ "अतोल"।
अत्त †–सज्ञा स्त्री॰ [स॰ अति] अति। अधिकता। ज्यादती।
अत्तार–सज्ञा पु॰ [अ॰] १. इत्र या तेल बेचनेवाला। गंधी। २. यूनानी दवा बनाने और बेचनेवाला।
अत्ति †–सज्ञा पु॰ दे॰ "अत्त"।
अत्यंत–वि॰ [स॰] बहुत अधिक। हद से ज्यादा। अतिशय।
अत्यंताभाव–सज्ञा पु॰ [स॰] १ किसी वस्तु का बिलकुल न होना। सत्ता की नितांत शून्यता। २. पाँच प्रकार के अभावों में से एक। तीनों कालों में संभव न होना,—जैसे, आकाशकुसुम, वंध्या पुत्र। (वैशेषिक) ३ बिल्कुल कमी।
अत्यंतिक–वि॰ [स॰] १ समीपी। नजदीकी। २ बहुत घूमनेवाला।
अत्यम्ल–सज्ञा पु॰ [स॰] इमली। वि॰ बहुत खट्टा।
अत्यय–सज्ञा पु॰ [स॰] १. मृत्यु। नाश। २ हद से बाहर जाना। ३ दंड। सजा। ४ कष्ट। ५. दोष।
अत्यष्टि सज्ञा स्त्री॰ [स॰] १७ वर्णों के वृत्तों की संज्ञा।
अत्याचार–सज्ञा पु॰ [स॰] १ आचार का अतिक्रमण। अन्याय। ज्यादती। जुल्म। २ दुराचार। पाप। ३. पाखंड। ढोंग। आडंबर।
अत्याचारी–वि॰ [स॰] १ अन्यायी। निठुर। जालिम। २. पाखंडी। ढोंगी।
अत्याज्य–वि॰ [स॰] १ न छोड़ने योग्य। २ जो छोड़ा न जा सके।
अत्युक्त–वि॰ [स॰] जो बहुत बढ़ा चढ़ाकर कहा गया हो।
अत्युक्ति–सज्ञा स्त्री॰ [स॰] १. बढ़ा चढ़ाकर वर्णन करने की शैली। मुबालिगा। बढ़ावा। २. एक अलंकार जिसमें शूरता, उदारता आदि गुणों का अद्भुत और अतथ्य वर्णन होता है।
अत्र–क्रि॰ वि॰ [स॰] यहाँ। इस जगह। सज्ञा पु॰ "अस्त्र" का अपभ्रंश।
अत्रक–वि॰ [स॰] १ यहाँ का। २ इस लोक का। ऐहिक।
अत्रभवान्–सज्ञा पु॰ [स॰] [स्त्री॰ अत्रभवती] माननीय। पूज्य। श्रेष्ठ।
अत्रि–सज्ञा पु॰ [स॰] १ सप्तर्षियों में से एक जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं। २ एक तारा जो सप्तर्षि-मंडल में है।
अत्रैगुण्य–सज्ञा पु॰ [स॰] सत, रज, तम, इन तीनों गुणों का अभाव।
अथ–अव्य॰ [स॰] १. एक शब्द जिससे प्राचीन लोग ग्रंथ या लेख का आरंभ करते थे। २. अब। ३ अनंतर।
अथऊ†–सज्ञा पु॰ [हिं॰ अथवना] वह भोजन जो जैन लोग सूर्यास्त के पहले करते हैं।
अथक–वि॰ [स॰ अ=नहीं+हिं॰ थकना] जो न थके। अश्रांत।
अथच–अव्य॰ [स॰] और। और भी।
अथना –क्रि॰ अ॰ [स॰ अस्त] अस्त होना। डूबना।
अथमना†–सज्ञा पु॰ [स॰ अस्तमन] पश्चिम दिशा। 'उगमना' का उल्टा।
अथरा–सज्ञा पु॰ [स॰ स्थाल] [स्त्री॰ अथरी] मिट्टी का खुले मुँह का चौड़ा बरतन। नाँद।
अथर्व–सज्ञा पु॰ [स॰ अथर्वन्] चौथा वेद जिसके मंत्र द्रष्टा या ऋषि भृगु और अंगिरा गोत्रवाले थे।
अथर्वन्–सज्ञा पु॰ दे॰ "अथर्व"।
अथर्वनी–सज्ञा पु॰ [स॰ अथर्वविद्] कर्मकांडी। यज्ञ करानेवाला। पुरोहित।
अथवना*–क्रि॰ अ॰ [स॰ अस्तमन] १. (सूर्य, चंद्र आदि का) अस्त होना। डूबना। २ लुप्त होना। गायब होना। चला जाना।
अथवा–अव्य॰ [स॰] एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कई

शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो। या। वा। किंवा।

अथाई–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थायि] १ बैठने की जगह। बैठक। चौबारा। २ वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे होकर पंचायत करते हैं। ३ घर के सामने का चबूतरा। ४ मंडली। सभा। जमावड़ा।

अथान, अथाना–संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु] अचार।

अथाना –क्रि० अ० दे० "अथवना"। क्रि० स० [सं० स्थान] १. थाह लेना। गहराई नापना। २ ढूँढना।

अथाह–वि० [सं० अ+हिं० थाह] १ जिसकी थाह न हो। बहुत गहरा। २ जिसका अंदाज़ न हो सके। अपरिमित। बहुत अधिक। ३ गंभीर। गूढ़। संज्ञा पुं० १ गहराई। २. जलाशय। ३ समुद्र।

अथिर*–वि० दे० "अस्थिर"।

अथोर*–वि० [सं० अ=नहीं+हिं० थोर] अधिक। ज्यादा। बहुत।

अदक –संज्ञा पुं० [सं० आतङ्क] डर। भय।

अदंड–वि० [सं०] १ जो दंड के योग्य न हो। सजा से बरी। २ जिस पर कर या महसूल न लगे। ३ निर्भय। स्वेच्छाचारी। ४ उद्दंड। बली। संज्ञा पुं० वह भूमि जिसकी मालगुजारी न लगे। मुआफी।

अदंडनीय–वि० [सं०] जो दंड पाने के योग्य न हो। अदंड्य।

अदंडमान–वि० [सं०] दंड के अयोग्य। दंड से मुक्त।

अदंड्य–वि० [सं०] जिसे दंड न दिया जा सके। सजा से बरी।

अदंत–वि० [सं०] १. जिसे दाँत न हो। २ बहुत थोड़ी अवस्था का। दुधमुहा।

अदंभ–वि० [सं०] १ दंभ रहित। पाखंडविहीन। २ सच्चा। निश्छल। निष्कपट। ३ प्राकृतिक। स्वाभाविक। ४ स्वच्छ। शुद्ध। संज्ञा पुं० शिव।

अदग–वि० [सं० अदग्ध] १ बेदाग। शुद्ध। २. निरपराध। निर्दोष। ३ अछूता। अस्पृष्ट। साफ़।

अदत्त–वि० [सं०] न दिया हुआ। संज्ञा पुं० वह वस्तु जिसके दिए जाने पर भी लेनेवाले को उसे रखने का अधिकार न हो। (स्मृति)

अदत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अविवाहिता कन्या।

अदद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ संख्या। गिनती। २ संख्या का चिह्न या संकेत।

अदन–संज्ञा पुं० [अ०] पैगंबरी मतों के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जहाँ ईश्वर ने आदम को बनाकर रक्खा था।

अदना–वि० [अ०] १ तुच्छ। क्षुद्र। २ सामान्य। मामूली।

अदब–संज्ञा पुं० [अ०] शिष्टाचार। कायदा। बड़ों का आदर सम्मान।

अद बदाकर—क्रि० वि० [सं० अधि+वद] टेक बाँधकर। अवश्य। जरूर।

अदभ्र–वि० [सं०] १ बहुत। अधिक। ज्यादा। २. अपार। अनंत।

अदम पैरवी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी मुकद्दमे में जरूरी कार्रवाई न करना।

अदम्य–वि० [सं०] जिसका दमन न हो सके। प्रचंड। प्रबल।

अदय–वि० [सं०] १ दयारहित। (व्यापार) २ निर्दय। निष्ठुर। (व्यक्ति)

अदरक–संज्ञा पुं० [सं० आर्द्रक, फा० अदरक] एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है।

अदरकी–संज्ञा स्त्री० [सं० आर्द्रक] सोंठ और गुड़ मिलाकर बनाई हुई टिकिया।

अदरा–संज्ञा पुं० दे० "आर्द्रा"।

अदराना–क्रि० अ० [सं० आदर] बहुत आदर पाने से शेखी पर चढ़ना। इतराना। क्रि० स० आदर देकर शेखी पर चढ़ाना। घमंडी बनाना।

अदर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] १ अविद्यमानता। असाक्षात्। २ लोप। विनाश।

अदर्शनीय–वि० [सं०] १. जो देखने लायक न हो। २ बुरा। कुरूप। भद्दा।

अदल–संज्ञा पुं० [अ०] न्याय। इंसाफ।

अदल बदल–संज्ञा पुं० [अ०] उलट पुलट। हेर फेर। परिवर्तन।

अदली*–संज्ञा पुं० [अ० अदल] न्यायी।

अदवान–संज्ञा स्त्री० [सं० अध =नीचे+हिं०

यान = रस्सी] चारपाई के पैताने बिनावट को खींचकर कड़ी रखने के लिये उसके छेदों में पड़ी हुई रस्सी। ओनचन।

अदहन–संज्ञा पुं० [सं० आदहन] आग पर चढ़ा हुआ वह गरम पानी जिसमें दाल, चावल आदि पकाते हैं।

अदाँत–वि० [सं० अदंत] जिसे दाँत न आए हों। (पशुओं के संबंध में)

अदांत–वि० [सं०] १ जो इंद्रियों का दमन न कर सके। विषयासक्त। २ उद्दंड। अक्खड़।

अदा–वि० [अ०] चुकता। बेबाक।

मुहा०–अदा करना = पालन या पूरा करना। जैसे—फर्ज अदा करना।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १ हाव भाव। नखरा। २. ढंग। तर्ज़।

अदाई–वि० [अ० अदा] १. ठगी। २. चालबाज।

अदायाँ–वि० [अ = नहीं + हिं० दायाँ] वाम। प्रतिकूल। बुरा।

अदाग–वि० [सं० अ + अ० दाग] १. बेदाग। साफ़। २ निर्दोष। पवित्र।

अदागी–वि० दे० "अदाग"।

अदाता–संज्ञा पुं० [सं०] कृपण। कंजूस।

अदान–वि० [सं० अ + फा० दाना] अनजान। नादान। नासमझ।

अदालत– संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० अदालती] १. न्यायालय। कचहरी। २ न्यायाधीश।

यौ०–अदालत खफ़ीफ़ा = वह दीवानी अदालत जिसमें छोटे मुकदमे लिए जाते हैं। अदालत दीवानी = वह अदालत जिसमें संपत्ति या स्वत्व संबंधी बातों का निर्णय होता है। अदालत माल = वह अदालत जिसमें लगान और मालगुजारी संबंधी मुकदमे दायर किए जाते हैं।

अदालती–वि० [अ० अदालत] १ अदालत का। २. जो अदालत करे। मुकदमा लड़नेवाला।

अदावँ–संज्ञा पुं० [सं० अ + हिं० दावँ] बुरा दावँ पेंच। असमंजस। कठिनाई।

अदावत–संज्ञा स्त्री० [अ०] शत्रुता। दुश्मनी। बैर। विरोध।

अदावती–वि० [अ० अदावत] १. जो अदावत रक्खे। २. विरोधजन्य। द्वेषमूलक।

अदाह–संज्ञा स्त्री० [अ० अदा] हाव भाव। नखरा।

अदित–संज्ञा पुं० दे० "आदित्य"।

अदिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकृति। २ पृथ्वी। ३. दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी जो देवताओं की माता है। ४. द्युलोक। ५. अंतरिक्ष। ६. माता। ७. पिता।

अदितिसुत–संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता। २. सूर्य।

अदिन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा दिन। संकट या दुःख का समय। २. अभाग्य।

अदिव्य–वि० [सं०] १. लौकिक। साधारण। २. बुरा।

अदिव्य नायक–संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य नायक। नायक जो देवता न हो। (साहित्य)

अदिष्ट–वि० संज्ञा पुं० दे० "अदृष्ट"।

अदिष्टी–वि० [सं० अ + दृष्टि] १. अदूरदर्शी मूर्ख। २ अभागा। बदकिस्मत।

अदीठ–वि० [सं० अदृष्ट] बिना देखा हुआ। गुप्त। छिपा हुआ।

अदीन–वि० [सं०] १. दीनतारहित। २ उग्र। प्रचंड। निडर। ३ ऊँची तबीयत का। उदार।

अदीयमान–वि० [सं०] जो न दिया जाय।

अदुंद–वि० [सं० अद्वंद्व, प्रा० अदुंद] १ द्वंद्वरहित। निर्द्वंद्व। बिना झंझट का। बाधारहित। २. शांत। निश्चिंत। ३. बेजोड़। अद्वितीय।

अदूरदर्शी–वि० [सं०] जो दूर तक न सोचे। स्थूलबुद्धि। नासमझ।

अदूषण–वि० [सं०] निर्दोष। शुद्ध।

अदूषित–वि० [सं०] निर्दोष। शुद्ध।

अदृश्य–वि० [सं०] १. जो दिखाई न दे। अलख। २. जिसका ज्ञान इंद्रियों को न हो। अगोचर। ३ लुप्त। गायब।

अदृष्ट–वि० [सं०] १. न देखा हुआ। २ लुप्त। अंतर्द्धान। गायब।

संज्ञा पुं० १. भाग्य। किस्मत। २ अग्नि और जल आदि से उत्पन्न आपत्ति। जैसे, *आग लगना, बाढ़ आना।*

अदृष्टपूर्व–वि० [सं०] १. जो पहले न देखा गया हो। २. अद्भुत। विलक्षण।

अदृष्टवाद–संज्ञा पुं० [सं०] परलोक आदि परोक्ष बातों का निरूपक सिद्धांत।

अदृष्टार्थ-संज्ञा पु० [सं०] वह शब्द-प्रमाण जिसके वाच्य या अर्थ का साक्षात् इस संसार में न हो, जैसे, स्वर्ग, परमात्मा इत्यादि।

अदेख -वि० [सं० अ=नहीं+हिं० देखना] १ छिपा हुआ। अदृश्य। गुप्त। २ न देखा हुआ। अदृष्ट।

अदेखी-वि० [सं० अ=नहीं+हिं०देखना] जो न देख सके। डाही। द्वेषी। ईर्षालु।

अदेय- वि० [सं०] न देने योग्य। जिसे दे न सकें।

अदेस -संज्ञा पु० [सं० आदेश] १. आज्ञा। आदेश। २ प्रणाम। दंडवत। (साधु)

अदेह-वि० [सं०] बिना शरीर का। संज्ञा पु० कामदेव।

अदोख -वि० दे० "अदोष"।

अदोखिल — वि० [सं० अदोष] निर्दोष।

अदोष -वि० [सं०] १ निर्दोष। निष्कलंक। बेऐब। २ निरपराध।

अदौरी—संज्ञा स्त्री० [सं० ऋद्ध+हिं० बरी] उर्द की सुखाई हुई बरी।

अद्ध -वि० दे० "अर्द्ध"।

अद्धरज -संज्ञा पु० दे० "अध्वर्यु"।

अद्धा-संज्ञा पु० [सं० अर्द्ध] १ किसी वस्तु का आधा मान। २ वह बोतल जो पूरी बोतल की आधी हो।

अद्धी-संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध] १. दमड़ी का आधा। एक पैसे का सोलहवाँ भाग। २. एक बारीक और चिकना कपड़ा।

अद्भुत-वि०[सं०] आश्चर्यजनक। विलक्षण। विचित्र। अनोखा।
संज्ञा पु० काव्य के नौ रसों में एक जिसमें विस्मय की परिपुष्टता दिखलाई जाती है।

अद्भुतालय-संज्ञा पु० दे० "अजायबघर"।

अद्भुतोपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय के ऐसे गुणों का उल्लेख किया जाय जिनका होना उपमान में कभी संभव न हो।

अद्य-क्रि० वि० [सं०] अब। अभी।

अद्यापि-क्रि० वि० [सं०] आज भी। अभी तक। आज तक।

अद्यावधि-क्रि० वि० [सं०] अब तक।

अद्रव्य-संज्ञा पु० [सं०] सत्ताहीन पदार्थ। अवस्तु। असत्। शून्य। अभाव।
वि० द्रव्य या धन रहित। दरिद्र।

अद्रा -संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"

अद्रि—संज्ञा पु० [सं०] पर्वत। पहाड़।

अद्रितनया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २ गंगा। ३ २३ वर्णों का एक वृत्त।

अद्वितीय-वि० [सं०] १ अकेला। एकाकी। २ जिसके ऐसा दूसरा न हो। बेजोड़। अनुपम। ३ प्रधान। मुख्य। ४ विलक्षण।

अद्वैत-वि० [सं०] १ एकाकी। अकेला। २ अनुपम। बेजोड़।
संज्ञा पु० ब्रह्म। ईश्वर।

अद्वैतवाद-संज्ञा पु० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें चैतन्य या ब्रह्म के अतिरिक्त और किसी वस्तु या तत्त्व की वास्तव सत्ता नहीं मानी जाती और आत्मा और परमात्मा में भी कोई भेद नहीं स्वीकार किया जाता। वेदांत मत।

अद्वैतवादी—संज्ञा पु० [सं०] अद्वैत मत को माननेवाला। वेदांती।

अध -अव्य० [सं०] नीचे। तले।
संज्ञा स्त्री० पैर के नीचे की दिशा।

अधःपतन-संज्ञा पु० [सं०] १. नीचे गिरना। २. अवनति। अध पात। ३. दुर्दशा। दुर्गति। ४ विनाश।

अधःपात-संज्ञा पु० [सं०] १ नीचे गिरना। पतन। २. अवनति। दुर्दशा।

अध-अव्य० दे० "अध"।
वि० [सं० अर्द्ध, प्रा० अद्ध] 'आधा' शब्द का संकुचित रूप। आधा। (यौगिक में) जैसे, अधकचरा, अधखुला।

अधकचरा-वि० [सं० अर्द्ध+हिं० कच्चा] १ अपरिपक्व। २. अधूरा। अपूर्ण। ३ अकुशल। अदक्ष।
वि० [सं० अर्द्ध+हिं० कचरना] आधा कूटा या पीसा हुआ। दरदरा।

अधकपारी-संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध=आधा +कपाल=सिर] आधे सिर का दर्द। आधा सीसी। सूर्यावर्त।

अधकरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा+कर] मालगुजारी, महसूल या किराए की आधी रकम जो किसी नियत समय पर दी जाय। अठनिया किस्त।

अधकहा-वि० [हिं० आधा+कहना] अस्पष्ट रूप में या आधा कहा हुआ।

अधखिला-वि० [हिं० आधा+खिलना]

आधा खिला हुआ। अर्द्धविकसित।
अधघट-वि० [हिं० आधा+घटना] जिससे ठीक अर्थ न निकले। अटपट।
अधचरा-वि० [हिं० आधा+चरना] आधा चरा या खाया हुआ।
अधड़ा-वि० [सं० अधर] [स्त्री० अधड़ी] १. न ऊपर न नीचे का। निराधार। २. ऊटपटांग। बे सिर पैर का। असंबद्ध।
अधन-वि० पुं० [सं० अ+धन] निर्धन। कंगाल। गरीब।
अधनिया-वि० [हिं० आध+आना] आध आने या दो पैसे का।
अधन्ना-संज्ञा पुं० [हिं० आधा+आना] आध आने का सिक्का। टका।
अधपई-संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा+पाव] एक सेर के आठवें हिस्से की तौल या बाट।
अधबर-संज्ञा पुं० [हिं० आधा+बाट] १. आधा मार्ग। आधा रास्ता। २. बीच।
अधबैसू-वि० पुं० [सं० अर्द्ध+वयस्] [स्त्री० अधबैसी] अधेड़। मध्यम अवस्था की (स्त्री)।
अधम-वि० [सं०] १. नीच। निकृष्ट। बुरा। २. पापी। दुष्ट।
अधमई-संज्ञा स्त्री० [सं० अधम+हिं० ई (प्रत्य०)] नीचता। अधमता।
अधमता-संज्ञा स्त्री० [सं०] अधम का भाव। नीचता। खोटाई।
अधमरा-वि० [हिं० आधा+मरा] आधा मरा हुआ। मृतप्राय। अधमुआ।
अधमर्ण-संज्ञा पुं० [सं०] ऋण लेनेवाला आदमी। कर्ज़दार। ऋणी।
अधमाई-संज्ञा स्त्री० [सं० अधम] अधमता।
अधमा दूती-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दूती जो कटु बातें कहकर नायक या नायिका का संदेशा एक दूसरे को पहुँचावे।
अधमा नायिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो प्रिय या नायक के हितकारी होने पर भी उसके प्रति अहित या कुव्यवहार करे।
अधमुआ-वि० दे० "अधमरा"।
अधमुख-संज्ञा पुं० दे० "अधोमुख"।
अधर-संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे का ओठ। २. ओठ।
संज्ञा पुं० [सं० अ=नहीं+हिं० धरना] १. बिना आधार का स्थान। अंतरिक्ष।
मुहा०—अधर में झूलना, पड़ना या लटकना। =१. अधूरा रहना। पूरा न होना। २. पसोपेश में पड़ना। दुविधा में पड़ना। २. पाताल।
वि० १. जो पकड़ में न आवे। चंचल। २ नीच। बुरा।
अधररज-संज्ञा पुं० [सं० अधर+रज] १. ओठों की ललाई। ओठों की सुर्खी। २. ओठ पर की पान या मिस्सी की धड़ी।
अधरपान-संज्ञा पुं० [सं०] ओठों का चुंबन।
अधरम-संज्ञा पुं० दे० "अधर्म"।
अधर्म-संज्ञा पुं० [सं०] धर्म के विरुद्ध कार्य्य। कुकर्म। दुराचार। बुरा काम।
अधर्मात्मा-वि० पुं० [सं०] अधर्मी।
अधर्मी-संज्ञा पुं० [सं० अधर्मिन्] [स्त्री० अधर्मिणी] पापी। दुराचारी।
अधवा-संज्ञा स्त्री० [सं० अ+धव=पति] बिना पति की स्त्री। विधवा। राँड़।
अधसेरा-संज्ञा पुं० [हिं० आधा+सेर] दो पाव का मान।
अधस्तल-संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे की कोठरी। २. नीचे की तह। ३. तहखाना।
अधाधुंध-क्रि० वि० दे० "अंधाधुंध"।
अधावट-वि० पुं० [हिं० आधा+औटना] आधा औटा हुआ। (दूध)
अधार-संज्ञा पुं० दे० "आधार"।
अधारी-संज्ञा स्त्री० [सं० आधार] १. आश्रय। सहारा। आधार। २. काठ के डंडे में लगा हुआ पीढ़ा जिसे साधु लोग सहारे के लिये रखते हैं। ३. यात्रा का सामान रखने का झोला या थैला।
वि० स्त्री० जी को सहारा देनेवाली। प्रिय।
अधि-एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है और जिसके ये अर्थ होते हैं—१. ऊपर। ऊँचा। जैसे—अधिराज। अधिकरण। २. प्रधान। मुख्य। जैसे—अधिपति। ३. अधिक। ज़्यादा। जैसे—अधिमास। ४. संबंध में। जैसे—आध्यात्मिक।
अधिक-वि० [सं०] १. बहुत। ज़्यादा। विशेष। २. बचा हुआ। फालतू।
संज्ञा पुं० १. वह अलंकार जिसमें आधेय को आधार से अधिक वर्णन करते हैं। २. न्याय में एक निग्रह स्थान।

अधिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुतायत। ज्यादती। विशेषता। बढ़ती। वृद्धि।
अधिक मास–संज्ञा पुं० [सं०] मलमास। लौंद का महीना। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या पर्यंत ऐसा काल जिसमें संक्रांति न पड़े। (प्रति तीसरे वर्ष)
अधिकरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. आधार। आसरा। सहारा। २ व्याकरण में कर्ता और कर्म द्वारा क्रिया का आधार। सातवाँ कारक। ३. प्रकरण। शीर्षक। ४. दर्शन में आधार विषय। अधिष्ठान।
अधिकांग–वि० [सं०] जिसे कोई अवयव अधिक हो। जैसे—छागुर।
अधिकांश–संज्ञा पुं० [सं०] अधिक भाग। ज्यादा हिस्सा।
वि० बहुत।
क्रि० वि० १ ज्यादातर। विशेषकर। २. अक्सर। प्रायः।
अधिकाई –संज्ञा स्त्री० [सं० अधिक+हिं० आई (प्रत्य०)] १. ज्यादती। अधिकता। बहुतायत। २ बड़ाई। महिमा।
अधिकाना–क्रि० अ० [सं० अधिक] अधिक होना। ज्यादा होना। बढ़ना।
अधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्यभार। प्रभुत्व। आधिपत्य। प्रधानता। २. प्रकरण। ३ स्वत्व। हक। अख्तियार। ४. कब्जा। प्राप्ति। ५. सामर्थ्य। शक्ति। ६. योग्यता। जानकारी। लियाकत। ७ प्रकरण। शीर्षक। ८ रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता। (नाट्यशास्त्र)
वि० पुं० [सं० अधिक] अधिक।
अधिकारी–संज्ञा० पुं० [सं० अधिकारिन्] [स्त्री० अधिकारिणी] १. प्रभु। स्वामी। मालिक। २. स्वत्वधारी। हकदार। ३. योग्यता या क्षमता रखनेवाला। उपयुक्त पात्र। ४. नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त होता है।
अधिकृत–वि० [सं०] अधिकार में आया हुआ। उपलब्ध।
संज्ञा पुं० अधिकारी। अध्यक्ष।
अधिगत–वि० [सं०] १ प्राप्त। पाया हुआ। २. जाना हुआ। ज्ञात।
अधिगम–संज्ञा पुं० [सं०] १. पहुँच। ज्ञान। गति। २ परोपदेश द्वारा प्राप्त ज्ञान। ३. ऐश्वर्य। बड़प्पन।
अधित्यका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। ऊँचा पहाड़ी मैदान।
अधिदेव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिदेवी] इष्टदेव। कुलदेव।
अधिदैव–वि० [सं०] दैविक। आकस्मिक।
अधिदैवत–संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रकरण या मंत्र जिसमें अग्नि, वायु, सूर्य इत्यादि देवताओं के नाम-कीर्तन से ब्रह्म विभूति की शिक्षा मिले।
वि० देवता संबंधी।
अधिनायक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिनायिका] सरदार। मुखिया।
अधिप–संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वामी। मालिक। २. सरदार। मुखिया। ३. राजा।
अधिपति–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिपत्नी] १. मालिक। स्वामी। २. नायक। अफसर। मुखिया।
अधिमास–संज्ञा पुं० दे० "अधिक मास"।
अधिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा] १. आधा हिस्सा। २. गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी। ३. एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करनेवाले को मिलता है।
संज्ञा पुं० गाँव में आधी पट्टी का मालिक।
अधियाना–क्रि० स० [हिं० आधा] आधा करना। दो बराबर हिस्सों में बाँटना।
अधियार– संज्ञा पुं० [हिं० आधा] [स्त्री० अधियारिन] १. किसी जायदाद में आधा हिस्सा। २. आधे का मालिक। ३. वह जिमींदार या असामी जो गाँव के हिस्से या जोत में आधे का हिस्सेदार हो।
अधियारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अधियार] किसी जायदाद में आधी हिस्सेदारी।
अधिरथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. रथ हाँकनेवाला। गाड़ीवान। २. बड़ा रथ।
अधिराज–संज्ञा पुं० [सं०] राजा। बादशाह। महाराज।
अधिराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] साम्राज्य।
अधिरोहण–संज्ञा पुं० [सं०] चढ़ना। सवार होना। ऊपर उठना।
अधिवास–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अधिवासित] १ रहने की जगह। २. खुशबू। ३. विवाह से पहिले तेल हलदी चढ़ाने की रीति। ४. उबटन।
अधिवासी–संज्ञा पुं० [सं० अधिवासिन्]

निवासी। रहनेवाला।
अधिवेशन–संज्ञा पुं० [सं०] बैठक। सभा। जलसा।
अधिष्ठाता–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिष्ठात्री] १. अध्यक्ष। मुखिया। प्रधान। २. वह जिसके हाथ में किसी कार्य्य का भार हो। ३ ईश्वर।
अधिष्ठान-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अधिष्ठित] १. वासस्थान। रहने का स्थान। २. नगर। शहर। ३. स्थिति। कयाम। पड़ाव। ४. आधार। सहारा। ५. वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो। जैसे रज्जु में सर्प और शुक्ति में रजत का। ६ सांख्य में भोक्ता और भोग का संयोग। ७ अधिकार। शासन। राजसत्ता।
अधिष्ठान शरीर–संज्ञा पुं [सं०] वह सूक्ष्म शरीर जिसमें मरण के उपरांत पितृलोक में आत्मा का निवास रहता है।
अधिष्ठित–वि० [सं०] १. ठहरा हुआ। स्थापित। २ निर्वाचित। नियुक्त।
अधीन–वि० [सं०] [संज्ञा अधीनता] १. आश्रित। मातहत। वशीभूत। आज्ञाकारी। २. विवश। लाचार। ३. अवलंबित। मुनहसर।
संज्ञा पुं० दास। सेवक।
अधीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परवशता। परतंत्रता। मातहती। २. लाचारी। बेबसी। ३. दीनता। गरीबी।
अधीनना–क्रि० अ० [हिं० अधीन+ना (प्रत्य०)] अधीन होना। वश में होना।
अधीर– वि० पुं० [सं०] [संज्ञा अधीरता] १. धैर्य्यरहित। घबराया हुआ। उद्विग्न। २ बेचैन। व्याकुल। विह्वल। ३ चंचल। उतावला। आतुर। ४. असंतोषी।
अधीरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक में नारी-विलास-सूचक चिह्न देखने से अधीर होकर प्रत्यक्ष कोप करे।
अधीश, अधीश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधीश्वरी] १. मालिक। स्वामी। अध्यक्ष। २. भूपति। राजा।
अधुना–क्रि० वि० [सं०] [वि० आधुनिक] अब। संप्रति। आजकल।
अधुनातन–वि० [सं०] वर्त्तमान समय का। हाल का। 'सनातन' का उलटा।
अधूत–संज्ञा पुं० [सं०] १. अकंपित। २. निर्भय। निडर। ३. ढीठ। ४. उचक्का।
अधूरा–वि० [हिं० अध+पूरा] [स्त्री० अधूरी] अपूर्ण। जो पूरा न हो। असमाप्त।
अधेड़–वि० [हिं० आधा+एड़ (प्रत्य०)] ढलती जवानी का। बुढ़ापे और जवानी के बीच का।
अधेला–संज्ञा पुं० [हिं० आधा+एला (प्रत्य०)] आधा पैसा।
अधेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा+एली (प्रत्य०)] रुपए का आधा सिक्का। अठन्नी।
अधो–अव्य० दे० "अधः"।
अधोगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पतन। गिराव। २ अवनति। दुर्दशा।
अधोगमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे जाना। २. अवनति। पतन।
अधोगामी–वि० [सं० अधोगामिन्] [स्त्री० अधोगामिनी] १. नीचे जानेवाला। २. अवनति की ओर जानेवाला।
अधोतर†–संज्ञा पुं० [सं० अध+उत्तर] दोहरी बुनावट का एक देशी मोटा कपड़ा।
अधोमार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे का रास्ता। २ सुरंग का रास्ता। ३ गुदा।
अधोमुख–वि० [सं०] १. नीचे मुँह किए हुए। २. औंधा। उलटा।
क्रि० वि० औंधा। मुँह के बल।
अधोलंब–संज्ञा पुं० [सं०] वह खड़ी रेखा जो किसी दूसरी सीधी आड़ी रेखा पर आकर इस प्रकार गिरे कि पार्श्व के दोनों कोण समकोण हों। लंब।
अधोवायु–संज्ञा पुं० [सं०] अपान वायु। गुदा की वायु। पाद। गोज।
अध्यक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वामी। मालिक। २. नायक। सरदार। मुखिया। ३ अधिकारी। अधिष्ठाता।
अध्यच्छ†–संज्ञा पुं० दे० "अध्यक्ष"।
अध्ययन–संज्ञा पुं० [सं०] पठन पाठन। पढ़ाई।
अध्यवसाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. लगातार उद्योग। दृढ़तापूर्वक किसी काम में लगा रहना। २. उत्साह। ३. निश्चय।
अध्यवसायी–वि० [सं० अध्यवसायिन्] [स्त्री० अध्यवसायिनी] १. लगातार उद्योग करनेवाला। उद्योगी। उद्यमी। २. उत्साही।

अध्यस्त–वि० [स०] वह जिसका भ्रम किसी अधिष्ठान में हो; जैसे रज्जु में सर्प का। (वेदांत)

अध्यात्म–सज्ञा पु० [स०] ब्रह्मविचार। ज्ञानतत्त्व। आत्मज्ञान।

अध्यापक–सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० अध्यापिका] शिक्षक। गुरु। पढ़ानेवाला। उस्ताद।

अध्यापकी–सज्ञा स्त्री० [स० अध्यापक+ई] पढ़ाने का काम। मुदर्रिसी।

अध्यापन–सज्ञा पुं० [सं०] शिक्षण। पढ़ाने का कार्य।

अध्याय–सज्ञा पु० [स०] १ ग्रंथविभाग। २. पाठ। सर्ग। परिच्छेद।

अध्यारोप–सज्ञा पु० [स०] १. एक व्यापार को दूसरे में लगाना। दोष। अध्यास। २. भूठीकल्पना। अन्य में अन्य वस्तु का भ्रम।

अध्यास–सज्ञा पु० [स०] अध्यारोप। मिथ्याज्ञान।

अध्यासन–सज्ञा पु० [स०] १ उपवेशन। बैठना। २. आरोपण।

अध्याहार–सज्ञा पु० [स०] १. तर्कवितर्क। विचार। बहस। २. वाक्य को पूरा करने के लिये उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना। ३. अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दों में स्पष्ट करने की क्रिया।

[अध्]यूढ़ा–सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका [प]ति दूसरा विवाह कर ले। ज्येष्ठा पत्नी।

[अध्]येय–वि० [सं०] पढ़ने योग्य।

[अ]ध्रुव–वि० [स०].१. चंचल। डाँवा-डोल। अस्थिर। २. अनिश्चित। बेठौर ठिकाने का।

अध्वर–सज्ञा पु० [स०] यज्ञ।

अध्वर्यु—सज्ञा पु० [सं०] यज्ञ में यजुर्वेद का मंत्र पढ़नेवाला ब्राह्मण।

अन्–अव्य० [स०] अभाव या निषेधसूचक अव्यय। जैसे—अनंत, अनधिकार।

अनंग–वि० [स०] [क्रि० अनंगना] विना शरीर का। देह रहित।
सज्ञा पु० कामदेव।

अनंगक्रीड़ा–सज्ञा स्त्री० [स०] १. रति। संभोग। २. छंदःशास्त्र में मुक्तक नामक विषम वृत्त का एक भेद।

अनंगना–क्रि० अ० [स०] शरीर की सुध छोड़ना। सुधबुध भुलाना।

[अनंगशेख]र–सज्ञा पु० [स०] दंडक नामक वर्ण-वृत्त का एक भेद।

अनंगारि–सज्ञा पु० [स०] शिव।

अनंगी–वि० [सं० अनङ्गिन्] [स्त्री० अनगिनी] अंगरहित। बिना देह का।
सज्ञा पु० १. ईश्वर। २. कामदेव।

अनंत–वि० [स०] १. जिसका अंत या पार न हो। असीम। बेहद। बहुत बड़ा। २. बहुत अधिक। ३ अविनाशी।
सज्ञा पु० १. विष्णु। २. शेषनाग। ३. लक्ष्मण। ४. बलराम। ५. आकाश। ६. बाहु का एक गहना। ७. सूत का गंडा जिसे भादों सुदी चतुर्दशी या अनंत के व्रत के दिन बाहु में पहनते हैं।

अनंतचतुर्दशी–सज्ञा स्त्री० [स०] भाद्र-शुक्ल चतुर्दशी।

अनंतमूल–सज्ञा पु० [स०] एक पौधा या बेल जो रक्त शुद्ध करने की औषध है।

अनंतर–क्रि०वि० [स०] १. पीछे। उप-रांत। बाद। २. निरंतर। लगातार।

अनंतवीर्य–वि० [सं०] अपार पौरुष-वाला।

अनंता–वि० स्त्री० [सं०] जिसका अंत या पारावार न हो।
सज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. पार्वती। ३. कलियारी। ४. अनंतमूल। ५. दूब। ६. पीपर। ७. अनंतसूत्र।

अनंद–सज्ञा पु० [सं०] १. चौदह वर्णों का एक वृत्त। २. दे० "आनंद"।

अनंदना –क्रि० अ० [स० आनंद] आनं-दित होना। खुश होना। प्रसन्न होना।

अनंदी–सज्ञा पुं० [सं० आनंद] १. एक प्रकार का धान। २. दे० "आनंदी"।

अनंभ–वि० [स०] विना पानी का।

[अनंह]–वि० [स० अन् = नहीं + अंह = विघ्न] निर्विघ्न। बाधारहित।

अन –क्रि० वि० [स० अन्] विना। बगैर
वि० [स० अन्य] अन्य। दूसरा।

अनअहिवात–सज्ञा पुं० [स० अन् = नहीं + हिं० अहिवात = सौभाग्य] वैधव्य विधवापन। रँड़ापा।

अनइस–संज्ञा पु० दे० "अनैस"।

अनऋतु–सज्ञा स्त्री० [स० अन् + ऋतु] १. विरुद्ध ऋतु। बेमौसिम। अकाल। २. ऋतु-विपर्यय। ऋतु के विरुद्ध कार्य।

अनक–सज्ञा पु० दे० "आनक"।

अनकना‡-क्रि० स० [सं० आकर्णन] १. सुनना। २. चुपचाप या, छिपकर सुनना।

अनकहा-वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० कहना] [स्त्री० अनकही] बिना कहा हुआ। अकथित। अनुक्त।

मुहा०-अनकही देना=चुपचाप होना।

अनख-संज्ञा पुं० [सं० अन्=बुरा+अक्ष=आँख] १. क्रोध। कोप। नाराज़ी। २. दुःख। ग्लानि। खिन्नता। ३. ईर्ष्या। द्वेष। डाह। ४. झंझट। अनरीति। ५. डिठौना। काजल की बिंदी जिसे डीठ (नज़र) से बचाने के लिये माथे में लगाते हैं।

वि० [सं० अ+नख] बिना नख का।

अनखना‡-क्रि० अ० [हिं० अनख] क्रोध करना। रुष्ट होना। रिसाना।

अनखाना‡-क्रि० अ० [हिं० अनख] क्रोध करना। रिसाना। रुष्ट होना।

क्रि० स० अप्रसन्न करना। नाराज़ करना।

अनखाहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० अनखना+आहट (प्रत्य०)] अनख दिखाने की क्रिया या भाव। नाराज़गी। क्रोध।

अनखी‡-वि० [हिं० अनख] क्रोधी। गुस्सावर। जो जल्दी नाराज़ हो।

अनखौहा‡-वि० [हिं० अनख] [स्त्री० अनखौंही] १. क्रोध से भरा। कुपित। रुष्ट। २. चिड़चिड़ा। जल्दी क्रोध करनेवाला। ३. क्रोध दिलानेवाला। ४. अनुचित। बुरा।

अनगढ़-वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० गढ़ना] १. बिना गढ़ा हुआ। २. जिसे किसी ने बनाया न हो। स्वयंभू। ३. बेडौल। भद्दा। बेढंगा। ४. उजड्ड। अक्खड़। ५. बेतुका। अंडबंड।

अनगन‡-वि० [सं० अन्+गणन] [स्त्री० अनगनी] अगणित। बहुत।

अनगना-वि०[सं० अन्=नहीं+हिं० गिनना] न गिना हुआ। अगणित। बहुत।

संज्ञा पुं० गर्भ का आठवाँ महीना।

अनगवना-क्रि० अ० [हिं० अन (प्रत्य०)=नहीं+गवन=जाना] रुककर देर करना। जान बूझकर विलंब करना।

अनगाना-क्रि० अ० दे० "अनगवना"।

अनगिन-वि० दे० "अनगिनत"।

अनगिनत-वि० [सं०अन्=नहीं+गिनना] जिसकी गिनती न हो। असंख्य। बेशुमार। बहुत।

अनगिना-वि० पुं० [सं० अन्+हिं० गिनना] १. जो गिना न गया हो। २. असंख्य।

अनगैरी‡-वि० [अ० ग़ैर] ग़ैर। पराया।

अनघेरी‡-वि० [सं० अन्+हिं० घेरना] बिना बुलाया हुआ। अनिमंत्रित।

अनघोर‡-संज्ञा पुं० [सं० घोर] अँधेर। अत्याचार। ज़्यादती।

अनचाहत‡-वि०[सं० अन्=नहीं+हिं० चाहना] न चाहनेवाला। जो प्रेम न करे।

अनचीन्हा‡-वि० [सं० अन्+हिं० चीन्हना] अपरिचित। अज्ञात।

अनजान-वि० [सं० अन्+हिं० जानना] १. अज्ञानी। नादान। नासमझ। २. अपरिचित। अज्ञात।

अनट‡-संज्ञा पुं० [सं० अनृत] उपद्रव। अनीति। अन्याय। अत्याचार।

अनडीठ‡-वि० [सं० अन्+दृष्ट] बिना देखा।

अनत-वि० [सं०] न झुका हुआ। सीधा।

‡क्रि० वि० [सं० अन्यत्र] और कहीं। दूसरी जगह में।

अनति-वि० [सं०] कम। थोड़ा।

संज्ञा स्त्री० नम्रता का अभाव। अहंकार।

अनदेखा-वि० पुं० [सं० अन्+हिं० देखना] [स्त्री० अनदेखी] बिना देखा हुआ।

अनद्यतन भविष्य-संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में भविष्य काल का एक भेद।

अनद्यतन भूत-संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में भूतकाल का एक भेद।

अनधिकार-संज्ञा पुं० [सं०] १. अधिकार का अभाव। इख्तियार का न होना। २. बेबसी। लाचारी। ३. अयोग्यता।

वि० १. अधिकाररहित। २. अयोग्य।

यौ०-अनधिकार चर्चा=जिस विषय में गति न हो, उसमें टाँग अड़ाना।

अनधिकारी-वि०[सं०अनधिकारिन्] १. जिसे अधिकार न हो। २. अयोग्य। अपात्र।

अनध्यवसाय-संज्ञा पुं०[सं०] १. अध्यवसाय का अभाव। अतत्परता। ढिलाई। २. किसी एक वस्तु के संबंध में साधारण अनिश्चय का वर्णन किया जाना।

अनध्याय-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह दिन

जो सहा न जाय। असह्य।

अनसुना-वि० [सं० अन्+हिं० सुनना] अश्रुत। बेसुना। बिना सुना हुआ।

मुहा०-अनसुनी करना = आनाकानी करना। बहलाना।

अनसूया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पराए गुण में दोष न देखना। नुक्ताचीनी न करना। २ ईर्ष्या का अभाव। ३. अत्रि मुनि की स्त्री।

अनहद नाद-संज्ञा पुं० दे० "अनाहत"।

अनहित-संज्ञा पुं० [सं० अन्=नहीं+हित] १. अहित। अपकार। बुराई। २ अहित चिंतक। शत्रु।

अनहोता-वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० होना] १ दरिद्र। निर्धन। गरीब। २ अलौकिक। अचंभे का।

अनहोनी-वि० स्त्री० [सं० अन्=नहीं+हिं० होना] न होनेवाली। अलौकिक। संज्ञा स्त्री० अलौकिक बात।

अनाकानी-संज्ञा स्त्री० [सं० अनाकर्णन] सुनी अनसुनी करना। जान बूझकर बहलाना। टाल-मटोल।

अनाकार-वि० [सं०] निराकार।

अनाखर†-वि० [सं० अनक्षर] बेडौल। बेढंगा।

अनागत-वि० [सं०] १. न आया हुआ। अनुपस्थित। २ भावी। होनहार। ३ अपरिचित। अज्ञात। ४. अनादि। अजन्मा। ५. अपूर्व। अद्भुत। क्रि० वि० अचानक। सहसा।

अनागम-संज्ञा पुं० [सं०] आगमन का अभाव। न आना।

अनाचार-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनाचारी] १. कदाचार। दुराचार। निंदित आचरण। २. कुरीति। कुप्रथा।

अनाचारिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुराचारिता। निंदित आचरण। २. कुरीति। कुचाल।

अनाज-संज्ञा पुं० [सं० अन्नाद्य] अन्न। धान्य। दाना। गल्ला।

अनाड़ी-वि० [सं० अनार्य्य] १ नासमझ। नादान। अनजान। २ जो निपुण न हो। अकुशल। अदक्ष।

अनात्म-वि० [सं०] आत्मरहित। जड़। संज्ञा पुं० आत्मा का विरोधी पदार्थ। अचित्। जड़।

अनाथ-वि० [सं०] १. नाथहीन। बिना मालिक का। २. जिसका कोई पालन पोषण करनेवाला न हो। ३. असहाय। अशरण। ४. दीन। दुखी।

अनाथालय-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ दीन दुखियों और असहायों का पालन हो। मुहताजखाना। लंगरखाना। २. लावारिस बच्चों की रक्षा का स्थान। यतीमखाना। अनाथाश्रम।

अनाथाश्रम-संज्ञा पुं० दे० "अनाथालय"।

अनादर-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनादरणीय, अनादरित, अनादृत] १. आदर का अभाव। निरादर। अवज्ञा। २ अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। ३. एक काव्यालंकार जिसमें प्राप्त वस्तु के तुल्य दूसरी अप्राप्त वस्तु की इच्छा के द्वारा प्राप्त वस्तु का अनादर सूचित किया जाता है।

अनादि-वि० [सं०] जिसका आदि न हो। जो सब दिन से हो।

अनादृत-वि० [सं०] जिसका अनादर हुआ हो। अपमानित।

अनाना†-क्रि० स० [सं० आनयन] मँगाना।

अनाप शनाप-संज्ञा पुं० [सं० अनाप्त] १. ऊटपटाँग। आयँ बायँ। अंड बंड। २. असंबद्ध प्रलाप। निरर्थक बकवाद।

अनाप्त-वि० [सं०] १. अप्राप्त। अलब्ध। २. अविश्वस्त। ३ असत्य। ४ अकुशल। अनाड़ी। ५. अनात्मीय। अबंधु।

अनाम-वि० [सं०] [स्त्री० अनामा] १. बिना नाम का। २. अप्रसिद्ध।

अनामय-वि० [सं०] १. रोगरहित। नीरोग। तंदुरुस्त। २ निर्दोष। बेऐब। संज्ञा पुं० १. नीरोगता। तंदुरुस्ती। २. कुशल क्षेम।

अनामा-संज्ञा स्त्री० दे० "अनामिका"।

अनामिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली। अनामा।

अनायास-क्रि० वि० [सं०] बिना प्रयास। बिना परिश्रम। अकस्मात्। अचानक।

अनार-संज्ञा पुं० [फा०] एक पेड़ और उसके फल का नाम। दाड़िम। संज्ञा० पुं० [सं० अन्याय] अन्याय। अनीति।

अनारदाना-संज्ञा पुं० [फा०] १ खट्टे

अनार का सुखाया हुआ दाना। २. रामदाना।
अनारी –वि० [हिं० अनार] अनार के रंग का। लाल।
वि० दे० "अनाड़ी"
अनार्य–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो आर्य न हो। अश्रेष्ठ। २. म्लेच्छ।
अनावश्यक–वि० [सं०] [संज्ञा अनावश्यकता] जिसकी आवश्यकता न हो। अप्रयोजनीय। ग़ैरज़रूरी।
अनावृत–वि० [सं०] १. जो ढँका न हो। खुला। २. जो घिरा न हो।
अनावृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्षा का अभाव। अवर्षा। सूखा।
अनाश्रमी–वि० [सं०] १. गार्हस्थ्य आदि चारों आश्रमों से रहित। आश्रमभ्रष्ट। २. पतित। भ्रष्ट।
अनाश्रय–वि० [सं०] निराश्रय। निरवलंब। अनाथ। दीन।
अनाश्रित–वि० [सं०] आश्रयरहित। निरवलंब। बेसहारा।
अनास्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आस्था का अभाव। अश्रद्धा। २. अनादर। अप्रतिष्ठा।
अनाह–संज्ञा पु० [सं०] अफरा। पेट फूलना।
अनाहक*–क्रि० वि० दे० "नाहक"।
अनाहत–वि० [सं०] जिस पर आघात न हुआ हो।
संज्ञा पु० १. शब्द योग में वह शब्द जो दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों कानों को बन्द करने से सुनाई देता है। २. हठ-योग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक।
अनाहार–संज्ञा पु० [सं०] भोजन का अभाव या त्याग।
वि० १. निराहार। जिसने कुछ खाया न हो। २. जिसमें कुछ खाया न जाय।
अनाहूत–वि० [सं०] बिना बुलाया हुआ। अनिमंत्रित।
अनिच्छा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अनिच्छित, अनिच्छुक] इच्छा का अभाव। अरुचि।
अनिच्छित–वि० [सं०] १. जिसकी इच्छा न हो। अनचाहा। २. अरुचिकर।
अनिच्छुक–वि० [सं०] इच्छा न रखनेवाला। अनभिलाषी। निराकांक्षी।

अनिंद*–वि० दे० "अनिंद्य"।
अनिंद्य–वि० पु० [सं०] १. जो निंदा के योग्य न हो। निर्दोष। २. उत्तम। अच्छा।
अनित्य–वि० [सं०] [स्त्री० अनित्या। संज्ञा अनित्यत्व, अनित्यता] १ जो सब दिन न रहे। अस्थायी। क्षणभंगुर। २. नश्वर। नाशवान्। ३ जो स्वयं कार्य रूप हो और जिसका कोई कारण हो। ४. असत्य। झूठा।
अनित्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनित्य अवस्था। अस्थिरता। २. नश्वरता।
अनिद्र–वि० [सं०] निद्रारहित। जिसे नींद न आवे।
संज्ञा पु० नींद न आने का रोग।
अनिप*–संज्ञा पु० [हिं० अनी=सेना + प=स्वामी] सेनापति। सेनाध्यक्ष।
अनिमा*–संज्ञा स्त्री० दे० "अणिमा"।
अनिमिष, अनिमेष–वि० [सं०] स्थिर दृष्टि। टकटकी के साथ।
क्रि० वि० १. बिना पलक गिराए। एक टक। २. निरंतर।
अनियंत्रित–वि० [सं०] १. प्रतिबंध रहित। बिना रोक टोक का। २. मनमाना।
अनियत–वि० [सं०] १. जो नियत न हो। अनिश्चित। २ अस्थिर। अदृढ। ३. अपरिमित। असीम।
अनियम–संज्ञा पु० [सं०] नियम का अभाव। व्यतिक्रम। अव्यवस्था।
अनियमित–वि० [सं०] १. नियमरहित। अव्यवस्थित। बेक़ायदा। २ अनिश्चित। अनिर्दिष्ट।
अनियाउ*–संज्ञा पु० दे० "अन्याय"।
अनियारा*–वि० [सं० अणि=नोक + हिं० आर (प्रत्य०)] [स्त्री० अनियारी] नुकीला। पैना। धारदार। तीक्ष्ण।
अनिरुद्ध–वि० [सं०] जो रोका हुआ न हो। अबाध। बेरोक।
संज्ञा पु० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र जिनको ऊषा ब्याही थी।
अनिर्दिष्ट–वि० [सं०] १. जो बताया न गया हो। अनिर्धारित। २. अनिश्चित। ३. असीम।
अनिर्देश्य–वि० [सं०] जिसके विषय में ठीक बतलाया न जा सके। अनिर्वचनीय।

अनिर्वचनीय-वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय।
अनिर्वाच्य-वि० [सं०] १. जो बतलाया न जा सके। २. जो चुनाव के अयोग्य हो।
अनिल-संज्ञा पु० [सं०] वायु। हवा।
अनिलकुमार-संज्ञा पु० [सं०] हनुमान्।
अनिवार्य-वि० [सं०] १. जिसका निवारण न हो। जो हटे नहीं। २. जो अवश्य हो। ३. जिसके बिना काम न चल सके।
अनिश्चित-वि० [सं०] जिसका निश्चय न हुआ हो। अनियत। अनिर्दिष्ट।
अनिष्ट-वि० [सं०] जो इष्ट न हो। अनभिलषित। अवांछित।
संज्ञा पु० अमंगल। अहित। बुराई। खराबी।
अनी-संज्ञा स्त्री० [सं० अणि = अग्रभाग, नोक] १ नोक। सिरा। कोर। २. किसी चीज़ का अगला सिरा। नोक।
संज्ञा स्त्री० [सं० अनीक = समूह] १ समूह। झुंड। दल। २. सेना। फ़ौज।
संज्ञा स्त्री० [हिं० आन = मर्यादा] ग्लानि।
अनीक-संज्ञा पु० [सं०] १ सेना। फ़ौज। २. समूह। झुंड। ३. युद्ध। लड़ाई।
वि० [सं० अ + हिं० नीक = अच्छा] जो अच्छा न हो। बुरा। खराब।
अनीठ-वि० [सं० अनिष्ट] १. जो इष्ट न हो। अप्रिय। २. बुरा। खराब।
अनीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अन्याय। बेइंसाफ़ी। २. शरारत। ३. अंधेर। अत्याचार।
अनीश-वि० [सं०] [स्त्री० अनीशा] १. बिना मालिक का। २. अनाथ। असमर्थ। ३. सबसे श्रेष्ठ।
संज्ञा पु० १. विष्णु। २. जीव। माया।
अनीश्वरवाद-संज्ञा पु० [सं०] १. ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास। नास्तिकता। २. मीमांसा।
अनीश्वरवादी-वि० [सं०] १. ईश्वर को न माननेवाला। नास्तिक। २. मीमांसक।
अनीस-संज्ञा पुं० [सं० अनीश] जिसका कोई रक्षक न हो। अनाथ।
अनु-उप० [सं०] एक उपसर्ग। जिस शब्द के पहले यह उपसर्ग लगता है, उसमें इन अर्थों का संयोग करता है—१. पीछे। जैसे-अनुगामी। २ सदृश। जैसे-अनुकूल। अनुरूप। ३. साथ। जैसे—अनुपान। ४ प्रत्येक। जैसे—अनुक्षण। ५. बार-बार। जैसे—अनुशीलन।
अव्य० हाँ। ठीक है।
अनुकंपा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दया। कृपा। अनुग्रह। २. सहानुभूति। हमदर्दी।
अनुकंपित-वि० [सं०] जिस पर कृपा की गई हो। अनुगृहीत।
अनुकरण-संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनुकरणीय, अनुकृत] १. देखादेखी कार्य। नकल। २. वह जो पीछे उत्पन्न हो या आवे।
अनुकर्त्ता-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अनुकर्त्री] १. अनुकरण या नक़ल करनेवाला। २. आज्ञाकारी।
अनुकार-संज्ञा पु० दे० "अनुकरण"।
अनुकारी-वि० [सं० अनुकारिन्] [स्त्री० अनुकारिणी] १. अनुकरण। २. नक़ल करनेवाला। ३ आज्ञाकारी।
अनुकूल-वि० [सं०] १. मुआफ़िक़। २. पक्ष में रहनेवाला। सहायक। ३. प्रसन्न।
संज्ञा पु० १. वह नायक जो एक ही विवाहिता स्त्री में अनुरक्त हो। २. एक काव्यालंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखाई जाती है।
अनुकूलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अप्रतिकूलता। अविरुद्धता। २ पक्षपात। सहायता। ३. प्रसन्नता।
अनुकूलना-क्रि० स० [सं० अनुकूलन] १. मुआफ़िक़ होना। २. हितकर होना। ३. प्रसन्न होना।
अनुकृत-वि० [सं०] अनुकरण या नक़ल किया हुआ।
अनुकृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देखादेखी कार्य। नक़ल। २. वह काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु का कारणांतर से दूसरी वस्तु के अनुसार हो जाना वर्णन किया जाय।
अनुक्त-वि० [सं०] [स्त्री० अनुक्ता] अकथित। बिना कहा हुआ।
अनुक्रम-संज्ञा पु० [सं०] क्रम। सिलसिला।
अनुक्रमणिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रम। सिलसिला। २. सूची। फ़िहरिस्त।
अनुक्रिया-संज्ञा स्त्री० दे० "अनुक्रम"।
अनुक्षण-क्रि० वि० [सं०] १. प्रतिक्षण। २. लगातार। निरंतर।

अनुग, अनुगत-वि० [सं०] [संज्ञा अनुगति] १. अनुगामी। अनुयायी। २ अनुकूल। मुआफ़िक।
संज्ञा पु० सेवक। नौकर।

अनुगति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुगमन। अनुसरण। २ अनुकरण। नकल। ३. मरण।

अनुगमन-संज्ञा पु० [सं०] १ पीछे चलना। अनुसरण। २ समान आचरण। ३. विधवा का मृत पति के साथ जल मरना।

अनुगामी-वि० [सं०] [स्त्री० अनुगामिनी] १. पीछे चलनेवाला। २. समान आचरण करनेवाला। ३ आज्ञाकारी।

अनुगुण-संज्ञा पु० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु के पूर्व गुण का दूसरी वस्तु के संसर्ग से बढ़ना दिखाया जाय।

अनुगृहीत-वि० [सं०] १. जिस पर अनुग्रह किया गया हो। उपकृत। २. कृतज्ञ।

अनुग्रह-संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनुगृहीत, अनुग्रही, अनुग्राहक] १. कृपा। दया। २. अनिष्ट निवारण। ३ सरकारी रिआयत।

अनुग्राहक-वि० [सं०] [स्त्री० अनुग्राहिका] अनुग्रह करनेवाला। कृपालु। उपकारी।

अनुग्राही-वि० दे० "अनुग्राहक"।

अनुचर-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अनुचरी] १ दास। नौकर। २. सहचारी। साथी।

अनुचित-वि० [सं०] अयुक्त। नामुनासिब। बुरा। खराब।

अनुज-वि० [सं०] जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। संज्ञा पु० [स्त्री० अनुजा] छोटा भाई।

अनुज्ञा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आज्ञा। हुक्म। इजाज़त। २. एक काव्यालंकार जिसमें दूषित वस्तु में कोई गुण देखकर उसके पाने की इच्छा का वर्णन किया जाता है।

अनुताप-संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनुतप्त] १. तपन। दाह। जलन। २. दुःख। रंज। ३. पछतावा। अफ़सोस।

अनुत्तर-वि० [सं०] निरुत्तर। कायल।

अनुदात्त-वि० [सं०] १. छोटा। तुच्छ। २. नीचा (स्वर)। लघु (उच्चारण)। ३. स्वर के तीन भेदों में से एक।

अनुदिन-क्रि० वि० [सं०] नित्यप्रति। प्रतिदिन। रोज़मर्रा।

अनुधावन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनुधावक, अनुधावित] १. पीछे चलना। अनुसरण। २. अनुकरण। नकल। ३. अनुसंधान।

अनुनय-संज्ञा पु० [सं०] १. विनय। विनती। प्रार्थना। २ मनाना।

अनुनासिक-वि० [सं०] जो (अक्षर) मुँह और नाक से बोला जाय। जैसे ङ, ञ, ण।

अनुपम-वि० [सं०] [संज्ञा अनुपमता] उपमारहित। बेजोड़।

अनुपमेय-वि० दे० "अनुपम"।

अनुपयुक्त-वि० [सं०] अयोग्य। बेठीक।

अनुपयुक्तता-संज्ञा स्त्री० [सं०] अयोग्यता।

अनुपयोगिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] उपयोगिता का अभाव। निरर्थकता।

अनुपयोगी-वि० [सं०] बेकाम। व्यर्थ का।

अनुपस्थित-वि० [सं०] जो सामने मौजूद न हो। अविद्यमान। ग़ैरहाज़िर।

अनुपस्थिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अविद्यमानता। ग़ैरमौजूदगी।

अनुपात-संज्ञा पु० [सं०] गणित की त्रैराशिक क्रिया।

अनुपातक-संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्महत्या के समान पाप। जैसे, चोरी, झूठ बोलना।

अनुपान-संज्ञा पु० [सं०] वह वस्तु जो औषध के साथ या ऊपर से खाई जाय।

अनुप्रास-संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार बार आता है। वर्णवृत्ति। वर्णमैत्री।

अनुबंध-संज्ञा पु० [सं०] १. बंधन। लगाव। २ आगापीछा। ३ आरंभ।

अनुभव-संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनुभवी] १. वह ज्ञान जो साक्षात् करने से प्राप्त हो। २. परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान। तजरबा।

अनुभवना-क्रि० स० [सं० अनुभव] अनुभव करना।

अनुभवी-वि० [सं० अनुभविन्] अनुभव रखनेवाला। तजरबेकार। जानकार।

अनुभाव-संज्ञा पुं० [सं०] १. महिमा। बड़ाई। २. काव्य में रस के चार योजकों में से एक। चित्त के भाव को प्रकाश करनेवाली कटाक्ष, रोमांच आदि चेष्टाएँ।

अनुभावी-वि० [सं० अनुभाविन्] [स्त्री० अनुभाविनी] १. जिसे अनुभव या संवेदना हो। २. वह साक्षी जिसने सब बातें ख़ुद देखी-सुनी हों। चश्मदीद गवाह।

अनुभूत-वि० [सं०] १. जिसका अनुभव या साक्षात् ज्ञान हुआ हो। २ परीक्षित।

तजरबा किया हुआ।
अनुभूति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुभव। परिज्ञान। बोध।
अनुमति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आज्ञा। हुक्म। २ सम्मति। इजाजत।
अनुमान-संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनुमित] १. अटकल। अदाजा। कयास। २ न्याय में प्रमाण के चार भेदों में से एक जिससे प्रत्यक्ष साधन के द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना हो।
अनुमानना -क्रि० स० [सं० अनुमान] अनुमान करना। अदाज़ा करना।
अनुमित-वि० [सं०] अनुमान किया हुआ।
अनुमिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुमान।
अनुमेय -वि० [सं०] अनुमान के योग्य।
अनुमोदन-संज्ञा पु० [सं०] १. प्रसन्नता का प्रकाशन। खुश होना। २ समर्थन।
अनुयायी-वि० [सं० अनुयायिन्] [स्त्री० अनुयायिनी] १ अनुगामी। पीछे चलनेवाला। २ अनुकरण करनेवाला।
संज्ञा पु० अनुचर। सेवक। दास।
अनुरंजन-संज्ञा पु० [सं०] १ अनुराग। प्रीति। २ दिलबहलाव।
अनुरक्त-वि० [सं०] १ अनुरागयुक्त। आसक्त। २ लीन।
अनुराग-संज्ञा पु० [सं०] प्रीति। प्रेम।
अनुरागना -क्रि० स० [सं० अनुराग] प्रीति करना। प्रेम करना।
अनुरागी-वि० [सं० अनुरागिन्] [स्त्री० अनुरागिनी] अनुराग रखनेवाला। प्रेमी।
अनुराध-संज्ञा पु० [सं०] विनती। विनय।
अनुराधना -क्रि० स० [सं० अनुराध] विनय करना। मनाना।
अनुराधा-संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में १७ वाँ नक्षत्र।
अनुरूप-वि० [सं०] १ तुल्य रूप का। सदृश। समान। २ योग्य। उपयुक्त।
अनुरूपता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ समानता। सादृश्य। २ अनुकूलता। उपयुक्तता।
अनुरोध-संज्ञा पु० [सं०] १ रुकावट। बाधा। २ प्रेरणा। उत्तेजना। ३ विनयपूर्वक किसी बात के लिये हठ। आग्रह। दबाव।
अनुलेपन-संज्ञा पु० [सं०] १ किसी तरल वस्तु की तह चढाना। लेपन। २ उबटन बटना लगाना। ३ लीपना।
अनुलोम-संज्ञा पु० [सं०] १ ऊँच से नीचे की ओर आने का क्रम। उतार का सिलसिला। २ संगीत में सुरों का उतार। अवरोही।
अनुलोम विवाह-संज्ञा पु० [सं०] उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से किसी नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह।
अनुवर्त्तन-संज्ञा पु० [सं०] १ अनुसरण। अनुगमन। २ अनुकरण। समान आचरण। ३ किसी नियम का कई स्थानों पर बार बार लगाना।
अनुवर्त्ती-वि० [सं० अनुवर्तिन्] [स्त्री० अनुवर्तिनी] अनुसरण करनेवाला। अनुयायी। अनुगामी।
अनुवाक-संज्ञा पु० [सं०] १ ग्रंथविभाग। अध्याय या प्रकरण का एक भाग। २ वेद के अध्याय का एक अंश।
अनुवाद-संज्ञा पु० [सं०] १ पुनरुक्ति। फिर कहना। दोहराना। २ भाषांतर। उल्था। तर्जुमा। ३ वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात का फिर फिर कथन हो। (न्याय)
अनुवादक-संज्ञा पु० [सं०] अनुवाद या भाषांतर करनेवाला। उल्था करनेवाला।
अनुवादित-वि० [सं० अनुवाद] अनुवाद किया हुआ।
अनुवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पद के पहले अंश से कुछ वाक्य उसके पिछले अंश में अर्थ को स्पष्ट करने के लिये लाना।
अनुशयाना-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो अपने प्रिय के मिलने के स्थान के नष्ट हो जाने से दुखी हो।
अनुशासक-संज्ञा पु० [सं०] १ आज्ञा या आदेश देनेवाला। हुक्म देनेवाला। २ उपदेष्टा। शिक्षक। ३ देश या राज्य का प्रबंध करनेवाला।
अनुशासन-संज्ञा पु० [सं०] १ आदेश। आज्ञा। हुक्म। २ उपदेश। शिक्षा। ३ व्याख्यान। विवरण।
अनुशीलन-संज्ञा पु० [सं०] १ चिंतन। मनन। विचार। २ पुन पुन अभ्यास।
अनुषंग-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आनुषंगिक] १ करुणा। दया। २ संबंध। लगाव। ३. प्रसंग से एक वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना।

अनुष्टुप्–संज्ञा पुं० [सं०] ३२ अक्षरों का एक वर्ण छंद।

अनुष्ठान–संज्ञा पु० [सं०] १. कार्य्य का आरंभ। २. नियमपूर्वक कोई काम करना। ३. शास्त्रविहित कर्म करना। ४. फल के निमित्त किसी देवता का आराधन। प्रयोग। पुरश्चरण।

अनुसंधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीछे लगना। २. खोज। ढूँढ़। जाँच पड़ताल। तहक़ीक़ात। ३. चेष्टा। कोशिश।

अनुसंधानना*–क्रि० स० [सं० अनुसन्धान] १. खोजना। ढूँढ़ना। २. सोचना।

अनुसरण–संज्ञा पु० [सं०] १. पीछे या साथ चलना। २. अनुकरण। नक़ल। ३. अनुकूल आचरण।

अनुसरना–क्रि० स० [सं० अनुसरण] १. पीछे या साथ साथ चलना। २. अनुकरण करना। नक़ल करना।

अनुसार–वि० [सं०] अनुकूल। सदृश। समान। मुआफ़िक़।

अनुसारना–क्रि० स० [सं० अनुसरण] १. अनुसरण करना। २. आचरण करना। ३. कोई कार्य्य करना।

अनुसारी–वि० [सं० अनुसार] अनुसरण या अनुकरण करनेवाला।

अनुसाल*–संज्ञा पु० [सं० अनु + हिं० सालना] वेदना। पीड़ा।

अनुस्वार–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर के पीछे उच्चारण होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण, जिसका चिह्न (ं) है। निगृहीत। २. स्वर के ऊपर की बिंदी।

अनुहरत*–वि० [हिं० अनुहरना का कृदंत रूप] १. अनुसार। अनुरूप। समान। २. उपयुक्त। योग्य। अनुकूल।

अनुहरना*–क्रि० स० [सं० अनुहरण] १. अनुकरण या नकल करना। २. समान होना।

अनुहरिया‡–दे० "अनुहार"। संज्ञा स्त्री० आकृति। सुरतानी।

अनुहार–वि० [सं०] १. सदृश। तुल्य। समान। २. अनुसार। अनुकूल। संज्ञा स्त्री० १. भेद। प्रकार। २. मुखानी। आकृति। ३. सादृश्य।

अनुहारना*–क्रि० स० [सं० अनुहारण] तुल्य करना। सदृश करना। समान करना।

अनुहारी–वि० [सं० अनुहारिन्] [स्त्री० अनुहारिणी] अनुकरण या नकल करनेवाला।

अनूठा–वि० [सं० अनुत्थ] [स्त्री० अनूठी] १. अनोखा। विचित्र। विलक्षण। अद्भुत। २. अच्छा। बढ़िया।

अनूठापन–संज्ञा पु० [हिं० अनूठा + पन (प्रत्य०)] १. विचित्रता। विलक्षणता। २. सुंदरता। अच्छापन।

अनूढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह बिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो।

अनूतर–वि० दे० "अनुत्तर"।

अनूदित–वि० [सं०] १. कहा हुआ। किया हुआ। २. तर्जुमा किया हुआ। भाषांतरित। उल्था किया हुआ।

अनूप–संज्ञा पुं० [सं०] जलप्राय देश। वह स्थान जहाँ जल अधिक हो। वि० [सं० अनुपम] १. जिसकी उपमा न हो। बेजोड़। २. सुंदर। अच्छा।

अनृत–संज्ञा पु० [सं०] १. मिथ्या। असत्य। झूठ। २. अन्यथा। विपरीत।

अनेक–वि० [सं०] एक से अधिक। बहुत। ज्यादा।

अनेकार्थ–वि० [सं०] जिसके बहुत से अर्थ हों।

अनेग वि० दे० "अनेक"।

अनेरा–वि० [सं० अनृत] [स्त्री० अनेरी] १. झूठ। व्यर्थ। निष्प्रयोजन। २. झूठा। ३. अन्यायी। दुष्ट। ४. निकम्मा। क्रि० वि० व्यर्थ। फ़जूल।

अनैक्य–संज्ञा पुं० [सं०] एका न होना। मतभेद। फूट।

अनैठ‡–संज्ञा पुं० [सं० अन् + पण्यस्थ] वह दिन जिसमें बाज़ार बंद रहे। 'पैंठ' का उल्टा।

अनैस*‡–संज्ञा पुं० [सं० अनिष्ट] बुराई। वि० बुरा। खराब।

अनैसना –क्रि० अ० [हिं० अनैस] बुरा मानना। रूठना।

अनैसा*–वि० [हिं० अनैस] [स्त्री० अनैसी] अप्रिय। बुरा। खराब।

अनैसे*–क्रि० वि० [हिं० अनैस] बुरे भाव से।

अनैहा*–संज्ञा पुं० [हिं० अनैस] उत्पात।

अनोखा–वि० [सं० अन् + ईक्ष] [स्त्री० अनोखी] १. अनूठा। निराला। विलक्षण। विचित्र। २. नया। ३. सुंदर। खूबसूरत।

अनोखापन–संज्ञा पुं० [हिं० अनोखा + पन

(प्रत्य०)] १. अनूठापन। निरालापन। विलक्षणता। विचित्रता। २. नयापन। ३. सुंदरता। खूबसूरती।

अनौचित्य-संज्ञा पुं० [सं०] उचित बात का अभाव। अनुपयुक्तता।

अनौट-संज्ञा पुं० दे० "अनवट"।

अन्न-संज्ञा पुं० [सं०] १. खाद्य पदार्थ। २. अनाज। धान्य। दाना। गल्ला। ३. पकाया हुआ अन्न। भात। ४ सूर्य। ५ पृथ्वी। ६. प्राण। जल।

* वि० [सं० अन्य] दूसरा। विरुद्ध।

अन्नकूट-संज्ञा पुं० [सं०] एक उत्सव जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यंत किसी दिन होता है। इसमें अनेक प्रकार के भोजनों का भोग भगवान् को लगाते हैं।

अन्नक्षेत्र-संज्ञा पुं० दे० "अन्नसत्र"।

अन्नजल-संज्ञा पुं० [सं०] १. दाना पानी। खाना-पानी। खान-पान।

मुहा०—अन्न-जल त्यागना या छोड़ना = उपवास करना।

२. आबदाना। जीविका।

अन्नदाता-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अन्नदात्री] १. अन्नदान करनेवाला। २. पोषक। प्रतिपालक। ३ मालिक। स्वामी।

अन्नपूर्णा-संज्ञा स्त्री० [सं०] अन्न की अधिष्ठात्री देवी। दुर्गा का एक रूप।

अन्नप्राशन-संज्ञा पुं० [सं०] बच्चों को पहिले पहिल अन्न चटाने का संस्कार।

अन्नमय कोश-संज्ञा पुं० [सं०] पंच कोशों में से प्रथम। अन्न से बना हुआ त्वचा से लेकर वीर्य तक का समुदाय। स्थूल शरीर। (वेदांत)

अन्नसत्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ भूखों को मुफ्त भोजन दिया जाता है।

अन्ना-संज्ञा स्त्री० [सं० अम्बा] दाई। धाय।

अन्य-वि० [सं०] दूसरा। और कोई। भिन्न। गैर

अन्यतः-क्रि० वि० [सं०] १. किसी और से। २. किसी और स्थान से।

अन्यत्र-क्रि० वि० [सं०] और जगह। दूसरी जगह।

अन्यथा-वि० [सं०] १. विपरीत। उलटा। विरुद्ध। २. असत्य। झूठ।

अव्य० नहीं तो।

[illegible] -संज्ञा स्त्री० [सं०] न्याय में एक दोष जिसमें यथार्थ कारण दिखाकर किसी बात की सिद्धि की जाय।

अन्यपुरुष-संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरा आदमी। गैर। २. व्याकरण में वह पुरुष जिसके संबंध में कुछ कहा जाय। जैसे 'यह', 'वह'।

अन्यमनस्क-वि० [सं०] जिसका जी न लगता हो। उदास। चिंतित। अनमना।

अन्यसंभोगदुःखिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अन्य स्त्री में अपने प्रिय के संभोग-चिह्न देखकर दुःखित हो।

अन्यसुरतिदुःखिता-संज्ञा स्त्री० दे० "अन्य-संभोग दुःखिता"।

अन्यापदेश-संज्ञा पुं० दे० "अन्योक्ति"।

अन्याय-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्यायी] १. न्याय-विरुद्ध आचरण। अनीति। बेइन्साफी। २ अंधेर। ३. जुल्म।

अन्यायी-वि० [सं० अन्यायिन्] अन्याय करनेवाला। ज़ालिम।

अन्यारा-वि० [सं० अ + हिं० न्यारा] १. जो पृथक न हो। जो जुदा न हो। २. अनोखा। निराला। ३. खूब। बहुत।

अन्योक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कथन जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जाय। अन्यापदेश।

अन्योदर्य-वि० [सं०] दूसरे के पेट से पैदा। 'सहोदर' का उलटा।

अन्योन्य-सर्व० [सं०] परस्पर। आपस में। संज्ञा पुं० वह काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं की किसी क्रिया या गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना कहा जाय।

अन्योन्याभाव-संज्ञा पुं० [सं०] किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु न होना।

अन्योन्याश्रय-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्योन्याश्रित] १. परस्पर का सहारा। एक दूसरे की अपेक्षा। २. न्याय में एक वस्तु के ज्ञान के लिये दूसरी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा। सापेक्ष ज्ञान।

अन्वय-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्वयी] १ परस्पर संबंध। तारतम्य। २. संयोग। मेल। ३. पद्यों के शब्दों को वाक्यरचना के नियमानुसार यथास्थान रखने का कार्य। ४. अवकाश। खाली स्थान। ५. कार्य-कारण का संबंध। ६. वंश। खानदान। ७. एक

बात की सिद्धि से दूसरी बात की सिद्धि का संबध।
अन्वित–वि० [स०] युक्त। शामिल।
अन्वीक्षण–सज्ञा पु० [स०] १. गौर। विचार। २. खोज। तलाश।
अन्वीक्षा–सज्ञा स्त्री० [स०] १ ध्यानपूर्वक देखना। २. खोज। तलाश।
अन्वेषक–वि० [स०] [स्त्री० अन्वेषिका] खोजनेवाला। तलाश करनेवाला।
अन्वेषण–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० अन्वेषणा] अनुसधान। खोज। ढूँढ़। तलाश।
अन्वेषी–वि० [स० अन्वेषिन्] [स्त्री० अन्वेषिणी] खोजनेवाला। तलाश करनेवाला।
अन्हवाना*–क्रि० स० [हिं० नहाना] स्नान कराना। नहलाना।
अन्हाना*†–क्रि० अ० दे० "नहाना"।
अप–सज्ञा पु० [स०] जल। पानी।
अपंग–वि० [स० अपाग] १ अगहीन। २ लँगड़ा। लूला। ३. अशक्त। बेबस।
अप–उप० [स०] उलटा। विरुद्ध। बुरा। अधिक। यह उपसर्ग जिस शब्द के पहिले आता है उसके अर्थ में निम्नलिखित विशेषता उत्पन्न करता है। १. निषेध। जैसे अपमान। २ अपकृष्ट (दूषण)। जैसे अपकर्म। ३ विकृति। जैसे अपाग। ४. विशेषता। जैसे अपहरण।
सर्व० आप का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में) जैसे—अपस्वार्थी। अपकाजी।
अपकर्त्ता–सज्ञा पु० [स] [स्त्री० अपकर्त्री] १. हानि पहुँचानेवाला। २ पापी।
अपकर्म–सज्ञा पु० [स०] बुरा काम। कुकर्म। पाप।
अपकर्ष–सज्ञा पु० [स०] १ नीचे को खींचना। गिराना। २. घटाव। उतार। ३ बेकदरी। निरादर। अपमान।
अपकाजी–वि० [हिं० आप+काज] स्वार्थी। मतलबी।
अपकार–सज्ञा पु० [स०] १. बुराई। अनुपकार। हानि। नुकसान। अहित। २ अनादर। अपमान।
अपकारक–वि० [स०] १ अपकार करनेवाला। हानिकारी। २. विरोधी। द्वेषी।
अपकारी–वि० [स० अपकारिन्] [स्त्री० अपकारिणी] १. हानिकारक। बुराई करनेवाला। २ विरोधी। द्वेषी।
अपकारीचार*–वि० [स० अपकार+आचार] हानि पहुँचानेवाला। निप्रकारी।
अपकीरति*–सज्ञा स्त्री० दे० "अपकीर्त्ति"।
अपकीर्त्ति–सज्ञा स्त्री० [स०] अपयश। अयश। बदनामी। निंदा।
अपकृत–वि० [स०] १. जिसका अपकार किया गया हो। २. अपमानित। ३ जिसका विरोध किया गया हो। 'उपकृत' का उलटा।
अपकृति–सज्ञा स्त्री० दे० "अपकार"।
अपकृष्ट–वि० [स०] [सज्ञा अपकृष्टता] १ गिरा हुआ। पतित। भ्रष्ट। २. अधम। नीच। ३. बुरा। खराब।
अपक्रम–सज्ञा पु० [स०] व्यतिक्रम। क्रमभंग। गड़बड़। उलट पलट।
अपक्व–वि० [स०] [सज्ञा अपक्वता] १. बिना पका हुआ। कच्चा। २ अनभ्यस्त। असिद्ध। जैसे, अपक्व बुद्धि।
अपघात–सज्ञा पु० [स०] [वि० अपघातक, अपघाती] १. हत्या। हिंसा। २. विश्वासघात। धोखा।
सज्ञा पु० [हिं० अप=अपना+घात=मार] आत्महत्या। आत्मघात।
अपच–सज्ञा पु० [स०] अजीर्ण।
अपचार–सज्ञा पु० [स०] [वि० अपचारी] १ अनुचित वर्त्ताव। बुरा आचरण। २. अनिष्ट। बुराई। ३ निंदा। अपयश। ४. कुपथ्य। स्वास्थ्य नाशक व्यवहार।
अपचाल–सज्ञा पु० [हिं० अप+चाल] कुचाल। खोटाई। नटखटी।
अपची–सज्ञा स्त्री० [स०] गटमाला रोग का एक भेद।
अपछरा*–सज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा"।
अपजय–सज्ञा स्त्री० [स०] पराजय। हार।
अपजस†*–सज्ञा पु० दे० "अपयश"।
अपटन†–सज्ञा पु० दे० "उबटन"।
अपटु–वि० [स०] [सज्ञा अपटुता] १. जो पटु न हो। २ सुस्त। आलसी।
अपठ–वि० [स०] १. अपढ़। जो पढ़ा न हो। २ मूर्ख।
अपठमान*–वि० [स० अपठमान] १. जो न पढ़ा जाय। २. न पढ़ने योग्य।
अपडर*–सज्ञा पु० [स० अप+डर] भय। शंका।
अपडरना*–क्रि० अ० [हिं० अपडर] भयभीत होना। डरना।

अपड़ाना*–क्रि० अ० [सं० अपर] [संज्ञा अपड़ाव] १. खींचा-तानी करना। २. रार या झगड़ा करना।

अपड़ाव–संज्ञा पुं० [सं० अपर] [क्रि० अपड़ाना] झगड़ा। रार। तकरार।

अपढ़–वि० [सं० अपठ] बिना पढ़ा। मूर्ख। अनपढ़।

अपत–वि० [सं० अ=नहीं+पत्र] १. पत्रहीन। बिना पत्तों का। २. आच्छादन-रहित। नग्न।

वि० [सं० अपात्र] अधम। नीच।

वि० [अ+पत=लज्जा, प्रतिष्ठा] निर्लज्ज।

अपतई*–संज्ञा पुं० [हिं० अपत] १. निर्लज्जता। बेहयाई। २. ढिठाई। उत्पात। ३. चंचलता।

अपताना–संज्ञा पुं० [हिं० अप=अपना+तानना] जंजाल। प्रपंच।

अपति–वि० स्त्री० [सं० अ+पति] बिना पति की। विधवा।

वि० [सं० अ+पति=गति] पापी। दुष्ट।

संज्ञा स्त्री० १. दुर्गति। दुर्दशा। २. अनादर। अपमान।

अपत्य–संज्ञा पुं० [सं०] संतान। औलाद।

अपथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. बीहड़ राह। विकट मार्ग। २. कुपथ। कुमार्ग।

अपथ्य–वि० [सं०] १. जो पथ्य न हो। स्वास्थ्य-नाशक। २. अहितकर।

संज्ञा पुं० रोग बढ़ानेवाला आहार-विहार।

अपद–संज्ञा पुं० [सं०] बिना पैर के रेंगनेवाले जंतु; जैसे, साँप, केचुआ आदि।

अपदेखा–वि० [हिं० आप+देखना] १. अपने को बड़ा माननेवाला। आत्मश्लाघी। घमंडी। २. स्वार्थी।

अपद्रव्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकृष्ट वस्तु। बुरी चीज। २. बुरा धन।

अपन–सर्व० दे० "अपना"। "हम"।

अपनपौ–संज्ञा पुं० [हिं० अपना+पौ (प्रत्य०)] १. अपनायत। आत्मीयता। संबंध। २. आत्मभाव। आत्मस्वरूप। ३. संज्ञा। सुध। होश। ज्ञान। ४. अहंकार। गर्व। ५. मर्य्यादा।

अपनयन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपनीत] १. दूर करना। हटाना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ३. गणित के समीकरण में किसी परिमाण को एक पक्ष से दूसरे पक्ष में ले जाना। ४. खंडन।

अपना–सर्व० [सं० आत्मन्] [क्रि० अपनाना] निज का। (*तीनों पुरुषों में*)

संज्ञा पुं० आत्मीय। स्वजन।

मुहा०–अपना सा करना=अपने सामर्थ्य या विचार के अनुसार करना। भर सक करना। **अपना सा मुँह लेकर रह जाना**=किसी बात में असफल होने पर लज्जित होना। **अपनी अपनी पड़ना**=अपनी अपनी चिंता में व्यग्र होना। **अपने तक रखना**=किसी से न कहना।

यौ०–अपने आप=स्वयं। स्वतः। खुद।

अपनाना–क्रि० स० [हिं० अपना] १. अपने अनुकूल करना। अपनी ओर करना। २. अपना बनाना। अपनी शरण में लेना। ३. अपने अधिकार में करना।

अपनापन–संज्ञा पुं० [हिं० अपना] १. अपनायत। आत्मीयता। २. आत्माभिमान।

अपनायत–संज्ञा स्त्री० [हिं० अपना] आत्मीयता। अपनापन। अपने से संबंध।

अपभय–संज्ञा पुं० [सं०] १. निर्भयता। २. व्यर्थ भय। ३. डर। भय।

वि० [सं०] निर्भय। जो न डरे।

अपभ्रंश–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपभ्रंशित] १. पतन। गिराव। २. बिगाड़। विकृति। ३. बिगड़ा हुआ शब्द।

वि० विकृत। बिगड़ा हुआ।

अपमान–संज्ञा पुं० [सं०] १. अनादर। अवज्ञा। २. तिरस्कार। बेइज्जती।

अपमानना*–क्रि० स० [सं० अपमान] अपमान करना। तिरस्कार करना।

अपमानित–वि० [सं०] १. निंदित। २. बेइज्जत।

अपमानी–वि० [सं० अपमानिन्] [स्त्री० अपमानिनी] निरादर करनेवाला। तिरस्कार करनेवाला।

अपमृत्यु–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुमृत्यु। कुसमय मृत्यु। जैसे–साँप आदि के काटने से मरना।

अपयश–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपकीर्त्ति। बदनामी। बुराई। २. कलंक। लांछन।

अपरंच–अव्य० [सं०] १. और भी। २. फिर भी। पुनः।

अपरंपार*–वि० [सं० अपर+हिं० पार] जिसका पारावार न हो। असीम। बेहद।

अपर–वि० [सं०] [स्त्री० अपरा] १. पहिला।

पूर्व का। २. पिछला। ३. अन्य। दूसरा।
अपरछन‡-वि० [सं० अप्रच्छन्न या अपरिच्छन्न] १. आवरण-रहित। जो ढका न हो। २. [सं० प्रच्छन्न] आवृत। छिपा। गुप्त।
अपरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] परायापन। संज्ञा स्त्री० [सं० अ = नहीं + परता = परायापन] भेद-भाव शून्यता। अपनापन।
‡ † वि० [हिं० अप + रत] स्वार्थी।
अपरती-संज्ञा स्त्री० [हिं० अप + सं० रति] १. स्वार्थ। २. बेईमानी।
अपरत्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. पिछलापन। अर्वाचीनता। २. परायापन। बेगानगी।
अपरना‡-संज्ञा स्त्री० दे० "अपर्णा"।
अपरलोक-संज्ञा पुं० [सं०] परलोक। स्वर्ग।
अपरस-वि० [सं० अ + स्पर्श] १ जिसे किसी ने छूआ न हो। २. न छूने योग्य। संज्ञा पुं० एक चर्मरोग जो हथेली और तलवे में होता है।
अपरांत-संज्ञा पुं० [सं०] पश्चिम का देश।
अपरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अध्यात्म या ब्रह्मविद्या के अतिरिक्त अन्य विद्या। लौकिक विद्या। पदार्थविद्या। २. पश्चिम दिशा।
अपराजिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विष्णु-क्रांता लता। कोवाठोंठी। कोयल। २. दुर्गा। ३ अयोध्या का एक नाम। ४. चौदह अक्षरों के एक वृत्त का नाम।
अपराध-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपराधी] १ दोष। पाप। कसूर। जुर्म। २. भूल। चूक।
अपराधी-वि० पुं० [सं० अपराधिन्] [स्त्री० अपराधिनी] दोषी। पापी। मुलजिम।
अपराह्न-संज्ञा पुं० [सं०] दो पहर के पीछे का काल। तीसरा पहर।
अपरिग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] १. दान का न लेना। दान-त्याग। २. आवश्यक धन से अधिक का त्याग। विराग। ३. योगशास्त्र में पाँचवाँ यम। संगत्याग।
अपरिचय-संज्ञा पुं० [सं०] परिचय का अभाव।
अपरिचित-वि० [सं०] १ जिसे परिचय न हो। जो जानता न हो। अनजान। २. जो जाना बूझा न हो। अज्ञात।
अपरिच्छिन्न-वि० [सं०] १. जिसका विभाग न हो सके। अभेद्य। २. मिला हुआ। ३. असीम। सीमा-रहित।
अपरिणामी-वि० [सं० अपरिणामिन्] [स्त्री० अपरिणामिनी] १. परिणामरहित। विकार-शून्य। जिसकी दशा या रूप में परिवर्तन न हो। २. निष्फल। व्यर्थ।
अपरिपक्व-वि० [सं०] १. जो पक्का न हो। कच्चा। २. अधकचा। अधकचरा।
अपरिमित-वि० [सं०] १. असीम। बेहद। २. असंख्य। अगणित।
अपरिमेय-वि० [सं०] १. बेअंदाज। अकूत। २. असंख्य। अनगिनत।
अपरिहार-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपरिहारित, अपरिहार्य्य] १. अवर्जन। अनिवा-र्य्य। २. दूर करने के उपाय का अभाव।
अपरिहार्य्य-वि० [सं०] १. जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके। अनि-वार्य्य। २. अत्याज्य। न छोड़ने योग्य। ३ आदरणीय। ४. न छीनने योग्य। ५. जिसके बिना काम न चले।
अपरूप-वि० [सं०] १ बदशक्ल। भद्दा। बेडौल। २. अद्भुत। अपूर्व।
अपर्णा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. दुर्गा।
अपलक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] कुलक्षण। बुरा चिह्न।
अपवर्ग-संज्ञा पुं० [सं०] १. मोक्ष। निर्वाण। मुक्ति। २. त्याग। ३. दान।
अपवश‡-वि० [हिं० अप + सं० वश] अपने अधीन। अपने वश का। 'परवश' का उलटा।
अपवाद-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपवादित] १. विरोध। प्रतिवाद। खंडन। २. निंदा। अपकीर्ति। ३. दोष। पाप। ४. वह नियम जो व्यापक नियम से विरुद्ध हो। उत्सर्ग का विरोधी। मुस्तसना। ५. सम्मति। राय। ६ आदेश। आज्ञा।
अपवादक, अपवादी-वि० [सं०] १. निंदक। २. विरोधी। बाधक।
अपवारण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपवारित] १. व्यवधान। रोक। आड़। २. हटाने या दूर करने का कार्य्य। ३. अंतर्धान।
अपवित्र-वि० [सं०] जो पवित्र न हो। अशुद्ध। नापाक। मलिन।
अपवित्रता-संज्ञा स्त्री० [सं०] अशुद्धि। अशौच। मैलापन। नापाकी।
अपविद्ध-वि० [सं०] १. त्यागा हुआ। छोड़ा

हुआ। २ बेधा हुआ। विद्ध।
सुत-सज्ञा पु० वह पुत्र जिसको उसके माता पिता ने त्याग दिया हो और किसी दूसरे ने पुत्रवत् पाला हो। (स्मृति)
अपव्यय-सज्ञा पु० [स०] १ निरर्थक व्यय। फजूलखर्ची। २ बुरे कामों में खर्च।
अपव्ययी-वि० [स० अपव्ययिन्] अधिक खर्च करनेवाला। फजूलखर्च।
अपशकुन-सज्ञा पु० [स०] कुसगुन। असगुन। बुरा शकुन।
अपशब्द-सज्ञा पु० [स०] १ अशुद्ध शब्द। २ बिना अर्थ का शब्द। ३ गाली। कुवाक्य। ४ पाद। गोज।
अपसगुन*-सज्ञा पु० दे "अपशकुन"।
अपसना-क्रि० अ० [स० अपसरण] १ खिस कना। सरकना। भागना। २ चल देना।
अपसर-वि० [हिं० अप=अपना + सर (प्रत्य०)] आपही आप। मनमाना। अपने मन का।
अपसर्जन-सज्ञा पु० [स०] विसर्जन। त्याग।
अपसव्य-वि० [स०] १ 'सव्य' का उलटा। दहिना। दक्षिण। २ उलटा। विरुद्ध। ३ जनेऊ दहिने कंधे पर रक्खे हुए।
अपसोस-सज्ञा पु० दे० "अफसोस"।
अपसोसना-क्रि० अ० [हिं० अपसोस] सोच करना। अफसोस करना।
अपसौन*-सज्ञा पु० [स० अपशकुन] असगुन। बुरा सगुन।
अपसौना†-क्रि० अ० [?] आना। पहुँचना।
अपस्नान-सज्ञा पु० [स०] [वि० अपस्नात] वह स्नान जो प्राणी के कुटुंबी उसके मरने पर करते हैं। मृतकस्नान।
अपस्मार-सज्ञा पु० [स०] एक रोग जिसमें रोगी काँपकर पृथ्वी पर मूर्छित हो गिर पड़ता है। मिरगी।
अपस्वार्थी-वि० [हिं० अप + स० स्वार्थ] स्वार्थ साधनेवाला। मतलबी। खुदगरज।
अपह-वि० [स०] नाश करनेवाला। विनाशक। जैसे क्लेशापह।
अपहत-वि० [स०] १ नष्ट किया हुआ। मारा हुआ। २ दूर किया हुआ।
अपहरण-सज्ञा पु० [स०] [वि० अपहरणीय अपहरित अपहृत अपहर्ता] १ छीनना। ले लेना। हर लेना। लूट। २ चोरी। ३ छिपाव। संगोपन।
न।*-क्रि० स० [स० अपहरण] १ छीनना। ले लेना। लूटना। २ चुराना। ३ कम करना। घटाना। क्षय करना।
अपहर्ता-सज्ञा पु० [स०] १ छीननेवाला। हर लेनेवाला। ले लेनेवाला। २ चोर। लूटनेवाला। ३ छिपानेवाला।
अपहास-सज्ञा पु० [स०] १ उपहास। २ अकारण हँसी।
अपहृत-वि० [स०] छीना हुआ। चुराया हुआ। लूटा हुआ।
अपह्नव-सज्ञा पु० [स०] १ छिपाव। दुराव। २ मिस। बहाना। टाल-मटूल।
अपह्नुति-सज्ञा स्त्री० [स०] १ दुराव। छिपाव। २ बहाना। टाल-मटूल। ३ वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापन किया जाय।
अपांग-सज्ञा पु० [स०] आँख का कोना। आँख की कोर। कटाक्ष।
वि० अंगहीन। अंगभंग।
अपात्र-वि० [स०] १ अयोग्य। कुपात्र। २ मूर्ख। ३ श्राद्धादि में निमंत्रण के अयोग्य (ब्राह्मण)।
अपादान-सज्ञा पु० [स०] १ हटाना। अलगाव। विभाग। २ व्याकरण में पाँचवाँ कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारंभ सूचित होता है। इसका चिह्न 'से' है। जैसे "घर से"।
अपान-सज्ञा पु० [स०] १ दस या पाँच प्राणों में से एक। २ गुदास्थ वायु जो मल मूत्र को बाहर निकालती है। ३ वह वायु जो तालु से पीठ तक और गुदा से उपस्थ तक व्याप्त है। ४ वह वायु जो गुदा से निकले। ५ गुदा।
सज्ञा पु० [हिं० अपना] १ आत्मभाव। आत्मतत्व। आत्मज्ञान। २ आपा। आत्मगौरव। भरम। ३ सुध। होश हवास। ४ अहम्। अभिमान। घमंड।
सर्व० दे० "अपना"।
अपान वायु-सज्ञा पु० [स०] १ पाँच प्रकार की वायु में से एक। २ गुदास्थ वायु। पाद।
अपाना†-सर्व० दे० "अपना"।
अपामार्ग-सज्ञा पु० [स०] चिचड़ा।
अपाय-सज्ञा पु० [स०] १ विश्लेष। अलगाव। २ अपगमन। पीछे हटना। ३ नाश। ४ अन्यथाचार। अनरीति।

वि० [सं० अ=नहीं + हिं० पाय=पैर] १ बिना पैर का। लँगडा। अपाहिज। २ निरुपाय। असमर्थ।
अपार-वि० [सं०] १ सीमारहित। अनंत। असीम। बेहद। २ असंख्य। अतिशय।
अपार्थ-सज्ञा पु० [सं०] कविता म वाक्यार्थ स्पष्ट न होने का दोष।
अपाव*-सज्ञा पु० [सं० अपाय=नाश] अन्याचार। अन्याय। उपद्रव।
अपावन-वि० पु० [सं०] [स्त्री अपावनी] अपवित्र। अशुद्ध। मलिन।
अपाहिज-वि० [सं० अपभग प्रा० अपग्ग] १ अगभग। लुज। लूला-लँगडा। २ काम करन के अयोग्य। ३ आलसी।
अपि-अव्य० [सं०] १ भी। ही। २ निश्चय। ठीक।
अपितु-अव्य० [सं०] १ किंतु। २ बल्कि।
अपिधान-सज्ञा पु० [सं०] आच्छादन। आवरण। ढक्कन।
अपीच-वि० [सं० अपिच्य] सुंदर।
अपील-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ निवेदन। विचारार्थ प्रार्थना। २ मातहत अदालत के फैसले के विरुद्ध ऊँची अदालत में फिर से विचार के लिये अभियोग उपस्थित करना।
अपुत्र-वि० [सं०] निःसंतान। पुत्रहीन।
अपुनपौ*-सज्ञा पु० दे० "अपनपौ"।
अपुनीत-वि० [सं०] १ अपवित्र। अशुद्ध। २ दूषित। दोषयुक्त।
अपूठना-क्रि० स० [सं० अ=नहीं+पृष्ठ] १ विध्वस या नाश करना। २ उलटना।
अपूठा-वि० [सं० अपुष्ट] अपरिपक्व। अजानकार। अनभिज्ञ।
वि० [सं० अस्फुट] अविकसित। बखिला।
अपूत-वि० [सं०] अपवित्र। अशुद्ध।
*वि० [हिं० अ+पूत] पुत्रहीन। निपूता।
सज्ञा पु० कुपूत। बुरा लड़का।
अपूर*-वि० [सं० आपूर्ण] पूरा। भरपूर।
अपूरना-क्रि० स० [सं० आपूरण] १ भरना। २ फूँकना। बजाना। (शख)
अपूरब*-वि० दे० "अपूर्व"।
अपूरा-सज्ञा पु० [सं० आ+पूर्ण] [स्त्री० अपूरी] भरा हुआ। फैला हुआ। व्याप्त।
अपूर्ण-वि० [सं०] १ जो पूर्ण या भरा न हो। २ अधूरा। असमाप्त। ३ कम।
अपूर्णता-सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अधूरापन। २ न्यूनता। कमी।
अपूर्णभूत-सज्ञा पु० [सं०] व्याकरण म क्रिया का वह भूत काल जिसम क्रिया की समाप्ति न पाई जाय। जैसे-वह खाता था।
अपूर्व-वि० [सं०] १ जो पहले न रहा हो। २ अद्भुत। अनोखा। विचित्र। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।
अपूर्वता-सज्ञा स्त्री० [सं०] विलक्षणता। अनोखापन।
अपूर्वरूप-सज्ञा पु० [सं०] वह काव्यालकार जिसम पूर्व गुण की प्राप्ति का निषेध हो।
अपेक्षा-सज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अपेक्षित] १ आकाक्षा। इच्छा। अभिलाषा। चाह। २ आवश्यकता। जरूरत। ३ आश्रय। भरोसा। आशा। ४ कार्य कारण का अन्योन्य संबंध। ५ तुलना। मुकाबिला।
अपेक्षाकृत-अव्य० [सं०] मुकाबले म। तुलना में।
अपेक्षित-वि० [सं०] १ जिसकी अपेक्षा हो। जिसकी आवश्यकता हो। आवश्यक। २ इच्छित। वाछित। चाहा हुआ।
अपेय-वि० [सं०] न पीने योग्य।
अपेल-वि० [सं०] [अ=नहीं+पाड= दबाना] जो हटे या टले नहीं। अटल।
अपोगंड-वि० [सं०] १ सोलह वर्ष के ऊपर की अवस्थावाला। २ बालिग।
अप्रकाशित-वि० [सं०] १ जिसम उजाला न हो। अँधेरा। २ जो प्रकट न हुआ हो। गुप्त। छिपा हुआ। ३ जो सर्वसाधारण के सामने न रक्खा गया हो। ४ जो छापकर प्रचलित न किया गया हो।
अप्रकृत-वि० [सं०] १ अस्वाभाविक। २ बनावटी। कृत्रिम। ३ झूठा।
अप्रचलित-वि० [सं०] जो प्रचलित न हो। अव्यवहृत। अप्रयुक्त।
अप्रतिभ-वि०[सं०]१ प्रतिभाशून्य। चेष्टाहीन। उदास। २ स्फूर्तिशून्य। सुस्त मंद। ३ मतिहीन। निर्बुद्धि। ४ लजीला।
अप्रतिभा-सज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिभा का अभाव। २ न्याय म एक निग्रह-स्थान।
अप्रतिम-वि० [सं०] अद्वितीय। अनुपम।
अप्रतिष्ठा-सज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अप्रतिष्ठित] १ अनादर। अपमान। २ अपयश। अपकीर्ति।

अप्रत्यक्ष-वि० [स०] १. जो प्रत्यक्ष न हो। परोक्ष। २. छिपा। गुप्त।
अप्रमेय-वि० [स०] १. जो नापा न जा सके। अपरिमित। अपार। अनंत। २. जो प्रमाण से न सिद्ध हो सके।
अप्रयुक्त-वि० [स०] जो काम में न लाया गया हो। अव्यवहृत।
अप्रसन्न-वि० [स०] १. असंतुष्ट। नाराज। २. खिन्न। दुखी। उदास।
अप्रसन्नता-संज्ञा स्त्री० [स०] १ नाराजगी। असंतोष। २. रोष। कोप। ३. खिन्नता।
अप्रसिद्ध-वि० [स०] १. जो प्रसिद्ध न हो। अविख्यात। २. गुप्त। छिपा हुआ।
अप्रस्तुत-वि० [स०] १. जो प्रस्तुत या मौजूद न हो। अनुपस्थित। २. जिसकी चर्चा न आई हो।
संज्ञा पु० उपमान।
अप्रस्तुत प्रशंसा-संज्ञा स्त्री० [स०] वह अलंकार जिसमें अप्रस्तुत के कथन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाय।
अप्राकृत-वि० [स०] जो प्राकृत न हो। अस्वाभाविक। असाधारण।
अप्राप्त-वि० [स०] १. जो प्राप्त न हो। दुर्लभ। अलभ्य। २. जिसे प्राप्त न हुआ हो। ३. अप्रत्यक्ष। परोक्ष। अप्रस्तुत।
अप्राप्तव्यवहार-वि० [स०] सोलह वर्ष से कम का (बालक)। नाबालिग़।
अप्राप्य-वि० [स०] जो प्राप्त न हो सके। अलभ्य।
अप्रामाणिक-वि० [स०] [स्त्री० अप्रमाणिकी] १. जो प्रमाण से सिद्ध न हो। ऊटपटाँग। २ जिस पर विश्वास न किया जा सके।
अप्रासंगिक-वि० [स०] प्रसंग-विरुद्ध। जिसकी कोई चर्चा न हो।
अप्रिय-वि० पुं० [स०] १. अरुचिकर। जो न रुचे। २. जिसकी चाह न हो।
अप्सरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अबुकण। वाष्पकण। २. वेश्याओं की एक जाति। ३. स्वर्ग की वेश्या। इंद्र की सभा में नाचने-वाली देवांगना। परी।
अफ़ग़ान-संज्ञा पु० [अ०] अफ़ग़ानिस्तान का रहनेवाला। काबुली।
अफ़यून-संज्ञा स्त्री० दे० "अफ़ीम"।
अफरना-क्रि० अ० [सं० स्फार] १. पेट भर खाना। भोजन से तृप्त होना। २. पेट का फूलना। ३. ऊबना और अधिक की इच्छा न रखना।
अफरा-संज्ञा पुं० [सं० स्फार] अजीर्ण या वायु से पेट फूलना।
अफराना*-क्रि० अ० [हिं० अफरना] भोजन से तृप्त करना।
अफल-वि० [स०] १. फलहीन। निष्फल। २. व्यर्थ। निष्प्रयोजन। ३ बाँझ।
अफ़वाह-संज्ञा स्त्री० [अ०] उड़ती ख़बर। बाज़ारू ख़बर। किंवदंती। गप्प।
अफ़सर-संज्ञा पु० [अं० आफिसर] १ प्रधान। मुखिया। २. अधिकारी। हाकिम।
अफ़सरी-संज्ञा स्त्री० १ [हिं० अफसर] अधिकार। प्रधानता। २. हुकूमत। शासन।
अफ़साना-संज्ञा पु० [फा०] क़िस्सा। कहानी। कथा।
अफ़सोस-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शोक। रंज। २ पश्चात्ताप। खेद। पछतावा। दुःख।
अफ़ीम-संज्ञा स्त्री० [यू० ओपियन, अ० अफ़यून] पोस्त के ढोंड का गोंद जो कडुआ, मादक और विष होता है।
अफ़ीमची-संज्ञा पु० [हिं० अफ़ीम + ची(प्रत्य०)] वह पुरुष जिसे अफ़ीम खाने की लत हो।
अफ़ीमी-वि० [हिं० अफ़ीम] अफ़ीमची।
अब-क्रि० वि० [सं० अथ, अद्य] इस समय। इस क्षण। इस घड़ी।
मुहा०†-अब की = इस बार। अब जाकर = इतनी देर पीछे। अब तब लगना या होना = मरने का समय निकट पहुँचना।
अबख़रा-संज्ञा पु० [अ०] भाप। बाष्प।
अबटन†-संज्ञा पु० दे० "उबटन"।
अबतर-वि० [फा०] [संज्ञा अबतरी] १. बुरा। खराब। २. बिगड़ा हुआ।
अबद्ध-वि० [स०] १. जो बँधा न हो। मुक्त। २. स्वच्छंद। निरंकुश।
अबध-वि० [स० अबाध] १. अचूक। जो खाली न जाय। २. जो रोका न जा सके।
अबधू*-वि० [स० अबोध] अज्ञानी। अबोध। संज्ञा पु० [स० अवधूत] त्यागी। विरागी।
अबध्य-वि० [स०] [स्त्री० अबध्या] १. जिसे मारना उचित न हो। २. जिसे शास्त्रानुसार प्राणदंड न दिया जा सके। जैसे, स्त्री ब्राह्मण। ३. जिसे कोई मार न सके।
अबर*-वि० [सं० अबल] निर्बल। कमज़ोर।
अबरक-संज्ञा पुं० [स० अभ्रक] १. एक धातु

जिसकी तहें काँच की तरह चमकीली होती है। भोडल। भोड़र। २. एक प्रकार का पत्थर।

अवरन*–वि० [सं० अवर्ण्य] जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय।
वि० [सं० अवर्ण] १. बिना रूप रंग का। वर्णशून्य। २. एक रंग का नहीं। भिन्न।
*संज्ञा पुं० दे० "आवरण"।

अवरस–संज्ञा पुं० [फा०] १. घोड़े का एक रंग जो सब्ज़ से कुछ खुलता हुआ सफ़ेद होता है। २. इस रंग का घोड़ा।

अवरा–संज्ञा पुं० [फा०] १.'अस्तर' का उलटा। दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला। उपल्ला। उपल्ली। २ न खुलनेवाली गाँठ। उलझन।

अवरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक प्रकार का धारीदार चिकना कागज़। २. एक पीला पत्थर जो पच्चीकारी के काम में आता है। ३ एक प्रकार की लाह की रँगाई।

अवरू–संज्ञा स्त्री० [फा०] भौंह। भ्रू।

अवल–वि० [सं०] निर्बल। कमज़ोर।

अवलख–वि० [सं० अवलक्ष] सफ़ेद और काले अथवा सफ़ेद और लाल रंग का। कबरा। दोरंगा।
संज्ञा पुं० वह घोड़ा या बैल जिसका रंग सफ़ेद और काला हो।

अवलखा–संज्ञा पुं० [सं० अवलक्ष] एक प्रकार का काला पक्षी।

अवला–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।

अववाव–संज्ञा पुं० [अ०] वह अधिक कर जो सरकार मालगुज़ारी पर लगाती है।

अवा–संज्ञा पुं० [अ०] अंगे से नीचा एक ढीला-ढाला पहनावा।

अवाती*–वि० [सं० अ+वात] १ बिना वायु का। २. जिसे वायु न हिलाती हो। ३. भीतर-भीतर सुलगनेवाला।

अवादान–वि० [अ० आबाद] बसा हुआ। पूर्ण। भरा पूरा।

अवादानी–संज्ञा स्त्री० [फा० आबादानी] १. पूर्णता। बस्ती। २ शुभचिंतकता। ३ चहल-पहल। रौनक।

अवाध–वि० [सं०] १. बाधारहित। बेरोक। २ निर्विघ्न। ३. अपार। अपरिमित। बेहद। ४. जो असगत न होता हो।

अवाधित–वि० [सं०] १. बाधारहित। बेरोक। २. स्वच्छंद। स्वतंत्र।

अवाध्य–वि० [सं०] १. बेरोक। जो रोका न जा सके। २. अनिवार्य।

अवान*–वि० [सं० अ+हिं० बाना] शस्त्ररहित। हथियार छोड़े हुए। निहत्था।

अवाबील–संज्ञा स्त्री० [फा०] काले रंग की एक चिड़िया। कृष्णा। कन्हैया।

अवार*–संज्ञा स्त्री० [सं० अ=बुरा+वेला=समय] देर। बेर। विलंब।

अवास –संज्ञा पुं० [सं० आवास] रहने का स्थान। घर। मकान।

अवीर–संज्ञा पुं० [अ०] ·[वि० अवीरी] रंगीन बुकनी या अबरक का चूर जिसे लोग होली में इष्ट मित्रों पर डालते हैं।

अवीरी–वि० [अ०] अबीर के रंग का। कुछ कुछ स्याही लिए लाल रंग का।
संज्ञा पुं० अबीरी रंग।

अवूझ–वि० [सं० अबुद्ध] अबोध। नासमझ। नादान।

अवे–अव्य० [सं० अयि] अरे। हे। (छोटे या नीच के लिये संबोधन)
मुहा०—अबे तबे करना=निरादरसूचक वाक्य बोलना।

अवेर*–संज्ञा स्त्री० [सं० अवेला] विलंब।

अवेश*–वि० [फा० बेश] अधिक। बहुत।

अवोध–संज्ञा पुं० [सं०] अज्ञान। मूर्खता।
वि० [सं०] अनजान। नादान। मूर्ख।

अवोल*–वि० [सं० अ=नहीं+हिं० बोल] १. मौन। अवाक्। २. जिसके विषय में बोल या कह न सकें। अनिर्वचनीय।
संज्ञा पुं० कुबोल। बुरा बोल।

अवोला–संज्ञा पुं० [सं० अ=नहीं+हिं० बोलना] रंज से न बोलना। रूठने के कारण मौन।

अब्ज–संज्ञा पुं० [सं०] १. जल से उत्पन्न वस्तु। २. कमल। ३. शंख। ४. हिज्जल। ईजड़। ५. चंद्रमा। ६. धन्वंतरि। ७. कपूर। ८. सौ करोड़। अरब।

अब्जा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

अब्द–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २. मेघ। बादल। ३. आकाश।

अब्धि–संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। सागर।

२. सरोवर। ताल। ३. सात की संख्या।

अब्धिज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अब्धिजा] १. समुद्र से पैदा हुई वस्तु। २. शंख। ३. चंद्रमा। ४. अश्विनीकुमार।

अब्बास–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० अब्बासी] एक पौधा जो फूल के लिये लगाया जाता है। गुले अब्बास। गुलाबाँस।

अब्बासी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मिस्र देश की एक प्रकार की कपास। २ एक प्रकार का लाल रंग।

अब्र–संज्ञा पुं० [फ़ा०] बादल। मेघ।

अब्रह्मण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कर्म जो ब्राह्मणोचित न हो। २. हिंसादि कर्म। ३. जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो।

अभंग–वि० [सं०] १. अखंड। अटूट। पूर्ण। २. अनाशवान्। न मिटनेवाला। ३. लगातार।

अभंगपद–संज्ञा पुं० [सं०] श्लेष अलंकार का एक भेद। वह श्लेष जिसमें अक्षरों को इधर उधर न करना पड़े।

अभंगी –वि० [सं० अभंगिन्] १. अभंग। पूर्ण। अखंड। २. जिसका कोई कुछ ले न सके।

अभंजन–वि० [सं०] अटूट। अखंड।

अभक्त वि० [सं०] १. भक्तिशून्य। श्रद्धाहीन। २. भगवद्विमुख। ३. जो बाँटा या अलग न किया गया हो। समूचा।

अभक्ष्य–वि० [सं०] १. असाद्य। अभोज्य। जो खाने के योग्य न हो। २. जिसके खाने का धर्मशास्त्र में निषेध हो।

अभग्न–वि० [सं०] अखंड। समूचा।

अभद्र–वि० [सं०] [संज्ञा अभद्रता] १. अमांगलिक। अशुभ। २. अशिष्ट। बेहूदा। कमीना।

अभद्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमांगलिकता। अशुभ। २. अशिष्टता। बेहूदगी।

अभय–वि० [सं०] [स्त्री० अभया] निर्भय। बेडर। बेख़ौफ़।

मुहा०–अभय देना या अभय बाँह देना = भय से बचाने का वचन देना। शरण देना।

अभयदान–संज्ञा पुं० [सं०] भय से बचाने का वचन देना। शरण देना। रक्षा करना।

अभयपद–संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ति।

अभयवचन–संज्ञा पुं० [सं०] भय से बचाने की प्रतिज्ञा। रक्षा का वचन।

अभर*–वि० [सं० अ+भार] दुर्वह। न ढोने योग्य।

अभरन*–संज्ञा पुं० दे० "आभरण"। वि० [सं० अवर्ण] अपमानित। दुर्दशाग्रस्त। ज़लील।

अभरम*–वि० [सं० अ + भ्रम] १. भ्रम न करनेवाला। अभ्रांत। २. निःशंक। निडर। क्रि० वि० निःसंदेह। निश्चय।

अभल*–वि० [सं० अ = नहीं + हिं० भला] अश्रेष्ठ। बुरा। ख़राब।

अभव्य–वि० [सं०] १. न होने योग्य। २. विलक्षण। अद्भुत। ३. अशुभ। बुरा।

अभाऊ –वि० [सं० अ = नहीं + भाव] १. जो न भावे। जो अच्छा न लगे। २. जो न सोहे। अशोभित।

अभाग* –संज्ञा पुं० दे० "अभाग्य"।

अभागा–वि० [सं० अभाग्य] [स्त्री० अभागिनी] भाग्यहीन। प्रारब्धहीन। बदक़िस्मत

अभागी–वि० [सं० अभागिन् [स्त्री० अभागिनी] १. भाग्यहीन। बदक़िस्मत। २. जो जायदाद के हिस्से का अधिकारी न हो।

अभाग्य–संज्ञा पुं० [सं०] प्रारब्धहीनता। दुर्दैव। बुरा दिन। बदक़िस्मती।

अभाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. अविद्यमानता। न होना। २. त्रुटि। टोटा। कमी। घाटा। ३. कुभाव। दुर्भाव। विरोध।

अभास*–संज्ञा पुं० दे० "आभास"।

अभि–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है–१. सामने। २. बुरा। ३. इच्छा। ४. समीप। ५. बारंबार। अच्छी तरह। ६. दूर। ७. ऊपर।

अभिक्रमण–संज्ञा पुं० [सं०] चढ़ाई। धावा।

अभिगमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पास जाना। २. सहवास। संभोग।

अभिगामी– वि० [सं०] [स्त्री० अभिगामिनी] १. पास जानेवाला। २. सहवास या संभोग करनेवाला।

अभिघात–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिघातक, अभिघाती] चोट पहुँचाना। प्रहार। मार।

अभिचार–संज्ञा पुं० [सं०] मंत्र यंत्र द्वारा मारण और उच्चाटन आदि हिंसाकर्म। पुरश्चरण।

अभिचारी–वि० [सं० अभिचारिन्] [स्त्री०

अभिचारिणी] यंत्र मंत्र आदि का प्रयोग करनेवाला।

अभिजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुल। वंश। २. परिवार। ३ जन्मभूमि। ४. वह जो घर में सब से बड़ा हो। ५. ख्याति।

अभिजात–वि० [सं०] १. अच्छे कुल में उत्पन्न। कुलीन। २ बुद्धिमान्। पंडित। ३. योग्य। उपयुक्त। ४. मान्य। पूज्य। ५ सुंदर। मनोहर।

अभिजित–वि० [सं०] विजयी।
संज्ञा पुं० [सं०] सिंघाड़े के आकार का एक नक्षत्र जिसमें तीन तारे हैं।

अभिज्ञ–वि० [सं०] १. जानकार। विज्ञ। २. निपुण। कुशल।

अभिज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिज्ञात] १. स्मृति। खयाल। २. लक्षण। पहचान। ३. निशानी। सहिदानी। परिचायक चिह्न।

अभिधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्दों के उस अर्थ को प्रकट करने की शक्ति जो उनके नियत अर्थों ही से निकलता हो।

अभिधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाम। लक्षण। २. कथन। ३. शब्दकोश।

अभिधायक–वि० [सं०] १. नाम रखनेवाला। २. कहनेवाला। ३. सूचक।

अभिधेय–वि० [सं०] १. प्रतिपाद्य। वाच्य। २. जिसका बोध नाम लेने ही से हो जाय।
संज्ञा पुं० नाम।

अभिनंदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. आनंद। २. संतोष। ३. प्रशंसा। ४. उत्तेजना। प्रोत्साहन। ५. विनीत प्रार्थना।
यौ०–अभिनंदनपत्र = वह आदर या प्रतिष्ठा-सूचक पत्र जो किसी महान् पुरुष के आगमन पर हर्ष और संतोष प्रकट करने के लिये उसे सुनाया और अर्पण किया जाता है। एड्रेस।

अभिनंदनीय–वि० [सं०] वंदनीय। प्रशंसा के योग्य।

अभिनंदित–वि० [सं०] वंदित। प्रशंसित।

अभिनय–संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरे व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा को कुछ काल के लिये धारण करना। स्वाँग। नकल। २. नाटक का खेल।

अभिनव–वि० [सं०] १. नया। नवीन। २. ताज़ा।

अभिनिविष्ट–वि० [सं०] १ धँसा हुआ। गड़ा हुआ। २. बैठा हुआ। ३ अनन्य मन से अनुरक्त। लिप्त। मग्न।

अभिनिवेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रवेश। पैठ। गति। २. मनोयोग। लीनता। एकाग्रचिंतन। ३. दृढ़ संकल्प। तत्परता। ४. योगशास्त्र में मरण के भय से उत्पन्न क्लेश। मृत्युशंका।

अभिनीत–वि० [सं०] १. निकट लाया हुआ। २. सुसज्जित। अलंकृत। ३. उचित। न्याय्य। ४ अभिनय किया हुआ। खेला हुआ (नाटक)।

अभिनेता–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अभिनेत्री] अभिनय करनेवाला व्यक्ति। स्वाँग दिखानेवाला पुरुष। नट। ऐक्टर।

अभिनेय–वि० [सं०] अभिनय करने योग्य। खेलने योग्य (नाटक)।

अभिन्न–वि० [सं०] [संज्ञा अभिन्नता] १. जो भिन्न न हो। अपृथक्। एकमय। २. मिला हुआ। सटा हुआ। संबद्ध।

अभिन्नपद–संज्ञा पुं० [सं०] श्लेष अलंकार का एक भेद।

अभिप्राय–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिप्रेत] आशय। मतलब। अर्थ। तात्पर्य।

अभिप्रेत–वि० [सं०] इष्ट। अभिलषित।

अभिभावक–वि० [सं०] १. अभिभूत या पराजित करनेवाला। २. स्तंभित कर देनेवाला। ३. वशीभूत करनेवाला। ४. ४. रक्षक। सरपरस्त।

अभिभूत–वि० [सं०] १. पराजित। हराया हुआ। २. पीड़ित। ३. जो वश में किया गया हो। वशीभूत। ४. विचलित।

अभिमंत्रण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिमंत्रित] १. मंत्र द्वारा संस्कार। २. आवाहन।

अभिमत–वि० [सं०] १. मनोनीत। वांछित। २. सम्मत। राय के मुताबिक़।
संज्ञा पुं० १. मत। सम्मति। राय। २. विचार। ३. मनचाही बात।

अभिमति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अभिमान। गर्व। अहंकार। २. वेदांत के अनुसार यह भावना कि 'अमुक वस्तु मेरी है'। ३. अभिलाषा। इच्छा। चाह। ४. मति। राय। विचार।

अभिमन्यु–संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन के पुत्र का नाम।

अभिमान–संज्ञा पुं० [सं०] वि० [अभिमानी] अहंकार। गर्व। घमंड।
अभिमानी–वि० [सं० अभिमानिन्] [स्त्री० अभिमानिनी] अहंकारी। घमंडी।
अभिमुख–क्रि० वि० [सं०] सामने। सम्मुख।
अभियुक्त–वि० [सं०] [स्त्री० अभियुक्ता] जिस पर अभियोग चलाया गया हो। मुलज़िम।
अभियोक्ता–वि० [सं०] [स्त्री० अभियोक्त्री] अभियोग उपस्थित करनेवाला। वादी। मुद्दई। फ़रियादी।
अभियोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी के किए हुए दोष या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन। नालिश। मुक़दमा। २. चढ़ाई। आक्रमण। ३. उद्योग।
अभियोगी–वि० [सं०] अभियोग चलानेवाला। नालिश करनेवाला। फ़रियादी।
अभिरना –क्रि० अ० [सं० अभि+रण= युद्ध] १. भिड़ना। लड़ना। २. टेकना। क्रि० स० मिलाना।
अभिराम–वि० [सं०] [स्त्री० अभिरामा] मनोहर। सुंदर। रम्य। प्रिय।
अभिरुचि–संज्ञा स्त्री० [सं०] अत्यंत रुचि। चाह। पसंद। प्रवृत्ति।
अभिलषित–वि० [सं०] वांछित। इष्ट। चाहा हुआ।
अभिलाख–संज्ञा पुं० दे० "अभिलाष"।
अभिलाखना –क्रि० स० [सं० अभिलषण] इच्छा करना। चाहना।
अभिलाखा –संज्ञा स्त्री० दे० "अभिलाषा"।
अभिलाष–संज्ञा पुं० [सं०] १. इच्छा। मनोरथ। कामना। चाह। २. वियोग शृंगार के अंतर्गत दस दशाओं में से एक। प्रिय से मिलने की इच्छा।
अभिलाषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। कामना। आकांक्षा। चाह।
अभिलाषी–वि० [सं० अभिलाषिन्] [स्त्री० अभिलाषिणी] इच्छा करनेवाला। आकांक्षी।
अभिवंदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रणाम। नमस्कार। २. स्तुति।
अभिवंदना–संज्ञा स्त्री० दे० "अभिवंदन"।
अभिवादन–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रणाम। नमस्कार। वंदना। २. स्तुति।
अभिव्यंजक–वि० [सं०] प्रकट करनेवाला। प्रकाशक। सूचक। बोधक।
अभिव्यक्त–वि० [सं०] प्रकट या ज़ाहिर किया हुआ। स्पष्ट किया हुआ।
अभिव्यक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकाशन। स्पष्टीकरण। साक्षात्कार। २. सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष कार्य में आविर्भाव। जैसे, बीज से अंकुर निकलना।
अभिशप्त–वि० [सं०] १. शापित। जिसे शाप दिया गया हो। २. जिस पर मिथ्या दोष लगा हो।
अभिशाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. शाप। बद-दुआ। २. मिथ्या दोषारोपण।
अभिशापित–वि० दे० "अभिशप्त"।
अभिषंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. पराजय। २. निंदा। आक्रोश। कोसना। ३. मिथ्यापवाद। झूठा दोषारोपण। ४. दृढ़ मिलाप। आलिंगन। ५. शपथ। कसम। ६. भूत प्रेत का आवेश। ७. शोक।
अभिषिक्त–वि० [सं०] [स्त्री० अभिषिक्ता] १. जिसका अभिषेक हुआ हो। २. बाधा-शांति के लिये जिस पर मंत्र पढ़कर दूर्वा और कुश से जल छिड़का गया हो। ३. राजपद पर निर्वाचित।
अभिषेक–संज्ञा पुं० [सं०] १. जल से सिंचन। छिड़काव। २. ऊपर से जल डालकर स्नान। ३. बाधा-शांति या मंगल के लिये मंत्र पढ़कर कुश और दूब से जल छिड़कना। मार्जन। ४. विधिपूर्वक मंत्र से जल छिड़ककर राजपद पर निर्वाचन। ५. यज्ञादि के पीछे शांति के लिये स्नान। ६. शिवलिंग के ऊपर छेदवाला घड़ा रखकर धीरे धीरे पानी टपकाना।
अभिष्यंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहाव। स्राव। २. आँख आना।
अभिसंधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वंचना। धोखा। २. चुपचाप कोई काम करने के कई आदमियों की सलाह। कुचक्र। षड्यंत्र।
अभिसंधिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कलहांतरिता नायिका।
अभिसरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. आगे जाना। २. समीप गमन। ३. प्रिय से मिलने लिये जाना।
अभिसरना –क्रि० अ० [सं० अभिसरण] संचरण करना। जाना। २. कि

वांछित स्थान को जाना। ३. प्रिय से मिलने के लिये संकेत-स्थल को जाना।
अभिसार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिसारिका, अभिसारी] १. सहाय। सहारा। २. युद्ध। ३. प्रिय से मिलने के लिये नायिका या नायक का संकेत-स्थल में जाना।
अभिसारना–क्रि० अ० दे० "अभिसरना"।
अभिसारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो संकेत-स्थान में प्रिय से मिलने के लिये स्वयं जाय या प्रिय को बुलावे।
अभिसारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अभिसारिका।
अभिसारी–वि० [सं० अभिसारिन्] [स्त्री० अभिसारिका] १. साधक। सहायक। २. प्रिय से मिलने के लिये संकेत स्थल पर जानेवाला।
अभिहित–वि० [सं०] कथित। कहा हुआ।
अभी–क्रि० वि० [हिं० अब+ही] इसी क्षण। इसी समय। इसी वक्त।
अभीक–वि० [सं०] १. निर्भय। निडर। २. निष्ठुर। कठोरहृदय। ३. उत्सुक।
अभीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. गोप। अहीर। २. एक छंद।
अभीष्ट–वि० [सं०] १. वांछित। चाहा हुआ। २. मनोनीत। पसंद का। ३. अभिप्रेत। आशय के अनुकूल।
संज्ञा पुं० मनोरथ। मनचाही बात।
अभुआना–क्रि० अ० [सं० आह्वान] हाथ पैर पटकना और ज़ोर ज़ोर से सिर हिलाना जिससे सिर पर भूत आना समझा जाता है।
अभुक्त–वि० [सं०] १. न खाया हुआ। २. बिना बर्त्ता हुआ। अव्यवहृत।
अभुक्तमूल–संज्ञा पुं० [सं०] ज्येष्ठा नक्षत्र के अंत की दो घड़ी तथा मूल नक्षत्र के आदि की दो घड़ी। गडांत।
अभू†–क्रि० वि० दे० "अभी"।
अभूखन†–संज्ञा पुं० दे० "आभूषण"।
अभूत–वि० [सं०] १. जो हुआ न हो। २. वर्तमान। ३. अपूर्व। विलक्षण।
अभूतपूर्व–वि० [सं०] १. जो पहले न हुआ हो। २. अपूर्व। अनोखा।
अभेद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभेदनीय, अभेद्य] १. भेद का अभाव। अभिन्नता। एकत्व। २. एकरूपता। समानता। ३. रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक।
वि० भेदशून्य। एकरूप। समान।
*वि० दे० "अभेद्य"।
अभेदनीय–वि० [सं०] जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके।
अभेद्य–वि० [सं०] १. जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके। २. जो टूट न सके।
अभेय–संज्ञा पुं० दे० "अभेद"।
अभेरना–क्रि० स० [सं० अभि+रण] १. भिड़ाना। मिलाकर रखना। सटाना। २. मिलाना। मिश्रित करना।
अभेरा–संज्ञा पुं० [सं० अभि+रण=लड़ाई] १. रगड़ा। मुठ-भेड़। २. रगड़। टक्कर।
अभेव*–संज्ञा पुं० दे० "अभेद"।
अभौतिक–वि० [सं०] १. जो पंचभूत का न बना हो। २. अगोचर।
अभ्यंग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्यक्त, अभ्यंजनीय] १. लेपन। चारों ओर पोतना। २. शरीर में तेल लगाना।
अभ्यंतर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मध्य। बीच। २. हृदय।
क्रि० वि० भीतर। अंदर।
अभ्यर्थना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थित] १. सम्मुख प्रार्थना। विनय। दरख़ास्त। २. सम्मान के लिये आगे बढ़कर लेना। *अगवानी।*
अभ्यसित–वि० दे० "अभ्यस्त"।
अभ्यस्त–वि० [सं०] १. जिसका अभ्यास किया गया हो। बार बार किया हुआ। २. जिसने अभ्यास किया हो। दक्ष। निपुण।
अभ्यागत–वि० [सं०] १. सामने आया हुआ। २. अतिथि। पाहुना। मेहमान।
अभ्यास–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्यासी, अभ्यस्त] १. पूर्णता प्राप्त करने के लिये फिर फिर एक ही क्रिया का अवलंबन। साधन। आवृत्ति। मश्क़। २. आदत। बान। टेव।
अभ्यासी–वि० [सं० अभ्यासिन्] [स्त्री० अभ्यासिनी] अभ्यास करनेवाला। साधक।
अभ्युत्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. उठना। २. किसी बड़े के आने पर उसके आदर के लिये उठकर खड़े हो जाना। प्रत्युद्गम। ३. बढ़ती। समृद्धि। उन्नति। ४. उठान। आरंभ। उदय। उत्पत्ति।

अभ्युदय–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य आदि ग्रहों का उदय। २. प्रादुर्भाव। उत्पत्ति। ३. मनोरथ की सिद्धि। ४. विवाह आदि शुभ अवसर। ५. वृद्धि। बढ़ती।
अभ्युपगम–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्युपगत] १. सामने आना या जाना। प्राप्ति। २. स्वीकार। अंगीकार। मंजूरी। ३. बिना परीक्षा किए किसी ऐसी बात को मानकर, जिसका खंडन करना है, फिर उसकी विशेष परीक्षा करना। (न्याय)
अभ्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। बादल। २. आकाश। ३. अभ्रक धातु। ४. स्वर्ण। सोना। ५. नागरमोथा।
अभ्रक–संज्ञा पुं० [सं०] अबरक। भोडर।
अभ्रांत–वि० [सं०] १. भ्रांति-शून्य। भ्रम-रहित। २. स्थिर।
अमंगल–वि० [सं०] मंगलशून्य। अशुभ। संज्ञा पुं० अकल्याण। दुःख। अशुभ।
अमंद–वि० [सं०] १. जो धीमा न हो। तेज़। २. उत्तम। श्रेष्ठ। ३. उद्योगी।
अमका–संज्ञा पुं० [सं० अमुक] ऐसा ऐसा। अमुक। फ़लाना।
अमचूर–संज्ञा पुं० [हिं० आम + चूर] सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण। पिसी हुई आम की फाँकें।
अमड़ा–संज्ञा पुं० [सं० आम्रात] एक पेड़ जिसमें आम की तरह के छोटे छोटे खट्टे फल लगते हैं। अमारी।
अमत–संज्ञा पुं० [सं०] १. मत का अभाव। असम्मति। २. रोग। ३. मृत्यु।
अमत्त–वि० [सं०] १. मदरहित। २. बिना घमंड का। ३. शांत।
अमन–संज्ञा पुं० [अ०] १. शांति। चैन। आराम। २. रक्षा। बचाव।
अमनिया*–वि० [देश०] शुद्ध। पवित्र। अछूता।
संज्ञा स्त्री० रसोई पकाने की क्रिया। (साधु)
अमर–वि० [सं०] जो मरे नहीं। चिरजीवी। संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अमरा, अमरी] १. देवता। २. पारा। ३. हड़जोड़ का पेड़। ४. अमरकोश। ५. लिंगानुशासन नामक प्रसिद्ध कोश के कर्त्ता अमरसिं... उनचास पवनों में से एक।
अमरख*–संज्ञा पुं० [सं० अम... [स्त्री० अमरखी] १. क्रोध। कोप। रिस। † २. क्षोभ। दुःख। रंज।
अमरखी*–वि० [हिं० अमरख] क्रोधी। बुरा माननेवाला। दुखी होनेवाला।
अमरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृत्यु का अभाव। चिरजीवन। २. देवत्व।
अमरत्व–संज्ञा पुं० दे० "अमरता"।
अमरपख –संज्ञा पुं० [सं० अमरपक्ष] पितृपक्ष।
अमरपद–संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ति।
अमरपुर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अमरपुरी] अमरावती। देवताओं का नगर।
अमरबेल–संज्ञा स्त्री० [सं० अंबरवल्ली] एक पीली लता या बौर जिसमें जड़ और पत्तियाँ नहीं होतीं। आकाश-बौर।
अमरलोक–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रपुरी। देवलोक। स्वर्ग।
अमरवल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं० अंबरवल्ली] अमर-बेल। आकाश बँवर। अमर-बौरिया।
अमरस–संज्ञा पुं० दे० "अमावट"।
अमरसी–वि० [हिं० अमरस] आम के रस की तरह पीला। सुनहला।
अमराई†–संज्ञा स्त्री० [सं० आम्रराजि] आम का बाग़। आम की बारी।
अमरालय–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
अमराव †–संज्ञा पुं० दे० "अमराई"।
अमरावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की पुरी। इंद्रपुरी।
अमरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवता की स्त्री। देवकन्या। देवपत्नी। २. एक पेड़। सग। आसन। पियासाल।
अमरू–संज्ञा पुं० [अ० अह्मर = लाल ?] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
अमरूत–संज्ञा पुं० [सं० अमृत(फल)] एक पेड़ जिसका फल खाया जाता है।
अमरेश–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
अमर्याद–वि० [सं०] १. मर्यादा-विरुद्ध। बेकायदा। २. अप्रतिष्ठित।
अमर्यादा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रतिष्ठा। बेइज़्ज़ती।
अमर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अमर्षित, अमर्षी] १ ...। रिस। २. वह द्वेष या दुःख जो ... का कोई अपकार न कर सके ... उत्पन्न होता है जिसमें अपना ... हो। ३. असहि-ष्णुता।
...] क्रोध।

अमर्षी–वि० [सं० अमर्षिन्] [स्त्री०अमर्षिणी] क्रोधी। असहनशील। जल्दी बुरा माननेवाला।
अमल–वि० [सं०] १. निर्मल। स्वच्छ। २. निर्दोष। पापशून्य।
संज्ञा पुं० [अ०] १. व्यवहार। कार्य। आचरण। साधन। २. अधिकार। शासन। हुकूमत। ३. नशा। ४. आदत। बान। टेव। लत। ५. प्रभाव। असर। ६. भोगकाल। समय। वक्त।
अमलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निर्मलता। स्वच्छता। २. निर्दोषता।
अमलतास–संज्ञा पुं० [सं० अम्ल] एक पेड़ जिसमें लंबी गोल फलियाँ लगती हैं।
अमलदारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अधिकार। दखल। २. एक प्रकार की काश्तकारी जिसमें असामी को पैदावार के अनुसार लगान देनी पड़ती है। कनकूत।
अमलपट्टा–संज्ञा पुं० [अ० अमल+हिं० पट्टा] वह दस्तावेज़ या अधिकार-पत्र जो किसी प्रतिनिधि या कारिंदे को किसी कार्य्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाय।
अमलबेत–संज्ञा पुं० [सं०अम्लवेतस्] १. एक प्रकार की लता जिसकी सूखी हुई टहनियाँ खट्टी होती हैं और चूरण में पड़ती हैं। २. एक पेड़ जिसके फल की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है।
अमला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. सातला वृक्ष।
संज्ञा पुं० [अ०] कार्य्याधिकारी। कर्म्मचारी। कचहरी में काम करनेवाला।
यौ०–अमलाफैला=कचहरी के कर्मचारी।
अमली–वि० [अ०] १. अमल में आनेवाला। व्यावहारिक। २. अमल करनेवाला। कर्मण्य। ३. नशेबाज़।
अमलोनी–संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ललोणी] नोनियाँ घास। नोनी।
अमहर–संज्ञा पुं० [हिं० आम] छिले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।
अमहल॰–संज्ञा पुं० [सं० अ=नहीं+अ० महल] १. जिसके रहने का कोई एक स्थान न हो। २. व्यापक।
अमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमावास्या की कला। २. घर। ३. मर्त्य लोक।
अमातना॰–क्रि० स० [सं० आमंत्रण] आमंत्रित करना। निमंत्रण या न्योता देना।
अमात्य–संज्ञा पुं० [सं०] मंत्री। वज़ीर।
अमान–वि० [सं०] १. जिसका मान या अंदाज़ न हो। अपरिमित। बेहद। बहुत। २. गर्वरहित। निरभिमान। सीधा-सादा। ३. अप्रतिष्ठित। अनादृत। तुच्छ।
संज्ञा पुं० [अ०] १. रक्षा। बचाव। २. शरण। पनाह।
अमानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अपनी वस्तु किसी दूसरे के पास कुछ काल के लिये रखना। २. वह वस्तु जो इस प्रकार रखी जाय। थाती। धरोहर।
अमानतदार–संज्ञा पुं० [अ०] वह जिसके पास अमानत रखी जाय।
अमाना–क्रि० अ० [सं० आ=पूरा+मान] १. पूरा पूरा भरना। समाना। अँटना। २. फूलना। इतराना। गर्व करना।
अमानी–वि० [सं० अमानिन्] निरभिमान। घमंडरहित। अहंकारशून्य।
संज्ञा स्त्री० [सं० आमन्] १.वह भूमि जिसकी ज़मींदार सरकार हो। खास। २.वह ज़मीन या कोई कार्य्य जिसका प्रबंध अपने ही हाथ में हो। ३. लगान की वह वसूली जिसमें फसल के विचार से रिआयत हो।
†संज्ञा स्त्री० [सं० अ+हिं० मानना] अपने मन की काररवाई। अंधेर। मनमानी।
अमानुष–वि० [सं०] १. मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर का। २. मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध। पाशव। पैशाचिक।
संज्ञा पुं० १. मनुष्य से भिन्न प्राणी। २. देवता। ३. राक्षस।
अमानुषी–वि० [सं० अमानुषीय] १. मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध। पाशव। पैशाचिक। २. मानवी शक्ति के बाहर का।
अमाय॰–वि० दे० "अमाया"।
अमाया–वि० [सं०] १. मायारहित। निर्लिप्त। २. निष्कपट। निश्छल।
अमारी–संज्ञा स्त्री० दे० "अँबारी"।
अमार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुमार्ग। कुराह। २. बुरी चाल। दुराचरण।
अमावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० आम+सं० आवर्त] १. आम के सुखाए हुए रस की पर्त्त या तह। २. पहिना जाति की एक मछली।
अमावस–संज्ञा स्त्री० दे० "अमावास्या"।

अमावास्या–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि।
अमाह–संज्ञा पुं॰ [सं॰ अमांस] आँख के ढेले से निकला हुआ लाल मांस। नाखूना।
अमिट–वि॰ [सं॰ अ+मिटना] १. जो न मिटे। जो नष्ट न हो। स्थायी। २. जिसका होना निश्चित हो। अटल। अवश्यंभावी।
अमित–वि॰ [सं॰] १. अपरिमित। बेहद। असीम। २. बहुत अधिक।
अमिताभ–संज्ञा पुं॰ [सं॰] बुद्धदेव।
अमित्र–वि॰ [सं॰] १. शत्रु। बैरी। २ जिसका कोई दोस्त न हो। अमित्रक।
अमिय–संज्ञा पुं॰ [सं॰ अमृत] अमृत।
अमिय-मूरि–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ अमृत-मूरि] अमृतबूटी। संजीवनी जड़ी।
अमिरती–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "इमरती"।
अमिल–वि॰ [सं॰ अ=नहीं+हिं॰ मिलना] १. न मिलने योग्य। अप्राप्य। २. बेमेल। बेजोड़। ३. जिससे मेल-जोल न हो। ४. ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा।
अमिली–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "इमली"। संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ अ+मिलना] मेल या अनुकूलता न होना। विरोध। मन-मुटाव।
अमिश्रित–वि॰ [सं॰] १. जो मिलाया न गया हो। २. बेमिलावट। खालिस।
अमिष–संज्ञा पुं॰ [सं॰] १.छल का अभाव। बहाने का न होना। २. दे॰ "आमिष"। वि॰ निश्छल। जो हीलेबाज न हो।
अमी–संज्ञा पुं॰ दे॰ "अमिय"।
अमीकर–संज्ञा पुं॰ [सं॰ अमृतकर] चंद्रमा।
अमीत–संज्ञा पुं॰ [सं॰ अमित्र] शत्रु।
अमीन–संज्ञा पुं॰ [अ॰] वह अदालती कर्मचारी जिसके सिपुर्द बाहर का काम हो।
अमीर–संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. कार्याधिकार रखनेवाला। सरदार। २. धनाढ्य। दौलतमंद। ३. उदार।
अमीराना–वि॰ [अ॰] अमीरों का सा। जिससे अमीरी प्रकट हो।
अमीरी–संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] १. धनाढ्यता। दौलतमंदी। २. उदारता। वि॰ अमीर का सा। जैसे अमीरी ठाट।
अमुक–वि॰ [सं॰] फलाँ। ऐसा ऐसा। कोई व्यक्ति। (इस शब्द का किसी नाम के स्थान पर करते हैं।)

अमूर्त–वि॰ [सं॰] मूर्तिरहित। निराकार। संज्ञा पुं॰ १. परमेश्वर। २. आत्मा। ३. जीव। ४. काल। ५. दिशा। ६. आकाश। ७. वायु।
अमूर्ति–वि॰ [सं॰] मूर्तिरहित। निराकार।
अमूर्तिमान्–वि॰ [सं॰ अमूर्तिमत्] १. निराकार। २. अप्रत्यक्ष। अगोचर।
अमूल–वि॰ [सं॰] बे जड़ का। संज्ञा पुं॰ प्रकृति। (सांख्य)
अमूलक–वि॰ [सं॰] १. जिसकी कोई जड़ न हो। निर्मूल। २. असत्य। मिथ्या।
अमूल्य–वि॰ [सं॰] १. जिसका मूल्य निर्धारित न हो सके। अनमोल। २ बहुमूल्य। बेशकीमत।
अमृत–संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. वह वस्तु जिसके पीने से जीव अमर हो जाता है। सुधा। पीयूष। २. जल। ३. घी। ४. यज्ञ के पीछे की बची हुई सामग्री। ५. अन्न। ६. मुक्ति। ७. दूध। ८. औषध। ९. विष। १०. बछनाग। ११. पारा। १२. धन। १३. सोना। १४. मीठी वस्तु।
अमृतकर–संज्ञा पुं॰ [सं॰] चंद्रमा।
अमृतकुंडली–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. एक छंद। २. एक बाजा।
अमृतगति–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक छंद।
अमृतत्व–संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. मरण का अभाव। न मरना। २. मोक्ष। मुक्ति।
अमृतदान–संज्ञा पुं॰ [सं॰ अमृत+आधान] भोजन की चीजें रखने का एक प्रकार का ढक्कनेदार बर्तन।
अमृतधारा–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक वर्णवृत्त।
अमृतध्वनि–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] २४ मात्राओं का एक यौगिक छंद।
अमृतबान–संज्ञा पुं॰ [सं॰ अमृत=घी+बान] लाह का रोगन किया हुआ मिट्टी का बरतन।
अमृतमूरि–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] संजीवनी जड़ी। अमरमूर।
अमृतयोग–संज्ञा पुं॰ [सं॰] फलित ज्योतिष में एक शुभ फल-दायक योग।
अमृतसंजीवनी–वि॰ स्त्री॰ दे॰ "मृत-संजीवनी"।
अमृतांशु–[illegible] [सं॰] चंद्रमा।
अमेजना–[illegible] [फा॰ आमेजन] मिला-वट

अमेध्य-संज्ञा पुं० [सं०] अपवित्र वस्तु। विष्ठा, मल मूत्र आदि।
वि० १. जो वस्तु यज्ञ में काम न आ सके। जैसे, पशुओं में कुत्ता और अन्नों में मसूर, उर्द आदि। २. जो यज्ञ कराने योग्य न हो। ३. अपवित्र।
अमेय-वि० [सं०] १. अपरिमाण। असीम। बेहद। २. जो जाना न जा सके। अज्ञेय।
अमोघ-वि० [सं०] निष्फल न होनेवाला। अव्यर्थ। अचूक।
अमोल, अमोलक-वि० [सं० अ+हिं० मोल] अमूल्य। बहुमूल्य। क़ीमती।
अमोला-संज्ञा पुं० [सं० आम्र] आम का नया निकलता हुआ पौधा।
अमोही-वि० [सं० मोह] १ विरक्त। २. निर्मोही। निष्ठुर।
अमौआ-संज्ञा पुं० [हिं० आम+औआ (प्रत्य०)] १. आम के सूखे रस का सा रंग जो कई प्रकार का होता है; जैसे, पीला, सुनहरा, मूँगिया, इत्यादि। २. इस रंग का कपड़ा।
अम्माँ-संज्ञा स्त्री० [सं० अम्बा] माता। माँ।
अम्मामा-संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का बड़ा साफ़ा।
अम्मारी-संज्ञा स्त्री० दे० "अंबारी"।
अम्ल-संज्ञा पुं० [सं०] १. खटाई। २. तेज़ाब।
वि० खट्टा। तुर्श।
अम्लजन-संज्ञा पुं० दे० "आक्सिजन"।
अम्लपित्त-संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें जो कुछ भोजन किया जाता है, सब पित्त के दोष से खट्टा हो जाता है।
अम्लसार-संज्ञा पुं० [सं०] १. काँजी। २. चूक। ३. अमलबेत। ४ हिंताल। ५. आमलासार गंधक।
अम्लान-वि० [सं०] १. जो उदास न हो। २. निर्मल। स्वच्छ। साफ़।
अम्हौरी-संज्ञा स्त्री० [सं० अम्मस+औरी (प्रत्य०)] बहुत छोटी छोटी फुंसियाँ जो गरमी के दिनों में पसीने के कारण शरीर में निकलती हैं। अँधौरी। घमौरी।
अयं-सर्व० [सं०] यह।
अय-संज्ञा पुं० [सं०] १. लोहा। २. अस्त्र शस्त्र। हथियार। ३. अग्नि।
अयथा-वि० [सं०] १. मिथ्या। झूठ। असत्य। २. अयोग्य।
अयन-संज्ञा पुं० [सं०] १. गति। चाल। २. सूर्य या चंद्रमा की दक्षिण और उत्तर की गति या प्रवृत्ति जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। बारह राशियों के चक्र का आधा। ३. राशिचक्र की गति। ४. ज्योतिषशास्त्र। ५. एक प्रकार का सेनानिवेश (क़वायद)। ६. आश्रम। ७. स्थान। ८. घर। ९. काल। समय। १०. अंश। ११. एक यज्ञ जो अयन के प्रारंभ में होता था। १२. गाय या भैंस के थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।
अयनकाल-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह काल जो एक अयन में लगे। २. छः महीने का काल।
अयनसंक्रम-संज्ञा पुं० [सं०] मकर और कर्क की संक्रांति। अयन-संक्रांति।
अयनसंक्रांति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अयन-संक्रम।
अयनसंपात-संज्ञा पुं० [सं०] अयनांशों का योग।
अयश-संज्ञा पुं० [सं०] १. अपयश। अप-कीर्ति। २. निंदा।
अयस्कांत-संज्ञा पुं० [सं०] चुंबक।
अयाचक-वि० [सं०] १. न माँगनेवाला। जो माँगे नहीं। २. संतुष्ट। पूर्णकाम।
अयाचित-वि० [सं०] बिना माँगा हुआ।
अयाची-वि० [सं० अयाचिन्] १. अयाचक। न माँगनेवाला। २. संपन्न। धनी।
अयाच्य-वि० [सं०] १. जिसे माँगने की आवश्यकता न हो। भरा-पूरा। २. संतुष्ट। तृप्त।
अयान-वि० दे० "अजान"।
वि० [सं०] बिना सवारी का। पैदल।
अयानप, अयानपन-संज्ञा पुं० [हिं० अयान+पन] १ अज्ञानता। अनजानपन। २. भोलापन। सीधापन।
अयानी-वि० स्त्री० [हिं० अयान] [पुं० अयाना] अजान। बुद्धिहीन। अज्ञानी।
अयाल-संज्ञा पुं० [फा०] घोड़े और सिंह आदि की गर्दन के बाल। केसर।
अयि-अव्य० [सं०] संबोधन का शब्द। हे। अय। अरे। अरी।
अयुक्त-वि० [सं०] १. अयोग्य। अनुचित। बेठीक। २. असंयुक्त। अलग।

३. आपद्ग्रस्त। ४. अनमना। ५. असंबद्ध। युक्तिशून्य।
अयुक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युक्ति का अभाव। असंबद्धता। गड़बड़ी। २. योग न देना। अप्रवृत्ति।
अयुग, अयुग्म-वि० [सं०] १. विषम। ताक। २. अकेला। एकाकी।
अयुत-संज्ञा पुं० [सं०] १. दस हजार की संख्या का स्थान। २. उस स्थान की संख्या।
अयोग-संज्ञा पुं० [सं०] १. योग का अभाव। २. बुरा योग। फलित ज्योतिष के अनुसार दुष्ट ग्रह-नक्षत्रादि का पड़ना। ३. कुसमय। कुकाल। ४. कठिनाई। संकट। ५. वह वाक्य जिसका अर्थ सुगमता से न लगे। कूट। ६. अप्राप्ति। ७. असंभव।
वि० [सं०] अप्रशस्त। बुरा।
वि० [सं० अयोग्य] अयोग्य। अनुचित।
अयोग्य-वि० [सं०] १. जो योग्य न हो। अनुपयुक्त। २. नालायक। निकम्मा। अपात्र। ३. अनुचित। ना-मुनासिब।
अयोनि-वि० [सं०] १. जो उत्पन्न न हुआ हो। अजन्मा। २. नित्य।
अरंग-संज्ञा पुं० [देश०] सुगंध का झोंका।
अरंड-संज्ञा पुं० दे० "एरंड", "रेंड"।
अरंभ*-संज्ञा पुं० १. दे० "आरंभ"। २. हलचल। शोर। ३. नाद। शब्द।
अरंभना*-क्रि० अ० [सं० आ+रंभ=शब्द करना] १. बोलना। नाद करना। २. शोर करना।
क्रि० स० [सं० आरंभ] आरंभ करना।
क्रि० अ० आरंभ होना। शुरू होना।
अर*-संज्ञा पुं० [हिं० अड़] जिद। अड़।
अरक-संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी पदार्थ का रस जो भभके से खींचने से निकले। आसव। २. रस। ३. पसीना।
अरकना*-क्रि० अ० [अनु०] १. अरराकर गिरना। टकराना। २. फटना। दरकना।
अरक नाना-संज्ञा पुं० [अ०] एक अरक जो पुदीना और सिरका मिलाकर खींचने से बनता है।
अरकना बरकना*-क्रि० अ० [अनु०] इधर-उधर करना। खींचा-तानी करना।
अरकाटी-संज्ञा पुं० [आरकाट प्रदेश] वह जो कुली भरती कराकर बाहर टापुओं में भेजता है।
अरगजा-संज्ञा पुं० [हिं० अरग+जा] एक सुगंधित द्रव्य जो केसर, चंदन, कपूर आदि के मिलाने से बनता है।
अरगजी-संज्ञा पुं० [हिं० अरगजा] एक रंग जो अरगजे का सा होता है।
अरगट-वि० [हिं० अलग] पृथक्। अलग। निराला। भिन्न।
अरगनी-संज्ञा स्त्री० दे० "अलगनी"।
अरगवानी-संज्ञा पुं० [फा०] लाल रंग।
वि० १ लाल। २ बैंगनी।
अरगल-संज्ञा पुं० दे० "अर्गल"।
अरगला-संज्ञा पुं० [सं० अर्गल] १ अर्गल। २ रोक। संयम।
अरगाना*-क्रि० अ० [हिं० अलगाना] १. अलग होना। पृथक् होना। २. सन्नाटा खींचना। चुप्पी साधना। मौन होना।
क्रि० स० अलग करना। छाँटना।
अरघ-संज्ञा पुं० दे० "अर्घ"।
अरघा-संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] १. एक गावदुम पात्र जिसमें अरघ का जल रखकर दिया जाता है। २. वह आधार जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है। जलधरी। जलहरी। ३. कूएँ की जगत पर पानी के लिये बना हुआ रास्ता। चँवना।
अरघान*-संज्ञा पुं० [सं० आघ्राण] गंध। महक। आघ्राण।
अरचन*-संज्ञा पुं० दे० "अर्चन"।
अरचना-क्रि० स० [सं० अर्चन] पूजा करना।
अरचि-संज्ञा स्त्री० दे० "अर्चि"।
अरज-संज्ञा स्त्री० [अ० अर्ज] १. विनय। निवेदन। विनती। २. चौड़ाई।
अरजल-संज्ञा पुं० [अ०] १. वह घोड़ा जिसके दोनों पिछले पैर और अगला दाहिना पैर सफेद या एक रंग के हों। (ऐबी) २. नीच जाति का पुरुष। ३ वर्णसंकर।
अरजी-संज्ञा स्त्री० [अ० अर्जी] आवेदनपत्र। निवेदनपत्र। प्रार्थनापत्र।
-[[अ० अर्ज] प्रार्थी। अर्ज करनेवाला।
अरणि, अरणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वृक्ष। गनियार। अँगेथू। २. सूर्य।

३. काठ का बना हुआ एक यंत्र जिसमें यज्ञों में आग निकालते हैं। अग्निमंथ।
अरण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. कायफल। ३. संन्यासियों के दस भेदों में से एक।
अरण्यरोदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. निष्फल रोना। ऐसी पुकार जिसका सुननेवाला न हो। २. ऐसी बात जिस पर कोई ध्यान न दे।
अरति–संज्ञा स्त्री० [सं०] विराग। चित्त का न लगना।
अरथ–संज्ञा पुं० दे० "अर्थ"।
अरथाना–क्रि० स० [सं० अर्थ] समझाना। विवरण करना। व्याख्या करना।
अरथी–संज्ञा स्त्री० [सं० रथ] सीढ़ी के आकार का ढाँचा जिस पर मुर्दे को रखकर श्मशान ले जाते हैं। टिखटी।
संज्ञा पुं० [सं० अ+रथी] जो रथी न हो। पैदल।
वि० दे० "अर्थी"।
अरदना–क्रि० स० [सं० अर्दन] १. रौंदना। कुचलना। २. वध या नाश करना।
अरदली–सं० पुं०[अं० आर्डरली] वह चपरासी जो साथ में या दरवाज़े पर रहता है।
अरदास–सं० स्त्री० [फा० अर्ज़दाश्त] १. निवेदन के साथ भेंट। नज़र। २. देवता के निमित्त भेंट निकालना।
अरधंग–संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांग"।
अरधंगी–संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांगी"।
अरध–वि० दे० "अर्ध"।
क्रि० वि० [सं० अधः] अंदर। भीतर।
अरन –संज्ञा पुं० दे० "अरण्य"।
अरना–संज्ञा पुं० [सं० अरण्य] जंगली भैंसा।
क्रि० अ० दे० "अड़ना"।
अरनि–संज्ञा स्त्री० दे० "अड़नि"।
अरनी–संज्ञा स्त्री० [सं० अरणी] १. एक छोटा वृक्ष जो हिमालय पर होता है। २. यज्ञ का अग्निमंथन काष्ठ।
वि० दे० "अरणि"।
अरपन–संज्ञा पुं० दे० 'अर्पण'।
अरपना–क्रि० स० [अर्पण] अर्पण करना।
अरब–संज्ञा पुं० [सं० अर्बुद] १. सौ करोड़। २. इसकी संख्या।
संज्ञा पुं० [सं० अर्वन्] १. घोड़ा। २. इंद्र।
संज्ञा पुं० [अ०] १. एशिया खंड का एक मरु-देश। २. इस देश का उत्पन्न घोड़ा।
अरबर–वि० दे० "अड़बड़"।
अरबराना–क्रि० अ० [हिं० अरबर] १. घबराना। व्याकुल होना। विचलित होना। २. चलने में लड़खड़ाना।
अरबरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० अरबर] घबराहट। हड़बड़ी। आकुलता।
अरबी–वि० [फा०] अरब देश का।
संज्ञा पुं० १. अरबी घोड़ा। ताज़ी। ऐराक़ी। २. अरबी ऊँट। ३. अरबी बाजा। ताशा।
अरबीला–वि० [अनु०] भोलाभाला।
अरभक–वि० दे० "अर्भक"।
अरमान–संज्ञा पुं० [तु०] इच्छा। लालसा। चाह। हौसला।
अरर–अव्य० [अनु०] अत्यंत व्यग्रता तथा अचंभे का सूचक शब्द।
अरराना–क्रि० अ० [अनु०] १. अररर शब्द करना। टूटने या गिरने का शब्द करना। २. भहरा पड़ना। सहसा गिरना।
अरवा–संज्ञा पुं० [सं० अ+हिं० लावना] वह चावल जो कच्चे अर्थात् बिना उबाले धान से निकाला जाय।
संज्ञा पुं० [सं० आलय] आला। ताखा।
अरविंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। २. सारस।
अरवी–संज्ञा स्त्री० [सं० आलु] एक कंद जो तरकारी के रूप में खाया जाता है।
अरस–वि० [सं० अ+रस] १. नीरस। फीका। २. गँवार। अनाड़ी।
संज्ञा पुं० [सं० अलस] आलस्य।
संज्ञा पुं० [अ० अर्श] १. छत। पाटन। २. धरहरा। ३. महल।
अरसना–क्रि० अ० [सं० अलस] शिथिल पड़ना। ढीला पड़ना। मंद होना।
अरसना परसना–क्रि० स० [सं० स्पर्श] आलिंगन करना। मिलना। भेंटना।
अरस परस–संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] लड़कों का एक खेल। छुआ-छुई। आँखमिचौली।
संज्ञा पुं० [सं० दर्शन-स्पर्शन] देखना।
अरसा–संज्ञा पुं० [अ०] १. समय। काल। २. देर। अतिकाल। विलंब।
अरसात–संज्ञा पुं० [सं० अलस] २४ अक्षरों का एक वृत्त।

अरसाना*-क्रि० अ० [सं० अलस] १. अलसाना। २. निद्राग्रस्त होना।

अरसी-संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"।

अरसौल*-वि० [सं० अलस] आलस्यपूर्ण। आलस्य से भरा।

अरसौहाँ*-वि० दे० "अलसौहाँ"।

अरहट-संज्ञा पुं० [सं० अरघट्ट] रहट नामक यंत्र जिससे कूएँ से पानी निकालते हैं।

अरहन-संज्ञा पुं० [सं० रंधन] वह आटा या बेसन जो तरकारी आदि पकाते समय उसमें मिलाया जाता है। रेहन।

अरहना*-संज्ञा स्त्री० [सं० अर्हणा] पूजा।

अरहर-संज्ञा स्त्री० [सं० आढकी, पा० अड्ढकी] दो दल के दानों का एक अनाज जिसकी दाल खाई जाती है। तुवरी। तुअर।

अराक-संज्ञा पुं० [अ० इराक़] १. एक देश जो अरब में है। २. वहाँ का घोड़ा।

अराज-वि० [सं० अ+राजन्] १. बिना राजा का। २. बिना क्षत्रिय का।
संज्ञा पुं० [सं० अ+राजन्] अराजकता। शासन-विप्लव। हलचल।

अराजक-वि० [सं०] जहाँ राजा न हो। राजाहीन। बिना राजा का।

अराजकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा का न होना। २. शासन का अभाव। ३. अशांति। हलचल।

अराति-संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रु। २. काम, क्रोध आदि विकार। ३. छः की संख्या।

अराधन-संज्ञा पुं० दे० "आराधन"।

अराधना-क्रि० स० [सं० आराधन] १. आराधना करना। पूजा करना। २. जपना। ध्यान करना।

अरावा-संज्ञा पुं० [अ०] १. गाड़ी। रथ। २. वह गाड़ी जिस पर तोप लादी जाय। चरख।

अराम†-संज्ञा पुं० दे० "आराम"।

अरारूट-संज्ञा पुं० [अं० ऐरोरूट] १. एक पौधा जिसके कंद का आटा तीखुर की तरह काम में आता है।

अरारोट-संज्ञा पुं० दे० "अरारूट"।

अराल-वि० [सं०] कुटिल। टेढ़ा।
संज्ञा पुं० १. राल। २. मत्त हाथी।

अरावल-संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

अरि-संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रु। बैरी। २. चक्र। ३. काम, क्रोध आदि। ४. छः की संख्या। ५. लग्न से छठा स्थान। (ज्यो०) ६. विट् खदिर। दुर्गंध खैर।

अरियाना*-क्रि० स० [सं० अरे] अरे कहकर बोलना। तिरस्कार करना।

अरिल्ल-संज्ञा पुं० [सं० अरिल] सोलह मात्राओं का एक छंद।

अरिष्ट-संज्ञा पुं० [सं०] १. दुःख। पीड़ा। २. आपत्ति। विपत्ति। ३. दुर्भाग्य। अमंगल। ४. अपशकुन। ५. दुष्ट ग्रहों का योग। मरणकारक योग। ६. एक प्रकार का मद्य जो धूप में ओषधियों का खमीर उठाकर बनता है। ७. काढ़ा। ८. वृषभासुर। ९. अनिष्ट-सूचक उत्पात; जैसे, भूकंप। १०. सौरी। सूतिकागृह।
वि० [सं०] १. दृढ़। अविनाशी। २. शुभ। ३. बुरा। अशुभ।

अरिष्टनेमि-संज्ञा पुं० [सं०] १. कश्यप प्रजापति का एक नाम। २. कश्यपजी का एक पुत्र जो विनता से उत्पन्न हुआ था।

अरिहन-संज्ञा पुं० [सं० अरिघ्न] १. शत्रुघ्न।
संज्ञा पुं० दे० "अरहर"।

अरिहा-वि० [सं०] शत्रु का नाश करनेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न।

अरी-अव्य० [सं० अयि] स्त्रियों के लिये संबोधन।

अरुंधती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वशिष्ठ मुनि की स्त्री। २. दक्ष की एक कन्या जो धर्म से ब्याही गई थी। ३. एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षिमंडलस्थ वशिष्ठ के पास पड़ता है।

अरु-संयो० दे० "और"।

अरुई†-संज्ञा स्त्री० दे० "अरवी।"

अरुचि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रुचि का अभाव। अनिच्छा। २. अग्निमांद्य रोग जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती। ३. घृणा। नफ़रत।

अरुचिकर-वि० [सं०] जो रुचिकर न हो। जो भला न लगे।

अरुज-वि० [सं०] नीरोग। रोगरहित।

अरुझना-क्रि० अ० दे० "उलझना"।

अरुझाना-क्रि० स० दे० "उलझाना"।

अरुण-वि० [सं०] [स्त्री० अरुणा] लाल। रक्त।

संज्ञा पु० [सं०] १. सूर्य। २. सूर्य्य का सारथी। ३. गुड़। ४. ललाई जो संध्या सबेरे पश्चिम में दिखलाई पड़ती है। ५. एक प्रकार का कुष्ठ रोग। ६. गहरा लाल रंग। ७. कुमकुम। ८. सिंदूर। ९. एक देश। १०. माघ के महीने का सूर्य।

अरुणचूड़–संज्ञा पु० [सं०] कुक्कुट। मुर्गा।

अरुणप्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अप्सरा। २. छाया और संज्ञा, सूर्य्य की स्त्रियाँ।

अरुणशिखा–संज्ञा पु० [सं०] मुर्गा।

अरुणाई–संज्ञा स्त्री० [सं० अरुण] ललाई। रक्तता। लाली।

अरुणिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ललाई। लालिमा। सुर्खी।

अरुणोदय–संज्ञा पु० [सं०] उषाकाल। ब्राह्म मुहूर्त। तड़का। भोर।

अरुणोपल–संज्ञा पु० [सं०] पद्मराग मणि। लाल।

अरुन–वि० दे० "अरुण"।

अरुनाना:–क्रि० अ० [सं० अरुण] लाल होना।

क्रि०स० [सं० अरुण] लाल करना।

अरुनारा–वि० [सं० अरुण] लाल। लाल रंग का।

अरुरना+–क्रि० अ० [देश०] लचकना। बल खाना। मुड़ना।

अरुवा–संज्ञा पु० [सं० अरु] एक लता जिसका कंद खाया जाता है।

संज्ञा पु० [हिं० ररुआ] उल्लू पक्षी।

अरूढ़:–वि० दे० "आरूढ़"।

अरूप–वि० [सं०] रूपरहित। निराकार।

अरुलना–क्रि० अ० [सं० अरुस्=घाव, घाव] १. छिदना। घाव होना। २. पीड़ित होना।

अरे–अव्य० [सं०] १. संबोधन का शब्द। ए। ओ। २. एक आश्चर्यसूचक अव्यय।

अरेरना+–क्रि० अ० [अनु०] रगड़ना।

अरोगना–क्रि० अ० दे० "आरोगना"।

अरोच:–संज्ञा पु० दे० "अरुचि"।

अरोचक–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें अन्न आदि का स्वाद नहीं मिलता।

वि० [सं०] जो रुचे नहीं। अरुचिकर।

अरोहन:–संज्ञा पु०दे० "आरोहण"।

अरोहना:–क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।

अर्क–संज्ञा पु० [सं०] १. सूर्य्य। २. इंद्र। ३. ताँबा। ४. स्फटिक। ५. विष्णु। ६. पंडित। ७. आक। मंदार। ८. बारह की संख्या।

संज्ञा पु० [अ०] उतारा या निचोड़ा हुआ रस। दे० "अरक"।

अर्कज–संज्ञा पु० [सं०] १. सूर्य्य के पुत्र। यम। २. शनि। ३. अश्विनीकुमार। ४. सुग्रीव। ५ कर्ण।

अर्कजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य्य की कन्या, यमुना। २. तापती।

अर्क नाना–संज्ञा पु० [अ०] सिरके के साथ भभके में उतारा हुआ पुदीने का अर्क।

अर्कवृत–संज्ञा पु० [सं०] राजा का प्रजा की वृद्धि के लिये उनसे कर लेना।

अर्कोपल–संज्ञा पु० [सं०] १. सूर्य्य-कांत मणि। २. लाल। पद्मराग।

अर्गल–संज्ञा पु० [सं०] १. वह लकड़ी जिसे किवाड़ बंद करके पीछे से आड़ी लगा देते हैं। अरगल। अगरी। ब्योड़ा। २. किवाड़। ३. अवरोध। ४. कल्लोल। ५. वे रंग-बिरंग के बादल जो सूर्य्योदय या सूर्य्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम दिशा में दिखाई पड़ते हैं। ६. मास।

अर्गला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अरगल। अगरी। २. बेवँड़ा। ३. बिल्ली। किल्ली। सिटकिनी। ४. ज़ंजीर जिसमें हाथी बाँधा जाता है। ५. एक स्तोत्र जिसका दुर्गासप्तशती के आदि में पाठ करते हैं। मत्स्य-सूक्त। ६. अवरोध। ७. बाधक।

अर्घ–संज्ञा पु० [सं०] १. षोडशोपचार में से एक। जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, तंडुल और जौ को मिलाकर देवता को अर्पण करना। २. अर्घ देने का पदार्थ। ३. जलदान। सामने जल गिराना। ४. हाथ धोने के लिये जल देना। ५. मूल्य। भाव। ६. भेंट। ७. जल से सम्मानार्थ सींचना। ८ घोड़ा। ९ मधु। शहद।

अर्घपात्र–संज्ञा पु० [सं०] शंख के आकार का ताँबे का बरतन जिससे सूर्य्य आदि देवताओं को अर्घ दिया जाता है। अर्घा।

अर्घा–संज्ञा पु० [सं० अर्घ] १. अर्घपात्र। २. जलहरी।

अर्घ्य–वि० [सं०] १. पूजनीय। २. बहु-मूल्य। ३. पूजा में देने योग्य (जल, फूल, मूल आदि)। ४. भेंट देने योग्य।

अलंव -संज्ञा पु० दे० "आलंब"।
अलक-संज्ञा पु० [सं०] १. मस्तक के इधर उधर लटकते हुए बाल। केश। लट। छल्लेदार बाल। २. हरताल। ३. मदार।
अलकतरा-संज्ञा पु० [अ०] पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा काला पदार्थ।
अलकलड़ैता-वि० [हिं० अलक=बाल +लाड=दुलार] [स्त्री० अलक लड़ैती] दुलारा। लाडला।
अलकसलोरा -वि० [सं० अलक=बाल + हिं० सलोना] [स्त्री० अलकसलोरी] लाडला। दुलारा।
अलका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुबेर की पुरी। २. आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की।
अलकापति-संज्ञा पु० [सं०] कुबेर।
अलकावलि-संज्ञा स्त्री० [सं०] केशों का समूह। बालों की लटें।
अलक्त, अलक्तक-संज्ञा पु० [सं०] १. लाख। चपड़ा। २. लाह का बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं।
अलक्षित-वि० [सं०] १. अप्रकट। अज्ञात। २. अदृश्य। गायब।
अलक्ष्य-वि० [सं०] १. अदृश्य। जो न देख पड़े। गायब। २. जिसका लक्षण न कहा जा सके।
अलख-वि० [सं० अलक्ष्य] १. जो दिखाई न पड़े। अदृश्य। अप्रत्यक्ष। २. अगोचर। इंद्रियातीत। ईश्वर का एक विशेषण।
मुहा०-अलख जगाना=१. पुकारकर परमात्मा का स्मरण करना या कराना। २. परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना।
अलखधारी-संज्ञा पु० दे० "अलखनामी"।
अलखनामी-संज्ञा पु० [सं० अलक्ष्य+नाम] एक प्रकार के साधु जो भिक्षा के लिये ज़ोर ज़ोर से "अलख अलख" पुकारते हैं।
अलखित-वि० दे० "अलक्षित"।
अलग-वि० [सं० अलग्न] जुदा। पृथक्। भिन्न। अलहदा।
मुहा०-अलग करना=१. दूर करना। हटाना। २. छुड़ाना। बरखास्त करना। ३ बेलाग। बचा हुआ। रक्षित।
अलगनी-संज्ञा स्त्री० [सं० आलग्न] आड़ी रस्सी या बाँस जो कपड़े लटकाने या फैलाने के लिये घर में बाँधा जाता है। डारा।
अलगरज-वि० दे० "अलगरज़ी"।
अलगरजी-वि० [अ०] बेगरज़। बेपरवा। संज्ञा स्त्री० बेपरवाही।
अलगाना-क्रि० स० [हिं० अलग] १. अलग करना। छाँटना। जुदा करना। २ दूर करना। हटाना।
अलगोज़ा-संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार की बाँसुरी।
अलच्छ -वि० दे० "अलक्ष्य"।
अलज्ज-वि० [सं०] निर्लज्ज। बेहया।
अलता-संज्ञा पु० [सं० अलक्तक, प्रा० अलत्तअ] १. लाल रंग जो स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं। जावक। महावर। २. खमी की मूर्तेंद्रिय।
अलप -वि० दे० "अल्प"।
अलपाका-संज्ञा पु० [स्पे० एलपका] १. ऊँट की तरह का एक जानवर जो दक्षिण अमेरिका में होता है। २ इस जानवर का ऊन। ३. एक प्रकार का पतला कपड़ा।
अलफा-संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० अलफी] एक प्रकार का बिना बाँह का लंबा कुरता।
अलबत्ता-अव्य० [अ०] १. निस्संदेह। निःसंशय। बेशक। २. हाँ। बहुत ठीक। दुरुस्त। ३. लेकिन। परंतु।
अलबेला-वि० [सं० अलभ्य+हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अलबेली] १. बाँका। बना-ठना। छैला। २. अनोखा। अनूठा। सुंदर। ३. अलहड़। बेपरवाह। मनमौजी। संज्ञा पु० नारियल का बना हुक्का।
अलबेलापन-संज्ञा पु० [हिं० अलबेला+पन (प्रत्य०)] १. बाँकापन। सजधज। छैलापन। २. अनोखापन। अनूठापन। सुंदरता। ३. अलहड़पन। बेपरवाही
अलबी तलबी-संज्ञा स्त्री० [अरबी+अनु०] अरबी फ़ारसी या कठिन उर्दू। (उपेक्षा)
अलभ्य-वि० [सं०] १. न मिलने योग्य। अप्राप्य। २. जो कठिनता से मिल सके। दुर्लभ। ३. अमूल्य। अनमोल।
अलम्-अव्य० [सं०] यथेष्ट। पर्याप्त। पूर्ण।
अलम-संज्ञा पु० [अ०] १. रंज। दुःख। २. झंडा।
अलमस्त-वि० [फा०] १. मतवाला। बदहोश। बेहोश। २. बे-ग़म। बेफ़िक्र।
अलमारी-संज्ञा स्त्री० [पुर्त० अलमारियो] वह खड़ा संदूक जिसमें चीजें रखने के लिये

खाने या दर बने रहते हैं। बड़ी भंटरिया।
अलर्क–संज्ञा पु० [सं०] १. पागल कुत्ता। २. सफेद आक या मदार। ३. एक प्राचीन राजा जिसने एक अंधे ब्राह्मण के माँगने पर अपनी दोनों आँखें निकालकर दे दी थीं।
अलल-टप्पू–वि० [देश०] अटकलपच्चू। बेठिकाने का। अंडबंड।
अलल-बछेड़ा–संज्ञा पु [हिं० अल्हड़+बछेड़ा] १. घोड़े का जवान बच्चा। २. अल्हड़ आदमी।
अललाना|–क्रि० अ० [सं० अर् =बोलना] चिल्लाना। गला फाड़कर बोलना।
अलवाँती–वि० स्त्री० [सं० बालवती] (स्त्री) जिसे बच्चा हुआ हो। प्रसूता। जच्चा।
अलवाई–वि० स्त्री० [सं० बालवती] (गाय या भैंस) जिसको बच्चा जने एक या दो महीने हुए हों। "बाखरी" का उलटा।
अलवान–संज्ञा पु० [अ०] ऊनी चादर।
अलस–वि० [सं०] आलसी। सुस्त।
अलसान, अलसानि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० आलस] १. आलस्य। सुस्ती। २. शैथिल्य।
अलसाना–क्रि० अ० [सं० अलस] आलस्य में पड़ना। शिथिलता अनुभव करना।
अलसी–संज्ञा स्त्री० [सं० अतसी] १. एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है। २. उस पौधे के बीज। तीसी।
अलसेट*–संज्ञा स्त्री० [सं० अलस] [वि० अलसेटिया] १. ढिलाई। व्यर्थ की देर। २. टालमटूल। भुलावा। चकमा। ३. बाधा। अड़चन। ४. झगड़ा। तकरार।
अलसेटिया*–वि० [हिं० अलसेट] १. व्यर्थ देर करनेवाला। २ अड़चन डालनेवाला। बाधा उपस्थित करनेवाला। ३. टालमटूल करनेवाला। ४. झगड़ा करनेवाला।
अलसौहाँ–वि० [सं० अलस] [स्त्री०अलसौंही] १. आलसयुक्त। क्लांत। शिथिल। २. नींद से भरा। उनींदा।
अलहदा–वि० [अ०] जुदा। अलग। पृथक्।
अलहदी–वि० दे० "अहदी"।
अलाई–वि० [सं० आलस] आलसी। काहिल। संज्ञा पु० घोड़े की एक जाति।
अलान–संज्ञा पु० [सं० आलान] १. हाथी बाँधने का खूँटा या सिक्कड़। २. बंधन। बेड़ी। ३. बेल चढ़ाने के लिये गाड़ी हुई लकड़ी।
अलाप–संज्ञा पु० दे० "आलाप"।
अलापना–क्रि० अ० [सं० आलापन] १. बोलना। बातचीत करना। २. तान लगाना। ३. गाना।
अलापी*–वि० [सं० आलापी] बोलनेवाला। शब्द निकालनेवाला।
अलाबू–संज्ञा स्त्री० [सं०] लौवा। कद्दू। तूँबा।
अलाम*–वि० [अ० अल्लामा] बात बनानेवाला। मिथ्यावादी।
अलायक*–संज्ञा० पु० [सं० अ+अ० लायक] नालायक। अयोग्य।
अलार–संज्ञा पु० [सं०] कपाट। किवाड़। * [सं० अलात] अलाव। आग का ढेर। आँवाँ। भट्ठी।
अलाल–वि० [सं० अलस] १. आलसी। सुस्त। २. अकर्मण्य। निकम्मा।
अलाव*–संज्ञा पु० [सं० अलात] तापने के लिये जलाई हुई आग। कौड़ा।
अलावा–क्रि० वि०[अ०] सिवाय। अतिरिक्त।
अलिंग–वि० [सं०] १. लिंगरहित। बिना चिह्न का। २. जिसकी कोई पहचान बतलाई न जा सके। संज्ञा पु० १. व्याकरण में वह शब्द जो दोनों लिंगों में व्यवहृत हो। जैसे—हम, तुम, मैं, वह, मित्र। २. ब्रह्म।
अलिंजर–संज्ञा पु० [सं०] पानी रखने का मिट्टी का बरतन। झंझर। घड़ा।
अलिंद–संज्ञा पु० [सं०] मकान के बाहरी द्वार के आगे का चबूतरा या छज्जा। संज्ञा पु० [सं० अलींद्र] भौंरा।
अलि–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अलिनी] १. भौंरा। भ्रमर। २. कोयल। ३. कौवा। ४. बिच्छू। ५. वृश्चिक राशि। ६. कुत्ता। ७. मदिरा। संज्ञा स्त्री० दे० "अली"।
अली–संज्ञा स्त्री० [सं० आली] १. सखी। सहेली। २. पंक्ति। कतार। * संज्ञा पुं० [सं० अलि] भौंरा।
अलीक–वि० [सं०] १. मिथ्या। झूठा। २. मर्य्यादारहित। अप्रतिष्ठित। संज्ञा पु० [सं० अ+हिं० लीक] अप्रतिष्ठा। अमर्यादा।
अलीन–संज्ञा पु० [सं० आलीन] १. द्वार के चौखट की खड़ी लंबी लकड़ी। साह।

बाजू। २. दालान या बरामदे के किनारे का खंभा जो दीवार से सटा होता है।
वि० [सं० अ=नहीं+लीन=रत] १. अग्राह्य। अनुपयुक्त। अनुचित। बेजा। २. जो लीन न हो। विरत।
अलील-वि० [अ०] बीमार। रुग्ण।
अलीहः-वि० [सं० अलीक] १. मिथ्या। असत्य। झूठ। २. अनुचित।
अलुक्-संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण में समास का एक भेद जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे—सरसिज, मनसिज।
अलुझनाः-क्रि० अ० दे० "अरुझना" और "उलझना"।
अलुटना -क्रि० अ० [सं० लुट्=लोटना] लड़खड़ाना। गिरना-पड़ना।
अलुमीनम-संज्ञा पु० [अं० एलुमीनियम] एक हलकी धातु जो कुछ कुछ नीलापन लिए सफेद होती है।
अलूला -संज्ञा पु० [हिं० बुलबुला] १. भभूका। बबूला। लपट। २. बुलबुला।
अलेख-वि० [सं०] १. जिसके विषय में कोई भावना न हो सके। दुर्बोध। अज्ञेय। २. जिसका लेखा न हो सके। अनगिनत।
वि० [सं० अलक्ष्य] अदृश्य।
अलेखाः-वि० [सं० अलेख] १. बे हिसाब। २. व्यर्थ। निष्फल।
अलेखी ः-वि० [सं० अलेख] १. बे हिसाब या अंडबंड काम करनेवाला। २. गड़बड़ मचानेवाला। अंधेर करनेवाला। अन्यायी।
अलोक-वि० [सं०] १. जो देखने में न आवे। अदृश्य। २. निर्जन। एकांत। ३. पुण्यहीन।
संज्ञा पु० १. पातालादि लोक। परलोक। २. मिथ्या दोष। कलंक। निंदा।
अलोकनाः-क्रि० स० [सं० आलोकन] देखना। ताकना।
अलोना-वि० [सं० अलवण] [स्त्री० अलोनी] १. जिसमें नमक न पड़ा हो। २. जिसमें नमक न खाया जाय। जैसे, अलोना व्रत। ३. फीका। स्वादरहित। बेमजा।
अलोप -वि० दे० "लोप"।
अलोलिकः-संज्ञा पु० [सं० अलोल] अचंचलता। धीरता। स्थिरता।
अलौकिक-वि० [सं०] १. जो इस लोक में न दिखाई दे। लोकोत्तर। २. अद्भुत। अपूर्व। ३. अमानुषी।
अल्प-वि० [सं०] १. थोड़ा। कम। २. छोटा।
संज्ञा पु० एक काव्यालंकार जिसमें आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता या छोटाई वर्णन की जाती है।
अल्पजीवी-वि० [सं०] जिसकी आयु कम हो। अल्पायु।
अल्पज्ञ-वि० [सं०] १. थोड़ा ज्ञान रखनेवाला। छोटी बुद्धि का। २. नासमझ।
अल्पता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमी। न्यूनता। २ छोटाई।
अल्पत्व-संज्ञा पु० दे० "अल्पता"।
अल्पप्राण-संज्ञा पु० [सं०] व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ अक्षर; तथा य, र, ल और व।
अल्पवयस्क-वि० [सं०] छोटी अवस्था का। कमसिन।
अल्पशः-क्रि० वि० [सं०] थोड़ा थोड़ा करके। धीरे धीरे। क्रमशः।
अल्पायु-वि० [सं०] थोड़ी आयुवाला। जो छोटी अवस्था में मरे।
अल्ल-संज्ञा पु० [अ० आल] वंश का नाम। उपगोत्रज नाम। जैसे—पाँड़े, त्रिपाठी, मिश्र।
अल्लम गल्लम-संज्ञा पु० [अनु०] अनाप। शनाप। व्यर्थ की बकवाद। प्रलाप।
अल्लाना †-क्रि० अ० दे० "अललाना"।
अल्लामा†-वि० स्त्री० [अ० अल्लामा] कर्कशा। लड़ाकी।
अल्हजा ः-संज्ञा पु० [अ० अलहजल] इधर-उधर की बात। गप्प।
अल्हड़-वि० [सं० अल=बहुत+लल=चाह] १. मनमौजी। बेपरवाह। २. बिना अनुभव का। जिसे व्यवहार-ज्ञान न हो। ३. उद्धत। उजड्ड। ४. अनारी। गँवार।
संज्ञा पु० नया बैल या बछड़ा जो निकाला न गया हो।
अल्हड़पन-संज्ञा पु० [हिं० अल्हड़+पन] १. मनमौजीपन। बेपरवाही। २. व्यवहार-ज्ञान का अभाव। भोलापन। ३. उजड्डपन। अक्खड़पन। ४. अनाड़ीपन।
अवंती-संज्ञा स्त्री० [सं०] उज्जैन। उज्जयिनी। (यह सप्तपुरियों में से एक है।)
अव-उप० [सं०] एक उपसर्ग। यह जिस

शब्द में लगता है, उसमें निम्नलिखित अर्थों की योजना करता है—१. निश्चय, जैसे—अवधारण। २. अनादर, जैसे—अवज्ञा। ३. न्यूनता या कमी, जैसे—अवघात। ४. निचाई या गहराई, जैसे—अवतार। अवक्षेप। ५. व्याप्ति, जैसे—अवकाश। अवगाहन।
‡ अव्य० दे० "और"।

अवकलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवकलित] १. इकट्ठा करके मिला देना। २. देखना। ३. जानना। ज्ञान। ४. ग्रहण।

अवकलना‡—क्रि० अ० [सं० अवकलन] ज्ञान होना। समझ पड़ना।

अवकाश—संज्ञा पुं० [सं०] १. रिक्त स्थान। खाली जगह। २. आकाश। अंतरिक्ष। शून्य स्थान। ३. दूरी। अंतर। फ़ासिला। ४. अवसर। समय। मौक़ा। ५. ख़ाली वक्त। फ़ुर्सत। छुट्टी।

अवकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवकीर्ण, अवकृष्ट] बिखेरना। फैलाना। छितराना।

अवकीर्ण—वि० [सं०] १. फैलाया या छितराया हुआ। बिखेरा हुआ। २. नाश किया हुआ। नष्ट। ३. चूर चूर किया हुआ।

अवक्खन‡—संज्ञा पुं० [सं० अवेक्षण] देखना।

अवगत—वि० [सं०] १. विदित। ज्ञात। जाना हुआ। मालूम। २. नीचे गया हुआ। गिरा हुआ।

अवगतना —क्रि० स० [सं० अवगत + हिं० ना (प्रत्य०)] समझना। विचारना।

अवगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। धारणा। समझ। २. बुरी गति।

अवगारना‡—क्रि० स० [सं० अव + गृ] समझाना बुझाना। जताना।

अवगाह‡—वि० [सं० अवगाध] १. अथाह। बहुत गहरा। ‡ २. अनहोना। कठिन।
✲ संज्ञा पुं० १. गहरा स्थान। २. संकट का स्थान। कठिनाई।
संज्ञा पुं० [सं०] १. भीतर प्रवेश करना। हलना। २. जल में हलकर स्नान करना।

अवगाहन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवगाहित] १. पानी में हलकर स्नान। निमज्जन। २. प्रवेश। पैठ। ३. मथन। विलोड़न। ४. खोज। छान-बीन। ५. चित्त लगाना। लीन होकर विचार करना।

अवगाहना —क्रि० अ० [सं० अवगाहन] १. हलकर नहाना। निमज्जन करना। २. पैठना। धँसना। ३. मग्न होना।
क्रि० स० १. छान-बीन करना। २. विचलित करना। हलचल डालना। ३. चलाना। हिलाना। ४. सोचना। विचारना। ५. धारण करना। ग्रहण करना।

अवगुंठन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवगुंठित] १. ढँकना। छिपाना। २. रेखा से घेरना। ३. घूँघट। बुर्क़ा।

अवगुण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दोष। ऐब। २. बुराई। खोटाई।

अवग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुकावट। अड़चन। बाधा। २. वर्षा का अभाव। अनावृष्टि। ३. बाँध। बंद। ४. संधि-विच्छेद। (व्या०) ५. 'अनुग्रह' का उलटा। ६. स्वभाव। प्रकृति। ७. शाप। कोसना।

अवघट—वि० [सं० अव + घट्ट = घाट] विकट। दुर्गम। कठिन।

अवचट—संज्ञा पुं० [सं० अव + हिं० चट = जल्दी] १. अनजान। अचक्का। २. कठिनाई। अंडस।
क्रि० वि० अकस्मात्। अनजान में।

अवच्छिन्न—वि० [सं०] १. अलग किया हुआ। पृथक्। २. विशेषण-युक्त।

अवच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवच्छेद्य, अवच्छिन्न] १. अलगाव। भेद। २. हद। सीमा। ३. अवधारण। छान-बीन। ४. परिच्छेद। विभाग।

अवच्छेदक—वि० [सं०] १. भेदकारी। अलग करनेवाला। २. हद बाँधनेवाला। ३. अवधारक। निश्चय करानेवाला।
संज्ञा पुं० विशेषण।

अवछंग —संज्ञा पुं० दे० "उछंग"।

अवज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अवज्ञात, अवज्ञेय] १. अपमान। अनादर। २. आज्ञा न मानना। अवहेला। ३. पराजय। हार। ४. वह काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष से दूसरी वस्तु का गुण या दोष न प्राप्त करना दिखलाया जाय।

अवज्ञात—वि० [सं०] अपमानित।

अवज्ञेय—वि० [सं०] अपमान के योग्य। तिरस्कार के योग्य।

अवटना—क्रि० स० [सं० आवर्तन] १.

मथना। आलोड़न करना। २. किसी द्रव पदार्थ को आँच पर गाढ़ा करना।
क्रि० अ० घूमना। फिरना।
अवडेर–संज्ञा पु० [देश०] १. फेर। चक्कर। २. झंझट। बखेड़ा। ३. रंग में भंग।
अवडेरना–क्रि० स० [हिं० अवडेर] १. फेर में डालना। झंझट में फँसाना। २. शांतिभंग करना। तंग करना।
अवडेरा–वि० [हिं० अवडेर] १. चक्करदार। फेर का। २. झंझटवाला। ३. बेढब। कुढंगा।
अवतंस–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अवतंसित] १. भूषण। अलंकार। २. शिरोभूषण। टीका। ३ मुकुट। ४. श्रेष्ठ व्यक्ति। सब से उत्तम पुरुष। ५ माला। हार। ६. बाली। मुरकी। ७. कर्णफूल। ८ दूल्हा।
अवतरण–संज्ञा पु० [सं०] १. उतरना। पार होना। २. जन्म ग्रहण करना। ३. नकल। प्रतिकृति। ४. प्रादुर्भाव। ५. सीढ़ी। ६ घाट।
अवतरणिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रस्तावना। भूमिका। उपोद्घात। २. परिपाटी।
अवतरना–क्रि० अ० [सं० अवतरण] प्रकट होना। उपजना। जन्मना।
अवतार–संज्ञा पु० [सं०] १. उतरना। नीचे आना। २. जन्म। शरीर-ग्रहण। ३. देवता का मनुष्यादि संसारी प्राणियों के शरीर को धारण करना। ४. विष्णु या ईश्वर का संसार में शरीर धारण करना। ५. सृष्टि।
अवतारण–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अवतारणा] १. उतारना। नीचे लाना। २. नकल करना। ३. उदाहृत करना।
अवतारना–क्रि० स० [सं० अवतारण] १. उत्पन्न करना। रचना। २. जन्म देना।
अवतारी–वि० [सं० अवतार] १. उतरनेवाला। २. अवतार ग्रहण करनेवाला। ३. देवांशधारी। अलौकिक। ४. अलौकिक शक्तिवाला।
अवदशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्दशा।
अवदात–वि० [सं०] १. उज्ज्वल। श्वेत। २. शुद्ध। स्वच्छ। निर्मल। ३. गौर। शुक्ल वर्ण का। ४. पीला।
अवदान–संज्ञा पुं० [सं०] १. शुद्ध आचरण। अच्छा काम। २. खंडन। तोड़ना। ३. शक्ति। बल। ४. अतिक्रम। उल्लंघन। ५. पवित्र करना। साफ करना।
अवदान्य–वि० [सं०] १. पराक्रमी। बली। २. अतिक्रमणकारी। हद से बाहर जानेवाला। ३. कंजूस।
अवदारण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अवदारित] १ विदारण करना। तोड़ना। फोड़ना। २ मिट्टी खोदने का रंभा। खंता।
अवद्य–वि० [सं०] १ अधम। पापी। २. त्याज्य। कुत्सित। निकृष्ट। ३. दोषयुक्त।
अवध–संज्ञा पु० [सं० अयोध्या] १. कोशल देश जिसकी प्रधान नगरी अयोध्या थी। २. अयोध्या नगरी।
* संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।
अवधान–संज्ञा पु० [सं०] १. मनोयोग। चित्त का लगाव। २. चित्त की वृत्ति का निरोध कर उसे एक ओर लगाना। समाधि। ३. सावधानी। चौकसी।
* संज्ञा पु० [सं० आधान] गर्भ। पेट।
अवधारण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अवधारित, अवधारणीय, अवधार्य] निश्चय। विचारपूर्वक निर्धारण करना।
अवधारना –क्रि० स० [सं० अवधारण] धारण करना। ग्रहण करना।
अवधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सीमा। हद। २. निर्धारित समय। मियाद। ३. अंत समय। अंतिम काल।
अव्य० [सं०] तक। पर्यंत।
अवधिमान*–संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।
अवधी–वि० [सं० अयोध्या] १. अवधसंबंधी। अवध का।
संज्ञा स्त्री० अवध की बोली।
अवधूत–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अवधूतिन] संन्यासी। साधु। योगी।
अवनत–वि० [सं०] १. नीचा। झुका हुआ। २. गिरा हुआ। पतित। ३. कम।
अवनति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घटती। कमी। न्यूनता। २. अधोगति। हीन दशा। ३ झुकाव। झुकना। ४. नम्रता।
अवना*–क्रि० अ० दे० "आवना"।
अवनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। ज़मीन।
अवपात–संज्ञा पु० [सं०] १. गिराव। पतन। २. गड्ढा। कुंड। ३. हाथियों के फँसाने का गड्ढा। खाँड़ा। माला। ४. नाटक में भयादि से भागना, व्याकुल

होना आदि दिखाकर अंक की समाप्ति।
अवभृथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शेष कर्म जिसके करने का विधान मुख्य यज्ञ के समाप्त होने पर है। २. यज्ञांत स्नान।
अवम–संज्ञा पुं० [सं०] १. पितरों का एक गण। २. मलमास। अधिमास।
अवम तिथि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जिसका क्षय हो गया हो।
अवमर्श संधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँच प्रकार की संधियों में से एक (नाट्य शास्त्र)।
अवमान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवमानित] तिरस्कार। अपमान।
अवयव–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंश। भाग। हिस्सा। २. शरीर का अंग। ३. तर्क-पूर्ण वाक्य का एक एक अंश या भेद। (न्याय)
अवयवी–वि० [सं०] १. जिसके बहुत से अवयव हों। अंगी। २. कुल। संपूर्ण। संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिसके बहुत से अवयव हों। २ देह। शरीर।
अवर:–वि० [सं० अपर] १. अन्य। दूसरा। और। २. अधम। नीच।
अवरत–वि० [सं०] १. जो रत न हो। विरत। निवृत्त। २. ठहरा हुआ। स्थिर। ३. अलग। पृथक्।
संज्ञा पुं० दे० "आवर्त्त"।
अवराधक–वि० [सं० आराधक] आराधना करनेवाला। पूजनेवाला।
अवराधन–संज्ञा पुं० [सं० आराधन] आराधन। उपासना। पूजा। सेवा।
अवराधना–क्रि० स० [सं० आराधन] उपासना करना। पूजना। सेवा करना।
अवराधी–वि० [सं० आराधन] आराधना करनेवाला। उपासक। पूजक।
अवरुद्ध–वि० [सं०] १. रुँधा या रुका हुआ। २. गुप्त। छिपा हुआ।
अवरूढ़–वि० [सं०] ऊपर से नीचे आया हुआ। उतरा हुआ। 'आरूढ़' का उलटा।
अवरेखना:–क्रि० स० [सं० अवलेखन] १. उरेहना। लिखना। चित्रित करना। २. देखना। ३. अनुमान करना। कल्पना करना। सोचना। ४ मानना। जानना।
अवरेब–संज्ञा पुं० [सं० अव=विरुद्ध+रेव=गति] १. वक्र गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट।
यौ०—अवरेबदार=तिरछी काट का।
३. पेंच। उलझन। ४. खराबी। कठिनाई। ५. झगड़ा। विवाद। खींचा-तानी।
अवरोध–संज्ञा पुं० [सं०] १ रुकावट। अड़चन। रोक। २. घेर लेना। मुहासिरा। ३ निरोध। बंद करना। ४. अनुरोध। दबाव। ५ अंतःपुर।
अवरोधक–वि० [सं०] रोकनेवाला।
अवरोधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोधित, अवरोधी, अवरुद्ध] १. रोकना। छेकना। २ अंतःपुर। जनाना।
अवरोधना:–क्रि० स० [सं० अवरोधन] रोकना। निषेध करना।
अवरोधित–वि० [सं०] रोका हुआ।
अवरोधी–वि० [सं० अवरोध] [स्त्री० अवरोधिनी] अवरोध करनेवाला।
अवरोह–संज्ञा पुं० [सं०] १. उतार। गिराव। अधःपतन। २. अवनति।
अवरोहण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही] नीचे की ओर जाना। उतार। गिराव। पतन।
अवरोहना:–क्रि० अ० [सं० अवरोहण] उतरना। नीचे आना।
क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।
: क्रि० स० [हिं० उरेहना] खींचना। अंकित करना। चित्रित करना।
: क्रि० स० [सं० अवरोधन] रोकना।
अवरोही (स्वर)–संज्ञा पुं० [सं० अवरोहिन्] वह स्वर-साधन जिसमें पहिले षड्ज का उच्चारण हो, फिर निषाद से षड्ज तक क्रमानुसार उतरते हुए स्वर निकलें। विलोम। आरोही का उलटा।
अवर्ण–वि० [सं०] १. वर्णरहित। बिना रंग का। २. बदरंग। बुरे रंग का। ३. वर्ण धर्म-रहित।
अवर्ण्य–वि० [सं०] जो वर्णन के योग्य न हो।
संज्ञा पुं० [सं० अ+वर्ण्य] जो वर्ण्य या उपमेय न हो। उपमान।
अवर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा का न होना।
अवलंघना–क्रि० स० [सं०] लाँघना।
अवलंब–संज्ञा पुं० [सं०] आश्रय। सहारा।
अवलंबन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलंबित, अवलंबी] १. आश्रय। आधार। सहारा। २. धारण। ग्रहण।

अवलंबना–क्रि० स० [सं० अवलंबन] १. अवलंबन करना। आश्रय लेना। टिकना। २. धारण करना।
अवलंबित–वि० [सं०] १. आश्रित। सहारे पर स्थिर। टिका हुआ। २. निर्भर। किसी बात के होने पर स्थिर किया हुआ।
अवलंबी–वि० पु० [सं० अवलंबिन्] [स्त्री० अवलंबिनी] १. अवलंबन करनेवाला। सहारा लेनेवाला। २. सहारा देनेवाला।
अवली–संज्ञा स्त्री० [सं० आवलि] १. पंक्ति। पाँती। २. समूह। झुंड। ३. वह अन्न की डाँठ जो नवान्न करने के लिये खेत से पहिले पहिल काटी जाती है।
अवलीक–वि० [सं० अव्यलीक] पापशून्य। निष्कलंक। शुद्ध।
अवलेखना–क्रि० स० [सं०अवलेखन] १. खोदना। खुरचना। २. चिह्न डालना।
अवलेप–संज्ञा पु० [सं० अवलेपन] १.उबटन। लेप। २. घमंड। गर्व।
अवलेपन–संज्ञा पु० [सं०] १. लगाना। पोतना। २. वह वस्तु जो लगाई जाय। लेप। ३. घमंड। अभिमान। ४. दूषण।
अवलेह–संज्ञा पु० [सं०] [वि० अवलेह्य] १. लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो। २. चटनी। माजून। ३. वह औषध जो चाटी जाय।
अवलोकन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलोकित, अवलोकनीय] १. देखना। २. देख-भाल। जाँच पड़ताल।
अवलोकना–क्रि० स० [सं० अवलोकन] १. देखना। २. जाँचना। अनुसंधान करना।
अवलोकनि–संज्ञा स्त्री० [सं० अवलोकन] १. आँख। दृष्टि। २. चितवन।
अवलोकनीय–वि० [सं०] देखने योग्य।
अवलोचना–क्रि० स० [सं० आलंचन] दूर करना।
अवश–वि० [सं०] विवश। लाचार।
अवशिष्ट–वि० [सं०] शेष। बाकी।
अवशेष–वि० [सं०] १. बचा हुआ। शेष। बाक़ी। २. समाप्त।
संज्ञा पु० [सं०] [वि० अवशिष्ट] १. बची हुई वस्तु। २. अंत। समाप्ति।
अवश्यंभावी–वि० [सं० अवश्यभाविन्] जो अवश्य हो, टले नहीं। अटल। ध्रुव।
अवश्य–क्रि० वि० [सं०] निश्चय करके। निःसंदेह। ज़रूर।
वि० [सं०] [स्त्री० अवश्या] १. जो वश में न आ सके। २. जो वश में न हो।
अवश्यमेव–क्रि० वि० [सं०] अवश्य ही। निःसंदेह। ज़रूर।
अवसन्न–वि० [सं०] १. विषाद-प्राप्त। दुःखी। २. नष्ट होनेवाला। ३. सुस्त। आलसी। निकम्मा।
अवसर–संज्ञा पु० [सं०] १. समय। काल। २. अवकाश। फ़ुरसत। ३. इत्तफ़ाक़। मुहा०–अवसर चूकना = मौका हाथ से जाने देना।
४. एक काव्यालंकार जिसमें किसी घटना का ठीक अपेक्षित समय पर घटित होना वर्णन किया जाय।
अवसर्पण–संज्ञा पु० [सं०] अधोगमन। अधःपतन। अवरोहण।
अवसर्पिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन शास्त्रानुसार पतन का समय जिसमें रूपादि का क्रमशः ह्रास होता है।
अवसाद–संज्ञा पु० [सं०] १. नाश। क्षय। २. विषाद। ३. दीनता। ४. थकावट। ५. कमज़ोरी।
अवसान–संज्ञा पु० [सं०] १. विराम। ठहराव। २. समाप्ति। अंत। ३. सीमा। ४. सायंकाल। ५. मरण।
अवसि–क्रि० वि० दे० "अवश्य"।
अवसेख–वि० दे० "अवशेष"।
अवसेचन–संज्ञा पु० [सं०] १. सींचना। पानी देना। २. पसीजना। पसीना निकलना। ३. वह क्रिया जिसके द्वारा रोगी के शरीर से पसीना निकाला जाय। ४. शरीर का रक्त निकालना।
अवसेर–संज्ञा स्त्री० [सं० अवसर] १. अटकाव। उलझन। २. देर। विलंब। ३. चिंता। व्यग्रता। उचाट। ४. हैरानी।
अवसेरना–क्रि० स० [हिं० अवसेर] तंग करना। दुःख देना।
अवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दशा। हालत। २. समय। काल। ३. आयु। उम्र। ४. स्थिति। ५. मनुष्य की चार अवस्थाएँ—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। ६. मनुष्य-जीवन की आठ अवस्थाएँ—कौमार, पौगंड,कैशोर, यौवन

बाल, वृद्ध और वर्षीयान्।
अवस्थान-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थान। जगह। २. ठहराव। टिकना। स्थिति।
अवस्थित-वि० [सं०] १. उपस्थित। विद्यमान। मौजूद। २. ठहरा हुआ।
अवस्थिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्तमानता। स्थिति। सत्ता।
अवहित्था-संज्ञा स्त्री० [सं०] छिपाव। भाव छिपाना।
अवहेलना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. ध्यान न देना। बेपरवाही। *क्रि० स० [सं० अवहेलन] तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।
अवहेलित-वि० [सं०] जिसकी अवहेलना हुई हो। तिरस्कृत।
अवाँ-संज्ञा पुं० दे० "आवाँ"।
अवांतर-वि० [सं०] अंतर्गत। मध्यवर्ती। संज्ञा पुं० [सं०] मध्य। बीच।
यौ०—अवांतर दिशा=बीच की दिशा। विदिशा। अवांतर भेद=अंतर्गत भेद। भाग का भाग।
अवाँसी-संज्ञा स्त्री० [सं० अवासित] वह बोझ जो नवान्न के लिये फसल में से पहले पहल काटा जाय। कवल। अवसी।
अवाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० आना] १. आगमन। आना। २. गहिरी जोताई। 'सेव' का उलटा।
अवाक्-वि० [सं० अवाच्] १. चुप। मौन। २. स्तंभित। चकित। विस्मित।
अवाङ्मुख-वि० [सं०] १. अधोमुख। उलटा। नीचे मुँह का। २. लज्जित।
अवाची-संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण दिशा।
अवाच्य-वि० [सं०] १. जो कुछ कहने योग्य न हो। अनिंदित। विरुद्ध। २. जिससे बात करना उचित न हो। नीच। संज्ञा पुं० [सं०] कुवाच्य। गाली।
अवाज*-संज्ञा स्त्री० दे० "आवाज़"।
अवार-संज्ञा पुं० [सं०] नदी के इस पार का किनारा। 'पार' का उलटा।
अवारजा-संज्ञा पुं० [फा०] १. वह बही जिसमें प्रत्येक असामी की जोत आदि लिखी जाती है। २. जमा खर्च की बही।
अवारना*-क्रि० स० [सं० अवारण] १. रोकना। मना करना। २. दे० "वारना।" संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] १. किनारा। मोड़। २. मुख। विवर। मुँह का छेद।
अवास*-संज्ञा पुं० दे० "आवास"।
अवि-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. मंदार। आक। ३. भेड़। ४. बकरा। ५. पर्वत।
अविकल-वि० [सं०] १. ज्यों का त्यों। बिना उलट-फेर का। २. पूर्ण। पूरा। ३. निश्चल। शांत।
अविकल्प-वि० [सं०] १. निश्चित। २. निःसंदेह। असंदिग्ध।
अविकार-वि० [सं०] १. विकार-रहित। निर्दोष। २ जिसका रूप-रंग न बदले। संज्ञा पुं० [सं०] विकार का अभाव।
अविकारी-वि० [सं० अविकारिन्] [स्त्री० अविकारिणी] १. जिसमें विकार न हो। जो एक सा रहे। निर्विकार। २. जो किसी का विकार न हो।
अविकृत-वि० पुं० [सं०] जो विकृत न हो। जो बिगड़ा या बदला न हो।
अविगत-वि० [सं०] १. जो जाना न जाय। २. अज्ञात। अनिर्वचनीय। ३. जिसका नाश न हो। नित्य।
अविचल-वि० [सं०] जो विचलित न हो। अचल। स्थिर। अटल।
अविचार-संज्ञा पुं० [सं०] १. विचार का अभाव। २. अज्ञान। अविवेक। ३. अन्याय। अत्याचार।
अविचारी-वि० [सं० अविचारिन्] [स्त्री० अविचारिणी] १. विचारहीन। बेसमझ। २ अत्याचारी। अन्यायी।
अविच्छिन्न-वि० [सं०] अटूट। लगातार।
अविच्छेद-वि० [सं०] जिसका विच्छेद न हो। अटूट। लगातार।
अविज्ञात-वि० [सं०] १. अनजाना। अज्ञात। २. बेसमझ। अर्थ-निश्चय-शून्य।
अविज्ञेय-वि० पुं० [सं०] जो जाना न जा सके। न जानने योग्य।
अवितत्-वि० [सं०] विरुद्ध। उलटा।
अविदित-वि० [सं०] जो विदित न हो। अज्ञात। बिना जाना हुआ।
अविद्यमान-वि० [सं०] १. जो विद्यमान या उपस्थित न हो। अनुपस्थित। २. असत्। ३. मिथ्या। असत्य।
अविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विरुद्ध ज्ञान। मिथ्या ज्ञान। अज्ञान। मोह। २. माया का एक भेद। ३. कर्मकांड

४. सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति। जड़।
अविधि-वि० [सं०] विधि-विरुद्ध। नियम के विपरीत।
अविनय-संज्ञा पुं० [सं०] विनय का अभाव। ढिठाई। उद्दंडता।
अविनश्वर-वि० [सं०] जिसका नाश न हो। जो बिगड़े नहीं। चिरस्थायी।
अविनाभाव-संज्ञा पुं० [सं०] १. संबंध। २. व्याप्य-व्यापक संबंध। जैसे, अग्नि और धूम का।
अविनाश-संज्ञा पुं० [सं०] विनाश का अभाव। अक्षय।
अविनाशी-वि० पुं० [सं० अविनाशिन्] [स्त्री० अविनाशिनी] १. जिसका विनाश न हो। अक्षय। अक्षर। २. नित्य। शाश्वत।
अविनीत-वि० [सं०] [स्त्री० अविनीता] १. जो विनीत न हो। उद्धत। २. अदांत। दुर्दांत। सरकश। ३. दुष्ट। ४. ढीठ।
अविभक्त-वि० [सं०] [वि० अविभाज्य] १. मिला हुआ। २. जो बाँटा न गया हो। शामिलाती। ३. अभिन्न। एक।
अविमुक्त-वि० पुं० [सं०] जो विमुक्त न हो। बद्ध।
संज्ञा पुं० [सं०] १. कनपटी। २. काशी।
अविरत-वि० [सं०] १. विरामशून्य। निरंतर। २. लगा हुआ।
क्रि० वि० [सं०] १. निरंतर। लगातार। २. नित्य। हमेशा।
अविरति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निवृत्ति का अभाव। लीनता। २. विषयासक्ति। ३. अशांति।
अविरल-वि० [सं०] १. मिला हुआ। २. घना। सघन।
अविराम-वि० [सं०] १. बिना विश्राम लिए हुए। २. लगातार। निरंतर।
अविरोध-संज्ञा पुं० [सं०] १. समानता। २. विरोध का अभाव। अनुकूलता। ३. मेल। संगति।
अविरोधी-वि० [सं० अविरोधिन्] १. जो विरोधी न हो। अनुकूल। २. मित्र।
अविवाहित-वि० पुं० [सं०] [स्त्री० अविवाहिता] जिसका ब्याह न हुआ हो। कुँआरा।
अविवेक-संज्ञा पुं० [सं०] १. विवेक का अभाव। अविचार। २. अज्ञान। नादानी। ३. अन्याय।
अविवेकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अज्ञानता। २. विवेक का न होना।
अविवेकी-वि० [सं० अविवेकिन्] १. अज्ञानी। विवेक-रहित। २. अविचारी। ३. मूढ़। मूर्ख। ४. अन्यायी।
अविशेष-वि० [सं०] भेदक धर्म रहित। तुल्य। समान।
संज्ञा पुं० १. भेदक धर्म का अभाव। २. सांख्य में सांतत्व, घोरत्व और मूढ़त्व आदि विशेषताओं से रहित सूक्ष्म भूत।
अविश्रांत-वि० [सं०] १. जो रुके नहीं। २. जो थके नहीं।
अविश्वसनीय-वि० [सं०] जिस पर विश्वास न किया जा सके।
अविश्वास-संज्ञा पुं० [सं०] १. विश्वास का अभाव। बेएतबारी। २. अप्रत्यय। अनिश्चय।
अविश्वासी-वि० [सं० अविश्वासिन्] १. जो किसी पर विश्वास न करे। २. जिस पर विश्वास न किया जाय।
अविषय-वि० [सं०] १. जो मन या इंद्रिय का विषय न हो। अगोचर। २. अनिर्वचनीय।
अविहड़-वि० [सं० अ + विघट] जो खंडित न हो। अखंड। अनश्वर।
अवीरा-वि० स्त्री० [सं०] १. पुत्र और पति-रहित (स्त्री)। २. स्वतंत्र (स्त्री)।
अवेक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवेक्षित, अवेक्षणीय] १. अवलोकन। देखना। २. जाँच-पड़ताल। देख-भाल।
अवेज-संज्ञा पुं० [अ० एवज] बदला। प्रतीकार।
अवेस-संज्ञा पुं० दे० "आवेश"।
अवैतनिक-वि० [सं०] बिना वेतन या तनख्वाह के काम करनेवाला। आनरेरी।
अवैदिक-वि० [सं०] वेदविरुद्ध।
अव्यक्त-वि० [सं०] १. अप्रत्यक्ष। अगोचर। जो ज़ाहिर न हो। २. अज्ञात। अनिर्वचनीय। ३. जिसमें रूप-गुण न हो।
संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. कामदेव। ३. शिव। ४. प्रधान। प्रकृति (सांख्य)। ५. सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था। ६. ब्रह्म। ७. बीजगणित में

वह राशि जिसका मान अनिश्चित हो। अन-वगत राशि। ८. जीव।
अव्यक्त गणित–संज्ञा पुं० [सं०] बीज-गणित।
अव्यक्तलिंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. सांख्य के अनुसार महत्तत्वादि। २. संन्यासी। ३. वह रोग जो पहचाना न जाय।
अव्यय–वि० [सं०] १. जो विकार को प्राप्त न हो। सदा एकरस रहनेवाला। अक्षय। २. नित्य। आदि-अंत-रहित।
संज्ञा पुं० [सं०] १. व्याकरण में वह शब्द जिसका सब लिंगों, सब विभक्तियों और सब वचनों में समान रूप से प्रयोग हो। २. परब्रह्म। ३. शिव। ४. विष्णु।
अव्ययीभाव–संज्ञा पुं० [सं०] समास का एक भेद (व्याकरण)।
अव्यर्थ–वि० [सं०] १. जो व्यर्थ न हो। सफल। २. सार्थक। ३. अमोघ। न चूकनेवाला। ४. अवश्य असर करने-वाला।
अव्यवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अव्यव-स्थित] १. नियम का न होना। बेक़ायदगी। २. स्थिति या मर्यादा का न होना। ३. शास्त्रादि-विरुद्ध व्यवस्था। अविधि। ४. बेइंतज़ामी। गड़बड़।
अव्यवस्थित–वि० [सं०] १. शास्त्रादि-मर्यादा-रहित। २. बेठिकाने का। ३. चंचल। अस्थिर।
अव्यवहार्य्य–वि० [सं०] १. जो व्यवहार में न लाया जा सके। २. पतित।
अव्याकृत–वि० [सं०] १. जिसमें विकार न हो। २. अप्रकट। गुप्त। ३. कारणरूप। ४. सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति।
अव्याप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अव्याप्त] १. व्याप्ति का अभाव। २. न्याय में संपूर्ण लक्ष्य पर लक्षण का न घटना।
अव्यावृत–वि० [सं०] १. निरंतर। लगा-तार। अटूट। २. ज्यों का त्यों।
अव्याहत–वि० [सं०] १. अप्रतिरुद्ध। बेरोक। २. सत्य। ठीक। युक्तियुक्त।
अव्युत्पन्न–वि० [सं०] १. अनभिज्ञ। अनाड़ी। २. व्याकरण शास्त्रानुसार वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके।
अव्वल–वि० [अ०] १. पहला। आदि। प्रथम। २. उत्तम। श्रेष्ठ।

संज्ञा पुं० आदि। प्रारंभ।
अशंक–वि० [सं०] बेडर। निर्भय।
अशकुन–संज्ञा पुं० [सं०] बुरा शकुन। बुरा लक्षण।
अशक्त–वि० [सं०] [संज्ञा अशक्ति] १. निर्बल। कमज़ोर। २. असमर्थ।
अशक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अशक्त] १. निर्बलता। कमज़ोरी। २. इंद्रियों और बुद्धि का बेकाम होना। (सांख्य)
अशक्य–वि० [सं०] असाध्य। न होने योग्य।
अशन–संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजन। आहार। अन्न। २. खाने की क्रिया। खाना।
अशरण–वि० [सं०] जिसे कहीं शरण न हो। अनाथ। निराश्रय।
अशरफ़ी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सोलह से पचीस रुपए तक का सोने का एक सिक्का। मोहर। २. पीले रंग का एक फूल।
अशराफ़–वि० [अ०] शरीफ़। भद्र।
अशांत–वि० [सं०] जो शांत न हो। अस्थिर। चंचल।
अशांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अस्थिरता। चंचलता। २. क्षोभ। असंतोष।
अशिक्षित–वि० [सं०] जिसने शिक्षा न पाई हो। बे पढ़ा-लिखा। अनपढ़।
अशिष्ट–वि० [सं०] उजड्ड। बेहूदा।
अशिष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. असाधुता। बेहूदगी। उजड्डपन। २. ढिठाई।
अशुचि–वि० [सं०] [संज्ञा अशौच] १. अपवित्र। २. गंदा। मैला।
अशुद्ध–वि० [सं०] १. अपवित्र। नापाक। २. बिना शोधा। असंस्कृत। ३. ग़लत।
अशुद्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अपवित्रता। गंदगी। २. ग़लती।
अशुद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "अशुद्धता"।
अशुन–संज्ञा पुं० [सं० अश्विनी] अश्विनी नक्षत्र।
अशुभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. अमंगल। अहित। २. पाप। अपराध।
वि० [सं०] जो शुभ न हो। बुरा।
अशेष–वि० [सं०] १. पूरा। समूचा। २. समाप्त। ख़तम। ३. अनंत। बहुत।
अशोक–वि० [सं०] शोकरहित। दुःख-शून्य।
संज्ञा पुं० १. एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम

की तरह लंबी लंबी और किनारों पर लहरदार होती है। २. पारा।
अशोकपुष्प-मंजरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दंडक वृत्त का एक भेद।
अशोक-वाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शोक को दूर करनेवाला रम्य उद्यान। २. रावण का वह प्रसिद्ध बगीचा जिसमें उसने सीताजी को ले जाकर रखा था।
अशौच–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अशुचि] १ अपवित्रता। अशुद्धता। २ हिन्दू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो घर के किसी प्राणी के मरने या संतान होने पर कुछ दिन मानी जाती है।
अश्मंतक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मूँज की तरह की एक घास जिससे प्राचीन काल में मेखला बनाते थे। २. आच्छादन। ढकना।
अश्मक–संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। त्रावंकोर।
अश्मकुट्ट–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के वानप्रस्थ जो केवल पत्थर से अन्न कूटकर पकाते थे।
अश्मरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पथरी नामक रोग।
अश्रद्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अश्रद्धेय] श्रद्धा का अभाव।
अश्रांत–वि० [सं०] जो थका माँदा न हो। क्रि० वि० लगातार। निरंतर।
अश्रु–संज्ञा पुं० [सं०] आँसू।
अश्रुत–वि० [सं०] १. जो सुना न गया हो। २. जिसने कुछ देखा सुना न हो।
अश्रुतपूर्व–वि० [सं०] १. जो पहले न सुना गया हो। २. अद्भुत। विलक्षण।
अश्रुपात–संज्ञा पुं० [सं०] आँसू गिराना। रुदन। रोना।
अश्लिष्ट–वि० [सं०] श्लेषशून्य। जो जुड़ा या मिला न हो। असंबद्ध।
अश्लील–वि० [सं०] फूहड़। भद्दा। लज्जाजनक।
अश्लीलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] फूहड़पन। भद्दापन। लज्जा का उल्लंघन। (काव्य में एक दोष)
अश्लेषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में से नवाँ।
अश्व–संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा। तुरंग।
अश्वकर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का शाल वृक्ष। २. लता-शाल।
अश्वगंधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] असगंध।
अश्वगति–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक छंद। २. एक चित्रकाव्य।
अश्वतर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अश्वतरी] १. नाग-राज। २. खच्चर।
अश्वत्थ–संज्ञा पुं० [सं०] पीपल।
अश्वत्थामा–संज्ञा पुं० [सं०] द्रोणाचार्य के पुत्र।
अश्वपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. घुड़सवार। २. रिसालदार। ३. घोड़ों का मालिक। ४. भरतजी के मामा। ५. केकय देश के राजकुमारों की उपाधि।
अश्वपाल–संज्ञा पुं० [सं०] साईस।
अश्वमेध–संज्ञा पुं० [सं०] एक बड़ा यज्ञ जिसमें घोड़े के मस्तक पर जयपत्र बाँधकर उसे भूमंडल में घूमने के लिये छोड़ देते थे। फिर उसको मारकर उसकी चर्बी से हवन किया जाता था।
अश्वशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ घोड़े रहें। अस्तबल। तबेला।
अश्वारोहण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अश्वारोही] घोड़े की सवारी।
अश्वारोही–वि० [सं०] घोड़े का सवार।
अश्विनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोड़ी। २. २७ नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र।
अश्विनीकुमार–संज्ञा पुं० [सं०] त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम की स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।
अषाढ़–संज्ञा पुं० दे० "आषाढ़"।
अष्ट–वि० [सं०] आठ।
अष्टक–संज्ञा पुं० [सं०] १. आठ वस्तुओं का संग्रह। २. वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक हों।
अष्टकमल–संज्ञा पुं० [सं०] हठ योग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक के आठ कमल।
अष्टका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अष्टमी। २. अष्टमी के दिन का कृत्य। अष्टकायाग।
अष्टकुल–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सर्पों के आठ कुल—शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक।
अष्टकृष्ण–संज्ञा पुं० [सं०] वल्लभ कुल के मतानुसार आठ कृष्ण या कृष्ण-मूर्तियाँ—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ,

द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचंद्रमा और मदनमोहन।
अष्टद्रव्य–संज्ञा पुं० [सं०] आठ द्रव्य जो हवन में काम आते हैं—अश्वत्थ, गूलर, पाकर, वट, तिल, सरसों, पायस और घी।
अष्टधाती–वि० [सं० अष्टधातु] १. अष्टधातुओं से बना हुआ। २. दृढ़। मजबूत। ३. उत्पाती। उपद्रवी। ४. वर्णसंकर।
अष्टधातु–संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।
अष्टपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का गीत जिसमें आठ पद होते हैं।
अष्टपाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. शरभ। शार्दूल। २. लूता। मकड़ी।
अष्टप्रकृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी। यथा—सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक और प्रतिनिधि।
अष्टभुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
अष्टम–वि० पुं० [सं०] आठवाँ।
अष्टमंगल–संज्ञा पुं० [सं०] आठ मंगल-द्रव्य—सिंह, वृष, नाग, कलश, पंखा, वैजयंती भेरी और दीपक।
अष्टमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्ल या कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि।
अष्टमूर्ति–संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ शिव की आठ मूर्तियाँ—सर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव।
अष्टवर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. आठ ओषधियों का समाहार—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि। २. ज्योतिष का एक गोचर। ३. राज्य के ऋषि, वस्ति, दुर्ग, सेना, हस्तिबंधन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य संस्थापन का समूह।
अष्टांग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अष्टांगी] १. योग की क्रिया के आठ भेद—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। २. आयुर्वेद के आठ विभाग—शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और वाजीकरण। ३. आठ अंग—जानु, पद, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि, जिनसे प्रणाम करने का विधान है।
वि० [सं०] १. आठ अवयववाला। २. अठपहल।
अष्टांगी–वि० [सं०] आठ अंगोंवाला।
अष्टाक्षर–संज्ञा पुं० [सं०] आठ अक्षरों का मंत्र।
वि० [सं०] आठ अक्षरों का।
अष्टाध्यायी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं।
अष्टावक्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि। २. टेढ़े मेढ़े अंगों का मनुष्य।
अष्ठीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें पेशाब नहीं होता और गाँठ पड़ जाती है।
असंक–वि० दे० "अशंक"।
असंक्रांति मास–संज्ञा पुं० [सं०] अधिक-मास। मलमास।
असंख्य–वि० [सं०] अनगिनत। बेशुमार।
असंग–वि० [सं०] १. अकेला। एकाकी। २ किसी से वास्ता न रखनेवाला। निर्लिप्त। ३. जुदा। अलग। ४. विरक्त।
असंगत–वि० [सं०] १. अयुक्त। बेठीक। २ अनुचित। नामुनासिब।
असंगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बेसिलसिलापन। बेमेल होने का भाव। २. अनुपयुक्तता। ना-मुनासिबत। ३. एक काव्यालंकार जिसमें कारण कहीं बताया जाय और कार्य कहीं।
असत–वि० [सं०] खल। दुष्ट।
असंतुष्ट–वि० [सं०] [संज्ञा असंतुष्टि] १. जो संतुष्ट न हो। २. अतृप्त। जिसका मन न भरा हो। ३. अप्रसन्न। नाराज।
असंतुष्टि–संज्ञा स्त्री० दे० "असंतोष"।
असंतोष–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० असंतोषी] १. संतोष का अभाव। अधैर्य। २. अतृप्ति। ३. अप्रसन्नता।
असंबद्ध–वि० [सं०] १ जो मेल में न हो। २. पृथक्। अलग। ३ अनमिल। बे-मेल। ऊटपटाँग। जैसे, असंबद्ध प्रलाप।
असंबाधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
असंभव–वि० [सं०] जो संभव न हो। जो हो न सके। ना-मुमकिन।
संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें यह दिखाया जाता है कि जो बात हो गई, उसका होना असंभव था।
असंभार–वि० [हिं० अ+संभार] १. जो

संँभालने योग्य न हो। २. अपार। बहुत बड़ा।

असंभावना-संज्ञा स्त्री० [सं०] संभावना का अभाव। अनहोनापन।

असंभावित-वि० [सं०] जिसके होने का अनुमान न किया गया हो। अनुमान-विरुद्ध।

असंभाव्य-वि० [सं०] जिसकी संभावना न हो। अनहोना।

असंभाष्य-वि० [सं०] १. न कहे जाने योग्य। २. जिससे बात-चीत करना उचित न हो। बुरा।

असंयत-वि० [सं०] संयमरहित। जो संयत या नियमबद्ध न हो।

असंस्कृत-वि० [सं०] १. बिना सुधारा हुआ। अपरिमार्जित। २. जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

अस†-वि० [सं० ईदृश] १. इस प्रकार का। ऐसा। २. तुल्य। समान।

असकताना-क्रि० अ० [हिं० आलकस] आलस्य में पड़ना। आलसी होना।

असकन्ना-संज्ञा पुं० [सं० असि+करण] लोहे का एक औज़ार जिससे तलवार की म्यान के भीतर की लकड़ी साफ़ की जाती है।

असगंध-संज्ञा पुं० [सं० अश्वगंधा] एक सीधी झाड़ी जिसकी मोटी जड़ पुष्टई और दवा के काम में आती है। अश्वगंधा।

असगुन-संज्ञा पुं० दे० "अशकुन"।

असज्जन-वि० [सं०] खल। दुष्ट।

असती-वि० [सं०] जो सती न हो। कुलटा। पुंश्चली।

असत्-वि० [सं०] १. अस्तित्व-विहीन। सत्तारहित। २. बुरा। खराब। ३ असाधु। असज्जन।

असत्ता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ता का अभाव। अनस्तित्व। २. असज्जनता।

असत्य-वि० [सं०] मिथ्या। झूठ।

असत्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] मिथ्यात्व। झुठाई।

असत्यवादी-वि० [सं०] झूठ बोलने-वाला। झूठा। मिथ्यावादी।

असबर्ग-संज्ञा पुं० [फ़ा०] खुरासान की एक लंबी घास जिसके फूल रेशम रँगने के काम में आते हैं।

असबाब-संज्ञा पुं० [अ०] चीज़। वस्तु। सामान। प्रयोजनीय पदार्थ।

असभ्यता†-संज्ञा स्त्री० [सं० असभ्यता] अशिष्टता। बेहूदगी। असभ्यता।

असभ्य-वि० [सं०] अशिष्ट। गँवार।

असभ्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] अशिष्टता। गँवारपन।

असमंजस-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुबधा। आगापीछा। २. अड़चन। कठिनाई।

असमंत-संज्ञा पुं० [सं० अश्मंत] चूल्हा।

असम-वि० [सं०] १. जो सम या तुल्य न हो। जो बराबर न हो। असदृश। २ विषम। ताक़। ३. ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़। ४ एक काव्यालंकार जिसमें उपमान का मिलना असंभव बतलाया जाय।

असमय-संज्ञा पुं० [सं०] विपत्ति का समय। बुरा समय।

क्रि० वि० कुअवसर। बे-मौक़ा।

असमर्थ-वि० [सं०] १. सामर्थ्यहीन। दुर्बल। अशक्त। २. अयोग्य।

असमवायि कारण-संज्ञा पुं० [सं०] न्यायदर्शन के अनुसार वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो।

असमशर-संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

असम्मत-वि० [सं०] १. जो राज़ी न हो। विरुद्ध। २. जिस पर किसी की राय न हो।

असम्मति-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० असम्मत] सम्मति का अभाव। विरुद्ध मत या राय।

असमान-वि० [सं०] जो समान या तुल्य न हो।

‡ संज्ञा पुं० दे० "आसमान"।

असमाप्त-वि० [सं०] [संज्ञा असमाप्ति] अपूर्ण। अधूरा।

असमेध"-संज्ञा पुं० दे० "अश्वमेध"।

असयानाः-वि० [हिं० अ+सयाना] १. सीधा-सादा। २. अनाड़ी। मूर्ख।

असर-संज्ञा पुं० [अ०] प्रभाव।

असरारः-क्रि० वि० [हिं० सरसर] निरंतर। लगातार। बराबर।

असल-वि० [अ०] १. सच्चा। खरा। २. उच्च। श्रेष्ठ। ३. बिना मिलावट का। शुद्ध। खालिस। ४. जो झूठा या बनावटी न हो।

संज्ञा पुं० १. जड़। बुनियाद। २. मूल धन।

असलियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तथ्य। वास्तविकता। २. जड़। मूल। ३. मूल तत्व। सार।

असली–वि० [अ० असल] १. सच्चा। खरा। २. मूल। प्रधान। ३. बिना मिलावट का। शुद्ध।

असवारा–संज्ञा पु० दे० "सवार"।

असह–वि० दे० "असह्य"।

असहनशील–वि० [सं०] [संज्ञा असहनशीलता] १. जिसमें सहन करने की शक्ति न हो। असहिष्णु। २. चिड़चिड़ा। तुनक-मिजाज।

असहनीय–वि० [सं०] न सहने योग्य। जो बरदाश्त न हो सके। असह्य।

असहयोग–संज्ञा पु० [सं०] १. मिलकर काम न करना। २. आधुनिक राजनीति में प्रजा या उसके किसी वर्ग का राज्य से असंतोष प्रकट करने के लिये उसके कामों से बिल्कुल अलग रहना।

असहाय–वि० [सं०] १. जिसे कोई सहारा न हो। निःसहाय। निराश्रय। २. अनाथ।

असहिष्णु–वि० [सं०] [संज्ञा असहिष्णुता] १ असहनशील। २. चिड़चिड़ा।

असही–वि० [सं० असह] दूसरे को देखकर जलनेवाला। ईर्ष्यालु।

असह्य–वि० [सं०] जो बरदाश्त न हो सके। असहनीय।

असाँच –वि० [सं० असत्य] असत्य। झूठ। मृषा।

असा–संज्ञा पु० [अ०] १. सोंटा। डंडा। २. चाँदी या सोने से मढ़ा हुआ सोंटा।

असाई –वि० [सं० अशालीन] अशिष्ट। बेहूदा। बदतमीज।

असाढ़–संज्ञा पु० दे० "आषाढ़"।

असाढ़ी–वि० [सं० आषाढ़] आषाढ़ का। संज्ञा स्त्री० १. वह फसल जो आषाढ़ में बोई जाय। खरीफ़। २. आषाढ़ी पूर्णिमा।

असाधारण–वि० [सं०] जो साधारण न हो। असामान्य। गैर-मामूली।

असाधु–वि० [सं०] [स्त्री० असाध्वी] १. दुष्ट। दुर्जन। २. अविनीत। अशिष्ट।

असाध्य–वि० [सं०] १. न होने योग्य। दुष्कर। कठिन। २. न आरोग्य होने के योग्य। जैसे असाध्य रोग।

असामयिक–वि० [सं०] जो नियत समय से पहले या पीछे हो। बिना समय का।

असामर्थ्य–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शक्ति का अभाव। अक्षमता। २. निर्बलता। नाताकती।

असामान्य–वि० [सं०] असाधारण। गैर-मामूली।

असामी–संज्ञा पु० [अ० असामी] १. व्यक्ति। प्राणी। २. जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो। ३. वह जिसने लगान पर जोतने के लिये जमींदार से खेत लिया हो। रैयत। काश्तकार। जोता। ४. मुद्दालेह। देनदार। ५. अपराधी। मुलजिम। ६. वह जिससे किसी प्रकार का मतलब गाँठना हो।
संज्ञा स्त्री० नौकरी। जगह।

असार–वि० [सं०] [संज्ञा असारता] १. सार-रहित। निःसार। २. शून्य। खाली। ३ तुच्छ।

असालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कुलीनता। २. सचाई। तत्त्व।

असालतन्–क्रि० वि० [अ०] स्वयं। खुद।

असावधान–वि० [सं०] जो सावधान या सतर्क न हो। जो सचेत न हो।

असावधानी– संज्ञा स्त्री० [सं०] बेखबरी। बेपरवाही।

असावरी–संज्ञा स्त्री० [सं० आशावरी] छत्तीस रागिनियों में से एक।

असासा–संज्ञा पु० [अ०] माल। असबाब। संपत्ति।

असि–संज्ञा स्त्री [सं०] तलवार। खड्ग।

असित–वि० [सं०] १. काला। २. दुष्ट। बुरा। ३. टेढ़ा। कुटिल।

असिद्ध–वि० [सं०] १. जो सिद्ध न हो। २. बे पका। कच्चा। ३. अपूर्ण। अधूरा। ४ निष्फल। व्यर्थ। ५. अप्रमाणित।

असिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अप्राप्ति। अनिष्पत्ति। २. कच्चापन। कचाई। ३ अपूर्णता।

असिपत्र वन–संज्ञा पु० [सं०] एक नरक।

असी–संज्ञा स्त्री० [सं० असि] एक नदी जो काशी के दक्षिण गंगा से मिली है।

असीम–वि० [सं०] १. सीमारहित। बे-हद। २ अपरिमित। अनंत। ३. अपार।

असील–वि० दे० "असल"।

असीस–संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।

असीसना—क्रि० स० [सं० आशिष] आशीर्वाद देना। दुआ देना।
असु॰—संज्ञा पुं० दे० "अश्व"।
असुविधा—संज्ञा स्त्री० [सं० अ = नहीं + सुविधि = अच्छी तरह] १. कठिनाई। अड़चन। २. तकलीफ़। दिक्कत।
असुर—संज्ञा पुं० [सं०] १. दैत्य। राक्षस। २. रात्रि। ३. नीच वृत्ति का पुरुष। ४ पृथ्वी। ५. सूर्य्य। ६. बादल। ७ राहु। ८. एक प्रकार का उन्माद।
असुरसेन—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस। (कहते हैं कि इसके शरीर पर गया नामक नगर बसा है।)
असुरारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता। २ विष्णु।
असूझ—वि० [सं० अ + हिं० + सूझना] १. अँधेरा। अंधकारमय। २. जिसका वारपार न दिखाई पड़े। अपार। बहुत विस्तृत। ३. जिसके करने का उपाय न सूझे। विकट। कठिन।
असूत—वि० [सं० अस्यूत] विरुद्ध। असंबद्ध।
असूया—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० असूयक] पराए गुण में दोष लगाना। ईर्ष्या। डाह। (रस के अंतर्गत एक संचारी भाव।)
असूर्यपश्या—वि० [सं०] जिसको सूर्य्य भी न देखे। परदे में रहनेवाली।
असूल—संज्ञा पुं० दे० १. "उसूल" और २ "वसूल"।
असेय॰—वि० [सं० असह्य] न सहने योग्य। असह्य। कठिन।
असेसर—संज्ञा पुं० [अं०] वह व्यक्ति जो जज को फौजदारी के मुकद्दमे में राय देने के लिये चुना जाता है।
असैला॰—वि० [सं० अ = नहीं + शैली = रीति] [स्त्री० असैली] १. रीति-नीति के विरुद्ध कर्म करनेवाला। कुमार्गी। २. शैली के विरुद्ध। अनुचित।
असोज॰†—संज्ञा पुं० [सं० अश्वयुज्] आश्विन। क्वार मास।
असोस॰—वि० [सं० अ + शोष] जो सूखे नहीं। न सूखनेवाला।
असौंध॰—संज्ञा पुं० [अ + हिं० सौंध = सुगंध] दुर्गंध। बदबू।
अस्तंगत—वि० [सं०] १. अस्त को प्राप्त। नष्ट। २. अवनत। हीन।
अस्त—वि० [सं०] १. छिपा हुआ। तिरोहित। २. जो न दिखाई पड़े। अदृश्य। ३. डूबा हुआ (सूर्य, चंद्र आदि)। ४. नष्ट। ध्वस्त।
संज्ञा पुं० [सं०] लोप। अदर्शन।
यौ०—सूर्यास्त। शुक्रास्त। चंद्रास्त।
अस्तबल—संज्ञा पुं० [अ०] घुड़साल। तबेला।
अस्तमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अस्तमित] १. अस्त होना। २ सूर्यादि ग्रहों का अस्त होना।
अस्तमित—वि० [सं०] १ तिरोहित। छिपा हुआ। २. डूबा हुआ। ३. नष्ट। ४. मृत।
अस्तर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ नीचे की तह या पल्ला। भितल्ला। २ दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। ३. चंदन का तेल जिसे आधार बनाकर इत्र बनाये जाते हैं। ज़मीन। ४ वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ बारीक साड़ी के नीचे लगाकर पहनती हैं। अँतरौटा। अंतरपट।
अस्तरकारी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. चूने की लिपाई। सफ़ेदी। कलई। २. गचकारी। पलस्तर।
अस्तव्यस्त—वि० [सं०] उलटा-पुल्टा। छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।
अस्ताचल—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे अस्त होने पर सूर्य्य का छिप जाना कहा जाता है। पश्चिमाचल।
अस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भाव। सत्ता। २. विद्यमानता। वर्त्तमानता।
अस्तित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्ता का भाव। विद्यमानता। होना। मौजूदगी। २. सत्ता। भाव।
अस्तु—अव्य० [सं०] १. जो हो। चाहे जो हो। २. ख़ैर। भला। अच्छा।
अस्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा। बुराई। ॰ संज्ञा स्त्री० दे० "स्तुति"।
अस्तुरा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाल बनाने का छुरा। उस्तरा।
अस्तेय—संज्ञा पुं० [सं०] चोरी का त्याग। चोरी न करना। (दस धर्मों में से एक)
अस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह हथियार जिसे फेंककर शत्रु पर चलावें। जैसे, बाण, शक्ति। २. हथियार जिससे शत्रु के

चलाए हथियारों की रोक हो। जैसे, ढाल। ३. वह हथियार जो मंत्र द्वारा चलाया जाय। ४. वह हथियार जिससे चिकित्सक चीर-फाड़ करते हैं। ५. शस्त्र। हथियार।
अस्त्रचिकित्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक शास्त्र का वह अंश जिसमें चीर-फाड़ का विधान है।
अस्त्रवेद–संज्ञा पुं० [सं०] धनुर्वेद।
अस्त्रशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ अस्त्र-शस्त्र रक्खे जायँ। अस्त्रागार।
अस्त्रागार–संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रशाला।
अस्त्री–संज्ञा पुं० [सं० अस्त्रिन्] [स्त्री० अस्त्रिणी] अस्त्रधारी मनुष्य। हथियारबंद।
अस्थि–संज्ञा स्त्री० [सं०] हड्डी।
अस्थिर–वि० [सं०] १ चंचल। चला-यमान। डाँवाडोल। २. जिसका कुछ ठीक न हो।
: वि० दे० "स्थिर"।
अस्थिसंचय–संज्ञा पुं० [सं०] अंत्येष्टि संस्कार के अनंतर जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र करने का कर्म।
अस्थूल–वि० [सं०] जो स्थूल न हो। सूक्ष्म।
: वि० दे० "स्थूल"।
अस्नानः–संज्ञा पुं० दे० "स्नान"।
अस्पताल–संज्ञा पुं० [अं० हास्पिटल] औष-धालय। चिकित्सालय। दवाखाना।
अस्पृश्य–वि० [सं०] १. जो छूने योग्य न हो। २. नीच या अन्त्यज जाति का।
अस्फुट–वि० [सं०] १. जो स्पष्ट न हो। २. गूढ़। जटिल।
अस्मिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दृक्, द्रष्टा और दर्शन शक्ति को एक मानना या पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति (योग)। २. अहंकार। मोह।
अस्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. कोना। २. रुधिर। ३. जल। ४. आँसू। ५. केसर।
अस्रप–संज्ञा पुं० [सं०] १. राक्षस। २. मूल नक्षत्र। ३. जोंक।
वि० रक्त पीनेवाला।
अस्वस्थ–वि० [सं०] १ रोगी। बीमार। २. अनमना।
अस्वाभाविक–वि० [सं०] १. जो स्वाभा-विक न हो। प्रकृति-विरुद्ध। २. कृत्रिम। बनावटी।
अस्वीकार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अस्वीकृत] स्वीकार का उलटा। इनकार। नामं-ज़ूरी। नाहीं।
अस्वीकृत–वि० सं०] अस्वीकार या ना-मंजूर किया हुआ। ना-मंजूर।
अस्सी–वि० [सं० अशीति] सत्तर और दस की संख्या। दस का अठगुना।
अहं–सर्व० [सं०] मैं।
संज्ञा पुं० [सं०] अहंकार। अभिमान।
अहंकार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अहंकारी] १. अभिमान। गर्व। घमंड। २. "मैं हूँ" या "मैं करता हूँ" इस प्रकार की भावना।
अहंकारी–वि० [सं० अहंकारिन्] [स्त्री० अहंकारिणी] अहंकार करनेवाला। घमंडी।
अहंता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अहंकार। गर्व।
अहंवाद–संज्ञा पुं० [सं०] डींग मारना। शेखी हाँकना।
अह–संज्ञा पुं० [सं० अहन्] १. दिन। २. विष्णु। ३. सूर्य्य। ४. दिन का देवता।
अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य, खेद या क्लेश आदि का सूचक शब्द।
अहक*–संज्ञा स्त्री० [सं० ईहा] इच्छा।
अहकना–क्रि० अ० [हिं० अहक] लालसा करना। प्रबल इच्छा करना।
अहटानाः–क्रि० अ० [हिं० आहट] आहट लगाना। पता चलना।
क्रि० स० आहट लगाना। टोह लेना।
क्रि० अ० [सं० आहत] दुखना।
अहद–संज्ञा पुं० [अ०] प्रतिज्ञा। वादा।
अहथिर†–वि० दे० "स्थिर"।
अहदनामा–संज्ञा पुं० [फा०] १ इकरार-नामा। प्रतिज्ञापत्र। २. सुलहनामा।
अहदी–वि० पुं० [अ०] १ आलसी। आसक्ती। २. अकर्मण्य। निठल्लू।
संज्ञा पुं० [अ०] अकबर के समय के एक प्रकार के सिपाही जिनसे बड़ी आवश्यकता के समय काम लिया जाता था और जो सब दिन बैठे खाते थे।
अहन्–संज्ञा पुं० [सं०] दिन।
अहनाःं–क्रि० अ० [सं० अस्=होना] होना। (अब यह क्रिया केवल वर्तमान रूप "अहै" में ही बोली जाती है।)
अहनिसिः–अव्य० दे० "अहनिश"।
अहमक–वि० [अ०] बेवकूफ। मूर्ख।
अहमितिः–संज्ञा स्त्री० दे० "अहम्मति"।

अहमेव—संज्ञा पुं० [सं०] गर्व। घमंड।
अहम्मति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अहंकार। २. अविद्या।
अहरन—संज्ञा स्त्री० [सं० आ+धरण] निहाई।
अहरना†—क्रि० स० [सं० आहरण] १. लकड़ी को छीलकर सुडौल करना। २. डोलना।
अहरा—संज्ञा पुं० [सं० आहरण] १. कंडे का ढेर। २. वह स्थान जहाँ लोग ठहरें।
अहर्निश—क्रि० वि० [सं०] १. रात-दिन। २. सदा। नित्य।
अहलकार—संज्ञा पुं० [फा०] १. कर्मचारी। २ कारिंदा।
अहलमद—संज्ञा पुं० [फा०] अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमों की मिसिलें रखता तथा अदालत के हुक्म के अनुसार हुक्मनामे जारी करता है।
अहल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] गौतम ऋषि की पत्नी।
अहसान—संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी के साथ नेकी करना। सलूक। उपकार। २. कृपा। अनुग्रह। ३ कृतज्ञता।
अहह—अव्य० [सं०] आश्चर्य, खेद, क्लेश या शोक-सूचक एक शब्द।
अहा—अव्य० [सं० अहह] आह्लाद और प्रसन्नता-सूचक एक शब्द।
अहाता—संज्ञा पुं० [अ०] १. घेरा। हाता। बाड़ा। २. प्राकार। चहारदीवारी।
अहार—संज्ञा पुं० दे० "आहार"।
अहारना:—क्रि० स० [सं० आहरण] १. खाना। भक्षण करना। २. चपकाना। ३. कपड़े में माँड़ी देना। ४. दे० "अहरना"।
अहारी—वि० दे० "आहारी"।
अहाहा—अव्य० [सं० अहह] हर्ष-सूचक अव्यय।
अहिंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी को दुःख न देना। किसी जीव को न सताना या न मारना।
अहिंस्र—वि० [सं०] जो हिंसा न करे। अहिंसक।
अहि—संज्ञा पुं० [सं०] १. साँप। २. राहु। ३. वृत्रासुर। ४. खल। वंचक। ५. पृथिवी। ६ सूर्य। ७. मात्रिक गणों में टगण। ८. छब्बीस अक्षरों के वृत्त का एक भेद।
अहिगण—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच मात्राओं के गण—ठगण—का सातवाँ भेद।
अहिच्छत्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन दक्षिण पांचाल।
अहित—वि० [सं०] १. शत्रु। वैरी। २. हानिकारक।
संज्ञा पुं० बुराई। अकल्याण।
अहिफेन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सर्प के मुँह की लार या फेन। २. अफ़ीम।
अहिबेल—संज्ञा स्त्री० [सं० अहिवल्ली] नाग-बेल। पान।
अहिवर—संज्ञा पुं० [सं०] दोहे का एक भेद।
अहिवात—संज्ञा पुं० [सं० अभिवाद] [वि० अहिवाती] स्त्री का सौभाग्य। सोहाग।
अहिवाती—वि० स्त्री० [हिं० अहिवात] सौभाग्यवती। सोहागिन। सधवा।
अहीर—संज्ञा पुं० [सं० आभीर] [स्त्री० अहीरिन] एक जाति जिसका काम गाय-भैंस रखना और दूध बेचना है। ग्वाला।
अहीश—संज्ञा पुं० [सं०] १ शेषनाग। २. शेष के अवतार लक्ष्मण और बलराम आदि।
अहुटना:—क्रि० अ० [हिं० हटना] हटना। दूर होना। अलग होना।
अहुटाना:—क्रि० स० [हिं० हटाना] हटाना। दूर करना। भगाना।
अहुठ:—वि० [अध्युष्ठ] साढ़े तीन। तीन और आधा।
अहेतु—वि० [सं०] १. बिना कारण का। निमित्त-रहित। २. व्यर्थ। फ़जूल।
अहेतुक—वि० दे० "अहेतु"।
अहेर—संज्ञा पुं० [सं० आखेट] १. शिकार। मृगया। २. वह जंतु जिसका शिकार किया जाय।
अहेरी—संज्ञा पुं० [हिं० अहेर] १. शिकारी आदमी। आखेटक। २. व्याध।
अहो—अव्य० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग कभी संबोधन की तरह और कभी करुणा, खेद, प्रशंसा हर्ष या विस्मय सूचित करने के लिये होता है।
अहोरात्र—संज्ञा पुं० [सं०] दिन-रात।
अहोर बहोर—क्रि० वि० [हिं० बहुरना] फिर फिर। बार बार।
अहोरा बहोरा—संज्ञा पुं० [सं० अहः=दिन +हिं० बहुरना] विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन ससुराल में जाकर उसी दिन अपने घर लौट जाती है। हेराफेरी।

आ

आ—हिंदी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो 'अ' का दीर्घ रूप है।

आँक—संज्ञा पु० [सं० अंक] १. अंक। चिह्न। निशान। २. संख्या का चिह्न। अदद। ३. अक्षर। हरफ़। ४. गढ़ी हुई बात। ५. अंश। हिस्सा। ६. लकीर। मुहा०—एक ही आँक=दृढ़ बात। पक्की बात। निश्चय।

आँकड़ा—संज्ञा पु० [हिं० आँक] १. अंक। अदद। संख्या का चिह्न। २. पेंच।

आँकना—क्रि० स० [सं० अंकन] १. चिह्नित करना। निशान लगाना। दागना। २. कूतना। अंदाज़ करना। मूल्य लगाना। ३ अनुमान करना। ठहराना।

आँकर—वि० [सं० आकर] १. गहरा। २. बहुत अधिक। वि० [सं० अक्रय्य] महँगा।

आँकुस†—संज्ञा पु० दे० "अंकुश"।

आँकू—संज्ञा पुं० [हिं० आँक+ऊ (प्रत्य०)] आँकने या कूतनेवाला।

आँख—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षि] १. वह इंद्रिय जिससे प्राणियों को रूप अर्थात् वर्ण, विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है। नेत्र। लोचन। २. दृष्टि। नज़र। ध्यान। मुहा०—आँख आना या उठना=आँख में लाली, पीड़ा और सूजन होना। आँख उठाना=१. ताकना। देखना। २. हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। आँख उलट जाना=पुतली का ऊपर चढ़ जाना (मरने के समय)। आँख का तारा=१. आँख का तिल। २. बहुत प्यारा व्यक्ति। आँख की पुतली=१. आँख के भीतर रंगीन भूरी झिल्ली का वह भाग जो सफ़ेदी पर की गोल काट से होकर दिखाई पड़ता है। २. प्रिय व्यक्ति। प्यारा मनुष्य। आँखों के डोरे=आँखों के सफ़ेद ढेलों पर लाल रंग की बहुत बारीक नसें। आँख खुलना=१. पलक खुलना। २. नींद टूटना। ३. ज्ञान होना। भ्रम का दूर होना। ४. चित्त स्वस्थ होना। तबियत ठिकाने आना। आँख खोलना=१. पलक उठाना। ताकना। २. चेताना। सावधान करना। ३. सुध में होना। स्वस्थ होना। आँख गड़ना=१. आँख किरकिराना। आँख दुखना। २. दृष्टि जमना। टकटकी बँधना। ३. प्राप्ति की उत्कट इच्छा होना। आँख चढ़ना=नशे या नींद से पलकों का तन जाना और नियमित रूप से न गिरना। आँखें चार करना, चार आँखें करना=देखा-देखी करना। सामने आना। आँख चुराना या छिपाना=१. कतराना। सामने न होना। २. लज्जा से बराबर न ताकना। आँख झपकना=१.आँख बंद होना। २.नींद आना। आँखें डबडबाना=१. क्रि० अ० आँखों में आँसू भर आना। २. क्रि० स० आँख में आँसू लाना। आँखें तरेरना=क्रोध की दृष्टि से देखना। आँख दिखाना=क्रोध की दृष्टि से देखना। कोप जताना। आँख न ठहरना=चमक या द्रुत गति के कारण दृष्टि न जमना। आँख निकालना=१. क्रोध की दृष्टि से देखना। २. आँख के ढेले को काटकर अलग कर देना। आँख नीची होना=सिर का नीचा होना। लज्जा उत्पन्न होना। आँख पथराना=पलक का नियमित क्रम से न गिरना और पुतली की गति का मारा जाना (मरने का पूर्व लक्षण)। आँखों पर परदा पड़ना=अज्ञान का अंधकार छाना। भ्रम होना। आँख फड़कना=आँख की पलक का बार-बार हिलना (शुभ-अशुभ-सूचक)। आँख फाड़कर देखना=खूब आँख खोलकर देखना। आँखें फिर जाना=१. पहले की सी कृपा न रहना। बेमुरौअती आ जाना। २. मन में बुराई आना। आँख फूटना=१. आँख की ज्योति का नष्ट होना। २. बुरा लगना। कुढ़न होना। आँख फेरना=१. पहिले की सी कृपा या स्नेह-दृष्टि न रखना। मित्रता तोड़ना। ३. विरुद्ध होना। प्रतिकूल होना। आँख फोड़ना=१. आँखों की ज्योति का नाश करना। २. कोई ऐसा काम करना जिसमें आँख पर जोर पड़े। आँख बंद होना=१. आँख झपकना। पलक गिरना। २. मृत्यु होना। मरण होना। आँख बंद करके या मूँदकर=बिना सब बात देखे, सुने या विचार किए। आँख बचाना=सामना न करना। कतराना। आँखें बिछाना=१. प्रेम से स्वागत करना। २. प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा करना। बाट जोहना। आँख भर आना=आँख में आँसू आना। आँख भर देखना=खूब अच्छी तरह देखना। तृप्त होकर देखना। इच्छा भर देखना। आँख मारना=१. इशारा करना। सनकारना। २. आँख के इशारे से मना करना।

आँख मिलाना = १. आँख सामने करना। बराबर ताकना। २. सामने आना। मुँह दिखाना। आँखों में खून उतरना = क्रोध से आँखें लाल होना। आँख में गड़ना या चुभना = १. बुरा लगना। २. जँचना। पसंद आना। आँखों में चरबी छाना = मदांध होना। गर्व से किसी की ओर ध्यान न देना। आँखों में धूल डालना = सरासर धोखा देना। भ्रम में डालना। आँखों में फिरना = ध्यान पर चढ़ना। स्मृति में बना रहना। आँखों में रात करना = किसी कष्ट, चिंता या व्यग्रता से सारी रात जागते बीतना। आँखों में समाना = हृदय में बसना। चित्त में स्मरण बना रहना। किसी पर आँख रखना = १. नजर रखना चौकसी करना। २. चाह रखना। इच्छा रखना। आँख लगना = १. नींद लगना। झपकी आना। सोना। २. टकटकी लगना। दृष्टि जमना। (किसी से) आँख लगना = प्रीति होना। प्रेम होना। आँख लड़ना = १. देखा देखी होना। आँख मिलना। २. प्रेम होना। प्रीति होना। आँख लाल करना = क्रोध की दृष्टि से देखना। आँख सेंकना = दर्शन का सुख उठाना। नेत्रा-नंद लेना। आँखों से लगाकर रखना = बहुत प्रिय करके रखना। बहुत आदर-सत्कार से रखना। आँख होना = १. परख होना। पहचान होना। २. ज्ञान होना। विवेक होना।

३. विचार। विवेक। परख। शिनाख्त। पहचान। ४. कृपादृष्टि। दया-भाव। ५. संतति। संतान। लड़का-बाला। ६. आँख के आकार का छेद या चिह्न। जैसे—सूई का छेद।

आँखड़ी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "आँख"।

आँखफोड़ टिड्डा–संज्ञा पुं० [सं० आक = मदार + हिं० फोड़ना] १. हरे रंग का एक कीड़ा या फतिंगा। २. कृतघ्न। बेमुरौवत।

आँखमिचौली, आँखमीचली–संज्ञा स्त्री० [हिं० आँख + मीचना] लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का किसी दूसरे लड़के की आँख मूँदकर बैठता है और बाकी लड़के इधर-उधर छिपते हैं जिन्हें उस आँख मूँदने-वाले लड़के को ढूँढकर छूना पड़ता है।

आंग‡–संज्ञा पुं० [सं० अंग] अंग।

आँगन–संज्ञा पुं० [सं० अंगण] घर के भीतर का सहन। चौक। अजिर।

–वि० [सं०] अंग-संबंधी। अंग का।

संज्ञा पुं० १. चित्त के भाव को प्रकट करने-वाली चेष्टा। जैसे भ्रू-विक्षेप, हाव आदि। २. रस में कायिक अनुभाव। ३. नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक।

आंगिरस–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंगिरा के पुत्र बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त। २. अंगिरा के गोत्र का पुरुष।

वि० अंगिरा-संबंधी। अंगिरा का।

आँगी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "अँगिया"।

आँगुरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।

आँधी–संज्ञा स्त्री० [सं० अंघ्रि = चरण] महीन कपड़े से मढ़ी हुई चलनी।

आँच–संज्ञा स्त्री० [सं० अर्चि] १. गरमी। ताप। २. आग की लपट। लौ। ३. आग। मुहा०—आँच खाना = गरमी पाना। आग पर चढ़ना। तपना। आँच दिखाना = आग के सामने रखकर गरम करना।

४. एक एक बार पहुँचा हुआ ताप। ५. तेज। प्रताप। ६. आघात। चोट। ७. हानि। अहित। अनिष्ट। ८. विपत्ति। संकट। आफत। ९. प्रेम। मुहब्बत। १०. काम-ताप।

आँचना‡–क्रि० स० [हिं० आँच] जलाना। तपाना।

आँचर‡–संज्ञा पुं० दे० "आँचल"।

आँचल–संज्ञा पुं० [सं० अंचल] १. धोती दुपट्टे आदि के दोनों छोरों पर का भाग पल्ला। छोर। २. साधुओं का अँचला ३. साड़ी या ओढ़नी का वह भाग जो सामने छाती पर रहता है।

मुहा०—आँचल देना = १. बच्चे को पिलाना। २. विवाह की एक रीति। आँ॰ फाड़ना = बच्चे के जीने के लिये टोटका कर आँचल में बाँधना = १. हर समय रखना। अतिशय पास रखना। २. किसी हुई बात को अच्छी तरह स्मरण रखना। न भूलना। आँचल लेना = आँचल नमस्कार या अभिवादन करना। (स्त्रि०)

आँजन‡–संज्ञा पुं० दे० "अंजन"।

आँजना–क्रि० स० [सं० अंजन] लगाना।

आंजनेय–संज्ञा पुं० [सं०] अंजना के हनुमान।

आँट–संज्ञा स्त्री० [हिं० अंटी] १. हथे तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान

दाँव। वश। ३. वैर। लाग-डाँट। ४. गिरह। गाँठ। ऐंठन। ५. पूला। गट्ठा।
आँटना†—क्रि० स० दे० "अँटना"।
आँटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँटना] १. लंबे तृणों का छोटा गट्ठा। पूला। २. लड़कों के खेलने की गुल्ली। ३. सूत का लच्छा। ४. धोती की गिरह। टेंट। मुर्रा। ऐंठन।
आँट-साँट—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँट+सटना] १. गुप्त अभिसंधि। साजिश। बंदिश। २. मेल-जोल।
आँठी—संज्ञा स्त्री० [सं० अष्टि, प्रा० अट्ठि] १ दही, मलाई आदि वस्तुओं का लच्छा। २ गिरह। गाँठ। ३. गुठली। बीज।
आँड़—संज्ञा पु० [सं० अण्ड] अंडकोश।
आँडू—वि० [सं० अण्ड] अंडकोशयुक्त। जो बधिया न हो। (बैल)
आँत—संज्ञा स्त्री० [सं० अन्त्र] प्राणियों के पेट के भीतर की वह लंबी नली जो गुदा-मार्ग तक रहती है और जिससे होकर मल या रद्दी पदार्थ बाहर निकल जाता है। अन्त्र। अँतड़ी। लाद।
मुहा०—आँत उतरना=एक रोग जिसमें आँत ढीली होकर नाभि के नीचे उतर आती है और अंडकोश में पीड़ा उत्पन्न होती है। **आँतों का बल खुलना**=पेट भरना। भोजन से तृप्ति होना। **आँतें कुलकुलाना या सूखना**=भूख के मारे बुरी दशा होना।
आँतर†—संज्ञा पु० दे० "अंतर"।
आँदू—संज्ञा पु० [सं० अंदू=बेड़ी] १. लोहे का कड़ा। बेड़ी। २. बाँधने का सीकड़।
आंदोलन—संज्ञा पु० [सं०] १. बार बार हिलना डोलना। २. उथल-पुथल करनेवाला प्रयत्न। हलचल। धूम।
आँध†—संज्ञा स्त्री० [सं० अंध] १ अँधेरा। धुंध। २ रतौंधी। ३. आफत। कष्ट।
आँधना—क्रि० अ० [हिं० आँधी] वेग से धावा करना। टूटना।
आँधरा†—वि० दे० "अंधा"।
आँधारंभ†—संज्ञा पुं० [सं० अंध+आरंभ] अंधेरखाता। बिना समझा-बूझा आचरण।
आँधी—संज्ञा स्त्री० [सं० अंध=अँधेरा] बड़े वेग की हवा जिससे इतनी धूल उठती है कि चारों ओर अँधेरा छा जाय। अंधड़। अंधवाव।
वि० आँधी की तरह तेज। चुस्त। चालाक।
आँध्र—संज्ञा पु० [सं०] ताप्ती नदी के किनारे का देश।
आँबा हलदी—संज्ञा स्त्री० दे० "आमा हलदी"।
आँय बाँय—संज्ञा स्त्री० [अनु०] अनाप-शनाप। अंड बंड। व्यर्थ की बात।
आँव—संज्ञा पु० [सं० आम=कच्चा] एक प्रकार का चिकना सफेद लसदार मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।
आँवठ—संज्ञा पु० [सं० ओष्ठ] किनारा।
आँवड़ना†—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
आँवड़ा†—वि० [सं० आकुंड] गहरा।
आँवल—संज्ञा पु० [सं० उल्वम्] झिल्ली जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं। खेंडी। जेरी। साम।
आँवला—संज्ञा पु० [सं० आमलक] एक पेड़ जिसके गोल फल खट्टे होते तथा खाने और दवा के काम में आते हैं।
आँवलासार गंधक—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँवला+सं० सार गंधक] खूब साफ की हुई गंधक जो पारदर्शक होती है।
आँवाँ—संज्ञा पु० [सं० आपाक] वह गड्ढा जिसमें कुम्हार लोग मिट्टी के बरतन पकाते हैं।
मुहा०—आँवाँ का आँवाँ बिगड़ना=किसी समाज के सब लोगों का बिगड़ना।
आंशिक—वि० [सं०] अंश संबंधी। अंश-विषयक।
आंशुक जल—संज्ञा पु० [सं०] वह जल जो दिन भर धूप में और रात भर चाँदनी या ओस में रखकर छान लिया जाय। (वैद्यक)
आँस—संज्ञा स्त्री० [सं० काश] संवेदना। दर्द। संज्ञा स्त्री० [सं० पाश] १. सुतली। डोरी। २. रेशा।
संज्ञा पु० दे० "आँसू"।
आँसी†—संज्ञा स्त्री० [सं० अंश] भाजी। बैना। मिठाई जो इष्ट मित्रों के यहाँ बाँटी जाती है।
आँसू—संज्ञा पु० [सं० अश्रु] वह जल जो आँखों से शोक या पीड़ा के समय निकलता है। अश्रु।
मुहा०—आँसू गिराना या ढालना=रोना। **आँसू पीकर रह जाना**=भीतर ही भीतर रोकर रह जाना। **आँसू पुँछना**=आश्वासन मिलना।

ढारस बँधना। आँसू पोंछना = ढारस बँधाना। दिलासा देना।

आँहड–संज्ञा पु० [सं० भाड।] बरतन।

आँहाँ–अव्य० [हिं० ना + हाँ] अस्वीकार या निषेध-सूचक एक शब्द। नहीं।

आ–अव्य० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग सीमा, अभिव्याप्ति, ईषत् और अतिक्रमण के अर्थों में होता है। जैसे— (क) सीमा—आसमुद्र = समुद्र तक। आजन्म = जन्म से। (ख) अभिव्याप्ति—आपाताल = पाताल के अन्तर्भाग तक। (ग) ईषत् (थोड़ा, कुछ)—आपिंगल = कुछ कुछ पीला। (घ) अतिक्रमण—आकालिक = बे मौसिम का।
उप० [सं०] एक उपसर्ग जो प्रायः गत्यर्थक धातुओं के पहले लगता है और उनके अर्थों में कुछ थोड़ी सी विशेषता कर देता है; जैसे, आरोहण, आकंपन। जब यह 'गम्' (जाना), 'या' (जाना), 'दा' (देना), तथा 'नी' (ले जाना) धातुओं के पहले लगता है, तब उनके अर्थों को उलट देता है; जैसे 'गमन' से 'आगमन', 'नयन' से 'आनयन', 'दान' से 'आदान'।

आइंदा–वि० [फा०] आनेवाला। आगंतुक। भविष्य।
संज्ञा पु० [फा०] भविष्य काल।
क्रि० वि० आगे। भविष्य में।

आइ*–संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] आयु जीवन।

आइना†–संज्ञा पु० दे० "आईना"।

आई–संज्ञा स्त्री० [हिं० आना] मृत्यु। मौत।
* संज्ञा स्त्री० दे० "आइ"।

आईन–संज्ञा पु० [फा०] १. नियम। क़ायदा। ज़ाबता। २. क़ानून। राजनियम।

आईना–संज्ञा पु० [फा०] १. आरसी। दर्पण। शीशा।
मुहा०—आईना होना = स्पष्ट होना। आईने में मुँह देखना = अपनी योग्यता को जाँचना।
२. किवाड़ का दिलहा।

आईनाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. झाड़-फानूस आदि की सजावट। २. फ़र्श में पत्थर या ईंट की जुड़ाई।

आईनासाज़–संज्ञा पु० [फा०] आईना बनानेवाला।

आईनासाज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] काँच की चद्दर के टुकड़े पर क़लई करने का काम।

आईनी–वि० [फा० आईन] क़ानूनी। राजनियम के अनुकूल।

आउ*–संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] जीवन। उम्र।

आउज–संज्ञा पु० [सं० वाद्य] ताशा।

आउबाउ*†–संज्ञा पु० [सं० वायु] अंड बंड बात। असंबद्ध प्रलाप।

आउस–संज्ञा पु० [सं० आशु, बँग० आउश] धान का एक भेद। भदई। ओसहन।

आकंपन–संज्ञा पु० [सं०] काँपना।

आक–संज्ञा पु० [सं० अर्क] मदार। अकौआ अकवन।

आकड़ा†–संज्ञा पु० दे० "आक"।

आक़बत–संज्ञा स्त्री० [अ०] मरने के पीछे की अवस्था। परलोक।

आकबाक*–संज्ञा पु० [सं० वाक्य] अक बक। अंडबंड बात। ऊटपटाँग बात।

आकर–संज्ञा पु० [सं०] १. खान। उत्पत्ति स्थान। २. ख़ज़ाना। भांडार। ३. भेद किस्म। जाति। ४. तलवार चलाने का एक भेद।

आकरकरहा–संज्ञा पु० [अ०] दे० "अकरकरा"।

आकरखना*–क्रि० स० दे० "आकर्षना"

आकरिक–संज्ञा पु० [सं०] खान खोदनेवाला।

आकरी–संज्ञा स्त्री० [सं० आकर] खान खोदने का काम।

आकर्ण–वि० [सं०] कान तक फैला हुआ

आकर्ष–संज्ञा पु० [सं०] १. एक जगह के पदार्थ का बल से दूसरी जगह जाना खिंचाव। कशिश। २. पासे का खेल ३. बिसात। चौपड़। ४. इंद्रिय। ५ धनुष चलाने का अभ्यास। ६. कसौटी ७. चुंबक।

आकर्षक–वि० [सं०] आकर्षण करनेवाला खींचनेवाला।

आकर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकर्षित आकृष्ट] १. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना २. खिंचाव। ३. एक प्रयोग जिसके द्वारा दूर देशस्थ पुरुष या पदार्थ पास में आ जाता है। (तंत्र)

आकर्षण शक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] भौतिक

पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।
आकर्षना-क्रि०स० [सं० आकर्षण] खींचना।
आकर्षित-वि० [सं०] खींचा हुआ।
आकलन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आकलनीय, आकलित] १. ग्रहण। लेना। २. संग्रह। संचय। इकट्ठा करना। ३. गिनती करना। ४. अनुष्ठान। संपादन। ५. अनुसंधान।
आकली-संज्ञा स्त्री० [सं० आकुल] आकुलता। बेचैनी।
आकस्मिक-वि० [सं०] १. जो बिना किसी कारण के हो। २. जो अचानक हो। सहसा होनेवाला।
आकांक्षक-वि० दे० "आकांक्षी"।
आकांक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इच्छा। अभिलाषा। वांछा। चाह। २. अपेक्षा। ३. अनुसंधान। ४. वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिये एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित होना। (न्याय)
आकांक्षित-वि० [सं०] १. इच्छित। अभिलषित। वांछित। २. अपेक्षित।
आकांक्षी-वि० [सं० आकांक्षिन्] [स्त्री० आकांक्षिणी] इच्छा करनेवाला। इच्छुक।
आकार-संज्ञा पु० [सं०] १ स्वरूप। आकृति। सूरत। २. डील-डौल। कद। ३. बनावट। संघटन। ४. निशान। चिह्न। ५. चेष्टा। ६. 'आ' वर्ण। ७. बुलावा।
आकारी-वि० [सं०] [स्त्री० आकारिणी] आह्वान करनेवाला। बुलानेवाला।
आकाश-संज्ञा पु० [सं०] १ अंतरिक्ष। आसमान। २ वह स्थान जहाँ वायु के अतिरिक्त और कुछ न हो। (पंचभूतों में से एक।) ३. अभ्रक। अबरक।
मुहा०—आकाश छूना या चूमना = बहुत ऊँचा होना। आकाश पाताल एक करना = १. भारी उद्योग करना। २. आंदोलन करना। हलचल करना। आकाश पाताल का अंतर = बड़ा अंतर। बहुत फ़र्क़। आकाश से बातें करना = बहुत ऊँचा होना।
आकाशकुसुम-संज्ञा पु० [सं०] १. आकाश का फूल। खपुष्प। २. अनहोनी बात। असंभव बात।
आकाशगंगा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुत से छोटे छोटे तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर-दक्षिण फैला है। आकाश जनेऊ। डहर। २. पुराणानुसार आकाश में की गंगा। मंदाकिनी।
आकाशचारी-वि० [सं० आकाशचारिन्] आकाश में फिरनेवाला। आकाशगामी। संज्ञा पु० १. सूर्यादि ग्रह। नक्षत्र। २. वायु। ३. पक्षी। ४. देवता।
आकाशदीया-संज्ञा पु० [सं० आकाश + हिं० दीया] वह दीपक जो कातिक में हिंदू लोग कंडील में रखकर एक ऊँचे बाँस के सिरे पर बाँधकर जलाते हैं।
आकाशधुरी-संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश + धुरी] खगोल का ध्रुव। आकाशध्रुव।
आकाशनीम-संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश + हिं० नीम] नीम का बाँदा।
आकाशपुष्प-संज्ञा पु० [सं०] १. आकाश का फूल। आकाशकुसुम। खपुष्प। २. असंभव वस्तु। अनहोनी बात।
आकाशबेल-संज्ञा स्त्री० दे० "अमरबेल"।
आकाशभाषित-संज्ञा पु० [सं०] नाटक के अभिनय में वक्ता का ऊपर की ओर देखकर किसी प्रश्न को इस तरह कहना मानो वह उससे किया जा रहा है और फिर उसका उत्तर देना।
आकाशमंडल-संज्ञा पु० [सं०] खगोल।
आकाशमुखी-संज्ञा पु० [सं० आकाश + हिं० मुखी] एक प्रकार के साधु जो आकाश की ओर मुँह करके तप करते हैं।
आकाशलोचन-संज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ से ग्रहों की स्थिति या गति देखी जाती है। मानमंदिर। अबज़रवेटरी।
आकाशवाणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शब्द या वाक्य जो आकाश से देवता लोग बोलें। देववाणी।
आकाशवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अनिश्चित जीविका। ऐसी आमदनी जो बँधी न हो।
आकाशी-संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश + ई (प्रत्य०)] वह चाँदनी जो धूप आदि से बचने के लिये तानी जाती है।
आकाशीय-वि० [सं०] १. आकाश संबंधी। आकाश का। २. आकाश में रहने या होनेवाला। ३. दैवागत। आकस्मिक।
आकिल-वि० [अ०] बुद्धिमान्।
आकिलखानी-[अ० + फ़ा०] एक रंग जो कालापन लिए लाल होता है।
आकीर्ण-वि० [सं०] व्याप्त। पूर्ण।

आकुंचन–संज्ञा पुं० [सं०] सिकुड़ना। सिमटना। संकोचन।
आकुंचित–वि० [सं०] १. सिकुड़ा हुआ। सिमटा हुआ। २. टेढ़ा। कुटिल।
आकुंठन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकुंठित] १. गुठला या कुंद होना। २. लज्जा। शर्म।
आकुल–वि० [सं०] [संज्ञा आकुलता] १. व्यग्र। घबराया हुआ। उद्विग्न। २. विह्वल। कातर। ३. व्याप्त। संकुल।
आकुलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आकुलित] १. व्याकुलता। घबराहट। २. व्याप्ति।
आकुलित–वि० [सं०] १. व्याकुल। घबराया हुआ। २. व्याप्त।
आकृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बनावट। गढ़न। ढाँचा। २. मूर्ति। रूप। ३. मुख। चेहरा। ४. मुख का भाव। चेष्टा। ५. २२ अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
आकृष्ट–वि० [सं०] खींचा हुआ।
आक्रंदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोना। २. चिल्लाना।
आक्रम–संज्ञा पुं० दे० "पराक्रम"।
आक्रमण–संज्ञा पुं० [सं०] १. बलपूर्वक सीमा का उल्लंघन करना। हमला। चढ़ाई। २. आघात पहुँचाने के लिये किसी पर झपटना। हमला। ३. घेरना। छेंकना। मुहासिरा। ४. आक्षेप। निंदा।
आक्रमित–वि० [सं०] [स्त्री० आक्रमिता] जिस पर आक्रमण किया गया हो।
आक्रमिता (नायिका)–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा नायिका जो मनसा, वाचा, कर्मणा अपने मित्र को वश करे।
आक्रांत–वि० [सं०] १. जिसपर आक्रमण हो। जिस पर हमला हो। २. घिरा हुआ। आवृत्त। ३. वशीभूत। पराजित। विवश। ४. व्याप्त। आकीर्ण।
आक्रोश–संज्ञा पुं० [सं०] कोसना। शाप देना। गाली देना।
आक्षिप्त–वि० [सं०] १. फेंका हुआ। गिराया हुआ। २. दूषित। ३. निंदित।
आक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना। गिराना। २. दोष लगाना। अपवाद या इल्जाम लगाना। ३. कटूक्ति। ताना। ४. एक वात रोग जिसमें अंग में कँपकँपी होती है। ५. ध्वनि। व्यंग्य।
आक्षेपक–वि० [सं०] [स्त्री० आक्षेपिका] १. फेंकनेवाला। २. खींचनेवाला। ३. आक्षेप करनेवाला। निंदक।
आखत†–संज्ञा पुं० [सं० अक्षत] १. अक्षत। बिना टूटा चावल। २. चंदन या केसर में रँगा चावल जो मूर्ति या दूल्हा-दुलहिन के माथे में लगाया जाता है।
आखता–वि० [फा०] जिसके अंडकोश चीरकर निकाल लिए गए हों। (घोड़ा)
आखन–क्रि० वि० [सं० आ+क्षण] प्रति क्षण। हर घड़ी।
आखना–क्रि० स० [सं० आख्यान] कहना। क्रि० स० [सं० आकांक्षा] चाहना। क्रि० स० [हिं० आँख] देखना। ताकना।
आखर–संज्ञा पुं० [सं० अक्षर] अक्षर।
आखा–संज्ञा पुं० [सं० आच्छादन] झीने कपड़े से मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी। वि० [सं० अक्षय] कुल। पूरा। समूचा।
आखा तीज–संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षयतृतीया] वैशाख सुदी तीज। (स्त्रियों द्वारा वट का पूजन और दान)
आखिर–वि० [फा०] अंतिम। पीछे का। संज्ञा पुं० १. अंत। २. परिणाम। फल। *क्रि० वि० [फा०] अंत में। अंत को।*
आखिरकार–क्रि० वि० [फा०] अंत में।
आखिरी–वि० [फा०] अंतिम। पिछला।
आखु–संज्ञा पुं० [सं०] १. मूसा। चूहा। २. देवताल। देवताड़। ३. सूअर।
आखुपाषाण–संज्ञा पुं० [सं०] १. चुंबक पत्थर। २. संखिया।
आखेट–संज्ञा पुं० [सं०] अहेर। शिकार।
आखेटक–संज्ञा पुं० [सं०] शिकार। अहेर। वि० [सं०] शिकारी। अहेरी।
आखेटी–संज्ञा पुं० [सं० आखेटिन्] [स्त्री० आखेटिनी] शिकारी। अहेरी।
आखोर–संज्ञा पुं० [फा०] १. जानवरों के खाने से बची हुई घास या चारा। २. कूड़ा करकट। ३. निकम्मी वस्तु। वि० [फा०] १. निकम्मा। बेकाम। २. सड़ा-गला। रद्दी। ३. मैला-कुचैला।
आख्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नाम। २. कीर्ति। यश। ३. व्याख्या।
आख्यात–वि० [सं०] १. प्रसिद्ध। विख्यात। २. कहा हुआ। ३. राजवंश के लोगों का वृत्तांत।
आख्याति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नामवरी।

ख्याति। शुहरत। २. कथन।

आख्यान–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्णन। वृत्तांत। बयान। २. कथा। कहानी। क़िस्सा। ३. उपन्यास के नौ भेदों में से एक। वह कथा जिसे स्वयं कवि ही कहे।

आख्यानक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्णन। वृत्तांत। बयान। २. कथा। क़िस्सा। कहानी। ३. पूर्व वृत्तांत। कथानक।

आख्यानिकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दंडक वृत्त का एक भेद।

आख्यायिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कथा। कहानी। क़िस्सा। २. वह कल्पित कथा जिससे कुछ शिक्षा निकले। ३. एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र भी अपने अपने चरित्र अपने मुँह से कुछ कुछ कहते हैं।

आगंतुक–वि० [सं०] १. जो आवे। आगमनशील। २. जो इधर उधर से घूमता-फिरता आ जाय।

आग–संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि] १. तेज और प्रकाश का पुंज जो उष्णता की पराकाष्ठा पर पहुँची हुई वस्तुओं में देखा जाता है। अग्नि। बसंदर। २. जलन। ताप। गरमी। ३. कामाग्नि। काम का वेग। ४. वात्सल्य। प्रेम। ५. डाह। ईर्ष्या।

वि० १. जलता हुआ। बहुत गरम। २. जो गुण में उष्ण हो।

मुहा०—आग बबूला (बगूला) होना या **बनना** = क्रोध के आवेश में होना। अत्यंत कुपित होना। **आग बरसना** = बहुत गरमी पड़ना। **आग बरसाना** = शत्रु पर खूब गोलियाँ चलाना। **आग लगना** = १. आग से किसी वस्तु का जलना। २. क्रोध उत्पन्न होना। कुढ़न होना। ३. महँगा फैलना। गिरानी होना। **आग लगे** = बुरा हो। नाश हो। (स्त्री०) **आग लगाना** = १. आग से किसी वस्तु को जलाना। २. गरमी करना। जलन पैदा करना। ३. उद्वेग बढ़ाना। जोश बढ़ाना। भड़काना। ४. क्रोध उत्पन्न करना। ५. चुग़ली खाना। ६. बिगाड़ना। नष्ट करना। **आग होना** = १. बहुत गर्म होना। २. क्रुद्ध होना। रोष में भरना। **पानी में आग लगाना** = १. अनहोनी बातें कहना। २. असंभव कार्य्य करना। ३. जहाँ लड़ाई की कोई बात न हो, वहाँ भी लड़ाई लगा देना। **पेट की आग** = भूख।

आगत–वि० [सं०] [स्त्री० आगता] आया हुआ। प्राप्त। उपस्थित।

आगतपतिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति परदेश से लौटा हो।

आगत स्वागत–संज्ञा पुं० [सं० आगत + स्वागत] आए हुए व्यक्ति का आदर। आदर-सत्कार। आव-भगत।

आगम–संज्ञा पुं० [सं०] १. अवाई। आगमन। आमद। २. भविष्य काल। आनेवाला समय। ३. होनहार।

मुहा०—आगम करना = ठिकाना करना। उपक्रम बाँधना। लाभ का डौल करना। उपाय रचना। **आगम जनाना** = होनहार की सूचना देना। **आगम बाँधना** = आनेवाली बात का निश्चय करना।

४. समागम। संगम। ५. आमदनी। आय। ६. व्याकरण में किसी शब्दसाधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाय। ७. उत्पत्ति। ८. शब्द-प्रमाण। ९. वेद। १०. शास्त्र। ११. तंत्र-शास्त्र। १२. नीति-शास्त्र। नीति।

वि० [सं०] आनेवाला। आगामी।

आगमजानी–वि० [सं० आगमज्ञानी] आगमज्ञानी। होनहार का जाननेवाला।

आगमज्ञानी–वि० [सं०] भविष्य का जाननेवाला। आगमजानी।

आगमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. अवाई। आना। आमद। २. प्राप्ति। आय। लाभ।

आगमवाणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भविष्यवाणी।

आगमविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदविद्या।

आगमसोची–वि० [सं० आगम + हिं० सोचना] दूरदर्शी। अग्रसोची।

आगामी–संज्ञा पुं० [सं० आगम = भविष्य] आगम विचारनेवाला। ज्योतिषी।

आगर–संज्ञा पुं० [सं० आकर] [स्त्री० आगरी] १. खान। आकर। २. समूह। ढेर। ३. कोष। निधि। ख़ज़ाना। ४. वह गड्ढा जिसमें नमक जमाया जाता है।

संज्ञा पुं० [सं० आगार] १. घर। गृह। २. छाजन। छप्पर।

वि० [सं० अग्र] १. श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़कर। २. चतुर। होशियार। दक्ष। कुशल।

आगरी–संज्ञा पुं० [हिं० आगर] . . . वाला पुरुष। लोनिया।

आगल–संज्ञा पुं० [सं० अर्गल] ब्योंड़ा। अँवड़ा।

क्रि० वि० [हिं० अगला] सामने। आगे। वि० अगला।

आगला—क्रि० वि० दे० "अगला"

आगवन—संज्ञा पुं० दे० "आगमन"।

आगा—संज्ञा पुं० [सं० अग्र] १. किसी चीज के आगे का भाग। अगाड़ी। २. शरीर का अगला भाग। ३. छाती। वक्षस्थल। ४. मुख। मुँह। ५. ललाट। माथा। ६. लिंगेंद्रिय। ७. अँगरखे या कुर्ते आदि की काट में आगे का टुकड़ा। ८ सेना या फौज का अगला भाग। हरावल। ९. घर के सामने का मैदान। १० पेशानीमा। आगड़ा। ११. आगे आनेवाला समय। भविष्य।

संज्ञा पुं० [तु० आग़ा] १. मालिक। सरदार। २. काबुली। अफ़गान।

आगान—संज्ञा पुं० [सं० आ+गान] बात। प्रसंग। आख्यान। वृत्तांत।

आगा-पीछा—संज्ञा पुं० [हिं० आगा+पीछा] १ हिचक। सोच-विचार। दुबिधा। २. परिणाम। नतीजा। ३. शरीर का अगला और पिछला भाग।

आगामि, आगामी—वि० [सं० आगामिन्] [स्त्री० आगामिनी] भावी। होनहार। आनेवाला।

आगार—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. स्थान। जगह। ३. ख़ज़ाना।

आगाह—वि० [फा०] जानकार। वाक़िफ़। संज्ञा पुं० [हिं० आगा+आह (प्रत्य०)] आगम। होनहार।

आगाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] जानकारी।

आगि—संज्ञा स्त्री० दे० "आग"।

आगिल—वि० दे० "अगला"।

आगी—संज्ञा स्त्री० दे० "आग"।

आगु—क्रि० वि० दे० "आगे"।

आगे—क्रि० वि० [सं० अग्र] १. और दूर पर। और बढ़कर। 'पीछे' का उलटा। २. समक्ष। सम्मुख। सामने। ३. जीवनकाल में। जीते जी। ४. इसके पीछे। इसके बाद। ५. भविष्य में। आगे को। ६. अनंतर। बाद। ७. पूर्व। पहले। ८. अतिरिक्त। अधिक। ९. गोद में। लालन पालन में। जैसे, उसके आगे एक लड़का है। मुहा०—आगे आना=१. सामने आना। २. सामने पड़ना। मिलना। ३. सामना करना। भिड़ना। ४. घटित होना। घटना। आगे करना=१. उपस्थित करना। प्रस्तुत करना। २. अगुआ बनाना। मुखिया बनाना। आगे को=आगे। भविष्य में। आगे चलकर या आगे जाकर=भविष्य में। इसके बाद। आगे निकलना=बढ़ जाना। आगे पीछे=१. एक के पीछे एक। एक के बाद दूसरा क्रम से। २. आस पास। किसी के आगे पी० होना=किसी के वश में किसी प्राणी का होना आगे से=१. सामने से। २. आइंदा से भविष्य में। ३. पहले से। पूर्व से। बहुत दिं से। आगे से लेना=अभ्यर्थना करना आगे होना=१. आगे बढ़ना। अग्रसर होना २. बढ़ जाना। ३ सामने आना। ४. मुक़ाबिला करना। भिड़ना। ५. मुखिया बनना।

आगौन—संज्ञा पुं० दे० "आगमन"।

आग्नीध्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ सोलह ऋत्विजों में से एक। २. वह यज्ञ मान जो साग्निक हो या अग्निहोत्र करत हो। ३. यज्ञमंडप।

आग्नेय—वि० [सं०] [स्त्री० आग्नेयी] १ अग्नि-संबंधी। अग्नि का। २. जिसके देवता अग्नि हों। ३. अग्नि से उत्पन्न ४. जिससे आग निकले। जलानेवाला। संज्ञा पुं० १. सुवर्ण। सोना। २. रक्त रुधिर। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. अग्नि के पुत्र कार्त्तिकेय। ५. दीपन औषध। ६ ज्वालामुखी पर्वत। ७ प्रतिपदा। ८ दक्षिण का एक देश जिसकी प्रधान नगर माहिष्मती थी। ९. वह पदार्थ जिससे आग भड़क उठे। जैसे बारूद। १०. ब्राह्मण ११. अग्निकोण।

यौ०—आग्नेयस्नान=भस्म पोतना।

आग्नेयास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के अस्त्रों का एक भेद जिनसे आग निकलती थी या जिनके चलाने पर आग बरसती थी।

आग्नेयी—वि० स्त्री० [सं०] १. अग्नि के दीपन करनेवाली औषध। २. पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा।

आग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुरोध। हठ। जिद। २. तत्परता। परायणता। ३. बल। जोर। आवेश।

आग्रहायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. अगहन। मार्गशीर्ष मास। २. मृगशिरा नक्षत्र।

७०२१

आग्रही–वि० [सं० आग्रहिन्] हठी। जिद्दी।
आघः–संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] मूल्य। क़ीमत।
आघात–संज्ञा पुं० [सं०] १. धक्का। ठोकर। २. मार। प्रहार। चोट। आक्रमण। ३. वध-स्थान। बूचड़ख़ाना।
आघूर्ण–वि० [सं०] १. घूमता हुआ। फिरता हुआ। २. हिलता हुआ।
आघूर्णित–वि० [सं०] इधर उधर फिरता हुआ। चकराया हुआ।
आघ्राण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आघात, आघ्रेय] १. सूँघना। बास लेना। २. अघाना। तृप्ति।
आचमन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आचमनीय, आचमित] १. जल पीना। २ पूजा या धर्म्म संबंधी कर्म्म के आरंभ में दाहिने हाथ में थोड़ा सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना।
आचमनी–संज्ञा स्त्री० [सं० आचमनीय] एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं।
आचरजः–संज्ञा पुं० दे० "अचरज"।
आचरण–संज्ञा० पुं० [सं०] [वि० आचरणीय, आचरित] १. अनुष्ठान। २. व्यवहार। बर्त्ताव। चाल-चलन। ३. आचार-शुद्धि। सफ़ाई। ४. रथ। ५ चिह्न। लक्षण।
आचरणीय–वि० [सं०] व्यवहार करने योग्य। करने योग्य।
आचरनः–संज्ञा पुं० दे० "आचरण"।
आचरनाः–क्रि० अ० [सं० आचरण] आचरण करना। व्यवहार करना।
आचरित–वि० [सं०] किया हुआ।
आचार–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यवहार। चलन। रहन-सहन। २. चरित्र। चाल-ढाल। ३ शील। ४. शुद्धि। सफ़ाई।
आचारजः–संज्ञा पुं० दे० "आचार्य्य"।
आचारजीः–संज्ञा स्त्री० [सं० आचार्य्य] पुरोहिताई। आचार्य्य होने का भाव।
आचारवान्–वि० [सं०] [स्त्री० आचारवती] पवित्रता से रहनेवाला। शुद्ध आचार का।
आचार विचार–संज्ञा पुं० [सं०] आचार और विचार। रहने की सफ़ाई। शौच।
आचारी–वि० [सं० आचारिन्] [स्त्री० आचारिणी] आचारवान्। चरित्रवान्। संज्ञा पुं० रामानुज संप्रदाय का वैष्णव।
आचार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आचार्य्याणी] १ उपनयन के समय गायत्री मंत्र का उपदेश करनेवाला। गुरु। २. वेद पढ़ानेवाला। ३. यज्ञ के समय कर्मोपदेशक। ४. पुरोहित। ५. अध्यापक। ६. ब्रह्मसूत्र के प्रधान भाष्यकार शंकर, रामानुज, मध्व और वल्लभाचार्य। ७ वेद का भाष्यकार।
विशेष—स्वयं आचार्य्य का काम करनेवाली स्त्री आचार्य्या कहलाती है। आचार्य्य की पत्नी को आचार्य्याणी कहते हैं।
आच्छन्न–वि० [सं०] १. ढका हुआ। आवृत। २. छिपा हुआ।
आच्छादक–संज्ञा पुं० [सं०] ढाँकनेवाला।
आच्छादन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आच्छादित, आच्छिन्न] १. ढकना। २. वस्त्र। कपड़ा। ३ छाजन। छवाई।
आच्छादित–वि० [सं०] १. ढका हुआ। आवृत। १. छिपा हुआ। तिरोहित।
आछत†–क्रि० वि० [क्रि० अ० आछना का कृदंत रूप] १. होते हुए। रहते हुए। विद्यमानता में। मौजूदगी में। सामने। २ अतिरिक्त। *सिवाय*। छोड़कर।
आछना–क्रि० अ० [सं० अस् = होना] १. होना। २. रहना। विद्यमान होना।
आछाः–वि० दे० "अच्छा"।
आछेः–क्रि० वि० [हिं० अच्छा] अच्छी तरह।
आछेपः–संज्ञा पुं० दे० "आक्षेप"।
आज–क्रि० वि० [सं० अद्य] १. वर्त्तमान दिन में। जो दिन बीत रहा है, उसमें। २ इन दिनों। वर्त्तमान समय में। ३. इस वक्त। अब।
आजकल–क्रि० वि० [हिं० आज + कल] इन दिनों। इस समय। वर्त्तमान दिनों में।
मुहा०–आज कल करना = टाल मटोल करना। हीला हवाला करना। आज कल लगना = अब तब लगना। मरण काल निकट आना।
आजन्म–क्रि० वि० [सं०] जीवन भर। जन्म भर। जिंदगी भर।
आजमाइश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] परीक्षा।
आजमाना–क्रि० स० [फ़ा० आज़माइश] परीक्षा करना। परखना।
आजा–संज्ञा पुं० [सं० आर्य] [स्त्री० आजी] पितामह। दादा। बाप का बाप।
आजागुरु–संज्ञा पुं० [हिं० आजा + गुरु] गुरु का गुरु।
आजाद–वि० [फ़ा०] [संज्ञा आज़ादी, आज़ादगी] १ जो बद्ध न हो। छूटा हुआ। मुक्त। बरी। २ बेफ़िक्र। बेपरवाह। ३

5857

स्वतंत्र। स्वाधीन। ४. निडर। निर्भय। ५. स्पष्टवक्ता। हाज़िर-जवाब। ६. उद्धत। ७. सूफी संप्रदाय के फ़कीर जो स्वतंत्र विचार के होते हैं।

आजादी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. स्वतंत्रता। स्वाधीनता। २. रिहाई। छुटकारा।

आजानु–वि०[सं०] जाँघ या घुटने तक लंबा।

आजानुबाहु–वि० [सं०] जिसके बाहु जानु तक लंबे हों। जिसके हाथ घुटने तक पहुँचें। (वीरों का लक्षण)

आजार– संज्ञा पु० [फा०] १. रोग। बीमारी। २. दुःख। तकलीफ़।

आजिज–वि० [अ०] १. दीन। विनीत। २. हैरान। तंग।

आजिजी–संज्ञा स्त्री० [अ०] दीनता।

आजीवन–क्रि० वि० [सं०] जीवन-पर्यंत। ज़िंदगी भर।

आजीविका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्ति। रोजी।

आज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बड़ों का छोटों को किसी काम के लिये कहना। आदेश। हुक्म। २. अनुमति।

आज्ञाकारी–वि० [सं० आज्ञाकारिन्] [स्त्री० आज्ञाकारिणी] १. आज्ञा माननेवाला। हुक्म माननेवाला। २. सेवक। दास।

आज्ञापक–वि० [सं०] [स्त्री० आज्ञापिका] १. आज्ञा देनेवाला। २. प्रभु। स्वामी।

आज्ञापत्र–संज्ञा पु० [सं०] वह लेख जिसके अनुसार किसी आज्ञा का प्रचार किया जाय। हुक्मनामा।

आज्ञापन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० आज्ञापित] सूचित करना। जताना।

आज्ञापालक–वि० [सं०] [स्त्री० आज्ञापालिका] १. आज्ञा का पालन करनेवाला। आज्ञाकारी। २. दास। टहलुआ।

आज्ञापित–वि० [सं०] सूचित किया हुआ। जताया हुआ।

आज्ञापालन–संज्ञा पु० [सं०] आज्ञा के अनुसार काम करना। फ़रमाँ बरदारी।

आज्ञाभंग–संज्ञा पु० [सं०] आज्ञा न मानना।

आटना–क्रि० स० [सं० अट्ट] तोपना। दबाना।

आटा–संज्ञा पु० [सं० अटन=घूमना] १. किसी अन्न का चूर्ण। पिसान। चून। मुहा०–आटे दाल का भाव मालूम होना = संसार के व्यवहार का ज्ञान होना। आटे दाल की फ़िक्र = जीविका की चिंता।
२. किसी वस्तु का चूर्ण। बुकनी।

आटोप–संज्ञा पु० [सं०] १. आच्छादन। फैलाव। २. आडंबर। विभव।

आठ–वि० [सं० अष्ट] चार का दूना। मुहा०–आठ-आठ आँसू रोना = बहुत अधिक विलाप करना। आठों गाँठ कुम्मैत = १. सर्वगुण संपन्न। २. चतुर। ३. घुटा हुआ। धूर्त। आठों पहर = दिन रात।

आडंबर–संज्ञा पु० [सं०] [वि० आडंबरी] १. गंभीर शब्द। २ तुरही का शब्द। ३. हाथी की चिग्घाड़। ४. ऊपरी बनावट। तड़क-भड़क। टीम-टाम। ढोंग। ५. आच्छादन। ६. तंबू। ७ बड़ा ढोल जो युद्ध में बजाया जाता है। पटह।

आडंबरी–वि० [सं०] आडंबर करनेवाला। ऊपरी बनावट रखनेवाला। ढोंगी।

आड़–संज्ञा स्त्री० [सं० अल=रोक] १. ओट। परदा। ओझल। २. रक्षा। शरण। पनाह। सहारा। आश्रय। ३. रोक। अड़ान। ४. थूनी। टेक।
संज्ञा पु० [सं० अल = डंक] बिच्छू या भिड़ आदि का डंक।
संज्ञा स्त्री० [सं० आलि = रेखा] १. लंबी टिकली जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। २. स्त्रियों के मस्तक पर का आड़ा तिलक। ३. माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टीका।

आड़न–संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़ना] ढाल।

आड़ना–क्रि० स० [सं० अल् = वारण करना] १. रोकना। छेंकना। २. बाँधना। ३. मना करना। न करने देना। ४. गिरवी या रेहन रखना। गहने रखना।

आड़ा–संज्ञा पु० [सं० आलि] १. एक धारीदार कपड़ा। २. लट्ठा। शहतीर।
वि० १. आँखों के समानांतर दाहिनी ओर से बाईं ओर को या बाईं ओर से दाहिनी ओर को गया हुआ। २. बार से पार तक रक्खा हुआ।
मुहा०–आड़े आना = १. रुकावट डालना। बाधक होना। २. कठिन समय में सहायक होना। आड़े हाथों लेना = किसी को व्यंग्योक्ति द्वारा लज्जित करना।

आड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़ा] १. तबला, मृदंग आदि बजाने का एक ढंग। २. चमारों

की छुट्टी। ३. ओर। तरफ। दे० "आरी"। ४. सहायक। अपने पक्ष का।

आड़ू—संज्ञा पुं० [सं० आलु] एक प्रकार का फल जिसका स्वाद खटमीठा होता है।

आढ़—संज्ञा पुं० [सं० आढक] चार प्रस्थ अर्थात् चार सेर की एक तौल।

संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़] १. ओट। पनाह। † २. अंतर। बीच। ३. नागा।

वि० [सं० आढ्य = संपन्न] कुशल। दक्ष।

आढ़क—संज्ञा पुं० [सं०] १. चार सेर की एक तौल। २. इतना अन्न नापने का काठ का एक बरतन। ३. अरहर।

आढ़त—संज्ञा स्त्री० [हिं० आड़ना = जमानत देना] १. किसी अन्य व्यापारी के माल की बिक्री करा देने का व्यवसाय। २. वह स्थान जहाँ आढ़त का माल रहता हो। ३. वह धन जो इस प्रकार बिक्री कराने के बदले में मिलता है।

आढ़तिया—संज्ञा पुं० दे० "अढ़तिया"।

आढ्य—वि० [सं०] १. संपन्न। पूर्ण। २. युक्त। विशिष्ट।

आणक—संज्ञा पुं० [सं०] एक रुपए का सोलहवाँ भाग। आना।

आतंक—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोब। दबदबा। प्रताप। २. भय। शंका। ३. रोग।

आततायी—संज्ञा पुं० [सं० आततायिन्] [स्त्री० आततायिनी] १. आग लगानेवाला। २. विष देनेवाला। ३. वधोद्यत शस्त्रधारी। ४. ज़मीन, धन या स्त्री हरनेवाला।

आतप—संज्ञा पुं० [सं०] १. धूप। घाम। २. गर्मी। उष्णता। ३. सूर्य्य का प्रकाश।

आतपी—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

वि० धूप का। धूप संबंधी।

आतम—वि० दे० "आत्म"।

आतमा—संज्ञा स्त्री० दे० "आत्मा"।

आतश—संज्ञा स्त्री० [फा०] आग। अग्नि।

आतशक—संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आतशकी] फिरंग रोग। उपदंश। गर्मी।

आतशखाना—संज्ञा पुं० [फा०] १. वह स्थान जहाँ कमरा गर्म करने के लिये आग रखते हैं। २. वह स्थान जहाँ पारसियों की अग्नि स्थापित हो।

आतशदान—संज्ञा पुं० [फा०] अँगीठी।

आतशपरस्त—संज्ञा पुं० [फा०] अग्नि की पूजा करनेवाला। अग्निपूजक। पारसी।

आतशबाज़ी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बारूद के बने हुए खिलौनों के जलने का दृश्य। २. बारूद के बने हुए खिलौने जो जलाने से कई आकार और रंग-बिरंग की चिनगारियाँ छोड़ते हैं।

आतशी—वि० [फा०] १. अग्नि संबंधी। २. अग्नि-उत्पादक। ३. जो आग में तपाने से न फूटे, न तड़के।

आतापी—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक असुर जिसे अगस्त्य मुनि ने अपने पेट में पचा डाला था। २. चील पक्षी।

आतिथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] अतिथि का सत्कार। पहुनाई। मेहमानदारी।

आतिश—संज्ञा स्त्री० दे० "आतश"।

आतिशय्य—संज्ञा पुं० [सं०] अतिशय होने का भाव। आधिक्य। बहुतायत। ज़्यादती।

आतुर—वि० [सं०] [संज्ञा आतुरता] १. व्याकुल। व्यग्र। घबराया हुआ। उतावला। २. अधीर। उद्विग्न। बेचैन। ३. उत्सुक। ४. दुःखी। ५. रोगी।

क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

आतुरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घबराहट। बेचैनी। व्याकुलता। २. जल्दी। शीघ्रता।

आतुरताई—संज्ञा स्त्री० दे० "आतुरता"।

आतुरसंन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] वह संन्यास जो मरने के कुछ पहले धारण कराया जाता है।

आतुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० आतुर + ई (प्रत्य०)] १. घबराहट। व्याकुलता। २. शीघ्रता।

आत्म—वि० [सं० आत्मन्] अपना।

आत्मक—वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] मय। युक्त। (यौगिक में)

आत्मगौरव—संज्ञा पुं० [सं०] अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान।

आत्मघात—संज्ञा पुं० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालने का काम। खुदकुशी।

आत्मघातक, आत्मघाती—वि० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालनेवाला।

आत्मज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आत्मजा] १. पुत्र। लड़का। २. कामदेव।

आत्मज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] जो अपने को जान गया हो। जिसे निज स्वरूप का ज्ञान हो।

आत्मज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०]

और परमात्मा के विषय में जानकारी। २. ब्रह्म का साक्षात्कार।

आत्मज्ञानी-संज्ञा पु० [सं०] आत्मा और परमात्मा के संबंध में जानकारी रखनेवाला।

आत्मतुष्टि-संज्ञा स्त्री० [सं०] आत्मज्ञान से उत्पन्न संतोष या आनंद।

आत्मत्याग-संज्ञा पु० [सं०] दूसरों के हित के लिये अपना स्वार्थ छोड़ना।

आत्मनिवेदन-संज्ञा पु० [सं०] अपने आपको या अपना सर्वस्व अपने इष्टदेव पर चढ़ा देना। आत्मसमर्पण। (नवधा भक्ति में)

आत्मनीय-संज्ञा पु० [सं०] १. पुत्र। २. साला। ३. विदूषक।

आत्मप्रशंसा-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने मुँह से अपनी बड़ाई।

आत्मबोध-संज्ञा पु० दे० "आत्मज्ञान"।

आत्मभू-वि० [सं०] १. अपने शरीर से उत्पन्न। २. आप ही आप उत्पन्न।
संज्ञा पु० १. पुत्र। २. कामदेव। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु। ५. शिव।

आत्मरक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी रक्षा या बचाव।

आत्मरत-वि० [सं०] [संज्ञा आत्मरति] जिसे आत्मज्ञान हुआ हो। ब्रह्मज्ञानप्राप्त।

आत्मरति-संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मज्ञान।

आत्मविक्रय-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आत्म-विक्रयी] अपने को आप बेच डालना।

आत्मविक्रेता-संज्ञा पु० [सं०] वह जो अपने आपको बेचकर दास बना हो।

आत्मविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह विद्या जिससे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो। ब्रह्मविद्या। अध्यात्म-विद्या। २. मिस्मरिज़्म।

आत्मविस्मृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने को भूल जाना। अपना ध्यान न रखना।

आत्मश्लाघा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आत्म-श्लाघी] अपनी तारीफ़ आप करना।

आत्मश्लाघी-वि० [सं०] अपनी प्रशंसा आप करनेवाला।

आत्मसंयम-संज्ञा पु० [सं०] अपने मन को रोकना। इच्छाओं को वश में रखना।

आत्महत्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने आपको मार डालना। ख़ुदकुशी।

आत्मा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आत्मिक, आत्मीय] १. मन या अंतःकरण से परे उसके व्यापारों का ज्ञान करनेवाली सत्ता। द्रष्टा। रूह। जीव। जीवात्मा। चैतन्य। २. मन। चित्त। ३. हृदय। दिल।
मुहा०—आत्मा ठंडी होना = १. तुष्टि होना। तृप्ति होना। संतोष होना। प्रसन्नता होना। २. पेट भरना। भूख मिटना।
४. देह। शरीर। ५ सूर्य। ६. अग्नि। ७. वायु। ८ स्वभाव। धर्म।

आत्मानंद-संज्ञा पु० [सं०] १ आत्मा का ज्ञान। २. आत्मा में लीन होने का सुख।

आत्माभिमान-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आत्माभिमानी] अपनी इज्ज़त या प्रतिष्ठा का ख़याल। मान अपमान का ध्यान।

आत्माराम-संज्ञा पु० [सं०] १. आत्म-ज्ञान से तृप्त योगी। २. जीव। ३ ब्रह्म। ४. तोता। सुग्गा। (प्यार का शब्द)

आत्मावलंबी-संज्ञा पु० [सं०] जो सब काम अपने बल पर करे।

आत्मिक-वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] १. आत्मा संबंधी। २. अपना। ३. मान-सिक।

आत्मीय-वि० [सं०] [स्त्री० आत्मीया] निज का। अपना।
संज्ञा पु० अपना संबंधी। रिश्तेदार।

आत्मीयता-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनायत। स्नेह संबंध। मैत्री।

आत्मोत्सर्ग-संज्ञा पु० [सं०] दूसरे की भलाई के लिये अपने हिताहित का ध्यान छोड़ना।

आत्मोद्धार-संज्ञा पु० [सं०] १. अपनी आत्मा को संसार के दुःख से छुड़ाना या ब्रह्म में मिलाना। मोक्ष। २. अपना उद्धार या छुटकारा।

आत्यंतिक-वि० [सं०] [स्त्री० आत्यंतिकी] जो बहुतायत से हो।

आत्रेय-वि० [सं० अत्रि] १. अत्रि संबंधी। २. अत्रि गोत्रवाला।
संज्ञा पु० [सं० अत्रि] १. अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा, चंद्रमा। २ आत्रेयी नदी के तट का देश जो दीनाजपुर ज़िले के अंतर्गत है।

आत्रेयी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक तपस्विनी जो वेदांत में बड़ी निष्णात थी।

आथना-क्रि० अ० [सं० अस्ति] होना।

आथर्वण—संज्ञा पुं० [सं०] १. अथर्व वेद का जाननेवाला ब्राह्मण। २. अथर्व-वेद-विहित कर्म।
आथि—संज्ञा स्त्री० [सं० अस्ति] १. स्थिरता। २. पूँजी। जमा।
आदत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्वभाव। प्रकृति। २. अभ्यास। टेव। बान।
आदम—संज्ञा पुं० [अ०] इबरानी और अरबी मतों के अनुसार मनुष्यों का आदि प्रजापति।
आदमजाद—संज्ञा पुं० [अ० आदम+फा० जाद] १. आदम की संतान। २. मनुष्य।
आदमियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनुष्यत्व। इंसानियत। २. सभ्यता।
आदमी—संज्ञा पुं० [अ०] १. आदम की संतान। मनुष्य। मानव जाति।
मुहा०—आदमी बनना=सभ्यता सीखना। अच्छा व्यवहार सीखना।
२ नौकर। सेवक।
आदर—संज्ञा पुं० [सं०] सम्मान। सत्कार। प्रतिष्ठा। इज्जत।
आदरणीय—वि० [सं०] आदरयोग्य। आदर करने के लायक।
आदरना—क्रि० स० [सं० आदर] आदर करना। सम्मान करना मानना।
आदर भाव—संज्ञा पुं० [सं० आदर+भाव] सत्कार। सम्मान। कदर। प्रतिष्ठा।
आदर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १. दर्पण। शीशा। आइना। २. टीका। व्याख्या। ३ वह जिसके रूप और गुण आदि का अनुकरण किया जाय। नमूना।
आदान प्रदान—संज्ञा पुं० [सं०] लेना-देना।
आदाब—संज्ञा पुं० [अ०] १. नियम। कायदे। २ लिहाज़। ध्यान। ३. नमस्कार। सलाम।
आदि—वि० [सं०] १. प्रथम। पहला। शुरू का। आरंभ का। २. बिल्कुल। नितांत। संज्ञा पुं० [सं०] १. आरंभ। बुनियाद। मूल कारण। २. परमेश्वर।
अव्य० वगैरह। आदिक। (इस शब्द से यह सूचित होता है कि इसी प्रकार और भी समझो।)
आदिक—अव्य [सं०] आदि। वगैरह।
आदि कारण—संज्ञा पुं० [सं०] पहला कारण जिससे सृष्टि के सब व्यापार उत्पन्न हुए। मूल कारण। जैसे, ईश्वर या प्रकृति।
आदित—संज्ञा पुं० दे० "आदित्य"।
आदित्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. अदिति के पुत्र। २. देवता। ३. सूर्य। ४. इंद्र। ५ वामन। ६. वसु। ७. विश्वेदेवा। ८. बारह मात्राओं के छंदों की संज्ञा। ९. मदार का पौधा।
आदित्यवार—संज्ञा पुं० [सं०] एतवार।
आदिपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।
आदिम—वि० [सं०] पहले का। पहला।
आदिल—वि० [फा०] न्यायी। न्यायवान्।
आदिविपुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।
आदी—वि० [अ०] अभ्यस्त।
† संज्ञा स्त्री० [सं० आर्द्रक] अदरक।
आदृत—वि० [सं०] जिसका आदर किया गया हो। सम्मानित।
आदेय—वि० [सं०] लेने के योग्य।
आदेश—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आदेशक, आदिष्ट] १. आज्ञा। २ उपदेश। ३. प्रणाम। नमस्कार। (साधु) ४. ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों का फल। ५. व्याकरण में एक अक्षर के स्थान पर दूसरे अक्षर का आना। अक्षर-परिवर्त्तन।
आदेस—संज्ञा पुं० दे० 'आदेश'।
आद्यंत—क्रि० वि० [सं०] आदि से अंत तक। शुरू से आखीर तक।
आद्य—वि० [सं० आदि, आद्य] पहला।
आद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. दस महाविद्याओं में से एक।
आद्योपांत—क्रि० वि० [सं०] शुरू से आखीर तक।
आद्रा—संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"।
आध—वि० [हिं० आधा] दो बराबर भागों में से एक। आधा। निस्फ। (यौगिक में)
यौ०—एक आध=थोड़े से। चंद।
आधा—वि० [सं० अर्द्ध] [स्त्री० आधी] दो बराबर हिस्सों में से एक। निस्फ।
मुहा०—आधो आध=दो बराबर भागों में। आधा तीतर आधा बटेर=कुछ एक तरह का और कुछ दूसरी तरह का। बेजोड़। बेमेल। अडबड। आधा होना=दुबला होना। आधे आध=दो बराबर हिस्सों में बँटा हुआ। आधी बात=ज़रा सी भी अपमानपूर्वक बात।
आधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थापन। रखना। २ गिरवी या बंधक रखना।

आधार-संज्ञा पु० [सं०] १. आश्रय। सहारा। अवलंब। २. व्याकरण में अधि-करण कारक। ३. थाला। आलबाल। ४. पात्र। ५. नींव। बुनियाद। मूल। ६. योगशास्त्र में एक चक्र। मूलाधार। ७. आश्रय देनेवाला। पालन करनेवाला।
यौ०—प्राणाधार = जिसके आधार पर प्राण हो। परम प्रिय।

आधारी-वि० [सं० आधारिन्] [स्त्री० आधारिणी] १. सहारा रखनेवाला। सहारे पर रहनेवाला। २. साधुओं की टेव की या अड्डे के आकार की एक लकड़ी।

आधासीसी-संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध + शीर्ष] अधकपाली। आधे सिर की पीड़ा।

आधि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मानसिक व्यथा। चिंता। २. रेहन। बंधक।

आधिक‡-वि० [हिं० आधा + एक] आधा।
क्रि० वि० आधे के लगभग। थोड़ा।

आधिकारिक-संज्ञा पु० [सं०] दृश्य काव्य में मूल-कथावस्तु।

आधिक्य-संज्ञा पु० [सं०] बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

आधिदैविक-वि० [सं०] देवता, भूत आदि द्वारा होनेवाला। देवताकृत। (दुःख)

आधिपत्य-संज्ञा पु० [सं०] प्रभुता। स्वामित्व।

आधिभौतिक-वि० [सं०] व्याघ्र, सर्पादि जीवों कृत। जीवों या शरीरधारियों द्वारा प्राप्त। (दुःख)

आधीन‡-वि० दे० "अधीन"।

आधुनिक-वि० [सं०] वर्तमान समय का। हाल का। आज-कल का।

आधेय-संज्ञा पु० [सं०] १. किसी सहारे पर टिकी हुई चीज़। २. ठहराने योग्य। रखने योग्य। ३. गिरों रखने योग्य।

आध्यात्मिक-वि० [सं०] १. आत्मासंबंधी। २. ब्रह्म और जीव संबंधी।

आनंद-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आनंदित, आनंदी] हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। सुख।
यौ०—आनंदमंगल।

आनंद बधाई-संज्ञा स्त्री० [सं० आनंद + हिं० बधाई] १. मंगल-उत्सव। २. मंगल-अव-सर।

आनंदवन-संज्ञा पु० [सं०] काशी।

आनंदमत्ता-संज्ञा स्त्री० दे० "आनंदसम्मो-हिता"।

आनंदसम्मोहिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनंद में अत्यंत निमग्न होने के कारण मुग्ध हो रही हो।

आनंदित-वि० [सं०] हर्षित। प्रसन्न।

आनंदी-वि० [सं०] १. हर्षित। प्रसन्न। २. खुशमिज़ाज। प्रसन्न रहनेवाला।

आन-संज्ञा स्त्री० [सं० आणि = मर्य्यादा, सीमा] १. मर्य्यादा। २. शपथ। सौगंद। क़सम। ३. विजय-घोषणा। दुहाई। ४. ढंग। तर्ज़। ५ क्षण। लमहा।
मुहा०—आन की आन में = शीघ्र ही। चट-पट। फ़ौरन्।
६. अकड़। ऐंठ। ठसक। ७. अदब। लिहाज़। ८. प्रतिज्ञा। प्रण। टेक।
" वि० [सं० अन्य] दूसरा। और।

आनक-संज्ञा पु० [सं०] १. डंका। भेरी। दुंदुभी। २ गरजता हुआ बादल।

आनकदुंदुभी-संज्ञा पु० [सं०] १. बड़ा नगाड़ा। २. कृष्ण के पिता वसुदेव।

आनद्ध-वि० [सं०] १. कसा हुआ। २. मढ़ा हुआ।
संज्ञा पु० १. वह बाजा जो चमड़े से मढ़ा हो। जैसे—ढोल, मृदंग आदि।

आनन-संज्ञा पु० [सं०] १. मुख। मुँह। २. चेहरा। मुखड़ा।

आनन फानन-क्रि० वि० [अ०] अति शीघ्र। फ़ौरन। झटपट।

आनना‡-क्रि० स० [सं० आनयन] लाना।

आन बान-संज्ञा स्त्री० [हिं० आन + बान] १. सजधज। ठाट-बाट। तड़क-भड़क। २. ठसक। अदा।

आनयन-संज्ञा पु० [सं०] १. लाना। २. उपनयन संस्कार।

आनरेरी-वि० [अं०] अवैतनिक। कुछ वेतन न लेकर केवल प्रतिष्ठा के हेतु काम करनेवाला। जैसे,—आनरेरी मजि-स्ट्रेट। आनरेरी सेक्रेटरी।

आनर्त्त-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आनर्त्तक] १. द्वारका। २. आनर्त्त देश का निवासी। ३. नृत्यशाला। नाचघर। ४. युद्ध।

आना-संज्ञा पु० [सं० आणक] १. एक रुपए का सोलहवाँ हिस्सा। २. किसी वस्तु का सोलहवाँ अंश।
क्रि० अ० [सं० आगमन] आगमन करना। वक्ता के स्थान की ओर चलना या उस

पर प्राप्त होना। २. जाकर लौटना। ३ काल प्रारंभ होना। ४. फलना। फूलना। फल-फूल लगना। ५. किसी भाव का उत्पन्न होना। जैसे—आनंद आना। **मुहा०—आए दिन**=प्रति दिन। रोज रोज। *आता जाता*=आने जानेवाला। पथिक। बटोही। **आ धमकना**=एकबारगी आ पहुँचना। **आ पड़ना**=१. सहसा गिरना। एकबारगी गिरना। २ आक्रमण करना। (अनिष्ट घटना का) घटित होना। **आया गया**=अतिथि। अभ्यागत। **आ रहना**=गिर पड़ना। **आ लेना**=१. पास पहुँच जाना। पकड़ लेना। २. आक्रमण करना। टूट पड़ना। (**किसी की**) **आ बनना**=लाभ उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना। **किसी को कुछ आना**=किसी को कुछ ज्ञान होना। (**किसी वस्तु**) **में आना**=१. ऊपर से ठीक या जमकर बैठना। २. भीतर अटना। समाना।

आनाकानी–संज्ञा स्त्री० [सं० अनाकर्णन] १. सुनी अनसुनी करने का कार्य्य। न ध्यान देने का कार्य्य। २. टाल-मटूल। हीला-हवाला। ३ कानाफूसी।

आनाह–संज्ञा पु० [सं०] मलमूत्र रुकने से पेट फूलना।

आनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "आन"।

आनुपूर्वी–वि० [सं० आनुपूर्व्य] क्रमानुसार। एक के बाद दूसरा।

आनुमानिक–वि० [सं०] अनुमान-संबंधी। खयाली।

आनुवंशिक–वि० [सं०] जो किसी वंश में बराबर होता आया हो। वंशानुक्रमिक।

आनुश्राविक–वि० [सं०] जिसको परंपरा से सुनते चले आए हों।

आनुषंगिक–वि० [सं०] जिसका साधन किसी दूसरे प्रधान कार्य्य को करते समय बहुत थोड़े प्रयास से हो जाय। गौण। अप्रधान। प्रासंगिक।

आन्वीक्षिकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आत्म-विद्या। २. तर्कविद्या। न्याय।

आप–सर्व० [सं० आत्मन्] १. स्वयं। ख़ुद। (तीनों पुरुषों में)
यौ०—आपकाज=अपना काम। जैसे—आपकाज महा काज। **आपकाजी**=स्वार्थी। मतलबी। **आपबीती**=घटना जो अपने ऊपर बीत चुकी हो। **आपरूप**=स्वयं। आप।
मुहा०—आप आप की पड़ना=अपने अपने काम में फँसना। अपनी अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना। **आप आपको**=अलग अलग। न्यारे-न्यारे। **आपको भूलना**=१. किसी मनोवेग के कारण बेसुध होना। २. *मदांध होना। घमंड में चूर होना।* **आप से**=स्वयं। ख़ुद। **आपसे आप**=स्वयं। ख़ुद ब-ख़ुद। **आप ही**=स्वयं। आपने आप। **आप ही आप**=१ बिना किसी और की प्रेरणा के। आपसे आप। २. मन ही मन में। किसी को संबोधन करके नहीं। स्वगत। २. "तुम" और "वे" के स्थान में आदरार्थक प्रयोग। ३. ईश्वर। भगवान। संज्ञा पु० [सं० आप = जल] जल। पानी।

आपगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

आपत्काल–संज्ञा पु० [सं०] १ विपत्ति। दुर्दिन। २. दुष्काल। कुसमय।

आपत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुःख। क्लेश। विघ्न। २. विपत्ति। संकट। आफ़त। ३. कष्ट का समय। ४ जीविका-कष्ट। ५ दोषारोपण। ६. उज्र। एतराज।

आपद्–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विपत्ति। आपत्ति। २. दुःख। कष्ट। विघ्न।

आपदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुःख। क्लेश। २. विपत्ति। आफ़त। ३. कष्ट का समय।

आपद्धर्म–संज्ञा पु० [सं०] १. वह धर्म जिसका विधान केवल आपत्काल के लिये हो। २. किसी वर्ण के लिये वह व्यवसाय या काम जिसकी आज्ञा और कोई जीवनोपाय न होने की अवस्था में ही हो। जैसे, ब्राह्मण के लिए वाणिज्य। (स्मृति)

आपन, आपना*†–सर्व० दे० "अपना"।

आपन्न–वि० [सं०] १. आपद्ग्रस्त। दुःखी। २. प्राप्त। जैसे, संकटापन्न।

आपया –संज्ञा स्त्री० [सं० आपगा] नदी।

आपरूप–वि० [हिं० आप+सं० रूप] अपने रूप से युक्त। मूर्तिमान्। साक्षात्। (महापुरुषों के लिये)
सर्व० साक्षात् आप। आप महापुरुष। हज़रत। (व्यंग्य)

आपस–संज्ञा स्त्री० [हिं० आप+से] १ संबंध। नाता। भाईचारा। जैसे—आपसवालों में, आपस के लोग। २. एक दूसरे का साथ। एक दूसरे का संबंध। (केवल संबंध और अधिकरण कारक में)

मुहा०—आपस का = १. इष्ट मित्र या भाई बंधु के बीच का। २. पारस्परिक। एक दूसरे का। परस्पर का। **आपस में** = परस्पर। एक दूसरे के साथ।

यौ०—आपसदारी = परस्पर का व्यवहार। भाई-चारा।

आपस्तंब—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आपस्तंबीय] १. एक ऋषि जो कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा के प्रवर्त्तक थे। २. आपस्तंब शाखा के कल्प सूत्रकार जिनके बनाए तीन सूत्र ग्रंथ हैं। ३. एक स्मृतिकार।

आपा—संज्ञा पु० [हिं० आप] १. अपनी सत्ता। अपना अस्तित्व। २. अपनी असलियत। ३. अहंकार। घमंड। गर्व। ४. होश हवास। सुध-बुध।

मुहा०—**आपा खोना** = १. अहंकार त्यागना। नम्र होना। २. मर्य्यादा नष्ट करना। अपना गौरव छोड़ना। **आपा तजना** = १. अपनी सत्ता को भूलना। आत्मभाव का त्याग। २. अहंकार छोड़ना। निरभिमान होना। ३. प्राण छोड़ना। मरना। **आपे में आना** = होश हवास में होना। चैन में होना। **आपे में न रहना** = १. आपे से बाहर होना। बेकाबू होना। अपने ऊपर वश न रखना। २. घबराना। बदहवास होना। ३. अत्यंत क्रोध में होना। **आपे से बाहर होना** = १. क्रोध और हर्ष आदि के आवेश में सुध-बुध खोना। क्षुब्ध होना। २. घबराना। उद्विग्न होना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० आप] बड़ी बहिन। (मुसल०)

आपात—संज्ञा पु० [सं०] १. गिराव। पतन। २ किसी घटना का अचानक हो जाना। ३ आरंभ। ४. अंत।

आपाततः—क्रि० वि० [सं०] १. अकस्मात्। अचानक। २. अंत को। आखिरकार।

आपातलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद।

आपाधापी—संज्ञा स्त्री० [हिं० आप+धाप] १. अपनी अपनी चिंता। अपनी अपनी धुन। २ खींच-तान। लाग-डाँट।

आपापंथी—वि० [हिं० आप+सं० पंथिन्] मनमाने मार्ग पर चलनेवाला। कुमार्गी। कुपथी।

आपी—संज्ञा पु० [सं० आप्य] पूर्वाषाढ़ नक्षत्र।

आपीड़—संज्ञा पु० [सं०] १. सिर पर पहनने की चीज; जैसे—पगड़ी, सिरपेच, इत्यादि।

आपुन†—सर्व० दे० "आप"।

आपुन†—सर्व० दे० "अपना"। "आप"।

आपुस†—संज्ञा पु० दे० "आपस"।

आपूरना—क्रि० अ० [सं० आपूरण] भरना।

आपेक्षिक—वि० [सं०] १. सापेक्ष। अपेक्षा रखनेवाला। २ दूसरी वस्तु के अवलंबन पर रहनेवाला। निर्भर रहनेवाला।

आप्त—वि० [सं०] १. प्राप्त। लब्ध। (यौगिक में) २. कुशल। दक्ष। ३. विषय को ठीक तौर से जाननेवाला। साक्षात्कृतधर्मा। ४. प्रामाणिक। पूर्ण तत्त्वज्ञ का कहा हुआ।

संज्ञा पु० [सं०] १. ऋषि। २ शब्द-प्रमाण। ३. भाग का लब्ध।

आप्तकाम—वि० [सं०] जिसकी सब कामनाएँ पूरी हो गई हों। पूर्णकाम।

आप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राप्ति। लाभ।

आप्यायन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आप्यायित] १. वृद्धि। वर्धन। २. तृप्ति। तर्पण। ३ एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त होना। ४. मृत धातु को जगाना या जीवित करना।

आप्लावन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आप्लावित] डुबाना। बोरना।

आफ़त—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपत्ति। विपत्ति। २. कष्ट। दुःख। ३. मुसीबत का दिन।

मुहा०—**आफ़त उठाना** = १. दुःख सहना। विपत्ति भोगना। २. ऊधम मचाना। हलचल मचाना। **आफ़त का परकाला** = १. किसी काम को बड़ी तेज़ी से करनेवाला। पटु। कुशल। २. घोर उद्योगी। आकाश-पाताल एक करनेवाला। ३. हलचल मचानेवाला। उपद्रवी। **आफ़त खड़ी करना** = विपद उपस्थित करना। **आफ़त ढाना** = १. ऊधम, उपद्रव या हलचल मचाना। २. तकलीफ़ देना। दुःख पहुँचाना। ३. अनहोनी बात कहना। **आफ़त मचाना** = १. हलचल करना। ऊधम मचाना। दंगा करना। २. गुल गपाड़ा करना। ३. जल्दी मचाना। उतावली करना। **आफ़त लाना** = १. विपद उपस्थित करना। २. बखेड़ा खड़ा करना। झंझट पैदा करना।

आफ़ताब—संज्ञा पु० [फ़ा०] [वि० आफ़ताबी] सूर्य्य।

आफ़ताबा—संज्ञा पु० [फ़ा०] हाथ मुँह धुलाने का एक प्रकार का गडुआ।

आफ़ताबी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. पान

आकार का पंखा जिस पर सूर्य का चिह्न बना रहता है और जो राजाओं के साथ या बारात आदि में झंडे के साथ चलता है। २. एक प्रकार की आतशबाजी। ३. दरवाज़े या खिड़की के सामने का छोटा सायवान या ओसारी।
वि० [फा०] १. गोल। २. सूर्य-संबंधी।
यौ०—आफ़ताबी गुलकंद=वह गुलकंद जो धूप में तैयार किया जाय।

आफू-संज्ञा स्त्री० [हिं० अफ़ीम, मि० मरा० अफ़ू] अफ़ीम।

आब-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चमक। तड़क-भड़क। आभा। कांति। पानी। २. शोभा। रौनक। छबि।
संज्ञा पु० पानी। जल।

आबकारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह स्थान जहाँ शराब चुआई या बेची जाती हो। हौली। शराबख़ाना। कलवरिया। भट्ठी। २. मादक वस्तुओं से संबंध रखनेवाला सरकारी मुहकमा।

आबख़ोरा-संज्ञा पु० [फा०] १. पानी पीने का बरतन। गिलास। २. प्याला। कटोरा।

आबजोश-संज्ञा पुं० [फा०] गरम पानी के साथ उबाला हुआ मुनक्का।

आबताब-संज्ञा स्त्री० [फा०] तड़क-भड़क। चमक-दमक। द्युति।

आबदस्त-संज्ञा पु० [फा०] मल त्याग के पीछे गुदेंद्रिय को धोना। सौंचना। पानी छूना।

आब दाना-संज्ञा पु० [फा०] अन्न-पानी। दाना पानी। अन्न जल। २. जीविका। ३. रहने का संयोग।
मुहा०—आब दाना उठना=जीविका न रहना। संयोग टलना।

आबदार-वि० [फा०] चमकीला। कांतिमान्। द्युतिमान्।
संज्ञा पु० वह आदमी जो पुरानी तोपों में सुंबा और पानी का पुचारा देता है।

आबदारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] चमक। कांति।

आबद्ध-वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २. क़ैद।

आबनूस-संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आबनूसी] एक जंगली पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत काली होती है।
मुहा०—आबनूस का कुंदा=अत्यंत काले रंग का मनुष्य।

आबनूसी-वि० [फा०] १. आबनूस का सा काला। गहरा काला। २ आबनूस का बना हुआ।

आबपाशी-संज्ञा स्त्री० [फा०] सिंचाई।

आबरवाँ-संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बहुत महीन मलमल।

आबरू-संज्ञा स्त्री० [फा०] इज्ज़त। प्रतिष्ठा। बड़प्पन। मान।

आबला-संज्ञा पु० [फा०] छाला। फफोला। फुटका।

आब हवा-संज्ञा स्त्री० [फा०] सरदी गरमी, स्वास्थ्य आदि के विचार से किसी देश की प्राकृतिक स्थिति। जलवायु।

आबाद-वि० [फा०] १. बसा हुआ। २. प्रसन्न। कुशलपूर्वक। ३. उपजाऊ। जोतने बोने योग्य (ज़मीन)।

आबादकार-संज्ञा पु० [फा०] वे काश्तकार जो जंगल काटकर आबाद हुए हों।

आबादानी-संज्ञा स्त्री० दे० "अबादानी"।

आबादी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बस्ती। २. जनसंख्या। मर्दुमशुमारी। ३ वह भूमि जिस पर खेती होती हो।

आबी-वि० [फा०] १ पानी संबंधी। पानी का। २. पानी में रहनेवाला। ३. रंग में हल्का। फीका। ३. पानी के रंग का। हल्का नीला या आसमानी। ४. जलतट-निवासी।
संज्ञा पु० समुद्र लवण। साँभर नमक।
संज्ञा स्त्री० वह भूमि जिसमें किसी प्रकार की आबपाशी होती हो। (ख़ाकी के विरुद्ध)

आब्दिक-वि० [सं०] वार्षिक। सालाना।

आभरण-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आभरित] १. गहना। आभूषण। ज़ेवर। अलंकार। इनकी गणना १२ है—१. नूपुर। २. किंकिणी। ३. चूड़ी। ४. अँगूठी। ५. कंकण। ६. बिजायठ। ७. हार। ८. कंठश्री। ९. वेसर। १०. बिरिया। ११. टीका। १२. सीसफूल। २. पोषण। परवरिश। पालन।

आभरन—संज्ञा पु० दे० "आभरण"।

आभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चमक।

दमक। कांति। दीप्ति। २. झलक। प्रतिबिंब। छाया।

आभार-संज्ञा पुं० [सं०] १. बोझ। २. गृहस्थी का बोझ। गृह-प्रबंध की देख-भाल की ज़िम्मेदारी। ३. एक वर्णवृत्त। ४. एहसान। उपकार।

आभारी-वि० [सं० आभारिन्] उपकार माननेवाला। उपकृत।

आभास-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रतिबिंब। छाया। झलक। २. पता। संकेत। ३. मिथ्या ज्ञान। जैसे—रस्सी में सर्प का। ४. वह जो ठीक या असल न हो। वह जिसमें असल की कुछ झलक भर हो। जैसे, रसाभास, हेत्वाभास।

आभीर-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आभीरी] १. अहीर। ग्वाल। गोप। २. एक देश। ३. ११ मात्राओं का एक छंद। ४. एक राग।

आभीरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक संकर रागिनी। अबीरी। २. प्राकृत का एक भेद।

आभूषण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आभूषित] गहना। जेवर। आभरण। अलंकार।

आभूषन-संज्ञा पुं० दे० "आभूषण"।

आभोग-संज्ञा पुं० [सं०] १. रूप में कोई कसर न रहना। २. किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातों की विद्यमानता। पूर्ण लक्षण। ३. किसी पद्य के बीच में कवि के नाम का उल्लेख।

आभ्यंतर-वि० [सं०] भीतरी।

आभ्यंतरिक-वि० [सं०] भीतरी।

आभ्युदयिक-वि० [सं०] अभ्युदय, मंगल या कल्याण संबंधी।

संज्ञा पुं० [सं०] नांदीमुख श्राद्ध।

आमंत्रण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमंत्रित] बुलाना। आह्वान। निमंत्रण। न्योता।

आमंत्रित-वि० [सं०] १. बुलाया हुआ। २. निमंत्रित। न्योता हुआ।

आम-संज्ञा पुं० [सं० आम्र] १. एक बड़ा पेड़ जिसका फल हिंदुस्तान का प्रधान फल है। रसाल। २. इस पेड़ का फल।

यौ०—अमचूर। अमहर।

वि० [सं०] कच्चा। अपक्व। असिद्ध। पुं० १. खाए हुए अन्न का कच्चा न पचा हुआ मल जो सफ़ेद और लसीला होता है। आँव। २. वह रोग जिसमें आँव गिरती है।

वि० [अ०] १. साधारण। मामूली। २. जन-साधारण। जनता।

यौ०—आम खास = महलों के भीतर का वह भाग जहाँ राजा या बादशाह बैठते हैं। दरबार आम = वह राजसभा जिसमें सब लोग जा सकें।

३. प्रसिद्ध। विख्यात। (वस्तु या बात)

आमड़ा-संज्ञा पुं० [सं० आम्रात] एक बड़ा पेड़ जिसके फल आम की तरह खट्टे और बड़े बेर के बराबर होते हैं।

आमद-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अवाई। आगमन। आना।

यौ०—आमद रफ़्त = आना जाना। आवागमन। २ आय। आमदनी।

आमदनी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आय। प्राप्ति। आनेवाला धन। २. व्यापार की वस्तु जो और देशों से अपने देश में आवे। रफ़्तनी का उलटा। आयात।

आमनाय-संज्ञा पुं० दे० "आम्नाय"।

आमना सामना-संज्ञा पुं० [हिं० सामना] मुकाबला। भेंट।

आमने सामने-क्रि० वि० [हिं० सामने] एक दूसरे के समक्ष। एक दूसरे के मुकाबिले।

आमय-संज्ञा पुं० [सं०] रोग। बीमारी।

आमरक्तातिसार-संज्ञा पुं० [सं०] आँव और लहू के साथ दस्त होने का रोग।

आमरख-संज्ञा पुं० दे० "आमर्ष"।

आमरखना-क्रि० अ० [सं० आमर्ष] क्रुद्ध होना। दुःखपूर्वक क्रोध करना।

आमरण-क्रि० वि० [सं०] मरणकाल पर्यंत। ज़िंदगी भर।

आमरस-संज्ञा पुं० दे० "अमरस"।

आमर्दन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमर्दित] ज़ोर से मलना, पीसना या रगड़ना।

आमर्ष-संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रोध। गुस्सा। २. असहनशीलता। (रस में एक संचारी भाव)

आमलक-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री०, अल्प० आमलकी] आमला। आँवला। धात्री-फल।

आमलकी-संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी जाति का आँवला। आँवली।

आमला†-संज्ञा पुं० दे० "आँवला"।
आमवात-संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें आंव गिरती है और शरीर सूजकर पीला पड़ जाता है।
आमशूल-संज्ञा पुं० [सं०] आँव के कारण पेट में मरोड़ होने का रोग।
आमातिसार-संज्ञा पुं० [सं०] आँव के कारण अधिक दस्तों का होना।
आमात्य-संज्ञा पुं० दे० "अमात्य"।
आमादगी-संज्ञा स्त्री० [फा०] तैयारी। मुस्तैदी। तत्परता।
आमादा-वि० [फा०] उद्यत। तत्पर। उतारू। तैयार। सन्नद्ध।
आमाल-संज्ञा पुं० [अ०] कर्म। करनी।
आमालनामा-संज्ञा पुं० [अ०] वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के चाल-चलन और योग्यता आदि का विवरण रहता है।
आमाशय-संज्ञा पुं० [सं०] पेट के भीतर की वह थैली जिसमें भोजन किए हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।
आमाहल्दी-संज्ञा स्त्री० [सं० आम्रहरिद्रा] एक पौधा जिसकी जड़ रंग में हल्दी की तरह और गंध में कपूर की तरह होती है।
आमिख-संज्ञा पुं० दे० "आमिष"।
आमिल-संज्ञा पुं० [अ०] १. काम करनेवाला। २. कर्त्तव्य परायण। ३. अमला। कर्मचारी। ४ हाकिम। अधिकारी। ५. ओझा। सयाना। ६. पहुँचा हुआ फ़कीर। सिद्ध।
वि० [सं० अम्ल] खट्टा अम्ल।
आमिष-संज्ञा पुं० [सं०] १. मांस। गोश्त। २. भोग्य वस्तु। ३. लोभ। लालच।
आमिषप्रिय-वि० [सं०] जिसे मांस प्यारा हो।
आमिषाशी-वि० [सं० आमिषाशिन्] [स्त्री० आमिषाशिनी] मांसभक्षक। मांस खानेवाला।
आमी-संज्ञा स्त्री० [हिं० आम] १. छोटा कच्चा आम। अँबिया। २. एक पहाड़ी पेड़।
संज्ञा स्त्री० [सं० आम = कच्चा] जौ और गेहूँ की भूनी हुई हरी बाल।
आमुख-संज्ञा० पुं० [सं०] नाटक की प्रस्तावना।
आमेजना*-क्रि० स० [फा० आमेज] मिलाना। सानना।
आमोद-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमोदित, आमोदी] १. आनंद। हर्ष। खुशी। प्रसन्नता। २. दिल बहलाव। तफ़रीह।
आमोद प्रमोद-संज्ञा पुं० [सं०] भोग-विलास। हँसी-खुशी।
आमोदित-वि० [सं०] १. प्रसन्न। खुश। २. दिल लगा हुआ। जी बहला हुआ।
आमोदी-वि० [सं०] प्रसन्न रहनेवाला। खुश रहनेवाला।
आम्नाय-संज्ञा पुं० [सं०] १. अभ्यास। २. परंपरा।
यौ०-अक्षराम्नाय = वर्णमाला। कुलाम्नाय = कुलपरंपरा। कुल की रीति।
३. वेद आदि का पाठ और अभ्यास। ४. वेद।
आम्र-संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़ या फल।
आम्रकूट-संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत जिसे अमर-कंटक कहते हैं।
आयँती पायँती†-संज्ञा स्त्री० [सं० अग-स्थ + फा० पायताना] सिरहाना। पायताना।
आय-संज्ञा स्त्री० [सं०] आमदनी। आमद। लाभ। प्राप्ति। धनागम।
यौ०-आयव्यय = आमदनी और खर्च।
आयत-वि० [सं०] विस्तृत। लंबा चौड़ा। दीर्घ। विशाल।
संज्ञा स्त्री० [अ०] इंजील या कुरान का वाक्य।
आयतन-संज्ञा पुं० [सं०] १. मकान। घर। मंदिर। २. ठहरने की जगह। ३. देवताओं की वंदना की जगह।
आयत्त-वि० [सं०] अधीन।
आयत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अधीनता।
आयद-वि० [अ०] १ आरोपित। लगाया हुआ। २. घटित। घटता हुआ।
आयस-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आयसी] १ लोहा। २. लोहे का कवच।
आयसी-वि० [सं० आयसीय] लोहे का। संज्ञा पुं० [सं०] कवच। जिरहबक्तर।
आयसु*-संज्ञा स्त्री० [सं० आदेश] आज्ञा। हुक्म।
आया-क्रि० अ० [हिं० आना] आना का भूतकालिक रूप।
संज्ञा स्त्री० [पुर्त्त०] अँगरेज़ों के बच्चों को दूध पिलाने और उनकी रक्षा करनेवाली

स्त्री। धाय। धात्री।
अव्य० [फा०] क्या। कि। (ब्रज० 'कैधों' के समान) जैसे, आया तुम जाओगे या नहीं।
आयात-संज्ञा पुं० [सं०] देश में बाहर से आया माल।
आयाम-संज्ञा पुं० [सं०] १. लंबाई। विस्तार। २. नियमित करने की क्रिया। नियमन। जैसे, प्राणायाम।
आयास-संज्ञा पुं० [सं०] परिश्रम। मेहनत।
आयु-संज्ञा स्त्री० [सं०] वय। उम्र। जिंदगी। जीवन-काल।
मुहा०-आयु खुटाना = आयु कम होना।
आयुध-संज्ञा पुं० [सं०] हथियार। शस्त्र।
आयुर्बल-संज्ञा पुं० [सं०] आयुष्य। उम्र।
आयुर्वेद-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आयुर्वेदीय] आयु-संबंधी शास्त्र। चिकित्सा शास्त्र। वैद्य-विद्या।
आयुष्मान्-वि० [सं०] [स्त्री० आयुष्मती] दीर्घजीवी। चिरजीवी।
आयुष्य-संज्ञा पुं० [सं०] आयु। उम्र।
आयोगव-संज्ञा पुं० [सं०] वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक संकर जाति। बढ़ई। (स्मृति)
आयोजन-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आयोजना। वि० आयोजित] १. किसी कार्य्य में लगाना। नियुक्ति। २. प्रबंध। इंतज़ाम। तैयारी। ३. उद्योग। ४. सामग्री। सामान।
आरंभ-संज्ञा पुं० [सं] १ किसी कार्य्य की प्रथमावस्था का संपादन। अनुष्ठान। उत्थान। शुरू। २ किसी वस्तु का आदि। शुरू का हिस्सा। ३ उत्पत्ति। आदि।
आरंभना-क्रि० अ० [सं० आरंभण] शुरू होना।
क्रि० स० आरंभ करना।
आर-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का बिना साफ़ किया निकृष्ट लोहा। २ पीतल। ३. किनारा। ४. कोना। जैसे, द्वादशार चक्र। ५. पहिए का आरा। ६ हरताल।
संज्ञा स्त्री० [सं० अल=डंक] १. लोहे की पतली कील जो साँटे या पैने में लगी रहती है। अनी। पैनी। २ नर मुर्गे के पंजे के ऊपर का काँटा। ३. बिच्छू, भिड़ या मधुमक्खी आदि का डंक।
संज्ञा स्त्री० [सं० आरा] चमड़ा छेदने का सूआ या टेकुआ। सुतारी।
† संज्ञा पुं० [हिं० अड़] ज़िद। हठ।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तिरस्कार। घृणा २. अदावत। वैर। ३ शर्म। लज्जा।
आरक्त-वि० [सं०] १ ललाई लिए हुए कुछ लाल। २ लाल।
आरग्वध-संज्ञा पुं० [सं०] अमिलतास।
आरज -वि० दे० "आर्य्य"।
आरजा-संज्ञा पुं० [अ०] रोग। बीमारी।
आरजू-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. इच्छा। वांछा। २. अनुनय। विनय। विनती।
आरण्य-वि० [सं०] जंगली। वन का।
आरण्यक-वि० [सं०] [स्त्री० आरण्यकी] वन का। जंगली।
संज्ञा पुं० [सं०] वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विवरण और उनके लिये उपयोगी उपदेश है।
आरत -वि० दे० "आर्त्त"।
आरति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरक्ति। २. दे० "आर्त्ति"।
आरती-संज्ञा स्त्री० [सं० आरात्रिक] १. किसी मूर्त्ति के ऊपर दीपक को घुमाना। नीराजन। (षोडशोपचार पूजन में) २ वह पात्र जिसमें कपूर या घी की बत्ती रखकर आरती की जाती है। ३. वह स्तोत्र जो आरती के समय पढ़ा जाता है।
आरन -संज्ञा पुं० [सं० अरण्य] जंगल। वन
आर पार-संज्ञा पुं० [सं० आर=किनारा + पार=दूसरा किनारा] यह किनारा और वह किनारा। यह छोर और वह छोर।
क्रि० वि० [सं०] एक किनारे से दूसरे किनारे तक। एक तल से दूसरे तल तक जैसे, आर पार जाना, आर-पार छेद होना।
आरबल, आरबला-संज्ञा पुं० दे० "आयुर्बल"।
आरब्ध-वि० [सं०] आरंभ किया हुआ
आरभटी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रोधादि उग्र भावों की चेष्टा। २. नाटक में वृत्ति का नाम जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है और जिसका व्यवहार इंद्रजाल, संग्राम, क्रोध, आघात, प्रतिघात, रौद्र, भयानक और वीभत्स रस आदि में होता है।

आरव–संज्ञा पुं० [सं०] १. शब्द। आवाज़। २. आहट।
आरषी–वि० स्त्री० [सं० आर्ष] आर्ष। ऋषियों की।
आरस–संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।
संज्ञा स्त्री० दे० "आरसी"।
आरसी–संज्ञा स्त्री० [सं० आदर्श] १. शीशा। आइना। दर्पण। २. शीशा जड़ा कटोरीदार छल्ला जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं।
आरा–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री०, अल्पा० आरी] १. लोहे की दाँतीदार पटरी जिससे रेतकर लकड़ी चीरी जाती है। २. चमड़ा सीने का टेकुआ या सूजा। सुतारी।
संज्ञा पुं० [सं० आर] लकड़ी की चौड़ी पटरी जो पहिए की गड़ारी और पुट्ठी के बीच जड़ी रहती है।
आराजी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भूमि। ज़मीन। २. खेत।
आराति–संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु। वैरी।
आराधक–वि० [सं०] [स्त्री० आराधिका] उपासक। पूजा करनेवाला।
आराधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आराधक, आराधित, आराधनीय, आराध्य] १. सेवा। पूजा। उपासना। २ तोषण। प्रसन्न करना।
आराधना–संज्ञा स्त्री० [सं०] पूजा। उपासना।
क्रि० स० [सं० आराधन] १. उपासना करना। पूजना। २. संतुष्ट करना। प्रसन्न करना।
आराम–संज्ञा पुं० [सं०] बाग़। उपवन।
संज्ञा पुं० [फा०] १ चैन। सुख। २. चंगापन। सेहत। स्वास्थ्य। ३. विश्राम। थकावट मिटाना। दम लेना।
मुहा०—आराम करना = सोना। आराम में होना = सोना। आराम लेना = विश्राम करना। आराम से = फुरसत में। धीरे धीरे।
वि० [फा०] चंगा। तंदुरुस्त। स्वस्थ।
आराम कुरसी–[फा० + अ०] एक प्रकार की लंबी कुरसी।
आराम तलब–वि० [फा०] १. सुख चाहनेवाला। सुकुमार। २. सुस्त। आलसी।
आरास्ता–वि० [फा०] सजा हुआ।
आरि–संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़] जिद। हठ।
आरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० आरा का अल्पा०] १. लकड़ी चीरने का बढ़ई का एक औज़ार। छोटा आरा। २ लोहे की एक कील जो बैल हाँकने के पैने की नोक में लगी रहती है। ३ जूता सीने का सूजा। सुतारी।
संज्ञा स्त्री० [सं० आर = किनारा] १. ओर। तरफ़। २. कोर। अवँठ।
आरूढ़–वि० [सं०] १. चढ़ा हुआ। सवार। २. दृढ़। स्थिर। किसी बात पर जमा हुआ। ३. सन्नद्ध। तत्पर। उतारू।
आरूढ़यौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्या नायिका के चार भेदों में से एक।
आरो–संज्ञा पुं० दे० "आरव"।
आरोगना–क्रि० स० [सं० आ + रोगना (रुज् = हिंसा)] भोजन करना। खाना।
आरोग्य–वि० [सं०] रोग रहित। स्वस्थ।
आरोग्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वास्थ्य।
आरोधना–क्रि० स० [सं० आ + रोधन] रोकना। छेंकना। आड़ना।
आरोप–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थापित करना। लगाना। मढ़ना। जैसे दोषारोप। २ एक पेड़ को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ३ झूठी कल्पना। ४ एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के धर्म की कल्पना। ५ (साहित्य में) एक वस्तु में दूसरी वस्तु के धर्म की कल्पना।
आरोपण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आरोपित, आरोप्य] १. लगाना। स्थापित करना। मढ़ना। २. पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ३ किसी वस्तु में स्थित गुण को दूसरी वस्तु में मानना। ४ मिथ्या ज्ञान।
आरोपना–क्रि० स० [सं० आरोपण] १. लगाना। २. स्थापित करना।
आरोपित–वि० [सं०] १. लगाया हुआ। स्थापित किया हुआ। २. रोपा हुआ।
आरोह–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आरोही] १. ऊपर की ओर गमन। चढ़ाव। २. आक्रमण। चढ़ाई। ३. घोड़े, हाथी आदि पर चढ़ना। सवारी। ४. वेदांत में क्रमानुसार जीवात्मा की ऊर्ध्व गति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति। ५ कारण से कार्य्य का प्रादुर्भाव या पदार्थों की एक अवस्था से दूसरी अवस्था की प्राप्ति। जैसे—बीज से अंकुर। ६. क्षुद्र और अल्प चेतनावाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत

प्राणियों की उत्पत्ति। आविर्भाव। विकास। (आधुनिक) ७. नितंब। ८. संगीत में स्वरों का चढ़ाव या नीचे स्वर के बाद क्रमशः ऊँचा स्वर निकालना।

आरोहण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आरोहित] चढ़ना। सवार होना।

आरोही-वि० [सं० आरोहिन्] [स्त्री० आरो-हिणी] चढ़नेवाला। ऊपर जानेवाला। संज्ञा पुं० १. संगीत में वह स्वर-साधन जो षड्ज से लेकर निषाद तक उत्तरोत्तर चढ़ता जाय। २. सवार।

आर्जव-संज्ञा पुं० [सं०] १. सीधापन। ऋजुता। २. सरलता। सुगमता। ३. व्यवहार की सरलता।

आर्त्त-वि० [सं०] १. पीड़ित। चोट खाया हुआ। २. दुखी। कातर। ३. अस्वस्थ।

आर्त्तता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पीड़ा। दर्द। २. दुःख। क्लेश।

आर्त्तनाद-संज्ञा पुं० [सं०] दुःख-सूचक शब्द। पीड़ा में निकली हुई ध्वनि।

आर्त्तव-वि० [सं०] [स्त्री० आर्त्तवी] ऋतु में उत्पन्न। मौसिमी। सामयिक।

आर्त्त स्वर-संज्ञा पुं० [सं०] दुःख-सूचक शब्द।

आर्थिक-वि० [सं०] धन-संबंधी। द्रव्य-संबंधी। रुपये-पैसे का। माली।

आर्द्री- संज्ञा स्त्री० दे० "कैवर्त्तमुस्तक"।

आर्द्र-वि० [सं०] [संज्ञा आर्द्रता] १. गीला। ओदा। तर। २. सना। लथपथ।

आर्द्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में छठा नक्षत्र। २. वह समय जब सूर्य्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है। आषाढ़ के आरंभ का काल। ३. ग्यारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति। ४. अदरक।

आर्य्य-वि० [सं०] [स्त्री० आर्य्या] १. श्रेष्ठ। उत्तम। २. बड़ा। पूज्य। ३. श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। मान्य। संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ पुरुष। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। २. मनुष्यों की एक जाति जिसने संसार में बहुत पहले सभ्यता प्राप्त की थी।

आर्य्यपुत्र-संज्ञा पुं० [सं०] पति को पुकारने का संबोधन। (प्राचीन)

आर्य्य समाज-संज्ञा पुं० [सं०] एक धार्मिक समाज या समिति जिसके संस्थापक स्वामी दयानंद थे।

आर्य्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. सास। ३. दादी। पितामही। ४. एक अर्द्ध-मात्रिक छंद।

आर्य्या गीत-संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।

आर्य्यावर्त-संज्ञा पुं० [सं०] उत्तरीय भारत।

आर्ष-वि० [सं०] १. ऋषि संबंधी। २. ऋषि-प्रणीत। ऋषि कृत। ३. वैदिक।

आर्ष प्रयोग-संज्ञा पुं० [सं०] शब्दों का वह व्यवहार जो व्याकरण के नियम के विरुद्ध हो, पर प्राचीन ग्रंथों में मिले।

आर्ष विवाह-संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में तीसरा, जिसमें वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क में लेकर कन्या देता था।

आलंकारिक-वि० [सं०] १ अलंकार संबंधी। २. अलंकारयुक्त। ३ अलंकार जाननेवाला।

आलंग-संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ियों की मस्ती।

आलंब-संज्ञा पुं० [सं०] १. अवलंब। आश्रय। सहारा। २. गति। शरण।

आलंबन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलंबित] १. सहारा। आश्रय। अवलंब। २. रस में वह वस्तु जिसके अवलंब से रस की उत्पत्ति होती है। वह जिसके प्रति किसी भाव का होना कहा जाय। जैसे,—शृंगार रस में नायक और नायिका, रौद्र रस में शत्रु। ३. बौद्ध मत में किसी वस्तु का ध्यान-जनित ज्ञान। ४. साधन। कारण।

आलंभन-संज्ञा पुं० [सं०] १. छूना। मिलना। पकड़ना। २. मारण। वध।

आल-संज्ञा पुं० [सं०] हरताल। संज्ञा स्त्री० [सं० अल=भूषित करना] १. एक पौधा जिसकी छाल और जड़ से लाल रंग निकलता है। २. इस पौधे से बना हुआ रंग। संज्ञा पुं० [अनु०] झंझट। बखेड़ा। संज्ञा पुं० [सं० आर्द्र] १. गीलापन। तरी। २. आँसू। संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बेटी की संतति। यौ०—आल-औलाद=बाल बच्चे। २. वंश। कुल। खानदान।

आलकस-संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।

आलथी पालथी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पलथी] बैठने का एक आसन जिसमें दाहिनी एँड़ी

बाएँ जंघे पर और बाईं एँड़ी दाहिने जंघे पर रखते हैं।

आलपीन–संज्ञा स्त्री० [पुर्त० आलफ़िनेट] एक घुंडीदार सूई जिससे कागज़ आदि के टुकड़े जोड़ते या नत्थी करते हैं।

आलम–संज्ञा पुं० [अ०] १. दुनिया। संसार। २. अवस्था। दशा। ३. जन-समूह।

आलमारी–संज्ञा स्त्री० दे० "अलमारी"।

आलय–संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. स्थान।

आलवाल–संज्ञा पुं० [सं०] थाला। अथाल।

आलस–वि० [सं०] आलसी। सुस्त। *संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।

आलसी–वि० [हिं० आलस] सुस्त। काहिल।

आलस्य–संज्ञा पुं० [सं०] कार्य्य करने में अनुत्साह। सुस्ती। काहिली।

आला–संज्ञा पुं० [सं० आलय] ताक़। ताखा। अरवा।
वि० [अ०] सबसे बढ़िया। श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० [अ०] औज़ार। हथियार।
*† वि० [सं० आर्द्र] गीला। ओदा।

आलाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] गंदी वस्तु। मल। गलीज़।

आलान–संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी बाँधने का खूँटा, रस्सा या जंजीर। २. बंधन।

आलाप–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलापक, आलापित] १. कथोपकथन। संभाषण। बात-चीत। २. संगीत के सात स्वरों का साधन। तान।

आलापक–वि० [सं०] १. बात-चीत करनेवाला। २. गानेवाला।

आलापचारी–संज्ञा स्त्री० [सं० आलाप + चारी] स्वरों को साधने या तान लड़ाने की क्रिया।

आलापना–क्रि० स० [सं०] गाना। सुर खींचना। तान लड़ाना।

आलापी–वि० [सं० आलापिन्] [स्त्री० आला-पिनी] १. बोलनेवाला। २. आलाप लेनेवाला। तान लगानेवाला। गानेवाला।

आलिंगन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलिंगित] गले से लगाना। परिरंभण।

आलिंगना*–क्रि० स० [सं० आलिंगन] भेंटना। लपटाना। गले लगाना।

आलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सखी। सहेली। २. बिच्छू। ३. भ्रमरी। ४. पंक्ति। अवली।

आलिम–वि० [अ०] विद्वान्। पंडित।

आली–संज्ञा स्त्री० [सं० आलि] सखी।
*† वि० स्त्री० [सं० आर्द्र] भीगी हुई।
वि० [अ०] बड़ा। उच्च। श्रेष्ठ।

आलीशान–वि० [अ०] भव्य। भड़कीला। शानदार। विशाल।

आलू–संज्ञा पुं० [सं० आलु] एक प्रकार का कंद जो बहुत खाया जाता है।

आलूचा–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक पेड़ जिसका फल पंजाब इत्यादि में बहुत खाया जाता है। २. इस पेड़ का फल। भोटिया बदाम। गर्दालू।

आलूबुखारा–संज्ञा पुं० [फा०] आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल।

आलेख–संज्ञा पुं० [सं०] लिखावट। लिपि।

आलेख्य–संज्ञा पुं० [सं०] चित्र। तसवीर।
यौ०—आलेख्य विद्या = चित्रकारी।
वि० लिखने योग्य।

आलोक–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलोकित] १. प्रकाश। चाँदनी। उजाला। रोशनी। २. चमक। ज्योति।

आलोचक–वि० [सं०] [स्त्री० आलोचिका] १. देखनेवाला। २. जो आलोचना करे।

आलोचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. दर्शन। २ गुण दोष का विचार। विवेचन।

आलोचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आलो-चित] किसी वस्तु के गुण-दोष का विचार।

आलोडन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलोड़ित] १ मथना। हिलोरना। २. विचार।

आलोड़ना*–क्रि० स० [सं० आलोडन] १. मथना। २. हिलोरना। ३. खूब सोचना विचारना। ऊहापोह करना।

आल्हा–संज्ञा पुं० [देश०] ३१ मात्राओं का एक छंद। वीर छंद। २. महोबे के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था। ३. बहुत लंबा चौड़ा वर्णन।

आव*–संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] आयु।

आवटना*–संज्ञा पुं० [सं० आवर्त] १. हलचल। उथल पुथल। अस्थिरता। २. संकल्प-विकल्प। ऊहापोह।

आवन*–संज्ञा पुं० [सं० आगमन] आगमन। आना।

आवभगत–संज्ञा स्त्री० [हिं० ...] आदर-सत्कार। ...

आवरण-संज्ञा पु० [सं०] १ आच्छादन। ढकना। २. वह कपड़ा जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटा हो। वेठन। ३ परदा। ४ ढाल। ५. दीवार इत्यादि का घेरा। ६. चलाए हुए अस्त्र शस्त्र को निष्फल करनेवाला अस्त्र।

आवरणपत्र-संज्ञा पु० [सं०] वह कागज जो किसी पुस्तक के ऊपर उसकी रक्षा के लिये लगा रहता है।

आवर्त्त-संज्ञा पु० [सं०] १. पानी का भँवर। २. वह बादल जिससे पानी न बरसे। ३. एक प्रकार का रत्न। राजावर्त्त। लाजवर्द। ४. सोच-विचार। चिंता। वि० घूमा हुआ। मुड़ा हुआ।

आवर्त्तन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आवर्तनीय, आवर्तित] १ चक्कर देना। फिराव। घुमाव। २. मथना। हिलाना।

आवर्दा-वि० [फा०] १ लाया हुआ। २ कृपापात्र।

आवाल-संज्ञा स्त्री० [सं०] पंक्ति। श्रेणी।

आवली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पंक्ति। श्रेणी। २ वह युक्ति या विधि जिसके द्वारा खेत की उपज का अंदाज होता है।

आवश्यक-वि० [सं०] १. जिसे अवश्य होना चाहिए। जरूरी। सापेक्ष्य। २. प्रयोजनीय। जिसके बिना काम न चले।

आवश्यकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जरूरत। अपेक्षा। २. प्रयोजन। मतलब।

आवश्यकीय-वि० [सं०] जरूरी।

आवाँ-संज्ञा पु० [सं० आपाक] गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

आवागमन-संज्ञा पु० [हिं० आवा=आना+सं० गमन] १. आना-जाना। आमद रफ्त। २. बार बार मरना और जन्म लेना। यौ०—आवागमन से रहित=मुक्त।

आवागवन†-संज्ञा पु० दे० "आवागमन"।

आवाज-संज्ञा स्त्री० [फा० मिलाओ सं० आवाद्य] १. शब्द। ध्वनि। नाद। २. बोली। वाणी। स्वर।

मुहा०—आवाज उठाना=विरुद्ध कहना। आवाज देना=ज़ोर से पुकारना। आवाज बैठना=कफ के कारण स्वर का साफ न निकलना। गला बैठना। आवाज भारी होना=कफ के कारण गला या स्वर विकृत होना।

आवाजा-संज्ञा पु० [फा०] बोली ठोली। ताना। व्यंग्य।

आवाजाही†-संज्ञा स्त्री० [हिं० आना+जाना] आना जाना।

आवारगी-संज्ञा स्त्री० [फा०] आवारापन। शुहदापन।

आवारजा-संज्ञा पु० [फा०] जमा खर्च की किताब।

आवारा-वि० [फा०] १ व्यर्थ इधर उधर फिरनेवाला। निकम्मा। २. बे ठौर ठिकाने का। उठल्लू। ३ बदमाश। लुच्चा।

आवारागर्द-वि० [फा०] व्यर्थ इधर उधर घूमनेवाला। उठल्लू। निकम्मा।

आवास-संज्ञा पु० [सं०] १ रहने की जगह। निवास स्थान। २ मकान। घर।

आवाहन-संज्ञा पु० [सं०] १. मंत्र द्वारा किसी देवता को बुलाने का कार्य। २ निमंत्रित करना। बुलाना।

आविद्ध-वि० [सं०] १. छिदा हुआ। भेदा हुआ। २ फेंका हुआ। संज्ञा पु० तलवार के ३२ हाथों में से एक

आविर्भाव-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आविर्भूत] १ प्रकाश। प्राकट्य। २ उत्पत्ति। ३ आवेश। संचार।

आविर्भूत-वि० [सं०] १ प्रकाशित प्रकटित। २. उत्पन्न।

आविष्कर्त्ता-वि० [सं०] आवि[ष्कार] करनेवाला।

आविष्कार-संज्ञा पु० [सं०] [वि० [आवि]ष्कारक, आविष्कर्त्ता, आविष्कृत] १ प्राक[ट्य]। प्रकाश। २. कोई ऐसी वस्तु तैयार क[रना] जिसके बनाने की युक्ति पहले किसी न मालूम रही हो। ईजाद। ३ [किसी] बात का पहले पहल पता लग[ाना]

आविष्कारक-वि० दे० "आविष्कर्त्ता"

आविष्कृत-वि० [सं०] १. प्रका[शित]। प्रकटित। २ पता लगाया हुआ। हुआ। ३. ईजाद किया हुआ।

आविष्क्रिया-संज्ञा स्त्री० दे० "[आविष्]कार"।

आवृत-वि० [सं०] १ छिपा ढका हुआ। २ लपेटा या घिरा हु[आ]

आवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बा[र बार] किसी बात का अभ्यास। २. पढ़[ना]

आवेग-संज्ञा पु० [सं०] १. चि

प्रबल वृत्ति। मन की झोंक। ज़ोर। जोश। २. रस के संचारी भावों में से एक। अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से चित्त की आतुरता। घबराहट।

आवेदक-वि० [सं०] निवेदन करनेवाला।

आवेदन-संज्ञा पु०[सं०] [वि० आवेदनीय, आवेदित, आवेदी, आवेद्य] अपनी दशा को सूचित करना। निवेदन। अर्ज़ी।

आवेदनपत्र-संज्ञा पु० [सं०] वह पत्र या कागज़ जिस पर कोई अपनी दशा लिखकर सूचित करे। अरज़ी।

[आ]वेश-संज्ञा पु० [सं०] १. व्याप्ति। [सं]चार। दौरा। २. प्रवेश। ३. चित्त की [प्रे]रणा। झोंक। वेग। जोश। ३. भूत प्रेत [की] बाधा। ४. मृगी रोग।

[आ]वेष्टन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आवेष्टित] १. छिपाने या ढँकने का कार्य। २. छिपाने लपेटने या ढँकने की वस्तु।

[आ]शंका-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आशंकित] १. डर। भय। २. शक। [सं]देह। ३. अनिष्ट की भावना।

[आ]शना-संज्ञा उभ० [फा०] १. जिससे जान [प]हचान हो। २. चाहनेवाला। प्रेमी।

[आ]शनाई-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जान-पहचान। २. प्रेम। प्रीति। दोस्ती। ३. अनुचित संबंध।

[आ]शय-संज्ञा पु० [सं०] १. अभिप्राय। मतलब। तात्पर्य। २. वासना। इच्छा। ३. उद्देश्य। नीयत।

आशी-वि० [सं० आशिन्] [स्त्री० आशिनी] खानेवाला। भक्षक।

आशीर्वाद-संज्ञा पु० [सं०] कल्याण या मंगल कामना-सूचक वाक्य। आशिष। दुआ।

आशु-क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्द।

आशु कवि-संज्ञा पु० [सं०] वह कवि जो तत्क्षण कविता कर सके।

आशुतोष-वि० [सं०] शीघ्र संतुष्ट होनेवाला। जल्दी प्रसन्न होनेवाला। संज्ञा पु० शिव। महादेव।

आश्चर्य-संज्ञा पु० [सं०] [वि० आश्चर्यित] १. वह मनोविकार जो किसी नई, अभूतपूर्व या असाधारण बात के देखने, सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न होता है। अचंभा। विस्मय। ताज्जुब। २. रस के नौ स्थायी भावों में से एक।

आश्चर्यित-वि० [सं०] चकित।

आश्रम-संज्ञा पु० [सं०] [वि० [illegible]] १. ऋषियों और मुनियों का निवासस्थान। तपोवन। २. साधु-संत के रहने की जगह। ३. विश्राम-स्थान। [ठहरने की] जगह। ४. स्मृति में कहे हुए हिंदुओं के जीवन की चार [अवस्थाएँ]—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास।

आश्रमी-वि० [सं०] १. [आश्रम-संबंधी]। २. आश्रम में रहनेवाला। ३. ब्रह्मचर्यादि चार आश्रमों में से किसी को धारण करनेवाला।

आश्विन-संज्ञा पुं० [सं०] वह महीना जिसकी पूर्णिमा अश्विनी नक्षत्र में पड़े। क्वार का महीना।

आषाढ़-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह चांद्र मास जिसकी पूर्णिमा को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो। असाढ़। २. ब्रह्मचारी का दंड।

आषाढ़ा-संज्ञा पुं० [सं०] पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ी-संज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ़ मास की पूर्णिमा। गुरुपूजा।

आसंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ। संग। २. लगाव। संबंध। ३. आसक्ति।

आस-संज्ञा स्त्री० [सं० आशा] १. आशा। उम्मेद। २. लालसा। कामना। ३. सहारा। आधार। भरोसा।

आसकत-संज्ञा स्त्री० [सं० अशक्ति] [वि० आसकती। क्रि० असकताना] सुस्ती। आलस्य।

आसकती-वि० दे० "आलसी"।

आसक्त-वि० [सं०] १. अनुरक्त। लीन। लिप्त। २. आशिक। मोहित। लुब्ध। मुग्ध।

आसक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनुरक्ति। लिप्तता। २. लगन। चाह। प्रेम।

आसतेः-क्रि० वि० [फ़ा० आहिस्तः] धीरे धीरे।

आसत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सामीप्य। निकटता। २. अर्थ-बोध के लिये बिना व्यवधान के एक दूसरे से संबंध रखनेवाले दो पदों या शब्दों का पास-पास रहना।

आसन-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थिति। बैठने की विधि। बैठने का ढब। बैठक। मुहा०—आसन उखड़ना = अपनी जगह से हिल जाना। घोड़े की पीठ पर रान न जमना। आसन करना = अंगों को तोड़ मरोड़कर बैठना। आसन छोड़ना = उठ जाना (आदरार्थ)। आसन जमना = जिस स्थान पर जिस रीति से बैठे, उसी स्थान पर उसी रीति से स्थिर रहना। बैठने में स्थिर भाव आना। आसन डिगना या डोलना = १. बैठने में स्थिर भाव न रहना। २. चित्त चलायमान होना। मन डोलना। आसन डिगाना = १. जगह से विचलित करना। २. चित्त को चलायमान करना। लोभ या इच्छा उत्पन्न करना। आसन देना = सत्कारार्थ बैठने के लिये कोई वस्तु रख देना या बतला देना। २. वह वस्तु जिस पर बैठें। ३. ठिकाना। डेरा। ४. चूतड़। ५. हाथी का कंधा जिस पर महावत बैठता है। ६. सेना का शत्रु के सामने डटे रहना।

आसना‡-क्रि० अ० [सं० अस् = होना] होना।

आसनी-संज्ञा स्त्री० [सं० आसन] छोटा आसन। छोटा बिछौना।

आसन्न-वि० [सं०] निकट आया हुआ। समीपस्थ। प्राप्त।

आसन्नभूत-संज्ञा पुं० [सं०] भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्तमान से उसकी समीपता पाई जाय। जैसे—मैं रहा हूँ।

आस पास-क्रि० वि० [अनु० आस + सं० पार्श्व] चारों ओर। निकट। इधर-उधर।

आसमान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० आसमानी] १. आकाश। गगन। २. स्वर्ग। देवलोक। मुहा०—आसमान के तारे तोड़ना = कोई कठिन या असंभव कार्य करना। आसमान टूट पड़ना = किसी विपत्ति का अचानक आ पड़ना। वज्रपात होना। आसमान पर उड़ना = १. इतराना। घमंड करना। २. बहुत ऊँचे ऊँचे संकल्प बाँधना। आसमान पर चढ़ना = घमंड करना। घमंड दिखाना। आसमान पर चढ़ाना = १. अत्यंत प्रशंसा करना। २. अत्यंत प्रशंसा करके मिज़ाज बिगाड़ देना। आसमान में थिगली लगाना = विकट कार्य करना। आसमान सिर पर उठाना = १. ऊधम मचाना। उपद्रव मचाना। २. हलचल मचाना। खूब आंदोलन करना। दिमाग़ आसमान पर होना = बहुत अभिमान होना।

आसमानी-वि० [फ़ा०] १. आकाश संबंधी। आकाशीय। आसमान का। २. आकाश के रंग का। हलका नीला। ३. दैवी। ईश्वरीय। संज्ञा स्त्री० ताड़ के पेड़ से निकाला हुआ मद्य। ताड़ी।

आसमुद्र-क्रि० वि० [सं०] समुद्र-पर्यंत। समुद्र के तट तक।

आसरना‡-क्रि० स० [हिं० आसरा] आश्रय लेना। सहारा लेना।

आसरा-संज्ञा पुं० [सं० आश्रय] १. सहारा। आधार। अवलंब। २. भरण पोषण की आशा। भरोसा। आस। ३. किसी से सहायता पाने का निश्चय। ४. जीवन या कार्य-निर्वाह का हेतु। आश्रयदाता।

सहायक। ५. शरण। पनाह। ६. प्रतीक्षा। प्रत्याशा। इंतज़ार। ७. आशा।

आसव–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मद्य जो भभके से न चुआया जाय, केवल फलों के खमीर को निचोड़कर बनाया जाय। २. द्रव्यों का खमीर छानकर बनी हुई औषध। ३. अर्क।

आसा–संज्ञा स्त्री० दे० "आशा"।
संज्ञा पुं० [अ० असा] सोने या चाँदी का डंडा जिसे केवल सजावट के लिये राजा महाराजाओं अथवा बरात और जुलूस के आगे चोबदार लेकर चलते हैं।
यौ०—आसा-बल्लम। आसा-सोंटा।

आसाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] आराम। सुख। चैन।

आसान–वि० [फा०] सहज। सरल।

आसानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० आसान] सरलता। सुगमता। सुबीता।

आसार–संज्ञा पुं० [अ०] चिह्न। लक्षण।

आसावरी–संज्ञा स्त्री० [?] श्री राग की एक रागिनी।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का कबूतर।

आसिख‡–संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।

आसिन–संज्ञा पुं० दे० "आश्विन"।

आसी‡–वि० दे० "आशी"।

आसीन–वि० [सं०] बैठा हुआ। विराजमान।

आसीस†–संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।

आसु‡–क्रि० वि० दे० "आशु"।

आसुर–वि० [सं०] असुर-संबंधी।
यौ०—आसुर विवाह = वह विवाह जो कन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर हो।
*संज्ञा पुं० दे० "असुर"।

आसुरी–वि० [सं०] असुर-संबंधी। असुरों का। राक्षसी।
यौ०—आसुरी चिकित्सा = शस्त्र-चिकित्सा। चीर-फाड़। आसुरी माया = चक्कर में डालनेवाली राक्षसों की चाल।
संज्ञा स्त्री० राक्षस की स्त्री।

आसूदा–वि० [फा०] [संज्ञा आसूदगी] १. संतुष्ट। तृप्त। २. संपन्न। भरा-पूरा।

आसेब–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० आसेबी] भूत प्रेत की बाधा।

आसोज†–संज्ञा पुं० [सं० अश्वयुज] आश्विन मास। क्वार का महीना।

आसौं‡–क्रि० वि० [सं० इह+संवत्] इस वर्ष। इस साल।

आस्तिक–वि० [सं०] १. वेद, ईश्वर और परलोक इत्यादि पर विश्वास करनेवाला। २. ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला।

आस्तिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेद, ईश्वर और परलोक में विश्वास।

आस्तीक–संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जिन्होंने जनमेजय के सर्पसत्र में तक्षक का प्राण बचाया था।

आस्तीन–संज्ञा स्त्री० [फा०] पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढँकता है। बाँही।
मुहा०—आस्तीन का साँप = वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे।

आस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूज्य बुद्धि। श्रद्धा। २. सभा। बैठक। ३. आलंबन। अपेक्षा।

आस्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. बैठने की जगह। बैठक। २. सभा। दरबार।

आस्पद–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थान। २. कार्य्य। कृत्य। ३. पद। प्रतिष्ठा। ४. अल्ल। वंश। कुल। जाति।

आस्य–संज्ञा पुं० [सं०] मुख। मुँह।

आस्वाद–संज्ञा पुं० [सं०] रस। स्वाद। ज़ायका। मज़ा।

आस्वादन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आस्वादनीय, आस्वादित] चखना। स्वाद लेना।

आह—अव्य० [सं० अहह] पीड़ा, शोक, दुःख, खेद और ग्लानि-सूचक अव्यय।
संज्ञा स्त्री० कराहना। दुःख या क्लेश-सूचक शब्द। ठंढी साँस। उसास।
मुहा०—आह पड़ना = शाप पड़ना। किसी को दुःख पहुँचाने का फल मिलना। आह भरना = ठंढी साँस खींचना। आह लेना = सताना। दुःख देकर कलपाना।
‡ संज्ञा पुं० [सं० साहस] १. साहस। हियाव। २. बल। ज़ोर।

आहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० आ = आना + हट (प्रत्य०)] १. वह शब्द जो चलने में पैर तथा दूसरे अंगों से होता है। आने का शब्द। पाँव की चाप। खटका। २. वह आवाज़ जिससे किसी स्थान पर किसी के रहने का अनुमान हो। ३. पता। सुराग़। टोह।

आहत–वि० [सं०] [संज्ञा आहति] १. चोट

खाया हुआ। घायल। जख्मी। २ जिस संख्या को गुणित करें। गुण्य। ३ व्याघात दोष युक्त (वाक्य)।
यौ०—हताहत=मारे हुए और जखमी।

आहन-संज्ञा पुं० [फा०] लोहा।

आहर-संज्ञा पुं० [सं० अह] समय। संज्ञा पुं० [सं० आहव] युद्ध। लड़ाई।

आहरण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आहरणीय। आहृत] १ छीनना। हर लेना। २ किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ३ ग्रहण। लेना।

आहरन-संज्ञा पुं० [आहनन] लोहारों और सुनारों की निहाई।

आहवन-संज्ञा [सं०] [वि० आहवनीय] यज्ञ करना। होम करना।

आहा-संज्ञा स्त्री० [सं० आह्वान] १ हाँक। दुहाई। घोषणा। २ पुकार। बुलावा।

आहा-अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य और हर्ष सूचक अव्यय।

आहार-संज्ञा पुं० [सं०] १ भोजन। खाना। २ खाने की वस्तु।

आहार विहार-संज्ञा पुं० [सं०] खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार। रहन सहन।

आहारी-वि० [सं० आहारिन्] [स्त्री० आहारिणी] खानेवाला। भक्षक।

आहार्य-वि० [सं०] १ ग्रहण किया हुआ। २ बनावटी। ३ खाने योग्य। संज्ञा पुं० [सं०] चार प्रकार के अनुभावों में चौथा। नायक और नायिका का परस्पर एक दूसरे का वेष धारण करना।

आहार्याभिनय-संज्ञा पुं० [सं०] बिना कुछ बोले या चेष्टा किए केवल रूप और वेष द्वारा नाटक का अभिनय करना।

आहि-क्रि० अ० [सं० अस] 'आसना' का वर्त्तमान कालिक रूप। है।

आहित-वि० [सं०] १ रक्खा हुआ। स्थापित। २ धरोहर या गिरों रक्खा हुआ। संज्ञा पुं० [सं०] १ पंद्रह प्रकार के दासों में से एक, जो अपने स्वामी से इकट्ठा धन लेकर उसकी सेवा में रहकर उसे पटाता हो। २ गिरवी रखा हुआ माल।

आहिस्ता-क्रि० वि० [फा०] धीरे से। धीरे धीरे। शनै शनै।

आहुत-संज्ञा पुं० [सं०] १ आतिथ्य सत्कार। २ भूतयज्ञ। बलिवैश्वदेव।

आहुति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मंत्र पढ़कर देवता के लिये द्रव्य को अग्नि में डालना। होम। हवन। २ हवन में डालने की सामग्री। ३ होम द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार यज्ञकुंड में डाली जाय।

आहूत-वि० [सं०] बुलाया हुआ। आह्वान किया हुआ। निमंत्रित।

आहे-क्रि० अ० [सं० अस] 'आसना' का वर्त्तमान कालिक रूप। है।

आह्निक-वि० [सं०] रोजाना। दैनिक।

आह्लाद-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आह्लादक आह्लादित] आनंद। खुशी। हर्ष।

आह्वय-संज्ञा पुं० [सं०] १ नाम। संज्ञा। २ तीतर, बटेर, मेढ़े आदि जीवों की लड़ाई की बाजी। प्राणिद्यूत।

आह्वान-संज्ञा पुं० [सं०] १ बुलाना। बुलावा। पुकार। २ राजा की ओर से बुलाने का पत्र। समन। तलबनामा। ३ यज्ञ में मंत्र द्वारा देवताओं को बुलाना।

इ

इ-वर्णमाला में स्वर के अंतर्गत तीसरा वर्ण। इसका स्थान तालु और प्रयत्न विवृत है। ई इसका दीर्घ रूप है।

इंगनी-संज्ञा स्त्री० [अं० मैंगनीज] एक प्रकार की धातु का मोर्चा जो काँच या शीशे का हरापन दूर करने के काम में आता है।
[illegible] स्त्री० [सं० इडा] इड़ा नाम की एक नाड़ी। (हठयोग)

इंगलिस्तान-संज्ञा पुं० [अं० इंगलिश+फा० स्तान] अँगरेजों का देश। इंगलैंड।

इंगित-संज्ञा पुं० [सं०] अभिप्राय को किसी चेष्टा द्वारा प्रकट करना। इशारा। चेष्टा। वि० १ हिलता हुआ। चलित। २. इशारा किया हुआ।

इंगुदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिंगोट का पेड़। २. ज्योतिष्मती वृक्ष। मालकँगनी।
इंगुर†–संज्ञा पुं० दे० "ईंगुर"।
इँगुरौटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ईंगुर+औटी (प्रत्य०)] वह डिबिया जिसमें सौभाग्यवती स्त्रियाँ ईंगुर या सिंदूर रखती हैं। सिंधौरा।
इंच–संज्ञा स्त्री० [अं०] एक फुट का बारहवाँ हिस्सा। तस्सू।
इँचना–क्रि० अ० दे० "खिंचना"।
इंजन–संज्ञा पुं० [अं० एंजिन] १. कल। पेंच। २. भाप या बिजली से चलनेवाला यंत्र। ३. रेलवे ट्रेन में वह गाड़ी जो भाप के जोर से सब गाड़ियों को खींचती है।
इंजीनियर–संज्ञा पुं० [अं० एंजीनियर] १. यंत्र की विद्या जाननेवाला। कलों का बनाने या चलानेवाला। २. शिल्पविद्या में निपुण। विश्वकर्मा। ३. वह अफसर जिसके निरीक्षण में सरकारी सड़कें, इमारतें और पुल इत्यादि बनते हैं।
इंजील–संज्ञा स्त्री० [यू०] ईसाइयों की धर्म-पुस्तक।
इँडुरी †–संज्ञा स्त्री० दे० "इँडुवा"।
इँडुवा–संज्ञा पुं० [सं० कुंडल] कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी जिसे बोझ उठाते समय सिर के ऊपर रख लेते हैं। गेंडुरी।
इंतकाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. मृत्यु। मौत। २. किसी संपत्ति का एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में जाना।
इंतजाम–संज्ञा पुं० [अ०] प्रबंध। बंदोबस्त। व्यवस्था।
इंतजार–संज्ञा पुं० [अ०] प्रतीक्षा।
इंदव–संज्ञा पुं० [सं० इंदव] एक छंद।
इंदिरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
इंदीवर–संज्ञा पुं० [सं०] १. नील-कमल। नीलोत्पल। २. कमल।
इंदु–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर। ३. एक की संख्या।
इंदुवदना–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
इंद्र–वि० [सं०] १. ऐश्वर्यवान्। विभूति-संपन्न। २. श्रेष्ठ। बड़ा। जैसे, नरेंद्र। संज्ञा पुं० १. एक वैदिक देवता जिसका स्थान अंतरिक्ष है और जो पानी बरसाता है। २. देवताओं का राजा।
यौ०—इंद्र का अखाड़ा=१. इंद्र की सभा जिसमें अप्सराएँ नाचती हैं। २. बहुत सजी हुई सभा जिसमें खूब नाच रंग होता हो। इंद्र की परी=१. अप्सरा। २. बहुत सुंदरी स्त्री। ३. बारह आदित्यों में से एक। सूर्य। ४. बिजली। ५. मालिक। स्वामी। ६. ज्येष्ठा नक्षत्र। ७. चौदह की संख्या। ८. छप्पय छंद के भेदों में से एक। ९. जीव। प्राण।
इंद्रकील–संज्ञा पुं० [सं०] मंदराचल।
इंद्रगोप–संज्ञा पुं० [सं०] बीरबहूटी नाम का कीड़ा।
इंद्रजव–संज्ञा पुं० [सं० इंद्रयव] कुड़ा। कोरैया का बीज।
इंद्रजाल–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० इंद्रजालिक] मायाकर्म। जादूगरी। तिलस्म।
इंद्रजाली–वि० [सं० इंद्रजालिन्] [स्त्री० इंद्रजालिनी] इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।
इंद्रजित्–वि० [सं०] इंद्र को जीतनेवाला। संज्ञा पुं० रावण का पुत्र, मेघनाद।
इंद्रजीत–संज्ञा पुं० दे० "इंद्रजित्"।
इंद्रदमन–संज्ञा पुं० [सं०] १ बाढ़ के समय नदी के जल का किसी निश्चित कुंड, ताल अथवा वट या पीपल के वृक्ष तक पहुँचना जो एक पर्व समझा जाता है। २. मेघनाद का एक नाम।
इंद्रधनुष–संज्ञा पुं० [सं०] सात रंगों का बना हुआ एक अर्द्धवृत्त जो वर्षा काल में सूर्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में देख पड़ता है।
इंद्रनील–संज्ञा पुं० [सं०] नीलम।
इंद्रप्रस्थ–संज्ञा पुं० [सं०] एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था।
इंद्रलोक–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
इंद्रवंशा–संज्ञा पुं० [सं०] १२ वर्णों का एक वृत्त।
इंद्रवज्रा–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।
इंद्रवधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] बीरबहूटी।
इंद्राणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्र की पत्नी, शची। २. बड़ी इलायची। ३. इंद्रायन। ४ दुर्गा देवी।
इंद्रायन–संज्ञा पुं० [सं० इंद्राणी] एक लता जिसका लाल फल देखने में सुंदर, पर खाने में बहुत कड़वा होता है। इनारू।
इंद्रायुध–संज्ञा पुं० [सं०] १. वज्र। २. इंद्रधनुष।
इंद्रासन–संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र का

सिंहासन। २. राजसिंहासन।

इंद्रिय-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। २. शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है। पदार्थों के रूप, रस, गंध आदि के अनुभव में सहायक अंग, जो पाँच हैं—चक्षु, श्रोत्र, रसना, नासिका और त्वचा। ज्ञानेंद्रिय। ३. वे अंग या अवयव जिनसे भिन्न भिन्न कर्म किए जाते हैं और जो पाँच हैं—वाणी, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ। कर्मेंद्रिय। ४. लिंगेंद्रिय। ५. पाँच की संख्या।

इंद्रियजत्-वि० [सं०] जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो। जो विषयासक्त न हो।

इंद्रियनिग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रियों के वेग को रोकना।

इंद्री-संज्ञा स्त्री० दे० "इंद्रिय"।

इंद्रीजुलाब-संज्ञा पुं० [सं० इंद्रिय+फा० जुलाब] वे ओषधियाँ जिनसे पेशाब अधिक आता है।

इंसाफ-संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मुंसिफ] १. न्याय। अदल। २. फैसला। निर्णय।

संज्ञा पुं० [सं०] वामदेव।

इकंग-वि० दे० "एकांग"।

इकंत-वि० दे० "एकांत"।

इक -वि० दे० "एक"।

इकजोर-क्रि०वि० [सं० एक+हिं० जोर= जोड़ना] इकट्ठा। एक साथ।

इकट्ठा-वि० [सं० एकस्थ] एकत्र। जमा।

इकतर-वि० दे० "एकत्र"।

इकता-संज्ञा स्त्री० दे० "एकता"।

इकताई-संज्ञा स्त्री० [फा० यकता] १. एक होने का भाव। एकत्व। २. अकेले रहने की इच्छा, स्वभाव या बान। एकांत-सेविता। ३. अद्वितीयता।

इकतान-वि० [हिं० एक+तान] एक रस। एक सा। स्थिर। अनन्य।

इकतार-वि० [हिं० एक+तार] बराबर। एक रस। समान।

क्रि० वि० लगातार।

इकतारा-संज्ञा पुं० [हिं० एक+तार] १. सितार के ढंग का एक बाजा जिसमें केवल एक ही तार रहता है। २. एक प्रकार का हाथ से बुना जानेवाला कपड़ा।

इकतीस-वि० [सं० एकत्रिंशत्, प्रा० एकतीस] तीस और एक।

संज्ञा पुं० तीस और एक की संख्या। इकतीस का अंक। ३१।

इकत्र -क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

इकथाल-संज्ञा पुं० दे० "एकथाल"।

इकराम-संज्ञा पुं० [अ०] १. पारितोषिक। इनाम। २. इज्जत। आदर।

इकरार-संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रतिज्ञा। वादा। २. कोई काम करने की स्वीकृति।

इकला-वि० दे० "अकेला"।

इकलाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० एक+लाई या लोई-पर्त] १. एक पाट का महीन दुपट्टा या चद्दर। २. अकेलापन।

इकलौता-संज्ञा पुं० [हिं० इकला+पुं० हिं० ऊत (सं० पुत्र)] वह लड़का जो अपने माँ-बाप का अकेला हो।

इकल्ला-वि० [हिं० एक+ला (प्रत्य०)] १. एकहरा। एक पत्त का। २. अकेला।

इकसठ-वि० [सं० एकषष्टि] साठ और एक।

संज्ञा पुं० वह अंक जिससे साठ और एक का बोध हो। ६१।

इकसर-वि० [हिं० एक+सर (प्रत्य०)] अकेला। एकाकी।

इकसूत-वि० [सं० एक+सूत्र] एक साथ। इकट्ठा। एकत्र।

इकहरा-वि० दे० "एकहरा"।

इकहाई-क्रि० वि० [हिं०एक+हाई (प्रत्य०)] १. एक साथ। फौरन। २. अचानक।

इकांत -वि० दे० "एकांत"।

इकैठ -वि० [सं० एकस्थ] इकट्ठा।

इकौंज-संज्ञा स्त्री० [सं० एक (इक)+ बंध्या, अथवा काकबंध्या] वह स्त्री जिसको एक ही संतान हुई हो। काक-बंध्या।

इकौसा-वि० [सं० एक+आवास] एकांत।

इक्का-वि० [सं० एक] १. एकाकी। अकेला। २. अनुपम। बेजोड़।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की कान की बाली जिसमें एक मोती होता है। २. वह योद्धा जो लड़ाई में अकेला लड़े। ३. वह पशु जो अपना झुंड छोड़कर अलग हो जाय ४. एक प्रकार की दो पहिए की घोड़ा गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है। ५. ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की एक ही बूटी हो।

इक्का दुक्का–वि० [हिं० इक्का+दुक्का] अकेला दुकेला।

इक्कीस–वि० [सं० एकविंशत्]बीस और एक। संज्ञा पुं० बीस और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है—२१।

इक्यावन–वि० [सं० एकपंचाशत्, प्रा० एकावन] पचास और एक। संज्ञा पुं० पचास और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है—५१।

इक्यासी–वि० [सं० एकाशीति, प्रा० एकासि] अस्सी और एक। संज्ञा पुं० अस्सी और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है—८१।

इक्षु–संज्ञा पुं० [सं०] ईख। गन्ना।

इक्ष्वाकु–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्यवंश का एक प्रधान राजा। २. कड़ुई लौकी।

इखद्–वि० दे० "ईषत्"।

इखराज–संज्ञा पुं० [अ०] निकास। खर्च।

इखलास–संज्ञा पुं० [अ०] १. मेल मिलाप। मित्रता। २. प्रेम। भक्ति। प्रीति।

इखु–संज्ञा पुं० दे० "इषु"।

इख्तियार–संज्ञा पुं० [अ०] १. अधिकार। २. अधिकारक्षेत्र। ३. सामर्थ्य। क़ाबू। ४. प्रभुत्व। स्वत्व।

इच्छना–क्रि० स० [सं० इच्छन] इच्छा करना। चाहना।

इच्छा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० इच्छित, इच्छुक] एक मनोवृत्ति जो किसी सुखद वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान ले जाती है। कामना। लालसा। अभिलाषा। चाह।

इच्छाभोजन–संज्ञा पुं० [सं०] जिन जिन वस्तुओं की इच्छा हो, उनको खाना।

इच्छित–वि० [सं०] चाहा हुआ। वांछित।

इच्छु–संज्ञा पुं० दे० "इक्षु"। वि० [सं०] चाहनेवाला। (यौगिक में)

इच्छुक–वि० [सं०] चाहनेवाला।

इजमाल–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इजमाली] १. कुल। समष्टि। २. किसी वस्तु पर कुछ लोगों का संयुक्त स्वत्व। साझा।

इजमाली–वि० [अ०] शिरकत का। मुश्तरका। संयुक्त। साझे का।

इजराय–संज्ञा पुं० [अ०] १. जारी करना। प्रचार करना। २. व्यवहार। अमल।
यौ०—इजराय डिगरी=डिगरी का अमलदरामद होना।

इजलास–संज्ञा पुं० [अ०] १. बैठक। २. वह जगह जहाँ हाकिम बैठकर मुक़द्दमे का फ़ैसला करता है। कचहरी। न्यायालय।

इज़हार–संज्ञा पुं० [अ०] १. ज़ाहिर करना। प्रकाशन। प्रकट करना। २. अदालत के सामने बयान। गवाही। साक्षी।

इजाजत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आज्ञा। हुक्म। २. परवानगी। मंजूरी।

इज़ाफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. बढ़ती। वृद्धि। २. व्यय से बचा हुआ धन। बचत।

इज़ार–संज्ञा स्त्री० [अ०] पायजामा। सूथन।

इज़ारबंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सूत या रेशम का बना हुआ जालीदार बँधना जो पायजामे या लहँगे के नेफे में उसे कमर से बाँधने के लिये पड़ा रहता है। नारा।

इजारदार, इजारेदार–वि० [फ़ा०] किसी पदार्थ को इजारे या ठेके पर लेनेवाला। ठेकेदार। अधिकारी।

इजारा–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी पदार्थ को उजरत या किराए पर देना। २. ठेका। ३. अधिकार। इख़्तियार। स्वत्व।

इज्ज़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] मान। मर्य्यादा। प्रतिष्ठा। आदर।
मुहा०—इज्जत उतारना=मर्य्यादा नष्ट करना। इज्जत रखना=प्रतिष्ठा की रक्षा करना।

इज़्ज़तदार–वि० [फ़ा०] प्रतिष्ठित।

इठलाना–क्रि० अ० [हिं० ऐंठ+लाना] १. इतराना। ठसक दिखाना। गर्व-सूचक चेष्टा करना। २. मटकना। नख़रा करना।

इठलाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० इठलाना] इठलाने का भाव। ठसक।

इठाई–संज्ञा स्त्री० [सं० इष्ट+आई (प्रत्य०)] १ रुचि। चाह। प्रीति। २. मित्रता।

इडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। भूमि। २. गाय। ३. वाणी। ४. स्तुति। ५. अन्न। हवि। ६. नभदेवता। ७. दुर्गा। अंबिका। ८. पार्वती। ९ कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो दक्ष की एक पुत्री थी। १०. स्वर्ग। ११. हठयोग की साधना के लिये कल्पित बाईं ओर की नाड़ी।

इत–क्रि० वि० [सं० इत.] इधर। इस ओर। यहाँ।

इतना–वि० [सं० एतावत् अथवा पुं० हिं० ई

(यह) + तना (प्रत्य०)] [स्त्री० इतनी] इस मात्रा का। इस क़दर।
मुहा०—इतने में = इसी बीच में।
इतनो †-वि० दे० "इतना"।
इतमाम †-संज्ञा पुं० [अ० इहतिमाम] इंत-ज़ाम। बंदोबस्त। प्रबंध।
इतमीनान-संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इतमी-नानी] विश्वास। दिलजमई। संतोष।
इतर-वि० [सं०] १. दूसरा। अपर। और। अन्य। २. नीच। पामर। ३. साधारण। संज्ञा पुं० दे० "अतर"।
इतराज़ी-संज्ञा स्त्री० [अ० एतराज़] विरोध। बिगाड़। नाराज़ी।
इतराना-क्रि० अ० [सं० उत्तरण] १. घमंड करना। २. ठसक दिखाना। इठलाना।
इतराहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० इतराना] दर्प। घमंड। गर्व।
इतरेतर-क्रि० वि० [सं०] परस्पर।
इतरेतराभाव-संज्ञा पुं० [सं०] न्याय शास्त्र में एक के गुणों का दूसरे में न होना। अन्योन्याभाव।
इतरेतराश्रय-संज्ञा पुं० [सं०] तर्क में एक प्रकार का दोष जो वहाँ होता है जहाँ एक वस्तु की सिद्धि दूसरी वस्तु की सिद्धि पर निर्भर होती है, और उस दूसरी वस्तु की सिद्धि भी पहली वस्तु की सिद्धि पर निर्भर होती है।
इतरौंहाँ -वि०[हिं० इतराना + औहाँ (प्रत्य०)] जिससे इतराने का भाव प्रकट हो। इत-राना सूचित करनेवाला।
इतवार-संज्ञा पुं० [सं० आदित्यवार] शनि और सोमवार के बीच का दिन। रविवार।
इतस्ततः-क्रि० वि० [सं०] इधर उधर।
इताअत-संज्ञा स्त्री० [अ०] आज्ञापालन।
इताति -संज्ञा स्त्री० दे० "इताअत"।
इति-अव्य० [सं०] समाप्तिसूचक अव्यय। संज्ञा स्त्री० [सं०] समाप्ति। पूर्णता।
यौ०—इतिश्री = समाप्ति। अंत।
इतिकर्तव्यता- संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी काम के करने की विधि। परिपाटी।
इतिवृत्त-संज्ञा पुं० [सं०] पुरावृत्त। पुरानी कथा। कहानी।
इतिहास-संज्ञा पुं० [सं०] बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे संबंध रखनेवाले का काल क्रम से वर्णन। तवारीख़।

इतेक†-वि० [हिं० इत + एक] इतना।
इतो -वि० [सं० इयत् = इतना] [स्त्री० इती] इतना। इस मात्रा का।
इत्तफ़ाक़-संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इत्तफ़ाकिया। क्रि० वि० इत्तफ़ाक़न्] १ मेल। मिलाप। एका। सहमति। २. संयोग। मौक़ा। अवसर।
मुहा०—इत्तफ़ाक़ पड़ना = संयोग उपस्थित होना। मौक़ा पड़ना। इत्तफ़ाक़ से = संयोगवश।
इत्तला-संज्ञा स्त्री० [अ० इत्तलाअ] सूचना। खबर।
यौ०—इत्तलानामा = सूचनापत्र।
इत्ता, इत्तो -वि० दे० "इतो"।
इत्थं-क्रि० वि० [सं०] ऐसे। यों।
इत्थंभूत-वि० [सं०] ऐसा।
इत्थमेव-वि० [सं०] ऐसा ही। क्रि० वि० इसी प्रकार से।
इत्यादि-अव्य० [सं०] इसी प्रकार अन्य। इसी तरह और दूसरे। वग़ैरह। आदि।
इत्यादिक- वि० [सं०] इसी प्रकार के अन्य और। ऐसे ही और दूसरे। वग़ैरह।
इत्र-संज्ञा पुं० दे० "अतर"।
इत्रीफल-संज्ञा पुं० [सं० त्रिफला] शहद में बनाया हुआ त्रिफला का अवलेह।
इदम्-सर्व० [सं०] यह।
इदमित्थं-पद० [सं०] ऐसा ही है। ठीक है।
इधर-क्रि० वि० [सं० इतर] इस ओर। यहाँ। इस तरफ़।
मुहा०—इधर उधर = १. यहाँ वहाँ। इतस्ततः। २. आस पास। इनारे किनारे। ३. चारों ओर। सब ओर। इधर उधर करना = १. टाल मटूल करना। हीला-हवाला करना। २. उलट पुलट करना। क्रम भंग करना। ३. तितर बितर करना। ४. हटाना। भिन्न भिन्न स्थानों पर कर देना। इधर उधर की बात = १. अपवाद। सुनी सुनाई बात। २. बेठिकाने की बात। असंबद्ध बात। इधर की उधर करना या लगाना = चुगलखोरी करना। झगड़ा लगाना। इधर की दुनिया उधर होना = अनहोनी बात का होना। इधर उधर में रहना = व्यर्थ समय खोना। इधर उधर होना = १. उलट पुलट होना। बिगड़ना। २. भाग जाना। तितर बितर होना।
इन-सर्व० [हिं० इस] 'इस' का बहुवचन।
इनकार-संज्ञा पुं० [अ०] अस्वीकार। नामं-

जूरी। 'इक़रार' का उलटा।
इनसान-संज्ञा पुं० [अ०] मनुष्य।
इनसानियत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनुष्यत्व। आदमियत। २ बुद्धि। शऊर। ३. भलमनसी। सज्जनता।
इनाम-संज्ञा पुं० [अ० इनआम] पुरस्कार। उपहार। बख़्शिश।
यौ०-इनाम इकराम=इनाम जो कृपापूर्वक दिया जाय।
इनायत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कृपा। दया। अनुग्रह। २. एहसान।
मुहा०-इनायत करना=कृपा करके देना।
इनारा-संज्ञा पुं० दे० "इँदारा"।
इने गिने-वि० [अनु० इन+हिं० गिनना] कतिपय। कुछ। थोड़े से। चुने चुनाए।
इन्हें-सर्व० दे० "इन"।
इफरात-संज्ञा स्त्री० [अ०] अधिकता।
इबरानी-वि० [अ०] यहूदी।
संज्ञा स्त्री० पैलिस्तान देश की प्राचीन भाषा।
इबादत-संज्ञा स्त्री० [अ०] पूजा। अर्चा।
इबारत-संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० इबारती] १. लेख। २. लेख-शैली।
इमरती-संज्ञा स्त्री० [सं० अमृत] एक प्रकार की मिठाई।
इमली-संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ल+हिं० ई (प्रत्य०)] १. एक बड़ा पेड़ जिसकी गूदेदार लंबी फलियाँ खटाई की तरह खाई जाती हैं। २. इस पेड़ का फल।
इमाम-संज्ञा पुं० [अ०] १. अगुआ। २. मुसलमानों के धार्मिक कृत्य करानेवाला मनुष्य। ३. अली के बेटों की उपाधि।
इमामदस्ता-संज्ञा पुं० [फा० हावन+दस्ता] लोहे या पीतल का खल और बट्टा।
इमामबाड़ा-संज्ञा पुं० [अ० इमाम+हिं० बाड़ा] वह हाता जिसमें शीया मुसलमान ताजिया रखते और उसे दफ़न करते हैं।
इमारत-संज्ञा स्त्री० [अ०] बड़ा और पक्का मकान। भवन।
इमि-क्रि० वि० [सं० एवम्] इस प्रकार।
इम्तहान-संज्ञा पुं० [अ०] परीक्षा। जाँच।
इयत्ता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सीमा। हद।
इरषा-संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्ष्या"।
इरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कश्यप की वह स्त्री जिससे वृहस्पति और उद्भिज उत्पन्न हुए थे। २. भूमि। पृथ्वी। ३. वाणी।
इराक़ी-वि० [अ०] अरब के इराक़ प्रदेश का।
संज्ञा पुं० घोड़ों की एक जाति।
इरादा-संज्ञा पुं० [अ०] विचार। संकल्प।
इर्द गिर्द-क्रि० वि० [अनु० इर्द+फा० गिर्द] १. चारो ओर। २. आस पास।
इर्षना-संज्ञा स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।
इलजाम-संज्ञा पुं० [अ०] १. दोष। अपराध। २. अभियोग। दोषारोपण।
इलहाम-संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर का शब्द। देववाणी।
इला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. पार्वती। ३. सरस्वती। वाणी। ४. गौ।
इलाका-संज्ञा पुं० [अ०] १. संबंध। लगाव। २. कई मौज़ों की ज़मींदारी।
इलाज-संज्ञा पुं० [अ०] १. दवा। औषध। २. चिकित्सा। ३. उपाय। युक्ति।
इलाम*-संज्ञा पुं० [अ० ऐलान] १. इस्लानामा। २. हुक्म। आज्ञा।
इलायची-संज्ञा स्त्री० [सं० एला+ची (फा० प्रत्य० 'च')] एक सदाबहार पेड़ जिसके फल के बीजों में बड़ी तीक्ष्ण सुगंध होती है। बीज मसाले में भी पड़ते हैं और मुख सुगंधित करने के लिये खाए भी जाते हैं।
इलायचीदाना-संज्ञा पुं० [सं० एला+फा० दाना] १. इलायची का बीज। २. चीनी में पागा हुआ इलायची या पोस्ते का दाना।
इलावर्त-संज्ञा पुं० दे० "इलावृत्त"।
इलावृत-संज्ञा पुं० [सं०] जंबू द्वीप के नौ खंडों में से एक।
इलाही-संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर। ख़ुदा।
वि० दैवी। ईश्वरीय।
इलाही गज-संज्ञा पुं० [अ०] अकबर का चलाया हुआ एक प्रकार का गज जो ४१ अंगुल (३३½ इंच) का होता है और इमारत आदि में नापने के काम में आता है।
इल्ज़ाम-संज्ञा पुं० [अ०] आरोप। दोषारोपण।
इल्तिजा-संज्ञा स्त्री० [अ०] निवेदन।
इल्म-संज्ञा पुं० [सं०] विद्या। ज्ञान।
इल्लत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रोग। बीमारी। २. झंझट। बखेड़ा। ३. दोष। अपराध।
इल्ला-संज्ञा पुं० [सं० कील] छोटी कड़ी फुंसी

जो चमड़े के ऊपर निकलती है।
इल्ली–संज्ञा स्त्री० [देश०] चींटी के बच्चों का वह रूप जो अंडे से निकलते ही होता है।
इव–अव्य० [सं०] उपमावाचक शब्द। समान। नाईं। तरह।
इशारा–संज्ञा पुं० [अ०] १. सैन। संकेत। २. संक्षिप्त कथन। ३. बारीक सहारा। सूक्ष्म आधार। ४. गुप्त प्रेरणा।
इश्क–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० आशिक, माशूक] मुहब्बत। चाह। प्रेम।
इश्तहार–संज्ञा पुं० [अ०] विज्ञापन।
इश्तियालक–संज्ञा स्त्री० [अ०] बढ़ावा। उत्तेजना।
इषणा–संज्ञा स्त्री० दे० "एषणा"।
इष्ट–वि० [सं०] १ अभिलषित। चाहा हुआ। वांछित। २. पूजित।
संज्ञा पुं० १. अग्निहोत्रादि शुभ कर्म। २. इष्टदेव। कुलदेव। ३. अधिकार। देवता की छाया या कृपा। ४. मित्र।
इष्टका–संज्ञा स्त्री० [सं०] ईंट।
इष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] इष्ट का भाव।
इष्टदेव, इष्टदेवता–संज्ञा पुं० [सं०] आराध्य देव। पूज्य देवता।
इष्टापत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वादी के कथन में दिखाई हुई ऐसी आपत्ति जिसे वादी स्वीकृत कर ले।
इष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इच्छा। अभिलाषा। २. यज्ञ।
इस–सर्व० [सं० एष] 'यह' शब्द का विभक्ति के पहले आदिष्ट रूप। जैसे, इसको।
इसपंज–संज्ञा पुं० [अं० स्पंज] समुद्र में एक प्रकार के अत्यंत छोटे कीड़ों के योग से बना हुआ मुलायम रूई की तरह का सजीव पिंड जो पानी खूब सोखता है। मुर्दा बादल।
इसपात–संज्ञा पुं० [सं० अयस्पत्र, अथवा पुर्त० स्पेडा] एक प्रकार का कड़ा लोहा।
इसबगोल–संज्ञा पुं० [फा०] फारस की एक झाड़ी या पौधा जिसके गोल बीज हकीमी दवा में काम आते हैं।
इसलाम–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० इसलामिया] मुसलमानी धर्म।
इसलाह–संज्ञा स्त्री० [अ०] संशोधन।
इसारत‡–संज्ञा स्त्री० [अ० इशारा] संकेत। इशारा।
इसे–सर्व० [सं० एष] 'यह' का कर्म कारक और संप्रदान कारक का रूप।
इस्तमरारी–वि० [अ०] सब दिन रहनेवाला। नित्य। अविच्छिन्न।
यौ०—इस्तमरारी बंदोबस्त = जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें मालगुजारी सदा के लिये मुकर्रर कर दी जाती है।
इस्तिंजा–संज्ञा पुं० [अ०] पेशाब करने के बाद मिट्टी के ढेले से इंद्रिय की शुद्धि।
इस्तिरी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्तरी=तह करनेवाली] कपड़े की तह बैठाने का धोबियों या दरजियों का औजार।
इस्तीफा–संज्ञा पुं० [अ० इस्तैफ़ा] नौकरी छोड़ने की दरख्वास्त। त्यागपत्र।
इस्तेमाल–संज्ञा पुं० [अ०] प्रयोग। उपयोग।
इह–क्रि० वि० [सं०] इस जगह। इस लोक में। इस काल में। यहाँ।
इहाँ‡–क्रि वि० दे० "यहाँ"।

ई

ई–हिंदी-वर्णमाला का चौथा अक्षर और 'इ' का दीर्घ रूप जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।
ईंगुर–संज्ञा पुं० [सं० हिंगुल, प्रा० इंगुल] गंधक और पारे से घटित एक खनिज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुंदर होती है। सिंगरफ।
सं० दे० "खींचना"।
ईंट–संज्ञा स्त्री० [सं० इष्टका] १. साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूँटा लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार उठाई जाती है।
मुहा०—ईंट से ईंट बजना = किसी नगर या घर का ढह जाना या ध्वंस होना। ईंट से ईंट बजाना = किसी नगर या घर को ढाना या ध्वस्त करना। ईंट चुनना = दीवार उठाने के लिये ईंट पर ईंट बैठाना। जोड़ाई करना। डेढ़ या

ढाई ईंट की मसजिद अलग बनाना = जो सब लोग कहते या करते हों, उसके विरुद्ध कहना या करना। ईंट पत्थर = कुछ नहीं। २. धातु का चौखूँटा ढला हुआ टुकड़ा। ३. ताश का एक रंग।
ईंटा—संज्ञा पु० दे० "ईंट"।
ईंडरी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] कपड़े की कुंडलाकार गद्दी जिसे भरा घड़ा या बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं। गेंडुरी।
ईंधन—संज्ञा पु० [सं० इंधन] जलाने की लकड़ी या कंडा। जलावन। जरनी।
संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
*सर्व० [सं० ई = निकट का संकेत] यह।
अव्य० [सं० हि] ज़ोर देने का शब्द। ही।
ईक्षण—संज्ञा पु० [सं०] [वि० ईक्षणीय, ईक्षित, ईक्ष्य] १. दर्शन। देखना। २. आँख। ३. विवेचन। विचार। जाँच।
ईख—संज्ञा स्त्री० [सं० इक्षु] शर जाति की एक घास जिसके डंठल में मीठा रस भरा रहता है। इसी रस से गुड़ और चीनी बनती है। गन्ना। ऊख।
ईखना—क्रि० स० [सं० ईक्षण] देखना।
ईछन—संज्ञा पु० [सं० ईक्षण] आँख।
ईछना—क्रि० स० [सं० इच्छा] इच्छा करना। चाहना।
ईछा—संज्ञा स्त्री० "इच्छा"।
ईजाद—संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी नई चीज़ का बनाना। नया निर्माण। आविष्कार।
ईठ—संज्ञा पु० [सं० इष्ट] मित्र। सखा।
ईठना—क्रि० स० [सं० इष्ट] इच्छा करना।
ईठि—संज्ञा स्त्री० [सं० इष्टि, प्रा० इट्ठि] १. मित्रता। दोस्ती। प्रीति। २. चेष्टा। यत्न।
ईढ—संज्ञा स्त्री० [सं० इष्ट, प्रा० इट्ठ] [वि० ईढी] जिद। हठ।
ईतर—वि० [हिं० इतराना] १. इतरानेवाला। ढीठ। शोख। गुस्ताख़।
वि० [सं० इतर] निम्न श्रेणी का।
ईति—संज्ञा स्त्री० [सं०] खेती को हानि पहुँचानेवाले उपद्रव जो छः प्रकार के हैं—(क) अतिवृष्टि। (ख) अनावृष्टि। (ग) टिड्डी पड़ना। (घ) चूहे लगना। (च) पक्षियों की अधिकता। (छ) दूसरे राजा की चढ़ाई। २. बाधा। ३. पीड़ा। दुःख।
ईथर—संज्ञा पु० [अं०] १. एक प्रकार का अति सूक्ष्म और लचीला द्रव्य या पदार्थ जो समस्त शून्य स्थल में व्याप्त है। आकाश द्रव्य। २. एक रासायनिक द्रव पदार्थ जो अलकोहल और गंधक के तेज़ाब से बनता है।
ईद—संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का एक त्योहार जो रोज़ा ख़तम होने पर होता है।
ईदगाह—संज्ञा स्त्री० [अ० ईदगाह] = वह स्थान जहाँ मुसलमान ईद के दिन इकट्ठे होकर नमाज़ पढ़ते हैं।
ईदृश—क्रि० वि० [सं०] [स्त्री० ईदृशी] इस प्रकार। इस तरह। ऐसे।
वि० इस प्रकार का। ऐसा।
ईप्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० ईप्सित, ईप्सु] इच्छा। वांछा। अभिलाषा।
ईप्सित—वि० [सं०] चाहा हुआ। अभिलषित।
ईबी सीबी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सिसकारी का शब्द। 'सी सी' का शब्द जो आनंद या पीड़ा के समय मुँह से निकलता है।
ईमान—संज्ञा पु० [अ०] १. धर्म विश्वास। आस्तिक्य बुद्धि। २. चित्त की सद्वृत्ति। अच्छी नीयत। ३. धर्म। ४. सत्य।
ईमानदार—वि० [फा०] १. विश्वास रखनेवाला। २. विश्वासपात्र। ३. सच्चा। ४. दियानतदार। जो लेन-देन या व्यवहार में सच्चा हो। ५. सत्य का पक्षपाती।
ईरखा—संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।
ईरान—संज्ञा पु० [फा०] [वि० ईरानी] फारस देश।
ईरषण—संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्षण] ईर्षा। डाह।
ईर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] [वि० ईर्षालु, ईर्षित, ईर्षु] दूसरे का उत्कर्ष न सहन होने की वृत्ति। डाह। हसद।
ईर्षालु—वि० [सं०] ईर्षा करनेवाला। दूसरे की बढ़ती देखकर जलनेवाला।
ईर्ष्या—संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।
ईश—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० ईशा, ईशी] १. स्वामी। मालिक। २. राजा। ३. ईश्वर। परमेश्वर। ४. महादेव। शिव। रुद्र। ५. ग्यारह की संख्या। ६. आर्द्रा नक्षत्र। ७. एक उपनिषद्। ८. पारा।
ईशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वामित्व। प्रभुत्व।
ईशान—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० ईशानी] १. स्वामी। अधिपति। २. शिव। महादेव। रुद्र। ३. ग्यारह की संख्या। ४. ग्यारह रुद्रों में से एक। ५. पूरब और

उत्तर के बीच का कोना।
ईशिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है।
ईशित्व-संज्ञा पुं० दे० "ईशिता"।
ईश्वर-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ईश्वरी] १. मालिक। स्वामी। २. क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से पृथक् पुरुष-विशेष। परमेश्वर। भगवान्। ३. महादेव। शिव।
ईश्वरप्रणिधान-संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के पाँच नियमों में से अंतिम। ईश्वर में अत्यंत श्रद्धा और भक्ति रखना।
ईश्वरीय-वि० [सं०] १. ईश्वर-संबंधी। २. ईश्वर का।
ईषत्-वि० [सं०] थोड़ा। कुछ। कम।
ईषत्स्पृष्ट-संज्ञा पुं० [सं०] वर्णों के उच्चारण में एक प्रकार का आभ्यंतर प्रयत्न जिसमें जिह्वा तालु, मूर्द्धा और दंत को तथा दाँत ओष्ठ को कम स्पर्श करता है। 'य', 'र', 'ल', 'व' ईषत्स्पृष्ट वर्ण हैं।
ईषद्-वि० दे० "ईषत्"।
ईषना*-संज्ञा स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।
ईस-संज्ञा पुं० दे० "ईश"।
ईसन*-संज्ञा पुं० [सं० ईशान] ईशान कोण।
ईसर*-संज्ञा पुं० [सं० ऐश्वर्य] ऐश्वर्य।
ईसरगोल-संज्ञा पुं० दे० "इसबगोल"।
ईसवी-वि० [फा०] ईसा से संबंध रखनेवाला।
यौ०—ईसवी सन् = ईसा मसीह के जन्मकाल से चला हुआ संवत्।
ईसा-संज्ञा पुं० [अ०] ईसाई धर्म के प्रवर्तक। ईसा मसीह।
ईसाई-वि० [फा०] ईसा को माननेवाला। ईसा के बताए धर्म पर चलनेवाला।
ईहा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० ईहित] १. चेष्टा। उद्योग। २. इच्छा। ३. लोभ।
ईहामृग-संज्ञा पुं० [सं०] रूपक का एक भेद जिसमें चार अंक होते हैं।

उ

उ-हिंदी वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
उँ-अव्य० एक प्रायः अव्यक्त शब्द जो प्रश्न, अवज्ञा या क्रोध सूचित करने के लिये व्यवहृत होता है।
उंगल-संज्ञा स्त्री० दे० "अंगुल"।
उँगली-संज्ञा स्त्री० [सं० अंगुलि] हथेली के छोरों से निकले हुए फलियों के आकार के पाँच अवयव जो मिलकर वस्तुओं को ग्रहण करते हैं और जिनके छोरों पर स्पर्श-ज्ञान की शक्ति अधिक होती है।
मुहा०-(किसी की ओर) उँगली उठना = (किसी का) लोगों की निंदा का लक्ष्य होना। निंदा होना। बदनामी होना। (किसी की ओर) उँगली उठाना = १. निंदा का लक्ष्य बनाना। लांछित करना। दोषी बताना। २. तनिक भी हानि पहुँचाना। टेढ़ी नजर से देखना। उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना = थोड़ा सा सहारा पाकर विशेष की प्राप्ति के लिये उत्साहित होना। उँगलियों पर नचाना = १. जैसा चाहे वैसा कराना। अपनी इच्छा के अनुसार ले चलना। कानी उँगली = कनिष्ठिका या सबसे छोटी उँगली। कानों में उँगली देना = किसी बात से विरक्त या उदासीन होकर उसकी चर्चा बचाना। पाँचों उँगलियाँ घी में होना = सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना।
उँचाई-संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँच", "ऊँचाई"।
उंचन-संज्ञा स्त्री० [सं० उदंचन = ऊपर खींचना या उठाना] अदवायन। अदवान।
उंचना-क्रि० स० [सं० उदंचन] अदवान तानना। उंचन कसना। अदवान खींचना।
उँचाना*-क्रि० स० [हिं० ऊँचा] ऊँचा करना। उठाना।
उँचाव*†-संज्ञा पुं० [सं० उच्च] ऊँचाई।
उँचास*†-संज्ञा पुं० दे० "ऊँचाई"।
उंछ-संज्ञा स्त्री० [सं०] मालिक के ले जाने के पीछे खेत में पड़े हुए अन्न के एक एक दाने को जीविका के लिये चुनने का काम। सीला बीनना।
उंछवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] खेत गिरे

हुए दानों को चुनकर जीवन-निर्वाह करने का कर्म।

उंदुर-संज्ञा पु० [सं०] चूहा। मूसा।

उँह-अव्य० [अनु०] १. अस्वीकार, घृणा या बेपरवाही का सूचक शब्द। २ वेदना-सूचक शब्द। कराहने का शब्द।

उ-संज्ञा पु० [सं०] १. ब्रह्मा। २. नर।

: अव्य० भी।

उअना-क्रि० अ० दे० "उगना"।

उआना-क्रि० स० दे० "उगाना"।

: क्रि० स० [सं० उद्गुरण] किसी के मारने के लिये हाथ या हथियार तानना।

उऋण-वि० [सं० उत्+ऋण] ऋणमुक्त। जिसका ऋण से उद्धार हो गया हो।

उकचना-क्रि० अ० [सं० उत्कर्ष] १. उखड़ना। अलग होना। २. पत्त से अलग होना। उचड़ना। २. उठ भागना।

उकटना-क्रि० स० दे० "उघटना"।

उकटा-वि० [हिं० उकटना] [स्त्री० उकटी] उकटनेवाला। एहसान जतानेवाला। संज्ञा पु० किसी के किए हुए अपराध या अपने उपकार को बार बार जताने का कार्य्य।

यौ०—उकटा पुरान=गई बीती और दबी दबाई बातों का विस्तारपूर्वक कथन।

उकठना-क्रि० अ० [सं० अव=बुरा+काष्ठ] सूखना। सूखकर कड़ा होना।

उकठा-वि० [हिं० उकठना] शुष्क। सूखा।

उकडूँ-संज्ञा पु० [सं० उत्कटोरु] घुटने मोड़कर बैठने की एक मुद्रा जिसमें दोनों तलवे जमीन पर पूरे बैठते हैं और चूतड़ एँड़ियों से लगे रहते हैं।

उकताना-क्रि० अ० [सं० आकुल] १. ऊबना। २. जल्दी मचाना।

उकति-संज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति"।

उकलना-क्रि० अ० [सं० उत्कलन=खुलना] १. तह से अलग होना। उचड़ना। २. लिपटी हुई चीज का खुलना। उधड़ना।

उकलाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० उगलना] कै। उलटी। वमन। मचली।

उकलाना-क्रि० अ० [हिं० उकलाई] उलटी करना। वमन करना। कै करना।

उकवथ-संज्ञा पु० [सं० उत्कोथ] एक प्रकार का चर्म-रोग जिसमें दाने निकलते हैं, खाज होती है और चेप बहता है।

उकसना-क्रि० अ० [सं० उत्कषण या उत्सुक] १. उभरना। ऊपर को उठना। २. निकलना। अंकुरित होना। ३ उधड़ना।

उकसनि-संज्ञा स्त्री० [हिं० उकसना] उठने की क्रिया या भाव। उभाड़।

उकसाना-क्रि० स० [हिं० 'उकसना' का प्रे० रूप] १. ऊपर को उठाना। २. उभाड़ना। उत्तेजित करना। ३ उठा देना। हटा देना। ४. (दिए की बत्ती) बढ़ाना या खसकाना।

उकसौंहाँ-वि० [हिं० उकसना+औंहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० उकसौंहीं] उभड़ता हुआ।

उकाब-संज्ञा पु० [अ०] बड़ी जाति का एक गिद्ध। गरुड़।

उकालना-क्रि० स० दे० "उकेलना"।

उकासना-क्रि० स० [हिं० उकसाना] १. उभाड़ना। २. खोदकर ऊपर फेंकना। ३ उघारना। खोलना।

उकुति-संज्ञा स्त्री० दे० 'उक्ति'।

उकसना-क्रि० स० [हिं० उकसना] उजाड़ना। उधेड़ना।

उकेलना-क्रि० स० [हिं० उकलना] १. तह या पत्त से अलग करना। उचाड़ना। २ लिपटी हुई चीज़ को छुड़ाना या अलग करना। उधेड़ना।

उकौना-संज्ञा पु० [हिं० ओकाई] गर्भवती की भिन्न-भिन्न वस्तुओं की इच्छा। दोहद।

उक्त-वि० [सं०] कथित। कहा हुआ।

उक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कथन। वचन। २. अनोखा वाक्य। चमत्कारपूर्ण कथन।

उखड़ना-क्रि० अ० [सं० उत्खिदन या उत्कर्षण] किसी जमी या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना। जड़-सहित अलग होना। खुदना। "जमना" का उलटा। २. किसी दृढ़ स्थिति से अलग होना। जमा या सटा न रहना। ३ जोड़ से हट जाना। ४. (घोड़े के वास्ते) चाल में भेद पड़ना। गति सम न रहना। ५ संगीत में बेताल और बेसुर होना। ६. एकत्र या जमा न रहना। तितर बितर हो जाना। ७. हटना। अलग होना। ८ टूट जाना।

मुहा०—उखड़ी उखड़ी बातें करना=उदासीनता दिखाते हुए बात करना। विरक्ति-

सूचक बात करना। पैर या पाँव उखड़ना = ठहर न सकना। एक स्थान पर जमा न रहना। लड़ने में उसके सामने न ठहरना।

उखड़वाना-क्रि० स० [हिं० उखड़ना का प्रे० रूप] किसी को उखाड़ने में प्रवृत्त करना।

उखम*-संज्ञा पुं० [सं० ऊष्म] गरमी।

उखमज -संज्ञा पुं० दे० "ऊष्मज"।

उखरना-क्रि० अ० दे० "उखड़ना"।

उखली-संज्ञा स्त्री० [सं० उदूखल] पत्थर या लकड़ी का एक पात्र जिसमें डालकर भूसीवाले अनाजों की भूसी मूसलों से कूटकर अलग की जाती है। काँडी।

उखा -संज्ञा स्त्री० दे० "उषा"।

उखाड़-संज्ञा पुं० [हिं० उखाड़ना] १ उखाड़ने की क्रिया। उत्पाटन। २ वह युक्ति जिससे कोई पेंच रद्द किया जाता है। तोड़।

उखाड़ना-क्रि० स० [हिं० उखड़ना का स० रूप] किसी जमी, गड़ी या बैठी हुई वस्तु को स्थान से पृथक् करना। जमा न रहने देना। २ अंग को जोड़ से अलग करना। ३ भड़काना। बिचकाना। ४ तितर बितर कर देना। ५ हटाना। टालना। ६ नष्ट करना। ध्वस्त करना।

मुहा०—गड़े मुर्दे उखाड़ना = पुरानी बातों को फिर से छेड़ना। गई बीती बात उभाड़ना। पैर उखाड़ देना = स्थान से विचलित करना। हटाना। भगाना।

उखारना*†-क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।

उखारी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊख] ईख का खेत।

उखेलना*-क्रि० स० [सं० उल्लेखन] उरेहना। लिखना। खींचना। (तस्वीर)

उगटना*-क्रि० स० [सं० उद्घाटन या उत्कथन] १ उघटना। बार बार कहना। २ ताना मारना। बोली बोलना।

उगना-क्रि० अ० [सं० उद्गमन] १ निकलना। उदय होना। प्रकट होना। (सूर्य्य चंद्र आदि ग्रह) २ जमना। अंकुरित होना। ३. उपजना। उत्पन्न होना।

उगरना*-क्रि० अ० [सं० उद्गरण] १ भरा हुआ पानी आदि निकलना। २ भरा हुआ पानी आदि निकल जाने से खाली होना।

उगलना-क्रि० स० [सं० उद्गिलन प्रा० उग्गिलन] १ पेट में गई हुई वस्तु को मुँह से बाहर निकालना। कै करना। २ मुँह में गई हुई वस्तु को बाहर थूक देना। ३ पचाया माल विवश होकर वापस करना। ४ जो बात छिपाने के लिये कही जाय, उसे प्रकट कर देना।

मुहा०—उगल पड़ना = तलवार का म्यान से बाहर निकल पड़ना। बाहर निकलना। जहर उगलना = ऐसी बात मुँह से निकालना जो दूसरे को बहुत बुरी लगे या हानि पहुँचावे।

उगलवाना-क्रि० स० दे० "उगलाना"।

उगलाना-क्रि० स० [हिं० उगलना का प्रे० रूप] १ मुख से निकलवाना। २ इकबाल कराना। दोष को स्वीकार कराना। ३ पचे हुए माल को निकलवाना।

उगवना*-क्रि० स० दे० "उगाना"।

उगसाना -क्रि० स० दे० "उकसाना"।

उगसारना*-क्रि० स० [हिं० उकसाना] बयान करना। कहना। प्रकट करना।

उगाना-क्रि० स० [हिं० उगना का स० रूप] १ जमाना। अंकुरित करना। उत्पन्न करना। (पौधा या अन्न आदि) २ उदय करना। प्रकट करना।

उगार, उगाल*-संज्ञा पुं० [सं० उद्गार, प्रा० उग्गाल] पीक। थूक। खखार।

उगालदान-संज्ञा पुं० [हिं० उगाल + फा० दान (प्रत्य०)] थूकने या खखार आदि गिराने का बरतन। पीकदान।

उगाहना-क्रि० स० [सं० उद्ग्रहण] वसूल करना। नियमानुसार अलग अलग अन्न, धन आदि लेकर इकट्ठा करना।

उगाही-संज्ञा स्त्री० [हिं० उगाहना] १ रुपया पैसा वसूल करने का काम। वसूली। २ वसूल किया हुआ रुपया-पैसा।

उगिलना*†-क्रि० स० दे० "उगलना"।

उग्गाहा-संज्ञा स्त्री० [सं० उद्गाथा, प्रा० उग्गाहा] आर्य्या छंद के भेदों में से एक।

उग्र-वि० [सं०] प्रचंड। उत्कट। तेज। संज्ञा पुं० १ महादेव। २ वत्सनाभ विष। बछनाग जहर। ३ क्षत्रिय पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न एक संकर जाति। ४ केरल देश। ५ सूर्य।

उग्रता-संज्ञा स्त्री० [सं०] तेजी। प्रचंडता।

उघटना-क्रि० अ० [सं० उद्घाटन] १ ताल देना। सम पर तान तोड़ना। २ दबी दबाई बात को उभाड़ना। ३ कमी के

किए हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध को बार बार कहकर ताना देना। ४. किसी को भला बुरा कहते कहते उसके बाप दादे को भी भला बुरा कहने लगना।

उघटा–वि० [हिं० उघटना] किए हुए उपकार को बार बार कहनेवाला। एहसान जतानेवाला। उघटनेवाला।
संज्ञा पु० [सं०] उघटने का कार्य्य।

उघडना–क्रि० अ० [सं० उद्घाटन] १. खुलना। आवरण का हटना। २. खुलना। आवरणरहित होना। ३ नंगा होना। ४ प्रकट होना। प्रकाशित होना। ५. भंडा फूटना।

उघरना †–क्रि० अ० दे० "उघडना"।

उघरारा †–वि० [हिं० उघरना] [स्त्री० उघरारी] खुला हुआ।

उघाडना –क्रि० स० [हिं० उघड़ना का स० रूप] १. खोलना। आवरण का हटाना। (आवरण के संबंध में)। २ खोलना। आवरण रहित करना। (आवृत के संबंध में)। ३ नंगा करना। ४. प्रकट करना। प्रकाशित करना। ५. गुप्त बात को खोलना। भंडा फोडना।

उघारना –क्रि० स० दे० "उघाड़ना"।

उघेलना –क्रि० स० [हिं० उघारना] खोलना।

उचकन–संज्ञा पु० [सं० उच्च+करण] ईंट, पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर किसी चीज को एक ओर ऊँचा करते हैं।

उचकना–क्रि० अ० [सं० उच्च=ऊँचा+करण=करना] १. ऊँचा होने के लिये पैर के पंजो के बल एड़ी उठाकर खड़ा होना। २ उछलना। कूदना।
क्रि० स० उछलकर लेना। लपककर छीनना।

उचका –क्रि० वि० [हिं० अचाका] अचानक। सहसा।

उचकाना–क्रि० स० [हिं० उचकना का स० रूप] उठाना। ऊपर करना।

उचक्का–संज्ञा पु० [हिं० उचकना] [स्त्री० उचक्की] १. उचककर चीज ले भागनेवाला आदमी। चाई। ठग। २. बदमाश।

उचटना–क्रि० अ० [सं० उच्चाटन] १. जमी हुई वस्तु का उखडना। उचडना। चिपका या जमा न रहना। २ अलग होना। पृथक् होना। छूटना। ३ भडकना। बिचकना। ४. विरक्त होना।

उचटाना –क्रि० स० [सं० उच्चाटन] १. उचाडना। नोचना। २ अलग करना। छुडाना। ३ उदासीन करना। विरक्त करना। ४ भडकाना। बिचकाना।

उचडना–क्रि० अ० [सं० उच्चाटन] १ सटी या लगी हुई चीज का अलग होना। पृथक् होना। २ किसी स्थान से हटना या अलग होना। जाना। भागना।

उचना –क्रि० अ० [सं० उच्च] १. ऊँचा होना। ऊपर उठना। उचकना। २. उठना।
क्रि० स० ऊँचा करना। उठाना।

उचनि –संज्ञा स्त्री० [सं० उच्च] उभाड़।

उचरंग†–संज्ञा पु० [हिं० उछलना+अंग] उड़नेवाला कीड़ा। पतंग। पतिंगा।

उचरना –क्रि० स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। बोलना।
क्रि० अ० मुँह से शब्द निकलना।
† क्रि० अ० दे० "उचडना"।

उचाट–संज्ञा पु० [सं० उच्चाट] मन का न लगना। विरक्ति। उदासीनता।

उचाटन –संज्ञा पु० दे० "उच्चाटन"।

उचाटना–क्रि० स० [सं० उच्चाटन] उच्चाटन करना। जी हटाना। विरक्त करना।

उचाटी –संज्ञा स्त्री० [सं० उच्चाट] उदासीनता। अनमनापन। विरक्ति।

उचाडना–क्रि० स० [हिं० उचडना] १ लगी या सटी हुई चीज को अलग करना। नोचना। २ उखाड़ना।

उचाना †–क्रि० स० [सं० उच्च+करण] १. ऊँचा करना। ऊपर उठाना। २ उठाना।

उचार –संज्ञा पु० दे० "उच्चार"।

उचारना –क्रि० स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। मुँह से शब्द निकालना।
क्रि० स० दे० "उचाडना"।

उचित–वि० [सं०] [संज्ञा औचित्य] योग्य। ठीक। मुनासिब। वाजिब।

उचेलना†–क्रि० स० दे० "उकेलना"।

उचौंहाँ –वि० [हिं० ऊँचा+औंहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० उँचौंही] ऊँचा उठा हुआ।

उच्च–वि० [सं०] १ ऊँचा। २ श्रेष्ठ। बड़ा।

उच्चतम–वि० [सं०] सब से ऊँचा।

उच्चता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऊँचाई। २. श्रेष्ठता। बड़ाई। ३ उत्तमता।

उच्चरण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उच्चरणीय, उच्चरित] कंठ, तालु जिह्वा आदि शब्द-

निकलना। मुँह से शब्द फूटना।
उचारना०–क्रि० स० [स० उच्चारण] उच्चारण करना। बोलना।
उचाट–सज्ञा पु० [स०] १. उखाड़ने या नोचने की क्रिया। २. अनमनापन।
उचाटन–सज्ञा पु० [स०] [वि० उचाटनीय, उचाटित] १. लगी या सटी हुई चीज को अलग करना। विश्लेषण। २. उचाड़ना। उखाड़ना। नोचना। ३. किसी के चित्त कहीं से हटाना। (तंत्र के छः अभिचारों या प्रयोगों में से एक)। ४. अनमनापन। विरक्ति। उदासीनता।
[उच्च]ार–संज्ञा पु० [स०] मुँह से शब्द निकालना। बोलना। कथन।
[उच्च]ारण–सज्ञा पु० [सं०] [वि० उच्चारणीय, उच्चारित, उच्चार्य्य, उच्चार्य्यमाण] १. कंठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि के प्रयत्न द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना। मुँह से स्वर और व्यंजनयुक्त शब्द निकालना। २. वर्णों या शब्दों को बोलने का ढंग। तलफ़्फ़ुज़।
[उ]च्चारना०–क्रि० स० [स० उच्चरण] (शब्द) मुँह से निकालना। बोलना।
उच्चारित–वि० [स०] जिसका उच्चारण किया गया हो। बोला या कहा हुआ।
उच्चार्य्य–वि० [सं०] उच्चारण के योग्य।
उच्चैःश्रवा–सज्ञा पु०[स० उच्चैःश्रवस्] खड़े कान और सात मुँह का इंद्र या सूर्य्य का सफ़ेद घोड़ा जो समुद्र-मथन के समय निकला था।
वि० ऊँचा सुननेवाला। बहरा।
उच्छन्न–वि० [स०] दबा हुआ। लुप्त।
उच्छलना०–क्रि० अ० दे० "उछलना"।
उच्छव०–संज्ञा पु० दे० "उत्सव"।
उच्छाव०–सज्ञा पु० दे० "उत्साह"।
उच्छाह०–सज्ञा पु० दे० "उछाह"।
उच्छिन्न–वि० [स०] १. कटा हुआ। खंडित। २. उखाड़ा हुआ। ३. नष्ट।
उच्छिष्ट–वि० [स०] १. किसी के खाने से बचा हुआ। जूठा। २. दूसरे का बर्ता हुआ।
सज्ञा पु० १. जूठी वस्तु। २. शहद।
उच्छू–संज्ञा स्त्री० [स० उत्थान, पं० उत्थ्] एक प्रकार की खाँसी जो गले में पानी इत्यादि रुकने से आने लगती है। सुनसुनी।
[उच्छृ]ंखल–वि० [स०] १. जो श्रृंखलाबद्ध न हो। क्रमविहीन। अंडबंड। २. निरंकुश। स्वेच्छाचारी। मनमाना काम करनेवाला। ३. उद्दंड। अक्खड़।
उच्छेद, उच्छेदन–सज्ञा पु० [स०] १. उखाड़-पछाड़। खंडन। २. नाश।
उच्छ्वसित–वि० [स०] १. उच्छ्वासयुक्त। २. जिस पर उच्छ्वास का प्रभाव पड़ा हो। ३. विकसित। प्रफुल्लित। ४. जीवित।
उच्छ्वास–सज्ञा पु० [स०] [वि० उच्छ्वसित, उच्छ्वासित, उच्छ्वासी] १. ऊपर को खींची हुई साँस। उसास। २. साँस। श्वास। ३. ग्रंथ का विभाग। प्रकरण।
उछंग०–सज्ञा पु० [स० उत्संग] १. गोद। क्रोड़। कोरा। २. हृदय। छाती।
उछकना–क्रि० अ० [हिं० छकना] नशा हटना। चेत में आना।
उछरना †–क्रि० अ० दे० "उछलना"।
उछल-कूद–सज्ञा स्त्री० [हिं० उछलना + कूदना] १. खेल-कूद। २. हलचल। अधीरता।
उछलना–क्रि० अ० [सं० उच्छलन] १. वेग से ऊपर उठना और गिरना। २. झटके के साथ एक-बारगी शरीर को क्षण भर के लिये इस प्रकार ऊपर उठा लेना जिसमें पृथ्वी का लगाव छूट जाय। कूदना। ३. अत्यंत प्रसन्न होना। ख़ुशी से फूलना। ४. रेखा या चिह्न का साफ़ दिखाई पड़ना। चिह्न पड़ना। उपटना। उभड़ना। ५. उतराना। तरना।
उछलवाना–क्रि० स० [हिं० उछलना का प्रे० रूप] उछलने में प्रवृत्त करना।
उछलाना–क्रि० स० [हिं० उछालना का प्रे० रूप] उछालने में प्रवृत्त करना।
उछाँटना–क्रि० स० [हिं० उचाटना] उचाटना। उदासीन करना। विरक्त करना।
०क्रि० स० [हिं० छाँटना] छाँटना। चुनना।
उछारना०†–क्रि० स० दे० "उछालना"।
उछाल–सज्ञा स्त्री० [स० उच्छालन] १. सहसा ऊपर उठने की क्रिया। २. फलाँग चौकड़ी। कुदान। ३. ऊँचाई जहाँ तक कोई वस्तु उछल सकती है। † ४. उल्टी कै। वमन। ५. पानी का छींटा।
उछालना–क्रि० स० [स० उच्छालन] १. ऊपर की ओर फेंकना। उचकाना। २. प्रगट करना। प्रकाशित करना।
उछाह०–सज्ञा पु० [सं० उत्साह] [वि०

उछाही] १. उत्साह। उमंग। हर्ष। २. उत्सव। आनंद की धूम। ३. जैन लोगों की रथ-यात्रा। ४. इच्छा।
उछाला–संज्ञा पुं० [हिं० उछाल] १. जोश। उबाल। २. वमन। कै। उलटी।
उछाही:†–वि० [हिं० उछाह] उत्साह करने वाला। आनंद मनानेवाला।
उछीनना*–क्रि० स० [सं० उच्छिन्न] उच्छिन्न करना। उखाड़ना। नष्ट करना।
उछीर*–संज्ञा पुं० [हिं० छोर=किनारा] अवकाश। जगह।
उजड़ना–क्रि० अ० [सं० अव—उ=नहीं+जटना=जमाना] [वि० उजाड़] १. उखड़ना-पुखड़ना। उच्छिन्न होना। ध्वस्त होना। २. गिर-पड़ जाना। तितर-बितर होना। ३. बरबाद होना। नष्ट होना।
उजड़वाना–क्रि० स० [हिं० उजाड़ना का प्रे० रूप] किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।
उजड्ड–वि० [सं० उद्दंड] १. वज्र मूर्ख। अशिष्ट। असभ्य। २. उद्दंड। निरंकुश।
उजड्डपन–संज्ञा पुं० [हिं० उजड्ड+पन (प्रत्य०)] उद्दंडता। अशिष्टता। असभ्यता।
उजबक–संज्ञा पुं० [तु०] तातारियों की एक जाति।
वि० उजड्ड। बेवकूफ़। मूर्ख।
उजरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मज़दूरी। २. किराया। भाड़ा।
उजरना*–क्रि० अ० दे० "उजड़ना"।
उजरा*–वि० दे० "उजला"।
उजराना:–क्रि० स० [सं० उज्ज्वल] उज्ज्वल कराना। साफ़ कराना।
क्रि० अ० सफ़ेद या साफ़ होना।
उजलत–संज्ञा स्त्री० [अ०] जल्दी।
उजलवाना–क्रि० स० [हिं० उजालना का प्रे० रूप] गहने या अस्त्र आदि का साफ़ करवाना।
उजला–वि० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजली] १. श्वेत। धौला। सफ़ेद। २. स्वच्छ। साफ़। निर्मल। झक।
उजागर–वि० [सं० उद्=ऊपर, अच्छी तरह+जागर=जागना, प्रकाशित होना] [स्त्री० उजागरी] १. प्रकाशित। जाज्वल्यमान। जगमगाता हुआ। २. प्रसिद्ध। विख्यात।
उजाड़–संज्ञा पुं० [हिं० उजड़ना] १. उजड़ा हुआ स्थान। गिरी पड़ी जगह। २. निर्जन स्थान। वह स्थान जहाँ बस्ती न हो। ३. जंगल। बियाबान।
वि० १. ध्वस्त। उच्छिन्न। गिरा पड़ा। २. जो आबाद न हो। निर्जन।
उजाड़ना–क्रि० स० [हिं० उजड़ना] १. ध्वस्त करना। गिराना पड़ाना। उधेड़ना। २. उच्छिन्न या नष्ट करना।
उजार*–संज्ञा पुं० दे० "उजाड़"।
उजारा*–संज्ञा पुं० [हिं० उजाला] उजाला।
वि० प्रकाशवान्। कांतिमान्।
उजालना–क्रि० स० [सं० उज्ज्वलन] १. गहने या हथियार आदि साफ़ करना। चमकाना। निखारना। २. प्रकाशित करना। ३. बालना। जलाना।
उजाला–संज्ञा पुं० [सं० उज्वल] [स्त्री० उजाली] १. प्रकाश। चाँदना। रोशनी। २. अपने कुल और जाति में श्रेष्ठ व्यक्ति।
वि० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजली] प्रकाशवान्। 'अँधेरा' का उलटा।
उजाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० उजाला] चाँदनी। चंद्रिका।
उजास–संज्ञा पुं०[हिं० उजाला+स (प्रत्य०)] चमक। प्रकाश। उजाला।
उजियर*–वि० दे० "उजला"।
उजियरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "उजाली"।
उजियार*–संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।
उजियारना*–क्रि० स० [हिं० उजियारा] १. प्रकाशित करना। २. जलाना।
उजियारा*–संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।
उजियाला–संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।
उजीर*†–संज्ञा पुं० दे० "वज़ीर"।
उजेर*–संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।
उजेला–संज्ञा पुं० [सं० उज्ज्वल] प्रकाश। चाँदना। रोशनी।
वि० [सं० उज्ज्वल] प्रकाशवान्।
उज्जर†*–वि० दे० "उज्ज्वल"।
उज्जल–क्रि० वि० [सं० उद्=ऊपर+जल=पानी] बहाव से उलटी ओर। नदी के चढ़ाव की ओर। उजान।
* वि० दे० "उज्ज्वल"।
उज्जयिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मालवा देश की प्राचीन राजधानी जो सिप्रा नदी के तट पर है। (सप्तपुरियों में से एक)
उज्जैन–संज्ञा पुं० दे० "उज्जयिनी"।
उज्यारा*–संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।
उज्र–संज्ञा पुं० [अ०] १. बाधा। वि

आपत्ति। विरुद्ध वक्तव्य। २. किसी बात के विरुद्ध विनय-पूर्वक कुछ कथन।

उज्रदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी ऐसे मामले में उज्र पेश करना जिसके विषय में अदालत से किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त की हो या प्राप्त करना चाहता हो।

उज्ज्वल–वि० [सं०] [संज्ञा उज्ज्वलता] १. दीप्तिमान्। प्रकाशवान्। २ शुभ्र। स्वच्छ। निर्मल। ३. बेदाग। ४ श्वेत। सफ़ेद।

उज्ज्वलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कांति। दीप्ति। चमक। २. स्वच्छता। निर्मलता। ३. सफ़ेदी।

उज्ज्वलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उज्ज्वलित] १. प्रकाश। दीप्ति। २. जलना। बलना। ३. स्वच्छ करने का कार्य्य।

उज्ज्वला–संज्ञा स्त्री० [सं०] बारह अक्षरों की एक वृत्ति।

उझकना–क्रि० अ० [हिं० उचकना] १. उचकना। उछलना। कूदना। २. ऊपर उठना। उभड़ना। उमड़ना। ३. ताकने के लिये ऊँचा होना। देखने के लिये सिर उठाना। ४ चौंकना।

उझरना–क्रि० अ० [सं० उत्सरण, प्रा० उच्छरण] ऊपर की ओर उठना।

उझलना–क्रि० स० [सं० उज्झरण] किसी द्रव पदार्थ को ऊपर से गिराना। ढालना। उँडेलना।

✻ क्रि० अ० उमड़ना। बढ़ना।

उझाकना–क्रि० स० दे० "झाँकना"।

उटंगन–संज्ञा पुं० [सं० उट=घास] एक घास जिसका साग खाया जाता है। चौपतिया। गुठुवा। सुसना।

उटकना✻–क्रि० स० [सं० उत्कलन] अनुमान करना। अटकल लगाना।

उटज–संज्ञा पुं० [सं०] झोपड़ी।

उट्ठी–संज्ञा स्त्री० [देश०] खेल या लाग डाट में बुरी तरह हार मानना।

उठँगन–संज्ञा पुं० [सं० उत्थ+अंग] १. आड़। टेक। २. बैठने में पीठ को सहारा देनेवाली वस्तु।

उठँगना–क्रि० अ० [सं० उत्थ+अंग] १. किसी ऊँची वस्तु का कुछ सहारा लेना। टेक लगाना। २ लेटना। पड़ रहना।

।–क्रि० स० [हिं० उठँगना] १. खड़ा करने में किसी वस्तु से लगाना। भिड़ाना। २. (किवाड़) भिड़ाना या बंद करना।

उठना–क्रि० अ० [सं० उत्थान] १. किसी वस्तु का ऐसी स्थिति में होना जिसमें उसका विस्तार पहले की अपेक्षा अधिक ऊँचाई तक पहुँचे। ऊँचा होना। बैठी से खड़ी स्थिति में होना।

मुहा०–उठ जाना=दुनिया से चला जाना। मर जाना। उठती जवानी=युवावस्था का आरंभ। उठते बैठते=प्रत्येक अवस्था में। हर घड़ी। प्रति क्षण। उठना बैठना=आना-जाना। संग-साथ।

२ ऊँचा होना। और ऊँचाई तक बढ़ जाना। जैसे—लहर उठना। ३ ऊपर जाना। ऊपर चढ़ना। आकाश में छाना। ४. कूदना। उछलना। ५. बिस्तर छोड़ना। जागना। ६. निकलना। उदय होना। ७ उत्पन्न होना। पैदा होना। जैसे–विचार उठना। ८ सहसा आरंभ होना। एक बारगी शुरू होना। जैसे—दर्द उठना। ९. तैयार होना। उद्यत होना। १०. किसी अंक या चिह्न का स्पष्ट होना। उभड़ना। ११. ख़मीर उठना। ख़मीर आना। सड़कर उफनाना। १२. किसी दूकान या कार्य्यालय के कार्य्य का समय पूरा होना। १३. किसी दूकान या कारखाने का काम बंद होना। १४. चल पड़ना। प्रस्थान करना। १५ किसी प्रथा का दूर होना। १६. खर्च होना। काम में लगना। जैसे, रुपया उठना। १७. बिकना या भाड़े पर जाना। १८. याद आना। ध्यान पर चढ़ना। १९. किसी वस्तु का क्रमशः जुड़-जुड़कर पूरी ऊँचाई पर पहुँचना। २०. गाय, भैंस या घोड़ी आदि का मस्ताना या अलंग पर आना।

उठल्लू–वि० [हिं० उठना+लू (प्रत्य०)] १. एक स्थान पर न रहनेवाला। आसनकोपी। २ आवारा। बेठिकाने का।

मुहा०–उठल्लू का चूल्हा या उठल्लू चूल्हा=बेकाम इधर-उधर फिरनेवाला। निकम्मा।

उठवाना–क्रि० स० [हिं० उठाना क्रिया का प्रे० रूप] उठाने का काम दूसरे से कराना।

उठाईगीरा–वि० [हिं० उठाना+फा० गीर] १ आँख बचाकर चीज़ों को चुरा लेनेवाला। उचक्का। चाईं। २. बदमाश। लुच्चा।

उठान–संज्ञा स्त्री० [सं० उत्थान] १. उठना। उठने की क्रिया। २. बाढ़। बढ़ने का ढंग।

वृद्धि-क्रम। ३. गति की प्रारंभिक अवस्था। आरंभ। ४. खर्च। व्यय। खपत।

उठाना–क्रि० स० [हिं० उठना का स० रूप] १. बैठी स्थिति से खड़ी स्थिति में करना। जैसे, लेटे हुए प्राणी को बैठाना। २. नीचे से ऊपर ले जाना। ३. धारण करना। कुछ काल तक ऊपर लिए रहना। ४.जगाना। ६. निकालना। उत्पन्न करना। ७.आरंभ करना। शुरू करना। छेड़ना। जैसे—बात उठाना। ८. तैयार करना। उद्यत करना। ९. मकान या दीवार आदि तैयार करना। १०. नियमित समय पर किसी दूकान या कारखाने को बंद करना। ११. किसी प्रथा का बंद करना। १२. खर्च करना। लगाना। १३. भाड़े या किराये पर देना। १४. भोग करना। अनुभव करना। १५. शिरोधार्य करना। मानना। १६. किसी वस्तु को हाथ में लेकर कसम खाना।

मुहा०—उठा रखना = बाकी रखना। कमर छोड़ना।

उठाव–संज्ञा पु० "उठान"।

उठौआ–वि० दे० "उठौवा"।

उठौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उठाना] १. उठाने की क्रिया। २. उठाने की मजदूरी या पुरस्कार। ३. वह रुपया जो किसी फसल की पैदावार या और किसी वस्तु के लिये पेशगी दिया जाय। अगौहा। दादनी। ४. बनियों या दूकानदारों के साथ उधार का लेन देन। ५. वह धन जो छोटी जातियों में वर की ओर से कन्या के घर विवाह दृढ करने के लिये भेजा जाता है। लगन-धरौआ। ६ वह धन या अन्न जो संकट पड़ने पर किसी देवता की पूजा के उद्देश से अलग रखा जाय। ७ एक रीति जिसमें किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन विरादरी के लोग इकट्ठे होकर मृतक के परिवार के लोगों को कुछ रुपया देते हैं और पुरुषों को पगड़ी बाँधते हैं।

उठौवा–वि० [हिं० उठाना] १. जिसका कोई स्थान नियत न हो। जो नियत स्थान पर न रहता हो। २ जो उठाया जाता हो।

उड़ंकू–वि० [हिं० उड़ना + अंकू (प्रत्य०)] १. उड़नेवाला। जो उड़ सके। २. चलने-फिरनेवाला। डोलनेवाला।

उड़–संज्ञा पु० दे० "उडु"।

उड़न–संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना] उड़ने की क्रिया। उड़ान।

उड़नखटोला–संज्ञा पुं० [हिं० उड़ना + खटोला] उड़नेवाला खटोला। विमान।

उड़नछू–वि० [हिं० उड़ना] चंपत। गायब।

उड़नझाँई–संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना + झाँई] चकमा। झुत्ता। बहाली।

उड़नफल–संज्ञा पु० [हिं० उड़ना + फल] वह फल जिसके खाने से उड़ने की शक्ति उत्पन्न हो।

उड़ना–क्रि० अ० [सं० उड्डयन] १. चिड़ियों का आकाश में या हवा में होकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २. आकाश-मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ३. हवा में ऊपर उठना। जैसे—गुड्डी उड़ रही है। ४. हवा में फैलना। जैसे—छींटा उड़ना। ५. इधर-उधर हो जाना। छितराना। फैलना। ६. फहराना। फरफराना। जैसे—पताका उड़ना। ७. तेज चलना। भागना। ८. झटके के साथ अलग होना। कटकर दूर जा पड़ना। ९. पृथक् होना। उधड़ना। छितराना। १०. जाता रहना। गायब होना। लापता होना। ११. खर्च होना। १२. किसी भोग्य वस्तु का भोगा जाना। १३. आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार होना। १४ रंग आदि का फीका पड़ना। धीमा पड़ना। १५. किसी पर मार पड़ना। लगना। १६. बातों में बहलाना। भुलावा देना। चकमा देना। १७. घोड़े का चौफाल कूदना। १८. फलाँग मारना। कूदना। (कुश्ती) क्रि० स० फलाँग मारकर किसी वस्तु को लाँघना। कूदकर पार करना।

मुहा०—उड़ चलना = १. तेज दौड़ना। सरपट भागना। २. शोभित होना। फबना। ३. मजेदार होना। स्वादिष्ठ बनना। ४. कुमार्ग स्वीकार करना। बदराह बनना। ५. इतराना। घमंड करना। उड़ती खबर = बाजारू खबर। किंवदंती। उड़कर खाना = १. उड़ उड़कर काटना २. अप्रिय लगना। बुरा लगना।

उड़प–संज्ञा पु० [हिं० उड़ना] नृत्य का एक भेद।

संज्ञा पु० दे० "उडुप"।

उड़व–संज्ञा पु० [सं० ओडव] रागों की एक जाति। वह राग जिसमें केवल पाँच स्वर लगें

और कोई दो स्वर न लगें।

उड़वाना–क्रि० स० [हिं० 'उड़ाना' का प्रे० रूप] उड़ाने में प्रवृत्त करना।

उड़सना–क्रि० अ० [उप० उ+डासन= बिछौना] १. बिस्तर या चारपाई उठाना। २. भंग होना। नष्ट होना।

उड़ाऊ–वि० [हिं० उड़ना] १. उड़नेवाला। उड़ंकू। २. खर्च करनेवाला। खरचीला।

उड़ाका, उड़ाकू–वि० [हिं० उड़ना] उड़ने वाला। जो उड़ सकता हो।

उड़ान–संज्ञा स्त्री० [सं० उड्डयन] १. उड़ने की क्रिया। २. छलांग। कुदान। ३. उतनी दूरी जितनी एक दौड़ में तै कर सकें। ४. कलाई। गट्टा पहुँचा।

उड़ाना–क्रि० स० [हिं० उड़ना] १. किसी उड़नेवाली वस्तु को उड़ने में प्रवृत्त करना। २. हवा में फैलाना। जैसे—धूल उड़ाना। ३. उड़नेवाले जीवों को भगाना या हटाना। ४. झटके के साथ अलग करना। काटकर दूर फेंकना। ५ हटाना। दूर करना। ६. चुराना। हजम करना। ७ मिटाना। नष्ट करना। ८. खर्च करना। बरबाद करना। ९. खाने-पीने की चीज को खूब खाना-पीना। चट करना। १०. भोग्य वस्तु को भोगना। ११. आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार करना। १२. प्रहार करना। लगाना। मारना। १३. भुलावा देना। बात टालना। १४. झूठ-मूठ दोष लगाना। १५. किसी विद्या को इस प्रकार सीख लेना कि उसके आचार्य को खबर न हो।

उड़ायक–वि० [हिं० उड़ान+क (प्रत्य०)] उड़ानेवाला।

उड़ास–संज्ञा स्त्री० [सं० उदास] रहने का स्थान। वास-स्थान। महल।

पक्षी। चिड़िया। ३. केवट। मल्लाह। ४ जल। पानी।

उडुप–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २ नाव। ३. घड़नई या धंडई। ४. भिलावाँ ५. बड़ा गरुड़।

संज्ञा पुं० [हिं० उड़ना] एक प्रकार का नृत्य।

उडुपति–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

उडुराज–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

उडुस–संज्ञा पुं० [सं० उद्दंश] खटमल।

उड़ौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उड़ना] जुगुनूँ।

उड़ौहाँ–वि० [हिं० उड़ना+औहाँ (प्रत्य०) उड़नेवाला।

उड्डयन–संज्ञा पुं० [सं०] उड़ना।

उड्डीयमान–वि० [सं० उड्डीयमत्] [स्त्री उड्डीयमानी] उड़नेवाला। उड़ता हुआ।

उढ़कना–क्रि० अ० [हिं० अड़ना] १. अड़ना। ठोकर खाना। २. रुकना। ठहरना। ३ सहारा लेना। टेक लगाना।

उढ़काना–क्रि० स० [हिं० उढ़कना] किसी के सहारे खड़ा करना। भिड़ाना।

उढ़रना–क्रि० अ० [सं० ऊढा] विवाहिता स्त्री का पर-पुरुष के साथ निकल जाना।

उढ़री–संज्ञा स्त्री० [हिं० उढ़रना] रखेली स्त्री। सुरैतिन।

उढ़ाना–क्रि० स० दे० "ओढ़ाना"।

उढ़ारना–क्रि० स० [हिं० उढ़रना] दूसरे की स्त्री को ले भागना।

उढ़ावनी–संज्ञा स्त्री० दे० "ओढ़नी"।

उतंक–संज्ञा पुं [सं० उत्तंक] १. एक ऋषि जो वेद-मुनि के शिष्य थे। २. एक ऋषि जो गौतम के शिष्य थे।

वि० [सं० उत्तुंग] ऊँचा।

उतपानना*—क्रि० स० [सं० उत्पन्न] उत्पन्न करना। उपजाना।
क्रि० अ० उत्पन्न होना।

उतर*—संज्ञा पु० दे० "उत्तर"।

उतरन—संज्ञा स्त्री० [हिं० उतरना] पहने हुए पुराने कपड़े।

उतरना—क्रि० अ० [सं० अवतरण] १. ऊँचे स्थान से सँभलकर नीचे आना। २. ढलना। अवनति पर होना। ३. शरीर में किसी जोड़ या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना। ४. कांति या स्वर का फीका पड़ना। ५. उग्र प्रभाव या उद्वेग का दूर होना। ६. वर्ष, मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना। ७. थोड़े थोड़े अंश को बैठाकर किया जानेवाला काम पूरा होना। जैसे—मोजा उतरना। ८. ऐसी वस्तु का तैयार होना जो खराद या साँचे पर चढ़ाकर बनाई जाय। ९. भाव का कम होना। १०. डेरा करना। ठहरना। टिकना। ११. नकल होना। खिंचना। अंकित होना। १२. बच्चों का मर जाना। १३. भर आना। संचारित होना। जैसे—थन में दूध उतरना। १४. भभके में खिंचकर तैयार होना। १५. सफाई के साथ कटना। उचड़ना। उधड़ना। १७. धारण की हुई वस्तु का अलग होना। १८. तौल में ठहरना। १९. किसी बाजे की कसन का ढीला होना जिससे उसका स्वर विकृत हो जाता है। २०. जन्म लेना। अवतार लेना। २१. आदर के निमित्त किसी वस्तु का शरीर के चारों ओर घुमाया जाना। वसूल होना।
मुहा०—उतरकर=निम्न श्रेणी का। नीचे दर्जे का। घटकर। चित्त से उतरना=१. विस्मृत होना। भूल जाना। २. नीचा जँचना। अप्रिय लगना। चेहरा उतरना=मुख मलिन होना। मुख पर उदासी छाना।
क्रि० स० [सं० उत्तरण] नदी, नाले या पुल का पार करना।

उतरवाना—क्रि० स० [हिं० उतरना] उतारने का काम कराना।

उतराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० उतरना] १. ऊपर से नीचे आने की क्रिया। २. नदी के पार उतारने का महसूल। ३. नीचे की ओर ढलती हुई ज़मीन। ढालू ज़मीन।

उतराना—क्रि० अ० [सं० उत्तरण] १. पानी के ऊपर आना। पानी की सतह पर तैरना। २. उबलना। उफान खाना। ३. प्रकट होना। हर जगह दिखाई देना।
क्रि० अ० "उतारना" क्रिया का प्रे० रूप।

उतराहाँ†—क्रि० वि० [सं० उत्तर+हा (प्रत्य०)] उत्तर की ओर।

उतलाना*†—क्रि० अ० [हिं० आतुर] जल्दी करना।

उतान—वि० [सं० उत्तान] पीठ को ज़मीन पर लगाये हुए। चित।

उतायल—वि० [सं० उद्+त्वरा] जल्दी।

उतायली—संज्ञा स्त्री० दे० "उतावली"।

उतार—संज्ञा पु० [हिं० उतरना] १. उतरने की क्रिया। २. क्रमशः नीचे की ओर प्रवृत्ति। ३. उतरने योग्य स्थान। ४. किसी वस्तु की मोटाई या घेरे का क्रमशः कम होना। ५. घटाव। कमी। ६. नदी में हलकर पार करने योग्य स्थान। हिलान। ७. समुद्र का भाटा। ८. उतारन। निकृष्ट। ९. उतारा। न्योछावर। सदका। १०. वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे, विष आदि का दोष दूर हो। परिहार।

उतारन—संज्ञा स्त्री० [हिं० उतारना] वह पहनावा जो पहनने से पुराना हो गया हो। २. निछावर। उतारा। ३. निकृष्ट वस्तु।

उतारना—क्रि० स० [सं० अवतरण] १. ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना। २. प्रतिरूप बनाना। (चित्र) खींचना। ३. लिखावट की नकल करना। ४. लगी या लिपटी हुई वस्तु को अलग करना। उचाड़ना। उधेड़ना। ५. किसी धारण की हुई वस्तु को दूर करना। पहनी हुई चीज़ को अलग करना। ६. ठहराना। टिकाना। डेरा देना। ७. उतारा करना। किसी वस्तु को मनुष्य के चारों ओर घुमाकर भूत प्रेत की भेंट के रूप में चौराहे आदि पर रखना। ८. निछावर करना। वारना। ९. वसूल करना। १०. किसी उग्र प्रभाव को दूर करना। ११. पीना। घूँटना। १२. ऐसी वस्तु तैयार करना जो मशीन, खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर बनाई जाय। १३. बाजे आदि की कसन को ढीला करना। १४. भभके से खींचकर तैयार करना या खौलते पानी में किसी

वस्तु का सार निकालना।
क्रि० स० [स० उत्तारण] पार ले जाना। नदी-नाले के पार पहुँचाना।
उतारा–संज्ञा पु० [हिं० उतरना] १. डेरा डालने या टिकने का कार्य्य। २. उतरने का स्थान। पड़ाव। ३. नदी पार करने की क्रिया।
संज्ञा पु० [हिं० उतारना] १ प्रेत-बाधा या रोग की शांति के लिये किसी व्यक्ति के शरीर के चारों ओर कुछ सामग्री घुमाकर चौराहे आदि पर रखना। २. उतारे की सामग्री या वस्तु।
उतारू–वि० [हिं० उतरना] उद्यत। तत्पर।
उताल–क्रि० वि० [स० उद्+त्वर] जल्दी। शीघ्र।
संज्ञा स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।
उताली–संज्ञा स्त्री० [हिं० उताल] शीघ्रता। जल्दी। उतावली।
क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।
उतावल–क्रि० वि० [स० उद्+त्वर] जल्दी जल्दी। शीघ्रता से।
उतावला–वि० [स० उद्+त्वर] [स्त्री० उतावली] १. जल्दी मचानेवाला। जल्दबाज। २. व्यग्र। घबराया हुआ।
उतावली–संज्ञा स्त्री० [स० उद्+त्वर] १. जल्दी। शीघ्रता। जल्दबाज़ी। २. व्यग्रता। चंचलता।
उतृण–वि० [स० उत्+ऋण] १. ऋण से मुक्त। उऋण। २. जिसने उपकार का बदला चुका दिया हो।
उतै–क्रि० वि० [हिं० उत] वहाँ। उधर।
उत्कंठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उत्कंठित] १. प्रबल इच्छा। तीव्र अभिलाषा। २. रस में एक संचारी का नाम। किसी कार्य्य के करने में विलंब न सहकर उसे चटपट करने की अभिलाषा।
उत्कंठित–वि० [स०] उत्कंठायुक्त। चाव से भरा हुआ।
उत्कंठिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] संकेत-स्थान में प्रिय के न आने पर तर्क वितर्क करनेवाली नायिका।
उत्कट–वि० [स०] तीव्र। विकट। उग्र।
उत्कर्ष–संज्ञा पुं०[सं०] १. बड़ाई। प्रशंसा। २. श्रेष्ठता। उत्तमता। ३. समृद्धि।
उत्कर्षता–संज्ञा स्त्री० [स०] १. श्रेष्ठता। बड़ाई। उत्तमता। २. अधिकता। प्रचुरता। ३. समृद्धि।
उत्कल–संज्ञा पु० [स०] उड़ीसा देश।
उत्कीर्ण–वि० [स०] १ लिखा हुआ। खुदा हुआ। २. छिदा हुआ।
उत्कुण–संज्ञा पु० [स०] १ मत्कुण। खटमल। २. बालों का कीड़ा। जूँ।
उत्कृति–संज्ञा स्त्री० [स०] १. २६ वर्णों के वृत्तों का नाम। २. छब्बीस की संख्या।
उत्कृष्ट–वि० [सं०] उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा।
उत्कृष्टता–संज्ञा स्त्री० [स०] श्रेष्ठता। अच्छापन। बड़प्पन।
उत्कोच–संज्ञा पु० [स०] घूँस। रिशवत।
उत्क्रांति–संज्ञा स्त्री० [स०] क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति।
उत्तंग–वि० दे० "उत्तुंग"।
उत्तंस–संज्ञा पु० दे० "अवतंस"।
उत्त–संज्ञा पु० [स० उत्] १. आश्चर्य। २. संदेह।
उत्तप्त–वि० [स०] १. खूब तपा हुआ। २. दुःखी। पीड़ित। संतप्त।
उत्तम–वि० [सं०] [स्त्री० उत्तमा] श्रेष्ठ। अच्छा। सब से भला।
उत्तमतया–क्रि० वि० [स०] अच्छी तरह से। भली भाँति से।
उत्तमता–संज्ञा स्त्री० [स०] श्रेष्ठता। उत्कृष्टता। खूबी। भलाई।
उत्तमत्व–संज्ञा पुं० [स०] अच्छापन।
उत्तम पुरुष–संज्ञा पुं० [स०] व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष को सूचित करता है। जैसे "मैं", "हम"।
उत्तमर्ण–संज्ञा पु० [स०] ऋण देनेवाला व्यक्ति। महाजन।
उत्तमा दूती–संज्ञा स्त्री० [स०] वह दूती जो नायक या नायिका को मीठी बातों से समझा-बुझाकर मना लावे।
उत्तमा नायिका–संज्ञा स्त्री० [स०] वह स्वकीया नायिका जो पति के प्रतिकूल होने पर भी स्वयं अनुकूल बनी रहे।
उत्तमोत्तम–वि० [स०] अच्छे से अच्छा।
उत्तर–संज्ञा पु० [स०] १ दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। उदीची। २ किसी प्रश्न या बात को सुनकर उसके समाधान के लिये कही हुई बात। जवाब। ३. बनाया हुआ जवाब। बहाना। मिस। हीला

३. प्रतिकार। बदला। ४. एक काव्यालंकार जिसमें उत्तर के सुनते ही प्रश्न का अनुमान किया जाता है; अथवा प्रश्नों का ऐसा उत्तर दिया जाता है जो अप्रसिद्ध हो। ५. एक काव्यालंकार जिसमें प्रश्न के वाक्यों ही में उत्तर भी होता है अथवा बहुत से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है।
वि० १. पिछला। बाद का। २. ऊपर का। ३. बढ़कर। श्रेष्ठ।
क्रि० वि० पीछे। बाद।

उत्तर कोशल–संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के आस-पास का देश। अवध।

उत्तरक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] अन्त्येष्टि क्रिया।

उत्तरदाता–संज्ञा पुं० [सं० उत्तरदातृ] [स्त्री० उत्तरदात्री] वह जिससे किसी कार्य्य के बनने बिगड़ने पर पूछ-ताछ की जाय। जवाबदेह। जिम्मेदार।

उत्तरदायित्व–संज्ञा पुं० [सं०] जवाबदेही। ज़िम्मेदारी।

उत्तरदायी–वि० [सं० उत्तरदायिन्] [स्त्री० उत्तरदायिनी] जवाबदेह। जिम्मेदार।

उत्तर पक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रार्थ में वह सिद्धांत जिससे पूर्व पक्ष अर्थात् पहले किए हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन या समाधान हो। जवाब की दलील।

उत्तरपथ–संज्ञा पुं० [सं०] देवयान।

उत्तरपद–संज्ञा पुं० [सं०] किसी यौगिक शब्द का अंतिम शब्द।

उत्तरमीमांसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदांत-दर्शन।

उत्तरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अभिमन्यु की स्त्री जिससे परीक्षित उत्पन्न हुए थे।

उत्तराखंड–संज्ञा पुं० [सं० उत्तर+खंड] भारतवर्ष का हिमालय के पास का उत्तरीय भाग।

उत्तराधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] किसी के मरने के पीछे उसके धनादि का स्वत्व। वरासत।

उत्तराधिकारी–संज्ञा पुं० [सं० उत्तराधिकारिन्] [स्त्री० उत्तराधिकारिणी] वह जो किसी के मरने पर उसकी संपत्ति का मालिक हो।

उत्तराफाल्गुनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बारहवाँ नक्षत्र।

उत्तराभाद्रपद–संज्ञा स्त्री० [सं०] छब्बीसवाँ नक्षत्र।

उत्तराभास–संज्ञा पुं० [सं०] झूठा जवाब। अड़बड जवाब। (स्मृति)

उत्तरायण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य की मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर गति। २. वह छः महीने का समय जिसके बीच सूर्य्य मकर रेखा से चलकर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है।

उत्तरार्द्ध–संज्ञा पुं० [सं०] पिछला आधा। पीछे का आधा भाग।

उत्तराषाढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] इक्कीसवाँ नक्षत्र।

उत्तरीय–संज्ञा पुं० [सं०] उपरना। दुपट्टा। चद्दर। ओढ़ना।
वि० १. ऊपर का। ऊपरवाला। २. उत्तर दिशा का। उत्तर दिशा संबंधी।

उत्तरोत्तर–क्रि० वि० [सं०] १. एक के पीछे एक। एक के अनंतर दूसरा। २. क्रमशः। लगातार। बराबर।

उत्ता–वि० दे० "उतना"।

उत्तान–वि० [सं०] पीठ को ज़मीन पर लगाए हुए। चित। सीधा।

उत्तानपाद–संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा जो स्वायंभुव मनु के पुत्र और प्रसिद्ध भक्त ध्रुव के पिता थे।

उत्ताप–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उत्तप्त, उत्तापित] १. गर्मी। तपन। २. कष्ट। वेदना। ३. दुःख। शोक। ४. क्षोभ।

उत्तीर्ण–वि० [सं०] १. पार गया हुआ। पारंगत। २. मुक्त। ३. परीक्षा में कृत-कार्य्य। पास-शुदः।

उत्तुंग–वि० [सं०] बहुत ऊँचा।

उत्तू–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह औज़ार जिसको गरम करके कपड़े पर बेल-बूटों या चुनट के निशान डालते हैं। २. बेल-बूटे का काम जो इस औज़ार से बनता है।
मुहा०—उत्तू करना = बहुत मारना।
वि० बदहवास। नशे में चूर।

उत्तेजक–वि० [सं०] १. उभाड़ने, बढ़ाने या उकसानेवाला। प्रेरक। २. वेगों को तीव्र करनेवाला।

उत्तेजन–संज्ञा पुं० दे० "उत्तेजना"।

उत्तेजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उत्तेजित, उत्तेजक] १. प्रेरणा। बढ़ावा। प्रोत्साहन।

२. वेगों को तीव्र करने की क्रिया।

उत्तोलन–संज्ञा पु० [सं०] १. ऊँचा करना। तानना। २. तौलना।

उत्थपना–क्रि० स० [सं० उत्थापन] अनु-ष्ठान करना। आरंभ करना।

उत्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. उठने का कार्य्य। २. उठान। आरंभ। ३. उन्नति। समृद्धि। बढ़ती।

उत्थापन–संज्ञा पु० [सं०] १. ऊपर उठाना। तानना। २. हिलाना। डुलाना। ३. जगाना।

उत्पत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उत्पन्न] १. उद्गम। पैदाइश। जन्म। उद्भव। २. सृष्टि। ३. आरंभ। शुरू।

उत्पन्न–वि० [सं०] [स्त्री० उत्पन्ना] जन्मा हुआ। पैदा।

उत्पल–संज्ञा पु० [सं०] कमल।

उत्पाटन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उत्पाटित] उखाड़ना।

उत्पात–संज्ञा पु० [सं०] १. कष्ट पहुँचाने-वाली आकस्मिक घटना। उपद्रव। आफ़त। २. अशांति। हलचल। ३. ऊधम। दंगा। शरारत।

उत्पाती–संज्ञा पु० [सं० उत्पातिन्] [स्त्री० हि० उत्पातिन] उत्पात मचानेवाला। उपद्रवी। नटखट। शरारती।

उत्पादक–वि० [सं०] [स्त्री० उत्पादिका] उत्पन्न करनेवाला।

उत्पादन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उत्पादित] उत्पन्न करना। पैदा करना।

उत्पीड़न–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उत्पीड़ित] तकलीफ़ देना। सताना।

उत्प्रेक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० उत्प्रेक्ष्य] १. उद्भावना। आरोप। २. एक अर्था-लंकार जिसमें भेद-ज्ञान पूर्वक उपमेय में उपमान की प्रतीति होती है। जैसे, "मुख मानो चंद्रमा है।"

उत्प्रेक्षोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्था-लंकार जिसमें किसी एक वस्तु के गुण का बहुतों में पाया जाना वर्णन किया जाता है। (केशव)

उत्फुल्ल–वि० [सं०] १. विकसित। खिला हुआ। २. उत्तान। चित।

उत्संग–संज्ञा पु० [सं०] १. गोद। क्रोड़। अंक। २. मध्य भाग। बीच। ३. ऊपर का भाग। वि० निर्लिप्त। विरक्त।

उत्सर्ग–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उत्सर्गी औत्सर्गीय, उत्सर्ग्य] १. त्याग। छोड़ना। २. दान। न्योछावर। ३. समाप्ति।

उत्सर्जन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उत्सर्जित उत्सृष्ट] १. त्याग। छोड़ना। २. दान।

उत्सर्पण–संज्ञा पु० [सं०] १. ऊपर चढ़ना। चढ़ाव। २. उल्लंघन। लाँघना

उत्सर्पिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] काल की वह गति या अवस्था जिसमें रूप, रस, गंध स्पर्श इन चारों की क्रम क्रम से वृद्धि होती है। (जैन)

उत्सव–संज्ञा पु० [सं०] १. उछाह। मंगल कार्य्य। धूम धाम। २. मंगल-समय तेहवार। पर्व। ३. आनंद। विहार।

उत्साह–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उत्साहित उत्साही] १. उमंग। उछाह। जोश हौसला। २. हिम्मत। साहस की उमंग। (वीर रस का स्थायी भाव)

उत्साही–वि० [सं० उत्साहिन्] उत्साहयुक्त हौसलेवाला।

उत्सुक–वि० [सं०] १. उत्कंठित। अत्यंत इच्छुक। २. चाही हुई बात में देर सहकर उसके उद्योग में तत्पर।

उत्सुकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आकुल इच्छा। २. किसी कार्य्य में विलंब न सहकर उसमें तत्पर होना। (एक संचारी भाव)

उथपना–क्रि० स० [सं० उत्थापन] १. उठाना २. उखाड़ना। ३. उजाड़ना।

उथलना–क्रि० अ० [सं० उत्+स्थल] १ डगमगाना। डाँवाँडोल होना। चलाय मान होना। २. उलटना। उलट-पुलट होना। ३. पानी का उथला या कम होना क्रि० स० नीचे-ऊपर करना। इधर-उधर करना।

उथल पुथल–संज्ञा स्त्री० [हिं० उथलना] उलट-पुलट। विपर्य्यय। क्रम-भंग। वि० उलट-पुलट। अंड का बंड।

उथला–वि० [सं० उत्+स्थल] कम गहरा। छिछला।

उदंत–वि० [सं० अ+दंत] जिसके दाँत न जमे हों। अदंत। (चौपायों के लिये)

उद्–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें इन अर्थों की विशेष ता करता है। ऊपर, जैसे—उद्गमन।

अतिक्रमण; जैसे—उत्तीर्ण। उत्कर्ष; जैसे—उद्बोधन। प्राबल्य, जैसे—उद्वेग। प्राधान्य; जैसे—उद्देश। अभाव; जैसे—उत्पथ। प्रकाश, जैसे—उच्चारण। दोष, जैसे—उन्मार्ग।

उदक—संज्ञा पु० [सं०] जल। पानी।

उदकक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] तिलांजलि।

उदकना—क्रि० अ० [देश०] कूदना।

उदकपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की शपथ या एक भेद जिसमें शपथ करनेवाले को अपने वचन की सत्यता प्रमाणित करने के लिये जल में डूबना पड़ता था।

उदगरना—क्रि० अ० [सं० उद्गरण] १. निकलना। बाहर होना। २. प्रकाशित होना। प्रकट होना। ३. उभड़ना।

उदगर्गल—संज्ञा पु० [सं०] वह विद्या जिससे यह ज्ञान प्राप्त हो कि अमुक स्थान में इतने हाथ की दूरी पर जल है।

उदगार—संज्ञा पु० दे० "उद्गार"।

उदगारना—क्रि० स० [सं० उद्गार] १. बाहर निकालना। बाहर फेंकना। २. उभाड़ना। भड़काना। उत्तेजित करना।

उदग्गा—वि० [सं० उदग्र] १. ऊँचा। उन्नत। २. प्रचंड। उग्र। उद्धत।

उदघटना—क्रि० स० [सं० उद्घटन] प्रकट होना। उदय होना।

उदघाटना—क्रि० स० [सं० उद्घाटन] प्रकट करना। प्रकाशित करना। खोलना।

उदथ—संज्ञा पु० [सं० उद्गीथ = सूर्य] सूर्य।

उदधि—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. घड़ा। ३. मेघ।

उदधिसुत—संज्ञा पु० [सं०] १. समुद्र से उत्पन्न पदार्थ। २. चंद्रमा। ३. अमृत। ४. शंख। ५. कमल।

उदधिसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

उदवस—वि० [हिं० उद्वासन] १. उजाड़। सूना। २. एक स्थान पर न रहनेवाला। खानाबदोश।

उदवासना—क्रि० स० [सं० उद्वासन] १. तंग करके स्थान से हटाना। रहने में विघ्न डालना। भगा देना। २. उजाड़ना।

उदमदना—क्रि० अ० [सं० उद्+मद] पागल होना। उन्मत्त होना।

उदमाद—संज्ञा पु० दे० "उन्माद"।

उदय—संज्ञा पु० [सं०] [वि० उदित] १. ऊपर आना। निकलना। प्रकट होना। (विशेषतः ग्रहों के लिये)

मुहा०—उदय से अस्त तक = पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक। सारी पृथ्वी में।

२. वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। ३. निकलने का स्थान। उद्गम। ४. उदयाचल।

उदयगिरि—संज्ञा पु० [सं०] उदयाचल।

उदयाचल—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से सूर्य निकलता है।

उदयाद्रि—संज्ञा पु० [सं०] उदयाचल।

उदर—संज्ञा पु० [सं०] १. पेट। जठर। २. किसी वस्तु के बीच का भाग। मध्य। पेटा। ३ भीतर का भाग।

उदरना—क्रि० अ० दे० "ओदरना"।

उदवना—क्रि० अ० दे० "उगना"।

उदात्त—वि० [सं०] १. ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ। २. दयावान्। कृपालु। ३. दाता। उदार। ४. श्रेष्ठ। बड़ा। ५. स्पष्ट। विशद। ६. समर्थ। योग्य।

संज्ञा पु० [सं०] १. वेद के स्वर के उच्चारण का एक भेद जिसमें तालु आदि के ऊपरी भाग से उच्चारण होता है। २. उदात्त स्वर। ३. एक काव्यालंकार जिसमें संभाव्य विभूति का वर्णन खूब बढ़ा चढ़ाकर किया जाता है। ४. दान।

उदान—संज्ञा पु० [सं०] प्राण-वायु का एक भेद जिसका स्थान कंठ है और जिससे डकार और छींक आती है।

उदायन—संज्ञा पु० [सं० उद्यान] बाग।

उदार—वि० [सं०] [संज्ञा उदारता] १. दाता। दानशील। २. बड़ा। श्रेष्ठ। ३. ऊँचे दिल का। ४. सरल। सीधा।

उदारचरित—वि० [सं०] जिसका चरित्र उदार हो। ऊँचे दिल का। शीलवान्।

उदारचेता—वि० [सं० उदारचेतस्] जिसका चित्त उदार हो।

उदारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दानशीलता। फैयाजी। २. उच्च वि[illegible]

उदारना—क्रि० स० [सं० उदारण] [illegible] "ओदारना"। २. गिराना [illegible]

उदावर्त—संज्ञा पु० [सं०] [illegible] रोग जिसमें काँच निक[illegible] मल-मूत्र रुक जाता है।

उदास—वि० [सं०]

पदार्थ से हट गया हो। विरक्त। २. झगड़े से अलग। निर्लिप्त। तटस्थ। ३. दुःखी। रंजीदा।
उदासी-संज्ञा पुं० [सं० उदास+हिं० ई (प्रत्य०)] १. विरक्त पुरुष। त्यागी पुरुष। संन्यासी। २. नानकशाही साधुओं का एक भेद।
संज्ञा स्त्री० [सं० उदास+हिं० ई (प्रत्य०)] १. खिन्नता। २. दुःख।
उदासीन-वि० [सं०] [स्त्री० उदासीना। संज्ञा उदासीनता] १. विरक्त। जिसका चित्त हट गया हो। २. झगड़े-बखेड़े से अलग। ३. जो परस्पर विरोधी पक्षों में से किसी की ओर न हो। निष्पक्ष। तटस्थ। ४. रूखा। उपेक्षायुक्त। प्रेमशून्य।
उदासीनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विरक्ति। त्याग। २. निरपेक्षता। निर्द्वंद्वता। ३. उदासी। खिन्नता।
उदाहरण-संज्ञा पुं० [सं०] १. दृष्टांत। मिसाल। २. न्याय में तर्क के पाँच अवयवों में से तीसरा, जिसके साथ साध्य का साधर्म्य या वैधर्म्य होता है।
उदियाना-क्रि० अ० [सं० उद्विग्न] उद्विग्न होना। घबराना। हैरान होना।
उदित-वि० [सं०] [स्त्री० उदिता] १. जो उदय हुआ हो। निकला हुआ। २. प्रकट। जाहिर। ३. उज्ज्वल। स्वच्छ। ४. प्रफुल्लित। प्रसन्न। ५. कहा हुआ।
उदितयौवना-संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के सात भेदों में से एक जिसमें तीन हिस्सा यौवन और एक हिस्सा लड़कपन हो।
उदीची-संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा।
उदीच्य-वि० [सं०] १. उत्तर का रहनेवाला। २. उत्तर दिशा का।
संज्ञा पुं० [सं०] वैतालीय छंद का एक भेद।
उदुंबर-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० औदुंबर] १. गूलर। २. देहली। ड्योढ़ी। ३. नपुंसक। ४. एक प्रकार का कोढ़।
उदूलहुक्मी-संज्ञा स्त्री० [फा०] आज्ञा न मानना। आज्ञा का उल्लंघन करना।
उदेग:-संज्ञा पुं० [सं० उद्वेग] उद्वेग।
उदै:-संज्ञा पुं० दे० "उदय"।
उदोत:-संज्ञा पुं० [सं० उद्योत] प्रकाश।
वि० १. प्रकाशित। दीप्त। २. शुभ्र। ३. उत्तम।
उदोती-वि० [सं० उद्योत] [स्त्री० उदोतिनी] प्रकाश करनेवाला।
उदौ-संज्ञा पुं० दे० "उदय"।
उद्गम-संज्ञा पुं० [सं०] १. उदय। आविर्भाव। २. उत्पत्ति का स्थान। उद्भव-स्थान। निकास। मखरज। ३. वह स्थान जहाँ से कोई नदी निकलती हो।
उद्गाता-संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में चार प्रधान ऋत्विजों में से एक जो साम वेद-मंत्रों का गान करता है।
उद्गाथा-संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।
उद्गार-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्गारी, उद्गारित] १. उबाल। उफान। २. वमन। कै। ३. थूक। कफ। ४. डकार। ५. बाढ़। आधिक्य। ६. घोर शब्द। ७. किसी के विरुद्ध बहुत दिनों से मन में रक्खी हुई बात एकबारगी कहना।
उद्गारी-वि० [सं० उद्गारिन्] [स्त्री० उद्गारिणी] १. उगलनेवाला। बाहर निकालनेवाला। २. प्रकट करनेवाला।
उद्गीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।
उद्घाटन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्घाटक, उद्घाटनीय, उद्घाटित] १. खोलना। उघाड़ना। २. प्रकट करना। प्रकाशित करना।
उद्घात-संज्ञा पुं० [सं०] १. ठोकर। धक्का। आघात। २. आरंभ।
उद्घातक-वि० [सं०] [स्त्री० उद्घातिका] १. धक्का मारनेवाला। ठोकर लगानेवाला। २. आरंभ करनेवाला।
संज्ञा पुं० नाटक में प्रस्तावना का एक भेद जिसमें सूत्रधार और नटी आदि की कोई बात सुनकर उसका और अर्थ लगाता हुआ कोई पात्र प्रवेश करता है या नेपथ्य से कुछ कहता है।
उद्दंड-वि० [सं०] [संज्ञा उद्दंडता] जिसे दंड इत्यादि का कुछ भी भय न हो। अक्खड़। प्रचंड। उद्धत।
उद्दाम-वि० [सं०] १. बंधनरहित। २. निरंकुश। उग्र। उद्दंड। बे-कहा। ३. स्वतंत्र। ४. महान्। गंभीर।

संज्ञा पु० [सं०] १. वरण। २ दंडक वृत्त का एक भेद।
उद्दिम—संज्ञा पु० दे० "उद्यम"।
उद्दिष्ट—वि० [सं०] १ दिखाया हुआ। इंगत किया हुआ। २ लक्ष्य। अभिप्रेत। संज्ञा पु० पिंगल में वह क्रिया जिससे यह बतलाया जाता है कि दिया हुआ छंद मात्रा प्रस्तार का कौन सा भेद है।
उद्दीपक—वि० [सं०] [स्त्री० उद्दीपिका] उत्तेजित करनेवाला। उभाडनेवाला।
उद्दीपन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्दीपनीय, उद्दीपित, उद्दीप्त, उद्दीप्य] १ उत्तेजित करने की क्रिया। उभाडना। बढाना। जगाना। २. उद्दीपन या उत्तेजित करनेवाला पदार्थ। ३. काव्य में वे विभाग जो रस को उत्तेजित करते हैं। जैसे, ऋतु, पवन आदि।
उद्देश—संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्दिष्ट, उद्देश्य, उद्देशित] १. अभिलाषा। चाह। मंशा। २ हेतु। कारण। ३. न्याय में प्रतिज्ञा।
उद्देश्य—वि० [सं०] लक्ष्य। इष्ट। संज्ञा पु० १ वह वस्तु जिस पर ध्यान रखकर कोई बात कही या की जाय। अभिप्रेत अर्थ। इष्ट। २. वह जिसके संबंध में कुछ कहा जाय। विशेष्य। विधेय का उलटा। ३ मतलब। मंशा।
उद्ध—क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।
उद्धत—वि० [सं०] [संज्ञा औद्धत्य] १ उग्र। प्रचंड। अक्खड़। २ प्रगल्भ। संज्ञा पु० चार मात्राओं का एक छंद।
उद्धतपन—संज्ञा पु० [सं० उद्धत + हिं० पन (प्रत्य०)] उजड्डपन। उग्रता।
उद्धरण—संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्धरणीय, उद्धृत] १. ऊपर उठना। २. मुक्त होने की क्रिया। ३ बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में आना। ४. पढे हुए पिछले पाठ का अभ्यास के लिये फिर फिर पढाना। ५ किसी लेख के किसी अंश को दूसरे लेख में ज्यों का त्यों रखना। ६. उन्मूलन।
उद्धरणी—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्धरण + हिं० ई० (प्रत्य०)] पढ़े हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिये बार बार पढ़ना।
उद्धरना—क्रि० स० [सं० उद्धरण] उद्धार करना। उबारना। क्रि० अ० बचना। छूटना।
उद्धव—संज्ञा पु० [सं०] १. उत्सव। २ यज्ञ की अग्नि। ३. कृष्ण के एक सखा।
उद्धार—संज्ञा पु० [सं०] १. मुक्ति। छुटकारा। निस्तार। २ सुधार। उन्नति। दुरुस्ती। ३ कर्ज से छुटकारा। ४. वह ऋण, जिस पर ब्याज न लगे।
उद्धारना—क्रि० स० [सं० उद्धार] उद्धार करना। छुटकारा देना।
उद्ध्वस्त—वि० [सं०] टूटा-फूटा। ध्वस्त।
उद्धृत—वि० [सं०] १. उगला हुआ। २. ऊपर उठाया हुआ। ३ अन्य स्थान से ज्यों का त्यों लिया हुआ।
उद्बुद्ध—वि० [सं०] १ विकसित। फूला हुआ। २ प्रबुद्ध। चैतन्य। जिसे ज्ञान हो गया हो। ३. जागा हुआ।
उद्बुद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी ही इच्छा से उपपति से प्रेम करनेवाली परकीया नायिका।
उद्बोध—संज्ञा पु० [सं०] थोड़ा ज्ञान।
उद्बोधक—वि० [सं०] [स्त्री० उद्बोधिका] १ बोध करानेवाला। चेतानेवाला। २. प्रकाशित, प्रकट या सूचित करनेवाला। ३. उत्तेजित करनेवाला। ४ जगानेवाला।
उद्बोधन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्बोधनीय, उद्बोधित] १ बोध कराना। चेताना। २ उत्तेजित करना। ३. जगाना।
उद्बोधिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो उपपति के चतुराई द्वारा प्रकट किए हुए प्रेम को समझकर प्रेम करे।
उद्भट—वि० [सं०] [संज्ञा उद्भटता] १. प्रबल। प्रचंड। श्रेष्ठ। २. उदाशय।
उद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उद्भूत] १. उत्पत्ति। जन्म। २. वृद्धि। बढ़ती।
उद्भावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कल्पना। मन की उपज। २ उत्पत्ति।
उद्भास—संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्भासनीय, उद्भासित, उद्भासुर] १. प्रकाश। दीप्ति। आभा। २ हृदय में किसी बात का उदय। प्रतीति।
उद्भासित—वि० [सं०] १ उत्तेजित। उद्दीप्त। २ प्रकाशित। प्रकट। ३. विदित।
उद्भज—संज्ञा पु० दे० "उद्भिज्ज"।
उद्भिज्ज—संज्ञा पु० [सं०] वृक्ष, लता, गुल्म आदि जो भूमि फोड़कर निकलते हैं। वनस्पति। पेड़ पौधे।
उद्भिद—संज्ञा पु० दे० "उद्भिज्ज"।

उद्भूत–वि० [सं०] उत्पन्न।
उद्भेद–संज्ञा पु० [सं०] १. फोड़कर निकलना (पौधों के समान)। २. प्रकाशन। उद्घाटन। ३. प्राचीनों के मत से एक काव्यालंकार जिसमें कौशल से छिपाई हुई किसी बात का किसी हेतु से प्रकाशित या लक्षित होना वर्णन किया जाय।
उद्भेदन–संज्ञा पु० [सं० उद्भेदनीय, उद्भिन्न] १. तोड़ना। फोड़ना। २. फोड़कर निकलना। छेदकर पार जाना।
उद्भ्रांत–वि० [सं०] १. घूमता हुआ। चक्कर मारता हुआ। २. भूला हुआ। भटका हुआ। ३. चकित। भौचक्का।
संज्ञा पु० तलवार के ३२ हाथों में से एक।
उद्यत–वि० [सं०] १. तैयार। तत्पर। प्रस्तुत। मुस्तैद। २. उठाया हुआ। ताना हुआ।
उद्यम–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्यमी, उद्यत] १. प्रयास। प्रयत्न। उद्योग। मेहनत। २. काम-धंधा। रोजगार।
उद्यमी–वि० [सं० उद्यमिन्] उद्यम करनेवाला। उद्योगी। प्रयत्नशील।
उद्यान–संज्ञा पु० [सं०] बगीचा। बाग।
उद्यापन–संज्ञा पु० [सं०] किसी व्रत की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य। जैसे हवन, गोदान इत्यादि।
उद्युक्त–वि० [सं०] उद्योग में रत। तत्पर।
उद्योग–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्योगी, उद्युक्त] १. प्रयत्न। प्रयास। कोशिश। मेहनत। २. उद्यम। काम-धंधा।
उद्योगी–वि० [सं० उद्योगिन्] [स्त्री० उद्योगिनी] उद्योग करनेवाला। मेहनती।
उद्योत–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रकाश। उजाला। २. चमक। झलक। आभा।
उद्रेक–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्रिक्त] १. वृद्धि। बढ़ती। अधिकता। ज्यादती। २. एक काव्यालंकार जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मंद पड़ जाना वर्णन किया जाता है।
उद्वह–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० उद्वहा] १. पुत्र। बेटा। जैसे, रघूद्वह। २. सात वायुओं में से एक जो तृतीय स्कंध पर है।
उद्वहन–संज्ञा पु० [सं०] १. ऊपर खिंचना। उठना। २. विवाह।
उद्वासन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्वासनीय, उद्वासित, उद्वास्य] १. स्थान छुड़ाना। भगाना। खदेड़ना। २. उजाड़ना। वासस्थान नष्ट करना। ३. मारना। वध।
उद्वाह–संज्ञा पु० [सं०] विवाह।
उद्वाहन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्वाहनीय, उद्वाही, उद्वाहित, उद्वाह्य] १. ऊपर ले जाना। उठाना। २. ले जाना। हटाना। ३. विवाह।
उद्विग्न–वि० [सं०] १. उद्वेगयुक्त। आकुल। घबराया हुआ। २. व्यग्र।
उद्विग्नता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आकुलता। घबराहट। २. व्यग्रता।
उद्वेग–संज्ञा पु० [सं०] [वि० उद्विग्न] १. चित्त की आकुलता। घबराहट। (संचारी भावों में से एक) २. मनोवेग। चित्त की तीव्र वृत्ति। आवेश। जोश। ३. झोंक।
उधड़ना–क्रि० अ० [सं० उद्धरण] १. खुलना। उखड़ना। २. सिला, जमा या लगा न रहना। ३. उजड़ना।
उधर–क्रि० वि० [सं० उत्तर अथवा पु० हिं० ऊ (वह) + धर (प्रत्य०)] उस ओर। उस तरफ। दूसरी तरफ।
उधरना–क्रि० स० [सं० उद्धरण] १. मुक्त होना। २. दे० "उधड़ना"।
क्रि० स० उद्धार या मुक्त करना।
उधराना–क्रि० अ० [सं० उद्धरण] १. हवा के कारण छितराना। तितर-बितर होना। २. ऊधम मचाना।
उधार–संज्ञा पु० [सं० उद्धार] १. कर्ज। ऋण।
मुहा०—उधार खाए बैठना = १. किसी मौके आसरे पर दिन काटते रहना। २. हर समय तैयार रहना। ३. किसी एक की वस्तु का दूसरे के पास केवल कुछ दिनों के व्यवहार के लिये जाना। मँगनी। ४. उद्धार। छुटकारा।
उधारक–वि० दे० "उद्धारक"।
उधारना–क्रि० स० [सं० उद्धरण] उद्धार करना। मुक्त करना।
उधारी–वि० [सं० उद्धारिन्] [स्त्री० उद्धारिनी] उद्धार करनेवाला।
उधेड़ना–क्रि० स० [सं० उद्धरण] १. मिली हुई पर्तों को अलग अलग करना। उचाड़ना। २. टाँका खोलना। सिलाई खोलना। ३. छितराना। बिखराना।
उधेड़बुन–संज्ञा स्त्री० [हिं० उधेड़ना + बुनना]

१. सोच-विचार। ऊहा-पोह। २. युक्ति बाँधना।
उनंत॰-वि॰ [सं॰ अवनत] झुका हुआ।
उन-सर्व॰ "उस" का बहुवचन।
उनका-संज्ञा पु॰ [अ॰] एक कल्पित पक्षी जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा है।
उनचास-वि॰ [सं॰ एकोनपंचाशत्] चालीस और नौ।
संज्ञा पु॰ चालीस और नौ की संख्या। ४९।
उनतीस-वि॰ [सं॰ एकोनत्रिंशत्] एक कम तीस। बीस और नौ।
संज्ञा पु॰ बीस और नौ की संख्या। २९।
उनदा॰-वि॰ दे॰ "उनींदा"।
उनदौहाँ-वि॰ दे॰ "उनींदा"।
उनमद॰-वि॰ [सं॰ उद्+मद] उन्मत्त।
उनमना॰-वि॰ दे॰ "अनमना"।
उनमाथना॰-क्रि॰ स॰ [सं॰ उन्मथन] [वि॰ उन्माथी] मथना। विलोड़न करना।
उनमाथी॰-वि॰ [हिं॰ उनमाथना] मथनेवाला। विलोड़न करनेवाला।
उनमान॰-संज्ञा पु॰ दे॰ "अनुमान"।
संज्ञा पु॰ [सं॰ उद्+मान] १. परिमाण। नाप। तौल। थाह। २. शक्ति। सामर्थ्य।
वि॰ तुल्य। समान।
उनमानना-क्रि॰ स॰ [हिं॰ उनमान] अनुमान करना। खयाल करना।
उनमुना॰-वि॰ [हिं॰ अनमना] [स्त्री॰ उनमुनी] मौन। चुपचाप।
उनमूलना॰-क्रि॰ स॰ [सं॰ उन्मूलन] उखाड़ना।
उनमेख॰-संज्ञा पु॰ [सं॰ उन्मेष] १. आँख का खुलना। २. फूल खिलना। ३. प्रकाश।
उनमेखना॰-क्रि॰ स॰ [सं॰ उन्मेष] १. आँख का खुलना। उन्मीलित होना। २. विकसित होना (फूल आदि का)।
उनरना॰-क्रि॰ अ॰ [सं॰ उन्नयन=ऊपर जाना] १. उठना। उभड़ना। २. कूदते हुए चलना।
उनवना-क्रि॰ अ॰ [सं॰ उन्नमन] १. झुकना। लटकना। २. छाना। घिर आना। ३. टूटना। ऊपर पड़ना।
उनवान-संज्ञा पु॰ दे॰ "अनुमान"।
उनसठ-वि॰ [सं॰ एकोनषष्ठि] पचास और नौ।
संज्ञा पु॰ पचास और नौ की संख्या या अंक। ५९।
उनहत्तर-वि॰ [सं॰ एकोनसप्तति] साठ और नौ।
संज्ञा पु॰ साठ और नौ की संख्या या अंक। ६९।
उनहानि-संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ अनुहारि] समता। बराबरी।
उनहार॰-वि॰ [सं॰ अनुसार] सदृश। समान।
उनहारि॰-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ अनुसार] समानता। सादृश्य। एकरूपता।
उनाना॰†-क्रि॰ स॰ [सं॰ उन्नमन] १. झुकाना। २. लगाना। प्रवृत्त करना।
क्रि॰ अ॰ आज्ञा मानना।
उनींदा-वि॰ [सं॰ उन्निद्र] [स्त्री॰ उनींदी] बहुत जागने के कारण अलसाया हुआ। नींद से भरा हुआ। ऊँघता हुआ।
उन्नइस†-वि॰ दे॰ "उन्नीस"।
उन्नत-वि॰ [सं॰] १. ऊँचा। ऊपर उठा हुआ। २. बढ़ा हुआ। समृद्ध। ३. श्रेष्ठ।
उन्नति-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. ऊँचाई। चढ़ाव। २. वृद्धि। समृद्धि। तरक्की।
उन्नतोदर-संज्ञा पु॰ [सं॰] १. चाप या वृत्तखंड के ऊपर का तल। २. वह वस्तु जिसका वृत्तखंड ऊपर को उठा हो।
उन्नाव-संज्ञा पु॰ [अ॰] एक प्रकार का बेर जो हकीमी नुसखों में पड़ता है।
उन्नावी-वि॰ [अ॰ उन्नाब] उन्नाब के रंग का। कालापन लिए हुए लाल।
उन्नायक-वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ उन्नायिका] १. ऊँचा करनेवाला। उन्नत करनेवाला। २. बढ़ानेवाला।
उन्नासी-वि॰ [सं॰ ऊनाशीति] सत्तर और नौ। एक कम अस्सी।
संज्ञा पु॰ सत्तर और नौ की संख्या या अंक। ७९।
उन्निद्र-वि॰ [सं॰] १. निद्रारहित। जैसे-उन्निद्र रोग। २. जिसे नींद न आई हो। ३. विकसित। खिला हुआ।
उन्नीस-वि॰ [सं॰ एकोनविंशति] एक कम बीस। दस और नौ।
संज्ञा पु॰ दस और नौ की संख्या या अंक। १९।
मुहा॰—उन्नीस बिस्वे=१. अधिकतर।

२. अधिकांश। प्रायः। उन्नीस होना = १. मात्रा में कुछ कम होना। थोड़ा घटना। २. गुण में घटकर होना। (दो वस्तुओं का परस्पर) उन्नीस-बीस होना = एक का दूसरी से कुछ अच्छा होना।

उन्मत्त–वि० [सं०] [संज्ञा उन्मत्तता] १. मतवाला। मदांध। २. जो आपे में न हो। बेसुध। ३. पागल। बावला।

उन्मत्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मतवालापन। पागलपन।

उन्माद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मादक, उन्मादी] १. वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का कार्यक्रम बिगड़ जाता है। पागलपन। विक्षिप्तता। चित्त-विभ्रम। २. रस के ३३ संचारी भावों में से एक जिसमें वियोग आदि के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता।

उन्मादक–वि० [सं०] १. पागल करनेवाला। २ नशा करनेवाला।

उन्मादन–संज्ञा पुं० [सं०] १. उन्मत्त या मतवाला करने की क्रिया। २. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

उन्मादी–वि० [सं० उन्मादिन्] [स्त्री० उन्मादिनी] उन्मत्त। पागल। बावला।

उन्मार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मार्गी] १. कुमार्ग। बुरा रास्ता। २. बुरा ढंग।

उन्मीलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मीलक, उन्मीलनीय, उन्मीलित] १. खुलना (नेत्र का)। २. विकसित होना। खिलना।

उन्मीलना–क्रि० स० [सं० उन्मीलन] खोलना।

उन्मीलित–वि० [सं०] खुला हुआ। संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच इतना अधिक सादृश्य वर्णन किया जाय कि केवल एक ही बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़े।

उन्मुख–वि० [सं०] [स्त्री० उन्मुखा] १. ऊपर मुँह किए। २. उत्कंठित। उत्सुक। ३. उद्यत। तैयार।

उन्मूलक–वि० [सं०] समूल नष्ट करनेवाला। बरबाद करनेवाला।

उन्मूलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मूलनीय, उन्मूलित] १. जड़ से उखाड़ना। समूल नष्ट करना। २. नष्ट करना।

उन्मेष–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उन्मिषित] १. खुलना (आँख का)। २. विकास। खिलना। ३. थोड़ा प्रकाश।

उप–उप० [सं०] एक उपसर्ग। यह जिन शब्दों के पहले लगता है, उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है। समीपता; जैसे—उपकूल, उपनयन,। सामर्थ्य (वास्तव में आधिक्य), जैसे—उपकार। गौणता या न्यूनता; जैसे—उपमंत्री, उपसभापति। व्याप्ति; जैसे—उपकीर्ण।

उपकरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सामग्री। २. राजाओं के छत्र, चँवर आदि राजचिह्न।

उपकरना–क्रि० स० [सं० उपकार] उपकार करना। भलाई करना।

उपकर्त्ता–संज्ञा पुं० दे० "उपकारक"।

उपकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. हितसाधन। भलाई। नेकी। २. लाभ। फायदा।

उपकारक–वि० [सं०] [स्त्री० उपकारिका] उपकार करनेवाला। भलाई करनेवाला।

उपकारिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भलाई।

उपकारी–वि० [सं० उपकारिन्] [स्त्री० उपकारिणी] १.उपकार करनेवाला। भलाई करनेवाला। २. लाभ पहुँचानेवाला।

उपकृत–वि० [सं०] १. जिसके साथ उपकार किया गया हो। २. कृतज्ञ।

उपकृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] उपकार।

उपक्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्यारंभ की पहली अवस्था। अनुष्ठान। उठान। २. किसी कार्य को आरंभ करने के पहले का आयोजन। तैयारी। ३. भूमिका।

उपक्रमणिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पुस्तक के आदि में दी हुई विषय-सूची।

उपक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. अभिनय के आरंभ में नाटक के समस्त वृत्तांत का संक्षेप में कथन। २. आक्षेप।

उपखान–संज्ञा पुं० दे० "उपाख्यान"।

उपगत–वि० [सं०] १. प्राप्त। उपस्थित। २. ज्ञात। जाना हुआ। ३. स्वीकृत।

उपगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति। स्वीकार। २. ज्ञान।

उपगीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

उपग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १. गिरफ़्तारी। २. कैद। ३. बँधुआ। कैदी। ४. अप्रधान ग्रह। छोटा ग्रह। ५. राहु और केतु। ६. वह छोटा ग्रह जो अपने बड़े ग्रह के

चारों ओर घूमता है। जैसे पृथ्वी का उपग्रह चंद्रमा है। (आधुनिक)

उपघात–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाश करने की क्रिया। २. इंद्रियों का अपने अपने काम में असमर्थ होना। अशक्ति। ३. रोग। व्याधि। ४. इन पांच पातकों का समूह—उपपातक, जातिभ्रंशीकरण, संकरीकरण, अपात्रीकरण, मलिनीकरण। (स्मृति)

उपचय–संज्ञा पुं० [सं०] १. वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। २. संचय। जमा करना।

उपचार–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यवहार। प्रयोग। विधान। २. चिकित्सा। दवा। इलाज। ३. सेवा। तीमारदारी। ४. धर्म्मानुष्ठान। ५. पूजन के अंग या विधान जो प्रधानतः सोलह माने गए हैं। जैसे, षोडशोपचार। ६. खुशामद। ७. घूस। रिशवत। ८ एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग के स्थान पर श या स हो जाता है। जैसे, निःछल से निश्छल।

उपचारक–वि० [सं०] [स्त्री० उपचारिका] १. उपचार या सेवा करनेवाला। २. विधान करनेवाला। ३. चिकित्सा करनेवाला।

उपचारछल–संज्ञा पुं० [सं०] वादी के कहे वाक्य में जान बूझकर अभिप्रेत अर्थ से भिन्न अर्थ की कल्पना करके दूषण निकालना।

उपचारना–क्रि० स० [सं० उपचार] १. व्यवहार में लाना। २. विधान करना।

उपचारी–वि० [सं० उपचारिन्] [स्त्री० उपचारिणी] उपचार करनेवाला।

उपचित्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णार्द्ध समवृत्त।

उपचित्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १६ मात्राओं का एक छंद।

उपज–संज्ञा स्त्री० [हिं० उपजना] १. उत्पत्ति। उद्भव। पैदावार। जैसे, खेत की उपज। २. नई उक्ति। उद्भावना। सूझ। ३. मनगढंत बात। ४. गाने में राग की सुंदरता के लिये उसमें बँधी हुई तानों के सिवा कुछ तानें अपनी ओर से मिला देना।

उपजना–क्रि० अ० [सं० उत्पद्यते,प्रा० उप्पज्जते] उत्पन्न होना। पैदा होना। उगना।

उपजाऊ–वि० [हिं० उपज + आऊ (प्रत्य०)] जिसमें अच्छी उपज हो। उर्वर। (भूमि)

उपजाति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वे वृत्त जो इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा तथा इंद्रवंशा और वंशस्थ के मेल से बनते हैं।

उपजाना–क्रि० स० [हिं० उपजना का स० रूप] उत्पन्न करना। पैदा करना।

उपजीवन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपजीवी, उपजीवक] १. जीविका। रोज़ी। २. निर्वाह के लिये दूसरे का अवलंबन।

उपजीवी–वि० [सं० उपजीविन्] [स्त्री० उपजीविनी] दूसरे के सहारे पर गुज़र करनेवाला।

उपटन–संज्ञा पुं० दे० "उबटन"।

संज्ञा पुं० [सं० उत्पतन = ऊपर उठना] अंक या चिह्न जो आघात, दबाने या लिखने से पड़ जाय। निशान। साँट।

उपटना–क्रि० अ० [सं० उत्पट = पट के ऊपर] १. आघात, दाब या लिखने का चिह्न पड़ना। निशान पड़ना। २. उखड़ना।

उपटाना–क्रि० स० [हिं० उबटना का प्रे० रूप] उबटन लगवाना।

क्रि० स० [सं० उत्पाटन] १. उखड़वाना। २. उखाड़ना।

उपटारना–क्रि० स० [सं० उत्पटन] उच्चाटन करना। उठाना। हटाना।

उपड़ना–क्रि० अ० [सं० उत्पटन] १. उखड़ना। २. उपटना। अंकित होना।

उपत्यका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पर्वत के पास की भूमि। तराई।

उपदंश–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक रोग जिसमें दाँत या नाखून लगने के कारण लिंगेंद्रिय पर घाव हो जाता है। २. गरमी। आतशक। फिरंग रोग। ३. गज़क। चाट।

उपदिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

उपदिष्ट–वि० [सं०] १. जिसे उपदेश दिया गया हो। २. जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो। ज्ञापित।

उपदेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. हित की बात का कथन। शिक्षा। सीख। नसीहत। २. दीक्षा। गुरुमंत्र।

उपदेशक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० उपदेशिका] उपदेश करनेवाला। शिक्षा देनेवाला।

उपदेश्य–वि० [सं०] १. उपदेश के योग्य। २. सिखाने योग्य (बात)।

उपदेष्टा–संज्ञा पुं० [सं० उपदेष्टृ] [स्त्री० उपदेष्ट्री] उपदेश देनेवाला। शिक्षक।

ऊपर कहा हुआ। पहले कहा हुआ। (शुद्ध रूप "उपर्युक्त")
उपरोध-संज्ञा पुं० [सं०] १. अटकाव। रुकावट। २. आच्छादन। ढकना।
उपरोधक-संज्ञा पुं० [सं०] १. रोकने या बाधा डालनेवाला। २. भीतर की कोठरी।
उपरौटा-संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर + पट] (किसी वस्तु के) ऊपर का पल्ला।
उपर्युक्त-वि० [सं०] ऊपर कहा हुआ।
उपल-संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्थर। २. ओला। ३. रत्न। ४. मेघ। बादल।
उपलक्षक-वि० [सं०] अनुमान करनेवाला। ताड़नेवाला।
संज्ञा पुं० वह शब्द जो उपादान लक्षणा से अपने वाच्यार्थ द्वारा निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी कोटि की और और वस्तुओं का भी बोध करावे।
उपलक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपलक्षय, उपलक्षित] १. बोध करानेवाला चिह्न। संकेत। २. शब्द की वह शक्ति जिससे उसके अर्थ से निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी की कोटि की और और वस्तुओं का भी बोध होता है।
उपलक्ष्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. संकेत। चिह्न। २. दृष्टि। उद्देश्य।
यौ०—उपलक्ष्य में = दृष्टि से। विचार से।
उपलब्ध-वि० [सं०] १. पाया हुआ। प्राप्त। २. जाना हुआ।
उपलब्धि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति। २. बुद्धि। ज्ञान।
उपला-संज्ञा पुं० [सं० उत्पल] [स्त्री०, अल्पा० उपली] ईंधन के लिये गोबर का सुखाया हुआ टुकड़ा। कंडा। गोहरा।
उपलेप-संज्ञा पुं० [सं०] १. लेप लगाना। लीपना। २. वह वस्तु जिससे लेप करें।
उपलेपन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपलेपित, उपलेप्य, उपलिप्त] लीपने या लेप लगाने का कार्य।
उपल्ला-संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर + ला (प्रत्य०)] स्त्री०, अल्पा० उपल्ली] किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, पर्त या तह।
उपवन-संज्ञा पुं० [सं०] १. बाग। बगीचा। फुलवारी। २. छोटा जंगल।
उपवना—क्रि० अ० [सं० उत्पवन] १. [illegible] होना। २. उदय होना।
उपवसथ-संज्ञा पुं० [सं०] १. गाँव। बस्ती। २. यज्ञ करने के पहले का दिन जिसमें व्रत आदि करने का विधान है।
उपवास-संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजन का छूटना। फाका। २. वह व्रत जिसमें भोजन छोड़ दिया जाता है।
उपवासी-वि० [सं० उपवासिन्] [स्त्री० उपवासिनी] उपवास करनेवाला।
उपविष-संज्ञा पुं० [सं०] हलका विष। कम तेज जहर। जैसे, अफीम या धतूरा।
उपविष्ट-वि० [सं०] बैठा हुआ।
उपवीत-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपवीती] १. जनेऊ। यज्ञसूत्र। २. उपनयन।
उपवेद-संज्ञा पुं० [सं०] वे विद्याएँ जो वेदों से निकली हुई कही जाती हैं। जैसे, धनुर्वेद, आयुर्वेद।
उपवेशन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट] १. बैठना। २. स्थित होना। जमना।
उपशम-संज्ञा पुं० [सं०] १. वासनाओं को दबाना। इंद्रिय-निग्रह। २. निवृत्ति। शांति। ३. निवारण का उपाय। इलाज।
उपशमन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपशमनीय, उपशमित, उपशाम्य] १. शांत रखना। दबाना। २. उपाय से दूर करना। निवारण।
उपशिष्य-संज्ञा पुं० [सं०] शिष्य का शिष्य।
उपसंपादक-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० उप-संपादिका] किसी कार्य्य में मुख्य कर्त्ता का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में उसका कार्य्य करनेवाला व्यक्ति।
उपसंहार-संज्ञा पुं० [सं०] १. हरण। परिहार। २. समाप्ति। खातमा। निराकरण। ३. किसी पुस्तक के अंत का अध्याय जिसमें उसका उद्देश्य या परिणाम संक्षेप में बतलाया गया हो। ४. सारांश।
उपसा†-संज्ञा स्त्री० [सं० उप + वास = मर्दन] दुर्गंध। बदबू।
उपसना†-क्रि० अ० [सं० उप + वास = मर्दन] १. दुर्गंधित होना। २. सड़ना।
उपसर्ग-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शब्द या अव्यय जो किसी शब्द के पहले लगता है और उसमें किसी अर्थ की विशेषता करता है। जैसे, अनु, अव, उप, उद् इत्यादि। २. अपशकुन। ३. दैवी उत्पात।

उपसागर-संज्ञा पुं० [सं०] छोटा समुद्र। समुद्र का एक भाग। खाड़ी।

उपसाना-क्रि० स० [हिं० उपसना] बासी करना। सड़ाना।

उपसुंद-संज्ञा पुं० [सं०] सुंद नाम के दैत्य का छोटा भाई।

उपसेचन-संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी से सींचना या भिगोना। पानी छिड़कना। २. गीली चीज़। रसा। शोरवा।

उपस्थ-संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे या मध्य का भाग। २. पेड़ू। ३ पुरुष-चिह्न। लिंग। ४. स्त्री चिह्न। भग। ५. गोद। वि० निकट बैठा हुआ।

उपस्थान-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपस्थानीय, उपस्थित] १. निकट आना। सामने आना। २. अभ्यर्थना या पूजा के लिये निकट आना। ३. खड़े होकर स्तुति करना। ४ पूजा का स्थान। ५. सभा। समाज।

उपस्थित-वि० [सं०] १. समीप बैठा हुआ। सामने या पास आया हुआ। विद्यमान। मौजूद। हाज़िर। २. ध्यान में आया हुआ। याद।

उपस्थिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्ति।

उपस्थिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यमानता। मौजूदगी। हाज़िरी।

उपस्वत्व-संज्ञा पुं० [सं०] ज़मीन या किसी जायदाद की आमदनी का हक़।

उपहत-वि० [सं०] १. नष्ट या बरबाद किया हुआ। २. बिगाड़ा हुआ। दूषित। ३. संकट में पड़ा हुआ।

उपहसित (हास)-संज्ञा पुं० [सं०] हास के छः भेदों में से चौथा। नाक फुलाकर आँखें टेढ़ी करते और गर्दन हिलाते हुए हँसना।

उपहार-संज्ञा पुं० [सं०] १. भेंट। नज़र। नज़राना। २. शैवों की उपासना के छ नियम—हसित, गीत, नृत्य, हुडुक्कार, नमस्कार और जप।

उपहास-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपहास्य] १. हँसी। दिल्लगी। २ निंदा। बुराई।

उपहासास्पद-वि० [सं०] १. उपहास के योग्य। हँसी उड़ाने के लायक़। २. निंदनीय। ख़राब। बुरा।

उपहासीः-संज्ञा स्त्री० [सं० उपहास] हँसी। ठट्ठा। निंदा।

उपहींः-संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर + हा (प्रत्य०)] अपरिचित, बाहरी या विदेशी आदमी।

उपांग-संज्ञा पुं० [सं०] १. अंग का भाग। अवयव। २. वह वस्तु जिससे किसी वस्तु के अंगों की पूर्त्ति हो। जैसे—वेद के उपांग। ३. तिलक। टीका।

उपांत-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपांत्य] १. अंत के समीप का भाग। २. आस पास का हिस्सा। प्रांत भाग। ३. छोटा किनारा।

उपांत्य-वि० [सं०] अंतवाले के समीपवाला। अंतिम से पहले का।

उपाउ ःसंज्ञा पुं० दे० "उपाय"।

उपाख्यान-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरानी कथा। पुराना वृत्तांत। २. किसी कथा के अंतर्गत कोई और कथा। ३ वृत्तांत।

उपाटनाः-क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।

उपातिः-संज्ञा स्त्री० दे० "उत्पत्ति"।

उपादान-संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राप्ति। ग्रहण। स्वीकार। २. ज्ञान। बोध। ३. विषयों से इंद्रियों की निवृत्ति। ४. वह कारण जो स्वयं कार्य्य रूप में परिणत हो जाय। सामग्री जिससे कोई वस्तु तैयार हो। ५. सांख्य की चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक जिसमें मनुष्य एक ही बात से पूरे फल की आशा करके और प्रयत्न छोड़ देता है।

उपादेय-वि० [सं०] १. ग्रहण करने योग्य। लेने योग्य। २. उत्तम। श्रेष्ठ।

उपाधि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. और वस्तु को और बतलाने का छल। कपट। २. वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखाई दे। ३. उपद्रव। उत्पात। ४. कर्त्तव्य का विचार। धर्मचिंता। ५ प्रतिष्ठासूचक पद। ख़िताब।

उपाधी-वि० [सं० उपाधिन्] [स्त्री० उपाधिनी] उपद्रवी। उत्पात करनेवाला।

उपाध्याय-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० उपाध्याया, उपाध्यायानी, उपाध्यायी] १. वेद वेदांग का पढ़ानेवाला। २. अध्यापक। शिक्षक। गुरु। ३. ब्राह्मणों का एक भेद।

उपाध्याया-संज्ञा स्त्री० [सं०] अध्यापिका।

उपाध्यायानी-संज्ञा स्त्री० [सं०] उपाध्याय की स्त्री। गुरुपत्नी।

उपाध्यायी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उपाध्याय की स्त्री। गुरुपत्नी। २. अध्यापिका।

उपानह्-संज्ञा पु० [सं०] जूता। पनही।

उपाना†-क्रि० स० [सं० उत्पन्न] १. उत्पन्न करना। पैदा करना। २. सोचना।

उपाय-संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपायी, उपेय] १. पास पहुँचना। निकट आना। २. वह जिससे अभीष्ट तक पहुँचें। साधन। युक्ति। तदबीर। ३. राजनीति में शत्रु पर विजय पाने की चार युक्तियाँ—साम, भेद, दंड, और दान। ४. शृंगार के दो साधन, साम और दान।

उपायन-संज्ञा पु० [सं०] भेंट। उपहार।

उपारना‡-क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।

उपार्जन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपार्जनीय, उपार्जित] लाभ करना। कमाना।

उपार्जित-वि० [सं०] कमाया हुआ। प्राप्त किया हुआ। संगृहीत।

उपालंभ-संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपालब्ध] ओलाहना। शिकायत। निंदा।

उपालंभन--संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपालंभनीय, उपालंभित, उपालभ्य उपालब्ध] ओलाहना देना। निंदा करना।

उपाव†-संज्ञा पु० दे० "उपाय"।

उपास†-संज्ञा पु० दे० "उपवास"।

उपासक--वि० [सं०] [स्त्री० उपासिका] पूजा या आराधना करनेवाला। भक्त।

उपासना-संज्ञा स्त्री० [सं० उपासन] १. पास बैठने की क्रिया। २. आराधना। पूजा। टहल। परिचर्या।

†क्रि० स० [सं० उपासन] उपासना, पूजा या सेवा करना। भजना।

क्रि० अ० [सं० उपवास] १. उपवास करना। भूखा रहना। २. निराहार व्रत रहना।

उपासनीय-वि० [सं०] सेवा करने योग्य। आराधनीय। पूजनीय।

उपासी-वि० [सं० उपासिन्] [स्त्री० उपासिनी] उपासना करनेवाला। सेवक। भक्त।

उपास्य-वि० [सं०] पूजा के योग्य। जिसकी सेवा की जाती हो। आराध्य।

उपेंद्र-संज्ञा पु० [सं०] इंद्र के छोटे भाई, वामन या विष्णु भगवान्।

उपेंद्रवज्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह वर्णों की एक वृत्ति।

~ पु० [सं०] [वि० उपेक्षणीय, उपेक्षित, उपेक्ष्य] १. विरक्त होना। उदासीन होना। किनारा खींचना। २. घृणा करना। तिरस्कार करना।

उपेक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उदासीनता। लापरवाही। विरक्ति। २. घृणा। तिरस्कार।

उपेक्षित-वि० [सं०] जिसकी उपेक्षा की गई हो। तिरस्कृत।

उपेक्ष्य-वि० [सं०] उपेक्षा के योग्य।

उपेना†-वि० [सं० उ + पह्नव] [स्त्री० उपैनी] खुला हुआ। नंगा।

क्रि० अ० [?] लुप्त हो जाना। उड़ना।

उपोद्घात-संज्ञा पु० [सं०] १. पुस्तक के आरंभ का वक्तव्य। प्रस्तावना। भूमिका। २. सामान्य कथन से भिन्न विशेष वस्तु के विषय में कथन। (न्याय)

उपोषण-संज्ञा पु० [सं०] [वि० उपोषणीय, उपोषित, उपोष्य] उपवास। निराहार व्रत।

उपोसथ-संज्ञा पु० [सं० उपवसथ, प्रा० उपोसथ] निराहार व्रत। उपवास। (जैन, बौद्ध)

उफ-अव्य० [अ०] आह। ओह। अफ़सोस।

उफड़ना‡-क्रि० अ० [हिं० उफनना] उबलना। उफान खाना। जोश खाना।

उफनना-क्रि० अ० [सं० उत् + फेन] १ उबलकर उठना। जोश खाना (दूध आदि का)। २. उमड़ना।

उफनाना-क्रि० अ० [सं० उत् + फेन] १. उबलना। २. उमड़ना।

उफान-संज्ञा पु० [सं० उत् + फेन] गरमी पाकर फेन के सहित ऊपर उठना। उबाल।

उबकना-क्रि० अ० [हिं० उबाक] कै करना।

उबकाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० ओकाई] मतली। कै।

उबट -संज्ञा पु० [सं० उद्वाट] अटपट या बुरा रास्ता। विकट मार्ग।

वि० ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा।

उबटन-संज्ञा पु० [सं० उद्वर्तन] शरीर पर मलने के लिये सरसों, तिल और चिरौंजी आदि का लेप। बटना। अभ्यंग।

उबटना-क्रि० अ० [सं० उद्वर्तन] बटना लगाना। उबटन मलना।

उबना‡-क्रि० अ० १. दे० "उगना"। २. दे० "उबना"।

उबरना-क्रि० अ० [सं० उद्वारण] १. उद्धार पाना। निस्तार पाना। मुक्त होना। छूटना। २. शेष रहना। बाकी बचना।

उवलना-क्रि० अ० [स० उद्=ऊपर+वलन =जाना] १. आँच या गरमी पाकर तरल पदार्थों का फेन के साथ ऊपर उठना। उफनना। २. उमडना। वेग से निकलना।
उवहना .-क्रि० स० [स० उद्वहन, पा० उब्बहन=ऊपर उठना] १. हथियार खींचना। (हथियार) म्यान से निकालना। शस्त्र उठाना। २ पानी फेंकना। उलीचना। ३ ऊपर की ओर उठना। उभरना।
क्रि० स० [स० उद्वहन] जोतना।
वि० [स० उपानह] बिना जूते का। नंगा।
उवाँत †-सज्ञा स्त्री० [स० उद्वांत] उलटी। वमन। कै।
उवार-सज्ञा पु० [स० उद्धारण] १ निस्तार। छुटकारा। उद्धार। २ ओहार।
उवारना-क्रि० स० [स० उद्धारण] उद्धार करना। छुडाना। मुक्त करना। बचाना।
उवाल-सज्ञा पु० [हिं० उवलना] १. आँच पाकर फेन के सहित ऊपर उठना। उफान। २. जोश। उद्वेग। क्षोभ।
उवालना-क्रि० स० [स० उद्वालन] १ तरल पदार्थ को आग पर रखकर इतना गरम करना कि वह फेन के साथ ऊपर उठ आवे। खोलाना। चुराना। जोश देना। २. पानी के साथ आग पर चढ़ाकर गरम करना। जोश देना। उसिनना।
उवासी-सज्ञा स्त्री० [स० उच्छ्वास] जँभाई।
उवाहना -क्रि० स० दे० "उवहना"।
उवीठना-क्रि० स० [स० अव+स० इष्ट] जी भर जाने पर अच्छा न लगना।
क्रि० अ० ऊबना। घबराना।
उवीधना-क्रि० अ० [स० उद्विद्ध] १. फँसना। उलझना। २ धँसना। गड़ना।
उवीधा-वि० [स० उद्विद्ध] [स्त्री० उवीधी] १ धँसा हुआ। गडा हुआ। २. काँटों से भरा हुआ। झाड़ झंखाड़वाला।
उवेना †-वि० [हिं० उ=नहीं+स० उपानह] नंगे पैर। बिना जूते का।
उवेरना -क्रि० स० दे० "उवारना"।
उवेहना-क्रि० स० [स० उद्वेधन] १. जड़ना। बैठाना। २. पिरोना।
उभरना†-क्रि० अ० [हिं० उभरना] १. अहंकार करना। शेखी करना। २ दे० "उभडना"।
उभडना-क्रि० अ० [स० उद्भरण] १. किसी तल या सतह का आस पास की सतह से कुछ ऊँचा होना। उकसना। फूलना। २. ऊपर निकलना। उठना। जैसे, अंकुर उभड़ना। ३ उत्पन्न होना। पैदा होना। ४ खुलना। प्रकाशित होना। ५. बढ़ना। अधिक या प्रबल होना। ६ चल देना। हट जाना। ७ जवानी पर आना। ८ गाय भैंस आदि का मस्त होना।
उभय-वि० [स०] दोनों।
उभयतः-क्रि० वि० [स०] दोनों ओर से।
उभयतोमुखी-वि० [स०] दोनों ओर मुँहवाला।
यौ०—उभयतोमुखी गौ=ब्याती हुई गाय जिसके गर्भ से बच्चे का मुँह बाहर निकल आया हो। (इसके दान का बडा माहात्म्य लिखा है।)
उभयविपुला-सज्ञा स्त्री० [स०] आर्या छंद का एक भेद।
उभरना†-क्रि० अ० दे० "उभडना"।
उभरौंहा-वि० [हिं० उभरना+औंहा (प्रत्य०)] उभार पर आया हुआ। उभरा हुआ।
उभाट-सज्ञा पु० [स० उद्भिदन] १. उठान। ऊँचापन। ऊँचाई। २ ओज। वृद्धि।
उभाडना-क्रि० स० [हिं० उभडना] १. भारी वस्तु को धीरे धीरे उठाना। उकसाना। २. उत्तेजित करना। बहकाना।
उभाडदार-वि० [हिं० उभाड+फा० दार] १ उठा या उभरा हुआ। २. भड़कीला।
उभाना-क्रि० अ० दे० "अभुआना"।
उभिटना -क्रि० अ० [देश०] ठिठकना। हिचकना। भिटकना।
उभै -वि० दे० "उभय"।
उमंग-सज्ञा स्त्री० [स० उद्=ऊपर+मग=चलना] १. चित्त का उभाड। सुखदायक मनोवेग। मौज। लहर। उल्लास। २. उभाड। ३. अधिकता। पूर्णता।
उमंगना -क्रि० अ० दे० "उमगना"।
उमँडना-क्रि० अ० दे० "उमडना"।
उमग -सज्ञा स्त्री० दे० "उमंग"।
उमगन-सज्ञा स्त्री० दे० "उमंग"।
उमगना-क्रि० अ० [हिं० उमंग+ना] १. उभडना। उमडना। भरकर ऊपर उठना। २. उल्लास में होना। हुलसना।
उमचना-क्रि० अ० [स० उन्मच] १. किसी वस्तु पर तलवों से अधिक दाब

पहुँचाने के लिये कूदना। हुमचना। २. चौकन्ना होना। सजग होना।

उमड़-संज्ञा स्त्री० [सं० उन्मंडन] १. बाढ़। चढ़ाव। भराव। २. घिराव। ३. धावा।

उमड़ना-क्रि० अ० [हिं० उमग] १. द्रव वस्तु का बहुतायत के कारण ऊपर उठना। उतराकर बह चलना। २. उठकर फैलना। छाना। घेरना। जैसे—बादल उमड़ना। यौ०—उमड़ना घुमड़ना = घूम घूमकर फैलना या छाना। (बादल) ३. आवेश में भरना। जोश में आना।

उमड़ाना-क्रि० अ० दे० "उमड़ना"। क्रि० स० "उमड़ना" का प्ररणार्थक रूप।

उमदना*-क्रि० अ० [सं० उन्मद] १. उमंग में भरना। मस्त होना। २. उमग ना। उमड़ना।

उमदा-वि० दे० "उम्दा"।

उमदाना*-क्रि० अ० [सं० उन्मद] १. मतवाला होना। मद में भरना। मस्त होना। २. उमंग या आवेश में आना।

उमर-संज्ञा स्त्री० [अ० उम्र] १. अवस्था। वय। २. जीवनकाल। आयु।

उमरा-संज्ञा पुं० [अ०] अमीर का बहुवचन। प्रतिष्ठित लोग। सरदार।

उमराव ‡-संज्ञा पुं० दे० "उमरा"।

उमस-संज्ञा स्त्री० [सं० ऊष्म] वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है।

उमहना*-क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।

उमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिव की स्त्री, पार्वती। २. दुर्गा। ३. हलदी। ४. अलसी। ५. कीर्ति। ६. कांति।

उमाकना -क्रि० अ० [सं० उ = नहीं + मक] खोदकर फेंक देना। नष्ट करना।

उमाकिनी*†-वि० स्त्री० [हिं० उमाकना] उखाड़नेवाली। खोदकर फेंक देनेवाली।

उमाचना †-क्रि० स० [सं० उन्मचन] १. उभाड़ना। ऊपर उठाना। २. निकालना।

उमाद*-संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।

उमापति-संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

उमाह-संज्ञा पुं० [हिं० उमहना] उत्साह। उमंग। जोश। चित्त का उद्गार।

उमाहना-क्रि० अ० दे० "उमड़ना"। क्रि० स० उमड़ाना। उमगाना।

उमाहल*-वि० [हिं० उमाह] उमंग से भरा हुआ। उत्साहित।

उमेठन-संज्ञा स्त्री० [सं० उद्वेष्टन] ऐंठन मरोड़। पेंच। बल।

उमेठना-क्रि० स० [सं० उद्वेष्टन] ऐंठना मरोड़ना।

उमेठवाँ-वि० [हिं० उमेठना] ऐंठदार ऐंठनदार। घुमावदार।

उमेड़ना*-क्रि० स० दे० "उमेठना"।

उमेलना*-क्रि० स० [सं० उन्मीलन] खोलना। प्रकट करना। २. वर्णन करना

उम्दगी-संज्ञा स्त्री० [फा०] अच्छापन भलापन। खूबी।

उम्दा-वि० [अ०] अच्छा। भला।

उम्मत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी म के अनुयायियों की मंडली। २. जमाअत समिति। समाज। ३. औलाद। संतान (परिहास) ४. पैरोकार। अनुयायी।

उम्मीद, उम्मेद-संज्ञा स्त्री० [फा०] आशा भरोसा। आसरा।

उम्मेदवार-संज्ञा पुं० [फा०] १. आशा आसरा रखनेवाला। २. काम सीखने नौकरी पाने की आशा से किसी दफ़्तर बिना तनख़ाह काम करनेवाला आदमी ३. किसी पद पर चुने जाने के लिये ख होनेवाला आदमी।

उम्मेदवारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आशा आसरा। २. काम सीखने या नौकरी प की आशा से बिना तनख़ाह काम करन

उम्र-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अवस्थ वयस। २. जीवनकाल। आयु।

उर-संज्ञा पुं० [सं० उरस्] १. वक्षस्थल छाती। २. हृदय। मन। चित्त।

उरकना -क्रि० अ० दे० "रुकना"

उरग-संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

उरगना*-क्रि० स० [सं० उररीकरण १. स्वीकार करना। २. सहना।

उरगारि-संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

उरगिनी*-संज्ञा स्त्री० [सं० उरगी] सर्पिणी

उरज, उरजात*-संज्ञा पुं० दे० "उरोज"

उरझना -क्रि० अ० दे० "उलझना"।

उरण-संज्ञा पुं० [सं०] १. मेड़ा। मेढ़ २. युरेनस नामक ग्रह।

उरद-संज्ञा पुं० [सं० ऋद्ध, प्रा० उद्द] [अल्पा० उरदी] एक प्रकार का पौधा जि फलियों के बीज या दाने की दाल है। माष।

उरध-क्रि॰ वि॰ दे॰ "ऊर्ध्व"।
उरधारना-क्रि॰ स॰ दे॰ "उधेड़ना"।
उरबसी-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उर्वशी"।
उरबी-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उर्वी"।
उरमना †-क्रि॰ अ॰ [सं॰ अवलंबन, प्रा॰ ओलंबन] लटकना।
उरमाना †-क्रि॰ स॰ [हिं॰ उरमना] लटकाना।
उरमाल-संज्ञा पुं॰ [फा॰ रूमाल] रूमाल।
उरविज-संज्ञा पुं॰ [सं॰ उर्वी+ज =उत्पन्न] भौम। मंगल।
उरला-वि॰ [सं॰ अपर, अवर+हिं॰ ला (प्रत्य॰)] पिछला। पीछे का। उत्तर। वि॰ [हिं॰ विरल] विरला। निराला।
उरस-वि॰ [सं॰ कुरस] फीका। नीरस। संज्ञा पुं॰ [सं॰ उरस्] १. छाती। वक्षस्थल। २. हृदय। चित्त।
उरसना-क्रि॰ अ॰ [हिं॰ उडसना] ऊपर नीचे करना। उथल-पुथल करना।
उरसिज-संज्ञा पुं॰ [सं॰] स्तन।
उरहना-संज्ञा पुं॰ दे॰ "उलाहना"।
उरा-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ उर्वी] पृथिवी।
उराय-संज्ञा पुं॰ दे॰ "उराव"।
उरारा-वि॰ [सं॰ उरु] विस्तृत। विशाल।
उराव-संज्ञा पुं॰ [सं॰ उरस्+आव (प्रत्य॰)] चाव। चाह। उमंग। उत्साह। हौसला।
उराहना-संज्ञा पुं॰ दे॰ "उलाहना"।
उरिण, उरिन-वि॰ दे॰ "उऋण"।
उरु-वि॰ [सं॰] १. विस्तीर्ण। लंबा चौड़ा। २. विशाल। बड़ा।
संज्ञा पुं॰ [सं॰ ऊरु] जंघा। जाँघ।
उरुआ-संज्ञा पुं॰ [सं॰ उलूक, प्रा॰ उलूअ] उल्लू की जाति की एक चिड़िया। रुरुआ।
उरूज-संज्ञा पुं॰ [अ॰] बढ़ती। वृद्धि।
उरे †-क्रि॰ वि॰ [सं॰ अवर] १. परे। आगे। २. दूर।
उरेखना-क्रि॰ स॰ दे॰ "अवरेखना"।
उरेह-संज्ञा पुं॰ [सं॰ उल्लेख] चित्रकारी।
उरेहना-क्रि॰ स॰ [सं॰ उल्लेखन] खींचना। लिखना। रचना। (चित्र)
उरोज-संज्ञा पुं॰ [सं॰] स्तन। कुच।
उर्द-संज्ञा पुं॰ दे॰ "उरद"।
उर्दपर्णी-संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ उर्द+सं॰ पर्णी] माषा-पर्णी। वन-उरदी।
उर्दू-संज्ञा स्त्री॰ [तु॰] वह हिंदी जिसमें अरबी, फ़ारसी के शब्द अधिक हों और जो फ़ारसी लिपि में लिखी जाय।
उर्दू बाजार-संज्ञा पुं॰ [हिं॰ उर्दू+बाजार] १. लशकर या छावनी का बाज़ार। २. वह बाजार जहाँ सब चीजें मिलें।
उर्ध-वि॰ [सं॰] ऊर्ध्व।
उर्फ-संज्ञा पुं॰ [अ॰] चलतू नाम। पुकारने का नाम। उपनाम।
उर्मि-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ऊर्मि"।
उर्मिला-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ ऊर्मिला] सीताजी की छोटी बहिन जो लक्ष्मणजी से ब्याही गई थी।
उर्वरा-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. उपजाऊ भूमि। २. पृथिवी। भूमि। ३. एक अप्सरा। वि॰ स्त्री॰ उपजाऊ। जरखेज। (जमीन)
उर्वशी-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक अप्सरा।
उर्विजा-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उर्वीजा"।
उर्वी-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पृथिवी।
उर्वीजा-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पृथ्वी से उत्पन्न, सीता।
उर्वीधर-संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. शेष। २. पर्वत।
उर्स-संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. मुसलमानों में पीर आदि के मरने के दिन का कृत्य। २. मुसलमान साधुओं की निर्वाण-तिथि।
उलंग-वि॰ [उलग्न] नंगा।
उलंघन-संज्ञा पुं॰ दे॰ "उल्लंघन"।
उलंघना, उलँघना-क्रि॰ स॰ [सं॰ उल्लंघन] १. नाँघना। डाँकना। उल्लंघन करना। २. न मानना। अवज्ञा करना।
उलका-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उल्का"।
उलचना-क्रि॰ स॰ दे॰ "उलीचना"।
उलछना †-क्रि॰ स॰ [हिं॰ उलचना] १. हाथ से छितराना। बिखराना। २. उलीचना।
उलझन-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ अवरुंधन] १. अटकाव। फँसाव। गिरह। गाँठ। २. बाधा। ३. पेंच। फेर। चक्कर। समस्या। ४. व्यग्रता। चिंता। तरद्दुद।
उलझना-क्रि॰ अ॰ [सं॰ अवरुंधन] १. फँसना। अटकना। जैसे काँटे में उलझना। ('उलझना' का उलटा 'सुलझना' है।) २. लपेट में पड़ना। बहुत से घुमावों के कारण फँस जाना। ३. लिपटना। ४. काम में लिप्त या लीन होना। ५. तकरार

करना। लड़ना-झगड़ना। ६. कठिनाई में पड़ना। अड़चन में पड़ना। ७. अटकना। रुकना। ८. बल खाना। टेढ़ा होना।

उलझा*–संज्ञा पुं० दे० "उलझन"।

उलझाना–क्रि० स० [हिं० उलझना] १. फँसाना। अटकाना। २. लगाए रखना। लिप्त रखना। ३. टेढ़ा करना।

क्रि० अ० उलझना। फँसना।

उलझाव–संज्ञा पुं० [हिं० उलझना] १. अटकाव। फँसाव। २. झगड़ा। बखेड़ा। ३. चक्कर। फेर।

उलझौहाँ–वि० [हिं० उलझना] १. अटकाने या फँसानेवाला। २ लुभानेवाला।

उलटना–क्रि० अ० [सं० उल्लोठन] १ ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर होना। औंधा होना। पलटना। २. पीछे मुड़ना। घूमना। पलटना। ३. उमड़ना। टूट पड़ना। ४. अंडबंड होना। अस्त-व्यस्त होना। ५. विपरीत होना। विरुद्ध होना। ६. क्रुद्ध होना। चिढ़ना। ७. बरबाद होना। नष्ट होना। ८. बेहोश होना। बेसुध होना। ९. गिरना। १०. घमंड करना। इतराना। ११. चौपायों का एक बार जोड़ा खाकर गर्भ धारण न करना और फिर जोड़ा खाना। क्रि० स० १. नीचे का भाग ऊपर और ऊपर का भाग नीचे करना। औंधा करना। पलटना। फेरना। २. औंधा गिराना। ३. पटकना। गिरा देना। ४. लटकती हुई वस्तु को समेटकर ऊपर चढ़ाना। ५. अंडबंड करना। अस्त-व्यस्त करना। ६. विपरीत करना। और का और करना। ७. उत्तर प्रत्युत्तर करना। बात दोहराना। ८. खोदकर फेंकना। उखाड़ डालना। ९. बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिये खेत जोतना। १०. बेसुध करना। बेहोश करना। ११. कै करना। वमन करना। १२. उँडेलना। अच्छी तरह ढालना। १३. बरबाद करना। नष्ट करना। १४. रटना। जपना। बार बार कहना।

उलट पलट (पुलट)–संज्ञा स्त्री० [हिं०] अदल-बदल। अव्यवस्था। गड़बड़ी।

उलट फेर–संज्ञा पुं० [हिं० उलटना + फेर] १. परिवर्त्तन। अदल-बदल। हेर-फेर। २. जीवन की भली-बुरी दशा।

...–वि० [हिं० उलटना] [स्त्री० उलटी] १. जिसके ऊपर का भाग नीचे और नीचे का भाग ऊपर हो। औंधा।

मुहा०—**उलटी साँस चलना**=साँस का जल्दी जल्दी बाहर निकलना। दम उखड़ना (मरने का लक्षण)। **उलटी साँस लेना**=जल्दी जल्दी साँस खींचना। मरने के निकट होना। **उलटे मुँह गिरना**=दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना।

२ जिसका आगे का भाग पीछे अथवा दाहिनी ओर का भाग बाईं ओर हो। इधर का उधर। क्रम-विरुद्ध।

मुहा०—**उलटा फिरना या लौटना**=तुरं[त] लौट पड़ना। बिना क्षण भर ठहरे पलटना। **उलटा हाथ**=बायाँ हाथ। **उलटी गं[गा] बहना**=अनहोनी बात होना। **उलटी मा[ला] फेरना**=बुरा मनाना। अहित चाहना। **उ[लटे] छूरे से मूँड़ना**=उल्लू बनाकर काम निकाल[ना।] झाँसना। **उलटे पाँव फिरना**=तुरत लौट पड़[ना।]

३. कालक्रम में जो आगे का पीछे ... पीछे का आगे हो। जो समय से ... पीछे हो। ४. विरुद्ध। विपरीत। खिला[फ]। ५. उचित के विरुद्ध। अंडबं[ड]। अयुक्त।

मुहा०—**उलटा जमाना**=वह समय [जिसमें] भली बात बुरी समझी जाय। अंधेर का स[मय]। **उलटा सीधा**=बिना क्रम का। अंड[बंड]। अव्यवस्थित। **उलटी खोपड़ी का**=जड़। **उलटी सीधी सुनाना**—खरी खोटी सु[नाना।] भला-बुरा कहना। फटकारना।

क्रि० वि० १. विरुद्ध क्रम से। उल[टे ढंग] से। बेठिकाने। अंडबंड। २. जैसा चाहिए उससे और ही प्रकार से।

संज्ञा पुं० बेसन से बननेवाला एक प[कवान]।

उलटाना*–क्रि० स० [हिं० उलटना] ... पलटाना। लौटाना। पीछे फेरना। २. और का और करना या कहना। अन्यथा करना या कहना। ३. फेरना। दूसरे पक्ष में करना। ४. उलटा करना।

उलटा पलटा (पुलटा)–वि० [हिं० उलटा + पलटना] इधर का उधर। अंडबंड। बे सिर पैर का। बेतरतीब।

उलटा पलटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० उलटना] फेरफार। अदल-बदल।

उलटाव–संज्ञा पुं० [हिं० उलटना] १. पलटाव। फेर। २. घुमाव। चक्कर।

उलटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० उलटना] १. वमन। कै। २. कलैया। कलाबाज़ी।
उलटी सरसों-संज्ञा स्त्री० [हिं० उलटी + सरसो] वह सरसों जिसकी कलियों का मुँह नीचे होता है। यह जादू, टोने के काम में आती है। टेरी।
उलटे-क्रि० वि० [हिं० उलटा] १. विरुद्ध क्रम से। बे ठिकाने। २. विपरीत व्यवस्थानुसार। विरुद्ध न्याय से।
उलथना -क्रि० अ० [सं० उद् = नहीं + स्थल = जमना।] ऊपर-नीचे होना। उथल-पुथल होना। उलटना।
क्रि० स० ऊपर-नीचे करना। उलट-पुलट करना।
उलथा-संज्ञा पु० [हिं० उलथना] १. नाचने के समय ताल के अनुसार उछलना। २. कलाबाज़ी। कलैया। ३. कलाबाज़ी के साथ पानी में कूदना। डलटा। उड़ी। ४. करवट बदलना। (चौपायों के लिये)
उलद*-संज्ञा स्त्री० [हिं० उलदना] झड़ी। वर्षण।
उलदना -क्रि० स० [हिं० उलटना] उँडेलना। उलटना। ढालना।
क्रि० अ० खूब बरसना।
उलमना† -क्रि० अ० [सं० अवलम्बन] लटकना। झुकना।
उलरना*-क्रि० अ० [सं० उल्ललन] १. कूदना। उछलना। २. नीचे-ऊपर होना। ३. झपटना।
उललना*-क्रि० अ० [हिं० उड़लना] १. ढरकना। ढलना। २. इधर-उधर होना।
उलसना*-क्रि० अ० [सं० उल्लसन] शोभित होना। सोहना।
उलहना-क्रि० अ० [सं० उल्लंघन] १. उभड़ना। निकलना। प्रस्फुटित होना। २. उमड़ना। हुलसना। फूलना।
संज्ञा पु० दे० "उलाहना"।
उलाँघना†*-क्रि० स० [सं० उल्लंघन] १. लाँघना। डाँकना। फाँदना। २. अवज्ञा करना। न मानना। ३. पहले पहल घोड़े पर चढ़ना। (चाबुक सवार)
उलाटना†-क्रि० अ० दे० "उलटना"।
उलार-वि० [हिं० ओलरना = लेटना] जो पीछे की ओर झुका हो। जिसके पीछे की ओर बोझ अधिक हो। (गाड़ी)
उलारना†क्रि० स० [हिं० उतरना] उछालना। नीचे ऊपर फेंकना।
क्रि० स० दे० "ओलारना"।
उलाहना-संज्ञा पु० [सं० उपालंभन] १. किसी की भूल या अपराध को उसे दुःखपूर्वक जताना। शिकायत। गिला। २. किसी के दोष या अपराध को उससे संबंध रखनेवाले किसी और आदमी से कहना। शिकायत।
†* क्रि० स० १. उलाहना देना। २. दोष देना। निंदा करना।
उलीचना-क्रि० स० [सं० उल्लुंचन] हाथ या बरतन से पानी उछालकर दूसरी ओर डालना।
उलूक-संज्ञा पु० [सं०] १. उल्लू चिड़िया। २. इंद्र। ३. दुर्योधन का एक दूत। ४. कणाद मुनि का एक नाम।
यौ०—उलूकदर्शन = वैशेषिक दर्शन।
संज्ञा पु० [सं० उल्का] लुक। लौ।
उलूखल-संज्ञा पु० [सं०] १. ओखली। २. खल। खरल। चट्टू। ३. गुग्गुल।
उलेड़ना -क्रि० स० [हिं० उड़ेलना] ढरकाना। उँडेलना। ढालना।
उलेल*-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुलेल] १. उमंग। जोश। तेज़ी। उछल-कूद। २. बाढ़।
वि० बेपरवाह। अल्हड़।
उल्का-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकाश। तेज। २. लुक। लुआठा। ३. मशाल। दस्ती। ४. दीआ। चिराग। ५. एक प्रकार के चमकीले पिंड जो कभी कभी रात को आकाश में एक ओर से दूसरी ओर को वेग से जाते हुए अथवा पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई पड़ते हैं। इनके गिरने को "तारा टूटना" कहते हैं।
उल्कापात-संज्ञा पु० [सं०] १. तारा टूटना। लुक गिरना। २. उत्पात। विघ्न।
उल्कापाती-वि० [सं० उल्कापातिन्] [स्त्री० उल्कापातिनी] दंगा मचानेवाला। उत्पाती।
उल्कामुख-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० उल्कामुखी] १. गीदड़। २. एक प्रकार का प्रेत जिसके मुँह से प्रकाश या आग निकलती है। अगिया-बैताल। ३. महादेव का एक नाम।
उल्था-संज्ञा पु० [हिं० उलथना] भाषांतर अनुवाद। तरजुमा।

उल्लंघन-संज्ञा पु० [सं०] १. लाँघना। डाकना। २. अतिक्रमण। ३. न मानना। पालन न करना।

उल्लंघना -क्रि० स० दे० "उलंघना"।

उल्लसन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० उल्लसित, उल्लासी] १. हर्ष करना। खुशी मनाना। २. रोमांच।

उल्लाप्य-संज्ञा पु० [सं०] १. उपरूपक का एक भेद। २. सात प्रकार के गीतों में से एक।

उल्लाल-संज्ञा पु० [सं०] एक मात्रिक अर्द्ध-सम छंद।

उल्लाला-संज्ञा पु० [सं० उल्लाल] एक मात्रिक छंद।

उल्लास-संज्ञा पु० [सं०] [वि० उल्लासक, उल्लसित] १. प्रकाश। चमक। झलक। २ हर्ष। आनंद। ३. ग्रंथ का एक भाग। पर्व। ४. एक अलंकार जिसमें एक के गुण या दोष से दूसरे में गुण या दोष का होना दिखलाया जाता है।

उल्लासक-वि० [सं०] [स्त्री० उल्लासिका] आनंद करनेवाला। आनंदी।

उल्लासन-संज्ञा पु० [सं०] १. प्रकट करना। प्रकाशित करना। २. हर्षित होना। प्रसन्न होना।

उल्लासी-वि० [सं० उल्लासिन्] [स्त्री० उल्लासिनी] आनंदी। सुखी।

उल्लिखित-वि० [सं०] १. खोदा हुआ। उत्कीर्ण। २. छीला हुआ। खरादा हुआ। ३. ऊपर लिखा हुआ। ४. खींचा हुआ। चित्रित। ५. लिखा हुआ। लिखित।

उल्लू-संज्ञा पु० [सं० उलूक] १. दिन में न देखनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी। खूसट। मुहा०—कहीं उल्लू बोलना = उजाड़ होना। २. बेवकूफ। मूर्ख।

उल्लेख-संज्ञा पु० [सं०] १. लिखना। लेख। २. वर्णन। चर्चा। ज़िक्र। ३. चित्र खींचना। ४. एक काव्यालंकार जिसमें एक ही वस्तु का अनेक रूपों में दिखाई पड़ना वर्णन किया जाय।

उल्लेखन-संज्ञा पु० [सं०] १ लिखना। २. चित्र खींचना।

उल्लेखनीय-वि० [सं०] लिखने योग्य। उल्लेख योग्य।

संज्ञा पु० [सं०] १. झिल्ली जिसमें बच्चा बँधा हुआ पैदा होता है। आँवल अँवरी। २. गर्भाशय।

उवना -क्रि० अ० दे० "उगना"।

उशबा-संज्ञा पु० [अ०] एक पेड़ जिसकी जड़ रक्तशोधक है।

उशीर-संज्ञा पु० [सं०] गाँडर की जड़ खस।

उषा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रभात। तड़का ब्राह्मवेला। २. अरुणोदय की लालिमा ३. बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध को ब्याही गई थी।

उषाकाल-संज्ञा पु० [सं०] भोर। प्रभात तड़का।

उषापति-संज्ञा पु० [सं०] अनिरुद्ध।

उष्ट्र-संज्ञा पु० [सं०] ऊँट।

उष्ण-वि० [सं०] १. तप्त। गरम। २ तासीर में गरम। ३. फुरतीला। तेज़। संज्ञा पु० १. ग्रीष्म ऋतु। २. प्याज़। ३ एक नरक का नाम।

उष्णक-संज्ञा पु० [सं०] १. ग्रीष्म काल २. ज्वर। बुख़ार। ३. सूर्य्य। वि० १. गरम। तप्त। २. ज्वरयुक्त। ३ तेज। फुरतीला।

उष्ण कटिबंध-संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है।

उष्णता-संज्ञा स्त्री० [सं०] गरमी। ताप

उष्णत्व-संज्ञा पु० [सं०] गरमी।

उष्णीष-संज्ञा पु० [सं०] १. पगड़ी। साफ़ा। २ मुकुट। ताज।

उष्म-संज्ञा पु० [सं०] १. गरमी। ताप। २. धूप। ३. गरमी की ऋतु।

उष्मज-संज्ञा पु० [सं०] छोटे कीड़े जो पसीने और मैल आदि से पैदा होते हैं। जैसे, खटमल, मच्छर।

उष्मा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गरमी। २. धूप। ३. गुस्सा। क्रोध। रिस।

उसे-सर्व० उभ० [हिं० वह] 'वह' शब्द का वह रूप है जो विभक्ति लगने पर होता है। जैसे—उसने, उसको।

उसकन-संज्ञा पु० [सं० उत्कर्षण] घास पात या पयाल का वह पोटा जिससे बरतन माँजते हैं। बकसन।

उसकना†-क्रि० अ० दे० "उकसना"।

उसकाना†-क्रि० सं० दे० "उकसाना"।

उसनना–क्रि० स० [सं० उष्ण या स्विन्न] १. उबालना। पानी के साथ आग पर चढ़ाकर गरम करना। २. पकाना।
उसनाना–क्रि० स० [हिं० उसनना का प्रे० रूप] उबलवाना। पकवाना।
उसनीसः–संज्ञा पुं० दे० "उष्णीष"।
उसमा†–संज्ञा पुं० [अ० वसमा] उबटन। बटना।
उसरना–क्रि० अ० [सं० उद्+सरण=जाना] १. हटना। टलना। दूर होना। स्थानांतरित होना। २. बीतना। गुज़रना। ३. भूलना। विस्मृत होना। बिसरना। ४. पूरा होना। बनकर खड़ा होना।
उसलनाः–क्रि० अ० दे० "उसरना"।
उससनाः–क्रि० स० [सं०उत्+सरण] खिसकना। टलना। स्थानांतरित होना। क्रि० स० [हिं० उसास] साँस लेना। दम लेना।
उसाँसः–संज्ञा पुं० दे० "उसास"।
उसारना –क्रि० स० [हिं० उभारना] १. उखाड़ना। २. हटाना। टालना। ३ बनाकर खड़ा करना।
उसारा†–संज्ञा पुं० दे० "ओसारा"।
उसालनाः–क्रि० स० [सं० उत्+सारण] १. उखाड़ना। २. हटाना। टालना। ३. भगाना।
उसास–संज्ञा स्त्री० [सं० उत्+श्वास] १. लंबी साँस। ऊपर को खींची हुई साँस। २. साँस। श्वास। ३. दुःख या शोक-सूचक श्वास। ठंढी साँस।
उसासी†ः–संज्ञा स्त्री० [हिं० उसास] दम लेने की फ़ुरसत। अवकाश। छुट्टी।
उसिनना†–क्रि० स० दे० "उसनना"।
उसीर–संज्ञा पुं० दे० "उशीर"।
उसीसा–संज्ञा पुं० [सं० उत्+शीर्ष] १. सिरहाना। २. तकिया।
उसूल–संज्ञा पुं० [अ०] सिद्धांत।
उस्तरा–संज्ञा पुं० दे० "उस्तुरा"।
उस्ताद–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० उस्तानी] गुरु। शिक्षक। अध्यापक।
वि० १. चालाक। छली। धूर्त। २. निपुण। प्रवीण। दक्ष।
उस्तादी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शिक्षक की वृत्ति। गुरुआई। २. चतुराई। निपुणता। ३. विज्ञता। ४. चालाकी। धूर्तता।
उस्तानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गुरुआनी। गुरुपत्नी। २. वह स्त्री जो शिक्षा दे। ३. चालाक स्त्री। ठगिन।
उस्तुरा–संज्ञा पुं० [फा०] बाल मूड़ने का औज़ार। छुरा। अस्तुरा।
उहदा†–संज्ञा पुं० दे० "ओहदा"।
उहवाँ†–क्रि० वि० दे० "वहाँ"।
उहाँ–क्रि० वि० दे० "वहाँ"।
उहै†–सर्व० दे० "वही"।

ऊ

ऊ–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का छठा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
ऊँग–संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ"।
ऊँगा–संज्ञा पुं० [सं० अपामार्ग] अपामार्ग। चिचड़ा।
ऊँघ–संज्ञा स्त्री० [सं० अवाङ्=नीचे मुँह] ऊँघाई। निद्रागम। झपकी। अर्द्ध-निद्रा।
ऊँघन–संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊँघ] ऊँघ। झपकी।
ऊँघना–क्रि० अ० [सं० अवाङ्=नीचे मुँह] झपकी लेना। नींद में झूमना। निद्रालु होना।
ऊँच†–वि० दे० "ऊँचा"।
यौ०—ऊँच नीच=१. छोटा-बड़ा। [illegible] अदना। २. छोटी [illegible] का और [illegible] जाति का। ३. [illegible] और [illegible] और बुरा।
ऊँचा–वि० [सं० उच्च] [स्त्री० [illegible]] जो दूर तक ऊपर की ओर [illegible] हुआ। उच्च। बलंद। [illegible]
मुहा०—ऊँचा नीचा=[illegible] जो समझ न हो। २. [illegible]
२. जिसका छोर [illegible] जिसका [illegible]

करता। ३. श्रेष्ठ। बड़ा। महान्।
मुहा०—ऊँचा नीचा या ऊँची नीची सुनाना = खोटी-खरी सुनाना। भला-बुरा कहना।
४. ज़ोर का (शब्द)। तीव्र (स्वर)।
मुहा०—ऊँचा सुनना = केवल ज़ोर की आवाज़ सुनना। कम सुनना।

ऊँचाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊँचा + ई (प्रत्य०)] १. ऊपर की ओर का विस्तार। उठान। उच्चता। बलंदी। २. गौरव। बड़ाई। श्रेष्ठता।

ऊँचे—क्रि० वि० [हिं० ऊँचा] १. ऊँचे पर। ऊपर की ओर। २. ज़ोर से (शब्द करना)।
मुहा०—ऊँचे नीचे पैर पड़ना = बुरे काम में फँसना।

ऊँछ—संज्ञा पुं० [देश०] एक राग।

ऊँछना—क्रि० अ० [सं० उच्छन = बीनना] कंघी करना।

ऊँट—संज्ञा पुं० [सं० उष्ट्र, पा० उट्ट] [स्त्री० ऊँटनी] एक ऊँचा चौपाया जो सवारी और बोझ लादने के काम में आता है।

ऊँटकटारा—संज्ञा पुं० [सं० उष्ट्रकंट] एक कँटीली झाड़ी जो ज़मीन पर फैलती है।

ऊँटवान—संज्ञा पुं० [हिं० ऊँट + वान (प्रत्य०)] ऊँट चलानेवाला।

ऊँड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कुंड] १. वह बरतन जिसमें धन रखकर भूमि में गाड़ दें। २. चहबच्चा। तहखाना।
वि० गहरा। गंभीर।

ऊँदुर—संज्ञा पुं० [सं० उंदुर] चूहा।

ऊँहूँ—अव्य० [अनु०] नहीं। कभी नहीं। हर्गिज़ नहीं। (उत्तर में)

ऊ—संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। २. चंद्रमा।
*† अव्य० भी।
*† सर्व० वह।

ऊअना—क्रि० अ० [सं० उदयन] उगना। उदय होना।

ऊआबाई—वि० [हिं० आव बाव] अंडबंड। निरर्थक। व्यर्थ।

ऊक—संज्ञा पुं० [सं० उल्का] १. उल्का। टूटता हुआ तारा। २. लूक। लुआठा। ३. दाह। जलन। ताप। तपन।
संज्ञा स्त्री० [हिं० चूक का अनु०] भूल। चूक। गलती।

ऊकना—क्रि० अ० [हिं० चूकना का अनु०] १. चूकना। खाली जाना। लक्ष्य पर न पहुँचना। २. भूल करना। गलती करना।
क्रि० स० १. भूल जाना। २. छोड़ देना। उपेक्षा करना।
क्रि० स० [हिं० ऊक] जलाना। दहना। भस्म करना।

ऊख—संज्ञा पुं० [सं० इक्षु] ईख। गन्ना।
संज्ञा पुं० [सं० ऊष्म] गरमी। ऊमस।
वि० तपा हुआ। गरमी से व्याकुल।

ऊखम—संज्ञा पुं० दे० "ऊष्म"।

ऊखल—संज्ञा पुं० [सं० उलूखल] काठ या पत्थर का गहरा बरतन जिसमें धान आदि की भूसी अलग करने के लिये मूसल से कूटते हैं। ओखली। काँड़ी। हावन।

ऊगना—क्रि० अ० दे० "उगना"।

ऊज—संज्ञा पुं० [सं० उद्धत] उपद्रव। ऊधम। अंधेर।

ऊजड़—वि० दे० "उजाड़"।

ऊजर—वि० दे० "उजला"।
वि० [हिं० उजड़ना] उजाड़।

ऊजरा—वि० दे० "उजला"

ऊटक नाटक—संज्ञा पुं० [सं० उत्कट + नाटक] १. व्यर्थ का काम। फ़ज़ूल इधर-उधर करना। २. इधर-उधर का काम। जैसा हो, वैसा काम।

ऊटना—क्रि० अ० [हिं० औटना] १. उत्साहित होना। हौसला करना। उमंग में आना। २. तर्क-वितर्क करना। सोच-विचार करना।

ऊटपटाँग—वि० [हिं० अटपट + अंग] १. अटपट। टेढ़ामेढ़ा। बेढंगा। बेमेल। २. निरर्थक। व्यर्थ। वाहियात।

ऊड़ना—क्रि० स० दे० "ऊढ़ना"।

ऊड़ा—संज्ञा पुं० [सं० ऊन] १. कमी। टोटा। घाटा। २. गिरानी। अकाल। ३. नाश। लोप।

ऊड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बूड़ना] डुब्बी। गोता।

ऊढ़—वि० [सं०] [स्त्री० ऊढ़ा] विवाहित।

ऊढ़ना—क्रि० अ० [सं० ऊह] तर्क करना। सोच-विचार करना।
क्रि० अ० [सं० ऊढ़] विवाह करना। ब्याहना।

ऊढ़ा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विवाहिता स्त्री

२ वह ब्याही स्त्री जो अपने पति को छोड़ कर दूसरे से प्रेम करे।
ऊत–वि० [सं० अपुत्र] १ बिना पुत्र का। निःसंतान। निपूता। २ उजड्ड। बेवकूफ। संज्ञा पुं० वह जो निःसंतान मरने के कारण पिंड आदि न पाकर भूत होता है।
ऊतर–संज्ञा पुं० दे० १ "उत्तर"। २ दे० "बहाना"।
ऊतला वि० [हिं० उतावला] चंचल। वेगवान्।
ऊतिम †–वि० दे० "उत्तम"।
ऊद–संज्ञा पुं० [अ०] अगर का पेड़ या लकड़ी।
संज्ञा पुं० [सं० उद] ऊदबिलाव।
ऊदबत्ती–संज्ञा स्त्री० [अ० ऊद + हिं० बत्ती] अगर की बत्ती जिसे सुगंध के लिये जलाते हैं।
ऊदबिलाव–संज्ञा पुं० [सं० उदबिडाल] नेवले के आकार का, पर उससे बड़ा, एक जंतु जो जल और स्थल दोनों में रहता है।
ऊदल–संज्ञा पुं० [उदयसिंह का संक्षिप्त रूप] महोबे के राजा परमाल के मुख्य सामंतों में से एक वीर।
ऊदा–वि० [अ० ऊद अथवा फा० कबूद] ललाई लिए हुए काले रंग का। बैंगनी। संज्ञा पुं० ऊदे रंग का घोड़ा।
ऊधम–संज्ञा पुं० [सं० उद्धम] उपद्रव। उत्पात। धूम। हुल्लड़।
ऊधमी–वि० [हिं० ऊधम] [स्त्री० ऊधमिन] ऊधम करनेवाला। उत्पाती। उपद्रवी।
ऊधो–संज्ञा पुं० दे० "उद्धव"।
ऊन–संज्ञा पुं० [सं० ऊर्णा] भेड़ बकरी आदि का रोयाँ जिससे कंबल और पहनने के गरम कपड़े बनते हैं।
वि० [सं० ऊन] [स्त्री० ऊनी] १ कम। थोड़ा। छोटा। २ तुच्छ। नाचीज़। संज्ञा पुं० स्त्रियों के व्यवहार के लिये एक प्रकार की छोटी तलवार।
ऊनता–संज्ञा स्त्री० [सं० ऊन] कमी। न्यूनता।
ऊना–वि० [सं०] १ कम। न्यून। थोड़ा। २ तुच्छ। हीन। नाचीज़।
संज्ञा पुं० खेद। दुःख। रंज।
ऊनी–वि० [सं० ऊन] कम। न्यून।
संज्ञा स्त्री० उदासी। रंज। खेद।
वि० [हिं० ऊन + ई (प्रत्य०)] ऊन का बना हुआ वस्त्र आदि।
संज्ञा स्त्री० दे० "ओप"।
ऊपर–क्रि० वि० [सं० उपरि] [वि० ऊपरी] १ ऊँचे स्थान में। ऊँचाई पर। आकाश की ओर। २ आधार पर। सहारे पर। ३ ऊँची श्रेणी में। उच्च कोटि में। ४ (लेख में) पहले। ५ अधिक। ज्यादा। ६ प्रकट में। देखने में। ७ तट पर। किनारे पर। ८ अतिरिक्त। परे। प्रतिकूल।
मुहा०—ऊपर ऊपर = बिना और किसी के जताए। चुपके से। ऊपर की आमदनी = १ वह प्राप्ति जो नियत द्वार से न हो। २ इधर उधर से फटकारी हुई रकम। ऊपर तले = १ ऊपर नीचे। २ एक के पीछे एक। आगे पीछे। क्रमशः। ऊपर तले के = वे दो भाई या बहनें जिनके बीच में और कोई भाई या बहन न हुई हो। ऊपर लेना = (किसी कार्य्य का) जिम्मे लेना। हाथ में लेना। ऊपर से = १ बलदी से। ऊँचे से। २ इसके अतिरिक्त। सिवा इसके। ३ वेतन से अधिक। घूँस या रिशवत के रूप में। ४ प्रत्यक्ष में। दिखाने के लिये। जाहिरी तौर पर।
ऊपरी–वि० [हिं० ऊपर] १ ऊपर का। २ बाहर का। बाहरी। ३ बँधे हुए के सिवा। ४ दिखौआ। नुमाइशी।
ऊब–संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊबना] कुछ काल तक एक ही अवस्था में रहने से चित्त की व्याकुलता। उद्वेग। घबराहट।
संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊभ] उत्साह। उमंग।
ऊबट–संज्ञा पुं० [सं० उद् = बुरा + वर्त्म, प्रा० वट्ट = मार्ग] कठिन मार्ग। अटपट रास्ता।
वि० ऊबड़-खाबड़। ऊँचा नीचा।
ऊबड़ खाबड़–वि० [अनु०] ऊँचा-नीचा। जो समथल न हो। अटपट।
ऊबना–क्रि० अ० [सं० उद्वेजन] उकताना। घबराना। अकुलाना।
ऊभ*–वि० [हिं० उभना = खड़ा होना] ऊँचा। उभरा हुआ। उठा हुआ।
संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊब] १ व्याकुलता। २ उमस। गरमी। ३ हौसला। उमंग।
ऊभना*–क्रि० अ० [सं० उद्भवन] उठना।
ऊमक*–संज्ञा स्त्री० [सं० ऊर्मि] झोंक। उठान। वेग।
ऊरज–वि० संज्ञा पुं० दे० "ऊर्ज"।
ऊरध*–वि० दे० "ऊर्ध्व"।

ऊरु–संज्ञा पु० [सं०] जानु । जंघा ।
ऊरुस्तंभ–संज्ञा पु० [सं०] वात का एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं ।
ऊर्ज–वि० [सं०] बलवान् । शक्तिमान् ।
संज्ञा पु० [सं०] [वि० ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वी] १. बल । शक्ति । २. कार्तिक मास । ३. एक काव्यालंकार जिसमें सहायकों के घटने पर भी अहंकार का न छोड़ना वर्णन किया जाता है ।
ऊर्जस्वी–वि० [सं०] १. बलवान् । शक्तिमान् । २. तेजवान् । ३. प्रतापी ।
संज्ञा पु० [सं०] एक काव्यालंकार जो वहाँ माना जाता है जहाँ रसाभास या भावाभास स्थायी भाव का अथवा भाव का अंग हो ।
ऊर्ण–संज्ञा पु० [सं०] भेड़ या बकरी के बाल । ऊन ।
ऊर्द्ध्व–क्रि० वि० [सं०] ऊपर ।
वि० १. ऊँचा । २. खड़ा ।
ऊर्द्ध्वगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुक्ति ।
ऊर्द्ध्वगामी–वि० [सं०] १. ऊपर को जानेवाला । २. मुक्त । निर्वाण-प्राप्त ।
ऊर्द्ध्वचरण–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार के तपस्वी जो सिर के बल खड़े होकर तप करते हैं ।
ऊर्द्ध्वद्वार–संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मरंध्र ।
ऊर्द्ध्वपुंड्र–संज्ञा पु० [सं०] खड़ा तिलक । वैष्णवी तिलक ।
ऊर्द्ध्वबाहु–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार के तपस्वी जो अपनी एक बाहु ऊपर की ओर उठाए रहते हैं ।
ऊर्द्ध्वरेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार राम कृष्ण आदि विष्णु के अवतारों के ४८ चरण चिह्नों में से एक चिह्न ।
ऊर्द्ध्वरेता–वि० [सं०] जो अपने वीर्य्य को गिरने न दे । ब्रह्मचारी ।
संज्ञा पु० १. महादेव । २. भीष्म पितामह । ३. हनुमान् । ४. सनकादि । ५. सन्यासी ।
ऊर्द्ध्वलोक–संज्ञा पु० [सं०] १. आकाश २. वैकुंठ । स्वर्ग ।
ऊर्द्ध्वश्वास–संज्ञा पु० [सं०] १. ऊपर चढ़ती हुई साँस । २. श्वास की कमी या तंगी ।
ऊर्ध–क्रि० वि० वि० दे० "ऊर्ध्व" ।
ऊर्ध्व–क्रि० वि०, वि० दे० "ऊर्द्ध्व" ।
ऊर्मि, ऊर्मी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लहर तरंग । २ पीड़ा । दुःख । ३. छः की संख्या । ४. शिकन । कपड़े की सलवट ।
ऊल जलूल–वि० [देश०] १. असंबद्ध । सिर पैर का । अडबंड । २. अनाड़ी । नासमझ । ३. बेअदब । अशिष्ट ।
ऊषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. । सवेरा २ अरुणोदय । पौ फटने की लाली । ३ बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध से ब्याही गई थी ।
ऊषाकाल–संज्ञा० पु० [सं०] सवेरा ।
ऊष्म–संज्ञा पु० [सं०] १. गरमी । २. भाप ३. गरमी का मौसिम ।
वि० गरम ।
ऊष्म वर्ण–संज्ञा पु० [सं०] "श, ष, स, ह" ये अक्षर ।
ऊष्मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ग्रीष्म काल । २. तपन । गरमी । ३. भाप ।
ऊसर–संज्ञा पुं० [सं० ऊषर] वह भूमि जिसमें रेह अधिक हो और कुछ उत्पन्न न हो ।
ऊह–अव्य० [सं०] १. क्लेश या दुख-सूचक शब्द । ओह । २. विस्मय-सूचक शब्द ।
संज्ञा पु० [सं०] १. अनुमान । विचार । २. तर्क । दलील । ३. किंवदंती । अफ़वाह ।
ऊहापोह–संज्ञा पु० [सं० ऊह + अपोह] तर्क वितर्क । सोच-विचार ।

ऋ

ऋ–एक स्वर जो वर्णमाला का सातवाँ वर्ण है । इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है ।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवमाता । अदिति । २. निंदा । बुराई ।
ऋक्–संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋचा । वेदमंत्र ।
संज्ञा पु० दे० "ऋग्वेद" ।
ऋक्ष–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० ऋक्षी] भालू । २. तारा । नक्षत्र । ३. मेष,

आदि राशियाँ।
ऋक्षपति–संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २. जांबवान।
ऋक्षवान–संज्ञा पुं० [सं०] ऋक्ष पर्वत जो नर्मदा के किनारे से गुजरात तक है।
ऋग्वेद–संज्ञा पुं० [सं०] चार वेदों में से एक।
ऋग्वेदी–वि० [सं० ऋग्वेदिन्] ऋग्वेद का जानने या पढ़नेवाला।
ऋचा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेदमंत्र जो पद्य में हो। २. वेदमंत्र। कारिका। ३. स्तोत्र।
ऋच्छ–संज्ञा पुं० दे० "ऋक्ष"।
ऋजु–वि० [सं०] [स्त्री० ऋज्वी] १. जो टेढ़ा न हो। सीधा। २ सरल। सुगम। सहज। ३ सरल चित्त का। सज्जन। ४. अनुकूल। प्रसन्न।
ऋजुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीधापन। २ सरलता। सुगमता। ३. सज्जनता।
ऋण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ऋणी] किसी से कुछ समय के लिये कुछ द्रव्य लेना। कर्ज। उधार।
मुहा०–ऋण उतरना=कर्ज अदा होना। ऋण चढ़ाना=जिम्मे रुपया निकलना। ऋण पटाना=उधार लिया हुआ रुपया चुकता करना।
ऋणी–वि० [सं० ऋणिन्] १. जिसने ऋण लिया हो। कर्जदार। देनदार। अधमर्ण। २ उपकार माननेवाला। अनुगृहीत।
ऋतु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राकृतिक अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो दो महीनों के विभाग जो ६ हैं—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमंत, शिशिर। २. रजोदर्शन के उपरांत वह काल जिसमें स्त्रियाँ गर्भ-धारण के योग्य होती हैं।
ऋतुचर्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋतुओं के अनुसार आहार विहार की व्यवस्था।
ऋतुमती–वि० स्त्री० [सं०] १. रजस्वला। पुष्पवती। मासिक-धर्मयुक्ता। २. जिस (स्त्री) के रजोदर्शन के उपरांत के १६ दिन न बीते हों और जो गर्भाधान के योग्य हो।
ऋतुराज–संज्ञा पुं० [सं०] वसंत ऋतु।
ऋतुवती–वि० स्त्री० दे० "ऋतुमती"।
ऋतुस्नान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्त्री० ऋतुस्नाता] रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान।
ऋत्विज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आर्त्विजी] यज्ञ करनेवाला। वह जिसका यज्ञ में वरण किया जाय। इनकी संख्या १६ होती है जिनमें चार मुख्य हैं—(क) होता, (ख) अध्वर्यु, (ग) उद्गाता और (घ) ब्रह्मा।
ऋद्ध–वि० [सं०] सपन्न। समृद्ध।
ऋद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक ओषधि या लता जिसका कंद दवा के काम में आता है। २. समृद्धि। बढ़ती। ३. आर्य्या छंद का एक भेद।
ऋद्धि सिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] समृद्धि और सफलता, जो गणेशजी की दासियाँ मानी जाती हैं।
ऋनिया–वि० [सं० ऋणी] ऋणी।
ऋभु–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गण देवता। २. देवता।
ऋषभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. बैल। २ श्रेष्ठता-वाचक शब्द। ३. राम की सेना का एक बंदर। ३. बैल के आकार का दक्षिण का एक पर्वत। ४. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा। ५. एक जड़ी जो हिमालय पर होती है।
ऋषि–संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद-मंत्रों का प्रकाश करनेवाला। मंत्र-द्रष्टा। २. आध्यात्मिक और भौतिक तत्त्वों का साक्षात्कार करनेवाला।
यौ०–ऋषिऋण=ऋषियों के प्रति कर्त्तव्य। वेद के पठन-पाठन से इससे उद्धार होता है।
ऋष्यमूक–संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का एक पर्वत।
ऋष्यशृंग–संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो विभांडक ऋषि के पुत्र थे।

ए

ए-संस्कृत वर्णमाला का ग्यारहवाँ और नागरी वर्णमाला का आठवाँ स्वर वर्ण। यह अ और इ के योग से बना है, इसी लिये यह कंठतालव्य है।

ऍच पॅच-संज्ञा पु० [फा० पेच] १. उलझाव उलझन। घुमाव। २. टेढ़ी चाल। घात।

एंजिन-संज्ञा पु० दे० "इंजन"।

ऍंडा बेंडा-वि० [हिं० बेंड़ा+अनु० ऐंड़] उलटा सीधा। अंडबंड।

एँड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० एरंड] १ एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जो अंडी के पत्ते खाता है। २ इस कीड़े का रशम। अंडी। मूगा। संज्ञा स्त्री० दे० "एड़ी"।

एँडुआ-संज्ञा पु० [हिं० ऍंड़ना] [स्त्री० अल्पा० एंडुई] गोल मँड़रा जिसे राही की तरह सिर पर रखकर बोझ उठाते हैं। विंड़ुआ। गेंडुरी।

ए-संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।
अव्य० एक अव्यय जिसका प्रयोग संबोधन या बुलाने के लिये करते हैं।
*सर्व० [सं० एष] यह।

एकंग-वि० [सं० एक+अंग] अकेला।

एकंगा-वि० [सं० एक+अंग] [स्त्री० एकंगी] एक ओर का। एकतरफा।

एकंत -वि० दे० "एकांत"।

एक-वि० [सं०] १ एकाइयों में सब से छोटी और पहली संख्या। २ अद्वितीय। बेजोड़। अनुपम। ३ कोई। अनिश्चित। ४ एक ही प्रकार का। समान। तुल्य। मुहा०—एक अंक या आँक=१ एक ही बात। ध्रुव बात। पक्की बात। निश्चय। २. एक बार। एक आध=थोड़ा। कम। इक्का दुक्का। एक आँख से देखना=सबके साथ समान भाव रखना। एक आँख न भाना=तनिक भी अच्छा न लगना। एक एक=१. हर एक। प्रत्येक। सब। २ अलग अलग। पृथक् पृथक्। एक एक करके=एक के पीछे दूसरा। धीरे धीरे। एक-कलम=बिलकुल। सब। अपनी और किसी की जान एक करना=१. किसी की और अपनी सी दशा एक करना। २ मारना और मर जाना। एक टक=१ अनिमेष। स्थिर दृष्टि से। नजर गड़ाकर। २. लगातार देखते हुए। एकताक=समान। बराबर। तुल्य। एकतार=१. एक ही रूप रंग का। समान। बराबर। २. सम भाव से। बराबर। लगातार। एक तो=पहले तो। पहली बात तो यह कि। एक-दम=१. बिना रुके। लगातार। २ फौरन। उसी समय। ३ एकबारगी। एक साथ। एक-दिल=१. खूब मिला जुला। २. एक ही विचार का। अभिन्नहृदय। एक दूसरे का, को, पर, में, से=परस्पर। एक न चलना=कोई युक्ति सफल न होना। एक पेट के=एक ही माँ से उत्पन्न। सहोदर (भाई)। एकाएक=अकस्मात्। अचानक। एकबारगी एक बात=१ दृढ़ प्रतिज्ञा। २ ठीक बात। सच्ची बात। एक सा=समान। बराबर। एक से एक=एक से एक बढ़कर। एक स्वर से कहना या बोलना=एक मत होकर कहना। एक होना=१ मिलना-जुलना। मेल करना। २ तद्रूप होना।

एक चक्र-संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य का रथ। २ सूर्य।
वि० चक्रवर्ती।

एकछत्र-वि० [सं०] बिना और किसी के आधिपत्य का (राज्य)। जिसमें कहीं और किसी का राज्य या अधिकार न हो।
क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ।
संज्ञा पु० [सं०] वह राज्य प्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार अकेले एक पुरुष को प्राप्त होता है।

एकज-संज्ञा पु० [सं०] १. जो द्विज न हो। शूद्र। २ राजा।
वि० [सं० एक+एव] एक ही।

एकजद्दी-वि० [फा०] जो एक ही पूर्व से उत्पन्न हुए हों। सपिंड या सगोत्र।

एकजन्मा-संज्ञा पु० [सं०] १. शूद्र २ राजा।

एकड़-संज्ञा पु० [अं०] पृथिवी की एक माप जो १ 1/4 बीघे के बराबर होती है।

एकडाल-संज्ञा पु० [हिं० एक+डाल] वह कटार या छुरा जिसका फल और बेंट एक ही लोहे का हो।

एकतः-क्रि० वि० [सं०] एक ओर से।

एकत्र-क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

एकतरफा-वि० [फा०] १ एक ओर का। एक पक्ष का। २. जिसमें तरफ

दारी की गई हो। पक्षपातग्रस्त। ३. एकरुखा। एक पार्श्व का।
मुहा०—एकतरफ़ा डिगरी=वह डिगरी जो मुद्दालेह के हाज़िर न होने के कारण मुद्दई को प्राप्त हो।
एकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐक्य। मेल। २. समानता। बराबरी।
वि० [फा०] अद्वितीय। बेजोड़। अनुपम।
एकतान—वि० [सं०] १. तन्मय। लीन। एकाग्र चित्त। २. मिलकर एक।
एकतारा—संज्ञा पु० [हिं० एक+तार] एक तार का सितार या बाजा।
एकतालीस—वि० [सं० एकचत्वारिंशत्] गिनती में चालीस और एक।
संज्ञा पुं० ४१ की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ४१।
एकतीस—वि० [सं० एकत्रिंश] गिनती में तीस और एक।
संज्ञा पु० ३१ की संख्या का बोधक अंक। ३१।
एकत्र—क्रि० वि० [सं०] इकट्ठा। एक जगह।
एकत्रित—वि० दे० "एकत्र"।
एकदंत—संज्ञा पु० [सं०] गणेश।
एकदा—क्रि० वि० [सं०] एक बार।
एक देशीय—वि० [सं०] जो एक ही अवसर या स्थल के लिये हो। जो सर्वत्र न घटे।
एकनयन—वि० [सं०] काना। एकाक्ष।
संज्ञा पु० १. कौवा। २. कुबेर।
एकनिष्ठ—वि० [सं०] जिसकी निष्ठा एक में हो। एक ही पर श्रद्धा रखनेवाला।
एकन्नी—संज्ञा स्त्री० [हिं०एक+आना] निकल धातु का एक आने मूल्य का सिक्का।
एकपक्षीय—वि० [सं०] एक ओर का। एकतरफ़ा।
एकपत्नी व्रत—वि० [सं०] एक को छोड़ दूसरी स्त्री से विवाह या प्रेम-संबंध न करनेवाला।
संज्ञा पु० एक ही पत्नी रखने का नियम।
एकबारगी—क्रि० वि० [फा०] १ एक ही दफे में। एक ही समय में। २. अचानक। अकस्मात्। ३. बिलकुल। सारा।
एकबाल—संज्ञा पु० [अ०] १. प्रताप। २. भाग्य। सौभाग्य। ३. स्वीकार।
एकभुक्त—वि० [सं०] जो रात-दिन में केवल एक बार भोजन करे।
एकमत—वि० [सं०] एक या समान मत रखनेवाले। एक राय के।
एकमात्रिक—वि० [सं०] एक मात्रा का।
एकमुखी—वि० [सं०] एक मुँहवाला।
यौ०—एकमुखी रुद्राक्ष=वह रुद्राक्ष जिसमें फाँकवाली लकीर एक ही हो।
एकरंग—वि० [हिं० एक+रंग] १. समान। तुल्य। २. कपट-शून्य। साफ़ दिल का। ३. जो चारों ओर एक सा हो।
एकरदन—संज्ञा पु० [सं०] गणेश।
एकरस—वि० [सं०] एक ढंग का। समान।
एकरार—संज्ञा पु० [अ०] १. स्वीकार। स्वीकृति। मंजूरी। २. प्रतिज्ञा। वादा।
यौ०—एकरारनामा=वह पत्र जिसमें दो या अधिक पुरुष परस्पर कोई प्रतिज्ञा करें। प्रतिज्ञापत्र।
एकरूप—वि० [सं०] १. समान आकृति का। एक ही रंग ढंग का। २. ज्यों का त्यों। वैसा ही। कोरा।
एकरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समानता। एकता। २. सायुज्य मुक्ति।
एकला†—वि० दे० "अकेला"।
एकलिंग—संज्ञा पु० [सं०] १. शिव का एक नाम। २. एक शिवलिंग जो मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के प्रधान कुलदेव हैं।
एकलौता—वि० [हिं० एकला+पुत्र] [स्त्री० एकलौती] अपने माँ-बाप का एक ही (लड़का)। जिसके और भाई बहन न हों।
एकवचन—संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता हो।
एकवाँझ—संज्ञा स्त्री० [हिं० एक+बाँझ] वह स्त्री जिसे एक बच्चे के पीछे और दूसरा बच्चा न हुआ हो। काकवंध्या।
एकवाक्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐकमत्य। लोगों के मत का परस्पर मिल जाना।
एकवेणी—वि० [सं०] १. जो (स्त्री) एक ही चोटी बनाकर बालों को किसी प्रकार समेट ले। २. वियोगिनी। ३. विधवा।
एकसठ—वि० [सं० एकषष्ठि] साठ और एक।
संज्ञा पु० वह अंक जिससे एकसठ की संख्या का बोध होता है। ६१।
एकसर†—वि० [हिं० एक+सर (प्रत्य०)] १. अकेला। २. एक पल्ले का।
वि० [फा०] बिलकुल। तमाम।
एकसाँ—वि० [फा०] बराबर। समान।

एकहत्तर-वि० [स० एकसप्तति] सत्तर और एक।
संज्ञा पुं० सत्तर और एक की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ७१।

एकहत्था-वि० [हिं० एक + हाथ] (काम या व्यवसाय) जो एक ही के हाथ में हो।

एकहरा-वि० [स० एक + हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० एकहरी] १ एक परत का। जैसे एकहरा अंगा। २ एक लड़ी का।
यौ०—एकहरा बदन=दुबला पतला शरीर।

एकांग-वि० [स०] जिसे एक ही अंग हो।

एकांगी-वि० [सं०] १ एक पक्ष का। एक तरफा। २ हठी। जिद्दी।

एकांत-वि० [स०] १ अत्यंत। बिलकुल। २ अलग। अकेला। ३ निर्जन। सूना।
संज्ञा पुं० [स०] निराला। सूना स्थान।

एकांत कैवल्य-संज्ञा पुं० [स०] मुक्ति का एक भेद। जीवन मुक्ति।

एकांतता-संज्ञा स्त्री० [स०] अकेलापन।

एकांतवास-संज्ञा पुं० [स०] [वि० एकांत वासी] निर्जन स्थान या अकेले में रहना।

एकांतिक-वि० [स०] जो एक ही स्थल के लिये हो। जो सर्वत्र न घटे। एक देशीय।

एकांती-संज्ञा पुं० [स०] वह भक्त जो भगवत्प्रेम को अपने अंतःकरण में रखता है, प्रकट नहीं करता फिरता।

एका—संज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा।
संज्ञा पुं० [स० एक] ऐक्य। एकता। मेल। अभिसंधि।

एकाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० एक + आई (प्रत्य०)] १ एक का भाव। एक का मान। २ वह मात्रा जिसके गुणन या विभाग से और दूसरी मात्राओं का मान ठहराया जाता है। ३ अंकों की गिनती में पहले अंक का स्थान। ४ उस स्थान पर लिखा जानेवाला अंक।

एकाएक-क्रि० वि० [हिं० एक] अकस्मात्। अचानक। सहसा।

एकाएकी†—क्रि० वि० दे० "एकाएक"।
वि० [स० एकाकी] अकेला। तनहा।

एकाकार-संज्ञा पुं० [स०] मिल मिलाकर एक होने की दशा। एकमय होना।
वि० एक आकार का। समान।

एकाकी-वि० [स० एकाकिन्] [स्त्री० एकाकिनी] अकेला। तनहा।

एकाक्ष-वि० [सं०] काना।
यौ०—एकाक्ष रुद्राक्ष=एकमुखी रुद्राक्ष।
संज्ञा पुं० १ कौआ। २ शुक्राचार्य।

एकाक्षरी-वि० [स० एकाक्षरिन्] एक अक्षर का। जिसमें एक ही अक्षर हो।
यौ०—एकाक्षरी कोश=वह कोश जिसमें अक्षरों के अलग अलग अर्थ दिए हों। जैसे अ से वासुदेव इ से कामदेव इत्यादि।

एकाग्र-वि० [स०] [संज्ञा एकाग्रता] १ एक ओर स्थिर। चंचलता रहित। २ जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

एकाग्रचित्त-वि० [स०] जिसका ध्यान बँधा हो। स्थिरचित्त।

एकाग्रता-संज्ञा स्त्री० [स०] चित्त का स्थिर होना। अचंचलता।

एकात्मता-संज्ञा स्त्री० [स०] १ एकता। अभेद। २ मिल मिलाकर एक होना।

एकादश-वि० [स०] ग्यारह।

एकादशाह-संज्ञा पुं० [स०] मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का कृत्य। (हिंदू)

एकादशी-संज्ञा स्त्री० [स०] प्रत्येक चांद्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जो व्रत का दिन है।

एकाधिपत्य-संज्ञा पुं० [स०] एक मात्र अधिकार। पूर्ण प्रभुत्व।

एकार्थक-वि० [स०] समानार्थक।

एकावली-संज्ञा स्त्री० [स०] १ एक अलंकार जिसमें पूर्व का और पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेषण भाव से स्थापन अथवा निषेध दिखलाया जाय। २ एक छंद। पंकज वाटिका। ३ एक लड़ का हार।

एकाह-वि० [स०] एक दिन में पूरा होने वाला। जैसे—एकाह पाठ।

एकीकरण-संज्ञा पुं० [स०] [वि० एकीकृत] मिलाकर एक करना।

एकीभूत-वि० [स०] मिला हुआ। मिश्रित। जो मिलकर एक हो गया हो।

एकेंद्रिय-संज्ञा पुं० [स०] १ सांख्य के अनुसार उचित और अनुचित दोनों प्रकार के विषयों से इंद्रियों को हटाकर उन्हें अपने मन में लीन करनेवाला। २ वह जीव जिसके केवल एक ही इंद्रिय अर्थात् त्वचा मात्र होती है। जैसे—जोंक, केंचुआ।

एकोतरसो-वि० [स० एकोत्तरशत] एक सौ एक।

एकोद्दिष्ट (श्राद्ध)–संज्ञा पुं० [सं०] वह श्राद्ध जो एक के उद्देश से किया जाय।
एकौक्षा †–वि० [सं० एक] अकेला।
एक्का–वि० [हिं० एक + का (प्रत्य०)] १. एक से संबंध रखनेवाला। २. अकेला।
यौ०—एक्का दुक्का = अकेला दुकेला।
संज्ञा पुं० १. वह पशु या पक्षी जो झुंड छोड़कर अकेला चरता या घूमता हो। २. एक प्रकार की दो पहिए की गाड़ी जिसमें एक बैल या घोड़ा जोता जाता है। ३. वह सिपाही जो अकेले बड़े बड़े काम कर सकता हो। ४. ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। एक्की।
एक्कावान–संज्ञा पुं० [हिं० एक्का + वान (प्रत्य०)] एक्का हाँकनेवाला।
एक्की–संज्ञा स्त्री० [हिं० एक] १. वह बैल-गाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाय। २. ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। एक्का।
एक्यानवे–वि० [सं० एकनवति, प्रा० एक्काउइ] नब्बे और एक।
संज्ञा पुं० नब्बे और एक की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ९१।
एक्यावन–वि० [सं० एकपंचाश, प्रा० एक्कावन्न] पचास और एक।
संज्ञा पुं० पचास और एक की संख्या का बोधक अंक। ५१।
एक्यासी–वि० [सं० एकाशीति, प्रा० एक्कासि] अस्सी और एक।
संज्ञा पुं० एक और अस्सी की संख्या का बोधक अंक। ८१।
एखनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मांस का रसा या शोरबा।
एड़–संज्ञा स्त्री० [सं० एडूक] एड़ी।
मुहा०—एड़ करना = १. एड़ लगाना। २. चल देना। रवाना होना। एड़ देना या लगाना = १. लात मारना। २. घोड़े को आगे बढ़ाने के लिये एड़ से मारना। ३. उकसाना। उत्तेजित करना। ४. बाधा डालना।
एड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० एडूक = हड्डी] टखनी के पीछे पैर की गद्दी का निकला हुआ भाग। एड़।
मुहा०—एड़ी घिसना या रगड़ना = १. एड़ी को मल-मलकर धोना। २. बहुत दिनों से क्लेश या बीमारी में पड़े रहना। एड़ी से चोटी तक = सिर से पैर तक।

एतद्–सर्व० [सं०] यह।
एतद्देशीय–वि० [सं०] इस देश से संबंध रखनेवाला। इस देश का।
एतबार–संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास। प्रतीति।
एतराज–संज्ञा पुं० [अ०] विरोध। आपत्ति।
एतवार–संज्ञा पुं० दे० "इतवार"।
एता † –वि० [सं० इयत्] [स्त्री० एती] इस मात्रा का। इतना।
एतादृश–वि० [सं०] ऐसा।
एतिक †–वि० स्त्री० [हिं० एती + एक] इतनी।
एमन–संज्ञा पुं० [सं० यवन, फा० यमन] संपूर्ण जाति का एक राग।
एरंड–संज्ञा पुं० [सं०] रेंड। रेंडी।
एराक–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० एराकी] अरब का एक प्रदेश जहाँ का घोड़ा अच्छा होता है।
एराकी–वि० [फा०] एराक का।
संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसकी नस्ल एराक देश की हो।
एलची–संज्ञा पुं० [तु०] वह जो एक राज्य का संदेसा लेकर दूसरे राज्य में जाता है। दूत। राजदूत।
एला–संज्ञा स्त्री० [सं०] इलायची।
एलुवा–संज्ञा पुं० [अ० एलो] मुसब्बर।
एव–क्रि० वि० [सं०] ऐसा ही। इसी प्रकार।
यौ०—एवमस्तु = ऐसा ही हो।
अव्य० ऐसे ही और। इसी प्रकार और।
एव–अव्य० [सं०] १. एक निश्चयार्थक शब्द। ही। २. भी।
एवज–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रतिफल। प्रतिकार। २. परिवर्त्तन। बदला। ३. दूसरे की जगह पर कुछ काल तक के लिये काम करनेवाला। स्थानापन्न पुरुष।
एवजी–संज्ञा स्त्री० [अ० एवज] दूसरे की जगह पर कुछ काल के लिये काम करनेवाला आदमी। स्थानापन्न पुरुष।
एष †–सर्व० [सं० एष] यह।
वि० यह।
एहतियात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. [illegible] धानी। होशियारी। २. परहेज़।
एहसान–संज्ञा पुं० [अ०] उपकार। [illegible] ज्ञता। निहोरा।
एहसानमंद–वि० [अ०] [illegible] कार माननेवाला। कृतज्ञ।

एहि–सर्व० [हिं० एह] "एह" का वह रूप जो उसे विभक्ति के पहले प्राप्त होता है। इसको।

एहो–अव्य० संबोधन शब्द। हे। ऐ।

ऐ

ऐ–संस्कृत वर्णमाला का बारहवाँ और हिंदी या देवनागरी वर्णमाला का नवाँ स्वर वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ और तालु है।

ऐँ–अव्य० [अनु०] १. एक अव्यय जिसका प्रयोग अच्छी तरह न सुनी या समझी हुई बात को फिर से कहलाने के लिये होता है। २. एक आश्चर्यसूचक अव्यय।

ऐँचना–क्रि० स० [हिं० खींचना] १. खींचना। तानना। २. दूसरे का कर्ज़ अपने जिम्मे लेना। ओढ़ना।

ऐँचा ताना–वि० [हिं० ऐँचना + तानना] जिसकी पुतली ताकने में दूसरी ओर को खिँचती हो। भेंगा।

ऐँचातानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ऐँचना + तानना] खींचा-खींची। अपने अपने पक्ष का आग्रह।

ऐँछना –क्रि० स० [सं० उञ्छन = चुनना] १. झाड़ना। साफ करना। २. (बालों में) कंघी करना। ऊँछना।

ऐँठ–संज्ञा स्त्री० [हिं० ऐंठन] १. अकड़। ठसक। २. गर्व। घमंड। ३. कुटिल भाव। द्वेष। विरोध। दुर्भाव।

ऐँठन–संज्ञा स्त्री० [सं० आवेष्टन] १. घुमाव। लपेट। पेच। मरोड़। बल। २. खिंचाव। अकड़ाव। तनाव।

ऐँठना–क्रि० स० [सं० आवेष्टन] १. घुमाव देना। बल देना। मरोड़ना। २. दबाव डालकर या धोखा देकर लेना। मूँसना।
क्रि० अ० १. बल खाना। घुमाव के साथ तनना। २. तनना। खिंचना। अकड़ना। ३. मरना। ४. अकड़ दिखाना। घमंड करना। ५. टेढ़ी बातें करना। टर्राना।

ऐँठवाना–क्रि० स० [हिं० ऐँठना का प्रे०रूप] ऐँठने का काम दूसरे से करवाना।

ऐँड़–संज्ञा पु० [हिं० ऐँठ] १. ऐँठ। ठसक। गर्व। २. पानी का भँवर।
वि० निकम्मा। नष्ट।

ऐँड़दार–वि० [हिं० ऐँड़ + फा० दार] १. ठसकवाला। गर्वीला। घमंडी। २. शानदार। बाँका तिरछा।

ऐँड़ना–क्रि० अ० [हिं० ऐँठना] १. ऐँठना बल खाना। २. अँगड़ाना। अँगड़ाई लेना ३. इतराना। घमंड करना।
क्रि० स० १. ऐँठना। बल देना। २ बदन तोड़ना। अँगड़ाना।

ऐँड़बैँड़ –वि० [हिं० बेंड़ी + ऐँड़ी (अनु०) टेढ़ा। तिरछा। दे० "ऐँड़ा बेंड़ा"।

ऐँड़ा–वि० [हिं० ऐँड़ना] [स्त्री० ऐँड़ी टेढ़ा। ऐँठा हुआ।
मुहा०—अंग ऐँड़ा करना = ऐँठ दिखाना

ऐंड़ाना–क्रि० अ० [हिं० ऐँड़ना] १. अँगड़ाना। अँगड़ाई लेना। बदन तोड़ना २. इठलाना। अकड़ दिखाना।

ऐंद्रजालिक–वि० [सं०] इंद्रजाल करनेवाला। मायावी।

ऐंद्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्राणी। शची २. दुर्गा। ३. इंद्रवारुणी। ४. इलायची।

ऐ–संज्ञा पु० [सं०] शिव।
अव्य० [सं० अयि या हे] एक संबोधन।

ऐक्य–संज्ञा पु० [सं०] १. एक का भाव। एकत्व। २. एका। मेल।

ऐगुन †–संज्ञा पु० दे० "अवगुण"।

ऐच्छिक–वि० [सं०] जो अपनी इच्छा पर हो।

ऐतन–अव्य० [अ०] तथा। तथैव। वही।

ऐत °–वि० दे० "इतना"।

ऐतरेय–संज्ञा पु० [सं०] १. ऋग्वेद का एक ब्राह्मण। २. एक आरण्यक।

ऐतिहासिक–वि० [सं०] १. इतिहास-संबंधी। जो इतिहास से हो। २. जो इतिहास जानता हो।

ऐतिह्य–संज्ञा पु० [सं०] परंपरा प्रसिद्ध प्रमाण। वह प्रमाण कि लोक में बराबर बहुत दिनों से ऐसा सुनते आए हैं।

ऐन–संज्ञा पु० दे० "अयन"
वि० [अ०] १. ठीक। उपयुक्त। सटीक। २ बिलकुल। पूरा पूरा।

ऐनक–संज्ञा स्त्री० [अ० ऐन = आँख] आँख में

लगाने का चश्मा।

ऐपन–संज्ञा पुं० [सं० लेपन] हल्दी के साथ गीला पिसा चावल जिससे देवताओं की पूजा में थापा लगाते हैं।

ऐब–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० ऐबी] १. दोष। दूषण। नुक्स। २. अवगुण। कलंक।

ऐबी–वि० [अ०] १. खोटा। बुरा। २. नटखट। दुष्ट। ३. विकलांग, विशेषतः काना।

ऐया–संज्ञा स्त्री० [सं० आर्या, प्रा० अज्जा] १. बड़ी बूढ़ी स्त्री। २. दादी।

ऐयार–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० ऐयारा] चालाक। धूर्त्त। उस्ताद। धोखेबाज़। छली।

ऐयारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] चालाकी। धूर्त्तता।

ऐयाश–वि० [अ०] [संज्ञा ऐयाशी] १. बहुत ऐश या आराम करनेवाला। २. विषयी। लंपट। इंद्रियलोलुप।

ऐयाशी–संज्ञा स्त्री० [अ०] विषयासक्ति। भोग-विलास।

ऐरा गैरा–वि० [अ० ग़ैर] १. बेगाना। अजनबी (आदमी)। २. तुच्छ। हीन।

ऐराक–संज्ञा पुं० दे० "एराक़"।

ऐरापति–संज्ञा पुं० दे० "ऐरावत"।

ऐरावत–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ऐरावती] १. बिजली से चमकता हुआ बादल। २. इन्द्र-धनुष। ३. बिजली। ४. इंद्र का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज है।

ऐरावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐरावत हाथी की हथिनी। २. बिजली। ३. रावी नदी।

ऐल–संज्ञा पुं० [सं०] इला का पुत्र पुरूरवा। संज्ञा पुं० [हिं० अहिला] १. बाढ़। बूड़ा। २. अधिकता। बहुतायत। ३. कोलाहल।

ऐश–संज्ञा पुं० [अ०] आराम। चैन। भोग-विलास।

ऐश्वर्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. विभूति। धन-संपत्ति। २. अणिमादिक सिद्धियाँ। ३. प्रभुत्व। आधिपत्य।

ऐश्वर्यवान्–वि० [सं०] [स्त्री० ऐश्वर्यवती] वैभवशाली। संपत्तिवान्। संपन्न।

ऐस†–वि० दे० "ऐसा"।

ऐसा–वि० [सं० ईदृश] [स्त्री० ऐसी] इस प्रकार का। इस ढंग का। इसके समान। मुहा०–ऐसा तैसा या ऐसा वैसा=साधारण। तुच्छ। अदना।

ऐसे–क्रि० वि० [हिं० ऐसा] इस ढब से। इस ढंग से। इस तरह से।

ऐहिक–वि० [सं०] इस लोक से संबंध रखनेवाला। सांसारिक। दुनियवी।

ओ

ओ–संस्कृत वर्णमाला का तेरहवाँ और हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर-वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और कंठ है।

ओं–अव्य० [अनु०] १. अर्द्धस्वीकार या स्वीकृतिसूचक शब्द। हाँ। अच्छा। तथास्तु। २. परब्रह्म-वाचक शब्द जो प्रणव मंत्र कहलाता है।

ओंइछना–क्रि० स० [सं० अंचन] वारना। निछावर करना।

ओंकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. परमात्मा का सूचक "ओं" शब्द। २. सोहन चिड़िया।

ओंगना–क्रि० स० [सं० अंजन] गाड़ी की धुरी में चिकनाई लगाना जिससे पहिया आसानी से फिरे।

ओंठ–संज्ञा पुं० [सं० ओष्ठ, प्रा० ओट्ठ] मुँह की बाहरी उभरी हुई कोर जिनसे दाँत ढके रहते हैं। लब। होंठ। मुहा०–ओंठ चबाना=क्रोध और दुःख प्रकट करना। ओंठ चाटना=किसी वस्तु के खा चुकने पर स्वाद के लालच से ओठों पर जीभ फेरना। ओंठ फड़कना=क्रोध के कारण ओठ काँपना।

ओंड़ा–वि० [सं० कुंड] गहरा। संज्ञा पुं० १. गड्ढा। गढ़ा। २. चोरों की खोदी हुई सेंध।

ओ–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। अव्य० १. एक संबोधन-सूचक शब्द। २. विस्मय या आश्चर्य-सूचक शब्द। ओह। ३. एक स्मरण-सूचक शब्द।

ओक–संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। निवास-स्थान। २. आश्रय। ठिकाना। ३. नक्षत्रों या ग्रहों का समूह। संज्ञा स्त्री० [अनु०] मतली। कै।

संज्ञा पु० [हिं० बूक] अंजली ।

ओकना-क्रि० अ० [अनु०] १ कै करना । २ भैंस की तरह चिल्लाना ।

ओकपति-संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य । २ चंद्रमा ।

ओकाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० ओकना] वमन । कै ।

ओकारांत-वि० [सं०] जिसके अंत में "ओ" अक्षर हो । जैसे, फोटो ।

ओखद-संज्ञा पु० दे० "औषध" ।

ओखली-संज्ञा स्त्री० [सं० उदूखल] ऊखल । मुहा०—ओखली में सिर देना = कष्ट सहने पर उतारू होना ।

ओखा -संज्ञा पु० [सं० ओख] मिस । बहाना । हीला ।

वि०[सं० ओख = सूखना] १ रूखा सूखा । २ कठिन । विकट । टेढ़ा । ३ खोटा । जो शुद्ध या खालिस न हो । 'चोखा' का उलटा । ४ झीना । विरल ।

ओग -संज्ञा पु० [हिं० उगहना] कर । चंदा ।

ओघ-संज्ञा पु० [सं०] १ समूह । ढेर । २ किसी वस्तु का घनत्व । ३ बहाव । धारा । ४ "काल पाके सब काम आपही हो जायगा" इस प्रकार संतोष । काल तुष्टि । (सांख्य)

ओछा-वि० [सं० तुच्छ] १ जो गंभीर या उच्चाशय न हो । तुच्छ । क्षुद्र । छिछोरा । २ जो गहरा न हो । छिछला । ३ हलका । जोर का नहीं । ४ छोटा । कम ।

ओछाई-संज्ञा स्त्री० दे० "ओछापन" ।

ओछापन-संज्ञा पु० [हिं० ओछा + पन (प्रत्य०)] नीचता । क्षुद्रता । छिछोरापन ।

ओज-संज्ञा पु० [सं० ओजस्] १ बल । प्रताप । तेज । २ उजाला । प्रकाश । ३ कविता का वह गुण जिससे सुननेवाले के चित्त में वीरता आदि का आवेश उत्पन्न हो । ४ शरीर के भीतर के रसों का सार भाग ।

ओजस्विता-संज्ञा स्त्री० [सं०] तेज । कांति । दीप्ति । प्रभाव ।

ओजस्वी-वि० [सं० ओजस्विन्] [स्त्री० ओजस्विनी] शक्तिवान् । प्रभावशाली ।

ओझ-संज्ञा पु० [सं० उदर हिं० ओझल] १ पेट की थैली । पेट । २ आँत ।

ओझर-संज्ञा पु० [सं० उदर] पेट ।

ओझल-संज्ञा पु० [सं० अवरुधन प्रा० आल्कझन] ओट । आड़ ।

ओझा-संज्ञा पु० [सं० उपाध्याय] १ सरजूपारी, मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति । २ भूत प्रेत झाड़नेवाला । सयाना ।

ओझाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० ओझा] ओझा की वृत्ति । भूत प्रेत झाड़ने का काम ।

ओट-संज्ञा स्त्री० [सं० उट = घास फूस] १ रोक जिससे सामने की वस्तु दिखाई न पड़े । व्यवधान । आड़ । मुहा०—ओट में = बहाने से । हीले से । २ आड़ करनेवाली वस्तु । ३ शरण । पनाह । रक्षा ।

ओटना-क्रि० स० [सं० आवर्तन] १ कपास को चरखी में दबाकर रूई और बिनौले को अलग करना । २ अपनी ही बात कहते जाना ।

क्रि० स० [हिं० ओट] अपने ऊपर सहना ।

ओटनी, ओटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० ओटना] कपास ओटने की चरखी । बेलनी ।

ओठँगना-क्रि० अ० [सं० अवस्थान + अंग] १ किसी वस्तु से टिककर बैठना । सहारा लेना । टेक लगाना । २ थोड़ा आराम करना । कमर सीधी करना ।

ओठँगाना-क्रि० स० [हिं० ओठँगना] १ सहारे से टिकाना । भिड़ाना । २ किवाड़ बंद करना ।

ओड़न -संज्ञा पु० [हिं० ओड़ना] १ ओड़ने की वस्तु । वार रोकने की चीज । २ ढाल । फरी ।

ओड़ना-क्रि० स० [हिं० ओट] १ रोकना । धारण करना । ऊपर लेना । २ (कुछ लेने के लिये) फैलाना । पसारना ।

ओड़व-संज्ञा पु० [सं०] रागों की एक जाति । वह राग जिसमें पाँच स्वर हों ।

ओड़ा-संज्ञा पु० १ दे० "औंड़ा" । २ टोकरा । खाँचा ।

संज्ञा पुं० कमी । टोटा ।

ओड़्र-संज्ञा पु० [सं०] १ उड़ीसा देश । २ उस देश का निवासी ।

ओढ़ना-क्रि० स० [सं० उपवेष्टन] १ शरीर के किसी भाग को वस्त्र आदि से आच्छादित करना । २ अपने सिर लेना । अपने ऊपर लेना । जिम्मे लेना ।

संज्ञा पु० ओढ़ने का वस्त्र ।

ओढ़नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओढ़ना] स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र । उपरैनी । फरिया ।

ओढ़र†–संज्ञा पुं० [हिं० ओढ़ना] बहाना ।

ओढ़ाना–क्रि० स० [हिं० ओढ़ना] ढाँकना । कपड़े से आच्छादित करना ।

ओत–संज्ञा स्त्री० [सं० अवधि] १. आराम । चैन । †२ आलस्य । ३. किफ़ायत

संज्ञा स्त्री० [हिं० आवत] प्राप्ति । लाभ ।

वि० [सं०] बुना हुआ ।

ओत प्रोत–वि० [सं०] बहुत मिला-जुला । *इतना मिला हुआ कि उसका अलग करना असम्भव सा हो ।*

संज्ञा पुं० ताना बाना ।

ओता†–वि० दे० "उत्ता" ।

ओद–संज्ञा पुं० [सं० आर्द्र] नमी । तरी ।

वि० गीला । तर । नम ।

ओदन–संज्ञा पुं० [सं०] पका हुआ चावल ।

ओदरना†–क्रि० अ० [हिं० ओदारना] १ विदीर्ण होना । फटना । २. छिन्न भिन्न होना । नष्ट होना ।

ओदा–वि० [सं० उद = जल] गीला । नम ।

ओदारना†–क्रि० स० [सं० अवदारण] १. विदीर्ण करना । फाड़ना । २. छिन्न-भिन्न करना । नष्ट करना ।

ओनचन–संज्ञा स्त्री० [हिं० ऐंचना] वह रस्सी जो चारपाई के पायताने की ओर बुनावट को खींचकर कड़ा रखने के लिये लगी रहती है ।

ओनचना–क्रि० स० [हिं० ऐंचना] चारपाई *के पायताने की खाली जगह में लगी हुई* रस्सी को बुनावट कड़ी रखने के लिये खींचना ।

ओनवना†–क्रि० अ० दे० "उनवना" ।

ओना†–संज्ञा पुं० [सं० उद्गमन] तालाब में पानी के निकलने का मार्ग । निकास ।

ओनामासी–संज्ञा स्त्री० [सं० ॐ नमः सिद्धम्] १. अक्षरारंभ । २ प्रारंभ । शुरू ।

ओप–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओपना] १. चमक । दीप्ति । आभा । कांति । शोभा । २. जिला । पालिश । माँजा ।

ओपची–संज्ञा पुं० [सं० ओप] कवचधारी योद्धा । रक्षक योद्धा ।

ओपना–क्रि० स० [सं० आवपन] जिला देना । चमकाना । पालिश करना ।

क्रि० अ० झलकना । चमकना ।

ओफ–अव्य० [अनु०] पीड़ा, खेद, शोक और आश्चर्य-सूचक शब्द । ओह ।

ओम्–संज्ञा पुं० [सं०] प्रणव मंत्र । ओंकार ।

ओर–संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] १. किसी नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार जिसे दाहिना, बायाँ, ऊपर, नीचे आदि शब्दों से निश्चित करते हैं । तरफ़ । दिशा । २. पक्ष ।

संज्ञा पुं० १. सिरा । छोर । किनारा ।

मुहा०—ओर निभाना या निबाहना = अंत तक *अपना कर्त्तव्य पूरा करना ।*

२. आदि । आरंभ ।

ओरहा–संज्ञा दे० "होरहा" ।

ओराना†–क्रि० अ० [हिं० ओर = अंत + आना] समाप्त होना । खतम होना ।

ओराहना†–संज्ञा पुं० दे० "उलाहना" ।

ओरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओरौती] ओलती ।

ओलंदेज़, ओलंदेज़ी–वि० [हालैंड देश] हालैंड देश संबंधी । हालैंड देश का ।

ओलंभा, ओलंभा–संज्ञा पुं० [सं० उपालंभ] उलाहना । शिकायत । गिला ।

ओल–संज्ञा पुं० [सं०] सूरन । जिमीकंद ।

वि० गीला । ओदा ।

संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड़] १ गोद । २. आड़ । ओट । ३ शरण । पनाह । ४. किसी वस्तु या प्राणी का किसी दूसरे के पास जमानत में उस समय तक के लिये रहना, जब तक उस दूसरे व्यक्ति को कुछ रुपया न दिया जाय या उसकी कोई शर्त न पूरी की जाय । जमानत । ५. वह वस्तु या व्यक्ति जो दूसरे के पास इस प्रकार ज़मानत में रहे ।

६. बहाना । मिस ।

ओलती–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओलमना] ढालुवाँ छप्पर का वह किनारा जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है । ओरी ।

ओलना–क्रि० स० [हिं० ओल] १ परदा करना । ओट में करना । २. आड़ना । रोकना । ३. ऊपर लेना । सहना ।

क्रि० स० [सं० शूल, हिं० हूल] घुसाना ।

ओला–संज्ञा पुं० [सं० उपल] १. गिरते हुए मेह के जमे हुए गोले । ―― । बिनौरी ।

२. मिसी का बना हुआ

वि० ओले के ऐसा ठं

संज्ञा पुं० [हिं० ओल]

२. भेद । गुप्त बात ।

ओलियाना–क्रि० स० [हिं० ओल = गोद] गोद में भरना।
क्रि० स० [हिं० हूलना] घुसाना। ठूँसना।

ओली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओल] १. गोद। २. अंचल। पल्ला।
ओली ओड़ना = आँचल फैलाकर कुछ माँगना।
३. झोली।

ओषधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वनस्पति। जड़ी-बूटी जो दवा में काम आवे। २. पौधे जो एक बार फलकर सूख जाते हैं।

ओषधिपति, ओषधीश–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

ओष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] होंठ। ओंठ। लब।

ओष्ठ्य–वि० [सं०] १. ओंठ संबंधी। २. जिसका उच्चारण ओंठ से हो।
यौ०–ओष्ठ्य वर्ण = उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।

ओस–संज्ञा स्त्री० [सं० अवश्याय] हवा में मिली हुई भाप जो रात की सरदी से जमकर जलबिंदु के रूप में पदार्थों पर लग जाती है। शीत। शबनम।
मुहा०–ओस पड़ना या पड़ जाना=१. कुम्हलाना। बेरौनक हो जाना। २. उमंग बुझ जाना। ३. लज्जित होना। शरमाना।

ओसाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ओसाना] १ ओसाने का काम। २. ओसाने के काम की मजदूरी।

ओसाना–क्रि० स० [सं० आवर्षण] दायँ हुए गल्ले को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा अलग अलग हो जाय। बरसाना। डाली देना।

ओसार–संज्ञा पुं० [सं० अवसार=फैलाव] फैलाव। विस्तार। चौड़ाई।

ओसारा–संज्ञा पुं० [सं० उपशाला] [स्त्री० अल्पा० ओसारी] १. दालान। बरामदा। २. ओसारे की छाजन। सायबान।

ओह–अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य, दुःख या बेपरवाई का सूचक शब्द।

ओहट–संज्ञा स्त्री० दे० "ओट"।

ओहदा–संज्ञा पुं० [अ०] पद। स्थान।

ओहदेदार–संज्ञा पुं० [फा०] पदाधिकारी। हाकिम। अधिकारी।

ओहार–संज्ञा पुं० [सं० अवधार] रथ या पालकी के ऊपर पड़ा हुआ कपड़ा। परदा।

ओहो–अव्य० [सं० अहो] आश्चर्य या आनंद-सूचक शब्द।

औ

औ–संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ और हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है। *यह अ + ओ के संयोग से बना है।*

औंगा–वि० [सं० अवाक्] गूँगा। मूक।

औंगी–संज्ञा स्त्री० [सं० अवाक्] चुप्पी। गूँगापन। खामोशी।

औंगना–क्रि० स० [सं० अंजन] गाड़ी के पहिए की धुरी में तेल देना।

औंघना, औंघाना–क्रि० अ० [सं० अवाङ्] ऊँघना। झपकी लेना।

औंघाई–संज्ञा स्त्री० [सं० अवाङ्=नीचे मुँह] हलकी नींद। झपकी। ऊँघ।

औंजना–क्रि० अ० [सं० आवेजन] ऊबना। व्याकुल होना। घबराना।
क्रि० स० [दे०] ढालना। उँड़ेलना।

औंठ–संज्ञा स्त्री० [सं० ओष्ठ] उठा या उभड़ा हुआ किनारा। बारी।

औंड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कुंड] मिट्टी खोदने या उठानेवाला मजदूर। बेलदार।

औंड़ा–वि० [सं० कुंड] [स्त्री० औंड़ी] गहरा। गंभीर।
वि० [हिं० उमड़ना] उमड़ा हुआ।

औंदना–क्रि० अ० [सं० उन्माद या उद्विग्न] १. उन्मत्त होना। बेसुध होना। २ व्याकुल होना। घबराना। अकुलाना।

औंदाना–क्रि० अ० [सं० उद्विग्न] ऊबना। व्याकुल होना। दम घुटने के कारण घबराना।

औंधना–क्रि० अ० [हिं० औंधा] उलट जाना। उलटा होना।
क्रि० स० उलटा कर देना।

औंधा–वि० [सं० अधोमुख] [स्त्री० औंधी] १. जिसका मुँह नीचे की ओर हो। उलटा। २. पेट के बल लेटा हुआ। पट।

मुहा०—औंधी खोपड़ी का = मूर्ख। जड़। औंधी समझ = उलटी समझ। जड़ बुद्धि। औंधे मुँह गिरना = बेतरह धोखा खाना। ३. नीचा।
संज्ञा पुं० उलटा या चिलड़ा नाम का पक्वान।

औंधाना–क्रि० स० [सं० अधः] १. उलटना। उलट देना। मुँह नीचे की ओर करना (बरतन)। २ नीचा करना। लटकाना।

औ –अव्य० दे० "और"।

औकात–संज्ञा पुं० बहु० [अ० वक्त का बहु०] समय। वक्त।
संज्ञा स्त्री० एक०। १. वक्त। समय। २. हैसियत। बिसात। बिसारत। वित्त।

औगत –संज्ञा स्त्री० [सं० अव+गति] दुर्दशा। दुर्गति।
वि० दे० "अवगत"।

औगी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १ रस्सी बटकर बनाया हुआ कोड़ा। २. बैल हाँकने की छड़ी। पैना।
संज्ञा स्त्री० [सं० अवगर्त्त] जानवरों को फँसाने का गड्ढा जो घास-फूस से ढँका रहता है।

औगुन †–संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"।

औघट: †–वि० दे० "अवघट"।

औघड़–संज्ञा पुं० [सं० अघोर] [स्त्री० औघड़िन] १. अघोर मत का पुरुष। अघोरी। २. काम में सोच-विचार न करनेवाला।
वि० अंड-बंड। उलटा पलटा।

औघर–वि० [सं० अव+घट] १. अटपट। अनगढ़। अंडबंड। 'सुघर' का प्रतिकूल। २. अनोखा। विलक्षण।

औचक–क्रि० वि० [सं० अव+चक = भ्रांति] अचानक। एकाएक। सहसा।

औचट–संज्ञा स्त्री० [सं० अ = नहीं + हिं० उचटना] अड़स। संकट। कठिनता।
क्रि० वि० १. अचानक। अकस्मात्। २ अनचीते में। भूल से।

औचित्य–संज्ञा पुं० [सं०] उचित का भाव। उपयुक्तता।

औज़ार–संज्ञा पुं० [अ०] वे यंत्र जिनसे लोहार, बढ़ई आदि कारीगर अपना काम करते हैं। हथियार। राछ।

औझड़, औझर–क्रि० वि० [सं० अव+हिं० झड़ी] लगातार। निरंतर।

औटना–क्रि० स० [सं० आवर्त्तन] १. दूध या किसी पतली चीज़ को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा करना। खौलाना। २. व्यर्थ घूमना।
क्रि० अ० किसी तरल वस्तु का आँच या गरमी खाकर गाढ़ा होना।

औटाना–क्रि० स० दे० "औटना"।

औठपाव–संज्ञा पुं० दे० "अठपाव"।

औढर–वि० [सं० अव+हिं० ढार या ढाल] जिस ओर मन में आवे, उसी ओर ढल पड़नेवाला। मनमौजी।

औतरना.–क्रि० अ० दे० "अवतरना"।

औतार–संज्ञा पुं० दे० "अवतार"।

औत्सुक्य–संज्ञा पुं० [सं०] उत्सुकता।

औथरा–वि० दे० "उथला"।

औदरिक–वि० [सं०] १. उदर-संबंधी। २. बहुत खानेवाला। पेटू।

औदसा †–संज्ञा स्त्री० दे० "अवदशा"।

औदार्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. उदारता। २. सात्विक नायक का एक गुण।

औदुंबर–वि० [सं०] १. उदुंबर या गूलर का बना हुआ। २. ताँबे का बना हुआ।
संज्ञा पुं० १. गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र। २. एक प्रकार के मुनि।

औद्धत्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. अक्खड़पन। उजड्डपन। २. धृष्टता। ढिठाई।

औद्योगिक–वि० [सं०] उद्योग संबंधी।

औध–संज्ञा पुं० दे० "अवध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।

औधि–संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।

औनि–संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।

औना पौना–वि० [हिं० ऊन (कम) + पौना (¾ भाग)] आधा-तीहा। थोड़ा-बहुत।
क्रि० वि० कमती-बढ़ती पर।

मुहा०—औने पौने करना = जितना दाम मिले उतने पर बेच डालना।

औपचारिक–वि० [सं०] १. उपचार-संबंधी। २. जो केवल कहने सुनने के लिये हो। जो वास्तविक न हो।

औपनिवेशिक–वि० [सं०] १. उपनिवेश संबंधी। २. उपनिवेशों का सा।

औपनिषदिक–वि० [सं०] उपनि— या उपनिषद् के समान।

औपन्यासिक–वि० [सं०] १. विषयक। उपन्यास-संबंधी। २. में वर्णन करने योग्य।
संज्ञा पुं० उपन्यास-लेखक।

औपपत्तिक शरीर–संज्ञा पुं० [सं०] देवलोक और नरक के जीवों का नैसर्गिक या सहज शरीर। लिंग शरीर।

औपसर्गिक–वि० [सं०] उपसर्ग-संबंधी।

औपश्लेषिक (आधार)–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में अधिकरण कारक के अंतर्गत वह आधार जिसके किसी अंश ही से दूसरी वस्तु का लगाव हो।

औम –संज्ञा स्त्री० [सं० अवम] अवम तिथि।

और–अव्य० [सं० अपर] एक संयोजक शब्द। दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला शब्द।
वि० १. दूसरा। अन्य। भिन्न।
मुहा०–और का और=कुछ का कुछ। विपरीत। अंडबंड। **और क्या**=हाँ। ऐसा ही है। (उत्तर में) उत्साहवर्द्धक वाक्य। **और तो और**=दूसरों का ऐसा करना तो उतने आश्चर्य की बात नहीं। **और ही कुछ होना**=सबसे निराला होना। विलक्षण होना। **और तो क्या**=और बातों का तो ज़िक्र ही क्या। २. अधिक। ज्यादा।

औरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्त्री। २. जोरू।

औरस–संज्ञा पुं० [सं०] १२ प्रकार के पुत्रों में सबसे श्रेष्ठ। धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र।
वि० जो अपनी विवाहिता स्त्री से उत्पन्न हो।

औरसना–क्रि० अ० [सं० अव=बुरा+रस] विरस होना। अनखाना। रुष्ट होना।

औरेब–संज्ञा पुं० [सं० अव+रेव=गति] १. वक्र गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट। ३. पेंच। उलझन। ४. पेंच की बात। चाल की बात।

औलाद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ संतान। संतति। २ वंश-परंपरा। नस्ल।

औला मौला–वि० [देश०] मनमौजी।

औलिया–संज्ञा पुं० [अ० वली का बहु०] मुसलमान मत के सिद्ध। पहुँचे हुए फ़कीर।

औवल–वि० [अ०] १. पहला। २ प्रधान। मुख्य। ३. सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।
संज्ञा पुं० आरंभ। शुरू।

औशि –क्रि० वि० दे० "अवश्य"।

औषध–संज्ञा पुं० स्त्री० [सं०] रोग दूर करनेवाली वस्तु। दवा।

औसत–संज्ञा पुं० [अ०] बराबर का परता। समष्टि का सम-विभाग। मामान्य।
वि० माध्यमिक। दरमियानी। साधारण।

औसना–क्रि० अ० [हिं० उमस+ना] १. गरमी पड़ना। उमस होना। २ खाने की चीज़ों का बासी होकर सड़ना। ३. गरमी से व्याकुल होना।

औसर–संज्ञा पुं० दे० "अवसर"।

औसान–संज्ञा [सं० अवसान] १. अंत। २ परिणाम।
संज्ञा पुं० [फा०] सुध-बुध। होश-हवास।

क

क–हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है। इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं।

कं–संज्ञा पुं० [सं० कम्] १. जल। २. मस्तक। ३. सुख। ४. अग्नि। ५. काम।

कंक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कंका, कंकी (हिं०)] १. सफेद चील। काँक। २. एक प्रकार का बड़ा आम। ३. यम। ४. क्षत्रिय। ५. युधिष्ठिर का उस समय का कल्पित नाम जब वे विराट के यहाँ रहे थे।

कंकड़–संज्ञा पुं० [सं० कर्कर] [स्त्री० अल्पा० कंकड़ी] [वि० कँकड़ीला] १. चिकनी मिट्टी और चूने के योग से बने रोड़े जो सड़क बनाने के काम में आते हैं। २. पत्थर का छोटा टुकड़ा। ३. किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो आसानी से न पिस सके। अकड़ा। ४. सूखा या सेंका हुआ तमाकू।

कँकड़ीला–वि० [हिं० कंकड़+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० कँकड़ीली] कंकड़ मिला हुआ।

कंकण–संज्ञा पुं० [सं०] १. कलाई में पहनने का एक आभूषण। कंगन। कड़ा। २. वह धागा जो विवाह के समय से पहले दुलहे या दुलहिन के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं।

कंकरीट–संज्ञा स्त्री० [अं० कांक्रीट] १. चूना, कंकड़, बालू इत्यादि से मिलकर बना हुआ

गच घनाने का मसाला। छुर्रा। बजरी। २. छोटी छोटी कंकड़ी जो सड़कों में बिछाई और कूटी जाती है।
कंकाल-संज्ञा पु० [सं०] ठठरी। अस्थि-पंजर।
कंकोल-संज्ञा पु० [सं०] शीतलचीनी के वृक्ष का एक भेद जिसके फल शीतल चीनी से बड़े और कड़े होते हैं।
कँखवारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख+वारी] वह फोड़िया जो काँख में होती है।
कँखौरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख] १. काँख। २. दे० "कँखवारी"।
कंगन-संज्ञा पु० [सं० कंकण] १. कंकण। २. लोहे का चक्र जिसे अकाली सिख सिर पर बाँधते हैं।
कँगना-संज्ञा पु० [सं० कंकण] [स्त्री० कँगनी] १. दे० "कंकण"। २. वह गीत जो कंकण बाँधते समय गाया जाता है।
कँगनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कँगना] १. छोटा कंगन। २. छत या छाजन के नीचे दीवार में उभड़ी हुई लकीर जो खूबसूरती के लिये बनाई जाती है। कगर। कार्निस। ३. गोल चक्कर जिसके बाहरी किनारे पर दाँत या नुकीले कँगूरे हों।
संज्ञा स्त्री० [सं० कंगु] एक अन्न जिसके चावल खाए जाते हैं। काकुन। टाँगुन।
कंगला-वि० दे० "कंगाल"।
कंगाल-वि० [सं० कङ्काल] १. भुक्खड़। अकाल का मारा। २. निर्धन। दरिद्र।
कंगाली-संज्ञा स्त्री० [हिं० कंगाल] निर्धनता।
कँगूरा-संज्ञा पु० [फा० कुंगरा] [वि० कँगूरेदार] १. शिखर। चोटी। २. किले की दीवार में थोड़ी थोड़ी दूर पर बने हुए ऊँचे स्थान जहाँ से सिपाही खड़े होकर लड़ते हैं। बुर्ज। ३. कँगूरे के आकार का छोटा रवा। (गहनों में)
कंघा-संज्ञा पु० [सं० कंक] [स्त्री० अल्पा० कंघी] १. लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई चीज़ जिसमें लंबे लंबे पतले दाँत होते हैं और जिससे सिर के बाल झाड़े या साफ किए जाते हैं। २. जुलाहों का एक औज़ार जिससे वे करघे में भरनी के तागों को कसते हैं। बय। बौला।
कंघी-संज्ञा स्त्री० [सं० कंकती] १. छोटा कंघा।
मुहा०—कंघी चोटी = बनाव सिंगार।
२. जुलाहों का कंघी नामक औज़ार। ३. एक पौधा जिसकी जड़, पत्ती आदि दवा के काम में आती है। अतिबला।
कँघेरा-संज्ञा पु० [हिं० कंघा+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कँघेरिन] कंघा बनानेवाला।
कंचन-संज्ञा पु० [सं० काञ्चन] १. सोना। सुवर्ण।
मुहा०—कंचन बरसना = (किसी स्थान का) समृद्धि और शोभा से युक्त होना।
२. धन। संपत्ति। ३. धतूरा। ४. एक प्रकार का कचनार। रक्त-कांचन। ५. [स्त्री० कंचनी] एक जाति का नाम जिसमें स्त्रियाँ प्रायः वेश्या का काम करती हैं।
वि० १. नीरोग। स्वस्थ। २. स्वच्छ।
कंचनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कंचन] वेश्या।
कंचुक-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कंचुकी] १. जामा। चपकन। अचकन। २. चोली। अँगिया। ३. वस्त्र। ४. बक्तर। कवच। ५. केंचुल।
कंचुकी-संज्ञा स्त्री० [सं०] अँगिया। चोली।
संज्ञा पु० [सं० कंचुकिन्] १. रनिवास के दास-दासियों का अध्यक्ष। अंतःपुर-रक्षक। २. द्वारपाल। नकीब। ३. साँप।
केंचुरि-संज्ञा स्त्री० दे० "केंचुल", "केंचली"।
कँचेरा-संज्ञा पु० [हिं० काँच] [स्त्री० कँचेरिन] काँच का काम करनेवाला।
कंज-संज्ञा पु० [सं०] १. ब्रह्मा। २. कमल। ३. चरण की एक रेखा। कमल। पद्म। ४. अमृत। ५. सिर के बाल। केश।
कंजई-वि० [हिं० कंजा] कंजे के रंग का। धूएँ के रंग का। खाकी।
संज्ञा पु० १. खाकी रंग। २. वह घोड़ा जिसकी आँख कंजई रंग की हो।
कंजड़-संज्ञा पु० [देश०, या कालंजर] [स्त्री० कंजड़िन] १. एक घूमनेवाली जाति। २. रस्सी बटने, सिरकी बनाने का काम करनेवाली एक जाति।
कंजा-संज्ञा पु० [सं० करंज] एक कँटीली झाड़ी जिसकी फली के दाने औषध के काम में आते हैं। करंजुवा।
वि० [स्त्री० कंजी] १. कंजे के रंग का। गहरे खाकी रंग का। २. जिसकी आँख कंजे के रंग की हो।
कंजावलि-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

कंजूस-वि०[सं० कण+हिं०चूस] [संज्ञा कंजूसी] जो धन का भोग न करे। कृपण। सूम।

कंटक-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कंटकित] १. काँटा। २. सूई की नोक। ३. क्षुद्र शत्रु। ४. विघ्न। बाधा। बखेड़ा। ५. रोमांच। ६. बाधक। विघ्नकर्त्ता। ७. कवच।

कंटकारी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भटकटैया। कटेरी। छोटी कटाई। २. सेमल।

कंटकित-वि० [सं०] १. रोमांचित। पुलकित। २. काँटेदार।

कंटकी-वि० [सं० कंटकिन्] काँटेदार। संज्ञा स्त्री० [सं०] भटकटैया।

कंटर-संज्ञा पुं० [अं० डिकैंटर] शीशे की बनी हुई सुंदर सुराही जिसमें शराब और सुगंध आदि रखे जाते हैं। करावा।

कंटाइन-संज्ञा स्त्री० [सं० कात्यायनी] १. चुड़ैल। डाइन। २. लड़ाकी स्त्री।

कंटाय-संज्ञा स्त्री० [हिं० काँटा] एक कँटीला पेड़ जिसकी लकड़ी के यज्ञ-पात्र बनते हैं।

कँटिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० काँटा] १. काँटी। छोटी कील। २. मछली मारने की पतली नोकदार अँकुसी। ३. अँकुसियों का गुच्छा जिससे कूएँ में गिरी हुई चीजें निकालते हैं। ४. सिर पर का एक गहना।

कँटीला-वि० [हिं० काँटा+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० कँटीली] काँटेदार। जिसमें काँटे हों।

कंटोप-संज्ञा पुं० [हिं० कान+तोपना] एक प्रकार की टोपी जिससे सिर और कान ढके रहते हैं।

कंठ-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कंठ्य] १. गला। टेटुआ। २. गले की वे नलियाँ जिनसे भोजन पेट में उतरता है और आवाज निकलती है। घाँटी।

मुहा०—कंठ फूटना=१. वर्णों के स्पष्ट उच्चारण का आरंभ होना। २. मुँह से शब्द निकलना। ३. घाँटी फूटना। युवावस्था आरंभ होने पर आवाज का बदलना। कंठ करना या रखना=जबानी याद करना या रखना।

३. स्वर। आवाज। शब्द। ४. तोते, पंडुक आदि के गले की रेखा। हँसली। ५. किनारा। तट। तीर। कांठा।

कंठगत-वि० [सं०] गले में आया हुआ। गले में अटका हुआ।

मुहा०—प्राण कंठगत होना=प्राण निकलने पर होना। मृत्यु का निकट आना।

कंठतालव्य-वि० [सं०] (वर्ण) जिनका उच्चारण कंठ और तालु-स्थानों से मिलकर हो। 'ए' और 'ऐ' वर्ण।

कंठमाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] गले का एक रोग जिसमें रोगी के गले में लगातार छोटी छोटी फुड़ियाँ निकलती हैं।

कंठस्थ-वि० [सं०] १. गले में अटका हुआ। कंठगत। २. जबानी। कंठाग्र।

कंठा-संज्ञा पुं० [हिं० कंठ] [स्त्री० अल्पा० कंठी] १. वह भिन्न भिन्न रंगों की रेखा जो तोते आदि पक्षियों के गले के चारों ओर निकल आती है। हँसली। २. गले का एक गहना जिसमें बड़े बड़े मनके होते हैं। ३. कुरते या अंगरखे का वह अर्धचंद्राकार भाग जो गले पर रहता है।

कंठाग्र-वि० [सं०] कंठस्थ। जबानी।

कंठी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कंठा का अल्पा० रूप] १. छोटी गुरियों का कंठा। २. तुलसी आदि की मनियों की माला जिसे वैष्णव लोग गले में बाँधते हैं।

मुहा०—कंठी देना या बाँधना=चेला करना या चेला बनाना। कंठी लेना=१ वैष्णव होना। भक्त होना। २. मद्य-मांस छोड़ना।

३. तोते आदि पक्षियों के गले की रेखा। हँसली। कंठी।

कंठोष्ठ्य-वि० [सं०] जो एक साथ कंठ और ओंठ के सहारे से बोला जाय। 'ओ' और 'औ' वर्ण।

कंठ्य-वि० [सं०] १. गले से उत्पन्न। २ जिसका उच्चारण कंठ से हो। ३. गले या स्वर के लिये हितकारी।

संज्ञा पुं० १. वह वर्ण जिनका उच्चारण कंठ से होता है। अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग। २.गले के लिये उपकारी औषध।

कंडरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्त की मोटी नाड़ी।

कंडा-संज्ञा पुं० [सं० स्कंदन] [स्त्री० अल्पा० कंडी] १. सूखा गोबर जो ईंधन के काम में आता है।

मुहा०—कंडा होना=१. सूखना। दुर्बल हो जाना। २. मर जाना।

२. जंगल में पाया हुआ सूखा गोबर जो जलाने के काम में आता है। उपला। ३. सूखा मल। गोटा। सुद्दा।

कंडाल-संज्ञा पुं० [सं० करनाल] नरसिंहा।

तुरही। तूरी।
संज्ञा पुं० [म० कंडेल] लोहे, पीतल आदि का बड़ा गहरा बरतन जिसमें पानी रखते हैं।
कंडी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कंडा] १ छोटा कंडा। गोहरी। उपली। २. सूखा मल। गोटा।
कंडील-संज्ञा स्त्री० [अ० कदील] मिट्टी, अबरक या कागज़ की बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है।
कंडु-संज्ञा स्त्री० [स०] खुजली। खाज।
कंडारा-संज्ञा पु [हिं० कंडा+ औरा (प्रत्य०)] वह स्थान जहां कंडा पाथा या रखा जाय।
कंत-संज्ञा पु० दे० "कांत"।
कंथा-संज्ञा स्त्री० [स०] गुदड़ी। कथड़ी।
कंथी-संज्ञा पु० [हिं० कंथा] गुदड़ीवाला। जोगी। साधु।
कंद-संज्ञा पु० [स०] १. वह जड़ जो गूदेदार और बिना रेशे की हो; जैसे सूरन, शकरकंद इत्यादि। २. सूरन। ओल। ३. बादल। ४. तेरह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त। ५. छप्पय के ७१ भेदों में से एक। संज्ञा पु० [फा०] जमाई हुई चीनी। मिस्री।
कंदन संज्ञा पु० [स०] नाश। ध्वंस।
कंदरा-संज्ञा स्त्री० [स०] गुफा। गुहा।
कंदर्प-संज्ञा पु० [स०] कामदेव।
कंदला-संज्ञा पु० [स० कदल = सोना] १. चाँदी की वह गुल्ली या लंबा छड़ जिससे तारकश तार बनाते हैं। पासा। रैनी। गुल्ली। २. सोने या चाँदी का पतला तार।
कंदा-संज्ञा पु० [स० कद] १. दे० "कंद"। २ शकरकंद। गंजी। ३. घुइयाँ। अरुई।
कंदील-संज्ञा स्त्री० दे० "कंदील"।
कंदुक-संज्ञा पु० [स०] १. गेंद। २. गोल तकिया। गल-तकिया। गेंडुआ। ३. सुपारी। पुंगीफल। ४. एक वर्ण वृत्त।
कँदैला-वि० [हिं० काँदो, पू० हिं० कँदई + ला (प्रत्य०)] मलिन। गँदला। मलयुक्त।
कंदोरा-संज्ञा पु० [हिं० कटि + डोरा] कमर में पहनने का एक तागा। करधनी।
कंध-संज्ञा पु० [स० स्कंध] १. डाली। २. दे० "कंधा"।
कंधनी-संज्ञा स्त्री० [स० कटिबंधनी] किंकिणी। मेखला। करधनी।
कंधर-संज्ञा पु० [स०] १. गरदन। ग्रीवा। २. बादल। ३. मुस्ता। मोथा।
कंधा-संज्ञा पु० [सं० स्कंध] १. मनुष्य के शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में होता है। २. बाहुमूल। मोढ़ा।
कंधारी-वि० [हिं० कंधार] जो कंधार देश में उत्पन्न हुआ हो। कंधार का। संज्ञा पु० घोड़े की एक जाति।
कँधावर-संज्ञा स्त्री० [हिं० कंधा + आवर (प्रत्य०)] १. जूए का वह भाग जो बैल के कंधे के ऊपर रहता है। २ वह चद्दर या दुपट्टा जो कंधे पर डाला जाता है।
कँधेला-संज्ञा पु० [हिं० कंधा + एला (प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो कंधे पर पड़ता है।
कंप-संज्ञा पु० [स०] कँपकँपी। काँपना। (सात्त्विक अनुभावों में से एक) संज्ञा पु० [अ० कैंप] पड़ाव। लशकर।
कंपकंपी-संज्ञा स्त्री० [हिं० काँपना] थरथराहट। काँपना। संचलन।
कंपन-संज्ञा पु० [स०] [वि० कंपित] काँपना। थरथराहट। कँपकँपी।
कँपना-क्रि० अ० [स० कंपन] १. हिलना। डोलना। काँपना। २. भयभीत होना।
कंपमान्-वि० दे० "कंपायमान"।
कंपा-संज्ञा पु० [हिं० कँपना] बाँस की पतली तीलियाँ जिनमें बहेलिए लासा लगाकर चिड़ियों को फँसाते हैं।
कँपाना-क्रि० स० [हिं० कँपना का प्रे०] १. हिलाना-डुलाना। २. भय दिखाना।
कंपायमान-वि० [स०] हिलता हुआ।
कंपास-संज्ञा पु० [अ०] १. एक यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है। २. परकार।
कंपित वि० [स०] १. काँपता हुआ। चंचल। २. भयभीत। डरा हुआ।
कंपू-संज्ञा पुं० [अ० कैंप] १. वह स्थान जहाँ फ़ौज रहती या ठहरती हो। छावनी। पड़ाव। जनस्थान। २. डेरा। खेमा।
कंबल-संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० अल्पा० कमली] १. ऊन का बना हुआ मोटा कपड़ा जिसे गरीब लोग ओढ़ते हैं। २. एक बरसाती कीड़ा। कमला।
कंबु, कंबुक-संज्ञा पुं० [स०] १. शंख। २. शंख की चूड़ी। ३. घोंघा। ४. हाथी।

कंबोज–संज्ञा पु० [सं०] [वि० कांबोज] अफ़ग़ानिस्तान के एक भाग का प्राचीन नाम जो गांधार के पास पड़ता था।

कँवल–संज्ञा पु० दे० "कमल"।

कँवलगट्टा–संज्ञा पु० [सं० कमल + हिं० गट्टा] कमल का बीज।

कंस–संज्ञा पु० [सं०] १. काँसा। २. प्याला। कटोरा। ३. सुराही। ४. मँजीरा। झाँझ। ५. काँसे का बना हुआ बर्तन या चीज। ६. मथुरा के राजा उग्रसेन का लड़का जो श्रीकृष्ण का मामा था और जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

क–संज्ञा पु० [सं०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ कामदेव। ४. सूर्य। ५. प्रकाश। ६. प्रजापति। ७. दक्ष। ८. अग्नि। ९. वायु। १०. राजा। ११. यम। १२. आत्मा। १३. मन। १४. शरीर। १५. काल। १६. धन। १७. शब्द।

कई–वि० [सं० कति, प्रा० कइ] एक से अधिक। अनेक।

ककड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कटी] ज़मीन पर फैलनेवाली एक बेल जिसमें लंबे लंबे फल लगते हैं।

ककनू–संज्ञा पु० दे० "कुकनू"।

ककहरा–संज्ञा पुं० [क + क—ह + रा (प्रत्य०)] 'क' से 'ह' तक वर्णमाला।

ककुद्–संज्ञा पु० [सं०] १. बैल के कंधे का कुब्बड़। डिल्ला। २. राजचिह्न।

ककुभ–संज्ञा पु० [सं०] १. अर्जुन का पेड़। २. एक राग। ३. एक छंद। ४ दिशा।

ककुभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा।

ककोड़ा–संज्ञा पु० दे० "खेखसा"।

कक्कड़–संज्ञा पु० [सं० कर्कर] सूखी या सेंकी हुई सुरती का भुरभुरा चूर जिसे छोटी चिलम पर रखकर पीते हैं।

कका–संज्ञा पु० [सं० केकय] केकय देश। संज्ञा पु० [सं०] नगाड़ा। दुंदुभी। संज्ञा पु० दे० "काका"।

कक्ष–संज्ञा पु० [सं०] १. काँख। बग़ल। २. काछ। कछौटा। लाँग। ३. कछार। कच्छ। ४. कास। ५. जंगल। ६. सूखी घास। ७. सूखा वन। ८. भूमि। ९. घर। कमरा। कोठरी। १०. पाप। दोष। ११. काँख का फोड़ा। कखरवार। १२. दर्जा। श्रेणी। १३. सेना के अगल बगल का भाग। १४. कमरबंद। पटुका।

कक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिधि। २. ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग। ३. तुलना। समता। बराबरी। ४. श्रेणी। दर्जा। ५. ड्योढ़ी। देहली। ६. काँख। ७. काँखरवार फोड़ा। ८. किसी घर की दीवार या पाख। ९ काछ। कछौटा।

कखौरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख] १. दे० "काँख"। २. काँख का फोड़ा।

कगर–संज्ञा पु० [सं० क = जल + अग्र] १. कुछ ऊँचा किनारा। २. बाढ़। औंठ। बारी। ३. मेंड़। डाँड़। ४. छत या छाजन के नीचे दीवार में रीढ़ सी उभड़ी हुई लकीर। कारनिस। कँगनी। क्रि० वि० १. किनारे पर। २. समीप।

कगार–संज्ञा पु० [हिं० कगर] १. ऊँचा किनारा। २. नदी का करारा। ३. टीला।

कच–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाल। २. सूखा फोड़ा या ज़ख्म। पपड़ी। ३ झुंड। ४. बादल। ५. बृहस्पति का पुत्र। संज्ञा पुं० [अनु०] १. धँसने या चुभने का शब्द। २. कुचले जाने का शब्द। वि० 'कच्चा' का अल्पा० रूप जिसका व्यवहार समास में होता है; जैसे, कचलहू।

कचक†–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच] वह चोट जो दबने से लगे। कुचल जाने की चोट।

कचकच–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बकवाद। झक-झक। किचकिच।

कचकचाना–क्रि० अ० [अनु० कचकच] १. कचकच शब्द करना। २. दाँत पीसना।

कचकोल–संज्ञा पुं० [फा० करकोल] दरियाई नारियल का भिक्षापात्र। कपाल। कासा।

कचदिला–वि० [हिं० कच्चा + फा० दिल] कच्चे दिल का। जिसे किसी प्रकार के कष्ट, पीड़ा आदि सहने का साहस न हो।

कचनार–संज्ञा पु० [सं० कांचनार] एक छोटा पेड़ जिसमें सुंदर फूल लगते हैं।

कचपच–संज्ञा पु० [अनु०] १. थोड़े से स्थान में बहुत सी चीज़ों या लोगों का भर जाना। गिचपिच। गुत्थम-गुत्था। २. दे० "कचकच"।

कचपची–संज्ञा स्त्री० [हिं० कचपच] १. कृत्तिका नक्षत्र। २. चमकीले बुंदे जिन्हें स्त्रियाँ माथे आदि पर चिपकाती हैं।

कचपेंदिया–वि० [हिं० कच्चा + पेंदी] १.

पेंदी का कमज़ोर। २. अस्थिर विचार का। बात का कच्चा। ओछा।
कचर-कचर-संज्ञा पुं० [अनु०] १. कच्चे फल के खाने का शब्द। २. कचकच। बकवाद।
कचरकूट-संज्ञा पुं० [हिं० कचरना+कूटना] १. खूब पीटना और लतियाना। मारकूट। †२. खूब पेट भर भोजन। इच्छा भोजन।
कचरना*†-क्रि० सं० [स० कचरण] १. पैर से कुचलना। रौंदना। २. खूब खाना।
कचरा-संज्ञा पु० [हिं० कच्चा] १. कच्चा खरबूज़ा। २. फूट का कच्चा फल। ककड़ी। ३. कूड़ा-करकट। रद्दी चीज़। ४. उरद या चने की पीठी। ५. समुद्र का सेवार।
कचरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्चा] १. ककड़ी की जाति की एक बेल जिसके फल खाये जाते हैं। पेहँटा। २. कचरी या कच्चे पेहँटे के सुखाए हुए टुकड़े। ३. कचरी के फल के तले हुए टुकड़े। ४. काटकर सुखाए हुए फल मूल आदि जो तरकारी के लिये रक्खे जाते हैं। ५. छिलकेदार दाल।
कचलोंदा-संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा+लोंदा] कच्चे आटे का पेड़ा। लोई।
कचलोन-संज्ञा पु० [हिं० काँच+लोन] एक प्रकार का लवण जो काँच की भट्ठियों में जमे हुए खार से बनता है।
कचलोहू-संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा+लोहू] वह पनछा या पानी जो खुले ज़ख़म से थोड़ा थोड़ा निकलता है। रसधातु।
कचहरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कचकच=वाद विवाद+हरी (प्रत्य०)] १. गोष्ठी। जमावड़ा। २. दरबार। राजसभा। ३. न्यायालय। अदालत। ४. दफ़तर।
कचाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्चा+ई (प्रत्य०)] १. कच्चापन। २. ना-तजुर्बेकारी।
कचाना†-क्रि० अ० [हिं० कच्चा] १. पीछे हटना। हिम्मत हारना। २. डरना।
कचायँध-संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्चा+गंध] कच्चेपन की महक।
कचारना†-क्रि० स० [हिं० पछारना] कपड़ा धोना।
कचालु-संज्ञा पु० [हिं० कच्चा+आलू] १. एक प्रकार की अरुई। बंडा। २. एक प्रकार की चाट।
कचीची*-संज्ञा स्त्री० [अनु० कच=कुचने का शब्द] जबड़ा। दाढ़।
मुहा०—कचीची बँधना=दाँत बैठाना। (मरने के समय)
कचूमर-संज्ञा पुं० १. [हिं० कुचलना] कुचलकर बनाया हुआ अचार। कुचला। २. कुचली हुई वस्तु।
मुहा०—कचूमर करना या निकालना= १. खूब कूटना। चूर-चूर करना। कुचलना। २. नष्ट करना। ३. खूब पीटना।
कचूर-संज्ञा पुं० [सं० कर्चूर] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ में कपूर की सी कड़ी महँक होती है। नर-कचूर।
कचोना-क्रि० स० [हिं० कच=धँसाने का शब्द] चुभाना। धँसाना।
कचोरा*†-संज्ञा पुं० [हिं० काँसा+ओरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कचोरी] कटोरा। प्याला।
कचौड़ी, कचौरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कचरी] एक प्रकार की पूरी जिसके भीतर उरद आदि की पीठी भरी जाती है।
कच्चा-वि० [सं० कषण] १. जो पका न हो। हरा और बिना रस का। अपक। २. जो आँच पर पका न हो। जैसे—कच्चा घड़ा। ३. जो पुष्ट न हुआ हो। अपरिपुष्ट। ४. जिसके तैयार होने में कसर हो। ५. अदृढ़। कमज़ोर।
मुहा०—कच्चा जी या दिल=विचलित होनेवाला चित्त। धैर्यच्युत होनेवाला चित्त। कच्चा करना=डराना। भयभीत करना।
६. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। बे ठीक।
मुहा०—कच्चा करना=१. अप्रामाणिक ठहराना। झूठा साबित करना। २. लज्जित करना। शरमाना। कच्चा पड़ना=१. अप्रामाणिक या झूठा ठहरना। २. सिटपिटाना। सकुचित होना। कच्ची पक्की=भली बुरी। उल्टी-सीधी। दुर्वचन। गाली। कच्ची बात=अश्लील बात। लज्जाजनक बात।
७. जो प्रामाणिक तौल या माप से कम हो। जैसे, कच्चा सेर। ८. कच्ची या गीली मिट्टी का बना हुआ। ९. अपरिपक्व। अपटु। अनाड़ी।
संज्ञा पुं० १. वह दूर दूर पर पड़ा हुआ तागे का डोभ जिस पर दरज़ी बखिया करते हैं। २. ढाँचा। खाका। ढड्ढा।

४ बहुत छोटा ताँबे का सिक्का जिसका चलन सब जगह न हो। कच्चा पैसा।
कच्चा चिट्ठा–संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा + चिट्ठा] १ वह वृत्तांत जो ज्यों का त्यों कहा जाय। २ गुप्त भेद। रहस्य।
कच्चा माल–संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा + माल] वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीजें बनती हों। सामग्री। जैसे, रूई, तिल।
कच्चा हाथ–संज्ञा पुं० वह हाथ जो किसी काम में बैठा न हो। अनभ्यस्त हाथ।
कच्ची–वि० "कच्चा" का स्त्रीलिंग।
संज्ञा स्त्री० दे० "कच्ची रसोई"।
कच्ची चीनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची + चीनी] वह चीनी जो खूब साफ न की गई हो।
कच्ची बही–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची + बही] वह बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो।
कच्ची रसोई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची + रसोई] केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। अन्न जो दूध या घी में न पकाया गया हो। जैसे रोटी, दाल, भात।
कच्ची सड़क–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची + सड़क] वह सड़क जिसमें कंकड़ आदि न पिटा हो।
कच्ची सिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची + सिलाई] दूर दूर पर पड़ा हुआ डोभ या टाँका और लंगर। कोका।
कच्चू–संज्ञा पुं० [सं० कचु] १ अरुई। घुइयाँ। २ बंडा।
कच्चे पक्के दिन–संज्ञा पुं० १ चार या पाँच महीने का गर्भकाल। २ दो ऋतुओं की संधि के दिन।
कच्चे बच्चे–संज्ञा पुं० [हिं० कच्चा + बच्चा] बहुत छोटे छोटे बच्चे। बहुत से लड़के बाले।
कच्छ–संज्ञा पुं० [सं०] १ जलप्रायदेश। अनूप देश। २ नदी आदि के किनारे की भूमि। कछार। ३ छप्पय का एक भेद। [वि० कच्छी] ४. गुजरात के समीप एक प्रदेश। ५ इस देश का घोड़ा।
संज्ञा पुं० [सं० कक्ष] धोती की लाँग।
६ संज्ञा पुं० [सं० कच्छप] कछुआ।
कच्छप–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कच्छपी] १ कछुआ। २ विष्णु के २४ अवतारों में से एक। ३ कुबेर की नौ निधियों में से एक। ४ दोहे का एक भेद।
[illegible]ी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कच्छप की स्त्री। कछुई। २ सरस्वती की वीणा।
कच्छा–संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] १ दो पतवारों की बड़ी नाव जिसके छोर चिपटे और बड़े होते हैं। २ कई नावों को मिलाकर बनाया हुआ बड़ा बेड़ा।
कच्छी–वि० [हिं० कच्छ] १ कच्छ देश का। २ कच्छ देश में उत्पन्न।
संज्ञा पुं० [हिं० कच्छ] घोड़े की एक जाति।
कच्छू†–संज्ञा पुं० [सं० कच्छप] कछुआ।
कछनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काछना] १ घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती। २ छोटी धोती। ३ वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाय।
कछवाहा–संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] राजपूतों की एक जाति।
कछान, कछाना–संज्ञा पुं० [हिं० काछना] घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहनना।
कछार–संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि।
कछु †–वि० दे० "कुछ"।
कछुआ संज्ञा पुं० [सं० कच्छप] [स्त्री० कछुई] एक जलजंतु जिसके ऊपर बड़ी कड़ी ढाल की तरह खोपड़ी होती है।
कछुक* वि० [हिं० कछु + एक] कुछ।
कछोटा, कछौटा–संज्ञा पुं० [हिं० काछ] [स्त्री० अल्पा० कछोटी] १ स्त्रियों के धोती पहनने का वह ढंग जिसमें पीछे लाँग खोंसी जाती है। २ कछनी।
कज–संज्ञा पुं० [फा०] १. टेढ़ापन। २ कसर। दोष। ऐब।
कजरा†–संज्ञा पुं० [हिं० काजल] १ दे० "काजल"। २ काली आँखोंवाला बैल।
कजराई –संज्ञा स्त्री० [हिं० काजल] कालापन।
कजरारा–वि० [हिं० काजर + आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कजरारी] १ काजलवाला। जिसमें काजल लगा हो। अंजन-युक्त। २ काजल के समान काला। स्याह।
कजरौटा†–संज्ञा पुं० दे० "कजलौटा"।
कजलाना–क्रि० अ० [हिं० काजल] १. काला पड़ना। २ आग का बुझना।
क्रि० स० काजल लगाना। आँजना।
कजली संज्ञा स्त्री० [हिं० काजल] १ कालिख। २ एक साथ पिसे हुए पारे और गंधक की बुकनी। ३ रस फूँकने में

धातु का वह अंश जो आँच से ऊपर चढ़कर पात्र में लग जाता है। ४. गन्ने की एक जाति। ५. वह गाय जिसकी आँखों के किनारे काला घेरा हो। ६. एक बरसाती त्योहार। ७. एक प्रकार का गीत जो बरसात में गाया जाता है।

कजलौटा-संज्ञा पु० [हिं० काजल + औटा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० कजलौटी] काजल रखने की लोहे की डंडीदार डिबिया।

कज़ा-संज्ञा स्त्री० [अ०] मौत। मृत्यु।

कज़ाक-संज्ञा पु० [तु०] लुटेरा। डाकू।

कज़ाकी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. लुटेरापन। लूट-मार। २. छल-कपट। धोखेबाजी।

कजावा-संज्ञा पु० [फा०] ऊँट की काठी।

कज़िया-संज्ञा पु० [अ०] झगड़ा। लड़ाई।

कजी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. टेढ़ापन। टेढ़ाई। २ दोष। ऐब। कसर।

कज्जल-संज्ञा पु० [सं०] [वि० कज्जलित] १. अंजन। काजल। २. सुरमा। ३. कालिख। ४. बादल। ५. एक छंद।

कज्जाक-संज्ञा पु० दे० "कजाक"।

कट-संज्ञा पु० [सं०] १. हाथी का गंडस्थल। २. गंडस्थल। ३. नरसल। नरकट। ४. नरकट की चटाई। दरमा। ५. टट्टी। ६. खस, सरकंडा आदि घास। ७. शव। लाश। ८. अरथी। ९. श्मशान।
संज्ञा पु० [हिं० कटना] १. एक प्रकार का काला रंग। २. 'काट' का संक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है। जैसे, कटखना कुत्ता।

कटक-संज्ञा पु० [सं०] १. सेना। फौज। २ राज-शिविर। ३. कंकण। कड़ा। ४. पर्वत का मध्य भाग। ५. नितंब। चूतड़। ६. घास फूस की चटाई। गोंदरी। सथरी। ७. हाथी के दाँतों पर जड़े हुए पीतल के बंद या सामी। ८ समूह।

कटकई*-संज्ञा स्त्री० [सं० कटक + ई (प्रत्य०)] कटक। फौज। लश्कर।

कटकट-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ दाँतों के बजने का शब्द। २. लड़ाई-झगड़ा।

कटकटाना-क्रि० अ० [हिं० कटकट] दाँत पीसना।

कटकाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० कटक + आई (प्रत्य०)] सेना। फौज।

कटखना-वि० [हिं० काटना + खाना] काट खानेवाला। दाँत से काटनेवाला।
संज्ञा पु० युक्ति। चाल। हथकंडा।

कटघरा-संज्ञा पुं० [हिं० काठ + घर] १. काठ का वह घर जिसमें जँगला लगा हो। २. बड़ा भारी पिंजड़ा।

कटड़ा-संज्ञा पु० [सं० कटार] भैंस का पँड़वा।

कटती-संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] बिक्री।

कटना-क्रि० अ० [सं० कर्त्तन] १. किसी धारदार चीज की दाब से दो टुकड़े होना। मुहा०—कटती कहना = मर्मभेदी बात कहना। २ पिसना। महीन चूर होना। ३. किसी धारदार चीज से घाव होना। ४. किसी भाग का अलग हो जाना। ५. लड़ाई में मरना। ६. कतरा जाना। ब्योंता जाना। ७. छीजना। नष्ट होना। ८. समय का बीतना। ९. रास्ता खतम होना। १०. धोखा देकर साथ छोड़ देना। खिसक जाना। ११. लज्जित होना। झेंपना। १२. जलना। डाह करना। १३. मोहित होना। आसक्त होना। १४. बिकना। खपना। १५. प्राप्ति होना। आय होना। जैसे—माल कटना। १६ कलम की लकीर से किसी लिखावट का रद होना। मिटना। खारिज होना। १७. एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का ऐसा भाग लगना कि शेष कुछ न बचे।

कटनास†-संज्ञा पु० [देश०,या सं० कीट + नाश] नीलकंठ। चाष पक्षी।

कटनि*-संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] १. काट। २. प्रीति। आसक्ति। रीझ।

कटनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] १. काटने का औजार। २. काटने का काम।

कटर†-संज्ञा पु० [अ०] १. एक प्रकार की बड़ी नाव जो चरखियों के सहारे चलती है। २. पनसुइया। छोटी नाव।

कटरा-संज्ञा पु० [हिं० कटहरा] छोटा चौकोर बाजार।
संज्ञा पु० [सं० कटाह] भैंस का नर बच्चा।

कटवाँ-वि० [हिं० काटना + वाँ (प्रत्य०)] जो काटकर बना हो। कटा हुआ।

कटसरैया-संज्ञा स्त्री० [सं० कटसारिका] अड़ूसे की तरह का एक कटिदार पौधा।

कटहर*-संज्ञा पु० दे० "कटहल"।

कटहरा–संज्ञा पुं० दे० "कटघरा"।
कटहल–संज्ञा पुं० [सं० कंटकिफल] १. एक सदाबहार घना पेड़ जिसमें हाथ सवा हाथ के मोटे और भारी फल लगते हैं। २. इस पेड़ का फल जो खाया जाता है।
कटहा–वि० [हिं० काटना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० कटही] काट खानेवाला।
कटा–संज्ञा पुं० [हिं० काटना] मार-काट। वध। हत्या। कत्लआम।
कटाइक–वि० [हिं० काटना] काटनेवाला।
कटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना] १. काटने का काम। २. फसल काटने का काम। ३. फसल काटने की मजदूरी।
कटाकट–संज्ञा पुं० [हिं० कट] १. कटकट शब्द। २. लड़ाई।
कटाकटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना] मार-काट।
कटाक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. तिरछी चितवन। तिरछी नज़र। २. व्यंग्य। आक्षेप।
कटाग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] घास फूस की आग जिसमें लोग जल मरते थे।
कटाछनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कटाकटी"।
कटान–संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना] काटने की क्रिया, भाव या ढंग।
कटाना–क्रि० स० [हिं० काटना का प्रे० रूप] काटने का काम दूसरे से कराना।
कटायक–वि० [हिं० काटना] काटनेवाला।
कटार–संज्ञा स्त्री० [सं० कट्टार] [स्त्री० अल्पा० कटारी] एक बालिश्त का छोटा तिकोना और दुधारा हथियार।
कटाव–संज्ञा पुं० [हिं० काटना] १. काट। काट छाँट। कतर-ब्योंत। २. काटकर बनाए हुए बेल-बूटे।
कटावदार–वि० [हिं० कटाव+दार (प्रत्य०)] जिस पर खोद या काटकर चित्र और बेल-बूटे बनाए गए हों।
कटावना–संज्ञा पुं० [हिं० कटना] १. कटाई करने का काम। २. किसी वस्तु का कटा हुआ टुकड़ा। कतरन।
कटास–संज्ञा पुं० [हिं० काटना] एक प्रकार का वनबिलाव। कटार। खीखर।
...–संज्ञा पुं० [सं०] १. कड़ाह। बड़ी ...। २. कछुए की खोपड़ी। ३. कूर्म। ४. नरक। ५. झोंपड़ी। ६. भैंस का बच्चा। ७. ढूह। ऊँचा टीला।
कटि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे पड़ता है। कमर। २. हाथी का गंडस्थल।
कटिजेब–संज्ञा स्त्री० [सं० कटि+हिं० जेब = रस्सी] किंकिणी। करधनी।
कटिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमरबंद। २. गरमी-सरदी के विचार से किए हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक।
कटिबद्ध–वि० [सं०] १. कमर बाँधे हुए। २. तैयार। तत्पर। उद्यत।
कटियाना–क्रि० अ० [हिं० काँटा] रोओं का खड़ा हो जाना। कंटकित होना।
कटिसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] कमर में पहनने का डोरा। मेखला। सूत की करधनी।
कटीला–वि० [हिं० काटना] [स्त्री० कटीली] १. काट करनेवाला। तीक्ष्ण। चोखा। २. बहुत तीव्र प्रभाव डालनेवाला। ३. मोहित करनेवाला। ४. नोक-झोंक का। वि० [हिं० काँटा] १. काँटेदार। काँटों से भरा हुआ। २. नुकीला। तेज।
कटु–वि० [सं०] १. छः रसों में से एक। चरपरा। कड़ुआ। २. बुरा लगनेवाला। अनिष्ट। ३. काव्य में रस के विरुद्ध वर्णों की योजना।
कटुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कड़ुआपन।
कटुत्व–संज्ञा पुं० [सं०] कड़ुआपन।
कटूक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रिय बात।
कटेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काँटा] भटकटैया।
कटैया–संज्ञा पुं० [हिं० काटना] काटनेवाला। जो काट डाले।
कटोरदान–संज्ञा पुं० [हिं० कटोरा+दान (प्रत्य०)] पीतल का एक ढक्कनदार बरतन जिसमें तैयार भोजन आदि रखते हैं।
कटोरा–संज्ञा पुं० [हिं० काँसा+ओरा (प्रत्य०) = कँसोरा] खुले मुँह, नीची दीवार और चौड़ी पेंदी का एक छोटा बरतन।
कटोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कटोरा का अल्पा०] १. छोटा कटोरा। बेलिया। प्याली। २. अँगिया का वह जुड़ा हुआ भाग जिसके भीतर स्तन रहते हैं। ३. तलवार की मूठ के ऊपर का गोल भाग। ४. फूल के सींके का चौड़ा सिरा जिस पर दल रहते हैं।
कटौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० कटना] किसी

रकम को देते हुए उसमें से कुछ बँधा हक़ या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना।

कट्टर–वि० [हिं० काटना] १. काट खानेवाला। कटहा। २. अपने विश्वास के प्रतिकूल बात को न सहनेवाला। अंध-विश्वासी। ३. हठी। दुराग्रही।

कट्टहा–संज्ञा पु० [सं० कट = शव + हा(प्रत्य०)] महाब्राह्मण। कट्टिया। महापात्र।

कट्टा–वि० [हिं० काठ] १. मोटा ताजा। हट्टा कट्टा। २. बलवान्। बली।

संज्ञा पु० जबड़ा। कल्ला।

मुहा०—कट्टे लगना = किसी दूसरे के कारण अपनी वस्तु का नष्ट होना या उस दूसरे के हाथ लगना।

कट्ठा–संज्ञा पु० [हिं० काठ] १. जमीन की एक नाप जो पाँच हाथ चार अंगुल की होती है। २. मोटा या ख़राब गेहूँ।

कठ–संज्ञा पु० [सं०] १. एक ऋषि। २. एक यजुर्वेदीय उपनिषद्। ३. कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा।

संज्ञा पु० [सं० काष्ठ] १. (केवल समस्त पदों में) काठ। लकड़ी। जैसे, कठपुतली, कठकीली। २.(समस्त पदों में फल आदि के लिये) जंगली। निकृष्ट जाति का। जैसे, कठकेला, कठजामुन।

कठकेला–संज्ञा पु० [हिं० काठ + केला] एक प्रकार का केला जिसका फल रूखा और फीका होता है।

कठताल–संज्ञा पु० दे० "करताल"।

कठपुतली–संज्ञा स्त्री० [हिं० काठ + पुतली] १. काठ की गुड़िया या मूर्ति जिसको तार द्वारा नचाते हैं। २. वह व्यक्ति जो केवल दूसरे के कहने पर काम करे।

कठड़ा–संज्ञा पु० [हिं० कठघरा] १. कठघरा। कटहरा। २. काठ का बड़ा संदूक। ३. काठ का बड़ा बरतन। कठौता।

कठफोड़वा–संज्ञा पु० [हिं० काठ + फोड़ना] खाकी रंग की एक चिड़िया जो पेड़ों की छाल को छेदती रहती है।

कठबंधन–संज्ञा पुं० [हिं० काठ + बंधन] काठ की वह बेड़ी जो हाथी के पैर में डाली जाती है। अँदुआ।

कठबाप–संज्ञा पुं० [हिं० काठ + बाप] सौतेला बाप।

कठमलिया–संज्ञा पुं० [हिं० काठ + माला] १. काठ की माला या कंठी पहननेवाला वैष्णव। २. झूठ मूठ कंठी पहननेवाला। बनावटी साधु। झूठा संत।

कठमस्त–वि० [हिं० कठ + फा० मस्त] १. सँड-मुसँड। २. व्यभिचारी।

कठमस्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० कठमस्त] मुसँडापन। मस्ती।

कठरा–संज्ञा पु० [हिं० काठ + रा] १. दे० "कठहरा" या "कटघरा"। २. काठ का संदूक। ३. काठ का बरतन। कठौता।

कठला–संज्ञा पु० [सं० कंठ + ला (प्रत्य०)] एक प्रकार की माला जो बच्चों को पहनाई जाती है।

कठवल्ली–संज्ञा पु० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा का एक उपनिषद्।

कठिन–वि० [सं०] १. कड़ा। सख्त। कठोर। २. मुश्किल। दुष्कर। दुःसाध्य।

कठिनता–संज्ञा स्त्री० [सं० कठिन] १. कठोरता। कड़ाई। कड़ापन। सख्ती। २. मुशकिल। असाध्यता। ३. निर्दयता। बेरहमी। ४. मज़बूती। दृढ़ता।

कठिनाई–संज्ञा स्त्री० [सं० कठिन + आई (प्रत्य०)] १. कठोरता। सख्ती। २. मुशकिल। क्लिष्टता। ३. असाध्यता।

कठिया–वि० [हिं० काठ] जिसका छिलका मोटा और कड़ा हो। जैसे कठिया बादाम।

कठियाना–क्रि० अ० [हिं० काठ + आना (प्रत्य०)] सूखकर कड़ा हो जाना।

कठुवाना–क्रि० अ० [हिं० काठ + आना (प्रत्य०)] १. सूखकर काठ की तरह कड़ा होना। २. ठंढक से हाथ-पैर ठिठुरना।

कठूमर–संज्ञा पु० [हिं० काठ + ऊमर] जंगली गूलर।

कठेठ, कठेठा–वि० [सं० काठ + एठ (प्रत्य०)] [स्त्री० कठेठी] १. कड़ा। कठोर। कठिन। दृढ़। सख़्त। २. कटु। अप्रिय। ३. अधिक बलवाला। तगड़ा।

कठोर–वि० [सं०] १. कठिन। सख़्त। कड़ा। २. निर्दय। निष्ठुर। निठुर। बेरहम।

कठोरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कड़ाई। सख्ती। २. निर्दयता। बेरहमी।

कठोरपन–संज्ञा पुं० [हिं० कठोर + पन (प्रत्य०)] १. कठोरता। कड़ापन। सख्ती। २. निर्दयता। निष्ठुरता।

कठौता–संज्ञा पुं० [हिं० कठौत] काठ

एक बड़ा और चौड़ा बरतन।

कड़क–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़कड़] १. कड़कड़ाहट का शब्द। कठोर शब्द। २. तड़प। दपट। ३. गाज। वज्र। ४. घोड़े की सरपट चाल। ५. कसक। दर्द जो रुक रुककर हो। ६. रुक रुककर और जलन के साथ पेशाब उतरने का रोग।

कड़कड़–संज्ञा पुं० [अनु०] १. दो वस्तुओं के आघात का कठोर शब्द। घोर शब्द। २. कड़ी वस्तु के टूटने या फूटने का शब्द।

कड़कड़ाता–वि० [हिं० कड़कड़] [स्त्री० कड़कड़ाती] १. कड़कड़ शब्द करता हुआ। २. कड़ाके का। बहुत तेज़। घोर। प्रचंड।

कड़कड़ाना–क्रि० अ० [सं० कड़्] १. कड़ कड़ शब्द होना। २. 'कड़कड़' शब्द के साथ टूटना। ३. घी, तेल आदि का आँच पर बहुत तपकर कड़कड़ बोलना। क्रि० स० १. कड़ कड़ शब्द के साथ तोड़ना। २. घी, तेल आदि को खूब तपाना।

कड़कड़ाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़कड़] कड़कड़ शब्द। गरज। घोर नाद।

कड़कना–क्रि० अ० [हिं० कड़कड़] १. कड़कड़ शब्द होना। २. चिटकने का शब्द होना। ३. दपटना। डाँटना। ४. चिटकना। फटना। दरकना।

कड़कनाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क + नाल] चौड़े मुँह की तोप।

कड़क बिजली–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क + बिजली] १. कान का एक गहना। चाँदवाला। २. तोड़दार बंदूक।

कड़खा–संज्ञा पुं० [हिं० कड़क] लड़ाई के समय गाया जानेवाला गीत।

कड़खैत–संज्ञा पुं० [हिं० कड़खा + ऐत (प्रत्य०)] १. कड़खा गानेवाला। २. भाट। चारण।

कड़बड़ा–वि० [सं० कर्बुर = कबरा] जिसके कुछ बाल सफेद और कुछ काले हों।

कड़बी–संज्ञा स्त्री० [सं० कांड, हिं० काँडा] ज्वार का पेड़ जिसके भुट्टे काट लिए गए हों और जो चारे के लिये छोड़ा हो।

कड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कटक] [स्त्री० कड़ी] १. हाथ या पाँव में पहनने का चूड़ा। २. लोहे या और किसी धातु का छल्ला या कुंडा। ३. एक प्रकार का कबूतर। [सं० कड्ड] [स्त्री० कड़ी] १. जो दबाने से जल्दी न दबे। कठोर। कठिन। सख्त। ठोस। २. जिसकी प्रकृति कोमल न हो। रूखा। ३. उग्र। दृढ़। ४. कसा हुआ। चुस्त। ५. जो गीला न हो। कम गीला। ६. हृष्ट-पुष्ट। तगड़ा। दृढ़। ७. ज़ोर का। प्रचंड। तेज़। जैसे—कड़ी चोट। ८. सहनेवाला। झेलनेवाला। धीर। ९. दुष्कर। दुःसाध्य। मुशकिल। १०. तीव्र प्रभाव डालनेवाला। तेज़। ११. असह्य। बुरा लगनेवाला। १२. कर्कश।

कड़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा का भाव०] कठोरता। कड़ापन। सख्ती।

कड़ाका–संज्ञा पुं० [हिं० कड़कड़] १. किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। मुहा०—कड़ाके का = ज़ोर का। तेज़। २. उपवास। लंघन। फ़ाका।

कड़ाबीन–संज्ञा स्त्री० [तु० क़राबीन] १. चौड़े मुँह की बंदूक। २. छोटी बंदूक।

कड़ाहा–संज्ञा पुं० [सं० कटाह, प्रा० कडाह] [स्त्री० अल्पा० कड़ाही] आँच पर चढ़ाने का लोहे का बड़ा गोल बरतन।

कड़ाही–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ाह] छोटा कड़ाहा।

कड़ियल–वि० [हिं० कड़ा] कड़ा।

कड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा] १. ज़ंजीर या सिकड़ी की लड़ी का एक छल्ला। २. छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को अटकाने या लटकाने के लिये लगाया जाय। ३. लगाम। ४. गीत का एक पद। संज्ञा स्त्री० [सं० कांड] छोटी धरन। संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा = कठिन] अड़स। संकट। दुःख। मुसीबत।

कड़ीदार–वि० [हिं० कड़ी + दार (प्रत्य०)] जिसमें कड़ी हो। छल्लेदार।

कड़ुआ–वि० [सं० कटुक] [स्त्री० कड़ुई] १. स्वाद में उग्र और अप्रिय। कटु। जैसे—नीम, चिरायता आदि का। २. तीखी प्रकृति का। गुस्सैल। अक्खड़। ३. अप्रिय। जो भला न मालूम हो। मुहा०—कड़ुआ करना = १. धन बिगाड़ना। रुपए लगाना। २. कुछ दाम खड़ा करना। कड़ुआ मुँह = वह मुँह जिससे कटु शब्द निकलें। कड़ुआ होना = बुरा बनना। ४. विकट। टेढ़ा। कठिन। मुहा०—कड़ुए कसैले दिन = १. बुरे दिन।

षष्ट के दिन। २. दो रसे दिन जिनमें रोग फैलता है। कड़ुआ घूँट = कठिन काम।

कड़ुआ तेल–सज्ञा पु० [हिं० कड़ुआ + तेल] सरसों का तेल जिसमें बहुत झाल होती है।

कड़ुआना–क्रि० अ० [हिं० कड़ुआ] १. कड़ुआ लगना। २. बिगड़ना। खीझना। ३. आँख में किरकिरी पड़ने का सा दर्द होना।

कड़ुआहट–सज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ुआ + हट (प्रत्य०)] कड़ुआपन।

कढ़ना–क्रि० अ० [स० कर्षण] १. निकलना। बाहर आना। खिंचना। २. उदय होना। ३. बढ़ जाना। ४. (प्रतिद्वंद्विता में) आगे निकल जाना। ५. स्त्री का उपपति के साथ घर छोड़कर चला जाना।
क्रि० अ० [हिं० गाढ़ा] दूध का औटाया जाकर गाढ़ा होना।

कढ़लाना†–क्रि० स० [स० काढ़ना + लाना] घसीटना। घसीटकर बाहर करना।

कढ़ाई–सज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही"।
सज्ञा स्त्री० [हिं० काढ़ना] कढ़ने की क्रिया।

कढ़ाना, कढ़वाना–क्रि० स० [हिं० काढ़ना का प्रे० रूप] निकलवाना। बाहर कराना।

कढ़ाव–सज्ञा पु० [हिं० काढ़ना] १. बूटे कशीदे का काम। २. बेलबूटों का उभार।

कढ़ी–सज्ञा स्त्री० [हिं० कढ़ना = गाढ़ा होना] एक प्रकार का सालन जो पानी में घोले हुए बेसन को आँच पर गाढ़ा करने से बनता है।
मुहा०—कढ़ी का सा उबाल = शीघ्र ही घट जानेवाला जोश।

कढ़ैया†–सज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही"।
† सज्ञा पु० [हिं० काढ़ना] १. निकालनेवाला। २. उद्धार करनेवाला। बचानेवाला।

कढ़ोरना†–क्रि० स० [स० कर्षण] खींचना। घसीटना।

कण–सज्ञा पु० [स०] १. किनका। रवा। ज़र्रा। अत्यंत छोटा टुकड़ा। २. चावल का बारीक टुकड़ा। कना। ३. अन्न के कुछ दाने। ४. भिक्षा।

कणाद–सज्ञा पु० [स०] वैशेषिक शास्त्र के रचयिता एक मुनि। उलूक मुनि।

कणिका–सज्ञा स्त्री० [स०] किनका। टुकड़ा।

कण्व–सज्ञा पुं० [स०] १. एक मंत्रकार ऋषि। २. कश्यप गोत्र में उत्पन्न एक ऋषि जिन्होंने शकुंतला को पाला था।

कत–सज्ञा पु० [अ०] देशी कलम की नोक की आड़ी काट।
† अव्य० [स० कुतः, पा० कुतो] क्यों। किस लिए। काहे को।

कतई–अव्य० [अ०] बिलकुल। एकदम।

कतना–क्रि० अ० [हिं० कातना] काता जाना।

कतरन–सज्ञा स्त्री० [हिं० कतरना] कपड़े, कागज़ आदि के वे छोटे रद्दी टुकड़े जो काट-छाँट के पीछे बच रहते हैं।

कतरना–क्रि० स० [स० कर्तन] कैंची या किसी औज़ार से काटना।

कतरनी–सज्ञा स्त्री० [हिं० कतरना] १. बाल, कपड़े आदि काटने का एक औज़ार। कैंची। मिक़राज़। २. धातुओं की चद्दर आदि काटने का, सँड़सी के आकार का, एक औज़ार। काती।

कतर ब्योंत–सज्ञा स्त्री० [हिं० कतरना + ब्योंत] १. काट छाँट। २. उलट फेर। इधर का उधर करना। ३. उधेड़बुन। सोच विचार। ४. दूसरे के सौदे सुलुफ़ में से कुछ रकम अपने लिये निकाल लेना। ५. युक्ति। जोड़ तोड़। ढंग। ढर्रा।

कतरवाना–क्रि० स० दे० "कतराना"।

कतरा–सज्ञा पुं० [हिं० कतरना] कटा हुआ टुकड़ा। खँड।
सज्ञा पु० [अ०] बूँद। बिंदु।

कतराई–सज्ञा स्त्री० [हिं० कतराना] १. कतरने का काम। २. कतरने की मजदूरी।

कतराना–सज्ञा स्त्री० [हिं० कतरना] किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना।
क्रि० स० [हिं० कतरना का प्रे० रूप] कटाना। कटवाना। छँटवाना।

कतरी–सज्ञा स्त्री० [स० कर्तरी = चक्र] १. कोल्हू का पाट जिस पर आदमी बैठकर बैलों को हाँकता है। कातर। २. हाथ में पहनने का पीतल का एक जेवर।

कतल–सज्ञा पु० [अ० क़त्ल] वध। हत्या।

कतलबाज–सज्ञा पुं० [अ० क़त्ल + फा० बाज़] वधिक। जल्लाद।

कतलाम–सज्ञा पु० [अ० क़त्ले-आम] सर्वसाधारण का वध। सर्वसंहार।

शा स्त्री० [पा० कतरा] मिठाई। चौकोर टुकड़ा।
-क्रि० स० [हिं० कातना का प्रे०रूप] कातने का काम लेना।
-सज्ञा पु० [हिं० पतवार = पताई] खट। बेकाम घास फूस।
तवारखाना = कूड़ा फेंकने की जगह।
पु० [हिं० कातना] कातनेवाला।
कतहूँ†-अव्य० [हिं० कत + हूँ] किसी स्थान पर। किसी जगह।
शा स्त्री० [अ० कतअ] १. बनावट। र। २. ढंग। वजा। ३. कपड़े ाट छाँट।
-सज्ञा स्त्री० [हिं० कातना] १. कातने क्रिया। २. कातने की मजदूरी।
†-सज्ञा पु० [फा०] १. अलसी की छाल ना एक बढ़िया कपड़ा जो पहले ा था। २. बढ़िया बुनावट का एक र का रेशमी कपड़ा।
ना- क्रि० स० [हिं० कातना का प्रे० रूप] ी अन्य से कातने का काम कराना।
ार-संज्ञा स्त्री० [अ०] १.पंक्ति। पाँति। ी। २. समूह। झुंड।
ारा-सज्ञा पुं० [स० कांतार] [स्त्री० अल्पा ारी] लाल रंग का मोटा गन्ना।
ारी†-सज्ञा स्त्री० दे० "कतार"।
शा स्त्री० [हिं० कतारा] कतारे की जाति ी छोटी और पतली ईख।
ति -वि० [स०] १. (गिनती में) कितने। २. किस कदर (तौल या माप में)। ३. कौन। ४. बहुत से। अगणित।
तिक†-वि० [स० कति + क] १. कितना। किस कदर। २. बहुत। अनेक।
कतिपय-वि० [स०] १. कितने ही। कई एक। २ कुछ थोड़े से।
कतीरा-सज्ञा पु० [देश०] गुलू नामक वृक्ष का गोंद जो दवा के काम में आता है।
कतेक†-वि० दे० "कितने"।
कतौनी-सज्ञा स्त्री० [हिं० कातना] १ कातने का काम या मजदूरी। २ कोई काम करने के लिये देर तक बैठे रहना।
कत्ता-सज्ञा पुं० [स०कर्त्तरी] १. बाँस चीरने का एक औजार। बाँका। बाँसा। २. छोटी टेढ़ी तलवार।
कत्ती-सज्ञा स्त्री० [स० कर्तरी] १. चाकू। छुरी। २. छोटी तलवार। ३. कटारी। पेशकब्ज़। ४. सोनारों की कतरनी। ५ वह पगड़ी जो बत्ती के समान बटकर बाँधी जाती है।
कत्थई-वि० [हिं० कत्था] खैर के रंग का।
कत्थक-सज्ञा पु० [सं० कथक] एक जाति जिसका काम गाना-बजाना और नाचना है।
कत्था-सज्ञा पु० [स० क्वाथ] १. खैर की लकड़ियों को उबालकर सुखाया काढ़ा जो पान में खाया जाता है। २ खैर का पेड़।
कथंचित्-क्रि० वि० [स०] शायद।
कथक-सज्ञा पु० [सं०] १ कथा या किस्सा कहनेवाला। २ पुराण बाँचनेवाला। पौराणिक। ३ कत्थक।
कथकीकर-सज्ञा पु० [हिं० कत्था + कीकर] खैर का पेड़।
कथक्कड़-सज्ञा पु० [स० कथा + क्कड़ (प्रत्य०)] बहुत कथा कहनेवाला।
कथन-सज्ञा पु० [स०] १. कथना। बयान। २. बात। उक्ति।
कथना†-क्रि० स० [स० कथन] १ कहना। बोलना। २. निंदा करना। बुराई करना।
कथनी†-सज्ञा स्त्री० [स० कथन + ई (प्रत्य०)] १. बात। कथन। २. हुज्जत। बकवाद।
कथनीय-वि० [स०] १. कहने योग्य। वर्णनीय। २. निंदनीय। बुरा।
कथरी-सज्ञा स्त्री० [स० कंथा + री (प्रत्य०)] पुराने चिथड़ों को जोड़-जाड़कर बनाया हुआ बिछावन। गुदड़ी।
कथा-सज्ञा स्त्री० [स०] १. वह जो कहा जाय। बात। २ धर्म-विषयक व्याख्यान। ३ बात। चर्चा। जिक्र। प्रसंग। ४. समाचार। हाल। ५ वाद-विवाद। कहा-सुनी। झगड़ा।
कथानक-सज्ञा पु० [स०] १. कथा। २. छोटी कथा। कहानी।
कथामुख-सज्ञा पु० [स०] आख्यान या कथा ग्रंथ की प्रस्तावना।
कथावस्तु-सज्ञा स्त्री० [स०] उपन्यास या कहानी का ढाँचा। प्लाट।
कथा वार्ता-सज्ञा स्त्री० [स०] अनेक प्रकार की बात-चीत।
कथित-वि० [स०] कहा हुआ।
कथोद्घात-सज्ञा पु० [स०] १ प्रस्तावना। कथा-प्रारंभ। २. (नाटक में) सूत्रधार की बात, अथवा उसके मर्म को लेकर पहले

पहल पात्र का रंगभूमि में प्रवेश और अभिनय का आरंभ।

कथोपकथन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बातचीत। २. वाद-विवाद।

कदंब–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध वृक्ष। कदम। २. समूह। ढेर। झुंड।

क़द–संज्ञा स्त्री० [अ० कद] [वि० कद्दी] १. द्वेष। शत्रुता। २. हठ। ज़िद। †अव्य० [सं० कदा] कब। किस समय।

क़द–संज्ञा पुं० [अ० क़द] ऊँचाई। (प्राणियों के लिए)

यौ०—क़द्दे आदम=मानव शरीर के बराबर ऊँचा।

कदध्वा–संज्ञा पुं० [सं० कदध्वा] खोटा मार्ग। कुपथ। बुरा रास्ता।

कदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मरण। विनाश। २. मारना। वध। हिंसा। ३. युद्ध। संग्राम। ४. पाप। ५. दुःख।

कदन्न–संज्ञा पुं० [सं०] कुत्सित अन्न। बुरा अन्न। मोटा अन्न। जैसे, कोदो,

कदम–संज्ञा पुं० [सं० कदंब] १. एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसमें बरसात में गोल फल लगते हैं। २. एक घास।

क़दम–संज्ञा पुं० [अ०] १. पैर। पाँव।

मुहा०—क़दम उठाना=१. तेज़ चलना। २. उन्नति करना। क़दम चूमना=अत्यंत आदर करना। क़दम छूना=१. प्रणाम करना। २. शपथ खाना। क़दम बढ़ाना या क़दम आगे बढ़ाना=१. तेज़ चलना। २. उन्नति करना। क़दम रखना=प्रवेश करना। दाखिल होना। आना।

२. धूल या कीचड़ में बना हुआ पैर का चिह्न।

मुहा०—क़दम पर क़दम रखना=१. ठीक पीछे पीछे चलना। २. अनुकरण करना।

३. चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अंतर। पैंड। पग। फाल। ४. घोड़े की एक चाल जिसमें केवल पैरों में गति होती है और बदन नहीं हिलता।

क़दमबाज़–वि० [अ०] क़दम की चाल चलनेवाला (घोड़ा)।

क़दर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मान। मात्रा। मिक़दार। २. मान। प्रतिष्ठा। बड़ाई।

कदरई*–संज्ञा स्त्री० [हिं० कादर] कायरता।

कदरज–संज्ञा पुं० [सं० कदर्य] एक प्रसिद्ध पापी।

वि० दे० "कदर्य"।

क़दरदान–वि० [फा०] क़द्र करनेवाला। गुणग्राही। गुणग्राहक।

क़दरदानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] गुणग्राहकता।

कदरमस*–संज्ञा स्त्री० [सं० कदन+हिं० मस (प्रत्य०)] मार-पीट। लड़ाई।

कदराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कादर+ई० (प्रत्य०)] कायरपन। भीरुता। कायरता।

कदराना*–क्रि० अ० [हिं० कादर] कायर होना। डरना। भयभीत होना।

कदरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कद=बुरा+रव=शब्द] एक पक्षी जो डील-डौल में मैना के बराबर होता है।

कदर्थ–संज्ञा पुं० [सं०] निकम्मी वस्तु। कूड़ा-करकट।

वि० कुत्सित। बुरा।

कदर्थना–संज्ञा स्त्री० [सं० कदर्थन] [वि० कदर्थित] दुर्गति। दुर्दशा। बुरी दशा।

कदर्थित–वि० [सं०] जिसकी दुर्दशा की गई हो। दुर्गति-प्राप्त।

कदर्य–वि० [सं०] [संज्ञा कदर्यता] कंजूस।

कदली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केला। २. एक पेड़ जिसकी लकड़ी जहाज़ बनाने में काम आती है। ३. एक तरह का हिरन।

कदा–क्रि० वि० [सं०] कब। किस समय।

मुहा०—यदा कदा=कभी कभी। जब तब।

कदाकार–वि० [सं०] बुरे आकार का। बदसूरत। बदशक्ल। भद्दा।

कदाच*–क्रि० वि० [सं० कदाचन] शायद। कदाचित्।

कदाचार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कदाचारी] बुरी चाल। बुरा आचरण। बदचलनी।

कदाचित्–क्रि० वि० [सं०] कभी। शायद कभी। शायद।

कदापि–क्रि० वि० [सं०] कभी। किसी समय भी। हर्गिज़।

कद्दी–वि० [अ० कद] हठी। ज़िद्दी

क़दीम–वि० [अ०] पुराना।

क़दीमी–वि० [अ० क़दीम] दिनों से चला आता हुआ।

कदुष्ण–वि० [सं०] थोड़ा गर्म। शीर-गर्म।

कदूरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] रंजिश। मन-मोटाव। कीना।

कद्दावर–वि० [फा०] बड़े डील-डौल का।

कद्दी–वि० दे० "कदी"।

कद्रुज–संज्ञा पु० [सं०] सर्प। साँप।

कद्दू–संज्ञा पु० [फा० कदू] लौकी। घिया।

कद्दूकश–संज्ञा पु० [फा०] लोहे पीतल आदि की छेददार चौकी जिस पर कद्दू को रगड़कर उसके महीन टुकड़े करते हैं।

कद्दूदाना–संज्ञा पु० [फा०] पेट के भीतर के छोटे छोटे सफ़ेद कीड़े जो मल के साथ गिरते हैं।

कधी–क्रि० वि० दे० "कभी"।

कन–संज्ञा पु० [सं० कण] १. बहुत छोटा टुकड़ा। जर्रा। २. अन्न का एक दाना। ३. अनाज के दाने का टुकड़ा। ४. प्रसाद। जूठन। ५. भीख। भिक्षान्न। ६. चावलों की धूल। कना। ७ बालू या रेत के कण। ८. शारीरिक शक्ति। संज्ञा पु० 'कान' का संक्षिप्त रूप जो यौगिक शब्दों में आता है। जैसे—कनपटी।

कनई†–संज्ञा स्त्री० [सं० कांड या कदल] कनखा। नई शाखा। कल्ला। कोंपल। †संज्ञा स्त्री० [हिं० काँदव] गीली मिट्टी।

कनउड़†–वि० दे० "कनौड़ा"।

कनक–संज्ञा पु० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २. धतूरा। ३. पलाश। टेसू। ढाक। ४. नागकेसर। ५. खजूर। ६. छप्पय छंद का एक भेद। संज्ञा पु० [सं० कणिक] गेहूँ।

कनककली–संज्ञा पु० [सं० कनक + हिं० कली] कान में पहनने का फूल।

कनककशिपु–संज्ञा पु० दे० "हिरण्यकशिपु"।

कनकचंपा–संज्ञा स्त्री० [सं० कनक + हिं० चंपा] मध्यम आकार का एक पेड़। कर्णिकार। कनियारी।

कनकटा–वि० [हिं० कान + कटना] १. जिसका कान कटा हो। बूचा। २. कान काट लेनेवाला।

कन कना–वि० [अनु०] जरा से आघात से टूटनेवाला। 'चीमड़' का उलटा।

कनकना–वि० [हिं० कनकनाना] [स्त्री०] १. जिससे कनकनाहट उत्पन्न हो। २. चुनचुनानेवाला। ३. अरुचिकर। नागवार। ४. चिड़चिड़ा।

कनकनाना–क्रि० अ० [हिं० कौंद, पु० हिं० कान] [संज्ञा कनकनाहट] १. सूरन, अरवी आदि वस्तुओं के स्पर्श से अंगों में चुनचुनाहट होना। चुनचुनाना। २. चुनचुनाहट या कनकनाहट उत्पन्न करना। गला काटना। ३. अरुचिकर लगना। नागवार मालूम होना। क्रि० अ० [हिं० कना] १. चौकन्ना होना। २. रोमांचित होना।

कनकनाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० कनकनाना] कनकनाने का भाव। कनकनी।

कनकफल–संज्ञा पु० [सं०] १. धतूरे का फल। २ जमालगोटा।

कनकाचल–संज्ञा पु० [सं०] १. सोने का पर्वत। २ सुमेरु पर्वत।

कनकानी–संज्ञा पु० [देश०] घोड़े की एक जाति।

कनकी–संज्ञा स्त्री० [सं० कणिक] १. चावलों के टूटे हुए छोटे टुकड़े। २. छोटा कण।

कनकूत–संज्ञा पु० [सं० कण + हिं० कूत] खेत में खड़ी फ़सल की उपज का अनुमान।

कनकौवा–संज्ञा पु० [हिं० कना + कौवा] कागज की बड़ी पतंग। गुड्डी।

कनखजूरा–संज्ञा पु० [हिं० कान + खजूर = एक कीड़ा] एक जहरीला छोटा कीड़ा जिसके बहुत से पैर होते हैं। गोजर।

कनखा†–संज्ञा पु० [सं० कांडक] कोंपल।

कनखियाना–क्रि० स० [हिं० कनखी] १. कनखी या तिरछी नजर से देखना। २. आँख से इशारा करना।

कनखी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोन + आँख] १. पुतली को आँख के कोने पर ले जाकर ताकने की मुद्रा। दूसरों की दृष्टि बचाकर देखना। २. आँख का इशारा। मुहा०—कनखी मारना = आँख से इशारा या मना करना।

कनखैया†–संज्ञा स्त्री० दे० "कनखी"।

कनखोदनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कान + खोदना] कान की मैल निकालने की सलाई।

कनगुरिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० कानी + अँगुरी] सबसे छोटी उँगली।

कनछेदन–संज्ञा पुं० [हिं० कान + छेदना]

हिंदुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चों का कान छेदा जाता है। कर्णवेध।
कनटोप-संज्ञा पुं० [हिं० कान+टोप या तोपना] कानों को ढँकनेवाली टोपी।
कनतूतुर-संज्ञा पुं० [हिं० कान+तू तू शब्द] छोटी जाति का एक जहरीला मेढक।
कनधार-संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"।
कनपटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+सं० पट] कान और आँख के बीच का स्थान।
कनपेड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० कान+पेड़ा] एक रोग जिसमें कान की जड़ के पास चिपटी गिल्टी निकल आती है।
कनफटा-संज्ञा पुं० [हिं० कान+फटना] गोरखनाथ के अनुयायी योगी जो कानों को फड़वाकर उनमें बिल्लौर की मुद्राएँ पहनते हैं।
कनफुँका-वि० [हिं० कान+फूँकना] [स्त्री० कनफुँकी] १. कान फूँकनेवाला। दीक्षा देनेवाला। २. जिसने दीक्षा ली हो।
कनफुसकी†-संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।
कनमनाना-क्रि० अ० [हिं० कान+मानना] १. सोए हुए प्राणी का कुछ आहट पाकर हिलना डोलना या सचेष्ट होना। २. किसी बात के विरुद्ध कुछ कहना या चेष्टा करना।
कनमैलिया-संज्ञा पुं० [हिं० कान+मैल] कान की मैल निकालनेवाला।
कनय: -संज्ञा पुं० दे० "कनक"।
कनरस-संज्ञा पुं० [हिं० कान+रस] १. गाना-बजाना सुनने का आनंद। २. गाना-बजाना या बात सुनने का व्यसन।
कनरसिया-संज्ञा पुं० [हिं० कान+रसिया] गाना बजाना सुनने का शौकीन।
कनसलाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+हिं० सलाई] कनखजूरे की तरह का एक कीड़ा।
कनसाल-संज्ञा पुं० [हिं० कोन+सालना] चारपाई के पायों के तिरछे पड़े छेद जिनके कारण चारपाई में कनेव आ जाय।
कनसार-संज्ञा पुं० [सं० कांस्यकार] ताम्र-पत्र पर लेख खोदनेवाला।
कनसुई-संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+सुनना] आहट। टोह।
मुहा०—कनसुई या कनसुइयाँ लेना=१. छिपकर किसी की बात सुनना। २. भेद लेना।
कनस्तर-संज्ञा पुं० [अं० कनिस्टर] टीन का चौखूँटा पीपा, जिसमें घी-तेल, आदि रक्खा जाता है।
कनहार:-संज्ञा पुं० [सं० कर्णधार] मल्लाह।
कना-संज्ञा पुं० दे० "कन"।
कनाउडा:-वि० दे० "कनौड़ा"।
कनागत-संज्ञा पुं० [सं० कन्यागत] १. पितृपक्ष। २. श्राद्ध।
कनात-संज्ञा स्त्री० [तु०] मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किसी स्थान को घेरकर आड़ करते हैं।
कनारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कनारा+ई (प्रत्य०)] १. मदरास प्रांत के कनारा नामक प्रदेश की भाषा। २ कनारा का निवासी।
कनावड़ा-संज्ञा पुं० दे० "कनौड़ा"।
कनिआरी-संज्ञा स्त्री० [सं० कर्णिकार] कनक-चंपा का पेड़।
कनिका.-संज्ञा स्त्री० दे० "कणिका"।
कनिगर:-संज्ञा पुं० [हिं० कानि+फा० गर] अपनी मर्यादा का ध्यान रखनेवाला। नाम की लाज रखनेवाला।
कनियाँ†-संज्ञा स्त्री० [हिं० काँध] गोद। कोरा। उछंग।
कनियाना-क्रि० अ० [हिं० कोना] आँख बचाकर निकल जाना। कतराना।
क्रि० अ० [हिं० कन्नी, कना] पतंग का किसी ओर झुक जाना। कन्नी खाना।
† क्रि० अ० [हिं० कनिया] गोद लेना। गोद में उठाना।
कनियार-संज्ञा पुं० [सं० कर्णिकार] कनकचंपा।
कनिष्ठ-वि० [सं०] [स्त्री० कनिष्ठा] १. बहुत छोटा। अत्यंत लघु। सबसे छोटा। २ जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। ३. उमर में छोटा। ४. हीन। निकृष्ट।
कनिष्ठा-वि० स्त्री० [सं०] १ बहुत छोटी। सबसे छोटी। २. हीन। निकृष्ट। नीच।
संज्ञा स्त्री० १ दो या कई स्त्रियों में सबसे छोटी या पीछे की विवाहिता स्त्री। २. नायिका भेद के अनुसार दो या अधिक स्त्रियों में वह स्त्री जिस पर पति का प्रेम कम हो। ३. छोटी उँगली। छिगुनी।
कनिष्ठिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] सबसे छोटी उँगली। कानी उँगली। छिगुनी।
कनी-संज्ञा स्त्री० [सं० कण] १. छोटा टुकड़ा। २. हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा।

–कनी खाना या चाटना=हीरे निगलकर प्राण देना।
...ल के छोटे छोटे टुकड़े। किनकी। ...ल का मध्य भाग जो कभी कभी ...ता। २. बूँद।
...का–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आँख ...ली। तारा। २. कन्या।
...० वि० [सं० करखे=स्थान में] ...। निकट। समीप। २. ओर। ...। ३. अधिकार में। कब्ज़े में।
...–वि० [हिं० काना+एरा (प्रत्य०)] ...ना। २. भेंगा। ऐंचा-ताना।
–संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+ऐंठना] मरोड़ने की सज़ा। गोशमाली।
–संज्ञा पु० [सं० कणेर] एक पेड़ जिसमें ..., या पीले सुंदर फूल लगते हैं।
...रेया–वि० [हिं० कनेर] कनेर के फूल ...ग का। कुछ श्यामता लिए लाल।
...ा–संज्ञा पु० [हिं० कोन+एव] चार-... का टेढ़ापन।
...जिया–वि० [हिं० कन्नौज+इया (प्रत्य०)] कन्नौज-निवासी। २. जिसके पूर्वज ...नौज के रहनेवाले रहे हों।
...ा पु० कान्यकुब्ज ब्राह्मण।
...ौड़ा–वि० [हिं० काना+औड़ा (प्रत्य०)] ... काना। २. जिसका कोई अंग खंडित ...। अपंग। खोंड़ा। ३. कलंकित। ...लेटित। ४. लज्जित। संकुचित।
...संज्ञा पु० [हिं० कौनना=मोल लेना+औड़ा (प्रत्य०)] १. मोल लिया हुआ गुलाम। क्रीत दास। २. कृतज्ञ मनुष्य। एहसान-मंद आदमी। ३. तुच्छ मनुष्य।
...नौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+औती (प्रत्य०)] १. पशुओं के कान या उनके कानों की नोक। २. कानों के उठाने या उठाए रखने का ढंग। ३. कान में पहनने की बाली।
कन्ना–संज्ञा पु० [सं० कर्ण, प्रा० कण्ण] [स्त्री० कन्नी] १. पतंग का वह डोरा जिसका एक छोर काँप और ढड्डे के मेल पर और दूसरा पुछल्ले के कुछ ऊपर बाँधा जाता है। २. किनारा। कोर। औंठ।
संज्ञा पु० [सं० कण] चावल का कन।
संज्ञा पु० [सं० कर्णक] वनस्पति का एक रोग जिससे उसकी लकड़ी तथा फल आदि में कीड़े पड़ जाते हैं।

कन्नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कन्ना] १. पतंग या कनकौवे के दोनों ओर के किनारे। २. वह धज्जी जो पतंग की कन्नी में इसलिये बाँधी जाती है कि वह सीधी उड़े। ३. किनारा। हाशिया।
संज्ञा पु० [सं० करण] राजगीरों का करनी नामक औज़ार।
कन्यका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्वारी लड़की। २. पुत्री। बेटी।
कन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अविवाहिता लड़की। क्वारी लड़की।
यौ०—पंचकन्या=पुराणों के अनुसार ये पाँच स्त्रियाँ जो बहुत पवित्र मानी गई हैं—अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी।
२. पुत्री। बेटी। ३. बारह राशियों में से छठी राशि। ४. घीक्वार। ५. बड़ी इलायची। ६. एक वर्ण-वृत्त।
कन्याकुमारी–संज्ञा स्त्री० [सं० कन्या+कुमारी] भारत के दक्षिण में रामेश्वर के निकट का एक अंतरीप। रासकुमारी।
कन्यादान–संज्ञा पु० [सं०] विवाह में वर को कन्या देने की रीति।
कन्याधन–संज्ञा पु० [सं०] वह स्त्री-धन जो स्त्री को अविवाहिता या कन्या-अवस्था में मिला हो।
कन्याराशी–वि० [सं० कन्याराशिन्] १. जिसके जन्म के समय चंद्रमा कन्या राशि में हो। २. चौपट। सत्यानाशी।
कन्यावानी–संज्ञा स्त्री० [सं० कन्या+हिं० पानी] कन्या के सूर्य के समय की वर्षा।
कन्हाई, कन्हैया–संज्ञा पु० [सं० कृष्ण] १. श्रीकृष्ण। २. अत्यंत प्यारा आदमी। प्रिय व्यक्ति। ३. बहुत सुंदर लड़का।
कपट–संज्ञा पु० [सं०] [वि० कपटी] १. अभिप्राय साधन के लिये हृदय की बात को छिपाने की वृत्ति। छल। दंभ। धोखा। २. दुराव। छिपाव।
कपटना–क्रि० स० [सं० कल्पन्] १. काट-कर अलग करना। छाँटना। खोंटना। २. काटकर अलग निकालना।
कपटी–वि० [सं०] कपट करनेवाला। छली। धोखेबाज़। धूर्त।
कपड़छन, कपड़छान–संज्ञा पु० [हिं० कपड़ा+छानना] किसी पिसी हुई बुकनी को कपड़े में छानने का कार्य।

कपड़द्वार–संज्ञा पुं० [हिं० कपड़ा + द्वार] कपड़ों का भंडार। वस्त्रागार। तोशाखाना।
कपड़धूलि–संज्ञा स्त्री० [हिं० कपड़ा + धूलि] एक प्रकार का बारीक रेशमी कपड़ा। करेब।
कपड़मिट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कपड़ा + मिट्टी] धातु या श्रोषधि फूँकने के संपुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया। कपड़ौटी। गिल-हिकमत।
कपड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कर्पट] १ रूई, रेशम, ऊन या सन के तागों से बुना हुआ शरीर का श्राच्छादन। वस्त्र। पट। मुहा०—कपड़ों से होना = मासिक धर्म से होना। रजस्वला होना। (स्त्री का) २. पहनावा। पोशाक। यौ०—कपड़ा लत्ता = पहनने का सामान।
कपड़ौटी–संज्ञा स्त्री० दे० "कपड़मिट्टी"।
कपर्द, कपर्दक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कपर्दिका] १. (शिव का) जटाजूट। २. कौड़ी।
कपर्दिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] कौड़ी।
कपर्दिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
कपर्दी–संज्ञा पुं० [सं० कपर्दिन्] [स्त्री० कपर्दिनी] १. शिव। २. ग्यारह रुद्रों में से एक।
कपाट–संज्ञा पुं० [सं०] किवाड़। पट।
कपाटबद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसके श्रक्षरों को विशेष रूप से लिखने से किवाड़ों का चित्र बन जाता है।
कपार०†–संज्ञा पुं० दे० "कपाल"।
कपाल–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कपाली, कपालिका] १. खोपड़ा। खोपड़ी। २. ललाट। मस्तक। ३ श्रदृष्ट। भाग्य। ४. घड़े श्रादि के नीचे या ऊपर का भाग। खपड़ा। खर्पर। ५. मिट्टी का भिक्षा-पात्र। खप्पर। ६. वह बरतन जिसमें यज्ञों में देवताश्रों के लिये पुरोडाश पकाया जाता था।
कपालक०–वि० दे० "कापालिक"।
कपालक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक-संस्कार के श्रतर्गत एक कृत्य जिसमें जलते हुए शव की खोपड़ी को बाँस या लकड़ी से फोड़ देते हैं।
कपालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] खोपड़ी। संज्ञा स्त्री० [सं० कापालिका] काली। रणचंडी।
कपालिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
कपाली–संज्ञा पुं० [सं० कपालिन्] [स्त्री० कपालिनी] १. शिव। महादेव। २. भैरव। ३. ठीकरा लेकर भीख माँगनेवाला। ४. एक वर्णसंकर जाति। कपरिया।
कपास–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्पास] [वि० कपासी] एक पौधा जिसके ढेंढ से रूई निकलती है।
कपासी–वि० [हिं० कपास] कपास के फूल के रंग का। बहुत हलके पीले रंग का। संज्ञा पुं० बहुत हलका पीला रंग।
कपिंजल–संज्ञा पुं० [सं०] १. चातक। पपीहा। २. गौरा पक्षी। ३. भरदूल। भरद्दी। ४. तीतर। ५. एक मुनि। वि० [सं०] पीले रंग का।
कपि–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंदर। २. हाथी। ३ करंज। कंजा। ४. सूर्य।
कपिकच्छु–संज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच।
कपिकेतु–संज्ञा पुं० [सं०] श्रर्जुन।
कपिखेल०–संज्ञा पुं० दे० "कपिकच्छु"।
कपित्थ–संज्ञा पुं० [सं०] कैथ का पेड़ या फल।
कपिध्वज–संज्ञा पुं० [सं०] श्रर्जुन।
कपिल–वि० [सं०] १. भूरा। मटमैला। तामड़े रंग का। २. सफेद। संज्ञा पुं० १. श्रग्नि। २. कुत्ता। ३. चूहा। ४. शिलाजीत। ५. महादेव। ६. सूर्य। ७. विष्णु। ८ एक मुनि जो सांख्य-शास्त्र के श्रादि प्रवर्तक माने जाते हैं।
कपिलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] केवाँच।
कपिलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भूरापन। २ ललाई। ३. पीलापन। ४ सफेदी।
कपिलवस्तु–संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध का जन्मस्थान।
कपिला–वि० स्त्री० [सं०] १. भूरे रंग की। मटमैले रंग की। २. सफेद रंग की। ३. जिसके शरीर में सफेद दाग हों। ४. सीधी सादी। भोली भाली। संज्ञा स्त्री० १. सफेद रंग की गाय। २. सीधी गाय। ३. पुंडरीक नामक दिग्गज की पत्नी। ४. दक्ष की एक कन्या।
कपिश–वि० [सं०] १. काला श्रौर पीला रंग लिए भूरे रंग का। मटमैला। २. पीला भूरा। लाल भूरा।
कपिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का मद्य। २. एक नदी कश्यप

की एक स्त्री जिससे पिशाच उत्पन्न हुए थे।
कपीश–संज्ञा पु० [सं०] वानरों का राजा। जैसे हनुमान, सुग्रीव इत्यादि।
कपूत–संज्ञा पु० [सं० कुपुत्र] बुरी चाल-चलन का पुत्र। बुरा लड़का।
कपूती–संज्ञा स्त्री० [हिं० कपूत] पुत्र के अयोग्य आचरण। नालायकी।
कपूर–संज्ञा पु० [सं० कर्पूर] एक सफेद रंग का जमा हुआ सुगंधित द्रव्य जो दारचीनी की जाति के पेड़ से निकलता है। काफूर।
कपूरकचरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कपूर + कचरी] एक बेल जिसकी जड़ सुगंधित होती है और दवा के काम में आती है। सितरुती।
कपूरी–वि० [हिं० कपूर] १. कपूर का बना हुआ। २. हलके पीले रंग का।
संज्ञा पु० १. कुछ हलका पीला रंग। २ एक प्रकार का कड़ुआ पान।
कपोत–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कपोतिका, कपोती] १. कबूतर। २. परेवा। ३. पक्षी। चिड़िया। ४. भूरे रंग का कच्चा सुरमा।
कपोतव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] चुप-चाप दूसरे के अत्याचारों को सहना।
कपोती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कबूतरी। २. पँडुकी। ३. कुमरी।
वि० [सं०] कपोत के रंग का। धूमला रंग का।
कपोल–संज्ञा पु० [सं०] गाल।
कपोलकल्पना–संज्ञा स्त्री० [सं०] मनगढ़ंत या बनावटी बात। गप्प।
कपोलकल्पित–वि० [सं०] बनावटी। मनगढ़ंत। झूठ।
कपोलगेंदुआ–संज्ञा पु० [सं० कपोल + हिं० गेंद] गाल के नीचे रखने का तकिया। गल-तकिया।
कफ–संज्ञा पु० [सं०] १. वह गाढ़ी लसीली और अठेदार वस्तु जो खाँसने या थूकने से मुँह से बाहर आती है तथा नाक से भी निकलती है। श्लेष्मा। बलगम। २. वैद्यक के अनुसार शरीर के भीतर की एक धातु।
कफ–संज्ञा पु० [अ०] कमीज या कुर्ते की आस्तीन के आगे की दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगते हैं।
संज्ञा पु० [फा०] झाग। फेन।
कफन–संज्ञा पु० [अ०] वह कपड़ा जिसमें मुर्दा लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है।
मुहा०—कफन को कौड़ी न होना या रहना = अत्यंत दरिद्र होना। कफन को कौड़ी न रखना = जो कमाना, वह सब खा लेना।
कफनखसोट–वि० [अ० कफन + हिं० खसोटना] कंजूस। मक्खीचूस। अत्यंत लोभी।
कफनखसोटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कफन + खसोटना] १. डोमों का कर जो वे श्मशान पर मुर्दों का कफन फाड़कर लेते हैं। २. इधर उधर से भले या बुरे ढंग से धन एकत्र करने की वृत्ति। ३ कंजूसी।
कफनाना–क्रि० स० [अ० कफन + हिं० आना (प्रत्य०)] गाड़ने या जलाने के लिये मुर्दे को कफन में लपेटना।
कफनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कफन] १ वह कपड़ा जो मुर्दे के गले में डालते हैं। २. साधुओं के पहनने की मेखला।
कफस–संज्ञा पु० [अ०] १. पिंजरा। २. काबुक। दरबा। ३. बंदीगृह। कैद-खाना। ४. बहुत तंग जगह।
कबंध–संज्ञा पु० [सं०] १ पीपा। कंडाल। २. बादल। मेघ। ३. पेट। उदर। ४ जल। ५. बिना सिर का धड़। रुंड। ६.एक राक्षस जिसे राम ने जीता ही भूमि में गाड़ दिया था। ७. राहु।
कब–क्रि० वि० [सं० कदा] १. किस समय ? किस वक्त ? (प्रश्नसूचक)।
मुहा०—कब का, कब के, कब से = देर से। विलंब से। कब नहीं = बराबर। सदा। २. कभी नहीं। नहीं।
कबड्डी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. लड़कों का एक खेल जिसे वे दो दल बनाकर खेलते हैं। २. कांपा। कंपा।
कबर–संज्ञा स्त्री० दे० "कब्र"।
कबरा–वि० [सं० कर्बुर, पा० कब्बर] [स्त्री० कबरी] सफेद रंग पर काले, लाल, पीले आदि दागवाला। चितला। अबलक।
कबरिस्तान–संज्ञा पुं० दे० "कब्रिस्तान"।
कबल–अव्य० [अ०] पहले। पेशतर।
कबा–संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का लंबा ढीला पहनावा।
कबाड़–संज्ञा पुं० [सं० कर्पट] [संज्ञा कबाड़ी] १. काम में न आनेवाली वस्तु। अँगड़-खंगड़। २. अँड़-बँड़ काम। व्यर्थ का व्यापार। ३. तुच्छ व्यवसाय।

कबाड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] व्यर्थ की बात। झंझट। बखेड़ा।

कबाड़िया—संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] १. टूटी-फूटी, सड़ी गली चीजें बेचनेवाला आदमी। २. तुच्छ व्यवसाय करनेवाला पुरुष। ३. झगड़ालू आदमी।

कबाड़ी—संज्ञा पुं० दे० "कबाड़िया"।

कबाब—संज्ञा पुं० [अ०] सीखों पर भूना हुआ मांस।

कबाबचीनी—संज्ञा स्त्री० [अ० कबाब+हिं० चीनी] १. मिर्च की जाति की एक लिपटनेवाली झाड़ी जिसके गोल फल खाने में चरपरे और ठंढे मालूम होते हैं। २. कबाबचीनी का गोल फल या दाना।

कबाबी—वि० [अ० कबाब] १. कबाब बेचनेवाला। २. मांसाहारी।

कबार—संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] १. व्यापार। रोजगार। व्यवसाय। २. दे० "कबाड़"।

कबारना†—क्रि० स० [देश०] उखाड़ना।

कबाला—संज्ञा पुं० [अ०] वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकार में चली जाय। जैसे—बयनामा।

कबाहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुराई। खराबी। २. दिक्कत। तरद्दुद। अड़चन।

कबीर—संज्ञा पुं० [अ० कबीर=बड़ा, श्रेष्ठ] १. एक प्रसिद्ध भक्त जो जुलाहे थे। २. एक प्रकार का अश्लील गीत या पद जो होली में गाया जाता है।
वि० श्रेष्ठ। बड़ा।

कबीरपंथी—वि० [हिं० कबीर+पंथ] कबीर के संप्रदाय का।

कबीला—संज्ञा स्त्री० [अ०] स्त्री। जोरू।

कबुलवाना, कबुलाना—क्रि० स० [हिं० कबूलना का प्रे० रूप] कबूल कराना।

कबूतर—संज्ञा पुं० [फा०, मिलाओ सं० कपोत] [स्त्री० कबूतरी] झुंड में रहनेवाला परेवा की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी।

कबूतरखाना—संज्ञा पुं० [फा०] पालतू कबूतरों के रहने का दरबा।

कबूतरबाज—वि० [फा०] जिसे कबूतर पालने और उड़ाने की लत हो।

कबूल—संज्ञा पुं० [अ०] स्वीकार। अंगीकार। मंजूर।

कबूलना—क्रि० स० [अ० कबूल+ना (प्रत्य०)] स्वीकार करना। सकारना। मंजूर करना।

कबूलियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह दस्तावेज जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति में ठेका या पट्टा देनेवाले को लिख दे।

कबूली—संज्ञा स्त्री० [फा०] चने की दाल की खिचड़ी।

कब्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १. ग्रहण। पकड़। २. दस्त का साफ़ न होना। मलावरोध।

कब्जा—संज्ञा पुं० [अ०] १. मूँठ। दस्ता।
मुहा०—कब्जे पर हाथ डालना=तलवार खींचने के लिये मूँठ पर हाथ ले जाना।
२. किवाड़ या संदूक में जड़े जानेवाले लोहे या पीतल की चद्दर के बने हुए दो चौखूँटे टुकड़े। नर-मादगी। पकड़। ३. दखल। अधिकार। वश। इख्तियार।

कब्जादार—संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० संज्ञा कब्जादारी] १. वह अधिकारी जिसका कब्जा हो। २. दखीलकार असामी।
वि० जिसमें कब्जा लगा हो।

कब्जियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] पाखाने का साफ़ न आना। मलावरोध।

कब्र—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह गड्ढा जिसमें मुसलमान, ईसाई आदि अपने मुर्दे गाड़ते हैं। २. वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जाता है।
मुहा०—कब्र में पैर या पाँव लटकाना=मरने को होना। मरने के करीब होना।

कब्रिस्तान—संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं।

कभी—क्रि० वि० [हिं० कब+ही] किसी समय। किसी अवसर पर।
मुहा०—कभी का=बहुत देर से। कभी न कभी=आगे चलकर अवश्य किसी अवसर पर।

कभू†—क्रि० वि० दे० "कभी"।

कमगर—संज्ञा पुं० [फा० कमानगर] १. कमान बनानेवाला। २. जोड़ की उतरी हुई हड्डी को असली जगह पर बैठानेवाला। ३. चितेरा। मुसौवर।
† वि० दक्ष। कुशल। निपुण।

कमगरी—संज्ञा स्त्री० [फा० कमानगर] १. कमान बनाने का पेशा या हुनर। २. हड्डी बैठाने का काम। ३ मुसौवरी।

कमंडल—संज्ञा पुं० दे० "कमंडलु"।

कमंडली—वि० [सं० कमंडलु+ई (प्रत्य०)] १. साधु। बैरागी। २. पाखंडी।

कमंडलु—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यासियों का

जलपात्र, जो धातु, मिट्टी, तुमड़ी, दरियाई नारियल आदि का होता है।
कमंद[२]—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कवच"।
संज्ञा स्त्री॰ [फा॰] १.वह फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर जंगली पशु आदि फँसाए जाते हैं। फंदा। पाश। २. फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।
कम—वि॰ [फा॰] १. थोड़ा। न्यून। अल्प। **मुहा॰**—कम से कम=अधिक नहीं तो इतना अवश्य। और नहीं तो इतना जरूर। २. बुरा। जैसे—कमबख्त। क्रि॰ वि॰ प्राय. नहीं। बहुधा नहीं।
कमअसल—वि॰ [फा॰ कम+अ॰ असल] वर्णसंकर। दोगला।
कमखाब—संज्ञा पुं॰ [फा॰] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिस पर कलाबत्तू के बेल बूटे बने होते हैं।
कमची—संज्ञा स्त्री॰ [तु॰। मि॰ स॰ कंचा] १. पतली लचीली टहनी जिससे टोकरी बनाई जाती है। तीली। २. पतली लचकदार छड़ी। ३. लकड़ी आदि की पतली फट्टी।
कमच्छा—संज्ञा स्त्री॰ दे॰"कामाख्या"।
कमजोर—वि॰ [फा॰] दुर्बल। अशक्त।
कमजोरी—संज्ञा स्त्री॰ [फा॰] निर्बलता। दुर्बलता। नाताकती। अशक्तता।
कमठ—संज्ञा पुं॰ [स॰] [स्त्री॰ कमठी] १. कछुआ। कच्छप। २. साधुओं का तुंबा। ३ बाँस।
कमठा—संज्ञा पुं॰ [कमठ] धनुष।
कमठी—संज्ञा पुं॰ [स॰] कछुई।
संज्ञा स्त्री॰ [स॰ कमठ] बाँस की पतली लचीली धज्जी। फट्टी।
कमती—संज्ञा स्त्री॰ [फा॰ कम+ ती (प्रत्य॰)] कमी। घटती।
वि॰ कम। थोड़ा।
कमना[०][‡]—क्रि॰ अ॰ [फा॰ कम] कम होना। न्यून होना। घटना।
कमनीय—वि॰ [स॰] १. कामना करने योग्य। २. मनोहर। सुंदर।
कमनैत—संज्ञा पुं॰ [फा॰ कमान+हिं॰ ऐत (प्रत्य॰)] कमान चलानेवाला। तीरंदाज।
कमनैती—संज्ञा स्त्री॰ [फा॰ कमान+हिं॰ ऐती (प्रत्य॰)] तीर चलाने की विद्या।
कमबख्त—वि॰ [फा॰] भाग्यहीन। अभागा।
कमबख्ती—संज्ञा स्त्री॰ [फा॰] बदनसीबी। दुर्भाग्य। अभाग्य।
कमर—संज्ञा स्त्री॰ [फा॰] १. शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे और पेड़ू तथा चूतड़ के ऊपर होता है। **मुहा॰**—कमर कसना या बाँधना=१. तैयार होना। उद्यत होना। २. चलने की तैयारी करना। कमर टूटना=निराश होना। उत्साह का न रहना। २. किसी लंबी वस्तु के बीच का पतला भाग। जैसे—कोल्हू की कमर। ३. अँगरखे या सलूके आदि का वह भाग जो कमर पर पड़ता है। लपेट।
कमरकोट, कमरकोटा—संज्ञा पुं॰ [फा॰ कमर+हिं॰ कोट] १. वह छोटी दीवार जो किलों और चार-दीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कँगूरे और छेद होते हैं। २. रक्षा के लिये घेरी हुई दीवार।
कमरख—संज्ञा स्त्री॰ [स॰ कर्मरंग,प्रा॰ कम्मरंग] १ एक पेड़ जिसके फाँकवाले लंबे लंबे फल खट्टे होते हैं और खाए जाते हैं। कर्मरंग। कमरंग। २. इस पेड़ का फल।
कमरखी—वि॰ [हिं॰ कमरख] जिसमें कमरख के ऐसी उभड़ी हुई फाँकें हों।
कमरबंद—संज्ञा पुं॰ [फा॰] १. लंबा कपड़ा जिससे कमर बाँधते हैं। पटुका। २. पेटी। ३. इजारबंद। नाड़ा।
वि॰ कमर कसे तैयार। मुस्तैद।
कमरबल्ला—संज्ञा पुं॰ [फा॰ कमर+हिं॰ बल्ला] १ खपड़े की छाजन में वह लकड़ी जो लड़क के ऊपर और कोरों के नीचे लगाई जाती है। कमरबस्ता। २. कमरकोटा।
कमरा—संज्ञा पुं॰ [लै॰ कैमेरा] १. कोठरी। २. फोटोग्राफी का वह औज़ार जिसके मुँह पर लेंस या प्रतिबिंब उतारने का गोल शीशा लगा रहता है।
[‡]संज्ञा पुं॰ दे॰ "कंबल"।
कमरिया—संज्ञा पुं॰ [फा॰ कमर] एक प्रकार का हाथी जो डील डोल में छोटा पर बहुत जबरदस्त होता है। बौना हाथी।
[‡]संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कमली"।
कमरी[‡]—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कमली"।
कमल—संज्ञा पुं॰ [स॰] १. पानी में होने वाला एक पौधा जो अपने सुंदर फूलों के लिये प्रसिद्ध है। २. इस पौधे का फूल

३. कमल के आकार का एक मांस पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है। क्लोमा। ४. जल। पानी। ५. तांबा। ६. [स्त्री० कमली] एक प्रकार का मृग। ७. सारस। ८. आंख का कोया। डेला। ९. योनि के भीतर कमलाकार एक गांठ। फूल। धरन। १०. छः मात्राओं का एक छंद। ११. छप्पय के ७१ भेदों में से एक। १२. कांच का एक प्रकार का गिलास जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है। १३. एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आंखें पीली पड़ जाती हैं। पीलू। कमला। कांवर। १४ मूत्राशय। मसाना।

कमलगट्टा–संज्ञा पुं० [सं० कमल + हिं० गट्टा] कमल का बीज। पद्मबीज।

कमलज–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

कमलनयन–वि० [सं०] [स्त्री० कमलनयनी] जिसकी आंखें कमल की पंखड़ी की तरह बड़ी और सुंदर हों।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २ राम। ३. कृष्ण।

कमलनाभ–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

कमलनाल–संज्ञा स्त्री० [सं०] कमल की डंडी जिसके ऊपर फूल रहता है। मृणाल।

कमलबंध–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य।

कमलबाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कमल + बाई] एक रोग जिसमें शरीर, विशेषकर आंखें पीली पड़ जाती हैं।

कमलयोनि–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

कमला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. धन। ऐश्वर्य। ३. एक प्रकार की बड़ी नारंगी। संतरा। ४. एक वर्ण-वृत्त। रतिपद।
संज्ञा पुं० [सं० कवल] १. एक रोएँदार कीड़ा जिसके शरीर में छू जाने से खुजलाहट होती है। झांझा। सूँड़ी। २. अनाज या सड़े फल आदि में पड़नेवाला लंबा सफेद रंग का कीड़ा। ढोला।

कमलाकार–संज्ञा पुं० [सं०] छप्पय का एक भेद।

कमलाक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल का बीज। २. दे० "कमलनयन"।

कमलापति–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

कमलालया–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

कमलावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] पद्मावती छंद।

कमलासन–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. योग का एक आसन। पद्मासन।

कमलिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा कमल। २. वह तालाब जिसमें कमल हों।

कमली–संज्ञा पुं० [सं० कमलिन्] ब्रह्मा।
संज्ञा स्त्री० छोटा कंबल।

कमवाना–क्रि० स० [हिं० कमाना का प्रे० रूप] कमाने का काम दूसरे से कराना।

कमसिन–वि० [फा०] [संज्ञा कमसिनी] कम उम्र का। छोटी अवस्था का।

कमसिनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] लड़कपन।

कमाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कमाना] १. कमाया हुआ धन। अर्जित द्रव्य। २ कमाने का काम। ३. व्यवसाय। उद्यम। धंधा।

कमाऊ–वि० [हिं० कमाना] कमानेवाला।

कमाच–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

कमाची–संज्ञा स्त्री० दे० "कमची"।
संज्ञा स्त्री० [फा० कमानचा] कमान की तरह झुकाई हुई तीली।

कमान–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. धनुष।
मुहा०—कमान चढ़ना = १. दौरदौरा होना। २. त्योरी चढ़ना। क्रोध में होना।
२. इंद्रधनुष। ३. मेहराब। ४. तोप। ५ बंदूक।
संज्ञा स्त्री० [अं० कमांड] १ आज्ञा। हुक्म। २. फौजी काम की आज्ञा। ३ फौजी नौकरी।
मुहा०—कमान पर जाना = लड़ाई पर जाना। कमान बोलना = नौकरी या लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।

कमानगर–संज्ञा पुं० दे० "कमंगर"।

कमानचा–संज्ञा पुं० [फा०] १ छोटी कमान। २. सारंगी बजाने की कमानी। ३. मिहराब। डाट।

कमाना–क्रि० स० [हिं० काम] १ कामकाज करके रुपया पैदा करना। २. सुधारना या काम के योग्य बनाना।
यौ०—कमाई हुई हड्डी *या* देह = कसरत से बलिष्ठ किया हुआ शरीर। कमाया सांप = वह सांप जिसके विषैले दांत उखाड़ लिए गए हों।
३ सेवा संबंधी छोटे छोटे काम करना। जैसे—पाखाना कमाना (उठाना)।

४. कर्म संचय करना। जैसे—पाप कमाना। क्रि० अ० १. मेहनत मजदूरी करना। २. कसब करना। खर्चा कमाना।
†क्रि० स० [हिं० कम] कम करना। घटाना।

कमानिया—संज्ञा पुं० [फा० कमान] धनुष चलानेवाला। तीरंदाज।
वि० धन्वाकार। मेहराबदार।

कमानी—संज्ञा स्त्री० [फा० कमान] [वि० कमानीदार] १. लोहे की तीली, तार अथवा इसी प्रकार की और कोई लचीली वस्तु जो इस प्रकार बैठाई हो कि दाब पड़ने से दब जाय और हटने पर फिर अपनी जगह पर आ जाय।
यौ०—बाल-कमानी = घड़ी की एक बहुत पतली कमानी जिसके सहारे चक्कर घूमता है।
२. झुकाई हुई लोहे की लचीली तीली। ३. एक प्रकार की चमड़े की पेटी जिसे आँत उतरनेवाले रोगी कमर में लगाते हैं। ४ कमान के आकार की कोई झुकी हुई लकड़ी जिसके दोनों सिरों के बीच में रस्सी, तार या बाल बँधा हो।

कमाल—संज्ञा पुं० [अ०] १. परिपूर्णता। पूरापन। २. निपुणता। कुशलता। ३. अद्भुत कर्म। अनोखा कार्य्य। ४. कारीगरी। ५. कबीरदास के बेटे का नाम।
वि० १. पूरा। संपूर्ण। सब। २. सर्वोत्तम। ३. अत्यंत। बहुत ज्यादा।

कमालियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. परिपूर्णता। पूरापन। २. निपुणता। कुशलता।

कमासुत—वि० [हिं० कमाना + सुत] १. कमाई करनेवाला। २. उद्यमी।

कमी—संज्ञा स्त्री० [फा० कम] १. न्यूनता। कोताही। अल्पता। २. हानि। नुकसान।

कमीज—संज्ञा स्त्री० [अ० कमीस] एक प्रकार का कुर्ता जिसमें कली और चौबगले नहीं होते।

कमीना—वि० [फा०] [स्त्री० कमीनी] ओछा। नीच। क्षुद्र।

कमीनापन—संज्ञा पुं० [फा० कमीना + पन (प्रत्य०)] नीचता। ओछापन। क्षुद्रता।

कमीला—संज्ञा पुं० [सं० कपिल] एक छोटा पेड़ जिसके फलों पर की लाल धूल रेशम रँगने के काम में आती है।

कमुकंदर०†—संज्ञा पुं० [सं० कार्मुक + दर] धनुष तोड़नेवाले रामचंद्र।

कमेरा—संज्ञा पुं० [हिं० काम + एरा (प्रत्य०)] काम करनेवाला। मजदूर। नौकर।

कमेला—संज्ञा पुं० [हिं० काम + एला (प्रत्य०)] वह जगह जहाँ पशु मारे जाते हैं। वध-स्थान।

कमोदिन०†—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

कमोरा—संज्ञा पुं० [सं० कुंभ + ओरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कमोरी, कमोरिया] चौड़े मुँह का मिट्टी का एक बरतन जिसमें दूध, दही या पानी रखा जाता है। घड़ा। कछरा।

कयपूती—संज्ञा स्त्री० [मला० कयु = पेड़ + पूती = सफेद] एक सदाबहार पेड़ जिसकी पत्तियों से कपूर की तरह उड़नेवाला सुगंधित तेल निकाला जाता है।

कया०—संज्ञा स्त्री० दे० "काया"।

कयाम—संज्ञा पुं० [अ०] १ ठहराव। टिकान। २ ठहरने की जगह। विश्राम स्थान। ३. ठौर ठिकाना। निश्चय। स्थिरता।

कयामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का लेखा रक्खा जायगा। लेखे का अंतिम दिन। २. प्रलय। ३. हलचल। खलबली।

कयास—सं० पुं० [अ०] [वि० कयासी] अनुमान। अटकल। सोच विचार। ध्यान।

करंक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मस्तक। २. कमंडलु। ३ नारियल की खोपड़ी। ४. पंजर। ठठरी।

करंज—संज्ञा पुं० [सं०] १ कंजा। २. एक छोटा जंगली पेड़। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी।
संज्ञा पुं० [फा० कुलंग, सं० कलिंग] मुर्गा

करंजा—संज्ञा पुं० दे० "कंजा"।

करंजुवा—संज्ञा पुं० दे० "करंज"।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार के अंकुर घास या ऊख में होते और उनको ह[illegible] पहुँचाते हैं। घमोई।
वि० [सं० करंज] करंज के रंग का। खाकी।
संज्ञा पुं० खाकी रंग। करंज का सा रंग

करंड—संज्ञा पुं० [सं०] १. शहद का छत्ता। २. तलवार। ३. कारंडव नाम का [illegible]। ४. बाँस की टोकरी या पिटारी। [illegible]
संज्ञा पुं० [सं० कुरविंद] कुरल पत्थर पर रखकर हथियार तेज किए जाते हैं।

करंतीना—संज्ञा पुं० [अं० क्वारंटाइन] वह स्थान जहाँ ऐसे लोग कुछ दिन रखे जाते हैं जो किसी फैलनेवाली बीमारी के स्थान से आते हैं।

कर—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ। २. हाथी की सूँड़। ३. सूर्य्य या चंद्रमा की किरण। ४ ओला। पत्थर। ५. मालगुजारी। महसूल। ६. छल। युक्ति। पाखंड।
प्रत्य० [सं० कृत] संबंधकारक का चिह्न। का।

करक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमंडलु। करवा। २. दाड़िम। अनार। ३. कचनार। ४ पलाश। ५. बकुल। मौलसिरी। ६. करील का पेड़।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क] १. रुक रुककर होनेवाली पीड़ा। कसक। चिनक। २. रुक रुककर और जलन के साथ पेशाब होने का रोग। ३. वह चिह्न जो शरीर पर किसी वस्तु की दाब, रगड़ या आघात से पड़ जाता है। साँट।

करकच—संज्ञा पुं० [देश०] समुद्री नमक।

करकट—संज्ञा पुं० [हिं० कर+सं० कट] कूड़ा। झाड़न। बहारन। कतवार।
यौ०—कूड़ा करकट।

करकना—क्रि० अ० दे० "कड़कना"।
वि० [सं० कर्कर] [स्त्री० करकरी] जिसके कण उँगलियों में गड़ें। खुरखुरा।

करकराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० करकरा+आहट (प्रत्य०)] १ कड़ापन। खुरखुराहट। २. आँख में किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा।

करकस—वि० दे० "कर्कश"।

करखा—संज्ञा पुं० १. दे० "कड़खा"। २. एक प्रकार का छंद।
संज्ञा पुं० [सं० कर्ष] उत्तेजना। बढ़ावा। ताव।
संज्ञा पुं० दे० "कालिख"।

करगता—संज्ञा पुं० [सं० कटि+गता] सोने, चाँदी या सूत की करधनी।

करगह—संज्ञा पुं० [फा० कारगाह] १. जुलाहों के कारखाने की वह नीची जगह जिसमें जुलाहे पैर लटकाकर बैठते हैं और कपड़ा बुनते हैं। २ कपड़ा बुनने का यंत्र।

करगहना—संज्ञा पुं० [सं० कर+हिं० गहना] पत्थर या लकड़ी जिसे खिड़की या दरवाजा बनाने में चौखटे के ऊपर रखकर आगे जोड़ाई करते हैं। भरेठा।

करग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] ब्याह।

करघा—संज्ञा पुं० दे० "करगह"।

करचंग—संज्ञा पुं० [हिं० कर+चंग] १. ताल देने का एक बाजा। २. डफ।

करछा—संज्ञा पुं० [सं० कर+रक्षा] [स्त्री० करछी] बड़ी करछी।

करछाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० कर+उछाल] उछाल। छलाँग। कुदान।

करछी†—संज्ञा स्त्री० दे० "कलछी"।

करज—संज्ञा पुं० [सं०] १ नख। नाखून। २. उँगली। ३. नख नामक सुगंधित द्रव्य।

करजोड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० कर+हिं० जोड़ना] हत्थाजोड़ी नाम की ओषधि।

करट—संज्ञा पुं० [सं०] १. कौआ। २. हाथी की कनपटी। ३ कुसुम का पौधा।

करटी—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

करण—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्त्ता क्रिया को सिद्ध करता है और जिसका चिह्न 'से' है। २. हथियार। औजार। ३. इंद्रिय। ४. देह। ५. क्रिया। कार्य्य। ६. स्थान। ७. हेतु। ८. ज्योतिष में तिथियों का एक विभाग। ९. वह संख्या जिसका पूरा पूरा वर्गमूल न निकल सके। करणीगत संख्या।
० संज्ञा पुं० दे० "कर्ण"।

करणीय—वि० [सं०] करने योग्य।

करतब—संज्ञा पुं० [सं० कर्त्तव्य] [वि० करतबी] १. कार्य। काम। २. कला। हुनर। ३. करामात। जादू।

करतबी—वि० [हिं० करतब] १. काम करनेवाला। पुरुषार्थी। २. निपुण। गुणी। ३ करामात दिखानेवाला। बाजीगर।

करतरी‡—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्त्तरी"।

करतल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० करतली] १. हाथ की गदोरी। हथेली। २. चार मात्राओं के गण (डगण) का एक रूप।

करतली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हथेली। २. हथेली का शब्द। ताली।

करता—संज्ञा पुं० दे० "कर्त्ता"।
संज्ञा पुं० १. एक वृत्त का नाम। २. उतनी दूरी जहाँ तक बंदूक की गोली जाय।

करतार—संज्ञा पुं० [सं० कर्त्तार] ईश्वर।
†संज्ञा पुं० दे० "करताल"।

करतारी†—संज्ञा स्त्री० दे० "करताली"।

वि०[स० कर्त्तार] ईश्वरीय।

करताल–संज्ञा पु० [स०] १ दोनों हथे लियों के परस्पर आघात का शब्द। ताली बजना। २ लकड़ी, काँसे आदि का एक बाजा जिसका एक एक जोड़ा हाथ में लेकर बजाते हैं। ३ झाँझ। मँजीरा।

करतूत–संज्ञा स्त्री० [स० कर्तृत्व] १ कर्म। करनी। काम। २ कला। गुण। हुनर।

करतूति–संज्ञा स्त्री० दे० "करतूत"।

करद–वि० [स०] १ कर देनेवाला। अधीन। २ सहारा देनेवाला।

करदा–संज्ञा पु० [हिं० गर्द] १ बिक्री की वस्तु में मिला हुआ कूड़ा करकट या खूद खाद। २ दाम में वह कमी जो किसी वस्तु में मिले कूड़े करकट आदि का वजन निकाल देने के कारण की जाय। धड़ा। कटौती।

करधनी–संज्ञा स्त्री० [स० किंकिणी] १ सोने या चाँदी का कमर में पहनने का एक गहना। २ कई लड़ों का सूत जो कमर में पहना जाता है।

करधर–संज्ञा पु० [स० कर=वर्षोपल+धर] बादल। मेघ।

करन–संज्ञा पु० दे० "कर्ण"।

करनधार–संज्ञा पु० दे० "कर्णधार"।

करनफूल–संज्ञा पु० [स० कर्ण+हिं० फूल] कान का एक गहना। तरौना। कर्णफूल।

करनबेध–संज्ञा पु० [स० कर्णवेध] बच्चों के कान छेदने का संस्कार या रीति।

करना–संज्ञा पु० [स० करुण] एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते हैं। सुदर्शन। संज्ञा पु० [सं० करुण] बिजौरे की तरह का एक बड़ा नीबू।

*संज्ञा पु० [स० करण] किया हुआ काम। करनी। करतूत।

क्रि० स० [स० करण] १ किसी क्रिया को समाप्ति की ओर ले जाना। निब टाना। भुगताना। अंजाम देना। संपादित करना। २ पकाकर तैयार करना। राधना। ३ ले जाना। पहुँचाना। ४ पति या पत्नी रूप से ग्रहण करना। ५ रोजगार खोलना। व्यवसाय चलाना। ६ सवारी ठहराना। भाड़े पर सवारी लेना। ७ रोशनी बुझाना। ८ एक रूप से दूसरे रूप में लाना। बनाना। ९ कोई पद देना। १० किसी वस्तु को पोतना। जैसे, रंग करना।

करनाई–संज्ञा स्त्री० [अ० करनाय] तुरही।

करनाटक–संज्ञा पु० [स० कर्णाटक] मद्रास प्रांत का एक भाग।

करनाटकी–संज्ञा पु० [स० कर्णाटकी] १ करनाटक प्रदेश का निवासी। २ कला बाज। कसरत दिखानेवाला मनुष्य। ३ जादूगर। इंद्रजाली।

करनाल–संज्ञा पु० [अ० करनाय] १ सिंघा। नरसिंहा। भोंपा। धूतू। २ एक प्रकार का बड़ा ढोल। ३ एक प्रकार की तोप।

करनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० करना] १ कार्य। कर्म। करतूत। करतब। २ अंत्येष्टि कर्म। मृतक संस्कार। ३ दीवार पर पलस्तर या गारा लगाने का औजार। कन्नी।

करपर*–संज्ञा स्त्री० [स० कर्पर] खोपड़ी। वि० [स० कृपण] कंजूस।

करपल्लई–संज्ञा स्त्री० दे० "करपल्लवी"।

करपल्लवी–संज्ञा स्त्री० [स०] उँगलियों के संकेत से शब्दों को प्रकट करने की विद्या।

कर पिचकी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर+हिं० पिचकी] जलक्रीड़ा में पिचकारी की तरह पानी का छींटा छोड़ने के लिए दोनों हथे लियों से बनाया हुआ संपुट।

करपीडन–संज्ञा पु० [स०] विवाह।

करपृष्ठ–संज्ञा पुं० [स०] हथेली के पीछे का भाग।

करबरना–क्रि० अ० [अनु०] १ कुल-बुलाना। २ कलरव करना। चहकना।

करबला–संज्ञा पु० [अ०] १ अरब का वह उजाड़ मैदान जहाँ हुसैन मारे गए थे। २ वह स्थान जहाँ ताजिए दफन हों। ३ वह स्थान जहाँ पानी न मिले।

करबूस–संज्ञा पु० [?] हथियार लटकाने के लिए घोड़े की जीन या चारजामे में टँकी हुई रस्सी या तसमा।

करभ–संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० करभी] १ हथेली के पीछे का भाग। करपृष्ठ। २ ऊँट का बच्चा। ३ हाथी का बच्चा। ४ नख नाम की सुगंधित वस्तु। ५ कटि। कमर। ६ दोहे के सातवें भेद का नाम।

करभोर–संज्ञा पु० [स०] हाथी की सूँड़ के ऐसा जंघा।

वि० सुंदर जाँघवाली।
करम-संज्ञा पुं० [सं० कर्म] १. कर्म। काम।
यौ०—करम-भोग = वह दुःख जो अपने किए हुए कर्मों के कारण हो।
२. कर्म का फल। भाग्य। किस्मत।
मुहा०—करम फूटना = भाग्य मंद होना।
यौ०—करमरेख = वह बात जो किस्मत में लिखी हो।
संज्ञा पुं० [अ०] मिहरबानी। कृपा।
करमकल्ला-संज्ञा पुं० [अ० करम + हिं० कल्ला] एक प्रकार की गोभी जिसमें केवल कोमल कोमल पत्तों का बँधा हुआ संपुट होता है। बंद-गोभी। पातगोभी।
करमचंद:†-संज्ञा पुं० [सं० कर्म] कर्म।
करमट्टा:-वि० [सं० कृपण] कंजूस।
करमठ:†-वि० [सं० कर्मठ] १. कर्मनिष्ठ। २. कर्मकांडी।
करमाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] उँगलियों के पोर जिन पर उँगली रखकर माला के अभाव में जप की गिनती करते हैं।
करमाली-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।
करमी-वि० [सं० कर्मी] १. कर्म करनेवाला। २. कर्मठ। ३. कर्मकांडी।
करमुहाँ*-वि० [हिं० काला + मुख] [स्त्री० करमुँही] काले मुँहवाला। कलंकी।
करमुँहा-वि० [हिं० काला + मुँह] १. काले मुँहवाला। २. कलंकी।
करर-संज्ञा पुं० [देश०] १. एक जहरीला कीड़ा जिसके शरीर में बहुत सी गाँठें

संज्ञा पुं० [सं० करपत्र] १. करवत। आरा। २. वे प्राचीन आरे या चक्र जिनके नीचे लोग शुभ फल की आशा से प्राण देते थे।
करवत-संज्ञा पुं० [सं० करपत्र] आरा।
करवर †-संज्ञा स्त्री० [देश०] विपत्ति। आफत। संकट। मुसीबत।
करवरना:-क्रि० अ० [सं० कलरव] कलरव करना। चहकना
करवा-संज्ञा पुं० [सं० करक] धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा। बधना।
करवा चौथ-संज्ञा स्त्री० [सं० करका चतुर्थी] कार्तिक कृष्ण चतुर्थी। इस दिन स्त्रियाँ गौरी का व्रत करती हैं।
करवाना-क्रि० स० [हिं० करना का प्रे० रूप] दूसरे को करने में प्रवृत्त करना।
करवार:-संज्ञा स्त्री० [सं० करवाल] तलवार।
करवाल-संज्ञा पुं० [सं० करवाल] १. नख। नाखून। २. तलवार।
करवाली-संज्ञा स्त्री० [सं० करवाल] छोटी तलवार। करौली।
करवीर-संज्ञा पुं० [सं०] १. कनेर का पेड़। २. तलवार। खड्ग। ३. श्मशान।
करवैया: †-वि० [हिं० करना + वैया (प्रत्य०)] करनेवाला।
करश्मा-संज्ञा पुं० [फा०] चमत्कार। अद्भुत व्यापार। करामात।
करष-संज्ञा पुं० [सं० कर्ष] १. खिंचाव। मनमोटाव। अनबन। लाग। द्रोह। २. ताव। लड़ाई का जोश।

करा॰-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कला"।
कराइत-संज्ञा पु॰ [हिं॰ काला] एक प्रकार का काला साँप जो बहुत विषैला होता है।
कराई-संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ केराना] उर्द, अरहर आदि के ऊपर की भूसी।
॰संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ काला] कालापन। श्यामता। संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ करना] करने या कराने का भाव।
करात-संज्ञा पुं॰ [अ॰ कीरात] चार जौ की एक तौल जो सोना, चाँदी या दवा तौलने के काम में आती है।
कराना-क्रि॰ स॰ [हिं॰ करना का प्रे॰ रूप] करने में लगाना।
कराबा-संज्ञा पु॰ [अ॰] शीशे का बड़ा बरतन जिसमें अर्क आदि रखते हैं।
करामात-संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ 'करामत' का बहु॰] चमत्कार। अद्भुत व्यापार। करश्मा।
करामाती-वि॰ [हिं॰ करामात + ई॰ (प्रत्य॰)] करामात या करश्मा दिखानेवाला। सिद्ध।
करार-संज्ञा पु॰ [अ॰] १. स्थिरता। ठहराव। २. धैर्य्य। धीरज। तसल्ली। संतोष। ३. आराम। चैन। ४. वादा। प्रतिज्ञा।
करारना॰ क्रि॰ अ॰ [अनु॰] कॉय काँय शब्द करना। कर्कश स्वर निकालना।
करारा-संज्ञा पु॰ [सं॰ कराल] १. नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बने। २. टीला। ढूह।
वि॰ [हिं॰ कड़ा, करा] १. छूने में कठोर। कड़ा। २. दृढ़चित्त। ३. आँच पर इतना तला या सेंका हुआ कि तोड़ने से कुर कुर शब्द करे। ४. उग्र। तेज। तीक्ष्ण। ५. चोखा। खरा। ६. अधिक गहरा। घोर। ७ हट्टा-कट्टा। बलवान्।
करारापन-संज्ञा पु॰ [हिं॰ करारा + पन (प्रत्य॰)] करारा होने का भाव। कड़ापन।
कराल-वि॰ [सं॰] १. जिसके बड़े बड़े दाँत हों। २. डरावना। भयानक।
कराली-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
वि॰ डरावनी। भयावनी।
कराव, करावा-संज्ञा पु॰ [हिं॰ करना] एक प्रकार का विवाह या सगाई।
कराह-संज्ञा पु॰ [हिं॰ करना + आह] कराहने का शब्द। पीड़ा का शब्द।
॰† संज्ञा पुं॰ दे॰ "कड़ाह"।
कराहना-क्रि॰ अ॰ [हिं॰ करना + आह] व्यथा-सूचक शब्द मुँह से निकालना। आह आह करना।
करिंद॰-संज्ञा पु॰ [सं॰ करींद्र] १. उत्तम या बड़ा हाथी। २. ऐरावत हाथी।
करि-संज्ञा पु॰ [सं॰ करिन्] हाथी।
करिखा॰†-संज्ञा पु॰ दे॰ "कालिख"।
करिणी-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] हथिनी।
करिया॰-संज्ञा पु॰ [सं॰ कर्ण] १. पतवार। कलवारी। २. माँझी। केवट। मल्लाह।
॰† वि॰ काला। श्याम।
करिल-संज्ञा पु॰ [सं॰ करीर] कोंपल।
वि॰ [हिं॰ कारा, काला] काला।
करिवदन-संज्ञा पु॰ [सं॰] गणेश।
करिहाँव-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ कटिभाग] कमर।
करी-संज्ञा पु॰ [सं॰ करिन्] हाथी।
संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ कांड] १. छत पाटने का शहतीर। कड़ी।
२. कली। ३. पंद्रह मात्राओं का एक छंद।
करीना॰-संज्ञा पु॰ दे॰ "केराना"।
क़रीना-संज्ञा पु॰ [अ॰] १. ढंग। तर्ज़। तरीक़ा। चाल। २. क्रम। तरतीब। ३. शऊर। सलीक़ा।
क़रीब-क्रि॰ वि॰ [अ॰] १. समीप। पास। निकट। २. लगभग।
करीम-वि॰ [अ॰] कृपालु। दयालु।
संज्ञा पु॰ ईश्वर।
करीर-संज्ञा पु॰ [सं॰] १. बाँस का नया कल्ला। २. करील का पेड़। ३. घड़ा।
करील-संज्ञा पु॰ [सं॰ करीर] एक कँटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होतीं।
करीश-संज्ञा पु॰ [सं॰] गजराज।
करीष-संज्ञा पु॰ [सं॰] सूखा गोबर जो जंगलों में मिलता है। अरना कंडा।
करुआ †-वि॰ दे॰ "कड़ुआ"।
करुआई॰-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कड़ुआपन"।
करुण-संज्ञा पु॰ [सं॰] १. दे॰ "करुणा"। (यह काव्य के नौ रसों में से है।) २. एक बुद्ध का नाम। ३. परमेश्वर।
वि॰ करुणायुक्त। दयार्द्र।
करुणा-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. वह मनोविकार या दुःख जो दूसरों के दुःख के ज्ञान से उत्पन्न होता है और दूसरों के दुःख को दूर करने की प्रेरणा करता है। दया। रहम।

5857

तर्स। २. वह दुःख जो अपने प्रिय मित्रादि के वियोग से होता है। शोक।
करुणादृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] दयादृष्टि।
करुणानिधान, करुणानिधि–वि० [सं०] जिसका हृदय करुणा से भरा हो। बहुत बड़ा दयालु।
करुणामय–वि० [सं०] बहुत दयावान्।
करुना–संज्ञा स्त्री० दे० "करुणा"।
करुर–वि० [सं० कटु] कड़ुआ।
करुवा†–संज्ञा पुं० दे० "करवा"।
संज्ञा पुं० दे० "कड़ुआ"।
करू–वि० दे० 'कड़ुआ"।
करूप–संज्ञा पुं० [सं०] एक देश का नाम जो रामायण के अनुसार गंगा के किनारे था।
करूला†–संज्ञा पुं० [हिं० कड़ा + ऊला (प्रत्य०)] हाथ में पहनने का कड़ा।
करेजा†–संज्ञा पुं० दे० "कलेजा"।
करेणु–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।
करेणुका–संज्ञा स्त्री० [सं०] हथनी।
करेब–संज्ञा स्त्री० [अ० क्रेप] एक कसारा झीना रेशमी कपड़ा।
करेमू–संज्ञा पुं० [सं० कलबु] पानी में की एक घास जिसका साग खाया जाता है।
करेर†–वि० [सं० कठोर] कठोर।
करेला–संज्ञा पुं० [सं० कारवेल्ल] १. एक छोटी बेल जिसके हरे कड़ुए फल तरकारी के काम में आते हैं। २. माला या हुमेल की लंबी गुरिया जो बड़े दानों के बीच में लगाई जाती है। हरें।
करेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० करेला] जंगली करेला जिसके फल छोटे होते हैं।
करैत–संज्ञा पुं० [हिं० कारा, काला] काला फनदार साँप जो बहुत विषैला होता है।
करैल–संज्ञा स्त्री० [हिं० कारा, काला] एक प्रकार की काली मिट्टी जो प्रायः तालों के किनारे मिलती है।
संज्ञा पुं० [सं० करीर] १. बाँस का नरम कल्ला। २. ढोम-कौआ।
करैला–संज्ञा पुं० दे० "करेला"।
करैली मिट्टी–संज्ञा स्त्री० दे० "करैल"।
करोटन–संज्ञा पुं० [अ० क्रोटन] १. वनस्पति की एक जाति। २ एक प्रकार के पौधे जो अपने रंग बिरंग और विलक्षण आकार के पत्तों के लिये लगाए जाते हैं।
करोटी–संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।
करोड़–वि० [सं० कोटि] सौ लाख की संख्या, १०००००००।
करोड़पती–वि० [हिं० करोड़ + सं० पति] वह जिसके पास करोड़ों रुपए हों। बहुत बड़ा धनी।
करोड़ी–संज्ञा पुं० [हिं० करोड़] १ रोकड़िया। तहवीलदार। २. मुसलमानी राज्य का एक अफ़सर जिसके ज़िम्मे कुछ तहसील रहती थी।
करोदना–क्रि० स० [सं० क्षुरण] खुरचना।
करोना†क्रि० स० [सं० क्षुरण] खुरचना।
करोला†–संज्ञा पुं० [हिं० करवा] करवा। गडुवा।
करौंछा†–वि० [हिं० काला + औंछा (प्रत्य०)] [स्त्री० करौंछी] कुछ काला। श्याम।
करौंजी–संज्ञा स्त्री० दे० "कलौंजी"।
करौंट–संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।
करौंदा–संज्ञा पुं० [सं० करमर्द] १. एक कँटीला झाड़ जिसके बेर के से सुंदर छोटे फल खटाई के रूप में खाए जाते हैं। २. एक छोटी कँटीली जंगली झाड़ी जिसमें मटर के बराबर फल लगते हैं।
करौंदिया–वि० [हिं० करौंदा] करौंदे के समान हलकी स्याही लिए हुए खुलता लाल।
करौत–संज्ञा पुं० [सं० करपत्र] [स्त्री० करौती] लकड़ी चीरने का आरा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० करना] रखेली स्त्री।
करौता–संज्ञा पुं० दे० "करौत"।
संज्ञा पुं० [हिं० करवा] काँच का बड़ा बरतन या शीशी। कराबा।
करौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० करौता] लकड़ी चीरने का औज़ार। आरी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० करवा] १. शीशे का छोटा बरतन। कराबा। २. काँच की भट्ठी।
करौला–संज्ञा पुं० [हिं० रौला + शोर] हँकवा करनेवाला। शिकारी।
करौली–संज्ञा स्त्री० [सं० करवाली] एक प्रकार की सीधी छुरी।
कर्क–संज्ञा पुं० [सं०] १. केकड़ा। २ बारह राशियों में से चौथी राशि। ३. काकड़ासींगी। ४. अग्नि। ५. दर्पण।
कर्कट संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कर्कटी, कर्कटा] १. केकड़ा। २. कर्क राशि। ३. एक प्रकार का सारस। करकरा। करकटिया।

४. लौकी। घीआ। ५. कमल की मोटी जड़। भसींड़। ६. सँड़सा।

कर्कटी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ककुई। २. ककड़ी। ३. सेमल का फल। ४. साँप।

कर्कर-संज्ञा पु० [सं०] १. कंकड़। २. कुरंज पत्थर जिसके चूर्ण की सान बनती है।
वि० १ कड़ा। करारा। २. खुरखुरा।

कर्कश-संज्ञा पु० [सं०] १ कमीले का पेड़। २. ऊख। ईख। ३. खड्ग। तलवार।
वि० १. कठोर। कड़ा। जैसे, कर्कश स्वर। २. खुरखुरा। काँटेदार। ३. तेज़। तीव्र। प्रचंड। ४. अधिक। ५ क्रूर।

कर्कशता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कठोरता। कड़ापन। २. खुरखुरापन।

कर्कशा-वि० स्त्री० [सं०] झगड़ालू। झगड़ा करनेवाली। लड़ाकी।

कर्कोट-संज्ञा पु० [सं०] १. बेल का पेड़। २. खेखसा। ककोड़ा।

कर्च्चूर-संज्ञा पु० [सं०] १. सोना। सुवर्ण। २. कचूर। नरकचूर।

कर्ज, कर्जा-संज्ञा पु० [अ०] ऋण। उधार।
मुहा०—कर्ज उतारना=कर्ज चुकाना। उधार बेबाक करना। कर्ज खाना=१. कर्ज लेना। २. उपकृत होना। वश में होना।

कर्जदार-वि० [फा०] उधार लेनेवाला।

कर्ण-संज्ञा पु० [सं०] १. कान। श्रवणेंद्रिय। २. कुंती का सबसे बड़ा पुत्र जो बहुत दानी प्रसिद्ध है।
मुहा०—कर्ण या पहरा=प्रभात काल। दोन पुरुष का समय।
३. नाव की पतवार। ४. समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा। ५. पिंगल में डगण अर्थात् चार मात्रावाले गणों की संज्ञा।

कर्णकटु-वि० [सं०] कान को अप्रिय। जो सुनने में कर्कश लगे।

कर्णकुहर-संज्ञा पु० [सं०] कान का छेद।

कर्णधार-संज्ञा पु० [सं०] १. माझी। मल्लाह। २ पतवार। किलवारी।

कर्णनाद-संज्ञा पु० [सं०] कान में सुनाई पड़ती हुई गूँज।

कर्णपिशाची-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिसके सिद्ध होने पर कहा जाता है कि मनुष्य जो चाहे सो जान सकता है।

...] कनपेड़ा रोग।

कर्णवेध-संज्ञा पु० [सं०] बालकों के कान छेदने का संस्कार। कनछेदन।

कर्णाट-संज्ञा पु० [सं०] १ दक्षिण का एक देश। २ संपूर्ण जाति का एक राग।

कर्णाटक-संज्ञा पु० दे० "कर्णाट"।

कर्णाटी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ संपूर्ण जाति की एक शुद्ध रागिनी। २. कर्णाट देश की स्त्री। ३ कर्णाट देश की भाषा। ४. शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमें केवल कवर्ग ही के अक्षर आते हैं।

कर्णिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कान का करनफूल। २. हाथ की बिचली उँगली। ३. हाथी की सूँड़ की नोक। ४. कमल का छत्ता। ५. सेवती। सफेद गुलाब। ६ कलम। लेखनी। ७. डंठल।

कर्णिकार-संज्ञा पु० [सं०] कनियारी या कनकचंपा का पेड़।

कर्णी-संज्ञा पु० [सं० कर्णिन्] बाण।

कर्त्तन-संज्ञा पु० [सं०] १. काटना। कतरना। २. (सूत इत्यादि) कातना।

कर्त्तनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] कैंची।

कर्त्तरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कैंची। कतरनी। २ (सुनारों की) काती। ३. छोटी तलवार। कटारी। ४ ताल देने का एक बाजा।

कर्त्तव्य-वि० [सं०] करने के योग्य।
संज्ञा पु० करने योग्य कार्य्य। धर्म। फ़र्ज़।
यौ०—कर्त्तव्याकर्त्तव्य=करने और न करने योग्य कर्म। उचित और अनुचित कर्म।

कर्त्तव्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कर्त्तव्य का भाव।
यौ०—इतिकर्त्तव्यता=उद्योग या प्रयत्न की पराकाष्ठा। दौड़ की हद।
२. कर्त्तव्य या कर्मकांड कराने की दक्षिणा।

कर्त्तव्यमूढ़-वि० [सं०] १ जिसे यह न सुझाई दे कि क्या करना चाहिए। २. भौचक्का।

कर्त्ता-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कर्त्री] १. करनेवाला। काम करनेवाला। २. रचनेवाला। बनानेवाला। ३. ईश्वर। ४. व्याकरण के छः कारकों में से पहला जिससे क्रिया के करनेवाले का ग्रहण होता है।

कर्त्तार-संज्ञा पु० [सं० 'कर्तृ' की प्रथमा का बहु०] १. करनेवाला। २. ईश्वर।

कर्त्तृक-वि० [सं०] किया हुआ। संपादित।

कर्तृत्व-संज्ञा पुं० [सं०] कर्त्ता का भाव। कर्त्ता का धर्म।
कर्तृवाचक-वि० [सं०] कर्त्ता का बोध करानेवाला। (व्या०)
कर्तृवाच्य क्रिया-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह क्रिया जिसमें कर्त्ता का बोध प्रधान रूप से हो, जैसे, खाना, पीना, मारना।
कर्दम-संज्ञा पुं० [सं०] १ कीचड। कीच। चहला। २. मांस। ३ पाप। ४ स्वायंभुव मन्वंतर के एक प्रजापति।
कर्नैता-संज्ञा पुं० [देश०] रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद।
कर्पट-संज्ञा पुं० [सं०] गूदड। लत्ता।
कर्पटी-संज्ञा पुं० [सं० कर्पटिन्] [स्त्री० कर्पटिनी] चिथड़े-गुदड़े पहननेवाला भिखारी।
कर्पर-संज्ञा पुं० [सं०] १ कपाल। खोपडी। २. खप्पर। ३ कछुए की खोपड़ी। ४ एक शस्त्र। ५ कड़ाह। ६. गूलर।
कर्परी-संज्ञा स्त्री० [सं०] खपरिया।
कर्पास-संज्ञा पुं० [सं०] कपास।
कर्पूर-संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।
कर्बुर-संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २ धतूरा। ३ जल। ४ पाप। ५ राक्षस। ६ जड़हन धान। ७ कचूर। वि० रंग बिरंगा। चितकबरा।
कर्म-संज्ञा पुं० [सं० कर्मन् का प्रथमा रूप] १ वह जो किया जाय। क्रिया। कार्य। काम। करनी। (वैशेषिक के छ पदार्थों में से एक।) २. यज्ञ-याग आदि कर्म। (मीमासा)। ३. व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े। ४ वह कार्य या क्रिया जिसका करना कर्त्तव्य हो। जैसे—ब्राह्मणों के षट्कर्म। ५ भाग्य। प्रारब्ध। किस्मत। ६ मृतक-संस्कार। क्रिया कर्म।
कर्मकर-संज्ञा पुं० दे० "कर्मकार"।
कर्मकांड-संज्ञा पुं० [सं०] १ धर्म संबंधी कृत्य। यज्ञादि कर्म। २ वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो।
कर्मकांडी-संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञादि कर्म या धर्म संबंधी कृत्य करानेवाला।
कर्मकार-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक वर्णसंकर जाति। कमकर। २ लोहे या सोने का काम बनानेवाला। ३ बैल। ४ नौकर। सेवक। ५ बेगार।
कर्मक्षेत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्य करने का स्थान। २ भारतवर्ष।
कर्मचारी-संज्ञा पुं० [सं० कर्मचारिन्] १ काम करनेवाला। कार्यकर्त्ता। २ वह जिसके अधीन राज्य प्रबंध या और कोई कार्य हो। अमला।
कर्मठ-वि० [सं०] १ काम में चतुर। २ धर्म-संबंधी कृत्य करनेवाला। कर्मनिष्ठ। संज्ञा पुं० अग्निहोत्र, संध्या आदि नित्य कर्मों को विधिपूर्वक करनेवाला व्यक्ति।
कर्मणा-क्रि० वि० [सं० कर्मन् का तृतीया] कर्म से। कर्म द्वारा। जैसे—मनसा, वाचा, कर्मणा।
कर्मण्य-वि० [सं०] खूब काम करनेवाला। उद्योगी। प्रयत्नशील।
कर्मण्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्य कुशलता।
कर्मधारय समास-संज्ञा पुं० [सं०] वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण हो, जैसे—कलहंस।
कर्मना -क्रि०वि० दे० "कर्मणा"।
कर्मनाशा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो चौसा के पास गंगा में मिलती है।
कर्मनिष्ठ-वि० [सं०] संध्या, अग्निहोत्र आदि कर्त्तव्य करनेवाला। क्रियावान्।
कर्मभू-संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मक्षेत्र"।
कर्मभोग-संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्मफल। करनी का फल। २ पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम।
कर्ममास-संज्ञा पुं० [सं०] ३० सावन दिनों का महीना। सावन मास।
कर्मयुग-संज्ञा पुं० [सं०] कलियुग।
कर्मयोग-संज्ञा पुं० [सं०] १ चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्र विहित कर्म। २ कर्त्तव्य कर्म का साधन जो सिद्धि और असिद्धि में समान भाव रखकर किया जाय।
कर्मरेख-संज्ञा स्त्री० [सं० कर्म + रेखा] कर्म की रेखा। भाग्य की लिखन। तकदीर।
कर्मवाच्य क्रिया-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह क्रिया जिसमें कर्म मुख्य होकर कर्त्ता के रूप में आया हो।
कर्मवाद-संज्ञा पुं० [सं०] १ मीमांसा, जिसमें कर्म प्रधान है। २. कर्मयोग।
कर्मवादी-संज्ञा पुं० [सं० कर्मवादिन्] कर्मकांड को प्रधान माननेवाला। मीमांसक।
कर्मवान्-वि० दे० "कर्मनिष्ठ"।

कर्मविपाक-संज्ञा पुं० [सं०] पूर्व जन्म के किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का भला और बुरा फल।
कर्मशील-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो फल की अभिलाषा छोड़कर स्वभावतः काम करे। कर्मवान्। २. यत्नवान्। उद्योगी।
कर्मशूर-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो साहस और दृढ़ता के साथ कर्म करे। उद्योगी।
कर्मसंन्यास-संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्म का त्याग। २ कर्म के फल का त्याग।
कर्मसाक्षी-वि० [सं० कर्मसाक्षिन्] जिसके सामने कोई काम हुआ हो।
संज्ञा पुं० वे देवता जो प्राणियों के कर्मों को देखते रहते हैं और उनके साक्षी रहते हैं, जैसे—सूर्य, चंद्र, अग्नि।
कर्महीन-वि० [सं०] १. जिससे शुभ कर्म न बन पड़े। २. अभागा। भाग्यहीन।
कर्मिष्ठ-वि० [सं०] १. कर्म करनेवाला। काम में चतुर। २ दे० "कर्म्मनिष्ठ"।
कर्मी-वि० [सं० कर्मिन्] [स्त्री० कर्मिणी] १. कर्म करनेवाला। २. फल की आकांक्षा से यज्ञादि कर्म करनेवाला।
कर्मेंद्रिय-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अंग जिससे कोई क्रिया की जाती है। ये पाँच हैं—हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ।
वि० [हिं० कड़ा] १. कड़ा। सख्त। २. कठिन। मुश्किल।
कर्राना†-क्रि० अ० [हिं० कर्रा] कड़ा होना। कठोर होना।
कर्ष-संज्ञा पुं० [सं०] १ सोलह माशे का एक मान। २. एक पुराना सिक्का। ३. खिंचाव। घसीटना। ४ जोताई। ५. (लकीर आदि) खींचना। ६ जोश।
कर्षक-संज्ञा पुं० [सं०] १ खींचनेवाला। २ हल जोतनेवाला।
कर्षण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कर्षित, कर्षक, कर्षणीय, कर्ष्य] १. खींचना। २ खरोंचकर लकीर डालना। ३ जोतना। ४. कृषिकर्म।
कर्षना-क्रि० स० [सं० कर्षण] खींचना।
कलंक-संज्ञा पुं० [सं०] १. दाग। धब्बा। २. चंद्रमा पर का काला दाग। ३. कालिख। कजली। ४. लांछन। बदनामी। ५ ऐब। दोष।
कलंकित-वि० [सं०] जिसे कलंक लगा हो। दोषी। अपराधी।
कलंकी-वि० [सं० कलंकिन्] [स्त्री० कलंकिनी] जिसे कलंक लगा हो। दोषी। अपराधी।
‡ संज्ञा पुं० [सं० कल्कि] कल्कि अवतार।
कलँगा-संज्ञा पुं० दे० "कलगा"।
कलंदर-संज्ञा पुं० [अ० कलंदर] १. एक प्रकार के मुसलमान साधु जो संसार से विरक्त होते हैं। २ रीछ और बंदर नचानेवाला। ३. दे० "कलंदरा"।
कलंदरा-संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। गुदड़।
कलंब-संज्ञा पुं० [सं०] १. शर। २. शाक का डंठल। ३ कदंब।
कलंचिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] गले के पीछे की नाड़ी। मन्या।
कल-संज्ञा पुं० [सं०] १ अव्यक्त मधुर ध्वनि। जैसे—कोयल की कूक। २. वीर्य।
वि० १. सुंदर। २. मधुर।
संज्ञा स्त्री० [सं० कल्य] १. आरोग्य। तंदुरुस्ती। २. आराम। सुख।
मुहा०—कल से=१. चैन से। †२. धीरे धीरे। आहिस्ता आहिस्ता।
३. संतोष। तुष्टि।
क्रि० वि० [सं० कल्य] १. आगामी दूसरा दिन। आनेवाला दिन। २. भविष्य में। ३. गया दिन। बीता हुआ दिन।
मुहा०—कल का=थोड़े दिनों का।
संज्ञा स्त्री० [सं० कला] १. ओर। बल। पहलू। २. अंग। अवयव। पुरजा। ३. युक्ति। ढंग। ४. पेचों और पुरजों से बनी हुई वस्तु जिससे काम लिया जाय। यंत्र।
यौ०—कलदार=(यंत्र से बना हुआ) रुपया।
५. पेंच। पुरजा।
मुहा०—कल ऐंठना=किसी के चित्त को किसी ओर फेरना।
६. बंदूक का घोड़ा या चाप।
वि० [हिं०] "काला" शब्द का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में।) जैसे—कलमुहाँ।
कलई-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. राँगा। २. राँगे का पतला लेप जो बरतन इत्यादि पर लगाते हैं। मुलम्मा। ३ वह लेप जो रंग चढ़ाने या चमकाने के लिए किसी वस्तु पर लगाया जाता है। ४ बाहरी चमक दमक। तड़क-भड़क।
मुहा०—कलई खुलना=असली भेद खुलना।

वास्तविक रूप का प्रगट होना। कलई न लगना = युक्ति न चलना।
४. चूने का लेप। सफेदी।

कलईदार–वि० [फा०] जिस पर कलई या रांगे का लेप चढ़ा हो।

कलकंठ–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कलकंठी] १. कोकिल। कोयल। २ पारावत। परेवा। ३. हंस।
वि० मीठी ध्वनि करनेवाला।

कलक–संज्ञा पुं० [अ० कलक] १. बेचैनी। घबराहट। २. रंज। दुःख। खेद।
संज्ञा पुं० दे० "कल्क"।

कलकना:–क्रि० अ० [हिं० कलकल] चिल्लाना। शोर करना। चीत्कार करना।

कलकल–संज्ञा पुं० [सं०] १. झरने आदि के जल के गिरने का शब्द। २. कोलाहल।
संज्ञा स्त्री० झगड़ा। वाद-विवाद।

कलकानि†–संज्ञा स्त्री० [अ० कलक] दिक्कत। हैरानी। दुःख।

कलकूजिका–वि० स्त्री० [सं०] मधुर ध्वनि करनवाली।

कलगा–संज्ञा पुं० [तु० कलगी] मरसे की जाति का एक पौधा। जटाधारी। मुर्गकेश।

कलगी–संज्ञा स्त्री० [तु०] १. शुतुरमुर्ग आदि चिड़ियों के सुंदर पर जिन्हें पगड़ी या ताज पर लगाते हैं। २. मोती या सोने का बना हुआ सिर का एक गहना। ३. चिड़ियों के सिर पर की चोटी। ४. इमारत का शिखर। ५. लावनी का एक ढंग।

कलचुरि–संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश।

कलछा–संज्ञा पुं० [सं० कर+रक्षा] बड़ी डाँड़ी का चम्मच या बड़ी कलछी।

कलछी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर+रक्षा] बड़ी डाँड़ी का चम्मच जिससे बटलोई की दाल आदि चलाते या निकालते हैं।

कलजिब्भा–वि० [हिं० काला+जीभ] [स्त्री० कलजिब्भी] १. जिसकी जीभ काली हो। २. जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बातें प्रायः ठीक घटें।

कलजीहा–वि० दे० "कलजिब्भा"।

कलझँवाँ–वि० [हिं० काला+झाँई] काले रंग का। साँवला।

कलत्र–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री। पत्नी।

कलदार–वि० [हिं० कल+दार] जिसमें कल लगी हो। पेंचदार।
संज्ञा पुं० सरकारी रुपया।

कलधूत–संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी।

कलधौत–संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। २. चाँदी। ३. सुंदर ध्वनि।

कलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कलित] १. उत्पन्न करना। बनाना। २. धारण करना। ३. आचरण। ४. लगाव। संबंध। ५. गणित की क्रिया। जैसे, संकलन, व्यवकलन। ६ ग्रास। कौर। ७. ग्रहण। ८ शुक्र और शोणित के संयोग का वह विकार जो गर्भ की प्रथम रात्रि में होता है और जिससे कलल बनता है।

कलप–संज्ञा पुं० [सं० कल्प] १. कलफ़। २. खिज़ाब। ३. दे० "कल्प"।

कलपना–क्रि० अ० [सं० कल्पन] १. विलाप करना। बिलखना। २. कल्पना करना।
क्रि० स० [सं० कल्पन] काटना। छाँटना।
संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पना"।

कलपाना–क्रि० स० [हिं० कलपना] दुःखी करना। जी दुखाना।

कलफ–संज्ञा पुं० [सं० कल्प] १. पतली लेई जिसे कपड़ों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिये लगाते हैं। माँड़ी। २. चेहरे पर का काला धब्बा। झाँई।

कलबल–संज्ञा पुं० [सं० कला+बल] उपाय। दाँव-पेंच। जुगुत।
संज्ञा पुं० [अनु०] शोर गुल।
वि० अस्पष्ट (स्वर)।

कलबूत–संज्ञा पुं० [फा० कालबुद] १. ढाँचा। साँचा। २. लकड़ी का वह ढाँचा जिस पर चढ़ाकर जूता सिया जाता है। फ़रमा। ३. गुंबदनुमा ढाँचा जिस पर रखकर टोपी या पगड़ी आदि बनाई जाती है। गोलंबर। कालिब।

कलम–संज्ञा पुं० स्त्री० [अ०, सं०] १. जीभ लगी हुई या कटी हुई लकड़ी का टुकड़ा जिसे स्याही में डुबाकर काग़ज़ पर लिखते हैं। लेखनी।
मुहा०—क़लम चलना = लिखाई होना। कलम चलाना = लिखना। लिखने की हद कर देना।

२. किसी पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैवंद लगाने के लिये काटी जाय।
मुहा०—कलम करना = काटना छाँटना।
३. जड़हन धान। ४. वे बाल जो हजामत बनवाने में कनपटियों के पास छोड़ दिए जाते हैं। ५. बालों की कूची जिससे चित्रकार चित्र बनाते या रंग भरते हैं। ६. शीशे का कटा हुआ लंबा टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है। ७. शोरे, नौसादर आदि का जमा हुआ छोटा लंबा टुकड़ा। रवा। ८. वह औज़ार जिससे महीन चीज़ काटी, खोदी या नकाशी जाय।

कलम कसाई–संज्ञा पु० [अ०] वह जो कुछ लिख-पढ़कर लोगों की हानि करे।

कलमकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] कलम से किया हुआ काम। जैसे—नक्काशी।

कलमख–संज्ञा पु० दे० "कल्मष"।

कलमतराश–संज्ञा पु० [फा०] कलम बनाने की छुरी। चाकू।

कलमदान–संज्ञा पु० [फा०] कलम, दवात आदि रखने का डिब्बा या छोटा संदूक।

कलमना–क्रि० स० [हिं० कलम] काटना। दो टुकड़े करना।

कलमलना–क्रि० अ० [अनु०] दाब में पड़ने के कारण अंगों का हिलना-डोलना। कुलबुलाना।

कलमा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वाक्य। बात। २ वह वाक्य जो मुसलमान धर्म्म का मूल मंत्र है।
मुहा०—कलमा पढ़ना = मुसलमान होना।

कलमी–वि० [फा०] १. लिखा हुआ। लिखित। २. जो कलम लगाने से उत्पन्न हुआ हो। जैसे, कलमी आम। ३. जिसमें कलम या रवा हो। जैसे, कलमी शोरा।

कलमुहाँ–वि० [हिं० काला+मुँह] १. जिसका मुँह काला हो। २. कलंकित। लांछित। ३. अभागा। (गाली)

कलरव–संज्ञा पु० [स०] १. मधुर शब्द। २. कोकिल। ३. कबूतर।

कलल–संज्ञा पुं० [स०] गर्भाशय में रज और वीर्य्य के संयोग की वह अवस्था जिसमें एक बुलबुला सा बन जाता है।

कलवरिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० कलवार+इया (प्रत्य०)] कलवार की दूकान। शराब की दूकान।

कलवार–संज्ञा पु० [स० कल्यपाल] एक जाति जो शराब बनाती और बेचती है।

कलविंक–संज्ञा पु० [स०] १. चटक। गौरैया। २ तरबूज़। ३. सफ़ेद चँवर।

कलश–संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० अल्पा० कलशी] १. घड़ा। गगरा। २. मंदिर, चैत्य आदि का शिखर। ३. मंदिरों या मकानों के शिखर पर का कँगूरा। ४. एक मान जो द्रोण या ८ सेर के बराबर होता था। ५. चोटी। सिरा।

कलशी–संज्ञा स्त्री० [स०] १. गगरी। छोटा कलसा। २. मंदिर का छोटा कँगूरा।

कलस–संज्ञा पु० दे० "कलश"।

कलसा–संज्ञा पु० [स० कलश] [स्त्री० अल्पा० कलसी] १. पानी रखने का बरतन। गगरा। घड़ा। २. मंदिर का शिखर।

कलसी–संज्ञा स्त्री० [सं० कलश] १. छोटा गगरा। २. छोटा शिखर या कँगूरा।

कलहंतरिता–संज्ञा स्त्री० दे० "कलहांतरिता"।

कलहंस–संज्ञा पु० [स०] १. हंस। २. राजहंस। ३. श्रेष्ठ राजा। ४. परमात्मा। ब्रह्म। ५. एक वर्ण वृत्त। ६. क्षत्रियों की एक शाखा।

कलह–संज्ञा पु० [स०] [वि० कलहकारी, कलही] १. विवाद। झगड़ा। २. लड़ाई।

कलहकारी–वि० [स० कलहकारिन्] [स्त्री० कलहकारिणी] झगड़ा करनेवाला।

कलहप्रिय–संज्ञा पु० [स०] नारद। वि० [स्त्री० कलहप्रिया] जिसे लड़ाई भली लगे। लड़ाका। झगड़ालू।

कलहांतरिता–संज्ञा स्त्री० [स०] वह नायिका जो नायक या पति का अपमान कर के पीछे पछताती है।

कलहारी–वि० स्त्री० [सं० कलहकार] कलह करनेवाली। लड़ाकी। झगड़ालू। कर्कशा।

कलही–वि० [स० कलहिन्] [स्त्री० कलहिनी] झगड़ालू। लड़ाका।

कलाँ–वि० [फा०] बड़ा। दीर्घाकार।

कलांकुर–संज्ञा पुं० दे० "कराकुल"।

कला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अंश। भाग। २. चंद्रमा का सोलहवाँ भाग। ३. सूर्य्य का बारहवाँ भाग। ४. अग्नि-मंडल के

दस भागों में से एक। ५. समय का एक विभाग जो तीस काष्ठा का होता है। ६. राशि के तीसवें अंश का ६० वाँ भाग। ७. वृत्त का १८०० वाँ भाग। राशि-चक्र के एक अंश का ६० वाँ भाग। ८. छंद.शास्त्र या पिंगल में 'मात्रा'। ९. चिकित्सा शास्त्र के अनुसार शरीर की सात विशेष झिल्लियाँ। १०. किसी कार्य्य को भली भाँति करने का कौशल। फ़न। हुनर। (काम-शास्त्र के अनुसार ६४ कलाएँ हैं।) ११. मनुष्य के शरीर के आध्यात्मिक विभाग जो १६ हैं। पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच कर्मेंद्रियाँ, पाँच प्राण और मन। १२. वृद्धि। सूद। १३. जिह्वा। १४. मात्रा (छंद)। १५. स्त्री का रज। १६. विभूति। तेज। १७. शोभा। छटा। प्रभा। १८. तेज। १९. कौतुक। खेल। लीला। २०. छल। कपट। धोखा। २१. ढंग। युक्ति। करतब। २२. नटों की एक कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर नीचे करके उलटता है। ढेकली। कलैया। २३. यंत्र। पेंच। २४ एक वर्ण वृत्त।

कलाई–संज्ञा स्त्री० [सं० कलाची] हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है। मणिबंध। गट्टा। प्रकोष्ठ। संज्ञा स्त्री० [सं० कलाप] १. सूत का लच्छा। करछा। कुकरी। २. हाथी के गले में बाँधने का कलावा।

कलाकंद–संज्ञा पुं० [फा०] खोए और मिस्री की बनी बरफ़ी।

कलाकौशल–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी कला की निपुणता। हुनर। दस्तकारी। कारीगरी। २. शिल्प।

कलादा–संज्ञा पुं० [सं० कलाप] हाथी की गर्दन पर वह स्थान जहाँ महावत बैठता है। कलावा। किलावा।

कलाधर–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. दंडक छंद का एक भेद। ३. शिव। ४. वह जो कलाओं का ज्ञाता हो।

कलानिधि–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

कलाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड जैसे—क्रिया-कलाप। २. मोर की पूँछ। ३. पूला। मुट्ठा। ४. तूण। तरकश। ५. कमरबंद। पेटी। ६. करधनी। ७. चंद्रमा। ८. कलावा। ९. कातंत्र व्याकरण। १०. व्यापार। ११. आभरण। जेवर। भूषण।

कलापक–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। २. पूला। मुट्ठा। ३. हाथी के गले का रस्सा। ४ चार श्लोकों का समूह।

कलापिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात्रि। २. मयूरी। मोरनी।

कलापी–संज्ञा पुं० [सं० कलापिन्] [स्त्री० कलापिनी] १. मोर। २. कोकिल। वि० १. तूणीर बाँधे हुए। तरकशबंद। २. झुंड में रहनेवाला।

कलाबत्तू–संज्ञा पुं० [तु० कलाबतून] [वि० कलाबतूनी] १. सोने-चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढ़ाकर बटा जाय। २. सोने-चाँदी के कलाबत्तू का बना हुआ पतला फ़ीता जो कपड़ों पर टाँका जाता है।

कलाबाज–वि० [हिं० कला + फा० बाज] कलाबाजी या नट क्रिया करनेवाला।

कलाबाजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कला + फा० बाजी] सिर नीचे करके उलट जाना। ढेकली। कलैया।

कलाभृत्–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

कलाम–संज्ञा पुं० [अ०] १ वाक्य। वचन। २. बात-चीत। कथन। ३. वादा। प्रतिज्ञा। ४. उज्र। एतराज़।

कलार–संज्ञा पुं० दे० "कलवार"।

कलाल–संज्ञा पुं० [सं० कल्यपाल] [स्त्री० कलाली] कलवार। मद्य बेचनेवाला।

कलावंत–संज्ञा पुं० [सं० कलावान्] १. संगीत कला में निपुण व्यक्ति। गवैया। २. कलाबाज़ी करनेवाला। नट। वि० कलाओं का जाननेवाला।

कलावती–वि० स्त्री० [सं०] १. जिसमें कला हो। २. शोभावाली। छबिवाली।

कलावा–संज्ञा पुं० [सं० कलापक] [स्त्री० अल्पा० कलाई] १. सूत का लच्छा जो तकले पर लिपटा रहता है। २. लाल पीले सूत के तागों का लच्छा जिसे विवाह आदि शुभ अवसरों पर हाथ या घड़े पर बाँधते हैं। ३ हाथी की गरदन।

कलावान–वि० [सं०] [स्त्री० कलावती] कला-कुशल। गुणी।

कलिंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. मटमैले रंग की एक चिड़िया। कुलंग। २. कुटज। कुरैया। ३. इंद्रजौ। ४. सिरिस का पेड़। ५. पाकर का पेड़। ६. तरबूज। ७.

गड़ा राग। ८. एक समुद्र-तटस्थ देश जिसका विस्तार गोदावरी और वैतरणी नदी के बीच में था।
वि० कलिंग देश का।

कलिंगड़ा-संज्ञा पुं० [सं० कलिंग] एक राग जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है।

कलिंद-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहेड़ा। २ सूर्य। ३. एक पर्वत जिससे यमुना नदी निकलती है।

कलिंदजा-संज्ञा स्त्री० [सं० कलिंद + जा] यमुना नदी।

कलिंदी*-संज्ञा स्त्री० दे० "कालिंदी"।

कलि-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहेड़े का फल या बीज। २. कलह। विवाद। झगड़ा। ३. पाप। ४. चार युगों में से चौथा युग जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता रहती है। ५. छंद में टगण का एक भेद। ६ सूरमा। वीर। जवाँमर्द। ७. क्लेश। दुःख। ८ संग्राम। युद्ध।
वि० [सं०] श्याम। काला।

कलिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिना खिला फूल। कली। २. वीणा का मूल। ३. प्राचीन काल का एक बाजा। ४. एक छंद।

कलिकाल-संज्ञा पुं० [सं०] कलियुग।

कलित-वि० [सं०] १. विदित। ख्यात। उक्त। २. प्राप्त। गृहीत। ३. सजाया हुआ। सुसज्जित। ४. सुंदर। मधुर।

कलिमल-संज्ञा पुं० [सं०] पाप। कलुष।

कलिया-संज्ञा पुं० [अ०] भूनकर रसेदार पकाया हुआ मांस।

कलियाना-क्रि० अ० [हिं० कलि] १. कली लेना। कलियों से युक्त होना। २. चिड़ियों का नया पंख निकलना।

कलियारी- संज्ञा स्त्री० [सं० कलिहारी] एक पौधा जिसकी जड़ में विष होता है।

कलियुग-संज्ञा पुं० [सं०] चार युगों में से चौथा युग। वर्त्तमान युग।

कलियुगाद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ की पूर्णिमा जिससे कलियुग का आरंभ हुआ था।

कलियुगी-वि० [सं०] १. कलियुग का। २. कुप्रवृत्तिवाला।

कलिवर्ज्य-वि० [सं०] जिसका करना कलियुग में निषिद्ध हो। जैसे-अश्वमेध।

कलिहारी-संज्ञा स्त्री० दे० "कलियारी"।

कलिंदा-संज्ञा पुं० [सं० कालिंदी] तरबूज़।

कली-संज्ञा स्त्री० [सं० कलिका] १ बिना खिला फूल। मुँह-बँधा फूल। बोंड़ी। कलिका।
मुहा०—दिल की कली खिलना = आनंदित होना। चित्त प्रसन्न होना।
२. चिड़ियों का नया निकला हुआ पर। ३. वह तिकोना कटा हुआ कपड़ा जो कुर्ते, अँगरखे आदि में लगाया जाता है। ४ हुक्के का नीचेवाला भाग।
संज्ञा स्त्री० [अ० कलई] पत्थर या सीप आदि का फुका हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनाया जाता है। जैसे—कली का चूना।

कलौंट †-वि० [हिं० काला] काला कलूटा।

कलीरा-संज्ञा पुं० [देश०] कौड़ियों और छुहारों की माला जो विवाह आदि में दी जाती है।

कलील-संज्ञा पुं० [अ०] थोड़ा। कम।

कलीसिया-संज्ञा पुं० [यू० इक्लिसिया] ईसाइयों या यहूदियों की धर्ममंडली।

कलुख-संज्ञा पुं० दे० "कलुष"।

कलुवा वीर-संज्ञा पुं० [हिं० काला + वीर] टोना टामर का एक देवता जिसकी दुहाई मंत्रों में दी जाती है।

कलुष-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कलुषित, कलुषी] १. मलिनता। २. पाप। ३. क्रोध।
वि० [स्त्री० कलुषा, कलुषी] १. मलिन। मैला। २. निंदित। ३. दोषी। पापी।

कलुषाई-संज्ञा स्त्री० [सं० कलुष + आई (प्रत्य०)] बुद्धि की मलिनता। चित्त का विकार।

कलुषित-वि० [सं०] १. दूषित। २. मलिन। मैला। ३. पापी। ४. दुःखित। ५. क्षुब्ध। ६. असमर्थ। ७ काला।

कलषी-वि० स्त्री० [सं०] १. पापिनी। दोषी। २. मलिन। गंदी।
वि० पुं० [सं० कलुषिन्] १. मलिन। मैला। गंदा। २. पापी। दोषी।

कलूटा-वि० [हिं० काला + टा (प्रत्य०)] [स्त्री० कलूटी] काले रंग का। काला।

कलेऊ*-संज्ञा पुं० दे० "कलेवा"।

कलेजा-संज्ञा पुं० [सं० यकृत] १. प्राणियों का एक भीतरी अवयव जो छाती के भीतर बाईं ओर होता है और जिससे नाड़ियों के सहारे शरीर में रक्त का संचार होता है। हृदय। दिल।

मुहा०—कलेजा उलटना = १. वमन करते करते जी घबराना। २ होश का जाता रहना। **कलेजा कांपना** = जी दहलना। डर लगना। **कलेजा जलाना** = दुःख देना। **कलेजा टूक टूक होना** = शोक से हृदय विदीर्ण होना। **कलेजा ठंढा करना** = संतोष देना। तुष्ट करना। *कलेजा थामकर बैठ या रह जाना* = शोक के वेग को दबाकर रह जाना। मन मसोसकर रह जाना। **कलेजा धक धक करना** = भय से व्याकुलता होना। **कलेजा धड़कना** = १ डर से जी काँपना। भय से व्याकुलता होना। २ चित्त में चिंता होना। जी में खटका होना। **कलेजा निकालकर रखना** = अत्यन्त प्रिय वस्तु समर्पण करना। सर्वस्व दे देना। **कलेजा पक जाना** = दुःख सहते सहते तंग आ जाना। **पत्थर का कलेजा** = १ कड़ा जी। दुःख सहने में समर्थ हृदय। २. कठोर चित्त। **कलेजा पत्थर का करना** = १ भारी दुःख झेलने के लिये चित्त को दबाना। **कलेजा फटना** = किसी के दुःख को देखकर मन में अत्यंत कष्ट होना। **कलेजा बाँसों, बल्लियों या हाथों उछलना** = १ आनंद से चित्त प्रफुल्लित होना। २ भय या आशंका से जी धक धक करना। **कलेजा बैठा जाना** = क्षीणता के कारण शरीर और मन की शक्ति का मंद पड़ना। **कलेजा मुँह को या** *मुँह तक आना* = १ जी घबराना। जी उकताना। व्याकुलता होना। २. संताप होना। दुःख से व्याकुलता होना। **कलेजा हिलना** = कलेजा काँपना। अत्यंत भय होना। **कलेजे पर साँप लोटना** = चित्त में किसी बात के स्मरण आ जाने से एक बारगी शोक छा जाना।

२ छाती। वक्षस्थल।

मुहा०—कलेजे से लगाना = छाती या गले

हलका भोजन जो सवेरे बासी मुँह किया जाता है। नहारी। जलपान।

मुहा०—कलेवा करना = १ निगल जाना। खा जाना। २. मार डालना।

२ वह भोजन जो यात्री घर से चलते समय बाँध लेते हैं। पाथेय। संबल। ३. *विवाह के अंतर्गत एक रीति जिसमें* वर ससुराल में भोजन करने जाता है। खिचड़ी। बासी।

कलेस —संज्ञा पु० दे० "क्लेश"।

कलैया—संज्ञा स्त्री० [सं० कला] सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाने की क्रिया। कलाबाजी।

कलोर—संज्ञा स्त्री० [सं० कल्या] वह जवान गाय जो बरदाई या ब्याई न हो।

कलोल—संज्ञा पु० [सं० कल्लोल] आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा केलि।

कलोलना —क्रि० अ० [हिं० कलोल] *क्रीड़ा* करना। आमोद-प्रमोद करना।

कलौंजी—संज्ञा स्त्री० [सं० कालाजाजी] १. एक पौधा। २ इसकी फलियों के महीन काले दाने जो मसाले के काम में आते हैं। मँगरेला। ३ एक प्रकार की तरकारी। भरता।

कलौंस—वि० [हिं० काला + औंस (प्रत्य०)] कालापन लिए। सियाही-मायल।

संज्ञा पु० १ *कालापन*। २ कलंक।

कल्क—संज्ञा पु० [सं०] १. चूर्ण। बुकनी। २ पीठी। ३ गूदा। ४. दंभ। पाखंड। ५ शठता। ६ मैल। कीट। ७ विष्ठा। ८ पाप। ९ गीली या पिसी हुई ओषधियों को बारीक पीसकर बनाई हुई चटनी। अवलेह। १० बहेड़ा।

कल्कि—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु के दसवें

वि० तुल्य। समान। जैसे, देवकल्प।
कलपक-संज्ञा पु० [सं०] १. नाई। २.कचूर। वि० १. रचनेवाला। २ काटनेवाला।
कल्पकार-संज्ञा पु० [सं०] कल्प-शास्त्र का रचनेवाला व्यक्ति।
कल्पतरु-संज्ञा पु० [सं०] कल्पवृक्ष।
कल्पद्रुम-संज्ञा पु० [सं०] कल्पवृक्ष।
कल्पना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रचना। बनावट। सजावट। २. वह शक्ति जो अंतःकरण में ऐसी वस्तुओं के स्वरूप उपस्थित करती है जो उस समय इंद्रियों के सम्मुख उपस्थित नहीं होतीं। उद्भावना। अनुमान। ३. किसी एक वस्तु में अन्य वस्तु का आरोप। अध्यारोप। ४. मान लेना। फ़र्ज़ करना। ५. मन-गढ़ंत बात।
कल्पवास-संज्ञा पु० [सं०] माघ में महीने भर गंगा तट पर संयम के साथ रहना।
कल्पवृक्ष-संज्ञा पु० [सं०] १. पुराणानुसार देवलोक का एक अविनश्वर वृक्ष जो सब कुछ देनेवाला माना जाता है। २. एक वृक्ष जो सब पेड़ों से बड़ा और दीर्घजीवी होता है। गोरख इमली।
कल्पसूत्र-संज्ञा पु० [सं०] वह सूत्र-ग्रंथ जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो।
कल्पांत-संज्ञा पु० [सं०] प्रलय।
कल्पित-वि० [सं०] १. जिसकी कल्पना की गई हो। २. मनमाना। मनगढ़ंत। फ़र्ज़ी। ३. बनावटी। नक़ली।
कल्मष-संज्ञा पु० [सं०] १. पाप। २. मैल। मल। † ३. पीब। मवाद।
कल्माष-वि० [सं०] १. चितकबरा। चित्रवर्ण। २. काला।
कल्य-संज्ञा पु० [सं०] १. सवेरा। भोर। प्रातःकाल। २. मधु। शराब।
कल्यपाल-संज्ञा पु० [सं०] कलवार।
कल्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] बरदाने के योग्य बछिया। कलोर।
कल्याण-संज्ञा पु० [सं०] १. मंगल। शुभ। भलाई। २. सोना। ३. एक राग।
वि० [स्त्री० कल्याणी] अच्छा। भला।
कल्याणी-वि० [सं०] १. कल्याण करनेवाली। २. सुंदरी।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माषपर्णी। २. गाय।
[illegible]-संज्ञा पु० दे० "कल्याण"।
कल्लर-संज्ञा पु० [देश०] १. नोनी मिट्टी। २. रेह। ३. ऊसर। बंजर।
कल्लाच-वि० [तु० कल्लाच] १. लुच्चा। शोहदा। गुंडा। २. दरिद्र। कंगाल।
कल्ला-संज्ञा पुं० [सं० करीर] १. अंकुर। कलफा। किल्ला। गोंफा। २. हरी निकली हुई टहनी। ३. लंप का सिरा जिसमें बत्ती जलती है। बर्नर।
संज्ञा पु० [फ़ा०] १. गाल के भीतर का अंश। जबड़ा। २ जबड़े के नीचे गले तक का स्थान।
कल्लातोड़-वि० [हिं० कल्ला+तोड़] १. मुँहतोड़। प्रबल। २. जोड़-तोड़ का।
कल्लादराज़-वि० [फ़ा०] [संज्ञा कल्लादराज़ी] बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला। मुँहज़ोर।
कल्लाना-क्रि० अ० [सं० कड् या कल्] चमड़े के ऊपर ही ऊपर कुछ जलन लिए हुए एक प्रकार की पीड़ा होना।
कल्लोल-संज्ञा पु० [सं०] १. पानी की लहर। तरंग। २. आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा।
कल्लोलिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
कल्ह†-क्रि० वि० दे० "कल"।
कल्हरना*-क्रि० अ० [हिं० कड़ाह+ना (प्रत्य०)] कड़ाही में तला जाना। भुनना।
कल्हारना†-क्रि० स० [हिं० कड़ाह+ना (प्रत्य०)] कड़ाही में भूनना या तलना।
क्रि० अ० [सं० कल्ल=शोर करना] दुःख से कराहना। चिल्लाना।
कवच-संज्ञा पु० [सं०] [वि० कवची] १. आवरण। छाल। छिलका। २ लोहे की कड़ियों के जाल का बना हुआ पहनावा जिसे योद्धा लड़ाई के समय पहनते थे। जिरह बकतर। सँजोया। सन्नाह। ३. तंत्र शास्त्र का एक अंग जिसमें मंत्रों द्वारा शरीर के अंगों की रक्षा के लिये प्रार्थना की जाती है। ४. इस प्रकार रक्षा मंत्र लिखा हुआ तावीज। ५. बड़ा नगाड़ा जो युद्ध में बजता है। पटह। डंका।
कवर-संज्ञा पु० [सं० कवल] ग्रास। कौर। लुक़मा। निवाला।
संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कवरी] १. केशपाश। २. गुच्छा।
कवरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] चोटी। जूड़ा।
कवर्ग-संज्ञा पु० [सं०] [वि० कवर्गीय]

क से ङ तक के अक्षरों का समूह।
कवल–संज्ञा पु० [सं०] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार में खाने के लिये मुँह में रखी जाय। कौर। ग्रास। गस्सा। २. उतना पानी जितना मुँह साफ़ करने के लिये एक बार मुँह में लिया जाय। कुल्ली।
संज्ञा पु० [देश०] [स्त्री० कवली] १. एक पक्षी। २. घोड़े की एक जाति।
कवलित–वि० [सं०] कौर किया हुआ। खाया हुआ। भक्षित।
कवाम–संज्ञा पु० [अ०] १. पकाकर शहद की तरह गाढ़ा किया हुआ रस। किवाम। २. चाशनी। शीरा।
कवायद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नियम। व्यवस्था। २. व्याकरण। ३. सेना के युद्ध करने के नियम। ४. लड़नेवाले सिपाहियों की युद्ध नियमों के अभ्यास की क्रिया।
कवि–संज्ञा पु० [सं०] १. काव्य करनेवाला। कविता रचनेवाला। २. ऋषि। ३. ब्रह्मा। ४. शुक्राचार्य्य। ५. सूर्य्य।
कविका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लगाम। २. केवड़ा।
कविता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मनोविकारों पर प्रभाव डालनेवाला रमणीय पद्यमय वर्णन। काव्य।
कविताई–संज्ञा स्त्री० दे० "कविता"।
कवित्त–संज्ञा पु० [सं० कवित्व] १. कविता। काव्य। २. दंडक के अंतर्गत ३१ अक्षरों का एक वृत्त।
कवित्व–संज्ञा पु० [सं०] १. काव्य-रचना शक्ति। २ काव्य का गुण।
कविनासा–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा"।
कविराज–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ कवि। २. भाट। ३ बंगाली वैद्यों की उपाधि।
कविराय–संज्ञा पु० दे० "कविराज"।
कविलास:–संज्ञा पु० [सं० कैलास] १. कैलास। २. स्वर्ग।
कवेला–संज्ञा पु० [हिं० कौआ + एला (प्रत्य०)] कौए का बच्चा।
कव्य–संज्ञा पु० [सं०] वह अन्न या द्रव्य जिससे पिंड, पितृ-यज्ञादि किए जायँ।
कश–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कशा] चाबुक।
संज्ञा पु० [फा०] १. खिंचाव।
यौ०—कश-मकश।
२. हुक्के या चिलम का दम। फूँक।
कशकोल–संज्ञा पु० दे० "कजकोल"।
कशमकश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. खींचा-तानी। २. भीड़। धक्कम-धक्का। ३. आगा पीछा। सोच विचार।
कशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रस्सी। २. कोड़ा।
कशिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] आकर्षण।
कशीदा–संज्ञा पु० [फा०] कपड़े पर सूई और तागे से निकाले हुए बेल बूटे।
कश्चित्–वि० [सं०] कोई। कोई-एक। सर्व० [सं०] कोई (व्यक्ति)।
कश्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नौका। नाव। २ पान, मिठाई या बायना बांटने के लिये धातु या काठ का बना हुआ एक छिछला बर्तन। ३ शतरंज का एक मोहरा।
कश्मीर–संज्ञा पु० [सं०] पंजाब के उत्तर हिमालय से घिरा हुआ एक पहाड़ी प्रदेश जो प्राकृतिक सौंदर्य्य और उर्वरता के लिये संसार में प्रसिद्ध है।
कश्मीरी–वि० [हिं० कश्मीर + ई (प्रत्य०)] कश्मीर का। कश्मीर देश में उत्पन्न।
संज्ञा स्त्री० कश्मीर देश की भाषा।
संज्ञा पु० [हिं० कश्मीर] [स्त्री० कश्मीरिन] १. कश्मीर देश का निवासी। २. कश्मीर देश का घोड़ा।
कश्यप–संज्ञा पु० [सं०] १ एक वैदिक-कालीन ऋषि। २. एक प्रजापति। ३. कछुआ। कच्छप। ४. सप्तर्षि मंडल का एक तारा।
कष–संज्ञा पु० [सं०] १ सान। २. कसौटी (पत्थर)। ३. परीक्षा। जांच।
कषा–संज्ञा पुं० दे० "कशा"।
कषाय–वि० [सं०] १. कसैला। बाकठ (छः रसों में से एक)। २. सुगंधित। खुशबूदार। ३. रँगा हुआ। ४. गेरू के रंग का। गैरिक।
संज्ञा पु० [सं०] १. कसैली वस्तु। २. गोंद। ३. गाढ़ा रस। ४. क्रोध। लोभ आदि विकार (जैन)। ५. कलियुग।
कष्ट–संज्ञा पु० [सं०] १. क्लेश। पीड़ा। तकलीफ़। २. संकट। आपत्ति। मुसीबत।
कष्टकल्पना–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत खींच खाँच की और कठिनता से ठीक घटनेवाली युक्ति।
कष्टसाध्य–वि० [सं०] जिसका करना

कठिन हो। मुश्किल से होनेवाला।

कष्टी–वि० [सं० कष्ट] पीड़ित। दुःखी।

कस–संज्ञा पुं० [सं० कष] १. परीक्षा। कसौटी। जाँच। २. तलवार की लचक जिससे उसकी उत्तमता की परख होती है।

संज्ञा पुं० १ बल। ज़ोर। २. वश। क़ाबू। मुहा०—कस का=जिस पर अपना इख़्तियार हो। कस में करना या रखना=वश में रखना। अधीन रखना।

३. रोक। अवरोध।

संज्ञा पुं० [सं० कषाय] १. 'कसाव' का संक्षिप्त रूप। २. निकाला हुआ अर्क। ३. सार। तत्व।

† क्रि० वि० १. कैसे। २ क्यों।

कसक–संज्ञा स्त्री० [सं० कष्] १. हलका या मीठा दर्द। साल। टीस। २. बहुत दिन का मन में रखा हुआ द्वेष। पुराना बैर।

मुहा०—कसक निकालना=पुराने बैर का बदला लेना।

३. हौसला। अरमान। अभिलाषा। ४. हमदर्दी। सहानुभूति।

कसकना–क्रि० अ० [हिं० कसक] दर्द करना। सालना। टीसना।

कसकुट–संज्ञा पुं० [हिं० काँसा+कुट=टुकड़ा] एक मिश्रित धातु जो ताँबे और जस्ते के बराबर भाग मिलाकर बनाई जाती है। भरत। कांसा।

कसन–संज्ञा स्त्री० [हिं० कसना] १. कसने की क्रिया या ढंग। २. कसने की रस्सी।

संज्ञा स्त्री० [सं० कष] दुःख। क्लेश।

कसना–क्रि० स० [सं० कर्षण] १. बंधन को दृढ़ करने के लिये उसकी डोरी आदि को खींचना। २. बंधन को खींचकर बँधी हुई वस्तु को अधिक दबाना।

मुहा०—कसकर=१. ज़ोर से। बलपूर्वक। २. पूरा पूरा। बहुत अधिक। कसा=पूरा पूरा। बहुत अधिक। जैसे—कसा दाम। ३. जकड़कर बाँधना। जकड़ना। ४. पुरज़ों को दृढ़ करके बैठाना। ५. साज़ रखकर सवारी के लिये तैयार करना।

मुहा०—कसा कसाया=चलने के लिये बिलकुल तैयार।

६. ठूस ठूसकर भरना।

क्रि० अ० १. बंधन का खिंचना जिससे वह अधिक जकड़ जाय। जकड़ जाना। २. किसी लपेटने या पहनने की वस्तु का तंग होना। ३. बँधना। ४. साज रखकर सवारी का तैयार होना। ५. खूब भर जाना।

क्रि० स० [सं० कषण] १ परखने के लिये सोने आदि धातुओं को कसौटी पर घिसना। कसौटी पर चढ़ाना। २. परखना। जाँचना। आजमाना। ३. तलवार को लचाकर उसके लोहे की परीक्षा करना। ४. दूध को गाढ़ा करके खोया बनाना।

क्रि० स० [सं० कषण=कष्ट देना] क्लेश देना। कष्ट पहुँचाना।

कसनि†–संज्ञा स्त्री० दे० "कसन"।

कसनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कसना] १. रस्सी जिसमें कोई वस्तु बाँधी जाय। २. बेठन। गिलाफ़। ३. कंचुकी। अँगिया। ४. कसौटी। ५. परीक्षा। परख। जाँच।

कसब–संज्ञा पुं० [अ०] १. परिश्रम। मेहनत। २. पेशा। रोज़गार। व्यवसाय। ३. वेश्यावृत्ति।

कसबल–संज्ञा पुं० [हिं० कस+बल] १ शक्ति। बल। २. साहस। हिम्मत।

कसबा–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० कसबाती] साधारण गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती। बड़ा गाँव।

कसबी–संज्ञा स्त्री० [अ० कस्ब] १. वेश्या। रंडी। पतुरिया। २. व्यभिचारिणी स्त्री।

कसम–संज्ञा स्त्री० [अ०] शपथ। सौगंध।

मुहा०—कसम उतारना=१. शपथ का प्रभाव दूर करना। २. किसी काम को नाम मात्र के लिये करना। कसम देना, दिलाना या खाना=किसी को किसी शपथ द्वारा बाध्य करना। कसम लेना=कसम खिलाना। प्रतिज्ञा कराना। कसम खाने को=नाम मात्र को।

कसमसाना–क्रि० अ० [अनु०] १ बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का एक दूसरे से रगड़ खाते हुए हिलना डोलना। खलबलाना। कुलबुलाना। २. उकताकर हिलना-डोलना। ३ घबराना। बेचैन होना। ४. आगा पीछा करना। हिचकना।

कसमसाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० कसमसाना] १. कुलबुलाहट। डोलाव। हिलाव। २ बेचैनी। घबराहट।

कसर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कमी। न्यूनता।

२. द्वेष। वैर। मनमोटाव।
मुहा०—कसर निकालना = बदला लेना।
३. टोटा। घाटा। हानि। ४. नुक्स। दोष। विकार। ५. किसी वस्तु के सूखने या उसमें से कूड़ा-करकट निकलने से हो जानेवाली कमी।
कसरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० कसरती] शरीर को पुष्ट और बलवान् बनाने के लिये दंड, बैठक आदि परिश्रम का काम। व्यायाम। मेहनत।
संज्ञा स्त्री० [अ०] अधिकता। .ज्यादती।
कसरती—वि० [अ० कसरत] १. कसरत करनेवाला। २ कसरत से पुष्ट और बलवान् बनाया हुआ।
कसवाना—क्रि० स० [हिं० कसना का प्रे०] कसने का काम दूसरे से कराना।
कसाई—संज्ञा पुं० [अ० कस्साब] [स्त्री० कसाइन] १. वधिक। घातक। २ बूचड़।
वि० निर्दय। बेरहम। निष्ठुर।
कसाना—क्रि० अ० [हिं० कसाव] स्वाद में कसैला हो जाना। काँसे के योग से खट्टी चीज़ का बिगड़ जाना।
क्रि० स० दे० "कसवाना"।
कसार—संज्ञा पुं० [सं० कृसर] चीनी मिला हुआ भुना आटा या सूजी। पँजीरी।
कसाला—संज्ञा पुं० [सं० कष] १. कष्ट। तकलीफ़। २. कठिन परिश्रम। श्रम। मेहनत।
कसाव—संज्ञा पुं० [सं० कषाय] कसेलापन।
कसावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० कसना] कसने का भाव। तनाव। खिंचावट।
कसीदा—संज्ञा पुं० दे० "कशीदा"।
कसीदा—संज्ञा पुं० [अ०] उर्दू या फारसी भाषा की एक प्रकार की कविता, जिसमें प्रायः स्तुति या निंदा की जाती है।
कसीस—संज्ञा पुं० [सं० कासीस] लोहे का एक विकार जो खानों में मिलता है।
कसूँभा—वि० [सं०] कुसुम के रंग का। लाल।
कसूर—संज्ञा पुं० [अ०] अपराध। दोष।
कसूरमंद, कसूरवार—वि० [फा०] दोषी। अपराधी।
कसेरा—संज्ञा पुं० [हिं० काँसा + एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कसेरिन] काँसे, फूल आदि के बरतन ढालने और बेचनेवाला।
कसेरू—संज्ञा पुं० [सं० कशेरु] एक प्रकार के मोथे की गँठीली जड़ जो मीठी होती है।
कसैया†—संज्ञा पुं० [हिं० कसना] १. कसनेवाला। जकड़कर बाँधनेवाला। २. परखनेवाला। जाँचनेवाला।
कसैला—वि० [हिं० कसाव + ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० कसैली] कषाय स्वादवाला। जिसमें कसाव हो। जैसे—आँवला, हड़ आदि।
कसैली†—संज्ञा स्त्री० [हिं० कसैला] सुपारी।
कसोरा—संज्ञा पुं० [हिं० काँसा + ओरा (प्रत्य०)] १ कटोरा। २. मिट्टी का प्याला।
कसौटी—संज्ञा स्त्री० [सं० कषपट्टी, प्रा० कसवट्टी] १. एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की परख की जाती है। २. परीक्षा। जाँच। परख।
कस्तूर—संज्ञा पुं० [सं० कस्तूरी] कस्तूरी-मृग।
कस्तूरा—संज्ञा पुं० [सं० कस्तूरी] १. कस्तूरी-मृग। २ लोमड़ी की तरह का एक पशु।
संज्ञा पुं० [देश०] १ वह सीप जिससे मोती निकलता है। २. एक ओषधि जो पोर्ट ब्लेयर की चट्टानों से खुरचकर निकाली जाती और बहुत बलकारक होती है।
कस्तूरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कस्तूरी।
कस्तूरिया—संज्ञा पुं० [हिं० कस्तूरी] कस्तूरी-मृग।
वि० १. कस्तूरीवाला। कस्तूरी मिश्रित। २. कस्तूरी के रंग का। मुश्की।
कस्तूरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है।
कस्तूरी मृग—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत ठंढे पहाड़ी स्थानों में होनेवाला एक प्रकार का हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।
कहँ—प्रत्य० [सं० कक्ष] कर्म और संप्रदान का चिह्न 'को'। के लिये। (अवधी)
क्रि० वि० दे० "कहाँ"।
कहगिल—संज्ञा स्त्री० [फा० काह = घास + गिल = मिट्टी] दीवार में लगाने का मिट्टी का गारा।
कहत—संज्ञा पुं० [अ०] दुर्भिक्ष। अकाल।
यौ०—कहतसाली = दुर्भिक्ष का समय।
कहता—संज्ञा पुं० [हिं० कहना] कहनेवाला पुरुष।
कहन—संज्ञा स्त्री० [सं० कथन] १. कथन।

उक्ति। २. वचन। बात। ३. कहावत। ४. कविता।

कहना क्रि० स० [सं० कथन] १. बोलना। उच्चारण करना। वर्णन करना।

मुहा० कह बदकर = १. प्रतिज्ञा करके। दृढ़ संकल्प करके। २. ललकारकर। दावे के साथ। कहना सुनना = बात-चीत करना। कहने को = १. नाममात्र को। २. भविष्य में स्मरण के लिये। कहने की बात = वह बात जो वास्तव में न हो।

२. प्रकट करना। खोलना। ज़ाहिर करना। ३. सूचना देना। खबर देना। ४. नाम रखना। पुकारना। ५. समझाना बुझाना।

मुहा०—कहना सुनना = समझाना।

६. कविता करना।

सज्ञा पु० वचन। आज्ञा। अनुरोध।

कहनाउत—सज्ञा स्त्री० दे० "कहनावत"।

कहनावत—सज्ञा स्त्री० [हिं० कहना + आवत (प्रत्य०)] १. बात। कथन। २. कहावत।

कहनि†—सज्ञा स्त्री० दे० "कहन"।

कहनूत†—सज्ञा स्त्री० [हिं० कहना + ऊत (प्रत्य०)] कहावत। मसल।

कहर—संज्ञा पु० [अ०] विपत्ति। आफ़त। वि० [अ० क़ह्हार] अपार। घोर। भयंकर।

कहरना†—क्रि० अ० दे० "कराहना"।

कहरवा—सज्ञा पु० [हिं० कहार] १. पाँच मात्राओं का एक ताल। २. दादरा गीत जो कहरवा ताल पर गाया जाता है। ३. वह नाच जो कहरवा ताल पर होता है।

कहरी वि० [अ० कह्र] आफ़त ढानेवाला।

कहरुवा—संज्ञा पु० [फा० कहरुबा] एक प्रकार का गोंद जिसे कपड़े आदि पर रगड़कर यदि घास या तिनके के पास रखें तो उसे चुंबक की तरह पकड़ लेता है।

कहल†—सज्ञा पु० [देश०] १. ऊमस। औंस। २. ताप। ३. कष्ट।

कहलना—क्रि० अ० [हिं० कहल] १. कलमलाना। अकुलाना। २. गरमी या ऊमस से व्याकुल होना। ३. दहलना।

कहलवाना—क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहलाना—क्रि० स० [कहना का प्रे० रूप] १. दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना। २. सँदेसा भेजना। ३. पुकारा जाना। क्रि० अ० [हिं० कहल] ऊमस या गरमी से व्याकुल या शिथिल होना।

कहवाँ†—क्रि० वि० दे० "कहाँ"।

कहवा—सज्ञा पुं० [अ०] एक पेड़ का बीज जिसके चूर को चाय की तरह पीते हैं।

कहवाना†—क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहवैया†—वि० [हिं० कहना + वैया (प्रत्य०)] कहनेवाला।

कहाँ—क्रि० वि० [वैदिक सं० कुह:] किस जगह? किस स्थान पर?

मुहा०—कहाँ का = १. न जाने कहाँ का। असाधारण। बड़ा भारी। २. कहीं का नहीं। नहीं है। कहाँ का कहाँ = बहुत दूर। कहाँ की बात = यह बात ठीक नहीं है। कहाँ यह, कहाँ वह = इनमें बड़ा अंतर है। कहाँ से = क्यों। व्यर्थ। नाहक़।

कहा†—सज्ञा पु० [सं० कथन] कथन। बात। आज्ञा। उपदेश।

क्रि० वि० [सं० कथम्] कैसे। किस प्रकार।

सर्व० [सं० कः] क्या। (ब्रज)

कहाना—क्रि० स० दे० "कहलाना"।

कहानी—सज्ञा स्त्री० [सं० कथानिका] १. कथा। किस्सा। आख्यायिका। २. झूठी बात। गढ़ी बात।

यौ०—रामकहानी = लंबा चौड़ा वृत्तांत।

कहार—सज्ञा पुं० [सं० क = जल + हार] एक जाति जो पानी भरने और डोली उठाने का काम करती है।

कहावत—सज्ञा स्त्री० [हिं० कहना] १. ऐसा बँधा वाक्य जिसमें कोई अनुभव की बात संक्षेप में चमत्कारिक ढंग से कही गई हो। कहनूत। लोकोक्ति। मसल। २. कही हुई बात। उक्ति।

कहा सुना—सज्ञा पु० [हिं० कहना + सुनना] अनुचित कथन और व्यवहार। भूल-चूक। जैसे—कहा-सुना माफ़ करो।

कहा सुनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० कहना + सुनना] वाद विवाद। झगड़ा-तकरार।

कहिया†—क्रि० वि० [सं० कुह:] किस दिन। कब।

कहीं—क्रि० वि० [हिं० कहाँ] १. किसी अनिश्चित स्थान में। ऐसे स्थान में जिसका ठीक ठिकाना न हो।

मुहा०—कहीं और = दूसरी जगह। अन्यत्र। कहीं का = १. न जाने कहाँ का। २. बड़ा भारी कहीं का न रहना या होना = दो पक्षों में से

किसी पद के योग्य न रहना। किसी काम का न रहना। कहीं न कहीं=किसी स्थान पर अवश्य।
२. (प्रश्न रूप में और निषेधार्थक) नहीं। कभी नहीं। ३. कदाचित्। यदि। अगर (आशंका और इच्छा सूचक)। ४ बहुत अधिक। बहुत बढ़कर।
कहूँ‡–क्रि० वि० दे० "कहीं"।
कहूँ†–क्रि० वि० दे० "कहीं"।
काँइयाँ–वि० [अनु० काँव काँव] चालाक। धूर्त।
काँई†–अव्य० [स० किम्] क्यों।
सर्व० [स० कानि] क्या।
काँकर†–सज्ञा पुं० दे० "कंकड़"।
काँकरी†–सज्ञा स्त्री० [हिं० काँकर] छोटा कंकड़।
मुहा०—काँकरी चुनना=चिंता या वियोग के दुःख से किसी काम में मन न लगना।
काँक्षनीय–वि० [स०] इच्छा करने योग्य। चाहने लायक।
कांक्षा–सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० कांक्षित] इच्छा। अभिलाषा। चाह।
कांक्षी–वि० [स० कांक्षिन्] [स्त्री० कांक्षिणी] चाहनेवाला। इच्छा रखनेवाला।
काँख–सज्ञा स्त्री० [स० कक्ष] बाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा। बगल।
काँखना–क्रि० अ० [अनु०] १ श्रम या पीड़ा से "हूँ" "आह" आदि शब्द मुँह से निकालना। २ मल या मूत्र को निकालने के लिये पेट की वायु को दबाना।
काँखासोती–सज्ञा स्त्री० [हिं० काँख+स० अत्र] दाहिनी बगल के नीचे से ले जाकर बाएँ कंधे पर दुपट्टा डालने का ढंग।
काँगड़ा–सज्ञा पु० [देश०] पंजाब प्रांत का एक पहाड़ी प्रदेश जिसमें एक छोटा ज्वालामुखी पर्वत है जो ज्वालामुखी देवी के नाम से प्रसिद्ध है।
काँगड़ी–सज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी अँगीठी जिसे जाड़े में कश्मीरी लोग गले में लटकाए रहते हैं।
काँच–सज्ञा स्त्री० [स० कच्छ] १ धोती का वह छोर जिसे दोनों जाँघों के बीच से ले जाकर पीछे खोंसते हैं। लाँग। २ गुदेंद्रिय के भीतर का भाग। गुदाचक्र।
मुहा०—काँच निकलना=किसी आघात या परिश्रम से बुरी दशा होना।
सज्ञा पु० [स० काच] एक मिश्र धातु जो बालू और रेह या खारी मिट्टी को गलाने से बनती और पारदर्शक होती है। शीशा।
कांचन–सज्ञा पु० [स०] [वि० कांचनीय] १. सोना। २. कचनार। ३ चंपा। ४ नागकेसर। ५ धतूरा।
कांचनशृंगा–सज्ञा पु० [स० कांचनशृंग] हिमालय की एक चोटी।
काँचरी†–सज्ञा स्त्री० दे० "काँचली"।
काँचली‡–सज्ञा स्त्री० [स० कंचुलिका] साँप की केंचुली।
काँचा†–वि० दे० "कच्चा"।
कांची–सज्ञा स्त्री० [स०] १. मेखला। क्षुद्र घंटिका। करधनी। २ गोटा। पट्टा। ३ गुंजा। घुँघची। ४ हिंदुओं की सात पुरियों में से एक पुरी। कांजीवरम्।
कांचीपुरी–सज्ञा स्त्री० [स०] कांची। कांजीवरम्।
काँछा†–सज्ञा स्त्री० दे० "कांक्षा"।
काँजी–सज्ञा स्त्री० [स० कांजिक] १ एक प्रकार का खट्टा रस जो पिसी हुई राई आदि को घोलकर रखने से बनता है। २. मट्ठे या दही का पानी। छाछ।
काँट–सज्ञा पु० दे० "काँटा"।
काँटा–सज्ञा पु० [स० कंटक] [वि० कँटीला] १ किसी किसी पेड़ की डालियों में निकले हुए सुई की तरह के नुकीले अंकुर जो बहुत कड़े हो जाते हैं। कंटक।
मुहा०—काँटा निकलना=१. बाधा या कष्ट दूर होना। २ खटका मिटना। रास्ते में काँटा बिछाना=विघ्न करना। बाधा डालना। काँटा बोना=१. बुराई करना। अनिष्ट करना। २ अड़चन डालना। उपद्रव मचाना। काँटा सा खटकना=अच्छा न लगना। दुःखदायी होना। काँटा होना=बहुत दुबला होना। काँटों में घसीटते हो=इतनी अधिक प्रशंसा या आदर करते हो जिसके मैं योग्य नहीं। काँटों पर लोटना=दुःख से तड़पना। बेचैन होना।
२ वह काँटा जो मोर, मुर्गे, तीतर आदि पक्षियों की नर जातियों के पैरों में पंजे के ऊपर निकलता है। खाँग। ३ वह काँटा जो मैना आदि पक्षियों के गले में रोग के रूप में निकलता है। ४ छोटी छोटी नुकीली और खुरखुरी फुंसियाँ जो जीभ में निकलती हैं। ५. [स्त्री० अल्पा० काँटी]

ाहे की बड़ी कील। ६. मछली पकड़ने ी झुकी हुई नोकदार अँकुड़ी या कँटिया। :. लोहे की झुकी हुई अँकुड़िया का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरे बरतन निकालते हैं। ८. सूई या कील की तरह की कोई नुकीली वस्तु। जैसे, साही का काँटा। ९. तराजू की डाँड़ी पर वह सूई जिससे दोनों पलड़े के बराबर होने की सूचना मिलती है। १०. वह लोहे की तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा होता है।
मुहा०—काँटे की तौल=न कम, न बेश। ठीक ठीक। काँटे से तुलना=महँगा होना।
११. नाक में पहनने की कील। लौंग। १२. पंजे के आकार का धातु का बना हुआ एक औज़ार जिससे अँगरेज़ लोग खाना खाते हैं। १३. घड़ी की सूई। १४. गणित में गुणन फल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की क्रिया।

काँटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँटा] १. छोटा काँटा। कील। २. वह छोटी तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा लगा हो। ३. झुकी हुई छोटी कील। अँकुड़ी। ४. बेड़ी।

काँठा—संज्ञा पुं० [सं० कंठ] १. गला। २. तोते आदि चिड़ियों के गले की रेखा। ३. किनारा। तट। ४ पार्श्व। बग़ल।

कांड—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस या ईख आदि का वह अंश जो दो गाँठों के बीच में हो। पोर। गाँडा। गंडा। २. शर। सरकंडा। ३. वृक्षों की पेड़ी। तना। ४. शाखा। डाली। डंठल। ५. गुच्छा। ६. किसी कार्य्य या विषय का विभाग। जैसे—कर्मकांड। ७. किसी ग्रंथ का वह विभाग जिसमें एक पूरा प्रसंग हो। ८. समूह। वृंद।

काँड़ना†—क्रि० स० [सं० कंडन] १. रौंदना। कुचलना। २. चावल से भूसी अलग करना। कूटना। ३. खूब मारना।

कांडर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋषि जिसने वेद के किसी कांड (कर्म ज्ञान, उपासना) पर विचार किया हो, जैसे—जैमिनि।

काँड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० काण्ड] १. लकड़ी का बड़ा डंडा। २. बाँस या लकड़ी का कुछ पतला सीधा लट्ठा।
मुहा०—काँड़ी कफ़न=मुरदे की रथी का
।

कांत—संज्ञा पुं० [सं०] १. पति। शौहर। २ श्रीकृष्णचंद्र। ३. चंद्रमा। ४. विष्णु। ५ शिव। ६. कार्त्तिकेय। ७. वसंत ऋतु। ८ कुंकुम। ९. एक प्रकार का बढ़िया लोहा। कांतसार।

कांतसार—संज्ञा पुं० [सं०] कांत लोहा।

कांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रिया। सुंदरी स्त्री। २. भार्य्या। पत्नी।

कांतार—संज्ञा पुं० [सं०] १. भयानक स्थान। २ दुर्भेद्य और गहन वन। ३ एक प्रकार की ईख। ४. बाँस। ५. छेद।

कांतासक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भक्ति का एक भेद जिसमें भक्त ईश्वर को अपना पति मानकर पत्नी भाव से उसकी भक्ति करता है। माधुर्य्य भाव।

कांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। प्रकाश। तेज। आभा। २ सौंदर्य्य। शोभा। छवि। ३. चंद्रमा की सोलह कलाओं में से एक। ४ चंद्रमा की एक स्त्री का नाम। ५. आर्य्या छंद का एक भेद।

काँथरि—संज्ञा स्त्री० दे० "कथरी"।

काँदना†—क्रि० अ० [सं० क्रंदन] रोना।

काँदा—संज्ञा पुं० [सं० कंद] १. एक गुल्म जिसमें प्याज़ की तरह गाँठ पड़ती है। २. प्याज़। ३ दे० "काँदो"।

काँदो †—संज्ञा पुं० [सं० कर्दम] कीचड़।

काँध †—संज्ञा पुं० दे० "कंधा"।

काँधना—क्रि० स० [हिं० काँध] १. उठाना। सिर पर लेना। सँभालना। २. ठानना। मचाना। ३ स्वीकार करना। अंगीकार करना। ४. भार लेना।

काँधर, काँधा †—संज्ञा पुं० दे० "कान्ह"।

काँप—संज्ञा स्त्री० [सं० कंपा] १. बाँस आदि की पतली लचीली तीली। २. पतंग या कनकौवे की धनुष की तरह झुकी हुई तीली। ३. सूअर का खाँग। ४. हाथी का दाँत। ५. कान में पहनने का एक गहना।

काँपना—क्रि० अ० [सं० कंपन] १. हिलना। थरथराना। २. डर से काँपना। थर्राना।

कांबोज—वि० [सं०] कंबोज देश का।

काँय काँय, काँव काँव—संज्ञा पुं० [अनु०] १ कौवे का शब्द। २. व्यर्थ का शोर।

काँवर—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँध + आवर (प्रत्य०)] बहँगी।

काँवरा†—वि० [सं० कमला] घबराया हुआ।

काँवरिया–संज्ञा पुं० [हिं० काँवरि] कावर लेकर चलनेवाला तीर्थयात्री । कामारथी ।

काँवरू–संज्ञा पुं० दे० "कामरूप" ।

काँवारथी–संज्ञा पुं० [सं० कामार्थी] वह जो किसी तीर्थ में किसी कामना से काँवर लेकर जाय ।

काँस–संज्ञा पुं० [सं० काश] एक प्रकार की लंबी घास ।

काँसा–संज्ञा पुं० [सं० कांस्य] [वि० काँसी] एक मिश्रित धातु जो ताँबे और जस्ते के संयोग से बनती है । कसकुट । भरत ।

संज्ञा पुं० [फा० कासा] भीख माँगने का ठीकरा या खप्पर ।

काँसागर–संज्ञा पुं० [हिं० काँसा + फा० गर (प्रत्य०)] काँसे का काम करनेवाला ।

काँस्य–संज्ञा पुं० [सं०] काँसा । कसकुट ।

का–प्रत्य० [सं० प्रत्य० क] संबंध या षष्ठी का चिह्न; जैसे—राम का घोड़ा ।

काई–संज्ञा स्त्री० [सं० कावार] १. जल या सीड़ में होनेवाली एक प्रकार की महीन घास या सूक्ष्म वनस्पति-जाल ।

मुहा०—काई छुड़ाना = १. मैल दूर करना । २. दुःख दारिद्र दूर करना । काई सा फट जाना = तितर बितर हो जाना । छँट जाना ।

२. एक प्रकार का मुर्चा जो ताँबे इत्यादि पर जम जाता है । ३. मल । मैल ।

काऊ‡–क्रि० वि० [सं० कदा] कभी ।

सर्व० [सं० कः] १. कोई । २ कुछ ।

काक–संज्ञा पुं० [सं०] कौआ ।

संज्ञा पुं० [अं० कार्क] एक प्रकार की नर्म लकड़ी जिसकी डाट बोतलों में लगाई जाती है । काग ।

काक-गोलक–संज्ञा पुं० [सं०] कौवे की आँख की पुतली, जो एक ही दोनों आँखों में घूमती हुई कही जाती है ।

काकजंघा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चकसेनी । मसी का पौधा । २. गुंजा । घुँघची । ३ मुगौन या मुगवन नाम की लता ।

काकडासींगी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कटशृंगी] काकड़ा नामक पेड़ में लगी हुई एक प्रकार की लाही जो दवा के काम में आती है ।

काकतालीय–वि० [सं०] संयोगवश होने-वाला । इत्तफ़ाकिया ।

यौ०—काकतालीय न्याय ।

काकदंत–संज्ञा पुं० [सं०] कोई असंभव बात ।

काकपक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] बालों के पट्टे जो दोनों ओर कानों और कनपटियों के ऊपर रहते हैं । कुल्ला । जुल्फ़ ।

काकपद–संज्ञा पुं० [सं०] वह चिह्न जो छूटे हुए शब्द का स्थान जताने के लिये पंक्ति के नीचे बनाया जाता है ।

काकपच्छ‡–संज्ञा पुं० दे० "काकपक्ष" ।

काकबंध्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे एक संतति के उपरांत दूसरी न हुई हो ।

काकबलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] श्राद्ध के समय भोजन का वह भाग जो कौओं को दिया जाता है । कागौर ।

काकभुशुंडि–संज्ञा पुं० [सं०] एक ब्राह्मण जो लोमश के शाप से कौआ हो गए थे और राम के बड़े भक्त थे ।

काकरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कँकड़ी" ।

काकरेजा–संज्ञा पुं० [हिं० काक + रंजन] काकरेजी रंग का कपड़ा ।

काकरेजी–संज्ञा पुं० [फा०] एक रंग जो लाल और काले के मेल से बनता है । कोकची ।

वि० काकरेज़ी रंग का ।

काकली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मधुर ध्वनि । कल-नाद । २. सेंध लगाने की सबरी ।

काका–संज्ञा पुं० [फा० काका = बड़ा भाई] [स्त्री० काकी] बाप का भाई । चाचा ।

काका कौआ–संज्ञा पुं० दे० "काकातूआ" ।

काकाक्षिगोलक न्याय–संज्ञा पुं० [सं०] एक शब्द या वाक्य को उलट-फेरकर दो भिन्न भिन्न अर्थों में लगाना ।

काकातूआ–संज्ञा पुं० [मला०] एक प्रकार का बड़ा तोता जिसके सिर पर टेढ़ी चोटी होती है ।

काकिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घुँघची । गुंजा । २. पण का चतुर्थ भाग जो पाँच गंडे कौड़ियों का होता है । ३. माशे का चौथाई भाग । ४. कौड़ी ।

काकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] कौए की मादा ।

संज्ञा स्त्री० [हिं० काका] चाची । चची ।

काकु–संज्ञा पुं० [सं०] १. छिपी हुई चुटीली बात । व्यंग्य । तनज़ । ताना । २. अलंकार में वक्रोक्ति के दो भेदों में से एक जिसमें शब्दों के अन्यार्थ या अनेकार्थ से नहीं बल्कि ध्वनि ही से दूसरा अभिप्राय ग्रहण किया जाय ।

काकुल-संज्ञा पुं० [फा०] कनपटी पर लटकते हुए लंबे बाल। कुल्ले। जुल्फें।
काकोली-संज्ञा स्त्री० [सं०] सतावर की तरह की एक श्रोषधि जो अब नहीं मिलती।
काग-संज्ञा पुं० [सं० काक] कौश्रा।
संज्ञा पुं० [अं० कार्क] १. बलूत की जाति का एक बड़ा पेड़ जो स्पेन, पुर्तगाल तथा अफ्रिका के उत्तरीय भागों में होता है। २ बोतल या शीशी की डाट जो इस पेड़ की छाल से बनती है।
कागज-संज्ञा पुं० [अ०] [वि० कागजी] १ सन, रूई, पटुए आदि को सड़ाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिस पर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं।
यौ०—कागज पत्र=१. लिखे हुए कागज। २. प्रामाणिक लेख। दस्तावेज।
मुहा०—कागज काला करना या रँगना= व्यर्थ कुछ लिखना। कागज की नाव=क्षण-भंगुर वस्तु। न टिकनेवाली चीज। कागजी घोड़े दौड़ाना=लिखा पढ़ी करना।
२. लिखा हुआ प्रामाणिक लेख। प्रमाण-पत्र। दस्तावेज। ३. समाचारपत्र। अखबार। ४. प्रामिसरी नोट।
कागजात-संज्ञा पुं० [अ० कागज का बहु०] कागज पत्र।
कागजी-वि० [अ० कागज] १ कागज का बना हुआ। २ जिसका छिलका कागज़ की तरह पतला हो। जैसे—कागज़ी बादाम। ३ लिखा हुआ। लिखित।
कागद-संज्ञा पुं० दे० "कागज़"।
कागभुसुंड-संज्ञा पुं० दे० "काकभुशुंडि"।
कागर-संज्ञा पुं० दे० "कागज"।
संज्ञा पुं० [हिं० काग ?] चिड़ियों के वे रूईं के से मुलायम पर जो झड़ जाते हैं।
कागरी-वि० [हिं० कागर] तुच्छ।
कागावासी-संज्ञा स्त्री० [हिं० काग+बासी] १. वह भांग जो सवेरे कौश्रा बोलते समय छानी जाय। २. एक प्रकार का मोती जो कुछ काला होता है।
कागारोल-संज्ञा पुं० [हिं० काग=कौआ+ रोर=शोर] हल्ला। हुल्लड़। शोर गुल।
कागौर-संज्ञा पुं० दे० "काकबलि"।
काच लवण-संज्ञा पुं० [सं०] कचिया नोन। नोन।

काची-संज्ञा स्त्री० [हिं० कच्चा] १. दूध रखने की हांड़ी। २. तीहुर, सिंघाड़े आदि का हलुआ।
काछ-संज्ञा पुं० [सं० कक्ष] १. पेड़ू और जांघ के जोड़ पर का तथा उसके नीचे तक का स्थान। २ धोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खोंसा जाता है। लांग। ३ अभिनय के लिये नटों का वेश या बनाव।
मुहा०—काछ काछना=वेष बनाना।
काछना-क्रि० स० [सं० कक्ष] १. कमर में लपेटे हुए वस्त्र के लटकते हुए भाग को जाँघों पर से ले जाकर पीछे कसकर बांधना। २ बनाना। सँवारना।
क्रि० स० [सं० कर्षण] हथेली या चम्मच आदि से तरल पदार्थ को किनारे की ओर खींचकर उठाना।
काछनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० काछना] १. कसकर और कुछ ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लांगें पीछे खोंसी जाती हैं। कछनी। २ घाघरे की तरह का एक चुननदार आधे जांघे तक का पहनावा।
काछा-संज्ञा पुं० [हिं० काछना] कसकर और कुछ ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लांगें पीछे खोंसी जाती हैं। कछनी।
काछी-संज्ञा पुं० [कच्छ=जलप्राय देश] तरकारी बोने और बेचनेवाला आदमी।
काछे-क्रि० वि० [सं० कक्ष] निकट। पास।
काज-संज्ञा पुं० [सं० कार्य्य] १. कार्य्य।
मुहा०—के काज=के हेतु। निमित्त।
२ व्यवसाय। पेशा। रोज़गार। ३ प्रयोजन। मतलब। उद्देश्य। अर्थ। ४ विवाह।
संज्ञा पुं० [अं० कायजा] वह छेद जिसमें बटन डालकर फँसाया जाता है। बटन का घर।
काजर-संज्ञा पुं० दे० "काजल"।
काजरी-संज्ञा स्त्री० [सं० कज्जली] वह गाय जिसकी आंखों पर काला घेरा हो।
काजल-संज्ञा पुं० [सं० कज्जल] वह कालिख जो दीपक के धुएँ के जमने से लग जाती है और आंखों में लगाई जाती है।
मुहा०—काजल घुलाना, डालना, देना या सारना=(आंखों में) काजल लगाना। काजल पारना=दीपक के धुएँ की कालिख को किसी बरतन में जमाना। काजल की कोठरी=

ऐसा स्थान जहाँ जाने से मनुष्य को कलंक लगे।

काजी–संज्ञा पु॰ [अ॰] मुसलमानों के धर्म और रीति नीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।

काजू–संज्ञा पु॰ [कोंक॰ काज्जु] १. एक पेड़ जिसके फलों की गिरी को भूनकर लोग खाते हैं। २. इस वृक्ष के फल की गुठली के भीतर की मींगी या गिरी।

काजू भोजू–वि॰ [हिं॰ काज + भोग] ऐसी दिखाऊ वस्तु जो अधिक दिनों तक काम न आ सके।

काट–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ काटना] १ काटने की क्रिया या भाव।

यौ॰–काट छाँट = १. मार-काट। लड़ाई। २. काटने से बचा खुचा टुकड़ा। कतरन। ३. किसी वस्तु में कमी बेशी। घटाव-बढ़ाव। मार-काट = तलवार आदि की लड़ाई।

२. काटने का ढंग। कटाव। तराश। ३. कटा हुआ स्थान। घाव। जख्म। ४. कपट। चालबाजी। विश्वासघात। ५. कुश्ती में पेंच का तोड़।

काटना–क्रि॰ स॰ [सं॰ कर्तन] १. शस्त्र आदि की धार धँसाकर किसी वस्तु के दो खंड करना।

मुहा॰—काटो तो खून नहीं = एकबारगी स्तब्ध होना जाना। बिलकुल स्तब्ध हो जाना।

२. पीसना। महीन चूर करना। ३ घाव करना। जख्म करना। ४. किसी वस्तु का कोई अंश निकालना। किसी भाग को कम करना। ५. युद्ध में मारना। वध करना। ६. कतरना। ब्योंतना। ७ नष्ट करना। ८. समय बिताना। ९. रास्ता खतम करना। दूरी तै करना। १०. अनुचित प्राप्ति करना। बुरे ढंग से आय करना। ११. कलम की लकीर से किसी लिखावट को रद करना। छेंकना। मिटाना। १२. ऐसे कामों को तैयार करना जो लकीर के रूप में कुछ दूर तक चले गए हों। जैसे, सड़क काटना, नहर काटना। १३ ऐसे कामों को तैयार करना जिनमें लकीरों द्वारा कई विभाग किए गए हों; जैसे—क्यारी काटना। १४. एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का ऐसा भाग लगाना कि शेष न बचे। १५. जेलखाने में दिन बिताना। कैद भोगना। १६. विषैले जंतु का डंक मारना या दाँत धँसाना। डसना।

मुहा॰—काटने दौड़ना = चिड़चिड़ाना। खीजना। १७. किसी तीक्ष्ण वस्तु का शरीर में लगकर जलन और छरछराहट पैदा करना। १८ एक रेखा का दूसरी रेखा के ऊपर से चार कोण बनाते हुए निकल जाना। १९. (किसी मत का) खंडन करना। अप्रमाणित करना। २० दुःखदायी लगना।

मुहा॰ – काटे खाना या काटने दौड़ना = १. बुरा मालूम होना। चित्त को व्यथित करना। २. सूना और उजाड़ लगना।

काटू–संज्ञा पु॰ [हिं॰ काटना] १. काटने-वाला। २ कटाऊ। डरावना। भयानक।

काठ–संज्ञा पु॰ [सं॰ काष्ठ] १ पेड़ का कोई स्थूल अंग जो आधार से अलग हो गया हो। लकड़ी।

यौ॰ – काठ कबाड़ = टूटा फूटा सामान।

मुहा॰—काठ का उल्लू = जड़। वज्र मूर्ख। काठ होना = १. संज्ञाहीन होना। चेतनारहित होना। स्तब्ध होना। २. सूखकर कड़ा हो जाना। काठ की हाँडी = ऐसी दिखाऊ वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके।

२. ईंधन। जलाने की लकड़ी। ३ शहतीर। लक्कड़। ४. लकड़ी की बनी हुई बेड़ी। कलंदरा।

मुहा॰—काठ मारना या काठ में पाँव देना = अपराधी को काठ की बेड़ी पहनाना।

काठड़ा–संज्ञा पु॰ [हिं॰ काठ + ड़ा (प्रत्य॰)] [स्त्री॰ काठड़ी] काठ का बड़ा बरतन। कठौता।

काठिन्य–संज्ञा पु॰ दे॰ "कठिनता"।

काठी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ काठ] १. घोड़ों या ऊँट की पीठ पर कसने की जीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है। अंगरेजी जीन। २. शरीर की गठन। अंगलेट। ३. तलवार या कटार की म्यान।

वि॰ [काठियावाड़ देश] काठियावाड़ का।

काढ़ना–क्रि॰ स॰ [सं॰ कर्षण] १. किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर करना। निकालना। २. किसी आवरण को हटाकर कोई वस्तु प्रत्यक्ष करना। खोलकर दिखाना। ३. किसी वस्तु को किसी वस्तु से अलग करना। ४. लकड़ी, पत्थर, कपड़े आदि पर बेल-बूटे बनाना। उरेहना।

चित्रित करना । ५. उधार लेना । ऋण लेना । ६. कड़ाहे में से पकाकर निकालना । पकाना । छानना ।

काढ़ा–संज्ञा पुं० [हिं० काढ़ना] ओषधियों को पानी में उबाल या औटाकर बनाया हुआ शरबत । क्वाथ । जोशांदा ।

कातंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] कलाप व्याकरण ।

कातना–क्रि० स० [सं० कर्त्तन] १. रूई को ऐंठ या बटकर तागा बनाना । २. चरखा चलाना ।

कातर–वि० [सं०] १. अधीर । व्याकुल । चंचल । २. डरा हुआ । भयभीत । ३. डरपोक । बुज़दिल । ४. आर्त । दुःखित । संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्त] कोल्हू में लकड़ी का वह तख़्ता जिस पर हांकनेवाला बैठता है ।

कातरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कातर] १. अधीरता । चंचलता । २. दुःख की व्याकुलता । ३. डरपोकपन ।

काता–संज्ञा पुं० [हिं० कातना] काता हुआ सूत । तागा । डोरा ।

यौ०—बुढ़िया का काता=एक प्रकार की मिठाई जो बहुत महीन सूत की तरह होती है ।

कातिक–संज्ञा पुं० [सं० कार्तिक] वह महीना जो क्वार के बाद पड़ता है । कार्त्तिक ।

कातिब–संज्ञा पुं० [अ०] लिखनेवाला । लेखक ।

कातिल–वि० [अ०] घातक । हत्यारा ।

काती–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्री] १. कैंची । २. सुनारों की कतरनी । ३. चाकू । छुरी । ४. छोटी तलवार । कत्ती ।

कात्यायन–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कात्यायनी] १. कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न ऋषि जिनमें तीन प्रसिद्ध हैं—एक विश्वामित्र के वंशज, दूसरे गोभिल के पुत्र और तीसरे सोमदत्त के पुत्र वररुचि कात्यायन । २. पाली व्याकरण के कर्त्ता एक बौद्ध आचार्य ।

कात्यायनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कत गोत्र में उत्पन्न स्त्री । २. कात्यायन ऋषि की पत्नी । ३. कषाय वस्त्र धारण करनेवाली अधेड़ विधवा स्त्री । ४. दुर्गा ।

कादंबरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोकिल । कोयल । २. सरस्वती । वाणी । ३. मदिरा । शराब । ४. मैना । ५. बाण भट्ट की लिखी एक प्रसिद्ध आख्यायिका ।

[illegible]ी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मेघमाला ।

कादर–वि० [सं० कातर] १. डरपोक । भीरु । २. अधीर । व्याकुल ।

कादिरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की चोली सीनाबंद ।

कान–संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] १. वह इंद्रिय *जिससे शब्द का ज्ञान होता है । सुनने* की इंद्रिय । श्रवण । श्रुति । श्रोत्र ।

मुहा०—कान उठाना=सुनने के लिये तैयार होना । आहट लेना । २. चौकन्ना होना । सचेत या सजग होना । **कान उमेठना**=१. दंड देने के हेतु किसी का कान मरोड़ देना । २. किसी काम के न करने की प्रतिज्ञा करना । **कान करना**=सुनना । ध्यान देना । **कान काटना**=मात करना । बढ़कर होना । **कान का कच्चा**=जो किसी के कहने पर बिना सोचे समझे विश्वास कर ले । **कान खड़े करना**=सचेत करना । होशियार करना । **कान खाना या खा जाना**=बहुत शोर-गुल करना । बहुत बातें करना । **कान गरम करना या कर देना**=कान उमेठना । **कान पूँछ दबाकर चला जाना**=चुपचाप चला जाना । बिना विरोध किए टल जाना । **(किसी बात पर) कान देना या धरना**=ध्यान देना । ध्यान से सुनना । **कान पकड़ना**=१. कान उमेठना । २. अपनी भूल या छोटाई स्वीकार करना । **(किसी बात से) कान पकड़ना**=पछतावे के साथ किसी बात के फिर न करने की प्रतिज्ञा करना । **कान पर जूँ न रेंगना**=कुछ भी परवा न होना । कुछ भी ध्यान न होना । **कान फुँकवाना**=गुरुमंत्र लेना । दीक्षा लेना । **कान फूँकना**=१. दीक्षा देना । चेला बनाना । २. दे० "कान भरना" । **कान भरना**=किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई बात बैठा देना । खयाल ख़राब करना । **कान मलना**=दे० "कान उमेठना" । **कान में तेल डाले बैठना**=बात सुनकर भी उस ओर कुछ ध्यान न देना । **कान में डाल देना**=सुना देना । **कानोंकान ख़बर न होना**=ज़रा भी ख़बर न होना । किसी के सुनने में न आना । **कानों पर हाथ धरना या रखना**=किसी बात के करने से एकबारगी इनकार करना ।

२. सुनने की शक्ति । श्रवण-शक्ति । ३. लकड़ी का एक टुकड़ा जो कूँड अधिक चौड़ी करने के लिये हल के अगले भाग में बाँध दिया जाता है । कन्ना । ४. सोने

का एक गहना जो कान में पहना जाता है। ५. चारपाई का टेढ़ापन। कनेव। ६. किसी वस्तु का ऐसा निकला हुआ कोना जो भद्दा जान पड़े। ७. तराजू का पसँगा। ८. तोप या बंदूक में वह स्थान जहाँ रंजक रखी और बत्ती दी जाती है। पियाली। रंजकदानी। ९ नाव की पतवार।
संज्ञा स्त्री० दे० "कानि"।

कानन–संज्ञा पु० [सं०] १. जंगल। वन। २ घर।

काना–वि० [सं० काण] [स्त्री० कानी] जिसकी एक आँख फूट गई हो। एकाक्ष। वि० [सं० कर्णक] वे फल आदि जिनका कुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो। कन्ना। संज्ञा पु० [सं० कर्ण] १. 'आ' की मात्रा जो किसी अक्षर के आगे लगाई जाती है और जिसका रूप (ा) है। २. पाँसे पर की बिंदी या चिह्न। जैसे, तीन काने। वि० [सं० कर्ण] जिसका कोई कोना या भाग निकला हो। तिरछा। टेढ़ा।

कानाकानी–संज्ञा स्त्री० [सं० कर्णाकर्ण] काना फूसी। चर्चा।

कानाफूसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कान+अनु० 'फुस'-'फुस'] वह बात जो कान के पास जाकर धीरे से कही जाय।

कानाबाती–संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।

कानि–संज्ञा स्त्री० [?] १. लोकलज्जा। मर्यादा का ध्यान। २. लिहाज। संकोच।

कानी–वि० स्त्री० [हिं० काना] एक आँखवाली। जिसकी एक आँख फूटी हो। मुहा०—कानी कौड़ी = फूटी या मैली कौड़ी। वि० स्त्री० [सं० कनीनी] सब से छोटी (उँगली)। जैसे—कानी उँगली।

कानीन–संज्ञा पु० [सं०] वह जो किसी कुमारी कन्या से पैदा हुआ हो।

कानी हाउस–संज्ञा पु० [अं० कांजी हाउस] वह घर जिसमें किसी की हानि करनेवाले पशु पकड़कर बंद किए जाते हैं।

क़ानून–संज्ञा पु० [अ०, यू० केनान] [वि० क़ानूनी] राज्य में शांति रखने का नियम। राजनियम। आईन। विधि।
मुहा०—कानून छाँटना = कानूनी बहस करना। कुतर्क या हुज्जत करना।

क़ानूनगो–संज्ञा पु० [फा०] माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के कागज़ों की जाँच करता है।

क़ानूनदाँ–संज्ञा पु० [फा०] क़ानून जाननेवाला। विधिज्ञ।

क़ानूनिया–वि० [अ० कानून] १. कानून जाननेवाला। २. हुज्जती।

क़ानूनी–वि० [अ० कानून] १ जो कानून जाने। २. क़ानून संबंधी। अदालती। ३. जो क़ानून के मुताबिक हो। नियमानुकूल। ४. तकरार करनेवाला। हुज्जती।

कान्यकुब्ज–संज्ञा पु० [सं०] १. प्राचीन समय का एक प्रांत जो वर्त्तमान समय के कन्नौज के आस-पास था। २ इस देश का निवासी। ३ इस देश का ब्राह्मण।

कान्ह –संज्ञा पु० [सं० कृष्ण] श्रीकृष्ण।

कान्हड़ा–संज्ञा पु० [सं० कर्णाट] एक राग।

कान्हर–संज्ञा पु० [हिं० कान्ह] श्रीकृष्णजी।

कापर –संज्ञा पु० दे० "कपड़ा"।

कापालिक–संज्ञा पु० [सं०] शैव मत के तांत्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिए रहते और मद्य मांसादि खाते हैं।

कापाली संज्ञा पु० [सं० कापालिन्] [स्त्री० कापालिनी] १. शिव। २. एक प्रकार का वर्णसंकर।

कापिल–वि० [सं०] १. कपिल-संबंधी। कपिल का। २. भूरा। संज्ञा पु० [सं०] १. सांख्य दर्शन। २. कपिल के दर्शन का अनुयायी। ३. भूरा रंग।

कापुरुष–संज्ञा पु० [सं०] कायर। डरपोक।

क़ाफ़िया–संज्ञा पु० [अ०] अंत्यानुप्रास। तुक। सज।
यौ०—काफ़ियाबंदी = तुकबंदी। तुक जोड़ना।
मुहा०—काफ़िया तंग करना = बहुत हैरान करना। नाकों दम करना।

काफ़िर–वि० [अ०] १. मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। २. ईश्वर को न माननेवाला। ३. निर्दय। निष्ठुर। बेदर्द। ४. दुष्ट। बुरा। ५. काफ़िर देश का रहनेवाला। संज्ञा पु० [अ०] [वि० काफ़िरी] एक देश का नाम जो अफ्रिका में है।

काफ़िला–संज्ञा पु० [अ०] यात्रियों का झुंड।

काफ़ी–वि० [अ०] जितना आवश्यक हो, उतना। पर्याप्त। पूरा।

काफूर-संज्ञा पु० [फा० मि० सं० कर्पूर] [वि० काफूरी] कपूर।
मुहा०—काफूर होना = चंपत होना।

काफूरी-वि० [हिं० काफूर] १ काफूर का। २. काफूर के रंग का।
संज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत हलका रंग जिसमें हरेपन की झलक रहती है।

काय-संज्ञा स्त्री० [तु०] बड़ी रिकाबी।

काबर-वि० [सं० कर्बुर, प्रा० कब्बुर] कई रंगों का। चितकबरा।

काबा-संज्ञा पु० [अ०] अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज करने जाते हैं।

काबिज-वि० [अ०] १ अधिकार रखनेवाला। अधिकारी। २ मल का अवरोध करनेवाला। दस्त रोकनेवाला।

काबिल-वि० [अ०] [संज्ञा काबिलीयत] १ योग्य। लायक। २ विद्वान्। पंडित।

काबिलीयत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ योग्यता। लियाकत। २ पांडित्य। विद्वत्ता।

काबिस-संज्ञा पु० [सं० कपिश] एक रंग जिससे मिट्टी के कच्चे बर्तन रँगकर पकाए जाते हैं।

काबुक-संज्ञा स्त्री० [फा०] कबूतरों का दरबा।

काबुल-संज्ञा पु० [सं० कुभा] [वि० काबुली] १ एक नदी जो अफगानिस्तान से आकर अटक के पास सिंधु नदी में गिरती है। २ अफगानिस्तान की राजधानी।

काबुली-वि० [हिं० काबुल] काबुल का। संज्ञा पु० काबुल का निवासी।

काबू-संज्ञा पु० [तु०] वश। इख्तियार।

काम-संज्ञा पु० [सं०] [वि० कामुक, कामी] १ इच्छा। मनोरथ। २ महादेव। ३ कामदेव। ४ इंद्रियों की अपने अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति (कामशास्त्र)। ५ सहवास या मैथुन की इच्छा। ६ चातुर्वर्ग या चार पदार्थों में से एक।
संज्ञा पु० [सं० कर्म, प्रा० कम्म] १ वह जो किया जाय। व्यापार। कार्य्य।
मुहा०—काम आना = लड़ाई में मारा जाना। काम करना = १. प्रभाव डालना। असर डालना। २ फल उत्पन्न करना। काम चलना = १ काम जारी रहना। २ किया का संपादन होना। काम तमाम करना = १ काम पूरा करना। २ मार डालना। जान लेना। काम होना = १ मरना। काम आना। २ अत्यंत कष्ट पहुँचना।
२ कठिन शक्ति या कौशल का कार्य्य।
मुहा०—काम रखता है = बड़ा कठिन कार्य्य है। मुश्किल बात है।
३ प्रयोजन। अर्थ। मतलब।
मुहा०—काम निकलना = १ प्रयोजन सिद्ध होना। उद्देश्य पूरा होना। मतलब गँठना। २ कार्य्य निर्वाह होना। आवश्यकता पूरी होना। काम पड़ना = आवश्यकता होना।
४ गरज। वास्ता। सरोकार।
मुहा०—किसी से काम पड़ना = किसी से पाला पड़ना। किसी प्रकार का व्यवहार या संबंध होना। काम से काम रखना = अपने प्रयोजन पर ध्यान रखना। व्यर्थ बातों में न पड़ना।
५ उपयोग। व्यवहार। इस्तेमाल।
मुहा०—काम आना = १ व्यवहार में आना। उपयोगी होना। २ सहारा देना। सहायक होना। काम का = व्यवहार योग्य। उपयोगी (वस्तु)। काम देना = व्यवहार में आना। उपयोगी होना। काम में लाना = बर्त्तना। व्यवहार करना।
६ कारबार। व्यवसाय। रोजगार। ७ कारीगरी। बनावट। रचना। ८ बेलबूटा या नक्काशी।

कामकला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मैथुन। रति। २ कामदेव की स्त्री। रति।

कामकाजी-वि० [हिं० काम+काज] काम करनेवाला। उद्योग धंधे में रहनेवाला।

कामगार-संज्ञा पु० दे० "कामदार"।

कामचलाऊ-वि० [हिं० काम+चलाना] जिससे किसी प्रकार काम निकल सके। जो बहुत से अंशों में काम दे जाय।

कामचारी-वि० [सं०] १ जहाँ चाहे वहाँ विचरनेवाला। २ मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। ३ कामुक।

कामचोर-वि० [हिं० काम+चोर] काम से जी चुरानेवाला। अकर्मण्य। आलसी।

कामज-वि० [सं०] वासना से उत्पन्न।

कामजित्-वि० [सं०] काम को जीतनेवाला।
संज्ञा पु० [सं०] १ महादेव। शिव। २ कार्तिकेय। ३ जिन देव।

कामज्वर-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का

ज्वर जो स्त्रियों और पुरुषों को अखंड ब्रह्मचर्य्य पालन करने से हो जाता है।

कामड़िया–संज्ञा पुं० [हिं० कामरी] रामदेव के मत के अनुयायी चमार साधु।

कामतरु–संज्ञा पुं० दे० "कल्पवृक्ष"।

कामता–संज्ञा पुं० [सं० कामद] चित्रकूट।

कामद–वि० [सं०] [स्त्री० कामदा] मनोरथ पूरा करनेवाला। इच्छानुसार फल देनेवाला।

कामद मणि–संज्ञा पुं० [सं०] चिंतामणि।

कामदहन–संज्ञा पुं० [सं० काम+दहन] कामदेव को जलानेवाले, शिव।

कामदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कामधेनु। २. दस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

कामदानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काम+दानी (प्रत्य०)] बेल बूटा जो बादले के तार या सलमे-सितारे से बनाया जाय।

कामदार–संज्ञा पुं० [हिं० काम+दार (प्रत्य०)] कारिंदा। अमला। प्रबंधकर्त्ता।
वि० जिस पर कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे बने हों। जैसे, कामदार टोपी।

कामदुहा–संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

कामदेव–संज्ञा पुं० [सं०] १ स्त्री पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला देवता। २ वीर्य। ३ संभोग की इच्छा।

काम धाम–संज्ञा पुं० [हिं० काम+धाम (अनु०)] काम काज। धंधा।

कामधुक–संज्ञा स्त्री० [सं० कामदुघ] कामधेनु।

कामधेनु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणानुसार एक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाय, वही मिलता है। सुरभी। २. वसिष्ठ की शबला या नंदिनी नाम की गाय जिसके कारण उनसे विश्वामित्र से युद्ध हुआ था।

कामना–संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। मनोरथ। ख्वाहिश।

कामबाण–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव के बाण, जो पाँच हैं—मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टकरण। बाणों को फूलों का मानने पर पाँच बाण ये हैं—लाल कमल, अशोक, आम की मंजरी, चमेली और नील कमल।

कामयाब–वि० [फा०] जिसका प्रयोजन सिद्ध हो गया हो। सफल। कृतकार्य्य।

कामयाबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सफलता।

कामरिपु–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

कामरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कंबल] कमली।

कामरुचि–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अस्त्र जिससे और अस्त्रों को व्यर्थ करते थे।

कामरू–संज्ञा पुं० दे० "कामरूप"।

कामरूप–संज्ञा पुं० [सं०] १. आसाम का एक ज़िला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है। २. एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु के फेंके हुए अस्त्र व्यर्थ किए जाते थे। ३. २६ मात्राओं का एक छंद। ४. देवता।
वि० मनमाना रूप बनानेवाला।

कामल–संज्ञा पुं० [सं०] कमल रोग।

कामला–संज्ञा पुं० दे० "कामल"।

कामली–संज्ञा स्त्री० [सं० कंबल] कमली।

कामवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] काम या संभोग की वासना रखनेवाली स्त्री।

कामवान्–वि० [सं०] [स्त्री० कामवती] काम या संभोग की इच्छा करनेवाला।

कामशर–संज्ञा पुं० दे० "कामबाण"।

कामशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह विद्या या ग्रंथ जिसमें स्त्री पुरुषों के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो।

कामसखा–संज्ञा पुं० [सं० कामसख] वसंत।

कामा–संज्ञा स्त्री० [सं० काम] एक वृत्ति जिसमें दो गुरु होते हैं।

कामाक्षी–संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्र के अनुसार देवी की एक मूर्त्ति।

कामाख्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवी का एक अभिग्रह। २. कामरूप।

कामातुर–वि० [सं०] काम के वेग से व्याकुल। समागम की इच्छा से उद्विग्न।

कामारथी–संज्ञा पुं० दे० "कांवारथी"।

कामावशायिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्य संकल्पता जो योगियों की आठ सिद्धियों या ऐश्वर्यों में से एक है।

कामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कामवती स्त्री। २. स्त्री। सुंदरी। ३. मदिरा।

कामिनीमोहन–संज्ञा पुं० [सं०] स्रग्विणी छंद का एक नाम।

कामिल–वि० [अ०] १. पूरा। पूर्ण। कुल। समूचा। २. योग्य। दक्षपन्न।

कामी–वि० [सं० कामिन्] [स्त्री० कामिनी] १. कामना रखनेवाला। इच्छुक। २. विषयी। कामुक।
संज्ञा पुं० [सं०] १. चकवा। २. कबूतर।

३. चिड़ा। ४. सारस। ५. चंद्रमा।

कामुक-वि० [सं०] १. [स्त्री० कामुका] इच्छा करनेवाला। चाहनेवाला। २. [स्त्री० कामुकी] कामी। विषयी।

कामेश्वरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तंत्र के अनुसार एक भैरवी। २. कामाख्या की पाँच मूर्त्तियों में से एक।

कामोद-संज्ञा पुं० [सं०] एक राग।

कामोद्दीपक-वि० [सं०] जिससे मनुष्य को सहवास की इच्छा अधिक हो।

कामोद्दीपन-संज्ञा पुं० [सं०] सहवास की इच्छा का उत्तेजन।

काम्य-वि० [सं०] १. जिसकी इच्छा हो। २. जिससे कामना की सिद्धि हो।

संज्ञा पुं० [सं०] वह यज्ञ या कर्म्म जो किसी कामना की सिद्धि के लिये किया जाय। जैसे—पुत्रेष्टि।

काम्येष्टि-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह यज्ञ जो कामना की सिद्धि के लिये किया जाय।

काय-वि० [सं०] प्रजापतिसंबंधी।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर। देह। बदन। जिस्म। २. प्रजापति तीर्थ। कनिष्ठा उँगली के नीचे का भाग (स्मृति)। ३. प्रजापति का हवि। ४. प्राजापत्य विवाह। ५. मूल धन। पूँजी। ६. समुदाय। संघ।

काय चिकित्सा-संज्ञा स्त्री० [सं०] चिकित्सा का वह अंग जिसमें ज्वर, कुष्ट, उन्माद, आदि सर्वांगव्यापी रोगों के उपशमन का विधान है।

कायजा-संज्ञा पुं० [अ० क़ायज़] घोड़े की लगाम की डोरी, जिसे पूँछ तक ले जाकर बाँधते हैं।

कायथ-संज्ञा पुं० दे० "कायस्थ"।

कायदा-संज्ञा पुं० [अ० क़ायदः] १. नियम। २. चाल। दस्तूर। रीति। ढंग। ३. विधि। विधान। ४. क्रम। व्यवस्था।

कायफल-संज्ञा पुं० [सं० कट्फल] एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम में आती है।

क़ायम-वि० [अ०] १. ठहरा हुआ। स्थिर। २. स्थापित। ३. निर्धारित। निश्चित। मुकर्रर।

क़ायम-मुक़ाम-वि० [अ०] स्थानापन्न। एवज़ी।

कायर-वि० [सं० कातर] डरपोक। भीरु।

कायरता-संज्ञा स्त्री० [सं० कातरता] डरपोकपन। भीरुता।

क़ायल-वि० [अ०] जो तर्क-वितर्क से सिद्ध बात को मान ले। क़बूल करनेवाला।

कायव्यूह-संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर में वात, पित्त, कफ तथा त्वक्, रक्त, मांस आदि के स्थान और विभाग का क्रम। २. योगियों की अपने कर्म्मों के भोग के लिये चित्त में एक एक इंद्रिय और अंग की कल्पना की क्रिया। ३. सैनिकों का घेरा।

कायस्थ-वि० [सं०] काय में स्थित। शरीर में रहनेवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] १. जीवात्मा। २. परमात्मा। ३. एक जाति का नाम।

काया-संज्ञा स्त्री० [सं० काय] शरीर। तन।

मुहा०—काया पलट जाना = रूपांतर हो जाना। और से और हो जाना।

कायाकल्प-संज्ञा पुं० [सं० कायकल्प] औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण और सशक्त करने की क्रिया।

काया पलट-संज्ञा स्त्री० [हिं० काया + पलटना] १. भारी हेर-फेर। बहुत बड़ा परिवर्तन। २. एक शरीर या रूप का दूसरे शरीर या रूप में बदलना। और ही रंग-रूप होना।

कायिक-वि० [सं०] १. शरीर संबंधी। २. शरीर से किया हुआ या उत्पन्न। जैसे, कायिक पाप। ३. संघ संबंधी। (बौद्ध)

कारंड, कारंडव-संज्ञा पुं० [सं०] हंस या बत्तख की जाति का एक पक्षी।

कारंधमी-संज्ञा पुं० [सं०] रसायनी। कीमियागर।

कार-संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रिया। कार्य्य। जैसे—उपकार, स्वीकार। २. बनानेवाला। रचनेवाला। जैसे, कुंभकार, स्वर्णकार। ३. एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के आगे लगकर उनका स्वतंत्र बोध कराता है। जैसे—चकार, लकार। ४. एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है। जैसे—चीत्कार।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] कार्य्य। काम।

वि० दे० "काला"।

कारक-वि० [सं०] [स्त्री० कारिका] करनेवाला। जैसे—हानिकारक, सुखकारक।

संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था जिसके

द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है।

कारकदीपक-संज्ञा पु० [सं०] काव्य में वह अर्थालंकार जिसमें कई एक क्रियाओं का एक ही कर्त्ता वर्णन किया जाय।

कारकुन-संज्ञा पु० [फा०] १. इंतजाम करनेवाला। प्रबंधकर्त्ता। २. कारिंदा।

कारखाना-संज्ञा पु० [फा०] १. वह स्थान जहाँ व्यापार के लिये कोई वस्तु बनाई जाती है। २ कार-बार। व्यवसाय। ३ घटना। दृश्य। मामला। ४. क्रिया।

कारगर-वि० [फा०] १. प्रभावजनक। असर करनेवाला। २. उपयोगी।

कारगुजार-वि० [फा०] [संज्ञा कारगुजारी] अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह पूरा करनेवाला।

कारगुजारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पूरी तरह और आज्ञा पर ध्यान देकर काम करना। कर्त्तव्यपालन। २ कार्यपटुता। होशियारी। ३. कर्मण्यता।

कारचोब-संज्ञा पु० [फा०] [वि० संज्ञा कारचोबी] १. लकड़ी का एक चौकठा जिस पर कपड़ा तानकर जरदोजी का काम बनाया जाता है। अड्डा। २. जरदोजी या कसीदे का काम करनेवाला। जरदोज।

कारचोबी-वि० [फा०] जरदोजी का। संज्ञा स्त्री० [फा०] जरदोजी। गुलकारी।

कारज †-संज्ञा पु० दे० "कार्य"।

कारट -संज्ञा पु० [सं० करट] कौआ।

कारण-संज्ञा पु० [सं०] १. हेतु। वजह। सबब। वह जिसके प्रभाव से कोई बात हो या जिसके विचार से कुछ किया जाय। २. वह जिससे दूसरे पदार्थ की संप्राप्ति हो। हेतु। निमित्त। प्रत्यय। ३ आदि। मूल। ४ साधन। ५ कर्म। ६ प्रमाण।

कारणमाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हेतुओं की श्रेणी। २ काव्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारण से उत्पन्न कार्य्य पुन किसी अन्य कार्य्य का कारण होता हुआ वर्णन किया जाय।

कारणशरीर-संज्ञा पुं० [सं०] सुषुप्त अवस्था का वह कल्पित शरीर जिसमें इंद्रियों के विषय-व्यापार का तो अभाव रहता है, पर अहंकार आदि का संस्कार रह जाता है। (वेदांत)

कारतूस-संज्ञा पु० [पुर्त्त० कारटूश] गोली-बारूद भरी एक नली जिसे टोंटेवाली और रिवाल्वर बंदूकों में भरकर चलाते हैं।

कारन‡-संज्ञा पु० दे० "कारण"। ‡संज्ञा स्त्री० [सं० कारुण्य] रोने का आर्त्त स्वर। कूक। करुण स्वर।

कारनिस-संज्ञा स्त्री० [अं०] दीवार की कँगनी। कगर।

कारनी-संज्ञा पु० [सं० कारण] प्रेरक। संज्ञा पु० [सं० कारिणि] भेद करानेवाला। भेदक। बुद्धि पलटनेवाला।

कारपरदाज-वि० [फा०] १. काम करनेवाला। कारकुन। २ प्रबंधकर्त्ता। कारिंदा।

कारपरदाजी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दूसरे की ओर से किसी कार्य्य के प्रबंध करने का काम। २. कार्य्य करने की तत्परता।

कारबार-संज्ञा पु० [फा०] [वि० कारबारी] काम-काज। व्यापार। पेशा। व्यवसाय।

कारबारी-वि० [फा०] कामकाजी। संज्ञा पु० कारकुन। कारिंदा।

काररवाई-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. काम। कृत्य। करतूत। २. कार्य्य तत्परता। कर्मण्यता। ३ गुप्त प्रयत्न। चाल।

कारवाँ-संज्ञा पु० [फा०] यात्रियों का झुंड।

कारसाज-वि० [फा०] [संज्ञा कारसाजी] बिगड़े काम को सँभालनेवाला। काम पूरा करने की युक्ति निकालनेवाला।

कारसाजी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. काम पूरा उतारने की युक्ति। २ गुप्त काररवाई। चालबाजी। कपट-प्रयत्न।

कारस्तानी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कारसाजी। काररवाई। २. चालबाजी।

कारा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बंधन। कैद। २ पीड़ा। क्लेश। वि० ‡ † दे० "काला"।

कारागार, कारागृह-संज्ञा पु० [सं०] कैदखाना। बंदीगृह।

कारावास संज्ञा पुं० [सं०] कैद।

कारिंदा-संज्ञा पु० [फा०] दूसरे की ओर से काम करनेवाला। कर्मचारी। गुमाश्ता।

कारिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या। २ नट की स्त्री। नटी।

कारिख-संज्ञा स्त्री० दे० "कालिख"।

कारित-वि० [सं०] कराया हुआ।

कारी–संज्ञा पुं० [सं० कारिन्] [स्त्री० कारिणी] करनेवाला। बनानेवाला।
वि० [फा०] घातक। मर्मभेदी।
कारीगर–संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा कारीगरी] धातु, लकड़ी, पत्थर इत्यादि से सुंदर वस्तुओं की रचना करनेवाला पुरुष। शिल्पकार।
वि० हाथ से काम बनाने में कुशल। निपुण। हुनरमंद।
कारीगरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अच्छे अच्छे काम बनाने की कला। निर्माणकला। २. सुंदर बना हुआ काम। मनोहर रचना।
कारुणिक–वि० [सं०] कृपालु। दयालु।
कारुण्य–संज्ञा पुं० [सं०] करुणा का भाव। दया। मेहरबानी।
कारूँ–संज्ञा पुं० [अ०] हज़रत मूसा का चचेरा भाई जो बड़ा धनी था; पर खैरात नहीं करता था।
यौ०—कारूँ का खज़ाना = अनंत संपत्ति।
कारूनी–संज्ञा स्त्री० [?] घोड़ों की एक जाति।
कारूरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. फुँकनी शीशी जिसमें रोगी का मूत्र वैद्य को दिखाने के लिये रखा जाता है। २. मूत्र। पेशाब।
कारौंछ–संज्ञा स्त्री० दे० "कालौंछ"।
कारोबार–संज्ञा पुं० दे० "कारबार"।
कार्तवीर्य–संज्ञा पुं० [सं०] कृतवीर्य का पुत्र सहस्रार्जुन।
कार्तिक–संज्ञा पुं० [सं०] एक चांद्र मास जो क्वार और अगहन के बीच में पड़ता है।
कार्त्तिकेय–संज्ञा पुं० [सं०] कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होनेवाले स्कंदजी। षडानन।
कार्पण्य–संज्ञा पुं० [सं०] कृपणता। कंजूसी।
कार्मण–संज्ञा पुं० [सं०] मंत्र-तंत्र आदि का प्रयोग।
कार्मना–संज्ञा पुं० [सं० कार्मण] १. मंत्र-तंत्र का प्रयोग। कृत्या। २. मंत्र। तंत्र।
कार्मुक–संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। २. परिधि का एक भाग। चाप। ३. इंद्र-धनुष। ४. बाँस। ५. सफ़ेद खैर। ६. बकायन। ७. धनु राशि। नवीं राशि।
कार्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. काम। कृत्य। व्यापार। धंधा। २. वह जो कारण का विकार हो अथवा जिसे लक्ष्य करके कर्त्ता क्रिया करे। ३. फल। परिणाम।
कार्यकर्त्ता–संज्ञा पुं० [सं०] काम करनेवाला। कर्मचारी।
कार्य-कारण-भाव–संज्ञा पुं० [सं०] कार्य और कारण का संबंध।
कार्यसम–संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में चौबीस जातियों में से एक। इसमें प्रतिवादी, किसी कारण से उत्पन्न कार्य्य के संबंध में, वादी द्वारा कही हुई बात के खंडन का प्रयत्न वैसे ही और कार्य्य बताकर करता है जिनमें वह बात नहीं पाई जाती।
कार्याधिकारी–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसके सुपुर्द किसी कार्य्य का प्रबंध आदि हो।
कार्याध्यक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] अफ़सर। मुख्य कार्य्यकर्त्ता।
कार्यार्थी–वि० [सं०] कार्य की सिद्धि चाहनेवाला। कोई ग़रज़ रखनेवाला।
कार्यालय–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई काम होता हो। दफ़्तर। कारखाना।
कार्रवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "काररवाई"।
कार्षापण–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन सिक्का।
काल–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह संबंध-सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान आदि की प्रतीति होती है। समय। वक्त।
मुहा०—काल पाकर = कुछ दिनों के पीछे।
२. अंतिम काल। नाश का समय। मृत्यु। ३. यमराज। यमदूत। ४. उपयुक्त समय। अवसर। मौक़ा। ५. अकाल। महँगी। दुर्भिक्ष। ६. [स्त्री० काली] शिव का एक नाम। महाकाल।
वि० काला। काले रंग का।
क्रि० वि० दे० "कल"।
कालकंठ–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. मोर। मयूर। ३. नीलकंठ पक्षी। ४. खंजन। खिड़रिच।
कालका–संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी।
कालकूट–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का अत्यंत भयंकर विष। काला बच्छनाग। २. सींगिया की जाति के एक पौधे की जड़ जिस पर चित्तियाँ होती हैं।
कालकेतु–संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस।
कालकोठरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० काल + कोठरी] १. जेलखाने की बहुत तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें कैद-तनहाई वाले कैदी

रखे जाते हैं। २. कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम नामक क़िले की एक तंग कोठरी जिसमें लोकापवाद के अनुसार सिराजुद्दौला ने बहुत से अँगरेजों को कैद किया था।

कालक्षेप–संज्ञा पु० [सं०] १. दिन काटना। समय बिताना। वक्त २. निर्वाह। गुज़र-बसर।

कालखंड–संज्ञा पु० [सं०] परमेश्वर।

कालगंडैत–संज्ञा पु० [हिं० काला+गंडा] वह विषधर साँप जिसके ऊपर काले गंडे या चित्तियाँ होती हैं।

कालचक्र–संज्ञा पु० [सं०] १. समय का हेर-फेर। ज़माने की गर्दिश। २. एक अस्त्र।

कालज्ञ–संज्ञा पु० [सं०] १. समय के हेर-फेर को जाननेवाला। २. ज्योतिषी।

कालज्ञान–संज्ञा पु० [सं०] १. स्थिति और अवस्था की जानकारी। २ मृत्यु का समय जान लेना।

कालतुष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य में एक तुष्टि। यह विचारकर संतुष्ट रहना कि जब समय आ जायगा, तब यह बात स्वयं हो जायगी।

कालदंड–संज्ञा पु० [सं०] यमराज का दंड।

कालधर्म–संज्ञा पु० [सं०] १ मृत्यु। विनाश। अवसान। २. वह व्यापार जिसका होना किसी विशेष समय पर स्वाभाविक हो। समयानुसार धर्म।

कालनिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिवाली की रात। २. अँधेरी भयावनी रात।

कालनेमि–संज्ञा पु० [सं०] १. रावण का मामा एक राक्षस। २. एक दानव जिसने देवताओं को पराजित करके स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था।

कालपाश–संज्ञा पु० [सं०] १. वह नियम जिसके कारण भूत-प्रेत कुछ समय तक के लिये कुछ अनिष्ट नहीं कर सकते। २. यमराज का बंधन। यमपाश।

कालपुरुष–संज्ञा पु० [सं०] १. ईश्वर का विराट् रूप। २. काल।

कालबंजर–संज्ञा पु० [सं० काल+हिं० बंजर] वह भूमि जो बहुत दिनों से बोई न गई हो।

कालबूत–संज्ञा पु० [फा० कालबुद] १. वह कच्चा भराव जिस पर मेहराब बनाई जाती है। छैना। २. चमारों का वह काठ का साँचा जिस पर चढ़ाकर वे जूता सीते हैं।

कालभैरव–संज्ञा पु० [सं०] शिव के मुख्य गणों में से एक।

कालयवन–संज्ञा पु० [सं०] हरिवंश के अनुसार यवनों का एक राजा जिसने जरासंध के साथ मथुरा पर चढ़ाई की थी।

कालयापन–संज्ञा पु० [सं०] कालक्षेप। दिन काटना। गुज़ारा करना।

कालराति–संज्ञा स्त्री० दे० "कालरात्रि"।

कालरात्रि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अँधेरी और भयावनी रात। २. ब्रह्मा की रात्रि जिसमें सारी सृष्टि लय को प्राप्त रहती है, केवल नारायण ही रहते हैं। प्रलय की रात। ३. मृत्यु की रात्रि। ४ दिवाली की अमावस्या। ५. दुर्गा की एक मूर्त्ति। ६. यमराज की बहिन जो सब प्राणियों का नाश करती है। ७. मनुष्य की आयु में वह रात जो सतहत्तरवें वर्ष के सातवें महीने के सातवें दिन पड़ती है और जिसके बाद वह नित्यकर्म आदि से मुक्त समझा जाता है।

कालवाचक, कालवाची–वि० [सं०] समय का ज्ञान करानेवाला। जिसके द्वारा समय का ज्ञान हो।

काला–वि० [सं० काल] [स्त्री० काली] १ काजल या कोयले के रंग का। स्याह। **मुहा०**—(अपना) मुँह काला करना = १. कुकर्म करना। पाप करना। २. व्यभिचार करना। अनुचित सह-गमन करना। ३. किसी बुरे आदमी का दूर होना। (दूसरे का) मुँह काला करना = १. किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु अथवा व्यक्ति को दूर करना। व्यर्थ की झंझट दूर हटाना। २. कलंक का कारण होना। बदनामी का सबब होना। काला मुँह होना या मुँह काला होना = कलंकित होना। बदनाम होना। २. कलुषित। बुरा। ३. भारी। प्रचंड। **मुहा०**—काले कोसों = बहुत दूर। संज्ञा पु० [सं० काल] काला साँप।

काला कलूटा–वि० [हिं० काला+कलूटा] बहुत काला। अत्यंत श्याम। (मनुष्य)

कालाक्षरी–वि० [सं०] काले अक्षर मात्र का अर्थ बता देनेवाला। अत्यंत विद्वान्।

कालाग्नि–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रलय काल

की अग्नि। २. प्रलयाग्नि के अधिष्ठाता रुद्र।
काला चोर-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत भारी चोर। २. बुरे से बुरा आदमी।
काला जीरा-संज्ञा पुं० [हिं० काला+जीरा] स्याह जीरा। मीठा जीरा। पर्वत जीरा।
कालातीत-वि० [सं०] जिसका समय बीत गया हो।
संज्ञा पुं० १ न्याय के पाँच प्रकार के हेत्वाभासोंमें से वह जिसमें अर्थ एक देशकाल के ध्वंस से युक्त हो और इस कारण असत् ठहरता हो। २. आधुनिक न्याय में एक प्रकार का बाध जिसमें साध्य के आधार में साध्य का अभाव निश्चित रहता है।
काला दाना-संज्ञा पुं० [हिं० काला+दाना] १. एक प्रकार की लता जिससे काले दाने निकलते हैं। २. इस लता का दाना या बीज जो अत्यंत रेचक होता है।
काला नमक-संज्ञा पुं० [हिं० काला+फा० नमक] सज्जी के योग से बना हुआ एक प्रकार का पाचक लवण। सोंचर।
काला नाग-संज्ञा पुं० [हिं० काला+नाग] १. काला साँप। विषधर सर्प। २. अत्यंत कुटिल या खोटा आदमी।
काला पहाड़-संज्ञा पुं० [हिं० काला+पहाड़] १. बहुत भारी और भयानक। दुस्तर (वस्तु)। २. बहलोल लोदी का एक भांजा जो सिकंदर लोदी से लड़ा था। ३ मुरशिदाबाद के नवाब दाऊद का एक सेनापति जो बड़ा क्रूर और कट्टर मुसलमान था।
काला पानी- संज्ञा पुं० [हिं० काला+पानी] १. बंगाल की खाड़ी के समुद्र में वह स्थान जहाँ का पानी अत्यंत काला दिखाई पड़ता है। २. देश निकाले का दंड। जलावतनी की सजा। ३. एंडमन और निकोबार आदि द्वीप जहाँ देश निकाले के कैदी भेजे जाते हैं। ४. शराब। मदिरा।
कालाभुजंग-वि० [हिं० काला+भुजंग] बहुत काला। घोर कृष्ण वर्ण का।
कालास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाण जिसके प्रहार से शत्रु का निधन निश्चय समझा जाता था।
कालिंग-वि० [सं० कलिंग] कलिंग देश का। संज्ञा पुं० [सं०] १. कलिंग देश का निवासी। २. कलिंग देश का राजा। ४. साँप। ५. तरबूज।
कालिंजर-संज्ञा पुं० [सं० कालंजर] एक पर्वत जो बाँदे से ३० मील पूर्व की ओर है और जिसका माहात्म्य पुराणों में है।
कालिंदी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कलिंद पर्वत से निकली हुई, यमुना नदी। २. कृष्ण की एक स्त्री। ३. एक वैष्णव संप्रदाय।
कालि-क्रि० वि० दे० "कल"।
कालिक-वि० [सं०] १. समय-संबंधी। समयोचित। २. जिसका कोई समय नियत हो।
कालिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवी की एक मूर्ति। चंडिका। काली। २ कालापन। कालिख। ३. बिछुआ नामक पौधा। ४ मेघ। घटा। ५. स्याही। मसि। ६. मदिरा। शराब। ७ आरा की काली पुतली। ८ रणचंडी।
कालिका पुराण-संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण जिसमें कालिका देवी के माहात्म्य आदि का वर्णन है।
कालि काल्ह-क्रि० वि० [हिं० कालि+काल] कदाचित्। कभी। किसी समय।
कालिख-संज्ञा स्त्री० [सं० कालिका] वह काली बुकनी जो धुएँ के जमने से लग जाती है। कलौंछ। स्याही।
मुहा०—मुँह में कालिख लगना=बदनामी के कारण मुँह दिखलाने लायक न रहना।
कालिब-संज्ञा पुं० [अ०] १. टीन या लकड़ी का गोल ढाँचा जिस पर चढ़ाकर टोपियाँ दुरुस्त की जाती हैं। २. शरीर। देह।
कालिमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कालापन। २. कलौंछ। कालिख। ३ अँधेरा। ४. कलंक। दोष। लांछन।
कालिय-संज्ञा पुं० [सं०] एक सर्प जिसे कृष्ण ने वश में किया था।
काली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंडी। कालिका। दुर्गा। २ पार्वती। गिरिजा। ३. दस महाविद्याओं में पहली महाविद्या।
काली घटा-संज्ञा स्त्री० [हिं० काली+घटा] घने काले बादलों का समूह। कादंबिनी।
काली ज़बान-संज्ञा स्त्री० [हिं० काली+फा० ज़बान] वह ज़बान जिससे निकली हुई अशुभ बातें सत्य घटा करें।
काली जीरी-संज्ञा स्त्री० [सं० कणजीर, हिं० काला+जीरा] एक ओषधि जो एक पेड़ के बोंड़ी के काबदार बीज हैं।

काली दह—संज्ञा पुं० [सं० कालिय+हिं० दह] वृंदावन में यमुना का एक दह या कुंड जिसमें काली नामक नाग रहा करता था।
कालीन—वि० [सं०] काल संबंधी। जैसे—प्राक्कालीन, महुकालीन।
कालीन—संज्ञा पुं० [अ०] मोटे तागों का बुना बहुत मोटा और भारी बिछावन जिसमें बेल-बूटे बने रहते हैं। गलीचा।
काली मिर्च—संज्ञा स्त्री० [हिं० काली+मिर्च] गोल मिर्च।
काली शीतला—संज्ञा स्त्री० [हिं० काली+सं० शीतला] एक प्रकार की शीतला या चेचक जिसमें काले दाने निकलते हैं।
कालौंछ—संज्ञा स्त्री० [हिं० काला+औंछ (प्रत्य०)] १. कालापन। स्याही। कालिमा। २. धुएँ की कालिमा। रहूँ।
काल्पनिक—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पना करनेवाला।
वि० [सं०] कल्पित। मनगढ़त।
काल्ह—क्रि० वि० दे० "कल"।
कावा—संज्ञा पुं० [फा०] घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया।
मुहा०—कावा काटना=१. वृत्त में दौड़ना। चक्कर खाना। २. आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना। कावा देना=चक्कर देना।
काव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वाक्य या वाक्यरचना जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो। २. वह पुस्तक जिसमें कविता हो। काव्य का ग्रंथ। ३. रोला छंद का एक भेद।
काव्यलिंग—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य के अर्थ द्वारा या पद के अर्थ द्वारा दिखाया जाय।
काव्यार्थापत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] अर्थापत्ति अलंकार।
काश—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की घास। काँस। २. खाँसी।
काशिका—वि० स्त्री० [सं०] १. प्रकाश करनेवाली। २. प्रकाशित। प्रदीप्त।
संज्ञा स्त्री० १. काशी पुरी। २. जयादित्य और वामन की बनाई हुई पाणिनीय व्याकरण पर एक वृत्ति।
काशी करवट—संज्ञा पुं० [सं० काशी+सं० करपत्र] काशी का एक तीर्थस्थान जहाँ प्राचीन काल में लोग आरे के नीचे कटकर अपने प्राण देना बहुत पुण्य समझते थे।
काशीफल—संज्ञा पुं० [सं० कैशफल] कुम्हड़ा।
काश्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. खेती। कृषि। २. जमींदार को कुछ वार्षिक लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व।
काश्तकार—संज्ञा पुं० [फा०] १. किसान। कृषक। खेतिहर। २. वह जिसने जमींदार को लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व प्राप्त किया हो।
काश्तकारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. खेतीबारी। किसानी। २. काश्तकार का हक।
काश्मरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंभारी का पेड़।
काश्मीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देश का नाम। दे० "कश्मीर"। २. कश्मीर का निवासी। ३. केसर।
काश्मीरा—संज्ञा पुं० [सं० काश्मीर] एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।
काश्मीरी—वि० [सं० काश्मीर+ई (प्रत्य०)] १. कश्मीर देश संबंधी। २. कश्मीर देश का निवासी।
काश्यप—वि० [सं०] कश्यप प्रजापति के वंश या गोत्र का। कश्यप संबंधी।
काषाय—वि० [सं०] १. हर्र, बहेड़े आदि कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ। २. गेरुआ।
काष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. लकड़ी। काठ। २ ईंधन।
काष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हद। अवधि। २. उच्चतम चोटी या ऊँचाई। उत्कर्ष। ३. अठारह पल का समय या एक कला का ३० वाँ भाग। ४. चंद्रमा की एक कला। ५ दिशा। ओर। तरफ़।
कास—संज्ञा पुं० [सं०] खाँसी।
संज्ञा पुं० [सं० काश] काँस।
कासनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक पौधा जिसकी जड़, डंठल और बीज दवा के काम में आते हैं। २. कासनी का बीज। ३. एक प्रकार का नीला रंग जो कासनी के फूल के रंग के समान होता है।
कासा—संज्ञा पुं० [फा०] १. प्याला। कटोरा। २. आहार। भोजन। ३ दरियाई नारियल का बरतन जो फ़कीर रखते हैं।
कासार—संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटा ताल। तालाब। २. २० रगण का एक दंडक वृत्त। ३. दे० "कसार"।

क़ासिद–संज्ञा पु० [अ०] सँदेसा ले जानेवाला । हरकारा । पत्रवाहक ।
काहँ†–प्रत्य० दे० "कहँ" ।
काहc–क्रि० वि० [सं० कः, को] क्या ? कौन वस्तु ?
काहि"–सर्व० [हिं० (प्रत्य०)] १. किसको ? किसे ? २. किससे ?
काहिल–वि० [अ०] आलसी । सुस्त ।
काहिली–संज्ञा स्त्री० [अ०] सुस्ती । आलस ।
काही–वि० [फा० काह या हिं० काई] घास के रंग का । कालापन लिए हुए हरा ।
काहु"–सर्व० दे० "काहू" ।
काहू–सर्व० [हिं० का + हू (प्रत्य०)] किसी । संज्ञा पु० [फा०] गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं ।
काहे – क्रि० वि० [सं० कार्य, प्रा० कई] क्यों ? किस लिये ?
यौ०—काहे को = किस लिये ? क्यों ?
किं–अव्य० दे० "किम्" ।
किंकर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० किंकरी] १. दास । २. राक्षसों की एक जाति ।
किं कर्त्तव्य-विमूढ़–वि० [सं०] जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिए । हक्का-बक्का । भौचक्का । घबराया हुआ ।
किंकिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्षुद्रघंटिका । २. करधनी । जेहर । कमरकस ।
किंगरी–संज्ञा स्त्री० [सं० किन्नरी] छोटा चिकारा । छोटी सारंगी जिसे बजाकर जोगी भीख माँगते हैं ।
किंचन–संज्ञा पु० [सं०] थोड़ी वस्तु ।
किंचित्–वि० [सं०] कुछ । थोड़ा ।
यौ०—किंचिन्मात्र = थोड़ा भी । थोड़ा ही ।
क्रि० वि० कुछ । थोड़ा ।
किंजल्क–संज्ञा पु० [सं०] १. पद्मकेशर । कमल का केशर । २. कमल । ३. कमल के फूल का पराग । ४. नागकेशर ।
वि० [सं०] कमल के केसर के रंग का ।
किंतु–अव्य० [सं०] १. पर । लेकिन । परंतु । २. वरन् । बल्कि ।
किंपुरुष–संज्ञा पु० [सं०] १. किन्नर । २. दोगला । वर्णसंकर । ३. प्राचीन काल की एक मनुष्य जाति ।
किंवदंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] अफ़वाह । उड़ती खबर । जनरव ।
किंवा–अव्य० [सं०] या । या तो । अथवा ।
किंशुक–संज्ञा पु० [सं०] १. पलाश । ढाक । टेसू । २. तुन का पेड़ ।
कि–सर्व० [सं० किम्] क्या ? किस प्रकार ? अव्य० [सं० किम् । फा० कि] १. एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना, इत्यादि कुछ क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है । २. तत्क्षण । इतने में । ३. या । अथवा ।
किकियाना–क्रि० अ० [अनु०] १. कीं कीं या कें कें का शब्द करना । २ रोना ।
किचकिच–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ व्यर्थ का वाद विवाद । बकवाद । २ झगड़ा ।
किचकिचाना–क्रि० अ० [अनु०] १ (क्रोध से) दाँत पीसना । २. भरपूर बल लगाने के लिये दाँत पर दाँत रखकर दबाना । ३. दाँत पर दाँत रखकर दबाना ।
किचकिचाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० किचकिचाना] किचकिचाने का भाव ।
किचकिची–संज्ञा स्त्री० [हिं० किचकिचाना] किचकिचाहट । दाँत पीसने की अवस्था ।
किचड़ाना–क्रि० अ० [हिं० कीचड़ + आना (प्रत्य०)] (आँख का) कीचड़ से भरना ।
किछु †–वि० दे० "कुछ" ।
किटकिट–संज्ञा स्त्री० [अनु० किचकिच ।
किटकिटाना–क्रि० अ० [सं० किटकिटाय । अनु०] १. क्रोध से दाँत पीसना । २. दाँत के नीचे कंकड़ की तरह कड़ा लगना ।
किटकिना–संज्ञा पु० [सं० कृतक] १. वह दस्तावेज जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठेके की चीज़ का ठेका दूसरे असामियों को देता है । २. चाल । चालाकी ।
किटकिनादार–संज्ञा पु० [हिं० किटकिना + फा० दार (प्रत्य०)] वह पुरुष जो किसी वस्तु को ठेकेदार से ठेके पर ले ।
किट्ट–संज्ञा पु० [सं०] १. धातु की मैल । २. तेल आदि में नीचे बैठी हुई मैल ।
कित †–क्रि० वि० [सं० कुत्र] १. कहाँ । २. किस ओर । किधर । ३. ओर । तरफ़ ।
कितक †–वि०, क्रि० वि० [सं० कियत्] कितना । किस क़दर ।
कितना– वि० [सं० कियत्] [स्त्री० कितनी] १. किस परिमाण, मात्रा या संख्या का ? (प्रश्नवाचक) । २. अधिक । बहुत । क्रि० वि० १. किस परिमाण या मात्रा में ?

कहाँ तक? २. अधिक। बहुत ज़्यादा।
कितव–सज्ञा पुं० [सं०] १. जुआरी। २. धूर्त। छली। ३. पागल। ४. दुष्ट।
किता–सज्ञा पु० [अ०] १. सिलाई के लिये कपड़े की काट छाँट। ब्योंत। २. ढंग। चाल। ३. संख्या। अदद। ४. विस्तार का एक भाग। सतह का हिस्सा। ५. प्रदेश। प्रांगण। भूभाग।
किताब–सज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० किताबी] १. पुस्तक। ग्रंथ। २. रजिस्टर। बही।
मुहा०—किताबी कीड़ा = वह व्यक्ति जो सदा पुस्तक पढ़ता रहता हो। किताबी चेहरा = वह चेहरा जिसकी आकृति लंबाई लिए हो।
किताबी–वि० [अ० किताब] किताब के आकार का।
कितिक†–वि० दे० "कितक", "कितना"।
कितेक†–वि० [सं० कियदेक] १. कितना। २. असंख्य। बहुत।
कितै†–अव्य० दे० "कित"।
कितो†–वि०, [सं० कियत्] [स्त्री० किती] कितना।
क्रि० वि० कितना।
कित्ति–सज्ञा स्त्री० [सं० कीर्ति, प्रा० कित्ति] कीर्ति। यश।
किधर–क्रि० वि० [सं० कुत्र] किस ओर, किस तरफ़?
किधौं–अव्य० [सं० किम्] अथवा। या। या तो। न जानें।
किन–सर्व० 'किस' का बहुवचन।
क्रि० वि० [सं० किम्+न] क्यों न। चाहे।
सज्ञा पु० [सं० किण] चिह्न। दाग।
किनका–सज्ञा पुं० [सं० कणिक] [स्त्री० अल्पा० किनकी] १. अन्न का टूटा हुआ दाना। २. चावल आदि की खुद्दी।
किनवानी–सज्ञा स्त्री० [सं० कण+हिं० पानी] छोटी छोटी बूँदों की झड़ी। फुही।
किनहा†–वि० [सं० कर्णक, प्रा० कण्णअ+हा (प्रत्य०)] (फल) जिसमें कीड़े पड़े हों। कन्ना।
किनार†–सज्ञा पु० दे० "किनारा"।
किनारदार–वि० [फा० किनारा+दार] (कपड़ा) जिसमें किनारा बना हो।
किनारा–सज्ञा पु० [फा०] १. अधिक लंबाई और कम चौड़ाईवाली वस्तु के वे दोनों भाग जहाँ से चौड़ाई समाप्त होती हो। लंबाई के बल की कोर। २. नदी या जलाशय का तट। तीर।
मुहा०—किनारे लगना = (किसी कार्य का) समाप्ति पर पहुँचना। समाप्त होना।
३. लंबाई चौड़ाईवाली वस्तु के चारों ओर का वह भाग जहाँ से उसके विस्तार का अंत होता हो। प्रांत। भाग। ४. (स्त्री० किनारी) कपड़े आदि में किनारे पर का वह भाग जो भिन्न रंग या बुनावट का होता है। हाशिया। गोट। ५. किसी ऐसी वस्तु का सिरा या छोर जिसमें चौड़ाई न हो। ६. पार्श्व। बगल।
मुहा०—किनारा खींचना = दूर होना। हटना। किनारे न जाना = अलग रहना। बचना। किनारे बैठना, रहना या होना = अलग होना। छोड़कर दूर हटना।
किनारी–सज्ञा स्त्री० [फा० किनारा] सुनहला या रुपहला पतला गोटा जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है।
किनारे–क्रि० वि० [हिं० किनारा] १. कोर या बाढ़ पर। २. तट पर। ३. अलग।
किन्नर–सज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० किन्नरी] १. एक प्रकार के देवता जिनका मुख घोड़े के समान होता है। २. गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति।
किन्नरी–सज्ञा स्त्री० [सं०] १. किन्नर की स्त्री। २ किन्नर जाति की स्त्री।
सज्ञा स्त्री० [सं० किन्नरीवीणा] १. एक प्रकार का तँबूरा। २. किंगरी। सारंगी।
किफ़ायत–सज्ञा स्त्री० [अ०] १. काफ़ी या अलम् होने का भाव। २. कमख़र्ची। थोड़े में काम चलाना। ३. बचत।
किफ़ायती–वि० [अ० किफ़ायत] कम ख़र्च करनेवाला। सँभालकर ख़र्च करनेवाला।
क़िबला–सज्ञा पु० [अ०] १. पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज़ पढ़ते हैं। २. मक्का। ३ पूज्य व्यक्ति। ४ पिता। बाप।
क़िबलानुमा–सज्ञा पुं० [फा०] पश्चिम दिशा को बतानेवाला एक यंत्र जिसका व्यवहार जहाज़ों पर अरब मल्लाह करते थे।
किम्–वि०, सर्व० [सं०] १. क्या? २. कौन सा?
यौ०—किमपि = कोई भी। कुछ भी।
किमाछ–सज्ञा पु० दे० "केवाँच"।

क़िमाम-संज्ञा पु० [अ० क़िवाम] शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत । ख़मीर।

क़िमाश-संज्ञा पु० [अ०] १. तर्ज़ । ढंग । वज़ा । २ गंजीफ़े का एक रंग । ताज।

किमि‡-क्रि० वि० [सं० किम्] कैसे ? किस प्रकार ? किस तरह ?

क़िम्मत‡-संज्ञा स्त्री० [अ० हिकमत] युक्ति। होशियारी।

कियत्-वि० [सं०] कितना ।

कियारी-संज्ञा स्त्री० [सं० केदार] १. खेतों या बगीचों में थोड़े थोड़े अंतर पर पतली मेड़ों के बीच की भूमि जिसमें पौधे लगाए जाते हैं । क्यारी । २. खेतों के वे विभाग जो सिंचाई के लिये नालियों के द्वारा बनाए जाते हैं । ३. वह बड़ा कड़ाह जिसमें समुद्र का खारा पानी नमक नीचे बैठने के लिये भरते हैं ।

कियाह-संज्ञा पु० [सं०] लाल रंग का घोड़ा ।

किरंटा-संज्ञा पु० [अ० क्रिश्चियन] छोटे दरजे का क्रिस्तान । केरानी । (तुच्छ)

किरका-संज्ञा पु० [सं० कर्कर=कंकड़ी] छोटा टुकड़ा । कंकड़ । किरकिरी ।

किरकिरा-वि० [सं० कर्कट] कँकरीला । करकड़दार । जिसमें महीन और कड़े रवे हों।
मुहा०—किरकिरा हो जाना=रंग में भंग हो जाना । आनंद में विघ्न पड़ना ।

किरकिराना-क्रि० अ० [हिं० किरकिरा] १. किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा करना । २. दे० "किटकिटाना" ।

किरकिराहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० किरकिरा + हट (प्रत्य०)] १. आँख में किरकिरी पड़ जाने की सी पीड़ा । २. दाँत के नीचे कँकरीली वस्तु के पड़ने का शब्द । ३. किटकिटापन । करकरीलापन ।

किरकिरी-संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कर] १ धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा उत्पन्न करता है । २. अपमान । हेठी ।

किरकिल-संज्ञा पु० [सं० कृकलास] गिरगिट ।
‡संज्ञा स्त्री० दे० "कृकल" ।

किरच-संज्ञा स्त्री० [सं० कृति=कैंची (अस्त्र)] १ एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है । २. छोटा नुकीला टुकड़ा (जैसे काँच आदि का) ।

किरण-संज्ञा स्त्री० [सं०] किरन ।

किरणमाली-संज्ञा पु० [सं०] सूर्य्य ।

किरन-संज्ञा स्त्री० [सं० किरण] १. ज्योति की अति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में सूर्य्य, चंद्र, दीपक आदि प्रज्वलित पदार्थों से निकलकर फैलती हुई दिखाई पड़ती हैं । रोशनी की लकीर ।
मुहा०-किरन फूटना=सूर्योदय होना ।
२ कलाबत्तू या बादले की बनी झालर ।

किरपा‡-संज्ञा स्त्री० दे० "कृपा" ।

किरपान‡-संज्ञा पु० दे० "कृपाण" ।

किरम-संज्ञा पु० [सं० कृमि] १ दे० "किरिमदाना" । २. कीट । कीड़ा ।

किरमाल‡-संज्ञा पु० [सं० करवाल] तलवार । खड्ग ।

किरमिच-संज्ञा पु० [अं० कैनवस] एक प्रकार का महीन टाट या मोटा विलायती कपड़ा जिससे परदे, जूते, बैग आदि बनते हैं ।

किरमिज-संज्ञा पु० [सं० कृमि + ज] [वि० किरमिजी] १. एक प्रकार का रंग । हिरमजी । दे० "किरिमदाना" । २. मटमैलापन लिए करौंदिया रंग का घोड़ा ।

किरमिजी-वि० [सं० कृमिज] किरमिज के रंग का । मटमैलापन लिए हुए करौंदिया ।

किरराना-क्रि० अ० [अनु०] १. क्रोध से दाँत पीसना । २ किरकिर शब्द करना ।

किरवार‡-संज्ञा पु० दे० "करवाल" ।

किरवारा‡-संज्ञा पु० [सं० कृतमाल] अमलतास ।

किरांची-संज्ञा स्त्री० [अं० कैरेज] १ वह बैल गाड़ी जिस पर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है । २. माल-गाड़ी का डब्बा ।

किरात-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराती] १. एक प्राचीन जंगली जाति । २. हिमालय के पूर्वीय भाग तथा उसके आस पास के देश का प्राचीन नाम ।

क़िरात-संज्ञा स्त्री० [अ० कैरात] जवाहरात की एक तौल जो लगभग ४ जौ के बराबर होती है ।

किराना-संज्ञा पु० दे० "केराना" ।
क्रि० स० दे० "केराना" ।

किरानी-संज्ञा पु० दे० "केरानी" ।

किराया-संज्ञा पु० [अ०] वह दाम जो दूसरे की कोई वस्तु काम में लाने के बदले में उसके मालिक को दिया जाय । भाड़ा ।

किरायेदार—संज्ञा पुं० [फा० किरायादार] कुछ दाम देकर किसी दूसरे की वस्तु कुछ काल तक काम में लानेवाला।

किरावल—संज्ञा पुं० [तु० करावल] १. वह सेना जो लड़ाई का मैदान ठीक करने के लिये आगे जाय। २. बंदूक से शिकार करनेवाला आदमी।

किरासन—संज्ञा पुं० [अ० केरोसिन] केरोसिन तेल। मिट्टी का तेल।

किरिच—संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"।

किरिनं†—संज्ञा स्त्री० दे० "किरण"।

किरिम—संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।

किरिमदाना—संज्ञा पुं० [सं० कृमि + हिं० दाना] किरमिज नामक कीड़ा जो लाख की तरह थूहर के पेड़ में लगता है और सुखाकर रँगन के काम आता है।

किरिया*†—संज्ञा स्त्री० [सं० क्रिया] १. शपथ। सौगंध। कसम। २. कर्त्तव्य। काम। ३. मृत व्यक्ति के हेतु श्राद्धादि कर्म। मृतकर्म।

यौ०—किरिया करम = क्रियाकर्म। मृतकर्म।

किरीट—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का शिरोभूषण जो माथे में बाँधा जाता था। २. आठ भगण का एक वर्ण-वृत्त या सवैया।

किरोलना—क्रि० स० [सं० कर्त्तन] करोदना। खुरचना।

किर्च—संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"।

किर्मिज—संज्ञा पुं० [सं० कृमिज] १. एक प्रकार का रंग। किरमिजी। दे० "किरिमदाना"। २. किरमिजी रंग का घोड़ा।

किल—अव्य० [सं०] निश्चय। सचमुच।

किलक—संज्ञा स्त्री० [हिं० किलकना] १. किलकने या हर्षध्वनि करने की क्रिया। २. हर्षध्वनि। किलकार।

संज्ञा स्त्री० [फा० किलक] एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।

किलकना—क्रि० अ० [सं० किलकिला] किलकार मारना। हर्षध्वनि करना।

किलकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० किलक] हर्षध्वनि।

किलकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० किलक] हर्षध्वनि।

किलकिंचित—संज्ञा पुं० [सं०] संयोग शृंगार के ११ हावों में से एक जिसमें नायिका एक साथ कई भाव प्रकट करती है।

किलकिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्षध्वनि। आनंद-सूचक शब्द। किलकारी।

संज्ञा पुं० [सं० कृकल] मछली खानेवाली एक छोटी चिड़िया।

संज्ञा पुं० [अनु०] समुद्र का वह भाग जहाँ की लहरें भयंकर शब्द करती हों।

किलकिलाना—क्रि० अ० [हिं० किलकिला] १. आनंद-सूचक शब्द करना। हर्षध्वनि करना। २. चिल्लाना। हल्लागुल्ला करना। ३. वाद-विवाद करना। झगड़ा करना।

किलकिलाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० किलकिलाना] किलकिलाने का शब्द या भाव।

किलना—क्रि० अ० [हिं० कील] १. कीलन होना। कीला जाना। २. वश में किया जाना। ३. गति का अवरोध होना।

किलनी—संज्ञा स्त्री० [सं० कीट, हिं० कीड़ा] पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक कीड़ा। किल्ली।

किलबिलाना—क्रि० अ० दे० "कुलबुलाना"।

किलवाँक—संज्ञा पुं० [देश०] काबुल देश का एक प्रकार का घोड़ा।

किलवाना—क्रि० स० [हिं० किलना का प्रे० रूप] १. कील लगवाना या जड़वाना। २. तंत्र या मंत्र द्वारा किसी भूत प्रेत के विघ्नकारी कृत्य को रोक्वा देना।

किलवारी†—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्ण] १ पतवार। कन्ना। २. छोटा डाँड़ा।

किलहँटा—संज्ञा पुं० [देश०] सिरोही पक्षी।

किला—संज्ञा पुं० [अ०] लड़ाई के समय बचाव का एक सुदृढ़ स्थान। दुर्ग। गढ़।

यौ०—किलेदार = दुर्गपति। गढ़पति।

किलाना—क्रि० स० दे० "किलवाना"।

किलाबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दुर्ग-निर्माण। २. व्यूह रचना।

किलावा—संज्ञा पुं० [फा० कलावा] हाथी के गले में पड़ा हुआ रस्सा जिसमें पैर फँसाकर महावत उसे चलाता है।

किलिक—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।

किलोल†—संज्ञा पुं० दे० "कलोल"।

किल्लत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कमी। न्यूनता। २. संकोच। तंगी।

किल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० कील] बहुत बड़ी कील या मेख। खूँटा।

किल्ली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कील] १. कील। खूँटी। मेख। २. सिटकिनी। बिल्ली।

३. किसी कल या पेंच की मुठिया जिसे घुमाने से वह चले।
मुहा०—किसी की किल्ली किसी के हाथ में होना = किसी का वश किसी पर होना। किसी की चाल किसी के हाथ में होना। किल्ली घुमाना या ऐंठना = दाँव चलाना। युक्ति लगाना।
किल्विप–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप। अपराध। दोष। २. रोग।
किवाँच–संज्ञा पुं० दे० "केवाँच"।
किवाड़–संज्ञा पुं० [सं० कपाट] [स्त्री० किवाड़ी] लकड़ी का पल्ला जो द्वार बंद करने के लिये चौखट में जड़ा रहता है। पट। कपाट।
किशमिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० किशमिशी] सुखाया हुआ छोटा बेदाना अंगूर।
किशमिशी–वि० [फा०] १ जिसमें किशमिश हो। २. किशमिश के रंग का। संज्ञा पुं० एक प्रकार का अमौआ रंग।
किशलय–संज्ञा पुं० [सं०] नया निकला हुआ पत्ता। कोमल पत्ता। कल्ला।
किशोर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० किशोरी] १. ग्यारह से १५ वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. पुत्र। बेटा।
किश्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के घात में पड़ना। शह।
किश्ती–संज्ञा स्त्री० [फा० कश्ती] १. नाव। २ एक प्रकार की छिछली थाली या तश्तरी। ३ शतरंज का एक मोहरा। हाथी।
किश्तीनुमा–वि० [फा०] नाव के आकार का। जिसके दोनों किनारे धन्वाकार होकर दोनों छोरों पर कोना डालते हुए मिलें।
किष्किंध–संज्ञा पुं० [सं०] मैसूर के आसपास के देश का प्राचीन नाम।
किष्किंधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किष्किंध पर्वतश्रेणी। २. किष्किंधा पर्वत की गुफा।
किस–सर्व० [सं० कस्य] 'कौन' और 'क्या' का वह रूप जो उन्हें विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।
किसब–संज्ञा पुं० दे० "कसब"।
किसबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह थैली जिसमें नाई अपने उस्तरे, कैंची आदि रखते हैं।
किसमत–संज्ञा स्त्री० दे० "किस्मत"।
किसमी–संज्ञा पुं० [अ० कस्बी] श्रमजीवी। कुली। मजदूर।
किसलय–संज्ञा पुं० दे० "किशलय"।
किसान–संज्ञा पुं० [सं० कृषाण, प्रा० किसान] कृषि या खेती करनेवाला। खेतिहर।
किसानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० किसान] खेती। कृषि कर्म। किसान का काम।
किसी–सर्व० वि० [हिं० किस + ही] "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—किसी ने।
किसू–सर्व० दे० "किसी"।
किस्त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कई बार करके ऋण या देना चुकाने का ढंग। २. किसी ऋण या देन का वह भाग जो किसी निश्चित समय पर दिया जाय।
किस्तबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] थोड़ा थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग।
किस्तवार–क्रि० वि० [फा०] १ किस्त के ढंग से। किस्त करके। २. हर किस्त पर।
किस्म–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकार। भेद। भाँति। तरह। २. ढंग। तर्ज। चाल।
किस्मत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रारब्ध। भाग्य। नसीब। करम। तकदीर।
मुहा०—किस्मत आजमाना = किसी कार्य को हाथ में लेकर देखना कि उसमें सफलता होती है या नहीं। किस्मत चमकना या जागना–भाग्य प्रबल होना। बहुत भाग्यवान् होना। किस्मत फूटना = भाग्य बहुत मंद हो जाना।
२. किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें कई जिले हों। कमिश्नरी।
किस्मतवर–वि० [फा०] भाग्यवान्।
किस्सा–संज्ञा पुं० [अ०] १. कहानी। कथा। आख्यान। २. वृत्तांत। समाचार। हाल। ३ काँड। झगड़ा। तकरार।
की–प्रत्य० [हिं० की] हिंदी विभक्ति "का" का स्त्रीलिंग रूप।
क्रि० स० [सं० कृत, प्रा० कि] हिं० "करना" के भूतकालिक रूप "किया" का स्त्री०।
कीक–संज्ञा पुं० [अनु०] चीत्कार। चीख।
कीकट–संज्ञा पुं० [सं०] १. मगध देश का प्राचीन वैदिक नाम। २. [स्त्री० कीकटी] घोड़ा। ३. प्राचीन काल की एक अनार्य्य जाति जो कीकट देश में बसती थी।
कीकना–क्रि० अ० [अनु०] की की करके चिल्लाना। चीत्कार करना।
कीकर–संज्ञा पुं० [सं० विकराल] बबूल।
कीकान–संज्ञा पुं० [सं० केकाण] १. पश्चि-

मोरार का एक देश जो घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था। २. इस देश का घोड़ा। ३. घोड़ा।

कीच–संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] कीचड़। कर्दम।

कीचक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस जिसके छेद में घुसकर वायु हू हू शब्द करती है। २. राजा विराट् का साला।

कीचड़–संज्ञा पुं० [हिं० कीच+ड़ (प्रत्य०)] १. पानी मिली हुई धूल या मिट्टी। कर्दम। पंक। २. आँख का सफ़ेद मल।

कीट–संज्ञा पुं० [सं०] रेंगने या उड़नेवाला क्षुद्र जंतु। कीड़ा। मकोड़ा।
संज्ञा स्त्री० [सं० किट्ट] जमी हुई मैल। मल।

कीटभृंग–संज्ञा पुं० [सं०] एक न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है जब कोई वस्तु बिलकुल एकरूप हो जाती है।

कीड़ा–संज्ञा पुं० [सं० कीट, प्रा० कीड] १. छोटा उड़ने या रेंगनेवाला जंतु। मकोड़ा। २. कृमि। सूक्ष्म कीट।
मुहा०—कीड़े काटना = चंचलता होना। जी उकताना। कीड़े पड़ना = १. (वस्तु में) कीड़े उत्पन्न होना। २. दोष होना। ऐब होना। ३. साँप। ४. जूँ, खटमल आदि।

कीड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कीड़ा] १. छोटा कीड़ा। २. चींटी। पिपीलिका।

कीनना†–क्रि० स० [सं० क्रीणन] खरीदना। मोल लेना। क्रय करना।

कीना–संज्ञा पुं० [फा०] द्वेष। बैर।

कीप–संज्ञा स्त्री० [अं० कीप] वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन में इसलिये लगाते हैं जिसमें द्रव पदार्थ उसमें डालते समय बाहर न गिरे। कुप्पी।

कीमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] दाम। मूल्य।

कीमती–वि० [अ०] अधिक दामों का। बहुमूल्य।

कीमा–संज्ञा पुं० [अ०] बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त।

कीमिया–संज्ञा स्त्री० [फा०] रासायनिक क्रिया। रसायन।

कीमियागर–संज्ञा पुं० [फा०] रसायन बनानेवाला। रासायनिक परिवर्तन में प्रवीण।

कीमुख्त–संज्ञा पुं० [अ०] गधे या घोड़े का चमड़ा जो हरे रंग का और दानेदार होता है।

कीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. शुक। सुग्गा। तोता। २. व्याध। बहेलिया। ३. कश्मीर देश। ४. कश्मीर देशवासी।

कीरति०–संज्ञा स्त्री० दे० "कीर्ति"।

कीर्तन–संज्ञा पुं० [सं०] १. कथन। यश-वर्णन। गुणकथन। २. कृष्णलीला संबंधी भजन और कथा आदि।

कीर्तनिया–संज्ञा पुं० [सं० कीर्तन+इया (प्रत्य०)] कृष्णलीला संबंधी भजन और कथा सुनानेवाला। कीर्तन करनेवाला।

कीर्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुण्य। २. ख्याति। बड़ाई। नामवरी। नेकनामी। यश। ३. राधा की माता का नाम। ४. आर्या छंद के भेदों में से एक। ५. दशाक्षरी वृत्तों में से एक। ६. एकादशाक्षरी वृत्तों में से एक वृत्त। ७. प्रसाद।

कीर्तिमान्–वि० [सं०] यशस्वी। नेकनाम। मशहूर। विख्यात।

कीर्ति-स्तंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्तंभ जो किसी की कीर्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया जाय। २. वह कार्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्ति स्थायी हो।

कील–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लोहे या काठ की मेख। काँटा। परेग। खूँटी। २. वह मूढ़ गर्भ जो योनि में अटक जाता है। ३. नाक में पहनने का एक छोटा आभूषण। लौंग। ४. मुहाँसे की मांस कील। ५. जाँते के बीचोबीच का खूँटा। ६. वह खूँटी जिस पर कुम्हार का चाक घूमता है।

कीलक–संज्ञा पुं० [सं०] १. खूँटी। कील। २. तंत्र के अनुसार एक देवता। ३. वह मंत्र जिससे किसी अन्य मंत्र की शक्ति या उसका प्रभाव नष्ट कर दिया जाय।

कीलन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। रोक। रुकावट। २. मंत्र को कीलने का काम।

कीलना–क्रि० स० [सं० कीलन] १. मेख जड़ना। कील लगाना। २. कील ठोंककर मुँह बंद करना (तोप आदि का)। ३. किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना। ४. साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके। अधीन करना। वश में करना।

कीला–संज्ञा पुं० [सं० कील] बड़ी

कीलाक्षर–संज्ञा पुं० [सं० ...] बाबुल की एक बहुत ... जिसके अक्षर कील के ...

कीलाल–संज्ञा पुं० [सं० ...]

जल। ३. रक्त। ४. मधु। ५. पशु।

कीलित-वि० [सं०] १. जिसमें कील जड़ी हो। २. मंत्र से स्तंभित। कीला हुआ।

कीली-संज्ञा स्त्री० [सं० कील] १. किसी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील जिस पर वह चक्र घूमता है। † २. दे० "कील" और "किल्ली"।

कीश-संज्ञा पुं० [सं०] १. बंदर। वानर।

यौ०—कीशध्वज = अर्जुन।

२. चिड़िया। ३. सूर्य।

कीसा-संज्ञा पुं० [फा०] थैली। खीसा।

कुँअर-संज्ञा पुं० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँअरि] १. लड़का। पुत्र। बालक। २. राजपुत्र। राजकुमार।

कुँअर-विलास-संज्ञा पुं० [हिं० कुँअर + विलास] एक प्रकार का धान या चावल।

कुँअरेटा †-संज्ञा पुं० [हिं० कुँअर + एटा] [स्त्री० कुँअरेटी] लड़का। बालक।

कुँआरा-वि० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँआरी] जिसका ब्याह न हुआ हो। बिन ब्याहा।

कुँई-संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

कुंकुम-संज्ञा पुं० [सं०] १. केसर। जाफ़रान। २. रोली जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती हैं। ३. कुंकुमा।

कुंकुमा-संज्ञा पुं० [सं० कुंकुम] भिल्ली की कुप्पी या ऐसा बना हुआ लाख का पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होली के दिनों में दूसरों पर मारते हैं।

कुंचन-संज्ञा पुं० [सं०] सिकुड़ने या बटुरने की क्रिया। सिमटना।

कुंचित-वि० [सं०] १. घूमा हुआ। टेढ़ा। २. घूँघरवाले। छल्लेदार (बाल)।

कुंज-संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जो वृक्ष, लता आदि से मंडप की तरह ढका हो। संज्ञा पुं० [फा० कुंज = कोना] वे बूटे जो दुशाले के कोनों पर बनाए जाते हैं।

कुंजक-संज्ञा पुं० [सं०] डेवढ़ी पर का वह चोबदार जो अंतःपुर में आता जाता हो। कंचुकी। ख्वाजःसरा।

कुंजकुटीर-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंजगृह। लताओं से घिरा हुआ घर।

कुंजगली-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंज + गली] १ बगीचों में लताओं से छाया हुआ पथ। २. पतली तंग गली।

कुँजड़ा-संज्ञा पुं० [सं० कुंज + ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० कुँजड़ी, कुँजड़िन] एक जाति जो तरकारी बोती और बेचती है।

कुंजर-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुंजरा, कुंजरी] १ हाथी।

मुहा०—कुंजरो वा नरो वा, कुंजरो नरो = हाथी या मनुष्य। श्वेत या कृष्ण। अनिश्चित या दुबधा की बात।

२ बाल। केश। ३. अंजना के पिता और हनुमान् के नाना का नाम। ४. छप्पय के इक्कीसवें भेद का नाम। ५. पाँच मात्राओं के छंदों के प्रस्तार में पहला प्रस्तार। ६. आठ की संख्या।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम। जैसे-पुरुष कुंजर।

कुंजविहारी-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

कुंजी-संज्ञा स्त्री० [सं० कुंचिका] १. चाभी। ताली।

मुहा०—(किसी की) कुंजी हाथ में होना = किसी का वश में होना।

२. वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ खुले। टीका।

कुंठ-वि० [सं०] १. जो चोखा या तीक्ष्ण न हो। गुठला। कुंद। २. मूर्ख।

कुंठित-वि० [सं०] १. जिसकी धार चोखी या तीक्ष्ण न हो। कुंद। गुठला। २. मंद। बेकाम। निकम्मा।

कुंड-संज्ञा पुं० [सं०] १. चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन। कुंडा। २ प्राचीन काल का एक मान जिससे अनाज नापा जाता था। ३. बहुत छोटा तालाव। ४. पृथ्वी में खोदा हुआ गड्ढा अथवा धातु आदि का बना हुआ पात्र, जिसमें आग जलाकर अग्निहोत्रादि करते हैं। ५ बटलोई। स्थाली। ६. ऐसी स्त्री का जारज लड़का जिसका पति जीता हो। ७ पूला। गट्ठा। ८. लोहे का टोप। कूँड। खोद। ९ होदा।

कुँडरा-संज्ञा पुं० [सं० कुंड] कुंडा। मटका।

कुंडल-संज्ञा पुं० [सं०] १. सोने चाँदी आदि का बना हुआ कान का एक मंडलाकार आभूषण। बाली। मुरकी। २. एक गोल आभूषण जिसे गोरखनाथ के अनुयायी कनफटे कानों में पहनते हैं। ३ कोई मंडलाकार आभूषण। जैसे—कड़ा, चूड़ा आदि। ४. रस्सी आदि का गोल

फंदा। ५. लोहे का वह गोल मँडरा जो मोट या चरस के मुँह पर लगाया जाता है। मेखला। मेंड़री। ६. किसी लंबी लचीली वस्तु की कई गोल फेरों में सिमटने की स्थिति। फेंटी। मंडल। ७. वह मंडल जो कुहरे या बदली में चंद्रमा या सूर्य के किनारे दिखाई पड़ता है। ८. छंद में वह मात्रिक गण जिसमें दो मात्राएँ हों, पर एक ही अक्षर हो। ६. बाईस मात्राओं का एक छंद।

कुंडलाकार–वि० [सं०] वर्तुलाकार। गोल। मंडलाकार।

कुंडलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मंडलाकार रेखा। २. कुंडलिया छंद।

कुंडलिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तंत्र और उसके अनुयायी हठयोग के अनुसार एक कल्पित वस्तु जो मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी की जड़ के नीचे मानी गई है। २. जलेबी या इमरती नाम की मिठाई।

कुंडलिया–संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडलिका] एक मात्रिक छंद जो एक दोहे और एक रोला के योग से बनता है।

कुंडली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जलेबी। २. कुंडलिनी। ३. गुडुचि। गिलोय। ४. जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति बतानेवाला एक चक्र जिसमें बारह घर होते हैं। ५. गेंडुरी। इँडुवा। ६. साँप के बैठने की मुद्रा।
संज्ञा पुं० [सं० कुंडलिन्] १. साँप। २. वरुण। ३. मोर। ४. विष्णु।

कुंडा–संज्ञा पुं० [सं० कुंड] मिट्टी का चौड़े मुँह का एक बहुत बड़ा गहरा बरतन। बड़ा मटका। कछरा।
संज्ञा पुं० [सं० कुंडल] दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोढ़ा जिसमें साँकल फँसाई जाती है और ताला लगाया जाता है।

कुंडिनपुर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन नगर जो विदर्भ देश में था।

कुंडी–संज्ञा स्त्री० [सं० कुंड] पत्थर या मिट्टी का कटोरे के आकार का बरतन जिसमें दही, चटनी आदि रखते हैं।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंडा] १. जंजीर की कड़ी। २. किवाड़ में लगी हुई साँकल।

कुंत–संज्ञा पुं० [सं०] १. गवेधुक। कौड़िल्ला। २. भाला। बरछी। ३. जूँ। ४. क्रूर भाव। अनख।

कुंतल–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर के बाल। केश। २. प्याला। चुक्कड़। ३. जौ। ४. हल। ५. एक देश का नाम जो कोंकण और बरार के बीच में था। ६. वेष बदलनेवाला पुरुष। बहुरुपिया।

कुंता†–संज्ञा स्त्री० दे० "कुंती"।

कुंतिभोज–संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा जिसने कुंती या पृथा को गोद लिया था।

कुंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता। पृथा।
संज्ञा स्त्री० [सं० कुंत] बरछी। भाला।

कुंथना–क्रि० अ० [हिं० कूँथना] मारा पीटा जाना।

कुंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. जूही की तरह का एक पौधा जिसमें सफ़ेद फूल लगते हैं। २. कनेर का पेड़। ३. कमल। ४. कुंदुर नाम का गोंद। ५. एक पर्वत का नाम। ६. कुबेर की नौ निधियों में से एक। ७. नौ की संख्या। ८. विष्णु।
वि० [फा०] १. कुंठित। गुठला। २. स्तब्ध। मंद।
यौ०–कुंदज़ेहन = मंदबुद्धि।

कुंदन–संज्ञा पुं० [सं० कुंद] १. बहुत अच्छे और साफ़ सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर जड़िए नगीने जड़ते हैं। २. बढ़िया या ख़ालिस सोना।
वि० १. कुंदन के समान चोखा। खालिस। स्वच्छ। बढ़िया। २. नीरोग।

कुँदरू–संज्ञा पुं० [सं० कुंदुर = करेला] एक बेल जिसमें चार पाँच अंगुल लंबे फल लगते हैं जिनकी तरकारी होती है। बिंबा।

कुंदलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] छब्बीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

कुंदा–संज्ञा पुं० [फा० मिलाओ सं० स्कंध] १. लकड़ी का बड़ा, मोटा और बिना चीरा हुआ टुकड़ा जो प्रायः जलाने के काम में आता है। लक्कड़। २. लकड़ी का वह टुकड़ा जिस पर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ते, कुंदीगर कपड़े पर कुंदी करते और किसान घास काटते हैं। निहठा। निष्ठा। ३. बंदूक का चौड़ा पिछला भाग। ४. वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं। काठ। ५. दस्ता। मूठ। बेंट। ६. लकड़ी की बड़ी मुँगरी जिससे कपड़ों की कुंदी की जाती है।

संज्ञा पु० [सं० स्कंध, हिं० कंधा] १.चिड़िया का पर। डैना। २. कुश्ती का एक पेंच।
संज्ञा पु० [सं० कदन] भुना हुआ दूध। खोवा। मावा।
कुंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंदा] १. कपड़ों की सिकुड़न और रखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिये उसे मोगरी से कूटने की क्रिया। २. खूब मारना। ठोंकपीट।
कुंदीगर–संज्ञा पु० [हिं० कुंदी + गर (प्रत्य०)] कुंदी करनेवाला।
कुंदुर–संज्ञा पु० [सं० अ०] एक प्रकार का पीला गोंद जो दवा के काम आता है।
कुँदेरना–क्रि० स० [सं० कुंजलन] खुरचना। खुरादना।
कुँदेरा–संज्ञा पु० [हिं० कुँदेरना + एरा (प्रत्य)] [स्त्री० कुँदेरी] खरादनेवाला। कुनेरा।
कुंभ–संज्ञा पु० [सं०] १. मिट्टी का घड़ा। घट। कलश। २ हाथी के सिर के दोनों ओर ऊपर उभड़े हुए भाग। ३. ज्योतिष में दसवीं राशि। ४. दो द्रोण या ६४ सेर का एक प्राचीन मान या तौल। ५. प्राणायाम के तीन भागों में से एक। कुंभक। ६. एक पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष पड़ता है। ७. प्रह्लाद का पुत्र एक दैत्य।
कुंभक–संज्ञा पु० [सं०] प्राणायाम का एक अंग जिसमें साँस लेकर वायु को शरीर के भीतर रोक रखते हैं।
कुंभकर्ण–संज्ञा पु० [सं०] एक राक्षस जो रावण का भाई था।
कुंभकार–संज्ञा पु० [सं०] १. मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार। २. मुर्गा।
कुंभज, कुंभजात–संज्ञा पु० [सं०] १. घड़े से उत्पन्न पुरुष। २. अगस्त्य मुनि। ३. वशिष्ठ। ४. द्रोणाचार्य्य।
कुंभसंभव–संज्ञा पु० [सं०] अगस्त्य मुनि।
कुंभिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुंभी। जलकुंभी। २. वेश्या। ३. कायफल। ४. आँख की एक फुंसी। गुहांजनी। बिलनी। ५. परवल का पेड़। ६. शूक रोग।
कुँभिलाना–क्रि० अ० दे० "कुम्हलाना"।
कुंभी–संज्ञा पु० [सं०] १. हाथी। २. मगर। ३. गुग्गुल। ४. एक जहरीला कीड़ा। ५. एक राक्षस जो बच्चों को क्लेश देता है।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा घड़ा। २. कायफल का पेड़। ३. दंती का पेड़। दाँती। ४. एक वनस्पति जो जलाशयों में होती है। जलकुंभी। ५. एक नरक का नाम। कुंभीपाक नरक।
कुंभीधान्य–संज्ञा पु० [सं०] घड़ा या मटका भर अन्न जिसे कोई गृहस्थ या परिवार छः दिन या किसी किसी के मत से साल भर खा सके। (स्मृति)
कुँभीधान्यक–संज्ञा पु० [सं०] उतना अन्न रखनेवाला जितना कोई गृहस्थ छः दिन या किसी किसी के मत से साल भर खा सके।
कुंभीनस–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कुंभीनसा] १. क्रूर साँप। २. एक प्रकार का ज़हरीला कीड़ा। ३. रावण।
कुंभीपाक–संज्ञा पु० [सं०] १. पुराणानुसार एक नरक। २ एक प्रकार का सन्निपात जिसमें नाक से काला खून जाता है।
कुंभीर–संज्ञा पु० [सं०] १ नक्र या नाक नामक जल-जंतु। २. एक प्रकार का कीड़ा।
कुँवर–संज्ञा पु० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँवरि] १. लड़का। पुत्र। बेटा। २. राजपुत्र। राजा का लड़का।
कुँवरेटा–संज्ञा पु० [हिं० कुँवर + एटा (प्रत्य०)] बालक। छोटा लड़का। बच्चा।
कुँवारा–वि० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँवारी] जिसका ब्याह न हुआ हो। बिन ब्याहा।
कुँहकुँह–संज्ञा पु० [सं० कुंकुम] केसर।
कु–उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के पहले लगकर उसके अर्थ में "नीच", "कुत्सित" आदि का भाव बढ़ाता है।
संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथिवी।
कुआँ–संज्ञा पु० [सं० कूप, प्रा० कूव] पानी निकालने के लिये पृथ्वी में खोदा हुआ गहरा गड्ढा। कूप। इँदारा।
मुहा०–(किसी के लिये) कुआँ खोदना=नाश करने या हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। कुआँ खोदना=जीविका के लिये परिश्रम करना। कुएँ में गिरना=आपत्ति में फँसना। विपत्ति में पड़ना। कुएँ में बाँस पड़ना=बहुत खोज होना। कुएँ में भाँग पड़ना=सबकी बुद्धि मारी जाना।
कुआर–संज्ञा पु० [सं० कुमार, प्रा० कुँवार] [वि० कुआरी] हिंदुस्तानी सातवाँ महीना। शरद् ऋतु का पहला महीना। आश्विन।
कुइयाँ–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुआँ] छोटा कुआँ।
यौ०—कठकुइयाँ=वह छोटा कुआँ जो काठ

से बँधा हो।

कुई—संज्ञा स्त्री० दे० "कुइयाँ"।
संज्ञा स्त्री० [सं० कुव] कुमुदिनी।

कुकटी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्कुटी=सेमल] कपास की एक जाति जिसकी रूई ललाई लिए होती है।

कुकड़ना—क्रि० अ० [हिं० सिकुड़ना] सिकुड़कर रह जाना। संकुचित हो जाना।

कुकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्कुटी] १. कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा जो कातकर तकले पर से उतारा जाता है। मुट्ठा। अटी। २. दे० "खुखडी"।

कुकनू—संज्ञा पु० [यू०] एक कल्पित पक्षी जो गाने में विलक्षण माना जाता है। कहा जाता है कि जब यह गाने लगता है, तब आग निकल पड़ती है जिसमें वह भस्म हो जाता है। आतशज़न।

कुकरी †—[सं० कुक्कुट] बन मुरगी।

कुकरौंधा—संज्ञा पु० [सं० कुक्कुद्रु] पालक से मिलता जुलता एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों से कड़ी गंध निकलती है।

कुकर्म—संज्ञा पु० [सं०] बुरा या खोटा काम।

कुकर्मी—वि० [हिं० कुकर्म] बुरा काम करनेवाला। पापी।

कुकुभ—संज्ञा पु० [सं०] एक मात्रिक छंद।

कुकुर—संज्ञा पु० [सं०] १. यदुवंशी क्षत्रियों की एक शाखा। २. एक प्राचीन प्रदेश। ३. एक साँप का नाम। ४ कुत्ता।

कुकुरखाँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुक्कुर+खाँसी] वह सूखी खाँसी जिसमें कफ़ न गिरे। ठाँसी।

कुकुरदंत—संज्ञा पु० [हिं० कुक्कुर+दंत] [वि० कुकुरदंता] *वह दाँत जो किसी किसी को* साधारण दाँतों के अतिरिक्त और उनसे कुछ नीचे थोड़ा निकलता है तथा जिसके कारण होंठ कुछ उठ जाता है।

कुकुरमुत्ता—संज्ञा पु० [हिं० कुक्कुर+मूत] एक प्रकार की खुमी जिसमें से बुरी गंध निकलती है। छत्राक।

कुकुही †—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्कुम] बनमुर्गी।

कुक्कुट—संज्ञा पु० [सं०] १. मुर्गा। २. चिनगारी। ३. लुक। ४. जटाधारी पौधा।

कुक्कुर—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कुक्कुरी] १. कुत्ता। श्वान। २. यदुवंशियों की एक शाखा। कुकुर। ३. एक मुनि।

कुक्ष—संज्ञा पु० [सं०] पेट। उदर।

कुक्षि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पेट। २. कोख। ३. किसी चीज़ के बीच का भाग।
संज्ञा पु० [सं०] १. एक दानव। २. राजा बलि। ३. *एक प्राचीन देश।*

कुखेत—संज्ञा पु० [सं० कुक्षेत्र] बुरा स्थान। खराब जगह। कुठाँव।

कुख्यात—वि०[सं०] निंदित। बदनाम।

कुख्याति—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा।

कुगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गति। दुर्दशा।

कुगहनि †—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+ग्रहण] अनुचित आग्रह। हठ। ज़िद्।

कुघा—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्षि] दिशा। ओर। तरफ़।

कुघात—संज्ञा पु० [हिं० कु+घात] १. कुअवसर। बेमौक़ा। २. बुरा दाँव। छल कपट।

कुच—संज्ञा० पु० [सं०] स्तन। छाती।

कुचकुचाना—क्रि० स० [अनु० कुचकुच] १. लगातार कोंचना। बार बार नुकीली चीज़ धँसाना या बींधना। २. थोड़ा कुचलना।

कुचना—क्रि० अ० [सं० कुंचन] सिकुड़ना। सिमटना। (क०)

कुचक्र—संज्ञा पु० [सं०] दूसरों को हानि *पहुँचानेवाला गुप्त प्रयत्न। षड्यंत्र।*

कुचक्री—संज्ञा पु० [सं० कुचक्रिन्] षड्यंत्र रचनेवाला। गुप्त प्रयत्न करके दूसरों को हानि पहुँचानेवाला।

कुचर—संज्ञा पु० [सं०] १. बुरे स्थानों में घूमनेवाला। आवारा। २. नीच कर्म करनेवाला। ३ वह जो पराई निंदा करता फिरे।

कुचलना—क्रि० स० [अनु०] १. किसी *चीज़ पर सहसा ऐसी दाब पहुँचाना जिससे* वह बहुत दब और विकृत हो जाय। मसलना। २. पैरों से रौंदना।
मुहा०—सिर कुचलना=पराजित करना।

कुचला—संज्ञा पु० [सं० कचीर] एक वृक्ष जिसके विषैले बीज औषध के काम में आते हैं।

कुचली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुचलना] वे दाँत जो डाढ़ों और राजदंत के बीच में होते हैं। कीला। सीता दाँत।

कुचाल—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० चाल] १. बुरा आचरण। खराब चाल चलन। २. दुष्टता। पाजीपन। बदमाशी।

कुचाली-संज्ञा पुं० [हिं० कुचाल] १. कुमार्गी । बुरे आचरणवाला । २. दुष्ट ।
कुचाह॰-संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० चाह] बुरी खबर । अशुभ बात ।
कुचील॰†-वि० [सं० कुचैल] मैले वस्त्रवाला । मैला कुचैला । मलिन ।
कुचीला॰†-वि० दे० "कुचैला" ।
कुचेष्ट-वि० [सं०] बुरी चेष्टावाला ।
कुचेष्टा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कुचेष्ट] १. बुरी चेष्टा । हानि पहुँचाने का यत्न । बुरी चाल । २. चेहरे का बुरा भाव ।
कुचैन॰-संज्ञा स्त्री० [सं० कु+हिं० चैन] कष्ट । दुःख । व्याकुलता ।
वि० बेचैन । व्याकुल ।
कुचैला-वि० [सं० कुचैल] [स्त्री० कुचैली] १. जिसका कपड़ा मैला हो । मैले कपड़ेवाला । २. मैला । गंदा ।
कुच्छित॰-वि० दे० "कुत्सित" ।
कुछ-वि० [सं० किंचित्] थोड़ी संख्या या मात्रा का । जरा । थोड़ा सा ।
मुहा०—कुछ एक=थोड़ा सा । कुछ कुछ=थोड़ा । कुछ ऐसा=विलक्षण । असाधारण । कुछ न कुछ=थोड़ा बहुत । कम या ज्यादा ।
सर्व० [सं० कश्चित्] १. कोई (वस्तु) । कुछ का कुछ=और का और । उलटा । कुछ कहना=कड़ी बात कहना । बिगड़ना । कुछ कर देना=जादू टोना कर देना । मंत्र प्रयोग कर देना । (किसी को) कुछ हो जाना=कोई रोग या भूत प्रेत की बाधा हो जाना । कुछ हो=चाहे जो हो ।
२. बड़ी या अच्छी बात । ३ सार वस्तु । काम की वस्तु । ४. गण्य मान्य मनुष्य ।
मुहा०—कुछ लगाना=(अपने को) बड़ा या श्रेष्ठ समझना । कुछ हो जाना=किसी योग्य हो जाना । गण्यमान्य हो जाना ।
कुजंत्र-संज्ञा पुं० [सं० कुयंत्र] बुरा यंत्र । अभिचार । टोटका । टोना ।
कुज-संज्ञा पुं० [सं०] १ मंगल ग्रह । २. वृक्ष । पेड़ । ३. नरकासुर जो पृथ्वी का पुत्र माना जाता था ।
कुजा-संज्ञा स्त्री० [सं० कु=पृथ्वी+जा=जायमान] १. जानकी । २. कात्यायिनी ।
कुजाति-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी जाति । [illegible] जाति ।
पुं० १. बुरी जाति का आदमी । नीच पुरुष । २. पतित या अधम पुरुष ।
कुजोग॰†-संज्ञा पुं० [सं० कुयोग] १. कुसंग । कुमेल । बुरा मेल । २. बुरा अवसर ।
कुजोगी॰-वि० [सं० कुयोगी] असंयमी ।
कुटंत†-संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना+त (प्रत्य०)] १. कूटने का भाव । कुटाई । २. मार ।
कुट-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुटी] १. घर । गृह । २. कोट । गढ़ । ३. कलश ।
संज्ञा स्त्री० [सं० कुष्ठ] एक बड़ा मोटी झाड़ी जिसकी जड़ सुगंधित होती है ।
संज्ञा पुं० [सं० कुट=कूटना] १. कूटा हुआ टुकड़ा । छोटा टुकड़ा । जैसे, तिलकुट ।
कुटका-संज्ञा पुं० [हिं० काटना] [स्त्री० अल्पा० कुटकी] छोटा टुकड़ा ।
कुटकी-संज्ञा स्त्री० [सं० कटुका] १. एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ की गोल गाँठें दवा के काम में आती हैं । २. एक जड़ी ।
† संज्ञा स्त्री० [हिं० कुटका] कँगनी । चेना ।
संज्ञा स्त्री० [सं० कटु+कीट] एक उड़नेवाला छोटा कीड़ा जो कुत्ते, बिल्ली आदि के रोयों में घुसा रहता है ।
कुटज-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुरैया । कर्ची । कुड़ा । २. अगस्त्य मुनि ।
कुटनपन-संज्ञा पुं० [सं० कुट्टनी] १. कुटनी का काम । दूती-कर्म । २. झगड़ा लगाने का काम ।
कुटनपेशा-संज्ञा पुं० दे० "कुटनपन" ।
कुटनहारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना+हारी (प्रत्य०)] धान कूटनेवाली स्त्री ।
कुटना-संज्ञा पुं० [हिं० कुटनी] १. स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाला । दूत । दाल । २. दो आदमियों में झगड़ा करानेवाला । चुगलखोर ।
संज्ञा पुं० [हिं० कूटना] वह हथियार जिससे कुटाई की जाय ।
क्रि० अ० [हिं० कूटना] कूटा जाना ।
कुटनाना-क्रि० स० [हिं० कुटना] किसी स्त्री को बहकाकर कुमार्ग पर ले जाना ।
कुटनापा-संज्ञा पुं० दे० "कुटनपन" ।
कुटनी-संज्ञा स्त्री० [सं० कुट्टनी] १. स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाली स्त्री । दूती । २. दो व्यक्तियों में झगड़ा करानेवाली ।
कुटवाना-क्रि० स० [हिं० कूटना का प्रे०] कूटने क्रिया की दूसरे से कराना ।

कुटाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना] १. कूटने का काम। २. कूटने की मजदूरी।
कुटास-संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना] मार पीट।
कुटिया-संज्ञा स्त्री० [सं० कुटी] झोपड़ी।
कुटिल-वि० [सं०] [स्त्री० कुटिला] १. वक्र। टेढ़ा। २. कुंचित। घूमा या बल खाया हुआ। ३. छल्लेदार। घुँघराला। ४. दगाबाज। कपटी। छली।
संज्ञा पुं० [सं०] १. शठ। खल। २. वह जिसका रंग पीलापन लिए सफेद और आँखें लाल हों। ३. चौदह अक्षरों का *एक वर्ण-वृत्त।*
कुटिलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़ापन। २. खोटाई। छल। कपट।
कुटिलपन-संज्ञा पु० दे० "कुटिलता"।
कुटिला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती नदी। २. एक प्राचीन लिपि।
कुटिलाई*-संज्ञा स्त्री० दे० "कुटिलता"।
कुटी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घास फूस से बनाया हुआ छोटा घर। पर्णशाला। कुटिया। झोपड़ी। २. *मुरा नामक गंध-द्रव्य।* ३. श्वेत कुटज।
कुटीचक-संज्ञा पु० [सं०] चार प्रकार के संन्यासियों में से पहला जो शिखा-सूत्र त्याग नहीं करता।
कुटीचर-संज्ञा पु० दे० "कुटीचक"।
संज्ञा पु० [सं० कुचर] कपटी। छली।
कुटीर-संज्ञा पु० दे० "कुटी"।
कुटुंब-संज्ञा पु० [सं०] परिवार। कुनबा। खानदान।
कुटुंबी-संज्ञा पु० [सं० कुटुंबिन्] [स्त्री० कुटुंबिनी] १. परिवारवाला। कुनबेवाला। २. कुटुंब के लोग। संबंधी। नातेदार।
कुटुम*†-संज्ञा पु० दे० "कुटुंब"।
कुटेक-संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० टेक] अनुचित हठ। बुरी जिद।
कुटेव-संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० टेव] खराब आदत। बुरी बान।
कुट्टनी-संज्ञा स्त्री० दे० "कुटनी"।
कुट्टमित-संज्ञा पु० [सं०] संयोग के समय में स्त्रियों की मिथ्या दु:ख-चेष्टा जो हावों में है।
कुट्टा-संज्ञा पु० [हिं० काटना] १. पर-कटा कबूतर। २. पैर बाँधकर जाल में छोड़ा हुआ पक्षी जिसे देखकर और पक्षी आकर फँसते हैं।
कुट्टी-संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना] १. चारे को छोटे छोटे टुकड़ों में काटने की क्रिया। २. गँडासे से बारीक काटा हुआ चारा। ३. कूटा और सड़ाया हुआ कागज़ जिससे कलमदान इत्यादि बनते हैं। ४. लड़कों का एक शब्द जिसका प्रयोग वे मित्रता तोड़ने के समय दाँतों पर नाखून बुलाकर करते हैं। मैत्री-भंग। ५. परकटा कबूतर।
कुठला-संज्ञा पु० [सं० कोष्ठ, प्रा० कोट्ठ + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० कुठली] अनाज *रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।*
कुठाँउँ-संज्ञा स्त्री० दे० "कुठाँव"।
कुठाँव*†-संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० ठाँव] बुरी ठौर। बुरी जगह।
मुहा०—कुठाँव मारना = ऐसे स्थान पर मारना जहाँ बहुत कष्ट या दुर्गति हो।
कुठाट- संज्ञा पु० [सं० कु + हिं० ठाट] १. बुरा साज। बुरा सामान। २. बुरा प्रबंध। बुरा आयोजन। ३. खराब काम करने की *बंदिश या तैयारी।*
कुठार-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कुठारी] १. कुल्हाड़ी। २. परशु। फरसा। ३. नाश करनेवाला।
कुठाराघात-संज्ञा पु० [सं०] १. कुल्हाड़ी का आघात। २. गहरी चोट।
कुठारी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुल्हाड़ी। टाँगी। २. नाश करनेवाला।
कुठाली-संज्ञा स्त्री० [सं० कु + स्थाली] मिट्टी *की घरिया जिसमें सोना चाँदी गलाते हैं।*
कुठाहर*-संज्ञा पु० [सं० कु + हिं० ठाहर] १. कुठौर। कुठाँव। बुरा स्थान। २. बे-मौका। बुरा अवसर।
कुठौर-संज्ञा पु० [सं० कु + हिं० ठौर] १. कुठाँव। बुरी जगह। २. बे-मौका।
कुड़-संज्ञा पु० [सं० कुष्ठ, प्रा० कुट्ठ] कुट नाम की ओषधि।
कुड़कुड़ाना-क्रि० अ० [अनु०] मन ही *मन कुढ़ना। कुड़बुड़ाना।*
कुड़कुड़ी-संज्ञा स्त्री० [अनु०] भूख या अजीर्ण से होनेवाली पेट की गुड़गुड़ाहट।
मुहा०—कुड़कुड़ी होना = किसी बात के जानने के लिये आकुलता होना।
कुड़बुड़ाना-क्रि० अ० [अनु०] मन ही मन कुढ़ना। कुड़कुड़ाना।

कुड़ल-संज्ञा स्त्री० [सं० कुंचन] शरीर में ऐंठन की पीड़ा जो रक्त की कमी या उसके ठंढे पड़ने से होती है। तशन्नुज।

कुड़व-संज्ञा पुं० [सं०] अन्न नापने का एक पुराना मान जो चार अंगुल चौड़ा और उतना ही गहरा होता था।

कुड़ा-संज्ञा पुं० [सं० कुटज] इंद्रजौ का वृक्ष।

कुड़ुक-संज्ञा स्त्री० [फा० कुर्क] १. अंडा न देनेवाली मुरगी। २. व्यर्थ। खाली।

कुडौल-वि० [सं० कु+हिं० डौल] बे-डंगा। भद्दा।

कुढंग-संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० ढंग] बुरा ढंग। कुचाल। बुरी रीति।

वि० १. बुरे ढंग का। बेढंगा। भद्दा। बुरा। २. बुरी तरह का। बद-वज़ा। कुढंगा।

कुढंगा-वि० [हिं० कुढंग] [स्त्री० कुढंगी] १. बेशऊर। उजड्ड। २. बेढंगा। भद्दा।

कुढंगी-वि० [हिं० कुढंग] कुमार्गी। बुरे चाल-चलन का।

कुढ़न-संज्ञा स्त्री० [सं० क्रुद्ध] वह क्रोध या दुःख जो मन ही मन रहे। चिढ़।

कुढ़ना-क्रि० अ० [सं० क्रुद्ध] १. भीतर ही भीतर क्रोध करना। मन ही मन खीझना या चिढ़ना। बुरा मानना। २. डाह करना। जलना। ३. भीतर ही भीतर दुःखी होना। मसोसना।

कुढव-वि० [सं० कु+हिं० ढव] १. बुरे ढंग का। बेढब। २. कठिन। दुस्तर।

कुढ़ाना-क्रि० स० [हिं० कुढ़ना] १. क्रोध दिलाना। चिढ़ाना। खिझाना। २. दुःखी करना। कलपना।

कुणप-संज्ञा पुं० [सं०] १. शव। लाश। २. ईंगुदी। गोंदी। ३. रांगा। ४. बरछा।

कुणपाशी-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का प्रेत जो मुर्दा खाता है। २. मुर्दा खाने-वाला जंतु।

कुतका-संज्ञा पुं० [हिं० गतका] १. गतका। २. मोटा डंडा। सोटा। ३. भाँग घोटने का डंडा। भँग-घोटना।

कुतना-क्रि० अ० [हिं० कूतना] कूतने का कार्य होना। कूता जाना।

कुतप-संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन का आठवाँ मुहूर्त जो मध्याह्न-समय में होता है। २. श्राद्ध में आवश्यक वस्तुएँ जैसे—मध्याह्न, गैंडे के चमड़े का पात्र, कुश, तिल आदि। ३. सूर्य। ४. अग्नि। ५. द्विज।

कुतरना-क्रि० स० [सं० कर्तन] १. दाँत से छोटा सा टुकड़ा काट लेना। २. बीच ही में से कुछ अंश उड़ा लेना।

कुतर्क-संज्ञा पुं० [सं०] बुरा तर्क। बेढंगी दलील। वितंडा।

कुतर्की-संज्ञा पुं० [सं० कुतर्किन्] व्यर्थ तर्क करनेवाला। बकवादी। वितंडावादी।

कुतवार-संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

कुतवाल-संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

कुतिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुत्ती] कुत्ते की मादा। कूकरी। कुत्ती।

कुतुब-संज्ञा पुं० [अ०] ध्रुव तारा।

कुतुबनुमा-संज्ञा पुं० [अ०] वह यंत्र जिस से दिशा का ज्ञान होता है। दिग्दर्शक यंत्र।

कुतूहल-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुतूहली] १. किसी वस्तु के देखने या किसी बात के सुनने की प्रबल इच्छा। विनोदपूर्ण उत्कंठा। २. वह वस्तु जिसके देखने की इच्छा हो। कौतुक। ३. क्रीड़ा। खिल-वाड़। ४. आश्चर्य। अचंभा।

कुतूहली-वि० [सं० कुतूहलिन्] १. जिसे वस्तुओं को देखने या जानने की अधिक उत्कंठा हो। २. कौतुकी। खिलवाड़ी।

कुत्ता-संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० कुत्ती] १. भेड़िए, गीदड़, लोमड़ी आदि की जाति का एक पशु जो घर की रक्षा के लिये पाला जाता है। श्वान। कूकुर।

यौ०—कुत्ते-खसी = व्यर्थ और तुच्छ कार्य।

मुहा०—क्या कुत्ते ने काटा है ? = क्या पागल हुए हैं ? कुत्ते की मौत मरना = बहुत बुरी तरह से मरना। कुत्ते का दिमाग होना या कुत्ते का भेजा खाना = बहुत अधिक बक-वाद करने की शक्ति होना।

२. एक प्रकार की घास जिसकी बालें कपड़ों में लिपट जाती हैं। लपटौवाँ। ३. कल का वह पुरजा जो किसी चक्कर को उलटा या पीछे की ओर घूमने से रोकता है। ४. लकड़ी का एक छोटा चौकोर टुकड़ा जिसके नीचे गिरा देने पर दरवाज़ा नहीं खुल सकता। बिल्ली। ५. बंदूक का घोड़ा। ६. नीच या तुच्छ मनुष्य। क्षुद्र।

कुत्सा-संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा।

कुत्सित-वि० [सं०] १. नीच। अधम। २. निंदित। गर्हित। खराब।

कुदकना–क्रि० अ० दे० "कूदना"।
कुदका†–संज्ञा पुं० [हिं० कूदना] उछल-कूद।
कुदरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ शक्ति। प्रभुत्व। इख्तियार। २. प्रकृति। माया। ईश्वरी शक्ति। ३ कारीगरी। रचना।
कुदरती–वि० [अ०] १. प्राकृतिक। स्वाभाविक। २ दैवी। ईश्वरीय।
कुदर्शन–वि० [सं०] कुरूप। बदसूरत।
कुदलाना–क्रि० अ० [हिं० कूदना] कूदते हुए चलना। उछलना। कूदना।
कुदाँव–संज्ञा पुं० [सं० कु + हिं० दाँव] १ बुरा दाँव। कुघात। २. विश्वासघात। दगा। धोखा। †३. औचट। बुरी स्थिति। संकट की स्थिति। ४ बुरा स्थान। विकट स्थान। ५ मर्मस्थान।
कुदाई–वि० [हिं० कुदाँव] बुरे ढंग से दाँव घात करनेवाला। छली। विश्वासघाती।
कुदान–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा दान (लेनेवाले के लिए)। जैसे—शय्यादान, गजदान आदि। २ कुपात्र या अयोग्य आदि को दिया जानेवाला दान।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कूदना] १. कूदने की क्रिया या भाव। २ बहुत पहुँचकर कहना। ३. उतनी दूरी जितनी एक बार कूदने में पार की जाय।
कुदाना–क्रि० स० [हिं० कूदना] कूदने का प्रेरणार्थक रूप। कूदने में प्रवृत्त करना।
कुदाम*–संज्ञा पुं० [सं० कु + हिं० दाम] खोटा सिक्का। खोटा रुपया।
कुदाय–संज्ञा पुं० दे० "कुदाँव"।
कुदाल–संज्ञा स्त्री० [सं० कुद्दाल] [स्त्री० अल्पा० कुदाली] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औजार।
कुदिन–संज्ञा पुं० [सं०] १ आपत्ति का समय। खराब दिन। २ एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक का समय। सायन दिन। ३ वह दिन जिसमें ऋतु विरुद्ध या कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों।
कुदिष्टि–संज्ञा स्त्री० दे० "कुदृष्टि"।
कुदृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी नजर। पापदृष्टि। बद-निगाह।
कुदेव–संज्ञा पुं० [सं० कु = भूमि + देव] भूदेव। भूसुर। ब्राह्मण।
संज्ञा पुं० [सं० कु = बुरा + देव] राक्षस।
कुद्रव–संज्ञा पुं० [सं०] कोदो (अन्न)।
संज्ञा पुं० [देश०] तलवार चलाने के ३२ हाथों या प्रकारों में से एक।
कुधर–संज्ञा पुं० [सं० कुध्र] १. पहाड़। पर्वत। २. शेषनाग।
कुधातु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी धातु। २. लोहा।
कुनकुना–वि० [सं० कदुष्ण] आधा गरम। कुछ गरम। गुनगुना।
कुनप–संज्ञा पुं० दे० "कुणप"।
कुनबा–संज्ञा पुं० [सं० कुटुंब] कुटुंब।
कुनबी–संज्ञा पुं० [सं० कुटुंब] हिंदुओं की एक जाति जो प्रायः खेती करती है। कुरमी। गृहस्थ।
कुनवा–संज्ञा पुं० [हिं० कुनना] बर्तन आदि खरादनेवाला मनुष्य। खरादी।
कुनह–संज्ञा स्त्री० [फा० कीन] [वि० कुनही] १ द्वेष। मनोमालिन्य। २. पुराना वैर।
कुनही–वि० [हिं० कुनह] द्वेष रखनेवाला।
कुनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुनना] १. वह चूर या बुकनी जो किसी वस्तु को खरादने या खुरचने पर निकलती है। बुरादा। २. खरादने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
कुनाम–संज्ञा पुं० [सं०] बदनामी।
कुनित–वि० दे० "क्वणित"।
कुनैन–संज्ञा स्त्री० [अ० किनिन] सिंकोना नामक पेड़ की छाल का सत जो अँगरेजी चिकित्सा में ज्वर के लिये अत्यंत उपकारी माना जाता है।
कुपथ–संज्ञा पुं० [सं० कुपथ] १ बुरा मार्ग। २. निषिद्ध आचरण। कुचाल। ३ बुरा मत। कुत्सित सिद्धांत या संप्रदाय।
कुपथी–वि० [हिं० कुपथ] बुरे आचरण वाला। कुमार्गी।
कुपढ़–वि० [सं० कु + हिं० पढ़ना] अनपढ़।
कुपथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा रास्ता। २ निषिद्ध आचरण। बुरी चाल।
यौ०—कुपथगामी = निषिद्ध आचरणवाला।
संज्ञा पुं० (सं०कुपथ्य) वह भोजन जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो।
कुपथ्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह आहार विहार जो स्वास्थ्य को हानिकारक हो। बदपरहेजी।
कुपना–क्रि० अ० दे० "कोपना"।
कुपाठ–संज्ञा पुं० [सं०] बुरी सलाह।

कुपात्र-वि० [सं०] १. अनधिकारी। अयोग्य। नालायक। २. वह जिसे दान देना शास्त्रों में निषिद्ध हो।
कुपार-संज्ञा पु० [सं० अकूपार] समुद्र।
कुपित-वि० [सं०] १. क्रुद्ध। क्रोधित। २. अप्रसन्न। नाराज़।
कुपुत्र-संज्ञा पु० [सं०] वह पुत्र जो कुपथ-गामी हो। कपूत। दुष्ट पुत्र।
कुप्पा-संज्ञा पु० [सं० कूपक या कुतुप] [स्त्री० अल्पा० कुप्पी] चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का बरतन जिसमें घी, तेल आदि रखे जाते हैं।
मुहा०—कुप्पा होना या हो जाना = १. फूल जाना। सूजना। २. मोटा होना। हृष्ट पुष्ट होना। ३. रूठना। मुँह फुलाना।
कुप्पी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुप्पा] छोटा कुप्पा।
कुफर †-संज्ञा पु० दे० "कुफ्र"।
कुफेन-संज्ञा स्त्री० [सं०] काबुल नदी का पुराना नाम।
कुफ्र-संज्ञा पु० [अ०] १. मुसलमानी मत से भिन्न अन्य मत। २. मुसलमानी धर्म के विरुद्ध बात।
कुबंड-संज्ञा पु० [सं० कोदंड] धनुष।
वि० [कु + बंड = रुंज] खोंड़ा। विकृतांग।
कुबजा-संज्ञा स्त्री० दे० "कुब्जा" या "कुबरी"।
कुबड़ा-संज्ञा पु० [सं० कुब्ज] [स्त्री० कुबड़ी] वह पुरुष जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई या झुक गई हो।
वि० १. झुका हुआ। टेढ़ा। २. जिसकी पीठ झुकी हो।
कुबड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुबड़ा] १. दे० "कुबरी"। २. वह छड़ी जिसका सिरा झुका हुआ हो। टेढ़िया।
कुबत †-संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० बात] १. बुरी बात। २. निंदा। ३ बुरी चाल।
कुबरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुबड़ा] १. कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचन्द्र पर अधिक प्रेम रखती थी। कुब्जा। २. वह छड़ी जिसका सिरा झुका हो। टेढ़िया।
कुबाक-संज्ञा पु० दे० "कुवाक्य"।
कुबानि-संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० बानि] बुरी आदत। बुरी लत। कुटेव।
कुबानी-संज्ञा पु० [सं० कुवाणिज्य] बुरा व्यापार।
कुबुद्धि-वि० [सं०] दुर्बुद्धि। मूर्ख।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मूर्खता। बेवकूफ़ी। २. बुरी सलाह। कुमंत्रणा।
कुबेला-संज्ञा स्त्री० [सं० कुवेला] बुरा समय। अनुपयुक्त काल।
कुब्ज-वि० [सं०] [स्त्री० कुब्जा] जिसकी पीठ टेढ़ी हो। कुबड़ा।
संज्ञा पु० [सं०] एक वायु रोग जिसमें छाती या पीठ टेढ़ी होकर ऊँची हो जाती है।
कुब्जा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचंद्र से प्रेम रखती थी। कुबरी। २ कैकेयी की मंथरा नाम की एक दासी।
कुब्बा-संज्ञा पु० दे० "कूबड़"।
कुभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी की छाया। २. बुरी दीप्ति। ३ काबुल नदी।
कुमटी -संज्ञा स्त्री०[सं० कमठ = बाँस] पतली लचीली टहनी।
कुमक-संज्ञा स्त्री० [तु०] १. सहायता। मदद। २. पक्षपात। हिमायत। तरफ़दारी।
कुमकी-वि० [तु० कुमक] कुमक का। कुमक से संबंध रखनेवाला।
संज्ञा स्त्री० हाथियों के पकड़ने में सहायता करने के लिये सिखाई हुई हथनी।
कुमकुम-संज्ञा पु० [सं० कुंकुम] १. केसर। २. कुमकुमा।
कुमकुमा-संज्ञा पु० [तु० कुमकुम] १. लाख का बना हुआ एक प्रकार का पोला गोला जिसमें अबीर और गुलाल भरकर होली में लोग एक दूसरे पर मारते हैं। २. एक प्रकार का तंग मुँह का छोटा लोटा। ३ काँच के बने हुए पोले छोटे गोले।
कुमरिया-संज्ञा पु० [?] हाथियों की एक जाति।
कुमरी-संज्ञा स्त्री० [अ०] पंडुक की जाति की एक चिड़िया।
कुमाच-संज्ञा पु० [अ० कुमाश] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।
कुमार-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कुमारी] १. पाँच वर्ष की अवस्था का बालक। २. पुत्र। बेटा। ३. युवराज। ४. कार्तिकेय। ५. सिंधु नद। ६. तोता। सुग्गा। ७. खरा सोना। ८. सनक, सनंदन, सनत् और सुजात आदि कई ऋषि जो सदा बालक

ही रहते हैं। ९. युवावस्था या उससे पहले की अवस्थावाला पुरुष। १०. एक ग्रह जिसका उपद्रव बालकों पर होता है।
वि० [सं०] बिना ब्याहा। कुँआरा।

कुमारग—संज्ञा पुं० दे० "कुमार्ग"।

कुमारतंत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक का वह भाग जिसमें बच्चों के रोगों का निदान और चिकित्सा हो। बालतंत्र।

कुमारबाज—संज्ञा पुं० [अ० क़िमार+फा० बाज] जुआरी। जुआ खेलनेवाला।

कुमारभृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या। २. गर्भिणी या नवप्रसूत बालकों के रोगों की चिकित्सा।

कुमारललिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात अक्षरों का एक वृत्त।

कुमारलसिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ अक्षरों का एक वृत्त।

कुमारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुमारी।

कुमारिल भट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मीमांसक जिन्होंने जैनों और बौद्धों को परास्त करने में योग दिया था।

कुमारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या। २. घीकुँवार। ३. नवमल्लिका। ४. बड़ी इलायची। ५. सीताजी का एक नाम। ६. पार्वती। ७. दुर्गा। ८. एक अंतरीप, जो भारतवर्ष के दक्खिन में है। ९. पृथिवी का मध्य।
वि० स्त्री० बिना ब्याही।

कुमारीपूजन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की देवी पूजा जिसमें कुमारी बालिकाओं का पूजन किया जाता है।

कुमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुमार्गी] १. बुरा मार्ग। बुरी राह। २. अधर्म।

कुमार्गी—वि० [सं० कुमार्गिन्] [स्त्री० कुमार्गिनी] १. बदचलन। कुचाली। २. अधर्मी। धर्महीन।

कुमुख—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० कुमुखी] जिसका चेहरा देखने में अच्छा न हो।

कुमुद—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुईं। कोका। २. लाल कमल। ३. चाँदी। ४. विष्णु। ५. एक बंदर जो राम-रावण के युद्ध में लड़ा था। ६. कपूर। ७. दक्षिण-पश्चिम कोण का दिग्गज।

कुमुदबंधु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

कुमुदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुईं। कोईं।

कुमुदिनीपति—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

कुमेरु संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिणी ध्रुव।

कुमोद—संज्ञा पुं० दे० "कुमुद"।

कुमोदिनी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

कुम्मैत—संज्ञा पुं० [तु० कुमेत] १ घोड़े का एक रंग, जो स्याही लिए लाल होता है। लाखी। २. इस रंग का घोड़ा।
यौ०—आठों गाँठ कुम्मैत = अत्यंत चतुर। छँटा हुआ। चालाक। धूर्त।

कुम्मैद—संज्ञा पुं० दे० "कुम्मैत"।

कुम्हड़ा—संज्ञा पुं० [सं० कूष्मांड] एक फैलनेवाली बेल जिसके फलों की तरकारी होती है।
मुहा०—कुम्हड़े की बतिया = १ कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल। २. अशक्त और निर्बल मनुष्य।

कुम्हड़ौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा = बरी] एक प्रकार की बरी जो पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई जाती है। बरी।

कुम्हलाना—क्रि० अ० [सं० कु + म्लान] १. पौधे की ताजगी का जाता रहना। मुरझाना। २. सूखने पर होना। ३. कांति का मलिन पड़ना। प्रभाहीन होना।

कुम्हार—संज्ञा पुं० [सं० कुम्भकार] [स्त्री० कुम्हारिन] मिट्टी के बरतन बनानेवाला।

कुम्ही—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंभी] जलकुंभी।

कुरंग—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुरंगी] १. बादामी या तामड़े रंग का हिरन। २. मृग। हिरन। ३. बरवै छंद।
संज्ञा पुं० [सं० कु + हिं० रंग] १. बुरा रंग ढंग। बुरा लक्षण। २. घोड़े का एक रंग जो लाह के समान होता है। नीला। कुम्मैत। लखौरी। ३ इस रंग का घोड़ा।
वि० बुरे रंग का। बदरंग।

कुरंगिन—संज्ञा स्त्री० [सं० कुरंग] हिरनी।

कुरंटक—संज्ञा पुं० [सं०] पीली कटसरैया।

कुरंड—संज्ञा पुं० [सं० कुरुविंद] एक खनिज पदार्थ। जिसके चूर्ण को लाख में मिलाकर हथियार तेज करने के सान बनाते हैं।

कुरकी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुर्की"।

कुरकुर—संज्ञा पुं० [अनु०] दबकर टूटने का शब्द।

कुरकुरा—वि० [हिं० ...

रारा और करारा जिसे तोड़ने पर कुरकुर शब्द हो।

कुरकुरी-संज्ञा स्त्री० [अनु०] पतली मुलायम हड्डी। जैसे, कान की।

कुरता-संज्ञा पु० [तु०] [स्त्री० कुरती] एक पहनावा जो सिर डालकर पहना जाता है।

कुरना† -क्रि० अ० दे० "कुरलना"।

कुरवान-वि० [अ०] जो निछावर या बलिदान किया गया हो।

मुहा०—कुरबान जाना = निछावर होना। बलि जाना।

कुरबानी-संज्ञा स्त्री० [अ०] बलिदान।

कुरर-संज्ञा पु० [सं०] १. गिद्ध की जाति का एक पक्षी। २. कराँकुल। क्रौंच।

कुररा-संज्ञा पु० [सं० कुरर] [स्त्री० कुररी] १. कराँकुल। क्रौंच। २. टिटिहरी।

कुररी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आर्य्या छंद का एक भेद। २. 'कुररा' का स्त्रीलिंग।

कुरलना-क्रि० अ० [सं० कलरव] मधुर स्वर से पक्षियों का बोलना।

कुरव-वि० [सं०] बुरी बोली बोलनेवाला।

कुरवना-क्रि० स० [हिं० कूरा] ढेर लगाना। राशि लगाना। एकबारगी बहुत सा रखना।

कुरवंद-संज्ञा पु० दे० "कुरुविंद"।

कुरसी-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमें पीछे की ओर सहारे के लिये पटरी लगी रहती है।

यौ०—आराम-कुरसी = एक प्रकार की बड़ी कुरसी जिस पर आदमी लेट सकता है।

२. वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनाई जाती है। ३ पीढ़ी। पुश्त।

कुरसीनामा-संज्ञा पु० [फा०] लिखी हुई वंश परंपरा। वंशवृक्ष। शजरा। पुश्तनामा।

कुरा-संज्ञा पु० [अ० कुरह] वह गाँठ जो पुराने जख्म में पड़ जाती है।

संज्ञा पु० [सं० कुरव] कटसरैया।

कुराइ॥-संज्ञा स्त्री० दे० "कुराय"

कुरान-संज्ञा पु० [अ०] अरबी भाषा की एक पुस्तक जो मुसलमानों का धर्मग्रंथ है।

कुराय॥-संज्ञा स्त्री० [सं० कु + फा० राह] पानी से पोली जमीन में पड़ा हुआ गड्ढा। -संज्ञा स्त्री० [सं० कु + फा० राह] [वि० कुराही] १. कुमार्ग। बुरी राह। २. बुरी चाल। खोटा आचरण।

कुराहर॥-संज्ञा पु० दे० "कोलाहल"।

कुराही-वि० [हिं० कुराह + ई (प्रत्य०)] कुमार्गी। बद-चलन।

संज्ञा स्त्री० बद-चलनी। दुराचार।

कुरिया†-संज्ञा स्त्री० [सं० कुटी] १ फूस की झोपड़ी। कुटी। २ बहुत छोटा गाँव।

कुरियाल-संज्ञा स्त्री० [सं० कल्लोल] चिड़ियों का मौज में बैठकर पंख खुजलाना।

मुहा०—कुरियाल में आना = १ चिड़ियों का आनंद में होना। २. मौज में आना।

कुरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कूरा] मिट्टी का छोटा धुस या टीला।

संज्ञा स्त्री० [सं० कुल] वंश। घराना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कूरा] खंड। टुकड़ा।

कुरीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी रीति। कुप्रथा। २. कुचाल।

कुरु-संज्ञा पु० [सं०] १. वैदिक आर्यों का एक कुल। २. हिमालय के उत्तर और दक्षिण का एक प्रदेश। ३. एक सोमवंशी राजा जिसके वंश में पांडु और धृतराष्ट्र हुए थे। ४. कुरु के वंश में उत्पन्न पुरुष।

कुरुई-संज्ञा स्त्री० [सं० कुटव] बाँस या मूँज की बुनी हुई छोटी डलिया। मौनी।

कुरुक्षेत्र-संज्ञा पु० [सं०] एक बहुत प्राचीन तीर्थ जो अंबाले और दिल्ली के बीच में है। महाभारत का युद्ध यहीं हुआ था।

कुरुखेत†-संज्ञा पु० दे० "कुरुक्षेत्र"।

कुरुख-वि० [सं० कु + फा० रुख] जिसके चेहरे से अप्रसन्नता झलकती हो। नाराज।

कुरुजांगल-संज्ञा पु० [सं०] पांचाल देश के पश्चिम का एक देश।

कुरुम॥-संज्ञा पु० दे० "कूर्म्म"।

कुरुविंद-संज्ञा पु० [सं०] १. मोथा। २. काच लवण। ३ उरद। ४. दर्पण।

कुरूप-वि० [सं०] [स्त्री० कुरूपा] बुरी शकल का। बदसूरत। बेडौल। बेढंगा।

कुरूपता-संज्ञा स्त्री० [सं०] बदसूरती।

कुरेदना-क्रि० स० [सं० कर्त्तन] १ खुरचना। खरोचना। करोदना। खोदना। २. राशि या ढेर को इधर-उधर चलाना।

कुरेर†-संज्ञा स्त्री० दे० "कुलेल"।

कुरेलना-क्रि० स० दे० "कुरेदना"।

कुरैया-संज्ञा स्त्री० [सं० कुटज] सुंदर फूलों

वाला एक जंगली पेड़ जिसके बीज "इंद्र-जौ" कहलाते हैं।
कुरौना†-क्रि० स० [हिं० कूरा=ढेर] ढेर लगाना। कूरा लगाना।
कुर्क-वि० [तु० कुर्क] [संज्ञा कुर्की] ज़ब्त।
कुर्क-अमीन-संज्ञा पुं० [तु० कुर्क+फा० अमीन] वह सरकारी कर्मचारी जो अदालत के आज्ञानुसार जायदाद की कुर्की करता है।
कुर्की-संज्ञा स्त्री० [तु० कुर्क+ई० (प्रत्य०)] क़र्ज़दार या अपराधी की जायदाद का ऋण या जुरमाने की वसूली के लिये सरकार द्वारा ज़ब्त किया जाना।
कुर्मी-संज्ञा पुं० दे० "कुनबी"।
कुर्रा-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. हेगा। पटरा। २. कुरकुरी हड्डी। ३. गोल टिकिया।
कुलंग-संज्ञा पुं० [फा०] १. एक पक्षी जिसका सिर लाल और बाकी शरीर मटमैले रंग का होता है। २. मुर्गा। कुक्कुट।
कुलंजन-संज्ञा पुं० [सं०] १. अदरक की तरह का एक पौधा जिसकी जड़ गरम और दीपन होती है। २. पान की जड़।
कुल-संज्ञा पुं० [सं०] १. वंश। घराना। खानदान। २. जाति। ३. समूह। समुदाय। झुंड। ४. घर। मकान। ५. वाममार्ग। कौल धर्म। ६. व्यापारियों का संघ। वि० [अ०] समस्त। सब। सारा।
यौ०—कुल जमा=१. सब मिलाकर। २. केवल। मात्र।
कुलकना-क्रि० अ० [हिं० किलकना] आनंदित होना। खुशी से उछलना।
कुलकलंक-संज्ञा पुं० [सं०] अपने वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला।
कुलकानि-संज्ञा स्त्री० [सं० कुल+हिं० कान=मर्य्यादा] कुल की मर्यादा। कुल की लज्जा।
कुलकुलाना-क्रि० अ० [अनु०] कुल कुल शब्द करना।
मुहा०—आँतें कुलकुलाना=भूख लगना।
कुलक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुलक्षणी] १. बुरा लक्षण। २. कुचाल। बदचलनी। वि० [सं०] [स्त्री० कुलक्षणा] १. बुरे लक्षणवाला। २. दुराचारी।
कुलच्छन-संज्ञा पुं० दे० "कुलक्षण"।
कुलच्छनी-संज्ञा स्त्री० दे० "कुलक्षणी"।
कुलट-वि० पुं० [सं०] [स्त्री० कुलटा] १. बहुत स्त्रियों से प्रेम रखनेवाला। व्यभिचारी। बदचलन। २ औरस के अतिरिक्त और प्रकार का पुत्र। जैसे, क्षेत्रज, दत्तक।
कुलटा-वि० स्त्री० [सं०] बहुत पुरुषों से प्रेम रखनेवाली। छिनाल। (स्त्री) संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो बहुत पुरुषों से प्रेम रखती हो।
कुलतारन-वि० [सं० कुल+हिं० तारना] [स्त्री० कुलतारनी] कुल को तारनेवाला।
कुलथी-संज्ञा स्त्री० [सं० कुलत्थ या कुलत्थिका] एक प्रकार का मोटा अन्न।
कुलदेव-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुलदेवी] वह देवता जिसकी पूजा किसी कुल में परंपरा से होती आई हो। कुलदेवता।
कुलदेवता-संज्ञा पुं० दे० "कुलदेव"।
कुलधर्म-संज्ञा पुं० [सं०] कुल-परंपरा से चला आता हुआ कर्त्तव्य।
कुलना-क्रि० अ० [हिं० कल्लाना] टीस मारना। दर्द करना।
कुलपति-संज्ञा पुं० [सं०] १. घर का मालिक। २. वह अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे। ३ वह ऋषि जो दस हज़ार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा दे।
कुलपूज्य-वि० [सं०] जिसका मान कुल-परंपरा से होता आया हो। कुल का पूज्य।
कुलफ†-संज्ञा पुं० [अ० क़ुफ़्ल] ताला।
कुलफत-संज्ञा स्त्री० [अ०] मानसिक दुःख। चिंता।
कुलफा-संज्ञा पुं० [फा० खुर्फ़ा] एक साग। बड़ी जाति की अमलोनी।
कुलफी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुलफ] १. पेंच। २. टीन आदि का चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बर्फ़ जमाते हैं। ३. उपर्युक्त प्रकार से जमा हुआ दूध, मलाई या कोई शर्बत।
कुलबुल-संज्ञा पुं० [अनु०] [संज्ञा कुलबुलाहट] छोटे छोटे जीवों के हिलने डोलने की आहट।
कुलबुलाना-क्रि० अ० [अनु० कुलबुल] १. बहुत से छोटे छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना डोलना। इधर-उधर रेंगना। २. चंचल होना। आकुल होना।
कुलबोरन†-वि० [हिं० ग

वंश की मर्य्यादा भ्रष्ट करनेवाला। कुल में दाग़ लगानेवाला।

कुलवधू-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलवती स्त्री मर्य्यादा से रहनेवाली स्त्री।

कुलवंत-वि० [सं०] [स्त्री० कुलवती] कुलीन।

कुलवान्-वि० [सं०] [स्त्री० कुलवती] कुलीन। अच्छे वंश का।

कुलह-संज्ञा स्त्री० [फा० कुलाह] १. टोपी। २. शिकारी चिड़ियों की आँखों पर का ढकन। अँधियारी।

कुलहा †-संज्ञा पुं० दे० "कुलह"।

कुलही-संज्ञा स्त्री० [फा० कुलाह] बच्चों के सिर पर देने की टोपी। कनटोप।

कुलांगार-संज्ञा पुं० [सं०] कुल का नाश करनेवाला। सत्यानाशी।

कुलाँच, कुलाँट -संज्ञा स्त्री० [तु० कुलाच] चौकड़ी। छलाँग। उछाल।

कुलाचल-संज्ञा पुं० दे० "कुलपर्वत"।

कुलाचार्य्य-संज्ञा पुं० [सं०] कुलगुरु।

कुलाबा-संज्ञा पुं० [अ०] १. लोहे का अंकुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा रहता है। पायजा। २. मोरी।

कुलाल-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुलाली] १. मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार। २. जंगली मुर्गा। ३. उल्लू।

कुलाह-संज्ञा पुं० [सं०] भूरे रंग का घोड़ा जिसके पैर गाँठ से सुमों तक काले हों। संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की टोपी जो अफ़ग़ानिस्तान में पहनी जाती है।

कुलाहल -संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल"।

कुलिंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का पक्षी। २. चिड़ा। गौरा। ३. पक्षी।

कुलिक-संज्ञा पुं० [सं०] १. शिल्पकार। दस्तकार। कारीगर। २. उत्तम वंश में उत्पन्न पुरुष। ३. कुल का प्रधान पुरुष।

कुलिश-संज्ञा पुं० [सं०] १. हीरा। २. वज्र। बिजली। गाज। ३. राम, कृष्णादि के चरणों का एक चिह्न। ४. कुठार।

कुली-संज्ञा पुं० [तु०] बोझ ढोनेवाला। मजदूर।

यौ०—कुली कबारी = छोटी जाति के लोग।

कुलीन-वि० [सं०] [संज्ञा कुलीनता] १. उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे घराने का। खानदानी। २. पवित्र। शुद्ध। साफ़।

कलुफ़ †-संज्ञा पुं० [अ० कुफ़्ल] ताला।

कुलू-संज्ञा पुं० [सं० कुलूत] काँगड़े के पास का देश।

कुलूत-संज्ञा पुं० [सं०] कुलू देश।

कुलेल-संज्ञा स्त्री० [सं० कल्लोल] क्रीड़ा। कलोल।

कुलेलना -क्रि० अ० [हिं० कुलेल] क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।

कुलमाष-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुलथी। २. उर्द। माष। ३. बोरो धान। ४. वह अन्न जिसमें दो भाग हों। द्विदल अन्न।

कुल्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कृत्रिम नदी। नहर। २. छोटी नदी। ३. नाली।

कुल्ला-संज्ञा पुं० [सं० कवल] [स्त्री० कुल्ली] मुँह को साफ़ करने के लिये उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया। गरारा। संज्ञा पुं० [?] १. घोड़े का एक रंग जिसमें पीठ की रीढ़ पर बराबर काली धारी होती है। २. इस रंग का घोड़ा। संज्ञा पुं० [फा० काकुल] ज़ुल्फ़। काकुल।

कुल्ली-संज्ञा स्त्री० दे० "कुल्ला"।

कुल्हड़-संज्ञा पुं० [सं० कुल्हर] [स्त्री० कुल्हिया] पुरवा। चुक्कड़।

कुल्हाड़ा-संज्ञा पुं० [सं० कुठार] [स्त्री० अल्पा० कुल्हाड़ी] एक औज़ार जिससे पेड़ काटते और लकड़ी चीरते हैं। कुठार।

कुल्हाड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुल्हाड़ा का स्त्री० अल्पा०] छोटा कुल्हाड़ा। कुठारी। टाँगी।

कुल्हिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० कुल्हड़] छोटा पुरवा या कुल्हड़। चुक्कड़।

मुहा०—कुल्हिया में गुड़ फोड़ना = इस प्रकार कोई कार्य्य करना जिसमें किसी को खबर न हो।

कुवलय-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुवलयिनी] १. नीली कोईं। कोका। २. नील कमल। ३. भूमंडल। ४. एक प्रकार के असुर।

कुवलयापीड़-संज्ञा पुं० [सं०] कंस का एक हाथी जिसे कृष्णचंद्र ने मारा था।

कुवलयाश्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. धुंधुमार राजा। २. ऋतुध्वज राजा। ३. एक घोड़ा जिसे, ऋषियों का यज्ञ विध्वंस करनेवाले पातालकेतु को मारने के लिये, सूर्य्य ने पृथिवी पर भेजा था।

कुवाच्य-वि० [सं०] जो कहने योग्य न हो। गंदा। बुरा। संज्ञा पुं० दुर्वचन। गाली।

कुधार—संज्ञा पुं० [सं० (अश्विनी)कुमार][वि० कुआरी] आश्विन का महीना। असोज।
कुविचार—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा विचार।
कुविचारी—वि० [सं० कुविचारिन्] [स्त्री० कुविचारिणी] बुरे विचारवाला।
कुबेर—संज्ञा पुं० [सं०] एक देवता जो यक्षों के राजा तथा इंद्र की नौ निधियों के भंडारी समझे जाते हैं।
कुश—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुशा, कुशी] १. काँस की तरह की एक घास जिसका यज्ञों में उपयोग होता था। २.जल। पानी। ३. रामचंद्र का एक पुत्र। ४. दे० "कुश-द्वीप"। ५. हल की फाल। कुसी।
कुशद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] सात द्वीपों में से एक जो चारों ओर घृत-समुद्र से घिरा है।
कुशध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] सीरध्वज। जनक के छोटे भाई जिनकी कन्याएँ भरत और शत्रुघ्न को ब्याही थीं।
कुशल—वि० [सं०] [स्त्री० कुशला] १. चतुर। दक्ष। प्रवीण। २. श्रेष्ठ। अच्छा। भला। ३. पुण्यशील ४. क्षेम। मंगल। खैरियत। राज़ी खुशी।
कुशल क्षेम—संज्ञा पुं० [सं०] राज़ी-खुशी। खैर-आफियत।
कुशलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चतुराई। चालाकी। २. योग्यता। प्रवीणता।
कुशलाई, कुशलात*—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुशल] कल्याण। क्षेम। खैरियत।
कुशा—संज्ञा स्त्री० दे० "कुश" (१)।
कुशाग्र—वि० [सं०] कुश की नोक की तरह तीखा। तीव्र। तेज़। जैसे—कुशाग्र बुद्धि।
कुशादा—वि० [फा०] [संज्ञा कुशादगी] १. खुला हुआ। २. विस्तृत। लंबा-चौड़ा।
कुशासन—संज्ञा पुं० [सं० कुश+आसन] कुश का बना हुआ आसन।
कुशिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन आर्य वंश। विश्वामित्र जो इसी वंश के थे। २. एक राजा जो विश्वामित्र के पिता-मह और गाधि के पिता थे। ३. फाल।
कुशीद—संज्ञा पुं० दे० "कुसीद"।
कुशीनार—संज्ञा पुं० [सं० कुशनगर] वह स्थान जहाँ साल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध का निर्वाण हुआ था।
कुशीलव—संज्ञा पुं० [सं०] १. कवि। चारण। २. नाटक खेलनेवाला। नट। ३. गवैया। ४. वाल्मीकि ऋषि।
कुशूलधान्यक—संज्ञा पुं० [सं०] वह गृहस्थ जिसके पास तीन वर्ष तक के लिये खाने भरको अन्न संचित हो।
कुश्ता—संज्ञा पुं० [फा०] वह भस्म जो धातुओं को रासायनिक क्रिया से फूँककर बनाया जाय। भस्म।
कुश्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] दो आदमियों का परस्पर एक दूसरे को बलपूर्वक पछाड़ने या पटकने के लिये लड़ना। मल्ल युद्ध। पकड़।
मुहा०—कुश्ती मारना = कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना। कुश्ती खाना = कुश्ती में हार जाना।
कुश्तीबाज़—वि० [फा०] कुश्ती लड़ने-वाला। लड़ंता। पहलवान।
कुष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोढ़। २. कुट नामक ओषधि। ३. कुड़ा नामक वृक्ष।
कुष्ठी—संज्ञा पुं० [सं० कुष्ठिन्] [स्त्री० कुष्ठिनी] वह जिसे कोढ़ हुआ हो। कोढ़ी।
कुष्मांड—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुम्हड़ा। २. एक प्रकार के देवता जो शिव के अनुचर हैं।
कुसंग—संज्ञा पुं० दे० "कुसंगति"।
कुसंगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरों का संग। बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना।
कुसंस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] चित्त में बुरी बातों का जमना। बुरी वासना।
कुसगुन—संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० सगुन] बुरा सगुन। असगुन। कुलक्षण।
कुसमय—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा समय। २. वह समय जो किसी कार्य के लिये ठीक न हो। अनुपयुक्त अवसर। ३. नियत से आगे या पीछे का समय। ४. संकट का समय। दुःख के दिन।
कुसल*†—वि० दे० "कुशल"।
कुसलई*—संज्ञा स्त्री० [सं० कुशल+ई (प्रत्य०) निपुणता। चतुराई।
कुसलाई*—संज्ञा स्त्री० [सं० कुशल+आई (प्रत्य०)] १. कुशलता। निपुणता। २. कुशल क्षेम। खैरियत।
कुसलात*—संज्ञा स्त्री० दे० "कुशलात"।
कुसली*—वि० दे० "कुशली"।
† संज्ञा पुं० [हिं० कसैली] १. आम की गुठली। २. गोझा। पिराक।
कुसवारी—संज्ञा पुं० [सं० कोशकार] १. रेशम का जंगली कीड़ा। २. रेशम का कोया।
कुसाइत—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+अ० साअत]

१. बुरी साइत। बुरा मुहूर्त। कुसमय। २. अनुपयुक्त समय। बेमौका।
कुसीद-संज्ञा पु० [सं०] [वि० कुसीदिक] १. सूद। ब्याज। वृद्धि। २. ब्याज पर दिया हुआ धन।
कुसुंभ-संज्ञा पु० [सं०] एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी जाठ और गाड़ियाँ बनाने के काम में आती है।
कुसुंभ-संज्ञा पु० [सं०] १. कुसुम। बर्रें। २. केसर। कुमकुम।
कसुंभा-संज्ञा पु० [सं० कुसुंभ] १. कुसुम का रंग। २. अफ़ीम और भाँग के योग से बना हुआ एक मादक द्रव्य।
कुसुंभी-वि० [सं० कुसुम] कुसुम के रंग का। लाल।
कुसुम-संज्ञा पु० [सं०] [वि० कुसुमित] १. फूल। पुष्प। २. वह गद्य जिसमें छोटे छोटे वाक्य हों। ३. आँख का एक रोग। ४. मासिक धर्म। रजोदर्शन। रज। ५. छंद में ठगण का छठा भेद।
संज्ञा पु० दे० "कुसुंब"।
संज्ञा पु० [सं० कुसुभ] एक पौधा जिसमें पीले फूल लगते हैं। बर्रें।
कुसुमपुर-संज्ञा पु० [सं०] पटना नगर का एक प्राचीन नाम।
कुसुमबाण-संज्ञा पु० [सं०] कामदेव।
कुसुमविचित्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण वृत्त।
कुसुमस्तवक-संज्ञा पु० [सं०] दंडक छंद का एक भेद।
कुसुमशर-संज्ञा पु० [सं०] कामदेव।
कुसुमांजलि-संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता पर हाथ की अँजुली में फूल भरकर चढ़ाना। पुष्पांजलि।
कुसुमाकर-संज्ञा पु० [सं०] १. वसंत। २. छप्पय का एक भेद।
कुसुमायुध-संज्ञा पु० [सं०] कामदेव।
कुसुमावलि-संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों का गुच्छा। फूलों का समूह।
कुसुमित-वि० [सं०] फूला हुआ। पुष्पित।
कुसूत-संज्ञा पु० [सं० कु+सूत्र, प्रा० सुत्त] १ बुरा सूत। २. कुप्रबंध। कुयोग।
कुसेसय -संज्ञा पु० दे० "कुशेशय"।
कुहक-संज्ञा पु० [सं०] १ माया। धोखा। जाल। फरेब। २. धूर्त। मक्कार। ३. मुर्गे की कूक। ४. इंद्रजाल जाननेवाला।
कुहकना-क्रि० अ० [सं० कुहुक या कुहू] पक्षी का मधुर स्वर में बोलना। पीकना।
कुहनी-संज्ञा स्त्री० [सं० कफोणि] हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी।
कुहप-संज्ञा पु० [सं० कुहू=अमावस्या + प] रजनीचर। राक्षस।
कुहर-संज्ञा पु० [सं०] १. गड्ढा। बिल। छेद। सूराख। २. गले का छेद।
कुहरा-संज्ञा पु० [सं० कुहेड़ी] जल के सूक्ष्म कणों का समूह जो ठंढक पाकर वायु की भाप में जमने से उत्पन्न होता है।
कुहराम-संज्ञा पु० [अ० कहर आम] १ विलाप। रोना पीटना। २. हलचल।
कुहाना† -क्रि० अ० [हिं० कोह + ना (प्रत्य०)] रिसाना। नाराज होना। रूठना।
कुहारा -संज्ञा पु० दे० "कुल्हाड़ा"।
कुहासा†-संज्ञा पु० दे० "कुहरा"।
कुही-संज्ञा स्त्री० [सं० कुधि=एक पक्षी] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया। कुहर।
संज्ञा पु० [फा० कोही=पहाड़ी] घोड़े की एक जाति। टाँगन।
कुहुक-संज्ञा पु० [अनु०] पक्षियों का मधुर स्वर। पीक।
कुहुकना-क्रि० अ० [हिं० कुहुक + ना (प्रत्य०)] पक्षियों का मधुर स्वर में बोलना।
कुहुकबान-संज्ञा पु० [हिं० कुहुकना + बाण] एक प्रकार का बाण जिसे चलाते समय कुछ शब्द निकलता है।
कुहू-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमावास्या, जिसमें चंद्रमा बिल्कुल दिखलाई न दे। २. मोर या कोयल की बोली। (इस अर्थ में "कुहू" के साथ कंठ, मुख आदि शब्द लगाने से कोकिलवाची शब्द बनते हैं।)
कूँच-संज्ञा स्त्री० [सं० कुंचिका=नली] मोटी नस जो एँड़ी के ऊपर या टखने के नीचे होती है। पै। घोड़ा नस।
कूँचना†-क्रि० स० दे० 'कुचलना"।
कूँचा-संज्ञा पु० [सं० कूर्च] [स्त्री० कूँची] झाड़ू। बोहारी।
कूँची-संज्ञा स्त्री० [हिं० कूँचा] १. छोटा कूँचा। छोटा झाड़ू। २. कूटी हुई मूँज या बालों का गुच्छा जिससे चीजों की मैल साफ करते या उन पर रंग फेरते हैं। ३. चित्रकार की रंग भरने की कलम।

कूँज—संज्ञा पुं० [सं० क्रौंच] क्रौंच पक्षी।
कूँड—संज्ञा पुं० [सं० कुंड] १ लोहे की ऊँची टोपी जिसे लड़ाई के समय पहनते थे। खोद। २ मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन, जिससे सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालते हैं। ३ वह नाली जो खेत में हल जोतने से बन जाती है। कुंड।
कूँडा—संज्ञा पुं० [सं० कुंड] [स्त्री० कूँडी] १ पानी रखने का मिट्टी का गहरा बरतन। २ छोटे पौधे लगाने का बरतन। गमला। ३ रोशनी करने की बड़ी हाँडी। डोल। ४ मिट्टी या काठ का बड़ा बरतन। कठौता। मठौता।
कूँडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूँडा] १ पत्थर की प्याली। पथरी। २ छोटी नाँद।
कूँथना—क्रि० अ० [सं० कुंथन] १ दुःख या श्रम से अस्पष्ट शब्द मुँह से निकालना। काँखना। २ कबूतरों का गुटरगूँ करना।
क्रि० स० मारना। पीटना।
कूईं—संज्ञा स्त्री० [सं० कुव+ई (प्रत्य०)] जल में होनेवाला एक पौधा, जिसके फूलों का चाँदनी रात में खिलना प्रसिद्ध है। कुमुदिनी। कोकावेली।
कूक—संज्ञा स्त्री० [सं० कूजन] १. लंबी सुरीली ध्वनि। २. मोर या कोयल की बोली।
संज्ञा स्त्री० [हिं० कुंजी] घड़ी या बाजे आदि में कुंजी देने की क्रिया।
कूकना—क्रि० अ० [सं० कूजन] कोयल या मोर का बोलना।
क्रि० स० [हिं० कुंजी] कमानी कसने के लिये घड़ी या बाजे में कुंजी भरना।
कूकर—संज्ञा पुं० [सं० कुक्कुर] [स्त्री० कूकरी] कुत्ता। श्वान।
कूकर कौर—स्त्री० पुं० [हिं० कूकर+कौर] १ वह जूठा भोजन जो कुत्ते के आगे डाला जाता है। टुकड़ा। २ तुच्छ वस्तु।
कूका—संज्ञा पुं० [हिं० कूकना=चिल्लाना] सिक्खों का एक पंथ।
कूच—संज्ञा पुं० [तु०] प्रस्थान। रवानगी।
मुहा०—कूच कर जाना=मर जाना। (किसी के) देवता कूच कर जाना=होश हवास जाता रहना। भय या किसी और कारण से ठक हो जाना। कूच बोलना=प्रस्थान करना।

कूचा—संज्ञा पुं० [फा०] १ छोटा रास्ता। गली। २ दे० "कूँचा"।
कूज—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूजना] ध्वनि।
कूजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कूजित] मधुर शब्द बोलना (पक्षियों का)।
कूजना—क्रि० अ० [सं० कूजन] कोमल और मधुर शब्द करना।
कूजा—संज्ञा पुं० [फा० कूज़ा] १ मिट्टी का पुरवा। कुल्हड़। २ मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई अर्द्ध गोलाकार मिस्री। मिस्री की डली।
कूजित—वि० [सं०] १ जो बोला या कहा गया हो। ध्वनित। २ गूँजा हुआ या ध्वनिपूर्ण (स्थान आदि)।
कूट—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहाड़ की ऊँची चोटी। जैसे—हेमकूट। २ सींग। ३ (अनाज आदि की) ऊँची और बड़ी राशि। ढेरी। ४ छल। धोखा। फरेब। ५. मिथ्या। असत्य। झूठ। ६ गूढ़ भेद। गुप्त रहस्य। ७. वह जिसका अर्थ जल्दी न प्रकट हो। जैसे, सूर का कूट। ८ वह हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो।
वि० [सं०] १ झूठा। मिथ्यावादी। २ धोखा देनेवाला। छलिया। ३ कृत्रिम। बनावटी। नकली। ४ प्रधान। श्रेष्ठ।
संज्ञा स्त्री० [सं० कुष्ठ] कुट नाम की ओषधि।
संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना या कूटना] काटने, कूटने या पीटने आदि की क्रिया।
कूटता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कठिनाई। २ झुठाई। ३ छल। कपट।
कूटत्व—संज्ञा पुं० दे० "कूटता"।
कूटना—क्रि० स० [सं० कुट्टन] १ किसी चीज को तोड़ने आदि के लिये उस पर बार बार कोई चीज पटकना। जैसे, धान कूटना।
मुहा०—कूट कूटकर भरना=खूब कस कस कर भरना। ठसाठस भरना।
२ मारना। पीटना। ठोंकना। ३ सिल, चक्की आदि में टाँकी से छोटे छोटे गड्ढे करना। दाँत निकालना।
कूटनीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दाव पेंच की नीति या चाल। छिपी हुई चाल। घात।
कूटयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह शत्रु को धोखा दिया ज
कूटसाक्षी—संज्ञा पुं० [सं०

कूटस्थ-वि० [सं०] १. सर्वोपरि स्थित। आला दर्जे का। २. अटल। अचल। ३. अविनाशी। विनाश रहित। ४. गुप्त। छिपा हुआ।
कूट्टू-संज्ञा पु०[देश०] एक पौधा जिसके बीजों का आटा व्रत में फलाहार के रूप में खाया जाता है। कफर। कुल्टू। काटू। कोटू।
कूड़ा-संज्ञा पु० [सं० कूट, प्रा० कूड=ढेर] १. जमीन पर पड़ी हुई गर्द, खर पत्ते आदि जिन्हें साफ़ करने के लिये झाड़ू दिया जाता है। खतवार। २ निकम्मी चीज़।
कूड़ाखाना-संज्ञा पु० [हिं० कूड़ा+फा०खाना] वह स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता हो। खत-वारखाना।
कूढ़-संज्ञा पु० [सं० कुष्टि] बोने की वह रीति जिसमें हल की गड़ारी में बीज डाला जाता है। छींटा का उलटा।
वि० [सं० कु+ऊढ़=कूढ़, पा० कूध] नास-मझ। अज्ञानी। बेवकूफ़।
कूढ़मग्ज़-वि० [हिं० कूढ़+फा० मग्ज] मंदबुद्धि। कुंदज़िहन।
कूत-संज्ञा स्त्री० [सं० आकूत=आशय] १. वस्तु की संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान। २. दे० "कनकूत"।
कूतना-क्रि० स० [हिं० कूत]१.अनुमान करना। अंदाज़ लगाना। २. बिना गिने, नापे या तौले संख्या, मूल्य या परिमाण आदि का अनुमान करना। ३. दे० "कनकूत"।
कूद-संज्ञा स्त्री० [सं०] कूदने की क्रिया या भाव।
यौ०—कूद-फाँद=कूदने या उछलने की क्रिया।
कूदना-क्रि० अ० [सं० स्कुदन] १ दोनों पैरों को पृथिवी पर से बलपूर्वक उठाकर शरीर को किसी ओर फेंकना। उछलना। —दना। २. जान-बूझकर ऊपर से नीचे ओर गिरना। ३. बीच में सहसा आ मिलना या दखल देना। ४. क्रम-भंग करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाना। ५. अत्यंत प्रसन्न होना। दे० "उछलना"। ६. बढ़ बढ़कर बातें करना।
मुहा०—किसी के बल पर कूदना=किसी का सहारा पाकर बहुत बढ़ बढ़कर बोलना।
क्रि० स० उल्लंघन कर जाना। लाँघ जाना।
कूप-संज्ञा पु० [सं०] १. कुआँ। इनारा। २. छेद। सूराख़। ३. गहरा गड्ढा।
कूपमंडूक-संज्ञा पु० [सं०] १. कूएँ में रहनेवाला मेढक। २. वह मनुष्य जो अपना स्थान छोड़कर कहीं बाहर न गया हो। बहुत थोड़ी जानकारी का मनुष्य।
कूबड़-संज्ञा पुं० [सं० कूबर] १ पीठ का टेढ़ापन। २. किसी चीज़ का टेढ़ापन।
कूबरी-संज्ञा स्त्री० दे० "कुबरी"।
कूर-वि० [सं० क्रूर] १. दया रहित। निर्दय। २. भयंकर। डरावना। ३ मनहूस। असगुनियाँ। ४ दुष्ट। बुरा। ५. अकर्मण्य। निकम्मा। ६. मूर्ख। जड़।
कूरता-संज्ञा स्त्री०[हिं० कूर] १. निर्दयता। कठोरता। बेरहमी। २. जड़ता। मूर्खता। ३. अरसिकता। ४ कायरता। डरपोक-पन। ५. खोटापन। बुराई।
कूरपन-संज्ञा पु० दे० "कूरता"।
कूरम-संज्ञा पु० दे० "कूर्म"।
कूरा-संज्ञा पु० [सं० कूट] [स्त्री०कूरी] १. ढेर। राशि। २. भाग। अंश। हिस्सा।
कूर्चिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कूँची। २. कली। ३. कुंजी। ४. सुई।
कूर्म-संज्ञा पु० [सं०] १. कच्छप। कछुआ। २. पृथिवी। ३. प्रजापति का एक अवतार। ४. एक ऋषि। ५. वह वायु जिसके प्रभाव से पलकें खुलती और बंद होती हैं। ६. विष्णु का दूसरा अवतार।
कूर्म पुराण-संज्ञा पु० [सं०] अठारह मुख्य पुराणों में से एक।
कूल-संज्ञा पु० [सं०] १. किनारा। तट। तीर। २. सेना के पीछे का भाग। ३. समीप। पास। ४. बड़ा नाला। नहर। ५. तालाब।
कूल्हा-संज्ञा पु० [सं० क्रोड] कमर में पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।
कूवत-संज्ञा स्त्री० [अ०] शक्ति। बल।
कूवर-संज्ञा पु० [सं०] १. रथ का वह भाग जिस पर जूआ बाँधा जाता है। युगंधर। हरसा। २ रथ में रथी के बैठने का स्थान। ३. कुबड़ा।
कूष्मांड-संज्ञा पु० [सं०] १. कुम्हड़ा। २. पेठा। ३. वैदिक काल के एक ऋषि।
कूह-संज्ञा स्त्री० [हिं० कूक] १. चिग्घाड़। हाथी की चिंघार। २. चीख़। चिल्लाहट।

क्षकर–संज्ञा पु० [सं०] मस्तक की वायु जिसके वेग से छींक आती है।
कृकलास–संज्ञा पु० [सं०] गिरगिट।
कृकाट, कृकाटक–संज्ञा पु० [सं०] गले का जोड़। रीढ़ का वह भाग जो गले को जोड़ता है।
कृच्छ्र–संज्ञा पु० [सं०] १. कष्ट। दुःख। २. पाप। ३ मूत्र-कृच्छ्र रोग। ४. कोई व्रत जिसमें पंचगव्य प्राशन कर दूसरे दिन उपवास किया जाय।
वि० कष्टसाध्य। मुश्किल।
कृत–वि० [सं०] १. किया हुआ। संपादित। २. बनाया हुआ। रचित।
संज्ञा पु० [सं०] १. चार युगों में से पहला युग। सतयुग। २. वह दास जिसने कुछ नियत काल तक सेवा करने की प्रतिज्ञा की हो। ३. चार की संख्या।
कृतकार्य–वि० [सं०] जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। सफल-मनोरथ।
कृतकृत्य–वि० [सं०] जिसका काम पूरा हो चुका हो। कृतार्थ। सफल-मनोरथ।
कृतघ्न–वि० [सं०] [संज्ञा कृतघ्नता] किए हुए उपकार को न माननेवाला। अकृतज्ञ।
कृतघ्नता–संज्ञा स्त्री० [सं०] किए हुए उपकार को न मानने का भाव। अकृतज्ञता।
कृतघ्नी:†–वि० दे० "कृतघ्न"।
कृतज्ञ–वि० [सं०] [संज्ञा कृतज्ञता] किए हुए उपकार को माननेवाला। एहसान माननेवाला।
कृतज्ञता–संज्ञा स्त्री० [सं०] किए हुए उपकार को मानना। एहसानमंदी।
कृतयुग–संज्ञा पु० [सं०] सतयुग।
कृतविद्य–वि० [सं०] जिसे किसी विद्या का अभ्यास हो। जानकार। पंडित।
कृतांत–संज्ञा पु० [सं०] १. समाप्त करनेवाला। अंत करनेवाला। २ यम। धर्मराज। ३. पूर्व जन्म में किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का फल। ४. मृत्यु। ५. पाप। ६ देवता। ७. दो की संख्या।
कृतात्यय–संज्ञा पु० [सं०] सांख्य के अनुसार भोग द्वारा कर्मों का नाश।
कृतार्थ–वि० [सं०] १. जिसका काम सिद्ध हो चुका हो। कृतकृत्य। सफल मनोरथ। २. संतुष्ट। ३. कुशल। निपुण। होशियार।
कृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. करतूत। करनी। २. कार्य। काम। ३. आघात। क्षति। ४. इंद्रजाल। जादू। ५. दो समान अंकों का घात। वर्गसंख्या (गणित)। ६. बीस की संख्या।
कृती–वि० [सं०] १. कुशल। निपुण। दक्ष। २ साधु। ३. पुण्यात्मा।
कृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृगचर्म। २. चमड़ा। खाल। ३. भोजपत्र।
कृत्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से तीसरा नक्षत्र। २. छकड़ा।
कृत्तिवास–संज्ञा पु० [सं०] महादेव।
कृत्य–संज्ञा पु० [सं०] १. कर्त्तव्य-कर्म। वेद-विहित आवश्यक कार्य्य। जैसे—यज्ञ, संस्कार। २. करनी। करतूत। कर्म। ३. भूत, प्रेत, यक्षादि जिनका पूजन अभिचार के लिये होता है।
कृत्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक भयंकर राक्षसी जिसे तांत्रिक अपने अनुष्ठान से शत्रु को नष्ट करने के लिये भेजते हैं। २. अभिचार। ३. दुष्टा या कर्कशा स्त्री।
कृत्रिम–वि० [सं०] १. जो असली न हो। नकली। २. वह अनाथ बालक जिसे पालकर किसी ने अपना पुत्र बनाया हो।
कृदंत–संज्ञा पु० [सं०] वह शब्द जो धातु में कृत् प्रत्यय लगाने से बने। जैसे—पाचक, मदन।
कृपण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० कृपणता] १. कंजूस। सूम। २ क्षुद्र। नीच।
कृपणता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कंजूसी।
कृपनाई:–संज्ञा स्त्री० दे० "कृपणता"।
कृपया–क्रि० वि० [सं०] कृपापूर्वक। अनुग्रहपूर्वक। मिहरबानी करके।
कृपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कृपालु] १. बिना किसी प्रतिकार की आशा के दूसरे की भलाई करने की इच्छा या वृत्ति। अनुग्रह। दया। २. क्षमा। माफी।
कृपाण–संज्ञा पु० [सं०] १. तलवार। २. कटार। ३. दंडक वृत्त का एक भेद।
कृपापात्र–संज्ञा पु० [सं०] वह व्यक्ति जिस पर कृपा हो। कृपा का अधिकारी।
कृपायतन–संज्ञा पु० [सं०] अत्यंत कृपालु।
कृपाल :†–वि० दे० "कृपालु"।
कृपालु–वि० [सं०] कृपा
कृपालुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दया
मेहरबानी।

कृपिण†-वि० दे० "कृपण"।
कृमि-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कृमिल] १. क्षुद्र कीट। छोटा कीड़ा। २. हिरमजी कीड़ा या मिट्टी। किरमिजी। ३. लाह।
कृमिज-वि० [सं०] कीड़ों से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कृमिजा] १. रेशम। २. अगर। ३. किरमिजी। हिरमिजी।
कृमिरोग-संज्ञा पुं० [सं०] आमाशय और पक्वाशय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग।
कृश-वि० [सं०] १. दुबला-पतला। क्षीण। २. अल्प। छोटा। सूक्ष्म।
कृशता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुबलापन। दुर्बलता। २. अल्पता। कमी।
कृशर-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कृशरा] १. तिल और चावल की खिचड़ी। २. खिचड़ी। ३. लोबिया मटर। केसारी। दुबिया।
कृशानु-संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।
कृशित-वि० [सं०] दुबला-पतला।
कृशोदरी-वि० स्त्री० [सं०] पतली कमर-वाली (स्त्री)।
कृषक-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसान। खेतिहर। काश्तकार। २. हल का फाल।
कृषि-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कृष्य] खेती। काश्त। किसानी।
कृष्ण-वि० [सं०] १. श्याम। काला। स्याह। २. नीला या आसमानी।
संज्ञा पुं० [स्त्री० कृष्णा] १. यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो विष्णु के प्रधान अवतारों में हैं। २. एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था। ३ एक मंत्रद्रष्टा ऋषि। ४. अथर्ववेद के अतर्गत एक उपनिषद्। ५. छप्पय छंद का एक भेद। ६. चार अक्षरों का एक वृत्त। ७. वेदव्यास। ८. अर्जुन। ९. कोयल। १०. कौआ। ११. कदम का पेड़। १२. अँधेरा पक्ष। १३. कलियुग। १४. चंद्रमा का धब्बा।
कृष्णचंद्र-संज्ञा पुं० दे० "कृष्ण" (१)
कृष्णद्वैपायन-संज्ञा पुं० [सं०] पराशर के पुत्र वेदव्यास। पाराशर्य।
कृष्ण पक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] मास का वह पक्ष जिसमें चंद्रमा का ह्रास हो। अँधेरा पाख।
कृष्णसार-संज्ञा पुं० [सं०] १. काला हिरन। करसायल। २. सेंहुड़। थूहर।
कृष्णा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. द्रौपदी। २. पीपल। पिप्पली। ३. दक्षिण देश की एक नदी। ४. काली दाख। ५. काला ज़ीरा। ६. काली (देवी)। ७ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ८. काले पत्ते की तुलसी।
कृष्णाभिसारिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अभिसारिका नायिका जो अँधेरी रात में अपने प्रेमी के पास संकेत स्थान में जाय।
कृष्णाष्टमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] भादों के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।
कृष्य-वि० [सं०] खेती करने योग्य (भूमि)।
कें कें-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चिड़ियों का कष्टसूचक शब्द। २. झगड़ा या असंतोष-सूचक शब्द।
केंचली-संज्ञा स्त्री० [सं० कंचुक] सर्प आदि के शरीर पर का झिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर जाता है।
केंचुआ-संज्ञा पुं० [सं० किंचिलिक] १. सूत के आकार का एक बरसाती कीड़ा जो एक बालिश्त लंबा होता है। २. केंचुए के आकार का सफ़ेद कीड़ा जो मल के साथ बाहर निकलता है।
केंचुली-संज्ञा स्त्री० दे० "केंचली"।
केंद्र-संज्ञा पुं० [सं० यू० केंट्रन] १. किसी वृत्त के अंदर का वह बिंदु जिससे परिधि तक खींची हुई सब रेखाएँ परस्पर बराबर हों। नाभि। ठीक मध्य का बिंदु। २. किसी निश्चित अंश से ९०, १८०, २७० और ३६० अंश के अंतर का स्थान। ३. मुख्य या प्रधान स्थान। ४. रहने का स्थान। ५. बीच का स्थान।
केंद्री-वि० [सं० केंद्रिन्] केंद्र में स्थित।
के-प्रत्य० [हिं० का] १. संबंधसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप। जैसे—राम के घोड़े। २. "का" विभक्ति का वह रूप जो उसे संबंधवान् के विभक्तियुक्त होने से प्राप्त होता है। जैसे—राम के घोड़े पर।
† सर्व० [सं० "कः"] कौन? (अवधी)
केउ †-सर्व० [हिं० के+उ] कोई।
केकड़ा-संज्ञा पुं० [सं० कर्कट] पानी का एक कीड़ा जिसे आठ टाँगें और दो पंजे होते हैं।
केकय-संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यास और शाल्मली नदी की दूसरी ओर के देश का प्राचीन नाम (यह अब कश्मीर के अंतर्गत है और कक्का कहलाता है)। २. [स्त्री०

केय्यी] केश्य देश का राजा या निवासी। ३. दशरथ के श्वशुर और कैकेयी के पिता।
केकयी—सज्ञा स्त्री० दे० "कैकेयी"।
केका—सज्ञा स्त्री० [स०] मोर की बोली।
केकी—सज्ञा पु० [स० केकिन्] मोर। मयूर।
केचित्—सर्व० [स०] कोई कोई।
केड़ा—सज्ञा पु० [स० काड] १ नया पौधा या अकुर। कोपल। २ नव युवक।
केत—सज्ञा पु० [स०] १ घर। भवन। २. स्थान। जगह। बस्ती। ३ केतु। ध्वजा।
केतक—सज्ञा पु० [स०] केवडा।
वि० [स० कति+एक] १. कितने। किस कदर। २ बहुत। बहुत कुछ।
केतकर —सज्ञा स्त्री० दे० 'केतकी"।
केतकी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक छोटा पौधा जिसमें काड के चारो ओर तलवार के से लंबे काँटेदार पत्ते निकले होते हे और कोरा मे बद मंजरी के रूप में बहुत सुगंधित फूल लगते हैं।
केतन—सज्ञा पु० [स०] १. निमंत्रण। २. ध्वजा। ३. चिह्न। ४ घर। ५. स्थान। जगह।
केता †—वि० [स० कियत्] [स्त्री० केती] कितना।
केतिक †—वि० [स० कति+एक] कितना। किस कदर।
केतु—सज्ञा पु० [स०] १. ज्ञान। २. दीप्ति। प्रकाश। ३. ध्वजा। पताका। ४. निशान। चिह्न। ५. पुराणानुसार एक राक्षस का कबंध। ६ एक प्रकार का तारा जिसके साथ प्रकाश की एक पूँछ सी दिखाई देती है। पुच्छल तारा। ७. नव ग्रहो मे से एक ग्रह (फलित)। ८. चंद्रकक्ष और क्रांतिरेखा के अध.पात का विंदु। (गणित ज्योतिष)
केतुमती—सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक वर्णार्द्ध समवृत्त। २ रावण की नानी अर्थात् सुमाली राक्षस की पत्नी।
केतुमान्—वि० [स०] १. तेजवान्। तेजस्वी। २. ध्वजावाला। ३. बुद्धिमान्।
केतुवृत्त—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार मेरु के चारो ओर के पर्वतों पर के वृक्षों का नाम। ये चार हैं—कदंब, जामुन, पीपल और बरगद।
केतो—वि० [स० कति] [स्त्री० केती] कितना।
केदली†—सज्ञा पु० दे० "कदली"।
केदार—सज्ञा पु० [स०] १. वह खेत जिसमें धान बोया या रोपा जाता हो। २ सिंचाई के लिये खेत में किया हुआ विभाग। कियारी। ३. वृक्ष के नीचे का थाला। थाँवला। ४ दे० "केदारनाथ"।
केदारनाथ—सज्ञा पु० [स०] हिमालय के अतर्गत एक पर्वत जिसके शिखर पर केदारनाथ नामक शिवलिंग है।
केन—सज्ञा पु० [स०] एक प्रसिद्ध उपनिषद्। तवलकार उपनिषद्।
केयूर—सज्ञा पु० [स०] बाँह में पहनने का बिजायठ। बजुल्ला। अगद। बहूँटा। भुजबद।
केयूरी—वि० [स०] जो केयूर पहने हो। केयूरधारी।
केर†—प्रत्य० [स० कृत] [स्त्री० केरी] सबध-सूचक विभक्ति। का (अवधी)।
केरल—सज्ञा पु० [स०] १ दक्षिण भारत का एक देश। कनारा। २. [स्त्री० केरली] केरल देश-वासी पुरुष। ३ एक प्रकार का फलित ज्योतिष।
केराना†—सज्ञा पु० [स० क्रयण] नमक, मसाला, हल्दी आदि चीजें जो पसारियो के यहाँ मिलती हैं।
केरानी—सज्ञा पु०[अं० क्रिश्चियन] १ वह जिसके माता पिता में से कोई एक युरोपियन और दूसरा हिंदुस्तानी हो। किरटा। युरेशियन। २. अँगरेजी दफ्तर में लिखने पढने का काम करनेवाला मुंशी। क्लर्क।
केराव†—सज्ञा पु० [स० कलाय] मटर।
केरि—प्रत्य० [स० कृत] दे० "केरी"।
सज्ञा स्त्री० दे० "केलि"।
केरी—प्रत्य० [स० कृत] की। "के" विभक्ति का स्त्रीलिंग रूप।
सज्ञा स्त्री० [देश०] आम का कच्चा और छोटा नया फल। अँबिया।
केरोसिन—सज्ञा पु० [अ०] मिट्टी का तेल।
केला—सज्ञा पु० [स० कदल, प्रा० कयल] गरम जगहो में होनेवाला एक पेड़ जिसके पत्ते गज सवा गज लंबे और फल लंबे, गूदेदार और मीठे होते हैं।
केलि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. खेल। क्रीड़ा। २. रति। मैथुन। स्त्रीप्रसंग। ३. हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी। ४. पृथ्वी।

केलिकला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती की वीणा। २. रति। समागम।
केवका-संज्ञा पु० [सं० क्वक=ग्रास] वह मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है।
केवट-संज्ञा पु० [सं० कैवर्त्त] एक जाति जो आजकल नाव चलाने तथा मिट्टी खोदने का काम करती है।
केवटी दाल-संज्ञा स्त्री० [हिं० केवट=एक संकर जाति+दाल] दो या अधिक प्रकार की, एक में मिली हुई, दाल।
केवटी मोथा-संज्ञा पु० [सं० कैवर्त्तमुस्तक] एक प्रकार का सुगंधित मोथा।
केवड़ई-वि० [हिं० केवड़ा+ई (प्रत्य०)] हलका पीला और हरा मिला हुआ सफेद। जैसे—केवड़ई रंग।
केवड़ा-संज्ञा पु० [सं० केविका] १. सफेद केतकी का पौधा जो केतकी से कुछ बड़ा होता है। २. इस पौधे का फूल। ३. इसके फूल से उतारा हुआ सुगंधित जल या आसव।
केवल-वि० [सं०] १. एक मात्र। अकेला। २. शुद्ध। पवित्र। ३. उत्कृष्ट। उत्तम। श्रेष्ठ।
क्रि० वि० मात्र। सिर्फ।
संज्ञा पु० [वि० केवली] वह ज्ञान जो भ्रांति-शून्य और विशुद्ध हो।
केवलात्मा-संज्ञा पु० [सं०] १. पाप और पुण्य से रहित, ईश्वर। २. शुद्ध स्वभाव-वाला मनुष्य।
केवली-संज्ञा पु० [सं० केवल+ई (प्रत्य०)] मुक्ति का अधिकारी साधु। केवल-ज्ञानी।
केवलव्यतरेकी-संज्ञा पु० [सं० केवलव्यतिरेकिन्] कार्य्य को प्रत्यक्ष देखकर कारण का अनुमान। जैसे—नदी का चढ़ाव देखकर वृष्टि होने का अनुमान। शेषवत्।
केवलान्वयी-संज्ञा पु० [सं० केवलान्वयिन्] कारण द्वारा कार्य्य का अनुमान। जैसे—बादल देखकर पानी बरसने का अनुमान। पूर्ववत्।
केवाँच-संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।
केवा-संज्ञा पु० [सं० कुव=कमल] १. कमल। २. केतकी। केवड़ा।
संज्ञा पु० [सं० किंवा] बहाना। मिस। टालमटूल।
केवाड़-संज्ञा पुं० दे० "किवाड़"।
केश-संज्ञा पु० [सं०] १. रश्मि। किरण। २ वरुण। ३. विश्व। ४. विष्णु। ५. सूर्य्य। ६. सिर का बाल।
केशकर्म-संज्ञा पु० [सं०] १. बाल झाड़ने और गूँथने की कला। केश-विन्यास। २. केशांत नामक संस्कार।
केशपाश-संज्ञा पु० [सं०] बालों की लट। काकुल।
केशरंजन-संज्ञा पुं० [सं०] भँगरैया।
केशर-संज्ञा पु० दे० "केसर"।
केशराज-संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रकार का भुजंगा पक्षी। २. भँगरैया। भृंगराज।
केशरी-संज्ञा पु० दे० "केसरी"।
केशव-संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २. कृष्ण-चंद्र। ३. ब्रह्म। परमेश्वर। ४. विष्णु के २४ मूर्ति-भेदों में से एक।
केशविन्यास-संज्ञा पु० [सं०] बालों की सजावट। बालों का सँवारना।
केशांत-संज्ञा पु० [सं०] १. सोलह संस्कारों में से एक जिसमें यज्ञोपवीत के पीछे सिर के बाल मूँड़े जाते थे। गोदान कर्म। २. मुंडन।
केशि-संज्ञा पु० [सं०] एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था।
केशिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जिसके सिर के बाल सुंदर और बड़े हों। २. एक अप्सरा। ३. पार्वती की एक सहचरी। ४. रावण की माता केकसी का एक नाम।
केशी-संज्ञा पु० [सं० केशिन्] [स्त्री० केशिनी] १. प्राचीन काल के एक गृहपति का नाम। २. एक असुर जिसे कृष्ण ने मारा था। ३. घोड़ा। ४. सिंह।
वि० १. किरण या प्रकाशवाला। २. अच्छे बालोंवाला।
केस-संज्ञा पु० दे० "केश"।
संज्ञा पु० [अ०] १. किसी चीज़ के रखने का खाना या घर। २. मुक़दमा। ३. दुर्घटना।
केसर-संज्ञा पु० [सं०] १. बाल की तरह पतले पतले सींके या सूत जो फूलों के बीच में रहते हैं। २. ठंढे देशों में होनेवाला एक पौधा जिसका केसर स्थायी सुगंध के लिये प्रसिद्ध है। कुंकुम। ज़ाफ़रान। ३. घोड़े, सिंह आदि जानवरों की गरदन

पर के बाल। अयाल। ४. नागकेसर। ५ बकुल। मौलसिरी। ६. स्वर्ग।
केसरिया–वि० [सं० केसर+इया (प्रत्य०)] १. केसर के रंग का। पीला। जर्द। २. केसर मिश्रित।
केसरी–संज्ञा पु० [सं० केसरिन्] १. सिंह। २. घोड़ा। ३. नागकेसर। ४. हनुमान्‌जी के पिता का नाम।
केसारी–संज्ञा स्त्री० [सं० कृसर] मटर की जाति का एक अन्न। दुनिया मटर।
केहरी॰–संज्ञा पु० [सं० केसरी] १. सिंह। शेर। २. घोड़ा।
केहा–संज्ञा पु० [सं० केका] मोर। मयूर।
केहि॰†–वि० [हिं० के+हि (विभक्ति)] किसको। (अवधी)
केहूँ॰–क्रि० वि० [सं० कथम्] किसी प्रकार। किसी भाँति। किसी तरह।
केहू†–सर्व० [हिं० के] कोई।
कैंचा–वि० [हिं० काना+ऐंचा=कनैचा] ऐंचाताना। भेंगा।
संज्ञा पु० [तु० कैंची] बड़ी कैंची।
कैंची–संज्ञा स्त्री० [तु०] १. बाल, कपड़े आदि काटने या कतरने का एक औजार। कतरनी। २ दो सीधी तीलियाँ या लकड़ियाँ जो कैंची की तरह एक दूसरी के ऊपर तिरछी रखी या जड़ी हों।
कैंडा–संज्ञा पु० [सं० काण्ड] १ वह यंत्र जिससे किसी चीज का नकशा ठीक किया जाता है। २. पैमाना। मान। नपना। ३ चाल। ढंग। तर्ज। काट-छाँट। ४ चालबाजी। चतुराई।
कै†–वि० [सं० कति, प्रा० कइ] कितना। किस कदर।
॰अव्य० [सं० किम्] या। वा। अथवा।
संज्ञा स्त्री० [अ० कै] वमन। उलटी।
कैकस–संज्ञा पु० [सं०] राक्षस।
कैकसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुमाली राक्षस की कन्या और रावण की माता।
कैकेयी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केकय गोत्र में उत्पन्न स्त्री। २. राजा दशरथ की वह रानी जिसने रामचंद्र को वनवास दिलवाया था।
कैटभ–संज्ञा पु० [सं०] एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।
कैटभारि–संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

कैतव–संज्ञा पु० [सं०] १. धोखा। छल। कपट। २. जुआ। द्यूत क्रीड़ा। ३. वैदूर्य मणि। लहसुनियाँ।
वि० १. धोखेबाज। छली। २ धूर्त। शठ। ३. जुआरी।
कैतवापह्नुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपह्नुति अलंकार का एक भेद, जिसमें वास्तविक विषय का गोपन या निषेध स्पष्ट शब्दों में न करके व्याज से किया जाता है।
कैतून–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की बारीक लैस जो कपड़ों में लगाई जाती है।
कैथ, कैथा–संज्ञा पु० [सं० कपित्थ] एक कँटीला पेड़ जिसमें बेल के आकार के कसैले और खट्टे फल लगते हैं।
कैथिन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० कायथ] कायस्थ जाति की स्त्री।
कैथी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कायथ] एक पुरानी लिपि या लिखावट जो शीघ्र लिखी जाती है और जिसमें शीर्ष-रेखा नहीं होती।
कैद–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० कैदी] १ बंधन। अवरोध। २. पहरे में बंद स्थान में रखना। कारावास।
मुहा०—कैद काटना=कैद में दिन बिताना। ३ किसी प्रकार की शर्त, अटक या प्रतिबंध जिसके पूरे होने पर ही कोई बात हो।
कैदक–संज्ञा स्त्री० [अ०] कागज का बंद या पट्टी जिसमें कागज आदि रखे जाते हैं।
कैदखाना–संज्ञा पु० [फ़ा०] वह स्थान जहाँ कैदी रखे जाते हैं। कारागार। बंदीगृह। जेलखाना।
कैद तनहाई–संज्ञा स्त्री० [अ०+फ़ा०] वह कैद जिसमें कैदी को तंग कोठरी में अकेले रखा जाय। कालकोठरी।
कैद महज़–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह कैद जिसमें कैदी को किसी प्रकार का काम न करना पड़े। सादी कैद।
कैद सख्त–संज्ञा स्त्री० [अ० कैद+फ़ा० सख्त] वह कैद जिसमें कैदी को कठिन परिश्रम करना पड़े। कड़ी कैद।
कैदी–संज्ञा पु० [अ०] वह जिसे कैद की सजा दी गई हो। बंदी। बँधुवा।
कैधौं॰†–अव्य० [हिं० कै+धौं] या। वा। अथवा।
कैफ–संज्ञा पुं० [अ०] नशा। मद।
कैफियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १

हाल। वर्णन। २. विवरण। ब्योरा।
मुहा०—कैफ़ियत तलब करना=नियमानुसार विवरण माँगना। कारण पूछना।
३. आश्चर्यजनक या हर्षोत्पादक घटना।

कैफ़ी-वि० [अ०] १. मतवाला। मद भरा। २. नशेबाज़।

कैंवर-संज्ञा स्त्री० [देश०] सीर का फल।

कैबार-संज्ञा स्त्री० अव्ययवत् [हिं० कै=कितना+वार] १. कितनी बार। २. बहुत बार।

कैमुतिक न्याय-संज्ञा पु० [सं०] एक न्याय या उक्ति जिसका प्रयोग यह दिखलाने के लिये होता है कि जब उतना बड़ा काम हो गया, तब यह क्या है।

कैरव-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कैरवी] १. कुमुद। २. सफ़ेद कमल। ३ शत्रु।

कैरा-संज्ञा पु० [सं० कैरव] [स्त्री० कैरी] १. भूरा (रंग)। २. वह सफ़ेदी जिसमें ललाई की झलक या आभा हो। ३. वह बैल जिसके सफ़ेद रोओं के अंदर से चमड़े की ललाई झलकती हो। सोकना। सोकन। वि० १. कैरे रंग का। २. जिसकी आँखें भूरी हों। कंजा।

कैलास-संज्ञा पु० [सं०] १. हिमालय की एक चोटी जो तिब्बत में रावण ह्रद से उत्तर ओर है। (यहाँ शिवजी का निवास माना जाता है।) २. शिवलोक।
यौ०—कैलासनाथ, कैलासपति=शिव। कैलासवास=मरण। मृत्यु।

कैवर्त्त-संज्ञा पु० [सं०] केवट।

कैवर्तमुस्तक-संज्ञा पु० [सं०] केवटी मोथा।

कैवल्य-संज्ञा पु० [सं०] १. शुद्धता। बेमेलपन। निर्लिप्तता। एकता। २. मुक्ति। मोक्ष। निर्वाण। ३. एक उपनिषद्।

कैशिकी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक की मुख्य चार वृत्तियों में से एक जिसमें नृत्य गीत तथा भोग-विलास आदि होते हैं।

कैसर-संज्ञा पु० [लै० सीज़र] सम्राट्। बादशाह।

कैसा-वि० [सं० कीदृश] [स्त्री० कैसी] १. किस प्रकार का ? किस ढंग का ? किस रूप या गुण का ? २. (निषेधार्थक प्रश्न के रूप में) किसी प्रकार का नहीं। जैसे—जब हम उस मकान में रहते नहीं, तब किराया कैसा ? ३. सदृश। समान। ऐसा।

कैसे-क्रि० वि० [हिं० कैसा] १. किस प्रकार से ? किस ढंग से ? २ किस हेतु ? क्यों ?

कसो†-वि० दे० "कैसा"।

कोंई-संज्ञा स्त्री० दे० "कुँई"।

कोंकण-संज्ञा पु० [सं०] १. दक्षिण भारत का एक प्रदेश। २. उक्त देश का निवासी।

कोंचना-क्रि० स० [सं० कुच] चुभाना। गोदना। गड़ाना। धँसाना।

कोंचा-संज्ञा पु० दे० "कौंच"।
संज्ञा पु० [हिं० कोंचना] बहेलियों की वह लंबी छड़ जिसके सिरे पर वे चिड़ियाँ फँसाने का लासा लगाए रहते हैं।

कोंछना-क्रि० स० दे० "कोंछियाना"।

कोंछियाना-क्रि० स० [हिं० कोंछा] (स्त्रियों की) साड़ी का वह भाग चुनना जो पहनने में पेट के नीचे खोंसा जाता है।
क्रि० स० [हिं० कोछ] (स्त्रियों के) अंचल के कोने में कोई चीज़ भरकर कमर में खोंस लेना।

कोंढ़ा-संज्ञा पु० [सं० कुंडल] [स्त्री० अल्पा० कोंढ़ी] धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें कोई वस्तु अटकाई जाती है।
वि० [हिं० कोंढ़ा+हा (प्रत्य०)] जिसमें कोंढ़ा लगा हो। जैसे, कोंढ़ा रुपया।

कोंथना-क्रि० अ० दे० "कूँथना"।

कोंपर-संज्ञा पु० [हिं० कोंपल] छोटा अधपका या डाल का पका आम।

कोंपल-संज्ञा स्त्री० [सं० कोमल या कुपल्लव] नई और मुलायम पत्ती। अंकुर। कल्ला।

कोंवर†-वि० [सं० कोमल] नरम। मुलायम। नाज़ुक।

कोंहड़ा-संज्ञा पु० दे० "कुम्हड़ा"।

कोंहड़ौरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० कोंहड़ा+बरी] कुम्हड़े या पेठे की बनाई हुई बरी।

को-सर्व० [सं० कः] कौन ?
प्रत्य० कर्म और संप्रदान की विभक्ति। जैसे—साँप को मारो।

कोआ-संज्ञा पु० [सं० कोश या हिं० कोसा] १. रेशम के कीड़े का घर। कुसियारी। २. टसर नामक रेशम का कीड़ा। ३. महुए का पका फल। कोलैंदा। गोलैंदा। ४. कटहल के गूदेदार पके हुए बीजकोष। ५. दे० "कोया"।

कोइरी-संज्ञा पु० [हिं० कोयर] साग, तरकारी आदि बोने और बेचनेवाली जाति। काछी।
संज्ञा स्त्री० दे० "कोइलारी"।

कोइली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोयल] १. वह कच्चा आम जिसमें काला दाग पड़ जाता है और एक विशेष प्रकार की सुगंध आती है। २ आम की गुठली।

कोई—सर्व०, वि० [सं० कोऽपि] १. ऐसा एक (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो। न जाने कौन एक।

मुहा०—कोई न कोई = एक नहीं तो दूसरा। यह न सही, वह।

२ बहुतों में से चाहे जो एक। अविशेष वस्तु या व्यक्ति। ३. एक भी (मनुष्य)। क्रि० वि० लगभग। करीब करीब।

कोउ—सर्व० दे० "कोई"।

कोउक—सर्व० [हिं० कोउ = एक] कोई एक। कतिपय। कुछ लोग।

कोऊ—सर्व० दे० "कोई"।

कोक—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० कोकी] १. चकवा पक्षी। चक्रवाक। सुरखाब। २. विष्णु। ३. मेंढक।

कोकई—वि० [तु० कोक] ऐसा नीला जिसमें गुलाबी की झलक हो। कौड़ियाला।

कोककला—संज्ञा स्त्री० [सं०] रति-विद्या। संभोग-संबंधी विद्या।

कोकदेव—संज्ञा पु० कोकशास्त्र या रतिशास्त्र का रचयिता एक पंडित।

कोकनद—संज्ञा पु० [सं०] १ लाल कमल। २. लाल कुमुद।

कोकनी—संज्ञा पु० [तु० कोक = आसमानी] एक प्रकार का रंग।

वि० [देश०] १. छोटा। नन्हा। २. घटिया।

कोकशास्त्र—संज्ञा पु० [सं०] कोक-कृत रतिशास्त्र। कामशास्त्र।

कोका—संज्ञा पु० [अ०] दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष जिसकी सुखाई हुई पत्तियाँ चाय या कहवे की भाँति शक्ति-वर्द्धक समझी जाती हैं।

संज्ञा पु० स्त्री० [तु०] धाय की संतान। दूध-भाई या दूध-बहिन।

संज्ञा स्त्री० दे० "कोकाबेली"।

कोकाबेरी, कोकाबेली—संज्ञा स्त्री० [सं० कोकनद + हिं० बेल] नीली कुमुदिनी।

कोकाह—संज्ञा पु० [सं०] सफ़ेद घोड़ा।

कोकिल—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोयल चिड़िया। २. नीलम की एक छाया। ३. छप्पय का ११ वाँ भेद। ४. कोयला।

कोकिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोयल।

कोकीन, कोकेन—संज्ञा स्त्री० [अ०] कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक प्रकार की मादक औषधि या विष जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।

कोको—संज्ञा स्त्री० [अनु०] कौआ। लड़कों को बहकाने का शब्द।

कोख—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्षि] १. उदर। जठर। पेट। २. पेट के दोनों बगल का स्थान। ३ गर्भाशय।

मुहा०—कोख उजड़ जाना = १. संतान मर जाना। २. गर्भ गिर जाना। कोख बंद होना = बंध्या होना। कोख, या कोख माँग से, ठंढी या भरी पूरी रहना = बालक, या, बालक और पति का सुख देखते रहना। (आसीस)।

कोगी—संज्ञा पु० [देश०] कुत्ते से मिलता जुलता एक शिकारी जानवर जो झुंड में रहता है। सोनहा।

कोच—संज्ञा पु० [अ०] १. एक प्रकार की चौपहिया बढ़िया घोड़ा-गाड़ी। २. गद्देदार बढ़िया पलंग, बेंच या कुरसी।

कोचकी—संज्ञा पु० [?] एक रंग जो ललाई लिए भूरा होता है।

कोचबकस—संज्ञा पु० [अ० कोच + बक्स] घोड़ा-गाड़ी आदि में वह ऊँचा स्थान जिस पर हाँकनेवाला बैठता है।

कोचवान—संज्ञा पु० [अ० कोचमैन] घोड़ा-गाड़ी हाँकनेवाला।

कोचा—संज्ञा पु० [हिं० कोंचना] १. तलवार, कटार आदि का हलका घाव जो पार न हुआ हो। २. लगती हुई बात। ताना।

कोजागर—संज्ञा पु० [सं०] आश्विन मास की पूर्णिमा। शरद पूनो। (जागरण का उत्सव)

कोट—संज्ञा पु० [सं०] १. दुर्ग। गढ़। किला। २. शहर पनाह। प्राचीर। ३. महल। राजप्रासाद।

संज्ञा पु० [सं० कोटि] समूह। यूथ।

संज्ञा पु० [अ०] अँगरेज़ी ढंग का एक पहनावा।

कोटपाल—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्ग करनेवाला। किलेदार।

कोटर—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाग। २. दुर्ग के

कृत्रिम घन जो रक्षा के लिये लगाया जाता है।

कोटि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धनुष का सिरा। २. अस्त्र की नोक या धार। ३. वर्ग। श्रेणी। दरजा। ४. किसी वाद-विवाद का पूर्व पक्ष। ५. उत्कृष्टता। उत्तमता। ६. समूह। जत्था। ७. किसी ६० अंश के चाप के दो भागों में से एक। ८. किसी त्रिभुज या चतुर्भुज की भूमि और कर्ण से भिन्न रेखा।

वि० [सं०] सौ लाख। करोड़।

कोटिक–वि० [सं० कोटि+क] १. करोड़। २. अनगिनत। बहुत अधिक।

कोटिशः–क्रि० वि० [सं०] अनेक प्रकार से। बहुत तरह से।

वि० बहुत अधिक। अनेकानेक।

कोटू–संज्ञा पु० दे० "कूटू"।

कोठा–वि० [सं० कुंठ] खटाई के असर से जिससे कोई वस्तु कूँची या चबाई न जा सके। कुंठित। (दाँत)

कोठरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोठा+ड़ी (री) (अल्पा० प्रत्य०)] (मकान आदि में) वह छोटा स्थान जो चारों ओर दीवारों से घिरा और छाया हुआ हो। छोटा कमरा।

कोठा–संज्ञा पु० [सं० कोष्ठक] १. बड़ी कोठरी। चौड़ा कमरा। २. भंडार। ३. मकान में छत या पाटन के ऊपर का कमरा। अटारी।

यौ०—कोठेवाली=वेश्या।

४. उदर। पेट। पक्वाशय।

मुहा०—कोठा बिगड़ना=अपच आदि रोग होना। कोठा साफ़ होना=साफ़ दस्त होना।

५. गर्भाशय। धरन। ६. खाना। घर। ७. किसी एक अंक का पहाड़ा जो एक खाने में लिखा जाता है। ८. शरीर या मस्तिष्क का कोई भीतरी भाग जिसमें कोई विशेष शक्ति या वृत्ति रहती हो।

कोठार–संज्ञा पु० [हिं० कोठा] अन्न, धन आदि रखने का स्थान। भंडार।

कोठारी–संज्ञा पुं० [हिं० कोठार+ई (प्रत्य०)] वह अधिकारी जो भंडार का प्रबंध करता हो। भंडारी।

कोठिला–संज्ञा पु० दे० "कुठला"।

कोठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोठा] १. बड़ा पक्का मकान। हवेली। २. अँगरेज़ों के रहने का मकान। बँगला। ३. वह मकान जिसमें रुपए का लेन-देन या कोई बड़ा कारबार हो। बड़ी दुकान। ४ अनाज रखने का कुठला। बखार। गंज। ५. ईंट या पत्थर की वह जोड़ाई जो कुएँ की दीवार या पुल के खंभे में पानी के भीतर की जमीन तक होती है। ६. गर्भाशय। बच्चादान।

संज्ञा स्त्री० [सं० कोटि=समूह] उन बाँसों का समूह जो एक साथ मंडलाकार उगते हैं।

कोठीवाल–संज्ञा पु० [हिं० कोठी+वाला] १ महाजन। साहूकार। २. बड़ा व्यापारी। ३. महाजनी अक्षर जो कई प्रकार के होते हैं। कोठीवाली। मुड़िया।

कोठीवाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोठी] १ कोठी चलाने का काम। २. कोठीवाल अक्षर।

कोड़ना–क्रि० स० [सं० कुड] १. खेत की मिट्टी को कुछ गहराई तक खोदकर उलट देना। गोड़ना। २. खोदना।

कोड़ा–संज्ञा पु० [सं० कवर] १. डंडे में बँधा हुआ बटा सूत या चमड़े की डोर जिससे जानवरों को चलाने के लिये मारते हैं। चाबुक। सांटा। दुर्रा। २. उत्तेजक बात। मर्मस्पर्शी बात। ३ चेतावनी।

कोड़ी–संज्ञा स्त्री० [अ० स्कोर] बीस का समूह। बीसी।

कोढ़–संज्ञा पु० [सं० कुष्ठ] [वि० कोढ़ी] एक प्रकार का रक्त और त्वचा संबंधी रोग जो संक्रामक और घिनौना होता है।

मुहा०—कोढ़ चूना या टपकना=कोढ़ के कारण अंगों का गल गलकर गिरना। कोढ़ की खाज या कोढ़ में खाज=दुःख पर दुःख।

कोढ़ी–संज्ञा पु० [हिं० कोढ़] [स्त्री० कोढ़िन] कोढ़ रोग से पीड़ित मनुष्य।

कोण–संज्ञा पु० [सं०] १. एक बिंदु पर मिलती या कटती हुई दो ऐसी रेखाओं के बीच का अंतर जो मिलकर एक न हो जाती हों। कोना। २. कोठरी या घर वह स्थान जहाँ दो दीवारें मिली हों कोना। गोशा। ३. दो दिशाओं के बीच की दिशा। विदिशा। कोण चार हैं–अग्नि नैऋति, ईशान और वायव्य।

कोत–संज्ञा स्त्री० दे० "कुवत"।

कोतल—संज्ञा पु० [फा०] १. सजा सजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो। जलूसी घोड़ा। २. स्वयं राजा की सवारी का घोड़ा। ३. वह घोड़ा जो जरूरत के वक्त के लिये साथ रखा जाता है।

कोतवाल—संज्ञा पु० [सं० कोटपाल] १. पुलिस का एक प्रधान कर्म्मचारी। पुलिस का इसपेक्टर। २ पंडितों की सभा, बिरादरी की पंचायत अथवा साधुओं के अखाड़े की बैठक, भोज आदि का निमंत्रण देने और उनका ऊपरी प्रबंध करनेवाला।

कोतवाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोतवाल+ई (प्रत्य०)] १. वह मकान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्यालय हो। २ कोतवाल का पद या काम।

कोता*†—वि० [फा० कोतह] [स्त्री० कोती] छोटा। कम। अल्प।

कोताह—वि० [फा०] छोटा। कम।

कोताही—संज्ञा स्त्री० [फा०] त्रुटि। कमी।

कोति*—संज्ञा स्त्री० दे० "कोद"।

कोथला—संज्ञा पु० [हिं० गूथल अथवा कोठला] १. बड़ा थैला। २. पेट।

कोथली—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोथला] रुपए पैसे रखने की एक प्रकार की लंबी थैली जिसे कमर में बाँधते हैं। हिमयानी।

कोदंड—संज्ञा पु० [सं०] १. धनुष। कमान। २ धनु राशि। ३. भौंह।

कोद*†—संज्ञा स्त्री० [सं० कोण अथवा कुत्र] १. दिशा। ओर। तरफ। २ कोना।

कोदो, कोदों—संज्ञा पु० [सं० कोद्रव] एक कदन्न जो प्रायः सारे भारतवर्ष में होता है।

मुहा०—कोदो देकर पढ़ना या सीखना = अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना। छाती पर कोदो दलना = किसी को दिखलाकर कोई ऐसा काम करना जो उसे बहुत बुरा लगे।

कोधः—संज्ञा स्त्री० दे० "कोद"।

कोना—संज्ञा पु० [सं० कोण] १. विंदु पर मिलती हुई ऐसी दो रेखाओं के बीच का अंतर जो मिलकर एक रेखा नहीं हो जाती। अंतराल। गोशा। २. नुकीला किनारा या छोर। नुकीला सिरा। ३. छोर का वह स्थान जहाँ लंबाई चौड़ाई मिलती हो। खूँट। ४ कोठरी या घर के अंदर की वह सँकरी जगह जहाँ लंबाई-चौड़ाई की दीवारें मिलती हैं। गोशा। ५. एकांत और छिपा हुआ स्थान।

मुहा०—कोना झाँकना = भय या लज्जा से जी चुराना या बचने का उपाय करना।

कोनिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोना] दीवार के कोन पर चीजें रखने के लिये बैठाई हुई पटरी या पटिया। पटनी।

कोप—संज्ञा पु० [सं०] [वि० कुपित] क्रोध। रिस। गुस्सा।

कोपना*—क्रि० अ० [सं० कोप] क्रोध करना। क्रुद्ध होना। नाराज़ होना।

कोपभवन—संज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य रूठकर जा रहे।

कोपरा†—संज्ञा पु० [हिं० कोपल] डाल का पका हुआ आम। टपका। सीकर।

कोपल—संज्ञा पु० [सं० कोमल या कुपल्लव] वृक्ष आदि की नई मुलायम पत्ती। कल्ला।

कोपि—सर्व० [सं०] कोई।

कोपी—वि० [सं० कोपिन्] कोप करनेवाला। क्रोधी।

कोपीन—संज्ञा पु० दे० "कौपीन"।

कोफ्ता—संज्ञा पु० [फा०] कूटे हुए मांस का बना हुआ एक प्रकार का कबाब।

कोबी—संज्ञा स्त्री० दे० "गोभी"।

कोमल—वि० [सं०] १. मृदु। मुलायम। नरम। २. सुकुमार। नाजुक। ३. अपरिपक्व। कच्चा। ४. सुंदर। मनोहर। ५. स्वर का एक भेद। (संगीत)

कोमलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृदुलता। मुलायमत। नरमी। २. मधुरता।

कोमला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह वृत्ति या अक्षर योजना जिसमें कोमल पद हों और प्रसाद गुण हो।

कोयः†—सर्व० दे० "कोई"।

कोयरा†—संज्ञा पु० [सं० कोमल] १. साग-पात। सब्ज़ी तरकारी। २. हरा चारा।

कोयल—संज्ञा स्त्री० [सं० कोकिल] बहुत सुंदर बोलनेवाली काले रंग की एक छोटी चिड़िया।

संज्ञा स्त्री० एक लता जिसकी पत्तियाँ गुलाब की पत्तियों से मिलती जुलती होती हैं। अपराजिता।

कोयला—संज्ञा पु० [सं० कोकिल = अंगारा] १. जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ अंगारा जो बहुत काला होता है। २. एक प्रकार का

खनिज पदार्थ जो कोयले के रूप का होता और जलाने के काम में आता है।

कोया–संज्ञा पुं० [सं० कोश] १. आँख का ढेला। २. आँख का कोना।

संज्ञा पुं० [सं० कोश] कटहल का गूदेदार बीजकोश जो खाया जाता है।

कोर–संज्ञा स्त्री० [सं० कोण] १. किनारा। सिरा। हाशिया। २. कोना। गोशा। ३. कपड़े आदि के छोर का कोना।

मुहा०—कोर दबना = किसी प्रकार के दबाव या वश में होना।

४. द्वेष। वैर। वैमनस्य। ५. दोष। ऐब। बुराई। ६. हथियार की धार। बाढ़। ७. पंक्ति। श्रेणी। कतार।

कोरक–संज्ञा पुं० [सं०] १. कली। मुकुल। २. फूल या कली के आधार के रूप में हरी पत्तियाँ। फूल की कटोरी। ३. कमल की नाल या डंडी। मृणाल।

कोर-कसर–संज्ञा स्त्री० [हिं० कोर + फा० कसर] १. दोष और त्रुटि। ऐब और कमी। २. अधिकता या न्यूनता। कमी-बेशी।

कोरमा–संज्ञा पुं० [तु०] भुना हुआ मांस जिसमें शोरबा बिलकुल नहीं होता।

कोरहन–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का धान।

कोरा–वि० [सं० केवल] [स्त्री० कोरी] १. जो बर्ता न गया हो। नया। अछूता।

मुहा०—कोरी धार या बाढ़ = हथियार की धार जिस पर अभी सान रखी गई हो।

२. (कपड़ा या मिट्टी का बरतन) जो धोया न गया हो। ३. जिस पर कुछ लिखा या चित्रित न किया हो। सादा।

मुहा०—कोरा जवाब = साफ इनकार। स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार।

४. खाली। रहित। वंचित। विहीन। ५. आपत्ति या दोष से रक्षित। बेदाग। ६. मूर्ख। अपढ़। जड़। ७. धनहीन। अकिंचन। ८. केवल। सिर्फ।

संज्ञा पुं० बिना किनारे की रेशमी धोती।

† संज्ञा पुं० [सं० क्रोड़] गोद। उछंग।

कोरापन–संज्ञा पुं० [हिं० कोरा + पन (प्रत्य०)] नवीनता। अछूतापन।

कोरि–वि० दे० "कोटि"।

कोरी–संज्ञा पुं० [सं० कोल = सूअर] [स्त्री० कोरिन] हिंदू जुलाहा।

कोल–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूअर। शूकर। २. गोद। उत्संग। ३. बेर। बदरीफल। ४. तोले भर की एक तौल। ५. काली मिर्च। ६. दक्षिण के एक प्रदेश या राज्य का प्राचीन नाम। ७. एक जंगली जाति।

कोलाहल–संज्ञा पुं० [सं०] शोर। हौरा।

कोली–संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड] गोद।

संज्ञा पुं० हिंदू जुलाहा। कोरी।

कोल्हू–संज्ञा पुं० [हिं० कूल्हा ?] दानों से तेल या गन्ने से रस निकालने का यंत्र।

मुहा०—कोल्हू का बैल = बहुत कठिन परिश्रम करनेवाला। कोल्हू में डालकर पेरना = बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना।

कोविद–वि० [सं०] [स्त्री० कोविदा] पंडित। विद्वान्। कृतविद्य।

कोविदार–संज्ञा पुं० [सं०] कचनार।

कोश–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंड। अंडा। २. संपुट। डिब्बा। गोलक। ३. फूलों की बँधी कली। ४. पंचपात्र नामक पूजा का बरतन। ५. तलवार, कटार आदि का म्यान। ६. आवरण। खोल। ७. वेदांत में निरूपित अन्नमय आदि पाँच आवरण जो प्राणियों में होते हैं। ८. थैली। ९. संचित धन। १०. वह ग्रंथ जिसमें अर्थ या पर्याय के सहित शब्द इकट्ठे किए गए हों। अभिधान। ११. समूह। १२. अंड-कोश। १३. रेशम का कोया। कुसियारी। १४. कटहल आदि फलों का कोया।

कोशकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. म्यान बनानेवाला। २. शब्द-कोश बनानेवाला। अर्थ सहित शब्दों का क्रमानुसार संग्रह करनेवाला। ३. रेशम का कीड़ा।

कोशपान–संज्ञा पुं० [सं०] अपराध की एक प्राचीन परीक्षा-विधि जिसमें अभियुक्त को एक दिन उपवास करने के बाद कुछ प्रतिष्ठित लोगों के सामने तीन चुल्लू जल पीना पड़ता था।

कोशपाल–संज्ञा पुं० [सं०] खज़ाने की रक्षा करनेवाला।

कोशल–संज्ञा पुं० [सं०] १. सरयू या घाघरा नदी के दोनों तटों पर का देश। २. उपर्युक्त देश में बसनेवाली क्षत्रिय जाति। ३. अयोध्या नगर।

कोशवृद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडवृद्धि रोग।

कोशांबी–संज्ञा स्त्री० दे० "कौशांबी"।

कोशागार–संज्ञा पुं० [सं०] खज़ाना।

कोशिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] प्रयत्न। चेष्टा।
कोष—संज्ञा पु० दे० "कोश"।
कोषाध्यक्ष—संज्ञा पु० [सं०] खजानची।
कोष्ठ—संज्ञा पु० [सं०] १ उदर का मध्य भाग। पेट का भीतरी हिस्सा। २ शरीर के भीतर का कोई भाग जिसके अदर कोई विशेष शक्ति रहती हो। जैसे—पक्वाशय, गर्भाशय आदि। ३. कोठा। घर का भीतरी भाग। ४ वह स्थान जहाँ अन्न संग्रह किया जाय। गोला। ५. कोश। भंडार। खजाना। ६ प्राकार। शहरपनाह। चहारदीवारी। ७ वह स्थान जो लकीर, दीवार, बाढ आदि से चारों ओर से घिरा हो।
कोष्ठक—संज्ञा पु० [सं०] १ किसी प्रकार की दीवार, लकीर या और किसी वस्तु से घिरा स्थान। खाना। कोठा। २. किसी प्रकार का चक्र जिसमें बहुत से खाने या घर हों। सारिणी। ३. लिखने में एक प्रकार के चिह्नों का जोडा जिसके अंदर कुछ वाक्य या अंक आदि लिखे जाते हैं। जैसे—[ ], { } ( )।
कोष्ठबद्ध—संज्ञा पु० [सं०] पेट में मल का रुकना। कब्जियत।
कोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जन्मपत्री।
कोस—संज्ञा पु० [सं० क्रोश] दूरी की एक नाप जो प्राचीन काल में ४००० या ८००० हाथ की मानी जाती थी। आज-कल दो मील की दूरी।
मुहा०—कोसों या काले कोसों=बहुत दूर। कोसों दूर रहना=अलग रहना।
कोसना-क्रि० स० [सं० क्रोशन] शाप के रूप में गालियाँ देना।
मुहा०—पानी पी पीकर कोसना=बहुत अधिक कोसना। कोसना काटना=शाप और गाली देना।
कोसा—संज्ञा पु० [सं० कोश] एक प्रकार का रेशम।
संज्ञा पु० [सं० कोश=प्याला] [स्त्री० कोसिया] मिट्टी का बडा दीया। कसोरा।
कोसा काटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोसना+काटना] शाप के रूप में गाली। बद-दुआ।
कोसिला†—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या"।
कोहँडौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा+बरी] उर्द की पीठी और कुम्हड़े के गूदे से बनाई हुई बरी।
कोह—संज्ञा पु० [फा०] पर्वत। पहाड।
† संज्ञा पु० [सं० क्रोध] क्रोध। गुस्सा।
संज्ञा पु० [सं० ककुभ] अर्जुन वृक्ष।
कोहनी—संज्ञा स्त्री० दे० "कुहनी"।
कोहनूर—संज्ञा पु० [फा० कोह+अ० नूर] भारत की किसी खान से निकला हुआ एक बहुत बड़ा प्राचीन और प्रसिद्ध हीरा।
कोहबर—संज्ञा पु० [सं० कोष्ठवर] वह स्थान या घर जहाँ विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते हैं।
कोहल—संज्ञा पु० [सं०] एक मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रणेता कहे जाते हैं।
कोहान—संज्ञा पु० [फा०] ऊँट की पीठ पर का डिल्ला या कूबड।
कोहाना†—क्रि० अ० [हिं० कोह] १ रूठना। नाराज होना। मान करना। २ गुस्सा होना। क्रोध करना।
कोहिस्तान—संज्ञा पु० [फा०] पहाडी देश।
कोही—वि० [हिं० कोह] क्रोध करनेवाला।
वि० [फा० कोह] पहाडी।
कौंच—संज्ञा स्त्री० [सं० कच्छु] सेम की तरह की एक बेल जिसमें तरकारी के रूप में खाई जानेवाली फलियाँ लगती हैं। कपि-कच्छु। केवाँच।
कौंछ—संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।
कौंतेय—संज्ञा पु० [सं०] १ कुंती के युधिष्ठिर आदि पुत्र। २ अर्जुन वृक्ष।
कौंध—संज्ञा स्त्री० [हिं० कौंधना] बिजली की चमक।
कौंधना-क्रि० अ० [सं० कनन=चमकना+अंध] बिजली का चमकना।
कौंला—संज्ञा पु० [सं० कमला] एक प्रकार का मीठा नींबू या संगतरा।
कौआ—संज्ञा पु० दे० "कौवा"।
कौआना†—क्रि० अ० [हिं० कौआ] १. भौचक्का होना। चकपकाना। २ अचानक कुछ बडबडा उठना।
कौटिल्य—संज्ञा पु० [सं०] १ टेढ़ापन। २. कपट। ३ चाणक्य का एक नाम।
कौटुंबिक—वि० [सं०] १ कुटुंब या कुटुंब संबंधी। २ परिवारवाला।
कौडा—संज्ञा पु० [सं० कपर्दक] बड़ी कौड़ी।
संज्ञा पु० [सं० कुंड] जाडे के दिनों में तापने के लिये जलाई हुई आग। अलाव

कौड़िया-वि० [हिं० कौडी] कौड़ी के रंग का। कुछ स्याही लिए हुए सफेद। संज्ञा पुं० कौड़िल्ला पक्षी। किलकिला।

कौड़ियाला-वि० [हिं० कौडी] कौड़ी के रंग का। ऐसा हलका नीला जिसमें गुलाबी की कुछ झलक हो। कोकई। संज्ञा पुं० १. कोकई रंग। २. एक प्रकार का विषैला साँप। ३. कृपण धनाढ्य। कंजूस अमीर। ४. एक पौधा जिसमें सुच्छी के आकार के छोटे छोटे फूल लगते हैं। ५ कौड़िल्ला पक्षी। किलकिला।

कौड़ियाही-संज्ञा स्त्री० [हिं० कौडी] मजदूरी की एक रीति जिसमें प्रति खेप कुछ कौड़ियाँ दी जाती हैं।

कौड़िल्ला-संज्ञा पुं० [हिं० कौडी] मछली खानेवाली एक चिड़िया। किलकिला।

कौड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० कपर्दिका] १. समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह एक अस्थि-कोश के अंदर रहता है और जिसका अस्थिकोश सबसे कम मूल्य के सिक्के की तरह काम आता है। कपर्दिका। वराटिका। मुहा०—कौड़ी काम का नहीं=निकम्मा। निकृष्ट। कौड़ी का, या, दो कौड़ी का=१. जिसका कुछ मूल्य न हो। तुच्छ। निकम्मा। २. निकृष्ट। खराब। कौड़ी के तीन तीन होना=१. बहुत सस्ता होना। २. तुच्छ होना। बेकदर होना। नाचीज होना। कौड़ी कौड़ी अदा करना, चुकाना या भरना=सब ऋण चुका देना। धुल बेबाक कर देना। कौड़ी कौड़ी जोड़ना=बहुत थोड़ा थोड़ा करके धन इकट्ठा करना। बड़े कष्ट से रुपया बटोरना। कौड़ी भर=बहुत थोड़ा सा। जरा सा। कानी या झंझी कौड़ी=१. वह कौड़ी जो टूटी हो। २. अत्यंत अल्प द्रव्य। चित्ती कौड़ी=वह कौड़ी जिसकी पीठ पर उभरी हुई गाँठें हों। (इसका व्यवहार जुए में होता है।) २. धन। द्रव्य। रुपया-पैसा। ३. वह कर जो सम्राट् अपने अधीन राजाओं से लेता है। ४. आँख का डेला। ५. छाती के नीचे बीचोबीच की वह छोटी हड्डी जिस पर सबसे नीचे की दोनों पसलियाँ मिलती हैं। ६. जाँघ, काँख या गले की गिल्टी। ७. कटार की नोक।

कौणप-संज्ञा पुं० [सं०] १. राक्षस। २. पापी। अधर्मी।

कौतिग ‡-संज्ञा पुं० दे० "कौतुक"।

कौतुक-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कौतुकी] १. कुतूहल। २. आश्चर्य। अचंभा। ३. विनोद। दिल्लगी। ४ आनंद। प्रसन्नता। ५. खेल तमाशा।

कौतुकिया-संज्ञा पुं० [हिं० कौतुक+इया (प्रत्य०)] १. कौतुक करनेवाला। २. विवाह संबंध करानेवाला, नाऊ या पुरोहित।

कौतुकी-वि० [सं०] १ कौतुक करनेवाला। विनोदशील। २. विवाह-संबंध करानेवाला। ३. खेल-तमाशा करनेवाला।

कौतूहल-संज्ञा पुं० दे० "कुतूहल"।

कौथ†-संज्ञा स्त्री० [हिं० कौन+तिथि] १. कौन सी तिथि? कौन तारीख? २. कौन संबंध? कौन वास्ता?

कौथा†-वि० [हिं० कौन+सं० स्था (स्थान)] किस संख्या का? गणना में किस स्थान का?

कौन-सर्व० [सं० क, किम्] एक प्रश्नवाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करता है। मुहा०—कौन सा=कौन? कौन होना=१. क्या अधिकार रखना? क्या मतलब रखना? २ कौन संबंधी होना? रिश्ते में क्या होना?

कौनप-संज्ञा पुं० दे० "कौणप"।

कौपीन-संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मचारियों और संन्यासियों आदि के पहनने की लँगोटी। चीर। कफनी। काछा।

कौम-संज्ञा स्त्री० [अ०] वर्ण। जाति।

कौमार-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कौमारी] १. कुमार अवस्था। जन्म से पाँच वर्ष तक की या (तंत्र के मत से) १६ वर्ष तक की अवस्था। २. कुमार।

कौमारभृत्य-संज्ञा पुं० [सं०] बालकों के लालन-पालन और चिकित्सा आदि की विद्या। धातृविद्या। दायागिरी।

कौमारी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी पुरुष की पहली स्त्री। २. सात मातृकाओं में से एक। ३. पार्वती।

कौमी-वि० [अ० कौम] कौम का। जाति संबंधी। जातीय।

कौमुदी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ज्योत्स्ना। चाँदनी। जुन्हैया। २. कार्तिकी पूर्णिमा। ३. आश्विनी पूर्णिमा। ४. दीपोत्सव की

तिथि। २. कुमुदिनी। कोंई।

कौमोदी, कौमोदकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु की गदा।

कौर–संज्ञा पु० [सं० कवल] १. उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। ग्रास। गस्सा। निवाला।

मुहा०—मुँह का कौर छीनना=देखते देखते किसी का अंश दबा बैठना।

२. उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने के लिये डाला जाय।

कौरना†–क्रि० स० [हिं० कौड़ा] थोड़ा भूनना। सेंकना।

कौरव–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० और वि० कौरवी] कुरु राजा की संतान। कुरु-वंशज। वि० [सं०] [स्त्री० कौरवी] कुरु संबंधी।

कौरवपति–संज्ञा पु० [सं०] दुर्योधन।

कौरी–संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड़] अँकवार। गोद।

कौलंज–संज्ञा पु० [यू० कूलज] पसलियों के नीचे का दर्द। बायसूल।

कौल–संज्ञा पु० [सं०] १. उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे खानदान का। २. वाम-मार्गी।

संज्ञा पु० [सं० कवल] कौर। ग्रास।

कौल–संज्ञा पु० [अ०] १. कथन। उक्ति। वाक्य। २ प्रतिज्ञा। प्रण। वादा।

यौ०—कौल करार=परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा।

कौवा–संज्ञा पु० [सं० काक] [स्त्री० कौवी] १. एक बड़ा काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर और चालाकी के लिये प्रसिद्ध है। काक।

यौ०—कौवा गुहार या कौवा रोर=१. बहुत अधिक बकबक। २. गहरा शोर गुल।

२. बहुत धूर्त्त मनुष्य। काइयाँ। ३. वह लकड़ी जो बँडेरी के सहारे के लिये लगाई जाती है। कौहा। बहुँवा। ४. गले के अंदर, तालू की झालर के बीच का लटकता हुआ मांस का टुकड़ा। घाँटी। लंगर। ललरी। ५. एक मछली जिसका मुँह बगले की चोंच सा होता है।

कौवाठोंठी–संज्ञा स्त्री० [सं० काकतुंडी] एक लता जिसके फूल सफ़ेद और नीले रंग के तथा आकार में कौवे की चोंच के समान होते हैं। काकतुंडी। काकनासा।

क़ौवाल–संज्ञा पुं० [अ०] क़ौवाली गानेवाला।

क़ौवाली–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. एक प्रकार का भगवत्प्रेम-संबंधी गीत जो सूफ़ियों की मजलिसों में होता है। २. इस धुन में गाई जानेवाली कोई ग़ज़ल। ३. क़ौवालों का पेशा।

कौशल–संज्ञा पु० [सं०] १. कुशलता। चतुराई। निपुणता। २. मंगल। ३. कोशल देश का निवासी।

कौशलेय–संज्ञा पु० [सं०] रामचंद्र।

कौशल्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] कोशल के राजा दशरथ की प्रधान स्त्री और रामचंद्र की माता।

कौशांबी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बहुत प्राचीन नगरी जिसे कुश के पुत्र कौशांब ने बसाया था। वत्सपट्टन।

कौशिक–संज्ञा पु० [सं०] १. इंद्र। २. कुशिक राजा के पुत्र गाधि। ३. विश्वामित्र। ४. कोशाध्यक्ष। ५. कोशकार। ६. रेशमी कपड़ा। ७. शृंगार रस। ८. एक उपपुराण। ९. हनुमत् के मत से छः रागों में से एक।

कौशिकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंडिका। २. राजा कुशिक की पोती और ऋचीक मुनि की स्त्री। ३. काव्य या नाटक में वह वृत्ति जिसमें करुणा, हास्य और शृंगार रस का वर्णन हो और सरल वर्ण आवें।

कौशिल्य–संज्ञा पु० [सं०] एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि।

कौशेय–वि० [सं०] रेशम का। रेशमी।

कौषिकी–संज्ञा स्त्री० दे० "कौशिकी"।

कौषीतकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऋग्वेद की एक शाखा। २. ऋग्वेद के अंतर्गत एक ब्राह्मण और उपनिषद्।

कौसल*–संज्ञा पु० दे० "कौशल"।

कौसिक*–संज्ञा पु० दे० "कौशिक"।

कौसिला*†–संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या"।

कौस्तुभ–संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार समुद्र से निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु अपने वक्षस्थल पर पहने रहते हैं।

क्या–सर्व० [सं० किम्] एक प्रश्नवाचक शब्द जो प्रस्तुत या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा करता है। कौन वस्तु या बात?

मुहा०—क्या कहना=प्रशंसासूचक वाक्य। अच्छा है! क्या कुछ,

कुछ। बहुत कुछ। क्या चीज़ है! = ना-चीज़ है। तुच्छ है। क्या जाता है! = क्या नुकसान होता है? कुछ हानि नहीं। क्या जाने! = कुछ नहीं जानते। ज्ञात नहीं। मालूम नहीं। क्या पड़ी है? = क्या आवश्यकता है? कुछ ज़रूरत नहीं। कुछ गरज नहीं। और क्या = हाँ ऐसा ही है। वि० १. कितना? किस क़दर? २. बहुत अधिक। बहुतायत से। ३. अपूर्व। विचित्र। ४. बहुत अच्छा। कैसा उत्तम! क्रि० वि० क्यों? किस लिये? अव्य० केवल प्रश्नसूचक शब्द।

क्यारी–संज्ञा स्त्री० दे० "कियारी"।

क्यों–क्रि० वि० [सं० किम्] १. किसी व्यापार या घटना के कारण की जिज्ञासा करने का शब्द। किस कारण? किस लिये? किस वास्ते?

यौ०—क्योंकि=इसलिये कि। इस कारण कि।

मुहा०—क्योंकर = किस प्रकार? कैसे? क्यों नहीं! = १ ऐसा ही है। ठीक कहते हो। निःसंदेह। बेशक। २. हाँ। ज़रूर। ३. कभी नहीं। मैं ऐसा नहीं कर सकता।

२. किस भाँति? किस प्रकार?

क्रंदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोना। विलाप। २. युद्ध के समय वीरों का आह्वान।

क्रकच–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्योतिष में एक अशुभ योग। २. करील का पेड़। ३. आरा। करवत। ४ एक नरक।

क्रतु–संज्ञा पुं० [सं०] १. निश्चय। संकल्प। २ इच्छा। अभिलाषा। ३. विवेक। प्रज्ञा। ४. इंद्रिय। ५. जीव। ६. विष्णु। ७. यज्ञ, विशेषतः अश्वमेध।

यौ०—क्रतुपति = विष्णु। क्रतुफल = यज्ञ का फल, स्वर्ग आदि।

८. आषाढ़ मास। ९. ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से हैं।

क्रतुध्वंसी–संज्ञा पुं० [सं०] (दक्ष प्रजापति का यज्ञ नष्ट करनेवाले) शिव।

क्रतुपशु–संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा।

क्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १. पैर रखने या डग भरने की क्रिया। २. वस्तुओं या कार्यों के परस्पर आगे-पीछे आदि होने का नियम। पूर्वापर संबंधी व्यवस्था। शैली। तरतीब। सिलसिला। ३. कार्य को उचित रूप से धीरे धीरे करने की प्रणाली।

मुहा०—क्रम क्रम करके = धीरे धीरे। शनैः शनैः। क्रम से, क्रम क्रम से = धीरे धीरे। ४. वेद पाठ की एक प्रणाली। ५ किसी कृत्य के पीछे कौन सा कृत्य करना चाहिए, इसकी व्यवस्था। वैदिक विधान। कल्प। ६. वह काव्यालंकार जिसमें प्रथमोक्त वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय।

* संज्ञा पुं० दे० "कर्म"।

क्रमनासा–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा"।

क्रमशः–क्रि० वि० [सं०] १ क्रम से। सिलसिलेवार। २. धीरे धीरे। थोड़ा थोड़ा करके।

क्रमसंन्यास–संज्ञा पुं० [सं०] वह संन्यास जो क्रम से ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम के बाद लिया जाय।

क्रमागत–वि० [सं०] १. क्रमशः किसी रूप को प्राप्त। २. जो सदा से होता आया हो। परंपरागत।

क्रमानुकूल, क्रमानुसार–वि०, क्रि० वि० [सं०] श्रेणी के अनुसार। क्रम से। सिलसिलेवार। तरतीब से।

क्रमिक–क्रि० वि० [सं०] १. क्रम-युक्त। क्रमागत। २. परंपरागत।

क्रमुक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुपारी। २. नागरमोथा। ३. एक प्राचीन देश।

क्रमेल, क्रमेलक–संज्ञा पुं० [सं० यूना० कमेलस] ऊँट। शुतुर।

क्रय–संज्ञा पुं० [सं०] मोल लेने की क्रिया। खरीदने का काम।

यौ०—क्रय विक्रय = खरीदने और बेचने की क्रिया। व्यापार।

क्रयी–संज्ञा पुं० [सं० क्रयिन्] मोल लेनेवाला। खरीदनेवाला।

क्रय्य–वि० [सं०] जो बिक्री के लिये रखा जाय। जो चीज बेचने के लिये हो।

क्रव्य–संज्ञा पुं० [सं०] मांस।

क्रव्याद–संज्ञा पुं० [सं०] १. मांस खानेवाला जीव। २. चिता की आग।

क्रांत–वि० [सं०] १. दबा या ढका हुआ। २. जिस पर आक्रमण हुआ हो। ग्रस्त। ३. आगे बढ़ा हुआ। जैसे—सीमाक्रांत।

क्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कदम रखना। गति। २. खगोल में वह कल्पित वृत्त, जिस पर सूर्य्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता जान पड़ता है। अपक्रम। ३. एक दशा

से दूसरी दशा में भारी परिवर्त्तन। फेरफार। उलटफेर। जैसे—राज्यक्रांति।
क्रांतिमंडल–संज्ञा पुं० [सं०] वह वृत्त जिस पर सूर्य्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है।
क्रांतिवृत्त–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य का मार्ग।
क्रिचयन†–संज्ञा पुं० [सं० कृच्छ्रचांद्रायण] चांद्रायण व्रत।
क्रिमि–संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।
क्रिमिजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लाह। लाख।
क्रियमाण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किया जा रहा हो। २. वर्त्तमान कर्म जिनका फल आगे मिलेगा।
क्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी काम का होना या किया जाना। कर्म। २. प्रयत्न। चेष्टा। ३. गति। हरकत। हिलना डोलना। ४. अनुष्ठान। आरंभ। ५. व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय। जैसे—खाना, मारना। ६. शौच आदि कर्म। नित्यकर्म। ७. श्राद्ध आदि प्रेत कर्म।
यौ०—क्रिया-कर्म=अंत्येष्टि क्रिया।
८. उपचार। चिकित्सा।
क्रियाचतुर–संज्ञा पुं० [सं०] क्रिया या घात में चतुर नायक।
क्रियातिपत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें प्रकृत से भिन्न, कल्पना करके, किसी विषय का वर्णन किया जाय। यह अतिशयोक्ति का एक भेद है।
क्रियानिष्ठ–वि० [सं०] संध्या, तर्पण आदि नित्य कर्म करनेवाला।
क्रियायोग–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की पूजा करना और मंदिर आदि बनवाना।
क्रियार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] वेद में यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधि वाक्य।
क्रियावान्–वि० [सं०] कर्मनिष्ठ। कर्मठ।
क्रियाविदग्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक पर किसी क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करे।
क्रिया विशेषण–संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव या रीति से होने का बोध हो। जैसे—वैसे, धीरे, क्रमशः, अचानक इत्यादि।
क्रिस्तान–संज्ञा पुं० [अं० क्रिश्चियन्] ईसा के मत पर चलनेवाला। ईसाई।
क्रिस्तानी–वि० [हिं० क्रिस्तान+ई(प्रत्य०)] १. ईसाइयों का। २. ईसाई मत के अनुसार।
क्रीट†–संज्ञा पुं० दे० "किरीट"।
क्रीडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केलि। आमोद-प्रमोद। खेल-कूद। २. एक छंद या वृत्त।
क्रीड़ाचक्र–संज्ञा पुं० [सं०] छः यगणों का एक वृत्त या छंद। महामोदकारी।
क्रीत–वि० [सं०] खरीदा हुआ।
संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "क्रीतक"। २. पंद्रह प्रकार के दासों में से वह जो मोल लिया गया हो।
क्रीतक–संज्ञा पुं० [सं०] बारह प्रकार के पुत्रों में से एक, जो माता पिता को धन देकर उनसे खरीदा गया हो।
क्रुद्ध–वि० [सं०] कोपयुक्त। क्रोध में भरा हुआ।
क्रूर–वि० [सं०] [स्त्री० क्रूरा] १. पर-पीड़क। दूसरों को कष्ट पहुँचानेवाला। २. निर्दय। जालिम। ३. कठिन। ४. तीक्ष्ण।
क्रूरकर्मा–संज्ञा पुं० [सं०] क्रूर काम करनेवाला।
क्रूरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निष्ठुरता। निर्दयता। कठोरता। २. दुष्टता।
क्रूरात्मा–वि० [सं०] दुष्ट प्रकृतिवाला।
क्रेता–संज्ञा पुं० [सं०] खरीदनेवाला। मोल लेनेवाला। खरीददार।
क्रोड–संज्ञा पुं० [सं०] १. आलिंगन में दोनों बाँहों के बीच का भाग। भुजांतर। वक्षःस्थल। २. गोद। अँकवार। कोल।
क्रोड़पत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी पुस्तक या समाचारपत्र में उसकी पूर्त्ति के लिये ऊपर से लगाया जाय। परिशिष्ट। पूरक। जमीमा।
क्रोध–संज्ञा पुं० [सं०] चित्त का वह उग्र भाव जो कष्ट या हानि पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले के प्रति होता है। कोप। रोष। गुस्सा।
क्रोधित†–वि० [हिं० क्रोध] कुपित। क्रुद्ध।
क्रोधी–वि० [सं० क्रोधिन्] [स्त्री० क्रोधिनी] क्रोध करनेवाला। गुस्सावर।
क्रोश–संज्ञा पुं० [सं०] कोस।
क्रौंच–संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। २. [illegible]

३ पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक। ४ एक प्रकार का अस्त्र। ५ एक वर्ण-वृत्त।

क्लांत-वि० [सं०] थका हुआ। श्रांत।

क्लांति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परिश्रम। २ थकावट।

क्लिष्ट-वि० [सं०] १ क्लेशयुक्त। दुखी। दुःख से पीड़ित। २ बेमेल (बात)। पूर्वापर विरुद्ध (वाक्य)। ३ कठिन। मुश्किल। ४ जो कठिनता से सिद्ध हो।

क्लिष्टता-संज्ञा स्त्री० [सं०] क्लिष्ट का भाव।

क्लिष्टत्व-संज्ञा पुं० [सं०] १ क्लिष्ट का भाव। कठिनता। क्लिष्टता। २ काव्य का वह दोष जिसके कारण उसका भाव समझने में कठिनता होती है।

क्लीव-वि० पुं० [सं०] १ षंढ। नपुंसक। नामर्द। २ डरपोक। कायर।

क्लीवता-संज्ञा स्त्री० [सं०] क्लीव का भाव।

क्लीवत्व-संज्ञा पुं० [सं०] नपुंसकता।

क्लेद-संज्ञा पुं० [सं०] १ गीलापन। आर्द्रता। २ पसीना।

क्लेदक-संज्ञा पुं० [सं०] १ पसीना लाने वाला। २ शरीर में एक प्रकार का कफ जिससे पसीना उत्पन्न होता है। ३ शरीर में की दस प्रकार की अग्नियों में से एक।

क्लेश-संज्ञा पुं० [सं०] १ दुःख। कष्ट। व्यथा। वेदना। † २ झगड़ा। लड़ाई।

क्लेशित-वि० [सं०] जिसे क्लेश हो। दुःखित। पीड़ित।

क्लैव्य-संज्ञा पुं० [सं०] क्लीवता।

क्लोम-संज्ञा पुं० [सं०] दाहिनी ओर का फेफड़ा। फुप्फुस।

क्वचित्-क्रि० वि० [सं०] कोई ही। शायद ही कोई। बहुत कम।

क्वणित-वि० [सं०] १ शब्द करता हुआ। झनकार करता हुआ। २ बजता हुआ।

क्वाथ-संज्ञा पुं० [सं०] पानी में उबालकर ओषधियों का निकाला हुआ गाढ़ा रस। काढ़ा। जोशाँदा।

क्वारपन-संज्ञा पुं० [हिं० क्वारा + पन (प्रत्य०)] क्वारापन। कुमारपन। क्वारा का भाव।

क्वारा-संज्ञा पुं०, वि० [सं० कुमार] [स्त्री० क्वारी] जिसका विवाह न हुआ हो। कुआरा। बिन ब्याहा।

क्वारापन-संज्ञा पुं० दे० "क्वारपन"।

क्वासि-वाक्य [सं०] तू कहाँ है ? तू किस स्थान पर है ?

क्षंतव्य-वि० [सं०] क्षमा करने के योग्य। क्षम्य।

क्षण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० क्षणिक] १ काल या समय का सब से छोटा भाग। पल का चतुर्थांश।

मुहा०—क्षण मात्र = थोड़ी देर।

२ काल। ३ अवसर। मौका। ४ समय। ५ उत्सव। पर्व का दिन।

क्षणप्रभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली।

क्षणभंगुर-वि० [सं०] शीघ्र या क्षण भर में नष्ट होनेवाला। अनित्य।

क्षणिक-वि० [सं०] एक क्षण रहने-वाला। क्षणभंगुर। अनित्य।

क्षणिक वाद-संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का एक सिद्धांत जिसमें प्रत्येक वस्तु उत्पत्ति से दूसरे क्षण में नष्ट हो जानेवाली मानी जाती है।

क्षत-वि० [सं०] जिसे क्षति या आघात पहुँचा हो। घाव लगा हुआ।

संज्ञा पुं० [सं०] १ घाव। जख्म। २ व्रण। फोड़ा। ३ मारना। काटना। ४ क्षति या आघात पहुँचाना।

क्षतज-वि० [सं०] १ क्षत से उत्पन्न। जैसे—क्षतज शोथ। २ लाल। सुर्ख।

संज्ञा पुं० [सं०] रक्त। रुधिर। खून।

क्षतयोनि-वि० [सं०] (स्त्री) जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो।

क्षत विक्षत-वि० [सं०] जिसे बहुत चोटें लगी हों। घायल। लहू लुहान।

क्षतव्रण-संज्ञा पुं० [सं०] कटने या चोट लगने के बाद पका हुआ स्थान।

क्षता-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसका विवाह से पहले ही किसी पुरुष से दूषित संबंध हो चुका हो।

क्षताशौच-संज्ञा पुं० [सं०] वह अशौच जो किसी मनुष्य को घायल या जख्मी होने के कारण लगता है।

क्षति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हानि। नुकसान। २ क्षय। नाश।

क्षत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १ बल। २ राष्ट्र। ३ धन। ४ शरीर। ५ जल। [स्त्री० क्षत्राणी] क्षत्रिय।

क्षत्रकर्म-संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियोचित कर्म।
क्षत्रधर्म-संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों का धर्म। यथा—अध्ययन, दान, यज्ञ और प्रजा-पालन करना आदि।
क्षत्रप-संज्ञा पुं० [सं० या पुं० फा०] ईरान के प्राचीन मांडलिक राजाओं की उपाधि जो भारत के शक राजाओं ने ग्रहण की थी।
क्षत्रपति-संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
क्षत्रयोग-संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में राजयोग।
क्षत्रवेद-संज्ञा पुं० [सं०] धनुर्वेद।
क्षत्रिय-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० क्षत्रिया, क्षत्राणी] १. हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण। इस वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और शत्रुओं से उसकी रक्षा करना है। २ राजा।
क्षत्री-संज्ञा पुं० दे० "क्षत्रिय"।
क्षपणक-वि० [सं०] निर्लज्ज।
संज्ञा पुं० [सं०] १. नंगा रहनेवाला जैन यती। दिगंबर यती। २. बौद्ध संन्यासी।
क्षपा-संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।
क्षपाकर-संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।
क्षपाचर-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० क्षपाचरी] निशाचर। राक्षस।
क्षपानाथ-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
क्षम-वि० [सं०] सशक्त। योग्य। समर्थ। उपयुक्त। (यौगिक में) जैसे—कार्यक्षम।
संज्ञा पुं० [सं०] शक्ति। बल।
क्षमणीय-वि० [सं०] क्षमा करने योग्य।
क्षमता-संज्ञा स्त्री० [सं०] योग्यता। सामर्थ्य।
क्षमना-क्रि० स० दे० "छमना"।
क्षमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चित्त की एक वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरे द्वारा पहुँचाए हुए कष्ट को चुपचाप सह लेता है और उसके प्रतिकार या दंड की इच्छा नहीं करता। शांति। मुआफ़ी। २. सहिष्णुता। सहनशीलता। ३. पृथ्वी। ४. एक की संख्या। ५ दक्ष की एक कन्या। ६. दुर्गा। ७. तेरह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति।
क्षमाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० क्षमा] क्षमा करने की क्रिया।
क्षमाना-क्रि० स० दे० "छमाना"।
क्षमालु-वि० [सं०] क्षमाशील। क्षमावान्।
क्षमावान्-वि० पुं० [सं० क्षमावत्] [स्त्री० क्षमावती] १. क्षमा करनेवाला। माफ़ करनेवाला। २. सहनशील। ग़मख़ोर।
क्षमाशील-वि० [सं०] १. माफ़ करनेवाला। क्षमावान्। २. शांत-प्रकृति।
क्षमितव्य-वि० [सं०] क्षमा करने योग्य।
क्षमी-वि० [सं० क्षमा + ई (प्रत्य०)] १. क्षमाशील। माफ़ करनेवाला। २. शांत-प्रकृति।
वि० [सं० क्षम] समर्थ। सशक्त।
क्षम्य-वि० [सं०] माफ़ करने योग्य। जो क्षमा किया जाय।
क्षय-संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० क्षयित] १. धीरे धीरे घटना। ह्रास। अपचय। २. प्रलय। कल्पांत। ३. नाश। ४. घर। मकान। ५. यक्ष्मा नामक रोग। क्षयी। ६. अंत। समाप्ति। ७. ज्योतिष में बहुत दिनों पर पड़नेवाला एक मास या महीना जिसमें दो संक्रांतियाँ होती हैं और जिसके तीन मास पहले और तीन मास पीछे एक एक अधिमास पड़ता है।
क्षयिष्णु-वि० [सं०] क्षय या नष्ट होनेवाला।
क्षयी-वि० [सं०] १. क्षय होनेवाला। नष्ट होनेवाला। २. जिसे क्षय या यक्ष्मा रोग हो।
संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
संज्ञा स्त्री० [सं० क्षय] एक प्रसिद्ध असाध्य रोग जिसमें रोगी का फेफड़ा सड़ जाता और सारा शरीर धीरे धीरे गल जाता है। तपेदिक। यक्ष्मा।
क्षय्य-वि० [सं०] क्षय होने के योग्य।
क्षर-वि० [सं०] नाशवान्। नष्ट होनेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] १. जल। २. मेघ। ३. जीवात्मा। ४. शरीर। ५ अज्ञान।
क्षरण-संज्ञा पुं० [सं०] १. रस रसकर चूना। स्राव होना। रसना। २. झगड़ा। ३. नाश या क्षय होना। ४. छूटना।
क्षांत-वि० [सं०] [स्त्री० क्षांता] १. क्षमाशील। क्षमा करनेवाला। २. सहनशील।
क्षांति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहिष्णुता। सहनशीलता। २. क्षमा।
क्षात्र-वि० [सं०] क्षत्रिय-संबंधी। क्षत्रियों का।
संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियत्व।
क्षाम-वि० [सं०] [स्त्री०

कृश। दुबला पतला।
यौ०—क्षामोदरी = पतली कमरवाली (स्त्री)।
२. दुर्बल। कमजोर। ३. अल्प। थोड़ा।
क्षार—संज्ञा पुं० [सं०] १. दाहक, जारक या विस्फोटक ओषधियों को जलाकर या खनिज पदार्थों को पानी में घोलकर रासायनिक क्रिया द्वारा साफ़ करके तैयार की हुई राख का नमक। खार। खारी। २. नमक। ३. सज्जी। खार। ४. शोरा। ५. सुहागा। ६ भस्म। राख।
वि० [सं०] १. क्षरणशील। २. खारा।
क्षारलवण—संज्ञा पुं० [सं०] खारी नमक।
क्षिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथिवी। २. वासस्थान। जगह। ३. गोरोचन। ४. क्षय। ५. प्रलय काल।
क्षितिज—संज्ञा पुं० [सं०] १. मंगल ग्रह। २. नरकासुर। ३. केंचुआ। ४. वृक्ष। पेड़। ५. खगोल में वह तिर्यग् वृत्त जिसकी दूरी आकाश के मध्य से ९० अंश हो। ६. दृष्टि की पहुँच पर वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं।
क्षिप्त—वि० [सं०] १. फेंका हुआ। त्यागा हुआ। २. विकीर्ण। ३. अवज्ञात। अपमानित। ४. पतित। ५. वात रोग से ग्रस्त। ६. उचटा हुआ। चंचल।
संज्ञा पुं० चित्त की पाँच अवस्थाओं में से एक। (योग)
क्षिप्र—क्रि० वि० [सं०] १. शीघ्र। जल्दी। २. तत्क्षण। तुरंत।
वि० [सं०] १. तेज़। जल्द। २. चंचल।
क्षिप्रहस्त—वि० [सं०] शीघ्र या तेज़ काम करनेवाला।
क्षीण—वि० [सं०] १. दुबला-पतला। २. सूक्ष्म। ३. क्षयशील। ४. घटा हुआ। जो कम हो गया हो।
क्षीण चंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चंद्रमा।
क्षीणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निर्बलता। कमज़ोरी। २. दुबलापन। ३. सूक्ष्मता।
क्षीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूध। पय।
यौ०—क्षीरसार = मक्खन।
२. द्रव या तरल पदार्थ। ३. जल। पानी। ४. पेड़ों का रस या दूध। ५. खीर।
क्षीरकाकोली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की काकोली जड़ी जो अष्टवर्ग के अंतर्गत है।
क्षीरज—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. शंख। ३. कमल। ४. दही।
क्षीरजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
क्षीरधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
क्षीरनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
क्षीरव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] केवल दूध पीकर रहने का व्रत। पयाहार।
क्षीरसागर—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक, जो दूध से भरा हुआ माना जाता है।
क्षीरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्षीरकाकोली। २. खिरनी।
क्षीरोद—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीर समुद्र।
यौ०—क्षीरोद-तनया = लक्ष्मी।
क्षुण्ण—वि० [सं०] १. अभ्यस्त। २. दलित। ३. टुकड़े टुकड़े किया हुआ। ४. खंडित।
क्षुत—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूख। क्षुधा।
क्षुद्र—वि० [सं०] १. कृपण। कंजूस। २. अधम। नीच। ३. अल्प। छोटा या थोड़ा। ४. क्रूर। खोटा। ५. दरिद्र।
क्षुद्रघंटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घुँघरूदार करधनी। २. घुँघरू।
क्षुद्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नीचता। कमीनापन। २. ओछापन।
क्षुद्रप्रकृति—वि० [सं०] ओछे या खोटे स्वभाववाला। नीच प्रकृति का।
क्षुद्रबुद्धि—वि० [सं०] १. दुष्ट या नीच बुद्धिवाला। २. नासमझ। मूर्ख।
क्षुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेश्या। २. अमलोनी। लोनी। ३. मधुमक्खी।
क्षुद्रावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षुद्रघंटिका।
क्षुद्राशय—वि० [सं०] नीच-प्रकृति। कमीना। "महाशय" का उलटा।
क्षुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० क्षुधित, क्षुधालु] भोजन करने की इच्छा। भूख।
क्षुधातुर—वि० [सं०] भूखा।
क्षुधावंत—वि० दे० "क्षुधावान्"।
क्षुधावान्—वि० [सं०] [स्त्री० क्षुधावती] जिसे भूख लगी हो। भूखा।
क्षुधित—वि० [सं०] भूखा।
क्षुप—संज्ञा पुं० [सं०] छोटी डालियोंवाला वृक्ष। पौधा। झाड़ी।
क्षुब्ध—वि० [सं०] १. चंचल। अधीर।

२. व्याकुल। विह्वल। ३. भयभीत। डरा हुआ। ४. कुपित। क्रुद्ध।
क्षुभित–वि० [सं०] क्षुब्ध।
क्षुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. छुरा। उस्तरा। २. पशुओं के पाँव का खुर।
क्षुरधार–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक नरक। २. एक प्रकार का बाण।
क्षुरप्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बाण। २ खुरपा।
क्षुरिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छुरी। चाकू। २. एक यजुर्वेदीय उपनिषद्।
क्षुरी–संज्ञा पुं० [सं० क्षुरिन्] [स्त्री० क्षुरिनी] १. नाई। हज्जाम। २. वह पशु जिसके पाँव में खुर हों।
संज्ञा स्त्री० [सं०] छुरी। चाकू।
क्षेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ अन्न बोया जाता हो। खेत। २. समतल भूमि। ३. उत्पत्ति-स्थान। ४. स्थान। प्रदेश। ५. तीर्थ-स्थान। ६. स्त्री। जोरू। ७. शरीर। बदन। ८ अंतःकरण। ९. वह स्थान जो रेखाओं से घिरा हुआ हो।
क्षेत्रगणित–संज्ञा पुं० [सं०] क्षेत्रों के नापने और उनका क्षेत्रफल निकालने की विधि बतानेवाला गणित।
क्षेत्रज–वि० [सं०] जो खेत से उत्पन्न हो। संज्ञा पुं० [सं०] वह पुत्र जो किसी मृत या असमर्थ पुरुष की बिना संतानवाली स्त्री के गर्भ से दूसरे पुरुष द्वारा उत्पन्न हो।
क्षेत्रज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] १. जीवात्मा। २. परमात्मा। ३. किसान। खेतिहर। वि० [सं०] जानकार। ज्ञाता।
क्षेत्रपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. खेतिहर। २. जीवात्मा। ३. परमात्मा।
क्षेत्रपाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. खेत का रखवाला। क्षेत्ररक्षक। २. एक प्रकार के भैरव। ३. द्वारपाल। ४. किसी स्थान का प्रधान प्रबंधकर्त्ता। भूमिया।
क्षेत्रफल–संज्ञा पुं० [सं०] किसी क्षेत्र का वर्गात्मक परिमाण। रकबा।
क्षेत्रविद्–संज्ञा पुं० [सं०] जीवात्मा।
क्षेत्री–संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्रिन्] १. खेत का मालिक। २. नियुक्ता स्त्री का विवाहित पति। ३. स्वामी।
क्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना। २. ठोकर। घात। ३. अवज्ञा। शर। ४. निंदा। बदनामी। ५. दूरी। ६. बिताना। गुज़ारना। जैसे—कालक्षेप।
क्षेपक–वि० [सं०] १. फेंकनेवाला। २. मिलाया हुआ। मिश्रित। ३. निंदनीय। संज्ञा पुं० [सं०] ऊपर से या पीछे से मिलाया हुआ अंश।
क्षेपण–संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना। २. गिराना। ३. बिताना। गुजारना।
क्षेमंकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की चील जिसका गला सफेद होता है। २. एक देवी।
क्षेम–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राप्त वस्तु की रक्षा। सुरक्षा। हिफ़ाज़त।
यौ०—योग-क्षेम।
२. कुशल। मंगल। ३. अभ्युदय। ४. सुख। आनंद। ५. मुक्ति।
क्षैण्य–संज्ञा पुं० [सं०] क्षीण का भाव।
क्षोणि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. एक की संख्या।
क्षोणिप–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
क्षोणी–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणि"।
क्षोभ–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० क्षुब्ध,क्षुभित] १. विचलता। खलबली। २ व्याकुलता। घबराहट। ३. भय। डर। ४. रंज। शोक। ५. क्रोध।
क्षोभण–वि० [सं०] क्षोभित करनेवाला। क्षोभक।
संज्ञा पुं० [सं०] काम के पाँच बाणों में से एक।
क्षोभित*–वि० [सं० क्षोभ] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २. विचलित। चलायमान। ३. डरा हुआ। भयभीत। ४. क्रुद्ध।
क्षोभी–वि० [सं० क्षोभिन्] उद्वेगशील। व्याकुल। चंचल।
क्षोम–संज्ञा पुं० दे० "क्षौम"।
क्षौणि, क्षौणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथिवी। २. एक की संख्या।
क्षौद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. क्षुद्र का भाव। क्षुद्रता। २. छोटी मक्खी का मधु। ३. जल।
क्षौम–संज्ञा पुं० [सं०] १. सन आदि के रेशों से बुना हुआ कपड़ा। २. वस्त्र। कपड़ा।
क्षौर–संज्ञा पुं० [सं०]

क्षौरिक-संज्ञा पुं० [सं०] नाई। हज्जाम।
क्ष्मा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। धरती। २. एक की संख्या।
क्ष्वेड़-संज्ञा पुं० [सं०] १. अव्यक्त शब्द या ध्वनि। २. विष। ज़हर। ३. शब्द। ध्वनि।
वि० [सं०] १. छिछोरा। २. कपटी।

ख

ख-हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर।
खं-संज्ञा पुं० [सं० खम्] १. शून्य स्थान। खाली जगह। २. बिल। छिद्र। ३. आकाश। ४ निकलने का मार्ग। ५. इंद्रिय। ६. बिंदु। शून्य। ७. स्वर्ग। ८. सुख। ९ ब्रह्म। १०. मोक्ष। निर्वाण।
खंख-वि० [सं० कक्ष] १. छूछा। खाली। २ उजाड़। वीरान।
खँखरा†-संज्ञा पुं० [देश०] तांबे का बड़ा देग जिसमें चावल आदि पकाया जाता है।
वि० [देश०] १ जिसमें बहुत से छेद हों। २. जिसकी बुनावट घनी या ठस न हो। झीना।
खँखार-संज्ञा पुं० दे० "खखार"।
खंग-संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] १. तलवार। २. गैंडा।
खँगना†-क्रि० अ० [सं० क्षय] कम होना। घट जाना।
खँगहा-वि० [हिं० खाँग+हा (प्रत्य०)] जिसे खाँग या निकले हुए दाँत हों।
संज्ञा पुं० गैंडा।
खँगालना-क्रि० स० [सं० क्षालन] १. हलका धोना। थोड़ा धोना। २. सब कुछ उठा ले जाना। खाली कर देना।
खँगी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खँगना] कमी। घटी।
खँघारना-क्रि० स० दे० "खँगालना"।
खँचना†-क्रि० अ० [हिं० खाँचना] चिह्नित होना। निशान पड़ना।
खँचाना†-क्रि० स० [हिं० खाँचना] १. अंकित करना। चिह्न बनाना। २. जल्दी जल्दी लिखना। ३. दे० "खींचना"।
खँचिया-संज्ञा स्त्री० दे० "खाँची"।
खंज†-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक रोग जिसमें मनुष्य का पैर जकड़ जाता है। २. लँगड़ा। पंगु।
० संज्ञा पुं० [सं० खंजन] खंजन पक्षी।
खजड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "खँजरी"।
खंजन-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरद् से लेकर शीत काल तक दिखाई देता है। खँड़रिच। ममोला। २. खँड़रिच के रंग का घोड़ा।
खंजर-संज्ञा पुं० [फा०] कटार।
खँजरी-संज्ञा स्त्री० [सं० खजरीट=एक ताल] डफली की तरह का एक छोटा बाजा।
संज्ञा स्त्री० [फा० खजर] १. रंगीन कपड़ों की लहरिएदार धारी। २. धारीदार कपड़ा।
खंजरीट-संज्ञा पुं० [सं०] ममोला। खंजन।
खंजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्द्ध समवृत्त।
खंड-संज्ञा पुं० [सं०] १. भाग। टुकड़ा। हिस्सा। २. देश। वर्ष। ३. नौ की संख्या। ४. समीकरण की एक क्रिया। (गणित)। ५. खाँड़। चीनी। ६. दिशा। दिक्।
वि० १. खंडित। अपूर्ण। २. छोटा। लघु।
संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] खाँड़ा।
खंडकथा-संज्ञा स्त्री० [सं०] कथा का एक भेद जिसमें मंत्री अथवा ब्राह्मण नायक होता है और चार प्रकार का विरह रहता है।
खंडकाव्य-संज्ञा पुं० [सं०] छोटा कथात्मक प्रबंधकाव्य। जैसे—मेघदूत।
खंडन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खंडनीय, खंडित] १. तोड़ने फोड़ने की क्रिया। भंजन। छेदन। २. किसी बात को अयथार्थ प्रमाणित करना। बात काटना। मंडन का उलटा।
खंडना*-क्रि० स० [सं० खंडन] १ टुकड़े टुकड़े करना। तोड़ना। २. बात काटना।
खंडनी-संज्ञा स्त्री० [सं० खंडन] मालगुज़ारी की किस्त। कर।
खंडनीय-वि० [सं०] १. तोड़ने फोड़ने लायक। २. खंडन करने योग्य। ३. जो अयुक्त ठहराया जा सके।

खंडपरशु-संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। शिव। २. विष्णु। ३ परशुराम।

खंडपूरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँड+पूरी] एक प्रकार की भरी हुई मीठी पूरी।

खंडप्रलय-संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रलय जो एक चतुर्युगी बीत जाने पर होता है।

खंडवरा-संज्ञा पुं० [हिं० खाँड़+बरा] मीठा बड़ा। (पक्वान)

खंडमेरु-संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में एक क्रिया।

खँडरा-संज्ञा पुं० [सं० खंड+हिं० बरा] बेसन का एक प्रकार का चौकोर बड़ा।

खँडरिच-संज्ञा पुं० [सं० खंजरीट] खंजन पक्षी।

खँडवानी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँड़+पानी] १. खाँड़ का रस। शरबत। २. कन्या पक्षवालों की ओर से बरातियों को जल-पान या शरबत भेजने की क्रिया।

खंडसाल-संज्ञा स्त्री० [सं० खंड+शाला] खाँड या शक्कर बनाने का कारखाना।

खँडहर-संज्ञा पुं० [सं० खंड+हिं०घर] किसी टूटे या गिरे हुए मकान का बचा हुआ भाग।

खंडित-वि० [सं०] १. टूटा हुआ। भग्न। २. जो पूरा न हो। अपूर्ण।

खंडिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका नायक रात को किसी अन्य नायिका के पास रहकर सवेरे उसके पास आवे।

खँडिया-संज्ञा स्त्री० [सं० खंड] छोटा टुकड़ा।

खँड़ौरा†-संज्ञा पुं० [हिं० खाँड+औरा (प्रत्य०)] मिसरी का लड्डू। ओला।

खंतरा-संज्ञा पुं० [सं० कांतर या हिं० अँतरा] १. दरार। खोड़रा। २. कोना। अँतरा।

खंता†-संज्ञा पुं० [सं० खनित्र] [स्त्री० अल्पा० खंती] १. कुदाल। २. फावड़ा।

खंदक-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. शहर या किले के चारों ओर की खाईं। २. बड़ा गड्ढा।

खंदा†-संज्ञा पुं० [हिं० खनना] खोदनेवाला।

खँधवाना-क्रि० स० [हिं० खाली] खाली कराना।

खँधार†-संज्ञा पुं० [सं० स्कंधावार] १. स्कंधावार। छावनी। २. डेरा। खेमा। संज्ञा पुं० [सं० खटपाल] सामंत राजा। सरदार।

खँधियाना†-क्रि० स० [हिं० खाली] बाहर निकालना। खाली करना।

खंभ-संज्ञा पुं० दे० "खंभा"।

खंभा-संज्ञा पुं० [सं० स्कंभ या स्तंभ] [स्त्री० खँभिया] १. पत्थर या काठ का लंबा खड़ा टुकड़ा जिसके आधार पर छत या छाजन रहती है। स्तंभ। २. बड़ी लाट। पत्थर आदि का लंबा खड़ा टुकड़ा।

खँभार†-संज्ञा पुं० [सं०क्षोभ, प्रा० खोभ] १. अंदेशा। चिंता। २. घबराहट। व्याकुलता। ३. डर। भय। ४. शोक।

खँभिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० खंभा] छोटा पतला खंभा।

ख-संज्ञा पुं० [सं०] १. गड्ढा। गर्त। २. खाली स्थान। ३. निर्गम। निकास। ४. छेद। बिल। ५. इंद्रिय। ६ गले की वह नाली जिससे प्राणवायु आती जाती है। ७. कुआँ। ८. तीर का घाव। ९. आकाश। १०. स्वर्ग। ११ सुख। १२. कर्म। १३. बिंदु। सिफ़र। १४. ब्रह्म। १५. शब्द।

खई†-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षयी] १. क्षय। २. लड़ाई। युद्ध। ३ तकरार। झगड़ा।

खकखा-संज्ञा पुं० [अ० कहकहा] १. जोर की हँसी। अट्टहास। कहकहा। २. अनुभवी पुरुष। ३ बड़ा और ऊँचा हाथी।

खखार-संज्ञा पुं० [अनु०] गाढ़ा थूक या कफ जो खखारने से निकले। कफ।

खखारना-क्रि० अ० [अनु०] थूक या कफ बाहर करने के लिये गले से शब्द सहित वायु निकालना।

खखेटना-क्रि० स०[सं० आखेट] १.दबाना। २. भगाना। ३. घायल करना।

खग-संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश में चलनेवाली वस्तु या व्यक्ति। २. पक्षी। चिड़िया। ३. गंधर्व। ४. बाण। तीर। ५. ग्रह। तारा। ६. बादल। ७. देवता। ८ सूर्य। ९. चंद्रमा। १०. वायु।

खगना†-क्रि० अ० [हिं० खाँग=काँटा] १. चुभना। धँसना। २. चित्त में पैठना। मन में धँसना। ३. लग जाना। लिप्त होना। ४. चिह्नित हो जाना। उपट आना। ५. अटक रहना। अड़

खगपति-संज्ञा पुं० [सं०] १ गरुड़।

खगेश-संज्ञा पुं० [सं०]।

खगोल–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश-मंडल। २. खगोल विद्या।
खगोल विद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे आकाश के नक्षत्रों, ग्रहों आदि का ज्ञान प्राप्त हो। ज्योतिष।
खग्ग –संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] तलवार।
खग्रास–संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य्य या चंद्र का सारा मंडल ढँक जाय।
खचन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खचित] १. बाँधने या जड़ने की क्रिया। २. अंकित करने या होने की क्रिया।
खचना –क्रि० अ० [सं० खचन] १. जड़ा जाना। २. अंकित होना। चित्रित होना। ३. रम जाना। अड़ जाना। ४. अटक रहना। फँसना।
क्रि० स० १. जड़ना। २. अंकित करना।
खचर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. मेघ। ३. ग्रह। ४. नक्षत्र। ५. वायु। ६. पक्षी। ७. बाण। तीर।
वि० आकाश में चलनेवाला।
खचरा–वि० [हिं० खचर] १. वर्णसंकर। दोगला। २. दुष्ट। पाजी।
खचाखच–क्रि० वि० [अनु०] बहुत भरा हुआ। ठसाठस।
खचित–वि० [सं०] खींचा हुआ। चित्रित या लिखित।
खच्चर–संज्ञा पुं० [देश०] गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु।
खज–वि० [सं० खाद्य, प्रा० खज्ज] खाने योग्य। जो खाया जा सके। भक्ष्य।
खजला–संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।
खजहजा–संज्ञा पुं० [सं० खाद्याद्य] खाने योग्य उत्तम फल या मेवा।
खज़ानची–संज्ञा पुं० [फ़ा०] खज़ाने का अफ़सर। कोशाध्यक्ष।
खज़ाना–संज्ञा पुं० [अ०] १. वह स्थान जहाँ धन या और कोई चीज़ संग्रह करके रखी जाय। धनागार। २. राजस्व। कर।
खजुआ†–संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।
खजुरा†–संज्ञा पुं० [हिं० खजूर] स्त्रियों के सिर की चोटी गूँथने की डोरी।
खजुली†–संज्ञा स्त्री० दे० "खुजली"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खाजा] खाजे की तरह की एक मिठाई।
खजूर–संज्ञा पुं० स्त्री० [सं० खर्जूर] १. ताड़ की जाति का एक पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं। २. एक प्रकार की मिठाई।
खजूरी–वि० [हिं० खजूर] १. खजूर-संबंधी। खजूर का। २. खजूर के आकार का। ३. तीन लर का गूँथा हुआ।
खट–संज्ञा पुं० [अनु०] दो चीज़ों के टकराने या किसी कड़ी चीज़ के टूटने से उत्पन्न शब्द। ठोंकने-पीटने की आवाज़।
मुहा०—खट से =तुरत। तत्काल।
खटक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] खटका। चिंता।
खटकना–क्रि० अ० [अनु०] १. 'खट खट' शब्द होना। टकराने या टूटने का सा शब्द होना। २. रह रहकर पीड़ा होना। ३. बुरा मालूम होना। खलना। ४. विरक्त होना। उचटना। ५. डरना। भय करना। ६. परस्पर झगड़ा होना। ७. अनिष्ट की भावना या आशंका होना। ८. ठीक न जान पड़ना। ९. मन में चिंता उत्पन्न करना।
खटका–संज्ञा पुं० [हिं० खटकना] १. 'खट खट' शब्द। टकराने या पीटने का सा शब्द। २. डर। भय। आशंका। ३. चिंता। फ़िक्र। ४. किसी प्रकार का पेंच या कमानी, जिसके घुमाने, दबाने आदि से कोई वस्तु खुलती या बंद होती हो। ५. किवाड़ की सिटकिनी। बिल्ली। ६. पेड़ में बँधा बाँस का वह टुकड़ा जिसे हिलाकर चिड़िया उड़ाते हैं।
खटकाना–क्रि० स० [हिं० खटकना] १. 'खट खट' शब्द करना। ठोंकना, हिलाना या बजाना। २. शंका उत्पन्न करना।
खटकीड़ा–संज्ञा पुं० दे० "खटमल"।
खटखट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ठोंकने-पीटने का शब्द। २. झंझट। झमेला। ३. लड़ाई। झगड़ा। रार।
खटखटाना–क्रि० स० [अनु०] 'खट खट' शब्द करना। खड़खड़ाना।
खटना–क्रि० स० [?] धन कमाना।
क्रि० अ० काम-धंधे में लगना।
खटपट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. अनबन। लड़ाई। झगड़ा। २. ठोंकने-पीटने या टकराने का शब्द।
खटपद–संज्ञा पुं० दे० "षट्पद"।
खटपाटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट+पाटी] खाट की पाटी।

खटबुना–संज्ञा पु० [हिं० खाट+बुनना] चारपाई आदि बुननेवाला।
खटमल–संज्ञा पु० [हिं० खाट+मल=मैल] उन्नाबी रंग का एक कीड़ा जो मैली खाटों, कुरसियों आदि में उत्पन्न होता है। खटकीड़ा।
खटमिट्ठा वि० [हिं० खट्टा+मीठा] कुछ खट्टा और कुछ मीठा।
खटमुख–संज्ञा पु० दे० "षट्मुख"।
खटराग–संज्ञा पु० दे० "षट्राग"।
संज्ञा पु० [सं० षट्राग] १. झंझट। बखेड़ा। २. व्यर्थ और अनावश्यक चीजें।
खटवाट–संज्ञा स्त्री० दे० "खटपाटी"।
खटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा] १. खट्टापन। तुरशी। २. खट्टी चीज़।
मुहा०—खटाई में डालना=दुविधा में डालना। कुछ निर्णय न करना।
खटाखट–संज्ञा पु० [अनु०] ठोंकने, पीटने, चलने आदि का लगातार शब्द।
क्रि० वि० १. खटखट शब्द के साथ। २. जल्दी जल्दी। बिना रुकावट के।
खटाना–क्रि० अ० [हिं० खट्टा] किसी वस्तु में खट्टापन आ जाना। खट्टा होना।
क्रि० अ० [सं० स्कन्ध] १ निर्वाह होना। गुज़ारा होना। निभना। २. ठहरना। ३. जाँच में पूरा उतरना।
खटापटी–संज्ञा स्त्री० दे० "खटपट"।
खटाव–संज्ञा पु० [हिं० खटाना] निर्वाह। गुजर।
खटास–संज्ञा पु० [सं० खट्वास] गंधबिलाव।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा] खट्टापन। तुरशी।
खटिक–संज्ञा पु० [सं० खट्टिक] [स्त्री० खटकिन] एक छोटी जाति जिसका काम फल, तरकारी आदि बेचना है।
खटिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट] छोटी चारपाई या खाट। खटोली।
खटेटी†–वि० [हिं० खाट+एटी (प्रत्य०)] जिस पर बिछौना न हो।
खटोलना–संज्ञा पु० दे० "खटोला"।
खटोला–संज्ञा पु० [हिं० खाट+ओला(प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० खटोली] छोटी खाट।
खट्टा–वि० [सं० कटु] कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का। तुर्श। अम्ल।
मुहा०—जी खट्टा होना=चित्त अप्रसन्न होना। दिल फिर जाना।
संज्ञा पु० [हिं० खट्टा] नीबू की जाति का एक बहुत खट्टा फल। गलगल।
खट्टा मीठा–वि० दे० "खटमिट्ठा"।
खट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा] खट्टा नीबू।
खट्टू–संज्ञा पु० [हिं० खटना] कमानेवाला।
खट्वांग–संज्ञा पु० [सं०] १. चारपाई का पाया या पाटी। २. शिव का एक अस्त्र। ३. वह पात्र जिसमें प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा माँगी जाती है।
खट्वा–संज्ञा स्त्री० [सं०] खटिया। खाट।
खड़ंजा–संज्ञा पु० [हिं० खड़ा+अंग] ईंटों की खड़ी चुनाई। (ऐसी जोड़ाई फ़र्श पर होती है।)
खड़क–संज्ञा स्त्री० दे० "खटक"।
खड़कना–क्रि० अ० दे० "खटकना"।
खड़खड़ा–संज्ञा पु० [अनु०] १. दे० "खटखटा"। २. काठ का एक ढाँचा जिसमें जोतकर गाड़ी के लिये घोड़े सधाए जाते हैं।
खड़खड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] कड़ी वस्तुओं का परस्पर शब्द के साथ टकराना।
क्रि० स० कई वस्तुओं को परस्पर टकराना।
खड़खड़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़खड़ाना] पालकी। पीनस।
खड़ग –संज्ञा पु० दे० "खड्ग"।
खड़गी –वि० [सं० खड्गिन्] तलवार लिए हुए। तलवारवाला।
संज्ञा पु० [सं० खड्ग] गैंडा।
खड़जी–संज्ञा पु० दे० "खड़गी"।
खड़बड़–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. खट खट शब्द। २. उलट फेर। ३. हलचल।
खड़बड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] १. विचलित होना। घबराना। २. बे-तरतीब होना।
क्रि० स० १. किसी वस्तु को उलट पुलटकर "खड़बड़" शब्द उत्पन्न करना। २. उलट फेर करना। ३. घबरा देना।
खड़बड़ाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़[illegible]] "खड़बड़ाना" का भाव।
खड़बड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० [illegible]] व्यतिक्रम। उलट फेर।
खड़बीहड़†–वि० दे०
खड़मंडल–संज्ञा पु० [[illegible]

गड़बड़। घोटाला।

खड़ा-वि० [सं० खड़क = खंभा, थूनी] [स्त्री० खड़ी] १. सीधा ऊपर को गया हुआ। ऊपर को उठा हुआ। जैसे—झंडा खड़ा करना। २. पृथ्वी पर पैर रखकर टाँगों को सीधा करके अपने शरीर को ऊँचा किए। दंडायमान।

मुहा०—खड़े खड़े = तुरत। भटपट। खड़ा जवाब = वह इनकार जो चटपट किया जाय। खड़ा होना = सहायता देना। मदद करना।

३. ठहरा या टिका हुआ। स्थिर। ४. प्रस्तुत। उपस्थित। तैयार। ५. सन्नद्ध। उद्यत। ६. आरंभ। जारी। ७. (घर, दीवार आदि) स्थापित। निर्मित। उठा हुआ। ८ जो उखाड़ा या काटा न गया हो। जैसे—खड़ी फसल। ९. बिना पका। असिद्ध। कच्चा। १०. समूचा। पूरा। ११. ठहरा हुआ। स्थिर।

खड़ाऊँ-संज्ञा स्त्री० [हिं० काठ + पाँव या 'खटखट' अनु०] काठ के तले का खुला जूता। पादुका।

खड़िया-संज्ञा स्त्री० [सं० खटिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी। खरिया। खड़ी।

खड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।

खड़ी बोली-संज्ञा स्त्री० [हिं० खड़ी + बोली] पश्चिमी हिंदी का वह भेद जो दिल्ली के आस पास बोला जाता है और जिसमें उर्दू और वर्तमान हिंदी गद्य लिखा जाता है।

खड्ग-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की तलवार। खाँड़ा। २. गैंडा।

खड्गपत्र-संज्ञा पुं० [सं०] यमपुरी का वह पेड़ जिसमें तलवार के से पत्ते होते हैं।

खड्गी-संज्ञा पुं० [सं० खड्गिन्] १. वह जिसके पास खड्ग हो। खड्गधारी। २. गैंडा।

खड्ड, खड्डा-संज्ञा पुं० [सं० खात] गड्ढा।

खत-संज्ञा पुं० [सं० क्षत] घाव। जख्म।

खत-संज्ञा पुं० [अ०] १. पत्र। चिट्ठी। २. लिखावट। ३. रेखा। लकीर। ४. दाढ़ी के बाल। ५. हजामत।

खतखोटा-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षत + हिं० खूँट] घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड।

खतना-संज्ञा पुं० [अ०] लिंग के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काटने की मुसलमानी रस्म। सुन्नत। मुसलमानी।

खतम-वि० [अ० खत्म] पूर्ण। समाप्त।

मुहा०—खतम करना = मार डालना।

खतमी-संज्ञा स्त्री० [अ०] गुलखैरू की जाति का एक पौधा।

खतर, खतरा-संज्ञा पुं० [अ०] १ डर। भय। खौफ। २ आशंका।

खतरेटा-संज्ञा पुं० दे० "खत्री"।

खता-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कसूर। अपराध। २ धोखा। ३. भूल। गलती।

खता†-संज्ञा पुं० दे० "खत"।

खतावार-वि० [अ० खता + फा० वार] दोषी। अपराधी।

खति:-संज्ञा स्त्री० दे० "क्षति"।

खतियाना-क्रि० स० [हिं० खाता] आय-व्यय और क्रय विक्रय आदि को खाते में अलग अलग मद में लिखना।

खतियौनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खतियाना] १. वह बही जिसमें अलग अलग हिसाब हो। खाता। २. खतियाने का काम।

खत्ता-संज्ञा पुं० [सं० खात] [स्त्री० खत्ती] १. गड्ढा। २. अन्न रखने का स्थान।

खत्म-वि० दे० "खतम"।

खत्री-संज्ञा पुं० [सं० क्षत्रिय] [स्त्री० खत-रानी] हिंदुओं में एक जाति।

खदबदाना-क्रि० अ० [अनु०] उबलने का शब्द होना।

खदान-संज्ञा स्त्री० [हिं० खोदना या खान] वह गड्ढा जो कोई वस्तु निकालने के लिये खोदा जाय। खान।

खदिर-संज्ञा पुं० [सं०] १. खैर का पेड़। २. कत्था। ३. चंद्रमा। ४ इंद्र।

खदेरना-क्रि० स० [हिं० खेदना] दूर करना।

खद्दड़, खद्दर-संज्ञा पुं० [?] हाथ के काते हुए सूत का बुना कपड़ा। खादी। गाढ़ा।

खद्योत-संज्ञा पुं० [सं०] १. जुगनूँ। २. सूर्य।

खन-:†-संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।

संज्ञा पुं० [सं० खंड] (मकान का) खंड।

खनक-संज्ञा पुं० [सं०] १. जमीन खोदने-वाला। २. वह स्थान जहाँ सोना आदि निकलता हो। खान। ३. भूतत्त्व-शास्त्र जाननेवाला।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] धातुखंडों के टकराने या बजने का शब्द।

खनकना-क्रि० अ० [अनु०] खनखनाना

धातुखंडों के टकराने का शब्द होना।

खनकाना-क्रि० स० [अनु०] धातुखंड आदि से शब्द उत्पन्न करना।

खनखनाना-क्रि० अ० [अनु०] खनकना। क्रि० स० [अनु०] खनकाना।

खनना†-क्रि० स० [सं० खनन] १. खोदना। २. कोड़ना।

खनिज-वि० [सं०] खान से खोदकर निकाला हुआ।

खनौना†-क्रि० स० दे० "खनना"।

खपच्ची-संज्ञा स्त्री० [तु० कमची] १. बाँस की पतली तीली। कमठी। २. बाँस की पतली पटरी।

खपड़ा-संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १. पटरी के आकार का मिट्टी का पका टुकड़ा जो मकान छाने के काम आता है। २. भीख माँगने का मिट्टी का बरतन। खप्पर। ३. मिट्टी के टूटे बरतन का टुकड़ा। ठीकरा। ४. कछुए की पीठ पर का कड़ा ढक्कन।

खपड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० खर्पर] १. नाँद की तरह का मिट्टी का छोटा बरतन। २. दे० "खोपड़ी"।

खपड़ैल-संज्ञा स्त्री० दे० "खपरैल"।

खपत, खपती-संज्ञा स्त्री० [हिं० खपना] १. समाई। गुंजाइश। २. माल की

खपुष्प-संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश-कुसुम। २. असंभव बात। अनहोनी घटना।

खप्पर-संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १. तसले के आकार का कोई पात्र।

मुहा०—खप्पर भरना=खप्पर में मदिरा आदि भरकर देवी पर चढ़ाना।

२. भिक्षापात्र। ३. खोपड़ी।

ख़फ़गी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. अप्रसन्नता। नाराज़गी। २. क्रोध। कोप।

ख़फ़ा-वि० [अ०] १. अप्रसन्न। नाराज़। २. क्रुद्ध। रुष्ट।

ख़फ़ीफ़-वि० [अ०] १. थोड़ा। कम। २. हलका। ३. तुच्छ। क्षुद्र। ४ [illegible]

ख़बर-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. [illegible] वृत्तांत। हाल।

मुहा०—ख़बर उड़ना=[illegible] [illegible] होना। ख़बर लेना=१. [illegible] करना। सहानुभूति दिखाना। २. [illegible]

२. सूचना। ज्ञान। [illegible] हुआ समाचार। संदेसा। [illegible] संज्ञा। ५. पता। खोज।

ख़बरदार-वि० [फ़ा०] [illegible]

ख़बरदारी-संज्ञा स्त्री० [illegible] होशियारी।

ख़बीस-संज्ञा पुं० [[illegible]

आदि का सड़ाव जो तंबाकू में डाला जाता है । ४. स्वभाव । प्रकृति ।
खमीरा-वि० पु० [अ०] [स्त्री० खमीरी] १. खमीर उठाकर बनाया या खमीर मिलाया हुआ । २ शीरे में पकाकर बनाई हुई ओषधि । जैसे—खमीरा बनफ़शा ।
खमोश-वि० दे० "खामोश" ।
खम्माच-संज्ञा स्त्री० [हिं० खंभावती] मालकोस राग की दूसरी रागिनी ।
खय†-संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय" ।
खया-संज्ञा पु० दे० "खवा" ।
खयानत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. धरोहर रखी हुई वस्तु न देना अथवा कम देना । गबन । २. चोरी या बेईमानी ।
खयाल-संज्ञा पु० दे० "ख्याल" ।
खर-संज्ञा पुं० [सं०] १. गधा । २. खच्चर । ३. बगला । ४ कौवा । ५. एक राक्षस जो रावण का भाई था । ६ तृण । तिनका । घास । ७. साठ संवत्सरों में से एक । ८. छप्पय छंद का एक भेद ।
वि० [सं०] १. कड़ा । सख्त । २. तेज़ । तीक्ष्ण । ३. हानिकर । अमांगलिक । जैसे—खर मास । ५. तेज़ धार का ।
खरक-संज्ञा पुं० [सं० खड़क] १. चौपायों के रखने के लिये लकड़ियाँ गाड़कर बनाया हुआ घेरा । डाँड़ा । बाड़ा । २. पशुओं के चरने का स्थान । ३. घासों की फट्टियों का केवाड़ । टट्टर ।
संज्ञा स्त्री० दे० "खड़क" ।
खरकना-क्रि० अ० [अनु०] १. दे० "खड़कना" । २ फाँस चुभने का सा दर्द होना । ३. सरकना । चल देना ।
खरका-संज्ञा पु० [हिं० खर] तिनका । **मुहा०**—खरका करना = भोजन के उपरांत तिनके से खोदकर दाँत साफ करना ।
संज्ञा पु० दे० "खरक" ।
खरखरा-वि० दे० "खुरखुरा" ।
खरखशा-संज्ञा पु० [फा०] १. झगड़ा । लड़ाई । २. भय । आशंका । डर । ३. झंझट । बखेड़ा ।
खरखौकी*-संज्ञा स्त्री० [हिं० खर + खाना] खर, तृण आदि खानेवाली, अग्नि ।
खरग-संज्ञा पु० दे० "खड्ग" ।
खरगोश- संज्ञा पु० [फा०] खरहा ।
खरच-संज्ञा पु० दे० "खर्च" ।
खरचना-क्रि० स० [फा० खर्च] १. व्यय करना । खर्च करना । २. व्यवहार में लाना ।
खरचा-संज्ञा पु० दे० १. "खरका" । २. दे० "खर्चा" ।
खरता-वि० [सं०] अधिक तीक्ष्ण । बहुत तेज़ ।
खरतल†-वि० [हिं० खरा] १. खरा । स्पष्टवादी । २ शुद्ध हृदयवाला । ३. मुरौवत न करनेवाला । ४. साफ़ । स्पष्ट । ५. प्रचंड । उग्र ।
खरदुक-संज्ञा पु० [फा० खुर्द ?] एक पुराना पहनावा ।
खरदूषण-संज्ञा पु० [सं०] खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण के भाई थे ।
खरधार-संज्ञा पु० [सं०] तेज़ धारवाला अस्त्र ।
खरब-संज्ञा पु० [सं० खर्व] सौ अरब की संख्या ।
खरबूजा-संज्ञा पु० [फा० खर्बुजा] ककड़ी की जाति का एक प्रसिद्ध गोल फल ।
खरभर-संज्ञा पुं० [अनु०] १. शोर । गुल । २. हलचल । गड़बड़ ।
खरभराना-क्रि० अ० [हिं० खरभर] १. खरभर शब्द करना । २. शोर करना । ३. गड़बड़ या हलचल मचाना । ४. व्याकुल होना ।
खरमस्ती-संज्ञा स्त्री० [फा०] दुष्टता । पाजीपन । शरारत ।
खरमास-संज्ञा पु० दे० "खरवाँस" ।
खरमिटाव†-संज्ञा पु० [हिं० खर + मिटाना] जलपान । कलेवा ।
खरल-संज्ञा पु० [सं० खल] पत्थर की कूँड़ी जिसमें ओषधियाँ कूटी जाती हैं । खल ।
खरवाँस-संज्ञा पु० [हिं० खर + मास] पूस और चैत का महीना जब कि सूर्य्य धन और मीन का होता है । (इनमें मांगलिक कार्य्य करना वर्जित है ।)
खरसा-संज्ञा पु० [सं० षड्रस] एक प्रकार का पकवान ।
खरसान-संज्ञा स्त्री० [हिं० खर + सान] एक प्रकार की सान जिस पर हथियार तेज किए जाते हैं ।
खरहरा-संज्ञा पु० [हिं० खरहरना] [स्त्री० अल्पा० खरहरी] १. अरहर के डंठलों से बना

हुआ झाड़ू। कूँचरा। २. घोड़े के रोएँ साफ करने के लिये दाँतीदार कंघी।
खरहा–संज्ञा पुं० [हिं० खर=घास+हा (प्रत्य०)] खरगोश जंतु।
खरा–वि० [सं० खर=तीक्ष्ण] १. तेज। तीखा। २. अच्छा। बढ़िया। विशुद्ध। बिना मिलावट का। ३. सेंककर कड़ा किया हुआ। करारा। ४. धीमड़। कड़ा। ५. जिसमें किसी प्रकार की बेईमानी या धोखा न हो। साफ। छल-छिद्र-शून्य। ६ नगद (दाम)।
मुहा०—रुपए खरे होना=रुपए मिलना या मिलने का निश्चय होना।
७ लगी-लिपटी न कहनेवाला। स्पष्टवक्ता। ८ (बात के लिये) यथातथ्य। सच्चा। †९ १. बहुत। अधिक। ज्यादा।
खराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खरा+ई (प्रत्य०)] "खरा" का भाव। खरापन।
संज्ञा स्त्री० [देश०] सवेरे अधिक देर तक जलपान या भोजन आदि न मिलने के कारण तबीयत खराब होना।
खराद–संज्ञा पुं० [फा० खर्राद] एक औजार जिस पर चढ़ाकर लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी और सुडौल की जाती है। संज्ञा स्त्री० १. खरादने का भाव या क्रिया। २ बनावट। गढ़न।
खरादना–क्रि० स० [हिं० खराद] १. खराद पर चढ़ाकर किसी वस्तु को साफ और सुडौल करना। २. काट-छाँटकर सुडौल बनाना।
खरादी–संज्ञा पुं० [हिं० खराद] खरादने-वाला।
खरापन–संज्ञा पुं० [हिं० खरा+पन] १ खरा का भाव। २. सत्यता। सच्चाई।
खराब–वि० [अ०] १. बुरा। निकृष्ट। २. दुर्दशाग्रस्त। ३. पतित। मर्यादा भ्रष्ट।
खराबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बुराई। दोष। अवगुण। २. दुर्दशा। दुरवस्था।
खरायँध–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षार+गंध] १ क्षार की सी गंध। २. मूत्र की सी दुर्गंध।
खरारि–संज्ञा पुं० [सं०] १ रामचंद्र। २ विष्णु भगवान्। ३. कृष्णचंद्र।
खराश–संज्ञा स्त्री० [फा०] खरोंच। छिलन।
खरिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० खर+इया (प्रत्य०)] १. घास, भूसा बाँधने की पतली रस्सी से बनी हुई जाली। पाँसी। २. झोली। संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।
खरियाना–क्रि० स० [हिं० खरिया=झोली] १. झोली में डालना। थैले में भरना। २ हस्तगत करना। ले लेना। ३ झोली में से गिराना।
खरिहान–संज्ञा पुं० दे० "खलियान"।
खरी†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "खड़िया"। २. "खली"।
खरीता–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० अल्पा० खरीती] १. थैली। खीसा। २. जेब। ३ वह बड़ा लिफाफा जिसमें आज्ञापत्र आदि भेजे जायँ।
खरीद–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मोल लेने की क्रिया। क्रय। २ खरीदी हुई चीज।
खरीदना–क्रि० स० [फा० खरीदन] मोल लेना। क्रय करना।
खरीदार–संज्ञा पुं० [फा०] १. मोल लेने-वाला। ग्राहक। २. चाहनेवाला।
खरीफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह फसल जो आषाढ़ से अगहन तक में काटी जाय।
खरोंच–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुरण] १ छिलने का चिह्न। खराश। २ एक पकवान।
खरोंचना–क्रि० स० [सं० क्षुरण] खुरचना। करोना। छीलना।
खरोट–संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच"।
खरोष्ट्री, खरोष्ठी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन लिपि जो फारसी की तरह दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी। गांधार लिपि।
खरौंट†–संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच"।
खरौंहा–वि० [हिं० खारा+औंहा] कुछ कुछ खारा। कुछ नमकीन।
खर्च–संज्ञा पुं० [अ० खर्ज] १. किसी काम में किसी वस्तु का लगना। व्यय। सरफा। खपत। २. वह धन जो किसी काम में लगाया जाय।
खर्चा–संज्ञा पुं० दे० "खर्च"।
खर्चीला–वि० [हिं० खर्च+ईला (प्रत्य०)] बहुत खर्च करनेवाला।
खर्जूर–संज्ञा पुं० [सं०] १. खजूर। २ चाँदी। ३ हरताल। ४ बिच्छू।
खर्पर–संज्ञा पुं० [सं०] १. ... का मिट्टी का बरतन। २ वह पात्र जिसमें वे ...

३. भिक्षापात्र। ४. खोपड़ा। ५. खपरिया नामक उपधातु।

खर्व-वि० [सं०] १. जिसका अंग भग्न या अपूर्ण हो। न्यूनांग। २. छोटा। लघु। ३. वामन। बौना।
संज्ञा पुं० [सं०] १. सौ अरब की संख्या। खरब। २. कुबेर की नौ निधियों में से एक।

खर्राच†-वि० दे० "खर्चीला"।

खर्रा-संज्ञा पुं० [खर खर से अनु०] १. वह लंबा कागज़ जिसमें कोई भारी हिसाब या विवरण लिखा हो। २. पीठ पर छोटी छोटी फुंसियाँ निकलने का रोग।

खर्राटा-संज्ञा पुं० [अनु०] वह शब्द जो सोते समय नाक से निकलता है।
मुहा०—खर्राटा भरना, मारना या लेना = बेखबर सोना।

खल-वि० [सं०] १. क्रूर। २. नीच। अधम। ३. दुर्जन। दुष्ट।
संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. तमाल का पेड़। ३. धतूरा। ४. खलियान। ५. पृथ्वी। ६. स्थान। ७. खरल।

खलक-संज्ञा पुं० [अ०] १. सृष्टि के प्राणी या जीवधारी। २. दुनिया। संसार।

खलड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "खाल"।

खलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुष्टता। नीचता।

खलना-क्रि० अ० [सं० खर=तीक्ष्ण] बुरा लगना। अप्रिय होना।

खलबल-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हलचल। २. शोर। हल्ला। ३. कुलबुलाहट।

खलबलाना-क्रि० अ० [हिं० खलबल] १. खलबल शब्द करना। २. खौलना। ३. हिलना डोलना। ४. विचलित होना।

खलबली-संज्ञा स्त्री० [हिं० खलबल] १. हलचल। २. घबराहट। व्याकुलता।

खलल-संज्ञा पुं० [अ०] रोक। बाधा।

खलाई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० खल+आई(प्रत्य०)] खलता। दुष्टता।

खलाना†-क्रि० स० [हिं० खाली] १. खाली करना। २. गड्ढा करना। ३. फूली हुई सतह को नीचे की ओर धँसाना। पिचकाना।

खलास-वि० [अ०] १. छूटा हुआ। मुक्त। २. समाप्त। ३. च्युत। गिरा हुआ।

खलासी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खलास] मुक्ति। छुटकारा। छुट्टी।
संज्ञा पुं० [देश०] जहाज़ पर का नौकर।

खलाल-संज्ञा पुं० [अ०] दाँत खोदने का तरका।

खलित-वि० [सं० स्खलित] १. चलायमान। चंचल। २. गिरा हुआ।

खलियान-संज्ञा पुं० [सं० खल+स्थान] १. वह स्थान जहाँ फ़सल काटकर रखी और बरसाई जाती है। २. राशि। ढेर।

खलियाना-क्रि० स० [हिं० खाल] खाल उतारना। चमड़ा अलग करना।
क्रि० स० [हिं० खाली] खाली करना।

खलिश-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] कसक। पीड़ा।

खली-संज्ञा स्त्री० [सं० खल] तेल निकाल लेने पर तेलहन की बची हुई सीठी।

खलीता-संज्ञा पुं० दे० "खरीता"।

खलीफा-संज्ञा पुं० [अ०] १. अध्यक्ष। अधिकारी। २. कोई बूढ़ा व्यक्ति। ३. खुर्राट। ४. खानसामाँ। बावर्ची। ५. हज्जाम। नाई।

खलु-अव्य०, क्रि० वि० [सं०] १. शब्दालंकार। २. प्रश्न। ३. प्रार्थना। ४. नियम। ५. निषेध। ६. निश्चय।

खलेल-संज्ञा पुं०[हिं० खली+तेल] खली आदि का वह अंश जो फुलेल में रह जाता है।

खल्लड़-संज्ञा पुं० [सं० खल्ल] १. चमड़े की मशक या थैला। २. ओषधि कूटने का खल। ३. चमड़ा।

खल्व-संज्ञा पुं० [सं०] वह रोग जिसके कारण सिर के बाल झड़ जाते हैं। गंज।

खल्वाट-संज्ञा पुं० [सं०] गंज रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं।
वि० [सं०] जिसके सिर के बाल झड़ गए हों। गंजा।

खवा-संज्ञा पुं० [सं० स्कंध] कंधा। भुजमूल।

खवाना†-क्रि० स० दे० "खिलाना"।

खवास-संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० खवासिन] राजाओं और रईसों का खास खिदमतगार।

खवासी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खवास+ई (प्रत्य०)] १. खवास का काम। खिदमतगारी। २. चाकरी। नौकरी। ३. हाथी के हौदे या गाड़ी आदि में पीछे की ओर वह स्थान जहाँ खवास बैठता है।

खवैया-संज्ञा पुं० [हिं० खाना+वैया (प्रत्य०)] खानेवाला।

खस–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्तमान गढ़वाल और उसके उत्तरवर्ती प्रांत का प्राचीन नाम। २. इस प्रदेश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति।
संज्ञा स्त्री० [फा० खस] गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़।

खसकंत†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खसकना + अंत (प्रत्य०)] खसकने का काम।

खसकना–क्रि० अ० [अनु०] धीरे धीरे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। सरकना।

खसकाना–क्रि० स० [हिं० खसकना] १. स्थानांतरित करना। हटाना। २. गुप्त रूप से कोई चीज़ हटाना।

खसखस–संज्ञा स्त्री० [सं०खसखस] पोस्ते का दाना।

खसखसा–वि० [अनु०] जिसके कण दबाने से अलग अलग हो जायँ। भुरभुरा।
वि० [हिं० खसखस] बहुत छोटे (बाल)।

खसखाना–संज्ञा पुं०[फा०] खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी।

खसखास–संज्ञा स्त्री० दे० "खसखस"।

खसखासी–वि० [हिं० खसखास] पोस्ते के फूल के रंग का। नीलापन लिए सफ़ेद।

खसना॰–क्रि० अ० [हिं० खसकना] अपने स्थान से हटना। खसकना। गिरना।

खसम–संज्ञा पुं० [अ०] १. पति। खाविंद। २ स्वामी। मालिक।

खसरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. पटवारी का एक कागज़ जिसमें प्रत्येक खेत का नंबर, रकबा आदि लिखा रहता है। २. हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा।
संज्ञा पुं० [फा० खारिश] एक प्रकार की खुजली।

खसलत–संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वभाव। आदत।

खसाना–क्रि० स० [हिं० खसना] नीचे की ओर ढकेलना या फेंकना। गिराना।

खसिया–वि० [अ० खस्सी] १. जिसके अंडकोश निकाल लिए गए हों। बधिया। २. नपुंसक। हिजड़ा। ३. बकरा।

खसी–संज्ञा पुं० [अ० खस्सी] बकरा।

खसीस–वि० [अ०] कंजूस। सूम।

खसोट–संज्ञा स्त्री० [हिं० खसोटना] १. बुरी तरह उखाड़ने या नोचने की क्रिया। २. उचकने या छीनने की क्रिया।

खसोटना–क्रि० स० [सं० कृष्ट] १. बुरी तरह से उखाड़ना या उचाड़ना। नोचना। २. बलपूर्वक लेना। छीनना।

खसोटी–संज्ञा स्त्री० दे० "खसोट"।

खस्ता–वि० [फा० खस्तः] बहुत थोड़ी दाब से टूट जानेवाला। भुरभुरा।

खस्वस्तिक–संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित बिंदु जो सिर के ऊपर आकाश में माना गया है। शीर्षबिंदु। पाद-बिंदु का उलटा।

खस्सी–संज्ञा पुं० [अ०] बकरा।
वि० [अ०] १. बधिया। २. हिजड़ा। नपुंसक।

खहर–संज्ञा पुं० [सं०] गणित में वह राशि जिसका हर शून्य हो।

खाँ–संज्ञा पुं० दे० "खान"।

खाँखर†–वि० [हिं० खाँख] १. जिसमें बहुत छेद हों। सूराखदार। २. जिसकी बुनावट दूर दूर पर हो। ३. खोखला।

खाँग†–संज्ञा पुं० [सं० खड्ग, प्रा० खग्ग] १. काँटा। कंटक। २. वह काँटा जो तीतर, मुर्ग आदि पक्षियों के पैरों में निकलता है। ३. गैंडे के मुँह पर का सींग। ४. जंगली सूअर का मुँह के बाहर निकला हुआ दाँत।
† संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँगना] त्रुटि। कमी।

खाँगना†–क्रि० अ० [सं० खंज=लँगड़ा] कम होना। घटना।

खाँगड़, खाँगड़ा–वि०[हिं०खाँग + ड़ (प्रत्य०)] १ जिसके खाँग हो। खाँगवाला। २. हथियारबंद। शस्त्रधारी। ३. बलवान्। ४ अक्खड़। बदड़।

खाँगी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँगना] कमी। घाटा। त्रुटि।

खाँचा†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँचना] १. संधि। जोड़। २. खींचकर बनाया हुआ निशान। ३ गठन। रचन।

खाँचना॰†–क्रि० स० [सं० कर्षण] [वि० खँचैया] १ अंकित करना। चिह्न बनाना। २ खींचना। जल्दी जल्दी लिखना।

खाँचा–संज्ञा पुं० [हिं० खाँचना] [स्त्री०खाँची] पतली टहनियों आदि का बना हुआ बड़े बड़े छेदों का टोकरा। झाबा।

खाँड़–संज्ञा स्त्री० [सं० खंड] बिना साफ की हुई चीनी। कच्ची शक्कर।

खाँड़ना–क्रि० स० [सं०

२ चबाना। कुचलना।

खाँडा–संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] खड्ग (अस्त्र)। संज्ञा पुं० [सं० खंड] भाग। टुकड़ा।

खाँभ †–संज्ञा पुं० [हिं० खंभा] खंभा।

खाँवाँ–संज्ञा पुं० [सं० खा] चौड़ी खाई।

खाँसना–क्रि० अ० [सं० कासन] कफ या और कोई अटकी हुई चीज निकालने के लिये वायु को शब्द के साथ कंठ से बाहर निकालना।

खाँसी–संज्ञा स्त्री० [सं० कास, कास] १ गले और श्वास की नलियों में फँसे या जमे हुए कफ अथवा अन्य पदार्थ को बाहर फेंकने के लिये शब्द के साथ हवा निकालने की क्रिया। २ अधिक खाँसने का रोग। कास रोग। ३ खाँसने का शब्द।

खाई–संज्ञा स्त्री० [सं० खानि] वह नहर जो किसी गाँव या महल आदि के चारों ओर रक्षा के लिये खोदी गई हो। खंदक।

खाऊ–वि० [हिं० खाना (खा)+ऊ (प्रत्य०)] बहुत खानेवाला। पेटू।

खाक–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ धूल। मिट्टी।
मुहा०—(कहीं पर) खाक उड़ना = बरबादी होना। उजाड़ होना। खाक उड़ाना या छानना = मारा मारा फिरना। खाक में मिलना = बिगड़ना। बरबाद होना।
२ तुच्छ। अकिंचन। ३ कुछ नहीं। जैसे—वे खाक पढ़ते लिखते हैं।

खाकसीर–संज्ञा स्त्री० [फा० खाकशीर] एक ओषध जिसे खूबकला भी कहते हैं।

खाका–संज्ञा पुं० [फा० खाक] १ चित्र आदि का डौल। ढाँचा। नकशा।
मुहा०—खाका उड़ाना = उपहास करना।
२ वह कागज जिसमें किसी काम के खर्च का अनुमान लिखा जाय। चिट्ठा। तख़मीना। तखमीना। ३ मसौदा।

खाकी–वि० [फा०] १. मिट्टी के रंग का। भूरा। २ बिना सींची हुई भूमि।

खागना–क्रि० अ० [हिं० खाँग = काँटा] चुभना। गड़ना।

खाज–संज्ञा स्त्री० [सं० खर्जु] एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है। खुजली।
मुहा०—कोढ़ की खाज = दुःख में दुःख बढ़ानेवाली वस्तु।

खाजा–संज्ञा पुं० [सं० खाद्य] १ भक्ष्य वस्तु। खाद्य। २ एक प्रकार की मिठाई।

खाजी"–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाजा] खाद्य पदार्थ। भोजन की वस्तु।
मुहा०—खाजी खाना = मुँह की खाना। बुरी तरह परास्त या अकृतकार्य होना।

खाट–संज्ञा स्त्री० [सं० खट्वा] चारपाई। पलँगड़ी। खटिया। माचा।

खाड–संज्ञा पुं० [सं० खात] गड्ढा। गर्त।

खाडव–संज्ञा पुं० दे० "षाडव"।

खाडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाड] समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो। अखात। खलीज।

खात–संज्ञा पुं० [सं०] १ खोदना। खोदाई। २ तालाब। पुष्करिणी। ३ कुआँ। ४ गड्ढा। ५ खाद, कूड़ा और मैला जमा करने का गड्ढा।

खातमा–संज्ञा पुं० [फा०] १ अंत। समाप्ति। २ मृत्यु।

खाता–संज्ञा पुं० [सं० खात] अन्न रखने का गड्ढा। बखार।
संज्ञा पुं० [हिं० खत] १ वह बही या किताब जिसमें मितिवार और ब्योरेवार हिसाब लिखा हो।
मुहा०—खाता खोलना = नया व्यवहार करना।
२ मद। विभाग।

खातिर–संज्ञा स्त्री० [अ०] आदर। सम्मान।
† अव्य० [अ०] वास्ते। लिये।

खातिरख्वाह–अव्य०, क्रि० वि० [फा०] जैसा चाहिए, वैसा। इच्छानुसार। यथेच्छ।

खतिर जमा–संज्ञा स्त्री० [अ०] संतोष। इतमीनान। तसल्ली।

खातिरदारी संज्ञा स्त्री० [फा०] सम्मान। आदर। आवभगत।

खातिरी–संज्ञा स्त्री० [फा० खातिर] १ सम्मान। आदर। आवभगत। २ तसल्ली। इतमीनान। संतोष।

खाती–संज्ञा स्त्री० [सं० खात] १. खोदी हुई भूमि। २ खती। जमीन खोदनेवाली एक जाति। खतिया। ३ बढ़ई।

खाद–संज्ञा स्त्री० [सं० खाद्य] वह पदार्थ जो खेत में उपज बढ़ाने के लिये डाला जाता है। पांस।

खादक–वि० [सं०] खानेवाला। भक्षक।

खादन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खादित, खाद्य, खादनीय] भक्षण। भोजन। खाना।

खादर–संज्ञा पुं० [हिं० खाड] १. नीची

जमीन। बांगर का उलटा। कछार।

खादित-वि० [सं०] खाया हुआ। भक्षित।

खादी-वि० [सं० खादिन्] १. खानेवाला। भक्षक। २. शत्रु का नाश करनेवाला। रक्षक। ३ कँटीला।

संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गजी या और कोई मोटा कपड़ा। २. हाथ से काते हुए सूत से भारत का बना कपड़ा। खद्दर।

† वि० [हिं० खादि=दोष] १. दोष निकालनेवाला। छिद्रान्वेषी। २. दूषित।

खादुक-वि० [सं०] जिसकी प्रवृत्ति सदा हिंसा की ओर रहे। हिंसालु।

खाद्य-वि० [सं०] खाने योग्य।

संज्ञा पुं० [सं०] भोजन। खाने की वस्तु।

खाधु†-संज्ञा पुं० [सं० खाद्य] भोज्य पदार्थ।

खान-संज्ञा पुं० [हिं० खाना] १. खाने की क्रिया। भोजन। २. भोजन की सामग्री। ३. भोजन करने का ढंग या आचार।

संज्ञा स्त्री० [सं० खानि] १. वह स्थान जहाँ से धातु, पत्थर आदि खोदकर निकाले जायँ। खानि। आकर। खदान। २. जहाँ कोई वस्तु बहुत सी हो। खज़ाना।

संज्ञा पुं० [तातार या मंगोल काअ=सरदार] १. सरदार। २. पठानों की उपाधि।

खानक-संज्ञा पुं० [सं० खन] १. खान खोदने वाला। २ बेलदार। ३. मेमार। राज।

खानकाह-संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमान साधुओं के रहने का स्थान या मठ।

खानगी-वि० [फा०] निज का। आपस का। घरेलू। घरू।

संज्ञा स्त्री० [फा०] केवल कसब करानेवाली तुच्छ वेश्या। कसबी।

खानदान-संज्ञा पुं० [फा०] वंश। कुल।

खानदानी-वि० [फा०] १. ऊँचे वंश का। अच्छे कुल का। २ वंश-परंपरागत।

करके जीविका निर्वाह करना। खा-पका जाना या डालना=खर्च कर डालना। उड़ा डालना। खाना न पचना=चैन न पड़ना। जी न मानना। २. हिंसक जंतुओं का शिकार पकड़ना और भक्षण करना।

मुहा०—खा जाना या कच्चा खा जाना=मार डालना। प्राण ले लेना। खाने दौड़ना=चिड़चिड़ाना। क्रुद्ध होना।

३. विषैले कीड़ों का काटना। डसना। ४. तंग करना। दिक करना। कष्ट देना। ५. नष्ट करना। बरबाद करना। ६. उड़ा देना। दूर कर देना। न रहने देना। ७. हजम करना। मार लेना। हड़प जाना। ८. बेईमानी से रुपया पैदा करना। रिशवत आदि लेना। ९ (आघात, प्रभाव आदि) सहना। बरदाश्त करना।

मुहा०—मुँह की खाना=१. देखना। २. पराजित होना। हार जाना।

खाना-संज्ञा पुं० [फा०] १. घर। मकान। जैसे—डाकखाना, दवाखाना। २ किसी चीज के रखने का घर। केस। ३. विभाग। कोठा। घर। ४ सारणी या चक्र का विभाग। कोष्ठक।

खानातलाशी-संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी खोई या चुराई हुई चीज के लिये मकान के अंदर छान-बीन करना।

खानापुरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खाना+पूरना] किसी चक्र या सारणी के कोठों में यथास्थान संख्या या शब्द आदि लिखना। नकशा भरना।

खानाबदोश-वि० [फा०] जिसका घर-बार न हो।

खानि-संज्ञा स्त्री० [हिं० खानि] १. दे० "खान" २. ओर। तरफ। ३. प्रकार। तरह। [illegible]

खानिक[illegible]-[illegible] दे० "खानि"

मोश-वि० [फा०] चुप। मौन।
मोशी-संज्ञा स्त्री० [फा०] मौन। चुप्पी।
र-संज्ञा पु० [सं० क्षार] १. दे० "क्षार"। . सज्जी। ३. लोना। लोनी। कल्लर। ट। ४. धूल। राख। ५. एक पौधा जिससे खार निकलता है।
ार-संज्ञा पु० [फा०] १. काँटा। कंटक। फाँस। २. खाँग। ३. डाह। जलन।
मुहा०-खार खाना=डाह करना। जलना।
ारा-वि० पु० [सं० क्षार] [स्त्री० खारी] १. क्षार या नमक के स्वाद का। २. कड़ुआ। अरुचिकर।
संज्ञा पु० [सं० क्षारक] १. एक धारीदार कपड़ा। २ घास या सूखे पत्ते बाँधने के लिये जालदार बँधना। ३ जालीदार थैला। ४ झाबा। खाँचा।
खारिक †-संज्ञा पु० [सं० क्षारक] छोहारा।
खारिज-वि० [अ०] १. बाहर किया हुआ। निकाला हुआ। बहिष्कृत। २. भिन्न। अलग। ३. जिस (अभियोग) की सुनाई न हो।
खारिश-संज्ञा स्त्री० [फा०] खुजली।
खारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खारा] एक प्रकार का क्षार लवण।
वि० क्षार-युक्त। जिसमें खार हो।
खारुआँ, खारुवा-संज्ञा पु० [सं० क्षारक] १ आल से बना हुआ एक प्रकार का रंग। २. इस रंग से रँगा हुआ मोटा कपड़ा।
खाल-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षाल] १. मनुष्य, पशु आदि के शरीर का ऊपरी आवरण। चमड़ा। त्वचा।
मुहा०-खाल उधेड़ना या खींचना= बहुत मारना पीटना या कड़ा दंड देना।
२. आधा चरसा। अधौड़ी। ३. धौंकनी। भाथी। ४ मृत शरीर।
संज्ञा स्त्री० [सं० खात] १. नीची भूमि। २ खाड़ी। खलीज। ३. खाली जगह।
खालसा-वि० [अ० खालिस=शुद्ध] १. जिस पर केवल एक का अधिकार हो। २. राज्य का। सरकारी।
मुहा०-खालसा करना= १. स्वायत्त करना। जब्त करना। २. नष्ट करना।
संज्ञा पु० सिक्खों की एक विशेष मंडली।
खाला-वि० [हिं० खाल] [स्त्री० खाली] नीचा। निम्न।

खाला-संज्ञा स्त्री० [अ०] माता की बहिन। मौसी।
मुहा०-खाला जी का घर=सहज काम।
खालिस-वि० [अ०] जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो। शुद्ध।
खाली-वि० [अ०] १. जिसके भीतर का स्थान शून्य हो। जो भरा न हो। रीता। रिक्त। २. जिस पर कुछ न हो। ३ जिसमें कोई एक विशेष वस्तु न हो।
मुहा०-हाथ खाली होना=हाथ में रुपया पैसा न होना। निर्धन होना। खाली पेट= बिना कुछ अन्न खाए हुए।
३. रहित। विहीन। ४. जिसे कुछ काम न हो। ५ जो व्यवहार में न हो। जिसका काम न हो (वस्तु)। ६. व्यर्थ। निष्फल।
मुहा०-निशाना या वार खाली जाना= ठीक न बैठना। लक्ष्य पर न पहुँचना। बात खाली जाना या पड़ना=वचन निष्फल होना। कहने के अनुसार कोई बात न होना।
क्रि० वि० केवल। सिर्फ।
खाविंद-संज्ञा पु० [फा०] १. पति। खसम। २. मालिक। स्वामी।
खास-वि० [अ०] १. विशेष। मुख्य। प्रधान। 'आम' का उलटा।
मुहा०-खासकर=विशेषत.। प्रधानत.।
२. निज का। आत्मीय। ३. स्वयं। खुद। ४. ठीक। ठेठ। विशुद्ध।
संज्ञा स्त्री० [अ० कीसा] गाढ़े कपड़े की थैली।
खासकलम-संज्ञा पु० [अ०] निज का मुंशी। प्राइवेट सेक्रेटरी।
खासगी-वि० [अ० खास+गी (प्रत्य०)] राजा या मालिक आदि का। निज का।
खासबरदार-संज्ञा पु० [फा०] वह सिपाही जो राजा की सवारी के ठीक आगे आगे चलता है।
खासा-संज्ञा पु० [अ०] १. राजा या भोजन। राजभोग। २. राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी। ३. एक प्रकार का पतला सफेद सूती कपड़ा।
वि० पुं० [देश०] [स्त्री०खासी] १. अच्छा। भला। उत्तम। २. स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग। ३. मध्यम श्रेणी का। ४. सुडौल।

सुंदर। ४. भरपूर। पूरा पूरा। सर्वांगपूर्ण।
खासियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्वभाव। प्रकृति। आदत। २. गुण। सिफ़त।
खिँचना—क्रि० अ० [सं० कर्षण] १. घसीटा जाना। २. किसी कोश, थैले आदि में से बाहर निकल जाना। ३. एक या दोनों छोरों का एक या दोनों ओर बढ़ना। तनना। ४ किसी ओर बढ़ना या जाना। आकर्षित होना। प्रवृत्त होना। ५. सोखा जाना। खपना। चुसना। ६. भभके से अर्क या शराब आदि तैयार होना। ७. गुण या तत्त्व का निकल जाना।
मुहा०—पीड़ा या दर्द खिंचना = (औषध आदि से) दर्द दूर होना।
८. कलम आदि से बनकर तैयार होना। चित्रित होना। ९. रुक रहना। रुकना।
मुहा०—हाथ खिँचना = देना बंद होना।
१०. माल की चलान होना। माल खपना ११. अनुराग कम होना।
खिँचवाना—क्रि० स० [हिं० खींचना का प्रे०] खींचने का काम दूसरे से कराना।
खिँचाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खींचना] १. खींचने की क्रिया। २. खींचने की मजदूरी।
खिँचाना—क्रि० स० दे० "खिँचवाना"।
खिँचाव—संज्ञा पु० [हिं० खिंचना] "खिँचना" का भाव।
खिँडाना†—क्रि० स० [सं० क्षिप्त] बिखराना। छितराना।
खिचड़वार—संज्ञा पु० [हिं० खिचड़ी + वार] मकर संक्रांति।
खिचड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० कृसर] १. एक में मिलाया या पकाया हुआ दाल और चावल।
मुहा०—खिचड़ी पकाना = गुप्त भाव से कोई सलाह करना। ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना = सबकी सम्मति के विरुद्ध या सब से अलग होकर कोई कार्य्य करना।
२. विवाह की एक रसम जिसमें बरातियों को कच्ची रसोई खिलाई जाती है। ३. एक ही में मिले हुए दो या अधिक प्रकार के पदार्थ। ४. मकर संक्रांति।
वि० १. मिला-जुला। २ गड़बड़।
खिजलाना—क्रि० अ० [हिं० खीजना] झुँझलाना। चिढ़ना।
क्रि० स० [हिं० खीजना का प्रे०] दुखी करना। चिढ़ाना।
खिजाब—संज्ञा पु० [अ०] सफ़ेद बालों को काला करने की औषधि। केश कल्प।
खिझ*—संज्ञा स्त्री० दे० "खीझ", "खीज"।
खिझना—क्रि० अ० दे० "खीजना"।
खिझाना—क्रि० स० [हिं० खीझना] चिढ़ाना।
खिड़की—संज्ञा स्त्री० [सं० खटक्किका] छोटा दरवाजा। दरीचा। झरोखा।
खिताब—संज्ञा पु० [अ०] पदवी। उपाधि।
खित्ता—संज्ञा पु० [अ०] प्रांत। देश।
खिदमत—संज्ञा स्त्री० [फा०] सेवा। टहल।
खिदमतगार—संज्ञा पु० [फा०] खिदमत करनेवाला। सेवक। टहलुवा।
खिदमती—वि० [फा० खिदमत] १. जो खूब सेवा करे। २. सेवा संबंधी अथवा जो सेवा के बदले में प्राप्त हुआ हो।
खिन*†—संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।
खिन्न—वि० [सं०] १. उदासीन। चिंतित। २. अप्रसन्न। नाराज। ३. दीन-हीन। असहाय।
खिपना*—क्रि० अ० [सं० क्षिप्] १. खपना। २. तल्लीन होना। निमग्न होना।
खियाना†—क्रि० अ० [सं० क्षय या हिं० खाना] रगड़ से घिस जाना।
†क्रि० वि० दे० "खिलाना"।
खिरनी—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीरिणी] एक ऊँचा पेड़ और उसके फल जो खाए जाते हैं।
खिराज—संज्ञा पु० [अ०] राजस्व। कर।
खिरैटी—संज्ञा स्त्री० [सं० खरयष्टिका] बला। बरियारा। बीजबंद।
खिरौरा—संज्ञा पु० [हिं० खीर + औरा] एक प्रकार का लड्डू।
खिलअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह वस्त्र आदि जो किसी राजा की ओर से सम्मान-सूचनार्थ किसी को दिया जाता है।
खिलकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सृष्टि। संसार। २. बहुत से लोगों का समूह। भीड़।
खिलकौरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेल + कौरी (प्रत्य०)] खेल। खिलवाड़।
खिलखिलाना—क्रि० अ० [अनु०] खिलखिल शब्द करके हँसना। जोर से हँसना।
खिलत, खिलति*†—संज्ञा स्त्री० दे० "खिलअत"।
खिलना—क्रि० अ० [सं० ...] ... से फूल होना। ।

प्रसन्न होना। ३. शोभित होना। ठीक या उचित जँचना। ४. बीच से फट जाना। ५. अलग अलग हो जाना।

खिलवत–संज्ञा स्त्री० [अ०] एकांत। शून्य या निर्जन स्थान।

खिलवतखाना–संज्ञा पु० [फा०] वह स्थान जहाँ कोई गुप्त सलाह हो। एकांत मंत्रणा-स्थान।

खिलवाड़–संज्ञा पु० दे० "खेलवाड़"।

खिलवाना–क्रि० स० [हिं० खाना] दूसरे से भोजन कराना।

क्रि० स० [हिं० खिलना का प्रे०] प्रफुल्लित कराना।

क्रि० स० दे० "खेलवाना"।

खिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खाना] खाने या खिलाने का काम।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खेलाना (खेल)] वह दाई या मजदूरनी जो बच्चों को खेलाती हो।

खिलाड़ी–संज्ञा पु० [हिं० खेल+आड़ी (प्रत्य०)] [स्त्री० खिलाड़िन] १. खेल करनेवाला। खेलनेवाला। २. कुश्ती लड़ने, पटा बनेठी खेलने या इसी प्रकार के और काम करनेवाला। ३. जादूगर।

खिलाना–क्रि० स० [हिं० खेलना] किसी को खेल में नियोजित करना। खेल करना।

क्रि० स० [हिं० खाना] 'खाना' का प्रेरणार्थक रूप। भोजन कराना।

क्रि० स० [हिं० खिलना] विकसित करना। फुलाना।

खिलाफ–वि० [अ०] विरुद्ध। उलटा। विपरीत।

खिलौना–संज्ञा पु० [हिं० खेल+औना (प्रत्य०)] कोई मूर्त्ति जिससे बालक खेलते हैं।

खिल्ली–संज्ञा स्त्री० [हिं० खिलना] हँसी। हास्य। दिल्लगी। मजाक।

यौ०—खिल्लीबाज़=दिल्लगीबाज़।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० खील] १. पान का बीड़ा। गिलौरी। २. कील। काँटा।

खिसकना–क्रि० अ० दे० "खसकना"।

खिसाना‡–क्रि० अ० दे० "खिसियाना"।

खिसारा–संज्ञा पु० [फा०] घाटा। नुकसान। हानि।

खिसियाना–क्रि० अ० [हिं० खीस+दाँत] १. लजाना। लज्जित होना। शरमाना। २. खफा होना। क्रुद्ध होना। रिसाना।

खिसी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खिसिआना] १. लज्जा। शरम। २. ढिठाई। धृष्टता।

खिसौहाँ*–वि० [हिं० खिसाना] १. लज्जित सा। २. कुढ़ा या रिसाया सा।

खींच–संज्ञा स्त्री० [हिं० खींचना] खींचना का भाव।

खींच-तान–संज्ञा स्त्री० [हिं० खींच+तान] १. दो व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग। खींचाखींची। २. क्लिष्ट कल्पना द्वारा किसी शब्द या वाक्य आदि का अन्यथा अर्थ करना।

खींचना–क्रि० स० [सं० कर्षण] [प्रे० खिंचवाना] १. घसीटना। २ किसी कोश, थैले आदि में से बाहर निकालना। ३. किसी वस्तु को छोर या बीच से पकड़कर अपनी ओर लाना। ४. बल-पूर्वक अपनी ओर बढ़ाना। तानना। ऐंचना। ५. आकर्षित करना। किसी ओर ले जाना।

मुहा०—चित्त खींचना=मन को मोहित करना।

६. सोखना। चूसना। ७. भभके से अर्क, शराब आदि टपकाना। ८. किसी वस्तु के गुण या तत्व को निकाल लेना।

मुहा०—पीड़ा या दर्द खींचना=(औषध आदि का) दर्द दूर करना।

९. कलम फेरकर लकीर आदि डालना। लिखना। चित्रित करना। १०. रोक रखना।

मुहा०—हाथ खींचना=देना या और कोई काम बंद करना।

खींचाखींची, खींचातानी–संज्ञा स्त्री० दे० "खींचतान"।

खीज–संज्ञा स्त्री० [हिं० खीजना] १. खीजना का भाव। झुँझलाहट। २. वह बात जिससे कोई चिढ़े।

खीजना–क्रि०. अ० [सं० खिद्यते] दुःखी और क्रुद्ध होना। झुँझलाना। खिजलाना।

खीझ*†–संज्ञा स्त्री० दे० "खीज"।

खीझना*†–क्रि० अ० दे० "खीजना"।

खीन*†–वि० [सं० क्षीण] क्षीण।

खीर–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीर] १. दूध में पकाया हुआ चावल।

मुह[illegible] [illegible] को पहले पहल अन्न [illegible]

खीरा-संज्ञा पुं० [सं० क्षीरक] ककड़ी की जाति का एक लंबा फल।

खीरी-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीर] चौपायों के थन के ऊपर का वह मांस जिसमें दूध रहता है। बाख।

खीरी-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीरी] खिरनी।

खील-संज्ञा स्त्री० [हिं० खिलना] भूना हुआ धान। लावा।
†संज्ञा स्त्री० दे० "कील"।

खीला‡-संज्ञा पुं० [हिं० कील] काँटा। मेख। कील।

खीली-संज्ञा स्त्री० [हिं० खील] पान का बीड़ा। गिलौरी।

खीवन, खीवनि-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षीवन] मतवालापन। मस्ती।

खीस:†-वि० [सं० क्षिप्त] नष्ट। बरबाद।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खीन] १. अप्रसन्नता। नाराज़गी। २. क्रोध। रोष। गुस्सा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खिसिआना] लज्जा। शरम।
संज्ञा स्त्री० [सं० कीश=बंदर] ओंठ से बाहर निकले हुए दाँत।

खीसा-संज्ञा पुं० [फ़ा० कीसा] [स्त्री० अल्प० खीसी] १. थैला। थैली। २. जेब। पाकेट। खलीता।

खुँदाना-क्रि० स० [सं० क्षुण्ण=रौंदा हुआ] (घोड़ा) कुदाना।

खुँदी-संज्ञा स्त्री० दे० "खूँद"।

खुआर:-वि० दे० "ख़्वार"।

खुक्ख-वि० [सं० शुष्क या रुक्ष] जिसके पास कुछ न हो। छूछा। ख़ाली।

खुखड़ी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत या ऊन। कुकड़ी। २. नैपाली छुरी।

खुगीर-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह ऊनी कपड़ा जो घोड़े के चारजामे के नीचे लगाया जाता है। नमदा। २. चारजामा। जीन।
मुहा०—खुगीर की भरती=बहुत ही अनावश्यक और व्यर्थ के लोगों या पदार्थों का समूह।

खुचर, खुचुर-संज्ञा स्त्री० [सं० कुचर] झूठ मूठ अवगुण दिखलाने का कार्य्य। ऐबजोई।

खुजलाना-क्रि० स० [सं० खर्जु] खुजली मिटाने के लिये नख आदि को अंग पर फेरना। सहलाना।
क्रि० अ० किसी अंग में सुरसुरी या खुजली मालूम होना।

खुजलाहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० खुजलाना] सुरसुरी। खुजली।

खुजली-संज्ञा स्त्री० [हिं० खुजलाना] १. खुजलाहट। सुरसुरी। २. एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है।

खुजाना-क्रि० स०, क्रि० अ० दे० "खुजलाना"।

खुटक:†-संज्ञा स्त्री० [हिं० खटकना] खटका। आशंका। चिंता।

खुटकना-क्रि० स० [सं० खुड् या खुट] किसी वस्तु को ऊपर ऊपर से तोड़ या नोच लेना।

खुटका-संज्ञा पुं० दे० "खटका"।

खुटचाल:-संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटी+चाल] १. दुष्टता। पाजीपन। २. ख़राब चाल चलन। ३. उपद्रव।

खुटचाली:-वि० [हिं० खुटचाल+ई (प्रत्य०)] १. दुष्ट। पाजी। २. दुराचारी। बद-चलन।

खुटना:†-क्रि० अ० [सं० खुड्] खुलना।
क्रि० अ० समाप्त होना।

खुटपन, खुटपना-संज्ञा पुं० [हिं० खोटा+पन, पना (प्रत्य०)] खोटापन। दोष। ऐब।

खुटाना†-क्रि० अ० [सं० खुड्=खोंडा होना, या खोट] समाप्त होना। ख़तम होना। चुकना।

खुटाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटाई] खोटापन। दोष।

खुटिला-संज्ञा पुं० [देश०] करनफूल नामक कान का गहना।

खुट्टी†-संज्ञा स्त्री० [खुट से अनु०] रेवड़ी नाम की मिठाई।

खुट्टी-संज्ञा स्त्री० [?] घाव पर जमी हुई पपड़ी। खुरंड।

खुडुआ†-संज्ञा पुं० दे० "घोघी"।

खुड्डी, खुड्ढी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गड्ढा] १. पाखाने में पैर रखने के पायदान। २. पाखाना फिरने का गड्ढा।

खुतबा-संज्ञा पुं० [अ०] १ तारीफ़। प्रशंसा। २. सामयिक राजा की प्रशंसा या घोषणा।

मुहा०—किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना = सर्व साधारण को सूचना देने के लिये किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना। (मुसल०)

खुत्थी, खुथी †—संज्ञा स्त्री० [हिं० खूँटी] १ पौधों का वह भाग जो फसल काट लेने पर पृथ्वी पर गड़ा रह जाता है। खूँथी। खूँटी। २ थाती। धरोहर। अमानत। ३ वह पतली लंबी थैली जिसमें रुपया भरकर कमर में बाँधते हैं। वसनी। हिमयानी। ४ धन। दौलत। संपत्ति।

खुद—अव्य० [फा] स्वयं। आप।

मुहा०—खुद ब खुद = आपसे आप। बिना किसी दूसरे के प्रयास, यत्न या सहायता के।

खुदकाश्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह जमीन जिसे उसका मालिक स्वयं जोते बोए, पर वह सीर न हो।

खुदगरज—वि० [फा०] अपना मतलब साधनेवाला। स्वार्थी।

खुदगरजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] स्वार्थपरता।

खुदना—क्रि० अ० [हिं० खोदना] खोदा जाना।

खुदमुख्तार—वि० [फा०] जिस पर किसी का दबाव न हो। अनिरुद्ध। स्वतंत्र। स्वच्छंद।

खुदरा—संज्ञा पु० [सं० क्षुद्र] छोटी और साधारण वस्तु। फुटकर चीज।

खुदवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुदवाना] खुदवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खुदवाना—क्रि० स० [हिं० खोदना का प्रे०] खोदने का काम कराना।

खुदा—संज्ञा पु० [फा०] स्वयंभू। ईश्वर।

खुदाई—संज्ञा स्त्री० [फा० खुदाई] १ ईश्वरता। २ सृष्टि।

खुदाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोदना] खोदने का भाव, काम या मजदूरी।

खुदावंद—संज्ञा पु० [फा०] १ ईश्वर। २ मालिक। अन्नदाता। ३ हुजूर। जनाब। श्रीमान्।

खुदी—संज्ञा पु० [फा०] १ अहंकार। २. अभिमान। घमंड। शेखी।

खुद्दी—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुद्र] चावल, दाल आदि के बहुत छोटे छोटे टुकड़े।

खुनखुना—संज्ञा पु० [अनु०] झुनझुना। झुनझुना।

खुनस—संज्ञा स्त्री० [सं० खिन्नमनस्] [वि० खुनसी] क्रोध। गुस्सा। रिस।

खुनसाना †—क्रि० अ० [सं० खिन्नमनस क्रोध करना। गुस्सा होना।

खुनसी—वि० [हिं० खुनसाना] क्रोधी।

खुफिया—वि० [फा०] गुप्त। पोशीदा। छिपा हुआ।

खुफिया पुलीस—संज्ञा स्त्री० [फा० खुफिया + अं० पुलीस] गुप्त पुलीस। भेदिया। जासूस।

खुभना क्रि० स० [अनु०] चुभना। घुसना। धँसना।

खुभराना †—क्रि० अ० [सं० क्षुब्ध] उपद्रव के लिये घूमना। इतराए फिरना।

खुभी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुभना] कान में पहनने का लौंग।

खुमान—वि० [सं० आयुष्मान्] बड़ी आयुवाला। दीर्घजीवी। (आशीर्वाद)

खुमार—संज्ञा पु० दे० "खुमारी"।

खुमारी—संज्ञा स्त्री० [अ० खुमार] १ मद। नशा। २. नशा उतरने के समय की हलकी थकावट। ३ वह शिथिलता जो रात भर जागने से होती है।

खुमी—संज्ञा स्त्री० [अ० कुमा] पत्र पुष्प रहित क्षुद्र उद्भिद की एक जाति जिसके अंतर्गत भूफोड़, ढिंगरी, कुकुरमुत्ता और गगनधूल आदि हैं।

संज्ञा स्त्री० [हिं० खुभना] १ सोने की कील जिसे लोग दाँतों में जड़वाते हैं। २ धातु का पोला खोल जो हाथी के दाँत पर चढ़ाया जाता है।

खुरंड—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुर = खरोचना + अंड] सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी।

खुर—संज्ञा पु० [सं०] सींगवाले चौपायों के पैर की कड़ी टाप जो बीच से फटी होती है।

खुरका—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुटक] सोच। खटका। अंदेशा।

खुरखुर—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो गले में कफ आदि रहने के कारण साँस लेते समय होता है। घरघर शब्द।

खुरखुरा—वि० [सं० क्षुर = खरोचना] जिसको छूने से हाथ में कण या रवे गड़ें। नाहमवार। खुरदरा।

खुरखुराना—क्रि० अ० [खुरखुर से अनु०]

गले में कफ के कारण घरघराहट होना। क्रि० अ० [हिं० खुरखुरा] खुरखुरा मालूम होना। कण या रवे आदि गड़ना।
खुरखुराहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरखुर] सांस लेते समय गले का शब्द। संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरखुरा] खरदरापन।
खुरचन–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरचना] वह वस्तु जो खुरचकर निकाली जाय।
खुरचना–क्रि० अ० [सं० क्षुरण] किसी जमी हुई वस्तु को कुरेदकर अलग कर लेना। करोचना। करोना।
खुरचाल–संज्ञा स्त्री० दे० "खुटचाल"।
खुरजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े, बैल आदि पर समान रखने का झोला। बड़ा थैला।
खुरतार–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर+ताड़ना] टाप या खुर की चोट। सुम का आघात।
खुरपका–संज्ञा पु० [हिं० खुर+पकना] चौपायों का एक रोग जिस में उनके मुँह और खुरों में दाने निकल आते हैं।
खुरपा–संज्ञा पु० [सं० क्षुरप्र] [स्त्री० अल्पा० खुरपी] घास छीलने का औज़ार।
खुरमा–संज्ञा पु० [अ०] १. छोहारा। २. एक प्रकार का पकवान या मिठाई।
खुराक–संज्ञा स्त्री० [फा०] भोजन। खाना।
खुराका–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह धन जो खुराक के लिये दिया जाय।
खुराफात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बेहूदा और रद्दी बात। २. गाली-गलौज। ३. झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव।
खुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर] टाप का चिह्न।
खुरूक–संज्ञा पु० दे० "खुरक"।
खुर्द–वि० [फा०] छोटा। लघु।
खुर्दबीन–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह यंत्र जिससे छोटी वस्तु बहुत बड़ी देख पड़ती है। सूक्ष्मदर्शक यंत्र।
खुर्द बुर्द–क्रि० वि० [फा०] नष्ट-भ्रष्ट।
खुर्दा–संज्ञा पु० [फा०] छोटी मोटी चीज़।
खुर्राट–वि० [देश०] १. बूढ़ा। वृद्ध। २. अनुभवी। तजरबेकार। ३. चालाक। काइयाँ।
खुलना–क्रि० अ० [सं० खुड, खुल=भेदन] १. अवरोध या आवरण का दूर होना। बंद न रहना। जैसे—किवाड़ खुलना। मुहा०—खुलकर=बिना रुकावट के। २. ऐसी वस्तु का हट जाना जो छाए या घेरे हो। ३. दरार होना। छेद होना। फटना। ४. बांधने या जोड़नेवाली वस्तु का हटना। ५. जारी होना। ६. सड़क, नहर आदि तैयार होना। ७. किसी कारखाने, दूकान या दफ़्तर का नित्य का कार्य्य आरंभ होना। ८ किसी सवारी का रवाना हो जाना। ९. गुप्त या गूढ़ बात का प्रकट हो जाना।
मुहा०—खुले आम, खुले खजाने, खुले मैदान=सबके सामने। छिपाकर नहीं।
१०. मन की बात कहना। भेद बताना। ११. देखने में अच्छा लगना। सजना।
मुहा०—खुलता रंग=हलका सोहावना रंग।
खुलवाना–क्रि० स० [हिं० खोलना का प्रे०] खोलने का काम दूसरे से कराना।
खुला–वि० पु० [हिं० खुलना] १. बंधन रहित। जो बँधा न हो। २. जिसे कोई रुकावट न हो। अवरोधहीन। ३. जो छिपा न हो। स्पष्ट। प्रकट। ज़ाहिर।
खुलासा–संज्ञा पु० [अ०] सारांश। वि० [हिं० खुलना] १. खुला हुआ। २. अवरोधरहित। ३. साफ़ साफ़। स्पष्ट।
खुल्लमखुल्ला–क्रि० वि० [हिं० खुलना] प्रकाश्य रूप से। खुले आम।
खुश–वि० [फा०] १. प्रसन्न। मगन। आनंदित। २. अच्छा। (यौगिक में)
खुशकिस्मत–वि० [फा०] भाग्यवान्।
खुशखबरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] प्रसन्न करनेवाला समाचार। अच्छी खबर।
खुशदिल–वि० [फा०] १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। २. हँसोड़। मसखरा।
खुशनसीब–वि० [फा०] भाग्यवान्।
खुशबू–संज्ञा स्त्री० [फा०] सुगंधि। सौरभ।
खुशबूदार–वि० [फा०] उत्तम गंधवाला।
खुशहाल–वि० [फा०] सुखी। संपन्न।
खुशामद–संज्ञा स्त्री० [फा०] प्रसन्न करने के लिये झूठी प्रशंसा। चापलूसी।
खुशामदी–वि० [फा० खुशामद+ई (प्रत्य०)] खुशामद करनेवाला। चापलूस।
खुशामदी टट्टू–संज्ञा पु० [हिं० खुशामदी+टट्टू] वह जिसका काम खुशामद करना हो।
खुशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] आनंद। प्रसन्नता।
खुश्क–वि० [फा० मि० सं० शुष्क] १. जो तर न हो। सूखा। २. [illegible] न हो। रूखे स्वभाव का

किसी और आमदनी के। केवल। मात्र।
खुश्की-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. रूखापन। शुष्कता। नीरसता। २. स्थल या भूमि।
खुसाल, खुस्याल-वि० [फा० खुशहाल] आनंदित। मुदित। खुश।
खुसिया-संज्ञा पुं० [अ०] अंडकोश।
खूँखार-वि० [फा०] १. खून पीनेवाला। २. भयंकर। डरावना। ३. क्रूर। निर्दय।
खूँट-संज्ञा पुं० [सं० खंड] १. छोर। कोना। २. ओर। तरफ। ३. भाग। हिस्सा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खोंट] कान की मैल।
खूँटना-क्रि० स० [सं० खंडन] १. पूछताछ करना। टोकना। २. छेड़ छाड़ करना। ३. कम होना। ४. दे० "खोंटना"।
खूँटा-संज्ञा पुं० [सं० क्षोड] पशु बाँधने के लिये ज़मीन में गड़ी लकड़ी या मेख़।
खूँटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० खूँटा] १. छोटी मेख़। छोटी गड़ी लकड़ी। २. अरहर, ज्वार आदि के पौधे की सूखी पेड़ी का अंश जो फसल काट लेने पर खेत में खड़ा रह जाता है। ३. गुल्ली। अटी। ४. बालों के नए निकले हुए कड़े अंकुर। ५. सीमा। हद। ६. मेख़ के आकार की लकड़ी या लोहा।
खूँद-संज्ञा स्त्री० [हिं० खूँदना] थोड़ी जगह में घोड़े का इधर-उधर चलते या पैर पटकते रहना।
खूँदना-क्रि० अ० [सं० खुंडन=तोड़ना] १. पैर उठा उठाकर जल्दी जल्दी भूमि पर पटकना। उछल-कूद करना। २. पैरों से रौंदकर खराब करना। † ३. कुचलना।
खूझा-संज्ञा पुं० [सं० गुह्य, प्रा० गुज्झ] १. फल के अंदर का निकम्मा रेशेदार भाग। २. उलझा हुआ रेशेदार लच्छा।
खूटना†-क्रि० अ० [सं० खुडन] १. रुक जाना। बंद हो जाना। २. खतम होना।
क्रि० स० छेड़ना। रोक टोक करना।
खूद, खूदड़, खूदरा-संज्ञा पुं० [सं० क्षुद्र] किसी वस्तु को छान लेने या साफ़ कर लेने पर निकम्मा बचा हुआ भाग। तल-छट। मैल।
ख़ून-संज्ञा पुं० [फा०] १. रक्त। रुधिर।
मुहा०—*ख़ून खलना या खौलना*=क्रोध से शरीर लाल होना। गुस्सा चढ़ना। ख़ून का प्यासा=वध का इच्छुक। ख़ून सिर पर चढ़ना या सवार होना=किसी को मार डालने या इसी प्रकार का और कोई अनिष्ट करने पर उद्यत होना। ख़ून पीना=१. मार डालना। २. बहुत तंग करना। सताना।
२. वध। हत्या। क़तल।
ख़ून ख़राबा-संज्ञा पुं० [हिं० ख़ून+ख़राबी] मार काट।
ख़ूनी-वि० [फा०] १. मार डालनेवाला। हत्यारा। घातक। २. अत्याचारी।
ख़ूब-वि० [फा०] [संज्ञा ख़ूबी] अच्छा। भला। उमदा। उत्तम।
क्रि० वि० [फा०] अच्छी तरह से।
ख़ूबकलाँ-संज्ञा स्त्री० [फा०] फारस की एक घास के बीज। खाकसीर।
ख़ूबसूरत-वि० [फा०] सुंदर। रूपवान्।
ख़ूबसूरती-संज्ञा स्त्री० [फा०] सुंदरता।
ख़ूबानी-संज्ञा स्त्री० [फा०] ज़रदालू।
ख़ूबी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. भलाई। अच्छाई। अच्छापन। २. गुण। विशेषता।
खूसट-संज्ञा पुं० [सं० कौशिक] उल्लू। वि० शुष्कहृदय। अरसिक। मनहूस।
खृष्टीय-वि० [हिं० खीष्ट+सं० ईय (प्रत्य०)] ईसा संबंधी। ईसा का। ईसाई।
खेकसा, खेखसा-संज्ञा पुं० [देश०] परवल के आकार का एक रोएँदार फल या तर-कारी। ककोड़ा।
खेचर-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो आस-मान में चले। आकाशचारी। २. सूर्य चंद्र आदि ग्रह। ३. तारागण। ४. वायु। ५. देवता। ६. विमान। ७. पक्षी। ८. बादल। ९. भूत-प्रेत। १०. राक्षस।
खेचरी गुटिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] योगसिद्ध गोली जिसको मुँह में रखने से आकाश में उड़ने की शक्ति आ जाती है। (तंत्र)
खेचरी मुद्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] योगसाधन की एक मुद्रा जिसमें जीभ को उलटकर तालू से लगाते हैं और दृष्टि मस्तक पर।
खेटक-संज्ञा पुं० [सं०] १. खेड़ा। गाँव। २. सितारा। ३. बलदेवजी की गदा।
संज्ञा पुं० [सं० आखेट] शिकार।
खेटकी-संज्ञा पुं० [सं०] भड्डरी। भड़ेरिया। भड्डर।
संज्ञा पुं० [सं० आखेट] १. शिकारी। अहेरी। २. वधिक।
खेड़ा-संज्ञा पुं० [सं० खेट] छोटा गाँव।

खेड़ी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का देशी लोहा। कुरकुटिया लोहा। २. वह मांसखंड जो जरायुज जीवों के बच्चों की नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है।

खेत—संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्र] १. अनाज आदि की फसल उत्पन्न करने के योग्य जोतने-बोने की जमीन।

मुहा०—खेत करना=१. समथल करना। २. उदय के समय चंद्रमा का पहले पहल प्रकाश फैलाना।

२. खेत में खड़ी हुई फसल। ३. किसी चीज़ के विशेषतः पशुओं आदि के उत्पन्न होने का स्थान या देश। ४. समर-भूमि।

मुहा०—खेत आना या रहना=युद्ध में मारा जाना। खेत रखना=समर में विजय प्राप्त करना।

५. तलवार का फल।

खेतिहर—संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्रधर] खेती करनेवाला। कृषक। किसान।

खेती—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेत+ई (प्रत्य०)] १. खेत में अनाज बोने का कार्य्य। कृषि। किसानी। २. खेत में बोई हुई फसल।

खेती बारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेती+बारी] किसानी। कृषि-कर्म।

खेद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खेदित, खिन्न] १. अप्रसन्नता। दुःख। रंज। २. शिथिलता। थकावट।

खेदना†—क्रि० स० [सं० खेट] १. मारकर हटाना। भगाना। खदेरना। २. शिकार के पीछे दौड़ना।

खेदा—संज्ञा पुं० [हिं० खेदना] १. किसी बनैले पशु को मारने या पकड़ने के लिये घेरकर एक उपयुक्त स्थान पर लाने का काम। २. शिकार। अहेर। आखेट।

खेदित—वि० [सं०] १. दुःखित। रंजीदा। २. थका हुआ। शिथिल।

खेना—क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. नाव के डाँड़ों को चलाना जिसमें नाव चले। २. कालक्षेप करना। बिताना। काटना।

खेप—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षेप] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार में ले जाई जाय। लदान। २. गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।

खेपना—क्रि० स० [सं० क्षेपण] बिताना। काटना। गुजारना।

खेम*—संज्ञा पुं० दे० "क्षेम"।

खेमटा—संज्ञा पुं० [देश०] १. बारह मात्राओं का एक ताल। २. इस ताल पर होनेवाला गाना या नाच।

खेमा—संज्ञा पुं० [अ०] तंबू। डेरा।

खेल—संज्ञा पुं० [सं० केलि] १. मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर-उधर उछल-कूद, दौड़-धूप या और कोई मनोरंजक कृत्य, जिसमें कभी कभी हार जीत भी होती है। क्रीड़ा।

मुहा०—खेल खेलाना=बहुत तंग करना।

२. मामला। बात। ३. बहुत हलका या तुच्छ काम। ४ अभिनय, तमाशा, स्वाँग या करतब आदि। ५. कोई अद्भुत बात। विचित्र लीला।

खेलक*—संज्ञा पुं० [हिं० खेलना] वह जो खेले। खेलाड़ी।

खेलना—क्रि० अ० [सं० केलि, खेलन] [प्रे० खेलाना] १. मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर-उधर उछलना, कूदना, दौड़ना आदि। क्रीड़ा करना। २. काम-क्रीड़ा करना। विहार करना। ३. भूत-प्रेत के प्रभाव से सिर और हाथ पैर आदि हिलाना। अभुआना। ४. विचरना। चलना। बढ़ना।

क्रि० स० १. मन बहलाव का काम करना। जैसे—गेंद खेलना, ताश खेलना।

मुहा०—जान या जी पर खेलना=ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो।

२. नाटक या अभिनय करना।

खेलवाड़—संज्ञा पुं० [हिं० खेल+वाड़] खेल। क्रीड़ा। तमाशा। मनबहलाव। दिल्लगी।

खेलवाड़ी—वि० [हिं० खेल+वार (प्रत्य०)] १. बहुत खेलनेवाला। २ विनोदशील।

खेलाड़ी—वि० [हिं० खेल+आड़ी (प्रत्य०)] १. खेलनेवाला। क्रीड़ाशील। २. विनोदी। संज्ञा पुं० १. खेल में सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति। वह जो खेले। २. तमाशा करनेवाला। ३. ईश्वर।

खेलाना—क्रि० स० [हिं० 'खेलना' का प्रे०] १. किसी दूसरे को खेल में लगाना। २. खेल में शामिल करना। ३. उलझाए रखना। बहलाना।

खेलार*†—संज्ञा पुं० दे० "खेलाड़ी"।

खेवक*—संज्ञा पुं० [सं० क्षेपक] नाव खेनेवाला। मल्लाह। केवट।

खेवट—संज्ञा पुं० [हिं० खेत+बाँट] पटवारी का एक कागज़ जिसमें हर एक पट्टीदार

का हिस्सा लिखा रहता है।
संज्ञा पु० [हिं० खेना] नाव खेनेवाला। मल्लाह। माँझी।

खेवा–संज्ञा पु० [हिं० खेना] १ नाव का किराया। २ नाव द्वारा नदी पार करने का काम। ३ बार। दफा। काल। समय।

खेवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खेना] १ नाव खेने का काम। २ नाव खेने की मजदूरी।

खेस–संज्ञा पु० [देश०] बहुत मोटे सूत की लंबी चादर।

खेसारी–संज्ञा स्त्री० [सं० कृसर] एक प्रकार का मटर। दुबिया मटर। लतरी।

खेह–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षार] धूल। राख।
मुहा०—खेह खाना = १ धूल फाँकना। व्यर्थ समय खोना। २ दुर्दशा-ग्रस्त होना।

खैंचना–क्रि० स० दे० "खींचना"।

खैर–संज्ञा पु० [सं० खदिर] १ एक प्रकार का बबूल। कथ कीकर। सोन कीकर। २ इस वृक्ष की लकड़ी को उबालकर निकाला और जमाया हुआ रस, जो पान में खाया जाता है। कत्था। ३ एक पक्षी।
संज्ञा स्त्री० [फा० खैर] कुशल। क्षेम।
अव्य० १ कुछ चिंता नहीं। कुछ परवा नहीं। २ अस्तु। अच्छा।

खैर आफियत–संज्ञा स्त्री० [फा०] कुशल मंगल। क्षेम कुशल।

खैरखाह–वि० [फा०] [संज्ञा खैरखाही] भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।

खैरा–वि० [हिं० खैर] खैर के रंग का। कत्थई।

खैरात–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० खैराती] दान। पुण्य।

खैरियत–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कुशल क्षेम। राजी-खुशी। २ भलाई। कल्याण।

खैंगाह–संज्ञा पु० [अ०] पीलापन लिए सफ़ेद रंग का घोड़ा।

खोंच–संज्ञा स्त्री० [सं० कुच] १. किसी नुकीली चीज से छिलने का आघात। खरोंट। २ काँटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना।

खोंचा–संज्ञा पु० [सं० कुच] बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लंबा बाँस।

खोंट–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोंटना] १ खोंटने या नोचने की क्रिया। २ नोचने से पड़ा हुआ दाग। खरोंट।

खोंटना–क्रि० स० [सं० खुंड] किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना। कपटना।

खोंडा–वि० [सं० खुंड] १ जिसका कोई अंग भंग हो। २ जिसके आगे के दो तीन दाँत टूटे हों।

खोंता–संज्ञा पु० [देश०] चिड़ियों का घोंसला। नीड़।

खोंसना–क्रि० स० [सं० कोश + ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु को कहीं स्थिर रखने के लिये उसका कुछ भाग किसी दूसरी वस्तु में घुसेड़ देना। अटकाना।

खोआ–संज्ञा पु० दे० "खोया"।

खोई–संज्ञा स्त्री०[सं० क्षुद्र] १ रस निकाले हुए गन्ने के टुकड़े। छोई। २ धान की खील। लाई। ३ कंबल की घोघी।

खोखला–वि० [हिं० खुक्ख=ला (प्रत्य०)] जिसके भीतर कुछ न हो। पोला।

खोगीर–संज्ञा पु० दे० "खुगीर"।

खोज–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोजना] १ अनुसंधान। तलाश। शोध। २ चिह्न। निशान। पता। ३ गाड़ी के पहिए की लीक अथवा पैर आदि का चिह्न।

खोजना–क्रि० स० [सं० खुज=चोराना] तलाश करना। पता लगाना। ढूँढ़ना।

खोजवाना–क्रि० स० [हिं०खोजना का प्रे०] पता लगवाना। ढुँढ़वाना।

खोजा–संज्ञा पु० [फा० ख्वाजा] १ वह नपुंसक जो मुसलमानी हरमों में सेवक की भाँति रहता है। २ सेवक। नौकर। ३ माननीय व्यक्ति। सरदार।

खोट–संज्ञा स्त्री० [सं० खोट] १ दोष। ऐब। बुराई। २ किसी उत्तम वस्तु में निकृष्ट वस्तु की मिलावट।

खोटा–वि० [सं० क्षुद्र] [स्त्री० खोटी] जिसमें कोई ऐब हो। बुरा। "खरा" का उलटा।
मुहा०—खोटी खरी सुनाना = डाँटना। फटकारना।

खोटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटा + ई (प्रत्य०)] १ बुराई। दुष्टता। क्षुद्रता। २. छल। कपट। ३. दोष। ऐब। नुक्स।

खोटापन–संज्ञा पुं० [हिं० खोटा + पन (प्रत्य०)] खोटा होने का भाव। क्षुद्रता।

खोड़रा–संज्ञा पुं० [सं० कोटर] पुराने पेड़ में खोखला भाग या गड्ढा।

खोद—संज्ञा पु० [फा० खोद] युद्ध में पहनने का लोहे का टोप। कूँड़। शिरस्त्राण।

खोदना—क्रि० स० [सं० खुद=भेदन करना] १. सतह की मिट्टी आदि हटाकर गहरा करना। गड्ढा करना। खनना। २. मिट्टी आदि उखाड़ना। ३. खोदकर उड़ाना या गिराना। ४. नक्काशी करना। ५. उँगली, छड़ी आदि से छूना या दबाना। गड़ाना। ६. छेड़-छाड़ करना। छेड़ना। ७. उत्तेजित करना। उसकाना। उभाड़ना।

खोद विनोद|—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोद+विनोद (अनु०)] छान-बीन। जाँच पड़ताल।

खोदवाना—क्रि० स० [हिं० खोदना का प्रे०] खोदने का काम दूसरे से करवाना।

खोदाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोदना] १. खोदने का काम। २. खोदने की मजदूरी।

खोना—क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. अपने पास की वस्तु को निकल जाने देना। गँवाना। २. भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ आना। ३. खराब करना। बिगाड़ना। क्रि० अ० पास की वस्तु का निकल जाना। किसी वस्तु का कहीं भूल से छूट जाना।

खोन्चा—संज्ञा पु० [फा० ख़्वान्चा] बड़ी परात या थाल जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं।

खोपड़ा—संज्ञा पु० [सं० खर्पर] १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर। ३. गरी का गोला। गरी। ४. नारियल।

खोपड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोपड़ा] १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर।

मुहा०—अंधी या औंधी खोपड़ी का=नासमझ। मूर्ख। खोपड़ी खा या चाट जाना=बहुत बातें करके दिक करना। खोपड़ी गंजी होना=मार से सिर के बाल झड़ जाना।

खोपा—संज्ञा पु० [सं० खर्पर, हिं० खोपड़ा] १. छप्पर का कोना। २. मकान का कोना जो किसी रास्ते की ओर पड़े। ३. स्त्रियों की गुथी चोटी की तिकोनी बनावट। ४. जूड़ा। वेणी। | ५. गरी का गोला।

खोम*—संज्ञा पुं० [अ० क़ौम] समूह।

खोय|—संज्ञा स्त्री० [फा० खू] आदत।

खोया—संज्ञा पु० [सं० क्षुद्र] आँच पर चढ़ाकर इतना गाढ़ा किया हुआ दूध कि उसकी पिंडी बाँध सकें। मावा। खोवा।

खोर—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर] १. सँकरी गली। कूचा। २. चौपायों को चारा देने की नाँद।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खोरना] स्नान। नहान।

खोरना|—क्रि० अ० [सं० क्षालन] नहाना।

खोरा—संज्ञा पु० [सं० खोलक, फा० आबखोरा] [स्त्री० खोरिया] १. कटोरा। बेला। २. पानी पीने का बरतन। आबखोरा। †* वि० [सं० खोर या खोट], लँगड़ा।

खोराक—संज्ञा स्त्री० दे० "खुराक"।

खोरि*—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुर] तंग गली।
संज्ञा स्त्री० [सं० खोट या खोर] १. ऐब। दोष। २. बुराई।

खोल—संज्ञा पु० [सं० खोल=कोश या आवरण] १. ऊपर से चढ़ा हुआ ढकना। गिलाफ़। २. कीड़ों का ऊपरी चमड़ा जिसे समय समय पर वे बदला करते हैं। ३. मोटी चादर।

खोलना—क्रि० स० [सं० खुड, खुल=भेदन] १. छिपाने या रोकनेवाली वस्तु को हटाना। जैसे—किवाड़ खोलना। २. दरार करना। छेद करना। शिगाफ़ करना। ३. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु को अलग करना। बंधन तोड़ना। ४ किसी बँधी हुई वस्तु को मुक्त करना। ५. किसी क्रम को चलाना या जारी करना। ६. सड़क, नहर आदि तैयार करना। ७. दूकान, दफ़्तर आदि का दैनिक कार्य्य आरंभ करना। ८. गुप्त या गूढ़ बात को प्रकट या स्पष्ट कर देना।

खोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोल] आवरण। गिलाफ़। जैसे—तकिए की खोली।

खोह—संज्ञा स्त्री० [सं० गोह] गुहा। गुफ़ा। कंदरा।

खौं—संज्ञा स्त्री० [सं० खन्] १. खात। गड्ढा। २. अन्न रखने का गहरा गड्ढा।

खौचा—संज्ञा पु० [सं० षट्+च] साढ़े छः का पहाड़ा।

खौफ़—संज्ञा पु० [अ०] [वि० खौफ़नाक] डर। भय। भीति। दहशत।

खौर—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षौर या क्षुर] १. चंदन का तिलक। टीका। २. स्त्रियों का सिर का एक गहना।

खौरना—क्रि० स० [हिं० खौर] खौर लगाना। चंदन का टीका लगाना।

खौरहा|—वि० [हिं० खौरा+हा खौरही] १. जिसके सिर

हो। २. जिसके शरीर में खौरा या खुजली का रोग हो। (पशु)

खौरा–संज्ञा पु० [सं० क्षौर। फा० बालखोरा] एक प्रकार की बुरी खुजली।
वि० जिसे खौरा रोग हुआ हो।

खौलना–क्रि० अ० [सं० क्ष्वेल] (तरल पदार्थ का) उबलना। जोश खाना।

खौलाना–क्रि० स० [हिं० खौलना] जल, दूध आदि गरम करना।

ख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध। विदित।

ख्याति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत।

ख़्याल–संज्ञा पु० [अ०] [वि० ख्याली] १. ध्यान। मनोवृत्ति।
मुहा०—ख़्याल रखना = ध्यान रखना। देखते भालते रहना। किसी के ख़्याल पड़ना = किसी को दिक करने पर उतारू होना।
२. स्मरण। स्मृति। याद।
मुहा०—ख़्याल से उतरना = भूल जाना। याद न रहना।
३. विचार। भाव। सम्मति। ४. आदर।
५. एक प्रकार का गाना।
[ ] संज्ञा पु० [हिं० खेल] खेल। क्रीड़ा।

ख़्याली–वि० [हिं० ख़्याल] कल्पित। फ़र्ज़ी।
मुहा०—ख़्याली पुलाव पकाना = असंभव बातें सोचना। मनोराज्य करना।
वि० [हिं० खेल] खेल या कौतुक करनेवाला।

ख्रिष्टान–संज्ञा पु० [हिं० ख्रीष्ट] ईसाई।

ख्रिष्टीय–वि० [अ० क्राइस्ट] १ ईसाई। २. ईसाई धर्म संबंधी।

ख्रीष्ट–संज्ञा पु० [अ० क्राइस्ट] [वि० ख्रिष्टीय] हजरत ईसा मसीह।

ख़्वाजा–संज्ञा पु० [फा०] १. मालिक। २. सरदार। ३. ऊँचे दर्जे का मुसलमान फ़कीर। ४. रनिवास का नपुंसक भृत्य। ख़्वाजासरा।

ख़्वाब–संज्ञा पु० [फा०] १. सोने की अवस्था। नींद। २. स्वप्न।

ख़्वार–वि० [फा०] [संज्ञा ख़्वारी] १ ख़राब। सत्यानाश। २. अनादृत। तिरस्कृत।

ख़्वाह–अव्य० [फा०] या। अथवा। या तो।
यौ०—ख़्वाह-म-ख़्वाह = १. चाहे कोई चाहे या न चाहे। जबरदस्ती। २. ज़रूर। अवश्य।

ख़्वाहिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० ख़्वाहिशमंद] इच्छा। अभिलाषा। आकांक्षा।

ग

ग–व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ है।

गंग–संज्ञा पु० [सं० गंगा] एक मात्रिक छंद।
संज्ञा स्त्री० [सं० गंगा] गंगा नदी।

गंग-बरार–संज्ञा पु० [हिं० गंगा + फा० बरार] वह ज़मीन जो किसी नदी की धारा के हटने से निकल आती है।

गंग शिकस्त–संज्ञा पु० [हिं० गंगा + फा० शिकस्त] वह ज़मीन जिसे कोई नदी काट ले गई हो।

गंगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] भारतवर्ष की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी।

गंगा-जमनी–वि० [हिं० गंगा + जमुना] १.मिला-जुला। संकर। दो-रंगा। २. सोने-चाँदी, पीतल-ताँबे आदि दो धातुओं का बना हुआ। ३. काला-उजला। स्याह-सफेद। अबलक।

गंगाजल–संज्ञा पु० [सं०] १. गंगा का पानी। २ एक बारीक सफ़ेद कपड़ा।

गंगाजली–संज्ञा स्त्री० [सं० गंगाजल] १. वह सुराही या शीशी जिसमें यात्री गंगा-जल भरकर ले जाते हैं। २. धातु की सुराही।

गंगाधर–संज्ञा पु० [सं०] शिव।

गंगापुत्र–संज्ञा पु० [सं०] १. भीष्म। २. एक प्रकार के ब्राह्मण जो नदियों के किनारों पर दान लेते हैं। ३. एक वर्णसंकर जाति।

गंगा यात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मरणा-सन्न मनुष्य का गंगा के तट पर मरने के लिये गमन। २. मृत्यु।

गंगाल–संज्ञा पु० [सं० गंगा + आलय] पानी रखने का बड़ा बरतन। कंडाल।

गंगालाभ–संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु।

गंगासागर–संज्ञा पु० [हिं० गंगा + सागर] १. एक तीर्थ जो उस स्थान पर है जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है। २. एक प्रकार की बड़ी टोंटीदार झारी।

गंगेरन–संज्ञा स्त्री० [सं० गांगेरुकी] एक

पौधा जो चतुर्विध बला के अंतर्गत माना जाता है। नागबला।

गंगोदक–संज्ञा पुं० [सं०] १. गंगाजल। २. चौबीस अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त।

गंज–संज्ञा पुं० [सं० कंज या खंज] १. सिर के बाल उड़ने का रोग। चाईं। चँदलाई। खल्वाट। २. सिर में छोटी छोटी फुनसियों का रोग। बालखोरा।

संज्ञा स्त्री० [फा० । सं०] १. खज़ाना। कोष। २. ढेर। अंबार। राशि। अटाला। ३. समूह। झुंड। ४. गल्ले की मंडी। गोला। हाट। बाज़ार। ५. वह चीज़ जिसके भीतर बहुत सी काम की चीज़ें हों।

गंजन–संज्ञा पुं० [सं०] १ अवज्ञा। तिरस्कार। २. पीड़ा। कष्ट। ३. नाश।

गंजना–क्रि० स० [सं० गंजन] १. अवज्ञा करना। निरादर करना। २. चूर चूर करना। नाश करना।

गंजा–संज्ञा पुं० [सं० खंज या कंज] गंज रोग। वि० जिसको गंज रोग हो। खल्वाट।

गंजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गंज] १. ढेर। समूह। गाँज। † २. शकरकंद। कंदा।

संज्ञा स्त्री० [अं० गुएरनेसी = एक टापू] बुनी हुई छोटी कुरती या बंडी जो बदन में चिपकी रहती है। बनियायन।

संज्ञा पुं० दे० "गँजेड़ी"।

गंजीफ़ा–संज्ञा पुं० [फा०] एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।

गँजेड़ी–वि० [हिं० गाँजा + एड़ी (प्रत्य०)] गाँजा पीनेवाला।

गँठजोड़ा, गँठबंधन–संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ + बंधन] विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू के वस्त्र को परस्पर बाँध देते हैं।

गंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. कपोल। गाल। २. कनपटी। ३. गंडा जो गले में पहना जाता है। ४. फोड़ा। ५. चिह्न। लकीर। दाग़। ६. गोल मंडलाकार चिह्न या लकीर। गराड़ी। गंडा। ७. गाँठ। ८. वीथी नामक नाटक का एक अंग।

गंडक–संज्ञा पुं० [सं०] १. गले में पहनने का जंतर या गंडा। २. गंडकी नदी का तटस्थ देश, तथा वहाँ के निवासी।

संज्ञा स्त्री० दे० "गंडकी"।

गंडकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा में गिरनेवाली उत्तर-भारत की एक नदी।

गंडमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें गले में छोटी छोटी बहुत सी फुड़ियाँ निकलती हैं। गलगंड। कंठमाला।

गंडस्थल–संज्ञा पुं० [सं०] कनपटी।

गंडा–संज्ञा पुं० [सं० गंडक] गाँठ।

संज्ञा पुं० [सं० गंडक] मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया धागा जिसे लोग रोग और भूत-प्रेत की बाधा दूर करने के लिये गले में बाँधते हैं।

मुहा०—गंडा तावीज़ = मंत्र-यंत्र। टोटका।

संज्ञा पुं० [सं० गंडक] पैसे, कौड़ी के गिनने में चार चार की संख्या का समूह।

संज्ञा पुं० [सं० गंड = चिह्न] १. आड़ी लकीरों की पंक्ति। २. तोते आदि चिड़ियों के गले की रंगीन धारी। कंठा। हँसली।

गँड़ासा–संज्ञा पुं० [हिं० गँडी + सं० असि] [स्त्री० अल्पा० गँड़ासी] चौपायों के चारे या घास के टुकड़े काटने का हथियार।

गँडेरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कांड या गंड] ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा।

गंदगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मैलापन। मलिनता। २. अपवित्रता। अशुद्धता। नापाकी। ३. मैला। ग़लीज़। मल।

गंदना–संज्ञा पुं० [सं० गंधन, या फा०] लहसुन या प्याज की तरह का एक मसाला।

गँदला–वि० [हिं० गंदा + ला (प्रत्य०)] मैला-कुचैला। गंदा। मलिन।

गंदा–वि० [फा०] [स्त्री० गंदी] १. मैला। मलिन। २. नापाक। अशुद्ध। ३. घिनौना। घृणित।

गंदुम–संज्ञा पुं० [फा०] गेहूँ।

गंदुमी–वि० [फा० गंदुम] गेहूँ के रंग का।

गंध–संज्ञा स्त्री० [सं० गंध] १. बास। महक। २. सुगंध। अच्छी महक। ३ सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाय। ४. लेश। अणुमात्र। संस्कार। संबंध।

गंधक–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० गंधकी] एक पीला जलनेवाला खनिज पदार्थ।

गंधकी–वि० [हिं० गंधक] गंधक के रंग का हलका पीला।

गंधपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद तुलसी। २. मरुवा। ३. नारंगी। ४. बेल।

गंधबिलाव—संज्ञा पुं० [हिं० गंध + बिलाव] नेवले की तरह का एक जंतु जिसकी गिलटी से सुगंधित चेप निकलता है।

गंधमार्जार–संज्ञा पुं० [सं०] गंधबिलाव ।
गंधमादन–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक पुराण-प्रसिद्ध पर्वत । २. भौंरा ।
गंधर्व–संज्ञा पुं० [सं०] [सं० स्त्री० गंधर्वी, हिं० स्त्री० गंधर्विन] १. देवताओं का एक भेद । ये गाने में निपुण कहे गए हैं । विद्याधर । २. मृग । ३. घोड़ा । ४. वह आत्मा जिसने एक शरीर छोड़कर दूसरा ग्रहण किया हो । प्रेत । ५ एक जाति जिसकी कन्याएँ गाती और वेश्यावृत्ति करती हैं । ६. विधवा स्त्री का दूसरा पति ।
गंधर्व नगर–संज्ञा पुं० [सं०] १. नगर, ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास जो आकाश या स्थल में दृष्टि-दोष से दिखाई पड़ता है । २. मिथ्या ज्ञान । भ्रम । ३. चंद्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है । ४. संध्या के समय पश्चिम दिशा में रंग-बिरंगे बादलों के बीच फैली हुई लाली ।
गंधर्वविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत ।
गंधर्वविवाह–संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से एक । वह संबंध जो वर और वधू अपने मन से कर लेते हैं ।
गंधर्ववेद–संज्ञा पुं० [सं०] संगीत शास्त्र जो चार उपवेदों में से एक है ।
गंधाना–क्रि० स० [हिं० गंध] गंध देना । बसाना । दुर्गंध करना ।
गंधाबिरोजा–संज्ञा पुं० [हिं० गंध + बिरोजा] चीर नामक वृक्ष का गोंद । चंद्रस ।
गंधार–संज्ञा पुं० दे० "गांधार" ।
गंधी–संज्ञा पुं० [सं० गंधिन्] [स्त्री० गंधिनी, गंधिन] १. सुगंधित तेल और इत्र आदि बेचनेवाला । अत्तार । २. गंधिया घास । गाँधी । ३. गँधिया कीड़ा ।
गंभारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बड़ा पेड़ । काश्मरी ।
गंभीर–वि० [सं०] १. जिसकी थाह जल्दी न मिले । नीचा । गहरा । २. घना । गहन । ३. जिसके अर्थ तक पहुँचना कठिन हो । गूढ़ । जटिल । ४. घोर । भारी । ५. शांत । सौम्य ।
गँवँ†–संज्ञा स्त्री० [सं० गम्य] १. घात । दाँव । २. मतलब । प्रयोजन । ३. अवसर । मौका । ४. ढंग । उपाय । युक्ति ।
मुहा० गँवँ से = ढंग से । युक्ति से । †धीरे से । चुपके से ।
गँवई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँव] [वि० गँवइयाँ] गाँव की बस्ती ।
गँवर मसला–संज्ञा पुं० [हिं० गँवार + अ० मसल] गँवारों की कहावत या उक्ति ।
गँवाना–क्रि० स० [सं० गमन] १. (समय) बिताना । काटना । २ पास की वस्तु को निकल जाने देना । खोना ।
गँवार–वि० [हिं० गाँव + आर (प्रत्य०)] [स्त्री० गँवारी, गँवारिन । वि० गँवारू, गँवारी] १. गाँव का रहनेवाला । ग्रामीण । देहाती । असभ्य । २. बेवकूफ । मूर्ख । ३. अनाड़ी ।
गँवारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गँवार] १ गँवार-पन । देहातीपन । २ मूर्खता । बेवकूफी । ३. गँवार स्त्री ।
वि० [हिं० गँवार + ई (प्रत्य०)] १. गँवार का सा । २. भद्दा । बदसूरत ।
गँवारू–वि० दे० "गँवारी" ।
गँस–संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथि] १. गाँठ । द्वेष । बैर । २ मन में चुभनेवाली बात । ताना । चुटकी ।
संज्ञा स्त्री० [सं० कषा] तीर की नोक ।
गँसना†–क्रि० स० [सं० ग्रंथन] १. अच्छी तरह कसना । जकड़ना । गाँठना । २. बुनावट में सूतों को परस्पर खूब मिलाना ।
क्रि० अ० १. बुनावट में सूतों का खूब पास पास होना । २. ठसाठस भरना ।
गँसीला–वि० [हिं० गाँसी] [स्त्री० गँसीली] तीर के समान नोकदार । चुभनेवाला ।
ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. गीत । २. गंधर्व । ३. गुरु मात्रा । ४. गणेश । ५. गानेवाला । ६. जानेवाला ।
गई करना–क्रि० अ० [हिं० गई + करना] तरह देना । जाने देना । छोड़ देना ।
गईबहोर–वि० [हिं० गया + बहुरि] खोई हुई वस्तु को पुनः देने अथवा बिगड़े हुए काम को बनानेवाला ।
गऊ–संज्ञा स्त्री० [सं० गो] गाय । गौ ।
गगन–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश । २. शून्य स्थान । ३. छप्पय छंद का एक भेद ।
गगनचर–संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी ।
गगनधूल–संज्ञा स्त्री० [सं० गगन + हिं० धूल] १. खुमी का एक भेद । एक प्रकार का कुकुरमुत्ता । २. केतकी के फूल की धूल ।
गगनवाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश

की वाटिका। (असंभव बात)
गगनभेद–संज्ञा स्त्री० [हिं० गगन+भेद] करांकुल या कूँज नाम की चिड़िया।
गगनभेदी, गगनस्पर्शी–वि० [सं०] आकाश तक पहुँचनेवाला। बहुत ऊँचा।
गगनानंग–संज्ञा पुं० [सं०] पचीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद।
गगरा–संज्ञा पुं० [सं० गर्गर] [स्त्री० अल्पा० गगरी] धातु का बड़ा घड़ा। कलसा।
गच–संज्ञा पुं० [अनु०] १. किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के धँसने का शब्द। २ चूने,सुरखी का मसाला, जिससे ज़मीन पक्की की जाती है। ३. चूने, सुरखी से पिटी हुई जमीन। पक्का फ़र्श। लेट।
गचकारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गच+फा० कारी] गच का काम। चूने, सुरखी का काम।
गचना‡–क्रि० स० [अनु० गच] १. बहुत अधिक या कसकर भरना। २. दे० "गाँसना।"
गछना‡–क्रि० अ० [सं० गच्छ=जाना] चलना। जाना।
क्रि० स० १ चलाना। निबाहना। २. अपने जिम्मे लेना। अपने ऊपर लेना।
गज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गजी] १. हाथी। २. एक राक्षस। ३ राम की सेना का एक बंदर। ४ आठ की संख्या।
गज–संज्ञा पुं० [फा०] १. लंबाई नापने की एक माप जो सोलह गिरह या तीन फुट की होती है। २. लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बंदूक भरी जाती है। ३. एक प्रकार का तीर।
गज़ इलाही–संज्ञा पुं० [फा० गज+इलाही] अकबरी गज़ जो ४१ अंगुल का होता है।
गजक–संज्ञा पुं० [फा० गजक] १ वह चीज जो शराब पीने के बाद मुँह का स्वाद बदलने के लिये खाई जाती है। चाट। जैसे—कबाब, पापड़। २. तिलपपड़ी। तिल शकरी। ३ नाश्ता। जलपान।
गजगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथी की सी मंद चाल। २ एक वर्णवृत्त।
गजगमन–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी की सी मंद चाल।
गजगामिनी–वि० स्त्री० [सं०] हाथी के समान मंद गति से चलनेवाली।
गजगाह–संज्ञा पुं० [सं० गज+ग्राह] हाथी की झूल।
गजगौन*–संज्ञा पुं० दे० "गजगमन"।
गजदंत–संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी का दाँत। २ दीवार में गड़ी खूँटी। ३ वह घोड़ा जिसके दाँत निकले हों। ४ दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत।
गजदान–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी का मद।
गजनाल–संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते थे।
गजपिप्पली–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जिसकी मंजरी औषध के काम आती है।
गजपीपल–संज्ञा स्त्री० दे० "गजपिप्पली"।
गजपुट–संज्ञा पुं० [सं०] गड्ढे में धातु फूँकने की एक रीति। (वैद्यक)
ग़ज़ब–संज्ञा पुं० [अ० ग़ज़ब] १ कोप। रोष। गुस्सा। २ आपत्ति। आफ़त। विपत्ति। ३ अंधेर। अन्याय। जुल्म। ४ विलक्षण बात।
मुहा०—ग़ज़ब का=विलक्षण। अपूर्व।
गजबाँक, गजबाग–संज्ञा पुं० [सं० गज+बाँक या बाग] हाथी का अंकुश।
गजमुक्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीनों के अनुसार एक मोती जिसका हाथी के मस्तक से निकलना प्रसिद्ध है।
गजमोती–संज्ञा पुं० दे० "गजमुक्ता"।
गजर–संज्ञा पुं० [सं० गर्ज, हिं० गरज] १. पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द। पारा। २ सवेरे के समय का घंटा।
मुहा०—गजर दम=तड़के। सवेरे।
३ चार, आठ और बारह बजने पर उतनी ही बार जल्दी जल्दी फिर घंटा बजना।
गजरा–संज्ञा पुं० [हिं० गज] १ फूलों की घनी गुथी हुई माला। २. एक गहना जो कलाई में पहना जाता है। ३ एक रेशमी कपड़ा। मशरू।
गजराज–संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा हाथी।
ग़ज़ल–संज्ञा स्त्री० [फा०] फारसी और उर्दू में एक प्रकार की कविता।
गजवदन–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
गजवान–संज्ञा पुं० [हिं० गज+वान (प्रत्य०)] महावत। हाथीवान।
गजशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर जिसमें हाथी बाँधे जाते हैं। फ़ीलखाना। हथिसार।
गजाधर–संज्ञा पुं० दे० "गदाधर"।

गजानन—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

गजी—संज्ञा स्त्री० [फा० गज] एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा। गाढ़ा। सल्लम।
संज्ञा स्त्री० [सं०] हथिनी।

गजेंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐरावत। २. बड़ा हाथी। गजराज।

गझा†—संज्ञा पुं० [सं० गञ्ज=शब्द] दूध, पानी आदि के छोटे छोटे बुलबुलों का समूह। गाज।
†संज्ञा पुं० [सं० गज] १. ढेर। गाँज। अंबार। २. खजाना। कोश। ३. धन।

गझिन†—वि० [हिं० गझना] १. सघन। घना। २. गाढ़ा। मोटा। ठस बुनावट का।

गटकना—क्रि० स० [गट से अनु०] १. खाना। निगलना। २. हड़पना। दबा लेना।

गटगट—संज्ञा पुं० [अनु०] निगलने या घूँट घूँट पीने में गले से उत्पन्न शब्द।

गटपट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बहुत अधिक मेल। घनिष्ठता। २. सहवास। प्रसंग।

गट्ट—संज्ञा पुं० [अनु०] किसी वस्तु के निगलने में गले से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

गट्टा—संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथ, प्रा० गंठ, हिं० गाँठ] १. हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़। कलाई। २. पैर की नली और तलुए के बीच की गाँठ। ३ गाँठ। ४. बीज। ५. एक प्रकार की मिठाई।

गट्ठर—संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ] बड़ी गठरी।

गट्ठा—संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया] १. घास, लकड़ी आदि का बोझ। भार। गट्ठर। २. बड़ी गठरी। बुकचा। ३. प्याज़ या लहसुन की गाँठ।

गठन—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रथन] बनावट।

गठना—क्रि० अ० [सं० ग्रंथन] १. दो वस्तुओं का मिलकर एक होना। जुड़ना। सटना। २. मोटी सिलाई होना। ३. बुनावट का दृढ़ होना।
यौ०—गठा बदन=हृष्टपुष्ट और कड़ा शरीर।
४. किसी षट्चक्र या गुप्त विचार में सहमत या सम्मिलित होना। ५. दाँव पर चढ़ना। अनुकूल होना। सधना। ६. अच्छी तरह निर्मित होना। भली भाँति रचा जाना। ७. संभोग होना। विषय होना। ८. अधिक मेल-मिलाप होना।

गठरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गट्ठर] १. कपड़े में ... र बाँधा हुआ सामान। बड़ी पोटली। बुकची। २. जमा की हुई दौलत।
मुहा०—गठरी मारना=अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना। ठगना।

गठवाँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गट्ठा+अंश] गट्ठे या बिस्वे का बीसवाँ अंश। बिस्वांसी।

गठवाना—क्रि० स० [हिं० गाठना] १. गठाना। सिलवाना। २. जुड़वाना। जोड़ मिलवाना।

गठाव—संज्ञा पुं० दे० "गठन"।

गठित—वि० [सं० ग्रंथित] गठा हुआ।

गठिबंध:::—संज्ञा पुं० दे० "गठबंधन"।

गठिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ] १.बोझ लादने का बोरा या दोहरा थैला। खुरजी। २. बड़ी गठरी। ३. एक रोग जिसमें जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।

गठियाना†—क्रि० स० [हिं० गाँठ] १. गाँठ देना। गाँठ लगाना। २. गाँठ में बाँधना।

गठिवन—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथिपर्ण] मध्यम आकार का एक पेड़।

गठीला—वि० [हिं० गाँठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गठीली] जिसमें बहुत सी गाँठें हों।
वि० [हिं० गठना] १. गठा हुआ। चुस्त। सुडौल। २. मज़बूत। दृढ़।

गठौत,गठौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० गठना] १. मेल मिलाप। मित्रता। २. मिलकर पक्की की हुई बात। अभिसंधि।

गड़ंग†—संज्ञा पुं० [सं० गर्व] [वि० गड़गिया] १. घमंड। शेखी। डींग। २. आत्म-श्लाघा। बड़ाई।

गड—संज्ञा पुं० [सं०] १. ओट। आड़। २. घेरा। चहार-दीवारी। ३. गड्ढा।

गड़गड़—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द। २. पेट में भरी वायु के हिलने का शब्द।

गड़गड़ा—संज्ञा पुं० [अनु०] एक प्रकार का हुक्का।

गड़गड़ाना—क्रि० अ० [हिं० गड़गड़] गरजना। कड़कना।
क्रि० स० गड़गड़ शब्द उत्पन्न करना।

गड़गड़ाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० गड़गड़ाना] गड़गड़ाने का शब्द। गड़गड़।

गड़दार—संज्ञा पुं० [सं० गड=गँड़ासा+दार] वह नौकर जो मस्त हाथी के साथ साथ भाला लिए हुए चलता है।

गड़ना—क्रि० अ० [सं० गर्त] १. धँसना। घुसना। चुभना। २. शरीर में चुभने की

सी पीड़ा पहुँचाना। सुरसुरी लगना। ३. दर्द करना। दुखना। पीड़ित होना (आँख और पेट के लिये)। ४. मिट्टी आदि के नीचे दबना। दफ़न होना।
मुहा०—गड़े मुर्दे उखाड़ना = दबी दबाई या पुरानी बात उठाना।
५. समाना। पैठना।
मुहा०—गड़ जाना = झेंपना। लज्जित होना।
६. खड़ा होना। भूमि पर ठहरना। ७. जमना। स्थिर होना। डटना।

गड़प—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पानी, कीचड़ आदि में किसी वस्तु के सहसा समाने का शब्द।

गड़पना—क्रि० स० [अनु० गड़प] १. निगलना। खा लेना। २. हज़म करना। अनुचित अधिकार करना।

गड़प्पा—संज्ञा पुं० [हिं० गड़] १. गड्ढा। २. धोखा खाने का स्थान।

गड़बड़—वि० [हिं० गड़ = गड्ढा + बड़ = बड़ा ऊँचा] [वि० गड़बड़िया] १. ऊँचा नीचा। असमतल। २. अस्त व्यस्त। अंडबंड।
संज्ञा पुं० १. क्रमभंग। अव्यवस्था। कुप्रबंध।
यौ०—गड़बड़झाला = गोलमाल। अव्यवस्था।
गड़बड़ाध्याय = दे० "गड़बड़झाला"।
२. उपद्रव। दंगा। ३. (रोग आदि का) उपद्रव। आपत्ति।

गड़बड़ाना—क्रि० अ० [हिं० गड़बड़] १. गड़बड़ी में पड़ना। चक्कर या भूल में पड़ना। २. क्रमभ्रष्ट होना। अव्यवस्थित होना। ३. अस्तव्यस्त होना। बिगड़ना।
क्रि० स० १. गड़बड़ी में डालना। चक्कर में डालना। २. भ्रम में डालना। भुलवाना। ३. बिगाड़ना। ख़राब करना।

गड़बड़िया—वि० [हिं० गड़बड़] गड़बड़ करनेवाला। उपद्रव करनेवाला।

गड़बड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "गड़बड़"।

गड़रिया—संज्ञा पुं० [सं० गड्डरिक] [स्त्री० गड़ेरिन] एक जाति जो भेड़ें पालती और उनके ऊन से कंबल बुनती है।

गड़हा—संज्ञा पुं० दे० "गड्ढा"।

गड़ा—संज्ञा पुं० [सं० गड्ड] ढेर। राशि।

गड़ाना—क्रि० स० [हिं० गड़ना] चुभाना। धँसाना। भोंकना।
क्रि० स० [हिं० 'गाड़ना' का प्रे० रूप] गाड़ने का काम कराना।

गड़ायत—वि० [हिं० गड़ना] गड़नेवाला। चुभनेवाला।

गड़ारी—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडल] १. मंडलाकार रेखा। गोल लकीर। वृत्त। २. घेरा।
संज्ञा स्त्री० [सं० गंड = चिह्न] लगातार पास पास आड़ी धारियाँ। गंडा।
संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] गोल घरनी जिस पर रस्सी चढ़ाकर कुएँ से पानी खींचते हैं। घिरनी।

गड़ारीदार—वि० [हिं० गड़ारी + फ़ा० दार] १. जिस पर गंडे या धारियाँ पड़ी हों। २. घेरदार। जैसे—गड़ारीदार पायजामा।

गड़ुई—संज्ञा स्त्री० [हिं० गडुवा] पानी पीने का टोंटीदार छोटा बरतन। झारी।

गड़ुवा—संज्ञा पुं० [हिं० गेरना = गिराना + वा (प्रत्य०)—गेरवा] टोंटीदार लोटा। झमझा।

गड़ेरिया—संज्ञा पुं० दे० "गड़रिया"।

गड़ोना—क्रि० स० दे० "गड़ाना"।

गड़ौना—संज्ञा पुं० [हिं० गाड़ना] एक प्रकार का पान।

गड्ड—संज्ञा पुं० [सं० गड्ड] [स्त्री० गड्डी] एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का समूह जो एक के ऊपर एक जमाकर रखी हों। गज।
संज्ञा पुं० [सं० गर्त] गड्ढा।

गड्डबड्ड, गड्डमड्ड—संज्ञा पुं० [हिं० गड्ड] बेमेल की मिलावट। घालमेल। घपला।
वि० बिना किसी क्रम के मिला-जुला। अंडबंड।

गड्डरिक—संज्ञा पुं० [सं०] गड़ेरिया।
वि० १. भेड़ का। भेड़ संबंधी। २. भेड़ के ऐसा।

गड्डाम—वि० [सं० गाड + श्याम] नीच। लुच्चा। बदमाश। पाजी।

गड्डी—संज्ञा स्त्री० दे० "गड्ड"।

गड्ढा—संज्ञा पुं० [सं० गर्त, प्रा० गड्ड] १. ज़मीन में गहरा स्थान। खाता। गढ़हा। २. थोड़े घेरे की गहराई।
मुहा०—किसी के लिये गड्ढा खोदना = किसी के अनिष्ट का प्रयत्न करना। बुराई करना।

गढ़ंत—वि० [हिं० गढ़ना] कल्पित। बनावटी। (बात)

गढ़—संज्ञा पुं० [सं० गड = खाँई] [स्त्री० अल्पा० गढ़ी] १. खाँई। २. क़िला।
मुहा०—गढ़ जीतना या ...

जीतना। २. बहुत कठिन काम करना।

गढ़न–संज्ञा स्त्री० [हिं० गढ़ना] बनावट। गठन। आकृति।

गढ़ना–क्रि०स० [सं० घटन] १. काट छाँट-कर काम की वस्तु बनाना। सुघटित करना। रचना। २. सुडौल करना। दुरुस्त करना। ३. बात बनाना। कपोल-कल्पना करना। ४. मारना। पीटना। ठोंकना।

गढ़पति–संज्ञा पुं० [हिं० गढ़+पति] १. क़िलेदार। २. राजा। सरदार।

गढ़वइ, गढ़वै–संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।

गढ़वाल–संज्ञा पुं० [हिं० गढ़+वाला] वह जिसके अधिकार में गढ़ हो। गढ़वाला। संज्ञा पुं० उत्तराखंड का एक प्रदेश।

गढ़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गढ़ना] १. गढ़ने की क्रिया या भाव। २. गढ़ने की मज़दूरी।

गढ़ाना–क्रि० स० [हिं० गढ़ना का प्रे० रूप] गढ़ने का काम कराना। गढ़वाना। क्रि० अ० [हिं० गाढ़=कठिन] कष्टकर प्रतीत होना। मुश्किल गुज़रना। खलना।

गढ़िया–संज्ञा पुं० [हिं० गढ़ना] गढ़नेवाला।

गढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गढ़] छोटा किला।

गढ़ैया–वि० [हिं० गढ़ना] गढ़नेवाला।

गढ़ोई†–संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।

गण–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। जत्था। २. श्रेणी। जाति। कोटि। ३. ऐसे मनुष्यों का समुदाय जिनमें किसी विषय में समानता हो। ४. सेना का वह भाग जिसमें तीन गुल्म हों। ५. छंदःशास्त्र में तीन वर्णों का समूह। लघु, गुरु के क्रम के अनुसार गण आठ माने गए हैं। ६. व्याकरण में धातुओं और शब्दों के वे समूह जिनमें समान लोप, आगम और वर्ण-विकारादि हों। ७. शिव के पारिषद्। प्रमथ। ८. दूत। सेवक। पारिषद्। ९. परिचारक वर्ग। अनुचरों का दल।

गणक–संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिषी।

गणदेवता–संज्ञा० पुं० [सं०] समूह-चारी देवता। जैसे—विश्वेदेवा, रुद्र।

गणन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि०गणनीय, गणित, गण्य] १. गिनना। २. गिनती।

गणना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गिनती। शुमार। २. हिसाब। ३. संख्या।

गणनायक–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

गणपति–संज्ञा पुं०[सं०] १.गणेश। २. शिव।

गणराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य जो चुने हुए मुखियों या सरदारों के द्वारा चलाया जाता हो।

गणाधिप–संज्ञा पुं० [सं०] १. गणेश। २. साधुओं का अधिपति या महंत।

गणिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।

गणित–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें मात्रा, संख्या और परिमाण का विचार हो। २. हिसाब।

गणितज्ञ–वि० [सं०] १. गणित शास्त्र जाननेवाला। हिसाबी। २. ज्योतिषी।

गणेश–संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं के एक प्रधान देवता जिनका सारा शरीर मनुष्य का सा है; पर सिर हाथी का सा है।

गण्य–वि० [सं०] १. गिनने के योग्य। २. जिसे लोग कुछ समझें। प्रतिष्ठित।

यौ०—गण्यमान्य=प्रतिष्ठित।

गत–वि० [सं०] १. गया हुआ। बीता हुआ। २. मरा हुआ। ३. रहित। हीन। संज्ञा स्त्री० [सं० गति] १. अवस्था। दशा।

मुहा०—गत बनाना=दुर्दशा करना।

२. रूप। रंग। वेष। ३. काम में लाना। सुगति। उपयोग। ४. दुर्गति। दुर्दशा। नाश। ५. बाजों के कुछ बोलों का क्रम-बद्ध मिलान। ६. नृत्य में शरीर का विशेष संचालन और मुद्रा। नाचने का ठाठ।

गतका–संज्ञा पुं० [सं० गदा] १. लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है। २. वह खेल जो फरी और गतके से खेला जाता है।

गतांक–वि० [सं०] गया बीता। निकम्मा। संज्ञा पुं० समाचार-पत्र का पिछला अंक।

गति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्रमशः जाने की क्रिया। चाल। गमन। २. हिलने डोलने की क्रिया। हरकत। स्पंदन। ३. अवस्था। दशा। हालत। ४. रूप-रंग। वेष। ५. पहुँच। प्रवेश। पैठ। ६. प्रयत्न की सीमा। अंतिम उपाय। दौड़। तदबीर। ७. सहारा। अवलंब। शरण। ८. चेष्टा। प्रयत्न। ९. लीला। माया। १०. ढंग। रीति। ११. मृत्यु के उपरांत जीवात्मा की दशा। १२. मोक्ष। मुक्ति। १३. लड़नेवालों के पैर की चाल। पैतरा।

गद्दा–संज्ञा पुं० [देश०] कागज़ के कई परतों

को काटकर बनाई हुई दफ्ती। कुट।

गत्ताल खाता—संज्ञा पुं० [सं० गर्त्त, प्रा० गत+हिं० खाता] बट्टाखाता। गई-बीती रकम का लेखा।

गथ‡—संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथ] १. पूँजी। जमा। २. माल। ३. झुंड।

गथना‡—क्रि० स० [सं० ग्रथन] १. एक में एक जोड़ना। आपस में गूँथना। २. बात गढ़ना। बात बनाना।

गद—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष। २. रोग। ३. श्रीकृष्णचंद्र का छोटा भाई।

संज्ञा पुं० [अनु०] वह शब्द जो किसी गुलगुली वस्तु पर या गुलगुली वस्तु का आघात लगने से होता है।

गदका‡—संज्ञा पुं० दे० "गतका"।

गदकारा—वि० पुं० [अनु० गद+कार (प्रत्य०)] [स्त्री० गदकारी] मुलायम और दब जाने वाला। गुलगुला। गुदगुदा।

गदगद‡—वि० दे० "गद्गद"।

गदना‡—क्रि० स० [सं० गदन] कहना।

गदर—संज्ञा पुं० [अ०] १. हलचल। खलबली। उपद्रव। २. बलवा। बगावत।

गदराना—क्रि० अ० [अनु० गद] १. (फल आदि का) पकने पर होना। २. जवानी में अंगों का भरना। ३. आँख में कीचड़ आदि आना।

क्रि० अ० [हिं० गदा] गँदला होना।

वि० गदराया हुआ।

गदहपचीसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गदहा+पचीसी] १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था जिसमें मनुष्य को अनुभव कम रहता है।

गदहपन—संज्ञा पुं० [हिं० गदहा+पन (प्रत्य०)] मूर्खता। बेवकूफी।

गदहपूरना—संज्ञा स्त्री० [सं० गदह=रोग+पुनर्नवा] पुनर्नवा नाम का पौधा।

गदहा—संज्ञा पुं० [सं०] रोग हरनेवाला, वैद्य। चिकित्सक।

संज्ञा पुं० [सं० गर्दभ] [स्त्री० गदही] १. घोड़े के आकार का, पर उससे कुछ छोटा, एक प्रसिद्ध चौपाया। गधा। गर्दभ।

मुहा०—गदहे पर चढ़ाना=बहुत बेइज्जत या बदनाम करना। गदहे का हल चलना=बिलकुल उजड़ जाना। बरबाद हो जाना।

२. मूर्ख। बेवकूफ। नासमझ।

गदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र जिसमें एक छोटे डंडे के छोर पर भारी लट्टू रहता था।

संज्ञा पुं० [फा०] फकीर। भिखमंगा। दरिद्र।

गदाई—वि० [फा० गदा=फ़क़ीर+ई (प्रत्य०)] १. तुच्छ। नीच। क्षुद्र। २. वाहियात। रद्दी।

गदाधर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। नारायण।

गदेला—संज्ञा पुं० [हिं० गद्दा] मोटा ओढ़ना या बिछौना। गद्दा।

गदोरी‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी] हथेली।

गद्गद—वि० [सं०] १. अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण। २. अधिक हर्ष प्रेम आदि के कारण रुका हुआ, अस्पष्ट या असंबद्ध। ३. प्रसन्न।

गद्द—संज्ञा पुं० [अनु०] १. मुलायम जगह पर किसी चीज़ के गिरने का शब्द। २. किसी गरिष्ठ या जल्दी न पचनेवाली चीज़ के कारण पेट का भारीपन।

गद्दर—वि० [देश०] १. जो अच्छी तरह पका न हो। अधपका। २. मोटा गद्दा।

गद्दा—संज्ञा पुं० [हिं० गद से अनु०] १. रूई, पयाल आदि भरा हुआ बहुत मोटा और गुदगुदा बिछौना। भारी तोशक। गदेला। २. घास, पयाल, रूई आदि मुलायम चीज़ों का बोझ। ३. किसी मुलायम चीज़ की मार।

गद्दी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दा का स्त्री० और अल्पा०] १. छोटा गद्दा। २. वह कपड़ा जो घोड़े ऊँट आदि की पीठ पर जीन आदि रखने के लिये डाला जाता है। ३. व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान। ४. किसी बड़े अधिकारी का पद।

मुहा०—गद्दी पर बैठना=१. सिंहासनारूढ़ होना। २. उत्तराधिकारी होना।

५. किसी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य की शिष्य परंपरा। ६. हाथ या पैर की हथेली।

गद्दीनशीन—वि० [हिं० गद्दी+फा० नशीन] १. सिंहासनारूढ़। जिसे राज्याधिकार मिला हो। २. उत्तराधिकारी।

गद्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या और स्थान आदि का कोई नियम न हो। वचनिका। पद्य का उलटा।

गधा—संज्ञा पुं० दे० "गदहा"।

गन‡—संज्ञा पुं० दे० "गण"।

गनगन–संज्ञा स्त्री० [अनु०] काँपने या रोमांच होने की मुद्रा ।

गनगनाना–क्रि० अ० [अनु० गनगन] शीत आदि से रोमांच या कंप होना ।

गनगौर–संज्ञा स्त्री० [सं० गण + गौरी] चैत्र शुक्ल तृतीया । इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं ।

गनना†–क्रि० स० दे० "गिनना" ।

गनाना:–क्रि० स० दे० "गिनाना" ।
क्रि० अ० गिना जाना ।

गनियारी–संज्ञा स्त्री० [सं० गणिकारी] शमी की तरह का एक पौधा । छोटी अरनी ।

ग़नीम–संज्ञा पु० [अ०] १. लुटेरा । डाकू । २. वैरी । शत्रु ।

ग़नीमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लूट का माल २. वह माल जो बिना परिश्रम मिले । मुफ़्त का माल । ३. संतोष की बात ।

गन्ना–संज्ञा पु० [सं० काड] ईख । ऊख ।

गप–संज्ञा स्त्री० [सं० कल्प] [वि० गप्पी] १. इधर उधर की बात, जिसकी सत्यता का निश्चय न हो । २. वह बात जो केवल जी बहलाने के लिये की जाय । बकवाद ।
यौ०—गपशप = इधर-उधर की बातें ।
३. झूठी ख़बर । मिथ्या संवाद । अफ़वाह । ४ वह झूठी बात जो बड़ाई प्रकट करने के लिये की जाय । डींग ।
संज्ञा पु० [अनु०] १. वह शब्द जो झट से निगलने, किसी नरम अथवा गीली वस्तु में धुसने आदि से होता है ।
यौ०—गपागप = जल्दी जल्दी । झटपट ।
२. निगलने या खाने की क्रिया । भक्षण ।

गपकना–क्रि० स० [अनु० गप + हिं० करना] चटपट निगलना । झट से खा लेना ।

गपड़ चौथ–संज्ञा स्त्री० [हिं० गपोड़ = बात + चौथ] व्यर्थ की गोष्ठी । व्यर्थ की बात ।
वि० लीप पोत । ऊट बड ।

गपना:–क्रि० स० [हिं० गप] गप मारना । बकवाद करना । बकना ।

गपोड़ा–संज्ञा पु० [हिं० गप] मिथ्या बात । कपोल कल्पना । गप ।

गप्प–संज्ञा स्त्री० दे० "गप" ।

गप्पा–संज्ञा पु० [अनु० गप] धोखा । छल ।

गप्पी–वि० [हिं० गप] गप मारनेवाला । छोटी बात को बढ़ाकर कहनेवाला ।

गप्फा–संज्ञा पु० [अनु० गप] १. बहुत बड़ा ग्रास । बड़ा कौर । २. लाभ । फ़ायदा ।

गफ–वि० [सं० ग्रप्स = गुच्छ] घना । ठस । गाढ़ा । घनी बुनावट का ।

ग़फ़लत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. असावधानी । बेपरवाई । २ बेख़बरी । चेत या सुध का अभाव । ३ भूल । चूक ।

ग़बन–संज्ञा पु० [अ०] किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को खा लेना । ख़यानत ।

गबरू–वि० [फ़ा० ख़ूबरू] १. उभड़ती जवानी का । जिसे रेख उठती हो । पट्ठा । २. भोला-भाला । सीधा ।
†संज्ञा पु० दूल्हा । पति ।

गबरून–संज्ञा पु० [फ़ा० गबरून] चारख़ाने की तरह का एक मोटा कपड़ा ।

गब्बर–वि० [सं० गर्व, पा० गब्ब] १. घमंडी । गर्वीला । अहंकारी । २. जल्दी काम न करने या बात का जल्दी उत्तर न देनेवाला । मट्ठर । मंद । ३. बहुमूल्य । क़ीमती । ४. मालदार । धनी ।

गभस्ति–संज्ञा पुं० [सं०] १. किरण । २. सूर्य्य । ३. बाँह । हाथ ।
संज्ञा स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा ।

गभस्तिमान्–संज्ञा पु० [सं० गभस्तिमत्] १. सूर्य्य । २. एक द्वीप । ३. एक पाताल ।

गभीर –वि० दे० "गंभीर" ।

गभुआर–वि० [सं० गर्भ + आर (प्रत्य०)] १. गर्भ का (बाल) । जन्म के समय का रखा हुआ (बाल) । २. जिसके सिर के जन्म के बाल न कटे हों । जिसका मुंडन न हुआ हो । ३ नादान । अनजान ।

गम–संज्ञा स्त्री० [सं० गम्य] (किसी वस्तु या विषय में) प्रवेश । पहुँच । गुज़र ।

ग़म–संज्ञा पु० [अ०] १. दुःख । शोक ।
मुहा०—ग़म खाना = क्षमा करना । ध्यान न देना । जाने देना ।
२ चिंता । फ़िक्र । ध्यान ।

गमक–संज्ञा पु० [सं०] १. जानेवाला । २. बोधक । सूचक । बतलानेवाला ।
संज्ञा स्त्री० १. संगीत में एक श्रुति या स्वर पर से दूसरी श्रुति या स्वर पर जाने का एक ढंग । २. तबले की गंभीर आवाज़ । ३. सुगंध ।

गमकना–क्रि० अ० [हिं० गमक] महकना ।

ग़मख़ोर–वि० [फ़ा० ग़मख़्वार] [संज्ञा ग़मख़ोरी] सहिष्णु । सहनशील ।

गमन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गम्य] १. जाना। चलना। यात्रा करना। २. संभोग। जैसे—वेश्यागमन। ३. राह। रास्ता।

गमना‡—क्रि० अ० [सं० गमन] जाना। चलना।

‡क्रि० अ० [अ० ग़म] १. सोच करना। रंज करना। २. ध्यान देना।

गमला—संज्ञा पुं० [?] १. फूलों के पेड़ और पौधे लगाने का बरतन। २. कमोड। पाखाना फिरने का बरतन।

गमाना‡—क्रि० स० दे० "गँवाना"।

ग़मी—संज्ञा स्त्री० [अ० ग़म] १. शोक की अवस्था या काल। २. वह शोक जो किसी मनुष्य के मरने पर उसके संबंधी करते हैं। सोग। ३. मृत्यु। मरनी।

गम्य—वि० [सं०] १. जाने योग्य। गमन योग्य। २. प्राप्य। लभ्य। ३. संभोग करने योग्य। भोग्य। ४. साध्य।

गयंद—संज्ञा पुं० [सं० गजेंद्र] बड़ा हाथी।

गय—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २ अंतरिक्ष। आकाश। ३. धन। ४. प्राण। ५ पुत्र। अपत्य। ६. एक असुर। ७. गया नामक तीर्थ।

‡ संज्ञा पुं० [सं० गज] हाथी।

गयनाल—संज्ञा स्त्री० दे० "गजनाल"।

गयशिर—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतरिक्ष। आकाश। २. गया के पास का एक पर्वत।

गया—संज्ञा पुं० [सं०] १. बिहार या मगध का एक तीर्थ जहाँ हिंदू पिंडदान करते हैं। २. गया में होनेवाला पिंडदान। क्रि० अ० [सं० गम] 'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप। प्रस्थानित हुआ।

मुहा०—गया गुज़रा या गया बीता=बुरी दशा को पहुँचा हुआ। नष्ट। निकृष्ट।

गयावाल—संज्ञा पुं० [हिं० गया+वाल] गया तीर्थ का पंडा।

गर—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोग। बीमारी। २. विष। ज़हर। ३. वत्सनाभ। बछनाग।

‡ संज्ञा पुं० [हिं० गल] गला। गरदन।

प्रत्य० [फ़ा०] (किसी काम को) बनाने या करनेवाला। जैसे—बाज़ीगर, कलईगर।

ग़रक़—वि० [अ० ग़र्क़] १. डूबा हुआ। निमग्न। २. विलुप्त। नष्ट। बरबाद।

ग़रक़ाब—वि० [फ़ा०] पानी में डूबा हुआ।

ग़रक़ी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. डूबने की क्रिया या भाव। डूबना। २. बूड़ा। अतिवृष्टि। बाढ़। ३. वह भूमि जो पानी के नीचे हो। ४. नीची भूमि। खलार।

गरगज—संज्ञा पुं० [हिं० गढ़+गज] १. क़िले की दीवारों पर बना हुआ बुर्ज जिस पर तोपें रहती हैं। २. वह ढूह या टीला जहाँ से शत्रु की सेना का पता चलाया जाता है। ३. तख़्तों से बनी हुई नाव की छत। ४. फाँसी की टिकठी।

†वि० बहुत बड़ा। विशाल।

गरगरा—संज्ञा पुं० [अनु०] गराड़ी। घिरनी।

गरगाव—वि० दे० "गरक़ाब"।

गरज—संज्ञा स्त्री० [सं० गर्जन] १. बहुत गंभीर शब्द। २. बादल या सिंह का शब्द।

ग़रज़—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आशय। प्रयोजन। मतलब। २. आवश्यकता। ज़रूरत। ३. चाह। इच्छा।

अव्य० १. निदान। आख़िरकार। अंततोगत्वा। २. मतलब यह कि। सारांश यह कि।

गरजना—क्रि० अ० [सं० गर्जन] १. बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना। जैसे—बादल का गरजना। २. मोती का चटकना। तड़कना। फूटना।

वि० गरजनेवाला।

ग़रज़मंद—वि० [फ़ा०] [संज्ञा ग़रज़मंदी] १. जिसे आवश्यकता हो। जरूरतवाला। २. इच्छुक। चाहनेवाला।

ग़रज़ी—वि० दे० "ग़रज़मंद"।

ग़रज़ू—वि० दे० "ग़रज़मंद"।

गरट्ट—संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथ] समूह। झुंड।

गरद—संज्ञा स्त्री० दे० "गर्द"।

गरदन—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग। ग्रीवा।

मुहा०—गरदन उठाना=विरोध करना। विद्रोह करना। गरदन काटना=१. धड़ से सिर अलग करना। मार डालना। २. बुराई करना। हानि पहुँचाना। गरदन पर=ऊपर। जिम्मे। (पाप के लिये) गरदन मारना=सिर काटना। मार डालना। गरदन में हाथ देना या डालना=गरदन पकड़कर निकाल बाहर करना। गरदनियाँ देना।

२. बरतन आदि का ऊपरी भाग।

गरदना†—संज्ञा पुं० [हिं० गरदन] १. मोटी गरदन। २. वह धौल जो गरदन पर लगे।

गरदनियाँ–संज्ञा स्त्री० [हिं० गरदन + इयाँ (प्रत्य०)] (किसी को किसी स्थान से) गरदन पकड़कर निकालने की क्रिया।
गरदा–संज्ञा पुं० [फा० गर्द] धूल। गुबार। मिट्टी। खाक। गर्द।
गरदान–वि० [फा०] घूम फिरकर एक ही स्थान पर आनेवाला।
संज्ञा पुं० १. शब्दों का रूप-साधन। २. वह कबूतर जो घूम फिरकर सदा अपने स्थान पर आता हो।
गरदानना–क्रि० स० [फा० गरदान] १. शब्दों का रूप साधना। २. बार बार कहना। उद्धरणी करना। ३. गिनना। समझना। मानना।
गरना*†–क्रि० अ० १. दे० "गलना"। २. दे० "गड़ना"।
क्रि० अ० [स० गरण] निचुड़ना।
गरनाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० गर + नली] बहुत चौड़े मुँह की तोप। घननाल। घननाद।
गरब †–संज्ञा पुं० [सं० गर्व] १. दे० "गर्व"। २. हाथी का मद।
गरब-गहेला–वि० [हिं० गर्व + गहना] जिसने गर्व धारण किया हो। गर्वीला।
गरबना, गरबाना †–क्रि० अ० [सं० गर्व] घमंड में आना। अभिमान करना।
गरबीला–वि० [सं० गर्व] जिसे गर्व हो। घमंडी। अभिमानी।
गरभ–संज्ञा पुं० दे० "गर्भ"।
गरभाना–क्रि० अ० [हिं० गर्भ] १. गर्भिणी होना। गर्भ से होना। २. धान, गेहूँ आदि के पौधों में बाल लगना।
गरम–वि० [फा० गर्म] १. जलता हुआ। तप्त। तत्ता। उष्ण।
यौ०—गरमागरम = तत्ता। उष्ण।
२. तीक्ष्ण। उग्र। खरा।
मुहा०—मिज़ाज गरम होना = १. क्रोध आना। २. पागल होना। गरम होना = आवेश में आना। क्रुद्ध होना।
३. तेज़। प्रबल। प्रचंड। ज़ोर शोर का।
४. जिसके व्यवहार या सेवन से गरमी बढ़े।
यौ०—गरम कपड़ा = शरीर गरम रखनेवाला कपड़ा। ऊनी कपड़ा। गरम मसाला = धनियाँ, लौंग, बड़ी इलायची, जीरा, मिर्च इत्यादि मसाले।
५. उत्साह-पूर्ण। जोश से भरा हुआ।
गरमागरमी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गरम + गरम] १. मुस्तैदी। जोश। २. कहा-सुनी।
गरमाना–क्रि० अ० [हिं० गरम] १. गरम पड़ना। उष्ण होना। २. उमंग पर आना। मस्ताना। ३. आवेश में आना। क्रोध करना। झल्लाना। ४. कुछ देर लगातार दौड़ने या परिश्रम करने पर घोड़े आदि पशुओं का तेज़ी पर आना।
† क्रि० स० गरम करना। तपाना। औटाना।
गरमाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० गरम] गरमी।
गरमी–संज्ञा स्त्री०[फा०] १. उष्णता। ताप। जलन। २. तेज़ी। उग्रता। प्रचंडता।
मुहा०—गरमी निकालना = गर्व दूर करना।
३. आवेश। क्रोध। गुस्सा। ४. उमंग। जोश। ५. ग्रीष्म ऋतु। कड़ी धूप के दिन। ६. एक रोग जो प्रायः दुष्ट मैथुन से उत्पन्न होता है। आतशक। फिरंग रोग।
गररा*–संज्ञा पुं० दे० "गर्रा"।
गरराना†–क्रि० अ० [अनु०] भीषण ध्वनि करना। गभीर गरजना।
गरल–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष। ज़हर। २. साँप का ज़हर।
गरहन*†–संज्ञा पुं० दे० "ग्रहण"।
गराँव–संज्ञा पुं० [हिं० गर = गला] दोहरी रस्सी जो चौपायों के गले में बाँधी जाती है।
गरा†–संज्ञा पुं० दे० "गला"।
गराज*–संज्ञा स्त्री० [सं० गर्जन] गरज।
गराड़ी–संज्ञा स्त्री० [अनु० गड गड या सं० कुंडली] काठ या लोहे का गोल चक्कर जिसके गड्ढे में रस्सी डालकर कूएँ से घड़ा या पंखा आदि खींचते हैं। घिरनी।
संज्ञा स्त्री० [सं० गड = चिह्न] रगड़ आदि से पड़ी हुई गहरी लकीर। साँट।
गराना*–क्रि० स० दे० "गलाना"।
क्रि० स० [हिं० गारना] १. गारने का काम कराना। २. गारना।
गरारा–वि० [सं० गर्व + आर (प्रत्य०)] १. गर्वयुक्त। २. प्रबल। प्रचंड। बलवान्।
संज्ञा पुं० [अ० गरगरा] १. कुल्ली। २. कुल्ली करने की दवा।
संज्ञा पुं० [हिं० घेरा] १. पायजामे की ढीली मोहरी। २. बहुत बड़ा थैला।
गरास*–संज्ञा पुं० दे० "ग्रास"।
गरासना*–क्रि० स० दे० "ग्रसना"।
गरिमा–संज्ञा स्त्री० [सं० गरिमन्] १. गुरुत्व। भारीपन। बोझ। २. महिमा। महत्त्व।

गौरव। ३. गर्व। अहंकार। घमंड। ४. आत्मश्लाघा। शेखी। ५. आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिसमें साधक अपना बोझ चाहे जितना भारी कर सकता है।

गरियाना†-क्रि० स० [हिं० गारी+आना (प्रत्य०)] गाली देना।

गरियार-वि० [हिं० गड़ना=एक जगह रुक जाना] सुस्त। बोदा। मट्ठर। (चौपाया)

गरिष्ठ-वि० [सं०] १. अति गुरु। अत्यंत भारी। २. जो जल्दी न पचे।

गरी-संज्ञा स्त्री० [सं० गुलिका] १. नारियल के फल के भीतर का मुलायम खाने योग्य गोला। २. बीज के अंदर की गूदी। गिरी। मींगी।

गरीब-वि० [अ० गरीब] १. नम्र। दीन। हीन। २. दरिद्र। निर्धन। कंगाल।

गरीबनवाज-वि० [फा० गरीब+निवाज] दीनों पर दया करनेवाला। दयालु।

गरीबपरवर-वि० [फा०] गरीबों को पालनेवाला। दीन-प्रतिपालक।

गरीबी-संज्ञा स्त्री० [अ० गरीब] १. दीनता। अधीनता। नम्रता। २. दरिद्रता। निर्धनता। कंगाली। मुहताजी।

गरीयस-वि० [सं०] [स्त्री० गरीयसी] १. बड़ा भारी। गुरु। २. महान्। प्रबल।

गरु, गरुआ०†-वि० [सं० गुरु] [स्त्री० गरुई] १. भारी। वजनी। २. गौरवशाली।

गरुआई-संज्ञा स्त्री० [हिं० गरुआ] गुरुता।

गरुड़-संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु के वाहन जो पक्षियों के राजा माने जाते हैं। २.बहुतों के मत से उकाब पक्षी। †३. एक सफेद रंग का बड़ा जल-पक्षी। पँड़वा ढेक। ४. सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना। ५. छप्पय छंद का एक भेद।

गरुड़गामी-संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

गरुड़ध्वज-संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

गरुड़पुराण-संज्ञा पु० [सं०] अठारह पुराणों में से एक।

गरुड़रुत-संज्ञा पुं० [सं०] सोलह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।

गरुड़व्यूह-संज्ञा पु० [सं०] रणस्थल में सेना के जमाव या स्थापन का एक प्रकार।

गरुवाई०†-संज्ञा स्त्री० दे० "गरुआई"।

गरू-वि० [सं० गुरु] भारी। वजनी।

गरूर-संज्ञा पुं० [अ०] घमंड। अभिमान।

गरूरी†-वि० [अ० गुरूरी] घमंडी। संज्ञा स्त्री० अभिमान। घमंड।

गरेबान-संज्ञा पुं० [फा०] अंगे, कुरते आदि में गले पर का भाग।

गरेरना†-क्रि० स० [हिं० घेरना] घेरना।

गरैयाँ†-संज्ञा स्त्री० [हिं० गला] गराँव।

गरोह-संज्ञा पुं० [फा०] झुंड। जत्था।

गर्ग-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक ऋषि। २ बैल। साँड़। ३. एक पर्वत का नाम।

गर्ज-संज्ञा स्त्री० दे० "गरज"।

गर्जन-संज्ञा पुं० [सं०] भीषण ध्वनि। गरजना। गरज। गंभीर नाद।

यौ०—गर्जन-तर्जन = १.तड़प। २.डाँट डपट।

गर्जना-क्रि० अ० दे० "गरजना"।

गर्त्त-संज्ञा पुं० [सं०] १. गड्ढा। गड्हा। २. दरार। ३. घर। ४. रथ।

गर्द-संज्ञा स्त्री० [फा०] धूल। राख।

यौ०—गर्द गुबार=धूल मिट्टी।

गर्दखोर, गर्दखोरा-वि० [फा० गर्दखोर] जो गर्द या मिट्टी आदि पड़ने से जल्दी मैला या खराब न हो।

संज्ञा पुं० पाँव पोंछने का टाट या कपड़ा।

गर्दभ-संज्ञा पु० [सं०] गधा। गदहा।

गर्दिश-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. घुमाव। चक्कर। २. विपत्ति। आपत्ति।

गर्भ-संज्ञा पुं० [सं०] १. पेट के अंदर का बच्चा। हमल।

मुहा०—गर्भ गिरना=पेट के बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले ही निकल जाना। गर्भपात। २. स्त्री के पेट के अंदर का वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है। गर्भाशय।

गर्भकेसर-संज्ञा पुं० [सं०] फूलों में वे पतले सूत जो गर्भनाल के अंदर होते हैं।

गर्भगृह-संज्ञा पुं० [सं०] १. मकान के बीच की कोठरी। मध्य का घर। २. घर का मध्य भाग। आँगन। ३. मंदिर में वह कोठरी जिसमें प्रतिमा रखी जाती है।

गर्भनाल-संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों के अंदर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भकेसर होता है।

गर्भपात-संज्ञा पु० [सं०] पेट में से बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले निकल जाना।

गर्भवती-वि० स्त्री० [सं०] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी। गुर्विणी।

गर्भसंधि–संज्ञा स्त्री [सं०] नाटक में पाँच प्रकार की संधियों में से एक।
गर्भस्थ–वि० [सं०] जो गर्भ में हो।
गर्भस्राव–संज्ञा पु० [सं०] चार महीने के अंदर का गर्भपात।
गर्भांक–संज्ञा पु० [सं०] १ नाटक के भीतर किसी नाटक का दृश्य। २ नाटक के अंक का एक भाग या दृश्य।
गर्भाधान–संज्ञा पु० [सं०] १ मनुष्य के सोलह संस्कारों में से पहला संस्कार जो गर्भ में आने के समय ही होता है। २. गर्भ की स्थिति। गर्भ धारण।
गर्भाशय–संज्ञा पु० [सं०] स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।
गर्भिणी–वि० स्त्री० [सं०] जिसे गर्भ हो। गर्भवती। पेटवाली।
गर्भित–वि० [सं०] १ गर्भयुक्त। २ भरा हुआ। पूर्ण।
गर्रा–वि० [सं० गरहाधिक] लाख के रंग का। संज्ञा पु० १. लाखी रंग। २ घोड़े का एक रंग जिसमें लाही बालों के साथ कुछ सफेद बाल मिले होते हैं। ३ इस रंग का घोड़ा। ४ लाही रंग का कबूतर।
गर्व–संज्ञा पु० [सं०] अहंकार। घमंड।
गर्वाना–क्रि० अ० [सं० गर्व] गर्व करना।
गर्विता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति के प्रेम का घमंड हो।
गर्वी–वि० [सं० गर्विन्] घमंडी। अहंकारी।
गर्वीला–वि० [सं० गर्व+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गर्वीली] घमंड से भरा हुआ। अभिमान-युक्त। घमंडी।
गर्हण–संज्ञा पु० [सं०] निंदा। शिकायत।
गर्हित–वि० [सं०] जिसकी निंदा की जाय। निंदित। दूषित। बुरा।
गर्ह्य–वि० [सं०] गर्हणीय।
गल–संज्ञा पु० [सं०] गला। कंठ।
गलकंबल–संज्ञा पु० [सं०] गाय के गले के नीचे का वह भाग जो लटकता रहता है। झालर। लहर।
गलका–संज्ञा [हिं०] ... प्रकार का फो... है। २ एक ... गंज ... ल। ...
गलगंजना–क्रि० अ० [हिं० गलगंज] शोर करना। हल्ला करना।
गलगंड–संज्ञा पु० [सं०] एक रोग जिसमें गला सूजकर लटक आता है। घेघा।
गलगल–संज्ञा स्त्री० [देश०] १ मैना की जाति की एक चिड़िया। सिरगोटी। गलगलिया। २ एक प्रकार का बड़ा नीबू।
गलगाजना–क्रि० अ० [हिं० गाल+गाजना] गाल बजाना। बढ़ बढ़कर बातें करना।
गलगुथना–वि० [हिं० गाल] जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हों। मोटा।
गलग्रह–संज्ञा पु० [सं०] १ मछली का काँटा। २ वह आपत्ति जो कठिनता से टले।
गलछट–संज्ञा स्त्री० दे० "गलफड़ा"।
गलजँदड़ा–संज्ञा पु० [सं० गल+यंत्र, प० जँदरा] १ वह जो कभी पिंड न छोड़े। गले का हार। २ कपड़े की पट्टी जो गले में चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिये बाँधी जाती है।
गलझप–संज्ञा पु० [हिं० गला+झाँपना] हाथी के गले में पहनाने की लोहे की झूल या जंजीर।
गलत–वि० [अ०] [संज्ञा स्त्री० गलती] १ अशुद्ध। भ्रमसूलक। २. असत्य। मिथ्या। झूठ।
गलतकिया–संज्ञा पुं० [हिं० गाल+तकिया] छोटा, गोल और मुलायम तकिया जो गालों के नीचे रखा जाता है।
गलत फहमी–संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी बात को और का और समझना। भ्रम।
गलती–संज्ञा स्त्री० [अ० गलत+ई] १ भूल। चूक। धोखा। २. अशुद्धि। भूल।
गलथना–संज्ञा पु० [सं० गलस्तन] वे थैलियाँ जो कुछ बकरियों की गरदन में दोनों ओर लटकती रहती हैं।
गलथैली–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाल+थैली] बंदरों के गाल के नीचे की थैली, जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं।
गलन–संज्ञा पु० [सं०] १ गिरना। पतन। २ गलना।
गलना–क्रि० अ० [सं० गरण] १ किसी पदार्थ के घनत्व का कम या नष्ट होना। ... होकर द्रव या कोमल होना। २ ... होना। ३ शरीर का दुर्बल ... सूखना। ४. बहुत अधिक

सरदी के कारण हाथ पैर का ठिठुरना। ५. वृथा या निष्फल होना। बेकाम होना।

गलफड़ा–संज्ञा पु० [हिं० गाल + फटना] १. जल-जंतुओं का वह अवयव जिससे वे पानी में साँस लेते हैं। २. गाल का चमड़ा।

गलफाँसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गला + फाँसी] १. गले की फाँसी। २. कष्टदायक वस्तु या कार्य। जंजाल।

गलबाँही–संज्ञा स्त्री० [हिं० गला + बाँह] गले में बाँह डालना। कंठालिंगन।

गलमंदरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाल + सं० मुद्रा] १. शिवजी के पूजन के समय गाल बजाने की मुद्रा। गलमुद्रा। २. गाल बजाना।

गलमुच्छा–संज्ञा पु० [हिं० गाल + हिं० मूछ] गालों पर के बढ़ाए हुए बाल। गलगुच्छा।

गलमुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं० गल + मुद्रा] गल-मँदरी।

गलवाना–क्रि० स० [हिं० 'गलना' का प्रे० रूप] गलाने का काम दूसरे से कराना।

गलशुंडी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जीभ के आकार का मांस का छोटा टुकड़ा जो जीभ की जड़ के पास होता है। छोटी ज़बान या जीभ। जीभी। कौआ। २. एक रोग जिसमें तालू की जड़ सूज जाती है।

गलसुआ–संज्ञा पु० [हिं० गाल + सूजना] एक रोग जिसमें गाल के नीचे का भाग सूज आता है।

गलसुई–संज्ञा स्त्री० दे० "गलतकिया"।

गलस्तन–संज्ञा पु० [सं०] गलथना।

गला–संज्ञा पु० [सं० गल] १. शरीर का वह अवयव जो सिर को धड़ से जोड़ता है। गरदन। कंठ। २. गले की नाली जिससे शब्द निकलता और आहार भीतर जाता है।

मुहा०—गला काटना = १. धड़ से सिर जुदा करना। २. बहुत हानि पहुँचाना। ३. सूरन, दहे आदि या गले के अंदर एक प्रकार की जलन और चुनचुनाहट उत्पन्न करना। चनकनाना। गला घुटना = दम रुकना। अच्छी तरह साँस न लिया जाना। गला घोंटना = १. गले को ऐसा दबाना कि साँस रुक जाय। टेंटुआ दबाना। २. जबरदस्ती करना। जब्र करना। ३. मार डालना। गला दबाकर मार डालना। गला छूटना = पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। गला दबाना = अनुचित दबाव डालना। गला फाड़ना = इतना चिल्लाना कि गला दुखने लगे। गला रेतना = दे० "गला काटना"। गले का हार = १. इतना प्यारा (व्यक्ति या वस्तु) कि पास से कभी जुदा न किया जाय। अत्यंत प्रिय। चिर सहचर। २. पीछा न छोड़नेवाला। (बात) गले के नीचे उतरना या गले उतरना (बात) मन में बैठना। जी में जँचना। ध्यान में आना। गले पड़ना = इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना। न चाहने पर भी मिलना। (दूसरे के) गले बाँधना या मढ़ना = दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। जबरदस्ती देना। गले लगना = १. भेंटना। मिलना। आलिंगन करना। २. दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। ३. गले का स्वर। कंठस्वर। ४. अँगरखे, कुरते आदि की काट में गले पर का भाग। गरेबान। ५. बरतन के मुँह के नीचे का पतला भाग। ६. चिमनी का कल्ला।

गलाना–क्रि० स० [हिं० गलना का सकर्मक रूप] १. किसी वस्तु के संयोजक अणुओं को पृथक् पृथक् करके उसे नरम, गीला या द्रव करना। नरम या मुलायम करना। पुलपुला करना। २. धीरे धीरे लुप्त करना। ३ (रुपया) खर्च कराना।

गलानि–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।

गलित–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। २. अधिक दिन का होने के कारण नरम पड़ा हुआ। ३. गला हुआ। ४. पुराना पड़ा हुआ। जीर्ण-शीर्ण। खंडित। ५. चुआ हुआ। च्युत। ६. नष्ट भ्रष्ट। ७ परिपक्व।

गलित कुष्ठ–संज्ञा पु० [सं०] वह कोढ़ जिसमें अंग गल गलकर गिरने लगते हैं।

गलित यौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका यौवन ढल चला हो।

गली–संज्ञा स्त्री० [सं० गल] १. घरों की पंक्तियों के बीच से होकर गया हुआ तंग रास्ता। खोरी। कूचा।

मुहा०—गली गली मारे मारे फिरना = १. इधर-उधर व्यर्थ घूमना। २ जीविका के लिये इधर से उधर भटकना। ३. चारों ओर अधिकता से मिलना। सब जगह दिखाई पड़ना।

२. मुहल्ला। महाल।

गलीचा–संज्ञा पु० [फा० गालीचः] एक प्रकार का खूब मोटा बुना हुआ ... जिस पर रंग बिरंग के ... रहते हैं। कालीन।

ग़लीज़–वि० [अ०] १. गँदला। मैला। २. नापाक। अशुद्ध। अपवित्र।
संज्ञा पुं० १. कूड़ा करकट। गंदी वस्तु। मैला। गदगी। २. पाखाना। मल।

गलीत*– [अ० गलीज] मैला कुचैला।

गलेबाज़–वि० [हिं० गला+बाज] जिसका गला अच्छा हो। अच्छा गानेवाला।

गल्प–संज्ञा स्त्री० [सं० जल्प या कल्प] १. मिथ्या प्रलाप। गप्प। २. डींग। शेखी। ३. छोटी कहानी।

गल्ला–संज्ञा पुं० [अ० गुल] शोर। हौरा।
संज्ञा पुं० [फा० गल्ला] झुंड। दल। (चौपायों के लिये)

ग़ल्ला–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० गल्लई] १. फल, फूल आदि की उपज। फ़सल। पैदावार। २. अन्न। अनाज। ३. वह धन जो दूकान पर नित्य की बिक्री से मिलता है। गोलक।

गवँ–संज्ञा स्त्री० [सं० गम] १. प्रयोजन सिद्ध होने का अवसर। घात। २. मतलब।
मुहा०—गवँ से=१. घात देखकर। मौका तजवीज कर। २. धीरे से। चुपचाप।

गवन*†–संज्ञा पुं० [सं० गमन] १. प्रस्थान। प्रयाण। चलना। जाना। २. वधू का पहले पहल पति के घर जाना। गौना।

गवनचार–संज्ञा पुं० [हिं० गवन+चार] वर के घर वधू के जाने की रस्म।

गवनना*–क्रि० अ० [सं० गमन] जाना।

गवना–संज्ञा पुं० दे० "गौना"।

गवय–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गवयी] १. नीलगाय। २. एक छंद।

गवाक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] छोटी खिड़की। गौखा। झरोखा।

गवाख*–संज्ञा पुं० दे० "गवाक्ष"।

गवामयन–संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ।

गवारा–वि० [फा०] १. मनभाता। अनुकूल। पसंद। २. सह्य। अंगीकार करने के योग्य।

गवाह–संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा गवाही] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो। २. वह जो किसी मामले के विषय में जानकारी रखता हो। साक्षी।

गवाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी घटना के विषय में ऐसे मनुष्य का कथन जिसने वह घटना देखी हो या जो उसके विषय में जानता हो। साक्षी का प्रमाण। साक्ष्य।

गवेजा–संज्ञा पुं० [हिं० गप, गव] गप। बातचीत।

गवेधु, गवेधुक–संज्ञा पुं० [सं०] कसेई। कौड़िल्ला।

गवेल†–वि० [हिं० गाँव] देहाती।

गवेषणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] खोज। अन्वेषण।

गवेषी–वि० [सं० गवेषिन्] [स्त्री० गवेषिणी] खोजनेवाला। ढूँढनेवाला।

गवैया–वि० [पू० हिं० गायब=गाना] गानेवाला। गायक।

गवैंहा–वि० [हिं० गाँव+ऐंहा (प्रत्य०)] गाँव का रहनेवाला। ग्रामीण। देहाती।

गव्य–वि० [सं०] गो से उत्पन्न। जो गाय से प्राप्त हो। जैसे—दूध, दही, घी।
संज्ञा पुं० १. गायों का झुंड। २ पंचगव्य।

ग़श–संज्ञा पुं० [अ० गशी से फा०] मूर्च्छा। बेहोशी। असंज्ञा। तांवर।
मुहा०—ग़श खाना=बेहोश होना।

गश्त–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० गश्ती] १. टहलना। घूमना। फिरना। भ्रमण। दौरा। चक्कर। २. पहरे के लिये किसी स्थान के चारों ओर या गली कूचों आदि में घूमना। रौंद। गिरदावरी। दौरा।

गश्ती–वि० [फा०] घूमनेवाला। फिरनेवाला। चलता।
संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी। कुलटा।

गसीला–वि० [हिं० गसना] [स्त्री० गसीली] १. जकड़ा हुआ। गठा हुआ। एक दूसरे से खूब मिला हुआ। गुथा हुआ। २. (कपड़ा आदि) जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों। ठस।

गस्सा–संज्ञा पुं० [सं० ग्रास] ग्रास। कौर।

गह–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रह] १. पकड़। पकड़ने की क्रिया या भाव। २. हथियार आदि थामने की जगह। मूठ। दस्ता।
मुहा०—गह बैठना=मूठ पर हाथ भरपूर जमना।

गहकना–क्रि० अ० [सं० गद्गद] १. चाह से भरना। लालसा से पूर्ण होना। ललकना। लहकना। २. उमंग से भरना।

गहगड्ड–वि० [सं० गह=गहरा+गड्ड=गड्ढा] गहरा। भारी। घोर। (नशे के लिये)

गहगह*–वि० [सं० गद्गद] प्रफुल्लित। प्रसन्नतापूर्ण। उमंग से भरा हुआ।

क्रि० वि० घमाघम। धूम के साथ। (बाजे के लिये)

गहगहा–वि० [सं० गद्गद] १. उमंग और आनंद से भरा हुआ। प्रफुल्लित। २. घमाघम। धूमधामवाला।

गहगहाना–क्रि० अ० [हिं० गहगहा] १. आनंद से फूलना। बहुत प्रसन्न होना। २. पौधों का लहलहाना।

गहगहे–क्रि० वि० [हिं० गहगहा] १. बड़ी प्रफुल्लता के साथ। २. धूम के साथ।

गहड़ोरना–क्रि० स० [देश०] पानी को मथकर या हिला डुलाकर गँदला करना।

गहन–वि० [सं०] १. गंभीर। गहरा। अथाह। २. दुर्गम। घना। दुर्भेद्य। ३. कठिन। दुरूह। ४. निविड़। घना।

संज्ञा पुं० १. गहराई। थाह। २. दुर्गम स्थान। ३. वन या कानन में गुप्त स्थान।

† संज्ञा पुं० [सं० ग्रहण] १. ग्रहण। २. कलंक। दोष। ३. दुःख। कष्ट। विपत्ति। ४. बंधक। रेहन।

संज्ञा स्त्री० [हिं० गहना=पकड़ना] १. पकड़ने का भाव। पकड़। २. हठ। ज़िद।

गहना–संज्ञा पुं० [सं० ग्रहण=धारण करना] १. आभूषण। ज़ेवर। २. रेहन। बंधक।

क्रि० स० [सं० ग्रहण] पकड़ना। धरना।

गहनि†–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रहण] १. टेक। अड़। ज़िद। हठ। २. पकड़।

गहबर†–वि० [सं० गह्वर] १. दुर्गम। विषम। २. व्याकुल। उद्विग्न। ३. आवेग से भरा हुआ। मनोवेग से आकुल।

गहबरना–क्रि० अ० [हिं० गहबर] १. आवेग से भरना। मनोवेग से आकुल होना। २. घबराना। उद्विग्न होना।

गहर–संज्ञा स्त्री० [?] देर। विलंब।

संज्ञा पुं० [सं० गह्वर] दुर्गम। गूढ़।

गहरना–क्रि० अ० [हिं० गहर=देर] देर लगाना। विलंब करना।

क्रि० अ० [सं० गह्वर] १. झगड़ना। उलझना। २. कुढ़ना। नाराज़ होना।

गहरवार–संज्ञा पुं० [गहिरदेव= एक राजा] एक क्षत्रिय वंश।

गहरा–वि० [सं० गंभीर] [स्त्री० गहरी] १. (पानी) जिसकी थाह बहुत नीचे हो। गंभीर। निम्न। अतलस्पर्श।

मुहा०—गहरा पेट=ऐसा पेट जिसमें सब बातें पच जायँ। ऐसा हृदय जिसका भेद न मिले।

२. जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो। ३. बहुत अधिक। ज़्यादा। घोर।

मुहा०—गहरा असामी=१. भारी आदमी। बड़ा आदमी। गहरे लोग=चतुर लोग। भारी उस्ताद। घोर धूर्त। गहरा हाथ=हथियार का भरपूर वार जिससे खूब चोट लगे।

४. दृढ़। मज़बूत। भारी। कठिन। ५. जो हलका या पतला न हो। गाढ़ा।

मुहा०—गहरी घुटना या छनना=१. खूब गाढ़ी भंग घुटना या पिसना। २. गाढ़ी मित्रता होना। बहुत अधिक हेल-मेल होना।

गहराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गहरा+ई(प्रत्य०)] गहरा का भाव। गहरापन।

गहराना†–क्रि० अ० [हिं० गहरा] गहरा होना।

क्रि० स० [हिं० गहरा] गहरा करना।

क्रि० अ० दे० "गहरना"।

गहराव†–संज्ञा पुं० [हिं० गहरा] गहराई।

गहरु:–संज्ञा स्त्री० दे० "गहर"।

गहलौत–संज्ञा पुं० [?] राजपूताने के क्षत्रियों का एक वंश।

गहवाना–क्रि० स० [हिं० गहना का प्रे०] पकड़ने का काम कराना। पकड़ाना।

गहवारा–संज्ञा पुं० [हिं० गहना] पालना। झूला। हिंडोला।

गहाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गहना] गहने का भाव। पकड़।

गहागड्ड–वि० दे० "गहगड्ड"।

गहाना–क्रि० स० [हिं० गहना का प्रे०] धराना। पकड़ाना।

गहीला–वि० [हिं० गहेला] [स्त्री० गहीली] १. गर्वयुक्त। घमंडी। २. पागल।

गहेजुआ†–संज्ञा पुं० [देश०] छछूँदर।

गहेला–वि० [हिं० गहना=पकड़ना+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० गहेली] १. हठी। ज़िद्दी। २. अहंकारी। मानी। घमंडी। ३. पागल। ४. गँवार। अनजान। मूर्ख।

गहैया–वि० [हिं० गहना+ऐया (प्रत्य०)] १. पकड़नेवाला। ग्रहण करनेवाला। २. अंगीकार करनेवाला। स्वीकार करनेवाला।

गह्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधकारमय और गूढ़ स्थान। २. ज़मीन में छोटा सूराख बिल। ३. विषम स्थान। दुर्भेद्य ४. गुफा। कंदरा। गुहा। ५.

लतागृह। ६. झाड़ी। ७. जंगल। वन। वि० १. दुर्गम। विषम। २. गुप्त।

गांग–वि० [सं०] गंगा संबंधी। गंगा का।

गांगेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. भीष्म। २. कार्तिकेय। ३. हेलसा मछली। ४. कसेरू।

गाँज–संज्ञा पुं० [फ़ा० गंज] राशि। ढेर।

गाँजना–क्रि० स० [हिं० गाँज, फ़ा० गंज] राशि लगाना। ढेर करना।

गाँजा–संज्ञा पुं० [सं० गंजा] भाँग की जाति का एक पौधा जिसकी कली का धूआँ पीते हैं।

गाँठ–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि, प्रा० गंठि] [वि० गँठीला] १. रस्सी, डोरी, तागे आदि में पड़ी उभरी हुई उलझन जो खिंचकर कड़ी और दृढ़ हो जाती है। गिरह। ग्रंथि।

मुहा०—मन या हृदय की गाँठ खोलना = १ जी खोलकर कोई बात कहना। मन में रखी हुई बात कहना। २ अपनी भीतरी इच्छा प्रकट करना। ३. हौसला निकालना। लालसा पूरी करना। **मन में गाँठ पड़ना** = आपस के संबंध में भेद पड़ना। मनमोटाव होना।

२. अंचल, चद्दर या किसी कपड़े की खूँट में कोई वस्तु (जैसे, रुपया) लपेटकर लगाई हुई गाँठ।

मुहा०—गाँठ कतरना या काटना = गाँठ काटकर रुपया निकाल लेना। जेब कतरना। **गाँठ का** = पास का। पल्ले का। **गाँठ का पूरा** = धनी। मालदार। **गाँठ जोड़ना** = विवाह आदि के समय स्त्री पुरुष के कपड़ों के पल्ले को एक में बाँधना। गँठजोड़ा करना। **(कोई बात) गाँठ में बाँधना** = अच्छी तरह याद रखना। स्मरण रखना। सदा ध्यान में रखना। **गाँठ से** = पास से। पल्ले से।

३ गठरी। बोरा। गट्ठा। ४. अंग का जोड़। बंद। जैसे—पैर की गाँठ। ५. ईख, बाँस आदि में थोड़े थोड़े अंतर पर कुछ उभरा हुआ मंडल। पोर। पर्व। जोड़। ६. गाँठ के आकार की जड़। अंटी। गुत्थी। ७ घास का बँधा हुआ बोझ। गट्ठा।

गाँठगोभी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ + गोभी] गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में खरबूजे की सी गोल गाँठ होती है।

गाँठदार–वि० [हिं० गाँठ + दार (प्रत्य०)] जिसमें बहुत सी गाँठें हों। गँठीला।

गाँठना–क्रि० स० [सं० ग्रंथन, प्रा० गंठन] १. गाँठ लगाना। सीकर, मुर्री लगाकर या बाँधकर मिलाना। साटना। २. फटी हुई चीज़ों को टाँकना या उनमें चकती लगाना। मरम्मत करना। गूथना। ३. मिलाना। जोड़ना। ४. तरतीब देना।

मुहा०—मतलब गाँठना = काम निकालना।

५. अपनी ओर मिलाना। अनुकूल करना। पक्ष में करना। ६. गहरी पकड़ पकड़ना। ७ वश में करना। वशीभूत करना। ८. वार को रोकना।

गाँडर–संज्ञा स्त्री० [सं० गंडाली] मूँज की तरह की एक घास। गंडदूर्वा।

गाँडा–संज्ञा पुं० [सं० कांड या खंड] [स्त्री० गँडी] १. किसी पेड़, पौधे या डंठल का छोटा कटा भेड़। जैसे—ईख का गाँडा। २ ईख का छोटा कटा टुकड़ा। गँडेरी।

गांडीव–संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन का धनुष।

गाँती–संज्ञा स्त्री० दे० "गाती"।

गाँथना–क्रि० स० [सं० ग्रथन] १. गूँथना। गुँथना। २. मोटी सिलाई करना।

गांधर्व–वि० [सं०] १ गंधर्व संबंधी। २. गंधर्व देशोत्पन्न। ३ गंधर्व जाति का। संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद का उपवेद जिसमें सामगान के स्वर, तालादि का वर्णन है। गंधर्व विद्या। गंधर्व वेद २. गान-विद्या। संगीत शास्त्र। ३ आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर और कन्या परस्पर अपनी इच्छा से प्रेमपूर्वक मिलकर पति पत्निवत् रहते हैं

गांधर्व वेद–संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद का उपवेद। २. संगीत-शास्त्र।

गांधार–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंधु नद के पश्चिम का देश। २. [स्त्री० गांधारी] गांधार देश का रहनेवाला। ३. संगीत में सात स्वरों में तीसरा स्वर।

गांधारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गांधार देश की स्त्री या राजकन्या। २. धृतराष्ट्र की स्त्री और दुर्योधन की माता का नाम।

गांधी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हरे रंग का एक छोटा कीड़ा। २. एक घास। ३ हींग। ४. गंधी। ५. गुजराती वैश्यों की एक जाति।

गांभीर्य–संज्ञा पुं० [सं०], १. गहराई। गंभीरता। २. स्थिरता। अचंचलता। ३. हर्ष, क्रोध, भय आदि मनोवेगों से

चंचल न होने का गुण। शांति का भाव। धीरता। ४. गूढ़ता। गहनता।
गाँव, गाँव-संज्ञा पुं० [सं० ग्राम] वह स्थान जहाँ पर बहुत से किसानों के घर हों। छोटी बस्ती। खेड़ा।
गाँस-संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँसना] १. रोक टोक। बंधन। २. वैर। द्वेष। ईर्ष्या। ३. हृदय की गुप्त बात। भेद की बात। रहस्य। ४. गाँठ। फंदा। गठन। ५. तीर या बर्छी का फल। †६ वश। अधिकार। शासन। ७. देख रेख। निगरानी। ८ अड़चल। कठिनता। संकट।
गाँसना-क्रि० स० [हिं० ग्रथन] १. एक दूसरे से लगाकर कसना। गूथना। २. सालना। छेदना। चुभोना। ३. ताने मे कसना, जिससे बुनावट ठस हो।
मुहा०—बात को गाँसकर रखना = मन में बैठाकर रखना। हृदय में जमाना। † ४. वश में रखना। शासन में रखना। ५. पकड़ में करना। दबोचना। ६. ठूसना। भरना।
गाँसी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँस] १. तीर या बरछी आदि का फल। हथियार की नोक। २. गाँठ। गिरह। ३. कपट। छलछंद। ४. मनोमालिन्य।
गागर, गागरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "गगरी"।
गाच-संज्ञा स्त्री० [अं० गाज] बहुत महीन जालीदार सूती कपड़ा जिस पर रेशमी बेल बूटे बने रहते हैं। पुलवर।
गाछ-संज्ञा पुं० [सं० गच्छ] १ छोटा पेड़। पौधा। २. पेड़। वृक्ष।
गाज-संज्ञा स्त्री० [सं० गर्ज] १. गर्जन। गरज। शोर। २. बिजली गिरने का शब्द। वज्रपातध्वनि। ३. बिजली। वज्र।
मुहा०—किसी पर गाज पड़ना = आफत आना। ध्वंस होना। नाश होना।
संज्ञा पुं० [अनु० गजगज] फेन। झाग।
गाजना-क्रि० अ० [सं० गर्जन, पा० गज्जन] १. शब्द करना। हुंकार करना। गरजना। चिल्लाना। २. हर्षित होना। प्रसन्न होना।
मुहा०—गाल गाजना = हर्षित होना।
गाजर-संज्ञा स्त्री० [सं० गृंजन] एक पौधा जिसका कंद मीठा होता है।
मुहा०—गाजर मूली समझना = तुच्छ समझना।
गाजा-संज्ञा पुं० [फा०] मुँह पर मलने का एक प्रकार का रोगन।
गाज़ी-संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्म के लिये विधर्मियों से युद्ध करे। २. बहादुर। वीर।
गाड़-संज्ञा स्त्री० [सं० गर्त] १. गड्हा। गड्ढा। २. वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है। ३. कुएँ की ढाल। भगाड़।
गाड़ना-क्रि० स० [हिं० गाड़ = गड्ढा] १. गड्ढा खोदकर किसी चीज को उसमें डालकर ऊपर से मिट्टी डाल देना। ज़मीन के अंदर दफ़नाना। तोपना। २. गड्ढा खोदकर उसमें किसी लंबी चीज़ का एक सिरा जमाकर खड़ा करना। जमाना। ३. किसी नुकीली चीज को नोक के बल किसी चीज़ पर ठोंककर जमाना। धँसाना। ४. गुप्त रखना। छिपाना।
गाडर†-संज्ञा स्त्री० [सं० गड्डरी] भेड़।
गाड़ा†-संज्ञा पुं० [सं० शकट] गाडी। छकड़ा। बैलगाड़ी।
संज्ञा पुं० [सं० गर्त, प्रा० गड्ढ] वह गड्ढा जिसमें आगे लोग छिपकर बैठ रहते थे और शत्रु, डाकू आदि का पता लेते थे।
गाड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० शकट] एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल असबाब या आदमियों को पहुँचाने के लिये एक यंत्र। यान। शकट।
गाड़ीवान-संज्ञा पुं० [हिं० गाड़ी + वान(प्रत्य०)] १. गाड़ी हाँकनेवाला। २. कोचवान।
गाढ-वि० [सं०] १. अधिक। बहुत। अतिशय। २. दृढ़। मजबूत। ३. घना। गाढ़ा। जो पानी की तरह पतला न हो। ४. गहरा। अथाह। ५. विकट। कठिन। दुरूह। दुर्गम।
संज्ञा पुं० कठिनाई। आपत्ति। संकट।
गाढ़ा-वि० [सं० गाढ़] [स्त्री० गाढ़ी] १. जिसमें जल के अतिरिक्त ठोस अंश भी मिला हो। २. जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों। ठस। मोटा (कपड़े आदि के लिये)। ३. घनिष्ट। गहरा। गूढ़। ४. बढ़ा चढ़ा। घोर। कठिन। विकट।
मुहा०—गाढ़े की कमाई = कमाया हुआ धन। गाढ़े का संकट के समय का मित्र। देनेवाला। गाढ़े दिन =

संज्ञा पु० [सं० गाढ] १. एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा। गजी। २. मस्त हाथी।

गाढ़े†–क्रि० वि० [हिं० गाढ़ा] १. दृढ़ता से। जोर से। २. अच्छी तरह।

गाणपत–वि० [सं०] गणपति संबंधी। संज्ञा पु० एक संप्रदाय जो गणेश की उपासना करता है।

गाणपत्य–संज्ञा पु० [सं०] गणेश का उपासक।

गात–संज्ञा पु० [सं० गात्र] शरीर। अंग।

गाती–संज्ञा स्त्री० [सं० गात्री] १. वह चद्दर जिसे गले में बाँधते हैं। २. चद्दर या अँगोछा लपेटने का एक ढंग।

गात्र–संज्ञा पु० [सं०] अंग। देह। शरीर।

गाथ–संज्ञा पु० [सं० गाथा] यश। प्रशंसा।

गाथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तुति। २. वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो। ३. प्राचीन काल की एक ऐतिहासिक रचना जिसमें लोगों के दान, यज्ञादि का वर्णन होता था। ४. आर्य्या नाम की वृत्ति। ५. एक प्रकार की प्राचीन भाषा। ६ श्लोक। ७. गीत। ८ कथा। वृत्तांत। ९. पारसियों के धर्म-ग्रंथ का एक भेद।

गाद†–संज्ञा स्त्री० [सं० गाध] १. तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज। तलछट। २ तेल की कीट। ३. गाढ़ी चीज़।

गादड़, गादर†–वि० [सं० कातर या कदर्य, प्रा० कादर] कायर। डरपोक। भीरु। संज्ञा पुं० [स्त्री० गादडी] गीदड़। सियार।

गादा–संज्ञा पु० [सं० गाधा=दलदल] १. खेत का वह अन्न जो अच्छी तरह न पका हो। अधपका अन्न। गदर। २. बे पकी फसल। कच्ची फसल।

गादी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी] १. एक पकवान। †२. दे० "गद्दी"।

गाध–संज्ञा पु० [सं०] १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का स्थल। थाह। ३. नदी का बहाव। कूल। ४ लोभ। वि० [स्त्री० गाधा] १. जिसे हलकर पार कर सकें। जो बहुत गहरा न हो। छिछला। पायाब। २ थोड़ा। स्वल्प।

गाधि–संज्ञा पु० [सं०] विश्वामित्र के पिता का नाम।

गान–संज्ञा पु० [सं०] [वि० गेय, गेतव्य] १. गाने की क्रिया। संगीत। गाना। २. गाने की चीज़। गीत।

गाना–क्रि० स० [सं० गान] १. ताल, स्वर के नियम के अनुसार शब्द उच्चारण करना। आलाप के साथ ध्वनि निकालना। २. मधुर ध्वनि करना। ३. वर्णन करना। विस्तार के साथ कहना। मुहा०—अपनी ही गाना=अपनी ही बात कहते जाना। अपना ही हाल कहना। ४. स्तुति करना। प्रशंसा करना। संज्ञा पु० १ गाने की क्रिया। गान। २. गाने की चीज। गीत।

गाफिल–वि० [अ०] [संज्ञा गफलत] १. बेसुध। बेखबर। २. असावधान।

गाभ–संज्ञा पु० [सं० गर्भ, पा० गब्भ] १. पशुओं का गर्भ। २. दे० "गाभा"।

गाभा–संज्ञा पु० [सं० गर्भ] [वि० गाभिन] १ नया निकलता हुआ मुँह बँधा नरम पत्ता। नया कल्ला। कोंपल। २. केले आदि के डंठल के अंदर का भाग। ३. लिहाफ, रजाई आदि के अंदर की निकाली हुई पुरानी रूई। गुदड़। ४. कच्चा अनाज। खड़ी खेती।

गाभिन, गाभिनी–वि० स्त्री० [सं० गर्भिणी] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी। (चौपायों के लिये)

गाम–संज्ञा पु० [सं० ग्राम] गाँव।

गामी–वि० [सं० गामिन्] [स्त्री० गामिनी] १. चलनेवाला। चालवाला। २ गमन करनेवाला। संभोग करनेवाला।

गाय–संज्ञा स्त्री० [सं० गो] १. सींगवाला एक मादा चौपाया जो दूध के लिये प्रसिद्ध है। २. बहुत सीधा मनुष्य। दीन मनुष्य।

गायक–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० गायकी] गानेवाला। गवैया।

गायत्री–संज्ञा स्त्री०[सं०] १. एक वैदिक छंद। २. एक वैदिक मंत्र जो हिंदू धर्म में सबसे अधिक महत्त्व का माना जाता है। ३. गैर। ४. दुर्गा। ५. गंगा। ६. छः अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

गायन–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० गायिनी] १. गानेवाला। गवैया। गायक। २ गान। गाना। ३. कार्त्तिकेय।

गायब–वि० [अ०] लुप्त। अंतर्धान।

गायिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गानेवाली स्त्री। २. एक मात्रिक छंद।

ग़ार–संज्ञा पु० [अ०] १. गहरा गड्ढा।

२. गुफा । कंदरा ।
संज्ञा स्त्री० दे० "गाली" ।
गारत–वि० [अ०] नष्ट । बरबाद ।
गारद–संज्ञा स्त्री० [अ० गार्ड] सिपाहियों का झुंड जो रक्षा के लिये नियत हो । पहरा । चौकी ।
गारना–क्रि० स० [सं० गालन] १. दबाकर पानी या रस निकालना । निचोड़ना । २. पानी के साथ घिसना । जैसे—चंदन गारना । ✡ ३. निकालना । त्यागना ।
✡† क्रि० स० [सं० गल] १. गलाना । मुहा०—तन या शरीर गारना = शरीर गलाना । शरीर को कष्ट देना । तप करना ।
२. नष्ट करना । बरबाद करना ।
गारा–संज्ञा पुं० [हिं० गारना] मिट्टी अथवा चूने, सुर्खी आदि का लसदार लेप जिससे ईंटों की जोड़ाई होती है ।
गारी✡†–संज्ञा स्त्री० दे० "गाली" ।
गारुड़–संज्ञा पुं० [सं०] १. साँप का विष उतारने का मंत्र । २. सेना की एक व्यूह-रचना । ३. सुवर्ण । सोना ।
वि० गरुड़ संबंधी ।
गारुड़ी–संज्ञा पुं० [सं० गारुड़िन्] मंत्र से साँप का विष उतारनेवाला ।
गारो✡–संज्ञा पुं० [सं० गौरव, प्रा० गारव] १. गर्व । घमंड । अहंकार । २. महत्त्व का भाव । बड़प्पन । मान ।
गार्गी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री । २. दुर्गा । ३. याज्ञवल्क्य ऋषि की एक स्त्री ।
गार्हपत्याग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] छः प्रकार की अग्नियों में से पहली और प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा शास्त्रानुसार प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए ।
गार्हस्थ्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. गृहस्थाश्रम । २. गृहस्थ के मुख्य कृत्य । पंचमहायज्ञ ।
गाल–संज्ञा पुं० [सं० गड, गल्ल] १. मुँह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल भाग । गंड । कपोल ।
मुहा०—गाल फुलाना = रूठकर न बोलना । रूठना । रिसाना । गाल बजाना या मारना = डींग मारना । बढ़ बढ़कर बातें करना । काल के गाल में जाना = मृत्यु के मुख में पड़ना ।
२. बरबाद करने की लत । मुँहजोरी ।
मुहा०—गाल करना = १. मुँहजोरी करना । मुँह से अंडबंड निकालना । २. बढ़ बढ़कर बातें करना । डींग मारना ।
३ मध्य । बीच । ४. उतना अन्न जितना एक बार मुँह में डाला जाय । फंका । ग्रास ।
गालगूल✡†–संज्ञा पुं० [हिं० गाल + अनु०] व्यर्थ बात । गपशप । अनाप शनाप ।
गालमसूरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पकवान या मिठाई ।
गालव–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि का नाम । २. एक प्राचीन वैयाकरण । ३. लोध का पेड़ । ४. एक स्मृतिकार ।
गाला–संज्ञा पुं० [हिं० गाल = ग्रास] धुनी हुई रुई का गोला जो चरखे में कातने के लिये बनाया जाता है । पूनी ।
मुहा०—रुई का गाला = बहुत उज्ज्वल ।
† संज्ञा पुं० [हिं० गाल] १. बड़बड़ाने की लत । अंड बंड बकने का स्वभाव । मुँहजोरी । बल्ले-दराज़ी । २. ग्रास ।
ग़ालिब–वि० [अ०] जीतनेवाला । बढ़-जानेवाला । विजयी । श्रेष्ठ ।
गालिम✡–वि० दे० "ग़ालिब" ।
गाली–संज्ञा स्त्री० [सं० गालि] १ निंदा या कलंक-सूचक वाक्य । दुर्वचन ।
मुहा०—गाली खाना = दुर्वचन सुनना । गाली सहना । गाली देना = दुर्वचन कहना ।
२. कलंक-सूचक आरोप ।
गाली गलौज–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाली + अनु० गलौज] परस्पर गालि-प्रदान । तू तू मैं मैं । दुर्वचन ।
गाली गुफ्ता–संज्ञा पुं० दे० "गाली गलौज" ।
गालना, गाल्हना✡†–क्रि० अ० [सं० गल्प = बात] बात करना । बोलना ।
गालू–वि० [हिं० गाल] १. गाल' बजानेवाला । व्यर्थ डींग मारनेवाला । २. बकवादी । गप्पी ।
गाव–संज्ञा पुं० [सं० गो । फा० गाव] गाय ।
गावकुशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] गोवध ।
गावजबान–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक बूटी जो फ़ारस देश में होती है ।
गावतकिया–संज्ञा पुं० [फा०] बड़ा तकिया जिससे कमर लगाकर लोग पर बैठते हैं । मसनद ।
गावदी–वि० [हिं० गाय बुद्धि का । अबोध ।

गावदुम-वि० [फा०] १. जो ऊपर से बैल की पूँछ की तरह पतला होता आया हो। २ चढ़ाव उतारवाला। ढालुवाँ।
गासिया-संज्ञा पु० [अ० गाशिया] ज़ीनपोश।
गाह-संज्ञा पु० [सं० ग्राह] १. ग्राहक। गाहक। २. पकड़। घात। ३ ग्राह। मगर।
गाहक-संज्ञा पु० [सं०]अवगाहन करनेवाला। संज्ञा पु० [सं० ग्राहक] १ खरीददार। मोल लेनेवाला।
मुहा०—जी या प्राण का गाहक=१ प्राण लेनेवाला। मार डालने की ताक में रहनेवाला। २ दिक करनेवाला।
२ कदर करनेवाला। चाहनेवाला।
गाहकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गाहक] १ विक्री। २ गाहक।
गाहकताई:-संज्ञा स्त्री० [सं० ग्राहकता] कदरदानी। चाह।
गाहन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० गाहित] गोता लगाना। विलोड़न। स्नान।
गाहना-क्रि० स० [सं० अवगाहन] १. डूबकर थाह लेना। अवगाहन करना। २ मथना। विलोड़ना। हलचल मचाना। ३. धान आदि के डंठल को झाड़ना जिसमें दाना नीचे झड़ जाय। ओहना।
गाहा-संज्ञा स्त्री० [सं० गाथा] १ कथा। वर्णन। चरित्र। वृत्तांत। २ आर्या छंद।
गाही-संज्ञा स्त्री० [हिं० गहना] फल आदि गिनने का पाँच पाँच का एक मान।
गाहू-संज्ञा स्त्री० [हिं० गना] उपगीति छंद।
गिँजना-क्रि० अ० [हिं० गींजना] किसी चीज़ (विशेषत कपड़े) का उलटे पुलटे जाने के कारण खराब हो जाना। गींजा जाना।
गिंजाई-संज्ञा स्त्री० [सं० गृंजन] एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।
संज्ञा स्त्री० [गाजना] गींजने का भाव।
गिंदौड़ा, गिंदौरा-संज्ञा पु० [हिं० गेंद] मोटी रोटी के आकार में गलाकर ढाली हुई चीनी का कतरा।
गिउ:-संज्ञा पुं० [सं० ग्रीवा] गला। गरदन।
गिचपिच-वि० [अनु०] जो साफ़ या क्रम से न हो। अस्पष्ट।
गिचिर पिचिर-वि० दे० "गिचपिच"।
गिजगिजा-वि० [अनु०] १ ऐसा गीला और मुलायम जो छूने में अच्छा न मालूम हो। २ जो छूने में मासल मालूम हो।
गिज़ा-संज्ञा स्त्री० [अ०] भोजन। खाद्य वस्तु। खूराक।
गिटकिरी-संज्ञा स्त्री० [अनु०] तान लेने में विशेष प्रकार से स्वर का काँपना।
गिटपिट-संज्ञा स्त्री० [अनु०] निरर्थक शब्द।
मुहा०—गिटपिट करना = टूटी फूटी या साधारण अँगरेजी भाषा बोलना।
गिट्टक-संज्ञा स्त्री० [हिं० गिट्टा] चिलम के नीचे रखने का कंकर। चुगल।
गिट्टी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गिट्टा] १ पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े। २ मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा। ठीकरी। ३ चिलम की गिट्टक।
गिड़गिड़ाना-क्रि० अ० [अनु०] अत्यंत नम्र होकर कोई बात या प्रार्थना करना।
गिड़गिड़ाहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० गिड़गिड़ाना] १ विनती। २. गिड़गिड़ाने का भाव।
गिद्ध-संज्ञा पु० [सं० गृध्र] १ एक प्रकार का बड़ा मांसाहारी पक्षी। २ छप्पय छंद का २२ वाँ भेद।
गिद्धराज-संज्ञा पु० [हिं० गिद्ध + राज] जटायु।
गिनती-संज्ञा स्त्री० [हिं० गिनना + ती (प्रत्य०)] १ संख्या निश्चित करने की क्रिया। गणना। शुमार।
मुहा०—गिनती में आना या होना = कुछ महत्त्व का समझा जाना। गिनती गिनाने के लिये = नाम मात्र के लिये। कहने सुनने भर को।
२ संख्या। तादाद।
मुहा०—गिनती के = बहुत थोड़े।
३. उपस्थिति की जाँच। हाजिरी। (सिपाही)। ४ एक से सौ तक की अंकमाला
गिनना-क्रि० स० [सं० गणन] १ गणना करना। शुमार करना। संख्या निश्चित करना।
मुहा०—दिन गिनना = १ आशा में समय बिताना। २ किसी प्रकार कालक्षेप करना।
२. गणित करना। हिसाब लगाना। ३ कुछ महत्त्व का समझना। खातिर में लाना
गिनवाना-क्रि० स० दे० "गिनाना"।
गिनाना-क्रि० स० [हिं० गिनना का प्रे०] गिनने का काम दूसरे से कराना।
गिनी-संज्ञा स्त्री० [अं०] १. सोने का एक

सिक्का। २. एक विलायती घास।
गिन्नी†—संज्ञा स्त्री० दे० "गिनी"।
गिब्बन—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का बंदर।
गिमटी—संज्ञा स्त्री० [अं० डिमिटी] एक प्रकार का बूटीदार मज़बूत कपड़ा।
गिय*—संज्ञा पुं० दे० "गिउ"।
गियाह—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।
गिर—संज्ञा पुं० [सं० गिरि] १. पहाड़। पर्वत। २ सन्यासियों के दस भेदों में से एक।
गिरई—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।
गिरगिट—संज्ञा पुं० [सं० कृकलास या गलगति] छिपकली की जाति का एक जंतु जो दिन में दो चार रंग बदलता है। गिरगिटान। गिर्दाना।
मुहा०—गिरगिट की तरह रंग बदलना = बहुत जल्दी सम्मति या सिद्धांत बदल देना।
गिरगिरी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] लड़कों का एक खिलौना।
गिरजा—संज्ञा पुं० [पुर्त० इग्रिजिया] ईसाइयों का प्रार्थना मंदिर।
गिरदा†—संज्ञा पुं० [फा० गिर्द] १. घेरा। चक्कर। २. तकिया। गेड़ुआ। बालिश। ३. काठ की थाली जिसमें हलवाई मिठाई रखते हैं। ४. ढाल। फरी।
गिरदान†—संज्ञा पुं० [हिं० गरगिट] गिरगिट।
गिरदावर—संज्ञा पुं० दे० "गिर्दावर"।
गिरना—क्रि० अ० [सं० गलन] १. एकदम ऊपर से नीचे आ जाना। अपने स्थान से नीचे आ रहना। पतित होना। २. खड़ा न रह सकना। ज़मीन पर पड़ जाना। ३. अवनति या घटाव पर होना। बुरी दशा में होना। ४ किसी जलधारा का किसी बड़े जलाशय में जा मिलना। ५. शक्ति या मूल्य आदि का कम या मंदा होना। ६. बहुत चाव या तेजी से आगे बढ़ना। टूटना। ७ अपने स्थान से हट, निकल या झड़ जाना। ८ किसी ऐसे रोग का होना जिसका वेग ऊपर की ओर से नीचे को आता माना जाता है। जैसे—फ़ालिज गिरना। ९. सहसा उपस्थित होना। प्राप्त होना। १०. लड़ाई में मारा जाना।
गिरनार—संज्ञा पुं० [सं० गिरि + नार = नगर] [वि० गिरनारी] जैनियों का एक तीर्थ जो गुजरात में जूनागढ़ के निकट एक पर्वत पर है। रैवतक पर्वत।
गिरफ़्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पकड़ने का भाव। पकड़। २. दोष का पता लगाने का ढब।
गिरफ़्तार—वि० [फा०] १ जो पकड़ा, क़ैद किया या बाँधा गया हो। २. ग्रस्त हुआ। ग्रस्त।
गिरफ़्तारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गिरफ़्तार होने का भाव। २ गिरफ़्तार होने की क्रिया।
गिरमिट—संज्ञा पुं० [अं० गिमलेट] (लकड़ी में छेद करने का) बड़ा बरमा।
‡ संज्ञा पुं० [अं० एग्रीमेंट = इकरारनामा] १. इकरारनामा। शर्तनामा। २. स्वीकृति या प्रतिज्ञा। इकरार।
गिरवान*†—संज्ञा पुं० दे० "गीर्वाण"।
संज्ञा पुं० [फा० गरेबान] १. अंगे या कुरते का वह गोल भाग जो गर्दन के चारों ओर रहता है। २. गर्दन। गला।
गिरवाना—क्रि० स० [हिं० गिराना का प्रे०] गिराने का काम दूसरे से कराना।
गिरवी—वि० [फा०] गिरौं रखा हुआ। बंधक। रेहन।
गिरवीदार—संज्ञा पुं० [फा०] वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु बंधक रखी हो।
गिरह—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गाँठ। ग्रंथि। २. जेब। कीसा। खरीता। ३. दो पोरों के जुड़ने का स्थान। ४ एक गज का सोलहवाँ भाग। ५. कलैया। उलटी। कलाबाजी।
गिरहकट—वि० [फा० गिरह = गाँठ + हिं० काटना] जेब या गाँठ में बँधा हुआ माल काट लेनेवाला। चाईं।
गिरहबाज़—संज्ञा पुं० [फा०] एक जाति का कबूतर जो उड़ते उड़ते उलटकर कलैया खा जाता है।
गिरही*†—संज्ञा पुं० दे० "गृही"।
गिराँ—वि० [फा० गराँ] १. जिसका दाम अधिक हो। महँगा। २. भारी। हलका का उलटा। ३. जो भला न मालूम हो। अप्रिय।
गिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणी की

शक्ति। बोलने की ताक़त। २. जिह्वा। जीभ। जबान। ३. वचन। वाणी। कलाम। ४. सरस्वती देवी।

गिराना-क्रि० स० [हिं० गिरना का स० रूप] १. अपने स्थान से नीचे डाल देना। पतन करना। २. खड़ा न रहने देकर जमीन पर डाल देना। ३. अवनत करना। घटाना। ४. किसी जलधारा या प्रवाह को किसी ढाल की ओर ले जाना। ५. शक्ति या स्थिति आदि में कम कर देना। ६. किसी चीज को उसके स्थान से हटा या निकाल देना। ७. कोई ऐसा रोग उत्पन्न करना जिसका वेग ऊपर से नीचे की ओर आता हुआ माना जाता हो। ८. सहसा उपस्थित करना। ९. लड़ाई में मार डालना।

गिरानी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. महँगापन। महँगी। २. अकाल। कहत। ३. कमी। अभाव। टोटा। ४. पेट का भारीपन।

गिरापति-संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा।

गिरापितु-संज्ञा पु० [सं० गिरा + पितृ] सरस्वती के पिता, ब्रह्मा।

गिरावट-संज्ञा स्त्री० [हिं० गिरना] गिरने की क्रिया, भाव या ढंग।

गिरास-संज्ञा पु० दे० "ग्रास"।

गिरासना‡-क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

गिरि-संज्ञा पु० [सं०] १ पर्वत। पहाड़। २. दशनामी संप्रदाय के अंतर्गत एक प्रकार के संन्यासी। ३. परिव्राजकों की एक उपाधि।

गिरिजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। गौरी। २. गंगा।

गिरिधर-संज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

गिरिधारन-दे० "गिरिधर"।

गिरिधारी-संज्ञा पु० [सं० गिरिधारिन्] श्रीकृष्ण।

गिरिनंदिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. गंगा। ३ नदी।

गिरिनाथ-संज्ञा पु० [सं०] महादेव। शिव।

गिरिराज-संज्ञा पु० [सं०] १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. गोवर्द्धन पर्वत। ४. मेरु।

गिरिव्रज-संज्ञा पु० [सं०] १. केकय देश की राजधानी। २. जरासंध की राजधानी, जिसे पीछे राजगृह कहते थे।

गिरिसुत-संज्ञा पु० [सं०] मैनाक पर्वत।

गिरिसुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

गिरींद्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. शिव।

गिरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गरी] वह गूदा जो बीज को तोड़ने पर उसके अंदर से निकलता है।

गिरीश-संज्ञा पु० [सं०] १. महादेव। शिव। २. हिमालय पर्वत। ३. सुमेरु पर्वत। ४. कैलाश पर्वत। ५ गोवर्द्धन पर्वत। ६. कोई बड़ा पहाड़।

गिरैयाँ†-संज्ञा स्त्री० [हिं० गेराँव] छोटा या पतला गेराँव।

गिरो-वि० [फा०] रेहन। बंधक। गिरवी।

गिर्द-अव्य० [फा०] आसपास। चारों ओर।

यौ०-इर्द गिर्द।

गिर्दावर-संज्ञा पु० [फा०] १. घूमनेवाला। दौरा करनेवाला। २. घूम घूमकर काम की जाँच करनेवाला।

गिल-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मिट्टी। २. गारा।

गिलकार-संज्ञा पु० [फा०] गारा या पलस्तर करनेवाला व्यक्ति।

गिलकारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] गारा लगाने या पलस्तर करने का काम।

गिलगिलिया-संज्ञा स्त्री० [अनु०] सिरोही चिड़िया।

गिलगिली-संज्ञा पु० [देश०] घोड़े की एक जाति।

गिलट-संज्ञा पु० [अं० गिल्ट] १ सोना चढ़ाने का काम। २. चाँदी सी सफेद बहुत हलकी और कम मूल्य की एक धातु।

गिलटी-संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि] १. चेप की गोल छोटी गाँठ जो शरीर के अंदर संधि-स्थान में रहती है। २. एक रोग जिसमें संधि-स्थान की गाँठें सूज जाती हैं।

गिलन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० गिलित] निगलना। लीलना।

गिलना-क्रि० स० [सं० गिरण] १ बिना दाँतों से तोड़े गले में उतार जाना। निगलना। २ मन ही मन में रखना। प्रकट न होने देना।

गिलबिलाना-क्रि० अ० [अनु०] अस्पष्ट उच्चारण से कुछ कहना।

गिलम—संज्ञा स्त्री० [फा० गिलीम=कंबल] १. नरम और चिकना ऊनी कालीन। २. मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना।
वि० कोमल। नरम।
गिलमिल—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा।
गिलहरा—संज्ञा पु०[देश०] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा। दे० "बेलहरा"।
गिलहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० गिरि=चुहिया] चूहे की तरह का मोटी रोएँदार पूँछ का जंतु जो पेड़ों पर रहता है। गिलाई। चेखुरा।
गिला—संज्ञा पु० [फा०] १. उलाहना। २. शिकायत। निंदा।
गिलाफ़—संज्ञा पु० [अ०] १. कपड़े की बड़ी थैली जो तकिए, लिहाफ़ आदि के ऊपर चढ़ा दी जाती है। खोल। २. बड़ी रजाई। लिहाफ़। ३. म्यान।
गिलावा†—संज्ञा पु० [फा० गिल+आब] गीली मिट्टी जिससे ईंट पत्थर जोड़ते हैं। गारा।
गिलास—संज्ञा पु० [अं० ग्लास] १. पानी पीने का एक गोल लंबोतरा बरतन। २. आलू-बालू या ओलची नाम का पेड़।
गिलिम—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलम"।
गिली—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल्ली"।
गिलोय—संज्ञा स्त्री० [फा०] गुरुच।
गिलोला—संज्ञा पुं० [फा० गुलेला] मिट्टी का छोटा गोला जो गुलेल से फेंका जाता है।
गिलौरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] पानों का बीड़ा।
गिलौरीदान—संज्ञा पु० [हिं० गिलौरी+फा० दान] पान रखने का डिब्बा। पानदान।
गिल्टी—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलटी"।
गींजना—क्रि० स० [हिं० मीजना] किसी कोमल पदार्थ, विशेषतः कपड़े आदि, को इस प्रकार मलना कि वह खराब हो जाय।
गी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणी। बोलने की शक्ति। २. सरस्वती देवी।
गीउ‡—संज्ञा स्त्री० दे० "गीव"।
गीत—संज्ञा पु० [सं०] १. वह वाक्य, पद या छंद जो गाया जाता हो। गाने की चीज। गाना।
मुहा०—गीत गाना=बड़ाई करना। प्रशंसा करना। अपना ही गीत गाना=अपनी ही बात कहना, दूसरे की न सुनना।
२ बड़ाई। यश।
गीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह ज्ञानमय उपदेश जो किसी बड़े से माँगने पर मिले। २. भगवद्गीता। ३. २६ मात्रा का एक छंद। ४. वृत्तांत। कथा। हाल।
गीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गान। गीत। २. आर्या छंद के भेदों में से एक।
गीतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक मात्रिक छंद। २. गीत। गाना।
गीतिरूपक—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का रूपक जिसमें गद्य कम और पद्य अधिक होता है।
गीदड़—संज्ञा पु० [सं० गृध्र, फा० गीदी] सियार। शृगाल।
यौ०—गीदड़-भभकी=मन में डरते हुए ऊपर से दिखाऊ साहस या क्रोध प्रकट करना।
वि० डरपोक। बुज़दिल।
गीदी—वि० [फा०] डरपोक। कायर।
गीध—संज्ञा पु० दे० "गिद्ध"।
गीधना‡†—क्रि० अ० [सं० गृध्र=लुब्ध] एक बार कोई लाभ उठाकर सदा उसका इच्छुक रहना। परचना।
गीबत†—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनुपस्थिति। गैर हाज़िरी। २ पिशुनता। चुगुलखोरी।
गीर—संज्ञा स्त्री० [सं० गी] वाणी।
गीर्देवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।
गीर्पति—संज्ञा पु० [सं०] १. बृहस्पति। २. विद्वान्।
गीर्वाण—संज्ञा पु० [सं०] देवता। सुर।
गीला—वि० [हिं० गलना] [स्त्री० गीली] भीगा हुआ। तर। नम। आर्द्र।
गीलापन—संज्ञा पु० [हिं० गीला+पन(प्रत्य०)] गीला होने का भाव। नमी। तरी।
गीव‡—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीवा"।
गीस्पति—संज्ञा पु० [सं०] १. बृहस्पति। २. विद्वान्। पंडित।
गुंगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूँगा] दोमुहाँ साँप। चुकरेंड़।
गुँगुआना—क्रि० अ० [अनु०] १. धूआँ देना। अच्छी तरह न जलना। २. गूँ गूँ शब्द करना। गूँगे की तरह बोलना।
गुंचा—संज्ञा पु० [अ०] १. कली। कोरक। २. नाच रंग। विहार। जश्न।
गुंज—संज्ञा स्त्री० [सं० गुंज] भनभनाने का शब्द। गुं ध्वनि। कलरव। ३. दे०

गुंजन-संज्ञा स्त्री० [सं०] भौंरों के गूँजने की क्रिया। भनभनाहट। कोमल मधुर ध्वनि।

गुंजना-क्रि० अ० [सं० गुंज] भौंरों का भनभनाना। मधुर ध्वनि निकालना। गुनगुनाना।

गुंजनिकेतन-संज्ञा पुं० [सं० गुंज+निकेतन] भौंरा। मधुकर।

गुंजरना-क्रि० अ० [हिं० गुंजार] १. गुंजार करना। भौंरों का गूँजना। भनभनाना। २. शब्द करना। गरजना।

गुंजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] घुँघची नाम की लता।

गुंजाइश-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अँटने की जगह। समाने भर को स्थान। अवकाश। २. समाई। सुबीता।

गुंजान-वि० [फा०] घना। अविरल। संघन।

गुंजायमान-वि० [सं०] गुंजारता हुआ। गूँजता हुआ।

गुंजार-संज्ञा पुं० [सं० गुंज+आर] भौंरों की गूँज। भनभनाहट।

गुंठा-संज्ञा पुं० [हिं० गठना] एक प्रकार का नाटे कद का घोड़ा। टाँगन।
† वि० [देश०] नाटा। बौना।

गुंडई-संज्ञा स्त्री० [हिं० गुंडा] गुंडापन। बदमाशी।

गुँडली-संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] १. फेंटा। कुंडली। २. गेंडुरी। इँडुरी।

गुंडा-वि० [सं० गुंडक] [स्त्री० गुंडी] १. बदचलन। कुमार्गी। बदमाश। २. छैला। चिकनिया।

गुंडापन-संज्ञा पुं० [हिं० गुंडा+पन (प्रत्य०)] बदमाशी।

गुँथना-क्रि० अ० [सं० गुत्स, गुत्थ=गुच्छा] १. तागों, बाल की लटों आदि का गुच्छेदार लड़ी के रूप में बँधना। २. एक में उलझकर मिलना। उलझकर बँधना। ३. मोटे तौर पर सिलना। नत्थी होना।

गुँदला-संज्ञा पुं० [सं० गुंडाला] नागरमोथा।

गुंधना-क्रि० अ० [सं० गुध=क्रीड़ा] पानी में सानकर मसला जाना। माँड़ा जाना।
† क्रि० अ० दे० "गुँथना"।

गुँधवाना-क्रि० स० [हिं० गूँथना का प्रे०] गूँथने का काम दूसरे से कराना।

गुँधाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० गूँधना] १. गूँधने या माड़ने की क्रिया या भाव। २. गूँधने या माड़ने की मजदूरी।

गुँधावट-संज्ञा स्त्री० [हिं० गूँधना] गूँधने या गूँधने की क्रिया या ढंग।

गुंफ-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुंफित] १. उलझन। फँसाव। गुत्थमगुत्था। २. गुच्छा ३. दाढ़ी। गलमुच्छा। ४. कारणमाला अलंकार।

गुंफन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुंफित] उलझाव। फँसाव। गुत्थमगुत्था। गूँथना। गाँछना।

गुंबज-संज्ञा पुं० [फा० गुंबद] गोल और ऊँची छत।

गुंबजदार-वि० [फा० गुंबद+दार] जिस पर गुंबज हो।

गुंबद-संज्ञा पुं० दे० "गुंबज"।

गुंबा-संज्ञा पुं० [हिं० गोल+अब=आम] वह कड़ी गोल सूजन जो सिर पर चोट लगने से होती है। गुलमा।

गुंभी-संज्ञा स्त्री० [सं० गुंफ] अंकुर। गाभ।

गुआ-संज्ञा पुं० [सं० गुवाक] १. चिकनी सुपारी। २. सुपारी।

गुइयाँ-संज्ञा स्त्री० पुं० [हिं० गोइन] १. साथी। सखा (स्त्री०)। २. सखी। सहचरी।

गुग्गुल-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक कँटीदार पेड़ जिसका गोंद सुगंध के लिये जलाने और दवा के काम में लाते हैं। गूगल। २. सलई का पेड़ जिससे राल या धूप निकलती है।

गुच्ची-संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह छोटा गड्ढा जो लड़के गोली या गुल्ली-डंडा खेलते समय बनाते हैं।
वि० स्त्री० बहुत छोटी। नन्हीं।

गुच्चीपारा, गुच्चीपाला-संज्ञा पुं० [हिं० गुच्ची=गड्ढा+पारना=डालना] एक खेल जिसमें लड़के एक छोटा सा गड्ढा बनाकर उसमें कौड़ियाँ फेंकते हैं।

गुच्छ, गुच्छक-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक में बँधे हुए फूलों या पत्तियों का समूह। गुच्छा। २. घास की जूरी। ३. वह पौधा जिसमें केवल पत्तियाँ या पतली लचीली टहनियाँ फैलें। झाड़। ४. मोर की पूँछ।

गुच्छा—संज्ञा पुं० [सं० गुच्छ] १. एक में लगे या बँधे कई पत्तों या फूलों का समूह। गुच्छा। २. एक में लगी या बँधी छोटी वस्तुओं का समूह। जैसे—कुंजियों का गुच्छा। ३. फुँदना। झब्बा।

गुच्छी—संज्ञा स्त्री० [सं० गुच्छ] १. करंज। कंजा। २. रीठा। ३. एक तरकारी।

गुच्छेदार—वि० [हिं० गुच्छा + फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें गुच्छा हो।

गुज़र—संज्ञा पुं० [फा०] १. निकास। गति। २. पैठ। पहुँच। प्रवेश। ३. निर्वाह। कालक्षेप।

गुज़रना—क्रि० अ० [फा० गुज़र + ना (प्रत्य०)] १. समय व्यतीत होना। कटना। बीतना। मुहा०—किसी पर गुज़रना = किसी पर (कष्ट या विपत्ति) पड़ना। २. किसी स्थान से होकर आना या जाना। मुहा०—गुज़र जाना = मर जाना। ३. निर्वाह होना। निपटना। निभना।

गुज़र बसर—संज्ञा पुं० [फा०] निर्वाह। गुज़ारा। कालक्षेप।

गुजरात—संज्ञा पुं० [सं० गुर्जर + राष्ट्र] [वि० गुजराती] भारतवर्ष के दक्षिण-पश्चिम प्रांत का एक देश।

गुजराती—वि० [हिं० गुजरात] १. गुजरात का निवासी। गुजरात देश में उत्पन्न। २ गुजरात का बना हुआ।
संज्ञा स्त्री० १. गुजरात देश की भाषा। २. छोटी इलायची।

गुज़रान—संज्ञा पुं० दे० "गुज़र (३)"।

गुँज़रानां†—क्रि० स० दे० "गुज़ारना"।

गुँजरिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूजर] गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। गोपी।

गुजरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूजर] १. कलाई में पहनने की एक प्रकार की पहुँची। २. कान-छटी मेंड़। ३. दे० "गूजरी"।

गुजरेटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूजर] १. गूजर जाति की कन्या। २ गूजरी। ग्वालिन।

गुज़श्ता—वि० [फा०] बीता हुआ। गत। व्यतीत। भूत (काल)।

गुज़ारना—क्रि० स० [फा०] १. बिताना। काटना। २. पहुँचाना। पेश करना।

गुज़ारा—संज्ञा पुं० [फा०] १. गुज़र। गुज़रान। निर्वाह। २. वह वृत्ति जो जीवन-निर्वाह के लिये दी जाय। ३. महसूल लेने का स्थान।

गुज़ारिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] निवेदन।

गुंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गूजरी। २. एक रागिनी।

गुझरौट†—संज्ञा पुं० [सं० गुप्त + सं० आवर्त] १. कपड़े की सिकुड़न। शिकन। सिलवट। २. स्त्रियों की नाभि के आस पास का भाग।

गुझिया—संज्ञा स्त्री० [सं० गुह्यक] १. एक प्रकार का पकवान। कुसली। पिराक। २ खोए की एक मिठाई।

गुझौटा†—संज्ञा पुं० दे० "गुझरौट"।

गुटकना—क्रि० अ० [अनु०] कबूतर की तरह गुटरगूँ करना।
† क्रि० स० १. निगलना। २. खा जाना।

गुटका—संज्ञा पुं० [सं० गुटिका] १ दे० "गुटिका"। २. छोटे आकार की पुस्तक। ३. लट्टू। ४. गुपचुप मिठाई।

गुटरगूँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] कबूतरों की बोली।

गुटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वटिका। वटी। गोली। २. एक सिद्धि जिसके अनुसार एक गोली मुँह में रख लेने से जहाँ चाहे, वहाँ चले जायँ, कोई नहीं देख सकता।

गुट्ट—संज्ञा पुं० [सं० गोष्ठ] समूह। झुंड। दल। यूथ।

गुट्ठल—वि० [हिं० गुठली] १. (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो। २. जड़। मूर्ख। कूढ़-मगज़। ३. गुठली के आकार का।
संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के इकट्ठा होकर जमने से बनी हुई गाँठ। गुलथी। २. गिलटी।

गुठली—संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] ऐसे फल का बीज जिसमें एक ही बड़ा बीज होता हो। जैसे—आम की गुठली।

गुड़ंबा—संज्ञा पुं० [हिं० गुड़ + अँब, आम] उबालकर शीरे में डाला हुआ कच्चा आम।

गुड़—संज्ञा पुं० [सं०] पकाकर जमाया हुआ ऊख या खजूर का रस जो बट्टी या भेली के रूप में होता है।
मुहा०—कुल्हिया में गुड़ फूटना = [illegible] से कोई कार्य होना। छिपे छिपे [illegible] होना।

गुड़गुड़—संज्ञा पुं० [अनु०] जल में नली आदि के [illegible] होता है, जैसा हुक्के [illegible]

गुड़गुड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] गुड़गुड़ शब्द होना।
क्रि० स० [अनु०] हुक्का पीना।
गुड़गुड़ाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना + हट (प्रत्य०)] गुड़गुड़ शब्द होने का भाव।
गुड़गुड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना] एक प्रकार का हुक्का। पेचवान। फ़रशी।
गुड़धानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़ + धान] वह लड्डू जो भुने हुए गेहूँ को गुड़ में पागकर बाँधे जाते हैं।
गुड़रू–संज्ञा पुं० [देश०] एक चिड़िया। गडुरी।
गुड़हर–संज्ञा पुं० [हिं० गुड़ + हर] १. अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा। २. एक छोटा वृक्ष।
गुड़हल–संज्ञा पुं० दे० "गुड़हर"।
गुड़ाकू–संज्ञा पुं० [हिं० गुड़] गुड़ मिला हुआ पीने का तमाकू।
गुडाकेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. अर्जुन।
गुड़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड़ या गुड्डा] कपड़ों की बनी हुई पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं।
मुहा०—गुड़ियों का खेल = सहज काम।
गुड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुड्डी] पतंग। चंग। कनकौवा। गुड्डी।
गुडूची–संज्ञा स्त्री० [सं०] गुरुच। गिलोय।
गुड्डा–संज्ञा पुं० [सं० गुड़ = खेलने की गोली] गुड़वा। कपड़े का बना हुआ पुतला।
मुहा०—गुड्डा बाँधना = अपकीर्ति करते फिरना। निंदा करना।
संज्ञा पुं० † [हिं० गुड्डी] बड़ी पतंग।
गुड्डी–संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु + उड्डीन] पतंग। कनकौवा। चंग।
संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] १. घुटने की हड्डी। २. एक प्रकार का छोटा हुक्का।
गुढ़ा–संज्ञा पुं० [सं० गूढ़] १. छिपने की जगह। गुप्त स्थान। २. मवास।
गुण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुणी] १. किसी वस्तु में पाई जानेवाली वह बात जिसके द्वारा वह वस्तु दूसरी वस्तु से पहचानी जाय। धर्म। सिफ़त। २. प्रकृति के तीन भाव—सत्त्व, रज और तम। ३. निपुणता। प्रवीणता। ४. कोई कला या विद्या। हुनर। ५. असर। तासीर। प्रभाव। ६. अच्छा स्वभाव। शील। सद्वृत्ति।
मुहा०—गुण गाना = प्रशंसा करना। तारीफ़ करना। गुण मानना = एहसान मानना। कृतज्ञ होना।
७. विशेषता। ख़ासियत। ८. तीन की संख्या। ९. प्रकृति। १०. व्याकरण में 'अ', 'ए' और 'ओ'। ११. रस्सी या तागा। डोरा। सूत। १२. धनुष की प्रत्यंचा।
प्रत्य० एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के आगे लगकर उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे—द्विगुण, चतुर्गुण।
गुणक–संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करें।
गुणकारक (कारी)–वि० [सं०] फ़ायदा करनेवाला। लाभदायक।
गुणगौरि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पतिव्रता स्त्री। २. सोहागिन स्त्री। ३. स्त्रियों का एक व्रत।
गुणग्राहक–संज्ञा पुं० [सं०] गुणियों का आदर करनेवाला मनुष्य। क़दरदान।
गुणग्राही–वि० दे० "गुणग्राहक"।
गुणज्ञ–वि० [सं०] १. गुण को पहचाननेवाला। गुण का पारखी। २. गुणी।
गुणन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गुण्य, गुणनीय, गुणित] १. गुणा करना। ज़रब देना। २. गिनना। तख़मीना करना। ३. उद्धरणी करना। रटना। ४. मनन करना। सोचना-विचारना।
गुणनफल–संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक या संख्या जो एक अंक को दूसरे अंक के साथ गुणा करने से आवे।
गुणना–क्रि० स० [सं० गुणन] ज़रब देना। गुणन करना।
गुणवत–वि० दे० "गुणवान्"।
गुणवाचक–वि० [सं०] जो गुण को प्रकट करे।
यौ०—गुणवाचक संज्ञा = व्याकरण में वह संज्ञा जिससे द्रव्य का गुण सूचित हो। विशेषण।
गुणवान्–वि० [सं० गुणवत्] [स्त्री० गुणवती] गुणवाला। गुणी।
गुणांक–संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिससे गुणा करना हो।

गुणा–संज्ञा पु० [सं० गुणन] [वि० गुण्य, गुणित] गणित की एक क्रिया। जरब।

गुणाढ्य–वि० [सं०] गुणपूर्ण। गुणी।

गुणानुवाद–संज्ञा पु० [सं०] गुण-कथन। प्रशंसा। तारीफ। बड़ाई।

गुणित–वि० [सं०] गुणा किया हुआ।

गुणी–वि० [सं० गुणिन्] गुणवाला। जिसमें कोई गुण हो।

संज्ञा पु० १ कलाकुशल पुरुष। हुनरमंद। २ झाड़ फूँक करनेवाला। ओझा।

गुणीभूत व्यंग्य–संज्ञा पु० [सं०] काव्य में वह व्यंग्य जो प्रधान न हो।

गुण्य–संज्ञा पु० [सं०] वह अंक जिसको गुणा करना हो।

गुत्थमगुत्था–संज्ञा पु० [हिं० गुथना] १ उलझाव। फँसाव। २ हाथापाई। भिड़ंत।

गुत्थी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुथना] वह गाँठ जो कई वस्तुओं के एक में गुथने से बने। गिरह। उलझन।

गुथना–क्रि० अ० [सं० गुत्सन] १ एक लड़ी या गुच्छे में नाथा जाना। २ टँकना। गाँथा जाना। ३ भद्दी सिलाई होना। टाँका लगना। ४ एक का दूसरे के साथ लड़ने के लिये एक में लिपट जाना।

गुथवाना–क्रि० स० [हिं० गूथना का प्रे०] गूथने का काम दूसरे से कराना।

गुथुवाँ–वि० [हिं० गुथना] जो गुँथकर बनाया गया हो।

गुदकार, गुदाकारा–वि० [हिं० गूदा या गुदार] १ गूदेदार। जिसमें गूदा हो। २. गुदगुदा। मोटा। मांसल।

गुदगुदा–वि० [हिं० गूदा] १ गूदेदार। मांस से भरा हुआ। २ मुलायम।

गुदगुदाना–क्रि० अ० [हिं० गुदगुदा] १ हँसाने या छेड़ने के लिये किसी के तलवे, कांख आदि को सहलाना। २ मन बहलाने या विनोद के लिये छेड़ना। ३ किसी में उत्कंठा उत्पन्न करना।

गुदगुदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुदगुदाना] १ वह सुरसुराहट या मीठी खुजली जो मांसल स्थानों पर उँगली आदि छू जाने से होती है। २ उत्कंठा। शौक। ३ आह्लाद। उल्लास। उमंग।

गुदड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गूथना] फटे पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ कपड़ा। कथा।

मुहा०—गुदड़ी में लाल=तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु।

गुदड़ी बाजार–संज्ञा पु० [हिं० गुदड़ी+फा० बाजार] वह बाजार जहाँ फटे पुराने कपड़े या टूटी फूटी चीजें बिकती हों।

गुदना–संज्ञा पु० दे० "गोदना"।

क्रि० अ० [हिं० गोदना] चुभना। धँसना।

गुदभ्रंश–संज्ञा पु० [सं०] काँच निकलने का रोग।

गुदरना†–क्रि० अ० [फा० गुजर+हिं० ना (प्रत्य०)] गुजरना। बीतना।

क्रि० स० निवेदन करना। पेश करना।

गुदरानना†–क्रि० स० [फा० गुजरान+हिं० ना (प्रत्य०)] १ पेश करना। सामने रखना। २. निवेदन करना।

गुदरैन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुदरना] १. पढ़ा हुआ पाठ शुद्धतापूर्वक सुनाना। जायजा। २ परीक्षा। इम्तहान।

गुदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मलद्वार। गाँड।

गुदाना–क्रि० स० [हिं० गोदना का प्रे०] गोदने की क्रिया कराना।

गुदार†–वि० [हिं० गूदा] गूदेदार।

गुदारा†–संज्ञा पु० [फा० गुजारा] १ नाव पर नदी पार करने की क्रिया। उतारा। २ दे० "गुजारा"।

गुद्दी†–संज्ञा पु० [हिं० गूदा] १. फल के बीज के भीतर का गूदा। मग्ज़। मींगी। गिरी। २ सिर का पिछला भाग। ३. हथेली का मांस।

गुन†–संज्ञा पु० दे० "गुण"।

गुनगुना–वि० दे० "कुनकुना"।

गुनगुनाना–क्रि० अ० [अनु०] १ गुन-गुन शब्द करना। २ नाक में बोलना। अस्पष्ट स्वर में गाना।

गुनना–क्रि० स० [सं० गुणन] १ गुणा करना। जरब देना। २ गिनना। तख-मीना करना। ३ उद्धरणी करना। रटना। ४ सोचना। चिंतन करना।

गुनहगार–वि० [फा०] १ पापी। २ दोषी। अपराधी।

गुनही†–संज्ञा पु० [फा० गुनाह] गुनहगार।

गुना–संज्ञा पु० [सं० गुणन] १ एक प्रत्यय जो किसी संख्या में लगकर किसी वस्तु का उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे–पाँचगुना। २ गुणा। (गणित)

गुनाह—सज्ञा पु० [फा०] १. पाप। २. दोष। कसूर। अपराध।
गुनाही—सज्ञा पु० दे० "गुनहगार"।
गनिया†—सज्ञा पु० [हिं० गुणी] गुणवान्।
गँनी—वि०, सज्ञा पु० दे० "गुणी"।
गँव—वि० दे० "घुप"।
गुपचुप—क्रि० वि० [हिं० गुप्त+चुप] बहुत गुप्त रीति से। छिपाकर। चुपचाप। सज्ञा पु० एक प्रकार की मिठाई।
गपाल—सज्ञा पु० दे० "गोपाल"।
गँपुत†—वि० दे० "गुप्त"।
गुप्त—वि० [स०] १. छिपा हुआ। पोशीदा। २. गूढ़। जिसके जानने में कठिनता हो। सज्ञा पु० [स०] वैश्यों का अल्ल।
गुप्तचर—सज्ञा पु० [स०] वह दूत जो किसी बात का चुपचाप भेद लेता हो। भेदिया। जासूस।
गुप्त दान—सज्ञा पु० [स०] वह दान जिसे देते समय दाता ही जाने और कोई न जाने।
गुप्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वह नायिका जो प्रेम छिपाने का उद्योग करती है। २. रक्खी हुई स्त्री। सुरेतिन। रखेली।
गुप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. छिपाने की क्रिया। २. रक्षा करने की क्रिया। ३. कारागार। केदखाना। ४. गुफा। ५. अहिंसा आदि योग के अंग। यम।
गुप्ती—सज्ञा स्त्री० [स० गुप्त] वह छड़ी जिसके अंदर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार हो।
गुफा—सज्ञा स्त्री० [स० गुहा] वह गहरा अँधेरा गड्ढा जो जमीन या पहाड़ के नीचे बहुत दूर तक चला गया हो। कंदरा। गुहा।
गुबरेला—सज्ञा पु० [हिं० गोबर+ऐला(प्रत्य०)] एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
गुबार—सज्ञा पु० [अ०] १. गर्द। धूल। २. मन में दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष आदि।
गबिंद—सज्ञा पु० दे० "गोविंद"।
गुब्बारा—सज्ञा पु० [हिं० कुप्पा] १. वह थैली जिसमें गरम हवा या हलकी गैस भरकर आकाश में उड़ाते हैं।
गुम—सज्ञा पु० [फा०] १. गुप्त। छिपा हुआ। २. अप्रसिद्ध। ३. खोया हुआ।
गुमटा—सज्ञा पु० [स० गुम्र+टा (प्रत्य०)] वह गोल सूजन जो माथे या सिर पर चोट लगने से होती है। गुलमी।
गुमटी—सज्ञा स्त्री० [फा० गुंबद] मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी या कमरों आदि की छत जो सबसे ऊपर उठी हुई होती है।
गुमना†—क्रि० अ० [फा० गुम] गुम होना। खो जाना।
गुमनाम—वि० [फा०] १. अप्रसिद्ध। अज्ञात। २. जिसमें नाम न दिया हो।
गुमर—सज्ञा पु० [फा० गुमान] १. अभिमान। घमंड। शेखी। २ मन में छिपाया हुआ क्रोध या द्वेष आदि। गुबार। ३. धीरे धीरे की बातचीत। कानाफूसी।
गुमराह—वि० [फा०] १ बुरे मार्ग में चलनेवाला। २. भूला भटका हुआ।
गुमान—सज्ञा पु० [फा०] १ अनुमान। क़यास। २. घमंड। अहंकार। गर्व। ३. लोगों की बुरी धारणा। बदगुमानी।
गमाना†—क्रि० स० दे० "गँवाना"।
गुमानी—वि० [हिं० गुमान] घमंडी। अहंकारी। गरूर करनेवाला।
गुमाश्ता—सज्ञा पु० [फा०] बड़े व्यापारी की ओर के खरीदने और बेचने पर नियुक्त मनुष्य। एजेंट।
गुम्मट—सज्ञा पु० [फा० गुंबद] गुंबद। सज्ञा पु० [स० गुल्म] दे० "गुमटा"।
गुम्मा—वि० [फा० गुम] चुप्पा। न बोलनेवाला।
गुर—सज्ञा पु० [स० गुरु मंत्र] वह साधन या क्रिया जिसके करते ही कोई काम तुरंत हो जाय। मूलमंत्र। भेद। युक्ति। †सज्ञा पु० दे० "गुड़"।
गुरगा—सज्ञा पु० [स० गुरग] [स्त्री० गुरगी] १. चेला। शिष्य। २. टहलुआ। नौकर। ३. गुप्तचर। जासूस।
गुरगाबी—सज्ञा पु० [फा०] मुंडा जूता।
गुरचा†—सज्ञा स्त्री० [हिं० गुच्च] सिकुड़न। बट। बल।
गुरचों—सज्ञा स्त्री० [अनु०] परस्पर धीरे धीरे बातें करना। कानाफूसी।
गुरदा—सज्ञा पु० [फा० स० गोर्द] १. रीढ़दार जीवों के अंदर का एक अंग जो कलेजे के निकट होता है। २. साहस। हिम्मत ३. एक प्रकार की छोटी तोप।

गुरमुख-वि० [हि० गुरु + मुख] जिसने गुरु से मंत्र लिया हो। दीक्षित।
गुराई-संज्ञा स्त्री० दे० "गोराई"।
गुराब-संज्ञा पु० [देश०] तोप लादने की गाड़ी।
गुरिंद-संज्ञा पु० [फा० गुर्ज] गदा।
गुरिया-संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] १ वह दाना या मनका जो माला का एक अंश हो। २ चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा। ३ मछली के मांस की बोटी।
गुरु-वि० [सं०] १ लंबे चौड़े आकारवाला। बड़ा। २ भारी। वजनी। ३ कठिनता से पकने या पचनेवाला। (खाद्य) संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० गुरुआनी] १ देवताओं के आचार्य, बृहस्पति। २ बृहस्पति नामक ग्रह। ३ पुष्य नक्षत्र। ४ यज्ञोपवीत संस्कार में गायत्री मंत्र का उपदेष्टा। आचार्य। ५ किसी मंत्र का उपदेष्टा। ६ किसी विद्या या कला का शिक्षक। उस्ताद। ७ दो मात्राओं-वाला अक्षर। (पिंगल) ८ ब्रह्म। ९ विष्णु। १० शिव।
गुरुआनी-संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु + आनी(प्रत्य०)] १ गुरु की स्त्री। २ वह स्त्री जो शिक्षा देती हो।
गुरुआई-संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु + आई (प्रत्य०)] १ गुरु का धर्म। २ गुरु का काम। ३ चालाकी। धूर्तता।
गुरुकुल-संज्ञा पु० [सं०] गुरु, आचार्य या शिक्षक के रहने का स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो।
गुरुच-संज्ञा स्त्री० [सं० गुडूची] एक प्रकार की मोटी बेल जो पेड़ों पर चढ़ी मिलती है और दवा के काम में आती है। गिलोय।
गुरुजन-संज्ञा पु० [सं०] बड़े लोग। माता पिता, आचार्य आदि।
गुरुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुरुत्व। भारीपन। २ महत्त्व। बड़प्पन। ३ गुरुपन। गुरुआई।
गुरुताई-संज्ञा स्त्री० दे० "गुरुता"।
गुरुतोमर-संज्ञा पु० [सं०] एक छंद।
गुरुत्व-संज्ञा पु० [सं०] १ भारीपन। वजन। बोझ। २ महत्त्व। बड़प्पन।
गुरुत्व केंद्र-संज्ञा पु० [सं०] किसी पदार्थ में वह बिंदु जिस पर समस्त वस्तु का भार एकत्र हुआ और कार्य्य करता हुआ मान सकते हैं।
गुरुत्वाकर्षण-संज्ञा पुं० [सं०] वह आकर्षण जिसके द्वारा भारी वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं।
गुरुदक्षिणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दक्षिणा जो विद्या पढ़ने पर गुरु को दी जाय।
गुरुद्वारा-संज्ञा पु० [सं० गुरु + द्वार] १ आचार्य या गुरु के रहने की जगह। २ सिक्खों का मंदिर।
गुरुभाई-संज्ञा पु० [सं० गुरु + हिं० भाई] एक ही गुरु के शिष्य।
गुरुमुख-वि० [सं० गुरु + मुख] दीक्षित। जिसने गुरु से मंत्र लिया हो।
गुरुमुखी-संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु + मुखी] गुरु नानक की चलाई हुई एक प्रकार की लिपि।
गुरुवार-संज्ञा पु० [सं०] बृहस्पति का दिन। बृहस्पति। बीफै।
गुरू-संज्ञा पु० [सं० गुरु] गुरु। अध्यापक।
यौ०—गुरू घंटाल = बड़ा भारी चालाक।
गुरेरना-क्रि० स० [सं० गुरु = बड़ा + हेरना] आँखें फाड़कर देखना। घूरना।
गुरेरा-संज्ञा पु० दे० "गुलेला"।
गुर्ज-संज्ञा पु० [फा०] गदा। सोंटा।
यौ०—गुर्जबरदार = गदाधारी सैनिक।
संज्ञा पु० दे० "बुर्ज"।
गुर्जर-संज्ञा पु० [सं०] १ गुजरात देश। २ गुजरात देश का निवासी। ३ गूजर।
गुर्जरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुजरात देश की स्त्री। २ भैरव राग की स्त्री। (रागिनी)
गुर्राना-क्रि० अ० [अनु०] १ डराने के लिये घुर घुर की तरह गंभीर शब्द करना। (जैसा कुत्ते, बिल्ली करते हैं।) २ क्रोध या अभिमान में कर्कश स्वर में बोलना।
गुर्विणी-वि० स्त्री० [सं०] गर्भवती।
गुल-संज्ञा पु० [फा०] १ गुलाब का फूल। २ फूल। पुष्प।
मुहा०—गुल खिलना = १ विचित्र घटना होना। २ बखेड़ा खड़ा होना।
३ पशुओं के शरीर में फूल के आकार का भिन्न रंग का गोल दाग। ४ वह गड्ढा जो गालों में हँसने आदि के समय [illegible] है। ५ शरीर पर गरम धातु से

से पड़ा हुआ चिह्न। दाग। छाप। ६. दीपक में बत्ती का वह अंश जो जलकर उभर आता है।
मुहा०—(चिराग) गुल करना = (चिराग) बुझाना या ठंढा करना।
७. तमाकू का जला हुआ अंश। जट्टा। ८. किसी चीज पर बना हुआ भिन्न रंग का कोई गोल निशान। ९. जलता हुआ कोयला।
संज्ञा पु० कनपटी।
गुल-संज्ञा पु० [फा०] शोर। हल्ला।
गुल अब्बास-संज्ञा पु० [फा० गुल+अ० अब्बास] एक पौधा जिसमें बरसात के दिनों में लाल या पीले रंग के फूल लगते हैं। गुलाबास।
गुलकंद-संज्ञा पु० [फा०] मिस्री या चीनी में मिलाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पँखरियाँ जिनका व्यवहार प्रायः दस्त साफ लाने के लिये होता है।
गुलकारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] बेलबूटे का काम।
गुलकेश-संज्ञा पु० [फा० गुल+केश] मुर्गकेश का पौधा या फूल। जटाधारी।
गुलखैरू-संज्ञा पु० [फा० गुल+खैरू] एक पौधा जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं।
गुलगपाड़ा-संज्ञा पु० [अ० गुल+गप्प] बहुत अधिक चिल्लाहट। शोर। गुल।
गुलगुल-वि० [हिं० गुलगुला] नरम। मुलायम। कोमल।
गुलगुला-वि० पु० दे० "गुलगुल"।
संज्ञा पु० [हिं० गोल+गोला] १. एक मीठा पकवान। २. कनपटी। गंडस्थल।
गुलगुलाना†-क्रि० स० हिं०गुलगुल] गूदेदार चीज को दबा या मलकर मुलायम करना।
गुलगोथना-संज्ञा पु० [हिं० गुलगुल+तन] ऐसा नाटा-मोटा आदमी जिसके गाल आदि अंग खूब फूले हुए हों।
गुलचा संज्ञा पु० [हिं० गाल] धीरे से प्रेमपूर्वक गालों पर किया हुआ हाथ का आघात।
गुलचाना गुलचियाना†-क्रि० स० [हिं० गुलचा+ना] गुलचा मारना।
गुलछर्रा-संज्ञा पु० [हिं० गोली+छर्रा] वह भोग-विलास या चैन जो बहुत स्वच्छंदतापूर्वक और अनुचित रीति से किया जाय।
[गुलज़]ार-संज्ञा पु० [फा०] बाग। वाटिका।
वि० हरा-भरा। आनंद और शोभा-युक्त।
गुलझटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल+सं० झट= जमाव] १. उलझन की गाँठ। २. सिकुड़न। शिकन।
गुलथी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल+सं० अस्थि] १. पानी ऐसी पतली वस्तुओं के गाढ़े होकर स्थान स्थान पर जमने से बनी हुई गुठली या गोली। २. मांस की गाँठ।
गुलदस्ता-संज्ञा पु० [फा०] सुंदर फूलों और पत्तियों का एक में बँधा समूह। गुच्छा।
गुलदाउदी-संज्ञा स्त्री० [फा० गुल+दाऊदी] एक छोटा पौधा जो सुंदर गुच्छेदार फूलों के लिये लगाया जाता है।
गुलदान-संज्ञा पु० [फा०] गुलदस्ता रखने का पात्र।
गुलदार-संज्ञा पु० [फा०] १. एक प्रकार का सफेद कबूतर। २. एक प्रकार का कशीदा।
वि० दे० "फूलदार"।
गुलदुपहरिया-संज्ञा पु० [फा० गुल+हिं० दुपहरिया] एक छोटा सीधा पौधा जिसमें कटोरे के आकार के गहरे लाल रंग के सुंदर फूल लगते हैं।
गुलनार-संज्ञा पु० [फा०] १. अनार का फूल। २. अनार के फूल का सा गहरा लाल रंग।
गुलबकावली-संज्ञा स्त्री० [फा० गुल+सं० बकावली] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसमें सुंदर सफेद सुगंधित फूल लगते हैं।
गुलबदन-संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।
गुलमेंहदी-संज्ञा स्त्री० [फा० गुल+हिं० मेंहदी] एक प्रकार के फूल का पौधा।
गुलमेख-संज्ञा स्त्री० [फा०] वह कील जिसका सिरा गोल होता है। फुलिया।
गुललाला-संज्ञा पु० [फा०] १. एक प्रकार का पौधा। २. इस पौधे का फूल।
गुलशन-संज्ञा पु० [फा०] वाटिका। बाग।
गुलशब्बो-संज्ञा स्त्री० [फा०] लहसुन से मिलता जुलता एक छोटा पौधा। रजनीगंधा। सुगंधरा। सुगंधिराज।
गुलहजारा-संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का गुललाला।
गुलाब-संज्ञा पु० [फा०] १. एक झाड़ या

कँटीला पौधा जिसमें बहुत सुंदर सुगंधित फूल लगते हैं। २. गुलाबजल।

गुलाबजामुन—संज्ञा पुं० [हिं० गुलाब + हिं० जामुन] १. एक मिठाई। २. एक पेड़ जिसका स्वादिष्ट फल नीबू के बराबर पर कुछ चपटा होता है।

गुलाबपाश—संज्ञा पुं० [हिं० गुलाब + फा० पाश] मारी के आकार का एक लंबा पात्र जिसमें गुलाबजल भरकर छिड़कते हैं।

गुलाब बाड़ी—संज्ञा स्त्री० [फा० गुलाब + हिं० बाड़ी] वह आमोद या उत्सव जिसमें कोई स्थान गुलाब के फूलों से सजाया जाता है।

गुलाबी—वि० [फा०] १. गुलाब के रंग का। २. गुलाब संबंधी। ३. गुलाबजल से बसाया हुआ। ४. थोड़ा या कम। हलका। संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलका लाल रंग।

गुलाम—संज्ञा पुं० [अ०] १ मोल लिया हुआ दास। खरीदा हुआ नौकर। २ साधारण सेवक। नौकर।

गुलामी—संज्ञा स्त्री० [अ० गुलाम + ई (प्रत्य०)] १. गुलाम का भाव। दासत्व। २ सेवा। नौकरी। ३. पराधीनता। परतंत्रता।

गुलाल—संज्ञा पुं० [फा० गुलाला] एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे हिंदू होली के दिनों में एक दूसरे के चेहरों पर मलते हैं।

गुलाला—संज्ञा पुं० दे० "गुललाला"।

गुलिस्ताँ—संज्ञा पुं० [फा०] बाग़। वाटिका।

गुलूबंद—संज्ञा पुं० [फा०] १. लंबी और प्रायः एक बालिश्त चौड़ी पट्टी जो सरदी से बचने के लिये सिर, गले या कानों पर लपेटते हैं। २. गले का एक गहना।

गुलेनार—संज्ञा पुं० दे० "गुलनार"।

गुलेल—संज्ञा स्त्री० [फा० गिलूल] वह कमान या धनुष जिसमें मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुलेला—संज्ञा पुं० [फा० गुलूला] १. मिट्टी की गोली जिसको गुलेल से फेंककर चिड़ियों का शिकार किया जाता है। २. गुलेल।

गुल्फ—संज्ञा पुं० [सं०] एँड़ी के ऊपर की गाँठ।

गुल्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले और जिसमें कड़ी लकड़ी या डंठल न हो। जैसे, ईख, शर, आदि। २. सेना का एक समुदाय जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल होते हैं। ३. पेट का एक रोग।

गुल्लक—संज्ञा स्त्री० दे० "गोलक"।

गुल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० गोला] मिट्टी की बनी हुई गोली जो गुलेल से फेंकते हैं। संज्ञा पुं० [अ० गुल] शोर। हल्ला। संज्ञा पुं० दे० "गुलेल"।

गुल्लाला—संज्ञा पुं० [फा० गुले लाला] एक प्रकार का लाल फूल जिसका पौधा पोस्ते के पौधे के समान होता है।

गुल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० गुलिका = गुठली] १. फल की गुठली। २ महुए की गुठली। ३. किसी वस्तु का कोई लंबोतरा छोटा टुकड़ा जिसका पेटा गोल हो। ४ छत्ते में वह जगह जहाँ मधु होता है।

गुवाक—संज्ञा पुं० [सं०] सुपारी।

गुवाल—संज्ञा पुं० दे० "ग्वाल"।

गुविंद†—संज्ञा पुं० दे० "गोविंद"।

गुसाँई†—संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं"।

गुसा†—संज्ञा पुं० दे० "गुस्सा"।

गुस्ताख—वि० [फा०] बड़ों का संकोच न रखनेवाला। धृष्ट। अशालीन। अशिष्ट।

गुस्ताखी—संज्ञा स्त्री० [फा०] धृष्टता। ढिठाई। अशिष्टता। बेअदबी।

गुस्ल—संज्ञा पुं० [अ०] स्नान। नहाना।

गुस्लखाना—संज्ञा पुं० [अ० गुस्ल + फा० खाना] स्नानागार। नहाने का घर।

गुस्सा—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० गुस्सावर, गुस्सैल] क्रोध। कोप। रिस।

मुहा०—गुस्सा उतरना या निकलना = क्रोध शांत होना। (किसी पर) गुस्सा उतारना = १. क्रोध में जो इच्छा हो, उसे पूर्ण करना। अपने कोप का फल चखाना। गुस्सा चढ़ना = क्रोध का आवेश होना।

गुस्सैल—वि० [अ० गुस्सा + हिं० ऐल (प्रत्य०)] जिसे जल्दी क्रोध आवे। गुस्सावर।

गुह—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्तिकेय। २. अश्व। घोड़ा। ३. विष्णु का एक नाम। ४. निषाद जाति का एक नायक जो राम का मित्र था। ५. गुफा। ६. हृदय। †संज्ञा पुं० [सं० गुह्य] गूह। मैला।

गुहना†—क्रि० स० दे० "गूँथना"।

गुहराना†—क्रि० स० [हिं० गुहार] पुकारना। चिल्लाकर बुलाना।

गुहवाना—क्रि० स० [हिं० ...] गुहने का काम कराना

गुहांजनी-संज्ञा स्त्री [सं० गुह्य+अञ्जन] आँख की पलक पर होनेवाली फुड़िया। बिलनी।

गुहा-संज्ञा स्त्री० [सं०] गुफा। कंदरा।

गुहाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० गुहाना] १. गुहने की क्रिया, ढंग या भाव। २. गुहने की मजदूरी।

गुहार-संज्ञा स्त्री० [सं० गो + हार] रक्षा के लिये पुकार। दोहाई।

गुह्य-वि० [सं०] १. गुप्त। छिपा हुआ। पोशीदा। २. गोपनीय। छिपाने योग्य। ३. गूढ़। जिसका तात्पर्य्य सहज में न खुले।

गुह्यक-संज्ञा पु० [सं०] वे यक्ष जो कुबेर के खजानों की रक्षा करते हैं।

गुह्यपति-संज्ञा पु० [सं०] कुबेर।

गूँगा-वि० [फा० गुँग=जो बोल न सके] [स्त्री० गूँगी] जो बोल न सके। जिसे वाणी न हो। मूक।

मुहा०—गूँगे का गुड़=ऐसी बात जिसका अनुभव हो, पर वर्णन न हो सके।

गूँज-संज्ञा स्त्री० [सं० गुंज] १. भौंरों के गूँजन का शब्द। कलध्वनि। गुंजार। २. प्रतिध्वनि। व्याप्तध्वनि। ३. लट्टू की कील। ४. कान की बालियों में लपेटा हुआ पतला तार।

गूँजना-क्रि० अ० [सं० गुंजन] १. भौंरों या मक्खियों का मधुर ध्वनि करना। गुंजारना। २ प्रतिध्वनित होना। शब्द से व्याप्त होना।

गूँथना-क्रि० स० दे० "गूथना"।

गूँधना-क्रि० स० [सं० गुध=क्रीडा] पानी में सानकर हाथों से दबाना या मलना। माड़ना। मसलना।

क्रि० स० [सं० गुम्फन] गूथना। पिरोना।

गूजर-संज्ञा पु० [सं० गुर्जर] [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] अहीरों की एक जाति। ग्वाला।

गूजरी-संज्ञा स्त्री० [सं० गुर्जरी] १. गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। २. पैर में पहनने का एक जेवर। ३ एक रागिनी।

गूझा-संज्ञा पु० [सं० गुह्यक] [स्त्री० गुझिया] १. गोझा। बड़ी पिराक। †२. फलों के भीतर का रेशा।

गूढ़-वि० [सं०] १ गुप्त। छिपा हुआ। २. जिसमें बहुत सा अभिप्राय छिपा हो। अभिप्राय-गर्भित। गंभीर। ३. जिसका आशय जल्दी समझ में न आवे। कठिन।

[illegible]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुप्तता। छिपाव। पोशीदगी। २. कठिनता।

गूढ़ोक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें कोई गुप्त बात किसी दूसरे के ऊपर छोड़ किसी तीसरे के प्रति कही जाती है।

गूढ़ोत्तर-संज्ञा पु० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न का उत्तर कोई गूढ़ अभिप्राय या मतलब लिए हुए दिया जाता है।

गूथना-क्रि० स० [सं० ग्रथन] १ कई चीज़ों को एक गुच्छे या लड़ी में नाथना। पिरोना। २. सूई तागे से टाँकना।

गूदड़-संज्ञा पु० [हिं० गूथना] [स्त्री० गूदड़ी] चिथड़ा। फटा पुराना कपड़ा।

गूदा-संज्ञा पु० [सं० गुप्त] [स्त्री० गूदी] १. फल के भीतर का वह अंश जिसमें रस आदि रहता है। २. भेजा। मग्ज। खोपड़ी का सार भाग। ३. मींगी। गिरी।

गून-संज्ञा स्त्री० [सं० गुण] वह रस्सी जिससे नाव खींचते हैं।

गूमा-संज्ञा पु० [सं० कुंभा] एक छोटा पौधा। द्रोणपुष्पी।

गूलर-संज्ञा पु० [सं० उदुंबर ?] वट वर्ग का एक बड़ा पेड़ जिसमें लड्डू के से गोल फल लगते हैं। उदुंबर। ऊमर।

मुहा०—गूलर का फूल=वह जो कभी देखने में न आवे। दुर्लभ व्यक्ति या वस्तु।

गूह-संज्ञा पु० [सं० गुह्य] गलीज। मल। मैला। विष्ठा।

गृध्र-संज्ञा पु० [सं०] १. गिद्ध। गीध। २. जटायु, संपाति आदि पौराणिक पक्षी।

गृह-संज्ञा पु० [सं०] [वि० गृही] १ घर। मकान। निवास-स्थान। २. कुटुंब। वंश।

गृहजात-संज्ञा पु० [सं०] वह दास जो घर की दासी से पैदा हो। घर-जाया।

गृहप, गृहपति-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० गृहपत्नी] १ घर का मालिक। २. अग्नि।

गृहयुद्ध-संज्ञा पु० [सं०] १. घर के भीतर का झगड़ा। २. किसी देश के भीतर ही आपस में होनेवाली लड़ाई।

गृहस्थ-संज्ञा पु० [सं०] १. ब्रह्मचर्य्य के उपरांत विवाह करके दूसरे आश्रम में रहने वाला व्यक्ति। ज्येष्ठाश्रमी। २. घरबार-वाला। बाल-बच्चोंवाला आदमी। †३. वह जिसके यहाँ खेती होती हो।

गृहस्थाश्रम-संज्ञा पु० [सं०] चार आश्रमों

में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके रहते और घर का काम-काज देखते हैं।

गृहस्थी–संज्ञा स्त्री० [सं० गृहस्थ + ई (प्रत्य०)] १. गृहस्थाश्रम। गृहस्थ का कर्त्तव्य। २. घरबार। गृह-व्यवस्था। ३. कुटुंब। लड़के-वाले। ४. घर का सामान। माल-असबाब। † ५. खेती बारी।

गृहिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घर की मालिकिन। २. भार्या। स्त्री।

गृही–संज्ञा पुं० [सं० गृहिन्] [स्त्री० गृहिणी] गृहस्थ। गृहस्थाश्रमी।

गृह्य–वि० [सं०] गृह संबंधी।

गृह्यसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह वैदिक पद्धति जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार करते हैं।

गेंठी–संज्ञा स्त्री० [सं० गृष्टि] वाराही कंद।

गेंड़|–संज्ञा पुं० [सं० काड] ऊख के ऊपर का पत्ता। अगौरा।
संज्ञा पुं० [सं० गेण्ड] घेरा। अहाता।

गेंडना–क्रि० स० [हिं० गेंड] १. खेतों को मेड़ से घेरकर हद बांधना। २. अन्न रखने के लिये गेंद बनाना। ३. घेरना। गोठना।

गेंडली–संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] कुंडल। फेंटा। जैसे—साँप की गेंडली।

गेंडा–संज्ञा पुं० [सं० कांड] १. ईख के ऊपर के पत्ते। अगौरी। २. ईख। गन्ना।

गेंडुआ|–संज्ञा पुं० [सं० गेंडुक = तकिया] १. तकिया। सिरहाना। २. बड़ा गेंद।

गेंडुरी–संज्ञा स्त्री० [सं० कुंडली] १. रस्सी का बना हुआ मेंडरा जिस पर घड़ा रखते हैं। इँडुरी। विड़वा। २ फेंटा। कुंडली। ३. साँपों का कुंडलाकार बैठना।

गेंद–संज्ञा पुं० [सं० गेंडुक, कंदुक] १. कपड़े, रबर या चमड़े का गोला जिससे लड़के खेलते हैं। कंदुक। २. कालिब। कलबूत।

गेंदवा|–संज्ञा पुं० [सं० गेंडुक] तकिया।

गेंदा–संज्ञा पुं० [हिं० गेंदा] एक पौधा जिसमें पीले रंग के फूल लगते हैं।

गेंदुकः–संज्ञा पुं० [सं० गेंडुक] गेंद।

गेंदुवा–संज्ञा पुं० [सं० गेंडुक] गेंडुआ। उसीसा। तकिया। गोलतकिया।

गेडना–क्रि० स० [सं० गड = चिह्न। हिं० गड़ा] १. लकीर से घेरना। २. परिक्रमा करना। चारों ओर घूमना।

गेय–वि० [सं०] गाने के लायक।

गेरना|‡–क्रि० स० [सं० गलन या गिरण] १. गिराना। नीचे डालना। २ ढालना। ढेडेलना। ३. डालना।

गेरुआ–वि० [हिं० गेरू + आ (प्रत्य०)] १. गेरू के रंग का। मटमैलापन लिए लाल रंग का। २. गेरू में रँगा हुआ। गैरिक। जोगिया। भगवा।

गेरू–संज्ञा स्त्री० [सं० गवेरुक] एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी जो खानों से निकलती है। गिरमाटी। गैरिक।

गेह–संज्ञा पुं० [सं० गृह] घर। मकान।

गेहनीः–संज्ञा स्त्री० [हिं० गेह] घरवाली। गृहिणी।

गेहीः–संज्ञा पुं० [हिं० गेह] गृहस्थ।

गेहुँअन–संज्ञा पुं० [हिं० गेहूँ] मटमैले रंग का एक अत्यंत विषधर फनदार साँप।

गेहुँआ–वि० [हिं० गेहूँ] गेहूँ के रंग का। बादामी।

गेहूँ–संज्ञा पुं० [सं० गोधूम] एक प्रसिद्ध अनाज जिसके चूर्ण की रोटी बनती है।

गैंडा–संज्ञा पुं० [सं० गण्डक] भैंसे के आकार का एक पशु जो ऐसे दलदलों और कछारों में रहता है जहाँ जंगल होता है।

गैनः–संज्ञा पुं० [सं० गमन] गैल। मार्ग।
ः संज्ञा पुं० दे० "गगन"।

ग़ैब–संज्ञा पुं० [अ०] परोक्ष। वह जो सामने न हो।

ग़ैबी–वि० [अ० ग़ैब] १. गुप्त। छिपा हुआ। २. अजनबी। अज्ञात।

गैयरः–संज्ञा पुं० [सं० गजवर] हाथी।

गैया–संज्ञा स्त्री० [सं० गो] गाय।

ग़ैर–वि० [अ०] १. अन्य। दूसरा। २. अजनबी। अपने कुटुंब या अपने समाज से बाहर का (व्यक्ति)। पराया। ३. विरुद्ध अर्थवाची या निषेध वाचक शब्द। जैसे—ग़ैरमुमकिन, ग़ैरहाज़िर।

गैर–संज्ञा स्त्री० [अ०] अत्याचार। अंधेर।

ग़ैरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] लज्जा। हया।

ग़ैरमनकूला–वि० [अ०] जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर न ले जा सकें। स्थिर। अचल।

ग़ैरमामूली–वि० [अ०] असाधारण।

ग़ैरमुनासिब–वि० [अ०] अनुचित।

ग़ैरमुमकिन–वि० [अ०] असंभव।

ग़ैरवाजिब–वि० [अ०] अयोग्य। अनुचित।

गैरहाज़िर-वि० [अ०] अनुपस्थित ।
गैरहाज़िरी-संज्ञा स्त्री० [अ०] अनुपस्थिति ।
गैरिक-संज्ञा पु० [सं०] १. गेरू । २. सोना ।
गैल-संज्ञा स्त्री० [हिं० गली] मार्ग । रास्ता ।
गोंठ-संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] धोती की लपेट जो कमर पर रहती है । मुर्री ।
गोंठना-क्रि० स० [सं० कुंठन] १. किसी वस्तु की नोक या कोर गुठली कर देना । २ गोझे या पुवे की कोर को मोड़ मोड़कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना ।
क्रि० स० [सं० गोष्ठ] चारों ओर से घेरना ।
गोंड-संज्ञा पु० [सं० गोंड] १. एक असभ्य जाति जो मध्य प्रदेश में पाई जाती है। २ वंग और भुवनेश्वर के बीच का देश ।
गोंडरा-संज्ञा पु० [सं० कुंडल] [स्त्री० गोंडरी] १. लोहे का मँडरा जिस पर मोट का चरसा लटकता है । २ कुंडल के आकार की वस्तु । मँडरा । ३. गोल घेरा ।
गोंड़ा-संज्ञा पु० [सं० गोष्ठ] १ बाड़ा । घेरा हुआ स्थान । (विशेषकर चौपायों के लिये ।) २. पुरा । गाँव । खेड़ा ।
गोंद-संज्ञा पु० [सं० कुंदुरु या हिं० गूदा] पेड़ों के तने से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार पसेव । लासा । निर्यास ।
यौ०—गोंददानी=वह बरतन जिसमें गोंद भिगाकर रखा रहे ।
गोंदपँजीरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गोंद + पँजीरी] गोंद मिली हुई पँजीरी जिसे प्रसूता स्त्रियों को खिलाते हैं ।
गोंदरी-संज्ञा स्त्री० [सं० गुंद्रा] १. पानी में होनेवाली एक घास । २. इस घास की बनी हुई चटाई ।
गोंदी-संज्ञा स्त्री० [सं० गोंदली = प्रियंगु] १. मौलसिरी की तरह का एक पेड़ । २. इंगुदी । हिंगोट ।
गो-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गाय । गऊ । २. किरण । ३. वृष राशि । ४. इंद्रिय । ५. बोलने की शक्ति । वाणी । ६. सरस्वती । ७ आँख । दृष्टि । ८ बिजली । ६. पृथ्वी । जमीन । १०. दिशा । ११. माता । जननी । १२. बकरी, भैंस भेड़ी इत्यादि दूध देनेवाले पशु । १३ जीभ । ज़बान ।
संज्ञा पु० [सं०] १. बैल । २. नंदी नामक शिवगण । ३. घोड़ा । ४ सूर्य । [च]द्रमा । ६. बाण । तीर । ७ आकाश । ८ स्वर्ग । ६ जल । १०. वज्र । ११. शब्द । १२ नौ का अंक ।
अव्य० [फा०] यद्यपि ।
यौ०—गोकि = यद्यपि । गो ।
प्रत्य० [फा०] कहनेवाला । (यौ० में)
गोइँठा-संज्ञा पु० [सं० गो + विष्ठा] ईंधन के लिये सुखाया हुआ गोबर । उपला । कंडा । गोहरा ।
गोइंदा-संज्ञा पु० [फा०] गुप्त भेदिया । गुप्तचर । जासूस ।
गोइ-संज्ञा पु० दे० "गोय" ।
गोइयाँ-संज्ञा पु० स्त्री० [हिं० गोहनिया] साथ में रहनेवाला । साथी । सहचर ।
गोई-संज्ञा स्त्री० दे० "गोइयाँ" ।
गोऊ †-वि० [हिं० गोना + ऊ (प्रत्य०)] चुरानेवाला । छिपानेवाला ।
गोकर्ण-संज्ञा पु० [सं०] १. हिंदुओं का एक शैव क्षेत्र जो मलाबार में है । २. इस स्थान में स्थापित शिवमूर्ति ।
वि० [सं०] गऊ के से लंबे कानवाला ।
गोकर्णी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता । मुरहरी । चुरनहार ।
गोकुल-संज्ञा पु० [सं०] १. गौओं का झुंड । गो-समूह । २. गोशाला । ३ एक प्राचीन गाँव जो वर्तमान मथुरा से पूर्व-दक्षिण की ओर है ।
गोकोस-संज्ञा पु० [सं० गो + क्रोश] १. उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुन पड़े । २. छोटा कोस ।
गोक्षुर-संज्ञा पु० दे० "गोखरू" ।
गोखरू-संज्ञा पु० [सं० गोक्षुर] १. एक प्रकार का क्षुप जिसमें चने के आकार के कड़े और कँटीले फल लगते हैं । २. धातु के गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के लिये उनके रास्ते में फैला दिए जाते हैं । ३. गोटे और बादले के तारों से गूथकर बनाया हुआ एक साज़ । ४. कड़े के आकार का एक आभूषण ।
गोखा-संज्ञा पु० दे० "झरोखा" ।
गोग्रास-संज्ञा पु० [सं०] पके हुए अन्न का वह थोड़ा सा भाग जो भोजन या श्राद्धादिक के आरंभ में गौ के लिये निकाला जाता है ।
गोचर-संज्ञा पु० [सं०] १. वह विषय जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो सके । २. गौओं के चरने का स्थान । चरागाह । चरी ।

गोज़–संज्ञा पुं० [फ़ा०] अपान वायु। पाद।
गोजर–संज्ञा पुं० [सं० गर्ज] कनखजूरा।
गोजी†–संज्ञा स्त्री० [सं० गवाजन] १. गौ हाँकने की लकड़ी। २. बड़ी लाठी। लट्ठ।
गोझनवट†–संज्ञा स्त्री० [देश०] स्त्रियों की साड़ी का अंचल। पल्ला।
गोझा–संज्ञा पुं० [सं० गुह्यक] [स्त्री० अल्पा० गोझिया, गुझिया] १. गुझिया नामक पकवान। पिराक। २. एक प्रकार की कँटीली घास। गुल्मा। ३. जेब। खलीता।
गोट–संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] १. वह पट्टी या फीता जिसे किसी कपड़े के किनारे लगाते हैं। मगजी। २. किसी प्रकार का किनारा।
संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठी] मंडली। गोष्ठी।
संज्ञा स्त्री० [सं० गुटक] चौपड़ का मोहरा। नरद। गोटी।
गोटा–संज्ञा पुं० [हिं० गोट] १. बादले का बुना हुआ पतला फीता जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है। २. धनिया की सादी या भुनी हुई गिरी। ३. छोटे टुकड़ों में कतरी और एक में मिली इलायची, सुपारी और खरबूजे बादाम की गिरी। ४. सूखा हुआ मल। कंडी। सुद्दा।
गोटी–संज्ञा स्त्री० [सं० गुटिका] १. कंकड़, गेरू, पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा जिससे लड़के अनेक प्रकार के खेल खेलते हैं। २. चौपड़ खेलने का मोहरा। नरद। ३. एक खेल जो गोटियों से खेला जाता है। ४. लाभ का आयोजन।
मुहा०—गोटी जमना या बैठना=१. युक्ति सफल होना। २. आमदनी की सूरत होना।
गोठ–संज्ञा स्त्री० [सं० गोष्ठ] १. गोशाला। गोस्थान। २. गोष्ठी। श्राद्ध। ३. सैर।
गोड़†–संज्ञा पुं० [सं० गम, गो] पैर।
गोड़इत–संज्ञा पुं० [हिं० गोड़ैत+ऐत (प्रत्य०)] गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार।
गोड़ना–क्रि० स० [हिं० कोड़ना] मिट्टी खोदना और उलट पुलट देना जिसमें वह पोली और भुरभुरी हो जाय। कोड़ना।
गोड़ा†–संज्ञा पुं० [हिं० गोड़] १. पलँग आदि का पाया। २. घोड़िया।
गोड़ाई–संज्ञा पुं० [हिं० गोड़ना] गोड़ने की क्रिया या मज़दूरी।
गोड़ाना–क्रि० स० [हिं० गोड़ना का प्रे०] गोड़ने का काम दूसरे से कराना।
गोड़ापाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोड़+पाई=जुलाहे का ढाँचा] बार बार आना-जाना।
गोड़ारी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोड़=पैर+आरी (प्रत्य०)] १. पलंग आदि का वह भाग जिधर पैर रहता है। पैताना। २. जूता।
गोड़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोड़] छोटा पैर।
गोणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टाट का दोहरा थैला। गोन। २. एक पुरानी माप।
गोत–संज्ञा पुं० [सं० गोत्र] १. कुल। वंश। खानदान। २. समूह। जत्था। गरोह।
गोतम–संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि।
गोतमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या।
गोता–संज्ञा पुं० [अ०] डूबने की क्रिया। डुब्बी।
मुहा०—गोता खाना=धोखे में आना। फरेब में आना। गोता मारना=१. डुबकी लगाना। डूबना। २. बीच में अनुपस्थित रहना।
गोताख़ोर–संज्ञा पुं० [अ०] डुबकी लगानेवाला। डुबकी मारनेवाला।
गोतिया–वि० दे० "गोती"।
गोती–वि० [सं० गोत्रीय] अपने गोत्र का। जिसके साथ शौचाशौच का संबंध हो। गोत्रीय। भाई-बंधु।
गोत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. संतति। संतान। २. नाम। ३. क्षेत्र। वर्त्म। ४. राजा का छत्र। ५. समूह। जत्था। गरोह। ६. बंधु। भाई। ७. एक प्रकार का जाति विभाग। ८. वंश। कुल। खानदान। ९. कुल या वंश की संज्ञा जो उसके किसी मूल पुरुष के अनुसार होती है।
गोदंती–संज्ञा स्त्री० [सं० गोदंत] १. सफ़ेद हरताल। २. एक रत्न।
गोद–संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड़] १. वह स्थान जो वक्षस्थल के पास एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने से बनता है और जिसमें प्रायः बालकों को लेते हैं। उत्संग। कोरा।
मुहा०—गोद का=छोटा बालक। बच्चा। गोद बैठना=दत्तक बनना।
२. अंचल।
मुहा०—गोद पसारकर=अत्यंत अधीनता से। गोद भरना=१. सौभाग्यवती स्त्री के

अंचल में नारियल आदि पदार्थ देना। २. संतान होना। औलाद होना।

गोदनहारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गोदना + हारी (प्रत्य०)] कंजड़ या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदने का काम करती है।

गोदना-क्रि० स० [हिं० खोदना] १. चुभाना। गड़ाना। २. किसी कार्य्य के लिये बार बार ज़ोर देना। ३. चुभती या लगती हुई बात कहना। ताना देना।
संज्ञा पु० तिल के आकार का काला चिह्न जो शरीर में नील या कोयले के पानी में डूबी हुई सूइयों से गोदकर बनता है।

गोदा-संज्ञा पु० [हिं० गोद] बड़, पीपल या पाकर के पक्के फल।

गोदान-संज्ञा पु० [सं०] १. गौ को विधि-वत् संकल्प करके ब्राह्मण को दान करने की क्रिया। २. केशांत संस्कार।

गोदाम-संज्ञा पु० [अ० गोडाउन] वह बड़ा स्थान जहाँ बहुत सा बिक्री का माल रखा जाता हो।

गोदावरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी।

गोदी-संज्ञा स्त्री० दे० "गोद"।

गोधन-संज्ञा पु० [सं०] १. गौओं का समूह। गौओं का झुंड। २. गौ रूपी संपत्ति। ३. एक प्रकार का तीर।
† संज्ञा पु० [सं० गोवर्द्धन] गोवर्द्धन पर्वत।

गोधा-संज्ञा स्त्री० [सं०] गोह नामक जंतु।

गोधूम-संज्ञा पु० [सं०] गेहूँ।

गोधूलि, गोधूली-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समय जब कि जंगल से चरकर लौटती हुई गौओं के खुरों से धूल उड़ने के कारण धुँधली छा जाय। संध्या का समय।

गोन-संज्ञा स्त्री० [सं० गोणी] १. टाट, कंबल, चमड़े आदि का बना दोहरा बोरा जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है। २. साधारण बोरा। खास।
संज्ञा स्त्री० [सं० गुण] रस्सी जिसे नाव खींचने के लिये मस्तूल में बाँधते हैं।

गोनर्द-संज्ञा पु० [सं०] १. नागरमोथा। २. सारस पक्षी। ३. एक प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतंजलि का जन्म हुआ था।

गोनस-संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रकार का साँप। २. वैक्रांत मणि।

गोना*-क्रि० स० [सं० गोपन] छिपाना।

गोनिया-संज्ञा स्त्री० [सं० कोण] दीवार या कोने आदि की सीध जाँचने का औज़ार।
संज्ञा पु० [हिं० गोन = बोरा + इया (प्रत्य०)] स्वयं अपनी पीठ पर या बैलों पर लादकर बोरे ढोनेवाला।

गोनी-संज्ञा स्त्री० [सं० गोणी] १. टाट का थैला। बोरा। २. पटुआ। सन। पाट।

गोप-संज्ञा पु० [सं०] १. गौ की रक्षा करनेवाला। २. ग्वाला। अहीर। ३. गोशाला का अध्यक्ष या प्रबंध करनेवाला। ४. भूपति। राजा। ५. गाँव का मुखिया।
संज्ञा पु० [सं० गुफ] गले में पहनने का एक आभूषण।

गोपन-संज्ञा पु० [सं०] १. छिपाव। दुराव। २ छिपाना। लुकाना। ३. रक्षा।

गोपना*†-क्रि० स० [सं० गोपन] छिपाना।

गोपनीय-वि० [सं०] छिपाने के लायक।

गोपांगना-संज्ञा स्त्री० [सं०] गोप जाति की स्त्री।

गोपा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गाय पालनेवाली, अहीरिन। ग्वालिन। २. श्यामा लता। ३. महात्मा बुद्ध की स्त्री का नाम।

गोपाल-संज्ञा पु० [सं०] १. गौ का पालन-पोषण करनेवाला। २. अहीर। ग्वाला। ३. श्रीकृष्ण। ४. एक छंद।

गोपालतापन, गोपालतापनीय-संज्ञा पु० [सं०] एक उपनिषद्।

गोपाष्टमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला अष्टमी।

गोपिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोप की स्त्री। गोपी। २. अहीरिन। ग्वालिन।

गोपी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ग्वालिनी। गोपपत्नी। २. श्रीकृष्ण की प्रेमिका व्रज की गोप जातीय स्त्रियाँ।

गोपीचंदन-संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की पीली मिट्टी।

गोपीनाथ-संज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

गोपुच्छ-संज्ञा पु० [सं०] १. गौ की पूँछ। २. एक प्रकार का गावदुमा हार।

गोपुर-संज्ञा पु० [सं०] १. नगर का द्वार। शहर का फाटक। २. किले का फाटक। ३. फाटक। दरवाजा। ४. स्वर्ग।

गोपेंद्र-संज्ञा पु० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २. गोपों में श्रेष्ठ, नंद।

गोफन, गोफना-संज्ञा पु० [सं० गोफण]

छींके के आकार का एक जाल जिससे ढेले आदि मारकर चलाते हैं। ढेलवांस। फन्नी।
गोफा–संज्ञा पु० [सं० गुंफ] नया निकला हुआ मुँहबँधा पत्ता।
गोबर–संज्ञा पु० [सं० गोमय] गाय की विष्ठा। गौ का मल
गोबरगणेश–वि० [हिं० गोबर + गणेश] १. भद्दा। बदसूरत। २. मूर्ख। बेवकूफ।
गोबरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोबर + ई (प्रत्य०)] १ कंडा। उपला। २. गोबर की लिपाई।
गोबरैला–संज्ञा पु० दे० "गुबरैला"।
गोभिल–संज्ञा पु० [सं०] सामवेदी गृह्य-सूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।
गोभी–संज्ञा स्त्री० [सं० गोजिह्वा या गुफ = गुच्छा] १. एक प्रकार की घास। गोजिया। बन-गोभी। २. एक प्रकार का शाक।
गोमती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक नदी। वाशिष्ठी। २. एक देवी। ३. ग्यारह मात्राओं का एक छंद।
गोमय–संज्ञा पु० [सं०] गौ का गू। गोबर।
गोमुख–संज्ञा पु० [सं०] १. गौ का मुँह। **मुहा०—गोमुख नाहर या व्याघ्र**=वह मनुष्य जो देखने में बहुत ही सीधा, पर वास्तव में बड़ा क्रूर और अत्याचारी हो।
२. वह शंख जिसका आकार गौ के मुँह के समान होता है। ३. नरसिंहा नाम का बाजा। ४. दे० "गोमुखी"।
गोमुखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं। जप-माली। जप-गुथली। २. गौ के मुँह के आकार का गंगोत्तरी का वह स्थान जहाँ से गंगा निकलती हैं।
गोमूत्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य।
गोमेद, गोमेदक–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रसिद्ध मणि या रत्न जो कुछ ललाई लिए पीला होता है। राहुरत्न।
गोमेध–संज्ञा पु० [सं०] एक यज्ञ जिसमें गौ से हवन किया जाता था।
गोय–संज्ञा पु० [फा०] गेंद।
गोया–क्रि० वि० [फा०] मानो।
गोर–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह गड्ढा जिसमें मृत शरीर गाड़ा जाय। कब्र।
† वि० [सं० गौर] गोरा।
गोरखइमली–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरख + इमली] एक बहुत बड़ा पेड़। कल्पवृक्ष।
गोरखधंधा–संज्ञा पु० [हिं० गोरख + धंधा] १. कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों इत्यादि का समूह जिनको विशेष युक्ति से परस्पर जोड़ या अलग कर लेते हैं। २. कोई ऐसी चीज या काम जिसमें बहुत झगड़ा या उलझन हो।
गोरखनाथ–संज्ञा पु० [हिं० गोरखनाथ] एक प्रसिद्ध अवधूत या हठयोगी।
गोरखपंथी–वि० [हिं० गोरखनाथ + पंथी] गोरखनाथ के चलाये हुए संप्रदायवाला।
गोरखमुंडी–संज्ञा स्त्री० [सं० मुण्डी] एक प्रकार की घास जिसमें घुंडी के समान गोल गुलाबी रंग के फूल लगते हैं।
गोरखर–संज्ञा पु० [फा०] गधे की जाति का एक जंगली पशु।
गोरखा–संज्ञा पु० [हिं० गोरख] १. नैपाल के अंतर्गत एक प्रदेश। २. इस देश का निवासी।
गोरज–संज्ञा पु० [सं०] गौ के खुरों से उड़ी हुई धूल।
गोरटा–वि० पु० [हिं० गोरा] [स्त्री० गोरटी] गोरे रंगवाला। गोरा।
गोरस–संज्ञा पु० [सं०] १. दूध। दुग्ध। २. दधि। दही। ३. तक्र। मठा। छाछ। ४. इंद्रियों का सुख।
गोरसी–संज्ञा स्त्री० [सं० गोरस + ई (प्रत्य०)] दूध गरम करने की अँगीठी।
गोरा–वि० [सं० गौर] सफेद और स्वच्छ वर्णवाला। जिसके शरीर का चमड़ा सफेद और साफ हो। (मनुष्य)
संज्ञा पु० युरोप, अमेरिका आदि देशों का निवासी। फिरंगी।
गोराई०†–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरा + ई या आई] १. गोरापन। २. सुंदरता। सौंदर्य।
गोरिल्ला–संज्ञा पु० [अफ्रिका] बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का बनमानुस।
गोरी–संज्ञा स्त्री० [सं० गौरी] सुंदर और गौर वर्ण की स्त्री। रूपवती स्त्री।
गोरू–संज्ञा पु० [सं० गो] सींगवाला पशु। चौपाया। मवेशी।
गोरोचन–संज्ञा पु० [सं०] पीले रंग का एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य जो गौ के पित्त में से निकलता है।
गोलंदाज़–संज्ञा पु० [फा०] तोप में गोला रखकर चलानेवाला। तोपची।

गोलंबर–संज्ञा पु० [हिं० गोल + अंबर] १. गुंबद । २. गुंबद के आकार का कोई गोल ऊँचा उठा हुआ पदार्थ । ३. गोलाई । ४. कलबूत । कालिब ।

गोल–वि० [सं०] १. जिसका घेरा या परिधि वृत्ताकार हो । चक्र के आकार का । वृत्ताकार । २. ऐसे घनात्मक आकार का जिसके पृष्ठ का प्रत्येक बिंदु उसके भीतर के मध्य बिंदु से समान अंतर पर हो । सर्ववर्त्तुल । गेंद आदि के आकार का ।
मुहा० –गोल गोल=१. स्थूल रूप से । मोटे हिसाब से । २. अस्पष्ट रूप से । साफ साफ नहीं । गोल बात=ऐसी बात जिसका अर्थ स्पष्ट न हो ।
संज्ञा पु० [सं०] १. मंडलाकार क्षेत्र । वृत्त । २. गोलाकार पिंड । गोला । वटक ।
संज्ञा पु० [फा० गोल] मंडली । झुंड ।

गोलक–संज्ञा पु० [सं०] १. गोलोक । २. गोल पिंड । ३. विधवा का जारज पुत्र । ४ मिट्टी का बड़ा कुंडा । ५. आँख का डेला । ६. आँख की पुतली । ७. गुंबद । ८. वह संदूक या थैली जिसमें धन संग्रह किया जाय । ९. गल्ला । गुल्लक । १०. वह धन जो किसी विशेष कार्य्य के लिये संग्रह करके रखा जाय । फंड ।

गोल गप्पा–संज्ञा पु० [हिं० गोल + अनु० गप] एक प्रकार की महीन और करारी घी में तली फुटकी ।

गोलमाल–संज्ञा पु० [सं० गोल (योग)] गड़बड़ । अव्यवस्था ।

गोल मिर्च–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल + सं० मरिच] काली मिर्च ।

गोलयंत्र–संज्ञा पु० [सं०] वह यंत्र जिससे ग्रहों, नक्षत्रों की गति और अयन परिवर्त्तन आदि जान जाते हों ।

गोलयोग–संज्ञा पु० [सं०] १. ज्योतिष में एक बुरा योग । २. गड़बड़ । गोलमाल ।

गोला–संज्ञा पु० [हिं० गोल] १. किसी पदार्थ का बड़ा गोलपिंड । जैसे—लोहे का गोला । २. लोहे का वह गोल पिंड जिसे तोपों की सहायता से शत्रुओं पर फेंकते हैं । ३ वायुगोला । ४ जंगली कबूतर । ५. नारियल की गिरी का गोल पिंड । गरी का गोला । ६. वह बाजार या मंडी जहाँ अनाज या किराने की बड़ी दूकानें हों । ७. लकड़ी का लंबा लट्ठा जो छाजन में लगाने तथा दूसरे कामों में आता है । कांड़ी । धल्ला । ८. रस्सी, सूत आदि की गोल लपेटी हुई पिंडी ।

गोलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल + आई (प्रत्य०)] गोल का भाव । गोलापन ।

गोलाकार, गोलाकृति–वि० [सं०] जिसका आकार गोल हो । गोल शक्लवाला ।

गोलार्द्ध–संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोबीच काटने से बनता है ।

गोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० गोला का अल्पा०] १. छोटा गोलाकार पिंड । वटिका । वटिया । २. औषध की वटिका । वटी । ३. मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोलपिंड जिससे बालक खेलते हैं । ४. गोली का खेल । ५ सीसे आदि का ढला हुआ छोटा गोल पिंड जो बंदूक में भरकर चलाया जाता है ।

गोलोक–संज्ञा पु० [सं०] कृष्ण का निवासस्थान जो सब लोकों से ऊपर माना जाता है ।

गोवना–क्रि० स० दे० "गोना" ।

गोवर्द्धन–संज्ञा पु० [सं०] वृंदावन का एक पवित्र पर्वत जिसे श्रीकृष्ण ने अपनी उँगली पर उठाया था ।

गोविंद–संज्ञा पु० [सं० गोपेंद्र, पा० गोविंद] १. श्रीकृष्ण । २. वेदांतवेत्ता । तत्वज्ञ ।

गोश–संज्ञा पु० [फा०] सुनने की इंद्रिय । कान ।

गोशमाली–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कान उमेठना । २. ताड़ना । कड़ी चेतावनी ।

गोशवारा–संज्ञा पु० [फा०] १. खजन नामक पेड़ का गोंद । २. कान का बाला । कुंडल । ३. बड़ा मोती जो सीप में अकेला हो । ४. कलाबत्तू से बुना हुआ पगड़ी का आँचल । ५. तुर्रा । कलगी । सिर पेच । ६. जोड़ । मीजान । ७ वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर एक मद का आय-व्यय अलग अलग दिखलाया गया हो ।

गोशा–संज्ञा पु० [फा०] १. कोना । अंतराल । २. एकांत स्थान । ३ तरफ । दिशा । ओर । ४. कमान की दोनों नोकें । धनुष्कोटि ।

गोशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] गौओं के रहने का स्थान । गोष्ठ ।

गोश्त—संज्ञा पुं० [फा०] मांस ।

गोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोशाला । २. परामर्श । सलाह । ३. दल । मंडली ।

गोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुत से लोगों का समूह । सभा । मंडली । २. वार्त्तालाप । बातचीत । ३. परामर्श । सलाह । ४. एक ही अंक का एक रूपक ।

गोसमावल—संज्ञा पुं० दे० "गोशवारा" ।

गोसाईं—संज्ञा पुं० [सं० गोस्वामी] १. गौओं का स्वामी या अधिकारी । २. ईश्वर । ३. सन्यासियों का एक संप्रदाय । ४. विरक्त साधु । अतीत । ५. मालिक । प्रभु ।

गोसैयाँ—संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं" ।

गोस्वामी—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो । जितेंद्रिय । २. वैष्णव संप्रदाय में आचार्यों के वंशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी ।

गोह—संज्ञा स्त्री० [सं० गोधा] छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु ।

गोहन०—संज्ञा पुं० [सं० गोधन] १. संग रहनेवाला । साथी । २. संग । साथ ।

गोहरा—संज्ञा पुं० [सं० गो+ईंध या गोहल्ल] [स्त्री० अल्पा० गोहरी] सुखाया हुआ गोबर । कंडा । उपला ।

गोहराना—क्रि० अ० [हिं० गोहार] पुकारना । बुलाना । आवाज़ देना ।

गोहार—संज्ञा स्त्री० [सं० गो+हार (हरण)] १. पुकार । दुहाई । रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाना । २. हल्ला गुल्ला । शोर ।

गोहारी—संज्ञा स्त्री० दे० "गोहार" ।

गोहीं०—संज्ञा स्त्री० [सं० गोपन] १. दुराव । छिपाव । २. छिपी हुई बात । गुप्त वार्त्ता ।

गौं—संज्ञा स्त्री० [सं० गम, प्रा० गवँ] १. प्रयोजन सिद्ध होने का स्थान या अवसर । सुयोग । मौका । घात ।

यौ०—गौं घात=उपयुक्त अवसर या स्थिति ।

२. प्रयोजन । मतलब । गरज । अर्थ ।

मुहा०—गौं का यार=मतलबी । स्वार्थी । गौं निकलना=काम निकलना । स्वार्थ साधन होना । गौं पड़ना=गरज होना ।

३ ढंग । ढब । तर्ज । ४. पार्श्व । पक्ष ।

गौ—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाय । गैया ।

गौखा—संज्ञा स्त्री० [सं० गवाक्ष] १. छोटी खिड़की । झरोखा । २. दालान या बरामदा ।

गौखा—संज्ञा पुं० दे० "गौरव" ।

संज्ञा पुं० [हिं० गौ=गाय+खाल] गाय का चमड़ा ।

गौगा—संज्ञा पुं० [अ०] १. शोर । गुल-गपाड़ा । हल्ला । २. अफवाह । जनश्रुति ।

गौचरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गौ+चरना] गाय चराने का कर ।

गौड़—संज्ञा पुं० [सं०] १. वंग देश का एक प्राचीन विभाग । २. ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसमें सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड़ सम्मिलित हैं । ३. ब्राह्मणों की एक जाति । ४. गौड़ देश का निवासी । ५. कायस्थों का एक भेद । ६. संपूर्ण जाति का एक राग ।

गौड़िया—वि० [सं० गौड़+इया (प्रत्य०)] गौड़ देश का । गौड़ देश-संबंधी ।

गौड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुड़ से बनी मदिरा । २. काव्य में एक रीति या वृत्ति जिसमें टवर्ग, संयुक्त अक्षर अथवा समास अधिक आते हैं । ३. संपूर्ण जाति की एक रागिनी ।

गौण—वि० [सं०] १. जो प्रधान या मुख्य न हो । २. सहायक । संचारी ।

गौणी—वि० स्त्री० [सं०] अप्रधान । साधारण । जो मुख्य न मानी जाय ।

संज्ञा स्त्री० एक लक्षणा जिसमें किसी एक वस्तु का गुण लेकर दूसरे में आरोपित किया जाता है ।

गौतम—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोतम ऋषि के वंशज ऋषि । २. न्याय शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य्य ऋषि । ३. बुद्ध देव । ४. सप्तर्षि-मंडल के तारों में से एक ।

गौतमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गौतम ऋषि की स्त्री, अहल्या । २. कृपाचार्य्य की स्त्री । ३. गोदावरी नदी । ४. दुर्गा ।

गौदुमा—वि० दे० "गावदुम" ।

गौन—संज्ञा पुं० दे० "गमन" ।

गौनहाई—वि० स्त्री० [हिं० गौना+हाई (प्रत्य०)] जिसका गौना हाल में हुआ हो ।

गौनहार—संज्ञा स्त्री० [हिं० गौना+हार (प्रत्य०)] १. वह स्त्री जो दुलहिन के साथ उसकी ससुराल जाय । २ दे० "गौनहारी"

गौनहारिन, गौनहारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गावना+हार (प्रत्य०)] गाने का पेशा करनेवाली स्त्री ।

गौना—संज्ञा पु० [सं० गमन] विवाह के बाद की एक रसम जिसमें वर वधू को अपने साथ घर ले आता है। द्विरागमन। मुकलावा।

गौर—वि० [सं०] १. गोरे चमड़ेवाला। गोरा। २. श्वेत। उज्ज्वल। सफेद। संज्ञा पु० [सं०] १. लाल रंग। २. पीला रंग। ३. चंद्रमा। ४. सोना। ५. केसर। संज्ञा पु० दे० "गौड़"।

गौर—संज्ञा पु० [अ०] १. सोच-विचार। चिंतन। २. खयाल। ध्यान।

गौरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोराई। गोरापन। २. सफेदी।

गौरव—संज्ञा पु० [सं०] १. बड़प्पन। महत्त्व। २. गुरुता। भारीपन। ३. सम्मान। आदर। इज्जत। ४. उत्कर्ष। ५. अभ्युत्थान।

गौरांग—संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. चैतन्य महाप्रभु।

गौरा—संज्ञा स्त्री० [सं० गौर] १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। गिरिजा। ३. हलदी।

गौरिया—संज्ञा स्त्री० [?] १. काले रंग का एक जलपक्षी। २. मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गौरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। गिरिजा। ३. आठ वर्ष की कन्या। ४. हलदी। ५. तुलसी। ६. गोरोचन। ७. सफेद रंग की गाय। ८. सफेद दूब। ९. गंगा नदी। १०. पृथिवी।

गौरीशंकर—संज्ञा पु० [सं०] १. महादेव। शिव। २. हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम।

गौरेया†—संज्ञा स्त्री० दे० "गौरिया"।

गौल्मिक—संज्ञा पु० [सं०] एक गुल्म या ३० सैनिकों का नायक।

गौहर—संज्ञा पु० [फा०] मोती।

ग्यान†—संज्ञा पु० दे० "ज्ञान"।

ग्यारस—संज्ञा स्त्री० [हिं० ग्यारह] एकादशी तिथि।

ग्यारह—वि० [सं० एकादश, प्रा० एगारस] दस और एक। संज्ञा पु० दस और एक की सूचक संख्या ११।

ग्रंथ—संज्ञा पु० [सं०] १. पुस्तक। किताब। २. गांठ देना या लगाना। ग्रंथन। ३. धन।

ग्रंथकर्त्ता, ग्रंथकार—संज्ञा पु० [सं०] ग्रंथ की रचना करनेवाला।

ग्रंथचुंबक—संज्ञा पु० [सं० ग्रंथ+चुंबक =चूमनेवाला] जो ग्रंथों का केवल पाठ मात्र कर गया हो। अल्पज्ञ।

ग्रंथचुंबन—संज्ञा पु० [सं० ग्रंथ+चुंबन] किताब को सरसरी तौर पर पढ़ना।

ग्रंथन—संज्ञा पु० [सं०] १. गोंद लगाकर जोड़ना। २. जोड़ना। ३. गूँथना।

ग्रंथसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रंथ का विभाग। जैसे—सर्ग, अध्याय आदि।

ग्रंथ साहब—संज्ञा पु० [हिं० ग्रंथ+साहब] सिक्खों की धर्म्म-पुस्तक।

ग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गांठ। २. बंधन। ३. मायाजाल। ४. एक रोग जिसमें गोल गाँठों की तरह सूजन हो जाती है।

ग्रंथित—वि० [सं० ग्रंथन] १. गूँथा हुआ। २. गांठ दिया हुआ। जिसमें गांठ लगी हो।

ग्रंथिपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाडर दूब।

ग्रंथिबंधन—संज्ञा पु० [सं०] विवाह के समय वर और कन्या के कपड़ों के कोनों को परस्पर गांठ देकर बाँधने की क्रिया। गँठबंधन।

ग्रंथिल—वि० [सं०] गाँठदार। गँठीला।

ग्रसन—संज्ञा पु० [सं०] १. भक्षण। निगलना। २. पकड़। ग्रहण। ३ बुरी तरह पकड़ना। ४. ग्रास। ५. ग्रहण।

ग्रसना—क्रि० स० [सं० ग्रसन] १. बुरी तरह पकड़ना। २. सताना।

ग्रसित—वि० दे० "ग्रस्त"।

ग्रस्त—वि० [सं०] १. पकड़ा हुआ। २. पीड़ित। ३. खाया हुआ।

ग्रस्तास्त—संज्ञा पु० [सं०] ग्रहण लगने पर चंद्रमा या सूर्य्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।

ग्रस्तोदय—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा या सूर्य्य का उस अवस्था में उदय होना जब कि उन पर ग्रहण लगा हो।

ग्रह—संज्ञा पु० [सं०] १. वे तारे जिनकी गति, उदय और अस्त काल आदि का पता प्राचीन ज्योतिषियों ने लगा लिया था। २. वह तारा जो अपने सौर जगत् में

सूर्य की परिक्रमा करे। जैसे—पृथ्वी, मंगल, शुक्र। ३ नौ की संख्या। ४. ग्रहण करना। लेना। ५. अनुग्रह। कृपा। ६. चंद्रमा या सूर्य्य का ग्रहण। ७. राहु। ८. स्कंद, शकुनी आदि छोटे बच्चों के रोग।

मुहा०—अच्छे ग्रह होना = अच्छा समय होना। फलित के अनुसार शुभ या अनुकूल ग्रह होना। बुरे ग्रह होना = ग्रहों का प्रतिकूल होना। †वि० बुरी तरह से पकड़ने या तंग करनेवाला। दिक् करनेवाला।

ग्रहण-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य, चंद्र या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उस पिंड के मध्य में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आ जाने या छाया पड़ने से होता है। उपराग। २. पकड़ने या लेने की क्रिया। ३. स्वीकार। मंजूरी।

ग्रहणीय-वि० [सं०] ग्रहण करने के योग्य।

ग्रहदशा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोचर ग्रहों की स्थिति। २. ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था। ३. अभाग्य। कमबख्ती।

ग्रहपति-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. शनि। ३. आक का पेड़।

ग्रहवेध-संज्ञा पुं० [सं०] ग्रह की स्थिति आदि का जानना।

ग्रांडील-वि० [अ० ग्रैंडियर] ऊँचे कद का। बहुत बड़ा या ऊँचा।

ग्राम-संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटी बस्ती। गाँव। २ मनुष्यों के रहने का स्थान। बस्ती। आबादी। जनपद। ३. समूह। ढेर। ४. शिव। ५. क्रम से सात स्वरों का समूह। सप्तक। (संगीत)

ग्रामणी-संज्ञा पुं० [सं०] १. गाँव का मालिक। २. प्रधान। अगुआ।

ग्रामदेवता-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी एक गाँव में पूजा जानेवाला देवता। २. गाँव की रक्षा करनेवाला देवता। डीहराज।

ग्रामीण-वि० [सं०] देहाती। गँवार।

ग्राम्य-वि० [सं०] १. गाँव से संबंध रखनेवाला। ग्रामीण। २ बेवकूफ। मूढ। ३. प्राकृत। असली।

संज्ञा पुं० १. काव्य में भद्दे या गँवारू शब्द आने का दोष। २. अश्लील शब्द या वाक्य। ३ मैथुन। स्त्री प्रसंग।

ग्राम्य धर्म-संज्ञा पुं०[सं०] मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

ग्रास-संज्ञा पुं० [सं०] १. उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। गस्सा। कौर। निवाला। २. पकड़ने की क्रिया। पकड़। ३. ग्रहण लगना।

ग्रासक-वि० [सं०] १. पकड़नेवाला। २. निगलनेवाला। ३. छिपाने या दबानेवाला।

ग्रासना-क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

ग्राह-संज्ञा पुं० [सं०] १. मगर। घड़ियाल। २ ग्रहण। उपराग। ३. पकड़ना। लेना।

ग्राहक-संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रहण करनेवाला। मोल लेनेवाला। खरीदनेवाला। खरीदार। ३. लेने या पीने की इच्छा रखनेवाला। चाहनेवाला। ४ वह औषधि जिससे बँधा पैखाना होने लगे।

ग्राही-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ग्राहिणी] १. वह जो ग्रहण करे। स्वीकार करनेवाला। २ मल रोकनेवाला पदार्थ।

ग्राह्य-वि० [सं०] १. लेने योग्य। २. स्वीकार करने योग्य। ३. जानने योग्य।

ग्रीखम †-संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म"।

ग्रीवा-संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्दन। गला।

ग्रीषम †-संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म"।

ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गरमी की ऋतु। जेठ असाढ़ का समय। २. उष्ण। गरम।

ग्लानि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शारीरिक या मानसिक शिथिलता। अनुत्साह। खेद। २. अपनी दशा, कार्य्य की बुराई या दोष आदि को देखकर अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता।

ग्वार-संज्ञा स्त्री० [सं० गोराणी] एक वार्षिक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है। कौरी। खुरथी।

ग्वारनट, ग्वारनेट-संज्ञा स्त्री० [अं० गारनेट] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

ग्वारपाठा-संज्ञा पुं० [सं० कुमारी + पाठा] घीकुआर।

ग्वारफली-संज्ञा स्त्री० [हिं० ग्वार + फली] ग्वार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

ग्वारी-संज्ञा स्त्री० दे० "ग्वार"।

ग्वाल-संज्ञा पुं० [सं० गो + पाल प्रा० गोवाल] १. अहीर। २. एक छंद का नाम।

ग्वाला–संज्ञा पु० दे० "ग्वाल"।
ग्वालिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० ग्वाल] १. ग्वाले की स्त्री। ग्वाल जाति की स्त्री। २. ग्वार। संज्ञा स्त्री० [सं० गोपालिका] एक बरसाती कीड़ा। गिंजाई। घिनौरी।
ग्यैंठना।*–क्रि० स० [सं० गुंठन, हिं० गुमेठना] मरोड़ना। ऐंठना। घुमाना।
ग्वैंडा।*–संज्ञा पु० दे० "गोइँड़"।

घ

घ–हिंदी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण जिह्वा-मूल या कंठ से होता है।
घँघोलना–क्रि० स० [हिं० घन+घोलना] १. हिलाकर घोलना। पानी को हिलाकर उसमें कुछ मिलाना। २. पानी को हिलाकर मैला करना।
घंट–संज्ञा पु० [सं० घट] १. घड़ा। २. मृतक की क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल में बाँधा जाता है।
संज्ञा पु० दे० "घंटा"।
घंटा–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अल्पा० घंटी] १. धातु का एक बाजा। घड़ियाल। २. वह घड़ियाल जो समय की सूचना देने के लिये बजाया जाता है। ३. दिन रात का चौबीसवाँ भाग। साठ मिनट का समय।
घंटाघर–संज्ञा पु० [हिं० घंटा+घर] वह ऊँचा धौरहर जिस पर एक ऐसी बड़ी धर्मघड़ी लगी हो जो चारों ओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो।
घंटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक बहुत छोटा घंटा। २. घुँघुरू।
घंटी–संज्ञा स्त्री० [सं० घंटिका] पीतल या फूल की छोटी लोटिया।
संज्ञा स्त्री० [सं० घंटा] १. बहुत छोटा घंटा। २. घंटी बजने का शब्द। ३. घुँघुरू। चौरासी। ४. गले की हड्डी की वह गुरिया जो अधिक निकली रहती है। ५. गले के अंदर मांस की वह छोटी पिंडी जो जीभ की जड़ के पास लटकती रहती है। कौआ।
घई*–संज्ञा स्त्री० [सं० गभीर] १. गंभीर भँवर। पानी का चक्कर। २. थूनी। टेक।
वि० [सं० गभीर] जिसकी थाह न लगे। अथाह।
घघरबेल–संज्ञा स्त्री० दे० "बंदाल"।
घघरा–संज्ञा पु० दे० "घाघरा"।
घट–संज्ञा पु० [सं०] १. घड़ा। जलपात्र। कलसा। २. पिंड। शरीर।
मुहा०–घट में बसना या बैठना = मन में बसना। ध्यान पर चढ़ा रहना।
वि० [हिं० घटना] घटा हुआ। कम।
घटक–संज्ञा पु० [सं०] १. बीच में पड़नेवाला। मध्यस्थ। २. विवाह संबंध तय करानेवाला। बरेखिया। ३. दलाल। ४. काम पूरा करनेवाला। चतुर व्यक्ति। ५. वंशपरंपरा बतलानेवाला। चारण।
घटकर्ण*–संज्ञा पु० दे० "कुंभकर्ण"।
घटका–संज्ञा पु० [सं० घटक = शरीर] मरने के पहले की वह अवस्था जिसमें साँस रुक रुककर घरघराहट के साथ निकलता है। कफ छेंकने की अवस्था। घर्रा।
घटती–संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना] १. कमी। कसर। न्यूनता। २. हीनता। अप्रतिष्ठा।
घटन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० घटनीय, घटित] १. गढ़ा जाना। २. उपस्थित होना।
घटना–क्रि० अ० [सं० घटन] १. उपस्थित होना। वाके होना। होना। २. लगना। सटीक बैठना। ३. ठीक उतरना।
क्रि० अ० [हिं० कटना] १. कम होना। क्षीण होना। २. काफी न रह जाना।
संज्ञा स्त्री० [सं०] कोई बात जो हो जाय। वाकया। वारदात।
घटबढ़–संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना+बढ़ना] कमी बेशी। न्यूनाधिकता।
घटयोनि–संज्ञा पु० [सं०] अगस्त्य मुनि।
घटवाना–क्रि० स० [हिं० घटाना का प्रे०] घटाने का काम कराना। कम कराना।
घटवाई–संज्ञा पु० [हिं० घाट+वाई] घाट का कर लेनेवाला।
संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना] कम करवाई।

घटवार–संज्ञा पुं० [हिं० घाट + पाल या वाला] १. घाट का महसूल लेनेवाला। २. मल्लाह। केवट। ३. घाट पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण। घाटिया।

घटसंभव–संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

घट स्थापन–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी मंगल-कार्य्य या पूजन आदि के पूर्व जल भरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना। २. नवरात्र का पहला दिन। (इस दिन से देवी की पूजा का आरंभ होता है।)

घटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मेघों का घना समूह। उमड़े हुए बादल। मेघमाला।

घटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना + ई(प्रत्य०)] हीनता। अप्रतिष्ठा। बेइज्ज़ती।

घटाकाश–संज्ञा पुं० [सं०] घड़े के अंदर की खाली जगह।

घटाटोप–संज्ञा पुं० [सं०] १. बादलों की घटा जो चारों ओर से घेरे हो। २. गाड़ी या बहली को ढक लेनेवाला ओहार।

घटाना–क्रि० स० [हिं० घटना] १. कम करना। क्षीण करना। २. बाकी निकालना। काटना। ३. अप्रतिष्ठा करना।

घटाव–संज्ञा पुं० [हिं० घटना] १. कम होने का भाव। न्यूनता। कमी। २. अवनति। तनज्जुली। ३. नदी की बाढ़ की कमी।

घटावना†–क्रि० स० दे० "घटाना"।

घटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा घड़ा या नाँद। २. घटी यंत्र। घड़ी। ३. एक घड़ी या २४ मिनट का समय।

घटित–वि० [सं०] घना हुआ। रचा हुआ। रचित। निर्मित।

घटिया–वि० [हिं० घट + इया (प्रत्य०)] १. जो अच्छे मेल का न हो। खराब। सस्ता। 'बढ़िया' का उलटा। २. अधम। तुच्छ।

घटिहा–वि० [हिं० घात + हा (प्रत्य०)] १. घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला। २. चालाक। मक्कार। ३. धोखेबाज़। बेईमान। ४. व्यभिचारी। लंपट। ५. दुष्ट।

घटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चौबीस मिनट का समय। घड़ी। मुहूर्त्त। २. समयसूचक यंत्र। घड़ी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना] १. कमी। न्यूनता। २. हानि। क्षति। नुकसान। घाटा।

घटूत्कच–संज्ञा पुं० दे० "घटोत्कच"।

घटोत्कच–संज्ञा पुं० [सं०] हिडिंबा से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।

घट्ठा–संज्ञा पुं० [सं० घट्ट] शरीर पर वह उभड़ा हुआ कड़ा चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ लगते लगते पड़ जाता है।

घड़घड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] गड़गड़ या घड़घड़ शब्द करना। गड़गड़ाना।

घड़घड़ाहट–संज्ञा स्त्री० [अनु० घड़घड़] घड़घड़ शब्द होने का भाव।

घड़ना–क्रि० स० दे० "गढ़ना"।

घड़नई, घड़नैल–संज्ञा स्त्री० [हिं० घड़ा + नैया (नाव)] बाँस में घड़े बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिससे छोटी छोटी नदियाँ पार करते हैं।

घड़ा–संज्ञा पुं० [सं० घट] मिट्टी का पानी भरने का बरतन। जलपात्र। बड़ी गगरी।
मुहा०—घड़ों पानी पड़ जाना = अत्यंत लज्जित होना। लज्जा के मारे गड़ जाना।

घड़ाना–क्रि० स० दे० "गढ़ाना"।

घड़िया–संज्ञा स्त्री० [सं० घटिका] १. मिट्टी का बरतन जिसमें सोनार सोना, चाँदी गलाते हैं। २. मिट्टी का छोटा प्याला।

घड़ियाल–संज्ञा पुं० [सं० घटिकालि = घंटों का समूह] वह घंटा जो पूजा में या समय की सूचना के लिये बजाया जाता है।
संज्ञा पुं० [हिं० घड़ा + आल = वाला] एक बड़ा और हिंसक जल-जंतु। ग्राह।

घड़ियाली संज्ञा पुं० [हिं० घड़ियाल] घंटा बजानेवाला।

घड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० घटी] १. दिन-रात का ३२ वाँ भाग। २४ मिनट का समय।
मुहा०–घड़ी घड़ी = बार बार। थोड़ी थोड़ी देर पर। घड़ी गिनना = १. किसी बात का बड़ी उत्सुकता के साथ आसरा देखना। २. मरने के निकट होना।
२. समय। काल। ३. अवसर। उपयुक्त समय। ४. समय-सूचक यंत्र।

घड़ीदिया–संज्ञा पुं० [हिं० घड़ी + दीआ = दीपक] वह घड़ा और दिया जो घर के किसी के मरने पर घर में रखा जाता है।

घड़ीसाज़–संज्ञा पुं० [हिं० घड़ी + फा० साज़] घड़ी की मरम्मत करनेवाला।

घड़ौंची–संज्ञा स्त्री० [सं० ... पानी से भरा घड़ा रखने

घतिया–संज्ञा पुं० [हिं०

घात करनेवाला। धोखा देनेवाला।

घतियाना-क्रि० स० [हिं० घात] १. अपनी घात या दाँव में लाना। मतलब पर चढ़ाना। २. चुराना। छिपाना।

घन-संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. लोहारों का बड़ा हथौड़ा जिससे वे गरम लोहा पीटते हैं। ३. समूह। झुंड। ४. कपूर। ५. घंटा। घड़ियाल। ६. वह गुणनफल जो किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणन करने से लब्ध हो। ७. लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊंचाई या गहराई) तीनों का विस्तार। ८ ताल देने का बाजा। ९ पिंड। शरीर। वि० १. घना। गझिन। २. गठा हुआ। ठोस। ३. दृढ़। मजबूत। ४. बहुत अधिक। ज्यादा।

घनगरज-संज्ञा स्त्री० [हिं० घन+गर्जन] १. बादल के गरजने की ध्वनि। २. एक प्रकार की खुमी जो खाई जाती है। ढिंगरी। ३. एक प्रकार की तोप।

घनघनाना-क्रि० अ० [अनु०] घंटे की सी ध्वनि निकलना।

क्रि० स० [अनु०] घन घन शब्द करना।

घनघनाहट-संज्ञा स्त्री० [अनु०] घन घन शब्द निकलने का भाव या ध्वनि।

घनघोर-संज्ञा पुं० [सं० घन+घोर] १. भीषण ध्वनि। २. बादल की गरज। वि० १. बहुत घना। गहरा। २. भीषण। यौ०-घनघोर घटा=बड़ी गहरी काली घटा।

घनचक्कर-संज्ञा पुं० [सं० घन+चक्र] १. वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि सदैव चंचल रहे। २. मूर्ख। बेवकूफ। मूढ़। ३. वह जो व्यर्थ इधर-उधर फिरा करे। आवारागर्द।

घनत्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. घना होने का भाव। घनापन। सघनता। २. लंबाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का भाव। ३. गठाव। ठोसपन।

घननाद-संज्ञा पुं० [सं०] मेघनाद।

घनफल-संज्ञा पुं० [सं०] १. लंबाई चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों का गुणनफल। २. वह गुणनफल जो किसी संख्या को उस संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो।

घनबान-संज्ञा पुं० [हिं० घन+बाण] एक [illegible]रा बाण जिससे बादल छा जाते थे।

घनबेल-वि० [हिं० घन+बेल] जिसमें बेल बूटे हों। बेलबूटेदार।

घनमूल-संज्ञा पुं० [सं०] गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक। जैसे—२७ का घनमूल ३ होगा।

घनश्याम-संज्ञा पुं० [सं०] १. काला बादल। २. श्रीकृष्ण। ३. रामचंद्र।

घनसार-संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

घना-वि० [सं० घन] [स्त्री० घनी] १. जिसके अवयव या अंश पास पास सटे हों। सघन। गझिन। गुंजान। २. घनिष्ठ। नजदीकी। निकट का। ३. बहुत।

घनाक्षरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दंडक या मनहर छंद जिसे लोग कवित्त कहते हैं।

घनात्मक-वि० [सं०] १. जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) बराबर हो। २. जो लंबाई, चौड़ाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो।

घनानंद-संज्ञा पुं० [सं०] गद्य-काव्य का एक भेद।

घनिष्ठ-वि० [सं०] १. गाढ़ा। घना। २. पास का। निकटस्थ। (संबंध)

घने-वि० [सं० घन] बहुत से। अनेक।

घनेरा†-वि० [हिं० घना+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घनेरी] बहुत अधिक। अतिशय।

घपची-संज्ञा स्त्री० [हिं० घन+पच] दोनों हाथों की मज़बूत पकड़।

घपला-संज्ञा पुं० [अनु०] ऐसी मिलावट जिसमें एक से दूसरे को अलग करना कठिन हो। गड़बड़। गोलमाल।

घबराना-क्रि० अ० [सं० गह्वर या हिं० गड़बड़ाना] १. व्याकुल होना। चंचल होना। उद्विग्न होना। २ भौचक्का होना। किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होना। ३ उतावली में होना। जल्दी मचाना। ४. जी न लगना। उचाट होना।

क्रि० स० १. व्याकुल करना। अधीर करना। २. भौचक्का करना। ३. जल्दी में डालना। गड़बड़ी डालना। ४. हैरान करना। ५ उचाट करना।

घबराहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० घबराना] १. व्याकुलता। अधीरता। उद्विग्नता। २. किंकर्त्तव्य-विमूढ़ता। ३. उतावली।

घमंड-संज्ञा पुं० [सं० गर्व] १. अभिमान। शेखी। अहंकार। २. जोर। भरोसा।

घमंडी–वि० [हिं० घमंड] [स्त्री० घमंडिन] अहंकारी। अभिमानी। मगरूर।

घमकना–क्रि० अ० [अनु० घम] 'घम घम' या और किसी प्रकार का गंभीर शब्द होना। घहराना। गरजना।
†क्रि० स० घूँसा मारना।

घमका–संज्ञा पु० [अनु०] गदा या घूँसा पड़ने का शब्द। आघात की ध्वनि।

घमघमाना–क्रि० अ० [अनु०] घम घम शब्द होना।
क्रि० स० प्रहार करना। मारना।

घमर–संज्ञा पु० [अनु०] नगाड़े, ढोल आदि का भारी शब्द। गंभीर ध्वनि।

घमसान–संज्ञा पु० [अनु० घम+सान (प्रत्य०)] भयंकर युद्ध। घोर रण। गहरी लड़ाई।

घमाका–संज्ञा पु० [अनु० घम] भारी आघात का शब्द।

घमाघम–संज्ञा स्त्री० [अनु० घम] १. घम घम की ध्वनि। २. धूम-धाम। चहल-पहल।
क्रि० वि० घम घम शब्द के साथ।

घमाना†–क्रि० अ० [हिं० घाम] घाम लेना। गरम होने के लिये धूप में बैठना।

घमासान–संज्ञा पु० दे० "घमसान"।

घमोय–संज्ञा स्त्री० [देश०] कँटीले पत्तों का एक पौधा। सत्यानाशी। भँड़भाँड़।

घर–संज्ञा पु० [सं० गृह] [वि० घराऊ, घरू, घरेलू] १. मनुष्यों के रहने का स्थान जो दीवार आदि से घेरकर बनाया जाता है। निवासस्थान। आवास। मकान।
मुहा०—**घर करना**=१. बसना। रहना। निवास करना। २. समाने या अँटने के लिये स्थान निकालना। ३. धुसना। धँसना। **चित्त, मन या आँख में घर करना**=इतना पसंद आना कि उसका ध्यान सदा बना रहे। जँचना। अत्यंत प्रिय होना। **घर का**=१. निज का। अपना। २. आपस का। संबंधियों या आत्मीय जनों के बीच का। **घर का न घाट का**=१. जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो। २. निकम्मा। बेकाम। **घर के बाढ़े**=घर ही में बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला। **घर के घर रहना**=न हानि उठाना न लाभ। बराबर रहना। **घर घाट**=१. रंग ढंग। चाल-ढाल। गति और अवस्था। २. ढंग। ढब। प्रकृति। ३ ठौर-ठिकाना। घर द्वार। स्थिति। **घर घालना**=१ घर बिगाड़ना। परिवार में अशांति या दुःख फैलाना। २. कुल में कलंक लगाना। ३. मोहित करके वश में करना। **घर फोड़ना**=परिवार में झगड़ा लगाना। **घर बसना**=१. घर आबाद होना। २ घर में धन धान्य होना। ३. घर में स्त्री या बहू आना। ब्याह होना। **घर बैठे**=बिना कुछ काम किए। बिना हाथ पैर डुलाए। बिना परिश्रम। *(किसी स्त्री का किसी पुरुष के)* **घर बैठना**=किसी के घर पत्नी भाव से जाना। किसी को खसम बनाना। **घर से**=१. पास से। पल्ले से। २ पति। स्वामी। ३. स्त्री। पत्नी।
२. जन्मस्थान। जन्मभूमि। स्वदेश। ३ घराना। कुल। वंश। खानदान। ४. कार्यालय। कारखाना। ५ कोठरी। कमरा। ६. आड़ी खड़ी खींची हुई रेखाओं से घिरा स्थान। कोठा। खाना। ७. कोई वस्तु रखने का डिब्बा। कोश। खाना। ८. पटरी आदि से घिरा हुआ स्थान। खाना। कोठा। ९. किसी वस्तु के अँटने या समाने का स्थान। छोटा गड्ढा। १०. छेद। बिल। ११ मूल कारण। उत्पन्न करनेवाला। गृहस्थी।

घरघराना–क्रि० अ० [अनु०] कफ के कारण गले से साँस लेते समय शब्द निकलना। घर घर शब्द निकलना।

घरघाल–वि० दे० "घरघालन"।

घरघालन–वि [हिं० घर+घालन] [स्त्री० घरघालनी] १ घर बिगाड़नेवाला। २. कुल में कलंक लगानेवाला।

घरजाया–संज्ञा पु० [हिं० घर+जाया=पैदा] गृहजात दास। घर का गुलाम।

घरदासी संज्ञा स्त्री० [हिं० घर+सं० दासी] गृहिणी। भार्या। पत्नी।

घरद्वार–संज्ञा पु० दे० "घरबार"।

घरनाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० घड़ा+नाली] एक प्रकार की पुरानी तोप। रहँकला।

घरनी–संज्ञा स्त्री० [सं० गृहिणी, प्रा० घरणी] घरवाली। भार्या। गृहिणी।

घरफोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० घर+फोड़ना] परिवार में कलह फैलानेवाली।

घरबसा–संज्ञा पु० [हिं० घर+बसना] [स्त्री० घरबसी] १. उपपति। यार। २. पति।

घरबार–संज्ञा पु० [हिं० घर+द्वार=द्वार

[वि० घरबारी] १. रहने का स्थान। ठौर-ठिकाना। २. घर का जंजाल। गृहस्थी। ३. निज की सारी संपत्ति।

घरबारी-संज्ञा पुं० [हिं० घर+बार] बाल बच्चोंवाला। गृहस्थ। कुटुंबी।

घरवात †-संज्ञा स्त्री० [हिं० घर+वात (प्रत्य०)] घर का सामान। गृहस्थी।

घरवाला-संज्ञा पुं० [हिं० घर+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० घरवाली] १. घर का मालिक। २. पति। स्वामी।

घरसा -संज्ञा पुं० [सं० घर्ष] रगड़ा।

घरहाई † संज्ञा स्त्री० [हिं० घर+सं० घाती, हिं० घाई] १. घर में विरोध करानेवाली स्त्री। २. अपकीर्ति फैलानेवाली।

घराऊ-वि० [हिं० घर+आऊ (प्रत्य०)] १. घर से संबंध रखनेवाला। गृहस्थी-संबंधी। २. आपस का। निज का।

घराती-संज्ञा पुं० [हिं० घर+आती (प्रत्य०)] विवाह में कन्या पक्ष के लोग।

घराना-संज्ञा पुं० [हिं० घर+आना (प्रत्य०)] खानदान। वंश। कुल।

घरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "घड़िया"।

घरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० घर=कोठा, खाना] तह। परत। लपेट।

घरीक †-क्रि वि० [हिं० घड़ी+एक] एक घड़ी भर। थोड़ी देर।

घरू-वि० [हिं० घर+ऊ (प्रत्य०)] जिसका संबंध घर-गृहस्थी से हो। घर का।

घरेलू-वि० [हिं० घर+एलू (प्रत्य०)] १. जो घर में आदमियों के पास रहे। पालतू। पालू। २. घर का। निज का। घरू। खानगी। ३. घर का बना हुआ।

घरैया †-वि० [हिं० घर+ऐया (प्रत्य०)] घर या कुटुंब का। अत्यंत घनिष्ठ संबंधी।

घरो †-संज्ञा पुं० दे० "घड़ा"।

घरौंदा, घरौंधा-संज्ञा पुं० [हिं० घर+औंदा (प्रत्य०)] १. कागज़, मिट्टी आदि का बना हुआ छोटा घर जिसे छोटे बच्चे खेलते हैं। २ छोटा-मोटा घर।

घर्म-संज्ञा पुं० [सं०] घाम। धूप।

घर्रा-संज्ञा पुं० [अनु०] १. एक प्रकार का अंजन। २. गले की घरघराहट जो कफ के कारण होती है।

घर्रांटा-संज्ञा पुं० दे० "खर्राटा"।

[illegible] पुं० [सं०] रगड़। घिस्सा।

घलना †-क्रि० अ० [हिं० घालना] १. छूट-कर गिर पड़ना। फेंका जाना। २. चढ़े हुए तीर या भरी हुई गोली का छूट पड़ना ३ मारपीट हो जाना।

घलाघल, घलाघली-संज्ञा स्त्री० [हिं० घलना] मार पीट। आघात-प्रतिघात।

घलुआ †-संज्ञा पुं० [हिं० घाल] वह अधिक वस्तु जो खरीदार को उचित तौल के अति-रिक्त दी जाय। घेलौना। घाल।

घवरि †-संज्ञा स्त्री० दे० "घौंद"।

घसखुदा-संज्ञा पुं० [हिं० घास+खोदना] १. घास खोदनेवाला। २ अनाड़ी। मूर्ख।

घसना †-क्रि० अ० दे० "घिसना"।

घसिटना-क्रि० अ० [सं० घर्षित+ना (प्रत्य०)] घसीटा जाना।

घसियारा-संज्ञा पुं० [हिं० घास+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घसियारी या घसियारिन] घास बेचनेवाला। घास छीलकर लानेवाला

घसीट-संज्ञा स्त्री० [हिं० घसीटना] १. जल्दी जल्दी लिखने का भाव। २. जल्दी का लिखा हुआ लेख। ३. घसीटने का भाव।

घसीटना-क्रि० स० [सं० घृष्ट, प्रा० घिष्ट+ना (प्रत्य०)] १. किसी वस्तु को इस प्रकार खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती हुई जाय। कढ़ोरना। २. जल्दी जल्दी लिख कर चलता करना। ३. किसी काम में जबरदस्ती शामिल करना।

घहनाना †-क्रि० अ० [अनु०] घंटे आदि की ध्वनि निकलना। घहराना।

घहरना-क्रि० अ० [अनु०] गरजने का सा शब्द करना। गंभीर ध्वनि निकालना।

घहराना-क्रि० अ० [अनु०] गरजने का सा शब्द करना। गंभीर शब्द करना।

घहरानि †-संज्ञा स्त्री० [हिं० घहराना] गंभीर ध्वनि। तुमुल शब्द। गरज।

घहरारा †-संज्ञा पुं० [हिं० घहराना] घोर शब्द। गंभीर ध्वनि। गरज। वि० घोर शब्द करनेवाला।

घाँ †-संज्ञा स्त्री० [सं० ख। या घाट=ओर] १. दिशा। दिक्। २. ओर। तरफ़।

घाँघरा-संज्ञा पुं० दे० "घाघरा"।

घाँटी †-संज्ञा स्त्री० [सं० घंटिका] १. गले के अंदर की घंटी। कौआ। २. गला।

घाँटो-संज्ञा पुं० [हिं० घट] एक प्रकार का चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।

घाँह|ः-संज्ञा पुं० [हिं० घाँ] तरफ़। ओर।
घाः-संज्ञा स्त्री० [सं०] ओर। तरफ़।
घाइः-संज्ञा पुं० दे० "घाव"।
घाइल|-वि० दे० "घायल"।
घाई|ः-संज्ञा स्त्री० [हिं० घाँ या घा] १. ओर। तरफ़। २. दो वस्तुओं के बीच का स्थान। संधि। ३. वार। दफ़ा। ४. पानी में पड़नेवाला भँवर। गिरदाब।
घाई-संज्ञा स्त्री० [सं० गभस्ति=उँगली] दो उँगलियों के बीच की संधि। अटी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० घाव] १. चोट। आघात। प्रहार। वार। २. धोखा। चालबाज़ी।
घाऊघप-वि० [हिं० खाऊ+गप या घप] चुपचाप माल हज़म करनेवाला।
घाएँ-अव्य० [हिं० घाँ] ओर। तरफ़।
घाघ-संज्ञा पुं० १. गोंडे के रहनेवाले एक बड़े चतुर और अनुभवी व्यक्ति जिनकी बहुत सी कहावतें उत्तरीय भारत में प्रसिद्ध हैं। २. गहरा चालाक। गुरुघंटाल।
घाघरा-संज्ञा पुं० [सं० घर्घर=क्षुद्रघंटिका] [स्त्री० अल्पा० घाघरी] वह चुननदार और घेरदार पहनावा जिससे स्त्रियों का कमर से नीचे का अंग ढका रहता है। लहँगा।
संज्ञा स्त्री० [सं० घर्घर] सरजू नदी।
घाघस-संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की मुरगी।
घाट-संज्ञा पुं० [सं० घट्ट] १. किसी जलाशय का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते, नहाते धोते या नाव पर चढ़ते हैं।
मुहा०—घाट घाट का पानी पीना=१. चारों ओर देश देशांतर में घूमकर अनुभव प्राप्त करना। २ इधर उधर मारे मारे फिरना।
२. चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग। ३. पहाड़। ४ ओर। तरफ़। दिशा। ५ रंग-ढंग। चाल-ढाल। डौल। ढब। तौर तरीका। ६. तलवार की धार।
†संज्ञा स्त्री० [सं० घात या हिं० घट=कम] १. धोखा। छल। २. बुराई।
†वि० [हिं० घट] कम। थोड़ा।
घाटवाल-संज्ञा पुं० [हिं० घाट+वाला (प्रत्य०)] घाटिया। गंगापुत्र।
घाटा-संज्ञा पुं० [हिं० घटना] घटी। हानि।
घाटारोह|ः-संज्ञा पुं० [हिं० घाट+सं० रोध] घाट रोकना। घाट से जाने न देना।
घाटिः†-वि० [हिं० घटना] कम। न्यून। घटकर।
संज्ञा स्त्री० [सं० घात] नीच कर्म। पाप।
घाटिया-संज्ञा पुं० [सं० घाट+इया (प्रत्य०)] घाटवाल। गंगापुत्र।
घाटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० घाट] पर्वतों के बीच का सँकरा मार्ग। दर्रा।
घात-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० घाती] १. प्रहार। चोट। मार। धक्का। ज़रब। २. वध। हत्या। ३. अहित। बुराई। ४. (गणित में) गुणनफल।
संज्ञा स्त्री० १ कोई कार्य्य करने के लिये अनुकूल स्थिति। दाँव। सुयोग।
मुहा०—घात पर चढ़ना या घात में आना =अभिप्राय साधन के अनुकूल होना। दाँव पर चढ़ना। हत्थे चढ़ना। घात लगना=मौका मिलना। घात लगाना=युक्ति भिड़ाना।
२. किसी पर आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध और कोई कार्य्य करने के लिये अनुकूल अवसर की खोज। ताक।
मुहा०—घात में=ताक में।
३. दाँव पेच। चाल। छल। चालबाज़ी। ४ रंग ढंग। तौर-तरीका।
घातक-संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालने-वाला। हत्यारा। २. हिंसक। वधिक।
घातकी-संज्ञा पुं० दे० "घातक"।
घातिनी-वि० स्त्री० [सं०] मारनेवाली। वध करनेवाली।
घाती-वि० [सं० घातिन्] [स्त्री० घातिनी] १. घातक। संहारक। २. नाश करनेवाला।
घान-संज्ञा पुं० [सं० घन=समूह] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार डालकर कोल्हू में पेरी या चक्की में पीसी जाय। २. उतनी वस्तु जितनी एक बार में पकाई जाय।
संज्ञा पुं० [हिं० घन] प्रहार। चोट।
घाना|ः-क्रि० स० [सं० घात] मारना।
घानी-संज्ञा स्त्री० दे० "घान"।
घाम|-संज्ञा पुं० [सं० घर्म] धूप। सूर्य्यातप।
घामड़-वि० [हिं० घाम] १. घाम या धूप से व्याकुल (चौपाया)। २. मूर्ख।
घाय|ः-संज्ञा पुं० दे० "घाव"।
घायक-वि० [हिं० घातक] विनाशक।
घायल-वि० [हिं० घाव] जिसको घाव लगा हो। चुटैल। ज़ख़्मी। आहत।
घाल|-संज्ञा पुं० [हिं० घलना] दे० "घलुआ"।

मुहा०—घाल न गिनना = तुच्छ समझना।
घालक-संज्ञा पुं० [हिं० घालना] [स्त्री० घालिका] मारने या नाश करनेवाला।
घालना†-क्रि० स० [सं० घटन] १. भीतर या ऊपर रखना। डालना। रखना। २. फेंकना। चलाना। छोड़ना। ३. बिगाड़ना। नाश करना। ४. मार डालना।
घालमेल-संज्ञा पुं० [हिं० घालना + मेल] १. कई भिन्न प्रकार की वस्तुओं को एक साथ मिलावट। गड्ड-बड्ड। २. मेल-जोल।
घाव-संज्ञा पुं० [सं० घात, प्रा० घाअ] शरीर पर का वह स्थान जो कट या चिर गया हो। क्षत। ज़ख्म।
मुहा०—घाव पर नमक या नोन छिड़कना = दुःख के समय और दुःख देना। शोक पर और शोक उत्पन्न करना। घाव पूजना या भरना = घाव का अच्छा होना।
घाव पत्ता-संज्ञा पुं० [हिं० घाव + पत्ता] एक लता जिसके पान के से पत्ते घाव, फोड़े आदि पर लगाए जाते हैं।
घावरिया†-संज्ञा पुं० [हिं० घाव + वरिया (वाला)] घावों की चिकित्सा करनेवाला।
घास-संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी पर उगनेवाले छोटे छोटे उद्भिद् जिन्हें चौपाए चरते हैं। तृण। चारा।
यौ०—घास पात या घास फूस = १. तृण और वनस्पति। २. खर पतवार। कूड़ा-करकट।
मुहा०—घास काटना, खोदना या छीलना = १. तुच्छ काम करना। २. व्यर्थ काम करना।
घाह†-संज्ञा स्त्री० दे० "घाई"।
घिग्घी-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. साँस लेने में वह रुकावट जो रोते रोते पड़ने लगती है। हिचकी। सुबकी। २. बोलने में वह रुकावट जो भय के मारे पड़ती है।
घिघियाना-क्रि० अ० [हिं० घिग्घी] १. करुण स्वर से प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाना। †२ चिल्लाना।
घिचपिच-संज्ञा स्त्री० [सं० घृष्ट + पिष्ट] १. जगह की तंगी। सँकरापन। २. थोड़े स्थान में बहुत सी वस्तुओं का समूह। वि० अस्पष्ट। गिचपिच।
घिन-संज्ञा स्त्री० [सं० घृणा] १. अरुचि। नफ़रत। घृणा। २. गंदी चीज़ देखकर जी मचलाने की सी अवस्था। जी बिगड़ना।
घिनाना-क्रि० अ० [हिं० घिन] घृणा करना। नफ़रत करना।
घिनावना-वि० दे० "घिनौना"।
घिनौना†-वि० [हिं० घिन] [स्त्री० घिनौनी] जिसे देखने से घिन लगे। घृणित। बुरा।
घिर्नी-संज्ञा स्त्री० १. दे० "घिरनी"। २. दे० "गिर्री"।
घिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० घी] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। कद्दू।
घियाकश-संज्ञा पुं० दे० "कद्दूकश"।
घियातोरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० घिया + तोरी] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। नेनुवा।
घिरना-क्रि० अ० [सं० ग्रहण] १. सब ओर से छेंका जाना। आवृत्त होना। घेरे में आना। २. चारों ओर इकट्ठा होना।
घिरनी-संज्ञा स्त्री० [सं० घूर्णन] १. गराड़ी। चरखी। २. चक्कर। फेरा। ३ रस्सी बटने की चरखी। ४. दे० "गिर्री"।
घिराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० घेरना] १. घेरने की क्रिया या भाव। २. पशुओं को चराने का काम या मजदूरी।
घिराव-संज्ञा पुं० [हिं० घेरना] १. घेरने या घिरने की क्रिया या भाव। २. घेरा।
घिर्राना†-क्रि० स० [अनु० घिर घिर] १. घसीटना। २. गिड़गिड़ाना।
घिसघिस-संज्ञा स्त्री० [हिं० घिसना] १. कार्य्य में शिथिलता। अनुचित विलंब। अतत्परता। २. व्यर्थ का विलंब। अनिश्चय।
घिसना-क्रि० स० [सं० घर्षण] एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर खूब दबाते हुए इधर-उधर फिराना। रगड़ना।
क्रि० अ० रगड़ खाकर कम होना।
घिसपिस†-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घिसघिस। २. सट्टा बट्टा। मेल-जोल।
घिसवाना-क्रि० स० [हिं० घिसना का प्रे०] घिसने का काम कराना। रगड़ाना।
घिसाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० घिसना] घिसने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
घिस्सा-संज्ञा पुं० [हिं० घिसना] १. रगड़ा। २. धक्का। ठोकर। ३. वह आघात जो पहलवान अपनी कुहनी और कलाई की हड्डी से देते हैं। कुंदा। रद्दा।
घी-संज्ञा पुं० [सं० घृत, प्रा० घीअ] दूध का चिकना सार जिसमें से जल का अंश तपा-

कर निकाल दिया गया हो। तपाया हुआ मक्खन। घृत।

मुहा०—घी के दिए जलना=१. कामना पूरी होना। मनोरथ सफल होना। २. आनंद-मंगल होना। उत्सव होना। (किसी की) पाँचों उँगलियाँ घी में होना=खूब आराम चैन का मौका मिलना। खूब लाभ होना।

घीकुवाँर–संज्ञा पु० [सं० घृतकुमारी] ग्वारपाठा। गेंडपट्ठा।

घुँइयाँ–संज्ञा स्त्री० [देश०] अरवी कंद।

घुँघनी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] भिगोकर तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न।

घुँघरारे –वि० दे० "घुँघराले"।

घुँघराले–वि० [हिं० घुमरना+वाले] [स्त्री० घुँघराली] घूमे हुए (बाल)। टेढ़े और बल खाए हुए (बाल)। छल्लेदार।

घुँघरू–संज्ञा पु० [अनु० घुन घुन+सं० रव या रू] १. किसी धातु की बनी हुई गोल पोली गुरिया जिसके भीतर 'घन घन' बजने के लिये कंकड़ भर देते हैं। २. ऐसी गुरियों की लड़ी। चौरासी। मंजीर। ३. ऐसी गुरियों का बना हुआ पैर का गहना। ४. गले का वह घुर घुर शब्द जो मरते समय कफ छेंकने के कारण निकलता है। घटका। घटुका।

घुँघुवारे–वि० दे० "घुँघराले"।

घुंडी–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि] १. कपड़े का गोल बटन। गोपक। २ हाथ पैर में पहनने के कड़े के दोनों छोरों पर की गाँठ। ३. कोई गोल गाँठ।

घुग्घी–संज्ञा स्त्री० [देश०] तिकोना लपेटा हुआ कंबल आदि जिसे किसान या गड़रिये धूप, पानी और शीत से बचने के लिये सिर पर डालते हैं। घोघी। खुड़ुआ।

घुग्घू–संज्ञा पु० [सं० घूक] उल्लू पक्षी।

घुघुआ–संज्ञा पु० दे० "घुग्घू"।

घुघुआना–क्रि० अ० [हिं० घुग्घू] १. उल्लू पक्षी का बोलना। २. बिल्ली का गुर्राना।

घुटकना–क्रि० स० [हिं० घूँट+करना] १. घूँट घूँट करके पीना। २. निगल जाना।

घुटना–संज्ञा पु० [सं० घुंटक] पाँव के मध्य का। टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ। क्रि० अ० [हिं० घूँटना या घोटना] १. साँस का भीतर ही दब जाना, बाहर न निकलना। रुकना। फँसना।

मुहा०—घुट घुटकर मरना=दम तोड़ते हुए साँसत से मरना।

२. उलझकर कड़ा पड़ जाना। फँसना। ३. गाँठ या बंधन का दृढ़ होना।

क्रि० अ० [हिं० घोटना] १. घोटा जाना।

मुहा०—घुटा हुआ=पक्का चालाक।

२. रगड़ खाकर चिकना होना। ३. घनिष्ठता होना। मेल-जोल होना।

घुटन्ना–संज्ञा पु० [हिं० घुटना] पायजामा।

घुटरूँ–संज्ञा पु० [सं० घुट] घुटना।

घुटवाना–क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे०] १. घोटने का काम कराना। २. बाल मुँड़ाना।

घुटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० घुटना] घोटने या रगड़ने का भाव या क्रिया।

घुटाना–क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे०] घोटने का काम दूसरे से कराना।

घुट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० घूँट] वह दवा जो छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाई जाती है।

मुहा०—घुट्टी में पड़ना=स्वभाव में होना।

घुड़कना–क्रि० स० [सं० घुर] क्रुद्ध होकर डराने के लिये ज़ोर से कोई बात कहना। कड़ककर बोलना। डाँटना।

घुड़की–संज्ञा स्त्री० [हिं० घुड़कना] १. वह बात जो क्रोध में आकर डराने के लिये जोर से कही जाय। डाँट-डपट। फटकार। २. घुड़कने की क्रिया।

यौ०—बंदरघुड़की=झूठ मूठ डर दिखाना।

घुड़चढ़ा–संज्ञा पु० [हिं० घोड़ा+चढ़ना] सवार। अश्वारोही।

घुड़चढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+चढ़ना] १. विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा घोड़े पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है। २. एक प्रकार की तोप। घुड़नाल।

घुड़दौड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+दौड़] १. घोड़ों की दौड़। २ एक प्रकार का जुए का खेल। ३ घोड़े दौड़ाने का स्थान या सड़क। ४. एक प्रकार की बड़ी नाव।

घुड़नाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+ ...] प्रकार की तोप जो घोड़े पर

घुड़बहल–संज्ञा स्त्री० [हिं० ...] वह रथ जिसमें घोड़े जुतते

घुड़साल-संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा + शाला] घोड़ा के बाँधने का स्थान। अस्तबल।

घुंडिया-संज्ञा स्त्री० दे० "घोड़िया"।

घुणाक्षर न्याय-संज्ञा पु० [सं०] ऐसी कृति या रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय, जिस प्रकार घुनों के खाते खाते लकड़ी में अक्षर से बन जाते हैं।

घुन-संज्ञा पु०[सं० घुण] एक छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी आदि में लगता है।

मुहा०—घुन लगना=१. घुन का अनाज या लकड़ी को खाना। २. अंदर ही अंदर किसी वस्तु का क्षीण होना।

घुनघुना-संज्ञा पु० दे० "झुनझुना"।

घुनना-क्रि० अ० [हिं० घुन] १. घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना। २. दोष के कारण अंदर ही से छीजना।

घुन्ना-वि० [अनु० घुनघुनाना] [स्त्री० घुन्नी] जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को मन ही में रक्खे। चुप्पा।

घुप-वि० [सं० कूप या अनु०] गहरा (अँधेरा)। निविड़ (अंधकार)।

घुमक्कड़-वि० [हिं० घूमना + अक्कड़ (प्रत्य०)] बहुत घूमनेवाला।

घुमटा-संज्ञा पु० [हिं० घूमना + टा (प्रत्य०)] सिर का चक्कर। जी घूमना।

घुमड़-संज्ञा स्त्री० [हिं० घुमड़ना] बरसनेवाले बादलों की घेरघार।

घुमड़ना-क्रि० अ० [हिं० घूम + अटना] १. बादलों का घूम घूमकर इकट्ठा होना। मेघों का छाना। २. इकट्ठा होना। छा जाना।

घुमरना-क्रि० अ० [अनु० घम घम] १. घोर शब्द करना। ऊँचे शब्द से बजना। २. दे० "घुमड़ना"। † ३. घूमना।

घुमराना-क्रि० अ० दे० "घुमरना"।

घुमाना-क्रि० स० [हिं० घूमना] १. चक्कर देना। चारों ओर फिराना। २. इधर-उधर टहलाना। सैर कराना। ३. किसी विषय की ओर लगाना। प्रवृत्त करना।

घुमाव-संज्ञा पु० [हिं० घुमाना] १. घूमने या घुमाने का भाव। २ फेर। चक्कर।

मुहा०—घुमाव-फिराव की बात=पेचीली बात। हेर-फेर की बात।

३. रास्ते का मोड़।

घुमावदार-वि० [हिं० घुमाव + दार] जिसमें कुछ घुमाव फिराव हो। चक्करदार।

घुम्मरना†-क्रि० अ० दे० "घुमरना"।

घुरघुरा-संज्ञा पुं० [देश०] झींगुर।

घुरघुराना-क्रि अ० [अनु० घुरघुर] गले से घुर घुर शब्द निकलना।

घुरना -क्रि० अ० दे० "घुलना"।

क्रि० अ० [सं० घुर] शब्द करना। बजना।

घुरविनिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० घूर + बीनना] घूर पर से दाना इत्यादि बीन बीनकर एकत्र करने या गली कूचों में से टूटी-फूटी चीज़ चुनकर एकत्र करने का काम।

घुर्मित-क्रि० वि० [सं० घूर्णित] घूमता हुआ।

घुलना-क्रि० अ० [सं घूर्णन प्रा० घुलन] १. पानी, दूध आदि पतली चीज़ों में खूब हिल मिल जाना। हल होना।

मुहा०—घुल घुलकर बातें करना=खूब मिल जुलकर बातें करना।

२. द्रवित होना। गलना। ३ पककर पिलपिला होना। ४ रोग आदि से शरीर का क्षीण होना। दुर्बल होना।

मुहा०—घुला हुआ=बुड्ढा। वृद्ध। घुल घुलकर काँटा होना=बहुत दुबला हो जाना। घुल घुलकर मरना=बहुत दिनों तक कष्ट भोगकर मरना।

५. (समय) बीतना। व्यतीत होना।

घुलवाना-क्रि० स० [हिं० घुलाना का प्रे०] १. गलवाना। द्रवित कराना। २. आँख में सुरमा लगवाना।

क्रि० स० [हिं० घोलना का प्रे०] किसी द्रव पदार्थ में मिश्रित कराना। हल कराना।

घुलाना-क्रि० स० [हिं० घुलना] १ गलाना। द्रवित करना। २. शरीर दुर्बल करना। ३. मुँह में रखकर धीरे धीरे रस चूसना। गलाना। घुभलाना। ४. गरमी या दाब पहुँचाकर नरम करना। ५. (सुरमा या काजल) लगाना। सारना। ६. (समय) बिताना। व्यतीत करना।

घुलावट-संज्ञा स्त्री० [हिं० घुलना]घुलने का भाव या क्रिया।

घुसड़ना†-क्रि० अ० दे० "घुसना"।

घुसना-क्रि० अ० [सं० घुश=आलिंगन करना अथवा घर्षण] १. अंदर पैठना। प्रवेश करना। भीतर जाना। २. धँसना। चुभना। गड़ना। ३ अनधिकार चर्चा या कार्य्य करना। ४ मनोनिवेश करना।

घुसपैठ-संज्ञा स्त्री० [हिं० घुसना + पैठना] पहुँच। गति। प्रवेश। रसाई।
घुसाना-क्रि० स० [हिं० घुसना] १ भीतर घुसेड़ना। पैठाना। २. चुभाना। धँसाना।
घुसेड़ना-क्रि० स० दे० "घुसाना"।
घूँघट-संज्ञा पु०[सं० गुंठ]१. वस्त्र का वह भाग जिससे कुलवधू का मुँह ढँका रहता है। २. परदे की वह दीवार जो बाहरी दरवाज़े के सामने भीतर की ओर रहती है। गुलाम गर्दिश। ओट।
घूँघर-संज्ञा पु० [हिं० घुमरना] बालों में पड़े हुए छल्ले या मरोड़।
घूँघरवाले-वि० [हिं० घूँघर] टेढ़े छल्लेदार। कुंचित। भ्रबरीले। (बाल)
घूँट-संज्ञा पु० [अनु० घुट घुट] द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार में गले के नीचे उतारा जाय। चुसकी।
घूँटना-क्रि० स० [हिं० घूँट] द्रव पदार्थ को गले के नीचे उतारना। पीना।
घूँटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० घूँट] एक औषध जो छोटे बच्चों को नित्य पिलाई जाती है। मुहा०—*जनम घूँटी* = वह घूँटी जो बच्चे को उसका पेट साफ़ करने के लिये जन्म के दूसरे दिन दी जाती है।
घूँसा-संज्ञा पु० [हिं० घिस्सा] १. बँधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय। मुक्का। डुक। धमाका। २. बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार।
घूआ-संज्ञा पुं० [देश०] १ काँस, मूँज या सरकंडे आदि का रूई की तरह का फूल जो लंबे सींकों में लगता है। २ एक कीड़ा जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते हैं।
घूगस-संज्ञा पु० [देश०] ऊँचा बुर्ज।
घूघू-संज्ञा स्त्री० [हिं० घोघी या फा० खोद] लोहे या पीतल की घनी टोपी।
घूम-संज्ञा स्त्री० [हिं० घूमना] घूमने का भाव।
घूमना-क्रि० अ० [सं० घूर्णन] १. चारों ओर फिरना। चक्कर खाना। २.सैर करना। टहलना। ३. देशांतर में भ्रमण करना। सफर करना। ४. वृत्त की परिधि में गमन करना। कावा काटना। मँडराना। ५ किसी ओर को मुड़ना। ६. वापस आना या जाना। लौटना। मुहा०—*घूम पड़ना* = सहसा क्रुद्ध हो जाना। ७. उन्मत्त होना। मतवाला होना।
घूरना-क्रि० अ० [सं० घूर्णन] १. बार बार आँख गड़ाकर बुरे भाव से देखना। २ क्रोधपूर्वक एक टक देखना। ३. घूमना।
घूरा-संज्ञा पु० [सं० कूट, हिं० कूरा] १. कूड़े-करकट का ढेर। २. कतवारखाना।
घूस-संज्ञा स्त्री० [सं० गुहाशय] चूहे के वर्ग का एक बड़ा जंतु।
संज्ञा स्त्री० [सं० गुह्याशय] वह द्रव्य जो किसी को अपने अनुकूल कोई कार्य कराने के लिये अनुचित रूप से दिया जाय। रिशवत। उत्कोच। लाँच।
यौ०—घूसखोर = घूस खानेवाला।
घृणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] घिन। नफ़रत।
घृणित-वि० [सं०] १ घृणा करने योग्य। २. जिसे देख या सुनकर घृणा पैदा हो।
घृत-संज्ञा पु० [सं०] घी।
घृतकुमारी-संज्ञा स्त्री० [सं०] घीकुवार।
घृताची-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा।
घेघा-संज्ञा पु० [देश०] १. गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है। २. गले का एक रोग जिसमें गले में सूजन होकर बतौड़ा सा निकल आता है।
घेर-संज्ञा पु० [हिं० घेरना] चारों ओर का फैलाव। घेरा। परिधि।
घेरघार-संज्ञा स्त्री० [हिं० घेरना] १. चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया। २. चारों ओर का फैलाव। विस्तार। ३. खुशामद। विनती।
घेरना-क्रि० स० [सं० ग्रहण] १. चारों ओर हो जाना। चारों ओर से छेंकना। बाँधना। २. चारों ओर से रोकना। आक्रांत करना। छेंकना। ग्रसना। ३. गाय आदि चौपायों को चराना। ४. किसी स्थान को अपने अधिकार में रखना। ५ खुशामद करना।
घेरा-संज्ञा पु० [हिं० घेरना] १ चारों ओर की सीमा। लंबाई चौड़ाई आदि का सारा विस्तार या फैलाव। परिधि। २. चारों ओर की सीमा की माप का जोड़। परिधि का मान। ३ वह वस्तु जो किसी स्थान के चारों ओर हो (जैसे दीवार आदि)। ४. घिरा हुआ स्थान। हाता। मंडल। ५ सेना का किसी दुर्ग या गढ़ को चारों ओर से छेंकने का काम। मुहासरा।

घेवर–संज्ञा पु० [हिं० घी + पूर] एक प्रकार की मिठाई।

घैया–संज्ञा पु० [हिं० घी या सं० घात] १. ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते हुए मक्खन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया। २. थन से छूटती हुई दूध की धार जो मुँह रोपकर पी जाय।
संज्ञा स्त्री० [हिं० घाई या घा] ओर। तरफ़।

घैर, घैरु, घैरो†–संज्ञा पु० [देश०] १. निंदामय चर्चा। बदनामी। अपयश। २. चुगली। गुप्त शिकायत।

घोंघा–संज्ञा पु० [देश०] [स्त्री० घोंघी] शंख की तरह का एक कीड़ा। शंबुक।
वि० १. जिसमें कुछ सार न हो। २. मूर्ख।

घोंटना–क्रि० स० [हिं० घूँट, पु० हिं० घोट] १. घूँट घूँट करके पीना। हजम करना।
क्रि० स० दे० "घोटना"।

घोंपना–क्रि० स० [अनु० घप] १ धँसाना। चुभाना। गड़ाना। २ बुरी तरह सीना।

घोंसला–संज्ञा पु० [सं० कुशालय] घास, फूस आदि से बना हुआ वह स्थान जिसमें पक्षी रहते हैं। नीड़। खोता।

घोंसुआ†–संज्ञा पु० दे० "घोंसला"।

घोखना–क्रि० स० [सं० घुष] पाठ को बार बार आवृत्ति करना। रटना। घोटना।

घोघी†–संज्ञा स्त्री० दे० "घुग्घी"।

घोट, घोटक–संज्ञा पुं० [सं० घोटक] घोड़ा।

घोटना–क्रि० स० [सं० घुट = आवर्त्तन] १. चिकना या चमकीला करने के लिये बार बार रगड़ना। २. बारीक पीसने के लिये बार बार रगड़ना। ३. बट्टे आदि से रगड़कर परस्पर मिलाना। हल करना। ४. अभ्यास करना। मश्क़ करना। ५. डाँटना। फटकारना। ६. (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाय।
संज्ञा पु० [स्त्री० घोटनी] घोटने का औजार।

घोटवाना–क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे०] घोटने का काम दूसरे से कराना।

घोटा–संज्ञा पु० [हिं० घोटना] १. वह वस्तु जिससे घोटा जाय। २ घुटा हुआ चमकीला कपड़ा। ३. रगड़ा। घुटाई।

घोटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोटना + आई (प्रत्य०)] घोटने का काम या मजदूरी।

घोटाला–संज्ञा पु० [देश०] घपला। गड़बड़।

घोड़साल–संज्ञा स्त्री० दे० "घुड़साल"।

घोड़ा–संज्ञा पु० [सं० घोटक, प्रा० घोड़] [स्त्री० घोड़ी] १. चार पैरों का एक प्रसिद्ध पशु जो सवारी और गाड़ी आदि खींचने के काम में आता है। अश्व।

मुहा०—घोड़ा उठाना = घोड़े को तेज दौड़ाना। घोड़ा कसना = घोड़े पर सवारी के लिये जीन या चारजामा कसना। घोड़ा डालना = किसी ओर वेग से घोड़ा बढ़ाना। घोड़ा निकालना = घोड़े को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना। घोड़ा फेंकना = वेग से घोड़ा दौड़ाना। घोड़ा बेचकर सोना = खूब निश्चिंत होकर सोना।

२. वह पेंच या खटका जिसके दबाने से बंदूक में गोली चलती है। ३. टोटा जो भार सँभालने के लिये दीवार में लगाया जाता है। ४ शतरंज का एक मोहरा।

घोड़ागाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा + गाड़ी] वह गाड़ी जो घोड़े द्वारा चलाई जाती है।

घोड़ा नस–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा + नस] वह बड़ी मोटी नस जो एड़ी के पीछे ऊपर को जाती है।

घोड़ाबच–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा + बच] खुरासानी बच।

घोड़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ी + इया (प्रत्य०)] १. छोटी घोड़ी। २. दीवार में गड़ी हुई खूँटी। ३. छज्जे का भार सँभालनेवाली टोटी।

घोड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा] १. घोड़े की मादा। २ पायों पर खड़ी काठ की लंबी पटरी। पाटा। ३. विवाह की वह रीति जिसमें दूल्हा घोड़ी पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है। ४. विवाह के गीत।

घोर वि० [सं०] १. भयंकर। भयानक। डरावना। विकराल। २. सघन। घना। दुर्गम। ३ कठिन। कड़ा। ४. गहरा। गाढ़ा। ५. बुरा। ६. बहुत ज्यादा।
संज्ञा स्त्री०[सं० घुर] शब्द। गर्जन। ध्वनि।

घोरना–क्रि० अ० [सं० घोर] भारी शब्द करना। गरजना।

घोरिला†–संज्ञा पु० [हिं० घोड़ी] लड़कों के खेलने का घोड़ा।

घोल–संज्ञा पु० [हिं० घोलना] वह जो घोलकर बनाया गया हो।

घोलना–क्रि० स० [हिं० घुलना] पानी या और किसी द्रव पदार्थ में किसी वस्तु को हिलाकर मिलाना। हल करना।

घोष–संज्ञा पुं० [सं० १. अहीरों की बस्ती। २. अहीर। ३. गोशाला। ४. तट। किनारा। ५. शब्द। आवाज। नाद। ६. गरजने का शब्द। ७. शब्दों के उच्चारण में एक प्रयत्न।

घोषणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उच्च स्वर से किसी बात की सूचना। २. राजाज्ञा आदि का प्रचार। मुनादी। डुग्गी।

यौ०—घोषणापत्र=वह पत्र जिसमें सर्वसाधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा आदि लिखी हो। ३ गर्जन। ध्वनि। शब्द। आवाज़।

घोसी–संज्ञा पुं० [सं० घोष] अहीर। ग्वाल।

घौद–संज्ञा पुं० [देश०] फलों का गुच्छा। गौद।

घ्राण–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० घ्रेय] १. नाक। २. सूँघने की शक्ति। ३. सुगंध।

ङ

ङ–व्यंजन वर्ण का पाँचवां और कवर्ग का अंतिम अक्षर। यह स्पर्श वर्ण है और इसका उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है।

ङ–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूँघने की शक्ति। २. गंध। सुगंध। ३. भैरव।

च

च–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का २२ वाँ अक्षर और छठा व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चंक–वि० [सं० चक्र] पूरा पूरा। समूचा। सारा। समस्त।

चंक्रमण–संज्ञा पुं० [सं०] इधर-उधर घूमना। टहलना।

चंग–संज्ञा स्त्री० [फा०] डफ के आकार का एक छोटा बाजा।

संज्ञा पुं० [?] गंजीफ़े का एक रंग।

संज्ञा स्त्री० [सं० च=चंद्रमा] पतंग। गुड्डी।

मुहा०—चंग चढ़ना या उमहना=खूब चढ़ी बात होना। खूब जोर होना। चंग पर चढ़ाना=१. इधर-उधर की बात कहकर अपने अनुकूल करना। २. मिजाज बढ़ा देना।

चंगना–क्रि० स० [हिं० चंगा या फा० तंग] तंग करना। कसना। खींचना।

चंगा–वि० [सं० चंग] [स्त्री० चंगी] १. स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग। २. अच्छा। भला। सुंदर। ३. निर्मल। शुद्ध।

चंगु–संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+अंगुल] १. चंगुल। पंजा। २. पकड़। वश।

चंगुल–संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+अंगुल] १. चिड़ियों या पशुओं का टेढ़ा पंजा। २. हाथ के पंजों की वह स्थिति जो उँगलियों से किसी वस्तु को उठाने या लेने के समय होती है। बकोटा।

मुहा०—चंगुल में फँसना=वश या पकड़ में आना। काबू में होना।

चँगेर, चँगेरी–संज्ञा स्त्री० [सं० चंगेरिका] १. घास की छिछली डलिया। घास की चौड़ी टोकरी। २. फूल रखने की डलिया। डगरी। ३. चमड़े का जलपात्र। मशक। पखाल। ४. रस्सी में बाँधकर लटकाई हुई टोकरी जिसमें बच्चों को सुलाकर झूला झुलाते हैं।

चँगेली–संज्ञा स्त्री० दे० "चँगेर"।

चंच–संज्ञा पुं० दे० "चंचु"।

चंचरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भ्रमरी। भँवरा। २. चाचरि। होली में गाने का एक गीत। ३. हरिप्रिया छंद। ४. एक वर्णवृत्त। चचरी। चंचली। विबुधप्रिया। ५. छब्बीस मात्राओं का एक छंद।

चंचरीक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चंचरीकी] भ्रमर। भौंरा।

चंचरीकावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

चंचल–वि० [सं०] [स्त्री०

चलायमान। अस्थिर। हिलता-डोलता। २. अधीर। अव्यवस्थित। एकाग्र न रहनेवाला। ३. उद्विग्न। घबराया हुआ। ४. नटखट। चुलबुला।

चंचलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अस्थिरता। चपलता। २. नटखटी। शरारत।

चंचलताई–संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता"।

चंचला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. बिजली। ३. पिप्पली। ४. एक वर्णवृत्त।

चंचलाई–संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता"।

चंचु–संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रकार का शाक। चेंच। २. रेंड़ का पेड़। ३. मृग। हिरन। संज्ञा स्त्री० चिड़ियों की चोंच।

चँचोरना–क्रि० स० दे० "चचोड़ना"।

चंट–वि० [सं० चंड] १. चालाक। होशियार। सयाना। २. धूर्त। छँटा हुआ।

चंड–वि० [सं०] [स्त्री० चंडा] १. तेज। तीक्ष्ण। उग्र। प्रखर। २. बलवान्। दुर्दमनीय। ३. कठोर। कठिन। विकट। ४. उद्धत। क्रोधी। गुस्सावर।
संज्ञा पु० [सं० चंड] १. ताप। गरमी। २. एक यमदूत। ३. एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ४. कार्तिकेय।

चंडकर–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य।

चंडता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उग्रता। प्रबलता। घोरता। २. बल। प्रताप।

चंड मुंड–संज्ञा पु० [सं०] दो राक्षसों के नाम जो देवी के हाथों से मारे गए थे।

चंडरसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।

चंडवृष्टिप्रपात–संज्ञा पु० [सं०] एक दंडक वृत्त।

चंडांशु–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य।

चंडाई–संज्ञा स्त्री० [सं० चंड=तेज] १. शीघ्रता। जल्दी। फुरती। उतावली। २. प्रबलता। जबरदस्ती। ऊधम। अत्याचार।

चंडाल–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० चंडालिन, चंडालिनी] चांडाल। श्वपच।

चंडालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. एक प्रकार की वीणा।

चंडालिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंडाल वर्ण की स्त्री। २. दुष्टा स्त्री। पापिनी स्त्री। ३. एक प्रकार का दोहा छंद। (दूषित)

चंडावल–संज्ञा पु० [सं० चंड+आवलि] १. सेना के पीछे का भाग। 'हरावल' का उलटा। २. बहादुर सिपाही। ३. संतरी।

चंडिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. लड़ाकी स्त्री। ३. गायत्री देवी।

चंडी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा का वह रूप जो उन्होंने महिषासुर के वध के लिये धारण किया था। २. कर्कशा और उग्र स्त्री। ३. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

चंडू–संज्ञा पु० [सं० चंड=तीक्ष्ण ?] अफ़ीम का किवाम जिसका धूआँ नशे के लिये एक नली के द्वारा पीते हैं।

चंडूखाना–संज्ञा पु० [हिं० चंडू+फा० खाना] वह घर जहाँ लोग चंडू पीते हैं।
मुहा०—चंडूखाने की गप=नशेवालों की झूठी बकवाद। बिलकुल झूठी बात।

चंडूबाज–संज्ञा पु० [हिं० चंडू+फा० बाज (प्रत्य०)] चंडू पीनेवाला।

चंडूल–संज्ञा पु० [देश०] खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया।

चंडोल–संज्ञा पु० [सं० चंद्र+दोल] एक प्रकार की पालकी।

चंद–संज्ञा पु० [सं० चंद्र] १. दे० "चंद्र"। २. हिंदी के एक अत्यंत प्राचीन कवि जो दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान की सभा में थे।
वि० [फा०] थोड़े से। कुछ।

चंदक–संज्ञा पु० [सं० चंद्र] १. चंद्रमा। २. चाँदनी। ३. चाँद नाम की मछली। ४. माथे पर पहनने का एक अर्द्धचंद्राकार गहना। ५. नथ में पान के आकार की बनावट।

चंदन–संज्ञा पु० [सं०] एक पेड़ जिसके हीर की सुगंधित लकड़ी का व्यवहार देवपूजन आदि में होता है। श्रीखंड। संदल। २. चंदन की लकड़ी या टुकड़ा। ३. घिसे हुए चंदन का लेप। ४. छप्पय छंद का तेरहवाँ भेद।

चंदनगिरि–संज्ञा पु० [सं०] मलयाचल।

चंदनहार–संज्ञा पु० दे० "चंद्रहार"।

चँदनौता–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का लहँगा।

चंदवान–संज्ञा पु० दे० "चंद्रवाण"।

चँदराना–क्रि० स० [सं० चंद्र (दिखलाना)] १. फुसलाना। बहकाना। बहलाना। २. जान बूझकर अनजान बनना।

चँदला–वि० [हिं० चाँद=खोपड़ी] गंजा।

चँदवा–संज्ञा पु० [सं० चंद्र या चंद्रोदय] एक प्रकार का छोटा मंडप। चँदोवा।

संज्ञा पुं० [सं० चंद्रक] १. गोल आकार की चकती। २. मोर की पूँछ पर का अर्द्धचंद्राकार चिह्न।

चंदा–संज्ञा पुं० [सं० चंद या चंद्र] चंद्रमा। संज्ञा पुं० [फा० चंद=कई एक] १. वह थोड़ा थोड़ा धन जो कई आदमियों से किसी कार्य्य के लिये लिया जाय। बेहरी। उगाही। २. किसी सामयिक पत्र या पुस्तक आदि का वार्षिक मूल्य।

चंदिका–संज्ञा स्त्री० दे० "चंद्रिका"।

चंदिगि, चंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र] चाँदनी। चंद्रिका।

चँदिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] खोपड़ी। सिर का मध्य भाग।

चंदिर–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

चँदेरी–संज्ञा स्त्री० [सं० चेदि या हिं० चंदेल] एक प्राचीन नगर जो ग्वालियर राज्य में है। चेदि देश की राजधानी।

चँदेरीपति–संज्ञा पुं० [सं०] शिशुपाल।

चंदेल–संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों की एक शाखा जो किसी समय कालिंजर और महोबे में राज्य करती थी।

चंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. एक की संख्या। ३. मोर की पूँछ की चंद्रिका। ४. कपूर। ५. जल। ६. सोना। सुवर्ण। ७. पौराणिक भूगोल के १८ उपद्वीपों में से एक। ८. वह बिंदी जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जाती है। ९. पिंगल में टगण का दसवाँ भेद; (॥ऽ॥)। १०. हीरा। ११. कोई आनंददायक वस्तु। वि० १. आनंददायक। २. सुंदर।

चंद्रक–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. चंद्रमा के ऐसा मंडल या घेरा। ३. चंद्रिका। चाँदनी। ४. मोर की पूँछ की चंद्रिका। ५. नहँ। नाखून ६. कपूर।

चंद्रकला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश। २. चंद्रमा की किरण या ज्योति। ३. एक वर्णवृत्त। ४. माथे पर पहनने का एक गहना।

चंद्रकांत–संज्ञा पुं० [सं०] एक मणि या रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह चंद्रमा के सामने करने से पसीजता है।

चंद्रकांता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमा की स्त्री। २. रात्रि। रात। ३. पंद्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

चंद्रगुप्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्रगुप्त। २. मगध देश का प्रथम मौर्य्यवंशी राजा। ३. गुप्तवंश का एक प्रसिद्ध राजा।

चंद्रग्रहण–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का ग्रहण।

चंद्रचूड़–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रज्योति–संज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र+ज्योति] चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी।

चंद्रधनु–संज्ञा पुं० [सं०] वह इंद्र-धनुष जो रात को चंद्रमा का प्रकाश पड़ने के कारण दिखाई पड़ता है।

चंद्रधर–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रप्रभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा की ज्योति। चाँदनी। चंद्रिका।

चंद्रबिंदु–संज्ञा पुं० [सं०] अर्द्ध अनुस्वार की बिंदी। जिसका रूप यह ँ है।

चंद्रबिंब–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का मंडल।

चंद्रभागा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पंजाब की चनाब नाम की नदी।

चंद्रभाल–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्रभूषण–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

चंद्रमणि–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रकांत मणि। २. उल्लाला छंद।

चंद्रमा–संज्ञा पुं० [सं० चंद्रमस्] रात को प्रकाश देनेवाला एक उपग्रह जो महीने में एक बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करता है और सूर्य से प्रकाश पाकर चमकता है। चाँद। शशि। विधु।

चंद्रमाललाम–संज्ञा पुं० [सं० चंद्रमा+ललाम=भूषण] महादेव। शंकर। शिव।

चंद्रमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] २८ मात्राओं का एक छंद।

चंद्रमौलि–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

चंद्ररेखा, चंद्रलेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमा की कला। २. चंद्रमा की किरन। ३. द्वितीया का चंद्रमा। ४. एक वृत्त का नाम।

चंद्रलोक–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का लोक।

चंद्रवंश–संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों के दो प्रधान कुलों में से एक जो पुरूरवा से आरंभ हुआ था।

चंद्रवर्त्म–संज्ञा पुं० [सं०]

चंद्रवार–संज्ञा पुं० [सं०]

चंद्रशेखर–संज्ञा पुं० [सं०]

चंद्रहार–संज्ञा पुं० [सं०] गले में पहनने की एक प्रकार की माला। नौलखा हार।
चंद्रहास–संज्ञा पुं० [सं०] १. खड्ग। तलवार। २. रावण की तलवार।
चंद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र] मरने के समय की वह अवस्था जब टकटकी बँध जाती है।
चंद्रातप–संज्ञा पुं० [सं०] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. चँदवा। वितान।
चंद्रावर्त्ता–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।
चंद्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। कौमुदी। २. मोर की पूँछ के पर का गोल चिह्न। ३. इलायची। ४ जूही या चमेली। ५. एक देवी। ६. एक वर्ण-वृत्त। ७. माथे पर का एक भूषण। बेंदी। बेंदा।
चंद्रोदय–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा का उदय। २. वैद्यक में एक रस। ३. चँदवा। चँदोवा। वितान।
चंपई–वि० [हिं० चंपा] चंपा के फूल के रंग का। पीले रंग का।
चंपक–संज्ञा पुं० [सं०] १. चंपा। २. चंपा केला। ३. सांख्य में एक सिद्धि।
चंपकमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
चंपत–वि० [देश०] चलता। गायब। अंतर्द्धान।
चँपना–क्रि० अ० [सं० चप्] १. बोझ से दबना। २. उपकार आदि से दबना।
चंपा–संज्ञा पुं० [सं० चंपक] १. मझोले कद का एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के कड़ी महक के फूल लगते हैं। २. एक पुरी जो प्राचीन काल में अंग देश की राजधानी थी। ३ एक प्रकार का मीठा केला। ४. घोड़े की एक जाति। ५. रेशम का कीड़ा।
चंपाकली–संज्ञा स्त्री० [हिं० चंपा + कली] गले में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।
चंपारण्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक स्थान जिसे आजकल चंपारन कहते हैं।
चंपू–संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यग्रंथ जिसमें गद्य के बीच बीच में पद्य भी हो।
चंबल–संज्ञा स्त्री० [सं० चर्मण्वती] १. नदी। २. नालों के किनारे की वह लकड़ी जिससे सिंचाई के लिये पानी ऊपर चढ़ाते हैं। संज्ञा पुं० पानी की बाढ़।
चँवर–संज्ञा पुं० [सं० चमर] [स्त्री० अल्पा० चँवरी] १. चमड़े में लगा हुआ सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो राजाओं या देवमूर्त्तियों के सिर पर डुलाया जाता है।
मुहा०–चँवर ढलना = ऊपर चँवर हिलाया जाना।
२. घोड़ों और हाथियों के सिर पर लगाने की कलगी। ३ झालर। फुँदना।
चँवरढार–संज्ञा पुं० [हिं० चँवर + ढारना] चँवर डुलानेवाला सेवक।
चंसुर–संज्ञा पुं० [सं० चंद्रशूर] हालों या हालिम नाम का पौधा।
च–संज्ञा पुं० [सं०] १ कच्छप। कछुआ। २ चंद्रमा। ३. चोर। ४ दुर्जन।
चउहट्ट†–संज्ञा पुं० दे० "चौहट्ट"।
चक–संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १. चरई नाम का खिलौना। २ चक्रवाक पक्षी। चकवा। ३ चक्र नामक अस्त्र। ४. चक्का। पहिया। ५ जमीन का बड़ा टुकड़ा। पट्टी। ६. छोटा गाँव। खेड़ा। पट्टी। पुरवा। ७. किसी बात की निरंतर अधिकता। ८. अधिकार। दखल।
वि० भरपूर। अधिक। ज्यादा।
वि० [सं०] चकपकाया हुआ। भ्रांत।
चकई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चकवा] मादा चकवा। मादा सुरखाब।
संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र] घिरनी या गड़ारी के आकार का एक खिलौना।
चकचकाना–क्रि० अ० [अनु०] १ किसी द्रव पदार्थ का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के भीतर से निकलना। रस रसकर ऊपर आना। २. भींग जाना।
चकचाना†–क्रि० अ० [अनु०] चौंधियाना। चकाचौंध लगना।
चकचाल†–संज्ञा पुं० [सं० चक्र + हिं० चाल] चक्कर। भ्रमण। फेरा।
चकचाव†–संज्ञा पुं० [अनु०] चकाचौंध।
चकचून–वि० [सं० चक्र + चूर्ण] चूर किया हुआ। पिसा हुआ। चकनाचूर।
चकचौंध–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।
चकचौंधना–क्रि० अ० [सं० चक्षुः + अंध] आँख का अत्यंत अधिक प्रकाश के सामने ठहर न सकना। चकाचौंध होना।
क्रि० स० चकाचौंधी उत्पन्न करना।
चकचौंह†–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।
चकडोर–संज्ञा स्त्री० [हिं० चरई + डोर] चकई नामक खिलौने में लपेटा हुआ सूत।

चकती–संज्ञा स्त्री० [सं० चक्रवत्] १. चमडे, कपड़े आदि में से काटा हुआ, गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। पट्टी। २. फटे-टूटे स्थान को बंद करने के लिये लगी हुई पट्टी या धज्जी। थिगली।

मुहा०—बादल में चकती लगाना = अनहोनी बात करने का प्रयत्न करना।

चकत्ता संज्ञा पु० [सं० चक्र+वर्त्त] १. रक्त-विकार आदि के कारण शरीर के ऊपर का गोल दाग। २. खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर पड़ी हुई चिपटी सूजन। ददोरा। ३. दाँतों से काटने का चिह्न।

संज्ञा पु० [तु० चगताई] १. मोगल या तातार अमीर चगताईखाँ जिसके वंश में बाबर, अकबर आदि मुग़ल बादशाह थे। २. चग़ताई वंश का पुरुष।

चकना⊙–क्रि० अ० [सं० चक्र = भ्रांत] १. चकित होना। भौचक्का होना। चकपकाना। २. चौंकना। आशंकायुक्त होना।

चकनाचूर–वि० [हिं० चक = भरपूर + चूर] १. जिसके टूट-फूटकर बहुत से छोटे छोटे टुकड़े हो गए हों। चूर चूर। खंड खंड। चूर्णित। २. बहुत थका हुआ।

चकपकाना–क्रि० अ० [सं० चक्र = भ्रांत] १. आश्चर्य से इधर उधर ताकना। भौचक्का होना। २. चौंकना।

चकफेरी–संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र, हिं० चक + हिं० फेरी] परिक्रमा। भँवरी।

चकबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चक + फा० बंदी] भूमि को कई भागों में विभक्त करना।

चकमक–संज्ञा पु० [तु०] एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर चोट पड़ने से बहुत जल्दी आग निकलती है।

चकमा–संज्ञा पु० [सं० चक्र = भ्रांत] १. भुलावा। धोखा। २. हानि। नुकसान।

चकर†–संज्ञा पु० [सं० चक्र] चक्रवाक पक्षी। चकवा।

चकरबा–संज्ञा पु० [सं० चक्रव्यूह] १. कठिन स्थिति। असमंजस। २. बखेड़ा।

चकराना–क्रि० अ० [सं० चक्र] १. (सिर का) चक्कर खाना। (सिर) घूमना। २. भ्रांत होना। चकित होना। ३. चकपकाना। चकित होना। घबराना। क्रि० स० आश्चर्य में डालना।

चकरी–संज्ञा स्त्री० [सं० चक्री] १. चक्की। २ चकई नाम का खिलौना।

वि० चक्की के समान इधर-उधर घूमनेवाला। भ्रमित। अस्थिर। चंचल।

चकला–संज्ञा पु० [सं० चक्र, हिं० चक + ला (प्रत्य०)] १. पत्थर या काठ का गोल पाटा जिस पर रोटी बेली जाती है। चौका। २ चक्की। ३. इलाका। ज़िला। ४. व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा।

वि० [स्त्री० चकली] चौड़ा।

चकली–संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र, हिं० चक] १. घिरनी। गड़ारी। २. छोटा चकला जिस पर चंदन घिसते हैं। होरसा।

चकलेदार–संज्ञा पु० [देश०] किसी प्रदेश का शासक या कर संग्रह करनेवाला।

चकवँड–संज्ञा पु० [सं० चक्रमर्द] एक बरसाती पौधा। पमार। पवाड़।

चकवा–संज्ञा पु० [सं० चक्रवाक] [स्त्री० चकई] एक जल-पक्षी जिसके संबंध में प्रवाद है कि रात को जोड़े से अलग पड़ जाता है। सुरख़ाब।

चकवाना⊙†–क्रि० अ० [देश०] चकपकाना।

चकवाह†–संज्ञा पु० दे० "चकवा"।

चकहा†–संज्ञा पु० [सं० चक्र] पहिया।

चका†–संज्ञा पु० [सं० चक्र] १. पहिया। चक्का। चाक। २. चकवा पक्षी।

चकाचक–वि० [अनु०] तराबोर। लथ-पथ। क्रि० वि० खूब। भरपूर।

चकाचौंध–संज्ञा स्त्री० [सं० चक् = चमकना + चौ = चारों ओर + अंध] अत्यंत अधिक चमक के सामने आँखों की झपक। तिलमिलाहट। तिलमिली।

चकाना†–क्रि० अ० दे० "चकपकाना"।

चकाबू–संज्ञा पु० [सं० चक्रव्यूह] १. एक के पीछे एक कई मंडलाकार पंक्तियों में सैनिकों की स्थिति। २. भूलभुलैयाँ।

चकित–वि० [सं०] १. चकपकाया हुआ। विस्मित। दंग। हक्काबक्का। २. हैरान। घबराया हुआ। ३. चौकन्ना। सशंकित। डरा हुआ। ४. डरपोक। कायर।

चकुला†–संज्ञा पु० [देश०] चिड़िया का बच्चा। चेंटुवा।

चकृत–वि० दे० "चकित"।

चकोटना–क्रि० स० [हिं० चिकोटी] चुटकी से मांस नोचना। चुटकी काटना।

चकोतरा—संज्ञा पु० [सं० चक्र=गोला] एक प्रकार का बड़ा जँबीरी नीबू।

चकोर—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० चकोरी] १. एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खानेवाला प्रसिद्ध है। २. एक वर्णवृत्त का नाम।

चकौंध—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

चक्क—संज्ञा पु० [सं० चक्र] १. चक्रवाक। चकवा। २. कुम्हार का चाक।

चक्कर—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १. पहिए के आकार की कोई (विशेषतः घूमनेवाली) बड़ी गोल वस्तु। मंडलाकार पटल। चाक। २. गोल या मंडलाकार घेरा। मंडल। ३. मंडलाकार गति। परिक्रमण। फेरा। ४. पहिए के ऐसा भ्रमण। अक्ष पर घूमना।

मुहा०—चक्कर काटना=परिक्रमा करना। मँडराना। चक्कर खाना=१. पहिए की तरह घूमना। २. घुमाव फिराव के साथ जाना। ३. भटकना। भ्रांत होना। हैरान होना।

५. चलने में अधिक घुमाव या दूरी। फेर। ६. हैरानी। असमंजस। ७. पेंच। जटिलता। दुरूहता।

मुहा०—किसी के चक्कर में आना या पड़ना=किसी के धोखे में आना या पड़ना।

८. सिर घूमना। घुमरी। घुमटा। ९. पानी का भँवर। जंजाल।

चक्कवइ—वि० दे० "चक्रवर्ती"।

चक्का—संज्ञा पु० [सं० चक्र, प्रा० चक्क] १. पहिया। चाक। २. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ३. बड़ा चिपटा टुकड़ा। बड़ा कतरा।

चक्की—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्री] आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र। जाँता।

मुहा०—चक्की पीसना=कड़ा परिश्रम करना।

संज्ञा स्त्री० [सं० चक्रिका] १. पैर के घुटने की गोल हड्डी। २. बिजली। वज्र।

चक्र—संज्ञा पु० [सं०] १. पहिया। चाक। २. कुम्हार का चाक। ३. चक्की। जाँता। ४. तेल पेरने का कोल्हू। ५. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ६. लोहे के एक अस्त्र का नाम जो पहिए के आकार का होता है। ७. पानी का भँवर। ८. वातचक्र। बवंडर। ९. समूह। समुदाय। मंडली। १०. एक प्रकार का व्यूह या सेना की स्थिति। ११. मंडल। प्रदेश। राज्य। १२. एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश। आसमुद्रांत भूमि। १३. चक्रवाक पक्षी। चकवा। १४ योग के अनुसार शरीरस्थ ६ पद्म। १५. फेरा। भ्रमण। घुमाव। चक्कर। १६. दिशा। प्रांत। १७ एक वर्णवृत्त।

चक्रतीर्थ—संज्ञा पु० [सं०] १. दक्षिण में वह तीर्थ-स्थान जहाँ ऋष्यमूक पर्वतों के बीच तुंगभद्रा नदी घूमकर बहती है। २. नैमिषारण्य का एक कुंड।

चक्रधर—वि० [सं०] जो चक्र धारण करे। संज्ञा पु० १. विष्णु भगवान्। २ श्रीकृष्ण। ३ बाजीगर। इंद्रजाल करनेवाला। ४ कई ग्रामों या नगरों का अधिपति।

चक्रधारी—संज्ञा पु० दे० "चक्रधर"।

चक्रपाणि—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

चक्रपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तांत्रिकों की एक पूजा विधि।

चक्रमर्द—संज्ञा पु० [सं०] चकवँड़।

चक्रमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिह्न जो वैष्णव अपने बाहु तथा और अंगों पर छपाते हैं।

चक्रवर्ती—वि० [सं० चक्रवर्तिन्] [स्त्री० चक्रवर्तिनी] आसमुद्रांत भूमि पर राज्य करनेवाला। सार्वभौम।

चक्रवाक—संज्ञा पु० [सं०] चकवा पक्षी।

यौ०—चक्रवाकबंधु=सूर्य।

चक्रवात—संज्ञा पु० [सं०] वेग से चक्कर खाती हुई वायु। वातचक्र। बवंडर।

चक्रवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह सूद या ब्याज जिसमें ब्याज पर भी ब्याज लगता जाता है। सूद दर सूद।

चक्रव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये उसके चारों ओर कई घेरों में सेना की चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति।

चक्रायुध—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

चक्रित—वि० दे० "चकित"।

चक्री—संज्ञा पु० [सं० चक्रिन्] १. वह जो चक्र धारण करे। २. विष्णु। ३. गाँव का पंडित या पुरोहित। ४. चक्रवाक। चकवा। ५. कुम्हार। ६. सर्प। ७. जासूस। गुप्तचर। चर। ८. तेली। ९. चक्रवर्ती। १०. चक्रमर्द। चकवँड़।

चक्षु–संज्ञा पुं० [सं० चक्षुस्] १. दर्शनेंद्रिय। आंख। २. एक नदी जिसे आजकल आक्सस या जेहूँ कहते हैं। वंक्षु नद।
चक्षुरिंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] आंख।
चक्षुष्य–वि० [सं०] १. जो नेत्रों को हितकारी हो (ओषधि आदि)। २. सुंदर। प्रियदर्शन। ३. नेत्र संबंधी।
चख॰–संज्ञा पुं० [सं० चक्षुस्] आंख।
संज्ञा पुं० [फा०] झगड़ा। तकरार। कलह।
यौ०—चख चख=तकरार। कहा सुनी।
चखना–क्रि० स० [सं० चष] स्वाद लेना। स्वाद लेने के लिये मुँह में रखना।
चखाचखी–संज्ञा स्त्री० [फा० चख=झगड़ा] लाग-डाँट। विरोध। वैर।
चखाना–क्रि० स० [हिं० 'चखना' का प्रे०] खिलाना। स्वाद दिलाना।
चखु॰–संज्ञा पुं० दे० "चक्षु"।
चखौड़ा॰†–संज्ञा पुं० [हिं० चख+औड़] दिठौना। डिठौना।
चगड़–वि० [देश०] चतुर। चालाक।
चगताई–संज्ञा पुं० [तु०] तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश जो चगताई खां से चला था।
चचा–संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० चची] बाप का भाई। पितृव्य।
चचिया–वि० [हिं० चचा] चाचा के बराबर का संबंध रखनेवाला।
यौ०—चचिया ससुर=पति या पत्नी का चाचा।
चचींडा†–संज्ञा पुं० [सं० चिचिंड] १. तोरई की तरह की एक तरकारी। २. चिचड़ा।
चचेरा–वि० [हिं० चचा] चाचा से उत्पन्न। चाचाज़ाद। जैसे—चचेरा भाई।
चचोड़ना–क्रि० स० [अनु० या देश०] दांत से खींच खींच या दबा दबाकर चूसना।
चट–क्रि० वि० [सं० चटुल=चंचल] जल्दी से। झट। तुरंत। फौरन्। शीघ्र।
॰†–संज्ञा पुं० [सं० चित्र] १. दाग़। धब्बा। २. घाव का चकत्ता।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है। २. वह शब्द जो उँगलियों को मोड़कर दबाने से होता है।
वि० [हिं० चाटना] चाट पोंछकर खाया हुआ।
मुहा०—चट कर जाना=१. सब खा जाना। २. दूसरे की वस्तु लेकर न देना।

चटक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चटका] गौरा पक्षी। गौरवा। गौरैया। चिड़ा।
संज्ञा स्त्री० [सं० चटुल=सुंदर] चटकीलापन। चमक-दमक। कांति।
†वि० चटकीला। चमकीला।
संज्ञा स्त्री० [सं० चटुल] तेज़ी। फुरती।
क्रि० वि० चटपट। तेज़ी से।
वि० चटपटा। चटकारा। चरपरा।
चटकदार–वि० दे० "चटकीला"।
चटकना–क्रि० अ० [अनु० चट]१. 'चट' शब्द करके टूटना या फूटना। तड़कना। कड़कना। २. कोयले, गँठीली लकड़ी आदि का जलते समय चट चट करना। ३. चिड़चिड़ाना। झुँझलाना। ४. दरज पड़ना। स्थान स्थान पर फटना। ५. कलियों का फूटना या खिलना। प्रस्फुटित होना। ६ अनबन होना। खटकना।
संज्ञा पुं० [अनु० चट] तमाचा। थप्पड़।
चटकनी–संज्ञा स्त्री० [अनु० चट] सिटकिनी।
चटक मटक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक+मटक] बनाव सिंगार। वेश विन्यास और हाव-भाव। नाज़ नखरा।
चटका†–संज्ञा पुं० [हिं० चट] फुरती।
चटकाना–क्रि० स० [अनु० चट] १. ऐसा करना जिसमें कोई वस्तु चटक जाय। तोड़ना। २. उँगलियों को खींचकर या मोड़कर दबाकर चट चट शब्द निकालना। ३. बार बार टकराना जिससे चट चट शब्द निकले।
मुहा०—जूतियां चटकाना=जूता घसीटते हुए फिरना। मारा मारा फिरना।
४. अलग करना। दूर करना। ५. चिढ़ाना। कुपित करना।
चटकारा–वि० [सं० चटुल] १. चटकीला। चमकीला। २. चंचल। चपल। तेज।
वि० [अनु० चट] स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द।
चटकाली–संज्ञा स्त्री० [सं० चटक+आलि] १. गौरों की पंक्ति। २ चिड़ियों की पंक्ति।
चटकीला–वि० [हिं० चमक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चटकीली] १. जिसका रंग फीका न हो। खुलता। शोख़। भड़कीला। २. चमकीला। चमकदार। आभा-युक्त। ३. चरपरा। चटपटा। मज़ेदार।
चटखना–क्रि० स०, संज्ञा पुं० दे० - ।

चट चट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चटकने का शब्द। चटचट शब्द।

चटचटाना–क्रि० अ० [सं० चट=भेदन] १. चटचट करते हुए टूटना या फूटना। २ लकड़ी, कोयले आदि का चटचट शब्द करते हुए जलना।

चटनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चाटना] १. चाटने की चीज। अवलेह। २ वह गीली चरपरी वस्तु जो भोजन के साथ स्वाद बढ़ाने को खाई जाय।

चटपट–क्रि० वि० [अनु०] शीघ्र। जल्दी।

चटपटा–वि० [हिं० चाट] [स्त्री० चटपटी] चरपरा। तीक्ष्ण स्वाद का। मजेदार।

चटपटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चटपट] [वि० चटपटिया] १ आतुरता। उतावली। शीघ्रता। २. घबराहट। व्यग्रता।

चटवाना–क्रि० स० दे० "चटाना"।

चटशाला–संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार"।

चटसार†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चट्टा=चेला+सार=शाला] बच्चों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मकतब।

चटाई–संज्ञा स्त्री० [सं० कट=चटाई?] फूस, सींक, पतली फट्टियों आदि का बिछावन। तृण का डासन। साथरी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० चाटना] चाटने की क्रिया।

चटाका–संज्ञा पु० [अनु०] लकड़ी या और किसी कड़ी वस्तु के जोर से टूटने का शब्द।

चटाना–क्रि० स० [हिं० चाटना का प्रे०] १. चाटने का काम कराना। २. थोड़ा थोड़ा किसी दूसरे के मुँह में डालना। खिलाना। ३. घूस देना। रिश्वत देना। ४. छुरी, तलवार आदि पर सान रखवाना।

चटापटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चटपट] शीघ्रता।

चटावन–संज्ञा पु० [हिं० चटाना] बच्चे को पहले पहल अन्न चटाना। अन्नप्राशन।

चटिक–क्रि० वि० [हिं० चट] चटपट।

चटियल–वि० [देश०] जिसमें पेड़ पौधे न हों। निचाट। (मैदान)

चटी–संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार"।
संज्ञा स्त्री० दे० "चट्टी"।

चटुल–वि० [सं०] १. चंचल। चपल। चालाक। २. सुंदर। प्रियदर्शन।

चटोरा–वि० [हिं० चाट+ओरा (प्रत्य०)] १. जिसे अच्छी अच्छी चीजें खाने की लत हो। स्वादलोलुप। २ लोलुप। लोभी।

चटोरापन–संज्ञा पु० [हिं० चटोरा+पन(प्रत्य०)] अच्छी अच्छी चीजें खाने का व्यसन।

चट्टा–वि० [हिं० चाटना] १. चाट पोंछकर खाया हुआ। २. समाप्त। नष्ट। गायब।

चट्टा–संज्ञा पु० [देश०] चटियल मैदान। संज्ञा पु० [हिं० चकत्ता] शरीर पर कुष्ट आदि के कारण निकला हुआ चकत्ता। दाग।

चट्टान–संज्ञा स्त्री० [हिं० चट्टा] पहाड़ी भूमि के अंतर्गत पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा। विस्तृत शिलापटल। शिलाखंड।

चट्टा-बट्टा–संज्ञा पु०[हिं० चट्टू + बट्टा=गोला] १ छोटे बच्चों के खेलने के लिये काठ के खिलौने का एक समूह। २. गोले और गोलियां जिन्हें बाजीगर एक थैली में से निकालकर लोगों को तमाशा दिखाते हैं।
मुहा०—एक ही थैली के चट्टे बट्टे=एक ही मेल के मनुष्य। चट्टे बट्टे लड़ाना=इधर की उधर लगाकर लड़ाई कराना।

चट्टी–संज्ञा स्त्री० [देश०] टिकान। पड़ाव। संज्ञा स्त्री० [हिं० चपटा या अनु० चट चट] एँड़ी की ओर खुला हुआ जूता। स्लिपर।

चट्टू–वि० [हिं० चाट] स्वादलोलुप। चटोरा। संज्ञा पु० [अनु०] पत्थर का बड़ा खरल।

चढ़त–संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना] किसी देवता को चढ़ाई हुई वस्तु। देवता की भेंट।

चढ़ना–क्रि० अ० [सं० उच्चलन] १. नीचे से ऊपर को जाना। ऊँचाई पर जाना। २. ऊपर उठना। उड़ना। ३. ऊपर की ओर सिमटना। ४. ऊपर से टँकना। मढ़ा जाना। ५. उन्नति करना।
मुहा०—चढ़ बनना=सुयोग मिलना। ६. (नदी या पानी का) बाढ़ पर आना। ७ धावा करना। चढ़ाई करना। ८ बहुत से लोगों का दल बांधकर किसी काम के लिये जाना। ९. महँगा होना। भाव का बढ़ना। १०. सुर ऊँचा होना। ११. धारा या बहाव के विरुद्ध चलना। १२. ढोल, सितार आदि की डोरी या तार का कस जाना। तनना।
मुहा०—नस चढ़ना=नस का अपने स्थान से हट जाने के कारण तन जाना।
१३. किसी देवता, महात्मा आदि को भेंट दिया जाना। देवार्पित होना। १४. सवारी पर बैठना। सवार होना। १५ वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का आरंभ होना।

१६. ऋण होना। कर्ज़ होना। १७. बही या कागज़ आदि पर लिखा जाना। टँकना। दर्ज होना। १८. किसी वस्तु का बुरा और उद्वेगजनक प्रभाव होना। १६. पकने या आँच खाने के लिये चूल्हे पर रखा जाना। २०. लेप होना। पोता जाना।
चढ़वाना–क्रि० स० [हिं० चढ़ाना का प्रे०] चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।
चढ़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि। ३. शत्रु से लड़ने के लिये प्रस्थान। धावा। आक्रमण।
चढ़ा-उतरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना + उतरना] बार बार चढ़ने-उतरने की क्रिया।
चढ़ा-ऊपरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना + ऊपर] एक दूसरे के आगे होने या बढ़ने का प्रयत्न। लाग-डाँट। होड़।
चढ़ाचढ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ा-ऊपरी"।
चढ़ाना–क्रि० स० [हिं० चढ़ना का प्रे०] १. चढ़ना का सकर्मक रूप। चढ़ने में प्रवृत्त करना। २. चढ़ने में सहायता देना। ऐसा काम करना जिससे चढ़े। ३. पी जाना।
चढ़ाव–संज्ञा पुं० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने की क्रिया या भाव।
यौ०—चढ़ाव-उतार = ऊँचा-नीचा स्थान।
२. बढ़ने का भाव। वृद्धि। बाढ़।
यौ०—चढ़ाव-उतार = एक सिरे पर मोटा और दूसरे सिरे की ओर क्रमशः पतला होते जाने का भाव। गावदुम आकृति।
३. दे० "चढ़ावा"। ४. वह दिशा जिधर से नदी की धारा आई हो। 'बहाव' का उलटा।
चढ़ावा–संज्ञा पुं० [हिं० चढ़ना] १. वह गहना जो दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहनाया जाता है। २. वह सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई जाय। पुजापा। ३. चढ़ावा। दम।
मुहा०—चढ़ावा बढ़ावा देना = उत्साह बढ़ाना। उसकाना। उत्तेजित करना।
चणक–संज्ञा पुं० [सं०] चना।
चतुरंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह गाना जिसमें चार प्रकार के बोल गठे हों। २. सेना के चार अंग—हाथी, घोड़े, रथ, पैदल। ३. चतुरंगिणी सेना। ४. शतरंज।
चतुरंगिणी–वि० स्त्री० [सं०] चार अंगों-वाली (विशेषतः सेना)।
चतुर–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० चतुरा] १. टेढ़ी चाल चलनेवाला। वक्रगामी। २. फुरतीला। तेज़। ३. प्रवीण। होशियार। निपुण। ४. धूर्त। चालाक।
संज्ञा पुं० शृंगार रस में नायक का एक भेद।
चतुरई–संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई"।
चतुरता–संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर + ता(प्रत्य०)] चतुराई। प्रवीणता। होशियारी।
चतुरपन†–संज्ञा पुं० दे० "चतुराई"।
चतुरस्र–वि० [सं०] चौकोर।
चतुरसम†–संज्ञा पुं० दे० "चतुस्सम"।
चतुराई–संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर + आई(प्रत्य०)] १. होशियारी। निपुणता। दक्षता। २. धूर्तता। चालाकी।
चतुरानन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।
चतुरिंद्रिय–संज्ञा पुं० [सं०] चार इंद्रियों-वाले जीव। जैसे—मक्खी, भौंरे, साँप आदि।
चतुर्गुण–वि० [सं०] १. चौगुना। २. चार गुणोंवाला।
चतुर्थ–वि० [सं०] चौथा।
चतुर्थांश–संज्ञा पुं० [सं०] चौथाई।
चतुर्थाश्रम–संज्ञा पुं० [सं०] संन्यास।
चतुर्थी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी पक्ष की चौथी तिथि। चौथ। २. वह गंगा-पूजन आदि कर्म जो विवाह के चौथे दिन होता है।
चतुर्दशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि। चौदस।
चतुर्दिक–संज्ञा पुं० [सं०] चारों दिशाएँ। क्रि० वि० चारों ओर।
चतुर्भुज–वि० [सं०] [स्त्री० चतुर्भुजा] चार भुजाओंवाला। जिसकी चार भुजाएँ हों। संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. वह क्षेत्र जिसमें चार भुजाएँ और चार कोण हों।
चतुर्भुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक देवी। २. गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति।
चतुर्भुजी–संज्ञा पुं० [सं० चतुर्भुज + ई (प्रत्य०)] एक वैष्णव संप्रदाय।
वि० चार भुजाओंवाला।
चतुर्मास–संज्ञा पुं० दे० "चातु[illegible]"
चतुर्मुख–संज्ञा पुं० [सं०] [illegible]
वि० [स्त्री० चतुर्मुखी] [illegible]
क्रि० वि० चारों ओर [illegible]
चतुर्युगी–संज्ञा [illegible]

का समय। ४३२०००० वर्ष का समय। चौजुगी। चौकड़ी।

चतुर्वर्ग-संज्ञा पुं० [सं०] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

चतुर्वर्ण-संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वेद-संज्ञा पुं० [सं०] १. परमेश्वर। ईश्वर। २. चारों वेद।

चतुर्वेदी-संज्ञा पुं० [सं० चतुर्वेदिन्] १. चारों वेदों का जाननेवाला पुरुष। २. ब्राह्मणों की एक जाति।

चतुर्व्यूह-संज्ञा पुं० [सं०] १. चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। २ विष्णु।

चतुष्कल-वि० [सं०] चार कलाओंवाला। जिसमें चार मात्राएँ हों।

चतुष्कोण-वि० [सं०] चार कोनोंवाला। चौकोर। चौकोना।

चतुष्टय-संज्ञा पुं० [सं०] १. चार की संख्या। २. चार चीज़ों का समूह।

चतुष्पथ-संज्ञा पुं० [सं०] चौराहा।

चतुष्पद-संज्ञा पुं० [सं०] चौपाया। वि० चार पदोंवाला।

चतुष्पदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] चौपैया छंद।

चतुष्पदी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. १५ मात्राओं की चौपई छंद। २. चार पद का गीत।

चत्वर-संज्ञा पुं० [सं०] १. चौमुहानी। चौरास्ता। २. चबूतरा। वेदी।

चद्दर-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० चादर] १. चादर। २. किसी धातु का लंबा चौड़ा चौकोर पत्तर। ३. नदी आदि के तेज़ बहाव में वह अंश जिसकी सतह कभी कभी बिलकुल समतल हो जाती है।

चनकना†-क्रि० अ० दे० "चटकना"।

चनखना-क्रि० अ० [हिं० अनखना] खफ़ा होना। चिढ़ना। चिटकना।

चना-संज्ञा पुं० [सं० चणक] चैती फसल का एक प्रधान अन्न। बूट। छोला। मुहा०—नाकों चने चबवाना = बहुत तंग करना। बहुत दिक या हैरान करना। लोहे का चना = अत्यंत कठिन काम। विकट कार्य।

चपकन-संज्ञा स्त्री० [हिं० चपकना] १. एक प्रकार का अंगा। अँगरखा। २. किवाड़, संदूक आदि में लोहे या पीतल का वह साज़ जिसमें ताला लगाया जाता है।

चपकना-क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चपकुलिश-संज्ञा स्त्री० [तु०] १. कठिन स्थिति। अड़चल। फेर। कठिनाई। झंझट। अड़स। २. बहुत भीड़भाड़।

चपटना†-क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चपटा†-वि० दे० "चिपटा"।

चपड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० चपटा] १. साफ़ की हुई लाख का पत्तर। २. लाल रंग का एक कीड़ा या फतिंगा।

चपत-संज्ञा पुं० [सं० चर्पट] १. तमाचा। थप्पड़। २. धक्का। हानि।

चपना-क्रि० अ० [सं० चपन = कूटना, कुचलना] १. दबना। कुचल जाना। २. लज्जा से गड़ जाना। लज्जित होना।

चपनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चपना] १. छिछला कटोरा। कटोरी। २. दरियाई नारियल का कमंडल। ३ हाँड़ी का ढक्कन।

चपरगट्टू-वि० [हिं० चौपट + गटपट] १ सत्यानाशी। चौपटा। २. आफ़त का मारा। अभागा। ३. गुत्थमगुत्थ। एक में उलझा हुआ।

चपरना†*-क्रि० स० [अनु० चपचप] १. दे० "चुपड़ना"। २. परस्पर मिलाना।

चपरा-अव्य० [हिं० चपरना] झटपट।

चपरास-संज्ञा स्त्री० [हिं० चपरासी] दफ्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी जिसे पेटी या परतले में लगाकर चौकीदार, अरदली आदि पहनते हैं। बल्ला। बैज।

चपरासी-संज्ञा पुं० [फ़ा० चप = बायाँ + रास्त = दाहिना] वह नौकर जो चपरास पहने हो। प्यादा। अरदली।

चपरि*-क्रि० वि० [सं० चपल] फुरती से।

चपल-वि० [सं०] १. स्थिर न रहनेवाला। चंचल। चुलबुला। २. बहुत काल तक न रहनेवाला। क्षणिक। ३. उतावला। जल्दबाज़। ४. चालाक। धृष्ट।

चपलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंचलता। तेज़ी। जल्दी। २. धृष्टता। ढिठाई।

चपला-वि० स्त्री० [सं०] चंचला। फुरतीली। तेज़।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. बिजली। चंचला। ३. आर्या छंद का एक भेद। ४. पुंश्चली स्त्री। ५. जीभ। जिह्वा।

चपलाई*-संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।

चपलाना –क्रि॰ अ॰ [स॰ चपल] चलना। हिलना। डोलना।
क्रि॰ स॰ चलाना। हिलाना।

चपली†–सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चपटा] जूती।

चपाती–सज्ञा स्त्री॰ [स॰ चर्पटी] वह पतली रोटी जो हाथ से बेलकर बढ़ाई जाती है।

चपाना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ चपना] १. दबाने का काम कराना। दबवाना। २. लज्जित करना। छिपाना। शरमिंदा करना।

चपेट–सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चपाना] १. झोका। रगड़ा। धक्का। आघात। २. थप्पड। झापड। तमाचा। ३. दबाव। संकट।

चपेटना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ चपेट] १. दबाना। दबोचना। २. बलपूर्वक भगाना। ३. फटकार बताना। डाँटना।

चपेड़ा–सज्ञा पु॰ दे॰ "चपेट"।

चपेरना –सज्ञा पु॰ [हिं॰ चापना] दबाना।

चप्पड–सज्ञा पु॰ दे॰ "चिप्पड़"।

चप्पन–सज्ञा पु॰ [हिं॰ चपना = दबाना] छिछला कटोरा।

चप्पल–सज्ञा पु॰ [हिं॰ चपटा] वह जूता जिसकी एड़ी पर दीवार न हो।

चप्पा–सज्ञा पु॰ [स॰ चतुष्पाद] १. चतुर्थांश। चौथा भाग। २. थोड़ा भाग। ३ चार अगुल जगह। ४. थोड़ी जगह।

चप्पी–सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चपना = दबना] धीरे धीरे हाथ-पैर दबाने की क्रिया। चरण सेवा।

चप्पू–सज्ञा पु॰ [हिं॰ चाँपना] एक प्रकार का डाँड जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी।

चबवाना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ चबाना का प्रे॰] चबाने का काम कराना।

चबाना–क्रि॰ स॰ [स॰ चर्वण] १. दाँतों से कुचलना। जुगालना।
मुहा॰—चबा चबाकर बातें करना = एक एक शब्द धीरे धीरे बोलना। मठार मठारकर बातें करना। चबे को चबाना = किए हुए काम को फिर फिर करना। पिष्टपेषण करना।
† २. दाँत से काटना। दरदराना।

चबूतरा–सज्ञा पु॰ [स॰ चत्वाल] १. बैठने के लिये चौरस बनाई हुई ऊँची जगह। चौतरा। † २. कोतवाली। बड़ा थाना।

चबेना–सज्ञा पु॰ [हिं॰ चबाना] चबाकर खाने के लिये सूखा भुना हुआ अनाज। चर्वण। भूँजा।

चबेनी–सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चबाना] जलपान का सामान।

चभाना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ चाभना का प्रे॰] खिलाना। भोजन कराना।

चभोरना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ चुभकी] १. डुबोना। गोता देना। २. तर करना।

चमक–सज्ञा स्त्री॰ [स॰ चमत्कृत] १. प्रकाश। ज्योति। रोशनी। २. कांति। दीप्ति। आभा। ३. कमर आदि का वह दर्द जो चोट लगने या एकबारगी अधिक बल पड़ने के कारण होता है। लचक। चिक।

चमक दमक–सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चमक + दमक अनु॰] १ दीप्ति। आभा। २ तड़क-भड़क।

चमकदार–वि॰ [हिं॰ चमक + फा॰ दार] जिसमें चमक हो। चमकीला।

चमकना–क्रि॰ अ॰ [हिं॰ चमक] १. प्रकाश या ज्योति से युक्त दिखाई देना। प्रकाशित होना। जगमगाना। २ कांति या आभा से युक्त होना। दमकना। ३. श्री-संपन्न होना। उन्नति करना। ४. ज़ोर पर होना। बढ़ना। ५ चौंकना। भड़कना। ६ फुरती से खसक जाना। ७ एकबारगी दर्द हो उठना। ८. मटकना। उँगलियाँ आदि हिलाकर भाव बताना। ९ कमर में चिक आना। लचक आना।

चमकाना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ चमकना] १. चमकीला करना। चमक लाना। झलकाना। २. उज्ज्वल करना। साफ़ करना। ३ भड़काना। चौंकाना। ४. चिढ़ाना। खिझाना। ५. घोड़े को चंचलता के साथ बढ़ाना। ६ भाव बताने के लिये उँगली आदि हिलाना। मटकाना।

चमकारी –सज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चमक"।
वि॰ चमकीली।

चमकी–सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चमक] कारचोबी में रुपहले या सुनहले तारों के छोटे छोटे गोल चिपटे टुकड़े। सितारे। तारे।

चमकीला–वि॰ [हिं॰ चमक + ईला (प्रत्य॰)] [स्त्री॰ चमकीली] १. जिसमें चमक हो। चमकनेवाला। २ भड़कीला। शानदार।

चमकौवल–सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चमक + औवल (प्रत्य॰)] १. चमकाने की क्रिया। २ मटकाने की क्रिया।

चमको–सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चमकना] १. चमकने मटकनेवाली स्त्री। चंचल और निर्लज्ज

स्त्री। २. कुलटा स्त्री। ३. झगड़ालू स्त्री।

चमगादड़–संज्ञा पुं० [सं० चर्मचटक] एक उड़नेवाला बड़ा जंतु जिसके चारों पैर पर-दार होते हैं।

चमचम–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बँगला मिठाई।
क्रि० वि० दे० "चमाचम"।

चमचमाना–क्रि० अ० [हिं० चमक] चमक-ना। प्रकाशमान होना। दमकना।
क्रि० स० चमकाना। चमक लाना।

चमचा–संज्ञा पुं० [फा० । मि० सं० चमस] [स्त्री० अल्पा० चमची] १. एक प्रकार की छोटी कलछी। चम्मच। डोई। २ चिमटा।

चमजूई–संज्ञा स्त्री० [सं० चर्मयूका] १. एक प्रकार की किलनी। २. पीछा न छोड़नेवाली वस्तु।

चमड़ा–संज्ञा पुं० [सं० चर्म] १. प्राणियों के सारे शरीर का ऊपरी आवरण। चर्म। त्वचा। जिल्द।
मुहा०—चमड़ा उधेड़ना या खींचना = १. चमड़े को शरीर से अलग करना। २. बहुत मार मारना।
२. प्राणियों के मृत शरीर पर से उतारा हुआ चर्म जिससे जूते, बेग आदि चीजें बनती हैं। खाल। चरसा।
मुहा०—चमड़ा सिझाना = चमड़े को बबूल की छाल, मन्नी, नमक आदि के पानी में डाल-कर मुलायम करना।
३. छाल। छिलका।

चमड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "चमड़ा"।

चमत्कार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चमत्कारी, चमत्कृत] १. आश्चर्य। विस्मय। २. आश्चर्य का विषय या विचित्र घटना। करामात। ३. अनूठापन। विचित्रता।

चमत्कारी–वि० [सं०] [स्त्री० चमत्कारिणी] १. जिसमें विलक्षणता हो। अद्भुत। २. चमत्कार या करामात दिखानेवाला।

चमत्कृत–वि० [सं०] आश्चर्यित। विस्मित।

चमत्कृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्चर्य।

चमन–संज्ञा पुं० [फा०] १. हरी क्यारी। २. फुलवारी। छोटा बगीचा।

चमर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चमरी] १. सुरागाय। २. सुरागाय की पूँछ का बना चामर।

चमरख–संज्ञा स्त्री० [हिं० चाम + रखा] मूँज या चमड़े की बनी हुई चक्ती जिसमें से होकर चरखे का तकला घूमता है।

चमरशिखा–संज्ञा स्त्री० [सं० चामर + शिखा] घोड़ों की कलगी।

चमरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चमर"।

चमरौधा–संज्ञा पुं० दे० "चमौवा"।

चमला–संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० चमली] भीख माँगने का ठीकरा या पात्र।

चमस–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० चमसी] १. सोमपान करने का चम्मच के आकार का यज्ञपात्र। २ कलछा। चम्मच।

चमाऊ–संज्ञा पुं० [सं० चामर] चँवर।

चमाचम–वि० [हिं० चमकना का अनु०] उज्ज्वल कांति के सहित। झलक के साथ।

चमार–संज्ञा पुं० [सं० चर्मकार] [स्त्री० चमारिन, चमारी] एक नीच जाति जो चमड़े का काम बनाती और झाड़ू देती है।

चमारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चमार] १ चमार की स्त्री। २. चमार का काम।

चमू–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेना। फौज। २. नियत संख्या की सेना जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे।

चमेली–संज्ञा स्त्री० [सं० चम्पकवेलि] १. एक झाड़ी या लता जो अपने सुगंधित फूलों के लिये प्रसिद्ध है। २. इस झाड़ी का फूल जो सफेद, छोटा और सुगंधित होता है।

चमोटा–संज्ञा पुं० [हिं० चाम + ओटा (प्रत्य०)] मोटे चमड़े का टुकड़ा जिस पर रगड़कर नाई छुरे की धार तेज करते हैं।

चमोटी–संज्ञा स्त्री०[हिं० चाम + ओटी (प्रत्य०)] १. चाबुक। कोड़ा। २. पतली छड़ी। कमची। बेंत। ३. चमड़े का वह टुकड़ा जिस पर नाई छुरे की धार घिसते हैं।

चमौवा–संज्ञा पुं० [हिं० चाम] वह भद्दा जूता जिसका तला चमड़े से सिया गया हो। चमरौधा।

चम्मच–संज्ञा पुं० [फा० । मि० । सं० चमस] एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी।

चय–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। ढेर। राशि। २. धुस्स। टीला। ढूह। ३. गढ़। किला। ४. धुम। कोट। चहार-दीवारी। प्राकार। ५. बुनियाद। नींव। ६. चबूतरा। ७. चौकी। ऊँचा आसन।

चयन–संज्ञा पु० [सं०] १. इकट्ठा करने का कार्य्य। संग्रह। संचय। २. चुनने का कार्य्य। चुनाई। ३. यज्ञ के लिये अग्नि का संस्कार। ४. क्रम से लगाना या चुनना।
† संज्ञा पु० दे० "चैन"।

चर–संज्ञा पु० [सं०] १. राजा की ओर से नियुक्त किया हुआ वह मनुष्य जिसका काम प्रकाश्य या गुप्त रूप से अपने अथवा पराए राज्यों की भीतरी दशा का पता लगाना हो। गूढ़ पुरुष। भेदिया। जासूस। २. किसी विशेष कार्य्य के लिये भेजा हुआ आदमी। दूत। क़ासिद। ३. वह जो चले। जैसे—अनुचर, खेचर। ४. खंजन पक्षी। ५. कौड़ी। कपर्द्दिका। ६. मंगल। भौम। ७. नदियों के किनारे या संगमस्थान पर की वह गीली भूमि जो नदी के साथ बहकर आई हुई मिट्टी के जमने से बनती है। ८. दलदल। कीचड़। ९. नदियों के बीच में बालू का बना हुआ टापू। रेता। वि० [सं०] १. आप से आप चलनेवाला। जंगम। २. एक स्थान पर न ठहरनेवाला। अस्थिर। ३. खानेवाला।

चरक–संज्ञा पु० [सं०] १. दूत। क़ासिद। चर। २. गुप्तचर। भेदिया। जासूस। ३. वैद्यक के एक प्रधान आचार्य्य। ४. मुसाफ़िर। बटोही। पथिक। ५. दे० "चटक"।

चरकटा–संज्ञा पु० [हिं० चारा + काटना] चारा काटकर लानेवाला आदमी।

चरका–संज्ञा पु० [फा० चरक:] १. हलका घाव। ज़ख्म। २. गरम धातु से दागने का चिह्न। ३. हानि। ४. धोखा। छल।

चरख–संज्ञा पु० [फा० चर्ख़] १. घूमनेवाला गोल चक्कर। चाक। २. खराद। ३. सूत कातने का चरखा। ४. कुम्हार का चाक। ५. गोफन। ढेलवाँस। ६. वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ी रहती है। ७. लकड़बग्घा। ८. एक शिकारी चिड़िया।

चरखपूजा–संज्ञा स्त्री० [सं० चरक = एक बौद्ध तांत्रिक संप्रदाय + पूजा] एक प्रकार की उग्र देवी-पूजा जो चैत की संक्रांति को होती है।

चरखा–संज्ञा पु० [फा० चर्ख़] १. घूमनेवाला गोल चक्कर। चरख। २. लकड़ी का यंत्र जिसकी सहायता से ऊन, कपास या रेशम आदि को कातकर सूत बनाते हैं। रहट। ३. कूएँ से पानी निकालने का रहट। ४. सूत लपेटने की गराड़ी। चरखी। रील। ५. गराड़ी। घिरनी। ६. बड़ा या बेडौल पहिया। ७. गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा निकालते हैं। खड़खड़िया। ८. झगड़े-बखेड़े या झंझट का काम।

चरखी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चरखा का स्त्री० अल्पा०] १. पहिए की तरह घूमनेवाली कोई वस्तु। २. छोटा चरखा। ३. कपास ओटने की चरखी। बेलनी। ओटनी। ४. सूत लपेटने की फिरकी। ५. कूएँ से पानी सींचने आदि की गराड़ी। घिरनी।

चरग–संज्ञा पु० [फा० चरग़] १. बाज़ की जाति की एक शिकारी चिड़िया। चरख। २. लकड़बग्घा नामक जंतु।

चरचना–क्रि० स० [सं० चर्चन] १. देह में चंदन आदि लगाना। २. लेपना। पोतना। ३. भाँपना। अनुमान करना।

चरचराना–क्रि० अ० [अनु० चरचर] १. चर चर शब्द के साथ टूटना या जलना। २. घाव आदि का खुश्की से तनना और दर्द करना। चर्राना।
क्रि० स० चर चर शब्द के साथ (लकड़ी आदि) तोड़ना।

चरचा–संज्ञा स्त्री० दे० "चर्चा"।

चरचारी–संज्ञा पु० [हिं० चरचा] १. चर्चा चलानेवाला। २. निंदक।

चरजना–क्रि० अ० [सं० चर्चन] १. बहकाना। भुलावा देना। बहाली देना। २. अनुमान करना। अंदाज़ लगाना।

चरण–संज्ञा पु० [सं०] १. पग। पैर। पाँव। क़दम। २. बड़ों का सान्निध्य। बड़ों का संग। ३. किसी छंद या श्लोक आदि का एक पद। ४. किसी चीज़ का चौथाई भाग। ५. मूल। जड़। ६. गोत्र। ७. क्रम। ८. आचार। ९. घूमने की जगह। १०. सूर्य्य आदि की किरण। ११. अनुष्ठान। १२. गमन। जाना। १३. भक्षण। चरने का काम।

चरणगुप्त–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य।

चरणचिह्न–संज्ञा पु० [सं०] १. पैरों के तलुए की रेखा। २. पैर का निशान।

चरणदासी–संज्ञा स्त्री० [सं० चरण + दासी] १. स्त्री। पत्नी। २. जूता। पनहीं।

चरणपादुका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खड़ाऊँ। पांवड़ी। २ पत्थर आदि पर बना हुआ चरण के आकार का पूजनीय चिह्न।
चरणपीठ-संज्ञा पुं० [सं०] चरणपादुका।
चरणसेवा-संज्ञा स्त्री० [सं० चरण+सेवा] १. पैर दबाना। २. बड़ों की सेवा।
चरणामृत-संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पानी जिसमें किसी महात्मा या बड़े के चरण धोए गए हों। पादोदक। २ एक में मिला हुआ दूध दही, घी, शक्कर और शहद जिसमें किसी देवमूर्ति को स्नान कराया गया हो।
चरणोदक-संज्ञा पुं० [सं०] चरणामृत।
चरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चर होने या चलने का भाव। २. पृथ्वी।
चरती-संज्ञा पुं० [हिं० चरना=खाना] व्रत के दिन उपवास न करनेवाला।
चरन-संज्ञा पुं० दे० "चरण"।
चरना-क्रि० स० [सं० चर=चलना] पशुओं का घूम घूमकर घास चारा आदि खाना।
क्रि० अ० [सं० चर] घूमना फिरना।
संज्ञा पुं० [सं० चरण=पैर] काछा।
चरनि -संज्ञा स्त्री० [सं० चर=गमन] चाल।
चरनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चरना] १ पशुओं के चरने का स्थान। चरी। चरागाह। २ वह नाँद जिसमें पशुओं को खाने के लिये चारा दिया जाता है। ३. पशुओं का आहार, घास, चारा आदि।
चरपट-संज्ञा पुं० [सं० चर्पट] १. चपत। तमाचा। थप्पड़। २. चाई। उचक्का। ३. एक छंद। चर्पट।
चरपरा-वि० [अनु०] [स्त्री० चरपरी] स्वाद में तीक्ष्ण। झालदार। तीता।
चरपराहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० चरपरा] १. स्वाद की तीक्ष्णता। झाल। २. घाव आदि की जलन। ३. द्वेष। डाह। ईर्ष्या।
चरफराना। -क्रि० अ० दे० "तड़पना"।
चरब-वि० [फा० चर्ब] तेज। तीखा।
चरबन।-संज्ञा पुं० दे० "चबैना"।
चरबाक, चरवाक-वि० [सं० चार्वाक] १. चतुर। चालाक। २. शोख। निडर।
चरबा-संज्ञा पुं० [फा० चरब] प्रतिमूर्ति। नकल। खाका।
चरबी-संज्ञा स्त्री० [फा०] सफेद या कुछ पीले रंग का एक चिकना गाढ़ा पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में और बहुत से पौधों और वृक्षों में भी पाया जाता है। मेद। वसा। पीव।
मुहा०—चरबी चढ़ना=मोटा होना। चरबी छाना=१. बहुत मोटा हो जाना। शरीर में मेद बढ़ जाना। २. मदांध होना।
चरम-वि० [सं०] अंतिम। सबसे बढ़ा हुआ। चोटी का।
चरमर-संज्ञा पुं० [अनु०] तनी या चीमड़ वस्तु (जैसे—जूता, चारपाई) के दबने या मुड़ने का शब्द।
चरमराना-क्रि० अ० [अनु०] चरमर शब्द होना।
क्रि० स० चरमर शब्द उत्पन्न करना।
चरमवती। -संज्ञा स्त्री० दे० "चर्मण्वती"।
चरवाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० चराना] १. चराने का काम। २ चराने की मजदूरी।
चरवाना-क्रि० स० [हिं० चराना का प्रे०] चराने का काम दूसरे से कराना।
चरवाहा-संज्ञा पुं० [हिं० चरना+वाहा=वाहक] गाय, भैंस आदि चरानेवाला।
चरवाही-संज्ञा स्त्री० दे० "चरवाई"।
चरवैया।-संज्ञा पुं० [हिं० चरना] १. चरनेवाला। २. चरानेवाला।
चरस-संज्ञा पुं० [सं० चर्म] १. भैंस या बैल आदि के चमड़े का वह बहुत बड़ा डोल जिससे खेत सींचने के लिये पानी निकाला जाता है। चरसा। नरसा। पुर। मोट। २. भूमि नापने का एक परिमाण जो २१०० हाथ का होता है। गोचर्म। ३. गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद या चेप, जिसका धूआँ नशे के लिये चिलम पर पीते हैं।
संज्ञा पुं० [फा० चर्ज] आसाम प्रांत में होनेवाला एक पक्षी। बन मोर। चीनी मोर।
चरसा-संज्ञा पुं० [हिं० चरस] १. भैंस, बैल आदि का चमड़ा। २. चमड़े का बना हुआ बड़ा थैला। ३. चरस। मोट।
चरसी-संज्ञा पुं० [हिं० चरस+ई (प्रत्य०)] १ चरस द्वारा खेत सींचनेवाला। २. वह जो चरस पीता हो।
चराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० चरना] १. चरने का काम। २ चराने का काम या मजदूरी।
चरागाह-संज्ञा पुं० [फा०] वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हों। चरनी। चरी।

चराचर–वि० [सं०] १. चर और अचर। जड़ और चेतन। २. जगत्। संसार।

चराना–क्रि० स० [हिं० चरना] १. पशुओं को चारा खिलाने के लिये खेतों या मैदानों में ले जाना। २. बातों में बहलाना।

चरापरा[illegible]–संज्ञा स्त्री० [देश०] व्यर्थ की बात। बकवाद।

चरिंदा–संज्ञा पुं० [फा०] चरनेवाला जीव। पशु। हैवान।

चरित–संज्ञा पुं० [सं०] १. रहन-सहन। आचरण। २. काम। करनी। करतूत। कृत्य। ३. किसी के जीवन की विशेष घटनाओं या कार्यों आदि का वर्णन। जीवन चरित। जीवनी।

चरितनायक–संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी जाय।

चरितार्थ–वि० [सं०] १. जिसके उद्देश्य या अभिप्राय की सिद्धि हो चुकी हो। कृत-कृत्य। कृतार्थ। २. जो ठीक ठीक घटे।

चरित्तर–संज्ञा पुं० [सं० चरित्र] १. धूर्त्तता की चाल। २. नखरेबाज़ी। नकल।

चरित्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वभाव। २. वह जो किया जाय। कार्य्य। ३. करनी। करतूत। ४. चरित।

चरित्रनायक–संज्ञा पुं० दे० "चरितनायक"।

चरित्रवान्–वि० [सं०] [स्त्री० चरित्रवती] अच्छे चरित्रवाला। उत्तम आचरणोंवाला।

चरी–संज्ञा स्त्री० [सं० चर या हिं० चरा] १. पशुओं के चरने की ज़मीन। २. छोटी ज्वार के हरे पेड़ जो चारे के काम में आते हैं। कड़वी।

चर्चक–संज्ञा पुं० [सं०] चर्चा करनेवाला।

चर्चन–संज्ञा पुं० [सं०] १. चर्चा। २. लेपन।

चर्चरिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में वह गान जो किसी एक विषय की समाप्ति और यवनिका पात होने पर होता है।

चर्चरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का गाना जो वसंत में गाया जाता है। फाग। चाँचर। २. होली की धूम-धाम या हुल्लड़। ३. एक वर्णवृत्त। ४. करतल ध्वनि। ताली बजाने का शब्द। ५. चर्चरिका। ६. आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा।

चर्चा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ज़िक्र। वर्णन। बयान। २. वार्त्तालाप। बातचीत। ३. किंवदंती। अफ़वाह। ४. लेपन। पोतना। ५. गायत्रीरूपा महादेवी। दुर्गा।

चर्चिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चर्चा। ज़िक्र। २. दुर्गा।

चर्चित–वि० [सं०] १. लगा या लगाया हुआ। पोता हुआ। लेपित। २. जिसकी चर्चा हो।

चर्पट–संज्ञा पुं० [[illegible]] १. [illegible]। [illegible]। २. हाथ की खुली हुई हथेली।

चर्म–संज्ञा पुं० [[illegible]] १. [illegible]। २. ढाल। [illegible]।

चर्मकशा, [illegible]–[illegible] [[illegible]] एक प्रकार का [illegible]। [illegible]।

चर्मकार–[illegible] [[illegible]] [[illegible]] चमड़े का [illegible] जाति। [illegible]

चर्मकील–[illegible] [[illegible]] १. [illegible] २. [illegible]

चलन। ३. काम-काज । ४. वृत्ति। जीविका। ५. सेवा। ६. चलना। गमन।
चर्राना-क्रि० अ० [अनु०] १. लकड़ी आदि का टूटने या तड़कने के समय चर चर शब्द करना। २. घाव पर खुजली या सुरसुरी मिली हुई हलकी पीड़ा होना। ३. खुश्की और रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव होना। ४. किसी बात की वेगपूर्ण इच्छा होना।
चर्री-संज्ञा स्त्री० [हिं० चर्राना] लगती हुई व्यंग्यपूर्ण बात। चुटीली बात।
चर्वण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चर्व्य] १. चबाना। २. वह वस्तु जो चबाई जाय। ३. भूना हुआ दाना जो चबाकर खाया जाता है। चबैना। बहुरी। दाना।
चर्वित-वि० [सं०] चबाया हुआ।
चर्वितचर्वण-संज्ञा पुं० [सं०] किसी किए हुए काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना। पिष्टपेषण।
चल-वि० [सं०] चंचल। अस्थिर।
संज्ञा पुं० [सं०] १. पारा। २. दोहा छंद का एक भेद। ३. शिव। ४. विष्णु।
चलकना-क्रि० अ० दे० "चमकना"।
चलचलाव-संज्ञा पुं० [हिं० चलना] १. प्रस्थान। यात्रा। चलाचली। २. मृत्यु।
चलचाल-वि० [सं०] चल-विचल। चंचल।
चलचूक-संज्ञा स्त्री० [सं० चल = चंचल + चूक = भूल] धोखा। छल। कपट।
चलता-वि० [हिं० चलना] [स्त्री० चलती] १. चलता हुआ। गमन करता हुआ।
मुहा०—चलता करना = १. हटाना। भगाना। भेजना। २. किसी प्रकार निपटाना। चलता बनना = चल देना।
२. जिसका क्रमभंग न हुआ हो। जो बराबर जारी हो। ३. जिसका रवाज बहुत हो। प्रचलित। ४. काम करने योग्य। जो अशक्त न हुआ हो। ५. ...चालाक।
...संज्ञा पुं० [देश०] १. एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें बेल के से फल लगते हैं। २. कवच। झिलम।
...संज्ञा स्त्री० [सं०] चल होने का भाव। चलता। अस्थिरता।
...ती-संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] मान-मर्यादा। ...व। अधिकार।
चलदल-संज्ञा पुं० [सं०] पीपल का वृक्ष।
चलन-संज्ञा पुं० [हिं० चलना] १. चलने का भाव। गति। चाल। २. रिवाज। रस्म। रीति। ३. किसी चीज़ का व्यवहार, उपयोग या प्रचार।
संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष में विषुवत् की उस समय की गति, जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।
संज्ञा पुं० [सं०] गति। भ्रमण।
चलन कलन-संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में एक प्रकार का गणित जिससे दिन-रात के घटने-बढ़ने का हिसाब लगाया जाता है।
चलनसार-वि० [हिं० चलन + सार (प्रत्य०)] १. जिसका उपयोग या व्यवहार प्रचलित हो। २. जो अधिक दिनों तक काम में लाया जा सके। टिकाऊ।
चलना-क्रि० अ० [सं० चलन] १. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। २. हिलना-डोलना।
मुहा०—पेट चलना = १. दस्त आना। २. निर्वाह होना। गुजर होना। मन चलना = इच्छा होना। लालसा होना। चल बसना = मर जाना। अपने चलते = भर सक। यथाशक्ति।
३. कार्य-निर्वाह में समर्थ होना। निभना। ४. प्रवाहित होना। बहना। ५. वृद्धि पर होना। बढ़ना। ६. किसी कार्य में अग्रसर होना। किसी युक्ति का काम में आना। ७. आरंभ होना। छिड़ना। ८. जारी रहना। क्रम या परंपरा का निर्वाह होना। ९. बराबर काम देना। टिकना। ठहरना। १०. लेन देन के काम में आना। ११. प्रचलित होना। जारी होना। १२ प्रयुक्त होना। व्यवहृत होना। काम में लाया जाना। १३. तीर, गोली आदि का छूटना। १४. लड़ाई-झगड़ा होना। विरोध होना। १५. पढ़ा जाना। बाँचा जाना। १६. कारगर होना। उपाय लगाना। वश चलना। १७. आचरण करना। व्यवहार करना। १८. निगला जाना। खाया जाना।
क्रि० स० शतरंज या चौसर आदि खेलों में किसी मोहरे या गोटी आदि को अपने स्थान से बढ़ाना या हटाना; अथवा ताश या गंजीफे आदि खेलों में किसी पत्ते को सब खेलनेवालों के सामने रखना।

संज्ञा पु० [हिं० चलनी] बड़ी चलनी ।

चलनि:–संज्ञा स्त्री० दे० "चलन" ।

चलनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "छलनी" ।

चलपत्र–संज्ञा पु० [सं०] पीपल का वृक्ष।

चलवाना–क्रि० स० [हिं० चलना का प्रे०] १. चलाने का कार्य दूसरे से कराना । २. चलाने का काम कराना ।

चलविचल–वि० [सं० चल + विचल] १. जो ठीक जगह से इधर-उधर हो गया हो। उखड़ा-पुखड़ा । बेठिकाने । २. जिसके क्रम या नियम का उल्लंघन हुआ हो ।

संज्ञा स्त्री० किसी नियम या क्रम का उल्लंघन ।

चलवैया†–संज्ञा पु० [हिं० चलना] चलनेवाला ।

चला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिजली । २. पृथ्वी । भूमि । ३. लक्ष्मी ।

चलाऊ–वि० [हिं० चलना] जो बहुत दिनों तक चले । मजबूत । टिकाऊ ।

चलाका†–संज्ञा स्त्री० [सं० चला] बिजली।

चलाचल–संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] १. चलाचली । २. गति । चाल ।

वि० [सं०] चंचल । चपल ।

चलाचली–संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] १. चलने के समय की घबराहट, धूम या तैयारी । रवारवी । २. बहुत से लोगों का प्रस्थान । ३. चलने की तैयारी या समय । वि० जो चलने के लिये तैयार हो ।

चलान–संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] १. भेजे जाने या चलने की क्रिया । २. भेजने या चलाने की क्रिया । ३. किसी अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिये न्यायालय में भेजा जाना । ४. माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना । ५. भेजा या आया हुआ माल । ६. वह कागज़ जिसमें किसी की सूचना के लिये भेजी हुई चीज़ों की सूची आदि हो । रवन्ना ।

चलाना–क्रि० स० [हिं० चलना] १. किसी को चलने में लगाना । चलने के लिये प्रेरित करना । २. गति देना । हिलाना-डुलाना । हरकत देना ।

मुहा०—किसी की चलाना = किसी के बारे में कुछ कहना । मुँह चलाना = खाना । भक्षण करना । हाथ चलाना = मारने के लिये हाथ उठाना । मारना । पीटना ।

३. कार्य-निर्वाह में समर्थ करना । निभाना । ४. प्रवाहित करना । बहाना । ५. वृद्धि करना । उन्नति करना । ६. किसी कार्य को अग्रसर करना । ७. आरंभ करना । छेड़ना । ८. जारी रखना । ९. बराबर काम में लाना । टिकाना । १०. व्यवहार में लाना । लेन-देन के काम में लाना । ११. प्रचलित करना । प्रचार करना । १२. व्यवहृत करना । प्रयुक्त करना । १३. तीर, गोली आदि छोड़ना । १४. किसी चीज़ से मारना । १५. किसी व्यवसाय की वृद्धि करना ।

चलायमान–वि० [सं०] १. चलनेवाला । जो चलता हो । २. चंचल । ३. विचलित ।

चलाव†–संज्ञा पु० [हिं० चलना] १. चलने का भाव । २. यात्रा ।

चलावा–संज्ञा पु० [हिं० चलना] १. रीति । रस्म । रवाज । २. आचरण । चाल-चलन । ३. द्विरागमन । गौना । मुक्लावा । ४. एक प्रकार का उतारा जो प्रायः गाँवों में भयंकर बीमारी फैलने के समय किया जाता है ।

चलित–वि० [सं०] १. अस्थिर । चलायमान । २. चलता हुआ ।

चलैया†–संज्ञा पु० [हिं० चलना] चलनेवाला ।

चवन्नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ (चार का अल्पा०) + आना + ई (प्रत्य०)] चार आने मूल्य का चाँदी या निकल का सिक्का ।

चवर्ग–संज्ञा पु० [सं०] [वि० चवर्गीय] च से ञ तक के अक्षरों का समूह ।

चवा.–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौवाई] एक साथ सब दिशाओं से बहनेवाली वायु ।

चवाई–संज्ञा पु० [हिं० चवाव] [स्त्री० चवाइन] १. बदनामी की चर्चा फैलानेवाला । निंदक । २. चुगलखोर ।

चवाव–संज्ञा पु० [हिं० चौवाई] १. चारों ओर फैलनेवाली चर्चा । प्रवाद । अफ़वाह । २. बदनामी । निंदा की चर्चा ।

चव्य–संज्ञा पु० [सं०] चाब ओषधि ।

चश्म–संज्ञा स्त्री० [फा० चश्मा] नेत्र । आँख ।

चश्मदीद–वि० [फा०] जो आँखों से देखा हुआ हो ।

यौ०—चश्मदीद गवाह = वह साक्षी जो अपनी आँखों से देखी घटना कहे ।

चश्मा–संज्ञा पु० [फा०] १. कमानी में जड़ा हुआ शीशे या पारदर्शी पत्थर के

तालों का जोड़ा, जो आँखों पर दृष्टि बढ़ाने या ठंढक रखने के लिये पहना जाता है। ऐनक। २. पानी का सोता। स्रोत।
चप:–संज्ञा पुं० [सं० चक्षु] आँख।
चपक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मद्य पीने का पात्र। २. मधु। शहद।
चपचोल–संज्ञा पुं० [हिं० चप+चोल= वस्त्र] आँख की पलक।
चसक–संज्ञा स्त्री० [देश०] हलका दर्द।
संज्ञा पुं० दे० "चषक"।
चसकना–क्रि० अ० [हिं० चसक] हलकी पीड़ा होना। टीसना।
चसका–संज्ञा पुं० [सं० चषण] १. किसी वस्तु या कार्य से मिला हुआ आनंद, जो उस चीज के पुनः पाने या उस काम के पुनः करने की इच्छा उत्पन्न करता है। शौक। चाट। २. आदत। लत।
चसना–क्रि० अ० [हिं० चाशनी] दो चीज़ों का एक में सटना। लगना। चिपकना।
चस्पाँ–वि० [फा०] चिपकाया हुआ।
चह–संज्ञा पुं० [सं० चय] नदी के किनारे नाव पर चढ़ने के लिये चबूतरा। घाट।
† संज्ञा स्त्री० [फा० चाह] गड्ढा।
चहक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चहकना] पक्षियों का मधुर शब्द। चिड़ियों का चहचह।
चहकना–क्रि० अ० [अनु०] १. पक्षियों का आनंदित होकर मधुर शब्द करना। चहचहाना। २. उमंग या प्रसन्नता से अधिक बोलना।
चहकार–संज्ञा स्त्री० दे० "चहक"।
चहकारना†–क्रि० अ० दे० "चहकना"।
चहचहा–संज्ञा पुं० [हिं० चहचहाना] १. 'चहचहाना' का भाव। चहक। २. हँसी-दिल्लगी। ठट्ठा।
वि० १. जिसमें चहचह शब्द हो। उल्लास शब्द युक्त। २. आनंद और उमंग उत्पन्न करनेवाला। बहुत मनोहर। ३. ताज़ा।
चहचहाना–क्रि० अ० [अनु०] पक्षियों का चह चह शब्द करना। चहकना।
चहनना†–क्रि० स० [अनु०] अच्छी तरह खाना।
चहना†–क्रि० स० दे० "चाहना"।
चहनि†–संज्ञा स्त्री० दे० "चाह"।
चहबच्चा–संज्ञा पुं० [फा० चाह=कुआँ+बच्चा] १. पानी भर रखने का छोटा गड्ढा या हौज़। २. धन गाड़ने या छिपा रखने का छोटा तहखाना।
चहर†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चहल] १. आनंद की धूम। रौनक। २. शोर-गुल। हल्ला।
वि० १. बढ़िया। उत्तम। २. चुलबुला।
चहरना†–क्रि० अ० [हिं० चहल] आनंदित होना। प्रसन्न होना।
चहल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] कीचड़। कीच।
संज्ञा स्त्री० [हिं० चहचहाना] आनंद की धूम। आनंदोत्सव। रौनक।
चहलकदमी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चहल+फा० कदम] धीरे धीरे टहलना या घूमना।
चहल पहल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. किसी स्थान पर बहुत से लोगों के आने-जाने की धूम। आबादानी। २. रौनक।
चहला†–संज्ञा पुं० [सं० चिकिल] कीचड़।
चहारदीवारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी स्थान के चारों ओर की दीवार। प्राचीर।
चहारुम–वि० [फा०] किसी वस्तु के चार भागों में से एक भाग। चतुर्थांश।
चहुँ–वि० [हिं० चार] चार। चारों।
चहुवान–संज्ञा पुं० दे० "चौहान"।
चहूँ–वि० दे० "चहुँ"।
चहूँटना†–क्रि० अ० [हिं० चिमटना] सटना। लगना। मिलना।
चहेटना–क्रि० स० [?] १. गारना। निचोड़ना। २. दे० "चपेटना"।
चहेता–वि० [हिं० चाहना+एता (प्रत्य०)] [स्त्री० चहेती] जिसे चाहा जाय। प्यारा।
चहोरना†–क्रि० अ० [देश०] १. पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। २. सहेजना। सँभालना।
चाँई–वि० [देश०] १. ठग। उचक्का। २. होशियार। छली। चालाक।
चाँक–संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+अंक= चिह्न] काठ की वह थापी जिससे खलियान में अन्न की राशि पर ठप्पा लगाते हैं।
चाँकना–क्रि० स० [हिं० चाँक] १. खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी, राख या ठप्पे से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय, तो मालूम हो जाय। २. सीमा घेरना। हद खींचना। हद बाँधना। ३. पहचान के लिये किसी वस्तु पर चिह्न डालना।

चाँगला†-वि० [सं० चंग, हिं० चंगा] १. स्वस्थ। तंदुरुस्त। हृष्ट पुष्ट। २. चतुर।
संज्ञा पुं० घोड़ों का एक रंग।
चाँचर, चाँचरि-संज्ञा स्त्री० [सं० चर्चरी] वसंत ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का राग। चर्चरी राग।
चाँचु०-संज्ञा पुं० दे० "चोंच"।
चाँटा†-संज्ञा पुं० [हिं० चिमटना] [स्त्री० चींटी] बड़ी च्यूँटी। चिऊँटा।
संज्ञा पुं० [अनु० चट] थप्पड़। तमाचा।
चाँटी-संज्ञा स्त्री० दे० "चींटी"।
चाँड़-वि० [सं० चंड] १. प्रबल। बलवान्। २. उग्र। उद्धत। शोख। ३. बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठ। ४. तृप्त। संतुष्ट।
संज्ञा स्त्री० [सं० चंड=प्रबल] १. भार सँभालने का खंभा। टेक। थूनी। २. किसी अभावपूर्ति के निमित्त आकुलता। भारी जरूरत। गहरी चाह।
मुहा०—चाँड़ सरना=इच्छा पूरी होना।
३. दबाव। संकट। ४. प्रबलता। अधिकता। बढ़ती।
चाँड़ना-क्रि० स० [?] १. खोदना। खोदकर गिराना। २. उजाड़ना। उखाड़ना।
चांडाल-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चांडाली, चांडालिन] १. एक अत्यंत नीच जाति। डोम। श्वपच। २. पतित मनुष्य। (गाली)
चांडिला†०-वि० [सं० चंड] [स्त्री० चांडिली] १. प्रचंड। प्रबल। उग्र। २. उद्धत। नटखट। शोख। ३. बहुत अधिक।
चाँद-संज्ञा पुं० [सं० चंद्र] १. चंद्रमा।
मुहा०-चाँद का टुकड़ा=अत्यंत सुंदर मनुष्य। चाँद पर थूकना=किसी महात्मा पर कलंक लगाना, जिसके कारण स्वयं अपमानित होना पड़े। किधर चाँद निकला है?=आज क्या अनहोनी बात हुई जो आप दिखाई पड़े?
२. चांद्र मास। महीना। ३. द्वितीया के चंद्रमा के आकार का एक आभूषण। ४. चाँदमारी का काला दाग जिस पर निशाना लगाया जाता है।
संज्ञा स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग।
चाँदतारा-संज्ञा पुं० [हिं० चाँद+तारा] १. एक प्रकार की बारीक मलमल जिस पर चमकीली बूटियाँ होती हैं। २. एक प्रकार की पतंग या कनकौवा।
चाँदना-संज्ञा पुं० [हिं० चाँद] १. प्रकाश। उजाला। २. चाँदनी।
चाँदनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] १. चंद्रमा का प्रकाश। चंद्रमा का उजाला। चंद्रिका।
मुहा०-चाँदनी का खेत=चंद्रमा का चारों ओर फैला हुआ प्रकाश। चार दिन की चाँदनी=थोड़े दिन रहनेवाला सुख या आनंद।
२. बिछाने की बड़ी सफेद चद्दर। सफेद फर्श। ३. ऊपर तानने का सफेद कपड़ा।
चाँदबाला-संज्ञा पुं० [हिं० चाँद+बाला] कान में पहनने का एक गहना।
चाँदमारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद+मारना] दीवार या कपड़े पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।
चाँदी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] एक सफेद चमकीली धातु जिसके सिक्के, आभूषण और बरतन इत्यादि बनते हैं। रजत।
मुहा०-चाँदी का जूता=घूस। रिशवत। चाँदी काटना=खूब रुपया पैदा करना।
चांद्र-वि० [सं०] चंद्रमा-संबंधी।
संज्ञा पुं० [सं०] १. चांद्रायण व्रत। २. चंद्रकांत मणि। ३. अदरक।
चांद्र मास-संज्ञा पुं० [सं०] उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है। पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या से अमावस्या तक का समय।
चांद्रायण-संज्ञा पुं० [सं०] १. महीने भर का एक कठिन व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार घटाना बढ़ाना पड़ता है। २. एक मात्रिक छंद।
चाँप-संज्ञा स्त्री० [हिं० चँपना] १. चँप या दब जाने का भाव। दबाव। २. रेल-पेल। धक्का। ३. किसी बलवान् की प्रेरणा। ४. बंदूक का वह पुरजा जिसके द्वारा कुंदे से नली जुड़ी रहती है।
† संज्ञा पुं० [हिं० चंपा] चंपा का फूल।
चाँपना-क्रि० स० [सं० चपन] दबाना।
चाँयँ चाँयँ-संज्ञा स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की बकवाद। बकबक।
चाइ, चाउ०-संज्ञा पुं० दे० "चाव"।
चाक-संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १. कील पर घूमता हुआ वह मंडलाकार पत्थर जिस पर मिट्टी का लोंदा रखकर कुम्हार बरतन बनाते हैं। कुलालचक्र। २. पहिया। ३.

कुएँ से पानी खींचने की चरखी । गराड़ी । घिरनी । ४. थापा जिससे खलियान की राशि पर छापा लगाते हैं । ५. मंडलाकार चिह्न की रेखा ।
संज्ञा पुं० [फा०] दरार । चीड़ ।
वि० [तु० चाक़] १. दृढ़ । मज़बूत । पुष्ट । २. हृष्ट-पुष्ट । तंदुरुस्त ।
यौ०—चाक चौबंद = १. हृष्ट पुष्ट । तगड़ा । २. चुस्त । चालाक । फुरतीला । तत्पर ।

चाकचक—वि० [तु० चाक + अनु० चक] चारों ओर से सुरक्षित । दृढ़ । मज़बूत ।

चाकचक्य—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चमक-दमक । चमचमाहट । उज्ज्वलता । २. शोभा । सुंदरता ।

चाकना—क्रि० स० [हिं० चाँक] १. सीमा बाँधने के लिये किसी वस्तु को रेखा या चिह्न खींचकर चारों ओर से घेरना । हद खींचना । २. खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी या राख से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय, तो मालूम हो जाय । ३. पहचान के लिये किसी वस्तु पर चिह्न डालना ।

चाकर—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० चाकरानी] दास । भृत्य । सेवक । नौकर ।

चाकरी—संज्ञा स्त्री० [फा०] सेवा । नौकरी ।

चाकसू—संज्ञा पुं० [सं० चक्षुष्या] १. बन-कुलथी । २. निर्मली ।

चाकी†—संज्ञा स्त्री० दे० "चक्की" ।
संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र] बिजली । वज्र ।

चाकू—संज्ञा पुं० [तु०] छुरी ।

चाक्षुष—वि० [सं०] १. चक्षु-संबंधी । २. जिसका बोध नेत्रों से हो । चक्षुर्ग्राह्य ।
संज्ञा पुं० १. न्याय में ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण जिसका बोध नेत्रों द्वारा हो । २. छठे मनु का नाम ।

चाखना†—क्रि० स० दे० "चखना" ।

चाचर, चाचरि—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्चरी] १. होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत । चर्चरी राग । २. होली में होनेवाले खेल-तमाशे । होली की धमार । ३. उपद्रव । दंगा । हलचल । हल्ला गुल्ला ।

चाचरी—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्चरी] योग की एक मुद्रा ।

चाचा—संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० चाची] काका । पितृव्य । बाप का भाई ।

चाट—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाटना] १. चटपटी चीज़ों के खाने या चाटने की प्रबल इच्छा । २. एक बार किसी वस्तु का आनंद लेकर फिर उसी का आनंद लेने की चाह । चसका । शौक़ । लालसा । ३. प्रबल इच्छा । बड़ी चाह । लोलुपता । ४. लत । आदत । बान । टेव । ५. चरपरी और नमकीन खाने की चीजें । गजक ।

चाटना—क्रि० स० [अनु० चट चट] १. खाने या स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को जीभ से उठाना । जीभ लगाकर खाना । २. पोंछकर खा लेना । चट कर जाना । ३. (प्यार से) किसी वस्तु पर जीभ फेरना ।
यौ०—चूमना चाटना = प्यार करना ।
४. कीड़ों का किसी वस्तु को खा जाना ।

चाटु—संज्ञा पुं० [सं०] १. मीठी बात । प्रिय बात । २. ख़ुशामद । चापलूसी ।

चाटुकार—संज्ञा पुं० [सं०] ख़ुशामद करनेवाला । चापलूस । ख़ुशामदी ।

चाटुकारी—संज्ञा स्त्री० [सं० चाटुकार + ई (प्रत्य०)] झूठी प्रशंसा या ख़ुशामद ।

चाड़*†—संज्ञा स्त्री० दे० "चाँड़" ।

चाड़ा*†—संज्ञा पुं० [हिं० चाड़] [स्त्री० चाड़ी] प्रेमपात्र । प्यारा । प्रिय ।

चाणक्य—संज्ञा पुं० [सं०] राजनीति के आचार्य एक मुनि जो पाटलीपुत्र के सम्राट् चंद्रगुप्त के मंत्री थे और कौटिल्य नाम से भी प्रसिद्ध हैं ।

चातक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चातकी] पपीहा नामक पक्षी ।

चातर†—वि० दे० "चातुर" ।

चातुर—वि० [सं०] १. नेत्रगोचर । २. चतुर । ३. ख़ुशामदी । चापलूस ।

चातुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चतुरता । चतुराई । व्यवहार-दक्षता । २. चालाकी ।

चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] चार पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ।

चातुर्मासिक—वि० [सं०] चार महीने में होनेवाला (यज्ञ, कर्म आदि) ।

चातुर्मास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. चार महीने में होनेवाला एक वैदिक यज्ञ । २. चार महीने का एक पौराणिक व्रत जो वर्षा काल में होता है ।

चातुर्य—संज्ञा पुं० [सं०] चतुराई ।

चात्रिक०‡–संज्ञा पुं० दे० "चातक"।

चादर–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कपड़े का लंबा चौड़ा टुकड़ा जो बिछाने या ओढ़ने के काम में आता है। २ हलका ओढ़ना। चौड़ा दुपट्टा। पिछौरी। ३. किसी धातु का बड़ा चौखूँटा पत्तर। चद्दर। ४ पानी की चौड़ी धार जो कुछ ऊपर से गिरती हो। ५. फूलों की राशि जो किसी पूज्य स्थान पर चढ़ाई जाती है। (मुसल०)

चानक‡–क्रि० वि० दे० "अचानक"।

चाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। २ गणित में आधा वृत्तक्षेत्र। ३. वृत्त की परिधि का कोई भाग। ४. धनु राशि। संज्ञा स्त्री० [सं० चाप=धनुष] १. दबाव। २ पैर की आहट।

चापना–क्रि०स० [सं० चाप=धनुष] दबाना।

चापलता‡–संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।

चापलूस–वि० [फा०] खुशामदी। लल्लो-चप्पो करनेवाला। चाटुकार।

चापलूसी–संज्ञा स्त्री० [फा०] खुशामद।

चाब–संज्ञा स्त्री० [सं० चव्य] १. गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ औषध के काम में आती है। चव्य। २ इस पौधे का फल।

संज्ञा स्त्री० [हिं० चाबना] १. वे चौखूँटे दाँत जिनसे भोजन कुचलकर खाया जाता है। डाढ़। चौभड़। २. बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति।

चाबना–क्रि० स० [सं० चर्वण] १. चबाना। २ खूब भोजन करना। खाना।

चाबी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चाप] कुंजी। ताली।

चाबुक–संज्ञा पुं० [फा०] १ कोड़ा। हंटर। सोटा। २ जोश दिलानेवाली बात।

चाबुकसवार–संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा चाबुकसवारी] घोड़े को चलना सिखानेवाला।

चाभना–क्रि० स० [हिं० चाबना] खाना।

चाभी–संज्ञा स्त्री० दे० "चाबी"।

चाम–संज्ञा पुं० [सं० चर्म] चमड़ा। खाल।

मुहा०—चाम के दाम चलाना=अपनी चलती में अन्याय करना। अंधेर करना।

चामर–संज्ञा पुं० [सं०] १ चौंर। चँवर। चौंरी। २ मोरछल। ३. एक वर्णवृत्त।

चामीकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २. धतूरा।

वि० स्वर्णमय। सुनहरा।

चामुंडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिन्होंने शुंभ निशुंभ के चंड मुंड नामक दो सेनापति दैत्यों का वध किया था।

चाय–संज्ञा स्त्री० [चीनी चा] १. एक पौधा जिसकी पत्तियों का काढ़ा चीनी के साथ पीने की चाल अब प्रायः सर्वत्र है। २. चाय उबाला हुआ पानी।

यौ०—चाय पानी=जलपान।

‡ संज्ञा पुं० दे० "चाव"।

चायक‡–संज्ञा पुं० [हिं० चाय] चाहनेवाला।

चार–वि० [सं० चतुर] १. जो गिनती में दो और दो हो। तीन से एक अधिक।

मुहा०—चार आँखें होना=नजर से नजर मिलना। देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। चार चाँद लगना= १. चौगुनी प्रतिष्ठा होना। २. चौगुनी शोभा होना। सौंदर्य बढ़ना (स्त्री०)। चारों फूटना=चारों आँखें (दो हिय की, दो ऊपर की) फूटना।

२ कई एक। बहुत से। ३ थोड़ा बहुत। कुछ।

संज्ञा पुं० चार का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४।

संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चारित, चारी] १. गति। चाल। गमन। २. बंधन। कारागार। ३ गुप्त दूत। चर। जासूस। ४ दास। सेवक। ५. चिरौंजी का पेड़। पियार। अचार। ६. आचार। रीति। रस्म।

चार-आइना–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का कवच या बक्तर।

चार काने–संज्ञा पुं० [हिं० चार+काना मासा] चौसर या पासे का एक दाँव।

चारखाना–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंगीन धारियों के द्वारा चौखूँटे घर बने रहते हैं।

चारजामा–संज्ञा पुं० [फा०] जीन। पलान।

चारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वंश का कीर्ति गानेवाला। भाट। बंदीजन। २ राजपूताने की एक जाति। ३ भ्रमणकारी।

चारदीवारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] घेरा। हाता। २. शहरपनाह।

चारना‡–क्रि० स० [सं० चारण] [illegible]

चारपाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चार+पाया] छोटा पलंग। खाट।

मुहा०—चारपाई पर पड़ना=इतना बीमार होना [illegible]

अत्यंत रुग्ण होना। चारपाई से लगना = बीमारी के कारण उठ न सकना।

चारबाग़-संज्ञा पुं० [फा०] १. चौखूँटा बगीचा। २. चार बराबर खानों में बँटा हुआ रूमाल।

चारयारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चार + फा० यार] १. चार मित्रों की मंडली। २. मुसलमानों में सुन्नी संप्रदाय की एक मंडली। ३. चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिस पर खलीफ़ाओं के नाम या कलमा लिखा रहता है।

चारा-संज्ञा पुं० [हिं० चरना] पशुओं के खाने की घास, पत्ती, डंठल आदि।
संज्ञा पुं० [फा०] उपाय। तदबीर।

चाराजोई-संज्ञा स्त्री० [फा०] नालिश। फ़रियाद।

चारिणी-वि० स्त्री० [सं०] आचरण करनेवाली। चलनेवाली।

चारित-वि० [सं०] चलाया हुआ।

चारित्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुल-क्रमागत आचार। २. चाल-चलन। व्यवहार। स्वभाव। ३. सन्यास। (जैन)

चारित्र्य-संज्ञा पुं० [सं०] चरित्र।

चारी-वि० [सं० चारिन्] [स्त्री० चारिणी] १. चलनेवाला। २. आचरण करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. पदाति सैन्य। पैदल सिपाही। २. संचारी भाव।

चारु-वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।

चारुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता।

चारुहासिनी-वि० स्त्री० [सं०] सुंदर हँसनेवाली। मनोहर मुसकानवाली।
संज्ञा स्त्री० वैताली छंद का एक भेद।

चार्वाक-संज्ञा पुं० [सं०] एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक।

चाल-संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] १. गति। गमन। चलने की क्रिया। २. चलने का ढंग। गमन प्रकार। ३. आचरण। बर्त्ताव। व्यवहार। ४. आकार-प्रकार। बनावट। गढ़न। ५. रीति। रवाज। रस्म। प्रथा। परिपाटी। ६. गमन-मुहूर्त्त। चलने की सायत। चाला। ७. कार्य्य करने की युक्ति। ढंग। तदबीर। ढब। ८. कपट। छल। धूर्त्तता। ९. ढंग। प्रकार। तरह। १०. शतरंज, ताश आदि के खेल में गोटी को एक घर से दूसरे घर में ले जाने अथवा पत्ते या पासे को दाँव पर डालने की क्रिया। ११. हलचल। धूम। आंदोलन। १२. हिलने डोलने का शब्द। आहट। खटका।

चालक-वि० [सं०] चलानेवाला। संचालक।
संज्ञा पुं० [हिं० चाल] धूर्त्त। छली।

चालचलन-संज्ञा पुं० [हिं० चाल + चलन] आचरण। व्यवहार। चरित्र। शील।

चाल ढाल-संज्ञा स्त्री० [हिं० चाल + ढाल] १. आचरण। व्यवहार। २. तौर-तरीक़ा।

चालन-संज्ञा पुं० [सं०] १. चलाने की क्रिया। २. चलने की क्रिया। गति।
संज्ञा पुं० [हिं० चालना] भूसी या चोकर जो आटा चालने के पीछे रह जाता है।

चालना†-क्रि० स० [सं० चालन] १. चलाना। परिचालित करना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना। ३. (बहू) बिदा करा के ले आना। ४. हिलाना। डोलाना। ५. कार्य्य निर्वाह करना। भुगताना। ६. बात उठाना। प्रसंग छेड़ना। ७. आटे को छलनी में रखकर छानना।
क्रि० अ० [सं० चालन] चलना।

चालबाज़-वि० [हिं० चाल + फा० बाज़] धूर्त्त। छली।

चाला-संज्ञा पुं० [हिं० चाल] १. प्रस्थान। कूच। रवानगी। २. नई बहू का पहले पहल मायके से ससुराल या ससुराल से मायके जाना। ३. यात्रा का मुहूर्त्त।

चालाक-वि० [फा०] १. व्यवहार-कुशल। चतुर। दक्ष। २. धूर्त्त। चालबाज़।

चालाकी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चतुराई। व्यवहार-कुशलता। दक्षता। पटुता। २. धूर्त्तता। चालबाज़ी। ३. युक्ति।

चालान-संज्ञा पुं० दे० "चलान"।

चालिया-वि० दे० "चालबाज़"।

चाली-वि० [हिं० चाल] १. चालिया। धूर्त्त। चालबाज़। २. चंचल। नटखट।

चालीस-वि० [सं० चत्वारिंशत] जो गिनती में बीस और बीस हो।
संज्ञा पुं० बीस और बीस की संख्या या अंक।

चालीसा-संज्ञा पुं० [हिं० चालीस] [स्त्री० चालीसी] १. चालीस वस्तुओं का समूह। २. चालीस दिन का समय। चिल्ला।

चाल्हा-संज्ञा स्त्री० [देश०] चेल्हवा मछली।

चावँ चावँ-संज्ञा स्त्री० दे० "चायँ चायँ"।

चाव-संज्ञा पु० [हिं० चाह] १. प्रबल इच्छा। अभिलाषा। लालसा। अरमान। २. प्रेम। अनुराग। चाह। ३. शौक़। उत्कंठा। ४. लाड़-प्यार। दुलार। नखरा। ५. उमंग। उत्साह। आनंद।

चावल-संज्ञा पु० [सं० तंडुल] १. एक प्रसिद्ध अन्न। धान के दाने की गुठली। तंडुल। २. पकाया चावल। भात। ३. चावल के आकार के दाने। ४. एक रत्ती का आठवाँ भाग या उसके बराबर की तौल।

चाशनी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. चीनी, मिस्री या गुड़ को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा और मधु के समान लसीला किया हुआ रस। २. चसका। मज़ा। ३. नमूने का सोना जो सुनार को गहने बनाने के लिये सोना देनेवाला गाहक अपने पास रखता है।

चाष-संज्ञा पु० [सं०] १. नीलकंठ पक्षी। २. चाहा पक्षी।

चासा-संज्ञा पु० [देश०] १. हलवाहा। हल जोतनेवाला। २. किसान। खेतिहर।

चाह-संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा। अथवा सं० उत्साह] १. इच्छा। अभिलाषा। २. प्रेम। अनुराग। प्रीति। ३. पूछ। आदर। क़दर। ४. माँग। ज़रूरत। संज्ञा स्त्री० [हिं० चाल = आहट] ख़बर। समाचार।

चाहक-संज्ञा पु० [हिं० चाहना] चाहनेवाला। प्रेम करनेवाला।

चाहत-संज्ञा स्त्री० [हिं० चाह] चाह। प्रेम।

चाहना-क्रि० स० [हिं० चाह] १. इच्छा करना। अभिलाषा करना। २. प्रेम करना। प्यार करना। ३. माँगना। ४. प्रयत्न करना। कोशिश करना। ५. देखना। ताकना। ६. ढूँढ़ना। संज्ञा स्त्री० [हिं० चाहना] चाह। ज़रूरत।

चाहा-संज्ञा पु० [सं० चाष] बगले की तरह का एक जल-पक्षी।

चाहि-अव्य० [सं० चैव = और भी?] अपेक्षाकृत (अधिक)। बनिस्बत।

चाहिए-अव्य० [हिं० चाहना] उचित है। उपयुक्त है। मुनासिब है।

चाही-वि० स्त्री० [हिं० चाह] चहेती। प्यारी।

चाहे-अव्य० [हिं० चाहना] १. जी चाहे। इच्छा हो। मन में आवे। २. यदि जी चाहे तो। जैसा जी चाहे। ३. होना चाहता हो। होनेवाला हो।

चिंआँ-संज्ञा पु० [सं० चिंचा] इमली का बीज।

चिउँटा-संज्ञा पु० [हिं० चिमटना] एक कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है।

चिउँटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिमटाना] एक बहुत छोटा कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है। चींटी। पिपीलिका।

मुहा०—चिउँटी की चाल = बहुत सुस्त चाल। मंद गति। चिउँटी के पर निकलना = ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो। मरने पर होना।

चिंगना-संज्ञा पु० [देश०] १. किसी पक्षी का विशेषतः मुरग़ी का छोटा बच्चा। २. छोटा बालक। बच्चा।

चिंघाड़-संज्ञा स्त्री० [सं० चीत्कार] १. चीख़ मारने का शब्द। २. किसी जंतु का घोर शब्द। चिल्लाहट। ३. हाथी की बोली।

चिंघाड़ना-क्रि० अ० [सं० चीत्कार] १. चीख़ना। चिल्लाना। २. हाथी का बोलना या चिल्लाना।

चिंचिनी-संज्ञा स्त्री० [सं० तिंतिड़ी] १. इमली का पेड़। २. इमली का फल।

चिंजा-संज्ञा पु० [सं० चिरजीव] [स्त्री० चिंजी] लड़का। पुत्र। बेटा।

चिंत-संज्ञा स्त्री० दे० "चिंता"।

चिंतक-वि० [सं०] १. चिंतन करनेवाला। ध्यान करनेवाला। २. सोचनेवाला।

चिंतन-संज्ञा पु० [सं०] १. बार बार स्मरण। ध्यान। २. विचार। विवेचना। ग़ौर।

चिंतना-क्रि० स० [सं० चिंतन] १. ध्यान करना। स्मरण करना। २. सोचना। संज्ञा स्त्री० [सं० चिंतन] १. ध्यान। स्मरण। भावना। २. चिंता। सोच।

चिंतनीय-वि० [सं०] १. चिंतन या ध्यान करने योग्य। भावनीय। २. जिसकी फ़िक्र करना उचित हो। ३. विचार करने योग्य। ४. संदिग्ध।

चिंतवन-संज्ञा पु० दे० "चिंतन"।

चिंता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ध्यान। भावना। २. सोच। फ़िक्र। खटका।

चिंतामणि-संज्ञा पु० [सं०] १. एक कल्पित रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि उससे जो अभिलाषा की जाय, वह पूर्ण कर देता है। २. ब्रह्मा। ३. परमेश्वर। ४. सरस्वती का मंत्र जिसे बि

लिये लड़के की जीभ पर लिखते हैं।
चिंतित-वि० [सं०] जिसे चिंता हो। चिंतायुक्त। फ़िक्रमंद।
चिंत्य-वि० [सं०] १ भावनीय। विचारणीय। विचार करने योग्य। २. संदिग्ध।
चिंदी-संज्ञा स्त्री० [देश०] टुकड़ा।
मुहा०-हिंदी की चिंदी निकालना = अत्यंत तुच्छ भूल निकालना। कुतर्क करना।
चिउड़ा-संज्ञा पुं० दे० "चिड़वा"।
चिक-संज्ञा स्त्री० [तु० चिक] बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा। चिलमन।
संज्ञा पुं० पशुओं को मारकर उनका मांस बेचनेवाला। बूचर। बकर कसाई।
संज्ञा स्त्री० [देश०] कमर का वह दर्द जो एकबारगी अधिक बल पड़ने के कारण होता है। चमक। चिलक। झटका।
चिकट-वि० [सं० चिक्किट] १ चिकना और मैल से गंदा। मैला कुचैला। २. लसीला।
चिकटना-क्रि० अ० [हिं० चिकट या चिकट] जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना।
चिकन-संज्ञा पुं० [फा०] महीन सूती कपड़ा जिस पर उभरे हुए बूटे बने रहते हैं।
चिकना-वि० [सं० चिक्कण] [स्त्री० चिकनी] १. जो छूने में खुरदुरा न हो। जो साफ़ और बराबर हो। २. जिस पर पैर आदि फिसले। ३. जिसमें तेल लगा हो।
मुहा०—चिकना घड़ा = निर्लज्ज। बेहया।
४. साफ़-सुथरा। सँवारा हुआ। सुंदर।
मुहा०-चिकनी चुपड़ी बातें = बनावटी स्नेह से भरी बातें। कृत्रिम मधुर भाषण।
५. लल्लो-चप्पो करनेवाला। चाटुकार। खुशामदी। ६. स्नेही। अनुरागी। प्रेमी।
संज्ञा पुं० तेल, घी, चरबी आदि चिकने पदार्थ।
चिकनाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिकना + ई(प्रत्य०)] १. चिकना होने का भाव। चिकनापन। चिकनाहट। २. स्निग्धता। सरसता।
चिकनाना-क्रि० स० [हिं० चिकना + ना (प्रत्य०)] १. चिकना करना। स्निग्ध करना। २ साफ़ करना। सँवारना।
क्रि० अ० १. चिकना होना। २. स्निग्ध होना। ३ चरबी से युक्त होना। हृष्ट-पुष्ट होना। मोटाना। ४. स्नेह-युक्त होना।
चिकनापन-संज्ञा पुं० [हिं० चिकना + पन (प्रत्य०)] चिकना होने का भाव। चिकनाई। चिकनाहट।
चिकनाहट-संज्ञा स्त्री० दे० "चिकनापन"।
चिकनिया-वि० [हिं० चिकना] छैला। शौक़ीन। बाँका। बना-ठना।
चिकनी सुपारी-संज्ञा स्त्री० [सं० चिक्कणी] एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।
चिकरना-क्रि० अ० [सं० चीत्कार] चीत्कार करना। चिंघाड़ना। चीखना।
चिकार-संज्ञा पुं० दे० "चिंघाड़"।
चिकारना-क्रि० अ० दे० "चिंघाड़ना"।
चिकारा-संज्ञा पुं० [हिं० चिकार] [स्त्री० अल्पा० चिकारी] १ सारंगी की तरह का एक बाजा। २. हिरन की जाति का एक जानवर।
चिकित्सक-संज्ञा पुं० [सं०] रोग दूर करने का उपाय करनेवाला। वैद्य।
चिकित्सा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० चिकित्सित, चिकित्स्य] १ रोग दूर करने की युक्ति या क्रिया। इलाज। २ वैद्य का व्यवसाय या काम।
चिकित्सालय-संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ रोगियों की दवा हो। शफ़ाख़ाना।
चिकुटीः-संज्ञा स्त्री० दे० "चिकोटी"।
चिकुर-संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर के बाल। केश। २. पर्वत। ३. साँप आदि रेंगनेवाले जंतु। ४. छछूँदर। ५. गिलहरी।
चिकोटी-संज्ञा स्त्री० दे० "चुटकी"।
चिक्कट-संज्ञा पुं० [हिं० चिकना + कीट या काट] गर्द, तेल आदि की मैल जो कहीं जम गई हो। कीट।
वि० मैला-कुचैला। गंदा।
चिक्कण-वि० [सं०] चिकना।
चिक्कारना-क्रि० अ० दे० "चिंग्घाड़ना"।
चिक्कार-संज्ञा पुं० दे० "चिग्घाड़"।
चिखुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "गिलहरी"।
चिचड़ा-संज्ञा पुं० [देश०] १. डेढ़, दो हाथ ऊँचा एक पौधा जो दवा के काम में आता है। अपामार्ग। औंगा। अझाझार। लटजीरा। २. दे० "चिचड़ी"।
चिचड़ी-संज्ञा स्त्री० [?] एक कीड़ा जो चौपायों के शरीर में चिमटा रहता और उनका खून पीता है। किलनी। किल्ली।
चिचानः-संज्ञा पुं० [सं० सचान] बाज पक्षी।
चिचिंडा-संज्ञा पुं० दे० "चचींड़ा"।

चितभंग-संज्ञा पुं० [सं० चित्त+भंग] १. ध्यान न लगना। उचाट। उदासी। २. होश का ठिकाने न रहना। मति भ्रम।
चितरना-क्रि० स० [सं० चित्र] चित्रित करना। चित्र बनाना।
चितरोख-संज्ञा स्त्री० [सं० चित्र+फा० रुख] एक प्रकार की चिड़िया। चितरवा।
चितला-वि० [सं० चित्रल] कबरा। चितकबरा। रंग-बिरंगा।
संज्ञा पुं० १. लखनऊ का एक प्रकार का खरबूजा। २. एक प्रकार की बड़ी मछली।
चितवन-संज्ञा स्त्री० [हिं० चेतना] ताकने का भाव या ढंग। अवलोकन। दृष्टि।
चितवना†-क्रि० स० [हिं० चेतना] देखना।
चितवाना†-क्रि० स० [हिं० चितवना का प्रे०] तकाना। दिखाना।
चिता-संज्ञा स्त्री० [सं० चिता] १. चुनकर रखी हुई लकड़ियों का ढेर जिस पर मुरदा जलाया जाता है। २. श्मशान। मरघट।
चिताना-क्रि० स० [हिं० चेतना] १. सावधान करना। होशियार करना। २. स्मरण कराना। याद दिलाना। ३. आत्मबोध कराना। ज्ञानोपदेश करना। ४. (आग) जलाना। सुलगाना।
चितावनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिताना] १. चिताने की क्रिया। सतर्क या सावधान करने की क्रिया। २. वह बात जो सावधान करने के लिये कही जाय।
चिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिता। २. समूह। ढेर। ३. चुनने या इकट्ठा करने की क्रिया। चुनाई। ४. चैतन्य। ५ दुर्गा।
चितेरा-संज्ञा पुं० [सं० चित्रकार] [स्त्री० चितेरिन] चित्रकार। चित्र बनानेवाला।
चितौन-संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन"।
चित्त-संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतःकरण की अनुसंधानात्मक वृत्ति। २. अंतःकरण। जी। मन। दिल।
मुहा०—चित्त चढ़ना=दे० "चित्त पर चढ़ना"। चित्त चुराना=मन मोहना। मोहित करना। चित्त देना=ध्यान देना। मन लगाना। चित्त पर चढ़ना=१. मन में बसना। बार बार ध्यान में आना। २. स्मरण होना। याद पड़ना। चित्त बँटना=चित्त एकाग्र न रहना। चित्त में धँसना, जमना या बैठना=१. हृदय में दृढ़ होना। मन में धँसना। २. समझ में आना। असर करना। चित्त से उतरना=१. ध्यान में न रहना। भूल जाना। २. दृष्टि से गिरना।
चित्तभूमि-संज्ञा स्त्री० [सं०] योग में चित्त की अवस्थाएँ जो पाँच हैं—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध।
चित्तविक्षेप-संज्ञा पुं० [सं०] चित्त की चंचलता या अस्थिरता।
चित्तविभ्रम-संज्ञा पुं० [सं०] १ भ्रांति। भ्रम। भौचक्कापन। २ उन्माद।
चित्तवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्त की गति। चित्त की अवस्था।
चित्ती-संज्ञा स्त्री० [सं० चित्र] छोटा दाग या चिह्न। छोटा धब्बा। बुँदकी। संज्ञा स्त्री० [हिं० चित] वह कौड़ी जिसकी पीठ चिपटी और खुरदरी होती है और जिससे जूए के दाँव फेंकते हैं। टैयाँ।
चित्तौर-संज्ञा पुं० [सं० चित्रकूट] एक इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन नगर जो उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी था।
चित्र-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चित्रित] १ चंदन आदि से माथे पर बनाया हुआ चिह्न। तिलक। २. किसी वस्तु का स्वरूप या आकार जो कलम और रंग आदि के द्वारा बना हो। तसवीर।
मुहा०—चित्र उतारना=१. चित्र बनाना। तसवीर खींचना। २. वर्णन आदि के द्वारा ठीक ठीक दृश्य सामने उपस्थित कर देना।
३. काव्य के तीन भेदों में से एक जिसमें व्यंग्य की प्रधानता नहीं रहती। अलंकार। ४. काव्य में एक प्रकार की रचना जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि हाथी, घोड़े, खड्ग, रथ, कमल आदि के आकार बन जाते हैं। ५. एक वर्णवृत्त। ६. आकाश। ७. एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर में सफेद चित्तियाँ या दाग पड़ जाते हैं। ८ चित्रगुप्त। ९. चीते का पेड़। चित्रक। वि० १. अद्भुत। विचित्र। २. चितकबरा। कबरा। ३ रंग बिरंगा।
चित्रक-संज्ञा पुं० [सं०] १. तिलक। २. चीते का पेड़। ३. चीता। बाघ। ४. चिरायता। ५. चित्रकार।
चित्रकला-संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्र बनाने की विद्या। तसवीर बनाने का हुनर।

चित्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र बनानेवाला। चितेरा।

चित्रकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चित्रकार + ई] चित्रविद्या। चित्र बनाने की कला।

चित्रकाव्य—संज्ञा पुं० दे० "चित्र" ४।

चित्रकूट—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वनवास के समय राम और सीता ने बहुत दिनों तक निवास किया था। २. चित्तौर।

चित्रगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] चौदह यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्रना०—क्रि० स० [सं० चित्रण] चित्रित करना। तसवीर बनाना।

चित्रपट—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कपड़ा, कागज या पटरी जिस पर चित्र बनाया जाय। चित्राधार। २. छींट।

चित्रपदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद।

चित्रमद—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक आदि में किसी स्त्री का अपने प्रेमी का चित्र देखकर विरह-सूचक भाव दिखलाना।

चित्रमृग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्तीदार हिरन। चीतल।

चित्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] बुड्ढे को जवान और जवान को बुड्ढा या नपुंसक बना देने की विद्या या कला।

चित्ररथ—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।

चित्रलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वर्णवृत्त। २. चित्र बनाने की कलम या कूँची।

चित्रविचित्र—वि० [सं०] १. रंग-बिरंगा। कई रंगों का। २. बेल बूटेदार।

चित्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] चित्र बनाने की विद्या।

चित्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह घर जहाँ चित्र बनते हों। २. वह घर जहाँ चित्र रखे हों या रंग बिरंग की सजावट हो।

चित्रसारी—संज्ञा स्त्री० [सं० चित्र + शाला] १. वह घर जहाँ चित्र टँगे हों या दीवार पर बने हों। २. सजा हुआ सोने का कमरा। विलासभवन। रंगमहल।

चित्रहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] वार का एक हाथ। हथियार चलाने का एक हाथ।

चित्रांग—वि० [सं०] [स्त्री० चित्रांगी] जिसके अंग पर चित्तियाँ, धारियाँ आदि हों। संज्ञा पुं० १. चित्रक। चीता। २ एक प्रकार का साँप। चीतल। ३. ईंगुर।

चित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से चौदहवाँ नक्षत्र। २. मूषिकपर्णी। ३ ककड़ी या खीरा। ४. दंती वृक्ष। ५. गडदूर्वा। ६. मजीठ। ७. बायबिडंग। ८. मूसाकानी। आखुकर्णी। ९. अजवाइन। १०. एक रागिनी। ११. पंद्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

चित्रिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

चित्रित—वि० [सं०] १. चित्र में खींचा हुआ। चित्र द्वारा दिखाया हुआ। २. जिस पर बेल बूटे आदि बने हों। ३. जिस पर चित्तियाँ या धारियाँ आदि हों।

चित्रोत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें प्रश्न ही के शब्दों में उत्तर या कई प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है।

चिथड़ा—संज्ञा पुं० [सं० चीर्ण या चीर] फटा पुराना कपड़ा। लत्ता। लुगरा।

चिथाड़ना—क्रि० स० [सं० चीर्ण] १. चीरना। फाड़ना। २. अपमानित करना।

चिदात्मा—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म।

चिदानंद—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म।

चिदाभास—संज्ञा पुं० [सं०] १. चैतन्य स्वरूप परब्रह्म का आभास या प्रतिबिंब जो अंतःकरण पर पड़ता है। २ जीवात्मा।

चिनक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चिनगी] जलन लिए हुए पीड़ा। चुनचुनाहट।

चिनगारी—संज्ञा स्त्री० [सं० चूर्ण, हिं० चून + अंगार] १ जलती हुई आग का छोटा कण या टुकड़ा। २. दहकती हुई आग में से फूट फूटकर उड़नेवाले कण। अग्निकण।

मुहा०—आँखों से चिनगारी छूटना = क्रोध से आँखें लाल लाल होना।

चिनगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० चुन + अग्नि] १. अग्निकण। चिनगारी। २. चुस्त और चालाक लड़का। ३. वह लड़का जो नटों के साथ रहता है।

चिनाना†—क्रि० स० दे० "चुनवाना"।

चिनिया—वि० [हिं० चीनी] १. चीनी के रंग का। सफेद। २ चीन देश का।

चिनिया केला—संज्ञा पुं० [हिं० चिनिया + केला] छोटी जाति का एक केला।

चिनिया बदाम—संज्ञा पुं० दे०

चिन्मय-वि० [सं०] ज्ञानमय।
संज्ञा पुं० परमेश्वर।
चिन्ह ‡-संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।
चिन्हवाना†-क्रि० स० दे० "चिन्हाना"।
चिन्हाना†-क्रि० स० [हिं० "चीन्हना" का प्रे०] पहचनवाना। परिचित कराना।
चिन्हानी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिह्न] १. चीन्हने की वस्तु। पहचान। लक्षण। २. स्मारक। यादगार। ३. रेखा। धारी। लकीर।
चिन्हारी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिह्न] जान-पहचान। परिचय।
चिपकना-क्रि० अ० [अनु० चिपचिप] किसी लसीली वस्तु के कारण दो वस्तुओं का परस्पर जुड़ना। सटना। चिमटना।
चिपकाना-क्रि० स० [हिं० चिपकना] १. लसीली वस्तु को बीच में देकर दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ना। चिमटाना। श्लिष्ट करना। चस्पाँ करना। २. लिपटाना।
चिपचिपा-वि० [अनु० चिपचिप] जिसे छूने से हाथ चिपकता हुआ जान पड़े। लसदार। लसीला।
चिपचिपाना-क्रि० अ० [हिं० चिपचिप] छूने में चिपचिपा जान पड़ना। लसदार मालूम होना।
चिपटना-क्रि० अ० दे० "चिपकना"।
चिपटा-वि० [सं० चिपिट] जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो। बैठा या धँसा हुआ।
चिपड़ी, चिपरी‡-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिप्पड़] गोबर के पाथे हुए चिपटे टुकड़े। उपली।
चिप्पड़-संज्ञा पुं० [सं० चिपिट] १. छोटा चिपटा टुकड़ा। २. सूखी लकड़ी आदि के ऊपर की छूटी हुई छाल का टुकड़ा। पपड़ी। ३. किसी वस्तु के ऊपर से छील-कर निकाला हुआ टुकड़ा।
चिप्पी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिप्पड़] १. छोटा चिप्पड़ या टुकड़ा। २. उपली। गोहँठी।
चिबुक-संज्ञा पुं० [सं०] ठोड़ी।
चिमटना-क्रि० अ० [हिं० चिपकना] १. चिपकना। सटना। २. आलिंगन करना। लिपटना। ३. हाथ-पैर आदि सब अंगों को लगाकर दृढ़ता से पकड़ना। गुथना। ४. पीछा न छोड़ना। पिंड न छोड़ना।
चिमटा-संज्ञा पुं० [हिं० चिमटना] [स्त्री० [illegible]] [illegible]क औजार जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़कर उठाते हैं, जहाँ हाथ नहीं ले जा सकते। दस्तपनाह।
चिमटाना-क्रि० स० [हिं० चिमटना] १. चिपकाना। सटाना। २. लिपटाना।
चिमटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिमटा] बहुत छोटा चिमटा।
चिमड़ा-वि० दे० "चीमड़"।
चिरजीव-वि० [सं०] १. चिरजीवी। २. आशीर्वाद का शब्द।
चिरंतन-वि० [सं०] पुराना।
चिर-वि० [सं०] बहुत दिनों तक रहनेवाला।
क्रि० वि० बहुत दिनों तक।
संज्ञा पुं० तीन मात्राओं का ऐसा गण जिसका प्रथम वर्ण लघु हो।
चिरई†-संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।
चिरकना-क्रि० अ० [अनु०] थोड़ा थोड़ा मल निकालना या हगना।
चिरकाल-संज्ञा पुं० [सं०] दीर्घ काल। बहुत समय।
चिरकीन-वि० [फा०] गंदा।
चिरकुट-संज्ञा पुं० [सं० चिर + कुट्ट = काटना] फटा पुराना कपड़ा। चिथड़ा। गूदड़।
चिरचिटा-संज्ञा पुं०[देश०]चिचड़ा। अपामार्ग।
चिरजीवी-वि० [सं०] १. बहुत दिनों तक जीनेवाला। २. अमर।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. कौवा। ३ मार्कंडेय ऋषि। ४. अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गए हैं।
चिरना-क्रि० अ० [सं० चीर्ण] १. फटना। सीध में कटना। २. लकीर के रूप में घाव होना।
चिरमिटी-संज्ञा स्त्री० [देश०] गुंजा। घुँघची।
चिरवाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिरवाना] चिरवाने का भाव, कार्य या मजदूरी।
चिरवाना-क्रि० स० [हिं० चीरना का प्रे०] चीरने का काम कराना। फड़वाना।
चिरस्थायी-वि० [सं० चिरस्थायिन्] बहुत दिनों तक रहनेवाला।
चिरस्मरणीय-वि० [सं०] १. बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य। २. पूजनीय।
चिरहटा†-संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।
चिराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० चीरना] चीरने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

चिराग़–संज्ञा पु० [फा० चिराग़] दीपक। दीया।

चिराना–क्रि० स० [हिं० चीरना] चीरने का काम दूसरे से कराना। फड़वाना। वि० [सं० चिरंतन] १. पुराना। २. जीर्ण।

चिरायँध–संज्ञा स्त्री० [सं० चर्म+गंध] वह दुर्गंध जो, चमड़े, बाल, मांस आदि जलने से फैलती है।

चिरायता–संज्ञा पुं० [सं० चिरतिक्त या चिरात्] एक पौधा जो बहुत कड़ुआ होता है और दवा के काम में आता है।

चिरायु–वि० [सं० चिरायुस्] बड़ी उम्रवाला। बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घायु।

चिरारी–संज्ञा स्त्री० दे० "चिरौंजी"।

चिरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिरिहार–संज्ञा पु० दे० "चिड़ीमार"।

चिरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिरौंजी–संज्ञा स्त्री० [सं० चार+बीज] पियाल वृक्ष के फलों के बीज की गिरी।

चिलक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिलकना] १. आभा। कांति। द्युति। २. रह रहकर उठनेवाला दर्द। टीस। चमक।

चिलकना–क्रि० अ० [हिं० चिल्ली=बिजली, या अनु०] १. रह रहकर चमकना। चमचमाना। २. रह रहकर दर्द उठना।

चिलकाना†–क्रि० स० [हिं० चिलक] चमकाना। झलकाना।

चिलगोजा–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का मेवा। चीड़ या सनोबर का फल।

चिलड़ा–संज्ञा पु० [देश०] उलटा नाम का एक पकवान।

चिलता–संज्ञा पुं० [फा० चिलतः] एक प्रकार का कवच।

चिलबिला, चिलबिल्ला–वि० [सं० चल+बल] [स्त्री० चिलबिल्ली] चंचल। चपल।

चिलम–संज्ञा स्त्री० [फा०] कटोरी के आकार का नलीदार मिट्टी का एक बरतन जिस पर तंबाकू जलाकर धुआँ पीते हैं।

चिलमची–संज्ञा स्त्री० [फा०] देग के आकार का एक बरतन जिसमें हाथ धोते और कुल्ली आदि करते हैं।

चिलमन–संज्ञा स्त्री० [फा०] बाँस की फट्टियों का परदा। चिक।

चिल्लड़–संज्ञा पु० [सं० चिल=वस्त्र] जूँ की तरह का एक बहुत छोटा सफेद कीड़ा।

चिल्ल-पों–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिल्लाना+अनु० पों] चिल्लाना। शोर-गुल। पुकार।

चिल्लवाना–क्रि० स० [हिं० चिल्लाना का प्रे०] चिल्लाने में दूसरे को प्रवृत्त करना।

चिल्ला–संज्ञा पु० [फा०] १. चालीस दिन का समय।

मुहा०—चिल्ले का जाड़ा=बहुत कड़ी सरदी।

२. चालीस दिन का बंधेज या किसी पुण्य कार्य्य का नियम। (मुसल०)

संज्ञा पु० [देश०] १. एक जंगली पेड़। २. उड़द या मूँग आदि की घी चुपड़कर सेंकी हुई रोटी। चीला। उलटा। ३. धनुष की डोरी। पतचिरा।

चिल्लाना–क्रि० अ० [हिं० चीत्कार] जोर से बोलना। शोर करना। हल्ला करना।

चिल्लाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिल्लाना] १. चिल्लाने का भाव। २. हल्ला। शोर।

चिल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं०] झिल्ली (कीड़ा)। संज्ञा स्त्री० [सं० चिरिका] बिजली। वज्र।

चिहुँकना*†–क्रि० अ० दे० "चौंकना"।

चिहुँटना*–क्रि० स० [सं० चिपिट, हिं० चिमटना] १. चुटकी काटना।

मुहा०—चित्त चिहुँटना=मर्म स्पर्श करना। चित्त में चुभना।

२. चिपटना। लिपटना।

चिहुँटी–संज्ञा स्त्री० [?] चुटकी। चिकोटी।

चिहुर*–संज्ञा पु० [सं० चिकुर] सिर के बाल। केश।

चिह्न–संज्ञा पु० [सं०] १. वह लक्षण जिससे किसी चीज की पहचान हो। निशान। २. पताका। झंडी। ३ दाग। धब्बा।

चिह्नित–वि० [सं०] चिह्न किया हुआ। जिस पर चिह्न हो।

चीं, चींचीं–संज्ञा स्त्री० [अनु०] पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत महीन शब्द।

चीं चपड़–संज्ञा स्त्री० [अनु०] विरोध में कुछ बोलना।

चींटा–संज्ञा पु० दे० "चिउँटा"।

चीक–संज्ञा स्त्री० [सं० चीत्कार] बहुत जोर से चिल्लाने का शब्द। चिल्लाहट।

चीकट–संज्ञा पु० [हिं० कीचड़] १. तेल की मैल। तलछट। २. लसार मिट्टी। संज्ञा पु० [देश०] चिकट नाम का कपड़ा। वि० बहुत मैला या गंदा।

चीकना–क्रि० अ० [सं० चीत्कार] १. ज़ोर से चिल्लाना। २. बहुत ज़ोर से बोलना।
चीख–संज्ञा स्त्री० दे० "चीक"।
चीखना–क्रि० स० [सं० चषण] स्वाद जानने के लिये, थोड़ी मात्रा में खाना।
चीखर, चीखल–संज्ञा पुं० दे० "कीचड़"।
चीज़–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सत्तात्मक वस्तु। पदार्थ। वस्तु। द्रव्य। २. आभूषण। गहना। ३. गाने की चीज़। गीत। ४. विलक्षण वस्तु। ५ महत्त्व की वस्तु।
चीठी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चिट्ठी"।
चीढ़–संज्ञा पुं० [सं० चीडा] एक बहुत ऊँचा पेड़ जिसके गोंद से गंधा विरोज़ा और ताड़पीन तेल निकलता है।
चीत*–संज्ञा पुं० [सं० चित्रा] चित्रा नक्षत्र।
चीतना–क्रि० स० [सं० चेत] [वि० चीता] १. सोचना। विचारना। २. चैतन्य होना। ३. स्मरण करना।
क्रि० स० [सं० चित्र] चित्रित करना। तस्वीर या बेल-बूटे बनाना।
चीतल–संज्ञा पुं० [हिं० चित्ती] १. एक प्रकार का हिरन जिसके शरीर पर सफ़ेद रंग की चित्तियाँ होती हैं। २. अजगर की जाति का एक प्रकार का चित्तीदार साँप।
चीता–संज्ञा पुं० [सं० चित्रक] १. बाघ की जाति का एक प्रसिद्ध हिंसक पशु। २. एक पेड़ जिसकी छाल और जड़ औषध के काम में आती है।
†संज्ञा पुं० [सं० चित्त] १. चित्त। हृदय। दिल। २. होश। सज्ञा।
वि० [हिं० चेतना] सोचा या विचारा हुआ।
चीत्कार–संज्ञा पुं० [सं०] चिल्लाहट। हल्ला। शोर। गुल।
चीथड़ा–संज्ञा पुं० दे० "चिथड़ा"।
चीथना–क्रि० स० [सं० चीर्ण] टुकड़े टुकड़े करना। चोंथना। फाड़ना।
चीन–संज्ञा पुं० [सं०] १. झंडी। पताका। २. सीसा नामक धातु। ३. तागा। सूत। ४. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ५. एक प्रकार का हिरन। ६. एक प्रकार का साँवा। चेना। ७. एक प्रसिद्ध देश।
चीनना†–क्रि० स० दे० "चीन्हना"।
चीनांशुक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की लाल बनात जो पहले चीन से आती थी। २. चीन से आनेवाला रेशमी कपड़ा।
चीना–संज्ञा पुं० [हिं० चीन] १. चीन देश-वासी। २. एक तरह का साँवाँ। चेना। ३. चीनी कपूर।
वि० चीन देश का।
चीना बदाम–संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।
चीनिया–वि० [देश०] चीन देश का।
चीनी–संज्ञा स्त्री० [चीन (देश) + ई (प्रत्य०)] मिठाई का सार जो सफ़ेद चूर्ण के रूप में होता है और ईख के रस, चुकंदर, खजूर आदि से निकाला जाता है। शक्कर।
वि० चीन देश का।
चीनी मिट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चीनी (वि०) + मिट्टी] एक प्रकार की सफ़ेद मिट्टी जिस पर पालिश बहुत अच्छी होती है और जिसके बरतन, खिलौने आदि बनते हैं।
चीन्ह†–संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।
चीन्हना–क्रि० स० [सं० चिह्न] पहचानना।
चीमड़–वि० [हिं० चमड़ा] जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से न फटे या टूटे।
चीयाँ–संज्ञा पुं० दे० "चियाँ"।
चीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्त्र। कपड़ा। २. वृक्ष की छाल। ३. चिथड़ा। लत्ता। ४. गौ का थन। ५. मुनियों, विशेषतः बौद्ध भिक्षुकों के पहनने का कपड़ा। ६. धूप का पेड़।
संज्ञा स्त्री० [हिं० चीरना] १. चीरने का भाव या क्रिया। २. चीरकर बनाया हुआ शिगाफ़ या दरार।
चीर-चरम*–संज्ञा पुं० [सं० चीरचर्म] बाघंबर। मृगचर्म। मृगछाला।
चीरना–क्रि० स० [सं० चीर्ण] विदीर्ण करना। फाड़ना।
मुहा०—माल (या रुपया आदि) चीरना = अनुचित रूप से बहुत धन कमाना।
चीरफाड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० चीर + फाड़] १. चीरने-फाड़ने का काम या भाव। २. शस्त्र-चिकित्सा। जर्राही।
चीरा–संज्ञा पुं० [हिं० चीरना] १. एक प्रकार का लहरियेदार रंगीन कपड़ा जो पगड़ी बनाने के काम में आता है। २. गाँव की सीमा पर गाड़ा हुआ पत्थर या खंभा। ३. चीरकर बनाया हुआ क्षत या घाव।
चीरी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।
चीर्ण–वि० [सं०] फाड़ा या चीरा हुआ।
चील–संज्ञा स्त्री० [सं० चिल्ल] गिद्ध की जाति

की एक बड़ी चिड़िया।
चीलर-संज्ञा पु० दे० "चिलड़"।
चीला-संज्ञा पु० दे० "चिलड़ा"।
चील्ह-संज्ञा स्त्री० दे० "चील"।
चील्ही-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का तंत्रोपचार जो बालकों के कल्याणार्थ स्त्रियाँ करती हैं।
चीवर-संज्ञा पु० [सं०] १. संन्यासियों या भिक्षुओं का फटा पुराना कपड़ा। २. बौद्ध संन्यासियों के पहनने के वस्त्र का ऊपरी भाग।
चीवरी-संज्ञा पु० [सं०] १. बौद्ध भिक्षुक। २. भिक्षुक। भिखमंगा।
चीस-संज्ञा स्त्री० दे० "टीस"।
चुंगल-संज्ञा पु० [हिं० चौ+अंगुल] १. चिड़ियों या जानवरों का पंजा। चंगुल। २. मनुष्य के पंजे की वह स्थिति जो किसी वस्तु को पकड़ने में होती है। पंजा। मुहा०—चंगुल में फँसना=वश में आना।
चुंगी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चुंगल] १. चुंगल भर वस्तु। चुटकी भर चीज़। २. वह महसूल जो शहर के भीतर आनेवाले बाहरी माल पर लगता है।
चुँघाना-क्रि० स० [हिं० चुमाना] चुसाना।
चुंडा-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अल्पा० चुंडी] कूआँ। कूप।
चुंडित-वि० [हिं० चुंटी] चुटियावाला। चुंडीवाला।
चुंदी-संज्ञा स्त्री० [सं० चूड़ा] बालों की शिखा जिसे हिंदू सिर पर रखते हैं। चुटैया।
चुँधलाना-क्रि० अ० [हिं० चौ=चार+अंध] चौंधना। चकाचौंध होना।
चुंधा-वि० [हिं० चौ=चार+अंध] [स्त्री० चुंधी] १. जिसे सुझाई न पड़े। २. छोटी छोटी आँखोंवाला।
चुँधियाना-क्रि० अ० दे० "चुँधलाना"।
चुंबक-संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो चुंबन करे। २. कामुक। कामी। ३. धूर्त मनुष्य। ४. ग्रंथों को केवल इधर-उधर उलटनेवाला। ५. एक प्रकार का पत्थर या धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है।
चुंबन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० चुंबनीय, चुंबित] प्रेम से होठों से (किसी के) गाल आदि अंगों का स्पर्श। चुम्मा। बोसा।
चुंबना-क्रि० स० दे० "चूमना"।
चुंबित-वि० [सं०] १. चूमा हुआ। २. प्यार किया हुआ। ३. स्पर्श किया हुआ।
चुंबी-वि० [सं०] चूमनेवाला।
चुअना-क्रि० अ० दे० "चूना"।
चुआई-संज्ञा स्त्री० [हिं० चुआना] चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव।
चुआन-संज्ञा स्त्री० [हिं० चूना] १. खाई। नहर। २. गड्ढा।
चुआना-क्रि० स० [हिं० चूना=टपकना] १. टपकना। बूँद बूँद गिरना। २. चुपड़ना। चिकनाना। रसमय करना। ३. भवके से अर्क उतारना।
चुकंदर-संज्ञा पु० [फ़ा०] गाजर की तरह की एक जड़ जो तरकारी के काम में आती है।
चुक-संज्ञा पुं० दे० "चूक"।
चुकचुकाना-क्रि० अ० [हिं० चूना+टपकना] १. किसी द्रव पदार्थ का बहुत बारीक छेदों से होकर बाहर आना। २. पसीजना।
चुकता-वि० [हिं० चुकना] बेबाक। निःशेष। अदा। (ऋण)
चुकती-वि० दे० "चुकता"।
चुकना-क्रि० अ० [सं० च्युत्कृत] १. समाप्त होना। खतम होना। बाकी न रहना। २. बेबाक होना। अदा होना। चुकता होना। ३. तै होना। निबटना। ४. चूकना। भूल करना। त्रुटि करना। ५. खाली जाना। व्यर्थ होना। ६. एक समाप्ति-सूचक संयोज्य क्रिया।
चुकाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० चुकता] चुकने या चुकता होने का भाव।
चुकाना-क्रि० स० [हिं० चुकना] १. किसी प्रकार का देना साफ़ करना। अदा करना। बेबाक करना। २. तै करना। ठहराना।
चुक्कड़-संज्ञा पु० [सं० चषक] मिट्टी का गोल छोटा बरतन जिसमें पानी या शराब आदि पीते हैं। पुरवा।
चुक्र-संज्ञा पु० [सं०] १. चूक नाम की खटाई। चुक। महाम्ल। २. एक प्रकार का खट्टा शाक। चूका। ३. काँजी।
चुगद-संज्ञा पु० [फ़ा०] १. उल्लू पक्षी। २. मूर्ख। बेवकूफ़।
चुगना-क्रि० स० [सं० च॰ चोंच से दाना उठाकर

चुगलखोर–संज्ञा पुं० [फा०] पीठ पीछे शिकायत करनेवाला। लुतरा।

चुगलखोरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] चुगली खाने का काम।

चुगली–संज्ञा स्त्री० [फा०] दूसरे की निंदा जो उसकी अनुपस्थिति में की जाय।

चुगाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुगाना + ई (प्रत्य०)] चुगने या चुगाने का भाव या क्रिया।

चुगाना–क्रि० स० [हिं० चुगना] चिड़ियों को दाना या चारा डालना।

चुगुल†–संज्ञा पुं० दे० "चुगल"।

चुचकारना–क्रि० स० [अनु०] चुमकारना।

चुचकारी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव।

चुचाना–क्रि० अ० [सं० च्यवन] चूना। टपकना। रसना। निचुड़ना।

चुचकना†–क्रि० अ० [सं० शुष्क + ना (प्रत्य०)] ऐसा सूखना जिसमें झुर्रियाँ पड़ जायँ।

चुटका†–संज्ञा पुं० [हिं० चोट] कोड़ा। चाबुक। संज्ञा स्त्री० [अनु० चुट चुट] चुटकी।

चुटकना–क्रि० स० [हिं० चोट] कोड़ा या चाबुक मारना।

क्रि० स० [हिं० चुटकी] १. चुटकी से तोड़ना। २. साँप काटना।

चुटका–संज्ञा पुं० [हिं० चुटकी] १. बड़ी चुटकी। २. चुटकी भर अन्न।

चुटकी–संज्ञा स्त्री० [अनु० चुट चुट] १. किसी वस्तु को पकड़ने, दबाने या लेने आदि के लिये अँगूठे और पास की उँगली का मेल।

मुहा०—चुटकी बजाना = अँगूठे को बीच की उँगली पर रखकर जोर से छटकाकर शब्द निकालना। चुटकी बजाते = चटपट। देखते देखते। बात की बात में। चुटकी भर = बहुत थोड़ा। जरा सा। चुटकियों में = बहुत शीघ्र। चटपट। चुटकियों में या पर उड़ाना = अत्यंत तुच्छ या सहज समझना। कुछ न समझना।

२. चुटकी भर आटा। थोड़ा आटा।

मुहा०—चुटकी माँगना = भिक्षा माँगना।

३. चुटकी बजने का शब्द। ४. अँगूठे और तर्जनी के संयोग से किसी प्राणी के चमड़े को दबाने या पीड़ित करने की क्रिया।

मुहा०—चुटकी भरना = १. चुटकी काटना। २. चुभती या लगती हुई बात कहना। चुटकी लेना = १. हँसी उड़ाना। दिल्लगी उड़ाना। २ चुभती या लगती हुई बात कहना।

५. अँगूठे और उँगली से मोड़कर बनाया हुआ गोखरू, गोटा या लचका। ६. बंदूक के प्याले का ढकना या घोड़ा।

चुटकुला–संज्ञा पुं० [हिं० चोट + कला] १. चमत्कारपूर्ण उक्ति। मजेदार बात।

मुहा०—चुटकुला छोड़ना = १. दिल्लगी की बात कहना। २. कोई ऐसी बात कहना जिससे एक नया मामला खड़ा हो जाय।

२. दवा का कोई छोटा नुसखा जो बहुत गुण-कारक हो। लटका।

चुटफुट†–संज्ञा स्त्री० [हिं०] फुटकर वस्तु। फुटकर चीज।

चुटिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० चोटी] बालों की वह लट जो सिर के बीचो बीच रखी जाती है। शिखा। चुंदी।

चुटीला–वि० [हिं० चोट] जिसे चोट या घाव लगा हो।

संज्ञा पुं० [हिं० चोटी] अगल बगल की पतली चोटी। मेंढ़ी।

वि० सिरे का। सबसे बढ़िया।

चुटैल–वि० [हिं० चोट] १. जिसे चोट लगी हो। घायल। †२. चोट या आक्रमण करनेवाला।

चुड़िहारा–संज्ञा पुं० [हिं० चूड़ी + हारा(प्रत्य०)] [स्त्री० चुड़िहारिन] चूड़ी बेचनेवाला।

चुड़ैल–संज्ञा स्त्री० [सं० चूड़ा + ऐल (प्रत्य०)] १. भूतनी। डायन। प्रेतनी। पिशाचिनी। २. कुरूपा स्त्री। ३. क्रूर स्वभाव की स्त्री। दुष्टा

चुनचुना–वि० [हिं० चुनचुनाना] जिसके छूने या खाने से जलन लिए हुए पीड़ा हो। संज्ञा पुं० सूत की तरह के महीन सफेद कीड़े जो पेट से मल के साथ निकलते हैं।

चुनचुनाना–क्रि० अ० [अनु०] कुछ जलन लिए हुए चुभने की सी पीड़ा होना।

चुनट–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनन"।

चुनन–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुनना] वह सिकुड़न जो दाब पाकर कपड़े, कागज आदि पर पड़ती है। सिलवट। शिकन। चुनट।

चुनना–क्रि० स०[सं० चयन] १. छोटी वस्तुओं को हाथ, चोंच आदि से एक एक करके उठाना। २. छाँट छाँटकर अलग करना। ३. बहुतों में से कुछ को पसंद करके लेना। ४. तरतीब से लगाना। सजाना। ५.

जोड़ाई करना। दीवार उठाना।
मुहा०—दीवार में चुनना = किसी मनुष्य को खड़ा करके उसके ऊपर ईंटों की जोड़ाई करना।
६. कपड़े में चुनन या सिकुड़न डालना।
चुनरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुनना] १. वह रंगीन कपड़ा जिसके बीच बीच में बुँदकियाँ होती हैं। २. याकूत। चुन्नी।
चुनवाना–क्रि० स० दे० "चुनाना"।
चुनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुनना] १. चुनने की क्रिया या भाव। २. दीवार की जोड़ाई या उसका ढंग। ३. चुनने की मज़दूरी।
चुनाना–क्रि० स० [हिं० चुनना का प्रे०] चुनने का काम दूसरे से कराना।
चुनाव–संज्ञा पु० [हिं० चुनना] १. चुनने का काम। २. बहुतों में से कुछ को किसी कार्य्य के लिये पसंद या नियुक्त करना।
चुनिंदा–वि० [हिं० चुनना + इंदा (प्रत्य०)] १. चुना हुआ। छँटा हुआ। २. बढ़िया।
चुनी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुन्नी"।
चुनौटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूना + औटी (प्रत्य०)] चूना रखने की डिबिया।
चुनौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुनचुनाना या चूना] १. उत्तेजना। बढ़ावा। चिट्टा। २. युद्ध के लिये आह्वान। ललकार। प्रचार।
चुन्नी–संज्ञा स्त्री० [सं० चूर्ण] १. मानिक, याकूत या और किसी रत्न का बहुत छोटा टुकड़ा। बहुत छोटा नग। २. अनाज का चूर। ३. लकड़ी का बारीक चूर। कुनाई। ४. चमकी। सितारा।
चुप–वि० [सं० चुप (चोपन) = मौन] जिसके मुँह से शब्द न निकले। अवाक्। मौन।
यौ०—चुपचाप = १. मौन। खामोश। २. शांत भाव से। बिना चंचलता के। ३. धीरे से। छिपे छिपे। ४. निरुद्योग। प्रयत्नहीन। ५. बिना विरोध में कुछ कहे। बिना चीं-चपड़ के।
संज्ञा स्त्री० मौनावलंबन। न बोलना।
चुपका–वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुपकी] मौन। खामोश।
मुहा०—चुपके से = १. बिना कुछ कहे सुने। २. गुप्त रूप से। धीरे से।
चुपड़ना–क्रि० स० [हिं० चिपचिपा] १. किसी गीली या चिपचिपी वस्तु का लेप करना। पोतना। जैसे—रोटी में घी चुपड़ना। २. किसी दोष का आरोप दूर करने के लिये इधर-उधर की बातें करना। ३. चिकनी-चुपड़ी कहना। चापलूसी करना।
चुपाना†–क्रि० अ० [हिं० चुप] चुप हो रहना। मौन रहना।
चुप्पा–वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुप्पी] जो बहुत कम बोले। घुन्ना।
चुप्पी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुप] मौन।
चुबलाना–क्रि० स० [अनु०] स्वाद लेने के लिये मुँह में रखकर इधर-उधर डुलाना।
चुभकना–क्रि० अ० [अनु०] गोता खाना।
चुभकी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] डुब्बी। गोता।
चुभना–क्रि० अ० [अनु०] १. किसी नुकीली वस्तु का दबाव पाकर किसी नरम वस्तु के भीतर घुसना। गड़ना। धँसना। २. हृदय में खटकना। मन में व्यथा उत्पन्न करना। ३. मन में बैठना।
चुभलाना–क्रि० स० दे० "चुबलाना"।
चुभाना, चुभोना–क्रि० स० [हिं० चुभना का प्रे०] धँसाना। गड़ाना।
चुमकार–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूमना + कार] चूमने का सा शब्द जो प्यार दिखाने के लिये निकालते हैं। पुचकार।
चुमकारना–क्रि० स० [हिं० चुमकार] प्यार दिखाने के लिये चूमने का सा शब्द निकालना। पुचकारना। दुलारना।
चुम्मा†–संज्ञा पु० दे० "चूमा"।
चुर–संज्ञा पुं० [देश०] बाघ आदि के रहने का स्थान। माँद। बैठक।
* वि० [सं० प्रचुर] बहुत। अधिक।
चुरकना–क्रि० अ० [अनु०] १. चहकना। चीं चीं करना (व्यंग्य या तिरस्कार)। † २. चटकना। टूटना।
चुरकी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चोटी] चुटिया।
चुरकुट, चुरकुस–वि० [हिं० चूर + कूटना] चकनाचूर। चूर चूर। चूर्णित।
चुरना†–क्रि० अ० [सं० चूर = जलना, पकना] १. आँच पर खौलते हुए पानी के साथ किसी वस्तु का पकना। सीझना। २. आपस में गुप्त मंत्रणा या बातचीत होना।
चुरमुर–संज्ञा पु० [अनु०] खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।
चुरमुरा–वि० [अनु०] जो दबाने पर चुर चुर शब्द करके टूट जाय। कुरकुरा।
चुरमुराना–क्रि० अ० [अनु०] चुरमुर शब्द करके टूटना।

क्रि० स० [अनु०] १. चुरमुर शब्द करके तोड़ना। २. करारी या खरी चीज चबाना।

चुरवाना–क्रि० स० [हिं० चुराना = पकाना] पकाने का काम कराना।

क्रि० स० दे० "चोरवाना"।

चुरा †–संज्ञा पु० दे० "चूरा"।

चुराना–क्रि० स० [सं० चुर = चोरी करना] १. गुप्त रूप से पराई वस्तु हरण करना। चोरी करना।

मुहा०—चित्त चुराना = मन मोहित करना। २ लोगों की दृष्टि से बचाना। छिपाना।

मुहा०—आँख चुराना = नजर बचाना। सामने मुँह न करना।

३ काम के करने में कसर करना।

क्रि० स० [हिं० चुरना] खौलते पानी में पकाना। सिझाना।

चुरी †–संज्ञा स्त्री० दे० "चूड़ी"।

चुरुट–संज्ञा पु० [अं० शेरुट] तंबाकू के पत्ते या चूर की बत्ती जिसका धुँआँ लोग पीते हैं। सिगार।

चुरू †–संज्ञा पु० दे० "चुल्लू"।

चुल–संज्ञा स्त्री० [सं० चल = चंचल] किसी अंग के मले या सहलाए जाने की इच्छा। खुजलाहट।

चुलचुलाना–क्रि० अ० [हिं० चुल] १. खुजलाहट होना। २. दे० "चुलबुलाना"।

चुलचुली–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुलचुलाना] चुल। खुजलाहट।

चुलबुला–वि० [सं० चल + बल] [स्त्री० चुलबुली] १ चंचल। चपल। २ नटखट।

चुलबुलाना–क्रि० अ० [हिं० चुलबुल] १. चुलबुल करना। रह रहकर हिलना। २ चंचल होना। चपलता करना।

चुलबुलापन–संज्ञा पु० [हिं० चुलबुला + पन (प्रत्य०)] चंचलता। चपलता। शोखी।

चुलबुलाहट–संज्ञा स्त्री० [देश०] चंचलता।

चुलाना–क्रि० स० दे० "चुआना"।

चुलियाला–संज्ञा पु० [?] एक मात्रिक छंद।

चुल्लू–संज्ञा पुं० [सं० चुलुक] गहरी की हुई हथेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सकें।

मुहा०—चुल्लू भर पानी में डूब मरो = मुँह न दिखाओ। लज्जा के मारे मर जाओ।

चुवना‡–क्रि० अ० दे० "चूना"।

चुवाना–क्रि० स० [हिं० चूना का प्रे०] बूँद बूँद करके गिराना। टपकाना।

चुसकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूसना] ओंठ से लगाकर थोड़ा थोड़ा करके पीने की क्रिया। सुड़क। घूँट। दम।

चुसना–क्रि० अ० [हिं० चूसना] १. चूसा जाना। २. निचुड़ जाना। निकल जाना। ३ सार-हीन होना। ४. देते देते पास में कुछ न रह जाना।

चुसनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूसना] १ बच्चों का एक खिलौना जिसे वे मुँह में डालकर चूसते हैं। २ दूध पिलाने की शीशी।

चुसाना–क्रि० स० [हिं० चूसना का प्रे०] चूसने का काम दूसरे से कराना।

चुस्त–वि० [फा०] १. कसा हुआ। जो ढीला न हो। संकुचित। तंग। २. जिसमें आलस्य न हो। तत्पर। फुरतीला। चलता। ३. दृढ़। मजबूत।

चुस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. फुरती। तेजी। २ कसावट। तंगी। ३ दृढ़ता। मजबूती।

चुहँटी–संज्ञा स्त्री० [देश०] चुटकी।

चुहचुहा–वि० [अनु०] [स्त्री० चुहचुही] १ चुहचुहाता हुआ। २. रसीला। शोख।

चुहचुहाता–वि० [हिं० चुहचुहाना] रसीला। सरस। रँगीला। मजेदार।

चुहचुहाना–क्रि० अ० [अनु०] १ रस टपकना। चटकीला लगना। २ चिड़ियों का बोलना। चहचहाना।

चुहचुही–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमकीले काले रंग की एक बहुत छोटी चिड़िया। फुलचुही।

चुहटना–क्रि० स० [देश०] रौंदना। कुचलना।

चुहल–संज्ञा स्त्री० [अनु० चुहचुह = चिड़ियों की बोली] हँसी। ठठोली। मनोरंजन।

चुहलबाज–वि० [हिं० चुहल + फा० बाज (प्रत्य०)] ठठोल। मसखरा। दिल्लगीबाज।

चुहिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूहा] चूहा का स्त्री० और अल्पा० रूप।

चुहुँटना†‡–क्रि० स० दे० "चिमटना"।

चुहुँटनी–संज्ञा स्त्री० दे० "चिरमिटी"।

चूँ–संज्ञा पु० [अनु०] १ छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। २ चूँ शब्द।

मुहा०—चूँ करना = १. कुछ कहना। २. प्रतिवाद करना। विरोध में कुछ कहना।

चूँकि–क्रि० वि० [फा०] इस कारण से कि। क्योंकि। इसलिये कि।

चूँदरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।

चूक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूकना] १. भूल। गलती। २. कपट। धोखा। छल। संज्ञा पुं० [सं० चूक] १. नींबू, इमली, अनार आदि खट्टे फलों के रस को गाढ़ा करके बनाया हुआ एक अत्यंत खट्टा पदार्थ। २. एक प्रकार का खट्टा साग। वि० बहुत अधिक खट्टा।

चूकना–क्रि० अ० [सं० च्युतक, प्रा० चुक्कि] १. भूल करना। गलती करना। २. लक्ष्य भ्रष्ट होना। ३. सुअवसर खो देना।

चूका–संज्ञा० पुं० [सं० चूक] एक खट्टा साग।

चूची–संज्ञा स्त्री० [सं० चूचुक] स्तन। कुच।

चूजा–संज्ञा पुं० [फा०] मुरगी का बच्चा।

चूड़ांत–वि० [सं०] चरम सीमा। क्रि० वि० अत्यंत। बहुत अधिक।

चूड़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चोटी। शिखा। चुरकी। २. मोर के सिर पर की चोटी। ३. कुआँ। ४. गुंजा। घुँघची। ५. बाँह में पहनने का एक अलंकार। ६. चूड़ाकरण नाम का संस्कार। संज्ञा पुं० [सं० चूड़ा] १. कंकण। कड़ा। वलय। २. हाथीदाँत की चूड़ियाँ।

चूड़ाकरण–संज्ञा पुं० [सं०] बच्चे का पहले पहल सिर मुँड़वाकर चोटी रखवाने का संस्कार। मुंडन।

चूड़ाकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] चूड़ाकरण।

चूड़ामणि–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर में पहनने का शीशफूल नाम का गहना। बीज। २. सर्वोत्कृष्ट। सबमें श्रेष्ठ।

चूड़ी–संज्ञा स्त्री०[हिं० चूड़ा] १. कोई मंडलाकार पदार्थ। वृत्ताकार पदार्थ। २. हाथ में पहनने का एक वृत्ताकार गहना। मुहा०—चूड़ियाँ ठंडी करना या तोड़ना = पति के मरने के समय स्त्री का अपनी चूड़ियाँ उतारना या तोड़ना। चूड़ियाँ पहनना = स्त्री का वेष धारण करना (व्यंग्य और हास्य)। ३. फोनोग्राफ या ग्रामोफोन बाजे का रेकार्ड जिसमें गाना भरा रहता है।

चूड़ीदार–वि० [हिं० चूड़ी + फा० दार] जिसमें चूड़ी या छल्ले अथवा इसी आकार के घेरे पड़े हों। यौ०—चूड़ीदार पायजामा = एक प्रकार का चुस्त पायजामा।

चूत–संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़। संज्ञा स्त्री० [सं० च्युति] योनि। भग।

चूतड़–संज्ञा पुं० [हिं० चूत + तल] पीछे की ओर कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर का मांसल भाग। नितंब।

चून–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] आटा। पिसान।

चूनर, चूनरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।

चूना–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] एक प्रकार का तीक्ष्ण और सफेद क्षारभस्म जो पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को भट्ठियों में फूँककर बनाया जाता है। क्रि० अ० [सं० च्यवन] १. किसी द्रव पदार्थ का बूँद बूँद होकर नीचे गिरना। टपकना। २. किसी चीज का, विशेषतः फल आदि का, अचानक ऊपर से नीचे गिरना। ३. गर्भपात होना। ४. किसी चीज में ऐसा छेद या दरज हो जाना जिसमें से होकर कोई द्रव पदार्थ बूँद बूँद गिरे। † वि० [हिं० चूना (क्रि० अ०)] जिसमें किसी चीज के चूने योग्य छेद या दरज हो।

चूनादानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूना + फा० दान] चूना रखने की डिबिया। चुनौटी।

चूनी–संज्ञा स्त्री० [सं० चूर्णिका] १. अन्न का छोटा टुकड़ा। अन्नकण। २. चुन्नी।

चूमना–क्रि० स० [सं० चुंबन] होंठों से (किसी दूसरे के) गाल आदि अंगों को अथवा किसी और पदार्थ को स्पर्श करना या दबाना। चुम्मा लेना। बोसा लेना।

चूमा–संज्ञा पुं० [सं० चुंबन, हिं० चूमना] चूमने की क्रिया या भाव। चुंबन। चुम्मा।

चूर–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] किसी पदार्थ के बहुत छोटे छोटे या महीन टुकड़े जो उसे तोड़ने, कूटने आदि से बनते हैं। बुरनी। वि० १. तन्मय। निमग्न। तल्लीन। २. मद विह्वल। नशे में बहुत बदमस्त।

चूरन–संज्ञा पुं० दे० "चूर्ण"।

चूरना‡–क्रि० स० [सं० चूर्णन] १. चूर करना। टुकड़े टुकड़े करना। २. तोड़ना।

चूरमा–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] रोटी या पूरी को चूर चूर करके घी, चीनी मिलाया हुआ एक खाद्य पदार्थ।

चूरा–संज्ञा पुं० [सं० चूर्ण] चूर्ण। बुरादा।

चूर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूखा पिसा हुआ अथवा बहुत ही छोटे छोटे टुकड़ों में किया हुआ पदार्थ। सफूफ। बुकनी। २. पाचक औषधों का बारीक सफूफ। चूरन।

वि० तोड़ा फोड़ा या नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।
चूर्णक-संज्ञा पु० [सं०] १. सत्तू। सतुआ। २. वह गद्य जिसमें छोटे छोटे शब्द हों, लंबे समासवाले शब्द न हों। ३. धान।
चूर्णा-संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का दूसरा भेद।
चूर्णित-वि० [सं०] चूर्ण किया हुआ।
चूल-संज्ञा पु० [सं०] १. शिखा। २. बाल। संज्ञा स्त्री० [देश०] किसी लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में उसे जोड़ने के लिये ठोंका जाय।
चूलिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना।
चूल्हा-संज्ञा पु० [सं० चुल्लि] मिट्टी, लोहे आदि का वह पात्र जिस पर, नीचे आग जलाकर, भोजन पकाया जाता है।
मुहा०—चूल्हा जलना = भोजन बनना। चूल्हा फूँकना = भोजन पकाना। चूल्हे में जाय या पड़े = नष्ट-भ्रष्ट हो।
चूषण-संज्ञा पु० [सं०] चूसने की क्रिया।
चूष्य-वि० [सं०] चूसने के योग्य।
चूसना-क्रि० स० [सं० चूषण] १. जीभ और होंठ के संयोग से किसी पदार्थ का रस पीना। २. किसी चीज़ का सार भाग ले लेना। ३. धीरे धीरे धन आदि लेना।
चूहड़ा-संज्ञा पु० [?] [स्त्री० चूहड़ी] भंगी या मेहतर। चांडाल। श्वपच।
चूहर-संज्ञा पु० दे० "चूहड़ा"।
चूहा-संज्ञा पु० [अनु० चूँ + हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० चुहिया, चूही आदि] एक प्रसिद्ध छोटा जंतु जो प्रायः घरों या खेतों में बिल बनाकर रहता और अन्न आदि खाता है। मूसा।
चूहादंती-संज्ञा स्त्री० [हिं० चूहा + दाँत] स्त्रियों के पहने की एक प्रकार की पहुँची।
चूहादान-संज्ञा पु० [हिं० चूहा + फा० दान] चूहों को फँसाने का एक प्रकार का पिंजड़ा।
चें-संज्ञा स्त्री० [अनु०] चिड़ियों के बोलने का शब्द। चें चें।
चेंच-संज्ञा पु० [सं० चंचु] एक प्रकार का साग।
चेंचें-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चिड़ियों या बच्चों के बोलने का शब्द। चीं चीं। २. व्यर्थ की बकवाद। बकबक।
चेंटुआ†-संज्ञा पु० [हिं० चिड़िया] चिड़िया का बच्चा।
चें पें-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चिल्लाहट। २. असंतोष की पुकार। ३. बकबक।
चेकितान-संज्ञा पु० [सं०] महादेव।
चेचक-संज्ञा स्त्री० [फा०] शीतला रोग।
चेचकरू-संज्ञा पु० [फा०] वह जिसके मुँह पर शीतला के दाग़ हों।
चेट-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चेटी या चेटिका] १ दास। सेवक। नौकर। २. पति। खाविंद। ३. नायक और नायिका को मिलानेवाला। भड़ुवा। ४. भाँड़।
चेटक-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० चेटकी] १. सेवक। दास। नौकर। २. चटक-मटक। ३. दूत। ४. जादू या इंद्रजाल की विद्या।
चेटकनी†-संज्ञा स्त्री० दे० "चटक"।
चेटकी-संज्ञा पु० [सं०] १. इंद्रजाली। जादूगर। २. कौतुक करनेवाला। कौतुकी। संज्ञा स्त्री० "चेटक" का स्त्री०।
चेटी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी।
चेत्-अव्य० [सं०] १. यदि। अगर। २. शायद। कदाचित्।
चेत-संज्ञा पु० [सं० चेतस्] १. चित्त की वृत्ति। चेतना। संज्ञा। होश। २ ज्ञान। बोध। ३. सावधानी। चौकसी। ४. ख़याल। स्मरण। सुध।
चेतन-वि० [सं०] जिसमें चेतना हो। संज्ञा पु० १. आत्मा। जीव। २. मनुष्य। ३. प्राणी। जीवधारी। ४. परमेश्वर।
चेतनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] चेतन का धर्म। चैतन्य। सज्ञानता।
चेतना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। २. मनोवृत्ति। ३. ज्ञानात्मक मनोवृत्ति। ४. स्मृति। सुधि। याद। ५. चेतनता। चैतन्य। संज्ञा। होश।
क्रि० अ० [हिं० चेत + ना (प्रत्य०)] १. संज्ञा में होना। होश में आना। २. सावधान होना। चौकस होना।
क्रि० स० विचारना। समझना।
चेतावनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चेतना] वह बात जो किसी को होशियार करने के लिये कही जाय। सतर्क होने की सूचना।
चेतिका†-संज्ञा स्त्री० [सं० चिति] मुरदा जलाने की चिता। सरा।
चेदि-संज्ञा पु० [सं०] १. एक देश। २. इस देश का राजा। ३. इस देश का निवासी।
चेदिराज-संज्ञा पु० [सं०] शिशुपाल।

चेना-संज्ञा पु० [सं० चणक] १. कँगनी या सावाँ की जाति का एक मोटा अन्न। २. एक प्रकार का साग।
चेप-संज्ञा पु० [चिपचिप से अनु०] १. कोई गाढ़ा चिपचिपा या लसदार रस। २. चिड़ियों को फँसाने का लासा।
चेपदार-वि० [हिं० चेप+फा० दार] जिसमें चेप या लस हो। चिपचिपा।
चेर, चेरा† —संज्ञा पु० [सं० चेटक] [स्त्री०चेरी] १. नौकर। सेवक। २. चेला। शिष्य।
चेराई†ः-संज्ञा स्त्री० [हिं० चेरा+ई] दासत्व। सेवा। नौकरी।
चेरी†ः-संज्ञा स्त्री० "चेरा" का स्त्री०।
चेल-संज्ञा पु० [सं०] कपड़ा।
चेलकाई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० चेला] चेलहाई।
चेलहाई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० चेला+हाई (प्रत्य०)] चेलों का समूह। शिष्यवर्ग।
चेला-संज्ञा पु० [सं० चेटक] [स्त्री० चेलिन, चेली] १. वह जिसने कोई धार्मिक उपदेश ग्रहण किया हो। शिष्य। २. वह जिसने शिक्षा ली हो। शागिर्द। विद्यार्थी।
चेलिन, चेली-संज्ञा स्त्री० "चेला" का स्त्री० रूप।
चेलहवा-संज्ञा स्त्री० [सं० चिल (मछली)] एक तरह की छोटी मछली।
चेष्टा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर के अंगों की गति। २. अंगों की गति या अवस्था जिससे मन का भाव प्रकट हो। ३. उद्योग। प्रयत्न। कोशिश। ४. कार्य्य। काम। ५. श्रम। परिश्रम। ६. इच्छा। कामना।
चेहरा-संज्ञा पु० [फा०] १. शरीर के ऊपरी गोल अंग का अगला भाग जिसमें मुँह, आँख, आदि रहते हैं। मुखड़ा। वदन।
यौ०—चेहरा शाही=वह रुपया जिस पर किसी बादशाह का चेहरा बना हो। प्रचलित रुपया।
मुहा०—चेहरा उतरना=लज्जा, शोक, चिंता या रोग आदि के कारण चेहरे का तेज जाता रहना। चेहरा होना=फौज में नाम लिखा जाना।
२. किसी चीज का अगला भाग। आगा। ३.देवता, दानव या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वांग आदि में चेहरे के ऊपर पहना या बाँधा जाता है।
चैं—संज्ञा पु० दे० "चय"।
चैत-संज्ञा पु० [सं० चैत्र] फागुन के बाद और बैसाख से पहले का महीना। चैत्र।
चैतन्य-संज्ञा पु० [सं०] १. चित्स्वरूप आत्मा। चेतन आत्मा। २. ज्ञान। बोध। चेतना। ३. ब्रह्म। ४. परमेश्वर। ५ प्रकृति। ६. एक प्रसिद्ध बंगाली महात्मा।
चैती-संज्ञा स्त्री० [हिं० चैत+ई (प्रत्य०)] १. वह फसल जो चैत में काटी जाय। रबी। २. एक चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।
वि० चैत संबंधी। चैत का।
चैत्य-संज्ञा पु० [सं०] १. मकान। घर। २. मंदिर। देवालय। ३. वह स्थान जहाँ यज्ञ हो। यज्ञशाला। ४. गाँव में वह पेड़ जिसके नीचे ग्राम देवता की वेदी या चबूतरा हो। ५. किसी देवी देवता का चबूतरा। ६. बुद्ध की मूर्त्ति। ७. अश्वत्थ का पेड़। ८. बौद्ध संन्यासी या भिक्षुक। ९. बौद्ध संन्यासियों के रहने का मठ। विहार। १० चिता।
चैत्र-संज्ञा पु० [सं०] १. संवत् का प्रथम मास। चैत। २. बौद्ध भिक्षु। ३. यज्ञभूमि। ४ देवालय। मंदिर।
चैत्ररथ-संज्ञा पु० [सं०] कुबेर के बाग़ का नाम।
चैन-संज्ञा पु० [सं० शयन] आराम। सुख।
मुहा०—चैन उड़ाना=आनंद करना। चैन पड़ना=शांति मिलना। सुख मिलना।
चैल-संज्ञा पु० [सं०] कपड़ा। वस्त्र।
चैला-संज्ञा पु० [हिं० छीलना] [स्त्री० अल्पा० चैली] कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का टुकड़ा जो जलाने के काम में आता है।
चोंक-संज्ञा स्त्री० [हिं० चोख] वह चिह्न जो चुंबन में दाँत लगने से पड़ता है।
चोंगा-संज्ञा पु० [?] कोई वस्तु रखने के लिये खोखली नली। कागज़ टीन आदि की बनी हुई नली।
चोंथनाः†-क्रि० स० दे० "चुगना"।
चोंच-संज्ञा स्त्री० [सं० चंचु] १. पक्षियों के मुँह का निकला हुआ अगला भाग। टोंट। तुंड। २. मुँह। (व्यंग्य)
मुहा०—दो दो चोंचें होना=कहा सुनी होना। कुछ लड़ाई झगड़ा होना।
चोंडा†-संज्ञा पु० [सं० चूड़ा] स्त्रियों के सिर के बाल। झोंटा।
चोंडा-संज्ञा पु० [सं० चुंटा=छोटा कुआँ] सिंचाई के लिये खोदा हुआ छोटा कुआँ।

चौथ—संज्ञा पु० [अनु०] उतने गोबर का ढेर जितना एक बार गिरे।

चौथना†—क्रि० स० [अनु०] किसी चीज़ में से उसका कुछ अंश बुरी तरह नोचना।

चौधर—वि० [हिं० चौंधियाना] १. जिसकी आँखें बहुत छोटी हों। २. मूर्ख।

चोआ—संज्ञा पु० [हिं० चुआना] एक सुगंधित द्रव पदार्थ जो कई गंध-द्रव्यों को एक साथ मिलाकर उनका रस टपकाने से तैयार होता है।

चोकर—संज्ञा पु० [हिं० चून = आटा + कराई = छिलका] गेहूँ, जौ आदि का छिलका जो आटा छानने के बाद बच जाता है।

चोका—संज्ञा पु० [हिं० चुसकना] १ चूसने की क्रिया या भाव। २. चूसने की वस्तु।

चोख†"—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोखा] तेज़ी।

चोखा—वि० [सं० चोक्ष] १. जिसमें किसी प्रकार की मैल, खोट या मिलावट आदि न हो। जो शुद्ध और उत्तम हो। २. जो सच्चा और ईमानदार हो। खरा। ३. जिसकी धार तेज़ हो। पैना। धारदार। संज्ञा पु० उबाले या भूने हुए बैंगन, आलू आदि को नमक मिर्च आदि के साथ मलकर तैयार किया हुआ सालन। भरता।

चोगा—संज्ञा पुं० [तु०] पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा। लबादा।

चोचला—संज्ञा पु० [अनु०] १. अंगों की वह गति या चेष्टा जो हृदय की किसी प्रकार की, विशेषतः जवानी की, उमंग में की जाती है। हाव-भाव। २. नखरा। नाज़।

चोज—संज्ञा पु० [?] १. वह चमत्कार पूर्ण उक्ति जिससे लोगों का मनोविनोद हो। सुभाषित। २. हँसी ठट्ठा, विशेषतः व्यंग्य-पूर्ण उपहास।

चोट—संज्ञा स्त्री० [सं० चुट = काटना] १. एक वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का वेग के साथ पतन या टक्कर। आघात। प्रहार। **मुहा०**—चोट खाना = आघात ऊपर लेना। २. शरीर पर आघात या प्रहार का प्रभाव। घाव। ज़ख्म। **यौ०**—चोट चपेट = घाव। ज़ख्म। ३. किसी को मारने के लिये हथियार आदि चलाने की क्रिया। वार। आक्रमण। ४. किसी हिंसक पशु का आक्रमण। हमला। ५. हृदय पर का आघात। मानसिक व्यथा। ६. किसी के अनिष्ट के लिये चली हुई चाल। ७. आवाजा। बौछार। ताना। ८. विश्वासघात। धोखा। दग़ा। ९. बार। दफ़ा। मरतबा।

चोटा—संज्ञा पु० [हिं० चोआ] राब का पसेव जो छानने से निकलता है। चोआ।

चोटार†—वि० [हिं० चोट + आर(प्रत्य०)] चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटारना†—क्रि० अ० [हिं० चोट] चोट करना।

चोटी—संज्ञा स्त्री० [सं० चूडा] १. सिर के मध्य में के थोड़े से कुछ बड़े बाल जिन्हें प्रायः हिंदू नहीं कटाते। शिखा। चुंदी। **मुहा०**—चोटी दबना = बेवस होना। लाचार होना। (किसी की) चोटी (किसी के) हाथ में होना = किसी प्रकार के दबाव में होना। २. एक में गुँथे हुए स्त्रियों के सिर के बाल। ३. सूत या ऊन आदि का डोरा जिससे स्त्रियाँ बाल बाँधती हैं। ४. जूड़े में पहनने का एक आभूषण। ५. कुछ पक्षियों के सिर के वे पर जो ऊपर उठे रहते हैं। कलगी। ६. शिखर। **मुहा०**—चोटी का = सर्वोत्तम।

चोटी पोटी†—वि० स्त्री० [देश०] १. खुशामद से भरी हुई (बात)। २. झूठी या बनावटी (बात)।

चोट्टा—संज्ञा पु० [हिं० चोर] [स्त्री० चोट्टी] वह जो चोरी करता हो। चोर।

चोड़—संज्ञा पु० [सं०] १. उत्तरीय वस्त्र। २. चोल नामक प्राचीन देश।

चोदक—वि० [सं०] प्रेरणा करनेवाला।

चोदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह वाक्य जिसमें कोई काम करने का विधान हो। विधि-वाक्य। २. प्रेरणा। ३ योग आदि के संबंध का प्रयत्न।

चोप—संज्ञा पु० [हिं० चाव] १. गहरी चाह। इच्छा। ख़्वाहिश। २. चाव। शौक। रुचि। ३. उत्साह। उमंग। ४. बढ़ावा।

चोपना†"—क्रि० अ० [हिं० चोप] किसी वस्तु पर मोहित हो जाना। मुग्ध होना।

चोपी*—वि० [हिं० चोप] १. इच्छा रखनेवाला। २. उत्साही।

चोब—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा। २. नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। ३. सोने या चाँदी से

मढ़ा हुआ डंडा। ४. छड़ी। सोटा।

चोबचीनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक काष्ठोपधि जो एक लता की जड है।

चोबदार–संज्ञा पु० [फा०] १ वह नौकर जिसके पास चोब या आसा रहता है। आसा-बरदार। २. प्रतीहार। द्वारपाल।

चोर–संज्ञा पु० [सं०] १. चुराने या चोरी करनेवाला। तस्कर।

मुहा०—मन में चोर पैठना = मन में किसी प्रकार का खटका या संदेह होना।

२. ऊपर से अच्छे हुए घाव में वह दूपित या विकृत अंश जो भीतर ही भीतर पकता और बढ़ता है। ३. वह छोटी संधि या छेद जिसमें से होकर कोई पदार्थ बह या निकल जाय या जिसके कारण कोई त्रुटि रह जाय। ४. खेल में वह लड़का जिससे दूसरे लड़के दाँव लेते हैं। ५. चोरक (गंधद्रव्य)। वि० जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने से पता न चले।

चोरकट–संज्ञा पु० [हिं० चोर + कट = काटने वाला] चोर। उचक्का।

चोरटा–संज्ञा पु० दे० "चोट्टा"।

चोर-दंत–संज्ञा पु० [हिं० चोर + दंत] वह दाँत जो बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त बहुत कष्ट के साथ निकलता है।

चोर दरवाजा–संज्ञा पु० [हिं० चोर + दरवाजा] मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार।

चोरपुष्पी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अधाहुली।

चोर महल–संज्ञा पु० [हिं० चोर + महल] वह महल जहाँ राजा और रईस अपनी अविवाहिता स्त्री रखते हैं।

चोरमिहीचनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चोर + मीचना = बंद करना] आँखमिचौली का खेल।

चोरा चोरी*†–क्रि० वि० [हिं० चोर + चोरी] छिपे छिपे, चुपके चुपके।

चोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चोर] १. छिपकर किसी दूसरे की वस्तु लेने का काम। चुराने की क्रिया। २ चुराने का भाव।

चोल–संज्ञा पु० [सं०] १. दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। २. उक्त देश का निवासी। ३ स्त्रियों के पहनने की चोली। ४. कुरते के ढंग का एक पहनावा। चोला। ५. कवच। जिरहबक्तर।

चोलना†–संज्ञा पु० दे० "चोला"।

चोला–संज्ञा पु० [सं० चोल] १. एक प्रकार का बहुत लंबा और ढीला ढाला कुरता जो प्रायः साधु, फ़कीर पहनते हैं। २ एक रसम जिसमें नए जनमे हुए बालक को पहले पहल कपड़े पहनाए जाते हैं। ३. शरीर। बदन। जिस्म। तन।

मुहा०—चोला छोड़ना = मरना। प्राण त्यागना। चोला बदलना = एक शरीर परित्याग करके दूसरा शरीर धारण करना। (साधु)

चोली–संज्ञा स्त्री० [सं० चोल] अँगिया की तरह का स्त्रियों का एक पहनावा।

मुहा०—चोली दामन का साथ = बहुत अधिक साथ या घनिष्ठता।

चोषण–संज्ञा पु० [सं०] चूसना।

चोष्य–वि० [सं०] जो चूसने के योग्य हो।

चौंक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौंकना] चौंकने की क्रिया या भाव।

चौंकना–क्रि० अ० [हिं० चौंक + ना (प्रत्य०)] १. एकाएक डर जाने या पीड़ा आदि अनुभव करने पर झट से काँप या हिल उठना। झिझकना। २. चौकन्ना होना। खबरदार होना। ३. चकित होना। भौचक्का होना। ४. भय या आशंका से हिचकना। भड़कना।

चौंकाना–क्रि० स० [हिं० चौंकना का प्रे०] किसी को चौंकने में प्रवृत्त करना। भड़काना।

चौंध–संज्ञा स्त्री० [सं० चक् = चमकना] चकचौंध। तिलमिलाहट।

चौंधियाना–क्रि० अ० [हिं० चौंध] १. अत्यंत अधिक चमक या प्रकाश के सामने दृष्टि का स्थिर न रह सकना। चकाचौंध होना। २. आँखों से सुझाई न पड़ना।

चौंधी–संज्ञा स्त्री० दे० "चकचौंध"।

चौंर–संज्ञा पु० दे० "चँवर"।

चौंराना–क्रि० स० [सं० चामर] १. चँवर डुलाना। चँवर करना। २. झाड़ू देना।

चौंरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौंर] १. काठ की डाँड़ी में लगा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा जो मक्खियाँ उड़ाने के काम में आता है। २ चोटी या वेणी बाँधने की डोरी। ३. सफ़ेद पूँछवाली गाय।

चौ–वि० [सं० चतुः] चार (केवल यौगिक में) जैसे,

संज्ञा पु० मोती तौलने का .

चौआ–संज्ञा पुं० दे० [illegible]

चौआना†*–क्रि० अ० [illegible]

चकपकाना। चकित होना। २. चौकन्ना होना।

चौक-संज्ञा पु० [सं० चतुष्क, प्रा० चउक] १. चौकोर भूमि। चौखूँटी खुली ज़मीन। २. घर के बीच की कोठरियों और बरामदों से घिरा हुआ चौखूँटा खुला स्थान। आँगन। सहन। ३. चौखूँटा चबूतरा। बड़ी वेदी। ४. मंगल अवसरों पर पूजन के लिये आटे, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र। ५. शहर के बीच का बड़ा बाज़ार। ६. चौराहा। चौमुहानी। ७. चौसर खेलने का कपड़ा। बिसात। ८. सामने के चार दाँतों की पंक्ति।

चौकड़ा-संज्ञा पु० [हिं० चौ+कड़ा] कान में पहनने की वह बालियाँ जिनमें दो दो मोती हों।

चौकड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+सं० कला=अंग] १ हिरन की वह दौड़ जिसमें वह चारों पैर एक साथ फेंकता हुआ जाता है। चौफाल कुदान। फलाँग। कुलाँच। मुहा०—चौकड़ी भूल जाना=बुद्धि का काम न करना। सिटपिटा जाना। घबरा जाना। २. चार आदमियों का गुट्ट। मंडली। यौ०—चंडाल चौकड़ी=उपद्रवियों की मंडली। ३. एक प्रकार का गहना। ४. चार युगों का समूह। चतुर्युगी। ५. पलथी। संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+घोड़ी] चार घोड़ों की गाड़ी।

चौकन्ना-वि० [हिं० चौ=चारों ओर+कान] १. सावधान। होशियार। चोकस। सजग। २. चौंका हुआ। आशंकित।

चौकल-संज्ञा पु० [सं०] चार मात्राओं का समूह।

चौकस-वि० [हिं० चौ=चार+कस=कसा हुआ] १. सावधान। सचेत। होशियार। २ ठीक। दुरुस्त। पूरा।

चौकसाई†-संज्ञा स्त्री० दे० "चौकसी"।

चौकसी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौकस] सावधानी। होशियारी। खबरदारी।

चौका-संज्ञा पु० [सं० चतुष्क] १. पत्थर का चौकोर टुकड़ा। चौखूँटी सिल। २. काठ या पत्थर का पाटा जिस पर रोटी बेलते हैं। चकला। ३. सामने के चार दाँतों की पंक्ति। ४. सिर का एक गहना। सीसफूल। ५. वह लिपा-पुता स्थान जहाँ हिंदू रसोई बनाते या खाते हैं। ६. मिट्टी या गोबर का लेप जो सफ़ाई के लिये किसी स्थान पर किया जाय। मुहा०—चौका लगाना=१. लीप-पोतकर बराबर करना। २. सत्यानाश करना। ७. एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का समूह। जैसे—मोतियों का चौका। ८. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।

चौकिया सोहागा-संज्ञा पु० [हिं० चौकी+सोहागा] छोटे छोटे चौकोर टुकड़ों में कटा हुआ सोहागा।

चौकी-संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्की] १. चौकोर आसन जिसमें चार पाए लगे हों। छोटा तख्त। २. कुरसी। ३. मंदिर में मंडप के खंभों के बीच का स्थान जिसमें से होकर मंडप में प्रवेश करते हैं। ४. पड़ाव। ठहरने की जगह। टिकान। अड्डा। ५. वह स्थान जहाँ आस पास की रक्षा के लिये थोड़े से सिपाही आदि रहते हों। ६. पहरा। खबरदारी। रखवाली। ७. वह भेंट या पूजा जो किसी देवता या पीर आदि के स्थान पर चढ़ाई जाती है। ८. गले में पहनने का एक गहना। पटरी। ९. रोटी बेलने का छोटा चकला।

चौकीदार-संज्ञा पु० [हिं० चौकी+फा० दार] १ पहरा देनेवाला। २. गोंड़ैत।

चौकीदारी-संज्ञा स्त्री० [हिं०] १. पहरा देने का काम। रखवाली। खबरदारी। २. चौकीदार का पद। ३. वह चंदा या कर जो चौकीदार रखने के लिये लिया जाय।

चौकोना-वि० दे० "चौकोर"।

चौकोर-वि० [सं० चतुष्कोण] जिसके चार कोने हों। चौखूँटा। चतुष्कोण।

चौखट-संज्ञा स्त्री० [हिं० चा=चार+काठ] १. लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं। २. देहली। देहरी।

चौखटा-संज्ञा पु० [हिं० चौखट] चार लकड़ियों का ढाँचा जिसमें मुँह देखने का या तसवीर का शीशा जड़ा जाता है। फ्रेम।

चौखानि-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+खानि=जाति] अंडज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज आदि चार प्रकार के जीव।

चौखूँट-संज्ञा पुं० [हिं० चौ+खूँट] १. चारों दिशाएँ। २. भूमंडल। क्रि० वि० चारों ओर।

चौखूँटा-वि० दे० "चौकोर"।
चौगान-संज्ञा पु० [फा०] १. एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं। २ चौगान खेलने का मैदान। ३. नगाड़ा बजाने की लकड़ी।
चौगिर्द-क्रि० वि० [हिं० चौ + फा० गिर्द = तरफ] चारों ओर। चारों तरफ।
चौगुना-वि० [सं० चतुर्गुण] [स्त्री० चौगुनी] चार बार और उतना ही। चतुर्गुण।
चौगोड़िया-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ = चार + गोड़ = पैर] एक प्रकार की ऊँची चौकी।
चौगोशिया-वि० [फा०] चार कोने वाला।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी।
संज्ञा पु० तुरकी घोड़ा।
चौघड़-संज्ञा पु० [हिं० चौ = चार + दाढ़] किनारे का वह चौड़ा चिपटा दाँत जो आहार कूचने या चबाने के काम में आता है। चौभर।
चौघड़ा-संज्ञा पु० [हिं० चौ = चार + घर = खाना] १ पान, इलायची रखने का डिब्बा जिसमें चार खाने बने होते हैं। २ चार खानों का बरतन जिसमें मसाला आदि रखते हैं। ३. पत्ते की वह खोंगी जिसमें चार बीड़े पान हों।
चौघर†-वि० [देश०] घोड़ों की एक चाल। चौफाल। पोइया। सरपट।
चौघोड़ी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + घोड़ा] चार घोड़ों की गाड़ी। चौकड़ी।
चौचंद†-संज्ञा पु० [हिं० चौथ + चंद्र या चवाव + चंड] कलंक-सूचक अपवाद। बदनामी की चर्चा। निंदा।
चौचंदहाई-वि० स्त्री० [हिं० चौचंद + हाई (प्रत्य०)] बदनामी करनेवाली।
चौड़ा-वि० [सं० चिपिट = चिपटा] [स्त्री० चौड़ी] लंबाई की ओर के दोनों किनारों के बीच विस्तृत। चकला। लंबा का उलटा।
चौड़ाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौड़ा + ई० (प्रत्य०)] चौड़ापन। फैलाव। अर्ज।
चौड़ान-संज्ञा स्त्री० दे० "चौड़ाई"।
चौतनियाँ-संज्ञा स्त्री० दे० "चौतनी"।
चौतनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ = चार + तनी = बंद] बच्चों की वह टोपी जिसमें चार बंद लगे रहते हैं।
चौतरा†-संज्ञा पु० दे० "चबूतरा"।
चौतही-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + तह] खेस की बुनावट का एक मोटा कपड़ा।
चौताल-संज्ञा पु० [हिं० चौ + ताल] १. मृदंग का एक ताल। २ एक प्रकार का गीत जो होली में गाया जाता है।
चौतुका-वि० [हिं० चौ + तुक] जिसमें चार तुक हों।
संज्ञा पु० एक प्रकार का छंद जिसके चारों चरणों की तुक मिली होती है।
चौथ-संज्ञा स्त्री० [सं० चतुर्थी] १ पक्ष की चौथी तिथि। चतुर्थी।
मुहा०—चौथ का चाँद = भादों शुक्ल चतुर्थी का चद्रमा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि कोई देख ले तो उसे झूठा कलंक लगता है।
२ चतुर्थांश। चौथाई भाग। ३ मराठों का लगाया हुआ एक कर जिसमें आमदनी या तहसील का चतुर्थांश ले लिया जाता था।
† वि० चौथा।
चौथपन†-संज्ञा पु० [हिं० चौथा + पन] जीवन की चौथी अवस्था। बुढ़ापा।
चौथा-वि० [सं० चतुर्थ] [स्त्री० चौथी] क्रम में चार के स्थान पर पड़नेवाला।
चौथाई-संज्ञा पु० [हिं० चौथा + ई (प्रत्य०)] चौथा भाग। चतुर्थांश। चहारुम।
चौथिया-संज्ञा पु० [हिं० चौथा] १. वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे। २ चौथाई का हकदार।
चौथी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चौथा] १ विवाह के चौथे दिन की एक रीति जिसमें वर-कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं। २ फसल की वह बाँट जिसमें जमींदार चौथाई लेता है।
चौदस-संज्ञा स्त्री० [हिं० चतुर्दशी] पक्ष का चौदहवाँ दिन। चतुर्दशी।
चौदह-वि० [सं० चतुर्दश] जो गिनती में दस और चार हों।
संज्ञा पु० दस और चार के जोड़ की संख्या। १४।
चौदाँत[illegible] पु० [हिं० [illegible] दो हाथियों की लड़ाई। [illegible]
चौधराई-[illegible] स्त्री० [[illegible] चौधरी का काम। २ [illegible]
चौधरी-[illegible] पु० [[illegible] समाज या [illegible] निर्णय कर समाज [illegible]

ै–संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्पदी] १५ मात्राओं
एक छंद।
ट–वि० [हिं० चौ = चार + पट = किवाड़]
ों ओर से खुला हुआ। अरक्षित।
· नष्ट भ्रष्ट। तबाह। बरबाद।
टा–वि० [हिं० चौपट] चौपट करनेवाला।
ड–संज्ञा स्त्री० दे० "चौसर"।
.त†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ = चार + परत]
पड़े की तह या घड़ी।
पतिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + पत्ती] १
क प्रकार की घास। २ एक साग।
पथ–संज्ञा पु० [सं० चतुष्पथ] चौराहा।
पद †–संज्ञा पु० "चौपाया"।
पहल–वि० [हिं० चौ + फा० पहलू] जि-
नके चार पहल या पार्श्व हों। वर्गात्मक।
ोपाई–संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्पदी] १. १६
मात्राओं का एक छंद। † २ चारपाई।
ोपाया–संज्ञा पु० [सं० चतुष्पद] चार
पैरोंवाला पशु। गाय, बैल, भैंस आदि पशु।
ोपाल–संज्ञा पु० [हिं० चौवार] १ बैठने
उठने का वह स्थान जो ऊपर से छाया हो,
पर चारों ओर खुला हो। २. बैठक। ३
दालान। ४ एक प्रकार की पालकी।
चौपैया–संज्ञा पु० [सं० चतुष्पदी] १. एक
प्रकार का छंद। †२ चारपाई। खाट।
चौबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + बंद] एक
प्रकार का छोटा चुस्त अंगा। बगलबंदी।
चौबंसा–संज्ञा पु० [देश०] एक वर्णवृत्त।
चौबगला–संज्ञा पु० [हिं० चौ + बगल]
कुरते, अंगे इत्यादि में बगल के नीचे और
कली के ऊपर का भाग।
वि० चारों ओर का।
चौबाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + बाई = हवा]
१ चारों ओर से बहनेवाली हवा। २
अफवाह। किंवदंती। उड़ती खबर।
चौबारा–संज्ञा पु० [हिं० चौ + बार] १. कोठे
के ऊपर की खुली कोठरी। बँगला। बाला-
खाना। २ खुली हुई बैठक।
क्रि० वि० [हिं० चौ = चार + बार = दफा]
चौथी दफा। चौथी बार।
चौबे–संज्ञा पु० [सं० चतुर्वेदी] [स्त्री० चौबाइन]
ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा।
चौबोला–संज्ञा पु० [हिं० चौबोल] एक प्रकार
का मात्रिक छंद।
चौमड़–संज्ञा स्त्री० दे० "चौघड़"।

चौमंज़िला–वि० [हिं० चौ = चार + फा०
मंज़िल] चार मरातिब या खंडोंवाला
(मकान आदि)।
चौमसिया–वि० [हिं० चौ + मास] वर्षा
के चार महीनों में होनेवाला।
संज्ञा पु० [हिं० चार + माशा] चार माशे की
बाट।
चौमासा–संज्ञा पु० [सं० चातुर्मास] १ वर्षा
काल के चार महीने–आषाढ़, श्रावण, भा
द्रपद और आश्विन। चातुर्मास। २ वर्षा
ऋतु के संबंध की कविता।
चौमुख–क्रि० वि० [हिं० चौ = चार + मुख =
ओर] चारों ओर। चारों तरफ।
चौमुखा–वि० [हिं० चौ = चार + मुख] [स्त्री०
चौमुखी] चारों ओर चार मुँहोंवाला।
चौमुहानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ = चार + फा०
मुहाना] चौराहा। चौरास्ता। चतुष्पथ।
चौरंग–संज्ञा पु० [हिं० चौ = चार + रंग =
प्रकार] तलवार का एक हाथ।
वि० तलवार के वार से कटा हुआ।
चौरंगा–वि० [हिं० चौ + रंग] [स्त्री० चौरंगी]
चार रंगों का। जिसमें चार रंग हों।
चौर–संज्ञा पु० [सं०] १. दूसरों की वस्तु
चुरानेवाला। चोर। २ एक गंध द्रव्य।
चौरस–वि० [हिं० चौ = चार + (एक) रस =
समान] १ जो ऊँचा नीचा न हो। सम
तल। बराबर। २. चौपहल। वर्गात्मक।
संज्ञा पु० एक प्रकार का वर्णवृत्त।
चौरस्ता–संज्ञा पु० दे० "चौराहा"।
चौरा–संज्ञा पु० [सं० चतुर] [स्त्री० अल्पा०
चौरी] १ चबूतरा। वेदी। २. किसी
देवता, सती, मृत महात्मा, भूत, प्रेत आदि
का स्थान जहाँ वेदी या चबूतरा बना रहता
है। † ३. चौपाल। चौबारा। ४
लोबिया। बोड़ा। अरवा। रवाँस।
चौराई–संज्ञा स्त्री० दे० "चौलाई"।
चौरासी–वि० [सं० चतुरशीति] अस्सी से
चार अधिक।
संज्ञा पु० १. अस्सी से चार अधिक की
संख्या। ८४। २. चौरासी लाख योनि।
मुहा०—चौरासी में पड़ना या भरमना =
निरंतर बार बार कई प्रकार के शरीर धारण करना।
३ नाचते समय पैर में बाँधने का घुँघरू।
चौराहा–संज्ञा पु० [हिं० चौ = चार + राह =

रास्ता] चौरस्ता। चौमुहानी।

चौरी–सज्ञा स्त्री० [हिं० चौरा] छोटा चबूतरा।

चौरेठा–सज्ञा पु० [हिं० चाउर + पीठा] पानी के साथ पीसा हुआ चावल।

चौर्य–सज्ञा पुं० [सं०] चोरी।

चौलाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + राई = दाने] एक पौधा जिसका साग खाया जाता है।

चौलुक्य–सज्ञा पु० दे० "चालुक्य"।

चौवा–सज्ञा पु० [हिं० चौ = चार] १. हाथ की चार उँगलियों का समूह। २. अँगूठे को छोड़ हाथ की बाकी उँगलियों की पंक्ति में लपेटा हुआ तागा। ३. चार अंगुल की माप। ४. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।

† सज्ञा पु० दे० "चौपाया"।

चौसर–सज्ञा पु० [सं० चतुस्सारि] १. एक खेल जो बिसात पर चार रंगों की चार चार गोटियों से खेला जाता है। चौपड़। नर्दबाजी। २. इस खेल की बिसात।

सज्ञा पु० [चतुस्सक] चार लड़ों का हार।

चौहट्टा–सज्ञा पु० दे० "चौहट्टा"।

चौहट्टा–सज्ञा पुं० [हिं० चौ = चार + हाट] १. वह स्थान जिसके चारों ओर दूकानें हों। चौक। २. चौमुहानी। चौरस्ता।

चौहद्दी–सज्ञा स्त्री० [हिं० चौ + फा० हद] चारों ओर की सीमा।

चौहरा–वि० [हिं० चौ = चार + हरा] १. जिसमें चार फेरे या तहें हों। चार परतवाला। † २. चौगुना। जो चार बार हो।

चौहान–सज्ञा पु० [?] क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

चौहैं–क्रि० वि० [हिं० चौ] चारों ओर।

च्यवन–सज्ञा पु० [सं०] १. चूना। झरना। टपकना। २. एक ऋषि का नाम।

च्यवनप्राश–सज्ञा पु० [सं०] आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध पौष्टिक अवलेह।

च्युत–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। झड़ा हुआ। २. भ्रष्ट। ३. अपने स्थान से हटा हुआ। ४. विमुख। पराङ्मुख।

च्युति–सज्ञा स्त्री० [सं०] १. झड़ना। गिरना। २. गति। उपयुक्त स्थान से हटना। ३. चूक। कर्तव्य-विमुखता।

छ

छ–हिंदी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।

छंग–सज्ञा पु० दे० "उछंग"।

छँछोरी–सज्ञा स्त्री० [हिं० छाछ + बरी] एक पकवान जो छाछ में बनाया जाता है।

छँटना–क्रि० अ० [सं० छटन] १. कटकर अलग होना। छिन्न होना। २. अलग होना। दूर होना। ३. समूह से अलग होना। ४. चुनकर अलग कर लिया जाना।

मुहा०—छँटा हुआ = १. चुना हुआ। २. चालाक। चतुर। धूर्त।

५. साफ़ होना। मैल निकलना। ६. क्षीण होना। दुबला होना।

छँटवाना–क्रि० स० [हिं० छाँटना] १. कटवाना। २. चुनवाना। ३. छिलवाना।

छँटाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० छाँटना] छाँटने का काम, भाव या मजदूरी।

छँडना–क्रि० स० [हिं० छोड़ना] १. छोड़ना। त्यागना। २. अन्न को ओखली में डालकर कूटना। छाँटना।

छँडाना†–क्रि० स० [हिं० छुड़ाना] छीनना। छुड़ाकर ले लेना।

छंद–सज्ञा पु० [सं० छन्दस्] १. वेदों के वाक्यों का वह भेद जो अक्षरों की गणना के अनुसार किया गया है। २. वेद। ३. वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो। पद्य। नज़्म। ४. वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार पद या वाक्य रचने की व्यवस्था। पद्यबंध। वृत्त। ५. वह विद्या जिसमें छंदों के लक्षण आदि का विचार हो। ६. अभिलाषा। इच्छा। ७. स्वेच्छाचार। ८. बंधन। गाँठ। ९. जाल। संघात। समूह। १०. कपट। छल।

यौ०—छल छंद = कपट। धोखेबाजी।

११. चाल। युक्ति। १२. रंग ढंग।

आकार। चेष्टा। १३. अभिप्राय। मतलब।
संज्ञा पु० [सं० छदक] एक आभूषण जो हाथ में पहना जाता है।

छंदोबद्ध–वि० [सं०] श्लोकबद्ध। जो पद्य के रूप में हो।

छंदोभंग–संज्ञा पु० [सं०] छंद-रचना का एक दोष जो मात्रा, वर्ण आदि के नियम का पालन न होने के कारण होता है।

छः–वि० [सं० षट्, प्रा० छ] गिनती में पाँच से एक अधिक।
संज्ञा पु० १. वह संख्या जो पाँच से एक अधिक हो। २. इस संख्या का सूचक अंक।

छ–संज्ञा पु० [सं०] १. काटना। २. ढाँकना। आच्छादन। ३. घर। ४. खंड। टुकड़ा।

छकड़ा–संज्ञा पु० [सं० शकट] बोझ लादने की बैलगाड़ी। सग्गड़। लढ़ी।

छकड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छः + कड़ी] १. छः का समूह। २. वह पालकी जिसे छः कहार उठाते हों। ३. छः घोड़ों की गाड़ी।

छकना–क्रि० अ० [सं० चकन] [संज्ञा छाक] १. खा-पीकर अघाना। तृप्त होना। २ मद्य आदि पीकर नशे में चूर होना।
क्रि० अ० [सं० चक्र = भ्रांत] १. चकराना। अचंभे में आना। २. दिक होना।

छकाना–क्रि० स [हिं० छकना] १. खिला पिलाकर तृप्त करना। २. मद्य आदि से उन्मत्त करना।
क्रि० स० [सं० चक्र = भ्रांत] १ अचंभे में डालना। २. दिक करना।

छक्का–संज्ञा पु० [सं० षट्क] १. छः का समूह या वह वस्तु जो छः अवयवों से बनी हो। २. जूए का एक दाँव जिसमें कौड़ी फेंकने से छः कौड़ियाँ चित पड़ें।
मुहा०—छक्का पंजा = चालबाजी।
३. जुआ। ४. वह ताश जिसमें छः बूटियाँ हों। ५. होश हवास। सुध। संज्ञा।
मुहा०—छक्के छूटना = १. होश हवास जाता रहना। बुद्धि का काम न करना। २. हिम्मत हारना। साहस छूटना।

छगड़ा–संज्ञा पुं० [सं० छागल] बकरा।

छगन–संज्ञा पु० [सं० छंगट = एक छोटी मछली] छोटा बच्चा। प्रिय बालक।
वि० बच्चों के लिये एक प्यार का शब्द।

छगुनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी + उँगली] कनिष्ठिका। छानी उँगली।

छछिआ, छछिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाँछ] छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र।

छछूँदर–संज्ञा पु० [सं० छुछुंदरी] १. चूहे की जाति का एक जंतु। २. एक प्रकार का यंत्र या तावीज। ३. एक आतिशबाजी।

छजना–क्रि० अ० [सं० सज्जन] १. शोभा देना। सजना। अच्छा लगना। २. उपयुक्त जान पड़ना। ठीक जँचना।

छज्जा–संज्ञा पु० [हिं० छाजना या छाना] १. छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है। ओलती। २. कोठे या पाटन का वह भाग जो कुछ दूर तक दीवार के बाहर निकला रहता है।

छटकना–क्रि० अ० [अनु० या हिं० छूटना] १. किसी वस्तु का दाब या पकड़ से वेग के साथ निकल जाना। सटकना। २. दूर दूर रहना। अलग अलग फिरना। ३. वश में से निकल जाना। ४. कूदना।

छटकाना–क्रि० अ० [हिं० छटकना] १. दाब या पकड़ से बलपूर्वक निकल जाने देना। २. झटका देकर पकड़ या बंधन से छुड़ाना। ३. पकड़ या दबाव में रखनेवाली वस्तु को बलपूर्वक अलग करना।

छटपटाना–क्रि० अ० [अनु०] १. बंधन या पीड़ा के कारण हाथ-पैर फटफटाना। तड़फड़ाना। २ बेचैन होना। व्याकुल होना। ३. किसी वस्तु के लिये व्याकुल होना।

छटपटी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घबराहट। बेचैनी। २. आकुलता। गहरी उत्कंठा।

छटाँक–संज्ञा स्त्री० [हिं० छः + टाँक] एक तौल जो सेर का सोलहवाँ भाग होती है।

छटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। प्रकाश। २. शोभा। सौंदर्य। ३. बिजली।

छठ–संज्ञा स्त्री० [सं० षष्ठी] पक्ष की छठी तिथि।

छठा–वि० [सं० षष्ठ] [स्त्री० छठी] जो क्रम में पाँच और वस्तुओं के उपरांत हो।

छठी–संज्ञा स्त्री० [सं० षष्ठी] जन्म से छठे दिन की पूजा या संस्कार।
मुहा०—छठी का दूध याद आना = सब सुध भूल जाना। बहुत हैरानी होना।

छड़–संज्ञा स्त्री० [सं० शर] धातु या लकड़ी आदि का लंबा पतला पड़ा टुकड़ा।

छड़ा–संज्ञा पु० [हिं० छड़] पैर में पहनने का एक गहना।

वि० [हिं० छाँड़ना] अकेला। एकाएकी।
छड़िया–संज्ञा पुं० [हिं० छड़ी] दरबान।
छड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छड़] १. सीधी पतली लकड़ी। पतली लाठी। २. झंडी जिसे मुसलमान पीरों की मज़ार पर चढ़ाते हैं।
छत–संज्ञा स्त्री०[सं० छत्र] १. घर की दीवारों के ऊपर चूने, कंकड़ से बनाया हुआ फर्श। पाटन। २ ऊपर का खुला हुआ कोठा। ३. छत के ऊपर तानने की चादर। चाँदनी।
"संज्ञा पुं० [सं० क्षत] घाव। जख्म।
⊙ क्रि० वि० [सं० सत्] होते हुए। रहते हुए। आछत।
छतगीर, छतगीरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छत+फा० गीर] ऊपर तानी हुई चाँदनी।
छतना‡–संज्ञा पुं० [हिं० छाता] पत्तों का बना हुआ छाता।
छतनार†–वि० [हिं० छाता या छतना] [स्त्री० छतनारी] छाते की तरह फैला हुआ। दूर तक फैला हुआ। विस्तृत। (पेड़)
छतरी–संज्ञा स्त्री० [सं० छत्र] १ छाता। २ मंडप। ३. समाधि के स्थान पर बना हुआ छज्जेदार मंडप। ४ कबूतरों के बैठन के लिये बाँस की फट्टियों का टट्टर। ५.खुमी।
छतिया⊙‡–संज्ञा स्त्री० दे० "छाती"।
छतियाना–क्रि० स० [हिं० छाती] १ छाती के पास ले जाना। २. बंदूक छोड़ने के समय कुंदे को छाती के पास लगाना।
छतिवन–संज्ञा पुं० [सं० सप्तपर्ण] एक पेड़। सप्तपर्णी।
छतीसा–वि० [हिं० छत्तीस] [स्त्री० छतीसी] १ चतुर। सयाना। २. धूर्त।
छत्तर‡–संज्ञा पुं० १. दे० "छत्र"। २. दे० "सत्र"।
छत्ता–संज्ञा पुं० [सं० छत्र] †१. छाता। छतरी। २. पटाव या छत जिसके नीचे से रास्ता चलता हो। ३. मधु-मक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर। ४. छाते की तरह दूर तक फैली हुई वस्तु। छतनारी चीज़। चकत्ता। ५. कमल का बीजकोश।
छत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ छाता। छतरी। २. राजाओं का रुपहला या सुनहरा छाता जो राजचिह्नों में से एक है।
यौ०—छत्रछाँह, छत्रछाया = रक्षा। शरण। ३. खुमी। भूफोड़। कुकुरमुत्ता।
छत्रक–संज्ञा पुं० [सं०] १. खुमी। कुकुरमुत्ता। छाता। २. तालमखाने की जाति का एक पौधा। ३. मंदिर। मंडप। देवमंदिर। ४. शहद का छत्ता।
छत्रधारी–वि० [सं० छत्रधारिन्] जो छत्र धारण करे। जैसे, छत्रधारी राजा।
छत्रपति–संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
छत्रभंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा का नाश। २. ज्योतिष का एक योग जो राजा का नाशक माना गया है। ३. अराजकता।
छत्री–वि० [सं० छत्रिन्] छत्रयुक्त।
संज्ञा पुं०‡ दे० "क्षत्रिय"।
छद–संज्ञा पुं० [सं०] १. ढक लेनेवाली वस्तु। आवरण। जैसे—रदच्छद। २. पक्ष। चिड़ियों का पंख। ३. पत्ता।
छदाम–संज्ञा पुं० [हिं० छ+दाम] पैसे का चौथाई भाग।
छद्म–संज्ञा पुं० [सं० छद्मन्] १. छिपाव। गोपन। २. व्याज। बहाना। हीला। ३. छल। कपट। जैसे—छद्मवेश।
छद्मवेश–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० छद्मवेशी] बदला हुआ वेश। कृत्रिम वेश।
छद्मी–वि० [सं० छद्मिन्] [स्त्री० छद्मिनी] १. बनावटी वेश धारण करनेवाला। २. छली। कपटी।
छन–संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।
छनक–संज्ञा पुं० [अनु०] छन छन करने का शब्द। झनझनाहट। झनकार।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी आशंका से चौंककर भागने की क्रिया। भड़क।
⊙ संज्ञा पुं० [हिं० छन+एक] एक क्षण।
छनकना–क्रि० अ० [अनु० छन छन] १. किसी तपती हुई धातु पर से पानी आदि की बूँद का छन छन शब्द करके उड़ जाना। २. ⊙ झनकार करना। बजना।
क्रि० अ० [अनु०] चौकन्ना होकर भागना।
छनकाना–क्रि० स० [हिं० छनकना] छन छन शब्द करना।
क्रि० स० [हिं० छनकना] चौंकाना। चौकन्ना करना। भड़काना।
छनछनाना–क्रि० अ० [अनु०] १. किसी तपी हुई धातु पर पानी आदि पड़ने के कारण छन छन शब्द होना। २. खौलते हुए घी, तेल आदि में किसी गीली वस्तु के पड़ने के कारण छन छन शब्द होना। ३. झनझनाना। झनकार होना।

क्रि० स० १. छन छन का शब्द उत्पन्न करना। २. झनकार करना।

छनछवि--संज्ञा स्त्री० [सं० क्षणछवि] बिजली।

छनदा--संज्ञा स्त्री० दे० "क्षणदा"।

छनना--क्रि० अ० [सं० क्षरण] १. किसी पदार्थ का महीन छेदों में से इस प्रकार नीचे गिरना कि मैल, सीठी आदि ऊपर रह जाय। छलनी से साफ़ होना। २. किसी नशे का पिया जाना।

मुहा०--गहरी छनना=१.खूब मेल जोल होना। गाढ़ी मैत्री होना। २. लड़ाई होना।

३. बहुत से छेदों से युक्त होना। छलनी हो जाना। ४. बिंध जाना। अनेक स्थानों पर चोट खाना। ५. छान-बीन होना। निर्णय होना। ६. कड़ाह में से पूरी, पकवान आदि निकलना।

छनाना--क्रि० स० [हिं० छानना] किसी दूसरे से छानने का काम कराना।

छनिक*--वि० दे० "क्षणिक"।

संज्ञा पु० [हिं० छन+एक] क्षण भर।

छन्न--संज्ञा पु० [अनु०] १. किसी तपी हुई चीज पर पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द। २. झनकार। ठनकार।

छप--संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. पानी में किसी वस्तु के एकबारगी जोर से गिरने का शब्द। २. पानी के छींटों के ज़ोर से पड़ने का शब्द।

छपका--संज्ञा पु० [हिं० चपकना] सिर में पहनने का एक गहना।

संज्ञा पु० [अनु०] १. पानी का भरपूर छींटा। २. पानी में हाथ-पैर मारने की क्रिया।

छपछपाना--क्रि० अ० [अनु०] पानी पर कोई वस्तु पटककर छपछप शब्द करना।

क्रि० स० [अनु०] पानी में छपछप शब्द उत्पन्न करना।

छपद--संज्ञा पु० [सं० षट्पद] भौंरा।

छपना†--वि० [हिं० छिपना] गुप्त। गायब।

संज्ञा पु० [सं० क्षपण] नाश। संहार।

छपना--क्रि० अ० [हिं० चपना=दबना] १. छापा जाना। चिह्न या दाग पड़ना। २. चिह्नित होना। अंकित होना। ३. यंत्रालय में किसी लेख आदि का मुद्रित होना। ४. शीतला का टीका लगना।

†क्रि० अ० दे० "छिपना"।

छपरखट, छपरखाट--संज्ञा स्त्री० [हिं० छप्पर+खाट] मसहरीदार पलंग।

छपरी†--संज्ञा स्त्री० [हिं० छप्पर] झोपड़ी।

छपवाना--क्रि० स० दे० "छपाना"।

छपा*--संज्ञा स्त्री० दे० "क्षपा"।

छपाई--संज्ञा स्त्री० [हिं० छापना] १. छापने का काम। मुद्रण। अंकन। २. छापने का ढंग। ३. छापने की मजदूरी।

छपाका--संज्ञा पु० [अनु०] १. पानी पर किसी वस्तु के ज़ोर से पड़ने का शब्द। २. जोर से उछाला हुआ पानी का छींटा।

छपाना--क्रि० स० [हिं० छापना का प्रे०] छापने का काम दूसरे से कराना।

* क्रि० स० दे० "छिपाना"।

छप्पय--संज्ञा पु० [सं० षट्पद] एक मात्रिक छंद जिसमें छः चरण होते हैं।

छप्पर--संज्ञा पु० [हिं० छोपना] १. फूस आदि की छाजन जो मकान के ऊपर छाई जाती है। छाजन। छान।

मुहा०--छप्पर पर रखना=छोड़ देना। चर्चा न करना। फिक्र न करना। छप्पर फाड़कर देना=अनायास देना। अकस्मात् देना।

२ छोटा ताल या गड्ढा। पोखर।

छबतख्ती*--संज्ञा स्त्री० [हिं० छबि+अ० तख्तीअ] शरीर की सुंदर बनावट।

छबि--संज्ञा स्त्री० दे० "छवि"।

छबीला--वि० [हिं० छबि+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० छबीली] शोभायुक्त। सुंदर।

छम--संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घुँघरू बजने का शब्द। २. पानी बरसने का शब्द।

* संज्ञा पु० दे० "क्षम"।

छमकना--क्रि० अ० [हिं० छम+क] १ घुँघरू आदि बजाते हुए हिलना डोलना। २ गहनों की झनकार करना।

छमछम--संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. नूपुर, पायल, घुँघरू आदि बजने का शब्द। २ पानी बरसने का शब्द।

क्रि० वि० छम छम शब्द के साथ।

छमछमाना--क्रि० अ० [अनु०] १. छम छम शब्द करना। २. छम छम शब्द करके चलना।

छमना†--क्रि० स० [सं० क्षमन्]क्षमा करना।

छमा†--संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।

छमाछम--क्रि० वि० [अनु०] लगातार छम छम शब्द के साथ।

छमुख--संज्ञा पु० [हिं० छः+मुख] षडानन।

छय †–संज्ञा पुं० दे० "क्षय"।
छयना ‡–क्रि० अ० [हिं० छय+ना] क्षय को प्राप्त होना। छीजना। नष्ट होना।
छर–संज्ञा पुं० दे० "छल"।
संज्ञा पुं० दे० "क्षर"।
छरकना –क्रि० अ० दे० "छलकना"।
छरछर–संज्ञा पुं० [हिं० छर] १ कणों या छर्रों के वेग से निकलने और गिरने का शब्द। २ पतली लचीली छड़ी के लगने का शब्द। सटसट।
छरछराना–क्रि० अ० [सं० क्षार] [संज्ञा छरछराहट] नमक आदि लगने से शरीर के घाव या छिले हुए स्थान में पीड़ा होना।
छरना–क्रि० अ० [सं० क्षरण] १ चूना। टपकना। २ चकचकाना। चुचुवाना।
†क्रि० स० [हिं० छलना] १ छलना। धोखा देना। ठगना। २ मोहित करना।
छरभार †–संज्ञा पुं० [सं० सार+भार] १. प्रबंध या कार्य्य का बोझ। कार्य्यभार। २ झंझट। बखेड़ा।
छरहरा–वि० [हिं० छड़+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० छरहरी] १ छीणांग। सुबुक। हलका। २ तेज। फुरतीला।
छरा–संज्ञा पुं० [सं० शर] १ छड़ा। २ लर। लड़ी। ३ रस्सी। ४ नारा। इजारबंद। नीवी।
छरी† –संज्ञा स्त्री० वि० १ दे० "छड़ी"। २ दे० "छली"।
छरीला–संज्ञा पुं० [सं० शैलेय] काई की तरह का एक पौधा। पथरफूल। बुढना।
छर्दन–संज्ञा पुं० [सं०] वमन। कै करना।
छर्दि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वमन। कै। उलटी।
छर्रा– संज्ञा पुं० [अनु० छरछर] १ छोटी कंकड़ी का कण। २ लोहे या सीसे के छोटे छोटे टुकड़े जो बंदूक में चलाए जाते हैं।
छल–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह व्यवहार जो दूसरे को धोखा देने के लिये किया जाता है। २ व्याज। मिस। बहाना। ३ धूर्त्तता। वंचना। ठगपन। ४ कपट।
छलक, छलकन–संज्ञा स्त्री० [हिं० छलकना] छलकने की क्रिया या भाव।
छलकना–क्रि० अ० [अनु०] १ किसी तरल चीज का बरतन से उछलकर बाहर गिरना। २ उमड़ना। बाहर होना।
छलकाना–क्रि० स० [हिं० छलकना] किसी पात्र में भरे हुए जल आदि को हिला डुलाकर बाहर उछालना।
छलछंद–संज्ञा पुं० [हिं० छल+छंद] [वि० छलछंदी] कपट का जाल। चालबाजी।
छलछलाना–क्रि० अ० [अनु०] १ छल छल शब्द होना। २ पानी आदि थोड़ा थोड़ा करके गिरना। ३ जल से पूर्ण होना।
छलछिद्र–संज्ञा पुं० [सं०] कपट व्यवहार। धूर्त्तता। धोखेबाजी।
छलना–क्रि० स० [सं० छलन] धोखा देना। भुलावे में डालना। प्रतारित करना।
संज्ञा स्त्री० [सं०] धोखा। छल।
छलनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० चालना या सं० चरण] आटा चालने का बरतन। चलनी।
मुहा०—छलनी हो जाना = किसी वस्तु में बहुत से छेद हो जाना। कलेजा छलनी होना = दुःख सहते सहते हृदय जर्जर हो जाना।
छलहाई †–वि० स्त्री० [सं० छल+हा (प्रत्य०)] छली। कपटी। चालबाज।
छलाँग–संज्ञा स्त्री० [हिं० उछल+अंग] कुदान। फर्लांग। चौकड़ी।
छला †–संज्ञा पुं० दे० "छल्ला"।
छलाई –संज्ञा स्त्री० [हिं० छल+आई (प्रत्य०)] छल का भाव। कपट।
छलाना–क्रि० स० [हिं० छलना का प्रे०] धोखा दिलाना। प्रतारित कराना।
छलावा–संज्ञा पुं० [हिं० छल] १ भूत प्रेत आदि की छाया जो एक बार दिखाई पड़ कर फिर झट से अदृश्य हो जाती है। २ वह प्रकाश या लुक जो दलदलों के किनारे या जंगलों में रह रहकर दिखाई पड़ता और गायब हो जाता है। अगिया बैताल। उल्कामुख प्रेत। ३ चपल। चंचल। शोख। ४ इंद्रजाल। जादू।
छलिया, छली–वि० [सं० छलिन्] छल करनेवाला। कपटी। धोखेबाज।
छल्ला–संज्ञा पुं० [सं० छल्ली = लता] १ मुँदरी। २ कोई मंडलाकार वस्तु। कड़ा। वलय।
छल्लेदार–वि० [हिं० छल्ला+फा० दार] जिसमें मंडलाकार चिह्न या घेरे बने हों।
छवना†–संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छवनी] १ बच्चा। २ सूअर का
छवा†–संज्ञा पुं० [सं० [illegible]] का बच्चा। बछड़ा।

संज्ञा पुं० [देश०] एँड़ी ।
छवाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० छाना] १. छाने का काम या भाव । २. छाने की मजदूरी ।
छवाना-क्रि० स० [हिं० छाना का प्रे०] छाने का काम दूसरे से कराना ।
छवि-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० छबीला] १. शोभा । सौंदर्य । २. कांति । प्रभा ।
छहरना-क्रि० अ० [सं० क्षरण] छितराना ।
छहराना-क्रि० अ० [सं० क्षरण] छितराना । बिखरना । चारों ओर फैलना ।
क्रि० स० बिखराना । छितराना ।
छहरीला-वि० [हिं० छहरना] [स्त्री० छहरीली] छितरानेवाला । बिखरनेवाला ।
छहियाँ-संज्ञा स्त्री० दे० "छांह" ।
छांगना-क्रि० स० [सं० छिन्न + करण] डाल, टहनी आदि काटकर अलग करना ।
छांगुर-संज्ञा पुं० [हिं० छः + अंगुल] वह मनुष्य जिसके पंजे में छः उँगलियाँ हों ।
छांट-संज्ञा स्त्री० [हिं० छाँटना] १. छाँटने, काटने या कतरने की क्रिया या ढंग । २. कतरन । ३. अलग की हुई निकम्मी वस्तु । संज्ञा स्त्री० [सं० छर्दि] वमन । कै ।
छांटना-क्रि० स० [सं० खंडन] १. छिन्न करना । काटकर अलग करना । २. किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिये काटना या कतरना । ३. अनाज में से कन या भूसी कूट फटककर अलग करना । ४ लेने के लिये चुनना या निकालने के लिये पृथक् करना । ५. दूर करना । हटाना । ६. साफ़ करना । ७ किसी वस्तु का कुछ अंश निकालकर उसे छोटा या संक्षिप्त करना । ८. हिंदी की चिंदी निकालना । ९. अलग या दूर रखना ।
छांड़ना-क्रि० स० दे० "छोड़ना" ।
छांद-संज्ञा स्त्री० [सं० छंद = बंधन] चौपायों के पैर बांधने की रस्सी । नोई ।
छांदना-क्रि० स० [सं० छंदन] १. रस्सी आदि से बाँधना । जकड़ना । कसना । २ घोड़े या गधे के पिछले पैरों को एक दूसरे से सटाकर बांध देना ।
छांदोग्य संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद का एक ब्राह्मण । २. छांदोग्य ब्राह्मण का उपनिषद् ।
छांवँ-संज्ञा स्त्री० दे० "छांह"।
छांवड़ा-संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छाँवड़ी, छौंडी] १. जानवर का बच्चा । २. छोटा बच्चा । बालक ।
छांह संज्ञा स्त्री० [सं० छाया] १. वह स्थान जहां आड़ या रोक के कारण धूप या चाँदनी न पड़ती हो । छाया । २. ऊपर से छाया हुआ स्थान । ३. बचाव या निर्वाह का स्थान शरण । संरक्षा । ४. छाया । परछाईं ।
मुहा०—छांह न छूने देना = पास न फटकने देना । निकट तक न आने देना । छांह बचाना = दूर दूर रहना । पास न जाना ।
५. प्रतिबिंब । ६ भूत-प्रेत आदि का प्रभाव । आसेब । बाधा ।
छांहगीर-संज्ञा पुं० [हिं० छाँह + फा० गीर] १. राजछत्र । २. दर्पण । आइना ।
छाक-संज्ञा स्त्री० [हिं० छकना] १ तृप्ति इच्छापूर्ति । २. वह भोजन जो काम करनेवाले दोपहर को करते हैं । दुपहरिया । कलेवा । ३ नशा । मस्ती
छाकना-क्रि० अ० [हिं० छकना] १ खा पीकर तृप्त होना । अघाना । अफरना २. नशा पीकर मस्त होना ।
क्रि० अ० [हिं० छकना] हैरान होना ।
छाग-संज्ञा पुं० [सं०] बकरा ।
छागल-संज्ञा पुं० [सं०] १. बकरा । २ बकरे की खाल की बनी हुई चीज़ ।
संज्ञा स्त्री० [हिं० साँकल] पैर का एक गहना झाँझन ।
छाछ-संज्ञा स्त्री० [सं० छच्छिका] वह पनीला दही या दूध जिसका घी या मक्खन निकाल लिया गया हो । मट्ठा । मही ।
छाज-संज्ञा पुं० [सं० छाद] १. अनाज फटकने का सींक का बरतन । सूप । २. छाजन छप्पर । ३. छज्जा ।
छाजन-संज्ञा पुं० [सं० छादन] आच्छादन वस्त्र । कपड़ा ।
यौ०—भोजन छाजन = खाना-कपड़ा ।
संज्ञा स्त्री० १. छप्पर । छान । खपरैल २. छाने का काम या ढंग । छवाई ।
छाजना-क्रि० अ० [सं० छादन] [वि० छाजित १. शोभा देना । अच्छा लगना । भला लगना । फबना । २. सुशोभित होना ।
छाजा-संज्ञा पुं० दे० "छज्जा" ।
छात-संज्ञा पुं० दे० "छाता" ।
छाता-संज्ञा पुं० [सं० छत्र] १. बड़ी छतरी मेंह, धूप आदि से बचने के लिये आच्छा-

दन जिसे लेकर लोग चलते हैं। २. खुर्मी।

छाती-संज्ञा स्त्री० [सं० छादिन्] १. हड्डी की ठठरियों का पल्ला जो पेट के ऊपर गर्दन तक होता है। सीना। वक्षस्थल। **मुहा०**—छाती पत्थर की करना = भारी दुःख सहने के लिये हृदय कठोर करना। **छाती पर मूँग या कोदो दलना** = किसी के सामने ही ऐसी बात करना जिससे उसका जी दुखे। **छाती पर पत्थर रखना** = दुःख सहने के लिये हृदय कठोर करना। **छाती पर साँप लोटना या फिरना** = १. दुःख से कलेजा दहल जाना। मानसिक व्यथा होना। २. ईर्ष्या से हृदय व्यथित होना। जलन होना। **छाती पीटना** = दुःख या शोक से व्याकुल होकर छाती पर हाथ पटकना। *छाती फटना* = *दुःख से हृदय व्यथित होना।* अत्यंत संताप होना। **छाती से लगाना** = आलिंगन करना। गले लगाना। **वज्र की छाती** = ऐसा कठोर हृदय जो दुःख सह सके। सहिष्णु हृदय। २. कलेजा। हृदय। मन। जी। **मुहा०**—**छाती जलना** = १. अजीर्ण आदि के कारण हृदय में जलन मालूम होना। २. शोक से हृदय व्यथित होना। संताप होना। ३. डाह होना। जलन होना। **छाती जुड़ाना** = दे० "छाती ठंढी करना"। **छाती ठंढी करना** = चित्त शांत और प्रफुल्लित करना। मन की अभिलाषा पूर्ण करना। **छाती धड़कना** = खटके या डर से कलेजा जल्दी जल्दी उछलना। जी दहलना। ३. स्तन। कुच। ४. हिम्मत। साहस।

छात्र-संज्ञा पुं० [सं०] शिष्य। चेला।

छात्रवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह वृत्ति या धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास की दशा में सहायतार्थ मिला करे।

छात्रालय-संज्ञा पुं० [सं०] विद्यार्थियों के रहने का स्थान। बोर्डिंग हाउस।

छादन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० छादित] १. छाने या ढकने का काम। २. वह जिससे छाया या ढका जाय। आवरण। आच्छादन। ३. छिपाव। ४. वस्त्र।

छान-संज्ञा स्त्री० [सं० छदन] छप्पर।

छानना-क्रि० सं० [सं० चालन या क्षरण] १. चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े या और किसी छेददार वस्तु के पार निकालना जिसमें उसका कूड़ा-करकट निकल जाय। २. छाँटना। बिलगाना। ३. जाँचना। पड़तालना। ४. ढूँढ़ना। अनुसंधान करना। तलाश करना। ५. भेदकर पार करना। ६. नशा पीना।
क्रि० स० दे० "छादना"।

छानबीन—संज्ञा स्त्री० [हिं० छानना + बीनना] १. पूर्ण अनुसंधान या अन्वेषण। जाँच-पड़ताल। गहरी खोज। २. पूर्ण विवेचना। विस्तृत विचार।

छाना-क्रि० स० [सं० छादन] १. किसी वस्तु पर कोई दूसरी वस्तु इस प्रकार फैलाना जिसमें वह पूरी ढक जाय। आच्छादित करना। २. पानी, धूप आदि से बचाव के लिये किसी स्थान के ऊपर कोई वस्तु तानना या फैलाना। ३. बिछाना। फैलाना। ४. शरण में लेना।
क्रि० अ० १. फैलना। पसरना। बिछ जाना। २. डेरा डालना। रहना।

छाप-संज्ञा स्त्री० [हिं० छापना] १. वह चिह्न जो छापने में पड़ता है। २. मुहर का चिह्न। मुद्रा। ३. शंख, चक्र आदि के चिह्न जिन्हें वैष्णव अपने अंगों पर गरम धातु से अंकित कराते हैं। मुद्रा। ४. वह अँगूठी जिसमें अक्षर आदि खुदा हुआ ठप्पा रहता है। ५. कवियों का उपनाम।

छापना-क्रि० स० [सं० चपन] १. स्याही आदि पुती वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर उसकी आकृति चिह्नित करना। २. किसी साँचे को दबाकर, उस पर के खुदे या उभरे हुए चिह्नों की आकृति चिह्नित करना। ठप्पे से निशान डालना। मुद्रित करना। अंकित करना। ३. काग़ज़ आदि को छापे की कल में दबाकर उस पर अक्षर या चित्र अंकित करना। मुद्रित करना।

छापा-संज्ञा पुं० [हिं० छापना] १. साँचा जिस पर गीली स्याही आदि पोतकर उस पर खुदे चिह्नों की आकृति किसी वस्तु पर उतारते हैं। ठप्पा। २. मुहर। मुद्रा। ३. ठप्पे या मुहर से दबाकर डाला हुआ चिह्न या अक्षर। ४. पंजे का वह चिह्न जो शुभ अवसरों पर हलदी आदि से छापकर (दीवार, कपड़े आदि पर) डाला जाता है। ५. रात में बेखबर लोगों पर आक्रमण।

छापाखाना-संज्ञा पुं० [हिं० छापा + फा० खाना] वह स्थान जहाँ पुस्तकें आदि छापी जाती हैं। मुद्रालय। प्रेस।

छाम-वि० दे० "क्षाम"।

छामोदरी -वि० स्त्री० दे० "क्षामोदरी"।
छाया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उजाला छेंकनेवाली वस्तु पड़ जाने के कारण उत्पन्न अंधकार या कालिमा। साया। २. आड़ या आच्छादन के कारण धूप, मेंह आदि का अभाव। साया। ३. वह स्थान जहाँ आड़ के कारण किसी आलोकप्रद वस्तु का उजाला न पड़ता हो। ४. परछाईं। ५ प्रतिबिंब। अक्स। ६ तद्रूप वस्तु। प्रतिकृति। अनुहार। पटतर। ७ अनुकरण। नकल। ८ सूर्य्य की एक पत्नी। ९. कांति। दीप्ति। १०. शरण। रक्षा। ११. अंधकार। १२. आर्य्या छंद का एक भेद। १३. भूत का प्रभाव।
छायाग्राहिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसने समुद्र फाँदते हुए हनुमानजी की छाया पकड़कर उन्हें खींच लिया था।
छायादान-संज्ञा पु० [सं०] घी या तेल से भरे काँसे के कटोरे में अपनी परछाईं देखकर दिया जानेवाला दान।
छायापथ-संज्ञा पु० [सं०] १. आकाशगंगा। २ देवपथ।
छायापुरुष-संज्ञा पु० [सं०] हठयोग के अनुसार मनुष्य की छायारूप आकृति जो आकाश की ओर स्थिर दृष्टि से बहुत देर तक देखते रहने से दिखाई पड़ती है।
छार-संज्ञा पु० [सं० क्षार] १. जली हुई वनस्पतियों या रासायनिक क्रिया से घुली हुई धातुओं की राख का नमक। खार। २. खारी नमक। ३. खारी पदार्थ। ४. भस्म। राख। खाक।
यौ०—छार खार करना = नष्ट भ्रष्ट करना। ५ धूल। गर्द। रेणु।
छाल-संज्ञा स्त्री० [सं० छल्ल] पेड़ों के धड़ आदि के ऊपर का आवरण। वल्कल।
छालटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० छाल+टी] छाल या सन का बना हुआ वस्त्र।
छालना-क्रि० स० [सं० चालन] १. छानना। २. छलनी की तरह छिद्रमय करना।
छाला-संज्ञा पु० [सं० छाल] १ छाल या चमड़ा। जिल्द। जैसे-मृगछाला। २. किसी अंग पर जलने, रगड़ खाने आदि से चमड़े की ऊपरी झिल्ली का उभार जिसके भीतर एक प्रकार का चेप रहता है। फफोला।
छालिया, छाली-संज्ञा स्त्री०[हिं० छाला] सुपारी।
छावनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० छाना] १. छप्पर। छान। २. डेरा। पड़ाव। ३. सेना के ठहरने का स्थान।
छावरा †-संज्ञा पु० दे० "छौना"।
छावा-संज्ञा पु० [सं० शावक] १. बच्चा। २ पुत्र। बेटा। ३. जवान हाथी।
छिउँकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिउँटी] १. एक प्रकार की छोटी चींटी। २. एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा। ३. चिकोटी।
छिछु - संज्ञा स्त्री० [अनु०] छींटा। धार।
छिड़ाना-क्रि० स० [हिं० छीनना] जबरदस्ती ले लेना। छीनना।
छि-अव्य० [अनु०] घृणा, तिरस्कार या अरुचिसूचक शब्द।
छिकनी-संज्ञा स्त्री० [सं० छिक्कनी] नकछिकनी घास जिसके फूल सूँघने से छींक आती है।
छिगुनी-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुद्र + अंगुली] सबसे छोटी उँगली। कनिष्ठिका।
छिच्छ -संज्ञा स्त्री० दे० "छिंछ"।
छिछकारना †-क्रि० स० दे० "छिड़कना"।
छिछड़ा-संज्ञा पु० दे० "छीछड़ा"।
छिछला-वि० [हिं० छूछा + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० छिछली] (पानी की सतह) जो गहरी न हो। उथला।
छिछोरपन, छिछोरापन-संज्ञा पु० [हिं० छिछोरा] छिछोरा होने का भाव। क्षुद्रता। ओछापन। नीचता।
छिछोरा-वि० [हिं० छिछला] [स्त्री० छिछोरी] क्षुद्र। ओछा।
छिटकना-क्रि० अ० [सं० क्षिप्त] १ इधर उधर पड़कर फैलना। चारों ओर बिखरना। २ प्रकाश की किरणों का चारों ओर फैलना।
छिटकाना-क्रि० स० [हिं० छिटकना] चारों ओर फैलाना। बिखराना।
छिड़कना-क्रि० स० [हिं० छाटा + करना] द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन महीन छींटे फैलकर इधर उधर पड़ें।
छिड़कवाना-क्रि० स० [हिं० छिड़कना का प्रे०] छिड़कने का काम दूसरे से कराना।
छिड़काई-संज्ञा स्त्री० [हिं० छिड़कना] १. छिड़कने की क्रिया या भाव। छिड़काव २. छिड़कने की मजदूरी।
छिड़काव-संज्ञा पु० [हिं० छिड़कना] पानी आदि छिड़कने की क्रिया।

छिड़ना–क्रि० अ० [हिं० छेड़ना] आरंभ होना। शुरू होना। चल पड़ना।

छितराना–क्रि० अ० [सं० क्षिप्त+करण] खडों या कणों का गिरकर इधर उधर फैलना। तितर बितर होना। बिखरना। क्रि० स० १. खंडों या कणों को गिराकर इधर उधर फैलाना। बिखराना। छींटना। २. दूर दूर करना। विरल करना।

छिति:–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षिति"।

छिदना–क्रि० अ० [हिं० छेदना] १. छेद से युक्त होना। सूराखदार होना। २. घायल होना। ज़ख्मी होना। ३. चुभना।

छिदाना–क्रि० स० [हिं० छेदना] १. छेद कराना। २. चुभवाना। धँसवाना।

छिद्र–संज्ञा पु० [सं०] [वि० छिद्रित] १. छेद। सूराख। २. गड्ढा। विवर। बिल। ३. अवकाश। जगह। ४. दोष। त्रुटि। ५. नौ की संख्या।

छिद्रान्वेषण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० छिद्रान्वेषी] दोष ढूँढ़ना। खुचुर निकालना।

छिद्रान्वेषी–वि० [सं० छिद्रान्वेषिन्] [स्त्री० छिद्रान्वेषिणी] पराया दोष ढूँढ़नेवाला।

छिन*–संज्ञा पु० दे० "क्षण"।

छिनक*–क्रि० वि० [हिं० छिन+एक] एक क्षण। दम भर। थोड़ी देर।

छिनकना–क्रि० स० [हिं० छिड़कना] नाक का मल जोर से साँस बाहर करके निकालना।

छिनछवि*–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षण+छवि] बिजली।

छिनना–क्रि० अ० [हिं० छिनना] छीन लिया जाना। हरण होना।

छिनवाना–क्रि० स० [हिं० छीनना का प्रे०] छीनने का काम दूसरे से कराना।

छिनाना–क्रि० स० दे० "छिनवाना"। † क्रि० स० छीनना। हरण करना।

छिनाल–वि० स्त्री० [सं० छिन्ना+नारी] व्यभिचारिणी। कुलटा। परपुरुषगामिनी।

छिनाला–संज्ञा पु० [हिं० छिनाल] स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास। व्यभिचार।

छिन्न–वि० [सं०] जो कटकर अलग हो गया हो। खंडित।

छिन्न भिन्न–वि० [सं०] १. कटा कुटा। खंडित। टूटा फूटा। २. नष्ट-भ्रष्ट। ३. अस्त-व्यस्त। तितर बितर।

छिन्नमस्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जो महाविद्याओं में छठी हैं।

छिपकली–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिपकना] एक सरीसृप या जंतु जो दीवारों आदि पर प्रायः दिखाई पड़ता है। पल्ली। गृहगोधिका। बिस्तुइया।

छिपना–क्रि० अ० [सं० क्षिप=डालना] ओट में होना। ऐसी स्थिति में होना जहाँ से दिखाई न पड़े।

छिपाना–क्रि० स० [सं० क्षिप=डालना] [संज्ञा छिपाव] १. आवरण या ओट में करना। दृष्टि से ओझल करना। २. प्रकट न करना। गुप्त रखना।

छिपाव–संज्ञा पु० [हिं० छिपना] छिपाने का भाव। गोपन। दुराव।

छिप्र*–क्रि० वि० दे० "क्षिप्र"।

छिमा*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।

छिया–संज्ञा स्त्री० [सं० छिम] १. घृणित वस्तु। घिनौनी चीज़। २ मल। गलीज़। **मुहा०**—छिया छरद करना = छी छी करना। घृणित समझना।
वि० मैला। मलिन। घृणित।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बचिया] छोकरी। लड़की।

छिरकना*–क्रि० स० दे० "छिड़कना"।

छिरेटा–संज्ञा पु० [सं० छिलहिंड] एक प्रकार की छोटी बेल। पाताल-गारुड़ी।

छिलका–संज्ञा पु० [हिं० छाल] एक परत की खोल जो फलों आदि पर होती है।

छिलना–क्रि० अ० [हिं० छीलना] १ छिलके का अलग होना। २. ऊपरी चमड़े का कुछ भाग कटकर अलग हो जाना।

छींक–संज्ञा स्त्री० [सं० छिक्का] नाक से शब्द के साथ सहसा निकलनेवाला वायु का झोंका या स्फोट।

छींकना–क्रि० अ० [हिं० छींक] नाक से वेग के साथ वायु निकालना।

छींट–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षिप्त] १. महीन बूँद। जलकण। सीकर। २. वह कपड़ा जिस पर रंग बिरंग के बेल बूटे छपे हों।

छींटना†–क्रि० स० दे० "छितराना"।

छींटा–संज्ञा पु० [सं० क्षिप्त, प्रा० छित्त] १. द्रव पदार्थ की महीन बूँद जो ज़ोर से पड़ने से इधर उधर गिरे। जलकण। सीकर। २. हलकी वृष्टि। ३. पड़ी हुई बूँद का चिह्न। ४. छोटा दाग़। ५.

चहू की एक मात्रा। २. व्यंग्यपूर्ण उक्ति।
छी-अव्य० [अनु०] घृणा-सूचक शब्द।
मुहा० --छी छी करना = घिनाना। अरुचि या घृणा प्रकट करना।
छींका-संज्ञा पु० [सं० शिक्य] १. रस्सियों का जाल जो छत में खाने-पीने की चीज़ रखने के लिये लटकाया जाता है। सिकहर। २. जालीदार खिड़की या झरोखा। ३. बैलों के मुँह पर चढ़ाया जानेवाला रस्सियों का जाल। ४. रस्सियों का बना हुआ झूलनेवाला पुल। झूला।
छीछड़ा-संज्ञा पु० [सं० तुच्छ, प्रा० छुच्छ] मांस का तुच्छ और निकम्मा टुकड़ा।
छीछा लेदर-संज्ञा स्त्री० [हिं० छी छी] दुर्दशा। दुर्गति। खराबी।
छीज-संज्ञा स्त्री० [हिं० छीजना] घाटा। कमी।
छीजना क्रि० अ० [सं० क्षयण] क्षीण होना। घटना। कम होना।
छीति॰-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षति] १. हानि। घाटा। २. बुराई।
छीती छान-वि० [सं० क्षति + छिन्न] छिन्न भिन्न। तितर बितर।
छीन-वि० दे० "क्षीण"।
छीनना-क्रि० स० [सं० छिन्न + ना (प्रत्य०)] १. काटकर अलग करना। २. दूसरे की वस्तु जबरदस्ती ले लेना। हरण करना। ३. चक्की आदि को छेनी से खुरदुरा करना। कूटना। रेहना।
छीना झपटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० छीनना + झपटना] छीनकर किसी वस्तु को ले लेना।
छीना†-क्रि० स० दे० "छूना"।
छीप-वि० [सं० क्षिप्र] तेज। वेगवान्।
संज्ञा स्त्री० [हिं० छाप] १. छाप। चिह्न। दाग। २. सेंहुआँ नामक रोग।
छीपी-संज्ञा पु० [हिं० छाप] [स्त्री० छीपिन] कपड़े पर बेलबूटे या छींट छापनेवाला।
छीवर-संज्ञा स्त्री० [हिं० छापना] मोटी छींट।
छीमी†-संज्ञा स्त्री० [सं० शिंबी] फली।
छीर-संज्ञा पु० दे० "क्षीर"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० छोर] कपड़े का वह किनारा जहाँ लंबाई समाप्त हो। छोर।
छीलना-क्रि० अ० [हिं० छाल] १. छिलका या छाल उतारना। २. जमी हुई वस्तु को खुरचकर अलग करना।
छीलर-संज्ञा पु० [हिं० छिछला] छिछला गड्ढा। तलैया।
छुँगली*-संज्ञा स्त्री० [हिं० छँगुली] एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।
छुआना†-क्रि० स० दे० "छुलाना"।
छुआछूत-संज्ञा स्त्री० [हिं० छूना] १. अछूत को छूने की क्रिया। अस्पृश्य स्पर्श। २. स्पृश्य अस्पृश्य का विचार। छूत-छात का विचार।
छुईमुई-संज्ञा स्त्री० [हिं० छूना + मुवना] लजालु। लजावंती। लजाधुर।
छुगुनू†-संज्ञा पु० दे० "घुँघरू"।
छुच्छी-संज्ञा स्त्री० [हिं० छूछा] १ पतली पोली नली। २ नाक की कील। लौंग।
छुछु-मछली-संज्ञा स्त्री० [सं० सूक्ष्म, हिं० छूछम + मछली] अंडे से फूटा हुआ मेंढक का बच्चा जिसका रूप मछली का सा होता है।
छुट॰-अव्य० [हिं० छूटना] छोड़कर। सिवाय। अतिरिक्त।
छुटकाना॰-क्रि० स० [हिं० छूटना] १ छोड़ना। अलग करना। २. मार्ग लेना। ३. मुक्त करना। छुटकारा देना।
छुटकारा-संज्ञा पु० [हिं० छुटकाना] १ बंधन आदि से छूटने का भाव या क्रिया। मुक्ति। रिहाई। २. आपत्ति या चिंता आदि से रक्षा। निस्तार।
छुटना॰-क्रि० अ० दे० "छूटना"।
छुटपन†-संज्ञा पु०[हिं० छोटा + पन (प्रत्य० १. छोटाई। लघुता। २. बचपन
छुटाना†-क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।
छुट्टा-वि० [हिं० छूटना] [स्त्री० छुट्टी] जो बँधा न हो। २. एकाकी। अकेला
छुट्टी-संज्ञा स्त्री० [हिं० छूट] १. छुटकारा मुक्ति। रिहाई। २. काम से खा[ली] वक्त। अवकाश। फुरसत। ३. क[ाम] बंद रहने का दिन। तातील। चलने की अनुमति। जाने की आज्ञा
छुड़वाना-क्रि० स० [हिं० छोड़ना का प्रे०] छो[ड़ने का] काम दू[सरे से] कराना।
छु[illegible] [illegible]] बँधी, फँ[सी] [illegible] को प्र[illegible] [illegible] से अ[illegible] को

बरखास्त करना। ५. किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को दूर करना।
['छोड़ना' का प्रे०] छोड़ने का काम कराना।
छुत्*–संज्ञा स्त्री० [सं० छुत] भूख।
छुतिहा–वि० [हिं० छूत+हा (प्रत्य०)] १. छूतवाला। जो छूने योग्य न हो। अस्पृश्य। २. कलंकित। दूषित।
छुद्र–संज्ञा पुं० दे० "क्षुद्र"।
छुद्रावलि*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुद्रघंटिका"।
छुधा–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुधा"।
छुपना–क्रि० अ० दे० "छिपना"।
छुभित*–वि० [सं० क्षुभित] १. विचलित। चंचलचित्त। २. घबराया हुआ।
छुभिराना*–क्रि० अ० [हिं० क्षोभ] क्षुब्ध होना। चंचल होना।
छुरधार*–संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुरधार] छुरे की धार। पतली पैनी धार।
छुरा–संज्ञा पुं० [सं० क्षुर] [स्त्री० अल्पा० छुरी] १. बेंट में लगे हुए लंबे धारदार टुकड़े का एक हथियार। २. वह हथियार जिससे नाई बाल मूँड़ते हैं। उस्तरा।
छुरित–संज्ञा पुं० [सं०] १. लास्य नृत्य का एक भेद। २. बिजली की चमक।
छुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छुरा] १. चीज़ काटने या चीरने फाड़ने का एक बेंटदार छोटा हथियार। चाकू। २. आक्रमण करने का एक धारदार हथियार।
छुलाना–क्रि० स० [हिं० छूना] छूना का प्रेरणार्थक रूप। स्पर्श कराना।
छुवाना–क्रि० स० दे० "छुलाना"।
छुहना*–क्रि० अ० [हिं० छुवना] १. छू जाना। २. रँगा जाना। लिपना। क्रि० स० दे० "छूना"।
छुहारा–संज्ञा पुं० [सं० क्षुत+हार] १. एक प्रकार का खजूर। खुरमा। २. पिंडखजूर।
छूँछा–वि० [सं० तुच्छ] [स्त्री० छूँछी] १. खाली। रीता। रिक्त। जैसे—छूँछा घड़ा। २. जिसमें कुछ तत्त्व न हो। निःसार। ३. निर्धन। गरीब।
छू–संज्ञा पुं० [अनु०] मंत्र पढ़कर फूँक मारने का शब्द।
मुहा०—छू मंतर होना=चट पट दूर होना। गायब होना। जाता रहना।
छूट–संज्ञा स्त्री० [हिं० छूटना] १. छूटने का भाव। छुटकारा। मुक्ति। २. अवकाश। फुरसत। ३. बाकी रुपया छोड़ देना। छुड़ौती। ४. किसी कार्य से संबंध रखनेवाली किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव। ५. वह रुपया जो देनदार से न लिया जाय। ६. स्वतंत्रता। आजादी। ७. गाली-गलौज।
छूटना–क्रि० अ० [सं० छुट] १. बँधी, फँसी या पकड़ी हुई वस्तु का अलग होना। दूर होना।
मुहा०—शरीर छूटना=मृत्यु होना।
२. किसी बाँधने या पकड़नेवाली वस्तु का ढीला पड़ना या अलग होना। जैसे—बंधन छूटना। ३. किसी पुती या लगी हुई वस्तु का अलग या दूर होना। ४. बंधन से मुक्त होना। छुटकारा होना। ५. प्रस्थान करना। रवाना होना। ६. दूर पड़ जाना। वियुक्त होना। बिछुड़ना। ७. पीछे रह जाना। ८. दूर तक जानेवाले अस्त्र का चल पड़ना। ९. बराबर होती रहनेवाली बात का बंद होना। न रह जाना।
मुहा०—नाड़ी छूटना=नाड़ी का चलना बंद हो जाना।
१०. किसी नियम या परंपरा का भंग होना। जैसे—व्रत छूटना। ११. किसी वस्तु में से वेग के साथ निकलना। १२. रस रस कर (पानी) निकलना। १३. ऐसी वस्तु का अपनी क्रिया में तत्पर होना जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले। १४. शेष रहना। बाकी रहना। १५. किसी काम का या उसके किसी अंग का भूल से न किया जाना। १६. किसी कार्य से हटाया जाना। बरखास्त होना। १७. रोजी या जीविका का न रह जाना।
छूत–संज्ञा स्त्री० [हिं० छूना] १. छूने का भाव। संसर्ग। लगाव। २. गंदी, अशुचि या रोग-संचारक वस्तु का स्पर्श। अस्पृश्य का संसर्ग।
यौ०—छूत का रोग=वह रोग जो किसी रोगी से छू जाने से हो।
३. अशुचि वस्तु के छूने का दोष या दूषण। ४. अशुद्धि के कारण अस्पृश्यता। ऐसी अशुद्धि कि छूने से दोष लगे। ५. भूत आदि लगने का बुरा प्रभाव।
छूना–क्रि० अ० [सं० छुप] एक वस्तु

दूसरी के इतने पास पहुँचना कि दोनों एक दूसरी से सट जायँ। स्पर्श होना।
क्रि० स० १. किसी वस्तु तक पहुँचकर उसके किसी अंग को अपने किसी अंग से सटाना या लगाना। स्पर्श करना।
मुहा०—आकाश छूना = बहुत ऊँचा होना। २. हाथ बढ़ाकर उँगलियों के संसर्ग में लाना। हाथ लगाना। † ३. दान के लिये किसी वस्तु को स्पर्श करना। ४. दौड़ की बाजी में किसी को पकड़ना। उन्नति की समान श्रेणी में पहुँचना। ६. बहुत कम काम में लाना। ७. पोतना।

छेंकना–क्रि० स० [सं० छद] १.आच्छादित करना। स्थान घेरना। जगह लेना। २. रोकना। आने न देना। ३ लकीरों से घेरना। ४. काटना। मिटाना।

छेक–संज्ञा पु० [हिं० छेद] १. छेद। सूराख। २. कटाव। विभाग।

छेकानुप्रास–संज्ञा पु० [सं०] वह अनुप्रास जिसमें वर्णों का सादृश्य एक ही बार हो।

छेकापह्नुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें वास्तविक बात का अयथार्थ उक्ति से खंडन किया जाता है।

छेकोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्थांतर-गर्भित उक्ति।

छेटा†–संज्ञा स्त्री० [सं० छिद्र] बाधा।

छेड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० छेद] १. छू या खोद खोदकर तंग करने की क्रिया। २. हँसी ठठोली करके कुढ़ाने का काम। चुटकी। ३. चिढ़ानेवाली बात। ४. रगड़ा। झगड़ा।

छेड़ना–क्रि० स० [हिं० छेदना] १. खोदना खोदना। दबाना। कोंचना। २. छू या खोद खोदकर भड़काना या तंग करना। ३. किसी के विरुद्ध ऐसा कार्य्य करना जिससे वह बदला लेने के लिये तैयार हो। ४. हँसी-ठठोली करके कुढ़ाना। चुटकी लेना। ५. कोई बात या कार्य्य आरंभ करना। उठाना। ६. बजाने के लिये बाजे में हाथ लगाना। ७. नश्तर से फोड़ा चीरना।

छेड़वाना–क्रि० स० [हिं० 'छेड़ना' का प्रे०] छेड़ने का काम दूसरे से कराना।

छेत्र †–संज्ञा पु० दे० "क्षेत्र"।

छेद–संज्ञा पु० [सं०] १. छेदन। काटने का काम। २. नाश। ध्वंस। ३. छेदन करनेवाला। ४. गणित में भाजक। संज्ञा पु० [सं० छिद्र] १. सूराख। छिद्र। रंध्र। २. बिल। दरज। खोखला विवर। ३ दोष। दूषण। ऐब।

छेदक–वि० [सं०] १. छेदने या काटनेवाला। २. नाश करनेवाला। ३. विभाजक।

छेदन–संज्ञा पु० [सं०] १ काटकर अलग करने का काम। चीर-फाड़। २. नाश। ध्वंस। ३. काटने या छेदने का अस्त्र।

छेदना–क्रि० स० [सं० छेदन] १. कुछ चुभाकर किसी वस्तु को छिद्रयुक्त करना। बेधना। भेदना। २. क्षत करना। घाव करना। † ३ काटना। छिन्न करना।

छेना–संज्ञा पु० [सं० छेदन] खटाई से फाड़ा हुआ दूध जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो। फटे दूध का खोया। पनीर।

छेनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० छेना] लोहे का वह औजार जिससे पत्थर आदि काटे या नकाशे जाते हैं। टाँकी।

छेम°†–संज्ञा पु० दे० "क्षेम"।

छेमकरी°–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षेमकरी"।

छेरी–संज्ञा स्त्री० [सं० छेलिका] बकरी।

छेव–संज्ञा पु० [सं० छेद] १. जख्म। घाव।
मुहा०—छल छेव = कपट व्यवहार।
† २. आनेवाली आपत्ति। होनहार दुःख। संज्ञा स्त्री० दे० "टेव"।

छेवना°–संज्ञा स्त्री० [हिं० छेना] ताड़ी।
क्रि० स० [सं० छेदन] १. काटना। छिन्न करना। २. चिह्न लगाना।
क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. फेंकना। २. डालना। ऊपर डालना।
मुहा०—जी पर छेवना = जी पर खेलना। जान संकट में डालना।

छेह°–संज्ञा पु० [हिं० छेव] १. दे० "छेव"। २. खंडन। नाश। ३. परंपरा भंग।
वि० १. टुकड़े टुकड़े किया हुआ। २ न्यून। कम।
संज्ञा स्त्री० दे० "खेह"।

छै†–वि० दे० "छः"।
°संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय"।

छैया†°–संज्ञा पुं० [हिं० छौना] बच्चा।

छैल –संज्ञा पु० दे० "छैला"।

छैल चिकनियाँ–संज्ञा पु० [देश०] शौकीन। बना ठना आदमी।

छैल छबीला–संज्ञा पु० [देश०] १. सजा-

यज्ञा और युवा पुरुष। बाँका। २. छरीला नाम का पौधा।

छैला—संज्ञा पुं० [सं० छवि+इल्ल (प्रत्य०)] सुंदर और बना ठना आदमी। सजीला। यारा। शौकीन।

छोंडा—संज्ञा पुं० [सं० क्षे] दही मथने की मथानी।

छोकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छोकड़ी] लड़का। बालक। लौंडा। (बुरे भाव से)

छोकड़ापन—संज्ञा पुं० [हिं० छोकड़ा+पन (प्रत्य०)] १. लड़कपन। २. छिछोरापन।

छोकरा†—संज्ञा पुं० दे० "छोकड़ा"।

छोटा—वि० [सं० क्षुद्र] [स्त्री० छोटी] १. जो बड़ाई या विस्तार में कम हो। डील-डौल में कम।

यौ०—छोटा मोटा=साधारण।

२. जो अवस्था में कम हो। थोड़ी उम्र का। ३. जो पद या प्रतिष्ठा में कम हो। ४. तुच्छ। सामान्य। ५ थोछा। क्षुद्र।

छोटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटा+ई (प्रत्य०)] १. छोटापन। लघुता। २. नीचता।

छोटापन—संज्ञा पु० [हिं० छोटा+पन (प्रत्य०)] १. छोटा होने का भाव। छोटाई। लघुता। २. बचपन। लड़कपन।

छोटी इलायची—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी+इलायची] सफ़ेद या गुजराती इलायची।

छोटी हाज़िरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी+हाज़िरी] यूरोपियनों का प्रातःकाल का कलेवा।

छोड़ना—क्रि० स० [सं० छोरण] १. पकड़ी हुई वस्तु को पकड़ से अलग करना। २. किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना। ३. बंधन आदि से मुक्त करना। छुटकारा देना। ४. अपराध क्षमा करना। मुआफ करना। ५. न ग्रहण करना। न लेना। ६. प्राप्य धन न लेना। देना। मुआफ करना। ७. परित्याग करना। पास न रखना। ८ पड़ा रहने देना। न उठाना या लेना। ९. प्रस्थान कराना। चलाना।

मुहा०—किसी पर किसी को छोड़ना=किसी को पकड़ने या चोट पहुँचाने के लिये उसके पीछे किसी को लगा देना।

१०. चलाना या फेंकना। क्षेपण करना। ११. किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान से आगे बढ़ जाना। १२. हाथ में लिए हुए कार्य्य को त्याग देना। १३. किसी रोग या व्याधि का दूर होना। १४. वेग के साथ बाहर निकालना। १५. ऐसी वस्तु को चलाना जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले। १६. बचाना। शेष रखना।

मुहा०—छोड़कर=अतिरिक्त। सिवाय।

१७ किसी कार्य को या उसके किसी अंग को भूल से न करना। १८. ऊपर से गिराना।

छोड़वाना—क्रि० स० [हिं० छोड़ना का प्रे०] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छोड़ाना—क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।

छोनिप*—संज्ञा पु० दे० "क्षोणिप"।

छोनी*—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणी"।

छोप—संज्ञा पु० [सं० क्षेप] १. गाढ़ी या गीली वस्तु की मोटी तह। मोटा लेप। २. लेप चढ़ाने का कार्य। ३ आघात। वार। प्रहार। ४. छिपाव। बचाव।

छोपना—क्रि० स० [हिं० छुपाना] १. गीली वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर फैलाना। गाढ़ा लेप करना। २. गीली मिट्टी आदि का लौंदा ऊपर रखना या फैलाना। गिलावा लगाना। थोपना। ३. दबाकर चढ़ बैठना। धर दबाना। ग्रसना। † ४. आच्छादित करना। ढकना। छेंकना। † ५. किसी बुरी बात को छिपाना। परदा डालना। † ६. वार या आघात से बचाना।

छोभ—संज्ञा पुं० दे० "क्षोभ"।

छोभना—क्रि० अ० [हिं० छोभ+ना (प्रत्य०)] करुणा, शंका, लोभ आदि के कारण चित्त का चंचल होना। क्षुब्ध होना।

छोभित*—वि० दे० "क्षोभित"।

छोम*—वि० [सं० क्षोम] १. चिकना। २. कोमल।

छोर—संज्ञा पुं० [हिं० छोड़ना] १. आयत विस्तार की सीमा। चौड़ाई का हाशिया।

यौ०—ओर छोर=आदि अंत।

२. विस्तार की सीमा। हद। ३. नोक।

छोरना†—क्रि० स० [सं० छोरण] १. बंधन आदि अलग करना। खोलना। २. बंधन से मुक्त करना। ३. हरण करना। छीनना।

छोरा†—संज्ञा पु० [सं० शावक] [स्त्री० छोरी] छोकड़ा। लड़का।

छोरा छोरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोरना] छीन

खसोट। छीना छीनी।
छोलना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ छाल] छीलना।
छोह–संज्ञा पुं॰ [हिं॰ क्षोभ] १. ममता। प्रेम। स्नेह। २. दया। अनुग्रह। कृपा।
छोहना–क्रि॰ अ॰ [हिं॰ छोह+ना (प्रत्य॰)] १. विचलित, चंचल या क्षुब्ध होना। २. प्रेम या दया करना।
छोहरा†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "छोरा"।
छोहाना*–क्रि॰ अ॰ [हिं॰ छोह] १. मुहब्बत करना। प्रेम दिखाना। २. अनुग्रह करना। दया करना।
छोहिनी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "अक्षौहिणी"।
छोही†–वि॰ [हिं॰ छोह] ममता रखनेवाला। प्रेमी। स्नेही। अनुरागी।
छौंक–संज्ञा स्त्री॰ [अनु॰] बघार। तड़का।
छौंकना–क्रि॰ स॰ [अनु॰ छायँ छायँ] १. बासने के लिये हींग, मिरचा आदि से मिले हुए कड़कड़ाते घी को दाल आदि में डालना। बघारना। २ मसाले मिले हुए कड़कड़ाते घी में कच्ची तरकारी आदि भूनने के लिये डालना। तड़का देना।
छौकना†–क्रि॰ अ॰ [सं॰ चतुष्क] जानवर का कूदना या झपटना।
छौना–संज्ञा पुं॰ [सं॰ शावक] [स्त्री॰ छौनी] पशु का बच्चा। जैसे–मृग-छौना।
छौलदारी–संज्ञा स्त्री॰ [देश॰] एक प्रकार का छोटा खेमा। छोटा तंबू।
छ्वाना*–क्रि॰ स॰ दे॰ "छुआना"।

ज

ज–हिंदी वर्णमाला का एक व्यंजन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है।
जंग–संज्ञा स्त्री॰ [फा॰] [वि॰ जंगी] लड़ाई। युद्ध। समर।
ज़ंग–संज्ञा पुं॰ [फा॰] लोहे का मुरचा।
जंगम–वि॰ [सं॰] १. चलने-फिरनेवाला। चर। २. जो एक स्थल से दूसरे स्थल पर लाया जा सके। जैसे—जंगम संपत्ति।
जंगल–संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ जंगली] १. जल-शून्य भूमि। रेगिस्तान। २. वन।
जँगला–संज्ञा पुं॰ [पुर्त॰ जँगिला] १. खिड़की, दरवाज़े, बरामदे आदि में लगी हुई लोहे के छड़ों की पंक्ति। कटहरा। बाड़। २. चौखट या खिड़की जिसमें छड़ लगी हो।
जंगली–वि॰ [हिं॰ जंगल] १. जंगल में मिलने या होनेवाला। जंगल संबंधी। २. बिना बोए या लगाए उगनेवाला पौधा। ३. जंगल में रहनेवाला। वनैला।
जंगार–संज्ञा पुं॰ [फा॰] [वि॰ जंगारी] १. तांबे का कसाव। तूतिया। २. एक रंग जो तांबे का कसाव है।
जंगारी–वि॰ [फा॰ जंगार] नीले रंग का।
जगाल–संज्ञा पुं॰ दे॰ "जंगार"।
जंगी–वि॰ [फा॰] १. लड़ाई से संबंध रखनेवाला। जैसे–जंगी जहाज़। २. फ़ौजी। सैनिक। सेना संबंधी। ३. बड़ा। बहुत बड़ा। दीर्घकाय। ४. वीर। लड़ाका
जंघा–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ जंघ] १. पिंडली २. जाँघ। रान। ऊरु।
जँचना–क्रि॰ अ॰ [हिं॰ जाँचना] १. जाँच जाना। देखा-भाला जाना। २. जाँच पूरा उतरना। उचित या अच्छा ठहरना ३. जान पड़ना। प्रतीत होना।
जँचा–वि॰ [हिं॰ जँचना] १. जाँचा हुआ सुपरीक्षित। २. अव्यर्थ। अचूक
जंजल †–वि॰ [सं॰ जर्जर] पुराना और कमज़ोर। बेकाम।
जंजाल–संज्ञा पुं॰ [हिं॰ जग+जाल] १ प्रपंच। झंझट। बखेड़ा। २. बंधन फँसाव। उलझन। ३. पानी का भँवर ४. एक प्रकार की बड़ी पलीतेदार बंदूक ५. बड़े मुँह की तोप। ६. बड़ा जाल।
जंजाली–वि॰ [हिं॰ जंजाल] झगड़ालू बखेड़िया। फ़सादी।
जंजीर–संज्ञा स्त्री॰ [फा॰] [वि॰ ज़ंजीरी १. साँकल। सिकड़ी। कड़ियों की लड़ी २. बेड़ी। ३. किवाड़ की कुंडी। सिकड़ी
जंतर–संज्ञा पुं॰ [सं॰ यंत्र] १. कल औज़ार। यंत्र। २. तांत्रिक यंत्र। ३ चौकोर या लंबा तावीज़ जिसमें यंत्र य

कोई टोटके की वस्तु रहती है। ४. गले में पहनने का एक गहना। कठुला।
तंतर-मंतर—संज्ञा पुं० [हिं० यंत्र+मंत्र] १. यंत्र मंत्र। टोना टोटका। जादू-टोना। २. मानमंदिर जहाँ ज्योतिषी नक्षत्रों की गति आदि का निरीक्षण करते हैं। आकाश-लोचन। वेधशाला।
जंतरी—संज्ञा स्त्री० [सं० यंत्र] १. छोटा जंता जिसमें सोनार तार बढ़ाते हैं। २. पत्रा। तिथि-पत्र। ३. जादूगर। भानमती। ४. बाजा बजानेवाला।
जंतसार—संज्ञा स्त्री० [सं० यंत्रशाला] जाँता गाड़ने का स्थान।
जंता—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] [स्त्री० जंती, जंतरी] १ यंत्र। कल। जैसे—जंताघर। २. तार खींचने का औज़ार।
वि० [सं० यंतृ=यंता] दंड देनेवाला। शासन करनेवाला।
जंती—संज्ञा स्त्री० [हिं० जंता] छोटा जंता। जंतरी।
† संज्ञा स्त्री० [हिं० जनना] माता। माँ।
जंतु—संज्ञा पुं० [सं०] जन्म लेनेवाला जीव। प्राणी। जानवर।
यौ०—जीवजंतु=प्राणी। जानवर।
जंतुघ्न—वि० [सं०] जंतुनाशक। कृमिघ्न।
जंत्र—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] १. कल। औज़ार। २. तांत्रिक यंत्र। ३. ताला।
जंत्रनाः—क्रि० स० [हिं० जंत्र] ताले के भीतर बंद करना। जकड़बंद करना।
संज्ञा स्त्री० दे० "यंत्रणा"।
जंत्र मंत्र—संज्ञा पुं० दे० "तंतर-मंतर"।
जंत्रित—वि० [सं० यंत्रित] १. दे० "यंत्रित"। २. बंद। बँधा हुआ।
जंत्री—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] बाजा।
जंद—संज्ञा पुं० [फा० ज़द] १. पारसियों का अत्यंत प्राचीन धर्मग्रंथ। २. वह भाषा जिसमें पारसियों का उक्त धर्मग्रंथ है।
जंदरा—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] १. यंत्र। कल। २. जाँता। † ३. ताला।
जंपनाः—क्रि० स० [सं० जल्पन] बोलना। कहना।
जंबीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. जँबीरी नीबू। २ मरुवा। ३. वन-तुलसी।
जँबीरी नीबू—संज्ञा पुं० [सं० जंबीर] एक प्रकार का खट्टा नीबू।
जंबु—संज्ञा पुं० [सं०] जामुन। (फल)
जंबुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा जामुन। फरेंदा। २. केवड़ा। ३. शृगाल। गीदड़।
जंबुद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक जिसमें हिंदुस्तान है।
जंबुमत्—संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्"।
जंबू—संज्ञा पुं० [सं०] १. जामुन। २. काश्मीर राज्य का एक प्रसिद्ध नगर।
जंबूर—संज्ञा पुं० [फा०] १. जंबूरा। जमुरका। २. तोप की चरख। ३. पुरानी छोटी तोपें जो प्रायः ऊँटों पर लादी जाती थी। जंबूरक।
जंबूरक—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. छोटी तोप। २. तोप की चरख। ३. भँवरकली।
जंबूरची—संज्ञा पुं० [फा०] १. तोपची। तुपक्ची। २. बर्कंदाज। सिपाही।
जंबूरा—संज्ञा पुं० [फा० जंबूर+भौंरा] १. चरख जिस पर तोप चढ़ाई जाती है। २. भँवर कड़ी। भँवर कली। ३. सुनारों का बारीक काम करने का एक औज़ार।
जंभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. दाढ़। चौभड़। २ जबड़ा। ३. एक दैत्य। ४. जँबीरी नीबू। ५. जँभाई।
जँभाई—संज्ञा स्त्री० [सं० जृंभा] मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया जो निद्रा या आलस्य मालूम पड़ने आदि के कारण होती है। उबासी।
जँभाना—क्रि० अ० [सं० जृंभण] जँभाई लेना।
जंभारि—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. अग्नि। ३. वज्र। ४. विष्णु।
ज—संज्ञा पुं० [सं०] १. मृत्युंजय। २. जन्म। ३. पिता। ४. विष्णु। ५. छंद शास्त्रानुसार एक गण जिसके आदि और अंत के वर्ण लघु और मध्य का गुरु होता है (।ऽ।)।
वि० १. वेगवान्। तेज़। २ जीतनेवाला।
प्रत्य० उत्पन्न। जात। जैसे—देशज।
जई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जौ] १. जौ की जाति का एक अन्न। २. जौ का छोटा अंकुर जो मंगल-द्रव्य के रूप में ब्राह्मण, पुरोहित भेंट करते हैं। ३. अंकुर। ४. उन फलों की बतिया जिनमें बतिया के साथ फूल भी रहता है। जैसे—कुम्हड़े की जई।
ः वि० दे० "जयी"।

जईफ–वि० [अ०] बुड्ढा । वृद्ध ।
जईफी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बुढ़ापा ।
जकंद॰–संज्ञा स्त्री० [फा० जगंद] छलाँग । चौकड़ी । उछाल ।
जकंदना †–क्रि० अ० [हिं० जकंद] १. कूदना । उछलना । २. टूट पड़ना ।
जक–संज्ञा पु० [सं० यक्ष] १. धन-रक्षक भूत प्रेत । यक्ष । २. कंजूस आदमी ।
संज्ञा स्त्री० [हिं० झक] [वि० झक्की] १. जिद् । हठ । अड़ । २. धुन । रट ।
जक–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हार । पराजय । २. हानि । घाटा । ३. पराभव । लज्जा ।
जकड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० जकड़ना] जकड़ने का भाव । कसकर बाँधना ।
मुहा०—जकड़बंद करना = १. खूब कसकर बाँधना । २. पूरी तरह अपने अधिकार में करना ।
जकड़ना–क्रि० स० [सं० युक्त + करण] कसकर बाँधना । कड़ा बाँधना ।
†क्रि० अ० तनाव आदि के कारण अंगों का हिलने डुलने के योग्य न रह जाना ।
जकना†॰–क्रि० अ० [हिं० जक या चक] १. भौंचक्का होना । चकपकाना । २. झक में बोलना ।
जकात–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दान । खैरात । २. कर । महसूल ।
जकित†॰–वि० [हिं० चकित] चकित । विस्मित । स्तंभित ।
जखम–संज्ञा पु० [फा० जख्म] १. क्षत । घाव । २. मानसिक दुःख का आघात ।
मुहा०—जखम ताजा या हरा हो आना = बीते हुए कष्ट का फिर लौट या याद आना ।
जखमी–वि० [फा० जख्मी] जिसे जखम लगा हो । घायल ।
जखीरा–संज्ञा पु० [अ०] १. वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों का संग्रह हो । कोष । खजाना । २. संग्रह । ढेर । समूह । ३. वह स्थान जहाँ तरह तरह के पौधे और बीज बिकते हों ।
जख्म–संज्ञा पुं० दे० "जखम" ।
जग–संज्ञा पु० [सं० जगत्] १. संसार । विश्व । दुनिया । २. संसार के लोग । जन-समुदाय । लोक ।
†॰ संज्ञा पु० दे० "यज्ञ" ।
जगजगा†–वि० [हिं० जगजगाना] चमकीला । प्रकाशित । जो जगमगाता हो ।
जगजगाना†–क्रि० अ० [अनु०] चमकना । जगमगाना ।
जगजोनि–संज्ञा पु० दे० "जगद्योनि" ।
जगड्वाल–संज्ञा पु० [सं०] आडंबर । व्यर्थ का आयोजन ।
जगण–संज्ञा पु० [सं०] पिंगल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि और अंत के लघु होते हैं । जैसे—महेश ।
जगत्–संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु । २. महादेव । ३. जंगम । ४ विश्व । संसार ।
जगत–संज्ञा स्त्री० [सं० जगति = घर की कुरसी] कूएँ के चारों ओर बना हुआ चबूतरा ।
संज्ञा पुं० दे० "जगत्" ।
जगतसेठ–संज्ञा पु० [सं० जगत् + श्रेष्ठ] बहुत बड़ा धनी या महाजन ।
जगती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संसार । भुवन । २. पृथ्वी । ३. एक वैदिक छंद ।
जगदंबा, जगदंबिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा ।
जगदाधार–संज्ञा पु० [सं०] ईश्वर ।
जगदीश–संज्ञा पु० [सं०] १. परमेश्वर । २. विष्णु । ३. जगन्नाथ ।
जगदीश्वर–संज्ञा पु० [सं०] परमेश्वर ।
जगदीश्वरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवती ।
जगद्गुरु–संज्ञा पु० [सं०] १. परमेश्वर । २. शिव । ३. नारद । ४. अत्यंत पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष ।
जगद्धाता–संज्ञा पु० [सं० जगद्धातृ] [स्त्री० जगद्धात्री] १. ब्रह्मा । २. विष्णु । ३ महादेव ।
जगद्धात्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा की एक मूर्त्ति । २. सरस्वती ।
जगद्योनि–संज्ञा पु० [सं०] १. शिव । २ विष्णु । ३. ब्रह्मा । ४. परमेश्वर । ५.पृथ्वी
जगद्वंद्य–वि० [सं०] जिसकी वंदना सारा संसार करे । संसार में पूज्य या श्रेष्ठ ।
जगना–क्रि० अ० [सं० जागरण] १. नींद से उठना । निद्रा त्याग करना । २. सचेत होना । सावधान होना । ३. देवी देवता या भूत-प्रेत आदि का अधिक प्रभाव दिखाना । ४ उत्तेजित होना । उमड़ना या उभड़ना । ५. (आग का) जलना । दहकना । ६. जगमगाना । चमकना ।
जगन्नाथ–संज्ञा पु० [सं०] १. ईश्वर । २ विष्णु । ३. विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्त्ति

जो उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में है।
जगन्नियंता–संज्ञा पुं० [सं० जगन्नियन्तृ] परमात्मा। ईश्वर।
जगन्माता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
जगन्मोहिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. महामाया।
जगवंद–वि० दे० "जगद्वंद्य"।
जगमग, जगमगा–वि० [अनु०] १. प्रकाशित। जिस पर प्रकाश पड़ता हो। २. चमकीला। चमकदार।
जगमगाना–क्रि० अ० [अनु०] खूब चमकना। झलकना। दमकना।
जगमगाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० जगमग] जगमगाने का भाव। चमक।
जगर मगर–वि० दे० "जगमग"।
जगवाना–क्रि० स० [हिं० जगना] जगाने का काम दूसरे से कराना।
जगह–संज्ञा स्त्री० [फा० जायगाह] १. वह अवकाश जिसमें कोई चीज रह सके। स्थान। स्थल। २ मौका। स्थल। अवसर। ३ पद। ओहदा। नौकरी।
जगात†–संज्ञा पुं० [अ० जकात] १. दान। खैरात। २. महसूल। कर।
जगाती†–संज्ञा पुं० [हिं० जगात] १.वह जो कर वसूल करे। २. कर उगहने का काम।
जगाना–क्रि० स० [हिं० जागना] १ 'जागने' या 'जगने' का प्रेरणार्थक रूप। नींद त्यागने के लिये प्रेरणा करना। २. चेत में लाना। होश दिलाना। बोध कराना। †३. फिर से ठीक स्थिति में लाना। †४. आग को तेज करना। सुलगाना। †५. यंत्र-मंत्र आदि का साधन करना। जैसे—*मंत्र जगाना।*
जगार†–संज्ञा स्त्री० [हिं० जागना] जागरण। सब का जाग उठना।
जगीला†–वि० [हिं० जागना] जागने के कारण अलसाया हुआ। उनींदा।
जघन–संज्ञा पुं० [सं०] १. कटि के नीचे आगे का भाग। पेड़ू। २. नितंब। चूतड़।
जघनचपला–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।
जघन्य–वि [सं०] १. अंतिम। चरम। २. गर्हित। त्याज्य। अत्यंत बुरा। ३. नीच। निकृष्ट।
संज्ञा पुं० १. शूद्र। २. नीच जाति।

जचना–क्रि० अ० दे० "जँचना"।
जच्चा–संज्ञा स्त्री० [फा० जच्च.] प्रसूता स्त्री। वह स्त्री जिसे हाल में बच्चा हुआ हो।
यौ०—जच्चाखाना = सूतिकागृह। सौरी।
जच्छ†–संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।
जजमान–संज्ञा पुं० दे० "यजमान"।
जज़िया–संज्ञा पुं० [अ०] १. दंड। २. एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य-काल में अन्य धर्मवालों पर लगता था।
जज़ीरा–संज्ञा पुं० [फा०] टापू। द्वीप।
जटना–क्रि० स० [हिं० जाट] धोखा देकर कुछ लेना। ठगना।
क्रि० स० [सं० जटन] जड़ना।
जटल–संज्ञा स्त्री० [सं० जटिल] व्यर्थ और झूठ बात। गप्प। बकवास।
जटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक में उलझे हुए सिर के बहुत से बड़े बड़े बाल, जैसे साधुओं के होते हैं। २. जड़ के पतले पतले सूत। झकरा। ३. एक साथ बहुत से रेशे आदि। ४. शाखा। ५. जटामासी। ६. जूट। पाट। ७. कौंछ। केवाँच। ८. वेदपाठ का एक भेद।
जटाजूट–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत से लंबे बालों का समूह। २. शिव की जटा।
जटाधर–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
जटाधारी–वि० [सं०] जो जटा रखे हो। संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. मरसे की जाति का एक पौधा। मुर्गकेश।
जटाना–क्रि० स० [हिं० जटना] जटने का काम दूसरे से कराना।
क्रि० अ० ठगा जाना।
जटामासी–संज्ञा स्त्री० [सं० जटामांसी] एक सुगंधित पदार्थ जो एक वनस्पति की जड़ है। बालछड़। बालूचर।
जटायु–संज्ञा पुं० [सं०] १. रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध। २. गुग्गुल।
जटित–वि० [सं०] जड़ा हुआ।
जटिल–वि० [सं०] १. जटावाला। जटाधारी। २. अत्यंत कठिन। दुरूह। दुर्बोध। ३. क्रूर। दुष्ट।
जठर–संज्ञा पुं० [सं०] १. पेट। कुक्षि। २. एक उदर रोग। ३. शरीर।
वि० १. वृद्ध। बुड्ढा। २. कठिन।
जठराग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है।

जड़-वि० [सं०] १. जिसमें चेतनता न हो। अचेतन। २. चेष्टाहीन। स्तब्ध। ३. नासमझ। मूर्ख। ४. ठिठुरा हुआ। ५. शीतल। ठंढा। ६. गूँगा। मूक। ७. बहरा। ८. जिसके मन में मोह हो।
संज्ञा स्त्री० [सं० जटा] १. वृक्षों और पौधों का वह भाग जो ज़मीन के अंदर दबा रहता है और जिसके द्वारा उन्हें जल और आहार पहुँचता है। मूल। सोर। २. नींव। बुनियाद।
मुहा०—जड़ उखाड़ना या खोदना = १. ऐसा नष्ट करना जिसमें फिर अपनी पूर्व स्थिति तक न पहुँच सके। २. बुराई करना। अहित करना। जड़ जमना = दृढ़ या स्थायी होना। जड़ पकड़ना = जमना। दृढ़ होना।
३. हेतु। कारण। सबब। ४ आधार।

जड़ता-संज्ञा स्त्री० [सं० जड़ का भाव] १. अचेतनता। २. मूर्खता। बेवकूफ़ी। ३. स्तब्धता। चेष्टा न करने का भाव। साहित्य में एक संचारी भाव।

जड़त्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. चेतनता का विपरीत भाव। अचेतन। स्वयं हिल डोल या किसी प्रकार की चेष्टा न कर सकने का भाव। २. अज्ञता। मूर्खता।

जड़ना-क्रि० स० [सं० जटन] १. एक चीज़ को दूसरी चीज़ में बैठाना। पच्ची करना। २. एक चीज को दूसरी चीज में ठोंककर बैठाना। जैसे—नाल जड़ना। ३. प्रहार करना। ४. चुगली खाना।

जड़भरत-संज्ञा पुं० [सं०] अंगिरस गोत्री एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे।

जड़वाना-क्रि० स० [हिं० जड़ना] जड़ने का काम दूसरे से कराना।

जड़हन-संज्ञा पुं० [हिं०जड़ + हनन = गाड़ना] वह धान जिसके पौधे एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह बैठाए जाते हैं। शालि।

जड़ाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० जड़ना] १. जड़ने का काम या भाव। २. जड़ने की मजदूरी।

जड़ाऊ-वि० [हिं० जड़ना] जिस पर नग या रत्न आदि जड़े हों।

जड़ाना-क्रि० स० दे० "जड़वाना"।
‡ क्रि० अ० [हिं० जाड़ा] सरदी की बाधा होना। शीत लगना।

जड़ाव-संज्ञा पुं० [हिं० जड़ना] १. जड़ने का काम या भाव। २. जड़ाऊ काम।

जड़ावर-संज्ञा पुं० [हिं० जाड़ा] जाड़े में पहनने के कपड़े। गरम कपड़े।

जड़ित:-वि० [सं० जटित] १. जड़ा हुआ। २. जिसमें नग आदि जड़े हों।

जड़िया-संज्ञा पुं० [हिं० जड़ना] नगों के जड़ने का काम करनेवाला। कुंदनसाज़।

जड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० जड़] वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम में लाई जाय। बिरई।
यौ०—जड़ी-बूटी = जंगली ओषधि।

जड़ुआ-वि० दे० "जड़ाऊ"।

जड़ैया‡-संज्ञा स्त्री० [हिं० जाड़ा + ऐया (प्रत्य०)] जूड़ी का बुख़ार।

जत‡:-वि० [सं० यत] जितना। जिस मात्रा का।

जतन:‡-संज्ञा पुं० दे० "यत्न"।

जतनी-संज्ञा पुं० [सं० यत्न] १. यत्न करनेवाला। २. चतुर। चालाक।

जतलाना-क्रि० स० दे० "जताना"।

जताना-क्रि० स० [हिं० जानना] १. ज्ञात कराना। बतलाना। २. पहले से सूचना देना। आगाह करना।

जती-संज्ञा पुं० दे० "यती"।

जतु-संज्ञा पुं० [सं०] १. वृक्ष का निर्यास। गोंद। २. लाख। लाह। ३. शिलाजीत।

जतुक-संज्ञा पुं० [सं०] १. हींग। २. लाख। लाह। ३. शरीर के चमड़े पर का दाग़ जो जन्म से ही होता है। लच्छन।

जतुका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पहाड़ी नामक लता। २. चमगादड़।

जतुगृह-संज्ञा पुं० [सं०] घास फूस आदि का बना हुआ घर। कुटी।

जतेक‡:-क्रि० वि० [हिं० जितना + एक] जितना। जिस मात्रा का।

जत्था-संज्ञा पुं० [सं० यूथ] १. बहुत से जीवों का समूह। झुंड। गरोह। २. वर्ग। फ़िरका।

जथा:-क्रि० वि० दे० "यथा"।
संज्ञा पुं० दे० "जत्था"।
संज्ञा स्त्री० [सं० गथ] पूँजी। धन।

जदा-क्रि० वि० [सं० यदा] जब। जब कभी।
अव्य० [सं० यदि] यदि। अगर।

जदपि-क्रि० वि० दे० "यद्यपि"।

जदवार—संज्ञा स्त्री० [अ०] निर्विषी ।
जदुपति:—संज्ञा पु० दे० "यदुपति" ।
जद्द† —वि० [अ० ज्याद:] ज्यादा । वि० प्रचंड । प्रबल ।
जद्यपि†—क्रि० वि० दे० "यद्यपि" ।
जन—संज्ञा पु० [सं०] १ लोक । लोग । २. प्रजा । ३. गँवार । देहाती । ४ अनुयायी । अनुचर । दास । ५. समूह । समुदाय । ६. भवन । ७. मजदूरी । ८. सात लोकों में से पाँचवाँ लोक ।
जनक—संज्ञा पु० [सं०] १. जन्मदाता । उत्पादक । २. पिता । बाप । ३. मिथिला के प्राचीन राजवंश की उपाधि । ४. सीता के पिता ।
जनकनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता ।
जनकपुर—संज्ञा पु० [सं०] मिथिला की प्राचीन राजधानी ।
जनकौर—संज्ञा पुं० [सं० जनक+पुर] १. जनकपुर । २ जनक राजा के भाई-बंधु ।
जनखा—वि० [फा० जनक:] १. जिसके हाव भाव आदि औरतों के से हों । २. हिंजड़ा । नपुंसक ।
जनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जनन का भाव । २. जन-समूह । सर्वसाधारण ।
जनन—संज्ञा पु० [सं०] १. उत्पत्ति । उद्भव । २. जन्म । ३. आविर्भाव । ४. तंत्र के अनुसार मंत्रों के दस संस्कारों में से पहला । ५. यज्ञ आदि में दीक्षित व्यक्ति का एक संस्कार । ६ वंश । कुल । ७. पिता । ८ परमेश्वर ।
जनना—क्रि० स० [सं० जनन] १. जन्म देना । पैदा करना । २. ब्याना ।
जननि:—संज्ञा स्त्री० दे० "जननी" ।
जननी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पन्न करनेवाली । २. माता । माँ । ३. कुटकी । ४. अलता । ५. दया । कृपा । ६. जनी नाम का गंध-द्रव्य ।
जननेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] भग । योनि ।
जनपद—संज्ञा पु० [सं०] १. आबाद देश । २. बस्ती ।
जनप्रिय—वि० [सं०] सबसे प्रेम रखनेवाला । सर्व-प्रिय ।
जनम—संज्ञा पु० दे० "जन्म" ।
जनमघूँटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० जनम+घूँटी] वह घूँटी जो बच्चों को जन्मते समय से दो तीन वर्ष तक दी जाती है ।
मुहा०—(किसी बात का) जनमघूँटी में पड़ना=जन्म से ही (किसी बात की) आदत पड़ना ।
जनमना—क्रि० अ० [सं० जन्म] पैदा होना । जन्म लेना ।
जनमसँघाती†:—संज्ञा पु० [हिं० जन्म+सँघाती] १. वह जिसका साथ जन्म से ही हो । २. वह जिसका साथ जन्म भर रहे ।
जनमाना—क्रि० स० [हिं० जनम] जनमने का काम कराना । प्रसव कराना ।
जनमेजय—संज्ञा पु० दे० "जन्मेजय" ।
जनयिता—संज्ञा पु० [सं० जनयितृ] पिता ।
जनयित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] माता ।
जनरव—संज्ञा पु० [सं०] १. किंवदंती । अफ़वाह । २. लोकनिंदा । बदनामी । ३. कोलाहल । शोर ।
जनलोक—संज्ञा पु० [सं०] सात लोकों में से एक ।
जनवाई—संज्ञा स्त्री० दे० "जनाई" ।
जनवाना—क्रि० स० [हिं० जनना] प्रसव कराना । लड़का पैदा कराना ।
† क्रि० स० [हिं० जानना] समाचार दिलवाना । सूचित कराना ।
जनवास—संज्ञा पु० [सं० जन+वास] १. सर्वसाधारण के ठहरने या टिकने का स्थान । २. बरातियों के ठहरने का स्थान । ३. सभा । समाज ।
जनवासा—संज्ञा पु० दे० "जनवास" ।
जनश्रुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अफ़वाह । किंवदंती ।
जनसंख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] बसनेवाले मनुष्यों की गिनती या तादाद । आबादी ।
जनहरण—संज्ञा पु० [सं०] एक दंडक वृत्त ।
जनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० जनना] १. जनानेवाली । दाई । २. जनाने की मजदूरी ।
जनाउ:†—संज्ञा पु० दे० "जनाव" ।
जनाज़ा—संज्ञा पु० [अ०] १. शव । लाश । २ अरथी या वह संदूक जिसमें लाश को रखकर गाड़ने, जलाने आदि ले जाते हैं ।
जनानखाना—संज्ञा पु० [फा०] स्त्रियों के रहने का स्थान । अंतःपुर ।
जनाना—क्रि० स० दे० "जताना" ।
क्रि० स० [हिं० जनना] उत्पन्न कराना । जनन का काम कराना ।

जनाना-वि० [फा०] [स्त्री० जनानी] १. स्त्रियों का। स्त्री संबंधी। २ हीजड़ा। ३. निर्बल। डरपोक।
संज्ञा पु० १. जनखा। मेहरा। २. अंतःपुर। जनानखाना। ३. पत्नी। जोरू।

जनानापन-संज्ञा पु० [फा० जनाना + पन (प्रत्य०)] मेहरापन। स्त्रीत्व।

जनाब-संज्ञा पु० [अ०] बड़ों के लिये आदरसूचक शब्द। महाशय।

जनार्दन-संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

जनाव†-संज्ञा पु० [हिं० जनाना] जनाने की क्रिया या भाव। सूचना। इत्तला।

जनि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। २. नारी। स्त्री। ३. माता। ४. जनी नामक गंधद्रव्य। ५. भार्य्या। पत्नी। ६. जन्मभूमि।
*† अव्य० मत। नहीं। न।

जनित-वि० [सं०] उत्पन्न। जन्मा हुआ।

जनिता-संज्ञा पु० [सं० जनितृ] [स्त्री० जनित्री] १. उत्पन्न करनेवाला। २. पिता।

जनियाँ*-संज्ञा स्त्री० [फा० जान] प्रियतमा। प्रिया। प्रेयसी।

जनी-संज्ञा स्त्री० [सं० जन] १. दासी। अनुचरी। २. स्त्री। ३. माता। ४. कन्या। पुत्री। ५. एक गंध-द्रव्य।
वि० स्त्री० उत्पन्न या पैदा की हुई।

जनु-क्रि० वि० [हिं० जानना] मानो। (उत्प्रेक्षावाचक)

जनेऊ†-संज्ञा पु० [सं० यज्ञ] १. यज्ञोपवीत। ब्रह्मसूत्र। २. यज्ञोपवीत संस्कार।

जनेत-संज्ञा स्त्री० [सं० जन + एत (प्रत्य०)] बरयात्रा। बरात।

जनेव-संज्ञा पु० दे० "जनेऊ"।

जनैया-वि० [हिं० जनना + ऐया (प्रत्य०)] जाननेवाला। जानकार।

जनौं†-क्रि० वि० [हिं० जानना] मानो। गोया।

जन्म-संज्ञा पु० [सं०] १. गर्भ में से निकलकर जीवन धारण करना। उत्पत्ति। पैदाइश।
मुहा०—जन्म लेना = पैदा होना। २. अस्तित्व में आना। आविर्भाव। ३. जीवन। जिंदगी।
मुहा०—जन्म हारना = १. व्यर्थ जन्म खोना। २ दूसरे का दास होकर रहना।
४. आयु। जीवनकाल। जैसे—जन्म भर।

जन्मकुंडली-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह चक्र जिससे किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति का पता चले। (फलित ज्योतिष)

जन्मतिथि-संज्ञा स्त्री० दे० "जन्मदिन"।

जन्मदिन-संज्ञा पु० [सं०] जन्म का दिन। वर्षगाँठ।

जन्मना-क्रि० अ० [सं० जन्म + ना (प्रत्य०)] १. जन्म लेना। पैदा होना। २ अस्तित्व में आना।

जन्मपत्र-संज्ञा पु० [सं०] जन्मपत्री।

जन्मपत्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति आदि का ब्योरा रहता है।

जन्मभूमि-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।

जन्मस्थान-संज्ञा पु० [सं०] जन्मभूमि।

जन्मांतर-संज्ञा पु० [सं०] दूसरा जन्म।

जन्माना-क्रि० स० [हिं० जन्मना] उत्पन्न करना। जन्म देना।

जन्माष्टमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का जन्म हुआ था।

जन्मेजय-संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २ राजा परीक्षित के पुत्र का नाम जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था।

जन्मोत्सव-संज्ञा पु० [सं०] किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव तथा पूजन।

जन्य-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० जन्या] १ साधारण मनुष्य। जनसाधारण। २ किंवदंती। अफ़वाह। ३. राष्ट्र। किसी एक देश के वासी। ४. लड़ाई। युद्ध। ५ पुत्र। बेटा। ६. पिता। ७ जन्म।
वि० १. जन-संबंधी। २. किसी जाति, देश या राष्ट्र से संबंध रखनेवाला। ३. राष्ट्रीय। जातीय। ४. जो उत्पन्न हुआ हो। उद्भूत।

जप-संज्ञा पु० [सं०] १. किसी मंत्र या वाक्य का बार बार धीरे धीरे पाठ करना। २. पूजा आदि में मंत्र का संख्या पूर्वक पाठ।

जप तप-संज्ञा पु० [हिं० जप + तप] संध्या, पूजा, जप और पाठ आदि। पूजा पाठ।

जपना-क्रि० स० [सं० जपन] १. किसी वाक्य या शब्द को धीरे धीरे देर तक कहना या दोहराना। २. संध्या, यज्ञ या पूजा

आदि के समय संख्यानुसार बार बार उच्चारण करना। ३. खा जाना। ले लेना।

जपनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जपना] १. माला। २. गोमुखी। गुप्ती।

जपनीय–वि० [सं०] जप करने योग्य।

जपमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह माला जिसे लेकर लोग जप करते हैं।

जपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] जवा। अड़हुल। संज्ञा पुं० [सं० जापक] जपनेवाला।

जफा–संज्ञा स्त्री० [फा०] सख्ती। ज़ुल्म।

जफील–संज्ञा स्त्री० [अ० जफ़ीर] १. सीटी का शब्द। २ वह जिससे सीटी बजाई जाय। सीटी।

जब–क्रि० वि० [सं० यावत्] जिस समय। जिस वक्त।

मुहा०—जब जब = जब कभी। जिस जिस समय। जब तब = कभी कभी। जब देखो तब = सदा। सर्वदा। हमेशा।

जबड़ा–संज्ञा पुं० [सं० जंभ] मुँह में दोनों ओर ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें डाढ़ें जड़ी रहती हैं। कल्ला।

जबर–वि० [फा० जब्र] १. बलवान्। बली। ताकतवर। २. दृढ़। मजबूत।

जबरई–संज्ञा स्त्री० [हिं० जबर] अन्याययुक्त अत्याचार। सख्ती। ज्यादती।

जबरदस्त–वि० [फा०] [संज्ञा जबरदस्ती] १. बलवान्। बली। शक्तिवाला। २. दृढ़। मज़बूत।

ज़बरदस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] अत्याचार। सीनाजोरी। जियादती। अन्याय। क्रि० वि० बलपूर्वक। दबाव डालकर।

जबरन्–क्रि० वि० [अ० जब्रन्] बलात्। जबरदस्ती। बलपूर्वक।

जबरा–वि० [हिं० जबर] बलवान्। बली। संज्ञा पुं० [अ० ज़ेबरा] घोड़े और गदहे के मध्य का एक बहुत सुंदर जंगली जानवर।

ज़बह–संज्ञा पुं० [अ०] गला काटकर प्राण लेने की क्रिया। हिंसा।

जबहा–संज्ञा पुं० [हिं० जीव] जीवट। साहस।

ज़बान–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जीभ। जिह्वा।

मुहा०—ज़बान खींचना = धृष्टतापूर्ण बातें करने के लिये कठोर दंड देना। जबान पकड़ना = बोलने न देना। कहने से रोकना। जबान पर आना = मुँह से निकलना। जबान में लगाम न होना = सोच समझकर बोलने के अयोग्य होना। जबान हिलाना = मुँह से शब्द निकालना। दबी जबान से बोलना या कहना = अस्पष्ट रूप से बोलना। साफ साफ न कहना। घर-जबान = कंठस्थ। उपस्थित। बेज़बान = बहुत सीधा। २. बात। बोल। ३. प्रतिज्ञा। वादा। कौल। ४. भाषा। बोल-चाल।

ज़बानदराज़–वि० [फा०] [संज्ञा ज़बानदराजी] धृष्टता पूर्वक अनुचित बातें करनेवाला।

ज़बानी–वि० [हिं० ज़बान] १. जो केवल ज़बान से कहा जाय, किया न जाय। मौखिक। २. जो लिखित न हो। मौखिक। मुँह से कहा हुआ।

जबाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] जाबाल ऋषि की माता जो एक दासी थी।

ज़बून–वि० [तु०] बुरा। खराब।

ज़ब्त–संज्ञा पुं० [अ०] १ किसी अपराध में राज्य के द्वारा हरण किया हुआ। सरकार से छीना हुआ। जैसे—रियासत जब्त होना। २. अपनाया हुआ।

ज़ब्ती–संज्ञा स्त्री० [अ० जब्त] ज़ब्त होने की क्रिया।

जब्र–संज्ञा पुं० [अ०] ज्यादती। सख्ती।

जमकात, जमकातर†:–संज्ञा पुं० [सं० यम + हिं० कातर] पानी का भँवर। संज्ञा स्त्री० [सं० यम + कर्तरी] १ यम का छुरा या खाँड़ा। २. खाँड़ा।

जमघंट–संज्ञा पुं० दे० "यमघंट"।

जमघट–संज्ञा पुं० [हिं० जमना + घट्ट] मनुष्यों की भीड़। ठट्ट। जमावड़ा।

जमडाढ़–संज्ञा स्त्री० [सं० यम + डाढ़] कटारी की तरह का एक हथियार।

जमदग्नि–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।

जमधर–संज्ञा पुं० दे० "जमडाढ़"।

जमन:–संज्ञा पुं० दे० "यवन"।

जमना–क्रि० अ० [सं० यमन] १ तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना। जैसे-बरफ जमना। २. दृढ़तापूर्वक बैठना अच्छी तरह स्थित होना। ३. स्थिर होना निश्चल होना। ४. एकत्र होना। इकट्ठा होना। ५. हाथ से होनेवाले काम का पूरा पूरा अभ्यास होना। ६. बहुत से आदमियों के सामने होनेवाले किसी काम का उत्तमता से होना। जैसे-गाना जमना।

७. किसी व्यवस्था या काम का अच्छी तरह चलने योग्य हो जाना।
क्रि० अ० [सं० जन्म+ना (प्रत्य०)] उगना। उपजना। उत्पन्न होना।
संज्ञा स्त्री० दे० "यमुना"।
जमघट–संज्ञा स्त्री० [हिं० जमना] लकड़ी का वह गोल चक्कर जो कूआँ बनाने में भगाड़ में रखा जाता है।
जमा–वि० [अ०] १. संग्रह किया हुआ। एकत्र। इकट्ठा। २. सब मिलाकर। ३. जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मूलधन। पूँजी। २. धन। रुपया-पैसा। ३. भूमि-कर। मालगुजारी। लगान। ४. जोड़। (गणित)
जमाई–संज्ञा पु० [सं० जामातृ] दामाद। जँवाई। जामाता।
संज्ञा स्त्री० [हिं० जमना] जमने या जमाने की क्रिया या भाव।
जमा खर्च–संज्ञा पु० [फा० जमा+खर्च] आय और व्यय।
जमात–संज्ञा स्त्री० [अ० जमाअत] १. मनुष्यों का समूह। गरोह या जत्था। २. कक्षा। श्रेणी। दरजा।
जमादार–संज्ञा पु० [फा०] [संज्ञा जमादारी] सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान।
ज़मानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह ज़िम्मेदारी जो ज़बानी, कोई काग़ज़ लिखकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है। जामिनी।
जमाना–क्रि० स० [हिं० जमना] "जमना" का सकर्मक। जमने में सहायक होना।
ज़माना–संज्ञा पु० [फा०] १. समय। काल। वक्त। २ बहुत अधिक समय। मुद्दत। ३. प्रताप या सौभाग्य का समय। ४. दुनिया। संसार। जगत्।
ज़मानासाज़–वि० [फा०] जो लोगों का रंग-ढंग देखकर व्यवहार करता हो।
जमाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पटवारी का एक कागज़ जिसमें असामियों के लगान की रकमें लिखी जाती हैं।
जमामार–वि० [हिं० जमा+मारना] दूसरों का धन दबा रखने या ले लेनेवाला।
जमालगोटा–संज्ञा पुं० [सं० जयपाल] एक पौधे का बीज जो अत्यंत रेचक होता है। जयपाल। दंतीफल।
जमाव–संज्ञा पु० [हिं० जमाना] १. जमने का भाव। २. जमाने का भाव।
जमावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० जमाना] जमने का भाव।
जमावड़ा–संज्ञा पु० [हिं० जमना=एकत्र होना] बहुत से लोगों का समूह। भीड़।
जमींकंद–संज्ञा पु० [फा० जमीन+कंद] सूरन। ओल।
ज़मींदार–संज्ञा पु० [फा०] ज़मीन का मालिक। भूमि का स्वामी।
ज़मींदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जमींदार की वह जमीन जिसका वह मालिक हो। २ ज़मींदार का पद।
ज़मीन–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पृथ्वी (ग्रह)। २. पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जिस पर लोग रहते हैं। भूमि। धरती।
मुहा०—ज़मीन आसमान एक करना=बहुत बड़े बड़े उपाय करना। जमीन आसमान का फ़रक़=बहुत अधिक अंतर। बहुत बड़ा फरक। जमीन देखना=१. गिर पड़ना। पटका जाना। २. नीचा देखना।
३. कपड़े आदि की वह सतह जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों। ४. वह सामग्री जिसका व्यवहार किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार रूप से किया जाय। ५. डौल। भूमिका। आयोजन।
जमुकना†–क्रि० अ० [?] पास पास होना। सटना।
ज़मुर्रद–संज्ञा पु० [फा०] पन्ना (रत्न)।
जमुहाना–†क्रि० अ० दे० "जँभाना"।
जमूरक, जमूरा†–संज्ञा पु०[फा० जंबूरक]एक प्रकार की छोटी तोप।
जमोग†–संज्ञा पु० [हिं० जमोगना] जमोगने अर्थात् स्वीकार कराने की क्रिया।
जमोगना†–क्रि० स० [अ० जमा+योग] १. हिसाब-किताब की जाँच करना। २ स्वयं उत्तरदायित्व से मुक्त होने के लिये दूसरे को भार सौंपना। सरेखना। ३. तसदीक़ कराना। ४. बात की जाँच कराना।
जम्हाना–क्रि० अ० दे० "जँभाना"।
जयत–वि० [सं०] [स्त्री० जयती] १. विजयी। २. बहुरूपिया।
संज्ञा पु० [सं०] १. रुद्र। २. इंद्र के पुत्र

उपेंद्र का नाम। ३. स्कंद। कार्त्तिकेय।
जयंती–संज्ञा स्त्री० [स०] १. विजय करनेवाली। विजयिनी। २. ध्वजा। पताका। ३. हल्दी। ४. दुर्गा। ५. पार्वती। ६. किसी महात्मा की जन्मतिथि पर होनेवाला उत्सव। वर्षगाँठ का उत्सव। ७. एक बड़ा पेड़। जैंत या जैंता। ८. वैजंती का पौधा। ९. जौ के छोटे पौधे जिन्हें विजयादशमी के दिन ब्राह्मण यजमानों को भेंट करते हैं। जई।
जय–संज्ञा स्त्री० [स०] १. युद्ध, विवाद आदि में विपक्षियों का पराभव। जीत।
मुहा०—जय मनाना=विजय की कामना करना। समृद्धि चाहना।
२. विष्णु के एक पार्षद का नाम। ३. महाभारत का पूर्व नाम। ४. जयंती। जैंत का पेड़। ५. लाभ। ६. अयन।
जयकरी–संज्ञा स्त्री० [स०] चौपाई छंद।
जयजीव –संज्ञा पु० [हिं० जय+जी] एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है—जय हो और जिओ।
जयद्रथ–संज्ञा पु० [स०] सिंधु-सौवीर का राजा जो दुर्योधन का बहनोई था।
जयना †–क्रि० अ० [स० जयन्] जीतना।
जयपत्र–संज्ञा पु० [स०] वह पत्र जो पराजित पुरुष अपने पराजय के प्रमाण में विजयी को लिख देता है। विजय-पत्र।
जयपाल–संज्ञा पु० [स०] १. जमालगोटा। २. विष्णु। ३. राजा।
जयमंगल–संज्ञा पु० [स०] राजा की सवारी का हाथी।
जयमाल–संज्ञा स्त्री० [स० जयमाला] १. वह माला जो विजयी को विजय पाने पर पहनाई जाय। २. वह माला जिसे स्वयंवर के समय कन्या अपने वरे हुए पुरुष के गले में डालती थी।
जयस्तंभ–संज्ञा पु० [सं०] विजय का स्मारक स्तंभ या धरहरा।
जया–संज्ञा स्त्री० [स०] १. दुर्गा। २. पार्वती। ३. हरी दूब। ४. अरणी वृक्ष। ५. जैंत का पेड़। ६. हरीतकी। हड़। ७. पताका। ध्वजा। ८. गुड़हल का फूल। वि० जय दिलानेवाली। जयकारिणी।
जयी–वि० [स० जयिन्] विजयी। जयशील।
जर☆–संज्ञा पुं० [स० जरा] वृद्धावस्था।
ज़र–संज्ञा पु० [फा०] १. सोना। स्वर्ण। २. धन। दौलत। रुपया।
जरकटी–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।
जरकस, जरकसी☆ – वि० [फा० जरकश] जिस पर सोने के तार आदि लगे हों।
ज़रखेज़–वि० [फा०] उपजाऊ। उर्वरा। (ज़मीन)
जरठ–वि० [स०] १. कर्कश। कठिन। २. वृद्ध। बुड्ढा। ३. जीर्ण। पुराना।
जरतार☆ –संज्ञा पु० [फा० जर+हिं० तार] सोने या चाँदी आदि का तार। जरी।
जरतुश्त–संज्ञा पु० दे० "ज़रदुश्त"।
जरत्–वि० [स०] [स्त्री० जरती] १. बुड्ढा। वृद्ध। २. पुराना। बहुत दिनों का।
जरत्कारु–संज्ञा पुं० [स०] एक ऋषि।
जरद्–वि० [फा० जर्द] पीला। पीत।
ज़रदा–संज्ञा पु० [फा०] १. चावलों का एक व्यंजन। २. पान में खाने की सुगंधित सुरती। ३. पीले रंग का घोड़ा।
ज़रदालू–संज्ञा पु० [फा०] खूबानी।
ज़रदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पिलाई। पीलापन। २. अंडे के भीतर का पीला चेप।
ज़रदुश्त–संज्ञा पु० [फा०] फारस देश के पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता आचार्य।
ज़रदोज़–संज्ञा पु० [फा०] ज़रदोज़ी का काम करनेवाला।
ज़रदोज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह दस्तकारी जो कपड़ों पर सलमे-सितारे आदि से की जाती है।
जरन†☆–संज्ञा स्त्री० दे० "जलन"।
जरना☆–क्रि० अ० दे० "जलना"।
क्रि० स० दे० "जड़ना"।
जरनि☆–संज्ञा स्त्री० दे० "जलन"।
ज़रब–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आघात। चोट।
मुहा० –जरब देना=चोट लगाना। पीटना।
२. गुणा। (गणित)
ज़रबफ्त–संज्ञा पुं० [फा०] वह रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे हों।
ज़रबाफी– वि० [फा०] जिस पर ज़रबाफ़ का काम बना हो।
संज्ञा स्त्री० ज़रदोज़ी।
जरबीला☆†–वि० [फा० जरब+ईला (प्रत्य०)] भड़कीला और सुंदर।
ज़रर–संज्ञा पु० [अ०] १. हानि। नुक-

सान। क्षति। २. आघात। चोट।

जरांकुश–संज्ञा पु० [सं० ज्वरांकुश] मूँज के प्रकार की एक सुगंधित घास।

जरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] बुढ़ापा।

ज़रा–वि० [अ० ज़र्रा] थोड़ा। कम। क्रि० वि० थोड़ा। कम।

जराग्रस्त–वि० [सं०] बुड्ढा। वृद्ध।

जरानाǁ–क्रि० स० दे० "जलाना"।

जरायु–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह झिल्ली, जिसमें बच्चा बँधा हुआ उत्पन्न होता है। आँवल। खेड़ी। उल्व। २. गर्भाशय।

जरायुज–संज्ञा पु० [सं०] वह प्राणी जो आँवल या खेड़ी में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो। पिंडज का एक भेद।

जराव:†–वि० दे० "जड़ाऊ"।

जरासंध–संज्ञा पु० [सं०] मगध देश का एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा।

जरियाǁ†–संज्ञा पु० दे० "जड़िया"।

ज़रिया–संज्ञा पु० [अ०] १. संबंध। लगाव। द्वार। २. हेतु। कारण। सबब।

ज़री–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ताश नामक कपड़ा जो बादले से बुना जाता है। २. सोने के तारों आदि से बना हुआ काम।

जरीब–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह जंजीर जिससे भूमि नापी जाती है।

ज़रूर–क्रि० वि० [अ०] अवश्य। निःसंदेह।

ज़रूरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आवश्यकता। प्रयोजन।

ज़रूरी–वि० [फा०] १. जिसके बिना काम न चले। प्रयोजनीय। २. जो अवश्य होना चाहिए। आवश्यक।

जरौट† –वि० [हिं० जड़ना] जड़ाऊ।

ज़र्क़ बर्क़–वि० [फा०] तड़क-भड़कवाला। भड़कीला। चमकीला। भड़कदार।

जर्जर–वि० [सं०] १. जीर्ण। जो पुराना होने के कारण बेकाम हो गया हो। २. टूटा-फूटा। खंडित। ३. वृद्ध। बुड्ढा।

ज़र्द–वि० [फा०] पीला। पीत।

ज़र्दी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पीलापन।

ज़र्रा–संज्ञा पु० [अ०] १. अणु। २. बहुत छोटा टुकड़ा या खंड।

जर्राह–संज्ञा पु० [अ०] [संज्ञा जर्राही] फोड़ों आदि को चीरकर चिकित्सा करनेवाला। शस्त्र-चिकित्सक।

जलंधर–संज्ञा पु० [सं०] एक राक्षस जिसका वध विष्णु के उसकी स्त्री को धोखा देने पर हुआ था। संज्ञा पु० दे० "जलोदर"।

जल–संज्ञा पु० [सं०] १. पानी। २. उशीर। खस। ३. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

जल-अलि–संज्ञा पु० [सं० जल+अलि] एक काला कीड़ा जो पानी पर तैरा करता है। पैरौवा। भौंतुवा।

जलकर–संज्ञा पु० [हिं० जल+कर] १. जलाशयों की उपज। ताल में होनेवाला पदार्थ। जैसे—मछली, सिंघाड़ा आदि। २. इस प्रकार के पदार्थों पर का कर।

जलक्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह क्रीड़ा जो जलाशय में की जाय। जल-विहार।

जलखावा†–संज्ञा पु० दे० "जलपान"।

जलघड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जल+घड़ी] समय जानने का एक प्राचीन यंत्र जिसमें नाँद में भरे जल के ऊपर एक महीन छेद की कटोरी पड़ी रहती थी।

जलचर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० जलचरी] पानी में रहनेवाले जंतु।

जल चादर–संज्ञा स्त्री० [हिं० जल+चादर] जल का फैला हुआ पतला प्रवाह।

जलचारी–संज्ञा पु० दे० "जलचर"।

जलज–वि० [सं०] जो जल में उत्पन्न हो। संज्ञा पु० [सं०] १. कमल। २. शंख। ३. मछली। ४. जलजंतु। ५. मोती।

ज़लज़ला–संज्ञा पु० [फा०] भूकंप।

जलजात–वि० दे० "जलज"। संज्ञा पु० [सं०] पद्म। कमल।

जल-डमरूमध्य–संज्ञा पु० [सं०] दो बड़े समुद्रों के बीच का उन्हें जोड़नेवाला पतला समुद्र। (भूगोल)

जलतरंग–संज्ञा पु० [सं०] एक बाजा जो जल से भरी कटोरियों को एक क्रम से रखकर बजाया जाता है।

जलत्रास–संज्ञा पु० [सं०] वह भय जो कुत्ते, शृगाल आदि जीवों के काटने पर जल देखने से उत्पन्न होता है। जलातंक।

जलथम–संज्ञा पु० दे० "जलस्तंभ"।

जलद–वि० [सं०] जल देनेवाला। संज्ञा पु० [सं०] १. मेघ। बादल। २. मोथा। ३. कपूर।

जलधर–संज्ञा पु० [सं०] १. बादल। २. मुस्ता। ३. समुद्र।

जलधरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अर्घा जिसमें शिवलिंग रहता है। जलहरी।

जलधारा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पानी का प्रवाह। पानी की धार। २. जल-धारा के नीचे बैठे रहने की तपस्या।

संज्ञा पु० बादल। मेघ।

जलधि-संज्ञा पु० [सं०] १. समुद्र। २. दस शंख की संख्या।

जलन-संज्ञा स्त्री० [हिं० जलना] १ जलने की पीड़ा या दुःख। दाह। २. बहुत अधिक ईर्ष्या। डाह।

जलना-क्रि० अ० [सं० ज्वलन] १. अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में हो जाना। दग्ध होना। बलना। २. आँच के कारण भाप या कोयले आदि के रूप में हो जाना। ३ आँच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित होना। झुलसना।

मुहा०—जले पर नमक छिड़कना = किसी दुःखी या व्यथित मनुष्य को और दुःख देना।

४ ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुढ़ना।

मुहा०—जली-कटी या जली-भुनी बात = लगती हुई बात। कटु बात जो द्वेष, डाह या क्रोध आदि के कारण कही जाय।

जलनिधि-संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

जलपक्षी-संज्ञा पु० [सं० जलपक्षिन्] वह पक्षी जो जल के आस-पास रहता हो।

जलपटल-संज्ञा पु० [हिं० जल + पटल] काजल।

जलपान-संज्ञा पु० [सं०] थोड़ा और हलका भोजन। कलेवा। नाश्ता।

जलपीपल-संज्ञा स्त्री० [सं० जलपिप्पली] पीपल के आकार की एक प्रकार की ओषधि।

जलप्रपात-संज्ञा पु० [सं०] किसी नदी आदि का ऊँचे पहाड़ पर से नीचे गिरना।

जलप्रवाह-संज्ञा पु० [सं०] १. पानी का बहाव। २. नदी में बहा देने की क्रिया।

जलप्लावन-संज्ञा पु० [सं०] १. पानी की बाढ़ जिससे आस-पास की भूमि जल में डूब जाय। २. एक प्रकार का प्रलय।

जलबेंत-संज्ञा पु० [सं० जलवेत्र] जलाशयों के पास होनेवाला बेत।

जलभँवरा-संज्ञा पु० [हिं० जल + भँवरा] एक काला कीड़ा जो पानी पर शीघ्रता से दौड़ता है। भौंतुवा।

जलमानुष-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० जलमानुषी] परीरू नामक कल्पित जलजंतु जिसकी नाभि से ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली के ऐसा होता है।

जलयान-संज्ञा पु० [सं०] वह सवारी जो जल में काम आती हो। जैसे—नाव।

जलराशि-संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

जलवर्त्त-संज्ञा पु० दे० "जलावर्त्त"।

जलवाना-क्रि० स० [हिं० जलाना] जलाने का काम दूसरे से कराना।

जलशायी-संज्ञा पु० [सं० जलशायिन्] विष्णु।

जलसा-संज्ञा पु० [अ०] १ आनंद या उत्सव का समारोह जिसमें खाना, पीना, गाना, बजाना आदि हो। २. सभा-समिति आदि का बड़ा अधिवेशन। बैठक।

जलसेना-संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र में जहाज़ों पर लड़नेवाली फौज।

जलस्तंभ-संज्ञा पु० [सं०] एक दैवी घटना जिसमें जलाशयों या समुद्र के ऊपर एक मोटा स्तंभ सा बन जाता है। सूँड़ी।

जलस्तंभन-संज्ञा पु० [सं०] मंत्रादि से जल की गति का अवरोध करना। पानी बाँधना।

जलहरण-संज्ञा पु० [सं०] बत्तीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति या दंडक।

जलहरी-संज्ञा स्त्री० [सं० जलधरी] १. अर्घा जिसमें शिव लिंग स्थापित किया जाता है। २. मिट्टी का जल भरा घड़ा जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर टाँगा जाता है।

जलाजल-संज्ञा पु० [हिं० झलाझल] गोटे आदि की झालर। झलाझल।

जलातंक-संज्ञा पु० दे० "जलत्रास"।

जलातन-वि० [हिं० जलना + तन] १. क्रोधी। बिगड़ैल। बदमिज़ाज। २. ईर्ष्यालु। डाही।

जलाधिप-संज्ञा पु० [सं०] वरुण।

जलाना-क्रि० स० [हिं० जलना] १. अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में कर देना। प्रज्वलित करना। भस्म करना। २. किसी पदार्थ को आँच से भाप या कोयले आदि के रूप में करना। ३. आँच के द्वारा विकृत या पीड़ित करना। झुलसाना। ४. किसी के मन में संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना।

जलापा-संज्ञा पु० [हिं० जलना + आपा (प्रत्य०)] डाह या ईर्ष्या की जलन।

जलाल-संज्ञा पु० [अ०] १. तेज। प्रकाश। २. प्रभाव। आतंक।

जलावन-संज्ञा पु० [हिं० जलाना] १ ईंधन। २. किसी वस्तु का वह अंश जो तपाए या जलाए जाने पर जल जाता है। जलता।

जलाशय-संज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ पानी जमा हो। जैसे—तालाब, नदी।

जलाहल-वि० [हिं० जलाजल] जलमय।

जलील-वि० [अ०] १ तुच्छ। बेकदर। २. जिसने नीचा देखा हो। अपमानित।

जलूस-संज्ञा पु० [अ०] बहुत से लोगों का सज धजकर किसी सवारी के साथ प्रस्थान। उत्सवयात्रा।

जलेबी-संज्ञा स्त्री० [हिं० जलाब] १ एक प्रकार की मिठाई जो कुंडलाकार होती है। २. गोल घेरा। कुंडली। लपेट। ३. एक प्रकार की आतशबाजी।

जलेश-संज्ञा पु० [सं०] १. वरुण। २. समुद्र। ३. जलाधिप।

जलोदर-संज्ञा पु० [सं०] एक रोग जिसमें पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी एकत्र होने से पेट फूल जाता है।

जलौका-संज्ञा स्त्री० [सं०] जोंक।

जल्द-क्रि० वि० [अ०] [संज्ञा जल्दी] १. शीघ्र। चटपट। २. तेजी से।

जल्दबाज़-वि० [फा०] [संज्ञा जल्दबाजी] जो किसी काम में बहुत जल्दी करता हो।

जल्दी-संज्ञा स्त्री० [अ०] शीघ्रता। फुरती। † क्रि० वि० दे० "जल्द"।

जल्प-संज्ञा पु० [सं०] १. कथन। कहना। २. बकवाद। व्यर्थ की बात। प्रलाप।

जल्पक-वि० [सं०] बकवादी। वाचाल।

जल्पन-संज्ञा पु० [सं०] १. बकवाद। प्रलाप। व्यर्थ की बातें। २. डींग।

जल्पना-क्रि० अ० [सं० जल्पन] व्यर्थ बकवाद करना। डींग मारना। सीटना।

जल्लाद-संज्ञा पु० [अ०] १. प्राणदंड पाए हुए अपराधियों का वध करने पर नियुक्त पुरुष। घातक। बधुआ। २ क्रूर व्यक्ति।

जवनिका-संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका"।

जवाँमर्द-वि० [फा०] [संज्ञा जवाँमर्दी] शूरवीर। बहादुर।

जवा-संज्ञा स्त्री० दे० "जपा"। † संज्ञा पु० [सं० यव] लहसुन का दाना।

जवाई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० जाना] जाने की क्रिया या भाव। गमन।

जवाखार-संज्ञा पु० [सं० यवक्षार] एक नमक जो जौ के चार से बनता है।

जवान-वि० [फा०] १. युवा। तरुण। २ वीर। बहादुर। †संज्ञा पु० १. मनुष्य। पुरुष। २. सिपाही।

जवानी-संज्ञा स्त्री० [सं०] अजवायन। संज्ञा स्त्री० [फा०] यौवन। तरुणाई।

मुहा०—जवानी उतरना या ढलना= उमर ढलना। बुढ़ापा आना। जवानी चढ़ना= यौवन का आगमन होना।

जवाब-संज्ञा पु० [अ०] १ किसी प्रश्न या बात के समाधान के लिये कही हुई बात। उत्तर। २ वह बात जो किसी बात के बदले में की जाय। बदला। ३ मुकाबले की चीज। जोड़। ४. नौकरी छूटने की आज्ञा। मौकूफी।

जवाबदावा-संज्ञा पु० [अ०] वह उत्तर जो वादी के निवेदन पत्र के उत्तर में प्रतिवादी लिखकर अदालत में देता है।

जवाबदेह-वि० [फा०] [संज्ञा जवाबदेही] उत्तरदाता। जिम्मेदार।

जवाबी-वि० [फा०] जवाब का। जिसका जवाब देना हो।

जवार†-संज्ञा पु० दे० "जवाल"।

जवारा-संज्ञा पु० [हिं० जौ] जौ के हरे अंकुर। जई।

जवाल-संज्ञा पु० [अ० ज़वाल] १. अवनति। उतार। घटाव। २. जंजाल। आफ़त।

जवास, जवासा-संज्ञा पु० [सं० यवासक] एक प्रकार का कँटीला पौधा।

जवाहर-संज्ञा पु० [अ०] रत्न। मणि।

जवाहरात-संज्ञा पु० [अ०] रत्न-समूह।

जवाहिर-संज्ञा पु० दे० "जवाहर"।

जवैया†-वि० [हिं० जाना+ऐया (प्रत्य०)] जानेवाला। गमनशील।

जशन-संज्ञा पु० [फा०] १. उत्सव। जलसा। २ आनंद। हर्ष।

जस*†-क्रि० वि० [सं० यथा] जैसा। †संज्ञा पु० दे० "यश"।

जसोदा-संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

जसोवै*-संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

जस्ता-संज्ञा पु० [सं० जसद] खाकी रंग की एक प्रसिद्ध धातु।

जह-क्रि० वि० दे० "जहाँ"।

जहँडना, जहँड़ाना†–क्रि० अ० [सं० जहन] १ घाटा उठाना। २. धोखे में आना।
जहतिया†–संज्ञा पुं० [हिं० जगात] जगात या लगान वसूल करनेवाला।
जहत्स्वार्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को बिल्कुल छोड़े हुए हो। लक्षण-लक्षणा।
जहदना—क्रि० अ० [हिं० जहदा] १. कीचड़ होना। २. थक जाना।
जहदा–संज्ञा पुं० [?] दलदल।
जहना‡†–क्रि० स० [सं० जहन] १. त्यागना। छोड़ना। २. नाश करना।
जहन्नुम–संज्ञा पुं० [अ०] नरक। दोजख।
मुहा०—जहन्नुम में जाय=चूल्हे में जाय। हमसे कोई संबंध नहीं।
जहमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपत्ति। मुसीबत। आफत। २. झंझट। बखेड़ा।
जहर–संज्ञा स्त्री० [अ० जह्र] १. विष। गरल।
मुहा०—जहर उगलना=मर्मभेदी या कटु बात कहना। जहर का घूँट पीना=किसी अनुचित बात को देखकर क्रोध को मन ही मन दबा रखना। जहर का बुझाया हुआ=बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट।
२. अप्रिय बात या काम।
मुहा०—जहर करना या कर देना=बहुत अधिक अप्रिय या असह्य कर देना। जहर लगना=बहुत अप्रिय जान पड़ना।
वि० १. घातक। मार डालनेवाला। २. बहुत अधिक हानि पहुँचानेवाला।
जहरबाद–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बहुत भयंकर और विषैला फोड़ा।
जहरमोहरा–संज्ञा पुं० [फा० जहमुहरा] १.एक काला पत्थर जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है। २. हरे रंग का एक विषघ्न पत्थर।
जहरीला–वि० [अ० जहर+ईला (प्रत्य०)] जिसमें जहर हो। विषैला।
जहल्लक्षणा–संज्ञा स्त्री० दे० "जहत्स्वार्था"।
जहाँ–क्रि० वि० [सं० यत्र] जिस स्थान पर। जिस जगह।
मुहा०—जहाँ का तहाँ=जिस जगह पर हो, उसी जगह पर। जहाँ तहाँ=१. इतस्ततः। इधर-उधर। २. सब जगह। सब स्थानों पर।
जहाँगीरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना। २. एक प्रकार की चूड़ी।
जहाँपनाह–संज्ञा पुं० [फा०] संसार का रक्षक। (बादशाहों का संबोधन)
जहाज़–संज्ञा पुं० [अ०] समुद्र में चलनेवाली बड़ी नाव।
मुहा०—जहाज का कौवा या काग=दे० "जहाजी कौआ"।
जहाजी–वि० [अ०] जहाज से संबंध रखनेरखनेवाला।
यौ०—जहाजी कौआ=१. वह कौआ जो किसी जहाज के छूटने के समय उस पर बैठ जाता है और जहाज के बहुत दूर समुद्र में निकल जाने पर और कहीं शरण न पाकर उड़ उड़कर फिर उसी जहाज पर आता है। २. ऐसा मनुष्य जिसे एक को छोड़ दूसरा ठिकाना न हो।
जहान–संज्ञा पुं० [फा०] संसार। लोक। जगत्।
जहालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] अज्ञान।
जहिया‡†–क्रि० वि० [सं० यद] जिस समय। जब।
जहीं†–अव्य० [सं० यत्र] जहाँ ही। जिस स्थान पर।
अव्य० दे० "ज्यों ही"।
ज़हीन–वि० [अ०] १. बुद्धिमान्। समझदार। २. धारणा शक्तिवाला।
जहेज़–संज्ञा पुं० [अ०] वह धन-संपत्ति जो विवाह में कन्या पक्ष की ओर से वर को दी जाती है। दहेज।
जह्नु–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. एक राजर्षि। जब भगीरथ गंगा को लेकर आ रहे थे, तब इन्होंने गंगा पी लिया था और फिर कान से निकाल दिया था। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा।
जाँगड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] भाट। बंदी।
जाँगर–संज्ञा पुं० [हिं० जान या जाँघ] शरीर का बल। बूता।
जांगल–संज्ञा पुं० [सं०] १. तीतर। २. मांस। ३. ऊसर देश।
वि० जंगल संबंधी। जंगली।
जाँगलू–वि० [फा० जंगल] गँवार। जंगली।
जाँघ–संज्ञा स्त्री० [सं० जंघा=पिंडली] घुटने और कमर के बीच का भाग। ऊरु।

आँधिया–संज्ञा पु० [हिं० जाँघ + इया (प्रत्य०)] पायजामे की तरह का घुटने तक का एक पहनावा। काछा।

जाँच–संज्ञा स्त्री० [हिं० जाँचना] १. जाँचने की क्रिया या भाव। परीक्षा। परख। २. गवेषणा। तहकीकात।

जाँचक*†–संज्ञा पु० दे० "जाचक"।

जाँचना–क्रि० स० [सं० याचन] १. सत्या-सत्य आदि का अनुसंधान करना। परीक्षा करना। † २. प्रार्थना करना। माँगना।

जाँजरा †–वि० दे० "जाजरा"।

जाँत, जाँता–संज्ञा पु० [सं० यंत्र] १. आटा पीसने की बड़ी चक्की। २. दे० "जाँता"।

जाँबः†–संज्ञा पु० दे० "जामुन"।

जाँववंत–संज्ञा पु० दे० "जांववान्"।

जाँववती–संज्ञा स्त्री० [सं० जांववती] जांव-वान् की कन्या जिसके साथ श्रीकृष्ण ने विवाह किया था।

जांववान्–संज्ञा पु० [सं०] सुग्रीव का मंत्री एक भालू जो राम की सेना में लड़ा था।

जांवुवान–संज्ञा पु० दे० "जांववान्"।

जाँवर*†–संज्ञा पु० [हिं० जाना] गमन। जाना।

जा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माता। माँ। २. देवरानी। देवर की स्त्री।

वि० स्त्री० उत्पन्न। संभूत।

*†सर्व० [हिं० जो] जिस।

वि० [फा०] मुनासिब। उचित।

जाइ*†–वि० दे० "जाय"।

जाई–संज्ञा स्त्री० [सं० जा] बेटी। पुत्री।

जाकड़–संज्ञा पु० [हिं० जाकर] माल इस शर्त पर ले आना कि यदि वह पसंद न होगा, तो फेर दिया जायगा। पक्का का उलटा।

जाखिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।

जाग– संज्ञा पु० [सं० यज्ञ] यज्ञ। मख।

‡ संज्ञा स्त्री० [हिं० जगह] जगह। स्थान।

संज्ञा स्त्री० [हिं० जगह] जागने की क्रिया या भाव। जागरण।

फा० जाग = कौवा।

जागती जोत–संज्ञा स्त्री० [हिं०जागना + ज्योति] किसी देवता विशेषतः देवी की प्रत्यक्ष महिमा या चमत्कार।

जागना–क्रि० अ० [सं० जागरण] १. सोकर उठना। नींद त्यागना। २. निद्रा रहित रहना। जाग्रत अवस्था में होना। ३. सजग होना। सावधान होना। ४. उदित होना। चमक उठना।

मुहा० —जागता = १. प्रत्यक्ष। साक्षात्। २. प्रकाशित। भासमान।

५. समृद्ध होना। बढ़-चढ़कर होना। ६. प्रसिद्ध होना। विख्यात होना। जोर शोर से उठना। ७. प्रज्वलित होना। जलना।

जागवलिक† –संज्ञा पु० दे० "याज्ञवल्क्य"।

जागरण–संज्ञा पु० [सं०] १. निद्रा का अभाव। जागना। २. किसी पर्व के उप-लक्ष में सारी रात जागना।

जागरित–संज्ञा पु० [सं०] १. नींद का न होना। जागरण। २. वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इंद्रियों द्वारा सब प्रकार के कार्यों का अनुभव होता रहे।

जागरूक–संज्ञा पु० [सं०] वह जो जाग्रत अवस्था में हो।

जागर्त्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जागरण। जाग्रति। २. चेतनता।

जागी†*–संज्ञा पु० [सं० यज्ञ] भाट।

जागीर–संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य की ओर से मिली भूमि या प्रदेश। सरकार से मिला तअल्लुका।

जागीरदार–संज्ञा पु० [फा०] १. वह जिसे जागीर मिली हो। जागीर का मालिक। २. अमीरी। रईसी।

जाग्रत–वि० [सं०] १ जो जागता हो। २. वह अवस्था जिसमें सब बातों का परि-ज्ञान हो।

जाग्रति–संज्ञा स्त्री० [सं० जाग्रत] जागरण। जागने की क्रिया।

जाचक†*–संज्ञा पु० [सं० याचक] १. माँगनेवाला। २. भीख माँगनेवाला। भिखमंगा।

जाचकता†*–संज्ञा स्त्री० [सं० याचकता] १ माँगने का भाव। २. भीख माँगने की क्रिया। भिखमंगी।

जाचना*†–क्रि० स० [सं० याचन] माँगना

जाजरा†*–वि० [सं० जर्जर] जर्जर जीर्ण।

जाजरूर–संज्ञा पु० [फा० जा + अ० जरूर] पाखाना। टट्टी।

जाजिम–संज्ञा स्त्री० [तु० जाजम] १.बिछा

की छपी हुई चादर या फर्श। २ गलीचा। कालीन।
जाज्वल्य-वि० [सं०] प्रज्वलित। प्रकाश-युक्त।
जाज्वल्यमान-वि० [सं०] १ प्रज्वलित। दीप्तिमान्। २. तेजस्वी। तेजवान्।
जाट-संज्ञा पुं० [?] भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध जाति जो पंजाब, सिंध और राज-पूताने में फैली हुई है।
जाठ-संज्ञा पुं० [सं० यष्टि] १. वह बड़ा लट्ठा जो कोल्हू की कूँड़ी के बीच में पड़ा रहता है। २. तालाब के बीच में गड़ा हुआ लट्ठा।
जाड़ा-संज्ञा पुं० [सं० जड़] १. वह ऋतु जिसमें बहुत ठंढक पड़ती है। शीतकाल। २. सरदी। शीत। पाला। ठंढ।
जाड्य-संज्ञा पुं० [सं०] जड़ता।
जात-संज्ञा पुं० [सं०] १. जन्म। २. पुत्र। बेटा। ३. जीव। प्राणी।
वि० १. उत्पन्न। जन्मा हुआ। २. व्यक्त। प्रकट। ३. प्रशस्त। अच्छा। ४. जिसने जन्म लिया हो। पैदा। जैसे—नवजात।
संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।
ज़ात-संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीर। देह।
संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।
जातक-संज्ञा पुं० [सं०] १. बच्चा। २. बच्चा। ३. भिक्षु। ४. फलित ज्योतिष का एक भेद। ५. वे बौद्ध कथाएँ जिनमें महात्मा बुद्धदेव के पूर्व जन्मों की बातें हैं।
जातकर्म्म-संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं के दस संस्कारों में से चौथा संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है।
जातना*-संज्ञा स्त्री० दे० "यातना"।
जात पाँत—संज्ञा स्त्री० [सं० जाति + पंक्ति] जाति। बिरादरी।
जाता-संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री।
वि० स्त्री० उत्पन्न।
जाति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जन्म। पैदाइश। २. हिंदुओं में समाज का वह विभाग जो पहले पहल कर्म्मानुसार किया गया था, पर पीछे से जन्मानुसार हो गया। ३. निवास-स्थान या वंशपरंपरा के विचार से मनुष्य-समाज का विभाग। ४. वह विभाग जो धर्म्म, आकृति आदि की समानता के विचार से किया जाय। कोटि। वर्ग। ५. सामान्य सत्ता। ६. वर्ण। ७. कुल। वंश। ८. गोत्र। ९. मात्रिक छंद।
जातिच्युत-वि० [सं०] जाति से गिरा या निकाला हुआ। जाति-बहिष्कृत।
जाति पाँति-संज्ञा स्त्री० [सं० जाति + हिं० पाँति (पंक्ति)] जाति या पंक्ति। वर्ण और उसके उपविभाग।
जाती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चमेली की जाति का एक फूल। जाही। जाई। २ छोटा आँवला। ३. मालती।
ज़ाती-वि० [अ० ज़ात] १. व्यक्तिगत। २ अपना। निज का।
जातीय-वि० [सं०] जाति संबंधी।
जातीयता-संज्ञा स्त्री० [सं०] जाति का भाव। जाति की ममता। जातित्व।
जातुधान-संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।
जादव†-संज्ञा पुं० दे० "यादव"।
जादवपति*†-संज्ञा पुं० [सं० यादवपति] श्रीकृष्णचंद्र।
जादसपति†-संज्ञा पुं० [सं० यादसांपति] जल-जंतुओं का स्वामी, वरुण।
जादू-संज्ञा पुं० [फा०] १. वह आश्चर्य-जनक कृत्य जिसे लोग अलौकिक और अमानवी समझते हों। इंद्रजाल। तिलस्म। २. वह अद्भुत खेल या कृत्य जो दर्शकों की दृष्टि और बुद्धि को धोखा देकर किया जाय। ३. टोना। टोटका। ४. दूसरे को मोहित करने की शक्ति। मोहिनी।
जादूगर-संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० जादूगरनी] वह जो जादू करता हो।
जादूगरी-संज्ञा स्त्री० [फा०] जादू करने की क्रिया। जादूगर का काम।
जादो†-संज्ञा पुं० दे० "यादव"।
जादोराय*†-संज्ञा पुं० [सं० यादव] श्री-कृष्णचंद्र।
जान-संज्ञा स्त्री० [सं० ज्ञान] १. ज्ञान। जानकारी। २ खयाल। अनुमान।
यौ०—जान पहचान = परिचय।
वि० सुजान। जानकार। चतुर।
संज्ञा पुं० दे० "यान"।
संज्ञा स्त्री० [फा०] १. प्राण। जीव। प्राणवायु। दम।
मुहा०—जान के लाले पड़ना = प्राण बचना कठिन दिखाई देना। जी पर आ बनना। जान को जान न समझना = कर्तव्य

कष्ट या परिश्रम सहना। जान खाना =तंग करना। बार बार घेरकर दिक करना। जान छुड़ाना या बचाना = १. प्राण बचाना। २. किसी झंझट से छुटकारा करना। संकट टलना। (किसी पर) जान जाना = किसी पर अत्यंत अधिक प्रेम होना। जान जोखों = प्राणहानि की आशंका। प्राण जाने का डर। जान निकलना = १. प्राण निकलना। मरना। २. भय के मारे प्राण सूखना। जान पर खेलना = प्राणों को भय में डालना। जान को जोखों में डालना। जान से जाना = प्राण खोना। मरना। २. बल। शक्ति। बूता। सामर्थ्य। दम। ३. सार। तत्त्व। ४. अच्छा या सुंदर करनेवाली वस्तु। शोभा बढ़ानेवाली वस्तु।

मुहा०—जान आना = शोभा बढ़ना।

जानकार–वि० [हिं० जानना + कार (प्रत्य०)] [संज्ञा जानकारी] १. जाननेवाला। अभिज्ञ। २. विज्ञ। चतुर।

जानकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] जनक की पुत्री, सीता।

जानकी-जानि–संज्ञा पुं० [सं०] रामचंद्र।

जानकी-जीवन–संज्ञा पुं० [सं०] रामचंद्र।

जानकीनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीराम।

जानदार–वि० [फा०] जिसमें जान हो। सजीव। जीवधारी।

जानना–क्रि० स० [सं० ज्ञान] १. ज्ञान प्राप्त करना। अभिज्ञ होना। परिचित होना। मालूम करना। २. सूचना पाना। खबर रखना। ३. अनुमान करना। सोचना।

जानपद–संज्ञा पुं० [सं०] १. जनपद संबंधी वस्तु। २. जनपद का निवासी। लोक। मनुष्य। ३ देश। ४. मालगुजारी।

जानपना†–संज्ञा पुं० [हिं० जान + पन (प्रत्य०)] बुद्धिमत्ता। चतुराई।

जानपनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० जान + पन (प्रत्य०)] बुद्धिमानी। चतुराई।

जानमनि‡–संज्ञा पुं० [हिं० जान + मणि] ज्ञानियों में श्रेष्ठ। बड़ा ज्ञानी पुरुष।

जानराय–संज्ञा पुं० [हिं० जान + राय] जानकारों में श्रेष्ठ। बड़ा बुद्धिमान्।

जानवर–संज्ञा पुं० [फा०] १. प्राणी। जीव। २. पशु। जंतु। हैवान।

जानहु‡†–अव्य० [हिं० जानना] मानो।

जाना–क्रि० अ० [सं० यान = जाना] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्राप्त होने के लिये गति में होना। गमन करना। बढ़ना। २. हटना। प्रस्थान करना।

मुहा०—जाने दो = १. क्षमा करो। माफ करो। २. चर्चा छोड़ो। प्रसंग छोड़ो। किसी बात पर जाना = किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना।

३. अलग होना। दूर होना। ४. हाथ या अधिकार से निकलना। हानि होना। ५ खो जाना। गायब होना। गुम होना। ६. बीतना। गुजरना। ७. नष्ट होना।

मुहा०—गया घर = दुर्दशाप्राप्त घराना। गया-बीता = १. दुर्दशाप्राप्त। २. निकृष्ट।

८. बहना। जारी होना।

†–क्रि० स० [सं० जनन] उत्पन्न करना। जन्म देना। पैदा करना।

जानि–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। भार्या। वि० [सं० ज्ञानी] जानकार।

जानी–वि० [फा०] जान से संबंध रखनेवाला। यौ०—जानी दुश्मन = जान लेने को तैयार दुश्मन। जानी दोस्त = दिली दोस्त। संज्ञा स्त्री० [फा० जान] प्राणप्यारी।

जानु–संज्ञा पुं० [सं०] जाँघ और पिंडली के मध्य का भाग। घुटना। संज्ञा पुं० [फा० जानू] जाँघ। रान।

जानुपाणि–क्रि० वि० [सं०] घुटनों। पैयाँ पैयाँ। घुटनों और हाथों के बल (जैसे बच्चे चलते हैं)।

जानो†–अव्य० [हिं० जानना] मानो। जैसे।

जाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाम आदि जपने की क्रिया। जप। २. जपने की थैली या माला।

जापक–संज्ञा पुं० [सं०] जप करनेवाला।

जापा–संज्ञा पुं० [सं० जनन] सौरी। प्रसूतिका गृह।

जापी–संज्ञा पुं० दे० "जापक"।

जाफा†–संज्ञा पुं० [अ० ज़ोफ़] १. बेहोशी। २. घुमरी। ३. मूर्छा। थकावट।

जाफत–संज्ञा स्त्री० [अ० ज़ियाफ़त] भोज। दावत।

जाफरान–संज्ञा पुं० [अ०] केसर।

जाबाल–संज्ञा पुं० [सं०] एक मुनि जिनकी माता का नाम जाबाला था।

जाबालि–संज्ञा पुं० [सं०] कश्यप-वंशीय एक ऋषि जो राजा दशरथ के गुरु थे

जाब्ता–संज्ञा पुं० [अ०] नियम । क़ायदा । व्यवस्था । क़ानून ।
यौ०—जाब्ता दीवानी=सर्वसाधारण के परस्पर आर्थिक व्यवहार से संबंध रखनेवाला क़ानून । जाब्ता फ़ौजदारी=दंडनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला क़ानून ।
जाम–संज्ञा पुं० [सं० याम] पहर । प्रहर । ७½ घड़ी या तीन घंटे का समय ।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] प्याला । कटोरा ।
संज्ञा पुं० दे० "जामुन" ।
जामगी–संज्ञा पुं० [?] बंदूक या तोप का फलीता ।
जामदानी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जामःदानी] एक प्रकार का कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा ।
जामन–संज्ञा पुं० [हिं० जमाना] वह थोड़ा सा दही या खट्टा पदार्थ जो दूध में उसे जमाकर दही बनाने के लिये डाला जाता है ।
जामना–क्रि० अ० दे० "जमना" ।
जामनी–वि० दे० "यावनी" ।
जामवंत–संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्" ।
जामा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पहनावा । कपड़ा । वस्त्र । २. घुननदार घेरे का एक प्रकार का पहनावा ।
मुहा०—जामे से बाहर होना=आपे से बाहर होना । अत्यंत क्रोध करना ।
जामाता–संज्ञा पुं० [सं० जामातृ] दामाद ।
जामिक०–संज्ञा पुं० [सं० यामिक] पहरुआ । पहरा देनेवाला । रक्षक ।
ज़ामिन, ज़ामिनदार–संज्ञा पुं० [अ०] ज़मानत करनेवाला । जिम्मेदार । प्रतिभू ।
जामिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "यामिनी" ।
संज्ञा स्त्री० दे० "ज़मानत" ।
जामुन–संज्ञा पुं० [सं० जंबु] एक सदा-बहार पेड़ जिसके फल बैंगनी या बहुत काले होते हैं और खाए जाते हैं ।
जामुनी–वि० [हिं० जामुन] जामुन के रंग का । बैंगनी या काला ।
जामेवार–संज्ञा पुं० [फ़ा० जामा+वार] १. एक प्रकार का दुशाला जिसकी सारी ज़मीन पर बूटे रहते हैं । २. इसी प्रकार की छींट ।
जाय०†–अव्य० [फ़ा० जा] वृथा । निष्फल । वि० उचित । वाजिब । ठीक ।
जायका–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० ज़ायकेदार] खाने पीने की चीज़ों का मज़ा । स्वाद ।
जायचा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] जन्मपत्री ।
जायज़–वि० [अ०] उचित । मुनासिब ।
जायज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. जाँच । पड़ताल । २. हाज़िरी । गिनती ।
जायदाद–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] भूमि, धन या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो । संपत्ति ।
जायनमाज़–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] छोटी दरी या बिछौना जिस पर बैठकर मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं । मुसल्ला ।
जायपत्री–संज्ञा स्त्री० दे० "जावित्री" ।
जायफल–संज्ञा पुं० [सं० जातीफल] अखरोट की तरह का पर उससे छोटा एक सुगंधित फल जिसका व्यवहार औषध और मसाले आदि में होता है ।
जाया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विवाहिता स्त्री । पत्नी । जोरू । २. उपजाति वृत्त का सातवाँ भेद ।
ज़ाया–वि० [फ़ा०] ख़राब । नष्ट ।
जार–संज्ञा पुं० [सं०] पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला पुरुष । उपपति । यार । आशना ।
वि० मारने या नाश करनेवाला ।
जारकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] व्यभिचार ।
जारज–संज्ञा पुं० [सं०] किसी स्त्री की वह संतान जो उसके उपपति से उत्पन्न हुई हो ।
जारज योग–संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में एक योग जिससे यह सिद्धांत निकाला जाता है कि बालक अपनी माता के जार या उपपति के वीर्य से उत्पन्न है ।
जारण–संज्ञा पुं० [सं०] जलाना । भस्म करना ।
जारन†–संज्ञा पुं० [हिं० जलना] १. ईंधन । २ जलाने की क्रिया या भाव ।
जारना†–क्रि० स० दे० "जलाना" ।
जारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री । बदचलन औरत ।
जारी–वि० [अ०] १. बहता हुआ । प्रवाहित । २. चलता हुआ । प्रचलित ।
संज्ञा स्त्री० [सं० जार+ई (प्रत्य०)] परस्त्री-गमन । छिनाला ।
जालंधर–संज्ञा पुं० दे० "जलंधर" ।
जालंधरी विद्या–संज्ञा स्त्री० [सं० जालंधर(दैत्य)] मायिक विद्या । माया । इंद्रजाल ।
जालंध्र–संज्ञा पुं० [सं०] झरोखे की जाली ।

जाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. तार या सूत आदि का पट जिसका व्यवहार मछलियों और चिड़ियों आदि को पकड़ने में होता है। २. एक में ओतप्रोत बुने या गुथे हुए बहुत से तारों अथवा रेशों का समूह। ३. किसी को फँसाने या वश में करने की युक्ति। ४. मकड़ी का जाला। ५. समूह। ६. इन्द्रजाल। ७. एक प्रकार की तोप।
संज्ञा पुं० [अ० जअल। मि० सं० जाल] फरेब। धोखा। झूठी कारवाई।

जालदार–वि० [सं० जाल + हिं० दार] जिसमें जाल की तरह पास पास बहुत से छेद हों।

जालसाज़–संज्ञा पुं० [अ० जअल + फा० साज़] वह जो दूसरों को धोखा देने के लिये किसी प्रकार की झूठी कारवाई करे।

जालसाज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] फरेब या जाल करने का काम। दग़ाबाजी।

जाला–संज्ञा पुं० [सं० जाल] १. मकड़ी का बुना हुआ पतले तारों का वह जाल जिसमें वह मक्खियों और कीड़े-मकोड़ों को फँसाती है। २. आँख का एक रोग जिसमें पुतली के ऊपर एक सफेद झिल्ली पड़ जाती है। ३. वह जाल जिसमें घास भूसा आदि बाँधे जाते हैं। ४. पानी रखने का एक प्रकार का मिट्टी का बड़ा बरतन।

जालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जाली। २. समूह। दल।

ज़ालिम–वि० [अ०] जुल्म करनेवाला।

जालिया–वि० [हिं० जाल + इया (प्रत्य०)] जालसाज। फरेब करने या धोखा देनेवाला।

जाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० जाल] १. लकड़ी, पत्थर या धातु की चादर आदि में बना हुआ बहुत से छोटे छोटे छेदों का समूह। २. कसीदे का एक प्रकार का काम। भरना। ३. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें केवल बहुत से छोटे छोटे छेद ही होते हैं। ४. कच्चे आम के अंदर गुठली के ऊपर का तंतु समूह।
वि० [अ० जअल] नकली।

जावक†–संज्ञा [सं० यावक] ... बना हुआ ... का ... अलता। ...

जावन†– ...

जाविनी–संज्ञा ...

जापनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।

जासु†–वि० [हिं० जो] जिसका।

जासूस–संज्ञा पुं० [अ०] गुप्त रूप से किसी बात, विशेषतः अपराध आदि, का पता लगानेवाला। भेदिया। मुखबिर।

जासूसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जासूस] गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना। जासूस का काम।

ज़ाहिर–वि० [अ०] १. जो सबके सामने हो। प्रकट। प्रकाशित। खुला हुआ। २. विदित। जाना हुआ।

ज़ाहिरदारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह बात या काम जो केवल दिखावे के लिये हो।

ज़ाहिरा–क्रि० वि० [अ०] देखने में प्रकट रूप में। प्रत्यक्ष में।

जाहिल–वि० [अ०] १. मूर्ख। अज्ञान नासमझ। २. अनपढ़। विद्याहीन।

जाही–संज्ञा स्त्री० [सं० जाति] चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगंधित फूल।

जाह्नवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] जह्नु ऋषि से उत्पन्न, गंगा।

जिंगनी, जिंगिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] जिंगिनी का पेड़।

जिंद–संज्ञा पुं० [अ०] भूत। प्रेत। जिन।

ज़िंदगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जीवन। २. जीवन-काल। आयु।
मुहा०—ज़िंदगी के दिन पूरे करना या भरना = १. दिन काटना। जीवन बिताना। २. मरने को होना। आसन्न-मृत्यु होना।

ज़िंदा–वि० [फा०] जीवित। जीता हुआ।

ज़िंदा दिल–वि० [फा०] [संज्ञा ज़िंदादिली] खुश मिज़ाज। हँसोड़। दिल्लगीबाज।

जिआना†–क्रि० स० दे० "जिमाना"।

जिंस–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. प्रकार। किस्म। भाँति। २. चीज़। वस्तु। द्रव्य। ३. सामग्री। सामान। ४. अनाज। गल्ला। रसद।

जिंसवार–संज्ञा पुं० [फा०] पटवारियों का वह कागज जिसमें वे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं।

जिआना†–क्रि० स० दे० "जिलाना"।

जिउ†–संज्ञा पुं० दे० "जीव"।

... दे० "जीविका"।
... [हिं० जीविका] १ ... २

वस्तुएँ लाकर नगरों में बेचते हैं।

जिउतिया-संज्ञा स्त्री० दे० "जितापुमी"।

ज़िक्र-संज्ञा पु० [अ०] चर्चा। प्रसंग।

जिगर-संज्ञा पु० [फा० मि० सं० यकृत्] [वि० जिगरी] १. कलेजा। २. चित्त। मन। जीव। ३. साहस। हिम्मत। ४. गूदा। सत्त। सार।

जिगरा-संज्ञा पु० [हिं० जिगर] साहस। हिम्मत। जीवट।

जिगरी-वि० [फा०] १. दिली। भीतरी। २. अत्यंत घनिष्ठ। अभिन्न-हृदय।

जिच, जिच्च-संज्ञा स्त्री० [?] १. बेबसी। तंगी। मजबूरी। २. शतरंज में खेल की वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न हो।

वि० विवश। मजबूर। तंग।

जिज़िया-संज्ञा पु० दे० "जज़िया"।

जिज्ञासा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जानने की इच्छा। ज्ञान प्राप्त करने की कामना। २. पूछ ताछ। प्रश्न। तहकीकात।

जिज्ञासु-वि० [सं०] जानने की इच्छा रखनेवाला। जो जिज्ञासा करे। खोजी।

जित्-वि० [सं०] जीतनेवाला। जेता।

जित-वि० [सं०] जीता हुआ।

संज्ञा पु० [सं०] जीत। विजय।

*†क्रि० वि० [सं० यत्र] जिधर। जिस ओर।

जितना-वि० [हिं० जिस+तना (प्रत्य०)] [स्त्री० जितनी] जिस मात्रा का। जिस परिमाण का।

क्रि० वि० जिस मात्रा में। जिस परिमाण में।

जितवना*†-क्रि० स० दे० "जताना"।

जितवाना-क्रि० स० दे० "जिताना"।

जितवार†-वि० [हिं० जीतना] जीतनेवाला।

जितवैया†-वि० [हिं० जीतना+वैया (पू० प्रत्य०)] जीतनेवाला।

जिताना-क्रि० स० [हिं० जीतना का प्रे०] जीतने में सहायता करना।

जिताष्टमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंदुओं का एक व्रत जिसे पुत्रवती स्त्रियाँ आश्विन कृष्णाष्टमी के दिन करती हैं। जिउतिया।

जितेंद्रिय-वि० [सं०] १. जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो। २. सम वृत्तिवाला। शांत।

जिते*-वि० बहु० [हिं० जिस+ते] जितने। (संख्या-सूचक)

जितै*-क्रि० वि० [सं० यत्र, प्रा० यत्त] जिधर। जिस ओर।

जितो †-वि० [हिं० जिस] जितना (परिमाण-सूचक)।

क्रि० वि० जिस मात्रा में। जितना।

जित्वर-वि० [सं०] जेता। विजयी।

ज़िद-संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० ज़िद्दी] १. २. वैर। शत्रुता। हठ। अड़। दुराग्रह।

ज़िद्दी-वि० [फा०] १. ज़िद करनेवाला। हठी। २. दूसरे की बात न माननेवाला। दुराग्रही।

जिधर-क्रि० वि० [हिं० जिस्+धर (प्रत्य०)] जिस ओर। जहाँ।

जिन-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. सूर्य्य। ३. बुद्ध। ४. जैनों के तीर्थंकर।

वि० सर्व० [सं० यानि] "जिस" का बहु०।

संज्ञा पु० [अ०] मुसलमान भूत।

ज़िना-संज्ञा पु० [अ०] व्यभिचार।

ज़िनाकार-वि० [फा०] [संज्ञा ज़िनाकारी] व्यभिचारी।

ज़िना बिलजब्र-संज्ञा पु० [अ०] किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा और सम्मति के विरुद्ध बलात् संभोग करना।

जिनि†-अव्य० [हिं० जनि] मत। नहीं।

जिनिस-संज्ञा स्त्री० दे० "जिंस"।

जिन्हें† -सर्व० दे० "जिन"।

जिब्भा, जिभ्या*-संज्ञा स्त्री० दे० "जिह्वा"।

जिमाना-क्रि० स० [हिं० जीमना] खाना खिलाना। भोजन कराना।

जिमि*-क्रि० वि० [हिं० जिम+इमि] जिस प्रकार से। जैसे। यथा। ज्यों।

ज़िम्मा-संज्ञा पु० [अ०] १. इस बात का भार-ग्रहण कि कोई बात या कोई काम अवश्य होगा; और यदि न होगा तो उसका दोष भार ग्रहण करनेवाले पर होगा। दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा। जवाबदिही।

मुहा०—किसी के ज़िम्मे रुपया आना, निकलना या होना=किसी के ऊपर रुपया ऋण स्वरूप होना। देना ठहरना।

२. सुपुर्दगी। देख रेख। संरक्षा।

ज़िम्मादार-संज्ञा पु० दे० "ज़िम्मावार"।

ज़िम्मावार-संज्ञा पु० [फा०] वो किसी बात के लिये ज़िम्मा देह। उत्तरदाता।

ज़िम्मावारी-संज्ञा स्त्री० [

१. किसी बात के करने या किए जाने का भार। उत्तरदायित्व। जवाबदिही। २. सपुर्दगी। संरक्षा।

जिम्मेवार–संज्ञा पु० दे० "जिम्मावार"।

जिय†–संज्ञा पु० [स० जीव] मन। चित्त।

जियन–संज्ञा पु० [हिं० जीवन] जीवन।

जियबधा–संज्ञा पु० दे० "जल्लाद"।

जियरा‡–संज्ञा पु० [हिं० जीव] जीव।

ज़ियान–संज्ञा पुं० [अ०] घाटा। टोटा।

जियाना†–क्रि० स० [हिं० जीना] १. जिलाना। जीवित रखना। २. पालना।

ज़ियाफ़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आतिथ्य। मेहमानदारी। २. भोज। दावत।

ज़ियारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दर्शन। २. तीर्थ-दर्शन।

मुहा०—ज़ियारत लगना = भीड़ लगना।

ज़ियारी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० जीना] १. जीवन। ज़िंदगी। २. जीविका। ३. हृदय की दृढ़ता। जीवट। जिगरा।

जिरगा–संज्ञा पु० [फा०] १. झुंड। गरोह। २. मंडली। दल।

जिरह–संज्ञा स्त्री० [अ० जुरह] १. हुज्जत। खुचुर। २. ऐसी पूछ ताछ जो किसी से उसकी कही हुई बातों की सत्यता की जाँच के लिये की जाय।

ज़िरह–संज्ञा स्त्री० [फा०] लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। वर्म। बकतर।

यौ०—ज़िरह-पोश = जो बकतर पहने हो।

ज़िरही–वि० [हिं० ज़िरह] जो ज़िरह पहने हो। कवचधारी।

जिराफ़ा–संज्ञा पु० दे० "ज़ुराफ़ा"।

ज़िला–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चमक दमक।

मुहा०—ज़िला देना = माँजकर तथा रोगन आदि चढ़ाकर चमकाना। सिकली करना।

यौ०—ज़िलाकार = सिकलीगर।

२. माँजकर या रोगन आदि चढ़ाकर चमकाने का कार्य।

ज़िला–संज्ञा पु० [अ०] १. प्रांत। प्रदेश। २. भारतवर्ष में किसी प्रांत का वह भाग जो एक कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर के प्रबंध में हो। ३. किसी इलाके का छोटा विभाग या अंश।

ज़िलादार–संज्ञा पु० [फा०] १. वह अफसर जिसे ज़मींदार अपने इलाके के किसी भाग में लगान वसूल करने के लिये नियत करता है। २. वह अफसर जो नहर, अफीम आदि संबंधी किसी हलके में काम करने के लिये नियत हो।

जिलाना–क्रि० स० [हिं० जीना का स०] १. जीवन देना। जिंदा करना। जीवित करना। † २. पालना। पोसना। ३. मरने से बचाना। प्राण-रक्षा करना।

ज़िलासाज़–संज्ञा पु० [फा०] हथियारों आदि पर ओप चढ़ानेवाला। सिकलीगर।

ज़िलाह‡–संज्ञा पु० [अ० जल्लाद] अत्याचारी।

ज़िलेदार–संज्ञा पु० दे० "ज़िलादार"।

जिल्द–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० जिल्दी] १ खाल। चमड़ा। खलड़ी। २. ऊपर का चमड़ा। त्वचा। ३. वह पट्ठा या दफ्ती जो किसी किताब के ऊपर उसकी रक्षा के लिये लगाई जाती है। ४ पुस्तक की एक प्रति। ५. पुस्तक का वह भाग जो पृथक् सिला हो। भाग। खंड।

जिल्दबंद–संज्ञा पु० [फा०] वह जो किताबों की जिल्द बाँधता हो। जिल्द बाँधनेवाला

जिल्दसाज़–संज्ञा पु० दे० "जिल्दबंद"।

ज़िल्लत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनादर अपमान। तिरस्कार। बेइज़्ज़ती।

मुहा०—ज़िल्लत उठाना या पाना = १ अपमानित होना। २. तुच्छ ठहरना।

२. दुर्गति। दुर्दशा। हीन दशा।

जिव†–संज्ञा पु० दे० "जीव"।

जिवाना–क्रि० स० दे० "जिलाना"।

जिस–वि० [सं० यः, यत्] 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्तियुक्त विशेष्य के साथ आने में प्राप्त होता है। जैसे—जिस पुरुष ने। सर्व० 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

जिस्ता–संज्ञा पु० १. दे० "जस्ता"। ‡ २ दे० "दस्ता"।

जिस्म–संज्ञा पु० [फा०] शरीर। देह।

जिह‡–संज्ञा स्त्री० [फा० जह, सं० ज्या धनुष का चिल्ला। रोदा। ज्या।

ज़िहन–संज्ञा पु० [अ०] समझ। बुद्धि।

मुहा०—ज़िहन खुलना = बुद्धि का विकास होना। ज़िहन लड़ाना = खूब सोचना।

जिहाद–संज्ञा पु० [अ०] मज़हबी लड़ाई। वह लड़ाई जो मुसलमान लोग अन्य धर्मावलंबियों से अपने धर्म के प्रचार आदि के लिये करते थे।

जिह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] जीभ। जबान।

जिह्वाग्र—सज्ञा पु० [स०] जीभ की नोक। मुहा०—जिह्वाग्र करना = कंठस्थ करना। जबानी याद करना।

जिह्वामूल—सज्ञा पु० [स०] [वि० जिह्वामूलीय] जीभ की जड़ या पिछला स्थान।

जिह्वामूलीय—सज्ञा पु० [स०] वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वा मूल से हो। क और ख के पहले विसर्ग आने से वे जिह्वामूलीय हो जाते हैं। कोई कोई कवर्ग मात्र को जिह्वामूलीय मानते हैं।

जींगन†—सज्ञा पु० [स० जृंगण] जुगनू।

जी—सज्ञा पु० [स० जीव] १ मन। दिल। तबीयत। चित्त। २ हिम्मत। दम। जीवट। ३. सकल्प। विचार। मुहा०—जी अच्छा होना = चित्त स्वस्थ होना। नीरोग होना। किसी पर जी आना = किसी से प्रेम होना। जी उचटना = चित्त न लगना। मन हटना। जी उड़ जाना = भय, आशंका आदि से चित्त सहसा व्यग्र हो जाना। जी करना = १. हिम्मत करना। साहस करना। २ इच्छा होना। जी का बुखार निकलना = क्रोध, शोक, दु ख आदि के वेग को रो कलपकर या बक झककर शांत करना। (किसी के) जी को जी समझना = किसी के विषय में यह समझना कि वह भी जीव है, उसे भी कष्ट होगा। जी खट्टा होना = मन फिर जाना या विरक्त होना। घृणा होना। जी खोलकर = १ बिना किसी संकोच के। बेधड़क। २ जितना जी चाहे। ... जी ... जान पर जोखों उठाना। जी बहलना = चित्त का आनंदपूर्वक लीन होना। मनोरंजन होना। जी बिगड़ना = जी मचलाना। कै करने की इच्छा होना। (किसी की ओर से) जी बुरा करना = किसी के प्रति अच्छा भाव न रखना। किसी के प्रति घृणा या क्रोध करना। जी भरना (क्रि० अ०) = चित्त संतुष्ट होना। तृप्ति होना। जी भरना (क्रि० स०) = दूसरे का संदेह दूर करना। खटका मिटाना। जी भरकर = मन माना। यथेष्ट। जी भर आना = चित्त में दु ख या करुणा का उद्रेक होना। दु ख या दया उमड़ना। जी मचलाना या मतलाना = उलटी या कै करने की इच्छा होना। वमन करने को जी चाहना। जी में आना = चित्त में विचार उत्पन्न होना। जी चाहना। (किसी का) जी रखना = मन रखना। इच्छा पूरी करना। प्रसन्न करना। संतुष्ट करना। जी लगना = मन का किसी विषय में योग देना। चित्त प्रवृत्त होना। (किसी से) जी लगना = किसी से प्रेम होना। जी से = जी लगाकर। ध्यान देकर। जी से उतर जाना = दृष्टि से गिर जाना। मन न जँचना। जी से जाना = मर जाना।

अव्य [स० जित्, या (श्री) युत] एक सम्मानसूचक शब्द जो किसी के नाम के आगे लगाया जाता है अथवा किसी बड़े के कथन, प्रश्न या संबोधन के उत्तर में सक्षिप्त प्रति संबोधन के रूप में प्रयुक्त होता है।

जीअ, जीउ—सज्ञा पु० दे० "जी", "जीव"। ...

मरा न हो। २. तौल या नाप में ठीक से कुछ बढ़ा हुआ।

जीन-वि० [सं० जीर्ण] १. जर्जर। कटा फटा। २. वृद्ध। बुड्ढा।

जीन-संज्ञा पु० [फा०] १. घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी। चारजामा। काठी। २. पलान। कजावा। ३. एक प्रकार का बहुत मोटा सूती कपड़ा।

जीनपोश-संज्ञा पु० [फा०] जीन के ऊपर ढकने का कपड़ा।

जीनसवारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े पर जीन रखकर चढ़ने का कार्य।

जीना-क्रि० अ० [सं० जीवन] १. जीवित रहना। जिंदा रहना।

मुहा०—जीता जागता = जीवित और सचेत। भला चंगा। जीती मक्खी निगलना = जान बूझकर कोई अन्याय या अनुचित कर्म करना। जीते जी मर जाना = जीवन में ही मृत्यु से बढ़कर कष्ट भोगना। जीना भारी हो जाना = जीवन का आनंद जाता रहना।

२. प्रसन्न होना। प्रफुल्लित होना।

संज्ञा पु० [फा० जीनः] सीढ़ी।

जीभ-संज्ञा स्त्री० [सं० जिह्वा] १. मुँह के भीतर रहनेवाली लंबे चिपटे मांस पिंड की वह इंद्रिय जिससे रसों का अनुभव और शब्दों का उच्चारण होता है। ज़बान। जिह्वा। रसना।

मुहा०—जीभ चलना = भिन्न भिन्न वस्तुओं का स्वाद लेने के लिये जीभ का हिलना डोलना। चटोरेपन की इच्छा होना। जीभ निकालना = जीभ खींचना। जीभ उखाड़ लेना। जीभ पकड़ना = बोलने न देना। बोलने से रोकना। जीभ बंद करना = बोलना बंद करना। चुप रहना। जीभ हिलाना = मुँह से कुछ बोलना। छोटी जीभ = गलशुंडी। किसी की जीभ के नीचे जीभ होना = किसी का अपनी कही हुई बात को बदल जाना।

२. जीभ के आकार की कोई वस्तु; जैसे–निब।

जीभी-संज्ञा स्त्री० [हिं० जीभ] १. धातु की बनी एक पतली धनुषाकार वस्तु जिससे जीभ छीलकर साफ करते हैं। २. निब। ३. छोटी जीभ। गलशुंडी।

जीमना-क्रि० स० [सं० जेमन] भोजन करना।

जीमूत-संज्ञा पु० [सं०] १. पर्वत। २. बादल। ३. इंद्र। ४. सूर्य। ५. शाल्मली द्वीप के एक वर्ष का नाम। ६ एक प्रकार का दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और ग्यारह रगण होते हैं। यह प्रचित के अंतर्गत है।

जीमूतवाहन-संज्ञा पु० [सं०] इंद्र।

जीय†ः-संज्ञा पु० दे० "जी"।

जीयट-संज्ञा पु० दे० "जीवट"।

जीयति† -संज्ञा स्त्री० [हिं० जीना] जीवन।

जीयदान-संज्ञा पु० [सं० जीवदान] प्राणदान। जीवनदान। प्राणरक्षा।

जीर-संज्ञा पु० [सं०] १. जीरा। २. फूल का जीरा। केसर। ३. खड्ग। तलवार।

संज्ञा पु० [फा० जिरह] जिरह। कवच।

वि० [सं० जीर्ण] जीर्ण। पुराना।

जीरण‡-वि० दे० "जीर्ण"।

जीरा-संज्ञा पु० [सं० जीरक] १. दो हाथ ऊँचा एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखाकर मसाले के काम में लाते हैं। इसके दो मुख्य भेद हैं—सफेद और काला। २. जीरे के आकार के छोटे महीन, लंबे बीज। ३. फूलों का केसर।

जीरी-संज्ञा पुं० [हिं० जीरा] एक प्रकार का अगहनी धान जो कई बरसों तक रह सकता है।

जीर्ण-वि० [सं०] १. बुढ़ापे से जर्जर। २ टूटा फूटा और पुराना। बहुत दिनों का।

यौ०—जीर्ण शीर्ण = फटा पुराना।

३. पेट में अच्छी तरह पचा हुआ।

जीर्णज्वर-संज्ञा पु० [सं०] वह ज्वर जिसे रहते बारह दिन से अधिक हो गए हों। पुराना बुखार।

जीर्णता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुढ़ापा। बुढ़ाई। २. पुरानापन।

जीर्णोद्धार-संज्ञा पु० [सं०] फटी पुरानी या टूटी फूटी वस्तुओं का फिर से सुधार। पुनः संस्कार। मरम्मत।

जीला†ः-वि० [सं० झिल्ली] [स्त्री० जीली] १. झीना। पतला। २. महीन।

जीवत-वि० [सं०] जीता जागता।

जीवंती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक लता जिसकी पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं। २. एक लता जिसके फूलों में मीठा मधु या मकरंद होता है। ३. एक प्रकार की बढ़िया पीली हड़। ४. बाँदा। ५. गुडूची।

जीव-संज्ञा पु० [सं०] १. प्राणियों का चेतन

तत्त्व। जीवात्मा। आत्मा। २. प्राण। जीवनतत्त्व। जान। ३. प्राणी। जीवधारी।
यौ०—जीवजंतु = १. जानवर। प्राणी। २. कीड़ा मकोड़ा।

जीवक-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राण धारण करनेवाला। २. क्षपणक। ३. सँपेरा। ४. सेवक। ५. ब्याज लेकर जीविका करनेवाला। सूदखोर। ६. पीलसाल वृक्ष। ७ अष्टवर्ग के अंतर्गत एक जड़ी या पौधा।

जीवट-संज्ञा पुं० [सं० जीवथ] हृदय की दृढ़ता। जिगरा। साहस। हिम्मत।

जीवदान-संज्ञा पुं० [सं०] अपने वश में आए हुए शत्रु या अपराधी को न मारने, या छोड़ देने का कार्य। प्राणदान। प्राणरक्षा।

जीवधारी-संज्ञा पुं० [सं०] प्राणी। जानवर।

जीवन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० जीवित] १. जन्म और मृत्यु के बीच का काल। जिंदगी। २. जीवित रहने का भाव। प्राण-धारण। ३. जीवित रखनेवाली वस्तु। ४. परमप्रिय। प्यारा। ५ जीविका। ६ पानी। ७. वायु।

जीवन-चरित-संज्ञा पुं० [सं०] जीवन में किए हुए कार्यों आदि का वर्णन। जिंदगी का हाल।

जीवनधन-संज्ञा पुं० [सं०] १ सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति। २. प्राणाधार। प्राणप्रिय।

जीवनबूटी-संज्ञा स्त्री० [सं० जीवन + हिं० बूटी] एक पौधा या बूटी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को भी जिला सकती है। संजीवनी।

जीवनमूरि-संज्ञा स्त्री० [सं० जीवन + मूल] १. जीवनबूटी। २. अत्यंत प्रिय वस्तु।

जीवनवृत्त-संज्ञा पुं० दे० "जीवनचरित"।

जीवना†-क्रि० अ० दे० "जीना"।

जीवनी-संज्ञा स्त्री० [जीवन + ई० (प्रत्य०)] जीवन भर का वृत्तांत। जीवनचरित।

जीवनोपाय-संज्ञा पुं० [सं०] जीविका।

जीवन्मुक्त-वि० [सं०] जो जीवित दशा में ही आत्मज्ञान द्वारा सांसारिक मायाबंधन से छूट गया हो।

जीवन्मृत-वि० [सं०] जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो।

जीवयोनि-संज्ञा स्त्री० [सं०] जीव जंतु।

जीवरा‡-संज्ञा पुं० [हिं० जीव] जीव। प्राण।

जीवरि‡-संज्ञा पुं० [सं० जीव या जीवन] जीवन। प्राण-धारण की शक्ति।

जीवलोक-संज्ञा पुं० [सं०] भूलोक। पृथ्वी।

जीवहत्या, जीवहिंसा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राणियों का वध। २. प्राणियों के वध का दोष।

जीवाजून†-संज्ञा पुं० [सं० जीवयोनि] पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि जीव।

जीवात्मा-संज्ञा पुं० [सं०] प्राणियों की चेतन वृत्ति का कारण स्वरूप पदार्थ। जीव। आत्मा। प्रत्यगात्मा।

जीवानुज-संज्ञा पुं० [सं०] गर्गाचार्य मुनि जो बृहस्पति के वंश में हुए हैं।

जीविका-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यापार जिससे जीवन का निर्वाह हो। जीवनोपाय। रोजी। वृत्ति।

जीवित-वि० [सं०] जीता हुआ। जिंदा।

जीवी-वि० [सं० जीविन्] १. जीनेवाला। प्राणधारी। २ जीविका करनेवाला। जैसे—श्रमजीवी।

जीवेश-संज्ञा पुं० [सं०] परमात्मा।

जीह-संज्ञा स्त्री० दे० "जीभ"।

जुंबिश-संज्ञा स्त्री० [फा०] चाल। गति। हरकत। हिलना डोलना।
मुहा०—जुंबिश खाना = हिलना डोलना।

जु‡-वि० क्रि० वि० दे० "जो"।

जुआँ-संज्ञा स्त्री० दे० "जूँ"।

जुआ-संज्ञा पुं० [सं० द्यूत] रुपए पैसे की बाजी लगाकर खेला जानेवाला खेल।

जुआचोर-संज्ञा पुं० [हिं० जुआ + चोर] धोखेबाज। ठग। वंचक।

जुआरी-संज्ञा पुं० [हिं० जुआ] जुआ खेलनेवाला।

जुईं-संज्ञा स्त्री० [हिं० जूँ] छोटी जुआँ।

जुकाम-संज्ञा पुं० [हिं० चू + घाम ?] सरदी से होनेवाली एक बीमारी जिसमें नाक और मुँह से कफ निकलता है। सरदी।
मुहा०—मेंढकी को जुकाम होना = किसी छोटे मनुष्य का कोई बड़ा काम करना।

जुग-संज्ञा पुं० [सं० युग] १. युग। २. जोड़ा। युग्म। ३. चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही कोठे में इकट्ठा होना। ४ पुश्त। पीढ़ी।

जुगजुगाना-क्रि० अ० [हिं० जगना] १. मंद ज्योति से चमकना। टिमटिमाना। २. अवनत दशा से कुछ उन्नत दशा को प्राप्त होना। उभरना।

जुगत–संज्ञा स्त्री० [सं० युक्ति] १. युक्ति। उपाय। तदबीर। ढंग। २. व्यवहार-कुशलता। चतुराई। हथकंडा।
जुगनी–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू"।
जुगनू–संज्ञा पु० [हिं० जुगजुगाना] १. एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह चमकता है। खद्योत। पटबीजना। २. पान के आकार का गले का एक गहना। रामनामी।
जुगल–वि० दे० "युगल"।
जुगवना–क्रि० स० [सं० योग + अवना (प्रत्य०)] १. संचित रखना। एकत्र करना। २. हिफाजत से रखना।
जुगाना†–क्रि० स० दे० "जुगवना"।
जुगालना–क्रि० अ० [सं० उद्गिलन] चौपायों का पागुर करना।
जुगाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुगालना] सींगवाले चौपायों की निगले हुए चारे को गले से थोड़ा थोड़ा निकाल कर फिर से चबाने की क्रिया। पागुर। रोमंथ।
जुगुत–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।
जुगुप्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० जुगुप्सित] १. निंदा। बुराई। २. अश्रद्धा। घृणा।
जुज़–संज्ञा पु० [फा० मि० सं० युज्] कागज के ८ या १६ पृष्ठों का समूह। फारम।
जुजवी–वि० [फा०] १. बहुतों में से कोई एक। बहुत कम। २. बहुत छोटे अंश का।
जुझ†–संज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध"।
जुझवाना†–क्रि० स० [हिं० जूझना] लड़ा देना।
जुझाऊ–वि० [हिं० जूझ + आऊ (प्रत्य०)] लड़ाई में काम आनेवाला। युद्ध संबंधी।
जुझार†*–वि० [हिं० जुझ + आर (प्रत्य०)] १. लड़ाका। वीर। २. युद्ध। लड़ाई।
जुट–संज्ञा स्त्री० [सं० युक्त] १. दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। जुग। २. जत्था। दल।
जुटना–क्रि० अ० [सं० युक्त + ना (प्रत्य०)] १. दो या अधिक वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का कोई अंग दूसरी के किसी अंग के साथ दृढ़तापूर्वक लगा रहे। संबद्ध होना। संश्लिष्ट होना। जुड़ना। २. लिपटना। गुथना। ३. संभोग करना। ४. एकत्र होना। इकट्ठा होना। ५. सम्मिलित होना। ६. मिलना।
जुटली–वि० [सं० जूट] जूड़ेवाला। लंबे बालों की लटवाला।
जुटाना–क्रि० स० [हिं० जुटना] जुटना का सकर्मक रूप। जुटने में प्रवृत्त करना।
जुट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुटना] १. घास या टहनियों का छोटा पूला। अँटिया। जूरी। २. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ३. तले ऊपर रखी हुई वस्तुओं का समूह। गड्डी। वि० जुटी या मिली हुई।
जुठारना–क्रि० स० [हिं० जूठा] खाने पीने की वस्तु को कुछ खाकर छोड़ देना। जूठा करना। उच्छिष्ट करना।
जुठिहारा–संज्ञा पु० [हिं० जूठा + हारा] [स्त्री० जुठिहारी] जूठा खानेवाला।
जुड़ना–क्रि० अ० [हिं० जुटना] १. कई वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का अंग दूसरी के साथ लगा रहे। संबद्ध होना। संयुक्त होना। २. संभोग करना। प्रसंग करना। †३. इकट्ठा होना। ४. एकत्र होना। किसी कार्य में योग देने के लिये उपस्थित होना। ५. प्राप्त होना। मिलना। ६. दे० "जुतना"।
जुड़पित्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूड़ + पित्त] एक रोग जिसमें शरीर में खुजली उठती है और बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं।
जुड़वाँ–वि० [हिं० जुड़ना] गर्भ काल से ही एक में सटे हुए। जुड़े हुए। यमल। जैसे—जुड़वाँ बच्चे।
संज्ञा पु० एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे।
जुड़वाना†–क्रि० स० [हिं० जूड़] १. ठंढा करना। २. शांत करना। सुखी करना।
क्रि० स० दे० "जोड़वाना"।
जुड़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ाई"।
जुड़ाना†–क्रि० अ० [हिं० जूड़] १. ठंढा होना। २. शांत होना। तृप्त होना।
क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना। २ शांत और संतुष्ट करना। तृप्त करना।
जुड़ावना†–क्रि० स० दे० "जुड़ाना"।
जुत*–वि० दे० "युक्त"।
जुतना–क्रि० अ० [हिं० युक्त] १. बैल, घोड़े आदि का गाड़ी, हल आदि में लगना। नधना। २. किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना। ३. हल से जोता जाना।
जुतवाना–क्रि० स० [हिं० जोतना] दूसरे से

जोतने का काम कराना।
जुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई"।
जुतियाना–क्रि० स० [हिं० जूता+इयाना (प्रत्य०)] १. जूता मारना। जूते लगाना। २. अत्यंत निरादर करना।
जुत्थ–संज्ञा पु० दे० "यूथ"।
जुदा–वि० [फा०] १. पृथक्। अलग। २. भिन्न। निराला।
जुदाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] जुदा होने का भाव। विछोह। वियोग।
जुद्ध–संज्ञा पु० दे० "युद्ध"।
जुन्हरी–संज्ञा स्त्री० [सं० यवनाल] ज्वार (अन्न)।
जुन्हाई–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जोण्हा] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. चंद्रमा।
जुन्हैया–संज्ञा स्त्री० दे० "जुन्हाई"।
जुमला–वि० [फा०] सब। कुल। संज्ञा पु० पूरा वाक्य।
जुमा–संज्ञा पु० [अ०] शुक्रवार।
जुमिल–संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का घोड़ा।
जुरअत–संज्ञा स्त्री० [फा०] साहस। हिम्मत।
जुरझुरी–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वर या जूर्त्ति+हिं० झुरझुराना] १. ज्वरांश। हरारत। २. ज्वर के आदि की कँपकँपी।
जुरना–क्रि० स० दे० "जुड़ना"।
जुरमाना–संज्ञा पु० [फा०] वह दंड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े। अर्थ-दंड। धन-दंड।
जुराफा–संज्ञा पु० [अ० जुर्राफ़] अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट की सी लंबी होती है। कुछ हिन्दी कवियों ने इसे भूलकर पक्षी समझ लिया है।
जुर्म–संज्ञा पु० [अ०] वह कार्य जिसके दंड का विधान राजनियम में हो। अपराध।
जुर्रा–संज्ञा पु० [फा०] नर बाज़।
जुर्राब–संज्ञा स्त्री० [तु०] मोजा। पायताबा।
जुल–संज्ञा पु० [सं० छल ?] धोखा। दम।
जुलाब–संज्ञा पु० [फा०] १. रेचन। दस्त। २. रेचक औषध। दस्त लानेवाली दवा।
जुलाहा–संज्ञा पु० [फा० जौलाह] १ कपड़ा बुननेवाला। तंतुवाय। तंतुकार। २. पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा।
ज़ुल्फ़–संज्ञा स्त्री० [फा०] सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं। पट्टा। कुल्ला।
ज़ुल्फ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "ज़ुल्फ़"।
ज़ुल्म–संज्ञा पु० [अ०] अत्याचार। अन्याय। मुहा०—ज़ुल्म टूटना = आफ़त आ पड़ना। ज़ुल्म ढाना = १. अत्याचार करना। २. कोई अद्भुत काम करना।
जुलूस–संज्ञा पु० [अ०] १. सिंहासनारोहण। २. किसी उत्सव का समारोह। ३. उत्सव और समारोह की यात्रा। धूमधाम की सवारी।
जुलाव–संज्ञा पु० दे० "जुलाब"।
जुस्तजू–संज्ञा स्त्री० [फा०] तलाश। खोज।
जुहाना–क्रि० स० [सं० यूथ+आना (प्रत्य०)] एकत्र करना। संचित करना।
जुहार–संज्ञा स्त्री [सं० अवहार ?] क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का प्रणाम। सलाम।
जुहारना–क्रि० स० [सं० अवहार] १ सहायता माँगना। २. एहसान लेना।
जुही–संज्ञा स्त्री० दे० "जूही"।
जूँ–संज्ञा स्त्री० [सं० यूका] एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है। मुहा०—कानों पर जूँ रेंगना = स्थिति का ज्ञान होना। होश होना।
जू–अव्य० [सं० (श्री) युक्त] एक आदरसूचक शब्द जो ब्रज, बुंदेलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगाया जाता है। जी।
जूआ–संज्ञा पु० [सं० युग] १. गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है। †२. जुआठा। ३. चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसे पकड़कर वह फिराई जाती है।
संज्ञा पु० [सं० द्यूत, प्रा० जूआ] वह खेल जिससे जीतनेवाले को हारनेवाले से कुछ धन मिलता है। हार-जीत का खेल। द्यूत।
जूजू–संज्ञा पु० [अनु०] एक कल्पित जीव जिसके नाम से लड़कों को डराते हैं। हाऊ।
जूझ–संज्ञा स्त्री० [सं० युद्ध] युद्ध। लड़ाई।
जूझना†–क्रि० अ० [सं० युद्ध] १. लड़ना। २. लड़कर मर जाना।
जूट–संज्ञा पु० [सं०] १. जटा की गाँठ। जूड़ा। २. लट। जटा।
जूठन–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूठा] १. वह खाने-पीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो। उच्छिष्ट भोजन। २. वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी ने एक दो बार कर लिया हो। भुक्त पदार्थ।

जुगत–संज्ञा स्त्री० [सं० युक्ति] १. युक्ति। उपाय। तदबीर। ढंग। २. व्यवहार-कुशलता। चतुराई। हथकंडा।

जुगनी–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू"।

जुगनू–संज्ञा पुं० [हिं० जुगजुगाना] १. एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह चमकता है। खद्योत। पटबीजना। २. पान के आकार का गले का एक गहना। रामनामी।

जुगल–वि० दे० "युगल"।

जुगवना–क्रि० स० [सं० योग+अवना (प्रत्य०)] १. संचित रखना। एकत्र करना। २. हिफाजत से रखना।

जुगाना†–क्रि० स० दे० "जुगवना"।

जुगालना–क्रि० अ० [सं० उद्गिलन] चौपायों का पागुर करना।

जुगाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुगालना] सींगवाले चौपायों की निगले हुए चारे को गले से थोड़ा थोड़ा निकाल कर फिर से चबाने की क्रिया। पागुर। रोमंथ।

जुगुत–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।

जुगुप्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० जुगुप्सित] १. निंदा। बुराई। २. अश्रद्धा। घृणा।

जुज़–संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० युज्] कागज के ८ या १६ पृष्ठों का समूह। फारम।

जुज़वी–वि० [फा०] १. बहुतों में से कोई एक। बहुत कम। २. बहुत छोटे अंश का।

जुज्झ†–संज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध"।

जुझवाना†–क्रि० स० [हिं० जूझना] लड़ा देना।

जुझाऊ–वि० [हिं० जूझ+आऊ (प्रत्य०)] लड़ाई में काम आनेवाला। युद्ध संबंधी।

जुझार†*–वि० [हिं० जुज्झ+आर (प्रत्य०)] १. लड़ाका। वीर। २. युद्ध। लड़ाई।

जुट–संज्ञा स्त्री० [सं० युक्त] १. दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। जुग। २. जत्था। दल।

जुटना–क्रि० अ० [सं० युक्त+ना (प्रत्य०)] १. दो या अधिक वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का कोई अंग दूसरी के किसी अंग के साथ दृढ़तापूर्वक लगा रहे। संबद्ध होना। संश्लिष्ट होना। जुड़ना। २. लिपटना। गुथना। ३. संभोग करना। ४. एकत्र होना। इकट्ठा होना। ५. ... में सम्मिलित होना। ६. मिलना।

जुटली–वि० [सं० जुट] जूड़ेवाला। लंबे बालों की लटवाला।

जुटाना–क्रि० स० [हिं० जुटना] जुटना का सकर्मक रूप। जुटने में प्रवृत्त करना।

जुट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुटना] १. घास या टहनियों का छोटा पूला। अँटिया। जूरी। २. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ३. तले ऊपर रखी हुई वस्तुओं का समूह। गड्डी।
वि० जुटी या मिली हुई।

जुठारना–क्रि० स० [हिं० जूठा] खाने पीने की वस्तु को कुछ खाकर छोड़ देना। जूठा करना। उच्छिष्ट करना।

जुठिहारा–संज्ञा पुं० [हिं० जूठा+हारा] [स्त्री० जुठिहारी] जूठा खानेवाला।

जुड़ना–क्रि० अ० [हिं० जुटना] १. कई वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का अंग दूसरी के साथ लगा रहे। संबद्ध होना। संयुक्त होना। २. संभोग करना। प्रसंग करना। †३. इकट्ठा होना। ४. एकत्र होना। किसी कार्य में योग देने के लिये उपस्थित होना। ५. प्राप्त होना। मिलना। ६. दे० "जुतना"।

जुड़पित्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूड़+पित्त] एक रोग जिसमें शरीर में खुजली उठती है और बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं।

जुड़वाँ–वि० [हिं० जुड़ना] गर्भ काल से ही एक में सटे हुए। जुड़े हुए। यमल। जैसे—जुड़वाँ बच्चे।
संज्ञा पुं० एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे।

जुड़वाना†–क्रि० स० [हिं० जूड़] १. ठंढा करना। २. शांत करना। सुखी करना।
क्रि० स० दे० "जोड़वाना"।

जुड़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ाई"।

जुड़ाना†–क्रि० अ० [हिं० जूड़] १. ठंढा होना। २. शांत होना। तृप्त होना।
क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना। २ शांत और संतुष्ट करना। तृप्त करना।

जुड़ावना†–क्रि० स० दे० "जुड़ाना"।

जुत*–वि० दे० "युक्त"।

जुतना–क्रि० अ० [हिं० जुतना] १. बैल, घोड़े आदि का गाड़ी, हल आदि में लगना। नधना। २. किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना। ३. हल से जोता जाना।

जुतवाना–क्रि० स० [हिं० जोतना] दूसरे से

जोतने का काम कराना।

जुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई"।

जुतियाना–क्रि० स० [हिं० जूता + इयाना (प्रत्य०)] १. जूता मारना। जूते लगाना। २. अत्यंत निरादर करना।

जुत्थ*–संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।

जुदा–वि० [फा०] १. पृथक्। अलग। २. भिन्न। निराला।

जुदाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] जुदा होने का भाव। विछोह। वियोग।

जुद्ध*–संज्ञा पुं० दे० "युद्ध"।

जुन्दरी–संज्ञा स्त्री० [सं० यवनाल] ज्वार (अन्न)।

जुन्हाई–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जोण्हा] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. चंद्रमा।

जुन्हैया†–संज्ञा स्त्री० दे० "जुन्हाई"।

जुमला–वि० [फा०] सब। कुल। संज्ञा पुं० पूरा वाक्य।

जुमा–संज्ञा पुं० [अ०] शुक्रवार।

जुमिल–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

जुरअत–संज्ञा स्त्री० [फा०] साहस। हिम्मत।

जुरजुरी–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वर या जूर्ति + हिं० फरफराना] १. ज्वरांश। हरारत। २. ज्वर के आदि की कँपकँपी।

जुरना*†–क्रि० अ० दे० "जुड़ना"।

जुरमाना–संज्ञा पुं० [फा०] वह दंड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े। अर्थ-दंड। धन-दंड।

जुराफा–संज्ञा पुं० [अ० जुर्राफा] अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट की सी लंबी होती हैं। कुछ हिन्दी कवियों ने इसे भूलकर पक्षी समझ लिया है।

जुर्म–संज्ञा पुं० [अ०] वह कार्य जिसके दंड का विधान राजनियम में हो। अपराध।

जुर्रा–संज्ञा पुं० [फा०] नर बाज़।

जुर्राब–संज्ञा स्त्री० [तु०] मोजा। पायताबा।

जुल–संज्ञा पुं० [सं० छल ?] धोखा। दम।

जुलाब–संज्ञा पुं० [फा०] १. रेचन। दस्त। २ रेचक औषध। दस्त लानेवाली दवा।

जुलाहा–संज्ञा पुं० [फा० जौलाह] १ कपड़ा बुननेवाला। तंतुवाय। तंतुकार। २. पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा।

ज़ुल्फ़–संज्ञा स्त्री० [फा०] सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं। पट्टा। कुल्ला।

ज़ुल्फ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "ज़ुल्फ़"।

ज़ुल्म–संज्ञा पुं० [अ०] अत्याचार। अन्याय। **मुहा०**—ज़ुल्म टूटना = आफत आ पड़ना। ज़ुल्म ढाना = १. अत्याचार करना। २. कोई अद्भुत काम करना।

जुलूस–संज्ञा पुं० [अ०] १. सिंहासनारोहण। २. किसी उत्सव का समारोह। ३ उत्सव और समारोह की यात्रा। धूमधाम की सवारी।

जुल्लाब–संज्ञा पुं० दे० "जुलाब"।

जुस्तजू–संज्ञा स्त्री० [फा०] तलाश। खोज।

जुहाना†–क्रि० स० [सं० यूथ + आना (प्रत्य०)] एकत्र करना। संचित करना।

जुहार–संज्ञा स्त्री [सं० अवहार ?] क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का प्रणाम। सलाम।

जुहारना–क्रि० स० [सं० अवहार] १ सहायता माँगना। २. एहसान लेना।

जुही–संज्ञा स्त्री० दे० "जूही"।

जूँ–संज्ञा स्त्री० [सं० यूका] एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है। **मुहा०**—कानों पर जूँ रेंगना = स्थिति का ज्ञान होना। होश होना।

जू–अव्य० [सं० (श्री) युक्त] एक आदरसूचक शब्द जो ब्रज, बुंदेलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगाया जाता है। जी।

जूआ–संज्ञा पुं० [सं० युग] १. गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है। †२. जुआठा। ३. चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसे पकड़कर वह फिराई जाती है। संज्ञा पुं० [सं० द्यूत, प्रा० जूआ] वह खेल जिससे जीतनेवाले को हारनेवाले से कुछ धन मिलता है। हार-जीत का खेल। द्यूत।

जूजू–संज्ञा पुं० [अनु०] एक कल्पित जीव जिसके नाम से लड़कों को डराते हैं। हाऊ।

जूझ–संज्ञा स्त्री० [सं० युद्ध] युद्ध। लड़ाई।

जूझना†*–क्रि० अ० [सं० युद्ध] १ लड़ना। २. लड़कर मर जाना।

जूट–संज्ञा पुं० [सं०] १. जटा की गाँठ। जूड़ा। २. लट। जटा।

जूठन–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूठा] १. वह खाने-पीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो। उच्छिष्ट भोजन। २. वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी ने एक दो बार कर लिया हो। भुक्त पदार्थ।

जुगत–संज्ञा स्त्री० [सं० युक्ति] १. युक्ति। उपाय। तदबीर। ढंग। २. व्यवहार-कुशलता। चतुराई। हथकंडा।

जुगनी–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू"।

जुगनू–संज्ञा पुं० [हिं० जुगजुगाना] १. एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह चमकता है। खद्योत। पटबीजना। २. पान के आकार का गले का एक गहना। रामनामी।

जुगल–वि० दे० "युगल"।

जुगवना–क्रि० स० [सं० योग + अवना (प्रत्य०)] १. संचित रखना। एकत्र करना। २. हिफाजत से रखना।

जुगाना†–क्रि० स० दे० "जुगवना"।

जुगालना–क्रि० अ० [सं० उद्गिलन] चौपायों का पागुर करना।

जुगाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुगालना] सींगवाले चौपायों की निगले हुए चारे को गले से थोड़ा थोड़ा निकाल कर फिर से चबाने की क्रिया। पागुर। रोमंथ।

जुगुत–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।

जुगुप्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० जुगुप्सित] १. निंदा। बुराई। २. अश्रद्धा। घृणा।

जुज़–संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० युज्] कागज के ८ या १६ पृष्ठों का समूह। फारम।

जुजवी–वि० [फा०] १. बहुतों में से कोई एक। बहुत कम। २. बहुत छोटे अंश का।

जुझ†–संज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध"।

जुझवाना†–क्रि० स० [हिं० जूझना] लड़ा देना।

जुझाऊ–वि० [हिं० जूझ + आऊ (प्रत्य०)] लड़ाई में काम आनेवाला। युद्ध संबंधी।

जुझार†*–वि० [हिं० जुझ + आर (प्रत्य०)] १. लड़ाका। वीर। २. युद्ध। लड़ाई।

जुट–संज्ञा स्त्री० [सं० युक्त] १. दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। जुग। २. जत्था। दल।

जुटना–क्रि० अ० [सं० युक्त + ना (प्रत्य०)] १. दो या अधिक वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का कोई अंग दूसरी के किसी अंग के साथ दृढ़तापूर्वक लगा रहे। संबद्ध होना। संश्लिष्ट होना। जुड़ना। २. लिपटना। गुथना। ३. संभोग करना। ४. एकत्र होना। इकट्ठा होना। ५. कार्य्य में सम्मिलित होना। ६. मिलना।

जुटली–वि० [सं० जट] जूड़ेवाला। लंबे बालों की लटवाला।

जुटाना–क्रि० स० [हिं० जुटना] जुटना का सकर्मक रूप। जुटने में प्रवृत्त करना।

जुट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुटना] १. घास या टहनियों का छोटा पूला। ऑंटिया। जूरी। २. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ३. तले ऊपर रखी हुई वस्तुओं का समूह। गड्डी। वि० जुटी या मिली हुई।

जुठारना–क्रि० स० [हिं० जूठा] खाने पीने की वस्तु को कुछ खाकर छोड़ देना। जूठा करना। उच्छिष्ट करना।

जुठिहारा–संज्ञा पुं० [हिं० जूठा + हारा] [स्त्री० जुठिहारी] जूठा खानेवाला।

जुड़ना–क्रि० अ० [हिं० जुटना] १. कई वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का अंग दूसरी के साथ लगा रहे। संबद्ध होना। संयुक्त होना। २. संभोग करना। प्रसंग करना। †३. इकट्ठा होना। ४. एकत्र होना। किसी कार्य में योग देने के लिये उपस्थित होना। ५. प्राप्त होना। मिलना। ६. दे० "जुतना"।

जुड़पित्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० जुड़ + पित्त] एक रोग जिसमें शरीर में खुजली उठती है और बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं।

जुड़वाँ–वि० [हिं० जुड़ना] गर्भ काल से ही एक में सटे हुए। जुड़े हुए। यमल। जैसे—जुड़वाँ बच्चे।

संज्ञा पुं० एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे।

जुड़वाना†–क्रि० स० [हिं० जूड़] १. ठंढा करना। २. शांत करना। सुखी करना। क्रि० स० दे० "जोड़वाना"।

जुड़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० 'जोड़ाई'।

जुड़ाना†–क्रि० अ० [हिं० जूड़] १. ठंढा होना। २. शांत होना। तृप्त होना। क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना। २ शांत और संतुष्ट करना। तृप्त करना।

जुड़ावना†–क्रि० स० दे० "जुड़ाना"।

जुत–वि० दे० "युक्त"।

जुतना–क्रि० अ० [हिं० युक्त] १. बैल, घोड़े आदि का गाड़ी, हल आदि में लगना। नधना। २. किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना। ३. हल से जोता जाना।

जुतवाना–क्रि० स० [हिं० जोतना] दूसरे से

जोतने का काम कराना।
जुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई"।
जुतियाना–क्रि० स० [हिं० जूता + इयाना (प्रत्य०)] १. जूता मारना। जूते लगाना। २. अत्यंत निरादर करना।
जुत्थ–संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।
जुदा–वि० [फा०] १. पृथक्। अलग। २. भिन्न। निराला।
जुदाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] जुदा होने का भाव। विछोह। वियोग।
जुद्ध–संज्ञा पुं० दे० "युद्ध"।
जुन्हरी–संज्ञा स्त्री० [सं० यवनाल] ज्वार (अन्न)।
जुन्हाई–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जोण्हा] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. चंद्रमा।
जुन्हैया–संज्ञा स्त्री० दे० "जुन्हाई"।
जुमला–वि० [फा०] सब। कुल।
संज्ञा पुं० पूरा वाक्य।
जुमा–संज्ञा पुं० [अ०] शुक्रवार।
जुमिल–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।
जुरअत–संज्ञा स्त्री० [फा०] साहस। हिम्मत।
जुरझुरी–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वर या जूर्ति + हिं० झुरझुराना] १. ज्वरांश। हरारत। २. ज्वर के आदि की कँपकँपी।
जुरना–क्रि० स० दे० "जुड़ना"।
जुरमाना–संज्ञा पुं० [फा०] वह दंड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े। अर्थ-दंड। धन-दंड।
जुराफा–संज्ञा पुं० [अ० जुर्राफा] अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट की सी लंबी होती हैं। कुछ हिन्दी कवियों ने इसे भूलकर पक्षी समझ लिया है।
जुर्म–संज्ञा पुं० [अ०] वह कार्य जिसके दंड का विधान राजनियम में हो। अपराध।
जुर्रा–संज्ञा पुं० [फा०] नर बाज़।
जुर्राब–संज्ञा स्त्री० [तु०] मोजा। पायताबा।
जुल–संज्ञा पुं० [सं० छल ?] धोखा। दम।
जुलाब–संज्ञा पुं० [फा०] १. रेचन। दस्त। २. रेचक औषध। दस्त लानेवाली दवा।
जुलाहा–संज्ञा पुं० [फा० जौलाह] १ कपड़ा बुननेवाला। तंतुवाय। तंतुकार। २. पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा।
ज़ुल्फ़–संज्ञा स्त्री० [फा०] सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं। पट्टा। कुल्ला।
ज़ुल्फ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "जुल्फ़"।
ज़ुल्म–संज्ञा पुं० [अ०] अत्याचार। अन्याय।
मुहा०—ज़ुल्म टूटना = आफ़त आ पड़ना। ज़ुल्म ढाना = १. अत्याचार करना। २. कोई अद्भुत काम करना।
जुलूस–संज्ञा पुं० [अ०] १. सिंहासनारोहण। २. किसी उत्सव का समारोह। ३. उत्सव और समारोह की यात्रा। धूमधाम की सवारी।
जुलाब–संज्ञा पुं० दे० "जुलाब"।
जुस्तजू–संज्ञा स्त्री० [फा०] तलाश। खोज।
जुहाना–क्रि० स० [सं० यूथ + आना (प्रत्य०)] एकत्र करना। संचित करना।
जुहार–संज्ञा स्त्री [सं० अवहार ?] क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का प्रणाम। सलाम।
जुहारना–क्रि० स० [सं० अवहार] १ सहायता माँगना। २. एहसान लेना।
जुही–संज्ञा स्त्री० दे० "जूही"।
जूँ–संज्ञा स्त्री० [सं० यूका] एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है।
मुहा०—कानों पर जूँ रेंगना = स्थिति का ज्ञान होना। चेत होना।
जू–अव्य० [सं० (श्री) युक्त] एक आदरसूचक शब्द जो ब्रज, बुंदेलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगाया जाता है। जी।
जूआ–संज्ञा पुं० [सं० युग] १. गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है। २. जुआठा। ३. चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसे पकड़कर वह फिराई जाती है।
संज्ञा पुं० [सं० द्यूत, प्रा० जूआ] वह खेल जिसमें जीतनेवाले को हारनेवाले से कुछ धन मिलता है। हार-जीत का खेल। द्यूत।
जूजू–संज्ञा पुं० [अनु०] एक कल्पित जीव जिसके नाम से लड़कों को डराते हैं। हाऊ।
जूझ–संज्ञा स्त्री० [सं० युद्ध] युद्ध। लड़ाई।
जूझना–क्रि० अ० [सं० युद्ध] १. लड़ना। २. लड़कर मर जाना।
जूट–संज्ञा पुं० [सं०] १. जटा की गाँठ। जूड़ा। २. लट। जटा।
जूठन–संज्ञा स्त्री० [हिं० जूठा] १. वह खाने-पीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो। उच्छिष्ट भोजन। २. वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी ने एक दो बार कर लिया हो। भुक्त पदार्थ।

जूठा-वि० [सं० जुष्ट] [स्त्री० जूठी । क्रि० जुठारना] १. किसी के खाने से बचा हुआ । उच्छिष्ट । २. जिसे किसी ने भोग करके अपवित्र कर दिया हो । भुक्त ।
संज्ञा पुं० दे० "जूठन" ।

जूड़ा-संज्ञा पुं० [सं० जूट] १. सिर के बालों की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ बालों को एक साथ लपेटकर ऊपर बाँधती हैं । २. चोटी । कलगी । ३. मूँज आदि का पूला । ४. घड़े के नीचे रखने की गेंडुरी ।

जूड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० जूड़] वह ज्वर जिसमें ज्वर आने के पहले रोगी को जाड़ा मालूम होता है ।

जूता-संज्ञा पुं० [सं० युक्त] चमड़े आदि का बना हुआ वह ढाँचा जिसे लोग काँटे आदि से बचने के लिये पैरों में पहनते हैं । जोड़ा । पादत्राण । उपानह ।
मुहा०-(किसी का) जूता उठाना = १. किसी का दासत्व करना । २ खुशामद करना । चापलूसी करना । जूता उछलना या चलना = मार-पीट होना । झगड़ा होना । जूता खाना = १. जूतों की मार खाना । २. बुरा भला सुनना । तिरस्कृत होना । जूते से खबर लेना या बात करना = जूते से मारना । जूतों दाल बँटना = आपस में लड़ाई-झगड़ा होना ।

जूताखोर-वि० [हिं० जूता + फा० खोर] जो मार या गाली की कुछ परवाह न करे । निर्लज्ज । बेहया ।

जूती-संज्ञा स्त्री० [हिं०जूता] स्त्रियों का जूता ।

जूती पैजार-संज्ञा स्त्री० [हिं० जूती + फा० पैजार] १. जूतों की मार-पीट । २. लड़ाई दंगा ।

जूथ -संज्ञा पुं० दे० "यूथ" ।

जून†-संज्ञा पुं० [सं० द्युवन्] समय । काल । संज्ञा पुं० [सं० जूर्ण] तृण । घास ।

जूप-संज्ञा पुं० [सं० द्यूत] १. जूआ । द्यूत । २. विवाह में एक रीति जिसमें वर और वधू परस्पर जूआ खेलते हैं । पासा ।
संज्ञा पुं० दे० "यूप" ।

जूमना*†-क्रि० अ०[अ० जमा] इकट्ठा होना । जुटना । एकत्र होना ।

जूर -संज्ञा पुं० [हिं० जुरना] जोड़ । संचय ।

जूरना*-क्रि० स० दे० "जोड़ना" ।

[illegible] पुं० दे० "जूड़ा" ।

जूरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० जुरना] १. घास या पत्तों का छोटा पूला । जुट्टी । २. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं । ३. एक प्रकार का पकवान ।

जूस-संज्ञा पुं० [सं० जूष] १. पकी हुई दाल का पानी जो रोगियों को पथ्य रूप में दिया जाता है । २. उबाली हुई चीज़ का रस । रसा ।
संज्ञा पुं० [फा० जुफ्त, सं० युक्त] युग्म संख्या । सम संख्या ।

जूस ताक-संज्ञा पुं० [हिं० जूस + फा० ताक] एक प्रकार का जूआ जिसमें कौड़ियाँ हाथ में लेकर पूछा जाता है कि ये जूस हैं या ताक ।

जूसी-संज्ञा स्त्री० [हिं० जूस] वह गाढ़ा लसीला रस जो ईख के पकते हुए रस में से छूटता है । खाँड़ का पसेव । चोटा ।

जूह*-संज्ञा पुं० दे० "यूथ" ।

जूहर*-संज्ञा पुं० दे० "जौहर" ।

जूही-संज्ञा स्त्री० [सं० यूथी] १. एक प्रसिद्ध झाड़ या पौधा । इसके फूल चमेली से मिलते-जुलते, पर छोटे होते हैं । २. एक प्रकार की आतशबाजी ।

जृंभ-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० जृंभा । वि० जृंभक] १. जँभाई । २. आलस्य ।

जृंभक-वि० [सं०] जँभाई लेनेवाला । संज्ञा पुं० १. रुद्रगणों में से एक । २. एक अस्त्र जिसके चलाने से शत्रु जँभाई लेने लगते थे, या सो जाते थे ।

जृंभण-संज्ञा पुं० [सं०] जँभाई लेना ।

जृंभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जँभाई । २. आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जड़ता ।

जेंवन-संज्ञा पुं० [हिं० जेंवना] भोजन ।

जेंवना-क्रि० स० [सं० जेमन] खाना ।

जेंवाना†-क्रि० स० [हिं० जेंवना] खिलाना ।

जे*†-सर्व० [सं० ये] 'जो' का बहुवचन ।

जेइ, जेउ, जेऊ*†-सर्व० दे० "जो" ।

जेठ-संज्ञा पुं० [सं० ज्येष्ठ] १. ग्रीष्म ऋतु का वह मास जो बैसाख और असाढ़ के बीच में पड़ता है । ज्येष्ठ । २. [स्त्री० जेठानी] पति का बड़ा भाई । भसुर ।
वि० अग्रज । बड़ा ।

जेठरा†-वि० दे० "जेठ" ।

जेठा-वि० [सं० ज्येष्ठ] [स्त्री० जेठी] १. अग्रज । बड़ा । २. सब से अच्छा ।

जेठाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० जेठ] बड़ाई । जेठापन ।
जेठानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० जेठ] जेठ या पति के बड़े भाई की स्त्री ।
जेठी–वि० [हिं० जेठ + ई (प्रत्य०)] जेठ संबंधी । जेठ का ।
जेठी मधु–संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिमधु] मुलेठी ।
जेठौत, जेठौता‡–संज्ञा पु० [सं० ज्येष्ठ + पुत्र] [स्त्री० जेठौती] जेठ या पति के बड़े भाई का पुत्र ।
जेता–संज्ञा पु० [सं० जेतृ] १. जीतनेवाला । विजयी । २. विष्णु ।
वि० दे० "जितना" ।
जेतिक †–क्रि० वि० [सं० यः] जितना ।
जेते †–वि० [सं० यः, यत्ते] जितने ।
जेतो †–क्रि० वि० [सं० य, यत्] जितना ।
जेब–संज्ञा पु० [फा०] पहनने के कपड़ों के बगल में या सामने की ओर लगी हुई वह छोटी थैली जिसमें चीजें रखते हैं । खीसा । खरीता । पाकेट ।
संज्ञा स्त्री० [फा० ज़ेब] शोभा । सौंदर्य ।
जेबकट–संज्ञा पु० [फा० जेब + हिं० काटना] वह जो दूसरों के जेब से रुपया पैसा लेने के लिये जेब काटता हो । जेबकतरा । गिरहकट ।
जेबखर्च–संज्ञा पु० [फा०] वह धन जो किसी को निज के खर्च के लिये मिले ।
जेबघड़ी–संज्ञा स्त्री० [फा० जेब + घड़ी] छोटी घड़ी जो जेब में रखी जाती है । जेबी घड़ी । वाच ।
जेबी–वि० [फा०] १. जो जेब में रखा जा सके । २. बहुत छोटा ।
जेय–वि० [सं०] जीतने योग्य ।
जेर–संज्ञा स्त्री० [देश०] वह झिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता है । आँवल ।
वि० [फा० ज़ेर] [संज्ञा ज़ेरबारी] १. परास्त । पराजित । २. जो बहुत तंग किया जाय ।
ज़ेरपाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्रियों की जूती ।
ज़ेरबार–वि० [फा०] १. जो किसी आपत्ति के कारण बहुत दुखी हो । २. जिसकी बहुत हानि हुई हो ।
ज़ेरबारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आपत्ति या क्षति के कारण बहुत दुखी होना । तंगी । २. हैरानी । परेशानी ।
जेरी–संज्ञा स्त्री० [?] १. दे० "जेर" । २. वह लाठी जो चरवाहे कँटीली झाड़ियाँ इत्यादि हटाने के लिये रखते हैं ।
जेल–संज्ञा पु० [अं०] वह स्थान जहाँ राज्य द्वारा दंडित अपराधी आदि निश्चित समय के लिये रखे जाते हैं । कारागार । बंदीगृह ।
संज्ञा पु० [फा० ज़ेर] जंजाल । हैरानी या परेशानी का काम ।
जेलखाना–संज्ञा पु० [अं० + फा०] कारागार ।
जेवना–क्रि० स० दे० "जीमना" ।
जेवनार–संज्ञा स्त्री० [हिं० जेवना] १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना । भोज । २. रसोई । भोजन ।
ज़ेवर–संज्ञा पु० [फा०] गहना । आभूषण ।
जेवरी–संज्ञा स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी ।
जेह–संज्ञा स्त्री० [फा० जिह = चिल्ला] १. कमान की डोरी में वह स्थान जो आँख के पास लगाया जाता है और जिसकी सीध में निशान रहता है । चिल्ला । २. दीवार में नीचे की ओर पलस्तर आदि का मोटा और उभड़ा हुआ लेप ।
ज़ेहन–संज्ञा पु० [अ०] [वि० ज़हीन] बुद्धि । धारणाशक्ति ।
जेहर†–संज्ञा स्त्री० [?] पाजेब (जेवर) ।
जेहल–संज्ञा पु० दे० "जेल" ।
जेहलखाना‡–संज्ञा पु० दे० "जेल" ।
जेहि–सर्व० [सं० यत्] १. जिसको । २. जिससे ।
जै–संज्ञा स्त्री० दे० "जय" ।
†वि० [सं० यावत्] जितने । जिस कदर ।
जैत†–संज्ञा स्त्री० [सं० जयति] विजय ।
संज्ञा पु० [सं० जयती] अगस्त की तरह का एक पेड़ ।
जैतपत्र–संज्ञा पु० [सं० जयति + पत्र] जयपत्र ।
जैतवार †–संज्ञा पु० [हिं० जैत + वार] जीतनेवाला । विजयी । विजेता ।
जैतून–संज्ञा पु० [अ०] एक ऊँचा सदाबहार पेड़ जिसे पश्चिम की प्राचीन जातियाँ पवित्र मानती थीं । इसके फल और बीज दवा के काम में आते हैं ।
जैन–संज्ञा पु० [सं०] १. भारत का एक धर्म संप्रदाय जिसमें अहिंसा परम धर्म माना जाता है और कोई ईश्वर या सृष्टिकर्त्ता नहीं माना जाता । २. जैनी ।
जैनी–संज्ञा पु० [हिं० जैन] जैन मतावलंबी ।
जैनु†–संज्ञा पु० [हिं० जेवना] भोजन ।

२. जोश। आवेश। ३. अभिमान।

जोय†–संज्ञा स्त्री० [सं० जाया] जोरू। स्त्री।
सर्व० पु० जो। जिस।

जोयना†–क्रि० स० [हिं० जोड़ना] बालना। जलाना।
क्रि० स० दे० "जोवना"।

जोयसी†–संज्ञा पु० दे० "ज्योतिषी"।

ज़ोर–संज्ञा पु० [फा०] १. बल। शक्ति।
मुहा०—(किसी बात पर) ज़ोर देना = किसी बात को बहुत ही आवश्यक या महत्त्वपूर्ण बतलाना। (किसी बात के लिये) ज़ोर देना = किसी बात के लिये आग्रह करना। ज़ोर मारना या लगाना = १. बल का प्रयोग करना। २. बहुत प्रयत्न करना।
यौ०—ज़ोर-ज़ुल्म = अत्याचार।
२. प्रबलता। तेज़ी। बढ़ती।
मुहा०—ज़ोरों पर होना = १. पूरे बल पर होना। बहुत तेज़ होना। २. खूब उन्नत होना।
३. वश। अधिकार। काबू। ४. वेग। आवेश। झोंक।
मुहा०—ज़ोरों पर = बड़े वेग से। तेज़ी से।
५. भरोसा। आसरा। सहारा।
मुहा०—किसी के ज़ोर पर कूदना = किसी की अपनी सहायता पर देखकर अपना बल दिखाना।
६. परिश्रम। मेहनत। ७. व्यायाम।

ज़ोरदार–वि० [फा०] जिसमें बहुत ज़ोर हो। ज़ोरवाला।

जोरना†–क्रि० स० दे० "जोड़ना"।

ज़ोर शोर–संज्ञा पु० [फा०] बहुत अधिक ज़ोर।

ज़ोरा ज़ोरी†–संज्ञा स्त्री० [फा० ज़ोर] ज़बरदस्ती।
क्रि० वि० ज़बरदस्ती से। बलपूर्वक।

ज़ोरावर–वि० [फा०] [संज्ञा ज़ोरावरी] बलवान। ताकतवर।

जोरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ी"।
संज्ञा स्त्री० [फा० ज़ोर] ज़बरदस्ती।

जोरू–संज्ञा स्त्री० [हिं० जोड़ा] स्त्री। पत्नी।

जोलाहल†*–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वाला] ज्वाला। अग्नि। आग।

जोली†–संज्ञा स्त्री० [... जोड़ी] ...

जोवना†–क्रि० ... जुषण = ...
१. जोहना [illegible]
करना। २. [illegible]

जोश–संज्ञा पु० [फा०] १. आँच या गरमी के कारण उबलना। उफान। उबाल।
मुहा०—जोश खाना = उबलना। उफनना। जोश देना = पानी के साथ उबालना।
२. चित्त की तीव्र वृत्ति। मनोवेग।
मुहा०—खून का जोश = प्रेम का वह वेग जो अपने वंश के किसी मनुष्य के लिये हो।

जोशन–संज्ञा पु० [फा०] १. भुजाओं पर पहनने का गहना। २. ज़िरह बकतर। कवच।

जोशाँदा–संज्ञा पु० [फा०] पानी में उबाली हुई जड़ या पत्तियाँ आदि। क्वाथ। काढ़ा।

जोशीला–वि० [फा० जोश + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० जोशीली] जिसमें खूब जोश हो। आवेशपूर्ण।

जोष–संज्ञा स्त्री० [सं० योषा] स्त्री। नारी।
संज्ञा स्त्री० दे० "जोख"।

जोषिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। नारी।

जोषी–संज्ञा पु० [सं० ज्योतिषी] १. गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति। २. ज्योतिषी। गणक। (क्व०)

जोहा†–संज्ञा स्त्री० [हिं० जोहना] १. खोज। तलाश। २. इंतज़ार। प्रतीक्षा। ३. कृपा दृष्टि।

जोहन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० जोहना] १. देखने या जोहने की क्रिया। २. तलाश। खोज। ३. प्रतीक्षा। इंतज़ार।

जोहना–क्रि० स० [सं० जुषण = सेवन] १. देखना। ताकना। २. ढूँढना। पता लगाना। ३. प्रतीक्षा करना।

जोहार–संज्ञा स्त्री० [सं० जुषण = सेवन] अभिवादन। वंदन। प्रणाम।
संज्ञा पु० दे० "जौहर"।

जौं–अव्य० [सं० यदि] यदि। जो।
क्रि० वि० दे० "ज्यों"।

जौंरा भौंरा–संज्ञा पु० [हिं० भुइँघर, भुइँहरा] किले या महलों का वह तहखाना जिसमें गुप्त खजाना आदि रहता है।
संज्ञा पु० [हिं० जोड़ा + भौंरा] दो बालकों का जोड़ा।

... पु० [सं० यव] १. गेहूँ की तरह का प्रसिद्ध पौधा जिसके बीज या दाने की ... अनाजों में है। २. एक पौधा ... से टोकरे, झाड़

थादि बनते हैं। ३. छ: राई (खरदल) के बराबर एक तौल।
†अव्य० [सं० यद्] यदि। अगर।
†क्रि० वि० जब।
जौख–संज्ञा पुं० [तु० जूक़] १. झुंड। जथा। २. फ़ौज। सेना। ३. पक्षियों की श्रेणी।
जौजा–संज्ञा स्त्री० [अ० ज़ौज.] जोरू।
जौधिक–संज्ञा पुं० [सं०] तलवार या खड्ग के ३२ हाथों में से एक।
जौन†–सर्व० [सं० यः] जो।
वि० जो।
संज्ञा पुं० दे० "यवन"।
जौपै†–अव्य० [हिं० जौ + पै] अगर। यदि।
जौहर–संज्ञा पुं० [फा० गौहर का अरबी रूप] १. रत्न। बहुमूल्य पत्थर। २. सार वस्तु। सारांश। तत्त्व। ३. हथियार की ओप। ४. विशेषता। उत्तमता। खूबी।
संज्ञा पुं० [हिं० जीव + हर] १. राजपूतों में युद्ध समय की एक प्रथा जिसके अनुसार नगर या गढ़ में शत्रु-प्रवेश का निश्चय होने पर उनकी स्त्रियाँ और बच्चे दहकती हुई चिता में जल जाते थे। २. वह चिता जो दुर्ग में स्त्रियों के जलने के लिये बनाई जाती है। ३. आत्महत्या।
जौहरी–संज्ञा पुं० [फा०] १. रत्न परखने या बेचनेवाला। रत्नविक्रेता। २. किसी वस्तु के गुण-दोष की पहचान रखनेवाला। पारखी। जँचवैया।
ज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज और ञ के संयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर। २. ज्ञान। बोध। ३. ज्ञानी। जाननेवाला। जैसे, शास्त्रज्ञ। ४. ब्रह्मा। ५. बुध ग्रह।
ज्ञप्त–वि० [सं०] जाना हुआ।
ज्ञप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जानकारी। २. बुद्धि।
ज्ञात– वि० [सं०] जाना हुआ। विदित।
ज्ञात यौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो।
ज्ञातव्य–वि० [सं०] जो जाना जा सके। ज्ञेय। बोधगम्य।
ज्ञाता–वि० [सं० ज्ञातृ, ज्ञाता] [स्त्री० ज्ञात्री] जानने या ज्ञान रखनेवाला। जानकार।
ज्ञाति–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य। गोती। २. भाई-बंधु।
संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।
ज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्तुओं और विषयों की वह भावना जो मन या आत्मा को हो। बोध। जानकारी। प्रतीति।
मुहा०—ज्ञान छाँटना = अपनी विद्या या जानकारी जताने के लिये लंबी-चौड़ी बातें करना।
२ यथार्थ या सम्यक् ज्ञान। तत्त्वज्ञान।
ज्ञानकांड–संज्ञा पुं० [सं०] वेद का वह कांड या विभाग जिसमें ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषयों का विचार है। जैसे—उपनिषद्।
ज्ञानगम्य–संज्ञा पुं० [सं०] जो जाना जा सके। ज्ञेय।
ज्ञानगोचर–वि० दे० "ज्ञानगम्य"।
ज्ञानयोग–संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञान की प्राप्ति द्वारा मोक्ष का साधन।
ज्ञानवान्–वि० [सं०] ज्ञानी।
ज्ञानवृद्ध–वि० [सं०] जिसकी जानकारी अधिक हो।
ज्ञानी–वि० [सं० ज्ञानिन्] १. जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवान्। जानकार। २. आत्मज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी।
ज्ञानेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० [सं०] वे पाँच इंद्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का बोध होता है। यथा—दर्शनेंद्रिय, श्रवणेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, रसना और स्पर्शेंद्रिय।
ज्ञापक–वि० [सं०] जतानेवाला। सूचक।
ज्ञापन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ज्ञापित, ज्ञाप्य] जताने या बताने का कार्य।
ज्ञापित–वि० [सं०] जताया हुआ। सूचित।
ज्ञेय–वि० [सं०] १. जिसका जानना योग्य या कर्त्तव्य हो। जानने योग्य। २. जो जाना जा सके।
ज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धनुष की डोरी। २. वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो। ३. वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से उस व्यास पर लंब रूप से गिरी हो जो चाप के दूसरे सिरे से होकर गया हो। ४. पृथ्वी।
ज्यादती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अधिकता। बहुतायत। २. अत्याचार।
ज्यादा–वि० [फा०] अधिक। बहुत।
ज्याफत–संज्ञा स्त्री० [अ० ज़ियाफ़त] १. दावत। भोज। २. मेहमानी। आतिथ्य।
ज्यामिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गणित

विद्या जिससे भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोण, तल आदि का विचार किया जाता है। क्षेत्रगणित। रेखागणित।
ज्यारना†-क्रि० अ० दे० "जिलाना"।
ज्यावना†-क्रि० स० दे० "जिलाना"।
ज्यूँ†-अव्य० दे० "ज्यों"।
ज्येष्ठ-वि० [सं०] १. बड़ा। जेठा। २. वृद्ध। बड़ा बूढ़ा।
संज्ञा पुं० १. जेठ का महीना। २. परमेश्वर।
ज्येष्ठता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ज्येष्ठ होने का भाव। बड़ाई। २. श्रेष्ठता।
ज्येष्ठा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अठारहवाँ नक्षत्र जो तीन तारों से बना और कुंडल के आकार का है। २. वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा अपने पति को अधिक प्यारी हो। ३ छिपकली। ४. मध्यमा उँगली।
वि० स्त्री० बड़ी।
ज्यों-क्रि० वि० [सं० य + इव] १. जिस प्रकार। जैसे। जिस ढँग से।
मुहा०—ज्यों त्यों=किसी न किसी प्रकार। २. जिस क्षण। जैसे ही।
मुहा०—ज्यों ज्यों=१. जिस क्रम से। २. जिस मात्रा से। जितना।
ज्योतिःशिखा-संज्ञा स्त्री० [सं०] विषम वर्णवृत्तों का एक भेद जिसके पहले दल में ३२ लघु और दूसरे दल में १६ गुरु होते हैं।
ज्योति-संज्ञा स्त्री० [सं० ज्योतिस्] १. प्रकाश। उजाला। द्युति। २. लपट। लौ। ३. अग्नि। ४. सूर्य। ५. नक्षत्र। ६. आँख की पुतली के मध्य का बिंदु। ७. दृष्टि। ८ विष्णु। ६. परमात्मा।
ज्योतिक-संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।
ज्योतिर्मय-वि० [सं०] प्रकाशमय। जग-मगाता हुआ।
ज्योतिर्लिंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। शिव। २. भारतवर्ष में प्रतिष्ठित शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं।
ज्योतिर्लोक-संज्ञा पुं० [सं०] ध्रुव लोक।
ज्योतिर्विद्-संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिषी।
ज्योतिर्विद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष।
ज्योतिश्चक्र-संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों और राशियों का मंडल।
ज्योतिष-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह विद्या जिसमें अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पारस्परिक दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है। २. अस्त्रों का एक संहार या रोक।
ज्योतिषी-संज्ञा पुं० [सं० ज्योतिषिन्] ज्योतिष शास्त्र का जाननेवाला मनुष्य। ज्योतिर्विद्। दैवज्ञ। गणक।
ज्योतिष्क-संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह। २ मेथी। ३. चित्रक वृक्ष। चीता। ४. गनियारी।
ज्योतिष्टोम-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ।
ज्योतिष्पथ-संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।
ज्योतिष्पुंज-संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्र-समूह।
ज्योतिष्मती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माल-कँगनी। २. रात्रि।
ज्योतिष्मान्-वि० [सं०] प्रकाशयुक्त।
संज्ञा पुं० सूर्य।
ज्योत्स्ना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २. चाँदनी रात।
ज्योनार-संज्ञा स्त्री० [सं० जेमन=खाना] १. पका हुआ भोजन। रसोई। २. भोज। दावत। ज़्याफ़त।
ज्योरी†-संज्ञा स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी।
ज्योहत, ज्योहर†-संज्ञा पुं० [सं० जीव+हत] आत्महत्या। जौहर।
ज्यौं-अव्य० [सं० यदि] जो। यदि।
ज्यौतिष-वि० [सं०] ज्योतिष-संबंधी।
ज्वर-संज्ञा पुं० [सं०] शरीर की वह गरमी जो अस्वस्थता प्रकट करे। ताप। बुखार।
ज्वरांकुश-संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्वर की एक ओषध। २ एक सुगंधित घास।
ज्वलंत-वि० [सं०] १. प्रकाशमान्। दीप्त। २. अत्यंत स्पष्ट।
ज्वलन-संज्ञा पुं० [सं०] १. जलने का कार्य या भाव। जलन। दाह। २. अग्नि। आग। ३. लपट। ज्वाला।
ज्वलित-वि० [सं०] १. जला हुआ। २. चमकता या झलकता हुआ। उज्ज्वल।
ज्वान†-वि० दे० "जवान"।
ज्वार-संज्ञा स्त्री० [सं० यवनाल] १. एक प्रकार की घास जिसकी बाल के दाने मोटे अनाजों में गिने जाते हैं। जोन्हरी। जुंडी। २. समुद्र के जल की तरंग का चढ़ाव। लहर की उठान। भाटा का उलटा।

ज्वार भाटा–संज्ञा पुं० [हिं० ज्वार + भाटा] समुद्र के जल का चढ़ाव-उतार या लहर का बढ़ना और घटना जो चंद्रमा और सूर्य के आकर्षण से होता है। इसके चढ़ने को ज्वार और उतरने को भाटा कहते हैं।

ज्वाल–संज्ञा पुं० [सं०] लौ। लपट।

ज्वाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अग्निशिखा। लपट। २. विष आदि की गरमी। ३. गरमी। ताप। जलन।

ज्वालादेवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] शारदा पीठ में स्थित एक देवी। इनका स्थान काँगड़ा जिले में है।

ज्वालामुखी पर्वत–संज्ञा पुं० [सं०] वह पर्वत जिसकी चोटी में से धूआँ, राख, तथा पिघले या जले हुए पदार्थ बराबर अथवा समय समय पर निकला करते हैं।

झ

झ–हिंदी व्यंजन वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

झकना–क्रि० अ० दे० "झीखना"।

झंकार–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झंझनाहट का शब्द। झनकार। २. झींगुर आदि छोटे जानवरों के बोलने का शब्द। झनकार।

झंकारना–क्रि० स० [सं० झंकार] "झनझन" शब्द उत्पन्न करना।

क्रि० अ० "झनझन" शब्द होना।

झंखना–क्रि० अ० दे० "झीखना"।

झंखाड़–संज्ञा पुं० [हिं० झाड़ का अनु०] १. घनी और कँटीली झाड़ी या पौधा। २. वह वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गए हों। ३. व्यर्थ की और रद्दी चीज़ों का समूह।

झँगा–संज्ञा पुं० दे० "झगा"।

झँगुलीः।–संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।

झंझट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] व्यर्थ का झगड़ा। टंटा। बखेड़ा। प्रपंच।

झंझनाना–क्रि० अ० [अनु०] झनझन शब्द होना। झंकारना।

क्रि० स० झनझन शब्द करना।

झंझर–संज्ञा स्त्री० दे० "झज्झर"।

झँझरा–वि० [अनु०] [स्त्री० झँझरी] जिसमें बहुत से छोटे छोटे छेद हों।

झँझरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झरझर से अनु०] १. किसी चीज़ में बहुत से छोटे छोटे छेदों का समूह। जाली। २. दीवारों आदि में बनी हुई छोटी जालीदार खिड़की।

झंझा–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह तेज़ आँधी जिसके साथ वर्षा भी हो। २ तेज़ आँधी।

झंझावात–संज्ञा पुं० दे० "झंझा"।

झंझी–संज्ञा स्त्री० [देश०] फूटी कौड़ी।

झंझोड़ना–क्रि० स० [सं० झर्झन] १. किसी चीज़ को बहुत वेग और झटके के साथ हिलाना जिससे वह टूट-फूट जाय या नष्ट हो जाय। झकझोरना। २. किसी जानवर का अपने से छोटे जानवर को मार डालने के लिये दाँतों से पकड़कर खूब झटका देना।

झंडा–संज्ञा पुं० [सं० जयंत] [स्त्री० अल्पा० झंडी] १. तिकोने या चौकोर कपड़े का टुकड़ा जिसका एक सिरा लकड़ी आदि के डंडों में लगा रहता है और जिसका व्यवहार चिह्न प्रकट करने, संकेत करने और उत्सव आदि सूचित करने के लिये होता है। पताका। निशान। फरहरा। ध्वजा।

मुहा०—झंडा खड़ा करना = १. सैनिक आदि एकत्र करने के लिये झंडा स्थापित करके संकेत करना। २. आडंबर करना। झंडा गाड़ना या फहराना = १. किसी स्थान विशेषतः नगर या किले आदि पर अपना अधिकार करके उसके चिह्न-स्वरूप झंडा स्थापित करना। २. पूर्ण रूप से अपना अधिकार जमाना।

२. ज्वार, बाजरे आदि पौधों के ऊपर का नर-फूल। जीरा।

झँडूला–वि० [हिं० झंड + ऊला (प्रत्य०)] १. जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों। जिसका मुंडन संस्कार न हुआ हो (बालक)। २. मुंडन संस्कार से पहले का। गर्भ का (बाल)। ३. घनी पत्तियोंवाला। सघन (वृक्ष)।

झंप–संज्ञा पुं० [सं०] उछाल। फाँद।

मुहा०—झंप देना = कूदना।

संज्ञा पु० [देश०] घोड़ों के गले का एक आभूषण।

झँपना–क्रि० अ० [सं० झप] १. ढँकना। छिपना। आड़ में होना। २. उछलना। कूदना। लपकना। ३. टूट पड़ना। एक दम से आ पड़ना। ४. झँपना। लज्जित होना।

झपरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँपना = ढकना] पालकी को ढाँकने की खोली। ओहार।

झंपान–संज्ञा पु० [सं० झंप] पहाड़ी सवारी के लिये एक प्रकार की खटोली। झप्पान।

झँपोला–संज्ञा पु० [हिं० झाँपा + ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० झँपोली या झँपोलिया] छोटा झाँपा या झाबा। छाबड़ा।

झँवकारा✱†–वि० [हिं० झाँवला + काला] झाँवले रंग का। काला।

झँवराना–क्रि० अ० [हिं० झाँवर] १. कुछ काला पड़ना। २. कुम्हलाना। फीका पड़ना।

झँवा–संज्ञा पु० दे० "झाँवा"।

झँवाना–क्रि० अ० [हिं० झाँवा] १ झाँवे के रंग का हो जाना। कुछ काला पड़ जाना। २. अग्नि का मंद हो जाना। ३. घट जाना। ४ कुम्हलाना। मुरझाना। ५. झाँवे से रगड़ा जाना।
क्रि० स० १. झाँवे के रंग का कर देना। कुछ काला कर देना। २. आग ठंढी करना। ३ घटाना। ४. कुम्हला देना। मुरझा देना। ५. झाँवे से रगड़ना या रगड़वाना।

झँसना–क्रि० स० [अनु०] १. सिर या तलुए आदि में कोई चिकना पदार्थ लगाकर हथेली से उसे बार बार रगड़ना। २. किसी को बहकाकर उसका धन आदि ले लेना।

झ–संज्ञा पुं० [सं०] १. झंझावात। वर्षा मिली हुई तेज़ आँधी। २. बृहस्पति। ३. दैत्यराज। ४. ध्वनि।

झई✱†–संज्ञा स्त्री० दे० "झाईं"।

झउआ†–संज्ञा पु० दे० "झाबा"।

झक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सनक। धुन।
संज्ञा स्त्री० दे० "झख"।
वि० चमकीला। साफ़।

झकझक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. व्यर्थ की हुज्जत। फ़जूल तकरार। २. बकबक।

झकझका–वि० [अनु०] चमकीला।

झकझकाहट–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमक।

झकझेलना–क्रि० स० दे० "झकझोरना"।

झकझोर–संज्ञा पु० [अनु०] झटका।
वि० झोंकेदार। तेज़।

झकझोरना–क्रि० स० [अनु०] किसी चीज़ को पकड़कर खूब हिलाना। झटका देना।

झकझोरा–संज्ञा पु० [अनु०] झटका।

झकना†–क्रि० अ० [अनु०] १. बकवाद करना। व्यर्थ की बातें करना। २. क्रोध में आकर अनुचित वचन कहना।

झकाझक–वि० [अनु०] खूब साफ़ और चमकता हुआ। झलाझल। उज्ज्वल।

झकुराना†–क्रि० अ० [हिं० झकोरा] झूमना।
क्रि० स० झूमने में प्रवृत्त करना।

झकोर✱†–संज्ञा पु० [अनु०] १. हवा का झोंका। २. झटका। झोंका।

झकोरना–क्रि० अ० [अनु०] हवा का झोंका मारना।

झकोरा–संज्ञा पु० [अनु०] हवा का झोंका।

झकोल✱†–संज्ञा पु० दे० "झकोर"।

झक्कड़–संज्ञा पु० [अनु०] तेज़ आँधी।
वि० दे० "झक्की"।

झक्की–वि० [अनु०] १. बहुत बकबक करनेवाला। २. जो अपनी धुन के सामने किसी की न सुने। सनकी।

झक्खना †–क्रि० अ० दे० "झीखना"।

झख–संज्ञा स्त्री० [हिं० झीखना] झीखने का भाव या क्रिया।
मुहा०—झख मारना = १. व्यर्थ समय नष्ट करना। २. अपनी मिट्टी खराब करना।

झखना✱–क्रि० अ० दे० "झीखना"।

झखी✱–संज्ञा स्त्री० [सं० झष] मछली।

झगड़ना–क्रि० अ० [हिं० झकझक से अनु०] परस्पर विवाद करना। झगड़ा करना।

झगड़ा–संज्ञा पु० [हिं० झकझक से अनु०] परस्पर आवेशपूर्ण विवाद। लड़ाई। हुज्जत। तकरार।

झगड़ालू–वि० [हिं० झगड़ा + आलू (प्रत्य०)] जो बात बात में झगड़ा करता हो। कलहप्रिय।

झगड़ी०–संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।

झगर–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

झगरा✱†–संज्ञा पु० दे० "झगड़ा"।

झगराऊ✱†–वि० दे० "झगड़ालू"।

झगरी०†–संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।

२. पलक का गिरना। ३. हलकी नींद। झपकी।

झपकना–क्रि० अ० [सं० झंप] १. पलक का गिरना। २. झपकी लेना। ऊँघना। (क्व०) ३. झपटना। ४. झेंपना।

झपकाना–क्रि० स० [अनु०] पलकों को बार बार बंद करना।

झपकी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हलकी नींद। २. आँख झपकने की क्रिया। ३. धोखा। चकमा। बहकावा।

झपकौंहा‡–वि० [हिं० झपना] [स्त्री० झपकौंही] १. नींद से भरा हुआ (नेत्र)। झपकता हुआ। २ मस्त। नशे में चूर।

झपट–संज्ञा स्त्री० [सं० झप] झपटने की क्रिया या भाव।

झपटना–क्रि० अ० [सं० झप] आक्रमण करने के लिये वेग से बढ़ना। टूटना।

झपटाना–क्रि० स० [हिं० झपटना का प्रे०] किसी को झपटने में प्रवृत्त करना।

झपट्टा–संज्ञा पुं० दे० "झपट"।

झपताल–संज्ञा पु० [देश०] संगीत में एक ताल।

झपना–क्रि० अ० [अनु०] १. (पलकों का) गिरना। २ आँखें झपकना। ३. झुकना। ४. झेंपना।

झपस–संज्ञा स्त्री० [हिं० झपसना] गुंजान होने का भाव।

झपसना–क्रि० अ० [हिं० झँपना = ढँकना] लता या पेड़ की डालियों का खूब घना होकर फैलना।

झपाना–क्रि० स० [हिं० झपना] १ मूँदना। बंद करना। (आँखों या पलकों का) २ झुकाना।

झपित–वि० [हिं० झपना] १. झपा हुआ। मुँदा हुआ। २. जिसमें नींद भरी हो। उनींदा (नेत्र)। ३ लज्जित। लज्जायुक्त।

झपेट–संज्ञा स्त्री० दे० "झपट"।

झपेटना–क्रि० स० [अनु०] आक्रमण करके दबा लेना। दबोचना। छोप लेना।

झपेटा‡–संज्ञा पु० [अनु०] १. चपेट। झपट। २. भूत प्रेतादि कृत बाधा या आक्रमण।

झप्पान–संज्ञा पु० दे० "झंपान"।

झबरा–वि० [अनु०] [स्त्री० झबरी] जिसके बहुत लंबे लंबे बिखरे हुए बाल हों।

झबरीला–वि० [हिं० झबरा + ईला] कुछ बड़ा, चारों तरफ बिखरा और घूमा हुआ (बाल)।

झबरैला‡–वि० दे० "झबरीला"।

झबा–संज्ञा पु० दे० "झब्बा"।

झबार, झबारि‡–संज्ञा स्त्री० [अनु०] टंटा। बखेड़ा। झगड़ा।

झबिया‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० झब्बा] छोटा झब्बा। छोटा फुँदना।

झबुकना‡–क्रि० अ० [अनु०] चमकना। झमकना। चौंकना।

झब्बा–संज्ञा पु० [अनु०] १. तारों का गुच्छा जो कपड़ों या गहनों में शोभा के लिये लटकाया जाता है। २ एक में लगी हुई छोटी चीजों का समूह। गुच्छा।

झमक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चमक का अनुकरण। २. प्रकाश। उजेला। ३. झमझम शब्द। ४ नखरे की चाल।

झमकना–क्रि० अ० [हिं० झमक] १. रह रहकर चमकना। दमकना। २. झपकना। छाना। ३. झमझम शब्द होना। झनकार होना। ४ लड़ाई में हथियारों का चमकना और खनकना। ५. अकड़ दिखलाना। ६ झमझम शब्द करना।

झमकाना–क्रि० स० [हिं० झमकना का स० रूप] १. चमकाना। चमक पैदा करना। २. आभूषण या हथियार आदि बजाना और चमकाना।

झमकारा–वि० [हिं० झमझम] बरसनेवाला (बादल)।

झमझम–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ घुँघुरुओं आदि के बजने का झमझम शब्द। छमछम। २ पानी बरसने का शब्द।
वि० जो खूब चमके। चमकता हुआ।
क्रि० वि० १. झमझम शब्द के साथ। २ चमक-दमक के साथ। झमाझम।

झमना–क्रि० अ० [अनु०] झुकना। दबना।

झमाका–संज्ञा पु० [अनु०] १. पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द। २. ठसक। नखरा।

झमाझम–क्रि० वि० [अनु०] १. उज्ज्वल कांति के सहित। दमक के साथ। २. झमझम शब्द सहित।

झमाट–संज्ञा पुं० [अनु०] झुरमुट।

झमाना–क्रि० अ० [अनु०] छाना। घेरना। क्रि० अ० दे० "झँवाना"।

झमेला—संज्ञा पु० [अनु० झाँव झाँव] १. बखेड़ा। झंझट। २. भीड़भाड़।

झमेलिया—संज्ञा पु० [हिं० झमेला + इया (प्रत्य०)] झमेला करनेवाला। झगड़ालू।

झर—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पानी गिरने का स्थान। निर्झर। २. झरना। सोता। चश्मा। ३. समूह। ४. तेजी। वेग। ५. झड़ी। लगातार वृष्टि। ६. ताप।

झरकना—क्रि० अ० १. दे० "झलकना"। २. दे० "झिड़कना"।

झरझर—संज्ञा स्त्री० [अनु०] जल के बहने, बरसने या हवा के चलने आदि का शब्द।

झरन—संज्ञा स्त्री० [हिं० झरना] १. झरने की क्रिया। २. वह जो कुछ झर कर निकला हो। ३. दे० "झड़न"।

झरना—क्रि० अ० [सं० क्षरण] १. दे० "झड़ना"। २. ऊँची जगह से सोते का गिरना।

संज्ञा पु० [सं० झर] ऊँचे स्थान से गिरनेवाला जल-प्रवाह। सोता। चश्मा।

संज्ञा पु० [सं० क्षरण] १. एक प्रकार की छलनी जिसमें रखकर अनाज छाना जाता है। २. लंबी डाँड़ी की छेददार चिपटी करछी। पौना।

वि० [स्त्री० झरनी] झरनेवाला। जो झरता हो।

झरनि †—संज्ञा स्त्री० दे० "झरन"।

झरप—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. झोंका। झकोर। २. वेग। तेजी। ३. चाँड़। टेक। ४. चिक। चिलमन। परदा। ५. दे० "झड़प"।

झरपना †—क्रि० अ० [अनु०] १. झोंका देना। बौछार मारना। २. दे० "झड़पना"।

झरहरना—क्रि० अ० [अनु०] झरझर शब्द करना।

झरहरा†—वि० दे० "झँझरा"।

झरहराना—क्रि० अ० [अनु०] हवा के झोंके से पत्तों का शब्द करना।

क्रि० स० झटकना। झाड़ना।

झराझर—क्रि० वि० [अनु०] १. झरझर शब्द सहित। २. लगातार। बराबर। ३. वेग सहित।

झरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झरना] १. पानी का झरना। स्रोत। चश्मा। २. वह किराया या कर जो किसी बाजार या सट्टी में जाकर सौदा बेचनेवालों से प्रति दिन लिया जाता है। ३. दे० "झड़ी"।

झरोखा—संज्ञा पु० [अनु० झरझर + गौख] हवा या रोशनी के लिये दीवारों में बनी हुई झँझरीदार छोटी खिड़की। गवाक्ष।

झल—संज्ञा पु० [सं० ज्वल = ताप] १. दाह। जलन। आँच। २. किसी विषय की उत्कट इच्छा। उग्र कामना। ३. क्रोध। गुस्सा। ४ समूह।

झलक—संज्ञा स्त्री० [सं० झल्लिका] १. चमक। दमक। आभा। २. आकृति का आभास। प्रतिबिंब।

झलकदार—वि० [हिं० झलक + फा० दार] चमकीला।

झलकना—क्रि० अ० [सं० झल्लिका] १ चमकना। दमकना। २ कुछ कुछ प्रकट होना। आभास होना।

झलकनि—संज्ञा स्त्री० दे० "झलक"।

झलका—संज्ञा पुं० [सं० ज्वल = जलना] शरीर में पड़ा हुआ छाला। फफोला।

झलकाना—क्रि० स० [हिं० झलकना का स०] १. चमकाना। दमकाना। २. दरसाना। कुछ आभास देना।

झलझल—संज्ञा स्त्री० [हिं० झलकना] चमक। दमक।

क्रि० वि० रह रहकर निकलनेवाली आभा के साथ।

झलझलाना—क्रि० अ० [अनु०] चमकना। क्रि० स० चमकाना। चमचमाना।

झलझलाहट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमक। दमक।

झलना—क्रि० स० [हिं० झलझल (हिलना)] हवा करने के लिये कोई चीज हिलाना।

क्रि० अ० १. इधर-उधर हिलना। † २. शेखी बघारना। डींग हाँकना। ३. "झालना" का अ० रूप। ४ दे० "झेलना"।

झलमल—संज्ञा पु० [सं० ज्वल = दीप्ति] १. अँधेरे के बीच थोड़ा थोड़ा उजाला। २. चमक-दमक।

क्रि० वि० दे० "झलझल"।

झलमला—वि० [हिं० झलमलाना] चमकीला।

झलमलाना—क्रि० अ० [हिं० झलमल] १. रह रहकर चमकना। चमचमाना। २. निकलते हुए प्रकाश का हिलना डोलना।

क्रि० स० किसी स्थिर ज्योति या लौ को हिलाना डुलाना।

झलरा—संज्ञा पुं० [हिं० झालर] एक प्रकार का पकवान जिसे झालर भी कहते हैं।

झलराना†—क्रि० अ० [हिं० झालर] फैल-कर छाना।

झलवाना—क्रि० स० [हिं० झलना] झलने या झालने का काम दूसरे से कराना।

झला†—संज्ञा पुं० [हिं० झड़] १. हलकी वर्षा। २. झालर, तोरण या बंदनवार आदि। ३. पंखा। ४. बेरा। ५. समूह।

झलाझल—वि० [अनु०] खूब चमचमाता हुआ। चमाचम।

झलाझली—वि० [अनु०] चमकदार। संज्ञा स्त्री० झलाझल का भाव।

झलाबोर—संज्ञा पुं० [हिं० झलमल] १. कलाबत्तू का बुना हुआ साड़ी आदि का चौड़ा अँचल। २ कारचोबी। वि० चमकीला। चमकदार।

झलामल†—संज्ञा स्त्री० [हिं० झलझल = चमक] चमक। दमक। वि० चमकीला।

झल्ल—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पागलपन।

झल्ला—संज्ञा पुं० [देश०] १. बड़ा टोकरा। २. वर्षा। वृष्टि। ३. बौछार। † [हिं० झल्लाना] १. पागल। २. बेवकूफ।

झल्लाना—क्रि० अ० [हिं० झल] चिढ़ना। खिजलाना। क्रि० स० चिढ़ाना। खिझाना।

झष—संज्ञा पुं० [सं०] १. मत्स्य। मछली। २. मकर। मगर। ३. ताप। गरमी। ४. वन। ५. मीन राशि। ६ दे० "झख"।

झषकेतु—संज्ञा पुं० [सं० झषकेतन] कामदेव।

झसना—क्रि० स० दे० "झँसना"।

झहनना†—क्रि० अ० [अनु०] १. झन्नाटे या सन्नाटे में आना। २. (रोएँ का) खड़ा होना। ३. झनझन शब्द होना।

झहनाना—क्रि० स० [अनु०] १ झहनना का सकर्मक रूप। २ झनकार करना।

झहरना†—क्रि० अ० [अनु०] १. झड़ने का सा या झरझर शब्द करना। २. शिथिल पड़ना। ढीला होना। क्रि० स० झिड़कना। झल्लाना।

झहराना—क्रि० अ० [अनु०] १. शिथिल होकर या झरझर शब्द के साथ गिरना। २. झल्लाना। खिजलाना। ३. हिलाना।

झाँई—संज्ञा स्त्री० [सं० छाया] १. परछाईं। छाया। झलक। २. अंधकार। अँधेरा। ३ धोखा। छल।

मुहा०—झाँई बताना = धोखा देना।

४. प्रतिशब्द। प्रतिध्वनि। ५. एक प्रकार के हलके काले धब्बे जो रक्त-विकार से मनुष्य के शरीर पर पड़ जाते हैं।

झाँक—संज्ञा स्त्री० [अ० झाँकना] झाँकने की क्रिया या भाव।

झाँकना—क्रि० अ० [सं० अध्यक्ष] १. ओट की बगल में से देखना। २. इधर उधर झुककर देखना।

झाँकनी†—संज्ञा स्त्री० दे० "झाँकी"।

झाँका—संज्ञा पुं० दे० "झरोखा"।

झाँकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। दर्शन। अवलोकन। २ दृश्य। ३ झरोखा।

झाँख—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हिरन।

झाँखना†—क्रि० अ० दे० "झीखना"।

झाँखर—संज्ञा पुं० दे० "झंखाड़"।

झाँगला—वि० [देश०] ढीला ढाला (कपड़ा)।

झाँगा†—संज्ञा पुं० दे० "झगा"।

झाँझ—संज्ञा स्त्री० [झनझन से अनु०] १. मँजीरे की तरह के काँसे के ढले हुए दो बड़े गोलाकार टुकड़ों का जोड़ा जो पूजन आदि के समय बजाते हैं। झाल। २ क्रोध। गुस्सा। ३. पाजीपन। शरारत। ४. दे० "झाँझन"।

झाँझड़ी†—संज्ञा स्त्री० दे० "झाँझन"।

झाँझन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना। पैजनी। पायल।

झाँझर†—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. झाँझन। पैंजनी। २. छलनी। वि० १. पुराना। जर्जर। २. छेदवाला।

झाँझरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. झाँझ बाजा। झाल। २. झाँझन नामक गहना।

झाँप—संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँपना] १. वह जिससे कोई चीज ढाँकी जाय। २. नींद। झपकी। ३. पर्दा। चिक। संज्ञा पुं० [सं० झप] उछल कूद।

झाँपना—क्रि० स० [सं० उत्थापन] पकड़कर दबा लेना। छोप लेना।

झाँपना—क्रि० स० [सं० उत्थापन] १.

ढाँकना। आड़ में करना। २. झेंपना। लजाना। शरमाना।

झाँपी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० झाँपना] १. ढाँकने की टोकरी। २. मूँज की पिटारी।

झाँवना–क्रि० स० [हिं० झाँवा] झाँवें से रगड़ कर (हाथ पैर आदि) धोना।

झाँवर†–वि० [सं० श्यामल] १. झाँवें के रंग का। कुछ काला। २. मलिन। ३. मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४. शिथिल। मंद। सुस्त।

झाँवली–संज्ञा स्त्री० [हिं० छाँव = छाया] १. झलक। २ आँख की कनखी।

झाँवाँ–संज्ञा पुं० [सं० झामक] जली हुई ईंट जिससे रगड़कर मैल छुड़ाते हैं।

झाँसना–क्रि० स० [हिं० झाँसा] धोखा देना। ठगना।

झाँसा–संज्ञा पुं० [सं० अध्यास] बहकाने की क्रिया। धोखा-धड़ी। दम-बुत्ता।

यौ०—झाँसा पट्टी = धोखा-धड़ी।

झा–संज्ञा पुं० [सं० उपाध्याय] मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।

झाऊ–संज्ञा पुं० [सं० झावुक] एक प्रकार का छोटा झाड़।

झाग–संज्ञा पुं० [हिं० गाज] पानी आदि का फेन। गाज।

झागड़ †–संज्ञा पुं० दे० "झगड़ा"।

झाड़–संज्ञा पुं० [सं० झाट] १. वह छोटा पेड़ या पौधा जिसकी डालियाँ जड़ या ज़मीन के बहुत पास से निकल कर चारों ओर खूब छितराई हुई हों। २. झाड़ के आकार का वह रोशनी करने का सामान जो छत में लटकाया या ज़मीन पर बैठकी की तरह रखा जाता है।

यौ०—झाड़ फानूस = शीशे के झाड़, हँडियाँ और गिलास आदि।

संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना] १. झाड़ने की क्रिया। २. फटकार। डाँट डपट। ३. मंत्र से झाड़ने की क्रिया।

यौ०—झाड़ फूँक = मंत्रोपचार।

झाड़खंड–संज्ञा पुं० [हिं० झाड़ + खंड] जंगल। वन।

झाड़ झंखाड़–संज्ञा पुं० [हिं० झाड़ + झंखाड़] १. काँटेदार झाड़ियों का समूह। २. निकम्मी चीज़ें।

झाड़दार–वि० [हिं० झाड़ + फा० दार] १. सघन। घना। २. कँटीला। काँटेदार।

झाड़न–संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना] १. वह जो झाड़ने पर निकले। २. वह कपड़ा जिससे कोई चीज़ झाड़ी जाय।

झाड़ना–क्रि० स० [सं० शरण या शायन] १. निकालना। दूर करना। हटाना। छुड़ाना। २. अपनी योग्यता दिखलाने के लिये गढ़ गढ़कर बातें करना।

क्रि० स० [सं० क्षरण] १. किसी चीज पर पड़ी हुई गर्द आदि साफ करने के लिये उसको उठाकर झटका देना। झटकारना। फटकारना। २. झटके से किसी चीज़ पर पड़ी या लगी हुई दूसरी चीज़ गिराना या हटाना। ३. बल या युक्ति-पूर्वक किसी से धन एंठना। झटकना। (क०) ४. रोग या प्रेत-बाधा आदि दूर करने के लिये किसी को मंत्र आदि से फूँकना। ५. फटकारना। डाँटना।

झाड़ फूँक–संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना + फूँकना] भूत-प्रेत आदि की बाधाओं अथवा रोगों को दूर करने के लिये मंत्र आदि पढ़कर झाड़ना फूँकना।

झाड़ बुहार–संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़ना + बुहारना] झाड़ना और बुहारना। सफाई।

झाड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० झाड़ना] १. झाड़ फूँक। २. तलाशी। ३. मल। गुह। मैला। ४. पाखाना। टट्टी।

झाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झाड़] १. छोटा झाड़। पौधा। २. छोटे पेड़ों का समूह।

झाड़ू–संज्ञा पुं० [हिं० झाड़ना] १. लंबी सींकों आदि का समूह जिससे ज़मीन या फर्श झाड़ते हैं। कूँचा। बोहारी। सोहनी।

मुहा०—झाड़ू फिरना = कुछ न रहना। झाड़ू मारना = घृणा या निरादर करना।

२. पुच्छल तारा। केतु।

झापड़–संज्ञा पुं० [सं० चपट] थप्पड़। तमाचा।

झाबर–संज्ञा पुं० दे० "झाबा"।

झाबा–संज्ञा पुं० [हिं० झाँपना] १. टोकरा। खाँचा। २. दे० "झब्बा"।

झाम†–संज्ञा पुं० [देश०] १. झब्बा। गुच्छा। २. घुड़की। डाँट। डपट। ३. धोखा। छल।

झामी†–संज्ञा पुं० [हिं० झाम] धोखेबाज़।

झायँ झायँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. झनकार। झन् झन् शब्द। २. वह शब्द जो किसी

सुनसान स्थान में हो। हवा का शब्द।
झावँ झावँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १.बकवाद। बकबक। २. हुज्जत। तकरार।
झारा–वि० [सं० सर्व] १. एक मात्र। निपट। केवल। २. कुल। सब। समस्त। संज्ञा पु० समूह। झुंड।
संज्ञा स्त्री०[सं० ज्वाला+ताप] १.दाह। जलन। २. ईर्ष्या। डाह। ३. ज्वाला। लपट। आँच। ४. झाल। चरपरापन।
झारखंड–संज्ञा पु० [हिं० झाड़+खंड] १. एक पहाड़ जो वैद्यनाथ से होता हुआ जगन्नाथपुरी तक चला गया है। २. दे० "झाड़खंड"।
झारना–क्रि० स० [सं० क्षर] १.बाल साफ़ करने के लिये कंघी करना। २. छाँटना। अलग करना। ३. दे० "झाड़ना"।
झारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झरना] एक प्रकार का लंबोतरा टोंटीदार पात्र।
झाल–संज्ञा पु० [सं० झल्लक] झाँझ नामक बाजा।
संज्ञा पुं० [देश०] झालने की क्रिया या भाव।
संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वाला] १. चरपराहट। तीतापन। तीक्ष्णता। २. तरंग। लहर।
संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़] पानी की झड़ी।
वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "झार"।
झालना–क्रि० स० [?] १. धातु की बनी हुई वस्तुओं में टाँका देकर जोड़ लगाना। २. पीने की चीज़ों को ठंढा करने के लिये बरफ या शोरे में रखना।
झालरा–संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का पकवान जिसे झल्ला भी कहते हैं।
झालर–संज्ञा स्त्री० [सं० झल्लरी] १. किसी चीज़ के किनारे पर शोभा के लिये बनाया या लगाया हुआ वह हाशिया जो लटकता रहता है। २. झालर या किनारे के आकार की लटकती हुई कोई चीज़। ३. झाँझ।
झालरना–क्रि० अ० दे० "झलराना"।
झालि–संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़] पानी की झड़ी।
झिंगवा–संज्ञा स्त्री० [सं० चिंगट] एक प्रकार की छोटी मछली।
झिंगुली†–संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।
झिंझिया–संज्ञा स्त्री० [अनु०] छेदोंवाला वह घड़ा जिसमें दीया बालकर कुआर के महीने में लड़कियाँ घुमाती हैं।
झिंझोटी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक रागिनी।
झिझकना–क्रि० अ० दे० "झझकना"।
झिझकारना–क्रि० स० १. दे० "झझकारना"। २. दे० "झटकना"।
झिड़कना–क्रि० स० [अनु०] १. अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना। २. अलग फेंक देना। झटकना।
झिड़की–संज्ञा स्त्री० [हिं० झिड़कना] वह बात जो झिड़ककर कही जाय। डाँट। फटकार।
झिनवा–संज्ञा पु० [देश०] महीन चावल का धान।
झिपना–क्रि० अ० दे० "झेंपना"।
झिपाना–क्रि० स० [हिं० झेंपना का स० रूप] लज्जित करना। शरमिंदा करना।
झिपझिरा–वि० [हिं० झरना] झँझरा। झीना। पतला। बारीक (कपड़ा)।
झिरना*–क्रि० अ० दे० "झरना"।
झिराना–क्रि० अ० दे० "झुराना"।
झिलँगा–संज्ञा पु० [हिं० ढीला+अंग] ऐसी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो। संज्ञा पु० दे० "झींगा"।
झिलना–क्रि० अ० [?] १. बलपूर्वक प्रवेश करना। धँसना। घुसना। २. तृप्त होना। अघा जाना। ३. मग्न होना। तल्लीन होना। ४. झेला जाना। सहा जाना।
झिलम–संज्ञा स्त्री० [हिं० झिलमिला] लोहे का बना एक झँझरीदार पहनावा जो लड़ाई में सिर और मुँह पर पहना जाता था। टोप। खोद।
झिलमिल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हिलता हुआ प्रकाश। २. रह रहकर प्रकाश के घटने बढ़ने की क्रिया। ३. एक प्रकार का बढ़िया, बारीक और मुलायम कपड़ा। ४. युद्ध में पहनने का लोहे का कवच। झिलम।
वि० रह रहकर चमकता हुआ।
झिलमिला–वि० [अनु०] १. जो गफ़ या गाढ़ा न हो। झँझरा। झीना। २. चमकता हुआ। ३. जो बहुत स्पष्ट न हो।
झिलमिलाना–क्रि० अ० [अनु०] १. रह रहकर चमकना। २. प्रकाश का हिलना।
क्रि० स० १. कोई चीज़ इस प्रकार हिलाना कि वह रह रहकर चमके। २. हिलाना।
झिलमिली–संज्ञा स्त्री० [हिं० झिलमिल]

१ बहुत सी थाडी पटरियों का ढाँचा जो किवाड़ों आदि में प्रकाश या वायु आने के लिये जड़ा रहता है। खड़खड़िया। २. चिक। चिलमन।
भिल्लड–वि० [हिं० भिल्ली] पतला और भँझरा। गफ का उलटा। (कपड़ा)
भिल्ली–सज्ञा पु० [स०] झींगुर।
सज्ञा स्त्री० [स० चैल] ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज दिखाई पड़े।
भींकना–क्रि० अ० दे० "भींखना"।
भींका–सज्ञा पु० [देश०] उतना अन्न जितना एक बार चक्की में डाला जाता है।
भींखना–क्रि० अ० [हिं० खीजना] १. बहुत पछताना और कुढ़ना। खीजना। २. दुखड़ा रोना। विपत्ति का हाल सुनाना।
सज्ञा पु० १ भींखने की क्रिया या भाव। २. दुःख का वर्णन। दुखड़ा।
भींगा–सज्ञा पु० [स० चिंगट] १ एक प्रकार की मछली। २. एक प्रकार का धान।
भींगुर–सज्ञा पु० [अनु० झीं+कर] एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती कीड़ा जो अँधेरे घरों, खेतों और मैदानों में होता है। इसकी आवाज बहुत तेज़ भीं भीं होती है। धुरधुरा। जजीरा। भिल्ली।
भींसी–सज्ञा स्त्री० [अनु० या हिं० झीना] छोटी छोटी बूँदों की वर्षा। फुहार।
भीखना–क्रि० अ० दे० "भींखना"।
भीना–वि० [स० क्षीण] १. बहुत महीन। बारीक। पतला। २. जिसमें बहुत से छेद हों। भँझरा। ३. दुबला। दुर्बल।
भील–संज्ञा स्त्री० [स० क्षीर] १. किसी बड़े मैदान में बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय। २. बहुत बड़ा तालाब। ताल। सर।
भीलर–संज्ञा पुं० [हिं० भील] छोटी भील।
भीवर–सज्ञा पु० [स० धीवर] मल्लाह।
भुँझलाना–क्रि० अ० [अनु०] रिसियाना। किटकिटाना। चिड़चिड़ाना।
भुंड–सज्ञा पु० [स० यूथ] बहुत से मनुष्यों या पशुओं आदि का समूह। वृंद। गरोह।
भुकना–क्रि० अ० [स० युज्] १. ऊपरी भाग का नीचे की ओर लटकना। निहुरना। नवना।
मुहा०—भुक भुक पड़ना=नशे या नींद के कारण अच्छी तरह खड़ा न रह सकना।
२. किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों का किसी ओर प्रवृत्त होना। ३. किसी खड़े या सीधे पदार्थ का किसी ओर प्रवृत्त होना। ४. प्रवृत्त होना। दत्त-चित्त होना। ५. नम्र होना। विनीत होना। ६. क्रुद्ध होना। रिसाना।
भुकमुख†–सज्ञा पुं० दे० "भुटपुटा"।
भुकराना–क्रि० अ० [हिं० भोंका] झोंका खाना।
भुकवाना–क्रि० स० [हिं० भुकना] भुकाने का काम दूसरे से कराना।
भुकाना–क्रि० स० [हिं० भुकना] १. किसी खड़ी चीज़ के ऊपरी भाग को टेढ़ा करके नीचे की ओर लाना। निहुराना। नवाना। २. किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों को किसी ओर प्रवृत्त करना। ३ प्रवृत्त करना। रुजू करना। ४. नम्र करना। विनीत बनाना।
भुकामुखी–सज्ञा स्त्री० दे० "भुटपुटा"।
भुकाव–सज्ञा पु० [हिं० भुकना] १. किसी ओर लटकने, प्रवृत्त होने या भुकने की क्रिया या भाव। २. ढाल। उतार। ३. मन का किसी ओर लगना। प्रवृत्ति।
भुटपुटा–सज्ञा पुं० [अनु०] ऐसा समय जब कि कुछ अँधकार और कुछ प्रकाश हो। भुरमुट।
भुट्टंग–वि० [हिं० भोंग] जिसके बड़े बड़े और बिखरे हुए बाल हों। भोंटेवाला।
भुठलाना–क्रि० स० [हिं० भूठ+ लाना (प्रत्य०)] १. भूठा ठहराना। भूठा बनाना। २. भूठ कहकर धोखा देना।
भुठाई†–सज्ञा स्त्री० [हिं० भूठ+आई] भूठ का भाव। भूठापन। असत्यता।
भुठाना–क्रि० स० [हिं० भूठ+ आना (प्रत्य०)] भूठा ठहराना।
भुनक–सज्ञा पुं० [अनु०] नूपुर का शब्द।
भुनकना–क्रि० अ० [अनु०] भुनभुन शब्द करना।
भुनवारा†–वि० [हिं० झीना] [स्त्री० भुनवारी] पतला। महीन। बारीक।
भुनभुन–संज्ञा पु० [अनु०] नूपुर आदि के बजने का शब्द।
भुनभुना–सज्ञा पु० [हिं० भुनभुन से अनु०] एक प्रकार का खिलौना जिसे हिलाने में भुनभुन शब्द होता है। घुनघुना।

झुनझुनाना–क्रि० अ० [अनु०] झुन झुन शब्द होना।
क्रि० स० झुन झुन शब्द उत्पन्न करना।

झुनझुनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झुनझुनाना] हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट।

झुपरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "झोंपड़ी"।

झुमका–संज्ञा पुं० [हिं० झूमना] छोटी गोल कटोरी के आकार का कान का एक गहना।

झुमाना–क्रि० स० [हिं० झूमना का स० रूप] किसी को झूमने में प्रवृत्त करना।

झुरझुरी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] कँपकँपी।

झुरना–क्रि० अ० [हिं० चूर या चूर] १. सूखना। खुश्क होना। दे० "झुराना"। २. बहुत अधिक दुःखी होना या शोक करना। ३. अधिक चिंता, रोग या परिश्रम आदि के कारण दुर्बल होना। घुलना।

झुरमुट–संज्ञा पुं० [सं० झुंट=झाड़ी] १. एक ही में मिले हुए या पास पास कई झाड़ या क्षुप। २. बहुत से लोगों का समूह। गरोह। ३. चादर आदि से शरीर को चारों ओर से ढक लेने की क्रिया।

झुरवाना–क्रि० स० [हिं० झुरना] सुखाने का काम दूसरे से कराना।

झुरसना†–क्रि० अ०, दे० "झुलसना"।

झुराना†–क्रि० स० [हिं० झुरना] सुखाना।
क्रि० अ० १. सूखना। २. दुःख या भय से घबरा जाना। ३. दुबला होना।

झुर्री–संज्ञा स्त्री० [हिं० झुरना] सिकुड़न। सिलवट। शिकन।

झुलना†–संज्ञा पुं० दे० "झूला"।
वि० [हिं० झूलना] झूलनेवाला।

झुलनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झूलना] १. तार में गुथा हुआ छोटे मोतियों का गुच्छा जिसे स्त्रियाँ नाक की नथ में लटकाती हैं। २. दे० "झूमर"।

झलाझल†–वि० दे० "झिलमिल"।

झुलसना–क्रि० अ० [सं० ज्वल+अंश] १. किसी भाग का इस प्रकार अंशतः जल जाना कि उसका रंग काला पड़ जाय। झौंसना। २. अधिक गरमी के कारण किसी चीज़ के ऊपरी भाग का सूखकर काला पड़ जाना।
क्रि० स० १. ऊपरी भाग या तल को इस प्रकार अंशतः जलाना कि उसका रंग काला पड़ जाय। झौंसना। २. किसी पदार्थ के ऊपरी भाग को सुखाकर अधजला कर देना।

झुलसवाना–क्रि० स० [हिं० झुलसना का प्रे०] झुलसने का काम दूसरे से कराना।

झुलसाना–क्रि० स० १. दे० "झुलसना"। २. दे० "झुलसवाना"।

झुलाना–क्रि० स० [हिं० झूलना] १. किसी को झूलने में प्रवृत्त करना। २. कोई चीज़ देने या कोई काम करने के लिये बहुत अधिक समय तक आसरे में रखना।

झुलावना†–क्रि० स० दे० "झुलाना"।

झुहिरना†–क्रि० स० [?] लदना। लादा जाना।

झूकट†–संज्ञा पुं० दे० "झोंका"।
संज्ञा स्त्री० दे० "झोंक"।

झूकना†–क्रि० स० १. दे० "झोंकना"। २. दे० "झखना"।

झूँखना†–क्रि० अ० दे० "झीखना"।

झूँझल–संज्ञा स्त्री० दे० "झुँझलाहट"।

झूँसना†–क्रि० अ० और स० दे० "झुलसना"।

झूँकटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झूर+काँटा] छोटी झाड़ी।

झूँका†–संज्ञा पुं० दे० "झोंका"।

झूझना–क्रि० अ० दे० "जूझना"।

झूठ–संज्ञा पुं० [सं० अयुक्त, प्रा० अजुत्त] वह बात जो यथार्थ न हो। सच का उलटा।
मुहा०—झूठ सच कहना या लगाना = झूठी निंदा करना। शिकायत करना।

झूठमूठ–क्रि० वि० [हिं० झूठ+मूठ अनु०] बिना किसी वास्तविक आधार के। यों ही। व्यर्थ।

झूठा–वि० [हिं० झूठ] १. जो सत्य न हो। मिथ्या। असत्य। २ झूठ बोलनेवाला। मिथ्यावादी। ३. जो केवल रूप-रंग आदि में असल चीज़ के समान हो, पर गुण आदि में नहीं। नकली। ४. जो (पुरजा ... आदि ... जाने के कारण ...
वि० ...

क्रिया या भाव। २. ऊँघ। झपकी। (क०)

झूमक-संज्ञा पु० [हिं० झूमना] १ एक प्रकार का गीत जो होली के दिनों में स्त्रियाँ झूम झूमकर एक घेरे मे नाचती हुई गाती हैं। झूमर। झूमकरा। २. इस गीत के साथ होनेवाला नृत्य। ३ झूमर नामक पूरबी गीत। ४ गुच्छा। ५. चाँदी, सोने आदि के छोटे झुमकों या मोतियो आदि के गुच्छों की वह कतार जो साड़ी आदि में सिर पर पड़नेवाले भाग में लगी रहती है। ६ दे० "झुमका"।

झूमकसाड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० झूमक + साड़ी] वह साड़ी जिसमें झूमक या मोती आदि के गुच्छे टँके हों।

झूमका-संज्ञा पु० १. दे० "झुमका"। २. दे० "झूमक"।

झूमड़-संज्ञा पु० दे० "झूमर"।

झूमड़ झामड़-संज्ञा पु० [हिं० झूमड़] ढकोसला। झूठा प्रपंच।

झूमना-क्रि० अ० [सं० झंप] १ बार बार आगे पीछे, नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना। झोंके खाना।

मुहा०—बादल झूमना = बादलों का एकत्र होकर झुकना।

२ सिर और धड को बार बार आगे-पीछे और इधर-उधर हिलाना। (मस्ती, प्रसन्नता, नींद या नशे में।)

झूमर-संज्ञा पु० [हिं० झूमना] १. सिर में पहनने का एक प्रकार का गहना। २. कान में पहनने का झुमका। ३. झूमक नाम का गीत। ४. इस गीत के साथ होनेवाला नाच। ५ बहुत से लोगों का साथ मिलकर गोल घेरे में घूम घूमकर नाचना। ६. झूमरा नामक ताल। ७. एक प्रकार का काठ का खिलौना।

झूर†-वि० [हिं० चूर] सूखा। खुश्क। वि० [हिं० झूठ] १. खाली। २. व्यर्थ। संज्ञा स्त्री० १. जलन। दाह। २. दुःख।

झूरा†-वि० [हिं० झूर] १. सूखा। खुश्क। २. खाली।

संज्ञा पु० १. जलवृष्टि का अभाव। अ-वर्षण। २. न्यूनता। कमी।

झूरे†-क्रि० वि० [हिं० झूर] व्यर्थ। निष्प्रयोजन। झूठमूठ।

वि० दे० "झूर"।

झूल-संज्ञा स्त्री० [हिं० झूलना] १ वह कपड़ा जो शोभा के लिये चौपायों पर डाला जाता है। २ वह कपड़ा जो पहनने पर भद्दा जान पड़े। (व्यंग्य) ३ दे० "झूला"।

झूलन-संज्ञा पु० [हिं० झूलना] वर्षा ऋतु का एक उत्सव जिसमें मूर्तियों को झूले पर बैठाकर झुलाते हैं। हिंडोला।

झूलना-क्रि० अ० [सं० दोलन] १ किसी लटकी हुई वस्तु के सहारे नीचे की ओर लटककर बार बार आगे पीछे या इधर उधर होना। लटककर बार बार इधर उधर हिलना। २ झूले पर बैठकर पेंग लेना। ३ किसी कार्य के होने की आशा में अधिक समय तक पड़े रहना।

वि० झूलनेवाला। जो झूलता हो।

संज्ञा पु० १ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २६ मात्राएँ और अंत में गुरु लघु होते हैं। २ इसी छंद का दूसरा भेद जिसके प्रत्येक चरण में ३७ मात्राएँ और अंत में यगण होता है। ३. हिंडोला। झूला।

झूलरि-संज्ञा स्त्री० [हिं० झूलना] झूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका।

झूला-संज्ञा पु० [सं० दोला] १ पेड़ की डाल या छत आदि में लटकाई हुई दोहरी या चौहरी रस्सी आदि से बँधी पटरी जिस पर बैठकर झूलते हैं। हिंडोला। २ बड़े रस्सों, ज़ंजीरों या तारों आदि का बना हुआ झूलनेवाला पुल। ३. वह बिस्तर जिसके दोनों सिरे रस्सियों में बाँधकर दोनों ओर दो ऊँची खूँटियों आदि में बाँध दिए गए हों। ४. देहाती स्त्रियों का ढीला-ढाला कुरता। ५ झोंका। झटका।

झेंपना, झेपना-क्रि० अ० [हिं० छिपना] शरमाना। लजाना। लज्जित होना।

झेर७†-संज्ञा स्त्री० [फा० देर] १ विलंब। देर। २ बखेड़ा। झगड़ा।

झेरना७†-क्रि० स० [हिं० झेलना] झेलना। क्रि० स० [हिं० छेड़ना] शुरू करना।

झेरा-संज्ञा पु० [?] झंझट। बखेड़ा।

झेल-संज्ञा स्त्री० [हिं० झेलना] १. तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाने की क्रिया। २. हलका धक्का या ३ झेलने की क्रिया या भाव। संज्ञा स्त्री० विलंब। देर।

झेलना–क्रि० स० [सं० क्षेल ?] १. ऊपर लेना। सहना। बरदाश्त करना। २. तैरने में हाथ पैर से पानी हटाना। ३. पानी में पैठना। हेलना। ४. ठेलना। ढकेलना। † ५. पचाना। हज़म करना। ६. ग्रहण करना। मानना।

झोंक–संज्ञा स्त्री० [हिं० झुकना] १. झुकाव। प्रवृत्ति। २. बोझ। भार। ३. प्रचंड गति। वेग। तेज़ी। रव। ४. किसी काम का धूमधाम से उठान। ५. ठाट। सजावट।

यौ०—झोंक झोंक = १. ठाट-बाट। धूम-धाम। २. प्रतिद्वंद्विता। विरोध।

६ पानी का हिलोरा। ७. दे० "झोंका"।

झोंकना–क्रि० स० [हिं० झोंक] १. किसी वस्तु को आग में फेंकना।

मुहा०—भाड़ झोंकना = तुच्छ काम करना।

२ ज़बरदस्ती आगे की ओर बढ़ाना। ढकेलना। ठेलना। ३. अंधाधुंध खर्च करना। ४. आपत्ति, दु:ख या भय के स्थान में कर देना। बुरी जगह ठेलना। ५. बहुत ज्यादा काम ऊपर डालना। ६. बिना विचारे दोष आदि मढ़ना।

झोंकवाना–क्रि० स० [हिं० झोंकना का प्रे०] झोंकने का काम दूसरे से कराना।

झोंका–संज्ञा पुं० [हिं० झोंक] १. झटका। धक्का। रेला। झपट्टा। २. हवा का झटका या धक्का। ३. हवा का बहाव। झकोरा। ४. पानी का हिलोरा। ५. इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया। ६. ठाट। सजावट।

झोंकाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंकना] झोंकने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

झोंकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंक] १. उत्तरदायित्व। जवाबदेही। २. अनिष्ट या हानि की आशंका। जोखों। जोखिम।

झोंझ–संज्ञा पुं० [देश०] १. खोंता। घोंसला। २. कुछ पक्षियों (जैसे, ढेक, गीध) के गले की थैली या लटकता हुआ मांस। ३. गुजली। सुरसुराहट।

झोंझल–संज्ञा स्त्री० [हिं० गुं‍झलाना] झुँझलाहट। कोप। कुढ़न।

झोंटा–संज्ञा पुं० [सं० जूट] १. बड़े बड़े बालों का समूह। २. पतली लंबी वस्तुओं का वह समूह जो एक बार हाथ में आ सके। जुट्टा।

संज्ञा पुं० [हिं० झोंका] वह धक्का जो झूले को इधर-उधर हिलाने के लिये दिया जाता है। झोका। पेंग।

झोंटी○†–संज्ञा स्त्री० दे० "झोंटा"।

झोंपड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० छोपना] [स्त्री० अल्पा० झोपड़ी] वह बहुत छोटा सा घर जो गांवों या जंगलों में कच्ची मिट्टी की छोटी दीवारें उठाकर और घास-फूस से छाकर बना लेते हैं। कुटी। पर्णशाला।

मुहा०—अंधा झोपड़ा = पेट। उदर।

झोंपड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० झोपड़ा] छोटा झोपड़ा। कुटिया।

झोंपा–संज्ञा पुं० [हिं० झब्बा] झब्बा। गुच्छा।

झोंटिंग–वि० [हिं० झोंटा] जिसके सिर पर बड़े बड़े और खड़े बाल हों। झोंटेवाला।

संज्ञा पुं० भूत-प्रेत या पिशाच आदि।

झोरई†–वि० [हिं० झोल] रसेदार। (तरकारी)

झोरना†–क्रि० स० [सं० दोलन] १. झटका देकर हिलाना या कँपाना। २. किसी चीज़ को इस प्रकार झटका देकर हिलाना जिसमें उसके साथ लगी हुई दूसरी चीज़ें गिर पड़ें। ३. इकट्ठा करना। एकत्र करना।

झोरि○†–संज्ञा स्त्री० दे० "झोली"।

झोरी○†–संज्ञा स्त्री० [हिं० झोली] १. झोली। २. पेट। झोझर। ओझर। ३. एक प्रकार की रोटी।

झोल–संज्ञा पुं० [हिं० झालि] १. तरकारी आदि का गाढ़ा रसा। शोरबा। २. कढ़ी आदि की तरह पकाई हुई पतली लेई। ३. मांड़। पीच। ४. धातु पर का मुलम्मा।

संज्ञा पुं० [हिं० झूलना] १. पहने या ताने हुए कपड़े आदि में वह अंश जो ढीला होने के कारण झूल या लटक जाता है। २. इस प्रकार झूलने या लटकने का भाव या क्रिया। तनाव या कसाव का उलटा। ३. पल्ला। आंचल। ४. परदा। ओट। आड़।

वि० १. जो कसा या तना न हो। ढीला। २. निकम्मा। ख़राब। बुरा।

संज्ञा पुं० ग़लती। भूल।

संज्ञा पुं० [हिं० झिल्ली] १. वह झिल्ली या थैली जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे या अंडे रहते हैं। २. गर्भ।

संज्ञा पुं० [सं० ज्वाल] १. राख। भस्म। खाक। २. दाह। जलन।

झोलदार–वि० [हिं० झोल+फा० दार] १. जिसमें रसा हो। २. जिस पर गिलट या मुलम्मा किया हो। ३. झोल संबंधी। ४. ढीला-ढाला।

झोला–संज्ञा पुं० [हिं० झूलना] झोंका। झकोरा। हिलोर।

संज्ञा पुं० [हिं० झूलना] [स्त्री० अल्पा० झोली] १. कपड़े की बड़ी झोली या थैली। २. ढीला-ढाला गिलाफ़। खोली। ३. साधुओं का ढीला कुरता। चोला। ४. वात का एक रोग जिसमें कोई अंग ढीला पड़कर बेकाम हो जाता है। लकवा। ५. पेड़ों का पाला, लू आदि के कारण एक बारगी कुम्हला जाने या सूख जाने का रोग। ६. झटका। आघात। धक्का। ७. बाधा। आपत्ति। ८. संकेत। इशारा।

झोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० झूलना] १. कपड़े को मोड़कर बनाई हुई थैली। धोकरी। २. घास बाँधने का जाल। ३. मोट। चरसा। पुर। ४. वह कपड़ा जिससे खलिहान में अनाज ओसाया जाता है। ५. कुश्ती का एक पेच। बँवरा। ६. सफ़री बिस्तर जो चारों कोनों पर लगी हुई रस्सियों के द्वारा खंभों में बाँधकर फैलाया जाता है।

संज्ञा स्त्री० [सं० ज्वाल] राख। भस्म।

मुहा०—झोली बुझाना = सब काम हो चुकने पर पीछे उसे करने चलना।

झोलना–क्रि० स० [सं० ज्वालन] जलाना।

झोंद–संज्ञा पुं० [हिं० झोझ] पेट। उदर।

झौंर–संज्ञा पुं० [सं० युग्म, प्रा० जुम्म, हिं० झूमर] १. झुंड। समूह। २. फूलों, पत्तियों या छोटे फलों का गुच्छा। ३. एक प्रकार का गहना। झब्बा। ४. पेड़ों या झाड़ियों का घना समूह। झापस। कुंज।

झौंरना–क्रि० अ० [अनु०] १. गूँजना। गुंजारना। २. दे० "झौरना"।

झौंराना–क्रि० अ० [हिं० झूमना] इधर उधर हिलना। झूमना।

क्रि० अ० [हिं० झाँवरा] १. झाँवले रंग का हो जाना। काला पड़ जाना। २. मुरझाना। कुम्हलाना।

झौंसना–क्रि० स० दे० "झुलसना"।

झौर–संज्ञा पुं० [अनु० झाँव झाँव] १. हुज्जत। तकरार। हौरा। विवाद। २. डाँट-फटकार। कहा-सुनी।

झौरना–क्रि० स०[हिं० झपटना] छोप लेना। दबा लेना। झपटकर पकड़ना।

झौरे–क्रि० वि० [हिं० धौरे] १. समीप। पास। निकट। २. साथ। संग।

झौवा–संज्ञा पुं० [हिं० झावा] रहठे की बनी हुई छोटी टोरी। खचिया।

झौहाना–क्रि० अ० [अनु०] १. गुर्राना। २. जोर से चिड़चिड़ाना।

ञ

ञ–हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान तालू और नासिका है।

ट

ट–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला में ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

टंक–संज्ञा पुं० [सं०] १. चार माशे की एक तौल। २. सिक्का। ३. २१$\frac{3}{5}$ रत्ती की मोती की तौल। ४. पत्थर गढ़ने का औज़ार। टाँकी। छेनी। ५. कुल्हाड़ी। फरसा। ६. कुदाल। ७. तलवार। ८. टाँग। ९. क्रोध। १०. अभिमान। ११. सुहागा। १२. कोप।

टंकण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुहागा। २. धातु की चीज़ में टाँके से जोड़ लगाने का

पार्श्व । ३ घोड़े की एक जाति । ४ एक प्राचीन देश जो कदाचित् दक्षिण में था ।

टँकना-क्रि० अ० [सं० टंकण] १ टाँका जाना । २. सीकर अँटकाया जाना । मिलना । ३. रेती के दाँतों का नुकीला होना । ४. लिखा जाना । दर्ज किया जाना । ५. सिल चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना । रेता जाना । कुटना ।

टँकवाना-क्रि० स० दे० "टँकाना" ।

टँकाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँकना] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

टँकाना-क्रि० स० [हिं० टाँकना] १ टाँकों से जोड़वाना या मिलवाना । २. सिला कर लगवाना । ३ (सिल, जाँता, चक्की आदि को) खुरदुरा कराना । कुटाना ।

टंकार-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ टन टन शब्द जो किसी कसे हुए तार आदि पर उँगली मारने से होता है । २ वह शब्द जो धनुष की कसी हुई डोरी पर बाण रखकर खींचने से होता है । ३. धातुखंड पर आघात लगने का शब्द । ठनाका । झनकार ।

टंकारना-क्रि० स० [सं० टंकार] धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना । चिल्ला खींचकर बजाना ।

टंकी-संज्ञा स्त्री० [सं० टंक = गड्ढा या खड्ढा] पानी भरने का बनाया हुआ छोटा सा कुंड या बड़ा बरतन । टाँका ।

टँकोर-संज्ञा पु० दे० "टंकार" ।

टँकोरना-क्रि० स० दे० "टंकारना" ।

टँगड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "टाँग" ।

टँगना-क्रि० अ० [सं० टंगण] १. किसी वस्तु का किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार अटकना कि उसका प्रायः सब भाग नीचे की ओर गया हो । लटकना । २ फाँसी पर चढ़ना या लटकना ।

संज्ञा पु० वह रस्सी जिस पर कपड़े आदि टाँगे या रखे जाते हैं । अलगनी ।

टँगारी†-संज्ञा स्त्री० [सं० टंग] कुल्हाड़ी ।

टंच†-वि० [सं० चंड] १. सूम । कंजूस । कृपण । २. कठोर हृदय । निष्ठुर ।

वि० [हिं० टिच] तैयार । मुस्तैद ।

टंटघंट-संज्ञा पुं० [अनु० टन टन+घंट] १. घड़ी घंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपंच । २. पाट-कपाट ।

टंटा-संज्ञा पुं० [अनु० टन टन] १. लंबी चौड़ी प्रक्रिया । आडंबर । खटराग । २. उपद्रव । दंगा । फसाद । ३. झगड़ा ।

टट-संज्ञा पुं० [सं०] १. नारियल का खोपड़ा । २ वामन । ३. चौथाई भाग । ४. शब्द ।

टक-संज्ञा स्त्री० [सं० टक या त्राटक] १ ऐसा ताकना जिसमें बड़ी देर तक पलक न गिरे । स्थिर दृष्टि ।

मुहा०—टक बाँधना = स्थिर दृष्टि से देखना । टक टक देखना = बिना पलक गिराये लगातार कुछ काल तक देखते रहना । टक लगाना = आसरा देखते रहना ।

टकटका *-संज्ञा पुं० [हिं० टक] [स्त्री० टकटकी] स्थिर दृष्टि । टकटकी ।

वि० स्थिर या बँधी हुई (दृष्टि) ।

टकटकाना†-क्रि० अ० [हिं० टक] १ एक टक ताकना । स्थिर दृष्टि से देखना । २ टकटक शब्द उत्पन्न करना ।

टकटकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० टक] ऐसी ताकाई जिसमें देर तक पलक न गिरे । अनिमेष या स्थिर दृष्टि । गड़ी हुई नजर ।

मुहा०—टकटकी बाँधना = स्थिर दृष्टि से देखना ।

टकटोना, टकटोरना†-क्रि० स० [सं० त्वक्+तोलन] १ टटोलना । २ ढूँढ़ना ।

टकटोलना-क्रि० स० दे० "टटोलना" ।

टकटोहन-संज्ञा पुं० [हिं० टकटोना] टटोलकर देखने की क्रिया ।

टकटोहना०-क्रि० स० दे० "टटोलना" ।

टकराना-क्रि० अ० [हिं० टक्कर] १. ज़ोर से भिड़ना । धक्का या ठोकर लेना । २. मारा मारा फिरना । डाँवाडोल घूमना ।

क्रि० स० एक वस्तु को दूसरी पर ज़ोर से मारना । ज़ोर से भिड़ाना । पटकना ।

टकसाल-संज्ञा स्त्री० [सं० टंकशाला] १ वह स्थान जहाँ सिक्के बनाए जाते हैं ।

मुहा०—टकसाल बाहर = १. (सिक्का) जिसका चलन न हो । २ (वाक्य या शब्द) जिसका प्रयोग शिष्ट न माना जाय ।

२ ऊँची या प्रामाणिक वस्तु ।

टकसाली-वि० [हिं० टकसाल] १. टकसाल का । टकसाल संबंधी । २. खरा । चोखा । ३. अधिकारियों या विज्ञों द्वारा माना हुआ । सर्व-सम्मत । ४. ऊँचा हुआ ।

संज्ञा पुं० टकसाल का अधिकारी ।

टका-संज्ञा पुं० [सं० टंक] १. चाँदी का एक

पुराना सिक्का। रुपया। २. ताँबे का एक सिक्का जो दो पैसों के बराबर होता है। अधन्ना। दो पैसे।

मुहा०—टका सा जवाब देना = साफ़ इनकार करना। कोरा जवाब देना। टका सा मुँह लेकर रह जाना = लज्जित हो जाना। खिसिया जाना। टके गज़ की चाल = मोटी चाल। थोड़े खर्च में निर्वाह।

३. धन। द्रव्य। रुपया पैसा। ४. तीन तोले की तौल। (वैद्यक)

टकासी-संज्ञा स्त्री० [हिं० टका] टके या दो पैसे फ़ी रुपए का सूद।

टकुआ-संज्ञा पुं० [सं० तर्कु] चरखे में का तकला जिस पर सूत काता जाता है।

टकैत-वि० [हिं० टका] धनी। संपन्न।

टकोर-संज्ञा स्त्री० [सं० टंकार] १. हलकी चोट। प्रहार। आघात। ठेस। थपेड़। २. नगाड़े पर का आघात। ३. डंके या नगाड़े की आवाज़। ४ धनुष की डोरी खींचने का शब्द। टंकार। ५. दवा भरी हुई गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर छुलाने की क्रिया। सेंक। ६. झाल। चरपराहट।

टकोरना-क्रि० स० [हिं० टकोर] १. हलका आघात पहुँचाना। २. डंके आदि पर चोट लगाना। दवा भरी हुई गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर छुलाना। सेंकना।

टक्कर-संज्ञा स्त्री० [अनु० ठक] १. वह आघात जो दो वस्तुओं के वेग के साथ एक दूसरी से भिड़ने से लगता है। ठोकर।

मुहा०—टक्कर खाना = १. किसी कड़ी वस्तु के साथ इतने वेग से भिड़ना या छू जाना कि गहरा आघात पहुँचे। २. मारा मारा फिरना।

२. मुक़ाबिला। मुठभेड़। लड़ाई।

मुहा०—टक्कर का = बराबरी का। समान। तुल्य। टक्कर खाना = १. मुक़ाबिला करना। भिड़ना। २. समान होना। तुल्य होना। टक्कर लेना = वार सहना। चोट सहना।

३. ज़ोर से सिर मारने का धक्का।

मुहा०—टक्कर मारना = ऐसा प्रयत्न करना जिसका फल शीघ्र दिखाई न दे। माथा मारना। टक्कर लड़ाना = दूसरे के सिर पर सिर मारकर लड़ना।

४. घाटा। हानि। नुक़सान।

टखना-संज्ञा पुं० [सं० टंक] एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ। गुल्फ।

टगण-संज्ञा पुं० [सं०] छः मात्राओं का एक गण।

टघरना†-क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टचटच-क्रि० वि० [हिं० टचना] धाँय धाँय। धक धक। (आग की लपट का शब्द)

टटका-वि० [सं० तत्काल] १. तुरंत का प्रस्तुत। हाल का। ताज़ा। २. नया। कोरा।

टटल बटल†-वि० [अनु०] अंडबंड। ऊटपटाँग।

टटीबा-संज्ञा पुं० [अनु०] घिरनी। चक्कर।

टटोरना†-क्रि० स० दे० "टटोलना"।

टटोल-संज्ञा स्त्री० [हिं० टटोलना] टटोलने का भाव या क्रिया। गूढ़ स्पर्श।

टटोलना-क्रि० स० [सं० त्वक्+तोलन] १. मालूम करने के लिये उँगलियों से छूना या दबाना। गूढ़ स्पर्श करना। २. ढूँढ़ने या पता लगाने के लिये इधर-उधर हाथ रखना। ३. बातों ही बातों में किसी के हृदय का भाव जानना। थाह लेना। थहाना। ४. जाँच करना। परखना।

टट्टर-संज्ञा पुं० [सं० तट या स्थाता] बाँस की फट्टियों, सरकंडों आदि को जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा जो ओट या रक्षा के लिये दरवाज़े आदि में लगाया जाता है।

टट्टी-संज्ञा स्त्री० [सं० तटी या स्थात्री] १. बाँस की फट्टियों आदि को जोड़कर आड़ या रक्षा के लिये बनाया हुआ ढाँचा।

मुहा०—टट्टी की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना = १. किसी के विरुद्ध छिपकर कोई चाल चलना। २. छिपाकर बुरा काम करना। धोखे की टट्टी = ऐसी वस्तु या बात जिसके कारण लोग धोखा खाकर हानि उठावें।

२. चिक। चिलमन। ३. पतली दीवार। ४. पाख़ाना। ५. बाँस की फट्टियों आदि की दीवार और छाजन जिस पर बेलें चढ़ाई जाती हैं।

टट्टू-संज्ञा पुं० [अनु०] छोटे कद का घोड़ा। टाँगन।

मुहा०—भाड़े का टट्टू = रुपया लेकर दूसरे की ओर से काम करनेवाला आदमी।

टन-संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी धातुखंड पर आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द। टनकार।

टनकना-क्रि० अ० [अनु० टन] १. टन टन बजना। २. धूप या गरमी लगने के कारण

सिर में दर्द होना।

टनटन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] घंटे का शब्द।

टनटनाना—क्रि० स० [हिं० टनाटन] धातुखंड पर आघात करके 'टनटन' शब्द निकालना।
क्रि० अ० टनटन बजना।

टनमन—संज्ञा पुं० दे० "टोना"।
वि० दे० "टनमना"।

टनमना—वि० [सं० तन्मनस्] जिसकी तबीयत हरी हो। स्वस्थ। चंगा। 'अनमना' का उलटा।

टनाका†—संज्ञा पुं० [अनु० टन] घंटा बजने का शब्द।
वि० बहुत कड़ी (धूप)।

टनाटन—संज्ञा स्त्री० [अनु०] लगातार होने-वाला टनटन शब्द।

टप—संज्ञा पुं० [हिं० टोप] १. खुली गाड़ियों में लगा हुआ ओहार या सायबान। कलंदरा। २. लटकानेवाले लंप के ऊपर की छतरी।
संज्ञा पुं० [अं० टब] १. नाँद के आकार का पानी रखने का खुला बरतन। टाँका। २. कान में पहनने का अँगरेजी ढंग का फूल।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बूँद बूँद टपकने का शब्द। २ किसी वस्तु के एक-बारगी ऊपर से गिर पड़ने का शब्द।

टपक—संज्ञा स्त्री० [हिं० टपकना] १. टपकने का भाव। २. बूँद बूँद गिरने का शब्द। ३. रुक रुककर होनेवाला दर्द।

टपकना—क्रि० अ० [अनु० टप टप] १. बूँद बूँद गिरना। चूना। रसना। २. फल का पेड़ से गिरना। ३ ऊपर से सहसा आना। ४. अधिकता से कोई भाव प्रकट होना। जाहिर होना। झलकना। ५ घाव आदि के कारण रह रहकर दर्द करना। चिलकना। टीस मारना।

टपका—संज्ञा पुं० [हिं० टपकना] १. बूँद बूँद गिरने का भाव। २. टपकी हुई वस्तु। स्राव। ३. पककर आपसे आप गिरा हुआ फल। ४. रह रहकर उठनेवाला दर्द। टीस।

टपका टपकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टपकना] १. बूँदा बूँदी। (मेंह की) हलकी झड़ी। फुहार। २. फलों का लगातार गिरना।

टपकाना—क्रि० स० [हिं० टपकना] १. बूँद बूँद करके गिराना। चुआना। २. भबके से अर्क खींचना। चुआना।

टपना—क्रि० अ० [हिं० तपना] १. बिना कुछ खाए पीए पड़ा रहना। २. व्यर्थ आसरे में बैठा रहना।

टपाटप—क्रि० वि० [अनु०] १. लगातार टप टप शब्द के साथ या बूँद बूँद करके (गिरना)। २. एक एक करके शीघ्रता से।

टपाना—क्रि० स० [हिं० तपाना] १. बिना खिलाए पिलाए पड़ा रहने देना। २. व्यर्थ आसरे में रखना।
क्रि० स० [हिं० टपना] फँदाना।

टप्पर†—संज्ञा पुं० दे० "छप्पर"।

टप्पा—संज्ञा पुं० [हिं० टाप] १. उछल उछलकर जाती हुई वस्तु की बीच बीच में टिकान। २ उतनी दूरी जितनी दूरी पर कोई फेंकी हुई वस्तु जाकर पड़े। ३. उछाल। कूद। फलाँग। ४ नियत दूरी। मुकर्रर फासला। ५. दो स्थानों के बीच में पड़नेवाला मैदान। ६. जमीन का छोटा हिस्सा। ७. अंतर। बीच। फर्क। ८. एक प्रकार का चलता गाना जो पंजाब से चला है।

टब—संज्ञा पुं० [अं०] पानी रखने के लिये नाँद के आकार का एक खुला गहरा बरतन।
संज्ञा पुं० [हिं० टप] एक प्रकार का लंप।

टमटम—संज्ञा स्त्री० [अं० टैंडम] दो ऊँचे ऊँचे पहियों की एक खुली हलकी गाड़ी।

टमटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बरतन।

टमाटर—संज्ञा पुं० [अं० टोमैटो] एक प्रकार का खट्टा विलायती बैंगन।

टर—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. कर्कश या कर्ण-कटु शब्द। कड़ुई बोली।
मुहा०—टर टर करना या लगाना = ढिठाई से बोलते जाना। अकानदराजी करना।
२. मेढ़क की बोली। ३. अविनीत वचन और चेष्टा। ऐंठ। अकड़। ४. हठ। जिद।

टरकना—क्रि० अ० [हिं० टरना] १. खिसक-ना। २. टल जाना। हट जाना।

टरकाना—क्रि० स० [हिं० टरकना] १.हटाना। खिसकाना। २. टाल देना। चलता करना। धता बताना।

टरटराना—क्रि० अ० [हिं० टर] १. बक बक करना। २. ढिठाई से बोलना।

टरना†—क्रि० अ० दे० "टलना"।

टरनि†—संज्ञा स्त्री० [हिं० टरना] टलने का

भाव या ढंग।
टर्रा-वि० [अनु० टर टर] १ अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देनेवाला। टर्रानेवाला। २. धृष्ट। कटुवादी।
टर्राना-क्रि० अ० [अनु० टर] अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देना।
टर्रापन-संज्ञा पु० [हिं० टर्रा] बात-चीत में अविनीत भाव। कटुवादिता।
टलना-क्रि० अ० [स० टलन] १. हटना। खिसकना। सरकना।
मुहा०—अपनी बात से टलना = प्रतिज्ञा न पूरी करना। मुकरना।
२. मिटना। न रह जाना। ३. (किसी कार्य्य के लिये) निश्चित समय से और आगे का समय स्थिर होना। ४. (किसी बात का) अन्यथा होना। ठीक न ठहरना। ५ (किसी आदेश या अनुरोध का) न माना जाना। उल्लंघित होना। ६. समय व्यतीत होना। बीतना।
टलहा-वि० [देश०] खोटा। खराब।
टल्लेनवीसी-संज्ञा स्त्री० दे० "टिल्लेनवीसी"।
टवाई-संज्ञा स्त्री० [स० अटन = घूमना] व्यर्थ घूमना। आवारगी।
टस-संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी भारी चीज के खिसकने या टसकने का शब्द।
मुहा०—टस से मस न होना = १ किसी भारी चीज का कुछ भी न खिसकना। २. कहने सुनने का कुछ भी प्रभाव अनुभव न करना।
टसक-संज्ञा स्त्री० [अनु० टसकना] रह रहकर उठनेवाली पीड़ा। कसक। टीस। चसक।
टसकना—क्रि० अ० [स० तस + करण] १. जगह से हटना। खिसकना। २. रह रहकर दर्द करना। टीस मारना। ३. हृदय में कहने सुनने का प्रभाव अनुभव करना। बात मानने को तैयार होना।
टसकाना-क्रि० स० [हिं० टसकना] हटाना। खिसकाना। सरकाना।
टसर-संज्ञा पु० [स० त्रसर] एक प्रकार का घटिया, कड़ा और मोटा रेशम।
टसुआ-संज्ञा पुं० [हिं० अँसुआ] आँसू।
टहना-संज्ञा पुं० [स० तनुः] वृक्ष की डाल।
टहनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० टहना] वृक्ष की पतली शाखा। डाली।
टहल-संज्ञा स्त्री० [हिं० टहलना] १. सेवा। शुश्रूषा। खिदमत।
यौ०—टहल टई या टहल टकोर = सेवा। २ नौकरी-चाकरी। काम-धंधा।
टहलना-क्रि० अ० [स० तत् + चलन] १. धीरे धीरे चलना। मंद गति से चलना।
मुहा०—टहल जाना = खिसक जाना।
२. जी बहलाने के लिये धीरे धीरे चलना या घूमना। सैर करना। हवा खाना।
टहलनी-संज्ञा स्त्री० [स० टहल] १. दासी। मजदूरनी। २ चिराग की बत्ती उकसानेवाली लकड़ी।
टहलाना-क्रि० स० [हिं० टहलना] १. धीरे धीरे चलाना। २. सैर कराना। घुमाना। फिराना। ३. दूर करना।
टहलुआ-संज्ञा पु० [हिं० टहल] [स्त्री० टहलुई, टहलनी] सेवक। खिदमतगार।
टहलू-संज्ञा पु० दे० "टहलुआ"।
टहो-संज्ञा स्त्री० [हिं० घाट, घात] मतलब निकालने की घात। प्रयोजन सिद्धि का ढंग। जोड़-तोड़।
टहोका-संज्ञा पु० [हिं० ठोकर] हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।
मुहा०—टहोका देना = झटकना। ढकेलना। टहोका खाना = धक्का खाना। ठोकर सहना।
टाँक-संज्ञा स्त्री० [स० टंक] १. तीन या चार माशे की एक तौल। (जौहरी) २. कूत। अंदाज। आँक।
संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँकना] १ लिखावट। लिखन। २. कलम की नोक।
टाँकना-क्रि० स० [स० टंकन] १. एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को कील आदि अड़ कर जोड़ना। २ सिलाई के द्वारा जोड़ना। सीना। ३ सीकर अटकाना। ४ सिल, चक्की आदि को टाँकी से गड्ढे करके खुरदुरा करना। कूटना। रेहना। ५. रेती तेज़ करना। ६. स्मरण रखने के लिये लिखना। दर्ज करना। चढ़ाना। † ७ लिखकर पेश करना। दाखिल करना। ८ चट कर जाना। उड़ा जाना। खाना। ९ अनुचित रूप से ले लेना। मार लेना।
टाँका-संज्ञा पु० [हिं० टाँकना] १ जोड़ मिलानेवाली कील या काँटा। २. सिलाई का पृथक् अंश। डोभ। ३. सिलाई। सीवन। ४. टँकी हुई चकती। थिगली। चिप्पी। ५. शरीर पर के घाव की सिलाई। ६. धातुओं को जोड़ने का मसाला।

ंज्ञा पुं० [सं० टंक] [स्त्री० अल्पा० टाँकी] पत्थर काटने की चौड़ी छेनी।
ंज्ञा पुं० [सं० टंक] १. पानी इकट्ठा रखने का छोटा सा कुंड। हौज़। चहबच्चा। २. पानी रखने का बड़ा बरतन। कंडाल।
ाकी—संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] १. पत्थर गढ़ने का औज़ार। छेनी। २. काटकर बनाया हुआ छेद।
संज्ञा स्त्री० [सं० टंक] छोटा टाँका।
ाँग—संज्ञा स्त्री० [सं० टंग] शरीर का वह निचला भाग जिससे प्राणी चलते या दौड़ते हैं। जीवों के चलने का अवयव।
मुहा०—टाँग अड़ाना=१. बिना अधिकार के किसी काम में योग देना। फजूल दखल देना। २. विघ्न डालना। टाँग तले से (या नीचे से) निकलना=हार मानना। परास्त होना। टाँग पसारकर सोना=निश्चित सोना।

टाँगन—संज्ञा पुं० [सं० तुरंगम] छोटा घोड़ा। टट्टू।

टाँगना—क्रि० स० [हिं० टँगना] १. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु से इस प्रकार बाँधना या उस पर ठहराना कि उसका सब या बहुत सा भाग नीचे लटकता रहे। लटकाना। २. फाँसी पर चढ़ाना।

टाँगा—संज्ञा पुं० [सं० टंग] बड़ी कुल्हाड़ी। संज्ञा पुं० [हिं० टँगना] एक प्रकार की गाड़ी जिसका ढाँचा इतना ढीला होता है कि वह पीछे की ओर कुछ झुका रहता है।

टाँगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँगा] कुल्हाड़ी।

टाँच—संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँचा] दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात या वचन। भाँजी। संज्ञा स्त्री० [हिं० टाँका] १. टाँका। सिलाई। डोभ। २. टँकी हुई चकती। थिगली।

टाँचना—क्रि० स० [हिं० टाँच] १. टाँकना। डोभ लगाना। २. काटना। तराशना।

टाँट—संज्ञा पुं०[हिं० टट्टी] खोपड़ी। कपाल।

टाँठ, टाँठा—वि० [अनु० ठन ठन] १. करारा। कड़ा। कठोर। २. दृढ़। बली।

टाँड़—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थाणु] १. लकड़ी के खंभों पर बनाई हुई पाटन जिस पर चीज़ असबाब रखते हैं। परछत्ती। २. मचान जिस पर बैठकर खेत की रखवाली करते हैं। संज्ञा पुं०[सं०ताड़] बाहु में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टँड़िया।

टाँड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० टाड़=समूह] १. अन्न आदि व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुंड जिसे व्यापारी लेकर चलते हैं। बरदी। २. बिक्री के माल का खेप। ३. बनजारों का झुंड। ४. कुटुंब। परिवार।

टाँड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "टिड्डी"।

टाँय टाँय—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. कर्कश शब्द। टें टें। २. बकवाद।
मुहा०—टाँय टाँय फिस=बकवाद बहुत, पर फल कुछ भी नहीं।

टाट—संज्ञा पुं० [सं० तंतु] १. सन या पटुए की रस्सियों का बुना हुआ मोटा कपड़ा।
मुहा०—टाट में पाट की बखिया=चीज़ तो भद्दी और सस्ती, पर उसमें लगी हुई सामग्री बढ़िया और बहुमूल्य। बेमेल का साज़।
२. बिरादरी या उसका अंग। ३. महाजनी गद्दी।
मुहा०—टाट उलटना=दिवाला निकालना।

टाटर—संज्ञा पुं० [सं० स्थातृ=जो खड़ा हो] १. टट्टर। टट्टी। २. सिर की हड्डी। खोपड़ी। कपाल।

टाटिक, टाटी—संज्ञा स्त्री० दे० "टट्टी"।

टान—संज्ञा स्त्री० [सं० तान] तनाव।

टानना—क्रि० स० दे० 'तानना'।

टाप—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापन] १. घोड़े के पैर का सबसे निचला भाग जो ज़मीन पर पड़ता है। सुम। २. घोड़े के पैरों के ज़मीन पर पड़ने का शब्द। ३. मछली पकड़ने का झाबा। ४. मुरगियों के बंद करने का झाबा।

टापना—क्रि० अ० [हिं० टाप+ना (प्रत्य०)] १. घोड़ों का पैर पटकना। २. किसी वस्तु के लिये इधर-उधर हैरान फिरना। ३. उछलना। कूदना।
क्रि० स० कूदना। फाँदना।
क्रि० अ० दे० "टपना"।

टापा—संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] १. उजाड़ मैदान। २. उछाल। ३. किसी वस्तु को ढकने या बंद करने का टोकरा। झाबा।

टापू—संज्ञा पुं० [हिं० टापा या टप्पा] १. स्थल का वह भाग जिसके चारों ओर जल हो। द्वीप। † २. टप्पा। टापा।

टाबर†—संज्ञा पुं० [पंजाबी टब्बर] १. बालक। लड़का। २. परिवार।

टामक†—संज्ञा पुं० [अनु०] डिमडिमी।

टामन—संज्ञा पु० दे० "टोटका"।

टारना†—क्रि० स० दे० "टालना"।

टाल—संज्ञा स्त्री० [सं० अट्टाल] १. ऊँचा ढेर। भारी राशि। अटाला। गंज। २. लकड़ी, भुस आदि की दूकान।
संज्ञा स्त्री० [हिं० टालना] टालने का भाव।
संज्ञा पु० [सं० टार] स्त्री और पुरुष का समागम करानेवाला। कुटना। भँड़ुआ।

टालटूल—संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल"।

टालना—क्रि० स० [हिं० टलना] १. हटाना। खिसकाना। सरकाना। २. दूर करना। भगा देना। ३. मिटाना। न रहने देना। ४. किसी कार्य के लिये दूसरा समय स्थिर करना। मुलतवी करना। ५.समय बिताना। ६. (आदेश या अनुरोध) न मानना। ७ बहाना करके पीछा छुड़ाना। हीला-हवाली करना। ८. झूठा वादा करना। ९ धता बताना। टरकाना। १०. पलटना। फेरना। ११. इधर उधर हिलाना। गति देना।

टालमटूल—संज्ञा स्त्री० हिं० टालना] बहाना।

टाली—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गाय, बैल आदि के गले में बाँधने की घंटी। २. चंचल जवान गाय या बछिया।

टाहली†—संज्ञा पु० दे० "टहलुआ"।

टिंड—संज्ञा स्त्री० [सं० टिंडिश] एक बेल जिसके गोल फलों की तरकारी होती है।

टिकट—संज्ञा पु० [अ०] १. वह कागज़ का टुकड़ा जो किसी प्रकार का महसूल या फ़ीस चुकानेवाले को प्रमाण-पत्र के रूप में दिया जाय। २. वह कर या महसूल जो किसी काम के करनेवालों पर लगाया जाय।

टिकटिकी—संज्ञा स्त्री० दे "टिकठी"।

टिकठी—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिकाष्ठ] १. तीन तिरछी खड़ी की हुई लकड़ियों का एक ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ पैर बाँधकर उनके शरीर पर बेंत या कोड़े लगाए जाते है या उनके गले में फाँसी का फंदा लगाया जाता है। २. तिपाई। ३. वह रथी जिसपर शव ले जाते हैं।

टिकड़ा—संज्ञा पु० [हिं० टिकिया] [स्त्री० अल्पा० टिकड़ी] १. कोई चिपटा गोल टुकड़ा। २. आँच पर सेंकी हुई रोटी। बाटी। अंगाकड़ी।

टिकना—क्रि० अ० [सं० स्थित] १. कुछ काल तक के लिये रहना। ठहरना। २. घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल में जमना। ३ कुछ दिनों तक काम देना। ४. स्थित रहना। खड़ा रहना।

टिकरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १. एक प्रकार का नमकीन पकवान। २. टिकिया।

टिकली—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १. छोटी टिकिया। २. पन्नी या काँच की बहुत छोटी बिंदी। सितारा। चमकी।

टिकस—संज्ञा पु० [अ० टैक्स] महसूल।

टिकाई†—संज्ञा पु० [हिं० टीका] युवराज।
संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] टिकने का भाव।

टिकाऊ—वि० [हिं० टिकना] टिकने या कुछ दिनों तक काम देनेवाला। मजबूत।

टिकान—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] १. टिकने या ठहरने का भाव। २. पड़ाव। चट्टी।

टिकाना—क्रि० स० [हिं० टिकना] १. रहने के लिये जगह देना। २. ठहराना। †३. बोझ उठाने में सहायता देना।

टिकाव—संज्ञा पु० [हिं० टिकना] १.स्थिति। ठहराव। २ स्थिरता। स्थायित्व। ३. ठहरने की जगह। पड़ाव।

टिकिया—संज्ञा स्त्री० [सं० वटिका] १. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। जैसे—दवा की टिकिया। २ कोयले की बुकनी से बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा जिससे चिलम पर आग सुलगाते हैं। ३. उक्त आकार की एक गोल मिठाई।

टिकुली—संज्ञा स्त्री० दे० "टिकली"।

टिकैत—संज्ञा पु० [हिं० टीका + ऐत (प्रत्य०)] १. राजा का उत्तराधिकारी कुमार। युवराज। २. अधिष्ठाता। ३. सरदार।

टिकोरा†—संज्ञा पु० [सं० वटिका, हिं० टिकिया] आम का छोटा और कच्चा फल।

टिक्कड़—संज्ञा पु० [हिं० टिकिया] १. बड़ी टिकिया। २. सेंकी हुई छोटी मोटी रोटी। बाटी। लिट्टी। अंगाकड़ी।

टिक्का—संज्ञा पु० दे० "टीका"।

टिक्की—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १ गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। टिकिया। २. अंगाकड़ी। बाटी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० टीका] १. माथे पर की बिंदी। २. ताश की बूटी।

टिघलना—क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टिचन—वि० [अं० अटेंशन] १. तैयार। प्रस्तुत। दुरुस्त। २. उद्यत। मुस्तैद।

टीम टाम–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बनाव सिंगार।

टीला–संज्ञा पु० [सं० अष्ठीला] १ पृथ्वी का कुछ उभरा हुआ भाग। ढूह। भीटा। २ मिट्टी का ऊँचा ढेर। धुस। ३ पहाड़ी।

टीस—संज्ञा स्त्री० [अनु०] रह रहकर उठने वाला दर्द। कसक। चसक।

टीसना–क्रि० अ० [हिं० टीस] रह रहकर दर्द उठना। कसक होना।

टुंटा,टुंडा–वि० [सं०तुंड] [स्त्री०टुंडी] १ जिसकी डाल या टहनी आदि कट गई हो। ठूँठा। २ जिसका हाथ कट गया हो। लूला। लुंजा।

टुइयाँ–संज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी जाति का तोता।

वि० ठिगना। नाटा। बौना।

टुक–वि० [सं० स्तोक] थोड़ा। ज़रा।

टुकड़गदा–संज्ञा पु० [हिं० टुकड़ा+फा० गदा] भिखारी। मँगता।

वि० १ तुच्छ। २ दरिद्र। कंगाल।

टुकड़गदाई–संज्ञा पु० दे० "टुकड़गदा"। संज्ञा स्त्री० टुकड़ा माँगने का काम।

टुकड़तोड़–संज्ञा पु० [हिं० टुकड़ा+तोड़ना] दूसरे का दिया हुआ टुकड़ा खाकर रहने वाला आदमी।

टुकड़ा–संज्ञा पु० [सं० स्तोक] [स्त्री० अल्पा० टुकड़ी] १ किसी वस्तु का वह भाग जो उससे कट-छँटकर अलग हो गया हो। खंड। २ चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश। भाग। ३ रोटी का तोड़ा हुआ अंश।

मुहा०—(दूसरे का) टुकड़ा तोड़ना = दूसरे के दिए हुए भोजन पर निर्वाह करना। टुकड़ा माँगना = भीख माँगना। टुकड़ा सा जवाब देना = स्पष्ट और रूखे शब्दों में अस्वीकार करना। कोरा जवाब देना।

टुकड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टुकड़ा] १ छोटा टुकड़ा। खंड। २ समुदाय। मंडली। दल। जत्था। ३ सेना का एक अंश।

टुच्चा–वि० [सं० तुच्छ] तुच्छ। ओछा।

टुटपुंजिया–वि० [हिं० टूटी+पूँजी] जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।

टुटरूँ–संज्ञा पु० [अनु०] छोटी पंडुकी।

टुटरूँ टूँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] पंडुकी या फाख्ते के बोलने का शब्द।

वि० १ अकेला। २ दुबला पतला।

टुनगा†–संज्ञा पु० [सं० तनु+अग्र] [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग।

टुपकना†–क्रि० अ० [अनु०] १ धीरे से काटना या डंक मारना। २ चुगली खाना।

टुर्रा–संज्ञा पु० [?] डली। रवा। कण।

टूँगना–क्रि० स० [हिं० टुनगा] थोड़ा सा काटकर खाना।

टूँड़–संज्ञा पु० [सं० तुंड] [स्त्री० अल्पा० टूँड़ी] कीड़ों के मुँह के आगे निकली हुई दो पतली नलियाँ जिन्हें धँसाकर वे रक्त आदि चूसते हैं। २ जौ गेहूँ आदि की बाल में दाने के कोश के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अवयव। सींग।

टूँड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १ छोटा तूँड़। २ ढोंढी। नाभि। ३ किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नाक।

टूक†–संज्ञा पु० [सं० स्तोक] टुकड़ा।

टूकरा†– संज्ञा० पु० दे० "टुकड़ा"।

टूका†– संज्ञा पु० [हिं० टूक] १ टुकड़ा। खंड। २ रोटी का चौथाई भाग। ३ भिक्षा। भीख।

टूटा†–संज्ञा स्त्री० [हिं० टूटना, सं० त्रुटि] १ खंड। टूटन। टुकड़ा। २ टूटने का भाव। ३ लिखावट में वह भूल से छूटा हुआ शब्द या वाक्य जो पीछे से किनारे पर लिखते हैं। ४ भूल। त्रुटि।
† संज्ञा पु० टोटा। घाटा।

टूटना–क्रि० अ० [सं० त्रुट] १ टुकड़े टुकड़े होना। खंडित होना। भग्न होना। २ किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ३ लगातार चलनेवाली वस्तु का रुक जाना। सिलसिला बंद होना। ४ किसी ओर एकबारगी वेग से जाना। ५ एकबारगी बहुत सा आ पड़ना। पिल पड़ना।

मुहा०—टूट टूटकर बरसना = मूसलधार बरसना।

६ एकबारगी धावा करना। ७ अनायास कहीं से आ जाना। ८ पृथक् होना। अलग होना। ९ संबंध छूटना। लगाव न रह जाना। १० दुर्बल होना। क्षीण होना। ११ धनहीन होना। १२ चलता न रहना। बंद हो जाना। १३ युद्ध में किले का ले लिया जाना। १४ घाटा होना। १५ शरीर में ऐंठन

या तनाव लिए हुए पीड़ा होना।

टूटा-वि० [हिं० टूटना] खंडित। भग्न।
मुहा०—टूटी फूटी बात या बोली=१. असंबद्ध वाक्य। २. अस्पष्ट वाक्य।
२ दुबला या कमजोर। ३. निर्धन।
संज्ञा पुं० दे० "टोटा"।

टूठना—क्रि० अ० [सं० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ] संतुष्ट होना।

टूठनि—संज्ञा स्त्री० [हिं० टूठना] संतोष। तुष्टि।

टूम-संज्ञा स्त्री० [अनु० टुन टुन] १. गहना। आभूषण।
मुहा०—टूम टाम=१. गहना पाता। वस्त्राभूषण। २. बनाव सिंगार।
२. ताना। व्यंग्य।

टूमना†-क्रि० स० [अनु०] १. धक्का देना। झटका देना। २. ताना मारना।

टें-संज्ञा स्त्री० [अनु०] तोते की बोली।
मुहा०—टें टें=व्यर्थ की बकवाद। हुज्जत। टें होना या बोलना=चटपट मर जाना।

टेंगना, टेंगरा-संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] एक प्रकार की मछली।

टेंट-संज्ञा स्त्री० [हिं० तट+ऐंठ] धोती की वह मंडलाकार ऐंठन जो कमर पर पड़ती है। मुर्री।
संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १. कपास का डोडा। २. दे० "टेंटर"।

टेंटर-संज्ञा पुं० [सं० तुंड] रोग या चोट के कारण आँख के डेले पर का उभरा हुआ मांस। ढेंढर।

टेंटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० टेंट] करील।
संज्ञा पुं० [अनु० टेंटें] व्यर्थ झगड़ा करनेवाला। हुज्जती।

टेंटुआ-संज्ञा पुं० [देश०] १. गला। २. अँगूठा।

टेंटें-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. तोते की बोली। २. व्यर्थ की बकवाद।

टेंडसी- संज्ञा स्त्री० दे "टिंड"।

टेउकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] किसी वस्तु को लुढ़कने या गिरने से बचाने के लिये उसके नीचे लगाई हुई वस्तु।

टेक-संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] १. वह लकड़ी जो किसी भारी वस्तु को टिकाए रखने के लिये नीचे से लगाई जाती है। चाँड़। थूनी। थम। २. दासना। सहारा। ३. आश्रय। अवलंब। ४. बैठने का स्थान। ५. ऊँचा टीला। ६. मन में ठानी हुई बात। हठ। ज़िद।
मुहा०—टेक निभना या रहना=प्रतिज्ञा पूरी होना। टेक पकड़ना या गहना=हठ करना।
७. बान। आदत। ८. गीत का पहला पद। स्थायी।

टेकना-क्रि० स० [हिं० टेक] १. सहारे के लिये किसी वस्तु को शरीर के साथ भिड़ाना। सहारा लेना। ढासना। लेना। २. ठहराना या रखना।
मुहा०—माथा टेकना=प्रणाम करना।
३. सहारे के लिये पकड़ना। हाथ का सहारा लेना। ४. हठ करना। ५. बीच में रोकना या पकड़ना।

टेकरा-संज्ञा पुं० [हिं० टेक] [स्त्री० अल्पा० टेकरी] टीला। छोटी पहाड़ी।

टेकला† -संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] धुन। रट।

टेकान-संज्ञा स्त्री० [हिं० टेकाना] १. गिरनेवाली छत आदि को सँभालने के लिये उसके नीचे खड़ी की हुई लकड़ी। टेक। चाँड। २. वह चबूतरा जिस पर बोझ ढोनेवाले बोझ अड़ाकर सुस्ताते हैं।

टेकाना—क्रि० स० [हिं० टेकना] १. उठाकर ले जाने में सहारा देने के लिये थामना। २. उठने बैठने में सहायता के लिये पकड़ना।

टेकी-संज्ञा पुं० [हिं० टेक] १. प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। २. हठी। ज़िद्दी।

टेकुआ†-संज्ञा पुं० [सं० तर्कुक] चरखे का तकला।

टेकुरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० टेकुआ] १. सूत कातने या रस्सी बटने का तकला। २. चमारों का सूआ जिससे वे तागा सींचते हैं।

टेघरना†-क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टेटका-संज्ञा पुं० [सं० ताटंक] कान का एक गहना।
† वि० दे० "टेढ़ा"।

टेढ़बिड़ंगा-वि० [हिं० टेढ़ा+बेढंगा] टेढ़ा-मेढ़ा।

टेढ़ा-वि० [सं० तिरस्=टेढ़ा] [स्त्री० टेढ़ी] १. जो बीच में इधर उधर झुका या घूमा हो। जो सीधा न हो। वक्र। कुटिल। २. जो समानांतर न गया हो। तिरछा। ३ कठिन। मुश्किल। पेचीला।
मुहा०—टेढ़ी खीर=मुश्किल काम।
४. उद्धत। उजड्ड। दुःशील।

मुहा०—टेढ़ा पड़ना या होना = १. उग्र रूप धारण करना। बिगड़ना। २. अकड़ना। ऐंठना। टेढ़ी सीधी सुनाना = भला बुरा कहना।

टेढ़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "टेढ़ापन"।

टेढ़ापन–संज्ञा पु० [हिं० टेढ़ा + पन] टेढ़ा होने का भाव।

टेढ़े–क्रि० वि० [हिं० टेढ़ा] घुमाव-फिराव के साथ।

मुहा०—टेढ़े टेढ़े जाना = इतराना।

टेना–क्रि० स० [हिं० टेव + ना (प्रत्य०)] १. हथियार को तेज़ करने के लिये पत्थर आदि पर रगड़ना। २. मूँछ के बालों को खड़ा करने के लिये ऐंठना।

टेम–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिमटिमाना] दीपशिखा। दिए की लौ। लाट।

टेर–संज्ञा स्त्री० [सं० तार] १. गाने में ऊँचा स्वर। तान। टीप। २. बुलाने का ऊँचा शब्द। पुकार। हाँक।

टेरना–क्रि० स० [हिं० टेर + ना (प्रत्य०)] १. ऊँचे स्वर से गाना। २. पुकारना। क्रि० स० [सं० तीरण = तै करना] तै करना। बिताना। पूरा करना।

टेव–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] आदत। बान।

टेवना†–क्रि० स० दे० "टेना"।

टेवा–संज्ञा पु० [सं० टिप्पन] १. जन्मपत्री। जन्मकुंडली। २. लग्नपत्र जिसमें विवाह की मिति, घड़ी आदि लिखी रहती है।

टेवैया†–संज्ञा पु० [हिं० टेवना] टेनेवाला। चोखा करनेवाला।

टेसू–संज्ञा पु० [सं० किंशुक] १. पलाश। ढाक। २. एक उत्सव जिसमें विजया दशमी के दिन बहुत से लड़के गाते हुए घूमते हैं।

टैयाँ–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिपटी छोटी कौड़ी। चित्ती।

टोंका†–संज्ञा पु० [सं० स्तोक = थोड़ा] १. सिरा। किनारा। २ नोक। कोना।

टोंचना–क्रि० स० [सं० टंकन] चुभाना।

टोंटा—संज्ञा पु० [सं० तुंड] [स्त्री० टोंटी] पानी आदि ढालने के लिये बरतन में लगी हुई नली। तुलतुली।

टोक†–संज्ञा स्त्री० [सं० स्तोक] १. टोकने की क्रिया या भाव।

यौ०—टोक-टाक = प्रश्न आदि द्वारा बाधा। रोक-टोक = मनाही। निषेध।

२. बुरी दृष्टि का प्रभाव। नज़र। (स्त्रि०)

टोकना–क्रि० स० [हिं० टोक] १. किसी को कोई काम करते हुए देखकर उसे कुछ कहकर रोकना या पूछ ताछ करना। २. नज़र लगाना।

संज्ञा पु० [?] [स्त्री० टोकनी] १. टोकरा। डला। २. एक प्रकार का हंडा।

टोकरा–संज्ञा पु० [?] [स्त्री० टोकरी] बाँस की फट्टियों या पतली टहनियों का बनाया हुआ गोल और गहरा बरतन। छावड़ा। डला। झावा। खाँचा।

टोकरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टोकरा] १. छोटा टोकरा। २. देगची। बटलोई।

टोकारा–संज्ञा पु० [हिं० टोक] वह बात जो किसी को कुछ चिताने या स्मरण दिलाने के लिये कही जाय।

टोटका–संज्ञा पु० [सं० त्रोटक] कोई बाधा दूर करने या मनोरथ सिद्ध करने के लिये ऐसा प्रयोग जो किसी अलौकिक या दैवी शक्ति पर विश्वास करके किया जाय। टोना। यंत्र मंत्र। लटका।

मुहा०—टोटका करने आना = आकर तुरत चला जाना।

टोटकेहाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० टोटका] टोटका, टोना या जादू करनेवाली।

टोटा–संज्ञा पु० [सं० तुंड] १. बचा या कटा हुआ टुकड़ा। २. कारतूस।

संज्ञा पु० [हिं० टूटना] १. घाटा। हानि। २. कमी। अभाव।

टोड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रोटकी] १. संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

टोनहा–वि० [हिं० टोना] [स्त्री० टोनही] टोना या जादू करनेवाला।

टोनहाया–संज्ञा पु० [हिं० टोना] [स्त्री० टोनहाई] टोना या जादू करनेवाला मनुष्य।

टोना–संज्ञा पु० [सं० तंत्र] १. मंत्र तंत्र का प्रयोग। जादू। २. विवाह का एक प्रकार का गीत।

संज्ञा पु० [देश०] एक शिकारी चिड़िया।

†क्रि० स० [सं० त्वक् + ना] हाथ से टटोलना। छूना।

टोप–संज्ञा पु० [हिं० तोपना = ढाँकना] १. बड़ी टोपी। २. लड़ाई में पहनने की लोहे की टोपी। शिरस्त्राण। खोद। कूँड़। ३. खोल। गिलाफ़।

†संज्ञा पु० [अनु० टप] बूँद। कतरा।

टोपा–संज्ञा पु० [हिं० टोप] बड़ी टोपी।

†संज्ञा पु० [हिं० तोपना] टोकरा।

†संज्ञा पु० [हिं० तोपना] टाँका। डोभ।

टोपी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तोपना] १. सिर पर का पहनावा। २ राजमुकुट। ताज। ३ इस आकार की कोई गोल और गहरी वस्तु। ४ इस आकार का धातु का गहरा ढकन जिसे बंदूक पर चढ़ाकर घोड़ा गिराने से आग लगती है। बंदूक का पड़ाका। ५. वह थैली जो शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ाई रहती है।

टोभ–संज्ञा पु० [हिं० डोभ] टाँका। तोपा।

टोरा–संज्ञा स्त्री० [देश०] कटारी। कटार।

टोरना†–क्रि० स० [सं० त्रुट] तोड़ना।

मुहा०—आँख टोरना = लज्जा आदि से दृष्टि हटाना या अलग करना।

टोरा–संज्ञा पु० [सं० तुवर] १ अरहर का छिटके सहित सड़ा दाना। २ रवा।

टोल–संज्ञा स्त्री० [सं० तोलिका] १. मंडली। जत्था। झुंड। २ चटसार। पाठशाला।

टोला–संज्ञा पु० [सं० तोलिका = घेरा, बाड़ा] [स्त्री० टोलिका] १ आदमियों की बड़ी बस्ती का एक भाग। महल्ला। २ पत्थर या ईंट का टुकड़ा। रोड़ा।

टोली–संज्ञा स्त्री० [सं० तोलिका] १. छोटा महल्ला। बस्ती का छोटा भाग। २. समूह। झुंड। जत्था। मंडली। ३ पत्थर की चौकोर पटिया। सिल। ४ एक प्रकार का बाँस। नाल।

टोवना†–क्रि० स० दे० "टोना"।

टोह–संज्ञा स्त्री० [हिं० टोली] १. टटोल। खोज। ढूँढ़। २ खबर। देखभाल।

टोही–संज्ञा स्त्री० [हिं० टोह] पता लगानेवाला।

टोहना–क्रि० स० [हिं० टेना ?] जाँच करना। परखना। थाह लेना। पता लगाना।

ठ

ठ–व्यंजनों में बारहवाँ व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है।

ठठ–वि० [सं० स्थाणु] ठूँठा। (पेड़)

ठठार–वि० [हिं० ठठ] खाली। रीता।

ठंढ–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठंढा] शीत। सरदी।

ठंढई–संज्ञा स्त्री० दे० "ठंढाई"।

ठंढक–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठंढा] १. शीत। सरदी। जाड़ा। २ ताप या जलन की कमी। तरी। ३ संतोष। तृप्ति। प्रसन्नता। तसल्ली। ४ किसी उपद्रव या फैले हुए रोग आदि की शांति।

ठंढा–वि० [सं० स्तब्ध] [स्त्री० ठंढी] १. सर्द। शीतल।

मुहा०—ठंढी साँस = दुःख से भरी साँस। शोकोच्छ्वास। आह।

२. जो जलता या दहकता न हो। बुझा हुआ। ३. जिसमें आवेश न हो। शांत।

मुहा०—ठंढा करना = १ क्रोध शांत करना। २. ढारस देकर शोक कम करना। तसल्ली देना।

४. धीर। शांत। गंभीर। ५. जिसमें उत्साह या उमंग न हो। सुस्त। उदासीन। ६ जो कोई अनुचित बात होते देखकर कुछ न बोले। विरोध न करनेवाला।

मुहा०—ठंढे ठंढे = बिना विरोध या प्रतिवाद किए। चुप चाप।

७ तृप्त। प्रसन्न। खुश।

मुहा०—ठंढे ठंढे = हँसी खुशी से। ठंढा रखना = आराम-चैन से रखना।

८ निश्चेष्ट। जड़। ६. मृत। मरा हुआ।

मुहा०—ठंढा होना = मर जाना। ताजिया ठंढा करना = ताजिया दफन करना। (किसी पवित्र या प्रिय वस्तु को) ठंढा करना = फेंकना या तोड़ना फोड़ना।

ठंढाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठंढा] १ वह दवा या मसाला जिससे शरीर की गरमी शांत होती और ठंढक आती है। २ पिसी हुई भाँग।

ठ–संज्ञा पु० [सं०] १. शिव। २ महाध्वनि। ३ चंद्रमंडल। ४. शून्य।

ठक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ठोंकने का शब्द। वि० सन्नाटे में आया हुआ। भौचक्का।

ठक ठक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बखेड़ा। टंटा। झंझट।
ठकठकाना–क्रि० स० [अनु०] १. खट-खटाना। २. ठोंकना पीटना।
ठकठकिया–वि० [अनु० ठक ठक] तकरार करनेवाला। हुज्जती। बखेड़िया।
ठकुरसुहाती–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर + सुहाना] लल्लोचप्पो। खुशामद।
ठकुराइन–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. ठाकुर की स्त्री। स्वामिनी। मालकिन। २. क्षत्री की स्त्री। क्षत्राणी। ३. नाई की स्त्री। नाइन।
ठकुराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. सरदारी। प्रधानता। २. ठाकुर का अधिकार। ३. वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधिकार में हो। रियासत। ४ बड़प्पन। महत्त्व। बड़ाई।
ठकुरानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. ठाकुर या सरदार की स्त्री। २. रानी। ३ मालकिन। स्वामिनी।
ठकुराय–संज्ञा पु० [हिं० ठाकुर] क्षत्रियों का एक भेद।
ठकुरायत–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. आधिपत्य। प्रभुत्व। २ वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधीन हो। रियासत।
ठकोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेकना + औरी] अर्द्ध के आकार की सहारा देने की वह लकड़ी जो साधु या पहाड़ी मजदूर अपने साथ रखते हैं। बैरागिन। जोगिन।
ठक्कर–संज्ञा स्त्री० दे० "टक्कर"।
ठग–संज्ञा पु० [सं० स्थग] [स्त्री० ठगनी, ठगिन] १ वह लुटेरा जो छल और धूर्त्तता से माल लूटता हो। २. छली। धूर्त्त। धोखेबाज।
ठगई|–संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।
ठगण–संज्ञा पु० [सं०] ५ मात्राओं का एक गण।
ठगना–क्रि० स० [हिं० ठग] १. धोखा देकर माल लूटना। २. धोखा देना। छल करना।
मुहा०—ठगा सा = आश्चर्य से स्तब्ध। चकित। भौचक्का।
३. सौदा बेचने में बेईमानी करना।
| क्रि० अ० १. धोखा खाना। प्रतारित होना। २. चक्कर में आना। चकित होना। दंग रहना।
ठगनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग] १. ठग की स्त्री या ठगनेवाली स्त्री। २. कुटनी।
ठगपना–संज्ञा पु० [हिं० ठग + पन] १. ठगने का भाव या काम। २. धूर्त्तता। छल। चालाकी।
ठगमूरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग + मूरि] वह नशीली जड़ी बूटी जिसे ठग पथिकों को बेहोश करके उनका धन लूटने के लिये खिलाते थे।
मुहा०—ठगमूरी खाना = मतवाला होना।
ठगमोदक–संज्ञा पु० दे० "ठगलाडू"।
ठगलाडू–संज्ञा पु० [हिं० ठग + लड्डू] ठगों का लड्डू जिसमें नशीली या बेहोश करनेवाली चीज मिली रहती थी।
मुहा०—ठगलाडू खाना = मतवाला होना। बेसुध होना।
ठगवाना–क्रि० स० [हिं० ठगना का प्रे०] दूसरे से धोखा दिलवाना।
ठगविद्या–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग + सं० विद्या] धूर्त्तता। धोखेबाजी।
ठगाना–|क्रि० अ० [हिं० ठगना] धोखे में आकर हानि सहना। ठगा जाना।
ठगाही|–संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।
ठगिन, ठगिनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग] १ धोखा देकर लूटनेवाली स्त्री। लुटेरिन। २. ठग की स्त्री।
ठगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग] १. धोखा देकर माल लूटने का काम या भाव। २ धूर्त्तता। धोखेबाजी।
ठगौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठग + बौरी] १. सुध-बुध भुलानेवाली शक्ति। टोना। जादू।
ठट–संज्ञा पु० [सं० स्थाता] १. एक स्थान पर स्थित बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह। २. बनाव। रचना। सजावट।
ठटकीला–वि० [हिं० ठाट] सजा हुआ। ठाटदार।
ठटना–क्रि० स० [हिं० ठाट] १ ठहराना। निश्चित करना। २. सजाना। सज्जित करना।
क्रि० अ० १. खड़ा रहना। अड़ना। डटना। २. सजना। सुसज्जित होना।
क्रि० स० [हिं० ठाट] आरंभ करना। (राग)
ठटनि–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठटना] बनाव। रचना।

ठटरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] १. हड्डियों का ढाँचा। अस्थिपंजर। २. घास-भूसा आदि बाँधने का जाल। खरिया। ३. किसी वस्तु का ढाँचा। ४. मुरदा उठाने की रथी। अरथी।

ठट्ठा–संज्ञा पु० [हिं० ठाट] बनाव। रचना।

ठट्ट–संज्ञा पु० दे० "ठट"।

ठट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] ठटरी। पंजर।

ठट्ठा–संज्ञा पु० [सं० अट्टहास] हँसी। दिल्लगी।

यौ०—ठट्ठेबाज़ = दिल्लगीबाज़।

मुहा०—ठट्ठा उड़ाना = उपहास करना।

ठठ–संज्ञा पु० दे० "ठट"।

ठठई–संज्ञा स्त्री० दे० "ठट्ठा"।

ठठकना†–क्रि० अ० [सं० स्थेय+करण] १ एक-बारगी रुक या ठहर जाना। ठिठकना। २ स्तंभित हो जाना। ठक रह जाना।

ठठना†–क्रि० अ० दे० "ठटना"।

ठठरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "ठटरी"।

ठनक–संज्ञा स्त्री० [अनु० ठन ठन] १. चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात पड़ने का शब्द। २ टीस। चसक।

ठनकना–क्रि० अ० [अनु० ठन ठन] १ ठन ठन शब्द करना। २. टीस मारना। चसकना।

मुहा०—माथा ठनकना = गहरा खटका पैदा होना।

ठनकाना–क्रि० स० [हिं० ठनकना] किसी धातुखंड या चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात करके शब्द निकालना। बजाना।

ठनकार–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ठनठन शब्द।

ठनगन–संज्ञा पु० [हिं० ठनना] मंगल अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिये हठ।

ठनठन गोपाल–संज्ञा पु० [अनु० ठनठन+गोपाल] १. छूँछी और [illegible] निर्धन मनुष्य।

[illegible]ाना–क्रि० म०..

चलते ठहर जाना। ठिठकना। रुकना। २. ठसक के साथ रुक रुककर या हाव भाव दिखाते हुए चलना।

ठमकाना, ठमकारना–क्रि० स० [हिं० ठमकना] चलते चलते रोकना। ठहराना।

ठयना–क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १. दृढ़ संकल्प के साथ आरंभ करना। ठानना। २. कर चुकना। पूरी तरह से करना। ३. मन में ठहराना। निश्चित करना। क्रि० अ० दे० "ठनना"।

क्रि० स० [सं० स्थापन] १. स्थापित करना। बैठाना। ठहराना। २. लगाना। प्रयुक्त करना।

क्रि० अ० १. स्थित होना। बैठना। जमना। २. प्रयुक्त होना। लगना।

ठरना–क्रि० अ० [सं० स्तब्ध] १. सरदी से अकड़ना या सुन्न होना। २. बहुत अधिक ठंड पड़ना।

ठर्रा–संज्ञा पु० [हिं० ठड्ढा] १. बहुत मोटा सूत। २. बड़ी अधपक्की ईंट। ३. महुए की निकृष्ट शराब।

ठवना–क्रि० स० दे० "ठयना"।

ठवनी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापन] १. बैठक। स्थिति। २. बैठने या खड़े होने का ढंग। आसन। मुद्रा।

ठस–वि० [सं० स्थास्नु] १. ठोस। कड़ा। २. जिसकी बुनावट घनी हो। गफ़। ३. दृढ़। मज़बूत। ४. भारी। वज़नी। ५. सुस्त। आलसी। ६. (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो। ७. कृपण। कंजूस।

ठसक–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठस] १. गर्वीली चेष्टा। नखरा। २. दर्प। शान।

ठसकदार–वि० [हिं० ठसक+फा० दार] १. घमंडी। अभिमानी। २. शानदार। तड़क-भड़कवाला।

ठसका–संज्ञा पुं० [अनु०] १. सूखी खाँसी जिसमें कफ़ न निकले। २. ठोकर। धक्का।

ठसाठस–क्रि० वि० [हिं० ठस] ठूँसकर या खूब कसकर भरा हुआ। खचाखच।

ठस्सा–संज्ञा पु० [देश०] १. अभिमानपूर्ण हाव-भाव। ठसक। २. घमंड। अहंकार। ३. ठाट-बाट। शान।

ठहना–क्रि० अ० [अनु०] १. घोड़ों का हिनहिनाना। २. घनघनाना। घंटे का बजना।

† क्रि० अ० [सं० संस्था] बनाना। सँवारना।

ठहर†–संज्ञा पु० [सं० स्थल] १. स्थान। जगह। २. रसोई का स्थान। चौका। लिपाई-पोताई।

ठहरना–क्रि० अ० [सं० स्थैर्य] १. चलना बंद करना। रुकना। थमना। २. डेरा डालना। टिकना। ३ एक स्थान पर बना रहना। स्थित रहना।

मुहा०—मन ठहरना = चित्त की आकुलता दूर होना।

४. नीचे न फिसलना या गिरना। अड़ा रहना। स्थित रहना। ५. नष्ट न होना। बना रहना। ६. कुछ दिन काम देने लायक रहना। चलना। ७ घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का स्थिर और साफ़ होकर ऊपर रहना। थिराना। ८. धीरज रखना। ९. प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। १०. निश्चित होना। पक्का होना।

मुहा०—किसी बात का ठहरना = किसी बात का संकल्प होना। ठहरा = है। जैसे, वह अपने संबंधी ठहरे।

ठहराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठहरना] १. ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. कब्ज़ा। अधिकार।

ठहराना–क्रि० स० [हिं० ठहरना] १. चलने से रोकना। गति बंद करना। २. डेरा देना। टिकाना। ३. अड़ाना। टिकाना। ४. इधर उधर न जाने देना। ५. किसी होते हुए काम को रोकना। ६. पक्का करना। तै करना।

ठहराव–संज्ञा पु० [हिं० ठहरना] १. ठहरने का भाव। स्थिरता। २. निश्चय। निर्धारण।

ठहरौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठहराना] विवाह में टीके, दहेज आदि के लेन देन का करार।

ठहाका†–संज्ञा पु० [अनु०] ज़ोर की हँसी। अट्टहास।

ठाँ–संज्ञा स्त्री० पु० दे० "ठाँव"।

ठाँई†–संज्ञा स्त्री०[हिं० ठाँव] १.स्थान। जगह। २. तई। प्रति। ३. समीप। पास। निकट।

ठाँउँ–संज्ञा पु० स्त्री० दे० "ठाँव"।

ठाँठ–वि० [अनु० ठन ठन] १. जो सूखकर

ठटरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] १. हड्डियों का ढाँचा। अस्थिपंजर। २. घास-भूसा आदि बाँधने का जाल। खरिया। ३. किसी वस्तु का ढाँचा। ४. मुरदा उठाने की रथी। अरथी।

ठट्टा†–संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] बनाव। रचना।

ठट्ट–संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

ठट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] ठटरी। पंजर।

ठट्ठा–संज्ञा पुं० [सं० अट्टहास] हँसी। दिल्लगी।

यौ०—ठट्ठेबाज़ = दिल्लगीबाज़।

मुहा०—ठट्ठा उड़ाना = उपहास करना।

ठठ–संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

ठठई–संज्ञा स्त्री० दे० "ठट्ठा"।

ठठकना† –क्रि० अ० [सं० स्थेय+करण] १. एक-बारगी रुक या ठहर जाना। ठिठकना। २. स्तंभित हो जाना। ठक रह जाना।

ठठना†–क्रि० अ० दे० "ठटना"।

ठठरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "ठटरी"।

ठठाना–क्रि० स० [अनु० ठक ठक] मारना। पीटना।

क्रि० अ० [सं० अट्टहास] ज़ोर से हँसना।

ठठेरिन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा] ठठेरे की स्त्री।

ठठेर-मंजारिका–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा + मार्जारिका] ठठेरे की बिल्ली जो ठक ठक शब्द से न डरे।

ठठेरा–संज्ञा पुं० [अनु० ठन ठन] [स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी] बरतन बनानेवाला। कसेरा।

मुहा०—ठठेरे ठठेरे बदलाई = जैसे के साथ वैसा व्यवहार। ठठेरे की बिल्ली = ठठेरे की बिल्ली ऐसा मनुष्य जो कोई विकट बात देखकर न चौंके या घबराय।

ठठेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा] १. ठठेरे की स्त्री। २. ठठेरे का काम।

यौ०—ठठेरी बाज़ार = कसेरों का बाज़ार।

ठठोल–संज्ञा पुं० [हिं० ठट्ठा] १. दिल्लगी-बाज़। मसखरा। २. दे० "ठठोली"।

ठठोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठट्ठा] हँसी। दिल्लगी।

ठडा†–वि० [हिं० स्थातृ] खड़ा। दंडायमान।

ठढ़ा†–वि० [सं० स्थातृ] खड़ा। दंडायमान।

ठन–संज्ञा स्त्री० [अनु०] धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द।

ठनक–संज्ञा स्त्री० [अनु० ठन ठन] १. चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात पड़ने का शब्द। २. टीस। चसक।

ठनकना–क्रि० अ० [अनु० ठन ठन] १. ठन ठन शब्द करना। २. टीस मारना। चसकना।

मुहा०—माथा ठनकना = गहरा खटका पैदा होना।

ठनकाना–क्रि० स० [हिं० ठनकना] किसी धातुखंड या चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात करके शब्द निकालना। बजाना।

ठनकार–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ठनठन शब्द।

ठनगन–संज्ञा पुं० [हिं० ठनना] मंगल अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिये हठ।

ठनठन गोपाल–संज्ञा पुं० [अनु० ठनठन + गोपाल] १. छूँछी और निःसार वस्तु। २. निर्धन मनुष्य।

ठनठनाना–क्रि० स० [अनु०] ठन ठन शब्द निकालना। बजाना।

क्रि० अ० ठनठन शब्द होना या बजना।

ठनना–क्रि० अ० [हिं० ठानना] १. (किसी कार्य का) तत्परता के साथ आरंभ होना। अनुष्ठित होना। छिड़ना। २. (मन में) ठहरना। पक्का होना। ३. ठहरना। लगना। जमाना। ४. उद्यत होना। मुस्तैद होना।

ठनाका–संज्ञा पुं० [अनु०] ठन ठन शब्द। ठनकार।

ठनाठन–क्रि० वि० [अनु० ठन ठन] ठन ठन शब्द के साथ।

ठपका†–संज्ञा पुं० [देश०] धक्का। ठेस।

ठप्पा–संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] १. लकड़ी, धातु आदि का खंड जिस पर कोई आकृति या बेल बूटे आदि इस प्रकार खुदे हों कि उसे किसी दूसरी वस्तु पर रखकर दबाने से वे आकृतियाँ उभर आवें या बन जायँ। साँचा। २ साँचे के द्वारा बनाया हुआ बेलबूटा आदि। छाप। नक़्श। ३. एक प्रकार का गोटा।

ठमक–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठमकना] १. चलते चलते ठहर जाने का भाव। रुकावट। २. चलने की ठसक। लचक।

ठमकना–क्रि० अ० [सं० स्तंभ] १. चलते

चलते ठहर जाना। ठिठकना। रुकना। २. ठसक के साथ रुक रुककर या हाव भाव दिखाते हुए चलना।

ठमकाना, ठमकारना–क्रि० स० [हिं० ठमकना] चलते चलते रोकना। ठहराना।

ठयना–क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १. दृढ़ संकल्प के साथ आरंभ करना। ठानना। २. कर चुकना। पूरी तरह से करना। ३. मन में ठहराना। निश्चित करना। क्रि० अ० दे० "ठनना"।
क्रि० स० [सं० स्थापन] १ स्थापित करना। बैठाना। ठहराना। २. लगाना। प्रयुक्त करना।
क्रि० अ० १ स्थित होना। बैठना। जमना। २. प्रयुक्त होना। लगना।

ठरना–क्रि० अ० [सं० स्तब्ध] १. सरदी से अकड़ना या सुन्न होना। २. बहुत अधिक ठंड पड़ना।

ठर्रा–सज्ञा पु० [हिं० ठड़ा] १. बहुत मोटा सूत। २ बड़ी अधपक्की ईंट। ३ महुए की निकृष्ट शराब।

ठवना–क्रि० स० दे० "ठयना"।

ठवनी–सज्ञा स्त्री० [सं० स्थापन] १. बैठक। स्थिति। २. बैठने या खड़े होने का ढंग। आसन। मुद्रा।

ठस–वि० [सं० स्थास्नु] १. ठोस। कड़ा। २. जिसकी बुनावट घनी हो। गफ। ३. दृढ़। मज़बूत। ४. भारी। वजनी। ५. सुस्त। आलसी। ६. (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो। ७. कृपण। कंजूस।

ठसक–सज्ञा स्त्री० [हिं० ठस] १. गर्वीली चेष्टा। नखरा। २. दर्प। शान।

ठसकदार–वि० [हिं० ठसक+फा० दार] १. घमंडी। अभिमानी। २. शानदार। तड़क भड़कवाला।

ठसका–सज्ञा पुं० [अनु०] १. सूखी खाँसी जिसमें कफ न निकले। २. ठोकर। धक्का।

ठसाठस–क्रि० वि० [हिं० ठस] ठूँसकर या खूब कसकर भरा हुआ। खचाखच।

ठस्सा–सज्ञा पु० [देश०] १. अभिमानपूर्ण हाव-भाव। ठसक। २. घमंड। अहंकार। ३. ठाट-बाट। शान।

ठहना–क्रि० अ० [अनु०] १. घोड़ों का हिनहिनाना। २. घनघनाना। घंटे का बजना।
† क्रि० अ० [सं० सज्जा] बनाना। सँवारना।

ठहर†–सज्ञा पु० [सं० स्थल] १. स्थान। जगह। २ रसोई का स्थान। चौका। लिपाई पोताई।

ठहरना–क्रि० अ० [सं० स्थैर्य] १. चलना बंद करना। रुकना। थमना। २. डेरा डालना। टिकना। ३ एक स्थान पर बना रहना। स्थित रहना।
मुहा०—मन ठहरना = चित्त की आकुलता दूर होना।
४. नीचे न फिसलना या गिरना। अड़ा रहना। स्थित रहना। ५. नष्ट न होना। बना रहना। ६ कुछ दिन काम देने लायक रहना। चलना। ७ घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का स्थिर और साफ होकर ऊपर रहना। थिराना। ८ धीरज रखना। ९. प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। १०. निश्चित होना। पक्का होना।
मुहा०—किसी बात का ठहरना = किसी बात का संकल्प होना। ठहरा = है। जैसे, वह अपने संबंधी ठहरे।

ठहराई–सज्ञा स्त्री० [हिं० ठहरना] १. ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. कब्ज़ा। अधिकार।

ठहराना–क्रि० स० [हिं० ठहरना] १. चलने से रोकना। गति बंद करना। २. डेरा देना। टिकाना। ३. अड़ाना। टिकाना। ४. इधर उधर न जाने देना। ५. किसी होते हुए काम को रोकना। ६. पक्का करना। तै करना।

ठहराव–सज्ञा पु० [हिं० ठहरना] १. ठहरने का भाव। स्थिरता। २. निश्चय। निर्धारण।

ठहरौनी–सज्ञा स्त्री० [हिं० ठहराना] विवाह में टीके, दहेज़ आदि के लेन देन का करार।

ठहाका†–सज्ञा पु० [अनु०] ज़ोर की हँसी। अट्टहास।

ठाँ–सज्ञा स्त्री० पु० दे० "ठाँव"।

ठाँई†–सज्ञा स्त्री०[हिं० ठाँव] १.स्थान। जगह। २. तईं। प्रति। ३. समीप। पास। निकट।

ठाँउँ–सज्ञा पु० स्त्री० दे० "ठाँयँ"।

ठाँठ–वि० [अनु० ठन ठन] १. जो सूखकर

बिना रस का हो गया हो। नीरस। २. (गाय या भैंस) जो दूध न देती हो।
ठाँयँ-संज्ञा पु० स्त्री० [सं० स्थान] १. स्थान। जगह। २. समीप। निकट। पास।
संज्ञा पु० [अनु०] बंदूक छूटने का शब्द।
ठाँयँ ठाँयँ-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बंदूक छूटने का शब्द। †२. झगड़ा।
ठाँव-संज्ञा पु० स्त्री० [सं० स्थान] स्थान। जगह। ठिकाना।
ठाँसना-क्रि० स० [सं० स्थासन्] १. जोर से घुसाना या भरना। २. रोकना। मना करना।
क्रि० अ० ठन ठन शब्द के साथ खाँसना।
ठाकुर-संज्ञा पु० [सं० ठक्कुर] [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी] १. देवता। देव-मूर्ति। २. ईश्वर। भगवान्। ३. पूज्य व्यक्ति। ४. किसी प्रदेश का अधिपति। नायक। सरदार। ५. जमींदार। ६. क्षत्रियों की उपाधि। ७. मालिक। स्वामी। ८. नाइयों की उपाधि।
ठाकुरद्वारा-संज्ञा पु० [हिं० ठाकुर+द्वार] मंदिर। देवालय। देवस्थान।
ठाकुरबाड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर+बाड़ी] देवालय। मंदिर।
ठाकुरसेवा-संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर+सेवा] १. देवता का पूजन। २. मंदिर के नाम उत्सर्ग की हुई संपत्ति।
ठाकुरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] स्वामित्व। आधिपत्य। शासन।
ठाट-संज्ञा पु० [सं० स्थातृ] १. लकड़ी या बाँस की फट्टियों का बना हुआ परदा। २. मूल अंगों की योजना जिनके आधार पर शेष रचना होती है। ढाँचा। ढड्ढा। पंजर। ३. वेश-विन्यास। शृंगार। सजावट।
क्रि० प्र०—ठटना।—बनाना।
मुहा०—ठाट बदलना=१. वेश बदलना। २. झूठमूठ अधिकार या बड़प्पन जताना। रंग बाँधना।
४ आडंबर। ऊपरी तड़क भड़क। दिखावट। ५. ढंग। शैली। प्रकार। तर्ज़। ६. आयोजन। तैयारी। ७. सामान। सामग्री। ८. युक्ति। ढंग। उपाय।
संज्ञा पु० [हिं० ठाट] [स्त्री० ठाटी] १. समूह। झुंड। †२. बहुतायत। अधिकता।
ठाटना†-क्रि० स० [हिं० ठाट] १. निर्मित करना। रचना। बनाना। २. अनुष्ठान या आयोजन करना। ठानना। ३. सजाना। सँवारना।
ठाट बाट-संज्ञा पु० [हिं० ठाट] १. सजावट। सजधज। २. तड़क भड़क। आडंबर।
ठाटर-संज्ञा पु० [हिं० ठाट] १. ठाट। टट्टर। टट्टी। २. ठठरी। पंजर। ३. ढाँचा। ४. कबूतर आदि के बैठने की छतरी। ५. ठाट बाट। बनाव। सिंगार। सजावट।
ठाटी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाट] ठट। समूह।
ठाठ†-संज्ञा पु० दे० "ठाट"।
ठाढ़ा† -वि० [सं० स्थातृ] १ खड़ा। दंडायमान। २. समूचा। साबित। ३ उत्पन्न। पैदा।
मुहा०—ठाढ़ा देना=ठहराना। टिकाना।
वि० हट्टा कट्टा। हृष्ट पुष्ट।
ठादर†-संज्ञा पु० [देश०] झगड़ा। मुठभेड़।
ठान-संज्ञा स्त्री० [सं० अनुष्ठान] १. कार्य्य का आयोजन। काम का छिड़ना। अनुष्ठान। २. छेड़ा हुआ काम। ३. दृढ़ निश्चय। पक्का इरादा। ४ अंदाज़। चेष्टा। मुद्रा।
ठानना†-क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १. (कार्य्य) तत्परता के साथ आरंभ करना। अनुष्ठित करना। छेड़ना। २. पक्का करना। ठहराना।
ठाना†-क्रि० स० [सं० अनुष्ठान] १. ठानना। २. निश्चित करना। पक्का करना। ३. स्थापित करना। रखना।
ठाम†‡-संज्ञा पुं० स्त्री० [सं० स्थान] १. स्थान। जगह। २. संचालन का ढंग। ठवनि। मुद्रा।
ठार-संज्ञा पु० [सं० स्तब्ध] १. गहरा जाड़ा। गहरी सरदी। २. पाला। हिम।
ठाला-संज्ञा पु० [हिं० निठल्ला] १. रोज़गार का न रहना। बेकारी। २. आमदनी का न होना।
वि० जिसे कुछ कामधंधा न हो। निठल्ला।
ठाली-वि० [हिं० निठल्ला] जिसे कुछ काम धंधा न हो। निठल्ला। बेकाम। खाली।
ठावना‡-क्रि० स० दे० "ठाना"।
ठाहर†-संज्ञा पु० [सं० स्थान] १. स्थान।

जगह। २. रहने या टिकने का स्थान। डेरा।

ठिगना–वि० [हिं० हेठ+अंग] [स्त्री० ठिगनी] छोटे डील का। नाटा।

ठिकठैना†–संज्ञा पु० [हिं० ठीक+ठयना] ठीक ठाक। प्रबंध। आयोजन।

ठिकना†–क्रि० अ० दे० "ठटरना"।

ठिकरा†–संज्ञा पु० दे० 'ठीकरा'।

ठिकाना–संज्ञा पु० [हिं० टिकान] १ स्थान। जगह। ठौर। २. रहने या ठहरने की जगह। निवास-स्थान। ३ निर्वाह या आश्रय का स्थान।

मुहा०—ठिकाने आना=१. अपने स्थान पर पहुँचना। २. बहुत सोच विचार के उपरांत यथार्थ बात करना या समझना। ठिकाने की बात=१. ठीक या प्रामाणिक बात। २. समझदारी की बात। ठिकाने पहुँचाना या लगाना=१ ठीक जगह पर पहुँचाना। २. नष्ट कर देना। न रहने देना। ३ मार डालना।

४. निश्चित अस्तित्व। दृढ़ स्थिति। स्थिरता। ठहराव। ५ प्रबंध। आयोजन। बंदोबस्त। ६. पारावार। अंत। हद।

† क्रि० स० [हिं० ठिकना] ठहराना।

ठिठकना–क्रि० अ० [सं० स्थित+करण] १. चलते चलते एकबारगी रुक जाना। २. स्तंभित होना। ठक रह जाना।

ठिठरना–क्रि० अ० [सं० स्थिर] सरदी से ऐंठना या सिकुड़ना।

ठिठुरना†–क्रि० अ० दे० "ठिठरना"।

ठिनकना–क्रि० अ० [अनु०] बच्चों का बीच में रुक रुककर रोना।

ठिर–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिर] गहरी सरदी।

ठिरना–क्रि० स० [हिं० ठिर] सरदी से ठिठुरना। क्रि० अ० बहुत जाड़ा पड़ना।

ठिलना–क्रि० अ० [हिं० ठेलना] १. ठेला जाना। ढकेला जाना। २. बलपूर्वक बढ़ना। घुसना। धँसना।

ठिलाठिल†–क्रि० वि० [हिं० ठिलना] एक पर एक गिरते हुए। धक्कमधक्का करते हुए।

ठिलिया–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थाली] छोटा घड़ा। गगरी।

ठिलुआ–वि० [हिं०निठल्ला] निठल्ला। निकम्मा।

ठिल्ला†–संज्ञा पु० [हिं० ठिलिया] [स्त्री० ठिलिया, ठिल्ली] गगरा। घड़ा।

ठिहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठहरना] ठहराव। निश्चय। इकरार।

ठीक–वि० [हिं० ठिकाना] १ जैसा हो, वैसा। यथार्थ। सच। प्रामाणिक। २. उपयुक्त। उचित। मुनासिब। योग्य। ३. शुद्ध। सही। ४. दुरुस्त। अच्छा। ५. जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। ६. सीधा। सुष्ट। ७. जिसमें कुछ फर्क न पड़े। निर्दिष्ट। ८. ठहराया हुआ। निश्चित। स्थिर। पक्का।

क्रि० वि० जैसे चाहिए वैसे। उचित रीति से।

संज्ञा पु० १. पक्की बात। निश्चय। ठिकाना।

मुहा०—ठीक देना=मन में पक्का करना।

२. स्थिर प्रबंध। पक्का आयोजन। ठहराव। ३. जोड़। मीजान। योग।

ठीक ठाक–संज्ञा पु० [हिं० ठीक] १. निश्चित प्रबंध। बंदोबस्त। आयोजन। २ निश्चय। ठहराव। पक्की बात।

वि० अच्छी तरह दुरुस्त। प्रस्तुत।

ठीकरा–संज्ञा पु० [हिं० टुकड़ा] [स्त्री०अल्पा० ठीकरी] १. मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा। सिटकी। २. पुराना या टूटा फूटा बरतन। ३. भीख माँगने का बरतन। भिक्षापात्र।

ठीकरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठीकरा] १. मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा। २. तुच्छ वस्तु।

ठीका–संज्ञा पु० [हिं० ठीक] १. कुछ धन आदि के बदले में किसी के किसी काम को पूरा करने का जिम्मा। २. आमदनी की वस्तु को कुछ काल तक के लिये इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता जाय। इजारा। पट्टा।

ठीकेदार–संज्ञा पु० [हिं० ठीका+फा० दार] ठीका लेनेवाला।

ठीलना†–क्रि० स० दे० "ठेलना"।

ठीवन.–संज्ञा पु० [सं० ष्ठीवन] थूक। खखार।

ठीहँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] घोड़ों की हिनहिनाहट।

ठीहा–संज्ञा पु० [सं० स्था] १. जमीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिस पर वस्तुओं को रखकर लोहार, बढ़ई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २. लकड़ी गढ़ने या चीरने का कुंदा। ३. बैठने

के लिये कुछ ऊँचा किया हुआ स्थान। गद्दी। ४. हद। सीमा।

ठुंठ–संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु] १. सूखा हुआ पेड़। २. कटे हुए हाथवाला जीव। लूला।

ठुकना–क्रि० अ० [अनु०] १. ताड़ित होना। ठोंका जाना। पिटना। २. धँसना। गड़ना। ३. मार खाना। मारा जाना। ४. हानि होना। नुकसान होना। ५. पैर में बेड़ी पहनना। कैद होना।

ठुकराना–क्रि० स० [हिं० ठोकर] १. ठोकर लगाना। लात मारना। २. तुच्छ समझकर दूर हटाना।

ठुकवाना–क्रि० स० [हिं० ठोकना का प्रे०] ठोकने का काम कराना। पिटवाना।

ठुड्डी–संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] चेहरे में होंठ के नीचे का भाग। चिबुक। ठोढ़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ठूठी] वह भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो। टोर्री।

ठुमक–वि० [अनु०] जिसमें उमंग के कारण थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलते हैं। ठसक भरी (चाल)।

ठुमकना–क्रि० अ० [अनु०] १. बच्चों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २. नाचने में पैर पटककर चलना जिसमें घुँघुरू बजें।

ठुमका†–वि० [अनु०] नाटा। ठेंगना।

ठुमकी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ठिठक। रुकावट। २ छोटी खरी पूरी।

वि० स्त्री० नाटी। छोटे डील की।

ठुमरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का गीत जो केवल एक स्थायी और एक ही अंतरे में समाप्त होता है।

ठुर्री–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठड़ा = खड़ा] वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर न खिले।

ठुसना–क्रि० अ० [हिं० ठूँसना] कसकर भरा जाना।

ठुसाना–क्रि० स० [हिं० ठूसना] १. कसकर भरवाना। २. खूब पेट भर खिलाना। (अशिष्ट)

ठूँग–संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १. चोंच। ठोर। २. चोंच से मारने की क्रिया।

ठूँठ–संज्ञा पुं० [सं० स्थाणु] १. वह पेड़ जिसकी डाल, पत्तियाँ आदि कट गई हों। सूखा पेड़। २. कटा हुआ हाथ। ठुंड।

ठूँठा–वि० [सं० स्थाणु] १. बिना पत्तियों और टहनियों का (पेड़)। सूखा (पेड़)। २. बिना हाथ का। लूला।

ठूँसना–क्रि० स० दे० "ठूसना"।

ठूसना–क्रि० स० [हिं० ठस] १. खूब कसकर भरना। २. घुसेड़ना। घुसाना। ३ खूब पेट भरकर खाना।

ठेंगना–वि० [हिं० हेठ + अंग] [स्त्री० ठेंगनी] छोटे डील का।

ठेंगा–संज्ञा पुं० [हिं० अँगूठा] १. अँगूठा। ठोसा। २. सोंटा। डंडा।

ठेंठी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. कान की मैल। २ कान के छेद में रखने या मूँदने के लिये लगाई हुई रूई आदि की डाट। ३. डाट। काग।

ठेंपी–संज्ञा स्त्री० दे० "ठेंठी"।

ठेक–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] १. टेक। चाँड़। २. पखड़। ३ पेंदा। तल। ४. घोड़ों की एक चाल। ५. छड़ी या लाठी की सामी।

ठेकना–क्रि० स० [हिं० टिकना, टेक] १. सहारा लेना। आश्रय लेना। टेकना। २. टिकना। ठहरना। रहना।

ठेका–संज्ञा पुं० [हिं० टिकना] १. सहारे की वस्तु। ठेक। २ ठहरने या रुकने की जगह। अड्डा। ३. तबला या ढोल बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाय। ४. तबले में बायाँ। ५. ठोकर। धक्का।

संज्ञा पुं० दे० "ठीका"।

ठेकाई–संज्ञा स्त्री० [देश०] कपड़ों की छपाई में काले हाशिए की छपाई।

ठेकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] टेक। सहारा।

ठेगना‡–क्रि० स० [हिं० टेकना] १. टेकना। सहारा लेना। २. रोकना। मना करना।

ठेघा†–संज्ञा पुं० [हिं० टेक] टेक। चाँड़।

ठेठ–वि० [देश०] १. निपट। निरा। बिलकुल। २. जिसमें कुछ मेल-जोल न हो। खालिस। ३. शुद्ध। निर्मल। निर्लिप्त। ४. आरंभ। शुरू।

संज्ञा स्त्री० वह बोली जिसमें लिखने पढ़ने की भाषा के शब्दों का मेल न हो। सीधी सादी बोली।

ठेलना–क्रि० स० [हिं० टलना] धक्का देकर आगे बढ़ाना। रेलना। ढकेलना।

ठेला–संज्ञा पुं० [हिं० ठेलना] १ धक्का।

आघात। टक्कर। २. एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते हैं। ३ भीड़भाड़। धक्कम धक्का।
ठेलाठेल–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठेलना] धक्कम-धक्का।
ठेस–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठस] आघात। चोट।
ठैन०†–संज्ञा स्त्री० [स० स्थान] जगह। स्थान।
ठोक–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठोकना] ठोंकने की क्रिया या भाव। प्रहार। आघात।
ठोंकना–क्रि० स० [अनु० ठक ठक] १ जोर से चोट मारना। प्रहार करना। पीटना। २. मारना पीटना। ३. चोट लगाकर धँसाना। गाड़ना। ४ (नालिश, अरजी आदि) दाखिल करना। दायर करना। ५. काठ में डालना। बेड़ियों से जकड़ना। ६ हथेली से आघात पहुँचाना। थपथपाना।
मुहा०—ठोंकना बजाना = जाँचना। परखना। ७. हाथ से मारकर बजाना।
ठोंग–संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १ चोंच या उसकी मार। २. उँगली की ठोकर।
ठो†–अव्य० [हिं० ठौर] एक शब्द जो संख्या-वाचक शब्दों के आगे लगाया जाता है। संख्या। अदद। (पूरबी)
ठोकर–संज्ञा स्त्री० [हिं० ठोकना] १. आघात जो चलने में कंकड़, पत्थर आदि के धक्के से पैर में लगे। ठेस।
मुहा०—ठोकर या ठोकरें खाना = १. किसी भूल के कारण दु:ख सहना। २ धोखे में आना। चूक जाना। ३. दुर्गति सहना। कष्ट सहना। ठोकर लेना = ठोकर खाना।
२. वह पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुककर चोट खाता हो। ३. वह कड़ा आघात जो पैर या जूते के पंजे से किया जाय। ४. कड़ा आघात। धक्का। ५. जूते का अगला भाग।
ठोठरा†–वि० [हिं० ठूँठ] खाली। पोपला।
ठोड़ी–संज्ञा स्त्री० [स० तुंड] होंठ के नीचे का गोलाई लिए उभरा भाग। ठुड्डी। चिबुक। दाढ़ी।
ठोढ़ी†–संज्ञा स्त्री० दे० "ठोड़ी"।
ठोर–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का पकवान।
† संज्ञा पु० [स० तुंड] चोंच। चंचु।
ठोस–वि० [हिं० ठस] १ जो पोला या खोखला न हो। २ दृढ़। मजबूत।
संज्ञा पुं० [देश०] कुढ़न। डाह।
ठोहना०†–क्रि० स० [हिं० ढूँढ़ना] पता लगाना। खोजना।
ठौनि०–संज्ञा स्त्री० दे० "ठवनि"।
ठौर–संज्ञा पु० [हिं० ठाँव] १. जगह। स्थान।
मुहा०—ठौर कुठौर = १. बुरे ठिकाने। अनुपयुक्त स्थान पर। २. बेमौका। बिना अवसर। ठौर न आना = समीप न आना। ठौर रखना = मार डालना। ठौर रहना = १. जहाँ का तहाँ पड़ रहना। २. मर जाना।
२. मौका। अवसर।

ड

ड–व्यंजनों में तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण।
डंक–संज्ञा पु० [सं० दंश] १. बिच्छू, मधुमक्खी आदि कीड़ों के पीछे का जहरीला काँटा जिसे वे जीवों के शरीर में धँसाते हैं। २ डंक मारा हुआ स्थान। ३. कलम की जीभ। निब।
डंकना†–क्रि० अ० [अनु०] भयानक शब्द करना। गरजना।
डंका–संज्ञा पु० [स० ढक्का] एक प्रकार का नगाड़ा।
मुहा०—डंके की चोट कहना = खुल्लमखुल्ला कहना। सबको सुनाकर कहना।
डंगर–संज्ञा पु० [देश०] चौपाया।
डँगरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डँगरा] लंबी ककड़ी। संज्ञा स्त्री० [हिं० डाँगर] चुड़ैल। डाइन।
डंगू ज्वर–संज्ञा पु० [अ० डेंगू] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।
डँटैया–संज्ञा पुं० [हिं० डाँटना] डाँटनेवाला। घुड़कनेवाला। धमकानेवाला।
डंठल–संज्ञा पुं० [स० दंड] छोटे पौधे की

पेड़ी और शाखा।

डंठी†-संज्ञा स्त्री० [सं० दंड] डंठल।

डंड-संज्ञा पुं० [सं० दंड] १. डंडा। सोंटा। २. बाहुदंड। बाहँ। ३. हाथ पैर के पंजों के बल पट पड़कर की जानेवाली एक प्रकार की कसरत।

मुहा०—डंड पेलना = खूब डंड करना।

४. दंड। सज़ा। ५. अर्थदंड। जुरमाना। ६. घाटा। हानि। नुकसान। ७. घड़ी। दंड।

डंडपेल-संज्ञा पुं० [हिं० डंड + पेलना] १. कसरती। पहलवान। २. बलवान् आदमी।

डँड़वारा-संज्ञा पुं० [हिं० डाँड + वार] [स्त्री० अल्पा० डँड़वारी] वह कम ऊँची दीवार जो किसी स्थान को घेरने के लिये उठाई जाय।

डँडवी†-संज्ञा पुं० [हिं० दंड] दंड या राजकर देनेवाला। करद।

डंडा-संज्ञा पुं० [सं० दंड] १. लकड़ी या बाँस का सीधा लंबा टुकड़ा। २. मोटी छड़ी। सोंटा। लाठी। ३. चारदीवारी। डाँड़। डँड़वारा।

डंडाकरन*-संज्ञा पुं० "दंडक वन"।

डँडिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० डाँड़ी = रेखा] १. वह साड़ी जिसके बीच में गोटे टाँककर लकीरें बनी हों। छड़ीदार साड़ी। २. गेहूँ के पौधे की सींक जिसमें बाल रहती है।

संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़] कर उगाहनेवाला।

डंडी-संज्ञा स्त्री० [हिं० डंडा] १. छोटी लंबी पतली लकड़ी। २. हाथ में रहनेवाली वस्तु का वह लंबा पतला भाग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। दस्ता। हत्था। मुठिया। ३. तराजू की लकड़ी जिसमें पलड़े बाँधे जाते हैं। डाँड़ी। ४. लंबा डंठल जिसमें फूल या फल लगा होता है। नाल। ५. आरसी नाम के गहने का वह छल्ला जो उँगली में पड़ा रहता है। ६. झप्पान नाम की पहाड़ी सवारी। ७ दंड धारण करनेवाला संन्यासी। दंडी।

† वि० [सं० द्वंद्व] चुगलखोर।

डँडोरना-क्रि०स० [अनु०] ढूँढ़ना। खोजना।

डंबर-संज्ञा पुं० [सं०] १. आडंबर। ढकोसला। २. विस्तार। ३ एक प्रकार का चँदवा। चदरछत।

यौ०—मेघडंबर = बड़ा शामियाना। दलबादल।

अबर डबर = वह लाली जो संध्या के समय आकाश में दिखाई पड़ती है।

डँवरुआ-संज्ञा पुं० [सं० डमरु] वात का एक रोग। गठिया।

डँवाँडोल-वि० दे० "डाँवाडोल"।

डस-संज्ञा पुं० [सं० दंश] १. एक प्रकार का बड़ा जंगली मच्छड़। डाँस। २. वह स्थान जहाँ विषैले कीड़ों का दाँत या डंक चुभा हो।

डक-संज्ञा पुं० [अं० डाक] १. एक प्रकार का टाट जिससे जहाजों के पाल बनते हैं। २ एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

डकराना-क्रि० अ० [अनु०] बैल या भैंसे का बोलना।

डकार-संज्ञा पुं० [अनु०] १. पेट की वायु का कंठ से शब्द के साथ निकल पड़ने का शारीरिक व्यापार जिससे पेट का भरा होना सूचित होता है।

मुहा०—डकार न लेना = किसी का धन चुपचाप हज़म कर जाना।

२, बाघ, सिंह आदि की गरज। दहाड़।

डकारना-क्रि० अ० [हिं० डकार + ना] १. पेट की वायु को मुँह से निकालना। डकार लेना। २. किसी का माल ले लेना। हज़म करना। पचा जाना। ३. बाघ, सिंह आदि का गरजना। दहाड़ना।

डकैत-संज्ञा पुं० [हिं० डाका + ऐत] डाका मारनेवाला। डाकू। लुटेरा।

डकैती-संज्ञा स्त्री० [हिं० डकैत] डाका मारने का काम। छापा।

डग-संज्ञा पुं० [हिं० डाँकना] १. एक स्थान से पैर उठाकर दूसरे स्थान पर रखना। फाल। कदम।

मुहा०—डग देना = चलने में आगे की ओर पैर रखना। डग भरना या मारना = क़दम बढ़ाना। लंबे पैर बढ़ाना।

२. उतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़े। पैंड़।

डगडगाना-क्रि० अ० [अनु०] इधर से उधर हिलना। हिलना।

डगडोलना-क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।

डगडौर-वि० दे० "डाँवाडोल"।

डगण-संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में चार मात्राओं का एक गण।

डगना†-क्रि० अ० [हिं० डग] १. हिलना।

खसकना। खसकना। जगह छोड़ना। २. चूकना। भूल करना। डिगना। ३. डगमगाना। लड़खड़ाना।

डगडगाना–क्रि० अ० [हिं० डग+मग] १. कभी इस बल, कभी उस बल झुकना। थरथराना। लड़खड़ाना। २. विचलित होना। दृढ़ न रहना।

डगर–संज्ञा स्त्री० [हिं० डग] मार्ग। रास्ता।

डगरना‡–क्रि० अ० [हिं० डगर] चलना। रास्ता लेना।

डगरा†–संज्ञा पुं० [हिं० डगर] रास्ता। मार्ग। संज्ञा पुं० [देश०] बाँस की पतली फट्टियों का बना छिछला बरतन। डलरा। छाबड़ा।

डगा†–संज्ञा पुं० [हिं० डागा] नगाड़ा बजाने की लकड़ी। चोब। डागा।

डगाना–क्रि० स० दे० "डिगाना"।

डटना–क्रि० अ० [हिं० ठाट] १. जमकर खड़ा होना। अड़ना। ठहरा रहना। २. लग जाना। छू जाना।

† क्रि० स० [सं० दृष्टि] देखना।

डटाना–क्रि० स० [हिं० डटना] १. एक वस्तु को दूसरी वस्तु से लगाना। सटाना। भिड़ाना। २. जोर से भिड़ाना। ३. जमाना। खड़ा करना।

डट्टा–संज्ञा पुं० [हिं० डाटना] १. हुक्के का नैचा। २. डाट। काग। ३. बड़ी मेख।

डड़ढार*†–वि० [हिं० डाढ़ी] १. बड़ी डाढ़ीवाला। २. वीर। बहादुर। ३. साहसी।

डढ़न*–संज्ञा स्त्री० [सं० दग्ध] जलन।

डढ़ना*–क्रि० अ० [सं० दग्ध] जलना।

डढ़ार, डढ़ारा–वि० [हिं० दाढ़] १. वह जिसके डाढ़ें हों। २. वह जिसे दाढ़ी हो।

डढ़ियल–वि० [हिं० डाढ़ी] डाढ़ीवाला। जिसे बड़ी डाढ़ी हो।

डढ़ना*–क्रि० स० [सं० दग्ध] जलाना।

डढ़ोरा*–वि० [हिं० डाढ़ी] डाढ़ीवाला।

डपट–संज्ञा स्त्री० [सं० दर्प] डाँट। झिड़की। घुड़की।

संज्ञा स्त्री० [हिं० रपट] घोड़े की तेज़ चाल।

डपटना–क्रि० स० [हिं० डपट] क्रोध में जोर से बोलना। डाँटना।

क्रि० स० [हिं० रपटना] तेजी से जाना।

डपोरसंख–संज्ञा पुं० [अनु० डपोर=बड़ा+ शंख] १. जो कहे बहुत, पर कर कुछ न सके। डींग मारनेवाला। २. बड़े डील-डौल का, पर मूर्ख।

डफ–संज्ञा पुं० [अ० दफ] १. चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बड़ा बाजा जो प्रायः होली में बजाया जाता है। डफला। २. लावनीबाजों का बाजा। चंग।

डफला–संज्ञा पुं० दे० "डफ"।

डफली–संज्ञा स्त्री० [अ० दफ] छोटा डफ। खँजरी।

मुहा०—अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग=जितने लोग, उतनी राय।

डफार†–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ज़ोर से रोने या चिल्लाने का शब्द। चिग्घाड़।

डफारना†–क्रि० अ० [अनु०] ज़ोर से रोना या चिल्लाना। दहाड़ मारना।

डफाली–संज्ञा पुं० [हिं० डफला] डफला, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला।

डफोरना†–क्रि० अ० [अनु०] हाँक देना। ललकारना।

डब–संज्ञा पुं० [हिं० डब्बा] जेब। थैला।

डबकना–क्रि० अ० [अनु०] पीड़ा करना। टपकना। टीस मारना।

डबकौंहाँ–वि० [अनु०] [स्त्री० डबकौंही] आँसू भरा हुआ। डबडबाया हुआ।

डबडबाना–क्रि० अ० [अनु०] आँसू से (आँखें) भर आना। अश्रुपूर्ण होना।

डबरा–संज्ञा पुं० [सं० दभ्र] [स्त्री० डबरी] छिछला गड्ढा जिसमें पानी जमा रहे। कुंड। हौज़।

डबल–वि० [अं०] दोहरा।

संज्ञा पुं० अँगरेजी राज्य का पैसा।

डबल रोटी–संज्ञा स्त्री० [अं० डबल+हिं० रोटी] पावरोटी।

डबी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "डब्बी"।

डबोना–क्रि० स० दे० "डुबाना"।

डब्बा–संज्ञा पुं० [सं० डिंब] १. ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन। संपुट। २. रेल-गाड़ी में की एक गाड़ी।

डब्बू–संज्ञा पुं० [हिं० डब्बा] व्यंजन परोसने का एक प्रकार का कटोरा।

डभकना†–क्रि० अ० [अनु० डमडम] १. पानी में डूबना उतराना। डुबकी लेना। २. आँखों में जल भर आना। आँख डबडबाना।

डभकौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डभकना]

की पीठी की परी। डुभकी।

डमरू-संज्ञा पुं० [सं० डमरु] १. चमड़ा मढ़ा एक बाजा जो बीच में पतला रहता और दोनों सिरों की ओर बराबर चौड़ा होता जाता है। २. इस आकार की कोई वस्तु। ३. ३२ लघु वर्णों का एक दंडक वृत्त।

डमरूमध्य-संज्ञा पुं० [सं० डमरु+मध्य] धरती का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूमि-खंडों को मिलाता हो।

यौ०—जल-डमरूमध्य=जल का वह तंग या पतला भाग जो जल के दो बड़े बड़े भागों को मिलाता हो।

डमरूयंत्र-संज्ञा पुं० [सं० डमरु+यंत्र] एक प्रकार का यंत्र या पात्र जिसमें अर्क खींचे जाते तथा सिंगरफ का पारा, कपूर आदि उड़ाए जाते हैं।

डर-संज्ञा पुं० [सं० दर] १. वह मनोवेग जो किसी अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होता है। भय। भीति। खौफ। त्रास। २. अनिष्ट की संभावना का अनुमान। आशंका।

डरना-क्रि० अ० [हिं० डर+ना] १. अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना। भयभीत होना। खौफ करना। २. आशंका करना। अंदेशा करना।

डरपना†-क्रि० अ० दे० "डरना"।

डरपाना†-क्रि० स० दे० "डराना"।

डरपोक-वि० [हिं० डरना+पोकना] बहुत डरनेवाला। भीरु। कायर।

डरवाना-क्रि० स० दे० "डराना"।

डराडरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "डर"।

डराना-क्रि० स० [हिं० डरना] डर दिखाना। भयभीत करना। खौफ दिलाना।

डरावना-वि० [हिं० डर] जिससे डर लगे। भयानक। भयंकर।

डरावा-संज्ञा पुं० [हिं० डराना] १. डराने के लिये कही हुई बात। २. वह लकड़ी जो पेड़ में चिड़िया उड़ाने के लिये बँधी रहती और खटखट शब्द करती है। खटखटा। धड़का।

डरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

डरीला†-वि० [हिं० डार] डारवाला। शाखायुक्त। टहनीदार।

डरौला†-वि० [हिं० डर] डरावना।

डल-संज्ञा पुं० [हिं० डला] टुकड़ा। खंड।

संज्ञा स्त्री० [सं० तल्ल] झील।

डलना-क्रि० अ० [हिं० डालना] डाला जाना। पड़ना।

डलवाना-क्रि० स० [हिं० 'डालना' का प्रे०] डालने का काम दूसरे से कराना।

डला-संज्ञा पुं० [सं० दल] [स्त्री० डली] टुकड़ा। खंड।

संज्ञा पुं० [सं० डलक] [स्त्री० डलिया] बाँस, बेंत आदि की पतली फट्टियों से बना हुआ बरतन। टोकरा। दौरा।

डलिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] छोटा डला या टोकरा। दौरी।

डली-संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] १. छोटा टुकड़ा। छोटा ढेला। खंड। २. सुपारी।

संज्ञा स्त्री० दे० "डलिया"।

डसन-संज्ञा स्त्री० [सं० दशन] डसने की क्रिया, भाव या ढंग।

डसना-क्रि० स० [सं० दशन] विषवाले कीड़े का दाँत से काटना। डंक मारना।

डसाना†-क्रि० स० [हिं० डसना का प्रे०] दाँत से कटवाना। डसवाना।

डहकना-क्रि० स० [हिं० डाका] १ छल करना। धोखा देना। ठगना। जटना। २. ललचाकर न देना।

क्रि० अ० [हिं० दहाड़, धाड़] १. बिलखना। विलाप करना। २. दहाड़ मारना।

* क्रि० अ० [देश०] छितराना। फैलना।

डहकाना-क्रि० स० [हिं० डाका] खोना। गँवाना। नष्ट करना।

क्रि० अ० धोखे में आकर पास का कुछ खोना। ठगा जाना।

क्रि० स० १. धोखे से किसी की चीज़ ले लेना। ठगना। जटना। २ कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर न देना।

डहडहा-वि० [अनु०] [स्त्री० डहडही] १. जो सूखा या मुरझाया न हो। हरा-भरा। ताजा। २. प्रसन्न। आनंदित। ३. तुरंत का। ताजा।

डहडहाट†*-संज्ञा स्त्री० [हिं० डहडहा] १. हरापन। ताजगी। २. प्रफुल्लता। आनंद।

डहडहाना-क्रि० अ० [हिं० डहडहा] १. पेड़, पौधे का हरा-भरा या ताजा होना। २. प्रसन्न होना। आनंदित होना।

डहन-संज्ञा पुं० [सं० डयन] पर। पंख।

डहना-क्रि० अ० [सं० दहन] १. जलना। भस्म होना। २. द्वेष करना। बुरा मानना। क्रि० स० १. जलाना। भस्म करना। २. संतप्त करना। दुःख पहुँचाना।

डहर†-संज्ञा स्त्री० [हिं० डगर] १. रास्ता। मार्ग। पथ। २. आकाशगंगा।

डहरना-क्रि० अ० [हिं० डहर] चलना।

डहराना†-क्रि० स० [डहरना] चलाना।

डहार-संज्ञा पुं० [हिं० डाहना] डाहने या तंग करनेवाला।

डाँक-संज्ञा स्त्री० [हिं० दमक] ताँबे या चाँदी का बहुत पतला पत्तर जो नगीनों के नीचे बैठाते हैं।

† संज्ञा स्त्री० [हिं० डाँकना] कै। वमन।

संज्ञा पुं० १. दे० "डंका"। २. दे० "डंक"।

डाँकना†-क्रि० स० [सं० तक=चलना] १. कूदकर पार करना। फाँदना। २. वमन करना। कै करना।

डाँगर-वि० [देश०] १. गाय, भैंस आदि पशु। चौपाया। २. एक नीच जाति।

वि० १. बहुत दुबला-पतला। २. मूर्ख।

डाँट-संज्ञा स्त्री० [सं० दांति] १. शासन। २. वश। दबाव। ३. घुड़की। डपट।

डाँटना-क्रि० स० [हिं० डाँट] डराने के लिये क्रोध-पूर्वक ज़ोर से बोलना। घुड़कना।

डाँठ†-संज्ञा पुं० [सं० दंड] डंठल।

डाँड़-संज्ञा पुं० [सं० दंड] १. सीधी लकड़ी। डंडा। २. गदका। ३. नाव खेने का बल्ला। चप्पू। ४. सीधी लकीर। ५. दूर तक गई हुई ऊँची तंग जमीन। ऊँची मेंड़। ६. छोटा भीटा या टीला। ७. सीमा। हद। ८. अर्थदंड। जुरमाना। ९. नुकसान का बदला। हरजाना।

डाँड़ना-क्रि० अ० [हिं० डाँड़] अर्थ दंड देना। जुरमाना करना।

डाँड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़] १. छड़। डंडा। २. गतका। ३. नाव खेने का डाँड़। ४. हद। सीमा। मेंड़।

डाँड़ा मेंड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़+मेंड़] १. परस्पर अत्यंत सामीप्य। लगाव। २. अनबन। झगड़ा।

डाँड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० डाँड़] १. लंबी पतली लकड़ी। २. लंबा हत्था या दस्ता। ३. तराज़ू की डंडी। ४. पतली शाखा। टहनी। ५. हिंडोले में वे चार सीधी लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिनमें बैठने की पटरी लटकती रहती है। ६. डाँड़ खेनेवाला आदमी। ७. सीधी लकीर। रेखा। ८. लीक। मर्यादा। ९. चिड़ियों के बैठने का अड्डा। १०. डंडे में बँधी हुई झोली के आकार की सवारी। झप्पान।

डाँवरा-संज्ञा पुं० [सं० डिंब ?] [स्त्री० डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

डाँवाँडोल-वि० [हिं० डोलना] एक स्थिति में न रहनेवाला। चंचल। अस्थिर।

डाँस-संज्ञा पुं० [सं० दंश] १. बड़ा मच्छड़। दंश। २. एक प्रकार की मक्खी।

डाइन-संज्ञा स्त्री० [सं० डाकिनी] १. भूतनी। चुड़ैल। २ वह स्त्री जिसकी दृष्टि आदि के प्रभाव से बच्चे मर जाते हों। टोनहाई। ३ कुरूपा और डरावनी स्त्री।

डाक-संज्ञा पुं० [हिं० डाँकना] १ सवारी का ऐसा प्रबंध जिसमें एक एक टिकान पर बराबर जानवर आदि बदले जाते हों।

मुहा०—डाक बैठाना या लगाना=शीघ्र यात्रा के लिये स्थान स्थान पर सवारी बदलने की चौकी नियत करना।

यौ०—डाक चौकी=मार्ग में वह स्थान जहाँ यात्रा के घोड़े या हरकारे बदले जायँ।

२. राज्य की ओर से चिट्ठियों के आने जाने की व्यवस्था। ३. काग़ज़ पत्र आदि जो डाक से आवे।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] वमन। कै।

संज्ञा पुं० [बंग०] नीलाम की बोली।

डाकखाना-संज्ञा पुं० [हिं० डाक+फ़ा० ख़ाना] वह सरकारी दफ़्तर जहाँ लोग चिट्ठी-पत्री आदि छोड़ते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ आदि बाँटी जाती हैं।

डाकगाड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० डाक+गाड़ी] डाक ले जानेवाली रेलगाड़ी जो और गाड़ियों से तेज़ चलती है।

डाकघर-संज्ञा पुं० दे० "डाकख़ाना"।

डाकना-क्रि०अ० [हिं० डाक] कै करना। क्रि० स० [हिं०डाँक+ना] फाँदना। लाँघना।

डाक बँगला-[हिं० डाक+बँगला] वह मकान जो सरकार की ओर से परदेसियों के ठहरने के लिये बना हो।

डाका-संज्ञा पुं० [हिं० डाकना या सं० दस्यु] माल असबाब ज़बरदस्ती छीनने के लिये दल बाँधकर धावा। बटमारी।

डाकाज़नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डाका + फा० जनी] डाका मारने का काम। बटमारी।

डाकिन–संज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनी"।

डाकिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक पिशाची जो काली के गणों में है। २. डाइन। चुड़ैल।

डाकू–संज्ञा पुं० [हिं० डाकना, सं० दस्यु] डाका डालनेवाला। लुटेरा।

डाकोर–संज्ञा पुं० [सं० ठक्कुर] ठाकुर। विष्णु भगवान्। (गुजरात)

डाख–संज्ञा पुं० दे० "ढाक"।

डागा–संज्ञा पुं० [सं० दण्डक] नगाड़ा बजाने का डंडा। चोब।

डागुर–संज्ञा पुं० [देश०] जाटों की एक जाति।

डाट–संज्ञा स्त्री० [सं० दान्ति] १. वह वस्तु जो बोझ को ठहराने या वस्तु को खड़ी रखने के लिये लगाई जाय। टेक। चाँड़। २. छेद बंद करने की वस्तु। ३. बोतल, शीशी आदि का मुँह बंद करने की वस्तु। ठेंठी। काग। गट्टा। ४. मेहराब को रोक रखने के लिये ईंटों आदि की भरती।

संज्ञा पुं० दे० "डाँट"।

डाटना–क्रि० स० [हिं० डाट] १. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कसकर दबाना। भिड़ाकर ठेलना। २. टेकना। चाँड़ लगाना। ३. छेद या मुँह बंद करना। ठेंठी लगाना। ४. कसकर या ठूसकर भरना। ५. खूब पेट भर खाना। ६. ठाट से कपड़ा-गहना आदि पहनना। ७. मिलाना। भिड़ाना।

डाढ़–संज्ञा स्त्री० [सं० दंष्ट्रा] चबाने के चौड़े दाँत। चौभड़। दाढ़।

डाढ़ना†–क्रि० स० [सं० दग्ध] जलाना।

डाढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं० दग्ध] १. दावानल। वन की आग। २. आग। ३. ताप। दाह। जलन।

डाढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डाढ़] १. ओठ के नीचे का उभरा हुआ गोल भाग। ठोढ़ी। ठुड्डी। चिबुक। २. ठुड्डी और कनपटी पर के बाल। दाढ़ी।

डाबर–संज्ञा पुं० [सं० दभ्र] १. नीची ज़मीन जहाँ पानी ठहरा रहे। २. गड़ही। पोखरी। तलैया। ३. हाथ धोने का पात्र। चिलमची। ४. मैला पानी।

डाबा–संज्ञा पुं० दे० "डब्बा"।

डाभ–संज्ञा पुं० [सं० दर्भ] १. एक प्रकार का कुश। २. कुश। ३. आम की मंजरी या मौर। ४. कच्चा नारियल।

डामर–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव कथित माना जानेवाला एक तंत्र। २. हलचल। धूम। ३. आडंबर। ठाटबाट। ४ चमत्कार।

संज्ञा पुं० [देश०] १. साल वृक्ष का गोंद। राल। २ कहरुवा नामक गोंद। ३ एक प्रकार की मधुमक्खी जो राल बनाती है।

डामल–संज्ञा स्त्री० [अ० दायमुल हब्स] १. उम्र भर के लिये कैद। २. 'देशनिकाला' का दंड।

डायँ डायँ–क्रि० वि० [अनु०] व्यर्थ इधर से उधर (घूमना)।

डायन–संज्ञा स्त्री० [सं० डाकिनी] १. डाकिनी। पिशाचिनी। चुड़ैल। २. कुरूपा स्त्री।

डार†–संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

संज्ञा स्त्री० [सं० डलक] डलिया। चँगेर।

डारना†–क्रि० स० दे० "डालना"।

डाल–संज्ञा स्त्री० [सं० दारु] १. पेड़ के धड़ से निकली हुई वह लंबी लकड़ी जिसमें पत्तियाँ और कल्ले होते हैं। शाखा। शाख। २. फ़ानूस जलाने के लिये दीवार में लगी हुई एक प्रकार की खूँटी। ३. तलवार का फल।

संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] १. डलिया। चँगेरी। २. कपड़ा और गहना जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिया जाता है।

डालना–क्रि० स० [सं० तलन] १. नीचे गिराना। छोड़ना। फेंकना।

मुहा०—डाल रखना = १. रख छोड़ना। २. रोक रखना। देर लगाना। भुलाना।

२. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कुछ दूर से गिराना। छोड़ना। ३ रखना या मिलाना। ४. प्रविष्ट करना। घुसाना। ५. खोज खबर न लेना। भुला देना। ६. अंकित करना। चिह्नित करना। ७ फैलाकर रखना। ८ शरीर पर धारण करना। पहनना। ९. ज़िम्मे करना। मार देना। १०. गर्भपात करना। (चौपायों के लिये) ११. कै करना। उलटी करना। १२. (स्त्री को) पत्नी की तरह रखना। १३. लगाना। उपयोग

करना। १४ घटित करना। मचाना। १५ बिछाना।

ाली–संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] १ डलिया। चँगेरी। २ फल, फूल और मेवे जो डलिया में सजाकर किसी के पास सम्मानार्थ भेजे जाते हैं।

संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

ावरा–संज्ञा पु० [सं० डिंब या मार० डावर ?] [स्त्री० डावरी] लड़का। बेटा।

ासन†–संज्ञा पु० [हिं० डाम + आसन] बिछावन। बिछौना। बिस्तर।

डासना†–क्रि० स० [हिं० डासन] बिछाना। डालना। फैलाना।

†क्रि० स० [हिं० डसना] डसना।

डासनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डासन] चारपाई।

डाह–संज्ञा स्त्री० [सं० दाह] जलन। ईर्ष्या।

डाहना–क्रि० स० [सं० दाहन] जलाना। सताना। तंग करना।

डिंगर–संज्ञा पु० [सं०] १ मोटा आदमी। २ दुष्ट। धदमाश। ३ दास। गुलाम।

संज्ञा पु० [देश०] वह काठ जो नटखट चौपायों के गले में बाँध दिया जाता है।

डिंगल–वि० [सं० डिंगर] नीच। दूषित।

संज्ञा स्त्री० राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली लिखते हैं।

डिंडसी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिंडसी"।

डिंब–संज्ञा पु० [सं०] १. घावैला। भय ध्वनि। २ दंगा। लड़ाई। ३ अंडा। ४ फेफड़ा। ५ प्लीहा। तिल्ली। ६ कीड़े का छोटा बच्चा।

डिंभ–संज्ञा पु० [सं०] १ छोटा बच्चा। २ मूर्ख।

† संज्ञा पु० [सं० दंभ] १ आडंबर। पाखंड। २ अभिमान। घमंड।

डिगना–क्रि० अ० [सं० टिक] १ जगह छोड़ना। टलना। खसकना। २ किसी बात पर स्थिर न रहना। विचलित होना।

डिगलाना–क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।

डिगाना–क्रि० स० [हिं० डिगना] १ जगह से टालना। सरकाना। खसकाना। २ बात पर स्थिर न रखना। विचलित करना।

डिग्गी–संज्ञा स्त्री० [सं० दीर्घिका] तालाब।

† संज्ञा स्त्री० [देश०] हिम्मत। साहस।

डिठार, डिठियार†–वि० [हिं० डीठ = नजर] जिसे सुझाई दे।

डिठौना–संज्ञा पु० [हिं० डीठ] काजल का टीका जो लड़कों को नजर से बचाने के लिये लगाते हैं।

डिल्ला†–संज्ञा स्त्री० [देश०] अत्यंत लालच। लालसा। कामना। तृष्णा।

डिबिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० डिब्बा] छोटा ढकनदार बरतन। छोटा डिब्बा या संपुट।

डिब्बा–संज्ञा पु० [सं० डिंब] १ एक प्रकार का ढकनदार छोटा बरतन। संपुट। २ रेलगाड़ी की एक गाड़ी। ३ बच्चों की पसली के दर्द की बीमारी। पसली।

डिमगना–क्रि० स० [देश०] मोहित करना। छलना। ठहकना।

डिम–संज्ञा पु० [सं०] नाटक का एक भेद जिसमें माया, इंद्रजाल लड़ाई और क्रोध आदि का समावेश होता है।

डिमडिमी–संज्ञा स्त्री० [सं० डिंडिम] डुगडुगिया या डुग्गी नाम का बाजा।

डिल्ला–संज्ञा पु० [सं०] १ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ और अंत में भगण होता है। २ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं। तिलका। तिल्ला। तिल्लाना।

संज्ञा पु० [हिं० टीला] बैलों के कंधे पर उठा हुआ कूबड़। कुब्बा। ककुद।

डींग–संज्ञा स्त्री० [सं० डीन] शेखी। सिट्ट।

डीठ–संज्ञा स्त्री० [सं० दृष्टि] १ दृष्टि। नजर। निगाह। २ देखने की शक्ति। ३ ज्ञान। समझ।

डीठना †–क्रि० अ० [हिं० डीठ] दिखाई देना। दृष्टि में आना।

क्रि० स० १ दिखाना। २ नजर लगाना।

डीठबंध–संज्ञा पु० [सं० दृष्टिबंध] १ नजरबंदी। इंद्रजाल। २ इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

डीठिमूठि†–संज्ञा स्त्री० [हिं० डीठि + मूठ] नजर। टोना। जादू।

डीबुआ†–संज्ञा पुं० [देश०] पैसा।

डीम डाम–संज्ञा स्त्री० [सं० डिंब] १ ठाट। ऐंठ। तपाक। ठसक। २ ठाट बाट।

डील–संज्ञा पु० [हिं० टीला] १ प्राणियों के शरीर की ऊँचाई। कद। उठान।

यौ०—डील डौल = १ देह

चौड़ाई। २. शरीर का ढाँचा। आकार। काठी। २ शरीर। जिस्म। देह। ३. व्यक्ति। प्राणी। मनुष्य।

डीह–संज्ञा पु० [फा० देह] १. आबादी। बस्ती। २. उजड़े हुए गाँव का टीला। ३. ग्राम-देवता।

डुंग†–संज्ञा पु० [सं० तुंग] १. ढेर। अटाला। २. टीला। भीटा। पहाड़ी।

डुंड†–संज्ञा पु० [सं० दंड] पेड़ों की सूखी डाल। ठूँठ।

डुगडुगी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा। डौंगी। डुग्गी।

डुग्गी–संज्ञा स्त्री० दे० "डुगडुगी"।

डुपटना†–क्रि० स० [हिं० दो+पट] (कपड़ा) चुनना। चुनियाना।

डुबकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डूबना] १ पानी में डूबना। डुब्बी। गोता। बुड़की। २. पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।

डुबाना–क्रि० स० [हिं० डूबना] १. पानी या किसी द्रव पदार्थ के भीतर डालना। गोता देना। २. चौपट या नष्ट करना।

मुहा०—नाम डुबाना=नाम को कलंकित करना। मर्यादा खोना। लुटिया डुबाना= महत्त्व या प्रतिष्ठा नष्ट करना।

डुबाव–संज्ञा पु० [हिं० डूबना] पानी की डूबने भर की गहराई।

डुबोना†–क्रि० स० दे० "डुबाना"।

डुभकौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डुबकी+बरी] पीठी की बिना तली बरी।

डुलना†–क्रि० अ० दे० "डोलना"।

डुलाना–क्रि० स० [हिं० डोलना] १. गति में लाना। हिलाना। चलाना। २. हटाना। भगाना। ३. फिराना। घुमाना। टहलाना।

डूंगर–संज्ञा पु० [सं० तुंग] १. टीला। भीटा। डूह। २. छोटी पहाड़ी।

डूबना–क्रि० अ० [अनु० डुब डुब] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ के भीतर समाना। गोता खाना।

मुहा०–डूब मरना=शरम के मारे मुँह न दिखाना। चुल्लू भर पानी में डूब मरना= दे० "डूब मरना"। डूबना उतराना=चिंता में पड़ जाना। जी डूबना=१. चित्त व्याकुल होना। २. बेहोशी होना।

२. सूर्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना। ३. चौपट होना। बरबाद होना।

मुहा०—नाम डूबना=प्रतिष्ठा नष्ट होना। ४. किसी व्यवसाय में लगाया हुआ या किसी को दिया हुआ धन नष्ट होना। ५. चिंतन में मग्न होना। ६. लीन होना। तन्मय होना। लिप्त होना।

डेंड़सी–संज्ञा स्त्री० [सं० टिंडिश] ककड़ी की तरह की एक तरकारी। टिंड। टिंडसी।

डेड़हा†–संज्ञा पु० [सं० डुंडुभ] पानी का साँप।

डेढ़–वि० [सं० अध्यर्द्ध] एक पूरा और उसका आधा। जो गिनती में १½ हो।

मुहा०—डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना= खरेपन या अक्खड़पन के कारण सबसे अलग काम करना। डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना= अपनी राय सबसे अलग रखना।

डेढ़ा–वि० दे० "डेवढ़ा"।

संज्ञा पु० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।

डेरा–संज्ञा पु० [हिं० ठहरना] १. थोड़े दिनों के लिये रहना। टिकान। पड़ाव। २. ठहरने या रहने के लिये फैलाया हुआ सामान।

मुहा०—डेरा डालना=सामान फैलाकर टिकना। ठहरना। डेरा पड़ना=टिकान होना।

३. ठहरने का स्थान। ४. छावनी। खेमा। तंबू। शामियाना। ५. नाचने गानेवालों का दल। मंडली। गोल। ६. मकान। घर।

[डेरा]†–वि० [सं० डहर ?] बायाँ। सव्य।

डेराना†–क्रि० अ० दे० "डरना"।

डेल–संज्ञा पु० [सं० डुंडुल] उल्लू पक्षी।

संज्ञा पु० [सं० दल] रोड़ा। ढेला।

संज्ञा पु० पक्षियों को बंद करने का डला।

डेला–संज्ञा पु० [सं० दल] आँख का सफेद उभरा हुआ भाग जिसमें पुतली होती है। कोया। रोड़ा।

डेली†–संज्ञा स्त्री० [हिं० डला] डलिया। बाँस की झाँपी।

डेवढ़†–वि० [हिं० डेवढ़ा] डेढ़गुना। डेवढ़ा।

संज्ञा स्त्री० सिलसिला। क्रम। तार।

डेवढ़ा–वि० संज्ञा पु० दे० "ड्योढ़ा"।

डेवढ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "ड्योढ़ी"।

डेहरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दहलीज़"।

डैना–संज्ञा पु० [सं० डयन] चिड़ियों का पंख। पक्ष। पर। बाज़ू।

डोंगर—संज्ञा पुं० [सं० तुंग] पहाड़ी । टीला ।
डोंगा—संज्ञा पुं० [सं० द्रोण] १. बिना पाल की नाव । २ बड़ी नाव ।
डोंगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोंगा] छोटी नाव ।
डोंडा—संज्ञा पुं० [सं० तुंड] १. बड़ी इलायची । २ टोंटा । कारतूस ।
डोंड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १. पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है । २ उभरा हुआ मुँह । टोंटी ।
डोई—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोकी] काठ की डाँडी की बड़ी करछी जिससे दूध, चाशनी आदि चलाते हैं ।
डोकरा—संज्ञा पुं० [सं० दुष्कर] [स्त्री० डोकरी] १ अशक्त और वृद्ध मनुष्य । २ पिता ।
डोकिया, डोकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोका] काठ का छोटा कटोरा जिसमें तेल, बटना आदि रखते हैं ।
डोडो—संज्ञा पुं० [अ०] बत्तख के बराबर एक चिड़िया जो अब नहीं मिलती ।
डोब, डोबा—संज्ञा पुं० [हिं० डूबना] डुबाने का भाव । गोता । डुबकी ।
डोम—संज्ञा पुं० [सं० डम] [स्त्री० डोमिनी, डोमनी] १ एक अस्पृश्य नीच जाति । श्मशान पर शव को आग देना, सूप-डले आदि बेचना इनका काम है । २ ढाढ़ी । मीरासी ।
डोम कौआ—संज्ञा पुं० [हिं० डोम + कौआ] बड़ा और बहुत काला कौआ ।
डोमड़ा—संज्ञा पुं० दे० "डोम" ।
डोमनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोम] १. डोम जाति की स्त्री । २. ढाढ़ी या मीरासी की स्त्री ।
डोमिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोम] १ डोम जाति की स्त्री । २ ढाढ़ी, मीरासियों की स्त्री ।
डोर—संज्ञा स्त्री० [सं०] डोरा । मोटा तागा ।
मुहा०—डोर पर लगाना = प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल करना । ढब पर लाना ।
डोरा—संज्ञा पुं० [सं० डोरक] १. रूई, रेशम आदि को बटकर बनाया हुआ बहुत लंबा और पतला खंड । मोटा सूत या तागा । धागा । २ धारी । लकीर । ३. आँखों की महीन लाल नसें जो नशे या उमंग की दशा में दिखाई पड़ती हैं । ४. तलवार की धार । ५ तपे घी की धार । ६. एक प्रकार की करछी । पली । ७ स्नेहसूत्र । प्रेम का बंधन ।
मुहा०—डोरा डालना = प्रेमसूत्र में बद्ध करना । परचाना ।
८ वह वस्तु जिससे किसी वस्तु का पता लगे । सुराग । ९ काजल या सुरमे की रेखा ।
डोरिया—संज्ञा पुं० [हिं० डोरा] १. वह कपड़ा जिसमें कुछ मोटे सूत की लंबी धारियाँ बनी हों । २ एक प्रकार का बगला ।
डोरियाना†—क्रि० स० [हिं० डोरी + आना (प्रत्य०)] पशुओं को रस्सी से बाँधकर ले चलना ।
डोरिहार—संज्ञा पुं० [हिं० डोरी + हारा] [स्त्री० डोरिहारिन] पटवा ।
डोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोरा] १ रस्सी । रज्जु । २ पाश । बंधन ।
मुहा०—डोरी ढीली छोड़ना = देख-रेख कम करना । चौकसी कम करना ।
३ डाँड़ीदार कटोरा या कलछा । डोरा ।
डोरे—क्रि० वि० [हिं० डोर] साथ लिए हुए । साथ साथ । संग संग ।
डोल—संज्ञा पुं० [सं० दोल] १. लोहे का एक गोल बरतन । २. हिंडोला । झूला । ३ डोली । पालकी । ४. हलचल ।
वि० [हिं० डोलना] चंचल ।
डोलची—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोल] छोटा डोल ।
डोलडाल—संज्ञा पुं० [हिं० डोलना] १. चलना फिरना । २. पाखाने जाना ।
डोलना—क्रि० अ० [सं० दोलन] १. चलायमान होना । गति में होना । २. चलना । फिरना । ३. हटना । दूर होना । ४ (चित्त) विचलित होना । डिगना ।
डोला—संज्ञा पुं० [सं० दोल] [स्त्री० डोली] १ स्त्रियों के बैठने की एक बंद सवारी जिसे कहार ढोते हैं । मियाना ।
मुहा०—डोला देना = १. किसी राजा या सरदार को भेंट की तरह पर अपनी बेटी देना । २ अपनी बेटी को वर के घर पर ले जाकर ब्याहना ।
२ झूले का झोंका । पेंग ।
डोलाना—क्रि० स० [हिं० डोलना] १. हिलाना । चलाना । २ दूर करना । भगाना । हटाना ।
डोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० डोला] एक प्रकार की सवारी जिसे कहार लेकर चलते हैं ।

डोही–संज्ञा स्त्री० दे० "डोई"।
डौंड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० डिंडिम] ढिंढोरा। डुगडुगिया।
मुहा०—डौंड़ी देना = १. मुनादी करना। २. सबसे कहते फिरना। डौंड़ी बजना = १ घोषणा होना। २. जयजयकार होना।
२. घोषणा। मुनादी।
डौंरू–संज्ञा पुं० दे० "डमरू"।
डौआ–संज्ञा पुं० [देश०] १. काठ का चमचा।
डौल–संज्ञा पुं० [हिं० डोल ?] ढाँचा। ढड्ढा।
मुहा०—डौल पर लाना = काट छाँटकर सुडौल या दुरुस्त करना।
२. बनावट का ढंग। रचना-प्रकार। ढब। ३. तरह। प्रकार। ४. युक्ति। उपाय।
मुहा०—डौल पर लाना = अभिप्राय-साधन के अनुकूल करना। डौल बाँधना या लगाना = उपाय करना। युक्ति बैठाना।
५. रंग ढंग। लक्षण। सामान।
डौलियाना–क्रि० स० [हिं० डौल] १. प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल करना। ढंग पर लाना। २. गढ़कर दुरुस्त करना।
ड्योढ़ा–वि० [हिं० डेढ़] किसी पदार्थ से उसका आधा और ज़्यादा। डेढ़गुना। संज्ञा पुं० एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें अंकों की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।
ड्योढ़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० देहली] १. फाटक। चौखट। दरवाजा। २. वह बाहरी कोठरी जो मकान में घुसने के पहले पड़ती है। पौरी।
ड्योढ़ीदार–संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ीवान"।
ड्योढ़ीवान–संज्ञा पुं० [हिं० ड्योढ़ी + वान (प्रत्य०)] ड्योढ़ी पर रहनेवाला पहरेदार। द्वारपाल। दरबान।

ढ

ढ–हिंदी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण और टवर्ग का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
ढंख†–संज्ञा पुं० दे० "ढाक"।
ढंग–संज्ञा पुं० [सं० तंग (तगन)] १. प्रणाली। शैली। ढब। रीति। २. प्रकार। तरह। किस्म। ३. रचना। बनावट। गढ़न। ४ युक्ति। उपाय। तदबीर।
मुहा०—ढंग पर चढ़ना = अभिप्राय साधन के अनुकूल होना। ढंग पर लाना = अभिप्राय साधन के अनुकूल करना।
५. चाल-ढाल। आचरण। व्यवहार। ६ बहाना। हीला। पाखंड। ७. लक्षण। आभास। आसार।
यौ०—रंग ढंग = लक्षण। आसार।
८ दशा। अवस्था। स्थिति।
ढँगलाना†–क्रि० स० [हिं० ढाल] लुढकाना।
ढंगी–वि० [हिं० ढंग] चालबाज। चतुर। चालाक।
ढँढोर–संज्ञा पुं० [अनु० धायँ धायँ] आग की लपट। ज्वाला। लौ।
ढँढोरची–संज्ञा पुं० [हिं० ढँढोरा] ढँढोरा या मुनादी फेरनेवाला।
ढँढोरना†–क्रि० स० दे० "ढूँढ़ना"।
ढँढोरा–संज्ञा पुं० [अनु० ढम + ढोल] १. घोषणा करने का ढोल। डुगडुगी। डौंड़ी। २. वह घोषणा जो ढोल बजाकर की जाय। मुनादी।
ढपना–क्रि० अ० दे० "ढकना"।
ढ–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा ढोल। २. कुत्ता। ३. ध्वनि। नाद।
ढई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढहना = गिरना] किसी के यहाँ किसी काम से पहुँचना और जब तक काम न हो जाय, तब तक वहाँ से न हटना। धरना देना।
ढकना–संज्ञा पुं० [सं० ढक = छिपना] [स्त्री० अल्पा० ढकनी] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन। क्रि० अ० किसी वस्तु के नीचे पड़कर दिखाई न देना। छिपना।
क्रि० स० दे० "ढाँकना"।
ढकनिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "ढकनी"।
ढकनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढकना] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।
ढका†–संज्ञा पुं० [सं० ढक्का] बड़ा ढोल। संज्ञा पुं० [अनु०] धक्का। टक्कर।

ढकिल°†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढकेलना] वेग के साथ धावा। चढ़ाई। आक्रमण।

ढकेलना–क्रि० स० [हिं० धक्का] १. धक्के से गिरना। ठेलकर आगे की ओर गिराना। २. धक्के से हटाना। ठेलकर सरकाना।

ढकोसना–क्रि० स० [अनु० ढक ढक] एक-बारगी बहुत सा पीना।

ढकोसला–संज्ञा पुं० [हिं० ढंग+सं० कौशल] मतलब साधने का ढंग। आडंबर। पाखंड।

ढक्कन–संज्ञा पुं० [सं०] ढाँकने की वस्तु। ढकना।

ढक्का–संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा ढोल।

ढगण–संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है।

ढचर–संज्ञा पुं० [हिं० ढाँचा] १. टंटा। बखेड़ा। २. आडंबर। ढकोसला।

ढड्ढा–वि० [देश०] बहुत बड़ा और बेढंगा। संज्ञा पुं० [हिं० ठाट] १. ढाँचा। २. झूठा ठाट-बाट। आडंबर।

ढनमनाना†–क्रि० अ० [अनु०] लुढ़कना।

ढपना–संज्ञा पुं० [हिं० ढाँपना] ढाकने की वस्तु। ढक्कन।
क्रि० अ० [हिं० ढकना] ढका होना।

ढप्पू– वि० [देश०] बहुत बड़ा। ढड्ढा।

ढफ†–संज्ञा पुं० दे० "डफ"।

ढब–संज्ञा पुं० [सं० धव=गति] १. ढंग। रीति। तौर। तरीका। २. प्रकार। तरह। किस्म। ३. बनावट। गढ़न। ४. अभियुक्ति। उपाय। तदबीर।
मुहा०—ढब पर चढ़ना=किसी का ऐसी अवस्था में होना जिससे कुछ मतलब निकले। ढब पर लगाना या लाना=किसी को इस प्रकार प्रवृत्त करना कि उससे कुछ अर्थ सिद्ध हो।
५. प्रकृति। आदत। बान।

ढयना–क्रि० अ० [सं० ध्वसन्] दीवार, मकान आदि का गिरना। ध्वस्त होना।

ढरकना†–क्रि० अ० [हिं० ढार या ढाल] १. पानी आदि द्रव पदार्थ का नीचे गिर पड़ना। ढलना। २ लेटना। ३. नीचे की ओर जाना।

ढरका–संज्ञा पुं० [हिं० ढरकना] बाँस की नली जिससे चौपायों के गले में दवा उतारते हैं।

ढरकाना†–क्रि० स० [हिं० ढरकना] पानी आदि को आधार से नीचे गिराना। गिराकर बहाना।

ढरकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढरकना] जुलाहों का एक औज़ार जिससे वे लोग बाने का सूत फेंकते हैं।

ढरना†°–क्रि० अ० दे० "ढलना"।

ढरनि–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढरना] १. गिरने या पड़ने की क्रिया। पतन। २ हिलने-डोलने की क्रिया। गति। ३. चित्त की प्रवृत्ति। झुकाव। ४ करुणा। दया-शीलता। कृपालुता।

ढरहरना°†–क्रि० अ० [हिं० ढरना] खसकना। सरकना। ढलना। झुकना।

ढरहरी†–संज्ञा स्त्री० [देश०] पकौड़ी।

ढराना– क्रि० स० १. दे० "ढलाना"। २. दे० "ढरकाना"।

ढरारा–वि० [हिं० ढार] [स्त्री० ढरारी] १. गिरकर बह जानेवाला। २ लुढ़कनेवाला। ३. शीघ्र प्रवृत्त होनेवाला।

ढर्रा–संज्ञा पुं० [हिं० धरना] १. मार्ग। रास्ता। पथ। २. शैली। ढंग। तरीका। ३. युक्ति। उपाय। तदबीर। ४. आचरण पद्धति। चाल-चलन।

ढलकना–क्रि० अ० [हिं० ढाल] १. द्रव पदार्थ का आधार से नीचे गिर पड़ना। ढलना। २. लुढ़कना।

ढलका–संज्ञा पुं० [हिं० ढलकना] वह रोग जिसमें आँख से पानी बहा करता है।

ढलकाना–क्रि० स० [हिं० ढलकना] १. द्रव पदार्थ को आधार से नीचे गिराना। २. लुढ़काना।

ढलना–क्रि० अ० [हिं० ढाल] १. द्रव पदार्थ का नीचे की ओर सरक जाना। ढरकना। बहना।
मुहा०—दिन ढलना=संध्या होना। सूरज या चाँद ढलना = सूर्य या चंद्रमा का अस्त होना।
२. बीतना। गुजरना। ३ उँडेला जाना। ४. लुढ़कना। ५. लहर खाकर इधर-उधर डोलना। लहराना। ६. किसी ओर आकृष्ट होना। प्रवृत्त होना। ७ प्रसन्न होना। रीझना। ८. साँचे में ढालकर बनाया जाना। ढाला जाना।
मुहा०—साँचे में ढला=बहुत सुंदर।

ढलवाँ–वि० [हिं० ढालना] जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो।

ढलवाना-क्रि० स० [हिं० ढालना का प्रे०] ढालने का काम दूसरे से कराना।

ढलाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० ढालना] १. ढालने का भाव या काम। २. ढालने की मज़दूरी।

ढलाना-क्रि० स० दे० "ढलवाना"।

ढवरी:†-संज्ञा स्त्री०[हिं० ढलना]धुन। डोरी। लौ। लगन। रट।

ढहना-क्रि० अ० [सं० ध्वसन] १. मकान आदि का गिर पड़ना। ध्वस्त होना। २. नष्ट होना। मिट जाना।

ढहरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "डेहरी"।
संज्ञा स्त्री० [देश०] मिट्टी का मटका।

ढहवाना- क्रि० स० [हिं० ढहाना का प्रे०] ढहाने का काम कराना। गिरवाना।

ढहाना-क्रि० स० [सं० ध्वसन] दीवार, मकान आदि गिरवाना। ध्वस्त कराना।

ढाँकना-क्रि० स० [सं० ढक=छिपाना] १. ऊपर से कोई वस्तु फैला या डालकर (किसी वस्तु को) ओट में करना। २. इस प्रकार ऊपर फैलाना कि नीचे की वस्तु छिप जाय।

ढाँचा-संज्ञा पु० [सं० स्थाना] १. किसी चीज़ को बनाने के पहले जोड़-जाड़कर बैठाए हुए उसके भिन्न भिन्न भाग। ठाट। ठट्टर। ढोल। २. इस प्रकार जोड़े हुए लकड़ी आदि के बल्ले कि उनके बीच में कोई वस्तु जमाई या जड़ी जा सके। ३. पंजर। ठटरी। ४. गढ़न। बनावट। ५. प्रकार। भाँति। तरह।

ढाँपना-क्रि० स० दे० "ढाँकना"।

ढाँसना-क्रि० अ० [हिं० ढाँस] सूखी खाँसी खाँसना।

ढाई-वि० [सं० अर्द्धद्वितीय, हिं० अढ़ाई] दो और आधा।

ढाक-संज्ञा पु० [सं० आपाढ़क] पलाश का पेड़। छिउला। छीउल।
मुहा०—ढाक के तीन पात=सदा एक सा।
संज्ञा पु० [सं० ढक्का] लड़ाई का ढोल।

ढाड-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चिग्घाड़। गरज। दहाड़ (बाघ, सिंह आदि की)। २. चिल्लाहट।
मुहा०—ढाड़ मारना=चिल्लाकर रोना।

ढाढना†-क्रि० स० दे० "दाढ़ना"।

ढाढ़स-संज्ञा पु० [सं० दृढ] १. धैर्य। आश्वासन। तसल्ली। २. दृढ़ता। साहस। हिम्मत।

ढाढ़ी-संज्ञा पु० [देश०][स्त्री० ढाढ़िन] एक प्रकार के मुसलमान गवैए।

ढाना-क्रि० स० [हिं० ढाहना] १. दीवार, मकान आदि को गिराना। ध्वस्त करना। २. गिराना।

ढाबर†-वि० [हिं० ढाबर] मिट्टी मिला हुआ। मटमैला। गँदला। (पानी)

ढामक-संज्ञा पु० [अनु०] ढोल आदि का शब्द।

ढार:-संज्ञा स्त्री० [सं० धार] १. ढाल। उतार। २. पथ। मार्ग। प्रणाली। ३. ढाँचा। रचना। बनावट।

ढारना†-क्रि० स० दे० "ढालना"।

ढारस-संज्ञा पु० दे० "ढाढ़स"।

ढाल-संज्ञा स्त्री० [सं०] तलवार आदि का वार रोकने का गोल अस्त्र या धातु की फरी। चर्म। आड़। फलक।
संज्ञा स्त्री० [सं० धार] १. वह स्थान जो क्रमशः बराबर नीचा होता गया हो। उतार। २ ढंग। प्रकार। तौर। तरीका।

ढालना-क्रि० स० [सं० धार] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ को गिराना। उँड़ेलना। २ शराब पीना। ३. बेचना। ४. ताना छोड़ना। व्यंग्य बोलना। ५. साँचे में ढालकर कोई चीज़ बनाना।

ढालवाँ-वि० [हिं० ढाल] [स्त्री० ढालवीं] जो बराबर नीचा होता गया हो। जिसमें ढाल हो। ढालू।

ढालू-वि० दे० "ढालवाँ"।

ढासा†-संज्ञा पु० [सं० दस्यु] लुटेरा। डाकू।

ढासना-संज्ञा पु० [सं० धारण+आसन] १. वह ऊँची वस्तु जिस पर बैठने में पीठ टिक सके। सहारा। टेक। २ तकिया।

ढाहना†-क्रि० स० दे० "ढाना"।

ढिंढोरना-क्रि० स० [अनु०] १. मथना। बिलोड़ना। २. हाथ डालकर ढूँढ़ना।

ढिंढोरा-संज्ञा पु० [अनु० ढम+ढोल] १ वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की सूचना दी जाती है। डुगडुगिया। २. वह सूचना जो ढोल बजाकर दी जाय। घोषणा। मुनादी।

ढिग-क्रि० वि० [सं० दिक्] पास। निकट।
संज्ञा स्त्री० १ पास। सामीप्य। २. तट। किनारा। छोर। ३. कपड़े का किनारा। कोर। हाशिया।

ढिठाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीठ] १. गुरु जनों

के समच व्यवहार की अनुचित स्वच्छंदता। धृष्टता। गुस्ताख़ी। २. निर्लज्जता। ३. अनुचित साहस।

ढिवरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० डिब्बी] वह डिबिया जिसके मुँह पर बत्ती लगाकर मिट्टी का तेल जलाते हैं।
संज्ञा स्त्री० [हिं० ढपना] कसे जानेवाले पेच के सिरे पर का लोहे का छल्ला।

ढिमका–सर्व० [हिं० अमका का अनु०] [स्त्री० ढिमकी] अमुक। फ़लाँ। फलाना।

ढिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीला] १. ढीला होने का भाव। २. शिथिलता। सुस्ती। संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीलना] ढीलने की क्रिया या भाव।

ढिलाना–क्रि० स० [हिं० ढीलना का प्रे०] १. ढीलने का काम कराना। २. ढीला कराना।
†क्रि० स० ढीला करना।

ढिसरना†–क्रि० अ० [सं० ध्वसन] १. फिसल पड़ना। सरक पड़ना। २. प्रवृत्त होना। झुकना।

ढींगर†–संज्ञा पु० [सं० डिंगर] १. हट्टा-कट्टा आदमी। २. पति या उपपति।

ढींढ़†–संज्ञा पु० [सं० ढुंढि = लंबोदर, गणेश] १. निकला हुआ पेट। २. गर्भ। हमल।

ढींट–संज्ञा स्त्री० [देश०] रेखा। लकीर।

ढीठ–वि० [सं० धृष्ट] १. बड़ों का संकोच या डर न रखनेवाला। धृष्ट। बेअदब। शोख़। २. अनुचित साहस करनेवाला। निडर। ३. साहसी। हिम्मतवर।

ढीठता†–संज्ञा स्त्री० दे० "ढिठाई"।

ढीठ्यो–संज्ञा पुं० दे० "ढीठ"।

ढीम†–संज्ञा पु० [देश०] १. पत्थर का बड़ा टुकड़ा या ढोंका। २. मिट्टी की पिंडी।

ढील–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीला] १. शिथिलता। अतत्परता। सुस्ती। २. बंधन को ढीला करने का भाव।
† संज्ञा पु० बालों का कीड़ा। जूँ।

ढीलना–क्रि० स० [हिं० ढीला] १. कसा या तना हुआ न रखना। ढीला करना। २. बंधन-मुक्त करना। छोड़ देना। ३. (रस्सी आदि) इस प्रकार छोड़ना जिसमें वह आगे की ओर बढ़ती जाय।

ढीला–वि० [सं० शिथिल] १. जो कसा या तना हुआ न हो। २. जो दृढ़ता से बँधा या लगा हुआ न हो। ३. जो ख़ूब कसकर पकड़े हुए न हो। ४. खुला हुआ। फ़राख़। कुशादा। ५. जो गाढ़ा न हो। बहुत गीला। ६. जो अपने संकल्प पर अड़ा न रहे। ७. धीमा। शांत। नरम। ८. मंद। सुस्त। शिथिल।
मुहा०—ढीली आँख = मद भरी चितवन। ९. सुस्त। आलसी।

ढीलापन–संज्ञा पु० [हिं० ढीला + पन (प्रत्य०)] ढीला होने का भाव। शिथिलता।

ढुँढा†–संज्ञा पु० [हिं० ढूँढना] उचक्का। ठग।

ढुंढपाणि–संज्ञा पु० [सं० दंडपाणि] १. शिव के एक गण। २. दंडपाणि भैरव।

ढुँढवाना–क्रि० स० [हिं० ढूँढना का प्रे०] ढूँढ़ने का काम कराना। तलाश करना।

ढुंढा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की बहिन थी।

ढुंढिराज–संज्ञा पु० [सं०] गणेश।

ढुढी–संज्ञा स्त्री० [देश०] बाँह। मुश्क।
मुहा०—ढुँढियाँ चढ़ाना = मुश्कें बाँधना।

ढुकना– क्रि० अ० [देश०] १. घुसना। प्रवेश करना। २. एकबारगी धावा करना। टूट पड़ना। ३. कोई बात सुनने या देखने के लिये आड़ में छिपना।

ढनमुनिया†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढनमनाना] लुढ़कने की क्रिया या भाव।

ढुरकना†–क्रि० अ० [हिं० ढार] १. फिसलकर गिरना। लुढ़कना। २. झुकना।

ढरना–क्रि० अ० [हिं० ढार] १. गिरकर बहना। ढुरकना। लुढ़ना। २. कभी इधर कभी उधर होना। डगमगाना। ३. सूत या रस्सी के रूप की वस्तु का इधर-उधर हिलना। लहराना। ४. लुढ़कना। फिसल पड़ना। ५. प्रवृत्त होना। झुकना। ६. अनुकूल होना। प्रसन्न होना।

ढुरहुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढुरना] १. लुढ़कने की क्रिया या भाव। २. पगडंडी।

ढुराना–क्रि० स० [हिं० ढुरना] १. [illegible] बहाना। ढुरकाना। ढुलकाना। २. [illegible] धर हिलाना। लहराना। ३. लुढ़

ढुर्री–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढुरना] पगडंडी

ढुलकना–क्रि० अ० [हिं० ढाल (प्रत्य०)] ऊपर नीचे चक्कर [illegible]

गिरना। लुढ़कना।

ढुलकाना–क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।

ढुलना–क्रि० अ० [हिं० ढाल] १. गिरकर बहना। लुढ़कना। २ प्रवृत्त होना। झुकना। ३ प्रसन्न होना। कृपालु होना। ४ इधर से उधर हिलना। लहराना।

ढुलवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोना] ढोने का काम, भाव या मज़दूरी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ढुलना] ढुलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ढुलवाना–क्रि० स० [हिं० ढोना का प्रे०] ढोने का काम दूसरे से कराना।

ढुलाना–क्रि० स० [हिं० ढाल] १. गिराकर बहाना। ढरकाना। ढालना। २ नीचे ढालना। गिराना। ३ लुढ़काना। ढँगलाना। ४. प्रवृत्त करना। झुकाना। ५ अनुकूल करना। प्रसन्न करना। कृपालु करना। ६ इधर उधर डुलाना। ७ चलाना। फिराना। ८ फेरना। पोतना।

क्रि० स० [हिं० ढोना] ढोने का काम कराना।

ढूँढ़–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढूँढ़ना] खोज। तलाश।

ढूँढ़ना–क्रि० स० [सं० ढुंढन] खोजना। तलाश करना।

ढूसर–संज्ञा पु० [देश०] बनियों की एक जाति। भागव।

ढूह, ढूहा†–संज्ञा पु० [सं० स्तूप] १. ढेर। अटाला। २. टीला। भीटा।

ढेंक–संज्ञा स्त्री० [सं० ढेक] पानी के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया।

ढेंकली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेंक (चिड़िया)] १ सिंचाई के लिये कूएँ से पानी निकालने का एक यंत्र। २ धान कूटने का लकड़ी का एक यंत्र। धन कुट्टी। ढेंकी। ३. कलाबाजी। कलैया।

ढेंकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेंक=एक पक्षी] अनाज कूटने की ढेंकली।

ढेंढ़†–संज्ञा पु० [देश०] १. कौवा। २. एक नीच जाति। ३. मूर्ख। मूढ़।

संज्ञा पु० [सं० तुंड] कपास आदि का डोंडा। ढोंढ़।

ढेंढर–संज्ञा पु० [हिं० ढेढ] आँख के डेले का निकला हुआ विकृत मांस। टेंटर।

ढेपुनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेप] १. पत्ते या फल का वह भाग जो टहनी से लगा रहता है। ढेंप। २ दाने की तरह उभरी हुई नोक। ठोंठ। ३. कुचाग्र।

ढेबुआ†–संज्ञा पु० [देश०] पैसा।

ढेर–संज्ञा पु० [हिं० धरना ?] नीचे ऊपर रखी हुई बहुत सी वस्तुओं का ऊपर उठा हुआ समूह। राशि। अटाला। अंबार।

मुहा०—ढेर करना=मार डालना। ढेर हो रहना या जाना=१. गिरकर मर जाना। २. थककर चूर हो जाना।

† वि० बहुत। अधिक। ज्यादा।

ढेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेर] ढेर। राशि।

ढेलवाँस–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेल+सं० पाश] रस्सी का वह फंदा जिससे ढेला फेंकते हैं। गोफना।

ढेला–संज्ञा पु० [सं० दल] १. ईंट, कंकड़, पत्थर आदि का टुकड़ा। चक्का। २. टुकड़ा। खंड। ३ एक प्रकार का धान।

ढेला चौथ–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेला+चौथ] भादों सुदी चौथ। (लोग इस दिन दूसरों पर ढेले फेंकते हैं।)

ढैया–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढाई] १ ढाई सेर तौलने का बटखरा। २. ढाई गुने का पहाड़ा।

ढोंग–संज्ञा पु० [हिं० ढंग] ढकोसला। पाखंड।

ढोंगबाज़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोंग+फा० बाज़ी] पाखंड। आडंबर।

ढोंगी–वि० [हिं० ढोंग] पाखंडी। ढकोसलेबाज़।

ढोंढ़–संज्ञा पु० [सं० तुंड] १ कपास, पोस्ते आदि का डोंडा। २. कली।

ढोंढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोंढ़] नाभि।

ढोटा–संज्ञा पु० [सं० दुहितृ=लड़की] [स्त्री० ढोटी] १. पुत्र। बेटा। २. लड़का।

ढोटौना†–संज्ञा पु० दे० "ढोटा"।

ढोना–क्रि० स० [सं० वोढ] १. बोझ लादकर ले जाना। भार ले चलना। २. उठा ले जाना। ३. निर्वाह करना।

ढोर–संज्ञा पु० [हिं० ढुरना] गाय, बैल, भैंस आदि पशु। चौपाया। मवेशी।

ढोरना*†–क्रि० स० [हिं० ढारना] १. ढरकाना। ढालना। २ लुढ़काना।

ढोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोरना] १ ढालने या ढरकाने की क्रिया या भाव। २. रट। धुन। लौ। लगन।

ढोल–संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रकार का

बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है।
मुहा०—ढोल पीटना या बजाना=चारों ओर कहते या बताते फिरना।
२. कान का परदा।
ढोलक—संज्ञा स्त्री० [सं० ढोल] छोटा ढोल।
ढोलना—संज्ञा पु० [हिं० ढोल] १. ढोलक के आकार का छोटा जंतर। २. ढोल के आकार का बड़ा बेलन जिससे सड़क पीटते हैं।
† क्रि० स० [सं० दोलन] १. ढरकाना। ढालना। २. डुलाना।
ढोलनी—संज्ञा स्त्री० [सं० दोलन] बच्चों का झूला। पालना।
ढोला—संज्ञा पु० [हिं० ढोल] १ एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो सड़ी हुई वस्तुओं में पड़ जाता है। २. हद का निशान। ३. पिंड। शरीर। देह। ४. प्यारा। प्रियतम। ५. एक प्रकार का गीत।
ढोलिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोलिया] ढोल बजानेवाली स्त्री। डफालिन।
ढोलिया—संज्ञा पु० [हिं० ढोल] [स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला।
ढोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोल] २०० पानों की गड्डी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठोली] हँसी। ठठोली।
ढोव—संज्ञा पु० [हिं० ढोवना] वह पदार्थ जो मंगल के अवसर पर लोग सरदार या राजा को भेंट करते हैं। डाली। नजर।
ढौंचा—संज्ञा पु० [सं० अर्द्ध+हिं० चार] साढ़े चार का पहाड़ा।
ढौंसना—क्रि० अ० [हिं० धौंस] आनंद ध्वनि करना।
ढौरी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] रट। धुन।

ण

ण—हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का पंद्रहवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
ण—संज्ञा पु० [सं०]१. एक बुस। २ आभूषण। ३. निर्णय। ४. ज्ञान। ५. शिव। ६. दान। ७. दे० "णगण"।
णगण—संज्ञा पु० [सं०] दो मात्राओं का एक गण।

त

त—संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन, वर्ण का १६ वाँ और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दंत है।
त—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नाव। २. पुण्य।
तंग—संज्ञा पु० [फा०] घोड़ों की ज़ीन कसने का तसमा। कसन।
वि० १. कसा। दृढ़। २. दिक। विकल। हैरान। ३. सिकुड़ा हुआ। संकुचित। ४. चुस्त। छोटा।
मुहा०—तंग आना या होना=घबरा जाना। दुःखी होना। तंग करना=सताना। दुःख देना। हाथ तंग होना=धनहीन होना।
तंगदस्त—वि० [फा०] [संज्ञा तंगदस्ती] १. कंजूस। २. ग़रीब।
तंगहाल—वि० [फा०] १ निर्धन। ग़रीब। २. विपद्ग्रस्त।
तंगा—संज्ञा पु० [देश०] १. एक प्रकार का पेड़। २. अधन्ना। डबल पैसा।
तंगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. तंग या सँकरे होने का भाव। संकीर्णता। संकोच। २. दुःख। तकलीफ़। ३. निर्धनता। ग़रीबी। ४. कमी।
तंजेब—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।
तंड—संज्ञा पु० [सं० तांडव] नृत्य। नाच।
तंडव—संज्ञा पु० दे० "तांडव"।
तंडुल—संज्ञा पु० [सं०] चावल।
तंतः†—संज्ञा पु० दे० "तंतु"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरत] आतुरता ।
संज्ञा पु० दे० "तत्व" ।
संज्ञा पु० [सं० तंत्र] १. वह बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हों। जैसे, सितार या सारंगी । २. क्रिया । ३. तर्क-शास्त्र । ४. इच्छा । कामना । ५. दे० "तंत्र" ।
वि० जो तौल में ठीक हो ।

तंतमंत–संज्ञा पु० दे० "तंत्रमंत्र" ।

तंतरी†–संज्ञा पु० [सं० तंत्री] वह जो तारवाले बाजे बजाता हो ।

तंतु–संज्ञा पु० [सं० तन्तु] १. सूत । डोरा । तागा । २. ग्राह । ३. संतान । बाल बच्चे । ४. विस्तार । फैलाव । ५. यज्ञ की परंपरा । ६. वंशपरंपरा । ७. तांत । ८. मकड़ी का जाला ।

तंतुवादक–संज्ञा पु० [सं०] बीन आदि तार के बाजे बजानेवाला । तंत्री ।

तंतुवाय–संज्ञा पु० [सं०] कपड़े बुननेवाला । तांती ।

तंत्र–संज्ञा पु० [सं०] १. तंतु । तांत । २. सूत । ३. जुलाहा । ४. कपड़ा । वस्त्र । ५. कुटुंब का भरण पोषण । ६. निश्चित सिद्धांत । ७. प्रमाण । ८. औषध । दवा । ९ झाड़ने फूँकने का मंत्र । १०. कार्य्य । ११. कारण । १२. राजकर्मचारी । १३. राज्य का प्रबंध । १४. सेना । फ़ौज । १५. धन । सम्पत्ति । १६. अधीनता । परवश्यता । १७. कुल । खानदान । १८. हिंदुओं का उपासना संबंधी एक शास्त्र जो शिव-प्रणीत माना और गुप्त रखा जाता है ।

तंत्रण–संज्ञा पु० [सं०] शासन या प्रबंध आदि करने का काम ।

तंत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार । २. गुरुच । ३. शरीर की नस । ४. रस्सी । ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हो । तंत्र । ६. वीणा ।
संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बाजा बजाता हो ।

तंदरा:†–संज्ञा स्त्री० दे० "तंद्रा" ।

तंदुरुस्त–वि० [फा०] जिसे कोई रोग या बीमारी न हो । नीरोग । स्वस्थ ।

तंदुरुस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नीरोग होने की अवस्था या भाव । २. स्वास्थ्य ।

तंदुल:†–संज्ञा पु० दे० "तंडुल" ।

तंदूर–संज्ञा पु० [फा० तनूर] भट्ठी की तरह का रोटी पकाने का मिट्टी का बहुत बड़ा, गोल पात्र ।

तँदूरी–वि० [हिं० तदूर] तंदूर में बना हुआ ।

तंदेही–संज्ञा स्त्री० [फा० तनदिही] १. परिश्रम । मेहनत । २. प्रयत्न । कोशिश । ३. चेतावनी । ताकीद ।

तंद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह अवस्था जिसमें नींद मालूम पड़ने के कारण मनुष्य कुछ कुछ सो जाय । ऊँघाई । ऊँघ । २. हलकी बेहोशी ।

तंद्रालु–वि० [सं०] जिसे तंद्रा आती हो ।

तबा–संज्ञा पु० [फा० तबान] चौड़ी मोहरी का एक प्रकार का पायजामा ।

तंबाकू–संज्ञा पु० दे० "तमाकू" ।

तँबिया–संज्ञा पु० [हिं० ताँबा+इया (प्रत्य०)] ताँबे या और किसी चीज़ का बना हुआ छोटा तसला ।

तँबियाना–क्रि० अ० [हिं० ताँबा] १. ताँबे के रंग का होना । २. ताँबे के बरतन में रहने के कारण किसी पदार्थ में ताँबे का स्वाद या गंध आ जाना ।

तंबीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नसीहत । शिक्षा । २. ताकीद ।

तंबू–संज्ञा पु० [हिं० तनना] कपड़े, टाट आदि का बना हुआ बड़ा घर । खेमा । डेरा । शिविर । शामियाना ।

तंबूरची–संज्ञा पु० [फा० तंबूर+ची (प्रत्य०)] तंबूरा बजानेवाला ।

तंबूरा–संज्ञा पु० [हिं० तानपूरा] बीन या सितार की तरह का एक बाजा । तानपूरा ।

तंबूल:†–संज्ञा पु० दे० "तांबूल" ।

तंबोल–संज्ञा पु० [सं० तांबूल] १. दे० "तांबूल" । २. दे० "तमोल" ।

तँबोली–संज्ञा पु० [हिं० तंबोल] वह जो पान बेचता हो । बरई ।

तंभ, तंभन:–संज्ञा पु० [सं० स्तंभ] शृंगार रस में स्तंभ नामक भाव ।

त–संज्ञा पु० [सं०] १. नाव । २. पुण्य । ३. चोर । ४. झूठ । ५. दुम । ६. गोद । ७. म्लेच्छ । ८. गर्भ । ९. रत्न । १०. बुद्ध ।
:†–क्रि० वि० [सं० तद्] तो ।

तअज्जुब–संज्ञा पु० [अ०] आश्चर्य । विस्मय । अचंभा ।

तअल्लुकः–संज्ञा पुं० [अ०] बहुत से मौज़ों की ज़मींदारी। बड़ा इलाक़ा।
तअल्लुकःदार–संज्ञा पुं० [अ०] इलाके-दार। तअल्लुके का मालिक।
तअल्लुकःदारी–संज्ञा स्त्री० [अ०] तअ-ल्लुकःदार का पद या भाव।
तअल्लुक–संज्ञा पुं० [अ०] संबंध।
तअल्लुका–संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुकः"।
तअस्सुब–संज्ञा पुं० [अ०] धर्म या जाति संबंधी पक्षपात।
तइसा†–वि० दे० "वैसा"।
तइँ–प्रत्य० [हिं० तें] से।
प्रत्य० [प्रा० हुतो] प्रति। को। से।
अव्य० [सं० तावत्] लिये। वास्ते।
तई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तवा का स्त्री०] थाली के आकार की छिछली कड़ाही।
तउ†–अव्य० १. दे० "तब"। २. दे० "त्यों"।
तऊ†–अव्य० [हिं० तव+ऊ (प्रत्य०)] तो भी। तथापि। तिस पर भी।
तक–अव्य० [सं० अत+क] एक विभक्ति जो किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करती है। पर्यंत।
संज्ञा स्त्री० दे० "टक"।
तक़दमा–संज्ञा पुं० [अ० तक़मीना] किसी चीज की तैयारी का वह हिसाब जो पहले से तैयार किया जाय। तख़मीना। अंदाज़।
तक़दीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।
तक़दीरवर–वि० [अ० तक़दीर+फ़ा० वर] जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्।
तकन–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना] ताकने की क्रिया या भाव। देखना। दृष्टि।
तकना †–क्रि० अ० [हिं० ताकना] १. देखना। निहारना। अवलोकन करना। २ शरण लेना। पनाह लेना।
तकमा†–संज्ञा पुं० १. दे० "तमगा"। २. दे० "तुकमा"।
तकमील–संज्ञा स्त्री० [अ०] पूरा होने की क्रिया या भाव। पूर्णता।
तकरार–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी बात को बार-बार कहना। २. हुज्जत। विवाद। झगड़ा। टंटा।
तक़रीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बातचीत। २. वक्तृता। भाषण।
तकला–संज्ञा पुं० [सं० तर्कु] [स्त्री० अल्पा० तकली] १. चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर सूत लिपटता जाता है। टेकुआ। २. रस्सी बनाने की टिकुरी।
तकलीफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कष्ट। क्लेश। दुःख। २. विपत्ति। मुसीबत।
तकल्लुफ़–संज्ञा पुं० [अ०] केवल दिखाने के लिये कष्ट उठाकर कोई काम करना। शिष्टाचार।
तक़सीम–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। २. गणित में वह क्रिया जिससे कोई संख्या कई भागों में बाँटी जाय। भाग।
तकाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना+ई (प्रत्य०)] ताकने की क्रिया या भाव।
तक़ाज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १. ऐसी चीज माँगना जिसके पाने का अधिकार हो। तगादा। २. ऐसा काम करने के लिये कहना जिसके लिये वचन मिल चुका हो। ३. उत्तेजना। प्रेरणा।
तकाना–क्रि० स० [हिं० ताकना का प्रे०] दूसरे को ताकने में प्रवृत्त करना। दिखाना।
तकावी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह धन जो गरीब खेतिहरों को बीज खरीदने या कुआँ आदि बनवाने के लिये क़र्ज़ दिया जाय।
तकिया–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कपड़े का वह थैला जिसमें रूई, पर आदि भरते हैं और जिसे लेटने के समय सिर के नीचे रखते हैं। बालिश। २. पत्थर की वह पटिया आदि जो रोक या सहारे के लिये लगाई जाती है। मुतका। ३. विश्राम करने का स्थान। ४. आश्रय। सहारा। आसरा। ५. वह स्थान जहाँ कोई मुसल-मान फ़क़ीर रहता हो।
तकिया कलाम–संज्ञा पुं० दे० "सखुन तकिया"।
तकुआ–संज्ञा पुं० दे० "तकला"।
तक्र–संज्ञा पुं० [सं०] मट्ठा। छाछ।
तक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] रामचंद्र के भाई भरत का बड़ा पुत्र।
तक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाताल के आठ नागों में से एक जिसने परीक्षित को काटा था। २. आज-कल के विद्वानों के अनुसार भारत में बसनेवाली एक प्राचीन अनार्य जाति। इनका जातीय चिह्न सर्प था। ३. साँप। सर्प। ४. विश्वकर्मा।

५. सूत्रधार। ६. एक संकर जाति।
तक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] लकड़ी, पत्थर आदि गढ़कर मूर्त्तियाँ बनाना।
तक्षशिला-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बहुत प्राचीन नगरी जो भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी थी। हाल में यह नगर रावलपिंडी के पास ज़मीन खोदकर निकाला गया है। जनमेजय ने यहीं सर्प-यज्ञ किया था।
तख़फ़ीफ़-संज्ञा स्त्री० [अ०] कमी।
तख़मीनन्-क्रि० वि० [अ०] अंदाज से।
तख़मीना-संज्ञा पुं० [अ०] अंदाज। अनुमान। अटकल।
तख़्त-संज्ञा पुं० [फा०] १. राजा के बैठने का आसन। सिंहासन। २. तख़्तों की बनी हुई बड़ी चौकी।
तख़्त ताऊस-संज्ञा पुं० [फा० + अ०] मोर के आकार का एक प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था।
तख़्तनशीन-वि० [फा०] जो राजसिंहासन पर बैठा हो। सिंहासनारूढ़।
तख़्तपोश-संज्ञा पुं० [फा०] १. तख़्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २. चौकी।
तख़्तबंदी-संज्ञा स्त्री० [फा०] तख़्तों की बनी हुई दीवार।
तख़्ता-संज्ञा पुं० [फा० तख़्त.] १. लकड़ी का लंबा चौड़ा और चौकोर टुकड़ा। बड़ा पटरा। पल्ला।
मुहा०—तख़्ता उलटना = बना बनाया काम बिगाड़ना। तख़्ता हो जाना = अकड़ जाना।
२. लकड़ी की बड़ी चौकी। तख़्त। ३. अरथी। टिकटी। ४. कागज़ का ताव। ५. बाग़ की कियारी।
तख़्ती-संज्ञा स्त्री० [फा० तख़्त] १. छोटा तख़्ता। २. काठ की पटरी जिस पर लड़के लिखने का अभ्यास करते हैं। पटिया।
तगड़ा-वि० [हिं० तन + कड़ा] [स्त्री० तगड़ी] १. सबल। बलवान्। मज़बूत। २. अच्छा और बड़ा।
तगण-संज्ञा पुं० [सं०] तीन वर्णों का वह समूह जिसमें पहले दो गुरु और तब एक लघु वर्ण होता है। (पिंगल)
तगदमा-दे० "तिरदमा"।
तगमा-संज्ञा पुं० दे० "तमगा"।
तगर-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत सुगंधित होती और औषध के काम में आती है।
तगला-संज्ञा पुं० दे० "तकला"।
तगा†-संज्ञा पुं० दे० "तागा"।
तगाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० तागना] तागने का काम, भाव या मज़दूरी।
तगादा-संज्ञा पुं० दे० "तकाज़ा"।
तगार,तगारी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. उखली गाड़ने का गड्ढा। २. चूना, गारा इत्यादि ढोने का तसला। ३. वह स्थान जहाँ चूना, गारा आदि बनाया जाय।
तग़ीर*-संज्ञा पुं० [अ० तग़य्युर] बदलने की क्रिया या भाव। परिवर्त्तन।
तग़ीरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तग़ीर] परिवर्त्तन।
तचना†-क्रि० अ० दे० "तपना"।
तचा†-संज्ञा स्त्री० [सं० त्वचा] चमड़ा। खाल।
तचाना-क्रि० स० [हिं० तपाना] १. तपाना। तप्त करना। २. संतप्त या दुःखी करना।
तच्छिन*-क्रि० वि० [सं० तत्क्षण] उसी समय। तत्काल।
तज-संज्ञा पुं० [सं० त्वच्] १. दारचीनी की जाति का मझोले कद का एक सदाबहार पेड़। बाज़ारों में मिलनेवाला तेजपत्ता इसका पत्ता और तज (लकड़ी) इसकी छाल है। २. इस पेड़ की सुगंधित छाल जो औषध के काम में आती है।
तज़किरा-संज्ञा पुं० [अ०] चर्चा। ज़िक्र।
तजन*†-संज्ञा पुं० [सं० त्यजन] तजने की क्रिया या भाव। त्याग। परित्याग।
संज्ञा पुं० [सं० तर्जन] कोड़ा। चाबुक।
तजना-क्रि० स० [सं० त्यजन] त्यागना।
तजरबा-संज्ञा पुं० [अ०] १. वह ज्ञान जो परीक्षा द्वारा प्राप्त किया जाय। अनुभव। २. वह परीक्षा जो ज्ञान प्राप्त करने के लिये की जाय।
तजरबाकार-संज्ञा पुं० [अ० तजरबा + फा० कार] जिसने तजरबा किया हो।
तजवीज़-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सम्मति। राय। २. फ़ैसला। निर्णय। ३. बंदोबस्त।
तज्ञ-वि० [सं०] १. तत्त्व का जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। २. ज्ञानी।
तटंक-संज्ञा पुं० दे० "ताटंक"।
तट-संज्ञा पुं० [सं०] १. क्षेत्र। खेत। २. प्रदेश। ३. तीर। किनारा। कूल।
क्रि० वि० समीप। पास। निकट।
तटका-वि० दे० "टटका"।

तटनी*-संज्ञा स्त्री० [सं० तटिनी] (तटवाली) नदी। सरिता। दरिया।

तटस्थ-वि० [सं०] १. तट या किनारे पर रहनेवाला। २. निकट रहनेवाला। ३. अलग रहनेवाला। जो किसी का पक्ष ग्रहण न करे। उदासीन। निरपेक्ष।

तटिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

तड़-संज्ञा पुं० [सं० तट] एक ही जाति या समाज में होनेवाला विभाग। पक्ष।
संज्ञा पुं० [अनु०] १. कोई चीज़ पटकने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। २. आमदनी की सूरत। (दलाल)

तड़क-संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़कना] १ तड़कने की क्रिया या भाव। २. तड़कने के कारण किसी चीज़ पर पड़ा हुआ चिह्न।

तड़कना-क्रि० अ० [अनु० तड़] १. 'तड़' शब्द के साथ फटना, फूटना या टूटना। चटकना। कड़कना। २. किसी चीज़ का सूखने आदि के कारण फट जाना। ३. ज़ोर का शब्द करना। ४ बिगड़ना। झुँझलाना। ५ उछलना। कूदना।

तड़का-संज्ञा पुं० [हिं० तड़कना] १. सबेरा। सुबह। प्रातःकाल। २. छौंक। बघार।

तड़काना-क्रि० स० [हिं० तड़कना का स०रूप] १. इस तरह से तोड़ना जिससे 'तड़' शब्द हो। २. ज़ोर का शब्द उत्पन्न करना।

तड़क्का†-क्रि० वि० दे० "तड़ाका"।

तड़तड़ाना-क्रि० अ० [अनु०] तड़ तड़ शब्द होना।
क्रि० स० तड़ तड़ शब्द उत्पन्न करना।

तड़प-संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़पना] १. तड़पने की क्रिया या भाव। २. चमक। भड़क।

तड़पना-क्रि० अ० [अनु०] १. अधिक वेदना के कारण व्याकुल होना। छट-पटाना। तलमलाना। २. घोर शब्द करना। गरजना।

तड़पाना-क्रि० स० [हिं० तड़पना का स० रूप] दूसरे को तड़पने में प्रवृत्त करना।

तड़फना-क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

तड़बंदी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तड़ + फा० बंदी] समाज या बिरादरी में अलग अलग तड़ या विभाग बनना।

तड़ाक-संज्ञा स्त्री० [अनु०] तड़ाके का शब्द।
क्रि० वि० १. 'तड़' या 'तड़ाक' शब्द के सहित। २. जल्दी से। चटपट। तुरंत।
यौ०—तड़ाक पड़ाक = चटपट। तुरंत।

तड़ाका-संज्ञा पुं० [अनु०] "तड़" शब्द। क्रि० वि० चटपट।

तड़ाग-संज्ञा पुं० [सं०] पद्मादियुक्त सर। तालाब। सरोवर। ताल। पुष्कर।

तड़ातड़-क्रि० वि० [अनु०] इस प्रकार जिसमें तड़ तड़ शब्द हो।

तड़ाना-क्रि० स० [हिं० ताड़ना का प्रे०] किसी दूसरे को ताड़ने में प्रवृत्त करना। भँपाना।

तड़ावा-संज्ञा पुं० [हिं० तड़ाना] १. ऊपरी तड़क भड़क। २. धोखा। छल। (क्व०)

तड़ित-संज्ञा स्त्री० [सं० तडित्] बिजली।

तड़िता-संज्ञा स्त्री० दे० "तड़ित"।

तड़ी-संज्ञा स्त्री० [तड़ से अनु०] १. चपत। धौल। २. धोखा। छल। (दलाल) ३. बहाना। हीला।

तत्-संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म। परमात्मा। २ वायु। हवा।
सर्व० उस। जैसे—तत्काल, तत्क्षण।

तत-संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। २. विस्तार। ३. पिता। ४. पुत्र। ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हों। जैसे—सारंगी, सितार आदि।
*†-वि० [सं० तप्त] तपा हुआ। गरम।
*†-संज्ञा पुं० दे० "तत्त्व"।

ततथेई-संज्ञा स्त्री० [अनु०] नृत्य का शब्द। नाच के बोल।

ततबाउ*†-संज्ञा पुं० दे० "तंतुवाय"।

ततबीर*†-संज्ञा स्त्री० दे० "तदबीर"।

ततसार†-संज्ञा स्त्री० [सं० तप्तशाला] आँच देने या तपाने की जगह।

तताई*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० तत्ता] गरमी।

ततारना-क्रि० स० [हिं० तत्ता] १. गरम जल से धोना। २. तरेरा देकर धोना।

तति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रेणी। पंक्ति। ताँता। २. समूह। ३. विस्तार।

ततुवाऊ*†-संज्ञा पुं० दे० "तंतुवाय"।

ततैया-संज्ञा स्त्री० [सं० तिक्त] बर्रे। भिड़।

तत्काल-क्रि० वि० [सं०] तुरंत। फ़ौरन।

तत्कालीन-वि० [सं०] उस समय का।

तत्क्षण-क्रि० वि० [सं०] उसी समय। तुरंत। फ़ौरन।

तत्त*†-संज्ञा पुं० दे० "तत्त्व"।

पदार्थ का गुण ग्रहण कर लेना वर्णित होता है।

तद्धित-संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत में लगाकर शब्द बनाते हैं। जैसे—'मित्र' से 'मित्रता'।

तद्भव-संज्ञा पुं० [सं०] संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप भाषा में कुछ परिवर्त्तित हो गया हो। संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप। जैसे—'अश्रु' का 'आँसू'।

तद्यपि-अव्य० [सं०] तथापि। तो भी।

तद्रूप-वि० [सं०] समान। सदृश।

तद्रूपता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सादृश्य। समानता।

तद्वत्-वि० [सं०] उसी के जैसा। उसके समान। ज्यों का त्यों।

तन-संज्ञा पुं० [सं० तनु] शरीर। देह। गात। **मुहा०**—तन को लगना=१. हृदय पर प्रभाव पड़ना। जी में बैठना। २. (खाद्य पदार्थ का) शरीर को पुष्ट करना। तन देना=ध्यान देना। मन लगाना। तन मन मारना=इंद्रियों को वश में रखना।

क्रि० वि० तरफ़। ओर।

* वि० दे० "तनिक"।

तनक़ीह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जाँच। तहक़ीक़ात। २. अदालत का किसी मुक़दमे की उन बातों का पता लगाना जिनका फ़ैसला होना ज़रूरी हो।

तनख़ाह-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तन,ख़्वाह] वेतन। तलब।

तनगना† -क्रि० अ० दे० "तिनकना"।

तनज़ेब-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार की बहुत महीन और बढ़िया मलमल।

तनज़्ज़ुल-वि० [अ०] उन्नत का उलटा। अवनत। उतारा या घटाया हुआ।

तनज़्ज़ुली-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अवनति।

तनतनाना-क्रि० अ० [अ० तनूतनः] १. शान दिखाना। २. क्रोध करना।

तनत्राण-संज्ञा पुं० दे० "तनुत्राण"।

तनधर-संज्ञा पुं० दे० "तनुधारी"।

तनना-क्रि० अ० [सं० तन या तनु] १. खिंचाव या ख़ुश्की आदि के कारण किसी पदार्थ का विस्तार बढ़ना। २. आकर्षित या प्रवृत्त होना। ३. अकड़कर सीधा खड़ा होना। ४. कुछ अभिमानपूर्वक रुष्ट या उदासीन होना। ऐंठना।

तनपात-संज्ञा पुं० दे० "तनुपात"।

तनमय-वि० दे० "तन्मय"।

तनय-संज्ञा पुं० [सं०] बेटा। पुत्र।

तनया-संज्ञा स्त्री० [सं०] बेटी। पुत्री।

तनराग-संज्ञा पुं० दे० "तनुराग"।

तनरुह*†-संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह"।

तनवाना-क्रि० स० [हिं० तानना का प्रे०] तानने का काम दूसरे से कराना। तनाना।

तनसुख-संज्ञा पुं० [हिं० तन+सुख] एक प्रकार का बढ़िया फूलदार कपड़ा।

तनहा-वि० [फ़ा०] जिसके संग कोई न हो। अकेला। एकाकी।

क्रि० वि० बिना किसी साथी के। अकेले।

तनहाई-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. तनहा होने की दशा या भाव। अकेलापन। २ एकांत।

तना-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वृक्ष का ज़मीन से ऊपर निकला हुआ वह भाग जिसमें डालियाँ न निकली हों। पेड़ का धड़। मंदल।

क्रि० वि० [हिं० तन] ओर। तरफ़।

तनाकु †-क्रि० वि० दे० "तनिक"।

तनाज़ा-संज्ञा पुं० [अ०] १. बखेड़ा। झगड़ा। २. शत्रुता। वैर।

तनाना-क्रि० स० दे० "तनवाना"।

तनाब-संज्ञा स्त्री० [अ० तिनाब] खेमे की रस्सी।

तनाव-संज्ञा पुं० [हिं० तनना] १. तनने का भाव या क्रिया। २. रस्सी। डोरी।

तनि, तनिक-वि० [सं० तनु=अल्प] १. थोड़ा। कम। २. छोटा।

क्रि० वि० ज़रा। टुक।

तनिया†-संज्ञा स्त्री० [हिं० तनी] १. लँगोटी। कौपीन। २. कछनी। जाँघिया। ३. चोली।

तनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तानना] १. डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो अँगरखे आदि में उनका पल्ला बाँधने के लिये लगाया जाता है। बंद। बंधन। २. दे० "तनिया"।

† क्रि० वि० दे० "तनिक"।

तनु-वि० [सं०] १. दुबला पतला। २. थोड़ा। कम। ३. कोमल। नाज़ुक। ४. सुंदर। बढ़िया।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर। देह। बदन। २. चमड़ा। खाल। ३. स्त्री। औरत।

तनुक*†-क्रि० वि० दे० "तनिक"।

तपी–संज्ञा स० [हिं० तप] तपस्वी ।
तपेदिक–संज्ञा पु० [फा० तप+अ० दिक] राजयक्ष्मा । क्षयी रोग ।
तपोधन–संज्ञा पु० [सं०] बड़ा तपस्वी ।
तपोबल–संज्ञा पु० [सं०] तप का प्रभाव या शक्ति ।
तपोभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] तप करने का स्थान । तपोवन ।
तपोलोक–संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार ऊपर के सात लोकों में से छठा लोक ।
तपोवन–संज्ञा पु० [सं०] तपस्वियों के रहने या तपस्या करने के योग्य वन ।
तपोवृद्ध–वि० [सं०] जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो ।
तप्त–वि० [सं०] १ तपाया या तपा हुआ । गरम । उष्ण । २ दुःखित । पीड़ित ।
तप्तकुंड–संज्ञा पु० [सं०] वह प्राकृतिक जल धारा जिसका पानी गरम हो ।
तप्तकृच्छ्र–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो प्रायश्चित्त-स्वरूप किया जाता है ।
तप्तमाष–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की परीक्षा जिससे अपराध आदि के संबंध में किसी के कथन की सत्यता जानी जाती थी।
तप्तमुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शस्त्र, चक्रादि के छापे जो तपाकर वैष्णव लोग अपने अंगों पर दाग लेते हैं ।
तप्पा–संज्ञा पु० दे० "टप्पा" ।
तफ़रीह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ खुशी । प्रसन्नता । २ दिल्लगी । हँसी । ठट्ठा । ३ हवाखोरी । सैर ।
तफसील–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ विस्तृत वर्णन । २ टीका । तशरीह । ३ कैफियत । ब्योरा ।
तफावत–संज्ञा पु० [अ०] १ अंतर । फर्क । २ दूरी । फासिला ।
तब–अव्य० [सं० तदा] १ उस समय । उस वक्त । २ इस कारण । इस वजह से ।
तबक़–संज्ञा पु० [अ०] १ आकाश के वे खंड जो पृथ्वी के ऊपर और नीचे माने जाते हैं । लोक । तल । २ परत । तह । ३ चाँदी, सोने के पत्तरों को पीटकर कागज की तरह बनाया हुआ पतला वरक । ४ चौड़ी और छिछली थाली ।
तबकगर–संज्ञा पु० [अ० तबक+फा० गर] सोने, चाँदी के तबक बनानेवाला । तबकिया ।
तबका–संज्ञा पु० [अ० तबक़] १ खंड । विभाग । २ तह । परत । ३ लोक । तल । ४ आदमियों का गरोह ।
तबकिया–संज्ञा पु० दे० "तबकगर" ।
तबदील–वि० [अ०] [संज्ञा तबदीली] जो बदला गया हो । परिवर्तित ।
तबर–संज्ञा पु० [फा०] १ कुल्हाड़ा । २ कुल्हाड़ी की तरह का एक हथियार ।
तबल–संज्ञा पु० [फा०] १ बड़ा ढोल । २ नगाड़ा । डंका ।
तबलची–संज्ञा पु० [अ० तबल] वह जो तबला बजाता हो । तबलिया ।
तबला–संज्ञा पु० [अ० तबल] ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा । यह बाजा इसी तरह के और दूसरे बाजे के साथ बजाया जाता है जिसे "बायाँ", "ठेका" या "डुग्गी" कहते हैं ।
तबलिया–संज्ञा पु० दे० "तबलची" ।
तबाशीर–संज्ञा पु० [सं० तवक्षीर] बंसलोचन।
तबाह–वि० [फा०] [संज्ञा तबाही] जो बिलकुल खराब हो गया हो । नष्ट । बरबाद ।
तबाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] नाश । बरबादी ।
तबीअत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ चित्त । मन । जी ।
मुहा०—(किसी पर) तबीअत आना । (किसी पर) प्रेम होना । आशिक होना । तबीअत फड़क उठना = चित्त का उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो जाना । तबीअत लगना = १ मन में अनुराग उत्पन्न होना । २ ध्यान लगा रहना ।
२ बुद्धि । समझ । ज्ञान ।
तबीअतदार–वि० [अ० तबीअत+फा० दार] १ समझदार । २ भावुक । रसिक ।
तबीब–संज्ञा पु० [अ०] वैद्य । हकीम ।
तभी–अव्य० [हिं० तब+ही] १ उसी समय । उसी वक्त । उसी घड़ी । २ इसी कारण । इसी वजह से ।
तमंचा–संज्ञा पुं० [फा०] १ छोटी बंदूक । पिस्तौल । २ वह लंबा पत्थर जो दरवाजों की बगल में लगाया जाता है ।
तम–संज्ञा पु० [सं० तमस] १ अंधकार । अँधेरा । २ राहु । ३ वराह । सूअर । ४ पाप । ५ क्रोध । ६ अज्ञान । ७ कालिख । कालिमा । ८ नरक । ९ मोह । १० सांख्य में प्रकृति का तीसरा गुण जिससे

काम, क्रोध और हिंसा आदि होती है।

तमक-संज्ञा पुं० [हिं० तमकना] १. जोश। उद्वेग। २. तेजी। तीव्रता। ३. क्रोध।

तमकना-क्रि० अ० [अनु०] १. क्रोध का आवेश दिखलाना। २. दे० "तमतमाना"।

तमगा-संज्ञा पुं० [तु०] पदक।

तमचर-संज्ञा पुं० [सं० तमीचर] १. राक्षस। निशाचर। २. उल्लू।

तमचुर*†-संज्ञा पुं० [सं० ताम्रचूड़] मुरगा। कुक्कुट।

तमचोर*†-संज्ञा पुं० दे० "तमचुर"।

तमतमाना-क्रि० अ० [सं० ताम्र] धूप या क्रोध आदि के कारण चेहरा लाल होना।

तमता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तम का भाव। २. अँधेरा। अंधकार।

तमस-संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधकार। २. अज्ञान का अंधकार। ३. पाप। ४. तमसा नदी। टौंस।

तमसा-संज्ञा स्त्री० [सं०] टौंस नदी।

तमस्सुक-संज्ञा पुं० [अ०] वह कागज़ जो ऋण लेनेवाला ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिखकर महाजन को देता है। दस्तावेज।

तमहीद-संज्ञा स्त्री० [अ०] भूमिका।

तमा-संज्ञा पुं० [सं० तमस्] राहु।
संज्ञा स्त्री० रात। रात्रि। रजनी।
संज्ञा स्त्री० [अ० तमअ] लोभ।

तमाकू-संज्ञा पुं० [पुर्त्त० टुबैको] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपों में काम में लाए जाते हैं। २. इस पौधे का पत्ता जिसका व्यवहार लोग अनेक प्रकार से नशे के लिये करते हैं। सुरती। ३. इन पत्तों से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी जिसे चिलम पर जलाकर मुँह से धुआँ खींचते हैं।

तमाखू†-संज्ञा पुं० दे० "तमाकू"।

तमाचा-संज्ञा पुं० [फा० तबान्च] हथेली और उँगलियों से गाल पर किया हुआ प्रहार। थप्पड़। झापड़।

तमादी-संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी बात की मुद्दत या मियाद गुजर जाना।

तमाम-वि० [अ०] १. पूरा। संपूर्ण। कुल। २. समाप्त। खतम।

तमामी-संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार का देशी रेशमी कपड़ा।

तमारि-संज्ञा पुं० [हिं० तम+अरि] सूर्य।
संज्ञा स्त्री० दे० "तँवार"।

तमाल-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बहुत ऊँचा सुंदर सदाबहार वृक्ष। २. तेजपत्ता। ३ काले खैर का वृक्ष। ४. वरुण वृक्ष। ५. एक प्रकार की तलवार।

तमाशबीन-संज्ञा पुं० [अ० तमाश + फा० बीन] १. तमाशा देखनेवाला। २. वेश्यागामी। ऐयाश।

तमाशा-संज्ञा पुं० [अ०] १. वह दृश्य जिसके देखने से मनोरंजन हो। चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २. अद्भुत व्यापार। अनोखी बात।

तमिस्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधकार। अँधेरा। २. क्रोध। गुस्सा।

तमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] रात।

तमीचर-संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

तमीज़-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भले और बुरे को पहचानने की शक्ति। विवेक। २. पहचान। ३. ज्ञान। बुद्धि। ४. अदब। क़ायदा।

तमीश-संज्ञा पुं० [सं० तमी+ईश] चद्रमा।

तमोगुण-संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति के तीन भावों में से एक जो भारी और रुकनेवाला तथा निकृष्ट माना गया है। निकृष्ट कर्म इसी के कारण होते हैं।

तमोगुणी-वि० [सं०] जिसकी वृत्ति में तमोगुण हो। अधम वृत्तिवाला।

तमोघ्न-संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. चंद्रमा। ३. सूर्य। ४. बुद्ध। ५. विष्णु। ६ शिव। ७. ज्ञान। ८. दीपक। दीआ।
वि० जिससे अँधेरा दूर हो।

तमोमय-वि० [सं०] १. तमोगुणयुक्त। २ अज्ञानी। ३ क्रोधी।

तमोर*†-संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] पान।

तमोरी*†-संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।

तमोल*†-संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] १. पान का बीड़ा। २. दे० "तंबोल"।

तमोली-संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।

तमोहर-संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. सूर्य। ३. अग्नि। आग। ४ ज्ञान।
वि० [सं०] १. अंधकार दूर करनेवाला। २. अज्ञान दूर करनेवाला।

तय-वि० [अ०] १. पूरा किया हुआ। निपटाया हुआ। समाप्त। २. निश्चित। ठहराया हुआ। मुकर्रर। ३. निपटाया

थ्रा। निर्णीत। फैसल।
[ना॰]-क्रि॰ अ॰ दे॰ "तपना"।
[ार]॰-वि॰ दे॰ "तैयार"।
ंग-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. पानी की लहर। 'लोर। मौज। २. संगीत में स्वरों का ढ़ाव उतार। स्वरलहरी। ३. चित्त की मंग। मन की मौज।
ंगवती-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] नदी।
ंगिणी-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] नदी।
वि॰ स्त्री॰ तरंगवाली।
ंगित-वि॰ [सं॰] हिलोर मारता या लहराता हुआ। नीचे ऊपर उठता हुआ।
ंगी-वि॰ [सं॰ तरंगित्] [स्त्री॰ तरंगिणी] १. तरंग-युक्त। जिसमें लहर हो। २. मनमौजी।
र-वि॰ [फा॰] १. भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। २. शीतल। ठंढा। ३. जो सूखा न हो। हरा। ४. मालदार।
क्रि॰ वि॰ [सं॰ तल] तले। नीचे।
प्रत्य॰ [सं॰] एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों में लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य (गुण में) सूचित करता है। जैसे—अधिकतर, श्रेष्ठतर।
रई-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ तारा] नक्षत्र।
रक-संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ तड़कना] दे॰ "तड़क"।
संज्ञा पुं॰ [सं॰ तर्क] १. सोच विचार। उधेड़बुन। ऊहापोह। २. सुंदर उक्ति। चतुराई का वचन। चोज की बात।
संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ तर = पथ?] वह शब्द जो पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर आगे के पृष्ठ के आरंभ का शब्द सूचित करने के लिये लिखा जाता है।
तरकना॰-क्रि॰ अ॰ दे॰ "तड़कना"।
क्रि॰ अ॰ [सं॰ तर्क] तर्क करना। सोच-विचार करना।
क्रि॰ अ॰ [अनु॰] उछलना। कूदना।
तरकश-संज्ञा पुं॰ [फा॰] तीर रखने का चोंगा। भाथा। तूणीर।
तरकसी-संज्ञा स्त्री॰ [फा॰ तर्कश] छोटा तरकस। तूणीर।
तरका-संज्ञा पुं॰ [अ॰] वह जायदाद जो किसी मरे हुए आदमी के वारिस को मिले।
तरकारी-संज्ञा स्त्री॰ [फा॰ तर: = सब्जी + कारी] १. वह पौधा जिसकी पत्ती, डंठल, फल आदि पकाकर खाने के काम आते हैं। भाजी। सब्जी। २. खाने के लिये पकाया हुआ फल-फूल, पत्ता आदि। शाक। भाजी। ३. खाने योग्य मांस। (पं॰)
तरकी-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ ताटंक] कान में पहनने का फूल के आकार का एक गहना।
तरकीब-संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] १. मिलान। २. बनावट। रचना। ३. युक्ति। उपाय। ढंग। ढब। ४. रचना-प्रणाली।
तरकुली-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तरकी"।
तरक्की-संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] वृद्धि। उन्नति।
तरखा-संज्ञा पुं॰ [सं॰ तरंग] जल का तेज बहाव। तीव्र प्रवाह।
तरखान-संज्ञा पुं॰ [सं॰ तक्षण] बढ़ई।
तरछाना॰-क्रि॰ अ॰ [हिं॰ तिरछा] तिरछी आँख से इशारा करना। इंगित करना।
तरजना-क्रि॰ अ॰ [सं॰ तर्जन] १. ताड़न करना। डाँटना। डपटना। २. भला-बुरा कहना। बिगड़ना।
तरजनी-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तर्जनी"।
संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ तर्जन] भय। डर।
तरजुमा-संज्ञा पुं॰ [अ॰] अनुवाद। भाषांतर। उल्था।
तरणि-संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. नदी आदि पार करना। २. निस्तार। उद्धार।
संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तरणी"।
तरणिजा-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. सूर्य की कन्या, यमुना। २. एक वर्ण-वृत्त।
तरणितनूजा-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सूर्य की पुत्री, यमुना।
तरणिसुत-संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सूर्य का पुत्र। २. यम। ३. शनि। ४. कर्ण।
तरणी-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] नौका। नाव।
तरतराना॰-क्रि॰ अ॰ [अनु॰] तड़ तड़ शब्द करना। तड़तड़ाना।
तरतीब-संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] वस्तुओं का अपने ठीक स्थानों पर लगाया जाना। क्रम। सिलसिला।
तरदीद-संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] १. काटने या रद करने की क्रिया। मंसूखी। २. खंडन। प्रत्युत्तर।
तरद्दुद-संज्ञा पुं॰ [अ॰] सोच। फिक्र। अंदेशा। चिंता। खटका।
तरन॰-संज्ञा पुं॰ दे॰ "तरण"।
संज्ञा पुं॰ दे॰ "तरौना"।
तरनतार-संज्ञा पुं॰ [सं॰ तरण] निस्तार।

मोक्ष। मुक्ति।
तरनतारन-संज्ञा पुं०[सं० तरण + हिं० तरना] १. उद्धार। निस्तार। मोक्ष। २. भव-सागर से पार करनेवाला।
तरना-क्रि० स० [सं० तरण] पार करना। क्रि० अ० मुक्त होना। सद्गति प्राप्त करना। क्रि० स० दे० "तलना"।
तरनि-संज्ञा स्त्री० दे० "तरणि"।
तरनी-संज्ञा स्त्री० [सं० तरणि] १. नाव। नौका। २. मिठाई का थाल या खोंचा रखने का छोटा मोढ़ा। तन्नी।
तरपत-संज्ञा पुं० [सं० तृप्ति] १. सुबीता। २. आराम।
तरपना-क्रि० अ० दे० "तड़पना"।
तरपर-क्रि० वि० [हिं० तर-पर] १. नीचे ऊपर। २. एक के पीछे दूसरा।
तरफ-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ओर। दिशा। अलंग। २. किनारा। पार्श्व। बगल। ३. पक्ष। पासदारी।
तरफ़दार-वि० [अ० तरफ + फ़ा० दार] [संज्ञा तरफ़दारी] पक्ष में रहनेवाला। पक्ष-पाती। हिमायती।
तरफराना-क्रि० अ० दे० "तड़फड़ाना"।
तर-बतर-वि०[फ़ा०]भींगा हुआ। आर्द्र।
तरबूज़-संज्ञा पुं० [फ़ा० तर्बुज] १. एक प्रकार की बेल। २. इस बेल के बड़े गोल फल जो खाने के काम में आते हैं।
तरमीम-संज्ञा स्त्री० [अ०] संशोधन।
तरल-वि० [सं०] १. हिलता डोलता। चलायमान। चंचल। २. क्षणभंगुर। ३. बहनेवाला। द्रव। ४. चमकीला।
तरलता-संज्ञा स्त्री०[सं०] १. चंचलता। २. द्रवत्व।
तरलनयन-संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।
तरलाई-संज्ञा स्त्री०[सं० तरल + आई (प्रत्य०)] १. चंचलता। चपलता। २. द्रवत्व।
तरवन-संज्ञा पुं० [हिं० ताड़ + बनना] १. कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।
तरवर-संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।
तरवा-संज्ञा पुं० दे० "तलवा"।
तरवार-संज्ञा स्त्री० दे० "तलवार"। संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।
तरस-संज्ञा पुं० [सं० त्रस] दया। रहम। मुहा०—(किसी पर) तरस खाना ... होना। दया करना। रहम करना।
तरसना-क्रि० अ० [सं० तर्षण] (किसी वस्तु को) न पाकर बेचैन रहना।
तरसाना-क्रि० स० [हिं० तरसना] १. कोई वस्तु न देकर उसके लिये बेचैन करना। २. व्यर्थ ललचाना।
तरह-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकार। भाँति। क़िस्म। २. रचना-प्रकार। ढाँचा। डौल। बनावट। रूप-रंग। ३. ढब। तर्ज़। प्रणाली। रीति। ढंग। ४. युक्ति। उपाय। मुहा०—तरह देना = खयाल न करना। बचा जाना। जाने देना। ५. हाल। दशा। अवस्था।
तरहटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तर] १. नीची भूमि। २. पहाड़ की तराई।
तरहदार-वि० [फ़ा०] [संज्ञा तरहदारी] १. सुंदर बनावट का। २ शौकीन।
तरहर†-क्रि० वि० [हिं० तर + हर (प्रत्य०)] तले। नीचे। वि० १. नीचे का। २. निकृष्ट। बुरा।
तरहेल†-वि० [हिं० तर + हेल (प्रत्य०)] १. अधीन। निम्नस्थ। २. वश में आया हुआ। पराजित।
तराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० तर = नीचे] १. पहाड़ के नीचे का सीड़वाला मैदान। २. पहाड़ की घाटी।
तराजू-संज्ञा पुं० [फ़ा०] सीधी डाँड़ी के छोरों से बँधे हुए दो पलड़े जिनसे वस्तुओं की तौल मालूम करते हैं। तुला। तकड़ी।
तराना-संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का चलता गाना।
तराप:†-संज्ञा स्त्री० [अनु०] बंदूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द।
तरापा†-संज्ञा पुं० [अनु०] हाहाकार। कुहराम। त्राहि त्राहि।
तराबोर-वि० [फ़ा० तर + हिं० बोरना] खूब भींगा हुआ। शराबोर।
तरामीरा-संज्ञा पुं० [देश०] एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।
तरारा-संज्ञा पुं० [?] १. उछाल। छलांग। कुलाँच। २. पानी की धार जो बराबर किसी वस्तु पर गिरे।
तरावट-संज्ञा ... [हिं० तर + आवट (प्रत्य०)] १. गीलापन ... ठंढक। शीतल-ता। ३. ... शांत करने- ... भोजन।

तराश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. काटने का ढंग या भाव। काट। २. काट-छाँट। बनावट। रचना-प्रकार। ३. ढंग। तर्ज़।
तराशना–क्रि० स० [फा०] काटना। कतरना।
तरिका†–संज्ञा पु० [सं० ताडंक] कान का एक गहना। तरकी। तरौना।
* संज्ञा स्त्री० [सं० तड़ित्] बिजली।
तरियाना†–क्रि० स० [हिं० तरे=नीचे] १. नीचे कर देना। तह में बैठा देना। २. ढाँकना। छिपाना।
क्रि० अ० तले बैठ जाना। तह में जमना।
तरिवन–संज्ञा पु० [हिं० ताड़] १. कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।
तरिवर:–संज्ञा पु० दे० "तरुवर"।
तरिहँत†–क्रि० वि० [हिं० तर+हँत (प्रत्य०)] नीचे। तले।
तरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाव। नौका।
संज्ञा स्त्री० [फा० तर] १. गीलापन। आर्द्रता। २. ठंढक। शीतलता। ३. वह नीची भूमि जहाँ बरसात का पानी इकट्ठा रहता हो। कछार। ४. तराई। तरहटी।
* संज्ञा स्त्री० [हिं० ताड़] कान का एक गहना। तरिवन। कर्णफूल।
तरीक़ा–संज्ञा पु० [अ०] १. ढंग। विधि। रीति। २. चाल। व्यवहार। ३. उपाय। तदबीर।
तरु–संज्ञा पु० [सं०] १. वृक्ष। पेड़। २. एक प्रकार का चीड़।
तरुण–वि० [सं०] [स्त्री० तरुणी] १. युवा। जवान। २. नया। नूतन।
तरुणाई:–संज्ञा स्त्री० [सं० तरुण+आई (प्रत्य०)] युवावस्था। जवानी।
तरुणाना:–क्रि० अ० [सं० तरुण+आना (प्रत्य०)] जवानी पर आना।
तरुणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती। जवान स्त्री।
तरुन †–संज्ञा पु० दे० "तरुण"।
तरुनई, तरुनाई:–संज्ञा स्त्री० [सं० तरुण+आई (प्रत्य०)] तरुणावस्था। जवानी।
तरुनापा:–संज्ञा पु० दे० "तरुनाई"।
तरुबाँही:–संज्ञा स्त्री० [सं० तरु+हिं० बाँह] पेड़ की भुजा। शाखा। डाल।
तरुदा–संज्ञा पु० [सं० तरंड] पानी में तैरता हुआ काठ। बेड़ा।
तरे†–क्रि० वि० [सं० तल] नीचे। तले।
तरेटी–संज्ञा स्त्री० दे० "तराई"।
तरेरना–क्रि० स० [सं० तर्ज+हिं० हेरना] दृष्टि से असम्मति या असंतोष प्रकट करना। क्रोधपूर्वक देखना।
तरोई–संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।
तरोवर:–संज्ञा पु० दे० "तरुवर"।
तरौंस† –संज्ञा पु० [हिं० तर+औंस (प्रत्य०)] तट। तीर। किनारा।
तरौना–संज्ञा पु० [हिं० ताड़+बनना] १. कान में पहनने का एक गहना। तरकी। ताडंक। २. कर्णफूल।
तर्क–संज्ञा पु० [सं०] १. किसी वस्तु के विषय में अज्ञात तत्त्व की कारणोपपत्ति द्वारा निश्चित करनेवाली उक्ति या विचार। हेतुपूर्ण युक्ति। विवेचना। दलील। २. चमत्कार-पूर्ण उक्ति। चुहल या चोज की बात। ३. व्यंग्य। ताना।
संज्ञा पु० [अ०] त्याग। छोड़ना।
तर्कना: †–क्रि० अ० [सं० तर्क] तर्क करना।
तर्क वितर्क–संज्ञा पु० [सं०] १. ऊहापोह। सोच विचार। २. वाद विवाद। बहस।
तर्कश–संज्ञा पु० [फा०] तीर रखने का चोंगा। भाथा। तूणीर।
तर्कशास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] १. विवेचना करने के नियम और सिद्धांतों के खंडन मंडन की शैली बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। २. न्यायशास्त्र।
तर्काभास–संज्ञा पु० [सं०] ऐसा तर्क जो ठीक न हो। कुतर्क।
तर्की–संज्ञा पु० [सं० तर्किन्] [स्त्री० तर्किनी] तर्क करनेवाला।
तर्कु–संज्ञा पु० [सं०] तकला। टेकुआ।
तर्क्य–वि० [सं०] जिस पर कुछ सोच विचार करना आवश्यक हो। विचार्य। चिंत्य।
तर्ज़–संज्ञा पु० [अ०] १. प्रकार। क़िस्म। तरह। २. रीति। शैली। ढंग। ढब। ३. रचना-प्रकार। बनावट।
तर्जन–संज्ञा पु० [सं० तर्ज्जन] [वि० तर्जित] १. धमकाने का कार्य्य। भय-प्रदर्शन। २. क्रोध। ३. फटकार। डाँट डपट।
यौ०—तर्जन-गर्जन=क्रोध-प्रदर्शन
तर्जना–क्रि० अ० [सं० तर्ज्जन]। धमकाना। डपटना।

तर्जनी-संज्ञा स्त्री० [सं० तर्ज्जनी] अँगूठे और मध्यमा के बीच की उँगली।

तर्जुमा-संज्ञा पुं० [अ०] भाषांतर। उल्था। अनुवाद।

तर्पण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी] १. तृप्त या संतुष्ट करने की क्रिया। २. कर्मकांड की एक क्रिया जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तुष्ट करने के लिये हाथ या अरघे से पानी देते हैं।

तरौना-संज्ञा पुं० दे० "तरौना।"

तल-संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे का भाग। २. पेंदा। तला। ३. जल के नीचे की भूमि। ४. वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पड़ता हो। ५. पैर का तलवा। ६. हथेली। ७. किसी वस्तु का बाहरी फैलाव। पृष्ठ देश। सतह। ८. घर की छत। पाटन। ९. सात पातालों में से पहला।

तलक-अव्य० [हिं० तक] तक। पर्यंत।

तलकर-संज्ञा पुं० [सं०] वह कर या लगान जो ज़मींदार ताल की वस्तुओं पर लगाता है।

तलछट-संज्ञा स्त्री० [हिं० तल + छँटना] द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल। तलौंछ।

तलना-क्रि० स० [सं० तरण = तिरना] कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना।

तलप-संज्ञा पुं० दे० "तल्प"।

तलपट-वि० [देश०] बरबाद। चौपट।

तलफ-वि० [अ०] नष्ट। बरबाद।

तलफना-क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

तलब-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खोज। तलाश। २. चाह। पाने की इच्छा। ३. आवश्यकता। माँग। ४. बुलावा। बुलाहट। ५.

तलवा-संज्ञा पुं० [सं० तल] एँड़ी और पंजों के बीच में पैर के नीचे की ओर का भाग। पादतल।

मुहा०—तलवा खुजलाना = तलवे में खुजली होना जिससे यात्रा का शकुन समझा जाता है। तलवे चाटना = बहुत खुशामद करना। तलवे छलनी होना = चलते चलते शिथिल हो जाना। तलवे धो धोकर पीना = अत्यंत सेवा शुश्रूषा करना। तलवों से आग लगना = अत्यंत क्रोध चढ़ना।

तलवार-संज्ञा स्त्री० [सं० तरवारि] लोहे का एक लंबा धारदार हथियार। खड्ग। असि। कृपाण।

मुहा०—तलवार का खेत = लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र। तलवार का घाट = तलवार में वह स्थान जहाँ से उसका टेढ़ापन आरंभ होता है। तलवार का पानी = तलवार की आभा या दमक। तलवारों की छाँह में = ऐसे स्थान में जहाँ अपने ऊपर चारों ओर तलवार ही तलवार दिखाई देती हो। रणक्षेत्र में। तलवार खींचना = आघात करने के लिये म्यान से तलवार बाहर करना। तलवार सौंतना = वार करने के लिये तलवार खींचना।

तलहटी-संज्ञा स्त्री० [सं० तल + घट्ट] पहाड़ के नीचे की भूमि। तराई।

तला-संज्ञा पुं० [सं० तल] १. किसी वस्तु के नीचे की सतह। पेंदा। २. जूते के नीचे का चमड़ा।

तलाक-संज्ञा पुं० [अ०] पति पत्नी का विधानपूर्वक संबंध-त्याग।

तलातल-संज्ञा पुं० [सं०] सात पातालों में से एक।

[illegible] पुं० [सं० [illegible]] तालाब।

सतह। पेंदी। २. तलछट। तलौछ। † ३. हाथ या पैर की हथेली या तलवा।

तले-क्रि० वि० [सं० तल] नीचे। ऊपर का उल्टा।

मुहा०—तले ऊपर=१. एक के ऊपर दूसरा। २. उलट-पलट किया हुआ। गड्ड-मड्ड। तले ऊपर के=ऐसे दो जिनमें से एक दूसरे के उपरांत हुआ हो।

तलेटी-संज्ञा स्त्री० [सं० तल] १. पेंदी। २. पहाड़ के नीचे की भूमि। तलहटी।

तलैया-संज्ञा स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल।

तलौछ-संज्ञा स्त्री० [सं० तल=नीचे] नीचे जमी हुई मैल आदि। तलछट।

तल्ख-वि० [सं०] [संज्ञा तल्खी] १. कड़ुआ। कटु। २. बुरे स्वाद का।

तल्प-संज्ञा पु० [सं०] १. शय्या। पलंग। सेज। २. अट्टालिका। अटारी।

तल्ला-संज्ञा पु० [सं० तल] १. तले की परत। अस्तर। भितल्ला। २. निकट। पास। सामीप्य।

तव-सर्व० [सं०] तुम्हारा।

तवक्षीर-संज्ञा पुं० [सं० मि० फा० तबाशीर] तबाशीर। तीखुर।

तवज्जह-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ध्यान। रुख़। २. कृपादृष्टि।

तवना-क्रि० अ० [सं० तपन] १. तपना। गरम होना। २. ताप या दुःख से पीड़ित होना। ३. प्रताप फैलाना। तेज पसारना। ४. गुस्से से लाल होना। क्रुद्ध जाना।

तवा-संज्ञा पुं० [हिं० तवना=जलना] १. लोहे का वह छिछला गोल बरतन जिस पर रोटी सेंकते हैं।

मुहा०—तवे की बूँद=१. क्षणस्थायी। देर तक न टिकनेवाला। २. जिससे कुछ भी तृप्ति न हो।

२. मिट्टी या खपड़े का गोल ठिकरा जिसे चिलम पर रखकर तमाखू पीते हैं।

तवाज़ा-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आदर। मान। आवभगत। २. मेहमानदारी। दावत।

तवायफ़-संज्ञा स्त्री० [अ०] वेश्या। रंडी।

तवारा-संज्ञा पु० [सं० ताप, हिं० ताव] जलन। दाह। ताप।

तवारीख़-संज्ञा स्त्री० [अ०] इतिहास।

तवालत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लंबाई। दीर्घत्व। २. अधिकता। अधिकाई। ३. बखेड़ा। झंझट।

तशख़ीस-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ठहराव। निश्चय। २. मर्ज़ की पहचान। रोग का निदान।

तशरीफ़-संज्ञा स्त्री० [अ०] बुजुर्गी। इज़्ज़त। महत्व। बड़प्पन।

मुहा०—तशरीफ़ रखना=विराजना। बैठना। (आदर)। तशरीफ़ लाना=पदार्पण करना। आना। (आदर)।

तश्तरी-संज्ञा स्त्री० [फा०] थाली के आकार का छिछला हलका बरतन। रिकाबी।

तष्टा-संज्ञा पु० [सं०] १. छील-छालकर गढ़नेवाला। २. विश्वकर्मा।

संज्ञा पु० [फा० तश्त] ताँबे की छोटी तश्तरी।

तस-वि० [सं० तादृश] तैसा। वैसा।

क्रि० वि० तैसा। वैसा।

तसकीन-संज्ञा स्त्री० [अ०] तसल्ली। ढारस।

तसदीक़-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सचाई। २. सचाई की परीक्षा या निश्चय। प्रमाणों के द्वारा पुष्टि। समर्थन। ३. साक्ष्य। गवाही।

तसदीह*†-संज्ञा स्त्री० [अ० तसदीअ] १. सिर का दर्द। २. तकलीफ़। दुःख।

तसबीह-संज्ञा स्त्री० [अ०] सुमिरनी। जपमाला। (मुसल०)

तसमा-संज्ञा पु० [फा०] चमड़े का चौड़ा फ़ीता।

तसला-संज्ञा पुं० [फा० तश्त] [स्त्री० तसली] कटोरे के आकार का पर उससे बड़ा और गहरा बरतन।

तसलीम-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सलाम। प्रणाम। २. किसी बात की स्वीकृति। हामी।

तसल्ली-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ढारस। सांत्वना। आश्वासन। २. शांति। धैर्य। धीरज।

तसवीर-संज्ञा स्त्री० [अ०] वस्तुओं की आकृति जो रंग आदि के द्वारा कागज़, पटरी आदि पर बनी हो। चित्र।

वि० चित्र सा सुंदर। मनोहर।

तसू-संज्ञा पुं० [सं० त्रि+शूक] इमारती गज का २४ वाँ अंश जो १⅛ इंच के लगभग होता है।

तस्कर-संज्ञा पुं० [सं०] १. चोर। २. श्रवण। कान। ३. चोर नामक गंध-द्रव्य।

तस्करता-संज्ञा स्त्री० [सं०] चोरी।

तस्करी-संज्ञा स्त्री० [सं० तस्कर] १. चोरी। २ चोर की स्त्री। ३. चोर स्त्री।

तस्मात्-अव्य० [सं०] इसलिये।

तस्य-सर्व० [सं०] उसका।

तस्सू-संज्ञा पुं० दे० "तसू"।

तहँ, तहँवाँ-क्रि० वि० दे० "तहाँ"।

तह-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी वस्तु की मोटाई का फैलाव जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर हो। परत।

मुहा०—तह करना या लगाना = किसी फैली हुई वस्तु के भागों को कई ओर से मोड़कर समेटना। तह कर रखो = रहने दो। नहीं चाहिए। तह तोड़ना = १. झगड़ा निपटाना। २. कूएँ का सब पानी निकाल देना जिससे जमीन दिखाई देने लगे। (किसी चीज़ की) तह देना = १. हलकी परत चढ़ाना। २. हलका रंग चढ़ाना।

२. किसी वस्तु के नीचे का विस्तार। तल। पेंदा।

मुहा०—तह की बात = छिपी हुई बात। गुप्त रहस्य। (किसी बात की) तह तक पहुँचना = यथार्थ रहस्य जान लेना। असली बात समझ जाना।

३. पानी के नीचे की जमीन। तल। थाह। ४. महीन पटल। वरक। झिल्ली।

तहकीक-संज्ञा स्त्री० दे० "तहकीकात"।

तहकीकात-संज्ञा स्त्री० [अ० तहकीक का बहु०] किसी विषय या घटना की ठीक ठीक बातों की खोज। अनुसंधान। जाँच।

तहखाना-संज्ञा पुं० [फा०] वह कोठरी या घर जो ज़मीन के नीचे बना हो। भुइँहरा। तलगृह।

तहज़ीब-संज्ञा स्त्री० [अ०] सभ्यता।

तहपेच-संज्ञा पुं० [फा०] पगड़ी के नीचे का कपड़ा।

तहमत-संज्ञा स्त्री० [फा० तहमद] कमर में लपेटा हुआ कपड़ा या अँगोछा। लुंगी। अँचला।

तहरी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी। २. मटर की खिचड़ी।

तहरीर-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लिखावट। लेख। २. लेख-शैली। ३. लिखी हुई बात। ४. लिखा हुआ प्रमाण-पत्र। ५. लिखने की उजरत। लिखाई।

तहरीरी-वि० [फा०] लिखा हुआ। लिखित।

तहलका-संज्ञा पुं० [अ०] १. मौत। मृत्यु। २. बरबादी। नाश। ३. खलबली। धूम। हलचल।

तहवील-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सुपुर्दगी। २ अमानत। धरोहर। ३. खज़ाना। जमा।

तहवीलदार-संज्ञा पुं० [अ० तहवील + फा० दार] कोषाध्यक्ष। खज़ानची।

तहस-नहस-वि० [देश०] बरबाद। नष्ट-भ्रष्ट।

तहसील-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लोगों से रुपया वसूल करने की क्रिया। वसूली। उगाही। २. वह आमदनी जो लगान वसूल करने से इकट्ठी हो। ३. तहसील-दार का दफ़्तर या कचहरी।

तहसीलदार-संज्ञा पुं० [अ० तहसील + फा० दार] १. कर वसूल करनेवाला। २. वह अफ़सर जो ज़मींदारों से सरकारी माल-गुजारी वसूल करता और माल के छोटे मुकदमों का फैसला करता है।

तहसीलदारी-संज्ञा स्त्री० [अ० तहसील + फा० दार + ई] १. तहसीलदार या पद। २. तहसीलदार की कचहरी।

तहसीलना-क्रि० स० [अ० तहसील] उगाहना। वसूल करना (कर, लगान, चंदा आदि)।

तहाँ-क्रि० वि० [सं० तत्र + सं० स्थान] उस स्थान पर। उस जगह। वहाँ।

तहाना-क्रि० स० [हिं० तह] तह करना। लपेटना।

तहियाँ-क्रि० वि० [सं० तदाहि] तब। उस समय।

तहियाना-क्रि० स० दे० "तहाना"।

तहीं-क्रि० वि० [हिं० तहाँ] उसी जगह। उसी स्थान पर। वहीं।

ता-प्रत्य० [सं०] एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा शब्दों के आगे लगता है। अव्य० [फा०] तक। पर्यंत।

*-सर्व० [सं० तद्] उस।

*-वि० उस।

ताईं-क्रि० वि० दे० "ताईं"।

ताँगा-संज्ञा पुं० दे० "टाँगा"।

तांडव-संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव का नृत्य। २. पुरुष का नृत्य। (पुरुषों के नृत्य को तांडव और स्त्रियों के नृत्य को लास्य कहते हैं।) ३. वह नाच जिसमें बहुत उछल कूद हो। उद्धत नृत्य।

ताँत-संज्ञा स्त्री० [सं० तंतु] १. भेड़, बकरी की अँतड़ी, या चौपायों के पुट्ठों को बटकर बनाया हुआ सूत। २. धनुष की डोरी। ३. डोरी। सूत। ४. सारंगी आदि का तार। ५. जुलाहों की राछ।

ताँता-संज्ञा पुं० [सं० तति = श्रेणी] श्रेणी। पंक्ति। कतार।

मुहा०—ताँता लगना = एक पर एक बराबर चला चलना।

ताँति-संज्ञा स्त्री० दे० "ताँत"।

ताँती-संज्ञा स्त्री० [हिं० ताँता] १. पंक्ति। कतार। २. बाल-बच्चे। औलाद।

संज्ञा पुं० जुलाहा। कपड़ा बुननेवाला।

तांत्रिक-वि० [सं०] [स्त्री० तांत्रिकी] तंत्र संबंधी।

संज्ञा पुं० तंत्रशास्त्र का जाननेवाला। यंत्र मंत्र आदि करनेवाला।

ताँबा-संज्ञा पुं० [सं० ताम्र] लाल रंग की एक प्रसिद्ध धातु। यह पीटने से बढ़ सकती है और इसका तार भी खींचा जा सकता है।

ताँबिया-संज्ञा स्त्री० दे० "ताँबी"।

ताँबी-संज्ञा स्त्री० [हिं० ताँबा] १. चौड़े मुँह का ताँबे का एक छोटा बरतन। २. ताँबे की करछी।

तांबूल-संज्ञा पुं० [सं०] १. पान या उसका बीड़ा। २. सुपारी।

ताँसना†-क्रि० स० [सं० त्रास] १. डाँटना। धमकाना। आँख दिखाना। २. दुःखी करना। सताना।

ताईं-अव्य० [सं० तावत् या फा० ता] १. तक। पर्यंत। २. पास। तक। समीप। निकट। ३. (किसी के) प्रति। समक्ष। लक्ष्य करके। ४. लिये। वास्ते। निमित्त। वि० दे० "तईं"।

ताई-संज्ञा स्त्री० [हिं० ताऊ] बाप के बड़े भाई की स्त्री। जेठी चाची।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छिछली कड़ाही।

ताईद-संज्ञा स्त्री [अ०] १. पक्षपात। तरफ़दारी। २. अनुमोदन। समर्थन।

ताऊ-संज्ञा पुं० [सं० तात] बाप का बड़ा भाई। बड़ा चाचा। ताया।

मुहा०—बछिया के ताऊ = मूर्ख।

ताऊन-संज्ञा पुं० [अ०] प्लेग का रोग।

ताऊस-संज्ञा पुं० [अ०] १. मोर। मयूर।

यौ०—तख्त ताऊस = शाहजहाँ का बहुमूल्य रत्नजटित राजसिंहासन जो मोर के आकार का था।

२. सारंगी से मिलता जुलता एक बाजा।

ताक-संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना] १. ताकने की क्रिया या भाव। अवलोकन। २. स्थिर दृष्टि। टकटकी। ३. किसी अवसर की प्रतीक्षा। मौका देखते रहना। घात।

मुहा०—ताक में रहना = मौक़ा देखते रहना। ताक रखना या लगाना = घात में रहना। मौका देखते रहना।

४. खोज। तलाश।

ताक़-संज्ञा पुं० [अ०] चीज़, वस्तु रखने के लिये दीवार में बना हुआ गड्ढा या खाली स्थान। आला। ताखा।

मुहा०—ताक़ पर धरना या रखना = पड़ा रहने देना। काम में न लाना।

वि० १. जो बिना खंडित हुए दो बराबर भागों में न बँट सके। विषम। जैसे—तीन, पाँच। २. जिसके जोड़ का दूसरा न हो। अद्वितीय। अनुपम।

ताक-झाँक-संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना + झाँकना] १. रह रहकर बार बार देखने की क्रिया। २. छिपकर देखने की क्रिया।

ताक़त-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जोर। बल। शक्ति। २. सामर्थ्य।

ताक़तवर-वि० [फा०] १. बलवान्। बलिष्ठ। २. शक्तिमान्। सामर्थ्यवान्।

ताकना क्रि० स० [सं० तर्कण] १. सोचना। विचारना। २. अवलोकन करना। देखना। ३. ताड़ना। समझ जाना। ४. पहले से देखकर स्थिर करना। तजवीज करना। ५. दृष्टि रखना। रखवाली करना।

ता कि-अव्य० [फा०] जिसमें। इसलिये कि जिसमें।

ताकीद-संज्ञा स्त्री० [अ०] जोर के साथ किसी बात की आज्ञा या अनुरोध। खूब चेताकर कही हुई बात।

तागड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० ताग + कड़ी]

कमर में पहनने का एक गहना। करधनी। किंकिणी। २. कमर में पहनने का रंगीन डोरा। कटिसूत्र। करगता।

तागना-क्रि० स० [हि० तागा] दूर दूर पर मोटी सिलाई करना। डोभ या लंगर डालना।

ताग पाट-संज्ञा पुं० [हि० तागा + पाट = रेशम] एक प्रकार का गहना जो विवाह में काम आता है।

तागा-संज्ञा पुं० [सं० तार्कव] १. रूई, रेशम आदि का वह अंश जो बटने से लंबी रेखा के रूप में निकलता है। डोरा। धागा। २ वह कर या महसूल जो प्रति मनुष्य के हिसाब से लगे।

ताज-संज्ञा पुं० [अ०] १. बादशाह की टोपी। राजमुकुट। २. कलगी। तुर्रा। ३. मोर, मुर्गे आदि के सिर की चोटी। शिखा। ४. दीवार की कँगनी या छज्जा। ५. मकान के सिरे पर शोभा के लिये बनाई हुई बुर्जी। ६. गंजीफे के एक रंग का नाम। ७ आगरे का ताजमहल।

ताजक-संज्ञा पुं० [फा०] एक ईरानी जाति जो बलोचिस्तान में "देहवार" कहलाती है।

ताज़गी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ताज़ापन। हरापन। २. प्रफुल्लता। स्वस्थता। ३. नयापन।

ताजदार-संज्ञा पुं० [फा०] बादशाह।

ताजन-संज्ञा पुं० [फा० ताज़ियाना] कोड़ा। चाबुक।

ताजपोशी-संज्ञा स्त्री० [फा०] राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव।

ताजमहल-संज्ञा पुं० [अ०] आगरे का प्रसिद्ध मकबरा जिसे शाहजहाँ बादशाह ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज़ महल के लिये बनवाया था।

ताज़ा-वि० [फा०] [स्त्री० ताज़ी] १. जो सूखा या कुम्हलाया न हो। हरा भरा। २. (फल आदि) जिसे पेड़ से अलग हुए बहुत देर न हुई हो। ३ जो थका-माँदा न हो। स्वस्थ। प्रफुल्लित।
यौ०—मोटा ताज़ा = हृष्ट पुष्ट।
४. तुरंत का बना। सद्यः प्रस्तुत। ५. जो व्यवहार के लिये अभी निकाला गया हो। ६. जो बहुत दिनों का न हो। नया।

ताज़िया-संज्ञा पुं० [अ०] बाँस की कमचियों आदि का मकबरे के आकार का मंडप जिसमें इमाम हुसेन की कब्र होती है। मुहर्रम में शीया मुसलमान इसकी आराधना करते और तब इसे दफ़न करते हैं।

ताज़ी-वि० [फा०] अरब का।
संज्ञा पुं० [फा०] १. अरब का घोड़ा। २. शिकारी कुत्ता।

ताज़ीम-संज्ञा स्त्री० [अ०] बड़े के सामने उसके आदर के लिये उठकर खड़े हो जाना, झुककर सलाम करना इत्यादि। सम्मान-प्रदर्शन।

ताज़ीमी सरदार-संज्ञा पुं० [फा० ताज़ीम + अ० सरदार] वह सरदार जिसके आने पर राजा या बादशाह उठकर खड़े हो जायँ।

ताटंक-संज्ञा पुं० [सं०] १. कान में पहनने का करनफूल। तरकी। २. छप्पय के २४वें भेद का नाम। ३. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और अंत में मगण होता है।

ताडंक-संज्ञा पुं० [सं०] कान की तरकी। करनफूल।

ताड़-संज्ञा पुं० [सं०] १. शाखा-रहित एक बड़ा और प्रसिद्ध पेड़ जो खंभे के रूप में ऊपर की ओर बढ़ता चला जाता है और केवल सिरे पर पत्ते धारण करता है। २ ताड़न। प्रहार। ३. शब्द। ध्वनि। ४. अनाज के डंठल आदि की अँटिया जो मुट्ठी में आ जाय। जुट्टी। ५. हाथ का एक गहना।

ताड़का-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसे श्रीरामचंद्र ने मारा था।

ताड़न-संज्ञा पुं० [सं०] १. मार। प्रहार। आघात। २. डाँट-डपट। घुड़की। ३. शासन। दंड।

ताड़ना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रहार। मार। २. डाँट-डपट। शासन। दंड। धमकी। ३. उत्पीड़न। कष्ट।
क्रि० स० १. मारना। पीटना। २. डाँटना-डपटना।
क्रि० स० [सं० तर्कण] १. किसी ऐसी बात को जान लेना जो छिपाई गई हो। लक्षण से समझ लेना। भाँपना। लख लेना। २. मार-पीटकर भगाना। हटा देना।

ताड़ित-वि० [सं०] १. जिस पर प्रहार

तीन प्रकार का माना गया है—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। ४. मानसिक कष्ट। हृदय का दुःख।

तापक–संज्ञा पु० [सं०] १. ताप उत्पन्न करनेवाला। २. रजोगुण। ३. ज्वर।

तापतिल्ली–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताप+तिल्ली] तिल्ली बढ़ने का रोग। प्लीहा रोग।

तापती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य की कन्या तापी। २. एक पवित्र नदी जो सतपुड़ा पहाड़ से निकलकर खंभात की खाड़ी में गिरती है।

तापत्रय–संज्ञा पु० [सं०] तीन प्रकार के ताप—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

तापन–संज्ञा पु० [सं०] १. ताप देनेवाला। २ सूर्य। ३ कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४ सूर्यकांत मणि। ५. मदार। ६ एक प्रकार का प्रयोग जिससे शत्रु को पीड़ा होती है। (तंत्र)

तापना–क्रि० अ० [सं० तापन] आग की आँच से अपने को गरम करना।
क्रि० स० १. गरम करने के लिये जलाना। फूँकना। २ नष्ट करना।
" क्रि० स० तपाना। गरम करना।

तापमान यंत्र–संज्ञा पु० [सं०] उष्णता की मात्रा मापने का यंत्र। थरमामीटर।

तापस–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० तापसी] १. तप करनेवाला। तपस्वी। २. तेजपत्ता।

तापसतरु, तापसद्रुम–संज्ञा पु० [सं०] इंगुदी वृक्ष। हिंगोट।

तापसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तपस्या करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की स्त्री।

तापस्वेद–संज्ञा पु० [सं०] उष्णता पहुँचाकर उत्पन्न किया हुआ पसीना।

तापा–संज्ञा पु० [हिं० तोपना ?] मुरगी का दरबा।

तापित–वि० [सं०] १. जो तपाया गया हो। २ दुःखित। पीड़ित।

तापी–वि० [सं० तापिन्] १. ताप देनेवाला। २ जिसमें ताप हो।
संज्ञा पु० बुद्धदेव।
संज्ञा स्त्री० १. सूर्य की एक कन्या। २. तापती नदी। ३. यमुना नदी।

तापेंद्र–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य।

ताफ़्ता–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।

ताब–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ ताप। गरमी। २. चमक। आभा। दीप्ति। ३ शक्ति। सामर्थ्य। ४. मन को वश में रखने की शक्ति। धैर्य।

ताबड़तोड़–क्रि० वि० [अनु०] अखंडित क्रम से। लगातार। बराबर।

ताबा–वि० दे० "ताबे"।

ताबूत–संज्ञा पु० [अ०] वह संदूक जिसमें लाश रखकर गाड़ने को ले जाते हैं।

ताबे–वि० [अ० ताबअ] १. वशीभूत। अधीन। मातहत। २ आज्ञानुवर्ती। हुक्म का पाबंद।

ताबेदार–वि० [अ० ताबअ+फा० दार] [संज्ञा ताबेदारी] आज्ञाकारी। हुक्म का पाबंद।

ताम–संज्ञा पु० [सं०] १. दोष। विकार। २. व्याकुलता। बेचैनी। ३. दुःख। क्लेश।
वि० १. भीषण। डरावना। भयंकर। २. व्याकुल। हैरान।
संज्ञा पु० [सं० तामस] १. क्रोध। रोष। गुस्सा। २. अंधकार। अँधेरा।

तामजान–संज्ञा पु० [हिं० थामना+सं० यान] एक प्रकार की छोटी खुली पालकी।

तामड़ा–वि० [हिं० ताँबा+ड़ा (प्रत्य०)] ताँबे के रंग का। ललाई लिए हुए भूरा।

तामरस–संज्ञा पु० [सं०] १. कमल। २. सोना। ३. ताँबा। ४. धतूरा। ५. एक नगण, दो जगण और एक यगण का एक वर्णवृत्त।

तामलूक–संज्ञा पु० [सं० ताम्रलिप्त] बंग देश का एक भूभाग जो मेदिनीपुर जिले में है। ताम्रलिप्त।

तामलेट–संज्ञा पु० [अ० टंबलर] टीन का गिलास या बरतन जिस पर रोगन या लुक फेरा रहता है।

तामस–वि० [सं०] [स्त्री० तामसी] तमोगुण से युक्त।
संज्ञा पु० १. सर्प। साँप। २. खल। ३. उल्लू। ४. क्रोध। गुस्सा। ५. अंधकार। अँधेरा। ६. अज्ञान। मोह।

तामसी–वि० स्त्री० [सं०] तमोगुणवाली।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अँधेरी रात। २. महाकाली। ३. एक प्रकार की माया विद्या।

तामिल—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. भारत के दक्षिण प्रांत की एक जाति जो आधुनिक मद्रास प्रांत के अधिकांश भाग में निवास करती है। २ द्राविड़ भाषा। तामिल लोगों की भाषा।

तामिस्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक अँधेरा नरक। २ क्रोध। ३ द्वेष। ४. एक अविद्या का नाम।

तामील—संज्ञा स्त्री० [अ०] (आज्ञा का) पालन।

ताम्र—संज्ञा पुं० [सं०] ताँबा।

ताम्रचूड़—संज्ञा पुं० [सं०] मुरगा।

ताम्रपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा जिस पर प्राचीन काल में अक्षर खुदवाकर दानपत्र आदि लिखते थे।

ताम्रपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बावली। तालाब। २ मद्रास की एक छोटी नदी।

ताम्रलिप्त—संज्ञा पुं० [सं०] मेदिनीपुर (बंगाल) जिले के तमलूक नामक स्थान का प्राचीन नाम।

ताय०†— संज्ञा पुं० [सं० ताप] १. ताप। गरमी। २. जलन। ३. धूप।

सर्व० दे० "ताहि"।

तायदाद—संज्ञा स्त्री० दे० "तादाद"।

तायफ़ा—संज्ञा पुं० स्त्री० [फ़ा०] १ वेश्याओं और समाजियों की मंडली। २ वेश्या।

तायना०†—क्रि० स० [हिं० ताव] तपाना।

ताया—संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० ताई] बाप का बड़ा भाई। बड़ा चाचा।

तार—संज्ञा पुं० [सं०] १ रूपा। चाँदी। २. तपी हुई धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा। धातु-तंतु। ३ धातु का वह तार या डोरी जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजा जाता है। टेलिग्राफ़। ४. तार से आई हुई ख़बर। ५. सूत। तागा।

मुहा०—तार तार करना = नोचकर सूत सूत अलग करना।

६. बराबर चलता हुआ क्रम। अखंड परंपरा। सिलसिला।

मुहा०—तार बँधना = किसी काम का बराबर चला चलना। सिलसिला जारी होना।

७. ब्योंत। सुबीता। व्यवस्था।

मुहा०—तार जमना, बैठना या बँधना = ब्योंत होना। कार्यसिद्धि का सुबीता होना।

| ८. ठीक माप। ९. कार्यसिद्धि का योग। युक्ति। ढब। १०. प्रणव। ओंकार। ११. संगीत में एक सप्तक। १२. अठारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

†संज्ञा पुं० [सं० ताल] १. ताल। मजीरा। २. करताल नामक बाजा।

संज्ञा पुं० [सं० तल] तल। सतह।

†संज्ञा पुं० [हिं० ताड़] कान का एक गहना। तारकी। तरौना।

वि० [सं०] निर्मल। स्वच्छ।

तारक—संज्ञा पुं० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३ आँख की पुतली। ४ एक असुर जिसे कार्त्तिकेय ने मारा था। दे० "तारकासुर"। ५. राम का षडक्षर मंत्र। 'ओं रामाय नमः' का मंत्र। ६. वह जो पार उतारे। ७ भवसागर से पार करनेवाला। ८ एक प्रकार का वर्णवृत्त।

तारकश—संज्ञा पुं० [हिं० तार + फ़ा० कश] धातु का तार खींचनेवाला।

तारका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २ आँख की पुतली। ३. नाराच नामक छंद। ४ बालि की स्त्री तारा।

†संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़का"।

तारकाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] तारकासुर का बड़ा लड़का। यह उन तीन भाइयों में से एक था जो तीन पुर (त्रिपुर) बसाकर रहते थे।

तारकासुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जिसको मारने के लिये शिव को पार्वती से विवाह करके कार्त्तिकेय को उत्पन्न करना पड़ा था।

तारकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

तारघर—संज्ञा पुं० [हिं० तार + घर] वह स्थान जहाँ से तार की ख़बर भेजी जाय।

तार घाट—संज्ञा पुं० [हिं० तार + घाट] मतलब निकलने का सुबीता। व्यवस्था। आयोजन।

तारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. पार उतारने का काम। २ उद्धार। निस्तार। ३ उद्धार करनेवाला। तारनेवाला। ४. विष्णु।

तारतम्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक दूसरे से कमी न्यूनाधिक्य। २. से तारतीय। ३. गुण, परस्पर मिलान।

तारन-संज्ञा पुं० दे० "तारण"।
तारना-क्रि० स० [सं० तारण] १. पार लगाना। पार करना। २. संसार के क्लेश आदि से छुड़ाना। सद्गति देना।
तारपीन-संज्ञा पुं० [अं० टरपेंटाइन] चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल जो प्रायः औषध के काम में आता है।
तारबर्की-संज्ञा पुं० [हिं० तार + फा० बर्क] बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचाने वाला तार।
तारल्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. तरल या प्रवाह-शील होने का धर्म। द्रवत्व। २. चंचलता।
तारा-संज्ञा पुं० [सं०] १. नक्षत्र। सितारा।
मुहा०—तारे गिनना = चिंता या आसरे में बेचैनी से रात काटना। तारा टूटना = चमकते हुए पिंड का आकाश से पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई पड़ना। उल्कापात होना। तारा डूबना = शुक्र का अस्त होना। तारे तोड़ लाना = कोई बहुत ही कठिन या चालाकी का काम करना। तारों की छाँह = बड़े सवेरे। तड़के।
२. आँख की पुतली। ३. सितारा। भाग्य। किसमत।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दस महाविद्याओं में से एक। २ बृहस्पति की स्त्री जिसे चंद्रमा ने उसके इच्छानुसार रख लिया था और जिससे बुध उत्पन्न हुआ था। ३. बालि नामक बंदर की स्त्री और सुषेण की कन्या। यह पंचकन्याओं में मानी जाती है।
संज्ञा पुं० दे० "ताला"।
ताराग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये पाँच ग्रह।
ताराज-संज्ञा पुं० [फा०] १. लूट-पाट। २. नाश। ध्वंस। बरबादी।
ताराधिप-संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २ शिव। ३. बृहस्पति। ४. बालि। ५. सुग्रीव।
ताराधीश-संज्ञा पुं० दे० "ताराधिप"।
तारापथ-संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।
तारामंडल-संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों का समूह या घेरा।
तारिका-संज्ञा स्त्री० दे० "तारका"।
तारिणी-वि० स्त्री० [सं०] तारनेवाली। उद्धार करनेवाली।
संज्ञा स्त्री० तारा देवी।
तारी-† संज्ञा स्त्री० दे० "ताली"।
† संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़ी"।
तारीक-वि० [फा०] [संज्ञा तारीकी] १. स्याह। काला। २ धुँधला। अँधेरा।
तारीख-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. महीने का हर एक दिन (२४ घंटों का)। तिथि। २. वह तिथि जिसमें पूर्व-काल के किसी वर्ष में कोई विशेष घटना हुई हो। ३ नियत तिथि। किसी काम के लिये ठह-राया हुआ दिन।
मुहा०—तारीख डालना = तारीख मुकर्रर करना। दिन नियत करना।
तारीफ-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लक्षण। परि-भाषा। २ वर्णन। विवरण। ३. बखान। प्रशंसा। श्लाघा। ४. विशेषता। गुण। सिफत।
तारुण्य-संज्ञा पुं० [सं०] जवानी।
तार्किक-संज्ञा पुं० [सं०] १ तर्कशास्त्र का जाननेवाला। २ तत्त्ववेत्ता। दार्शनिक।
ताल-संज्ञा पुं० [सं०] १. करतल। हथेली। २. वह शब्द जो दोनों हथेलियों को एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न होता है। कर तलध्वनि। ताली। ३. नाचने गाने में उसके मध्यवर्त्ती काल और क्रिया का परि-माण।
मुहा०—ताल बेताल = १. जिसका ताल ठिकाने से न हो। २. अवसर या बिना अवसर के।
४ जंघे या बाहु पर जोर से हथेली मार-कर उत्पन्न किया हुआ शब्द। (कुश्ती)
मुहा०—ताल ठोंकना = लड़ने के लिये ललकारना।
५. मँजीरा। झाँझ। ६. चश्मे के पत्थर या काँच या एक पल्ला। ७. हरताल। ८. ताड़ का पेड़ या फल। ९. ताला। १० तलवार की मूठ। ११. पिंगल में ढगण का दूसरा भेद।
संज्ञा पुं० [सं० तल्ल] तालाब।
तालक-†-संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"।
तालकेतु-संज्ञा पुं० [सं०] १. भीष्म। २. बलराम।
तालजंघ-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश। २. इस देश का निवासी।
तालध्वज-संज्ञा पुं० दे० "तालकेतु"।
तालपर्णी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौंफ। २. कपूर कचरी। ३ तालमूली। मुसली।
ताल बैताल-संज्ञा पुं० [सं० ताल + बेताल]

। देवता या यक्ष। ऐसा प्रसिद्ध है कि ...जा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध किया था।

ताल मखाना-संज्ञा पुं० [हिं० ताल + मखान] १. एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं। २. दे० "मखाना"।

तालमूली-संज्ञा स्त्री० [सं०] मुसली।

तालमेल-संज्ञा पुं० [हिं० ताल + मेल] १. ताल सुर का मिलान। २. उपयुक्त योजना। ठीक ठीक संयोग। ३. उपयुक्त अवसर।

तालरस-संज्ञा पुं० [सं०] ताड़ के पेड़ का रस। ताड़ी।

तालवन-संज्ञा पुं० [सं०] १. ताड़ के पेड़ों का जंगल। २. ब्रज का एक वन।

ताल्व्य-वि० [सं०] १. तालू संबंधी। २. तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण। जैसे—इ, ई, च, छ, य, श आदि।

ताला-संज्ञा पुं० [सं० तलक] लोहे, पीतल आदि की वह कल जिसे बंद किवाड़, संदूक आदि की कुंडी में फँसा देने से वह बिना कुंजी के नहीं खुल सकता। कुल्फ।

मुहा०—ताला तोड़ना = किसी दूसरे की वस्तु को चुराने के लिये उसके ताले को तोड़ना।

ताला कुंजी-संज्ञा स्त्री० [हिं० ताला + कुंजी] १. किवाड़, संदूक आदि बंद करने का यंत्र। २. लड़कों का एक खेल।

तालाब-संज्ञा पुं० [हिं० ताल + फा० आब] जलाशय। सरोवर। पोखरा।

तालिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ताली। कुंजी। २. नत्थी या तागा जिससे तालपत्र या कागज बँधे हों। ३. सूची। फेहरिस्त।

तालिब-संज्ञा पुं० [अ०] १. ढूँढ़नेवाला। तलाश करनेवाला। २. चाहनेवाला।

तालिबइल्म-संज्ञा पुं० [अ०] विद्यार्थी।

तालिम†-संज्ञा स्त्री० [सं० तल्प] बिस्तर।

ताली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लोहे की वह कील जिससे ताला खोला और बंद किया जाता है। कुंजी। चाबी। २. ताड़ी। ताड़ का मद्य। ३. तालमूली। मुसली। ४. एक वर्णवृत्त। ५. मेहराब के बीचो बीच का पत्थर या ईंट।

संज्ञा स्त्री० [सं० ताल] १. दोनों फैली हुई हथेलियों को एक दूसरी पर मारने की क्रिया। थपोड़ी।

मुहा०—ताली पीटना या बजाना = हँसी उड़ाना। उपहास करना।

२. दोनों हथेलियों को फैलाकर एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न शब्द। करतल ध्वनि।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल। तलैया। गड़ही।

तालीम-संज्ञा स्त्री० [अ०] अभ्यासार्थ उपदेश। शिक्षा।

तालीशपत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. तमाल या तेजपत्ते की जाति का एक पेड़। २. भुईआँवला की जाति का एक पौधा। इसकी सूखी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं। पनियाँ आँवला।

तालु-संज्ञा पुं० [सं०] तालू।

तालुका-संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुका"।

तालू-संज्ञा पुं० [सं० तालु] १. मुँह के भीतर की ऊपरी छत।

मुहा०—तालू में दाँत जमना = अदृष्ट आना। बुरे दिन आना। तालू से जीभ न लगना = चुपचाप न रहा जाना। बके जाना।

२. खोपड़ी के नीचे का भाग। दिमाग।

तालेवर-वि० [अ० ताल + वर] धनी।

ताल्लुक-संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"।

ताव-संज्ञा पुं० [सं० ताप] १. वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिये पहुँचाई जाय।

मुहा०—(किसी वस्तु में) ताव आना = जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना। ताव खाना = आँच पर गरम होना। ताव देना = आँच पर रखना। गरम करना। मूँछों पर ताव देना = पराक्रम, बल आदि के घमंड में मूँछों पर हाथ फेरना।

२. अधिकार मिले हुए क्रोध का आवेश।

मुहा०—ताव दिखाना = अभिमान मिला हुआ क्रोध प्रकट करना। ताव में आना = अभिमान मिले हुए क्रोध के आवेग में होना।

३. शेखी की झोंक। ४. ऐसी इच्छा जिसमें उतावलापन हो।

मुहा०—ताव चढ़ना = प्रबल इच्छा होना।

संज्ञा पुं० [फा० ता] कागज का तख्ता।

तावत्-क्रि० वि० [सं०] १. उतनी देर तक। तब तक। २. उतनी दूर तक। वहाँ तक। "यावत्" का संबंधपूरक।

तावना†-क्रि० स० [सं० तापन] १. तपाना। गरम करना। २. जलाना। ३. दुःख पहुँचाना।

ताव भाव-संज्ञा पुं० [हिं० ताव + भाव]

तितारा-संज्ञा पुं० [सं० त्रि + हिं० तार] सितार की तरह का एक बाजा जिसमें तीन तार लगे रहते हैं।
वि० जिसमें तीन तार हों।
तितिंबा-संज्ञा पुं० [अ० तितिम्म] १. ढकोसला। २. शेष। ३. पुस्तक का परिशिष्ट। उपसंहार।
तितिक्ष-वि० [सं०] सहनशील।
तितिक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सर्दी, गरमी आदि सहने की सामर्थ्य। सहिष्णुता। २ क्षमा। शांति।
तितिक्षु-वि० [सं०] क्षमाशील।
तितिम्मा-संज्ञा पुं० [अ०] १. बचा हुआ भाग। २. परिशिष्ट। उपसंहार।
तिते †-वि० [सं० तति] उतने।
तितेक †-वि० [हिं० तितो + एक] उतना।
तितै †-क्रि० वि० [हिं० तित + ऐ (प्रत्य०)] १. वहाँ या वहीं। २. उधर।
तितो †-वि०, क्रि० वि० [सं० तति] उतना।
तित्तिरि-संज्ञा पुं० [सं०] १. तीतर पक्षी। २ यजुर्वेद की एक शाखा। तैत्तिरीय। ३. यास्क मुनि के शिष्य जिन्होंने तैत्तिरीय शाखा चलाई थी।
तिथि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चांद्रमास के अलग अलग दिन जिनके नाम संख्या के अनुसार होते हैं। मिति। तारीख। (प्रत्येक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं।) २. पंद्रह की संख्या।
तिथिक्षय-संज्ञा पुं० [सं०] किसी तिथि का गिनती में न आना। (ज्यो०)
तिथिपत्र-संज्ञा पुं० [सं०] पंचांग। जंत्री।
तिदरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन + फा० दर] वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे या खिड़कियाँ हों।
तिधर†-क्रि० वि० दे० "उधर"।
तिधारा-संज्ञा पुं० [सं० त्रिधार] बिना पत्तों का एक प्रकार का थूहर (सेंहुड़)।
तिन†-सर्व० [सं० तेन] 'तिस' का बहु०। संज्ञा पुं० [सं० तृण] तिनका। तृण।
तिनकना-क्रि० अ० [अनु०] चिड़चिड़ाना। चिढ़ना। झल्लाना।
तिनका-संज्ञा पुं० [सं० तृण] सूखी घास या डाठी का टुकड़ा। तृण।
मुहा०—तिनका दाँतों में पकड़ना या लेना = क्षमा या कृपा के लिये दीनतापूर्वक विनय करना। गिड़गिड़ाना। तिनका तोड़ना = १. संबंध तोड़ना। २. बलैया लेना। तिनके का सहारा = थोड़ा सा सहारा। तिनके को पहाड़ करना = छोटी बात को बड़ी कर डालना।
तिनगना-क्रि० अ० दे० "तिनकना"।
तिनगरी-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पकवान।
तिनपहला-वि० [हिं० तीन + पहल] जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।
तिनिश-संज्ञा पुं० [सं०] सीसम की जाति का एक पेड़। तिनास। तिनसुना।
तिनूका †-संज्ञा पुं० दे० "तिनका"।
तिन्ना-संज्ञा पुं० [सं०] १. सती नामक वर्णवृत्त। २. रोटी के साथ खाने की रसेदार वस्तु। ३. तिन्नी धान।
तिन्नी-संज्ञा स्त्री० [सं० तृण] एक प्रकार का जंगली धान जो तालों में होता है। संज्ञा स्त्री० [देश०] नीवी। फुफुँदी।
तिन्ह†-सर्व० दे० "तिन"।
तिपति †-संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति"।
तिपल्ला-वि० [हिं० तीन + पल्ला] १. जिसमें तीन पल्ले हों। २. जिसमें तीन तागे हों।
तिपाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन + पाया] तीन पायों की बैठने या घड़ा आदि रखने की छोटी ऊँची चौकी। टिकठी। तिगोड़िया।
तिपाड़-संज्ञा पुं० [हिं० तीन + पाट] १. जो तीन पाट जोड़कर बना हो। २. जिसमें तीन पल्ले हों।
तिबारा-वि० [हिं० तीन + बार] तीसरी बार।
संज्ञा पुं० तीन बार खींचा हुआ मद्य।
संज्ञा पुं० [हिं० तीन + बार = दरवाजा] वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों।
तिबासी-वि० [हिं० तीन + बासी] तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ)।
तिब्बत-संज्ञा पुं० [सं० त्रि + भोट] एक देश जो हिमालय के उत्तर है। भोट देश।
तिब्बती-वि० [हिं० तिब्बत] भोट देशी। तिब्बत का। तिब्बत में उत्पन्न।
संज्ञा स्त्री० तिब्बत की भाषा।
संज्ञा पुं० तिब्बत का रहनेवाला।
तिमंजिला-वि० [हिं० तीन + अ० मंजिल] [स्त्री० तिमंजिली] तीन खंडों का। तीन मरातिब का।
तिमिंगिल-संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र में

युक्त अवसर। मौका। परिस्थिति।
तावरी-संज्ञा स्त्री० [सं० ताप] १. ताप। दाह। जलन। २ धूप। घाम। ३. बुखार। ज्वर। हरारत। ४. गरमी से आया हुआ चक्कर। मूर्च्छा।
तावरो†-संज्ञा पु० दे० "तावरी"।
तावान-संज्ञा पु० [फा०] वह चीज जो नुकसान भरने के लिये दी या ली जाय। दंड। डाँड़।
तावीज़-संज्ञा पु० [अ० तअवीज़] १. यंत्र, मंत्र या कवच जो किसी संपुट के भीतर रखकर पहना जाय। २. धातु का चौकोर या अठपहला संपुट जिसे तागे में लगाकर गले या बाँह पर पहनते हैं। जन्तर।
ताश-संज्ञा पु० [अ० तास] १. एक प्रकार का ज़रदोज़ी कपड़ा। ज़रबफ़्। २ खेलने के लिये मोटे कागज़ के चौखूँटे टुकड़े जिन पर रंगों की बूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं। ३. छोटी दफ़्ती जिस पर सीने का तागा लपेटा रहता है।
ताशा-संज्ञा पु० [अ० तास] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा।
तासीर-संज्ञा स्त्री० [अ०] असर। प्रभाव
तासु‡-सर्व० [हिं० ता] उसका।
तासूँ†-सर्व० दे० "तासों"।
तासों†-सर्व० [हिं० ता] उससे।
ताहम-अव्य० [फा०] तो भी।
ताहि †-सर्व० [हिं० ता] उसको। उसे।
ताहीं†-अव्य० दे० "ताईं", "तईं"।
तितिडी-संज्ञा स्त्री० [सं०] इमली।
तिआ संज्ञा स्त्री० दे० "तिया"।
तिआह†-संज्ञा पु० [सं० त्रिविवाह] १. तीसरा विवाह। २. वह पुरुष जिसका तीसरा ब्याह हो रहा हो।
तिकड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन + कड़ी] १. तीन कड़ियोंवाला। २. चारपाई की वह बुनावट जिसमें तीन रस्सियाँ एक साथ हों।
तिकोन‡-वि० दे० "तिकोना"।
तिकोना-वि० [सं० त्रिकोण] जिसमें तीन कोन हों। तीन कोनों का।
संज्ञा पु० समोसा नाम का पक्वान।
तिकोनिया-वि० दे० "तिकोना"।
तिक्का†-संज्ञा पु० [फा० तिक] मांस की बोटी। लोथ।
तिक्की-संज्ञा स्त्री० [सं० त्रि] गंजीफे या ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ हों।
तिक्ख -वि० [सं० तीक्ष्ण] १. तीखा। चोखा। तेज़। २. तीव्रबुद्धि। चालाक।
तिक्त-वि० [सं०] जिसका स्वाद नीम या चिरायते आदि का सा हो। तीता। कड़ुआ।
तिक्तता-संज्ञा स्त्री० [सं०] तिताई। कड़ुआपन।
तिख †-वि० [सं० तीक्ष्ण] १. तीक्ष्ण। तेज़। २. चोखा। पैना।
तिखता‡-संज्ञा स्त्री० [सं० तीक्ष्णता] तेज़ी।
तिखटी †-संज्ञा स्त्री० दे० "टिकठी"।
तिखाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० तीखा] तीखापन।
तिखारना†-क्रि० अ० [सं० त्रि + हिं० आखर] कोई बात पक्की करने के लिये कई बार कहना या कहलाना।
तिखूँटा-वि० [हिं० तीन + खूँट] जिसमें तीन कोने हों। तिकोना।
तिगुना-वि० [सं० त्रिगुण] तीन बार अधिक। तीन गुना।
तिग्म-वि० [सं०] तीक्ष्ण। तेज़।
संज्ञा पु० १. वज्र। २. पिप्पली।
तिग्मता-संज्ञा स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता।
तिच्छ‡-वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिच्छन‡-वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिजरा-संज्ञा पु० दे० "तिजारी"।
तिजारत-संज्ञा स्त्री० [अ०] वाणिज्य। व्यापार। रोजगार। सौदागरी।
तिजारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तिजार] हर तीसरे दिन जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।
तिड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "तिक्की"।
तिड़ी बिड़ी†-वि० [देश०] तितर-बितर। छितराया हुआ।
तित -क्रि० वि० [सं० तत्र] १. तहाँ। वहाँ। २. उधर। उस ओर।
तितना†-क्रि० वि० दे० "उतना"।
तितर बितर-वि० [हिं० तिधर + अनु०] १. जो एकत्र न हो। छितराया हुआ। बिखरा हुआ। २. अव्यवस्थित। अस्तव्यस्त।
तितली-संज्ञा स्त्री० [हिं० तीतर] १. एक उड़नेवाला सुंदर कीड़ा या फतिंगा जो प्रायः फूलों पर बैठा हुआ दिखाई पड़ता है। २. एक प्रकार की घास।
तितलौकी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० तीता + लौआ] कड़ु तुंबी। कड़ुवा कद्दू।

तितारा—संज्ञा पुं० [सं० त्रि+हिं० तार] सितार की तरह का एक बाजा जिसमें तीन तार लगे रहते हैं।
वि० जिसमें तीन तार हों।

तितिंबा—संज्ञा पुं० [अ० तितिम्म] १ ढकोसला। २ शेष। ३ पुस्तक का परिशिष्ट। उपसंहार।

तितिक्ष—वि० [सं०] सहनशील।

तितिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरदी, गरमी आदि सहने की सामर्थ्य। सहिष्णुता। २ क्षमा। शांति।

तितिक्षु—वि० [सं०] क्षमाशील।

तितिम्मा—संज्ञा पुं० [अ०] १ बचा हुआ भाग। २ परिशिष्ट। उपसंहार।

तिते †—वि० [सं० तति] उतने।

तितेक †—वि० [हिं० तितो+एक] उतना।

तितैं—क्रि० वि० [हिं० तित+ऐ (प्रत्य०)] १ वहाँ या वहीं। २ उधर।

तितो†—वि०, क्रि० वि० [सं० तति] उतना।

तित्तिरि—संज्ञा पुं० [सं०] १ तीतर पक्षी। २ यजुर्वेद की एक शाखा। तैत्तिरीय। ३ यास्क मुनि के शिष्य जिन्होंने तैत्तिरीय शाखा चलाई थी।

तिथि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चांद्रमास के अलग अलग दिन जिनके नाम संख्या के अनुसार होते हैं। मिति। तारीख। (प्रत्येक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं।) २ पंद्रह की संख्या।

तिथिक्षय—संज्ञा पुं० [सं०] किसी तिथि का गिनती में न आना। (ज्यो०)

तिथिपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] पचांग। जंत्री।

तिदरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+फा० दर] वह कोठरी जिसमें तीन दरवाज़े या खिड़कियाँ हों।

तिधर†—क्रि० वि० दे० "उधर"।

तिधारा—संज्ञा पुं० [सं० त्रिधार] बिना पत्रों का एक प्रकार का थूहर (सेंहुड़)।

तिन†—सर्व० [सं० तेन] 'तिस' का बहु०।
संज्ञा पुं० [सं० तृण] तिनका। तृण।

तिनकना—क्रि० अ० [अनु०] चिड़चिड़ाना। चिढ़ना। झल्लाना।

तिनका—संज्ञा पुं० [सं० तृण] सूखी घास या डाँठी का टुकड़ा। तृण।
मुहा०—तिनका दाँतों में पकड़ना या लेना = क्षमा या कृपा के लिये दीनतापूर्वक विनय करना। गिड़गिड़ाना। तिनका तोड़ना = १ संबंध तोड़ना। २ बलैया लेना। तिनके का सहारा = थोड़ा सा सहारा। तिनके को पहाड़ करना = छोटी बात को बड़ी कर डालना।

तिनगना—क्रि० अ० दे० "तिनकना"।

तिनगरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्वान।

तिनपहला—वि० [हिं० तीन+पहल] जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।

तिनिश—संज्ञा पुं० [सं०] सीसम की जाति का एक पेड़। तिनास। तिनसुना।

तिनूका†—संज्ञा पुं० दे० 'तिनका'।

तिन्ना—संज्ञा पुं० [सं०] १. सती नामक वर्णवृत्त। २ रोटी के साथ खाने की रसेदार वस्तु। ३ तिन्नी धान।

तिन्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० तृण] एक प्रकार का जंगली धान जो तालों में होता है।
संज्ञा स्त्री० [देश०] नीबी। फुफुँदी।

तिन्ह†—सर्व० दे० "तिन"।

तिपति†—संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति"।

तिपल्ला—वि० [हिं० तीन+पल्ला] १. जिसमें तीन पल्ले हों। २. जिसमें तीन तागे हों।

तिपाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+पाया] तीन पायों की बैठने या घड़ा आदि रखने की छोटी ऊँची चौकी। टिकठी। तिगोड़िया।

तिपाड—संज्ञा पुं० [हिं० तीन+पाट] १ जो तीन पाट जोड़कर बना हो। २ जिसमें तीन पल्ले हों।

तिबारा—वि० [हिं० तीन+बार] तीसरी बार।
संज्ञा पुं० तीन बार खींचा हुआ मद्य।
संज्ञा पुं० [हिं० तीन+बार = दरवाजा] वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों।

तिबासी—वि० [हिं० तीन+बासी] तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ)।

तिब्बत—संज्ञा पुं० [सं० त्रि+भोट] एक देश जो हिमालय के उत्तर है। भोट देश।

तिब्बती—वि० [हिं० तिब्बत] भोट देशी। तिब्बत का। तिब्बत में उत्पन्न।
संज्ञा स्त्री० तिब्बत की भाषा।
संज्ञा पुं० तिब्बत का रहनेवाला।

तिमंज़िला—वि० [हिं० तीन+अ० मंज़िल] [स्त्री० तिमंज़िली] तीन खंडों का। तीन मरातिब का।

तिमिंगिल—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र में

रहनेवाला मत्स्य के आकार का एक बड़ा भारी जंतु। २. एक द्वीप का नाम।

तिमि—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र में रहनेवाला मछली के आकार का एक बड़ा भारी जंतु। २. समुद्र। ३. रतौंधी का रोग जिसमें रात को दिखाई नहीं देता।

*अव्य० [सं० तद् + इमि] उस प्रकार। वैसे।

तिमिर—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधकार। अँधेरा। २. आँखों से धुँधला दिखाई पड़ना, रात को न दिखाई पड़ना आदि आँखों के दोष।

तिमिरहर—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

तिमिरारि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

तिमिरारी—संज्ञा स्त्री० [सं० तिमिराली] अंधकार का समूह। अँधेरा।

तिमिरावलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंधकार का समूह।

तिमुहानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन + फा० मुहाना] वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने को तीन मार्ग हों। तिरमुहानी।

तिय—संज्ञा स्त्री [सं० स्त्री०] १. स्त्री। औरत। २ पत्नी। जोरू।

तियला—संज्ञा पुं० [हिं० तिय + ला] स्त्रियों का एक पहनावा।

तिया—संज्ञा पुं० [सं० त्रि] तिक्की। तिड़ी। संज्ञा स्त्री० दे० "तिय"।

तिरकुटा—संज्ञा पुं० [सं० त्रिकटु] सोंठ, मिर्च, पीपल इन तीन कडुई ओषधियों का समूह।

तिरखा‡—संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।

तिरखित—वि० दे० "तृषित"।

तिरखूँटा—वि० [सं० त्रि + हिं० खूँट] जिसमें तीन खूँट या कोने हों। तिरकोना।

तिरछई‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० तिरछा] तिरछापन।

तिरछा—वि० [सं० तिरश्चीन] १. जो ठीक सामने की ओर न जाकर इधर उधर हट कर गया हो।

—१०—बाँका तिरछा = छबीला।

[मुहा०]—तिरछी चितवन या नज़र = बिना र फेरे हुए बगल की ओर दृष्टि। तिरछी [बा]त या वचन = कटु वाक्य। अप्रिय शब्द। . एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

[तिर]छाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० तिरछा] तिरछापन।

तिरछाना—क्रि० अ० [हिं० तिरछा] तिरछा होना।

तिरछापन—संज्ञा पुं० [हिं० तिरछा + पन] तिरछा होने का भाव।

तिरछौहाँ—वि० [हिं० तिरछा + औहाँ] जो कुछ तिरछापन लिए हो।

तिरछौहें—क्रि० वि० [हिं० तिरछौहाँ] तिरछेपन के साथ। वक्रता से।

तिरना—क्रि० अ० [सं० तरण] १. पानी में न डूबकर सतह के ऊपर रहना। उतराना। २ तैरना। पैरना। ३. पार होना। ४. तरना। मुक्त होना।

तिरनी—संज्ञा स्त्री० [?] १ घाघरी बाँधने की डोरी। नीवी। तिन्नी। फुबती। २. स्त्रियों के घाघरे या धोती का वह भाग जो नाभि के नीचे पड़ता है।

तिरप—संज्ञा [सं० त्रि] नृत्य में एक प्रकार की गति। त्रिसम। तिहाई।

तिरपट‡—वि० [देश०] १. तिरछा। टेढ़ा। २ मुश्किल। कठिन।

तिरपाई—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिपाद] तीन पायों की ऊँची चौकी। स्टूल।

तिरपाल—संज्ञा पुं० [सं० तृण + हिं० पातना = बिछाना] फूस या सरकंडों के लंबे पूले जो छाजन में खपड़ों के नीचे दिए जाते हैं। मुट्ठा।

संज्ञा पुं० [अं० टारपोलिन] रोगन चढ़ा हुआ कनवास या टाट।

तिरपित‡—वि० दे० "तृप्त"।

तिरपौलिया—संज्ञा पुं० [सं० त्रि + हिं० पौल] वह स्थान जहाँ बराबर से ऐसे तीन बड़े फाटक हों जिनसे होकर हाथी, ऊँट इत्यादि सवारियाँ निकल सकें।

तिरबेनी—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।

तिरमिरा—संज्ञा पुं० [सं० तिमिर] १. दुर्बलता के कारण होनेवाला दृष्टि का एक दोष जिसमें कभी अँधेरा और कभी अनेक प्रकार के रंग या तारे दिखाई पड़ते हैं। २. तेज रोशनी या चमक में नज़र का न ठहरना। चकाचौंध।

तिरमिराना—क्रि० अ० [हिं० तिरमिरा] तेज़ रोशनी या चमक के सामने (आँखों का) झपना। चौंधना। चौंधियाना।

तिरलोक‡—संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"।

तिरशूल†–संज्ञा पु० दे० "त्रिशूल"।
तिरस्कार–संज्ञा पु० [सं०] [वि० तिरस्कृत] १. अनादर। अपमान। २. भर्त्सना। फटकार। ३. अनादरपूर्वक त्याग।
तिरस्कृत–वि० [सं०] १. जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादृत। २. अनादर-पूर्वक त्याग किया हुआ। ३. परदे में छिपा हुआ।
तिरहुत–संज्ञा पु० [सं० तीरभुक्ति] मिथिला प्रदेश जिसके अंतर्गत आजकल मुजफ्फरपुर और दरभंगा है।
तिरहुतिया-वि० [हिं० तिरहुत] तिरहुत का।
संज्ञा पु० तिरहुत का रहनेवाला।
संज्ञा स्त्री० तिरहुत की बोली।
तिराना–क्रि० स० [हिं० तिरना] १. पानी के ऊपर ठहराना या चलाना। तैराना। २. पार करना। ३. उबारना। निस्तार करना। भयभीत करना।
तिराहा–संज्ञा पु० [हिं० तीन+फा० राह] वह स्थान जहाँ से तीन रास्ते तीन ओर गए हों। तिरमुहानी।
तिरिन†–संज्ञा पु० दे० "तृण"।
तिरिया–संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।
यौ०—तिरिया चरित्तर=स्त्रियों की चालाकी या कौशल।
तिरीछा†–वि० दे० "तिरछा"।
तिरौंदा–संज्ञा पु० [सं० तरंड] १. समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिये किसी ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ पानी छिछला होता है या चट्टानें होती हैं। २. मछली मारने की बंसी में की लकड़ी जिसके डूबने से मछली के फँसने का पता लगता है। तरौंदा।
तिरोधान–संज्ञा पु० [सं०] अंतर्द्धान।
तिरोभाव–संज्ञा पु० [सं०] १. अंतर्द्धान। अदर्शन। २ गोपन। छिपाव।
तिरोहित, तिरोभूत–वि० [सं०] छिपा हुआ। अंतर्हित। गायब।
तिरौंछा†–वि० दे० "तिरछा"।
तिर्यक्–वि० [सं०] तिरछा। टेढ़ा।
संज्ञा पु० पशु पक्षी, आदि जीव।
तिर्यक्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तिरछापन।
तिर्यग्गति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तिरछी या टेढ़ी चाल। २. पशु-योनि की प्राप्ति।
तिर्यग्योनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पशु, पक्षी आदि जीव।
तिलंगा–संज्ञा पु० [सं० तैलंग] अँगरेजी फौज का देशी सिपाही।
संज्ञा पु० [हिं० तीन+लग] एक प्रकार का कनकौआ।
तिलंगाना–संज्ञा पु० [सं० तैलंग] तैलंग देश।
तिलंगी–वि० [सं० तैलंग] तिलंगाने का निवासी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+लग] एक प्रकार की पतंग।
तिल–संज्ञा पु० [सं०] १. एक पौधा जिसकी खेती तेलवाले बीजों के लिये होती है। तिल दो प्रकार का होता है—सफेद और काला।
मुहा०—तिल की ओट पहाड़=किसी छोटी बात के भीतर बड़ी भारी बात। तिल का ताड़ करना=किसी छोटी बात को बहुत बड़ा देना। तिल तिल=थोड़ा थोड़ा। तिल धरने की जगह न होना=जरा सी भी जगह खाली न रहना। तिल भर=जरा सा। थोड़ा सा।
२. काले रंग का बहुत छोटा दाग जो शरीर पर होता है। ३. काली बिंदी के आकार का गोदना। ४. आँख की पुतली के बीचो बीच की गोल बिंदी।
तिलक–संज्ञा पु० [सं०] १. वह चिह्न जो चंदन, केसर आदि से मस्तक बाहु आदि पर सांप्रदायिक संकेत या शोभा के लिये लगाते हैं। टीका। २. राज्याभिषेक। राजगद्दी। राजतिलक। ३. विवाह-संबंध स्थिर करने की एक रीति। टीका। ४. माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टीका। ५ शिरोमणि। श्रेष्ठ व्यक्ति। ६. पुन्नाग की जाति का एक सुंदर पेड़। ७. घोड़े का एक भेद। ८. तिल्ली जो पेट के भीतर होती है। क्लोम। ९. किसी ग्रंथ की अर्थसूचक व्याख्या। टीका।
संज्ञा पु० [तु० तिरलीक] १. एक प्रकार का जनाना कुरता। २. खिलअत।
तिलकना–क्रि० अ० [हिं० तड़कना] १. गीली मिट्टी का सूखकर स्थान स्थान पर दरकना या फटना। २. फिसलना।
तिलक मुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चंदन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि का छापा

रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है।

मुहा०—तिस पर = इतना होने पर। ऐसी अवस्था में।

तिसना :-संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।

तिसरायत-संज्ञा स्त्री० [हिं० तीसरा] तीसरा या ग़ैर होने का भाव।

तिसरैत-संज्ञा पुं० [हिं० तीसरा] १. झगड़ा करनेवालों से अलग एक तीसरा मनुष्य। तटस्थ। २. तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसाना :-क्रि० अ० [सं० तृषा] प्यासा होना।

तिहरा-वि० दे० "तेहरा"।

तिहराना-क्रि० स० [हिं० तेहरा] दो बार करके एक बार फिर और करना।

तिहवार-संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।

तिहाई-संज्ञा स्त्री० [सं० त्रि + भाग] तीसरा भाग या हिस्सा। तृतीयांश।

संज्ञा स्त्री० खेत की उपज। फसिल।

तिहायत-संज्ञा पुं० दे० "तिसरैत"।

तिहारा तिहारो*†-सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तिहाव†-संज्ञा पुं० [हिं० तेह] १. क्रोध। कोप। २. बिगाड़। झगड़ा।

तिहि-सर्व० दे० "तेहि"।

तिहुँ†-वि० [हिं० तीन] तीनों।

तिहैया-संज्ञा पुं० [हिं० तिहाई] १. तीसरा भाग। तृतीयांश। २ तबले, मृदंग आदि की वे तीन थापें जिनमें से अंतिम थाप ठीक सम पर पड़ती है।

ती *-संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] १. स्त्री। औरत। २. जोरू। पत्नी। ३. मनोहरण छंद। भ्रमरावली। नलिनी।

तीखण, तीखन -वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीक्ष्ण-वि० [सं०] १. तेज नोक या धार-वाला। २. तेज़। प्रखर। तीव्र। ३. उग्र। प्रचंड। तीखा। ४. जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। ५. जो सुनने में अप्रिय हो। कर्ण-कटु। ६. जो सहन न हो। असह्य।

तीक्ष्णता-संज्ञा स्त्री० [सं०] तीक्ष्ण होने का भाव। तीव्रता। तेजी।

तीक्ष्णदृष्टि-वि० [सं०] जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पड़ती हो। सूक्ष्म-दृष्टि।

तीक्ष्णधार-संज्ञा पुं० [सं०] खड्ग।

वि० जिसकी धार बहुत तेज हो।

तीक्ष्णबुद्धि-वि० [सं०] जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो। बुद्धिमान्।

तीख* †-वि० दे० "तीखा"।

तीखन †-वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीखा-वि० [सं० तीक्ष्ण] १. जिसकी धार या नोक बहुत तेज़ हो। तीक्ष्ण। २. तेज़। तीव्र। प्रखर। ३. उग्र। प्रचंड। ४ जिसका स्वभाव बहुत उग्र हो। ५. जिसका स्वाद बहुत तेज या चरपरा हो। ६ जो सुनने में अप्रिय हो। ७ चोखा। बढ़िया।

तीखुर-संज्ञा पुं० [सं० तवक्षीर] हल्दी की जाति का एक प्रकार का पौधा। इसकी जड़ के सत्त का व्यवहार कई तरह की मिठाइयाँ आदि बनाने में होता है।

तीछन* †-वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीज-संज्ञा स्त्री० [सं० तृतीया] १. पक्ष की तीसरी तिथि। २. भादों सुदी तीज। वि० दे० "हरतालिका"।

तीजा-वि० [हिं० तीन] [स्त्री० तीजी] तीसरा। तृतीय।

तीत *†-वि० दे० "तीता"।

तीतर-संज्ञा पुं० [सं० तित्तिर] एक प्रसिद्ध चंचल और तेज़ दौड़नेवाला पक्षी जो लड़ाने के लिये पाला जाता है।

तीता-वि० [सं० तिक्त] १. जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो। तिक्त। जैसे—मिर्च। २ कड़ुआ। कटु।

तीतुरी*†-संज्ञा स्त्री० दे० "तितली"।

तीतुल -संज्ञा पुं० दे० "तीतर"।

तीन-वि० [सं० त्रीणि] जो दो और एक हो।

संज्ञा पुं० दो और एक का जोड़।

मुहा०—तीन पाँच करना = घुमाव फिराव या हुज्जत की बात करना।

संज्ञा पुं० सरजूपारी ब्राह्मणों में तीन उत्तम गोत्रों का एक वर्ग।

मुहा०—तीन तेरह करना = तितर बितर करना। अलग अलग करना। न तीन में, न तेरह में = जो किसी गिनती में न हो।

तीनि* †-संज्ञा पुं० और वि० दे० "तीन"।

तीमारदारी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रोगियों की सेवा-शुश्रूषा का काम।

तीय-संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।

तीया*-संज्ञा स्त्री० दे० "तीता"।

संज्ञा पुं० दे० "तिक्की"

जो भक्त लोग लगाते हैं।

तिलकहार–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तिलक+हार] वह लोग जो कन्या पक्ष से वर को तिलक चढ़ाने के लिये भेजे जाते हैं।

तिलका–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक वर्णवृत्त। तिल्ला। तिल्लाना। डिल्ला।

तिलकुट–संज्ञा पु॰ [सं॰ तिलक] कूटे हुए तिल जो खाँड की चाशनी में पगे हों।

तिलचटा–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तिल+चाटना] एक प्रकार का झींगुर। चपड़ा।

तिलछना–क्रि॰ अ॰ [अनु॰] विकल रहना। छटपटाना। बेचैन रहना।

तिलड़ा–वि॰ [हिं॰ तीन+लड़] जिसमें तीन लड़ हों।

तिलड़ी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ तीन+लड़] तीन लड़ों की माला जिसके बीच में जुगनी होती है।

तिलदानी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ तिल्ला+सं॰ आधान] वह थैली जिसमें दरजी सूई, तागा आदि रखते हैं।

तिलपट्टी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ तिल+पट्टी] खाँड़ में पगे हुए तिलों का जमाया हुआ कतरा।

तिलपपड़ी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तिलपट्टी"।

तिलपुष्प–संज्ञा पु॰ [सं॰] १. तिल का फूल। २ व्याघ्रनख। बघनखी।

तिलभुग्गा–संज्ञा पु॰ दे॰ "तिलकुट"।

तिलमिल–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ तिरमिर] चका चौंध। तिरमिराहट।

तिलमिलाना–क्रि॰अ॰ दे॰ "तिरमिराना"।

तिलवा–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तिल] तिलों का लड्डू।

तिलस्म–संज्ञा पु॰ [यू॰ टेलिस्मा] १. जादू। इंद्रजाल। २ अद्भुत या अलौकिक व्यापार। करामात। चमत्कार।

तिलस्मी–वि॰ [हिं॰ तिलस्म] तिलस्म-संबंधी।

तिलहन–संज्ञा पु॰[हिं॰ तेल+धान्य] वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है।

तिलांजली–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] मृतक संस्कार की एक क्रिया जिसमें अँजुली में जल और तिल लेकर मृतक के नाम से छोड़ते हैं।

मुहा॰—तिलांजली देना=बिलकुल त्याग देना। ज़रा भी संबंध न रखना।

तिलाक–संज्ञा पु॰ [अ॰ तलाक़] पति पत्नी के नाते का टूटना।

तिली†–संज्ञा स्त्री॰ १. दे॰ "तिल"। २. दे॰ "तिल्ली"।

तिलेदानी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तिलदानी"।

तिलेगू–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तैलगू"।

तिलोक–संज्ञा पु॰ दे॰ "त्रिलोक"।

तिलोकपति–संज्ञा पु॰ [सं॰ त्रिलोकपति] विष्णु।

तिलोकी–संज्ञा पु॰ [सं॰ त्रिलोकी] इक्कीस मात्राओं का एक उपजाति छंद।

तिलोचन–संज्ञा पु॰ दे॰ "त्रिलोचन।"

तिलोत्तमा–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पुराणानुसार एक परम रूपवती अप्सरा जिसे ब्रह्मा ने संसार भर के सब उत्तम पदार्थों में से एक एक तिल अंश लेकर बनाया था।

तिलोदक—संज्ञा पु॰ दे॰ "तिलांजली"।

तिलोरी–संज्ञा स्त्री॰ [देश॰] १. तेलिया मैना। २ दे॰ "तिलौरी"।

तिलौंछना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ तेल+औंछना] थोड़ा तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौंछा–वि॰ [हिं॰ तेल+औंछा] जिसमें तेल का सा स्वाद या रंग हो।

तिलौरी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ तिल+बरी] वह बरी जिसमें तिल भी मिला हो।

तिल्ला–संज्ञा पु॰ [अ॰ तिला] १ कलाबत्तू या बादले आदि का काम। २ दुपट्टे या साड़ी आदि का वह अंचल जिसमें कलाबत्तू आदि का काम किया हो।

संज्ञा पु॰ दे॰ "तिलका" (वर्णवृत्त)।

तिल्लाना–संज्ञा पु॰ दे॰ "तराना" (१)।

तिल्ली–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ तिलक] पेट के भीतर का पोला गुठली के आकार का एक छोटा अवयव जो पसलियों के नीचे बाईं ओर होता है। इसका संबंध पाकाशय से होता है। प्लीहा। पिल्ही।

संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ तिल] तिल नाम का अन्न।

तिवाड़ी, तिवारी–संज्ञा पु॰ दे॰ 'त्रिपाठी'।

तिवासा†–संज्ञा पु॰ [सं॰ त्रिवासर तीन दिन।

तिशना–संज्ञा पु॰ [फा॰ तशनीय] ताना। मेहना। व्यंग्य वचन।

संज्ञा स्त्री॰ दे॰ 'तृष्णा"।

तिष्ठना–क्रि॰ अ॰ [सं॰ तिष्ठ] ठहरना।

तिष्पन–वि॰ दे॰ "तीक्ष्ण"।

तिस†–सर्व॰ [सं॰ तस्मिन्] 'ता' का एक

रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है।
मुहा०—तिस पर=इतना होने पर। ऐसी अवस्था में।
तिसना—संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।
तिसरायत—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीसरा] तीसरा या ग़ैर होने का भाव।
तिसरैत—संज्ञा पुं० [हिं० तीसरा] १. झगड़ा करनेवालों से अलग एक तीसरा मनुष्य। तटस्थ। २. तीसरे हिस्से का मालिक।
तिसाना—क्रि० अ० [सं० तृषा] प्यासा होना।
तिहरा—वि० दे० "तेहरा"।
तिहराना—क्रि० स० [हिं० तेहरा] दो बार करके एक बार फिर और करना।
तिहवार—संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।
तिहाई—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रि+भाग] तीसरा भाग या हिस्सा। तृतीयांश।
संज्ञा स्त्री० खेत की उपज। फसिल।
तिहायत—संज्ञा पुं० दे० "तिसरैत"।
तिहारा तिहारो—सर्व० दे० "तुम्हारा"।
तिहाव—संज्ञा पुं० [हिं० तेह] १. क्रोध। कोप। २. बिगाड़। झगड़ा।
तिहि—सर्व० दे० "तेहि"।
तिहूँ—वि० [हिं० तीन] तीनों।
तिहैया—संज्ञा पुं० [हिं० तिहाई] १. तीसरा भाग। तृतीयांश। २. तबले, मृदंग आदि की वे तीन थापें जिनमें से अंतिम थाप ठीक सम पर पड़ती है।
तीं—संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] १. स्त्री। औरत। २. जोरू। पत्नी। ३. मनोहरण छंद। भ्रमरावली। नलिनी।
तीछन, तीछन—वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तीक्ष्ण—वि० [सं०] १. तेज़ नोक या धारवाला। २. तेज़। प्रखर। तीव्र। ३. उग्र। प्रचंड। तीखा। ४. जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। ५. जो सुनने में अप्रिय हो। कर्ण-कटु। ६. जो सहन न हो। असह्य।
तीक्ष्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीक्ष्ण होने का भाव। तीव्रता। तेज़ी।
तीक्ष्णदृष्टि—वि० [सं०] जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पड़ती हो। सूक्ष्म-दृष्टि।
तीक्ष्णधार—संज्ञा पुं० [सं०] खड्ग।
वि० जिसकी धार बहुत तेज़ हो।
तीक्ष्णबुद्धि—वि० [सं०] जिसकी बुद्धि बहुत तेज़ हो। बुद्धिमान्।
तीख—वि० दे० "तीखा"।
तीखन—वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तीखा—वि० [सं० तीक्ष्ण] १. जिसकी धार या नोक बहुत तेज़ हो। तीक्ष्ण। २. तेज़। तीव्र। प्रखर। ३. उग्र। प्रचंड। ४. जिसका स्वभाव बहुत उग्र हो। ५. जिसका स्वाद बहुत तेज़ या चरपरा हो। ६. जो सुनने में अप्रिय हो। ७. चोखा। बढ़िया।
तीखुर—संज्ञा पुं० [सं० तवक्षीर] हलदी की जाति का एक प्रकार का पौधा। इसकी जड़ के सत्त का व्यवहार कई तरह की मिठाइयाँ आदि बनाने में होता है।
तीछन—वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तीज—संज्ञा स्त्री० [सं० तृतीया] १. पक्ष की तीसरी तिथि। २. भादों सुदी तीज। वि० दे० "हरतालिका"।
तीजा—वि० [हिं० तीन] [स्त्री० तीजी] तीसरा। तृतीय।
तीत—वि० दे० "तीता"।
तीतर—संज्ञा पुं० [सं० तित्तिर] एक प्रसिद्ध चंचल और तेज़ दौड़नेवाला पक्षी जो लड़ाने के लिये पाला जाता है।
तीता—वि० [सं० तिक्त] १. जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो। तिक्त। जैसे—मिर्च। २. कड़ुआ। कटु।
तीतुरी—संज्ञा स्त्री० दे० "तितली"।
तीतुल—संज्ञा पुं० दे० "तीतर"।
तीन—वि० [सं० त्रीणि] जो दो और एक हो।
संज्ञा पुं० दो और एक का जोड़।
मुहा०—तीन पाँच करना=घुमाव-फिराव या हुज्जत की बात करना।
संज्ञा पुं० सरजूपारी ब्राह्मणों में तीन उत्तम गोत्रों का एक वर्ग।
मुहा०—तीन तेरह करना=तितर-बितर करना। अलग अलग करना। न तीन में, न तेरह में=जो किसी गिनती में न हो।
तीनि—संज्ञा पुं० और वि० दे० "तीन"।
तीमारदारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] रोगियों की सेवा-शुश्रूषा का काम।
तीय—संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।
तीया—संज्ञा स्त्री० दे० "तीय"।
संज्ञा पुं० दे० "तिक्की" या "तिड़ी"।

तीरंदाज-संज्ञा पुं० [फा०] तीर चलानेवाला।

तीरंदाजी-संज्ञा स्त्री० [फा०] तीर चलाने की विद्या या क्रिया।

तीर-संज्ञा पुं० [सं०] १. नदी का किनारा। कूल। तट। २ पास। निकट। समीप।
संज्ञा पु० [फा०] बाण। शर।
मुहा०—तीर चलाना या फेंकना=युक्ति भिड़ाना। टग-ढग लगाना।

तीरथ-संज्ञा पु० दे० "तीर्थ"।

तीरभुक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] तिरहुत देश।

तीरवर्त्ती-वि० [सं०] १. तट या किनारे पर रहनेवाला। २. पास रहनेवाला। पड़ोसी।

तीरस्थ-संज्ञा पु० [सं०] नदी के तीर पर पहुँचाया हुआ मरणासन्न व्यक्ति।

तीरा†-संज्ञा पु० दे० "तीर"।

तीर्णा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त। सती। तिन्न। सारणिजा।

तीर्थंकर-संज्ञा पु० [सं०] जैनियों के उपास्य देव जो सब देवताओं से भी श्रेष्ठ और सब प्रकार के दोषों से रहित और मुक्तिदाता माने जाते हैं। इनकी संख्या २४ है।

तीर्थ-संज्ञा पु० [सं०] १. वह पवित्र या पुण्य स्थान जहाँ धर्म-भाव से लोग यात्रा, पूजा या स्नान आदि के लिये जाते हों। २. कोई पवित्र स्थान। ३. हाथ में के कुछ विशिष्ट स्थान। ४ शास्त्र। ५. यज्ञ। ६ स्थान। स्थल। ७. उपाय। ८. अवसर। ९. अवतार। १०. उपाध्याय। गुरु। ११. दर्शन। १२. ब्राह्मण। १३ अग्नि। १४. संन्यासियों की एक उपाधि। १५. तारनेवाला। १६. ईश्वर। १७. माता-पिता।

तीर्थपति-संज्ञा पु० दे० "तीर्थराज"।

तीर्थयात्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्र स्थानों में दर्शन, स्नानादि के लिये जाना। तीर्थाटन।

तीर्थराज-संज्ञा पु० [सं०] प्रयाग।

तीर्थराजी-संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी।

तीर्थाटन-संज्ञा पु० [सं०] तीर्थयात्रा।

तीर्थिक-संज्ञा पु० [सं०] १. तीर्थ का ब्राह्मण, पंडा। २. बौद्ध धर्म का विद्वेषी ब्राह्मण। (बौद्ध) ३. तीर्थंकर।

तीली-संज्ञा स्त्री० [फा० तीर] १. बड़ा तिनका। सींक। २. धातु आदि का पतला, पर कड़ा तार।

तीवर-संज्ञा पु० [सं०] १. समुद्र। २. व्याधा। शिकारी। ३. मछुआ। ४. एक वर्ण-संकर अत्यज जाति।

तीव्र-वि० [सं०] १. अतिशय। अत्यंत। २. तीक्ष्ण। तेज। ३. बहुत गरम। ४. नितांत। बेहद। ५. कटु। कड़वा। ६. न सहने योग्य। असह्य। ७. प्रचंड। ८. तीखा। ९. वेग-युक्त। तेज। १०. कुछ ऊँचा और अपने स्थान से बढ़ा हुआ (स्वर)। (संगीत)

तीव्रता-संज्ञा स्त्री० [सं०] तीव्र होने का भाव। तीक्ष्णता। तेजी। तीखापन।

तीस-वि० [सं० त्रिंशति] दस का तिगुना। बीस और दस।
यौ०—तीसो दिन या तीस दिन=सदा। हमेश.। तीसमार खाँ=बड़ा बहादुर। (व्यंग्य)
संज्ञा पु० दस की तिगुनी संख्या।

तीसरा-वि० [हिं० तीन] १. क्रम में तीन के स्थान पर पड़नेवाला। २. जिसका प्रस्तुत विषय से कोई संबंध न हो। गैर।

तीसी-संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० तीस] फल आदि गिनने का तीस गाहियों अर्थात् एक सौ पचास का एक मान।
संज्ञा पु० दे० "तिहाई"।

तुंग-वि० [सं०] १. उन्नत। ऊँचा। २. उग्र। प्रचंड। ३. प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पु० १. पुन्नाग वृक्ष। २. पर्वत। पहाड़। ३ नारियल। ४. कमल का केसर। ५. शिव। ६ दो नगण और दो गुरु का एक वर्णवृत्त।

तुंगता-संज्ञा स्त्री० [सं०] ऊँचाई।

तुंगनाथ-संज्ञा पु० [सं०] हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।

तुंगबाहु-संज्ञा पु० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

तुंगभद्र-संज्ञा पु० [सं०] मतवाला हाथी।

तुंगभद्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी।

तुंगारण्य-संज्ञा पु० [सं०] झाँसी के पास बेतवा के किनारे का एक जंगल।

तुंगारन्य†-संज्ञा पु० दे० "तुंगारण्य"।

तुंड–संज्ञा पु० [सं०] १. मुख। मुँह। २. चंचु। चोंच। ३. निकला हुआ मुँह। थूथन। ४. तलवार का अगला हिस्सा। ५. शिव। महादेव।

तुंडि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुँह। २. चोंच। ३. नाभि।

तुंडी–वि० [सं० तुंडिन्] मुँह, चोंच, थूथन, या सूँड़वाला।
संज्ञा पु० गणेश।
संज्ञा स्त्री० नाभि। ढोंढी।

तुंद–संज्ञा पु० [सं०] पेट। उदर।
वि० [फा०] तेज। प्रचंड। घोर।

तुंदिल–वि० [सं०] तोंदवाला। बड़े पेटवाला।

तुँदैला–वि० [सं० तुंदिल] तोंद या बड़े पेटवाला।

तुँबड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "तूँबड़ी"।

तुंबरु–संज्ञा पु० दे० "तुँबुर"।

तुंबा–संज्ञा पु० दे० "तूँबा"।

तुंबुरु–संज्ञा पु० [सं०] १. धनिया। २. एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिया के आकार का होता है। ३. एक गंधर्व जो चैत के महीने में सूर्य के रथ पर रहते हैं।

तुअ:[]–सर्व० दे० "तुव", "तव"।

तुअना:[]–क्रि० अ० [हिं० चूना] १. चूना। टपकना। २. खड़ा न रह सकना। गिर पड़ना। ३ गर्भपात होना।

तुक–संज्ञा स्त्री० [हिं० टूक] १. किसी पद्य या गीत का कोई खंड। कड़ी। २. पद्य के दोनों चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अक्षर-मैत्री। अंत्यानुप्रास। काफ़िया।
मुहा०—तुक जोड़ना = भद्दी कविता करना।

तुकबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तुक + फा० बंदी] १. केवल तुक जोड़ने या भद्दी कविता करने की क्रिया। २. भद्दी कविता जिसमें काव्य के गुण न हों।

तुकमा–संज्ञा पु० [फा०] घुंडी फँसाने का फंदा। मुद्धी।

तुकांत–संज्ञा पुं० [हिं० तुक + सं० अंत] पद्य के दो चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अंत्यानुप्रास। काफ़िया।

तुका–संज्ञा पु० दे० "तुक्का"।

तुकार–संज्ञा स्त्री० [हिं० तू + सं० कार] 'तू' का प्रयोग जो अपमान-जनक समझा जाता है। अशिष्ट संबोधन।

तुकारना–क्रि० स० [हिं० तुकार] तू तू करके या अशिष्ट संबोधन करना।

तुक्कल–संज्ञा स्त्री० [फा० तुक्का] बड़ी पतंग।

तुक्का–संज्ञा पु० [फा० तुका] वह तीर जिसमें गाँसी की जगह घुंडी सी बनी होती है।

तुख–संज्ञा पु० [सं० तुष] १. भूसी। छिलका। २. अंडे के ऊपर का छिलका।

तुखार–संज्ञा पु० [सं०] १ एक देश का प्राचीन नाम जिसकी स्थिति हिमालय के उत्तर-पश्चिम होनी चाहिए। यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे माने जाते थे। २. इस देश का निवासी। ३. इस देश का घोड़ा।
संज्ञा पु० दे० "तुषार"।

तुख्म–संज्ञा पु० [अ०] बीज।

तुच्छ–वि० [सं०] १. हीन। क्षुद्र। नाचीज़। २. ओछा। नीच। ३. अल्प। थोड़ा।

तुच्छता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हीनता। नीचता। २. ओछापन। क्षुद्रता। ३. अल्पता।

तुच्छत्व–संज्ञा पुं० दे० "तुच्छता"।

तुच्छातितुच्छ–वि० [सं०] छोटे से छोटा। अत्यंत हीन। अत्यंत क्षुद्र।

तुझ–सर्व० [सं० तुभ्यम्] 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियाँ लगने के पहले प्राप्त होता है।

तुझे–सर्व० [हिं० तुझ] 'तू' का कर्म और संप्रदान रूप। तुझको।

तुट–वि० [सं० त्रुट] लेश मात्र। जरा सा।

तुट्ठना:–क्रि० स० [सं० तुष्ट] तुष्ट करना। प्रसन्न करना। राजी करना।
क्रि० अ० तुष्ट होना। प्रसन्न होना।

तुड़वाना–क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

तुड़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तुड़ाना] १. तुड़ाने की क्रिया या भाव। २. तोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तुड़ाना–क्रि० स० [हिं० तोड़ने का प्रे०] १. तोड़ने का काम कराना। तुड़वाना। २. अलग करना। संबंध न रखना। ३. बड़े सिक्के को बराबर मूल्य के कई छोटे छोटे सिक्कों से बदलना। भुनाना।

तुतरा:[]–वि० दे० "तोतला"।

तुतराना:[]–क्रि० अ० दे० "तुतलाना"।

तुतरौहाँ:[]–वि० दे० "तोतला"।

तुतलाना-क्रि० अ० [अनु०] शब्दों और वर्णों का अस्पष्ट उच्चारण करना। रुक रुककर टूटे फूटे शब्द बोलना।

तुत्थ-संज्ञा पुं० [सं०] तूतिया।

तुदन-संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यथा देने की क्रिया। पीड़न। २. व्यथा। पीड़ा।

तुन-संज्ञा पुं० [सं० तुन्न] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फूलों से एक प्रकार का पीला बसंती रंग निकलता है।

तुनीर-संज्ञा पुं० दे० "तूणीर"।

तुपक-संज्ञा स्त्री० [तु० तोप] १. छोटी तोप। २ बंदूक। कड़ाबीन।

तुफंग-संज्ञा स्त्री० [तु० तोप] १. हवाई बंदूक। २. वह लंबी नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ आदि डालकर फूँक के ज़ोर से चलाते हैं।

तुभना-क्रि० अ० [सं० स्तोमन] स्तब्ध रहना। रुक रह जाना। चकित रह जाना।

तुम-सर्व० [सं० त्वम्] 'तू' शब्द का बहुवचन रूप। वह सर्वनाम जिसका व्यवहार उस पुरुष के लिये होता है, जिससे कुछ कहा जाता है।

तुमड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० तुंबिनी] १. छोटा तूँबा। तुंबी। २. सूखे कद्दू का बना हुआ एक बाजा। महुवर।

तुमरा-सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तुमरू-संज्ञा पुं० दे० "तुंबुरु"।

तुमल-संज्ञा पुं०, वि० दे० "तुमुल"।

तुमुरः-संज्ञा पुं० दे० "तुमुल"।

तुमुल-संज्ञा पुं० [सं०] १ सेना का कोलाहल या धूम। लड़ाई की हलचल। २. सेना की गहरी मुठभेड़।

तुम्हें-सर्व० दे० "तुम"।

तुम्हारा-सर्व० [हिं० तुम] 'तुम' का संबंधकारक का रूप।

तुम्हें-सर्व० [हिं० तुम] 'तुम' का वह विभक्तियुक्त रूप जो उसे कर्म और संप्रदान में प्राप्त होता है। तुमको।

तुरग-संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा। २ चित्त। ३. सात की संख्या।

तुरंगक-संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी तोरई।

तुरगम-संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा। २ चित्त। ३ दो नगण और दो गुरु का वृत्त। तुंग। तुगा।

तरंज-संज्ञा पुं० [फा०] १. चकोतरा। २. बिजौरा नीबू। खट्टी।

तुरंजबीन-संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार की चीनी जो ऊँटकटारे के पौधों पर जमती है। २. नीबू के रस का शरबत।

तुरंत-क्रि० वि० [सं० तुर] जल्दी से। अत्यंत शीघ्र। झटपट। फ़ौरन।

तुरई-संज्ञा स्त्री० [सं० तूर] एक बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनाई जाती है।

तुरक-संज्ञा पुं० दे० "तुर्क"।

तुरकटा-संज्ञा पुं० [फा० तुर्क + हिं० टा प्र०] मुसलमान। (उपेक्षासूचक शब्द)

तुरकाना-संज्ञा पुं० [फा० तुर्क] [स्त्री० तुरकानी] १ तुरकों का सा। २ तुर्कों का देश या बस्ती।

तुरकिन-संज्ञा स्त्री० [फा० तुर्क] १ तुर्क जाति की स्त्री। † २ मुसलमान की स्त्री।

तुरकी-वि० [फा०] तुर्क देश का।
संज्ञा स्त्री० [फा०] तुर्किस्तान की भाषा।

तुरग-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० तुरगी] १. घोड़ा। २. चित्त।

तुरत-अव्य० [सं० तुर] शीघ्र। चटपट।

तुरपन-संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरपना] एक प्रकार की सिलाई। बखिया का उलटा।

तुरपना-क्रि० स० [हिं० तुरप + ना] तुरपन की सिलाई करना। लुढ़ियाना।

तुरय-संज्ञा पुं० [सं० तुरग] घोड़ा।

तुरही-संज्ञा स्त्री० [सं० तूर] फूँककर बजाने का एक बाजा जो मुँह की ओर पतला और पीछे की ओर चौड़ा होता है।

तुरा-संज्ञा स्त्री० दे० "त्वरा"।
संज्ञा पुं० [सं० तुरग] घोड़ा।

तुराई-संज्ञा स्त्री० [सं० तूलिका] गद्दा।

तुराना-क्रि० अ० [सं० तुर] घबराना। आतुर होना।
क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

तुरावती-वि० स्त्री० [सं० त्वरावती] वेगवाली। झोंक के साथ बहनेवाली।

तुरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "तुरीय"।

तुरीय-वि० [सं०] चतुर्थ। चौथा।
संज्ञा स्त्री० १. वेद में वाणी या वाक् के चार भेदों में [illegible] । वह अवस्था जब वाणी मुँह [illegible] होती है। २ प्राणियों [illegible] में से [illegible]

तुर्क जाति

तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य। २. इस जाति का देश। तुर्किस्तान। ३. तुर्किस्तान का घोड़ा।

तुरुही–संज्ञा स्त्री० दे० "तुरही"।

तुर्क–संज्ञा पु० [सं० तुरुष्क] १ तुर्किस्तान का निवासी। २. रूम या टर्की का रहनेवाला।

तुर्कमान–संज्ञा पु० [फा० तुर्क] १. तुर्क जाति का मनुष्य। २. तुर्की घोड़ा।

तुर्की–वि० [फा० तुर्क] तुर्किस्तान का। संज्ञा स्त्री० १. तुर्किस्तान की भाषा। २. तुर्किस्तान का घोड़ा। ३. तुर्कों की सी ऐंठ। अकड़। गर्व।

तुर्रा–संज्ञा पु० [अ०] १. घुँघराले बालों की लट जो माथे पर हो। काकुल। २. पर या फुँदना जो पगड़ी में लगाया या खोसा जाता है। कलगी। गोशवारा।

मुहा०—तुर्रा यह कि=उस पर भी इतना और। सबके उपरांत इतना यह भी।

३ फूलों की लड़ियों का गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है। ४ टोपी आदि में लगा हुआ फुँदना। ५ पक्षियों के सिर पर निकले हुए परों का गुच्छा। चोटी। शिखा। ६. कोड़ा। चाबुक।

वि० [फा०] अनोखा। अद्भुत।

तुर्वसु–संज्ञा पु० [सं०] देवयानी के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति का एक पुत्र।

तुर्श–वि० [फा०] खट्टा। अम्ल।

तुर्शी–संज्ञा स्त्री० [फा०] खटाई। अम्लता।

तुल्य–वि० दे० "तुल्य"।

तुलना–क्रि० अ० [सं० तुल] १. तौला जाना। तराजू पर अंदाजा जाना। २ तौल या मान में बराबर उतरना। तुल्य होना। ३. आधार पर इस प्रकार ठहरना कि आधार के बाहर निकला हुआ कोई भाग अधिक बोझ के कारण किसी ओर को झुका न हो। ४. किसी अस्त्र आदि का इस प्रकार चलाया जाना कि वह ठीक लक्ष्य पर पहुँचे। सधना। ५ नियमित होना। बँधना। ६. गाड़ी के पहिए का ओंगा जाना। ७. उद्यत होना।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दो या अधिक वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक दूसरी से घट बढ़ होने का विचार। मिलान। तारतम्य। २ सादृश्य। समता। ३. उपमा।

तुलवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तौलना] १. तौलन की मजदूरी। २. पहिए को ओंगने की मजदूरी।

तुलवाना–क्रि० स० [हिं० तौलना] [संज्ञा तुलवाई] १ तौल कराना। वजन कराना। २. गाड़ी के पहिए की धुरी में घी, तेल आदि दिलाना। ओंगवाना।

तुलसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा झाड़ या पौधा जिसकी पत्तियों से एक प्रकार की तीक्ष्ण गंध निकलती है। इसको हिंदू अत्यंत पवित्र मानते हैं।

तुलसी दल–संज्ञा पु० [सं०] तुलसी के पौधे का पत्ता जिसे अत्यंत पवित्र मानते हैं।

तुलसीदास–संज्ञा पु० उत्तरीय भारत के सर्वप्रधान भक्त कवि जिनके 'रामचरित-मानस' का प्रचार भारत में घर घर है।

तुलसीपत्र–संज्ञा पु० [सं०] तुलसी की पत्ती।

तुला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सादृश्य। तुलना। मिलान। २. गुरुत्व नापने का यंत्र। तराजू। काँटा। ३ मान। तौल। ४. ज्योतिष की बारह राशियों में से सातवीं जिसका आकार तराजू लिए हुए मनुष्य का सा माना जाता है।

तुलाई–संज्ञा स्त्री० [सं० तूल] रूई से भरा दोहरा कपड़ा जो ओढ़ने के काम में आता है। दुलाई।

संज्ञा स्त्री० [हिं० तुलना] १. तौलने का काम या भाव। २ तौलने की मजदूरी।

तुलादान–संज्ञा पु० [सं०] सोलह महादानों में से एक प्रकार का दान जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान होता है।

तुलाधार–संज्ञा पु० [सं०] १. तुला राशि। २. बनियाँ। वणिक्। ३. काशी का रहनेवाला एक वणिक् जिसने महर्षि जाजलि को उपदेश दिया था। ४. काशी-निवासी एक व्याध जो सदा माता-पिता की सेवा में तत्पर रहता था।

तुलाना:–क्रि० अ० [हिं० तुलना] १. आ पहुँचना। समीप आना। निकट आना। २ बराबर होना। पूरा उतरना।

क्रि० स० [हिं० तुलना] गाड़ी के पहियों की धुरी में चिकना दिलाना।

तुला परीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अभियुक्तों

तुतलाना-क्रि० अ० [अनु०] शब्दों और वर्णों का अस्पष्ट उच्चारण करना। रुक रुककर टूटे फूटे शब्द बोलना।

तुत्थ-सज्ञा पु० [स०] तूतिया।

तुदन-सज्ञा पु० [स०] १ व्यथा देने की क्रिया। पीड़न। २ व्यथा। पीड़ा।

तुन-सज्ञा पु० [स० तुन्न] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फूलों से एक प्रकार का पीला बसंती रंग निकलता है।

तुनीर-सज्ञा पु० दे० "तूणीर"।

तुपक-सज्ञा स्त्री० [तु० तोप] १ छोटी तोप। २ बंदूक। कड़ाबीन।

तुफंग-सज्ञा स्त्री० [तु० तोप] १ हवाई बंदूक। २ वह लंबी नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ आदि डालकर फूँक के जोर से चलाते हैं।

तुभना-क्रि० अ० [स० स्तोभन] स्तब्ध रहना। ठक रह जाना। चकित रह जाना।

तुम-सर्व० [स० त्वम्] 'तू' शब्द का बहुवचन रूप। वह सर्वनाम जिसका व्यवहार उस पुरुष के लिये होता है, जिससे कुछ कहा जाता है।

तुमड़ी-सज्ञा स्त्री० [स० तुंबिनी] १ छोटा तूँबा। तुंबी। २ सूखे कद्दू का बना हुआ एक बाजा। महुवर।

तुमरा-सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तुमरू-सज्ञा पु० दे० "तुंबुरु"।

तुमल -सज्ञा पु० वि० दे० "तुमुल"।

तुमुर -सज्ञा पु० दे० "तुमुल"।

तुमुल-सज्ञा पु० [स०] १ सेना का कोलाहल या धूम। लड़ाई की हलचल। २ सेना की गहरी मुठभेड़।

तुम्ह†-सर्व० दे० "तुम"।

तुम्हारा-सर्व० [हिं० तुम] 'तुम' का संबंधकारक का रूप।

तुम्हें-सर्व० [हिं० तुम] 'तुम' का वह विभक्तियुक्त रूप जो उसे कर्म और संप्रदान में प्राप्त होता है। तुमको।

तुरंग-सज्ञा पु० [स०] १ घोड़ा। २ चित्त। ३ सात की संख्या।

तुरंगक-सज्ञा पु० [स०] बड़ी तोरई।

तुरंगम-सज्ञा पु० [स०] १ घोड़ा। २ चित्त। ३ दो नगण और दो गुरु का एक वृत्त। तुंग। तुंगा।

तुरंज-सज्ञा पु० [फा०] १ चकोतरा नीबू। २ बिजौरा नीबू। खट्टी।

तुरंजबीन-सज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार की चीनी जो ऊँटकटारे के पौधों पर जमती है। २ नीबू के रस का शरबत।

तुरंत-क्रि० वि० [स० तुर] जल्दी से। अत्यंत शीघ्र। झटपट। फौरन।

तुरई-सज्ञा स्त्री० [स० तूर] एक बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनाई जाती है।

तुरक-सज्ञा पु० दे० "तुर्क"।

तुरकटा-सज्ञा पु० [फा० तुर्क + हिं० टा प्र०] मुसलमान। (उपेक्षासूचक शब्द)

तुरकाना-सज्ञा पु० [फा० तुर्क] [तुरकानी] १ तुरकों का सा। २ तुर्कों का देश या बस्ती।

तुरकिन-सज्ञा स्त्री० [फा० तुर्क] १ ... जाति की स्त्री। † २ मुसलमान स्त्री

तुरकी-वि० [फा०] तुर्क देश का। सज्ञा स्त्री० [फा०] तुर्किस्तान की ...

तुरग-सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० ...] घोड़ा। २ चित्त।

तुरत-अव्य० [स० तुर] शीघ्र ...

तुरपन-सज्ञा स्त्री० [हिं० ...] प्रकार की सिलाई। बखिया ...

तुरपना-क्रि० स० [हिं० ...] पन की सिलाई करना।

तुरय -सज्ञा पु० [स० ...

तुरही-सज्ञा स्त्री० [स० ...] का एक बाजा जो ... और पीछे की ओर ...

तुरा...-सज्ञा स्त्री० ... सज्ञा पु० [स० ...

तुराई...-सज्ञा ...

तुराना...-क्रि० ... आतुर होना ... क्रि० स० दे० ...

तुरावती-... वाली। २ ...

तुरिया...

तुरीय-... सज्ञा ... भेद ... वार ... २ ...

उड़े, पानी बरसे, तथा इसी प्रकार के और उत्पात हों। आँधी। ३. आपत्ति। आफ़त। ४. हल्लागुल्ला। ५. झगड़ा। बखेड़ा। दंगा। ६. झूठा दोषारोपण। तोहमत।
तूफ़ानी–वि० [फ़ा०] १. बखेड़ा करनेवाला। उपद्रवी। फ़सादी। २. झूठा कलंक लगानेवाला। ३. उग्र। प्रचंड।
तूमड़ी–संज्ञा स्त्री० [दे० तूँबा] १. तूँबी। २. तूँबी का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाया करते हैं।
तूम तड़ाक–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. तड़क-भड़क। शान-शौकत। २. ठसक। बनावट।
तूमना–क्रि० स० [सं० स्तोम] १. रूई के गाले के सटे हुए रेशों को कुछ अलग अलग करना। उधेड़ना। २. धज्जी धज्जी करना। ३. हाथ से मसलना।
तूमार–संज्ञा पुं० [अ०] बात का व्यर्थ विस्तार। बात का बतंगड़।
तूर–संज्ञा पुं० [सं०] १. नगाड़ा। २. तुरही।
तूरज –संज्ञा पुं० दे० "तूर्य"।
तूरण, तूरन–क्रि० वि० दे० "तूर्ण"।
तूरना–क्रि० स० दे० "तोड़ना"।
तूरा–संज्ञा पुं० [सं० तूर] तुरही।
तूरान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] फ़ारस के उत्तर-पूर्व पड़नेवाला मध्य एशिया का सारा भू-भाग जो तुर्क, तातारी, मुग़ल आदि जातियों का निवासस्थान है।
तूरानी–वि० [फ़ा०] तूरान देश का। संज्ञा पुं० तूरान देश का निवासी।
तूर्ण–क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्दी।
तूल–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश। २. शहतूत। ३. कपास, मदार, सेमर आदि के ढोड़े के भीतर का घूआ।
तूल–संज्ञा पुं० [हिं० तून] १. चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा। २. गहरा लाल रंग।
तूल–वि० [सं० तुल्य] तुल्य। समान।
तूलना–क्रि० स० [हिं० तुलना] पहिए की धुरी में तेल या चिकना देना।
तूला–संज्ञा स्त्री० [सं०] कपास।
तूलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] तसवीर बनानेवालों की कलम या कूँची।
तूष्णी–वि० [सं० तूष्णीम्] मौन। चुप। संज्ञा स्त्री० मौन। ख़ामोशी। चुप्पी।
तूस–संज्ञा पुं०[सं० तुष] भूसी। भूसा।
संज्ञा पुं० [तिब्बती थोस] १. एक प्रकार का बहुत उत्तम ऊन जिससे दुशाले बनते हैं। पशम। पशमीना। २. तूस के ऊन का जमाया हुआ कंबल या नमदा।
तूसदान–संज्ञा पुं० [पुर्त्त० कारतूश+दान] कारतूस।
तूसना–क्रि० स० [सं० तुष्ट] १ संतुष्ट करना। तृप्त करना। २. प्रसन्न करना। क्रि० अ० संतुष्ट या तृप्त होना।
तृखा–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।
तृजग–वि० दे० "तिर्यक्"।
तृण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह उद्भिद् जिसकी पेड़ी में छिलके और हीर का भेद नहीं होता और जिसकी पत्तियों के भीतर केवल लंबाई के बल नसें होती हैं। जैसे—कुश, दूब, सरपत, बाँस, घास। मुहा०—तृण गहना या पकड़ना=हीनता प्रकट करना। गिड़गिड़ाना। (किसी वस्तु पर) तृण टूटना=किसी वस्तु का इतना सुंदर होना कि उसे नज़र से बचाने के लिये उपाय करना पड़े। तृणवत्=अत्यंत तुच्छ। कुछ भी नहीं। तृण तोड़ना=किसी सुंदर वस्तु को देखकर उसे नज़र से बचाने के लिये उपाय करना। तृण तोरना=संबंध तोड़ना।
तृणधान्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. तिन्नी का चावल। मुन्यन्न। २. सावाँ।
तृणमय–वि० [सं०] घास का बना हुआ।
तृणशय्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] चटाई।
तृणारणि न्याय–संज्ञा पुं० [सं०] तृण और अरणी से अग्नि उत्पन्न होने की भाँति स्वतंत्र या अलग अलग कारणों की व्यवस्था।
तृणावर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. चक्रवात। बवंडर। २. एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मार डाला था।
तृतीय–वि० [सं०] तीसरा।
तृतीयांश–संज्ञा पुं० [सं०] तीसरा भाग।
तृतीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन। तीज। २. व्याकरण में करण कारक।
तृन–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।
तृपति–संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति"।
तृपित–वि० दे० "तृप्त"।
तृप्त–वि० [सं०] १. जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो। तुष्ट। अघाया हुआ। २. प्रसन्न। ख़ुश।

की एक दिव्य परीक्षा। इसमें अभियुक्त को दो बार तौलते थे और दोनों बार तौल बराबर होने पर निर्दोष मानते थे।

तुलायंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] तराजू।

तुल्य–वि० [सं०] १. समान। बराबर। २ सदृश।

तुल्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बराबरी। समता। २. सादृश्य।

तुल्ययोगिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें कई प्रस्तुतों या अप्रस्तुतों का अर्थात् बहुत से उपमेयों या उपमानों का एक ही धर्म बतलाया जाता है।

तव–सर्व० दे० "तव"।

तुँवर–संज्ञा पुं० [सं०] १. कसैला रस। २. अरहर।

तुष–संज्ञा पुं० [सं०] १ अन्न का छिलका। भूसी। २ अंडे का छिलका।

तुषानल–संज्ञा पुं० [सं०] १. भूसी या घास फूस की आग। २. ऐसी आग में भस्म होने की क्रिया जो प्रायश्चित्त के लिये की जाती है।

तुषार–संज्ञा पुं० [सं०] १. हवा में मिली भाप जो सरदी से जमकर गिरती है। पाला। २ हिम। बरफ़। ३. हिमालय के उत्तर का एक देश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध थे। ४. तुषार देश में बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा थी।

वि० छूने में बरफ़ की तरह ठंढा।

तुष्ट–वि० [सं०] १. तोषप्राप्त। तृप्त। २. राजी। प्रसन्न। खुश।

तुष्टता–संज्ञा स्त्री [सं०] संतोष।

तुष्टना–क्रि० अ० [सं० तुष्ट] प्रसन्न होना।

तुष्टि–संज्ञा स्त्री [सं०] १ संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। (सांख्य में नौ प्रकार की तुष्टियाँ मानी गई हैं, चार आध्यात्मिक और पाँच बाह्य।) ३. कंस के आठ भाइयों में से एक।

तसी–संज्ञा स्त्री० [सं० तुस] अन्न के ऊपर का छिलका। भूसी।

तहारा–सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तुहिं–सर्व० [हिं० तू] तुझको।

तुहिन–संज्ञा पुं० [सं०] १ पाला। कुहरा। तुषार। २. हिम। बरफ़। ३. चाँदनी। ४. शीतलता। ठंढक।

तूँ–सर्व० दे० "तू"।

तूँबा–संज्ञा पुं० [सं० तुंबक] १. कड़ुआ गोल कद्दू। तितलौकी। २. कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन जिसे प्रायः साधु अपने साथ रखते हैं। कमंडल। तुंबा।

तूँबी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तूँबा] १ कड़ुआ गोल कद्दू। २ कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन।

तू–सर्व० [सं० त्वम्] मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम। जैसे, तू यहाँ से चला जा। यह शब्द अशिष्ट समझा जाता है।

मुहा०—तू तड़ाक, तू तुकार या तू तू मैं मैं करना = अशिष्ट शब्दों में विवाद करना।

तूख–संज्ञा पुं० [सं० तुष] तिनके का टुकड़ा। सींक। खरका।

तूठना–क्रि० अ० [सं० तुष्ट] १. संतुष्ट होना। तृप्त होना। २ प्रसन्न होना।

तूण–संज्ञा पुं० [सं०] १ तीर रखने का चोंगा। तरकश। २. चामर नामक वृत्त।

तूणीर–संज्ञा पुं० [सं०] तूण। तरकश।

तूत–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मझोले आकार का एक पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं। शहतूत।

तूती–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. छोटी जाति का तोता। २. कनेरी नाम की छोटी सुंदर चिड़िया। ३ मटमैले रंग की एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुंदर बोलती है।

मुहा०—किसी की तूती बोलना = किसी की खूब चलती होना या प्रभाव जमना। नक्कारखाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है = १. भीड़ भाड़ या शोर गुल में कही हुई बात नहीं सुनाई पड़ती। २. बड़े लोगों के सामने छोटों की बात कोई नहीं सुनता।

४ मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा।

तूदा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. ढेर। राशि। २. सीमा का चिह्न। हदबंदी। ३. मिट्टी का वह टीला जिस पर निशाना लगाना सीखा जाता है।

तून–संज्ञा पुं० [सं० तुन्नक] १. तुन का पेड़। २. तूल नाम का लाल कपड़ा।

संज्ञा पुं० दे० "तूण"।

तूना–क्रि० अ० दे० "तुअना"।

तूनीर–संज्ञा पुं० दे० "तूणीर"।

तूफ़ान–संज्ञा पुं० [अ०] १. डुबानेवाली बाढ़। २. ऐसा अंधड़ जिसमें खूब धूल

उड़े, पानी बरसे, तथा इसी प्रकार के और उत्पात हों। आँधी। ३. आपत्ति। आफ़त। ४. हलागुला। ५. झगड़ा। बखेड़ा। दंगा। ६. झूठा दोषारोपण। तोहमत।

तूफ़ानी–वि० [फा०] १. बखेड़ा करनेवाला। उपद्रवी। फ़सादी। २. झूठा कलंक लगानेवाला। ३. उग्र। प्रचंड।

तूमड़ी–संज्ञा स्त्री० [दे० तूँबा] १. तूँबी। २. तूँबी का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाया करते हैं।

तूम तड़ाक–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. तड़क-भड़क। शान-शौकत। २. ठमक। बनावट।

तूमना–क्रि० स० [सं० स्तोम] १. रूई के गाले के सटे हुए रेशों को कुछ अलग अलग करना। उधेड़ना। २. धज्जी धज्जी करना। ३. हाथ से मसलना।

तूमार–संज्ञा पुं० [अ०] बात का व्यर्थ विस्तार। बात का बतंगड़।

तूर–संज्ञा पुं० [सं०] १. नगाड़ा। २. तुरही।

तूरज०–संज्ञा पुं० दे० "तूर्य"।

तूरण, तूरन०–क्रि० वि० दे० "तूर्ण"।

तूरना–क्रि० स० दे० "तोड़ना"।

०† संज्ञा पुं० [सं० तूर] तुरही।

तूरान–संज्ञा पुं० [फा०] फ़ारस के उत्तर-पूर्व पड़नेवाला मध्य एशिया का सारा भू-भाग जो तुर्क, तातारी, मुग़ल आदि जातियों का निवासस्थान है।

तूरानी–वि० [फा०] तूरान देश का। संज्ञा पुं० तूरान देश का निवासी।

तूर्ण–क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्दी।

तूल–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश। २. शहतूत। ३. कपास, मदार, सेमर आदि के डोड़े के भीतर का घूआ।

संज्ञा पुं० [हि० तून] १. चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा। २. गहरा लाल रंग।

०वि० [सं० तुल्य] तुल्य। समान।

तूलना–क्रि० स० [हिं० तुलना] पहिए की धुरी में तेल या चिकना देना।

तूला–संज्ञा स्त्री० [सं०] कपास।

तूलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] तसवीर बनानेवालों की कलम या कूँची।

तूष्णी–वि० [सं० तूष्णीम्] मौन। चुप। संज्ञा स्त्री० मौन। ख़ामोशी। चुप्पी।

तूस–संज्ञा पुं० [तिब्बती थोश] १. एक प्रकार का बहुत नरम ऊन जिससे दुशाले बनते हैं। पशम। पशमीना। २. तूस के ऊन का जमाया हुआ कंबल या नमदा।

तूसदान–संज्ञा पुं० [पुर्त० कारतूश+दान] कारतूस।

तूसना०–क्रि० स० [सं० तुष्ट] १. संतुष्ट करना। तृप्त करना। २. प्रसन्न करना। क्रि० अ० संतुष्ट या तृप्त होना।

तृखा–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।

तृजग*–वि० दे० "तिर्यक्"।

तृण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह उद्भिद् जिसकी पेड़ी में छिलके और हीर का भेद नहीं होता और जिसकी पत्तियों के भीतर केवल लंबाई के बल नसें होती हैं। जैसे—कुश, दूब, सरपत, बाँस, घास। मुहा०—तृण गहना या पकड़ना = हीनता प्रकट करना। गिड़गिड़ाना। (किसी वस्तु पर) तृण टूटना = किसी वस्तु का इतना सुंदर होना कि उसे नज़र से बचाने के लिये उपाय करना पड़े। तृणवत् = अत्यंत तुच्छ। कुछ भी नहीं। तृण तोड़ना = किसी सुंदर वस्तु को देखकर उसे नज़र से बचाने के लिये उपाय करना। तृण तोरना = संबंध तोड़ना।

तृणधान्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. तिन्नी का चावल। मुन्यन्न। २. सावाँ।

तृणमय–वि० [सं०] घास का बना हुआ।

तृणशय्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] चटाई।

तृणारणि न्याय–संज्ञा पुं० [सं०] तृण और अरणी से अग्नि उत्पन्न होने की भाँति स्वतंत्र या अलग अलग कारणों की व्यवस्था।

तृणावर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. चक्रवात। बवंडर। २. एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मार डाला था।

तृतीय–वि० [सं०] तीसरा।

तृतीयांश–संज्ञा पुं० [सं०] तीसरा [illegible]

तृतीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. [illegible] का तीसरा दिन। तीज। २. [illegible] में करण कारक।

तृन०–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

तृपति‡०–संज्ञा स्त्री० दे० [illegible]

तृपित‡०–वि० दे० [illegible]

तृप्त–वि० [सं०] [illegible] हो गई हो। [illegible]

तृप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इच्छा पूरी होने से प्राप्त शांति और आनंद। संतोष। २. प्रसन्नता। खुशी।
तृषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्यास। २. इच्छा। अभिलाषा। ३. लोभ। लालच।
तृषावंत–वि० [सं० तृषावान्] प्यासा।
तृषित–वि० [सं०] १. प्यासा। २. अभिलाषी। इच्छुक।
तृष्णा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति के लिये आकुल करनेवाली इच्छा। लोभ। लालच। २. प्यास।
तें †–प्रत्य० [सं० तस् (प्रत्य०)] १. से। द्वारा। २. से (अधिक)। ३. (किसी काल या स्थान) से।
तेंदुआ–संज्ञा पुं० [देश०] बिल्ली या चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु।
तेंदू–संज्ञा पुं० [सं० तिंदुक] १. मझोले आकार का एक वृक्ष। इसकी लकड़ी आवनूस के नाम से बिकती है। २. इस पेड़ का फल जो खाया जाता है।
ते–अव्य० दे० "तें"।
† सर्व० [सं० ते] वे। वे लोग।
तेखना †–क्रि० अ० [हिं० तेहा] बिगड़ना। क्रुद्ध होना। नाराज़ होना।
तेग़–संज्ञा स्त्री० [अ०] तलवार। खड्ग।
तेग़ा–संज्ञा पुं० [अ० तेग] १. खाँड़ा। खड्ग। (अस्त्र) २. दरवाज़े को पत्थर, मिट्टी इत्यादि से बंद करने की क्रिया।
तेज–संज्ञा पुं० [सं० तेजस्] १. दीप्ति। कांति। चमक। आभा। २. पराक्रम। ज़ोर। बल। ३. वीर्य। ४. सार भाग। तत्त्व। ५. ताप। गर्मी। ६. पित्त। ७. सोना। ८. तेजी। प्रचंडता। ९. प्रताप। रोब-दाब। १०. सत्व गुण से उत्पन्न लिंग-शरीर। ११. पाँच महाभूतों में से तीसरा भूत जिसमें ताप और प्रकाश होता है। अग्नि।
तेज़–वि० [फा०] १. तीक्ष्ण धार का। जिसकी धार पैनी हो। २. चलने में शीघ्रगामी। ३. चटपट काम करनेवाला। फुरतीला। ४. तीक्ष्ण। तीखा। झालदार। ५. महँगा। गराँ। ६. उग्र। प्रचंड। ७. चटपट अधिक प्रभाव डालनेवाला। ८. जिसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण हो।
तेजपत्ता–संज्ञा पुं० [सं० तेजपत्र] दारचीनी की जाति का एक पेड़। इसकी पत्तियाँ सुगंधित होने के कारण दाल, तरकारी आदि में मसाले की तरह डाली जाती हैं।
तेजपत्र–संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।
तेजपात–संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।
तेजवंत–वि० दे० "तेजवान्"।
तेजवान्–वि० [सं० तेजोवान्] १. जिसमें तेज हो। तेजस्वी। २. वीर्यवान्। ३. बली। ताकतवाला। ४. चमकीला।
तेजस–संज्ञा पुं० दे० "तेज"।
तेजसी–वि० [हिं० तेजस्वी] तेज-युक्त।
तेजस्विता–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेजस्वी होने का भाव।
तेजस्वी–वि० [सं० तेजस्विन्] १. कांतिमान्। तेजयुक्त। जिसमें तेज हो। २. प्रतापी। प्रभावशाली।
तेज़ाब–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० तेजाबी] औषध के काम के लिये किसी क्षार पदार्थ का तरल या रवे के रूप में तैयार किया हुआ अम्ल-सार जो द्रावक होता है।
तेज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] तेज़ होने का भाव। २ तीव्रता। प्रबलता। ३. उग्रता। प्रचंडता। ४. शीघ्रता। जल्दी। ५. महँगी। मंदी का उलटा।
तेजोमंडल–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य, चंद्रमा आदि प्रकाशीय पिंडों के चारों ओर का मंडल। छटा-मंडल।
तेजोमय–वि० [सं०] बहुत आभा, कांति या ज्योतिवाला।
तेतना†–वि० दे० "तितना"।
तेता†–वि० पुं० [सं० तावत्] [स्त्री० तेती] उतना। उसी कदर। उसी प्रमाण का।
तेतिक †–वि० [हिं० तेता] उतना।
तेतो †–वि० दे० "तेता"।
तेरस–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रयोदशी] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। त्रयोदशी।
तेरहीं–संज्ञा स्त्री० [हिं० तेरह] किसी के मरने के दिन से तेरहवीं तिथि, जिसमें पिंडदान और ब्राह्मण-भोजन करके दाह करनेवाला और मृतक के घर के लोग शुद्ध होते हैं।
तेरा–सर्व० [सं० तव] [स्त्री० तेरी] मध्यम पुरुष एक-वचन संबंधकारक सर्वनाम। तू का संबंधकारक रूप।
मुहा०—तेरी सी = तेरे लाभ या मतलब की बात। तेरे अनुकूल बात।

तेरुस॰†–संज्ञा पु॰ दे॰ "त्यौरुस"। संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तेरस"।
तेरे†–अव्य॰ [हिं॰ ते] से।
तेरो॰–सर्व॰ दे॰ "तेरा"।
तेल–संज्ञा पु॰ [सं॰ तैल] १. वह चिकना तरल पदार्थ जो बीजों या वनस्पतियों आदि से निकाला जाता है अथवा आप से आप निकलता है। चिकना। रोग़न। २. विवाह से कुछ पहले की एक रस्म जिसमें वर और वधू को हल्दी मिला हुआ तेल लगाया जाता है।
मुहा॰—तेल उठना या चढ़ना = विवाह से पहले तेल की रस्म पूरी होना।
तेलगू–संज्ञा पु॰ [सं॰ तैलग] तैलंग देश की भाषा।
तेलहन–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तेल] वे बीज जिनसे तेल निकलता है। जैसे, सरसों।
तेलहा†–वि॰ पु॰ [हिं॰ तेल] १. तेल-युक्त। जिसमें तेल हो। २. तेल संबंधी।
तेला–संज्ञा पु॰ [?] तीन दिन रात का उपवास।
तेलिन–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ तेली का स्त्री॰] १. तेली जाति की स्त्री। २ एक बरसाती कीड़ा जिसके छूने से शरीर में छाले पड़ जाते हैं।
तेलिया–वि॰ [हिं॰ तेल] १. तेल की तरह चिकना और चमकीला। २. तेल के से रंगवाला।
संज्ञा पु॰ १. काला, चिकना और चमकीला रंग। २. इस रंग का घोड़ा। ३. एक प्रकार का बबूल। ४. सींगिया नामक विष।
तेलिया कंद–संज्ञा पु॰ [सं॰ तैलकंद] एक प्रकार का कंद। यह जहाँ होता है, वहाँ भूमि तेल से सींची हुई जान पड़ती है।
तेलिया कुमैत–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तेलिया + कुमैत] घोड़े का एक रंग जो अधिक काला या कुमैत होता है।
तेलिया सुरंग–संज्ञा पु॰ दे॰ "तेलिया कुमैत"।
तेली–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तेल] [स्त्री॰ तेलिन] हिंदुओं की एक जाति जिसकी गणना शूद्रों में होती है। इस जाति के लोग सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का व्यवसाय करते हैं।
मुहा॰—तेली का बैल = हर समय काम में लगा रहनेवाला व्यक्ति।
तेवन†॰–संज्ञा पु॰ [सं॰ अतेवन] १. नजरबाग़। पाईं बाग। २. आमोद-प्रमोद और क्रीड़ा का स्थान या वन। ३ क्रीड़ा।
तेवर–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तेह = क्रोध] १. कुपित दृष्टि। क्रोध भरी चितवन।
मुहा॰—तेवर चढ़ना = दृष्टि का ऐसा हो जाना जिससे क्रोध प्रकट हो। तेवर बदलना या बिगड़ना = १. बेमुरौवत हो जाना। २. ख़फ़ा हो जाना।
२ भौंह। भ्रुकुटी।
तेवाना॰†–क्रि॰ अ॰ [देश॰] सोचना। चिंता करना।
तेह॰†–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तेहना] १. क्रोध। ग़ुस्सा। २. अहंकार। घमंड। ताव। ३. तेजी। प्रचडता।
तेहरा–वि॰ पु॰ [हिं॰ तीन + हरा] १. तीन परत किया हुआ। तीन लपेट का। २ जो एक साथ तीन तीन हों। ३ जो दो बार होकर फिर तीसरी बार किया गया हो। ४. तिगुना। (क्व॰)
तेहराना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ तेहरा] किसी काम को बिलकुल ठीक करने के लिये तीसरी बार करना।
तेहवार–संज्ञा पु॰ दे॰ "त्योहार"।
तेहा–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तेह] १. क्रोध। ग़ुस्सा। २. अहंकार। शेख़ी। घमंड।
तेहि॰†–सर्व॰ [सं॰ ते] उसको। उसे।
तेही–संज्ञा पु॰ [हिं॰ तेह + ई (प्रत्य॰)] १ ग़ुस्सा करनेवाला। क्रोधी। २. अभिमानी। घमंडी।
तैं†॰–क्रि॰ वि॰ [हिं॰ ते] से। वि॰ दे॰ "तें"।
सर्व॰ [सं॰ त्वम्] तू।
तै–क्रि॰ वि॰ [सं॰ तत] उतना। उस क़दर। उस मात्रा का।
संज्ञा पु॰ [अ॰] १. निबटेरा। फ़ैसला।
यौ॰—तै-तमाम = अंत। समाप्ति।
२. पूर्ति। पूरा करना।
वि॰ १. जिसका निबटेरा या फ़ैसला हो चुका हो। २ जो पूरा हो चुका हो।
तैजस–संज्ञा पु॰ [सं॰] १. कोई चमकीला पदार्थ। २. घी। ३ पराक्रमी। ४. भगवान्। ५. वह शारीरिक शक्ति जो आहार

को रस तथा रस को धातु में परिणत करती है। ६ राजस अवस्था में प्राप्त अहंकार।
वि० [सं०] तेज से उत्पन्न। तेज संबंधी।
तैत्तिर-संज्ञा पुं० [सं०] तीतर। गैंडा।
तैत्तिरि-संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण-यजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम।
तैत्तिरीय-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओं में से एक, जो तित्तिरि नामक ऋषि-प्रोक्त है। २ इस शाखा का उपनिषद् है।
तैत्तिरीयारण्यक-संज्ञा पुं० [सं०] तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक अंश जिसमें वानप्रस्थों के लिये उपदेश है।
तैनात-वि० [अ० तअय्युन] [संज्ञा तैनाती] किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ। मुकर्रर। नियत। नियुक्त।
तैयार-वि० [अ०] १. जो काम में आने के लिये बिलकुल उपयुक्त हो गया हो। दुरुस्त। ठीक। लैस।
मुहा०—हाथ तैयार होना=कला आदि में हाथ का बहुत अभ्यस्त और कुशल होना।
२ उद्यत। तत्पर। मुस्तैद। ३. प्रस्तुत। उपस्थित। मौजूद। ४ हृष्ट पुष्ट। मोटा-ताजा।
तैयारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० तैयार+ई (प्रत्य०)] १ तैयार होने की क्रिया या भाव। दुरुस्ती। २ तत्परता। मुस्तैदी। ३. शरीर की पुष्टता। मोटाई। ४ प्रबंध आदि के संबंध की धूम धाम। ५. सजावट।
तैयो†-क्रि० वि० दे० "तक"।
तैरना-क्रि० अ० [सं० तरण] १ पानी के ऊपर ठहरना। उतराना। २. हाथ पैर या और कोई अंग हिलाकर पानी पर चलना। पैरना। तरना।
तैराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० तैरना+आई (प्रत्य०)] तैरने की क्रिया या भाव।
तैराक-वि० [हिं० तैरना+आक (प्रत्य०)] जो अच्छी तरह तैरना जानता हो।
तैराना-क्रि० स० [हिं० तैरना का प्रे०] १. दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना। २. घुसाना।
तैलंग-संज्ञा पुं० [सं० त्रिकलिंग] दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। इस देश की भाषा तेलगू कहलाती है।
तैलंगी-संज्ञा पुं० [हिं० तैलंग+ई (प्रत्य०)] तैलंग देशवासी।
संज्ञा स्त्री० तैलंग देश की भाषा।
तैल-संज्ञा पुं० [सं०] चिकना।
तैलत्व-संज्ञा पुं० [सं०] तेल का भाव या गुण।
तैलाक्त-वि० [सं०] जिसमें तेल लगा हो।
तैलाभ्यंग-संज्ञा पुं० [सं०] शरीर में तेल मलने की क्रिया। तेल की मालिश।
तैश-संज्ञा पुं० [अ०] आवेश। क्रोध।
तैसा-वि० [सं० तादृश] उस प्रकार का। "वैसा" का पुराना रूप।
तैसे-क्रि० वि० दे० "वैसे"।
तोंः†-क्रि० वि० दे० "त्यों"।
तोंअर†-संज्ञा पुं० दे० "तोमर"।
तोंद-संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] पेट के आगे का बढ़ा हुआ भाग। पेट का फुलाव।
तोंदल-वि० [हिं० तोंद+ल (प्रत्य०)] जिसका पेट आगे को बढ़ा हो। तोंदवाला।
तो-सर्व० [सं० तव] तेरा।
अव्य० [सं० तद्] उस दशा में। तब।
अव्य० [सं० तु] एक अव्यय जिसका व्यवहार किसी शब्द पर जोर देने के लिये अथवा कभी कभी यों ही किया जाता है।
†सर्व० [सं० तव] तू का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के समय प्राप्त होता है। तुझ। (ब्रज०)
क्रि० अ० [हिं० हतो=था] था। (क्व०)
तोइ†-संज्ञा पुं० [सं० तोय] पानी। जल।
तोख*†-संज्ञा पुं० दे० "तोष"।
तोटक-संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।
तोटका-संज्ञा पुं० दे० "टोटका"।
तोड़-संज्ञा पुं० [हिं० तोड़ना] १. तोड़ने की क्रिया या भाव। (क्व०) २. नदी आदि के जल का तेज बहाव। ३. कुश्ती में किसी दाँव से बचने के लिये किया हुआ दाँव या पेंच। ४. किसी प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला पदार्थ या कार्य। प्रतिकार। मारक। ५. बार। दफा। झोंक।
तोड़ना-क्रि० स० [हिं० टूटना] १. आघात या झटके से किसी पदार्थ के खंड करना। टुकड़े करना। २. किसी वस्तु के अंग को अथवा उसमें लगी हुई किसी दूसरी वस्तु को किसी प्रकार अलग करना। ३. किसी वस्तु का कोई अंग किसी प्रकार खंडित,

भग्न या बेकाम करना। ४. खेत में हल जोतना। ५. सेंध लगाना। ६. क्षीण, दुर्बल व अशक्त करना। ७ किसी संघटन, व्यवस्था या कार्य-क्षेत्र आदि को न रहने देना अथवा नष्ट कर देना। ८. निश्चय के विरुद्ध आचरण करना अथवा नियम का उल्लंघन करना। ६. मिटा देना। बना न रहने देना।

तोड़वाना–क्रि० स० दे० "तुड़वाना"।

तोड़ा–सज्ञा पु० [हिं० तोड़ना] १. सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी ज़ंजीर या सिकरी जो हाथों या गले में पहनी जाती है। २. रुपए रखने की टाट आदि की थैली जिसमें १०००) आते हैं। **मुहा०**–तोड़े उलटना या गिनना=बहुत सा द्रव्य देना।

३. नदी का किनारा। तट। ४. नदी के संगम पर बालू, मिट्टी आदि का मैदान। ५. घाटा। घटी। टोटा।

सज्ञा पु० [स० तुड या हिं० टोटा] नारियल की जटा की वह रस्सी जिससे पुरानी चाल की तोड़ेदार बंदूक छोड़ी जाती थी। पलीता। **यौ०**–तोड़ेदार बदूक=वह बंदूक जो तोड़ा या पलीता दागकर छोड़ी जाय।

सज्ञा पु० [देश०] वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग निकलती है।

तोण †–सज्ञा पु० [सं० तूण] तरकश।

तोत†–सज्ञा पुं० [फ़ा० तोदः] ढेर। समूह।

तोतई–वि० [हिं० तोता+ई (प्रत्य०)] तोते के रंग का सा। धानी।

तोतराना*–क्रि० अ० दे० "तुतलाना"।

तोतला–वि० [हिं० तुतलाना] १. वह जो तुतलाकर बोलता हो। अस्पष्ट बोलनेवाला। २. जिसमें उच्चारण स्पष्ट न हो।

तोता–सज्ञा पु० [फ़ा०] १. एक प्रसिद्ध पक्षी जिसके शरीर का रंग हरा और चोंच लाल होती है। ये आदमियों की बोली की बहुत अच्छी तरह नकल करते हैं, इसलिये लोग इन्हें पालते हैं। कीर। सुआ। **मुहा०**–हाथों के तोते उड़ जाना=बहुत घबरा जाना। सिटपिटा जाना। तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना=बहुत बेमुरौवत होना। तोता पालना=किसी दोष, दुर्व्यसन या रोग को जान-बूझकर बढ़ाना।

२. बंदूक का घोड़ा।

तोताचश्म–संज्ञा पु० [फ़ा०] तोते की तरह आँखें फेर लेनेवाला। बेमुरौवत।

तोदन–सज्ञा पु० [स०] १. चाबुक, कोड़ा, चमोटी आदि। तोत्र। २. व्यथा। पीड़ा।

तोदरी–सज्ञा पुं० [फ़ा०] फ़ारस में होनेवाला एक प्रकार का बड़ा कँटीला पेड़ जिसके बीज औषध के काम में आते हैं।

तोप–सज्ञा स्त्री० [तु०] एक प्रकार का बहुत बड़ा अस्त्र जो प्रायः दो या चार पहियों की गाड़ी पर रखा रहता है और जिसमें गोले रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर चलाए जाते हैं।

मुहा०–तोप कीलना=तोप की नाली में लकड़ी का कुंदा खूब कसकर ठोंक देना जिसमें उसमें से गोला न चलाया जा सके। तोप की सलामी उतारना=किसी प्रसिद्ध पुरुष के आगमन पर अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना के समय बिना गोले के बारूद भरकर शब्द करना।

तोपखाना–सज्ञा पु० [अ० तोप+फ़ा० खाना] १. वह स्थान जहाँ तोपें और उनका कुल सामान रहता हो। २. युद्ध के लिये सुसज्जित चार से आठ तोपों तक का समूह।

तोपची–सज्ञा पु० [अ० तोप+ची (प्रत्य०)] तोप चलानेवाला। गोलंदाज़।

तोपना†–क्रि० स० [स० क्षेपन] ढाँकना।

तोपा–सज्ञा पु० [हिं० तुरपना] एक टाँके में की हुई सिलाई।

तोफ़ा†–वि०, सज्ञा पुं० दे० "तोहफ़ा"।

तोबड़ा–सज्ञा पुं० [फ़ा० तोबरा] चमड़े या टाट आदि की वह थैली जिसमें दाना भरकर घोड़े को खिलाते हैं।

मुहा०–तोबड़ा चढ़ाना=बोलने से रोकना।

तोबा–सज्ञा स्त्री० [अ० तौबः] किसी अनुचित कार्य्य को भविष्य में न करने की शपथपूर्वक दृढ़ प्रतिज्ञा।

मुहा०–तोबा तिल्ला करना या मचाना=रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए तोबा करना। तोबा बुलवाना=पूर्ण रूप से परास्त करना।

तोम–संज्ञा पु० [स० स्तोम] समूह। ढेर।

तोमर–सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी के डंडे में आगे की ओर लोहे का बड़ा फल लगा रहता था। शर्पला। शापला। २. एक प्रकार का छंद। ३. एक प्राचीन देश का नाम। ४. इस देश का निवासी। ५. राजपूत ५

तौर–संज्ञा पुं० [अ०] १. चाल-ढाल। चाल-चलन।
यौ०—तौर तरीका=चाल चलन।
२. हालत। दशा। अवस्था। ३. तरीका। तर्ज। ढंग। ४. प्रकार। भाँति। तरह।
तौरात–संज्ञा पुं० दे० "तौरेत"।
तौरिया†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताँवरि] घुमेर। घुमरी। चक्कर।
तौरेत–संज्ञा पुं० [इब्रा०] यहूदियों का प्रधान धर्म्म-ग्रंथ जो हज़रत मूसा पर प्रकट हुआ था।
तौल–संज्ञा पुं० [सं०] १. तराज़ू। २. तुला राशि।
संज्ञा स्त्री० १. किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण। भार का मान। वज़न। २. तौलने की क्रिया या भाव।
तौलना–क्रि० स० [सं० तौलन] १. किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण जानने के लिये उसे तराज़ू या काँटे आदि पर रखना। वज़न करना। जोखना। २ किसी अस्त्र आदि को चलाने के लिये हाथ को इस प्रकार ठीक करना कि वह अस्त्र अपने लक्ष्य पर पहुँच जाय। साधना। ३. तारतम्य जानना। मिलान करना। ४. गाड़ी के पहिए में तेल देना। औंगना।
तौलवाना†–क्रि० स० [हिं० तौलना का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना। तौलाना।
तौला–संज्ञा पुं० [हिं० तौलना] १. अनाज तौलनेवाला मनुष्य। बया। २. ताँबिया।
तौलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तौल+आई (प्रत्य०)] तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
तौलाना–क्रि० स० [हिं० तौलने का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना।
तौलिया–संज्ञा स्त्री० पुं० [अ० टावेल] एक विशेष प्रकार का मोटा अँगोछा।
तौसना†–क्रि० अ० [हिं० तौंस] गरमी से बहुत व्याकुल होना।
क्रि० स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना।
तौहीन–संज्ञा स्त्री० [अ०] अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज़्ज़ती।
तौहीनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "तौहीन"।
त्यक्त–वि० [सं०] [वि० त्यक्तव्य] छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। जिसका त्याग हो।
त्यजन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० त्यजनीय] छोड़ने का काम। त्याग।
त्याग–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ पर से अपना स्वत्व हटा लेने अथवा उसे अपने पास से अलग करने की क्रिया। उत्सर्ग। २. किसी बात को छोड़ने की क्रिया। ३. संबंध या लगाव न रखने की क्रिया। ४. विरक्ति आदि के कारण सांसारिक विषयों और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया।
त्यागना–क्रि० स० [सं० त्याग] छोड़ना। तजना। पृथक् करना। त्याग करना।
त्यागपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो। २. इस्तीफ़ा।
त्यागी–वि० [सं० त्यागिन्] स्वार्थ या सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला। विरक्त।
त्याज्य–वि० [सं०] त्यागने योग्य।
त्यार†–वि० दे० "तैयार"।
त्यूँ–†क्रि० वि० दे० "त्यों"।
त्यों–क्रि० वि० [सं० तत्+एवम्] १. उस प्रकार। उस तरह। उस भाँति। २. उसी समय। तत्काल।
त्योरुस†–संज्ञा पुं० [हिं० ति० (तीन)+बरस] १. पिछला तीसरा वर्ष। वह वर्ष जिसे बीते दो बरस हो चुके हों। २. आगामी तीसरा वर्ष।
त्योरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० त्रिकुटी] अवलोकन। चितवन। दृष्टि। निगाह।
मुहा०—त्योरी चढ़ना या बदलना=दृष्टि का ऐसी अवस्था में हो जाना जिससे कुछ क्रोध झलके। आँखें चढ़ना। त्योरी में बल पड़ना=त्योरी चढ़ना।
त्योहार–संज्ञा पुं० [सं० तिथि+वार] वह दिन जिसमें कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाय। पर्व दिन।
त्योहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० त्योहार] वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष में छोटों, लड़कों, आश्रितों या नौकरों आदि को दिया जाता है।
त्यौं–क्रि० वि० दे० "त्यों"।
त्यौनार–संज्ञा पुं० [हिं० तेवर] ढंग। तर्ज़।
त्यौर–संज्ञा पुं० दे० "त्योरी"।
त्रपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० त्रपमाण] १. लज्जा। लाज। शर्म। हया। २. छिनाल स्त्री। पुंश्चली। ३. कीर्ति। यश।
वि० [सं०] लज्जित। शरमिंदा।
त्रय–वि० [सं०] १. तीन। २. तीसरा।

का एक प्राचीन राजवंश।

तोय–संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।

तोयधर, तोयधार–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। २. मोथा।

तोयधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

तोयनिधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

तोर†–संज्ञा पुं० दे० "तोड़"।
†वि० दे० "तेरा"।

तोरई–संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

तोरण–संज्ञा पुं० [सं०] १ घर या नगर का बाहरी फाटक। २ वे मालाएँ आदि जो सजावट के लिये खंभों और दीवारों में लटकाई जाती हैं। वंदनवार।

तोरन†–संज्ञा पुं० दे० "तोरण"।

तोरना–क्रि० स० दे० "तोड़ना"।

तोरा†–सर्व० दे० "तेरा"।

तोराना†–क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

तोरावान्†–वि० [सं० त्वरावत्] [स्त्री० तोरावती] वेगवान्। तेज।

तोरी–संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

तोल†–संज्ञा स्त्री० दे० "तौल"।

तोलन–संज्ञा पुं० [सं०] १ तौलने की क्रिया। २ उठाने की क्रिया।

तोलना–क्रि० स० दे० "तौलना"।

तोला–संज्ञा पुं० [सं० तोलक] १. बारह माशे की तौल। २. इस तौल का बाट।

तोशक–संज्ञा स्त्री० [तु०] खोल में रूई आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना। हलका गद्दा।

तोशदान–संज्ञा पुं० [फा० तोश दान] १ वह थैली आदि जिसमें मार्ग के लिये जलपान आदि या दूसरी आवश्यक चीजें रखते हैं। २ चमड़े की वह थैली जिसमें सिपाहियों का कारतूस रहता है।

तोशा–संज्ञा पुं० [फा०] १ वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिये अपने साथ रख लेता है। पाथेय। २. साधारण खाने-पीने की चीज।

तोशाखाना–संज्ञा पुं० [तु० तोशक+फा० खाना] वह बड़ा कमरा या स्थान जहाँ राजाओं और अमीरों के पहनने के बढ़िया कपड़े और गहने आदि रहते हैं।

तोष–संज्ञा पुं० [सं०] १. अघाने या मन भरने का भाव। तुष्टि। संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। आनंद।

वि० अल्प। थोड़ा। (अनेकार्थ)

तोषक–वि० [सं०] संतुष्ट करनेवाला।

तोषण–संज्ञा पुं० [सं०] १. तृप्ति। संतोष। २ संतुष्ट करने की क्रिया या भाव।

तोषना†–क्रि० स० [सं० तोष] संतुष्ट करना। तृप्त करना।
क्रि० अ० संतुष्ट होना। तृप्त होना।

तोषल–संज्ञा पुं० [सं०] १ कंस के एक असुर मल्ल का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। २ मूसल।

तोषित–वि० [सं०] जिसका तोष हो गया हो। तुष्ट। तृप्त।

तोस–संज्ञा पुं० दे० "तोष"।

तोसल†–संज्ञा पुं० दे० "तोषल"।

तोसा†–संज्ञा पुं० दे० "तोशा"।

तोसागार†–संज्ञा पुं० दे० "तोशाखाना"।

तोहफगी–संज्ञा स्त्री० [अ० तोहफा] उत्तमता। अच्छापन। उम्दगी।

तोहफा–संज्ञा पुं० [अ०] सौगात। उपहार।
वि० अच्छा। उत्तम। बढ़िया।

तोहमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] वृथा लगाया हुआ दोष। झूठा कलंक।

तोहरा†–सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तोहि–सर्व० [हिं० तू या तैं] तुझको। तुझे।

तौंस†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताव+उमस] वह प्यास जो धूप खा जाने के कारण लगे और किसी भाँति न बुझे।

तौंसना–क्रि० अ० [हिं० तौंस] गरमी से झुलस जाना। गरमी से संतप्त होना।

तौंसा–संज्ञा पुं० [हिं० ताव+उमस] अधिक ताप। कड़ी गरमी।

तौ†–क्रि० वि० दे० "तो"।
क्रि० अ० [हिं० हतो] था।

तौक–संज्ञा पुं० [अ०] १. हँसुली के आकार का गले में पहनने का एक गहना। २ इसी आकार की बहुत भारी वृत्ताकार पटरी या मँडरा जिसे अपराधी या पागल के गले में पहना देते हैं। ३ इसी आकार का वह प्राकृतिक चिह्न जो पक्षियों आदि के गले में होता है। हँसुली। ४ पट्टा। चपरास। ५ कोई गोल घेरा या पदार्थ।

तौन†–सर्व० [सं० तद्] वह। जो।

तौनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० तवा का स्त्री० अल्पा०] रोटी सेंकने का छोटा तवा। तई। तवी।

तौया–संज्ञा स्त्री० दे० "तौवा"।

तौर–संज्ञा पु० [अ०] १. चाल-ढाल। चाल चलन।
यौ०—तौर तरीका=चाल चलन।
२. हालत। दशा। अवस्था। ३. तरीका। तर्ज़। ढंग। ४. प्रकार। भाँति। तरह।
तौरात–संज्ञा पु० दे० "तौरेत"।
तौरि†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ताँवरि] घुमेर। घुमरी। चक्कर।
तौरेत–संज्ञा पु० [इब्रा०] यहूदियों का प्रधान धर्म्म-ग्रंथ जो हज़रत मूसा पर प्रकट हुआ था।
तौल–संज्ञा पु० [सं०] १. तराजू। २. तुला राशि।
संज्ञा स्त्री० १. किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण। भार का मान। वजन। २ तौलने की क्रिया या भाव।
तौलना–क्रि० स० [सं० तौलन] १. किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण जानने के लिये उसे तराज़ू या काँटे आदि पर रखना। वजन करना। जोखना। २ किसी अस्त्र आदि को चलाने के लिये हाथ को इस प्रकार ठीक करना कि वह अस्त्र अपने लक्ष्य पर पहुँच जाय। साधना। ३ तारतम्य जानना। मिलान करना। ४. गाड़ी के पहिए में तेल देना। औंगना।
तौलवाना†–क्रि० स० [हिं० तौलना का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना। तौलाना।
तौला–संज्ञा पु० [हिं० तौलना] १ अनाज तौलनेवाला मनुष्य। बया। २. तँबिया।
तौलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० तौल+आई (प्रत्य०)] तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
तौलाना–क्रि० स० [हिं० तौलने का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना।
तौलिया–संज्ञा स्त्री० पु० [अं० टावेल] एक विशेष प्रकार का मोटा अँगोछा।
तौसना†–क्रि० अ० [हिं० ताँस] गरमी से बहुत व्याकुल होना।
क्रि० स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना।
तौहीन–संज्ञा स्त्री० [अ०] अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।
तौहीनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "तौहीन"।
त्यक्त–वि० [सं०] [वि० त्यक्तव्य] छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। जिसका त्याग हो।
त्यजन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० त्यजनीय] छोड़ने का काम। त्याग।
त्याग–संज्ञा पु० [सं०] १. किसी पदार्थ पर से अपना स्वत्व हटा लेने अथवा उसे अपने पास से अलग करने की क्रिया। उत्सर्ग। २. किसी बात को छोड़ने की क्रिया। ३. संबंध या लगाव न रखने की क्रिया। ४. विरक्ति आदि के कारण सांसारिक विषयों और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया।
त्यागना–क्रि० स० [सं० त्याग] छोड़ना। तजना। पृथक् करना। त्याग करना।
त्यागपत्र संज्ञा पु० [सं०] १. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो। २ इस्तीफा।
त्यागी–वि० [सं० त्यागिन्] स्वार्थ या सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला। विरक्त।
त्याज्य–वि० [सं०] त्यागने योग्य।
त्यार†–वि० दे० "तैयार"।
त्यूँ–†क्रि० वि० दे० "त्यों"।
त्यों–क्रि० वि० [सं० तत्+एवम्] १. उस प्रकार। उस तरह। उस भाँति। २ उसी समय। तत्काल।
त्योरुस–संज्ञा पु० [हिं० ति० (तीन)+बरस] १. पिछला तीसरा वर्ष। वह वर्ष जिसे बीते दो बरस हो चुके हों। २. आगामी तीसरा वर्ष।
त्योरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० त्रिकुटी] अवलोकन। चितवन। दृष्टि। निगाह।
मुहा०—त्योरी चढ़ना या बदलना=दृष्टि का ऐसी अवस्था में हो जाना जिससे कुछ क्रोध झलके। आँखें चढ़ना। त्योरी में बल पड़ना =त्योरी चढ़ना।
त्योहार–संज्ञा पु० [सं० तिथि+वार] वह दिन जिसमें कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाय। पर्व दिन।
त्योहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० त्योहार] वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष में छोटों, लड़कों, आश्रितों या नौकरों आदि को दिया जाता है
त्यौं–क्रि० वि० दे० "त्यों"।
त्यौनार–संज्ञा पु० [हिं० तेवर] ढंग। तर्ज़।
त्यौर–संज्ञा पु० दे० "त्योरी"।
त्रपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० त्रपमान्] १ लज्जा। लाज। शर्म। हया। २. छिनाल स्त्री। पुंश्चली। ३ कीर्त्ति। यश।
वि० [सं०] लज्जित। शरमिंदा।
त्रय–वि० [सं०] १. तीन। २. तीसरा।

त्रयी–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन वस्तुओं का समूह। तिगुड्डु।
त्रयोदशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। तेरस।
त्रष्टा–संज्ञा पु० दे० "तष्टा"। (तश्तरी)
त्रसन–संज्ञा पु० [सं०] १. भय। डर। २. उद्वेग।
त्रसना†–क्रि० अ० [सं० त्रसन] भय से काँप उठना। डरना। खौफ खाना।
त्रसरेणु–संज्ञा पु० [सं०] वह चमकता हुआ कण जो छेद में से आती हुई धूप में नाचता या घूमता दिखाई देता है। सूक्ष्म कण।
त्रसाना†–क्रि० स० [हिं० त्रसना] डराना। धमकाना। भय दिखाना।
त्रसित–वि० [सं० त्रस्त] १. भयभीत। डरा हुआ। २ पीड़ित। सताया हुआ।
त्रस्त–वि० [सं०] १ भयभीत। डरा हुआ। २. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित।
त्राण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० त्रातक] १. रक्षा। बचाव। हिफ़ाजत। २. रक्षा का साधन। ३ कवच।
त्राता, त्रातार–संज्ञा पु० [सं० त्रातृ] रक्षक। बचानेवाला।
त्रायमाण–संज्ञा पु० [सं०] बनफ़शे की तरह की एक लता।
वि० रक्षक। रक्षा करनेवाला।
त्रास–संज्ञा पु० [सं०] १. डर। भय। २. कष्ट। तकलीफ।
त्रासक–संज्ञा पु० [सं०] १. डरानेवाला। भयभीत करनेवाला। २ निवारक। दूर करनेवाला।
त्रासना†–क्रि० स० [सं० त्रासन] डराना। भय दिखाना। त्रास देना।
त्रासित–वि० दे० "त्रस्त"।
त्राहि–अव्य० [सं०] बचाओ। रक्षा करो।
त्रि–वि० [सं०] तीन। जैसे, त्रिकाल।
त्रिकंटक–वि० [सं०] जिसमें तीन काँटे हों।
त्रिक–संज्ञा पु० [सं०] १ तीन का समूह। २ रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती है। ३ कमर। ४. त्रिफला।
त्रिककुद्–संज्ञा पु० [सं०] १ त्रिकूट पर्वत। २ विष्णु।
वि० जिसके तीन शृंग हों।
त्रिकटु, त्रिकटुक–संज्ञा पु० [सं०] सोंठ, मिर्च और पीपल ये तीन कटु वस्तुएँ।
त्रिकल–संज्ञा पु० [सं०] १. तीन मात्राओं का शब्द। प्लुत। २. दोहे का एक भेद। वि० जिसमें तीन कलाएँ हों।
त्रिकांड–संज्ञा पु० [सं०] १. अमरकोष का दूसरा नाम। २ निरुक्त का दूसरा नाम। वि० जिसमें तीन कांड हों।
त्रिकाल–संज्ञा पु० [सं०] १. तीनों समय–भूत, वर्त्तमान और भविष्य। २. तीनों समय—प्रातः, मध्याह्न और सायं।
त्रिकालज्ञ–संज्ञा पु० [सं०] सर्वज्ञ।
त्रिकालदर्शक–वि० दे० 'त्रिकालज्ञ'।
त्रिकालदर्शी–संज्ञा पु० [सं० त्रिकालदर्शिन्] तीनों कालों की बातों को जाननेवाला व्यक्ति। त्रिकालज्ञ।
त्रिकुटी–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिकूट] दोनों भौंहों के बीच के कुछ ऊपर का स्थान।
त्रिकूट–संज्ञा पु० [सं०] १. वह पर्वत जिसकी तीन चोटियाँ हों। २. वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई मानी जाती है। ३ एक कल्पित पर्वत जो सुमेरु पर्वत का पुत्र माना जाता है। ४. योग में मस्तक के छः चक्रों में से पहला चक्र।
त्रिकोण–संज्ञा पु० [सं०] १. तीन कोने का क्षेत्र। त्रिभुज क्षेत्र। २ तीन कोनेवाली कोई वस्तु।
त्रिकोणमिति–संज्ञा स्त्री० [सं०] गणित-शास्त्र का वह विभाग जिसमें त्रिभुज के कोण बाहु, वर्ग-विस्तार आदि का मान निकालने की रीति बतलाई जाती है।
त्रिखा–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।
त्रिगर्त्त–संज्ञा पु० [सं०] उत्तर भारत के उस प्रांत का प्राचीन नाम जिसमें आज-कल जालंधर और कांगड़ा आदि नगर हैं।
त्रिगुण–संज्ञा पु० [सं०] सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों का समूह।
वि० [सं०] तीन गुना। तिगुना।
त्रिगुणात्मक–वि० पु० [सं०] [स्त्री० त्रिगुणात्मिका] सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त।
त्रिजग‡–संज्ञा पु० [सं० तिर्यक्] पशु तथा कीड़े मकोड़े। तिर्य्यक।
संज्ञा पु० [सं० त्रिजगत्] तीनों लोक—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।
त्रिजट–संज्ञा पु० [सं०] महादेव।
त्रिजटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] विभीषण की

बहिन जो अशोक वाटिका में जानकी जी के पास रहा करती थी।

त्रिजामा:†–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रियामा] रात्रि।

त्रिज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्त के केंद्र से परिधि तक की रेखा। व्यास की आधी रेखा।

त्रिण*–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

त्रिदंड–संज्ञा पुं० [सं०] संन्यास आश्रम का चिह्न, बाँस का एक डंडा जिसके सिरे पर दो छोटी लकड़ियाँ बाँधी होती हैं।

त्रिदंडी–संज्ञा पुं० [सं०] सन्यासी।

त्रिदश–संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

त्रिदशालय–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २ सुमेरु पर्वत।

त्रिदिनस्पृश–संज्ञा पुं० [सं०] वह तिथि जिसका थोड़ा बहुत अंश तीन दिनों में पड़ता हो।

त्रिदेव–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता।

त्रिदोष–संज्ञा पुं० [सं०] १. वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष। २. सन्निपात रोग।

त्रिदोषना:†–क्रि० अ० [सं० त्रिदोष] १. तीनों दोषों के कोप में पड़ना। २. काम, क्रोध और लोभ के फंदों में पड़ना।

त्रिधा–क्रि० वि० [सं०] तीन तरह से। वि० [सं०] तीन तरह का।

त्रिधारा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तीन धारा-वाला सेंहुड़। तिधारा। २. गंगा।

त्रिन*†–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

त्रिनयन–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

त्रिनेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

त्रिपथ–संज्ञा पुं० [सं०] कर्म, ज्ञान और उपासना इन तीनों मार्गों का समूह।

त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

त्रिपद–संज्ञा पुं० [सं०] १. तिपाई। २. त्रिभुज। ३ वह जिसके तीन पद हों।

त्रिपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंसपदी। २. तिपाई। ३ गायत्री।

त्रिपाठी–संज्ञा पुं० [सं० त्रिपाठिन्] १. तीन वेदों का जाननेवाला पुरुष। त्रिवेदी। २. ब्राह्मणों की एक जाति। त्रिवेदी। तिवारी।

त्रिपिटक–संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् बुद्ध के उपदेशों का संग्रह जिसे बौद्ध लोग अपना प्रधान धर्मग्रंथ मानते हैं। यह तीन भागों में है—सूत्रपिटक, विनयपिटक और अभिधर्मपिटक।

त्रिपिताना†–क्रि० अ० [सं० तृप्ति + आना (प्रत्य०)] तृप्त होना। अघा जाना। क्रि० स० तृप्त या संतुष्ट करना।

त्रिपुंड–संज्ञा पुं० [सं० त्रिपुंड्र] भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव लोग लगाते हैं।

त्रिपुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाणासुर का एक नाम। २. तीनों लोक। ३. चँदेरी नगर। ४ वे तीनों नगर जो तारकासुर के तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली नाम के तीनों पुत्रों ने मय दानव से अपने लिये बनवाए थे।

त्रिपुरदहन–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

त्रिपुरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] कामाख्या देवी की एक मूर्त्ति।

त्रिपुरारि–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

त्रिपुरासुर–संज्ञा पुं० दे० "त्रिपुर" ४।

त्रिफला–संज्ञा स्त्री० [सं०] आँवले, हड़ और बहेड़े का समूह।

त्रिवली–संज्ञा स्त्री० [सं०] वे तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं। इन की गणना स्त्री के सौंदर्य में होती है।

त्रिभंग–वि० [सं०] जिसमें तीन जगह बल पड़ते हों। संज्ञा पुं० खड़े होने की एक मुद्रा जिसमें पेट, कमर और गरदन में कुछ टेढ़ापन रहता है।

त्रिभंगी–वि० [सं०] त्रिभंग। संज्ञा पुं० [सं०] १. एक मात्रिक छंद। २ गणात्मक दंडक का एक भेद।

त्रिभुज–संज्ञा पुं० [सं०] वह धरातल जो तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हो।

त्रिभुवन–संज्ञा पुं० [सं०] तीनों लोक अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।

त्रिमात्रिक–वि० [सं०] जिसमें तीन मात्राएँ हों। प्लुत।

त्रिमूर्त्ति–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों देवता। २. सूर्य।

त्रिया:†–संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] औरत।

यौ०—त्रियाचरित्र = स्त्रियों का छल-कपट जिसे पुरुष सहज में नहीं समझ सकते।

त्रियामा–संज्ञा स्त्री० [सं०] रात्रि।
त्रियुग–संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २. सत्ययुग, द्वापर और त्रेता ये तीनों युग।
त्रिलोक–संज्ञा पु० [सं०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।
त्रिलोकनाथ–संज्ञा पु० [सं०] १. ईश्वर। २. राम। ३ कृष्ण।
त्रिलोकपति–संज्ञा पु० दे० "त्रिलोकनाथ"।
त्रिलोकी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिलोक"।
त्रिलोचन–संज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव
त्रिवर्ग–संज्ञा पु० [सं०] १. अर्थ, धर्म और काम। २. त्रिफला। ३. त्रिकुटा। ४. वृद्धि, स्थिति और क्षय। ५. सत्त्व, रज और तम ये तीनों गुण। ६. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों प्रधान जातियाँ।
त्रिविध–वि० [सं०] तीन प्रकार का।
क्रि० वि० [सं०] तीन प्रकार से।
त्रिवृत्करण–संज्ञा पु० [सं०] अग्नि, जल और पृथ्वी इन तीनों तत्त्वों में से प्रत्येक में शेष दोनों तत्त्वों का समावेश करके प्रत्येक को अलग अलग तीन भागों में विभक्त करने की क्रिया।
त्रिवेणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तीन नदियों का संगम। २. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम-स्थान जो प्रयाग में है। ३. इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीनों नाड़ियों का संगम-स्थान। (हठ योग)
त्रिवेद–संज्ञा पु० [सं०] ऋक्, यजुः और साम ये तीनों वेद।
त्रिवेदी–संज्ञा पुं० [सं० त्रिवेदिन्] १. ऋक्, यजुः और साम इन तीनों वेदों का जाननेवाला। २. ब्राह्मणों का एक भेद। तिवाड़ी।
त्रिवेनी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।
त्रिशंकु–संज्ञा पु० [सं०] १. बिल्ली। २. जुगनूँ। ३. एक पहाड़ का नाम। ४. पपीहा। ५. एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जिन्होंने सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से यज्ञ किया था, पर जो देवताओं के विरोध करने के कारण स्वर्ग न पहुँच सके ये और बीच आकाश में रुक गए थे। ६. एक तारा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशंकु है जो इंद्र के ढकेलने पर आकाश से गिर रहे थे और जिन्हें मार्ग में ही विश्वामित्र ने रोक दिया था।
त्रिशक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीनों ईश्वरीय शक्तियाँ। २. महत्तत्त्व जो त्रिगुणात्मक है। बुद्धितत्त्व। ३ गायत्री।
त्रिशिर–संज्ञा पु०[सं० त्रिशिरस्] १. रावण का एक भाई। २. कुबेर।
वि० जिसके तीन सिर हों।
त्रिशूल–संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं (महादेवजी का अस्त्र)। २. दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख।
त्रिषित –वि० दे० "तृषित"।
त्रिष्टुभ–संज्ञा पु० [सं०] एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
त्रिसंगम–संज्ञा पु० [सं०] तीन नदियों का संगम। त्रिवेणी। फलुनियाँ।
त्रिसंध्य–संज्ञा पु० [सं०] प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल।
त्रिसंध्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों संध्याएँ।
त्रिस्थली–संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी, गया और प्रयाग ये तीन पुण्य-स्थान।
त्रिस्रोता–संज्ञा स्त्री० [सं० त्रिस्रोतस्] गंगा।
त्रुटि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमी। कसर। न्यूनता। २. अभाव। ३. भूल। चूक। ४. वचन-भंग।
त्रुटी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्रुटि"।
त्रेतायुग–संज्ञा पु० [सं०] चार युगों में से दूसरा युग जो १२९६००० वर्ष का होता है। इसका आरम्भ कार्तिक शुक्ल नवमी को हुआ था।
त्रै–वि० [सं० त्रय] तीन।
त्रैकालिक–संज्ञा पुं० [सं०] तीनों कालों में या सदा होनेवाला।
त्रैगुण्य–संज्ञा पु० [सं०] सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों का धर्म्म या भाव।
त्रैमातुर–संज्ञा पु० [सं०] लक्ष्मण।
त्रैमासिक–वि० [सं०] हर तीसरे महीने होनेवाला। जो हर तीसरे महीने हो।
त्रैराशिक–संज्ञा पु० [सं०] गणित की एक क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।
त्रैलोक्य–संज्ञा पु० [सं०] १. स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक। २. २१

गाथाओं का कोई छंद।
त्रैवार्षिक-वि० [सं०] जो हर तीसरे वर्ष हो। तीन वर्ष संबंधी।
त्रोटक-संज्ञा पुं० [सं०] नाटक का एक भेद जिसमें ५, ७, ८ या ६ अंक होते हैं।
त्र्यंबक-संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
त्र्यंबका-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
त्वक्-संज्ञा पुं० [सं०] १. छिलका। छाल। २. त्वचा। चमड़ा। खाल। ३. पाँच ज्ञानेंद्रियों में से एक जो सारे शरीर के ऊपर है।
त्वचा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चमड़ा। २. छाल। वल्कल। ३. साँप की कचुली।
त्वदीय-सर्व० [सं०] तुम्हारा।
त्वरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] शीघ्रता। जल्दी।
त्वरावान्-वि० [सं० त्वरावत्] शीघ्रता करनेवाला। जल्दबाज।
त्वरित-वि० [सं०] तेज।
क्रि० वि० शीघ्रता से।
त्वरितगति-संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त। अमृतगति।
त्वष्टा-संज्ञा पुं० [सं० त्वष्टृ] १. विश्वकर्मा। २. महादेव। शिव। ३. एक प्रजापति का नाम। ४. बढ़ई। ५. बारह आदित्यों में से ग्यारहवें आदित्य। ६. एक वैदिक देवता।

थ

थ-हिंदी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन वर्ण और त-वर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान दंत है।
थंब, थंभ-संज्ञा पुं० [सं० स्तंभ] [स्त्री० थंभी] १. खंभा। स्तंभ। २. सहारा। टेक।
थंभन-संज्ञा पुं० [सं० स्तंभन] १. रुकावट। ठहराव। २. दे० "स्तंभन"।
थंभना†-क्रि० अ० दे० "थमना"।
थंभित*-वि० [सं० स्तंभित] १. रुका या ठहरा हुआ। २. अचल। स्थिर। ३ भय या आश्चर्य से निश्चल। ठक।
थ-संज्ञा पुं० [सं०] १ रक्षण। २. मंगल। ३. भय। ४ पर्वत। ५. भक्षण। आहार।
थकना-क्रि० अ० [सं० स्था+क] १. परिश्रम करते करते हार जाना। शिथिल होना। क्लांत होना। २ ऊब जाना। हैरान हो जाना। ३ बुढ़ापे से अशक्त होना। ४. ढीला होना या रुक जाना। चलता न रहना। ५. मोहित होना। मुग्ध होना।
थकान-संज्ञा स्त्री० [हिं० थकना] थकने का भाव। थकावट। शिथिलता।
थकाना-क्रि० स० [हिं० थकना] श्रांत या शिथिल करना। परिश्रम से अशक्त कराना।
थका माँदा-वि० [हिं० थकना+माँदा] परिश्रम करते करते अशक्त। श्रांत। श्रमित।
थकावट, थकाहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० थकना] थकने का भाव। शिथिलता।
थकित-वि० [हिं० थकना] १. थका हुआ। श्रांत। शिथिल। २ मोहित। मुग्ध।
थकौहाँ†-वि० [हिं० थकना] [स्त्री० थकौहीं] कुछ थका हुआ। थका-माँदा। शिथिल।
थक्का-संज्ञा पुं० [सं० स्था+क] [स्त्री० थक्की, थकिया] गाढ़ी चीज की जमी हुई मोटी तह। जमा हुआ कतरा।
थगित-वि० [हिं० थकित] १ ठहरा हुआ। रुका हुआ। २. शिथिल। ढीला। ३ मंद।
थति†*-संज्ञा स्त्री० दे० "थाती"।
थन-संज्ञा पुं० [सं० स्तन] गाय, भैंस, बकरी इत्यादि चौपायों का स्तन। चौपायों की चूची।
थनी-संज्ञा स्त्री० [सं० स्तन] स्तन के आकार की दो थैलियाँ जो बकरियों के गले के नीचे लटकती हैं। गलथना।
थनैला-संज्ञा पुं० [हिं० थन+एला (प्रत्य०)] एक प्रकार का फोड़ा जो स्त्रियों के स्तन पर होता है।
थनैत-संज्ञा पुं० [हिं० थान] १ गाँव का मुखिया। २. वह आदमी जो जमींदार की ओर से गाँव का लगान वसूल करे।
थपकना-क्रि० स० [अनु० थप थप] १ प्यार से या आराम पहुँचाने के लिये किसी के शरीर पर धीरे धीरे हाथ मारना। २ धीरे धीरे ठोंकना। ३ पुचकारना या ढारस दिलासा देना।
थपकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० ...] ... के शरीर पर (प्यार ... के लिये) हथेली से ...

हुआ आघात। २. हाथ से धीरे धीरे ठोकने की क्रिया।

थपथपी–संज्ञा स्त्री० दे० "थपकी"।

थपन–संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] ठहरने या जमाने का काम। स्थापन।

थपना–क्रि० स० [सं० स्थापन] स्थापित करना। बैठाना। जमाना।
क्रि० अ० स्थापित होना। जमना।

थपेड़ा–संज्ञा पुं० [अनु० थप थप] १. थप्पड़। २ आघात। धक्का। टक्कर।

थप्पड़–संज्ञा पुं० [अनु० थप थप] १. हथेली से किया हुआ आघात। तमाचा। झापड़। २ आघात। धक्का।

थमकारी–वि० [सं० स्तंभन] स्तंभन करनेवाला। रोकनेवाला।

थमना–क्रि० अ० [सं० स्तंभन] १. चलता न रहना। रुकना। ठहरना। २. जारी न रहना। बंद हो जाना। ३. धीरज धरना। सब्र करना। ठहरा रहना।

थर–संज्ञा स्त्री० [सं० स्तर] तह। परत।
संज्ञा पुं० [सं० स्थल] १. दे० "थल"। २. बाघ की माँद।

थरकना–क्रि० अ० [अनु० थर थर] डर से काँपना। थर्राना।

थरथर–संज्ञा स्त्री० [अनु०] डर से काँपने की मुद्रा।
क्रि० वि० काँपने की पूरी मुद्रा से।

थरथराना–क्रि० अ० [अनु० थर थर] १. डर के मारे काँपना। २. काँपना।

थरथरी–संज्ञा स्त्री० [अनु० थर थर] कँपकँपी।

थर्राना–क्रि० अ० [अनु० थर थर] डर के मारे काँपना। दहलना।

थल–संज्ञा पुं० [सं० स्थल] १. स्थान। जगह। ठिकाना। २ वह जमीन जिस पर पानी न हो। सूखी धरती। जल का उलटा। ३ थल का मार्ग। ४. वह स्थान जहाँ बहुत सी रेत पड़ गई हो। भूड़। थली। रेगिस्तान। ५ बाघ की माँद। चुर।

थलकना–क्रि० अ० [सं० स्थूल] १. झोल पड़ने के कारण ऊपर-नीचे हिलना। २ मोटाई के कारण शरीर के माँस का हिलने-डोलने में हिलना।

थलचर–संज्ञा पुं० [सं० स्थलचर] पृथ्वी पर रहनेवाले जीव।

थलथल–वि० [सं० स्थूल] मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।

थलथलाना–क्रि० अ० [हिं० थूला] मोटाई के कारण शरीर के मांस का झूलकर हिलना।

थलरुह–वि० [सं० स्थलरुह] धरती पर उत्पन्न होनेवाले जंतु, वृक्ष आदि।

थली–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थली] १. स्थान। जगह। २ जल के नीचे का थल। ३. ठहरने या बैठने की जगह। बैठक। ४. बालू का मैदान।

थवई–संज्ञा पुं० [सं० स्थपति] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। मेमार।

थहना–क्रि० स० [हिं० थाह] थाह लेना।

थहराना–क्रि० अ० [अनु० थर थर] काँपना।

थहाना–क्रि० स० [हिं० थाह] १. गहराई का पता लगाना। थाह लेना। २ किसी की विद्या, बुद्धि या भीतरी अभिप्राय आदि का पता लगाना।

थाँग–संज्ञा स्त्री० [हिं० थान] १. चोरों या डाकुओं का गुप्त स्थान। २. खोज। पता। सुराग।

थाँगी–संज्ञा पुं० [हिं० थाँग] १. चोरी का माल मोल लेने या अपने पास रखनेवाला आदमी। २. चोरों को चोरी के लिये ठिकाने आदि का पता देनेवाला मनुष्य। ३. जासूस। ४. चोरों के गोल का सरदार।

थाँवला–संज्ञा पुं० [सं० स्थल] वह घेरा या गड्ढा जिसमें कोई पौधा लगा हो। थाला। आल बाल।

था–क्रि० अ० [सं० स्था] 'है' शब्द का भूतकालिक रूप। रहा।

थाक–संज्ञा पुं० [सं० स्था] १. गाँव की सीमा। २. ढेर। समूह। राशि।

थाकना–क्रि० अ० दे० "थकना"।

थात–वि० [सं० स्थाता] जो बैठा या ठहरा हो। स्थित।

थाति–संज्ञा स्त्री० [हिं० थात] १. स्थिरता। ठहराव। टिकाव। रहन। २ दे० "थाती"।

थाती–संज्ञा स्त्री० [हिं० थात] १. समय पर काम आने के लिये रखी हुई वस्तु। २. जमा। पूँजी। गथ। ३ धरोहर। अमानत।

थान–संज्ञा पुं० [सं० स्थान] १. जगह। ठौर। ठिकाना। २. डेरा। निवासस्थान। ३. किसी देवी या देवता का स्थान। ४. वह स्थान जहाँ घोड़े या चौपाए बाँधे जायँ। ५. कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा जिसकी लंबाई बँधी हुई होती है। ६. संख्या। अदद।

थाना–संज्ञा पुं० [सं० स्थान] १. टिकने या बैठने का स्थान। अड्डा। २. वह स्थान जहाँ अपराधों की सूचना दी जाती है और कुछ सरकारी सिपाही रहते हैं। पुलिस की बड़ी चौकी।

थानेदार–संज्ञा पुं० [हिं० थाना = फा० दार] थाने का प्रधान अफसर।

थानैत–संज्ञा पुं० [हिं० थान + ऐत (प्रत्य०)] १. किसी चौकी या अड्डे का मालिक। २. किसी स्थान का देवता। ग्राम देवता।

थाप–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापन] १. तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे का आघात। थपकी। ठोंक। २ थप्पड़। तमाचा। ३. निशान। छाप। ४. स्थिति। जमाव। ५. प्रतिष्ठा। मर्यादा। धाक। ६. मान। कदर। प्रमाण। ७. पंचायत। ८. शपथ। सौगंध। कसम।

थापन–संज्ञा पुं० [सं० स्थापन] १. स्थापित करने, जमाने या बैठाने की क्रिया। २. किसी स्थान पर प्रतिष्ठित करना। रखना।

थापना–क्रि० स० [सं० स्थापन] १. स्थापित करना। जमाना। बैठाना। २ किसी गीली सामग्री को हाथ या साँचे से पीट अथवा दबाकर कुछ बनाना।

संज्ञा स्त्री० [सं० स्थापना] १. स्थापन। प्रतिष्ठा। २. नवरात्र में दुर्गा पूजा के लिये घट-स्थापना।

थापा–संज्ञा पुं० [हिं० थाप] १. पंजे का छापा। २. खलियान में अनाज की राशि पर गीली मिट्टी या गोबर से डाला हुआ चिह्न। चाँकी। ३ वह साँचा जिसमें रंग आदि पोतकर कोई चिह्न अंकित किया जाय। छापा। ४. ढेर। राशि।

थापी–संज्ञा स्त्री० [हिं० थापना] वह चिपटी मुँगरी जिससे राज या कारीगर गच पीटते हैं।

थाम–संज्ञा पुं० [सं० स्तंभ] १. खंभा। स्तंभ। २. मस्तूल।

संज्ञा स्त्री० [हिं० थामना] थामने की क्रिया या ढंग। पकड़।

थामना–क्रि० स० [सं० स्तंभन] १ किसी चलती हुई वस्तु को रोकना। गति या वेग अवरुद्ध करना। २ गिरने, पड़ने या लुढ़कने आदि न देना। ३. ग्रहण करना। हाथ में लेना। पकड़ना। ४. सहारा देना। मदद देना। सँभालना। ५ अपने ऊपर कार्य्य का भार लेना।

थायी॰–वि० दे० "स्थायी"।

थाल–संज्ञा पुं० [हिं० थाली] बड़ी थाली।

थाला–संज्ञा पुं० [सं० स्थल, हिं० थल] वह घेरा या गड्ढा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है। थावँला। आलबाल।

थाली–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थाली] वह बड़ा छिछला बरतन जिसमें खाने के लिये भोजन रखा जाता है। बड़ी तश्तरी।

मुहा०—*थाली का बैंगन* = लाभ और हानि देख कभी इस पक्ष में कभी उस पक्ष में होनेवाला।

थाह–संज्ञा स्त्री० [सं० स्था] १. धरती का वह तल जिस पर पानी हो। गहराई का अंत या हद। २. कम गहरा पानी जिसकी थाह मिल सके। ३ गहराई का पता। गहराई का अंदाज। ४. अंत। पार। सीमा। हद। ५. कोई वस्तु कितनी या कहाँ तक है, इसका पता लेना।

थाहना–क्रि० स० [हिं० थाह] थाह लेना। अंदाज लेना। पता लगाना।

थाहरा॰†–वि० [हिं० थाह] जिसमें जल गहरा न हो। छिछला।

थिगली–संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकली] वह टुकड़ा जो किसी फटे हुए कपड़े आदि का छेद बंद करने के लिये लगाया जाय। चकती। पैबंद।

मुहा०—*बादल में थिगली लगाना* = अत्यंत कठिन काम करना।

थित॰–वि० [सं० स्थित] १. ठहरा हुआ। २ स्थापित। रखा हुआ।

थिति–संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिति] १ ठहराव। स्थायित्व। २. ठहरने का स्थान। ३. रहाइश। रहन। ४ बने रहने का भाव। रक्षा। ५. अवस्था। दशा।

थिर–वि० [सं० स्थिर] १. स्थिर। ठहरा हुआ। अचल। २ शांत। धीर। ३. स्थायी। दृढ़। टिकाऊ।

थिरक-संज्ञा पुं०[हिं० थिरकना] नृत्य में चरणों की चंचल गति।

थिरकना-क्रि० अ० [सं० अस्थिर+करण] १. नाचने में पैरों को क्षण क्षण पर उठाना और रखना। २. अंग मटकाकर नाचना।

थिरजीह"-संज्ञा पुं० [सं० स्थिरजिह्व] मछली।

थिरता.-संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिरता] १. ठह-राव। अचलत्व। २. स्थायित्व। ३. शांति। धीरता।

थिरताई -संज्ञा स्त्री० दे० "थिरता"।

थिरना-क्रि० अ० [सं० स्थिर] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ का हिलना डोलना बंद होना। २. जल के स्थिर होने के कारण उसमें घुली हुई वस्तु का तल में बैठना। ३. मैल आदि के नीचे बैठ जाने के कारण साफ चीज का जल के ऊपर रह जाना। निथरना।

थिरा -संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिरा] पृथ्वी।

थिराना-क्रि० स० [हिं० थिरना] १ क्षुब्ध जल को स्थिर होने देना। २. जल को स्थिर करके उसमें घुली हुई वस्तु को नीचे बैठने देना। ३. किसी वस्तु को जल में घोलकर और उसकी मैल आदि को नीचे बैठाकर साफ करना। निथारना।
†क्रि० अ० दे० "थिरना"।

थीता"-संज्ञा पुं० [सं० स्थित] १. स्थिरता। शांति। २. कल। चैन।

थुकाना-क्रि० स० [हिं० थूकना का प्रे०] १. थूकने की क्रिया दूसरे से कराना। २ मुँह में ली हुई वस्तु को गिरवाना। उगलवाना। ३. थुड़ी थुड़ी कराना। निंदा कराना।

थुक्का फजीहत-संज्ञा स्त्री० [हिं० थूक+अ० फजीहत] १. निंदा और तिरस्कार। थुड़ी-थुड़ी। २. लड़ाई-झगड़ा।

थुड़ी-संज्ञा स्त्री० [अनु० थू थू] घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द। धिक्कार। लानत।
मुहा०—थुड़ी थुड़ी करना = धिक्कारना।

थुन्नी-संज्ञा स्त्री० दे०"थूनी"।

थुरहथा- वि० [हिं० थोड़ा+हाथ] [स्त्री० थुरहथी] १ जिसके हाथ छोटे हों। जिसकी हथेली में कम चीज आवे। २. किफायत करनेवाला।

थू-अव्य० [अनु०] १. थूकने का शब्द। २. घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द। धिक्। छिः।
मुहा०—थू थू करना = धिक्कारना।

थूक-संज्ञा पुं० [अनु० थू थू] वह गाढ़ा और कुछ कुछ लसीला रस जो मुँह के भीतर जीभ तथा मांस की झिल्लियों से छूटता है। ष्ठीवन। खखार। लार।
मुहा०—थूकों सत्तू सानना = बहुत थोड़ी सामग्री लगाकर बड़ा कार्य्य पूरा करने चलना।

थूकना-क्रि० अ० [हिं० थूक] मुँह से थूक निकालना या फेंकना।
मुहा०—किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना = अत्यंत तुच्छ समझकर ध्यान तक न देना। थूककर चाटना = १. कहकर मुकर जाना। २. किसी दी हुई वस्तु को लौटा लेना।
क्रि० स० १. मुँह में ली हुई वस्तु को गिराना। उगलना।
मुहा०—थूक देना = तिरस्कार कर देना।
२. बुरा कहना। धिक्कारना। निंदा करना।

थूथन-संज्ञा पुं० [देश०] लंबा निकला हुआ मुँह। जैसे, सूअर या ऊँट का।

थून-संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूणा] थूनी। चाँड़।

थूनी-संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूणा] १. खंभा। स्तंभ। थम। २. वह खंभा जो किसी बोझ को रोकने के लिये नीचे से लगाया जाय। चाँड़।

थूरना-क्रि० स० [सं० थूर्वण] १. कूटना। दलित करना। २. मारना। पीटना। ३. ठूँसना। कसकर भरना।

थूल"-वि० [सं० स्थूल] १. मोटा। भारी। २ भद्दा।

थूला-वि० [सं० स्थूल] [स्त्री० थूली] मोटा। मोटा-ताजा।

थूवा-संज्ञा पुं० [सं० स्तूप] १. ढूह। २. पिंडा। लोंदा। ३ सीमा-सूचक स्तूप।

थूहर-संज्ञा पुं० [सं० स्थूण] एक छोटा पेड़ जिसमें गाँठों पर से डंडे के आकार के डंठल निकलते हैं। इसका दूध विषैला होता है और औषध के काम में आता है। सेंहुड़।

थेई थेई-वि० [अनु०] थिरक थिरककर नाचने की मुद्रा और ताल।

थेगली-संज्ञा स्त्री० दे० "थिगली"।

थैला-संज्ञा पुं० [सं० स्थल] [स्त्री०अल्पा० थैली] १. कपड़े आदि को सीकर बनाया हुआ पात्र जिसमें कोई वस्तु भरकर बंद कर सकें। बड़ा बटुआ। बड़ा कीसा। २. रुपयों से

भरा हुआ थैला। तोड़ा।

थैली–संज्ञा स्त्री० [हिं० थैला] १. छोटा थैला। कोश। कीसा। बटुआ। २. रुपयों से भरी हुई थैली। तोड़ा।

मुहा०—थैली खोलना = थैली में से निकालकर रुपया देना।

थोक–संज्ञा पुं० [सं० स्तोमक] १. ढेर। राशि। २. समूह। झुंड।

मुहा०—थोक करना = इकट्ठा करना। जमा करना।

३. इकट्ठा बेचने की चीज़। खुदरा का उलटा। ४. इकट्ठी वस्तु। कुल।

थोड़ा–वि० [सं० स्तोक] [स्त्री० थोड़ी] जो मात्रा या परिमाण में अधिक न हो। न्यून। अल्प। कम। ज़रा सा।

यौ०—थोड़ा बहुत = कुछ कुछ। किसी कदर। क्रि० वि० अल्प परिमाण या मात्रा में। ज़रा। तनिक।

मुहा०—थोड़ा ही = नहीं। बिल्कुल नहीं।

थोथरा–वि० दे० "थोथा"।

थोथा–वि० [देश०] [स्त्री० थोथी] १. जिसके भीतर कुछ सार न हो। खोखला। खाली। पोला। २. जिसकी धार तेज़ न हो। कुंठित। गुठला। ३. व्यर्थ का। निकम्मा।

थोपड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० थोपना] चपत। धौल।

थोपना–क्रि० स० [सं० स्थापन] १. किसी गीली वस्तु का लोंदा यों ही ऊपर डाल देना या जमा देना। छोपना। २. मोटा लेप चढ़ाना। ३. मत्थे मढ़ना। लगाना। ४. आक्रमण आदि से रक्षा करना। बचाना। ५. दे० "छोपना"।

थोबड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] जानवरों का थूथन।

थोर, थोरा†–वि० दे० "थोड़ा"।

थोरिक†–वि० [हिं० थोरा] थोड़ा सा। तनिक सा।

थ्यावस†–संज्ञा पुं० [सं० स्थैर्य] १. स्थिरता। ठहराव। २. धीरता। धैर्य।

द

द–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला में अठारहवाँ व्यंजन जो तवर्ग का तीसरा वर्ण है। दंतमूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से इसका उच्चारण होता है।

दंग–वि० [फा०] विस्मित। चकित। आश्चर्यान्वित। स्तब्ध।

संज्ञा पुं० १. घबराहट। भय। डर। २. दे० "दंगा"।

दंगई–वि० [हिं० दंगा] १. दंगा करनेवाला। उपद्रवी। झगड़ालू। २. प्रचंड। उग्र।

दंगल–संज्ञा पुं० [फा०] १. पहलवानों की वह कुश्ती जो जोड़ बदकर हो और जिसमें जीतनेवाले को इनाम आदि मिले। २. अखाड़ा। मल्लयुद्ध का स्थान। ३. जमावड़ा। समूह। जमात। दल। ४. बहुत मोटा गद्दा या तोशक।

दंगा–संज्ञा पुं० [फा० दंगल] १. झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव। २. गुल-गपाड़ा। हुल्लड़। शोर-गुल।

दंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. डंडा। सोंटा। लाठी। स्मृतियों में आश्रम और वर्ण के अनुसार दंड धारण करने की व्यवस्था है। २. डंडे के आकार की कोई वस्तु। जैसे, भुजदंड, मेरुदंड। ३. एक प्रकार की कसरत जो हाथ-पैर के पंजों के बल औंधे होकर की जाती है। ४. भूमि पर औंधे लेटकर किया हुआ प्रणाम। दंडवत्। ५. किसी अपराध के प्रतिकार में अपराधी को पहुँचाई हुई पीड़ा या हानि। सज़ा। तदारुक। ६. अर्थदंड। जुरमाना। डाँड़।

मुहा०—दंड भरना = १. जुरमाना देना। २. दूसरे के नुकसान को पूरा करना। दंड भोगना या भुगतना = सज़ा अपने ऊपर लेना। दंड सहना = नुकसान उठाना। घाटा सहना।

७. दमन। शासन। वश। शमन। ८. ध्वजा या पताका का बाँस। ९. तराजू की डंडी। डाँड़ी। १०. किसी वस्तु (जैसे—करछी, चम्मच आदि) की डंडी। ११. लंबाई की एक माप जो चार हाथ की होती थी। १२. (दंड देनेवाले)

१२. साठ पल का काल। २४ मिनट का समय। घड़ी।

दंडक–संज्ञा पु० [सं०] १. डंडा। २. दंड देनेवाला पुरुष। शासक। ३. वह छंद जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो। अक्षर यह दो प्रकार का होता है। एक गणात्मक जिसमें गणों का बंधन या नियम होता है, और दूसरा मुक्त जिसमें केवल अक्षरों की गिनती होती है। ४ दंडकारण्य।

दंडकला–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मात्रिक छंद।

दंडकारण्य–संज्ञा पु० [सं०] वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था।

दंडदास–संज्ञा पु० [सं०] वह जो दंड का रुपया न दे सकने के कारण दास हुआ हो।

दंडधर–संज्ञा पु० [सं०] १. यमराज। २. शासनकर्त्ता। ३. संन्यासी।

दंडधार–संज्ञा पु० [सं०] १. यमराज। २ राजा।

दंडन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० दंडनीय, दंडित, दंड्य] दंड देने की क्रिया। शासन।

दंडना–क्रि० स० [सं० दंडन] दंड देना। शासित करना। सज़ा देना।

दंडनायक–संज्ञा पु० [सं०] १. सेनापति। २. दंड विधान करनेवाला राजा या हाकिम।

दंडनीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] दंड देकर अर्थात् पीड़ित करके शासन में रखने की राजाओं की नीति।

दंडनीय–वि० [सं०] दंड देने योग्य।

दंडपाणि–संज्ञा पु० [सं०] १. यमराज। २. भैरव की एक मूर्त्ति।

दंडप्रणाम–संज्ञा पु० [सं०] दंडवत्। सादर अभिवादन।

दंडवत्–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी पर लेटकर किया हुआ नमस्कार। साष्टांग प्रणाम।

दंडविधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराधों के दंड से संबंध रखनेवाला नियम या व्यवस्था।

दंडायमान–वि० [सं०] डंडे की तरह सीधा खड़ा। खड़ा।

दंडालय–संज्ञा पु० [सं०] १. न्यायालय। २. वह स्थान जहाँ दंड दिया जाय। ३. एक छंद। दंडकला।

दंडिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] बीस अक्षरों की वर्णवृत्ति।

दंडित–वि० पु० [सं०] जिसे दंड मिला हो। सजायाफ़्ता।

दंडी–संज्ञा पु० [सं० दंडिन्] १ दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। २ यमराज। ३. राजा। ४. द्वारपाल। ५. वह संन्यासी जो दंड और कमंडलु धारण करे। ६. जिनदेव। ७ शिव। महादेव। ८ संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जिनके बनाए हुए दो ग्रंथ मिलते हैं–'दशकुमारचरित' और 'काव्यादर्श'।

दंड्य–वि० [सं०] दंड पाने योग्य।

दंत–संज्ञा पु० [सं०] १. दाँत। २. ३२ की संख्या।

दंतकथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी बात जिसे बहुत दिनों से लोग एक दूसरे से सुनते चले आए हों, और जिसका कोई पुष्ट प्रमाण न हो। सुनी-सुनाई परंपरागत बात।

दंतच्छद–संज्ञा पु० [सं०] ओष्ठ। ओंठ।

दंतधावन–संज्ञा पु० [सं०] १. दाँत धोने या साफ़ करने का काम। दातुन करने की क्रिया। २. दतौन। दातुन।

दंतमूलीय–वि० [सं०] दंतमूल से उच्चारण किया जानेवाला (वर्ण)। जैसे तवर्ग।

दँतिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत + इया (प्रत्य०)] छोटे छोटे दाँत।

दंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडी की जाति का एक पेड़। यह दो प्रकार की होती है–लघुदंती और बृहद्दंती।

दँतुरिया–संज्ञा स्त्री० दे० "दँतिया"।

दँतुला–वि० [सं० दंतुल] [स्त्री० दँतुली] बड़े बड़े दाँतोंवाला।

दंतोष्ठ्य–वि० [सं०] (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत और ओठ से हो। ऐसा वर्ण "व" है।

दंत्य–वि० [सं०] १. दंत-संबंधी। २. (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो। जैसे तवर्ग।

दंद–संज्ञा स्त्री० [सं० दंदन] किसी स्थान से निकलती हुई गरमी।

संज्ञा पु० [सं० द्वंद] १. लड़ाई-झगड़ा।

उपद्रव। २. शोर-गुल।
दंदाना–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दंदानेदार] दाँत के आकार की उभरी हुई वस्तुओं की पंक्ति। जैसी कंघी या आरे आदि की।
दंदानेदार–वि० [फा०] जिसमें दाँत की तरह निकले हुए कँगूरों की पंक्ति हो।
दंदी–वि० [हिं० दंद] झगड़ालू। उपद्रवी।
दंपति, दंपती–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री-पुरुष का जोड़ा। पति-पत्नी का जोड़ा।
दंपा–संज्ञा स्त्री० [हिं० दमकना] बिजली।
दंभ–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंभी] १. महत्त्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिये झूठा आडंबर। २. झूठी ठसक। अभिमान। घमंड।
दंभी–वि० [सं० दंभिन्] १. पाखंडी। ढकोसलेबाज़। २. अभिमानी। घमंडी।
दंभोलि–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रास्त्र। वज्र।
दँवरी–संज्ञा स्त्री० [सं० दमन, हिं० दाँवना] अनाज के सूखे डंठलों में से दाने झाड़ने के लिये उसे बैलों से रौंदवाने का काम।
दंश–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह घाव जो दाँत काटने से हुआ हो। दंत-क्षत। २. दाँत काटने की क्रिया। दंशन। ३. दाँत। ४. विषैले जंतुओं का डंक। ५. डाँस नामक विषैली मक्खी।
दंशक–संज्ञा पुं० [सं०] दाँत से काटनेवाला।
दंशन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंशित, दंशी] १. दाँत से काटना। डसना। २. वर्म। बक्तर।
दंष्ट्र–संज्ञा पुं० [सं०] दाँत।
दंस–संज्ञा पुं० दे० "दंश"।
द–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। पहाड़। २. दाँत। ३. दाता। यौगिक में जैसे, वरद।
संज्ञा स्त्री० १. भार्या। स्त्री। २. रक्षा। ३. खंडन।
दइत–संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।
दई–संज्ञा पुं० [सं० दैव] १. ईश्वर। विधाता।
मुहा०—दई का घाला = ईश्वर का मारा हुआ। अभागा। कमबख्त। दई दई = हे दैव, हे दैव! (रक्षा के लिये ईश्वर की पुकार।)
२. दैव संयोग। अदृष्ट। प्रारब्ध।
दईमारा–वि० [हिं० दई + मारना] [स्त्री० दईमारी] जिस पर ईश्वर का कोप हो। अभागा। कमबख्त।

दकीका–संज्ञा पुं० [अ०] १. कोई बारीक बात। २. युक्ति। उपाय।
मुहा०—कोई दकीका बाक़ी न रखना = कोई उपाय बाक़ी न रखना। सब उपाय कर चुकना।
दक्खिन–संज्ञा पुं० [सं० दक्षिण] [वि० दक्खिनी] १. वह दिशा जो सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दहिने हाथ की ओर पड़ती है। उत्तर के सामने की दिशा। २. भारत का वह भाग जो दक्षिण में है।
दक्खिनी–वि० [हिं० दक्खिन] १. दक्खिन का। २. जो दक्षिण के देश का हो।
संज्ञा पुं० दक्षिण देश का निवासी।
दक्ष–वि० [सं०] १. निपुण। कुशल। चतुर। होशियार। २. दक्षिण। दाहिना।
संज्ञा पुं० १. एक प्रजापति का नाम जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे। ये सृष्टि के उत्पादक, पालक और पोषक कहे गए हैं। पुराणानुसार शिव की पत्नी सती इन्हीं की कन्या थी। २. अत्रि ऋषि। ३. महेश्वर।
दक्षकन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] सती, जो शिव की पत्नी थीं।
दक्षता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निपुणता। योग्यता। कमाल।
दक्षिण–वि० [सं०] १. बायाँ का उलटा। दाहिना। अपसव्य। २. इस प्रकार प्रवृत्त जिससे किसी का कार्य सिद्ध हो। अनुकूल। ३. उस ओर का जिधर सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिना हाथ पड़े। ४. निपुण। दक्ष। चतुर।
संज्ञा पुं० १. उत्तर के सामने की दिशा। २. वह नायक जिसका अनुराग अपनी सब नायिकाओं पर समान हो। ३. प्रदक्षिणा। ४. तंत्रोक्त एक आचार या मार्ग।
दक्षिणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दक्षिण दिशा। २. वह दान जो किसी शुभ कार्य आदि के समय ब्राह्मणों को दिया जाय। ३. पुरस्कार। भेंट। ४. वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से संबंध करने पर भी उससे बराबर वैसी ही प्रीति रखती हो।
दक्षिणापथ–संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत के दक्षिण ओर का वह प्रदेश जहाँ से दक्षिण भारत के लिये रास्ते जाते हैं।
दक्षिणायन–वि० [सं०] भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर। जैसे, दक्षिणायन सूर्य।
संज्ञा पुं० १. सूर्य्य की कर्क रेखा से दक्षिण

मकर रेखा की ओर गति। २. २१ जून से २२ दिसंबर तक वह छः महीने का समय जिसमें सूर्य्य कर्क रेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर बढ़ता रहता है।

दक्षिणावर्त्त–वि० [स०] जो दाहिनी ओर को घूमा हुआ हो।
संज्ञा पु० एक प्रकार का शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है।
वि० दक्षिण देश का।

दाक्षणीय–वि० [स०] १. दक्षिण का। २. जो दक्षिणा का पात्र हो।

दखमा–संज्ञा पुं० [?] वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुरदे रखते हैं।

दखल–संज्ञा पु० [अ०] १ अधिकार। कब्जा। २ हस्तक्षेप। हाथ डालना। ३. पहुँच। प्रवेश।

दखिन–संज्ञा पु० दे० "दक्षिण"।

दखिनहा†–वि० [हिं० दक्खिन + हा (प्रत्य०)] दक्षिण का। दक्खिनी।

दखील–वि० [अ०] जिसका दखल या कब्जा हो। अधिकार रखनेवाला।

दखीलकार–संज्ञा पु० [अ० दखील + फा० कार] वह असामी जिसने किसी जमींदार के खेत या जमीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना दखल रक्खा हो।

दगड–संज्ञा पु० [?] लड़ाई में बजाया जानेवाला बड़ा ढोल।

दगदगा–संज्ञा पु० [अ०] १. डर। भय। २ संदेह। ३. एक प्रकार की कंडील।

दगदगाना–क्रि० अ० [हिं० दगना] दम-दमाना। चमकना।
क्रि० स० चमकाना। चमक उत्पन्न करना।

दगदगी–संज्ञा स्त्री० दे० "दगदगा"।

दगध†–संज्ञा पु० दे० "दाह"।
वि० दे० "दग्ध"।

दगधना::–क्रि० अ० [स० दग्ध] जलना।
क्रि० स० १. जलाना। २. दुःख देना।

दगना–क्रि० अ० [स० दग्ध + ना (प्रत्य०)] १. (बंदूक या तोप आदि का) छूटना। चलना। २. जलना। झुलस जाना। ३. दागा जाना। दागना का अकर्मक ४. प्रसिद्ध होना। मशहूर होना।
क्रि० स० दे० "दागना"।

दगर, दगरा†–संज्ञा पु० [?] १. देर। विलंब। २ डगर। रास्ता।

दगल–संज्ञा पु० दे० "दगला"।

दगला–संज्ञा पु० [?] मोटे वस्त्र का बना हुआ या रूईदार अँगरखा। भारी लबादा।

दगवाना–क्रि० स० [हिं० दागना का प्रे०] दागने का काम दूसरे से कराना।

दगहा–वि० [हिं० दाग] जिसमें दाग हो।
वि० [हिं० दाह = प्रेतकर्म + हा (प्रत्य०)] जिसने प्रेत-क्रिया की हो। दाह-कर्म करनेवाला।
वि० [हिं० दगना + हा (प्रत्य०)] जो दागा हुआ हो। दग्ध किया हुआ।

दगा–संज्ञा स्त्री० [अ०] छल-कपट। धोखा।

दगादार–वि० दे० "दगाबाज"।

दगाबाज़–वि० [फा०] धोखा देनेवाला। छली। कपटी।

दगाबाज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] छल। कपट।

दगैल–वि० [अ० दाग + ऐल (प्रत्य०)] १. दागदार। जिसमें दाग हो। २. जिसमें कुछ खोट या दोष हो।
संज्ञा पु० [अ० दगा] दगाबाज़। छली।

दग्ध–वि० [स०] १. जला या जलाया हुआ। २. दुःखित। जिसे कष्ट पहुँचा हो।

दग्धा–संज्ञा स्त्री० [स०] १. पश्चिम दिशा। २. कुछ विशिष्ट राशियों से युक्त कुछ विशिष्ट तिथियाँ (अशुभ)।

दग्धाक्षर संज्ञा पु० [स०] पिंगल के अनुसार झ, ह, र, भ और ष ये पाँचों अक्षर जिनका छंद के आरंभ में रखना वर्जित है।

दचकना–क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा दचका] १. ठोकर या धक्का खाना। २. दब जाना। ३. झटका खाना।
क्रि० स० १. ठोकर या धक्का लगाना। २. दबाना। ३. झटका देना।

दचना–क्रि० अ० [अनु०] गिरना।

दच्छ–संज्ञा पु० दे० "दक्ष"।

दच्छकुमारी –संज्ञा स्त्री० [स० दक्ष + कुमारी] दक्ष प्रजापति की कन्या, सती।

दच्छना–संज्ञा स्त्री० दे० "दक्षिणा"।

दच्छसुता–संज्ञा स्त्री० [स० दक्ष + सुता] दक्ष की कन्या, सती।

दच्छिन–वि० दे० "दक्षिण"।

दढ़ियल–वि० [हिं० दाढ़ी + इयल (प्रत्य०)] दाढ़ीवाला। जो दाढ़ी रखे हो।

दतवन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुअन"।

दतिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत का अल्पा०

स्त्री०] दाँत का स्त्रीलिंग और अल्पार्थक रूप। छोटा दाँत।

दतुअन, दतुवन-संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत + अवन (प्रत्य०)] १ नीम या बबूल आदि की छोटी टहनी जिससे दाँत साफ करते हैं। दातुन। २ दाँत साफ करने और मुँह धोने की क्रिया।

दतौन-संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दत्त-संज्ञा पु० [सं०] १. दत्तात्रेय। २ जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक। ३ दान। ४ दत्तक।
यौ०—दत्तविधान = दत्तक पुत्र लेना।
वि० दिया हुआ।

दत्तक-संज्ञा पु० [सं०] वह जो वास्तव में पुत्र न हो पर शास्त्र-विधि से बनाकर पुत्र मान लिया गया हो। गोद लिया हुआ लड़का। मुतबन्ना।

दत्तचित्त-वि० [सं०] जिसने किसी काम में खूब जी लगाया हो।

दत्तात्मा-संज्ञा पुं० [सं० दत्तात्मन्] वह जो स्वयं किसी के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बने।

दत्तात्रेय-संज्ञा पु० [सं०] एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो पुराणानुसार विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक माने जाते हैं।

दत्तोपनिषद्-संज्ञा पु० [सं०] एक उपनिषद्।

ददा-संज्ञा पु० दे० "दादा"।

ददिया ससुर-संज्ञा पु० [हिं० दादा + ससुर] [स्त्री० ददिया सास] पत्नी या पति का दादा। श्वसुर का पिता।

ददिहाल-संज्ञा पु० [हिं० दादा + आलय] १ दादा का कुल। २ दादा का घर।

ददोरा-संज्ञा पु० [हिं० दाद] मच्छड़, बरें आदि के काटने या खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर होनेवाली चकत्ती की तरह थोड़ी सी सूजन। चकत्ता।

दद्रु-संज्ञा पुं० [सं०] दाद रोग।

दधि*-संज्ञा पुं० "दधि"।

दधसार*- संज्ञा पु० दे० "दधिसार"।

दधि-संज्ञा पु० [सं०] १ जमाया हुआ दूध। दही। २ वस्त्र। कपड़ा।
* संज्ञा पु० [सं० उदधि] समुद्र। सागर।

दधिकाँदो-संज्ञा पु० [सं० दधि + हिं० काँदो = कीचड़] जन्माष्टमी के समय होनेवाला एक प्रकार का उत्सव जिसमें लोग हलदी मिला हुआ दही एक दूसरे पर फेंकते हैं।

दधिजात-संज्ञा पु० [सं०] मक्खन।
संज्ञा पु० [सं० उदधि + जात] चंद्रमा।

दधिसुत-संज्ञा पु० [सं० उदधि सुत] १. कमल। २ मुक्ता। मोती। ३ चंद्रमा। ४ जालंधर दैत्य। ५ विष। जहर।
संज्ञा पु० [सं०] मक्खन। नवनीत।

दधिसुता-संज्ञा स्त्री० [सं० उदधिसुता] सीप।

दधीचि-संज्ञा पु० [सं०] एक वैदिक ऋषि जो यास्क के मत से अथर्व के पुत्र थे और इसी लिये दधीचि कहलाते थे। एक बार वृत्रासुर के उपद्रव करने पर इंद्र ने अस्त्र बनाने के लिये दधीचि से उनकी हड्डियाँ माँगीं। दधीचि ने इसके लिये अपने प्राण त्याग दिए। तभी से ये बड़े भारी दानी प्रसिद्ध हैं।

दनदनाना—क्रि० अ० [अनु०] १ दनदन शब्द करना। २ आनंद करना।

दनादन-क्रि० वि० [अनु०] दनदन शब्द के साथ।

दनु-संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी। इसके चालीस पुत्र हुए थे जो सब दानव कहलाते हैं।

दनुज-संज्ञा पुं० [सं०] असुर। राक्षस।

दनुजदलनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

दनुजराय-संज्ञा पु० [सं० दनुज + हिं० राय] दानवों का राजा हिरण्यकशिपु।

दनुजेंद्र-संज्ञा पु० [सं०] रावण।

दन्न-संज्ञा पु० [अनु०] "दन्न" शब्द जो तोप आदि के छूटने से होता है।

दपटना-क्रि० अ० [हिं० डाँटना के साथ अनु०] [संज्ञा दपट] डाँटना। घुड़कना।

दपु-संज्ञा पु० [सं० दर्प] दर्प। शेखी।

दपेट-संज्ञा स्त्री० दे० "दपट"।

दफतर-संज्ञा पु० दे० "दफ्तर"।

दफती-संज्ञा स्त्री० [अ० दफ्तीन] कागज के कई तख्तों को एक में साटकर बनाया हुआ गत्ता। कुट। वसली।

दफन-संज्ञा पु० [अ०] किसी चीज को विशेषतः मुरदे को जमीन में गाड़ने की क्रिया।

दफनाना-क्रि० स० [अ० दफन + आना] जमीन में दबाना। गाड़ना।

दफा-संज्ञा स्त्री० [अ० दफ़अ] १. बार। बेर। २ किसी कानूनी किताब का वह

एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के संबंध में व्यवस्था हो। धारा।

मुहा०—दफ़ा लगाना = अभियुक्त पर किसी दफ़ा के नियमों को घटना।

वि० [अ० दफ़ा] दूर किया हुआ। हटाया हुआ। तिरस्कृत।

दफ़ादार–संज्ञा पु० [अ० दफ़अ = समूह + फ़ा० दार] फ़ौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों।

दफ़ीना–संज्ञा पु० [अ०] गड़ा हुआ धन या खज़ाना।

दफ़्तर–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. वह स्थान जहाँ किसी कारखाने आदि के संबंध की कुल लिखा-पढ़ी और लेन-देन आदि हो। आफ़िस। कार्यालय। २. लंबी चौड़ी चिट्ठी। ३. सविस्तर वृत्तांत। चिट्ठा।

दफ़्तरी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह कर्म्मचारी जो दफ़्तर के कागज़ आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर रूल खींचता हो। २. किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। जिल्द साज़। जिल्दबंद।

दबंग–वि० [हिं० दबाना या दबाना] प्रभावशाली। दबानेवाला।

दबक–संज्ञा स्त्री० [हिं० दबकना] १. दबने या छिपने की क्रिया या भाव। २. सिकुड़न।

होना। ५. किसी के मुकाबले में ठीक या अच्छा न जँचना। ६. किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना। ७ उभड़ न सकना। शांत रहना। ८ अपनी चीज़ का अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में चला जाना। ९. ऐसी अवस्था में आ जाना जिसमें कुछ बस न चल सके। १०. धीमा पड़ना। मंद पड़ना।

मुहा०—दबी ज़बान से कहना = साफ़ साफ़ न कहना, बल्कि इस प्रकार कहना जिससे केवल कुछ ध्वनि व्यक्त हो।

११. संकोच करना। झेंपना।

दबवाना–क्रि० स० [हिं० दबना का प्रे०] दबाने का काम दूसरे से कराना।

दबाना–क्रि० स० [सं० दमन] [संज्ञा दाब, दबाव] १. ऊपर से भार रखना (जिसमें कोई चीज नीचे की ओर धँस जाय अथवा इधर-उधर हट न सके)। २. किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत ज़ोर पहुँचाना। ३. पीछे हटाना। ४. ज़मीन के नीचे गाड़ना। दफ़न करना। ५. किसी पर इतना आतंक जमाना कि वह कुछ कह न सके। ज़ोर डालकर विवश करना। ६. दूसरे [illegible] मंद या मात कर देना। ७. किसी [illegible] उठने [illegible] न देना। [illegible]

करने के लिये दिया जाता है। सजा। २. इंद्रियों को वश में रखना और चित्त को बुरे कामों में प्रवृत्त न होने देना। ३. कीचड़। ४. घर। ५. पुराणानुसार मरुत्त राजा के पौत्र जो बभ्रु की कन्या इंद्रसेना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ६. बुद्ध का एक नाम। ७. विष्णु। ८. दबाव।
संज्ञा पु० [फा०] १. साँस। श्वास।
मुहा०—दम अटकना या उखड़ना = साँस रुकना, विशेषतः मरने के समय साँस रुकना। दम खींचना = १. चुप रह जाना। २. साँस ऊपर चढ़ाना। दम घुटना = हवा की कमी के कारण साँस रुकना। दम घोंटकर मारना = १. गला दबाकर मारना। २. बहुत कष्ट देना। दम तोड़ना = अंतिम साँस लेना। दम फूलना = १. अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना। हाँफना। २. दमे के रोग का दौरा होना। दम भरना = १. किसी के प्रेम अथवा मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना। २. परिश्रम के कारण थक जाना। दम मारना = १. विश्राम करना। सुस्ताना। २. बोलना। कुछ कहना। चूँ करना। दम लेना = विश्राम करना। सुस्ताना। दम साधना = १. श्वास की गति को रोकना। २. चुप होना। मौन रहना।
२. नशे आदि के लिये साँस के साथ धूआँ खींचने की क्रिया।
मुहा०—दम मारना या लगाना = गाँजे आदि को चिलम पर रखकर उसका धूआँ खींचना।
३ साँस खींचकर जोर से बाहर फेंकने या फूँकने की क्रिया। ४. उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। लहमा। पल।
मुहा०—दम के दम = पल भर। थोड़ी देर। दम पर दम = बहुत थोड़ी थोड़ी देर पर।
५ प्राण। जान। जी।
मुहा०—दम खुश्क होना = दे० "दम सूखना"। दम नाक में या नाक में दम आना = बहुत तंग या परेशान होना। दम निकलना = मृत्यु होना। मरना। दम सूखना = बहुत डर के कारण साँस तक न लेना। प्राण सूखना।
६. वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाए रखता और काम देता है। जीवनी शक्ति। ७. व्यक्तित्व।
मुहा०—(किसी का) दम ग़नीमत होना = (किसी के) जीवित रहने के कारण कुछ न कुछ अच्छी बातों का होता रहना।
८. खाद्य पदार्थ को बरतन में रखकर और उसका मुँह बंद करके आग पर पकाने की क्रिया। ९. धोखा। छल। फरेब।
यौ०—दम झाँसा = छल कपट। दम दिलासा या दम पट्टी = वह बात जो केवल फुसलाने के लिये कही जाय। झूठी आशा।
मुहा०—दम देना = बहकाना। धोखा देना।
१०. तलवार या छुरी आदि की धार।

दमक—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक का अनु०] चमक। चमचमाहट। द्युति। आभा।

दमकना—क्रि० अ० [हिं० चमकना का अनु०] चमकना। चमचमाना।

दमकल—संज्ञा स्त्री० [हिं० दम + कल] १. वह यंत्र जिसमें ऐसे नल लगे हों, जिनके द्वारा कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर अथवा और किसी ओर झोंक से फेंका जा सके। पंप। २ वह यंत्र जिसकी सहायता से मकानों में लगी हुई आग बुझाई जाती है। पंप। ३. वह यंत्र जिसकी सहायता से कूएँ से पानी निकालते हैं। पंप। ४ दे० "दमक्ला"।

दमकला—संज्ञा पु० [हिं० दम + कल] १ वह बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी के द्वारा महफ़िलों में गुलाब जल अथवा रंग आदि छिड़का जाता है। २. दे० "दमकल"।

दमखम—संज्ञा पु० [फा०] १. दृढ़ता। मजबूती। २. जीवनी शक्ति। प्राण। ३. तलवार की धार और उसका झुकाव।

दम-चूल्हा—संज्ञा पु० [हिं० दम + चूल्हा] एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

दमड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० द्रविण = धन] पैसे का आठवाँ भाग।

दमदमा—संज्ञा पु० [फा०] वह किलेबंदी जो लड़ाई के समय थैलों में बालू भरकर की जाती है। मोरचा। धुस।

दमदार—वि० [फा०] १. जिसमें जीवनी शक्ति यथेष्ट हो। २. दृढ़। मजबूत। ३. जिसमें दम या साँस अधिक समय तक रह सके। ४. जिसकी धार तेज हो। चोखा।

दमन—संज्ञा पु० [सं०] १. दबाने या रोकने की क्रिया। २. दंड। सजा। ३. इंद्रियों की चंचलता रोकना। निग्रह। दम। ४. विष्णु। ५. महादेव। शिव। ६.

एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के संबंध में व्यवस्था हो। धारा।
मुहा०—दफ़ा लगाना = अभियुक्त पर किसी दफ़ा के नियमों को घटाना।
वि० [अ० दफ़ाअ] दूर किया हुआ। हटाया हुआ। तिरस्कृत।
दफ़ादार—संज्ञा पुं० [अ० दफ़अः = समूह + फ़ा० दार] फ़ौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों।
दफ़ीना—संज्ञा पुं० [अ०] गड़ा हुआ धन या खज़ाना।
दफ़्तर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह स्थान जहाँ किसी कारखाने आदि के संबंध की कुल लिखा-पढ़ी और लेन-देन आदि हो। आफ़िस। कार्यालय। २. लंबी चौड़ी चिट्ठी। ३. सविस्तर वृत्तांत। चिट्ठा।
दफ़्तरी—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह कर्मचारी जो दफ़्तर के काग़ज़ आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर रूल खींचता हो। २. किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। जिल्दसाज़। जिल्दबंद।
दबंग—वि० [हिं० दबाव या दबाना] प्रभावशाली। दबाववाला।
दबक—संज्ञा स्त्री० [हिं० दबकना] १. दबने या छिपने की क्रिया या भाव। २. सिकुड़न।
दबकगर—संज्ञा पुं० [हिं० दबक + गर (प्रत्य०)] दबका (तार) बनानेवाला। दबकैया।
दबकना—क्रि० अ० [हिं० दबाना] १. भय के कारण छिपना। २. लुकना। छिपना। क्रि० स० धातु को हथौड़ी से पीटकर बढ़ाना।
दबका—संज्ञा पुं० [हिं० दबकना = तार आदि पीटना] कामदानी का सुनहला तार।
दबकाना—क्रि० स० [हिं० दबकना का स० रूप] छिपाना। आड़ में करना।
दबकैया—संज्ञा पुं० दे० "दबकगर"।
दबगर—संज्ञा पुं० [देश०] १. ढाल बनानेवाला। २. चमड़े के कुप्पे बनानेवाला।
दबदबा—संज्ञा पुं० [अ०] रोब दाब।
दबना—क्रि० अ० [सं० दमन] १. भार के नीचे आना। बोझ के नीचे पड़ना। २. ऐसी अवस्था में होना जिसमें किसी ओर से बहुत ज़ोर पड़े। ३. किसी भारी शक्ति के सामने अपने स्थान पर न ठहर सकना। पीछे हटना। ४. दबाव में पड़कर किसी के इच्छानुसार काम करने के लिये विवश होना। ५. किसी के मुकाबले में ठीक या अच्छा न जँचना। ६. किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना। ७. उभड़ न सकना। शांत रहना। ८. अपनी चीज़ का अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में चला जाना। ९. ऐसी अवस्था में आ जाना जिसमें कुछ वश न चल सके। १०. धीमा पड़ना। मंद पड़ना।
मुहा०—दबी ज़बान से कहना = साफ़ साफ़ न कहना, बल्कि इस प्रकार कहना जिससे केवल कुछ ध्वनि व्यक्त हो।
११. संकोच करना। झेंपना।
दबवाना—क्रि० स० [हिं० दबना का प्रे०] दबाने का काम दूसरे से कराना।
दबाना—क्रि० स० [सं० दमन] [संज्ञा दाब, दबाव] १. ऊपर से भार रखना (जिसमें कोई चीज़ नीचे की ओर धँस जाय अथवा इधर-उधर हट न सके)। २. किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत ज़ोर पहुँचाना। ३. पीछे हटाना। ४. ज़मीन के नीचे गाड़ना। दफ़न करना। ५. किसी पर इतना आतंक जमाना कि वह कुछ कह न सके। ज़ोर डालकर विवश करना। ६. दूसरे को मंद या मात कर देना। ७. किसी बात को उठने या फैलने न देना। ८. दमन करना। शांत करना। ९. किसी दूसरे की चीज़ पर अनुचित अधिकार करना। १०. झोंक के साथ बढ़कर किसी चीज़ को पकड़ लेना। ११. ऐसी अवस्था में ले आना जिसमें मनुष्य असहाय, दीन या विवश हो जाय।
दबाव—संज्ञा पुं० [हिं० दबाना] १. दबाने की क्रिया। चाँप। २. दबाने का भाव। चाँप। ३. रोब।
दबीज़—वि० [फ़ा०] जिसका दल मोटा हो। गाढ़ा। संगीन।
दबैल—वि० [हिं० दबाना + ऐल (प्रत्य०)] १. जिस पर किसी का प्रभाव या दबाव हो। २. जो बहुत दबता या डरता हो।
दबोचना—क्रि० स० [हिं० दबाना] १. किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना। ५ दबाना। २. छिपाना।
दबोसना†—क्रि० स० [हिं० दबाना] आगे सामने ठहरने न देना। दबाना।
दम—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह दंड जो द॰

करने के लिये दिया जाता है। सजा। २. इंद्रियों को वश में रखना और चित्त को बुरे कामों में प्रवृत्त न होने देना। ३ कीचड़। ४. घर। ५. पुराणानुसार मरुत राजा के पौत्र जो बभ्रु की कन्या इंद्रसेना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ६. बुद्ध का एक नाम। ७. विष्णु। ८. दबाव।
संज्ञा पु० [फ़ा०] १. साँस। श्वास।
मुहा० –दम अटकना या उखड़ना = साँस रुकना, विशेषतः मरने के समय साँस रुकना। दम खींचना = १. चुप रह जाना। २. साँस ऊपर चढ़ाना। दम घुटना = हवा की कमी के कारण साँस रुकना। दम घोंटकर मारना = १. गला दबाकर मारना। २. बहुत कष्ट देना। दम तोड़ना=अंतिम साँस लेना। दम फूलना=१. अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना। हाँफना। २. दमे के रोग का दौरा होना। दम भरना = १. किसी के प्रेम अथवा मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना। २. परिश्रम के कारण थक जाना। दम मारना = १. विश्राम करना। सुस्ताना। २. बोलना। कुछ कहना। चूँ करना। दम लेना = विश्राम करना। सुस्ताना। दम साधना = १. श्वास की गति को रोकना। २. चुप होना। मौन रहना।
२. नशे आदि के लिये साँस के साथ धूआँ खींचने की क्रिया।
मुहा०—दम मारना या लगाना = गाँजे आदि की चिलम पर रखकर उसका धूआँ खींचना।
३. साँस खींचकर ज़ोर से बाहर फेंकने या फूँकने की क्रिया। ४. उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। लहमा। पल।
मुहा०—दम के दम = क्षण भर। थोड़ी देर। दम पर दम = बहुत थोड़ी थोड़ी देर पर।
५. प्राण। जान। जी।
मुहा०–दम खुश्क होना = दे० "दम सूखना"। दम नाक में या नाक में दम आना = बहुत तंग या परेशान होना। दम निकलना = मृत्यु होना। मरना। दम सूखना = बहुत डर के कारण साँस तक न लेना। प्राण सूखना।
६. वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाए रखता और काम देता है। जीवनी शक्ति। ७. व्यक्तित्व।
मुहा० —(किसी का) दम ग़नीमत होना = (किसी के) जीवित रहने के कारण कुछ न कुछ अच्छी बातों का होता रहना।
८. खाद्य पदार्थ को बरतन में रखकर और उसका मुँह बंद करके आग पर पकाने की क्रिया। ९. धोखा। छल। फरेब।
यौ०—दम झाँसा = छल कपट। दम दिलासा या दम पट्टी = वह बात जो केवल फुसलाने के लिये कही जाय। झूठी आशा।
मुहा० –दम देना = बहकाना। धोखा देना।
१०. तलवार या छुरी आदि की धार।

दमक–संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक का अनु०] चमक। चमचमाहट। द्युति। आभा।

दमकना–क्रि० अ० [हिं० चमकना का अनु०] चमकना। चमचमाना।

दमकल–संज्ञा स्त्री० [हिं० दम + कल] १. वह यंत्र जिसमें ऐसे नल लगे हों, जिनके द्वारा कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर अथवा और किसी ओर झोंक से फेंका जा सके। पंप। २. वह यंत्र जिसकी सहायता से मकानों में लगी हुई आग बुझाई जाती है। पंप। ३. वह यंत्र जिसकी सहायता से कूएँ से पानी निकालते हैं। पंप। ४ दे० "दमकला"।

दमकला–संज्ञा पु० [हिं० दम + कल] १ वह बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी के द्वारा महफ़िलों में गुलाब जल अथवा रंग आदि छिड़का जाता है। २. दे० "दमकल"।

दमखम–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. दृढ़ता। मज़बूती। २. जीवनी शक्ति। प्राण। ३. तलवार की धार और उसका झुकाव।

दम-चूल्हा–संज्ञा पु० [हिं० दम + चूल्हा] एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

दमड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० द्रविण = धन] पैसे का आठवाँ भाग।

दमदमा–संज्ञा पु० [फ़ा०] वह किलेबंदी जो लड़ाई के समय थैलों में बालू भरकर की जाती है। मोरचा। धुस।

दमदार–वि० [फ़ा०] १. जिसमें जीवनी शक्ति यथेष्ट हो। २. दृढ़। मज़बूत। ३. जिसमें दम या साँस अधिक समय तक रह सके। ४. जिसकी धार तेज़ हो। चोखा।

दमन–संज्ञा पु० [सं०] १. दबाने या रोकने की क्रिया। २. दंड। सजा। ३. इंद्रियों की चंचलता रोकना। निग्रह। दम। ४. विष्णु। ५. महादेव। शिव। ६.

एक ऋषि का नाम। दमयंती इन्हीं के यहां उत्पन्न हुई थी। ७. एक राक्षस। संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"।

दमनक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का छंद। २. दौना नामक पौधा।

दमनशील–वि० [सं०] जिसकी प्रकृति दमन करने की हो। दमन करनेवाला।

दमनीय–वि० [सं०] १.जो दमन किया जा सके। २. जो दबाया जा सके।

दमबाज़–वि० [फा० दम + बाज़] दम देनेवाला। फसलानेवाला।

दमयंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा नल की स्त्री जो विदर्भ देश के राजा भीमसेन की कन्या थी।

दमा–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस लेने में बहुत कष्ट होता है, खाँसी आती है और कफ बड़ी कठिनता से निकलता है। साँस।

दमाद–संज्ञा पुं० [सं० जामातृ] कन्या का पति। जवाई। जामाता।

दमानक–संज्ञा स्त्री० [देश०] तोपों की बाढ़।

दमामा–संज्ञा पुं० [फा०] नगाड़ा। डंका।

दमारि†–संज्ञा पुं० [सं० दावानल] जंगल की आग। वन की आग।

दमावति–संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"।

दमैया†–वि० [हिं० दमन + ऐया (प्रत्य०)] दमन करनेवाला।

दयत†–संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।

दया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मन का दुःखपूर्ण वेग जो दूसरे के कष्ट को देखकर उत्पन्न होता और उस कष्ट को दूर करने की प्रेरणा करता है। करुणा। रहम। २. दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म को ब्याही गई थी।

दयादृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] करुणा या अनुग्रह का भाव। मेहरबानी की नज़र।

दयानत–संज्ञा स्त्री० [अ०] सत्यनिष्ठा। ईमान।

दयानतदार–वि० [अ० दयानत + फा० दार] ईमानदार। सच्चा।

दयाना○–क्रि० अ० [हिं० दया + ना (प्रत्य०)] दयालु होना। कृपालु होना।

दयानिधान–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसमें बहुत अधिक दया हो। बहुत दयालु।

[दयानि]धि–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत दयालु [मनुष्य]। २. ईश्वर।

[दयापात्र]–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दया के योग्य हो।

दयामय–संज्ञा पुं० [सं०] १. दया से पूर्ण। दयालु। २. ईश्वर।

दयार–संज्ञा पुं० [अ०] प्रांत। प्रदेश।

दयार्द्र–वि० [सं०] दया-पूर्ण। दयालु।

दयाल–वि० दे० "दयालु"।

दयालु–वि० [सं०] बहुत दया करनेवाला।

दयालुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दयालु होने का भाव।

दयावत–वि० दे० "दयालु"।

दयावना –वि० पुं० [हिं० दया + आवना] [स्त्री० दयावनी] दया के योग्य। दीन।

दयावान्–वि० [सं०] [स्त्री० दयावती] जिसके चित्त में दया हो। दयालु।

दयाशील–वि० [सं०] दयालु।

दयासागर–संज्ञा पुं० [सं०] जिसके चित्त में बहुत दया हो।

दर–संज्ञा पुं० [सं०] १. शंख। २. गड्ढा। दरार। ३. गुफा। कंदरा। ४. फाड़ने की क्रिया। विदारण। ५. डर। भय। संज्ञा पुं० [सं० दल] समूह। दल। संज्ञा पुं० [फा०] द्वार। दरवाज़ा।

मुहा०—दर दर मारा मारा फिरना = दुर्दशाग्रस्त होकर घूमना।

संज्ञा स्त्री० १. भाव। निर्ख। २. प्रमाण। ठीक ठिकाना। ३. कदर। प्रतिष्ठा। संज्ञा स्त्री० [सं० दारु] ईख। कलम।

दरकना–क्रि० अ० [सं० दर = फाड़ना] दाब पड़ने से फटना। चिरना।

दरका–संज्ञा पुं० [हिं० दरकना] १. शिगाफ। दरार। २. वह चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय।

दरकाना–क्रि० स० [हिं० दरकना] फाड़ना। क्रि० अ० फटना।

दरकार–वि० [फा०] आवश्यक। अपेक्षित। ज़रूरी।

दर किनार–क्रि० वि० [फा०] अलग। अलहदा। एक ओर। दूर।

दरकूच–क्रि० वि० [फा०] बराबर यात्रा करता हुआ। मंज़िल दर मंज़िल।

दरख़त†–संज्ञा पुं० दे० "दरख़्त"।

दरख़ास्त–संज्ञा स्त्री० [फा० दरख़्वास्त] १. किसी बात के लिये प्रार्थना। २. निवेदन। प्रार्थनापत्र। निवेदनपत्र।

दरख़्त–संज्ञा पुं० [फा०] पेड़। वृक्ष।

दरगाह-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चौखट। देहरी। २. दरबार। कचहरी। ३. किसी सिद्ध पुरुष का समाधि स्थान। मकबरा।
दर-गुज़र-वि० [फा०] १. अलग। वंचित। २. मुआफ। क्षमा-प्राप्त।
दरज-संज्ञा स्त्री० [सं० दर=दरार] शिगाफ। दराज। दरार।
दरजन-संज्ञा पुं० दे० "दर्जन"।
दरजा-संज्ञा पु० दे० "दर्जा"।
दरजी-संज्ञा पु० दे० "दर्जी"।
दरण-संज्ञा पु० [सं०] १. दलने या पीसने की क्रिया। २. ध्वंस। विनाश।
दरद-संज्ञा पु० [फा० दर्द] १. पीड़ा। व्यथा। २. दया। करुणा।
संज्ञा पु० १. काश्मीर और हिंदूकुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम। २. एक म्लेच्छ जाति जिसका उल्लेख मनुस्मृति, हरिवंश आदि में है। ३. ईंगुर। शिंगरफ।
दर दर-क्रि० वि० [फा० दर] द्वार द्वार। स्थान स्थान पर।
दरदरा-वि० [सं० दरण=दलना] [स्त्री० दरदरी] जिसके कण स्थूल हों। जिसके रवे महीन न हों, मोटे हों।
दरदराना-क्रि० स० [सं० दरण] इस प्रकार पीसना या रगड़ना कि मोटे मोटे रवे या टुकड़े हो जायँ। थोड़ा पीसना।
दरदवत, दरदवंद-वि० [फा० दर्द + वंत (प्रत्य०)] १. सहानुभूति रखनेवाला। कृपालु। दयालु। २. जिसको पीड़ा हो। पीड़ित। दुखी।
दरद्-संज्ञा पु० दे० "दरद" या "दर्द"।
दरना†-क्रि० स० [सं० दरण] १. दरदरा दलना। मोटा चूर्ण करना। २. नष्ट करना।
दरप†-संज्ञा पु० दे० "दर्प"।
दरपन-संज्ञा पु० दे० "दर्पण"।
दरपना-क्रि० अ० [सं० दर्पण] १. ताव में आना। क्रोध करना। २. घमंड करना।
दरपनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दरपन] मुँह देखने का छोटा शीशा।
दर-पेश-क्रि० वि० [फा०] आगे। सामने।
दरब-संज्ञा पु० [सं० द्रव्य] धन। दौलत।
दरबा-संज्ञा पु० [फा० दर] कबूतरों, मुरगियों आदि के रहने के लिये काठ का खानेदार संदूक।
दरबान-संज्ञा पु० [फा०, मि० सं० द्वारवान्] ड्योढ़ीदार। द्वारपाल।
दरबार-संज्ञा पु० [फा०] [वि० दरबारी] १. वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहबों के साथ बैठते हैं। २. राजसभा।
मुहा०—दरबार खुलना=दरबार में जाने की आज्ञा मिलना। दरबार बंद होना=दरबार में जाने की रोक होना।
३. महाराज। राजा। (रजवाड़ों में) ४. दरवाजा। द्वार।
दरबारदारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी के यहाँ बार बार जाकर बैठना और खुशामद करना।
दरबार-विलासी-संज्ञा पु० [फा० दरबार + सं० विलासी] द्वारपाल। दरबान।
दरबारी-संज्ञा पु० [फा०] दरबार में बैठने-वाला आदमी।
वि० दरबार का। दरबार के योग्य।
दरभ-संज्ञा पु० दे० "दर्भ"।
संज्ञा पु० [?] बंदर।
दरमा-संज्ञा पु० [देश०] बाँस की चटाई।
दरमान-संज्ञा पु० [फा०] औषध। दवा।
दरमाहा-संज्ञा पु० [फा०] मासिक वेतन।
दरमियान-संज्ञा पु० [फा०] मध्य। बीच।
क्रि० वि० बीच में। मध्य में।
दरमियानी-वि० [फा०] बीच का।
संज्ञा पु० [फा०] दो आदमियों के बीच के झगड़े का निबटेरा करनेवाला मनुष्य।
दरवाजा-संज्ञा पु० [फा०] १. द्वार। मुहाना। २. किवाड़। कपाट।
दरवी-संज्ञा स्त्री० [सं० दर्वी] १. साँप का फन।
यौ०—दरवीकर=साँप।
२. करछुल। पौना।
दरवेश-संज्ञा पु० [फा०] फकीर। साधु।
दरशन-संज्ञा पु० दे० "दर्शन"।
दरशाना-क्रि० अ०, स० दे० "दरसाना"।
दरस-संज्ञा पु० [सं० दर्श] १. देखा-देखी। दर्शन। दीदार। २. भेंट। मुलाकात। ३. रूप। छवि। सुंदरता।
दरसन-संज्ञा पु० दे० "दर्शन"।
दरसना-क्रि० अ० [सं० दर्शन] दिखाई पड़ना। देखने में आना।
क्रि० स० [सं० दर्शन] देखना। लखना।

दरशनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दर्शन। दर्पण। शीशा।
दरशनी हुंडी-संज्ञा स्त्री०[सं० दर्शन] वह हुंडी जिसके भुगतान की मिति को दस दिन या उससे कम बाकी हो।
दरसाना-क्रि० स० [सं० दर्शन] १. दिख-लाना। दृष्टिगोचर कराना। २. प्रकट करना। स्पष्ट करना। समझाना।
*क्रि० अ० दिखाई पड़ना।
दरसावना-क्रि० स० दे० "दरसाना"।
दराज-वि० [फा०] बड़ा भारी। दीर्घ।
क्रि० वि० [फा०] बहुत। अधिक।
संज्ञा स्त्री० [हिं०दरार] दरज। दरार।
संज्ञा स्त्री० [अं० ड्राअर] मेज में लगा हुआ संदूकनुमा खाना।
दरार-संज्ञा स्त्री० [सं० दर] वह खाली जगह जो किसी चीज़ के फटने पर पड़ जाती है। शिगाफ। दरज।
दरारना-क्रि० अ० [हिं० दरार+ना (प्रत्य०)] फटना। विदीर्ण होना।
दरारा-संज्ञा पु० [हिं० दरना] दरेरा। धक्का।
दरिंदा-संज्ञा पु० [फा०] फाड़ खानेवाला जंतु। मांस-भक्षक वन-जंतु।
दरिद्र-वि० [सं०] [स्त्री० दरिद्रा] जिसके पास धन न हो। निर्धन। कंगाल।
दरिद्रता-संज्ञा स्त्री० [सं०] कंगाली। निर्धन-ता। गरीबी।
दरिद्री-वि० दे० "दरिद्र"।
दरिया-संज्ञा पु० [फा०] १. नदी। २. समुद्र। सिंधु।
दरियाई-वि० [फा०] १ नदी संबंधी। २. नदी के निकट का। ३. समुद्र संबंधी।
संज्ञा स्त्री० [फा० दाराई] एक प्रकार की रेशमी पतली साटन।
दरियाई घोड़ा-संज्ञा पु० [फा० दरियाई+ हिं० घोड़ा] गैंडे की तरह का एक जानवर जो अफ्रिका में नदियों के किनारे रहता है।
दरियाई नारियल-संज्ञा पु० [फा० दरियाई + हिं० नारियल] एक प्रकार का बड़ा नारि-यल जिसके खोपड़े का पात्र बनता है जिसे संन्यासी या फकीर अपने पास रखते हैं।
दरियादासी-संज्ञा पु० निर्गुण उपासक साधुओं का एक संप्रदाय जिसे दरिया साहब एक व्यक्ति ने चलाया था।
... वि० [फा०] [स्त्री० दरियादिली] उदार। दानी। फैयाज़।
दरियाफ्त-वि० [फा०] जिसका पता लगा हो। ज्ञात। मालूम।
दरिया-बरार-संज्ञा पु० [फा०] वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले।
दरियाबुर्द-संज्ञा पु० [फा०] वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे।
दरियाव-संज्ञा पु० दे० "दरिया"।
दरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुफा। खोह। २. पहाड़ के बीच का वह नीचा स्थान जहाँ कोई नदी गिरती हो।
संज्ञा स्त्री० [सं० स्तर] मोटे सूतों का बुना हुआ मोटे दल का बिछौना। शतरंजी।
दरीखाना-संज्ञा पु० [फा० दर+खाना] वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों। बारहदरी।
दरीचा-संज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० दरीची] १. खिड़की। झरोखा। २ खिड़की के पास बैठने की जगह।
दरीबा-संज्ञा पु० [?] पान का बाजार।
दरेग-संज्ञा पु० [अ० दरेग] कमी। कसर।
दरेरना-क्रि० स० [सं० दरण] १. रगड़ना। पीसना। २. रगड़ते हुए धक्का देना।
दरेरा-संज्ञा पु० [सं० दरण] १ रगड़ा। धक्का। २. बहाव का जोर। तोड़।
दरेस-संज्ञा स्त्री० [अं० ड्रेस] फूलदार छपा हुआ एक प्रकार का महीन कपड़ा।
वि० तैयार। बना बनाया।
दरैया-संज्ञा पु० [सं० दरण] १. दलने-वाला। जो दले। २. घातक। विनाशक।
दरोग-संज्ञा पु० [अ०] झूठ। असत्य।
दरोगहलफी-संज्ञा स्त्री० [अ०] सच बोलने की कसम खाकर भी झूठ बोलना।
दर्ज-संज्ञा स्त्री० दे० "दरज"।
वि० [फा०] कागज पर लिखा हुआ।
दर्जन-संज्ञा पु० [अं० डजन] बारह का समूह। इकट्ठी बारह वस्तुएँ।
दर्जा-संज्ञा पु० [अ०] १ ऊँचाई निचाई के क्रम के विचार से निश्चित स्थान। श्रेणी। कोटि। वर्ग। २. पढ़ाई के क्रम में ऊँचा नीचा स्थान। ३ पद। ओहदा। ४ किसी वस्तु का वह विभाग जो ऊपर नीचे के क्रम से हो। खंड।
क्रि० वि० गुणित। गुना।
दर्जी-संज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० दर्जिन] १. वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करे। २.

कपड़ा सीनेवाली जाति का पुरुष।

दर्द–संज्ञा पुं० [फा०] १. पीड़ा। व्यथा। २ दुःख। तकलीफ। ३ करुणा। दया। मुहा०—दर्द खाना=दया करना। ४. हाथ से निकल जाने का कष्ट।

दर्दमंद–वि० [फा०] १. पीड़ित। दुःखी। २ दयावान्।

दर्दी–वि० दे० "दर्दमंद"।

दर्दुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेढक। २. बादल। ३. अभ्रक। अबरक।

दद्रु–संज्ञा पुं० [सं०] दाद नामक रोग।

दर्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. घमंड। अहंकार। अभिमान। गर्व। २ अहंकार के कारण किसी के प्रति कोप। मान। ३. उद्दंडता। अक्खड़पन। ४. आतंक। रोब।

दर्पण–संज्ञा पुं० [सं०] १ मुँह देखने का शीशा। आइना। आरसी। २. आँख।

दर्वन–संज्ञा पुं० [सं० द्रव्य] १ द्रव्य। धन। २. धातु। (सोना, चाँदी इत्यादि)

दर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का कुश। डाभ। २ कुश। ३ कुशासन।

दर्भासन–संज्ञा पुं० [सं०] कुश का बना हुआ बिछावन। कुशासन।

दर्रा–संज्ञा पुं० [फा०] पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग। घाटी।

दर्राना–क्रि० अ० [अनु० दड़ दड़] धड़-धड़ाना। बेधड़क चला जाना।

दर्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंसा करनेवाला मनुष्य। २. राक्षस। ३. पंजाब के उत्तर की एक प्राचीन जाति। ४. इस जाति का उक्त देश।

दर्वी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. करछी। चमचा। २ साँप का फन।

दर्वीकर–संज्ञा पुं० [सं०] फनवाला साँप।

दर्श–संज्ञा पुं० [सं०] १. दर्शन। २ अमावास्या तिथि। ३. द्वितीया तिथि। ४. वह यज्ञ या कृत्य जो अमावास्या के दिन हो।

दर्शक–संज्ञा पुं० [सं०] १ दर्शन करनेवाला। देखनेवाला। २. दिखानेवाला।

दर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह बोध जो दृष्टि के द्वारा हो। साक्षात्कार। अवलोकन। २ भेंट। मुलाकात। ३ तत्त्वज्ञान संबंधी विद्या या शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जगत् के नियामक धर्म और जीवन के अंतिम लक्ष्य आदि का निरूपण होता है। ४. नेत्र। आँख। ५. स्वप्न। ६ बुद्धि। ७ धर्म। ८. दर्पण।

दर्शनी हुंडी–संज्ञा स्त्री० दे० "दरशनी हुंडी"।

दर्शनीय–वि० [सं०] १. देखने योग्य। देखने लायक। २. सुंदर। मनोहर।

दर्शाना–क्रि० स० दे० "दरसाना"।

दर्शी–वि० [सं० दर्शिन्] देखनेवाला।

दल–संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु के उन दो सम खंडों में से एक जो एक दूसरे से स्वभावतः जुड़े हुए हों, पर जरा सा दबाव पड़ने से अलग हो जायँ। जैसे, दाल के दो दल। २. पौधों का पत्ता। पत्र। ३. तमालपत्र। ४. फूल की पँखड़ी। ५. समूह। झुंड। गरोह। ६ मंडली। गुट्ट। ७. सेना। फौज। ८. परत की तरह फैली हुई चीज की मोटाई।

दलक–संज्ञा स्त्री० [अ० दलक़] गुदड़ी। संज्ञा स्त्री० [हिं० दलकना] १. आघात से उत्पन्न कंप। थरथराहट। धमक। २ रह रहकर उठनेवाला दर्द। टीस। चमक।

दलकन–संज्ञा स्त्री० [हिं० दलक] १. दलकने की क्रिया या भाव। २. आघात।

दलकना–क्रि० अ० [सं० दलन] १. फट जाना। दरार खाना। चिर जाना। २. थर्राना। काँपना। ३. चौंकना। ४. उद्विग्न हो उठना।

क्रि० स० [सं० दलन] डराना। भयभीत कर देना।

दलगंजन–वि० [सं०] भारी वीर।

दलदल–संज्ञा स्त्री० [सं० दलाढ्य] १ कीचड़। पाँक। चहला। २. वह गीली जमीन जिसमें पैर नीचे को धँसता हो। मुहा०—दलदल में फँसना=१. मुश्किल या दिक्कत में पड़ना। २. जल्दी खतम या तै न होना। खटाई में पड़ना।

दलदला–वि० [हिं० दलदल] [स्त्री० दलदली] जिसमें दलदल हो। दलदलवाला।

दलदार–वि० [हिं० दल+फा० दार] जिसका दल, तह या परत मोटी हो।

दलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दलित] पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। २. संहार।

दलना–क्रि० स० [सं० दलन] १. रगड़ या पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। चूर्ण करना। २. रौंदना। कुचलना। ३. दबाना। मसलना। मींडना। ४. चक्की में डालकर

अनाज आदि के दानों को दो दलों या कई टुकड़ों में करना। ५. नष्ट करना। ध्वस्त करना। ६ झटके से खंडित करना। तोड़ना।
दलनि†-संज्ञा स्त्री० [हिं० दलना] दलने की क्रिया या ढंग।
दलपति-संज्ञा पुं० [सं०] १. मुखिया। अगुआ। सरदार। २. सेनापति।
दल बल-संज्ञा पुं० [सं०] लाव लश्कर। फौज।
दल बादल-संज्ञा पुं० [हिं० दल+बादल] १. बादलों का समूह। २. भारी सेना। ३. बहुत बड़ा शामियाना।
दलमलना-क्रि० स० [हिं० दलना+मलना] १ मसल डालना। मींड़ डालना। २. रौंदना। कुचलना। ३. नष्ट करना।
दलवाना-क्रि० स० [हिं० दलना का प्रे०] दलने का काम दूसरे से करवाना।
दलवाल*†-संज्ञा पुं० [सं० दलपाल] सेनापति।
दलहन-संज्ञा पुं० [हिं० दाल+अन्न] वह अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।
दलान†-संज्ञा पुं० दे० "दालान"।
दलाल-संज्ञा पुं० [अ०] [संज्ञा दलाली] १. वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता दे। मध्यस्थ। २. कुटना।
दलाली-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दलाल का काम। २. वह द्रव्य जो दलाल को मिलता है।
दलित-वि० [सं०] १. मसला हुआ। मर्दित। २ दबाया, रौंदा या कुचला हुआ। ३ खंडित। ४ विनष्ट किया हुआ।
दलिया-संज्ञा पुं० [हिं० दलना] दलकर टुकड़े टुकड़े किया हुआ अनाज।
दलील-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तर्क। युक्ति। २. बहस। वाद-विवाद।
दलेल-संज्ञा स्त्री० [अ० ड्रिल] सिपाहियों की वह कवायद जो सजा की तरह पर हो।
दवँगरा-संज्ञा पुं० [सं० दव+अगार ?] वर्षा के आरंभ में होनेवाली झड़ी।
दव-संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. वह आग जो वन में आप से आप लग जाती है। दवाग्नि। दवारि। दावा। ३. अग्नि। आग।
दवन*-संज्ञा पुं० [सं० दमन] नाश।
... पुं० [सं० दमनक] दौना पौधा। ...-संज्ञा पुं० दे० "दौना"।
...क्रि० स० [सं० दव] जलना।
दवनी-संज्ञा स्त्री० [सं० दमन] फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाकर दाना झाड़ने का काम। दँवरी। मिसाई।
दवरिया†-संज्ञा स्त्री० दे० "दवारि"।
दवा-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह वस्तु जिससे कोई रोग या व्यथा दूर हो। औषध। २ रोग दूर करने का उपाय। उपचार। चिकित्सा। ३. दूर करने की युक्ति। मिटाने का उपाय। ४ दुरुस्त करने का तदबीर। *†संज्ञा स्त्री० [सं० दव] १. वन में लगनेवाली आग। वनाग्नि। २. अग्नि। आग।
दवाखाना-संज्ञा पुं० [फा०] १ वह जगह जहां दवा मिलती हो। २ औषधालय।
दवागिन*-संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।
दवाग्नि-संज्ञा स्त्री० [सं०] वन में लगनेवाली आग। दावानल।
दवात-संज्ञा स्त्री० [अ० दावात] लिखने की स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।
दवानल-संज्ञा पुं० [सं०] दवाग्नि।
दवामी-वि० [अ०] जो चिर काल तक के लिये हो। स्थायी।
दवामी बंदोबस्त-संज्ञा पुं० [फा०] जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें सरकारी मालगुजारी एक ही बार सदा के लिये मुकर्रर हो।
दवारी-संज्ञा स्त्री० [सं० दवाग्नि] दवाग्नि।
दशकंठ-संज्ञा पुं० [सं०] रावण।
दशकंठजहा-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।
दशकंधर-संज्ञा पुं० [सं०] रावण।
दशगात्र-संज्ञा पुं० [सं०] मृतक संबंधी एक कर्म जो उसके मरने के पीछे दस दिनों तक होता रहता है।
दशन-संज्ञा पुं० [सं०] १ दांत। २. कवच।
दशनाम-संज्ञा पुं० [सं०] सन्यासियों के दस भेद जो ये हैं—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।
दशनामी-संज्ञा पुं० [हिं० दश+नाम] संन्यासियों का एक वर्ग जो अद्वैतवादी शंकराचार्य्य के शिष्यों से चला है।
दशमलव-संज्ञा पुं० [सं०] वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात हो। (गणित)
दशमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] चांद्र मास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि।

दशमुख–संज्ञा पुं० [सं०] रावण।
दशमूल–संज्ञा पुं० [सं०] विशिष्ट दस पेड़ों की छाल या जड़। (वैद्यक)
दशरथ–संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के इक्ष्वाकु-वंशीय एक प्राचीन राजा जिनके पुत्र श्री रामचंद्र थे।
दशशीश –संज्ञा पुं० [सं० दशशीर्ष] रावण।
दशहरा–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं। २ विजया दशमी।
दशांग–संज्ञा पुं० [सं०] पूजन में सुगंध के निमित्त जलाने का एक धूप जो दस सुगंध द्रव्यों के मेल से बनता है।
दशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवस्था। स्थिति। प्रकार। हालत। २. मनुष्य के जीवन की अवस्था। ३. साहित्य में रस के अंतर्गत विरही की अवस्था। ४. फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में प्रत्येक ग्रह का नियत भोग काल।
दशानन–संज्ञा पुं० [सं०] रावण।
दशार्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. विंध्य पर्वत के पूर्व-दक्षिण की ओर स्थित उस प्रदेश का प्राचीन नाम जिससे होकर धसान नदी बहती है। २. उक्त देश का निवासी या राजा। ३. तंत्र का एक दशाक्षर मंत्र।
दशार्णा–संज्ञा स्त्री० [सं०] धसान नदी जो विंध्याचल से निकलकर यमुना में मिलती है।
दशाश्वमेध–संज्ञा पुं० [सं०] १. काशी के अंतर्गत एक तीर्थ। २. प्रयाग के अंतर्गत त्रिवेणी के पास एक पवित्र घाट, जहाँ से यात्री जल भरते हैं।
दशाह–संज्ञा पुं० [सं०] १. दस दिन। २. मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन।
दस–वि० [सं० दश] १. जो गिनती में नौ से एक अधिक हो। २. कई। बहुत से। संज्ञा पुं० पाँच की दूनी संख्या।
दसखत‡–संज्ञा पुं० दे० "दस्तखत"।
दसन*–संज्ञा पुं० दे० "दशन"।
दसना–क्रि० अ० [हिं० डासना] बिछाया जाना। बिछना। फैलना।
क्रि० स० बिछाना। विस्तर फैलाना।
संज्ञा पुं० बिछौना। बिस्तर।
दसमाथ*–संज्ञा पुं० [हिं० दस+माथ] रावण।
दसमी–संज्ञा स्त्री० दे० "दशमी"।
दसा–संज्ञा स्त्री० दे० "दशा"।
दसारन–संज्ञा पुं० दे० "दशार्ण"।
दसी–संज्ञा स्त्री० [सं० दशा] १. कपड़े के छोर पर का सूत। छीर। २ थान का आँचल।
दसौंधी–संज्ञा पुं० [सं० दास+बंदी = भाट] बंदियों या चारणों की एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहती है। ब्रह्मभट्ट। भाट।
दस्तंदाजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप।
दस्त–संज्ञा पुं० [फा०] १. पतला पाखाना। विरेचन। २. हाथ।
दस्तक–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हाथ से खट-खट शब्द उत्पन्न करने या खटखटाने की क्रिया। २. बुलाने के लिये दरवाजे की कुंडी खटखटाने की क्रिया। ३. माल-गुजारी वसूल करने के लिये गिरफ्तारी या वसूली का परवाना। ४. माल आदि ले जाने का परवाना। ५. कर। महसूल।
दस्तकार–संज्ञा पुं० [फा०] हाथ से कारी-गरी का काम करनेवाला आदमी।
दस्तकारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] हाथ की कारी-गरी। शिल्प।
दस्तखत–संज्ञा पुं० [फा०] अपने हाथ का लिखा हुआ अपना नाम। हस्ताक्षर।
दस्त बरदार–वि० [फा०] जो किसी वस्तु पर से अपना हाथ या अधिकार उठा ले।
दस्तयाब–वि० [फा०] हस्तगत। प्राप्त।
दस्तरखान–संज्ञा पुं० [फा०] वह चादर, जिस पर खाना रखा जाता है। (मुसल०)
दस्ता–संज्ञा पुं० [फा० दस्त] १. वह जो हाथ में आवे या रहे। २. किसी औजार आदि का वह हिस्सा जो हाथ से पकड़ा जाता है। मूठ। बेंट। ३ फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। ४. सिपाहियों का छोटा दल। गारद। ५. किसी वस्तु का उतना गड्डा या पूला जितना हाथ में आ सके। ६. कागज के चौबीस या पचीस तावों की गड्डी।
दस्ताना–संज्ञा पुं० [फा० दस्तान] पंजे और हथेली में पहनने का बुना हुआ कपड़ा। हाथ का मोजा।
दस्तावर–वि० [फा०] जिससे दस्त आवें। विरेचक।
दस्तावेज़–संज्ञा स्त्री० [फा०] वह

जिसमें कुछ आदमियों के बीच के व्यवहार की बात लिखी हो और जिस पर व्यवहार करनेवालों के दस्तखत हों। व्यवहार-संबंधी लेख।

दस्ती-वि० [फा० दस्त=हाथ] हाथ का। सज्ञा स्त्री० १. हाथ में लेकर चलने की बत्ती। मशाल। २. छोटी मूठ। छोटा बेंट। ३. छोटा कलमदान।

दस्तूर-सज्ञा पु० [फा०] १. रीति। रस्म। रवाज। चाल। प्रथा। २. नियम। कायदा। विधि। ३. पारसियों का पुरोहित जो कर्म-कांड कराता है।

दस्तूरी-सज्ञा स्त्री० [फा० दस्तूर] वह द्रव्य जो नौकर अपने मालिक का सौदा लेने में दूकानदारों से हक़ के तौर पर पाते हैं।

दस्यु-सज्ञा पु० [स०] १. डाकू। चोर। २ असुर। ३. अनार्य। म्लेच्छ। ४. दास।

दस्युता-सज्ञा स्त्री० [स०] १. लुटेरापन। डकैती। २. दुष्टता। क्रूर स्वभाव।

दस्युवृत्ति-सज्ञा स्त्री० [स०] १. डकैती। लुटेरापन। २. चोरी।

दह-सज्ञा पुं० [स० ह्रद] १. नदी में वह स्थान जहाँ पानी बहुत गहरा हो। पाल। २. कुंड। हौज।
सज्ञा स्त्री० [स० दहन] ज्वाला। लपट।

दहक-सज्ञा स्त्री० [स० दहन] १. आग दहकने की क्रिया। धधक। दाह। २. ज्वाला। लपट।

दहकना-क्रि० अ० [स० दहन] १. लौ के साथ बलना। धधकना। भड़कना। २. शरीर का गरम होना। तपना।

दहकाना-क्रि० स० [हिं० दहकना] १. ऐसा जलाना कि लौ ऊपर उठे। २. धधकाना। ३. भड़काना। क्रोध दिलाना।

दहड़ दहड़-क्रि० वि० [स० दहन या अनु०] लपट फेंकते हुए। धायँ धायँ।

दहन-सज्ञा पु० [स०] [वि० दहनीय, दह्यमान] १. जलने की क्रिया या भाव। दाह। २. अग्नि। आग। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. तीन की संख्या। ५. एक रुद्र।

दहना-क्रि० अ० [स० दहन] १. जलना। बलना। भस्म होना। २. क्रोध से संतप्त होना। कुढ़ना।
क्रि० स० १. जलाना। भस्म करना। २. [illegible]। दुःखी करना। कष्ट पहुँचाना। ३. क्रोध दिलाना। कुढ़ाना।
क्रि० अ० [हिं० दह] धँसना। नीचे बैठना।
वि० दे० "दहिना"।

दहनि-सज्ञा स्त्री० [हिं० दहना] जलने की क्रिया। जलन।

दहपट-वि० [फा० दह=दस+पट=समतल] १. ढाया हुआ। ध्वस्त। चौपट। नष्ट। २. रौंदा हुआ। कुचला हुआ। दलित।

दहपटना-क्रि० स० [हिं० दहपट] १. ध्वस्त करना। चौपट करना। नष्ट करना। २. रौंदना। कुचलना।

दहर-सज्ञा पु० [स० ह्रद] १. नदी में गहरा स्थान। दह। २. कुंड। हौज।

दहरना*-क्रि० अ० दे० "दहलना"।
क्रि० स० दे० "दहलाना"।

दहल-सज्ञा स्त्री० [हिं० दहलना] डर से एकबारगी काँप उठने की क्रिया।

दहलना-क्रि० अ० [स० दर=डर+हिं० हिलना] डर से एक-बारगी काँप उठना। भय से स्तंभित होना।

दहला-सज्ञा पु० [फा० दह=दस] ताश या गजीफे का वह पत्ता जिसमें दस बूटियाँ हों।
† सज्ञा पु० [स० थल] थाला। थाँवला।

दहलाना-क्रि० स० [हिं० दहलना] डर से कँपाना। भयभीत करना।

दहलीज़-सज्ञा स्त्री० [फा०] द्वार के चौखट की नीचेवाली लकड़ी जो जमीन पर रहती है। देहली। डेहरी।

दहशत-सज्ञा स्त्री० [फा०] डर। भय।

दहा-सज्ञा पु० [फा० दह] १. मुहर्रम का महीना। २ मुहर्रम की १ से १० तारीख तक का समय। ३. ताज़िया।

दहाई-सज्ञा स्त्री० [फा० दह=दस] १. दस का मान या भाव। २. अंकों के स्थानों की गिनती में दूसरा स्थान जिस पर जो अंक लिखा होता है, उससे उतने ही गुने दस का बोध होता है।

दहाड़-सज्ञा स्त्री० [अनु०] १. किसी भयंकर जंतु का घोर शब्द। गरज। २. चिल्लाकर रोने की ध्वनि। आर्त्तनाद।
मुहा०—दहाड़ मारना, या दहाड़ मारकर रोना=चिल्ला चिल्लाकर रोना।

दहाड़ना-क्रि० अ० [अनु०] १. घोर शब्द करना। गरजना। २. चिल्लाकर रोना।

दहाना-सज्ञा पुं० [फा०] १. चौड़ा मुँह।

द्वार। २. वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में गिरती है। मुहाना। ३. मोरी।

दहिना-वि० [सं० दक्षिण] [स्त्री० दहिनी] शरीर के दो पार्श्वों में से उस पार्श्व का नाम जिधर के अंगों या पेशियों में अधिक बल होता है। बायाँ का उलटा। अपसव्य।

दहिनावर्त्त†-वि० दे० "दक्षिणावर्त्त"।

दहिने-क्रि० वि० [हिं० दहिना] दहिनी ओर को।

यौ०—**दहिने होना** = अनुकूल होना। प्रसन्न होना। **दहिने बाएँ** = इधर उधर। दोनों ओर।

दही-संज्ञा पु० [सं० दधि] खटाई के द्वारा जमाया हुआ दूध।

मुहा०—**दही दही करना** = किसी चीज को मोल लेने के लिये लोगों से कहते फिरना।

दहु:-अव्य० [सं० अथवा] १. अथवा। या। किंवा। २. स्यात्। कदाचित्।

दहेड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दही + हंडी] दही रखने का मिट्टी का बरतन।

दहेज-संज्ञा पु० [अ० जहेज] वह धन और सामान जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जाता है। दायजा। यौतुक।

दहेला-वि० [हिं० दहला + एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दहेली] १. जला हुआ। दग्ध। २. संतप्त। दुःखी।

वि० [हिं० दहलना] [स्त्री० दहेली] भीगा हुआ। ठिठुरा हुआ।

दाँ-संज्ञा पु० [सं० दाच् (प्रत्य०) जैसे, एकदा] दफा। बार। बारी।

संज्ञा पुं० [फा०] ज्ञाता। जाननेवाला।

दाँक-संज्ञा स्त्री० [सं० द्रांच] दहाड़। गरज।

दाँकना-क्रि० अ० [हिं० दाँक + ना (प्रत्य०)] गरजना। दहाड़ना।

दाँग-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. छः रत्ती की तौल। २ दिशा। तरफ। ओर।

संज्ञा पु० [हिं० डंका] नगाड़ा। डंका।

संज्ञा पु० [हिं० डूँगर] टीला। छोटी पहाड़ी।

दाँज†-संज्ञा स्त्री० [सं० उदाहार्य] बराबरी। समता। जोड़। तुलना।

दाँत-संज्ञा पु० [सं० दंत] १. अंकुर के रूप में निकली हुई हड्डी जो जीवों के मुँह, तालू, गले या पेट में होती है और आहार चबाने, तोड़ने तथा आक्रमण करने, ज़मीन खोदने इत्यादि के काम में आती है। दंत। रद। दशन।

मुहा०—**दाँतों उँगली काटना** = दे० "दाँत तले उँगली दबाना"। **दाँत काटी रोटी** = अत्यंत घनिष्ठ मित्रता। गहरी दोस्ती। **दाँत खट्टे करना** = १. खूब हैरान करना। २. प्रतिद्वंद्विता या लड़ाई में परास्त करना। पस्त करना। **दाँत चबाना** = क्रोध से दाँत पीसना। कोप प्रकट करना। **दाँत तले उँगली दबाना** = १. अचरज में आना। चकित होना। दंग रहना। २. खेद प्रकट करना। अफसोस करना। **दाँत तोड़ना** = परास्त करना। हैरान करना। **दाँत पीसना** = (क्रोध में) दाँत पर दाँत रखकर हिलाना। दाँत किटकिटाना। **दाँत बजना** = सरदी से दाँत के हिलने या काँपने के कारण दाँत पर दाँत पड़ना। **दाँत बैठ जाना** = दाँत की ऊपर नीचेवाली पंक्तियों का परस्पर इस प्रकार मिल जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके। **दाँतों में तिनका लेना** = दया के लिये बहुत विनती करना। हा हा खाना। **(किसी वस्तु पर) दाँत रखना या लगाना** = १. लेने की गहरी चाह रखना। २. बैर लेने का विचार रखना। **(किसी के) तालू में दाँत जमना** = बुरे दिन आना। शामत आना।

२. दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु। दंदाना। दाँता।

दांत-वि० [सं०] १. जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। २. जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो। संयमी। ३. दाँत का। दाँत-संबंधी।

दाँता-संज्ञा पु० [हिं० दाँत] दाँत के आकार का कँगूरा। रवा। दंदाना।

दाँताकिटकिट-संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत + किटकिट (अनु०)] १. कहा-सुनी। झगड़ा। २. गाली गलौज।

दांति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्रिय-निग्रह। इंद्रियों का दमन। २. अधीनता। ३. विनय। नम्रता।

दाँती-संज्ञा स्त्री० [सं० दात्री] १. हँसिया जिससे घास या फसल काटते हैं। २. काली भिड़।

संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत] १. दाँतों की पंक्ति। दंतावलि। बत्तीसी। २. दो पहाड़ों के बीच की सँकरी जगह। दर्रा।

दाँना–क्रि० स० [सं० दमन] पकी फसल के डंठलों को बैलों से इसलिये रौंदवाना जिसमें डंठल से दाना अलग हो जाय।
दांपत्य–वि० [सं०] पति-पत्नी संबंधी। स्त्री पुरुष का सा।
संज्ञा पुं० स्त्री-पुरुष के बीच का प्रेम या व्यवहार।
दांभिक–वि० [सं०] १. पाखंडी। आडंबर रचनेवाला। धोखेबाज। २. अहंकारी। घमंडी।
दाँयँ–संज्ञा स्त्री० दे० "दँवरी"।
दाँवनी–संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] दामिनी नाम का सिर का गहना।
दाँवरी–संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। डोरी।
दाइ–संज्ञा पुं० दे० "दाय" और "दाँव"।
दाईं–वि० स्त्री० [हिं० दायाँ] दाहिनी।
संज्ञा स्त्री० [सं० दाव (प्रत्य०), हिं० दाँ (प्रत्य०)] बारी। दफा। बार।
दाई–संज्ञा स्त्री० [सं० धात्री, मि० फा० दाय:] १. दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलानेवाली स्त्री। धाय। २. बच्चे की देख-रेख रखने-वाली दासी। ३. प्रसूता के उपचार के लिये नियुक्त स्त्री।
मुहा०—दाई से पेट छिपाना=जाननेवाले से कोई बात छिपाना।
॰वि० दे० "दायी"।
दाउ†–संज्ञा पुं० दे० "दाँव"।
दाऊ–संज्ञा पुं० [सं० देव] १. बड़ा भाई। २. कृष्ण के बड़े भाई बलदेव।
दाऊदखानी–संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का चावल। २. उत्तम प्रकार का सफेद गेहूँ। दाऊदी गेहूँ।
दाऊदी–संज्ञा पुं० [अ० दाऊद] एक प्रकार का बढ़िया गेहूँ।
दाक्षायण–वि० [सं०] १. दक्ष से उत्पन्न। २. दक्ष का। दक्ष-संबंधी।
दाक्षायणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दक्ष की कन्या। २. अश्विनी आदि नक्षत्र। ३. दुर्गा। ४ कश्यप की स्त्री, अदिति।
दाक्षिणात्य–वि० [सं०] दक्खिनी। दक्षिण का।
संज्ञा पुं० १. भारतवर्ष का वह भाग जो विंध्याचल के दक्षिण पड़ता है। २. दक्षिण देश का निवासी।
।पुं० [सं०] १. अनुकूलता। प्रसन्नता। २. उदारता। सुशीलता। ३ दूसरे को प्रसन्न करने का भाव। ४. नाटक में वाक्य या चेष्टा द्वारा दूसरे के उदासीन या अप्रसन्न चित्त को फेरकर प्रसन्न करना।
वि० १. दक्षिण का। दक्षिण संबंधी। २. दक्षिणा संबंधी।
दाख–संज्ञा स्त्री० [सं० द्राक्षा] १. अंगूर। २ मुनक्का। ३. किशमिश।
दाखिल–वि० [फा०] १. प्रविष्ट। घुसा हुआ। पैठा हुआ।
मुहा०—दाखिल करना=भर देना। जमा करना।
२. शरीक। मिला हुआ। ३. पहुँचा हुआ।
दाखिल खारिज–संज्ञा पुं० [फा०] किसी सरकारी कागज पर से किसी जायदाद के पुराने हकदार का नाम काटकर उस पर उसके वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखना।
दाखिल-दफ्तर–वि० [फा०] दफ्तर में इस प्रकार डाल रक्खा हुआ (कागज) जिस पर कुछ विचार न किया जाय।
दाखिला–संज्ञा पुं० [फा०] १. प्रवेश। पैठ। २. संस्था आदि में सम्मिलित किए जाने का कार्य्य।
दाग–संज्ञा पुं० [सं० दग्ध] १. जलाने का काम। दाह। २. मुर्दा जलाने की क्रिया।
मुहा०—दाग देना=मुरदे का क्रिया-कर्म करना।
३. जलन। दाह। ४. जलन का चिह्न।
दाग–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० दागी] १. धब्बा। चित्ती।
मुहा०—सफेद दाग=एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं। फूल।
२. निशान। चिह्न। अंक। ३. फल आदि पर पड़ा हुआ सड़ने का चिह्न। ४. कलंक। ऐब। दोष। लाञ्छन। ५. जलने का चिह्न।
दागदार–वि० [फा०] जिस पर दाग या धब्बा लगा हो।
दागना–क्रि० स० [हिं० दाग] १. जलाना। दग्ध करना। २. तपे लोहे से किसी के अंग को ऐसा जलाना कि चिह्न पड़ जाय। ३. धातु के तपे हुए साँचे को छुलाकर अंग पर उसका चिह्न डालना। तप्त मुद्रा से अंकित करना। ४. फोड़े आदि पर ऐसी तेज

दवा लगाना जिससे वह जल या सूख जाय। ५. भरी हुई बंदूक में बत्ती देना। तोप, बंदूक आदि छोड़ना।
क्रि० स० [फा० दाग] रंग आदि से चिह्न या दाग लगाना। अंकित करना।
दागबेल–संज्ञा स्त्री० [फा० दाग + हिं० बेलि] भूमि पर फावड़ या कुदाल से बनाए हुए चिह्न जो सड़क बनाने, नींव खोदने आदि के लिये डाले जाते हैं।
दागी–वि० [फा० दाग] १. जिस पर दाग या धब्बा हो। २. जिस पर सड़ने का चिह्न हो। ३. कलंकित। दोषयुक्त। लांछित। ४. जिसको सजा मिल चुकी हो।
दाघ–संज्ञा पु० [सं०] १. गरमी। ताप। २. दाह। जलन।
दाजन॥–संज्ञा स्त्री० दे० "दाझन"।
दाजना॥–क्रि० अ० [सं० दग्ध या दाहन] १. जलना। २. ईर्ष्या करना। डाह करना।
क्रि० स० जलाना।
दाझन॥–संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] जलन।
दाझना–क्रि० अ० [सं० दाहन] जलना। संतप्त होना।
क्रि० स० जलाना।
दाड़िम–संज्ञा पु० [सं०] अनार। फल।
दाढ़ संज्ञा स्त्री० [सं० दंष्ट्रा या दाढ़क] जबड़े के भीतर के मोटे चौड़े दाँत। चौभर।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. भीषण शब्द। गरज। दहाड़। २. चिल्लाहट।
मुहा०—दाढ़ मारकर रोना = खूब चिल्ला चिल्लाकर रोना।
दाढ़ना–क्रि० स० [सं० दाहन] १. जलाना। आग में भस्म करना। २ संतप्त करना। दु:खी करना।
दाढ़ा॥–संज्ञा पुं० दे० "दाढ़"।
संज्ञा पु० [हिं० दाढ़] १. वन की आग। दावानल। २. आग। अग्नि। ३. दाह। जलन।
दाढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाढ़] १. चिबुक। २. ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल। श्मश्रु। दे० "दाढ़ी"।
दाढ़ीजार–संज्ञा पु० [हिं० दाढ़ी + जलना] एक गाली, जिसे स्त्रियाँ कुपित होने पर पुरुषों को देती हैं।
दात॥–संज्ञा पु० [सं० दातव्य] दान।
संज्ञा पु० दे० "दाता"।
दातव्य–वि० [सं०] देने योग्य।
संज्ञा पु० १ देने का काम। दान। २ दानशीलता। उदारता।
दाता–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो दान दे। दानशील। २. देनेवाला।
दातार–संज्ञा पु० [सं० दाता का बहु०] दाता। देनेवाला।
दाती॥–संज्ञा स्त्री० [सं० दात्री] देनेवाली।
दातुन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।
दातृत्व–संज्ञा पु० [सं०] दानशीलता। देने की प्रवृत्ति।
दातौन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।
दात्यूह–संज्ञा पु० [सं०] १. पपीहा। चातक। २. मेघ। बादल।
दात्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] देनेवाली।
संज्ञा स्त्री० [सं०] हँसिया। दाँती।
दाद–संज्ञा स्त्री० [सं० दद्रु] एक चर्मरोग जिसमें शरीर पर उभरे हुए ऐसे चकत्ते पड़ जाते हैं जिनमें बहुत खुजली होती है। दिनाई।
संज्ञा स्त्री० [फा०] इंसाफ। न्याय।
मुहा०—दाद चाहना = किसी अत्याचार के प्रतीकार की प्रार्थना करना। दाद देना = १. न्याय करना। २. प्रशंसा करना। सराहना।
दादनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह रकम जिसे चुकाना हो। २. वह रकम जो किसी काम के लिये पेशगी दी जाय। अगता।
दादरा–संज्ञा पु० [?] १. एक प्रकार का चलता गाना। २. दो अर्द्ध मात्राओं का एक ताल।
दादा–संज्ञा पु० [सं० तात] [स्त्री० दादी] १. पितामह। पिता का पिता। आजा। २. बड़ा भाई। ३. बड़े बूढ़ों के लिये आदर-सूचक शब्द।
दादि॥–संज्ञा स्त्री० [फा० दाद] न्याय। इंसाफ।
दादी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दादा] पिता की माता। दादा की स्त्री।
संज्ञा पु० [फा० दाद] दाद चाहनेवाला। न्याय का प्रार्थी। फरियादी।
दादु॥–संज्ञा स्त्री० [सं० दद्रु] ... भाई]
दादुर॥–संज्ञा पु० [सं०
दादू–संज्ञा पु० [...
लिये संबोधन या
'भाई' आदि के

धन। ३. एक साधु जिनके नाम पर एक पंथ चला है। ये जाति के धुनिया कहे जाते हैं। इनका जन्मस्थान अहमदाबाद था। ये अकबर के समय में हुए थे।

दादूदयाल–संज्ञा पुं० दे० "दादू" (३)।

दादूपंथी–संज्ञा पुं० [हिं० दादू + पंथी] दादू नामक साधु या उनके पंथ का अनुयायी।

दाध –संज्ञा स्त्री० [सं० दाद] जलन। दाह।

दाधना*–क्रि० स० [सं० दग्ध] जलाना। भस्म करना।

दान–संज्ञा पुं० [सं०] १. देने का कार्य। २. वह धर्मार्थ कर्म जिसमें श्रद्धा या दया-पूर्वक दूसरे को धन आदि दिया जाता है। खैरात। ३. वह वस्तु जो दान में दी जाय। ४. कर। महसूल। चुंगी। ५ राजनीति में कुछ देकर शत्रु के विरुद्ध कार्य-साधन की नीति। ६. हाथी का मद। ७ छेदन। ८. शुद्धि।

दानधर्म्म–संज्ञा पुं० [सं०] दान देने का धर्म्म। दान-पुण्य।

दानपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह लेख या पत्र जिसके द्वारा कोई संपत्ति किसी को प्रदान की जाय।

दानपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जो दान पाने के उपयुक्त हो।

दानलीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कृष्ण की वह लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर वसूल किया था। २. वह ग्रंथ जिसमें इस लीला का वर्णन किया गया हो।

दानव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दानवी] कश्यप के वे पुत्र जो 'दनु' नाम्नी पत्नी से उत्पन्न हुए थे। असुर। राक्षस।

दान-वारि–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी का मद।

दानवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दानव की स्त्री। २. दानव जाति की स्त्री। राक्षसी। वि० [सं० दानवीय] दानवों का। दानव संबंधी।

दानवीर–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दान देने से न हटे। अत्यंत दानी।

दानवेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] राजा बलि।

दानशील–वि० [सं०] [संज्ञा दानशीलता] दान करनेवाला। दानी।

दाना–संज्ञा पुं० [फा० दानः] १. अनाज का एक बीज। अन्न का एक कण। कन।

मुहा०—दाने दाने को तरसना = अन्न का कष्ट सहना। भोजन न पाना। दाने दाने को मुहताज = अत्यंत दरिद्र।

२ अनाज। अन्न। ३ सूखा भुना हुआ अन्न। चबेना। चर्वण। ४. कोई छोटा बीज जो बाल, फली या गुच्छे में लगे। ५. फल या उसका बीज। ६. कोई छोटी गोल वस्तु। जैसे—मोती का दाना। घुँघरू का दाना। ७ माला की गुरिया। मनका। ८. छोटी गोल वस्तुओं के लिये संख्या के स्थान पर आनेवाला शब्द। अदद। ९ रवा। कण। कणिका। १०. किसी सतह पर के छोटे छोटे उभार जो टटोलने से अलग अलग मालूम हों। वि० [फा० दाना] बुद्धिमान्। अक्लमंद।

दानाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] अक्लमंदी।

दानाध्यक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं के यहाँ दान का प्रबंध करनेवाला कर्म्मचारी।

दाना पानी–संज्ञा पुं० [फा० दाना + हिं० पानी] १. खान पान। अन्न-जल।

मुहा०—दाना-पानी छोड़ना = अन्न-जल ग्रहण न करना। उपवास करना।

२. भरण पोषण का आयोजन। जीविका। ३. रहने का संयोग।

दानी–वि० [सं० दानिन्] [स्त्री० दानिनी] जो दान करे। उदार। संज्ञा पुं० दान करनेवाला व्यक्ति। दाता। संज्ञा पुं० [सं० दानीय] १. कर संग्रह करनेवाला। महसूल उगाहनेवाला। २. दान लेनेवाला।

दानेदार–वि० [फा०] जिसमें दाने या रवे हों। रवादार।

दानौ*–संज्ञा पुं० दे० "दानव"।

दाप–संज्ञा पुं० [स[illegible] दर्प [illegible] अहंकार। घमंड। [illegible]
बल। जोर। [illegible]
रोष। दबदबा। [illegible]
जलन। ताप। [illegible]
–संज्ञा पुं० [[illegible]
क्रि० स० [illegible]
करना। [illegible]
० [हिं० [illegible]
भाव। [illegible]
की

शासन।

दावदार–वि० [हिं० दाव+फा० दार] आतंक रखनेवाला। रोबदार।

दावना–क्रि० स० दे० "दबाना"।

दाभ–संज्ञा पुं० [सं० दर्भ] कुश। डाभ।

दाम–संज्ञा पुं० [सं०] १. रस्सी। रज्जु। २. माला। हार। लड़ी। ३. समूह। राशि। ४. लोक। विश्व।

संज्ञा पुं० [फा० मिलाओ सं०] जाल। फंदा। पाश।

संज्ञा पुं० [हिं० दमड़ी] १. पैसे का चौबीसवाँ या पचीसवाँ भाग।

मुहा०—दाम दाम भर देना=कौड़ी कौड़ी चुका देना। कुछ (ऋण) बाकी न रखना। २ वह धन जो किसी वस्तु के बदले में बेचनेवाले को दिया जाय। मूल्य। कीमत।

मुहा०—दाम खड़ा करना=कीमत वसूल करना। दाम चुकाना=१. मूल्य दे देना। २. कीमत ठहराना। मोल-भाव तै करना। दाम भरना=नुकसानी देना। डाँड़ देना। ३. धन। रुपया-पैसा। ४. सिक्का। रुपया।

मुहा०—चाम के दाम चलाना=अधिकार या अवसर पाकर मनमाना अंधेर करना।

५. राजनीति की एक चाल जिसमें शत्रु को धन द्वारा वश में करते हैं। दान नीति।

दामन–संज्ञा पुं० [फा०] १. अंगे, कोट, कुरते इत्यादि का निचला भाग। पल्ला। २. पहाड़ों के नीचे की भूमि।

दामरी–संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। रज्जु।

दामा॰–संज्ञा स्त्री० [सं० दावा] दावानल।

दामाद–संज्ञा पुं० [फा० मिलाओ सं० जामातृ] पुत्री का पति। जवाई। जामाता।

दामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिजली। विद्युत्। २. स्त्रियों का एक शिरोभूषण। बेंदी। बिंदिया। दाँवनी।

दामी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाम] कर। माल-गुज़ारी।

वि० मूल्यवान्। कीमती।

दामोदर–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु। ३. एक जैन तीर्थंकर।

दाय॰–संज्ञा पुं० दे० "दावँ"।

संज्ञा स्त्री० [?] बराबरी। दे० "दाँज"।

दाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह धन जो किसी को देने को हो। २. दायजे, दान आदि में दिया जानेवाला धन। ३. वह पैतृक या संबंधी का धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग हो सके। ४. दान।

॰ संज्ञा पुं० दे० "दाव"।

दायक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दायिका] देनेवाला। दाता।

दायज, दायजा–संज्ञा पुं० [सं० दाय] वह धन जो विवाह में वर-पक्ष को दिया जाय। यौतुक। दहेज।

दायभाग–संज्ञा पुं० [सं०] १. पैतृक धन का विभाग। २. बाप दादे या संबंधी की संपत्ति के पुत्रों, पौत्रों या संबंधियों में बाँटे जाने की व्यवस्था। यह हिन्दू धर्म-शास्त्र का एक प्रधान विषय है। इसके दो प्रधान पक्ष हैं—मिताक्षरा और दायभाग।

दायमुलहब्स–संज्ञा पुं० [अ०] जीवन भर के लिये कैद। काले पानी की सज़ा।

दायर–वि० [फा०] १. फिरता या चलता हुआ। २. चलता। जारी।

मुहा०—दायर करना=मामले मुकदमे वगैरह को चलाने के लिये पेश करना।

दायरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. गोल घेरा। कुंडल। मंडल। २. वृत्त। ३. कक्षा।

दायाँ–वि० [हिं० दाहिना] दाहिना।

दाया॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "दया"।

संज्ञा स्त्री० [फा०] दाई।

दायाद–वि० [सं०] [स्त्री० दायादा] जो दाय का अधिकारी हो। जिसे किसी की जायदाद में हिस्सा मिले।

संज्ञा पुं० १. वह जिसका संबंध के कारण किसी की जायदाद में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २. पुत्र। बेटा। ३. सपिंड कुटुंबी।

दायित्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. देनदार होने का भाव। २. जिम्मेदारी। जवाबदेही।

दायी–वि० [सं० दायिन्] [स्त्री० दायिनी] देनेवाला। जैसे—सुखदायी। वरदायी।

दायें–क्रि० वि० [हिं० दायाँ] दाहिनी ओर को।

मुहा०—दायें होना=अनुकूल या प्रसन्न होना।

दार–संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्या।

॰ संज्ञा पुं० दे० "दारु"।

प्रत्य० [फा०] रखनेवाला।

दारक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दारिका] १. बच्चा। लड़का। २. पुत्र। बेटा।

दारकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] विवाह।

दारचीनी–संज्ञा स्त्री० [सं० दारु + चीन (देश)] १. एक प्रकार का तज जो दक्षिण भारत और सिंहल में होता है। २. इस पेड़ की सुगंधित छाल जो दवा और मसाले के काम में आती है।

दारण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० दारित] १. चीरने-फाड़ने का काम। चीर-फाड़। २. चीरने-फाड़ने का औज़ार। ३. फोड़ा आदि चीरने का काम।

दारना–क्रि० स० [सं० दारण] १. फाड़ना। विदीर्ण करना। २. नष्ट करना।

दारपरिग्रह–संज्ञा पु० [सं०] विवाह।

दार-मदार–संज्ञा पु० [फा०] १. आश्रय। ठहराव। २ किसी कार्य्य का किसी पर अवलंबित रहना।

दारा–संज्ञा स्त्री० [सं० दार] पत्नी। भार्य्या।

दारि†–संज्ञा स्त्री० दे० "दाल"।

दारिउँ–संज्ञा पु० दे० "दाड़िम"।

दारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बालिका। कन्या। २. बेटी। पुत्री।

दारिद–संज्ञा पु० [सं० दारिद्र्य] दरिद्रता।

दारिद्र–संज्ञा पु० दे० "दारिद्र्य"।

दारिद्र्य–संज्ञा पु० [सं०] दरिद्रता। निर्धनता। गरीबी।

संज्ञा स्त्री० [सं० दारिका] वह लौंडी जिसे लड़ाई में जीतकर लाए हों।

दारीजार–संज्ञा पु० [हिं० दारी + सं० जार] १ लौंडी का पति। (गाली) २. दासीपुत्र।

दारु–संज्ञा पु० [सं०] १. काठ। लकड़ी। २. देवदार। ३ बढ़ई। ४. कारीगर।

दारुक–संज्ञा पु० [सं०] १. देवदारु। २. श्रीकृष्ण के सारथी का नाम।

दारुजोषित*–संज्ञा स्त्री० दे० "दारुयोषित"।

दारुण–वि० [सं०] १. भयंकर। भीषण। घोर। २. कठिन। प्रचंड। विकट।

संज्ञा पु० १. चीते का पेड़। २. भयानक रस। ३ विष्णु। ४. शिव। ५. एक नरक का नाम। ६. राक्षस।

दारुन–वि० दे० "दारुण"।

दारुयोषित–संज्ञा स्त्री० [सं०] कठपुतली।

दारुहल्दी–संज्ञा स्त्री० [सं० दारुहरिद्रा] आल जाति का एक सदाबहार झाड़। इसकी ... और डंठल दवा के काम में आते हैं।

... स्त्री० [फा०] १. दवा। औषध। २. मद्य। शराब। ३. बारूद।

दारों–संज्ञा पु० दे० "दारयों"।

दारोगा–संज्ञा पु० [फा०] १. देख-भाल रखनेवाला या प्रबंध करनेवाला व्यक्ति। २. पुलिस का वह अफसर जो किसी थाने पर अधिकारी हो। थानेदार।

दार्यों–संज्ञा पु० [सं० दाड़िम] अनार।

दार्व–संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन प्रदेश जो आधुनिक काश्मीर के अंतर्गत पड़ता था।

दार्शनिक–वि० [सं०] १. दर्शन जाननेवाला। तत्त्वज्ञानी। २. दर्शन शास्त्र संबंधी।

दाल–संज्ञा स्त्री० [सं० दालि] १ दली हुई अरहर, मूँग आदि जिसे सालन की तरह खाते हैं। २. मसाले के साथ पानी में उबाला हुआ दला अन्न जो रोटी, भात आदि के साथ खाया जात है।

मुहा०—(किसी की) दाल गलना = (किसी का) प्रयोजन सिद्ध होना। मतलब निकलना। दाल दलिया = सूखा रूखा भोजन। गरीबों का सा खाना। दाल में कुछ काला होना = कुछ खटके या संदेह की बात होना। किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई पड़ना। दाल रोटी = सादा खाना। सामान्य भोजन। जूतियों दाल बँटना = आपस में खूब लड़ाई झगड़ा होना।

३. दाल के आकार की कोई वस्तु। ४ चेचक, फोड़े, फुंसी आदि के ऊपर का चमड़ा जो सूखकर छूट जाता है। खुरंड।

दालचीनी–संज्ञा स्त्री० दे० "दारचीनी"।

दालमोठ–संज्ञा स्त्री० [हिं० दाल + मोठ = एक अन्न] घी, तेल आदि में नमक, मिर्च के साथ तली हुई दाल।

दालान–संज्ञा पु० [फा०] मकान में वह छाई हुई जगह जो एक, दो या तीन ओर खुली हो। बरामदा। ओसारा।

दालिम–संज्ञा पु० दे० "दाड़िम"।

दावँ–संज्ञा पु० [सं० प्रत्य० दा (दाच्) जैसे एकदा] १. बार। दफा। मरतबा। २. किसी बात का समय जो कई आदमियों में एक दूसरे के पीछे क्रम से आवे। बारी। पारी। ३. उपयुक्त समय। अनुकूल संयोग। अवसर। मौका।

मुहा०—दावँ करना = घात लगाना। घात में बैठना। दावँ लगना = अनुकूल संयोग मिलना। मौका मिलना। दावँ लेना = बदला लेना।

४. कार्य्य-साधन की युक्ति। उपाय। चाल।
मुहा०—दाँव पर चढ़ना=इस प्रकार वश में होना कि दूसरा अपना मतलब निकाल ले। ५ कुश्ती या लड़ाई जीतने के लिये काम में लाई जानेवाली युक्ति। चाल। पेच। बंद। ६. कार्य्य साधन की कुटिल युक्ति। छल। कपट। ७ खेल में प्रत्येक खेलाड़ी के खेलने का समय जो एक दूसरे के पीछे क्रम से आता है। खेलने की बारी। चाल।
मुहा०—दाँव पर रखना या लगाना=रुपया-पैसा या कोई वस्तु बाजी पर लगाना।
८. पाँसे, जूए की कौड़ी आदि का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो।
मुहा०—दाँव देना=खेल में हारने पर नियत दंड भोगना या परिश्रम करना। (लड़के)
† ९. स्थान। ठौर। जगह।

दावँना-क्रि० स० [सं० दमन] दाना और भूसा अलग करने के लिये कटी हुई फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाना।
दावँनी-संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। बंदी।
दावँरी-संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। रज्जु।
दाव-संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. वन की आग। ३. आग। अग्नि। ४. जलन। ताप।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हथियार।
दावत-संज्ञा स्त्री० [अ० दअवत] १. ज्योनार। भोज। २. खाने का बुलावा। निमंत्रण।
दावन-संज्ञा पुं० [सं० दमन] १. दमन। नाश। २. हँसिया। ३ एक प्रकार का टेढ़ा छुरा। खुखड़ी।
दावना-क्रि० स० दे० "दावँना"।
क्रि० स० [हिं० दावन] दमन करना।
दावनी-संज्ञा स्त्री० दे० "दावँनी"।
दावा-संज्ञा स्त्री० [सं० दाव] वन में लगने-वाली आग जो पेड़ों की डालियों के एक दूसरी से रगड़ खाने से उत्पन्न होती है।
संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी वस्तु पर अधि-कार प्रकट करने का कार्य्य। किसी चीज़ पर हक ज़ाहिर करना। २. स्वत्व। हक। ३ किसी जायदाद या रुपए-पैसे के लिये चलाया हुआ मुकदमा। ४. नालिश। अभियोग। ५. अधिकार। ज़ोर। ६. कोई बात कहने में वह साहस जो उसकी यथार्थता के निश्चय से उत्पन्न होता है। दृढ़ता। ७. दृढ़तापूर्वक कथन।
दावागीर-संज्ञा पुं० [अ० दावा+फा० गीर] दावा करनेवाला। अपना हक जतानेवाला।
दावाग्नि-संज्ञा स्त्री० दे० "दावानल"।
दावात-संज्ञा स्त्री० [अ०] स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।
दावादार-संज्ञा पुं० [अ० दावा+फा० दार] दावा करनेवाला। अपना हक जतानेवाला।
दावानल-संज्ञा पुं० [सं०] वनाग्नि। दावा।
दावनी-संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] १. बिजली। २. दावँनी नाम का गहना।
दाशरथि-संज्ञा पुं० [सं०] दशरथ के पुत्र श्रीरामचंद्र आदि।
दास-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दासी] १. वह जो अपने को दूसरे की सेवा के लिये समर्पित कर दे। सेवक। चाकर। नौकर। मनुस्मृति में सात प्रकार के और याज्ञवल्क्य, नारद आदि में पंद्रह प्रकार के दास कहे गए हैं। २. शूद्र। ३ धीवर। ४. एक उपाधि जो शूद्रों के नामों के आगे लगाई जाती है। ५. दस्यु। ६. वृत्रासुर।
†" संज्ञा पुं० दे० "डासन"।
दासता-संज्ञा स्त्री० [सं०] दास का कर्म। दासत्व। सेवावृत्ति।
दासत्व-संज्ञा पुं० दे० "दासता"।
दासन-संज्ञा पुं० दे० "डासन"।
दासपन-संज्ञा पुं० दे० "दासता"।
दासा-संज्ञा पुं० [सं० दासी=वेदी] १. दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुश्ता जो कुछ ऊँचाई तक हो और जिस पर चीज वस्तु भी रख सकें। २. आँगन के चारो ओर दीवार से सटाकर उठाया हुआ चबू-तरा। ३. वह लकड़ी या पत्थर जो दर-वाजे पर दीवार के आर-पार रहता है।
दासानुदास-संज्ञा पुं० [सं०] सेवक का सेवक। अत्यंत तुच्छ सेवक। (नम्रता)
दासी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली स्त्री। टहलनी। लौंडी।
दास्तान-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वृत्तांत। हाल। २. कथा। किस्सा। ३. वर्णन।
दास्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. दासत्व। दास-पन। सेवा। २. भक्ति के नौ भेदों में से एक जिसमें उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उनका दास समझते हैं।

दाह–संज्ञा पुं० [सं०] १. जलाने की क्रिया या भाव। भस्मीकरण। २ शव जलाने की क्रिया। मुर्दा फूँकने का धर्म। ३. जलन। ताप। ४. एक रोग जिसमें शरीर में जलन मालूम होती है, प्यास लगती है है और कंठ सूखता है। ५. शोक। संताप। अत्यंत दु:ख। ६. डाह। ईर्ष्या।

दाहक–वि० [सं०] जलानेवाला।
संज्ञा पुं० १. चित्रक वृक्ष। २. अग्नि।

दाहकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] जलने का भाव या गुण।

दाहकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] शवदाह-कर्म। मुर्दा फूँकने का काम।

दाहक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक को जलाने का संस्कार। शवदाह-कर्म।

दाहन–संज्ञा पुं० [सं०] १. जलाने का काम। २. जलवाने या भस्म कराने की क्रिया।

दाहना–क्रि० स० [सं० दाह] १. भस्म करना। २. जलाना। दुःख पहुँचाना।
वि० दे० "दाहिना"।

दाहिना–वि० [सं० दक्षिण] [स्त्री० दाहिनी] १. उस पार्श्व का जिसके अंगों की पेशियों में अधिक बल होता है। 'बायाँ' का उलटा। दक्षिण। अपसव्य।
मुहा०—दाहिनी देना = दक्षिणावर्त परिक्रमा करना। दाहिनी लाना = प्रदक्षिणा करना। (किसी का) दाहिना हाथ होना = बड़ा भारी सहायक होना।
२. उधर पड़नेवाला जिधर दाहिना हाथ हो। ३. अनुकूल। प्रसन्न।

दाहिनावर्त्त–वि० दे० "दक्षिणावर्त्त"।

दाहिने–क्रि० वि० [हिं० दाहिना] उस तरफ जिस तरफ दाहिना हाथ हो। दाहिने हाथ की दिशा में।

दाही–वि० [सं० दाहिन्] [स्त्री० दाहिनी] जलानेवाला। भस्म करनेवाला।

दिंडी–संज्ञा पुं० [सं०] उन्नीस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं।

दिअली–संज्ञा स्त्री० [हिं० दीया का स्त्री० अल्पा०] १ मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दीया या कसोरा। २ दे० "दिवली"।

दिआ–संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

दिआना–क्रि० स० दे० "दिलाना"।

दिउली†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिअली] १. सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड। दाल। २. दे० "दिअली"। ३. मछली के ऊपर से छूटनेवाला छिलका। सेहरा।

दिक्–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा। ओर।

दिक्–वि० [अ०] १ जिसे बहुत कष्ट पहुँचाया गया हो। हैरान। तंग। २. अस्वस्थ। बीमार। ('तबीयत' शब्द के साथ)
संज्ञा पुं० क्षयी रोग। तपेदिक्।

दिकदाह–संज्ञा पुं० दे० "दिग्दाह"।

दिक्क–वि०, संज्ञा पुं० दे० "दिक्"।

दिक्कत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दिक का भाव। परेशानी। तकलीफ़। तंगी। कष्ट। २. कठिनता। मुश्किल।

दिक्कन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा रूपी कन्या। (पुराणों में दसों दिशाएँ ब्रह्मा की कन्याएँ मानी गई हैं।)

दिक्करी–संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

दिक्कांता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिक्कन्या।

दिक्पाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार दसों दिशाओं के पालन करनेवाले देवता। यथा—पूर्व के इंद्र, दक्षिण के यम आदि। २. चौबीस मात्राओं का एक छंद। उर्दू का रेख़्ता यही है।

दिक्शूल–संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास। जिस दिन जिस दिशा में दिक्शूल माना जाता है, उस दिन उस दिशा की ओर यात्रा करना बहुत ही अशुभ माना जाता है।

दिक्साधन–संज्ञा पुं० [सं०] वह उपाय या विधि जिससे दिशाओं का ज्ञान हो।

दिक्सुंदरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्कन्या"।

दिखना†–क्रि० अ० [हिं० देखना] दिखाई देना। देखने में आना।

दिखराना–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखरावना–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखरावनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखलाना] दिखाने का भाव या क्रिया।

दिखलवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखलाना] १. वह धन जो दिखलवाने के बदले में दिया जाय। २. दे० "दिखलाई"।

दिखलवाना–क्रि० स० [हिं० दिखलाना का प्रे०] दिखलाने का काम दूसरे से कराना।

दिखलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखलाना] १. दिखलवाने की क्रिया या भाव।

धन जो दिखलाने के बदले में दिया जाय।

दिखलाना–क्रि० स० [हिं० देखना का प्रे० रूप] १ दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना। दृष्टिगोचर कराना। दिखाना। २ अनुभव कराना। मालूम कराना। जताना।

दिखहार†–संज्ञा पु० [हिं० देखना + हार (प्रत्य०)] देखनेवाला।

दिखाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखाना + आई (प्रत्य०)] १. देखने या दिखाने का काम। २. वह धन जो देखने या दिखाने के बदले में दिया जाय।

दिखाऊ†–वि० [हिं० देखना + आऊ (प्रत्य०)] १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। ३. दिखौआ। बनावटी।

दिखादिखी–संज्ञा स्त्री० दे० "देखादेखी"।

दिखाना–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखाव–संज्ञा पु० [हिं० देखना + आव (प्रत्य०)] १. देखने का भाव या क्रिया। २. दृश्य। नज़ारा।

दिखावटी–वि० दे० "दिखौआ"।

दिखावा–संज्ञा पु० [हिं० देखना + आवा (प्रत्य०)] ऊपरी तड़क भड़क। आडंबर।

दिखैया†–संज्ञा पु० [हिं० देखना + ऐया (प्रत्य०)] दिखलाने या देखनेवाला।

दिखौआ–वि० [हिं० देखना + औआ (प्रत्य०)] वह जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। बनावटी।

दिगंत–संज्ञा पु० [सं०] १. दिशा का छोर। दिशा का अंत। २. आकाश का छोर। क्षितिज। ३. सब दिशाएँ।
संज्ञा पु० [सं० दृग + अंत] आँख का कोना।

दिगंतर–संज्ञा पु० [सं०] दो दिशाओं के बीच का स्थान।

दिगंबर–संज्ञा पु० [सं०] १. शिव। महादेव। २. नंगा रहनेवाला जैन यति। दिग-

दिग्दंति †–संज्ञा पु० दे० "दिग्गज"।

दिग्पाल–संज्ञा पु० दे० "दिकपाल"।

दिग्गज–संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिये स्थापित हैं।
वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।

दिग्घ†–वि० [सं० दीर्घ] १. लंबा। २. बड़ा।

दिग्दर्शक यंत्र–संज्ञा पु० [सं०] डिबिया के आकार का एक प्रकार का यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है। कुतुबनुमा।

दिग्दर्शन–संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो कुछ उदाहरण-स्वरूप दिखलाया जाय। नमूना। २. नमूना दिखाने का काम। ३. अभिज्ञता। जानकारी।

दिग्दाह–संज्ञा पु० [सं०] एक दैवी घटना जिसमें सूर्यास्त होने पर भी दिशाएँ लाल और जलती हुई सी दिखलाई पड़ती है। (अशुभ)

दिग्देवता–संज्ञा पु० दे० "दिकपाल"।

दिग्पट–संज्ञा पु० [सं० दिकपट] १. दिशा-रूपी वस्त्र। २. नंगा। दिगंबर।

दिग्पति–संज्ञा पु० दे० "दिकपाल"।

दिग्भ्रम–संज्ञा पु० [सं०] दिशाओं का भ्रम होना। दिशा भूल जाना।

दिग्मंडल–संज्ञा पु० [सं०] दिशाओं का समूह। संपूर्ण दिशाएँ।

दिग्राज–संज्ञा पु० दे० "दिकपाल"।

दिग्वस्त्र–संज्ञा पु० [सं०] १. महादेव। शिव। २. नंगा रहनेवाला जैन यती।

दिग्वास–संज्ञा पु० दे० "दिग्वस्त्र"।

दिग्विजय–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजाओं का अपनी वीरता दिखलाने और महत्त्व स्थापित करने के लिये देश-देशांतरों में

दिग्शूल-संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल"।
दिङ्नाग-संज्ञा पुं० [सं०] १. दिग्गज। २ एक बौद्ध नैयायिक और आचार्य्य, जो मल्लिनाथ के अनुसार कालिदास के समय में हुए थे और उनके बड़े भारी प्रतिद्वंद्वी थे।
दिङ्मंडल-संज्ञा पुं० [सं०] दिशाओं का समूह।
दिच्छित†-संज्ञा पुं०, वि० दे० "दीक्षित"।
दिजराज†-संज्ञा पुं० दे० "द्विजराज"।
दिठवन-संज्ञा स्त्री० दे० "देवोत्थान"।
दिठादिठी-संज्ञा स्त्री० दे० "देखा-देखी"।
दिठाना-क्रि० अ० [हिं० दीठ] बुरी दृष्टि लगना।
क्रि० स० बुरी दृष्टि लगाना।
दिठौना†-संज्ञा पुं० [हिं० दीठ=दृष्टि+औना (प्रत्य०)] काजल की वह बिंदी जो बालकों को नजर से बचाने के लिये लगाते हैं।
दिढ़†-वि० दे० "दृढ़"।
दिढ़ाना†-क्रि० स० [सं० दृढ़+आना (प्रत्य०)] १ पक्का करना। मजबूत करना। २. निश्चित करना।
दिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषि की एक स्त्री जो दक्ष प्रजापति की एक कन्या और दैत्यों की माता थी।
दितिसुत-संज्ञा पुं० [सं०] दैत्य। राक्षस।
दिदार-संज्ञा पुं० दे० "दीदार"।
दिन-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय।
मुहा०—दिन को तारे दिखाई देना=इतना अधिक मानसिक कष्ट पहुँचना कि बुद्धि ठिकाने न रहे। दिन को दिन, रात को रात न जानना या समझना=अपने सुख या विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना। दिन चढ़ना=सूर्योदय होना। दिन छिपना या डूबना=संध्या होना। दिन ढलना=संध्या का समय निकट आना। दिन दहाड़े या दिन दिहाड़े=बिलकुल दिन के समय। दिन दूना रात चौगुना होना या बढ़ना=बहुत जल्दी जल्दी और बहुत अधिक बढ़ना। [illegible] पर होना। दिन निकलना=[illegible]
यौ०—दिन रात=सदा। हर[illegible]
२ उतना समय जितने में पृ[illegible] अपने अक्ष पर घूमती है। [illegible] चौबीस घंटे का समय।
मुहा०—[illegible] या दिन [illegible]
नित्य प्रति। सदा। हर रोज।
३. समय। काल। वक्त।
मुहा०—दिन काटना या पूरे करना=निर्वाह करना। समय बिताना। दिन बिगड़ना=बुरे दिन होना।
४. नियत या उपयुक्त काल। निश्चित या उचित समय।
मुहा०—दिन धरना=दिन निश्चित करना।
५ वह समय जिसके बीच में कोई विशेष बात हो। जैसे—गर्भ के दिन, बुरे दिन।
मुहा०—दिन चढ़ना=किसी स्त्री का गर्भवती होना। दिन फिरना=बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन आना। दिन भरना=बुरे दिन काटना।
क्रि० वि० सदा। हमेशा।
दिनअर-संज्ञा पुं० दे० "दिनकर"।
दिनकंत†-संज्ञा पुं० [सं० दिन+हिं० कंत (कांत)] सूर्य्य।
दिनकर-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।
दिनचर्य्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] दिन भर का काम धंधा। दिन भर का कर्त्तव्य कर्म्म।
दिनदानी†-संज्ञा पुं० [सं० दिन+दानी] प्रति दिन दान करनेवाला।
दिननाथ-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।
दिनपति-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।
दिनमणि-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य। रवि।
दिनमान-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय का मान। दिन का प्रमाण।
दिनराइ-संज्ञा पुं० दे० "दिनराज"।
दिनराज-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।
दिनांध-संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे दिन को न सूझे।
दिनाइ†-संज्ञा पुं० [देश०] दाद नामक रोग।
दिनाई†-संज्ञा स्त्री० [सं० दिन, हिं० आना] कोई ऐसी विषाक्त वस्तु जिसके खाने से थोड़े ही समय में मृत्यु हो जाय।
दिनियर†-संज्ञा पुं० [सं० दिनकर] सूर्य।
दिनी-वि० [illegible] दिन+ई (प्रत्य०)] बहुत दिनों [illegible]। प्राचीन।
दिनेर-[illegible] दिनकर] सूर्य।
दिनेश [illegible]] १ सूर्य। २. दिन के अ[illegible]
दिनौंधी [illegible] दिन+अं[illegible] (प्रत्य०)] [illegible] दिन के [illegible] की [illegible] के कारण

चम दिखाई देता है ।
दिपति†-संज्ञा स्त्री० दे० "दीप्ति"।
दिपना†-क्रि० अ० [सं० दीप्ति] प्रकाशमान होना । चमकना ।
दिपाना-क्रि० अ० दे० "दिपना"।
दिब्ब†-संज्ञा पुं० दे० "दिव्य"।
दिमाक-संज्ञा पुं० दे० "दिमाग"।
दिमाग़-संज्ञा पुं० [अ०] १. सिर का गूदा। मस्तिष्क । भेजा ।
मुहा०—दिमाग खाना या चाटना = व्यर्थ की बातें कहना । बहुत बकवाद करना । दिमाग खाली करना = ऐसा काम करना जिसमें मानसिक शक्ति का बहुत अधिक व्यय हो । मगजपच्ची करना । दिमाग चढ़ना या आसमान पर होना = बहुत अधिक घमंड होना ।
२. मानसिक शक्ति । बुद्धि । समझ ।
मुहा०—दिमाग़ लड़ाना = बहुत अच्छी तरह विचार करना । खूब सोचना ।
३ अभिमान । घमंड । शेखी ।
दिमागदार-वि० [अ० दिमाग + फा० दार (प्रत्य०)] १. जिसकी मानसिक शक्ति बहुत अच्छी हो । बहुत बड़ा समझदार । २. अभिमानी । घमंडी ।
दिमाग़ी-वि० दे० "दिमागदार"।
वि० दिमाग़ संबंधी ।
दिमात†-संज्ञा पुं० वि० [सं० द्विमातृ] दो माताओंवाला । वह जिसकी दो माताएँ हों।
वि०, संज्ञा पुं० [सं० द्विमात्रा] वह जिसमें दो मात्राएँ हों । दो मात्राओंवाला ।
दिमाना†-वि० दे० "दीवाना"।
दियना†-संज्ञा पुं० दे० "दीया"।
क्रि० अ० [सं० दीप्त] चमकना ।
दियरा-संज्ञा पुं० [हिं० दीआ + रा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का पकवान । २. वह लुक जो शिकारी हिरनों को आकर्षित करने के लिये जलाते हैं । ३. दे० "दीया"।
दिया-संज्ञा पुं० दे० "दीया"।
दियारा-संज्ञा पुं० [फा० दयार = प्रदेश] १ नदी के किनारे की वह जमीन जो नदी के हट जाने पर निकल आती है । कछार। खादर । दरियाबरार । २ प्रदेश । प्रांत ।
दियासलाई-संज्ञा स्त्री० दे० "दीयासलाई"।
दिरद†-संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।
दिरम-संज्ञा पुं० [अ० दरहम] १. मिस्र देश का चाँदी का एक सिक्का । दिरहम । २ साढ़े तीन माशे की एक तौल ।
दिरमान†-संज्ञा पुं० [फा० दरमान] चिकित्सा। इलाज ।
दिरमानी-संज्ञा पुं० [फा० दरमान + ई (प्रत्य०)] इलाज करनेवाला । चिकित्सक ।
दिरिस†-संज्ञा पुं० दे० "दृश्य"।
दिल-संज्ञा पुं० [फा०] १. कलेजा । हृदय । २. मन । चित्त । हृदय । जी ।
मुहा०—दिल कड़ा करना = हिम्मत बाँधना । साहस करना । दिल का कँवल खिलना = चित्त प्रसन्न होना । मन में आनंद होना । दिल का गवाही देना = मन में किसी बात की संभावना या औचित्य का निश्चय होना । दिल का बादशाह = १. बहुत बड़ा उदार । २. मनमौजी । लहरी । दिल के फफोले फोड़ना = भली-बुरी सुनाकर अपना जी ठंढा करना । दिल जमना = १. किसी काम में चित्त लगना । ध्यान या जी लगना । २. संतुष्ट होना । जी भरना । दिल ठिकाने होना = मन में शांति, संतोष या धैर्य होना । चित्त स्थिर होना । दिल देना = आशिक होना । प्रेम करना । दिल बुझना = चित्त में किसी प्रकार का उत्साह या उमंग न रह जाना । दिल में फ़रक आना = सद्भाव में अंतर पड़ना । मन मोटाव होना । दिल से = १. जी लगाकर । अच्छी तरह । ध्यान देकर । २ अपने मन से । अपनी इच्छा से । दिल से दूर करना = भुला देना । विस्मरण करना । ध्यान छोड़ देना । दिल ही दिल में = चुपके चुपके । मन ही मन ।
(शेष मुहावरों के लिये देखो "जी" और "कलेजा" के मुहावरे ।)
३. साहस । दम । ४ प्रवृत्ति । इच्छा ।
दिलगीर-वि० [फा०] [संज्ञा दिलगीरी] १. उदास । २ दुःखी ।
दिलचला-वि० [फा० दिल + हिं० चलना] १. साहसी । हिम्मतवाला । दिलेर । २. वीर । बहादुर ।
दिलचस्प-वि० [फा०] [संज्ञा दिलचस्पी] जिसमें जी लगे । मनोहर । चित्ताकर्षक ।
दिलजमई-संज्ञा स्त्री० [फा० दिल + अ० जमअ + ई० (प्रत्य०)] इतमीनान । तसल्ली ।
दिलजला-वि० [फा० दिल + हिं० जलना] जिसके चित्त को बहुत कष्ट पहुँचा
दिलदार-वि० [फा०] [संज्ञा ...] उदार । दाता । २ ...

दिलवर–वि० [फा०] प्यारा। प्रिय।
दिलरवा–संज्ञा पु० [फा०] वह जिससे प्रेम किया जाय। प्यारा।
दिलवाना–क्रि० स० दे० "दिलाना"।
दिलहा–संज्ञा पु० दे० "दिल्ली"।
दिलाना–क्रि० स० [हिं० देना का प्रे०] दूसरे को देने में प्रवृत्त करना। दिलवाना।
दिलावर–वि० [फा०] [संज्ञा दिलावरी] १ शूर। बहादुर। २. उत्साही। साहसी।
दिलासा–संज्ञा पु० [फा० दिल + हिं० आसा] तसल्ली। ढारस। आश्वासन। धैर्य्य।
यौ०—दम दिलासा = १ तसल्ली। धैर्य्य। २. दम-झुत्ता। धोखा। फरेब।
दिली–वि० [फा० दिल + ई० (प्रत्य०)] १. हृदय या दिल संबंधी। हार्दिक। २. अत्यंत घनिष्ट। अभिन्नहृदय। जिगरी।
दिलीप–संज्ञा पु० [सं०] १. इक्ष्वाकुवंशी एक राजा जो वाल्मीकि के अनुसार राजा सगर के परपोते, भगीरथ के पिता और रघु के परदादा थे, किन्तु रघुवंश के अनुसार इन्हीं राजा दिलीप की स्त्री सुदक्षिणा के गर्भ से राजा रघु उत्पन्न हुए थे।
दिलेर–वि० [फा०] [संज्ञा दिलेरी] १. बहादुर। शूर। वीर। २ साहसी।
दिल्लगी–संज्ञा स्त्री० [फा० दिल + हिं० लगना] १. दिल लगाने की क्रिया या भाव। २. केवल चित्त-विनोद या हँसने-हँसाने की बात। ठट्ठा। ठठोली। मजाक। मखौल।
मुहा०—किसी बात की दिल्लगी उड़ाना = (किसी बात को) अमान्य और मिथ्या ठहराने के लिये (उसे) हँसी में उड़ा देना। उपहास करना।
दिल्लगीबाज़–संज्ञा पुं० [हिं० दिल्लगी + फा० बाज़] हँसी दिल्लगी करनेवाला। मसखरा।
दिल्ला–संज्ञा पु० [देश०] किवाड़ के पल्ले में लकड़ी का वह चौखटा जो शोभा के लिये बना या जड़ दिया जाता है। आईना।
दिव–संज्ञा पु०[सं०] १. स्वर्ग। २ आकाश। ३ वन। ४. दिन।
दिवराज संज्ञा पु० [सं०] इंद्र।
दिवस–संज्ञा पु० [सं०] दिन। रोज।
दिवस अंध–संज्ञा पु० दे० "दिवांध"।
दिवस्पति–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।
दिवांध–वि० [सं०] जिससे दिन में न सूझे। जिसे दिनौंधी हो।
पु० १. दिनौंधी का रोग। २. उल्लू।

दिवा–संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन। दिवस। २ बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। मालिनी।
दिवाकर–संज्ञा पु० [सं०] सूर्य।
दिवाना†–संज्ञा पु० दे० "दीवाना"।
*† क्रि० स० दे० "दिलाना"।
दिवाभिसारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो दिन के समय अपने प्रेमी से मिलने के लिये संकेत-स्थान में जाय।
दिवाल–वि० [हिं० देना = वाल (प्रत्य०)] जो देता हो। देनेवाला।
† संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।
दिवाला–संज्ञा पु० [हिं० दिया + बालना = जलाना] १ वह अवस्था जिसमें मनुष्य के पास अपना ऋण चुकाने के लिये कुछ न रह जाय। टाट उलटना।
मुहा०—दिवाला निकलना = दिवाला होना। दिवाला मारना = दिवालिया बन जाना। ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाना।
२ किसी पदार्थ का बिलकुल न रह जाना।
दिवालिया–वि०[हिं० दिवाला + इया (प्रत्य०)] जिसके पास ऋण चुकाने के लिये कुछ न बच गया हो।
दिवाली–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।
दिवैया–वि० [हिं० देना + वैया (प्रत्य०)] देनेवाला। जो देता हो।
दिवोदास–संज्ञा पु० चंद्रवंशी राजा भीमरथ के एक पुत्र जो काशी के राजा थे और धन्वंतरि के अवतार माने जाते हैं।
दिवोल्का–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिन के समय आकाश से गिरनेवाला पिंड या उल्का।
दिवौका–संज्ञा पु० [सं० दिवौकस्] १. वह जो स्वर्ग में रहता हो। २. देवता।
दिव्य–वि० [सं०] १. स्वर्ग से संबंध रखनेवाला। स्वर्गीय। २. आकाश से संबंध रखनेवाला। अलौकिक। ३. प्रकाशमान। चमकीला। ४. खूब साफ या सुंदर।
संज्ञा पुं० [सं०] १. यव। जौ। २. तत्त्ववेत्ता। ३. तीन प्रकार के केतुओं में से एक। ४. आकाश में होनेवाला एक प्रकार का उत्पात। ५. तीन प्रकार के नायकों में से एक। वह नायक जो स्वर्गीय या अलौकिक हो। जैसे—इंद्र, राम। ६. व्यवहार या न्यायालय में प्राचीन काल की एक प्रकार की परीक्षा जिससे किसी मनुष्य का अपराधी या निरपराध होना सिद्ध होता था। ये

ेताएँ नौ प्रकार की होती थीं—घट, ग्न, उदक, विष, कोष, तंडुल, तप्तमाषक, ठ तथा धर्मज। ७. शपथ, विशेषतः ताओं आदि की शपथ। सौगंध। कसम।

यचक्षु–संज्ञा पुं० [सं० दिव्यचक्षुस्] १. ानचक्षु। २. अंधा। ३. चश्मा। ऐनक।

यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिव्य का व। २. देवभाव। ३. सुंदरता। तमता।

यदृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अलौकिक ष्टि जिससे गुप्त, परोक्ष अथवा अंतरिक्ष दार्थ दिखाई दें। २. ज्ञान दृष्टि।

यरथ–संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का मान।

यसूरि–संज्ञा पुं० [सं०] रामानुज संप्र- ाय के बारह आचार्य जिनके नाम ये हैं- सार, भूत, महत, भक्तिसार, शठारि, लशेखर, विष्णुचित्त, भक्तांघ्रिरेणु, मुनि- ाह, चतुष्कविंद्र, रामानुज और गोदा वा या मधुकर कवि।

व्यांगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देववधू। २. अप्सरा।

दव्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक। स्वर्गीय या अलौकिक नायिका। जैसे—पार्वती, सीता आदि।

दिव्यादिव्य–संज्ञा पुं० [सं०] तीन प्रकार के नायकों में से एक। वह मनुष्य या इहलौकिक नायक जिसमें देवताओं के भी गुण हों। जैसे—नल, अभिमन्यु।

दिव्यादिव्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक। वह इहलौकिक नायिका जिसमें स्वर्गीय स्त्रियों के भी गुण हों। जैसे—दमयंती, उर्वशी आदि।

दिव्यास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं का दिया हुआ हथियार। २. मंत्रों द्वारा चलनेवाला हथियार।

दिव्योदक–संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा का जल। पानी।

दिश–संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा। दिक्।

दिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार। ओर। तरफ। २. क्षितिज वृत्त के किए हुए चार कल्पित विभागों में से किसी एक विभाग की ओर का विस्तार। ये चार विभाग पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण कहलाते हैं। प्रत्येक दो दिशाओं के बीच में एक कोण भी होता है। इनके सिवा एक ऊर्ध्व या सिर के ऊपर की ओर दूसरी अधः या पैर के नीचे की ओर भी मानी जाती है। ३. दस की संख्या।

दिशाभ्रम–संज्ञा पुं० [सं०] दिशाओं के संबंध में भ्रम होना। दिक्भ्रम।

दिशाशूल–संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल"।

दिशि–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

दिष्ट–संज्ञा पुं० [सं०] १. भाग्य। २. उपदेश। ३. दारुहलदी। ४. काल।

दिष्टबंधक–संज्ञा पुं० [सं० दृष्टि+बंधक] वह रेहन जिसमें चीज पर रुपए देनेवाले का कोई कब्जा न हो, उसे सिर्फ सूद मिलता रहे।

दिष्टि–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।

दिसंतर†–संज्ञा पुं० [सं० देशांतर] देशा- तर। विदेश। परदेश।

क्रि० वि० बहुत दूर तक।

दिस†–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

दिसना†–क्रि० अ० दे० "दिखना"।

दिसा–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

†संज्ञा स्त्री० [सं० दिशा=ओर] मल-त्याग। पैखाना। झाड़ा फिरना।

दिसादाह†–संज्ञा पुं० दे० "दिग्दाह"।

दिसावर–संज्ञा पुं० [सं० देशांतर] दूसरा देश। परदेस। विदेश।

दिसावरी–वि० [हिं० दिसावर+ई (प्रत्य०)] विदेश से आया हुआ। बाहरी। (माल)

दिसि†–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

दिसिटि†–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।

दिसिदुरद†–संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

दिसिनायक†–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिसिप–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिसिराज–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिसैया†–वि० [हिं० दिसना+ऐया (प्रत्य०)] १ देखनेवाला। २ दिखानेवाला।

दिस्टी–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।

दिस्टीबंध–संज्ञा पुं० [सं० दृष्टिबंधन] नजर- बंद। जादू। इंद्रजाल।

दिस्ता–संज्ञा पुं० दे० "दस्ता"।

दिहंदा–वि० [फा०] दाता।

दिहाड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० ...
१. दुर्गत। बुरी हाल

दिहात–संज्ञा स्त्री० दे०

दीश्रा-संज्ञा पुं० दे० "दीया"।
दीक्षक-संज्ञा पुं० [सं०] १. दीक्षा देनेवाला गुरु। २. शिक्षक।
दीक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दीक्षित] दीक्षा देने की क्रिया।
दीक्षांत-संज्ञा पुं० [सं०] वह अवभृत यज्ञ जो किसी यज्ञ के समापनांत में उसकी त्रुटि आदि के दोष की शांति के लिये हो।
दीक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सोमयागादि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान। यजन। २. गुरु या आचार्य्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश। मंत्र की शिक्षा जो गुरु दे और शिष्य ग्रहण करे। ३. उपनयन-संस्कार जिसमें आचार्य्य गायत्री मंत्र का उपदेश देता है। ४. वह मंत्र जिसका उपदेश गुरु करे। गुरुमंत्र।
दीक्षागुरु-संज्ञा पुं० [सं०] मंत्रोपदेष्टा गुरु।
दीक्षित-वि० [सं०] १. जिसने सोमयागादि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान किया हो। २. जिसने आचार्य से दीक्षा या गुरु से मंत्र लिया हो।
संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद।
दीखना-क्रि० अ० [हिं० देखना] दिखाई देना। देखने में आना। दृष्टिगोचर होना।
दीघी-संज्ञा स्त्री० [सं० दीर्घिका] बावली। पोखरा। तालाब।
दीच्छा -संज्ञा स्त्री० दे० "दीक्षा"।
दीठ-संज्ञा स्त्री० [सं० दृष्टि] १. देखने की वृत्ति या शक्ति। दृष्टि। २. टक। दृक्पात। नज़र। निगाह।
(मुहावरे के लिये दे० "दृष्टि" के मुहावरे।)
३. आँख की ज्योति का प्रसार जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का बोध होता है। दृक्पथ। ४. अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि जिसका प्रभाव बुरा पड़े। नज़र।
मुहा०—दीठ उतारना या झाड़ना = मंत्र के द्वारा बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करना। दीठ खा जाना = किसी की बुरी दृष्टि के सामने पड़ जाना। टोक में आना। दीठ जलाना = नज़र उतारने के लिये राई-नोन या कपड़ा जलाना।
५. देखने के लिये खुली हुई आँख। ६. देख-भाल। देख-रेख। निगरानी। ७. परख। पहचान। तमीज़। ८. कृपा-दृष्टि। मिहरबानी की नज़र। ९. आशा की दृष्टि। उम्मीद। १०. विचार। संकल्प।
दीठबंदी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दीठबंद] इंद्रजाल की ऐसी माया जिससे लोगों को और का और दिखाई दे। नज़रबंदी। जादू।
दीठवंत-वि० [सं० दृष्टि+वंत] जिसे दिखाई दे। सुझाखा।
दीदा-संज्ञा पुं० [फा० दीदः] १. दृष्टि। नज़र। २. आँख। नेत्र।
मुहा०—दीदा लगना = जी लगना। ध्यान जमना। दीदे का पानी ढल जाना = निर्लज्ज हो जाना। दीदे निकालना = क्रोध की दृष्टि से देखना। दीदे फाड़कर देखना = अच्छी तरह आँख खोलकर देखना।
३. अनुचित साहस। ढिठाई।
दीदार-संज्ञा पुं० [फा०] दर्शन। देखा-देखी।
दीदी-संज्ञा स्त्री० [पुं० हिं० दादा = बड़ा भाई] बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द।
दीधिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य, चंद्रमा आदि की किरण। २. उँगली।
दीन-वि० [सं०] १. जिसकी दशा हीन हो। दरिद्र। गरीब। २. दुःखित। संतप्त। कातर। ३. जिसका मन मरा हुआ हो। उदास। खिन्न। ४. दुःख या भय से अधीनता प्रकट करनेवाला। नम्र। विनीत।
संज्ञा पुं० [अ०] मत। मज़हब।
दीनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दरिद्रता। गरीबी। २. नम्रता। विनीत भाव।
दीनताई-संज्ञा स्त्री० दे० "दीनता"।
दीनत्व-संज्ञा पुं० [सं०] दीनता।
दीनदयालु-वि० [सं०] दीनों पर दया करनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर का एक नाम।
दीनदार-वि० [अ० दीन + फा० दार] [संज्ञा दीनदारी] अपने धर्म्म पर विश्वास रखनेवाला। धार्मिक।
दीन-दुनिया-संज्ञा स्त्री० [अ० दीन + दुनिया] यह लोक और परलोक।
दीनबंधु-संज्ञा पुं० [सं०] १. दुखियों का सहायक। २. ईश्वर का एक नाम।
दीनानाथ-संज्ञा पुं० [सं० दीन + नाथ] १. दीनों का स्वामी या रक्षक। २. ईश्वर।
दीनार-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ण-भूषण। सोने का गहना। २. निष्क की तौल। ३. स्वर्णमुद्रा। मोहर।
दीप-संज्ञा पुं० [सं०] १. दीया। चिराग़।

२ दस मात्राओं का एक छंद।
संज्ञा पु० दे० "द्वीप"।

दीपक-संज्ञा पु० [सं०] १ दीया। चिराग। यौ०—कुलदीपक=वंश को उजाला करनेवाला। २ एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत (जो वर्णन का विषय हो) और अप्रस्तुत (जो वर्णन का उपस्थित विषय न हो और उपमान आदि हो) का एक ही धर्म्म कहा जाता है अथवा बहुत सी क्रियाओं का एक ही कारक होता है। ३ संगीत में छः रागों में से दूसरा राग। ४ केसर। कुंकुम। वि० [सं०] [स्त्री० दीपिका] १ प्रकाश करनेवाला। उजाला फैलानेवाला। २ पाचन की अग्नि को तेज करनेवाला। ३ शरीर में वेग या उमंग लानेवाला। उत्तेजक।

दीपकमाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वर्ण वृत्त। २ दीपक अलंकार का एक भेद, जिसमें कई दीपक एक साथ आते हैं।

दीपकवृक्ष-संज्ञा पु० [सं०] १. वह बड़ी दीवट जिसमें दीए रखने के लिये कई शाखाएँ हों। २ झाड़।

दीपकावृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] दीपक अलंकार का एक भेद।

दीपत*-संज्ञा स्त्री० [सं० दीप्ति] १ कांति। चमक। प्रभा। २ शोभा। ३ कीर्ति।

दीपदान-संज्ञा पु० [सं०] १ किसी देवता के सामने दीपक जलाने का काम, जो पूजन का एक अंग समझा जाता है। २. एक कृत्य जिसमें मरणासन्न व्यक्ति के हाथ से आटे के जलते हुए दीए का संकल्प कराया जाता है।

दीपध्वज-संज्ञा पु० [सं०] काजल।

दीपन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० दीपनीय, दीपित, दीप्त, दीप्य] १ प्रकाश के लिये जलाने का काम। प्रकाशन। २ भूख को उभारना। ३. आवेग उत्पन्न करना। उत्तेजन। वि० दीपन करनेवाला। जठराग्नि-वर्द्धक। संज्ञा पु० मंत्र के उन दस संस्कारों में से एक जिनके बिना मंत्र सिद्ध नहीं होता।

दीपना*-क्रि० अ० [सं० दीपन] प्रकाशित होना। चमकना। जगमगाना। क्रि० स० प्रकाशित करना। चमकाना।

दीपमाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जलते हुए दीपों की पंक्ति। २ दीपदान या आरती के लिये जलाई हुई बत्तियों का समूह।

दीपमालिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीपदान, आरती या शोभा के लिये दीयों की पंक्ति। २ दीवाली।

दीपमाली-संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।

दीपशिखा-संज्ञा स्त्री० [सं०] दीये की टेम। चिराग की लौ। प्रदीपज्वाला।

दीपावलि-संज्ञा स्त्री० दे० "दीपमालिका"।

दीपिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा दीया। वि० स्त्री० उजाला फैलानेवाली।

दीपित-वि० [सं०] १ प्रकाशित। प्रज्वलित। २ चमकता या जगमगाता हुआ। ३ उत्तेजित।

दीपोत्सव-संज्ञा पु० [सं०] दीवाली।

दीप्त-वि० [सं०] १ प्रज्वलित। जलता हुआ। २ जगमगाता हुआ। चमकीला।

दीप्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रकाश। उजाला। रोशनी। २ प्रभा। आभा। चमक। द्युति। ३ कांति। शोभा। छवि। ४ ज्ञान का प्रकाश।

दीप्तिमान्-वि० [सं० दीप्तिमत्] [स्त्री० दीप्तिमती] १ दीप्तियुक्त। चमकता हुआ। २ कांतियुक्त। शोभायुक्त।

दीप्य-वि० [सं०] १ जो जलाया जाने को हो। २ जो जलाने योग्य हो।

दीप्यमान-वि० [सं०] चमकता हुआ।

दीबो†-संज्ञा पु० दे० "देना"।

दीमक-संज्ञा स्त्री० [फा०] चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा। यह लकड़ी, कागज आदि में लगकर उसे खोखला और नष्ट कर देता है। वल्मीक।

दीयट-संज्ञा पु० दे० "दीवट"।

दीया-संज्ञा पु० [सं० दीपक] १ उजाले के लिये जलाई हुई बत्ती। चिराग। दीपक। मुहा०—दीया ठंढा करना=दीया बुझाना। (किसी के घर का) दीया ठंढा होना=किसी के मरने से कुल में अंधकार छा जाना। दीया बढ़ाना=दीया बुझाना। दीया बत्ती करना=रोशनी का सामान करना। चिराग जलाना। दीया लेकर ढूँढ़ना=चारों ओर हैरान होकर ढूँढ़ना। बड़ी छान-बीन से खोजना। २ [स्त्री० अल्पा० दियली, दियरी] बत्ती जलाने का छोटा कसोरा।

दीयासलाई-संज्ञा स्त्री० [लकड़ी की छोटी एक सिरा गंधक

कारण रगड़ने से जल उठता है।
दीरघ—वि० दे० "दीर्घ"।
दीर्घ—वि० [सं०] १. आयत। लंबा। २. बड़ा। (देश और काल दोनों के लिये) संज्ञा पु० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण। ह्रस्व का उलटा। जैसे—आ, ई, ऊ।
दीर्घकाय—वि० [सं०] बड़े डील डौल का।
दीर्घजीवी—वि० [सं० दीर्घजीविन्] जो बहुत दिनों तक जीए। बहुत काल तक जीनेवाला।
दीर्घतमा—संज्ञा पु० [सं० दीर्घतमस्] एक जन्मांध ऋषि जो उतथ्य के पुत्र थे। इन्हीं ने अपनी स्त्री के अनुचित व्यवहार से अप्रसन्न होकर यह मर्यादा बाँधी थी कि कोई स्त्री एक के बाद दूसरा पति न कर सकेगी।
दीर्घदर्शिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] परिणाम आदि का विचार करनेवाली बुद्धि। दूरदर्शिता।
दीर्घदर्शी—वि० [सं० दीर्घदर्शिन्] दूर तक की बात सोचनेवाला। दूरदर्शी।
दीर्घदृष्टि—वि० दे० "दीर्घदर्शी"।
दीर्घनिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मौत।
दीर्घ निःश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] लंबी साँस जो दुःख के आवेग के कारण ली जाती है।
दीर्घबाहु—वि० [सं०] जिसकी भुजाएँ लंबी हों।
दीर्घलोचन—वि० [सं०] बड़ी आँखोंवाला।
दीर्घश्रुत—वि० [सं०] १. जो दूर तक सुनाई पड़े। २. जिसका नाम दूर तक विख्यात हो।
दीर्घसूत्र—वि० दे० "दीर्घसूत्री"।
दीर्घसूत्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रत्येक कार्य में विलंब करने का स्वभाव।
दीर्घसूत्री—वि० [सं० दीर्घसूत्रिन्] हर एक काम में जरूरत से ज्यादा देर लगानेवाला।
दीर्घस्वर—संज्ञा पु० [सं०] द्विमात्रिक स्वर।
दीर्घायु—वि० [सं०] बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घजीवी। चिरंजीवी।
दीर्घिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बावली। छोटा जलाशय। छोटा तालाब।
दीवट—संज्ञा स्त्री० [सं० दीपस्थ] पीतल, लकड़ी आदि का आधार जिस पर दीया रखा जाता है। दीपाधार। चिरागदान।
दीवा—संज्ञा पु० [सं० दीपक] दीया।
दीवान—संज्ञा पु० [अ०] १. राजा या बादशाह के बैठने की जगह। राजसभा। कचहरी। २. राज्य का प्रबंध करनेवाला। मंत्री। वजीर। प्रधान। ३. गजलों का संग्रह।
दीवानआम—संज्ञा पुं० [अ०] १. ऐसा दरबार जिसमें राजा या बादशाह से सब लोग मिल सकते हों। २. वह स्थान जहाँ आम दरबार लगता हो।
दीवानखाना—संज्ञा पु० [फा०] घर का वह बाहरी हिस्सा जहाँ बड़े आदमी बैठते और सब लोगों से मिलते हैं। बैठक।
दीवानखास—संज्ञा पु० [फा० + अ०] १. ऐसी सभा जिसमें राजा या बादशाह मंत्रियों तथा चुने हुए प्रधान लोगों के साथ बैठता है। खास दरबार। २. वह जगह जहाँ खास दरबार होता हो।
दीवाना—वि० [फा०] [स्त्री० दीवानी] पागल।
दीवानापन—संज्ञा पु० [फा० दीवाना + पन (प्रत्य०)] पागलपन। सिड़ीपन। विक्षिप्तता।
दीवानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दीवान का पद। २ वह न्यायालय जो सम्पत्ति आदि संबंधी स्वत्वों का निर्णय करे।
दीवार—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि को नीचे ऊपर रखकर उठाया हुआ परदा जिससे किसी स्थान को घेरकर मकान आदि बनाते हैं। भीत। २. किसी वस्तु का घेरा जो ऊपर उठा हो।
दीवारगीर—संज्ञा पु० [फा०] दीया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।
दीवाल—संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।
दीवाली—संज्ञा स्त्री० [सं० दीपावली] कार्त्तिक की अमावास्या को होनेवाला एक उत्सव जिसमें संध्या के समय घर में भीतर बाहर बहुत से दीपक जलाकर पंक्तियों में रखे जाते हैं और लक्ष्मी का पूजन होता है। इस दिन लोग जूआ भी खेलते हैं।
दीसना—क्रि० अ० [सं० दृश = देखना] दिखाई पड़ना। दृष्टिगोचर होना।
दीह —वि० [सं० दीर्घ] लंबा। बड़ा।
दुंद—संज्ञा पु० [सं० द्वंद्व] १. दो मनुष्यों के बीच में होनेवाला युद्ध या झगड़ा। २. उत्पात। उपद्रव। ३. जोड़ा। युग्म। संज्ञा पु० [सं० दुंदुभि] नगाड़ा।
दुंदुभि—संज्ञा पु० [सं०] १. वरुण। २. विष। ३ एक राक्षस जिसे बालि ने मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था। संज्ञा स्त्री० [सं०] नगाड़ा। धौंसा।

.भी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुंदुभि"।
दुंदुह०–संज्ञा पुं० [सं० दुंडुभ] पानी का ांप। डेंड़हा।
वा–संज्ञा पुं० [फा० दुंबाल] एक प्रकार । मेढ़ा, जिसकी दुम चक्की के पाट की रह गोल और भारी होती है।
कंत०–संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।
ख–संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसी अवस्था ससे छुटकारा पाने की इच्छा प्राणियों स्वाभाविक हो। सुख का विपरीत ाव। तक्लीफ़। कष्ट। क्लेश। (सांख्य में :ख तीन प्रकार के माने गए हैं—आध्या- त्मक, आधिभौतिक और आधिदैविक।)
हा०—दुःख उठाना, पाना या भोगना =कष्ट सहना। तक्लीफ़ सहना। दुःख ना या पहुँचाना=कष्ट पहुँचाना। दुःख टाना=सहानुभूति करना। कष्ट या संकट के मय साथ देना। दुःख भरना=कष्ट या कट के दिन काटना।
.. संकट। आपत्ति। विपत्ति। ३. मान- सेक कष्ट। खेद। रंज। ४. पीड़ा। व्यथा। र्द। ५. व्याधि। रोग। बीमारी।
:खद, दु:खदाता–वि० [सं० दुःखदातृ] :ख पहुँचानेवाला।
खदायक–वि० [सं०] [स्त्री० दुःखदायिका] :ख या कष्ट पहुँचानेवाला।
:खदायी–वि० दे० "दुःखदायक"।
:खप्रद–संज्ञा पुं० [सं०] दुःखद।
:खमय–वि० [सं०] क्लेश से भरा हुआ।
:खांत–वि० [सं०] १. जिसके अंत में दुःख हो। २. जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो। जैसे, दुःखांत नाटक।
संज्ञा पुं० १. दुःख का अंत। क्लेश की समाप्ति। २. दुःख की पराकाष्ठा।

संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के १०० लड़कों में से एक, जो दुर्योधन का अत्यंत प्रेमपात्र और मंत्री था। यह अत्यंत क्रूर स्वभाव का था। पांडव लोग जब जूए में हार गए थे, तब यही द्रौपदी को पकड़कर सभास्थल में लाया था।
दुःशील–वि० [सं०] बुरे स्वभाव का।
दुःशीलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुष्टता।
दुःसंधान–संज्ञा पुं० [सं०] केशवदास के अनुसार काव्य में एक रस, जो उस स्थल पर होता है जहाँ एक तो अनुकूल होता है और दूसरा प्रतिकूल; एक तो मेल की घात करता है, दूसरा बिगाड़ की।
दुःसह–वि० [सं०] जिसका सहन करना कठिन हो। जो कष्ट से सहा जाय।
दुःसाध्य–वि० [सं०] १. जिसका करना कठिन हो। २. जिसका उपाय कठिन हो।
दुःसाहस–संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसा साहस जिसका परिणाम कुछ न हो, या बुरा हो। व्यर्थ का साहस। २. ऐसी बात करने की हिम्मत जो अच्छी न समझी जाती हो या हो न सकती हो। अनुचित साहस। ढिठाई। धृष्टता।
दुःसाहसी–वि० [सं०] दुःसाहस करनेवाला।
दुःस्वप्न–संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा सपना जिसका फल बुरा माना जाता हो।
दुःस्वभाव–संज्ञा पुं० [सं०] बुरा स्वभाव। दुःशीलता। बदमिज़ाजी।
वि० दुःशील। दुष्ट स्वभाव का।
दु–वि० [हिं० दो] "दो" शब्द का संक्षिप्त रूप जो समास बनाने के काम में आता है। जैसे—दुचित्ता, दुचित्ता।
दुअन–संज्ञा पुं० दे० "दुवन"।
दुआ–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. प्रार्थना

दुखारा, दुखारी-वि० [हिं० दुख + आर (प्रत्य०)] दुखी। पीड़ित।
दुखारो॰-वि० दे० "दुखारा"।
दुखित॰-वि० दे० "दुःखित"।
दुखिया-वि० [हिं० दुख + इया (प्रत्य०)] जिसे किसी प्रकार का दुःख या कष्ट हो। दुखी।
दुखियारा-वि० [हिं० दुखिया] [स्त्री० दुखियारी] १. जिसे किसी बात का दुःख हो। दुखिया। २ रोगी।
दुखी-वि० [सं० दुःखित, दुःखी] १. जिसे दुःख हो। जो कष्ट या दुःख में हो। २. जिसके चित्त में खेद उत्पन्न हुआ हो। जिसके दिल में रंज हो। ३. रोगी। बीमार।
दुखीला†-वि० हिं० [दुख + ईला (प्रत्य०)] दुःख अनुभव करनेवाला। दुःखपूर्ण।
दुखौहाँ॰-वि० [हिं० दुख + औहाँ] [स्त्री० दुखौहीं] दुःखदायी। दुःख देनेवाला।
दुगई-संज्ञा स्त्री० [देश०] ओसारा। बरामदा।
दुगदुगी-संज्ञा स्त्री० [अनु० धुकधुक] १. वह गड्ढा जो छाती के ऊपर बीचोबीच होता है। धुकधुकी। २. गले में पहनने का एक गहना।
दुगना-वि० [सं० द्विगुण] [स्त्री० दुगनी] किसी वस्तु से उतना और अधिक, जितनी कि वह हो। द्विगुण। दूना।
दुगड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० दो + गाड़ = गड्ढा] १. दुनाली बंदूक। २ दोहरी गोली।
दुगासरा-संज्ञा पुं० [सं० दुर्ग + आश्रय] किसी दुर्ग के नीचे या चारों ओर बसा हुआ गाँव।
दुगुण॰-वि० दे० "द्विगुण"।
दुगुन॰†-वि० दे० "दुगना"।
दुग्ग॰-संज्ञा पुं० दे० "दुर्ग"।
दुग्ध-वि० [सं०] १. दुहा हुआ। २. भरा हुआ।
संज्ञा पुं० दूध। पय।
दुग्धी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुधिया नाम की घास। दुद्धी।
वि० [सं० दुग्धिन्] दूधवाला। जिसमें दूध हो।
दुघड़िया-वि० [हिं० दो + घड़ी] दो घड़ी का। जैसे—दुघड़िया मुहूर्त।

दुघड़िया मुहूर्त-संज्ञा पुं० [हिं० दोघड़ी + सं० मुहूर्त] दो दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त। द्विघटिका मुहूर्त। (ऐसा मुहूर्त बहुत जल्दी या आवश्यकता के समय निकाला जाता है; और इसमें वार आदि का विचार नहीं होता।)
दुघरी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + घड़ी] दुघड़िया मुहूर्त।
दुचंद-वि० [फा० दोचंद] दूना। दुगना।
दुचित॰-वि० [हिं० दो + चित्त] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। अस्थिर चित्त। २ चिंतित। फ़िक्रमंद।
दुचितई॰-संज्ञा स्त्री० [हिं० दुचित] १. चित्त की अस्थिरता। दुबधा। २. खटका। आशंका। चिंता।
दुचिताई॰-संज्ञा स्त्री० [हिं० दुचित] १. चित्त की अस्थिरता। दुबधा। संदेह। २ खटका। चिंता। आशंका।
दुचित्ता-वि० [हिं० दो + चित्त] [स्त्री० दुचित्ती] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। जो दुबधे में हो। अस्थिर-चित्त। २. संदेह में पड़ा हुआ। ३. जिसके चित्त में खटका हो। चिंतित।
दुज॰-संज्ञा पुं० दे० "द्विज"।
दुजन्मा-संज्ञा पुं० दे० "द्विजन्मा"।
दुजपति॰-संज्ञा पुं० दे० "द्विजपति"।
दुजानू-क्रि० वि० [हिं० दो + फा० ज़ानू] दोनों घुटनों के बल। (बैठना)
दुजीह॰-संज्ञा पुं० दे० "द्विजिह्व"।
दुजेश-संज्ञा पुं० दे० "द्विजेश"।
दुटूक-वि० [हिं० दो + टूक] दो टुकड़ों में किया हुआ। खंडित।
मुहा०—दुटूक बात = थोड़े में कही हुई साफ बात। बिना घुमाव फिराव की स्पष्ट बात। खरी बात।
दुत्-अव्य० [अनु०] १. एक शब्द जो तिरस्कारपूर्वक हटाने के समय बोला जाता है। दूर हो। २ घृणा या तिरस्कारसूचक शब्द।
दुतकार-संज्ञा स्त्री० [अनु० दुत + कार] वचन द्वारा किया हुआ अपमान। तिरस्कार। धिक्कार। फटकार।
दुतकारना-क्रि० स० [हिं० दुतकार] १. दुत् दुत् शब्द करके किसी को अपने पास से हटाना। २. तिरस्कृत करना। धिकारना।
दुतर्फा-वि० [हिं० दो + अ० तरफ] [स्त्री०

दुआल-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चमड़ा । २ चमड़े का तसमा । ३ रिकाब का तसमा ।
दुआली-संज्ञा स्त्री० [फा० दुआल = तसमा] चमड़े का वह तसमा जिससे खरादे और बढ़ई खराद घुमाते हैं ।
दुइ-वि० दे० "दो" ।
दुइज -संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीय] पाख की दूसरी तिथि । द्वितीया । दूज ।
संज्ञा पु० [सं० द्वित] दूज का चाँद । द्वितीया का चन्द्रमा ।
दुऊ -वि० दे० "दोनों" ।
दुकड़ा-संज्ञा पु० [सं० द्विक + डा (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकड़ी] १. वह वस्तु जो एक साथ या एक में लगी हुई दो दो हो । जोड़ा । २ वह जिसमें कोई वस्तु दो दो हो या जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो । ३ एक पैसे का चौथाई भाग । दो दमड़ी । छदाम ।
दुकड़ी-वि० स्त्री० [हिं० दुकड़ा] जिसमें कोई वस्तु दो दो हो ।
संज्ञा स्त्री० १ चारपाई की वह बुनावट जिसमें दो दो बाध एक साथ बुने जाते हैं । २. दो बूटियोंवाला ताश का पत्ता । दुक्की । ३ दो घोड़ों की बग्घी ।
दुकान-संज्ञा स्त्री० [फा०] वह स्थान जहाँ बेचने के लिये चीजें रखी हों और जहाँ ग्राहक जाकर उन्हें खरीदते हों । सौदा बिकने का स्थान । हट्ट । हट्टी ।
मुहा०—दुकान बढ़ाना = दुकान बंद करना । दुकान लगाना = १. दुकान का असबाब फैला-कर यथास्थान बिक्री के लिये रखना । २. बहुत सी चीजों को इधर उधर फैलाकर रख देना ।
दुकानदार-संज्ञा पु० [फा०] १. दुकान पर बैठकर सौदा बेचनेवाला । दुकानवाला । २ वह जिसने अपनी आय के लिये कोई ढोंग रच रखा हो ।
दुकानदारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दुकान या बिक्री बट्टे का काम । दुकान पर माल बेचने का काम । २ ढोंग रचकर रुपया पैदा करने का काम ।
दुकाल-संज्ञा पु० [सं० दुष्काल] अन्न कष्ट का समय । अकाल । दुर्भिक्ष ।
दुकूल-संज्ञा पु० [सं०] १ सन या तीसी के रेशे का बना कपड़ा । क्षौम वस्त्र । २. महीन कपड़ा । बारीक कपड़ा । ३ वस्त्र । कपड़ा ।

दुकेला-[हिं० दुका + एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकेली] जिसके साथ कोई दूसरा भी हो । जो अकेला न हो ।
यौ०—अकेला दुकेला = जिसके साथ कोई न हो या एक ही दो आदमी हों ।
दुकेले-क्रि० वि० [हिं० दुकेला] किसी के साथ । दूसरे आदमी को साथ लिए हुए ।
दुक्कड़-संज्ञा पु० [हिं० दो + कूँड] १ तबले की तरह का एक बाजा जो शहनाई के साथ बजाया जाता है । २ एक में जुड़ी हुई या साथ पटी हुई दो नावों का जोड़ा ।
दुक्का-वि० [सं० द्विक] [स्त्री० दुक्की] १ जो एक साथ दो हो । जिसके साथ कोई दूसरा भी हो ।
यौ०—इक्का दुक्का = अकेला दुकेला ।
२ जो जोड़े में हो । जो एक साथ दो हों । (वस्तु)
संज्ञा पु० दे० "दुक्की" ।
दुक्की-संज्ञा स्त्री० [हिं० दुक्का] ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ बनी हों ।
दुखंडा-वि० [हिं० दो + खंड] जिसमें दो खंड हों । दो मरातिब का । दो तहा ।
दुखंत-संज्ञा पु० दे० "दुष्यंत" ।
दुख-संज्ञा पु० दे० "दुःख" ।
दुखड़ा-संज्ञा पु० [हिं० दुःख + ड़ा (प्रत्य०)] १ वह कथा जिसमें किसी के कष्ट या शोक का वर्णन हो । तकलीफ का हाल ।
मुहा०—दुखड़ा रोना = अपने दुःख का वृत्तान्त कहना ।
२ कष्ट । विपत्ति । मुसीबत ।
दुखदाई, दुखदानि -वि० दे० "दुःखदायी" ।
दुखदुंद-संज्ञा पु० [सं० दुःखद्वंद्व] दुःख का उपद्रव । दुःख और आपत्ति ।
दुखना-क्रि० अ० [सं० दुःख] (किसी अंग का) पीड़ित होना । दर्द करना । पीड़ायुक्त होना ।
दुखरा-संज्ञा पु० दे० "दुखड़ा" ।
दुखवना-क्रि० स० दे० "दुखाना" ।
दुखहाया-वि० दे० "दुःखित" ।
दुखाना-क्रि० स० [सं० दुःख] १. पीड़ा देना । कष्ट पहुँचाना । व्यथित करना ।
मुहा०—जी दुखाना = मानसिक कष्ट पहुँचाना । मन में दुःख उत्पन्न करना ।
२ किसी के मर्मस्थान या पके घाव इत्यादि को छू देना, जिससे उसमें पीड़ा हो ।

दुखारा, दुखारी–वि० [हिं० दुख+आर (प्रत्य०)] दुखी। पीड़ित।

दुखारो*–वि० दे० "दुखारा"।

दुखित*–वि० दे० "दुःखित"।

दुखिया–वि० [हिं० दुख+इया (प्रत्य०)] जिसे किसी प्रकार का दुःख या कष्ट हो। दुखी।

दुखियारा–वि० [हिं० दुखिया] [स्त्री० दुखियारी] १. जिसे किसी बात का दुख हो। दुखिया। २. रोगी।

दुखी–वि० [सं० दुःखित, दुःखी] १. जिसे दुःख हो। जो कष्ट या दुःख में हो। २. जिसके चित्त में खेद उत्पन्न हुआ हो। जिसके दिल में रंज हो। ३. रोगी। बीमार।

दुखीला†–वि० हिं० [दुख+ईला (प्रत्य०)] दुःख अनुभव करनेवाला। दुःखपूर्ण।

दुखौहाँ*–वि० [हिं० दुख+औहाँ] [स्त्री० दुखौहीं] दुःखदायी। दुःख देनेवाला।

दुगई–संज्ञा स्त्री० [देश०] ओसारा। बरामदा।

दुगदुगी–संज्ञा स्त्री० [अनु० धुकधुक] १. वह गड्ढा जो छाती के ऊपर बीचोबीच होता है। धुकधुकी। २. गले में पहनने का एक गहना।

दुगना–वि० [सं० द्विगुण] [स्त्री० दुगनी] किसी वस्तु से उतना और अधिक, जितनी कि वह हो। द्विगुण। दूना।

दुगड़ा–संज्ञा पु० [हिं० दो+गाड=गड्ढा] १ दुनाली बंदूक। २ दोहरी गोली।

दुगासरा–संज्ञा पु० [सं० दुर्ग+आश्रय] किसी दुर्ग के नीचे या चारों ओर बसा हुआ गाँव।

दुगुण*–वि० दे० "द्विगुण"।

दुगुन*†–वि० दे० "दुगना"।

दुग्ग–संज्ञा पु० दे० "दुर्ग"।

दुग्ध–वि० [सं०] १. दुहा हुआ। २. भरा हुआ।

संज्ञा पु० दूध। पय।

दुग्धी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुधिया नाम की घास। दुद्धी।

वि० [सं० दुग्धिन्] दूधवाला। जिसमें दूध हो।

दुघड़िया–वि० [हिं० दो+घड़ी] दो घड़ी का। जैसे–दुघड़िया मुहूर्त।

दुघड़िया मुहूर्त–संज्ञा पु० [हिं० दोघड़ी+सं० मुहूर्त] दो दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त। द्विघटिका मुहूर्त। (ऐसा मुहूर्त बहुत जल्दी या आवश्यकता के समय निकाला जाता है; और इसमें वार आदि का विचार नहीं होता।)

दुघरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+घड़ी] दुघड़िया मुहूर्त।

दुचंद–वि० [फ़ा० दोचंद] दूना। दुगना।

दुचित*–वि० [हिं० दो+चित्त] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। अस्थिर चित्त। २ चिंतित। फिक्रमंद।

दुचितई†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० दुचित] १. चित्त की अस्थिरता। दुबधा। २. खटका। आशंका। चिंता।

दुचिताई†*–संज्ञा स्त्री० [हिं० दुचित] १. चित्त की अस्थिरता। दुबधा। संदेह। २ खटका। चिंता। आशंका।

दुचित्ता–वि० [हिं० दो+चित्त] [स्त्री० दुचित्ती] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। जो दुबधे में हो। अस्थिरचित्त। २. संदेह में पड़ा हुआ। ३. जिसके चित्त में खटका हो। चिंतित।

दुज*–संज्ञा पु० दे० "द्विज"।

दुजन्मा–संज्ञा पु० दे० "द्विजन्मा"।

दुजपति*–संज्ञा पु० दे० "द्विजपति"।

दुजानू–क्रि० वि० [हिं० दो+फ़ा० जानू] दोनों घुटनों के बल। (बैठना)

दुजीह*–संज्ञा पु० दे० "द्विजिह्व"।

दुजेश–संज्ञा पु० दे० "द्विजेश"।

दुटूक–वि० [हिं० दो+टूक] दो टुकड़ों में किया हुआ। खंडित।

मुहा०—दुटूक बात = थोड़े में कही हुई साफ बात। बिना घुमाव-फिराव की स्पष्ट बात। खरी बात।

दुत्–अव्य० [अनु०] १. एक शब्द जो तिरस्कारपूर्वक हटाने के समय बोला जाता है। दूर हो। २ घृणा या तिरस्कारसूचक शब्द।

दुतकार–संज्ञा स्त्री० [अनु० दुत+कार] वचन द्वारा किया हुआ अपमान। तिरस्कार। धिक्कार। फटकार।

दुतकारना–क्रि० स० [हिं० दुत् दुत् शब्द करके किसी को हटाना। २. तिरस्कृत क०

दुतर्फ़ा–वि० [हिं० दो+

दुतर्फी] दोनों ओर का। जो दोनों ओर हो।

दुतारा–सज्ञा पु० [हिं० दो+तार] एक बाजा जिसमें दो तार होते है।

दुति–सज्ञा स्त्री० दे० "द्युति"।

दुतिमान–वि० दे० "द्युतिमान्"।

दुतिय–वि० दे० "द्वितीय"।

दुतिया–सज्ञा स्त्री० [स० द्वितीया] पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।

दुतिवत–वि० [हिं० दुति+वत (प्रत्य०)] १. आभायुक्त। चमकीला। २. सुंदर।

दुतीय–वि० दे० "द्वितीय"।

दुतीया–सज्ञा स्त्री० दे० "द्वितीया"।

दुदल–सज्ञा पुं० [सं० द्विदल] १. दाल। २. एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है। कानफूल। बरन।

दुदलाना–क्रि० स० दे० "दुतकारना"।

दुदामी–सज्ञा स्त्री० [हिं० दो+दाम] एक प्रकार का सूती कपड़ा जो मालवे में बनता था।

दुदिला–वि० [हिं० दो+फा० दिल] १. दुबधे में पड़ा हुआ। दुचित्ता। २. खटके में पड़ा हुआ। चिंतित। व्यग्र। घबराया हुआ।

दुद्धी–सज्ञा स्त्री० [स० दुग्धी] १. जमीन पर फैलनेवाली एक घास जिसके डंठलों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गांठे होती हैं। इसका व्यवहार औषध में होता है। २ थूहर की जाति का एक छोटा पौधा।
सज्ञा स्त्री० [हिं० दूध] १ खड़िया मिट्टी। २ सारिवा लता। ३ जगली नील।

दुधमुख–वि० [हिं० दूध+मुख] दूध पीता। दुधमुहाँ।

दुधमुँहाँ–वि० दे० "दूधमुहाँ"।

दुधहाँडी–सज्ञा स्त्री० [हिं० दूध+हाँडी] मिट्टी का वह छोटा बरतन जिसमें दूध रखा या गरम किया जाता है।

दुधाँडी–सज्ञा स्त्री० दे० "दुधहँड़ी"।

दुधार–वि० [हिं० दूध+आर (प्रत्य०)] १. दूध देनेवाली। जो दूध देती हो। २. जिसमें दूध हो।
वि० सज्ञा पु० दे० "दुधारा"।

दुधारा–वि० [हिं० दो+धार] (तलवार, छुरी आदि) जिसमें दोनों ओर धार हो।
सज्ञा पु० एक प्रकार का खाँडा।

दुधारी–वि० स्त्री० [हिं० दूध+आर (प्रत्य०)] दूध देनेवाली। जो दूध देती हो।
वि० स्त्री० [हिं० दो+धार] जिसमें दोनों ओर धार हो।

दुधारू–वि० दे० "दुधार"।

दुधिया–वि० [हिं० दूध+इया (प्रत्य०)] १. दूध मिला हुआ। जिसमें दूध पड़ा हो। २. जिसमें दूध होता हो। ३ दूध की तरह सफेद। सफेद रग का।
सज्ञा स्त्री० [स० दुग्धिका] १ दुद्धी नाम की घास। २ एक प्रकार की ज्वार या चरी। ३ खड़िया मिट्टी। ४. कलियारी की जाति का एक विष।

दुधिया पत्थर–सज्ञा पु० [हिं० दुधिया+पत्थर] १ एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं। २ एक प्रकार का नग या रत्न।

दुधिया विष–सज्ञा पु० [हिं० दुधिया+विष] कलियारी की जाति का एक विष जिसके सुदर पौधे काश्मीर और हिमालय के पश्चिमी भाग में मिलते हैं। इसकी जड़ में विष होता है। तेलिया विष। मीठा जहर।

दुधैल–वि० [हिं० दूध+ऐल (प्रत्य०)] बहुत दूध देनेवाली। दुधार।

दुनवना–क्रि० अ० [हिं० दो+नवना=झुकना] लचकर प्राय: दोहरा हो जाना।
क्रि० स० लचाकर दोहरा करना।

दुनाली–वि० स्त्री० [हिं० दो+नाल] दो नलोंवाली। जैसे दुनाली बंदूक।
सज्ञा स्त्री० वह बंदूक जिसमें दो दो गोलियाँ एक साथ भरी जायँ। दुनाली बंदूक।

दुनियाँ–सज्ञा स्त्री० [अ० दुनिया] १ संसार। जगत्।
यौ०—दीन दुनियाँ = लोक परलोक।
मुहा०—दुनिया के परदे पर = सारे संसार में। दुनिया की हवा लगना = सासारिक अनुभव होना। ससारी विषयों का अनुभव होना। दुनिया भर का = बहुत या बहुत अधिक।
२. संसार के लोग। लोक। जनता। ३ संसार का जजाल। जगत् का प्रपंच।

दुनियाई–वि० [अ० दुनिया+हिं० ई (प्रत्य०)] सासारिक।
सज्ञा स्त्री० संसार।

दुनियादार-संज्ञा पुं० [फा०] सांसारिक प्रपंच में फँसा हुआ मनुष्य। गृहस्थ। वि० १. ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। २. व्यवहार-कुशल।

दुनियादारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दुनिया का कारबार। गृहस्थी का जंजाल। २. वह व्यवहार जिससे अपना प्रयोजन सिद्ध हो। स्वार्थसाधन। ३. बनावटी व्यवहार।

दुनियासाज-वि० [फा०] [संज्ञा दुनियासाजी] १. ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। स्वार्थसाधक। २. चापलूस।

दुनी*-संज्ञा स्त्री० [अ० दुनिया] संसार।

दुपटा†*-संज्ञा पुं० दे० "दुपट्टा"।

दुपट्टा-संज्ञा पुं० [हिं० दो+पाट] [स्त्री० अल्पा० दुपट्टी] १. ओढ़ने का वह कपड़ा जो दो पाटों को जोड़कर बना हो। दो पाट की चद्दर। चादर।

मुहा०—दुपट्टा तानकर सोना=निश्चिंत होकर सोना। बेखटके सोना।

२. कंधे या गले पर डालने का लंबा कपड़ा।

दुपट्टी†*-संज्ञा स्त्री० दे० "दुपट्टा"।

दुपहर-संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

दुपहरिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+पहर] १. मध्याह्न का समय। दोपहर। २. एक छोटा पौधा जो फूलों के लिये लगाया जाता है।

दुपहरी-संज्ञा स्त्री० दे० "दुपहरिया"।

दुफसली-वि० [हिं० दो+अ० फस्ल] वह चीज़ जो रबी और खरीफ़ दोनों में हो। वि० स्त्री० दुबधा की। अनिश्चित। (बात)

दुबधा-संज्ञा स्त्री० [सं० द्विविधा] १. दो में से किसी एक बात पर चित्त के न जमने की क्रिया या भाव। अनिश्चय। चित्त की अस्थिरता। २. संशय। संदेह। ३. असमंजस। आगा-पीछा। पसोपेश। ४. खटका। चिंता।

दुबरा†-वि० दे० "दुबला"।

दुबराना†*-क्रि० अ० [हिं० दुबरा+ना] दुबला होना। शरीर से चीण होना।

दुबला-वि० [सं० दुर्बल] [स्त्री० दुबली] १. जिसका बदन हलका और पतला हो। चीण शरीर का। कृश। २. अशक्त।

दुबलापन-संज्ञा पुं० [हिं० दुबला+पन] कृशता। चीणता।

दुबारा-क्रि० वि० दे० "दोबारा"।

दुबाला-वि० दे० "दोबाला"।

दुबिद*-संज्ञा पुं० दे० "द्विविद"।

दुबिध, दुबिधा*-संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।

दुबे-संज्ञा पुं० [सं० द्विवेदी] [स्त्री० दुबाइन] ब्राह्मणों का एक भेद। दूबे। द्विवेदी।

दुभाखी-संज्ञा पुं० दे० "दुभाषिया"।

दुभाषिया-संज्ञा पुं० [सं० द्विभाषी] दो भाषाओं का जाननेवाला ऐसा मनुष्य जो उन भाषाओं के बोलनेवाले दो मनुष्यों को एक दूसरे का अभिप्राय समझावे।

दुमंजिला-वि० [फा०] [स्त्री० दुमंजिली] दो मरातिब का। दोखंडा

दुम-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पूँछ। पुच्छ।

मुहा०—दुम दबाकर भागना=डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना। दुम हिलाना=कुत्ते का दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना।

२. पूँछ की तरह पीछे लगी या बँधी हुई वस्तु। ३. पीछे पीछे लगा रहनेवाला आदमी। पिछलग्गू। ४. किसी काम का सब से अंतिम थोड़ा सा अंश।

दुमची-संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है।

दुमदार-वि० [फा०] १. पूँछवाला। २. जिसके पीछे पूँछ की सी कोई वस्तु हो।

दुमाता-वि० [सं० दुर्मातृ] १. बुरी माता। २. सौतेली माँ।

दुमुहाँ-वि० दे० "दोमुहाँ"।

दुरंगा-वि० [हिं० दो+रंग] [स्त्री० दुरंगी] १. दो रंगों का। जिसमें दो रंग हों। २. दो तरह का। ३. दोहरी चाल चलनेवाला।

दुरंगी-वि० स्त्री० दे० "दुरंगा"। संज्ञा स्त्री० कुछ इस पत्त का, कुछ उस पत्त का अवलंबन। द्विविधा।

दुरंत-वि० [सं०] १. अपार। बड़ा भारी। २. दुर्गम। दुस्तर। कठिन। ३. घोर। प्रचंड। भीषण। ४. जिसका परिणाम बुरा हो। अशुभ। ५. दुष्ट। खल।

दुरधा*-वि० [सं० द्विरंध्र] १. दो छिद्रोंवाला। २. आर-पार छेदा हुआ।

दुर-अव्य० या उप० [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है—१. दूषण। (बुरा अर्थ) जैसे—दुरात्मा। २. निषेध। जैसे—दुर्बल। ३. दुःख।

दुर-अव्य० [हिं० दूर] एक शब्द जिसका प्रयोग तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिये होता है और जिसका अर्थ है "दूर हो"।

मुहा०—दुर दुर करना=तिरस्कारपूर्वक हटाना। कुत्ते की तरह भगाना।
संज्ञा पुं० [फा०] १. मोती। मुक्ता। २. मोती का वह लटकन जो नाक में पहना जाता है। लोलक। ३. छोटी बाली।
दुरजन—संज्ञा पुं० दे० "दुर्जन"।
दुरजोधन—संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।
दुरतिक्रम—वि० [सं०] १. जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन न हो सके २. प्रबल। ३. जिसका पार पाना कठिन हो। अपार।
दुरद—संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।
दुरदाम—वि० [सं० दुर्दम] कष्टसाध्य।
दुरदाल—संज्ञा पुं० [सं० द्विरद] हाथी।
दुरदुराना—क्रि० स० [हिं० दुरदुर] तिरस्कारपूर्वक दूर करना। अपमान के साथ भगाना।
दुरना—क्रि० अ० [हिं० दूर] १ आँखों के आगे से दूर होना। आड़ में जाना। २. न दिखलाई पड़ना। छिपना।
दुरपदी—संज्ञा स्त्री० दे० "द्रौपदी"।
दुरभिसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरे अभिप्राय से गुट बाँधकर की हुई सलाह।
दुरभेव—संज्ञा पुं० [सं० दुर्भाव या दुर्भेद] बुरा भाव। मनमोटाव। मनोमालिन्य।
दुरमुस—संज्ञा पुं० [सं० दुर (प्रत्य०)+मुस=कूटना] गदा के आकार का डंडा, जिससे कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाई जाती है।
दुरवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी दशा। खराब हालत। २. दुःख, कष्ट या दरिद्रता की दशा। हीन दशा।
दुराउ—संज्ञा पुं० दे० "दुराव"।
दुरागमन—संज्ञा पुं० दे० "द्विरागमन"।
दुराग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दुराग्रही] १. किसी बात पर बुरे ढंग से अड़ना। हठ। ज़िद। २. अपने मत के ठीक न सिद्ध होने पर भी उस पर स्थिर रहने का काम।
दुराचरण—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा चाल-चलन। खोटा व्यवहार।
दुराचार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दुराचारी] दुष्ट आचरण। बुरा चाल-चलन।
दुराज—संज्ञा पुं० [सं० दुर्+राज्य] बुरा राज्य। बुरा शासन।
संज्ञा पुं० [हिं० दो+राज्य] १. एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन। २. वह स्थान जहाँ दो राजाओं का राज्य हो।
वि० [सं० दुराज्य] दो राजाओं का।
दुरात्मा—वि० [सं० दुरात्मन्] दुष्टात्मा। नीचाशय। खोटा।
दुरादुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुरना=छिपना] छिपाव। गोपन।
मुहा०—दुरादुरी करके=छिपे छिपे।
दुराधर्ष—वि० [सं०] जिसका दमन करना कठिन हो। प्रचंड। प्रबल।
दुराना—क्रि० अ० [हिं० दूर] १. दूर होना। हटना। टलना। भागना। २. छिपना।
क्रि० स० १. दूर करना। हटाना। २. छोड़ना। त्यागना। ३ छिपाना। गुप्त रखना।
दुरालभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जवासा। धमासा। हिंगुवा। २. कपास।
दुराव—संज्ञा पुं० [हिं० दुराना] १. अविश्वास या भय के कारण किसी से बात गुप्त रखने का भाव। छिपाव। भेदभाव। २. कपट। छल।
दुराशय—संज्ञा पुं० [सं०] दुष्ट आशय। बुरी नीयत।
वि० जिसका आशय बुरा हो। खोटा।
दुराशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी आशा जो पूरी होनेवाली न हो। व्यर्थ की आशा।
दुरासा—संज्ञा स्त्री० दे० "दुराशा"।
दुरित—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाप। पातक। २. उपपातक। छोटा पाप।
वि० पापी। पातकी। अघी।
दुरुखा—वि० [हिं० दो+फा० रुख] १ जिसके दोनों ओर मुँह हों। [illegible] जिसके दोनों ओर कोई चिह्न या विशेष [illegible] हो। ३. जिसके दोनों ओर दो रंग हों।
दुरुपयोग—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु को बुरी तरह से काम में लाना। बुरा उपयोग।
दुरुस्त—वि० [फा०] १. जो अच्छी दशा में हो। जो टूटा-फूटा या बिगड़ा न हो। ठीक। २. जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३. उचित। मुनासिब। ४. यथार्थ।
दुरुस्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुधार। संशोधन।
दुरूह—वि० [सं०] जल्दी समझ में न आने योग्य। गूढ़। कठिन।
दुरेफ—संज्ञा पुं० दे० "द्विरेफ"।
दुकूल—संज्ञा पुं० दे० "दुष्कुल"।
दुर्गंध—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी गंध या महक। बदबू। कुवास।

दुर्ग-वि० [सं०] जिसमें पहुँचना कठिन हो। दुर्गम।
संज्ञा पुं० १. पत्थर आदि की चौड़ी और पुष्ट दीवारों से घिरा हुआ वह स्थान जिसके भीतर राजा, सरदार और सेना के सिपाही आदि रहते हैं। गढ़। कोट। क़िला। २. एक असुर का नाम जिसे मारने के कारण देवी का नाम दुर्गा पड़ा।
दुर्गत-वि० [सं०] १. जिसकी बुरी गति हुई हो। दुर्दशा-ग्रस्त। २. दरिद्र।
संज्ञा स्त्री० दे० "दुर्गति"।
दुर्गति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी गति। दुर्दशा। बुरा हाल। ज़िल्लत। २. वह दुर्दशा जो परलोक में हो। नरक-भोग।
दुर्गपाल-संज्ञा पुं० [सं०] गढ़ का रक्षक। क़िलेदार।
दुर्गम-वि० [सं०] १. जहाँ जाना कठिन हो। औघट। २. जिसे जानना कठिन हो। दुर्ज्ञेय। ३. दुस्तर। कठिन। विकट।
संज्ञा पुं० १. गढ़। दुर्ग। क़िला। २. विष्णु। ३. वन। ४. संकट का स्थान।
दुर्गरक्षक-संज्ञा पुं० [सं०] क़िलेदार।
दुर्गा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आदि शक्ति। देवी। वैदिक काल में यह अंबिका देवी के रूप में स्मरण की जाती थीं और रुद्र की बहन मानी जाती थीं। देवी भागवत के अनुसार ये विष्णु की माया थीं जो दक्ष प्रजापति की कन्या सती के रूप में प्रकट हुई थीं, जिन्होंने तप करके शिव को पति रूप में प्राप्त किया। इनका अनेक असुरों को मारना प्रसिद्ध है। गौरी, काली, रौद्री, भवानी, चंडी, अन्नपूर्णा आदि इन्हीं के नाम और रूप हैं। २. नील का पौधा। ३. अपराजिता। कौवा-ठोंठी। ४. श्यामा पक्षी। ५. नौ वर्ष की कन्या। ६. एक संकर रागिनी।
दुर्गाध्यक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] गढ़ का प्रधान। क़िलेदार।
दुर्गुण-संज्ञा पुं० [सं०] बुरा गुण। दोष। ऐब। बुराई।
दुर्गोत्सव-संज्ञा पुं० [सं०] दुर्गा-पूजा का उत्सव जो नवरात्र में होता है।
दुर्घट-वि० [सं०] जिसका होना कठिन हो। कष्टसाध्य।
दुर्घटना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐसी बात जिसके होने से बहुत कष्ट, पीड़ा या शोक हो। अशुभ घटना। बुरा संयोग। वारदात। २. विपद। आफ़त।
दुर्जन-संज्ञा पुं० [सं०] दुष्ट जन। खोटा आदमी। खल।
दुर्जनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुष्टता।
दुर्जय-वि० [सं०] जिसे जीतना बहुत कठिन हो। जो जल्दी जीता न जा सके।
दुर्ज्ञेय-वि० [सं०] जो जल्दी समझ में न आ सके। दुर्बोध।
दुर्दमनीय-वि० [सं०] १. जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। २. प्रचंड। प्रबल।
दुर्दम्य-वि० दे० "दुर्दमनीय"।
दुर्दशा-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी दशा। मंद अवस्था। दुर्गति। ख़राब हालत।
दुर्दिन-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा दिन। २. ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हों और पानी बरसता हो। मेघाच्छन्न दिन। ३. दुर्दशा, दुःख और कष्ट का समय।
दुर्दैव-संज्ञा पुं० [सं०] १. दुर्भाग्य। बुरी क़िस्मत। २. दिनों का बुरा फेर।
दुर्द्धर-वि० [सं०] १. जिसे कठिनता से पकड़ सकें। २. प्रबल। प्रचंड। ३. जो कठिनता से समझ में आवे।
दुर्द्धर्ष-वि० [सं०] १. जिसका दमन करना कठिन हो। २. प्रबल। प्रचंड। उग्र।
दुर्नाम-संज्ञा पुं० [सं० दुर्नामन्] १. बुरा नाम। कुख्याति। बदनामी। २. गाली। बुरा वचन। ३. बवासीर। ४. सीप।
दुर्निवार्य-वि० [सं०] १. जिसका निवारण करना कठिन हो। जो जल्दी रोका न जा सके। २. जो जल्दी हटाया न जा सके। ३. जिसका होना निश्चित हो।
दुर्नीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुनीति। कुचाल। अन्याय। अयुक्त आचरण।
दुर्बल-वि० [सं०] १. जिसे बल न हो। कमज़ोर। अशक्त। २. दुबला-पतला।
दुर्बलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बल की कमी। कमज़ोरी। २. कृशता। दुबलापन।
दुर्बोध-वि० [सं०] जो जल्दी समझ में न आवे। गूढ़। क्लिष्ट। कठिन।
दुर्भाग्य-संज्ञा पुं० [सं०] मंद भाग्य। बुरा अदृष्ट। खोटी क़िस्मत।
दुर्भाव-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा भाव। २. द्वेष। मनमोटाव। मनोमालिन्य।
दुर्भावना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुरी

भावना। २. खटका। चिंता। अंदेशा।
दुर्भिक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें भिक्षा या भोजन कठिनता से मिले। अकाल। कहत।
दुर्भिच्छ*-संज्ञा पुं० दे० "दुर्भिक्ष"।
दुर्भेद-वि० [सं०] १. जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २. जिसे जल्दी पार न कर सकें।
दुर्भेद्य-वि० दे० "दुर्भेद"।
दुर्मति-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी बुद्धि। वि० १. जिसकी समझ ठीक न हो। दुर्बुद्धि। कमअक्ल। २. खल। दुष्ट।
दुर्मल्लिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] दृश्य काव्य के अंतर्गत चार अंकों का एक उपरूपक जिसमें हास्य रस प्रधान होता है।
दुर्मिल-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं। अंत में एक सगण और दो गुरु होते हैं। २. एक प्रकार का सवैया जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं।
दुर्मुख-संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा। २. राम की सेना का एक बंदर। ३. रामचंद्रजी का एक गुप्तचर जिसके द्वारा उन्होंने

हो। दुष्प्राप्य। २. अनोखा। बहुत बढ़िया। ३. प्रिय।
दुर्वचन-संज्ञा पुं० [सं०] दुर्वाक्य। गाली।
दुर्वह-वि० [सं०] जिसका वहन करना कठिन हो।
दुर्वाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. अपवाद। निंदा। २. स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य।
दुर्वासा-संज्ञा पुं० [सं० दुर्वासस्] एक मुनि जो अत्रि के पुत्र थे। ये अत्यंत क्रोधी थे।
दुर्विनीत-वि० [सं०] अविनीत। अशिष्ट। उद्दत। अक्खड़।
दुर्विपाक-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा परिणाम। २. बुरा संयोग। दुर्घटना।
दुर्वृत्त-वि० [सं०] दुश्चरित्र। दुराचारी।
दुर्व्यवस्था-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुप्रबंध।
दुर्व्यवहार-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा व्यवहार। बुरा बर्त्ताव। २. दुष्ट आचरण।
दुर्व्यसन-संज्ञा पुं० [सं०] किसी ऐसी बात का अभ्यास जिससे कोई हानि हो। बुरी लत। खराब आदत।
दुर्व्यसनी-वि० [सं०] बुरी लतवाला।
दुलकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दल[illegible]] घोड़े की एक चाल जिसमें वह चारों

दुलहिया दुलही†-संज्ञा स्त्री० दे० "दुलहन"।
दुलहेटा-संज्ञा पुं० [प्रा० दुल्लह + हिं० बेटा] लाड़ला बेटा। दुलारा लड़का।
दुलाई-संज्ञा स्त्री० [सं० तूल] ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसके भीतर रूई भरी हो।
दुलाना -क्रि० स० दे० "डुलाना"।
दुलार-संज्ञा पुं० [हिं० दुलारना] प्रसन्न करने की वह चेष्टा जो प्रेम के कारण लोग बच्चों या प्रेमपात्रों के साथ करते हैं। लाड़-प्यार।
दुलारना-क्रि० स० [सं० दुर्लालन] प्रेम के कारण बच्चों या प्रेमपात्रों को प्रसन्न करने के लिये उनके साथ अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करना। लाड करना।
दुलारा-वि० [हिं० दुलार] [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार या लाड़-प्यार हो। लाड़ला।
दुलोही-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + लोहा] एक प्रकार की तलवार।
दुल्लभ*-वि० दे० "दुर्लभ"।
दुव-वि० [सं० द्वि] दो।
दुवन-संज्ञा पुं० [सं० दुर्मनस्] १. खल। दुर्जन। बुरा आदमी। २. शत्रु। वैरी। दुश्मन। ३. राक्षस। दैत्य।
दुवाज-संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।
दुवादस*†-वि० दे० "द्वादश"।
दुवादस बानी*-वि० [सं० द्वादश = सूर्य + वर्ण] बारह बानी का। सूर्य के समान दमकता हुआ। आभायुक्त। खरा। (विशेषतः सोने के लिये)
दुवार†-संज्ञा पुं० दे० "द्वार"।
दुवाल-संज्ञा स्त्री० [फा०] रिकाब में लगा हुआ चमड़े का चौड़ा फीता।
दुवाली-संज्ञा स्त्री० [देश०] रँगे या छपे हुए कपड़े पर चमक लाने के लिये घोंटने का औज़ार। घोंटा।
संज्ञा स्त्री० [फा० दुवाल] चमड़े का परतला या पेटी जिसमें बंदूक़, तलवार आदि लटकाते हैं।
दुविधा†-संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।
दुवो*†-वि० [हिं० दुव = दो] दोनों।
दुशवार-वि० [फा०] [संज्ञा दुशवारी] १. कठिन। दुरूह। मुश्किल। २. दुःसह।
दुशाला-संज्ञा पुं० [सं० द्विशाट, फा० दोशाला] पशमीने की चादरों का जोड़ा जिनके किनारे पर पशमीने की बेलें बनी रहती हैं।
दुशासन*-संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन"।
दुश्चरित-वि० [सं०] १. बुरे आचरण का। बदचलन। २. कठिन।
संज्ञा पुं० बुरा आचरण। कुचाल।
दुश्चरित्र-वि० [सं०] [स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे चरित्रवाला। बदचलन।
संज्ञा पुं० बुरी चाल। दुराचार।
दुश्चेष्टा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० दुश्चेष्टित] बुरा काम। कुचेष्टा।
दुश्मन-संज्ञा पुं० [फा०] शत्रु। वैरी।
दुश्मनी-संज्ञा स्त्री० [फा०] वैर। शत्रुता।
दुष्कर-वि० [सं०] जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके। दुःसाध्य।
दुष्कर्म-संज्ञा पुं० [सं० दुष्कर्मन्] [वि० दुष्कर्मा] बुरा काम। कुकर्म। पाप।
दुष्कर्मा-वि० [सं० दुष्कर्मन्] पापी। कुकर्मी।
दुष्कर्मी-वि० [सं० दुष्कर्म + ई (प्रत्य०)] बुरा काम करनेवाला। पापी। दुराचारी।
दुष्काल-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा वक़्त। कुसमय। २. दुर्भिक्ष। अकाल।
दुष्ट-वि० [सं०] [स्त्री० दुष्टा] १. जिसमें दोष या ऐब हो। दूषित। दोष-ग्रस्त। २. पित्त आदि दोष से युक्त। ३. दुर्जन। खल। दुराचारी। पाजी।
दुष्टता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दोष। नुक्स। ऐब। २. बुराई। ख़राबी। ३. बदमाशी।
दुष्टपना-संज्ञा पुं० दे० "दुष्टता"।
दुष्टाचार-संज्ञा पुं० [सं०] कुचाल। कुकर्म।
दुष्टात्मा-वि० [सं०] जिसका अंतःकरण बुरा हो। खोटी प्रकृति का। दुराशय।
दुष्प्राप्य-वि० [सं०] जो सहज में न मिल सके। जिसका मिलना कठिन हो।
दुष्मंत-संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।
दुष्यंत-संज्ञा पुं० [सं०] पुरुवंशी एक राजा जो ऐलि नामक राजा के पुत्र थे। इन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला के साथ गांधर्व विवाह किया था। इसी से शकुन्तला के गर्भ से सर्वदमन या भरत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसके नाम पर यह देश भारत कहलाया।
दुसराना*-क्रि० स० दे० "दोहराना"।
दुसरिहा*†-वि० [हिं० दूसर + हा (प्रत्य०)] १. साथी। संगी। २. प्रतिद्वंद्वी।
दुसह*-वि० [सं० दुःसह] जो सहा न

पावना। २. खटका। चिंता। अंदेशा।
र्भिक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें भिक्षा या भोजन कठिनता से मिले। अकाल। कहत।
र्भिच्छ-संज्ञा पुं० दे० "दुर्भिक्ष"।
र्भेद-वि० [सं०] १. जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २. जिसे जल्दी पार न कर सकें।
र्भेद्य-वि० दे० "दुर्भेद"।
र्मति-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी बुद्धि। वि० १. जिसकी समझ ठीक न हो। दुर्बुद्धि। नासमझ। २. खल। दुष्ट।
र्मल्लिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] दृश्य काव्य के अंतर्गत चार अंकों का एक उपरूपक जिसमें हास्य रस प्रधान होता है।
र्मिल-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं। अंत में एक सगण और दो गुरु होते हैं। २. एक प्रकार का सवैया जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं।
र्मुख-संज्ञा पुं० [सं०] १ घोड़ा। २. राम की सेना का एक बंदर। ३. रामचंद्रजी का एक गुप्तचर जिसके द्वारा उन्होंने सीता के विषय में लोकापवाद सुना था। वि० [स्त्री० दुर्मुखी] १. जिसका मुख बुरा हो। २ कटुभाषी। अप्रियवादी।
र्योधन-संज्ञा पुं० [सं०] कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र जो अपने चचेरे भाई पांडवों से बहुत बुरा मानता था। इसीके साथ जूआ खेलकर युधिष्ठिर अपना सारा राज्य और धन, यहाँ तक कि द्रौपदी को भी, हार गए और उन्हें सब भाइयों सहित १२ वर्ष तक वनवास और १ वर्ष तक अज्ञातवास करना पड़ा। जब वे अज्ञातवास से लौटे तब दुर्योधन ने उनका राज्य उन्हें नहीं लौटाया जिसके कारण महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ।
दुर्रा-संज्ञा पुं० [फा०] कोड़ा। चाबुक।
दुर्रानी-संज्ञा पुं० [फा०] अफगानों की एक जाति।
दुर्लंघ्य-वि० [सं०] जिसे जल्दी लाँघ न सकें।
... वि० [सं०] जो कठिनता से दिखाई ... । जो प्रायः अदृश्य हो।
... [सं०] १. जिसे पाना सहज न हो। दुष्प्राप्य। २. अनोखा। बहुत बढ़िया। ३. प्रिय।
दुर्वचन-संज्ञा पुं० [सं०] दुर्वाक्य। गाली।
दुर्वह-वि० [सं०] जिसका वहन करना कठिन हो।
दुर्वाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. अपवाद। निंदा। २ स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य।
दुर्वासा-संज्ञा पुं० [सं० दुर्वासस्] एक मुनि जो अत्रि के पुत्र थे। ये अत्यंत क्रोधी थे।
दुर्विनीत-वि० [सं०] अविनीत। अशिष्ट। उद्दंड। अक्खड़।
दुर्विपाक-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा परिणाम। २. बुरा संयोग। दुर्घटना।
दुर्वृत्त-वि० [सं०] दुश्चरित्र। दुराचारी।
दुर्व्यवस्था-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुप्रबंध।
दुर्व्यवहार-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा व्यवहार। बुरा बर्त्ताव। २. दुष्ट आचरण।
दुर्व्यसन-संज्ञा पुं० [सं०] किसी ऐसी बात का अभ्यास जिससे कोई हानि हो। बुरी लत। खराब आदत।
दुर्व्यसनी-वि० [सं०] बुरी लतवाला।
दुलकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दलकना] घोड़े की एक चाल जिसमें वह चारों पैर अलग अलग उठाकर कुछ उछलता हुआ चलता है।
दुलखना-क्रि० स० [हिं० दो + लक्षण] बार बार कहना या बतलाना।
दुलड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + लड़] दो लड़ों की माला।
दुलत्ती-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + लात] घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।
दुलदुल-संज्ञा पुं० [अ०] वह खच्चरी जो इसकंदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को नजर में दी थी। साधारण लोग इसे घोड़ा समझते हैं और मुहर्रम के दिनों में इसकी नकल निकालते हैं।
दुलना-क्रि० अ० दे० "डुलना"।
दुलभ-वि० दे० "दुर्लभ"।
दुलराना †-क्रि० स० [हिं० दुलारना] बच्चों को बहलाकर प्यार करना। लाड़ करना। क्रि० अ० दुलारे बच्चों की सी चेष्टा करना।
दुलरी-संज्ञा स्त्री० दे० "दुलड़ी"।
दुलहन-संज्ञा स्त्री० [हिं० दुलहा] नवविवाहिता वधू। नई ब्याही हुई स्त्री।
दुलहा-संज्ञा पुं० दे० "दूल्हा"।

दुलहिया दुलही†-संज्ञा स्त्री० दे० "दुलहन"।

दुलहेटा-संज्ञा पुं० [प्रा० दुलह+हिं० बेटा] लाड़ला बेटा। दुलारा लड़का।

दुलाई-संज्ञा स्त्री० [सं० तूल] ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसके भीतर रूई भरी हो।

दुलाना-क्रि० स० दे० "डुलाना"।

दुलार-संज्ञा पुं० [हिं० दुलारना] प्रसन्न करने की वह चेष्टा जो प्रेम के कारण लोग बच्चों या प्रेमपात्रों के साथ करते हैं। लाड़ प्यार।

दुलारना-क्रि० स० [सं० दुर्लालन] प्रेम के कारण बच्चों या प्रेमपात्रों को प्रसन्न करने के लिये उनके साथ अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करना। लाड़ करना।

दुलारा-वि० [हिं० दुलार] [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार या लाड़ प्यार हो। लाड़ला।

दुलोही-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लोहा] एक प्रकार की तलवार।

दुलभ†-वि० दे० "दुर्लभ"।

दुव-वि० [सं० द्वि] दो।

दुवन-संज्ञा पुं० [सं० दुर्मनस्] १ खल। दुर्जन। बुरा आदमी। २ शत्रु। वैरी। दुश्मन। ३ राक्षस। दैत्य।

दुवाज-संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

दुवादस†-वि० दे० "द्वादश"।

दुवादस बानी†-वि० [सं० द्वादश=सूर्य+वर्ण] बारह बानी का। सूर्य के समान दमकता हुआ। आभायुक्त। खरा। (विशेषत सोने के लिये)

दुवार†-संज्ञा पुं० दे० "द्वार"।

दुवाल-संज्ञा स्त्री० [फा०] रिकाब में लगा हुआ चमड़े का चौड़ा फीता।

दुवाली-संज्ञा स्त्री० [देश०] रँगे या छपे हुए कपड़ों पर चमक लाने के लिये घोटने का औजार। घोटा।

संज्ञा स्त्री० [फा० दुवाल] चमड़े का परतला या पेटी जिसमें बंदूक, तलवार आदि लटकाते हैं।

दुविधा†-संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।

दुवो†-वि० [हिं० दुव=दो] दोनों।

दुशवार-वि० [फा०] [संज्ञा दुशवारी] १ कठिन। दुरूह। मुश्किल। २ दु सह।

दुशाला-संज्ञा पुं० [सं० द्विशाट, फा० दोशाला] पशमीने की चादरों का जोड़ा जिनके किनारे पर पशमीने की बेलें बनी रहती हैं।

दुशासन-संज्ञा पुं० दे० "दु शासन"।

दुश्चरित-वि० [सं०] १ बुरे आचरण का। बदचलन। २ कठिन।

संज्ञा पुं० बुरा आचरण। कुचाल।

दुश्चरित्र-वि० [सं०] [स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे चरित्रवाला। बदचलन।

संज्ञा पुं० बुरी चाल। दुराचार।

दुश्चेष्टा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० दुश्चेष्टित] बुरा काम। कुचेष्टा।

दुश्मन-संज्ञा पुं० [फा०] शत्रु। वैरी।

दुश्मनी-संज्ञा स्त्री० [फा०] वैर। शत्रुता।

दुष्कर-वि० [सं०] जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके। दु साध्य।

दुष्कर्म-संज्ञा पुं० [सं० दुष्कर्मन्] [वि० दुष्कर्मा] बुरा काम। कुकर्म। पाप।

दुष्कर्मा-वि० [सं० दुष्कर्मन्] पापी। कुकर्मी।

दुष्कर्मी-वि० [सं० दुष्कर्म+ई (प्रत्य०)] बुरा काम करनेवाला। पापी। दुराचारी।

दुष्काल-संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा वक्त। कुसमय। २. दुर्भिक्ष। अकाल।

दुष्ट-वि० [सं०] [स्त्री० दुष्टा] १ जिसमें दोष या ऐब हो। दूषित। दोषग्रस्त। २ पित्त आदि दोष से युक्त। ३ दुर्जन। खल। दुराचारी। पाजी।

दुष्टता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दोष। नुक्स। ऐब। २ बुराई। खराबी। ३ बदमाशी।

दुष्टपना-संज्ञा पुं० दे० "दुष्टता"।

दुष्टाचार-संज्ञा पुं० [सं०] कुचाल। कुकर्म।

दुष्टात्मा-वि० [सं०] जिसका अंत करण बुरा हो। खोटी प्रकृति का। दुराशय।

दुष्प्राप्य-वि० [सं०] जो सहज में न मिल सके। जिसका मिलना कठिन हो।

दुष्मत-संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

दुष्यंत-संज्ञा पुं० [सं०] पुरुवंशी एक राजा जो ऐलि नामक राजा के पुत्र थे। इन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला के साथ गांधर्व विवाह किया था। इसी से शकुंतला के गर्भ से सर्वदमन या भरत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसके नाम पर यह देश भारत कहलाया।

दुसराना-क्रि० स० दे० "दोहराना"।

दुसरिहा†-वि० [हिं० दूसर+हा (प्रत्य०)] १ साथी। संगी। २ प्रतिद्वंद्वी।

दुसह†-वि० [सं० दु सह] जो सहा न

भावना। २. खटका। चिंता। अंदेशा।

दुर्भिक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें भिक्षा या भोजन कठिनता से मिले। अकाल। कहत।

दुर्भिच्छ*-संज्ञा पुं० दे० "दुर्भिक्ष"।

दुर्भेद-वि० [सं०] १. जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २. जिसे जल्दी पार न कर सकें।

दुर्भेद्य-वि० दे० "दुर्भेद"।

दुर्मति-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी बुद्धि। वि० १. जिसकी समझ ठीक न हो। दुर्बुद्धि। कमसमझ। २. खल। दुष्ट।

दुर्मल्लिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] दृश्य काव्य के अंतर्गत चार अंकों का एक उपरूपक जिसमें हास्य रस प्रधान होता है।

दुर्मिल-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं। अंत में एक सगण और दो गुरु होते हैं। २. एक प्रकार का सवैया जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं।

दुर्मुख-संज्ञा पुं० [सं०] १ घोड़ा। २. राम की सेना का एक बंदर। ३. रामचंद्रजी का एक गुप्तचर जिसके द्वारा उन्होंने सीता के विषय में लोकापवाद सुना था। वि० [स्त्री० दुर्मुखी] १. जिसका मुख बुरा हो। २. कटुभाषी। अप्रियवादी।

दुर्योधन-संज्ञा पुं० [सं०] कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र जो अपने चचेरे भाई पांडवों से बहुत बुरा मानता था। इसीके साथ जूआ खेलकर युधिष्ठिर अपना सारा राज्य और धन, यहाँ तक कि द्रौपदी को भी, हार गए और उन्हें सब भाइयों सहित १२ वर्ष तक वनवास और १ वर्ष तक अज्ञातवास करना पड़ा। जब वे अज्ञातवास से लौटे तब दुर्योधन ने उनका राज्य उन्हें नहीं लौटाया जिसके कारण महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ।

दुर्रा-संज्ञा पुं० [फा०] कोड़ा। चाबुक।

दुर्रानी-संज्ञा पुं० [फा०] अफ़गानों की एक जाति।

दुर्लंघ्य-वि० [सं०] जिसे जल्दी लाँघ न सकें।

दुर्लक्ष्य-वि० [सं०] जो कठिनता से दिखाई पड़े। जो प्रायः अदृश्य हो।

दुर्लभ-वि० [सं०] १. जिसे पाना सहज न हो। दुष्प्राप्य। २. अनोखा। बहुत बढ़िया। ३. प्रिय।

दुर्वचन-संज्ञा पुं० [सं०] दुर्वाक्य। गाली।

दुर्वह-वि० [सं०] जिसका वहन करना कठिन हो।

दुर्वाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. अपवाद। निंदा। २ स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य।

दुर्वासा-संज्ञा पुं० [सं० दुर्वासस्] एक मुनि जो अत्रि के पुत्र थे। ये अत्यंत क्रोधी थे।

दुर्विनीत-वि० [सं०] अविनीत। अशिष्ट। उद्धत। अक्खड़।

दुर्विपाक-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा परिणाम। २. बुरा संयोग। दुर्घटना।

दुर्वृत्त-वि० [सं०] दुश्चरित्र। दुराचारी।

दुर्व्यवस्था-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुप्रबंध।

दुर्व्यवहार-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा व्यवहार। बुरा बर्त्ताव। २. दुष्ट आचरण।

दुर्व्यसन-संज्ञा पुं० [सं०] किसी ऐसी बात का अभ्यास जिससे कोई हानि हो। बुरी लत। खराब आदत।

दुर्व्यसनी-वि० [सं०] बुरी लतवाला।

दुलकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दलकना] घोड़े की एक चाल जिसमें वह चारों पैर अलग अलग उठाकर कुछ उछलता हुआ चलता है।

दुलखना-क्रि० स० [हिं० दो+लखना] बार बार कहना या बतलाना।

दुलड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लड़] दो लड़ों की माला।

दुलत्ती-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लात] घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।

दुलदुल-संज्ञा पुं० [अ०] वह खच्चरी जो इसकंदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को नज़र में दी थी। साधारण लोग इसे घोड़ा समझते हैं और मुहर्रम के दिनों में इसकी नकल निकालते हैं।

दुलना-क्रि० अ० दे० "डुलना"।

दुलभ*-वि० दे० "दुर्लभ"।

दुलराना*†-क्रि० स० [हिं० दुलारना] बच्चों को बहलाकर प्यार करना। लाड़ करना। क्रि० अ० दुलारे बच्चों की सी चेष्टा करना।

दुलरी-संज्ञा स्त्री० दे० "दुलड़ी"।

दुलहन-संज्ञा स्त्री० [हिं० दुलहा] नवविवाहिता वधू। नई ब्याही हुई स्त्री।

दुलहा-संज्ञा पुं० दे० "दूल्हा"।

दुलहिया दुलही†–संज्ञा स्त्री० दे० "दुलहन"।
दुलहेटा–संज्ञा पुं० [प्रा० दुल्लह+हिं० बेटा] लाड़ला बेटा। दुलारा लड़का।
दुलाई–संज्ञा स्त्री० [सं० तूल] ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसके भीतर रूई भरी हो।
दुलाना*–क्रि० स० दे० "डुलाना"।
दुलार–संज्ञा पुं० [हिं० दुलारना] प्रसन्न करने की वह चेष्टा जो प्रेम के कारण लोग बच्चों या प्रेमपात्रों के साथ करते हैं। लाड़-प्यार।
दुलारना–क्रि० स० [सं० दुर्लालन] प्रेम के कारण बच्चों या प्रेमपात्रों को प्रसन्न करने के लिये उनके साथ अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करना। लाड करना।
दुलारा–वि० [हिं० दुलार] [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार या लाड़-प्यार हो। लाड़ला।
दुलोही–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लोहा] एक प्रकार की तलवार।
दुल्लभ*–वि० दे० "दुर्लभ"।
दुव–वि० [सं० द्वि] दो।
दुवन–संज्ञा पुं० [सं० दुर्मनस्] १. खल। दुर्जन। बुरा आदमी। २. शत्रु। वैरी। दुश्मन। ३. राक्षस। दैत्य।
दुवाज–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।
दुवादस*†–वि० दे० "द्वादश"।
दुवादस बानी*–वि० [सं० द्वादश=सूर्य+वर्ण] बारह बानी का। सूर्य के समान दमकता हुआ। आभायुक्त। खरा। (विशेषतः सोने के लिये)
दुवार†–संज्ञा पुं० दे० "द्वार"।
दुवाल–संज्ञा स्त्री० [फा०] रिकाब में लगा हुआ चमड़े का चौड़ा फीता।
दुवाली–संज्ञा स्त्री० [देश०] रँगे या छपे हुए कपड़ों पर चमक लाने के लिये घोंटने का औजार। घोटा।
संज्ञा स्त्री० [फा० दुवाल] चमड़े का परतला या पेटी जिसमें बंदूक, तलवार आदि लटकाते हैं।
दुविधा†–संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।
दुवो*†–वि० [हिं० दुव=दो] दोनों।
दुशवार–वि० [फा०] [संज्ञा दुशवारी] १. कठिन। दुरूह। मुश्किल। २. दुःसह।
दुशाला–संज्ञा पुं० [सं० द्विशाट, फा० दोशाला] पशमीने की चादरों का जोड़ा जिनके किनारे पर पशमीने की बेलें बनी रहती हैं।
दुशासन*–संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन"।
दुश्चरित–वि० [सं०] १. बुरे आचरण का। बदचलन। २. कठिन।
संज्ञा पुं० बुरा आचरण। कुचाल।
दुश्चरित्र–वि० [सं०] [स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे चरित्रवाला। बदचलन।
संज्ञा पुं० बुरी चाल। दुराचार।
दुश्चेष्टा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० दुश्चेष्टित] बुरा काम। कुचेष्टा।
दुश्मन–संज्ञा पुं० [फा०] शत्रु। वैरी।
दुश्मनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] वैर। शत्रुता।
दुष्कर–वि० [सं०] जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके। दुःसाध्य।
दुष्कर्म–संज्ञा पुं० [सं० दुष्कर्मन्] [वि० दुष्कर्मा] बुरा काम। कुकर्म। पाप।
दुष्कर्मा–वि० [सं० दुष्कर्मन्] पापी। कुकर्मी।
दुष्कर्मी–वि० [सं० दुष्कर्म+ई (प्रत्य०)] बुरा काम करनेवाला। पापी। दुराचारी।
दुष्काल–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा वक्त। कुसमय। २. दुर्भिक्ष। अकाल।
दुष्ट–वि० [सं०] [स्त्री० दुष्टा] १. जिसमें दोष या ऐब हो। दूषित। दोषग्रस्त। २. पित्त आदि दोष से युक्त। ३. दुर्जन। खल। दुराचारी। पाजी।
दुष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दोष। नुक्स। ऐब। २ बुराई। खराबी। ३. बदमाशी।
दुष्टपना–संज्ञा पुं० दे० "दुष्टता"।
दुष्टाचार–संज्ञा पुं० [सं०] कुचाल। कुकर्म।
दुष्टात्मा–वि० [सं०] जिसका अंतःकरण बुरा हो। खोटी प्रकृति का। दुराशय।
दुष्प्राप्य–वि० [सं०] जो सहज में न मिल सके। जिसका मिलना कठिन हो।
दुष्मंत–संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।
दुष्यंत–संज्ञा पुं० [सं०] पुरुवंशी एक राजा जो ऐलि नामक राजा के पुत्र थे। इन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला के साथ गांधर्व विवाह किया था। इसी से शकुन्तला के गर्भ से सर्वदमन या भरत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसके नाम देश भारत कहलाया।
दुसराना*–क्रि० स० दे० [illegible]
दुसरिहा*†–वि० [हिं० दूसर+ [illegible] १. साथी। संगी। २. [illegible]
दुसह*–वि० [सं० दुःसह]

जाय। असह्य। कठिन।

दुसही†-वि० [हिं० दुःसह + ई (प्रत्य०)] १. जो कठिनता से सह सके। २. ईर्ष्यालु।

दुसाखा-सज्ञा पु० [हिं० दो + शाखा] एक प्रकार का शमादान, जिसमें दो कनखे निकले होते हैं।

दुसाध-सज्ञा पु० [सं० दोषाद] हिंदुओं में एक नीच जाति जो सूअर पालती है।

दुसार-सज्ञा पु० [हिं० दो + सालना] आर पार किया हुआ छेद।
क्रि० वि० एक पार से दूसरे पार तक।

दुसाल-सज्ञा पु० [हिं० दो + शल] आर पार छेद।

दुसासन -सज्ञा पु० दे० "दुःशासन"।

दुसूती-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + सूत] एक प्रकार की मोटी चादर।

दुसेजा-सज्ञा पु० [हिं० दो + सेज] बड़ी खाट। पलंग।

दुस्तर-वि० [सं०] १ जिसे पार करना कठिन हो। २. विकट। कठिन।

दुस्सह-वि० दे० "दु सह"।

दुहता-सज्ञा पुं० [सं० दौहित्र] [स्त्री० दुहती] बेटी का बेटा। नाती।

दुहत्था-वि० [हिं० दो + हाथ] [स्त्री० दुहत्थी] दोनो हाथों से किया हुआ।

दुहना-क्रि० स० [सं० दोहन] १. स्तन से दूध निचोड़कर निकालना। ('दूध' और 'दूधवाला पशु' दोनों इसके कर्म हो सकते हैं।) २. निचोड़ना। तत्त्व या सार खींचना।
मुहा०—दुह लेना = १. सार खींच लेना। २. धन हर लेना। लूटना।

दुहनी-सज्ञा स्त्री० [सं० दोहनी] वह बरतन जिसमें दूध दुहा जाता है। दोहनी।

दुहाई-सज्ञा स्त्री० [सं० द्वि + आह्वाय] १. उच्च स्वर से किसी बात की सूचना, जो चारों ओर दी जाय। मुनादी। घोषणा।
मुहा०—(किसी की) दुहाई फिरना = १. राजा के सिंहासन पर बैठने पर उसके नाम की घोषणा होना। २. प्रताप या डंका पिटना। २. शपथ। कसम। सौगंध। ३. बचाव या रक्षा के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना।
मुहा०—दुहाई देना = अपने बचाव के लिये का नाम लेकर चिल्लाना।
[हिं० दुहना] १. गाय, भैंस आदि को दुहने का काम। २. दुहनेकी मजदूरी।

दुहाग-सज्ञा पु० [सं० दुर्भाग्य] १. दुर्भाग्य। २. वैधव्य। रँडापा।

दुहागिन†-सज्ञा स्त्री० [हिं० दुहाग] सुहागिन का उलटा। विधवा।

दुहागी†-वि० [सं० दुर्भागिन्] [स्त्री० दुहागिन] दुर्भागी। अभागा। बदकिस्मत।

दुहाना-क्रि० स० [हिं० दुहना का प्रे०] दुहने का काम दूसरे से कराना।

दुहावनी-सज्ञा स्त्री० [हिं० दुहाना] दूध दुहने की मजदूरी। दुहाई।

दुहिता-सज्ञा स्त्री० [सं० दुहितृ] कन्या। लड़की।

दुहिन -सज्ञा पुं० [सं० द्रुहण] ब्रह्मा।

दुहेला-वि० [सं० दुर्हेल] [स्त्री० दुहेली] १. दुःखदायी। दुःसाध्य। कठिन। २ दुःखी।
सज्ञा पु० विकट या दुःखदायक काम।

दुहोतरा-वि० [सं० द्व, द्वि + उत्तर] दो अधिक। दो ऊपर।

दुह्य-वि० [सं०] [स्त्री० दुह्या] दुहने योग्य।

दूइज†-सज्ञा स्त्री० दे० "दूज"।

दूक*-वि० [सं० द्वैक] दो एक। कुछ।

दूकान-सज्ञा पु० दे० "दुकान"।

दूखना*†-क्रि० स० [सं० दूषण + ना (प्रत्य०)] दोष लगाना। ऐब लगाना।

दूज-सज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीया] किसी पक्ष की दूसरी तिथि। दुइज। द्वितीया।
मुहा०—दूज का चाँद होना = बहुत दिनों पर दिखाई पड़ना। कम दर्शन देना।

दूजा*†-वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।

दूत-सज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० दूती] १. वह जो किसी विशेष कार्य के लिये कहीं भेजा जाय। चर। बसीठ। २. प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक दूसरे तक पहुँचानेवाला मनुष्य।

दूतकर्म-सज्ञा पुं० [सं०] सँदेसा या खबर पहुँचाना। दूत का काम। दूतत्व।

दूतता-सज्ञा स्त्री० [सं०] दूतत्व।

दूतत्व-सज्ञा पुं० [सं०] दूत का काम। दूतता।

दूतपन-सज्ञा पुं० दे० "दूतत्व"।

दूतर*†-वि० दे० "दुस्तर"।

दूतिका, दूती-सज्ञा स्त्री० [सं०] प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री। कुटनी। संचारिका। सारिका।

दूध-संज्ञा पु० [सं० दुग्ध] १. सफेद रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों में रहता है और जिससे उनके बच्चों का बहुत दिनों तक पोषण होता है। पय। दुग्ध।

मुहा०—दूध उतरना=छातियों में दूध भर जाना। दूध का दूध और पानी का पानी करना=ऐसा न्याय करना जिसमें किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो। दूध की मक्खी की तरह निकालना या निकालकर फेंक देना=किसी मनुष्य को बिलकुल तुच्छ समझकर अपने साथ से एक दम अलग कर देना। दूध के दाँत न टूटना=अभी तक बचपन रहना। दूधों नहाओ, पूतों फलो=धन और संतान की वृद्धि हो (आशीर्वाद)। दूध फटना=खटाई आदि पड़ने के कारण दूध का जल अलग और सार भाग या छेना अलग हो जाना। दूध बिगड़ना। (स्तनों में) दूध भर आना=बच्चे की ममता या स्नेह के कारण माता के स्तनों में दूध उतर आना।

२ अनाज के हरे बीजों का रस। ३ वह सफेद तरल पदार्थ जो अनेक प्रकार के पौधों की पत्तियों और डंठलों को तोड़ने पर निकलता है।

दूधपिलाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० दूध + पिलाना] १. दूध पिलानेवाली दाई। २. ब्याह की एक रसम जिसमें बरात के समय माता, वर को दूध पिलाने की सी मुद्रा करती है।

दूध पूत-संज्ञा पु० [हिं० दूध+पूत] धन और संतति।

दूधमुँहा-वि० [हिं० दूध+मुँह] जो अभी तक माता का दूध पीता हो। छोटा बच्चा।

दूधमुख-वि० [हिं० दूध + सं० मुख] छोटा बच्चा। बालक। दूधमुँहा।

दूधिया-वि० [हिं० दूध+इया (प्रत्य०)] १ जिसमें दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो। २ दूध के रंग का। सफेद। संज्ञा पु० १ एक प्रकार का सफेद और चमकीला पत्थर या रत्न। २. एक प्रकार का सफेद घटिया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती हैं।

दून-संज्ञा स्त्री० [हिं० दूना] १. दूने का भाव।

मुहा०—दून की लेना या हाँकना=बहुत बढ़-चढ़कर बातें करना। डींग मारना।

२. जितना समय लगाकर गाना या बजाना आरंभ किया जाय, उसके आधे समय में गाना या बजाना।

संज्ञा पु० [देश०] तराई। घाटी।

दूनर†-वि० [सं० द्विनम्र] जो लचकर दोहरा हो गया हो।

दूतावास-संज्ञा पु० [सं०] दूसरे राज्य के दूत के रहने का स्थान।

दूना-वि० [सं० द्विगुण] दुगुना। दोचंद। दो बार उतना ही।

दूनौ†-वि० दे० "दोनों"।

दूब-संज्ञा स्त्री० [सं० दूर्वा] एक बहुत प्रसिद्ध घास। यह तीन प्रकार की होती है, हरी, सफेद और गाँडर। वि० दे० "गाँडर"।

दूबदू-क्रि० वि० [हिं० दो या फा० रूबरू] आमने सामने। मुकाबले में।

दूबरा †-वि० दे० "दुबला"।

दूबे-संज्ञा पु० [सं० द्विवेदी] द्विवेदी ब्राह्मण।

दूभर-वि० [सं० दुर्भर] कठिन। मुश्किल।

दूमना†-क्रि० अ० [सं० द्रुम] हिलना।

दूरंदेश-वि० [फा०] [संज्ञा दूरंदेशी] दूर तक की बात विचारनेवाला। दूरदर्शी।

दूर-क्रि० वि० [सं०] देश, काल या संबंध आदि के विचार से बहुत अंतर पर। बहुत फासले पर। पास या निकट का उलटा।

मुहा०—दूर करना=१. अलग करना। जुदा करना। २. न रहने देना। मिटाना। दूर भागना या रहना=बहुत बचना। पास न जाना। दूर होना=१. हट जाना। अलग हो जाना। २. मिट जाना। नष्ट होना। दूर की बात=१. बारीक बात। २ कठिन बात।

वि० जो दूर या फासले पर हो।

दूरता-संज्ञा स्त्री० दे० "दूरत्व"।

दूरत्व-संज्ञा पु० [सं०] दूर होने का भाव। अंतर। दूरी। फासला।

दूरदर्शक-वि० [सं०] दूर तक देखनेवाला।

दूरदर्शक यंत्र-संज्ञा पु० [सं०] दूरबीन।

दूरदर्शिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] दूर की बात सोचने का गुण। दूरंदेशी।

दूरदर्शी-वि० [सं०] बहुत दूर तक की बात सोचनेवाला। अग्रसोची। दूरंदेश।

दूरबीन-संज्ञा स्त्री० [फा०] गोल नल के आकार का एक यंत्र जिससे दूर की बहुत पास, स्पष्ट या बड़ी दिखाई

दूरवर्ती-वि० [सं०] दूर का। औ

दूरवीक्षण-संज्ञा पुं० [सं०]

दूरस्थ–वि० [सं०] दूर का।
दूरी–संज्ञा स्त्री० [सं० दूर+ई० (प्रत्य०)] दो वस्तुओं के मध्य का स्थान। दूरत्व। अंतर। फ़ासला।
दूर्वा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दूब नाम की घास।
दूलन:–संज्ञा पु० दे० "दोलन"।
दूलह–संज्ञा पु० [सं० दुर्लभ] १. दुलहा। वर। नौशा। २. पति। स्वामी।
दूल्हा–संज्ञा पु० दे० "दूलह"।
दूषक–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो किसी पर दोषारोपण करे। २. दोष उत्पन्न करनेवाला। पदार्थ।
दूषण–संज्ञा पु० [सं०] १.दोष। ऐब। बुराई। अवगुण। २. दोष लगाने की क्रिया या भाव। ऐब लगाना। ३. रावण का भाई, एक राक्षस।
दूषणीय–वि० [सं०] दोष लगाने योग्य। जिसमें ऐब लगाया जा सके।
दूषना:†–क्रि० स०[सं० दूषण]दोष लगाना। कलंकित करना।
दूषित–वि० [सं०] जिसमें दोष हो। खराब। बुरा। दोषयुक्त।
दूष्य–वि० [सं०] १. दोष लगाने योग्य। जिसमें दोष लगाया जा सके। २. निंदनीय। निंदा करने योग्य। ३. तुच्छ।
दूसना–क्रि० स० दे० "दूषना"।
दूसरा–वि० [हिं० दो] १. जो क्रम में दो के स्थान पर हो। पहले के बाद का। द्वितीय। २. जिसका प्रस्तुत विषय या व्यक्ति से संबंध न हो। अन्य। अपर।
दूहना–क्रि० स० दे० "दुहना"।
दूहा:†–संज्ञा पु० दे० "दोहा"।
दृक्–संज्ञा पु० [सं०] छिद्र। छेद।
दृक्क्षेप–संज्ञा पु० [सं०] दृष्टिपात।
दृक्पथ–संज्ञा पु० [सं०] दृष्टि का मार्ग। दृष्टि की पहुँच।
दृक्पात–संज्ञा पु० [सं०] दृष्टिपात।
दृक्शक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकाश-रूप। चैतन्य। २ आत्मा।
दृगंचल–संज्ञा पु० [सं०] पलक।
दृग:–संज्ञा पु० [सं० दृश्] १. आँख। मुहा०—दृग डालना या देना=देखना। २ देखने की शक्ति। दृष्टि। ३. दो की संख्या।
—पुं० [हिं० दृग+मीचना] आँख-मिचौली का खेल।
दृगोचर–वि० [सं०] जो आँख से दिखाई दे।
दृढ़–वि० [सं०] १. जो ख़ूब कसकर बँधा या मिला हो। प्रगाढ़। २. पुष्ट। मज़बूत। कड़ा। ठोस। ३ बलवान्। बलिष्ठ। हृष्ट-पुष्ट। ४. जो जल्दी नष्ट या विचलित न हो। स्थायी। ५. निश्चित। ध्रुव। पक्का। ६. निडर। ढीठ। कड़े दिल का।
दृढ़ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दृढ़ होने का भाव। दृढ़त्व। २. मज़बूती। ३. स्थिरता।
दृढ़त्व–संज्ञा पु० [सं०] दृढ़ता।
दृढ़पद–संज्ञा पु० [सं०] तेईस मात्राओं का एक छंद। उपमान।
दृढ़प्रतिज्ञ–वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न टले।
दृढ़ांग–वि० [सं०] जिसके अंग दृढ़ हों। कड़े बदन का। हृष्ट-पुष्ट।
दृढ़ाई†:–संज्ञा स्त्री० दे० "दृढ़ता"।
दृढ़ाना–क्रि० स० [सं० दृढ+आना (प्रत्य०)] दृढ़ करना। पक्का या मज़बूत करना। क्रि० अ० १. कड़ा, पुष्ट या मज़बूत होना। २. स्थिर या पक्का होना।
दृश–संज्ञा पु० [सं०] [वि० दृश्य] १. देखना। दर्शन। २. दिखानेवाला। प्रदर्शक। ३. देखनेवाला।
संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. आँख। ३. दो की संख्या। ४. ज्ञान।
दृशद्वती–संज्ञा स्त्री० दे० "दृषद्वती"।
दृश्य–वि० [सं०] १. जो देखने में आ सके। जिसे देख सकें। दृगोचर। २. जो देखने योग्य हो। दर्शनीय। ३ मनोरम। सुंदर। ४. जानने योग्य। ज्ञेय।
संज्ञा पु० १. वह पदार्थ जो आँखों के सामने हो। देखने की वस्तु। २. तमाशा। ३. वह काव्य जो अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जाय। नाटक। ४. गणित में ज्ञात या दी हुई संख्या।
दृश्यमान–वि० [सं०] १. जो दिखाई पड़ रहा हो। २. चमकीला। ३. सुंदर।
दृषद्वती–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जिसका नाम ऋग्वेद में आया है। इसे आजकल घग्घर और राखी कहते हैं।
दृष्ट–वि० [सं०] १. देखा हुआ। २. जाना हुआ। ज्ञात। प्रकट। ३. लौकिक और गोचर। प्रत्यक्ष।

संज्ञा पुं० १. दर्शन। २. साक्षात्कार। ३. प्रत्यक्ष प्रमाण। (सांख्य)

दृष्टकूट–संज्ञा पुं० [सं०] १. पहेली। २. वह कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाच्यार्थ से न समझा जा सके, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से जाना जाय।

दृष्टमान०–वि० [सं० दृश्यमान] प्रकट।

दृष्टवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत जो केवल प्रत्यक्ष ही को मानता है।

दृष्टांत–संज्ञा पुं० [सं०] १ अज्ञात वस्तुओं या व्यापारों का धर्म आदि समझाने के लिये समान धर्मवाली किसी प्रसिद्ध या ज्ञात वस्तु या व्यापार का कथन। उदाहरण। मिसाल। २. एक अर्थालंकार जिसमें एक ओर तो उपमेय और उसके साधारण धर्म्म का वर्णन और दूसरी ओर बिंब-प्रतिबिंब-भाव से उपमान और उसके साधारण धर्म का वर्णन होता है। ३. शास्त्र।

दृष्टार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो। २. वह शब्द जिसके श्रवण से श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो, जिसका प्रत्यक्ष इस संसार में होता हो।

दृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देखने की वृत्ति या शक्ति। आँख की ज्योति। २. आँख की पुतली के किसी वस्तु की सीध में होने की स्थिति। अवलोकन। नज़र। निगाह। ३. आँख की ज्योति का प्रसार, जिसमें वस्तुओं के रूप, रंग आदि का बोध होता है। दृक्‌पथ। ४. देखने के लिये खुली हुई आँख।

मुहा०—(किसी से) दृष्टि जुड़ना= देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। (किसी से) दृष्टि जोड़ना=आँख मिलाना। साक्षात्कार करना। दृष्टि मिलाना=दे० "दृष्टि जोड़ना"। दृष्टि रखना=देख रेख में रखना।

५. परख। पहचान। तमीज़। ६. कृपा-दृष्टि। हित का ध्यान। मिहरबानी की नजर। ७. आशा की दृष्टि। आस। उम्मीद। ८. ध्यान। विचार। अनुमान। ६. उद्देश्य।

दृष्टिगत–वि० [सं०] जो दिखाई पड़ता हो।

दृष्टिगोचर–वि० [सं०] नेत्रेंद्रिय द्वारा जिसका बोध हो जो देखने में आ सके।

दृष्टिपथ–संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टि का फैलाव। नज़र की पहुँच।

दृष्टिपात–संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टि डालने की क्रिया या भाव। ताकना। देखना।

दृष्टिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. नीठबंदी। इंद्रजाल। माया। जादू। २. हाथ की सफ़ाई या चालाकी। हस्त-लाघव।

दृष्टिवंत–वि० [सं० दृष्टि+वंत (प्रत्य०)] १. दृष्टिवाला। २. ज्ञानी। ज्ञानवान्।

दृष्टिवाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो।

दे–संज्ञा स्त्री० [सं० देवी] स्त्रियों के लिये एक आदर-सूचक शब्द। देवी।

देई–संज्ञा स्त्री० [सं० देवी] १. देवी। २. स्त्रियों के लिये एक आदरसूचक शब्द।

देख–संज्ञा स्त्री० [हिं० देखना] देखने की क्रिया या भाव। जैसे, देख-रेख, देख-भाल।

देखन०†–संज्ञा स्त्री० [हिं० देखना] देखने की क्रिया, भाव या ढंग।

देखनहारा†०–संज्ञा पुं० [हिं० देखना] [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।

देखना–क्रि० स० [सं० दृश्] १. किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूप, रंग आदि का ज्ञान नेत्रों द्वारा प्राप्त करना। अवलोकन करना।

मुहा०—देखना सुनना=जानकारी प्राप्त करना। पता लगाना। देखने में= १. बाह्य लक्षणों के अनुसार। साधारण व्यवहार में। २. रूप रंग में। देखते देखते=१. आँखों के सामने। २. तुरंत। फौरन। चटपट। देखते रह जाना=दंग या भौंचक्का रह जाना। चकित हो जाना। देखा जायगा=१. फिर विचार किया जायगा। २. पीछे जो कुछ करना होगा, किया जायगा।

२. जाँच करना। मुआयना करना। ३. ढूँढ़ना। खोजना। तलाश करना। पता लगाना। ४. परीक्षा करना। आज़माना। परखना। ५. निगरानी रखना। ताकते रहना। ६. समझना। सोचना। विचारना। ७ अनुभव करना। भोगना। ८. पढ़ना। बाँचना। ६. गुण, दोष का पता लगाना। परीक्षा करना। जाँच। १०. ठीक करना।

देख-भाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० देखना + भालना] १. जाँच-पड़ताल। निरीक्षण। निगरानी। २. देखा-देखी। साक्षात्कार।

देखराना०†–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

देखरावना†-क्रि० स० दे० "दिखलाना"

देख-रेख-संज्ञा स्त्री० [हिं० देखना + सं० प्रेक्षण] देख-भाल। निरीक्षण। निगरानी।

देखाऊ-वि० [हिं० देखना] १. जो केवल देखने में सुंदर हो, काम का न हो। झूठी तड़क-भड़कवाला। २. जो ऊपर से दिखाने के लिये हो, वास्तविक न हो। बनावटी।

देखा-देखी-संज्ञा स्त्री० [हिं० देखना] आँखों से देखने की दशा या भाव। दर्शन। साक्षात्कार।

क्रि० वि० दूसरों को करते देखकर। दूसरों के अनुकरण पर।

देखाना†-क्रि० स० दे० "दिखाना"।

देखाव-संज्ञा पु० [हिं० देखना] १. दृष्टि की सीमा। नजर की पहुँच। २. ठाट-बाट। तड़क-भड़क।

देखावट-संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखाना] १. रूप-रंग दिखाने की क्रिया या भाव। बनाव। २. ठाट-बाट। तड़क-भड़क।

देखावना-क्रि० स० दे० "दिखाना"।

देग-संज्ञा पु० [फा०] खाना पकाने का चौड़े मुँह और चौड़े पेट का बड़ा बरतन।

देगचा-संज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० अल्पा० देगची] छोटा देग।

देदीप्यमान-वि० [सं०] अत्यंत प्रकाश-युक्त। चमकता हुआ। दमकता हुआ।

देन-संज्ञा स्त्री० [हिं० देना] १. देने की क्रिया या भाव। दान। २. दी हुई चीज। प्रदत्त वस्तु।

देनदार-संज्ञा पु० [हिं० देना + फा० दार] ऋणी। क़र्ज़दार।

देनहार†-वि० [हिं० देना + हार (प्रत्य०)] देनेवाला।

देना-क्रि० स० [सं० दान] १. अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में करना। प्रदान करना। २. सौंपना। हवाले करना। ३. हाथ पर या पास रखना। थमाना। ४. रखना, लगाना या डालना। ५. मारना। प्रहार करना। ६. अनुभव कराना। भोगाना। ७. उत्पन्न करना। निकालना। ८. बंद करना। ९. भिड़ाना। (इस क्रिया का प्रयोग बहुत सी सकर्मक क्रियाओं के साथ संयो० क्रि० के रूप में है। जैसे—कर देना, गिरा देना।)

संज्ञा पु० उधार लिया हुआ रुपया। क़र्ज़।

देमान†-संज्ञा पु० दे० "दीवान"।

देय-वि० [सं०] देने योग्य। दातव्य।

देर-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नियमित, उचित या आवश्यक से अधिक समय। अतिकाल। विलंब। २. समय। वक्त।

देरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "देर"।

देव-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० देवी] १. देवता। सुर। २. पूज्य व्यक्ति। ३. ब्राह्मणों तथा बड़ों के लिये एक आदर-सूचक शब्द।

संज्ञा पु० [फा०] दैत्य। राक्षस।

देवऋण-संज्ञा पु० [सं०] देवताओं के लिये कर्त्तव्य यज्ञादि।

देवऋषि-संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के लोक में रहनेवाले नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य आदि ऋषि।

देवकन्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता की पुत्री। देवी।

देवकार्य्य-संज्ञा पु० [सं०] देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किया हुआ कर्म। होम, पूजा आदि।

देवकी-संज्ञा स्त्री० [सं०] वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता का नाम।

देवकीनंदन-संज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

देवगण-संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के अलग अलग समूह। देवताओं को वर्ग।

देवगति-संज्ञा स्त्री० [सं०] मरने के उप-रांत उत्तम गति। स्वर्गलाभ।

देवगिरि-संज्ञा पु० [सं०] १. रैवतक पर्वत जो गुजरात में है। गिरनार। २. दक्षिण का एक प्राचीन नगर, जो आजकल दौल-ताबाद कहलाता है।

देवगुरु-संज्ञा पु० [सं०] बृहस्पति।

देवठान-संज्ञा पु० [सं० देवोत्थान] कार्त्तिक शुक्ला एकादशी। इस दिन विष्णु भगवान् सोकर उठते हैं। दिठवन।

देवतर्पण-संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं के नाम ले-लेकर पानी देना।

देवता-संज्ञा पु० [सं०] स्वर्ग में रहनेवाला अमर प्राणी। सुर।

देवत्व-संज्ञा पु० [सं०] देवता होने का भाव या धर्म।

देवदत्त-वि० [सं०] १. देवता का दिया हुआ। २. देवता के निमित्त दिया हुआ।

संज्ञा पु० १. देवता के निमित्त दान की हुई

संपत्ति। २. शरीर की पाँच वायुओं में से एक, जिससे जँभाई आती है। ३. अर्जुन के शंख का नाम।

देवदार–संज्ञा पुं० [सं० देवदारु] एक बहुत ऊँचा और सीधा पेड़। इसकी अनेक जातियाँ संसार के अनेक स्थानों में पाई जाती हैं। इससे एक प्रकार का अलकतरा और तारपीन की तरह का तेल भी निकलता है।

देवदाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता जो देखने में तुरई की बेल से मिलती जुलती होती है। घघर बेल। बंदाल।

देवदासी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेश्या। २ मंदिरों में रहनेवाली दासी या नर्तकी।

देवदेव–संज्ञा पुं० [सं०] इन्द्र।

देवधुनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

देवनदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंगा। २. सरस्वती और दृषद्वती नदियाँ।

देवनागरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भारतवर्ष की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिंदी, मराठी आदि देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि का विकसित रूप है।

देवपथ–संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

देवभाषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] संस्कृत भाषा।

देवभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग।

देवमंदिर–संज्ञा पुं० [सं०] वह घर, जिसमें किसी देवता की मूर्त्ति स्थापित हो। देवालय।

देवमाया–संज्ञा स्त्री० [सं०] परमेश्वर की माया जो अविद्या रूप होकर जीवों को बंधन में डालती है।

देवमुनि–संज्ञा पुं० [सं०] नारद ऋषि।

देवयज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] होमादि कर्म जो पंचयज्ञों में से एक है।

देवयान–संज्ञा पुं० [सं०] उपनिषदों के अनुसार शरीर से अलग होने के उपरांत जीवात्मा के जाने के लिये दो मार्गों में से वह मार्ग जिससे वह ब्रह्मलोक को जाता है।

देवयानी–संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्राचार्य की कन्या, जो पहले अपने पिता के शिष्य कच पर आसक्त हुई थी। पीछे राजा ययाति के साथ इसका विवाह हुआ था।

देवयोनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग, अंतरिक्ष आदि में रहनेवाले उन जीवों की सृष्टि, जो देवताओं के अंतर्गत माने जाते हैं। जैसे—अप्सरा, यक्ष, पिशाच आदि।

देवर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० देवरानी] १. पति का छोटा भाई। २. पति का भाई।

देवरा–संज्ञा पुं० [सं० देव] [स्त्री० देवरी] छोटा-मोटा देवता।

देवराज–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

देवराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

देवरानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० देवर] देवर की स्त्री। पति के छोटे भाई की स्त्री।

संज्ञा स्त्री० [हिं० देव + रानी] देवराज इंद्र की पत्नी, शची। इंद्राणी।

देवराय–संज्ञा पुं० दे० "देवराज"।

देवर्षि–संज्ञा पुं० [सं०] नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, भृगु इत्यादि जो देवताओं में ऋषि माने जाते हैं।

देवल–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो देवताओं की पूजा करके जीविका निर्वाह करे। पुजारी। पंडा। २ धार्मिक पुरुष। ३ नारद मुनि। ४. एक प्रकार का चावल।

संज्ञा पुं० [देवालय] देवालय। देवमंदिर।

देवलोक–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

देववधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवता की स्त्री। २ देवी। ३. अप्सरा।

देववाणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संस्कृत भाषा। २. किसी अदृश्य देवता का वचन जो अंतरिक्ष में सुनाई पड़े। आकाशवाणी।

देवव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] भीष्म पितामह।

देवशुनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] देवलोक की कुतिया, सरमा। विशेष—दे० "सरमा"।

देवसभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवताओं का समाज। २ राजसभा। ३. सुधर्म्मा नामक सभा, जिसे मय ने अर्जुन या युधिष्ठिर के लिये बनाया था।

देवसेना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं की सेना। २. प्रजापति की कन्या, जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। षष्ठी।

देवस्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं के रहने की जगह। २ देवालय। मंदिर।

देवहूति–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वायंभुव मनु की तीन कन्याओं में से एक, जो कर्दम मुनि को ब्याही थी। सांख्यशास्त्र के कर्त्ता कपिल इन्हीं के पुत्र थे।

देवांगना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवताओं की स्त्री। स्वर्ग की स्त्री। २. अप्सरा।

देवा–वि० [हिं० देना] १. देनेवाला। जैसे—

२. देवताओं की की हुई। देवकृत। प्रारब्ध या संयोग से होनेवाली। ३. आकस्मिक। ४. सात्त्विक।
दैवी गति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ईश्वर की की हुई बात। २. भावी। होनहार। अदृष्ट।
दैहिक-वि० [सं०] १. देह-संबंधी। शारीरिक। २. देह से उत्पन्न।
दोंचना†-क्रि० स० [हिं० दोचन] दबाव में डालना।
दो-वि० [सं० द्वि] एक और एक।
मुहा०-दो एक या दो चार=कुछ। थोड़े। दो चार होना=भेंट होना। मुलाकात होना। आँखें दो चार होना=सामना होना। दो दिन का=बहुत ही थोड़े समय का।
दो-आतशा-वि० [फा०] जो दो बार भभके में खींचा या चुआया गया हो।
दोआब-संज्ञा पुं० [फा०] किसी देश का वह भाग जो दो नदियों के बीच में हो।
दोइ†-संज्ञा पुं० वि० दे० "दो"।
दोउ, दोऊ*†-वि० [हिं० दो] दोनों।
दोख †-संज्ञा पुं० दे० "दोष"।
दोखना*†-क्रि० स० [हिं० दोष+ना (प्रत्य०)] दोष लगाना। ऐब लगाना।
दोखी*†-संज्ञा पुं० दे० "दोषी"।
दोगला-संज्ञा पुं० [फा० दोगल.] [स्त्री० दोगली] १. वह मनुष्य जो अपनी माता के यार से उत्पन्न हुआ हो। जारज। २. वह जीव जिसके माता-पिता भिन्न भिन्न जातियों के हों।
दोगा-संज्ञा पुं० [हिं० दुक्का] १. एक प्रकार का लिहाफ़ का कपड़ा। २ पानी में घोला हुआ चूना जिससे सफेदी की जाती है।
दोच-संज्ञा स्त्री० [हिं० दबोच] १. दुबधा। असमंजस। २. कष्ट। दुःख। ३. दबाव। दबाए जाने का भाव।
दोचन-संज्ञा स्त्री० [हिं० दबोचन] १. दुबधा। असमंजस। २. दबाव। ३. कष्ट। दुःख।
दोचना-क्रि० स० [हिं० दोच] कोई काम करने के लिये बहुत ज़ोर देना। दबाव डालना।
दोचित्ता-वि० [हिं० दो+चित्त] [स्त्री० दोचित्ती] जिसका चित्त दो कामों या बातों में बँटा हो। उद्विग्न-चित्त।
स्त्री० [हिं० दो+चित्त] "दोचित्ता" होने का भाव। चित्त की उद्विग्नता।
दोज†-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो] किसी पक्ष की द्वितीया तिथि। दूज।
दोजख-संज्ञा पुं० [फा०] मुसलमानों के अनुसार नरक जिसके सात विभाग हैं।
दोजखी-वि० [फा०] १. दोज़ख संबंधी। दोज़ख का। २. बहुत बड़ा अपराधी या पापी। नारकी।
दोतरफा-वि० [फा०] दोनों तरफ़ का। दोनों ओर संबंधी।
क्रि० वि० दोनों तरफ़। दोनों ओर।
दोतला, दोतल्ला-वि० [हिं० दो+तल] दो खंड का। दो-मंजिला। जैसे—दोतला मकान।
दोतारा-संज्ञा पुं० [हिं० दो+तार (धातु)] एक-तारे की तरह का एक प्रकार का बाजा।
दोदना†-क्रि० स० [हिं० दो (दोहराना)] प्रत्यक्ष कही हुई बात से इनकार करना। प्रत्यक्ष बात से मुकरना।
दोधक-संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त। बंधु।
दोधारा-वि० [हिं० दो+धार] [स्त्री० दोधारी] जिसके दोनों ओर धार या बाढ़ हो।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का थूहर।
दोन-संज्ञा पुं० [हिं० दो] दो पहाड़ों के बीच की नीची ज़मीन।
संज्ञा पुं० [हिं० दो+नद] १. दो नदियों के बीच की ज़मीन। दोआबा। २. दो नदियों का संगम-स्थान। ३. दो वस्तुओं की संधि या मेल।
दोनला-वि० [हिं० दो+नल] जिसमें दो नालें हों। जैसे—दोनली बंदूक।
दोना-संज्ञा पुं० [सं० द्रोण] [स्त्री० दोनी पत्तों का बना हुआ कटोरे के आकार का छोटा गहरा पात्र।
दोनिया, दोनी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० दोना का स्त्री० अल्पा०] छोटा दोना।
दोनो-वि० [हिं० दो+नो (प्रत्य०)] ऐसे विशिष्ट दो (मनुष्य या पदार्थ) जिनका पहले वर्णन हो चुका हो और जिनमें से कोई छोड़ा न जा सकता हो। एक और दूसरा। उभय।
दोपलिया†-वि० संज्ञा स्त्री० दे० "दोपल्ली"।

दोपल्ली–वि० [हिं० दो + पल्ला + ई (प्रत्य०)] दो पल्लेवाला। जिसमें दो पल्ले हों। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी जिसमें कपड़े के दो टुकड़े एक साथ सिले होते हैं।

दोपहर–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + पहर] वह समय जब कि सूर्य मध्य आकाश में रहता है। मध्याह्न काल।

दोपहरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

दोपीठा–वि० [हिं० दो + पीठ] दोनों ओर समान रंग रूप का। दोरुखा।

दोफसली–वि० [हिं० दो + अ० फसल] १. दोनों फ़सलों के संबंध का। २. जो दोनों ओर लग सके। दोनों ओर काम देने योग्य।

दोबल–संज्ञा पु० [?] दोष। अपराध।

दोबारा–क्रि० वि० [फा०] एक बार हो चुकने के उपरांत फिर एक बार। दूसरी बार।

दोभाषिया–संज्ञा पु० दे० "दुभाषिया"।

दोमंज़िला–वि० [फा०] जिसमें दो खंड या मंज़िलें हों। (मकान)

दोमुहला–वि० दे० "दो मंज़िला"।

दोमुँहा–वि० [हिं० दो + मुँह] १. जिसे दो मुँह हों। २. दोहरी चाल चलने या बात करनेवाला। कपटी।

दोमुँहा साँप–संज्ञा पु० [हिं० दो + मुँहा + साँप] १. एक प्रकार का साँप जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान ही जान पड़ती है। २. कुटिल। कपटी।

दोय*†–वि० संज्ञा पु० १. दे० "दो"। २. दे० "दोनों"।

दोरंगा–वि० [हिं० दो + रंग] १. दो रंग का। जिसमें दो रंग हों। २. जो दोनों ओर लग या चल सके।

दोरंगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + रंग + ई (प्रत्य०)] १. दोरंगे या दोमुँहे होने का भाव। २. छल। कपट।

दोरदंड*†–वि० दे० "दुर्दंड"।

दोरसा–वि० [हिं० दो + रस] दो प्रकार के स्वाद या रसवाला। जिसमें दो तरह के रस या स्वाद हों।
यौ०—दोरसे दिन = गर्भावस्था के दिन।
संज्ञा पु० एक प्रकार का पीने का तमाकू।

दोराहा–संज्ञा पु० [हिं० दो + राह] वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।

दोरुखा–वि० [फा०] १. जिसके दोनों ओर समान रंग या बेल-बूटे हों। २. जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो।

दोल–संज्ञा पु० [सं०] १. झूला। हिंडोला। २. डोली। चंडोल।

दोला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिंडोला। झूला। २. डोली या चंडोल।

दोलायंत्र–संज्ञा पु० [सं०] वैद्यों का एक यंत्र जिसकी सहायता से वे ओषधियों के अर्क उतारते हैं।

दोलायमान–वि० [सं०] हिलता हुआ।

दोशाखा–संज्ञा पु० [फा०] शमादान या दीवारगीर जिसमें दो बत्तियाँ हों।

दोष–संज्ञा पु० [सं०] १. बुरापन। खराबी। अवगुण। ऐब। नुक्स।
मुहा०—दोष लगाना = किसी के संबंध में यह कहना कि उसमें अमुक दोष है।
२. लगाया हुआ अपराध। अभियोग। लांछन। कलंक।
यौ०—दोषारोपण = दोष देना या लगाना।
३. अपराध। कसूर। जुर्म। ४. पाप। पातक। ५. शरीर में के वात, पित्त और कफ जिनके कुपित होने से शरीर में व्याधि उत्पन्न होती है। ६. वह मानसिक भाव जो मिथ्या ज्ञान से उत्पन्न होता है और जिसकी प्रेरणा से मनुष्य भले या बुरे कामों में प्रवृत्त होता है। अतिव्याप्ति। (न्याय) ७. साहित्य में वे बातें जिनसे काव्य के गुण में कमी हो जाती है। यह पाँच प्रकार का होता है–पद-दोष, पदांश-दोष, वाक्य-दोष, अर्थ-दोष और रस दोष। ८. प्रदोष।
संज्ञा पु० [सं० द्वेष] द्वेष। शत्रुता।

दोषता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दोष का भाव।

दोषन*†–संज्ञा पु० [सं० दूषण] दोष। दूषण। अपराध।

दोषना†–क्रि० स० [सं० दूषण + ना (प्रत्य०)] दोष लगाना। अपराध लगाना।

दोषिन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० दोषी] १. अपराधिनी। २. पाप करनेवाली स्त्री।

दोषी–संज्ञा पुं० [सं० दोषिन्] १. अपराधी। कसूरवार। २. पापी। ३. मुजरिम। अभियुक्त। ४. जिसमें दोष हो।

दोस*†–संज्ञा पु० दे० "दोष"।

दोसदारी*†–संज्ञा स्त्री० [फा०] मित्रता। दोस्ती।

दोसाला†-वि० [हिं० दो + साल = वर्ष] दो वर्ष का। दो वर्ष का पुराना।

दोसूती-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + सूत] दोतही या दुसुती नाम की बिछाने की मोटी चादर।

दोस्त-संज्ञा पुं० [फा०] मित्र। स्नेही।

दोस्ताना-संज्ञा पुं० [फा०] १. दोस्ती। मित्रता। २. मित्रता का व्यवहार।
वि० दोस्ती का। मित्रता का।

दोस्ती-संज्ञा स्त्री० [फा०] मित्रता। स्नेह।

दोह*†-संज्ञा पुं० दे० "द्रोह"।

दोहगा†-संज्ञा स्त्री० [सं० दुर्भगा] रखनी। सुरैतिन। उपपत्नी।

दोहता-संज्ञा पुं० [सं० दौहित्र] [स्त्री० दोहती] लड़की का लड़का। नाती। नवासा।

दोहत्थड़-संज्ञा पुं० [हिं० दो + हाथ] दोनों हाथों से मारा हुआ थप्पड़।

दोहत्था-क्रि० वि० [हिं० दो + हाथ] दोनों हाथों से। दोनों हाथों के द्वारा।
वि० जो दोनों हाथों से हो।

दोहद-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गर्भवाली स्त्री की इच्छा। उकौना। २. गर्भवती स्त्री की मतली इत्यादि। ३. गर्भावस्था। ४. गर्भ का चिह्न। ५. गर्भ। ६. एक प्राचीन विश्वास जिसके अनुसार सुंदर स्त्री के स्पर्श से प्रियंगु, पान की पीक थूकने से मौलसिरी, चरणाघात से अशोक, दृष्टिपात से तिलक, मधुर गान से आम, और नाचने से कचनार इत्यादि वृक्ष फूलते हैं।

दोहदवती-संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्भवती स्त्री।

दोहन-संज्ञा पुं० [सं०] १. गाय, भैंस इत्यादि के स्तनों से दूध निकालना। दुहना। २. दोहनी।

दोहना*-क्रि० स० [सं० दूषण] १. दोष लगाना। २. तुच्छ, ठहराना।

दोहनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मिट्टी का वह बरतन जिसमें दूध दुहते हैं। २. दूध दुहने का काम।

दोहर-संज्ञा स्त्री० [हिं० दो + धड़ी = तह] एक प्रकार की चादर जो कपड़े की दो परतों को एक में सीकर बनाई जाती है।

दोहरना-क्रि० अ० [हिं० दोहरा] १. दो बार होना। दूसरी आवृत्ति होना। २. दोहरा होना।
क्रि० स० दोहरा करना।

दोहरा-वि० पुं० [हिं० दो + हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० दोहरी] १. दो परत या तह का। २. दुगना।
संज्ञा पुं० १. एक ही पत्ते में लपेटे हुए पान के दो बीड़े। (तंबोली) २. दोहा नाम का छंद।

दोहराना-क्रि० स० [हिं० दोहरा] १. किसी बात को दूसरी बार कहना या करना। पुनरावृत्ति करना। †२. किसी कपड़े या कागज़ आदि की दो तहें करना। दोहरा करना।

दोहा-संज्ञा पुं० [हिं० दो + हा (प्रत्य०)] एक प्रसिद्ध हिंदी छंद। इसी को उलट देने से सोरठा हो जाता है।

दोहाई-संज्ञा स्त्री० दे० "दुहाई"।

दोहाक, दोहाग*†-संज्ञा पुं० [सं० दौर्भाग्य] दुर्भाग्य। बदकिस्मती। अभाग्य।

दोहागा†-संज्ञा पुं० [हिं० दोहाग] [स्त्री० दोहागिन] अभागा। बदकिस्मत।

दोहित†-संज्ञा पुं० [सं० दौहित्र] बेटी का बेटा। नाती।

दोही-संज्ञा पुं० [हिं० दो] दोहे की तरह का एक छंद।
संज्ञा पुं० [सं० दोहिन्] १. दूध दुहनेवाला। २ ग्वाला।

दोह्य-वि० [सं०] दूहने योग्य।

दौं*-अव्य० [सं० अथवा] या। अथवा। दे० "धौं"।

दौंकना*-क्रि० अ० दे० "दमकना"।

दौंचना*†-क्रि० स० [हिं० दबोचना] १. दबाव डालकर लेना। २. लेने के लिये अड़ना।

दौंरी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँना या दाँवना] १. बैलों का झुंड जो कटी हुई फसल के डंठलों पर दाना झाड़ने के लिये फिराया जाता है। २. वह रस्सी जिससे बैल बँधे होते हैं। ३. फ़सल के डंठलों से दाने झाड़ने की क्रिया। ४. झुंड।

दौ*-संज्ञा स्त्री० [सं० दव] १. जंगल की आग। २. संताप। ताप। जलन।

दौड़-संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की क्रिया या भाव। द्रुतगमन। धावा।
मुहा०—दौड़ मारना या लगाना = १. वेग के साथ जाना। २. दूर तक पहुँचना। लंबी यात्रा करना।
२. वेगपूर्वक आक्रमण। धावा। चढ़ाई। ३. उद्योग में इधर-उधर फिरने की क्रिया।

प्रयत्न। ४. द्रुत गति। वेग।
मुहा०—मन की दौड़ = चित्त की सूझ। कल्पना।
५. गति की सीमा। पहुँच। ६. उद्योग की सीमा। प्रयत्नों की पहुँच। ७. बुद्धि की गति। अक्ल की पहुँच। ८. विस्तार। लंबाई। आयतन। ९. सिपाहियों का दल जो अपराधियों को एकबारगी कहीं पकड़ने के लिये जाय।
दौड़-धूप-संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़+धूप] परिश्रम। प्रयत्न। उद्योग।
दौड़ना-क्रि० अ० [सं० धोरण] १. मामूली चलने से ज्यादा तेज चलना।
मुहा०—चढ़ दौड़ना = चढ़ाई करना। आक्रमण करना। दौड़ दौड़कर आना = जल्दी जल्दी या बार बार आना।
२. सहसा प्रवृत्त होना। झुक पड़ना। ३ किसी प्रयत्न में इधर उधर फिरना। ४. फैलना। व्याप्त होना। छा जाना।
दौड़ादौड़-क्रि० वि० [हिं० दौड़+दौड़] [संज्ञा दौड़ादौड़ी] बिना कहीं रुके हुए। अविश्रांत। बेतहाशा।
दौड़ादौड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़धूप। २. बहुत से लोगों के साथ इधर-उधर दौड़ने की क्रिया। ३. आतुरता। हड़बड़ी।
दौड़ान-संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की क्रिया या भाव। द्रुतगमन। २. वेग। झोंक। ३. सिलसिला।
दौड़ाना-क्रि० स० [हिं० दौड़ना का सकर्मक रूप] १. दौड़ने की क्रिया कराना। जल्द जल्द चलाना। २. बार बार आने-जाने के लिये कहना या विवश करना। ३. किसी वस्तु को एक जगह से खींचकर दूसरी जगह ले जाना। ४. फैलाना। पोतना। ५. चलाना। जैसे—कलम दौड़ाना।
दौत्य*-संज्ञा पुं० [सं०] दूत का काम।
दौन*-संज्ञा पुं० दे० "दमन"।
दौना-संज्ञा पुं० [सं० दमनक] एक पौधा जिसकी पत्तियों में तेज, पर कुछ कड़ुई सुगंध आती है।
†संज्ञा पुं० दे० "दोना"।
*क्रि० स० [सं० दमन] दमन करना।
दौनागिरि-संज्ञा पुं० दे० "द्रोणागिरि"।
दौर-संज्ञा पुं० [अ०] १. चक्कर। भ्रमण। फेरा। २. दिनों का फेर। कालचक्र। ३. अभ्युदय काल। बढ़ती का समय।
यौ०—दौरदौरा = प्रधानता। प्रबलता।
४. प्रताप। प्रभाव। हुकूमत। ५. बारी। पारी। ६. बार। दफा। ७. दे० "दौरा"।
दौरना*†-क्रि० अ० दे० "दौड़ना"।
दौरा-संज्ञा पुं० [अ० दौर] १. चक्कर। भ्रमण। २. इधर-उधर जाने या घूमने की क्रिया। फेरा। गश्त। ३ अफसर का इलाके में जाँच-पड़ताल के लिये घूमना।
मुहा०—(असामी या मुकदमा) दौरा सुपुर्द करना = (असामी या मुकदमे को) फैसले के लिये सेशन-जज के पास भेजना।
४. सामयिक आगमन। फेरा। ५. किसी ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना जो समय समय पर होता हो। आवर्त्तन।
†संज्ञा पुं० [सं० द्रोण] [स्त्री० अल्पा० दौरी] बाँस की फट्टियों या मूँज आदि का टोकरा।
दौरात्म्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. दुरात्मा का भाव। दुर्जनता। २. दुष्टता।
दौरान-संज्ञा पुं० [फा०] १. दौरा। चक्र। २. दिनों का फेर। ३. फेरा। पारी।
दौराना†*-क्रि० स० दे० "दौड़ाना"।
दौरी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० दौरा] बाँस या मूँज की छोटी टोकरी। चँगेरी। डलिया।
दौर्जन्य-संज्ञा पुं० [सं०] दुर्जनता।
दौर्बल्य-संज्ञा पुं० [सं०] दुर्बलता।
दौर्मनस्य-संज्ञा पुं० [सं०] 'दुर्मनस्' होने का भाव। दुर्जनता।
दौर्य-संज्ञा पुं० [सं०] दूरी।
दौलत-संज्ञा स्त्री० [अ०] धन। संपत्ति।
दौलतखाना-संज्ञा पुं० [फा०] निवासस्थान। घर। (आदरार्थ)
दौलतमंद-वि० [फा०] धनी। संपन्न।
दौवारिक-संज्ञा पुं० [सं०] द्वारपाल।
दौहित्र-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दौहित्री] लड़की का लड़का। नाती।
द्यु-संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन। २. आकाश। ३. स्वर्ग। ४. अग्नि। ५. सूर्यलोक।
द्युति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। कांति। चमक। २. शोभा। छवि। ३. लावण्य। ४. रश्मि। किरण।
द्युतिमंत-वि० दे० "द्युतिमान्"।
द्युतिमा-संज्ञा स्त्री० [सं० द्युति+मा (प्रत्य०)] प्रकाश। तेज।

द्युतिमान्–वि० [सं० द्युतिमत्] [स्त्री० द्युतिमती] जिसमें चमक या आभा हो ।
द्युमणि–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य ।
द्युमत्सेन–संज्ञा पुं० [सं०] शाल्व देश के एक राजा जो सत्यवान् के पिता थे ।
द्युलोक–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्गलोक ।
द्यूत–संज्ञा पुं० [सं०] वह खेल जिसमें दाँव बदकर हार जीत की जाय । जूआ ।
द्योतक–वि० [सं०] १. प्रकाश करनेवाला । प्रकाशक । २. बतलानेवाला ।
द्योतन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० द्योतित] १. दर्शन । २ प्रकाशित करने या जलाने का काम । ३ दिखाने का काम ।
द्योहरा–संज्ञा पुं० दे० "देवघरा" ।
द्यौस–संज्ञा पुं० [सं० दिवस] दिन ।
द्रम्म–संज्ञा पुं० [सं० मि० फा० दिरम] सोलह पण मूल्य की एक मुद्रा । (लीलावती)
द्रव–संज्ञा पुं० [सं०] १. द्रवण । २. बहाव । ३. पलायन । दौड़ । ४. वेग । ५. आसव । ६. रस । ७. द्रवत्व ।
वि० १. पानी की तरह पतला । तरल । २. गीला । ३. पिघला हुआ ।
द्रवण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० द्रवित] १. गमन । गति । २. चरण । बहाव । ३. पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव । ४. चित्त के कोमल होने की वृत्ति ।
द्रवता–संज्ञा स्त्री० [सं०] द्रवत्व ।
द्रवत्व–संज्ञा पुं० [सं०] पानी की तरह पतला होने या बहने का भाव ।
द्रवना*–क्रि० अ० [सं० द्रवण] १. प्रवाहित होना । बहना । २. पिघलना । ३. पसीजना । दयार्द्र होना ।
द्रविड़–संज्ञा पुं० [सं० तिरमिक] १. दक्षिण भारत का एक देश । २. इस देश का रहनेवाला । ३. ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत पाँच विभाग हैं—आंध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड़ और महाराष्ट्र ।
द्रवीभूत–वि० [सं०] १. जो पानी की तरह पतला या द्रव हो गया हो । २. पिघला हुआ । ३. दयार्द्र । दयालु ।
द्रव्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्तु । पदार्थ । चीज़ । २. वह पदार्थ जिसमें केवल गुण और क्रिया अथवा केवल गुण हो और जो समवायि कारण हो । वैशेषिक में द्रव्य नौ कहे गए हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन । वास्तव में द्रव्य उस मूल तत्त्व को कहते हैं जिसमें और कोई द्रव्य न मिला हो । वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि जल और वायु आदि कई और मूल द्रव्यों के योग से बने हैं । उन्होंने लगभग ७५ ऐसे मूल द्रव्य या तत्त्व ढूँढ़ निकाले हैं जिनके योग से भिन्न भिन्न पदार्थ बने हैं । ३. सामग्री । सामान । उपादान । ४. धन । दौलत ।
द्रव्यत्व–संज्ञा पुं० [सं०] द्रव्य का भाव ।
द्रव्यवान्–वि० [सं० द्रव्यवत्] [स्त्री० द्रव्यवती] धनवान् । धनी ।
द्रष्टव्य–वि० [सं०] १. देखने योग्य । दर्शनीय । २. जो दिखाया जानेवाला हो ।
द्रष्टा–वि० [सं०] १. देखनेवाला । २. साक्षात् करनेवाला । ३ दर्शक । प्रकाशक ।
संज्ञा पुं० सांख्य के अनुसार पुरुष; और योग के अनुसार आत्मा ।
द्राक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] दाख । अंगूर ।
द्राघिमा–संज्ञा पुं० [सं० द्राघिमन्] १. दीर्घता । लंबाई । २. अक्षांश सूचित करनेवाली वे कल्पित रेखाएँ जो भूमध्य रेखा के समानांतर पूर्व-पश्चिम को मानी गई हैं ।
द्राव–संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन । २. चरण । ३. बहने या पसीजने की क्रिया ।
द्रावक–वि० [सं०] १. ठोस चीज़ को पानी की तरह पतला करनेवाला । २. बहानेवाला । ३. गलानेवाला । ४. पिघलानेवाला । ५. हृदय पर प्रभाव डालनेवाला ।
द्रावण–संज्ञा पुं० [सं०] गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव ।
द्राविड़–वि० [सं०] [स्त्री० द्राविड़ी] द्रविड़ देशवासी ।
द्राविड़ी–वि० [सं०] द्रविड़-संबंधी ।
मुहा०—द्राविड़ी प्राणायाम = कोई सीधी तरह होनेवाली बात घुमाव फिराव के साथ करना ।
द्रुत–वि० [सं०] १. द्रवीभूत । गला हुआ । २. शीघ्रगामी । तेज । ३. भागा हुआ ।
संज्ञा पुं० १. वृक्ष । २. ताल की एक मात्रा का आधा । बिंदु । व्यंजन । ३. वह लय जो मध्यम से कुछ तेज़ हो । दून ।
द्रुतगामी–वि० [सं० द्रुतगामिन्] [स्त्री० द्रुतगामिनी] शीघ्रगामी । तेज़ चलनेवाला ।
द्रुतपद–संज्ञा पुं० [सं०] बारह अक्षरों का

एक छंद।
द्रुतमध्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्द्ध-सम-वृत्ति।
द्रुतविलंबित–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है। संदरी।
द्रुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. द्रव। २. गति।
द्रुपद–संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर पांचाल के एक राजा जो महाभारत के युद्ध में मारे गए थे। धृष्टद्युम्न और शिखंडी इनके पुत्र और कृष्णा इनकी कन्या थी।
द्रुम–संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष।
द्रुमिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं।
द्रुह्यु–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन आर्यों का एक वंश या जनसमूह। २. शर्म्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का ज्येष्ठ पुत्र जिसने ययाति का बुढ़ापा लेना अस्वीकृत किया था।
द्रोण–संज्ञा पुं० [सं०] १. लकड़ी का एक बरतन जिसमें वैदिक काल में सोम रस रखा जाता था। २. जल आदि रखने का लकड़ी का बरतन। कठवत। ३. चार आढ़क या १६ सेर की एक प्राचीन माप। ४. पत्तों का दोना। ५. नाव। डोंगा। ६. अरणी की लकड़ी। ७. लकड़ी का रथ। ८. डोम कौआ। काला कौआ। ९. द्रोणगिरि नाम का पहाड़। १०. दे० "द्रोणाचार्य्य"।
द्रोणकाक–संज्ञा पुं० [सं०] डोम कौआ।
द्रोणगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत जिसे वाल्मीकीय रामायण में क्षीरोद समुद्र लिखा है।
द्रोणाचार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत में प्रसिद्ध ब्राह्मण वीर जो भरद्वाज ऋषि के पुत्र थे। शरद्वान् की कन्या कृपी के साथ इनका विवाह हुआ था जिससे अश्वत्थामा नामक वीर पुत्र उत्पन्न हुआ था।
द्रोणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डोंगी। २. छोटा दोना। ३. काठ का प्याला। कठवत। डोकिया। ४. दो पर्वतों के बीच की भूमि। दून। ५. दर्रा। ६. द्रोण की स्त्री, कृपी। ७. एक परिमाण जो दो सूर्प या १२८ सेर का होता था।
द्रोन–संज्ञा पुं० दे० "द्रोण"।
द्रोह–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० द्रोही] दूसरे का अहितचिंतन। वैर। द्वेष।
द्रोही–वि० [सं० द्रोहिन्] [स्त्री० द्रोहिणी] द्रोह करनेवाला। बुराई चाहनेवाला।
द्रौपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा द्रुपद की कन्या कृष्णा जो पाँचों पांडवों को ब्याही गई थी। जूए में युधिष्ठिर का सर्वस्व जीत लेने पर दुर्योधन ने दुःशासन द्वारा इसे भरी सभा में बुलवाकर इसका वस्त्र खिंचवाना चाहा था; पर वह वस्त्र न खिंच सका। इसी पर भीम ने बदला चुकाने के लिये दुःशासन के कलेजे का रक्त-पान करने की प्रतिज्ञा की थी जो उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में पूरी की थी।
द्वंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. युग्म। मिथुन। जोड़ा। २. जोड़। प्रतिद्वंद्वी। ३. दो आदमियों की परस्पर लड़ाई। द्वंद-युद्ध। ४. झगड़ा। कलह। बखेड़ा। ५ दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। जैसे—*राग-द्वेष, सुख-दुःख इत्यादि*। ६. उलझन। झंझट। जंजाल। ७. कष्ट। दुःख। ८. उपद्रव। झगड़ा। ऊधम। ९. दुबधा। संशय।
संज्ञा स्त्री० [सं० दुंदुभी] दुंदुभी।
द्वंदर–वि० [सं० द्वंद्वालु] झगड़ालू।
द्वंद्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. दो वस्तुएँ जो एक साथ हों। युग्म। जोड़ा। २. स्त्री-पुरुष या नर-मादा का जोड़ा। ३. दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। ४. गुप्त बात। रहस्य। ५. दो आदमियों की लड़ाई। ६. झगड़ा। बखेड़ा। कलह। ७. एक प्रकार का समास जिसमें मिलनेवाले सब पद प्रधान रहते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है। जैसे—*रोटी-दाल पकाओ*।
द्वंद्वयुद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] वह लड़ाई जो दो पुरुषों के बीच में हो। कुश्ती।
द्वय–वि० [सं०] दो।
द्वादश–वि० [सं०] १. जो संख्या में दस और दो हो। बारह। २. बारहवाँ।
संज्ञा पुं० बारह की संख्या या अंक। १२।
द्वादशाक्षर–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक मंत्र जिसमें बारह अक्षर हैं। वह मंत्र यह है—"ओं नमो भगवते वासुदेवाय"।
द्वादशाह–संज्ञा पुं० [सं०] १. बारह दिन

का समुदाय। २. वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने से बारहवें दिन हो।
द्वादशी-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की बारहवीं तिथि।
द्वादसबानी-वि० दे० "बारहबानी"।
द्वापर-संज्ञा पुं० [सं०] चार युगों में से तीसरा युग। पुराणों में यह युग ८६४००० वर्ष का माना गया है।
द्वार-संज्ञा पुं० [सं०] १. दीवार, परदे आदि में वह खुला स्थान जिससे होकर कोई वस्तु भीतर-बाहर आ जा सके। मुख। मुहाना। मुहड़ा। २. घर में आने-जाने के लिये दीवार में खुला हुआ स्थान। दरवाजा। ३. इंद्रियों के मार्ग या छेद, जैसे—आँख, कान, नाक। ४. उपाय। साधन।
द्वारका-संज्ञा स्त्री० [सं०] काठियावाड़ गुजरात की एक प्राचीन नगरी। यह सात पुरियों में से एक है। कुशस्थली। द्वारावती।
द्वारकाधीश-संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २. कृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका में है।
द्वारकानाथ-संज्ञा पुं० दे० "द्वारकाधीश"।
द्वारपाल-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दरवाज़ पर रक्षा के लिये नियुक्त हो। दरबान।
द्वारपूजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह में एक कृत्य जो कन्यावाले के द्वार पर उस समय होता है जब बारात के साथ वर आता है।
द्वारवती-संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वारका।
द्वारसमुद्र-संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का एक पुराना नगर जहाँ कर्नाटक के राजाओं की राजधानी थी।
द्वारा-संज्ञा पुं० [सं० द्वार] १. द्वार। दरवाजा। फाटक। २. मार्ग। राह। अव्य० [सं० द्वारात्] जरिए से। साधन से।
द्वारावती-संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वारका।
द्वारिका-संज्ञा स्त्री० दे० "द्वारका"।
द्वारी-संज्ञा स्त्री० [सं० द्वार+ई (प्रत्य०)] छोटा द्वार। दरवाजा।
द्वि-वि० [सं०] दो।
द्विक-वि० [सं०] १. जिसमें दो अवयव हों। २. दोहरा।
द्विकर्मक-वि० [सं०] (क्रिया) जिसके दो कर्म हों।
द्विकल-संज्ञा पुं० [हिं० द्वि+कला] छंदःशास्त्र में दो मात्राओं का समूह।
द्विगु-संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्मधारय समास जिसका पूर्वपद संख्यावाचक हो। पाणिनि ने इसे कर्मधारय के अंतर्गत रखा है; पर और लोग इसे स्वतंत्र समास मानते हैं।
द्विगुण-वि० [सं०] दुगना। दूना।
द्विगुणित-वि० [सं०] १. दो से गुणा किया हुआ। २. दूना। दुगना।
द्विज-संज्ञा पुं० [सं०] जिसका जन्म दो बार हुआ हो।
संज्ञा पुं० [सं०] १. अंडज प्राणी। २. पक्षी। ३. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष जिनको यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। ४. ब्राह्मण। ५. चंद्रमा। ६. दाँत।
द्विजन्मा-वि० [सं० द्विजन्मन्] जिसका दो बार जन्म हुआ हो।
संज्ञा पुं० द्विज।
द्विजपति, द्विजराज-संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्राह्मण। २ चंद्र। ३. कपूर। ४. गरुड़।
द्विजाति-संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, जिनको यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। द्विज। २. ब्राह्मण। ३. अंडज। ४. पक्षी। ५. दाँत।
द्विजिह्व-वि० [सं०] १. जिसे दो जीभ हों। २. चुगलखोर। ३ खल। दुष्ट।
संज्ञा पुं० साँप।
द्विजेंद्र, द्विजेश-संज्ञा पुं० दे० "द्विजपति"।
द्वितीय-वि० [सं०] [स्त्री० द्वितीया] दूसरा।
द्वितीया-संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।
द्वित्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. दो का भाव। २. दोहरे होने का भाव।
द्विदल-वि० [सं०] १ जिसमें दो दल या पिंड हों। २. जिसमें दो पटल हों।
संज्ञा पुं० वह अन्न जिसमें दो दल हों। दाल।
द्विधा-क्रि० वि० [सं०] १. दो प्रकार से। दो तरह से। २. दो खंडों या टुकड़ों में।
द्विपदी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह छंद या वृत्ति जिसमें दो पद हों। २. दो पदों का गीत। ३. एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें किसी दोहे आदि को कोष्ठों की तीन पंक्तियों में लिखते हैं।
द्विपाद-वि० [सं०] १. दो पैरोंवाला (पशु)। २. जिसमें दो पद या चरण हों।
द्विभाषी-संज्ञा पुं० [सं० द्विभाषिन्] [स्त्री० द्विभाषिणी] वह पुरुष जो दो भाषाएँ जानता

हो। दुभाषिया।

द्विमुखी–वि० स्त्री० [सं०] दो मुँहवाली। संज्ञा स्त्री० वह गाय जो बच्चा दे रही हो। (ऐसी गाय के दान का बड़ा माहात्म्य समझा जाता है।)

द्विरद–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी। वि० दो दाँतोंवाला।

द्विरागमन–संज्ञा पुं० [सं०] वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना। दौंगा।

द्विरुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो बार कथन।

द्विरेफ–संज्ञा पुं० [सं०] भ्रमर। भौंरा।

द्विविध–वि० [सं०] दो प्रकार का। क्रि० वि० दो प्रकार से।

द्विविधा–संज्ञा पुं० [सं० द्विविध] दुबधा।

द्विवेदी–संज्ञा पुं० [सं० द्विवेदिन्] ब्राह्मणों की एक उपजाति। दूबे।

द्विशिर–वि० [सं० द्वि+शिर] दो सिरोंवाला। जिसके दो सिर हों।

मुहा०—कौन द्विशिर है ? = किसे फालतू सिर है ? किसे अपने मरने का भय नहीं है ?

द्वींद्रिय–संज्ञा पुं० [सं०] वह जंतु जिसके दो ही इंद्रियाँ हों।

द्वीप–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो। टापू। जजीरा। (बहुत बड़े द्वीप को महाद्वीप और छोटे छोटे द्वीपों के समूह को द्वीपपुंज या द्वीपमाला कहते हैं।) २. पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभाग जिनके नाम ये हैं—जंबूद्वीप, लंकाद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप।

द्वेष–संज्ञा पुं० [सं०] चित्त को अप्रिय लगने की वृत्ति। चिढ़। शत्रुता। वैर।

द्वेषी–वि० [सं० द्वेषिन्] [स्त्री० द्वेषिणी] विरोधी। वैरी। चिढ़ रखनेवाला।

द्वैषा–वि० दे० "द्वेषी"।

द्वै–वि० [सं० द्वय] दो। दोनों।

द्वैज–संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीय] द्वितीया। दूज।

द्वैत–संज्ञा पुं० [सं०] १. दो का भाव। युग्म। युगल। २. अपने और पराए का भाव। भेद। अंतर। भेद-भाव। ३. दुबधा। भ्रम। ४. अज्ञान।

द्वैतवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है। वेदांत को छोड़कर शेष पाँचों दर्शन द्वैतवादी माने जाते हैं। २. वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें भूत और चित् शक्ति अथवा शरीर और आत्मा दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं।

द्वैतवादी–वि० [सं० द्वैतवादिन्] [स्त्री० द्वैतवादिनी] द्वैतवाद को माननेवाला।

द्वैध–संज्ञा पुं० [सं०] १. विरोध। २. राजनीति के षड्गुणों में से एक जिसमें मुख्य उद्देश्य गुप्त रखकर दूसरा उद्देश्य प्रकट किया जाता है। ३. आधुनिक राजनीति में वह शासन-प्रणाली जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों।

द्वैपायन–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यासजी का एक नाम। २. एक हृद या ताल जिसमें कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन भागकर छिपा था।

द्वैमातुर–वि० [सं०] जिसकी दो माँ हों। संज्ञा पुं० १. गणेश। २. जरासंध।

द्वौ–वि० [हिं० दो+ऊ, दोउ] दोनों। वि० दे० "दुव"।

ध

ध–हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान दंतमूल है।

धंधक–संज्ञा पुं० [हिं० धंधा] काम-धंधे का आडंबर। जंजाल। बखेड़ा।

धंधकधोरी–संज्ञा पुं० [हिं० धंधक+धोरी] हर घड़ी काम में जुता रहनेवाला।

धंधरक–संज्ञा पुं० दे० "...

धँधला–संज्ञा पुं० [हिं० ...] आडंबर। झूठा ... हीला। बहाना।

धँधलाना–क्रि० ...

छंद करना। ढंग रचना।

धंधा-संज्ञा पुं० [सं० धनधान्य] १. धन या जीविका के लिये उद्योग। काम-काज। २. उद्यम। व्यवसाय। कारबार।

धँधार-संज्ञा स्त्री० [हिं० धूआँ] ज्वाला। लपट।

धुंधारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० धंधा] गोरखधंधा।

धँधोर-संज्ञा पुं० [अनु० धायँ धायँ=आग दहकने की ध्वनि] १. होलिका। होली। २. आग की लपट। ज्वाला।

धँसन-संज्ञा स्त्री० [हिं० धँसना] १. धँसने की क्रिया या ढंग। २. घुसने या पैठने का ढंग। ३. गति। चाल।

धँसना-क्रि० अ० [सं० दशन] १ किसी कड़ी वस्तु का किसी नरम वस्तु के भीतर दाब पाकर घुसना। गड़ना।

मुहा०—जी या मन में धँसना=चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना। दिल में असर करना।

२. अपने लिये जगह करते हुए घुसना। ३. नीचे की ओर धीरे धीरे जाना। नीचे खसकना। उतरना। ४ तल के किसी अंश का दबाव आदि पाकर नीचे हो जाना जिससे गड्ढा सा पड़ जाय। ५. किसी खड़ी वस्तु का जमीन में और नीचे तक चला जाना। बैठ जाना।

क्रि० अ० [सं० ध्वसन] नष्ट होना।

धसान-संज्ञा स्त्री० [हिं० धँसना] १. धँसने की क्रिया या ढंग। २. दलदल।

धसाना-क्रि० स० [हिं० धँसना] १. नरम चीज में घुसाना। गड़ाना। चुभाना। २. पैठाना। प्रवेश कराना। ३ तल या सतह को दबाकर नीचे की ओर करना।

धँसाव-संज्ञा पुं० दे० "धँसान"।

धक-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हृदय के जल्दी जल्दी चलने का भाव या शब्द।

मुहा०—जी धक धक करना=भय या उद्वेग से जी धड़कना। जी धक हो जाना=१. डर से जी दहल जाना। २. चौंक उठना।

२. उमंग। उद्वेग। चोप।

क्रि० वि० अचानक। एकबारगी।

संज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी जूँ।

धकधकाना-क्रि० अ० [अनु० धक] १. भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का जोर जोर से या जल्दी जल्दी चलना। † २. दहकना। भभकना।

धकधकी-संज्ञा स्त्री० [अनु० धक] १. जी धक धक करने की क्रिया या भाव। जी की धड़कन। २. गले और छाती के बीच का गड्ढा जिसमें स्पंदन मालूम होता है। धुकधुकी। दुगदुगी।

मुहा०—धुकधुकी धड़कना=अकस्मात् आशंका या खटका होना। छाती धड़कना।

धकपक-संज्ञा स्त्री० [अनु०] धकधकी। क्रि० वि० दहलते हुए। डरते हुए।

धकपकाना-क्रि० अ० [अनु० धक] जी में दहलना। दहशत खाना। डरना।

धकपेल-संज्ञा स्त्री० [अनु० धक+पेलना] धक्कमधक्का। रेलापेल।

धका-संज्ञा पुं० दे० "धक्का"।

धकाना†-क्रि० स० [हिं०दहकाना] दहकाना। सुलगाना।

धकारा†-संज्ञा पुं० [अनु० धक] आशंका। खटका।

धकियाना†-क्रि० स० [हिं० धक्का] धक्का देना। ढकेलना।

धकेलना-क्रि० स० दे० "ढकेलना"।

धकैत-वि० [हिं० धक्का+ऐत (प्रत्य०)] धक्कमधक्का करनेवाला।

धक्कमधक्का-संज्ञा पुं० [हिं० धक्का] १. बार बार, बहुत अधिक या बहुत से आदमियों का परस्पर धक्का देने का काम। धकापेल। २. ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों।

धक्का-संज्ञा पुं० [सं० धम, हिं० धमक] १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ ऐसा वेग युक्त स्पर्श जिससे एक या दोनों पर एकबारगी भारी दबाव पड़ जाय। टक्कर। रेला। झोंका। २. ढकेलने की क्रिया। झोंका। चपेट। ३ ऐसी भारी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों। कसमकस। ४ शोक या दुःख का आघात। संताप। ५. विपत्ति। आफत। ६. हानि। टोटा। नुकसान।

धक्कामुक्की-संज्ञा स्त्री० [हिं० धक्का+मुक्का] ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को ढकेलें और घूसों से मारें। मुठभेड़। मारपीट।

धगड़ा-संज्ञा पुं० [सं० धव=पति] यार। उपपति।

धगधागना†-क्रि० अ० [अनु०] धकधकाना। धड़कना (छाती या जी का)।

धगवरी-वि० [हिं० धगड़ा = पति या यार] १. पति की दुलारी। २. कुलटा।
धगा[*]-संज्ञा पुं० दे० "धागा"।
धचका-संज्ञा पुं० [अनु०] धक्का। झटका।
धज-संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वज] १. सजावट। बनाव। सुंदर रचना।
यौ०—सजधज = तैयारी। साज-सामान।
२. मोहित करनेवाली चाल। सुंदर ढंग। ३. बैठने-उठने का ढब। ठवन। ४. ठसक। नखरा। ५. रूप-रंग। शोभा।
धजा-संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।
धजीला-वि० [हिं० धज + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० धजीली] सजीला। तरहदार। सुंदर।
धज्जी-संज्ञा स्त्री० [सं० धटी] १. कपड़े, कागज़ आदि की कटी हुई लंबी पतली पट्टी। २. लोहे की चद्दर या लकड़ी के पतले तख्ते की अलग की हुई लंबी पट्टी।
मुहा०—धज्जियाँ उड़ाना = १. टुकड़े टुकड़े करना। विदीर्ण करना। २. (किसी की) खूब दुर्गति करना।
धड़ंग-वि० [हिं० धड़ + अंग] नंगा।
धड़-संज्ञा पुं० [सं० धर] १. शरीर का स्थूल मध्यभाग जिसके अंतर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं। २. पेड़ का वह सबसे मोटा कड़ा भाग जिससे निकलकर डालियाँ इधर-उधर फैली रहती हैं। पेड़ी। तना। संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो किसी वस्तु के एकबारगी गिरने आदि से होता है।
धड़क-संज्ञा स्त्री० [अनु० धड] १. दिल के चलने या उछलने की क्रिया। हृदय का स्पंदन। २. हृदय के स्पंदन का शब्द। तड़प। तपाक। ३. भय, आशंका आदि के कारण हृदय का अधिक स्पंदन। जी धक धक करने की क्रिया। ४. आशंका। खटका। अंदेशा। भय।
यौ०—बे-धड़क = बिना किसी संकोच के।
धड़कन-संज्ञा स्त्री० [हिं० धड़क] हृदय का स्पंदन। दिल का धक धक करना।
धड़कना-क्रि० अ० [हिं० धड़क] १. हृदय का स्पंदन करना। दिल का उछलना या धक धक करना।
मुहा०—छाती, जी या दिल धड़कना = भय या आशंका से हृदय का ज़ोर ज़ोर से और जल्दी जल्दी चलना।
२. किसी भारी वस्तु के गिरने का सा धड़-धड़ शब्द होना।
धड़का-संज्ञा पुं० [अनु० धड़] १. दिल की धड़कन। २. दिल धड़कने का शब्द। ३. खटका। अंदेशा। भय। ४. पयाल का पुतला या डंडे पर रखी हुई काली हाँड़ी आदि जिसे चिड़ियों को डराने के लिये खेतों में रखते हैं। धोखा।
धड़काना-क्रि० स० [हिं० धड़क] १. दिल में धड़क पैदा करना। जी धक धक कराना। २. जी दहलाना। डराना। ३. धड़ धड़ शब्द उत्पन्न कराना।
धड़धड़ाना-क्रि० अ० [अनु० धड़धड़] धड़ धड़ शब्द करना। भारी चीज़ के गिरने-पड़ने की सी आवाज़ करना।
मुहा०—धड़धड़ाता हुआ = १. धड़ धड़ शब्द और वेग के साथ। २. बिना किसी प्रकार के खटके या संकोच के। बेधड़क।
धड़ल्ला-संज्ञा पुं० [अनु० धड़] धड़ाका।
मुहा०—धड़ल्ले से या धड़ल्ले के साथ = १. बिना किसी रुकावट के। झोंक से। २. बिना किसी प्रकार के भय या संकोच के। बेधड़क।
धड़ा-संज्ञा पुं० [सं० धट] १. वह बोझ जो बँधी हुई तौल का होता है और जिसे तराज़ू के एक पलड़े पर रखकर दूसरे पलड़े पर उसी के बराबर चीज़ रखकर तौलते हैं। बाट। बटखरा।
मुहा०—धड़ा करना = कोई वस्तु रखकर तौलने के पहले तराज़ू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना। धड़ा बाँधना = १. दे० "धड़ा करना"। २ दोषारोपण करना। कलंक लगाना।
२. चार सेर की एक तौल। ३. तराज़ू।
धड़ाका-संज्ञा पुं० [अनु० धड़] 'धड़' 'धड़' शब्द। धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द।
मुहा०—धड़ाके से = जल्दी से। चटपट।
धड़ाधड़-क्रि० वि० [अनु० धड़] १. लगातार 'धड़' 'धड़' शब्द के साथ। २. लगातार। बराबर। जल्दी जल्दी।
धड़ाम-संज्ञा पुं० [अनु० धड़] ऊपर से एकबारगी कूदने या गिरने का शब्द।
धड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० धटिका, धटी] १. चार या पाँच सेर की एक तौल। २. वह लकीर जो मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़ जाती है।
धत्-अव्य० [अनु०] दुतकारने का शब्द। तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।

धत–संज्ञा स्त्री० [सं० रत, हिं० लत] खराब आदत। कुटेव। लत।
धतकारना–क्रि० स० [अनु० धत] १. दुत-कारना। दुरदुराना। २. लानत मला-मत करना। धिक्कारना।
धता–वि० [अनु० धत] जो दूर हो गया हो या किया गया हो। चलता। हटा हुआ।
मुहा०—धता करना या बताना = चलता करना। हटाना। भगाना। टालना।
धतूर–संज्ञा पु० [अनु० धू + सं० तूर] नर-सिंहा नाम का बाजा। तुरही। सिंहा।
धतूरा–संज्ञा पु० [सं० धुस्तूर] दो तीन हाथ ऊँचा एक पौधा। इसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।
मुहा०—धतूरा खाए फिरना = उन्मत्त के समान घूमना।
धत्ता–संज्ञा पु० [देश०] एक मात्रिक छंद।
धत्तानंद–संज्ञा पु० [सं०] एक छंद जिसकी प्रत्येक पंक्ति में ३१ मात्राएँ और अंत में नगण होता है।
धधक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव। आग की भड़क। २ आँच। लपट। लौ।
धधकना–क्रि० अ० [हिं० धधक] आग का लपट के साथ जलना। दहकना। भड़कना।
धधकाना–क्रि० स० [हिं० धधकना] आग दहकाना। प्रज्वलित करना।
धधाना–क्रि० अ० दे० "धधकाना"।
धनंजय–संज्ञा पु० [सं०] १. अग्नि। २. चित्रक वृक्ष। चीता। ३ अर्जुन का एक नाम। ४ अर्जुन वृक्ष। ५. विष्णु। ६. शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक।
धन–संज्ञा पु० [सं०] १. रुपया-पैसा, जमीन-जायदाद इत्यादि। संपत्ति। द्रव्य। दौलत। २. चौपायों का झुंड जो किसी के पास हो। गाय, भैंस आदि। गोधन। ३. स्नेह-पात्र। अत्यंत प्रिय व्यक्ति। जीवनसर्वस्व। ४ गणित में जोड़ी जानेवाली संख्या या जोड़ का चिह्न। ऋण या क्षय का उलटा। ५ मूल। पूँजी।
.. संज्ञा स्त्री० [सं० धनी] युवती स्त्री। वधू। ‡वि० दे० "धन्य"।
धनक–संज्ञा पु० [सं० धनु] १. धनुष। कमान। २. एक प्रकार की ओढ़नी।
~ –संज्ञा पु० [सं०] वह जो धन में कुबेर के समान हो। अत्यंत धनी।
धनतेरस–संज्ञा स्त्री० [हिं० धन + तेरस] कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी। इस दिन रात को लक्ष्मी की पूजा होती है।
धनद–वि० [सं०] धन देनेवाला। दाता। संज्ञा पुं० १ कुबेर। २. धनपति वायु।
धनधान्य–संज्ञा पुं० [सं०] धन और अन्न आदि। सामग्री और संपत्ति।
धनधाम–संज्ञा पु० [सं०] घर-बार और रुपया पैसा।
धनधारी–संज्ञा पुं० [सं० धन + धारी] १. कुबेर। २ बहुत बड़ा अमीर।
धनपति–संज्ञा पु० [सं०] कुबेर।
धनवंत–वि० दे० "धनवान्"।
धनवान्–वि० [सं०] [स्त्री० धनवती] जिसके पास धन हो। धनी। दौलतमंद।
धनहीन–वि० [सं०] निर्धन। दरिद्र।
धना ‡–संज्ञा स्त्री० [सं० धनिका, हिं० धनिया = युवती] युवती। वधू। (गीत या कविता)
धनाढ्य–वि० [सं०] धनवान्। अमीर।
धनाश्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।
धनि‡–संज्ञा स्त्री० [सं० धनी] युवती। वधू। वि० दे० "धन्य"।
धनिक–वि० [सं०] धनी। संज्ञा पु० १. धनी मनुष्य। २. पति।
धनिया–संज्ञा पु० [सं० धन्याक, धनिका] एक छोटा पौधा जिसके सुगंधित फल मसाले के काम में आते हैं।
‡ संज्ञा स्त्री० [सं० धनिका] युवती स्त्री।
धनिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।
धनी–वि० [सं० धनिन्] १. जिसके पास धन हो।
यौ०—धनी धोरी = १. धन और मर्यादा-वाला। २. मालिक या रक्षक।
मुहा०—बात का धनी = बात का सच्चा।
२. जिसके पास कोई गुण आदि हो। संज्ञा पु० १. धनवान् पुरुष। मालदार आदमी। २ वह जिसके अधिकार में कोई हो। अधिपति। मालिक। स्वामी। ३. पति। शौहर।
संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती स्त्री। वधू।
धनु–संज्ञा पु० दे० "धनुस्"।
धनुआ–संज्ञा पु० [सं० धन्वन्, धन्वा] १. धनुस्। कमान। २. रूई धुनने की धुनकी।

धनुई†-संज्ञा स्त्री० [सं० धनु+ई (प्रत्य०)] छोटा धनुस्।

धनुक-संज्ञा पुं० १. दे० "धनुस्"। २. दे० "इन्द्रधनुष"।

धनुकबाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० धनुक+बाई] लकवे की तरह का एक वायु-रोग।

धनुद्धर-संज्ञा पुं० [सं०] धनुष धारण करनेवाला पुरुष। कमनैत। तीरंदाज।

धनुर्द्धारी-संज्ञा पुं० दे० "धनुर्धर"।

धनुर्यज्ञ-संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसमें धनुस् का पूजन तथा उसके चलाने आदि की परीक्षा भी होती थी।

धनुर्वात-संज्ञा पुं० [सं०] धनुकबाई रोग।

धनुर्विद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] धनुस् चलाने की विद्या। तीरंदाजी का हुनर।

धनुर्वेद-संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें धनुस् चलाने की विद्या का निरूपण है। यह यजुर्वेद का उपवेद माना जाता है।

धनुष-संज्ञा पुं० दे० "धनुस्"।

धनुस्-संज्ञा पुं० [सं०] १ फलदार तीर फेंकने का वह अस्त्र जो बाँस या लोहे के लचीले डंडे को झुकाकर और उसके दोनों छोरों के बीच डोरी बाँधकर बनाया जाता है। कमान। २ ज्योतिष में धनु राशि। ३ एक लग्न। ४. चार हाथ की एक माप।

धनुहाई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० धनु+हाई (प्रत्य०)] धनुस् की लड़ाई।

धनुही†-संज्ञा स्त्री० [हिं० धनु+ही (प्रत्य०)] लड़कों के खेलने की कमान।

धनेस-संज्ञा पुं० [सं० धनस ?] बगले के आकार की एक चिड़िया।

धन्नाः-वि० दे० "धन्य"।

धन्नासेठ-संज्ञा पुं० [हिं० धन+सेठ] बहुत धनी आदमी। प्रसिद्ध धनाढ्य।

धन्नी-संज्ञा स्त्री० [सं० (गो) धन] १. गायों और बैलों की एक जाति। २. घोड़े की एक जाति।

धन्य-वि० [सं०] प्रशंसा या बड़ाई के योग्य पुण्यवान्। सुकृती। श्लाघ्य।

धन्यवाद-संज्ञा पुं० [सं०] १ साधुवाद। शाबाशी। प्रशंसा। २. किसी उपकार या अनुग्रह के बदले में प्रशंसा। कृतज्ञता-सूचक शब्द। शुक्रिया।

धन्वंतरि-संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के वैद्य जो पुराणानुसार समुद्र-मंथन के समय और सब वस्तुओं के साथ समुद्र से निकले थे। ये आयुर्वेद के सबसे प्रधान आचार्य और सबसे बड़े चिकित्सक माने जाते हैं।

धन्वा-संज्ञा पुं० [सं० धन्वन्] १. धनुस्। कमान। २. जलहीन देश। मरुभूमि।

धन्वाकार-वि० [सं०] धनुस् या कमान के आकार का। गोलाई के साथ झुका हुआ। टेढ़ा।

धन्वी-वि० [सं० धन्विन्] १ धनुर्धर। कमनैत। २. निपुण। चतुर।

धप-संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द।
संज्ञा पुं० धौल। थप्पड़। तमाचा।

धपना-क्रि० अ० [सं० धावन, या हिं० धाप] १. जोर से चलना। दौड़ना। २. झपटना। लपकना। ३ मारना। पीटना।

धप्पा-संज्ञा पुं० [अनु० धप] १. थप्पड़। तमाचा। २. घाटा। नुकसान।

धब्बा-संज्ञा पुं० [देश०] १. किसी सतह के ऊपर पड़ा हुआ ऐसा चिह्न जो देखने में बुरा लगे। दाग। निशान। २. कलंक।
मुहा०—नाम में धब्बा लगाना=कीर्ति को मिटानेवाला काम करना।

धम-संज्ञा स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका।

धमक-संज्ञा स्त्री० [अनु० धम] १ भारी वस्तु के गिरने का शब्द। आघात का शब्द। २. पैर रखने की आवाज या आहट। ३. आघात आदि से उत्पन्न कंप या विचलता। ४. आघात। चोट।

धमकना-क्रि० अ० [हिं० धमक] १ 'धम' शब्द के साथ गिरना। धमाका करना।
मुहा०-आ धमकना=आ पहुँचना।
२. दर्द करना। व्यथित होना। (सिर)

धमकाना-क्रि० स० [हिं० धमक] १. डराना। भय दिखाना। २. डाँटना। घुड़कना।

धमकी-संज्ञा स्त्री० [हिं०] १. दंड देने या अनिष्ट करने का विचार जो भय दिखाने के लिये प्रकट किया जाय। त्रास दिखाने की क्रिया। २. घुड़की। डाँट-डपट।
मुहा०—धमकी में आना=डराने से डरकर कोई काम कर बैठना।

धमधमाना-क्रि० अ० [अनु० धम] 'धम धम' शब्द करना।

धमनी-संज्ञा स्त्री [सं०] १. शरीर के भीतर की

वह छोटी या बड़ी नली जिसमें रक्त आदि का संचार होता रहता है। इनकी संख्या सुश्रुत के अनुसार २४ है। इनकी सहस्रों शाखाएँ सारे शरीर में फैली हुई हैं। २. वह नली जिसमें शुद्ध लाल रक्त हृदय के स्पंदन द्वारा चण चण पर जाकर सारे शरीर में फैलता रहता है। नाड़ी। (आधुनिक)
धमाका-संज्ञा पुं० [अनु०] १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. बंदूक का शब्द। ३ आघात। धक्का। ४. पथरकला बंदूक। ५. हाथी पर लादने की तोप।
धमाचौकड़ी-संज्ञा स्त्री० [अनु० धम + हिं० चौकड़ी] १. उछल-कूद। उपद्रव। ऊधम। २ धींगाधींगी। मार-पीट।
धमाधम-क्रि० वि० [अनु० धम] १. लगातार कई बार 'धम', 'धम' शब्द के साथ। २. लगातार कई प्रहार-शब्दों के साथ।
संज्ञा स्त्री० १. कई बार गिरने से उत्पन्न लगातार धम धम शब्द। २. मार पीट।
धमार-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ उछल-कूद। उपद्रव। उत्पात। धमाचौकड़ी। २. नटों की उछल-कूद। कलाबाजी। ३. विशेष प्रकार के साधुओं की दहकती आग पर कूदने की क्रिया।
संज्ञा पुं० होली में गाने का एक गीत।
धरंता‡-वि० [हिं० धरना] पकड़नेवाला।
धर-वि० [सं०] १. धारण करनेवाला। ऊपर लेनेवाला। २. ग्रहण करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. पर्वत। पहाड़। २. कच्छप जो पृथ्वी को ऊपर लिए है। कूर्मराज। ३ विष्णु। ४. श्रीकृष्ण। ५. पृथ्वी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] धरने या पकड़ने की क्रिया।
यौ०—धर-पकड़ = भागते हुए आदमियों को पकड़ने का व्यापार। गिरफ्तारी।
धरक‡*-संज्ञा स्त्री० दे० "धड़क"।
धरकना-क्रि० अ० दे० "धड़कना"।
धरण-संज्ञा पुं० दे० "धारण"।
धरणि-संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
धरणिधर-संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी को धारण करनेवाला। २. कच्छप। ३. पर्वत। ४. विष्णु। ५. शिव। ६. शेषनाग।
धरणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
।सुता।—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
धरता-संज्ञा पुं० [हिं० धरना या वैदिक धर्तृ] १. किसी का रुपया धरनेवाला। देनदार। ऋणी। कर्ज़दार। २. कोई कार्य्य आदि अपने ऊपर लेनेवाला। धारण करनेवाला।
यौ०—कर्त्ता धरता = सब कुछ करनेवाला।
धरती-संज्ञा स्त्री० [सं० धरित्री] पृथ्वी।
धरधर:-संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।
संज्ञा स्त्री० दे० "धड़धड़"।
धरधरा‡-संज्ञा पुं० [अनु०] धड़कन।
धरधराना‡-क्रि० अ० दे० "धड़धड़ाना"।
धरन-संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] १. धरने की क्रिया, भाव या ढंग। २ वह लंबा लट्ठा जो दीवारों या लट्ठों पर इसलिये आड़ा रखा जाता है जिसमें उसके ऊपर पाटन (छत आदि) या कोई बोझ ठहर सके। कड़ी। धरनी। ३ वह नस जो गर्भाशय को दृढ़ता से जकड़े रहती है। गर्भाशय का आधार। ४ गर्भाशय। ५. टेक। हठ।
संज्ञा पुं० दे० "धरना"।
†संज्ञा स्त्री० [सं० धरणि] धरती। जमीन।
धरनहार‡-वि० [हिं० धरना + हार (प्रत्य०)] धारण करनेवाला।
धरना-क्रि० स० [सं० धरण] १. किसी वस्तु को दृढ़ता से हाथ में लेना। पकड़ना। थामना। ग्रहण करना।
मुहा०—धर पकड़कर = जबरदस्ती। बलात्।
२. स्थापित करना। स्थित करना। रखना। ठहराना। ३ पास या रक्षा में रखना।
मुहा०—धरा रह जाना = काम न आना।
४. धारण करना। देह पर रखना। पहनना। ५. अवलंबन करना। अंगीकार करना। ६. व्यवहार के लिये हाथ में लेना। ग्रहण करना। ७. पल्ला पकड़ना। आश्रय ग्रहण करना। ८. किसी फैलने वाली वस्तु का किसी दूसरी वस्तु में लगना या छू जाना। ९. किसी स्त्री को रखना। रखेली की तरह रखना। १०. गिरवी रखना। रेहन रखना। बंधक रखना।
संज्ञा पुं० कोई काम कराने के लिये किसी के पास अड़कर बैठना और जब तक काम न हो, तब तक अन्न न ग्रहण करना।
धरनी-संज्ञा स्त्री० दे० "धरणी"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] हठ। टेक।
धरम‡-संज्ञा पुं० दे० "धर्म"।
धरवाना-क्रि० स० [हिं० धरना का प्रे०

धरने का काम दूसरे से कराना।

धरपना*-क्रि० स० [सं० धर्षण] दबाना। मर्दन करना।

धरसना-क्रि० अ० [सं० धर्षण] १. दब जाना। २. डर जाना। सहम जाना। क्रि० स० १. दबाना। २. अपमानित करना।

धरसनी*-संज्ञा स्त्री० दे० "धर्षणी"।

धरहर†-संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना+हर (प्रत्य०)] १. गिरफ्तारी। धर-पकड़। २. लड़नेवालों को धर-पकड़कर लड़ाई बंद करने का कार्य्य। बीच-बिचाव। ३. बचाव। रक्षा। ४. धैर्य। धीरज।

धरहरना*-क्रि० अ० [अनु०] धड़ धड़ शब्द करना। धड़धड़ाना।

धरहरा-संज्ञा पुं० [हिं० धुर=ऊपर+घर] खंभे की तरह बहुत ऊँचा मकान का भाग जिस पर चढ़ने के लिये भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनी हों। धौरहर। मीनार।

धरहरिया†-संज्ञा पुं० [हिं० धरहरि] बीच-बिचाव करानेवाला। रक्षक।

धरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। ज़मीन। २. संसार। दुनिया। ३. एक वर्णवृत्त।

धराऊ-वि० [हिं० धरना+आऊ (प्रत्य०)] १. जो साधारण से अधिक अच्छा होने के कारण कभी कभी केवल विशेष अवसरों पर निकाला जाय। बहुमूल्य। २. बहुत दिनों का रखा हुआ। पुराना।

धराक*†-संज्ञा पुं० दे० "धड़ाक"।

धरातल-संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी। धरती। २. केवल लंबाई-चौड़ाई का गुणन-फल जिसमें मोटाई, गहराई या ऊँचाई का कुछ विचार न किया जाय। सतह। ३. लंबाई और चौड़ाई का गुणन-फल। रकबा।

धराधर-संज्ञा पुं० [सं०] १. शेषनाग। २ पर्वत। ३. विष्णु।

धराधरन*-संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।

धराधार-संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग।

धराधीश-संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

धराना-क्रि० स० [हिं० 'धरना' का प्रे०] १. पकड़ाना। थमाना। २. स्थित कराना। रखाना। ३. स्थिर करना। ठहराना। निश्चित कराना। मुकर्रर कराना।

धरापुत्र-संज्ञा पुं० [सं०] मंगल ग्रह।

धरासुर†-संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।

धराहर-संज्ञा पुं० दे० "धरहरा"।

धरित्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] धरती। पृथ्वी।

धरैया†-संज्ञा पुं० [हिं० धरना] धरनेवाला।

धरोहर-संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना] वह वस्तु या द्रव्य जो किसी के पास इस विश्वास पर रखा हो कि उसका स्वामी जब माँगेगा, तब वह दे दिया जायगा। थाती। अमानत।

धर्त्ता-संज्ञा पुं० [सं० धर्तृ] १. धारण करने-वाला। २. कोई काम ऊपर लेनेवाला।

यौ०—कर्त्ता-धर्त्ता=जिसे सब कुछ करने धरने का अधिकार हो।

धर्म-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उसमें सदा रहे, उससे कभी अलग न हो। प्रकृति। स्वभाव। नित्य नियम। २. अलंकार शास्त्र में वह गुण या वृत्ति जो उपमेय और उपमान में समान रूप से हो। जैसे—'कमल के ऐसे कोमल और लाल चरण'। इस उदाहरण में कोमलता और ललाई दोनों के साधारण धर्म हैं। ३. वह कृत्य या विधान जिसका फल शुभ (स्वर्ग या उत्तम लोक की प्राप्ति आदि) बताया गया हो। ४. किसी जाति, कुल, वर्ग, पद इत्यादि के लिये उचित ठहराया हुआ व्यव-साय या व्यवहार। कर्त्तव्य। फ़र्ज़। जैसे—ब्राह्मण का धर्म्म, पुत्र का धर्म्म। ५. कल्याणकारी कर्म। सुकृत। सदाचार। श्रेय। पुण्य। सत्कर्म।

मुहा०—धर्म कमाना=धर्म करके उसका फल संचित करना। धर्म बिगाड़ना=१. धर्म के विरुद्ध आचरण करना। धर्म भ्रष्ट करना। २. स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। धर्म-लगती कहना=ठीक ठीक कहना। सत्य या उचित बात कहना। धर्म से कहना=सत्य सत्य कहना। ६. किसी आचार्य या महात्मा द्वारा प्रव-र्तित ईश्वर, परलोक आदि के संबंध में विशेष रूप का विश्वास और आराधना की विशेष प्रणाली। उपासना-भेद। मत। संप्रदाय। पंथ। मज़हब। ७. नी[illegible] न्याय व्यवस्था। कायदा। कानून। ८. हिंदू-धर्मशास्त्र। ८. विवेक।

धर्म-कर्म-संज्ञा पुं० [सं०] व[illegible] जिसका करना किसी ध[illegible] ठहराया गया हो।

धर्मक्षेत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुरुक्षेत्र। २. भारतवर्ष जो धर्म के संचय के लिये कर्म-भूमि माना गया है।
धर्मग्रंथ-संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ या पुस्तक जिसमें किसी जन-समाज के आचार व्यवहार और उपासना आदि के संबंध में शिक्षा हो।
धर्मघड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० धर्म + हिं० घड़ी] बड़ी घड़ी जो ऐसे स्थान पर लगी हो जिसे सब लोग देख सकें।
धर्मचक्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का समूह। २ बुद्ध की धर्मशिक्षा जिसका आरंभ काशी से हुआ था।
धर्मचर्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म का आचरण।
धर्मचारी-वि० [सं० धर्मचारिन्] [स्त्री० धर्मचारिणी] धर्म का आचरण करनेवाला।
धर्मज्ञ-वि० [सं०] धर्म्म जाननेवाला। धर्मपुत्र युधिष्ठिर।
धर्मतः-अव्य० [सं०] धर्म का ध्यान रखते हुए। सत्य सत्य।
धर्मधक्का-संज्ञा पुं० [सं० धर्म + हिं० धक्का] १. वह हानि या कठिनाई जो धर्म या परोपकार आदि के लिये सहनी पड़े। २. व्यर्थ का कष्ट।
धर्मध्वज-संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का आडंबर खड़ा करके स्वार्थ साधनेवाला मनुष्य। पाखंडी। २. मिथिला के एक जनकवंशीय राजा जो संन्यास-धर्म और मोक्ष-धर्म के जाननेवाले परम ब्रह्मज्ञानी थे।
धर्मध्वजी-संज्ञा पुं० [सं० धर्मध्वजिन्] पाखंडी।
धर्मनिष्ठ-वि० [सं०] धर्म में जिसकी आस्था हो। धार्मिक। धर्मपरायण।
धर्मनिष्ठा-संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म में आस्था। धर्म में श्रद्धा, भक्ति और प्रवृत्ति।
धर्मपत्नी-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके साथ धर्मशास्त्र की रीति से विवाह हुआ हो। विवाहिता स्त्री।
धर्मबुद्धि-संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म-अधर्म का विवेक। भले-बुरे का विचार।
धर्मभीरु-वि० [सं०] जिसे धर्म का भय हो। जो अधर्म करते हुए बहुत डरता हो।
धर्मयुग-संज्ञा पुं० [सं०] सत्ययुग।
धर्मयुद्ध-संज्ञा पुं० [सं०] वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का नियम भंग न हो।

धर्मरक्षित-संज्ञा पुं० [सं०] योग (यवन) देशीय एक बौद्ध धर्मोपदेशक या स्थविर जिसे महाराज अशोक ने अपरांतक (बलोचिस्तान) देश में उपदेश देने भेजा था।
धर्मराइ‡-संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।
धर्मराज-संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का पालन करनेवाला राजा। २. युधिष्ठिर। ३. यमराज। ४ न्यायाधीश। न्यायकर्त्ता।
धर्मराय -संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।
धर्मलुप्ता उपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय में समान रूप से पाई जानेवाली बात का कथन न हो।
धर्मवीर-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धर्म करने में साहसी हो।
धर्मव्याध-संज्ञा पुं० [सं०] मिथिलापुर-निवासी एक व्याध जिसने कौशिक नामक एक तपस्वी वेदाध्यायी ब्राह्मण को धर्म का तत्त्व समझाया था।
धर्मशाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह मकान जो पथिकों या यात्रियों के टिकने के लिये धर्मार्थ बना हो। २ अन्नसत्र।
धर्मशास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार-संबंधी नियम हों।
धर्मशास्त्री-संज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देनेवाला। धर्मशास्त्र जाननेवाला पंडित।
धर्मशील-वि० [सं०] [संज्ञा धर्म्मशीलता] धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला। धार्मिक।
धर्मसभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] न्यायालय। कचहरी। अदालत।
धर्मसारी*†-संज्ञा स्त्री० दे० "धर्मशाला"।
धर्मांशु-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।
धर्माचार्य-संज्ञा पुं० [सं०] धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु।
धर्मात्मा-वि० [धर्मात्मन्] धर्मशील। धार्मिक।
धर्माधिकरण-संज्ञा पुं० [सं०] न्यायालय।
धर्माधिकारी-संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म-अधर्म की व्यवस्था देनेवाला। विचारक। न्यायाधीश। २ वह जो किसी राजा की ओर से धर्मार्थ द्रव्य बाँटने आदि का प्रबंध करता है। दानाध्यक्ष।
धर्माध्यक्ष-संज्ञा पुं० दे० "धर्माधिकारी"।

धर्मार्थ-क्रि० वि० [सं०] केवल धर्म या पुण्य के उद्देश्य से। परोपकार के लिये।
धर्मावतार-संज्ञा पुं० [सं०] १. साक्षात् धर्मस्वरूप। अत्यंत धर्मात्मा। २. न्यायाधीश। ३. युधिष्ठिर।
धर्मासन-संज्ञा पुं० [सं०] वह आसन या चौकी जिस पर न्यायाधीश बैठता है।
धर्मिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी।
वि० धर्म करनेवाली।
धर्मिष्ठ-वि० [सं०] धार्मिक। पुण्यात्मा।
धर्मी-वि० [सं० धर्मिन्] [स्त्री० धर्मिणी] १. जिसमें धर्म या गुण हो। २. धार्मिक। पुण्यात्मा। ३. मत या धर्म को माननेवाला।
संज्ञा पुं० १. धर्म का आधार। गुण या धर्म का आश्रय। २. धर्मात्मा मनुष्य।
धर्मोपदेशक-संज्ञा पुं० [सं०] धर्म का उपदेश देनेवाला।
धर्ष-संज्ञा पुं० दे० "धर्षण"।
धर्षक-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धर्षण करे।
धर्षण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० धर्षणीय, धर्षित] १. अनादर। अपमान। २ दबोचना। आक्रमण। ३. दबाने या दमन करने का कार्य्य। ४. असहनशीलता।
धर्षणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवज्ञा। अपमान। हतक। २. दबाने या हराने का कार्य्य। ३. सतीत्वहरण।
धर्षी-वि० [सं० धर्षिन्] [स्त्री० धर्षिणी] १. धर्षण करनेवाला। २. आक्रमण करनेवाला। दबोचनेवाला। ३. हरानेवाला। ४. नीचा दिखाने या अपमान करनेवाला।
धव-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक जंगली पेड़ जिसके कई अंगों का ओषधि के रूप में व्यवहार होता है। २. पति। स्वामी। जैसे—माधव। ३. पुरुष। मर्द।
धवनी-संज्ञा स्त्री० दे० "धौंकनी"।
†वि० [सं० धवल] सफ़ेद। उजला।
धवरा†-वि० [सं० धवल] [स्त्री० धवरी] उजला। सफ़ेद।
धवरी-वि० स्त्री० [हिं० धवरा] सफ़ेद।
संज्ञा स्त्री० सफ़ेद रंग की गाय।
धवल-वि० [सं०] १.श्वेत। उजला। सफ़ेद। २. निर्मल। झकाझक। ३. सुंदर।
संज्ञा पुं० छप्पय छंद का ४१ वाँ भेद।
धवलगिरि-संज्ञा पुं० दे० "धवलागिरि"।
धवलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सफ़ेदी।
धवलना-क्रि० स० [सं० धवल] उज्ज्वल करना। चमकाना। प्रकाशित करना।
धवला-वि० स्त्री० [सं०] सफ़ेद। उजली।
संज्ञा स्त्री० सफ़ेद गाय।
धवलाई†-संज्ञा स्त्री० [सं० धवल + आई (प्रत्य०)] सफ़ेदी। उजलापन।
धवलागिरि-संज्ञा पुं० [सं० धवल + गिरि] हिमालय पहाड़ की एक प्रख्यात चोटी।
धवली-संज्ञा स्त्री० [सं०] सफ़ेद गाय।
धवाना-क्रि० स० [हिं० धाना का प्रे०] दौड़ाना।
धस-संज्ञा पुं० [हिं० धँसना = पैठना] जल आदि में प्रवेश। डुबकी। गोता।
धसक-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ठन ठन शब्द जो सूखी खाँसी में गले से निकलता है। २. सूखी खाँसी। ठसक।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धसकना] १ डाह। ईर्ष्या। २. धसकने की क्रिया या भाव।
धसकना-क्रि० अ० [हिं० धँसना] १. नीचे को धँसना या दब जाना। बैठ जाना। २. डाह करना। ईर्ष्या करना। ३. डरना।
धसना*-क्रि० अ० [सं० ध्वसन] ध्वस्त होना। नष्ट होना। मिटना।
‡क्रि० अ० दे० "धँसना"।
धसनि-संज्ञा स्त्री० दे० 'धँसनि'।
धसमसाना†-क्रि० अ० दे० "धँसना"।
धसान-संज्ञा स्त्री० दे० "धँसान"।
संज्ञा स्त्री० [सं० दशार्ण] पूरबी मालवा और बुंदेलखंड की एक छोटी नदी।
धाँगड़-संज्ञा पुं० [देश०] १. एक अनार्य जंगली जाति। २. एक जाति जो कुएँ और तालाब खोदने का काम करती है।
धाँधना-क्रि० स० [देश०] १. बंद करना। भेड़ना। २. बहुत अधिक खा लेना।
धाँधल-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ऊधम। उपद्रव। नटखटी। २. फ़रेब। धोखा। दगा। ३. बहुत अधिक जल्दी।
धाँधलपन-संज्ञा पुं० [हिं० धाँधल + पन (प्रत्य०)] १. पाजीपन। शरारत। २. धोखेबाज़ी। दगाबाज़ी।
धाँधली-संज्ञा स्त्री० [हिं० धाँधल + ई (प्रत्य०)] १. उपद्रवी। शरीर। पाजी। नटखट। २. धोखेबाज़। दगाबाज़। ३. अधिक जल्दी। धाँधल। ४.

चारिता। मनमानी।

धाँस-संज्ञा स्त्री० [अनु०] सूखे तंबाकू या मिर्च आदि की तेज़ गंध।

धाँसना-क्रि० अ० [अनु०] पशुओं का खाँसना।

धा-वि० [सं०] धारण करनेवाला। धारक। प्रत्य० तरह। भाँति। जैसे-नवधा भक्ति। संज्ञा पुं० [सं० धैवत] संगीत में "धैवत" शब्द या स्वर का संकेत। ध।

धाउ-संज्ञा पुं० [सं० धाव] नाच का एक भेद।

धाऊ†-संज्ञा पुं० [सं० धावन] वह आदमी जो आवश्यक कामों के लिये दौड़ाया जाय। हरकारा।

धाक-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. रोब। आतंक। **मुहा०**—धाक बँधना = रोब या दबदबा होना। आतंक छाना। धाक बाँधना = रोब जमाना। २. प्रसिद्धि। शोहरत। शोर।

धाकना-क्रि० अ० [हिं० धाक] धाक जमाना। रोब जमाना।

धागा†-संज्ञा पुं० [हिं० तागा] बटा हुआ सूत। डोरा। तागा।

धाड़†-संज्ञा स्त्री० १. दे० "डाढ़"। २. दे० "दहाड़"। ३. दे० "ढाड़"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धार] १. डाकुओं का आक्रमण। २. जत्था। झुंड। गरोह।

धात-संज्ञा स्त्री० दे० "धातु"।

धातकी-संज्ञा स्त्री० [सं०] धव का फूल।

धाता-संज्ञा पुं० [सं० धातृ] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। महादेव। ४. ४६ वायुओं में से एक। ५ शेषनाग। ६. १२ सूर्यों में से एक। ७. ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ८. विधाता। विधि। ६. टगण के आठवें भेद की संज्ञा।
वि० १. पालनेवाला। पालक। २. रक्षा करनेवाला। रक्षक। ३. धारण करनेवाला।

धातु-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह खनिज मूल द्रव्य जो अपारदर्शक हो, जिसमें एक विशेष प्रकार की चमक और गुरुत्व हो, जिसमें से होकर ताप और विद्युत् का संचार हो सके तथा जो पीटने अथवा तार के रूप में खींचने से खंडित न हो। प्रसिद्ध धातुएँ ये हैं—सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, सीसा और राँगा। २. शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ। वैद्यक में शरीरस्थ सात धातुएँ मानी गई ... , रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र। ३. बुद्ध या किसी महात्मा की अस्थि आदि जिसे बौद्ध लोग डिब्बे में बंद करके स्थापित करते थे। ४. शुक्र। वीर्य।
संज्ञा पुं० १. भूत। तत्त्व। २. शब्द का वह मूल जिससे क्रियाएँ बनी या बनती हैं। जैसे—संस्कृत में भू, कृ, घृ इत्यादि।

धातुपुष्ट-वि० [सं०] (ओषधि) जिससे वीर्य गाढ़ा होकर बढ़े।

धातुमर्म-संज्ञा पुं० [सं०] कच्ची धातु को साफ़ करना, जो ६४ कलाओं में है।

धातुवर्द्धक-वि० [सं०] वीर्य्य को बढ़ाने-वाला। जिससे वीर्य्य बढ़े।

धातुवाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. चौसठ कलाओं में से एक, जिसमें कच्ची धातु को साफ़ करते तथा एक में मिली हुई अनेक धातुओं को अलग अलग करते हैं। २. रसायन बनाने का काम। ३ ताँबे से सोना बनाना। कीमियागरी।

धात्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माता। माँ। २. वह स्त्री जो किसी शिशु को दूध पिलावे और उसका लालन-पालन करे। धाय। दाई। ३. गायत्री-स्वरूपिणी भगवती। ४. गंगा। ५ आँवला। ६. भूमि। पृथ्वी। ७. गाय। ८. आर्य्या छंद का एक भेद।

धात्रीविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़का जनाने और उसे पालने आदि की विद्या।

धात्वर्थ-संज्ञा पुं० [सं०] धातु से निकलने-वाला (किसी शब्द का) अर्थ। मूल और पहला अर्थ।

धाधि-संज्ञा स्त्री० [हिं० धधकना] ज्वाला।

धान-संज्ञा पुं० [सं० धान्य] तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों की गिनती अच्छे अन्नों में है। इन्हीं बीजों को कूटकर उनका छिलका निकालने से चावल बनते हैं। शालि। व्रीहि।

धानक-संज्ञा पुं० [सं० धानुष्क] १. धनुष चलानेवाला। धनुर्द्धारी। तीरंदाज़। कमनैत। २. रूई धुननेवाला। धुनिया। ३. पूरब की एक पहाड़ी जाति।

धानकी-संज्ञा पुं० [हिं० धानुक] धनुर्द्धर।

धानपान-वि० [हिं० धान+पान] दुबला पतला। नाजुक।

धानमाली-संज्ञा पुं० [सं०] किसी दूसरे के चलाए हुए अस्त्र को रोकने की एक क्रिया।

धाना‡–क्रि० अ० [सं० धावन] १. तेज़ी से चलना। दौड़ना। भागना। २. कोशिश करना। प्रयत्न करना।

धानी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह जो धारण करे। वह जिसमें कोई वस्तु रखी जाय। २. स्थान। जगह। जैसे—राजधानी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धान+ई (प्रत्य०)] धान की पत्ती के रंग का सा हलका हरा रंग।
वि० हलके हरे रंग का।
संज्ञा स्त्री० [सं० धाना] भूना हुआ जौ या गेहूँ।
संज्ञा स्त्री०‡ दे० "धान्य"।

धानुक–संज्ञा पु० दे० "धानक"।

धान्य–संज्ञा पु० [सं०] १. चार तिल का एक परिमाण या तौल। २. धनिया। ३. छिलके समेत चावल। धान। ४. अन्न मात्र। ५. एक प्राचीन अस्त्र।

धाप–संज्ञा पु० [हिं० टप्पा] १. दूरी की एक नाप जो प्रायः एक मील की और कहीं दो मील की मानी जाती है। २. लंबा-चौड़ा मैदान। ३. खेत की नाप।
संज्ञा स्त्री० [हिं० धापना] तृप्ति। संतोष।

धापना‡–क्रि० अ० [सं० तर्पण] संतुष्ट होना। तृप्त होना। अघाना। जी भरना।
क्रि० स० संतुष्ट करना। तृप्त करना।
क्रि० अ० [सं० धावन] दौड़ना। भागना।

धावा–संज्ञा पु० [देश०] १. छत के ऊपर का कमरा। अटारी। २. वह स्थान जहाँ पर कच्ची या पक्की रसोई (मोल) मिलती हो।

धा-भाई–संज्ञा पु० [हिं० धा=धाय+भाई] दूधभाई।

धाम–संज्ञा पु० [सं० धामन्] १. घर। मकान। २. देह। शरीर। ३. बागडोर। लगाम। ४. शोभा। ५. प्रभाव। ६. देवस्थान या पुण्यस्थान। जैसे—चारों धाम आदि। ७. जन्म। ८. विष्णु। ९. ज्योति। १०. ब्रह्म। ११. स्वर्ग।

धामक धूमक–संज्ञा स्त्री० दे० "धूमधाम"।

धामिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० धाना=दौड़ना] एक प्रकार का बहुत लंबा और तेज दौड़नेवाला साँप।

धायँ–संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी पदार्थ के जोर से गिरने या तोप, बंदूक आदि छूटने का शब्द।

धाय–संज्ञा स्त्री० [सं० धात्री] वह स्त्री जो किसी दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करने के लिये नियुक्त हो। धात्री। दाई।
संज्ञा पु० [सं० धातकी] धव का पेड़।

धायना–‡क्रि० अ० [हिं० धाना] दौड़ना।

धार–संज्ञा पु० [सं०] १. ज़ोर से पानी बरसना। ज़ोर की वर्षा। २. इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल जो वैद्यक और डाक्टरी में बहुत उपयोगी माना जाता है। ३. ऋण। उधार। क़र्ज़। ४ प्रांत। प्रदेश।
संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १. द्रव पदार्थ की गति-परंपरा। पानी आदि के गिरने या बहने का तार। अखंड प्रवाह।
मुहा०—धार चढ़ाना=किसी देवी, देवता या पवित्र नदी आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना। धार देना=दूध देना। धार निकालना=दूध दूहना। धार मारना=पेशाब करना।
२. पानी का सोता। चश्मा। ३. किसी काटनेवाले हथियार का वह तेज़ सिरा या किनारा जिससे कोई चीज़ काटते हैं। बाढ़।
मुहा०—धार बाँधना—…ंत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार को निकम्मा कर देना।
४. किनारा। सिरा। छोर। ५. सेना। फ़ौज। ६. किसी प्रकार का डाका, आक्रमण या हल्ला। ७. ओर। तरफ़। दिशा।

धारक–वि० [सं०] १. धारण करनेवाला। २. रोकनेवाला। ३. ऋण लेनेवाला।

धारण–संज्ञा पु० [सं०] १. थामना, लेना या अपने ऊपर ठहराना। २. पहनना। ३ सेवन करना। खाना या पीना। ४. अंगीकार करना। ग्रहण करना। ५. ऋण लेना। उधार लेना।

धारणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धारण करने की क्रिया या भाव। २. वह शक्ति जिससे कोई बात मन में धारण की जाती है। बुद्धि। अक़्ल। समझ। ३. दृढ़ निश्चय। पक्का विचार। ४. मर्य्यादा। ५. याद। स्मृति। ६. योग में मन की वह स्थिति जिसमें केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है।

धारणीय–वि० [सं०] धारण करने योग्य।

धारना–क्रि० स० [सं० धारण] १. धारण करना। अपने ऊपर लेना। २. ऋण करना। उधार लेना।
क्रि० स० दे० "ढारना"।

धारा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोड़े की चाल

का चलना। २. पानी आदि का
व या गिराव। अखंड प्रवाह। धार।
लगातार गिरता या बहता हुआ कोई
पदार्थ। ४. पानी का झरना। सोता।
ना। ५. काटनेवाले हथियार का तेज़
ा। बाढ़। धार। ६. बहुत अधिक
ा। ७. समूह। झुंड। ८ प्राचीन
त की एक नगरी का नाम जो दक्षिण
में थी। ९. लकीर। रेखा। १०.
लवा की प्राचीन राजधानी।
धाधर-सज्ञा पुं० [सं०] बादल।
धारावाही-वि० [सं०] धारा के रूप में
ना रोक-टोक बढ़ने या चलनेवाला।
धारि-सज्ञा स्त्री [सं० धारा] १ दे० "धार"।
. समूह। झुंड। ३. एक वर्णवृत्त।
धारिणी-सज्ञा स्त्री० [सं०] धरणी। पृथ्वी।
वि० स्त्री० धारण करनेवाली।
धारी-वि० [सं० धारिन्] [स्त्री० धारिणी]
धारण करनेवाला। जो धारण करे।
सज्ञा पुं० धारि नामक वर्णवृत्त।
सज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १. सेना। फौज।
२. समूह। झुंड। ३. रेखा। लकीर।
धारीदार-वि० [हिं० धारी + फा० दार]
जिसमें लंबी लंबी धारियाँ या लकीरें हों।
धारोष्ण-सज्ञा पुं० [सं०] थन से निकला
हुआ ताजा दूध जो प्रायः कुछ गरम होता
है और बहुत गुणकारक माना जाता है।
धार्मिक-वि० [सं०] १. धर्मशील। धर्मात्मा।
पुण्यात्मा। २ धर्म्म संबंधी।
धार्मिकता-सज्ञा स्त्री० [सं०] धार्मिक होने
का भाव। धर्म्मशीलता।
धार्य-वि० [सं०] धारण करने के योग्य।
धावक-सज्ञा पुं० [सं०] हरकारा।
धावन-सज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत जल्दी या
दौड़कर जाना। २. चिट्ठी या सँदेसा पहुँ-
चानेवाला। दूत। हरकारा। ३ धोने
या साफ़ करने का काम। ४. वह चीज
जिससे कोई चीज़ धोई या साफ़ की जाय।
धावना*†-क्रि० अ० [सं० धावन] जल्दी
जल्दी जाना। दौड़ना। भागना।
धावनि*†-सज्ञा स्त्री० [सं० धावन = गमन]
१. जल्दी जल्दी चलने की क्रिया या भाव।
२. धावा। चढ़ाई।
धावरी*†-सज्ञा स्त्री० [सं० धवल] सफ़ेद
। धारी।

वि० सफ़ेद। उज्ज्वल।
धावा-सज्ञा पुं० [सं० धावन] १. शत्रु से
लड़ने के लिये दल बल सहित तैयार होकर
जाना। आक्रमण। हमला। चढ़ाई।
२. जल्दी जल्दी जाना। दौड़।
मुहा०—धावा मारना = जल्दी जल्दी चलना।
धाह*-सज्ञा स्त्री० [अनु०] जोर से चिल्ला-
कर रोना। धाड़।
धाही*†-सज्ञा स्त्री० दे० "धाय"।
धिंग-सज्ञा स्त्री० [सं० दृढ़ाग या धींगाधींगी
अनु०] धींगा-धींगी। ऊधम। उपद्रव।
धिंगा†-सज्ञा पुं० [सं० दृढ़ाग] १. बद-
माश। शरीर। २. बेशर्म। निर्लज्ज।
धिंगाई-सज्ञा स्त्री० [सं० दृढ़ागी] १. शरा-
रत। ऊधम। बदमाशी। २. बेशर्मी।
धिंगाना-क्रि० स० [हिं० धिंग] धींगा धींगी
करना। उपद्रव या ऊधम मचाना।
धिआ-सज्ञा स्त्री० दे० "धिय"।
धिआन*†-सज्ञा पुं० दे० "ध्यान"।
धिआना*†-क्रि० स० दे० "ध्यावना"।
धिक्-अव्य० [सं०] १. तिरस्कार, अनादर
या घृणासूचक एक शब्द। लानत। २.
निंदा। शिकायत।
धिक-अव्य० [सं० धिक्] धिक्। लानत।
धिकना†-क्रि० अ० [सं० दग्ध] गरम
होना। तप्त होना।
धिकाना†-क्रि० स० [सं० दग्ध या हिं०
दहकना] खूब गरम करना। तपाना।
धिक्कार-सज्ञा स्त्री० [सं०] तिरस्कार, अना
दर या घृणाव्यंजक शब्द। लानत।
धिक्कारना-क्रि० स० [सं० धिक्] "धिक"
कहकर बहुत तिरस्कार करना। लानत-
मलामत करना। फटकारना।
धिग-*अव्य० दे० "धिक्"।*
धिय-सज्ञा स्त्री० [सं० दुहिता] १. कन्या।
बेटी। २. लड़की। बालिका।
धिरकार†-सज्ञा स्त्री० दे० "धिक्कार"।
धिरवना*†-क्रि० स० [सं० धर्षण]
धमकाना।
धिराना*†-क्रि० स० [हिं० धिरवना]
डराना। धमकाना। भय दिखाना।
क्रि० अ० [सं० धीर] १. धीमा होना।
मंद पड़ना। २. धैर्य्य धारण करना।
धींग-सज्ञा पुं० [सं० डिंगर] हट्टा-कट्टा।
दढ़ांग मनुष्य।

वि० १. मज़बूत। ज़ोरावर। २. शरीर। बदमाश। ३. कुमार्गी। पापी।
धींगरा–सज्ञा पु० [स० डिंगर] [स्त्री० धींगरी] १. हट्टा-कट्टा। मुसंड। मोटा-ताज़ा। २. शठ। बदमाश।
धींगा–सज्ञा पु० [स० डिंगर=शठ] शरीर। बदमाश। उपद्रवी। पाजी।
धींगाधींगी–सज्ञा स्त्री० [हिं० धींग] १. शरारत। बदमाशी। २. जबरदस्ती।
धींगामुश्ती–सज्ञा स्त्री० दे० "धींगाधींगी"।
धींगड़, धींगड़ा†–वि० [स० डिंगर] [स्त्री० धींगड़ी] १. पाजी। बदमाश। दुष्ट। २. हट्टा-कट्टा। हृष्ट-पुष्ट। ३. वर्ण-संकर। दोगला।
धींद्रिय–संज्ञा स्त्री० [स०] वह इंद्रिय जिससे किसी बात का ज्ञान हो। जैसे—मन, आँख, कान। ज्ञानेंद्रिय।
धींवर–सज्ञा पु० दे० "धीमर"।
धी–सज्ञा स्त्री० [स०] १. बुद्धि। अक्ल। २. मन। ३. कर्म्म।
सज्ञा स्त्री० [स० दुहिता] लड़की। बेटी।
धीजना–क्रि० स० [स० धृ, धार्य्य, धैर्य्य] १. ग्रहण करना। स्वीकार करना। अंगीकार करना। २. धीरज धरना। धैर्य्ययुक्त होना। ३. प्रसन्न या संतुष्ट होना।
धीम:†–वि० दे० "धीमा"।
धीमर–सज्ञा पु० दे० "धीवर"।
धीमा–वि० [स० मध्यम] [स्त्री० धीमी] १. जिसकी चाल में बहुत तेज़ी न हो। जो आहिस्तः चले। २. जो अधिक प्रचंड, तीव्र या उग्र न हो। हलका। ३. कुछ नीचा और साधारण से कम (स्वर)। ४. जिसकी तेज़ी कम हो गई हो।
धीमान्–सज्ञा पु० [स० धीमत्] [स्त्री० धीमती] १. बृहस्पति। २. बुद्धिमान्।
धीय†–सज्ञा स्त्री० दे० "धी"।
धीया–सज्ञा स्त्री० [स० दुहिता] लड़की।
धीर–वि० [सं०] १. जिसमें धैर्य्य हो। दृढ़ और शांत चित्तवाला। २. बलवान्। ताक़तवर। ३. विनीत। नम्र। ४. गंभीर। ५. मनोहर। सुंदर। ६. मंद। धीमा।
‡ सज्ञा पु० [स० धैर्य्य] १. धैर्य्य। धीरज। ढारस। २. संतोष। सब्र।
धीरज‡–सज्ञा पु० दे० "धैर्य्य"।
धीरता–सज्ञा स्त्री० [स०] १. चित्त की स्थिरता। मन की दृढ़ता। धैर्य्य। २. स्थिरता। संतोष। सब्र।
धीरललित–सज्ञा पु० [स०] वह नायक जो सदा खूब बना ठना और प्रसन्नचित्त रहता हो।
धीरशांत–सज्ञा पु० [स०] वह नायक जो सुशील, दयावान्, गुणवान् और पुण्यवान् हो।
धीरा–सज्ञा स्त्री० [स०] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर व्यंग्य से कोप प्रकाशित करे।
वि० [स० धीर] मंद। धीमा।
सज्ञा पु० [स० धैर्य्य] धीरज। धैर्य्य।
धीराधीरा–सज्ञा स्त्री० [स०] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध जतलावे।
धीरे–क्रि० वि० [हिं० धीर] १. आहिस्ते से। धीमी गति से। २. इस प्रकार जिसमें कोई सुन या देख न सके। चुपके से।
धीरोदात्त–सज्ञा पु० [स०] १. वह नायक जो निरभिमान, दयालु, क्षमाशील, बलवान्, धीर, दृढ़ और योद्धा हो। २. वीर-रस प्रधान नाटक का मुख्य नायक।
धीरोद्धत–संज्ञा पु० [स०] वह नायक जो बहुत प्रचंड और चचल हो और सदा अपने ही गुणों का बखान किया करे।
‡सज्ञा पु० दे० "धैर्य्य"।
धीवर–सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० धीवरी] एक जाति जो प्रायः मछली पकड़ने और बेचने का काम करती है। मछुवा। मल्लाह।
धुंकार–सज्ञा स्त्री० [स० ध्वनि+कार] ज़ोर का शब्द। गरज। गड़गड़ाहट।
धुँगार–सज्ञा स्त्री० [स० धूम्र+आधार] बघार। तड़का। छौंक।
धुँगारना–क्रि० स० [हिं० धुँगार] बघारना। छौंकना। तड़का देना।
धुंज†–वि० [हिं० धुध] धुँधली। मंद दृष्टि।
धुंद–सज्ञा स्त्री० दे० "धुंध"।
धुंध–सज्ञा स्त्री० [स० धूम्र+अंध] १. वह अँधेरा जो हवा में मिली धूल के कारण हो। २. हवा में उड़ती हुई धूल। ३. आँख का एक रोग जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट नहीं दिखाई देती।
धुंधकार–सज्ञा पु० [हिं० धुँकार] १ धुंकार।

गरज। गड़गड़ाहट । २. अधकार ।

धुंधमार–संज्ञा पुं० दे० "धुंधुमार"।

धुंधरा†–संज्ञा स्त्री० [हिं० धुंध] १. हवा से उड़ती हुई धूल। २. अँधेरा। तारीकी।

धुँधराना–क्रि० अ० दे० "धुँधलाना"।

धुँधला–वि० [हिं० धुंध+ला] १. कुछ कुछ काला। धूएँ के रंग का। २. जो साफ़ दिखाई न दे। अस्पष्ट। ३. कुछ कुछ अँधेरा।

धुँधलाई‡–संज्ञा स्त्री० दे० "धुँधलापन"।

धुँधलापन–संज्ञा पुं० [हिं० धुँधला+पन] १. धुँधले या अस्पष्ट होने का भाव। २. कम दिखाई देने का भाव।

धुंधु–संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस जो मधु राक्षस का पुत्र था। यह जब साँस लेता था तब उसके साथ धूआँ और अगारे निकलते थे और भूकंप होता था।

धुंधुकार–संज्ञा पुं० [हिं० धुंध+कार] १. अंधकार। अँधेरा। २. धुँधलापन। ३. नगाड़े का शब्द। धुंकार।

धुंधुमार–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा त्रिशंकु का पुत्र। २. कुवलयाश्व, जिसने धुंधु-मार को मारा था।

धुंधुरि‡†–संज्ञा स्त्री० [हिं० धुंध] गर्द-गुबार या धूएँ के कारण होनेवाला अँधेरा।

धुंधरित–वि० [हिं० धुंधुर] १. धुँधला किया हुआ। धूमिल। २. दृष्टिहीन। धुँधली दृष्टिवाला।

धुँधवाना †–क्रि० अ० [सं० धूम, हिं० धूआँ] धूआँ देना। धूआँ दे देकर जलना।

धुंधेरी–संज्ञा स्त्री० दे० "धुंधुरि"।

धुँअ‡–संज्ञा पुं० दे० "ध्रुव"।

धुआ–संज्ञा पुं० [सं० धूम] १. जलती हुई चीज़ों से निकलनेवाली भाप जो कुछ कालापन लिए होती है। धूम।

मुहा०—धुएँ का धौरहर = थोड़े ही काल में नष्ट होनेवाली वस्तु या आयोजन। धुएँ के बादल उड़ाना = भारी गप हाँकना। धुआँ निकालना या काढ़ना = बढ़ बढ़कर बातें कहना।

२. घटाटोप उमड़ती हुई वस्तु। भारी समूह। ३ धुर्रा। धज्जी।

धुआँकश–संज्ञा पुं० [हिं० धुआँ+फा० कश] भाप के ज़ोर से चलनेवाली नाव या जहाज़। स्टीमर।

धुआँधार–वि० [हिं० धुआँ+धार] १. धुएँ से भरा। धूममय। २. गहरे रंग का। भड़कीला। भव्य। ३. काला। स्याह। ४. बड़े ज़ोर का। प्रचंड। घोर।

क्रि० वि० बहुत अधिक या बहुत ज़ोर से।

धुआँना–क्रि० अ० [हिं० धुआँ+ना (प्रत्य०)] अधिक धुएँ में रहने के कारण स्वाद और गंध में बिगड़ जाना। (पकवान आदि)

धुआँयँध–वि० [हिं० धुआँ+गंध] धुएँ की तरह महकनेवाला।

संज्ञा स्त्री० अन्न न पचने के कारण आनेवाला डकार। धूम।

धुआँस–संज्ञा स्त्री० दे० "धुवाँस"।

धुकड़ पुकड़–संज्ञा पुं० [अनु०] १. भय आदि से होनेवाली चित्त की अस्थिरता। घबराहट। २. आगा-पीछा। पसोपेश।

धुकधुकी–संज्ञा स्त्री० [धुकधुक से अनु०] १ पेट और छाती के बीच का वह भाग जो कुछ गहरा सा होता है। २. कलेजा। हृदय। ३. कलेजे की धड़कन। कंप। ४. डर। भय। खौफ़। ५. पदिक या जुगनू नामक गहना।

धुकना†–क्रि० अ० [हिं० झुकना] १. नीचे की ओर ढलना। झुकना। नवना। २. गिर पड़ना। ३ झपटना। टूट पड़ना।

धुकार†–संज्ञा स्त्री० [हिं० धमकाना] घोर शब्द। गड़गड़ाहट का शब्द।

धुकाना†–क्रि० स० [हिं० धुकना] १. झुकाना। नवाना। २. गिराना। ढकेल-ना। ३. पछाड़ना। पटकना।

क्रि० स० [सं० धूम+करण] धूनी देना।

धुकार, धुकारी–संज्ञा स्त्री० [धु से अनु०] नगाड़े का शब्द।

धुकना‡†–क्रि० अ० दे० "धुकना"।

धज, धुजा‡†–संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।

धुंजिनी †–संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वज] सेना। फ़ौज।

धुड़गा †–वि० [हिं० धूर+अंगी] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो।

धुतकार–संज्ञा स्त्री० दे० "दुतकार"।

धुताई‡†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूर्तता"।

धुधुकार–संज्ञा स्त्री० [धुधु से अनु०] १. धु धु शब्द का शोर। २. घोर शब्द। गरज।

धुधुकारी–संज्ञा स्त्री० दे० "धुधुकार"।

धुन–संज्ञा स्त्री० [हिं० धुनना] १. बिना

आगा पीछा सोचे कोई काम करते रहने की प्रवृत्ति। लगन।
यौ०—धुन का पक्का = वह जो आरंभ किए हुए काम को बिना पूरा किए न छोड़े।
२ मन की तरंग। मौज। ३. सोच। विचार। चिंता। खयाल।
संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वनि] १. गीत गाने का ढंग। गाने का तर्ज़। २ दे० "ध्वनि"।

धुनकना—क्रि० स० दे० "धुनना"।

धुनकी—संज्ञा स्त्री० [सं० धनुस्] १. धुनियों का वह धनुस् के आकार का औज़ार जिससे वे रुई धुनते हैं। पिंजा। फटका। २. लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।

धुनना—क्रि० स० [हिं० धुनकी] १. धुनकी से रुई साफ़ करना जिसमें उसके बिनौले निकल जायँ। २. खूब मारना-पीटना। ३. बार-बार कहना। कहते ही जाना। ४ कोई काम बिना रुके बराबर करना।

धुनवाना—क्रि० स० [हिं० धुनना का (प्रे०)] धुनने का काम दूसरे से कराना।

धुनि—संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वनि"।

धुँनियाँ—संज्ञा पु० [हिं० धुनना] वह जो रुई धुनने का काम करता हो। बेहना।

धुपना†—क्रि० अ० दे० "धुलना"।

धुँमिला—वि० दे० "धूमिल"।

धुरंधर—वि० [सं०] १. भार उठानेवाला। २ जो सबमें बहुत बड़ा, भारी या बली हो। ३ श्रेष्ठ। प्रधान।

धुर—संज्ञा पु० [सं० धुर्] १ गाड़ी या रथ आदि का धुरा। अक्ष। २ शीर्ष या प्रधान स्थान। ३. भार। बोझ। ४. आरंभ। शुरू। ५. जमीन की एक माप जो बिस्वे का बीसवाँ भाग होती है। बिस्वांसी।
अव्य० [सं० धुर] १. बिल्कुल ठीक। सटीक। सीधे। २. एक दम दूर। बिल्कुल दूर।
मुहा०—धुर सिर से = बिलकुल शुरू से।
वि० [सं० ध्रुव] पक्का। दृढ़।

धुरजटी—संज्ञा पु० दे० "धूर्जटी"।

धुरना†—क्रि० स० [सं० धूर्वण] १. पीटना। मारना। २. बजाना।

धुरपद—संज्ञा पु० दे० "ध्रुपद"।

धुरा—संज्ञा पु० [सं० धुर] [संज्ञा स्त्री० अल्पा० धुरी] वह डंडा जिसमें पहिया पहनाया रहता है और जिस पर वह घूमता है। अक्ष।

धुरियाना†—क्रि० स० [हिं० धूर] १. किसी वस्तु पर धूल डालना। २. किसी ऐब को युक्ति से दबा देना।
क्रि० अ० १. किसी चीज़ का धूल से ढँका जाना। २ ऐब का दबाया जाना।

धुरिया मल्लार—संज्ञा पु० [देश० धुरिया + मल्लार] मल्लार।

धुरीण—वि० [सं०] १. बोझ सँभालनेवाला। २ मुख्य। प्रधान। ३ धुरंधर।

धुरेटना†—क्रि स० [हिं० धुर + एटना (प्रत्य०)] धूल से लपेटना। धूल लगाना।

धुर्रा—संज्ञा पु० [हिं० धूर] किसी चीज का अत्यंत छोटा भाग। कण। जर्रा। भुरा।
मुहा०—धुर्रे उड़ाना = १. किसी वस्तु के अत्यत छोटे छोटे टुकड़े कर डालना। २ छिन्न भिन्न कर डालना। ३ बहुत अधिक मारना।

धुलना—क्रि० अ० [हिं० धोना का अ० रूप] पानी की सहायता से साफ़ या स्वच्छ किया जाना। धोया जाना।

धुलवाना—क्रि० स० दे० "धुलाना"।

धुँलाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० धोना] १ धोने का काम या भाव। २. धोने की मज़दूरी।

धुलाना—क्रि० स० [सं० धवल] धोने का काम दूसरे से कराना। धुलवाना।

धुलेंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूल + उड़ाना] हिंदुओं का एक त्योहार जो होली जलने के दूसरे दिन होता है। इस दिन लोग दूसरों पर अबीर-गुलाल डालते हैं।

धुव†—संज्ञा पु० दे० "ध्रुव"।

धुँवाँ—संज्ञा पु० दे० "धुआँ"।

धुवाँस—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूर + मास। वा० धूमसी] उरद का आटा जिससे पापड़ या कचौड़ी बनती है।

धुवाना—क्रि० स० दे० "धुलाना"।

धुस्स—संज्ञा पु० [सं० ध्वंस] १. मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर। टीला। २. नदी का बाँध। बंद।

धुस्सा—संज्ञा पु० [सं० दिशाट] मोटे ऊन की लोई जो ओढ़ने के काम में आती है।

धूँध—संज्ञा स्त्री० दे० "धुंध"।

धू—वि० [सं० ध्रुव] स्थिर। अचल।
संज्ञा पु० १. ध्रुव तारा। २. राजा उत्तानपाद का पुत्र जो भगवान् का भक्त था। ३. धुरी।

धूआँ—संज्ञा पु० दे० "धुआँ"।

धूजट*—संज्ञा पु० [सं० धूर्जटि] शिव ।

धूत—वि० [सं०] १. हिलता या कांपता हुआ । थरथराता हुआ । २. जो धमकाया गया हो । ३. त्यक्त । छोड़ा हुआ ।
†*वि० [सं०धूर्त] धूर्त । दग़ाबाज़ ।

धूतना*—क्रि० स० [हिं० धूर्त] धूर्तता करना । धोखा देना । ठगना ।

धूतपापा—संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी की एक पुरानी छोटी नदी ।

धूती—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक चिड़िया ।

धूधू—संज्ञा पु०[अनु०] आग के दहकने या ज़ोर से जलने का शब्द ।

धूनना*—क्रि० स० [हिं० धूनी] किसी वस्तु को जलाकर उसका धुआँ उठाना । धूनी देना ।
क्रि० स० दे० "धुनना" ।

धूना—संज्ञा पु० [हिं० धूनी] १ एक प्रकार का बड़ा पेड़ । इसका गोंद भी धूप की तरह जलाया जाता है । २ वह सुगन्धित वस्तु जो आग में जलाई जाय ।

धूनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूई] १. गुग्गुल, लोबान आदि गंध-द्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ । धूप ।
मुहा०—धूनी देना = गंध-मिश्रित या विशेष प्रकार का धुआँ उठाना या पहुँचाना ।
२. साधुओं के तापने की आग ।
मुहा०—धूनी जगाना या लगाना=१.साधुओं का अपने सामने आग जलाना । २.शरीर तपाना । तप करना । ३. साधु होना । विरक्त होना । धूनी रमाना = १. सामने आग जलाकर शरीर तपाने बैठना । २. तप करना । साधु या विरक्त हो जाना ।

धूप—संज्ञा पु० [सं०] देवपूजन में या सुगंध के लिये गंधद्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ । सुगंधित धूम ।
संज्ञा स्त्री० १. गंधद्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठता है । जैसे—कस्तूरी, अगर की लकड़ी । २. कृत्रिम अर्थात् कई द्रव्यों के योग से बनाई हुई धूप । ३. सूर्य्य का प्रकाश और ताप । घाम ।
मुहा०—धूप खाना = ऐसी स्थिति में होना कि धूप ऊपर पड़े । धूप चढ़ना या निकलना = सूर्योदय के पीछे प्रकाश का बढ़ना । दिन चढ़ना । धूप दिखाना = धूप में रखना । धूप लगने देना । धूप में बाल या चूँड़ा सफेद = बिना कुछ अनुभव प्राप्त किए जीवन का बहुत सा भाग बिता देना ।

धूपघड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूप + घड़ी] एक यंत्र जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है । इसमें एक गोल चक्कर के बीच में एक कील होती है । धूप में उसी कील की परछाँही से समय जाना जाता है ।

धूपछाँह—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूप + छाँह] एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है और कभी दूसरा ।

धूपदान—संज्ञा पु० [सं० धूप + आधान] धूप या गंधद्रव्य जलाने का डिब्बा । अगियारी ।

धूपदानी—संज्ञा स्त्री० दे० "धूपदान" ।

धूपना †—क्रि० अ० [सं० धूपन] धूप देना । गंध-द्रव्य जलाना ।
क्रि० स० गंधद्रव्य जलाकर सुगंधित धुआँ पहुँचाना । सुगंधित धुएँ से वासना ।
क्रि० स० [सं० धूपन = श्रांत होना] दौड़ना । हैरान होना । जैसे—दौड़ना-धूपना ।

धूपबत्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूप + बत्ती] मसाला लगी हुई सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है ।

धूम—संज्ञा पु० [सं०] १. धुआँ । २. अजीर्ण या अपच में उठनेवाली डकार । ३. धूमकेतु । ४. उल्कापात ।
संज्ञा स्त्री० [सं० धूम = धुआँ] १. बहुत से लोगों के इकट्ठे होने और शोरगुल करने आदि का व्यापार । रेलपेल । हलचल । आंदोलन । २. उपद्रव । उत्पात । ऊधम ।
मुहा०—धूम डालना = ऊधम करना ।
३. ठाट बाट । समारोह । भारी आयोजन । ४. कोलाहल । हल्ला । शोर । ५. जनरव । शोहरत । प्रसिद्धि ।

धूमक धया—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूम] उछलकूद और हल्ला-गुल्ला । उपद्रव । उत्पात ।

धूमकेतु—संज्ञा पु० [सं०] १. अग्नि । २. केतुग्रह । पुच्छल तारा । ३. शिव ।

धूम धड़क्का—संज्ञा पु० दे० "धूमधाम" ।

धूमधाम—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूम + धाम (अनु०)] भारी तैयारी । ठाट-बाट । समारोह ।

धूमपान—संज्ञा पुं० [सं०] १. विशेष प्रकार का धुआँ जो नल के द्वारा रोगी को सेवन कराया जाता है । २. तमाकू, चुरट आदि पीने का कार्य्य ।

धूमपोत—संज्ञा पु० [सं०] धुआँकश ।

धूमर†–वि० दे० "धूमल"।
धूमल, धूमला–वि० [सं० धूमल] [स्त्री० धूमली] १. धुएँ के रंग का। ललाई लिए काला। २. जो चटकीला न हो। धुँधला। ३. जिसकी कांति मंद हो।
धूमावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओं में से एक देवी।
धूमिल† –वि० [सं० धूमल] १. धुएँ के रंग का। २. धुँधला।
धूम्र–वि० [सं०] धुएँ के रंग का। संज्ञा पुं० १. ललाई लिए काला रंग। २. शिलारस नाम का गंध द्रव्य। ३. एक असुर। ४. शिव। महादेव। ५ मेढ़ा।
धूम्रवर्ण–वि० [सं०] धुएँ के रंग का।
धूर†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।
धूरजटी†–संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटि"।
धूरत†–वि० दे० "धूर्त"।
धूरधान–संज्ञा पुं० [हिं० धूर+धान] धूल की राशि। गर्द का ढेर।
धूरधानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धूरधान] १. गर्द की ढेरी। धूल की राशि। २. ध्वंस। विनाश। ३. पथरकला। बंदूक।
धूरा–संज्ञा पुं० [हिं० धूर] १. धूल। गर्द। २. चूर्ण। बुकनी। चूरा।
मुहा०—धूरा करना या देना=शीत से अंग सुन्न होने पर सोंठ की बुकनी आदि मलना।
धूरि†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।
धूर्जटि–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
धूर्त–वि० [सं०] १. मायावी। छली। चालबाज़। २ धोखा देनेवाला। वंचक। संज्ञा पुं० १. साहित्य में शठ नायक का एक भेद। २. विट् लवण। ३ लोहे की मैल। ४ धतूरा। ५. दाँव पेंच करनेवाला।
धूर्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] चालबाजी। वंचकता। ठगपना। चालाकी।
धूल–संज्ञा स्त्री० [सं० धूलि] १. मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर। रेणु। रज। गर्द।
मुहा०—(कहीं) धूल उड़ना=१. बरबादी होना। तबाही आना। २. सन्नाटा होना। रौनक न रहना। (किसी की) धूल उड़ना=१. दोषों और त्रुटियों का उद्घाटन होना। बदनामी होना। २ उपहास होना। दिल्लगी उड़ना। किसी की धूल उड़ाना=१. बुराइयों को प्रकट करना। बदनामी करना। २. उपहास करना। हँसी करना। धूल की रस्सी बटना=१. अनहोनी बात के पीछे पड़ना। २ केवल धूर्तता से काम निकालना। धूल चाटना=१ बहुत विनती करना। २ अत्यंत नम्रता दिखाना। (किसी बात पर) धूल डालना=१. फैलने न देना। दबाना। २. ध्यान न देना। धूल फाँकना=मारा मारा फिरना। धूल में मिलना=नष्ट होना। चौपट होना। पैर की धूल=अत्यंत तुच्छ वस्तु या व्यक्ति। नाचीज। सिर पर धूल डालना=पछताना। सिर धुनना। २ धूल के समान तुच्छ वस्तु।
मुहा०—धूल समझना=अत्यंत तुच्छ समझना। किसी गिनती में न लाना।
धूला–संज्ञा पुं० [देश०] टुकड़ा। खंड।
धूलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] धूल। गर्द।
धूवाँ–संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।
धूसर–वि० [सं०] १. धूल के रंग का। खाकी। मटमैला। २. धूल लगा हुआ। जिसमें धूल लिपटी हो। धूल से भरा।
यौ०—धूल धूसर=धूल से भरा हुआ।
धूसरा–वि० दे० "धूसर"।
धूसरित–वि० [सं०] १. जो धूल से मटमैला हुआ हो। २ धूल से भरा हुआ।
धूसला–वि० दे० "धूसर"।
धृक, धृग†–अव्य० दे० "धिक्"।
धृत–वि० [सं०] १. धरा हुआ। पकड़ा हुआ। २ धारण किया हुआ। ग्रहण किया हुआ। ३ स्थिर किया हुआ। निश्चित। ४ पतित।
धृतराष्ट्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह देश जो अच्छे राजा के शासन में हो। २ वह जिसका राज्य दृढ़ हो। ३. एक कौरव राजा जो दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य्य के पुत्र थे।
धृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धरने या पकड़ने की क्रिया। धारण। २ स्थिर रहने की क्रिया या भाव। ठहराव। ३. मन की दृढ़ता। धैर्य्य। धीरता। ४ सोलह मातृकाओं में से एक। ५. अठारह अक्षरों के वृत्तों की संज्ञा। ६ दक्ष की एक कन्या और धर्म की पत्नी।
धृष्ट–वि० [सं०] [स्त्री० धृष्टा] १. संकोच या लज्जा न करनेवाला। निर्लज्ज। बेहया। २ ढीठ। गुस्ताख़। उद्धत।
धृष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनुचित साहस। ढिठाई। गुस्ताख़ी। २. निर्लज्ज-

ता। बेहयाई।

धृष्टद्युम्न–संज्ञा पुं० [सं०] राजा द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई। कुरुक्षेत्र के युद्ध में जब द्रोणाचार्य्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु की झूठी खबर सुनकर योग में मग्न हुए, तब इसी ने उनका सिर काटा था।

धृष्य–वि० [सं०] धर्षण योग्य। धर्षणीय।

धेन–संज्ञा स्त्री० दे० "धेनु"।

धेनु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह गाय जिसे बच्चा जने बहुत दिन न हुए हों। सवत्सा गौ। २. गाय।

धेनुक–संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस जिसे बलदेवजी ने मारा था।

[धे]य–वि० [सं०] १. धारण करने योग्य। धार्य्य। २. पोषण करने योग्य। पोष्य।

[धे]र–संज्ञा पुं० [देश०] एक अनार्य्य जाति। इस जाति के लोग गाँव के बाहर रहते और मरे हुए चौपायों का मांस खाते हैं।

[धे]लचा, धेला–संज्ञा पुं० दे० "अधेला"।

[धे]ली–संज्ञा स्त्री० [हिं० अधेल] अठन्नी।

[धै]ताल–वि० [अनु० धै+हिं० ताल] १. चपल। चंचल। २. उजड्ड। उद्धत।

[धे]ना–संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना या धंधा] १. टेव। आदत। स्वभाव। २. काम-धंधा।

[धै]र्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. संकट, बाधा, आदि उपस्थित होने पर चित्त की स्थिरता। धीरता। धीरज। २. उतावला या आतुर न होने का भाव। सब्र। ३. चित्त में उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव।

धैवत–संज्ञा पुं० [सं०] संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर जो मध्यम के बाद का है।

[धों]धा–संज्ञा पुं० [सं० बुद्धि+गणेश] १. लोंदा। बेडौल पिंड। २. भद्दा।

मुहा०—मिट्टी का धोंधा = १. मूर्ख। नासमझ। जड़। २. निकम्मा। आलसी।

धोई–संज्ञा स्त्री० [हिं० धोना] छिलका निकाली हुई उरद या मूँग की दाल।

[धो]–संज्ञा पुं० [हिं० धवई] राजगीर। थवई।

धोकड़–वि० [देश०] हट्टा-कट्टा। मुसटंडा।

धोका–संज्ञा पुं० दे० "धोखा"।

धोखा–संज्ञा पुं० [सं० धूर्तता] १. मिथ्या व्यवहार जिससे दूसरे के मन में मिथ्या प्रतीति उत्पन्न हो। भुलावा। छल। दगा। २. धूर्तता, चालाकी, झूठ बात आदि से उत्पन्न मिथ्या प्रतीति। डाला हुआ भ्रम। भुलावा।

मुहा०—धोखा खाना = ठगा जाना। प्रतारित होना। धोखा देना = १. भ्रम में डालना। छलना। २. अकस्मात् मरकर या नष्ट होकर दुःख पहुँचाना।

३. भ्रम। भ्रांति। भूल।

मुहा०—धोखा खाना = भ्रम में पड़ना।

४ भ्रम में डालनेवाली वस्तु। माया।

मुहा०—धोखे की टट्टी = १. वह पर्दा या टट्टी जिसकी ओट में छिपकर शिकारी शिकार खेलते हैं। २. भ्रम में डालनेवाली चीज। ३. दिखाऊ चीज। धोखा खड़ा करना या रचना = भ्रम में डालने के लिये आडंबर करना।

५. जानकारी का अभाव। अज्ञान।

मुहा०—धोखे में या धोखे से = जान-बूझकर नहीं। भूल से।

६. अनिष्ट की संभावना। जोखें।

मुहा०—धोखा उठाना = भ्रम में पड़कर हानि या कष्ट उठाना।

७. अन्यथा होने की संभावना। संशय।

मुहा०—धोखा पड़ना = जैसा समझा या कहा जाय, उसके विरुद्ध होना। अन्यथा होना।

८. भूल। चूक। प्रमाद। त्रुटि।

मुहा०—धोखा लगना = त्रुटि होना। कमी होना। धोखा लगाना = चूक या कसर करना।

९ वह पुतला जिसे किसान चिड़ियों को डराने के लिये खेत में खड़ा करते हैं। बिजूखा। भुचकाक। १०. रस्सी लगी हुई लकड़ी जो फलदार पेड़ों पर इसलिये बाँधी जाती है कि रस्सी खींचने से खटखट शब्द हो और चिड़ियाँ दूर रहें। खटखटा। ११. बेसन का एक पकवान।

धोखेबाज–वि० [हिं० धोखा+फा० बाज] धोखा देनेवाला। छली। कपटी। धूर्त्त।

धोखेबाजी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धोखेबाज] छल। कपट। धूर्त्तता।

धोटा–संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।

धोती–संज्ञा स्त्री० [सं० अधोवस्त्र] वह कपड़ा जो कटि से लेकर घुटनों के नीचे तक का शरीर और स्त्रियों का प्रायः सर्वांग ढकने के लिये कमर में लपेटकर ओढ़ा जाता है।

मुहा०—धोती ढीली करना = डर जाना। भयभीत होना। डरकर भागना।

संज्ञा स्त्री० [सं० धौती] १. योग की एक

क्रिया। दे० "धौति"। २. कपड़े की वह धज्जी जिसे हठ योग की "धौति" क्रिया में मुँह से निगलते हैं।

धोना–क्रि० स० [स० धावन] १. पानी से साफ़ करना। प्रक्षालित करना। पखारना।

मुहा०—(किसी वस्तु से) हाथ धोना = खो देना। गँवा देना। वंचित रहना। हाथ धोकर पीछे पड़ना = सब छोड़कर लग जाना।

२. दूर करना। हटाना। मिटाना।

मुहा०—धो बहाना = न रहने देना।

धोप†–सज्ञा स्त्री० [?] तलवार। खड्ग।

धोव–सज्ञा पु० [हिं० धोवना] धोए जाने की क्रिया। धुलावट।

धोविन–सज्ञा स्त्री० [हिं० धोबी] १. धोबी जाति की स्त्री। २. एक जल-पक्षी।

धोबी–सज्ञा पु० [हिं० धोवना] [स्त्री० धोबिन] वह जो मैले कपड़ों को धो और साफ़ करके अपनी जीविका चलाता हो। कपड़ा धोनेवाला। रजक।

मुहा०—धोबी का कुत्ता = व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला। निकम्मा आदमी।

धोम–सज्ञा पु० [स० धूम्र] धूम्र। धूआँ।

धोर–सज्ञा पु० [स० धर = किनारा] १. पास। निकटता। २. किनारा। बाढ़।

धोरी–सज्ञा पु० [स० धौरेय] १. धुरे को उठानेवाला। भार उठानेवाला। २. बैल। वृषभ। ३. प्रधान। मुखिया। सरदार। ४. श्रेष्ठ पुरुष। बड़ा आदमी।

धोरें†–क्रि० वि० [स० धर] पास। निकट।

धोवती–सज्ञा स्त्री० [स० अधोवस्त्र] धोती।

धोवन–सज्ञा स्त्री० [हिं० धोना] १. धोने का भाव। पखारने की क्रिया। २. वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो।

धोवना–क्रि० स० दे० "धोना"।

धोवा–सज्ञा पु० [हिं० धोना] १. धोवन। २ जल। अर्क।

धोवाना†–क्रि० स० [हिं० धोना] धुलाना। क्रि० अ० धुलना। धोया जाना।

धौं†–अव्य० [हिं० दैव, दहुँ] १. एक अव्यय जो ऐसे प्रश्नों के पहले लगाया जाता है जिनमें जिज्ञासा का भाव कम और संशय का भाव अधिक होता है। न जाने। मालूम नहीं। २. प्रश्न के रूप में आनेवाले दो विकल्प या संदेहसूचक वाक्यों में से दूसरे या दोनों के पहले लगनेवाला शब्द। कि। या। अथवा। ३. एक शब्द जिसका प्रयोग जोर देने के लिये ऐसे प्रश्नों के पहले 'तो' या 'भला' के अर्थ में होता है जिनका उत्तर काकु से 'नहीं' होता है। ४. किसी वाक्य के पूरे होने पर उससे मिले हुए प्रश्न वाक्य का आरंभ-सूचक शब्द जो 'कि' का अर्थ देता है। ५. विधि आदेश आदि वाक्यों के पहले केवल जोर देने के लिये आनेवाला एक शब्द।

धौंक–सज्ञा स्त्री० [हिं० धौंकना] १. आग दहकाने के लिये भाथी को दबाकर निकाला हुआ हवा का झोंका। २ गरमी की लपट। ताप। लू।

धौंकना–क्रि० स० [स० धम् = धौंकना] १. आग पर, उसे दहकाने के लिये, भाथी दबाकर हवा का झोंका पहुँचाना। २. ऊपर डालना। भार डालना या सहन कराना। ३ दंड आदि लगाना।

धौंकनी–सज्ञा स्त्री० [हिं० धौंकना] १. बाँस या धातु की एक नली जिससे लोहार, सोनार आदि आग फूँकते हैं। २. भाथी।

धौंका†–सज्ञा स्त्री० [हिं० धौंकना] लू।

धौंकिया–सज्ञा पु० [हिं० धौंकना] १. भाथी चलानेवाला। आग फूँकनेवाला। २. एक प्रकार के व्यापारी जो भाथी आदि लिए घूमते और टूटे-फूटे बरतनों की मरम्मत करते हैं।

धौंकी–सज्ञा स्त्री० दे० "धौंकनी"।

धौंज–सज्ञा स्त्री० [हिं० धौंजना] १. दौड़-धूप। २. घबराहट। उद्विग्नता।

धौंजन–सज्ञा स्त्री० दे० "धौंज"।

धौंजना†–क्रि० स० [स० ध्वजन] दौड़ना-धूपना। दौड़-धूप करना। क्रि० स० पैरों से रौंदना।

धौंताल–वि० [हिं० धुन + ताल] १. जिसे किसी बात की धुन लग जाय। २. फुरतीला। चुस्त। चालाक। ३. साहसी। दृढ़। ४. हट्टा-कट्टा। मजबूत। हैकड़। ५. निपुण। पटु।

धौंस–सज्ञा स्त्री० [स० दंश] १. [illegible] घुड़की। डाँट। डपट। २ [illegible] वार। रोब-दाब। [illegible] भुलावा। धोखा।

धौंसना–क्रि० स० [illegible] दमन करना। [illegible]

डराना। ३. मारना पीटना।
धौंस-पट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धौंस+पट्टी] भुलावा। झाँसा-पट्टी। दम-दिलासा।
धौंसा–संज्ञा पुं० [हिं० धौंसना] १. बड़ा नगारा। डंका। २. सामर्थ्य। शक्ति।
धौंसिया–संज्ञा पुं० [हिं० धौंसना] १. धौंस से काम चलानेवाला। २. झाँसा-पट्टी देनेवाला। ३. नगारा बजानेवाला।
धौ–संज्ञा पुं० दे० "धव"।
धौत–वि० [सं०] १. धोया हुआ। साफ़। २. उजला। सफ़ेद। ३. नहाया हुआ। संज्ञा पुं० रूपा। चाँदी।
धौति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुद्ध। २. हठ योग की एक क्रिया जो शरीर के भीतर और बाहर से शुद्ध करने के लिये की जाती है। ३. आँतें साफ़ करने की योग की एक क्रिया जिसमें कपड़े की एक धज्जी मुँह से पेट के नीचे उतारते हैं; फिर पानी पीकर उसे धीरे धीरे बाहर निकालते हैं।
धौम्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि जो देवल के भाई और पांडवों के पुरोहित थे। २. एक ऋषि जो महाभारत के अनुसार व्याघ्रपद नामक ऋषि के पुत्र और बड़े शिवभक्त थे। ३ एक ऋषि जो तारा रूप में पश्चिम दिशा में स्थित है।
धौरहर–संज्ञा पुं० दे० "धौराहर"।
धौरा–वि० [सं० धवल] [स्त्री० धौरी] १. श्वेत। सफ़ेद। उजला। २. सफ़ेद रंग का बैल। ३. धौ का पेड़। ४. एक प्रकार का पडुक।
धौराहर–संज्ञा पुं० [हिं० धुर=ऊपर+घर] ऊँची अटारी। धरहरा। मीनार। बुर्ज।
धौरेय–संज्ञा पुं० [सं० धौरेय] बैल।
धौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० धौरा] १. सफ़ेद रंग की गाय। कपिला। २. एक प्रकार की चिड़िया।
धौरे–क्रि० वि० दे० "धोरे"।
धौल–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. धप्पा। चाँटा। थप्पड़। २. नुकसान। हानि। टोटा। वि० [सं० धवल] उजाला। सफ़ेद।
मुहा०—धौल धूर्त=गहरा धूर्त।
संज्ञा पुं० [हिं० धौरहर] धरहरा। धौराहर।
धौल धक्का–संज्ञा पुं० [हिं० धौल+धक्का] आघात। चपेट।
... —संज्ञा पुं० [हिं० धौल+धप्पा] १. मार-पीट। धक्का-मुक्का। २. उपद्रव।
धौलहर–संज्ञा पुं० दे० "धौराहर"।
धौला–वि० [सं० धवल] [स्त्री० धौली] सफ़ेद। उजला। श्वेत।
धौलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० धौल+आई (प्रत्य०)] सफ़ेदी। उजलापन।
धौलागिरि–संज्ञा पुं० दे० "धवलगिरि"।
ध्यात–वि० [सं०] विचारा हुआ। ध्यान किया हुआ। चिंतित।
ध्याता–वि० [सं० ध्यातृ] [स्त्री० ध्यात्री] १. ध्यान करनेवाला। २ विचार करनेवाला।
ध्यान–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतःकरण में उपस्थित करने की क्रिया या भाव। मानसिक प्रत्यक्ष।
मुहा०—ध्यान में डूबना या मग्न होना=कोई बात इतना मन में लाना कि और सब बातें भूल जायँ। ध्यान धरना=मन में स्थापित करना। (किसी के) ध्यान में लगना=किसी का विचार मन में लाकर मग्न होना।
२ सोच विचार। चिंतन। मनन। ३. भावना। प्रत्यय। विचार। ख़याल।
मुहा०—ध्यान आना=विचार उत्पन्न होना। ध्यान जमना=विचार स्थिर होना। ध्यान बँधना=लगातार ख़याल बना रहना। ध्यान रखना=विचार बनाए रखना। न भूलना। ध्यान लगना=बराबर ख़याल बना रहना।
४. चित्त की ग्रहण-वृत्ति। चित्त। मन।
मुहा०—ध्यान में न लाना=१. चिंता न करना। परवाह न करना। २ न विचारना।
५. चेतना की प्रवृत्ति। चेत। ख़याल।
मुहा०—ध्यान जमना=चित्त एकाग्र होना। ध्यान जाना=चित्त का किसी ओर प्रवृत्त होना। ध्यान दिलाना=ख़याल कराना, या जताना। चेताना। सुझाना। ध्यान देना=(अपना) चित्त प्रवृत्त करना। गौर करना। ध्यान पर चढ़ना=मन में स्थान कर लेना। चित्त से न हटना। ध्यान बँटना=चित्त एकाग्र न रहना। ख़याल इधर-उधर होना। ध्यान बँधना=किसी ओर चित्त स्थिर या एकाग्र होना। ध्यान लगना=चित्त प्रवृत्त या एकाग्र होना।
६. बोध करनेवाली वृत्ति। समझ। बुद्धि।
७. धारणा। स्मृति। याद।
मुहा०—ध्यान आना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान दिलाना=स्मरण कराना। याद दिलाना। ध्यान पर चढ़ना=स्मरण

होना। याद होना। ध्यान रखना=याद रखना। ध्यान से उतरना=भूलना।
८ चित्त को एकाग्र करके किसी ओर लगाने की क्रिया। यह योग के आठ अंगों में से सातवाँ अंग और धारणा तथा समाधि के बीच की अवस्था है।
मुहा०—ध्यान छूटना=चित्त की एकाग्रता का नष्ट होना। चित्त इधर उधर हो जाना। ध्यान धरना=परमात्मचिंतन आदि के लिये चित्त को एकाग्र करके बैठना।
ध्यानना —क्रि० स० [सं० ध्यान] ध्यान करना।
ध्यानयोग-संज्ञा पुं० [सं०] वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो।
ध्याना —क्रि० स० [सं० ध्यान] १. ध्यान करना। २. स्मरण करना। सुमरना।
ध्यानी-वि० [सं० ध्यानिन्] १. ध्यानयुक्त। समाधिस्थ। २ ध्यान करनेवाला।
ध्येय-वि० [सं०] १ ध्यान करने योग्य। २ जिसका ध्यान किया जाय।
ध्रुपद-संज्ञा पुं० [सं० ध्रुवपद] एक प्रकार का गीत जिसके द्वारा देवताओं की लीला या राजाओं के यज्ञादि का वर्णन गाया जाता है।
ध्रुव-वि० [सं०] १. सदा एक ही स्थान पर रहनेवाला। स्थिर। अचल। २ सदा एक ही अवस्था में रहनेवाला। नित्य। ३ निश्चित। दृढ़। ठीक। पक्का।
संज्ञा पुं० १. आकाश। २. शंकु। कील। ३ पर्वत। ४. खंभा। थून। ५. वट। बरगद। ६ आठ वसुओं में से एक। ७ ध्रुपद। ८ विष्णु। ९ ध्रुव तारा। १० पुराणों के अनुसार राजा उत्तानपाद के एक पुत्र जिनकी माता का नाम सुनीति था। विष्णु भगवान् ने इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर इन्हें वर दिया कि तुम सब लोकों, ग्रहों और नक्षत्रों के ऊपर उनके आधार-स्वरूप होकर अचल भाव से स्थित रहोगे। तब से ये आकाश में तारे के रूप में प्राय: एक ही स्थान पर स्थित हैं। ११ भूगोल विद्या में पृथ्वी के वे दोनों सिरे जिनसे होकर अक्षरेखा गई हुई मानी जाती है। १२ रगण का अठारहवाँ भेद जिसमें क्रमश एक लघु, एक गुरु और तीन लघु होते हैं।
ध्रुवता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थिरता। अचलता। २ दृढ़ता। पक्कापन। ३ निश्चय।
ध्रुव तारा-संज्ञा पुं० [सं० ध्रुव+तारक, हिं० तारा] वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है, कभी इधर-उधर नहीं होता। यह उत्तानपाद का पहला पुत्र ध्रुव माना जाता है।
ध्रुवदर्शक-संज्ञा पुं० [सं०] १. सप्तर्षि मंडल। २. कुतुबनुमा।
ध्रुवदर्शन-संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें वर वधू को ध्रुव तारा दिखाया जाता है।
ध्रुव लोक-संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक लोक जो सत्यलोक के अंतर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित है।
ध्वंस-संज्ञा पुं० [सं०] विनाश। नाश।
ध्वंसक-वि० [सं०] नाश करनेवाला।
ध्वंसन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ध्वंसनीय, ध्वंसित, ध्वस्त] १ नाश करने की क्रिया। २ नाश होने का भाव। क्षय। विनाश।
ध्वंसी-वि० [सं० ध्वंसिन्] [स्त्री० ध्वंसिनी] नाश करनेवाला। विनाशक।
ध्वज-संज्ञा पुं० [सं०] १ चिह्न। निशान। २ वह लंबा या ऊँचा डंडा जिसके सिरे पर कोई चिह्न बना रहता है, या पताका बँधी रहती है। निशान। झंडा।
ध्वजभंग-संज्ञा पुं० [सं०] नपुंसकता।
ध्वजा-संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वज] १ पताका। झंडा। निशान। २ छंद शास्त्रानुसार टगण का पहला भेद जिसमें पहले लघु फिर गुरु आता है।
ध्वजिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना का एक भेद जिसका परिमाण कुछ लोग वाहिनी का दूना मानते हैं।
ध्वजी-वि० [सं० ध्वजिन्] [स्त्री० ध्वजिनी] १ ध्वजवाला। जो ध्वजा पताका लिए हो। २ चिह्नवाला। चिह्नयुक्त।
ध्वनि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह विषय जिसका ग्रहण श्रवणेंद्रिय से हो। शब्द। नाद। आवाज़। २ शब्द का स्फोट। आवाज की गूँज। लय। ३ वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक विशेषतावाला हो। ४ आशय। गूढ़ अर्थ। मतलब।
ध्वनित-वि० [सं०] १ शब्दित। २.

नकघिसनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक + घिसना] १. ज़मीन पर नाक रगड़ने की क्रिया। २. बहुत अधिक दीनता। आजिज़ी।

नकचढ़ा-संज्ञा पु० [हिं० नाक + चढ़ना] [स्त्री० नकचढ़ी] चिड़चिड़ा। बद-मिज़ाज।

नकछिकनी-संज्ञा स्त्री० [सं० छिक्कनी] एक प्रकार की घास जिसके फूल सूँघने से छींके आने लगती हैं।

नकटा-संज्ञा पु० [हिं० नाक + कटना] [स्त्री० नकटी] १. वह जिसकी नाक कट गई हो। २. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ विवाह के समय गाती हैं।
वि० १ जिसकी नाक कटी हो। २. निर्लज्ज।

नकतोड़ा-संज्ञा पु० [हिं० नाक + तोड़ = गति] अभिमान पूर्वक नाक-भौं चढ़ाकर नखरा करना अथवा कोई बात कहना।

नकद-संज्ञा पु० [अ०] वह धन जो सिक्कों के रूप में हो। रुपया-पैसा।
वि० १. (रुपया) जो तैयार हो। (धन) जो तुरंत काम में लाया जा सके। २ खास। ३. दे० "नगद"।
क्रि० वि० तुरंत दिए हुए रुपए के बदले में। 'उधार' का उलटा।

नकदी-संज्ञा स्त्री० दे० "नकद"।

नकना†-क्रि० स० [हिं० नाकना] १. उल्लंघन करना। लाँघना। डाँकना। फाँदना। २ चलना। ३ त्यागना।
क्रि० अ० [हिं० नकियाना] नाक में दम होना। हैरान होना।
क्रि० स० नाक में दम करना।

नकफूल-संज्ञा पु० [हिं० नाक + फूल] नाक में पहनने का लौंग या कील।

नकब-संज्ञा स्त्री० [अ०] चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद। सेंध।

नकबानी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक + बानी ?] नाक में दम। हैरानी।

नकबेसर-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक + बेसर] नाक में पहनने की छोटी नथ। बेसर।

नकमोती-संज्ञा पु० [हिं० नाक + मोती] नाक में पहनने का मोती। लटकन।

नकल-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह जो किसी दूसरे के ढंग पर या उसकी तरह तैयार किया गया हो। अनुकृति। कापी। २. एक के अनुरूप दूसरी वस्तु बनाने का । अनुकरण। ३ लेख आदि की अक्षरशः प्रतिलिपि। कापी। ४. किसी के वेष, हाव-भाव या बात-चीत आदि का पूरा पूरा अनुकरण। स्वाँग। ५. अद्भुत और हास्यजनक आकृति। ६ हास्य रस की कोई छोटी मोटी कहानी। चुटकुला।

नकलनवीस-संज्ञा पु० [अ० नकल + फा० नवीस] वह आदमी, विशेषतः अदालत का मुहर्रिर, जिसका काम केवल दूसरों के लेखों की नकल करना होता है।

नकली-वि० [अ०] १. जो नकल करके बनाया गया हो। कृत्रिम। बनावटी। २ खोटा। जाली। झूठा।

नकश-संज्ञा पु० [अ० नक्श] १ दे० "नक्श"। २. ताश से खेला जानेवाला एक जूआ।

नकशा-संज्ञा पु० दे० "नक्शा"।

नकसीर-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक + सं० क्षीर = जल] आप से आप नाक से रक्त बहना।
मुहा०—नकसीर भी न फूटना = ज़रा भी तकलीफ़ या नुकसान न होना।

नकाना†-क्रि० अ० [हिं० नकियाना] नाक में दम होना। बहुत परेशान होना।
क्रि० स० [हिं० नकियाना] नाक में दम करना। बहुत परेशान करना।

नकाब-संज्ञा स्त्री० पु० [अ०] १. वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिये सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है। (मुसलमान)
यौ०—नकाबपोश = चेहरे पर नकाब डाले हुआ।
२. साड़ी या चादर का वह भाग जिससे स्त्रियों का मुँह ढँका रहता है। घूँघट।

नकार-संज्ञा पु० [सं०] १. न या नहीं का बोधक शब्द या वाक्य। नहीं। २ इनकार। अस्वीकृति। ३. "न" अक्षर।

नकारना-क्रि० अ० [हिं० नकार + ना (प्रत्य०)] इनकार करना। अस्वीकृत करना।

नकारा†-वि० [फा० नाकार] जो किसी काम का न हो। खराब। निकम्मा।

नकाशना†-क्रि० स० [अ० नकाशी] धातु, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र, फूल, पत्ती आदि बनाना।

नकाशी-संज्ञा स्त्री० दे० "नक्काशी"।

नकियाना†-क्रि० अ० [हिं० नाक + आना (प्रत्य०)] १. शब्दों का अनुनासिक-वत् उच्चारण करना। २. बहुत दुखी या हैरान होना।

क्रि० स० बहुत परेशान या तंग करना।
नकीब-संज्ञा पुं० [अ०] १. चारण। बंदी-जन। भाट। २. कड़खा गानेवाला पुरुष। कड़खैत।
नकुल-संज्ञा पुं० [सं०] १. नेवला नामक जंतु। २. पांडु राजा के चौथे पुत्र का नाम जो अश्विनीकुमार द्वारा माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ३. बेटा। पुत्र।
नकेल-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक + एल (प्रत्य०)] ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है। मुहरा।
मुहा०—किसी की नकेल हाथ में होना = किसी पर सब प्रकार का अधिकार होना।
नक्का-संज्ञा पुं० [हिं० नाक] सूई का वह छेद जिसमें डोरा पहनाया जाता है। नाका।
नक्कारखाना-संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ पर नक्कारा बजता है। नौबतखाना।
मुहा०—नक्कारखाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है = बड़े बड़े लोगों के सामने छोटे आदमियों की बात कोई नहीं सुनता।
नक्कारची- संज्ञा पुं० [फा०] नगाड़ा बजानेवाला।
नक्कारा-संज्ञा पुं० [फा०] नगाड़ा। डंका। नौबत। दुंदुभी।
नक्काल-संज्ञा पुं० [अ०] १. अनुकरण करनेवाला। नकल करनेवाला। २. भाँड़।
नक्काश-संज्ञा पुं० [अ०] वह जो नक्काशी करता हो।
नक्काशी-संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० नक्काशीदार] १. धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। २. वे बेल-बूटे जो इस प्रकार बनाए गए हों।
नक्कू-वि० [हिं० नाक] १. जिसकी नाक बड़ी हो। २. अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला। ३. सबसे अलग और उलटा काम करनेवाला।
नक्त-संज्ञा पुं० [सं०] १. बिलकुल संध्या का समय। २. रात। ३ एक प्रकार का व्रत। इसमें रात को तारे देखकर भोजन किया जाता है। ४. शिव।
नक्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. नाक नामक जल-जंतु। २. मगर। ३. घड़ियाल। कुंभीर। ४. नाक। नासिका।
नक्ल-संज्ञा स्त्री० दे० "नकल"।
नक्श-वि० [अ०] जो अंकित या चित्रित किया गया हो। बनाया या लिखा हुआ।
मुहा०—मन में नक्श करना या कराना = किसी के मन में कोई बात अच्छी तरह बैठाना।
संज्ञा पुं० [अ०] १. तसवीर। चित्र। २. खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटा। ३. मोहर। छाप।
मुहा०—नक्श बैठना = अधिकार जमना।
४. वह यंत्र जो रोगों आदि को दूर करने के लिये कागज़ आदि पर लिखकर बाँह या गले में पहनाया जाता है। तावीज़। ५. जादू। टोना। ६. दे० "नक्शा (२)"।
नक्शा-संज्ञा पुं० [अ०] १. रेखाओं द्वारा आकार आदि का निर्देश। चित्र। प्रतिमूर्ति। तसवीर। २. आकृति। शक्ल। ढाँचा। गढ़न। ३. किसी पदार्थ का स्वरूप। आकृति। ४. चाल-ढाल। तर्ज़। ढंग। ५. अवस्था। दशा। ६. ढाँचा। ठप्पा। ७. किसी धरातल पर बना हुआ वह चित्र जिसमें पृथिवी या खगोल का कोई भाग अपनी स्थिति के अनुसार अथवा और किसी विचार से चित्रित हो। ऐसे चित्रों में प्रायः देश, पर्वत, समुद्र, नदियाँ और नगर आदि दिखलाए जाते हैं।
नक्शानवीस-संज्ञा पुं० [अ० नक्शा + फा० नवीस] नक्शा लिखने या बनानेवाला।
नक्शी-वि० [अ० नक्श + ई (प्रत्य०)] जिस पर बेल-बूटे बने हों। नक्काशीदार।
नक्षत्र-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का वह समूह या गुच्छ जिसका पहचान के लिये आकार निर्दिष्ट करके कोई नाम रखा गया हो। ये सब २७ नक्षत्रों में विभक्त हैं।
नक्षत्रनाथ-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
नक्षत्रपथ-संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों के चलने का मार्ग।
नक्षत्रराज-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
नक्षत्रलोक-संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र हैं।
नक्षत्रवृष्टि-संज्ञा स्त्री० [सं०] तारा टूटना। उल्कापात होना।
नक्षत्री-संज्ञा पुं० [सं० नक्षत्रिन्] चंद्रमा।
वि० [सं० नक्षत्र + ई (प्रत्य०)] भाग्यवान्।
नख-संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ या पैर का नाखून। २. नाखून के आकार का एक प्रसिद्ध गंधद्रव्य जो घोंघे की जाति के एक

जानवर के मुँह का ऊपरी आवरण होता है। ३ खंड। टुकड़ा।
संज्ञा स्त्री० [फा० नख] गुड्डी उड़ाने के लिये पतला रेशमी या सूती तागा। डोर।
नखक्षत–संज्ञा पुं० [सं०] वह दाग या चिह्न जो नाखून के गड़ने के कारण बना हो।
नखच्छत †–संज्ञा पुं० दे० "नखक्षत"।
नखछोलिया †–संज्ञा पुं० दे० "नखक्षत"।
नखत, नखतर*†–संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।
नखना–क्रि० अ० [हिं० नाखना] उल्लंघन होना। डाँका जाना।
क्रि० स० उल्लंघन करना। पार करना।
क्रि० स० [सं० नष्ट] नष्ट करना।
नखरा–संज्ञा पुं० [फा०] १ वह चुलबुलापन या चेष्टा जो जवानी की उमंग में अथवा प्रिय को रिझाने के लिये हो। चोचला। नाज़। २ चचलता। चुलबुलापन।
नखरा तिल्ला–संज्ञा पुं० [फा० नखरा + हिं० तिल्ला (अनु०)] नखरा। चोचला।
नखरीला†–वि० [फा० नखरा] नखरा करनेवाला।
नखरेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] नखक्षत।
नखरेबाज़–वि० [फा०] [संज्ञा नखरेबाज़ी] जो बहुत नखरा करे। नखरा करनेवाला।
नखरोट–संज्ञा स्त्री० दे० "नखक्षत"।
नखबिंदु–संज्ञा पुं० [सं०] वह गोल या चंद्राकार चिह्न जो स्त्रियाँ नाखून के ऊपर मेंहदी या महावर से बनाती है।
नखशिख–संज्ञा पुं० [सं०] १. नख से लेकर शिख तक के सब अंग।
मुहा०—नखशिख से = सिर से पैर तक। २ शरीर के सब अंगों का वर्णन।
नखांक–संज्ञा पुं० [सं०] १ नख नामक गंध द्रव्य। २ नाखून गड़ने का चिह्न।
नखास–संज्ञा पुं० [अ० नख्खास] वह बाज़ार जिसमें पशु विशेषतः घोड़े बिकते हैं।
नखियाना*†–क्रि० स० [सं० नख + इयाना (प्रत्य०)] नाखून गड़ाना।
नखी–संज्ञा पुं० [सं० नखिन्] १ शेर। २ चीता। ३ वह जानवर जो नाखून से किसी पदार्थ को चीर या फाड़ सकता हो।
संज्ञा स्त्री० [सं०] नख नामक गंधद्रव्य।
नखोटना*†–क्रि० स० [सं० नख + ओटना ( )] नाखून से खरोंचना या नोचना।

नग–संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत। पहाड़। २ पेड़। वृक्ष। ३ सात की संख्या। ४ सर्प। साँप। ५ सूर्य।
संज्ञा पुं० [फा० नगीना, सं० नग] १ दे० "नगीना"। २ अदद। संख्या।
नगज–संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।
वि० जो पहाड़ से उत्पन्न हो।
नगजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
नगण–संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में तीन लघु अक्षरों का एक गण।
नगण्य–वि० [सं०] बहुत ही साधारण या गया-बीता। तुच्छ।
नगदंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] विभीषण की स्त्री।
नगद–संज्ञा पुं० दे० "नकद"।
नगधर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।
नगधरन –संज्ञा पुं० दे० "नगधर"।
नगनंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
नगन †–वि० [सं० नग्न] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा।
नगनिका–संज्ञा स्त्री० [?] क्रीड़ा वृत्त। जिसमें एक यगण और एक गुरु होता है।
नगनी–संज्ञा स्त्री० [सं० नग्ना] १ कन्या। पुत्री। बेटी। २ नंगी स्त्री।
नगपति–संज्ञा पुं० [सं०] १ हिमालय पर्वत। २ चंद्रमा। ३ शिव। ४ सुमेर।
नगर–संज्ञा पुं० [सं०] गाँव या कस्बे आदि से बड़ी मनुष्यों की वह बस्ती जिसमें अनेक जातियों के लोग रहते हों। शहर।
नगरकीर्तन–संज्ञा पुं० [सं०] वह गाना, बजाना या कीर्तन, जो नगर की गलियों और सड़कों में घूम घूमकर हो।
नगरनारि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।
नगरपाल–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका काम नगर की रक्षा करना हो।
नगरवासी–संज्ञा पुं० [सं०] शहर में रहनेवाला। नागरिक। पुरवासी।
नगरहार–संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भारत का एक नगर जो वर्त्तमान जलालाबाद के निकट बसा था।
नगराई*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० नगर + आई (प्रत्य०)] १. नागरिकता। शहरातीपन। २ चतुराई। चालाकी।
नगरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नगर। शहर।
संज्ञा पुं० [सं० नागरिन्] शहर में रहनेवाला।
नगस्वरूपिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक

प्रकार का वर्णवृत्त। प्रमाणी। प्रमाणिका।
नगाड़ा-संज्ञा पुं० दे० "नगारा"।
नगाधिप-संज्ञा पुं० [सं०] १. हिमालय पर्वत। २. सुमेरु पर्वत।
नगारा-संज्ञा पुं० [फा०] डुगडुगी या बाएँ की तरह का एक प्रकार का बहुत बड़ा बाजा। नगाड़ा। डंका। धौंसा।
नगारि-संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
नगी-संज्ञा स्त्री० [सं० नग = पर्वत + ई(प्रत्य०)] १. रत्न। मणि। नगीना। नग। २. पार्वती। ३. पहाड़ी स्त्री।
नगीच†-क्रि० वि० दे० "नज़दीक"।
नगीना-संज्ञा पुं० [फा०] रत्न। मणि।
नगीनासाज़-संज्ञा पुं० [फा०] वह जो नगीना बनाता या जड़ता हो।
नगेंद्र, नगेश-संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।
नगेसरि*†-संज्ञा पुं० दे० "नागकेशर"।
नग्न-वि० [सं०] १. जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा। २. जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण न हो।
नग्नता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नंगे होने का भाव।
नग्र*†-संज्ञा पुं० दे० "नगर"।
नघना-क्रि० स० [सं० लंघन] लाँघना।
नघाना-क्रि० स० [सं० लंघन] लँघाना।
नचना*†-क्रि० अ० [हिं० नाचना] नाचना। वि० १. नाचनेवाला। २. बराबर इधर-उधर घूमनेवाला।
नचनि*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाचना] नाच।
नचनिया†-संज्ञा पुं० [हिं० नाचना + इया (प्रत्य०)] नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला।
नचनी-वि० स्त्री० [हिं० नाचना] १ नाचनेवाली। २. इधर उधर घूमती रहनेवाली।
नचाना-क्रि० स० [हिं० नाचना का प्रे०] १. दूसरे को नाचने में प्रवृत्त करना। नृत्य कराना। २. किसी को बार बार उठने बैठने या और कोई काम करने के लिये तंग करना। हैरान करना।
मुहा०—नाच नचाना = घूमने-फिरने या और कोई काम करने के लिये विवश करके तंग करना।
३. इधर-उधर घुमाना या हिलाना।
मुहा०—आँखें (या नैन) नचाना = चंचलता-पूर्वक आँखों की पुतलियों को इधर उधर घुमाना।
४. व्यर्थ इधर उधर दौड़ाना।
नचिकेता-संज्ञा पुं० [सं० नचिकेतस्] १. वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था। २. अग्नि।
नचौहाँ*†-वि० [हिं० नाचना + औहाँ(प्रत्य०)] जो सदा नाचता या इधर-उधर घूमता रहे।
नछत्र-संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।
नछत्री*†-वि० [सं० नक्षत्र + ई (प्रत्य०)] भाग्यवान्। भाग्यशाली।
नज़दीक-वि० [फा०] [संज्ञा, वि० नज़दीकी] निकट। पास। करीब। समीप।
नज़म-संज्ञा स्त्री० [अ० नज़्म] कविता।
नज़र-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दृष्टि। निगाह।
मुहा०—नज़र आना = दिखाई देना। दिखाई पड़ना। नज़र पर चढ़ना = पसंद आ जाना। भला मालूम होना। नज़र पड़ना = दिखाई देना। नज़र बाँधना = जादू या मंत्र आदि के ज़ोर से किसी को कुछ का कुछ कर दिखाना।
२. कृपादृष्टि। मेहरबानी से देखना। ३. निगरानी। देख-रेख। ४. ध्यान। ख़याल। ५ परख। पहचान। शिनाख़्त। ६. दृष्टि का वह कल्पित प्रभाव जो किसी सुंदर मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदि पर पड़कर उसे ख़राब कर देनेवाला माना जाता है।
मुहा०—नज़र उतारना = बुरी दृष्टि के प्रभाव को किसी मंत्र या युक्ति से हटा देना। नज़र लगना = बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भेंट। उपहार। २. अधीनता सूचित करने की एक रसम जिसमें राजाओं आदि के सामने प्रजावर्ग के या अधीनस्थ लोग आदि नक़द रुपया आदि हथेली में रखकर सामने लाते हैं।
नज़रना*-क्रि० अ० [अ० नज़र + ना (प्रत्य०)] १. देखना। २. नज़र लगाना।
नज़रबंद-वि० [अ० नज़र + फा० बंद] जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय जहाँ से वह कहीं आ जा न सके। संज्ञा पुं० जादू या इंद्रजाल आदि का वह खेल जिसके विषय में लोगों का यह विश्वास रहता है कि वह लोगों की नज़र बाँधकर किया जाता है।
नज़रबंदी-संज्ञा स्त्री० [अ० नज़र + फा० बंदी] १. राज्य की ओर से वह [illegible] दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित स्थान पर रखा जाना [illegible] होने की दशा। २ [illegible]
नज़रबाग-सं[illegible] बड़े मकानों [illegible]

घोर का भाग।
नज़रहाया-वि० [अ० नज़र+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० नज़रहाई] नज़र लगानेवाला।
नज़रानना†०-क्रि० स० [हिं० नज़र+आनना (प्रत्य०)] १. उपहार स्वरूप देना। २. नज़र लगाना।
नज़राना-क्रि० अ० [हिं० नज़र] नज़र लग जाना। बुरी दृष्टि के प्रभाव में आना।
क्रि० स० नज़र लगाना।
संज्ञा पुं० [अ०] भेंट। उपहार।
नजरि०-संज्ञा स्त्री० दे० "नज़र"।
नज़ला-संज्ञा पुं० [अ०] १. एक प्रकार का रोग जिसमें गरमी के कारण सिर का विकार-युक्त पानी ढलकर भिन्न भिन्न अंगों की ओर प्रवृत्त होकर उन्हें ख़राब कर देता है। २. ज़ुकाम। सरदी।
नज़ाकत-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] नाज़ुक होने का भाव। सुकुमारता। कोमलता।
नजात-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुक्ति। मोक्ष। २. छुटकारा। रिहाई।
नज़ारा-संज्ञा पुं० [अ०] १. दृश्य। २. दृष्टि। नज़र। ३. प्रिय को लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना।
नजिकाना०†-क्रि० स० [हिं० नजीक (नज़दीक)+आना (प्रत्य०)] निकट पहुँचना। नज़दीक पहुँचना। पास पहुँचना।
नजीक†०-क्रि० वि० [फ़ा० नज़दीक] निकट।
नज़ीर-संज्ञा स्त्री० [अ०] उदाहरण। दृष्टांत।
नजूम-संज्ञा पुं० [अ०] ज्योतिष विद्या।
नजूमी-संज्ञा पुं० [अ०] ज्योतिषी।
नज़ूल-संज्ञा पुं० [अ०] शहर की वह ज़मीन जो सरकार के अधिकार में हो।
नट-संज्ञा पुं० [सं०] १. दृश्यकाव्य का अभिनय करनेवाला मनुष्य। वह जो नाट्य करता हो। २. प्राचीन काल की एक संकर जाति। ३. एक नीच जाति जो प्रायः गा-बजाकर और खेल-तमाशे करके निर्वाह करती है। ४. संपूर्ण जाति का एक राग।
नटई†-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गला। गरदन। २. गले की घंटी। घाँटी।
नटखट-वि० [हिं० नट+अनु० खट] १. ऊधमी। उपद्रवी। चंचल। शरीर। २. चालाक। धूर्त। मक्कार।
नटखटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० नटखट] बदमाशी। शरारत। पाजीपन।
नटता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नट का भाव।
नटना-क्रि० अ० [सं० नट] १. नाट्य करना। २. नाचना। नृत्य करना। ३. कहकर बदल जाना। मुकरना।
क्रि० स० [सं० नष्ट] नष्ट करना।
क्रि० अ० नष्ट होना।
नटनारायण-संज्ञा पुं० [सं०] संपूर्ण जाति का एक राग।
नटनि०†-संज्ञा स्त्री० [सं० नर्तन] नृत्य।
संज्ञा स्त्री० [हिं० नटना] इनकार।
नटनी-संज्ञा स्त्री० [सं० नट+नी (प्रत्य०)] १. नट की स्त्री। २. नट जाति की स्त्री।
नटवना०-क्रि० स० [सं० नट] नाट्य करना। अभिनय करना।
नटवर-संज्ञा पुं० [सं०] १. नाट्यकला में प्रवीण मनुष्य। २. श्रीकृष्ण।
वि० बहुत चतुर। चालाक।
नटसार*†-संज्ञा स्त्री० दे० "नाट्यशाला"।
नटसाल-संज्ञा स्त्री० [?] १. काँटे का वह भाग जो निकाल लिए जाने पर भी टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। २. बाण की गाँसी जो शरीर के भीतर रह जाय। ३. कसक। पीड़ा।
नटिन-संज्ञा स्त्री० [हिं० नट] नट की स्त्री।
नटी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नट जाति की स्त्री। २. नाचनेवाली स्त्री। नर्तकी। ३. अभिनय करनेवाली स्त्री। अभिनेत्री।
नटुआ, नटुवा†-संज्ञा पुं० १. दे० "नट"। २. "नटई"।
नटेश्वर-संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
नठना०†-क्रि० अ० [सं० नष्ट] नष्ट होना।
क्रि० स० नष्ट करना।
नढ़ना†-क्रि० स० [हिं० नाधना] १. गूँथना। पिरोना। २. बाँधना। कसना।
नतपाल-संज्ञा पुं० [सं० नत+पालक] शरणागत का पालन करनेवाला। भक्तवत्सल।
नतरु, नतरुक०†-क्रि० वि० [हिं० न+तो] नहीं तो। अन्यथा।
नतांश-संज्ञा पुं० [सं०] ग्रहों की स्थिति निश्चित करनेवाला वह वृत्त जिसका केंद्र भूकेंद्र पर होता है और जो विषुवत् रेखा पर लंब होता है।
नति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झुकाव। उतार। २. नमस्कार। प्रणाम। ३. विनय।

विनती। ४. नम्रता। ख़ाकसारी।

नातिनी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाती का स्त्री० रूप] लड़की की लड़की। नातिन।

नतीजा-संज्ञा पु० [फा०] परिणाम। फल।

नतु-क्रि० वि० [हिं० न+तो] नहीं तो।

नतैत†-संज्ञा पु० [हिं० नाता+ऐत (प्रत्य०)] संबंधी। रिश्तेदार। नातेदार।

नत्थ†-संज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।

नत्थी-संज्ञा स्त्री० [हिं० नथ या नाथना] १. कागज या कपड़े आदि के कई टुकड़ों को एक साथ मिलाकर सबको एक ही में बाँधना या फँसाना। २. इस प्रकार नाथे हुए कई कागज आदि। मिसल।

नथ-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाथना] बाली की तरह का नाक का एक गहना।

नथना-संज्ञा पु० [सं० नस्त] १. नाक का अगला भाग।

मुहा०—नथना फुलाना=क्रोध करना।

२. नाक का छेद।

क्रि० अ० [हिं० नाथना का अ० रूप] १. किसी के साथ नत्थी होना। एक सूत्र में बँधना। २ छिदना। छेदा जाना।

नथनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० नथ] १. नाक में पहनने की छोटी नथ। २. बुलाक।

नथिया, नथुनी†-संज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।

नद-संज्ञा पु० [सं०] बड़ी नदी अथवा ऐसी नदी जिसका नाम पुंलिंग वाची हो।

नदना †-क्रि० अ० [सं० नदन=शब्द करना] १. पशुओं का शब्द करना। रँभाना। बँबाना। २. बजना। शब्द करना।

नदराज-संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

नदान*†-वि० दे० "नादान"।

नदारद-वि० [फा०] जो मौजूद न हो। गायब। अप्रस्तुत। लुप्त।

नदिया †-संज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।

नदी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जल का वह प्राकृतिक और भारी प्रवाह जो किसी बड़े पर्वत या जलाशय आदि से निकलकर किसी निश्चित मार्ग से होता हुआ प्रायः बारहों महीने बहता रहता हो। दरिया।

मुहा०—नदी नाव संयोग=ऐसा संयोग जो कभी इत्तिफ़ाक़ से हो जाय।

२. किसी तरल पदार्थ का बड़ा प्रवाह।

नदीगर्भ-संज्ञा पु० [सं०] वह गड्ढा या तल जिसमें से होकर नदी का पानी बहता है।

नदीश-संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

नद्दना*†-क्रि० अ० दे० "नदना"।

नद्दी*†-संज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।

नद्ध-वि० [सं०] बँधा हुआ। बद्ध।

नधना-क्रि० अ० [सं० नद्ध+ना (प्रत्य०)] १. बैल, घोड़े आदि का उस वस्तु के साथ जुड़ना या बँधना जिसे उन्हें खींचकर ले जाना हो। जुतना। २. जुड़ना। संबद्ध होना। ३ काम का ठनना।

ननकारना*†-क्रि० अ० [हिं० न+करना] अस्वीकार करना। मंजूर न करना।

ननँद, ननद-संज्ञा स्त्री० [सं० ननांदृ] पति की बहिन।

ननदोई-संज्ञा पु० [हिं० ननद+ओई (प्रत्य०)] ननद का पति। पति का बहनोई।

ननसार-संज्ञा स्त्री० दे० "ननिहाल"।

ननिया ससुर-संज्ञा पु० [हिं० नानी+इया (प्रत्य०)+हिं० ससुर] [स्त्री० ननिया सास] स्त्री या पति का नाना।

ननिहाल-संज्ञा पु० [हिं० नाना+आलय] नाना का घर। ननसार।

नन्हा-वि० [सं० न्यच या न्यून] [स्त्री० नन्हीं] छोटा।

नन्हाई -संज्ञा स्त्री० [हिं० नन्हा+ई (प्रत्य०)] १.छोटापन। छोटाई। २. अप्रतिष्ठा। हेठी।

नन्हैया †-वि० दे० "नन्हा"।

नपाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाप+आई (प्रत्य०)] नापने का काम, भाव या मजदूरी।

नपाक †-वि० [फा० नापाक] अपवित्र।

नपुंसक-संज्ञा पु० [सं०] वह पुरुष जिसमें कामेच्छा बहुत ही कम हो और किसी विशेष उपाय से जाग्रत हो। २ हिजड़ा।

नपुंसकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नपुंसक होने का भाव। २. नामर्दी। हिजड़ापन।

नपुंसकत्व-संज्ञा पु० [सं०] नामर्दी।

नपुत्री †-वि० दे० "निपुत्री"।

नप्ता-संज्ञा स्त्री० [सं० नप्तृ] [स्त्री० नप्त्री] नाती या पोता।

नफ़र-संज्ञा पु० [फा०] १. दास। सेवक। २. व्यक्ति।

नफ़रत-संज्ञा स्त्री० [अ०] घिन। घृणा।

नफ़री-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक मजदूर की एक दिन की मजदूरी या काम। मजदूरी का दिन।

नफ़ा-संज्ञा पु० [अ०] लाभ। फ़ायदा

नफ़ासत-संज्ञा स्त्री० [अ०] नफ़ीस होने का भाव। उम्दापन।
नफ़ीरी-संज्ञा स्त्री [फ़ा०] तुरही।
नफ़ीस-वि० [अ०] १. उमदा। बढ़िया। २. साफ़। स्वच्छ। ३. सुंदर।
नबी-संज्ञा पुं० [अ०] ईश्वर का दूत। पैग़ंबर। रसूल।
नबेड़ना-क्रि० स० [सं० निवारण] १. निपटाना। तै करना। (झगड़ा आदि) समाप्त करना। २. चुनना। दे० "निबेरना"।
नबेड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० नबेड़ना] फ़ैसला। न्याय। निपटारा।
नब्ज़-संज्ञा स्त्री० [अ०] हाथ की वह रक्तवहा नाली जिसकी चाल से रोग की पहचान की जाती है। नाड़ी।
मुहा०—नब्ज़ चलना = नाड़ी में गति होना। नब्ज़ छूटना = नाड़ी की गति या प्राण न रह जाना।
नभ-संज्ञा पुं० [सं० नभस्] १. पंच तत्त्व में से एक। आकाश। आसमान। गगन। व्योम। २. शून्य स्थान। आकाश। ३. शून्य। सुन्ना। सिफ़र। ४. सावन या भादों का महीना। ५. आश्रय। आधार। ६. पास। निकट। नज़दीक। ७. शिव। ८. जल। ९. मेघ। बादल। १०. वर्षा।
नभगामी-संज्ञा पुं० [सं० नभोगामिन्] १. चंद्रमा। (डिं०) २. पक्षी। ३. देवता। ४. सूर्य। ५. तारा।
नभचर-संज्ञा पुं० दे० "नभश्चर"।
नभधुज०-संज्ञा पुं० [सं० नभध्वज] मेघ।
नभश्चर-संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। २. बादल। ३. हवा। ४. देवता, गंधर्व और ग्रह आदि।
वि० आकाश में चलनेवाला।
नभस्थल-संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।
नभस्थित-वि० [सं०] आकाश में स्थित।
नम-वि० [फ़ा०] [संज्ञा नमी] भीगा हुआ। गीला। तर। आर्द्र।
संज्ञा पुं० [सं० नमस्] १. नमस्कार। २. त्याग। ३. अन्न। ४. वज्र। ५. यज्ञ।
नमक-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जिसका व्यवहार भोज्य पदार्थों में एक प्रकार का स्वाद उत्पन्न करने के लिये थोड़े मान में होता है। लवण। नोन।
मु०—नमक अदा करना = अपने पालक या स्वामी के उपकार का बदला चुकाना। (किसी का) नमक खाना = (किसी के द्वारा) पालित होना। (किसी का) दिया खाना। नमक मिर्च मिलाना या लगाना = किसी बात को बहुत बढ़ा चढ़ाकर कहना। नमक फूटकर निकलना = नमकहरामी की सज़ा मिलना। कृतघ्नता का दंड मिलना। कटे पर नमक छिड़कना = किसी दुखी को और भी दुःख देना।
२ कुछ विशेष प्रकार का सौंदर्य जो अधिक मनोहर या प्रिय हो। लावण्य।
नमकख़्वार-वि० [फ़ा०] नमक खानेवाला। पालित होनेवाला।
नमकसार-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह स्थान जहाँ नमक निकलता या बनता हो।
नमकहराम-संज्ञा पुं० [फ़ा० नमक + अ० हराम] [संज्ञा नमकहरामी] वह जो किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उसी का द्रोह करे। कृतघ्न।
नमकहलाल-संज्ञा पुं० [फ़ा० नमक + अ० हलाल] [संज्ञा नमकहलाली] वह जो अपने स्वामी या अन्नदाता का कार्य धर्मपूर्वक करे। स्वामिनिष्ठ। स्वामिभक्त।
नमकीन-वि० [फ़ा०] १. जिसमें नमक का सा स्वाद हो। २. जिसमें नमक पड़ा हो। ३. सुंदर। ख़ूबसूरत।
संज्ञा पुं० वह पकवान आदि जिसमें नमक पड़ा हो।
नमदा-संज्ञा पुं० [फ़ा०] जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा।
नमन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० नमनीय, नमित] १. प्रणाम। नमस्कार। २ झुकाव।
नमना०-क्रि० अ० [सं० नमन] १. झुकना। २. प्रणाम करना। नमस्कार करना।
नमनीय-वि० [सं०] १. जिसे नमस्कार किया जाय। आदरणीय। पूजनीय। माननीय। २. जो झुक सके।
नमस्कार-संज्ञा पुं० [सं०] झुककर अभिवादन करना। प्रणाम।
नमस्ते-[सं०] एक वाक्य जिसका अर्थ है—आपको नमस्कार है।
नमाज़-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मि० सं० नमन] मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना जो नित्य पाँच बार होती है।
नमाज़ी-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. नमाज़ पढ़नेवाला। २. वह वस्त्र जिस पर खड़े होकर

नमाज पढ़ी जाती है।
नमाना‡†–क्रि० स० [सं० नमन] १. झुकाना। २ दबाकर अपने अधीन करना।
नमित–वि० [सं०] झुका हुआ।
नमिस–संज्ञा स्त्री० [फा० नमिश्क] विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन।
नमी–संज्ञा स्त्री० [फा०] गीलापन। आर्द्रता।
नमुचि–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि का का नाम। २. एक दानव जो पहले इंद्र का सखा था, पर पीछे इंद्र द्वारा मारा गया था। ३. एक दैत्य जो शुंभ और निशुंभ का छोटा भाई था।
नमूना–संज्ञा पुं० [फा०] १. अधिक पदार्थ में से निकाला हुआ वह थोड़ा अंश जिसका उपयोग उस मूल पदार्थ के गुण और स्वरूप आदि का ज्ञान कराने के लिये होता है। बानगी। २ ढाँचा। ठाठ। खाका।
नम्र–वि० [सं०] १. विनीत। जिसमें नम्रता हो। २ झुका हुआ।
नम्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नम्र होने का भाव। विनय।
नय–संज्ञा पुं० [सं०] १. नीति। २. नम्रता। संज्ञा स्त्री० [सं० नद] नदी।
नयकारी–संज्ञा पुं० [सं० नृत्यकारी] १. नाचनेवालों का मुखिया। २. नाचनेवाला। नचनिया।
नयन–संज्ञा पुं० [सं०] १. चक्षु। नेत्र। आँख। २. ले जाना।
नयनगोचर–वि० [सं०] जो आँखों के सामने हो। समक्ष।
नयनपट–संज्ञा पुं० [सं०] आँख की पलक।
नयना‡†–क्रि० अ० [सं० नमन] १. नम्र होना। २ झुकना। लटकना।
‡ संज्ञा पुं० [सं० नयन] आँख। नेत्र।
नयनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख की पुतली। वि० स्त्री० आँखवाली। जैसे—मृगनयनी।
नयनू–संज्ञा पुं० [सं० नवनीत] १. मक्खन। २. एक प्रकार की बूटीदार मलमल।
नयर†–संज्ञा पुं० [सं० नगर] नगर।
नयशील–वि० [सं०] १. नीतिज्ञ। २. विनीत।
नया–वि० [सं० नव। मि० फा० नौ] १. जो थोड़े समय से बना, चला या निकला हो। नवीन। हाल का।
मुहा०—नया करना=कोई नया फल या अनाज, मौसिम में पहले पहल खाना। नया पुराना करना=१. पुराना हिसाब साफ करके नया हिसाब चलाना। (महाजनी) २ पुराने को हटाकर उसके स्थान पर नया करना या रखना।
२. जो थोड़े समय से मालूम हुआ हो या सामने आया हो। ३. जो पहले था, उसके स्थान पर आनेवाला दूसरा। ४. जिससे पहले किसी ने काम न लिया हो। ५. जिसका आरंभ बहुत हाल में हुआ हो।
नयापन–संज्ञा पुं० [हिं० नया+पन (प्रत्य०)] नया होने का भाव। नवीनता। नूतनत्व।
नयाम–संज्ञा पुं० [फा०] तलवार की म्यान।
नर–संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ शिव। महादेव। ३. अर्जुन। ४ एक देवयोनि। ५. पुरुष। मर्द। आदमी। ६. वह खूँटी जो छाया आदि जानने के लिये खड़े बल गाड़ी जाती है। शंकु। लंब। ७. सेवक। ८. दोहे का एक भेद जिसमें १५ गुरु और १८ लघु होते हैं। ९ छप्पय का एक भेद जिसमें १० गुरु और १३ लघु होते हैं। १०. दे० "नर नारायण"।
वि० जो (प्राणी) पुरुष जाति का हो। मादा का उलटा।
संज्ञा पुं० [हिं० नल] पानी का नल।
नरकंत‡–संज्ञा पुं० [सं० नरकांत] राजा।
नरक–संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणों और धर्मशास्त्रों आदि के अनुसार वह स्थान जहाँ पापी मनुष्यों की आत्मा पाप का फल भोगने के लिये भेजी जाती है। दोजख। जहन्नुम। २. बहुत ही गंदा स्थान। ३. वह स्थान जहाँ बहुत अधिक पीड़ा हो।
नरकगामी–वि० [सं०] नरक में जानेवाला।
नरक चतुर्दशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी जिस दिन घर का कूड़ा-कतवार निकालकर फेंका जाता है।
नरकचूर–संज्ञा पुं० दे० "कचूर"।
नरकट–संज्ञा पुं० [सं० नल] बेंत की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा। इसके डंठल कलमें, निगालियाँ, दोरियाँ तथा चटाइयाँ आदि बनाने के काम में आते हैं।
नरकासुर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध और बहुत बली असुर, जो पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। विष्णु ने सुदर्शन से इसका सिर काटा था।
नरकी–वि० दे० "नारकी"

नरकेसरी–संज्ञा पु० [सं०] नृसिंह ।

नरकेहरि–संज्ञा पु० दे० "नरकेसरी" ।

नरगिस–संज्ञा स्त्री० [फा०] प्याज की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के आकार का सफेद रंग का फूल लगता है । फ़ारसी के कवि इस फूल से आँख की उपमा देते हैं ।

नरत्व–संज्ञा पु० [सं०] नर होने का भाव ।

नरद–संज्ञा स्त्री० [फा० नर्द] चौसर खेलने की गोटी ।

संज्ञा स्त्री० [सं० नर्द] ध्वनि । नाद ।

नरदन–संज्ञा स्त्री० [सं० नर्दन = नाद] नाद करना । गरजना ।

नरदारा–संज्ञा पु० [सं० नर + सं० दारा] १. हिजड़ा । नपुंसक । २. डरपोक । कायर ।

नरदेव–संज्ञा पु० [सं०] १. राजा । नृपति । २. ब्राह्मण ।

नरनाथ–संज्ञा पु० [सं०] राजा ।

नर-नारायण–संज्ञा पु० [सं०] नर और नारायण नाम के दो ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं ।

नरनारि–संज्ञा स्त्री० [सं०] नर (अर्जुन) की स्त्री, द्रौपदी । पांचाली ।

नरनाह*–संज्ञा पुं० [सं० नरनाथ] राजा ।

नरनाहर–संज्ञा पु० [सं० नर + हिं० नाहर] नृसिंह भगवान् ।

नरपति–संज्ञा पुं० [सं०] राजा ।

नरपाल–संज्ञा पु० [सं० नृपाल] राजा ।

नरपिशाच–संज्ञा पुं० [सं०] जो मनुष्य होकर भी पिशाचों का सा काम करे ।

नरबदा–संज्ञा स्त्री० दे० "नर्मदा" ।

नरभक्षी–संज्ञा पु० [सं० नरभक्षिन्] राक्षस ।

नरमा–संज्ञा स्त्री० [हिं० नरम] १. एक प्रकार की कपास । मनवा । देव-कपास । राम-कपास । २ सेमर की रूई । ३ कान के नीचे का भाग । लौल । ४. एक प्रकार का रंगीन कपड़ा ।

नरमाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "नरमी" ।

नरमाना–क्रि० स० [हिं० नरम + आना(प्रत्य०)] १. नरम करना । मुलायम करना । २. शांत करना । धीमा करना ।

क्रि० अ० १. नरम होना । मुलायम होना । २. शांत होना । ठंढा होना ।

नरमी–संज्ञा स्त्री० [फा० नर्म] नरम होने का भाव । मुलायमियत । कोमलता ।

*–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीन काल में मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी ।

नरलोक–संज्ञा पु० [सं०] संसार ।

नरवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "नरई" ।

नरसल–संज्ञा पु० दे० "नरकट" ।

नरसिंघ–संज्ञा पु० दे० "नृसिंह" ।

नरसिंघा–संज्ञा पु० [हिं० नर = बड़ा + सिंघा = सींग का बना बाजा] तुरही की तरह का एक प्रकार का नल के आकार का ताँबे का बड़ा बाजा जो फूँककर बजाया जाता है ।

नरसिंह–संज्ञा पु० दे० "नृसिंह" ।

नरहरि–संज्ञा पु० [सं०] नृसिंह भगवान् जो दस अवतारों में से चौथे अवतार हैं ।

नरहरी–संज्ञा पु० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ और अंत में एक नगण और एक गुरु होता है ।

नरांतक–संज्ञा पु० [सं०] रावण का एक पुत्र जिसे अंगद ने मारा था ।

नराच–संज्ञा पु० [सं० नाराच] १. तीर । बाण । शर । २. पंच-चामर या नागराज नामक वृत्त ।

नराचिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] वितान वृत्त का एक भेद ।

नराज–वि० दे० "नाराज़" ।

नराजना*–क्रि० स० [फा० नाराज] अप्रसन्न करना । नाराज करना ।

क्रि० अ० अप्रसन्न होना । नाराज़ होना ।

नराट*†–संज्ञा पु० [सं० नराट्] राजा ।

नराधिप–संज्ञा पु० [सं०] राजा ।

नरिंद*†–संज्ञा पु० [सं० नरेंद्र] राजा ।

नरिया†–संज्ञा पु० [हिं० नाली] एक प्रकार का अर्द्धवृत्ताकार और लंबा मिट्टी का खपड़ा ।

नरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सिझाया हुआ चमड़ा । मुलायम चमड़ा । २ ढरकी के भीतर की नली जिस पर तार लपेटा रहता है । नार । (जुलाहा) ३. एक घास ।

† संज्ञा स्त्री० [सं० नलिका] नली । नाली ।

संज्ञा स्त्री० [सं० नर] स्त्री । नारी ।

नरेंद्र–संज्ञा पु० [सं०] १. राजा । नृप । नरेश । २. वह जो साँप बिच्छू आदि के काटने का इलाज करे । विषवैद्य । ३. २८ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं ।

नरेश–संज्ञा पुं० [सं०] राजा । नृप ।

नरोत्तम–संज्ञा पु० [सं०] ईश्वर।
नर्क–संज्ञा पु० दे० "नरक"।
नर्तक–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० नर्तकी] १. नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला। नट। २. नरकट। ३. चारण। बंदीजन। ४ महादेव। ५. एक प्रकार की संकर जाति।
नर्तकी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाचनेवाली।
नर्तन–संज्ञा पु० [सं०] नृत्य। नाच।
नर्तना–क्रि०अ० [सं० नर्तन] नाचना।
नर्द–संज्ञा स्त्री० [फा०] चौसर की गोटी।
नर्दन–संज्ञा स्त्री० [सं०] भीषण ध्वनि।
नर्म–संज्ञा पु० [सं० नर्मन्] १. परिहास। हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी। २. हँसी-ठट्ठा करनेवाला सखा।
वि०दे० "नरम"।
नर्मद–संज्ञा पु० [सं०] मसखरा। भाँड़।
नर्मदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्य प्रदेश की एक नदी जो अमरकंटक से निकलकर भड़ौच के पास खंभात की खाड़ी में गिरती है।
नर्मदेश्वर–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार के अंडाकार शिवलिंग जो नर्मदा नदी से निकलते हैं।
नर्मद्युति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिमुख संधि के १३ अंगों में से एक। (नाट्य०)
नर्मसचिव–संज्ञा पु० [सं०] विदूषक।
नल–संज्ञा पु० [सं०] १. नरकट। २. पद्म। कमल। ३. निषध देश के चंद्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र। विदर्भ देश के राजा भीम की कन्या दमयंती के साथ इनका विवाह हुआ था। नल और दमयंती घोर कष्ट भोगने के लिए प्रसिद्ध हैं। ४. राम की सेना का एक बंदर जो विश्वकर्मा का पुत्र माना जाता है। इसी ने पत्थरों को पानी पर तैराकर लंका-विजय के समय समुद्र पर पुल बाँधा था।
संज्ञा पु० [सं० नाल] १. पोली लंबी चीज। २ धातु आदि का बना हुआ पोला गोल लंबा खंड। ३. वह मार्ग जिसमें से होकर गदगी और मैला आदि बहता हो। पनाला। ४ पेड़ू के अंदर की वह नाली जिसमें होकर पेशाब नीचे उतरता है। नला।
नलकूबर–संज्ञा पु० [सं०] कुबेर के एक पुत्र। कहते हैं कि ये और इनके भाई मणिग्रीव नारद के शाप से यमलार्जुन हुए थे। श्रीकृष्ण ने इन्हें स्पर्श करके शापमुक्त किया था।
नलसेतु–संज्ञा पु० [सं०] रामेश्वर के निकट का समुद्र पर बँधा हुआ वह पुल जो रामचंद्र ने नल-नील आदि से बनवाया था।
नला–संज्ञा पुं० [हिं० नल] १. पेड़ू के अंदर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है। नल। २ हाथ या पैर की नली के आकार की लंबी हड्डी।
नलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नल के आकार की कोई वस्तु। चोंगा। नली। २ मूँगे के आकार का एक प्रकार का गंध द्रव्य। ३. प्राचीन काल का एक अस्त्र। नाल। ४ तरकश जिसमें तीर रखते हैं।
नलिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमलिनी। कमल। २. वह देश जहाँ कमल अधिकता से होते हों। ३ पुराणानुसार गंगा की एक धारा का नाम। ४. नलिका नामक गंध द्रव्य। ५ नदी। ६ एक वर्णवृत्त। मनहरण। भ्रमरावली।
नलिनीरुह–संज्ञा पु० [सं०] १ मृणाल। कमल की नाल। २. ब्रह्मा।
नली–संज्ञा स्त्री० [हिं० नल का स्त्री० अल्पा०] १. छोटा या पतला नल। छोटा चोंगा। २. नल के आकार की भीतर से पोली हड्डी जिसमें मज्जा भी होती है। ३ घुटने से नीचे का भाग। पैर की पिंडली। ४. बंदूक की नली जिसमें होकर गोली गुजरती है।
नलुआ–संज्ञा पु० [हिं० नल = गला] छोटा नल या चोंगा।
नव–वि० [सं०] नया। नवीन। नूतन।
वि० [सं० नवन्] नौ। आठ और एक।
नवक–संज्ञा पु० [सं०] एक ही तरह की नौ चीजों का समूह।
नवकुमारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नौ-रात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ जिनमें नौ देवियों की कल्पना की जाती है।
नवग्रह–संज्ञा पु० [सं०] फलित ज्योतिष में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह।
नवछावरि‡–संज्ञा स्त्री० दे० "न्योछावर"।
नवतन†–वि० [सं० नवीन] नया।
नवदुर्गा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार नौ दुर्गाएँ जिनकी नवरात्र में नौ दिनों तक क्रमशः पूजा होती है। यथा—शैलपुत्री,

भारतीय मुसलमान अमीरों को अँगरेज़ी सरकार की ओर से मिलती है।

वि० बहुत शान शौकत और अमीरी ढंग से रहने तथा ख़ूब ख़र्च करनेवाला।

नवाबी-संज्ञा स्त्री० [हिं० नवाब + ई (प्रत्य०)] १. नवाब का पद। २ नवाब का काम। ३ नवाब होने की दशा। ४ नवाबों का राजत्व काल। ५. नवाबों की सी हुकूमत। ६ बहुत अधिक अमीरी।

नवासा-संज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० नवासी] बेटी का बेटा। दौहित्र।

नवाह-संज्ञा पु० [सं०] रामायण आदि का वह पाठ जो नौ दिन में समाप्त हो।

नवीन-वि० [सं०] १ हाल का। ताजा। नया। नूतन। २ विचित्र। अपूर्व। ३ [स्त्री० नवीना] नवयुवक। जवान।

नवीनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नवीन या नया होने का भाव। नूतनता।

नवीस-संज्ञा पु० [फा०] लिखनेवाला। लेखक। कातिब।

नवीसी-संज्ञा स्त्री० [फा०] लिखने की क्रिया या भाव। लिखाई।

नवेद-संज्ञा पु० [सं० निवेदन] १ निमंत्रण। न्योता। २ निमंत्रणपत्र।

नवेला-वि० [सं० नवल] [स्त्री० नवेली] १ नवीन। नया। २ तरुण। जवान।

नवोढ़ा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नवविवाहिता स्त्री। वधू। २ नवयौवना। युवती स्त्री। ३ साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत ज्ञातयौवना नायिका का एक भेद। वह नायिका जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाना चाहती हो।

नव्य-वि० [सं०] नया। नूतन। नवीन।

नशना -क्रि० अ० [सं० नाश] नष्ट होना।

नशा-संज्ञा पुं० [फा० या अ० ?] १ वह अवस्था जो शराब अफीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीने से होती है।

मुहा०—नशा किरकिरा हो जाना = किसी अप्रिय बात के होने के कारण नशे का मजा बीच में बिगड़ जाना। (आँखों में) नशा छाना = नशा चढ़ना। मस्ती चढ़ना। नशा जमना = अच्छी तरह नशा होना। नशा हिरन होना = किसी असमावित घटना आदि के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना।

२ वह चीज़ जिससे नशा हो। मादक द्रव्य।

यौ०—नशा पानी = मादक द्रव्य और उसकी सब सामग्री। नशे का सामान।

३ धन, विद्या, प्रभुत्व या रूप आदि का घमंड। अभिमान। मद। गर्व।

मुहा०—नशा उतारना = घमंड दूर करना।

नशाखोर-संज्ञा पुं० [फा०] वह जो नशे का सेवन करता हो। नशेबाज़।

नशाना*-क्रि० स० [सं० नाश] नष्ट करना।

नशावन*†-वि० [सं० नाश] नाश करना।

नशीन-वि० [फा०] बैठनेवाला।

नशीनी-संज्ञा स्त्री० [फा०] बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला-वि० [फा० नशा + ईला (प्रत्य०)] १ नशा उत्पन्न करनेवाला। मादक। २ जिस पर नशे का प्रभाव हो।

मुहा०—नशीली आँखें = वे आँखें जिनमें मस्ती छाई हो। मदमत्त आँखें।

नशेबाज-संज्ञा पु० [फा०] वह जो बराबर किसी प्रकार के नशे का सेवन करता हो।

नशोहर†-वि० [सं० नाश + ओहर] नाशक।

नश्तर-संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का बहुत तेज छोटा चाकू। इसका व्यवहार फोड़े आदि चीरने में होता है।

नश्वर-वि० [सं०] जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।

नश्वरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नश्वर का भाव।

नष*-संज्ञा पु० दे० "नख"।

नषत*-संज्ञा पु० दे० "नक्षत्र"।

नष्ट-वि० [सं०] १ जो अदृश्य हो। जो दिखाई न दे। २ जिसका नाश हो गया हो। जो बरबाद हो गया हो। ३ अधम। नीच। ४ निष्फल। व्यर्थ।

नष्टता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नष्ट होने का भाव। २. वाहियातपन। दुराचारिता।

नष्टबुद्धि-वि० [सं०] मूर्ख। मूढ़।

नष्ट भ्रष्ट-वि० [सं०] जो बिलकुल टूट फूट या नष्ट हो गया हो।

नष्टा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेश्या। रंडी। २ व्यभिचारिणी। कुलटा।

नसंक*†-वि० [सं० निःशंक] निर्भय।

नस-संज्ञा स्त्री० [सं० स्नायु] १ शरीर के भीतर तंतुओं का वह बंध या लच्छा जो पेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों या

ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा।

नवधा भक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] नौ प्रकार की भक्ति। यथा—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।

नवन –संज्ञा पुं० दे० "नमन"।

नवना †–क्रि० अ० [सं० नमन] १. झुकना। २ नम्र होना।

नवनि† –संज्ञा स्त्री० [हिं० नवना] १ झुकने की क्रिया या भाव। २ नम्रता। दीनता।

नवनीत–संज्ञा पुं० [सं०] मक्खन।

नवपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] चौपई या जन करी छंद का एक नाम।

नवम–वि० [सं०] जो गिनती में नौ के स्थान पर हो। नवाँ।

नवमल्लिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चमेली। २ नवारी।

नवमालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] नगण, जगण, भगण और यगण का एक वर्णवृत्त। नव मालिनी।

नवमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] चांद्र मास के किसी पक्ष की नवीं तिथि।

नवयुवक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नवयुवती] नौजवान। तरुण।

नवयुवा–संज्ञा पुं० दे० "नवयुवक"।

नवयौवना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके यौवन का आरंभ हो। नौजवान औरत।

नवरंग–वि० [सं० नव+हिं० रंग] १. सुंदर। रूपवान्। २ नए ढंग का। नवेला।

नवरंगी–वि० [हिं० नवरंग+ई (प्रत्य०)] १ नित्य नए आनंद करनेवाला। २ हँसमुख। खुशमिजाज।

नवरत्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न या जवाहिर। २ राजा विक्रमादित्य की एक कल्पित सभा के नौ पंडित—धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि। ३ गले में पहनने का नौ रत्नों का हार।

।–संज्ञा पुं० [सं०] चैत्र शुक्ला प्रति- से नवमी तक और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ नौ दिन जिनमें लोग नवदुर्गा का व्रत, घटस्थापन तथा पूजन आदि करते हैं।

नवल–वि० [सं०] १. नवीन। नया। २. सुंदर। ३ जवान। युवा। ४ उज्ज्वल।

नवल अनंगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक। (केशव)

नवलकिशोर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।

नवल वधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक। (केशव)

नवला–संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती।

नवशिक्षित–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने अभी हाल में कुछ पढ़ा या सीखा हो। नौसिखुआ। २ वह जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो।

नवसत –संज्ञा पुं० [सं० नव+सप्त=सत] नव और सात, सोलह शृंगार। वि० सोलह। षोडश।

नवसप्त–संज्ञा पुं० [सं०] नौ और सात, सोलह शृंगार।

नवसर–संज्ञा पुं० [हिं० नौ=सं० स्रक्] नौ लड़ का हार। वि० [सं० नव+वत्सर] नवयुवक।

नवससि –संज्ञा पुं० [सं० नवशशि] द्वितीया या दूज का चाँद। नया चाँद।

नवाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० नवना] विनीत होने का भाव। † वि० नया। नवीन।

नवागत–वि० [सं०] नया आया हुआ।

नवाज–वि० [फा०] कृपा करनेवाला।

नवाजना–क्रि० स० [फा० नवाज] कृपा करना। दया दिखलाना।

नवाडा–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की नाव।

नवाना–क्रि० स० [सं० नवन] १ झुकाना। २ विनीत करना।

नवान्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. फसल का नया अनाज। २. एक प्रकार का श्राद्ध।

नवाब–संज्ञा पुं० [अ० नव्वाब] १ मुगल सम्राटों के समय बादशाह का प्रतिनिधि जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिये नियुक्त होता था। २ एक उपाधि जो आज कल छोटे मोटे मुसलमानी राज्यों के मालिक अपने नाम के साथ लगाते हैं। ३. राजा की उपाधि के समान एक उपाधि जो

भारतीय मुसलमान अमीरों को अँगरेज़ी सरकार की ओर से मिलती है।

वि० बहुत शान-शौकत और अमीरी ढंग से रहन तथा ख़ूब ख़र्च करनेवाला।

नवाबी-संज्ञा स्त्री० [हिं० नवाब + ई (प्रत्य०)] १. नवाब का पद। २. नवाब का काम। ३. नवाब होने की दशा। ४. नवाबों का राजत्व काल। ५. नवाबों की सी हुकूमत। ६. बहुत अधिक अमीरी।

नवासा-संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० नवासी] बेटी का बेटा। दौहित्र।

नवाह्-संज्ञा पुं० [सं०] रामायण आदि का वह पाठ जो नौ दिन में समाप्त हो।

नवीन-वि० [सं०] १. हाल का। ताज़ा। नया। नूतन। २. विचित्र। अपूर्व। ३ [स्त्री० नवीना] नवयुवक। जवान।

नवीनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नवीन या नया होने का भाव। नूतनता।

नवीस-संज्ञा पुं० [फ़ा०] लिखनेवाला। लेखक। कातिब।

नवीसी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] लिखने की क्रिया या भाव। लिखाई।

नवेद-संज्ञा पुं० [सं० निवेदन] १ निमंत्रण। न्योता। २ निमंत्रणपत्र।

नवेला-वि० [सं० नवल] [स्त्री० नवेली] १ नवीन। नया। २. तरुण। जवान।

नवोढ़ा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नवविवाहिता स्त्री। वधू। २ नवयौवना। युवती स्त्री। ३ साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत ज्ञातयौवना नायिका का एक भेद। वह नायिका जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाना चाहती हो।

नव्य-वि० [सं०] नया। नूतन। नवीन।

नशना*-क्रि० अ० [सं० नाश] नष्ट होना।

नशा-संज्ञा पुं० [फ़ा० या अ० ?] १. वह अवस्था जो शराब, अफ़ीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीने से होती है।

मुहा०—नशा किरकिरा हो जाना = किसी अप्रिय बात के होने के कारण नशे का मज़ा बीच में बिगड़ जाना। (आँखों में) नशा छाना = नशा चढ़ना। मस्ती चढ़ना। नशा जमना = अच्छी तरह नशा होना। नशा हिरन होना = किसी असंभावित घटना आदि के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना।

२ वह चीज़ जिससे नशा हो। मादक द्रव्य।

यौ०—नशा-पानी = मादक द्रव्य और उसकी सब सामग्री। नशे का सामान।

३. धन, विद्या, प्रभुत्व या रूप आदि का घमंड। अभिमान। मद। गर्व।

मुहा०—नशा उतारना = घमंड दूर करना।

नशाख़ोर-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो नशे का सेवन करता हो। नशेबाज़।

नशाना*-क्रि० स० [सं० नाश] नष्ट करना।

नशावन*†-वि० [सं० नाश] नाश करना।

नशीन-वि० [फ़ा०] बैठनेवाला।

नशीनी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला-वि० [फ़ा० नशा + ईला (प्रत्य०)] १. नशा उत्पन्न करनेवाला। मादक। २. जिस पर नशे का प्रभाव हो।

मुहा०—नशीली आँखें = वे आँखें जिनमें मस्ती छाई हो। मदमत्त आँखें।

नशेबाज़-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो बराबर किसी प्रकार के नशे का सेवन करता हो।

नशोहर†-वि० [सं० नाश + ओहर] नाशक।

नश्तर-संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का बहुत तेज छोटा चाकू। इसका व्यवहार फोड़े आदि चीरने में होता है।

नश्वर-वि० [सं०] जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।

नश्वरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नश्वर का भाव।

नष-संज्ञा पुं० दे० "नख"।

नषत-संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

नष्ट-वि० [सं०] १. जो अदृश्य हो। जो दिखाई न दे। २ जिसका नाश हो गया हो। जो बरबाद हो गया हो। ३ अधम। नीच। ४ निष्फल। व्यर्थ।

नष्टता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नष्ट होने का भाव। २. वाहियातपन। दुराचारिता।

नष्टबुद्धि-वि० [सं०] मूर्ख। मूढ़।

नष्ट भ्रष्ट-वि० [सं०] जो बिलकुल टूट फूट या नष्ट हो गया हो।

नष्टा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेश्या। रंडी। २ व्यभिचारिणी। कुलटा।

नसंक*†-वि० [सं० निःशंक] निर्भय।

नस-संज्ञा स्त्री० [सं० स्नायु] १ शरीर के भीतर तंतुओं का वह बंध या लच्छा जो पेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों या

अस्थि आदि कड़े स्थानों से जोड़ने के लिये होता है (जैसे, घोड़ानस)। साधारण बोलचाल में कोई शरीर-तंतु या रक्तवाहिनी नली।

मुहा०—नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना = खिंचाव, दबाव या झटके आदि के कारण शरीर में किसी स्थान की नस का अपने स्थान से इधर-उधर हो जाना या बल खा जाना। नस नस में = सारे शरीर में। सर्वांग में। नस नस फड़क उठना = बहुत अधिक प्रसन्नता होना।

२. वे पतले रेशे या तंतु जो पत्तों में बीच बीच में होते हैं।

नस तरंग–संज्ञा पुं० [हिं० नस + तरंग] शहनाई के आकार का पीतल का एक बाजा जिसको गले की घंटी के पास की नसों पर रखकर गले से स्वर भरकर बजाते हैं।

नसतालीक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. फारसी या अरबी लिपि लिखने का वह ढंग जिसमें अक्षर खूब साफ और सुंदर होते हैं। 'घसीट' या 'शिकस्त' का उलटा। २. वह जिसका रंग ढंग बहुत अच्छा और सुंदर हो।

नसना*†–क्रि० अ० [सं० नशन] १. नष्ट होना। बरबाद होना। २. बिगड़ जाना। क्रि० अ० [हिं० नम्ना] भागना।

नसल–संज्ञा स्त्री० [अ०] वंश।

नसवार–संज्ञा स्त्री० [हिं० नास + वार (प्रत्य०)] सूँघने के लिये तमाकू के पीसे हुए पत्ते। सुँघनी। नास।

नसाना*†–क्रि० अ० [सं० नाश] १. नष्ट हो जाना। २. बिगड़ जाना।

नसावना†–क्रि० अ० दे० "नसाना"।

नसीनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० नि श्रेणी] सीढ़ी।

नसीब–संज्ञा पुं० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।

मुहा०—नसीब होना=प्राप्त होना। मिलना।

नसीबवर–वि० [अ०] भाग्यवान्।

नसीबा–संज्ञा पुं० दे० "नसीब"।

नसीहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. उपदेश। शिक्षा। सीख। २. अच्छी सम्मति।

नसेनी–संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] सीढ़ी।

नस्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. नास। सुँघनी। २. वह दवा या चूर्ण आदि जिसे नाक के रास्ते दिमाग में चढ़ाते हैं।

नस्वर*†–वि० दे० "नश्वर"।

नहँ†–संज्ञा पुं० दे० "नाखून"।

एक रस्म जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और उसे मेंहदी आदि लगाई जाती है।

नहन–संज्ञा पुं० [देश०] पुरवट खींचने की मोटी रस्सी। नार।

नहना–क्रि० स० [हिं० नाधना] नाधना। काम में लगाना। जोतना।

नहर–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वह कृत्रिम जलमार्ग जो खेतों की सिंचाई या यात्रा आदि के लिये तैयार किया जाता है।

नहरनी–संज्ञा स्त्री० [सं० नखहरणी] हज्जामों का एक औज़ार जिससे नाखून काटे जाते हैं।

नहरुआ–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का रोग जिसमें एक घाव में से डोरी की तरह का कीड़ा धीरे-धीरे निकलता है।

नहलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० नहलाना] नहलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नहलाना–क्रि० स० [हिं० नहाना का स०] दूसरे को स्नान कराना। नहवाना।

नहसुत–क्रि० स० [सं० नखक्षत] नख की रेखा। नाखून का निशान।

नहान–संज्ञा पुं० [सं० स्नान] १. नहाने की क्रिया। २. स्नान का पर्व।

नहाना–क्रि० अ० [सं० स्नान] १. शरीर को स्वच्छ करने या उसकी शिथिलता दूर करने के लिये उसे जल से धोना। स्नान करना।

मुहा०—दूधों नहाना पूतों फलना = धन और परिवार में पूर्ण होना। (आशीर्वाद)

२. किसी तरल पदार्थ से सारे शरीर का आप्लुत हो जाना। बिलकुल तर हो जाना।

नहार–वि० [फ़ा०, मि० सं० निराहार] जिसने सवेरे से कुछ खाया न हो। बासी मुँह।

नहारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नहार] जलपान।

नहिं*–अव्य० दे० "नहीं"।

नहीं–अव्य० [सं० नहि] एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या अस्वीकृति प्रकट करने के लिये होता है।

मुहा०—नहीं तो = उस दशा में जब कि यह बात न हो। नहीं सही = यदि ऐसा न हो तो कोई परवा या हानि [illegible]

[illegible]–संज्ञा पुं० [[illegible] [illegible] का एक

पुत्र और ययाति का पिता था। २. एक नाग का नाम। ३. विष्णु।
नहूसत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनहूस होने का भाव। उदासीनता। खिन्नता। मनहूसी। २. अशुभ लक्षण।
नाँउँ–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाँगा–वि० दे० "नंगा"।
संज्ञा पुं० [हिं० नंगा] एक प्रकार के साधु जो नंगे ही रहते हैं। नागा।
नाँघना†–क्रि० स० [सं० लघन] लाँघना। इस पार से उस पार उछलकर जाना।
नाँठना–क्रि० अ० [सं० नष्ट] नष्ट होना।
नाँद–संज्ञा स्त्री० [सं० नंदक] मिट्टी का वह बड़ा और चौड़ा बरतन जिसमें पशुओं को चारा-पानी आदि दिया जाता है। हौदी।
नाँदना–क्रि० अ० [सं० नाद] १. शब्द करना। शोर करना। २ छींकना।
क्रि० अ० [सं० नंदन] १. आनंदित होना। २. दीपक का बुझने के पहले भभकना।
नांदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अभ्युदय। समृद्धि। २ वह आशीर्वादात्मक श्लोक या पद्य जिसका सूत्रधार नाटक आरंभ करने से पहले पाठ करता है। मंगलाचरण।
नांदीमुख–संज्ञा पुं० [सं०] एक आभ्युदयिक श्राद्ध जो विवाह आदि मंगल अवसरों पर किया जाता है। वृद्धिश्राद्ध।
नांदीमुखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो नगण, दो तगण और दो गुरु का एक वर्णवृत्त।
नाँयँ†–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
अव्य० दे० "नहीं"।
नाँव–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाँह–संज्ञा पुं० [सं० नाथ] स्वामी।
ना–अव्य० [सं०] नहीं। न।
नाइक–संज्ञा पुं० दे० "नायक"।
नाइत्तिफ़ाक़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मेल का अभाव। फूट। मतभेद। विरोध।
नाइन–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाई] १. नाई जाति की स्त्री। २ नाई की स्त्री।
नाइब–संज्ञा पुं० दे० "नायब"।
नाई–संज्ञा स्त्री० [सं० न्याय] समान दशा।
वि० स्त्री० समान। तुल्य।
नाई–संज्ञा पुं० [सं० नापित] नाऊ। हज्जाम।
नाउँ†–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाउ†–संज्ञा स्त्री० दे० "नाव"।
नाउन–संज्ञा स्त्री० दे० "नाइन"।
नाउम्मेद–वि० [फा०] निराश।
नाउम्मेदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] निराशा।
नाऊ–संज्ञा पुं० दे० "नाई"।
नाकंद–वि० [फा० ना + कंद] बिना निकाला हुआ (घोड़ा आदि)। अल्हड़। अशिक्षित। बिना सिखाया हुआ।
नाक–संज्ञा स्त्री० [सं० नक्र] १ ओठों और आँखों के बीच की सूँघने और साँस लेने की इंद्रिय। नासा। नासिका।
यौ०—नाकघिसनी = विनती और गिड़गिड़ाहट।
मुहा०—नाक कटना = प्रतिष्ठा नष्ट होना। इज्जत जाना। नाक कान काटना = कड़ा दंड देना। (किसी की) नाक का बाल = सदा साथ रहनेवाला घनिष्ठ मित्र या मंत्री। नाक चढ़ना = क्रोध आना। त्यौरी चढ़ना। नाकों चने चबवाना = खूब तंग करना। हैरान करना। नाक-भौं चढ़ाना या नाक-भौं सिकोड़ना = १. अरुचि और अप्रसन्नता प्रकट करना। २. घिनाना और चिढ़ना। नापसंद करना। नाक में दम करना या नाक में दम लाना = खूब तंग करना। बहुत हैरान करना। बहुत सताना। नाक रगड़ना = बहुत गिड़गिड़ाना और विनती करना। मिन्नत करना। नाकों आना = हैरान हो जाना। बहुत तंग होना। नाक सिकोड़ना = अरुचि या घृणा प्रकट करना। घिनाना।
२. कपाल के केशों आदि का मल जो नाक से निकलता है। रेंट। नेटा।
यौ०—नाक सिनकना = जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।
३. प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु। ४. प्रतिष्ठा। इज्जत। मान।
मुहा०—नाक रख लेना = प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना।
संज्ञा पुं० [सं० नक्र] मगर की जाति का एक प्रसिद्ध जलजंतु।
संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. अंतरिक्ष। आकाश। ३. अस्त्र का एक आघात।
नाकडा–संज्ञा पुं० [हिं० नाक + ड़ा (प्रत्य०)] एक रोग जिसमें नाक पक जाती है।
नाक़दर–वि० [फा० ना + अ० क़द्र] [संज्ञा नाक़दरी] जिसकी कद्र या प्रतिष्ठा न हो
नाकना†–क्रि० स [सं० लंघन] १ लाँघना। उल्लंघन करना। २. मात कर देना।

नाकबुद्धि–वि० [हिं० नाक+बुद्धि] क्षुद्र बुद्धिवाला। ओछी समझ का।

नाका–संज्ञा पुं० [हिं० नाकना] १. रास्ते आदि का छोर। प्रवेश-द्वार। मुहाना। २. गली या रास्ते का आरंभ स्थान। ३. नगर, दुर्ग आदि का प्रवेश द्वार। फाटक।
मुहा०—नाका छेंकना या बाँधना=आने-जाने का मार्ग रोकना।
४. वह प्रधान स्थान जहाँ निगरानी रखने, या महसूल आदि वसूल करने के लिये सिपाही तैनात हों। ५. सूई का छेद।

नाकाबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाका+फा० बंदी] किसी रास्ते से कहीं आने या घुसने की रुकावट।

नाकिस–वि० [अ०] बुरा। खराब।

नाकुली–संज्ञा स्त्री० [सं० नकुल] एक प्रकार का कंद जो सर्प के विष को दूर करता है।

नाकेदार–संज्ञा पुं० [हिं० नाका+फा० दार (प्रत्य०)] १. नाके या फाटक पर रहने-वाले सिपाही। २. वह अफसर जो आने-जाने के प्रधान स्थानों पर किसी प्रकार का कर आदि वसूल करने के लिये तैनात हो।
वि० जिसमें नाका या छेद हो।

नाकेबंदी–संज्ञा स्त्री० दे० "नाकाबंदी"।

नाक्षत्र–वि० [सं०] नक्षत्र-संबंधी।

नाखना†–क्रि० स० [सं० नष्ट] १. नाश करना। बिगाड़ना। २. फेंकना। गिराना।
क्रि० स० [हिं० नखना] उल्लंघन करना।

नाखुना–संज्ञा पुं० [फा०] आँख का एक रोग जिसमें एक लाल झिल्ली सी आँख की सफेदी में पैदा होती है।

नाख़ुश–वि० [फा०] [संज्ञा नाखुशी] अप्रसन्न। नाराज़।

नाख़ून–संज्ञा पुं० [फा० नाखुन] १. उँगलियों के छोर पर चिपटे किनारे या नोक की तरह निकली हुई कड़ी धातु। नख। नहँ। २. चौपायों की टाप या खुर का बढ़ा हुआ किनारा।

नाग–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नागिन] १. सर्प। साँप।
मुहा०—नाग खेलाना=ऐसा कार्य करना जिसमें प्राण जाने का भय हो।
२. कद्रु से उत्पन्न कश्यप की संतान जिनका स्थान पाताल लिखा गया है। ३. एक देश का नाम जो हिमालय के उस पार था। ४. इस देश में बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा मानी जाती है। ५. एक पर्वत। (महाभारत) ६. हाथी। हस्ति। ७. राँगा। ८ सीसा। (धातु) ९. नागकेसर। १०. पुन्नाग। ११. पान। तांबूल। १२ नागवायु। १३. बादल। १४. आठ की संख्या। १५. दुष्ट या क्रूर मनुष्य।

नागकन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाग जाति की कन्या जो बहुत सुंदर मानी गई है।

नागकेसर–संज्ञा पुं० [सं० नागकेशर] एक सीधा सदाबहार पेड़। इसके सूखे फूल औषध मसाले और रंग बनाने के काम में आते हैं। नागचंपा।

नागझाग –संज्ञा पुं० [हिं० नाग+झाग] अफीम।

नागदमन–संज्ञा पुं० [सं०] नागदौन।

नागदौन–संज्ञा पुं० [सं० नागदमन] १. छोटे आकार का एक पहाड़ी पेड़। कहते हैं, इसकी लकड़ी के पास साँप नहीं आते। २. दे० "नागदौना"।

नागनग–संज्ञा पुं० [सं०] गजमुक्ता।

नागपंचमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सावन सुदी पंचमी।

नागपति–संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्पों का राजा वासुकि। २. हाथियों का राजा ऐरावत।

नागपाश–संज्ञा पुं० [सं०] एक अस्त्र जिससे शत्रुओं को बाँध लेते थे।

नागफनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाग+फन] १ थूहर की जाति का एक पौधा जिसके चौड़े मोटे पत्तों पर जहरीले काँटे होते हैं। २ कान में पहनने का एक गहना।

नागफाँस–संज्ञा पुं० दे० "नागपाश"।

नागबला–संज्ञा स्त्री० [सं०] गँगेरन।

नागबेल–संज्ञा स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान की बेल। पान।

नागर–वि० [सं०] [स्त्री० नागरी] १. नगर संबंधी। २. नगर में रहनेवाला।
संज्ञा पुं० १. नगर में रहनेवाला मनुष्य। २ चतुर आदमी। सभ्य, शिष्ट और निपुण व्यक्ति। ३. देवर। ४ गुजरात में रहने-वाले ब्राह्मणों की एक जाति।

नागरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नागरिकता। शहरातीपन। २ नगर का रीति-व्यवहार। सभ्यता। ३. चतुराई।

नागरबेल–संज्ञा स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान ।
नागरमुस्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नागरमोथा ।
नागरमोथा–संज्ञा पुं० [सं० नागरमुस्ता] एक प्रकार का तृण या घास जिसकी जड़ मसाले और औषध के काम में आती है ।
नागराज–संज्ञा पुं० [सं०] १. शेषनाग । २. ऐरावत । ३. 'पंचामर' या 'नाराच' नामक छंद ।
नागरिक–वि० [सं०] १. नगर-संबंधी । नगर का । २. नगर में रहनेवाला । शहराती । ३. चतुर । सभ्य ।
नागरिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नागरिक के अधिकारों से संपन्न होने की अवस्था ।
नागरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नगर की रहनेवाली स्त्री । २. चतुर स्त्री । प्रवीण स्त्री । ३ भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत और हिंदी लिखी जाती है । देवनागरी ।
नागलोक–संज्ञा पुं० [सं०] पाताल ।
नागवंश–संज्ञा पुं० [सं०] शक जाति की एक शाखा, जिसका राज्य भारत के कई स्थानों और सिंहल में भी था ।
नागवल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं०] पान ।
नागवार–वि० [फा०] १. असह्य । २. जो अच्छा न लगे । अप्रिय ।
नागा–संज्ञा पुं० [सं० नग्न] उस संप्रदाय का शैव साधु जिसमें लोग नंगे रहते हैं । संज्ञा पुं० [सं० नाग] १. आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसनेवाली एक जंगली जाति । २. आसाम में वह पहाड़ जिसके आस-पास नागा जाति की बस्ती है । संज्ञा पुं० [अ० नाग़ः] किसी निरंतर या नियत समय पर होनेवाली बात का किसी दिन या किसी नियत अवसर पर न होना । अंतर । बीच ।
नागार्जुन–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन बौद्ध महात्मा या बोधिसत्व जो माध्यमिक शाखा के प्रवर्तक थे ।
नागाशन–संज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड़ । २. मयूर । ३. सिंह ।
नागिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाग] १. नाग की स्त्री । साँप की मादा । २. रोयें की लंबी भौंरी जो पीठ पर होती है । (अशुभ)
नागेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा सर्प । २. शेष, वासुकि आदि नाग । ३. ऐरावत ।
नागेसर–संज्ञा पुं० दे० "नागकेसर" ।
नागौर–संज्ञा पुं० [हिं० नव + नगर] मारवाड़ के अंतर्गत एक नगर ।
नागौरी–वि० [हिं० नागौर] नागौर का अच्छी जाति का (बैल, बछड़ा आदि) । वि० स्त्री० नागौर की । अच्छी जाति की । (गाय)
नाच–संज्ञा पुं० [सं० नाट्य] १. अंगों की वह गति जो हृदयोल्लास के कारण मनमानी अथवा संगीत के मेल में ताल-स्वर के अनुसार और हाव भाव युक्त हो ।
मुहा०—नाच काछना = नाचने के लिये तैयार होना । नाच दिखाना = १ उछलना, कूदना । हाथ-पैर हिलाना । २. विलक्षण आचरण करना । नाच नचाना = १. जैसा चाहना, वैसा काम कराना । २. दिक करना ।
२. नाट्य । खेल । ३. कृत्य । कर्म ।
नाच-कूद–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाच + कूद] १. नाच-तमाशा । २. आयोजन । प्रयत्न । ३. गुण, योग्यता, बड़ाई आदि प्रकट करने का उद्योग । डींग । ४. क्रोध से उछलना ।
नाचघर–संज्ञा पुं० [हिं० नाच + घर] वह स्थान जहाँ नाच हो । नृत्यशाला ।
नाचना–क्रि० अ० [हिं० नाच] १. चित्त की उमंग से उछलना, कूदना तथा इसी प्रकार की और चेष्टा करना । २. संगीत के मेल में ताल स्वर के अनुसार हाव-भावपूर्वक कूदना, फिरना तथा इसी प्रकार की और चेष्टाएँ करना । थिरकना । नृत्य करना । ३. भ्रमण करना । चक्कर मारना । घूमना ।
मुहा०—सिर पर नाचना = १. घेरना । भ्रमना । २ पास आना । निकट आना । आँख के सामने नाचना = अंतःकरण में प्रत्यक्ष के समान प्रतीत होना ।
४. उद्योग में इधर से उधर फिरना । दौड़ना-धूपना । ५ थर्राना । काँपना । ६. क्रोध में आकर उछलना कूदना । बिगड़ना ।
नाच महल–संज्ञा पुं० दे० "नाचघर" ।
नाच-रंग–संज्ञा पुं० [हिं० नाच + रंग] आमोद प्रमोद । जलसा ।
नाचीज़–वि० [फा०] तुच्छ । पोच ।
नाज–संज्ञा पुं० [हिं० अनाज] १. अन्न । अनाज । २. खाद्य द्रव्य । भोज्य सामग्री ।
नाज़–संज्ञा पुं० [फा०] १. नखरा । चोचला
मुहा०—नाज़ उठाना = चोचला सहना ।

२ घमंड। गर्व।
नाज़नीं-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सुंदरी स्त्री।
नाजायज़-वि० [अ०] जो जायज न हो। जो नियमविरुद्ध हो। अनुचित।
नाज़िम-वि० [अ०] प्रबंधकर्त्ता।
संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी राज्यकाल में वह प्रधान कर्मचारी जिस पर किसी देश के प्रबंध का भार रहता था।
नाज़िर-संज्ञा पुं० [अ०] १ निरीक्षक। देखभाल करनेवाला। २ लेखकों का अफ़सर। ३. ख़्वाजा। महलसरा। ४ वेश्याओं का दलाल।
नाजुक-वि० [फ़ा०] १. कोमल। सुकुमार। २ पतला। महीन। बारीक। ३ सूक्ष्म। गूढ़। ४ ज़रा से झटके या धक्के से टूट फूट जानेवाला।
यौ०—नाजुक मिजाज = जो थोड़ा सा कष्ट भी न सह सके।
५ जिससे हानि या अनिष्ट की आशंका हो। जोखो का।
नाट-संज्ञा पुं० [सं०] १ नृत्य। नाच। २ नकल। स्वाँग। ३ एक देश जो कर्नाटक के पास था। ४. यहाँ का निवासी।
नाटक-संज्ञा पुं० [सं०] १ नाट्य या अभिनय करनेवाला। नट। २. रंगशाला में नटों की आकृति, हाव भाव, वेष और वचन आदि द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन। अभिनय। ३. वह ग्रंथ या काव्य जिसमें स्वाँग के द्वारा दिखाया जानेवाला चरित्र हो। दृश्य काव्य। अभिनय-ग्रंथ।
नाटकशाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर या स्थान जहाँ नाटक होता हो।
नाटकावतार-संज्ञा पुं० [सं०] किसी नाटक के अभिनय के बीच दूसरे नाटक का अभिनय।
नाटकिया, नाटकी-वि० [हिं० नाटक] नाटक का अभिनय करनेवाला।
नाटकीय-वि० [सं०] नाटक संबंधी।
नाटना-क्रि० अ० [सं० नाश = बहाना] प्रतिज्ञा आदि पर स्थिर न रहना। निकल जाना।
क्रि० स० अस्वीकार करना। इनकार करना।
नाटा-वि० [सं० नत = नीचा] [स्त्री० नाटी] जिसका डील ऊँचा न हो। छोटे कद का।
नाटिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का काव्य जिसमें चार अंक होते हैं।
नाट्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. नटों का काम। नृत्य गीत और वाद्य। २ स्वाँग के द्वारा चरित्र प्रदर्शन। अभिनय। ३ स्वाँग।
नाट्यकार-संज्ञा पुं० [सं०] नाटक करनेवाला। नट।
नाट्यमंदिर-संज्ञा पुं० [सं०] नाट्यशाला।
नाट्यरासक-संज्ञा पुं० [सं०] एक ही अंक का एक प्रकार का उपरूपक दृश्य काव्य।
नाट्यशाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ पर अभिनय किया जाय।
नाट्यशास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या। २ भरत मुनि कृत एक प्राचीन ग्रंथ।
नाट्यालंकार-संज्ञा पुं० [सं०] वह विशेष अलंकार जिसके आने से नाटक का सौंदर्य अधिक बढ़ जाता है।
नाट्योक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] वे विशेष विशेष संबोधन शब्द जो विशेष विशेष व्यक्तियों के लिये नाटकों में आते हैं—जैसे, ब्राह्मण के लिये आर्य्य।
नाठ -संज्ञा पुं० [सं० नष्ट] १. नाश। ध्वंस। २ अभाव। अनस्तित्व।
नाठना -क्रि० स० [सं० नष्ट] नष्ट करना। ध्वस्त करना।
क्रि० अ० नष्ट होना। ध्वस्त होना।
क्रि० अ० [हिं० नाटना] भागना। हटना।
नाठा-संज्ञा पुं० [सं० नष्ट] वह जिसके आगे-पीछे कोई वारिस न हो।
नाड-संज्ञा स्त्री० [सं० नाल] ग्रीवा। गर्दन।
नाडा-संज्ञा पुं० [सं० नाड़ी] १ सूत की वह मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा या धोती बाँधती है। इजारबंद। नीवी। २. लाल या पीला रँगा हुआ गंडेदार सूत जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।
नाडी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नली। २. साधारणतः शरीर के भीतर की वे नलियाँ जिनमें होकर रक्त बहता है। धमनी।
मुहा०—नाड़ी चलना = कलाई की नाड़ी में स्पंदन या गति होना। नाड़ी छूट जाना = १. नाड़ी का न चलना। २. प्राण न रह जाना। मृत्यु हो जाना। ३. मूर्च्छा आना। बेहोशी आना। नाड़ी देखना = कलाई की नाड़ी दबाकर रोगी की अवस्था का पता लगाना।
३ हठयोग के अनुसार ज्ञानवाहिनी, शक्तिवाहिनी और श्वास प्रश्वास-वाहिनी

नालियाँ। ४. ब्रह्मरंध्र। नासूर का छेद। ५ बंदूक की नली। ६. काल का एक मान जो छः क्षण का होता है।

नाड़ीचक्र-संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग के अनुसार नाभिदेश में कल्पित एक अंडाकार गाँठ जिससे निकलकर सब नाड़ियाँ फैली हैं।

नाड़ीमंडल-संज्ञा पुं० [सं०] विषुवद्रेखा।

नाड़ीवलय-संज्ञा पुं० [सं०] काल या समय निश्चित करने का एक यंत्र।

नात†-संज्ञा पुं० [सं० ज्ञाति] १. नातेदार। संबंधी। २. नाता। संबंध।

नातरु-अव्य० [हिं० न+तो+अरु] और नहीं तो। अन्यथा।

नाता-संज्ञा पुं० [सं० ज्ञाति] १. दो या कई मनुष्यों के बीच वह लगाव जो एक ही कुल में उत्पन्न होने या विवाह आदि के कारण होता है। ज्ञाति-संबंध। रिश्ता। २. संबंध। लगाव।

नाताकत-वि० [फा० ना+अ० ताकत] जिसे ताकत या बल न हो। निर्बल।

नाती-संज्ञा पुं० [सं० नप्तृ] [स्त्री० नतिनी, नातिन] लड़की या लड़के का लड़का। बेटी या बेटे का बेटा।

नाते-क्रि० वि० [हिं० नाता] १. संबंध से। २. हेतु। वास्ते। लिये।

नातेदार-वि० [हिं० नाता+फा० दार] [संज्ञा नातेदारी] संबंधी। रिश्तेदार। सगा।

नाथ-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रभु। स्वामी। अधिपति। मालिक। २. पति। ३. वह रस्सी जिसे बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उन्हें वश करने के लिये डाल देते हैं।
संज्ञा स्त्री० [हिं० नाथना] १. नाथने की क्रिया या भाव। २. जानवरों की नकेल।

नाथना-क्रि० स० [हिं० नाथ] १. बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उसमें इसलिये रस्सी डालना जिसमें वे वश में रहें। नकेल डालना। २. किसी वस्तु को छेदकर उसमें रस्सी या तागा डालना। ३. नत्थी करना। ४. लड़ी के रूप में जोड़ना।

नाथद्वारा-संज्ञा पुं० [सं० नाथद्वार] उदयपुर राज्य के अंतर्गत वल्लभ संप्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथजी की मूर्त्ति स्थापित है।

नाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. शब्द। आवाज़। २. वर्णों का अव्यक्त रूप। ३. वर्णों के उच्चारण में एक प्रयत्न जिसमें कंठ को न तो बहुत अधिक फैलाकर और न संकुचित करके वायु निकालनी पड़ती है। ४ सानुनासिक स्वर। अर्द्धचंद्र। ५ संगीत।
यौ०—नादविद्या = संगीत शास्त्र।

नादना—क्रि० स० [सं० नदन] बजाना।
क्रि० अ० १. बजना। शब्द करना। २. चिल्लाना। गरजना।
क्रि० अ० [सं० नदन] लहकना। लहलहाना। प्रफुल्लित होना।

नादली-संज्ञा स्त्री० [अ० नाद+अली] संग यशब नामक पत्थर की चौकोर टिकिया जिसे हृदय की रोग-बाधा दूर करने के लिये यंत्र की तरह पहनते हैं। हौलदिली।

नादान-वि० [फा०] [संज्ञा नादानी] नासमझ। अनजान। मूर्ख।

नादार-वि० [फा०] [संज्ञा नादारी] निर्धन।

नादिम-वि० [अ०] लज्जित।

नादिया-संज्ञा पुं० [सं० नंदी] १. नंदी। २ वह बैल जिसे लेकर जोगी भीख माँगते हैं।

नादिर-वि० [फा०] अद्भुत। अनोखा।

नादिरशाही-संज्ञा स्त्री० [फा०] भारी अंधेर या अत्याचार।
वि० बहुत कठोर और उग्र।

नादिहंद-वि० [फा०] न देनेवाला। जिससे रकम वसूल न हो।

नादी-वि० [सं० नादिन्] [स्त्री० नादिनी] १. शब्द करनेवाला। २ बजनेवाला।

नाधना-क्रि० स० [सं० नद्ध] १ रस्सी या तस्मे के द्वारा बैल, घोड़े आदि को उस वस्तु के साथ बाँधना जिसे उन्हें खींचकर ले जाना होता है। जोतना। २. जोड़ना। संबद्ध करना। ३. गूँथना। गुहना। ४. आरंभ करना। ठानना।।

नान-संज्ञा स्त्री० [फा०] रोटी। चपाती।

नानक-संज्ञा पुं० पंजाब के एक प्रसिद्ध महात्मा जो सिख संप्रदाय के आदिगुरु थे।

नानकपंथी-संज्ञा पुं० [हिं० नानक+पंथ] गुरु नानक का अनुयायी। सिख।

नानकशाही-वि० [हिं० नानकशाह] १. गुरु नानक से संबंध रखनेवाला। २. नानकशाह का शिष्य या अनुयायी। सिख।

नानकीन-संज्ञा पुं० [चीनी नानकिङ्] एक

प्रकार का सूती कपड़ा।

नानखताई-संज्ञा स्त्री० [फा०] टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई।

नानबाई-संज्ञा पु० [फा० नानबा, नानबाक़] रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला।

नाना-वि० [सं०] १. अनेक प्रकार के। बहुत तरह के। २. अनेक। बहुत।
संज्ञा पु० [देश०] [स्त्री० नानी] माता का पिता। माँ का बाप। मातामह।
† क्रि० स० [सं० नमन] १. झुकाना। नम्र करना। २. नीचा करना। ३. डालना। फेंकना। ४. घुसाना। प्रविष्ट करना।
संज्ञा पु० [अ०] पुदीना।
यौ०—अर्क़ नाना = सिरके के साथ भबके में उतारा हुआ पुदीने का अर्क़।

ननिहाल-संज्ञा पु० [हिं० नानी + आल (आलय)] नाना-नानी का स्थान या घर।

नानी-संज्ञा स्त्री० [देश०] माँ की माँ। माता की माता। मातामही।
मुहा०—नानी याद आना या मर जाना = आपत्ति सी आ जाना। दुःख सा पड़ जाना।

ना नुकर-संज्ञा पु० [हिं० न + करना] नाहीं। इनकार।

नान्हा-वि० [सं० न्यून] १. छोटा। लघु। २. नीच। क्षुद्र। ३. पतला। महीन।
मुहा०—नान्ह कातना = १. बहुत बारीक काम करना। २. कठिन या दुष्कर कार्य करना।

नान्हक-संज्ञा पुं० दे० "नानक"।

नान्हरिया‡-वि० [हिं० नान्ह] छोटा।

नान्हा†-वि० दे० "नन्हा"।

नाप-संज्ञा स्त्री० [सं० मापन] १. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई जिसकी छोटाई-बड़ाई का निश्चय किसी निर्दिष्ट लंबाई के साथ मिलाने से किया जाय। परिमाण। माप। २. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई आदि कितनी है, इसको ठीक ठीक स्थिर करने के लिये की जानेवाली क्रिया। नापने का काम। ३. वह निर्दिष्ट लंबाई जिसे एक मानकर किसी वस्तु का विस्तार कितना है, यह स्थिर किया जाता है। मान। ४. नापने की वस्तु।

नाप-जोख, नाप तौल-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाप + जोख या तौल] १. नापने-जोखने या तौलने की क्रिया। २. परिमाण या मात्रा जो नाप या तौलकर स्थिर की जाय।

नापना-क्रि० स० [सं० मापन] १. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई कितनी है, यह निश्चित करना। मापना।
मुहा०—सिर नापना = सिर काटना।
२. कोई वस्तु कितनी है, इसका पता लगाना।

नापसंद-वि० [फा०] १. जो पसंद न हो। जो अच्छा न लगे। २. अप्रिय।

नापाक-वि० [फा०] [संज्ञा नापाकी] १. अशुद्ध। अपवित्र। २. मैला कुचैला।

नापित-संज्ञा पु० [सं०] वह जो सिर के बाल मूँड़ने या काटने आदि का काम करता हो। नाई। नाऊ। हज्जाम।

नाफ़ा-संज्ञा पु० [फा०] कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी-मृगों की नाभि में होती है।

नाबदान-संज्ञा पु० [फा० नाव = नाली] वह नाली जिससे मैला पानी आदि बहता है। पनाला। नरदा।

नाबालिग़-वि० [अ० + फा०] [संज्ञा नाबालिग़ी] जो पूरा जवान न हुआ हो। अप्राप्तवयस्क।

नाबूद-वि० [फा०] नष्ट। ध्वस्त।

नाभ-संज्ञा स्त्री० [सं० नाभि] १. नाभि। ढोंढी। धुन्नी। २. शिव का एक नाम। ३. एक सूर्यवंशी राजा जो भगीरथ के पुत्र थे। (भागवत) ४. अस्त्रों का एक संहार।

नाभा-संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध भक्त जिनका नाम नारायणदास था। कहते हैं कि ये जाति के डोम थे और दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे। ये जन्मांध कहे जाते हैं। अपने गुरु अग्रदास की आज्ञा से इन्होंने 'भक्तमाल' बनाया था।

नाभाग-संज्ञा पु० [सं०] १. वाल्मीकि के अनुसार इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो ययाति के पुत्र थे। इनके पुत्र अज और अज के दशरथ हुए। २. मार्कंडेय पुराण के अनुसार कारूष वंश के एक राजा।

नाभि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चक्रमध्य। पहिए का मध्य भाग। नाह। २. जरायुज जंतुओं के पेट के बीचोबीच वह चिह्न या गड्ढा जहाँ गर्भावस्था में जरायुनाल जुड़ा रहता है। ढोंढी। धुन्नी। तुन्नी। तुंदी। ३. कस्तूरी।

संज्ञा पु० १. प्रधान राजा। २. प्रधान व्यक्ति या वस्तु। ३. गोत्र। ४. क्षत्रिय।

नामंज़ूर–वि० [फा० + अ०] [संज्ञा नामंज़ूरी] जो मंज़ूर न हो। जो माना न गया हो।

नाम–संज्ञा पु० [सं० नामन्] [वि० नामी] १. वह शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या समूह का बोध हो। संज्ञा। आख्या। **मुहा०**—**नाम उछालना**=बदनामी कराना। चारों ओर निंदा कराना। **नाम उठ जाना**= चिह्न मिट जाना या चर्चा बंद हो जाना। (**किसी बात का**) **नाम करना**=कोई बात पूरी तरह से न करना, कहने भर के लिये थोड़ा सा करना। **नाम का**=१. नामधारी। २. कहने सुनने भर को, काम के लिये नहीं। **नाम के लिये या नाम को**=१. कहने सुनने भर के लिये। थोड़ा सा। २. काम के लिये नहीं। **नाम चढ़ना**= किसी नामावली में नाम लिखा जाना। **नाम चलना**=लोगों में नाम का स्मरण बना रहना। यादगार बनी रहना। **नाम जपना**=१. बार-बार नाम लेना। २. ईश्वर या देवता का नाम स्मरण करना। (**किसी का**) **नाम धरना**= १ बदनाम करना। दोष लगाना। २. दोष निकालना। ऐब बताना। **नाम धराना**=१. नामकरण कराना। २. बदनामी कराना। निंदा कराना। **नाम न लेना**=दूर रहना। बचना। **नाम निकल जाना**=किसी बात के लिये मशहूर या बदनाम हो जाना। **किसी के नाम पर**= किसी को अर्पित करके। किसी के निमित्त। **किसी के नाम पड़ना**=किसी के नाम के आगे लिखा जाना। जिम्मेदार रखा जाना। (**किसी के**) **नाम पर मरना या मिटना**=किसी के प्रेम में लीन होना। किसी के प्रेम में खपना। (**किसी के**) **नाम पर बैठना**=किसी के भरोसे सन्तोष करके स्थिर रहना। (**किसी का**) **नाम बद करना**=बदनामी करना। कलंक लगाना। **नाम बाकी रहना**=१. मरने या कहीं चले जाने पर भी कीर्ति का बना रहना। २. केवल नाम ही नाम रह जाना, और कुछ न रहना। **नाम बिकना**=नाम मशहूर होने से कदर होना। **नाम मिटना**=१. नाम न रहना। स्मारक या कीर्ति का लोप होना। २. नाम तक शेष न रहना। एक दम अभाव हो जाना। **नाम-मात्र**=नाम लेने भर को। बहुत थोड़ा। अत्यंत अल्प। (**कोई**) **नाम रखना**=नाम निश्चित करना। नामकरण करना। **नाम लगाना**=किसी दोष या अपराध के संबंध में नाम लेना। दोष मढ़ना। अपराध लगाना। (**किसी के**) **नाम लिखना**=किसी के नाम के आगे लिखना। किसी के जिम्मे लिखना या टाँकना। (**किसी का**) **नाम लेकर**=१. किसी प्रसिद्ध या बड़े आदमी के नाम से लोगों का ध्यान आकर्षित करके। नाम के प्रभाव से। २. (किसी देवता या पूज्य पुरुष का) स्मरण करके। **नाम लेना**=१. नाम का उच्चारण करना। नाम कहना। २. नाम जपना। नाम स्मरण करना। ३. गुण गाना। प्रशंसा करना। ४. चर्चा करना। जिक्र करना। **नाम व निशान**=पता। खोज। (**किसी**) **नाम से**=शब्द द्वारा निर्दिष्ट होकर या करके। (**किसी**) **के नाम से**=१. चर्चा से। जिक्र से। २. (किसी का) संबंध बताकर। यह प्रकट करके कि कोई बात किसी की ओर से है। ३. (किसी को) हकदार या मालिक बनाकर। (किसी के) उपयोग या भोग के लिये। **नाम से काँपना**=नाम सुनते ही डर जाना। बहुत भय मानना। **नाम होना**=१. दोष मढ़ा जाना। कलंक लगना। २. नाम प्रसिद्धि होना।

२. प्रसिद्ध। ख्याति। यश। कीर्ति। **मुहा०**—**नाम कमाना या करना**=प्रसिद्धि प्राप्त करना। मशहूर होना। **नाम को मरना**= सुयश के लिये प्रयत्न करना। **नाम जगाना**= उज्वल कीर्ति फैलाना। **नाम डुबाना**=यश और कीर्ति का नाश करना। **नाम डूबना**= यश और कीर्ति का नाश होना। **नाम पर धब्बा लगाना**=यश पर लांछन लगाना। बदनामी करना। **नाम पाना**=प्रसिद्धि प्राप्त करना। मशहूर होना। **नाम रह जाना**=कीर्ति की चर्चा रहना। यश बना रहना।

नामक–वि० [सं०] नाम से प्रसिद्ध। नाम धारण करनेवाला।

नामकरण–संज्ञा पु० [सं०] १. नाम रखने का काम। २. हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से पाँचवाँ जिसमें बच्चे का नाम रखा जाता है।

नामकर्म–संज्ञा पु० [सं०] नामकरण।

नामकीर्त्तन–संज्ञा पु० [सं०] ईश्वर के नाम का जप। भगवान् का भजन।

नामज़द–वि० [फा०] १. जिसका नाम किसी बात के लिये निश्चित कर दिया गया हो। २. प्रसिद्ध

नामदेव–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त जिनकी कथा भक्तमाल में है। ये नामदेवजी के नाती (दौहित्र) थे। २. महाराष्ट्र देश के एक प्रसिद्ध कवि।
नामधराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाम+धराना] बदनामी। निंदा। अपकीर्ति।
नाम धाम–संज्ञा पुं० [हिं० नाम+धाम] नाम और पता। पता ठिकाना।
नामधारी–वि० [सं०] नामक।
नामधेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाम। निदर्शक शब्द। २. नामकरण।
वि० नामवाला। नाम का।
नामनिशान–संज्ञा पुं० [फा०] चिह्न। पता।
नामबोला–संज्ञा पुं० [हिं० नाम+बोलना] भक्तिपूर्वक नाम स्मरण करनेवाला।
नामर्द–वि० [फा०] [संज्ञा नामर्दी] १. नपुंसक। क्लीव। २. डरपोक। कायर।
नामलेवा–संज्ञा पुं० [हिं० नाम+लेना] १. नाम लेनेवाला। नाम स्मरण करनेवाला। २. उत्तराधिकारी। संतति। वारिस।
नामवर–वि० [फा०] [संज्ञा नामवरी] जिसका बड़ा नाम हो। नामी। प्रसिद्ध।
नामशेष–वि० [सं०] १. जिसका केवल नाम बाकी रह गया हो। नष्ट। ध्वस्त। २. मृत। गत। मरा हुआ।
नामांकित–वि० [सं०] जिस पर नाम लिखा या खुदा हो।
नामाकूल–वि० [फा० + अ० माकूल] १. अयोग्य। नालायक। २. अयुक्त। अनुचित।
नामावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नामों की पंक्ति। नामों की सूची। २. वह कपड़ा जिस पर चारों ओर भगवान् या किसी देवता का नाम छपा होता है। रामनामी।
नामी–वि० [हिं० नाम+ई (प्रत्य०) अथवा सं० नामिन्] १. नामधारी। नामवाला। २. प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।
नामुनासिब–वि० [फा०] अनुचित।
नामुमकिन–वि० [फा० + अ०] असंभव।
नामूसी–संज्ञा स्त्री० [अ० नामूस=इज्जत] बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। बदनामी।
नाम्ना–वि० [सं०] [स्त्री० नाम्नी] नामवाला।
नायँ†–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
अव्य० दे० "नहीं"।
नायक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नायिका] १. लोगों को अपने कहे पर चलानेवाला आदमी। नेता। अगुआ। सरदार। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३. श्रेष्ठ पुरुष। जन-नायक। ४. साहित्य में शृंगार का आलंबन या साधक रूप-यौवन संपन्न पुरुष अथवा वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक आदि का मुख्य विषय हो। ५. संगीत-कला में निपुण पुरुष। कलावंत। ६ एक वर्णवृत्त का नाम।
नायका–संज्ञा स्त्री० [सं० नायिका] १. दे० "नायिका"। २. वेश्या की माँ। ३. कुटनी। दूती।
नायन–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाई] नाई की स्त्री।
नायब–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी की ओर से काम करनेवाला। मुनीब। मुख्तार। २. सहायक। सहकारी।
नायिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रूपगुण-संपन्न स्त्री। २. वह स्त्री जो शृंगार रस का आलंबन हो अथवा किसी काव्य, नाटक आदि में जिसके चरित्र का वर्णन हो।
नारंग–संज्ञा पुं० [सं०] नारंगी।
नारंगी–संज्ञा स्त्री० [सं० नागरंग, अ० नारंज] १ नीबू की जाति का एक मझोला पेड़ जिसमें मीठे, सुगंधित और रसीले फल लगते हैं। २. नारंगी के छिलके का सा रंग। पीलापन लिए हुए लाल रंग।
वि० पीलापन लिए हुए लाल रंग का।
नार–संज्ञा स्त्री० [सं० नाल] १. गरदन। ग्रीवा।
मुहा०—नार नवाना या नीचा करना= १. गरदन झुकाना। सिर नीचे की ओर करना। २. लज्जा, चिंता, संकोच और मान आदि के कारण सामने न ताकना। दृष्टि नीची करना।
२. जुलाहों की ढरकी। नाल।
†संज्ञा पुं० १. आँवल नाल। दे० "नाल"। २. नाला। ३. बहुत मोटा रस्सा। ४. सूत की वह डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा कसती हैं। नारा। नाला। ५ जुआ जोड़ने की रस्सी या तस्मा।
‡ संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।
नारकी–वि० [सं० नारकिन्] नरक में जाने योग्य कर्म करनेवाला। पापी।
नारद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं। ये बहुत बड़े हरिभक्त प्रसिद्ध हैं और कलह-प्रिय भी कहे गए हैं। पर आजकल के विद्वानों का

मत है कि नारद किसी एक आदमी का नाम नहीं था, बल्कि साधुओं का एक संप्रदाय था। २. विश्वामित्र के एक पुत्र। ३ एक प्रजापति। ४. झगड़ा करानेवाला आदमी।

नारद पुराण-संज्ञा पुं० [सं०] १. अठारह महापुराणों में से एक। इसमें तीर्थों और व्रतों का माहात्म्य है। २ बृहन्नारदीय नामक एक उपपुराण।

नारदीय-वि० [सं०] नारद संबंधी।

नारना-क्रि० स० [सं० ज्ञान] थाह लगाना।

नारबेवार-संज्ञा पुं० [हिं० नार+सं० विवार=फैलाव] नाल और खेड़ी आदि। नारा पेटी।

नारसिंह-संज्ञा पुं० [सं०] १. नरसिंह रूपधारी विष्णु। २. एक तंत्र का नाम। ३ एक उपपुराण। नृसिंह संबंधी।

नारा-संज्ञा पुं० [सं० नाल] १. इजारबंद। नीबी। दे० "नाड़ा"। २. लाल रँगा हुआ सूत जो पूजन में देवताओं को चढ़ाया जाता है। मौली। कुसुंभ-सूत्र। ३. हल के जुवे में बँधी हुई रस्सी। †४. दे० "नाला"।

नाराच-संज्ञा पुं० [सं०] १ लोहे का बाण। २. दुर्दिन। ऐसा दिन जिसमें बादल घिरा हो, अंधड़ चले तथा इसी प्रकार के और उपद्रव हों। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त। महामालिनी। तारका। ४ २४ मात्राओं का एक छंद।

नाराज़-वि० [फा०] [संज्ञा नाराजगी, नाराजी] अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश। खफ़ा।

नारायण-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। भगवान्। ईश्वर। २. पूस का महीना। ३. 'अ' अक्षर का नाम। ४. कृष्ण यजुर्वेद के अंतर्गत एक उपनिषद्। ५. एक अस्त्र।

नारायणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. *लक्ष्मी*। ३. *गंगा*। ४. *श्रीकृष्ण की* सेना का नाम जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिये दिया था।

नारायणीय-वि० [सं०] नारायण संबंधी।

नाराशंस-वि० [सं०] जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा हो। स्तुति-संबंधी।

संज्ञा पुं० १. वेदों के वे मंत्र जिनमें राजाओं आदि की प्रशंसा होती है। प्रशस्ति। २. वह चमचा जिसमें पितरों को सोमपान दिया जाता है। ३. पितर।

नाराशंसी-संज्ञा स्त्री० दे० "नाराशंस"।

नारि-संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।

नारिकेल-संज्ञा पुं० [सं०] नारियल।

नारियल-संज्ञा पुं० [सं० नारिकेल] १. खजूर की जाति का एक पेड़। इसके बड़े गोल फलों के ऊपर एक बहुत कड़ा रेशेदार छिलका होता है जिसके नीचे कड़ी गुठली और सफ़ेद गिरी होती है जो खाने में मीठी होती है। २. नारियल का हुक्का।

नारियली-संज्ञा स्त्री० [हिं० नारियल] १. नारियल का खोपड़ा। २. नारियल का हुक्का।

नारी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। औरत। २. तीन गुरु वर्णों की एक वृत्ति।

†-संज्ञा स्त्री० १. दे० "नाड़ी"। २. दे० "नाली"।

नारू-संज्ञा पुं० [देश०] १. जूँ। ढील। २. नहरुआ नामक रोग।

नालंद-संज्ञा पुं० बौद्धों का एक प्राचीन क्षेत्र और विद्यापीठ जो मगध में पटने से तीस कोस दक्खिन था।

नाल-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली लंबी डंडी। डाँड़ी। २. पौधे का डंठल। काँड। ३. गेहूँ, जौ आदि की वह पतली लंबी डंडी जिसमें बाल लगती है। ४. नली। नल। ५. बंदूक की नली। ६. सुनारों की फुकनी। ७. जुलाहों की नली। छूँछा।

संज्ञा पुं० १. रक्त की नलियों तथा एक प्रकार के मज्जातंतु से बनी हुई रस्सी के आकार की वस्तु जो एक ओर तो गर्भस्थ बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय की दीवार से मिली होती है। आँवल-नाल। उल्वनाल। नारा। २. लिंग। ३. हरताल। ४ जल बहने का स्थान।

संज्ञा पुं० [अ०] १ लोहे का वह अर्द्धचंद्राकार *खंड जिसे घोड़ों की टाप के नीचे* या जूतों की एँड़ी के नीचे उन्हें रगड़ से बचाने के लिये जड़ते हैं। २. तलवार आदि के म्यान की साम जो नोक पर मढ़ी होती है। ३. कुंडलाकार गढ़ा हुआ पत्थर का भारी टुकड़ा जिसके बीचोबीच पकड़कर उठाने के लिये एक दस्ता रहता है। इसे अभ्यास के लिये कसरत करनेवाले उठाते हैं। लकड़ी का वह चक्कर [illegible]

नामदेव–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त जिनकी कथा भक्तमाल में है। ये नामदेवजी के नाती (दौहित्र) थे। २. महाराष्ट्र देश के एक प्रसिद्ध कवि।

नामधराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाम + धराना] बदनामी। निंदा। अपकीर्त्ति।

नाम धाम–संज्ञा पुं० [हिं० नाम + धाम] नाम और पता। पता ठिकाना।

नामधारी–वि० [सं०] नामक।

नामधेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाम। निदर्शक शब्द। २. नामकरण।
वि० नामवाला। नाम का।

नामनिशान–संज्ञा पुं० [फा०] चिह्न। पता।

नामबोला–संज्ञा पुं० [हिं० नाम + बोलना] भक्तिपूर्वक नाम स्मरण करनेवाला।

नामर्द–वि० [फा०] [संज्ञा नामर्दी] १. नपुंसक। क्लीव। २. डरपोक। कायर।

नामलेवा–संज्ञा पुं० [हिं० नाम + लेना] १. नाम लेनेवाला। नाम स्मरण करनेवाला। २. उत्तराधिकारी। संतति। वारिस।

नामवर–वि० [फा०] [संज्ञा नामवरी] जिसका बड़ा नाम हो। नामी। प्रसिद्ध।

नामशेष–वि० [सं०] १. जिसका केवल नाम बाकी रह गया हो। नष्ट। ध्वस्त। २. मृत। गत। मरा हुआ।

नामांकित–वि० [सं०] जिस पर नाम लिखा या खुदा हो।

नामाकूल–वि० [फा० + अ० माकूल] १. अयोग्य। नालायक। २. अयुक्त। अनुचित।

नामावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नामों की पंक्ति। नामों की सूची। २. वह कपड़ा जिस पर चारों ओर भगवान् या किसी देवता का नाम छपा होता है। रामनामी।

नामी–वि० [हिं० नाम + ई (प्रत्य०) अथवा सं० नामिन्] १. नामधारी। नामवाला। २. प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

नामुनासिब–वि० [फा०] अनुचित।

नामुमकिन–वि० [फा० + अ०] असंभव।

नामूसी–संज्ञा स्त्री० [अ० नामूस = इज्जत] बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। बदनामी।

नाम्ना–वि० [सं०] [स्त्री० नाम्नी] नामवाला

नायँ–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
अव्य० दे० "नहीं"।

नायक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नायिका] १. लोगों को अपने कहे पर चलानेवाला आदमी। नेता। अगुआ। सरदार। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३. श्रेष्ठ पुरुष। जन-नायक। ४. साहित्य में शृंगार का आलंबन या साधक रूप-यौवन-संपन्न पुरुष अथवा वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक आदि का मुख्य विषय हो। ५. संगीत-कला में निपुण पुरुष। कलावंत। ६ एक वर्णवृत्त का नाम।

नायका–संज्ञा स्त्री० [सं० नायिका] १. दे० "नायिका"। २. वेश्या की माँ। ३. कुटनी। दूती।

नायन–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाई] नाई की स्त्री।

नायब–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी की ओर से काम करनेवाला। मुनीब। मुख्तार। २. सहायक। सहकारी।

नायिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रूपगुण-संपन्न स्त्री। २. वह स्त्री जो शृंगार रस का आलंबन हो अथवा किसी काव्य, नाटक आदि में जिसके चरित्र का वर्णन हो।

नारंग–संज्ञा पुं० [सं०] नारंगी।

नारंगी–संज्ञा स्त्री० [सं० नागरंग, अ० नारंज] १. नीबू की जाति का एक मझोला पेड़ जिसमें मीठे, सुगंधित और रसीले फल लगते हैं। २. नारंगी के छिलके का सा रंग। पीलापन लिए हुए लाल रंग।
वि० पीलापन लिए हुए लाल रंग का।

नार–संज्ञा स्त्री० [सं० नाल] १. गरदन। ग्रीवा।
मुहा०—नार नवाना या नीचा करना = १. गरदन झुकाना। सिर नीचे की ओर करना। २. लज्जा, चिंता, संकोच और मान आदि के कारण सामने न ताकना। दृष्टि नीची करना।
२. जुलाहों की ढरकी। नाल।
†संज्ञा पुं० १. आँवल नाल। दे० "नाल"। २. नाला। ३. बहुत मोटा रस्सा। ४. सूत की वह डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा कसती हैं। नारा। नाला। ५. जुवा जोड़ने की रस्सी या तस्मा।
‡संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।

नारकी–वि० [सं० नारकिन्] नरक में जाने योग्य कर्म करनेवाला। पापी।

नारद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं। ये बहुत बड़े हरिभक्त प्रसिद्ध हैं और कलह-प्रिय भी कहे गए हैं। पर आजकल के विद्वानों का

को न मानने की बुद्धि ।
नास्तिवाद–संज्ञा पुं० [सं०] नास्तिकों का तर्क या मत ।
नाह*–संज्ञा पुं० दे० "नाथ" ।
नाहक–क्रि० वि० [फा० ना + अ० हक़] वृथा । व्यर्थ । बेफ़ायदा । बे-मतलब ।
नाह-नूह–संज्ञा स्त्री० [हिं० नाहीं] नहीं नहीं शब्द । इनकार ।
नाहर–संज्ञा पुं० [सं० नरहरि] १. सिंह । शेर । २. बाघ ।
संज्ञा पुं० [?] टेसू का फूल ।
नाहरू–संज्ञा पुं० [देश०] नारू नाम का रोग । नहरुवा ।
संज्ञा पुं० दे० "नाहर" ।
नाहिनै*–वाक्य [हिं० नाहीं] नहीं है ।
नाहीं–अव्य० दे० "नहीं" ।
नित*–क्रि० वि० दे० "नित्य" ।
निंद–वि० दे० "निंद्य" ।
निंदक–संज्ञा पुं० [सं०] निंदा करनेवाला ।
निंदन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निंदनीय, निंदित, निंद्य] निंदा करने का काम ।
निंदना†–क्रि० स० [सं० निंदन] निंदा करना । बदनाम करना ।
निंदनीय–वि० [सं०] १. निंदा करने योग्य । २. बुरा । गर्ह्य ।
निँदरना–क्रि० स० दे० "निंदना" ।
निँदरिया†–संज्ञा स्त्री० [सं० निद्रा] नींद ।
निंदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. (किसी व्यक्ति या वस्तु का) दोषकथन । बुराई का वर्णन । अपवाद । बदगोई । २. अपकीर्ति । बदनामी । कुख्याति ।
निँदासा–वि० [हिं० नींद + आसा (प्रत्य०)] जिसे नींद आ रही हो । उनींदा ।
निंदास्तुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा के बहाने स्तुति । व्याज-स्तुति ।
निंदित–वि० [सं०] जिसकी लोग निंदा करते हों । दूषित । बुरा ।
निँदिया†–संज्ञा स्त्री० [हिं० नींद] नींद ।
निंद्य–वि० [सं०] १. निंदा करने योग्य । निंदनीय । २. दूषित । बुरा ।
निंब–संज्ञा स्त्री० [सं०] नीम का पेड़ ।
निंबार्क–संज्ञा पुं० [सं०] १. अरुणि या निंबादित्य नामक आचार्य । २. इनका चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय ।
निंबू–संज्ञा पुं० [सं०] नीबू ।

निः–अव्य० [सं० निस्] एक उपसर्ग । दे० "नि" ।
निःशंक–वि० [सं०] १. जिसे डर न हो । निडर । निर्भय । २. जिसे किसी प्रकार का खटका या हिचक न हो ।
निःशब्द–वि० [सं०] शब्दरहित । जहाँ शब्द न हो या जो शब्द न करे ।
निःशेष–वि० [सं०] १ जिसका कोई अंश न रह गया हो । समूचा । सब । २. समाप्त ।
निःश्रेणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सीढ़ी ।
निःश्रेयस–वि० [सं०] १. मोक्ष । मुक्ति । २. कल्याण । ३. भक्ति । ४. विज्ञान ।
निःश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] प्राणवायु का नाक से निकलना या नाक से निकाली हुई वायु । साँस ।
निःसंकोच–क्रि० वि० [सं०] बिना संकोच के । बेधड़क ।
निःसंग–वि० [सं०] १. बिना मेल या लगाव का । २. निर्लिप्त । ३ जिसमें अपने मतलब का कुछ लगाव न हो ।
निःसंतान–वि० [सं०] जिसके संतान न हो । निपूता या निपूती । लावल्द ।
निःसंदेह–वि० [सं०] संदेह-रहित । जिसे या जिसमें कुछ संदेह न हो ।
अव्य० १. बिना किसी संदेह के । २. इसमें कोई संदेह नहीं । ठीक है । बेशक ।
निःसंशय–वि० [सं०] संदेह-रहित ।
निःसत्व–वि० [सं०] जिसमें कुछ असलियत, तत्त्व या सार न हो ।
निःसरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलना । २ निकलने का रास्ता । निकास । ३. निर्याण । ४. मरण ।
निःसीम–वि० [सं०] १ जिसकी सीमा न हो । बेहद । २. बहुत बड़ा या अधिक ।
निःसृत–वि० [सं०] निकला हुआ ।
निःस्पृह–वि० [सं०] १ इच्छारहित । जिसे किसी बात की आकांक्षा न हो । २ जिसे प्राप्ति की इच्छा न हो । निर्लोभ ।
निःस्वार्थ–वि० [सं०] १. जो अपने लाभ, सुख या सुभीते का ध्यान न रखता हो । २ (कोई बात) जो अपने अर्थ-साधन के निमित्त न हो ।
नि–अव्य० [सं०] एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्दों में इन अर्थों की विशेषता होती है—संघ या समूह; जैसे, निकर । अधो-

कूएँ की खोदाई की जाती है। २. वह रुपया जो जुआरी जुए का अड्डा रखनेवाले को देता है।

नालकटाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाल + कटाई] तुरंत के जनमे हुए बच्चे की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम।

नालकी-संज्ञा स्त्री० [सं० नाल = डंडा] इधर-उधर से खुली पालकी जिस पर एक मिहराबदार छाजन होती है।

नालबंद-संज्ञा पु० [अ० + फा०] जूते की एँड़ी या घोड़े की टाप में नाल जड़नेवाला।

नाला-संज्ञा पु० [सं० नाल] [स्त्री० अल्पा० नाली] १. लकीर के रूप में दूर तक गया हुआ वह गड्ढा जिससे होकर बरसाती पानी किसी नदी आदि में जाता है। जल-प्रणाली। २. उक्त मार्ग से बहता हुआ जल। जल प्रवाह। ३ दे० "नाड़ी"।

नालायक-वि० [फा० + अ०] [संज्ञा नालायकी] अयोग्य। निकम्मा। मूर्ख।

नालिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटी नाल या डंठल। २. नाली। ३. एक प्रकार का गंधद्रव्य।

नालिश-संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी के द्वारा पहुँचे हुए दुःख या हानि का ऐसे मनुष्य के निकट निवेदन जो उसका प्रतिकार कर सकता हो। फ़रियाद।

नाली-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाला] १. जल बहने का पतला मार्ग। जल-प्रवाह-पथ। २. गलीज आदि बहने का मार्ग। मोरी। ३. कोई गहरी लकीर। ४ घोड़े की पीठ का गड्ढा। ५. बैल आदि चौपायों को दवा पिलाने का चोंगा। ढरका।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नाड़ी। धमनी। रक्त आदि बहने की नली। २. करेमू का साग। ३ घड़ी। ४ कमल।

नावँ*†-संज्ञा पु० दे० "नाम"।

नाव-संज्ञा स्त्री० [सं० नौका] लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई जल के ऊपर चलनेवाली सवारी। नौका। किश्ती।

नावक-संज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार का छोटा बाण। २ मधुमक्खी का डंक।

संज्ञा पु० [सं० [illegible]] केवट। मल्लाह।

नावना†-क्रि० स० [सं० नामन] १. झुकाना। नवाना। २. डालना। फेंकना। गिराना। ३. प्रविष्ट करना। घुसाना।

नावर*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाव] १. नाव। नौका। २. नाव की एक क्रीड़ा जिसमें उसे बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं।

नाविक-संज्ञा पु० [सं०] मल्लाह। केवट।

नाश-संज्ञा पु० [सं०] १. न रह जाना। लोप। ध्वंस। बरबादी। २. गायब होना।

नाशक-वि० [सं०] १ नाश करनेवाला। ध्वंस करनेवाला। २. मारनेवाला। वध करनेवाला। ३. दूर करनेवाला।

नाशकारी-वि० [सं० नाशकारिन्] नाशक।

नाशना*-क्रि० स० दे० "नासना"।

नाशपाती-संज्ञा स्त्री० [तु०] मझोले डील-डौल का एक पेड़ जिसके फल प्रसिद्ध मेवों में गिने जाते हैं।

नाशवान्-वि० [सं०] नश्वर। अनित्य।

नाशी-वि० [सं० नाशिन्] [स्त्री० नाशिनी] १. नाश करनेवाला। नाशक। २. नश्वर।

नाश्ता-संज्ञा पु० [फा०] जलपान।

नास-संज्ञा स्त्री० [सं० नासा] १ वह औषध जो नाक से सूँघी जाय। २ सुँघनी।

नासदान-संज्ञा पु० [हिं० नास + दान (सं० आधान)] सुँघनी रखने की डिबिया।

नासना*-क्रि० स० [सं० नाशन] १. नष्ट करना। बरबाद करना। २. मार डालना।

नासमझ-वि० [हिं० ना + समझ] [संज्ञा नासमझी] जिसे समझ न हो। निर्बुद्धि। बेवकूफ।

नासा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० नास्य] १. नासिका। नाक। २ नाक का छेद। नथना।

नासापुट-संज्ञा पु० [सं०] नथना।

नासिक-संज्ञा स्त्री० [सं० नासिक्य] महाराष्ट्र देश में एक तीर्थ जो उस स्थान के निकट है जहाँ से गोदावरी निकलती है।

नासिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाक। नासा।

नासी -वि० दे० "नाशी"।

नासूर-संज्ञा पु० [अ०] घाव, फोड़े आदि के भीतर दूर तक गया हुआ छेद जिससे बराबर मवाद निकला करता है और जिसके कारण घाव जल्दी अच्छा नहीं होता। नाड़ीव्रण।

नास्तिक-संज्ञा पु० [सं०] वह जो ईश्वर या परलोक आदि को न माने।

नास्तिकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नास्तिक होने का भाव। ईश्वर, परलोक आदि

को न मानने की बुद्धि।
नास्तिवाद-संज्ञा पुं० [सं०] नास्तिकों का तर्क या मत।
नाह॥-संज्ञा पुं० दे० "नाथ"।
नाहक-क्रि० वि० [फा० ना+अ० हक] वृथा। व्यर्थ। बेफ़ायदा। बे-मतलब।
नाह-नूह॥-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाहीं] नहीं नहीं शब्द। इनकार।
नाहर-संज्ञा पुं० [सं० नरहरि] १. सिंह। शेर। २. बाघ।
संज्ञा पुं० [?] टेसू का फूल।
नाहरू- संज्ञा पुं० [देश०] नारू नाम का रोग। नहरुवा।
संज्ञा पुं० दे० "नाहर"।
नाहिनै॥-वाक्य [हिं० नाहीं] नहीं है।
नाहीं-अव्य० दे० "नहीं"।
नित॥-क्रि० वि० दे० "नित्य"।
निंद॥-वि० दे० "निंद्य"।
निंदक-संज्ञा पुं० [सं०] निंदा करनेवाला।
निंदन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निंदनीय, निंदित, निंद्य] निंदा करने का काम।
निंदना॥-क्रि० स० [सं० निंदन] निंदा करना। बदनाम करना।
निंदनीय-वि० [सं०] १ निंदा करने योग्य। २. बुरा। गर्ह्य।
निँदरना-क्रि० स० दे० निंदना"।
निँदरिया॥ -संज्ञा स्त्री० [सं०निद्रा] नींद।
निंदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. (किसी व्यक्ति या वस्तु का) दोषकथन। बुराई का वर्णन। अपवाद। बदगोई। २. अपकीर्ति। बदनामी। कुख्याति।
निँदासा-वि० [हिं० नींद+आसा (प्रत्य०)] जिसे नींद आ रही हो। उनींदा।
निंदास्तुति-संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा के बहाने स्तुति। व्याज स्तुति।
निंदित-वि० [सं०] जिसकी लोग निंदा करते हों। दूषित। बुरा।
निंदिया॥-संज्ञा स्त्री० [हिं० नींद] नींद।
निंद्य-वि० [सं०] १. निंदा करने योग्य। निंदनीय। २. दूषित। बुरा।
निंब-संज्ञा स्त्री० [सं०] नीम का पेड़।
निंबार्क-संज्ञा पुं० [सं०] १. अरुणि या निंबादित्य नामक आचार्य। २. इनका चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय।
निंबू-संज्ञा पुं० [सं०] नींबू।

निः-अव्य० [सं० निस्] एक उपसर्ग। दे० "नि"।
निःशंक-वि० [सं०] १. जिसे डर न हो। निडर। निर्भर। २. जिसे किसी प्रकार का खटका या हिचक न हो।
निःशब्द-वि० [सं०] शब्दरहित। जहाँ शब्द न हो या जो शब्द न करे।
निःशेष-वि० [सं०] १ जिसका कोई अंश न रह गया हो। समूचा। सब। २. समाप्त।
निःश्रेणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सीढ़ी।
निःश्रेयस-वि० [सं०] १. मोक्ष। मुक्ति। २. कल्याण। ३. भक्ति। ४. विज्ञान।
निःश्वास-संज्ञा पुं० [सं०] प्राणवायु का नाक से निकलना या नाक से निकाली हुई वायु। सांस।
निःसंकोच-क्रि० वि० [सं०] बिना संकोच के। बेधड़क।
निःसंग-वि० [सं०] १ बिना मेल या लगाव का। २. निर्लिप्त। ३ जिसमें अपने मतलब का कुछ लगाव न हो।
निःसंतान-वि० [सं०] जिसके संतान न हो। निपूता या निपूती। लावल्द।
निःसंदेह-वि० [सं०] संदेह-रहित। जिसे या जिसमें कुछ संदेह न हो।
अव्य० १. बिना किसी संदेह के। २. इसमें कोई संदेह नहीं। ठीक है। बेशक।
निःसंशय-वि० [सं०] संदेह-रहित।
निःसत्त्व-वि० [सं०] जिसमें कुछ असलियत, तत्त्व या सार न हो।
निःसरण-संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलना। २ निकलने का रास्ता। निकास। ३ निर्वाण। ४. मरण।
निःसीम-वि० [सं०] १ जिसकी सीमा न हो। बेहद। २. बहुत बड़ा या अधिक।
निःसृत-वि० [सं०] निकला हुआ।
निःस्पृह-वि० [सं०] १ इच्छारहित। जिसे किसी बात की आकांक्षा न हो। २ जिसे प्राप्ति की इच्छा न हो। निर्लोभ।
निःस्वार्थ-वि० [सं०] १. जो अपने लाभ, सुख या सुभीते का ध्यान न रखता हो। २. (कोई बात) जो अपने अर्थ-साधन के निमित्त न हो।
नि-अव्य० [सं०] एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्दों में इन अर्थों की विशेषता होती है—संघ या समूह; जैसे, निकर।

भाव, जैसे, निपतित। अत्यंत; जैसे, निगृहीत। आदेश; जैसे, निदेश। नित्य कौशल, बंधन, अंतर्भाव, समीप, दर्शन आदि।
संज्ञा पुं० निषाद स्वर का संकेत।

निअर†-अव्य० [सं० निकट] निकट।
वि० समान। तुल्य।

निअराना†-क्रि० स० [हिं० निअर] निकट जाना। समीप पहुँचना।
क्रि० अ० निकट आना। पास होना।

निआउ†-संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।

निआन-संज्ञा पुं० [सं० निदान] अंत।
अव्य० अंत में। आखिर।

निआमत-संज्ञा स्त्री० [अ०] अच्छा और बहुमूल्य पदार्थ। अलभ्य पदार्थ।

निकंटक-वि० दे० "निष्कंटक"।

निकंदन-संज्ञा पुं० [सं० नि+कंदन=नाश, वध] नाश। विनाश।

निकट-वि० [सं०] १. पास का। समीप का। २. संबंध जिससे विशेष अंतर न हो।
क्रि० वि० पास। समीप। नज़दीक।
मुहा०—किसी के निकट=१. किसी से। २. किसी के लेखे में। किसी की समझ में।

निकटता-संज्ञा स्त्री [सं०] समीपता।

निकटवर्ती-वि० [सं० निकटवर्तिन्] [स्त्री० निकटवर्तिनी] पासवाला। समीपस्थ।

निकटस्थ-वि० [सं०] १. पास का। २. संबंध में जिससे बहुत अंतर न हो।

निकम्मा-वि० [सं० निष्कर्म्म] [स्त्री० निकम्मी] १. जो कोई काम धंधा न करे। २. जो किसी काम का न हो। बेमसरफ़। बुरा।

निकर-संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। झुंड। २. राशि। ढेर। ३ निधि।

निकरना†-क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निकर्मा-वि० [सं० निष्कर्म्मा] आलसी।

निकलंक-वि० [सं० निष्कलंक] दोषरहित।

निकलंकी-संज्ञा पुं० [सं० निष्कलंक] विष्णु का दसवाँ अवतार। कल्कि अवतार।

निकल-संज्ञा स्त्री० [अ०] एक धातु जो कोयले, गंधक आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है। साफ होने पर यह चाँदी की तरह चमकती है।

निकलना-क्रि० अ० [हिं० निकालना] १. भीतर से बाहर आना। निर्गत होना।
मुहा०—निकल जाना=१. चला जाना। आगे बढ़ जाना। २. न रह जाना। नष्ट हो जाना। ३. घट जाना। कम हो जाना। ४. न पकड़ा जाना। भाग जाना। (स्त्री का) निकल जाना=किसी पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर छोड़कर चली जाना।
२. मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज़ का अलग होना। ३. पार होना। एक ओर से दूसरी ओर चला जाना।
मुहा०—निकल चलना=वित्त से बाहर काम करना। इतराना। अति करना।
४. किसी श्रेणी आदि के पार होना। उत्तीर्ण होना। ५. गमन करना। जाना। गुजरना। ६. उदय होना। ७. प्रादुर्भूत होना। उत्पन्न होना। ८. उपस्थित होना। दिखाई पड़ना। ९. किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। १०. निश्चित होना। ठहराया जाना। ११ स्पष्ट होना। प्रकट होना। १२. छिड़ना। आरंभ होना। १३. सिद्ध होना। सरना। १४. हल होना। किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना। १५ फैलाव होना। १६. प्रचलित होना। १७. छूटना। मुक्त होना। १८. आविष्कृत होना। १९. शरीर के ऊपर उत्पन्न होना। २०. अपने को बचा जाना। बच जाना। २१. कहकर नहीं करना। मुकरना। नटना। २२. खपना। बिकना। २३. प्रस्तुत होकर सर्वसाधारण के सामने आना। प्रकाशित होना। २४. हिसाब किताब होने पर कोई रकम ज़िम्मे ठहरना। २५ फटकर अलग होना। उचड़ना। २६. जाता रहना। दूर होना। न रह जाना। २७. व्यतीत होना। बीतना। गुजरना। २८ घोड़े, बैल आदि का सवारी लेकर चलना आदि सीखना।

निकलवाना-क्रि० स० [हिं० निकलना का प्रे०] निकालने का काम दूसरे से कराना।

निकसना†-क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निकाई-संज्ञा पुं० दे० "निकाय"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० नीक] १. भलाई। अच्छापन। उम्दगी। २. ख़ूबसूरती। सुंदरता।

निकाज-वि० [हिं० नि+काज] बेकाम। निकम्मा।

निकाम-वि० [हिं० नि+काम] १. निकम्मा। २. बुरा। ख़राब।
क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फ़ज़ूल।

निकाय-संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. ढेर। राशि। ३. घर। ४. परमात्मा।

निकारना †-क्रि० स० दे० "निकालना"।

निकालना-क्रि० स० [सं० निष्कासन] १ भीतर से बाहर लाना। निर्गत करना। २. मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज को अलग करना। ३. पार करना। अतिक्रमण कराना। ४. गमन कराना। ले जाना। ५. किसी ओर को बढ़ा हुआ करना। ६. निश्चित करना। ठहराना। ७ उपस्थित करना। मौजूद करना। ८. खोलना। स्पष्ट करना। ९. छेड़ना। आरंभ करना। चलाना। १०. सबके सामने लाना। देखने में करना। ११. अलग करना। पृथक् करना। १२. घटाना। कम करना। १३. अलग करना। छुड़ाना। मुक्त करना। १४. नौकरी से छुड़ाना। बरखास्त करना। १५. दूर करना। हटाना। १६. बेंचना। खपाना। १७. सिद्ध करना। प्राप्त करना। १८. निर्वाह करना। चलाना। १९. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना। हल करना। २०. जारी करना। फैलाना। २१. आविष्कृत करना। ईजाद करना। २२. बचाव करना। निस्तार करना। उद्धार करना। २३. प्रचारित करना। प्रकाशित करना। २४. रकम ज़िम्मे ठहराना। ऊपर ऋण या देना निश्चित करना। २५. ढूँढ़कर पाना। बरामद करना। २६. घोड़े, बैल आदि को सवारी लेकर चलना या गाड़ी आदि खींचना सिखाना। शिक्षा देना। २७ सुई से बेल-बूटे बनाना।

निकाला-संज्ञा पुं० [हिं० निकालना] १. निकालने का काम। २. किसी स्थान से निकाले जाने का दंड। निष्कासन।

निकास-संज्ञा पुं० [हिं० निकसना] १. निकलने की क्रिया या भाव। २. निकालने की क्रिया या भाव। ३. निकलने के लिये खुला स्थान या छेद। ४. द्वार। दरवाजा। ५ बाहर का खुला स्थान। मैदान। ६. उद्गम। मूल स्थान। ७ वंश का मूल। ८ रक्षा का उपाय। छुटकारे की तदबीर। ९. निर्वाह का ढंग। वसीला। सिलसिला। १०. प्राप्ति का ढंग। आमदनी का रास्ता। ११. आय। आमदनी। निकासी।

निकासी-संज्ञा स्त्री० [हिं० निकास] १. निकलने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। रवानगी। २. वह धन जो सरकारी मालगुजारी आदि देकर जमींदार को बचे। मुनाफ़ा। ३ आय। आमदनी। लाभ। ४. बिक्री के लिये माल की रवानगी। लदाई। भरती। ५. बिक्री। खपत। ६. चुंगी। ७ रवन्ना।

निकासना†-क्रि० स० दे० "निकालना"।

निकाह-संज्ञा पुं० [अ०] मुसल्मानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह।

निकियाना-क्रि० स० [देश०] नोचकर धज्जी-धज्जी अलग करना।

निकिष्ट*†-वि० दे० "निकृष्ट"।

निकुंज-संज्ञा पुं० [सं०] लतागृह। ऐसा स्थान जो घनी लताओं से घिरा हो।

निकुंभ-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुंभकर्ण का एक पुत्र। यह रावण का मंत्री था। २. एक विश्वेदेव। ३. महादेव का एक गण।

निकृष्ट-वि० [सं०] बुरा। अधम। नीच।

निकृष्टता-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुराई। अधमता। नीचता। मंदता।

निकेत-संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. स्थान। जगह।

निक्षिप्त-वि० [सं०] १. फेंका हुआ। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त।

निक्षेप संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकने या डालने की क्रिया या भाव। २. चलाने की क्रिया या भाव। ३. छोड़ने की क्रिया या भाव। त्याग। ४. पोंछने की क्रिया या भाव। ५. धरोहर। अमानत। थाती।

निक्षेपण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निक्षित, निक्षिप्य] १. फेंकना। डालना। २. छोड़ना। चलाना। ३. त्यागना।

निखंग*-संज्ञा पुं० दे० "निषंग"।

निखंड-वि० [सं० निस्+खंड] ठीक मध्य में। न थोड़ा इधर न उधर। सटीक। ठीक।

निखट्टू-वि० [हिं० उप० नि=नहीं+खटना=कमाना] १. जो कुछ कमाई न करे। इधर-उधर मारा मारा फिरनेवाला। २. निकम्मा। आलसी।

निखरना-क्रि० अ० [सं० निक्षरण=छँटना] १. मैल छँटकर साफ़ होना। निर्मल होना। २. रंगत का खुलता होना।

निखरवाना-क्रि० स० [हिं० निखारना] साफ कराना। धुलवाना।
निखरी-सज्ञा स्त्री० [हिं० निखरना] पक्की या घी की पकी हुई रसोई। घृतपक्व। सखरी का उलटा।
निखवख*-वि० [सं० न्यक्ष=सारा, सब] बिलकुल। सब। और बाकी कुछ नहीं।
निखाद-सज्ञा पु० दे० "निषाद"।
निखार-सज्ञा पु० [हिं० निखरना] १. निर्मलता। स्वच्छता। सफाई। २. शृंगार।
निखारना-क्रि० स० [हिं० निखरना] १. साफ करना। २. पवित्र करना।
निखालिस]-वि० [हिं० नि+अ० खालिस] विशुद्ध। जिसमें और किसी चीज का मेल न हो।
निखिल-वि० [सं०] संपूर्ण। सब।
निखेध -स० पुं० दे० "निषेध"।
निखेधना*-[सं० निषेध] मना करना।
निखोट-वि० [हिं० उप० नि+खोट] १. जिसमें कोई खोटाई या दोष न हो। निर्दोष। २. साफ। स्पष्ट या खुला हुआ। क्रि० वि० बिना संकोच के। बेधड़क।
निगदना-क्रि० स० [फा० निगदः=बखिया] रजाई, दुलाई आदि रूई भरे कपड़ों में तागा डालना।
निगंध*-वि० [स० निर्गंध] गंधहीन।
निगड़-सज्ञा स्त्री [सं०] १ हाथी के पैर बाँधन की जंजीर। अँदू। २. बेड़ी।
निगम-सज्ञा पु० [स०] १. मार्ग। पथ। २. वेद। ३. हाट। बाज़ार। ४. मेला। ५. रोजगार। व्यापार। ६. निश्चय।
निगमन-सज्ञा पु० [स०] न्याय में अनुमान के पाच अवयवो में से एक। साबित की जानेवाली बात साबित हो गई, यह जताने के लिये दलील वगैरह के पीछे उस बात को फिर कहना। नतीजा।
निगमागम-सज्ञा पु० [स०] वेदशास्त्र।
निगर-वि० सज्ञा पु० दे० "निकर"।
निगरानी-सज्ञा स्त्री०[फा०] देख-रेख। निरीक्षण।
निगरु*-वि० [स० नि+गुरु] हलका। जो भारी या वज़नी न हो।
... स० [सं० निगरण] १. ...ना। गले के नीचे उतार लेना। ...े का धन आदि मार बैठना।
निगह-सज्ञा स्त्री० दे० "निगाह"।
निगहबान-सज्ञा पु० [फा०] रक्षक।
निगहबानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] रक्षा।
निगालिका-सज्ञा स्त्री० [स०] आठ अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। नगस्वरूपिणी।
निगाली-सज्ञा स्त्री० [हिं० निगाल] हुक्के की नली जिसे मुँह में रखकर धुआँ खींचते हैं।
निगाह-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. दृष्टि। नज़र। २ देखने की क्रिया या ढग। चितवन। तकाई। ३. कृपादृष्टि। मेहरबानी। ४. ध्यान। विचार। ५. परख। पहचान।
निगिभ -वि० [सं० निगुध] जिसका बहुत लोभ हो। बहुत प्यारा।
निगुण*-वि० दे० "निर्गुण"।
निगुनी*-वि० [हिं० उप० नि+गुनी] जो गुणी न हो। गुण-रहित।
निगुरा-वि० [हिं० उप० नि+गुरु] जिसने गुरु से मंत्र न लिया हो। अदीक्षित।
निगूढ़-वि० [स०] अत्यंत गुप्त।
निगृहीत-वि० [स०] १. धरा हुआ। पकड़ा हुआ। २. जिस पर आक्रमण किया गया हो। आक्रमित। आक्रांत। ३. पीड़ित। ४. दंडित।
निगोड़ा-वि० [हिं० निगुरा] [स्त्री० निगोड़ी] १. जिसके ऊपर कोई बड़ा न हो। २. जिसके आगे पीछे कोई न हो। अभागा। ३. दुष्ट। बुरा। नीच। कमीना।
निग्रह-सज्ञा पु० [स०] १. रोक। अवरोध। २ दमन। ३. चिकित्सा। रोकने का उपाय। ४. दंड। ५. पीड़न। सताना। ६. बंधन। ७. भर्त्सन। डाँट। फटकार। ८. सीमा। हद।
निग्रहना*-क्रि० स० [स० निग्रहण] १. पकड़ना। २. रोकना। ३. दंड देना।
निग्रहस्थान-सज्ञा पुं० [स०] वाद-विवाद या शास्त्रार्थ में वह अवसर जहाँ दो शास्त्रार्थ करनेवालों में से कोई उलटी-पुलटी या नासमझी की बात कहने लगे और उसे चुप करके शास्त्रार्थ बंद कर देना पड़े। यह पराजय का स्थान है। न्याय में ऐसे निग्रह-स्थान २२ कहे गए हैं।
निग्रही-वि० [सं० निग्रहिन्] १. रोकनेवाला। दबानेवाला। २. दंड देनेवाला।
निघंटु-सज्ञा पु० [स०] १. वैदिक शब्दों

का कोश। २. शब्द संग्रह मात्र।
निघटना*-क्रि० अ० दे० "घटना"।
निघर-घट-वि० [हिं० नि=नहीं+घरघाट] १. जिसका कहीं घर-घाट न हो। जिसे कहीं ठिकाना न हो। २. निर्लज्ज। बेहया।
मुहा०—निघर-घट देना=बेहयाई से झूठी सफाई देना।
निघरा-वि० [हिं० नि+घर] जिसके घर-बार न हो। निगोड़ा। (गाली)
निचय-संज्ञा पु० [सं०] १. समूह। २. निश्चय। ३. संचय।
निचल*-वि० दे० "निश्चल"।
निचला-वि० [हिं० नीचे+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० निचली] नीचे का। नीचेवाला।
वि० [सं० निश्चल] स्थिर। शांत।
निचाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० नीच] १. नीचा होने का भाव। नीचापन। २ नीचे की ओर दूरी या विस्तार। ३ कमीनापन।
निचान-संज्ञा स्त्री० [हिं० नीचा] १. नीचा-पन। २. ढाल। ढालुवाँपन। ढुलान।
निचिंत-वि० [सं० निश्चिंत] चिंतारहित। बेफ़िक्र। सुचित।
निचुड़ना-क्रि० अ० [सं० उप० नि+च्य-वन=चूना] १. रस से भरी या गीली चीज़ का इस प्रकार दबना कि रस या पानी टपककर निकल जाय। गरना। २. छूटकर चूना। गरना। ३. रस या सार-हीन होना। ४. शरीर का रस या सार निकल जाने से दुबला होना।
निचै*-संज्ञा पु० दे० "निचय"।
निचोड़-संज्ञा पु० [हिं० निचोड़ना] १. निचो-ड़ने स निकला हुआ रस आदि। २. सार। सत। ३ साराश। खुलासा।
निचोड़ना-क्रि० स० [हिं० निचुड़ना] १. गीली या रस भरी वस्तु को दबाकर या एंठकर उसका पानी या रस टपकाना। गारना। २. किसी वस्तु का सार भाग निकाल लेना। ३. सर्वस्व हरण कर लेना।
निचोना*†-क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।
निचोरना*†-क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।
निचोल-संज्ञा पु० [?] स्त्रियों की ओढ़नी या चादर।
निचोवना*†-क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।
निचौहाँ-वि० [हिं० नीचा+ औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० निचौहीं] नीचे की ओर किया हुआ या झुका हुआ। नमित।
निचौहैं-क्रि० वि० [हिं० निचौहाँ] नीचे की ओर।
निछक्का-संज्ञा पु० [सं० निम्+चक्र=मंडली] निराला। एकांत। निर्जन स्थान।
निछत्र-वि० [सं० निश्छत्र] १. छत्रहीन। बिना छत्र का। २. बिना राजचिह्न का।
वि० [सं० निःक्षत्र] क्षत्रियों से हीन।
निछनियाँ†-क्रि० वि० दे० "निछान"।
निछल*-वि० [सं० निश्छल] छलहीन।
निछान†-वि० [हिं० उप० नि+छानना] खालिस। विशुद्ध।
क्रि० वि० एक-दम। बिल्कुल।
निछावर-संज्ञा स्त्री० [सं० न्यासावर्त। मि० अ० निसार] १ एक उपचार या टोटका जिसमें किसी की रक्षा के लिये कोई वस्तु उसके सिर या सारे अंगों के ऊपर से घुमाकर दान कर देते या डाल देते हैं। उत्सर्ग। वारा-फेरा। उतारा।
मुहा०—(किसी का) किसी पर निछा-वर होना=किसी के लिये मर जाना।
२ वह द्रव्य या वस्तु जो ऊपर घुमाकर दान की जाय या छोड़ दी जाय। ३. इनाम। नेग।
निछोह, निछोही-वि०[हिं० उप० नि+छोह] १. जिसे छोह या प्रेम न हो। २. निर्दय।
निज-वि० [सं०] १. अपना। स्वकीय।
मुहा०—निज का=खास अपना।
२. खास। मुख्य। प्रधान। ३. ठीक। सही। सच्चा। यथार्थ।
अव्य० १. निश्चय। ठीक ठीक।
मुहा०—निज करके=निश्चय। अवश्य।
२. खासकर। विशेष करके। मुख्यतः।
निजकाना†-क्रि० अ० [फा० नज़दीक] निकट पहुँचना। समीप आना।
निज़ाम-संज्ञा पु० [अ०] १. बंदोबस्त। इंतज़ाम। २. हैदराबाद के नव्वाबों का पदवीसूचक नाम।
निजु†-वि० [हिं० निज] निज का।
निज़ोर†*-वि० [हिं० नि+फा० ज़ोर] निर्बल।
निझरना-क्रि० अ० [हिं० उप० नि+झरना] १. अच्छी तरह झड़ जाना। २. लगी हुई वस्तु के झड़ जाने से खाली हो जाना। ३. सार वस्तु से रहित हो जाना। खुल

हो जाना। ४. अपने को निर्दोष प्रमाणित करना। सफ़ाई देना।

निटोल—संज्ञा पु० [हिं० उप० नि+टोला] टोला मुहल्ला। पुरा। बस्ती।

निठि—क्रि० वि० दे० "नीठि"।

निठल्ला—वि०[हिं० उप० नि=नहीं+टहल=काम] १. जिसके पास कोई काम-धंधा न हो। खाली। २ बेरोजगार। बेकार।

निठल्लू—वि० दे० "निठल्ला"।

निठाला—संज्ञा पु० [हिं० नि+टहल=काम] १. ऐसा समय जब कोई काम धंधा न हो। खाली वक्त। २. वह वक्त या हालत जिसमें कुछ आमदनी न हो।

निठुर—वि० [सं० निष्ठुर] जो पराया कष्ट न समझे। निर्दय। क्रूर।

निठुरई—संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठुरता—संज्ञा स्त्री० [सं० निष्ठुरता] निर्दयता। क्रूरता। हृदय की कठोरता।

निठुराई—संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठौर—संज्ञा पु० [हिं० नि+ठौर] १. बुरी जगह। कुठांव। २. बुरा दांव। बुरी दशा।

निडर—वि० [हिं० उप० नि+डर] १. जिसे डर न हो। निःशंक। निर्भय। २. साहसी। हिम्मतवाला। ३. ढीठ। धृष्ट।

निडरपन, निडरपना—संज्ञा पु० [हिं० निडर+पन (प्रत्य०)] निर्भयता।

निड़े—क्रि० वि० [सं० निकट] निकट। पास।

निढाल—वि० [हिं० नि+ढाल=गिरा हुआ] १. शिथिल। थका-मांदा। अशक्त। २. सुस्त। उत्साहहीन।

निढिल—वि० [हिं० नि+ढीला] १. कसा या तना हुआ। २. कड़ा।

नितंत—क्रि० वि० दे० "नितांत"।

नितंब—संज्ञा पु० [सं०] १. कमर का पिछला उभरा हुआ भाग। चूतड़। (विशेषतः स्त्रियों का) २. स्कंध। कंधा।

नितंबिनी—संज्ञा स्त्री [सं०] सुंदर नितंबवाली स्त्री। सुंदरी।

नित—अव्य० [सं०] १. प्रति दिन। रोज़। यौ०—नित नित=प्रति दिन। रोज़ रोज़। नित नया=सब दिन नया रहनेवाला। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।

नितल—संज्ञा पु० [सं०] सात पातालों में से एक।

...वि० [सं०] १. बहुत अधिक। २. बिलकुल। सर्वथा। एक दम।

निति—अव्य० दे० "नित"।

नित्य—वि० [सं०] १. जो सब दिन रहे। शाश्वत। अविनाशी। त्रिकालव्यापी। २. प्रति दिन का। रोज़ का। अव्य० १. प्रति दिन। रोज़ रोज़। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।

नित्यकर्म—संज्ञा पु० [सं०] १. प्रति दिन का काम। २. वह धर्म संबंधी कर्म जिसका प्रति दिन करना आवश्यक ठहराया गया हो। नित्य की क्रिया।

नित्यक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] नित्यकर्म।

नित्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नित्य होने का भाव। अनश्वरता।

नित्यत्व—संज्ञा पु० [सं०] नित्यता।

नित्यनियम—संज्ञा पु० [सं०] प्रति दिन का बँधा हुआ व्यापार। रोज़ का कायदा।

नित्यनैमित्तिक कर्म—संज्ञा पु० [सं०] पर्व, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि कर्म।

नित्यप्रति—अव्य० [सं०] हर रोज़।

नित्यशः—अव्य० [सं०] १. प्रति दिन। रोज। २ सदा। सर्वदा।

नित्यसम—संज्ञा पु० [सं०] न्याय में वह अयुक्त खंडन जो इस प्रकार किया जाय कि अनित्य वस्तुओं में भी अनित्यता नित्य है; अतः धर्म के नित्य होने से धर्मी भी नित्य हुआ।

निथंभ—संज्ञा पु० [सं० नि+स्तंभ] खंभा।

निथरना—क्रि० अ० [हिं० नि+थिर+ना (प्रत्य०)] १. पानी या और किसी पतली चीज़ का स्थिर होना जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज़ के नीचे बैठ जाने से जल का अलग हो जाना।

निथार—संज्ञा पु० [हिं० निथारना] १. घुली हुई चीज के बैठ जाने से अलग हुआ साफ़ पानी। २ पानी के स्थिर होने से उसके तल में बैठी हुई चीज।

निथारना—क्रि० स० [हिं० निथरना] १. पानी या और किसी पतली चीज़ को स्थिर करना जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज़ को नीचे बैठाकर खाली पानी अलग करना।

निदई—वि० दे० "निर्दय"।

निदरना—क्रि० स० [सं० निरादर] १ निरा-

दूर करना। अपमान करना। बेइज़्ज़ती करना। २. तिरस्कार करना। त्याग करना। ३ मात करना। बढ़कर निकलना।
निदर्शन–संज्ञा पु० [सं०] १ दिखाने या प्रदर्शित करने का कार्य्य। २. उदाहरण।
निदर्शना–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें एक बात किसी दूसरी बात को ठीक ठीक कर दिखाती हुई कही जाती है।
निदलन*–संज्ञा पु० दे० "निर्दलन"।
निदहना*–क्रि० स० [सं० निदहन] जलाना।
निदाघ–संज्ञा पु० [सं०] १ गरमी। ताप। २. धूप। घाम। ३. ग्रीष्म काल। गरमी।
निदान–संज्ञा पु० [सं०] १. आदि कारण। २ कारण। ३. रोगनिर्णय। रोगलक्षण। रोग की पहचान। ४. अंत। अवसान। ५. तप के फल की चाह। ६. शुद्धि।
अव्य० अंत में। आखिर।
वि० अंतिम या निम्न श्रेणी का। निकृष्ट।
निदारुण–वि० [सं०] १ कठिन। घोर। भयानक। २. दु:सह। ३. निर्दय।
निदिध्यासन–संज्ञा पु० [सं०] फिर फिर स्मरण। बार बार ध्यान में लाना।
निदेश–संज्ञा पु० [सं०] १. शासन। २. आज्ञा। हुक्म। ३ कथन। ४ पास।
निदेस*–संज्ञा पु० दे० "निदेश"।
निदोष*–वि० दे० "निर्दोष"।
निद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "निधि"।
निद्र–संज्ञा पु० [सं०] एक उपसंहारक अस्त्र।
निद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सचेष्ट अवस्था के बीच बीच में होनेवाली प्राणियों की वह निश्चेष्ट अवस्था जिसमें उनकी चेतन वृत्तियाँ (और कुछ अचेतन वृत्तियाँ भी) रुकी रहती हैं और उसे विश्राम मिलता है। नींद। स्वप्न। सुप्ति।
निद्रायमान–वि० [सं०] जो नींद में हो।
निद्रालु–वि० [सं०] निद्राशील। सोनेवाला।
निद्रित–वि० [सं०] सोया हुआ।
निधड़क–क्रि० वि० [हिं० नि = नहीं + धड़क] १ बे रोक। बिना किसी रुकावट के। २ बिना आगा पीछा किए। ३ बेखटके।
निधन–संज्ञा पु० [सं०] १ नाश। २ मरण। ३. कुल। खानदान। ४. कुल का अधिपति। ५ विष्णु।
वि० धनहीन। निर्धन। दरिद्र।
निधनी–वि० [हिं० नि + धनी] निर्धन।
निधान–संज्ञा पु० [सं०] १. आधार। आश्रय। २ निधि। ३. वह स्थान जहाँ कोई वस्तु लीन हो। लयस्थान।
निधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गड़ा हुआ खजाना। खजाना। २ कुबेर के नौ प्रकार के रत्न—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और वर्च्च। ३ समुद्र। ४ आधार। घर। जैसे, गुणनिधि। ५. विष्णु। ६. शिव। ७ नौ की संख्या।
निधिनाथ, निधिपति–संज्ञा पु० [सं०] निधियों के स्वामी, कुबेर।
निनरा–वि० [सं० नि + निकट, प्रा० निनिअड] न्यारा। अलग। जुदा। दूर।
निनाद–संज्ञा पु० [सं०] शब्द। आवाज।
निनादी–वि० [सं० निनादिन्] [स्त्री० निनादिनी] शब्द करनेवाला।
निनान*–संज्ञा पु० [सं० निदान] १. अंत। २. लक्षण।
क्रि० वि० अंत में। आखिर।
वि० १. परले सिरे का। बिलकुल। एकदम। २. बुरा। निकृष्ट।
निनारा–वि० [सं० नि + निकट] १. अलग। जुदा। भिन्न। २. दूर। हटा हुआ।
निनावाँ–संज्ञा पु० [हिं० नन्हा ?] मुँह के भीतरी भागों में निकलनेवाले महीन महीन लाल दाने जिनमें छरछराहट होती है।
निनौना†–क्रि० स० [हिं० नवना = झुकना] नीचे करना। झुकाना। नवाना।
निनानवे–वि० [सं० नवनवति] नब्बे और नौ।
संज्ञा पु० नब्बे और नौ की संख्या। ९९।
मुहा०—निनानबे के फेर में आना या पड़ना = धन बढ़ाने की धुन में होना।
निनौना*–क्रि० स० [सं० नवन] झुकाना।
निन्यारा*–वि० दे० "निनारा"।
निपंग –वि० [सं० नि + पंगु] जिसके हाथ पैर टूटे हों। अपाहिज। निकम्मा।
निपजना*†–क्रि० अ० [सं० निष्पद्यते] १ उपजना। उत्पन्न होना। उगना। २. बढ़ना। पुष्ट होना। पकना। ३ बनना।
निपजी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० निपजना] १ लाभ। मुनाफ़ा। २ उपज।
निपत्र–वि० [सं० निष्पत्र] पत्रहीन। ठूँठा।
निपट–अव्य० [हिं० नि + पट] १. निरा। विशुद्ध। केवल। एक मात्र। २ सरासर।

एक दम। बिल्कुल।
निपटना–क्रि० अ० दे० "निबटना"।
निपतन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निपतित] अधःपतन। गिरना। गिराव।
निपात–संज्ञा पुं० [सं०] १. पतन। गिराव। पात। २. अधःपतन। ३. विनाश। ४. मृत्यु। क्षय। नाश। ५. शाब्दिकों के मत से वह शब्द जो व्याकरण में दिए नियमों के अनुसार न बना हो।
वि० [हिं० नि+पत्ता] बिना पत्तों का।
निपातन–संज्ञा पुं० [सं०] १. गिराने का कार्य्य। २. नाश। ३. वध करने का कार्य्य।
निपातना–क्रि० स० [हिं० निपातन] १. नीचे गिराना। २. नष्ट करना। काटकर गिराना। ३. मार गिराना। वध करना।
निपाती–वि० [सं० निपातिन्] १. गिरानेवाला। फेंकनेवाला। २. मारनेवाला।
संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
वि० [हिं० नि+पाती] बिना पत्ते का।
निपीडन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निपीड़ित] १. पीड़ित करना। तकलीफ़ देना। २. मलना-दलना। ३. पेरना।
निपीड़ना–क्रि० स० [सं० निपीड़न] १. दबाना। मलना दलना। २. कष्ट पहुँचाना। पीड़ित करना।
निपुण–वि० [सं०] दक्ष। कुशल। प्रवीण।
निपुणता–संज्ञा स्त्री०[सं०] दक्षता। कुशलता।
निपुणाई–संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।
निपुत्री–वि० [हिं० नि+पुत्री] निपूता। निःसंतान।
निपुन–वि० दे० "निपुण"।
निपुनई–संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।
निपूत, निपूता–वि०–[हिं० नि+पूत] [स्त्री० निपूती] अपुत्र। पुत्रहीन।
निफन–वि० [सं० निष्पन्न] पूर्ण। पूरा।
क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।
निफरना–क्रि० अ० [हिं० निफारना] चुभकर या धँसकर आर-पार होना।
क्रि० अ० [सं० नि+स्फुट] खुलना। उद्घाटित होना। साफ़ होना।
निफल–वि० [सं० निष्फल] निरर्थक।
निफाक–संज्ञा पुं० [अ०] १. विरोध। द्रोह। वैर। २. फूट। बिगाड़। अनबन।
...ोट–वि० [सं० नि+स्फुट] स्पष्ट।
...ध–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। २. वह व्याख्या जिसमें अनेक मतों का संग्रह हो। ३. लिखित प्रबंध। लेख। ४. गीत।
निबंधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निबद्ध] १. बंधन। २. व्यवस्था। नियम। बंधेज। ३. कर्त्तव्य। बंधन। ४. हेतु। कारण।
निबकौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० नीम+कौड़ी] १. नीम का फल। २. नीम का बीज।
निबटना–क्रि० अ० [सं० निवर्त्तन] [संज्ञा निबटेरा, निबटाव] १. निवृत्त होना। छुट्टी पाना। फुरसत पाना। २ समाप्त होना। पूरा होना। ३. निर्णीत होना। तै होना। ४. चुकना। खतम होना। ५. शौच आदि से निवृत्त होना।
निबटाना–क्रि० स० [हिं० निबटना] १. पूरा करना। समाप्त करना। खतम करना। २. चुकाना। बेबाक़ करना। ३. तै करना।
निबटाव–संज्ञा पुं० दे० "निबटेरा"।
निबटेरा–संज्ञा पुं० [हिं० निबटना] १. निबटने का भाव या क्रिया। छुट्टी। २. समाप्ति। ३. फ़ैसला। निश्चय।
निबड़ना–क्रि० अ० दे० "निबटना"।
निबद्ध–वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २. निरुद्ध। रुका हुआ। ३. ग्रथित। गुथा हुआ। ४. बैठाया या जड़ा हुआ।
निबर–वि० दे० "निर्बल"।
निबरना–क्रि० अ० [सं० निवृत्त] १. बँधी या लगी वस्तु का अलग होना। छूटना। २ मुक्त होना। उद्धार पाना। ३. छुट्टी पाना। फुरसत पाना। ४. (काम) पूरा होना। समाप्त होना। ५. निर्णय होना। फ़ैसल होना। ६. एक में मिली-जुली वस्तुओं का अलग होना। ७. उलझन दूर होना। सुलझना। ८ दूर होना।
निबल–वि० [सं० निर्बल] दुर्बल।
निबह–संज्ञा पुं० [?] समूह। झुंड।
निबहना–क्रि० अ० [हिं० निबाहना] १. पार पाना। निकलना। छुट्टी पाना। २. निर्वाह होना। बराबर चला चलना। ३. पूरा होना। सपरना। ४. निरंतर व्यवहार होना। पालन होना।
निबहुर–संज्ञा पुं० [हिं० नि+बहुरना] जहाँ से कोई न लौटे। यमद्वार।
निबहुरा–वि० [हिं० नि+बहुरना] जो चला जाय और न लौटे। (गाली)
निबाह–संज्ञा पुं० [सं० निर्वाह] १. निबा-

हने की क्रिया या भाव। रहन। रहायस। गुजारा। २. किसी बात के अनुसार निरंतर व्यवहार। सबंध या परंपरा की रक्षा। ३. पूरा करने का कार्य्य। पालन। ४. छुटकारे का ढंग। बचाव का रास्ता।

निबाहना–क्रि० स० [सं० निर्वाहन] १. (किसी बात का) निर्वाह करना। बराबर चलाए चलना। जारी रखना। २. पालन करना। चरितार्थ करना। ३. बराबर करते जाना। सपराना।

निबिड़–वि० दे० "निविड़"।

निबुआ–संज्ञा पुं० दे० "नीबू"।

निबुकना–क्रि० अ० [सं० निर्मुक्त] १. छुटकारा पाना। छूटना। २. बंधन खुलना।

निबेड़ना–क्रि० स० [सं० निवृत्त] १. (बंधन आदि) छुड़ाना। उन्मुक्त करना। २. बिलगाना। छाँटना। चुनना। ३. उलझन दूर करना। सुलझाना। ४ निर्णय करना। फैसल करना। ५. दूर करना। अलग करना। ६. पूरा करना। निबटाना।

निबेड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० निबेड़ना] १. छुटकारा मुक्ति। २. बचाव। उद्धार। ३. बिलगाव। छाँट। चुनाव। ४. सुलझाने की क्रिया या भाव। ५ त्याग। ६. निबटेरा। समाप्ति। ७. निर्णय। फैसला।

निबेरना–क्रि० स० दे० "निबेड़ना"।

निबेरा–संज्ञा पुं० दे० "निबेड़ा"।

निबेहना–क्रि० स० दे० "निबेरना"।

निबौरी, निबौली–संज्ञा स्त्री० [सं० निम्ब + वर्तुल] निबकौरी। नीम का फल।

निभ–संज्ञा पुं० [सं०] प्रकाश। प्रभा। वि० तुल्य। समान।

निभना–क्रि० अ० [हिं० निबहना] १. पार पाना। छुट्टी पाना। छुटकारा पाना। २. जारी रहना। लगातार बना रहना। ३ गुजारा होना। रहायस होना। ४. पूरा होना। सपरना। भुगतना। ५. पालन होना। चरितार्थ होना।

निभरम–वि० [सं० निर्भ्रम] जिसे या जिसमें कोई शंका न हो। भ्रमरहित। क्रि० वि० बेखटके। बेधड़क।

निभरोसी–वि० [हिं० नि = नहीं, भरोसा] १ जिसे कोई भरोसा न रह गया हो। निराश। हताश। २. जिसे किसी का आसरा-भरोसा न हो। निराश्रय।

निभागा–वि० [हिं० नि + भाग्य] अभागा।

निभाना–क्रि० स० [हिं० निबाहना] १. (किसी बात का) निर्वाह करना। बराबर चलाए चलना। जारी रखना। २. चरितार्थ करना। पालन करना। ३. बराबर करते जाना। चलाना। भुगताना।

निभाव–संज्ञा पु० दे० "निबाह"।

निभृत–वि० [सं०] १. रखा हुआ। २. निश्चल। अटल। ३. गुप्त। छिपा हुआ। ४. बंद किया हुआ। ५ निश्चित। स्थिर। ६. नम्र। विनीत। ७ शांत। धीर। ८ निर्जन। एकांत। ९. भरा हुआ। पूर्ण।

निभ्रांत–वि० दे० 'निर्भ्रांत"।

निमंत्रण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० निमंत्रित] १. किसी कार्य्य के लिये नियत समय पर आने का अनुरोध करना। बुलावा। आह्वान। २. खाने का बुलावा। न्योता।

निमंत्रणपत्र–संज्ञा पु० [सं०] वह पत्र जिसके द्वारा किसी को निमंत्रण दिया जाय।

निमंत्रना–क्रि० स० [सं० निमंत्रण] न्योता देना।

निमंत्रित–वि० [सं०] जिसे न्योता दिया गया हो। आहूत।

निमक–संज्ञा पु० दे० "नमक"।

निमकी–संज्ञा स्त्री० [फा० नमक] १. नीबू का अचार। २. मैदे की मोयनदार नमकीन टिकिया।

निमकौड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "निबौली"।

निमग्न–वि० [सं०] [स्त्री० निमग्ना] १. डूबा हुआ। मग्न। २ तन्मय।

निमज्जन–संज्ञा पु० [सं०] डूबकर किया जानेवाला स्नान। अवगाहन।

निमज्जना–क्रि० अ० [सं० निमज्जन] डूबना। गोता लगाना। अवगाहन करना।

निमज्जित–वि० [सं०] १. डूबा हुआ। मग्न। २ स्नात। नहाया हुआ।

निमटना–क्रि० अ० दे० "निबटना"।

निमता–वि० [हिं० नि + माता] जो उन्मत्त न हो।

निमान–संज्ञा पु० [सं० निम्न] १. नीचा स्थान। गड्ढा। २. जलाशय।

निमाना–वि० [सं० निम्न] [स्त्री० निमानी] १. नीचा। ढालुवाँ। नीचे की ओर गया

हुआ। २. नम्र। विनीत। ३. दब्बू।

निमि-संज्ञा पुं० [सं०] १. महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। २. राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। इन्हीं से मिथिला का विदेह वंश चला। ३ आँखों का मिचना। निमेष।

निमिख-संज्ञा पुं० दे० "निमिष"।

निमित्त-संज्ञा पुं० [सं०] १. हेतु। कारण। २. चिह्न। लक्षण। ३. उद्देश्य।

निमित्तक-वि० [सं०] किसी हेतु से होनेवाला। जनित। उत्पन्न।

निमित्त कारण-संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी सहायता या कर्तृत्व से कोई वस्तु बने। (न्याय)। विशेष—दे० "कारण"।

निमिराज -संज्ञा पुं० [सं०] राजा जनक।

निमिष-संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।

निमूद-वि० [हिं० मुँदना] मुँदा हुआ। बंद।

निमेख-संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।

निमेट-वि० [हिं० नि + मिटना] न मिटनेवाला।

निमेष-संज्ञा पुं० [सं०] १. पलक का गिरना। आँख का झपकना। २. पलक मारने भर का समय। पल। क्षण।

निमोना- संज्ञा पुं० [सं० नवान्न] चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों का बनाया हुआ रसेदार व्यंजन।

निम्न-वि० [सं०] नीचा।

निम्नगा-संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

नियंता-संज्ञा पुं० [सं० नियंतृ] [स्त्री० नियंत्री] १. नियम बाँधनेवाला। व्यवस्था करनेवाला। २. कार्य्य को चलानेवाला। ३ नियम पर चलानेवाला। शासक।

नियंत्रण-संज्ञा पुं० [सं०] नियम आदि में बाँधना या उसके अनुसार चलाना।

नियंत्रित-वि० [सं०] नियम से बँधा हुआ। कायदे का पाबंद। प्रतिबद्ध।

नियत-वि० [सं०] १ नियम द्वारा स्थिर। बँधा हुआ। परिमित। २ ठीक किया हुआ। निश्चित। मुकर्रर। ३. नियोजित। स्थापित। तैनात।

संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।

नियताप्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में अन्य उपायों को छोड़कर एक ही उपाय से फल-प्राप्ति का निश्चय।

नियति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नियत होने का भाव। बंधेज। २. स्थिरता। मुकर्ररी। ३. भाग्य। दैव। अदृष्ट। ४. बँधी हुई बात। अवश्य होनेवाली बात। ५ पूर्वकृत कर्म का निश्चित परिणाम।

नियम-संज्ञा पुं० [सं०] १. विधि या निश्चय के अनुकूल प्रतिबंध। परिमिति। रोक। पाबंदी। २. दबाव। शासन। ३. बँधा हुआ क्रम। परंपरा। दस्तूर। ४. ठहराई हुई रीति। विधि। व्यवस्था। क़ानून। ज़ाब्ता। ५ शर्त्त। ६. संकल्प। प्रतिज्ञा। व्रत। ७. योग के आठ अंगों में से एक जिसमें शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान किया जाता है। ८. एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात का एक ही स्थान पर नियम कर दिया जाय; अर्थात् उसका होना एक ही स्थान पर बतलाया जाय। ९ विष्णु। १०. महादेव।

नियमन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० नियमित, नियम्य] १. नियमबद्ध करने का कार्य्य। क़ायदा बाँधना। २ शासन।

नियमबद्ध-वि० [सं०] नियमों से बँधा हुआ। क़ायदे का पाबंद।

नियमित-वि० [सं०] १. बँधा हुआ। क्रमबद्ध। २. क़ायदे या क़ानून के मुताबिक़। नियमबद्ध।

नियर†-अव्य० [सं० निकट] समीप। पास।

नियराई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० नियर + आई (प्रत्य०)] निकटता। सामीप्य।

नियराना†-क्रि० अ० [हिं० नियर + आना (प्रत्य०)] निकट पहुँचना। नज़दीक आना।

नियाई:‒-वि० दे० "न्यायी"।

नियान· -संज्ञा पुं० [सं० निदान] परिणाम। अव्य० अंत में। आख़िर।

नियामक-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० नियामिका] १. नियम करनेवाला। २. व्यवस्था या विधान करनेवाला। ३. मारनेवाला।

नियामत-संज्ञा स्त्री० [अ० नेअमत] १. अलभ्य पदार्थ। दुर्लभ पदार्थ। २ स्वादिष्ट भोजन। उत्तम व्यंजन। ३. धन दौलत।

नियार-संज्ञा पुं० [हिं० न्यारा ?] जौहरी या सुनारों की दूकान का कूड़ा-करकट।

नियारा†-वि० [सं० निर्निकट] अलग। दूर।

नियारिया-संज्ञा पुं० [हिं० नियार] १. सुनारों या जौहरियों की राख, कूड़ा-करकट आदि में से माल निकालनेवाला। २. चतुर मनुष्य। चालाक आदमी।

नियारे०।–अव्य० दे० "न्यारे"।
नियाव‡–संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।
नियुक्त–वि० [सं०] १. नियोजित। लगाया हुआ। तैनात। मुकर्रर। २. तत्पर किया हुआ। प्रेरित। ३. स्थिर किया हुआ।
नियुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुकर्ररी। तैनाती।
नियुत–वि० [सं०] १. एक लाख। लक्ष। २. दस लाख।
नियुद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] बाहुयुद्ध। कुश्ती।
नियोक्ता–संज्ञा पुं० [सं० नियोक्तृ] १. नियोजित करनेवाला। २. नियोग करनेवाला।
नियोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. नियोजित करने का कार्य। तैनाती। मुकर्ररी। २. प्रेरणा। ३. अवधारण। ४. प्राचीन आर्यों की एक प्रथा जिसके अनुसार यदि किसी स्त्री का पति न होता या उसे अपने पति से संतान न होती तो वह अपने देवर या पति के और किसी गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी। (मनु) ५. आज्ञा।
नियोजक–संज्ञा पुं० [सं०] काम में लगानेवाला। मुकर्रर करनेवाला।
नियोजन संज्ञा पुं० [सं०] [वि० नियोजित, नियोज्य, नियुक्त] किसी काम में लगाना। तैनात या मुकर्रर करना।
निरकार०–संज्ञा पुं० दे० "निराकार"।
निरंकुश–वि० [सं०] जिसके लिये कोई अंकुश या प्रतिबंध न हो। बिना डर का।
निरंग–वि० [सं०] १. अंग-रहित। २. केवल। खाली। जिसमें और कुछ न हो।
संज्ञा पुं० रूपक अलंकार का एक भेद।
वि० [हिं० उप० नि = नहीं + रंग] १. बेरंग। बदरंग। विवर्ण। २. उदास। बेरौनक।
निरंजन–वि० [सं०] १. अंजन-रहित। बिना काजल का। जैसे, निरंजन नेत्र। २. कल्मष शून्य। दोष रहित। ३. माया से निर्लिप्त। (ईश्वर का एक विशेषण)
संज्ञा पुं० परमात्मा।
निरंतर–वि० [सं०] १. अंतर-रहित। जो बराबर चला गया हो। अविच्छिन्न। २. निबिड़। घना। गझिन। ३. लगातार या बराबर होनेवाला। ४. सदा रहनेवाला। अविचल। स्थायी।
क्रि० वि० बराबर। सदा। हमेशा।
निरंध–वि० [सं०] १. भारी अंधा। २. महामूर्ख। ३. बहुत अँधेरा।
निरंभ–वि० [सं० निरंभस्] १. निर्जल। २. बिना पानी पिए रह जानेवाला।
निरंश–वि० [सं०] १. जिसे उसका भाग न मिला हो। २. बिना अक्षांश का।
निरकेवल।–वि० [सं० निस्+केवल] १. खालिस। बिना मेल का। २. स्वच्छ।
निरक्ष देश–संज्ञा पुं० [सं०] भूमध्य रेखा के आस-पास के देश जिनमें रात और दिन बराबर होते हैं।
निरखन०–संज्ञा पुं० दे० "निरीक्षण"।
निरक्षर–वि० [सं०] १. अक्षर-शून्य। २. अनपढ़। मूर्ख।
निरक्ष-रेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाड़ीमंडल। निरक्षवृत्त। क्रांतिवृत्त।
निरखना०–क्रि० स० [सं० निरीक्षण] देखना। ताकना। अवलोकन करना।
निरग०–संज्ञा पुं० दे० "नृग"।
निरगुन०–वि० दे० "निर्गुण"।
निरच्छू–वि० [सं० निश्चिंत] जिसे फुरसत मिल गई हो। निश्चिंत। खाली।
निरच्छ०–वि० [सं० निरक्षि] अंधा।
निरजर–वि० [हिं० नि+सं० जरा] जो कभी जीर्ण या पुराना न हो।
निरजोस–संज्ञा पुं० [सं० निर्यास] १. निचोड़। २. निर्णय।
निरजोसी–वि० [हिं० निरजोस] १. निचोड़ निकालनेवाला। २. निर्णय करनेवाला।
निरझर०–संज्ञा पुं० दे० "निर्झर"।
निरत–वि० [सं०] किसी काम में लगा हुआ। तत्पर। लीन। मशगूल।
०‡–संज्ञा पुं० दे० "नृत्य"।
निरतना०–क्रि० स० [सं० नर्तन] नाचना।
निरधातु–वि० [सं० निर्धातु] शक्तिहीन।
निरधार०–संज्ञा पुं० दे० "निर्धार"।
निरधारना–क्रि० स० [सं० निर्धारण] १. निश्चय करना। स्थिर करना। २. मन में धारण करना। समझना।
निरनुनासिक–वि० [सं०] (वर्ण) जिसका उच्चारण नाक के संबंध से न हो।
निरन्न–वि० [सं०] १. अन्नरहित। २. निराहार। जो अन्न न खाए हो।
निरन्ना–वि० [सं० निरन्न] निराहार।
निरपना०– वि० [सं० निर+हिं० अपना] १. जो अपना न हो। २. बेगाना। गैर।

निरपराध–वि॰ [सं॰] अपराध-रहित। बेकसूर। निर्दोष।
क्रि॰ वि॰ बिना कोई कसूर किए।
निरपराधी–वि॰ दे॰ "निरपराध"।
निरपेक्ष–वि॰ [सं॰] [संज्ञा निरपेक्षा, निरपेक्षी] १. जिसे किसी बात की अपेक्षा या चाह न हो। बेपरवा। २. जो किसी पर निर्भर न हो। ३ अलग। तटस्थ।
निरबंसी–वि॰ [सं॰ निर्वंश] जिसे वंश या संतान न हो।
निरबल–वि॰ दे॰ "निर्बल"।
निरबहना–क्रि॰ अ॰ दे॰ "निभना"।
निरबेद–संज्ञा पु॰ [सं॰ निर्वेद?] १ वैराग्य। २ ताप।
निरबेरा–संज्ञा पु॰ दे॰ "निबेरा"।
निरभिमान–वि॰ [सं॰] जिसे अभिमान न हो। अहंकार-शून्य।
निरभिलाष–वि॰ [सं॰] अभिलाषा-रहित।
निरभ्र–वि॰ [सं॰] बिना बादल का।
निरमना–क्रि॰ स॰ [सं॰ निर्माण] निर्माण करना। बनाना।
निरमर, निरमल–वि॰ दे॰ "निर्मल"।
निरमान–संज्ञा पु॰ दे॰ "निर्माण"।
निरमाना–क्रि॰ स॰ [सं॰ निर्माण] बनाना। तैयार करना। रचना।
निरमायल–संज्ञा पु॰ दे॰ "निर्माल्य"।
निरमूलना–क्रि॰ स॰ [सं॰ निर्मूलन] १. निर्मूल करना। २. नष्ट करना।
निरमोल–वि॰ [सं॰ निर+हिं॰ मोल] १. अनमोल। अमूल्य। २ बहुत बढ़िया।
निरमोही–वि॰ दे॰ "निर्मोही"।
निरय–संज्ञा पुं॰ [सं॰] नरक।
निरयण–संज्ञा पु॰ [सं॰] अयन रहित गणना। ज्योतिष में गणना की एक रीति।
निरर्थक–वि॰ [सं॰] १. अर्थशून्य। बेमानी। २. न्याय में एक निग्रहस्थान। ३ बिना मतलब का। व्यर्थ। ४ निष्फल।
निरवयव–वि॰ [सं॰] निराकार।
निरवलंब–वि॰ [सं॰] १. अवलंबहीन। आधार रहित। बिना सहारे। २. निराश्रय। जिसका कोई सहायक न हो।
निरवार–संज्ञा पु॰ [हिं॰ निरवारना] १. निस्तार। छुटकारा। बचाव। २. छुड़ाने या सुलझाने का काम। ३ निबटेरा।
निरवारना–क्रि॰ स॰ [सं॰ निवारण] १. टालना। रोकनेवाली वस्तु को हटाना। २. मुक्त करना। छुड़ाना। ३. छोड़ना। त्यागना। ४ गाँठ आदि छुड़ाना। सुलझाना। ५. निर्णय करना। ते करना।
निरवाह–संज्ञा पु॰ दे॰ "निर्वाह"।
निरशन–संज्ञा पु॰ [सं॰] भोजन न करना। लंघन। उपवास।
निरसंक–वि॰ दे॰ "निःशंक"।
निरस–वि॰ [सं॰] १ जिसमें रस न हो। रसविहीन। २. बद-जायका। फीका। ३. असार। निस्तत्त्व। ४. रूखा-सूखा।
निरसन–संज्ञा पु॰ [सं॰] [वि॰ निरसनीय, निरस्य] १. फेंकना। दूर करना। हटाना। २ खारिज करना। रद्द करना। ३ निराकरण। परिहार। ४. निकालना। ५. नाश। ६. वध।
निरस्त्र–वि॰ [सं॰] अस्त्रहीन। बिना हथियार का।
निरहंकार–वि॰ [सं॰] अभिमान-रहित।
निरहेतु–वि॰ दे॰ "निर्हेतु"।
निरा–वि॰ [सं॰ निरालय] [स्त्री॰ निरी] १. विशुद्ध। बिना मेल का। खालिस। २. जिसके साथ और कुछ न हो। केवल। ३. निपट। नितांत। एक दम। बिलकुल।
निराई–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ निराना] १. फ़सल के पौधों के आसपास उगनेवाले तृण, घास आदि दूर करना। २. निराने की मज़दूरी।
निराकरण–संज्ञा पु॰ [सं॰] [वि॰ निराकरणीय, निराकृत।] १. छाँटना। अलग करना। २. हटाना। दूर करना। ३. मिटाना। रद करना। ४. शमन। निवारण। परिहार। ५. खंडन। युक्ति या दलील को काटने का काम।
निराकार–वि॰ [सं॰] जिसका कोई आकार न हो। जिसके आकार की भावना न हो।
संज्ञा पु॰ १. ईश्वर। २. आकाश।
निराकुल–वि॰ [सं॰] १. जो आकुल न हो। जो घबराया न हो। २. बहुत व्याकुल। बहुत घबराया हुआ।
निराखर–वि॰ [सं॰ निरक्षर] १. जिसमें अक्षर न हों। बिना अक्षर का। २ मौन। चुप। ३. अपढ़। मूढ़।
निराट–वि॰ [हिं॰ निराला] एक मात्र। निरा। बिलकुल। निपट।

का

अभाव। अपमान। बेइज्जती।

निराधार-वि० [सं०] १. जिसे सहारा न हो या जो सहारे पर न हो। २. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। अयुक्त। मिथ्या। झूठ। ३. जिसे या जिसमें जीविका आदि का सहारा न हो। ४. जो बिना अन्न-जल आदि के हो।

निराना-क्रि० स० [सं० निराकरण] फ़सल के पौधों के आस-पास की घास खोदकर दूर करना जिसमें पौधों की बाढ़ न रुके। नींदना। निकाना।

निरापद-वि० [सं०] १. जिसे कोई आफ़त या डर न हो। सुरक्षित। २. जिससे हानि या अनर्थ की आशंका न हो। ३. जहाँ किसी बात का डर या खतरा न हो।

निरापन*-वि० [सं० नि. + हिं० अपना] जो अपना न हो। पराया। बेगाना।

निरापुन-वि० दे० "निरापन"।

निरामय-वि० [सं०] नीरोग। तंदुरस्त।

निरामिप-वि० [सं०] १. जिसमें मांस न मिला हो। २. जो मांस न खाय।

निरारा-वि० [हिं० निराला] अलग। पृथक्।

निरालंब-वि० [सं०] १. बिना आलंब या सहारे का। निराधार। २. निराश्रय।

निरालस्य-वि० [सं०] जिसमें आलस्य न हो। तत्पर। फुरतीला। चुस्त।

निराला-संज्ञा पुं० [सं० निरालय] [स्त्री० निराली] एकांत स्थान। ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो।

वि० १ जहाँ कोई मनुष्य या बस्ती न हो। एकांत। निर्जन। २. विलक्षण। सब से भिन्न। अद्भुत। अजीब। ३. अनूठा। अपूर्व। बहुत बढ़िया।

निरावना†-क्रि० स० दे० "निराना"।

निरावलंब-वि० [सं०] बिना सहारे का।

निराश-वि० [हिं० नि + आशा] आशाहीन। जिसे आशा न हो। नाउम्मीद।

निराशा-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाउम्मेदी।

निराशी*-वि० [सं० निराश] १. हताश। नाउम्मीद। २. उदासीन। विरक्त।

निराश्रय-वि० [सं०] १. आश्रयरहित। बिना सहारे का। २. असहाय। अशरण।

निरास*-वि० दे० "निराश"।

निरासी*-वि० [सं० निराश] १. दे० "निराशी"। २. उदास। बेरौनक।

निराहार-वि० [सं०] १. आहार-रहित। जो बिना भोजन के हो। २. जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाता हो।

निरिंद्रिय-वि० [सं०] इंद्रिय शून्य। जिसे कोई इंद्रिय न हो।

निरिच्छना*-क्रि० स० [सं० निरीक्षण] देखना।

निरीक्षक-संज्ञा पुं० [सं०] १. देखनेवाला। २. देख रेख करनेवाला।

निरीक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्ष्यमाण] १. देखना। दर्शन। २. देख रेख। निगरानी। ३. देखने की मुद्रा या ढँग। चितवन।

निरीक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] देखना।

निरीश्वरवाद-संज्ञा पुं० [सं०] यह सिद्धांत कि कोई ईश्वर नहीं है।

निरीश्वरवादी-संज्ञा पुं० [सं०] जो ईश्वर का अस्तित्व न माने। नास्तिक।

निरीह-वि० [सं०] १. जो किसी बात के लिये प्रयत्न न करे। २. जिसे किसी बात की चाह न हो। ३. उदासीन। विरक्त। ४. शांतिप्रिय।

निरुआर†-संज्ञा पुं० दे० "निरुवार"।

निरुक्त-वि० [सं०] १. निश्चय रूप से कहा हुआ। व्याख्या किया हुआ। २. नियुक्त। ठहराया हुआ।

संज्ञा पुं० छः वेदांगों में से एक जिसमें यास्क मुनि की दी हुई वैदिक शब्दों के निघंटु की व्याख्या है। वेद का चौथा अंग।

निरुक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा कथन हो। २. एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का मनमाना अर्थ किया जाय, परंतु वह अर्थ सयुक्तिक हो।

निरुज*-वि० दे० "नीरज"।

निरुत्तर-वि० [सं०] १. जिसका कुछ उत्तर न हो। लाजवाब। २. जो उत्तर न दे सके।

निरुत्साह-वि० [सं०] उत्साहहीन। [illegible]

निरुद्ध-वि० [सं०] रुका या [illegible]

संज्ञा पुं० योग में चित्त [illegible] जिसमें वह अपनी [illegible] प्राप्त होकर स्थित [illegible]

निरुद्यम-वि० [illegible] जिसके [illegible]

रहित। बेकाम।

निरुद्यमी-संज्ञा पुं० [सं० निरुद्यमिन्] जो कोई उद्यम न करता हो। बेकार। निकम्मा।

निरुद्योग-वि० [सं०] उद्योग-रहित। बेकार।

निरुपद्रव-वि० [सं०] जिसमें कोई उपद्रव न हो।

निरुपद्रवी-संज्ञा पुं० [सं० निरुपद्रविन्] जो उपद्रव न करे। शांत।

निरुपम-वि० [सं०] जिसकी उपमा न हो। उपमा रहित। बेजोड़।

निरुपयोगी-वि० [सं०] जो उपयोग में न आ सके। व्यर्थ। निरर्थक।

निरुपाधि-वि० [सं०] १. उपाधि-रहित। बाधा-रहित। २. माया-रहित।
संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म।

निरुपाय-वि० [सं०] १. जो कुछ उपाय न कर सके। २. जिसका कोई उपाय न हो।

निरुवरना‡-क्रि० अ० [सं० निवारण] कठिनता आदि का दूर होना। सुलझना।

निरुवार‡-संज्ञा पुं० [सं० निवारण] १. छुड़ाने का काम। मोचन। २. छुटकारा। बचाव। ३. सुलझाने का काम। ४. तै करना। निबटाना। ५. निर्णय। फ़ैसला।

निरुवारना‡-क्रि० स० [हिं० निरुवार] १. छुड़ाना। मुक्त करना। २. सुलझाना। उलझन मिटाना। ३. तै करना। निबटाना। ४. निर्णय करना। फ़ैसला करना।

निरुढ़-वि० [सं०] १. उत्पन्न। २. प्रसिद्ध। विख्यात। ३. अविवाहित। कुँआरा।

निरुढ़-लक्षणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमें शब्द का गृहीत अर्थ रूढ़ हो गया हो; अर्थात् वह केवल प्रसंग या प्रयोजन-वश ही न ग्रहण किया गया हो।

निरुढ़ा-संज्ञा स्त्री० दे० "निरुढ़ लक्षणा"।

निरूप-वि० [हिं० नि + रूप] १. रूप-रहित। निराकार। २. कुरूप। बदशक्ल।

निरूपक-वि० [सं०] किसी विषय का निरूपण करनेवाला।

निरूपण-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रकाश। २. किसी विषय का विवेचनापूर्वक निर्णय। विचार। ३. निदर्शन।

निरूपना‡-क्रि० अ० [सं० निरूपण] निर्णय करना। ठहराना। निश्चित करना।

निरूपित-वि० [सं०] जिसका निरूपण या निर्णय हो चुका हो।

निरेखना‡-क्रि० स० दे० "निरखना"।

निरै‡-संज्ञा पुं० [सं० निरय] नरक।

निरोग, निरोगी‡-संज्ञा पुं० [सं० नीरोग] वह व्यक्ति जिसे कोई रोग न हो। स्वस्थ।

निरोध-संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। अवरोध। रुकावट। बंधन। २. घेरा। घेर लेना। ३. नाश। ४ योग में चित्त की समस्त वृत्तियों को रोकना जिसमें अभ्यास और वैराग्य की आवश्यकता होती है।

निरोधक-वि० [सं०] रोकनेवाला।

निर्ख-संज्ञा पुं० [फा०] भाव। दर।

निर्गंध-वि० [सं०] [संज्ञा निर्गंधता] जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। गंधहीन।

निर्गत-वि० [सं०] [स्त्री० निर्गता] निकला हुआ। बाहर आया हुआ।

निर्गम-संज्ञा पुं० [सं०] निकास।

निर्गमना-क्रि० अ० [सं० निर्गमन] निकलना।

निर्गुंडी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का क्षुप जिसकी जड़ औषध के काम में आती है। सँभालू। सिंदुवार।

निर्गुण-संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।
वि० [सं०] [संज्ञा निर्गुणता] १. जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हो। २. जिसमें कोई अच्छा गुण न हो। बुरा।

निर्गुणिया-वि० [सं० निर्गुण + इया (प्रत्य०)] वह जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करता हो।

निर्गुणी-वि० [सं० निर्गुण] मूर्ख।

निर्घंट-संज्ञा पुं० [सं०] शब्द या ग्रंथ-सूची।

निर्घृण-वि० [सं०] १. जिसे गंदी वस्तुओं से या बुरे कामों से घृणा या लज्जा न हो। २ अति नीच। निंदित। ३. निर्दय।

निर्घोष-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निर्घोषित] शब्द। आवाज़।
वि० [सं०] शब्द-रहित।

निर्छल‡-वि० दे० "निश्छल"।

निर्जन-वि० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो। सुनसान। एकांत।

निर्जल-वि० [सं०] १. बिना जल का। २. जिसमें जल पीने का विधान न हो।

निर्जला एकादशी-संज्ञा स्त्री० [सं०] जेठ सुदी एकादशी तिथि, जिस दिन लोग निर्जल व्रत रखते हैं।

निर्जीव-वि० [सं०] १. जीव-रहित। बेजान। मृतक। २. अशक्त या उत्साहहीन।

निर्झर-संज्ञा पु० [सं०] पानी का झरना। सोता। चश्मा।
निर्णय-संज्ञा पु० [सं०] १. औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके किसी विषय के दो पक्षों में से एक पक्ष को ठीक ठहराना। निश्चय। २. वादी और प्रतिवादी की बातों को सुनकर उनके सत्य अथवा असत्य होने के संबंध में कोई विचार स्थिर करना। फैसला। निबटारा।
निर्णयोपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है।
निर्णीत-वि० [सं०] निर्णय किया हुआ। जिसका निर्णय हो चुका हो।
निर्त†-संज्ञा पु० दे० "नृत्य"।
निर्तक †संज्ञा पु० दे० "नर्तक"।
निर्तना †-क्रि० अ० [सं० नृत्य] नाचना।
निर्दई †-वि० दे० "निर्दय"।
निर्दय-वि० [सं०] निष्ठुर। बेरहम।
निर्दयता-संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दय होने की क्रिया या भाव। बेरहमी। निष्ठुरता।
निर्दयी†-वि० दे० "निर्दय"।
निर्दहना†-क्रि० स० [सं० दहन] जलाना।
निर्दिष्ट-वि० [सं०] १. जिसका निर्देश हो चुका हो। २. बतलाया या नियत किया हुआ। ठहराया हुआ।
निर्दूषण†-वि० दे० "निर्दोष"।
निर्देश-संज्ञा पु० [सं०] १ किसी पदार्थ को बतलाना। २ ठहराना या निश्चित करना। ३. आज्ञा। हुक्म। ४ कथन। ५. उल्लेख। जिक्र। ६. वर्णन। ७ नाम।
निर्दोष-वि० [सं०] १. जिसमें कोई दोष न हो। बे ऐब। बे दाग। २. बे कसूर।
निर्दोषता-संज्ञा स्त्री० [सं० निर्दोष + ता (प्रत्य०)] निर्दोष होने की क्रिया या भाव।
निर्दोषी-वि० दे० "निर्दोष"।
निर्द्वंद, निर्द्वंद्व-वि० [सं०] १ जिसका कोई विरोध करनेवाला न हो। २. जो राग, द्वेष, मान, अपमान आदि द्वंद्वों से रहित या परे हो। ३ स्वच्छंद।
निर्धन-वि० [सं०] धनहीन। गरीब।
निर्धनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] गरीबी।
निर्धार, निर्धारण-संज्ञा पुं० [सं०] १. ठहराना या निश्चित करना। २. निश्चय। निर्णय। ३. न्याय के अनुसार किसी एक जाति के पदार्थों में से गुण या कर्म आदि के विचार से कुछ को अलग करना।
निर्धारना-क्रि० स० [सं० निर्धारण] निश्चित करना। निर्धारित करना। ठहराना।
निर्धारित-वि० [सं०] निश्चित किया हुआ।
निर्निमेष-क्रि० वि० [सं०] बिना पलक झपकाए। एकटक।
वि० १. जो पलक न गिरावे। २ जिसमें पलक न गिरे।
निर्बंध-संज्ञा पु० [सं०] १ रुकावट। अड़चन। २. जिद। हठ। ३ आग्रह।
निर्बल-वि० [सं०] बलहीन। कमजोर।
निर्बलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] कमजोरी।
निर्बहना-क्रि० अ० [सं० निर्वहन] १ पार होना। अलग होना। दूर होना। २. क्रम का चलना। निभना। पालन होना।
निर्बुद्धि-वि० [सं०] बेवकूफ। मूर्ख।
निर्बोध-वि० [सं०] जिसे अच्छे बुरे का कुछ भी ज्ञान न हो। अज्ञान। अनजान।
निर्भय-वि० [सं०] १. जिसे कोई डर न हो। निडर। बेखौफ।
निर्भयता-संज्ञा स्त्री० [सं०] निडरपन। निडर होने का भाव या अवस्था।
निर्भर-वि० [सं०] १. पूर्ण। भरा हुआ। २. युक्त। मिला हुआ। ३ अवलंबित। आश्रित। मुनहसर।
निर्भीक-वि० [सं०] बेडर। निडर।
निर्भीकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्भीक होने की क्रिया या भाव।
निर्भ्रम-वि० [सं०] भ्रमरहित। शंकारहित। क्रि० वि० निधड़क। बेखटके।
निर्भ्रांत-वि० [सं०] १. भ्रम रहित। जिसमें कोई संदेह न हो। २. जिसको कोई भ्रम न हो।
निर्मना†-क्रि० स० दे० 'निर्माना"।
निर्मम-वि० [सं०] जिसे ममता न हो। जिसको कोई वासना न हो।
निर्मल-वि० [सं०] १ मल रहित। साफ। स्वच्छ। २. पाप-रहित। शुद्ध। पवित्र। ३ निर्दोष। कलंकहीन।
निर्मलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफाई। स्वच्छता। २. निष्कलंकता। ३. शुद्धता।
निर्मला-संज्ञा पुं० [सं० निर्मल] नानक-

पंथी एक साधु-सम्प्रदाय।
निर्मली-संज्ञा स्त्री० [सं० निर्मल] १. एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष, जिसके पके हुए बीजों का औषध रूप में तथा गँदला पानी साफ करने के लिये व्यवहार होता है। चाक्सू। २ रीठे का वृक्ष या फल।
निर्माण-संज्ञा पु० [सं०] १. रचना। बना-वट। २ बनाने का काम।
निर्माता-संज्ञा पु० [सं०] निर्माण करने-वाला। बनानेवाला। जो बनावे।
निर्मात्रिक-वि० [सं०] बिना मात्रा का।
निर्माना -क्रि० स० [सं० निर्माण] बनाना।
निर्मान-वि० [हिं० नि + मान] बेहद। अपार। संज्ञा पु० दे० "निर्माण"।
निर्मायल-संज्ञा पु० दे० "निर्माल्य"।
निर्माल्य-संज्ञा पु० [सं०] वह पदार्थ जो किसी देवता पर चढ़ चुका हो।
निर्मित-वि० [सं०] बनाया हुआ। रचित।
निर्मूल-वि० [सं०] १. जिसमें जड़ न हो। बिना जड़ का। २. जड़ से उखाड़ा हुआ। ३. बे बुनियाद। बे-जड़। ४ जो सर्वथा नष्ट हो गया हो।
निर्मूलन-संज्ञा पु० [सं०] निर्मूल होना या करना। विनाश।
निर्मोक-संज्ञा पु० [सं०] १. साँप की केंचुली। २. शरीर के ऊपर की खाल। ३. आकाश।
निर्मोल-+-वि० [सं० निः + हिं० मोल] जिसका मूल्य बहुत अधिक हो। अमूल्य।
निर्मोह-वि० [सं०] जिसके मन में मोह या ममता न हो।
निर्मोहिनी-वि० स्त्री० [हिं० निर्मोही + इनी (प्रत्य०)] जिसके चित्त में ममता या दया न हो। निर्दय।
निर्मोही-वि० [सं० निर्मोह] जिसके हृदय में मोह या ममता न हो। निर्दय।
निर्यातन-संज्ञा पु० [सं०] १ बदला चुकाना। २. प्रतीकार। ३. मार डालना।
निर्यास-संज्ञा पु० [सं०] १. वृक्षों की ...
निर्लिप्त-वि० [सं०] १. जो किसी विषय में आसक्त न हो। २. जो लिप्त न हो।
निर्लोभ-वि० [सं०] जिसे लोभ न हो।
निर्वंश-वि० [सं०] [संज्ञा निर्वंशता] जिसका वंश नष्ट हो गया हो।
निर्वहण-संज्ञा पु० [सं०] १. निबाह। गुजर। निर्वाह। २. समाप्ति।
निर्वहना+-क्रि० अ० [सं० निर्वहन] परं-परा का पालन होना। निभना। चलना।
निर्वाचक-संज्ञा पु० [सं०] वह जो निर्वा-चन करे या चुने। चुननेवाला।
निर्वाचन-संज्ञा पु० [सं०] किसी काम के लिये बहुतों में से एक या अधिक को चुनना।
निर्वाचित-वि० [सं०] चुना हुआ।
निर्वाण-वि० [सं०] १ बुझा हुआ (दीपक, आग आदि)। २ अस्त। डूबा हुआ। ३ शांत। धीमा पड़ा हुआ। ४. मृत। संज्ञा पु० १ बुझना। ठंढा होना। २ समाप्ति। न रह जाना। ३ अस्त। गमन। डूबना। ४. शांति। ५. मुक्ति।
निर्वासन-संज्ञा पु० [सं०] १ मार डालना। वध। २. गाँव, शहर या देश आदि से दंड-स्वरूप बाहर निकाल देना। देश-निकाला। ३. निकालना।
निर्वाह-संज्ञा पु० [सं०] १. किसी क्रम या परंपरा का चला चलना। निबाह। २. किसी बात के अनुसार बराबर आचरण। पालन। ३ समाप्ति। पूरा होना।
निर्वाहना -क्रि० अ० [सं० निर्वाह + ना (हिं० प्रत्य०)] निर्वाह करना।
निर्विकल्प-वि० [सं०] १. जो विकल्प, परिवर्तन या प्रभेदों आदि से रहित हो। २. स्थिर। निश्चित।
निर्विकल्प समाधि-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की समाधि जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि का कोई भेद नहीं रह जाता।
निर्विकार-[illegible] जिसमें किसी प्रकार का विका[illegible] न हो।

जड़ का व्यवहार अनेक प्रकार के विषों का नाश करने के लिये होता है। जदवार।

निर्बीज-वि० [सं०] १. बीजरहित। जिसमें बीज न हो। २. जो कारण से रहित हो।

निर्वीर्य-वि० [सं०] वीर्यहीन। बल या तेजरहित। कमजोर। निस्तेज।

निर्व्यलीक-वि० [सं०] निष्कपट।

निर्व्याज-वि० [सं०] १. निष्कपट। छल रहित। २ बाधा-रहित।

निर्हेतु-वि० [सं०] जिसमें कोई हेतु न हो।

निलज्ज-वि० दे० "निर्लज्ज"।

निलज्जता-संज्ञा स्त्री० [सं० निर्लज्जता] निर्लज्जता। बेशर्मी। बेहयाई।

निलज्जा†-वि० स्त्री० [हिं० निर्लज्ज] निर्लज्जा। बेशर्म। बेहया। (स्त्री)

निलय-संज्ञा पु० [सं०] १. मकान। घर। २ स्थान। जगह।

निलहा-वि० [हिं० नील] १ नीलवाला। जैसे—निलहा गोरा। २. नील संबंधी।

निवसन-संज्ञा पु० [सं० नि+वसन] १ गाँव। २ घर। ३. वस्त्र।

निवसना-क्रि० अ० [सं० निवसन] रहना। निवास करना।

निवह-संज्ञा पु० [सं०] १ समूह। यूथ। २ सात वायुओं में से एक वायु।

निवाई-वि० [सं० नव] १ नवीन। नया। २. अनोखा। विलक्षण।

निवाज-वि० [फा०] कृपा करनेवाला।

निवाजना†-क्रि० स० [फा० निवाज] अनुग्रह करना। कृपा करना।

निवाड़ा-संज्ञा पु० [देश०] १. छोटी नाव। २. नाव की एक क्रीड़ा जिसमें उसे बीच से ले जाकर चक्कर देते हैं। नावर।

निवार-संज्ञा स्त्री० [फा० नवार] बहुत मोटे सूत की बुनी हुई चौड़ी पट्टी जिसमे पलंग आदि बुने जाते हैं। निवाड़। नेवार। संज्ञा पुं० [सं० नीवार] तिन्नी धान।

निवारक-वि० [सं०] १ रोकनेवाला। रोधक। २ दूर करनेवाला। मिटानेवाला।

निवारण-संज्ञा पु० [सं०] १. रोकने की क्रिया। २ हटाने या दूर करने की क्रिया। ३ निवृत्ति। छुटकारा।

निवारना-क्रि० स० [सं० निवारण] १. रोकना। दूर करना। हटाना। २. बचाना। रक्षा के साथ काटना या बिताना। ३. निषेध करना। मना करना।

निवारी-संज्ञा स्त्री० [सं० नेपाली या नेमाली] १ जूही की जाति का एक फूलनेवाला झाड़ या पौधा। २. इस पौधे का फूल।

निवाला-संज्ञा पु० [फा०] कौर। ग्रास।

निवास-संज्ञा पु० [सं०] १ रहने की क्रिया या भाव। २. रहने का स्थान। ३ घर।

निवासस्थान-संज्ञा पु० [सं०] १. रहने का स्थान। २. घर। मकान।

निवासी-संज्ञा पु० [सं० निवासिन्] [स्त्री० निवासिनी] रहनेवाला। बसनेवाला। वासी।

निविड़-वि० [सं०] १ घना। घन। घोर। २ गहरा।

निविष्ट-वि० [सं०] १ जिसका चित्त एकाग्र हो। २. एकाग्र। ३ लपेटा हुआ। ४. घुसा या घुसाया हुआ। ५ बाँधा हुआ।

निवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुक्ति। छुटकारा। प्रवृत्ति का उलटा। २ मोक्ष।

निवेद†-संज्ञा पु० दे० "नैवेद्य"।

निवेदक-संज्ञा पु० [सं०] निवेदन करनेवाला। प्रार्थी।

निवेदन-संज्ञा पु० [सं०] १. विनय। विनती। प्रार्थना। २ समर्पण।

निवेदना†-क्रि० स० [हिं० निवेदन] १. विनती करना। प्रार्थना करना। २. कुछ भोज्य पदार्थ आगे रखना। नैवेद्य चढ़ाना। ३ अर्पित करना।

निवेदित-वि० [सं०] १. अर्पित किया हुआ। २. निवेदन किया हुआ।

निवेरना†-क्रि० स० दे० "निबटाना"।

निवेरा-वि० [हिं० निवेरना] १. चुना हुआ। छाँटा हुआ। २. नवीन। अनोखा।

निवेश-संज्ञा पु० [सं०] १ विवाह। २. डेरा। सेना। ३ प्रवेश। ४ घर।

निशंक-वि० [सं० नि शंक] जिसे किसी बात की शंका या भय न हो। निर्भय। निडर।

निशंग-संज्ञा पु० दे० "निषंग"।

निश-संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

निशांत-संज्ञा पु० [सं०] १ रात्रि का अंत। २. प्रभात। तड़का।

निशांध-वि० [सं०] जिसे रात को न सूझे।

निशा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात्रि। रजनी। २ हरिद्रा। हलदी। ३ दारुहरिद्रा।

निशाकर-संज्ञा पु० [सं०] १. चंद्रमा। चाँद। २. कुक्कुट। मुरगा।

निशाखातिर–संज्ञा स्त्री० [अ० खातिर+फा० निशाँ (खातिरनिशाँ)] तसल्ली। दिलजमई।

निशाचर–संज्ञा पु० [सं०] १. राक्षस। २. श्रृगाल। गीदड़। ३. उल्लू। ४. सर्प। ५. चक्रवाक। ६. भूत। ७. चोर। ८ वह जो रात को चले।

निशाचरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राक्षसी। २ कुलटा। ३ अभिसारिका नायिका।

निशाधीश–संज्ञा पु० दे० "निशापति"।

निशान–संज्ञा पु० [फा०] १. लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जाय। चिह्न। २. किसी पदार्थ से अंकित किया हुआ चिह्न। ३. शरीर अथवा और किसी पदार्थ पर बना हुआ स्वाभाविक या और किसी प्रकार का चिह्न, दाग या धब्बा। ४. वह चिह्न जो अपढ़ आदमी अपने हस्ताक्षर के बदले में किसी कागज़ आदि पर बनाता है। ५. वह लक्षण या चिह्न जिससे किसी प्राचीन या पहले की घटना अथवा पदार्थ का परिचय मिले।

यौ०—नाम निशान=१. किसी प्रकार का चिह्न या लक्षण। २. अस्तित्व का लेश। बचा हुआ थोड़ा अंश।

६. पता। ठिकाना।

मुहा०—निशान देना=असामी को सम्मन आदि तामील करने के लिये पहचनवाना।

७. समुद्र में या पहाड़ों आदि पर बना हुआ वह स्थान जहाँ लोगों को मार्ग आदि दिखाने के लिये कोई प्रयोग किया जाता हो। ८. दे० "लक्षण"। ९. दे० "निशाना"। १०. दे० "निशानी"। ११. ध्वजा। पताका। झंडा।

मुहा०—किसी बात का निशान उठाना या खड़ा करना=किसी काम में अगुआ या नेता बनकर लोगों को अपना अनुयायी बनाना।

निशानची–संज्ञा पुं० [फा० निशान+ची (प्रत्य०)] वह जो किसी राजा, सेना या दल आदि के आगे झंडा लेकर चलता हो। निशान बरदार।

निशानदेही–संज्ञा स्त्री० [फा० निशान+हिं० देना या फा० देह=देना] असामी को सम्मन आदि की तामील के लिये पहचनवाने की क्रिया।

निशापति–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

निशाना–संज्ञा पु० [फा०] १. वह जिस पर ताककर किसी शस्त्र या अस्त्र आदि का वार किया जाय। लक्ष्य। २. किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उसकी ओर किसी प्रकार का वार करना।

मुहा०—निशाना बाँधना=वार करने के लिये अस्त्र आदि को इस प्रकार साधना जिसमें ठीक लक्ष्य पर वार हो। निशाना मारना या लगाना=ताककर अस्त्र आदि का वार करना।

३ वह जिसपर लक्ष्य करके कोई व्यंग्य या बात कही जाय।

निशानाथ–संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

निशानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. स्मृति के उद्देश्य से दिया अथवा रखा हुआ पदार्थ। यादगार। स्मृति चिह्न। २ वह चिह्न जिससे कोई चीज़ पहचानी जाय। निशान।

निशामणि–संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

निशास्ता–संज्ञा पु० [फा०] १ गेहूँ को भिगोकर उसका निकाला और जमाया हुआ सत या गूदा। २. माड़ी। कलफ।

निशि–संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।

निशिकर–संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

निशिचर–संज्ञा पु० दे० "निशाचर"।

निशिचरराज–संज्ञा पु० [सं०] विभीषण।

निशिनाथ–संज्ञा पु० दे० "निशानाथ"।

निशिपाल–संज्ञा पु० [सं०] १. चंद्रमा। २. एक प्रकार का छंद।

निशिवासर–संज्ञा पु० [सं०] रात-दिन। सदा। सर्वदा। हमेशा।

निशीथ–संज्ञा पु० [सं०] रात।

निशीथिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] रात।

निशुंभ–संज्ञा पु० [सं०] १. वध। २. हिंसा। ३. एक असुर जो शुंभ तथा निमुचि का भाई था और दुर्गा के हाथ से मारा गया था।

निशुंभमर्दिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

निश्चय–संज्ञा पु० [सं०] १. ऐसी धारणा जिसमें कोई संदेह न हो। निःसंशय ज्ञान। २. विश्वास। यकीन। ३. निर्णय। ४. पक्का विचार। दृढ़ संकल्प। पूरा इरादा। ५. एक अर्थालंकार जिसमें अन्य विषय का निषेध होकर प्रकृत या यथार्थ विषय का स्थापन होता है।

निश्चयात्मक–वि० [सं०] जो बिलकुल निश्चित [illegible] १. असंदिग्ध।

निश्चल [illegible] जो अपने स्थान से

न हटे। अचल। अटल। २ स्थिर।

निश्चलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चल होने का भाव। स्थिरता। दृढ़ता।

निश्चित–वि० [सं०] जिसे कोई चिंता या फ़िक्र न हो। चिंतारहित। बे फ़िक्र।

निश्चिंताई–संज्ञा स्त्री० दे० "निश्चिंतता"।

निश्चितता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चिंत होने का भाव। बेफ़िक्री।

निश्चित–वि० [सं०] १. जिसके संबंध में निश्चय हो। ते किया हुआ। निर्णीत। २. जिसमें कोई फेर बदल न हो सके। दृढ़। पक्का।

निश्चेष्ट–वि० [सं०] १ बेहोश। अचेत। चेष्टारहित। २ निश्चल। स्थिर।

निश्चै–संज्ञा पु० दे० "निश्चय"।

निश्छल–वि० [सं०] छलरहित। सीधा।

निश्रेणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीढ़ी। जीना। २ मुक्ति।

निश्रेयस–संज्ञा पु० [सं० नि श्रेयस] १ मोक्ष। २ दुःख का अत्यंत अभाव। ३ कल्याण।

निश्वास–संज्ञा पु० [सं०] नाक या मुँह से बाहर निकलनेवाला श्वास।

निश्शंक–वि० [सं०] १. निडर। निर्भय। २ संदेह रहित। जिसमें शंका न हो।

निश्शेष वि० [सं०] जिसमें से कुछ भी बाकी न बचा हो। जिसका कुछ भी अवशिष्ट न हो।

निषंग–संज्ञा पु० [सं०] [वि० निषंगी] १ तूण। तूणीर। तरकश। २ खड्ग।

निषध–संज्ञा पु० [सं०] १ पुराणानुसार एक पर्वत जो हरिवर्ष की सीमा पर है। २ हरिवंश के अनुसार रामचंद्र के प्रपौत्र और कुश के पौत्र का नाम। ३ पुराणानुसार एक देश का प्राचीन नाम जो विंध्याचल पर्वत पर था।

निषधाभास–संज्ञा पु० [सं०] अलंकार के पाँच भेदों में से एक। आक्षेप।

निषाद–संज्ञा पु० [सं०] १ एक बहुत पुरानी अनार्य जाति जो भारत में आर्य जाति के आने से पहले निवास करती थी। २ एक प्राचीन देश जो संभवत शृंगवेरपुर के चारों ओर था। ३. संगीत में सातवाँ और सबसे ऊँचा स्वर।

निषादी–संज्ञा पु० [सं० निषादिन्] हाथीवान। महावत।

निषिद्ध–वि० [सं०] १ जिसका निषेध किया गया हो। जिसके लिये मनाही हो। २. खराब। बुरा। दूषित।

निषेध–संज्ञा पु० [सं०] १ वर्जन। मनाही। न करने का आदेश। २ बाधा। रुकावट।

निषेधक–संज्ञा पु० [सं०] मना करनेवाला।

निषेधित–वि० दे० "निषिद्ध"।

निष्कंटक–वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की बाधा, आपत्ति या झंझट आदि न हो। बिना खटके का। निर्विघ्न।

निष्क–संज्ञा पु० [सं०] १ वैदिक काल का एक प्रकार का सोने का सिक्का या मोहर, भिन्न भिन्न समयों में जिसका मान भिन्न भिन्न था। २ प्राचीन काल में चाँदी की एक प्रकार की तौल जो चार सुवर्ण के बराबर होती थी। ३ वैद्यक में चार माशे की तौल। टंक। ४ सुवर्ण। ५ हीरा।

निष्कपट–वि० [सं०] निश्छल। छलरहित। सीधा। सरल।

निष्कपटता–संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्कपट होने का भाव। सरलता। सीधापन।

निष्कर्म–वि० [सं० निष्कर्मन्] अकर्मा। जो कामों में लिप्त न हो।

निष्कर्ष–संज्ञा पु० [सं०] १ निश्चय। २ खुलासा। तत्त्व। ३ निचोड़। सार।

निष्कलंक–वि० [सं०] निर्दोष। बे ऐब।

निष्काम–वि० [सं०] [संज्ञा निष्कामता] १ (वह मनुष्य) जिसमें किसी प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा न हो। २ (वह काम) जो बिना किसी प्रकार की कामना या इच्छा के किया जाय।

निष्कारण–वि० [सं०] १ बिना कारण। बेसबब। २ व्यर्थ। वृथा।

निष्कासन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० निष्कासित] निकालना। बाहर करना।

निष्क्रमण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० निष्क्रांत] १ बाहर निकलना। २ एक संस्कार जिसमें जब बालक चार महीने का होता है, तब उसे घर से बाहर निकालकर सूर्य का दर्शन कराया जाता है।

निष्क्रय–संज्ञा पु० [सं०] १. वेतन। तनखाह। २ विनिमय। बदला। ३ बिक्री।

निष्क्रिय–वि० [सं०] जिसमें कोई क्रिया या व्यापार न हो। निश्चेष्ट।

यौ०—निष्क्रिय प्रतिरोध = किसी अनुचित कार्य या आज्ञा का वह विरोध जिसमें विरोध करनेवाला उचित काम करता रहता है और दंड की परवा नहीं करता।

निष्क्रियता-संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।

निष्ठ-वि० [सं०] १. स्थित। ठहरा हुआ। २ तत्पर। लगा हुआ। ३. जिसमें किसी के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो।

निष्ठा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थिति। अवस्था। ठहराव। २. निर्वाह। ३. चित्त का जमना। ४ विश्वास। निश्चय। ५ धर्म्म, गुरु या बड़े आदि के प्रति श्रद्धा-भक्ति। पूज्य बुद्धि। ६. नाश। ७ ज्ञान की वह चरमावस्था जिसमें आत्मा और ब्रह्म की एकता हो जाती है।

निष्ठावान्-वि० [सं० निष्ठावत्] जिसमें निष्ठा या श्रद्धा हो।

निष्ठीवन-संज्ञा पुं० [सं०] थूक।

निष्ठुर-वि० [सं०] [स्त्री० निष्ठुरा] १. कठिन। कड़ा। सख्त। २. क्रूर। बेरहम।

निष्ठुरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कड़ाई। सख्ती। कठोरता। २. निर्दयता। क्रूरता।

निष्णात-वि० [सं०] किसी बात को पूरा पंडित। विज्ञ। निपुण।

निष्पद-वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का कंप न हो।

निष्पक्ष-वि० [सं०] [संज्ञा निष्पक्षता] जो किसी के पक्ष में न हो। पक्षपात-रहित।

निष्पत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समाप्ति। अंत। २. सिद्धि। परिपाक। ३. निर्वाह। ४. मीमांसा। ५. निश्चय। निर्धारण।

निष्पन्न-वि० [सं०] जो समाप्त या पूरा हो चुका हो।

निष्पीडन-संज्ञा पुं० [सं०] निचोड़ना।

निष्प्रभ-वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की प्रभा या चमक न हो। प्रभाशून्य।

निष्प्रयोजन-वि० [सं०] १. जिसमें कोई मतलब न हो। स्वार्थशून्य। २. व्यर्थ। क्रि० वि० १. बिना अर्थ या मतलब के। २. व्यर्थ। फजूल।

निष्प्रेही०-वि० [सं० निस्पृह] निस्पृह।

निष्फल-वि० [सं०] जिसका कोई फल न हो। व्यर्थ। निरर्थक। बेफायदा।

...†-वि० दे० "निरंकुश"।

निसँठ-वि० [हिं० नि + सँठ = पूँजी] गरीब।

निसंस†-वि [सं० नृशंस] क्रूर। वि० [हिं० नि + साँस] मुरदा सा। मृतकवत्।

निसंसना०-क्रि० अ० [सं० निःश्वास] हाँफना। निःश्वास लेना।

निस†-संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

निसक-वि० [सं० निःशक्त] अशक्त। कमजोर। दुर्बल।

निसकर†-संज्ञा० पुं० दे० "निशाकर"।

निसत†-वि० [सं० नि सत्य] असत्य।

निसतरना†-क्रि० अ० [सं० निस्तार] निस्तार पाना। छुटकारा पाना।

निसतारना-क्रि० स० [सं० निस्तार] निस्तार करना। मुक्त करना।

निसद्योस†-क्रि० वि० [सं० निशि + दिवस] रात दिन। नित्य। सदा।

निसनेहा-संज्ञा स्त्री० दे० "निस्नेहा"।

निसबत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ संबंध। लगाव। ताल्लुक। २. मँगनी। विवाह-संबंध की बात। ३. तुलना। मुकाबला।

निसयाना-वि० [हिं० नि + सयाना] जिसके होश हवास ठिकाने न हो।

निसरना०-क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निसर्ग-संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वभाव। प्रकृति। २. रूप। आकृति। ३. दान। ४ सृष्टि।

निसवादला†-वि० [सं० नि स्वाद] स्वाद-रहित। जिसमें कोई स्वाद न हो।

निसवासर०†-संज्ञा पुं० [सं० निशिवासर] रात और दिन। क्रि० वि० नित्य। सदा। हमेशा।

निसस†-वि० [सं० निःश्वास] श्वास-रहित। अचेत। बेहोश।

निसाँक†-वि० दे० "निःशंक"।

निसाँस, निसाँसा०†-संज्ञा पुं० [सं० निःश्वास] ठंढी साँस। लंबी साँस। वि० बेदम। मृतकप्राय।

निसा-संज्ञा स्त्री० [निशाखातिर ?] संतोष। मुहा०—निसा भर = जी भर के। संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

निसान-संज्ञा पुं० [फा० निशान] १. दे० "निशान"। २. नगाड़ा। धौंसा।

निसानन०†-संज्ञा पुं० [सं० निशानन] संध्या का समय। प्रदोष-काल।

निसाफ०†-संज्ञा पुं० दे० "इनसाफ"।

निसार-संज्ञा पुं० [अ०] निछावर। सदका।

निसार† वि० दे० "निस्सार"।
निसारना†–क्रि० स० दे० "निकालना"।
निसास –संज्ञा पुं० [सं० निःश्वास] गहरी या ठंढी साँस।
वि० [हिं० नि+साँस] विगतश्वास। बे दम।
निसासी–वि० [सं० निःश्वास] जिसका श्वास न चलता हो। बे दम।
निसि–संज्ञा स्त्री० [सं० निशि] १. दे० "निशि"। २. एक वर्णवृत्त।
निसिकर–संज्ञा पुं० दे० "निशिकर"।
निसिचर†–संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।
निसिचारी–संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।
निसिदिन–क्रि० वि० [सं० निशिदिन] १. रातदिन। आठों पहर। २. सदा। सर्वदा।
निसि निसि–संज्ञा स्त्री० [सं० निशि निशि] अर्द्ध रात्रि। निशीथ। आधी रात।
निसियर–संज्ञा पुं० [सं० निशिकर] चंद्रमा।
निसिवासर–क्रि० वि० [सं० निशि+वासर] रातदिन। सदा। सर्वदा। नित्य।
निसीठा–वि० [सं० नि.+हिं० सीठी] निःसार। नीरस। थोथा।
निसु†–संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।
निसुका –वि० [सं० निस्स्व] १. गरीब। २ निगोड़ा।
निसूदन–संज्ञा पुं० [सं०] हिंसा करना।
निसृष्ट–वि० [सं०] १. छोड़ा हुआ। २. मध्यस्थ। ३. भेजा हुआ। प्रेरित। ४. दिया हुआ। दत्त।
निसृष्टार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] वह दूत जो दोनों पक्षों का अभिप्राय अच्छी तरह समझकर स्वयं ही सब प्रश्नों का उत्तर दे देता और कार्य सिद्ध कर लेता है।
निसेनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० निःश्रेणी] सीढ़ी।
निसेष–वि० दे० "निःशेष"।
निसेस–संज्ञा पुं० [सं० निशेश] चंद्रमा।
निसैनी–संज्ञा स्त्री० दे० "निसेनी"।
निसोग†–वि० [सं० निःशोक] जिसे कोई शोक या चिंता न हो।
निसोच –वि० [सं० निःशोच] चिंता रहित।
निसोत–वि० [सं० निःसंयुक्त] जिसमें और किसी चीज का मेल न हो। शुद्ध। निरा।
निसोथ–संज्ञा स्त्री० [सं० निसृता] एक प्रकार की लता जिसकी जड़ और डंठल अच्छे रेचक समझे जाते हैं।
निसोधु †–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोध या सुध १. सुध। खबर। २. सँदेसा।
निस्केवल–वि० [सं० निष्केवल] बेमेल। शुद्ध। निर्मल। खालिस।
निस्तत्त्व–वि० [सं०] जिसमें कोई तत्त्व न हो। निस्सार।
निस्तब्ध–वि० [सं०] १. जो हिलता-डोलता न हो। २ जड़वत्। निश्चेष्ट।
निस्तब्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तब्ध होने का भाव। खामोशी। २ सन्नाटा।
निस्तरण–संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"।
निस्तरना†–क्रि० अ० [सं० निस्तार] निस्तार पाना। मुक्त होना। छूट जाना।
निस्तार–संज्ञा पुं० [सं०] १ पार होने का भाव। २. छुटकारा। मोक्ष। उद्धार।
निस्तारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. निस्तार करना। बचाना। छुड़ाना। २ पार करना।
निस्तारन–वि० दे० "निस्तारण"।
निस्तारना†–क्रि० स० [सं० निस्तार+ना (प्रत्य०)] छुड़ाना। मुक्त करना। उद्धार।
निस्तारा–संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"।
निस्तीर्ण–वि० [सं०] १. जो तैर या पार कर चुका हो। २ छूटा हुआ। मुक्त।
निस्तेज–वि० [सं० निस्तेजस्] तेजरहित। जिसमें तेज न हो। अप्रभ। मलिन।
निस्पृह–वि० [सं०] [संज्ञा निस्पृहता] जिसे किसी प्रकार का लोभ न हो। लालच या कामना आदि से रहित।
निस्फ–वि० [अ०] अर्द्ध। आधा।
निस्संकोच–वि० [सं०] संकोचरहित। जिसमें संकोच या लज्जा न हो। बेधड़क।
निस्संतान–वि० [सं०] जिसे कोई संतान न हो। संतति-रहित।
निस्संदेह–क्रि० वि० [सं०] अवश्य। जरूर। वि० जिसमें संदेह न हो।
निस्सरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलने का मार्ग। २. निकलने का भाव या क्रिया।
निस्सार–वि० [सं०] १ सार-रहित। २ जिसमें कोई काम की वस्तु न हो।
निस्सीम–वि० [सं०] १. असीम। अपार। २ बहुत अधिक।
निस्सृत–संज्ञा पुं० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक।
निस्स्वार्थ–वि० [सं०] जिसमें स्वयं अपने लाभ या हित का कोई विचार न हो।
निहंग–वि० [सं० निःसंग] १ एकाकी।

अकेला। २. स्त्री आदि से संबंध न रखने-वाला (साधु)। ३. नंगा। ४ बेशरम।

निहंग लाडला-वि० [हिं० निहग+लाडला] जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत ही उद्दंड और लापरवा हो गया हो।

निहंता-वि० [स० निहंतृ] [स्त्री० निहंत्री] १ नाश करनेवाला। २ प्राण लेनेवाला।

निहकाम*†-वि० दे० "निष्काम"।

निहचय †-सज्ञा पु० दे० "निश्चय"।

निहचल †-वि० दे० "निश्चल"।

निहत-वि० [स०] १. फेंका हुआ। २ नष्ट। ३. जो मार डाला गया हो।

निहत्था-वि० [हिं० नि+हाथ] १ जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो। शस्त्रहीन। २. खाली हाथ। निर्धन। गरीब।

निहनना †-क्रि० स० [स० निहनन] मारना। मार डालना।

निहपाप† -वि० दे० "निष्पाप"।

निहफल† -वि० दे० "निष्फल"।

निहाई-सज्ञा स्त्री० [स० निघाति मि० फा० निहाली] सोनारों और लोहारों का लोहे का एक चौकोर औज़ार जिस पर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।

निहाउ†*-सज्ञा पु० दे० "निहाई"।

निहायत-वि० [अ०] अत्यंत। बहुत।

निहार-सज्ञा पु० [स०] १ कुहरा। पाला। २. ओस। ३ हिम। बरफ़।

निहारना-क्रि० स० [स० निभालन = देखना] ध्यानपूर्वक देखना। देखना। ताकना।

निहाल-वि० [फा०] जो सब प्रकार से संतुष्ट और प्रसन्न हो गया हो। पूर्णकाम।

निहाली-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ गद्दा। तोशक। २. निहाई।

निहित-वि० [स०] स्थापित। रखा हुआ।

निहुरना†-क्रि० अ० [हिं० नि+होड़न] झुकना। नवना।

निहुराना-क्रि० स० [हिं० निहुरना का प्रे०] झुकाना। नवाना।

निहोरना-क्रि० स० [स० मनोहार] १ प्रार्थना करना। विनय करना। २. मनाना। मनौती करना। ३. कृतज्ञ होना।

निहोरा†-सज्ञा पु० [स० मनोहार] १ अनुग्रह। एहसान। कृतज्ञता। उपकार। २. विनती। प्रार्थना। ३ भरोसा। आसरा। वि० १. कारण से। बदौलत। द्वारा। २ के लिये। वास्ते। निमित्त।

नींद-सज्ञा स्त्री० [स० निद्रा] जीवन की एक नित्यप्रति होनेवाली अवस्था जिसमें चेतन क्रियाएँ रुकी रहती है और शरीर तथा अतःकरण दोनों विश्राम करते हैं। सोने की अवस्था। निद्रा। स्वप्न।

मुहा०—नींद उचटना = नींद का दूर होना। नींद खुलना या टूटना = नींद का छूट जाना। जाग पड़ना। नींद पड़ना = नींद आना। निद्रा की अवस्था होना। नींद भर सोना = जितनी इच्छा हो, उतना सोना। इच्छा भर सोना। नींद लेना = सोना। नींद संचरना = नींद आना। नींद हराम होना = सोना छूट जाना।

नींदड़ी†-सज्ञा स्त्री० दे० "नींद"।

नीक, नीका†*-वि० [स० निक्त = स्वच्छ] [स्त्री० नीकी] अच्छा। सुंदर। भला। सज्ञा पु० अच्छाई। उत्तमता। अच्छापन।

नीके-क्रि० वि० [हिं० नीक] अच्छी तरह।

नीच-वि० [स०] १. जाति, गुण, कर्म या किसी और बात में घटकर या न्यून। क्षुद्र। २ अधम। बुरा। निकृष्ट। तुच्छ। हेठा।

यौ०—नीच ऊँच = १. अच्छा बुरा। २. बुराई-भलाई। गुण-अवगुण। ३. अच्छा और बुरा परिणाम। हानि-लाभ। ४ सुख-दुःख।

नीचगामी-वि० [सं० नीचगामिन्] [स्त्री० नीचगामिनी] १. नीचे जानेवाला। २. ओछा।

नीचता-सज्ञा स्त्री० [स०] १. नीच होने का भाव। २. अधमता। क्षुद्रता। कमीनापन।

नीचा-वि० [स० नीच] [स्त्री० नीची] १. जो कुछ उतार या गहराई पर हो। गहरा। ऊँचा का उलटा। निम्न।

यौ०—नीचा ऊंचा = कहीं गहरा और कहीं उठा हुआ। जो समतल न हो। ऊबड़ खाबड़। २. ऊँचाई में सामान्य की अपेक्षा कम। जो ऊपर की ओर दूर तक न गया हो। ३. जो ऊपर से जमीन की ओर दूर तक आया हो। अधिक लटका हुआ। ४. झुका हुआ। नत। ५. जो तीव्र या ज़ोर का न हो। धीमा। मध्यम। ६. जो जाति, पद, गुण इत्यादि में न्यून या घटकर हो। ओछा। क्षुद्र। बुरा।

मुहा०—नीचा ऊँचा = १. भला बुरा। २. भलाई बुराई। गुण-अवगुण। अच्छा और बुरा

परिणाम। हानि-लाभ। ३ सम्पद-विपद। सुख-दुःख। नीचा खाना=१ तुच्छ बनना। अपमानित होना। २. हारना। परास्त होना। ३. लज्जित होना। झिपना। नीचा दिखाना=१. तुच्छ बनाना। अपमानित करना। २. मान-भंग करना। शेखी झाड़ना। ३. परास्त करना। हराना। ४. लज्जित करना। नीचा देखना=दे० "नीचा खाना"। नीची दृष्टि करना=सिर झुकाना। सामने न ताकना।

नीचाशय–वि० [स०] क्षुद्र। ओछा।

नीचू†–क्रि० वि० दे० "नीचे"।

नीचे–क्रि० वि० [हिं० नीचा]१ नीचे की ओर। अधोभाग में। ऊपर का उलटा।

मुहा०—नीचे ऊपर=१. एक पर एक। तले-ऊपर। २ उलट पलट। अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित। नीचे गिरना=१. प्रतिष्ठा खोना। मान मर्य्यादा गँवाना। २. पतित होना। अवनत दशा को प्राप्त होना। ऊपर से नीचे तक=१. सब भागों में। सर्वत्र। २. सर्वांग में। सिर से पैर तक।

२ घटकर। कम। न्यून। ३ अधीनता में।

नीजन‡–सज्ञा पु० [स० निर्जन] निर्जन स्थान।

नीझर–सज्ञा पु० [स० निर्झर] निर्झर। झरना। सोता।

नीठ–क्रि० वि० दे० "नीठि"।

नीठि–सज्ञा स्त्री० [सं० अनिष्टि] अरुचि। अनिच्छा।

क्रि० वि० १ ज्यों-त्यों करके। किसी न किसी प्रकार। २. मुश्किल से। कठिनता से।

नीठो –वि० [स० अनिष्ट] अनिष्ट। अप्रिय।

नीड़–सज्ञा पु० [स०] चिड़ियों का घोसला।

नीत–वि० [स०] १ लाया हुआ। पहुँचाया हुआ। २ स्थापित। ३ प्राप्त।

नीति–सज्ञा स्त्री० [स०] १. ले जाने या ले चलने की क्रिया, भाव या ढंग। २ व्यवहार की रीति। आचार पद्धति। ३ व्यवहार की वह रीति जिससे अपना कल्याण हो और समाज को भी कोई बाधा न पहुँचे। ४. लोक या समाज के कल्याण के लिये उचित ठहराया हुआ आचार-व्यवहार। सदाचार। अच्छी चाल। नय। ५. राजा और प्रजा की रक्षा के लिये निर्धारित व्यवस्था। राजविद्या। ६ राज्य की रक्षा के लिये काम में लाई जानेवाली युक्ति। ७. किसी कार्य्य की सिद्धि के लिये चली जानेवाली चाल। युक्ति। उपाय। हिकमत।

नीतिज्ञ–वि० [स०] नीति का जाननेवाला। नीतिकुशल।

नीतिमान्–वि० [स० नीतिमत] [स्त्री० नीतिमती] नीतिपरायण। सदाचारी।

नीतिशास्त्र–सज्ञा पु० [स०] १. वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार बरतने के नियम हों। २ वह शास्त्र जिसमें मनुष्य समाज के हित के लिये आचार, व्यवहार और शासन का विधान हो।

नींदना–क्रि० स० [स० निंदन] निंदा करना।

नीधना†‡–वि० [स० निर्धन] दरिद्र।

नीवी*–सज्ञा स्त्री० दे० "नीवी"।

नीबू–सज्ञा पु० [स० निंबूक, अ० लेमूँ] मध्यम आकार का एक पेड़ या झाड़ जिसका फल गोल, छोटा और खट्टा होता है और खाया जाता है। मीठे नीबू भी कई प्रकार के होते हैं। खट्टे नीबू के मुख्य भेद ये हैं—कागज़ी, जंबीरी, बिजौरा, चकोतरा।

मुहा०—नीबू निचोड़=भारी कंजूस।

नीम–सज्ञा पु० [स० निंब] पत्ती झाड़नेवाला एक पेड़ जिसका प्रत्येक भाग कड़ुवा होता है।

वि० [फा०। मि० स० नेम] आधा। अर्द्ध।

नीमन†–वि० [स० निर्मल] १ नीरोग। चंगा। २. दुरुस्त। ठीक। ३. बढ़िया।

नीमरज़ा–वि० [फा०] १. थोड़ी बहुत रज़ामंदी। २. कुछ तोष या प्रसन्नता।

नीमा–सज्ञा पु० [फा०] एक पहनावा जो जामे के नीचे पहना जाता है।

नीमावत–सज्ञा पु० [हिं० निंब] निंबार्काचार्य का अनुयायी वैष्णव।

नीमास्तीन–सज्ञा स्त्री० [फा० नीम + आस्तीन] आधी आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।

नीयत–सज्ञा स्त्री० [अ०] आंतरिक लक्ष्य। उद्देश्य। आशय। संकल्प। इच्छा। मंशा।

मुहा०–नीयत डिगना या बद होना=अच्छा या उचित सकल्प दृढ़ न रहना। बुरा सकल्प होना। नीयत बदल जाना=१. सकल्प या विचार और का और होना। इरादा दूसरा हो जाना। २. बुरा विचार होना। अनुचित या बुरी बात की ओर प्रवृत्ति होना। नीयत बाँधना=सकल्प करना। इरादा करना। नीयत भरना=जी भरना। इच्छा पूरी होना। नीयत में फर्क आना=बेईमानी

या बुराई सूझना। नीयत लगी रहना = इच्छा बनी रहना। जी ललचाया करना।

नीर–संज्ञा पु० [सं०] १. पानी। जल।

मुहा०—नीर ढलना = मरते समय आँख से आँसू बहना। किसी की आँख का नीर ढल जाना = निर्लज्ज या बेहया हो जाना।

२. कोई द्रव पदार्थ या रस। ३. फफोले आदि के भीतर का चेप या रस।

नीरज–संज्ञा पु० [सं०] १ जल में उत्पन्न वस्तु। २ कमल। ३ मोती। मुक्ता।

नीरद–संज्ञा पु० [सं०] बादल।

वि० [सं० नि.+रद] बे दाँत का। अदंत।

नीरधि–संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

नीरस–वि० [सं०] १. जिसमें रस या गीलापन न हो। रसहीन। २. सूखा। शुष्क। ३. जिसमें कोई स्वाद या मजा न हो। फीका। ४. जिसमें मन न लगे।

नीराजन–संज्ञा पु० [सं०] १. देवता को दीपक दिखाने की विधि। दीपदान। आरती। २. हथियारों को चमकाने या साफ करने का काम।

नीरे–क्रि० वि० दे० "नियरे"।

नीरोग–वि० [सं०] जिसे रोग न हो। स्वस्थ। चंगा। तंदुरुस्त।

नील–वि० [सं०] नीले रंग का।

संज्ञा पु० [सं०] १ नीला रंग। गहरा आसमानी रंग। २. एक प्रसिद्ध पौधा जिससे नीला रंग निकाला जाता है।

मुहा०—नील का टीका लगाना = कलंक लेना। बदनामी उठाना। नील की सलाई फिरवा देना = आँखें फोड़वा डालना। अंधा कर देना।

३. चोट का नीले या काले रंग का दाग जो शरीर पर पड़ जाता है। ४. लांछन। कलंक। ५ राम की सेना का एक बंदर। ६. इलावृत्त खंड का एक पर्वत। ७ नव निधियों में से एक। ८. नीलम। ९. एक वर्णवृत्त। ११. सौ अरब की संख्या।

नीलकंठ–वि० [सं०] जिसका कंठ नीला हो।

संज्ञा पु० १. मोर। मयूर। २. एक प्रकार की चिड़िया जिसका कंठ और डैने नीले होते हैं। चाष पक्षी। ३. महादेव। ४. गौरा पक्षी। चटक।

नीलकांत–संज्ञा पु० [सं०] १ एक पहाड़ी चिड़िया। २. विष्णु। ३. नीलम मणि।

...–संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णुक्रांता लता जिसमें बड़े बड़े नीले फूल लगते हैं।

नीलगाय–संज्ञा स्त्री० [हिं० नील+गाय] नीलापन लिए भूरे रंग का एक बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता है। गवय।

नीलचक्र–संज्ञा पु० [सं०] १. जगन्नाथजी के मंदिर के शिखर पर माना जानेवाला चक्र। २. ३० अक्षरों का एक दंडक वृत्त।

नीलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] नीलापन।

नीलम–संज्ञा पु० [फ़ा० मि० सं० नीलमणि] नीलमणि। नीले रंग का रत्न। इंद्रनील।

नीलमणि–संज्ञा पु० [सं०] नीलम।

नीलमोर–संज्ञा पु० [हिं० नील+मोर] कुररा नामक पक्षी।

नीललोहित–वि० [सं०] नीलापन लिए लाल। बैंगनी।

संज्ञा पु० शिव का एक नाम।

नीलस्वरूप, नीलस्वरूपक–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त।

नीलांजन–संज्ञा पु० [सं०] १. नीला सुरमा। २ तूतिया। नीला थोथा।

नीलांबर–संज्ञा पुं० [सं०] नीले रंग का कपड़ा (विशेषतः रेशमी)।

वि० नीले कपड़े धारण करनेवाला।

नीलांबुज–संज्ञा पु० [सं०] नील कमल।

नीला–वि० [सं० नील] आकाश के रंग का। नील के रंग का।

मुहा०—नीला पीला होना = क्रोध दिखाना। क्रुद्ध होना। बिगड़ना। चेहरा नीला पड़ जाना = १ आकृति में भय, उद्विग्नता, लज्जा आदि प्रकट होना। २. सजीवता के लक्षण नष्ट होना।

नीला थोथा–संज्ञा पु० [सं० नीलतुत्थ] ताँबे का नीला क्षार या लवण। तूतिया।

नीलाम–संज्ञा पु० [पुर्त्त० लीलाम] बिक्री का एक ढंग जिसमें माल उस आदमी को दिया जाता है जो सबसे अधिक दाम लगाता है। बोली बोलकर बेचना।

नीलावती–संज्ञा स्त्री० [सं० नीलवती] एक प्रकार का चावल।

नीलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नीलबरी २. नीली निर्गुंडी। नील सम्हालू वृक्ष। ३. आँख तिलमिलाने का रोग। ४. मुख पर का एक रोग जिसमें सरसों के बराबर छोटे-छोटे कड़े काले दाने निकलते हैं। झाई।

नीलिमा–संज्ञा स्त्री० [सं० नीलिमन्] १.

नीलापन। २. श्यामता। स्याही।

नीली घोड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० नीली + घोड़ी] जामे के साथ सिली हुई कागज़ की घोड़ी जिसे पहन लेने से जान पड़ता है कि आदमी घोड़े पर सवार है। डफाली इसे पहनकर भीख माँगने निकलते हैं।

नीलोत्पल–संज्ञा पुं० [सं०] नील कमल।

नीलोफर–संज्ञा पुं० [फा०। मि० सं० नीलोत्पल] १. नील कमल। २. कुईं। कुमुद।

नीवँ–संज्ञा स्त्री० [सं० नेमि, प्रा० नेइ] १. घर बनाने में गहरी नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा जिसके भीतर से दीवार की जोड़ाई आरंभ होती है।

मुहा०–नीवँ देना = गड्ढा खोदकर दीवार खड़ी करने के लिये स्थान बनाना। (किसी बात की) नीवँ देना = कारण या आधार खड़ा करना। जड़ खड़ी करना। उपक्रम करना।

२. दीवार की जड़ या आधार। मूलभित्ति।

मुहा०—नीवँ जमाना, डालना या देना = दीवार उठाने के लिये नीवँ के गड्ढे में ईंट, पत्थर आदि जमाकर आधार खड़ा करना। दीवार की जड़ जमाना। (किसी बात की) नीवँ जमाना या डालना = आधार दृढ़ करना। स्थिर करना। स्थापित करना। (किसी वस्तु या बात की) नीवँ पड़ना = १. घर की दीवार का आधार खड़ा होना। २. सूत्रपात होना। जड़ खड़ी होना या जमना।

३. जड़। मूल। स्थिति। आधार।

नीव–संज्ञा स्त्री० दे० "नीवँ"।

नीवि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमर में लपेटी हुई धोती की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे सूत की डोरी से या योंही बाँधती हैं। २. सूत की डोरी जिससे स्त्रियाँ धोती या लहँगे की गाँठ बाँधती हैं। कटिवस्त्र बंध। फुंफुदी। ३. साड़ी। धोती।

नीवी–संज्ञा स्त्री० दे० "नीवि"।

नीसानी–संज्ञा स्त्री० [?] तेईस मात्राओं का एक छंद। उपमान।

नीहाँ–संज्ञा स्त्री० दे० "नीवँ"।

नीहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुहरा। २. पाला। हिम। तुषार। बर्फ।

नीहारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश में धूएँ या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाशपुंज जो अँधेरी रात में सफ़ेद धब्बे की तरह कहीं कहीं दिखाई पड़ता है।

नुकता–संज्ञा पुं० [अ० नुक़तः] बिंदु। बिंदी।

संज्ञा पुं० [अ० नुक्तः] १. चुटकुला। फबती। लगती हुई उक्ति। २. ऐब।

नुकताचीनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] छिद्रान्वेषण। दोष निकालने का काम।

नुकती–संज्ञा स्त्री० [फा० नखुदी] एक प्रकार की मिठाई। बेसन की महीन बुँदिया।

नुकरा–संज्ञा पुं० [अ०] १. चाँदी। २. घोड़ों का सफ़ेद रंग।

वि० सफ़ेद रंग का (घोड़ा)।

नुकसान–संज्ञा पुं० [अ०] १. कमी। घटी। ह्रास। छीज। २. हानि। घाटा। क्षति।

मुहा०—नुक़सान उठाना = हानि सहना। क्षतिग्रस्त होना। नुक़सान पहुँचाना = हानि करना। क्षतिग्रस्त करना। नुक़सान भरना = हानि की पूर्ति करना। घाटा पूरा करना।

३. दोष। अवगुण। विकार।

मुहा०—(किसी को) नुक़सान करना = दोष उत्पन्न करना। स्वास्थ्य के प्रतिकूल होना।

नुकीला–वि० [हिं० नोक + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नुकीली] १. नोकदार। जिसमें नोक निकली हो। २. बाँका तिरछा।

नुक्कड़–संज्ञा पुं० [हिं० नोक का अल्पा०] १. नोक। पतला सिरा। २. सिरा। छोर। अंत। ३. निकला हुआ कोना।

नुक्स–संज्ञा पुं० [अ०] १. दोष। ऐब। खराबी। बुराई। २. त्रुटि। कसर।

नुचना–क्रि० अ० [सं० लुंचन] १. नोचा जाना। खिंचकर उखड़ना। उड़ना। २. खरोंचा जाना। नाखून आदि से छिलना।

नुचवाना–क्रि० स० [हिं० नोचना का प्रे०] नोचने का काम दूसरे से कराना।

नुत्फा–संज्ञा पुं० [अ०] १. वीर्य। शुक्र। २. संतति। औलाद।

नुनखरा, नुनखारा–वि० [हिं० नून + खार] स्वाद में नमक का सा खारा। नमकीन।

नुनना–क्रि० स० [सं० लवन, लून] लुनना। खेत काटना।

नुनाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० नून] लावण्य। सुंदरता। सलोनापन।

नुनेरा–संज्ञा पुं० [हिं० नून + एरा (प्रत्य०)] १. नोनी मिट्टी आदि से नमक निकालनेवाला। २. लोनिया। नोनिया।

नुमाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दिखावट।

दिखावा। प्रदर्शन। २ तड़क भड़क। ठाठ बाट। सजधज। ३ नाना प्रकार की वस्तुओं का कुतूहल और परिचय के लिये एक स्थान पर दिखाया जाना। प्रदर्शिनी।

नुमाइशी-वि० [फा० नुमाइश] जो केवल दिखावट के लिये हो किसी प्रयोजन का न हो। दिखाऊ। दिखौवा।

नुसखा-संज्ञा पु० [अ०] १ लिखा हुआ कागज। २ कागज का वह चिट जिस पर हकीम या वैद्य रोगी के लिये औषध और सेवन विधि लिखते हैं।

नूत-वि० [सं० नूतन] १ नया। नूतन। २ अनोखा। अनूठा।

नूतन-वि० [सं०] १ नया। नवीन। २ हाल का। ताजा। ३ अनोखा।

नूतनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] नूतन का भाव। नवीनता। नयापन।

नून-संज्ञा पु० [?] १ आल। २ आल की जाति की एक लता।
†संज्ञा पु० [सं० लवण] नमक।
मुहा०-नून तेल=गृहस्थी का सामान।
*वि० दे० "न्यून"।

नूनताई -संज्ञा स्त्री० दे० "न्यूनता"।

नूपुर-संज्ञा पु० [सं०] १ पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। पैंजनी। घुँघरू। २ नगण के पहले भेद का नाम।

नूका-संज्ञा पुं० [?] १४ मात्राओं का एक छंद। कज्जल।

नूर-संज्ञा पु० [अ०] १ ज्योति। प्रकाश। मुहा० -नूर का तड़का=प्रातःकाल। नूर बरसना=प्रभा की अधिकता से प्रकट होना। २ श्री। कांति। शोभा।

नूरा*-वि० [अ० नूर] नूरवाला। तेजस्वी।

नूह--संज्ञा पु० [अ०] (यहूदी, ईसाई और मुसलमान मतों के अनुसार) एक पैगंबर जिनके समय में बड़ा भारी तूफान आया था।

नृ-संज्ञा पु० [सं०] नर। मनुष्य।

नृकेशरी-संज्ञा पु० [सं० नृकेशरिन्] १ नृसिंह अवतार। २ श्रेष्ठ पुरुष।

नृतक*-संज्ञा पु० दे० "नर्तक"।

नृत्तना*-क्रि० अ० [सं० नृत्य] नाचना।

नृत्य-संज्ञा पु० [सं०] संगीत के ताल और गति के अनुसार हाथ पाँव हिलाना, धड़ कन आदि का व्यापार। नाच। नर्त्तन।

नृत्यकी*-संज्ञा स्त्री० दे० "नर्त्तकी"।

नृत्यशाला-संज्ञा स्त्री [सं०] नाचघर।

नृदेव, नृदेवता-संज्ञा पु० [सं०] १ राजा। २ ब्राह्मण।

नृप-संज्ञा पु० [सं०] नरपति। राजा।

नृपति, नृपाल-संज्ञा पु० [सं०] राजा।

नृमेध-संज्ञा पु० [सं०] नरमेध यज्ञ।

नृयज्ञ-संज्ञा पु० [सं०] पंचयज्ञों में से एक जिसका करना गृहस्थ के लिये कर्त्तव्य है। अतिथिपूजा। अभ्यागत का सत्कार।

नृशंस-वि० [सं०] १ क्रूर। निर्दय। २ अपकारी। अत्याचारी। जालिम।

नृशंसता-संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्दयता।

नृसिंह-संज्ञा पु० [सं०] १ सिंहरूपी भगवान् जो विष्णु के चौथे अवतार थे। इन्होंने हिरण्यकशिपु को मारकर प्रह्लाद की रक्षा की थी। २ श्रेष्ठ पुरुष।

नृहरि-संज्ञा पु० [सं०] नृसिंह।

ने-प्रत्य० [सं०प्रत्य० टा=एण] सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता की विभक्ति।

नेक-वि० [फा०] १ भला। उत्तम। २ शिष्ट। सज्जन।
*†वि० [हिं० न+एक] थोड़ा। तनिक। क्रि० वि० थोड़ा। जरा। तनिक।

नेकचलन-वि० [फा० नेक+हिं० चलन] [संज्ञा नेकचलनी] अच्छे चाल चलन का। सदाचारी।

नेकनाम-वि० [फा०] [संज्ञा नेकनामी] जिसका अच्छा नाम हो। यशस्वी।

नेकनीयत-वि० [फा० नेक+अ० नीयत] [संज्ञा नेकनीयती] १ अच्छे संकल्प का। शुभ संकल्पवाला। २ उत्तम विचार का।

नेकी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ भलाई। उत्तम व्यवहार। २ सज्जनता। भलमनसाहत।
यौ०—नेकी बदी=भलाई बुराई। पाप पुण्य।
३ उपकार। हित।

नेकु*-वि०, क्रि० वि० दे० "नेक"।

नेग-संज्ञा पु० [सं० नैयमिक] १ विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा कृत्य में योग देनेवाले लोगों को कुछ दिए जाने का नियम। २ वह वस्तु या धन जो इस प्रकार दिया जाता है।

नेगचार-संज्ञा पु० दे० "नागेचार"।

नेग जोग-संज्ञा पु० [हिं० नेग+जोग] विवाह आदि मंगल अवसरों पर संबंधियों तथा

काम करनेवालों को उनके प्रसन्नतार्थ कुछ दिए जाने का दस्तूर।

नेगटी†–संज्ञा पुं० [हिं० नेग + टा (प्रत्य०)] नेग या रीति का पालन करनेवाला।

नेगी–संज्ञा पुं० [हिं० नेग] नेग पानेवाला। नेग पाने का हकदार।

नेगीजोगी–संज्ञा पुं० [हिं० नेगजोग] नेग पानेवाले। नेगी। जैसे, नाई, बारी।

नेछावर†–संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

नेजा–संज्ञा पुं० [फा०] १. भाला। बरछा। २ साँग। निशान।

नेजाबरदार–संज्ञा पुं० [फा०] भाला या राजाओं का निशान लेकर चलनेवाला।

नेजाल†–संज्ञा पुं० [फा० नेजा] भाला।

नेठना‡–क्रि० अ० दे० "नाठना"।

नेड़े†–क्रि० वि० [सं० निकट] निकट। पास।

नेत–संज्ञा पुं० [सं० नियति] १ ठहराव। निर्धारण। २. निश्चय। संकल्प। इरादा। ३. व्यवस्था। प्रबंध। आयोजन।
संज्ञा पुं० [सं० नेत्र] मथानी की रस्सी।
संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की चादर।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का गहना।
संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।

नेता–संज्ञा पुं० [सं० नेतृ] [स्त्री० नेत्री] १ अगुआ। नायक। सरदार। २ स्वामी। मालिक। ३. काम को चलानेवाला। निर्वाहक।
संज्ञा पुं० [सं० नेत्र] मथानी की रस्सी।

नेति–[सं०] एक संस्कृत वाक्य (न इति) जिसका अर्थ है "इति नहीं" अर्थात् "अंत नहीं है"।

नेती–संज्ञा स्त्री० [हिं० नेता] वह रस्सी जो मथानी में लपेटी जाती है और जिसके खींचने से मथानी फिरती है।

नेती धोती–संज्ञा स्त्री० [सं० नेत्र, हिं० नेता + सं० धौति] हठयोग की एक क्रिया जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में डालकर आँतें साफ करते हैं। धौति।

नेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. आँख। २. मथानी की रस्सी। ३. एक प्रकार का वस्त्र। ४ वृक्षमूल। पेड़ की जड़। ५ रथ। ६. दो की संख्या का सूचक शब्द।

नेत्रजल–संज्ञा पुं० [सं०] आँसू।

नेत्रबाला–संज्ञा पुं० दे० "सुगंधबाला"।

नेत्रमंडल–संज्ञा पुं० [सं०] आँख का घेरा। आँख का ढेला।

नेत्रस्राव–संज्ञा पुं० [सं०] आँखों से पानी बहना।

नेत्राभिष्यंद–संज्ञा पुं० [सं०] आँख आने का रोग।

नेनुआ, नेनुवा–संज्ञा पुं० [?] एक भाजी या तरकारी। घियातोरई।

नेपच्यून–संज्ञा पुं० [फरासीसी] सूर्य की परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह।

नेपथ्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ वेश भूषा। सजावट। २ नृत्य, अभिनय आदि में परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट वेश सजते हैं। वेशस्थान।

नेपाल–संज्ञा पुं० [देश०] हिंदुस्तान के उत्तर में एक प्रसिद्ध पहाड़ी देश।

नेपाली–वि० [हिं० नेपाल] १. नेपाल में रहने या होनेवाला। २ नेपाल-संबंधी।

नेफा–संज्ञा पुं० [फा०] पायजामे या लँहगे के घेर में इजारबंद पिरोने का स्थान।

नेब‡–संज्ञा पुं० [फा० नायब] १. सहायक। कार्य्य में सहायता देनेवाला। २ मंत्री।

नेम–संज्ञा पुं० [सं० नियम] १. नियम। कायदा। बंधेज। २ बँधी हुई बात। ऐसी बात जो टलती न हो, बराबर होती हो। ३. रीति। दस्तूर। ४ धर्म की दृष्टि से कुछ क्रियाओं का पालन।
यौ०—नेम धरम = पूजा पाठ, व्रत आदि।

नेमि–संज्ञा स्त्री [सं०] १. पहिये का घेरा या चक्कर। चक्रपरिधि। २. कूएँ की जगत। ३. कूएँ की जमवट। ४. प्रांतभाग।
संज्ञा पुं० १ नेमिनाथ तीर्थंकर। २ वज्र।

नेमी–वि० [सं० नियम] १ नियम का पालन करनेवाला। २ धर्म की दृष्टि से पूजापाठ, व्रत आदि करनेवाला।

नेरे†–क्रि० वि० [हिं० नियर] निकट। पास।

नेव–संज्ञा पुं० दे० "नव"।

नेवग–संज्ञा पुं० दे० "नेग"।

नेवज–संज्ञा पुं० [सं० नैवेद्य] खाने पीने की चीज जो देवता को चढ़ाई जाय। भोग।

नेवतना†–क्रि० स० [सं० निमंत्रण] निमंत्रित करना। नेवता भेजना।

नेवता–संज्ञा पुं० दे० "न्योता"।

नेवर–संज्ञा पुं० दे० "नूपुर"।
† वि० [सं० न + वर – ...

नेवरना–क्रि० अ० [सं० ...

रण या दूर होना। समाप्त होना।

नेवला-संज्ञा पु० [सं० नकुल] एक मांसाहारी पिंडज छोटा जंतु जो देखने में गिलहरी के आकार का पर उससे बड़ा और भूरा होता है। यह साँप को खा जाता है।

नेवाज़-वि० दे० "निवाज़"।

नेवारना -क्रि० स० दे० "निवारना"।

नेवारी-संज्ञा स्त्री० [सं० नेपाली] जूही की जाति का एक पौधा। वनमल्लिका।

नेसुक †-वि० [हिं० नेसु] तनिक। ज़रा।
क्रि० वि० थोड़ा सा। ज़रा-सा। तनिक।

नेस्त-वि० [फ़ा०] जो न हो।
यौ०-नेस्त नाबूद = नष्ट भ्रष्ट।

नेस्ती-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. न होना। अनस्तित्व। २. आलस्य। ३. नाश।

नेह-संज्ञा पु० [सं० स्नेह] १ स्नेह। प्रेम। प्रीति। २. चिकना। तेल या घी।

नेही -वि० [हिं० नेह + ई (प्रत्य०)] स्नेह करनेवाला। प्रेमी।

नै-संज्ञा स्त्री० दे० "नय"।
संज्ञा स्त्री० [सं० नदी] नदी।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ बाँस की नली। २. हुक्के की निगाली। ३ बाँसुरी।

नैऋत -वि० संज्ञा पु० दे० नैऋत्य।

नैक, नैकु-वि० दे० "नेक", "नेकु"।

नैकट्य-संज्ञा पु० [सं०] निकटता।

नैगम-वि० [सं०] १. निगम-संबंधी। २. जिसमें ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो।
संज्ञा पु० १. उपनिषद् भाग। २ नीति।

नैचा-संज्ञा पु० [फ़ा०] हुक्के की दोहरी नली जिसके एक सिरे पर चिलम रखी जाती है और दूसरे का छोर मुँह में रखकर धूआँ खींचते हैं।

नैतिक-वि० [सं०] नीति संबंधी।

नैन -संज्ञा पु० दे० "नयन"।
संज्ञा पु० [सं० नवनीत] मक्खन।

नैनसुख-संज्ञा पु० [हिं० नैन + सुख] एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।

नैनू-संज्ञा पु० [हिं० नैन = आँख] १. एक प्रकार का उभरे हुए बेलबूटे का कपड़ा।
†संज्ञा पु० [सं० नवनीत] मक्खन।

नैपाल-वि० [सं०] १. नेपाल-संबंधी। २. नेपाल में होनेवाला।
संज्ञा पु० दे० "नेपाल"।

नि [हिं० नैपाल] १. नैपाल देश का। २. नैपाल में रहने या होनेवाला।
संज्ञा पु० नैपाल का रहनेवाला आदमी।

नैपुण्य-संज्ञा पु० [सं०] निपुणता। चतुराई। होशियारी। दक्षता। कमाल।

नैमित्तिक-वि० [सं०] जो निमित्त उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो।

नैमिषारण्य-संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन वन जो आजकल हिंदुओं का एक तीर्थ-स्थान माना जाता है। नीमसार।

नैया ‡-संज्ञा स्त्री० [हिं० नाव] नाव।

नैयायिक-वि० [सं०] न्यायशास्त्र का जाननेवाला। न्यायवेत्ता।

नैर* -संज्ञा पु० [सं० नगर] १ शहर। २. देश। जनपद।

नैराश्य-संज्ञा पु० [सं०] निराशा का भाव। नाउम्मेदी।

नैऋत-वि० [सं०] निऋति संबंधी।
संज्ञा पु० १ राक्षस। २. पश्चिम दक्षिण कोण का स्वामी।

नैऋति-संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।

नैवेद्य-संज्ञा पु० [सं०] वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढ़ाई जाय। देव-बलि। भोग।

नैषध-वि० [सं०] निषध देश संबंधी। निषध देश का।
संज्ञा पु० १. नल जो निषध देश के राजा थे। २. श्रीहर्ष-रचित एक संस्कृत काव्य।

नैष्ठिक-वि० [सं०] [स्त्री० नैष्ठिकी] निष्ठावान्। निष्ठायुक्त।

नैसर्गिक-वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। स्वभावसिद्ध। कुदरती।

नैसा -वि० [सं० अनिष्ट] बुरा। ख़राब।

नैहर-संज्ञा पु० [सं० ज्ञाति = पिता + हिं० घर] स्त्री के पिता का घर। मायका। पीहर।

नोक-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] [वि० नुकीला] १. उस ओर का सिरा जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती गई हो। सूक्ष्म अग्र-भाग। २. किसी वस्तु के निकले हुए भाग का पतला सिरा। ३. निकला हुआ कोना।

नोक झोंक-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नोक + हिं० झोंक] १. बनाव-सिंगार। ठाठ-बाट। सजावट। २. तपाक। तेज। आतंक। दर्प। ३. चुभनेवाली बात। व्यंग्य।

ताना। ग्रादोज़ा। ४. छेड़छाड़।
नोकना–क्रि० स० [?] ललचना।
नोकदार–वि० [फा०] १. जिसमें नोक हो। २ चुभनेवाला। पैना। ३. चित्त में चुभनेवाला। ४. शानदार।
नोका भोंकी–संज्ञा स्त्री० दे० "नोक-झोंक"।
नोखा†–वि० दे० "अनोखा"।
नोच–संज्ञा स्त्री० [हिं० नोचना] १. नोचने की क्रिया या भाव। २. छीनना। लूट।
नोच खसोट–संज्ञा स्त्री० [हिं० नोचना + खसोटना] जबरदस्ती खींच-खाँच करके लेना। छीनाझपटी। लूट।
नोचना–क्रि० स० [सं० लुंचन] १. जमी या लगी हुई वस्तु को झटके से खींचकर अलग करना। उखाड़ना। २. नख आदि से विदीर्ण करना। ३ दुःखी और हैरान करके माँगना या लेना।
नोट–संज्ञा पु० [अं०] १ टाँकने या लिखने का काम। ध्यान रखने के लिये लिख लेने का काम। २ लिखा हुआ परचा। पत्र। चिट्ठी। ३ आशय या अर्थ प्रकट करनेवाला लेख। टिप्पणी। ४. सरकार की ओर से जारी किया हुआ वह कागज़ जिस पर कुछ रुपयों की संख्या रहती है और यह लिखा रहता है कि सरकार से उतना रुपया मिल जायगा। सरकारी हुंडी।
नोदन–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रेरणा। चलाने या हाँकने का काम। २ बैलों को हाँकने की छड़ी या कोड़ा। पैना। औंगी।
नोन†–संज्ञा पु० दे० "नमक"।
नोना–संज्ञा पु० [सं० लवण] [स्त्री० नोनी] १. नमक का वह अंश जो पुरानी दीवारों तथा सीड़ की जमीन में लगा मिलता है। २. लोनी मिट्टी। † ३ शरीफ़ा। सीताफल। †वि० [स्त्री० नोनी] १. नमक मिला। खारा। २. लावण्यमय। सलोना। सुंदर। क्रि० स० दे० "नोवना"।
नोना चमारी–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जादूगरनी जिसकी दोहाई मंत्रों में दी जाती है।
नोनिया–संज्ञा पु० [हिं० नोना] लोनी मिट्टी से नमक निकालनेवाली एक जाति।
† संज्ञा स्त्री० [हिं० नोन] लोनिया। अमलोनी।
नोनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० लवण] १. लोनी मिट्टी। २ लोनिया। अमलोनी का पौधा।
नोनोः–वि० दे० "नोना"।
नोर, नोलः–वि० दे० "नवल"।
नोवना†–क्रि० स० [सं० नद्ध] दुहते समय रस्सी से गाय के पैर बाँधना।
नोहर†–वि० [सं० नोपलभ्य] १. अलभ्य। दुर्लभ। जल्दी न मिलनेवाला। २. अनोखा। अद्भुत।
नौ–वि० [सं० नव] एक कम दस।
मुहा०—नौ दो ग्यारह होना = देखते देखते भग जाना। चल देना।
नौकर–संज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० नौकरानी] १ भृत्य। चाकर। टहलुआ। खिदमतगार। २ कोई काम करने के लिये वेतन आदि पर नियुक्त मनुष्य। वैतनिक कर्मचारी।
नौकरशाही–संज्ञा स्त्री० [फा० नौकर + शाही] वह शासन प्रणाली जिसमें सारी राजसत्ता केवल बड़े बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है।
नौकरानी–संज्ञा स्त्री० [फा० नौकर + आनी (प्रत्य०)] घर का काम धंधा करनेवाली स्त्री। दासी। मजदूरनी।
नौकरी–संज्ञा स्त्री० [फा० नौकर + ई (प्रत्य०)] १. नौकर का काम। सेवा। टहल। खिदमत। २. कोई काम जिसके लिये तनख़ाह मिलती हो।
नौकरीपेशा–संज्ञा पु० [फा०] वह जिसकी जीविका नौकरी से चलती हो।
नौका–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाव। किश्ती।
नौछावर†–संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।
नौज–अव्य० [सं० नवद्य, प्रा० नवज्ज] १. ऐसा न हो। ईश्वर न करे। (अनिच्छा सूचक) २. न हो। न सही। (बेपरवाही) (स्त्रि०)
नौजवान–वि० [फा०] नवयुवक।
नौजा–संज्ञा पु० [फा० लौज] १. बादाम। २. चिलगोजा।
नौतनः–वि० दे० "नूतन"।
नौतमः–वि० [सं० नवतम] १. अत्यंत नवीन। बिलकुल नया। २ ताजा। संज्ञा पु० [हिं० नवना] नम्रता। विनय।
नौता–वि० [सं० नव] नया। ताजा।
नौधाः–वि० दे० "नवधा"।
नौनगा–संज्ञा पु० [हिं० नौ + नग] बाहु पर पहनने का नौ नगों का एक गहना।
नौना–क्रि० अ० दे० "नवना"।
नौबढ़–वि० [सं० नया + हिं० बढ़ना]

हीन दशा से अच्छी दशा में आए थोड़े ही दिन हुए हों। हाल में बढ़ा हुआ।

नौबत–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बारी। पारी। २. गति। दशा। हालत। ३. उपस्थित दशा। संयोग। ४. वैभव या मंगलसूचक वाद्य, विशेषतः शहनाई और नगाड़ा जो देवमंदिरों या बड़े आदमियों के द्वार पर बजता है।

मुहा०—नौबत झड़ना=नौबत बजना। नौबत बजना=१. आनंद उत्सव होना। २. प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा होना।

नौबतखाना–संज्ञा पुं० [फा०] फाटक के ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठकर नौबत बजाई जाती है। नक्कारखाना।

नौबती–संज्ञा पुं० [फा० नौबत+ई० (प्रत्य०)] १. नौबत बजानेवाला। नक्कारची। २. फाटक पर पहरा देनेवाला। पहरेदार। ३. बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा। ४. बड़ा खेमा या तंबू।

नौमि–क्रि० स० [सं० नमामि] एक वाक्य जिसका अर्थ है "मैं नमस्कार करता हूँ"।

नौमी–संज्ञा स्त्री० [सं० नवमी] पक्ष की नवीं तिथि। नवमी।

नौरंग–संज्ञा पुं० औरंग (औरंगजेब) का रूपांतर।

नौरंगी–संज्ञा स्त्री० दे० "नारंगी"।

नौरतन–संज्ञा पुं० दे० "नवरत्न"। संज्ञा पुं० [सं० नवरत्न] नौनगा गहना। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चटनी।

नौरोज़–संज्ञा पुं० [फा०] १. पारसियों में नए वर्ष का पहला दिन। इस दिन बहुत आनंद-उत्सव मनाया जाता था। २. त्योहार।

नौल–वि० दे० "नवल"।

नौलखा–वि० [हिं० नौ+लाख] जिसका मूल्य नौ लाख हो। जड़ाऊ और बहुमूल्य।

नौशा–संज्ञा पुं० [फा०] दूल्हा। वर।

नौसत–संज्ञा पुं० [हिं० नौ+सात] सोलहों शृंगार। सिंगार।

नौसादर–संज्ञा पुं० [फा० नौशादर] एक तीक्ष्ण झालदार क्षार या नमक।

नौसिखिया, नौसिखुआ–वि० [सं० नवशिक्षित] जिसने कोई काम हाल में सीखा हो। जो दक्ष या कुशल न हुआ हो।

नौसेना–संज्ञा स्त्री० [सं०] जलसेना। जल में लड़नेवाली सेना।

नौहड़–संज्ञा पुं० [सं० नव=नया+हिं० हाँडी] मिट्टी की नई हाँड़ी।

न्यग्रोध–संज्ञा पुं० [सं०] १. वट वृक्ष। बरगद। २. शमी वृक्ष। ३. बाहु। ४. विष्णु। ५. महादेव।

न्यस्त–वि० [सं०] १. रखा हुआ। धरा हुआ। २. स्थापित। बैठाया या जमाया हुआ। ३ चुनकर सजाया हुआ। ४. डाला हुआ। फेंका हुआ। ५. त्यक्त। छोड़ा हुआ। ६ अमानत रखा हुआ।

न्याउ–संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।

न्याति–संज्ञा स्त्री० [सं० ज्ञाति] जाति।

न्याय–संज्ञा पुं० [सं०] १. उचित बात। नियम के अनुकूल बात। हक बात। इंसाफ। २. किसी मामले मुकदमे में दोषी और निर्दोष, अधिकारी और अनधिकारी आदि का निर्धारण। ३. वह शास्त्र जिसमें किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिये विचारों की उचित योजना या निरूपण होता है। यह छः दर्शनों में है और इसके प्रवर्तक मिथिला के गौतम ऋषि कहे जाते हैं। ४. ऐसा दृष्टांत-वाक्य जिसका व्यवहार लोक में कोई प्रसंग आ पड़ने पर होता है और जो किसी उपस्थित बात पर घटती है। कहावत। जैसे—काकतालीय न्याय, काकाक्षिगोलक न्याय।

न्यायकर्त्ता–संज्ञा पुं० [सं०] न्याय या फैसला करनेवाला हाकिम।

न्यायतः–क्रि० वि० [सं०] १. न्याय से। ईमान से। २ ठीक ठीक।

न्यायपरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] न्यायशीलता। न्यायी होने का भाव।

न्यायवान्–संज्ञा पुं० [सं० न्यायवत्] [स्त्री० न्यायवती] न्याय पर चलनेवाला। न्यायी।

न्यायाधीश–संज्ञा पुं० [सं०] मुकदमे का फैसला करनेवाला अधिकारी। न्यायकर्त्ता।

न्यायालय–संज्ञा पुं० [सं०] वह जगह जहाँ मुकदमों का फैसला होता हो। अदालत। कचहरी।

न्यायी–संज्ञा पुं० [सं० न्यायिन्] न्याय पर चलनेवाला। उचित पक्ष ग्रहण करनेवाला।

न्याय्य–वि० [सं०] न्यायसंगत। उचित।

न्यारा–वि० [सं० निर्निकट] [स्त्री० न्यारी] १. जो पास न हो। दूर। २. अलग।

पृथक्। जुदा। ३. और ही। अन्य। भिन्न। ४. निराला। अनोखा। विलक्षण।

न्यारिया–संज्ञा पुं० [हिं० न्यारा] सुनारों के नियार (राख इत्यादि) को धोकर सोना-चांदी एकत्र करनेवाला।

न्यारे–क्रि० वि० [हिं० न्यारा] १ पास नहीं। दूर। २. अलग। पृथक्।

न्याव–संज्ञा पुं० [सं० न्याय] १ नियम नीति। आचरण पद्धति। २. उचित पक्ष। वाजिब बात। ३. विवेक। ४ इंसाफ़। न्याय।

न्यास–संज्ञा पुं० [सं] [वि० न्यस्त] १. स्थापन। रखना। २ धरोहर। थाती। ३ अर्पण। त्याग। ४. संन्यास। ५ देवता के भिन्न भिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मंत्र पढ़कर उन पर विशेष वर्णों का स्थापन। (तंत्र)

न्यून–वि० [सं०] १. कम। थोड़ा। अल्प। २ घटकर। नीचा।

न्यूनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कमी। २. हीनता।

न्योछावर–संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

न्योजी–संज्ञा स्त्री० [?] लीची नामक फल। २. चिलगोजा। नेजा।

न्योतना–क्रि० स० [हिं० न्योता + ना (प्रत्य०)] आनंद-उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिये बंधु-बांधव आदि को बुलाना। निमंत्रित करना।

न्योतहरी– संज्ञा पुं० [हिं० न्योता] निमंत्रित। न्योते में आया हुआ आदमी।

न्योता–संज्ञा पुं० [सं० निमंत्रण] १. आनंद-उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिये बंधु-बांधव आदि का आह्वान। बुलावा। निमंत्रण। २. वह भोजन जो दूसरे को अपने यहाँ कराया जाय या दूसरे के यहाँ (उसकी प्रार्थना पर) किया जाय। दावत। ३ वह भेंट या धन जो इष्ट मित्र या संबंधी इत्यादि के यहां किसी शुभ या अशुभ कार्य के समय भेजा जाता है।

न्योला–संज्ञा पुं० दे० "नेवला"।

न्योली संज्ञा स्त्री० [सं० नली] हठ योग की एक क्रिया जिसमें पेट के नलों को पानी से साफ करते हैं।

न्हाना –क्रि० अ० दे० "नहाना"।

प

प–हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतिम वर्ग का पहला वर्ण। इसका उच्चारण ओंठ से होता है।

पंक–संज्ञा पुं० [सं०] १. कीचड़। कीच। २. पानी के साथ मिला हुआ पोतने योग्य पदार्थ। लेप।

पंकज–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

पंकजराग–संज्ञा पुं० [सं०] पद्मराग मणि।

पंकजवाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। एकावली।

पंकजात–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

पंकजासन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

पंकरुह–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

पंकिल–वि० [सं०] जिसमें कीचड़ हो।

पंक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐसा समूह जिसमें एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुएँ एक दूसरी के उपरांत एक सीध में हों। श्रेणी। पाँती। कतार। २. चालीस अक्षरों का एक वैदिक छंद। ३ एक वर्णवृत्त। ४. दस की संख्या। ५. सेना में दस दस योद्धाओं की श्रेणी। ६ कुलीन ब्राह्मणों की श्रेणी। ७ भोज में एक साथ बैठकर खानेवालों की श्रेणी।

पंक्तिपावन–संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जिसको यज्ञादि में बुलाना, भोजन कराना और दान देना श्रेष्ठ माना गया है।

पंक्तिबद्ध–वि० [सं०] श्रेणीबद्ध। में बँधा या रखा हुआ।

पंख–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] पर।

मुहा०–पंख जमना = [illegible] उत्पन्न होना। २ [illegible] रंग ढंग दिखाई [illegible] दिखाई देना। [illegible] पक्षी के [illegible]

पँखड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी"।
पंखा—संज्ञा पु० [हिं० पंख] [स्त्री० अल्पा० पंखी] वह वस्तु जिसे हिलाकर हवा का झोंका किसी ओर ले जाते हैं। बेना।
पंखा कुली—संज्ञा पु० [हिं० पंखा + कुली] वह कुली जो पंखा खींचता हो।
पंखापोश—संज्ञा पु० [हिं० पंखा + फा० पोश] पंखे के ऊपर का गिलाफ़।
पंखी—संज्ञा पु० [सं० पक्ष] १. पक्षी। चिड़िया। २. पांखी। फतिंगा। ३. एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पंखा] छोटा पंखा।
पँखुड़ा—संज्ञा पु० [सं० पक्ष] कंधे और बाँह का जोड़। पखोरा।
पँखुड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंख] फूल का दल। पखड़ी।
पंग—वि० [सं० पंगु] १. लँगड़ा। २. स्तब्ध।
संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का नमक।
पंगत, पंगति—संज्ञा स्त्री० [सं० पंक्ति] १. पाँती। पंक्ति। २. भोज के समय भोजन करनेवालों की पंक्ति। ३. भोज। ४. समाज। सभा।
पंगा—वि० [सं० पंगु] [स्त्री० पंगी] १. लँगड़ा। २. स्तब्ध। बेकाम।
पंगु—वि० [सं०] जो पैर से चल न सकता हो। लँगड़ा।
संज्ञा पुं० [सं०] १. शनैश्चर। २. एक वात रोग जो मनुष्य की जाँघों में होता है। इसमें रोगी चल-फिर नहीं सकता।
पंगुगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्णिक छंदों का एक दोष जो किसी वर्णिक छंद में लघु के स्थान में गुरु या गुरु के स्थान में लघु आ जाने से होता है।
पंगुल—वि० [सं० पंगु] पंगु। लँगड़ा।
पंच—वि० [सं०] जो संख्या में चार से एक अधिक हो। पाँच।
संज्ञा पु० १. पाँच की संख्या या अंक। २. समुदाय। समाज। ३. जनता। लोक।
मुहा०—पंच की भीख = सर्वसाधारण की कृपा। सबका आशीर्वाद। पंच की दुहाई = सब लोगों से अन्याय दूर करने या सहायता करने की पुकार। पंच परमेश्वर = दस आदमियों का कहना ईश्वर वाक्य के तुल्य है।
४. पाँच या अधिक आदमियों का समाज जो किसी झगड़े या मामले को निपटाने के लिये एकत्र हो। न्याय करनेवाली सभा।
मुहा०—(किसी को) पंच मानना या बदना = झगड़ा निपटाने के लिये किसी को नियत करना।
५. वह जो फ़ौजदारी के दौरे के मुक़द्दमे में दौरा जज की अदालत में फ़ैसले में जज की सहायता के लिये नियत हो।
पंचक—संज्ञा पु० [सं०] १. पाँच का समूह। पाँच का संग्रह। २. वह जिसके पाँच अवयव या भाग हों। ३. धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिनमें किसी नये कार्य्य का आरंभ निषिद्ध है। पचखा। (फलित) ४. शकुनशास्त्र। ५ पंचायत।
पंचकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार *अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी* ये पाँच स्त्रियाँ जो सदा कन्या ही रहीं अर्थात् विवाह आदि करने पर भी जिनका कौमार्य नष्ट नहीं हुआ।
पंचकल्याण—संज्ञा पु० [सं०] वह घोड़ा जिसका सिर (माथा) और चारों पैर सफ़ेद हों और शेष शरीर लाल या काला हो।
पंचकवल—संज्ञा पु० [सं०] पाँच ग्रास अन्न जो स्मृति के अनुसार खाने के पूर्व कुत्ते, पतित, कोढ़ी, रोगी, कौए आदि के लिये अलग निकाल दिया जाता है। अग्राशन।
पंचकोण—वि० [सं०] जिसमें पाँच कोने हों।
पंचकोश—संज्ञा पु० [सं०] उपनिषद् और वेदांत के अनुसार शरीर संघटित करनेवाले पाँच कोश (स्तर) जिनके नाम ये हैं—अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश।
पंचकोस—संज्ञा पु० [सं० पंचक्रोश] [संज्ञा पंचकोसी] पाँच कोस की लंबाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की पवित्र भूमि।
पंचकोसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पंचकोस] काशी की परिक्रमा।
पंचक्रोश—संज्ञा पु० [सं०] पंचकोस। काशी।
पंचगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँच नदियों का समूह—*गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा*। पंचनद।
पंचगव्य—संज्ञा पु० [सं०] गाय से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्य—दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र, जो बहुत पवित्र माने जाते और प्रायश्चित्त आदि में खिलाए जाते हैं।
पंचगौड़—संज्ञा पु० [सं०] देशानुसार विंध्य

के उत्तर बसनेवाले ब्राह्मणों के पाँच भेद —सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल।

पंचचामर-संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद। नाराच। गिरिराज।

पंचजन-संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच या पाँच प्रकार के जनों का समूह। २. गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस। ३. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद। ४. मनुष्य। जन-समुदाय। ५. पुरुष। ६. मनुष्य, जीव और शरीर से संबंध रखनेवाले प्राण आदि।

पंचजन्य-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध शंख जिसे श्रीकृष्णचंद्र बजाया करते थे।

पंचतत्त्व-संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। पंचभूत।

पंचतन्मात्र-संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य में पाँच स्थूल महाभूतों के कारण-रूप सूक्ष्म महाभूत जो अतींद्रिय माने गये हैं। इनके नाम हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

पंचतपा-संज्ञा पुं० [सं० पंचतपस्] चारों ओर आग जलाकर धूप में बैठकर तप करनेवाला। पंचाग्नि तापनेवाला।

पंचता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाँच का भाव। २. मृत्यु। विनाश।

पंचतिक्त-संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेद में इन पाँच कड़ुई ओषधियों का समूह—गिलोय (गुरुच), कंटकारि (भटकटैया), सोंठ, कुट और चिरायता (चकदत्त)।

पँचतोलिया-संज्ञा पुं० [हिं० पाँच+तोला?] एक प्रकार का झीना महीन कपड़ा।

पंचत्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच का भाव। २. मृत्यु। मरण। मौत।

पंचदेव-संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्रधान देवता जिनकी उपासना आजकल हिंदुओं में प्रचलित है—आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी।

पंचद्राविड़-संज्ञा पुं० [सं०] उन ब्राह्मणों के पाँच भेद जो विंध्याचल के दक्षिण बसते हैं—महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़।

चनद—संज्ञा पुं० [सं०] १. पंजाब की ये पाँच प्रधान नदियाँ जो सिंधु में मिलती हैं—सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम। २. पंजाब प्रदेश। ३. काशी के अंतर्गत एक तीर्थ जिसे पंचगंगा कहते हैं।

पंचनाथ-संज्ञा पुं० [सं० पंच+नाथ] बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ।

पंचनामा-संज्ञा पुं० [हिं० पंच+फा० नामा] वह कागज़ जिस पर पंच लोगों ने अपना निर्णय या फैसला लिखा हो।

पंचपल्लव-संज्ञा पुं० [सं०] इन पाँच वृक्षों के पल्लव—आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल।

पंचपात्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. गिलास के आकार का चौड़े मुँह का एक बरतन जो पूजा में काम आता है। २. पार्वण श्राद्ध।

पंचपीरिया-संज्ञा पुं० [हिं० पाँच+फा० पीर] मुसलमानों के पाँचों पीरों की पूजा करनेवाला।

पंचप्राण-संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्राण या वायु—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान।

पंचभर्तारी-संज्ञा स्त्री० [सं० पंच+भर्तार] द्रौपदी।

पंचभूत-संज्ञा पुं० दे० "पंचतत्त्व"।

पंचम-वि० [सं०] [स्त्री० पंचमी] १. पाँचवाँ। २. रुचिर। सुंदर। ३. दक्ष। निपुण। संज्ञा पुं० [सं०] १. सात स्वरों में से पाँचवाँ स्वर। यह स्वर कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। २. एक राग जो छः प्रधान रागों में तीसरा है।

पंचमकार-संज्ञा पुं० [सं०] वाम-मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पंचमहापातक-संज्ञा पुं० [सं०] मनुस्मृति के अनुसार ये पाँच महापातक हैं—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार और इन पातकों के करनेवालों का संसर्ग।

पंचमहायज्ञ-संज्ञा पुं० [सं०] स्मृतियों के अनुसार पाँच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थों के लिये आवश्यक है। कृत्य ये हैं—१. अध्यापन और संध्यावंदन। २. पितृतर्पण या पितृयज्ञ। ३. होम या देवयज्ञ। ४. बलिवैश्वदेव या भूतयज्ञ। ... अतिथिपूजन—नृयज्ञ या ...

पंचमहाव्रत-संज्ञा पुं० [सं०] ... अनुसार ये पाँच आचरण-... चारेय, ब्रह्मचर्य और ... पातंजलि जी ने 'यम' माना

पंचमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तिथि। २. द्रौपदी। ३. व्याकरण में अपादान कारक।

पंचमुखी-वि० [सं० पंचमुखिन्] पाँच मुखवाला।

पंचमूल-संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक पाचन औषध जो पाँच ओषधियों की जड़ से बनती है।

पचमेल-वि० [हिं० पाँच + मेल या मिलाना] १ जिसमें पाँच प्रकार की चीज़ें मिली हों। २. जिसमें सब प्रकार की चीज़ें मिली हों।

पँचरंग, पँचरंगा-वि० [हिं० पाँच + रंग] १. पाँच रंगों का। २. अनेक रंगों का।

पंचरत्न-संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्रकार के रत्न-सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती।

पंचराशिक-संज्ञा पुं० [सं०] गणित में एक प्रकार का हिसाब जिसमें चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

पँचलड़ा-वि० [हिं० पाँच + लड़] पाँच लड़ों का। जैसे, पँचलड़ा हार।

पंचलवण-संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक शास्त्रानुसार पाँच प्रकार के लवण—काँच, सेंधा, सामुद्र, बिट और सोंचर।

पंचवटी-संज्ञा स्त्री० [सं०] रामायण के अनुसार दंडकारण्य के अन्तर्गत नासिक के पास एक स्थान जहाँ रामचंद्र जी वनवास में रहे थे। सीताहरण यहीं हुआ था।

पचवाँसा-संज्ञा पुं० [हिं० पाँच + मास] एक रीति जो गर्भ रहने से पाँचवें महीने में की जाती है।

पंचबाण-संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव के पाँच बाण जिनके नाम ये हैं—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्माद। कामदेव के पाँच पुष्पबाणों के नाम ये हैं, कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल। २ कामदेव।

पंचबान-संज्ञा पुं० [?] राजपूतों की एक जाति।

पंचशब्द-संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच मंगल-सूचक बाजे जो मंगल कार्यों में बजाए जाते हैं—तंत्री, ताल, झाँझ, नगाड़ा और तुरही। २. व्याकरण के अनुसार सूत्र, वार्तिक, भाष्य, कोष और महाकवियों के प्रयोग।

पंचशर-संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव के पाँच बाण। २. कामदेव।

पंचशिख-संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह बाजा। २. एक मुनि जो कपिल के पुत्र थे।

पंचसूना-संज्ञा स्त्री० [सं०] मनु के अनुसार ये पाँच प्रकार की हिंसाएँ जो गृहस्थों से गृहकार्य करने में होती है—चूल्हा जलाना, आटा आदि पीसना, झाड़ू देना, कूटना और पानी का घड़ा रखना।

पचहजारी-संज्ञा पुं० दे० "पंजहजारी"।

पंचांग-संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच अंग या पाँच अंगों से युक्त वस्तु। २. वृक्ष के पाँच अंग—जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल (वैद्यक)। ३ ज्योतिष के अनुसार वह तिथिपत्र जिसमें किसी संवत् के वार, तिथि नक्षत्र, योग और करण ब्योरेवार दिए गए हों। पत्रा। ४. प्रणाम का एक भेद जिसमें घुटना, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेककर और देवता की ओर करके मुँह से प्रणामसूचक शब्द कहा जाता है।

पंचाक्षर-वि० [सं०] जिसमें पाँच अक्षर हों। संज्ञा पुं० १. प्रतिष्ठा नामक वृत्ति। २. शिव का एक मंत्र जिसमें पाँच अक्षर हैं—ॐ नमः शिवाय।

पंचाग्नि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अन्वाहार्य्य, पचन, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य नाम की पाँच अग्नियाँ। २. छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार सूर्य्य, पर्जन्य, पृथिवी, पुरुष और योषित्। ३. एक प्रकार का तप जिसमें तप करनेवाला अपने चारों ओर अग्नि जलाकर दिन में धूप में बैठा रहता है।

वि० १. पंचाग्नि की उपासना करनेवाला। २. पंचाग्नि विद्या जाननेवाला। ३. पंचाग्नि तापनेवाला।

पंचानन-वि० [सं०] जिसके पाँच मुँह हों। संज्ञा पुं० १. शिव। २. सिंह।

पंचामृत-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का द्रव्य जो दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर देवताओं के स्नान के लिये बनाया जाता है।

पंचायत-संज्ञा स्त्री० [सं० पंचायतन] १. किसी विवाद या झगड़े पर विचार करने के लिये चुने हुए लोगों का समाज। पंचों की बैठक या सभा। कमेटी। २. एक साथ बहुत

से लोगों की बकवाद।

पंचायतन-संज्ञा पुं० [सं०] पाँच देवताओं की मूर्त्तियों का समूह। जैसे, राम-पंचायतन।

पंचायती-वि० [हिं० पंचायत] १. पंचायत का किया हुआ। पंचायत का। २. पंचायत संबंधी। ३. बहुत से लोगों का मिला-जुला। साझे का। ४. सब लोगों का।

पंचाल-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देश का बहुत प्राचीन नाम। यह देश हिमालय और चंबल के बीच गंगा के दोनों ओर था। २. [स्त्री० पंचाली] पंचाल देशवासी। ३. पंचाल देश का राजा। ४. महादेव। शिव। ५. एक प्रकार का छंद।

पंचालिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुतली। गुड़िया। २. नटी। नर्त्तकी।

पंचाली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुतली। गुड़िया। २. द्रौपदी। ३. एक गीत।

पंचीकरण-संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत में पंचभूतों का विभाग विशेष।

पंछा-संज्ञा पुं० [हिं० पानी + छाला] १. स्राव जो प्राणियों के शरीर से या पेड़ पौधों के अंगों से निकलता है। २. छाले आदि के भीतर भरा हुआ पानी।

पंछाला-संज्ञा पुं० [हिं० पानी + छाला] १. फफोला। २. फफोले का पानी।

पंछी-संज्ञा पुं० [सं० पक्षी] चिड़िया। पक्षी।

पंजर-संज्ञा पुं० [सं०] १. हड्डियों का ठट्टर या ढाँचा जो शरीर के कोमल भागों को अपने ऊपर ठहराए रहता है अथवा बंद या रक्षित रखता है। ठठरी। अस्थिपंजर। कंकाल। २. ऊपरी धड़ (छाती) का हड्डियों का घेरा। पार्श्व. वक्षःस्थल आदि की अस्थिपंक्ति। ३. शरीर। देह। ४. पिंजड़ा।

पंजहजारी संज्ञा पुं० [फा०] एक उपाधि जो मुसलमान राजाओं के समय में सरदारों और दरबारियों को मिलती थी।

पंजा-संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० पंचक] १. पाँच का समूह। गाही। २. हाथ या पैर की पाँचों उँगलियों का समूह।

मुहा०—पंजे झाड़कर पीछे पड़ना या चिमटना = हाथ धोकर पीछे पड़ना। जी-जान से लगना या तत्पर होना। पंजे में = १. पकड़ में। मुट्ठी में। वश में। २. अधिकार में।

३. पंजा लड़ाने की कसरत या बल-परीक्षा। ४. उँगलियों के सहित हथेली का संपुट। चंगुल। ५. जूते का अगला भाग जिसमें उँगलियाँ रहती हैं। ६. मनुष्य के पंजे के आकार का कटा हुआ किसी धातु का टुकड़ा जिसे लंबे बाँस आदि में बाँधकर झंडे या निशान की तरह ताज़िये के साथ लेकर चलते हैं। ७. ताश का वह पत्ता जिसमें पाँच चिह्न या बूटियाँ हों।

मुहा०—छक्का पंजा = दाँव पेंच। चालबाजी।

पंजाब-संज्ञा पुं० [फा०] [वि० पंजाबी] भारत के उत्तर-पश्चिम का प्रदेश जहाँ सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम नाम की पाँच नदियाँ बहती हैं। प्राचीन पंचनद।

पंजाबी-वि० [फा०] पंजाब का।

संज्ञा पुं० [स्त्री० पंजाबिन] पंजाब निवासी।

पंजारा-संज्ञा पुं० [सं० पिंजकार] धुनिया।

पंजिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] पंचांग।

पँजीरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच + जीरा] एक प्रकार की मिठाई जो आटे के चूर्ण को घी में भूनकर बनाई जाती है।

पँजेरा-संज्ञा पुं० [हिं० पाँजना] बरतन में टाँके आदि देकर जोड़ लगानेवाला।

पंडल-वि० [सं० पांडुर] पांडु वर्ण का। पीला।

संज्ञा पुं० [सं० पिंड] पिंड। शरीर।

पँडवा-संज्ञा पुं० [?] भैंस का बच्चा।

पंडा-संज्ञा पुं० [सं० पंडित] [स्त्री० पंडाइन] किसी तीर्थ या मंदिर का पुजारी। पुजारी।

पंडाल-संज्ञा पुं० [?] सभा के अधिवेशन के लिये बनाया हुआ मंडप।

पंडित-वि० [सं०] [स्त्री० पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी] १. विद्वान्। शास्त्रज्ञ। ज्ञानी। २. कुशल। प्रवीण। चतुर।

संज्ञा पुं० १. शास्त्रज्ञ। २. ब्राह्मण।

पंडिताई-संज्ञा स्त्री० [हिं० पंडित + आई (प्रत्य०)] विद्वत्ता। पांडित्य।

पंडिताऊ-वि० [हिं० पंडित] पंडितों के ढंग का। जैसे, पंडिताऊ हिंदी।

पंडितानी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पंडित] १. पंडित की स्त्री। २. ब्राह्मणी।

पंडु-वि० [सं०] १. पीलापन लिए हुए मटमैला। २. श्वेत। सफेद। ३

पंडुक-संज्ञा पुं० [सं० पांडु] [

कपोत या कबूतर की जाति

पत्ती। पिंडुक। पेंडकी। फ़ाख़्ता।

पंडुर–संज्ञा पु० [देश०] पानी में रहनेवाला साँप। डेड़हा।

पँतीजना–क्रि० स० [स० पिंजन] रूई ओटना। पींजना।

पँतीजी–संज्ञा स्त्री० [सं० पिंजक] रूई धुनने की धुनकी।

पंथ–संज्ञा पु० [सं० पथ] १. मार्ग। रास्ता। राह। २. आचार-पद्धति। चाल। रीति। **मुहा०—पंथ गहना**=१. रास्ता पकड़ना। चलना। २. चाल पकड़ना। आचरण ग्रहण करना। **पंथ दिखाना**=१. रास्ता बताना। २. उपदेश देना। **पंथ देखना या निहारना**=प्रतीक्षा करना। इंतज़ार करना। **पंथ में या पंथ पर पाँव देना**=१. चलना। २. आचरण ग्रहण करना। **पंथ पर लगना**=१. रास्ते पर होना। २. चाल ग्रहण करना। **किसी के पंथ लगना**=१. किसी के पीछे होना। अनुयायी होना। २. किसी के पीछे पड़ना। बराबर तंग करना। **पंथ सेना**=बाट जोहना। आसरा देखना। ३. धर्ममार्ग। संप्रदाय। मत।

पंथान–संज्ञा पु० [सं० पंथ] मार्ग।

पंथकी*–संज्ञा पु० [स० पथिक] राही। पथिक। मुसाफ़िर।

पंथिक†–संज्ञा पु० दे० "पथिक"।

पथी–संज्ञा पु० [स० पथिन्] १. राही। बटोही। पथिक। २. किसी संप्रदाय या पंथ का अनुयायी। जैसे, कबीरपंथी।

पंद–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] शिक्षा। उपदेश।

पंपा–संज्ञा स्त्री० [स०] दक्षिण देश की एक नदी और बस्ती से लगा हुआ एक ताल और नगर जिसका उल्लेख रामायण में है।

पंपासर–संज्ञा पु० दे० "पंपा"।

पँवर–संज्ञा पुं० [?] सामान। सामग्री।

पँवरना†–क्रि० अ० [सं० प्लवन] १. तैरना। २. थाह लेना। पता लगाना।

पँवरि–संज्ञा स्त्री० [स० पुर=घर] प्रवेश-द्वार या गृह। ड्योढ़ी।

पँवरिया–संज्ञा पु० [हिं० पँवरी, पौरि] १. द्वारपाल। दरबान। ड्योढ़ीदार। २. मंगल अवसर पर द्वार पर बैठकर मंगल गीत गानेवाला याचक।

पँवरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव] खड़ाऊँ। पाँवरी।

पँवाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० प्रवाद] १. लंबी-चौड़ी कथा जिसे सुनते सुनते जी ऊबे। दास्तान। २. व्यर्थ विस्तार के साथ कही हुई बात। ३. एक प्रकार का गीत।

पँवार–संज्ञा पुं० दे० "परमार"।

पँवारना†–क्रि० स० [सं० प्रवारण] हटाना। दूर करना। फेंकना।

पंसारी–संज्ञा पुं० [स० पण्यशाली] मसाले और जड़ी-बूटी बेचनेवाला बनिया।

पंसासार–संज्ञा पुं० [स० पाशक + स० सारि=गोटी] पासे का खेल।

पसेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच + सेर] पाँच सेर की तौल या बाट।

पइता–संज्ञा पु० [?] एक छंद जिसे पाईता भी कहते हैं।

पइसना†–क्रि० अ० दे० "पैठना"।

पइसार†–संज्ञा पु० [हिं० पइसना] पैठ। प्रवेश।

पउँरि, पउरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि"।

पकड़–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रकृष्ट] १. पकड़ने की क्रिया या भाव। ग्रहण। २ पकड़ने का ढंग। ३. लड़ाई में एक एक बार आकर परस्पर गुथना। भिड़ंत। हाथा-पाई। ४. दोष, भूल आदि ढूँढ़ निकालना।

पकड़ धकड़–संज्ञा स्त्री० दे० "धर-पकड़"।

पकड़ना–क्रि० सं० [स० प्रकृष्ट] १. किसी वस्तु को इस प्रकार हाथ में लेना कि वह जल्दी छूट न सके। धरना। थामना। ग्रहण करना। २. क़ाबू में करना। गिरफ़्तार करना। ३. कुछ करने से रोक रखना। ठहराना। ४. ढूँढ़ निकालना। पता लगाना। ५. रोकना। टोकना। ६. दौड़ने, चलने या और किसी बात में बढ़े हुए के बराबर हो जाना। ७. किसी फैलनेवाली वस्तु में लगकर उसका अपने में संचार करना। ८. लगकर फैलना या मिलना। संचार करना। ९. अपने स्वभाव या वृत्ति के अंतर्गत करना। १०. आक्रांत करना। ग्रसना। घेरना।

पकड़वाना–क्रि० स० [हिं० पकड़ना का प्रे०] पकड़ने का काम दूसरे से कराना।

पकड़ाना–क्रि० स० [हिं० पकड़ना का प्रे०] १. किसी के हाथ में देना या रखना। थमाना। २. पकड़ने का काम कराना।

पकना–क्रि० अ० [सं० पक्व] १. फल आदि

पक्षाघात-संज्ञा पुं० [सं०] अर्द्धांग रोग जिसमें शरीर के दहिने या बाएँ किसी पार्श्व के सब अंग क्रियाहीन हो जाते हैं। *आधे अंग का लकवा।* फालिज।

पक्षिराज-संज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड़। २. जटायु। ३. एक प्रकार का धान।

पक्षी-संज्ञा पुं० [सं०] १ चिड़िया। २ तरफ़दार।

पखंडी-संज्ञा पुं० [हिं० पाखंडी] १ पाखंडी। २. वह जो कठपुतलियाँ नचाता हो।

पख-संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष] १ ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बात। तुर्रा। २ ऊपर से बढ़ाई हुई शर्त। बाधक नियम। अड़ंगा। ३ झगड़ा। बखेड़ा। ४ दोष त्रुटि।

पखड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष्म] फूलों का रंगीन पटल जो खिलने के पहले गर्भ या परागकेसर को चारों ओर से बंद किए रहता है और खिलने पर फैला रहता है। पुष्पदल।

पखराना-क्रि० स० [हिं० पखारना का प्रे०] धुलवाना। पखारने का काम कराना।

पखरी†-संज्ञा स्त्री० १. दे० "पाखर"। २ दे० "पँखड़ी"।

पखरैत-संज्ञा पुं० [हिं० पाखर + ऐत (प्रत्य०)] वह घोड़ा, बैल या हाथी जिस पर लोहे की पाखर पड़ी हो।

पखवाड़ा†-संज्ञा पुं० दे० "पखवारा"।

पखवारा-संज्ञा पुं० [सं० पक्ष + वार] १. महीने के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभागों में से कोई एक। २ पंद्रह दिन का काल।

पखान०-संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।

पखाना-संज्ञा पुं० [सं० उपाख्यान] कहावत। कहनूत। कथा। मसल।
†संज्ञा पुं० दे० "पाखाना"।

पखारना-क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] पानी से धोकर साफ करना। धोना।

पखाल-संज्ञा स्त्री० [सं० पय = पानी + हिं० खाल] १. बैल के चमड़े की बनी हुई बड़ी मशक जिसमें पानी भरा जाता है। २ धौंकनी।

पखावज-संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष + वाद्य] एक बाजा जो मृदंग से कुछ छोटा होता है।

पखावजी-संज्ञा पुं० [हिं० पखावज + ई] पखावज बजानेवाला।

पखी, पखीरी०-संज्ञा पुं० दे० "पक्षी"।

पखुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी"।

पखेरू-संज्ञा पुं० [सं० पक्षालु] पक्षी। चिड़िया।

पखौटा-संज्ञा पुं० [हिं० पख] १ डैना। पर। २ मछली का पर।

पग-संज्ञा पुं० [सं० पदक] १ पैर। पाँव। २ चलने में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर रखने की क्रिया की समाप्ति। डग। फाल।

पगडंडी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पग + डंडी] जंगल या मैदान में वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते चलते बन गया हो।

पगड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० पटक] वह लंबा कपड़ा जो सिर पर लपेटकर बाँधा जाता है पाग। चीरा। साफा। उष्णीष।

मुहा०—(किसी से) पगड़ी अटकना = बराबरी होना। मुकाबला होना। पगड़ी उछालना = १ बेइज्जती करना। दुर्दशा करना। २ उपहास करना। हँसी उड़ाना। पगड़ी उतार लेना = १ मान या प्रतिष्ठा भंग करना। बेइज्जती करना। २ बल से धन हरना। ठगना। लूटना। (किसी को) पगड़ी बँधना = १ उत्तराधिकार मिलना। वरासत मिलना। २. उच्च पद या स्थान प्राप्त होना। ३ प्रतिष्ठा मिलना। सम्मान प्राप्त होना। (किसी के साथ) पगड़ी बदलना = भाई चारे का नाता जोड़ना। मैत्री करना।

पगतरी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० पग + तल] जूता।

पगदासी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पग + दासी] १. जूता। २ खड़ाऊँ।

पगना-क्रि० अ० [सं० पाक] १ शरबत या शीरे में इस प्रकार पकना कि शरबत या शीरा चारों ओर लिपट और घुस जाय। २. रस आदि के साथ ओत प्रोत होना। सनना। ३ किसी के प्रेम में डूबना।

पगनियाँ†-संज्ञा स्त्री० [सं० पग] जूती।

पगरा†-संज्ञा पुं० [हिं० पग + रा (प्रत्य०)] पग। डग। कदम।
संज्ञा पुं० [फा० पगाह] यात्रा आरंभ करने का समय। प्रभात। सवेरा। तड़का।

पगला-वि० पुं० दे० "पागल"।

पगहा†-संज्ञा पुं० [सं० प्रग्रह] [स्त्री० पगही] वह रस्सी जिससे पशु बाँधा जाता है। गिराँव। पघा।

पगा[1]—संज्ञा पु० [हिं० पाग] दुपट्टा।
संज्ञा पु० दे० "पघा"।

पगाना—क्रि० स० [सं० पक या पाक] १. पागने का काम कराना। २. अनुरक्त करना। मग्न करना।

पगार✻—संज्ञा पु० [सं० प्रकार] चहारदीवारी।
संज्ञा पुं० [हिं० पग+गारना] १. पैरों से कुचली हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा। २. ऐसी वस्तु जिसे पैरों से कुचल सकें। ३. वह पानी या नदी जिसे पैदल चलकर पार कर सकें। पायाब।

पगाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] यात्रा आरंभ करने का समय। प्रभात। भोर। तड़का।

पगिआना †—क्रि० स० दे० "पगाना"।

पगिया †संज्ञा स्त्री० दे० "पगड़ी"।

पगुराना†—क्रि० अ० [हिं० पागुर] १. पागुर या जुगाली करना। २. हजम करना।

पघा—संज्ञा पु० [सं० प्रग्रह] ढोरों को बाँधने की मोटी रस्सी। पगहा।

पचकना—क्रि० अ० दे० "पिचकना"।

पचकल्यान—संज्ञा पु० दे० 'पंचकल्याण"।

पचखा†—संज्ञा पु० दे० 'पंचक"।

पचगुना—वि० [सं० पंचगुण] पाँच बार अधिक। पाँच गुना।

पचड़ा—संज्ञा पु० [हिं० पाँच (प्रपंच)+डा (प्रत्य०)] १. झंझट। बखेड़ा। पँवाड़ा। प्रपंच। २. एक प्रकार का गीत जिसे प्रायः ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते हैं। ३. लावनी के ढंग का एक गीत।

पचन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पचाने की क्रिया या भाव। पाक। २ पकने की क्रिया या भाव। ३. अग्नि।

पचना—क्रि० अ० [सं० पचन] १. खाई हुई वस्तु का जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत होना। हजम होना। २. क्षय होना। समाप्त या नष्ट होना। ३. पराया माल इस प्रकार अपने हाथ में आ जाना कि फिर वापस न हो सके। हजम हो जाना। ४ ऐसा परिश्रम होना जिससे शरीर क्षीण हो। बहुत हैरान होना।
मुहा०—पच मरना = किसी काम के लिये बहुत अधिक परिश्रम करना। हैरान होना।
५ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में पूर्ण रूप से लीन होना। खपना।

पचमेल—वि० दे० 'पँचमेल"।

पचरंग—संज्ञा पु० [हिं० पाँच+रंग] चौक पूरने की सामग्री—मेंहदी का चूरा, अबीर बुक्का, हल्दी और सुरवाली के बीज।

पचरंगा—वि० [हिं० पाँच+रंग] [स्त्री० पँचरंगी] १ जिसमें भिन्न भिन्न पाँच रंग हों। २. कई रंगों से रंजित।
संज्ञा पु० नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जानेवाला चौक।

पचलड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच+लड़ी] माला की तरह का एक आभूषण।

पचलोना—संज्ञा पु० [हिं० पाँच+लोन (लवण)] १. जिसमें पाँच प्रकार के नमक मिले हों। २. दे० "पंचलवण"।

पचहरा—वि० [हिं० पाँच+हरा] १ पाँच परतों या तहोंवाला। २. पाँच बार किया हुआ। (अप्रयुक्त)

पचाना—क्रि० स० [हिं० पचना] १. पचना का सकर्मक रूप। पकाना। आँच पर गलाना। २ जीर्ण करना। हजम करना। ३ समाप्त, नष्ट या क्षय करना। ४. पराए माल को अपना कर लेना। हजम कर जाना। ५ अत्यधिक परिश्रम लेकर या क्लेश देकर शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ६. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने आप में पूर्ण रूप से लीन कर लेना। खपाना।

पचारना†—क्रि० स० [सं० प्रचारण] ललकारना।

पचास—वि० [सं० पंचाशत्, प्रा० पंचासा] चालीस और दस।
संज्ञा पु० चालीस और दस की संख्या।

पचासा—संज्ञा पु० [हिं० पचास] एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह।

पचित—वि० [सं० पचित = पचा हुआ] पच्ची किया हुआ। जड़ा या बैठाया हुआ।

पचीस—वि० [सं० पंचविंशति] पाँच और बीस।
संज्ञा पु० ५ और २० की संख्या या अंक। २५।

पचीसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पचीस] १. एक ही प्रकार की २५ वस्तुओं का समूह। २. किसी की आयु के पहले २५ वर्ष। ३. एक विशेष गणना जिसका सैकड़ा पचीस गाहियों अर्थात् १२५ का माना जाता है। ४. एक प्रकार का खेल जो चौसर की बिसात पर पासे के बदले ७ कौड़ियों से खेला जाता है।

पचोतर सौ-संज्ञा पुं० [सं० पंचोत्तरशत] एक सौ पांच की संख्या या अंक।

पचौर, पचौली†-संज्ञा पुं० [हिं० पंच] गांव का मुखिया। सरदार। पंच।

पचौवर-वि० [हिं० पाँच+सं० आवर्त] पाँच तह या परत किया हुआ। पचहरा।

पच्चड़, पच्चर-संज्ञा पुं० [सं० पचित या पच्ची] लकड़ी की वह गुल्ली जिसे लकड़ी की बनी चीजों में सांद या जोड़ को कसने के लिये ठोंकते हैं। काठ का पैबंद।

पच्ची-संज्ञा स्त्री० [सं० पचित] १ ऐसा जड़ाव जिसमें जड़ी या जमाई जानेवाली वस्तु उस वस्तु के बिलकुल समतल हो जाय जिसमें वह जड़ी या जमाई जाय। २ किसी धातु निर्मित पदार्थ पर किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव।

मुहा०—(किसी में) पच्ची हो जाना = बिलकुल मिल जाना। लीन हो जाना।

पच्चीकारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पच्ची+फा० कारी] पच्ची करने की क्रिया या भाव।

पच्छ †-संज्ञा पुं० दे० "पक्ष"।

पच्छिम-संज्ञा पुं० दे० "पश्चिम"।

पच्छी-संज्ञा पुं० दे० "पक्षी"।

पछटना-क्रि० अ० [हिं० पीछा] १ लड़ने में पटका जाना। २ दे० "पिछड़ना"।

पछताना-क्रि० अ० [हिं० पछताव] किसी किए हुए अनुचित कार्य्य के संबंध में पीछे से दुखी होना। पश्चात्ताप करना।

पछतानि †-संज्ञा स्त्री० दे० "पछतावा"।

पछतावना-क्रि० अ० दे० "पछताना"।

पछतावा-संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्ताप] पश्चात्ताप।

पछना-क्रि० अ० [हिं० पाछना] पाछा जाना। संज्ञा पुं० १ वह अस्त्र जिससे कोई चीज पाछी जाय। २ फसद।

पछलना-संज्ञा पुं० दे० "पिछलना"।

पछवाँ-वि० [सं० पश्चिम] पच्छिम का।

पछाँह-संज्ञा पुं० [सं० पश्चिम] पच्छिम की ओर का देश।

पछाँहिया-वि० [हिं० पछाँह+इया (प्रत्य०)] पछाँह का। पश्चिमी प्रदेश का।

पछाड़-संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] अचेत होकर गिरना। मूर्च्छित होकर गिरना।

मुहा०—पछाड़ खाना = खड़े खड़े अचानक बेसुध होकर गिर पड़ना।

[illegible] -क्रि० स० [हिं० पछाड़] कुश्ती या लड़ाई में पटकना। गिराना।

क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] धोने के लिये कपड़े को जोर जोर से पटकना।

पछानना-क्रि० स० दे० 'पहचानना'।

पछारना -क्रि० स० दे० 'पछाड़ना'।

पछावरि †-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का सिखरन या शरबत। २ छाछ का बना एक पेय पदार्थ।

पछाहीं-वि० [हिं० पछाँह] पछाँह का।

पछिआना†-क्रि० स० [हिं० पाछे+आना] पीछे पीछे चलना। पीछा करना।

पछिताव-संज्ञा पुं० दे० "पछतावा"।

पछुवाँ-वि० [हिं० पच्छिम] पच्छिम की (हवा)।

पछेली†-संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछे+एली (प्रत्य०)] हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक प्रकार का कड़ा।

पछोड़ना†-क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] सूप आदि में रखकर (अन्न आदि के दानों को) साफ करना। फटकना।

पछयावर†-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का सिखरन या शरबत।

पजरना-क्रि० अ० [सं० प्रज्वलन] जलना।

पजारना-क्रि० स० [हिं० पजरना] जलाना।

पजावा-संज्ञा पुं० [फा० पजाव] आवाँ। ईंट पकाने का भट्ठा।

पज्ज-संज्ञा पुं० [सं० पद्य] शूद्र।

पज्झटिका-संज्ञा स्त्री० [सं० पद्धटिका] १६ मात्राओं का एक प्रकार का छंद।

पटवर †-संज्ञा पुं० [सं० पट+अंबर] रेशमी कपड़ा। कौशेय।

पट-संज्ञा पुं० [सं०] १ वस्त्र। कपड़ा। २ कोई आड़ करनेवाली वस्तु। पर्दा। चिक। ३ धातु आदि का वह चिपटा टुकड़ा या पट्टी जिस पर कोई चित्र या लेख खुदा हुआ हो। ४ कागज का वह टुकड़ा जिस पर चित्र खींचा या उतारा जाय। चित्रपट। ५ वह चित्र जो जगन्नाथ, बदरिकाश्रम आदि मंदिरों से दर्शनप्राप्त यात्रियों को मिलता है। ६. छप्पर। छान। ७ कपास।

संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] १ साधारण दरवाजों के किवाड़।

मुहा०—पट उघड़ना या खुलना = मंदिर का दरवाजा इसलिये खुलना कि लोग दर्शन करें।

२. पालकी के दरवाजे के किवाड़ जो सरकाने से खुलते और बंद होते हैं। ३. सिंहासन। ४. चिपटी और चौरस भूमि। वि० ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि की ओर हो। चित का उलटा। औंधा।
मुहा०—पट पड़ना=मंद पड़ना। न चलना।
क्रि० वि० चट का अनुकरण। तुरंत।

पटकन—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटकना] १. पटकने की क्रिया या भाव। २ चपत। तमाचा। ३ छोटा डंडा। छड़ी।

पटकना—क्रि० स० [सं० पतन+करण] १. झोंके के साथ नीचे की ओर गिराना। २. किसी खड़े या बैठे हुए व्यक्ति को उठाकर जोर से नीचे गिराना। दे मारना।
मुहा०—(किसी पर) पटकना=कोई ऐसा काम किसी के सपुर्द करना जिसे करने की उसकी इच्छा न हो।
३. कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ना।
| क्रि० अ० १. सूजन बैठना या पचकना। २. पट शब्द के साथ किसी चीज का दरक या फट जाना।

पटकनिया, पटकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं०पटकना] १. पटकने या पटके जाने की क्रिया या भाव। २. भूमि पर गिरकर लोटने या पछाड़ खाने की क्रिया या अवस्था।

पटका—संज्ञा पु० [सं० पट्टक] वह दुपट्टा या रूमाल जिससे कमर बाँधी जाय। कमरबंद। कमरपेच।

पटकान—संज्ञा स्त्री० दे० "पटकनी"।

पटतर—संज्ञा पु० [सं० पट्ट+तल] १. समता। बराबरी। समानता। २. उपमा। तशबीह।
† वि० चौरस। समतल। बराबर।

पटतरना—क्रि० अ० [हिं० पटतर] उपमा देना।

पटतारना—क्रि० स० [हिं० पट+तारना= अंदाजना] खाँडे, भाले आदि शस्त्रों को किसी पर चलाने के लिये पकड़ना या खींचना। सँभालना।
क्रि० स० [हिं० पटतर] ऊँची नीची जमीन को चौरस करना। पड़तारना।

पटधारी—वि० पु० [सं०] जो कपड़ा पहने हो।

पटना—क्रि० स० [हिं० पट=जमीन की सतह के बराबर] १. किसी गड्ढे या नीचे स्थान का भरकर आस पास की सतह के बराबर हो जाना। समतल होना। २. किसी स्थान में किसी वस्तु की इतनी अधिकता होना कि उसमें शून्य स्थान न दिखाई पड़े। परिपूर्ण होना। ३ मकान, कूएँ आदि के ऊपर कच्ची या पक्की छत बनना। ४ † सींचा जाना। सेराब होना। ५. दो मनुष्यों के विचार या स्वभाव में समानता होना। मन मिलना। बनना। ६ लेन देन आदि में उभय पक्ष का मूल्य या शर्तों आदि पर सहमत हो जाना। तै हो जाना। ७ (ऋण) चुकना।
संज्ञा पु० दे० "पाटलिपुत्र"।

पटनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटना=तै होना] वह जमीन जो किसी को इस्तमरारी पट्टे के द्वारा मिली हो।

पटपट—संज्ञा स्त्री० [अनु० पट] हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द की आवृत्ति।
क्रि० वि० बराबर पट ध्वनि करता हुआ।

पटपटाना—क्रि० अ० [हिं० पटकना] १. भूख प्यास या सरदी गरमी के मारे बहुत कष्ट पाना। २ किसी चीज से पटपट ध्वनि निकलना।
क्रि० स० 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना। २. खेद करना। शोक करना।

पटपर—वि [हिं० पट+अनु० पर] समतल। बराबर। चौरस। हमवार।
संज्ञा पु० १ नदी के आस पास की वह भूमि जो बरसात के दिनों में प्राय सदा डूबी रहती है। २ अत्यंत उजड़ स्थान।

पटबंधक—संज्ञा पु० [हिं० पटना+सं० बंधक] एक प्रकार का रेहन जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई संपत्ति के लाभ में से सूद लेने के बाद बचा हुआ धन मूल ऋण में मिनहा करता जाता है।

पटबीजना|—संज्ञा पु० दे० "जुगनूँ"।

पटमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।

पटमंडप—संज्ञा पु० [सं०] तंबू। खेमा।

पटरा—संज्ञा पु० [सं० पटल] [स्त्री० अल्पा० पटरी] १. काठ का लंबा चौकोर और चौरस टुकड़ा। तख्ता। पल्ला।
मुहा०—पटरा कर देना=१ मार काटकर फैला देना या बिछा देना। २. चौपट कर देना।
२. धोबी का पाट। ३ हेंगा। पाटा।

पटरानी—संज्ञा स्त्री० [सं० पट्ट+रानी] वह रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो। पाटमहिषी।

मिठाई । ११. कपड़े की धज्जी जिसे सर्दी और थकावट से बचने के लिये टांगों में बांधते हैं । १२ पंक्ति । पांती । कतार । १३. मांग के दोनों ओर के कंघी से खूब बैठाए हुए बाल जो पट्टी से दिखाई पड़ते हैं । पाटी । पटिया । १४. किसी वस्तु विशेषत किसी संपत्ति का एक भाग । हिस्सा । भाग । विभाग । पत्ती । १५. ० वह अतिरिक्त कर जो जमींदार किसी विशेष प्रयोजन के लिये असामियों पर लगाता है । नेग । अबवाब ।

पट्टीदार-सज्ञा पु० [हिं० पट्टी + फा० दार] १. वह व्यक्ति जिसका किसी संपत्ति में हिस्सा हो । हिस्सेदार । २ बराबर का अधिकारी ।

पट्टीदारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पट्टीदार] १. पट्टी होने का भाव । बहुत से हिस्से होना । २. पट्टीदार होने का भाव ।

मुहा०—पट्टीदारी करना = १. किसी के बराबर अधिकार जताना । २. बराबरी करना ।

३. वह जमींदारी जिसके बहुत से मालिक होने पर भी जो अविभक्त संपत्ति समझी जाती हो । भाई-चारा ।

पट्टू-सज्ञा पुं० [हिं० पट्टी] एक खूब गरम ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप में होता है ।

पठमान॰—वि० [स० पठ्यमान] पढ़ने योग्य ।

पट्ठा-सज्ञा पु० [स० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ] [स्त्री० पठिया] १. जवान । तरुण । पाठा । २. कुश्तीबाज । लड़ाका । ३. ऐसा पत्ता जो लंबा, दलदार या मोटा हो । ४. वे तंतु जो मांसपेशियों को परस्पर और हड्डियों के साथ बांधे रखते हैं । मोटी नस । स्नायु ।

मुहा०--पट्ठा चढ़ना = किसी नस का तन जाना । नस पर नस चढ़ना ।

५. एक प्रकार का चौड़ा गोटा । ६. पेड़ू के नीचे कमर और जांघ के जोड़ का वह स्थान जहां छूने से गिलटियाँ मालूम होती हैं ।

पट्ठी—सज्ञा स्त्री० दे० "पठिया" ।

पठन—सज्ञा पु० [स०] पढ़ना ।

पठनीय-वि० [सं०] पढ़ने योग्य ।

पठनेटा—सज्ञा पु० [हिं० पठान + एटा = बेटा (प्रत्य०)] पठान का लड़का ।

पठवना॰-क्रि० स० [स० प्रस्थान] भेजना ।

।७—क्रि० स० [हिं० पठाना का प्रे०] भेजने का काम दूसरे से कराना । भेजवाना ।

पठान-संज्ञा पु० [पश्तो० पुख़्ताना] एक मुसलमान जाति जो अफगानिस्तान के अधिकांश और भारत के सीमांत प्रदेश आदि में बसती है ।

पठाना॰—क्रि० स० [स० प्रस्थान] भेजना ।

पठानी-सज्ञा स्त्री० [हिं० पठान] १. पठान जाति की स्त्री । २ पठान होने का भाव । ३. क्रूरता, शूरता, रक्तपात-प्रियता आदि पठानों के गुण । पठानपन ।

वि० [हिं० पठान] पठानों का ।

पठानी लोध-सज्ञा स्त्री० [स० पट्टिका लोध्र] एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और फूल औषध के काम में आते हैं ।

पठावन†—सज्ञा पु० [हिं० पठाना] दूत ।

पठावनि, पठावनी सज्ञा स्त्री० [हिं० पठाना] १ किसी को कहीं कोई वस्तु या संदेश पहुँचाने के लिये भेजना । २ इस प्रकार भेजने की मज़दूरी ।

पठित-वि० [स०] १. पढ़ा हुआ (ग्रंथ) । जिसे पढ़ चुके हों । अधीत । २. पढ़ा-लिखा । शिक्षित । (यह अर्थ ठीक नहीं है)

पठिया-सज्ञा स्त्री० [हिं० पट्ठा + इया (प्रत्य०)] जवान और तगड़ी स्त्री ।

पठौनी†—सज्ञा स्त्री० दे० 'पठावनी" ।

पठ्यमान-वि० [स० पाठ्य + मान (प्रत्य०)] पढ़ा जाने के योग्य । सुपाठ्य ।

पड़छती, पड़छत्ती—सज्ञा स्त्री० [स० पटच्छदि] १. भीत की रक्षा के लिये लगाया जाने-वाला छप्पर या टट्टी । २. कमरे आदि के बीच की पाटन जिस पर चीज असबाब रखते हैं । टांड़ ।

पड़त॰—सज्ञा स्त्री० दे० "पड़ता" ।

पड़ता-सज्ञा पुं० [हिं० पड़ना] १. किसी वस्तु की ख़रीद या तैयारी का दाम । सर्फ़ की क़ीमत । लागत ।

मुहा०—पड़ता खाना या पड़ना = लागत और अभीष्ट लाभ मिल जाना । खर्च और मुनाफ़ा निकल आना । पड़ता फैलाना या बैठाना = किसी चीज के तैयार करने, ख़रीदने और मँगाने आदि में जो खर्च पड़ा हो, उसे देखते हुए उसका भाव निश्चित करना ।

२. दर । शरह । ३. भूकर की दर । लगान की शरह । ४. सामान्य दर । औसत ।

पड़ताल-सज्ञा स्त्री० [स० परितोलन] १.

...नना क्रिया या भाव। किसी वस्तु ...ेम छान-बीन। अन्वीक्षण। अनु-... । २. गाँव अथवा शहर के पटवारी ... खेतों का एक प्रकार की जाँच।

...तालना–क्रि० स० [हिं० पड़ताल+ना (प्रत्य०)] पड़ताल करना। जाँचना।

पड़ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० पड़ना] वह भूमि जिस पर कुछ काल से खेती न की गई हो।
मुहा०—पड़ती उठना = पड़ती का जोता जाना। पड़ती पर खेती होना। पड़ती छोड़ना = किसी खेत को कुछ समय तक यों ही छोड़ना, उसे जोतना नहीं, जिसमें उसकी उर्वरा शक्ति बढ़े।

पड़ना–क्रि० अ० [सं० पतन] १. प्रायः ऊँचे स्थान से नीचे आना। गिरना। पतित होना। २. (दुःखद घटना) घटित होना। जैसे—मुसीबत पड़ना।
मुहा०—(किसी पर) पड़ना = विपत्ति या मुसीबत आना। संकट या कठिनाई प्राप्त होना।
३. बिछाया जाना। फैलाया जाना। ४. पहुँचना या पहुँचाया जाना। दाखिल होना। प्रविष्ट होना। ५. हस्तक्षेप करना। दखल देना। ६. ठहरना। टिकना।
मुहा०—पड़ा होना = १. एक स्थान में कुछ समय तक स्थित रहना। एक ही जगह पर बने रहना। २. रखा रहना। धरा रहना। ३. बाकी रहना। शेष रहना।
७. विश्राम के लिये सोना या लेटना। आराम करना।
मुहा०—पड़े रहना या पड़ा रहना = बिना कुछ काम किए लेटे रहना। निकम्मे रहना।
८. बीमार होना। खाट पर पड़ना। ६. मिलना। प्राप्त होना। १०. पड़ता खाना। ११. आय, प्राप्ति आदि की औसत होना। पड़ता होना। १२. रास्ते में मिलना। मार्ग में मिलना। १३. उत्पन्न होना। पैदा होना। १४. स्थित होना। १५. संयोगवश होना। उपस्थित होना। १६. जाँच या विचार करने पर ठहरना। पाया जाना। १७. देशांतर या अवस्थांतर होना। १८ अत्यंत इच्छा होना। धुन होना।
मुहा०—क्या पड़ी है = क्या मतलब है।

पड़पड़ाना–क्रि० अ० [अनु०] १. पड़पड़ शब्द होना। २. अत्यंत कड़वे पदार्थ के भक्षण या स्पर्श से जीभ पर किंचित् दुःखद तीक्ष्ण अनुभूति होना। चरपराना।

पड़पोता–संज्ञा पु० [सं० प्रपौत्र] [स्त्री० पड़पोती] पुत्र का पोता। पोते का पुत्र।

पड़वा–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिपदा, प्रा० पड़िवआ] प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि।

पड़ाना–क्रि० स० [हिं० पड़ना का सक०] गिराना। झुकाना।

पड़ाव–संज्ञा पु० [हिं० पड़ना+आव (प्रत्य०)] १. यात्री-समूह का यात्रा के बीच में अवस्थान। २. वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हों।

पड़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं० पँड़वा, पड़वा] भैंस का मादा बच्चा।

पड़िवा†–संज्ञा स्त्री० दे० "पड़वा"।

पड़ोस–संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवेश या प्रतिवास] १. किसी के घर के आस-पास के घर।
यौ०—पास पड़ोस = समीपवर्ती स्थान।
मुहा०—पड़ोस करना = पड़ोस में बसना।
२. किसी स्थान के आस-पास के स्थान।

पड़ोसी–संज्ञा पु० [हिं० पड़ोस+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० पड़ोसिन] वह मनुष्य जिसका घर पड़ोस में हो। पड़ोस में रहनेवाला।

पढ़ंत–संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ना] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। २. निरंतर पढ़ना।

पढ़ंता–वि० [हिं० पढ़ना] पढ़नेवाला।

पढ़त–संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ना+अंत (प्रत्य०)] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। २. मंत्र।

पढ़ना–क्रि० स० [सं० पठन] १. किसी पुस्तक, लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी बात मालूम हो जाय। २. किसी लिखावट के शब्दों का उच्चारण करना। बाँचना। ३. उच्चारण करना। मध्यम या धीमे स्वर से कहना। ४. स्मरण रखने के लिये किसी विषय का बार-बार उच्चारण करना। रटना। ५. मंत्र फूँकना। जादू करना। ६. तोते, मैना आदि का मनुष्यों के सिखाए हुए शब्द उच्चारण करना। ७. विद्या पढ़ना। शिक्षा प्राप्त करना। अध्ययन करना।
यौ०—पढ़ना लिखना = शिक्षा पाना। पढ़ना पढ़ाना। पढ़ा लिखा = शिक्षित।

पढ़वाना–क्रि० स० [हिं० पढ़ना तथा पढ़ाना का प्रे०] १ किसी को पढ़ने में ... करना। बँचवाना। २. किसी ... किसी को शिक्षा दिलाना।

पढ़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ना

१. पढ़ने का काम। विद्याभ्यास। अध्ययन। पठन। २. पढ़ने का भाव।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ाना + आई (प्रत्य०)] १. पढ़ाने का काम। अध्यापन। पाठन। पढ़ौनी। २. पढ़ाने का भाव। ३. पढ़ाने का ढंग। अध्यापन शैली।

पढ़ाना-क्रि० स० [हिं० पढ़ना का प्रे०] १. शिक्षा देना। अध्यापन करना। २. कोई कला या हुनर सिखाना। ३. तोते, मैना आदि पक्षियों को बोलना सिखाना। ४. सिखाना। समझाना।

पढ़िना-संज्ञा पुं० [सं० पाठीन] एक प्रकार की बिना सेहरे की बड़ी मछली। पहिना।

पण-संज्ञा पुं० [सं०] १. कोई कार्य जिसमें बाजी बदी गई हो। जूआ। द्यूत। २. प्रतिज्ञा। शर्त। मुआहिदा। ३. वह वस्तु जिसके देने का करार या शर्त हो। जैसे, किराया। ४. मोल। कीमत। मूल्य। ५. फीस। शुल्क। ६. धन। संपत्ति। जायदाद। ७. क्रय-विक्रय की वस्तु। सौदा। ८. व्यवहार। व्यापार। व्यवसाय। ९. स्तुति। प्रशंसा। १०. प्राचीन काल का ताँबे का टुकड़ा जिसका व्यवहार सिक्के की भाँति किया जाता था। ११ प्राचीन काल की एक विशेष नाप।

पणव-संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटा नगाड़ा या ढोल। २. चौपाई की तरह का एक वर्णवृत्त।

पण्य-वि० [सं०] १. खरीदने या बेचने योग्य। २. प्रशंसा करने योग्य।
संज्ञा पुं० १. सौदा। माल। २. व्यापार। रोजगार। ३. बाजार। ४. दूकान।

पण्यभूमि-संज्ञा स्त्री [सं०] वह स्थान जहाँ माल या सौदा जमा किया जाता हो। कोठी। गोदाम। गोला।

पण्यशाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] दूकान।

पतंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २. शलभ। टिड्डी। ३. भुनगा। फतिंगा। ४. उड़नेवाला कीड़ा। ५. सूर्य। ६. एक प्रकार का धान। जड़हन। ७ जल महुआ। ८. कंदुक। गेंद। ९. शरीर। (अनेक०) ११. नौका। नाव। (अने०)
-संज्ञा पुं० [सं० पतंग] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। इसकी लकड़ी से बहुत बढ़िया लाल रंग निकलता है।
संज्ञा पुं० [सं० पतंग = उड़नेवाला] हवा में ऊपर उड़ाने का एक खिलौना जो बाँस की तीलियों के ढाँचे पर चौकोना कागज मढ़कर बनाया जाता है। गुड्डी। कनकौवा।

पतंगबाज़-संज्ञा पुं० [हिं० पतंग + फा० बाज़] वह जिसको पतंग उड़ाने का व्यसन हो।

पतंगबाज़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पतंगबाज़] पतंग उड़ाने की कला क्रिया या भाव।

पतंगसुत-संज्ञा पुं० [सं०] अश्विनीकुमार।

पतंगा-संज्ञा पुं० [सं० पतंग] १. पतंग। कोई उड़नेवाला कीड़ा-मकोड़ा। २. एक कीड़ा जो घास अथवा वृक्ष की पत्तियों पर होता है। फतिंगा। ३. चिनगारी।

पतंचिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी। कमान की तांत। चिल्ला।

पतंजलि-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्होंने योग शास्त्र की रचना की। २ एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने पाणिनीय सूत्रों और कात्यायन-कृत उनके वार्त्तिक पर 'महाभाष्य' की रचना की थी।

पत†-संज्ञा पुं० [सं०पति] १. पति। खसम। २. मालिक। स्वामी।
संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिष्ठा ?] १. लाज। लज्जा। आबरू। २. प्रतिष्ठा। इज्जत।
यौ०—पत-पानी = लज्जा। आबरू।
मुहा०—पत उतारना या लेना = बेइज्जती करना। पत रखना = इज्जत बचाना।

पतझड़-संज्ञा स्त्री० [हिं० पत = पत्ता + झड़ना] १. वह ऋतु जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। शिशिर ऋतु। माघ और फाल्गुन के महीने। २. अवनति-काल।

पतझार-संज्ञा स्त्री दे० "पतझड़"।

पततप्रकर्ष-संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में एक प्रकार का रस दोष।

पतन-संज्ञा पुं० [सं०] १. गिरने या नीचे आने की क्रिया या भाव। गिरना। २. बैठना या डूबना। ३. अवनति। अधोगति। जवाल। तबाही। ४. नाश। मृत्यु। ५ पाप। पातक। ६. जातिच्युति। जाति से बहिष्कृत होना। ७. उड़ान। उड़ना।

पतनशील-वि० [सं०] जो बिना गिरे न रह सके। गिरनेवाला।

पतनीय-वि० [सं०] गिरनेवाला।

पतनोन्मुख-वि० [सं०] जो गिरने पर और प्रवृत्त हो। जिसका पतन, अधोगति

या विनाश निरन्तर आता जाता हो।

पत-पानी-संज्ञा पुं० [हिं० पत+पानी] १. प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। २. लाज। आबरू।

पतरा†-वि० [सं० पत्र] १. पतला। कृश। २. पत्ता। पर्ण। ३. पत्तल।

पतरा†-वि० दे० "पतला"।

पतरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "पत्तल"।

पतला-वि० [सं० पात्रट] [स्त्री० पतली] १. जिसका घेरा, लपेट अथवा चौड़ाई कम हो। जो मोटा न हो। २. जिसकी देह या घेरा कम हो। जो स्थूल या मोटा न हो। कृश। ३. जिसका दल मोटा न हो। झीना। हलका। ४. गाढ़े का उलटा। अधिक तरल। ५. अशक्त। असमर्थ।

मुहा०—पतला पड़ना=दुर्दशाग्रस्त होना। पतला हाल=दुःख और कष्ट की अवस्था।

पतलापन-संज्ञा पुं० [हिं० पतला+पन (प्रत्य०)] पतला होने का भाव।

पतलून-संज्ञा पुं० [अं० पैंटलून] वह पाजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और पायँचा सीधा गिरता है। अँगरेजी पाजामा।

पतलो-संज्ञा स्त्री० [देश०] सरकंडा। सरपत।

पतवर†-क्रि० वि० [सं० पंक्ति] पंक्तिवार। पंक्तिक्रम से। बराबर बराबर।

पतवार, पतवारी-संज्ञा स्त्री० [सं० पात्रपाल] नाव का वह तिकोनाकार मुख्य अंग जो पीछे की ओर आधा जल में और आधा बाहर होता है। इसी के द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है। कन्हर। कर्ण।

पता-संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यय] १. किसी का स्थान सूचित करनेवाली बात जिससे उसको पा सकें।

यौ०—पता ठिकाना=किसी वस्तु का स्थान और उसका परिचय।

२. खोज। अनुसंधान। सुराग। टोह।

यौ०—पता निशान=१. वे बातें जिनसे किसी के संबंध में कुछ जान सकें। २. अस्तित्वसूचक चिह्न। नाम निशान।

३. अभिज्ञता। जानकारी। खबर। ४. गूढ़ तत्त्व। रहस्य। भेद।

मुहा०—पते की या पते की बात=भेद प्रकट करनेवाली बात। रहस्य खोलनेवाला कथन।

पताई-संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] झड़ी हुई पत्तियों का ढेर।

पताका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लकड़ी आदि के डंडे के एक सिरे पर पहनाया हुआ तिकोना या चौकोना कपड़ा। झंडा। झंडी। फरहरा।

मुहा०—(किसी स्थान में अथवा किसी स्थान पर) पताका उड़ना=१. अधिकार होना। राज्य होना। २. सर्वप्रधान होना। सबमें श्रेष्ठ माना जाना। (किसी वस्तु की) पताका उड़ना=प्रसिद्धि होना। धूम होना। पताका उड़ाना=अधिकार करना। विजयी होना। पताका गिरना=हार होना। पराजय होना। विजय की पताका=विजयसूचक पताका।

२. वह डंडा जिसमें पताका पहनाई हुई होती है। ध्वज। ३. सौभाग्य। ४. दस खर्व की संख्या। ५. नाटक में वह स्थल जहाँ एक पात्र एक विषय में कोई बात सोच रहा हो और दूसरा पात्र आकर दूसरे के संबंध में कोई बात कहे। ६. पिंगल के नौ प्रत्ययों में से आठवाँ जिसके द्वारा किसी निश्चित गुरु लघु वर्ण के छंद का स्थान जाना जाय।

पताका स्थान-संज्ञा पुं० दे० "पताका" ५।

पताकिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना।

पतार†-संज्ञा पुं० [सं० पाताल] १. दे० "पाताल"। २. जंगल। सघन वन।

पताल-संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।

पताल आँवला-संज्ञा पुं० [सं० पाताल आमलकी] औषध के काम में आनेवाला एक पौधा या क्षुप।

पताल कुम्हड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० पताल+कुम्हड़ा] एक प्रकार का जंगली पौधा जिसकी गाँठों से शकरकंद की तरह कंद फूटते हैं।

पतिंग-संज्ञा पुं० [सं० पतंग] पतंग। फतिंगा।

पतिंबरा-वि० स्त्री० [सं०] जो अपना पति स्वयं चुने। स्वयंवरा। (स्त्री)

पति-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पत्नी] १. मालिक। स्वामी। अधिपति। २. स्त्री विशेष का विवाहित पुरुष। दूल्हा। शौहर। खाविंद। ३. शिव या ईश्वर। ४. मर्यादा। प्रतिष्ठा।

पतिआना†-क्रि० स० [सं० प्रत्यय+आना (प्रत्य०)] विश्वास या एतबार करना।

पतिआर†-संज्ञा पुं० [हिं० पतिआना] १. विश्वास। साख। एतबार। २. विश्वसनीय।

पतित-वि० [सं०] १. गिरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। २ आचार, नीति

या धर्म से गिरा हुआ। नीतिभ्रष्ट। ३. महापापी। अति पातकी। ४. जाति से निकाला हुआ। समाज-बहिष्कृत। ५. अत्यंत मलीन। महा अपावन। ६. अति नीच। अधम।

पतित-उधारन-वि० [स० पतित + हिं० उधारना] जो पतित का उद्धार करे।
संज्ञा पु० ईश्वर या उनका अवतार।

पतितता-संज्ञा स्त्री० [स०] १. पतित होने का भाव। २. नीचता।

पतितपावन-वि० [स०] [स्त्री० पतितपावनी] पतित को पवित्र करनेवाला।
संज्ञा पु० १ ईश्वर। २. सगुण ईश्वर।

पतित्व-संज्ञा पु० [स०] १. स्वामी, प्रभु या मालिक होने का भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व। २. पति होने का भाव।

पतिदेवा-संज्ञा स्त्री० [स०] पतिव्रता।

पतिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "पत्नी"।

पतियाना†-क्रि० स० [स० प्रत्यय + हिं० आना (प्रत्य०)] विश्वास करना।

पतियारा-संज्ञा पु० [हिं० पतियाना] पतियान का भाव। विश्वास। एतबार।

पतिलोक-संज्ञा पु० [स०] पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।

पतिवती-वि० स्त्री० [सं० पति + वती (प्रत्य०)] सधवा। सौभाग्यवती। (स्त्री)

पतिव्रत-संज्ञा पु० [स०] पति में (स्त्री की) अनन्य प्रीति और भक्ति। पातिव्रत्य।

पतिव्रता-वि० [स०] पति में अनन्य अनुराग रखनेवाली और यथाविधि पतिसेवा करनेवाली। सती। साध्वी। (स्त्री)

पतीजन, पतीजना-क्रि० अ० [हिं० प्रतीत + ना (प्रत्य०)] पतियाना। एतबार करना।

पतीला†-वि० दे० "पतला"।

पतीली-संज्ञा स्त्री० [स० पातिली = हाँडी] ताँबे या पीतल की एक प्रकार की बटलोई।

पतुरिया-संज्ञा स्त्री० [स० पातिली] वेश्या।

पतोखा-संज्ञा पुं० [हिं० पत्ता] [अल्पा० पतोखी] पत्ते का बना पात्र। दोना।
संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बगला।

पतोखी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पतोखा] १. एक पत्ते का दोना। छोटा दोना। २. पत्तों का बना छोटा छाता। घोघी।

पतोहू-संज्ञा स्त्री० [स० पुत्रवधू] बेटे की स्त्री। पुत्रवधू।

पतौआ†-संज्ञा पु० [स० पत्र] पत्ता। पर्ण।

पत्तन-संज्ञा पु० [सं०] नगर। शहर।

पत्तर-संज्ञा पु० [स० पत्र] धातु का ऐसा चिपटा लंबोतरा टुकड़ा जो पीटकर तैयार किया गया हो। धातु की चादर।

पत्तल-संज्ञा स्त्री० [स० पत्र] १. पत्तों को जोड़कर बनाया हुआ एक पात्र जिससे थाली का काम लिया जाता है।
मुहा०—एक पत्तल के खानेवाले = परस्पर रोटी-बेटी का व्यवहार करनेवाले। किसी की पत्तल में खाना = किसी के साथ खान पान आदि का संबंध करना या रखना। जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना = जिससे लाभ उठाना, उसी की हानि करना। कृतघ्नता करना।
२. पत्तल में परसी हुई भोजन-सामग्री। ३. एक आदमी के खाने भर भोजन-सामग्री।

पत्ता-संज्ञा पु० [स० पत्र] [स्त्री० पत्ती] १. पेड़ या पौधे के शरीर का वह हरे रंग का फैला हुआ अवयव जो कांड या टहनी से निकलता है। पल्लव। पत्रक। पर्ण।
मुहा०—पत्ता खड़कना = कुछ खटका या आशंका होना। पत्ता न हिलना = हवा का बिलकुल बंद होना। हब्स होना।
२. कान में पहनने का एक गहना। ३ मोटे कागज़ का गोल या चौकोर खंड।

पत्ति-संज्ञा पु० [स०] १. पैदल सिपाही। प्यादा। पदातिक। २. शूरवीर पुरुष। योद्धा। बहादुर। ३. प्राचीन काल में सेना का सबसे छोटा विभाग जिसमें १ रथ, १ हाथी, ३ घोड़े और ५ पैदल होते थे।

पत्तिक-संज्ञा पु० [स०] १. प्राचीन काल में सेना का एक विशेष विभाग जिसमें १० घोड़े, १० हाथी, १० रथ और १० प्यादे होते थे। २. उपर्युक्त विभाग का अफ़सर।
वि० पैदल चलनेवाला।

पत्ती-संज्ञा स्त्री० [हिं० पत्ता + ई (प्रत्य०)] १. छोटा पत्ता। २. भाग। हिस्सा। साझे का अंश। ३. फूल की पँखड़ी। दल। ४. भाँग। ५. पत्ती के आकार की लकड़ी, धातु आदि का कटा हुआ कोई टुकड़ा। पट्टी।
संज्ञा स्त्री० [?] राजपूतों की एक जाति।

पत्तीदार-संज्ञा पु० [हिं० पत्ती + फा० दार] साझीदार। हिस्सेदार।

पत्थ*-संज्ञा पु० दे० "पथ्य"।

पत्थर–संज्ञा पुं० [सं० प्रस्तर] [वि० पथरीली, क्रि० पथराना] १ पृथ्वी के कड़े स्तर का पिंड या ढेंड । भूद्रव्य का कड़ा पिंड ।
मुहा०–पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय = वह हृदय जिसमें दया, करुणा आदि कोमल वृत्तियों का स्थान न हो । पत्थर की छाती = बलवान् और दृढ़ हृदय । मजबूत दिल । पक्की तबीयत । पत्थर की लकीर = सदा सर्वदा बनी रहनेवाली (वस्तु) । सार्वकालिक । अमिट । पक्की । स्थायी । पत्थर चटाना = पत्थर पर घिसकर धार तेज करना । पत्थर तले हाथ आना या दबना = ऐसे संकट में फँस जाना जिससे छूटने का उपाय न दिखाई पड़ता हो । बुरी तरह फँस जाना । पत्थर तले से हाथ निकालना = संकट या मुसीबत से छूटना । पत्थर पर दूब जमना = अनहोनी बात या असंभव काम होना । पत्थर पसीजना या पिघलना = अत्यंत कठोर चित्त में नरमी या कृपण के मन में दानेच्छा आदि होना । पत्थर से सिर फोड़ना या मारना = *असंभव बात के लिये प्रयत्न करना ।*
२ सड़क की नाप सूचित करनेवाला पत्थर । मील का पत्थर । ३. ओला । बिनौली । इंद्रोपल ।
मुहा०–पत्थर पड़ना = चौपट हो जाना । नष्ट भ्रष्ट हो जाना । पत्थर पानी = आँधी पानी आदि का काल । तूफानी समय ।
४ रत्न । जवाहिर । हीरा, लाल, पन्ना आदि । ५ पत्थर की तरह कठोर, भारी अथवा हटने, गलने आदि के अयोग्य वस्तु । ६ कुछ नहीं । बिल्कुल नहीं । खाक । (तिरस्कार के साथ अभाव का सूचक)

पत्थरकला–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर + कल] पुरानी चाल की बंदूक जिसमें बारूद सुलगाने के लिये चकमक पत्थर लगा रहता था । तोड़ेदार या पलीतेदार बंदूक ।

पत्थरचटा–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर + हिं० चाटना] १ एक प्रकार की घास । २ एक प्रकार का साँप । ३. एक प्रकार की मछली । ४ कंजूस । मक्खीचूस ।

[पत्थ]रफूल–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर + फूल] [छरी]ला । शैलाख्य ।

[पत्थर]फोड़–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर + फोड़ना] [...] की संधि में होनेवाली एक वनस्पति ।

[...] स्त्री० [सं०] विधिपूर्वक विवा[हित स्त्री] । भार्या । वधू । सहधर्मिणी ।

पत्नीव्रत–संज्ञा पुं० [सं०] अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प या नियम ।

पत्य–संज्ञा पुं० [सं०] पति होने का भाव ।

पत्याना †–क्रि० स० दे० "पतिआना" ।

पत्यारा–संज्ञा पुं० दे० "पतिआरा" ।

पत्यारी☆–संज्ञा स्त्री० [सं० पंक्ति] पंक्ति ।

पत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वृक्ष का पत्ता । पत्ती । दल । पर्ण । २ वह वस्तु जिस पर कुछ लिखा हो । लिखा हुआ कागज । ३ वह कागज जिस पर किसी खास मामले की सनद या सबूत के लिये कुछ लिखा हो । ४ वसीका, पट्टा या दस्तावेज । ५ चिट्ठी । पत्री । खत । ६ समाचार-पत्र । खबर का कागज । अखबार । ७ पुस्तक या लेख का एक पन्ना । पृष्ठ । सफा । पन्ना । ८ धातु की चद्दर । वरक । ९ तीर या पक्षी के पंख । पक्ष ।

पत्रकार–संज्ञा पुं० [सं०] समाचारपत्र का संपादक ।

पत्रकृच्छ्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत जिसमें पत्तों का काढ़ा पीकर रहा जाता है ।

पत्र पुष्प–संज्ञा पुं० [सं०] १ सत्कार या पूजा की बहुत मामूली सामग्री । २ लघु उपहार ।

पत्रभंग–संज्ञा पुं० [सं०] चित्र या रेखाएँ जो सौंदर्य-वृद्धि के लिये स्त्रियाँ भाल, कपोल आदि पर बनाती हैं ।

पत्रवाहक–संज्ञा पुं० [सं०] पत्र ले जाने-वाला । चिट्ठीरसाँ । हरकारा ।

पत्र व्यवहार–संज्ञा पुं० [सं०] चिट्ठी आने जाने का क्रम । लिखा पढ़ी । खत किताबत ।

पत्रा–संज्ञा पुं० [सं० पत्र] १. तिथिपत्र । जंत्री । पंचांग । २ पन्ना । वर्क । पृष्ठ ।

पत्रावली–संज्ञा स्त्री० दे० "पत्रभंग" ।

पत्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चिट्ठी । खत । २ कोई छोटा लेख या लिपि । ३ कोई सामयिक पत्र या पुस्तक । समाचारपत्र ।

पत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिट्ठी । खत । २ कोई छोटा लेख या लिपिपत्रिका ।
वि० [सं० पत्रिन्] जिसमें पत्ते हों ।
संज्ञा पुं० १ बाण । तीर । २. पक्षी । चिड़िया । ३ श्येन । बाज । ४ वृक्ष । पेड़ ।

पथ–संज्ञा पुं० [सं०] १ मार्ग । रास्ता । राह । २ व्यवहार आदि की रीति ।

संज्ञा पुं० दे० "पथ्य"।

पथगामी–संज्ञा पुं० [सं० पथगामिन्] पथिक।

पथदर्शक, पथप्रदर्शक–संज्ञा पुं० [सं०] मार्गदर्शक। रास्ता दिखानेवाला।

पथरकला–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर या पथरी + कल] एक प्रकार की बंदूक या कड़ाबीन जो चकमक पत्थर के द्वारा अग्नि उत्पन्न कर के चलाई जाती थी।

पथरचटा–संज्ञा पुं० [हिं० पत्थर + चाटना] पाषाणभेद या पखानभेद नाम की ओषधि।

पथराना–क्रि० अ० [हिं० पत्थर + आना (प्रत्य०)] १. सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना। २. ताज़गी न रहना। नीरस और कठोर हो जाना। ३. स्तब्ध हो जाना। सजीव न रहना।

पथरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पत्थर + ई (प्रत्य०)] १. कटोरे या कटोरी के आकार का पत्थर का बना हुआ कोई पात्र। २. एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर के छोटे-बड़े कई टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं। ३. चकमक पत्थर। ४. पत्थर का वह टुकड़ा, जिस पर रगड़कर उस्तरे आदि की धार तेज़ करते हैं। सिल्ली। ५. कुरंड पत्थर जिससे औज़ार तेज़ करने की सान बनाते हैं।

पथरीला–वि० [हिं० पत्थर + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० पथरीली] पत्थरों से युक्त।

पथिक–संज्ञा पुं० [सं०] मार्ग चलनेवाला। यात्री। मुसाफ़िर। राहगीर।

पथी–संज्ञा पुं० [सं० पथिन्] यात्री। पथिक।

पथुरा–संज्ञा पुं० [सं० पथ] पथ। मार्ग।

पथ्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह हलका और जल्दी पचनेवाला खाना जो रोगी के लिये लाभदायक हो। उपयुक्त आहार।

मुहा०–पथ्य से रहना = संयम से रहना। २. हित। मंगल। कल्याण।

पथ्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का भेद।

पद–संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यवसाय। काम। २. त्राण। रक्षा। ३. योग्यता के अनुसार नियत स्थान। दर्जा। ४. चिह्न। निशान। ५. पैर। पाँव। ६. वस्तु। चीज़। ७. शब्द। ८. प्रदेश। ९. पैर का निशान। १०. श्लोक या किसी छंद का चतुर्थांश। श्लोकपाद। ११. उपाधि। १२. मोक्ष। निर्वाण। १३. ईश्वर-भक्ति संबंधी गीत। भजन। १४. पुराणानुसार दान के लिये जूते, छाते, कपड़े, अँगूठी, कमंडलु, आसन, बरतन और भोजन का समूह।

पदक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पूजन आदि के लिये किसी देवता के पैरों के बनाए हुए चिह्न। २ सोने, चाँदी या किसी और धातु का बना हुआ सिक्के की तरह का गोल या चौकोर टुकड़ा जो किसी व्यक्ति अथवा जनसमूह को कोई विशेष अच्छा कार्य करने के उपलक्ष में दिया जाता है। तमगा।

पदचतुरर्द्ध–संज्ञा पुं० [सं०] विषम वृत्तों का एक भेद।

पदचर–संज्ञा पुं० [सं०] पैदल।

पदच्छेद–संज्ञा पुं० [सं०] संधि और समास-युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पद को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग करने की क्रिया।

पदच्युत–वि० [सं०] [संज्ञा पदच्युति] जो अपने पद या स्थान से हट गया हो।

पदतल–संज्ञा पुं० [सं०] पैर का तलवा।

पदत्राण–संज्ञा पुं० [सं०] जूता।

पददलित–वि० [सं०] १. पैरों से रौंदा हुआ। २ जो दबाकर बहुत हीन कर दिया गया हो।

पदन्यास–संज्ञा पुं० [सं०] १. पैर रखना। चलना। गमन करना। २. पैर रखने की एक मुद्रा। ३. चलन। ढंग। ४. पद रचने का काम।

पदम–संज्ञा पुं० दे० "पद्म"।

संज्ञा पुं० [सं० पद्मकाष्ठ] बादाम की जाति का एक जंगली पेड़। पद्माख।

पदमैत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुप्रास।

पदयोजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] कविता के लिये पदों का जोड़ना।

पदरिपु–संज्ञा पुं० [सं० पद + रिपु] काँटा।

पदवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंथ। रास्ता। २ पद्धति। परिपाटी। तरीक़ा। ३ वह प्रतिष्ठा या मानसूचक पद जो राज्य अथवा किसी संस्था आदि की ओर से किसी योग्य व्यक्ति को मिलता है। उपाधि। ख़िताब। ४ ओहदा। दरजा।

पदाति, पदातिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो पैदल चलता हो। प्यादा। २. पैदल सिपाही। ३. नौकर। सेवक।

पदाधिकारी–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो

किसी पद पर नियुक्त हो। ओहदेदार।

पदाना–क्रि० स० [हिं० पादना का प्रे०] बहुत अधिक दिक करना। तंग करना।

पदार–सज्ञा पु० [स०] पैरों की धूल।

पदार्थ–संज्ञा पु० [स०] १ पद का अर्थ। शब्द का विषय। वह जिसका कोई नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके। २. उन विषयों में कोई विषय जिनका किसी दर्शन में प्रतिपादन हो और जिनके संबंध में यह माना जाता है कि उनके ज्ञान द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है। ३ पुराणानुसार धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ४. वैद्यक में रस, गुण, वीर्य्य, विपाक और शक्ति। ५. चीज। वस्तु।

पदार्थवाद–सज्ञा पु० [स०] वह सिद्धांत जिसमें भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता हो और आत्मा अथवा ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार न होता हो।

पदार्थविज्ञान–सज्ञा पु० [स०] वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान हो। विज्ञान शास्त्र।

पदार्थविद्या–सज्ञा स्त्री० [स०] वह विद्या जिसमें विशिष्ट संज्ञाओं द्वारा सूचित पदार्थों का तत्त्व बतलाया गया हो।

पदार्पण–सज्ञा पु० [स०] किसी स्थान में पैर रखने या आने की क्रिया। (प्रतिष्ठित व्यक्तियों के संबंध में)

पदावली–सज्ञा स्त्री० [स०] १ वाक्यों की श्रेणी। २ भजनों का संग्रह।

पदिक–सज्ञा पु० [स०] पैदल सेना।

पदिक † सज्ञा पु० [स० पदक] १ गले में पहनने का जुगनूँ नाम का गहना। २. हीरा।

यौ०—पदिकहार = रत्नहार। मणिमाल।

पदी†–सज्ञा पुं० [स० पद] पैदल। प्यादा।

पद्धटिका–सज्ञा स्त्री० [सं०] एक मातृक छंद। पद्धरि। पज्झटिका।

पद्धति–सज्ञा स्त्री० [स०] १ राह। पथ। मार्ग। सड़क। २. पंक्ति। कतार। ३ रीति। रस्म। रवाज। ४. कर्म या संस्कार विधि की पोथी। ५. वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ या तात्पर्य्य समझा जाय। ६. ढंग। तरीका। ७. कार्य प्रणाली। विधि। विधान।

पद्धरी–सज्ञा पु० दे० "पद्धटिका"।

पद्म–सज्ञा पु० [स०] १ कमल का फूल या पौधा। २. सामुद्रिक के अनुसार पैर में का एक विशेष आकार का चिह्न जो भाग्य-सूचक माना जाता है। ३ विष्णु का एक आयुध। ४. कुबेर की नौ निधियों में से एक। ५. शरीर पर के सफेद दाग। ६. पदम या पद्माख वृक्ष। ७. गणित में सोलहवें स्थान की संख्या (१०० नील)। ८ पुराणानुसार एक नरक का नाम। ९ पुराणानुसार जंबू द्वीप के दक्षिण-पश्चिम का एक देश। १०. एक पुराण का नाम। ११. एक वर्णवृत्त।

पद्मकंद–सज्ञा पु० [स०] कमल की जड़। मुरार। भिस्सा। भसीड़।

पद्मनाभ–सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

पद्मपाणि–संज्ञा पु० [स०] १. ब्रह्मा। २. बुद्ध की एक विशेष मूर्ति। ३ सूर्य्य।

पद्मबंध–सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें अक्षरों को ऐसे क्रम से लिखते हैं जिससे एक पद्म या कमल का आकार बन जाता है।

पद्मयोनि–सज्ञा पु० [स०] ब्रह्मा।

पद्मराग–सज्ञा पु० [स०] मानिक। लाल।

पद्मबीज–सज्ञा पु० [स०] कमलगट्टा।

पद्मव्यूह–सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा के लिये सेना रखने की एक स्थिति।

पद्मा–सज्ञा स्त्री० [स०] १ लक्ष्मी। २ भादों सुदी एकादशी तिथि।

पद्माकर–सज्ञा पु० [स०] बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल पैदा होते हों।

पद्माख–सज्ञा पु० दे० "पदम।"

पद्मालय–सज्ञा पु० [स०] ब्रह्मा।

पद्मालया–सज्ञा स्त्री० [स०] लक्ष्मी।

पद्मावती–सज्ञा स्त्री० [स०] १. पटना नगर का प्राचीन नाम। २ पद्मा नगर का प्राचीन नाम। ३. उज्जयिनी का एक प्राचीन नाम। ४. एक मात्रिक छंद। ५ मनसा देवी। ६ लोकप्रचलित कथा के अनुसार सिंहल की एक राजकुमारी जिससे चित्तौर के राजा रत्नसेन ब्याहे थे।

पद्मासन–सज्ञा पु० [सं०] १. योगसाधन का एक आसन जिसमें पालथी मारकर सीधे बैठते हैं। २ ब्रह्मा। ३. शिव।

पद्मिनी–सज्ञा स्त्री० [स०] १. कमलिनी।

छोटा कमल।
यौ०—पद्मिनीवल्लभ = सूर्य्य ।
२ वह तालाब या जलाशय जिसमें कमल हो। ३ कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति। ४ लक्ष्मी।

पद्य—वि० [सं०] १. जिसका संबंध पैरों से हो। २. जिसमें कविता के पद हों।
सज्ञा पुं० [सं०] पिंगल के नियमों के अनुसार नियमित मात्रा या वर्ण का चार चरणोंवाला छंद। कविता। गद्य का उलटा।

पद्यात्मक—वि० [सं०] जो छंदोबद्ध हो।

पधरना—क्रि० अ० [हिं० पधारना] किसी बड़े, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन।

पधराना—क्रि० स० [सं० प्र + धारण] १. आदरपूर्वक ले जाना। इज्जत से बैठाना। २ प्रतिष्ठित करना। स्थापित करना।

पधरावनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० पधराना] १. किसी देवता की स्थापना। २. किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाने की क्रिया।

पधारना—क्रि० अ० [हिं० पग + धारना] १. जाना। चला जाना। गमन करना। २ आ पहुँचना। आना। ३ चलना।
क्रि० स० आदरपूर्वक बैठाना। पधराना।

पन—सज्ञा पु० [सं० पण] प्रतिज्ञा। संकल्प।
सज्ञा पुं० [सं० पर्वन् = विशेष अवस्था] आयु के चार भागों में से एक।
प्रत्य० एक प्रत्यय जिसे नामवाचक या गुणवाचक संज्ञाओं में लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं। जैसे, लड़कपन।

पनकपड़ा—सज्ञा पु० [हिं० पानी + कपड़ा] वह गीला कपड़ा जो शरीर के किसी अंग में चोट लगने पर बाँधा जाता है।

पनघट—सज्ञा पु० [हिं० पानी + घाट] वह घाट जहाँ से लोग पानी भरते हों।

पनच—सज्ञा स्त्री० [सं० पतञ्चिका] धनुष का रोदा या डोरी। प्रत्यंचा।

पनचक्की—सज्ञा स्त्री० [हिं० पानी + चक्की] पानी के ज़ोर से चलनेवाली चक्की या कल।

पनडुब्बा—सज्ञा पु० [हिं० पानी + डूबना] १. पानी में गोता लगानेवाला। गोताखोर। २ वह पत्ती जो पानी में गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ता हो। ३. मुरगाबी। ४ एक प्रकार का कल्पित भूत।

पनडुब्बी—सज्ञा स्त्री० [हिं० पानी + डूबना] एक प्रकार की नाव जो प्रायः पानी के अंदर डूबकर चलती है। सब मेरीन।

पनपना—क्रि० अ० [सं० पर्णय = हरा होना] १ पानी पाने के कारण फिर से हरा हो जाना। २. फिर से तदुरुस्त होना।

पनबट्टा—सज्ञा० पु० [हिं० पान + बट्टा (डिब्बा)] पान रखने का छोटा डिब्बा।

पनभरा—सज्ञा पु० दे० "पनहरा"।

पनव—सज्ञा पु० दे० "प्रणव"।

पनवाड़ी—सज्ञा पु० [हिं० पान + वाला] पान बेचनेवाला। तमोली।

पनवारा—सज्ञा पु० [हिं० पान + वार (प्रत्य०)] १. पत्तों की बनी हुई पत्तल। २ एक पत्तल भर भोजन जो एक मनुष्य के खाने भर को हो।

पनस—सज्ञा पु० [सं०] कटहल।

पनसाखा—सज्ञा पु० [हिं० पाँच + शाखा] एक प्रकार की मशाल जिसमें तीन या पाँच बत्तियाँ एक साथ जलती हैं।

पनसारी—सज्ञा पु० दे० "पसारी"।

पनसाल—सज्ञा स्त्री० [हिं० पानी + शाला] वह स्थान जहाँ सर्व साधारण को पानी पिलाया जाता हो। पौसरा।
सज्ञा स्त्री० पानी की गहराई नापने का उपकरण।

पनसुइया—सज्ञा स्त्री० [हिं० पानी + सूई] एक प्रकार की छोटी नाव।

पनसेरी—सज्ञा स्त्री० दे० "पसेरी"।

पनहरा—सज्ञा पु० [हिं० पानी + हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० पनहारन, पनहारिन, पनहारी] वह जो पानी भरने का काम करता हो। पनभरा।

पनहा—सज्ञा पु० [सं० परिणाह] १ कपड़े या दीवार आदि की चौड़ाई। २ गूढ़ आशय या तात्पर्य। मर्म। भेद।
सज्ञा पु० [सं० पण] चोरी का पता लगानेवाला।

पनहारा—सज्ञा पु० दे० "पनहरा"।

पनहियाभद्र—सज्ञा पुं० [हिं० पनही + भद्र = मुंडन] सिर पर इतने जूते पड़ना कि बाल उड़ जायँ।

पनही†—सज्ञा स्त्री० [सं० उपानह] जूता।

पना—सज्ञा पुं० [सं० प्रपानक या पानीय] आम, इमली आदि के रस से बनाया जानेवाला एक प्रकार का शरबत। प्रपानक। पन्हा।

पनाती–संज्ञा पुं० [सं० प्रनप्तृ] [स्त्री० पनातिन] पोते अथवा नाती का पुत्र।

पनाला–संज्ञा पुं० दे० "परनाला"।

पनासना†–क्रि० स० [सं० पालाशन] पोषण करना। परवरिश करना।

पनाह–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शत्रु, संकट या कष्ट से बचाव या रक्षा पाने की क्रिया या भाव। त्राण। बचाव।

मुहा०—(किसी से) पनाह माँगना = किसी से बहुत बचने की इच्छा करना।

२. रक्षा पाने का स्थान। शरण। आड़।

पनिच†–संज्ञा पुं० दे० "पनच"।

पनियाँ†–वि० दे० "पनिहा"।

पनिया सोत†–वि० [हिं० पानी + सोत] (तालाब, खाईं आदि) जिसमें पानी का सोता निकला हो। अत्यंत गहरा।

पनिहा–वि० [हिं० पानी + हा (प्रत्य०)] १. पानी में रहनेवाला। २. जिसमें पानी मिला हो। ३. पानी-संबंधी।

संज्ञा पुं० भेदिया। जासूस।

पनी†::–संज्ञा पुं० [सं० पण] प्रण करनेवाला। प्रतिज्ञा करनेवाला।

पनीर–संज्ञा पुं० [फा०] १. फाड़कर जमाया हुआ दूध। छेना। २. वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

पनीरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. फूल-पत्तों के वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह ले जाकर रोपने के लिये उगाए गए हों। फूल-पत्तों के बेहन। २. वह क्यारी जिसमें पनीरी जमाई गई हो। बेहन की क्यारी।

पनीला–वि० [हिं० पानी + इला (प्रत्य०)] पानी मिला हुआ। जलयुक्त।

पनुआँ†–वि० [हिं० पानी] फीका। नीरस।

पनेला–संज्ञा पुं० [हिं० पनीला = एक प्रकार का सन] एक प्रकार का गाढ़ा चिकना और चमकीला कपड़ा। बेलहरा।

पन्न–वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पड़ा हुआ। जैसे, शरणापन्न। २ नष्ट। गत।

पन्नग–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पन्नगी] १. सर्प। साँप। २. पद्माख।

::[हिं० पन्ना] पन्ना। मरकत।

पन्नगपति–संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग।

पन्नगारि–संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

पन्ना–संज्ञा पुं० [सं० पर्ण ?] पिरोजे की जाति का हरे रंग का एक रत्न। मरकत।

संज्ञा पुं० [हिं० पान] पृष्ठ। वरक। पत्र।

पन्नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पन्ना = पत्ता] १. राँगे या पीतल के कागज की तरह पतले पत्तर जिन्हें शोभा के लिये अन्य वस्तुओं पर चिपकाते हैं। २. सोने या चाँदी के पानी में रँगा हुआ कागज या चमड़ा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पना] एक भोज्य पदार्थ।

संज्ञा स्त्री० [देश०] बारूद की एक तौल।

पन्नीसाज़–संज्ञा पुं० [हिं० पन्नी + फा० साज] पन्नी बनाने का काम करनेवाला।

पन्हाना†–क्रि० अ० दे० "पिन्हाना"।

क्रि० स० १. दे० "पिन्हाना"। २. दे० "पहनाना"।

पपड़ा–संज्ञा पुं० [सं० पर्पट] [स्त्री० अल्पा० पपड़ी] १. लकड़ी का रूखा करकरा और पतला छिलका। २. रोटी का छिलका।

पपड़ियाना–क्रि० अ० [हिं० पपड़ी + आना (प्रत्य०)] १. किसी चीज की परत का सूखकर सिकुड़ जाना। २ इतना सूख जाना कि ऊपर पपड़ी जम जाय।

पपड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पपड़ा का अल्पा०] १ किसी वस्तु की ऊपरी परत जो तरी या चिकनाई के अभाव के कारण कड़ी और सिकुड़कर जगह जगह से चिटक गई हो। २ घाव के ऊपर मवाद के सूख जाने से बना हुआ आवरण या परत। खुरंड। ३. सोहन पपड़ी नामक मिठाई।

पपीहा–संज्ञा पुं० [देश०] एक पक्षी जो वसंत और वर्षा में बड़ी सुरीली ध्वनि में बोलता है। चातक।

पपीता–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके पके फल खाए जाते हैं। पपैया। अड खरबूजा।

पपोटा–संज्ञा पुं० [सं० प्र + पट] आँख के ऊपर का चमड़े का पर्दा। पलक। ढक्कन।

पपोरना†–क्रि० स० [देश०] बाँहें देखना और उनका भराव या पुष्टता देखना। (बलाभिमान का सूचक)

पब्बय::–संज्ञा पुं० [सं० पर्वत]

पमार–संज्ञा पुं० दे०

पय–संज्ञा पुं० [सं० पयस्] जल। पानी। ३ अन्न।

पयद::–संज्ञा पुं० दे०

पयधि::–संज्ञा पुं० दे०

पयनिधि–संज्ञा पुं० दे० "पयोनिधि"।
पयस्विनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूध देनेवाली गाय। २. बकरी। ३ नदी।
पयस्वी–वि० [सं० पयस्विन्] [स्त्री० पयस्विनी] पानीवाला। जिसमें जल हो।
पयहारी–संज्ञा पुं० [सं० पयस्+आहारी] दूध पीकर रह जानेवाला तपस्वी या साधु।
पयान–संज्ञा पुं० [सं० प्रयाण] गमन। जाना।
पयार, पयाल–संज्ञा पुं० [सं० पलाल] धान, कोदो आदि के सूखे डंठल जिनके दाने झाड़ लिए गए हों। पुआल।
मुहा०—पयाल गाहना या झाड़ना=व्यर्थ मिहनत या सेवा करना।
पयोज–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।
पयोद–संज्ञा पुं० [सं०] बादल। मेघ।
पयोधर–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्तन। २. बादल। ३. नागरमोथा। ४. कसेरू। ५. तालाब। तड़ाग। ६. गाय का अयन। ७. पर्वत। पहाड़। ८ दोहा छंद का ११ वाँ भेद। ९. छप्पय छंद का २७ वाँ भेद।
पयोधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
पयोनिधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
परंच–अव्य० [सं०] १. और भी। २. तो भी। परंतु। लेकिन।
परंतप–वि० [सं०] १ वैरियों को दुःख देनेवाला। २ जितेंद्रिय।
परंतु–अव्य० [सं० परं+तु] पर। तो भी। किंतु। लेकिन। मगर।
परंपरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक के पीछे दूसरा, ऐसा क्रम (विशेषतः कालक्रम)। अनुक्रम। पूर्वापर क्रम। २. वंशपरंपरा। संतति। औलाद।
परंपरागत–वि० [सं०] परंपरा से चला आता हुआ। जो सदा से होता हो।
पर–वि० [सं०] १. अपने को छोड़कर शेष। ग़ैर। दूसरा। अन्य। और। २. पराया। दूसरे का। ३. भिन्न। जुदा। अतिरिक्त। ४. पीछे का। बाद का। ५. दूर। अलग। तटस्थ। ६ सबके ऊपर। श्रेष्ठ। ७. प्रवृत्त। लीन। तत्पर। (समास में) प्रत्य० [सं० उपरि] सप्तमी या अधिकरण का चिह्न। जैसे. घर पर। तुम पर।
अव्य० [सं० परम्] १. पश्चात्। पीछे। २. परंतु। किंतु। लेकिन। तो भी।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] चिड़ियों का डैना और उस पर के घूए या रोएँ। पंख। पक्ष।
मुहा०—पर कट जाना=शक्ति या बल का आधार न रह जाना। अशक्त हो जाना। पर जमना=१. पर निकलना। २. जो पहले सीधा सादा रहा हो, उसे शरारत सूझना। (कहीं जाते हुए) पर जलना=१. हिम्मत न होना। साहस न होना। २. गति न होना। पहुँच न होना। पर न मारना=पैर न रख सकना।
परई†–संज्ञा स्त्री० [सं० पार=कटोरा, प्याला] दीए के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का एक बरतन।
परकटा–वि० [फ़ा० पर+हिं० कटना] जिसके पर या पंख कटे हों।
परकना†–क्रि० अ० [हिं० परचना] १. परचना। हिलना। मिलना। २. धड़क खुलना। अभ्यास पड़ना। चसका लगना।
परकसना–क्रि० अ० [हिं० परकासना] १. प्रकाशित होना। जगमगाना। २. प्रकट होना।
परकाजी–वि० [हिं० पर+काज] परोपकारी।
परकाना†–क्रि० स० [हिं० परकना] १. परचाना। २. चसका लगाना।
परकार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वृत्त या गोलाई खींचने का एक औज़ार।
†संज्ञा पुं० दे० "प्रकार"।
परकारना–क्रि० स० [हिं० परकार] १. परकार से वृत्त बनाना। २. चारों ओर फेरना।
परकाल–संज्ञा पुं० दे० "परकार"।
परकाला–संज्ञा पुं० [सं० प्राकार या प्रकोष्ठ] १. सीढ़ी। ज़ीना। २. चौखट। देहलीज।
संज्ञा पुं० [फ़ा० परगाल.] १. टुकड़ा। खंड। २. शीशे का टुकड़ा। ३. चिनगारी।
मुहा०—आफ़त का परकाला=ग़ज़ब करनेवाला। प्रचंड या भयंकर मनुष्य।
परकास–संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश"।
परकासना–क्रि० स० [सं० प्रकाशन] १. प्रकाशित करना। २. प्रकट करना।
परकिति†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रकृति"।
परकीय–वि० [सं०] पराया। दूसरे का।
परकीया–संज्ञा स्त्री० [सं०] पति को छोड़ दूसरे पुरुष से प्रीति-संबंध रखनेवाली स्त्री।
परकोटा–संज्ञा पुं० [सं० परिकोट] १. किसी गढ़ या स्थान की रक्षा के लिये चारों ओर उठाई हुई दीवार। २ धुस। बाँध। चह।
परख–संज्ञा स्त्री० [सं० परीक्षा] १. गुण-दोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देख भाल। जाँच। परीक्षा। २. गुण दोष का

ठीक पता लगानेवाली दृष्टि। पहचान।

परखना–क्रि० स० [सं० परीक्षण] १ गुण-दोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देखना-भालना। परीक्षा करना। जाँच करना। २ भला और बुरा पहचानना।

क्रि० स० [हिं० परेखना] प्रतीक्षा करना। इंतजार करना। आसरा देखना।

परखवैया–संज्ञा पुं० [हिं० परख+वैया (प्रत्य०)] परखनेवाला। जाँचनेवाला।

परखाना–क्रि० स० [हिं० 'परखना' का प्रे०] १ परखने का काम दूसरे से कराना। परीक्षा कराना। जँचवाना। २ सहेजवाना। सँभलवाना।

परखैया–संज्ञा पुं० दे० "परखवैया"।

परग–संज्ञा पुं० [सं० पदक] पग। कदम।

परगटना:–क्रि० अ० [हिं० प्रगट] प्रकट होना। खुलना। जाहिर होना।

क्रि० स० प्रकट या जाहिर करना।

परगन–संज्ञा पुं० दे० "परगना"।

परगना–संज्ञा पुं० [फा० । मि० सं० परिगण =घर] वह भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से ग्राम हों।

परगसना*–क्रि० अ० [सं० प्रकाशन] प्रकाशित होना। प्रकट होना।

परगाछा–संज्ञा पुं० [हिं० पर=दूसरा+गाछ =पेड़] एक प्रकार के पौधे जो प्राय गरम देशों में दूसरे पेड़ों पर उगते हैं।

परगास*–संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश"।

परघट †–वि० दे० "प्रकट"।

परचंड:–वि० दे० "प्रचंड"।

परचत †–संज्ञा स्त्री० [सं० परिचित] जान-पहचान। जानकारी।

परचना–क्रि० अ० [सं० परिचयन] १ हिलना मिलना। घनिष्ठता प्राप्त करना। २ चसका लगना। धड़क खुलना।

परचा–संज्ञा पुं० [फा०] १. कागज का टुकड़ा। चिट। कागज। पत्र। २ पुरजा। खत। चिट्ठी। ३. परीक्षा में आनेवाला प्रश्नपत्र।

संज्ञा पुं० [सं० परिचय] १. परिचय। जानकारी। २ परख। परीक्षा। जाँच। ३. प्रमाण। सबूत।

परचाना–क्रि० स० [हिं० परचना] १. हिलाना मिलाना। आकर्षित करना। २ धड़क खोलना। चसका लगाना। टेव डालना।

क्रि० स० [सं० प्रज्वलन] जलाना।

परचार*–संज्ञा पुं० दे० "प्रचार"।

परचारना:–क्रि० स० दे० "प्रचारना"।

परचून–संज्ञा पुं० [सं० पर+चूर्ण] आटा, दाल, मसाला आदि भोजन का सामान।

परचूनी–संज्ञा पुं० [हिं० परचून] आटा, दाल आदि बेचनेवाला बनिया। मोदी।

परछत्ती–संज्ञा स्त्री० [सं० परि=छत] १. घर या कोठरी के भीतर दीवार से लगाकर कुछ दूर तक बनाई हुई पाटन जिस पर सामान रखते हैं। टाँड। पाटा। २ फूस आदि की छाजन।

परछन–संज्ञा स्त्री० [सं० परि+अर्चन] विवाह की एक रीति जिसमें बरात द्वार पर आने पर कन्या पक्ष की स्त्रियाँ वर की आरती करतीं तथा उसके ऊपर से मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।

परछना–क्रि० स० [हिं० परछन] परछन की क्रिया करना।

परछाईं–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिच्छाया] १. किसी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया जो प्रकाश के अवरोध के कारण पड़ती है। छायाकृति।

मुहा०–परछाईं से डरना या भागना= १ बहुत डरना। अत्यंत भयभीत होना। २. पास तक आने से डरना।

२. जल, दर्पण आदि पर पड़ा हुआ किसी पदार्थ का पूरा प्रतिरूप। प्रतिबिंब। अक्स।

परछालना:–क्रि०स० [सं० प्रक्षालन] धोना।

परज–संज्ञा स्त्री० [सं० पराजिका] एक संकर रागिनी।

वि० [सं०] पर जात। दूसरे से उत्पन्न।

परजन*–संज्ञा पुं० दे० "परिजन"।

परजरना*–क्रि० अ० [सं० प्रज्वलन] १ जलना। दहकना। सुलगना। २ क्रुद्ध होना। कुढ़ना। ३ डाह करना।

परजन्य–संज्ञा पुं० दे० "पर्जन्य"।

परजा–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रजा] १. प्रजा। रैयत। २. आश्रित जन। काम धंधा करनेवाला। ३ जमींदार की जमीन पर खेती आदि करनेवाला। आसामी।

परजाता–संज्ञा पुं० [सं० पारिजात] मझोले आकार का एक पेड़ जिसमें गुच्छे लगते हैं। परिजात।

परजाय*–संज्ञा पुं० दे० "पर्याय"

परजौट—संज्ञा पु० [हिं० परजा + औट (प्रत्य०)] घर बनाने के लिये सालाना किराए पर ज़मीन लेने-देने का नियम।
परणना॰—क्रि० स० [सं० परिणयन] ब्याहना। विवाह करना।
परतचा—संज्ञा स्त्री० दे० "पतचिरा"।
परतंत्र—वि० [सं०] पराधीन। परवश।
परतंत्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पराधीनता।
परतः—अव्य० [सं० परतस्] १. दूसरे से। अन्य से। २. पश्चात्। पीछे। ३. परे। आगे।
परत—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] १. मोटाई का फैलाव जो किसी सतह के ऊपर हो। स्तर। तह। २. लपेटी जा सकनेवाली फैलाव की वस्तुओं का इस प्रकार का मोड़ जिससे उनके भिन्न भिन्न भाग ऊपर नीचे हो जायँ। तह।
परतच्छ॰—वि० दे० "प्रत्यक्ष"।
परतल—संज्ञा पु० [सं० पट = वस्त्र + तल = नीचे] लादनेवाले घोड़ों की पीठ पर रखने का बोरा या गून।
परतला—संज्ञा पु० [सं० परितल] चमड़े या मोटे कपड़े की चौड़ी पट्टी जो कंधे से कमर तक छाती और पीठ पर से तिरछी होती हुई आती है और जिसमें तलवार या चपरास आदि लटकाई जाती है।
परता—संज्ञा पुं० दे० "पड़ता"।
परताप॰—संज्ञा पु० दे० "प्रताप"।
परतिंचा॰—संज्ञा स्त्री० दे० "पतंचिका"।
परती—संज्ञा स्त्री० [हिं० परना = पड़ना] वह खेत या जमीन जो बिना जोती हुई छोड़ दी गई हो।
परतीत॰—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीति"।
परितेजना॰—क्रि० स० [सं० परित्यजन] परित्याग करना। छोड़ना।
परत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पर होने का भाव। पहले या पूर्व होने का भाव।
परथन†—संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।
परदच्छिना॰†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिणा"।
परदा—संज्ञा पुं [फ़ा०] १. आड़ करने के काम में आनेवाला कपड़ा, चिक आदि। पट। मुहा०—परदा उठाना या खोलना = छिपी बात प्रकट करना। भेद का उद्घाटन करना। परदा डालना या रखना = छिपाना। प्रकट होने देना। आँख पर परदा पड़ना = सुझाई न देना। ढँका परदा = १. छिपा हुआ दोष या कलंक। २. बनी हुई प्रतिष्ठा या मर्य्यादा। २. आड़ करनेवाली कोई वस्तु। व्यवधान। ३. लोगों की दृष्टि के सामने न होने की स्थिति। आड़। ओट। छिपाव। मुहा०—परदा रखना = १. परदे के भीतर रहना। सामने न होना। २. छिपाव रखना। दुराव रखना। परदा होना = १. स्त्रियों को सामने न होने देने का नियम होना। २. छिपाव होना। दुराव होना। परदे में रखना = १. स्त्रियों को घर के भीतर रखना, बाहर लोगों के सामने न होने देना। २. छिपा रखना। प्रकट न होने देना। ४. स्त्रियों को बाहर निकलकर लोगों के सामने न होने देने की चाल। ५. वह दीवार जो विभाग करने या ओट करने के लिये उठाई जाय। ६. तह। परत। तल। ७. वह झिल्ली या चमड़ा आदि जो कहीं पर आड़ या व्यवधान के रूप में हो।
परदादा—संज्ञा पु० [सं० प्र० + हिं० दादा] [स्त्री० परदादी] प्रपितामह। दादा का बाप।
परदानशीन—वि० [फ़ा०] परदे में रहनेवाली। अंतःपुरवासिनी। (स्त्री)
परदुम्न॰—संज्ञा पुं० दे० "प्रद्युम्न"।
परदेश—संज्ञा पु० [सं०] विदेश। दूसरा देश। पराया शहर।
परदेशी—वि० [सं०] विदेशी। दूसरे देश का। अन्य देशनिवासी।
परदोस॰—संज्ञा पु० दे० "प्रदोष"।
परधान॰—वि० दे० "प्रधान"।
संज्ञा पु० दे० "परिधान"।
परधाम—संज्ञा पु० [सं०] वैकुंठ धाम।
परन—संज्ञा पु० [सं० प्रण] प्रतिज्ञा। टेक।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पड़ना] बान। आदत।
॰ संज्ञा पु० दे० "पर्ण"।
परना॰†—क्रि० अ० दे० "पड़ना"।
परनाना—संज्ञा पुं० [सं० पर + हिं० नाना] [स्त्री० परनानी] नाना का बाप।
परनाम—संज्ञा पु० दे० "प्रणाम"।
परनाला—संज्ञा पु० [सं० प्रणाली] [स्त्री० अल्पा० परनाली] पनाला। नाबदान। मोरी।
परनि॰—संज्ञा स्त्री० [हिं० पड़ना] बान। आदत। टेव।
परनौत॰—संज्ञा स्त्री० [हिं० परनवना] प्रणाम।
परपंच॰†—संज्ञा पु० दे० "प्रपंच"।
परपंचक॰—वि० दे० "परपंची"।

परपंची◌†–वि० [सं० प्रपंच] १. बखेड़िया। फसादी। २ धूर्त। मायावी।

परपट–संज्ञा पु० [हिं० पर+सं० पट=चादर] चौरस मैदान। समतल भूमि।

परपराना–क्रि० अ० [देश०] मिर्च आदि कड़ुई चीजों का जीभ में विशेष प्रकार का उग्र संवेदन उत्पन्न करना। चुनचुनाना।

परपार–संज्ञा पु० [सं०] उस ओर का तट। दूसरी तरफ़ का किनारा।

परपीड़क–संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरे को पीड़ा या दुःख पहुँचानेवाला। २. पराई पीड़ा को समझनेवाला।

परपूठा◌–वि० [सं० परिपुष्ट] पक्का।

परपोता–संज्ञा पु० [सं० प्रपौत्र] पोते का बेटा। पुत्र के पुत्र का पुत्र।

परफुल्ल◌–वि० दे० "प्रफुल्ल"।

परब–संज्ञा पुं० दे० "पर्व"।

परबत–संज्ञा पु० दे० "पर्वत"।

परबसताई◌–संज्ञा स्त्री० [सं० परवश्यता] पराधीनता। परतंत्रता।

परबाल–संज्ञा पु० [हिं० पर=दूसरा+बाल=रोयाँ] आँख की पलक पर का वह फालतू बाल जिसके कारण बहुत पीड़ा होती है। ◌संज्ञा पु० दे० "प्रवाल"।

परबीन◌–वि० दे० "प्रवीण"।

परबेस◌–संज्ञा पु० दे० "प्रवेश"।

परबोध–संज्ञा पु० दे० "प्रबोध"।

परबोधना◌–क्रि० स० [सं० प्रबोधन] १. जगाना। २. ज्ञानोपदेश करना। ३. दिलासा देना। तसल्ली देना।

परब्रह्म–संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्म जो जगत् से परे है। निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म।

परभाइ◌–संज्ञा पु० दे० "प्रभाव"।

परभात◌–संज्ञा पु० दे० "प्रभात"।

परभाव◌–संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।

परम–वि० [सं०] १ सबसे बढ़ा-चढ़ा। अत्यंत। २. जो बढ़-चढ़कर हो। उत्कृष्ट। ३. प्रधान। मुख्य। ४ आद्य। आदिम। संज्ञा पु० १. शिव। २. विष्णु।

परमगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

परम तत्त्व–संज्ञा पु० [सं०] मूल तत्त्व जिससे संपूर्ण विश्व का विकास है।

परम धाम–संज्ञा पु० [सं०] वैकुंठ।

परम पद–संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

परम भट्टारक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० परम-भट्टारिका] एकछत्र राजाओं की एक प्राचीन उपाधि।

परमल–संज्ञा पु० [सं० परिमल] ज्वार या गेहूँ का एक प्रकार का भुना हुआ दाना।

परमहंस–संज्ञा पु० [सं०] १. वह संन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को पहुँच गया हो। २ परमात्मा।

परमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शोभा। छवि।

परमाणु–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज और वायु इन चार भूतों का वह छोटे से छोटा भाग जिसके फिर और विभाग नहीं हो सकते। अत्यंत सूक्ष्म अणु।

परमाणुवाद–संज्ञा पु० [सं०] न्याय और वैशेषिक का यह सिद्धांत कि परमाणुओं से जगत् की सृष्टि हुई है।

परमात्मा–संज्ञा पु० [सं० परमात्मन्] ईश्वर।

परमानंद–संज्ञा पु० [सं०] १ ब्रह्म के अनुभव का सुख। महानंद। २. आनंद स्वरूप ब्रह्म।

परमान◌†–संज्ञा पु० [सं० प्रमाण] १. प्रमाण। सबूत। २. यथार्थ बात। सत्य बात। ३. सीमा। अवधि। हद।

परमानना◌–क्रि० स० [सं० प्रमाण] १. प्रमाण मानना। ठीक समझना। २ स्वीकार करना।

परमायु–संज्ञा स्त्री० [सं० परमायुस्] अधिक से अधिक आयु। जीवित काल की सीमा जो १०० अथवा १२० वर्ष मानी जाती है।

परमार–संज्ञा पु० [सं० पर=शत्रु+हिं० मारना] राजपूतों का एक कुल जो अग्नि कुल के अंतर्गत है। पँवार।

परमारथ◌–संज्ञा पु० दे० "परमार्थ"।

परमार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. सबसे [illegible] वस्तु। २ वास्तव सत्ता। नाम, [illegible] परे यथार्थ तत्त्व। ३. मोक्ष।

परमार्थवादी–संज्ञा पु० [सं० [illegible]] ज्ञानी। वेदांती। तत्त्वज्ञ। [illegible]

परमार्थी–वि० [सं० पर[illegible]] तत्त्व को ढूँढ़नेवाला। [illegible] २ मोक्ष चाहनेवाला। [illegible]

परमुख◌–वि० [सं० [illegible]] पीछे फिरा हुआ। [illegible] ध्यान धरे।

परमेश, परमे[illegible] संसार का [illegible] ब्रह्म।

[illegible] दूसरे [illegible] न्तर। [illegible] ख की [illegible] काल। [illegible] साथ [illegible] गादड़। [illegible]

परमेश्वरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा ।
परमेष्ठी-संज्ञा पुं० [सं० परमेष्ठिन्] १. ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता । २. विष्णु । ३. शिव ।
परमेसर॰‡-संज्ञा पुं० दे० "परमेश्वर" ।
परमोद -संज्ञा पुं० दे० "प्रमोद" ।
परयंक॰-संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक" ।
परलउ, परलय॰-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रलय] सृष्टि का नाश या अंत । प्रलय ।
परला-वि० [सं० पर=उधर+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० परली] उस ओर का । उधर का ।
मुहा०—परले दरजे या सिरे का=हद दरजे का । अत्यंत । बहुत अधिक ।
परलै॰-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रलय" ।
परलोक-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है । जैसे, स्वर्ग, वैकुंठ आदि ।
यौ०—परलोकवासी=मृत । मरा हुआ ।
मुहा०—परलोक सिधारना=मरना ।
२. मृत्यु के उपरांत आत्मा की दूसरी स्थिति की प्राप्ति ।
परलोकगमन-संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु ।
परवर॰-संज्ञा पुं० [सं० पटोल] परवल ।
परवरदिगार-संज्ञा पुं० [फा०] ईश्वर ।
परवरिश-संज्ञा स्त्री० [फा०] पालन-पोषण ।
परवल-संज्ञा पुं० [सं० पटोल] एक लता जिसके फलों की तरकारी होती है ।
परवश, परवश्य-वि० [सं०] पराधीन ।
परवश्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] पराधीनता ।
परवस्ती॰‡-संज्ञा स्त्री० दे० "परवरिश" ।
परवा-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिपदा] पक्ष की पहली तिथि । पड़वा । परिवा ।
संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चिंता । खटका । आशंका । २. ध्यान । ख़याल । ३. आसरा ।
परवाई॰-संज्ञा स्त्री० दे० "परवाह" ।
परवान॰-संज्ञा पुं० [सं० प्रमाण] १. प्रमाण । सबूत । २. यथार्थ बात । सत्य बात । ३. सीमा । मिति । अवधि । हद ।
परवानगी-संज्ञा स्त्री० [फा०] इजाज़त । आज्ञा । अनुमति ।
परवानना॰-क्रि० स० [सं० प्रमाण] ठीक समझना ।
परवाना-संज्ञा पुं० [फा०] १. आज्ञापत्र । २. फतिंगा । पंखी । पतंग ।
परवाल॰-संज्ञा पुं० दे० "प्रवाल" ।
-संज्ञा पुं० [सं० वाड] आच्छादन ।
परवाह-संज्ञा स्त्री० दे० "परवा" ।
संज्ञा पुं० दे० "प्रवाह" ।
परवी-संज्ञा स्त्री० [सं० पर्व] पर्व-काल ।
परवीन॰-वि० दे० "प्रवीण" ।
परवेख॰-संज्ञा पुं० [सं० परिवेष] हलकी बदली के बीच दिखाई पड़नेवाला चंद्रमा के चारों ओर का घेरा । चाँद की अथाई । मंडल ।
परवेश॰-संज्ञा पुं० दे० "प्रवेश" ।
परश-संज्ञा पुं० [सं०] पारस पत्थर ।
संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] स्पर्श । छूना ।
परशु-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की कुल्हाड़ी जो लड़ाई में काम आती थी । तबर । भलुवा ।
परशुराम-संज्ञा पुं० [सं०] जमदग्नि ऋषि के एक पुत्र जिन्होंने २१ वार क्षत्रियों का नाश किया था ।
परसंग॰-संज्ञा पुं० दे० "प्रसंग" ।
परसंसा॰-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रशंसा" ।
परस-संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] छूना । स्पर्श ।
संज्ञा पुं० [सं० परश] पारस पत्थर ।
परसन॰-संज्ञा पुं० [सं० स्पर्शन] १. छूना । छूने का काम । २. छूने का भाव ।
वि० [सं० प्रसन्न] प्रसन्न । खुश ।
परसना॰-क्रि० स० [सं० स्पर्शन] १. छूना । स्पर्श करना । २. स्पर्श कराना ।
क्रि० स० [सं० परिवेषण] परोसना ।
परसन्न॰-वि० दे० "प्रसन्न" ।
परस पखान-संज्ञा पुं० दे० "पारस" ।
परसा-संज्ञा पुं० [हिं० परसना] एक मनुष्य के खाने भर का भोजन । पत्तल ।
परसाद ‡-संज्ञा पुं० दे० "प्रसाद" ।
परसाना॰-क्रि० स० [हिं० परसना] छुलाना ।
क्रि० स० [हिं० परसना] भोजन बँटवाना ।
परसाल-अव्य० [सं० पर+फा० साल] १. गत वर्ष । पिछले साल । २. आगामी वर्ष ।
परसिद्ध॰-वि० दे० "प्रसिद्ध" ।
परसु॰-संज्ञा पुं० दे० "परशु" ।
परसूत ‡-वि०, संज्ञा पुं० दे० "प्रसूत" ।
परसेद॰-संज्ञा पुं० दे० "प्रस्वेद" ।
परसों-अव्य० [सं० परश्वः] १. गत दिन से पहले का दिन । बीते हुए कल से एक दिन पहले । २. आगामी दिन के बाद का दिन ।
परसोतम॰‡-संज्ञा पुं० दे० "पुरुषोत्तम" ।
परसौंहाँ-वि० [सं० स्पर्श] छूनेवाला ।

परस्पर–क्रि० वि० [सं०] एक दूसरे के साथ। आपस में।

परस्परोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है। उपमेयोपमा।

परहरना०–क्रि० स० [सं० परि+हरण] त्यागना।

परहार†–संज्ञा पुं० १. दे० "प्रहार"। २. दे० "परिहार"।

परहेज़–संज्ञा पुं० [फा०] १. स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाली बातों से बचना। खाने पीने आदि का संयम। २. दोषों और बुराइयों से दूर रहना।

परहेज़गार–संज्ञा पुं० [फा०] १. परहेज़ करनेवाला। संयमी। २. दोषों से दूर रहनेवाला।

परहेलना०–क्रि० स० [सं० प्रहेलन] निरादर करना। तिरस्कार करना।

परांठा–संज्ञा पुं० [हिं० पलटना] घी लगाकर तवे पर सेंकी हुई चपाती। परौठा।

परा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चार प्रकार की वाणियों में पहली वाणी। २. वह विद्या जो ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है जो सब गोचर पदार्थों से परे हो। ब्रह्मविद्या। उपनिषद् विद्या।

संज्ञा पुं० [?] पंक्ति। कतार।

पराकाष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चरम सीमा। सीमांत। हद। अंत।

पराक्रम–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पराक्रमी] १. बल। शक्ति। २. पुरुषार्थ। उद्योग।

पराक्रमी–वि० [सं० पराक्रमिन्] १. बलवान्। बलिष्ठ। २. बहादुर। ३. उद्योगी।

पराग–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह रज या धूलि जो फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमा रहती है। पुष्परज। २. धूलि। रज। ३. एक प्रकार का सुगंधित चूर्ण जिसे लगाकर स्नान किया जाता है। ४. चंदन। ५. उपराग।

पराग-केसर–संज्ञा पुं० [सं०] फूलों के बीच में वे पतले लंबे सूत जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।

परागना०–क्रि० अ० [सं० उपराग] अनुरक्त होना।

पराङ्मुख–वि० [सं०] १. मुँह फेरे हुए। विमुख। २. जो ध्यान न दे। उदासीन। ३. विरुद्ध।

पराजय–संज्ञा स्त्री० [सं०] विजय का उलटा। हार। शिकस्त।

पराजित–वि० [सं०] परास्त। हारा हुआ।

परात–संज्ञा स्त्री० [सं० पात्र] थाली के आकार का एक बड़ा बरतन।

परात्पर–वि० [सं०] सर्वश्रेष्ठ।

संज्ञा पुं० १. परमात्मा। २. विष्णु।

पराधीन–वि० [सं०] परवश। जो दूसरे के अधीन हो। परतंत्र। परवश।

पराधीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] परतंत्रता। दूसरे की अधीनता।

परान–संज्ञा पुं० दे० "प्राण"।

पराना०†–क्रि० अ० [सं० पलायन] भागना।

परान्न–संज्ञा पुं० [सं०] पराया धान्य। दूसरे का दिया हुआ भोजन।

पराभव–संज्ञा पुं० [सं०] १. पराजय। हार। २. तिरस्कार। मानध्वंस। ३. विनाश।

पराभूत–वि० [सं०] १. पराजित। हारा हुआ। २. ध्वस्त। नष्ट।

परामर्श–संज्ञा पुं० [सं०] १. पकड़ना। खींचना। २. विवेचन। विचार। ३. युक्ति। ४. सलाह। मंत्रणा।

परायण–वि० [सं०] १. गत। गया हुआ। २. प्रवृत्त। तत्पर। लगा हुआ।

पराया–वि० पुं० [सं० पर] [स्त्री० पराई] १. दूसरे का। अन्य का। २. जो आत्मीय न हो। ग़ैर। बिराना।

परार०–वि० दे० "पराया"।

परारध०–संज्ञा पुं० दे० "परार्द्ध"।

परार्थ–वि० [सं०] दूसरे का काम। दूसरे का उपकार।

वि० जो दूसरे के अर्थ हो। पर-निमित्तक।

परार्द्ध–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक शंख की संख्या। २. ब्रह्मा की आयु का आधा काल।

परावन–संज्ञा पुं० [हिं० पराना] एक साथ बहुत से लोगों का भागना। भगदड़।

संज्ञा पुं० [सं० पर्व] पुण्यकाल। पर्व।

परावर्तन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परावर्तित] पलटना। लौटना। पीछे फिरना।

परावह–संज्ञा पुं० [सं०] वायु के सात भेदों में से एक।

पराशा–संज्ञा पुं० दे० ..

पराशर–संज्ञा पुं० [सं०]

ऋषि जो पुराणानुसार वसिष्ठ और शक्ति के पुत्र थे। २ एक प्रसिद्ध स्मृतिकार।

परास†–संज्ञा पुं० दे० "पलाश"।

परास्त–वि० [सं०] १. पराजित। हारा हुआ। २ विजित। ध्वस्त।

पराह्न–वि० [सं०] अपराह्न। दोपहर के बाद का समय। तीसरा पहर।

परि–उप० [सं०] एक संस्कृत उपसर्ग जिसके लगने से शब्द में इन अर्थों की वृद्धि होती है–चारो ओर–जैसे, परिक्रमण। अच्छी तरह। जैसे, परिपूर्ण। अतिशय–जैसे परिवर्द्धन। पूर्णता–जैसे, परित्याग। दोषाख्यान—जैसे, परिहास। नियम, क्रम—जैसे, परिच्छेद।

परिकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्यंक। पलँग। २ परिवार। ३. वृंद। समूह। ४ अनुयायियों का दल। अनुचरवर्ग। ५. समारंभ। तैयारी। ६ एक अर्थालंकार जिसमें अभिप्राय भरे हुए विशेषणों के साथ विशेष्य आता है।

परिकरमा†–संज्ञा स्त्री० दे० "परिक्रमा"।

परिकरांकुर–संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष्य या शब्द का प्रयोग विशेष अभिप्राय लिए हुए होता है।

परिक्रमण–संज्ञा पुं० [सं०] १ टहलना। मन बहलाने के लिये घूमना। २. परिक्रमा।

परिक्रमा–संज्ञा स्त्री० [सं० परिक्रम] १. चारो ओर घूमना। फेरी। चक्कर। २. किसी तीर्थ या मंदिर के चारो ओर घूमने के लिये बना हुआ मार्ग।

परिक्षा–संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।

परिक्षित–संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।

परिखन–वि० [हिं० परिखना] रखवाली करनेवाला। रक्षक।

परिखना†क्रि० स० दे० "परखना।" क्रि० अ० [सं० प्रतीक्षा] आसरा देखना।

परिखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] खंदक। खाई।

परिख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।

परिगणन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिगणित, परिगणनीय, परिगण्य] गणना करना। गिनना।

परिगणित–वि० [सं०] गिना हुआ।

परिगत–वि० [सं०] १ बीता हुआ। गत। २. मरा हुआ। मृत। ३. भूला हुआ। विस्मृत। ४. जाना हुआ। ज्ञात। –संज्ञा पुं० [सं० परिग्रह] संगी साथी या आश्रित जन।

परिगृहीत–वि० [सं०] १. मंजूर किया हुआ। स्वीकृत। २ मिला हुआ।

परिग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिग्राह्य] १. प्रतिग्रह। दान लेना। २ पाना। ३. धनादि का संग्रह। ४ आदरपूर्वक कोई वस्तु लेना। ५ विवाह। ६. पत्नी। भार्या। ७. परिवार।

परिघ–संज्ञा पुं० [सं०] १. अगला। अगड़ी। २ भाला। बर्छा। ३ घड़ा। ४. फाटक। ५ घर। ६. तीर। ७ बाधा। प्रतिबंध।

परिचय–संज्ञा पुं० [सं०] १ जानकारी। ज्ञान। अभिज्ञता। २. प्रमाण। लक्षण। ३ किसी व्यक्ति के नाम धाम या गुण-कर्म आदि के संबंध की जानकारी। ४. जान पहचान।

परिचर–संज्ञा पुं० [सं०] १ सेवक। खिदमतगार। २. रोगी की सेवा करनेवाला।

परिचरजा†–संज्ञा स्त्री० दे० "परिचर्या"।

परिचरी संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी।

परिचर्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेवा। टहल। २. रोगी की सेवा-शुश्रूषा।

परिचायक–संज्ञा पुं० [सं०] १. परिचय या जान-पहचान करानेवाला। २ सूचित करनेवाला। सूचक।

परिचार–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेवा। टहल। २. टहलने या घूमने फिरने का स्थान।

परिचारक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेवक। नौकर। २. रोगी की सेवा करनेवाला।

परिचारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेवा करना। खिदमत करना। २. संग करना या रहना।

परिचारना†–क्रि० स० [सं० परिचारण] सेवा करना। खिदमत करना।

परिचारिक–संज्ञा पुं० [सं०] सेवक।

परिचारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] दासी।

परिचालक–संज्ञा पुं० [सं०] चलानेवाला।

परिचालन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिचालित] १. चलने के लिये प्रेरित करना। चलाना। २. कार्य्यक्रम को जारी रखना। ३. हिलाना। गति देना।

परिचालित–वि० [सं०] १. चलाया हुआ। २ बराबर जारी रखा हुआ। ३ हिलाया हुआ।

परिचित–वि० [सं०] १. जाना-बूझा। ज्ञात। मालूम। २. जिसको परिचय हो।

चुका हो। अभिज्ञ। वाकिफ़। ३. जान-पहचान रखनेवाला। मुलाक़ाती।
परिचिति–संज्ञा स्त्री० दे० "परिचय"।
परिचो†–संज्ञा पु० दे० "परिचय"।
परिच्छद–संज्ञा पु० [सं०] १. ढकने का कपड़ा। आच्छादन। पट। २. पहनावा। पोशाक। ३. राजचिह्न। ४. राजा का अनुचर। ५. परिवार। कुटुंब।
परिच्छन्न–वि० [सं०] १. ढका हुआ। छिपा हुआ। २. जो कपड़े पहने हो। वस्त्रयुक्त। ३. साफ़ किया हुआ।
परिच्छिन्न–वि० [सं०] १. सीमायुक्त। परिमित। मर्यादित। २. विभक्त।
परिच्छेद–संज्ञा पुं० [सं०] १. खंड या टुकड़े करना। विभाजन। २. ग्रंथ का कोई स्वतंत्र विभाग। अध्याय। प्रकरण।
परिछन–संज्ञा पु० दे० "परछन"।
परिछाहीं–संज्ञा स्त्री० दे० "परछाईं"।
परिजंक*–संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।
परिजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रित या पोष्य वर्ग। परिवार। २. सदा साथ रहनेवाले सेवक।
परिज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्ञान।
परिज्ञात–वि० [सं०] जाना हुआ।
परिज्ञान–संज्ञा पु० [सं०] पूर्ण ज्ञान।
परिणत–वि० [सं०] [संज्ञा परिणति] १. झुका हुआ। २. बदला हुआ। रूपांतरित। ३. पका हुआ। ४. पचा हुआ।
परिणति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बदलना। रूपांतर होना। २. पकना या पचना। परिपाक। ३. प्रौढ़ता। पुष्टि। ४ अंत।
परिणय–संज्ञा पु० [सं०] ब्याह। विवाह।
परिणयन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्याहना।
परिणाम–संज्ञा पु० [सं०] १. बदलने का भाव या कार्य। बदलना। रूपांतर-प्राप्ति। २. स्वाभाविक रीति से रूप-परिवर्त्तन या अवस्थांतर-प्राप्ति। (सांख्य) ३. विकृति। विकार। रूपांतर। ४. एक स्थिति से दूसरी स्थिति में प्राप्ति। (योग) ५. एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना अथवा अप्रकृत (उपमान) का प्रकृत (उपमेय) से एकरूप होकर कोई कार्य करना कहा जाता है। ६. विकास। वृद्धि। परिपुष्टि। ७. समाप्त होना। बीतना। ८. नतीजा। फल।
परिणामदर्शी–वि० [सं० परिणामदर्शिन्] परिणाम या फल को सोचकर कार्य करनेवाला। सूक्ष्मदर्शी। दूरदर्शी।
परिणामदृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कार्य के परिणाम को जान लेने की शक्ति।
परिणामवाद–संज्ञा पु० [सं०] सांख्य मत जिसमें जगत् की उत्पत्ति, नाश आदि नित्य परिणाम के रूप में माने जाते हैं।
परिणामी–वि० [सं० परिणामिन्] [स्त्री० परिणामिनी] जो बराबर बदलता रहे।
परिणीत–वि० [सं०] १. जिसका ब्याह हो चुका हो। विवाहित। २. समाप्त। पूर्ण।
परितच्छ*–संज्ञा पु० दे० "प्रत्यक्ष"।
परिताप–संज्ञा पु० [सं०] १. गरमी। आँच। ताव। २. दुःख। क्लेश। पीड़ा। ३. संताप। रंज। ४. पश्चात्ताप। पछतावा।
परितापी–वि० [सं० परितापिन्] १. जिसको परिताप हो। दुःखित या व्यथित। २. पीड़ा देनेवाला। सतानेवाला।
परितुष्ट–वि० [सं०] [संज्ञा परितुष्टि] १. खूब संतुष्ट। २. प्रसन्न। खुश।
परितोष–संज्ञा पुं० [सं०] १. संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। खुशी।
परितोस*–संज्ञा पु० दे० "परितोष"।
परित्यक्त–वि० [सं०] [स्त्री० परित्यक्ता] छोड़ा, फेंका, या दूर किया हुआ।
परित्याग–संज्ञा पु० [सं०] वि० [परित्यागी] निकालना। अलग कर देना। छोड़ना।
परित्याज्य–वि० [सं०] छोड़ने या त्यागने योग्य।
परित्राण–संज्ञा पु० [सं०] बचाव। हिफ़ाजत। रक्षा।
परिध–संज्ञा पुं० दे० "परिधि"।
परिधन*–संज्ञा पु० [सं० परिधान] नीचे पहनने का कपड़ा। धोती आदि।
परिधान–संज्ञा पु० [सं०] १. शरीर को कपड़े से लपेटना। कपड़ा पहनना। २. वस्त्र। कपड़ा। पोशाक।
परिधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह रेखा जो किसी गोल पदार्थ के चारों ओर खींचने से बने। घेरा। २. सूर्य, चंद्र आदि के आस-पास देख पड़नेवाला घेरा। परिवेश। मंडल। ३. बाड़ा, रूँधान या चहार-दीवारी। ४. नियत या नियमित मार्ग। कक्षा। ५. कपड़ा। वस्त्र। पोशाक।

परिवेष्टन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिवेष्टित] १. चारों ओर से घेरना या वेष्टन करना। २. आच्छादन। आवरण। ३. परिधि। घेरा। दायरा।

परिव्रज्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इधर-उधर भ्रमण। २. तपस्या। ३. भिक्षुक की भाँति जीवन बिताना।

परिव्राज, परिव्राजक-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह संन्यासी जो सदा भ्रमण करता रहे। २. संन्यासी। यती। परमहंस।

परिव्राट्-संज्ञा पुं० दे० "परिव्राज"।

परिशिष्ट-वि० [सं०] बचा हुआ। संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पुस्तक या लेख का वह भाग जिसमें वे बातें दी गई हों जो किसी कारण यथास्थान न आ सकी हों और जिनके पुस्तक में न आने से वह अपूर्ण रह जाती हो। २. किसी पुस्तक का वह अतिरिक्त अंश जिसमें कुछ ऐसी बातें दी गई हों जिनसे उसकी उपयोगिता या महत्त्व बढ़ता हो। जमीमा।

परिशीलन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिशीलित] १. विषय को ख़ूब सोचते हुए पढ़ना। मननपूर्वक अध्ययन। २. स्पर्श।

परिशेष-वि० [सं०] बचा हुआ। संज्ञा पुं० १. जो कुछ बच रहा हो। २. परिशिष्ट। ३. समाप्ति। अंत।

परिशोध-संज्ञा पुं० [सं०] १. पूर्ण शुद्धि। पूरी सफ़ाई। २. ऋण की बेबाकी। चुकता।

परिशोधन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित] १. पूरी तरह साफ़ या शुद्ध करना। २. ऋण या कर्ज़ की बेबाकी। चुकता।

परिश्रम-संज्ञा पुं० [सं०] १. उद्यम। आयास। श्रम। क्लेश। मेहनत। मशक्कत। २. थकावट। श्रांति। माँदगी।

परिश्रमी-वि० [सं० परिश्रमिन्] जो बहुत श्रम करे। उद्यमी। मेहनती।

परिश्रय-संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रय। पनाह की जगह। २. सभा। परिषद्।

परिश्रांत-वि० [सं०] थका हुआ।

परिश्रुत-वि० [सं०] विख्यात। प्रसिद्ध।

परिषत्-संज्ञा स्त्री० दे० "परिषद्"।

परिषद्-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राचीन काल में विद्वान् ब्राह्मणों की वह सभा जिसे राजा किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिये बुलाता था और जिसका निर्णय सर्वमान्य होता था। २. सभा। मजलिस। ३. समूह। समाज। भीड़।

परिषद्-संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "परिषद्।" २. सदस्य। सभासद। ३. मुसाहब। दरबारी।

परिष्कार-संज्ञा पुं० [सं०] १. संस्कार। शुद्धि। सफ़ाई। २. स्वच्छता। निर्मलता। ३ गहना। जेवर। ४ शोभा। ५. सजावट। सिंगार।

परिष्क्रिया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुद्ध करना। शोधन। २. माँजना धोना। ३. सँवारना। सजाना।

परिष्कृत-वि० [सं०] १ साफ़ या शुद्ध किया हुआ। २. माँजा या धोया हुआ। ३ सँवारा या सजाया हुआ।

परिसंख्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गणना। गिनती। २ एक अर्थालंकार जिसमें पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के सदृश दूसरी बात को व्यंग्य या वाच्य से वर्जित करने के अभिप्राय से कही जाय। यह दो प्रकार का होता है—प्रश्नपूर्वक और बिना प्रश्न का।

परिसर्प-संज्ञा पुं० [सं०] १. परिक्रिया। परिक्रमण। २. घूमना-फिरना। ३ किसी की खोज में जाना। ४. साहित्यदर्पण के अनुसार नाटक में किसी का किसी की खोज में मार्ग के चिह्नों के सहारे भटकना। ५. सुश्रुत के अनुसार ११ क्षुद्र कुष्ठों में से एक।

परिस्तान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह कल्पित लोक या स्थान जहाँ परियाँ रहती हों। २. वह स्थान जहाँ सुंदर मनुष्यों विशेषतः स्त्रियों का जमघट हो।

परिस्फुट-वि० [सं०] १ बिलकुल प्रकट या खुला हुआ। २. व्यक्त। प्रकाशित। प्रकट। ३. ख़ूब खिला हुआ।

परिस्पंद-संज्ञा पुं० [सं०] झरना। क्षरण।

परिहँस-संज्ञा पुं० दे० "परिहस"।

परिहृत-वि० [सं०] मृत। मरा हुआ।

परिहरण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिहरणीय, परिहर्तव्य, परिहृत] १. ज़बरदस्ती ले लेना। छीन लेना। २ परित्याग। छोड़ना। तजना। ३. दोष, अनिष्टादि का उपचार या उपाय करना। निवारण। निराकरण।

परिहरना-क्रि० स० [सं० परिहरण] त्यागना। छोड़ना। तज देना।

परिहस-संज्ञा पुं० [सं० परिहास] परिहास। हँसी। दिल्लगी। २. ईर्ष्या। डाह। संज्ञा पुं० रंज। खेद। दुःख।

परिहा-संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का छंद।

परिहार-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिहारक] १. दोष, अनिष्ट, खराबी आदि का निवारण या निराकरण। २ दोषादि के दूर करने की युक्ति या उपाय। इलाज। उपचार। ३ परित्याग। तजने या त्यागने का कार्य। ४. पशुओं के चरने के लिये परती छोड़ी हुई सार्वजनिक भूमि। चरहा। ५. लड़ाई में जीता हुआ धनादि। ६ कर या लगान की माफी। छूट। ७. खंडन। तरदीद। ८. नाटक में किसी अनुचित या अविधेय कर्म का प्रायश्चित्त करना। (साहित्यदर्पण) ९. तिरस्कार। १० उपेक्षा। संज्ञा पुं० [सं०] राजपूतों का एक वंश जो अग्निकुल के अंतर्गत माना जाता है।

परिहारना*-क्रि०स०[सं० प्रहार] प्रहार करना।

परिहारी-संज्ञा पुं० [सं० परिहारिन्] निवारण, त्याग, दोषक्षालन, हरण या गोपन करनेवाला।

परिहार्य-वि० [सं०] १. जिसका परिहार किया जा सके। जिससे बचा जा सके। जो दूर किया जा सके। २. जिसका निवारण, त्याग या उपचार करना उचित हो।

परिहास-संज्ञा पुं० [सं०] १ हँसी। दिल्लगी। मजाक। २. क्रीड़ा। खेल।

परिहित-वि० [सं०] १. चारों ओर से घिरा या ढँका हुआ। २ पहना हुआ।

परी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ फारस की प्राचीन कथाओं के अनुसार काफ नामक पहाड़ पर बसनेवाली कल्पित सुंदरी और परवाली स्त्रियाँ। २. परम सुंदरी। अत्यंत रूपवती।

परीक्षक-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० परीक्षिका] परीक्षा करने या लेनेवाला। इम्तहान करने या लेनेवाला।

परीक्षण-संज्ञा पुं० दे० "परीक्षा"।

परीक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुण, दोष आदि जानने के लिये अच्छी तरह से देखने भालने का कार्य। समीक्षा। समालोचना। २. वह कार्य जिससे किसी की योग्यता, सामर्थ्य आदि जाने जायँ। इम्तहान। ३. आजमाइश। अनुभवार्थ प्रयोग। ४. निरीक्षण। जाँच पड़ताल। ५ वह विधान जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का निश्चय करते थे।

परीक्षित-वि० [सं०] जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो। संज्ञा पुं० अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, पांडु कुल के एक प्रसिद्ध राजा। कहते हैं कि जब तक्षक के काटने से इनकी मृत्यु हो गई, तब कलियुग का आरंभ हुआ था।

परीक्ष्य-वि० [सं०] परीक्षा करने योग्य।

परीखना*-क्रि० स० दे० "परखना"।

परीछत*-संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।

परीछा-संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।

परीछित*-क्रि० वि०[सं०परीक्षित] अवश्य ही।

परीजाद-वि० [फा०] अत्यंत सुंदर।

परीत*-संज्ञा पुं० दे० "प्रेत"।

परीषह-संज्ञा पुं० [सं०] जैन शास्त्रों के अनुसार त्याग या सहन। ये २२ प्रकार के कहे गए हैं।

परुख*-वि० दे० "परुष"।

परुखाई*-संज्ञा स्त्री० [हिं० परुख + आई (प्रत्य०)] परुषता। कठोरता।

परुष-वि० [सं०] [स्त्री० परुषा] १. कठोर। कड़ा। सख्त। २. बुरा लगनेवाला (शब्द, वचन, आदि)। ३ निष्ठुर। निर्दय। बेरहम।

परुषता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कठोरता। कड़ाई। २. (वचन या शब्द की) कर्कशता। ३. निर्दयता।

परुषत्व-संज्ञा पुं० [सं०] परुषता।

परुषा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काव्य में वह वृत्ति, रीति या शब्दयोजना की प्रणाली जिसमें टवर्गीय, द्वित्त, संयुक्त, रेफ और श, ष आदि वर्ण तथा लंबे लंबे समास अधिक आए हों। २. रावी नदी।

परे-अव्य० [सं० पर] १. उस ओर। उधर। २. बाहर। अलग। ३. ऊपर। बढ़कर। ४ बाद। पीछे।

परेई-संज्ञा स्त्री० [हिं० परेवा] १. पंडुकी। फाखता। २. मादा कबूतर।

परेखना-क्रि० स० [सं० प्रेक्षण] १. परखना। जाँचना। २ आसरा देखना।

परेखा*-संज्ञा पुं० [सं०

जाँच। २. विश्वास। प्रतीति। ३. पछ-तावा। अफ़सोस। खेद।
परेग–संज्ञा स्त्री० [अ० पेग] छोटा काँटा।
परेत–संज्ञा पु० दे० "प्रेत"।
परेता–संज्ञा पु० [सं० परितः] १. जुलाहों का एक औज़ार जिस पर वे सूत लपेटते हैं। २. पतंग की डोर लपेटने का बेलन।
परेरा–संज्ञा पु० [सं० पर=दूर, ऊँचा+पर] आकाश। आसमान।
परेवा–संज्ञा पु० [सं० पारावत] [स्त्री० परेई] १. पंडुक पक्षी। पेंडुकी। फ़ाख़ता। २. कबूतर। ३. तेज उड़नेवाला पक्षी। ४. चिट्ठीरसाँ। हरकारा।
परेश–संज्ञा पु० [सं०] ईश्वर।
परेशान–वि० [फा०] व्यग्र। व्याकुल। उद्विग्न।
परेशानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] व्याकुलता। उद्विग्नता। व्यग्रता।
परों†–क्रि० वि० दे० "परसों"।
परोक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुपस्थिति। अभाव। गैरहाज़िरी। २. परम ज्ञानी। वि० [सं०] १. जो देख न पड़े। २. गुप्त। छिपा हुआ।
परोजन–संज्ञा पु० दे० "प्रयोजन"।
परोपकार–संज्ञा पु० [सं०] वह काम जिससे दूसरों का भला हो। दूसरे के हित का काम।
परोपकारी–संज्ञा पुं० [सं० परोपकारिन्] [स्त्री० परोपकारिणी] दूसरों की भलाई करनेवाला।
परोरना†–क्रि० स० [?] मंत्र पढ़कर फूँकना।
परोल–संज्ञा पु० [अ० पेरोल] सैनिकों का संकेत का शब्द जिसके बोलने से पहरे पर के सिपाही बोलनेवाले को आने या जाने से नहीं रोकते।
परोसना†–क्रि० स० दे० "परसना"।
परोसा†–संज्ञा पुं० [हिं० परोसना] एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो कहीं भेजा जाता है।
परोहन–संज्ञा पु० [सं० प्ररोहण] वह जिस पर कोई सवार हो, या कोई चीज़ लादी जाय।
पर्जंक†–संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।
पर्जन्य–संज्ञा पु० [सं०] १. बादल। मेघ। २. विष्णु। ३. इंद्र।
पर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष का पत्ता।
पर्णकुटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] केवल पत्तों की बनी हुई कुटी। पर्णशाला। झोंपड़ी।
पर्णशाला–संज्ञा स्त्री० दे० "पर्णकुटी"।
पर्णी–संज्ञा पुं० [सं० पर्णिन्] वृक्ष। पेड़। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की अप्सराएँ।
पर्त–संज्ञा स्त्री० दे० "परत"।
पर्दा–संज्ञा पु० दे० "परदा"।
पर्पट–संज्ञा पुं० [सं०] १. पित्तपापड़ा। २. पापड़।
पर्पटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौराष्ट्र देश की मिट्टी। गोपीचंदन। २. पानड़ी। ३. पपड़ी। ४ स्वर्ण-पर्पटी नामक औषध।
पर्पटी रस–संज्ञा पु० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस।
पर्यंक–संज्ञा पु० [सं०] पलँग।
पर्यंत–अव्य० [सं०] तक। लौं।
पर्यटन–संज्ञा पु० [सं०] भ्रमण। घूमना-फिरना।
पर्यवसान–संज्ञा पु० [सं०] [वि० पर्यवसित] १. अंत। समाप्ति। २. शामिल हो जाना। ३. ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना।
पर्यस्तापह्नुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें वस्तु का गुण गोपन करके उस गुण का किसी दूसरे में आरोपित किया जाना वर्णन किया जाय।
पर्याप्त–वि० [सं०] १. पूरा। काफ़ी। यथेष्ट। २ प्राप्त। मिला हुआ। ३. समर्थ।
पर्याय–संज्ञा पु० [सं०] १. समानार्थवाची शब्द। जैसे, 'विष' का पर्याय 'हलाहल' है। २. क्रम। सिलसिला। ३. वह अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रय लेना वर्णित हो या अनेक वस्तुओं का एक ही के आश्रित होने का वर्णन हो।
पर्यायोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें कोई बात साफ़ न कहकर घुमाव-फिराव से कही जाय, अथवा जिसमें किसी रमणीय मिस या व्याज से कार्य साधन किए जाने का वर्णन हो।
पर्यालोचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] पूरी जाँच; पड़ताल। समीक्षा।
पर्युपासक–संज्ञा पु० [सं०] सेवक। दास।
पर्युपासन–संज्ञा पु० [सं०] सेवा।

पर्व-संज्ञा पुं० [सं० पर्वन्] १. धर्म, पुण्य-कार्य्य अथवा उत्सव आदि करने का समय। पुण्यकाल। २. चातुर्मास्य। ३. प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा अथवा अमावस्या तक का समय। पक्ष। ४. दिन। ५. क्षण। ६. अवसर। मौका। ७. उत्सव। ८. संधि स्थान। ९. भाग। टुकड़ा। हिस्सा।

पर्व-काल-संज्ञा पुं० [सं०] वह समय जब कि कोई पर्व हो। पुण्य-काल।

पर्वणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णिमा।

पर्वत-संज्ञा पुं० [सं०] १. ज़मीन के ऊपर आस-पास की ज़मीन से बहुत अधिक उठा हुआ प्राकृतिक भाग जो प्रायः पत्थर ही होता है। पहाड़। २. किसी चीज़ का बहुत ऊँचा ढेर। ३. वृक्ष। पेड़। ४. दश-नामी संप्रदाय के एक प्रकार के संन्यासी।

पर्वतनंदिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

पर्वतराज-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत बड़ा पहाड़। २. हिमालय पर्वत।

पर्वतारि-संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

पर्वतास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकते ही शत्रु की सेना पर बड़े बड़े पत्थर बरसने लगते थे, अथवा अपनी सेना के चारों ओर पहाड़ खड़े हो जाते थे।

पर्वती-वि० दे० "पर्वतीय"।

पर्वतीय-वि० [सं०] १. पहाड़ी। पहाड़ संबंधी। २. पहाड़ पर रहने, होने या बसने-वाला।

पर्वतेश्वर-संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

पर्वर-संज्ञा पुं० दे० "परवल"।
वि० दे० "परवर"।

पर्वरिश-संज्ञा स्त्री० [फा०] पालन-पोषण। पालना-पोसना।

पर्वसंधि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूर्णिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के बीच का समय। २. सूर्य्य अथवा चंद्रमा को ग्रहण लगने का समय।

पर्वाह-संज्ञा स्त्री० दे० "परवाह"।

पर्विणी-संज्ञा स्त्री० दे० "पर्व"।

पर्हेज़-संज्ञा पुं० [फा०] १. रोग आदि के समय अपथ्य वस्तु का त्याग। २. अलग रहना। दूर रहना।

पलंका‡-संज्ञा स्त्री० [हिं० पर+लंका] बहुत दूर का स्थान।

पलंग-संज्ञा पुं० [सं० पर्य्यंक] [स्त्री० अल्पा० पलँगड़ी] अच्छी और बड़ी चारपाई। पर्यंक।

पलंगपोश-संज्ञा पुं० [हिं० पलंग+फा० पोश] पलंग पर बिछाने की चादर।

पलँगिया‡-संज्ञा स्त्री० [हिं० पलंग+इया (प्रत्य०)] छोटा पलंग। खटिया।

पल-संज्ञा पुं० [सं०] १. समय का एक प्राचीन विभाग जो २/५ मिनट या २४ सेकेंड के बराबर होता है। घड़ी या दंड का ६० वाँ भाग। २. चार कर्ष की एक तौल। ३. मांस। ४. धान का पयाल। ५. धोखे-बाज़ी। प्रतारणा। ६. तराज़ू। तुला।
संज्ञा पुं० [सं० पलक] १. पलक। दृगंचल।
मुहा०—पल मारते या पल मारने में=बहुत ही जल्दी। आँख झपकते। तुरंत।
२. समय का अत्यंत छोटा विभाग। क्षण। लहज़ा।
मुहा०—पल के पल में=बहुत ही अल्प काल में। क्षण भर में।

पलक-संज्ञा स्त्री० [सं० पल+क] १. क्षण। पल। लहमा। २. आँख के ऊपर का चमड़े का परदा। पपोटा तथा बरौनी।
मुहा०—पलक झपकते=अत्यंत अल्प समय में। बात कहते। किसी के रास्ते में या किसी के लिये पलक बिछाना=किसी का अत्यंत प्रेम से स्वागत करना। पलक भाँजना =पलक गिराना या हिलाना। पलक मारना = १. आँखों से संकेत या इशारा करना। २. पलक झपकाना या गिराना। पलक लगना=१. आँखें मुँदना। पलक झपकना। २. नींद आना। झपकी लगना। पलक से पलक न लगना= १. टकटकी बँधी रहना। २. नींद न आना।

पलक-दरिया‡-वि० [हिं० पलक+फा० दरिया] बहुत बड़ा दानी। अति उदार।

पलकनेवाज़‡-वि० दे० "पलक-दरिया"।

पलका‡-संज्ञा पुं० [सं० पर्यंक] [स्त्री० पलकी] पलंग। चारपाई।

पलचर-संज्ञा पुं० [सं० पल+चर] १. एक उपदेवता जिसका वर्णन राजपूतों की कथाओं में है।

पलटन-संज्ञा स्त्री० [अं० बटालियन या प्लैटून] १. अँगरेज़ी पैदल सेना का एक विभाग जिसमें २०० के लगभग सैनिक होते हैं। २. दल। समुदाय। झुंड।

पलटना-क्रि० अ० [सं०

जाना। (क्व०) २. अवस्था या दशा बदलना। परिवर्तन होना। काया-पलट हो जाना। ३. अच्छी स्थिति या दशा प्राप्त होना। ४ मुड़ना। घूमना। पीछे फिरना। ५. लौटना। वापस होना।
क्रि० स० १. उलटना। औंधाना। २ अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत करना। काया पलट देना। ३. फेरना। बार-बार उलटना। ४. बदलना। एक वस्तु को त्यागकर दूसरी को ग्रहण करना। ५. बदले में लेना। बदला करना। (अप्रयुक्त) ६ एक बात से मुकरकर दूसरी कहना। ७. लौटाना। फेरना। वापस करना।

पलटनिया—संज्ञा पुं० [हिं० पलटन] पलटन में काम करनेवाला। सिपाही। सैनिक।

पलटा—संज्ञा पुं० [हिं० पलटना] १. पलटने की क्रिया या भाव। परिवर्तन।
मुहा०—पलटा खाना=दशा या स्थिति का उलट जाना।
२ बदला। प्रतिफल। ३. गाने में जल्दी जल्दी थोड़े से स्वरों पर चक्कर लगाना या उनका उच्चारण करना।

पलटाना—क्रि० स० [हिं० पलटना] १. लौटाना। फेरना। वापस करना। २. बदलना। (क्व०)

पलटे—क्रि० वि० [हिं० पलटा] बदले में। एवज में। प्रतिफल-स्वरूप।

पलड़ा—संज्ञा पुं० [सं० पटल] तराजू का पल्ला। तुलापट।

पलथी—संज्ञा स्त्री० [सं० पर्य्यस्त] वह आसन जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ और बाएँ पैर का पंजा दहिने पुट्ठे के नीचे दबाकर बैठते हैं। स्वस्तिकासन। पालथी।

पलना—क्रि० अ० [सं० पालन] १. पालने का अकर्मक रूप। परवरिश पाना। पाला-पोसा जाना। २. खा पीकर हृष्ट पुष्ट होना। तैयार होना।
संज्ञा पुं० दे० "पालना"।

पलनाना—क्रि० स० [हिं० पलान=जीन +ना (प्रत्य०)] घोड़े पर ज़ीन कसकर उसे चलने के लिये तैयार करना।

पलवा—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] अँजुली। चुल्लू।
—क्रि० स० [हिं० पालना का प्रेरणा०] किसी से पालन कराना।

पलवैया—संज्ञा पुं० [हिं० पालना+वैया (प्रत्य०)] पालन करनेवाला। पालक।

पलस्तर—संज्ञा पुं० [अं० प्लास्टर] दीवार आदि पर का मिट्टी, चूने आदि के गारे का लेप। लेट।
मुहा०—पलस्तर ढीला होना, बिगड़ना या बिगड़ जाना=बहुत परेशान होना। नसें ढीली हो जाना।

पलहना—क्रि० अ० [सं० पल्लव] पल्लवित होना। पल्लव फूटना। पनपना। लहलहाना।

पलहा—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] कोमल पत्ते। कोंपल।

पलांडु—संज्ञा पुं० [सं०] प्याज।

पला—संज्ञा पुं० [सं० पल] पल। निमिष।
संज्ञा पुं० [सं० पटल] १ तराजू का पल्ड़ा। पल्ला। २. पल्ला। आँचल। ३. पार्श्व। किनारा।

पलाद—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

पलान—संज्ञा पुं० [सं० पल्याण, प्रा० पालाम] वह गद्दी या चारजामा जो जानवरों की पीठ पर लादने या चढ़ने के लिये कसा जाता है।

पलानना—क्रि० स० [हिं० पलान+ना (प्रत्य०)] १. घोड़े आदि पर पलान कसना। २. चढ़ाई की तैयारी करना।

पलाना—क्रि० अ० [सं० पलायन] भागना। पलायन करना।
क्रि० स० पलायन कराना। भगाना।

पलानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पलान] १. छप्पर। २. दे० "पलान"।

पलायक—संज्ञा पुं० [सं०] भागनेवाला। भगू।

पलायन—संज्ञा पुं० [सं०] भागने की क्रिया या भाव। भागना।

पलायमान—वि० [सं०] भागता हुआ।

पलायित—वि० [सं०] भागा हुआ।

पलाश—संज्ञा पुं० [सं०] १. पलास। ढाक। टेसू। २. पत्र। पत्ता। ३. राक्षस। ४. कचूर। ५. मगध देश।
वि० १. मांसाहारी। २. निर्दय।

पलाशी—वि० [सं० पलाशिन्] १. मांसाहारी। २. पत्र विशिष्ट। पत्रयुक्त।
संज्ञा पुं० राक्षस।

पलास—संज्ञा पुं० [सं० पलाश] १. एक प्रसिद्ध वृक्ष जो तीन रूपों में पाया जाता

है—वृक्ष रूप में, क्षुप रूप में और लता रूप में। इसके फूल को प्रायः टेसू कहते हैं। पलास। ढाक। टेसू। केसू। २. गीध की जाति का एक मांसाहारी पक्षी।

पलित—वि० [सं०] [स्त्री० पलिता] १. वृद्ध। बुड्ढा। २. पका हुआ या सफेद (बाल)। संज्ञा पुं० १. सिर के बालों का उजला होना। बाल पकना। २. ताप। गरमी।

पली—संज्ञा स्त्री० [सं० पलिघ] तेल, घी आदि द्रव पदार्थों को बड़े बरतन से निकालने का लोहे का एक उपकरण।

मुहा०—पली पली जोड़ना=थोड़ा थोड़ा करके संचय या संग्रह करना।

पलीता—संज्ञा पुं० [फा० फलीतः] [स्त्री० अल्पा० पलीती] १. बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह कागज जिस पर कोई यंत्र लिखा हो। २. वह बत्ती जिससे बंदूक या तोप के रंजक में आग लगाई जाती है। ३. कपड़े की वह बत्ती जिसे पलशाखे पर रखकर जलाते हैं।

वि० बहुत क्रुद्ध। आग बबूला।

पलीद—वि० [फा०] १. अपवित्र। गंदा। २. घृणास्पद। ३. नीच। दुष्ट।

संज्ञा पुं० [हिं० पलीत] भूत। प्रेत।

पलुआ†—संज्ञा पुं० [हिं० पलना] पालतू। पाला हुआ।

पलुहना*†—क्रि० अ० [सं० पल्लव] पलुवित होना। हरा-भरा होना।

पलुहाना*†—क्रि० स० [हिं० पलुहना] पलुवित करना। हरा-भरा करना।

पलेड़ना*†—क्रि० स० [सं० प्रेरण] ढकेलना। धक्का देना।

पलेथन—संज्ञा पुं० [सं० परिस्तरण] १. वह सूखा आटा जिसे रोटी बेलने के समय लोई पर लपेटते हैं। परथन।

मुहा०—पलेथन निकलना=१. खूब मार पड़ना या खाना। २. परेशान होना। तंग होना।

२. किसी हानि या अपकार के पश्चात् उसी के संबंध से होनेवाला अनावश्यक व्यय।

पलोटना—क्रि० स० [सं० प्रलोठन] १. पैर दबाना। २. दे० "पलटना"।

क्रि० अ० [हिं० पलटना] कष्ट से लोटना-पोटना। तड़फड़ाना।

पलोथन—संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।

पलोवना*—क्रि० स० [सं० प्रलोठन] १. पैर दबाना। पैर मलना। २. सेवा करना।

पलोसना*—क्रि० स० [हिं० परसना] १. धोना। २. मीठी मीठी बातें करके ढंग पर लाना।

पल्लव—संज्ञा पुं० [सं०] १. नए निकले हुए कोमल पत्तों का समूह या गुच्छा। कोंपल। कल्ला। २. हाथ में पहनने का कड़ा या कंकण। ३. विस्तार। ४. बल। ५. पल्लव देश। ६. दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश जिसका राज्य उड़ीसा से तुंगभद्रा नदी तक था।

पल्लवना*—क्रि० अ० [सं० पल्लव+ना (प्रत्य०)], पल्लवित होना। पत्ते फेंकना। पनपना।

पल्लवित—वि० [सं०] १. जिसमें नए नए पत्ते हों। २. हरा-भरा। ३. लंबा-चौड़ा। ४. जिसके रोंगटे खड़े हों।

पल्ला—क्रि० वि० [सं० पर या पार] दूर।

संज्ञा पुं० दूरी।

संज्ञा पुं० [?] १. कपड़े का छोर। आँचल। दामन।

मुहा०—पल्ला छूटना=पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। पल्ला पसारना=किसी से कुछ माँगना। पल्ले पड़ना=प्राप्त होना। मिलना। (किसी के) पल्ले बाँधना=जिम्मे किया जाना।

२. दूरी। ३. †पास। अधिकार में। ४. तरफ।

संज्ञा पुं० [सं० पटल] १. दुपल्ली टोपी का आधा भाग। २. किवाड़। पटल। ३. पहल। ४. तीन मन का बोझ।

संज्ञा पुं० [सं० पल] तराजू में एक ओर का टोकरा या डलिया। पलड़ा।

मुहा०—पल्ला झुकना या भारी होना=पक्ष बलवान् होना।

संज्ञा पुं० [सं० फल] कैंची के दो भागों में से एक भाग।

वि० दे० "परला"।

पल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा गाँव। पुरवा। खेड़ा। २. कुटी।

पल्लू†—संज्ञा पुं० [हिं० पल्ला] १. आँचल। छोर। दामन। २. चौड़ी गोट। पट्टा।

पल्ले†*—वि० दे० १. "परलय"। २. दे० "पल्ला"।

पल्लेदार—संज्ञा पुं० [हिं० पल्ला+फा० दार] १. अनाज ढोनेवाला मजदूर। २. गल्ला

लनेवाला आदमी। चया।
ेदारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पल्लेदार+ई प्रत्य०)] पल्लेदार का काम।
ौ†—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] पल्लव।
ज्ञा पुं० वह चद्दर या टाट जिसमें अनाज ांधते हैं। पल्ला।
ंगा—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का छंद।
वन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा।
मुहा०—पवन का भूसा होना=उड़ जाना। कुछ न रहना।
२. कुम्हार का आँवा। ३. जल। पानी। ४. श्वास। साँस। ५. प्राण वायु।
* संज्ञा पुं० दे० "पावन"।
पवन अस्त्र—संज्ञा पुं० दे० "पवनास्त्र"।
पवन-कुमार—संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान्। २. भीमसेन।
पवन चक्की—संज्ञा स्त्री० [सं० पवन+हिं० चक्की] वह चक्की या कल जो हवा के जोर से चलती हो।
पवन चक्र—संज्ञा पुं० [सं०] बवंडर।
पवन तनय—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान्। २ भीमसेन।
पवन पति—संज्ञा पुं० [सं०] वायु के अधिष्ठाता देवता।
पवन परीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक क्रिया जिसके अनुसार आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा को देखकर ऋतु का भविष्य कहते हैं।
पवन पुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान्। २. भीमसेन।
पवन वाण—संज्ञा पुं० [सं०] वह बाण जिसके चलाने से हवा वेग से चलने लगे।
पवन-सुत—संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान्। २. भीमसेन।
पवनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।
पवनाशी—संज्ञा पुं० [सं० पवनाशिन्] १. वह जो हवा खाकर रहता हो। २. साँप।
पवनास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक अस्त्र। कहते हैं कि इसके चलाने से तेज हवा चलने लगती थी।
पवनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाना=प्राप्त करना] गाँवों में रहनेवाली वह छोटी प्रजा जो अपने निर्वाह के लिये गाँववालों से कुछ पाती है। जैसे नाऊ, धारी, धोबी।
पवरी†—संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि"।

पवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग जिसमें प, फ, ब, भ, म, ये पाँच अक्षर हैं।
पवाँर—संज्ञा पुं० दे० "परमार"।
पवाँरना†—क्रि० स० [सं० प्रवारण] फेंकना। गिराना।
पवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव] १. एक पैर का जूता। २. चक्की का एक पाट।
पवाड़ा—संज्ञा पुं० दे० "पँवाड़ा"।
पवाना†—क्रि० स० [हिं० पाना, भोजन करना) का सकर्मक] खिलाना। भोजन कराना।
पवि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वज्र। २. बिजली। गाज। ३ वाक्य।
पवितई*—वि० स्त्री० दे० "पवित्रता"।
पवित्तर†—वि० दे० "पवित्र"।
पवित्र—वि० [सं०] जो गंदा, मैला या खराब न हो। शुद्ध। निर्मल। साफ़।
संज्ञा पुं० [सं०] १. मेंह। बारिश। वर्षा। २ कुशा। ३ ताँबा। ४. जल। ५. दूध। ६ यज्ञोपवीत। जनेऊ। ७ घी। ८ शहद। ९. कुशा की बनी हुई पवित्री जिसे श्राद्धादि में उँगलियों में पहनते हैं। १०. विष्णु। ११. महादेव।
पवित्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्र या शुद्ध होने का भाव। स्वच्छता। सफ़ाई।
पवित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुलसी। २. हल्दी। ३. पीपल। ४. रेशमी माला जो कुछ धार्मिक कृत्यों के समय पहनी जाती है।
पवित्रात्मा—वि० [सं० पवित्रात्मन्] जिसकी आत्मा पवित्र हो। शुद्ध अंतःकरणवाला।
पवित्रित—वि० [सं०] शुद्ध या निर्मल किया हुआ।
पवित्री—संज्ञा स्त्री० [सं० पवित्र] कुश का बना छल्ला जो कर्मकांड के समय अनामिका में पहना जाता है।
पशम—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० पश्म] १. बढ़िया मुलायम ऊन जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं। २ उपस्थ पर के बाल। शष्प। ३ बहुत ही तुच्छ वस्तु।
पशमीना—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ पशम। २ पशम का बना हुआ कपड़ा।
पशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ चार पैरों से चलनेवाला कोई जंतु जिसके शरीर का भार खड़े होने पर पैरों पर रहता हो। जैसे, कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा इत्यादि। २. जीव-

मात्र। प्राणी। २. देवता।
पशुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पशु का भाव। जानवरपन। २. मूर्खता और औद्धत्य।
पशुत्व–संज्ञा पुं० दे० "पशुता"।
पशुधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] पशुओं का सा आचरण। मनुष्य के लिये निंद्य व्यवहार।
पशुपतास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव का शूलास्त्र।
पशुपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. अग्नि। ३. ओषधि।
पशुपाल–संज्ञा पुं० [सं०] पशुओं को पालनेवाला। पशुओं का रक्षक।
पशुभाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. पशुत्व। जानवरपन। २. तंत्र में मंत्र के साधन के तीन प्रकारों में से एक।
पशुराज–संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।
पश्चात्–अव्य० [सं०] पीछे। पीछे से। बाद। फिर। अनंतर।
पश्चात्ताप–संज्ञा पुं० [सं०] अनुताप। अफसोस। पछतावा।
पश्चात्तापी–संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्तापिन्] पछतावा करनेवाला।
पश्चानुताप–संज्ञा पुं० [सं०] पश्चात्ताप।
पश्चिम–संज्ञा पुं० [सं०] वह दिशा जिसमें सूर्य्य अस्त होता है। प्रतीची। पच्छिम।
पश्चिमवाहिनी–वि० [सं०] पश्चिम की ओर बहनेवाली। (नदी आदि)
पश्चिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पच्छिम दिशा।
पश्चिमाचल–संज्ञा पुं० [सं०] अस्ताचल।
पश्चिमी–वि० [सं०] १. पश्चिम की ओर का। २. पश्चिम-संबंधी। पश्चिम का।
पश्चिमोत्तर–संज्ञा पुं० [सं०] पश्चिम और उत्तर के बीच का कोना। वायुकोण।
पश्तो–संज्ञा स्त्री० [देश०] पश्चिमोत्तर भारत की एक आर्य्य भाषा जिसमें फारसी आदि के बहुत से शब्द मिल गए हैं।
पश्म–संज्ञा स्त्री० दे० "पशम"।
पश्मीना–संज्ञा पुं० दे० "पशमीना"।
पश्यंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाद की दूसरी अवस्था या स्वरूप जब कि वह मूलाधार से उठकर हृदय में जाता है।
पश्यतोहर–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो आँखों के सामने से चीज़ चुरा ले। जैसे, सुनार आदि।
पश्वाचार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पश्वाचारी] तांत्रिकों के अनुसार कामना और संकल्प-पूर्वक वैदिक रीति से देवी का पूजन। वैदिकाचार।
पष:†–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] १. पख। डैना। २. तरफ़। ओर। ३. पक्ष। पाख।
पषा–संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] दाढ़ी। श्मश्रु।
पषान–संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।
पषारना:†–क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] धोना।
पसघा†–संज्ञा पुं० [फा० पासंग] वह बोझ जिसे तराज़ू के पल्लों का बोझ बराबर करने के लिये हलके पल्ले की तरफ़ बाँध देते हैं। पासँग।
वि० बहुत ही थोड़ा या कम।
मुहा०—पसघा भी न होना=कुछ भी न होना। बहुत ही तुच्छ होना।
पसंती:–संज्ञा स्त्री० दे० "पश्यंती"।
पसंद–वि० [फ़ा०] रुचि के अनुकूल। मनोनीत। जो अच्छा लगे।
संज्ञा स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति। अभिरुचि।
पसनी†–संज्ञा स्त्री० [सं० प्राशन] अन्नप्राशन नामक संस्कार।
पसर–संज्ञा पुं० [सं० प्रसर] गहरी की हुई हथेली। करतलपुट। आधी अंजली।
† संज्ञा पुं० [सं० प्रसार] विस्तार। फैलाव।
पसरना–क्रि० अ० [सं० प्रसरण] १. आगे की ओर बढ़ना। फैलना। २. विस्तृत होना। बढ़ना। ३. पैर फैलाकर लेटना।
पसरहट्टा–संज्ञा पुं० [हिं० पसारी+हाट] वह बाजार जिसमें पंसारियों आदि की दूकानें हों।
पसराना–क्रि० स० [सं० प्रसारण] दूसरे को पसारने में प्रवृत्त करना।
पसरौंहाँ:†–वि० [हिं० पसरना+औहाँ (प्रत्य०)] जो पसरता हो। फैलनेवाला।
पसली–संज्ञा स्त्री० [सं० पर्शुका] मनुष्यों और पशुओं आदि के शरीर में छाती पर के पंजर की आड़ी और गोलाकार हड्डियों में से कोई हड्डी।
मुहा०—पसली फड़कना या फड़क उठना=मन में उत्साह होना। जोश आना। हड्डी-पसली तोड़ना=बहुत मारना पीटना।
पसाउ†:–संज्ञा पुं० [सं० प्रसाद] प्रसाद। प्रसन्नता। कृपा।
पसाना–क्रि० स० [सं० प्रस्रावण] १. भात

में से माँड़ निकालना। २. पसेव निकालना या गिराना।

†☉ क्रि० अ० [सं० प्रसन्न] प्रसन्न होना।

पसार–संज्ञा पु० [सं० प्रसार] १. पसरने की क्रिया या भाव। प्रसार। फैलाव। २. विस्तार। लंबाई-चौड़ाई।

पसारना–क्रि० स० [सं० प्रसारण] आगे की ओर बढ़ाना। फैलाना।

पसारी–संज्ञा पु० दे० "पंसारी"।

पसाव–संज्ञा पु० [हिं० पसाना] पसाने पर निकलनेवाला पदार्थ। माँड़। पीच।

पसावन–संज्ञा पु० दे० "पसाव"।

पसीजना–क्रि० अ० [सं० प्र+स्विद्] १. घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंश का रस रसकर बाहर निकलना। रसना। २ चित्त में दया उत्पन्न होना। दयार्द्र होना।

पसीना–संज्ञा पु० [सं० प्रस्वेदन] वह जल जो परिश्रम करने अथवा गरमी लगने पर शरीर से निकलने लगता है। प्रस्वेद। स्वेद। श्रमवारि।

पसुरी☉†–संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

पसूज–संज्ञा स्त्री० [देश०] वह सिलाई जिसमें सीधे तोपे भरे जाते हैं।

पसूजना–क्रि० स० [देश०] सीना। सिलाई करना।

पसेउ†–संज्ञा पु० दे० "पसेव"।

पसेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँच+सेर+ई (प्रत्य०)] पाँच सेर का बाट। पंसेरी।

पसेव–संज्ञा पु० [सं० प्रस्राव] १. किसी चीज में से रसकर निकला हुआ जल। २. पसीना।

पसोपेश–संज्ञा पु० [फा० पस व पेश] १. आगा पीछा। सोच विचार। हिचक। दुबिधा। २. हानि-लाभ। ऊँच नीच।

पस्त–वि० [फा०] १ हारा हुआ। २. थका हुआ। ३. दबा हुआ।

पस्तहिम्मत–वि० [फा०] भीरु। डरपोक। कायर।

पस्सी बबूल–संज्ञा पु० [पस्सी ?+हिं० बबूल] एक प्रकार का पहाड़ी बबूल।

पहँ☉–अव्य० [सं० पार्श्व] १. निकट। पास। २. से।

पहँसुल–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रह्व=झुका हुआ+शूल] हँसिया के आकार का तरकारी काटने का एक औज़ार।

पह^†–संज्ञा स्त्री० दे० "पौ"।

पहचनवाना–क्रि० स० [हिं० पहचानना का प्रे०] पहचानने का काम कराना।

पहचान–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रत्यभिज्ञान] १. पहचानने की क्रिया या भाव। २. किसी का गुण, मूल्य या योग्यता जानने की क्रिया या भाव। ३. लक्षण। निशानी। ४. पहचानने या भेद समझने की शक्ति। ५. जान-पहचान। परिचय। (क्व०)

पहचानना–क्रि० स० [हिं० पहचान] १. देखते ही जान लेना कि यह कौन व्यक्ति, या क्या वस्तु है। चीन्हना। २ किसी वस्तु के रूप-रंग या शक्ल-सूरत से परिचित होना। ३. अंतर समझना या करना। बिलगाना। ४. योग्यता या विशेषता से अभिज्ञ होना।

पहटना†–क्रि० स० [सं० प्रखेट] पीछा करना। खदेड़ना।

पहन☉–संज्ञा पु० दे० "पाहन"।

पहनना–क्रि० स० [सं० परिधान] शरीर पर धारण करना। परिधान करना।

पहनवाना–क्रि० स० [हिं० 'पहनना' का प्रे०] किसी और के द्वारा किसी को कुछ पहनाना।

पहनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहनना] १. पहनने की क्रिया या भाव। २. पहनाने की मज़दूरी या उजरत।

पहनाना–क्रि० स० [हिं० पहनना] दूसरे को कपड़े, आभूषण आदि धारण कराना।

पहनावा–संज्ञा पु० [हिं० पहनना] १. पहनने के मुख्य मुख्य कपड़े। परिच्छद। परिधेय। पोशाक। २ विशेष अवस्था, स्थान अथवा समाज में ऊपर पहने जानेवाले कपड़े। ३. कपड़े पहनने का ढंग या चाल।

पहपट–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ गाया करती हैं। २ शोर-गुल। हल्ला। कोलाहल। ३. बदनामी या अपवाद का शोर। ४. छल। धोखा। फरेब।

पहपटबाज़–संज्ञा पु० [हिं० पहपट+फा० बाज़] [संज्ञा पहपटबाज़ी] १. शरारती। झगड़ालू। २. ठग। धोखेबाज़।

पहपटहाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहपट+हाई (प्रत्य०)] झगड़ा कराने या लगानेवाली।

पहर–संज्ञा पु० [सं० प्रहर] १. एक दिन का

चतुर्थांश। तीन घंटे का समय। २. समय। जमाना। युग।

पहरना†–क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहरा–संज्ञा पुं० [हिं० पहर] १. किसी वस्तु या व्यक्ति के लिये आदमियों का यह देखने के लिये बैठना कि वह निर्दिष्ट स्थान से हटने या भागने न पावे। रक्षक-नियुक्ति। रक्षा अथवा निगहबानी का प्रबंध। चौकी। मुहा०—पहरा बदलना = नया रक्षक नियुक्त करके पुराने को छुट्टी देना। रक्षक बदलना। पहरा बैठना = किसी वस्तु या व्यक्ति के आसपास रक्षक बैठाया जाना।

२. किसी व्यक्ति या वस्तु के संबंध में यह देखते रहने की क्रिया कि वह निर्दिष्ट स्थान से हट न सके। *रखवाली। हिफ़ाज़त।* निगहबानी।

मुहा०—पहरा देना = रखवाली करना। ३. उतना समय जितने में एक रक्षक अथवा रक्षक-दल को रक्षार्थ्य करना पड़ता है। तैनाती। नियुक्ति। ४. वे रक्षक या चौकीदार जो एक समय में काम कर रहे हों। रक्षकदल। गारद। (क्व०) ५. चौकीदार का गश्त या फेरा। ६. चौकीदार की आवाज़। ७. पहरे में रहने की स्थिति। हिरासत। हवालात। नज़रबंदी।

मुहा०—पहरे में देना या रखना = हिरासत में देना। हवालात भेजना। पहरे में होना = *हिरासत में होना। नज़रबंद होना।*

०† ८. समय। युग। ज़माना।

संज्ञा पु० [हिं० पाँव + रा, पैरा] आ जाने का शुभ या अशुभ प्रभाव। पौरा।

पहराना†–क्रि० स० दे० "पहनाना"।

पहरावनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहरावना] वह पोशाक जो कोई बड़ा छोटे को दे। खिलअत।

पहरी–संज्ञा पुं० [सं० प्रहरी] पहरेदार। चौकीदार। रक्षक। पहरा देनेवाला।

पहरुआ†–संज्ञा पुं० दे० "पहरू"।

पहरू–संज्ञा पुं० [हिं० पहरा + ऊ (प्रत्य०)] पहरा देनेवाला। चौकीदार। रक्षक।

पहल–*संज्ञा पुं०* [फा० पहलू, मि० सं० पटल] १. किसी घन पदार्थ के तीन या अधिक कोरों अथवा कोनों के बीच की समतल भूमि। बगल। पहलू। बाज। तरफ़। २. जमी हुई रूई अथवा ऊन। ३. रज़ाई, तोशक आदि से निकाली हुई पुरानी रूई। ०४. तह। परत।

संज्ञा पुं० [हिं० पहला] किसी कार्य्य का आरंभ। छेड़।

पहलदार–वि० [हिं० पहल + फा० दार] जिसमें पहल हों। पहलूदार।

पहलवान–संज्ञा पुं० [फा०] [संज्ञा पहलवानी] १. कुश्ती लड़नेवाला बली पुरुष। कुश्तीबाज़। मल्ल। २. बलवान् तथा डील-डौलवाला।

पहलवानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पहलवान होने का भाव, काम या पेशा।

पहलवी–संज्ञा पु० दे० "पह्लवी"।

पहला–वि० [सं० प्रथम] [स्त्री० पहली] जो *क्रम के विचार से आदि में हो।* आरंभ का। प्रथम। अौवल।

पहलू–संज्ञा पुं० [फा०] १. बगल और कमर के बीच का वह भाग जहाँ पसलियाँ होती हैं। पार्श्व। पाँजर। २. दाहिना अथवा बायाँ भाग। पार्श्व भाग। बाज़ू। बगल। ३. करवट। बल। दिशा। तरफ़। ४. [हिं० पहलूदार] किसी वस्तु के पृष्ठदेश पर का समतल कटाव। पहल। ५. गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंग। पक्ष।

पहले–अव्य० [हिं० पहला] १. आरंभ में। सर्वप्रथम। आदि में। शुरू में। २. देश-*क्रम में प्रथम। स्थिति में पूर्व।* ३. आगे। पेश्तर। ४. बीते समय में। पूर्व काल में।

पहले पहल–अव्य० [हिं० पहले] पहली बार। सबसे पहले। सर्व-प्रथम।

पहलौठा–वि० [हिं० पहल + औठा (प्रत्य०)] [स्त्री० पहलौठी] पहली बार के गर्भ से उत्पन्न। (लड़का)

पहलौठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहलौठा] पहले-पहल बच्चा जनना। प्रथम प्रसव।

पहाड़–संज्ञा पुं० [सं० पाषाण] [स्त्री० अल्पा० पहाड़ी] १. पत्थर, चूने, मिट्टी आदि की चट्टानों का ऊँचा और बड़ा समूह जो प्राकृतिक रीति से बना हो। पर्वत। गिरि। मुहा०—पहाड़ उठाना = भारी काम सिर पर लेना। पहाड़ टूटना या टूट नया कोई भारी आपत्ति आ पड़ना उपस्थित होना। पहाड़ से जबरदस्त से मुकाबिला करना

२. बहुत भारी ढेर। ऊँची राशि। ३. बहुत भारी चीज। ४. वह जिसको समाप्त या शेष न कर सकें। ५ अति कठिन कार्य। दुष्कर काम।

पहाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० प्रस्तार] किसी अंक के गुणन-फलों की क्रमागत सूची या नक्शा। गुणन-सूची।

पहाड़ी–वि० [हिं० पहाड़+ई (प्रत्य०)] १. जो पहाड़ पर रहता या होता हो। २. जिसका संबंध पहाड़ से हो।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पहाड़+ई (प्रत्य०)] १. छोटा पहाड़। २. पहाड़ के लोगों की गाने की एक धुन।

पहारा†–संज्ञा पुं० [हिं० पहरा] पहरेदार।

पहिचान–संज्ञा स्त्री० दे० "पहचान"।

पहित, पहिती:†–संज्ञा स्त्री० [सं० पहित] पकी हुई दाल।

पहिनना–क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहियाँ‡–अव्य० दे० "पहँ"।

पहिया–संज्ञा पुं० [सं० परिधि ?] गाड़ी अथवा कल में लगा हुआ वह चक्कर जो अपनी धुरी पर घूमता है और जिसके घूमने पर गाड़ी या कल भी चलती है। चक्का। चक्र। चक्कर।

पहिरना†–क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहिरावनी–संज्ञा स्त्री० दे० "पहनावा"।

पहिला–वि० [हिं० पहला] [स्त्री० पहिली] १ दे० "पहला"। २. प्रथम प्रसूता। पहले पहल ब्याई हुई।

पहिले–अव्य० दे० "पहले"।

पहीति:†–संज्ञा स्त्री० दे० "पहिती"।

पहुँच–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रभूत] १. किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या शक्ति। २. किसी स्थान तक लगातार फैलाव। ३. गुजर। पैठ। प्रवेश। रसाई। ४. पहुँचने की सूचना। रसीद। ५. किसी विषय को समझने या ग्रहण करने की शक्ति। पकड़। दौड़। ६. अभिज्ञता की सीमा। परिचय। प्रवेश। दखल।

पहुँचना–क्रि० अ० [सं० प्रभूत] १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत या प्राप्त होना।
मुहा०—पहुँचा हुआ=ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ। सिद्ध।
[illegible] लगातार फैलना। ३. एक हालत से दूसरी हालत में जाना। ४. घुसना। पैठना। प्रविष्ट होना। ५. किसी के अभिप्राय या आशय को जान लेना। ताड़ना। समझना। ६. समझने में समर्थ होना।
मुहा०—पहुँचनेवाला=जानकार। भेद या रहस्य जानने में समर्थ। पहुँचा हुआ=१. जिसे सब कुछ मालूम हो। अभिज्ञ। पता रखनेवाला। २. दक्ष। निपुण। उस्ताद।
७. आई अथवा भेजी हुई चीज किसी को मिलना। प्राप्त होना। मिलना। ८. अनुभव में आना। अनुभूत होना। ९. समकक्ष होना। तुल्य होना।

पहुँचा–संज्ञा पुं० [सं० प्रकोष्ठ] हाथ की कुहनी के नीचे का भाग। कलाई। गट्टा। मणिबंध।

पहुँचाना–क्रि० स० [हिं० पहुँचना का सकर्मक] १ किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से ले जाकर दूसरे स्थान पर प्राप्त या प्रस्तुत कराना। घुसाना। उपस्थित कराना। ले जाना। २. किसी के साथ इसलिये जाना जिसमें वह अकेला न पड़े। ३. किसी को विशेष अवस्था तक ले जाना। ४. प्रविष्ट कराना। ५. कोई चीज लाकर या ले जाकर किसी को प्राप्त कराना। ६. अनुभव कराना। ७. समान बना देना।

पहुँची–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहुँचा] १. कलाई पर पहनने का एक आभूषण। २. युद्ध में कलाई पर पहना जानेवाला एक आवरण।

पहुना†–संज्ञा पुं० दे० "पाहुना"।

पहुनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पहुना+ई (प्रत्य०)] १. पाहुना होने का भाव। अतिथि रूप में कहीं जाना या आना। २. अतिथि-सत्कार। मेहमानदारी।

पहुप:†–संज्ञा पुं० दे० "पुष्प"।

पहुमी–संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"।

पहुला–संज्ञा पुं० [सं० प्रफुल्ल] कुमुदिनी।

पहेली–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रहेलिका] १. किसी वस्तु या विषय का ऐसा वर्णन जो दूसरी वस्तु या विषय का वर्णन जान पड़े और बहुत सोच-विचार से उस पर घटाया जा सके। बुझौवल। २. घुमाव फिराव की बात। समस्या।
मुहा०—पहेली बुझाना=अपने मतलब को घुमा फिराकर कहना। चक्करदार बात करना।

पह्लव-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। प्रायः प्राचीन पारसी या ईरानी। २. एक प्राचीन देश जो पह्लव जाति का निवास-स्थान था। वर्त्तमान पारस या ईरान का अधिकांश।

पह्लवी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० अथवा सं० पह्लव] अति प्राचीन पारसी या जेंद अवस्ता की भाषा और आधुनिक फ़ारस के मध्यवर्ती काल की फ़ारस की भाषा।

पाँ, पाँइ*-संज्ञा पुं० [सं० पाद] पाँव।

पाँइता*-संज्ञा पुं० दे० "पायँता"।

पाँईबाग-संज्ञा पुं० [फ़ा०] महलों के चारों ओर का छोटा बाग़ जिसमें राजमहल की स्त्रियाँ सैर करने जाती हैं।

पाउँ*†-संज्ञा पुं० [सं० पाद] पाँव। पैर।

पाँक-संज्ञा पुं० [सं० पंक] कीचड़। पंक।

पाँख†-संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] पंख। पर।

पाँखड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

पाँखी*†-संज्ञा स्त्री० [सं० पक्षी] १. पतिंगा। २. पक्षी। चिड़िया।

पाँखुरी†-संज्ञा स्त्री दे० "पँखड़ी"।

पाँगा, पाँगा नोन-संज्ञा पुं० [सं० पंक] समुद्री नोन।

पाँच-वि० [सं० पंच] जो गिनती में चार और एक हो।

मुहा०—पाँचों उँगलियाँ घी में होना = सब तरह का लाभ या आराम होना। ख़ूब बन आना। पाँचों सवारों में नाम लिखाना = औरों के साथ अपने को भी श्रेष्ठ गिनाना।

संज्ञा पुं० [सं० पंच] १. पाँच की संख्या या अंक। ५। २. कई एक आदमी। बहुत से लोग। ३. जाति या बिरादरी के मुखिया लोग। पंच।

पाँचजन्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. कृष्ण के बजाने का शंख। २. विष्णु के शंख का नाम। ३. अग्नि।

पाँचभौतिक-संज्ञा पुं० [सं०] पाँचों भूतों या तत्त्वों से बना हुआ शरीर।

पाँचाल-संज्ञा पुं० दे० "पंचाल"।

वि० [सं०] १. पांचाल देश का रहनेवाला। २. पांचाल देश संबंधी।

पाँचाली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुड़िया। कपड़े की पुतली। २. साहित्य में एक प्रकार की रीति या वाक्य-रचना-प्रणाली जिसमें बड़े बड़े पाँच छः समासों से युक्त और कांतिपूर्ण पदावली होती है। ३. पांडवों की स्त्री द्रौपदी।

पाँचैं†-संज्ञा स्त्री० [हिं० पंचमी] किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि। पंचमी।

पाँजना-क्रि० स० [सं० प्रणद्ध] धातु के टुकड़ों को टाँके लगाकर जोड़ना। झालना। टाँका लगाना।

पाँजर-संज्ञा पुं० [सं० पंजर] १. बग़ल और कमर के बीच का वह भाग जिसमें पसलियाँ होती हैं। २. पसली। ३. पार्श्व। पास। बग़ल।

पाँजी-संज्ञा स्त्री० [सं० पदाति ?] नदी का इतना सूख जाना कि उसे हलकर पार कर सकें।

पाँझ-वि० दे० "पाँजी"।

पांडव-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुंती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के पाँचों पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। २. एक प्राचीन प्रदेश जो वितस्ता (झेलम) नदी के तीर पर था।

पांडवनगर-संज्ञा पुं० [सं०] दिल्ली।

पांडित्य-संज्ञा पुं० [सं०] पंडित होने का भाव। विद्वत्ता। पंडिताई।

पांडु-संज्ञा पुं० [सं०] १. पांडुफली। परवली। २. परमल। ३. कुछ लाली लिए पीला रंग। ४. सफ़ेद हाथी। ५. सफ़ेद रंग। ६. एक रोग का नाम जिसमें रक्त के दूषित हो जाने से शरीर का चमड़ा पीले रंग का हो जाता है। ७. प्राचीन काल के एक राजा का नाम जो पांडव वंश के आदि पुरुष थे। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इनके पुत्र थे जो पांडव कहलाए।

पांडुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] पांडु होने का भाव, धर्म या क्रिया। पांडुत्व। पीलापन।

पांडुर-वि० [सं०] १. पीला। २. सफ़ेद। संज्ञा पुं० [सं०] १. धौ का पेड़। २. कबूतर। ३. बगला। ४. सफ़ेद खड़िया। ५. कामला रोग। ६. सफ़ेद कोढ़।

पांडुलिपि-संज्ञा स्त्री० [सं०] लेख आदि का वह पहला रूप जो घटाने-बढ़ाने आदि के लिये तैयार किया जाय। मसौदा।

पांडुलेख-संज्ञा पुं० दे० "पांडुलिपि"।

पाँड़े-संज्ञा पुं० [सं० पंडित] १. सरयूपारी, कान्यकुब्ज और गुजराती आदि ब्राह्मणों की एक शाखा। २. कायस्थों की एक

शाखा। ३. पंडित। विद्वान्।
पांडेय-संज्ञा पुं० दे० "पांडे"।
पाँति-संज्ञा स्त्री० [सं० पंक्ति] १. कतार। पंगत। २. समूह। ३. एक साथ भोजन करनेवाले बिरादरी के लोग।
पांथ-वि० [सं०] १. पथिक। २. वियोगी। विरही।
पांथनिवास-संज्ञा पुं० [सं०] सराय। चट्टी।
पांथशाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] सराय। चट्टी।
पायँ†-संज्ञा पुं० [पाद] चरण। पैर।
पायँचा-संज्ञा पुं० [फा०] १. पाखानों आदि में बना हुआ वह स्थान जिस पर पैर रखकर शौच से निवृत्त होने के लिये बैठते हैं। २. पायजामे की मोहरी जिससे पैर ढका जाता है।
पायँता-संज्ञा पुं० [हिं० पाँव+तल] पलँग, खाट या बिस्तर का वह भाग जिसकी ओर पैर किए जाते हैं। पैताना।
पाँवर †-वि० दे० "पामर"।
पाँवरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव+री (प्रत्य०)] १. दे० "पावड़ी"। २. सोपान। सीढ़ी। ३. पैर रखने का स्थान। ४. जूता।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पौरि] १. पौरी। ड्योढ़ी। २. बैठक। दालान।
पांशु-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धूलि। रज। २ बालू। ३. गोबर की खाद।
पांशुज-संज्ञा पुं० [सं०] नोनी मिट्टी से निकाला हुआ नमक।
पांशुल-वि० [सं०] [स्त्री० पांशुला] १. लंपट। व्यभिचारी। २. मलिन। मैला।
पाँस-संज्ञा स्त्री० [सं० पांशु] १. सड़ी गली चीजें जो खेतों को उपजाऊ करने के लिये उनमें डाली जाती हैं। खाद। २ किसी वस्तु को सड़ाने पर उठा हुआ खमीर।
पाँसना†-क्रि० स० [हिं० पाँस+ना (प्रत्य०)] खेत में खाद देना।
पाँसा-संज्ञा पुं० [सं० पाशक] चार पाँच अंगुल लंबे चत्ती के आकार के चौपहल टुकड़े जिनसे चौसर का खेल खेलते हैं।
मुहा०—पाँसा उलटना = किसी प्रयत्न का उलटा फल होना।
पाँसुरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।
पाँहीं‡†-क्रि० वि० [हिं० पँह] निकट। पास। समीप।
पुं० दे० "पाहूँ"।

पाइक†-संज्ञा पुं० दे० "पायक"।
पाइतरी †-संज्ञा स्त्री० [सं० पादस्थली] पलँग का वह भाग जहाँ सोनेवाले के पैर रहते हैं। पैताना।
पाइल -संज्ञा स्त्री० दे० "पायल"।
पाई-संज्ञा स्त्री० [सं० पाद, हिं० पाय] १. एक ही घेरे में नाचने या चलने की क्रिया। मंडल। घूमना। २. एक छोटा सिक्का जो एक पैसे का तीसरा भाग होता है। ३ एक पैसा। (क्व०) ४ वह छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लगाने से एकाई का चतुर्थांश प्रकट करती है। जैसे, १।, अर्थात् सवा चार। ५ दीर्घ आकार-सूचक मात्रा। पूर्ण विराम सूचित करने-वाली खड़ी रेखा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पापा = पाई, कीड़ा] एक छोटा लंबा कीड़ा जो धान को खराब कर देता है।
पाउँ‡†-संज्ञा पुं० दे० "पाँव"।
पाक-संज्ञा पुं० [सं०] १. पकाने की क्रिया। रींधना। २ पकने या पकाने की क्रिया या भाव। ३. रसोई। पकवान। ४. वह औषध जो चाशनी में मिलाकर बनाई जाय। ५ खाए हुए पदार्थ के पचने की क्रिया। पचन। ६ वह खीर जो श्राद्ध में पिंडदान के लिये पकाई जाती है।
वि० [फा०] १. पवित्र। शुद्ध। २. पाप-रहित। निर्मल। निर्दोष। ३. समाप्त।
मुहा०—झगड़ा पाक करना = १. किसी भारी कार्य को समाप्त कर डालना। २. झगड़ा ते करना। बाधा दूर करना। ३ मार डालना। ४ साफ। शुद्ध।
पाकठ†-वि० [हिं० पकना] १. पका हुआ। २ तजरबेकार। ३. बली। मजबूत।
पाकड़-संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।
पाकदामन-वि० [फा०] [संज्ञा पाकदामनी] पतिव्रता। सती।
पाकना-क्रि० अ० दे० "पकना"।
पाकयज्ञ-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पाकयाज्ञिक] १. गृहप्रतिष्ठा आदि के समय किया जानेवाला होम जिसमें खीर की आहुति दी जाती है। २ पंच महायज्ञों में ब्रह्मयज्ञ के अतिरिक्त अन्य चार यज्ञ—वैश्वदेव होम, बलि-कर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि भोजन।
पाकर-संज्ञा पुं० [सं० पर्कटी] एक प्रसिद्ध

वृक्ष जो पथ्यपदार्थों में माना जाता है। पारर। पलास।

पाकशाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] रसोई बनाने का घर। बावरचीख़ाना।

पाकशासन-संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

पाकस्थली-संज्ञा स्त्री० दे० "पक्वाशय"।

पाका†-वि० दे० "पका"।

पाकागार-संज्ञा पुं० [सं०] रसोई घर।

पाक्य-वि० [सं०] पचने योग्य।

पाक्षिक-वि० [सं०] १. पक्ष या पखवाड़े से संबंध रखनेवाला। २. पक्षपाती। तरफ़-दार। ३. दो मात्राओं का (छंद)।

पाखंड-संज्ञा पुं० [सं० पषंड] १. वेद-विरुद्ध आचार। २. ढोंग। आडंबर। ढकोसला। ३. छल। धोखा। ४ नीचता। शरारत।

मुहा०—पाखंड फैलाना=किसी को ठगने के लिये उपाय रचना। मकर फैलाना।

पाखंडी-वि० [सं० पाखंडिन्] १. वेद विरुद्ध आचार करनेवाला। २. बनावटी धार्मिकता दिखानेवाला। कपटाचारी। बगला भगत। ३ धोखेबाज़। धूर्त।

पाख-संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] १. पंद्रह दिन। पखवाड़ा। २. मकान की चौड़ाई की दीवारों के वे भाग जो लंबाई की दीवारों से त्रिकोण के आकार में अधिक ऊँचे होते हैं और जिन पर 'बँड़ेर' रखते हैं। ३. पंख। पर।

पाखर-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रखर] लोहे की वह झूल जो लड़ाई में हाथी या घोड़े पर डाली जाती है। चार आईना।

संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।

पाखा-संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] १. कोना। छोर। २. दे० "पाख" (२)।

पाखान✽†-संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।

पाखाना-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह स्थान जहाँ मल त्याग किया जाय। २. मल। गू। गुग़ोज़। पुरीष।

पाग-संज्ञा स्त्री० [हिं० पग] पगड़ी।

संज्ञा पुं० [सं० पाक] १. दे० "पाक"। २. वह शीरा या चाशनी जिसमें मिठाइयाँ आदि डुबाकर रखी जाती हैं। ३. चीनी के शीरे में पकाया हुआ फल आदि। ४ वह दवा या पुष्टई जो शीरे में पकाकर बनाई जाय।

पागना-क्रि० स० [सं० पाक] मीठी चाशनी में सानना या लपेटना।

क्रि० अ० अत्यंत अनुरक्त होना।

पागल-वि० [?] [स्त्री० पगली] १. जिसका दिमाग़ ठीक न हो। बावला। सिड़ी। विक्षिप्त। २. जिसके होश हवास दुरुस्त न हों। आपे से बाहर। ३ मूर्ख। बेवकूफ़।

पागलख़ाना-संज्ञा पुं० [हिं० पागल+फ़ा० ख़ाना] वह स्थान जहाँ पागलों का इलाज किया जाता है।

पागलपन-संज्ञा पुं० [हिं० पागल+पन (प्रत्य०)] १. वह मानसिक रोग जिसमें मनुष्य की बुद्धि और इच्छा शक्ति आदि में अनेक प्रकार के विकार होते हैं। उन्माद। विक्षिप्तता। चित्तविभ्रम। २. मूर्खता।

पागुर-संज्ञा पुं० दे० "जुगाली"।

पाचक-वि० [सं०] पचाने या पकानेवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] १. वह औषध जो पाचन शक्ति को बढ़ाने के लिये खाई जाती है। २ [स्त्री० पाचिका] रसोइया। बावर्ची। ३. पाँच प्रकार के पित्तों में से एक पित्त। ४. पाचक पित्त में रहनेवाली अग्नि।

पाचन-संज्ञा पुं० [सं०] १. पचाना या पकाना। २ खाए हुए आहार का पेट में जाकर शरीर की धातुओं के रूप में परिवर्त्तन। ३. वह ओषधि जो आम अथवा अपक्व दोष को पचावे। ४. प्रायश्चित। ५ खट्टा रस। ६. अग्नि।

वि० पचानेवाला। हाज़िम।

पाचन शक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शक्ति जो भोजन को पचावे। हाज़मा।

पाचना✽-क्रि० स० [सं० पाचन] अच्छी तरह पकाना। परिपक्व करना।

पाचनीय-वि० [सं०] पचाने या पकाने योग्य। पाच्य।

पाचिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] रसोईदारिन। रसोई करनेवाली।

पाच्छाह†-संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पाच्य-वि० [सं०] पचाने या पकाने योग्य। पचनीय।

पाछ-संज्ञा स्त्री० [हिं० पाछना] १. जंतु या पौधे के शरीर पर छुरी की धार आदि मारकर किया हुआ हलका घाव। २. पोस्ते के ढोंढ़े पर नहरनी से लगाया हुआ चीरा जिससे अफ़ीम निकलती है। ३. किसी

ा पर उसका रस निकालने के लिये गाया हुआ चीरा।

श पु० [सं० पश्चात्] पीछा। पिछला भाग।

।० वि० पीछे।

ना-क्रि० स० [हिं० पछा] छुरे या हरनी आदि से रक्त, पंछा या रस नकालने के लिये हलका चीरा लगाना।

ोना।

छुल-वि० दे० "पिछला"।

छा-सज्ञा पु० दे० 'पीछा"।

ाछिल-वि० दे० "पिछला"।

ाछे, पाछैं-क्रि० वि० दे० "पीछे"।

ाज-सज्ञा पु० [सं० पाजस्य] पाँजर।

ाजामा-सज्ञा पु० [फा०] पैर मे पहने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जिससे टखने से कमर तक का भाग ढँका रहता है। इसके कई भेद हैं—सुथना, तमान, इजार, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, पेशावरी, नैपाली आदि।

पाजी-सज्ञा पु० [सं० पदाति] १. पैदल सेना का सिपाही। प्यादा। २. रक्षक। चौकीदार।

वि० [सं० पाप्य] दुष्ट। लुच्चा।

पाजीपन-सज्ञा पु० [हिं० पाजी+पन (प्रत्य०)] दुष्टता। कमीनापन। नीचता।

पाजेब-सज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्रियों का एक गहना जो पैरों मे पहना जाता है। मंजीर। नूपुर।

पाटंबर-सज्ञा पु० [सं०] रेशमी वस्त्र।

पाट-सज्ञा पु० [सं० पट्ट] १. रेशम। २ बटा हुआ रेशम। नख। ३ रेशम के कीड़े का एक भेद। ४. पटसन के रेशे। ५. राज्यासन। सिंहासन। गद्दी। ६. चौड़ाई। फैलाव। ७. पल्ला। पीढ़ा। ८. वह शिला जिस पर धोबी कपड़ा धोता है। ९. चक्की के एक ओर का भाग। १०. वस्त्र। कपड़ा।

पाटन-सज्ञा स्त्री० [हिं० पाटना] १. पाटने की क्रिया या भाव। पटाव। २. वह जो पाटकर बनाया जाय। ३ मकान की पहली मंजिल से ऊपर की मंजिलें। ४ सर्प का विष उतारने का एक मंत्र जो रोगी के कान के पास चिल्लाकर पढ़ा जाता है।

पाटना-क्रि० स० [हिं० पाट] १. किसी गहराई को मिट्टी, कूड़े आदि से भर देना। २. दो दीवारों के बीच में या किसी गहरे स्थान के आर पार बल्ले आदि बिछाकर आधार बनाना। छत बनाना। ३. तृप्त करना। सींचना।

पाटमहिषी-सज्ञा स्त्री० दे० "पटरानी"।

पाटरानी-सज्ञा स्त्री० दे० "पटरानी"।

पाटल-सज्ञा पु० [सं०] पाडर या पाढर का पेड़।

पाटला-सज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाडर का वृक्ष। २. लाल लोध। ३ दुर्गा।

सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का बढ़िया सोना।

पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र-सज्ञा पु० [सं०] मगध का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर जो इस समय भी बिहार का मुख्य नगर है। पटना।

पाटली-सज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाडर। २. पांडुफली। ३. पटने की अधिष्ठात्री देवी।

पाटव-सज्ञा पु० [सं०] १. पटुता। कुशलता। २ दृढ़ता। मजबूती। ३ आरोग्य।

पाटवी-वि० [हिं० पाट] १. पटरानी से उत्पन्न (राजकुमार)। २. रेशमी। कौशेय। (वस्त्र)

पाटसन-सज्ञा पु० दे० "पटसन"।

पाटा-सज्ञा पु० [हिं० पाट] लकड़ी का पीढ़ा।

पाटी-सज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिपाटी। अनुक्रम। रीति। २. जोड़, बाकी, गुणा आदि का क्रम। ३. श्रेणी। पंक्ति।

सज्ञा पु० हिं० [सं० पाट] १. लकड़ी की वह पट्टी जिस पर छात्र लिखने का अभ्यास करते हैं। तख्ती। पटिया। २. पाठ। सबक।

मुहा०—पाटी पढ़ना=पाठ पढ़ना। शिक्षा पाना।

३. माँग के दोनों ओर कंघी द्वारा बैठाए हुए बाल। पट्टी। पटिया। ४. चारपाई के ढाँचे में लंबाई की ओर की पट्टी। ५ चटाई। ६ शिला। चट्टान। ७. खपरैल की नरिया का प्रत्येक आधा भाग।

पाठ-सज्ञा पु० [सं०] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २. किसी पुस्तक विशेषत. धर्मपुस्तक को नियमपूर्वक पढ़ने की क्रिया या भाव। ३. वह जो कुछ पढ़ा या पढ़ाया जाय। ४. उतना अंश जो एक बार पढ़ा जाय। सबक। सैथा।

मुहा०—पाठ पढ़ाना=अपने मतलब के लिये किसी को बहकाना। पट्टी पढ़ाना। उलटा

पाठ पढ़ाना=कुछ का कुछ समझा देना। सबक देना।

२. परिच्छेद। अध्याय। ३. शब्दों या वाक्यों का क्रम या योजना।

पाठक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पढ़नेवाला। वाचक। २. पढ़ानेवाला। अध्यापक। ३. धर्मोपदेशक। ४. गौड़, सारस्वत, सरयूपारीण, गुजराती आदि ब्राह्मणों का एक वर्ग।

पाठदोष–संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ने का वह ढंग जो निंद्य और वर्जित है। जैसे कठोर स्वर से पढ़ना, या ठहर ठहरकर उच्चारण करना।

पाठन–संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ाने की क्रिया या भाव। पढ़ाना। अध्यापन।

पाठना०–क्रि० स० दे० "पढ़ाना"।

पाठभेद–संज्ञा पुं० दे० "पाठांतर"।

पाठशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ पढ़ाया जाय। मदरसा। विद्यालय। चटसाल।

पाठांतर–संज्ञा पुं० [सं०] एक ही पुस्तक की दो प्रतियों के लेख में किसी विशेष स्थल पर भिन्न शब्द, वाक्य अथवा क्रम। दूसरा पाठ। पाठभेद।

पाठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पाढ़ नाम की लता। यह दो प्रकार की होती है–छोटी और बड़ी।
संज्ञा पुं० [सं० पुष्ट] [स्त्री० पाठी] १. जवान और परिपुष्ट। हृष्टपुष्ट। मोटा-तगड़ा। २. जवान बैल, भैंसा या बकरा।

पाठालय–संज्ञा पुं० [सं०] पाठशाला।

पाठी–संज्ञा पुं० [सं० पाठिन्] १. पाठ करनेवाला। पाठक। पढ़नेवाला। २. चीता। चित्रक वृक्ष।

पाठ्य–वि० [सं०] १. पढ़ने योग्य। पठनीय। २. जो पढ़ाया जाय।

पाड़–संज्ञा पुं० [हिं० पाट] १. धोती आदि का किनारा। २. मचान। पायट। ३. वह जाली जो कूएँ के मुँह पर रखी रहती है। कटहर। चह। ४. बाँध। पुश्ता। ५ वह तख्ता जिस पर खड़ा करके फाँसी दी जाती है। टिकठी।

पाडर–संज्ञा स्त्री० [सं० पाटल] पाटल नामक वृक्ष।

पाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० पट्टन] महल्ला।

पाढ़–संज्ञा पुं० [सं० पाठा] १. पाठा। २. वह मचान जिस पर फसल की रखवाली के लिये खेतवाला बैठता है।

पाढ़त०–संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़ना] १. जो कुछ पढ़ा जाय। २ मंत्र। जादू। ३. पढ़ने की क्रिया या भाव।

पाढ़र, पाढल–संज्ञा पुं० [सं० पाटल] पाडर का पेड़।

पाढ़ा–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हिरन। चित्रमृग।
संज्ञा स्त्री० दे० "पाठा"।

पाणि–संज्ञा पुं० [सं०] हाथ। कर।

पाणिग्रहण–संज्ञा पुं० [सं०] १ विवाह की एक रीति जिसमें कन्या का पिता उसका हाथ वर के हाथ में देता है। २. विवाह। ब्याह।

पाणिग्राहक–संज्ञा पुं० [सं०] पति।

पाणिज–संज्ञा पुं० [सं०] १. उँगली। २. नख। नाखून।

पाणिनि–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मुनि जो ईसा से प्रायः तीन चार सौ वर्ष पूर्व हुए थे और जिन्होंने अष्टाध्यायी नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ की रचना की थी।

पाणिनीय–वि० [सं०] १. पाणिनि-कृत (ग्रंथ आदि)। २. पाणिनि का कहा हुआ।

पाणिनीय दर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि का अष्टाध्यायी व्याकरण।

पाणिपीड़न–संज्ञा पुं० [सं०] १. पाणिग्रहण। विवाह। २. क्रोध, पश्चात्ताप आदि के कारण हाथ मलना।

पाणी–संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।

पातंजल–वि० [सं०] पतंजलि का बनाया हुआ (योगसूत्र या व्याकरण महाभाष्य)। संज्ञा पुं० १. पतंजलि-कृत योगसूत्र। २. पतंजलि-प्रणीत महाभाष्य।

पातंजल दर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] योगदर्शन।

पातंजल भाष्य–संज्ञा पुं० [सं०] महाभाष्य नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ।

पातंजल-सूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] योगसूत्र।

पात–संज्ञा पुं० [सं०] १. गिरने या गिराने की क्रिया या भाव। पतन। २. नाश। ध्वंस। मृत्यु। ३. पड़ना। जा लगना। ४. खगोल में वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षाएँ क्रांतिवृत्त को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे आती हैं। ५. राहु।
०संज्ञा पुं० [सं० पत्र] पत्ता। पत्र।

पातक–संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म जिसके

करने से नरक जाना पड़े। पाप। गुनाह।

पातकी-वि० [सं० पातकिन्] पातक करनेवाला। पापी। कुकर्मी।

पातन-संज्ञा पुं० [सं०] गिराने की क्रिया।

पातर::†-संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] पत्तल। संज्ञा स्त्री० [सं० पातली] वेश्या। रंडी। ::† वि० [सं० पात्रट=पतला] १. पतला। सूक्ष्म। २. चीण। बारीक।

पातल-संज्ञा स्त्री० दे० "पातर"।

पातव्य-वि० [सं०] १. रक्षा करने योग्य। २. पीने योग्य।

पातशाह-संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पाता-संज्ञा पुं० दे० "पत्ता"।

पातावा-संज्ञा पुं० [फा०] पैरों में पहनने का मोज़ा।

पातार::-संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।

पाताल-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ। २. पृथ्वी से नीचे के लोक। अधोलोक। नागलोक। ३. विवर। गुफा। बिल। ४. बड़वानल। छंदःशास्त्र में वह चक्र जिसके द्वारा मात्रिक छंद की संख्या, लघु, गुरु, कला आदि का ज्ञान होता है।

पाताल यंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा कड़ी ओषधियाँ पिघलाई जाती हैं या उनका तेल बनाया जाता है।

पाताखत†-संज्ञा पुं० [हिं० पात+अक्षत] पत्र और अक्षत। तुच्छ भेंट।

पाति†-संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] १. पत्ती। दल। २. चिट्ठी। पत्र।

पातित्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. पतित होने का भाव। गिरावट। २. [illegible]

पत्ता। पत्र।

पात्रता-संज्ञा स्त्री० [सं०] पात्र होने का भाव। योग्यता।

पात्रत्व-संज्ञा पुं० दे० "पात्रता"।

पात्रदुष्ट रस-संज्ञा पुं० [सं०] केशवदास के मत से एक प्रकार का रस-दोष जिसमें कवि जिस वस्तु को जैसा समझता है, रचना में उसके विरुद्ध कह जाता है।

पात्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा बरतन।

पात्रीय-वि० [सं०] पात्र-संबंधी। पात्र का।

पाथ-संज्ञा पुं० [सं० पाथस्] १. जल। २. सूर्य। ३. अग्नि। ४. अन्न। ५. आकाश। ६ वायु। संज्ञा पुं० [सं० पथ] मार्ग। राह।

पाथना-क्रि० स० [सं० प्रथन] १. सुडौल करना। गढ़ना। बनाना। २. थोप, पीट या दबाकर बड़ी बड़ी टिकिया या पटरी बनाना। ३. पीटना। ठोंकना। मारना।

पाथनिधि-संज्ञा पुं० दे० "पाथोनिधि"।

पाथर::†-संज्ञा पुं० दे० "पत्थर"।

पाथेय-संज्ञा पुं० [सं०] १. रास्ते का कलेवा। २. पथिक का राहखर्च। संबल। राहखर्च।

पाथोज-संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

पाथोधि-संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

पाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. चरण। पैर। पाँव। २. श्लोक या पद्य का चतुर्थांश। पद। चरण। ३. चौथा भाग। चौथाई। ४. पुस्तक का विशेष अंश। ५. वृक्ष का मूल। ६. नीचे का भाग। तल। ७. बड़े पर्वत के समीप में छोटा पर्वत। ८. चलना। गमन। संज्ञा पुं० [सं० पर्द] वह वायु जो गुदा के मार्ग से निकले। अपानवायु। अधोवायु। गोज़।

[illegible]-वि० [सं०] १. [illegible] २.

बैठने का पीढ़ा।

पादपीठ—संज्ञा पुं० [सं०] पीढ़ा।

पादपूरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्लोक या कविता के किसी चरण को पूरा करना। २. वह अक्षर या शब्द जो किसी पद को पूरा करने के लिये उसमें रखा जाय।

पादप्रक्षालन—संज्ञा पुं० [सं०] पैर धोना।

पादप्रणाम—संज्ञा पुं० [सं०] साष्टांग दंडवत्। पाँव पड़ना।

पादप्रहार—संज्ञा पुं० [सं०] लात मारना। ठोकर मारना।

पादरक्ष, पादरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिससे पैरों की रक्षा हो। जैसे, जूता।

पादरी—संज्ञा पुं० [पुर्त्त० पैद्रे] ईसाई धर्म का पुरोहित जो अन्य ईसाइयों का जातकर्म आदि संस्कार और उपासना कराता है।

पादवंदन—संज्ञा पुं० [सं०] पैर पकड़कर प्रणाम करना।

पादशाह—संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पादहीन—वि० [सं०] १ जिसके तीन ही चरण हों। २. जिसके चरण न हों।

पादाकुलक—संज्ञा पुं० [सं०] चौपाई।

पादाक्रांत—वि० [सं०] पददलित। पैर से कुचला हुआ। पामाल।

पादाति, पादातिक—संज्ञा पुं० [सं०] पैदल सिपाही।

पादार्घ—संज्ञा पुं० दे० "पाद्यार्घ"।

पादी—संज्ञा पुं० [सं० पादिन्] पैरवाले जल-जंतु। जैसे-गोह, घड़ियाल आदि।

पादीय—वि० [सं०] पदवाला। मर्यादावाला। जैसे, कुमारपादीय।

पादुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खड़ाऊँ। २ जूता।

पादोदक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जल जिसमें पैर धोया गया हो। २. चरणामृत।

पाद्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह जल जिससे पूजनीय व्यक्ति या देवता के पैर धोए जायँ।

पाद्यक—संज्ञा पुं० [सं०] पाद्य देने का एक भेद।

पाद्यार्घ—संज्ञा पुं० [सं०] १. पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल। २ पूजा की सामग्री। ३ पूजा में भेंट या नजर।

पाधा—संज्ञा पुं० [सं० उपाध्याय] १ आचार्य। उपाध्याय। २ पंडित।

पान—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी द्रव पदार्थ को गले के नीचे घूँट घूँट करके उतारना। पीना। २. मद्यपान। शराब पीना। ३. पीने का पदार्थ। पेय द्रव्य। ४ मद्य। ५. पानी। ६ कटोरा। प्याला।

*संज्ञा पुं० [सं० प्राण] प्राण।

संज्ञा पुं० [सं० पर्ण] १. पत्ता। २ एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्तों का बीड़ा बनाकर खाते हैं। तांबूल-वल्ली।

मुहा०—पान देना = दे० 'बीड़ा देना"। पान पत्ता = १ लगा या बना हुआ पान। २ तुच्छ पूजा या भेंट। पान फूल। पान फूल = १ सामान्य उपहार या भेंट। २ अत्यंत कोमल वस्तु। पान बनाना = १. पान में चूना, कत्था, सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार करना। २ पान लगाना। पान लेना = दे० 'बीड़ा लेना"।

३ पान के आकार की कोई चीज। ४. ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक।

* संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।

पानगोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह सभा या मंडली जो शराब पीने के लिये बैठी हो।

पानड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० पान + ड़ी (प्रत्य०)] एक प्रकार की सुगंधित पत्ती।

पानदान—संज्ञा पुं० [हिं० पान + फा० दान (प्रत्य०)] वह डिब्बा जिसमें पान और उसके लगाने की सामग्री रखी जाती है। पनडब्बा।

पानरा†—संज्ञा पुं० दे० "पनारा"।

पानही†—संज्ञा स्त्री० दे० "पनही"।

पाना—क्रि० स० [सं० प्रापण] १ अपने पास या अधिकार में करना। उपलब्ध करना। प्राप्त करना। हासिल करना। २ भला या बुरा परिणाम भोगना। ३ दी या खोई हुई चीज वापस मिलना। ४ पता पाना। भेद पाना। समझना। ५ कुछ सुन या जान लेना। ६ देखना। साक्षात् करना। ७ अनुभव करना। भोगना। उठाना। ८ समर्थ होना। सकना। (संयोज्य क्रिया में) ९ पास तक पहुँचना। १० किसी बात में किसी के बराबर पहुँचना। बराबर होना। ११ भोजन करना। खाना। (साधु) १२ जानना। समझना।

वि० जिसे पाने का हक हो। प्राप्तव्य। पावना।

पानागार—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिलकर शराब पीते हों।

पानात्यय-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जो बहुत मद्य पीने से होता है।
पानि-संज्ञा पुं० [सं० पाणि] हाथ।
संज्ञा पुं० दे० "पानी"।
पानिग्रहण-संज्ञा पुं० दे० "पाणिग्रहण"।
पानिप-संज्ञा पुं० [हिं० पानी + प (प्रत्य०)] १. ओप। द्युति। कांति। चमक। आब। २. पानी।
पानी-संज्ञा पुं० [सं० पानीय] १. एक प्रसिद्ध यौगिक द्रव द्रव्य जो पीने, स्नान करने और खेत आदि सींचने के काम आता है। यह समुद्रों, नदियों और कूओं में मिलता है और आकाश से बरसता है। जल। अंबु। तोय।
मुहा०—पानी का बतासा या बुलबुला = क्षणभंगुर वस्तु। पानी की तरह बहाना = अधा-धुंध खर्च करना। उड़ाना या लुटाना। पानी के मोल = बहुत सस्ता। पानी टूटना = कुएँ, ताल आदि में इतना कम पानी रह जाना कि निकाला न जा सके। पानी देना = १. पानी से भरना। सींचना। २. पितरों के नाम अंजलि में लेकर गिराना। तर्पण करना। पानी पढ़ना = मंत्र पढ़कर पानी फूँकना। पानी परोरना = पानी पढ़ना या फूँकना। पानी पानी होना = लज्जित होना। लज्जा से कट जाना। पानी फूँकना = मंत्र पढ़कर पानी पर फूँक मारना। (किसी पर) पानी फेरना या फेर देना = चौपट कर देना। मटियामेट कर देना। (किसी के सामने) पानी भरना = (किसी से तुलना में) अत्यंत तुच्छ प्रतीत होना। फीका पड़ना। पानी भरी खाल = अनित्य या क्षणभंगुर शरीर। पानी में आग लगाना = जहाँ झगड़ा होना असंभव हो, वहाँ झगड़ा करा देना। पानी में फेंकना या बहाना = नष्ट करना। बरबाद करना। सूखे पानी में डूबना = भ्रम में पड़ना। धोखा खाना। मुँह में पानी आना या छूटना = १. स्वाद लेने का गहरा लालच होना। २. गहरा लोभ होना।
२. वह पानी का सा पदार्थ जो जीभ, आँख, त्वचा, घाव आदि से रसकर निकले। ३. मेंह। वर्षा। वृष्टि। ४. पानी जैसी पतली वस्तु। ५. किसी वस्तु का सार अंश जो जल के रूप में हो। रस। अर्क। जूस। ६. चमक। आब। कांति। छवि। ७. हथियारों के लोहे का वह हलका स्याह रंग जिससे उसकी उत्तमता की पहचान होती है। आब। जौहर। ८. मान प्रतिष्ठा। इज्जत। आबरू।
मुहा०—पानी उतारना = अपमानित करना। इज्जत उतारना। पानी जाना = प्रतिष्ठा नष्ट होना। इज्जत जाना।
९. वर्ष। साल। जैसे, पाँच पानी का सूअर। १०. मुलम्मा। ११. मरदानगी। जीवट। हिम्मत। १२. पशुओं की वंश विशेषता या कुलीनता। १३. पानी की तरह ठंढा पदार्थ।
मुहा०—पानी करना या कर देना = किसी के चित्त को ठंढा कर देना। किसी का गुस्सा उतार देना।
१४ पानी की तरह फीका या स्वादहीन पदार्थ। १५. लड़ाई या द्वंद्वयुद्ध। १६. बार। बेर। दफ़ा। १७. जल-वायु। आब-हवा।
मुहा०—पानी लगना = स्थान विशेष के जल वायु के कारण स्वास्थ्य बिगड़ना या रोग होना।
संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।
पानीदार-वि० [हिं० पानी + फा० दार (प्रत्य०)] १. आबदार। चमकदार। २. इज्जतदार। माननीय। ३. जीवटवाला। मरदाना। साहसी।
पानीदेवा-वि० [हिं० पानी + देवा = देनेवाला] तर्पण या पिंडदान करनेवाला। वंशज।
पानीफल-संज्ञा पुं० [हिं० पानी + सं० फल] सिंघाड़ा।
पानीय-संज्ञा पुं० [सं०] जल।
वि० १. पीने योग्य। जो पीया जा सके। २. रक्षा करने योग्य। रक्षा-संबंधी।
पानूस-संज्ञा पुं० दे० "फानूस"।
पानौरा-संज्ञा पुं० [हिं० पान + बरा] पान के पत्ते की पकौड़ी।
पाप-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कर्म जिसका फल इस लोक और परलोक में अशुभ हो। धर्म या पुण्य का उलटा। बुरा काम। गुनाह। अघ। पातक।
मुहा०—पाप उदय होना = संचित पाप का फल मिलना। पिछले जन्मों के पाप का बदला मिलना। पाप कटना = पाप का नाश होना। पाप कमाना या बटोरना = पाप कर्म करना। पाप लगना = पाप होना। दोष होना।
२. अपराध। कसूर। जुर्म। ३. वध।

हत्या। ४. पापबुद्धि। बुरी नीयत। बुराई। ५ अनिष्ट। अहित। खराबी। ६ झंझट। जंजाल।

मुहा०—पाप कटना = झगड़ा दूर होना। जजाल छूटना। पाप मोल लेना = जान बूझकर किसी बखेड़े के काम में फँसना। पाप पड़ना ⁕ = मुश्किल पड जाना। कठिन हो जाना।

७ पापग्रह। अशुभ ग्रह।

पापकर्म–संज्ञा पु० [स०] वह काम जिसके करने में पाप हो।

पापकर्मा–वि० दे० "पापी"।

पापगण–संज्ञा पु० [स०] छंद शास्त्र के अनुसार टगण का आठवाँ भेद।

पापघ्न–वि० [स०] जिससे पाप नष्ट हो।

पापचारी–वि० [स० पापचारिन्] [स्त्री० पापचारिणी] पापी। पाप करनेवाला।

पापड़–संज्ञा पु० [स० पर्पट] उर्द अथवा मूँग की धोई के आटे से बनाई हुई मसालेदार पतली चपाती।

मुहा०—पापड़ बेलना = १. बडी मिहनत करना। २. कठिनाई या दु ख से दिन काटना। बहुत से पापड़ बेलना = बहुत तरह के काम कर चुकना।

पापड़ा–संज्ञा पु० [स० पर्पट] १ एक पेड़ जिसकी लकड़ी से कघी और खराद की चीजें बनाई जाती हैं। २. दे० "पित्तपापड़ा"।

पापदृष्टि–वि० [स०] १. जिसकी दृष्टि पापमय हो। २. जिसकी दृष्टि पडने से हानि पहुँचे।

पापनाशन–संज्ञा पु० [स०] १. पाप का नाश करनेवाला। पापनाशी। २. प्रायश्चित्त। ३ विष्णु। ४. शिव।

पापयोनि–संज्ञा स्त्री० [स०] पाप से प्राप्त होनेवाली मनुष्य के अतिरिक्त अन्य पशु, पक्षी, वृक्ष आदि की योनि।

पापरोग–संज्ञा पु० [स०] १. वह रोग जो कोई विशेष पाप करने से होता है। धर्मशास्त्रानुसार कुष्ठ, यक्ष्मा, पीनस, श्वेतकुष्ठ, मूकता, उन्माद, अपस्मार, अधत्व, काणत्व, आदि रोग पापरोग माने गए हैं। २ वसंत रोग। छोटी माता।

पापलोक–संज्ञा पु० [स०] नरक।

पापहर–वि० पु० [स०] पापनाशक।

पापाचार–संज्ञा पु० [सं०] [वि० पापाचारी] पाप का आचरण। दुराचार।

पापात्मा–वि० [स० पापात्मन्] पाप में अनुरक्त। पापी। दुष्टात्मा।

पापिष्ठ–वि० [स०] अतिशय पापी। बहुत बडा पापी।

पापी–वि० [स० पापिन्] [स्त्री० पापिनी] १. पाप करनेवाला। अघी। पातकी। २ क्रूर। निर्दय। नृशंस। पर-पीड़क।

पापोश–संज्ञा स्त्री० [फा०] जूता।

पाबंद–वि० [फा०] [संज्ञा स्त्री० पाबंदी] १ बँधा हुआ। बद्ध। अस्वाधीन। कैद। २ किसी बात का नियमित रूप से अनुसरण करनेवाला। ३. नियम, प्रतिज्ञा, विधि, आदेश आदि का पालन करने के लिये विवश।

पाबंदी–संज्ञा स्त्री० [फा०] पाबद होने का भाव।

पामड़ा–संज्ञा पु० दे० "पाँवड़ा"।

पामर–वि० [स०] १ खल। दुष्ट। कमीना। २ पापी। अधम। ३ नीच कुल या वंश में उत्पन्न। ४ मूर्ख। निर्बुद्धि।

पामरी–संज्ञा स्त्री० [स० प्रावार] दुपट्टा। संज्ञा स्त्री० दे० "पाँवड़ी"।

पामाल–वि० [फा० पा + माल = रौंदना] [संज्ञा पामाली] १ पैर से मला या रौंदा हुआ। पद-दलित। २ तबाह। बरबाद। चौपट।

पायँ ⁕–संज्ञा पु० दे० "पाँव"।

पायँजेहरि ⁕–संज्ञा स्त्री० दे० "पायजेब"।

पायँता–संज्ञा पु० [हिं० पायँ + स० स्थान] पलँग या चारपाई का वह भाग जिधर पैर रहता है। सिरहाने का उलटा। पैताना।

पायती–संज्ञा स्त्री० दे० "पायँता"।

पायदाज़–संज्ञा पु० [फा०] पैर पोछने का बिछावन।

पाय ⁕–संज्ञा पु० [स० पाद] पैर। पाँव।

पायक–संज्ञा पुं० [स० पादातिक, पायिक] १. धावन। दूत। हरकारा। २. दास। सेवक। अनुचर। ३. पैदल सिपाही।

पायताबा–संज्ञा पु० [फा०] पैर का एक पहनावा जिससे उँगलियो से लेकर पूरी या आधी टाँगें ढकी रहती हैं। मोजा। जुर्राब।

पायदार–वि० [फा०] [संज्ञा पायदारी] बहुत दिनों तक टिकनेवाला। टिकाऊ। दृढ़। मजबूत।

पायमाल–वि० दे० "पामाल"।

पायरा—संज्ञा पुं० [हिं० पाय+रा] रकाब।
पायल—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाय+ल (प्रत्य०)] १. नूपुर। पाज़ेब। २. तेज़ चलनेवाली हथनी। ३. वह बच्चा, जन्म के समय जिसके पैर पहले बाहर हों।
पायस—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खीर। २. सरल-निर्यास। सलई का गोंद।
पायसा†—संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] पड़ोस।
पाया—संज्ञा पुं० [सं० पाद] १. पलँग, चौकी आदि में खड़े डंडे या खंभे के आकार का वह भाग जिसके सहारे उसका ढाँचा ऊपर ठहरा रहता है। गोड़ा। पावा। २. खंभा। स्तंभ। ३. पद। दरजा। ओहदा। ४. सीढ़ी। ज़ीना।
पायी—वि० [सं० पायिन्] पीनेवाला।
पारंगत—वि० [सं०] १. पार गया हुआ। २. पूर्ण पंडित। पूरा जानकार।
पारंपर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. परंपरा का भाव। २. परंपराक्रम। ३. वंशपरंपरा।
पार—संज्ञा पुं० [सं०] १ नदी, झील आदि जलाशयों के आमने-सामने के दोनों किनारों में उस किनारे से भिन्न किनारा जहाँ (या जिसकी ओर) अपनी स्थिति हो। दूसरी ओर का किनारा।
यौ०—आर-पार=१. यह किनारा और वह किनारा। २. इस किनारे से उस किनारे तक।
मुहा०—पार उतरना=१. किसी काम से छुट्टी पाना। २. सिद्धि या सफलता प्राप्त करना। ३. समाप्त करना। ठिकाने लगाना। मार डालना। (नदी आदि) पार करना=१. जल आदि का मार्ग तै करना। २. पूरा करना। समाप्ति पर पहुँचाना। ३. निबाहना। बिताना। पार लगना=नदी आदि के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। किसी से पार लगना=पूरा हो सकना। हो सकना। पार लगाना=१. किसी वस्तु के बीच से ले जाकर उसके दूसरे किनारे पर पहुँचाना। २. कष्ट या दुःख से बाहर करना। उद्धार करना। ३. पूरा करना। खतम करना। पार होना=१. किसी दूर तक फैली हुई वस्तु के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। २. किसी काम को पूरा कर चुकना।
२ सामनेवाला दूसरा पार्श्व। दूसरी ओर। दूसरी तरफ़। ३. आमने-सामने दोनों किनारों में से एक दूसरे की अपेक्षा, से कोई एक। ओर। तरफ़। ४. छोर। अंत। असीर। हद। परिमिति।
मुहा०—पार पाना=अंत तक पहुँचना। समाप्ति तक पहुँचना। (किसी से) पार पाना=किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। जीतना।
अव्य० परे। आगे। दूर।
परई†—संज्ञा स्त्री० दे० "परई"।
पारख†—संज्ञा स्त्री० १. दे० "पारिख" २. दे० "परख"। ३. दे० "पारखी"।
पारखद—संज्ञा पुं० दे० "पार्षद"।
पारखी—संज्ञा पुं० [हिं० पारख+ई (प्रत्य०)] १. वह जिसे परख या पहचान हो। २. परखनेवाला। परीक्षक।
पारग—वि० [सं०] १. पार जानेवाला। २ काम को पूरा करनेवाला। समर्थ। ३. पूरा जानकार।
पारचा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ टुकड़ा। खंड। धज्जी (विशेषतः कपड़े, काग़ज़ आदि की)। २. कपड़ा। पट। वस्त्र। ३ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ४. पहनावा।
पारजात†—संज्ञा पुं० दे० "पारिजात"।
पारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जानेवाला पहला भोजन और तत्संबंधी कृत्य। २. तृप्त करने की क्रिया या भाव। ३. मेघ। बादल। ४. समाप्ति। खातमा।
पारतंत्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] परतंत्रता।
पारथ—संज्ञा पुं० दे० "पार्थ"।
पारथिव—संज्ञा पुं० दे० "पार्थिव"।
पारद—संज्ञा पुं० [सं०] १. पारा। २. पारस देश की एक प्राचीन जाति।
पारदर्शक—वि० [सं०] जिसमें आर-पार दिखाई पड़े। जैसे *शीशा* पारदर्शक पदार्थ है।
पारदर्शी—वि० [सं० पारदर्शिन्] १. उस पार तक देखनेवाला। २. दूरदर्शी। चतुर। बुद्धिमान्। ३. जो पूरा पूरा देख चुका हो।
पारधी—संज्ञा पुं० [सं० परिधान] १. बहेलिया। व्याध। २. शिकारी। ३. हत्यारा।
पारन—संज्ञा पुं० दे० "पारण"।
पारना—क्रि० स० [हिं० पारना (पड़ना) का स० रूप] १. डालना। गिराना। २. ज़मीन पर लंबा डालना। ३. लेटाना। ४. कुश्ती या लड़ाई में गिराना। पछाड़ना। ५. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु में रखने, ठहराने या मिलाने के लिये उसमें

गिराना या रखना। ६. रखना।
यौ०—पिंडा पारना = पिंड-दान करना।
७. किसी के अंतर्गत करना। शामिल करना। ८. शरीर पर धारण करना। पहनाना। ९. बुरी बात घटित करना। उत्पात मचाना। १०. साँचे आदि में ढालकर या किसी वस्तु पर जमाकर कोई वस्तु तैयार करना।
क्रि० अ० [हिं० पार लगना] सकना। समर्थ होना।
वि० स० दे० "पालना"।
पारमार्थिक—वि० [स०] १. परमार्थ-संबंधी। जिससे परमार्थ सिद्ध हो। २. सदा ज्यों का त्यों रहनेवाला। वास्तविक।
पारलौकिक—वि० [स०] १. परलोक-संबंधी। २ परलोक में शुभ फल देनेवाला।
पारवश्य—सज्ञा पु० [स०] परवशता।
पारशव—सज्ञा पु० [स०] १. पराई स्त्री से उत्पन्न पुरुष। २. एक वर्णसंकर जाति। ३. लोहा। ४. एक प्राचीन देश जहाँ मोती निकलते थे।
पारषद—सज्ञा पुं० दे० "पार्षद"।
पारस—सज्ञा पु० [स० स्पर्श] १. एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि लोहा उससे छुलाया जाय तो सोना हो जाता है। स्पर्शमणि। २. अत्यंत लाभ-दायक और उपयोगी वस्तु। ३. वह जो दूसरे को अपने समान कर ले।
वि० १ पारस पत्थर के समान स्वच्छ और उत्तम। २. चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त।
सज्ञा पुं० [हिं० परसना] १. खाने के लिये लगाया हुआ भोजन। परसा हुआ खाना। २. पत्तल जिसमें खाने के लिये पकवान, मिठाई आदि हो।
सज्ञा पु० [स० पार्श्व] पास। निकट।
सज्ञा पुं० [स० पारस्य] अफगानिस्तान के आगे का प्राचीन कांबोज और वाह्लीक के पश्चिम का देश।
पारसनाथ—सज्ञा पु० दे० "पार्श्वनाथ"।
पारसव—सज्ञा पु० दे० "पारशव"।
पारसी—वि० [फा० फारस] पारस देश का। पारस देश-संबंधी।
सज्ञा पु० १. पारस देश का रहनेवाला आदमी। २. हिंदुस्तान में बंबई और गुजरात की ओर हजारों वर्ष से बसे हुए वे फारस निवासी जिनके पूर्वज मुसलमान होने के डर से पारस छोड़कर यहाँ आए थे।
पारसीक—सज्ञा पु० [स०] १. पारस देश। २. पारस देश का निवासी। ३. पारस देश का घोड़ा।
पारस्कर—सज्ञा पु० [स०] १ एक देश का प्राचीन नाम। २. एक गृह्यसूत्रकार मुनि।
पारस्परिक—वि० [स०] परस्पर होनेवाला। आपस का।
पारस्य—सज्ञा पु० [स०] पारस देश।
पारा—सज्ञा पु० [स० पारद] चाँदी की तरह सफेद और चमकीली एक धातु जो साधारण गरमी या सरदी में द्रव अवस्था में रहती है।
मुहा०—पारा पिलाना = किसी वस्तु को इतना भारी करना मानो उसमें पारा भरा हो।
सज्ञा पु० [स० पारि = प्याला] दीये के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का बरतन। परई।
सज्ञा पु० [फा० पार] १. टुकड़ा। २. वह छोटी दीवार जो केवल पत्थरों के टुकड़े एक दूसरे पर रखकर बनाई गई हो।
पारायण—सज्ञा पु० [स०] १ पूरा करने का कार्य। समाप्ति। २. समय बाँधकर किसी ग्रंथ का आद्योपांत पाठ।
पारावत—संज्ञा पु० [स०] १ परेवा। पंडुक। २. कबूतर। कपोत। ३. बदर। ४. गिरि। पर्वत।
पारावार—सज्ञा पु० [स०] १. आर-पार। दोनों तट। २ सीमा। हद। ३. समुद्र।
पाराशर—सज्ञा पु० [स०] १. पराशर का पुत्र या वंशज। २. व्यास।
वि० १. पराशर-सबधी। २ पराशर का बनाया हुआ।
पारि—सज्ञा स्त्री० [हिं० पार] १. हद। सीमा। २. ओर। तरफ। दिशा। देश।
३. जलाशय का तट।
पारिख—सज्ञा स्त्री० दे० "परख"।
पारिजात—सज्ञा पु० [स०] १. एक देववृक्ष जो स्वर्गलोक में इंद्र के नंदन कानन में है। यह समुद्र-मंथन के समय निकला था। २. परजाता। हरसिंगार। ३. कचनार। ४. पारिभद्र।
पारितोषिक—सज्ञा पुं० [स०] वह वस्तु जो किसी ... उसे दी जाय।

पारिपात्र-संज्ञा पुं० [सं०] सप्तकुल पर्वतों में से एक जो विंध्य के अंतर्गत है।

पारिपार्श्व-संज्ञा पुं० [सं०] पारिषद्। अनुचर। अरदली।

पारिपार्श्विक-संज्ञा पुं० [सं०] १ सेवक। पारिषद्। अरदली। २ नाटक के अभिनय में एक विशेष नट जो स्थापक का अनुचर होता है।

पारिभद्र-संज्ञा पुं० [सं०] १ फरहद का पेड़। २ देवदार।

पारिभाषिक-वि० [सं०] जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाय। जैसे, पारिभाषिक शब्द।

पारिषद्-संज्ञा पुं० [सं०] १ परिषद् में बैठनेवाला। सभासद। सभ्य। २ अनुयायिवर्ग। गण।

पारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० वार, बारी] किसी बात का अवसर जो कुछ अंतर देकर क्रम से प्राप्त हो। बारी।

पारुष्य-संज्ञा पुं० [सं०] १ वचन की कठोरता। बात का कड़वापन। २ इंद्र का वन।

पार्थ-संज्ञा पुं० [सं०] १ पृथ्वीपति। २ (पृथा का पुत्र) अर्जुन। ३ युधिष्ठिर और भीम। ४ अर्जुन वृक्ष।

पार्थक्य-संज्ञा पुं० [सं०] १ पृथक् होने का भाव। भेद। २ जुदाई। वियोग।

पार्थिव-वि० [सं०] १ पृथिवी-संबंधी। २ पृथ्वी से उत्पन्न। मिट्टी आदि का बना हुआ। ३ राजा के योग्य। राजसी।
संज्ञा पुं० मिट्टी का शिवलिंग जिसके पूजन का बड़ा फल माना जाता है।

पार्वण-संज्ञा पुं० [सं०] वह श्राद्ध जो किसी पर्व में किया जाय।

पार्वत-वि० [सं०] १ पर्वत संबंधी। २ पर्वत पर होनेवाला।

पार्वती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिमालय पर्वत की कन्या, शिव की अर्द्धांगिनी देवी जो गौरी, दुर्गा आदि अनेक नामों से पूजी जाती है। शिवा। भवानी। उमा। गिरिजा। गौरी। २ गोपीचंदन।

पार्वतीय-संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ का। पहाड़ी।

पार्वतेय-वि० [सं०] पर्वत पर होनेवाला।

पार्श्व-संज्ञा पुं० [सं०] १ छाती के दाहिने बायें का भाग। बगल। २ बगल बगल की जगह। पास। निकटता। समीपता
यौ०—पार्श्ववर्ती = साथी या मुसाहिब।

पार्श्वग-संज्ञा पुं० [सं०] सहचर।

पार्श्वनाथ-संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के तेईस तीर्थंकर जो वाराणसी के इक्ष्वाकुवंशी राजा अश्वसेन के पुत्र थे।

पार्श्ववर्त्ती-संज्ञा पुं० [सं० पार्श्ववर्तिन्] [स्त्री पार्श्ववर्तिनी] पास रहनेवाला। मुसाहब

पार्श्वस्थ-वि० [सं०] पास खड़ा रहनेवाला
संज्ञा पुं० अभिनय के नटों में से एक।

पार्षद-संज्ञा पुं० [सं०] १ पास रहनेवाल सेवक। पारिषद्। २ मुसाहब। मंत्री।

पालक-संज्ञा पुं० [सं० पल्यंक] १ पाल शाक। पालकी। २ बाज पक्षी। ३ ए रत्न जो काला, हरा और लाल होता है।

पालंग-संज्ञा पुं० दे० "पलंग"।

पाल-संज्ञा पुं० [सं०] १ पालनकर्त्ता। पालक २ चीते का पेड़। ३ बंगाल का ए प्रसिद्ध राजवंश जिसने साढ़े तीन सौ व तक बंग और मगध में राज्य किया था।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पालना] फलों को गर पहुँचाकर पकाने के लिये पत्ते बिछा रखने की विधि।
संज्ञा पुं० [सं० पट या पाट] १ वह लंब चौड़ा कपड़ा जिसे नाव के मस्तूल से लगा कर इसलिये तानते हैं जिसमें हवा भ और नाव को ढकेले। २ तंबू। शामि याना। चँदोवा। ३ गाड़ी या पालक आदि ढाँकने का कपड़ा। ओहार।
संज्ञा स्त्री० [सं० पालि] १ पानी को रोक वाला बाँध या किनारा। मेड़। २ ऊँच किनारा। कगार।

पालक-संज्ञा पुं० [सं०] १ पालनकर्ता २ अश्वरक्षक। साईस। ३ पाला हुअ लड़का। दत्तक पुत्र।
संज्ञा पुं० [सं० पालक] एक प्रकार का साग
संज्ञा पुं० [हिं० पलंग] पलंग। पर्यंक।

पालकी-संज्ञा स्त्री० [सं० पल्यंक] एक प्रका की सवारी जिसे आदमी कंधे पर लेक चलते हैं। म्याना। खड़खड़िया
संज्ञा स्त्री० [सं० पालंक] पालक का शाक

पालकी गाड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पालकी+ गाड़ी] वह गाड़ी जिस पर पालकी समान छत हो।

पालट-संज्ञा पुं० [सं० पालन] दत्तक पुत्र।

पालतू–वि० [सं० पालना] पाला हुआ। पोसा हुआ।

पालथी–संज्ञा स्त्री० दे० "पलथी"।

पालन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० पालनीय, पालित, पाल्य] १. भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवन-रक्षा। भरण-पोषण। परवरिश। २. अनुकूल आचरण द्वारा किसी बात की रक्षा या निर्वाह। भंग न करना। न टालना।

पालना–क्रि० स० [सं० पालन] १. भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवन-रक्षा करना। भरण-पोषण करना। परवरिश करना। २. पशु-पक्षी आदि को रखना। ३. भंग न करना। न टालना।

संज्ञा पु० [सं० पर्यंक] एक प्रकार का झूला या हिँडोला। पिँगूरा। गहवारा।

पालव†–संज्ञा पु० [सं० पल्लव] १. पल्लव। पत्ता। २. कोमल पत्ता।

पाला–संज्ञा पुं० [सं० प्रालेय] १. हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणुओं की तह जो पृथ्वी के बहुत ठंढे हो जाने पर उस पर सफेद सफेद जम जाती है। हिम।

मुहा०—पाला मार जाना = पौधे या फ़सल का पाला गिरने से नष्ट हो जाना।

२. हिम। बर्फ़। ३. ठंढ। सरदी।

संज्ञा पु० [हिं० पल्ला] व्यवहार करने का संयोग। वास्ता। साबिका।

मुहा०—(किसी से) पाला पड़ना = व्यवहार करने का संयोग होना। वास्ता पड़ना। काम पड़ना। (किसी के) पाले पड़ना = वश में होना। क़ाबू में आना। पकड़ में आना।

संज्ञा पुं० [सं० पट्ट, हिं० पाड़ा] १. प्रधान स्थान। सदर मुकाम। २. सीमा निर्दिष्ट करने के लिये मिट्टी की उठाई हुई मेड़या छोटा भीटा। धुस। ३. अनाज भरने का बड़ा बरतन जो प्रायः कच्ची मिट्टी का गोल दीवार के रूप में होता है। डेहरी। ४. कुश्ती लड़ने या कसरत करने की जगह। अखाड़ा।

पालागन–संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव + लगना] प्रणाम। दंडवत्। नमस्कार।

पालि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कान की लौ। २. कोना। ३. पंक्ति। श्रेणी। कतार। ४. किनारा। ५. सीमा। हद। ६. मेंड़। बाँध। ७. करारा। कगार। भीटा। ८. अंक। गोद। ६. परिधि। १०. चिह्न।

पालिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।

पालित–वि० [सं०] पाला हुआ। रक्षित।

पालिनी–वि० स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।

पाली–वि० [सं० पालिन्] [स्त्री० पालिनी] १. पालन करनेवाला। पोषण करनेवाला। २. रखनेवाला। रक्षा करनेवाला।

संज्ञा स्त्री० [सं० पालि = पंक्ति] एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं और जिसका पठन-पाठन स्याम, बरमा, सिंहल आदि देशों में उसी प्रकार होता है जिस प्रकार भारतवर्ष में संस्कृत का।

पालू–वि० [हिं० पालना] पालतू।

पाल्य–वि० [सं०] पालन के योग्य।

पावँ–संज्ञा पु० [सं० पाद] वह अंग जिससे चलते हैं। पैर।

मुहा०—(किसी काम या बात में) पावँ अड़ाना = किसी बात में व्यर्थ सम्मिलित होना। फ़जूल दखल देना। पावँ उखड़ जाना = ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना। लड़ाई में न ठहरना। पावँ उठाना = १. चलने के लिये क़दम बढ़ाना। २ जल्दी-जल्दी पैर आगे रखना। पावँ घिसना = चलते-चलते पैर थकना। पावँ जमना = १. पैर ठहरना। स्थिर भाव से खड़ा होना। २. दृढ़ता रहना। हटने या विचलित होने की अवस्था न आना। पावँ तले की मिट्टी निकल जाना = (किसी भयकर बात को सुनकर) स्तब्ध सा हो जाना। होश उड़ जाना। ठक हो जाना। पावँ तोड़ना = १. बहुत चलकर पैर थकाना। २. बहुत दौड़-धूप करना। इधर-उधर बहुत हैरान होना। घोर प्रयत्न करना। पावँ तोड़कर बैठना = १. कहीं न जाना। अचल होना। स्थिर हो जाना। २. हारकर बैठना। किसी के पावँ धरना = १. पैर छूकर प्रणाम करना। २. दीनता से विनय करना। हा हा खाना। बुरे पथ पर पावँ धरना = बुरे काम में प्रवृत्त होना। पावँ पकड़ना = १. विनती करके किसी को कहीं जाने से रोकना। २. पैर छूना। बड़ी दीनता और विनय करना। हा हा खाना। ३. पैर छूकर नमस्कार करना। पावँ पखारना = पैर धोना। पावँ पड़ना = १. पैरों पर गिरना। साष्टांग दंडवत् करना। २. अत्यंत दीनता से विनय करना। पावँ पर गिरना = दे० "पावँ पड़ना"। पावँ पसारना = १. पैर फैलाना। २

पड़ना या सोना। ३. मरना। ४. आडंबर बढ़ाना। ठाट-बाट करना। **पावँ पावँ चलना** = पैरों से चलना। पैदल चलना। **पावँ पूजना** = १. बड़ा आदर सत्कार करना। बहुत पूज्य मानना। २. विवाह में कन्यादान के समय कन्याकुल के लोगों का वर का पूजन करना और कन्यादान में योग देना। **पावँ फूँक फूँककर रखना** = बहुत बचाकर काम करना। बहुत सावधानी से चलना। **पावँ फैलाना** = १. अधिक पाने के लिये हाथ बढ़ाना। मुँह बाना। पाकर भी अधिक का लोभ करना। २. बच्चों की तरह अड़ना। जिद करना। मचलना। **पाँव बढ़ाना** । १. चलने में पैर आगे रखना। २. अधिक बढ़ना। अतिक्रमण करना। **पावँ भर जाना** = थकावट से पैर में बोझ सा मालूम होना। पैर थकना। **पावँ भारी होना** = गर्भ रहना। हमल होना। **पावँ रोपना** = प्रण करना। प्रतिज्ञा करना। **पावँ लगना** = १. प्रणाम करना। २. विनती करना। **पावँ से पावँ बाँधकर रखना** = १. बराबर अपने पास रखना। पास से अलग न होने देना। २. बड़ी चौकसी रखना। **पाँव सो जाना** = १. पैर सुन्न हो जाना। स्तब्ध हो जाना। २. पैर झन्ना उठना। **(किसी के) पाँव न होना** = ठहरने की शक्ति या साहस न होना। दृढ़ता न होना। **धरती पर पावँ न रखना** = १. बहुत घमंड करना। २. फूले अंग न समाना।

पावड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० पावँ + ड़ा (प्रत्य०)] वह कपड़ा या बिछौना जो आदर के लिये किसी के मार्ग में बिछाया जाता है। पायंदाज़।

पावँड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पावँ + ड़ी (प्रत्य०)] १. पादत्राण। खड़ाऊँ। २. जूता।

पावर-वि० [सं० पामर] १. तुच्छ। खल। नीच। दुष्ट। २. मूर्ख। निर्बुद्धि।
संज्ञा पुं० दे० "पाँवड़ा"।
संज्ञा स्त्री० दे० "पावँड़ी"।

पाव-संज्ञा पुं० [सं० पाद] १. चौथाई। चतुर्थ भाग। २. एक सेर का चौथाई भाग। चार छटाँक का मान।

पावक-संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। आग। तेज। ताप। २. सदाचार। ३. अग्निमंथ वृक्ष। अगेथू का पेड़। ४. वरुण। ५. सूर्य।
वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला।

[illegible]-संज्ञा पुं० [सं० पादांगुलक] पादा- । चौपाई।

पावदान-संज्ञा पुं० [हिं० पावँ + दान (प्रत्य०)] १. पैर रखने के लिये बना हुआ स्थान या वस्तु। २. इक्के, गाड़ी आदि में लोहे की पटरी जिस पर पैर रखकर चढ़ते हैं।

पावन-वि० [सं०] [स्त्री० पावनी] १. पवित्र करनेवाला। २ पवित्र। शुद्ध। पाक।
संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. प्रायश्चित्त। शुद्धि। ३. जल। ४. गोबर। ५. रुद्राक्ष। ६. व्यास का एक नाम। ७. विष्णु।

पावनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्रता।

पावना†-क्रि० स० [सं० प्रापण] १. पाना। प्राप्त करना। २. अनुभव करना। जानना। समझना। ३. भोजन करना। ४. दे० "पाना"।
संज्ञा पुं० १. दूसरे से रुपया आदि पाने का हक। लहना। २. वह रुपया जो दूसरे से पाना हो।

पावस†-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रावृष] वर्षा-काल। बरसात।

पावा†-संज्ञा पुं० दे० "पाया"।
संज्ञा पुं० [देश०] गोरखपुर ज़िले का एक प्राचीन गाँव जो वैशाली से पश्चिम है।

पाश-संज्ञा पुं० [सं०] १. रस्सी, तार, आदि से सरकनेवाली गाँठों आदि के द्वारा बनाया हुआ घेरा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और कभी-कभी बंधन के अधिक कसकर बैठ जाने से मर भी जाता है। फंदा। फाँस। २. पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। ३. बंधन। फँसानेवाली वस्तु।

पाशक-संज्ञा पुं० [सं०] पासा। चौपड़।

पाशकेरली-संज्ञा स्त्री० [सं० पाश + केरल (देश)] ज्योतिष की एक गणना जो पासे फेंककर की जाती है।

पाशव-वि० [सं०] १. पशु-संबंधी। पशुओं का। २. पशुओं का जैसा।

पाशा-संज्ञा पुं० [तु० फा० पादशाह] तुर्की सरदारों की उपाधि।

पाशुपत-वि० [सं०] १. पशुपति-संबंधी। शिव-संबंधी। २. पशुपति का।
संज्ञा पुं० १. पशुपति या शिव का उपासक। एक प्रकार का शैव। २. शिव का कहा हुआ तंत्रशास्त्र। ३. अथर्व वेद का एक उपनिषद्।

पाशुपत दर्शन-संज्ञा पुं० [सं०] एक सांप-

दायिक दर्शन जिसका उल्लेख सर्वदर्शन-संग्रह में है। नकुलीश पाशुपति दर्शन।
पाशुपतास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] शिव का शूलास्त्र जो बड़ा प्रचंड था।
पाश्चात्य-वि० [सं०] १. पीछे का। पिछला। २. पश्चिम दिशा का। पश्चिम
पाषंड-संज्ञा पुं० [सं०] १. वेदविरुद्ध आचरण करनेवाला। झूठा मत माननेवाला। २. लोगों को ठगने के लिये साधुओं का सा रूप रंग बनानेवाला। धर्मध्वजी। ढोंगी।
पाषंडी-वि० [सं० पाषंडिन्] १. वेदविरुद्ध मत और आचरण ग्रहण करनेवाला। २. धर्म आदि का झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला। ढोंगी। धूर्त।
पाषर-सं० स्त्री० दे० "पाखर"।
पाषाण-संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर। प्रस्तर।
पाषाणभेद-संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जो अपनी पत्तियों की सुंदरता के लिये बगीचों में लगाया जाता है। पखानभेद। पथरचट।
पासंग-संज्ञा पुं० [फा०] १. तराजू की डंडी को बराबर करने के लिये उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ। पसंघा।
मुहा०—(किसी का) पासंग भी न होना = किसी के मुकाबले में बहुत कम होना।
२. तराजू की डाँड़ी बराबर न होना।
पास-संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] १. बगल। ओर। तरफ। २. सामीप्य। निकटता। समीपता। ३ अधिकार। कब्जा। रक्षा। पल्ला। (केवल 'के', 'में' और 'से' विभक्तियों के साथ।)
अव्य० १ निकट। समीप। नजदीक।
यौ०—आसपास = १ अगल बगल। समीप। २. लगभग। करीब।
मुहा०—(किसी के) पास बैठना = संगत में रहना। पास फटकना = निकट जाना।
२. अधिकार में। कब्जे में। रक्षा में। पल्ले। ३. निकट जाकर, संबोधन करके। किसी के प्रति। किसी से।
० संज्ञा पुं० दे० "पाश"।
० संज्ञा पुं० दे० "पासा"।
पासनी†-संज्ञा स्त्री० [सं० प्राशन] बच्चे को पहले पहल अनाज चटाने की रीति। अन्नप्राशन।
पासमान०-संज्ञा पुं० [हिं० पास + मान (प्रत्य०)] पास रहनेवाला दास। पार्श्ववर्ती।
पासवर्त्ती०-वि० दे० "पार्श्ववर्त्ती"।
पासा-संज्ञा पुं० [सं० पाशक, प्रा० पासा] १. हाथीदाँत या हड्डी के छः पहले टुकड़े जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिनसे चौसर खेलते हैं।
मुहा०—(किसी का) पासा पड़ना = भाग्य अनुकूल होना। किसमत जोर करना। पासा पलटना = १. अच्छे से मंद भाग्य होना। २. युक्ति या तदबीर का उलटा फल होना।
२. वह खेल जो पासों से खेला जाता है। चौसर का खेल। ३ मोटी बत्ती के आकार में लाई हुई वस्तु। कामी। गुल्ली।
पासी-संज्ञा पुं० [सं० पाशिन्] १ जाल या फंदा डालकर चिड़िया पकड़नेवाला। २. एक नीच और अस्पृश्य जाति।
संज्ञा स्त्री० [सं० पाश, हिं० पास + ई (प्रत्य०)] १. फंदा। फाँस। पाश। फाँसी। २. घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी।
पासुरी०-संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।
पाहँ०-अव्य० [सं० पार्श्व] १. निकट। समीप। पास। २. किसी के प्रति। किसी से।
पाहन०-संज्ञा पुं० [सं० पाषाण] पत्थर।
पाहरू*†-संज्ञा पुं० [हिं० पहरा] पहरा देनेवाला। पहरेदार।
पाहिँ०-अव्य० [सं० पार्श्व] १. पास। निकट। समीप। २. किसी के प्रति। किसी से।
पाहि-एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो' या "बचाओ"।
पाहीँ०-अव्य० दे० "पाहिँ"।
पाहुँचा†-संज्ञा स्त्री० दे० "पहुँचा"।
पाहुना-संज्ञा पुं० [सं० प्राघूर्ण] [स्त्री० पाहुनी] १. अतिथि। मेहमान। अभ्यागत। २. दामाद। जामाता।
पाहुनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पाहुना] १. स्त्री अतिथि। अभ्यागत स्त्री। मेहमान औरत। २. आतिथ्य। मेहमानदारी।
पाहुर†-संज्ञा पुं० [सं० प्राभृत] १. भेंट। नजर। २. सौगात।
पिंग-वि० [सं०] १. पीला। पीलापन लिए भूरा। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३ सुँघनी रंग का।
पिंगल-वि० [सं०] १. पीला। पीत। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३. भूरापन लिए पीला। सुँघनी रंग का।
संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन मुनि जो छंद शास्त्र

के आदि आचार्य माने जाते हैं। २. छंदःशास्त्र। ३. साठ संवत्सरों में से एक। ४. एक निधि का नाम। ५. बंदर। कपि। ६. अग्नि। ७. पीतल। ८. उल्लू पक्षी।

पिंगला–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. हठ योग और तंत्र में जो तीन प्रधान नाड़ियाँ मानी गई हैं, उनमें से एक। २. लक्ष्मी का नाम। ३. गोरोचन। ४. शीशम का पेड़। ५. राजनीति। ६. दक्षिण के दिग्गज की स्त्री।

पिंजड़ा–संज्ञा पु॰ दे॰ "पिंजरा"।

पिंजर–वि॰ [सं॰] १. पीला। पीतवर्ण का। २. भूरापन लिए लाल रंग का। संज्ञा पु॰ १. पिंजड़ा। २. शरीर के भीतर का हड्डियों का ठट्टर। पंजर। ३. सोना। ४. भूरापन लिए लाल रंग का घोड़ा।

पिँजरा–संज्ञा पु॰ [सं॰ पंजर] लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।

पिंजरापोल–संज्ञा पु॰ [हिं॰ पिंजरा+पोल=फाटक] वह स्थान जहाँ पालने के लिये गाय, बैल आदि चौपाये रखे जाते हों। पशुशाला। गोशाला।

पिंड–संज्ञा पु॰ [सं॰] १. गोल मटोल टुकड़ा। गोला। २. ठोस टुकड़ा। लुगदा। ३. ढेर। राशि। ४. पके हुए चावल आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। ५. भोजन। आहार। ६. शरीर। देह।

मुहा॰—पिंड छोड़ना=साथ न लगा रहना या संबंध न रखना। तंग न करना।

पिंडखजूर–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ पिंडखर्जूर] एक प्रकार की खजूर जिसके फल मीठे होते हैं।

पिंडज–संज्ञा पु॰ [सं॰] गर्भ से सजीव निकलनेवाला जंतु। जैसे, मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली।

पिंडदान–संज्ञा पु॰ [सं॰] पितरों को पिंड देने का कर्म जो श्राद्ध में किया जाता है।

पिंडरी†–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "पिँडली"।

पिंडरोग–संज्ञा पु॰ [सं॰] १. वह रोग जो शरीर में घर किए हो। २. कोढ़।

पिंडरोगी–वि॰ [सं॰] रुग्ण शरीर का।

पिंडली–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ पिंड] टाँग का ऊपरी पिछला भाग जो मांसल होता है।

पिंडवाही–संज्ञा स्त्री॰ [?] एक प्रकार का कपड़ा।

–संज्ञा पु॰ [सं॰ पिंड] [स्त्री॰ अल्पा॰ पिंडी] १. ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। २. गोल मटोल टुकड़ा। लुगदा। ३. मधु, तिल मिली हुई खीर आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। मुहा॰—पिंडा पानी देना=श्राद्ध और तर्पण करना। ४. शरीर। देह।

पिंडारी–संज्ञा पु॰ [देश॰] दक्षिण की एक जाति जो पहले खेती करती थी, पीछे अवसर पाकर लूट मार करने लगी और मुसलमान हो गई।

पिंडालू–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ पिंड+आलु] १. एक प्रकार का सकरकंद। सुथनी। पिंडिया। २. एक प्रकार का शफतालू या रतालू।

पिंडिका–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. छोटा पिंड। पिंडी। २ पिंडली। ३. वह पिंडी जिस पर देवमूर्त्ति स्थापित की जाती है। वेदी।

पिंड़िया–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ पिंडिका] १. गीली भुरभुरी वस्तु का मुट्ठी से बाँधा हुआ लंबोतरा टुकड़ा। लंबोतरी पिंडी। २. गुड़ की लंबोतरी भेली। मुट्ठी। ३. लपेटे हुए सूत, सुतली या रस्सी का छोटा गोला।

पिंडी–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. छोटा ढेला या लोंदा। लुगदी। २. गीली या भुरभुरी वस्तु का टुकड़ा। ३. घीया। कद्दू। ४. पिंड खजूर। ५. वेदी जिस पर बलिदान किया जाता है। ६. सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा।

पिंडुरी†–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "पिंडली"।

पिअ–वि॰ संज्ञा पु॰ दे॰ "प्रिय"।

पिअराई†–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ पीत] पीलापन।

पिअरी†–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ पीला] हल्दी के रंग से रँगी हुई वह धोती जो विवाह के समय में वर या वधू को पहनाई जाती है; या स्त्रियाँ गंगाजी को चढ़ाती हैं। वि॰ स्त्री॰ दे॰ "पीली"।

पिउ–संज्ञा पु॰ [सं॰ प्रिय] पति।

पिक–संज्ञा पु॰ [सं॰] कोयल।

पिघलना–क्रि॰ अ॰ [सं॰ प्र+गलन] १. गरमी से किसी चीज का गलकर पानी सा हो जाना। द्रवीभूत होना। २. चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।

पिघलाना–क्रि॰ स॰ [हिं॰ पिघलना का प्रे॰] १. किसी चीज़ को गरमी पहुँचाकर पानी के रूप में लाना। २. किसी के मन में

दया उत्पन्न करना।

पिचकना–क्रि० अ० [स० पिच=दवना] किसी फूले या उभरे हुए तल का दब जाना।

पिचकाना–क्रि० स० [हिं० पिचकना का प्रे०] फूले या उभरे हुए तल को दबाना।

पिचकारी–सज्ञा स्त्री० [हिं० पिचकना] एक प्रकार का नलदार यंत्र जिसका व्यवहार जल या किसी दूसरे तरल पदार्थ को ज़ोर से किसी ओर फेंकने में होता है।

पिचकी†–सज्ञा स्त्री० दे० "पिचकारी"।

पिचुका†–सज्ञा पु०[हिं० पिचकना] १. पिचकारी। २. गोलगप्पा।

पिचित–वि० [स० पिच=दबना, पिचकना] पिचका हुआ। दबा हुआ।

पिच्ची–वि० दे० "पिचित"।

पिच्छ–सज्ञा पु० [स०] १. पशु की पूँछ। लांगूल। २. मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ। ३. मोर की चोटी। चूड़ा।

पिच्छल–सज्ञा पु० [स०] १. मोचरस। २. अकासबेल। ३. शीशम।

वि० रपटनेवाला। चिकना।

वि० दे० "पिछला"।

पिच्छिल–वि० [स०] [स्त्री० पिच्छिला] १. गीला और चिकना। २. फिसलनेवाला। जिस पर पड़ने से पैर रपटे। ३ चूड़ायुक्त (पक्षी)। ४. खट्टा, कोमल, फूला हुआ और कफकारी (पदार्थ)।

पिछड़ना–क्रि० अ० [हिं० पिछाड़ी+ना (प्रत्य०)] पीछे रह जाना। साथ साथ, बराबर या आगे न रहना।

पिछलगा–सज्ञा पु० [हिं० पीछे+लगना] १. वह मनुष्य जो किसी के पीछे चले। अधीन। आश्रित। २. अनुवर्ती। अनुगामी। शिष्य। ३. सेवक। नौकर।

पिछलगी–सज्ञा स्त्री० [हिं० पिछलगा] पिछलगा होने का भाव। अनुयायी होना। अनुगमन करना।

पिछलग्गू†–सज्ञा पु० दे० "पिछलगा"।

पिछला–वि० [हिं० पीछा] [स्त्री० पिछली] १. पीछे की ओर का। "अगला" का उलटा। २. बाद का। अनंतर का। पहला का उलटा। ३. अंत की ओर का। मुहा०—पिछला पहर=दो पहर या आधी रात के बाद का समय। पिछली रात=आधी रात के बाद का समय। ४. बीता हुआ। गत। पुराना। गुज़रा हुआ। ५ गत बातों में से अंतिम।

पिछवाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] पीछे की ओर लटकाने का परदा।

पिछवाड़ा–सज्ञा पु० [हिं० पीछा+वाड़ा (प्रत्य०)] १. किसी मकान का पीछे का भाग। घर का पृष्ठ भाग। २. घर के पीछे का स्थान या जमीन।

पिछाड़ी–सज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] १. पिछला भाग। पीछे का हिस्सा। २. वह रस्सी जिससे घोड़े के पिछले पैर बाँधते हैं।

पिछानना†–क्रि० स० दे० "पहचानना"।

पिछौंहें–†–क्रि० वि० [हिं० पीछा] पीछे की ओर। पीछे की ओर से।

पिछौरा†–सज्ञा पु० [स० पक्षपट] [स्त्री० पिछौरी] ओढ़ने का दुपट्टा या चादर।

पिटंत–सज्ञा स्त्री० [हिं० पीटना+अंत (प्रत्य०)] पीटने की क्रिया या भाव।

पिटक–सज्ञा पु० [स०] १. पिटारा। २. फुड़िया। फुंसी। ३. किसी ग्रंथ का एक भाग। ग्रंथ-विभाग। खंड। हिस्सा।

पिटना–क्रि० अ० [हिं० पीटना] १. मार खाना। ठोंका जाना। २. बजना। आघात पाकर आवाज करना।

†सज्ञा पु० [हिं० पीटना] चूने आदि की छत पीटने का औजार। थापी।

पिटवाना–क्रि० स० [हिं० पीटना] पीटने का काम दूसरे से कराना।

पिटाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० पीटना] १ पीटने का काम या भाव। २. प्रहार। मार। ३. पीटने की मज़दूरी।

पिटारा–सज्ञा पु० [स० पिटक] [स्त्री० अल्पा० पिटारी] बाँस, बेंत, मूँज आदि के नरम छिलकों से बना हुआ एक प्रकार का बड़ा ढकनेदार पात्र।

पिट्ठू–सज्ञा पु० [हिं० पिठ+ऊ (प्रत्य०)] १. पीछे चलनेवाला। अनुयायी। २. सहायक। मददगार। हिमायती। ३ किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसकी बारी में वह स्वयं खेलता है।

पिठवन–सज्ञा स्त्री० [स० पृष्ठपर्णी] एक प्रसिद्ध लता जो औषध के काम आती है। पिठौनी। पृष्टिपर्णी।

पिठौरी–सज्ञा स्त्री० [हिं० पिट्ठी+औरी] पीठी की बनी हुई बरी या पकौड़ी।

पितंवर–संज्ञा पुं० दे० "पीतांवर"।
पितपापड़ा–संज्ञा पुं० [सं० पर्पट] एक झाड़ या क्षुप जिसका उपयोग औषध के रूप में होता है। दवनपापड़ा।
पितर–संज्ञा पुं० [सं० पितृ] मृत पूर्वपुरुष। मरे हुए पुरखे जिनका श्राद्ध किया जाता है।
पितरायँध†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीतल+गंध] खाद्य वस्तु में पीतल का कसाव।
पिता–संज्ञा पुं० [सं० पितृ का कर्ता०] जन्म देकर पालन पोषण करनेवाला। बाप। जनक।
पितामह–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पितामही] १. पिता का पिता। दादा। २. भीष्म। ३. ब्रह्मा। ४. शिव।
पितु–संज्ञा पुं० दे० "पिता"।
पितृ–संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "पिता"। २ किसी व्यक्ति के मृत बाप, दादा, परदादा आदि। ३. किसी व्यक्ति का ऐसा मृत पूर्वपुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो। ४. एक प्रकार के देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गए हैं।
पितृऋण–संज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्रानुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक। पुत्र उत्पन्न करने से इस ऋण से मुक्ति होती है।
पितृकर्म–संज्ञा पुं० [सं० पितृकर्मन्] श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म जो पितरों के उद्देश्य से होते हैं।
पितृकुल–संज्ञा पुं० [सं०] बाप, दादा या उनके भाई-बंधुओं आदि का कुल।
पितृगृह–संज्ञा पुं० [सं०] बाप का घर। नैहर। मायका। (स्त्रियों के लिये)
पितृतर्पण–संज्ञा पुं० [सं०] पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला जलदान। तर्पण।
पितृतीर्थ–संज्ञा पुं० [सं०] १. गया तीर्थ। २ अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग।
पितृत्व–संज्ञा पुं० [सं०] पिता या पितृ होने का भाव।
पितृपक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुँआर की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय। २. पिता के संबंधी। पितृ कुल।
पितृपद–संज्ञा पुं० [सं०] पितरों का लोक।
पितृमेध–संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के अंत्येष्टि कर्म का एक भेद जो श्राद्ध से भिन्न होता था।
–संज्ञा पुं० [सं०] पितृतर्पण।
पितृयाण–संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु के अनंतर जीव के जाने का वह मार्ग जिससे वह चंद्रमा को प्राप्त होता है।
पितृलोक–संज्ञा पुं० [सं०] पितरों का लोक। वह स्थान जहाँ पितृगण रहते हैं।
पितृव्य–संज्ञा पुं० [सं०] चचा। चाचा।
पित्त–संज्ञा पुं० [सं०] एक तरल पदार्थ जो शरीर के अंतर्गत यकृत में बनता है। यह चिकनाई के पाचन में सहायक होता है।
मुहा०—पित्त उबलना या खौलना=दे० "पित्ता उबलना या खौलना"। पित्त गरम होना=शीघ्र क्रुद्ध होने का स्वभाव होना।
पित्तघ्न–वि० [सं०] पित्तनाशक।
पित्तज्वर–संज्ञा पुं० [सं०] वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो। पैत्तिक ज्वर।
पित्तपापड़ा–संज्ञा पुं० दे० "पितपापड़ा"।
पित्तप्रकृति–वि० [सं०] जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त की अधिकता हो।
पित्तप्रकोपी–वि० [सं० पित्तप्रकोपिन्] (वस्तु) जिसके भोजन से पित्त की वृद्धि हो।
पित्तल–वि० [सं० पित्त] जिससे पित्तदोष बढ़े। पित्तकारी। (द्रव्य)
संज्ञा पुं० १. भोजपत्र। २. हरताल। ३. पीतल धातु।
पित्ता–संज्ञा पुं० [सं० पित्त] १. जिगर में वह थैली जिसमें पित्त रहता है। पित्ताशय।
मुहा०—पित्ता उबलना या खौलना=बड़ा क्रोध आना। मिजाज भड़क उठना। पित्ता निकालना†‡=बहुत अधिक परिश्रम का काम करना। पित्ता पानी करना=बहुत परिश्रम करना। जान लड़ाकर काम करना। पित्ता मरना=गुस्सा न रह जाना। पित्ता मारना=१. क्रोध दबाना। क्रुद्ध करना। २. कोई अरुचिकर या कठिन काम करने में न ऊबना।
२. हिम्मत। साहस। हौसला।
पित्ताशय–संज्ञा पुं० [सं०] पित्त की थैली जो जिगर में पीछे और नीचे की ओर होती है।
पित्ती–संज्ञा स्त्री० [सं० पित्त+ई] एक रोग जिसमें शरीर भर में छोटे छोटे ददोरे पड़ जाते हैं। २. लाल महीन दाने जो गर्मी के दिनों में शरीर पर निकल आते हैं। अँभौरी।
†‡संज्ञा पुं० पितृव्य। चचा। काका।
पित्र्य–वि० [सं०] पितृ संबंधी।
पिद्दड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी"।

पिद्दा–संज्ञा पुं० दे० "पिद्दी"।
पिद्दी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बया की जाति की एक सुंदर छोटी चिड़िया। २. बहुत ही तुच्छ और अगण्य जीव।
पिधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. आवरण। पर्दा। गिलाफ़। २. ढक्कन। ढकना। ३. तलवार की म्यान। ४. किवाड़ा।
पिनकना–क्रि० अ० [हिं० पीनक] १. अफ़ीम के नशे में सिर का झुका पड़ना। पीनक लेना। २. नींद में आगे को झुकना। ऊँघना।
पिनपिन†–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बच्चों का अनुनासिक और अस्पष्ट स्वर में रोना। २. धीमी और अनुनासिक आवाज़ में रोना।
पिनपिनाना†–क्रि० अ० [हिं० पिनपिन] १. रोते समय नाक से स्वर निकालना। २. रोगी अथवा कमज़ोर बच्चे का रोना।
पिनाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव का धनुष जिसे श्रीरामचंद्रजी ने जनकपुर में तोड़ा था। अजगव। २. धनुष। ३. त्रिशूल।
पिनाकी–संज्ञा पुं० [सं० पिनाकिन्] शिव।
पिन्नी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिठाई, जो आटे में चीनी मिलाकर बनाई जाती है।
पिन्हाना†–क्रि० स० दे० "पहनाना"।
पिपरामूल–संज्ञा पुं० [सं०] पिप्पली मूल। पीपल की जड़।
पिपासा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तृषा। प्यास। २. लालच। लोभ।
पिपासु–वि० [सं०] १. तृषित। प्यासा। २. उग्र इच्छा रखनेवाला। लालची।
पिपीलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] च्यूँटी।
पिप्पल–संज्ञा पुं० [सं०] पीपल। अश्वत्थ।
पिप्पली–संज्ञा स्त्री० [सं०] पीपल।
पिप्पलीमूल–संज्ञा पुं० [सं०] पिपरामूल।
पिय*–संज्ञा पुं० [सं० प्रिय] पति। स्वामी।
पियराई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीयर + आई (प्रत्य०)] पीलापन। ज़र्दी।
पियराना*†–क्रि० अ० [हिं० पियरा] पीला पड़ना। पीला होना।
पियरी†–वि० स्त्री० दे० "पीली"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पियर] १. पीली रँगी हुई धोती। पिअरी। २. पीलापन।
पियल्ला‡–संज्ञा पुं० [हिं० पीना] दूध पीने वाला बच्चा।
पियार*–संज्ञा पुं० दे० "पिय"।
पियार–संज्ञा पुं० [सं० पियाल] महुए की तरह का मझोले आकार का एक पेड़ जिसके बीजों की गिरी चिरौंजी कहलाती है।
†वि० दे० "प्यारा"।
†संज्ञा पुं० दे० "प्यार"।
पियाल–संज्ञा पुं० [सं०] चिरौंजी का पेड़। दे० "पियार"।
पियासाल–संज्ञा पुं० [सं० पीतसाल, प्रियसालक] बहेड़े की जाति का एक बड़ा पेड़।
पियूख*–सं० पुं० दे० "पीयूष"।
पिरकी†–संज्ञा स्त्री० [सं० पिड़क] फोड़िया। फुंसी।
पिरथी‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।
पिराई‡*–संज्ञा स्त्री० दे० "पियराई"।
पिराक–संज्ञा पुं० [सं० पिष्टक] एक प्रकार का पकवान। गोझा। गोझिया।
पिराना‡*–क्रि० अ० [सं० पीड़न] १. पीड़ित होना। दर्द करना। दुखना। २. पीड़ा अनुभव करना। दुःख समझना।
पिरारा‡*–संज्ञा पुं० दे० "पिंड़ारा"।
पिरीतम‡*–संज्ञा पुं० दे० "प्रियतम"।
पिरीता*–वि० [सं० प्रीत] प्रिय। प्यारा।
पिरोजा–संज्ञा पुं० दे० "फ़ीरोज़ा"।
पिरोना–क्रि० स० [सं० प्रोत] १. छेद के सहारे सूत, तागे आदि में फँसाना। गूथना। पोहना। २ तागे आदि को छेद में डालना।
पिलना–क्रि० अ० [सं० पिल = प्रेरण] १. किसी ओर को एकबारगी टूट पड़ना। ढल पड़ना। झुक पड़ना। २ एकबारगी प्रवृत्त होना। लिपट जाना। भिड़ जाना। ३. पेरा जाना। तेल निकालने के लिये दबाया जाना।
पिलपिला–वि० [अनु०] भीतर से गीला और नरम।
पिलपिलाना–क्रि० स० [हिं० पिलपिला] रसदार या गूदेदार वस्तु को दबाना जिससे रस या गूदा ढीला होकर बाहर निकले।
पिलवाना–क्रि० स० [हिं० "पिलाना" का प्रे०] पिलान का काम दूसरे से कराना।
क्रि० स० [हिं० पेलना] पेलने या पेरने का काम दूसरे से कराना। पेरवाना।
पिलाना–क्रि० स० [हिं० पीना] १. पीने का काम दूसरे से कराना। पान कराना। २. पीने को देना। ३. भीतर भरना।
पिल्ला–संज्ञा पुं० [देश०] कुत्ते का बच्चा।

पिल्लू–संज्ञा पुं० [सं० पीलु=कृमि] एक सफेद लंबा कीड़ा जो सड़े हुए फल या घाव आदि में देखा जाता है। ढोला।
पिव –संज्ञा पुं० दे० "पिय"।
पिवाना†–क्रि० स० दे० "पिलाना"।
पिशाच–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पिशाची] एक हीन देवयोनि। भूत।
पिशुन–संज्ञा पुं० [सं०] चुगलखोर।
पिष्ट–वि० [सं०] पिसा हुआ।
पिष्टक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पिष्ट। पीठी। पिट्ठी। २. कचौरी या पूआ। रोट।
पिष्टपेषण–संज्ञा पुं० [सं०] १. पिसे हुए को पीसना। २. कही हुई बात को फिर फिर कहना।
पिसनहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीसना + हारी (प्रत्य०)] वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसने से चलती हो।
पिसना–क्रि० अ० [हिं० पीसना] १. चूर्ण होना। चूर होकर धूल सा हो जाना। २. पिसकर तैयार होना। ३. दब जाना। कुचला जाना। ४. घोर कष्ट, दुःख या हानि उठाना। पीड़ित होना। ५. थककर बेदम होना।
पिसवाना–क्रि० स० [हिं० पीसना का प्रे०] पीसने का काम दूसरे से कराना।
पिसाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीसना] १. पीसने की क्रिया या भाव। २. पीसने का काम या व्यवसाय। ३. पीसने की मजदूरी। ४. अत्यंत अधिक श्रम। बड़ी कड़ी मिहनत।
पिसाच* –संज्ञा पुं० दे० "पिशाच"।
पिसान†–संज्ञा पुं० [हिं० पिसना, पिसा + अन्न] अन्न का बारीक पिसा हुआ चूर्ण। आटा।
पिसुन*–संज्ञा पुं० दे० "पिशुन"।
पिसौनी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० पीसना] १. पीसने का काम। २. कठिन काम।
पिस्तई–वि० [फा० पिस्त.] पिस्ते के रंग का। पीलापन लिए हरा।
पिस्ता–संज्ञा पुं० [फा० पिस्तः] एक छोटा पेड़ जिसके फल की गिरी अच्छे मेवों में है।
पिस्तौल–संज्ञा स्त्री० [अं० पिस्टल] तमंचा। छोटी बंदूक।
पिस्सू–संज्ञा पुं० [फा० पश्शः] एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा जो काटता और रक्त पीता है। कुटकी।
पिहकना–क्रि० अ० [अनु०] कोयल, पपीहे आदि पक्षियों का बोलना।
पिहित–वि० [सं०] छिपा हुआ।
संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का कोई भाव जानकर क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करना वर्णन किया जाय।
पींजना–क्रि० स० [सं० पिंजन] रूई धुनना।
पींजरा –संज्ञा पुं० दे० "पिंजड़ा"।
पींड†–संज्ञा पुं० [सं० पिंड] १. शरीर। देह। पिंड। २. वृक्ष का धड़। तना। पेड़ी। ३. गीली वस्तु का गोला। पिंड। पिंडी। ४. दे० "पीढ़"। ५. पिंड खजूर।
पी*–संज्ञा पुं० दे० "पिय"।
संज्ञा पुं० [अनु०] पपीहे की बोली।
पीक–संज्ञा स्त्री० [सं० पिच्च] थूक से मिला हुआ पान का रस।
पीकदान–संज्ञा पुं० [हिं० पीक + फा० दान] एक विशेष प्रकार का बना हुआ बरतन जिसमें पान की पीक थूकी जाती है। उगालदान।
पीकना†–क्रि० अ० [सं० पिक] पिहकना। पपीहे या कोयल का बोलना।
पीका†–संज्ञा पुं० [देश०] नया कोमल पत्ता। कोंपल। पल्लव।
पीच–संज्ञा स्त्री० [सं० पिच्च] माँड़।
पीछा–संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्] १. किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे की ओर का भाग। पश्चात् भाग। पुश्त। "आगा" का उलटा।
मुहा०—**पीछा दिखाना**=१. भागना। पीठ दिखाना। २. दे० "पीछा देना"। **पीछा देना**=किसी काम में पहले साथ देकर फिर किनारा करना। पीछे हट जाना।
२. किसी घटना के बाद का समय। ३. पीछे पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहना।
मुहा०—**पीछा करना**=१. किसी बात के लिये किसी को तंग या दिक करना। गले पड़ना। २. किसी को पकड़ने, मारने या भगाने आदि के लिये उसके पीछे पीछे चलना। खदेड़ना। **पीछा छुड़ाना**=१. पीछा करनेवाले व्यक्ति से जान छुड़ाना। २. अप्रिय या इच्छाविरुद्ध संबंध का अंत करना। **पीछा छूटना**=१. पीछा करनेवाले से छुटकारा मिलना। पिंड छूटना। जान छूटना। २. अप्रिय कार्य या संबंध से छुटकारा मिलना। **पीछा छोड़ना**=१. तंग न करना। परेशान करना बंद करना। २. जिस बात में बहुत देर से लगे हों उसे छोड़ देना।

पीछू†—क्रि० वि० दे० "पीछे"।

पीछे—अव्य० [हिं० पीछा] १. पीठ की ओर। आगे या सामने का उलटा। पश्चात्।

मुहा०—(किसी के) पीछे चलना = १. किसी विषय में किसी को पथदर्शक, नेता या गुरु मानना। २. अनुकरण करना। नकल करना। (किसी के) पीछे छोड़ना या भेजना = किसी का पीछा करने के लिये किसी को भेजना। (धन) पीछे डालना = आगे के लिये बटोरना। संचय करना। (किसी काम के) पीछे पड़ना = किसी काम को कर डालने पर तुल जाना। किसी कार्य के लिये अविराम उद्योग करना। (किसी व्यक्ति के) पीछे पड़ना = १. कोई काम करने के लिये किसी से बार बार कहना। घेरना। तंग करना। २. मौका या संधि ढूँढ़ ढूँढ़कर किसी की बुराई करते रहना। पीछे लगना = १. पीछे पीछे घूमना। पीछा करना। २. दुःखजनक वस्तु का साथ हो जाना। (अपने) पीछे लगाना = १. आश्रय देना। साथ कर लेना। २. अनिष्ट वस्तु से संबंध कर लेना। (किसी और के) पीछे लगाना = १. अनिष्ट या अप्रिय वस्तु से संबंध करा देना। मढ़ देना। २. भेद लेने या निगाह रखने के लिये किसी को साथ कर देना।

२. पीछे की ओर कुछ दूर पर।

मुहा०—पीछे छूटना, पड़ना या होना = १. किसी विषय में किसी व्यक्ति की अपेक्षा घट-कर होना। पिछड़ा होना। २. किसी विषय में किसी ऐसे आदमी से घट जाना जिसने किसी समय बराबरी रही हो। पिछड़ जाना। (किसी को) पीछे छोड़ना = १. किसी विषय में किसी से बढ़-कर या अधिक होना। २. किसी विषय में किसी से आगे निकल जाना।

३. पश्चात्। उपरांत। अनंतर। ४. अंत में। आखिर में। (क्व०) ५. किसी की अनुपस्थिति या अभाव में। पीठ पीछे। ६. मर जाने पर। ७. लिये। वास्ते। ८. कारण। निमित्त। बदौलत।

पीटना—क्रि० स० [सं० पीड़न] १. चोट पहुँचाना। मारना।

मुहा०—छाती पीटना = दुःख या शोक प्रकट करने के लिये छाती पर हाथ से आघात करना। किसी व्यक्ति को या के लिये पीटना = किसी के मरने पर छाती पीटना। मातम करना।

२. चोट से चिपटा या चौड़ा करना। ३. मारना। प्रहार करना। ठोंकना। ४. भले या बुरे प्रकार से कर डालना। ५. किसी न किसी प्रकार प्राप्त कर लेना। फट-कार लेना।

संज्ञा पुं० १. मृत्युशोक। मातम। २. मुसी-बत। आफत।

पीठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. लकड़ी, पत्थर आदि का बैठने का आधार या आसन। पीढ़ा। चौकी। २. विद्यार्थियों आदि के बैठने का आसन। ३. किसी मूर्त्ति के नीचे का आधार-पिंड। ४. किसी वस्तु के रहने की जगह। अधिष्ठान। ५. सिंहासन। राजासन। तख्त। ६. वेदी। देवपीठ। ७. वह स्थान जहाँ पुराणानुसार दक्षपुत्री सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर गिरा है। भिन्न भिन्न पुराणों में इनकी संख्या ५१,५३,७७ या १०८ कही गई है। ८. प्रदेश। प्रांत। ९. बैठने का एक आसन। १०. वृत्त के किसी अंश का पूरक।

संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठ] १. पेट की दूसरी ओर का भाग जो मनुष्य में पीछे की ओर और पशुओं, पक्षियों आदि के शरीर में ऊपर की ओर पड़ता है। पृष्ठ। पुश्त।

मुहा०—पीठ का = दे० "पीठ पर का"। पीठ चारपाई से लग जाना = बीमारी के कारण अत्यंत दुबला और कमजोर हो जाना। पीठ ठोंकना = १. किसी कार्य की प्रशंसा करना। शाबाशी देना। २. हिम्मत बढ़ाना। प्रोत्साहित करना। पीठ दिखाना = युद्ध या मुकाबिले से भाग जाना। पीछा दिखाना। पीठ दिखाकर जाना = स्नेह तोड़कर या ममता छोड़कर जाना। पीठ देना = १ विदा होना। रुखसत होना। २. विमुख होना। मुँह मोड़ना। ३. भाग जाना। पीठ दिखाना। ४. लेटना। आराम करना। पीठ पर = एक ही माता द्वारा जन्मक्रम में पीछे। पीठ पर का = जन्मक्रम में अपने सहोदर के अनंतर का। पीठ मीजना या पीठ पर हाथ फेरना = दे० "पीठ ठोंकना"। पीठ पर होना = मदद पर होना। हिमायत पर होना। पीठ पीछे = किसी के पीछे। अनुपस्थिति में। परोक्ष में। पीठ फेरना = १. विदा होना। चला जाना। २. भाग जाना। पीठ दिखाना। ३. मुँह फेर लेना। ४. अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना। (घोड़े, बैल आदि की) पीठ लगना = पीठ पर

घाव हो जाना। पीठ पक जाना। (चारपाई आदि से) पीठ लगाना = लेटना। सोना। पड़ना। २. किसी वस्तु की बनावट का ऊपरी भाग। पृष्ठ भाग।

पीठना०–क्रि० स० दे० "पीसना"।

पीठमर्द–संज्ञा पुं० [सं०] १. नायक के चार सखाओं में से एक जो वचन-चातुरी से नायिका का मान-मोचन करने में समर्थ हो। २. वह नायक जो कुपित नायिका को प्रसन्न कर सके।

पीठस्थान–संज्ञा पुं० दे० "पीठ (७)"

पीठा–संज्ञा पुं० दे० "पीढ़ा"।

संज्ञा पुं० [सं० पिष्टक] एक प्रकार का पकवान।

पीठि –संज्ञा स्त्री० दे० "पीठ"।

पीठी–संज्ञा स्त्री० [सं० पिष्टक] पानी में भिगो-कर पीसी हुई दाल।

पीड़–संज्ञा स्त्री० [सं० आपीड] सिर या बालों पर बाँधा जानेवाला एक आभूषण।

पीड़क–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीड़ा देनेवाला। दुःखदायी। २ सतानेवाला।

पीड़न–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित] १. दबाना। चापना। २ पेरना। पेलना। ३ दुःख देना। यंत्रणा पहुँचाना। ४. अत्याचार करना। ५. भली भाँति पकड़-ना। दबोचना। ६. उच्छेद। नाश।

पीड़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेदना। व्यथा। तकलीफ़। दर्द। २. रोग। व्याधि।

पीड़ित–वि० [सं०] १. पीड़ायुक्त। दुःखित। क्लेशयुक्त। २. रोगी। बीमार। ३. दबाया हुआ। ४. नष्ट किया हुआ।

पीड़ुरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "पिँडली"।

पीढ़ा†–संज्ञा पुं० [सं० पीठक] चौकी के आकार का छोटा और कम ऊँचा आसन। पाटा। पीठ। पीठक।

पीढ़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० पीठिका] १. कुल परंपरा में किसी विशेष व्यक्ति से आरंभ करके बाप, दादे, परदादे आदि अथवा बेटे, पोते, परपोते आदि के क्रम से पहला दूसरा आदि कोई स्थान। पुश्त। २. किसी विशेष व्यक्ति अथवा प्राणी की संतति-समुदाय। ३ किसी विशेष समय में वर्ग-विशेष व्यक्तियों की समष्टि। संतति। संतान। नस्ल। †संज्ञा स्त्री० [हिं० पीढ़ा] छोटा पीढ़ा।

पीत–वि० [सं०] [स्त्री० पीता] १. पीला। पीतवर्ण-युक्त। २. भूरा। कपिल वर्ण।

वि० [सं० पान] पिया हुआ।

संज्ञा पुं० [सं०] १ पीला रंग। २. भूरा रंग। ३. हरताल। ४. हरिचंदन। ५. कुसुम। ६. पुखराज। ७ मूँगा।

पीतक–संज्ञा पुं० [सं०] १. हरताल। २. केशर। ३. अगर। ४. पीतल। ५. पीला चंदन। ६ शहद।

वि० पीला। पीले रंग का।

पीतचंदन–संज्ञा पुं० [सं०] द्रविड़देशीय पीले रंग का चंदन। हरिचंदन।

पीतता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पीत का भाव। पीलापन। ज़र्दी।

पीतधातु –संज्ञा स्त्री० [सं० पीत + धातु] राम-रज। गोपीचंदन।

पीतपुष्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. कनेर। २. घिया-तरोई। ३. पीले फूल की कट सरैया। ४. चंपा।

पीतम .–वि० दे० "प्रियतम"।

पीतल–संज्ञा पुं० [सं० पित्तल] एक प्रसिद्ध पीली उपधातु जो ताँबे और जस्ते के संयोग से बनती है।

पीतवास–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

पीतशाल–संज्ञा पुं० [सं०] विजयसार।

पीतसार–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीतचंदन। हरिचंदन। २. सफ़ेद चंदन। ३. गोमेद मणि। ४ शिलारस।

पीतांबर–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीला कपड़ा। २. मरदानी रेशमी धोती जिसे लोग पूजा-पाठ आदि के समय पहनते हैं। ३. श्रीकृष्ण।

पीदड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी"।

पीन–वि० [सं०] १. स्थूल। मोटा। २. पुष्ट। प्रवृद्ध। ३. संपन्न। भरा पूरा।

पीनक–संज्ञा स्त्री० [हिं० पिनकना] १. नशे की हालत में अफ़ीमची का आगे की ओर झुक झुक पड़ना। २. ऊँघना।

पीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मोटाई।

पीनस–संज्ञा पुं० [सं०] नाक का एक रोग जिसमें उसकी घ्राण शक्ति नष्ट हो जाती है। संज्ञा स्त्री० [फ़ा० फ़ीनस] पालकी।

पीना–क्रि० स० [सं० पान] १. तरल वस्तु को घूँट घूँट करके गले के नीचे उतारना। घूँटना। पान करना। २. किसी बात को दबा देना। उपेक्षा करना। ३. क्रोध या उत्तेजना न प्रकट करना

सह जाना। ४. किसी मनोविकार को भीतर ही भीतर दबा देना। मारना। ५. किसी मनोविकार का कुछ भी अनुभव न करना। ६. शराब पीना। ७. हुक्के, चुरट आदि का धुआँ भीतर खींचना। धूम्रपान करना। ८. सोखना। शोषण।

पीप–संज्ञा स्त्री० [स० पूय] फोड़े या घाव के भीतर से निकलनेवाला सफ़ेद लसदार पदार्थ। पीब। मवाद।

पीपर–संज्ञा पुं० दे० "पीपल"।

पीपरवर्न–संज्ञा पुं० [हिं० पीपल+पर्न= पत्ता] कान में पहनने का एक आभूषण।

पीपल–संज्ञा पुं० [स० पिप्पल] बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जो हिंदुओं में बहुत पवित्र माना जाता है।
संज्ञा स्त्री० [स० पिप्पली] एक लता जिसकी कलियाँ प्रसिद्ध ओषधि हैं।

पीपलामूल–संज्ञा पु० [स० पिप्पलीमूल] एक प्रसिद्ध ओषधि जो पीपल लता की जड़ है।

पीपा–संज्ञा पु० [?] बड़े ढोल के आकार का काठ या लोहे का पात्र जिसमें मद्य, तेल आदि तरल पदार्थ रखे जाते हैं।

पीब–संज्ञा स्त्री० दे० "पीप"।

पीय–संज्ञा पु० दे० "पिय"।

पीयूख–संज्ञा पु० दे० "पीयूष"।

पीयूष–संज्ञा पु० [स०] १. अमृत। सुधा। २. दूध। ३. उस गाय का दूध जिसे ब्याए सात दिन से अधिक न हुआ हो।

पीयूषभानु–संज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

पीयूषवर्ष–संज्ञा पु० [स०] १. चंद्रमा। २. कपूर। ३. एक प्रकार का मात्रिक छंद। आनंद-वर्द्धक।

पीर–संज्ञा स्त्री० [स० पीड़ा] १. पीड़ा। दुःख। दर्द। २. सहानुभूति। हमदर्दी।
वि० [फ़ा०] [संज्ञा पीरी] १. वृद्ध। बूढ़ा। बड़ा। बुजुर्ग। २. महात्मा। सिद्ध।

पीरा–संज्ञा स्त्री० दे० "पीड़ा"।
वि० दे० "पीला"।

पीरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २. चेला मूड़ने का धंधा या पेशा। गुरुआई। ३. इजारा। ठेका। हुकूमत।

पील–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. हाथी। गज। हस्ति। २. शतरंज का एक मोहरा। फ़ील। ऊँट।

पीलपाल–संज्ञा पु० दे० "फ़ीलवान"।

पीलपाँव–संज्ञा पु० [फ़ा० फ़ीलपा] एक प्रसिद्ध रोग। फ़ीलपा। श्लीपद।

पीलवान–संज्ञा पु० दे० "फ़ीलवान"।

पीलसोज़–संज्ञा पु० [फ़ा० फ़तीलसोज़] दीया जलाने की दीवट। चिराग़दान।

पीला–वि० [स० पीत] [स्त्री० पीली] १. हल्दी, सोने या केसर के रग का (पदार्थ)। ज़र्द। २. कांतिहीन। निस्तेज।
मुहा०—पीला पड़ना या होना = १. बीमारी के कारण चेहरे या शरीर से रक्त का अभाव सूचित होना। २. भय से चेहरे पर सफ़ेदी आना।
संज्ञा पु० हलदी या सोने के रंग से मिलता-जुलता एक प्रकार का रंग।

पीलापन–संज्ञा पु० [हिं० पीला+पन (प्रत्य०)] पीला होने का भाव। पीतता। ज़र्दी।

पीलिया–संज्ञा पु० [हिं० पीला] कमल रोग।

पीलु–संज्ञा पु० [सं०] १. फलदार वृक्ष। पीलू। २. फूल। पुष्प। ३. परमाणु। ४. हाथी। ५. हड्डी का टुकड़ा। अस्थिखंड।

पीलू–संज्ञा पुं० [स० पीलु] १. एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है। २. वे सफ़ेद लंबे कीड़े जो सड़ने पर फलों आदि में पड़ जाते हैं।
संज्ञा पु० एक प्रकार का राग।

पीवना–क्रि० स० दे० "पीना"।

पीव–संज्ञा पुं० [हिं० पिय] पिय। पति।

पीवर–वि० [स०] [स्त्री० पीवरा] [संज्ञा पीवरता] १. मोटा। स्थूल। २. भारी। गुरु।

पीवरी–संज्ञा स्त्री० [स०] १. सतावर। २. सरिवन। ३. युवती स्त्री। ४ गाय।

पीसना–क्रि० स० [स० पेषण] १. किसी वस्तु को आटे, बुकनी या धूल के रूप में करना। २. किसी वस्तु को जल की सहायता से रगड़कर बारीक करना। ३. कुचल देना। दबाकर भुरकुस कर देना।
मुहा०—किसी आदमी को पीसना = बहुत भारी अपकार करना या हानि पहुँचाना। नष्टप्राय कर देना। चौपट कर देना।
४. कड़ी मिहनत करना। जान लड़ाना।
संज्ञा पु० १. पीसी जानेवाली वस्तु। २. उतनी वस्तु जो किसी एक आदमी को पीसने को दी जाय।

पीहर–संज्ञा पुं० [स० पितृ + [illegible] स्त्रियों का मायका। [illegible]

का घर। मैका।
पुंख-संज्ञा पु० [सं०] बाण का पिछला भाग जिसमें पर खोंसे रहते थे।
पुंगव-संज्ञा पु० [सं०] बैल। वृष। वि० श्रेष्ठ। उत्तम।
पुंगीफल-संज्ञा पु० दे० "पूँगीफल"।
पुँछार‡-संज्ञा पु० [हिं० पूँछ] मयूर। मोर।
पुँछाला-संज्ञा पु० दे० "पुछल्ला"।
पुंज-संज्ञा पु० [सं०] समूह। ढेर।
पुंजी-संज्ञा स्त्री० दे० "पूँजी"।
पुंड-संज्ञा पु० [सं०] तिलक। टीका।
पुंडरी-संज्ञा पु० [सं० पुंडरिन्] स्थलपद्म।
पुंडरीक-संज्ञा पु० [सं०] १. श्वेत कमल। २. कमल। ३. रेशम का कीड़ा। ४. शर। बाघ। ५. तिलक। ६ सफ़ेद रंग का हाथी। ७. श्वेत कुष्ठ। सफ़ेद कोढ़। ८. अग्निकोण के दिग्गज का नाम। ९. अग्नि। आग। १०. बाण। शर। (अनेकार्थ) ११. आकाश। (अनेकार्थ)
पुंडरीकाक्ष-संज्ञा पु० [सं०] विष्णु। वि० जिसके नेत्र कमल के समान हों।
पुंड्र-संज्ञा पु० [सं०] १. गन्ना। पौंढ़ा। २. श्वेत कमल। ३. तिलक। टीका। ४ भारत के एक भाग का प्राचीन नाम।
पुंड्रवर्द्धन-संज्ञा पु० [सं०] पुंड्र देश की प्राचीन राजधानी।
पुंलिंग-संज्ञा पु० [सं०] १ पुरुष का चिह्न। २. शिश्न। ३. पुरुषवाचक शब्द। (व्या०)
पुंश्चली-वि० स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी। कुलटा। छिनाल।
पुंस‡-संज्ञा पु० [सं०] पुरुष। मर्द।
पुंसवन-संज्ञा पु० [सं०] १. दुग्ध। दूध। २ द्विजातियों के सोलह संस्कारों में से दूसरा जो गर्भाधान से तीसरे महीने हो। गर्भिणी को पुत्र प्रसव कराने के अभिप्राय से होता है। ३ वैष्णवों का एक व्रत।
पुंसत्व-संज्ञा पु० [सं०] १. पुरुषत्व। २ पुरुष की स्त्री-सहवास की शक्ति। ३. शुक्र। वीर्य्य।
पुआ-संज्ञा पु० [सं० पूप] मीठे के रस में सने हुए आटे की मोटी पूरी या टिकिया।
पुआल-संज्ञा पु० दे० "पयाल"।
पुकार-संज्ञा स्त्री० [हिं० पुकारना] १. किसी का नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव। हाँक। टेर। २. रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट। दुहाई। ३. प्रतिकार के लिये चिल्लाहट। फ़रियाद। नालिश। ४. गहरी माँग।
पुकारना-क्रि० स० [सं० प्रकुश=पुकारना] १. नाम लेकर बुलाना। टेरना। आवाज़ लगाना। २. नाम का उच्चारण करना। रटना। धुन लगाना। ३. चिल्लाकर कहना। घोषित करना। ४ चिल्लाकर माँगना। ५. रक्षा के लिये चिल्लाना। गोहार लगाना। ६. फ़रियाद करना। नालिश करना।
पुक्कस-संज्ञा पु० [सं०] १. चांडाल। २. अधम। नीच।
पुख†-संज्ञा पु० दे० "पुष्य"।
पुखर‡-संज्ञा पु० [सं० पुष्कर] तालाब।
पुखराज-संज्ञा पु० [सं० पुष्पराग] एक प्रकार का पीला रत्न।
पख्य-संज्ञा पु० दे० "पुष्य"।
पुगाना-क्रि० अ० दे० "पूजना"।
पुँगाना-क्रि० स० [हिं० पुजाना] पूरा करना।
पुचकार-संज्ञा स्त्री० [हिं० पुचकारना] दे० "पुचकारी"।
पुचकारना-क्रि० स० [अनु० पुच=से+हिं० कार+ना (प्रत्य०)] चूमने का सा शब्द निकालकर प्यार जताना। चुमकारना।
पुचकारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पुचकारना] प्यार जताने के लिये ओठों से निकाला हुआ चूमने का सा शब्द। चुमकार।
पुचारा-संज्ञा पु० [अनु० पुचपुच या पुताड़] १ भींगे कपड़े से पोछने का काम। २. पतला लेप करने का काम। ३. पोता। हलका लेप। ४ वह गीला कपड़ा जिससे पोतते या पुचारा देते हैं। ५. लेप करने या पोतने के लिये पानी में घोली हुई कोई वस्तु। ६. दगी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये उस पर गीला कपड़ा फेरनेकी क्रिया। ७. प्रसन्न करनेवाले वचन। ८. झूठी प्रशंसा। चापलूसी। ख़ुशामद। ९. उत्साह बढ़ानेवाला वचन। बढ़ावा।
पुच्छ-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुम। पूँछ। २ किसी वस्तु का पिछला भाग।
पुच्छल-वि० [हिं० पुच्छ] दुमदार। पूँछदार। यौ०—पुच्छल तारा=दे० "केतु"।
पुछल्ला-संज्ञा पु० [हिं० पूँछ+ल (प्रत्य०)]

१ बड़ी पूँछ। लंबी दुम। २. पूँछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु। ३. बराबर पीछे लगा रहनेवाला। साथ न छोड़नेवाला। ४. साथ में लगी हुई वस्तु या व्यक्ति जिसकी उतनी आवश्यकता न हो। ५. पिछलग्गू। चापलूस। आश्रित।

पुछार†*–संज्ञा पुं० [हिं० पूछना] आदर करनेवाला। पूछनेवाला।

पुजना–क्रि० अ० [हिं० पूजना] १. पूजा जाना। आराधना का विषय होना। २. सम्मानित होना।

पुजवना†*–क्रि० स० [हिं० पूजना] १. पुनाना। भरना। २. पूरा करना। ३. सफल करना।

पुजवाना–क्रि० स० [हिं० पूजना का प्रे०] १. पूजन कराना। पूजा करने में प्रवृत्त करना। २. अपनी पूजा कराना। ३. अपनी सेवा या सम्मान कराना।

पुजाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पूजना] पूजने का भाव, क्रिया या पुरस्कार।

पुजाना–क्रि० स० [हिं० पूजना का प्रे०] १. पूजा में प्रवृत्त या नियुक्त करना। २. अपनी पूजा-प्रतिष्ठा कराना। भेंट चढ़वाना। ३. धन वसूल करना।

क्रि० स० [हिं० पूजना = पूरा होना] १. भर देना। २. पूरा करना। पूर्ति करना। सफल करना।

पुजापा–संज्ञा पुं० [सं० पूजा + पात्र] देव-पूजन की सामग्री। पूजा का सामान।

पुजारी–संज्ञा पुं० [सं० पूजा + कारी] देवमूर्ति की पूजा करनेवाला।

पुजेरी–संज्ञा पुं० दे० "पुजारी"।

पुजैया†–संज्ञा पुं० [हिं० पूजना] पूजा करनेवाला।

संज्ञा पुं० [हिं० पूजना = भरना] पूरा करनेवाला। भरनेवाला।

संज्ञा स्त्री० दे० "पूजा"।

पुट–संज्ञा पुं० [अनु०] १. किसी वस्तु से तर करने या उसका हलका मेल करने के लिये डाला हुआ छींटा। हलका छिड़काव। २ रंग या हलका मेल देने के लिये घुले हुए रंग या और किसी पतली चीज में डुबाना। बोर। ३. बहुत हलका मेल। भावना।

संज्ञा पुं० [सं०] १. आच्छादन। ढाँकनेवाली वस्तु। २. गोल गहरा पात्र। कटोरा। ३. दोने के आकार की वस्तु। ४. औषध पकाने का मुँहबंद बरतन। ५. दो बराबर बरतनों को मुँह मिलाकर जोड़ने से बना हुआ बंद घेरा। संपुट। ६. घोड़े की टाप। ७. अंतःपट। अँतरौटा। ८. दो नगण, एक मगण और एक रगण का एक वर्णवृत्त।

पुटकी–संज्ञा स्त्री० [सं० पुटक] पोटली। गठरी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पटपटाना = मरना] १. आकस्मिक मृत्यु। २ दैवी आपत्ति। आफत।

संज्ञा स्त्री० [हिं० पुट = हलका मेल] *बेसन या* आटा जो तरकारी के रसे में उसे गाढ़ा करने के लिये मिलाते हैं। आलन।

पुटपाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्ते के दोने में रखकर औषध पकाने का विधान। (वैद्यक) २. मुँहबंद बरतन में दवा रखकर उसे गड्ढे के भीतर पकाने का विधान।

पुटी–संज्ञा स्त्री० [सं० पुट] १. छोटा दोना। छोटा कटोरा। २. खाली स्थान जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके। ३. पुड़िया। ४. कौपीन। लँगोटी।

पुटीन–संज्ञा पुं० [अं० पुटी] किवाड़ों में शीशे बैठाने या लकड़ी के जोड़ आदि भरने *में काम आनेवाला एक मसाला।*

पुट्ठा–संज्ञा पुं० [सं० पुष्ट या पृष्ठ] १ चूतड़ का ऊपरी कुछ कड़ा भाग। २. चौपायों का विशेषतः घोड़ों का चूतड़। ३. घोड़ों की संख्या के लिये शब्द। ४. किसी पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग।

पुठवार–क्रि० वि० [हिं० पुट्ठा] पीछे। बगल में।

पुठवाल–संज्ञा पुं० [हिं० पुट्ठा + वाला] मददगार। पृष्ठरक्षक।

पुड़ा–संज्ञा पुं० [सं० पुट] [स्त्री० अल्पा० पुड़िया] बड़ी पुड़िया या बंडल।

पुड़िया–संज्ञा स्त्री० [सं० पुटिका] १. मोड़ *या लपेटकर संपुट के आकार का किया* हुआ कागज जिसके भीतर कोई वस्तु रखी जाय। २. पुड़िया में लपेटी हुई दवा की एक खुराक या मात्रा। ३. आधार-स्थान। खान। भंडार। घर।

पुण्य–वि० [सं०] पवित्र। शुभ। अच्छा।

संज्ञा पुं० १. वह कर्म जिसका फल शुभ हो। धर्म का कार्य। २. शुभ कर्म का संचय।

पुण्यकाल–संज्ञा पुं० [सं०] १ दान पुण्य करने का समय। २. पवित्र समय।
पुण्यक्षेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ जाने से पुण्य हो। तीर्थ।
पुण्यभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्यावर्त्त।
पुण्यवान्–वि० [सं० पुण्यवत] [स्त्री० पुण्यवती] पुण्य करनेवाला। धर्मात्मा।
पुण्यश्लोक–वि० [सं०] [स्त्री० पुण्यश्लोका] पवित्र चरित्र या आचरणवाला।
पुण्यस्थान–संज्ञा पुं० [सं०] तीर्थ स्थान।
पुण्याई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पुण्य + आई (प्रत्य०)] पुण्य का फल या प्रभाव।
पुण्यात्मा–वि० [सं० पुण्यात्मन्] जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो। धर्मात्मा।
पुण्याहवाचन–संज्ञा पुं० [सं०] देवकार्य्य के अनुष्ठान के पहले मंगल के लिये 'पुण्याह' शब्द का तीन बार कथन।
पुतरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पुतली"।
पुतला–संज्ञा पुं० [सं० पुत्रक] [स्त्री० पुतली] लकड़ी मिट्टी कपड़े आदि का बना हुआ पुरुष का वह आकार या मूर्ति जो विनोद या क्रीड़ा (खेल) के लिये हो।
मुहा०—किसी का पुतला बाँधना = किसी की निंदा करते फिरना। बदनामी करना।
पुतली–संज्ञा स्त्री० [हिं० पुतला] १. लकड़ी, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति या मूर्ति जो विनोद या क्रीड़ा (खेल) के लिये हो। गुड़िया। २. आँख के बीच का काला भाग।
मुहा०—पुतली फिर जाना = आँखें पथरा जाना। नेत्र स्तब्ध होना। (मरण चिह्न)
३ कपड़ा बुनने की कल या मशीन।
यौ०—पुतलीघर = कल कारखाना, विशेषतः कपड़ा बुनने का कारखाना।
पुताई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पोतना + आई (प्रत्य०)] पोतने की क्रिया भाव या मजदूरी।
पुत्त–संज्ञा पुं० दे० "पुत्र"।
पुत्तरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पुत्री"।
पुत्तलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुतली। २. गुड़िया।
पुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पुत्री] लड़का। बेटा।
पुत्रजीव–संज्ञा पुं० [सं०] इंगुदी से मिलता-जुलता एक बड़ा और सुंदर पेड़, जिसकी छाल और बीज दवा के काम आते हैं।
पुत्रवती–वि० स्त्री० [सं०] जिसके पुत्र हो। पुत्रवाली। पूती। (स्त्री)
पुत्रवधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्र की स्त्री।
पुत्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लड़की। बेटी। २. पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या। ३. गुड़िया। मूर्ति। पुतली। ४ आँख की पुतली। ५. स्त्री का चित्र।
पुत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। बेटी।
पुत्रेष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है।
पुदीना–संज्ञा पुं० [फा० पोदीनः] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों में बहुत अच्छी गंध होती है। इससे लोग चटनी आदि बनाते हैं।
पुद्गल–संज्ञा पुं० [सं०] १ स्पर्श, रस और वर्णवाला पदार्थ। (जैन) २. शरीर। देह। (बौद्ध) ३ परमाणु। ४. आत्मा।
पुनः–अव्य० [सं० पुनर्] १ फिर। दोबारा। दूसरी बार। २. उपरांत। पीछे। अनंतर।
पुन–संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।
पुनरपि–क्रि० वि० [सं०] फिर भी।
पुनरवसु†–संज्ञा पुं० दे० "पुनर्वसु"।
पुनरागमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. फिर से आना। दोबारा आना। २. फिर जन्म लेना।
पुनरावृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० पुनरावृत्त] १ फिर से घूमना। फिर से घूमकर आना। २ किए हुए काम को फिर करना। दोहराना। ३. एक बार पढ़कर फिर पढ़ना।
पुनरुक्तवदाभास–संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें शब्द सुनने से पुनरुक्ति सी जान पड़े, परंतु यथार्थ में न हो।
पुनरुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० पुनरुक्त] एक बार कही हुई बात को फिर कहना। कहे हुए वचन को फिर कहना।
पुनर्जन्म–संज्ञा पुं० [सं०] मरने के बाद फिर दूसरे शरीर में उत्पत्ति। एक शरीर छूटने पर दूसरा शरीर धारण।
पुनर्नवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जो फूलों के रंग के भेद से तीन प्रकार का होता है—श्वेत, रक्त और नील। गदहपूरना।
पुनर्भू–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विधवा स्त्री जिसका विवाह दूसरे पुरुष से हो।
पुनर्वसु–संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र। २. विष्णु। ३.

शिव। ४ कात्यायन मुनि। ५ एक लोक।
पुनि†‌—क्रि० वि० [सं० पुन] फिर। फिर से। दोबारा।
पुनी‌—संज्ञा पुं० [सं० पुण्य] पुण्यात्मा। संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्ण] पूर्णिमा। पूनो। क्रि० वि० [सं० पुनः] पुनः। फिर।
पुनीत—वि० [सं०] पवित्र। पाक।
पुन्न—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।
पुन्नाग—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुलताना चंपा। २. श्वेत कमल। ३. जायफल।
पुपली†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पोपला] बाँस की पतली पोली नली।
पुमान्—संज्ञा पुं० [सं०] मर्द। नर।
पुरंदर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुर, नगर या घर को तोड़नेवाला। २. इंद्र। ३ विष्णु।
पुरः—अव्य० [सं० पुरस्] १. आगे। २ पहले।
पुरःसर—वि० [सं०] १. अग्रगता। अगुआ। २. संगी। साथी। ३ समन्वित। सहित।
पुर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पुरी] १. नगर। शहर। कसबा। २. आगार। घर। ३. कोठा। अटारी। ४. लोक। भुवन। ५. नक्षत्र। पुंज। राशि। ६. देह। शरीर। ७. दुर्ग। किला। गढ़।
वि० [अ०] पूर्ण। भरा हुआ।
संज्ञा पुं० [देश०] कूएँ से पानी निकालने का चमड़े का डोल। चरसा।
पुरइन‌—संज्ञा स्त्री० [सं० पुटकिनी] १. कमल का पत्ता। २ कमल।
पुरखा—संज्ञा पुं० [सं० पुरुष] [स्त्री० पुरखिन] १ पूर्वज। पूर्व-पुरुष। बाप, दादा, परदादा आदि।
मुहा०—पुरखे तर जाना=पूर्व-पुरुषों को (पुत्र आदि के कृत्य से) परलोक में उत्तम गति प्राप्त होना। बड़ा भारी पुण्य या फल होना।
२ घर का बड़ा बूढ़ा।
पुचक—संज्ञा स्त्री० [हिं० पुचकार] १. चुमकार। पुचकार। २. बढ़ावा। उत्साह दान। ३ प्रेरणा। उसकावा। ४. समर्थन। हिमायत। तरफदारी।
पुरजा—संज्ञा पुं० [फा०] १. टुकड़ा। खंड।
मुहा०—पुरजे पुरजे करना या उड़ाना=खंड खंड करना। टूक टूक करना।
। टुकड़ा। कत्तल। ग। भाग।
मुहा०—चलता पुरजा=चालाक आदमी।
पुरत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] शहरपनाह। प्राकार। कोट। परकोटा।
पुरबला, पुरबुला†—वि० [सं० पूर्व+ला प्रत्य०)] [स्त्री० पुरबली, पुरबुली] १. पूर्व का। पहले का। २. पूर्वजन्म का।
पुरबिया—वि० [हिं० पूरब] [स्त्री० पुरबिनी] पूर्वदेश में उत्पन्न या रहनेवाला। पूरब का।
पुरवट†—संज्ञा पुं० [सं० पूर] चमड़े का बहुत बड़ा डोल जिसे कुएँ में डालकर बैलों की सहायता से सिंचाई के लिये पानी खींचते हैं। चरसा। मोट।
पुरवना†—क्रि० स० [हिं० पूरना] १. पूरना। भरना। पुजाना। २ पूरा करना।
मुहा०—साथ पुरवना=साथ देना।
क्रि० अ० १ पूरा होना। २. यथेष्ट होना। ३ उपयोग के योग्य होना।
पुरवा—संज्ञा पुं० [सं० पुर] छोटा गाँव। पुरा। खेड़ा।
संज्ञा पुं० [सं० पूर्व+वात] पूर्व दिशा से चलनेवाली वायु।
संज्ञा पुं० [सं० पुटक] मिट्टी का कुल्हड़।
पुरवाई, पुरवैया—संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्व+वायु] वह वायु जो पूर्व से चलती है।
पुरश्चरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी कार्य की सिद्धि के लिये पहले से ही उपाय सोचना और अनुष्ठान करना। २. किसी मंत्र स्तोत्र आदि को किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिये नियमपूर्वक जपना। प्रयोग।
पुरषा—संज्ञा पुं० दे० "पुरखा"।
पुरसा—संज्ञा पुं० [सं० पुरुष] साढ़े चार या पाँच हाथ की एक नाप।
पुरस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पुरस्कृत] १. आगे करने की क्रिया। २. आदर। पूजा। ३ प्रधानता। ४. स्वीकार। ५ पारितोषिक। उपहार। इनाम।
पुरस्कृत—वि० [सं०] १. आगे किया हुआ। २. आदृत। पूजित। ३. स्वीकृत। ४. जिसे इनाम या पुरस्कार मिला हो।
पुरहूत‌—संज्ञा पुं० दे० "पुरहूत"।
पुरा—अव्य० [सं०] १. पुरान समय में।
वि० २. प्राचीन। पुराना।
संज्ञा पुं० [सं० पुर] गाँव।
पुराकल्प—संज्ञा पुं० [सं० पहले व

एक प्रकार का अर्थवाद जिसमें प्राचीन काल का इतिहास कहकर किसी विधि के करने की ओर प्रवृत्त किया जाता है।

पुराकृत-वि० [सं०] पूर्व काल में किया हुआ। २. पूर्व-जन्म में किया हुआ।

पुराण-वि० [सं०] पुरातन। प्राचीन।
संज्ञा पुं० १. सृष्टि, मनुष्य, देवों, दानवों, आदि के ऐसे वृत्तांत जो पुरुष-परंपरा से चले आते हों। २. हिंदुओं के धर्म-संबंधी आख्यान-ग्रंथ जिनमें सृष्टि, लय और प्राचीन ऋषियों आदि के वृत्तांत रहते हैं। ये अठारह हैं। ३. अठारह की संख्या। ४. शिव। ५. कार्षापण।

पुरातत्व-संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल-संबंधी विद्या। प्रत्नशास्त्र।

पुरातन-वि० [सं०] प्राचीन। पुराना।
संज्ञा पुं० विष्णु।

पुरान†-वि० दे० "पुराना"।
संज्ञा पुं० दे० "पुराण"।

पुराना- वि० [सं० पुराण] [स्त्री० पुरानी] १. जिसे उत्पन्न हुए या बने बहुत काल हो गया हो। बहुत दिनों का। प्राचीन। पुरातन। २. जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो। जीर्ण। ३. जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो। परिपक्व।
मुहा०—पुराना खुर्रांट = १. बूढ़ा। २. बहुत दिनों का अनुभवी। पुराना घाघ = गहरा चालाक।
४. अगले समय का। प्राचीन। अतीत। ५. बहुत काल या समय का। ६. जिसका चलन अब न हो।
क्रि० स० [हिं० पूरना का प्रे०] १. पूरा कराना। पुजवाना। भराना। २. पालन कराना। अनुकूल कराना। ३. पूरा करना। भरना। ४. पालन करना। अनुसरण करना।

पुरारि-संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

पुराल†*-संज्ञा पुं० दे० "पयाल"।

पुरावृत्त-संज्ञा पुं० [सं०] पुराना वृत्तांत। पुराना हाल। इतिहास।

पुरि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुरी। २. नदी।
संज्ञा पुं० दशनामी संन्यासियों में एक।

पुरिखा*-संज्ञा पुं० दे० "पुरखा"।

पुरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नगरी। शहर। २. जगन्नाथपुरी। पुरुषोत्तम धाम।
*-संज्ञा पुं० [सं०] विष्ठा। मल। गू।

पुरु-संज्ञा पुं० [सं०] १. देवलोक। २. दैत्य। ३. पराग। ४. शरीर। ५. एक प्राचीन राजा जो नहुष के पुत्र ययाति के पुत्र थे।

पुरुख*†-संज्ञा पुं० दे० "पुरुष"।

पुरुष-संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य। आदमी। २. नर। ३. सांख्य में प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी, अकर्ता और असंग चेतन पदार्थ। आत्मा। ४. विष्णु। ५. सूर्य। ६. जीव। ७. शिव। ८. व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम या क्रियापदवाचक (कहनेवाले) के लिये प्रयुक्त हुआ है अथवा संबोध्य (जिससे कहा जाय) के लिये अथवा अन्य के लिये। जैसे—'मैं' उत्तम पुरुष हुआ, 'वह' प्रथम पुरुष और 'तुम' मध्यम पुरुष। ९. मनुष्य का शरीर या आत्मा। १०. पूर्वज। ११. पति। स्वामी।

पुरुषत्व-संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष होने का भाव। पुंस्त्व। मरदानगी।

पुरुषपुर-संज्ञा पुं० [सं०] गांधार की प्राचीन राजधानी। आजकल का पेशावर।

पुरुषमेध-संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक यज्ञ जिसमें नर-बलि की जाती थी।

पुरुषसूक्त-संज्ञा पुं० [सं०] ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त जो "सहस्रशीर्षा" से आरंभ होता है।

पुरुषानुक्रम-संज्ञा पुं० [सं०] पुरखों की चली आती हुई परंपरा।

पुरुषायित बंध-संज्ञा पुं० [सं०] काम-शास्त्र के अनुसार विपरीत रति।

पुरुषारथ*-संज्ञा पुं० दे० "पुरुषार्थ"।

पुरुषार्थ-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुष के उद्योग का विषय। पुरुष का लक्ष्य। २. पौरुष। उद्यम। पराक्रम। ३. शक्ति। सामर्थ्य। बल।

पुरुषार्थी-वि० [सं० पुरुषार्थिन्] १. पुरुषार्थ करनेवाला। २. उद्योगी। ३. परिश्रमी। ४. बली।

पुरुषोत्तम-संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ पुरुष। २. विष्णु। ३. जगन्नाथ जिनका मंदिर उड़ीसा में है। ४. कृष्णचंद्र। ५. ईश्वर। नारायण। ६. मल-मास। अधिक मास।

पुरुहूत-संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

पुरूरवा-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन राजा जिसको ऋग्वेद में इला का पुत्र

कहा गया है। इनकी पत्नी उर्वशी थी। २. विश्वेदेव।

पुरोडाश–संज्ञा पुं० [सं०] १. यव आदि के आटे की बनी हुई टिकिया जो यज्ञ के समय आहुति देने के लिये कपाल में पकाई जाती थी। २. हवि। ३. वह वस्तु जिसका यज्ञ में होम किया जाय। यज्ञभाग। ४. सोमरस।

पुरोधा–संज्ञा पुं० [सं० पुरोधस्] पुरोहित।

पुरोहित–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पुरोहितानी] वह प्रधान याजक जो यजमान के यहाँ यज्ञादि गृहकर्म और संस्कार करे कराए। कर्मकांड करानेवाला।

पुरोहिताई–संज्ञा स्त्री० [सं० पुरोहित + आई (प्रत्य०)] पुरोहित का काम।

पुर्त्तगाल–संज्ञा पुं० [अं०] योरप के दक्षिण-पश्चिम कोने का एक छोटा प्रदेश।

पुर्त्तगाली–वि० [हिं० पुर्त्तगाल] १. पुर्त्तगाल संबंधी। २. पुर्त्तगाल का रहनेवाला।

पुर्तगीज–वि० [अं०] पुर्तगाली।

पुल–संज्ञा पुं० [फा०] नदी, जलाशय आदि के आर-पार जाने का रास्ता जो नाव पाटकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया जाय। सेतु।

मुहा०—किसी बात का पुल बाँधना = झड़ी बाँधना। बहुत अधिकता कर देना। अतिशय करना। पुल टूटना = बहुतायत होना। अधिकता होना। अटाला या जमघट लगना।

पुलक–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से रोमकूपों (छिद्रों) का प्रफुल्ल होना। रोमांच। २ एक प्रकार का रत्न। याकूत। महताब।

पुलकना–क्रि० अ० [सं० पुलक + ना (प्रत्य०)] पुलकित होना। प्रेम, हर्ष आदि से प्रफुल्ल होना। गद्गद होना।

पुलकाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पुलकना] पुलकित होने का भाव। गद्गद होना।

पुलकालि, पुलकावलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] पुलकावलि। हर्ष से प्रफुल्ल रोमावली।

पुलकित–वि० [सं०] प्रेम या हर्ष के वेग से जिसके रोएँ उभर आए हों। गद्गद।

पुलटा–संज्ञा स्त्री० दे० "पलटा"।

पुलटिस–संज्ञा स्त्री० [अं० पोल्टिस] फोड़े, घाव आदि को पकाने के लिये उन पर चढ़ाया हुआ दवाओं का मोटा लेप।

पुलपुला–वि० [अनु०] जो भीतर इतना ढीला और मुलायम हो कि दबाने से धँसे।

पुलपुलाना–क्रि० स० [वि० पुलपुला] १. किसी मुलायम चीज को दबाना। २. मुँह में लेकर दबाना। चूसना।

पुलस्त्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि जिनकी गिनती सप्तर्षियों और प्रजापतियों में है। ये ब्रह्मा के मानस-पुत्रों में थे। २. शिव।

पुलह–संज्ञा पुं० [सं०] १ सप्तर्षियों में एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस-पुत्र और प्रजापति थे। २. शिव।

पुलहना–क्रि० अ० दे० "पलुहना"।

पुलाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक कदन्न। अँकरा। २. उबाला हुआ चावल। भात। ३. भात का माँड़। पीच। ४ पुलाव।

पुलाव–संज्ञा पुं० [सं० पुलाक। मि० फा० पुलाव] एक व्यंजन जो मांस और चावल को एक साथ पकाने से बनता है। मांसोदन।

पुलिंद–संज्ञा पुं० [सं०] १. भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति। २. वह देश जहाँ पुलिंद जाति बसती थी।

पुलिंदा–संज्ञा पुं० [हिं० पूला] लपेटे हुए कपड़े, कागज़ आदि का छोटा मुट्ठा। गड्डी। बंडल।

पुलिन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी के भीतर से हाल की निकली हुई ज़मीन। चर। २. तट। किनारा।

पुलिस–संज्ञा स्त्री० [अं०] प्रजा की जान और माल की हिफ़ाज़त के लिये मुकर्रर सिपाही या अफ़सर।

पुलिहोरा–संज्ञा पुं० [दे०] एक पकवान।

पुलोमजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्राणी। शची।

पुलोमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] भृगु की पत्नी का नाम।

पुवा–संज्ञा पुं० दे० "मालपूवा"।

पुश्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पृष्ठ। [illegible] पीठ। २. वंश-परंपरा में कोई एक [illegible] पिता, पितामह, प्रपितामह [illegible] बेटा, पोता आदि का पूर्वापर [illegible]

यौ०—पुश्त दर पुश्त = [illegible] पुश्तहा पुश्त = कई पीढ़ि[illegible]

पुश्तक–संज्ञा स्त्री० [[illegible] आदि का पीछे [illegible] मारना। दोलत्ती।

पुश्तनामा–[illegible] पीढ़ीनामा। [illegible]

पुश्ता–संज्ञा पु० [फा० पुश्तः] १. पानी की रोक या मज़बूती के लिये किसी दीवार से लगातार कुछ ऊपर तक जमाया हुआ मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का ढालुआँ टीला । २. बाँध । ऊँची मेंड़ । ३. किताब की जिल्द के पीछे का चमड़ा । पुट्ठा ।

पुश्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. टेक । सहारा । आश्रय । थाम । २. सहायता । पृष्ठबल । मदद । ३. पक्ष । तरफ़दारी । ४. बड़ा तकिया । गाव-तकिया ।

पुश्तैनी–वि० [हिं० पुश्त] १. जो कई पुश्तों से चला आता हो । दादा, परदादा के समय का पुराना । २. आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला ।

पुष्कर–संज्ञा पु० [सं०] १. जल । २ जलाशय । ताल । ३. कमल । ४. करछी का कटोरा । ५. हाथी की सूँड़ का अगला भाग । ६. आकाश । ७. बाण । तीर । ८ सर्प । ९. युद्ध । १०. भाग । अंश । ११. पुष्करमूल । १२. सूर्य । १३. एक दिग्गज । १४. सारस पक्षी । १५. विष्णु । १६. शिव । १७. बुद्ध । १८. पुराणों में कहे गए सात द्वीपों में से एक । १९ एक तीर्थ जो अजमेर के पास है ।

पुष्करमूल–संज्ञा पु [सं०] एक ओषधि का मूल या जड़ जो आजकल नहीं मिलती ।

पुष्कल–संज्ञा पु० [सं०] १. चार ग्रास की भिक्षा । २. अनाज नापने का एक प्राचीन मान । ३. राम के भाई भरत के दो पुत्रों में से एक । ४. शिव ।
वि० १. बहुत । अधिक । ढेर सा । प्रचुर । २. भरा-पूरा । परिपूर्ण । ३ श्रेष्ठ । ४. उपस्थित । ५. पवित्र ।

पुष्ट–वि० [सं०] १. पोषण किया हुआ । पाला हुआ । २. तैयार । मोटा-ताज़ा । बलिष्ठ । ३. मोटा-ताज़ा करनेवाला । बलवर्द्धक । ४. दृढ़ । मज़बूत । पक्का ।

पुष्टई–संज्ञा स्त्री० [सं० पुष्ट+ई० (प्रत्य०)] बलवीर्यवर्द्धक औषध । ताकत की दवा ।

पुष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मज़बूती । पोढ़ापन । दृढ़ता ।

पुष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पोषण । २. मोटा-ताज़ा पन । बलिष्ठता । ३. वृद्धि । संतति की बढ़ती । ४. दृढ़ता । मज़बूती । ५. बात का समर्थन । पक्कापन ।

पुष्टिकर, पुष्टिकारक–वि० [सं०] पुष्टि करनेवाला । बलवीर्यकारक ।

पुष्टिमार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] वल्लभ संप्रदाय । वल्लभाचार्य के मतानुकूल वैष्णव भक्ति-मार्ग ।

पुष्प–संज्ञा पु० [सं०] १. पौधों का फूल । २ ऋतुमती स्त्री का रज । ३. आँख का एक रोग । फूली । ४ कुबेर का विमान । पुष्पक । ५ मास । (वाममार्गी)

पुष्पक–संज्ञा पु० [सं०] १ फूल । २. कुबेर का विमान जिसे उनसे रावण ने छीना था और राम ने रावण से छीनकर फिर कुबेर को दे दिया था । ३. आँख का एक रोग । फूला । फूली ।

पुष्पदंत–संज्ञा पु० [सं०] १. वायुकोण का दिग्गज । २. शिव का अनुचर एक गंधर्व ।

पुष्पधन्वा–संज्ञा पु० [सं० पुष्पधन्वन्] कामदेव ।

पुष्पध्वज–संज्ञा पु० [सं०] कामदेव ।

पुष्पपुर–संज्ञा पु० [सं०] प्राचीन पाटलिपुत्र (पटना) का एक नाम ।

पुष्पमित्र–संज्ञा पु० दे० "पुष्यमित्र" ।

पुष्परज–संज्ञा पु० [सं० पुष्परजस्] पराग । फूलों की धूल ।

पुष्पराग–संज्ञा पु० [सं०] पुखराज ।

पुष्परेणु–संज्ञा पु० [सं०] पराग ।

पुष्पवती–वि० स्त्री० [सं०] १. फूलवाली । फूली हुई । २. रजोवती । रजस्वला । ऋतुमती ।

पुष्पवाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] फुलवारी । फूलों का बगीचा । उद्यान ।

पुष्पबाण–संज्ञा पु० [सं०] कामदेव ।

पुष्पवृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों की वर्षा । ऊपर से फूल गिरना या गिराना ।

पुष्पशर–संज्ञा पु० [सं०] कामदेव ।

पुष्पांजलि–संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों से भरी अंजली भरकर फूल जो किसी देवता या पूज्य पुरुष पर चढ़ाए जायँ ।

पुष्पिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] अध्याय के अंत में वह वाक्य जिसमें कहे हुए प्रसंग की समाप्ति सूचित की जाती है और जो प्रायः "इति श्री" से आरंभ होता है ।

पुष्पित–वि० [सं०] पुष्पों से युक्त । फूला हुआ ।

पुष्पिताग्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्द्ध समवृत्त ।

पुष्पोद्यान-संज्ञा पुं० [सं०] फुलवारी। पुष्पवाटिका।
पुष्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुष्टि। पोषण। २. मूल या सार वस्तु। ३. आठवाँ नक्षत्र जिसकी आकृति वाण की सी है। तिष्य। ४. पूस का महीना।
पुष्यमित्र-संज्ञा पुं० [सं०] मौर्यों के पीछे मगध में शुंग वंश का राज्य प्रतिष्ठित करनेवाला एक प्रतापी राजा।
पसाना:†-क्रि० अ० [हिं० पोसना] १. पूरा पड़ना। बन पड़ना। २. अच्छा लगना। शोभा देना।
पुस्त:‡-संज्ञा स्त्री० दे० "पुश्त"।
पुस्तक-संज्ञा स्त्री० [सं०] पोथी। किताब।
पुस्तकाकार-वि० [सं०] पोथी के रूप का। पुस्तक के आकार का।
पुस्तकालय-संज्ञा पुं० [सं०] वह भवन या घर जिसमें पुस्तकों का संग्रह हो।
पुहकर:-संज्ञा पुं० दे० "पुष्कर"।
पुहप, पुहुप-संज्ञा पुं० [सं० पुष्प] फूल।
पुहमी:-संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी।
पुहरेनु:-संज्ञा पुं० [सं० पुष्परेणु] पराग।
पुहुवी:-संज्ञा स्त्री० [सं० पृथिवी] भूमि।
पूँछ-संज्ञा स्त्री० [सं० पुच्छ] १. जंतुओं, पक्षियों, कीड़ों आदि के शरीर में सबसे अंतिम या पिछला भाग। पुच्छ। लांगूल। दुम। २. किसी पदार्थ के पीछे का भाग। ३. पिछलग्गू। पुछल्ला।
पूँजी-संज्ञा स्त्री० [सं० पुंज] १. संचित धन। संपत्ति। जमा। २. वह धन जो किसी व्यापार में लगाया गया हो। ३. धन। रुपया पैसा। ४. किसी विशेष विषय में किसी की योग्यता। ५. समूह। ढेर।
पूँजीदार-संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी + फा० दार] पूँजीपति।
पूँजीपति-संज्ञा पुं० [हिं० पूँजी + सं० पति] वह जिसके पास पूँजी हो या जो किसी काम में पूँजी लगावे। पूँजीदार।
पूँठ‡-संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठ] पीठ।
पूआ-संज्ञा० पुं० [सं० पूप, अपूप] एक प्रकार की पूरी जो आटे को गुड़ या चीनी के रस में घोलकर घी में छानी जाती है। मालपुआ।
पूखन:-संज्ञा पुं० दे० "पोषण"।
पूग-संज्ञा पुं० [सं०] १. सुपारी का पेड़ या फल। २. ढेरा। ३. छंद। ४. समूह। ढेर। ५. किसी विशेष कार्य के लिये बना हुआ संघ। कंपनी।
पूगना-क्रि० अ० [हिं० पूजना] पूरा होना। पूजना।
पूगी-संज्ञा स्त्री० [सं० पूगफल] सुपारी।
पूगीफल-संज्ञा पुं० [सं०] सुपारी।
पूछ-संज्ञा स्त्री० [हिं० पूछना] १. पूछने का भाव। जिज्ञासा। २ खोज। चाह। ज़रूरत। तलब। ३. आदर। इज्ज़त।
पूछ ताछ-संज्ञा स्त्री० [हिं० पूछना] किसी बात का पता लगाने के लिये बार बार पूछना। जिज्ञासा।
पूछना-क्रि० स० [सं० पृच्छन] १. कुछ जानने के लिये किसी से प्रश्न करना। दरियाफ्त करना। जिज्ञासा करना। २. खोज-खबर लेना। ३. किसी के प्रति सत्कार का भाव प्रकट करना।
मुहा०—बात न पूछना = १. तुच्छ जानकर ध्यान न देना। २. आदर न करना।
४. आदर करना। गुण या मूल्य जानना। ५ ध्यान देना। टोकना।
पूछ पाछ-संज्ञा स्त्री० दे० "पूछ-ताछ"।
पूछरी:†-संज्ञा स्त्री० [हिं० पूँछ] १. दुम। पूँछ। २ पीछे का भाग।
पूछाताछी, पूछापाछी-संज्ञा स्त्री० दे० "पूछताछ"।
पूजक-संज्ञा पुं० [सं०] पूजा करनेवाला।
पूजन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पूजक, पूजनीय, पूजितव्य, पूज्य] १. पूजा की क्रिया। देवता की सेवा और वंदना। अर्चन। आराधना। २. आदर। सम्मान।
पूजना-क्रि० स० [सं० पूजन] १. देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिये कोई अनुष्ठान या कर्म करना। अर्चना करना। आराधन करना। २. आदर-सत्कार करना। ३. सिर झुकाना। सम्मान करना। ४. घूस देना। रिशवत देना। क्रि० अ० [सं० पूर्ण] १. पूरा होना। भरना। २. गहराई का भरना या बराबर हो जाना। ३ पटना। चुकता होना। ४. बीतना।
पूजनीय-वि० [सं०] १. अर्चनीय। २. आदरणीय।
पूजमान-वि० दे० "पू

पूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ईश्वर या देवी-देवता के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव प्रकट करनेवाला कार्य्य। अर्चना। आराधन। २. वह धार्मिक कृत्य जो जल, फूल आदि किसी देवी-देवता पर चढ़ाकर या उसके निमित्त रखकर किया जाता है। आराधन। अर्चा। ३. आदर-सत्कार। खातिर। ४. किसी को प्रसन्न करने के लिये कुछ देना। ५. दंड। ताड़ना।

पूजित–वि० [सं०] [स्त्री० पूजिता] जिसकी पूजा की गई हो। आराधित। अर्चित।

पूज्य–वि० [सं०] [स्त्री० पूज्या] १. पूजा के योग्य। पूजनीय। २. आदर के योग्य।

पूज्यपाद–वि० [सं०] जिसके पैर पूजनीय हों। अत्यंत पूज्य। अत्यंत मान्य।

पूठि*†–संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठ] पीठ।

पूड़ा–संज्ञा पुं० दे० "पूआ"।

पूड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पूरी"।

पूत–वि० [सं०] पवित्र। शुद्ध। शुचि।
संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्य। २. शंख। ३. सफेद कुश। ४. पलास। ५. तिल वृक्ष।
संज्ञा पुं० [सं० पुत्र] बेटा। पुत्र।

पूतना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक दानवी जो कंस के भेजने से बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल आई थी। इसे कृष्ण ने मार डाला था। २. एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग।

पूतरा†–संज्ञा पुं० दे० "पुतला"।
संज्ञा पुं० [सं० पुत्र] पुत्र। लड़का।

पूति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पवित्रता। शुचिता। २. दुर्गंध। बदबू।

पूती–संज्ञा स्त्री० [सं० पोत=गट्ठा] १. वह जड़ जो गाँठ के रूप में हो। २. लहसुन की गाँठ।

पून–संज्ञा० पुं० दे० "पुण्य"।
संज्ञा पुं० दे० "पूर्ण"।

पूनिउँ–संज्ञा स्त्री० दे० "पूनो"।

पूनी–संज्ञा स्त्री० [सं० पिंजिका] धुनी हुई रूई की वह बत्ती जो चरखे पर सूत कातने के लिये तैयार की जाती है।

पूनो†–संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णिमा"।

पूप–संज्ञा पुं० [सं०] पूआ। मालपूआ।

पूय–संज्ञा पुं० [सं०] पीप। मवाद।

पूर–वि० [सं० पूर्ण] १. दे० "पूर्ण"। वे मसाले या दूसरे पदार्थ जो किसी पकवान के भीतर भरे जाते हैं।

पूरक–वि० [सं०] पूरा करनेवाला।
संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राणायाम विधि के तीन भागों में से पहला जिसमें श्वास को नाक से खींचते हुए भीतर की ओर ले जाते हैं। २. बिजौरा नीबू। ३. वे दस पिंड जो हिंदुओं में किसी के मरने पर उसके मरने की तिथि से दसवें दिन तक नित्य दिए जाते हैं। ४. वह अंक जिसके द्वारा गुणा किया जाता है। गुणक अंक।

पूरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पूरणीय] १. भरने की क्रिया। २. समाप्त या तमाम करना। ३. अंकों का गुणा करना। अंक-गुणन। ४. पूरक पिंड। दशाह-पिंड। ५. मेह। वृष्टि। ६. समुद्र।
वि० [सं०] पूरक। पूरा करनेवाला।

पूरन*–वि० दे० "पूर्ण"।

पूरनपरब*†–संज्ञा पुं० दे० "पूर्णमासी"।

पूरनपूरी–संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्ण + हिं० पूरी] एक प्रकार की मीठी कचौरी।

पूरनमासी–संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णमासी"।

पूरना†–क्रि० स० [सं० पूरण] १. कमी या त्रुटि को पूरा करना। पूर्त्ति करना। २. आच्छादित करना। ढाँकना। ३. (मनोरथ) सफल करना। सिद्ध करना। ४. मंगल अवसरों पर आटे, अबीर आदि से देवताओं के पूजन आदि के लिये चौखूँटे क्षेत्र आदि बनाना। चौक बनाना। ५. बटना। जैसे, तागा पूरना। ६. फूँकना। बजाना।
क्रि० अ० पूर्ण होना। भर जाना।

पूरब–संज्ञा पुं० [सं० पूर्व] वह दिशा जिसमें सूर्य का उदय होता है। पूर्व। प्राची।
*†वि०, क्रि० वि० दे० "पूर्व"।

पूरबल*†–संज्ञा पुं० [हिं० पूरबला] १. पुराना ज़माना। २. पूर्वजन्म।

पूरबला*–वि० पुं० [सं० पूर्व + हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० पूरबली] १. प्राचीन काल का। पुराना। २. पहले जन्म का।

पूरबी–वि० दे० "पूर्वी"।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का दादरा। (बिहार)

पूरा–वि० पुं० [सं० पूर्ण] [स्त्री० पूरी] १. जो खाली न हो। भरा। परिपूर्ण। २. समूचा। समग्र। समस्त। ३. जिसमें कोई कमी या कसर न हो। पूर्ण। कामिल। ४. भरपूर। यथेच्छ। काफ़ी। बहुत।

मुहा०—किसी बात का पूरा = १ जिसके पास कोई वस्तु यथेष्ट या प्रचुर हो। २ पक्का। दृढ़। मजबूत। किसी का पूरा पड़ना = कार्य्य पूर्ण हो जाना। सामग्री न घटना।
४ संपन्न। पूर्ण संपादित। कृत।
मुहा०—(कोई काम) पूरा उतरना = अच्छी तरह होना। जैसा चाहिए वैसा ही होना। बात पूरी उतरना = ठीक निकलना। सत्य ठहरना। दिन पूरे करना = समय बिताना। किसी प्रकार कालक्षेप करना। (दिन) पूरे होना = अंतिम समय निकट आना।
६ तुष्ट। पूर्ण।

पूरित—वि० [सं०] १ भरा हुआ। परिपूर्ण। २ तृप्त। ३ गुणा किया हुआ। गुणित।

पूरी—संज्ञा स्त्री० [सं० पूलिका] १ एक प्रसिद्ध पक्वान जिसे रोटी की तरह बेलकर खौलते घी में छान लेते हैं। २ मृदंग, ढोल आदि के मुँह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा।

पूर्ण—वि० [सं०] १ पूरा। भरा हुआ। परिपूर्ण। २ जिसे कोई इच्छा या अपेक्षा न हो। अभावशून्य। ३ जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो। परितृप्त। ४. भरपूर। यथेष्ट। काफी। ५ समूचा। अखंडित। सकल। ६ समस्त। सारा। ७ सिद्ध। सफल। ८ जो पूरा हो चुका हो। समाप्त।

पूर्णकाम—वि० [सं०] १ जिसकी सारी इच्छाएँ तृप्त हो चुकी हों। २ निष्काम। कामनाशून्य।

पूर्णचंद्र—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्णिमा का चंद्रमा।

पूर्णतया, पूर्णतः—क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

पूर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्ण का भाव। पूर्ण होना।

पूर्णप्रज्ञ—वि० [सं०] पूर्ण ज्ञानी।
संज्ञा पुं० पूर्णप्रज्ञदर्शन के कर्त्ता मध्वाचार्य्य।

पूर्णप्रज्ञ दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] वेदांतसूत्र के आधार पर बना हुआ एक दर्शन।

पूर्णमासी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चांद्र मास की अंतिम तिथि जिसमें चंद्रमा अपनी सारी कलाओं से पूर्ण होता है। पूर्णिमा।

पूर्ण विराम—संज्ञा पुं० [सं०] लिपि प्रणाली में वह चिह्न जो वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जाता है।

पूर्णायु—संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्णायुस्] १. सौ वर्ष की आयु। २. पूरी आयु।
वि० सौ वर्ष तक जीनेवाला।

पूर्णावतार—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर या किसी देवता का संपूर्ण कलाओं से युक्त अवतार।

पूर्णाहुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह आहुति जिसे देकर होम समाप्त करते हैं। २. किसी कर्म की समाप्ति की क्रिया।

पूर्णिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णमासी।

पूर्णोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उसके चारों अंग—अर्थात् उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म-प्रकट रूप से प्रस्तुत हों।

पूर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ पालन। २ बावली, देवगृह आराम (बगीचा), सड़क आदि बनाने का काम।
वि० १. पूरित। २ ढका हुआ।

पूर्तविभाग—संज्ञा पुं० [सं० पूर्त+विभाग] वह सरकारी महकमा जिसका काम सड़क, पुल आदि बनवाना है। तामीर का महकमा।

पूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी आरंभ किए हुए कार्य की समाप्ति। २ पूर्णता। पूरापन। ३ किसी काम में जो वस्तु चाहिए, उसकी कमी को पूरा करने की क्रिया। ४ वापी, कूप या तड़ाग आदि का उत्सर्ग। ५ भरने का भाव। पूरण। ६ गुणा करने का भाव। गुणन।

पूर्व—संज्ञा पुं० [सं०] वह दिशा जिस ओर सूर्य निकलता हुआ दिखलाई देता है। पश्चिम के सामने की दिशा।
वि० [सं०] १ पहले का। २ आगे का। अगला। ३ पुराना। ४ पिछला।
क्रि० वि० पहले। पेश्तर।

पूर्वक—क्रि० वि० [सं०] साथ। सहित।

पूर्वकालिक—वि० [सं०] १ जिसकी उत्पत्ति या जन्म पूर्व काल में हुआ हो। २ पूर्व कालीन। पूर्व काल-संबंधी।

पूर्वकालिक क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो।

पूर्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा भाई। अग्रज। २ बाप, दादा, परदादा आदि। पूर्व पुरुष। पुरखा।

पूर्वजन्म—संज्ञा पुं० [सं० पूर्वजन्मन्] वर्तमान से पहले का जन्म। पिछला जन्म

पूर्व पक्ष–संज्ञा पु० [सं०] १ शास्त्रीय विषय के संबंध में उठाई हुई बात, प्रश्न या शंका। २ कृष्ण पक्ष। ३ मुद्दई का दावा।

पूर्वपक्षी–संज्ञा पु० [सं० पूर्वपक्षिन्] १. वह जो पूर्वपक्ष उपस्थित करे। २ वह जो दावा दायर करे।

पूर्वफाल्गुनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में ग्यारहवां नक्षत्र।

पूर्वभाद्रपद संज्ञा पु० [सं०] २७ नक्षत्रों में पचीसवां नक्षत्र।

पूर्वमीमांसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंदुओं का जैमिनि कृत एक दर्शन जिसमें कर्मकांड-संबंधी बातों का निर्णय किया गया है।

पूर्वरंग–संज्ञा पु० [सं०] वह संगीत या स्तुति आदि जो नाटक आरंभ होने से पहले विघ्नों की शांति या दर्शकों को सावधान करने के लिये होती है।

पूर्वराग–संज्ञा पु० [सं०] साहित्य में नायक अथवा नायिका की एक अवस्था जो दोनों का संयोग होने से पहले प्रेम के कारण होती है। प्रथमानुराग। पूर्वानुराग।

पूर्वरूप–संज्ञा पु० [सं०] १ वह आकार जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। २ किसी वस्तु का वह चिह्न या लक्षण जो उस वस्तु के उपस्थित होने के पहले ही प्रकट हो। आगमसूचक लक्षण। आसार।

पूर्ववत्–क्रि० वि० [सं०] पहले की तरह। जैसा पहले था, वैसा ही।
संज्ञा पु० किसी कार्य्य का वह अनुमान जो उसके कारण को देखकर उसके होने से पहले ही किया जाय।

पूर्ववर्ती–वि० [सं० पूर्ववर्तिन्] पहले का। जो पहले हो या रह चुका हो।

पूर्ववृत्त–संज्ञा पु० [सं०] इतिहास।

पूर्वानुराग–संज्ञा पु० [सं०] वह प्रेम जो किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होता है। पूर्वराग।

पूर्वापर–क्रि० वि० [सं०] आगे-पीछे।
वि० आगे का और पीछे का। अगला और पिछला।

पूर्वापर्य–संज्ञा पु० [सं०] पूर्वापर का भाव।

पूर्वाफाल्गुनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में ग्यारहवां नक्षत्र।

[illegible] पु० [सं०] २७ नक्षत्रों में [illegible] नक्षत्र।

पूर्वार्द्ध–संज्ञा पु० [सं०] पहला आधा भाग। शुरू का आधा हिस्सा।

पूर्वाषाढा–संज्ञा स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में बीसवां नक्षत्र जिसमें चार तारे हैं।

पूर्वाह्न–संज्ञा पु० [सं०] सबेरे से दुपहर तक का समय।

पूर्वी–वि० [सं० पूर्वीय] पूर्व दिशा से संबंध रखनेवाला। पूरब का।
संज्ञा पु० १ पूरब में होनेवाला एक प्रकार का चावल। २. एक प्रकार का दादरा जिसकी भाषा बिहारी होती है। ३. संपूर्ण जाति का एक राग।

पूर्वोक्त–वि० [सं०] पहले कहा हुआ। जिसका जिक्र पहले आ चुका हो।

पूला–संज्ञा पु० [सं० पूलक] [स्त्री० अल्पा० पूली] मूँज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा।

पूषण–संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य। २. पुराणानुसार बारह आदित्यों में से एक। ३ एक वैदिक देवता जो कहीं सूर्य के रूप में और कहीं पशुओं के पोषक के रूप में पाए जाते हैं।

पूषा–संज्ञा पु० दे० "पूषण"।

पूस–संज्ञा पु० [सं० पौष] वह चांद्र मास जो अगहन के बाद पड़ता है। पौष।

पृक्का–संज्ञा स्त्री० [सं०] असबरग।

पृच्छक–वि० [सं०] १. पूछनेवाला। प्रश्न करनेवाला। २. जिज्ञासु।

पृतना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेना का एक विभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घुड़सवार और १२१५ पैदल सिपाही होते थे। २. सेना। फौज। ३ युद्ध।

पृथक्–वि० [सं०] [संज्ञा पृथक्ता] भिन्न। अलग। जुदा।

पृथक्करण–संज्ञा पु० [सं०] अलग करने का काम।

पृथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंतिभोज की कन्या कुंती का दूसरा नाम।

पृथिवी–संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

पृथु–वि० [सं०] १. चौड़ा। विस्तृत। २. बड़ा। महान्। ३ अगणित। असंख्य। ४. चतुर। प्रवीण।
संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. विष्णु। ३. शिव। ४. एक विश्वेदेव। ५. राजा वेणु के पुत्र का नाम।
वि० जिसकी कीर्ति बहुत अधिक हो।

पृथुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथु होने का भाव। २. विस्तार। फैलाव।

पृथ्वी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौर-जगत् का वह ग्रह जिस पर हम सब लोग रहते हैं। अवनी। इला। धरा। २. पंच भूतों या तत्वों में से एक जिसका प्रधान गुण गंध है।. ३ पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जो मिट्टी और पत्थर आदि का है और जिस पर हम सब लोग चलते फिरते हैं। भूमि। ज़मीन। धरती। (मुहा० के लिये दे० "ज़मीन") ४. मिट्टी। ५ सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

पृथ्वीतल-संज्ञा पुं० [सं०] १ ज़मीन की सतह। वह धरातल जिस पर हम लोग चलते फिरते हैं। २. संसार। दुनिया।

पृथ्वीनाथ-संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

पृश्नि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुतप नामक राजा की रानी का नाम। २. चितले रंग की गाय। चितकबरी गाय। ३. पिठवन। ४. रश्मि। किरण।

पृष्ट-वि० [सं०] पूछा हुआ।

पृष्ठ-संज्ञा पुं० [सं०] १. पीठ। २ किसी वस्तु का ऊपरी तल। ३ पीछे का भाग। पीछा। ४. पुस्तक के पन्ने का एक ओर का तल। ५ पुस्तक का पन्ना। पन्ना।

पृष्ठपोषक-संज्ञा पुं० [सं०] १. पीठ ठोकनेवाला। २ सहायक। मददगार।

पृष्ठभाग-संज्ञा पुं० [सं०] १ पीठ। पुश्त। २. पिछला भाग।

पृष्ठवंश-संज्ञा पुं० [सं०] रीढ़।

पेंग-संज्ञा स्त्री० [हिं० पेंग] झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर को जाना।

मुहा०—पेंग मारना=झूले पर झूलते समय उस पर इस प्रकार ज़ोर पहुँचाना जिसमें उसका वेग बढ़ जाय और दोनों ओर वह दूर तक झूले।

पेंडुकी-संज्ञा स्त्री० [सं० पण्डुक] १. पण्डुक पक्षी। फाख़्ता। २ सुनारों की फुँकनी। संज्ञा स्त्री० दे० "गुझिया"।

पेंदा-संज्ञा पुं० [सं० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पेंदी] किसी वस्तु का निचला भाग जिसके आधार पर वह ठहरती हो। तला।

पेउसी†-संज्ञा स्त्री० [सं० पीयूष] १ दे० "पेउस"। २. एक प्रकार का पकवान। इंदर।

पेखक*-संज्ञा पुं० [सं० प्रेक्षक] देखनेवाला।

पेखना*†-क्रि० स० [सं० प्रेक्षण] देखना।

पेच-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. घुमाव। फिराव। चक्कर। २. उलझन। झंझट। बखेड़ा। ३. चालाकी। चालबाज़ी। धूर्तता। ४ पगड़ी की लपेट। ५. कल। यंत्र। मशीन। ६. मशीन का पुरज़ा।

मुहा०—पेच घुमाना=ऐसी युक्ति करना जिससे किसी के विचार बदल जायँ।

७ वह कील या काँटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गड़ारियाँ बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है। स्क्रू। ८. पतंग लड़ने के समय दो या

प्रकार का आभूषण जो टोपी या पगड़ी में सामने की ओर खोंसा या लगाया जाता है। सिर-पेच। १२. एक प्रकार का आभूषण जो कानों में पहना जाता है। गोशपेच।

पेचक-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी।

संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पेचिका] १. उल्लू पक्षी। २ जूँ। ३ बादल। ४ पलंग।

पेचकश-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बढ़इयों और लोहारों आदि का वह औज़ार जिससे वे लोग पेच जड़ते अथवा निकालते हैं। २. लोहे का बना हुआ वह घुमावदार पेच जिसकी सहायता से बोतल का काग निकाला जाता है।

पेच-ताब-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह गुस्सा जो मन ही मन में रहे और निकाला न जा सके।

पेचदार-वि० [फ़ा०] १. जिसमें कोई पेच या कल हो। २ दे० "पेचीला"।

पेचवान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बड़ी सटक जो फ़र्शी या गुड़गुड़ी में लगाई जाती है। २. बड़ा हुक्का।

पेचा†-संज्ञा पुं० [सं० पेचक] [स्त्री० पेची] उल्लू पक्षी।

पेचिश-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पेट की वह पीड़ा जो आँव होने के कारण होती है। मरोड़।

पेचीदा-वि० [फ़ा०] [संज्ञा पेचीदगी] १. जिसमें पेच हो। पेचदार। २ जो टेढ़ा-मेढ़ा और कठिन हो। मुश्किल।

पेचीला-वि० दे० "पेचीदा"।

पेज-संज्ञा स्त्री० [सं० पेय]

पेट—संज्ञा पुं० [सं० पेट = थैला] १. शरीर में थैले के आकार का वह भाग जिसमें पहुँच-कर भोजन पचता है। उदर।
मुहा०—पेट काटना = जान-बूझकर कम खाना जिसमें कुछ बचत हो जाय। पेट का धंधा = रोज़ी-रोज़गार ढूँढ़ने का प्रबंध। जीविका का उपाय। पेट का पानी न पचना = रहा न जाना। रह न सकना। पेट का हलका = क्षुद्र प्रकृति का। ओछे स्वभाव का। पेट की आग = भूख। पेट की बात = गुप्त भेद। भेद की बात। †पेट दिखाना = १. अत्यंत दीनता दिखलाना। २. भूखे होने का संकेत करना। पेट चलना = दस्त होना। बार बार पाखाना होना। पेट जलना = अत्यंत भूख लगना। †पेट देना = अपने मन की बात बतलाना। पेट पालना = जीवन निर्वाह करना। पेट फूलना = १. किसी बात के लिये बहुत अधिक उत्सुक होना। २. बहुत अधिक हँसने के कारण पेट में हवा भर जाना। ३. पेट में वायु का प्रकोप होना। पेट मारकर मर जाना = आत्मघात करना। पेट में डाढ़ी होना = बचपन ही में बहुत चतुर होना। पेट में डालना = खा जाना। पेट में पाँव होना = अत्यंत छली या कपटी होना। चालबाज़ होना। (कोई वस्तु) पेट में होना = गुप्त रूप से पास में होना। पेट से पाँव निकालना = १. कुमार्ग में लगना। २. बहुत इतराना।
२. गर्भ। हमल।
मुहा०—पेट गिरना = गर्भपात होना। पेट रहना = गर्भ रहना। हमल रहना। पेटवाली = गर्भवती। पेट से होना = गर्भवती होना।
३. पेट के अंदर की वह थैली जिसमें खाद्य पदार्थ रहता और पचता है। पचौनी। ओझर। ४. अंतःकरण। मन। दिल।
मुहा०—पेट में घुसना या पैठना = रहस्य जानने के लिये मेल बढ़ाना। पेट में होना = मन में होना। ध्यान में होना।
५. पोली वस्तु के बीच का या भीतरी भाग। ६. गुंजाइश। समाई।

पेटक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पिटारा। मंजूषा। २. समूह। ढेर।

पेटकैया‡—क्रि० वि० [हिं० पेट + कैया (प्रत्य०)] पेट के बल।

... पुं० [हिं० पेट] १. किसी पदार्थ का मध्य भाग। बीच का हिस्सा। २. तफ़सील। ब्योरा। पूरा विवरण। ३. सीमा। हद। ४. घेरा। वृत्त।

पेटागि—संज्ञा स्त्री० [सं० पेट + अग्नि] भूख।

पेटारा—संज्ञा पुं० दे० "पिटारा"।

पेटार्थी, पेटार्थू—वि० [सं० पेट + अर्थिन्] जो पेट भरने को ही सब कुछ समझता हो। भुक्खड़। पेटू।

पेटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संदूक। पेटी। २ छोटी पिटारी।

पेटी—संज्ञा स्त्री० [सं० पेटिका] १ संदूकची। छोटा संदूक। २. छाती और पेड़ू के बीच का स्थान।
मुहा०—पेटी पड़ना = तोंद निकलना।
३ कमर में बाँधने का चौड़ा तसमा। कमरबंद। ४. चपरास। ५. हज्जामों की किसबत जिसमें वे कैंची, छूरा आदि रखते हैं।

पेटू—वि० [हिं० पेट] जो बहुत अधिक खाता हो। भुक्खड़।

पेठा—संज्ञा पुं० [देश०] सफ़ेद कुम्हड़ा।

पेड़—संज्ञा पुं० [सं० पिंड] वृक्ष। दरख़्त।

पेड़ा—संज्ञा पुं० [सं० पिंड] १. खोवे की एक प्रसिद्ध गोल और चिपटी मिठाई। २. गुँधे हुए आटे की लोई।

पेड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड] १. पेड़ का तना। धड़। कांड। २. मनुष्य का धड़। ३. पान का पुराना पौधा। ४. पुराने पौधे के पान। ५. वह कर जो प्रति वृक्ष पर लगाया जाय।

पेडू—संज्ञा पुं० [हिं० पेट] १. नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का स्थान। उपस्थ। २. गर्भाशय।

पेन्हाना†—क्रि० स० दे० "पहनाना"।
क्रि० अ० [सं० पय:स्रवण] दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना।

पेम*†—संज्ञा पुं० दे० "प्रेम"।

पेय—वि० [सं०] पीने योग्य।
संज्ञा पुं० [सं०] १. पीने की वस्तु। २. जल। पानी। ३. दूध।

पेरना—क्रि० स० [सं० पीडन] १. किसी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आवे। २. कष्ट देना। बहुत सताना। ३. किसी काम में बहुत देर लगाना।

क्रि० स० [स० प्रेरण] १. प्रेरणा करना। चलाना। २. भेजना। पठाना।

पेलना–क्रि० स० [स० पीड़न] १. दबाकर भीतर घुसाना। धँसाना। दबाना। २. ढकेलना। धक्का देना। ३. टाल देना। अवज्ञा करना। ४. त्यागना। हटाना। फेंकना। ५ ज़बरदस्ती करना। बल प्रयोग करना। ६. प्रविष्ट करना। घुसेड़ना। ७. दे० "पेरना"।

क्रि० स० [स० प्रेरण] आक्रमण करने के लिये सामने छोड़ना। आगे बढ़ाना।

पेला–सज्ञा पुं० [हिं० पेलना] १ तकरार। झगड़ा। २. अपराध। कसूर। ३. आक्रमण। धावा। चढ़ाई। ४. पेलने की क्रिया या भाव।

पेवँ†–संज्ञा पुं० [सं० प्रेम] प्रेम। स्नेह।

पेवस–सज्ञा पु० [सं० पीयूष] हाल की ब्याई गाय या भैंस का दूध जो रंग में कुछ पीला और हानिकारक होता है।

पेश–क्रि० वि० [फा०] सामने। आगे।

मुहा०—पेश आना=१. बर्ताव करना। व्यवहार करना। २. घटित होना। सामने आना। पेश करना=१. सामने रखना। दिखलाना। २. भेंट करना। नजर करना। पेश जाना या चलना=वश चलना। जोर चलना।

पेशकार–सज्ञा पु० [फा०] हाकिम के सामने कागज पत्र पेश करनेवाला कर्मचारी।

पेशखेमा–सज्ञा पुं० [फा०] १. फ़ौज का वह सामान जो पहले से ही आगे भेज दिया जाय। २ फ़ौज का अगला हिस्सा। रावल। ३. किसी बात या घटना का [illegible] लक्षण।

[illegible]गी–सज्ञा स्त्री० [फा०] वह धन जो [कि]सी को कोई काम करने के लिये पहले [illegible] दे दिया जाय। अगौढ़ी। अगाऊ।

[illegible]तर–क्रि० वि० [फा०] पहले। पूर्व।

[illegible]बंदी–सज्ञा स्त्री० [फा०] पहले से किया [गय]ा प्रबंध या बचाव की युक्ति।

[illegible]राज–सज्ञा पु० [फा० पेश+हिं० राज= [मका]न बनानेवाला] पत्थर ढोनेवाला मजदूर।

[illegible]वा–सज्ञा पु० [फा०] १. नेता। सर-[दा]र। अग्रगण्य। २ महाराष्ट्र साम्राज्य [के] प्रधान मन्त्रियों की उपाधि।

[illegible]वाई–सज्ञा स्त्री० [फा०] किसी माननीय पुरुष के आने [स० पाद या पयान] १ [illegible] स्वागत [illegible] चलता सिक्का जो

सज्ञा स्त्री० [हिं० पेश्वा होता है। २ धन। पेशवाओं की शासन-[illegible] पैसना] पैठ। प्रवेश। पद या कार्य्य। + आहारी] केवल

पेशवाज़–सज्ञा स्त्री० [फा० गुधु)। नर्तकियों का वह घाघरा जो [illegible] जो समय पहनती हैं।

पेशा–सज्ञा पु० [फा०] वह कार्य्य जो जीविका उपार्जित करने के लिये किया जाय। कार्य्य। उद्यम। व्यवसाय।

पेशानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ललाट। माथा। २ क़िस्मत। भाग्य।

पेशाब–सज्ञा पु० [फा०] मूत। मूत्र।

मुहा०—पेशाब करना=१. मूतना। २. अत्यन्त तुच्छ समझना। (किसी के) पेशाब से चिराग जलना=अत्यंत प्रतापी होना।

पेशाबखाना–सज्ञा पु० [फा०] वह स्थान जहाँ लोग मूत्र त्याग करते हैं।

पेशावर–सज्ञा पु० [फा०] किसी प्रकार का पेशा करनेवाला। व्यवसायी।

पेशी–सज्ञा स्त्री० [फा०] १. हाकिम के सामने किसी मुकदमे के पेश होने की क्रिया। मुकदमे की सुनवाई। २. सामने होने की क्रिया या भाव।

सज्ञा स्त्री० [स०] १. वज्र। २ तलवार की म्यान। ३. चमड़े की वह थैली जिसमें गर्भ रहता है। ४. शरीर के भीतर मांस की गुत्थी या गाँठ।

पेश्तर–क्रि० वि० [फा०] पहले। पूर्व।

पेषण–सज्ञा पु० [स०] पीसना।

पेषना–क्रि० स० दे० "पेखना"।

पेस*–क्रि० वि० दे० "पेश"।

पेहँटा†–सज्ञा पु० [देश०] कचरी नाम की लता का फल। कचरी।

पैंजनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पायँ+अनु० झन, झन] झन झन बजनेवाला एक गहना जो पैर में पहना जाता है।

पैंठ–सज्ञा स्त्री० [स० पण्यस्थान] १. हाट। बाजार। २ दुकान। ३. वह दिन जिस दिन हाट लगती हो।

पैंठौर†–सज्ञा पु० [हिं० पैठ+ठौर] दुकान।

पैंड–सज्ञा पु० [हिं० पायँ+ड (प्रत्य०)] १. डग। कदम। २. पथ। मार्ग। रास्ता।

पेट–संज्ञा पुं० [सं० पेट=थैला] १. रास्ता। थैले के आकार का वह भाग पड़ना। बार बार कर भोजन पचता है।
मुहा०—पेट काटनावल। २. प्रणाली। सोना जिसमें कुछ वस्तु [सं० पणकृत] दाँव। बाज़ी। धंधा = रोज़ी-रोज़गार का उपाय। पैंत [सं० पवित्र] कुश का छल्ला ...आदि कर्म करते समय उँगली में पहनते हैं। पवित्री।
पै–अव्य० [सं० पर] १. पर। परंतु। लेकिन। २. निश्चय। अवश्य। ज़रूर। ३. पीछे। अनंतर। बाद।
यौ०—जो पै=यदि। अगर। तो पै=तो। फिर। उस अवस्था में।
[हिं० पहँ] १. पास। समीप। निकट। २. प्रति। ओर। तरफ़।
प्रत्य० [सं० उपरि] १. अधिकरण-सूचक एक विभक्ति। पर। ऊपर। २. करण-सूचक विभक्ति। से। द्वारा।
संज्ञा स्त्री० [सं० आपत्ति] दोष। ऐब। नुक्स।
संज्ञा पुं० दे० "पय"।
पैकरमा‡–संज्ञा स्त्री० दे० "परिक्रमा"।
पैकार–संज्ञा पुं० [फा०] छोटा व्यापारी। फेरीवाला। फुटकर सौदा बेचनेवाला।
पैखाना–संज्ञा पुं० दे० "पाखाना"।
पैगंबर–संज्ञा पुं० [फा०] मनुष्यों के पास ईश्वर का सँदेसा लेकर आनेवाला। जैसे, ईसा, मुहम्मद।
पैज–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतिज्ञा] १. प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। हठ। २. प्रतिद्वंद्विता। होड़।
पैजामा–संज्ञा पुं० दे० "पायजामा"।
पैज़ार–संज्ञा स्त्री० [फा०] जूता। जोड़ा।
यौ०—जूती पैज़ार=१. जूते से मार-पीट। जूता चलना। २. लड़ाई झगड़ा।
पैठ–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रविष्ट] १. घुसने का भाव। प्रवेश। दख़ल। २. गति। पहुँच।
पैठना–क्रि० अ० [हिं० पैठ+ना (प्रत्य०)] घुसना। प्रविष्ट होना। प्रवेश करना।
पैठाना–क्रि० स० [हिं० पैठना] प्रवेश कराना। घुसाना। भीतर ले जाना।
पैठार‡–संज्ञा पुं० [हिं० पैठ+आर (प्रत्य०)] १. पैठ। प्रवेश। २. फाटक। दरवाज़ा।
पैठारी‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० पैठार] १. पैठ। प्रवेश। २. गति। पहुँच।
पैड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पैर] सीढ़ी।
पैतरा–संज्ञा पुं० [सं० पदांतर] तलवार चलाने या कुश्ती लड़ने में घूम फिरकर पैर रखने की मुद्रा। वार करने का ठाट।
पैतृक–वि० [सं०] पितृ-संबंधी। पुश्तैनी। पुरखों का।
पैदल–वि० [सं० पादतल] जो पाँवों से चले। पैरों से चलनेवाला।
क्रि० वि० पावँ पावँ। पैरों से।
संज्ञा पुं० १. पावँ पावँ चलना। पाद-चारण। २. पैदल सिपाही। पदाति।
पैदा–वि० [फा०] १. उत्पन्न। जन्मा हुआ। प्रसूत। २. प्रकट। आविर्भूत। घटित। ३. प्राप्त। अर्जित। कमाया हुआ।
संज्ञा स्त्री० आय। आमदनी। लाभ।
पैदाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] उत्पत्ति। जन्म।
पैदाइशी–वि० [फा०] १. जन्म का। जब से जन्म हुआ, तभी का। २. स्वाभाविक। प्राकृतिक।
पैदावार–संज्ञा स्त्री० [फा०] अन्न आदि जो खेत में बोने से प्राप्त हो। उपज। फ़सल।
पैना–वि० [सं० पैण] [स्त्री० पैनी] जिसकी धार बहुत पतली या काटनेवाली हो। धारदार। तेज़।
संज्ञा पुं० १. हलवाहों की बैल हाँकने की छोटी छड़ी। २. लोहे का नुकीला छड़।
पैमाइश–संज्ञा स्त्री० [फा०] मापने की क्रिया या भाव। माप।
पैमाना–संज्ञा पुं० [फा०] मापने का औज़ार या साधन। मानदंड।
पैमाल‡–वि० दे० "पामाल"।
पैयाँ‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० पायँ] पायँ। पैर।
पैया–संज्ञा पुं० [सं० पाय्य=निकृष्ट] १. बिना सत का अनाज का दाना। खोखला दाना। २. खुक्ख। दीन-हीन।
पैर–संज्ञा पुं० [सं० पद+दंड] १. वह अंग जिससे प्राणी चलते-फिरते हैं। २. धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न।
पैर-गाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पैर+गाड़ी] वह हलकी गाड़ी जो बैठे बैठे पैर दबाने से चलती है। जैसे, बाइसिकिल, ट्राइसिकिल।
पैरना–क्रि० अ० [सं० प्लवन] तैरना।
पैरवी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अनुगमन। अनुसरण। २. आज्ञापालन। ३. पक्ष का मंडन। पक्ष लेना। ४. कोशिश।

दौड़ धूप।
ैरवीकार–संज्ञा पुं० [फा०] पैरवी करनेवाला।
ैरा–संज्ञा पुं० [हिं०पैर] १ पड़े हुए चरण। पौरा। २ किसी ऊँची जगह चढ़ने के लिये लकड़ियों के बदले आदि रखकर बनाया हुआ रास्ता।
ैराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० पैरना] पैरने या तैरने की क्रिया या भाव।
ैराक–संज्ञा पुं० [हिं० पैरना] तैरनेवाला। तैराक।
ैराव–संज्ञा पुं० [हिं० पैरना] इतना पानी जिसे केवल तैरकर ही पार कर सकें। डुबाव।
ैरेखना०‡–क्रि० स० दे० "परेखना"।
ैरोकार–संज्ञा पुं० दे० "पैरवीकार"।
ैला†–संज्ञा पुं० [सं० पातिली] [स्त्री० अल्पा० पैली] मिट्टी का वह बरतन जिससे दूध दही ढाकते हैं। बड़ी पैली।
ैवंद–संज्ञा पुं० [फा०] १ कपड़े आदि का छेद बंद करने का छोटा टुकड़ा। चकती। थिगली। जोड़। २ किसी पेड़ की टहनी काटकर उसी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में जोड़कर बाँधना जिससे फल बढ़ जायँ या उनमें नया स्वाद आ जाय।
ैवंदी–वि० [फा०] पैवंद लगाकर पैदा किया हुआ। (फल आदि)
ैवस्त–वि० [फा० पैवस्त] (द्रव पदार्थ) जो भीतर घुसकर सब भागों में फैल गया हो। सोखा हुआ। समाया हुआ।
ैशाच–वि० [सं०] १ पिशाच-संबंधी। २ पिशाच देश का।
ैशाच विवाह–संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से एक जो सोई हुई कन्या का हरण करके या मदोन्मत्त कन्या को फुसलाकर छल से किया गया हो।
ैशाचिक–वि० [सं०] पिशाचों का। राक्षसी। घोर और वीभत्स।
ैशाची–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की प्राकृत भाषा।
ैशुन्य–संज्ञा पुं० [सं०] चुगुलखोरी।
ैसना†–क्रि० अ० [सं० प्रविश] घुसना। पैठना। प्रवेश करना।
ैसरा–संज्ञा पुं० [सं० परिश्रम] १ झंझट। बखेड़ा। २ प्रयत्न। व्यापार।
पैसा–संज्ञा पुं० [सं० पाद या पणांश] १ ताँबे का सबसे अधिक चलता सिक्का जो आने का चौथा भाग होता है। २ धन।
पैसार†–संज्ञा पुं० [हिं० पैसना] पैठ। प्रवेश।
पैहारी–वि० [सं० पयस्+आहारी] केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।
पोंका–संज्ञा पुं० [देश०] वह फतिंगा जो पौधों पर उड़ता फिरता है। थोंका।
पोंगा–संज्ञा पुं० [सं० पुष्क] [स्त्री० अल्पा० पोंगी] १ बाँस या धातु की नली। चोंगा। २ पाव की नली।
वि० १ पोला। २ मूर्ख।
पोंछ†–संज्ञा स्त्री० दे० "पूँछ"।
पोंछन–संज्ञा स्त्री० [हिं० पोंछना] लगी हुई वस्तु का वह बचा अंश जो पोंछने से निकले।
पोंछना–क्रि० स० [सं० प्रोञ्छन] १ लगी हुई वस्तु को जोर से हाथ आदि फेरकर उठाना या हटाना। काछना। २ रगड़ कर साफ करना।
संज्ञा पुं० [स्त्री० पोंछनी] पोंछन का कपड़ा।
पोआ–संज्ञा पुं० [सं० पुत्रक] साँप का बच्चा।
पोआना–क्रि० स० [हिं० पोना का प्रे०] पोने का काम दूसरे से कराना।
पोइया–संज्ञा स्त्री० [फा० पोय] घोड़े की दो दो पैर फेंकते हुए दौड़। सरपट चाल।
पोइस–संज्ञा स्त्री० [फा० पोय, हिं० पोइया] सरपट दौड़।
अव्य० [फा० पेश] देखो। हटो। बचो।
पोई–संज्ञा स्त्री० [सं० पोदकी] एक बरसाती लता जिसकी पत्तियों का साग और पकौड़ियाँ बनती हैं।
पोख–संज्ञा पुं० दे० "पोस"।
पोखना०–क्रि० स० दे० "पोसना"।
पोखरा–संज्ञा पुं० [सं० पुष्कर] [स्त्री० अल्पा० पोखरी] वह जलाशय जो खोदकर बनाया गया हो। तालाब।
पोगंड–संज्ञा पुं० [सं०] १ पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक। २ वह जिसका कोई अंग छोटा, बड़ा या अधिक हो।
पोच–वि० [फा० पूच] १ तुच्छ। क्षुद्र। निकृष्ट। २ अशक्त। क्षीण। हीन।
पोचाई०–संज्ञा स्त्री० [हिं० पोच] निचाई। हेठापन। बुराई।

पोट–संज्ञा स्त्री० [सं० पोट] १. गठरी। पोटली। बुकचा। २. ढेर। अटाला।
पोटना०–क्रि० स० [हिं० पुट] १. समेटना। बटोरना। २ फुसलाना। घात में लाना।
पोटरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पोटली"।
पोटली–संज्ञा स्त्री० [सं० पोटलिका] छोटी गठरी। छोटा बकुचा।
पोटा–संज्ञा पुं० [सं० पुट=थैली] [स्त्री० अल्पा० पोटी] १. पेट की थैली। उदराशय। २. साहस। सामर्थ्य। पित्ता। ३. समाई। औकात। बिसात। ४. आँख की पलक। ५. उँगली का छोर।
संज्ञा पुं० [सं० पोत] चिड़िया का बच्चा।
पोढ़ा–वि० [सं० प्रौढ़] [स्त्री० पोढ़ी] १. पुष्ट। दृढ़। मज़बूत। २. कड़ा। कठिन। कठोर।
पोढ़ाना†–क्रि० अ० [हिं० पोढ़] १. दृढ़ होना। मज़बूत होना। २. पक्का पड़ना।
क्रि० स० दृढ़ करना। पक्का करना।
पोत–संज्ञा पुं० [सं०] १. पशु, पक्षी आदि का छोटा बच्चा। २. छोटा पौधा। ३. गर्भस्थ पिंड जिस पर झिल्ली न चढ़ी हो। ४. कपड़े की बुनावट। ५. नौका। नाव।
संज्ञा स्त्री० [सं० प्रोता] १. माला या गुरिया का छोटा दाना। २. काँच की गुरिया।
संज्ञा पुं० [सं० प्रवृत्ति] १. ढंग। ढब। प्रवृत्ति। २. बारी। दाँव। पारी।
संज्ञा पुं० [फा० फोता] ज़मीन का लगान।
पोतदार–संज्ञा पुं० [हिं० पोत+दार] १. खज़ानची। २. पारखी। ख़ज़ाने में रुपया परखनेवाला।
पोतना–क्रि० स० [सं० पोतन=पवित्र] १. गीली तह चढ़ाना। चुपड़ना। २. किसी पदार्थ को किसी वस्तु पर ऐसा लगाना कि वह उसपर जम जाय। ३. मिट्टी, गोबर, चूने आदि से लीपना।
संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिससे कोई चीज़ पोती जाय। पोता।
पोतला–संज्ञा पुं० [हिं० पोतना] पराँठा।
पोता–संज्ञा पुं० [सं० पौत्र] बेटे का बेटा। पुत्र का पुत्र।
संज्ञा पुं० [फा० फोता] १. पोत। लगान। भूमिकर। २. अंडकोष।
संज्ञा पुं० दे० "पोटा"।
संज्ञा पुं० [हिं० पोतना] १. पोतने का कपड़ा। २. धुली हुई मिट्टी जिसका लेप दीवार पर करते हैं।
पोती–संज्ञा स्त्री० [हिं० पोता] पुत्र की पुत्री।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पोतना] पुतारा देने की क्रिया।
पोथा–संज्ञा पुं० [हिं० पोथी] १. काग़ज़ों की गड्डी। २. बड़ी पोथी। बड़ी पुस्तक।
पोथी–संज्ञा स्त्री० [सं० पुस्तिका] पुस्तक।
पोदना–संज्ञा पुं० [अनु० फुदकना] १. एक छोटी चिड़िया। २ नाटा आदमी।
पोद्दार–संज्ञा पुं० दे० "पोतदार"।
पोना–क्रि० स० [हिं० पूवा+ना (प्रत्य०)] १ गीले आटे की लोई को हाथ से दबाकर घुमाते हुए रोटी के आकार में बढ़ाना। २ (रोटी) पकाना।
क्रि० स० [सं० प्रोत] पिरोना। गूथना।
पोपला–वि० [हिं० पुलपुला] १. पचका और सिकुड़ा हुआ। २. जिसमें दाँत न हों। ३. जिसके मुँह में दाँत न हों।
पोपलाना–क्रि० अ० [हिं० पोपला] पोपला होना।
पोया–संज्ञा पुं० [सं० पोत] १. वृक्ष का नरम पौधा। २. बच्चा। ३. साँप का बच्चा।
पोर–संज्ञा स्त्री० [सं० पर्व] १. उँगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह झुक सकती है। २. उँगली का वह भाग जो दो गाँठों के बीच हो। ३. ईख, घास आदि का वह भाग जो दो गाँठों के बीच में हो। ४ रीढ़। पीठ।
पोल–संज्ञा पुं० [हिं० पोला] १. शून्य स्थान। अवकाश। खाली जगह। २. खोखलापन। सार-हीनता।
मुहा०—(किसी की) पोल खुलना=छिपा हुआ दोष या बुराई प्रकट हो जाना। भंडा फूटना।
संज्ञा पुं० [सं० प्रतोली] १. फाटक। प्रवेश द्वार। २ आँगन। सहन।
पोला–वि० [सं० पोल=फुलका] [स्त्री० पोली] १. जिसके भीतर खाली जगह हो। २. जो ठोस न हो। खोखला। निःसार। तत्त्व-हीन। खुक्ख। ३. जो भीतर से कड़ा न हो। पुलपुला।
पोलिया–संज्ञा पुं० दे० "पौरिया"।
पोशाक–संज्ञा स्त्री० [फा० पोश] पहनने के कपड़े। वस्त्र। परिधान। पहनावा।

पोशीदा-वि० [फा०] गुप्त। छिपा हुआ।
पोष-संज्ञा पुं० [सं०] १. पोषण। पुष्टि। २. अभ्युदय। उन्नति। ३. वृद्धि। बढ़ती। ४. धन। ५. तुष्टि। संतोष।
पोषक-वि० [सं०] १. पालक। पालनेवाला। २. वर्द्धक। बढ़ानेवाला। ३. सहायक।
पोषण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पोषित, पुष्ट, पोषणीय, पोष्य] १. पालन। २. वर्द्धन। बढ़ती। ३ पुष्टि। ४ सहायता।
पोषना-क्रि० स० [सं० पोषण] पालना।
पोषित-वि० [सं०] पाला हुआ।
पोष्य-वि० [सं०] पालने योग्य। पालनीय।
पोष्यपुत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुत्र के समान पाला हुआ लड़का। पालक। २. दत्तक।
पोस-संज्ञा पुं० [सं० पोषण] पालनेवाले के साथ प्रेम या हेल-मेल।
पोसन-संज्ञा पुं० [सं० पोषण] पालन। रक्षा।
पोसना-क्रि० स० [सं० पोषण] १. पालना या रक्षा करना। २. शरण आदि देकर अपनी रक्षा में रखना।
पोस्त-संज्ञा पुं० [फा०] १. छिलका। बकला। २ खाल। चमड़ा। ३. अफ़ीम के पौधे का डोड़ा या ढोंढ। ४. अफ़ीम का पौधा। पोस्ता।
पोस्ता-संज्ञा पुं० [फा० पोस्त] एक पौधा जिसमें से अफ़ीम निकलती है।
पोस्ती-संज्ञा पुं० [फा०] १. वह जो नशे के लिये पोस्ते के डोडे पीसकर पीता हो। २ आलसी आदमी।
पोस्तीन-संज्ञा पुं० [फा०] १. गरम और मुलायम रोएँवाले समूर आदि कुछ जानवरों की खाल का बना हुआ पहनावा। २ खाल का बना हुआ कोट जिसमें नीचे की ओर बाल होते हैं।
पोहना-क्रि० स० [सं० प्रोत] १. पिरोना। गूँथना। २. छेदना। ३. लगाना। पोतना। ४. जड़ना। घुसाना। धँसाना। ५. पीसना। घिसना। ६. दे० "पोना"। वि० [स्त्री० पोहनी] घुसनेवाला। भेदनेवाला।
पोहमी-संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"।
पौंचा-संज्ञा पुं० [सं० पञ्च] साढ़े पाँच का पहाड़ा।
पौंडा-संज्ञा पुं० [सं० पौंड्रक] एक प्रकार की बड़ी और मोटी जाति की ईख या गन्ना।
पौंड्रक-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का मोटा गन्ना। पौंडा। २. एक पतित जाति। पुंड्र। ३. पुंड्र देश का एक राजा जो जरासंध का संबंधी था और श्रीकृष्ण के हाथ से मारा गया था।
पौंढ़ना-क्रि० स० दे० "पौढ़ना"।
पौंरना†-क्रि० अ० [सं० प्लवन] तैरना।
पौंरि-संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि","पौरी"।
पौ-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रपा, प्रा० पवा] पौसाला। पौसला। प्याऊ।
संज्ञा स्त्री० [सं० पाद] किरन-प्रकाश की रेखा। ज्योति।
मुहा०—पौ फटना = सवेरे का उजाला दिखाई पड़ना। सवेरा होना।
संज्ञा पुं० [सं० पाद] १. पैर। २. जड़।
संज्ञा स्त्री० [सं० पद] पाँसे की एक चाल या दाँव।
मुहा०—पौ बारह होना = १ जीत का दाँव पड़ना। २. बन आना। लाभ का अवसर मिलना।
पौआ-संज्ञा पुं० दे० "पौवा"।
पौगंड-संज्ञा पुं० [सं०] पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था।
पौढ़ना-क्रि० अ० [सं० प्लवन] झूलना। आगे पीछे हिलना।
क्रि० अ० [सं० प्रलोठन?] लेटना। सोना।
पौढ़ाना-क्रि० स० [हिं० पौढ़ना का प्रेर०] १. डुलाना। झुलाना। इधर से उधर हिलाना। २. लेटाना। ३. सुलाना।
पौत्र-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पौत्री] लड़के का लड़का। पोता।
पौद-संज्ञा स्त्री० [सं० पोत] १. छोटा पौधा। २ वह छोटा पौधा जो एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाया जा सके।
संज्ञा स्त्री० दे० "पाँवड़ा"।
पौदर-संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँव + डालना] १. पैर का चिह्न। २. पगडंडी।
पौधा-संज्ञा पुं० [सं० पोत] १. नया निकलता हुआ पेड़। २ छोटा पेड़। क्षुप।
पौधि-संज्ञा स्त्री० दे० "पौद"।
पौन-संज्ञा पुं० स्त्री० [सं० पवन] १. हवा। २. प्राण। जीवात्मा। ३ प्रेत। भूत। वि० [सं० पद + ऊन] एक में से चौथाई कम। तीन चौथाई।

संज्ञा पुं० ढगण का एक भेद।

पौना-संज्ञा पुं० [सं० पाद+ऊन] पौन का पहाड़ा।
संज्ञा पुं० [हिं० पौना] काठ या लोहे की एक प्रकार की बड़ी करछी।

पौनार-संज्ञा स्त्री० [सं० पद्मनाल] कमल के फूल की नाल या डंठल।

पौनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० पावना] नाई, बारी, धोबी आदि जो विवाह आदि उत्सवों पर इनाम पाते है।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पौना] छोटा पौना।

पौने-वि० [हिं० पौन] किसी संख्या का तीन चौथाई।

पौमान-संज्ञा पुं० [सं० पवमान] १ दे० "पवमान"। २. जलाशय।

पौर-वि० [सं०] पुर-संबंधी। नगर का।
संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", "पौरी"।

पौरव-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरु का वंशज। पुरु की संतति। २. उत्तर-पूर्व का एक देश। (महाभारत)

पौरा-संज्ञा पुं० [हिं० पैर] आया हुआ कदम। पड़े हुए चरण। पैरा।

पौराणिक-वि० [सं०] [स्त्री० पौराणिकी] १. पुराणवेत्ता। २. पुराण पाठी। ३. पुराण संबंधी। ४. प्राचीन काल का।
संज्ञा पुं० अठारह मात्रा के छंदों की संज्ञा।

पौरि-संज्ञा स्त्री० दे० "पौरी"।

पौरिया-संज्ञा पुं० [हिं० पौरि] द्वारपाल। दरबान।

पौरी-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतोली] ड्योढ़ी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पैर] सीढ़ी। पैड़ी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पाँवरि] खड़ाऊँ।

पौरुष-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरुष का भाव। पुरुषत्व। २. पुरुष का कर्म। पुरुषार्थ। ३. पराक्रम। साहस। ४. उद्योग। उद्यम।
वि० पुरुष संबंधी।

पौरुषेय-वि० [सं०] १. पुरुष-संबंधी। २. आदमी का किया हुआ। ३. आध्यात्मिक।

पौरोहित्य-संज्ञा पुं० [सं०] पुरोहिताई। पुरोहित का कर्म।

पौर्णमास-संज्ञा पुं० [सं०] एक याग।

पौर्णमासी-संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णमासी।

पौलस्त्य-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पौलस्त्यी] पुलस्त्य के वंश का पुरुष। २. कुबेर। ३. कुम्भकर्ण और विभीषण। ४. चंद्र।

पौला-संज्ञा पुं० [हिं० पाव+ला (प्रत्य०)] एक प्रकार की खड़ाऊँ।

पौलिया-संज्ञा पुं० दे० "पौरिया"।

पौली-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रतोली] पौरी। ड्योढ़ी।

पौलोमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्राणी। २. भृगु महर्षि की पत्नी का नाम।

पौवा-संज्ञा पुं० [सं० पाद] १. एक सेर का चौथाई भाग। २. वह बरतन जिसमें पाव भर पानी दूध आदि आ जाय।

पौष-संज्ञा पुं० [सं०] वह महीना जिसमें पूर्णमासी पुष्य नक्षत्र में हो। पूस।

पौष्टिक-वि० [सं०] पुष्टिकारक। बल-वीर्यदायक।

पौसरा, पौसला-संज्ञा पुं० [सं० पय शाला] वह स्थान जहाँ पर लोगों को पानी पिलाया जाता है।

पौहारी-संज्ञा पुं० [सं० पयस्=दूध+आहार] वह जो केवल दूध ही पीकर रहे (अन्न आदि न खाय)।

प्याऊ-संज्ञा पुं० [सं० प्रपा] पौसला। सबील।

प्याज़-संज्ञा पुं० [फ़ा०] गोल गाँठ के आकार का एक प्रसिद्ध कंद। इसकी गंध बहुत उग्र और अप्रिय होती है।

प्याज़ी-वि० [फ़ा०] हलका गुलाबी। रंग।

प्यादा-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पदाति। पैदल। २. दूत। हरकारा।

प्यार-संज्ञा पुं० [सं० प्रीति] १. मुहब्बत। प्रेम। चाह। स्नेह। २. प्रेम जताने की क्रिया।

प्यारा-वि० [सं० प्रिय] [स्त्री० प्यारी] १. जिसे प्यार करें। प्रेमपात्र। प्रिय। २. जो भला मालूम हो।

प्याला-संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० अल्पा० प्याली] १. एक प्रकार का छोटा कटोरा। बेला। जाम। २. तोप या बंदूक आदि में वह गड्ढा जिसमें रंजक रखते हैं।

प्यावना†-क्रि० स० दे० "पिलाना"।

प्यास-संज्ञा स्त्री० [सं० पिपासा] १. जल पीने की इच्छा। तृषा। तृष्णा। पिपासा। २. प्रबल कामना।

प्यासा-वि० [सं० पिपासित] जिसे प्यास लगी हो। तृषित। पिपासा-युक्त।

प्यौ†-संज्ञा पुं० [हिं० पिय] पति। स्वामी।

प्योसर-संज्ञा पुं० [सं० पीयूष] हाल की ब्याई हुई गौ का दूध।

प्योसार†-संज्ञा पुं० [सं० पितृशाला] स्त्री के लिये पिता का गृह। पीहर। मायका।
प्यौर☆-संज्ञा पु० [सं० प्रिय] १. पति। स्वामी। २. प्रियतम।
प्रकंप-संज्ञा पु० [सं०] कँपकँपी।
प्रकट-वि० [सं०] १. जो प्रत्यक्ष हुआ हो। ज़ाहिर। २. उत्पन्न। आविर्भूत। ३. स्पष्ट। व्यक्त।
प्रकटित-वि० [सं०] प्रकट किया हुआ।
प्रकरण-संज्ञा पु० [सं०] १. उत्पन्न करना। २. ज़िक्र करना। वृत्तांत। ३. प्रसंग। विषय। ४. किसी ग्रंथ के छोटे छोटे भागों में से कोई भाग। अध्याय। ५. दृश्य काव्य के अंतर्गत रूपक का एक भेद।
प्रकरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का गान। २. नाटक में प्रयोजन-सिद्धि के पाँच साधनों में से एक। ३. वह कथा-वस्तु जो थोड़े काल तक चलकर रुक जाय।
प्रकर्ष-संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्कर्ष। उत्तमता। २. अधिकता। बहुतायत।
प्रकला-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक कला (समय) का साठवाँ भाग।
प्रकांड-वि० [सं०] १. बहुत बड़ा। २. बहुत विस्तृत।
प्रकार-संज्ञा पु० [सं०] १. भेद। क़िस्म। २. तरह। भाँति।
☆ संज्ञा स्त्री० [सं० प्राकार] परकोटा। घेरा।
प्रकाश-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके द्वारा वस्तुओं का रूप नेत्रों को गोचर होता है। दीप्ति। आलोक। ज्योति। २. विकास। स्फुटन। अभिव्यक्ति। ३. प्रकट होना। गोचर होना। ४. प्रसिद्धि। ख्याति। ५. किसी ग्रंथ या पुस्तक का विभाग। ६. धूप। घाम।
प्रकाशक-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो प्रकाश करे। २. वह जो प्रकट करे। प्रसिद्ध करनेवाला।
प्रकाशधृष्ट-संज्ञा पुं० [सं०] वह धृष्ट नायक जो प्रकट रूप से धृष्टता करे।
प्रकाशन-संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २. प्रकाशित करने का काम।
प्रकाशमान-वि० [सं०] १. चमकता हुआ। चमकीला। २. प्रसिद्ध। मशहूर।
प्रकाश वियोग-संज्ञा पु० [सं०] केशव के अनुसार वह वियोग जो सब पर प्रकट हो जाय।
प्रकाश संयोग-संज्ञा पु० [सं०] केशव के अनुसार वह संयोग जो सब पर प्रकट हो जाय।
प्रकाशित-वि० [सं०] १. जिस पर या जिसमें प्रकाश हो। चमकता हुआ। २. प्रकट।
प्रकाश्य-वि० [सं०] प्रकट करने योग्य। क्रि० वि० प्रकट रूप से। स्पष्टतया। "स्वगत" का उलटा। (नाटक)
प्रकास☆-संज्ञा पु० दे० "प्रकाश"।
प्रकासना☆-क्रि० स० [सं० प्रकाश] प्रकट करना।
प्रकीर्णक-संज्ञा पु० [सं०] १. अध्याय। प्रकरण। २. वह जिसमें तरह तरह की चीज़ें मिली हों। फुटकर।
प्रकुपित-वि० [सं०] जिसका प्रकोप बहुत बढ़ गया हो।
प्रकृत-वि० [सं०] [संज्ञा प्रकृतता, प्रकृतत्व] १. यथार्थ। असली। सच्चा। २. जिसमें किसी प्रकार का विकार न हुआ हो। संज्ञा पुं० श्लेष अलंकार का एक भेद।
प्रकृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मूल या प्रधान गुण। तासीर। स्वभाव। २. प्राणी की प्रधान प्रवृत्ति। स्वभाव। मिज़ाज। ३. वह मूल शक्ति, अनेक रूपात्मक जगत् जिसका विकास है। क़ुदरत।
प्रकृति भाव-संज्ञा पु० [सं०] १. स्वभाव। २. संधि का वह नियम जिसमें दो पदों के मिलने से कोई विकार नहीं होता।
प्रकृति शास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे, पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि) का विचार किया जाय।
प्रकृतिसिद्ध-वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। नैसर्गिक।
प्रकृतिस्थ-वि० [सं०] १. जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो। २. स्वाभाविक।
प्रकोप-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत अधिक कोप। २. क्षोभ। ३. चंचलता। चपलता। ४. बीमारी का अधिक और तेज़ होना। ५. शरीर के वात, पित्त आदि का बिगड़ जाना जिससे रोग उत्पन्न होता है।
प्रकोष्ठ-संज्ञा पुं० [सं०] १. सदर फाटक के पास की कोठरी। २. बड़ा आँगन।

प्रक्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रम। सिलसिला। २. उपक्रम।
प्रक्रमभंग–संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक दोष। किसी वर्णन में आरंभ किए हुए क्रम आदि का ठीक ठीक पालन न होना।
प्रक्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकरण। २. क्रिया। युक्ति। तरीका।
प्रछ*–वि [सं० पृच्छक] पूछनेवाला।
प्रक्षालन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रक्षालित] जल से साफ़ करने की क्रिया। धोना।
प्रक्षिप्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंका हुआ। २. ऊपर से बढ़ाया हुआ। पीछे से मिलाया हुआ।
प्रक्षेप, प्रक्षेपण–संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना। डालना। २. छितराना। बिखराना। ३ मिलाना। बढ़ाना।
प्रखर–वि० [सं०] [संज्ञा प्रखरता] १. तीक्ष्ण। प्रचंड। २. धारदार। पैना।
प्रख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।
प्रगट–वि० दे० "प्रकट"।
प्रगटना|–क्रि० अ० [सं० प्रकटन] प्रकट होना। सामने आना। ज़ाहिर होना।
प्रगटाना|–क्रि० स० [सं० प्रकटन] प्रकट करना। ज़ाहिर करना।
प्रगल्भ–वि० [सं०] [संज्ञा प्रगल्भता] १. चतुर। होशियार। २ प्रतिभाशाली। ३. उत्साही। साहसी। ४ हाज़िर जवाब। ५. निर्भय। निडर। ६. उद्धत। उद्दंड।
प्रगल्भवचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मध्या नायिका जो बातों ही बातों में अपना दुःख और क्रोध प्रकट करे।
प्रगसना*|–क्रि० अ० दे० "प्रगटना"।
प्रगाढ़–वि० [सं०] १. बहुत अधिक। २. बहुत गाढ़ा या गहरा। ३. कड़ा। कठोर।
प्रग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढंग। धारण।
प्रघट*–वि० दे० "प्रकट"।
प्रघटना*–क्रि० अ० दे० "प्रगटना"।
प्रघट्टक*|–वि० [सं० प्रकट] प्रकट या प्रकाश करनेवाला। खोलनेवाला।
प्रचंड–वि० [सं०] [संज्ञा प्रचंडता] १. बहुत अधिक तीव्र। बहुत तेज़। उग्र। प्रखर। २. भयंकर। ३ कठिन। कठोर। ४. दुःसह। असह्य। ५. बड़ा। भारी।
संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा। चंडी।
प्रचरना*|–क्रि० अ० [सं० प्रचार] प्रचारित होना। चलना। फैलना।
प्रचलन–संज्ञा पुं० [सं०] प्रचार।
प्रचलित–वि० [सं०] जारी। चलता हुआ। जिसका चलन हो।
प्रचार–संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु का निरंतर व्यवहार या उपयोग। चलन। रवाज। २ प्रकाश।
प्रचारक–वि० [सं०] [स्त्री० प्रचारिणी] फैलानेवाला। प्रचार करनेवाला।
प्रचारना*|–क्रि० स० [सं० प्रचारण] १. प्रचार करना। फैलाना। २. सामना करने के लिये ललकारना।
प्रचारित–वि० [सं०] फैलाया हुआ। प्रचार किया हुआ।
प्रचुर–वि० [सं०] बहुत। अधिक।
प्रचुरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रचुर होने का भाव। ज़्यादती। अधिकता।
प्रचेता–संज्ञा पुं० [सं० प्रचेतस्] १. एक प्राचीन ऋषि। २. वरुण। ३. पुराणानुसार पृथु के परपोते और प्राचीन बर्हि के दस पुत्र।
प्रचोदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेरणा। उत्तेजना। २ आज्ञा। ३ कायदा।
प्रच्छक–वि० [सं०] पूछनेवाला।
प्रच्छन्न–वि० [सं०] ढका हुआ। लपेटा हुआ। छिपा हुआ।
प्रच्छादन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रच्छादित] १. ढाँकना। २ छिपाना। ३. उत्तरीय वस्त्र।
प्रजंत*|–अव्य० दे० "पर्यंत"।
प्रजनन–संज्ञा पुं० [सं०] १. संतान उत्पन्न करने का काम। २. जन्म। ३ दाई का काम। धात्री-कर्म। (सुश्रुत)
प्रजरना*–क्रि० अ० [सं० प्रत्य० प्र + हिं० जरना] अच्छी तरह जलना।
प्रजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संतान। औलाद। २ वह जनसमूह जो किसी एक राज्य में रहता हो। रिआया। रैयत।
प्रजातंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें कोई राजा नहीं होता, प्रजा ही समय समय पर अपना प्रधान शासक चुन लेती है।
प्रजापति–संज्ञा पुं० [सं०] १. सृष्टि को उत्पन्न करनेवाला। सृष्टिकर्त्ता। २. ब्रह्मा। ३. मनु। ४ राजा। ५. सूर्य। ६.

आग। ७ पिता। बाप। ८ घर का मालिक या बड़ा। ९. दे० "प्राजापत्य"।
प्रजारना †-क्रि० स० [स० प्रत्य० प्र+हिं० जारना] अच्छी तरह जलाना।
प्रजासत्ता-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रजातंत्र"।
प्रजुलित*-वि० दे० "प्रज्वलित"।
प्रजोग-संज्ञा पु० दे० "प्रयोग"।
प्रज्झटिका-संज्ञा स्त्री० [स०] १६ मात्राओं का एक छंद। पद्धरी। पद्धटिका।
प्रज्ञ-संज्ञा पु० [स०] विद्वान्। जानकार।
प्रज्ञप्ति-संज्ञा स्त्री० [स०] १. जताने का भाव। २. सूचना। ३. संकेत। इशारा।
प्रज्ञा-संज्ञा स्त्री० [स०] १. बुद्धि। ज्ञान। २. सरस्वती।
प्रज्ञाचक्षु-संज्ञा पु० [स० प्रज्ञा+चक्षुस्] १. धृतराष्ट्र। २ ज्ञानी। ३. अंधा। (व्यंग्य)
प्रज्वलन-संज्ञा पु० [स०] [वि० प्रज्वलनीय, प्रज्वलित] जलने की क्रिया। जलना।
प्रज्वलित-वि० [स०] १ जलता हुआ। धधकता हुआ। २. बहुत स्पष्ट।
प्रज्वलिया-संज्ञा पु० दे० "प्रज्झटिका"।
[प्र]ण-संज्ञा पु० [स० पण] अटल निश्चय। प्रतिज्ञा।
[प्र]णत-वि० [स०] १. झुका हुआ। २. प्रणाम करता हुआ। ३ नम्र। दीन।
[प्र]णतपाल-संज्ञा पु० [स०] दीनों, दासों या भक्तजनों का पालन करनेवाला। दीनरक्षक।
[प्र]णति-संज्ञा स्त्री० [स०] १. प्रणाम। दंडवत। २ नम्रता। ३. विनती।
[प्र]णमन-संज्ञा पु० [स०] १. झुकना। २. प्रणाम करना।
[प्र]णम्य-वि० [स०] प्रणाम करने के योग्य।
[प्र]णय-संज्ञा पुं० [स०] १ प्रीतियुक्त प्रार्थना। २ प्रेम। ३ विश्वास। भरोसा। ४ निर्वाण। मोक्ष।
[प्र]णयन-संज्ञा पु० [स०] रचना। बनाना।
[प्र]णयिनी-संज्ञा स्त्री० [स०] १. प्रियतमा। प्रेमिका। २ स्त्री। पत्नी।
[प्र]णयी-संज्ञा पु० [स० प्रणयिन्] [स्त्री० प्रणयिनी] १. प्रेम करनेवाला। प्रेमी। २ स्वामी। पति।
[प्र]णव-संज्ञा पु० [स०] १. ॐकार। ओंकार मंत्र। २. परमेश्वर।
[प्र]णवना-क्रि० स० [स० प्रणमन] प्रणाम करना। नमस्कार करना।

प्रणाली-संज्ञा स्त्री० [स०] १ निकलने का मार्ग। २. रीति। चाल। प्रथा। ३. ढंग। तरीका। कायदा। ४ वह छोटा जलमार्ग जो जल के दो बड़े भागों को मिलाता हो।
प्रणिधान-संज्ञा पुं० [स०] १. रखा जाना। २. प्रयत्न। ३. समाधि। (योग) ४. अत्यंत भक्ति। ५. ध्यान। चित्त की एकाग्रता।
प्रणीत-संज्ञा पु० [स०] १. रचित। बनाया हुआ। २. सुधारा हुआ। संशोधित। ३ भेजा हुआ। लाया हुआ।
प्रणेता-संज्ञा पु० [स० प्रणेतृ] [स्त्री० प्रणेत्री] रचयिता। बनानेवाला। कर्त्ता।
प्रतचा†-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रत्यंचा"।
प्रतच्छ †-वि० दे० "प्रत्यक्ष"।
प्रतप्त-वि० [स०] तपा हुआ।
प्रतर्दन-संज्ञा पु० [स०] १ काशी का एक प्रख्यात राजा जो राजा दिवोदास का पुत्र था। २. एक प्राचीन ऋषि। ३. विष्णु।
प्रतल-संज्ञा पु० [स०] पाताल के सातवें भाग का नाम।
प्रताप-संज्ञा पुं० [स०] १ पौरुष। मरदानगी। वीरता। २. बल, पराक्रम आदि का ऐसा प्रभाव जिसके कारण विरोधी शांत रहें। तेज। इकबाल। ३ ताप। गरमी।
प्रतापी-वि० [स० प्रतापिन्] १ इकबालमंद। जिसका प्रताप हो। २. सतानेवाला।
प्रतारक-संज्ञा पु० [स०] १ वंचक। ठग। २. धूर्त। चालाक।
प्रतारणा-संज्ञा स्त्री० [स०] वंचना। ठगी।
प्रतिंचा-संज्ञा स्त्री० [स० पतंचिका] धनुष की डोरी। ज्या। चिल्ला।
प्रति-अव्य० [स०] एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—विपरीत, जैसे, प्रतिकूल। सामने, जैसे, प्रत्यक्ष। बदले में, जैसे, प्रत्युपकार। हर एक, जैसे, प्रत्येक। समान, जैसे, प्रतिनिधि। मुकाबले का, जैसे, प्रतिवादी। अव्य० १. सामने। मुकाबिले में। २. ओर। तरफ।
संज्ञा स्त्री० [स०] नकल। कापी।
प्रतिकार-संज्ञा पुं० [स०] बदला। जवाब।
प्रतिकूल-वि० [स०] [संज्ञा प्रतिकूलता]

जो अनुकूल न हो। खिलाफ़। उलटा। विरुद्ध। विपरीत।

प्रतिकृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रतिमा। प्रतिमूर्त्ति। २. तसवीर। चित्र। ३. प्रतिबिंब। छाया। ४. बदला। प्रतिकार।

प्रतिक्रिया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिकार। बदला। २. एक ओर कोई क्रिया होने पर परिणाम स्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया।

प्रतिगृहीता-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। धर्म्मपत्नी।

प्रतिग्या-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिज्ञा"।

प्रतिग्रह-संज्ञा पु० [सं०] १. स्वीकार। ग्रहण। २. उस दान का लेना जो ब्राह्मण को विधिपूर्वक दिया जाय। ३. पकड़ना। अधिकार में लाना। ४. पाणिग्रहण। विवाह। ५. ग्रहण। उपराग।

प्रतिघात-संज्ञा पु० [सं०] १. वह आघात जो किसी दूसरे के आघात करने पर किया जाय। २. टक्कर। ३ रुकावट। बाधा।

प्रतिघाती-संज्ञा पु० [सं० प्रतिघातिन्] [स्त्री० प्रतिघातिनी] १. शत्रु। वैरी। दुश्मन। २. मुकाबला करनेवाला।

प्रतिच्छा-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीक्षा"।

प्रतिच्छाया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चित्र। तसवीर। २. परछाईं। प्रतिबिंब।

प्रतिछाँई, प्रतिछाँह-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया २."।

प्रतिज्ञांतर-संज्ञा पु० [सं०] तर्क में एक निग्रह-स्थान।

प्रतिज्ञा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोई काम करने या न करने आदि के संबंध में दृढ़ निश्चय। प्रण। २. शपथ। सौगंद। कसम। ३. अभियोग। दावा। ४. न्याय में उस बात का कथन जिसे सिद्ध करना हो।

प्रतिज्ञापत्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हो। इकरारनामा।

प्रतिज्ञाहानि-संज्ञा स्त्री० [सं०] तर्क में एक प्रकार का निग्रहस्थान।

प्रतिदान-संज्ञा पुं० [सं०] १. लौटाना। वापस करना। २. परिवर्तन। बदला।

प्रतिद्वंद्वी-संज्ञा पु० [सं० प्रतिद्वंद्विन्] [भाव० प्रतिद्वंद्विता] मुकाबले का लड़नेवाला। शत्रु।

प्रतिध्वनि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अपनी उत्पत्ति के स्थान पर फिर से टकराकर सुनाई पड़नेवाला शब्द। प्रतिशब्द। गूँज। आवाज बाजगश्त। २. शब्द से व्याप्त होना। गूँजना। ३. दूसरों के विचारों आदि का दोहराया जाना।

प्रतिना-संज्ञा स्त्री० दे० "पृतना"।

प्रतिनायक-संज्ञा पु० [सं०] नाटकों और काव्यों आदि में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र।

प्रतिनिधि-संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० प्रतिनिधित्व] १ प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। २ वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिये नियुक्त हो।

प्रतिपक्षी-संज्ञा पुं० [सं० प्रतिपक्षिन्] विपक्षी। विरोधी। शत्रु।

प्रतिपत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति। पाना। २. ज्ञान। ३. अनुमान। ४. देना। दान। ५. कार्य्य रूप में लाना। ६. प्रतिपादन। निरूपण। ७. जी में बैठाना। ८. मानना। स्वीकृति।

प्रतिपदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपद्। परिवा।

प्रतिपन्न-वि० [सं०] १. अवगत। जाना हुआ। २ अंगीकृत। स्वीकृत। ३. प्रमाणित। ४. साबित। निश्चित। ५. भरा-पूरा। ६. शरणागत। ७. प्राप्त।

प्रतिपादक-संज्ञा पु० [सं०] प्रतिपादन करनेवाला।

प्रतिपादन-संज्ञा पु० [सं०] [वि० प्रतिपादित] १. अच्छी तरह समझाना। प्रतिपत्ति। २. किसी बात का प्रमाणपूर्वक कथन। ३. प्रमाण। सबूत।

प्रतिपार-संज्ञा पु० दे० "प्रतिपाल"।

प्रतिपाल, प्रतिपालक-संज्ञा पु० [सं०] १. पालन-पोषण करनेवाला। पोषक। रक्षक। २. राजा।

प्रतिपालन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिपालित] १. पालन करने की क्रिया या भाव। २. रक्षा। निर्वाह। तामील।

प्रतिपालना*-क्रि० स० [सं० प्रतिपालन] १. पालन करना। २. रक्षा करना। बचाना।

प्रतिफल-संज्ञा पु० [सं०] १. प्रतिबिंब। छाया। २. परिणाम। नतीजा।

प्रतिबंध-संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। अट-

वट। अटकाव। २. विघ्न। बाधा।

प्रतिबंधक–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोकनेवाला। २. बाधा डालनेवाला।

प्रतिबिंब–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिबिंबित] १. परछाईं। छाया। २. मूर्ति। प्रतिमा। ३. चित्र। तसवीर। ४. शीशा। दर्पण।

प्रतिबिंब वाद–संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत का यह सिद्धांत कि जीव वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिंब है।

प्रतिभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। समझ। २ वह असाधारण मानसिक शक्ति जिससे मनुष्य किसी काम में बहुत अधिक योग्यता प्राप्त कर लेता है। असाधारण बुद्धि-बल। ३. दीप्ति। चमक। (क्व०)

प्रतिभावान्, प्रतिभाशाली–वि० [सं०] जिसमें प्रतिभा हो। प्रतिभावाला।

प्रतिभू–संज्ञा पुं० [सं०] ज़मानत में पड़नेवाला। ज़ामिन।

प्रतिम–अव्य० [सं०] समान। सदृश।

प्रतिमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी की आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र आदि। अनुकृति। २. मिट्टी, पत्थर आदि की देवताओं की मूर्ति। ३. प्रतिबिंब। छाया। ४. एक अलंकार जिसमें किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति के अभाव में उसी के सदृश किसी और पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन होता है।

[प्र]तिमान–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रतिबिंब। [प]रछाँही। २. समानता। बराबरी। ३. [दृ]ष्टांत। उदाहरण।

[प्रतिमु]ख–संज्ञा पुं० [सं०] नाटक की पाँच [संधियों] में से एक।

[प्रतिमूर्ति]–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिमा।

[प्रतिमोक्ष]–संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष की प्राप्ति।

[प्रतियोग]–संज्ञा पुं० [सं०] १ शत्रुता। [विरो]ध। २. विरुद्ध संयोग।

[प्रतियोगिता]–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिद्वं[द्विता]। [लाग-डाँट]। चढ़ा-ऊपरी। मुकाबला। विरोध।

[प्रतियोगी]–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिस्सेदार। [साझी]। २. शत्रु। विरोधी। वैरी। ३. [सहायक]। मददगार।

[प्रतिरूप]–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रतिमा। [मूर्ति]। २. तसवीर। चित्र। ३. प्रतिनिधि।

[प्रतिरोध]–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिरोधक] [१]. विरोध। २. रुकावट। रोक। बाधा।

प्रतिलिपि–संज्ञा स्त्री० [सं०] लेख की नक़ल। किसी लिखी हुई चीज़ की नक़ल।

प्रतिलोम–वि० [सं०] १. प्रतिकूल। विपरीत। २. जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो। उलटा। अनुलोम का उलटा।

प्रतिलोम विवाह–संज्ञा पुं० [सं०] वह विवाह जिसमें पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो।

प्रतिवस्तूपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग अलग वाक्यों में किया जाय।

प्रतिवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कथन जो किसी मत को मिथ्या ठहराने के लिये हो। विरोध। खंडन। २. विवाद। बहस।

प्रतिवादी–संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवादिन्] १. प्रतिवाद या खंडन करनेवाला। २. वह जो वादी की बात का उत्तर दे। प्रतिपक्षी।

प्रतिवास–संज्ञा पुं० [सं०] पड़ोस। समीप का निवास।

प्रतिवासी–संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवासिन्] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी।

प्रतिवेश–संज्ञा पुं० [सं०] पड़ोस।

प्रतिवेशी–संज्ञा पुं० [सं० प्रतिवेशिन्] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी।

प्रतिशब्द–संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिध्वनि।

प्रतिशोध–संज्ञा पुं० [सं० प्रति+शोध] वह काम जो किसी बात का बदला चुकाने के लिये किया जाय। बदला।

प्रतिश्याय–संज्ञा पुं० [सं०] ज़ुकाम।

प्रतिषेध–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रतिषिद्ध, प्रतिषेधक] १. निषेध। मनाही। २. खंडन। ३. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध या अंतर का इस प्रकार उल्लेख किया जाय जिससे उसका कुछ विशेष अर्थ निकले।

प्रतिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थापना। रखा जाना। २. देवता की प्रतिमा की स्थापना। ३. मान-मर्यादा। गौरव। ४. यश। कीर्ति। ५. आदर। सत्कार। इज़्ज़त। ६ व्रत का उद्यापन। ७. एक प्रकार का छंद। ८. चार वर्णों का वृत्त।

प्रतिष्ठान–संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थापित या प्रतिष्ठित करना। रखना। बैठाना। २. देवमूर्ति की स्थापना। ३. प्रतिष्ठानपुर।

प्रतिष्ठानपुर-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन नगर जो गंगा यमुना के संगम पर वर्तमान झूसी नामक स्थान के पास था। २ गोदावरी के तट का एक प्राचीन नगर।

प्रतिष्ठापत्र-संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिष्ठा करने के लिये दिया जानेवाला पत्र। सम्मानपत्र।

प्रतिष्ठित-वि० [सं०] १ जिसकी प्रतिष्ठा हुई हो। आदर प्राप्त। इज्जतदार। २. जो स्थापित किया गया हो।

प्रतिस्पर्द्धा-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी काम में दूसरे से बढ़ जाने का उद्योग। लाग-डाँट। चढ़ा-ऊपरी।

प्रतिस्पर्द्धी-संज्ञा पुं० [सं० प्रतिस्पर्द्धिन्] वह जो प्रतिस्पर्द्धा करे। मुकाबला या बराबरी करनेवाला।

प्रतिहार-संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वारपाल। दरबान। ड्योढ़ीदार। २ द्वार। दरवाजा। ३ प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी जो राजाओं को समाचार आदि सुनाया करता था। ४. चोबदार। नकीब।

प्रतिहारी-संज्ञा पुं० [सं० प्रतिहारिन्] [स्त्री० प्रतिहारिणी] द्वारपाल। ड्योढ़ीदार।

प्रतिहिंसा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वैर चुकाना। बदला लेना।

प्रतीक-संज्ञा पुं० [सं०] १ पता। चिह्न। निशान। २ मुख। मुँह। ३ आकृति। रूप। सूरत। ४ प्रतिरूप। स्थानापन्न वस्तु। ५ प्रतिमा। मूर्ति।

प्रतीकार-संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिकार।

प्रतीकोपासना-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी विशेष पदार्थ में ब्रह्म की भावना करके उसे पूजना।

प्रतीक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी कार्य्य के होने या किसी के आने की आशा में रहना। आसरा। इंतजार। प्रत्याशा।

प्रतीची-संज्ञा स्त्री० [सं०] पश्चिम दिशा।

प्रतीच्य-वि० [सं०] पश्चिमी।

प्रतीत-वि० [सं०] १ ज्ञात। विदित। जाना हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर। ३ आनंदित। प्रसन्न। खुश।

प्रतीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ज्ञान। जानकारी। २ विश्वास। ३ प्रसन्नता।

प्रतीप-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रतिकूल घटना। इच्छा के विरुद्ध फल। २. वह अर्थालंकार जिसमें उपमान को ही उपमेय के समान कहते हैं अथवा उपमेय द्वारा उपमान का तिरस्कार वर्णन करते हैं।

प्रतीयमान-वि० [सं०] जान पड़ता हुआ।

प्रतीहार-संज्ञा पुं० दे० "प्रतिहार"।

प्रतीहारी-संज्ञा पुं० दे० "प्रतिहारी"।

प्रतुद-संज्ञा पुं० [सं०] वे पक्षी जो अपना भक्ष्य चोंच से तोड़कर खाते हैं।

प्रतोली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चौड़ी सड़क। शाहराह। २ गली। कूचा। ३ दुर्ग का द्वार।

प्रत्न-वि० [सं०] पुराना। प्राचीन।

प्रत्नतत्त्व-संज्ञा पुं० दे० "पुरातत्त्व"।

प्रत्यंचा-संज्ञा स्त्री० [सं० पतंचिका] धनुष की डोरी जिसमें लगाकर बाण छोड़ा जाता है। चिल्ला।

प्रत्यक्ष-वि० [सं०] [संज्ञा प्रत्यक्षता] १. जो देखा जा सके। जो आँखों के सामने हो। २ जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके। संज्ञा पुं० चार प्रकार के प्रमाणों में से एक। क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।

प्रत्यक्षदर्शी-संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यक्षदर्शिन्] १. वह जिसने प्रत्यक्ष रूप से कोई घटना देखी हो। २. साक्षी। गवाह।

प्रत्यक्षवादी-संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यक्षवादिन्] [स्त्री० प्रत्यक्षवादिनी] वह व्यक्ति जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने, और कोई प्रमाण न माने।

प्रत्यनीक-संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहनेवाले या संबंधी के प्रति किसी हित या अहित का किया जाना वर्णन किया जाय। २ शत्रु। दुश्मन। ३ प्रतिपक्षी। विपक्षी।

प्रत्यभिज्ञा-संज्ञा स्त्री० [सं०] स्मृति की सहायता से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान।

प्रत्यभिज्ञा दर्शन-संज्ञा पुं० [सं०] माहेश्वर संप्रदाय का एक दर्शन जिसके अनुसार महेश्वर ही परमेश्वर माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञान-संज्ञा पुं० [सं०] स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान।

प्रत्यय-संज्ञा पुं० [सं०] १. विश्वास करने की क्रिया या भाव। २ प्रमाण। सबूत। ३. निर्वाह। तामील। ४. बुद्धि। समझ। ५ व्याख्या। शरह। ६. कारण। हेतु। ७ आवश्यकता। जरूरत। ८ प्रख्याति। प्रसिद्धि। ९. चिह्न। लक्षण। १०. निर्णय। फैसला। नतीजा।

…प्रतिपादन। …वि० प्रतिपा-… प्रति-… प्रमाणपूर्वक …सबूत। …"प्रतिपाल"। …संज्ञा पुं० [सं०] …पालनेवाला। पोषक। …[सं०] [वि० प्रति-…] …करना। बचाना। …[सं० प्रतिफलन] १. प्रतिबिंब। …१. रोक। …

११. सम्मति। राय। १२ वे नौ रीतियाँ जिनके द्वारा छंदों के भेद और उनकी संख्या जानी जाय। १३ व्याकरण में वह अक्षर या अक्षर समूह जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में, उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने के उद्देश्य से लगाया जाय। जैसे, मूर्खता में "ता" प्रत्यय है।

प्रत्याख्यान-संज्ञा पुं० [सं०] १. खंडन। २ निराकरण।

प्रत्यागत-वि० [सं०] जो लौट आया हो।

प्रत्यागमन-संज्ञा पुं० [सं०] १. लौट आना। वापसी। २ दोबारा आना।

प्रत्यालीढ-संज्ञा पुं० [सं०] धनुष चलानेवालों के बैठने का एक प्रकार।

प्रत्यावर्त्तन-संज्ञा पुं० [सं०] लौट आना।

प्रत्याशा-संज्ञा स्त्री० [सं०] आशा। उम्मेद।

प्रत्याहार-संज्ञा पुं० [सं०] योग के आठ अंगों में से एक अंग जिसमें इंद्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण किया जाता है। इंद्रियनिग्रह।

प्रत्युत-अव्य० [सं०] बल्कि। वरन्। इसके विरुद्ध।

प्रत्युत्तर-संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर मिलने पर दिया हुआ उत्तर। जवाब का जवाब।

प्रत्युत्पन्न-वि० [सं०] १. जो फिर से उत्पन्न हो। २ जो ठीक समय पर उत्पन्न हो।

यौ०—प्रत्युत्पन्नमति=जो तुरंत ही कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले। तत्पर बुद्धिवाला।

प्रत्युपकार-संज्ञा पुं० [सं०] वह उपकार जो किसी उपकार के बदले में किया जाय।

प्रति-यूष-संज्ञा पुं० [सं०] प्रभात। तड़का।

...सेक-वि० [सं०] समूह अथवा बहुतों में हर एक, अलग अलग।

...म-वि० [सं०] १. जो गिनती में सबसे पहले आवे। पहला। अव्वल। २. श्रेष्ठ। सब से अच्छा।

वि० [सं०] पहले। पेश्तर। आगे।

...कारक-संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में ...र्ता" (कारक)।

...पुरुष-संज्ञा पुं० दे० "उत्तम पुरुष"।

...ा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मदिरा। शराब। ...लिंग) २. व्याकरण का कर्त्ता कारक।

...थमी‡-संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

प्रथा-संज्ञा स्त्री० [सं०] रीति। रिवाज। चाल। प्रणाली। नियम।

प्रथी‡-संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

प्रथु-संज्ञा पुं० दे० "पृथु"।

प्रद-वि० [सं०] देनेवाला। जो दे। दाता। (यौगिक में) जैसे, आनंदप्रद।

प्रदक्षिण-संज्ञा पुं० [सं०] देवमूर्ति आदि के चारों ओर घूमना। परिक्रमा।

प्रदक्षिणा-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिण"।

प्रदत्त-वि० [सं०] दिया हुआ।

प्रदर-संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसीदार पानी सा बहता है।

प्रदर्शक-संज्ञा पुं० [सं०] १ दिखलानेवाला। वह जो कोई चीज दिखलावे। २. दर्शक।

प्रदर्शन-संज्ञा पुं० [सं०] १. दिखलाने का काम। २ दे० "प्रदर्शनी"।

प्रदर्शनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ तरह तरह की चीजें लोगों को दिखलाने के लिये रखी जायँ। नुमाइश।

प्रदर्शित-वि० [सं०] जो दिखलाया गया हो। दिखलाया हुआ।

प्रदाता-वि० [सं० प्रदातृ] दाता। देनेवाला।

प्रदान-संज्ञा पुं० [सं०] १ देने की क्रिया। २. दान। बख्शिश। ३. विवाह। शादी।

प्रदायक-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदायिका] देनेवाला। जो दे।

प्रदायी-संज्ञा पुं० दे० "प्रदायक"।

प्रदाह-संज्ञा पुं० [सं०] ज्वर आदि के कारण अथवा और किसी कारण शरीर में होनेवाली जलन। दाह।

प्रदीप-संज्ञा पुं० [सं०] १. दीपक। दीआ। चिराग। २. रोशनी। प्रकाश।

प्रदीपक-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदीपिका] प्रकाश में लानेवाला। प्रकाशक।

प्रदीपति*‡-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदीप्ति"।

प्रदीपन-संज्ञा पुं० [सं०] १ उजाला करना। २ उज्ज्वल करना। चमकाना।

प्रदीप्त-वि० [सं०] १. जगमगाता हुआ। प्रकाशवान्। २ उज्ज्वल। चमकीला।

प्रदीप्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रोशनी। प्रकाश। २ चमक। आभा।

प्रदुमन○-संज्ञा पुं० दे० "प्रद्युम्न"।

प्रदेश-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देश का वह बड़ा विभाग जिसकी भाषा रीति-व्यवहार, शासन पद्धति आदि उसी देश के अन्य विभागों की इन सब बातों से भिन्न

हो। प्रांत। सूबा। २. स्थान। जगह। मुकाम। ३. अंग। अवयव।

प्रदोष-संज्ञा पुं० [सं०] १. संध्या काल। सूर्य्य के अस्त होने का समय। २. त्रयोदशी का व्रत जिसमें संध्या समय शिव का पूजन करके भोजन करते हैं। ३. बड़ा दोष। भारी अपराध।

प्रद्युम्न-संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव। कंदर्प। २. श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।

प्रद्योत-संज्ञा पुं० [सं०] १. किरण। रश्मि। २. दीप्ति। आभा। चमक।

प्रधान-वि० [सं०] मुख्य। खास। संज्ञा पुं० [सं०] १. मुखिया। सरदार। २. सचिव। मंत्री। वज़ीर। ३. सभापति।

प्रधानता-संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य्य या पद।

प्रधानी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० प्रधान+ई (प्रत्य०)] प्रधान का पद या कर्म्म।

प्रध्वंस-संज्ञा पुं० [सं०] नाश। विनाश।

प्रन†-संज्ञा पुं० दे० "प्रण"।

प्रनति†-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रणति"।

प्रनवना†-क्रि० स० दे० "प्रणमना"।

प्रनामी†-संज्ञा पुं० [सं० प्रणामिन्] प्रणाम करनेवाला। जो प्रणाम करे। संज्ञा स्त्री० [सं० प्रणाम+ई (प्रत्य०)] वह दक्षिणा जो गुरु, ब्राह्मण आदि को भक्त लोग प्रणाम करने के समय देते हैं।

प्रनिपात†-संज्ञा पुं० दे० "प्रणिपात"।

प्रपंच-संज्ञा पुं० [सं०] १. संसार। सृष्टि। भव-जाल। २. विस्तार। फैलाव। ३. दुनिया का जंजाल। ४. झगड़ा। झमेला। ५. आडंबर। ढोंग। ६. छल। धोखा।

प्रपंची-वि० [सं० प्रपंचिन्] १. प्रपंच...

प्रपितामह-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपितामही] १. परदादा। दादा का बाप। २. परब्रह्म।

प्रपीड़न-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रपीड़ित] बहुत अधिक कष्ट देना।

प्रपुंज-संज्ञा पुं० [सं०] भारी झुंड।

प्रपुत्र-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपुत्री] पुत्र का पुत्र। पोता।

प्रपौत्र-संज्ञा पुं० [सं०] पड़पोता। पुत्र का पोता। पोते का पुत्र।

प्रफुड़ना-क्रि० अ० दे० "प्रफुलना"।

प्रफुलना†-क्रि० अ० [सं० प्रफुल्ल] फूलना।

प्रफुला†-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रफुल्ल] १. कुमुदिनी। कुँई। २. कमलिनी। कमल।

प्रफुलित*-वि० [सं० प्रफुल्ल] १. खिला हुआ। कुसुमित। २. प्रफुल्ल। आनंदित।

प्रफुल्ल-वि० [सं०] १. खिला हुआ। विकसित। २. जिसमें फूल लगे हों। ३. खुला हुआ। ४. प्रसन्न। आनंदित।

प्रबंध-संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँधने की डोरी आदि। २. बंधान। योजना। ३. बँधा हुआ सिलसिला। ४. लेख या अनेक संबद्ध पद्यों में पूरा होनेवाला काव्य। निबंध। ५. आयोजन। उपाय। ६. व्यवस्था। बंदोबस्त। इंतज़ाम।

प्रबंधकल्पना-संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसा प्रबंध जिसमें थोड़ी सी सत्य कथा में बहुत सी बातें ऊपर से मिलाई गई हों।

प्रबल-वि० [सं०] [स्त्री० प्रबला] १. बलवान्। प्रचंड। २. ज़ोर का। तेज़। उग्र। ३. घोर। महान्।

प्रबला-संज्ञा स्त्री० [...] बहुत बलवती।

...-वि० [...] ...हुआ। २. ...में आ... ३. पंडित।

बुझाना। ४. सिखाना। पाठ पढ़ाना। पट्टी पढ़ाना। ५. ढारस देना। तसल्ली देना।

प्रबोधिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्ति। सुनंदिनी। मंजुभाषिणी।

प्रबोधिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] देवोत्थान या कार्त्तिक शुक्ला एकादशी।

प्रभंजन-संज्ञा पुं० [सं०] १. तोड़ फोड़। नाश। २. प्रचंड वायु। आँधी।

प्रभद्रक-संज्ञा पुं० दे० "प्रभद्रिका"।

प्रभद्रिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्ति।

प्रभव-संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्पत्ति-कारण। २. उत्पत्ति-स्थान। आकर। ३ जन्म। उत्पत्ति। ४. सृष्टि। संसार।

प्रभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकाश। आभा। चमक। २. सूर्य्य की एक पत्नी। ३. एक द्वादशाक्षरा वृत्ति। मंदाकिनी।

प्रभाउ:-संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।

प्रभाकर-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. चंद्रमा। ३. अग्नि। ४. समुद्र।

प्रभात-संज्ञा पुं० [सं०] सवेरा। तड़का।

प्रभाती-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रभात] एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल गाया जाता है।

प्रभाव-संज्ञा पुं० [सं०] १. उद्भव। प्रादुर्भाव। २. सामर्थ्य। शक्ति। ३. असर। ४. महिमा। माहात्म्य। ५. इतना मान या अधिकार कि जो बात चाहे, कर या करा सके। साख या दबाव।

प्रभावती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य्य की पत्नी। २ तेरह अक्षरों का एक छंद। रुचिरा। वि० स्त्री० प्रभाववाली।

प्रभास-संज्ञा पुं० [सं०] १. दीप्ति। ज्योति। २. एक प्राचीन तीर्थ। सोमतीर्थ।

प्रभासना-क्रि० अ० [सं० प्रभासन] भासित होना। दिखाई पड़ना।

प्रभु-संज्ञा पुं० [सं०] १. अधिपति। नायक। २. स्वामी। मालिक। ३ ईश्वर। भगवान्।

प्रभुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बड़ाई। महत्त्व। २. हुकूमत। शासनाधिकार। ३. वैभव। ४. साहिबी। मालिकपन।

प्रभुताई-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रभुता"।

प्रभुत्व-संज्ञा पुं० [सं०] प्रभुता।

प्रभू:-संज्ञा पुं० दे० "प्रभु"।

प्रभूत-वि० [सं०] १. निकला हुआ। उत्पन्न। २. उन्नत। ३ प्रचुर। बहुत। संज्ञा पुं० पंचभूत। तत्त्व।

प्रभृति-अव्य० [सं०] इत्यादि। वगैरह।

प्रभेद-संज्ञा पुं० [सं०] भेद। विभिन्नता।

प्रमत्त-वि० [सं०] [संज्ञा प्रमत्तता] १. मस्त। नशे में चूर। २. पागल। बावला। ३. जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

प्रमथ-संज्ञा पुं० [सं०] १. मथन या पीड़ित करनेवाला। २. शिव के एक प्रकार के गण या पारिषद।

प्रमथन-संज्ञा पुं० [सं०] १. मथना। २. दुःख पहुँचाना। ३. वध या नाश करना।

प्रमद-संज्ञा पुं० [सं०] १. मतवालापन। २. हर्ष। आनंद। वि० मत्त। मतवाला।

प्रमदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती स्त्री।

प्रमर्दन-संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह मलना दलना। २. कुचलना। रौंदना। वि० खूब मर्दन करनेवाला।

प्रमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुद्ध बोध। यथार्थ ज्ञान। (न्याय) २. माप।

प्रमाण-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह बात जिससे कोई दूसरी बात सिद्ध हो। सबूत। २. एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का कथन होता है। ३. सत्यता। सचाई। ४. निश्चय। प्रतीति। यक़ीन। ५. मर्य्यादा। मान। आदर। ६ प्रामाणिक बात या वस्तु। मानने की बात। ७. इयत्ता। हद। मान। ८. प्रमाणपत्र। वि० १ प्रमाणित। चरितार्थ। ठीक घटता हुआ। २. माना जानेवाला। ठीक। ३. बड़ाई आदि में बराबर। अव्य० पर्य्यंत। तक।

प्रमाणकोटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रमाण मानी जानेवाली बातों या वस्तुओं का घेरा।

प्रमाणना-क्रि० स० दे० "प्रमानना"।

प्रमाणपत्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह कागज़ जिस पर का लेख किसी बात का प्रमाण हो। सर्टिफिकेट।

प्रमाणिक-वि० दे० "प्रामाणिक"।

प्रमाणिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] नगस्वरूपिणी वृत्त का दूसरा नाम।

प्रमाणित-वि० [सं०] प्रमाण द्वारा सिद्ध। साबित। निश्चित।

प्रमाता-संज्ञा पुं० [सं० प्रमातृ] १. वह जिसे प्रमा का ज्ञान हो। २. ज्ञान कर्त्ता आत्मा या चेतन पुरुष। ३. द्रष्टा। साक्षी।

संज्ञा स्त्री० [सं०] दादी। पिता की माता।

प्रमाद–संज्ञा पु० [सं०] १ भूल। चूक। भ्रम। भ्रांति। २. अंतःकरण की दुर्बलता। ३ समाधि के साधनों की भावना न करना या उन्हें ठीक न समझना। (योग)

प्रमादी–वि० [सं० प्रमादिन्] [स्त्री० प्रमादिनी] प्रमादयुक्त। भूल-चूक करनेवाला।

प्रमान–संज्ञा पु० दे० "प्रमाण"।

प्रमानना–क्रि० स० [सं० प्रमाण+ना (प्रत्य०)] १. प्रमाण मानना। ठीक समझना। २. प्रमाणित करना। साबित करना। ३. स्थिर करना। निश्चित करना।

प्रमानी–वि० [सं० प्रामाणिक] मानने योग्य। प्रमाण योग्य। माननीय।

प्रमित–वि० [सं०] १. परिमित। २. निश्चित। ३ अल्प। थोड़ा।

प्रमिताक्षरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक द्वादशाक्षरा वर्णवृत्त।

प्रमीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तंद्रा। २. थकावट। शैथिल्य। ग्लानि।

प्रमुख–वि० [सं०] १. प्रथम। पहला। २ प्रधान। श्रेष्ठ। ३. मान्य। प्रतिष्ठित। अव्य० इत्यादि। वगैरह।

प्रमुदित–वि० [सं०] हर्षित। प्रसन्न।

प्रमुदितवदना–संज्ञा स्त्री० [सं०] बारह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। मंदाकिनी।

प्रमेय–वि० [सं०] १. जो प्रमाण का विषय हो सके। २. जिसका मान बताया जा सके। ३ जिसका निर्धारण कर सकें।
संज्ञा पु० वह जिसका बोध प्रमाण द्वारा करा सकें।

प्रमेह–संज्ञा पु० [सं०] एक रोग जिसमें मूत्र मार्ग से शुक्र तथा शरीर की और धातुएँ निकला करती हैं।

प्रमोद–संज्ञा पु० [सं०] १. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। २ सुख। ३. दे० "प्रमोदा"।

प्रमोदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य में आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

प्रयक–संज्ञा पु० दे० "पर्यंक"।

प्रयत –अव्य० दे० "पर्यंत"।

प्रयत्न–संज्ञा पु० [सं०] १ किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये की जानेवाली क्रिया। प्रयास। चेष्टा। कोशिश। २. प्राणियों की क्रिया। जीवों का व्यापार। (न्याय) ३. वर्णों के उच्चारण में होनेवाली क्रिया। (व्याकरण)

प्रयत्नवान्–वि० [सं० प्रयत्नवत्] [स्त्री० प्रयत्नवती] प्रयत्न में लगा हुआ।

प्रयाग–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-जमुना के संगम पर है। इलाहाबाद।

प्रयागवाल–संज्ञा पुं० [हिं० प्रयाग+वाला (प्रत्य०)] प्रयाग तीर्थ का पंडा।

प्रयाण–संज्ञा पु० [सं०] १ गमन। प्रस्थान। यात्रा। २ युद्धयात्रा। चढ़ाई।

प्रयास–संज्ञा पु० [सं०] १ प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २ श्रम। मेहनत।

प्रयुक्त–वि० [सं०] १. अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। सम्मिलित। २ जो खूब काम में लाया गया हो।

प्रयुत–संज्ञा पुं० [सं०] दस लाख की संख्या

प्रयोक्ता–संज्ञा पुं० [सं० प्रयोक्तृ] १ प्रयोग व व्यवहार करनेवाला। २. ऋण देनेवाला

प्रयोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी काम में लगाना। आयोजन। साधन। २. व्यवहार इस्तेमाल। बरता जाना। ३. क्रिया का साधन। विधान। अमल। ४. मारण मोहन आदि तांत्रिक उपचार या साधन जो बारह कहे जाते हैं। ५. अभिनय। नाटक का खेल। ६. यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान का बोध करानेवाली विधि। पद्धति। ७ दृष्टांत। निदर्शन।

प्रयोगातिशय–संज्ञा पुं० [सं०] नाटक में प्रस्तावना का एक भेद।

प्रयोगी, प्रयोजक–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रयोगकर्ता। अनुष्ठान करनेवाला। २ काम में लगानेवाला। प्रेरक। ३. प्रदर्शक।

प्रयोजन–संज्ञा पु० [सं०] १. कार्य। काम। अर्थ। २. उद्देश्य। अभिप्राय। मतलब। आशय। ३ उपयोग। व्यवहार।

प्रयोजनवती लक्षणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करे।

प्रयोजनीय–वि० [सं०] काम का। लब का।

प्रयोज्य–वि० [सं०] प्रयोग के योग्य। में लाने लायक।

प्ररोचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाह। रुचि उत्पन्न करना। २ उत्तेजना। बढ़ावा। ३. नाटक के अभिनय में प्रस्तावना के बीच में सूत्रधार, नट आदि का नाटक और नाटककार की प्रशंसा में कुछ कहना।

रोहण—संज्ञा पुं० [सं०] १. आरोह। चढ़ाव। २ उगना। जमना।
लंब—वि० [सं०] १. नीचे की ओर दूर तक लटकता हुआ। २. लंबा। ३. टँगा हुआ। टिका हुआ। ४. निकला हुआ।
लंबन—संज्ञा पुं० [सं०] अवलंबन। सहारा।
लंबी—वि० [सं० प्रलंबिन्] [स्त्री० प्रलंबिनी] १. दूर तक लटकनेवाला। २. सहारा लेनेवाला।
लयंकर—वि० [सं०] [स्त्री० प्रलयंकरी] प्रलयकारी। सर्वनाशकारी।
लय—संज्ञा पुं० [सं०] १. लय को प्राप्त होना। न रह जाना। २. जगत् के नाना रूपों का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना। संसार का तिरोभाव। ३. साहित्य में एक सात्विक भाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने से पूर्व स्मृति का लोप हो जाता है। ४. मूर्च्छा। बेहोशी।
लाप—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलापी] १. कहना। बकना। २. व्यर्थ की बकवाद। पागलों की सी बड़बड़।
लेप—संज्ञा पुं० [सं०] अंग पर कोई गीली दवा छोपना या रखना। लेप। पुल्टिस।
लेपन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलेपक, प्रलेप्य] लेप करने की क्रिया। पोतने का काम।
लोभ, प्रलोभन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रलोभक] लोभ दिखाना। लालच दिखाना।
वंचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रवंचक] छल। ठगपना। धूर्तता।
वक्ता—संज्ञा पुं० [सं० प्रवक्तृ] १. अच्छी तरह बोलने या कहनेवाला। २. वेदादि का उपदेश देनेवाला।
वचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रवचनीय] १. अच्छी तरह समझाकर कहना। २. व्याख्या। ३. वेदांग।
वण—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रमशः नीची होती हुई भूमि। ढाल। उतार। २. गड्ढा। ३ उदर। पेट।
...१. ढालुआँ। जो क्रमशः नीचा होता ...ो। २ झुका हुआ। नत। ३. प्रवृत्त। ...४. नम्र। विनीत। ५. उदार।
...वत्स्यत्पतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह ...का जिसका पति विदेश जानेवाला हो।
...वत्प्रेयसी, प्रवत्स्यद्भर्तृका—संज्ञा स्त्री० प्रवत्स्यत्पतिका।

प्रवर—वि० [सं०] श्रेष्ठ। बड़ा। मुख्य। संज्ञा पुं० १. किसी गोत्र के अंतर्गत विशेष विशेष प्रवर्त्तक मुनि। २. संतति।
प्रवरललिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
प्रवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्य्यारंभ। ठानना। २. एक प्रकार के मेघ।
प्रवर्त्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी काम को चलानेवाला। संचालक। २. आरंभ करनेवाला। जारी करनेवाला। ३. काम में लगानेवाला। प्रवृत्त करनेवाला। ४. उभारनेवाला। उसकानेवाला। ५. निकालनेवाला। ईजाद करनेवाला। ६. नाटक में प्रस्तावना का वह भेद जिसमें सूत्रधार वर्त्तमान समय का वर्णन करता हो और उसी का संबंध लिए पात्र का प्रवेश हो।
प्रवर्त्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रवर्तित, प्रवर्तनीय, प्रवर्त्य] १. कार्य्य आरंभ करना। ठानना। २. काम को चलाना। ३. प्रचार करना। जारी करना।
प्रवर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्षा। बारिश। २. किष्किंधा के समीप का एक पर्वत।
प्रवह—संज्ञा पुं० [सं०] १. खूब बहाव। २. सात वायुओं में से एक वायु।
प्रवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. बात-चीत। २. जनश्रुति। जनरव। अफवाह। ३. झूठी बदनामी। अपवाद।
प्रवान*—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाण"।
प्रवाल—संज्ञा पुं० [सं०] मूँगा। विद्रुम।
प्रवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. अपना देश छोड़कर दूसरे देश में रहना। २. विदेश।
प्रवासी—वि० [सं० प्रवासिन्] परदेश में रहनेवाला। परदेसी।
प्रवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल का स्रोत। बहाव। २. बहता हुआ पानी। धारा। ३ काम का जारी रहना। ४. चलता हुआ क्रम। तार। सिलसिला।
प्रवाहित—वि० [सं०] बहता हुआ।
प्रवाही—वि० [सं० प्रवाहिन्] [स्त्री० प्रवाहिनी] १. बहानेवाला। २. बहनेवाला। ३. तरल। द्रव।
प्रविष्ट—वि० [सं०] घुसा हुआ।
प्रविसना—क्रि० अ० [सं० प्रविश] घुसना।
प्रवीण—वि० [सं०] [संज्ञा प्रवीणता] निपुण। कुशल। दक्ष। चतुर। होशियार।

प्रवीर–वि० [सं०] भारी योद्धा। बहादुर।

प्रवृत्त–वि० [सं०] १. किसी बात की ओर झुका हुआ। २ तत्पर। उद्यत। तैयार।

प्रवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रवाह। बहाव। २. मन का लगाव। लगन। ३. न्याय में एक यत्न विशेष। ४. प्रवर्त्तन। काम का चलना। ५. सांसारिक विषयों का ग्रहण। निवृत्ति का उलटा।

प्रवृद्ध–वि० [सं०] १. खूब बढ़ा हुआ। २. प्रौढ़। खूब पक्का।
संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

प्रवेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. भीतर जाना। घुसना। पैठना। २. गति। पहुँच। रसाई। ३. किसी विषय की जानकारी।

प्रवेशिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह पत्र या चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने पाएँ। २. प्रवेश के लिये दिया जानेवाला धन। दाखिला।

प्रव्रज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] संन्यास।

प्रशंस*–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रशंसा"।
वि० [सं० प्रशस्य] प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसक–वि० [सं०] १. प्रशंसा करनेवाला। २. खुशामदी।

प्रशंसन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशंस्य] गुण-कीर्त्तन। स्तुति करना। सराहना। तारीफ करना।

प्रशंसना*–क्रि० स० [सं० प्रशंसन] सराहना। गुणानुवाद करना। तारीफ़ करना।

प्रशंसनीय–वि० [सं०] प्रशंसा के योग्य। बहुत अच्छा।

प्रशंसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रशंसित] गुण-वर्णन। स्तुति। बड़ाई। तारीफ़।

प्रशंसोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशंसा करके उपमान की प्रशंसा द्योतित की जाती है।

प्रशंस्य–वि० [सं०] प्रशंसनीय।

प्रशमन–संज्ञा पुं० [सं०] १ शमन। शांति। २. नाशन। ध्वंस करना। ३. मारण। वध।

प्रशस्त–वि० [सं०] १. प्रशंसनीय। सुंदर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. भव्य।

प्रशस्तपाद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन आचार्य्य जिनका वैशेषिक दर्शन पर पदार्थ-धर्म-संग्रह नामक ग्रंथ है।

प्रशस्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रशंसा। स्तुति। २. राजा की ओर से एक प्रकार के आज्ञापत्र जो चट्टानों या ताम्रपत्रादि पर खोदे जाते थे। ३. प्राचीन पुस्तकों के आदि और अंत की कुछ पंक्तियाँ जिनसे पुस्तक के कर्ता, विषय, कालादि का परिचय मिलता हो।

प्रशांत–वि० [सं०] १. चंचलता रहित। स्थिर। २ शांत। निश्चल वृत्तिवाला।
संज्ञा पुं० एक महासागर जो एशिया और अमरीका के बीच में है।

प्रशाखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शाखा की शाखा। टहनी। पतली शाखा।

प्रश्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. पूछताछ। जिज्ञासा। सवाल। २. पूछने की बात। ३. विचारणीय विषय। ४. एक उपनिषद्।

प्रश्नोत्तर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सवाल-जवाब। प्रश्न और उत्तर। संवाद। २. वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं।

प्रश्रय–संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रयस्थान। २. टेक। सहारा। आधार।

प्रश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] वह वायु जो नथने से बाहर निकलती है।

प्रष्टव्य–वि० [सं०] १. पूछने योग्य। २. पूछने का। जिसे पूछना हो।

प्रसंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. संबंध। लगाव। संगति। २. विषय का लगाव। अर्थ की संगति। ३. स्त्री-पुरुष का संयोग। ४. बात। वार्ता। विषय। ५. उपयुक्त संयोग। अवसर। मौक़ा। ६ हेतु। कारण। ७ विषयानुक्रम। प्रस्ताव। प्रकरण। ८. विस्तार। फैलाव।

प्रसंसना*–क्रि० स० दे० "प्रशंसना"।

प्रसन्न–वि० [सं०] १. संतुष्ट। तुष्ट। २. खुश। हर्षित। प्रफुल्ल। ३. अनुकूल।
‡वि० [फा० पसंद] मनोनीत। पसंद।

प्रसन्नता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुष्टि। संतोष। २. प्रफुल्लता। हर्ष। आनंद। ३. कृपा।

प्रसन्नित*‡–वि० दे० "प्रसन्न"।

प्रसरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रसरणीय, प्रसरित] १. आगे बढ़ना। खिसकना। सरकना। २. फैलना। फैलाव। ३. व्याप्ति। ४. विस्तार।

प्रसव–संज्ञा पुं० [सं०] १. बच्चा जनने की क्रिया। जनन। प्रसूति। २. जन्म।

उत्पत्ति। ३. बच्चा। संतान।
प्रसविनी-वि० स्त्री० [सं०] प्रसव करनेवाली। जननेवाली।
प्रसाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसन्नता। २. अनुग्रह। कृपा। मिहरबानी। ३. वह वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय। ४. वह पदार्थ जिसे देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें। ५. देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय। ६. भोजन। मुहा०—प्रसाद पाना = भोजन करना। ७. काव्य का एक गुण। जिसकी भाषा स्वच्छ और साधु हो और सुनने के साथ ही जिसका भाव समझ में आ जाय। ८.शब्दालंकार के अंतर्गत एक वृत्ति। कोमला वृत्ति। ९. १. दे० "प्रासाद"।
प्रसादना*-क्रि० स० [सं० प्रसादन] प्रसन्न करना।
प्रसादनीय*-वि० [सं०] प्रसन्न करने योग्य।
प्रसादी-संज्ञा स्त्री० [हिं० प्रसाद] १. देवताओं को चढ़ाया हुआ पदार्थ। २. नैवेद्य। ३. वह पदार्थ जो पूज्य और बड़े लोग छोटों को दें।
प्रसार-संज्ञा पुं० [सं०] १. विस्तार। फैलाव। पसार। २. संचार। ३. गमन। ४. निर्गम। विकास।
प्रसारण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रसारित, प्रसार्य] १. फैलाना। २. बढ़ाना।
प्रसारिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंधप्रसारिणी लता। २. छजालू। लाजवंती।
प्रसारित-वि० [सं०] फैलाया हुआ।
प्रसिद्ध-वि० [सं०] १. भूषित। अलंकृत। २. ख्यात। विख्यात। मशहूर।
प्रसिद्धि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ख्याति। शोहरत। २. भूषा। बनाव-सिंगार।
प्रसुप्त-वि० [सं०] सोया हुआ।
प्रसुप्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] नींद।
प्रसू-संज्ञा स्त्री० [सं०] जननेवाली। उत्पन्न करनेवाली।
प्रसूत-वि० [सं०] [स्त्री० प्रसूता] १. उत्पन्न। संजात। पैदा। २. उत्पादक। संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों को प्रसव के पीछे होता है।
प्रसूता-संज्ञा स्त्री० [सं०] बच्चा जननेवाली स्त्री। जच्चा।
प्रसूति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रसव। जनन। २. उद्भव। ३. कारण। प्रकृति।
प्रसूतिका-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रसूता"।
प्रसून-संज्ञा पुं० [सं०] १. फूल। २. फल।
प्रसृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रसृत] १. फैलाव। विस्तार। २. संतति। संतान।
प्रसेक-संज्ञा पुं० [सं०] १. सेचन। सींचना। २. निचोड़। ३. छिड़काव। ४. एक असाध्य रोग। जिरियान। (सुश्रुत)
प्रसेद*-संज्ञा पुं० [सं० प्रस्वेद] पसीना।
प्रस्तर-संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्थर। २. बिछावन। ३. चौड़ी सतह। ४ प्रस्तार।
प्रस्तार-संज्ञा पुं० [सं०] १. फैलाव। विस्तार। २. आधिक्य। वृद्धि। ३. परत। तह। ४. छंदःशास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययों में से पहला जिससे छंदों के भेद की संख्याओं और रूपों का ज्ञान होता है।
प्रस्ताव-संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसंग। छिड़ी हुई बात। २ अवसर पर कही हुई बात। ज़िक्र। चर्चा। ३. सभा के सामने उपस्थित मंतव्य। (आधुनिक) ४. प्राक्कथन। भूमिका। विषय-परिचय।
प्रस्तावना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आरंभ। २. प्राक्कथन। भूमिका। उपोद्घात। ३ नाटक में अभिनय के पूर्व विषय का परिचय देने के लिये उठाया हुआ प्रसंग।
प्रस्तावित-वि० [सं०] जिसके लिये प्रस्ताव किया गया हो।
प्रस्तुत-वि० [सं०] १. जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई हो। २. जो कहा गया हो। उक्त। कथित। ३. उपस्थित। सामने आया हुआ। ४. उद्यत। तैयार।
प्रस्तुतालंकार-संज्ञा पुं० [सं०] एक अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत के संबंध में कोई बात कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत के प्रति घटाया जाता है।
प्रस्थ-संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़ के ऊपर की चौरस भूमि। २. प्राचीन काल का एक मान।
प्रस्थान-संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन। यात्रा। रवानगी। २. पहनने के कपड़े आदि जिसे लोग यात्रा के मुहूर्त पर घर से निकालकर यात्रा की दिशा में कहीं पर रखवा देते हैं।
प्रस्थानी-वि० [हिं० प्रस्थान] जानेवाला।

प्रस्थापन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रस्थापित, प्रस्थाप्य] १. प्रस्थान कराना। भेजना। २. प्रेरण। ३. स्थापन।

प्रस्थित–वि० [सं०] १. ठहराया हुआ। टिका हुआ। २. दृढ़। ३. जो गया हो। गत।

प्रस्फुरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलना। २. प्रकाशित होना।

प्रस्फोटन–संज्ञा पुं० [सं०] एकबारगी ज़ोर से खुलना या फूटना। स्फोट।

प्रस्रवण–संज्ञा पुं० [सं०] १. जल आदि का टपक या गिरकर बहना। २. सोता। ३. प्रपात। झरना। निर्झर।

प्रस्वेद–संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।

प्रहर–संज्ञा पुं० [सं०] दिन-रात के आठ सम भागों में से एक भाग। पहर।

प्रहरखना–क्रि० अ० [सं० प्रहर्षण] हर्षित होना। आनंदित होना।

प्रहरणकलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

प्रहरी–वि० [सं० प्रहरिन्] १. पहर पहर पर घंटा बजानेवाला। घड़ियाली। २. पहरा देनेवाला।

प्रहर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] हर्ष। आनंद।

प्रहर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] १. आनंद। २. एक अलंकार जिसमें बिना उद्योग के अनायास किसी के वांछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है।

प्रहर्षणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्ति।

प्रहसन–संज्ञा पुं० [सं०] १. हँसी। दिल्लगी। परिहास। २. चुहल। खिल्ली। ३. हास्य-रस-प्रधान एक प्रकार का काव्य-मिश्र नाट्य जो रूपक के दस भेदों में से है।

प्रहार–संज्ञा पुं० [सं०] आघात। वार। चोट। मार।

प्रहारना–क्रि० अ० [सं० प्रहार] १. मारना। आघात करना। २. मारने के लिये चलाना।

प्रहारित–वि० [सं० प्रहार] जिस पर प्रहार हो। प्रताड़ित।

प्रहारी–वि० [सं० प्रहारिन्] [स्त्री० प्रहारिणी] १. मारनेवाला। प्रहार करनेवाला। २. चलानेवाला। छोड़नेवाला। ३. नाशक।

प्रहेलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पहेली।

प्रह्लाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. आमोद। आनंद। २. एक भक्त दैत्य जो राजा हिरण्यकशिपु का पुत्र था।

प्रांगण–संज्ञा पुं० [सं०] मकान के बीच का खुला हुआ भाग। आँगन। सहन।

प्रांजल–वि० [सं०] १. सरल। सीधा। २ सच्चा। ३. बराबर। समान।

प्रांत–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रांतिक] १ अंत। शेष। सीमा। २. किनारा। छोर। सिरा। ३ ओर। दिशा। तरफ़। ४. खंड। प्रदेश।

प्रांतीय, प्रांतिक–वि० [सं०] किसी एक प्रांत से संबंध रखनेवाला।

प्राकाम्य–संज्ञा० पुं० [सं०] आठ प्रकार के ऐश्वर्यों या सिद्धियों में से एक।

प्राकार–संज्ञा पुं० दे० "प्राचीर"।

प्राकृत–वि० [सं०] १. प्रकृति से उत्पन्न या प्रकृति-संबंधी। २. स्वाभाविक। नैसर्गिक। ३. भौतिक। ४. सहज। संज्ञा स्त्री० १. बोलचाल की भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रांत में हो अथवा रहा हो। २. एक प्राचीन भारतीय भाषा। भारत की बोलचाल की आर्य्य भाषाएँ बोलचाल की प्राकृतों से बनी हैं।

प्राकृतिक–वि० [सं०] १. जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। २. प्रकृति-संबंधी। प्रकृति का। ३. स्वाभाविक। सहज।

प्राकृतिक भूगोल–संज्ञा पुं० [सं०] भूगोल-विद्या का वह अंग जिसमें पृथ्वी की वर्त्तमान स्थिति तथा भिन्न भिन्न प्राकृतिक अवस्थाओं का वर्णन होता है।

प्राक्–वि० [सं०] पहले का। अगला। संज्ञा पुं० पूर्व। पूरब।

प्राखर्य–संज्ञा पुं० [सं०] प्रखरता।

प्रागभाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी विशेष समय के पूर्व न होना। २. वह पदार्थ जिसका आदि न हो, पर अंत हो।

प्राग्ज्योतिष–संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत आदि के अनुसार कामरूप देश।

प्राग्ज्योतिषपुर–संज्ञा पुं० [सं०] प्राग्ज्योतिष देश की राजधानी। आधुनिक गोहाटी।

प्राङ्मुख–वि० [सं०] जिसका मुँह पूर्व दिशा की ओर हो। पूर्वाभिमुख।

प्राची–संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा। पूरब।

प्राचीन–वि० [सं०] १. पूरब का। २. पिछले जमाने का। पुराना। पुरातन। ३. वृद्ध। संज्ञा पुं० दे० "प्राचीर"।

प्राचीनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन होने का भाव। पुरानापन।

प्राचीर–संज्ञा पुं० [सं०] चहार-दीवारी। शहरपनाह। परकोटा।

प्राचुर्य–संज्ञा पुं० [सं०] प्रचुर होने का भाव। अधिकता। बहुतायत।

प्राच्य–वि० [सं०] १. पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न। पूर्व का। २. पूर्वीय। पूर्व-संबंधी। ३. पुराना। प्राचीन।

प्राच्यवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वैतालीय वृत्ति का एक भेद।

प्राजापत्य–वि० [सं०] १. प्रजापति-संबंधी। २. प्रजापति से उत्पन्न। संज्ञा पुं० १. आठ प्रकार के विवाहों में से चौथा। इसमें कन्या का पिता वर और कन्या को एकत्र कर उनसे यह प्रतिज्ञा कराता है कि हम दोनों मिलकर गार्हस्थ धर्म का पालन करेंगे। २. यज्ञ।

प्राज्ञ–वि० [सं०] [स्त्री० प्राज्ञा, प्राज्ञी] १ बुद्धिमान्। समझदार। चतुर। २. पंडित। विद्वान्।

प्राड्विवाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. न्याय करनेवाला। न्यायाधीश। २. वकील।

प्राण–संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है। ३. श्वास। साँस। ४. काल का वह विभाग जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके। ५. बल। शक्ति। ६. जीवन। जान। मुहा०—प्राण उड़ जाना = १. बहुत घबराहट हो जाना। हक्का-बक्का हो जाना। २. डर जाना। भयभीत होना। प्राण का गले तक आना = मरने पर होना। मरणासन्न होना। प्राण या प्राणों का मुँह को आना या चले आना = १. मरने पर होना। २. अत्यंत दुःख होना। बहुत अधिक कष्ट होना। प्राण जाना, छूटना या निकलना = जीवन का अंत होना। मरना। प्राण डालना = जीवन प्रदान करना। प्राण त्यागना, तजना या छोड़ना = मरना। प्राण देना = मरना। किसी पर या किसी के ऊपर प्राण देना = १. किसी के किसी काम से बहुत दुखी या रुष्ट होकर मरना। २. किसी को बहुत अधिक चाहना। प्राणों से भी बढ़कर चाहना। प्राण निकलना = १. मर जाना। मरना। २. बहुत घबरा जाना। भयभीत होना। प्राण पयान होना = प्राण निकलना। प्राण या प्राणों पर बीतना = १. जीवन संकट में पड़ना। २. मर जाना। प्राण रखना = १. जिलाना। जीवन देना। २. जान बचाना। जीवन की रक्षा करना। प्राण लेना या हरना = मार डालना। प्राण हारना = १. मर जाना। २. साहस टूट जाना। ७. परम प्रिय। ८. ब्रह्मा। ९. विष्णु। १०. अग्नि। आग।

प्राणअधार:†–संज्ञा पुं० [सं० प्राण + आधार] १. बहुत प्रिय व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

प्राणघात–संज्ञा पुं० [सं०] हत्या। वध।

प्राणजीवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राणाधार। २. परम प्रिय व्यक्ति।

प्राणत्याग–संज्ञा पुं० [सं०] मर जाना।

प्राणदंड–संज्ञा पुं० [सं०] हत्या आदि अपराध के बदले में मार डालना।

प्राणद–वि० [सं०] १. जो प्राण दे। २. प्राणों की रक्षा करनेवाला।

प्राणदान–संज्ञा पुं० [सं०] किसी को मरने या मारे जाने से बचाना।

प्राणधन–वि० [सं०] अत्यंत प्रिय।

प्राणधारी–वि० [सं० प्राणधारिन्] १. जीवित। प्राणयुक्त। २. जो साँस लेता हो। चेतन। संज्ञा पुं० प्राणी। जंतु। जीव।

प्राणनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्राणनाथा] १. प्रिय व्यक्ति। प्यारा। प्रियतम। २. पति। स्वामी। ३. एक संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य जो क्षत्रिय थे और औरंगजेब के समय में हुए थे।

प्राणनाथी–संज्ञा पुं० [सं० प्राणनाथ] १. प्राणनाथ के संप्रदाय का पुरुष। २. स्वामी प्राणनाथ का चलाया हुआ संप्रदाय।

प्राणनाश–संज्ञा पुं० [सं०] हत्या या मृत्यु।

प्राणपति–संज्ञा पुं० [सं०] १. पति। स्वामी। २. प्रिय व्यक्ति। प्यारा।

प्राणप्यारा–संज्ञा पुं० [हिं० प्राण + प्यारा] [स्त्री० प्राणप्यारी] १. प्रियतम। अत्यंत प्रिय व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

प्राणप्रतिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी नई

मूर्ति को मंदिर आदि में स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राण का आरोप।
प्राणप्रद–वि० [सं०] १. प्राणदाता। जो प्राण दे। २. स्वास्थ्य वर्धक।
प्राणप्रिय–वि० [सं०] [स्त्री० प्राणप्रिया] जो प्राण के समान प्रिय हो। प्रियतम।
प्राणमय–वि० [सं०] जिसमें प्राण हों।
प्राणमय कोश–संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत के अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा। यह पाँच प्राणों से बना हुआ माना जाता है।
प्राणवल्लभ–संज्ञा पुं० [सं०] १. अत्यंत प्रिय। २. स्वामी। पति।
प्राणवायु–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राण।
प्राणशरीर–संज्ञा पुं० [सं०] एक सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना गया है।
प्राणांत–संज्ञा पुं० [सं०] मरण। मृत्यु।
प्राणांतक वि० [सं०] प्राण लेनेवाला। जान लेनेवाला। घातक।
प्राणाधार, प्राणाधिक–वि० [सं०] अत्यंत प्रिय। बहुत प्यारा।
संज्ञा पुं० पति। स्वामी।
प्राणायाम–संज्ञा पुं० [सं०] योग शास्त्रानुसार योग के आठ अंगों में चौथा। श्वास और प्रश्वास। इन दोनों प्रकार की वायुओं की गतियों को धीरे धीरे कम करना।
प्राणिद्यूत–संज्ञा पुं० [सं०] वह बाजी जो मेढ़े, तीतर आदि जीवों की लड़ाई आदि पर लगाई जाय।
प्राणी–वि० [सं० प्राणिन्] प्राणधारी।
संज्ञा पुं० १. जंतु। जीव। २. मनुष्य।
‡ संज्ञा स्त्री० पुं० पुरुष या स्त्री।
प्राणेश, प्राणेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्राणेश्वरी] १ पति। स्वामी। २ बहुत प्यारा।
प्रात–अव्य० [सं० प्रात] सबेरे। तड़के।
संज्ञा पुं० सबेरा। प्रातःकाल।
प्रात–संज्ञा पुं० [सं० प्रातर] सबेरा। प्रभात।
प्रातःकर्म–संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म जो प्रातःकाल किया जाता हो; जैसे–स्नान।
प्रातःकाल–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रातःकालीन] १ रात के अंत में सूर्योदय के पूर्व का काल। यह तीन मुहूर्त का माना गया है। २. सबेरे का समय।
[illegible]–संज्ञा पुं० [सं०] सबेरे के समय ईश्वर का भजन करना।
प्रातःस्मरणीय–वि० [सं०] जो प्रातःकाल स्मरण करने के योग्य हो। श्रेष्ठ। पूज्य।
प्रातनाथ–संज्ञा पुं० [सं० प्रातः + नाथ] सूर्य।
प्रातिपदिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २ संस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो धातु न हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगाने से हुई हो। जैसे, पेड़ अच्छा आदि।
प्राथमिक–वि० [सं०] १. पहले का। २. प्रारंभिक। आदिम।
प्रादुर्भाव–संज्ञा पुं० [सं०] १. आविर्भाव। प्रकट होना। २ उत्पत्ति।
प्रादुर्भूत–वि० [सं०] १. जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। प्रकटित। २. उत्पन्न।
प्रादुर्भूतमनोभवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] केशव के अनुसार मध्या के चार भेदों में से एक।
प्रादेशिक–वि० [सं०] प्रदेश-संबंधी। किसी एक प्रदेश का। प्रांतिक।
संज्ञा पुं० सामंत। जमींदार या सरदार।
प्राधान्य–संज्ञा पुं० [सं०] प्रधानता।
प्रान–संज्ञा पुं० दे० "प्राण"।
प्रापण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रापक, प्राप्य, प्राप्त] १ प्राप्ति। मिलना। २. प्रेरण।
प्रापति†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्राप्ति"।
प्रापना†–क्रि० स० [सं० प्रापण] प्राप्त होना। मिलना।
प्राप्त–वि० [सं०] १. पाया हुआ। जो मिला हो। २. समुपस्थित।
प्राप्तकाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. उपयुक्त काल। उचित समय। २. मरण योग्य काल।
वि० जिसका काल आ गया हो।
प्राप्तव्य–वि० दे० "प्राप्य"।
प्राप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उपलब्धि। मिलना। २. पहुँच। ३. अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिससे सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। ४. आय। ५. लाभ। फायदा। ६. नाटक का सुखद उपसंहार।
प्राप्तिसम–संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में वह आपत्ति जो हेतु और साध्य को ऐसी अवस्था में जब कि दोनों प्राप्य हों, अविशिष्ट बतलाकर की जाय।

प्राप्य-वि० [सं०] १. पाने योग्य। प्राप्त करने योग्य। प्राप्तव्य। २. गम्य। ३. जो मिल सके। मिलने योग्य।

प्राबल्य-संज्ञा पुं० [सं०] प्रबलता।

प्रामाणिक-वि० [सं०] १. जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो। २. माननीय। मानने योग्य। ३. ठीक। सत्य।

प्रामाण्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रमाण का भाव। २. मान-मर्यादा।

प्राय-संज्ञा पुं० [सं०] १. समान। तुल्य। जैसे, मृतप्राय। २ लगभग। जैसे, प्रायद्वीप।

प्रायः-वि० [सं०] १. विशेषकर। बहुत। अकसर। २ लगभग। करीब करीब।

प्रायद्वीप-संज्ञा पुं० [सं० प्रायोद्वीप] स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।

प्रायशः-क्रि० वि० [सं०] प्राय'। बहुधा।

प्रायश्चित्त-संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं।

प्रायश्चित्तिक-वि० [सं०] १. प्रायश्चित्त के योग्य। २. प्रायश्चित्त संबंधी।

प्रायश्चित्ती-वि० [सं० प्रायश्चित्तिन्] १ प्रायश्चित्त के योग्य। २. प्रायश्चित्त करनेवाला।

प्रारंभ-संज्ञा पुं० [सं०] १. आरंभ। शुरू। २. आदि।

प्रारंभिक-वि० [सं०] १. प्रारंभ का। २. आदिम। ३ प्राथमिक।

प्रारब्ध-वि० [सं०] आरंभ किया हुआ। संज्ञा पुं० १ तीन प्रकार के कर्मों में से वह जिसका फल-भोग आरंभ हो चुका हो। २ भाग्य। किस्मत।

प्रारब्धी-वि० [सं० प्रारब्धिन्] भाग्यवान्।

प्रार्थना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी से कुछ माँगना। याचना। २. विनती। विनय। निवेदन।

☼ क्रि० स० प्रार्थना या विनती करना।

प्रार्थनापत्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। निवेदनपत्र। अर्जी।

प्रार्थना समाज-संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्म समाज की तरह का एक नवीन समाज या संप्रदाय।

प्रार्थनीय-वि० [सं०] प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थी-वि० [सं० प्रार्थिन्] [स्त्री० प्रार्थिनी] प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।

प्रालेय-संज्ञा पुं० [सं०] १. हिम। तुषार। २. बर्फ।

प्रावृट्-संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा ऋतु।

प्राशन-संज्ञा पुं० [सं०] १. खाना। भोजन। २. चखना। जैसे, अन्नप्राशन।

प्राशी-वि० [सं० प्राशिन्] [स्त्री० प्राशिनी] प्राशन करनेवाला। खानेवाला। भक्षक।

प्रासंगिक-वि० [सं०] १. प्रसंग संबंधी। प्रसंग का। २. प्रसंग द्वारा प्राप्त।

प्रासाद-संज्ञा पुं० [सं०] लंबा, चौड़ा, ऊँचा और कई भूमियों का पक्का या पत्थर का घर। विशाल भवन। महल।

प्रियंगु-संज्ञा स्त्री० [सं०] कँगनी नामक अन्न।

प्रियंवद-वि० [सं०] [स्त्री० प्रियंवदा] प्रिय वचन कहनेवाला। प्रियभाषी।

प्रियंवदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

प्रिय-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रिया] स्वामी। पति।

वि० १. जिससे प्रेम हो। प्यारा। २. मनोहर। सुंदर।

प्रियतम-वि० [सं०] [स्त्री० प्रियतमा] प्राणों से भी बढ़कर प्रिय।

संज्ञा पुं० स्वामी। पति।

प्रियदर्शन-वि० [सं०] [स्त्री० प्रियदर्शना] जो देखने में प्रिय लगे। सुंदर।

प्रियदर्शी-वि० [सं०] सबको प्रिय समझने या सबसे स्नेह करनेवाला।

प्रियभाषी-वि० [सं० प्रियभाषिन्] [स्त्री० प्रियभाषिणी] मधुर वचन बोलनेवाला।

प्रियवर-वि० [सं०] अति प्रिय। सबसे प्यारा। (पत्रों आदि में संबोधन)

प्रियवादी-संज्ञा पुं० दे० "प्रियभाषी"।

प्रिया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नारी। स्त्री। २ भार्या। पत्नी। जोरू। ३. प्रेमिका स्त्री। माशूका। ४. एक वृत्त का नाम। ५ सोलह मात्राओं का एक छंद।

प्रीत-वि० [सं०] प्रीतियुक्त।

☼ संज्ञा पुं० दे० "प्रीति"।

प्रीतम-संज्ञा पुं० [सं० प्रियतम] १. पति। भर्ता। स्वामी। २. प्यारा।

प्रीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संतोष। तृप्ति। २. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। ३. प्रेम। प्यार।

प्रीतिकर, प्रीतिकारक-वि० [सं०] प्रसन्न-

प्रीता उत्पन्न करनेवाला । प्रेमजनक ।
प्रीतिपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] जिसके साथ प्रीति की जाय । प्रेमभाजन । प्रेमी ।
प्रीतिभोज–संज्ञा पुं० [सं०] वह खान-पान जिसमें मित्र, बंधु आदि प्रेमपूर्वक सम्मिलित हों ।
प्रीत्यर्थ–अव्य० [सं०] १. प्रीति के कारण । प्रसन्न करने के वास्ते । २. लिये । वास्ते ।
प्रूम–संज्ञा पुं० [?] सीसे आदि का बना हुआ लट्टू के आकार का वह यंत्र जिसे समुद्र में डुबाकर उसकी गहराई नापते हैं ।
प्रेंखण–संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह हिलना या झूलना । २. अठारह प्रकार के रूपकों में से एक ।
प्रेक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] देखनेवाला । दर्शक ।
प्रेक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] १. आँख । २. देखने की क्रिया ।
प्रेक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देखना । २. नाच-तमाशा देखना । ३. दृष्टि । निगाह । ४. प्रज्ञा । बुद्धि ।
प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजाओं आदि के मंत्रणा करने का स्थान । मंत्रणागृह । २. नाट्यशाला ।
प्रेत–संज्ञा पुं० [सं०] १. मरा हुआ मनुष्य । मृतक प्राणी । २. पुराणानुसार वह कल्पित शरीर जो मनुष्य को मरने के उपरांत प्राप्त होता है । ३. नरक में रहनेवाला प्राणी । ४. पिशाचों की तरह की एक कल्पित देवयोनि ।
प्रेतकर्म–संज्ञा पुं० [सं० प्रेतकर्मन्] हिंदुओं में मृतदाह आदि से लेकर सपिंडी तक का कर्म । प्रेतकार्य्य ।
प्रेतकार्य्य–संज्ञा पुं० दे० "प्रेतकर्म" ।
प्रेतगृह–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्मशान । मरघट । २. कब्रिस्तान ।
प्रेतगेह*–संज्ञा पुं० दे० "प्रेतगृह" ।
प्रेतत्व–संज्ञा पुं० [सं०] प्रेत का भाव या धर्म्म । प्रेतता ।
प्रेतदाह–संज्ञा पुं० [सं०] मृतक को जलाने आदि का कार्य्य ।
प्रेतदेह–संज्ञा पुं० [सं०] मृतक का वह कल्पित शरीर जो उसके मरने के समय से सपिंडी तक उसकी आत्मा को प्राप्त रहता है ।
प्रेतनी–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रेत+नी (प्रत्य०)] भूतनी । चुड़ैल ।
प्रेतयज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जिसके करने से प्रेत-योनि प्राप्त होती है ।
प्रेतलोक–संज्ञा पुं० [सं०] यमपुर ।
प्रेतविधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक का दाह आदि करना ।
प्रेता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पिशाची । २. भगवती कात्यायिनी ।
प्रेताशिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवती ।
प्रेताशौच–संज्ञा पुं० [सं०] वह अशौच जो हिंदुओं में किसी के मरने पर उसके संबंधियों आदि को होता है ।
प्रेती–संज्ञा पुं० [सं० प्रेत+ई (प्रत्य०)] प्रेत की उपासना करनेवाला । प्रेतपूजक ।
प्रेतोन्माद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उन्माद या पागलपन ।
प्रेम–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्नेह । मुहब्बत । अनुराग । प्रीति । २ पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप, गुण अथवा काम-वासना के कारण होता है । प्यार । मुहब्बत । प्रीति । ३. केशव के अनुसार एक अलंकार ।
प्रेमगर्विता–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो अपने पति के अनुराग का अहंकार रखती हो ।
प्रेमपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिससे प्रेम किया जाय । माशूक ।
प्रेमवारि–संज्ञा पुं० दे० "प्रेमाश्रु" ।
प्रेमा–संज्ञा पुं० [सं० प्रेमन्] १. स्नेह । २. इंद्र । ३. उपजाति वृत्त का ग्यारहवाँ भेद ।
प्रेमाक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार आक्षेप अलंकार का एक भेद जिसमें प्रेम का वर्णन करने में ही उसमें बाधा पड़ती हुई दिखाई जाती है ।
प्रेमालाप–संज्ञा पुं० [सं०] वह बातचीत जो प्रेमपूर्वक हो ।
प्रेमालिंगन–संज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपूर्वक गले लगाना ।
प्रेमाश्रु–संज्ञा पुं० [सं०] वे आँसू जो प्रेम के कारण आँखों से निकलते हैं ।
प्रेमिक–संज्ञा पुं० दे० "प्रेमी" ।
प्रेमी–संज्ञा पुं० [सं० प्रेमिन्] १. प्रेम करनेवाला । २. आशिक । आसक्त ।
प्रेय–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार

जिसमें कोई भाव किसी दूसरे भाव अथवा, स्थायी का अंग होता है।

प्रेयसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रेमिका।

प्रेरक–संज्ञा पु० [सं०] किसी काम में प्रवृत्त या प्रेरणा करनेवाला।

प्रेरणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना। उत्तेजना देना। २. दबाव। ज़ोर।

प्रेरणार्थक क्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि वह किसी की प्रेरणा से कर्ता के द्वारा हुआ है। जैसे, लिखना का प्रेरणार्थक लिखवाना।

प्रेरित–वि० [सं०] भेजा हुआ। प्रेषित।

प्रेषक–संज्ञा पु० [सं०] भेजनेवाला।

प्रेषण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० प्रेषित] १ प्रेरणा करना। २. भेजना। रवाना करना।

प्रोक्त–वि० [सं०] कहा हुआ। कथित।

प्रोक्षण–संज्ञा पु० [सं०] १. पानी छिड़कना। २. पानी का छींटा।

प्रोत–वि० [सं०] १. किसी में अच्छी तरह मिला हुआ। २. छिपा हुआ।

प्रोत्साह–संज्ञा पु० [सं०] बहुत अधिक उत्साह या उमंग।

प्रोत्साहन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० प्रोत्साहित] खूब उत्साह बढ़ाना। हिम्मत बँधाना।

प्रोत्साहित–वि० [सं०] (जिसका) उत्साह बढ़ाया गया हो। (जिसकी) हिम्मत खूब बँधाई गई हो।

प्रोषित–वि० [सं०] जो विदेश में गया हो। प्रवासी।

प्रोषित नायक या पति–संज्ञा पु० [सं०] वह नायक जो विदेश में अपनी पत्नी के वियोग से विकल हो। विरही नायक।

प्रोषितपतिका (नायिका)–संज्ञा स्त्री० [सं०] (वह नायिका) जो अपने पति के परदेस में होने के कारण दुखी हो। प्रवत्स्यत्प्रेयसी।

प्रोषितभर्तृका–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रोषित-पतिका"।

प्रोषितभार्य्य–संज्ञा पु० [सं०] वह नायक जो अपनी भार्या के विदेश जाने के कारण दुखी हो।

प्रौढ़–वि० [सं०] [स्त्री० प्रौढ़ा] १. अच्छी तरह बढ़ा हुआ। २. जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ३. पक्का। मज़बूत। दृढ़। ४. गंभीर। गूढ़। ५ चतुर।

प्रौढ़ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रौढ़ होने का भाव। प्रौढ़त्व।

प्रौढ़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अधिक वयस-वाली स्त्री। २. साहित्य में वह नायिका जो काम-कला आदि अच्छी तरह जानती हो। साधारणतः ३० वर्ष से ५० वर्ष तक की अवस्थावाली स्त्री।

प्रौढ़ा अधीरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा जिसमें अधीरा नायिका के लक्षण हों।

प्रौढ़ा धीरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ताना देकर कोप प्रकट करनेवाली प्रौढ़ा।

प्रौढ़ा धीराधीरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा जिसमें धीराधीरा के गुण हों।

प्रौढ़ोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें जिसके उत्कर्ष का जो हेतु नहीं है, वह हेतु कल्पित किया जाय।

प्लक्ष–संज्ञा पु० [सं०] १. पाकर वृक्ष। पिलखन। २. पुराणानुसार सात क स्पत द्वीपों में से एक। ३. अश्वत्थ। पीपल।

प्लवंग–संज्ञा पु० [सं०] १. बानर। बंदर। २. मृग। हिरन। ३. प्लक्ष। पाकर।

प्लवंगम–संज्ञा पु० [सं०] एक मात्रिक छंद।

प्लवन–संज्ञा पु० [सं०] १. उछलना। कूदना। २. तैरना।

प्लावन–संज्ञा पु० [सं०] १. बाढ़। सैलाव। २ खूब अच्छी तरह धोना। ३. तैरना।

प्लावित–वि० [सं०] जो जल में डूब गया हो। पानी में डूबा हुआ।

प्लीहा–संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली"।

प्लुत–संज्ञा पु० [सं०] १ टेढ़ी चाल। वक्राल। २. स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं का होता है।

फ

फ–हिंदी वर्णमाला में बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान ओष्ठ है।

फंका–संज्ञा पु० [हिं० फाँकना] [स्त्री० फंकी] १. उतनी मात्रा जितनी एक बार फाँकी जा सके। २. कतरा। टुकड़ा।

फंकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० फंका] १. फाँकने की दवा। २. उतनी दवा जितनी एक बार में फाँकी जाय।

संज्ञा स्त्री० [हिं० फाँक] छोटी फाँक।

फंग–संज्ञा पु० [सं० बंध] १. बंधन। फंदा। २. राग। अनुराग।

फंद–संज्ञा पु० [सं० बंध, हिं० फंदा] १. बंध। बंधन। २. फंदा। जाल। फाँस। ३. छल। धोखा। ४. रहस्य। मर्म। ५. दुःख। कष्ट। ६. नथ की काँटी फँसाने का फंदा। गूँज।

फँदना–क्रि० अ० [सं० बंधन या फंदा] फंदे में पड़ना। फँसना।

क्रि० स० [हिं० फाँदना] फाँदना। लाँघना।

फ़दवार–वि० [हिं० फंदा] फंदा लगानेवाला।

फंदा–संज्ञा पु० [सं० पाश या बंध] १. रस्सी, तागे आदि का वह घेरा जो किसी को फँसाने के लिये बनाया गया हो। फनी। फाँद। २. पाश। फाँस। जाल।

मुहा०—फंदा लगाना = किसी को फँसाने के लिये जाल लगाना। २. धोखा देना। फंदे में पड़ना = १. धोखे में पड़ना। २. किसी के वश में होना।

३. बंधन। ४. दुःख। कष्ट।

फँदाना–क्रि० स० [हिं० फँदना] फंदे में लाना। जाल में फँसाना।

क्रि० स० [सं० स्पंदन] फाँदने का काम दूसरे से कराना। कुदाना।

फँफाना–क्रि० अ० [अनु०] शब्द उच्चारण के समय जिह्वा का काँपना। हकलाना।

फँसना–क्रि० स० [हिं० फाँस] १. बंधन या फंदे में पड़ना। २. अटकना। उलझना।

मुहा०—बुरा फँसना = आपत्ति में पड़ना।

फंसाना–क्रि० स० [हिं० फँसना] १. फंदे में लाना या अटकाना। बझाना। २. ... धरना। अपने जाल या वश में लाना। ३. अटकाना। बझाना।

फँसिहारा–वि० [हिं० फाँस + हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फँसिहारिन] फँसानेवाला।

फक–संज्ञा पु० [सं०] १. कटु वाक्य। रूखा वचन। २. फुक्कार। फुफ्कार। ३. निष्फल भाषण।

फक–वि० [सं० स्फटिक] १. स्वच्छ। सफ़ेद। २. बदरंग।

मुहा०—रंग फक हो जाना या फक पड़ जाना = घबरा जाना। चेहरे का रंग फीका पड़ जाना।

फकड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० फक्कड़ + ई० (प्रत्य०)] दुर्दशा। दुर्गति।

फ़क़त–वि० [अ०] १. बस। अलम्। पर्याप्त। २. केवल। सिर्फ़।

फ़क़ीर–संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० फकीरन, फकीरनी] १. भीख माँगनेवाला। भिखमंगा। भिक्षुक। २. साधु। संसारत्यागी। ३. निर्धन मनुष्य।

फ़क़ीरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० फ़कीर + ई] १. भिखमंगापन। २. साधुता। ३. निर्धनता।

फक्किका–संज्ञा स्त्री० [सं०] कूट प्रश्न। २. अनुचित व्यवहार। ३ धोखेबाज़ी।

फख़र–संज्ञा पु० [फा० फख़्र] गौरव। गर्व।

फग–संज्ञा पु० दे० "फग"।

फगुआ–संज्ञा पु० [हिं० फागुन] १. होली। होलिकोत्सव का दिन। २. फागुन के महीने में लोगों का आमोद-प्रमोद। फाग।

मुहा०—फगुआ खेलना या मनाना = होली के उत्सव में रंग, गुलाल आदि एक दूसरे पर डालना।

३ फागुन में गाए जानेवाले अश्लील गीत।
४ फगुआ खेलने के उपलक्ष में दिया जानेवाला उपहार।

फगुनहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० फागुन + हट (प्रत्य०)] फागुन में चलनेवाली तेज हवा।

फगुहारा–संज्ञा पु० [हिं० फगुआ + हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० फगुहारी, फगुहारिन] वह जो फाग खेलने के लिये होली में किसी के यहाँ जाय।

फजर–संज्ञा स्त्री० [अ०] सवेरा।

फ़ज़्ल–संज्ञा पुं० [अ० फ़ज़्ल] अनुग्रह। कृपा।

फ़ज़ीलत-संज्ञा स्त्री० [अ०] उत्कृष्टता। श्रेष्ठता।

मुहा०—फ़ज़ीलत की पगड़ी = विद्वत्तासूचक पद या चिह्न।

फ़ज़ीहत-संज्ञा स्त्री० [अ०] दुर्दशा। दुर्गति।

फ़ज़ूल-वि० [अ० फ़ुज़ूल] जो किसी काम का न हो। व्यर्थ। निरर्थक।

फ़ज़ूलखर्च-वि० [फ़ा०] [संज्ञा फ़ज़ूलखर्ची] अपव्ययी। बहुत खर्च करनेवाला।

फट-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हलकी पतली चीज़ के हिलने या गिरने पड़ने का शब्द। २. एक तांत्रिक मंत्र। अस्त्र मंत्र।

फटक-संज्ञा पुं० [सं० स्फटिक] बिल्लौर। क्रि० वि० [अनु०] तत्क्षण। भट।

फटकन-संज्ञा स्त्री० [हिं० फटकना] वह भूसी जो अन्न को फटकने पर निकले।

फटकना-क्रि० स० [अनु० फट] १. हिलाकर फट फट शब्द करना। फटफटाना। २. पटकना। झटकना। ३. फेंकना। चलाना। मारना। ४. सूप पर अन्न आदि को हिलाकर साफ करना।

मुहा०—फटकना पछोरना = १ सूप या छाज पर हिलाकर साफ करना। २. अच्छी तरह जाँचना। परखना।

५. रूई आदि को फटके से धुनना। क्रि० अ० [अनु०] १. जाना। पहुँचना। २ दूर होना। अलग होना। ३ तड़फड़ाना। हाथ पैर पटकना। ४. श्रम करना। हाथ पैर हिलाना।

फटका†-संज्ञा पुं० [अनु०] १. रूई धुनने की धुनकी। २ कोरी तुकबंदी। रस और गुण से हीन कविता।
संज्ञा पुं० दे० "फाटक"।

फटकाना†-क्रि० स० [हिं० फटकना] १ अलग करना। फेंकना। २. फटकने का काम दूसरे से कराना।

फटकार-संज्ञा स्त्री० [हिं० फटकारना] १ फटकारने की क्रिया या भाव। झिड़की। दुतकार। २ दे० "फिटकार"।

फटकारना-क्रि० स० [अनु०] १ (शस्त्र आदि) मारना। चलाना। २. बहुत सी चीज़ों को एक साथ झटका मारना जिसमें वे छितरा जायँ। ३. लेना। लाभ उड़ाना। ४ अच्छी तरह पटक पटककर धोना। ५ झटका देकर दूर फेंकना। ६. खरी और कड़ी बात कहकर चुप कराना।

फटना-क्रि० अ० [हिं० फाड़ना का अ० रूप] १. किसी पोली चीज़ में इस प्रकार दरार पड़ जाना जिसमें भीतर की चीज़ें बाहर निकल पड़ें अथवा दिखाई देने लगें।

मुहा०—छाती फटना = असह्य दुःख होना। बहुत अधिक दुःख पहुँचना। (किसी से) मन या चित्त फटना = विरक्ति होना। संबंध रखने को जी न चाहना।

२. किसी वस्तु का कोई भाग बीच से अलग हो जाना। बीच से कटकर छिन्न भिन्न हो जाना। ३. अलग हो जाना। पृथक् हो जाना। ४ द्रव पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसका पानी और सार भाग दोनों अलग अलग हो जायँ। ५. किसी बात का बहुत अधिक होना।

मुहा०—फट पड़ना = अचानक आ पहुँचना।

६. बहुत अधिक पीड़ा होना।

फटफटाना-क्रि० स० [अनु०] १ व्यर्थ बकवाद करना। २ फटफट शब्द करना। फड़फड़ाना। ३ हाथ पैर मारना। प्रयास करना। ४. इधर उधर टक्कर मारना। क्रि० अ० फट फट शब्द होना।

फटा-संज्ञा पुं० [हिं० फटना] छिद्र। छेद।

मुहा०—किसी के फटे में पाँव देना = दूसरे की आपत्ति अपने ऊपर लेना।

फटिक-संज्ञा पुं० [सं० स्फटिक] १ बिल्लौर। स्फटिक। २. मरमर पत्थर। संग मरमर।

फट्टा-संज्ञा पुं० [हिं० फटना] [स्त्री० फट्टी] बाँस को चीरकर बनाया हुआ लट्ठा। फलठा।

फड़-संज्ञा पुं० [सं० पण] १. जूए का दाँव जिस पर जुआरी बाजी लगाते हैं। दाँव। २ जुआखाना। जूए का अड्डा। ३. वह स्थान जहाँ दूकानदार बैठकर माल खरीदता या बेचता हो। ४ पक्ष। दल।
संज्ञा पुं० [सं० फल या पल] वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है। चरख।

फड़क, फड़कन-संज्ञा स्त्री० [अनु०] फड़कने की क्रिया या भाव।

फड़कना-क्रि० अ० [अनु०] १. बार बार नीचे ऊपर या इधर उधर हिलना। फड़फड़ाना। उछलना।

मुहा०—फड़क उठना या जाना =

होना। प्रसन्न होना। मुग्ध होना।
२. किसी अंग में अचानक स्फुरण होना।
३. हिलना डोलना। गति होना।
मुहा०—बोटी फड़कना = अत्यंत चंचलता होना।
४ चंचल होना। किसी क्रिया के लिये उद्यत होना।

फड़काना—क्रि० स० [हिं० फड़कना का प्रे०] दूसरे को फड़कने में प्रवृत्त करना।

फड़नवीस—संज्ञा पुं० [फा० फर्दनवीस] मराठों के राजत्व-काल का एक राज-पद।

फड़फड़ाना—क्रि० स० अ० दे० "फट-फटाना"।

फड़बाज़—संज्ञा पुं० [हिं० फड़ + फा० बाज़] वह जो लोगों को अपने यहाँ जूआ खेलाता हो।

फण—संज्ञा पुं० [सं०] १. साँप का फन। २ रस्सी का फंदा। मुद्दी।

फणधर—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

फणिक—संज्ञा पुं० [सं० फणी] साँप। नाग।

फणिपात—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फणिमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप की मणि।

फणींद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. शेष। २. वासुकि। ३. बड़ा साँप।

फणी—संज्ञा पुं० [सं० फणिन्] साँप।

फणीश—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फतवा—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों के धर्म्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो मौलवी आदि किसी कर्म के अनुकूल या प्रतिकूल होने के विषय में देते हैं।

फतह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विजय। जीत। २ सफलता। कृतकार्य्यता।

फतिंगा—संज्ञा पुं० [सं० पतंग] [स्त्री० पतिंगी] १. किसी प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा। २. पतिंगा। पतंग।

फ़तीलसोज़—संज्ञा पुं० [फा०] १. धातु की दीवट जिसमें एक या अनेक दीए ऊपर नीचे बने होते हैं। चौमुखा। २. दीवट। चिरागदान।

फ़तीला—संज्ञा पुं० दे० "पलीता"।

फतूर—संज्ञा पुं० [अ०] १. विकार। दोष। २. हानि। नुकसान। ३. विघ्न। बाधा। ४. उपद्रव। खराफ़ात।

फ़तूरिया—वि० [अ० फ़तूर + इया (प्रत्य०)] करनेवाला। उपद्रवी।

फ़तूह—संज्ञा स्त्री० [अ० "फ़तह" का बहुवचन] १. विजय। जीत। जय। २. वह धन जो लड़ाई या लूट में मिला हो।

फतूही—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बिना आस्तीन की एक प्रकार की पहनने की कुरती। सदरी। २. लड़ाई या लूट में मिला हुआ माल।

फ़ते†—संज्ञा स्त्री० दे० "फ़तह"।

फतेह—संज्ञा स्त्री० [अ० फ़तह] विजय। जीत।

फदकना—क्रि० अ० [अनु०] १. फद फद शब्द करना। २ दे० "फुदकना"।

फन—संज्ञा पुं० [सं० फण] साँप का सिर उस समय जब वह उसे फैलाकर छत्र के आकार का बना लेता है। फण।

फ़न—संज्ञा पुं० [फा०] १. गुण। खूबी। २ विद्या। ३. दस्तकारी। ४. छलने का ढंग। मकर।

फनकना—क्रि० अ० [अनु०] हवा में सन सन करते हुए हिलना या चलना।

फनकार—संज्ञा स्त्री० [अनु०] साँप के फूँकने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न फन फन शब्द।

फनगा†—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फनफनाना—क्रि० अ० [अनु०] १. फन फन शब्द उत्पन्न करना। २. चंचलता के कारण हिलना।

फ़ना—संज्ञा स्त्री० [अ०] नाश। बरबादी।

फनिंग—संज्ञा पुं० [सं० फणींद्र] साँप।

फनिंद†—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फनि—संज्ञा पुं० १ दे० "फणी"। २. दे० "फण"।

फनिग—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फनिराज—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

फनी—संज्ञा पुं० दे० "फणी"।

फनूस—संज्ञा पुं० दे० "फ़ानूस"।

फन्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० फण] लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली चीज़ की जड़ में उसे कसने के लिये ठोंका जाता है। पच्चर।

फफूँदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फुंदती] स्त्रियों की साड़ी का बंधन। नीवी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० ≈ रूई या फाहा] काई की तरह की, पर सफ़ेद, तह जो बरसात में फल, लकड़ी आदि पर लगती है। भुकड़ी।

फफोला—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्फोट] चमड़े पर

का पोला उभार जिसके भीतर पानी भरा रहता है। छाला। फलका।

मुहा०—दिल के फफोले फोड़ना = अपने दिल की जलन या क्रोध प्रकट करना।

फबती–संज्ञा स्त्री० [हिं० फबना] १. वह बात जो समय के अनुकूल हो। २. हँसी की बात जो किसी पर घटती हो। व्यंग्य। चुटकी।

मुहा०—फबती उड़ाना = हँसी उड़ाना। फबती कहना = चुभती हुई पर हँसी की बात कहना।

फबन–संज्ञा स्त्री० [हिं० फबना] फबने का भाव। शोभा। छवि। सुंदरता।

फबना–क्रि० अ० [सं० प्रभवन] सुंदर या भला जान पड़ना। खिलना। सोहना।

फबाना–क्रि० स० [हिं० फबना का सक० रूप] ऐसी जगह लगाना जहाँ भला जान पड़े।

फबि†–संज्ञा स्त्री० दे० "फबन"।

फबीला–वि० [हिं० फबि + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फबीली] जो फबता या भला जान पड़ता हो। शोभा देनेवाला। सुंदर।

फर*†–संज्ञा पुं० दे० "फल"।
संज्ञा पुं० [?] १. सामना। मुक़ाबिला। २. बिछावन। बिछौना।

फरक–संज्ञा स्त्री० [हिं० फरकना] १. फरकने की क्रिया या भाव। २. फड़क।

फ़रक़–संज्ञा पुं० [अ० फ़र्क़] १. पार्थक्य। अलगाव। २. बीच का अंतर। दूरी।

मुहा०—फरक फरक होना = 'दूर हो' या 'राह छोड़ो' की आवाज़ होना। 'हटो बचो' होना।

३. भेद। अंतर। ४. दुराव। परायापन। अन्यता। ५. कमी। कसर।

फरकन–संज्ञा स्त्री० [हिं० फरकना] १. फड़कने की क्रिया या भाव। दे० "फड़क"। २. फरकने की क्रिया या भाव। फरक।

फरकना*†–क्रि० अ० [सं० स्फुरण] १. दे० "फड़कना"। २. आप से आप बाहर आना। उमड़ना। ३. बढ़ना।

फरका–संज्ञा पुं० [सं० फलक] १. वह छप्पर जो अलग छाकर बँडेर पर चढ़ाया जाता है। २. बँडेर के एक ओर की छाजन। पल्ला। ३. दरवाज़े का टट्टर।

फरकाना–क्रि० स० [हिं० फरकना] १. फरकने का सकर्मक रूप। हिलाना। संचालित करना। २. फड़फड़ाना।

क्रि० स० [हिं० फ़रक़] अलग करना।

फरचा†–वि० [सं० स्पृश्य] १. जो जूठा न हो। शुद्ध। पवित्र। २. साफ़-सुथरा।

फ़रज़ंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पुत्र। बेटा।

फ़रज़ी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] शतरंज का एक मोहरा जिसे रानी या वज़ीर भी कहते हैं।
वि० नक़ली। बनावटी। कल्पित।

फ़रज़ीबंद–संज्ञा पुं० [फ़ा०] शतरंज के खेल में एक योग।

फ़रद–संज्ञा स्त्री० [अ० फ़र्द] १. लेखा या वस्तुओं की सूची आदि जो स्मरणार्थ किसी काग़ज़ पर अलग लिखी गई हो। २. एक ही तरह के अथवा एक साथ काम में आनेवाले कपड़ों के जोड़े में से एक कपड़ा। पल्ला। ३. रज़ाई या दुलाई का ऊपरी पल्ला। ४. दो पदों की कविता।
वि० अनुपम। बेजोड़।

फरना*†–क्रि० अ० [सं० फल] फलना।

फरफंद–संज्ञा पुं० [हिं० फर अनु० + फंदा (जाल)] १ दाँव पेच। छल कपट। माया। २. नख़रा। चोचला।

फरफर–संज्ञा पुं० [अनु०] किसी पदार्थ के उड़ने या फड़कने से उत्पन्न शब्द।

फरफराना–क्रि० स० अ० दे० "फड़फड़ाना"।

फरफुंदा*†–संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

फरमा–संज्ञा पुं० [अं० फ्रेम] १. लकड़ी आदि का ढाँचा या साँचा जिस पर रखकर चमार जूता बनाते हैं। कालबूत। २. वह साँचा जिसमें कोई चीज़ ढाली जाय।
संज्ञा पुं० [अं० फ़ार्म] काग़ज़ का पूरा तख़्ता जो एक बार प्रेस में छापा जाता है।

फ़रमाइश–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] आज्ञा, विशेषतः वह आज्ञा जो कोई चीज़ लाने या बनाने आदि के लिये दी जाय।

फ़रमाइशी–वि० [फ़ा०] विशेष रूप से आज्ञा देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ।

फ़रमान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] राजकीय आज्ञा-पत्र। अनुशासनपत्र।

फ़रमाना–क्रि० स० [फ़ा०] आज्ञा देना। कहना। (आदर-सूचक)

फरराना†–क्रि० अ० दे० "फहराना"।

फरवी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्फुरण] एक प्रकार का भुना हुआ चावल। मुरमुरा। लाई।

फ़रश–संज्ञा पुं० [अ० फ़र्श] १. बैठने के लिये बिछाने का वस्त्र। बिछावन। २. धरातल। समतल भूमि। ३. पक्की बनी हुई ज़मीन। गच।

फ़रशबंद–संज्ञा पुं० दे० "फ़रश"।

फ़रशी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. धातु का वह बरतन जिस पर नैचा, सटक आदि लगाकर लोग तमाकू पीते हैं। गुड़गुड़ी। २. इस प्रकार बना हुआ हुक्का।

फरस†–संज्ञा पुं० दे० "फ़रश"।
* संज्ञा पुं० दे० "फरसा"।

फरसा–संज्ञा पुं० [सं० परशु] १. पैनी और चौड़ी धार की कुल्हाड़ी। २. फावड़ा।

फरहद–संज्ञा पुं० [सं० पारिभद्र] एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल और फूलों से रंग निकलता है।

फरहरना†–क्रि० अ० [अनु० फरफर] १. फरफराना। फरकना। २. फहराना।

फरहरा–संज्ञा पुं० [हिं० फहराना] पताका। झंडा।

फ़राक*–संज्ञा पुं० [फ़ा० फ़राख़] मैदान।
वि० लंबा चौड़ा। विस्तृत।

फ़राकत–वि० [फ़ा० फ़राख़] लंबा-चौड़ा और समतल। विस्तृत।
वि० संज्ञा पुं० दे० "फ़रागत"।

फ़राख़–वि० [फ़ा०] लंबा-चौड़ा।

फ़राख़ी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. चौड़ाई। विस्तार। २. आढ्यता। संपन्नता।

फ़रागत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. छुटकारा। छुट्टी। मुक्ति। २. निश्चिंतता। बेफ़िक्री। ३. मल-त्याग। पाख़ाना फिरना।

फ़रामोश–वि० [फ़ा०] भूला हुआ। विस्मृत।

फ़रार–वि० [अ०] भागा हुआ।

फ़रासीस–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. फ़्रांस देश। २. फ़्रांस का रहनेवाला। ३. एक प्रकार की लाल छींट।

फ़रासीसी–वि० [हिं० फ़रासीस] १. फ़्रांस का रहनेवाला। २. फ़्रांस का।

फरिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० फरना] वह लहँगा जो सामने की ओर सिला नहीं रहता।

फ़रियाद–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. दुःख से बचाए जाने के लिये पुकार। शिकायत। नालिश। २. विनती। प्रार्थना।

फ़रियादी–वि० [फ़ा०] फ़रियाद करनेवाला।

फरियाना–क्रि० स० [सं० फलीकरण] १. छाँटकर अलग करना। २. साफ़ करना। ३. निपटाना। तै करना।
क्रि० अ० १. छँटकर अलग होना। २. साफ़ होना। ३. तै होना। निबटना। ४. समझ पड़ना।

फ़रिश्ता–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञा के अनुसार कोई काम करता हो। (मुसल०) २. देवता।

फरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० फल] १. फाल। कुशी। २. गाड़ी का हरसा। फड़। ३. चमड़े की गोल छोटी ढाल जिससे गतके की मार रोकते हैं।

फ़रीक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुक़ाबला करनेवाला। प्रतिद्वंद्वी। विरोधी। विपक्षी। २. दो पक्षों में से किसी पक्ष का मनुष्य।
यौ०—फ़रीक़ सानी = प्रतिवादी। (क़ानून)

फरुही†–संज्ञा स्त्री० [हिं० फावड़ा] १. छोटा फावड़ा। २. लकड़ी का एक औज़ार जिससे क्यारी बनाने के लिये खेत की मिट्टी हटाई जाती है। ३. मथानी।
संज्ञा स्त्री० दे० "फरवी"।

फरेंदा†–संज्ञा पुं० [सं० फलेंद्र] [स्त्री० फरेंदी] एक प्रकार का बढ़िया जामुन।

फ़रेब–संज्ञा पुं० [फ़ा०] छल। कपट।

फ़रेबी–संज्ञा पुं० [फ़ा०] कपटी।

फरेरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० फल + (प्रत्य०) री] जंगल के फल। जंगली मेवा।

फ़रोख़्त–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] विक्रय। बिक्री।

फ़र्क़–संज्ञा पुं० दे० "फ़रक़"।

फ़र्ज़–संज्ञा पुं० [अ०] १. कर्त्तव्य कर्म। २. कल्पना। मान लेना।

फ़र्ज़ी–वि० [फ़ा०] १. कल्पित। माना हुआ। २. नाम मात्र का। सत्ताहीन।
संज्ञा पुं० दे० "फ़रज़ी"।

फ़र्द–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. काग़ज़ या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा। २. काग़ज़ का वह टुकड़ा जिस पर किसी वस्तु का विवरण, लेखा, सूची आदि लिखी गई हो। ३. रज़ाई, शाल आदि का ऊपरी पल्ला जो अलग बनता है। चद्दर। पल्ला।

फर्राटा–संज्ञा पुं० [अनु०] १. वेग। तेज़ी। शीघ्रता। २. दे० "सर्राटा"।

फ़राश-संज्ञा पु० [अ०] १. वह नौकर जिसका काम डेरा गाड़ना, फ़र्श बिछाना और दीपक जलाना आदि होता है। २. नौकर। खिदमतगार।

फ़राशी-वि० [फ़ा०] फ़र्श या फ़राश के कामों से संबंध रखनेवाला।

यौ०—फ़राशी पंखा = बड़ा पंखा जिससे फ़र्श भर पर हवा की जा सकती हो।

संज्ञा स्त्री० फ़राश का काम या पद।

फ़र्श-संज्ञा पु० [अ०] १. बिछावन। बिछाने का कपड़ा। २. दे० "फ़रश"।

फ़र्शी-संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बड़ा हुक्का।

वि० फ़र्श संबंधी। फ़र्श का।

मुहा०—फ़र्शी सलाम = जमीन पर झुककर किया जानेवाला सलाम।

फलंक-संज्ञा पु० दे० "फलांग"।

संज्ञा पु [फ़ा० फ़लक] आकाश।

फल-संज्ञा पु० [सं०] १. वनस्पति में होनेवाला वह बीज या गूदे से परिपूर्ण बीज-कोश जो किसी विशिष्ट ऋतु में फूलों के आने के बाद उत्पन्न होता है। २. लाभ। ३. प्रयत्न या क्रिया का परिणाम। नतीजा। ४. धर्म या परलोक की दृष्टि से कर्म का परिणाम जो सुख और दुःख है। कर्मभोग। ५. गुण। प्रभाव। ६. शुभ कर्मों के परिणाम जो संख्या में चार माने जाते हैं—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। ७. प्रतिफल। बदला। प्रतीकार। ८. बाण, भाले, छुरी आदि का वह तेज़ अगला भाग जिससे आघात किया जाता है। ९. हल की फाल। १०. फलक। ११. ढाल। १२. उद्देश्य की सिद्धि। १३. न्यायशास्त्र के अनुसार वह अर्थ जो प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न होता है। १४. गणित की किसी क्रिया का परिणाम। १५. त्रैराशिक की तीसरी राशि या निष्पत्ति में प्रथम निष्पत्ति का द्वितीय पद। १६. फलित ज्योतिष में ग्रहों के योग का परिणाम जो सुख-दुःख आदि के रूप में होता है।

फलक-संज्ञा पुं० [सं०] १. पटल। तखता। पट्टी। २. चादर। ३. वरक़। तबक। ४. पत्र। वरक़। पृष्ठ। ५. हथेली। ६. फल।

फ़लक-संज्ञा पु० [अ०] १. आकाश। २. स्वर्ग।

फलकना-क्रि० अ० [अनु०] १. छलकना। उमगाना। २. दे० "फरकना"।

फलकर-संज्ञा पु० [हिं० फल + कर] वह कर जो वृक्षों के फल पर लगाया जाय।

फलका—संज्ञा पु० [सं० स्फोटक] फफोला। छाला। झलका।

फलतः-अव्य० [सं०] फल-स्वरूप। परिणामतः। इसलिये।

फलद-वि० [सं०] फल देनेवाला।

फलदान-संज्ञा पु० [हिं० फल + दान] हिंदुओं में विवाह पक्का करने की एक रीति। बरच्छा।

फलदार-वि० [हिं० फल + दार (फा० प्रत्य०)] १. जिसमें फल लगे हों। २. जिसमें फल लगें।

फलना-क्रि० अ० [सं० फलन] १. फल से युक्त होना। फल लाना। २. फल देना। लाभदायक होना।

मुहा०—फलना फूलना = सुखी और संपन्न होना।

३. शरीर में छोटे छोटे दानों का निकल आना जिससे पीड़ा होती है।

फलयोग-संज्ञा पु० [सं०] नाटक में वह स्थान जिसमें फल की प्राप्ति या उसके नायक के उद्देश्य की सिद्धि होती है।

फललक्षणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लक्षणा।

फलहरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० फल + हरी (प्रत्य०)] १. वन के वृक्षों के फल। मेवा। वनफल। २. फल। मेवा।

फलहार-संज्ञा पु० "फलाहार"।

फलहारी-वि० [हिं० फलहार + ई (प्रत्य०)] जिसमें अन्न न पड़ा हो अथवा जो अन्न से न बना हो, बल्कि फलों से बना हो।

फलाँ-वि० [फा०] अमुक। फलाना।

फलाँग-संज्ञा स्त्री० [सं० प्रलंघन] १. एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कुदान। चौकड़ी। २. वह दूरी जो फलाँग से तै की जाय।

फलाँगना-क्रि० अ० [हिं० फलाँग + ना (प्रत्य०)] एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कूदना। फाँदना।

फलांश-संज्ञा पु० [सं०] तात्पर्य। सारांश।

फलागम-संज्ञा पुं० [सं०] १. फल लगने

...ड़ी आदि का कड़ा तंतु जो शरीर में ...स जाता है। २. पतली सीली या ...ाची।

...सना–क्रि० स० [सं० पाश] १. पाश में ...सना। जाल में फँसाना। २. धोखा ...र अपने अधिकार में करना।

...ी–संज्ञा स्त्री० [सं० पाश] १. फँसाने ...फंदा। पाश। २. वह रस्सी का फंदा ...में गला फँसने से घुट जाता है और ...वाला मर जाता है।

...०—फाँसी चढ़ना = पाश द्वारा प्राणदंड ...।

...ह दंड जो अपराधी को फंदे के द्वारा ...र दिया जाय।

...—फाँसी देना = गले में फंदा डालकर ...रना।

...संज्ञा पुं० [अ० फ़ाक़:] उपवास।

...स्त, फ़ाक़ेमस्त–वि० [फ़ा०] जो ...ने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिंता ...ा हो।

...–संज्ञा स्त्री० [अ०] पंडुक। धवँरखा।

...संज्ञा पुं० [हिं० फागुन] १. फागुन ...ाला उत्सव जिसमें एक दूसरे पर ...गुलाल डालते हैं। २. वह गीत ...के उत्सव में गाया जाता है।

...संज्ञा पुं० [सं० फाल्गुन] माघ के ... महीना। फाल्गुन।

...–वि० [अ०] १. आवश्यकता से ...। २. विद्वान्।

...ा पुं० [सं० कपाट] १. बड़ा ...ा दरवाज़ा। तोरण। २. मवेशी-...ज़ी हौस।

...[हिं० फटकना] भूसी जो अनाज ...से बची हो। पछोड़न। फटकन।

...क्रि० अ० दे० "फटना"।

...संज्ञा स्त्री० [हिं० फाड़ना] कागज़ ...आदि का टुकड़ा जो फाड़ने से निकले।

...–क्रि० स० [सं० स्फाटन] १. चीरना। ...करना। २. टुकड़े करना। धज्जियाँ ...। ३. संधि या जोड़ फैलाकर ...ा। ४. किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को ...कार करना कि पानी और सार पदार्थ अलग हो जायँ।

...–संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रार्थना। २. ...ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय। (मुसल०)

फ़ानूस–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक प्रकार की बड़ी कंदील। २. एक डंड में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं।

फाफर–संज्ञा पुं० दे० "कूटू"।

फाय...–संज्ञा स्त्री० दे० "फबन।"

फाबना...–क्रि० अ० दे० "फबना।"

फ़ायदा–संज्ञा पुं० [अ०] १. लाभ। नफ़ा। प्राप्ति। २. प्रयोजन सिद्धि। मतलब पूरा होना। ३. अच्छा फल। भला परिणाम। ४. उत्तम प्रभाव। अच्छा असर।

फ़ायदेमंद–वि० [फ़ा०] लाभदायक।

फार...–संज्ञा पुं० दे० "फाल।"

फारख़ती–संज्ञा स्त्री० [अ० फ़ारिग़ + ख़त] वह लेख जो इस बात का सबूत हो कि किसी के ज़िम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया। चुकती। बेबाकी।

फारना...–क्रि० स० दे० "फाड़ना।"

फारस–संज्ञा पुं० दे० "पारस"।

फ़ारसी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] फ़ारस देश की भाषा।

फारा...–संज्ञा पुं० [सं० फाल] १ फाल। कतरा। कटी हुई फाँक। २. दे० "फाल।"

फाल–संज्ञा स्त्री० [सं०] लोहे का चौकोर लंबा छड़ जो हल के नीचे लगा रहता है। ज़मीन इसी से खुदती है। कुस। कुसी। संज्ञा स्त्री० [सं० फलक] १. काटा या कतरा हुआ पतले दल का टुकड़ा। २. कटी हुई सुपारी। छालिया।
संज्ञा पुं० [सं० प्लव] १. डग। फलाँग।
मुहा०—फाल बाँधना = उछलकर लाँघना।
२. क़दम भर का फ़ासला। पैंड़।

फ़ालतू–वि० [हिं० फाल = टुकड़ा + तू (प्रत्य०)] १. आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। २. व्यर्थ। निकम्मा।

फालसई–वि० [फ़ा० फालसा] फालसे के रंग का। ललाई लिए हुए हलका ऊदा।

फालसा–संज्ञा पुं० [फ़ा०। सं० परुषक] एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने के बराबर छोटे छोटे खटमीठे फल लगते हैं।

फ़ालिज–संज्ञा पुं० [अ०] एक रोग जिसमें आधा अंग सुन्न हो जाता है। अर्धांग। पक्षाघात।

फालूदा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पीने के लिये गेहूँ के सत्त से बनाई हुई एक चीज़। (मुसल०)
फाल्गुन—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक चांद्र-मास। दे० "फागुन"। २. अर्जुन का एक नाम।
फाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।
फावड़ा—संज्ञा पुं० [सं० फाल] [स्त्री० अल्पा० फावड़ी] मिट्टी खोदने और टालने का एक औज़ार। फरसा। करसी।
फ़ाश—वि० [फ़ा०] खुला। प्रकट।
फासला—संज्ञा पुं० [अ०] दूरी। अंतर।
फाहा—संज्ञा पुं० [सं० फाल] तेल, घी या मरहम आदि में तर की हुई कपड़े की पट्टी या रूई। फाया।
फ़ाहिशा—वि० स्त्री० [अ०] छिनाल। पुंश्चली।
फ़िकरा—संज्ञा पुं० [अ०] १ वाक्य। २ झाँसा पट्टी। ३. व्यंग्य।
फिकैत—संज्ञा पुं० [हिं० फेंकना] वह जो फरी गदका चलाता हो।
फ़िक्र—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चिंता। सोच। खटका। २. ध्यान। विचार। ३. उपाय का विचार। यत्न। तदबीर।
फ़िक्रमंद—वि० [अ० + फ़ा०] चिंताग्रस्त।
फिचकुर—संज्ञा पुं० [सं० पिच्छ = लार] फेन जो मूर्छा या बेहोशी आने पर मुँह से निकलता है।
फिट—अव्य० [अनु०] धिक्। छी। थुड़ी। (धिक्कारने का शब्द)
फिटकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० फिट + कार] १. धिक्कार। लानत। २. शाप। कोसना। बद-दुआ।
फिटकिरी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्फटिका] एक मिश्र खनिज पदार्थ जो स्फटिक के समान श्वेत होता है।
फिटन—संज्ञा स्त्री० [अं०] चार पहियों की एक प्रकार की खुली गाड़ी।
फिट्टा—वि० [हिं० फिट] फटकार खाया हुआ। अपमानित। भीहत।
फ़ितना—संज्ञा पुं० [अ०] १. झगड़ा। दंगा फ़साद। २. एक प्रकार का इत्र।
फ़ितूर—संज्ञा पुं० [अ० फुतूर] वि० फ़ितूरी] १. विकार। विपर्यय। खराबी। २. झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव।
फ़िदवी—वि० [अ० फ़िदाई से फ़ा०] स्वामि-भक्त। आज्ञाकारी।
संज्ञा पुं० [स्त्री० फ़िदविया] दास।
फिनिया—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का गहना जो कान में पहना जाता है।
फिरंग—संज्ञा पुं० [अ० फ्रांक] १. युरोप का एक देश। गोरों का मुल्क। फिरंगिस्तान। २. गरमी। आतशक। (रोग)
फिरंगी—वि० [हिं० फिरंग] १ फिरंग देश में उत्पन्न। २. फिरंग देश में रहनेवाला। गोरा। ३. फिरंग देश का।
संज्ञा स्त्री० विलायती तलवार।
फिरट—वि० [हिं० फिरना या अ० फ्रंट] १. फिरा हुआ। विरुद्ध। खिलाफ। २. विरोध या लड़ाई पर उद्यत।
फिर—क्रि० वि० [हिं० फिरना] १. एक बार और। दोबारा। पुनः।
यौ०—फिर फिर = बार बार। कई दफ़ा।
२. भविष्य में किसी समय। और वक्त। ३. पीछे। अनंतर। उपरांत। ४. तब। उस अवस्था में।
मुहा०—फिर क्या है ? = तब क्या पूछना है। तब तो कोई अड़चन ही नहीं है।
५. और चलकर। आगे और दूरी पर। ६. इसके अतिरिक्त।
फ़िरक़ा—संज्ञा पुं० [अ०] १. जाति। २. जत्था। ३. पंथ। संप्रदाय।
फिरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फिरना] १. वह गोल या चक्राकार पदार्थ जो बीच की कीली को एक स्थान पर टिकाकर घूमता हो। २ लड़कों का एक खिलौना जिसे वे नचाते हैं। फिरहरी। ३ चकई नाम का खिलौना। ४. चमड़े का गोल टुकड़ा जो चरखे के तकले में लगाया जाता है।
फिरता—संज्ञा पुं० [हिं० फिरना] [स्त्री० फिरती] १. वापसी। २. अस्वीकार।
वि० वापस लौटाया हुआ।
फिरना—क्रि० अ० [हिं० फेरना का अकर्मक रूप] १. इधर उधर चलना। भ्रमण करना। २. टहलना। विचरना। सैर करना। ३. चक्कर लगाना। बार बार फेरे खाना। ४. ऐंठा जाना। मरोड़ा जाना। ५. लौटना। वापस होना। ६. सामना दूसरी तरफ़ हो जाना। ७. मुड़ना।

मुहा०—किसी ओर फिरना=प्रवृत्त होना। जी फिरना=चित्त उचट जाना। विरक्त हो जाना। नई लाइन। ८. लड़ने या मुकाबला करने के लिये तैयार हो जाना। ९. उलटा होना। विपरीत होना।

मुहा०—सिर फिरना=बुद्धि भ्रष्ट होना। १०. बात पर दृढ़ न रहना। ११. झुकना। टेढ़ा होना। १२ चारों ओर प्रचारित होना। घोषित होना। १३. किसी वस्तु के ऊपर पोता जाना। चढ़ाया जाना।

फिरवाना—क्रि० स० [हिं० 'फेरना' का प्रे०] फेरने या फिराने का काम कराना।

फ़िराक़—संज्ञा पु० [अ०] १. वियोग। विछोह। २. चिंता। सोच। ३. खोज।

फिराना—क्रि० स० [हिं० फिरना] १. कभी इस ओर, कभी उस ओर ले जाना। २. टहलाना। ३ चक्कर देना। बार बार फेरे खिलाना। ४ ऐंठना। मरोड़ना। ५. लौटाना। पलटाना। ६. सामना एक ओर से दूसरी ओर करना। ७. दे० "फेरना"।

फिरार—संज्ञा पु० [अ०] [वि० फ़िरारी] भागना। भाग जाना।

फिरि‡—क्रि० वि० दे० "फिर"।

फिरियाद‡—संज्ञा स्त्री० दे० "फ़रियाद"।

फिल्ली—संज्ञा स्त्री० [देश०] पिंडली। (अग)

फिस—वि० [अनु०] कुछ नहीं। (हास्य)

मुहा०—टाँय टाँय फिस=भी तो बड़ी धूम, पर हुआ कुछ नहीं।

फिसड्डी—वि० [अनु० फिस] १. जिससे कुछ करते धरते न बने। २. जो काम में सबसे पीछे रहे।

फिसलन—संज्ञा स्त्री० [हिं० फिसलना] १ फिसलने की क्रिया या भाव। रपटन। २ चिकनी जगह जहाँ पैर फिसले।

फिसलना—क्रि० अ० [स० प्र+सरण] १ चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर आदि का न जमना। रपटना। २. प्रवृत्त होना। झुकना।

फ़ी—अव्य० [अ०] प्रति एक। हर एक।

फीका—वि० [स० अपक्व] १. स्वादहीन। सीठा। नीरस। बे-जायका। २. जो चटकीला न हो। धूमला। मलिन। ३. बिना तेज का। कांतिहीन। बे-रौनक। ४. प्रभावहीन। व्यर्थ। निष्फल।

फ़ीता—संज्ञा पु० [फ़ा०] पतली धज्जी, सूत आदि जो किसी वस्तु को लपेटने या बाँधने के काम में आता है।

फ़ीरनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० फिरनी] एक प्रकार की खीर।

फ़ीरोज़ा—संज्ञा पु० [फ़ा०] हरापन लिए नीले रंग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर।

फ़ीरोज़ी—वि० [फ़ा०] हरापन लिए नीला।

फ़ील—संज्ञा पु० [फ़ा०] हाथी।

फ़ीलख़ाना—संज्ञा पु० [फ़ा०] वह घर जहाँ हाथी बाँधा जाता हो। हस्तिशाला।

फ़ीलपा—संज्ञा पु० [फ़ा०] एक रोग जिसमें पैर या और कोई अंग फूलकर हाथी के पैर की तरह हो जाता है।

फ़ीलवान—संज्ञा पु० [फ़ा०] हाथीवान।

फीली—संज्ञा स्त्री० [स० पिंड] पिंडली।

फुँकना—क्रि० अ० [हिं० फूँकना] १. फूँकने का अकर्मक रूप। २ जलना। भस्म होना। ३ नष्ट होना। बरबाद होना। संज्ञा पु० १. दे० "फुँकनी"। २. प्राणियों के शरीर का वह अवयव जिसमें मूत्र रहता है।

फुँकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं०फूँकना] १. वह नली जिसे मुँह से फूँककर आग सुलगाते हैं। २. भाथी।

फुँकरना—क्रि० अ० [हिं० फुंकार] फूत्कार छोड़ना। फूँ फूँ शब्द करना।

फुँकवाना, फुँकाना—क्रि० स० [हिं० 'फूँकना' का प्रे०] फूँकने का काम दूसरे से कराना।

फुँकार—संज्ञा पु० दे० "फूत्कार"।

फुँदना—संज्ञा पु० [हिं० फूल+फंद] १. फूल के आकार की गाँठ जो बंद, डोरी, झालर आदि के छोर पर शोभा के लिये बनाते हैं। फुलरा। झब्बा।

फुँदिया—संज्ञा स्त्री दे० "फुँदना"।

फुँदी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फंदा] फंदा। गाँठ। संज्ञा स्त्री [हिं० बिंदी] बिंदी। टीका।

फुंसी—संज्ञा स्त्री० [स० पनसिका] छोटी फोड़िया।

फुकना—क्रि० अ० दे० "फुँकना"।

फुचड़ा—संज्ञा पु० [देश०] कपड़े आदि की बुनी हुई वस्तुओं में बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।

फुही—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+चुसना] रंग की एक चमकती हुई चिड़िया।
फुलझड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+झड़ना] एक प्रकार की आतशबाजी। २. उपद्रव खड़ा करनेवाली बात।
...र—संज्ञा पु० [हिं० फूल+वार] एक ... का रेशमी बूटीदार कपड़ा।
...ई—संज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"।
...र—वि० [सं० फुल्ल] प्रफुल्ल। प्रसन्न।
...री—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+बारी] १. ...वाटिका। उद्यान। बगीचा। २. ...ज़ के बने हुए फूल और वृक्षादि जो ...के साथ निकाले जाते हैं।
...रा—संज्ञा० पु० [हिं० फूल+हारा] [स्त्री० फुलहारी] माली।
...ना—क्रि० स० [हिं० फूलना] १. किसी ...के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि ...बाव पहुँचाकर बढ़ाना।
...२—मुँह फुलाना = मान करना। रूठना।
...सी को पुलकित या आनंदित कर... ३. किसी में गर्व उत्पन्न करना। ...सुमित करना। फूलों से युक्त करना। ...० दे० "फूलना"।
...ल—संज्ञा पु० दे० "फुलेल"।
...—संज्ञा पु० [हिं० फूलना] फूलने की ...या भाव। उभार या सूजन।
...—संज्ञा पु० [सं० स्फुलिंग] चिनगारी।
...—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल] १. किसी ...से छड़ के आकार की वस्तु का फूल की ...गोल सिरा। २ वह कील या ...जिसका सिरा फूल की तरह हो। ...प्रकार का लौंग (गहना)।
...संज्ञा पु० [हिं० फूल+तेल] फूलों ...के से बासा हुआ सिर में लगाने का ...सुगंधयुक्त तेल।
...रा—संज्ञा पु० [हिं० फूल+हार] ...रेशम आदि के बंदनवार जो उत्सवों ...र पर लगाए जाते हैं।
...री—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+बरी] चने ...मटर आदि के बेसन की पकौड़ी।
...वि० [सं०] फूला हुआ। विकसित।
...म—संज्ञा पु० [सं० फुल्लदामन्] उन्नीस ...की एक वृत्ति।
...—संज्ञा स्त्री० [अनु०] धीमी आवाज।

फुसकारना—क्रि० अ० [अनु०] फूँ मारना। फूत्कार छोड़ना।
फुसफुसा—वि० [हिं० फूस या अनु० फुस] जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय। २. कमजोर। ३. मंदा। मद्धिम।
फुसफुसाना—क्रि० अ० [अनु०] बहुत दबे हुए स्वर से बोलना।
फुसलाना—क्रि० स० [हिं० फिसलाना] अनुकूल या संतुष्ट करने के लिये मीठी मीठी बातें कहना। चकमा देना। बहकाना।
फुहार—संज्ञा स्त्री० [सं० फूत्कार] १. पानी का महीन छींटा। जलकण। २ महीन बूँदों की झड़ी। झींसी।
फुहारा—संज्ञा पु० [हिं० फुहार] १. जल का महीन छींटा। २. जल की वह टोंटी जिसमें से दबाव के कारण जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठकर गिरा करते हैं। जलयंत्र।
फुही—संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।
फूँक—संज्ञा स्त्री० [अनु० फू फू] १. मुँह को बटोरकर वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २. साँस। मुँह की हवा।
मुहा०—फूँक निकल जाना = प्राण निकल जाना।
३. मंत्र पढ़कर मुँह से छोड़ी हुई वायु।
यौ०—झाड़ फूँक = मंत्र तंत्र का उपचार।
फूँकना—क्रि० स० [हिं० फूँक] १. मुँह को बटोरकर वेग के साथ हवा छोड़ना।
मुहा०—फूँक फूँककर पैर रखना या चलना = बहुत सावधानी से कोई काम करना।
२. मंत्र आदि पढ़कर किसी पर फूँक मारना। ३. शंख, बाँसुरी आदि मुँह से बजाए जानेवाले बाजों को फूँककर बजाना। ४. फूँककर प्रज्वलित करना। ५ जलाना। भस्म करना। ६. फजूल खर्च कर देना। उड़ाना।
[illegible]
भरकर और उन्हें स्तन में लगाकर फूँकना जिससे गायों का सारा दूध बाहर निकल आवे। २. बाँस आदि की वह नली जिससे फूँका मारा जाता है। ३ फफोला।
फूँद—संज्ञा स्त्री० दे० "फुँदना"

फूँदा†—संज्ञा पुं० १. दे० "फुँदना"।
यौ०—फूँद फुँदारा = फुँदनेवाला।
२. फुफुँदी।

फूट—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूटना] १. फूटने की क्रिया या भाव। २. बैर। विरोध। बिगाड़। ३ एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटना—क्रि० अ० [सं० स्फुटन] १. खरी या करारी वस्तुओं का आघात पाकर टूटना। करकना। दरकना। २. ऐसी वस्तुओं का फटना जिनके भीतर या तो पोला हो अथवा मुलायम या पतली चीज़ भरी हो। ३ नष्ट होना। बिगड़ना।
मुहा०—फूटी आँखों न भाना = तनिक भी न सुहाना। बहुत बुरा लगना। फूटी आँखों न देख सकना = बुरा मानना। जलना। कुढ़ना।
४. भीतर से झोंक के साथ बाहर आना। ५. शरीर पर दाने या घाव के रूप में प्रकट होना। ६. कली का खिलना। प्रस्फुटित होना। ७. अंकुर, शाखा आदि का निकलना। ८. शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना। ९ बिखरना। फैलना। व्याप्त होना। १०. पक्ष छोड़ना। दूसरे पक्ष में हो जाना। ११. शब्द का मुँह से निकलना।
मुहा०—फूट फूटकर रोना = विलाप करना।
१२. व्यक्त होना। प्रकट होना। प्रकाशित होना। १३. गुप्त बात का प्रकट हो जाना। १४. बाँध, मेड़ आदि का टूट जाना। १५. जोड़ों में दर्द होना।

फूत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] मुँह से हवा छोड़ने का शब्द। फूँक। फुफकार।

फूफा—संज्ञा पुं० [हिं० फूफी] फूफी का पति। बाप का बहनोई।

फूफी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बाप की बहिन। बूआ।

फूल—संज्ञा पुं० [सं० फुल्ल] १ गर्भाधानवाले पौधों में वह ग्रंथि जिसमें फल उत्पन्न करने की शक्ति होती है और जिसे उद्भिदों की जननेंद्रिय कह सकते हैं। पुष्प। कुसुम। सुमन।
मुहा०—फूल झड़ना = मुँह से प्रिय और मधुर बातें निकलना। फूल सा = अत्यंत सुकुमार, हलका या सुंदर। फूल सूँघकर रहना = बहुत कम खाना। (व्यंग्य) पान ... सा = अत्यंत सुकुमार।
२. फूल के आकार के बेल बूटे या नक्काशी। ३. फूल के आकार का कोई गहना। जैसे, करनफूल। सीसफूल। ४. पीतल आदि की गोल गाँठ या घुंडी। फुलिया। ५. सफेद या लाल धब्बा जो कुष्ठ रोग के कारण शरीर पर पड़ जाता है। सफेद दाग। श्वेत कुष्ठ। ६. स्त्रियों का मासिक रज। पुष्प। ७. वह हड्डी जो शव जलाने के पीछे बच रहती है। (हिंदू) ८ एक मिश्र धातु जो ताँबे और राँगे के मेल से बनती है।
संज्ञा स्त्री० [हिं० फूलना] १ फूलने की क्रिया या भाव। २ उत्साह। उमंग। ३ आनंद। प्रसन्नता।

फूलगोभी—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल + गोभी] गोभी की एक जाति जिसमें पत्तों का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है। गाँठ गोभी।

फूलदान—संज्ञा पुं० [हिं० फूल + दान (प्रत्य०)] गुलदस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का गिलास के आकार का बरतन।

फूलदार—वि० [हिं० फूल + दार (प्रत्य०)] जिस पर फूल पत्ते और बेल बूटे बने हों।

फूलना—क्रि० अ० [हिं० फूल + ना (प्रत्य०)] १. फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना।
मुहा०—फूलना फलना = सुखी और सपन्न होना। उन्नति करना। फूलना फालना = उल्लास में रहना। प्रसन्न होना।
२. फूल का संपुट खुलना जिससे उसकी पँखड़ियाँ फैल जायँ। विकसित होना। खिलना। ३. भीतर किसी वस्तु के भर जाने के कारण अधिक फैल या बढ़ जाना। ४. शरीर के किसी भाग का सूजना। ५. मोटा होना। स्थूल होना। ६. गर्व करना। घमंड करना। इतराना। ७. आनंदित होना। बहुत खुश होना।
मुहा०—फूला फूला फिरना = प्रसन्न घूमना। आनंद में रहना। फूले अंग न समाना = अत्यंत आनंदित होना।
८ मुँह फुलाना। रूठना। मान करना।

फूलमती—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल + मती (प्रत्य०)] ... देवी का नाम।
... फूल] वह सफेद दाग पड़ जाता है।
...] ... वह सूखी

में आती है। २. सूखा तृण। खर। तिनका।

फूहड़–वि० [सं० पत = गोबर + घट = गढ़ना] १. जिसे कुछ करने का ढंग न हो। बे-शऊर। २. बेढंगा। भद्दा।

फूही–संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।

फेंकना–क्रि० स० [सं० प्रेषण] १. झोंक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। २. एक स्थान से ले जाकर और स्थान पर डालना। ३. असावधानी या भूल से इधर-उधर छोड़ना, गिराना या रखना। ४. तिरस्कार के साथ त्यागना। छोड़ना। ५. अपव्यय करना। फजूल खर्च करना।

फेंकरना‡†–क्रि० अ० [अनु० फें फें + करना] चिल्ला चिल्लाकर रोना।

फेंट–संज्ञा स्त्री० [हिं० पेट या पेटी] १. कमर का घेरा। कटि का मंडल। २. धोती का वह भाग जो कमर में लपेटकर बाँधा गया हो। ३. कमर से बाँधा हुआ कोई कपड़ा। पटुका। कमरबंद।

मुहा०—फेंट धरना या पकड़ना = इस प्रकार पकड़ना कि भागने न पावे। फेंट कसना या बाँधना = कमर कसकर तैयार होना।

४. फेरा। लपेट। घुमाव।

संज्ञा स्त्री० [हिं० फेंटना] फेंटने की क्रिया या भाव।

फेंटना–क्रि० स० [सं० पिष्ट] १. गाढ़े द्रव पदार्थ को उँगली घुमा घुमाकर हिलाना। २. गड्डी के ताशों को उलट पुलटकर अच्छी तरह से मिलाना।

फेंटा–संज्ञा पु० [हिं० फेंट] १. दे० "फेंट"। २. छोटी पगड़ी।

फेकरना–क्रि० अ० [हिं० फेकारना] (सिर का) खुलना। नंगा होना।

क्रि० अ० दे० "फेंकरना"।

फेन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० फेनिल] महीन महीन बुलबुलों का गठा हुआ समूह। झाग।

फेनी–संज्ञा स्त्री० [सं० फेनिका] सूत के लच्छे के आकार की एक मिठाई।

फेफड़ा–संज्ञा पु० [सं० फुप्फुस + डा (प्रत्य०)] वक्षःस्थल के भीतर का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं। फुप्फुस।

फेफड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० पपड़ी] फाके या गरमी में सूखे हुए होंठ पर का चमड़ा। पपड़ी।

फेफरी–संज्ञा स्त्री० दे० "फेफड़ी"।

फेर–संज्ञा पु० [हिं० फेरना] १. चक्कर। घुमाव। घूमने की क्रिया, दशा या भाव।

मुहा०—फेर खाना = सीधा न जाकर इधर उधर घूमकर अधिक चलना।

२. मोड़। झुकाव। ३. परिवर्तन। उलट-पलट। रद्द-बदल।

मुहा०—दिनों का फेर = एक दशा से दूसरी दशा की प्राप्ति (विशेषतः अच्छी से बुरी दशा की)। कुफेर = बुरे दिन। बुरी दशा। सुफेर = १. अच्छी दशा। २. अच्छा अवसर।

४. अंतर। फर्क। भेद। ५. असमंजस। उलझन। दुबधा।

मुहा०—फेर में पड़ना = असमंजस में होना।

६. भ्रम। संशय। धोखा। ७. षट्-चक्र। चालबाजी। ८ बखेड़ा। झंझट।

मुहा०—निन्नानबे का फेर = निन्नानबे रुपए पाकर सौ रुपए पूरे करने की धुन। रुपया बढ़ाने का चसका।

९. युक्ति। उपाय। ढंग। १०. बदला बदला। एवज।

यौ०—हेर-फेर = लेन देन। व्यवसाय।

११. हानि। टोटा। घाटा। १२. भूत प्रेत का प्रभाव। * १३. ओर। दिशा।

* अव्य० फिर। पुनः। एक बार और।

फेरना–क्रि० स० [सं० प्रेरण, प्रा० पेरन] १. एक ओर से दूसरी ओर ले जाना। घुमाना। मोड़ना। २. पीछे चलाना। लौटाना। वापस करना। ३. जिसने दिया हो, उसी को फिर देना। लौटाना। वापस करना। ४. वापस लेना। लौटा लेना। ५. चक्कर देना। घुमाना। ६. ऐंठना। मरोड़ना। ७. रखकर इधर उधर स्पर्श कराना। ८. पोतना। तह चढ़ाना।

मुहा०—पानी फेरना = नष्ट करना।

९. उलट पलट या इधर उधर करना। १०. चारों ओर सबके सामने ले जाना। घुमाना। ११. प्रचारित करना। घोषित करना। १२. घोड़े आदि को ठीक तरह से चलने की शिक्षा देना। निकालना।

फेरफार–संज्ञा पु० [हिं० फेर] १. परिवर्तन। उलट फेर। २. अंतर। फर्क। ३. टाल-मटूल। बहाना। ४. घुमाव फिराव। पेच। चक्कर।

फेरवट–संज्ञा स्त्री० [हिं० फेरना] १. फिरने

या भाव। २. घुमाव फिराव। पेच। चक्कर।

फेरा–संज्ञा पु० [हिं० फेरना] १. किसी के चारों ओर गमन। परिक्रमण। चक्कर। २. लपेटने में एक एक बार का घुमाव। लपेट। मोड़। बल। ३. बार बार आना जाना। ४. घूमते फिरते आ जाना या जा पहुँचना। ५. लौटकर फिर आना। पलटकर आना। ६ आवर्त्त। घेरा। मंडल।

फेरि –अव्य० [हिं० फिर] फिर। पुनः।

फेरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० फेरना] १. दे० "फेरा"। २ दे० "फेर"। ३. परिक्रमा। प्रदक्षिणा। ४. योगी या फकीर का किसी बस्ती में भिक्षा के लिये बराबर आना। ५ कई बार आना जाना। चक्कर।

फेरीवाला–संज्ञा पु० [हिं० फेरी+वाला] घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

.फेल–संज्ञा पु० [अ०] कर्म्म। काम।

.फेहरिस्त–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़िहरिस्त"।

फेल ‡–संज्ञा पु० [अ० फ़ेल] १ काम। कार्य्य। २. क्रीड़ा। खेल। ३. नखरा।

फैलना–क्रि० अ० [सं० प्रसृत] १. कुछ दूर तक स्थान घेरना। २. विस्तृत होना। पसरना। अधिक बड़ा या लंबा-चौड़ा होना। ३. मोटा होना। स्थूल होना। ४ बढ़ती होना। वृद्धि होना। ५. छितराना। बिखरना। ६. तनकर किसी ओर बढ़ना। ७. प्रचार पाना। बहुतायत से मिलना। ८. प्रसिद्ध होना। मशहूर होना। ९. आग्रह करना। हठ करना। जिद करना। १०. भाग का ठीक ठीक लग जाना।

फ़ैलसूफ़–वि० [यू० फ़िलसफ़] फ़ज़ूल खर्च।

फ़ैलसूफ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० फ़ैलसूफ़] फ़जूलखर्ची। अपव्यय।

फैलाना–क्रि० स० [हिं० फैलना] १. लगातार कुछ दूर तक स्थान घिरवाना। २. विस्तृत करना। पसारना। विस्तार बढ़ाना। ३. व्यापक करना। छा देना। भर देना। ४. बिखेरना। अलग अलग दूर तक कर देना। ५. बढ़ती करना। वृद्धि करना। ६. तानकर किसी ओर बढ़ाना। ७ प्रचलित करना। जारी करना। ८ इधर-उधर दूर तक पहुँचाना। ९. प्रसिद्ध करना। चारों ओर करना। १० हिसाब किताब करना। लेखा लगाना। ११. गुणा भाग के ठीक होने की परीक्षा करना।

फैलाव–संज्ञा पु० [हिं० फैलाना] १ विस्तार। प्रसार। २. प्रचार।

.फ़ैसला–संज्ञा पु० [अ०] १. दो पक्षों में से किसकी बात ठीक है, इसका निर्णय। २. किसी मुकदमे में अदालत की आखिरी राय।

फोंक–संज्ञा पु० [सं० पुंख] तीर के पीछे की नोक जिसके पास पर लगाए जाते हैं।

फोंदा–संज्ञा पु० दे० "फुँदना"।

फोक–संज्ञा पु० [हिं० फोकला] १. सार निकल जाने पर बचा हुआ अंश। सीठी। २. भूसी। तुष। ३. फीकी या नीरस चीज़।

फोकट–वि० [हिं० फोक] जिसका कुछ मूल्य न हो। निःसार। व्यर्थ।

मुहा०—फोकट में = मुफ़्त में। यों ही।

फोकला‡–संज्ञा पु० [सं० वल्कल] छिलका।

फोट–संज्ञा पु० दे० "स्फोट"।

फोड़ना–क्रि० स० [सं० स्फोटन] १ करी वस्तुओं को खंड खंड करना। भग्न करना। विदीर्ण करना। २. केवल आघात या दबाव से भेदन करना। ३ शरीर में ऐसा विकार उत्पन्न करना जिससे घाव या फोड़े हो जायँ। ४. अंकुर, कनखे, शाखा आदि निकालना। ५. शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना। ६. दूसरे पक्ष से अलग करके अपने पक्ष में कर लेना। ७. भेदभाव उत्पन्न करना। ८. फूट डालकर अलग करना। ९. एकबारगी भेद खोलना।

फोड़ा–संज्ञा पु० [सं० स्फोटक] [स्त्री० अल्पा० फोड़िया] वह शोथ जो शरीर में कहीं पर कोई दोष संचित होने से उत्पन्न होता है और जिसमें रक्त सड़कर पीब के रूप में हो जाता है। व्रण।

फोड़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं० फोड़ा] छोटा फोड़ा।

फोता–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. भूमिकर। पोत। २. थैली। कोष। थैला। ३ अंडकोष।

फोतेदार–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. खज़ांची। कोषाध्यक्ष। २. रोकड़िया।

फोरना†–क्रि० स० दे० "फोड़ना"।

फौआरा–संज्ञा पु० दे० "फुहारा"।

फ़ौज–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. झुंड। जत्था। २. सेना। लश्कर।

फ़ौजदार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सेनापति ।

फ़ौजदारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. लड़ाई झगड़ा । मार-पीट । २ वह अदालत जहाँ ऐसे मुकदमों का निर्णय होता हो जिनमें अपराधी को दंड मिलता है ।

फ़ौजी–वि० [फ़ा०] फ़ौज संबंधी । सैनिक ।

फ़ौत–वि० [अ०] मृत । गत ।

फ़ौरन–क्रि० वि० [अ०] तुरत । चटपट ।

फ़ौलाद–संज्ञा पुं० [फ़ा० पोलाद] एक प्रकार का कड़ा और अच्छा लोहा । खेड़ी ।

फ़्रांसीसी–वि० [फ़्रांस] १ फ़्रांस देश का । २ फ़्रांस देशवासी ।

ब

ब–हिंदी का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण । यह ओष्ठ्य वर्ण है ।

बंक–वि० [सं० वक्र, बंक] १ टेढ़ा । तिरछा । २. पुरुषार्थी । विक्रमशाली । ३. दुर्गम । जिस तक पहुँच न हो सके ।
संज्ञा पुं० [अं० बैंक] वह संस्था जो लोगों का रुपया अपने यहाँ जमा करती अथवा लोगों को ऋण देती है ।

बंकराज–संज्ञा पुं० [सं० वंकराज] एक प्रकार का सर्प ।

बंका†–वि० [सं० वक्र] १. टेढ़ा । तिरछा । २. बाँका । ३ पराक्रमी ।

बकाई†–संज्ञा स्त्री० दे० "वकुरता" ।

बंकुरता*–संज्ञा स्त्री० [सं० वक्रता] टेढ़ाई । टेढ़ापन ।

बँगला–वि० [हिं० बंगाल] बंगाल देश का । बंगाल संबंधी ।
संज्ञा पुं० १ वह चारों ओर से खुला हुआ एक मंजिल का मकान जिसके चारों ओर बरामदे हों । २ वह छोटा हवादार कमरा जो प्राय ऊपरवाली छत पर बनाया जाता है । ३ बँगाल देश का पान ।
संज्ञा स्त्री० बंगाल देश की भाषा ।

बंगाला–संज्ञा पुं० दे० "बँगाल" ।
बंगालिका नाम की रागिनी ।

बंगाली–संज्ञा पुं० [हिं० बंगाल + ई (प्रत्य०)] बंगाल देश का निवासी ।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बंग] बंग देश की भाषा ।

बंचक–संज्ञा पुं० [सं० वंचक] धूर्त । ठग ।

बंचकता, बंचकताई*†–संज्ञा स्त्री० [सं० वंचकता] छल । धूर्तता । चालबाजी ।

बंचनता–संज्ञा स्त्री० [सं० वंचकता] ठगी ।

बंचना–संज्ञा स्त्री० [सं० वंचना] ठगी ।
†क्रि० स० [सं० वंचन] ठगना । छलना ।

बँचवाना–क्रि० स० [हिं० बाँचना] पढ़वाना ।

बंछना*†–क्रि० स० [सं० वांछा] अभिलाषा करना । इच्छा करना । चाहना ।

बंछित–*†–वि० दे० "वांछित"

बंजा–संज्ञा पुं० दे० "बनिज" ।

बंजर–संज्ञा पुं० [सं० वन + ऊजड़] ऊसर ।

बंजारा–संज्ञा पुं० दे० "बनजारा" ।

बंझा–वि० संज्ञा स्त्री० दे० 'बाँझ' ।

बँटना–क्रि० अ० [सं० वितरन] १ विभाग होना । अलग अलग हिस्सा होना । २. कई व्यक्तियों को अलग अलग दिया जाना ।

बँटवाना–क्रि० स० [सं० वितरण] बाँटने का काम दूसरे से कराना ।

बँटवारा–संज्ञा पुं० [हिं० बाँटना] बाँटने की क्रिया । विभाग । तकसीम ।

बंटा–संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बटी] गोल या चौकोर छोटा डब्बा ।

बँटाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँटना] १ बाँटने का काम या भाव । २. खेती का वह प्रकार जिसमें खेत जोतनेवाले से मालिक को लगान के रूप में फ़सल का कुछ अंश मिलता है ।

बँटाना–क्रि० स० [हिं० बाँटना] १. बँट वाना । २ दूसरे का बोझ हलका करने के लिये शामिल होना ।

बँटावन†–वि० [हिं० बँटाना] बँटानेवाला।
बंडा–सं० पुं० [हिं० बंटा] एक प्रकार का कच्चू या अरुई।
बंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँडा = कटा हुआ] १. फतुही। कुरती। २. बगलबंदी।
बँडेरी–संज्ञा स्त्री० [सं० वरदंड] वह लकड़ी जो खपरैल की छाजन में मँगरे पर लगती है।
बंद–संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० बंध] १. वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २. पुश्ता। मेंड़। बाँध। ३. शरीर के अंगों का कोई जोड़। ४ फीता। तनी। ५ कागज का लंबा और बहुत कम चौड़ा टुकड़ा। ६. बंधन। कैद।
वि० [फा०] १. जिसके चारों ओर कोई अवरोध हो। २. जिसके मुँह अथवा मार्ग पर ढकना या ताला आदि लगा हो। ३ जो खुला न हो। ४. किवाड़, ढकना आदि जो ऐसी स्थिति में हो जिससे कोई वस्तु भीतर से बाहर न जा सके और बाहर की चीज अंदर न आ सके। ५. जिसका कार्य्य रुका हुआ या स्थगित हो। ६. रुका हुआ। थमा हुआ। ७. जो किसी तरह की कैद में हो।
बंदगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. भक्तिपूर्वक ईश्वर की वंदना। २. सेवा। खिदमत। ३. आदाब। प्रणाम। सलाम।
बंद गोभी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बंद + गोभी] करमकल्ला। पातगोभी।
बंदन–संज्ञा पुं० दे० "वंदन"।
संज्ञा पुं० [सं० वंदनी = गोरोचन] १. रोचन। रोली। २. ईंगुर। सेंदुर।
बंदनता–संज्ञा स्त्री० [सं० वंदनता] वंदनीयता। आदर या वंदना किए जाने की योग्यता।
बंदनवार–संज्ञा पुं० [सं० वंदनमाला] फूलों या पत्तों की मालर जो मंगल सूचनार्थ दीवारों आदि में बाँधी जाती है। तोरण।
बंदना–संज्ञा स्त्री० दे० "वंदना"।
क्रि० स० [सं० वंदन] प्रणाम करना।
बंदनी*–वि० दे० "वंदनीय"।
बंदनी माल–संज्ञा स्त्री० [सं० वंदनमाल] वह लंबी माला जो गले से पैरों तक लटकती हो।
बंदर–संज्ञा पुं० [सं० वानर] एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया जो मनुष्य से बहुत मिलता-जुलता होता है। कपि। मर्कट।
मुहा०–बंदर-घुड़की या बंदर-भभकी = ऐसी धमकी या डाँट-डपट जो केवल डराने या धमकाने के लिये ही हो।
संज्ञा पुं० दे० "बंदरगाह"।
बंदरगाह–संज्ञा पुं० [फा०] समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं।
बंदवान–संज्ञा पुं० [सं० वंदी + वान] बंदीगृह का रक्षक। कैदखाने का अफसर।
बंदसाल†–संज्ञा पुं० [सं० वंदीशाला] कैदखाना। जेल।
बंदा–संज्ञा पुं० [फा०] सेवक। दास।
संज्ञा पुं० [सं० वंदी] बंदी। कैदी।
बंदारु–वि० [सं० वंदारु] १. वंदनीय। २. पूजनीय। आदरणीय।
बंदाल–संज्ञा पुं० [?] देवदाली।
बंदि–संज्ञा स्त्री० [सं० वंदिन्] कैद।
बँदिया†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बंदनी] बंदी। (आभूषण)
बंदिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बाँधने की क्रिया या भाव। २. प्रबंध। रचना। योजना। ३ षड्यंत्र।
बंदी–संज्ञा पुं० [सं०] एक जाति जो राजाओं का कीर्तिगान करती थी। भाट। चारण।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बंदनी] एक प्रकार का आभूषण जिसे स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।
संज्ञा पुं० [फा०] कैदी।
बंदीखाना–संज्ञा पुं० [फा०] कैदखाना।
बंदीछोर*†–संज्ञा पुं० [फा० बंदी + हिं० छोर] कैद या बंधन से छुड़ानेवाला।
बंदीवान*–संज्ञा पुं० [सं० वंदिन्] कैदी।
बंदूक–संज्ञा स्त्री० [अ०] नली के रूप का एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें गोली रखकर बारूद की सहायता से चलाई जाती है।
बंदूकची–संज्ञा पुं० [फा०] बंदूक चलानेवाला सिपाही।
बँदेरा*–संज्ञा पुं० [सं० वंदी] [स्त्री० बँदेरी] १. बंदी। कैदी। २. सेवक। दास।
बंदोबस्त–संज्ञा पुं० [फा०] १. प्रबंध। इंतजाम। २. खेती के लिये भूमि को नापकर उसका राजकर निर्धारित करने का काम। ३. वह महकमा या विभाग जिसके

सपुर्द खेतों आदि को नापकर उनका कर निश्चित करने का काम हो।

बंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। २. गाँठ। गिरह। ३. कैद। ४. पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ५. कोकशास्त्र के अनुसार रति का आसन। ६. योग-शास्त्र के अनुसार योग-साधन की कोई मुद्रा। ७. निर्बंध-रचना। गद्य या पद्य लेख तैयार करना। ८. चित्रकाव्य में छंद की ऐसी रचना जिससे किसी विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय। ९. वह जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। बंद। १०. लगाव। फँसाव। ११. शरीर।

बंधक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वस्तु जो लिए हुए ऋण के बदले में धनी के यहाँ रख दी जाय। रेहन। २. बाँधनेवाला। संज्ञा पुं० [सं० बध] स्त्री-संभोग का कोई आसन। बंध।

बंधन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँधने की क्रिया। २. वह जिससे कोई चीज़ बाँधी जाय। ३. वह जो किसी की स्वतंत्रता आदि में बाधक हो। प्रतिबंध। ४. वध। हत्या। ५. रस्सी। ६. कारागार। कैदखाना। ७. शरीर का संधिस्थान। जोड़।

बँधना–क्रि० अ० [सं० बंधन] १. बंधन में आना। बद्ध होना। बाँधा जाना। २. कैद होना। बंदी होना। ३. प्रतिबंध में रहना। फँसना। अटकना। ४. प्रतिज्ञा या वचन आदि से बद्ध होना। ५. ठीक होना। दुरुस्त होना। ६. क्रम निर्धारित होना। स्थिर होना। ७. प्रेमपाश में बद्ध या मुग्ध होना। संज्ञा पुं० [सं० बंधन] वह वस्तु जिससे किसी चीज को बाँधें। बाँधने का साधन।

बँधनि†–संज्ञा स्त्री० [सं० बंधन, हिं० बँधना] १. बंधन। जिसमें कोई चीज़ बँधी हुई हो। २. उलझाने या फँसानेवाली चीज़।

बँधवाना–क्रि० स० [हिं० बाँधना का प्रे०] बाँधने का काम दूसरे से कराना।

बंधान–संज्ञा पुं० [हिं० बँधना] १. लेन देन या व्यवहार आदि की नियत परिपाटी। २. वह पदार्थ या धन जो इस परिपाटी के अनुसार दिया या लिया जाय। ३. पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ४. ताल का सम। (संगीत)

बँधाना–क्रि० स० [हिं० बधन] १. धारण कराना। २. दे० "बँधवाना"।

बंधी–संज्ञा पुं० [सं० बंधिन्] बँधा हुआ। †संज्ञा स्त्री० [हिं० बँधना = नियत होना] वह कार्यक्रम जिसका नित्य होना निश्चित हो। बंधेज।

बंधु–संज्ञा पुं० [सं०] १. भाई। भ्राता। २. सहायक। मददगार। ३. मित्र। दोस्त। ४. एक वर्णवृत्त। दोधक। ५. बंधूक पुष्प।

बँधुआ–संज्ञा पुं० [हिं० बँधना] कैदी। बंदी।

बंधुक–संज्ञा पुं० [सं०] दुपहरिया का फूल।

बंधुता–संज्ञा स्त्री० दे० "बंधुत्व"।

बंधुत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधु होने का भाव। बंधुता। २. भाईचारा। ३. मित्रता। दोस्ती।

बंधूक–संज्ञा पुं० [सं० बन्धु] १. दे० "बंधुक"। २. दोधक नामक वृत्त। बंधु।

बंधेज–संज्ञा पुं० [हिं० बँधना + एज (प्रत्य०)] १. नियत समय पर और नियत रूप से मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य। २. किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति। ३. रुकावट। प्रतिबंध।

बंध्या–वि० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री) जो संतान न पैदा कर सके। बाँझ।

बंध्यापन–संज्ञा पुं० दे० "बाँझपन"।

बंध्यापुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] ठीक वैसा ही असंभव भाव या पदार्थ जैसे बंध्या का पुत्र। कभी न होनेवाली चीज़।

बंपुलिस–संज्ञा स्त्री० [अनु० बं + अं० प्लेस] मलत्याग के लिये म्युनिसिपैलिटी आदि का बनवाया हुआ सार्वजनिक स्थान।

बंब–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. युद्धारंभ में वीरों का उत्साहवर्द्धक नाद। रणनाद। हल्ला। २. नगारा। दुंदुभी। डंका।

बंबा–संज्ञा पुं० [अ० मंबा] १. जल-कल। पानी की कल। पंप। २. सोता। स्रोत।

बँबाना–क्रि० अ० [अनु०] गौ आदि पशुओं का बाँ बाँ शब्द करना। रँभाना।

बंबू–संज्ञा पुं० [मलाया० बैंबू = बाँस] चंडू पीने की बाँस की छोटी पतली नली।

बंस–संज्ञा पुं० दे० "वंश"।

बंसकार–संज्ञा पुं० [सं० वंश] बाँसुरी।

बंसलोचन–संज्ञा पुं० [सं० वंशलोचन] बाँस का सार भाग जो सफेद रंग के छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है। वंशकपूर।

चंसी–संज्ञा स्त्री० [सं० वंशी] १. बाँस की नली का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। वंशी। मुरली। २. मछली फँसाने का एक औजार। ३. विष्णु, कृष्ण, और रामजी के चरणों का रेखा चिह्न।
वंसीधर–संज्ञा पुं० [सं० वंशीधर] श्रीकृष्ण।
वँहगी–संज्ञा स्त्री० [सं० वह] भार ढोने का वह उपकरण जिसमें एक लंबे बाँस के दोनों सिरों पर रस्सियों के बड़े बड़े छींके लटका दिए जाते है।
व–संज्ञा पुं० [सं०] १ वरुण। २. सिंधु। ३. जल। ४ सुगंधि।
वइठना–क्रि० अ० दे० "बैठना"।
वउर–संज्ञा पुं० दे० "बौर" या "मौर"।
वउरा–वि० दे० "बावला"।
चक–संज्ञा पुं० [सं० वक] १. बगला। २. अगस्त्य नामक पुष्प का वृक्ष। ३. कुबेर। ४. बकासुर।
वि० बगले सा सफेद।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बकना] प्रलाप। बकवाद।
वकतर–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की जिरह या कवच जिसे योद्धा लड़ाई में पहनते हैं। सन्नाह।
वकता–वि० दे० "वक्ता"।
वकध्यान–संज्ञा पुं० [सं० वकध्यान] ऐसी चेष्टा या ढंग जो देखने में तो बहुत साधु जान पड़े, पर जिसका वास्तविक उद्देश्य दुष्ट हो। बनावटी साधु भाव।
वकना–क्रि० स० [सं० वचन] १. ऊटपटाँग बात कहना। व्यर्थ बहुत बोलना। २. प्रलाप करना। बड़बड़ाना।
वकवक–संज्ञा स्त्री० [हिं० बकना] बकने की क्रिया या भाव।
वकमौन–संज्ञा पुं० [सं० वक+मौन] दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिये बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहना।
वि० चुपचाप काम साधनेवाला।
वकर कसाव–संज्ञा पुं० [हिं० बकरी + अ० कस्साब = कसाई] बकरों का मांस बेचनेवाला पुरुष। चिक।
वकरना–क्रि० स० [हिं० बकना] १. आपसे आप बकना। बड़बड़ाना। २. अपना दोष या करतूत आप से आप कहना।
वकरा–संज्ञा पुं० [सं० वर्कर] [स्त्री० बकरी] प्रसिद्ध चतुष्पाद पशु जिसके सींग पीछे मुड़े हुए, पूँछ छोटी और खुर फटे होते हैं।
वकलस–संज्ञा पुं० [अं० बकल्स] एक प्रकार की विलायती अँकुसी जो किसी बंधन के दो छोरों को मिलाए रखने या कसने के काम में आती है। बकसुआ।
वकला–संज्ञा पुं० [सं० वल्कल] १. पेड़ की छाल। २. फल का छिलका।
वकवाद–संज्ञा स्त्री० [हिं० बक + वाद] व्यर्थ की बात। बकबक।
वकवादी–वि० [हिं० बकवाद] बहुत बक बक करनेवाला। बकी।
वकवास–संज्ञा स्त्री० दे० "बकवाद"।
वकस–संज्ञा पुं० [अं० बाक्स] १. कपड़े आदि रखने का चौकोर संदूक। २. छोटा डिब्बा। खाना।
वकसना–क्रि० स० [फा० बख्श + हिं० ना] १. कृपापूर्वक देना। प्रदान करना। २. क्षमा करना। माफ करना।
वकसाना–क्रि० स० [हिं० बकसना] क्षमा कराना। माफ कराना।
वकसी–संज्ञा पुं० दे० "बख्शी"।
वकसीस–संज्ञा स्त्री० [फा० बख्शिश] १. दान। २. इनाम। पारितोषिक।
वकसुआ–संज्ञा पुं० दे० "बकलस"।
वकाउर–संज्ञा स्त्री० दे० "बकावली"।
वकाना–क्रि० स० [हिं० बकना का प्रेरणा० रूप] १. बकबक कराना। २ रटाना।
वकायन–संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़का + नीम ?] नीम की जाति का एक पेड़।
वकाया–संज्ञा पुं० [अ०] १. बचा हुआ। बाकी। २. बचत।
वकारी–संज्ञा स्त्री० [सं० 'व' कार या वाक्य] मुँह से निकलनेवाला शब्द।
वकावर–संज्ञा स्त्री० दे० "गुल बकावली"।
वकावली–संज्ञा स्त्री० दे० "गुल बकावली"।
वकासुर–संज्ञा पुं० [सं० वकासुर] एक दैत्य का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
वकुचना–क्रि० अ० [सं० विकुंचन] सिमटना। सिकुड़ना। संकुचित होना।
वकुचा–संज्ञा पुं० [हिं० बकुचना] [स्त्री० बकुची] छोटी गठरी। बकचा।
वकुची–संज्ञा स्त्री० [सं० वाकुची] एक पौधा जो औषध के काम में आता है।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बकुचा] छोटी गठरी।

बकचोहाँ†–वि० [हिं० बकुचा + औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० बकुचौहीं] बकुचे की भाँति।
बकुल–संज्ञा पुं० [सं०] मौलसिरी।
बकुला†–संज्ञा पुं० दे० "बगला"।
बकेन, बकेना†–संज्ञा स्त्री० [सं० वष्कयणी] वह गाय या भैंस जिसे बच्चा दिए साल भर से अधिक हो गया हो और जो दूध देती हो। लवाई का उलटा।
बकैयाँ–संज्ञा पुं० [सं० बक + ऐयाँ (प्रत्य०)] बच्चों का घुटनों के बल चलना।
बकोट–संज्ञा स्त्री० [सं० प्रकोष्ठ या अभिकोष्ठ] बकोटने की मुद्रा, क्रिया या भाव।
बकोटना–क्रि० स० [हिं० बकोट] नाखूनों से नोचना। पंजा मारना। निकोटना।
बकौरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "गुल बकावली"।
बक्कम–संज्ञा पुं० [अ० बक्रम] एक छोटा कँटीला वृक्ष। इसकी लकड़ी, छिलके और फलों से लाल रंग निकलता है। पतंग।
बक्कल–संज्ञा पुं० [सं० वल्कल] १. छिलका। २. छाल।
बक्काल–संज्ञा पुं० [अ०] वणिक्। बनिया।
बक्की–वि० [हिं० बकना] बहुत बोलने या बकबक करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धान।
बक्खर–संज्ञा पुं० दे० "बाखर"।
बक्स–संज्ञा पुं० दे० "बकस"।
बखतर–संज्ञा पुं० दे० "बक्तर"।
बखर–संज्ञा पुं० १. दे० "बाखर"। २. दे० "बक्खर"।
बखरा–संज्ञा पुं० [फा० बखर.] १. भाग। हिस्सा। बाँट। २. दे० "बाखर"।
बखरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बखर] मिट्टी, ईंटा आदि का बना हुआ मकान। (गाँव)
बखसीस*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बख्सीस"।
बखान–संज्ञा पुं० [सं० व्याख्यान] १ वर्णन। कथन। २. प्रशंसा। स्तुति। बड़ाई।
बखानना–क्रि० स० [हिं० बखान + ना] १. वर्णन करना। कहना। २ प्रशंसा करना। सराहना। ३. गाली गलौज देना।
बखार†–संज्ञा पुं० [सं० प्राकार] [स्त्री० अल्पा० बखारी] दीवार आदि से घिरा हुआ गोल घेरा जिसमें गाँवों में अन्न रखा जाता है।
बखिया–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई।
बखियाना–क्रि० स० [हिं० बखिया] किसी चीज पर बखिया की सिलाई करना।
बखीर†–संज्ञा स्त्री० [हिं० खीर का अनु०] मीठे रस में उबाला हुआ चावल।
बखील–वि० [अ०] कृपण। सूम।
बखूबी–क्रि० वि० [फा०] १ अच्छे प्रकार से। भली भाँति। २. पूर्ण रूप से।
बखेड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० बखेरना] १ उलझाव। झंझट। उलझन। २. झगड़ा। टंटा। विवाद। ३ कठिनता। मुश्किल। ४ व्यर्थ विस्तार। आडंबर।
बखेड़िया–वि० [हिं० बखेड़ा + इया (प्रत्य०)] बखेड़ा करनेवाला। झगड़ालू।
बखेरना–क्रि० स० [सं० विकिरण] चीजों को इधर उधर या दूर दूर फैलाना। छितराना।
बखोरना†–क्रि० स० [हिं० बक्कुर] छेड़ना।
बख्त–संज्ञा पुं० [फा०] भाग्य। किस्मत।
बख्तर–संज्ञा पुं० दे० "बकतर"।
बख्शना–क्रि० स० [फा० बख्श] १ देना। प्रदान करना। २ त्यागना। छोड़ना। ३. क्षमा करना। माफ करना।
बख्शवाना, बख्शाना–क्रि० स० [हिं० बख्शना का प्रे०] किसी को बख्शन में प्रवृत्त करना।
बख्शिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. उदारता। २. दान। ३. क्षमा।
बग†–संज्ञा पुं० [सं० बक] बगुला।
बगई†–संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती है। कुकुरमाछी। २. एक प्रकार की घास।
बगछुट, बगटुट–क्रि० वि० [हिं० बाग + छुटना या टूटना] सरपट। बेतहाशा। बड़े वेग से।
बगदना†–क्रि० अ० [हिं० बिगड़ना] १. बिगड़ना। खराब होना। २. भ्रम में पड़ना। ३ लुढ़कना। गिरना।
बगदहा*†–वि० [हिं० बगदना + हा (प्रत्य०)] [स्त्री० बगदही] चौंकने या बिगड़नेवाला। बिगड़ैल।
बगदाना†–क्रि० स० [हिं० बगदना] १. बिगाड़ना। खराब करना। २ ठीक रास्ते से हटाना। ३ भुलाना। भटकाना।
बगना*†–क्रि० अ० [सं० वक] घूमना फिरना।
बगनी–संज्ञा स्त्री० [देश०] बगई। (घास)
बगमेल–संज्ञा पुं० [हिं० बाग + मेल]

दूसरे के घोड़े के साथ बाग मिलाकर चलना। बराबर बराबर चलना। २. बराबरी। समानता। तुलना।
क्रि० वि० बाग मिलाए हुए। साथ साथ।

बगर†–संज्ञा पुं० [सं० प्रघण] १. महल। प्रासाद। २. बड़ा मकान। घर। ३. घर। कोठरी। ४. सहन। आँगन। ५. वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं। बगार। घाटी।
संज्ञा स्त्री० दे० "बगल"।

बगरना†–क्रि० अ० [सं० विकिरण] फैलना। बिखरना। छितराना।

बगराना†–क्रि० स० [हिं० बगरना का सक० रूप] फैलाना। छितराना। छिटकाना।
क्रि० अ० बगरना। फैलना। बिखरना।

बगरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बखरी"।

बगरूरा–संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

बगल–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बाहु-मूल के नीचे की ओर का गड्ढा। काँख। २. छाती के दोनों किनारों का भाग। पार्श्व।
मुहा०—बगल में दबाना या धरना = अधिकार करना। ले लेना। बगलें बजाना = बहुत प्रसन्नता प्रकट करना। खूब खुशी मनाना।
३. इधर उधर का भाग। किनारे का हिस्सा।
मुहा०—बगलें झाँकना = इधर उधर भागने का यत्न करना।
४. कपड़े का वह टुकड़ा जो कुरते आदि में कंधे के जोड़ के नीचे लगाया जाता है।
५. समीप का स्थान। पास की जगह।

बगलगंध–संज्ञा पुं० [हिं० बगल + गंध] १. वह फोड़ा जो बगल में होता है। कँखवार। २. एक प्रकार का रोग जिसमें बगल से बहुत बदबूदार पसीना निकलता है।

बगलबंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बगल + बंद] एक प्रकार की मिरजई या कुरती।

बगला–संज्ञा पुं० [सं० बक + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बगली] सफेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी टाँगें, चोंच और गला लंबा होता है।
मुहा०—बगला भगत = १. धर्मध्वजी। २. कपटी। धोखेबाज।

बगलामुखी–संज्ञा स्त्री० [देश०] तांत्रिकों की एक देवी।

बगलियाना†–क्रि० अ० [हिं० बगल + इयाना (प्रत्य०)] बगल से होकर जाना। अलग हटकर चलना या निकलना।
क्रि० स० १. अलग करना। २. बगल में लाना या करना।

बगली–वि० [हिं० बगल + ई (प्रत्य०)] बगल से संबंध रखनेवाला। बगल का।
मुहा०—बगली घूँसा = वह वार जो आड़ में छिपकर या धोखे से किया जाय।
संज्ञा स्त्री० १. वह थैली जिसमें दर्जी सूई तागा रखते हैं। तिलादानी। २. कुरते आदि में कपड़े का वह टुकड़ा जो कंधे के नीचे लगाया जाता है। बगल।

बगलौहाँ†–वि० [हिं० बगल + औहाँ] [स्त्री० बगलौहीं] बगल की ओर झुका हुआ। तिरछा।

बगसना†–क्रि० स० दे० "बख्शना"।

बगा†–संज्ञा पुं० [हिं० बागा] जामा। बागा।
संज्ञा पुं० [सं० बक] बगला।

बगाना†–क्रि० स० [हिं० बगना का प्रे०] टहलाना। सैर कराना। घुमाना। फिराना।
क्रि० अ०–भागना। जल्दी जल्दी जाना।

बगार–संज्ञा पुं० [देश०] वह स्थान जहाँ गाएँ बाँधी जाती हैं। घाटी।

बगारना–क्रि० स० [सं० विकिरण, हिं० बगरना] १. फैलाना। छिटकाना। बिखेरना। २. दे० "बगराना"।

बगावत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बागी होने का भाव। २. बलवा। ३. राजद्रोह।

बगिया†–संज्ञा स्त्री० [फा० बाग + हिं० इया (प्रत्य०)] बागीचा। उपवन। छोटा बाग।

बगीचा–संज्ञा पुं० [फा० बागचा] [स्त्री० अल्पा० बगीची] वाटिका। छोटा बाग।

बगुला–संज्ञा पुं० दे० "बगला"।

बगूला–संज्ञा पुं० [हिं० बाउ + गोला] वह वायु जो एक ही स्थान पर भँवर सी घूमती हुई दिखाई देती है। बवंडर। वातचक्र।

बगेरी–संज्ञा स्त्री० [देश०] खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया। बघेरी। भरद्दी।

बगैर–अव्य० [अ०] बिना।

बग्गी, बग्घी–संज्ञा स्त्री० [अ० बोगी] चार पहियों की पाटनदार घोड़ा-गाड़ी।

बघंबर–संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रांबर] बाघ की खाल जिस पर साधु लोग बैठते हैं।

बघनहाँ†–संज्ञा पुं० [हिं० बाघ + नहँ = नाखून]

[स्त्री० अल्पा० बघनहीं] १. एक प्रकार का हथियार जिसमें बाघ के नहँ के समान चिपटे टेढ़े काँटे निकले रहते हैं। शेरपंजा। २. एक आभूषण जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने में मढ़े होते हैं।
बघनहियाँ‡—संज्ञा स्त्री० दे० "बघनहाँ(२)"।
बघना‡—संज्ञा पुं० दे० "बघनहाँ(२)"।
बघरूरा‡—संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।
बघार—संज्ञा पुं० [हिं० बघारना] वह मसाला जो बघारते समय घी में डाला जाय। तड़का। छौंक।
बघारना—क्रि० स० [सं० अवधारण=बघारण] १. छौंकना। दागना। तड़का देना। २. अपनी योग्यता से अधिक बोलना।
बच‡—संज्ञा पुं० [सं० वच.] वचन। वाक्य। संज्ञा स्त्री० [सं० वचा] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ और पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं।
बचका—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पकवान।
बचकाना‡—वि० [हिं० बच्चा+काना (प्रत्य०)] [स्त्री० बचकानी] १. बच्चों के योग्य। २. बच्चों का सा।
बचत—संज्ञा स्त्री० [हिं० बचना] १ बचने का भाव। बचाव। रक्षा। २. बचा हुआ अंश। शेष। ३. लाभ। मुनाफ़ा।
बचन‡—संज्ञा पुं० [सं० वचन] १. वाणी। वाक्। २. वचन।
मुहा०—बचन डालना=माँगना। याचना करना। बचन तोड़ना या छोड़ना=प्रतिज्ञा से विचलित होना। कहकर न करना। प्रतिज्ञा भंग करना। बचन बाँधना=प्रतिज्ञा कराना। वचनबद्ध करना। बचन हारना=प्रतिज्ञाबद्ध होना। बात हारना।
बचना—क्रि० अ० [सं० वचन=न पाना] १. कष्ट या विपत्ति आदि से अलग रहना। रक्षित रहना। २. किसी बुरी बात से अलग रहना। ३. छूट जाना। रह जाना। ४. काम में आने पर शेष रह जाना। बाकी रहना। ५. दूर या अलग रहना। क्रि० स० [सं० वचन] कहना।
बचपन—संज्ञा पुं० [हिं० बच्चा+पन (प्रत्य०)] १. लड़कपन। २ बच्चा होने का भाव।
बचवैया‡—संज्ञा पुं० [हिं० बचाना+वैया (प्रत्य०)] बचानेवाला। रक्षक।
बचा‡—संज्ञा पुं० [फा० बच । सं० वत्स] [स्त्री० बची] लड़का। बालक।
बचाना—क्रि० स० [हिं० बचना] १. आपत्ति या कष्ट आदि में न पड़ने देना। रक्षा करना। २. प्रभावित न होने देना। अलग रखना। ३. खर्च न होने देना। ४. छिपाना। चुराना। ५. अलग रखना। दूर रखना।
बचाव—संज्ञा पुं० [हिं० बचाना] बचने का भाव। रक्षा। त्राण।
बच्चा—संज्ञा पुं० [फा०। मि० सं० वत्स] [स्त्री० बच्ची] १. किसी प्राणी का नवजात शिशु। २. लड़का। बालक।
मुहा०—बच्चों का खेल=सहज काम।
वि० विज्ञान। अनजान।
बच्चादान—संज्ञा पुं० [फा०] गर्भाशय।
बच्छ—संज्ञा पुं० [सं० वत्स] १. बच्चा। बेटा। २. गाय का बच्चा। बछड़ा।
बच्छल‡—वि० [सं० वत्सल] माता पिता के समान प्यार करनेवाला। वत्सल।
बच्छस‡—संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्] छाती।
बछा‡—संज्ञा पुं० [सं० वत्स] [स्त्री० बछिया] गाय का बच्चा। बछड़ा। बछवा।
बछ‡—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
बछड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० बच्छ+ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा।
बछनाग—संज्ञा पुं० [सं० वत्सनाभ] एक स्थावर विष। यह नेपाल में होनेवाले एक पौधे की जड़ है। सींगिया। तेलिया। मीठा विष।
बछरा‡—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
बछरू—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
बछल‡—वि० दे० "वत्सल"।
बछवा‡—संज्ञा पुं० दे० "बछेड़ा"।
बछेड़ा—संज्ञा पुं० [सं० वत्स] घोड़े का बच्चा।
बछेरू‡—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
बजनी—संज्ञा पुं० [हिं० बाजा] बाजा बजानेवाला। बजनियाँ।
बजड़ा—संज्ञा पुं० दे० "बजरा"।
बजना—क्रि० अ० [हिं० बाजा] १. किसी प्रकार के आघात या बाजे आदि में से शब्द उत्पन्न होना। बोलना। २. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर इस प्रकार पड़ना कि शब्द उत्पन्न हो। ३ शस्त्रों का चलना। ४. अड़ना। हठ करना। जिद करना। ५. प्रख्याति पाना। प्रसिद्ध होना।

बटला–संज्ञा पुं० [सं० वर्तुल] बड़ी बटलोई। देग। देगचा।
बटली, बटलोई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बटला] दाल, चावल आदि पकाने का चौड़े मुँह का बरतन। देग। देगची। पतीली।
बटवार–संज्ञा पुं० [हिं० बाट+वाला] १. पहरेदार। २. रास्ते का कर उगाहनेवाला।
बटा‡–संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बटिया] १. गोला। वर्तुलाकार वस्तु। २. गेंद। ३. ढोंका। रोड़ा। ढेला। ४. बटोही। पथिक।
बटाऊ–संज्ञा पुं० [हिं० बाट+आऊ (प्रत्य०)] बाट चलनेवाला। पथिक। मुसाफ़िर।
मुहा०–बटाऊ होना = चलता होना। चल देना।
बटाक‡–वि० [हिं० बड़ा+क ?] बड़ा। ऊँचा।
बटाना‡–क्रि० अ० [पू० हिं० पटाना=बंद होना] बंद हो जाना। जारी न रहना।
बटिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० बटा=गोला] १. छोटा गोला। २. छोटा बट्टा। लोढ़िया।
बटी–संज्ञा स्त्री० [सं० वटी] १. गोली। २. बड़ी नाम का पकवान।
‡संज्ञा स्त्री० [सं०वाटी] वाटिका। उपवन।
बटुआ–संज्ञा पुं० दे० "बटुवा"।
संज्ञा पुं० [हिं० बटना] सिल आदि पर पीसा हुआ।
बटुरना‡–क्रि० अ० [सं०वर्तुल+ना (प्रत्य०)] १. सिमटना। सरककर थोड़े स्थान में होना। २. इकट्ठा होना। एकत्र होना।
बटुवा–संज्ञा पुं० [सं० वर्तुल] १. एक प्रकार की गोल थैली जिसके भीतर कई खाने होते हैं। २. बड़ा बटलोई या देग।
बटेर–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्तक] तीतर या लवा की तरह की एक छोटी चिड़िया।
बटेरबाज़–संज्ञा पुं० [हिं०बटेर+फा० बाज़] बटेर पालने या लड़ानेवाला।
बटोर–संज्ञा पुं० [हिं० बटोरना] १. बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना। जमावड़ा। २. वस्तुओं का ढेर।
बटोरना–क्रि० स० [हिं० बटुरना] १. बिखरी हुई वस्तुओं को समेटकर एक स्थान पर करना। समेटना। २. चुनकर एकत्र करना। जुटाना।
बटोही–संज्ञा पुं० [हिं० बाट+वाह (प्रत्य०)] रास्ता चलनेवाला। पथिक। मुसाफ़िर।
बट्ट–संज्ञा पुं० [हिं० बटा] १. बटा। गोला। २. गेंद।
बट्टा–संज्ञा पुं० [सं० वार्त्त प्रा० वाट्ट=बनियाई] १. वह कमी जो व्यवहार या लेन-देन में किसी वस्तु के मूल्य में हो जाती है। २. दलाली। दस्तूरी। ३. खोटे सिक्के, धातु आदि के बेचने में वह कमी जो उसके पूरे मूल्य में हो जाती है।
मुहा०–बट्टा लगना = दाग या कलंक लगना।
४. टोटा। घाटा। नुकसान। हानि।
संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बट्टी, बटिया] १. कूटने या पीसने का पत्थर। लोढ़ा। २. पत्थर आदि का गोल टुकड़ा। ३. छोटा गोल डिब्बा।
बट्टाखाता–संज्ञा पुं० [हिं० बट्टा+खाता] डूबी हुई रकम का लेखा या बही।
बट्टाढाल–वि० [हिं० बट्टा+ढालना] खूब समतल और चिकना।
बट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बट्टा] १. छोटा बट्टा। गोल छोटा टुकड़ा। २. कूटने पीसने का पत्थर। लोढ़िया। ३. बड़ी टिकिया।
बट्टू–संज्ञा पुं० दे० "बजरबट्टू"।
संज्ञा पुं० [सं० बर्बट] बोड़ा। लोबिया।
बड़–संज्ञा स्त्री० [अनु० बड़बड़] बकवाद।
संज्ञा पुं० [सं० वट] बरगद का पेड़।
† वि० दे० "बड़ा"।
बड़प्पन–संज्ञा पुं० [हिं० बड़ा+पन] बड़ाई। श्रेष्ठ या बड़ा होने का भाव। महत्त्व।
बड़बड़–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बकवाद। प्रलाप।
बड़बड़ाना–क्रि० अ० [अनु० बड़बड़] १. बक बक करना। बकवाद करना। २. कोई बात बुरी लगने पर मुँह में ही कुछ बोलना। बुड़बुड़ाना।
बड़बेरी–संज्ञा स्त्री० दे० "झड़बेरी"।
बड़बोल, बड़बोला–वि० [हिं० बड़ा+बोल] बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला। सीटनेवाला।
बड़भाग, बड़भागी–वि० [हिं० बड़ा+भाग्य] बड़े भाग्यवाला। भाग्यवान्।
बड़रा‡–वि० [हिं० बड़ा] बड़ा। विशाल।
बड़वाग्नि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्राग्नि। समुद्र के भीतर की आग या ताप।
बड़वानल–संज्ञा पुं० दे० "बड़वाग्नि"।
बड़वार‡–वि० दे० "बड़ा"।

बड़हन†-संज्ञा पुं० [हिं० बड़ी + धान] एक प्रकार का धान।

बड़हल-संज्ञा पुं० [हिं० बड़ा + फल] एक बड़ा पेड़ जिसके फल छोटे शरीफे के बराबर, पर बड़े बेडौल होते हैं।

बड़हार-संज्ञा पुं० [हिं० वर + आहार] विवाह के पीछे बरातियों की ज्योनार।

बड़ा-वि० [सं० वर्द्धन] १. खूब लंबा चौड़ा। अधिक विस्तार का। विशाल। वृहद्। महान्। मुहा०—बड़ा घर = कैदखाना। कारागार। २. जिसकी उम्र ज्यादा हो। अधिक वयस् का। ३. अधिक परिमाण, विस्तार या अवस्था का। मान, माप या वयस् का। ४. गुरु। श्रेष्ठ। बुजुर्ग। ५. महत्त्व का। भारी। ६. बढ़कर। ज्यादा।
संज्ञा पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बड़ी] एक पकवान जो मसाला मिली हुई उर्द की पीठी की गोल टिकिया को तलकर बनाया जाता है।

बड़ाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़ा + ई (प्रत्य०)] १. बड़े होने का भाव। परिमाण या विस्तार का आधिक्य। २. बड़प्पन। श्रेष्ठता। बुजुर्गी। ३. परिमाण या विस्तार। ४. महिमा। प्रशंसा। तारीफ। मुहा०—बड़ाई देना = आदर करना। सम्मान करना। बड़ाई मारना = शेखी हाँकना।

बड़ा दिन-संज्ञा पुं० [हिं० बड़ा + दिन] २५ दिसंबर का दिन जो ईसाइयों का त्योहार है।

बड़ी-वि० स्त्री० दे० "बड़ा"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़ा] आलू, पेठा आदि मिली हुई पीठी की छोटी छोटी सुखाई हुई टिकिया। बरी। कुम्हड़ौरी।

बड़ी माता-संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़ी + माता] शीतला। चेचक।

बड़ेरर-संज्ञा पुं० [देश०] बवंडर। चक्रवात।

बड़ेरा†०-वि० [हिं० बड़ा + एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० बड़ेरी] १. बड़ा। वृहत्। महान्। २. प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पुं० [सं० वडभि] [स्त्री० अल्पा० बड़ेरी] छाजन में बीच की लकड़ी।

बड़ौना†०-संज्ञा पुं० [हिं० बड़ाना] प्रशंसा।

बढ़ई-संज्ञा पुं० [सं० वर्द्धकि, प्रा० बड्ढइ] काठ को गढ़कर अनेक प्रकार के सामान बनानेवाला।

बढ़ती-संज्ञा स्त्री० [हिं० बढ़ना + ती (प्रत्य०)] १. तौल या गिनती में अधिकता। मात्रा का आधिक्य। २. धन संपत्ति आदि का बढ़ना। उन्नति।

बढ़ना-क्रि० अ० [सं० वर्द्धन] १. विस्तार या परिमाण में अधिक होना। वृद्धि को प्राप्त होना। २. गिनती या नाप-तौल में ज्यादा होना। ३. मर्य्यादा, अधिकार, विद्या-बुद्धि, सुख-संपत्ति आदि में अधिक होना। तरक्की करना।
मुहा०—बढ़कर चलना = इतराना। घमंड करना।
४. किसी स्थान से आगे जाना। अग्रसर होना। चलना। ५. किसी से किसी बात में अधिक हो जाना। ६. लाभ होना। मुनाफे में मिलना। ७ दूकान आदि का समेटा जाना। बंद होना। ८. चिराग का बुझना।

बढ़नी†-संज्ञा स्त्री० [सं० वर्द्धनी] झाड़ू।

बढ़ाना-क्रि० स० [हिं० बढ़ना] १. विस्तार या परिमाण में अधिक करना। विस्तृत करना। २. गिनती या नाप-तौल आदि में ज्यादा करना। ३. फैलाना। लंबा करना। ४. अधिक व्यापक, प्रबल या तीव्र करना। ५. उन्नत करना। तरक्की देना। ६. आगे गमन कराना। चलाना। ७. सस्ता बेचना। ८ विस्तार करना। फैलाना। ९. दूकान आदि बंद करना। १०. दीपक निर्वापित करना। चिराग बुझाना। क्रि० अ० चुकना। समाप्त होना।

बढ़ाव-संज्ञा पुं० [हिं० बढ़ना + आव (प्रत्य०)] बढ़ने की क्रिया या भाव।

बढ़ावा-संज्ञा पुं० [हिं० बढ़ाव] १. किसी काम की ओर मन बढ़ानेवाली बात। प्रोत्साहन। उत्तेजना। २. साहस या हिम्मत दिलानेवाली बात।

बढ़िया-वि० [हिं० बढ़ना] उत्तम। अच्छा।

बढ़ैया†-वि० [हिं० बढ़ाना, बढ़ना] १. बढ़ानेवाला। २. बढ़नेवाला।
†संज्ञा पुं० दे० "बढ़ई"।

बढ़ोतरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बाढ़ + उत्तर] १. उत्तरोत्तर वृद्धि। बढ़ती। २. उन्नति।

वणिक-संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यापार व्यवसाय करनेवाला। बनिया। सौदागर। २. बेचनेवाला। विक्रेता।

णिज्–संज्ञा पुं० दे० "वणिक्"।

तकही–संज्ञा स्त्री० [हिं० बात + कहना] १. बातचीत। वार्त्तालाप। २. वाद विवाद।

तख–संज्ञा स्त्री० [अ० बत] हंस की जाति .ी पानी की एक सफेद प्रसिद्ध चिड़िया।

तचल–वि० [हिं० बात + चलाना] बकवादी।

तबढ़ाव–संज्ञा पुं० [हिं० बात + बढ़ाव] व्यर्थ बात बढ़ाना। झगड़ा बखेड़ा बढ़ाना।

तरस–संज्ञा पुं० [हिं० बात + रस] बातचीत का आनंद। बातों का मजा।

तराना†–क्रि० अ० [हिं० बात + आना (प्रत्य०)] बातचीत करना।

तरोहाँ†–वि० [हिं० बात] [स्त्री० बतरोहीं] बातचीत की ओर प्रवृत्त। वार्त्तालाप का इच्छुक।

तलाना–क्रि० स० दे० "बताना"।

ताना–क्रि० स० [हिं० बात + ना (प्रत्य०)] १. कहना। अभिज्ञ करना। जताना। २. समझाना बुझाना। हृदयंगम कराना। ३ निर्देश करना। दिखाना। प्रदर्शित करना। ४. नाचने-गाने में हाथ उठाकर भाव प्रकट करना। भाव बताना। ५. ठीक करना। मार पीटकर दुरुस्त करना।

ताशा–संज्ञा पुं० दे० "बतासा"।

तास†–संज्ञा स्त्री० [सं० वातासह] १. बात का रोग। गठिया। २. वायु। हवा।

तासा–संज्ञा पुं० [हिं० बतास = हवा] १. एक प्रकार की मिठाई जो चीनी की चाशनी को टपकाकर बनाई जाती है। २. एक प्रकार की आतशबाजी। ३. बुलबुला। बुद्बुद।

तिया–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्त्तिका, प्रा० बत्तिआ = बत्ती] छोटा, कोमल और कच्चा फल।

तियाना†–क्रि० अ० [हिं० बात] बातचीत करना।

तियार–संज्ञा स्त्री० [हिं० बात] बातचीत।

तू–संज्ञा पुं० दे० "कलाबत्तू"।

तौर–क्रि० वि० [अ०] १. तरह पर। रीति से। तरीके पर। २. सदृश। समान।

त्तिस†–वि० दे० "बत्तीस"।

त्ती–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ति, प्रा० बत्ति] १. चिराग जलाने के लिये रूई या सूत का बटा हुआ लच्छा। २. मोमबत्ती। ३. दीपक। चिराग। रोशनी। प्रकाश। ४. फलीता। पलीता। ५. पतले छड़ या सलाई के आकार में लाई हुई कोई वस्तु। ६. फूस का पूला जो छाजन में लगाते हैं। मूठा। ७. कपड़े की वह लंबी धज्जी जो घाव में मवाद साफ करने के लिये भरते हैं।

बत्तीस–वि० [सं० द्वात्रिंशत्, प्रा० बत्तीसा] जो गिनती में तीस से दो ज्यादा हो।

संज्ञा पुं० तीस से दो अधिक की संख्या या अंक। ३२।

बत्तीसा–संज्ञा पुं० [हिं० बत्तीस] पुष्टई के बत्तीस मसालों का एक प्रकार का लड्डू।

बत्तीसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बत्तीस] १. बत्तीस का समूह। २ मनुष्य के नीचे ऊपर के दांतों की पंक्ति।

बथुआ–संज्ञा पुं० [सं० वास्तुक] एक छोटा पौधा जिसके पत्तों का साग खाते हैं।

बद–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ध्म = गिलटी] गोहिया। वाघी। रोग।

वि० [फा०] १. बुरा। खराब। निकृष्ट। २. दुष्ट। खल। नीच।

संज्ञा स्त्री० [सं० वर्त्त] पलटा। बदला।

मुहा०—बद में = एवज में। बदले में।

बद-अमली–संज्ञा स्त्री० [फा० बद + अ० अमल] राज्य का कुप्रबंध। अशांति। हलचल।

बदकार–वि० [फा०] १. कुकर्मी। २. व्यभिचारी।

बदकिस्मत–वि० [फा० बद + अ० क़िस्मत] बुरी क़िस्मत का। मंदभाग्य। अभागा।

बदचलन–वि० [फा०] कुमार्गी। लपट।

बदज़ात–वि० [फा० बद + अ० ज़ात] खोटा। नीच।

बदतर–वि० [फा०] और भी बुरा। किसी की अपेक्षा बुरा।

बददुआ–संज्ञा स्त्री० [फा० + अ०] शाप।

बदन–संज्ञा पुं० [फा०] शरीर। देह।

बदनसीब–वि० [फा० + अ०] अभागा।

बदना✡–क्रि० स० [सं० वद = कहना] १. कहना। वर्णन करना। २. मान लेना। स्वीकार करना। ३. नियत करना। ठहराना। निश्चित करना।

मुहा०—बदा होना = भाग्य में लिखा होना। बदकर (कोई काम करना) = १. जान बूझकर। पूरे हठ के साथ। २. ललकारकर। ४. बाजी लगाना। शर्त लगाना। ५. कुछ समझना। बड़ा या महत्त्व का मानना

बदनाम-वि० [फा०] जिसकी निंदा हो रही हो। कलंकित।
बदनामी-सज्ञा स्त्री० [फा०] लोकनिंदा।
बदबू-सज्ञा स्त्री० [फा०] दुर्गंध। बुरी गंध।
बदमाश-वि० [फा० बद+अ० मआश = जीविका] १. बुरे कर्म से जीविका करनेवाला। दुर्वृत्त। २. दुष्ट। पाजी। लुच्चा। ३. दुराचारी।
बदमाशी-सज्ञा स्त्री० [फा० बद+अ० मआश] १. दुष्कर्म। खोटाई। २ दुष्टता। पाजीपन। ३. व्यभिचार।
बदमिज़ाज-वि० [फा०] दुःस्वभाव।
बदरंग-वि० [फा०] १. भद्दे रंग का। २. जिसका रंग बिगड़ गया हो। विवर्ण।
बदर-सज्ञा पुं० [सं०] बेर का पेड़ या फल। क्रि० वि० [फा०] बाहर।
बदरा†-सज्ञा पुं० [हिं०] बादल। मेघ।
बदराह-वि० [फा०] १. कुमार्गी। बुरी राह पर चलनेवाला। २. दुष्ट। बुरा।
बदरि-सज्ञा पुं० [सं०] बेर का पौधा या फल।
बदरिकाश्रम-सज्ञा पुं० [सं०] तीर्थ विशेष जो हिमालय पर है। यहाँ नर-नारायण तथा व्यास का आश्रम है।
बदरिया†-सज्ञा स्त्री० दे० "बदली"।
बदरीनारायण-सज्ञा पुं० [सं०] बदरिकाश्रम के प्रधान देवता।
बदरौंहा-वि० [फा० बद+रौ=चाल] कुमार्गी। बदचलन।
†सज्ञा पुं० [हिं० बादर+औंहैं (प्रत्य०)] बदली का आभास।
बदल-सज्ञा पुं० [अ०] १. एक के स्थान पर दूसरा होना। परिवर्तन। हेर-फेर। २. पलटा। एवज़। प्रतिकार।
बदलना-क्रि० अ० [अ० बदल+ना (प्रत्य०)] १. जैसा रहा हो, उससे भिन्न हो जाना। परिवर्तित होना। २. एक के स्थान पर दूसरा हो जाना। ३. एक जगह से दूसरी जगह तैनात होना।
क्रि० स० १. जैसा रहा हो, उससे भिन्न करना। परिवर्तित करना। २. एक वस्तु के स्थान की पूर्ति दूसरी वस्तु से करना।
मुहा०—बात बदलना=पहले एक बात कहकर फिर उससे विरुद्ध दूसरी बात कहना। विनिमय करना।
बदलवाना-क्रि० स० [हिं० 'बदलना' का प्रे०] बदलने का काम कराना।
बदला-सज्ञा पुं० [हिं० बदलना] १. परस्पर लेन और देने का व्यवहार। विनिमय। २. एक वस्तु की हानि या स्थान की पूर्ति के लिये उपस्थित की हुई दूसरी वस्तु। पलटा। एवज़। ३. एक पक्ष के किसी व्यवहार के उत्तर में दूसरे पक्ष का वैसा ही व्यवहार। पलटा। एवज। प्रतीकार।
मुहा०—बदला लेना=किसी के बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना।
४. किसी कर्म का परिणाम। नतीजा।
बदलाना-क्रि० स० दे० "बदलवाना"।
बदली-सज्ञा स्त्री० [हिं० बादल का अल्पा०] फैलकर छाया हुआ बादल। घन विस्तार। सज्ञा स्त्री० [हिं० बदलना] १. एक के स्थान पर दूसरी वस्तु की उपस्थिति। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति। नवदीली। तबादला।
बदलौवल-सज्ञा स्त्री० [हिं० बदलना] अदल-बदल। हेर फेर।
बदस्तूर-क्रि० वि० [फा०] जैसा था या रहता है, वैसा ही। जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों।
बदहज़मी-सज्ञा स्त्री० [फा०] अपच। अजीर्ण।
बदहवास-वि० [फा०] १. बेहोश। अचेत। २. व्याकुल। विकल। उद्विग्न।
बदा-वि० [हिं० बदना] भाग्य में लिखा हुआ।
बदान-सज्ञा स्त्री० [हिं० बदना] बदे जाने की क्रिया या भाव।
बदाबदी-सज्ञा स्त्री० [हिं० बदना] दो पक्षों की एक दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ। लाग-डाँट।
बदाम-सज्ञा पुं० दे० "बादाम"।
बदि-†-सज्ञा स्त्री० [सं० वर्त] पलटा। बदला।
अव्य० १. बदले में। एवज में। २. लिये। वास्ते। खातिर।
बदी-सज्ञा स्त्री० [?] कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख।
सज्ञा स्त्री० [फा०] बुराई। अपकार। अहित।
बदौलत-क्रि० वि० [फा०] १. द्वारा। कृपा से। कृपा से। २. कारण से।
बद्दर, बद्दल†-सज्ञा पुं० दे० "बादल"।
बद्ध-वि० [सं०] १. बँधा हुआ। जो

बाँधा गया हो। २. संसार के बंधन में पड़ा हुआ। जो मुक्त न हो। ३ जिसके लिये कोई रोक हो। ४. जो किसी हद हिसाब के भीतर रखा गया हो। ५. निर्धारित। ठहराया हुआ।
बद्धकोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] मल अच्छी तरह न निकलने का रोग। कब्ज। कब्जियत।
बद्धपरिकर—वि० [सं०] कमर बाँधे हुए। तैयार।
बद्धी—संज्ञा स्त्री० [सं० बद्ध] १. वह जिससे कुछ कसें या बाँधें। डोरी। रस्सी। तसमा। २. चार लड़ों का एक गहना।
बध—संज्ञा पुं० [सं०] हनन। हत्या।
बधना—क्रि० स० [सं० बध+ना (प्रत्य०)] मार डालना। बध करना। हत्या करना। संज्ञा पुं० [सं० वर्द्धन=मिट्टी का गडुवा] मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।
बधाई—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्द्धन] १. वृद्धि। बढ़ती। २. मंगल अवसर का गाना बजाना। मंगलाचार। ३. आनंद। मंगल। उत्सव। ४ किसी शुभ अवसर पर आनंद प्रकट करनेवाला वचन या सँदेसा। मुबारकबाद।
बधाना—क्रि० स० [हिं० 'बधना' का प्रे०] बध कराना। दूसरे से मरवाना।
बधावा—संज्ञा पुं० दे० "बधाई"।
बधावा—संज्ञा पुं० [हिं०बधाई] १. बधाई। २. वह उपहार जो संबंधियों या इष्ट मित्रों के यहाँ से मंगल अवसरों पर आता है।
बधिक—संज्ञा पुं० [सं० वधक] १. बध करनेवाला। हत्यारा। २. जल्लाद। ३. व्याध। बहेलिया।
बधिया—संज्ञा पुं० [हिं० बध=मारना] वह बैल या और कोई पशु जो अंडकोश निकालकर षंढ कर दिया गया हो। खस्सी। आख्ता।
बधिर—संज्ञा पुं० [सं०] जिसमें सुनने की शक्ति न हो। बहरा।
बधूटी—संज्ञा स्त्री० [सं० वधूटी] १. पुत्र की स्त्री। पतोहू। २. सुहागिन स्त्री। ३. नई आई हुई बहू।
बधूरा—संज्ञा पुं० [हिं० बहुधूर] बगूला। बवंडर।
बध्य—वि० [सं०] मार डालने के योग्य।
बन—संज्ञा पुं० [सं० वन] १. जंगल। कानन। अरण्य। २. समूह। ३. जल। पानी। ४. बगीचा। बाग। ५ कपास का पौधा। ६. दे० 'वन'।
बनक†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] १. सजधज। सजावट। २ बाना। वेष। भेस।
बनकर—संज्ञा पुं० [सं० वनकर] जंगल में होनेवाले पदार्थों अर्थात् लकड़ी या घास आदि की आमदनी।
बनखंड—संज्ञा पुं० [सं० वनखंड] जंगली प्रदेश।
बनखंडी—संज्ञा स्त्री० [हिं०बन+खंड=टुकड़ा] १. वन का कोई भाग। २. छोटा सा बन। संज्ञा पुं० बन में रहनेवाला।
बनचर—संज्ञा पुं० [सं० वनचर] १ जंगल में रहनेवाला पशु। २. जंगली आदमी।
बनचारी—वि० [सं० वनचारिन्] १ बन में घूमनेवाला। २ बन में रहनेवाला।
बनज—संज्ञा पुं० [सं० वनज] १. कमल। २. जल में होनेवाले पदार्थ। संज्ञा पुं० [सं० वाणिज्य] वाणिज्य। व्यापार।
बनजात—संज्ञा पुं० [सं० वनजात] कमल।
बनजारा—संज्ञा पुं० [हिं० बनिज+हारा] १ वह व्यक्ति जो बैलों पर अन्न लादकर बेचने के लिये एक देश से दूसरे देश को जाता है। टँड़िया। बंजारा। २ व्यापारी।
बनजी†—संज्ञा पुं० [सं० वाणिज्य] १. व्यापार। रोजगार। २ व्यापारी।
बनज्योत्स्ना—संज्ञा स्त्री० [सं० वनज्योत्स्ना] माधवी लता।
बनत—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना+त (प्रत्य०)] १. रचना। बनावट। २ अनुकूलता। सामंजस्य। मेल।
बनताई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बन+ताई (प्रत्य०)] बन की सघनता या भयंकरता।
बनतुलसी—संज्ञा स्त्री० [सं० वन+तुलसी] बबई नाम का पौधा। बर्बरी।
बनद—संज्ञा पुं० [सं० वनद] बादल।
बनदाम—संज्ञा स्त्री० [सं० वनदाम] बनमाला।
बनदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं० वनदेवी] किसी वन की अधिष्ठात्री देवी।
बनधातु—संज्ञा स्त्री० [सं०] गेरू या और कोई रंगीन मिट्टी।
बनना—क्रि० अ० [सं० वर्णन] १. तैयार होना। रचा जाना।
मुहा०—बना रहना=१. जीता रहना।

संसार में जीवित रहना। २. उपस्थित रहना। ३. काम में आने के योग्य होना। ३. जैसा चाहिए, वैसा होना। ४. किसी एक पदार्थ का रूप परिवर्त्तित करके दूसरा पदार्थ हो जाना। ५. किसी दूसरे प्रकार का भाव या संबंध रखनेवाला हो जाना। ६. कोई विशेष पद, मर्यादा या अधिकार प्राप्त करना। ७. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचना। ८. वसूल होना। प्राप्त होना। ९. मरम्मत होना। दुरुस्त होना। १०. संभव होना। हो सकना। ११. निभना। पटना। मित्रभाव होना। १२. अच्छा, सुंदर या स्वादिष्ट होना। १३. सुयोग मिलना। सुअवसर मिलना। १४. स्वरूप धारण करना। १५. मूर्ख ठहरना। उपहासास्पद होना। १६. अपने आपको अधिक योग्य या गंभीर प्रमाणित करना।
मुहा०—बनकर = अच्छी तरह। भली भाँति। १७. सजना। सजावट करना।

बननिॐ†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] १. बनावट। २. बनाव सिंगार।

बनपटॐ–संज्ञा पुं० [सं० बन+पट] वृक्षों की छाल आदि से बनाया हुआ कपड़ा।

बनपातीॐ†–संज्ञा स्त्री० दे० "वनस्पति"।

बनफशा–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जड़, फूल और पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।

बनवास–संज्ञा पुं० [सं० वनवास] १. वन में बसने की क्रिया या अवस्था। २. प्राचीन काल का देशनिकाले का दंड।

बनवासी–संज्ञा पुं० [सं० वनवासिन्] १. वह जो वन में बसे। २. जंगली।

बनवाहन–संज्ञा पुं० [सं० वनवाहन] नाव।

बनबिलाव–संज्ञा पुं० [हिं० बन+बिलाव = बिल्ली] बिल्ली की जाति का, पर उससे कुछ बड़ा, एक जंगली जंतु।

बनमानुस–संज्ञा पुं० [हिं० बन+मानुष] मनुष्य से मिलता-जुलता कोई जंगली जंतु। जैसे—गोरिल्ला, चिंपैंजी आदि।

बनमाला–संज्ञा स्त्री० [सं० वनमाला] तुलसी, कुंद, मंदार, परजाता और कमल इन पाँच चीजों की बनी हुई माला।

बनमाली–संज्ञा पुं० [सं० वनमाली] १. वनमाला धारण करनेवाला। २. कृष्ण। ३. विष्णु। नारायण। ४. मेघ। बादल। ५. वह प्रदेश जिसमें घने वन हों।

बनर–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का अस्त्र।

बनरखा–संज्ञा पुं० [हिं० बन+रखना = रक्षा करना] १. जंगल की रखवाली करनेवाला। वन-रक्षक। २. बहेलियों की एक जाति।

बनराॐ†–संज्ञा पुं० दे० "बंदर।"
संज्ञा पुं० [हिं० बनना] १. वर। दूल्हा। २. विवाह समय का एक प्रकार का गीत।

बनराज, बनरायॐ†–संज्ञा पुं० [सं० वनराज] १. सिंह। शेर। २. बहुत बड़ा पेड़।

बनरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनरा का स्त्री०] नववधू। नई ब्याही हुई वधू।

बनरुह–संज्ञा पुं०[सं० वनरुह] १. जंगली पेड़। २. कमल।

बनवनाॐ†–क्रि० स० दे० "बनाना"।

बनवसनॐ–संज्ञा पुं० [सं० वनवसन] वृक्षों की छाल का बना हुआ कपड़ा।

बनवाना–क्रि० स० [हिं० बनाना का प्रे० रूप] दूसरे को बनाने में प्रवृत्त करना।

बनवारी–संज्ञा पुं० [सं० वनमाली] श्रीकृष्ण।

बनस्थली–संज्ञा स्त्री० [सं० वनस्थली] जंगल का कोई भाग। वनखंड।

बना–संज्ञा पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनी] दूल्हा। वर।
संज्ञा पुं० [?] 'दंडकला' नामक छंद।

बनाइ (य)–क्रि० वि० [हिं० बनाकर = अच्छी तरह] १. बिलकुल। अत्यंत। नितांत। २. भली भाँति। अच्छी तरह।

बनाउरिॐ†–संज्ञा स्त्री० दे० "बाणावली"।

बनाग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं० वनाग्नि] दावानल।

बनात–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाना] एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

बनाना–क्रि० स० [हिं० बनना का स० रूप] १. रूप या अस्तित्व देना। रचना। तैयार करना।
मुहा०—बनाकर = खूब अच्छी तरह। भली भाँति। २. रूप परिवर्तित करके काम में आने लायक करना। ३. ठीक दशा या रूप में लाना। ४. एक पदार्थ के रूप को बदलकर दूसरा पदार्थ तैयार करना। ५. दूसरे प्रकार का भाव या संबंध रखनेवाला कर देना। ६. कोई विशेष पद, मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना। ७. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना। ८. उपार्जित करना। वसूल करना।

प्राप्त करना। ९. मरम्मत करना। दोष दूर करके ठीक करना। १०. मूर्ख ठहराना। उपहासास्पद करना।

बनाफर–संज्ञा पुं० [सं० वन्यफल?] क्षत्रियों की एक जाति।

बनावंत, बनावनत*†–संज्ञा पुं० [हिं० बनना + मनना] विवाह करने के विचार से किसी लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।

बनाम–अव्य० [फा०] नाम पर। नाम से। किसी के प्रति।

बनाय†–क्रि० वि० [हिं० बनाकर = अच्छी तरह] १. बिलकुल। २ अच्छी तरह से।

बनार–संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन राज्य जो वर्त्तमान काशी की उत्तर सीमा पर था।

बनाव–संज्ञा पुं० [हिं० बनना + आव (प्रत्य०)] १. बनावट। रचना। २. शृंगार। सजावट। ३. तरकीब। युक्ति। तदबीर।

बनावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनाना + वट (प्रत्य०)] १. बनने या बनाने का भाव। रचना। गढ़न। २. ऊपरी दिखावा। आडंबर।

बनावटी–वि० [हिं० बनावट] बनाया हुआ। नकली। कृत्रिम।

बनावनहारा–संज्ञा पुं० [हिं० बनाना + हारा (प्रत्य०)] १. बनानेवाला। रचयिता। २ वह जो बिगड़े हुए को बनावे।

बनावरि–संज्ञा स्त्री० [सं० बाणावलि] बाणों की अवली या पंक्ति।

बनासपती–संज्ञा स्त्री० [सं० वनस्पति] १. जड़ी, बूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि। २. घास, साग पात इत्यादि।

बनि०†–वि० [हिं० बनाना] समस्त। सब।

बनिज–संज्ञा पुं० [सं० वाणिज्य] १. व्यापार। रोजगार। २. व्यापार की वस्तु। सौदा।

बनिजना०†–क्रि० स० [सं० वाणिज्य] १ व्यापार करना। खरीदना और बेचना। २. अपने अधीन कर लेना।

बनिजारिन, बनिजारी०†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनाव] बनजारा जाति की स्त्री।

बनित०†–संज्ञा स्त्री [हिं० बनना] बानक। वेष। साज बाज।

बनिता–संज्ञा स्त्री० [सं० वनिता] १. स्त्री। औरत। २. भार्या। पत्नी।

बनिया–संज्ञा पुं० [सं० वणिक्] [स्त्री० बनियाइन] १. व्यापार करनेवाला व्यक्ति। व्यापारी। वैश्य। २. आटा, दाल आदि बेचनेवाला। मोदी।

बनियाइन–संज्ञा स्त्री० [अं० बेनियन] जुर्राब की बुनावट की कुरती या बंडी जो शरीर से चिपकी रहती है। गंजी।

बनिस्वत–अव्य० [फा०] अपेक्षा। मुकाबले में।

बनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बन] १. वनस्थली। बन का एक टुकड़ा। २. वाटिका। बाग।
संज्ञा स्त्री [हिं० बना] १. दुलहिन। २. स्त्री। नायिका।
संज्ञा पुं० [सं० वणिक्] बनिया।

बनीनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनिया + ईनी (प्रत्य०)] वैश्य जाति की स्त्री। बनिये की स्त्री।

बनीर०–संज्ञा पुं० [सं० वानीर] बेंत।

बनेठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बन + सं० यष्टि] पटेबाजों की वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरों पर गोल लट्टू लगे रहते हैं।

बनैला–वि० [हिं० बन + ऐला (प्रत्य०)] जंगली। वन्य।

बनोबास*†–संज्ञा पुं० दे० "बनवास"।

बनौटी–वि० [हिं० बन + औटी (प्रत्य०)] कपास के फूल का सा। कपासी।

बनौरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० वन = जल + ओला] वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला। पत्थर।

बनौवा–वि० दे० "बनावटी"।

बन्हि–संज्ञा स्त्री० दे० "वह्नि"।

बप०†–संज्ञा पुं० [सं० वप्र] बाप। पिता।

बपमार–वि० [हिं० बाप + मारना] १. वह जो अपने पिता की हत्या करे। २. सबके साथ धोखा करनेवाला।

बपतिस्मा–संज्ञा पुं० [अं० बैप्टिज्म] ईसाई संप्रदाय का एक मुख्य संस्कार जो किसी व्यक्ति को ईसाई बनाने के समय किया जाता है।

बपना०†–क्रि० स० [सं० वपन] बीज बोना।

बपु०–संज्ञा पुं० [सं० वपु] १. शरीर। देह। २. अवतार। ३. रूप।

बपुस०–संज्ञा पुं० [सं० वपुस्] शरीर। देह।

बपुरा†–वि० [सं० वराक?] बेचारा। ग़रीब।

बपौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाप + औती प्रत्य०] बाप से पाई हुई जायदाद।

बप्पा–संज्ञा पुं० [हिं० बाप] पिता। बाप।

बफारा–संज्ञा पुं० [हिं० भाप + आरा (प्रत्य०)]

औषध-मिश्रित। जल की भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेंकना।

बबर–संज्ञा पु० [फा०] बबरी देश का शेर। बड़ा शेर। सिंह।

बबा–संज्ञा पु० दे० "बाबा"।

बबुआ–संज्ञा पु० [हिं० बाबू] [स्त्री० बबुई] १. बेटे या दामाद के लिये प्यार का संबोधन शब्द। (पूरब) २. जमींदार। रईस।

बबूल–संज्ञा पु० [सं० बब्बूर] मझोले कद का एक प्रसिद्ध काँटेदार पेड़।

बबूला–संज्ञा पु० १. दे० "बगूला"। २. दे० "बुलबुला"।

बभूत–संज्ञा स्त्री० दे० "भभूत" या "विभूत"।

बम–संज्ञा पु० [अ० बॉब] विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना वह गोला जो शत्रुओं पर फेंकने के लिये बनाया जाता है। संज्ञा पु० [अनु०] शिव के उपासकों का "बम", "बम" शब्द।

मुहा०—बम बोलना या बोल जाना = शक्ति, धन आदि की समाप्ति हो जाना। कुछ न रह जाना।

संज्ञा पु० [कनाड़ी बंबू = बाँस] बग्गी, फिटन आदि में आगे की ओर लगा हुआ वह लंबा बाँस जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।

बमकना–क्रि० अ० [अनु०] बहुत शेखी हाँकना। डींग हाँकना।

बमना:†–क्रि० स० [सं० वमन] मुँह से उगलना। वमन करना। कै करना।

बमपुलिस–संज्ञा पुं० दे० "बंपुलिस"।

बमूजिब–क्रि० वि० [फा०] अनुसार। मुताबिक।

बम्हनी–संज्ञा स्त्री० [सं० ब्राह्मण, हिं० बाम्हन] १. छिपकिली की तरह का एक पतला कीड़ा। २. आँख का एक रोग। बिलनी।

बयन‡†–संज्ञा पु० [सं० वचन] वाणी। बात।

बयना‡†–क्रि० स० [सं० वपन] बोना। बीज जमाना या लगाना।

क्रि० स० [सं० वचन] वर्णन करना। कहना। संज्ञा पु० दे० "बैना"।

बयनी‡†–वि० [हिं० बयन] बोलनेवाली।

बयस–संज्ञा स्त्री० दे० "वय"।

बयस-सिरोमनि‡†–संज्ञा पुं० [सं० वयसशिरोमणि] युवावस्था। जवानी। यौवन।

बया–संज्ञा पु० [सं० वयन = बुनना] गौरैया के आकार और रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी। ... [अ० बायः = बेचनेवाला] वह जो अनाज तौलने का काम करता हो।

बयान–संज्ञा पु० [फा०] १. बखान। वर्णन। जिक्र। २. हाल। विवरण। वृत्तांत।

बयाना–संज्ञा पु० [अ० बै + फा० (प्रत्य०) आना] किसी काम के लिये दिए जानेवाले पुरस्कार का कुछ अंश जो बातचीत पक्की करने के लिये दिया जाय। पेशगी।

बयार, बयारि‡†–संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] हवा।

बयारी–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"। "बयारि"।

बयाला†–संज्ञा पुं० [सं० बाह्य + आला] १. दीवार में का वह छेद जिससे झाँककर बाहर की ओर की वस्तु देखी जा सके। २ ताख। आला। ३ गढ़ों में वह स्थान जहाँ तोपें लगी रहती हैं।

बर–संज्ञा पु० [सं० वर] १. वह जिसका विवाह होता हो। दूल्हा। दे० "वर"। २ आशीर्वाद-सूचक वचन। दे० "वर" वि० श्रेष्ठ। अच्छा। उत्तम।

मुहा०—बर परना = श्रेष्ठ होना।

संज्ञा पु० [सं० बल] बल। शक्ति।

संज्ञा पु० [सं० वट] वट वृक्ष। बरगद।

संज्ञा पुं० [हिं० बल = सिकुड़न] रेखा। लकीर।

मुहा०—बर खींचना = १. किसी विषय में बहुत दृढ़ता सूचित करना। २. जिद करना।

अव्य० [फा०] ऊपर।

मुहा०—बर आना या पाना = बढ़कर निकलना। मुकाबले में अच्छा ठहरना।

वि० १. बड़ा चढ़ा। श्रेष्ठ। २. पूरा। पूर्ण। (आशा)

‡ अव्य० [सं० वरं] वरन्। बल्कि।

बरई†–संज्ञा पु० [हिं० बाड़ = बगीचा] [स्त्री० बरइन] पान पैदा करने या बेचनेवाला तमोली।

बरकंदाज़–संज्ञा पु० [अ० + फा०] १. वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी रहती हो। २. तोड़ेदार बंदूक रखनेवाला सिपाही।

बरकत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी पदार्थ की बहुलता या आवश्यकता से अधिकता। बढ़ती। बहुतायत। २. लाभ। फ़ायदा। ३. समाप्ति। अंत। ४. एक की संख्या। ५. धन-दौलत। ६. प्रसाद। कृपा।

बरकती–वि० [अ० बरकत + ई (प्रत्य०)] १. बरकतवाला। जिसमें बरकत हो। २. बरकत संबंधी। बरकत का।

बरकना‡-क्रि० अ० [हिं० बरकाना] १. कोई बुरी बात न होने पाना। निवारण होना। २. हटना। दूर रहना।

बरकरार-वि० [फा० बर + अ० क़रार] १. कायम। स्थिर। २. उपस्थित। मौजूद।

बरकाज-संज्ञा पुं० [सं० वर + कार्य] विवाह।

बरकाना‡-क्रि० अ० [सं० वारण, वारक] १ कोई बुरी बात न होने देना। निवारण करना। २. बहलाना। फुसलाना।

बरख⁎†-संज्ञा पुं० [सं० वर्ष] बरस।

बरखना-क्रि० अ० दे० "बरसना"।

बरखा⁎-संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।

बरखास⁎†-वि० दे० "बरखास्त"।

बरखास्त-वि० [फा०] १. (सभा आदि) जिसका विसर्जन कर दिया गया हो। २. जो नौकरी से हटा या छुड़ा दिया गया हो। मौकूफ।

बरखिलाफ-क्रि० वि० [फा० बर + अ० ख़िलाफ़] प्रतिकूल। उलटा। विरुद्ध।

बरगद-संज्ञा पुं० [सं० वट, हिं० बड़] पीपल की जाति का एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष। इसकी छाया बहुत घनी और ठंढी होती है। बड़ का पेड़।

बरछा-संज्ञा पुं० [सं० व्रश्चन = काटनेवाला ?] [स्त्री० बरछी] भाला नामक हथियार।

बरछैत-संज्ञा पुं० [हिं० बरछा + ऐत (प्रत्य०)] बरछा चलानेवाला। भाला-बर्दार।

बरजन⁎†-क्रि० अ० [सं० वर्जन] मना करना। रोकना। निषेध करना।

बरजनि⁎†-संज्ञा स्त्री० [सं० वर्जन] १. मनाही। २. रुकावट। ३. रोक।

बरजबान-वि० [फा०] मुखाग्र। कंठस्थ।

बरजोर-वि० [हिं० बल + फा० ज़ोर] १. प्रबल। बलवान्। जबरदस्त। २. अत्याचारी। बल प्रयोग करनेवाला।

क्रि० वि० जबरदस्ती। बलपूर्वक।

बरजोरी⁎†-संज्ञा स्त्री० [हिं० बरजोर] जबरदस्ती। बलप्रयोग।

क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक।

बरणना-क्रि० स० दे० "बरनना"।

बरत-संज्ञा पुं० दे० "व्रत"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बरना = बटना] १. रस्सी। २. नट की रस्सी जिस पर चढ़कर वह खेल करता है।

बरतन-संज्ञा पुं० [सं० वर्तन] मिट्टी या धातु आदि की इस प्रकार बनी वस्तु कि उसमें खाने-पीने की वस्तु रख सकें। पात्र। भाँड़। भाँड़ा।

बरतना-क्रि० अ० [सं० वर्तन] व्यवहार करना। बरताव करना।

क्रि० स० काम में लाना। व्यवहार में लाना। इस्तेमाल करना।

बरतरफ-वि० [फा० बर + अ० तरफ़] १. किनारे। अलग। एक ओर। २. नौकरी से छुड़ाया हुआ। मौकूफ। बरखास्त।

बरताना-क्रि० स० [सं० वर्तन या वितरण] वितरण करना। बाँटना।

बरताव-संज्ञा पुं० [हिं० बरतना या भाव] बरतने का ढंग। व्यवहार।

बरती-वि० [सं० व्रतिन्, हिं० व्रती] जिसने उपवास किया या व्रत रखा हो।

बरतोर†-संज्ञा पुं० [हिं० बाल + तोड़ना] वह फुंसी या फोड़ा जो बाल उखड़ने से हो।

बरदाना‡-क्रि० स० [हिं० बरधा = बैल] गौ, बकरी, घोड़ी आदि पशुओं का उनकी जाति के नर-पशुओं से संयोग कराना। जोड़ा खिलाना।

क्रि० अ० गौ, बकरी, घोड़ी आदि पशुओं का अपनी जाति के नर पशुओं से जोड़ा खाना।

बरदार-वि० [फा०] १. वहन करनेवाला। ढोनेवाला। धारण करनेवाला। २. पालन करनेवाला। माननेवाला।

बरदाश्त-संज्ञा स्त्री० [फा०] सहन करने की क्रिया या भाव। सहन।

बरधा-संज्ञा पुं० (सं० बलीवर्द] बैल।

बरधाना-क्रि० स० अ० दे० "बरदाना"।

बरन⁎-संज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।

बरनन⁎†-संज्ञा पुं० दे० "वर्णन"।

बरनना⁎†-क्रि० स० [सं० वर्णन] वर्णन करना। बयान करना।

बरना-क्रि० स० [सं० वरण] १. वर या वधू के रूप में ग्रहण करना। ब्याहना। २. कोई काम करने के लिये किसी को चुनना या नियुक्त करना। ३. दान देना।

‡क्रि० अ० दे० "जलना"।

बरपा-वि० [फा०] खड़ा हुआ। उठा हुआ। मचा हुआ। (झगड़ा, आफ़त)

बरफ़-संज्ञा स्त्री० दे० "बर्फ़"

बरफ़ी–संज्ञा स्त्री० [फा० बरफ़] एक प्रकार की प्रसिद्ध चौकोर मिठाई।
बरबंड°†–वि० [सं० बलवत्] १. बलवान्। ताकतवर। २ प्रतापशाली। ३. उदंड। उद्धत। ४. प्रचंड। प्रखर।
बरबट°–क्रि० वि० दे० "बरबस"।
बरबर†–संज्ञा स्त्री० [अनु०] बकबक। संज्ञा पु० दे० "बबर"।
बरबस–क्रि० वि० [सं० बल+वश] १ बलपूर्वक। जबरदस्ती। हठात्। २. व्यर्थ।
बरबाद–वि० [फ़ा०] नष्ट। चौपट।
बरबादी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] नाश। तबाही।
बरम°–संज्ञा पु० [सं० वर्म] जिरह बक्तर। कवच। शरीर-त्राण।
बरमा–संज्ञा पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा० बरमी] लकड़ी आदि में छेद करने का, लोहे का एक प्रसिद्ध औज़ार।
बरमी–संज्ञा पु० [हिं० बरमा+ई (प्रत्य०)] बरमा देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० बरमा देश की भाषा।
वि० बरमा-संबंधी। बरमा देश का।
बरम्हा–संज्ञा पु० १. दे० "ब्रह्मा"। २. दे० "बरमा"।
बरम्हाना°†–क्रि० स० [सं० ब्रह्म] (ब्राह्मण का) आशीर्वाद देना।
बरम्हाव°†–संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्म+आव (प्रत्य०)] १. ब्राह्मणत्व। २. ब्राह्मण का आशीर्वाद।
बररट–संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली" (रोग)।
बरवै–संज्ञा पु० [देश०] १९ मात्राओं का एक छंद। ध्रुव। कुरंग।
बरषना°†–क्रि० अ० दे० "बरसना"।
बरषा°–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्षा] १. पानी बरसना। वृष्टि। २. वर्षा-काल। बरसात।
बरषाना°†–क्रि० स० दे० "बरसाना"।
बरषासन°†–संज्ञा पु० [सं० वर्षाशन] एक वर्ष की भोजन-सामग्री।
बरस–संज्ञा पु० [सं० वर्ष] बारह महीनों या ३६५ दिनों का समूह। वर्ष। साल।
बरसगाँठ–संज्ञा स्त्री० [हिं० बरस+गाँठ] वह दिन जिसमें किसी का जन्म हुआ हो। जन्मदिन। सालगिरह।
बरसना–क्रि० स० [सं० वर्षण] १. वर्षा का जल गिरना। मेह पड़ना। २. वर्षा के जल की तरह ऊपर से गिरना। ३. बहुत अधिक मात्रा में चारों ओर से आना।
मुहा०—बरस पड़ना = बहुत अधिक क्रुद्ध होकर डाँटने डपटने लगना।
४. बहुत अच्छी तरह झलकना। खूब प्रकट होना। ५. दाएँ हुए गल्ले का इस प्रकार हवा में उड़ाया जाना जिसमें दाना अलग और भूसा अलग हो जाय। ओसाया जाना।
बरसाइत†–संज्ञा स्त्री० [सं० वट+सावित्री] जेठ बदी अमावस, जिस दिन स्त्रियाँ वट सावित्री का पूजन करती हैं।
बरसात–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्षा] सावन-भादों के दिन जब कि खूब वर्षा होती है। वर्षा काल। वर्षा-ऋतु।
बरसाती–वि० [सं० वर्षा] बरसात का। संज्ञा पु० [हिं० बरसात] एक प्रकार का ढीला कपड़ा जिसे वर्षा के समय पहन लेने से शरीर नहीं भीगता।
बरसाना–क्रि० स० [हिं० बरसना का प्रे०] १. वर्षा करना। वृष्टि करना। २. वर्षा के जल की तरह लगातार बहुत सा गिराना। ३ बहुत अधिक संख्या या मात्रा में चारों ओर से प्राप्त कराना। ४ दाएँ हुए अनाज को इस प्रकार हवा में गिराना जिससे दाने अलग और भूसा अलग हो जाय। ओसाना। डाली देना।
बरसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बरस+ई (प्रत्य०)] मृतक के उद्देश्य से किया जानेवाला वार्षिक श्राद्ध।
बरसौहाँ–वि० [हिं० बरसना+औहाँ (प्रत्य०)] बरसनेवाला।
बरहा–संज्ञा पु० [हिं० बहा] [स्त्री० अल्पा० बरही] खेतों में सिंचाई के लिये बनी हुई छोटी नाली।
संज्ञा पु० [देश०] मोटा रस्सा।
संज्ञा पु० [सं० बर्हि] मोर। मयूर।
बरही–संज्ञा पु० [सं० बर्हि] १. मयूर। मोर। २. साही नाम का जंतु। ३. मुरगा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह] १. प्रसूता का वह स्नान तथा अन्यान्य क्रियाएँ जो संतान उत्पन्न होने के बारहवें दिन होती हैं।
संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पत्थर आदि भारी बोझ उठाने का मोटा रस्सा। २. जलाने की लकड़ी आदि का भारी बोझ।
बरहीपीड़°†–संज्ञा पु० [सं० बर्हिपीड]

मोर के परों का बना हुआ मुकुट। मोर-मुकुट।

बरहीमुख†–संज्ञा पुं० [सं० बर्हिमुख] देवता।

बरहीं–संज्ञा पुं० दे० "बरही"।

बरह्मंड–संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।

बरह्मावना–क्रि० स० [सं० ब्रह्म+अपना] आशीर्वाद देना। असीस देना।

बरा–संज्ञा पुं० [सं० वटी] उड़द की पीसी हुई दाल का बना हुआ एक प्रकार का पकवान। बड़ा।

संज्ञा पुं० [?] भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण। बहुँटा। टाँड़।

बराई–संज्ञा स्त्री० दे० "बड़ाई"।

बराक–संज्ञा पुं० [सं० वराक] १. शिव। २. युद्ध। लड़ाई।

वि० १. शोचनीय। २. नीच। अधम। ३. बापुरा। बेचारा।

बराट–संज्ञा स्त्री० [सं० वराटिका] कौड़ी।

बरात–संज्ञा स्त्री० [सं० वरयात्रा] वर पक्ष के लोग जो विवाह के समय वर के साथ कन्यावालों के यहाँ जाते हैं। जनेत।

बराती–संज्ञा पुं० [हिं० बरात+ई (प्रत्य०)] बरात में वर के साथ कन्या के घर तक जानेवाला।

बराना–क्रि० अ० [सं० वारण] १. प्रसंग पड़ने पर भी कोई बात न कहना। बचाना। २. जान बूझकर अलग करना। बचाना। ३. रक्षा करना। हिफ़ाज़त करना।

क्रि० स० [सं० वरण] बहुत सी चीज़ों में से कुछ चीजें चुनना। छाँटना।

†क्रि० स० दे० "बालना" (जलाना)।

बराबर–वि० [फ़ा० बर] १. मात्रा, गुण, मूल्य आदि के विचार से समान। तुल्य। एक सा। २. जिसकी सतह ऊँची-नीची न हो। समतल।

मुहा०—बराबर करना=समाप्त कर देना।

क्रि० वि० १. लगातार। निरंतर। २. एक ही पंक्ति में। एक साथ। ३. साथ। (क्व०) ४. सदा। हमेशा।

बराबरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बराबर+ई (प्रत्य०)] १. बराबर होने की क्रिया या भाव। समानता। तुल्यता। २. सादृश्य। ३. मुकाबला। सामना।

बरामद–वि० [फ़ा०] १. बाहर या सामने आया हुआ। २. खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहीं से निकाली जाय।

संज्ञा स्त्री० १. निकासी। माल-बाहर। २. निकासी। आमदनी।

बरामदा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. मकानों में वह छाया हुआ लंबा भाग जो मकान की सीमा के कुछ बाहर निकला रहता है। बारजा। छज्जा। २. दालान। ओसारा।

बराय–अव्य० [फ़ा०] वास्ते। लिये।

बरायन–संज्ञा पुं० [सं० वर+आयन(प्रत्य०)] लोहे का वह छल्ला जो ब्याह के समय दूल्हे के हाथ में पहनाया जाता है।

बराव–संज्ञा पुं० [हिं० बराना+आव (प्रत्य०)] 'बराना' का भाव। बचाव। परहेज़।

बरास–संज्ञा पुं० [सं० पोतास ?] एक प्रकार का कपूर। भीमसेनी कपूर।

बराह–संज्ञा पुं० दे० "वराह"।

क्रि० वि० [फ़ा०] १. के तौर पर। २. ज़रिये से। द्वारा।

बरिया‡–वि० [सं० बलिन्] बलवान्।

बरियाई†–क्रि० वि० [सं० बलात्] बल-पूर्वक। हठात्। ज़बरदस्ती।

संज्ञा स्त्री० बलवान् होने का भाव।

बरियारा–संज्ञा पुं० [सं० बला] एक छोटा झाड़दार छतनारा पौधा। खिरैंटी। बीजबंध। बनमेथी।

बरिल†–संज्ञा पुं० [हिं० बरा, बरा] पकौड़ी या बड़े की तरह का एक पकवान।

बरिवंड–वि० दे० "बरवंड"।

बरिषा–संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।

बरिस†–संज्ञा पुं० [सं० वर्ष] वर्ष। साल।

बरी–संज्ञा स्त्री० [सं० वटी] १. गोल टिकिया। बटी। २. उर्द या मूँग की पीठी के सुखाए हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े।

वि० [फ़ा०] मुक्त। छूटा हुआ।

* ‡वि० दे० "बली"।

बरीस‡–संज्ञा पुं० दे० "वर्ष"।

बरीसना–क्रि० अ० दे० "बरसना"।

बरु*–अव्य० [सं० वर=श्रेष्ठ, भला] भले ही। चाहे। कुछ हर्ज नहीं।

संज्ञा पुं० दे० "वर"।

बरुआ†–संज्ञा पुं० [सं० बटुक] १. बटु। ब्रह्मचारी। २. ब्राह्मणकुमार। ३. उपनयन।

बरुक–अव्य० दे० "बरु"।

बरुनी-संज्ञा स्त्री० [सं० वरण=ढाँकना] पलक के किनारे पर के बाल।
बरूथी-संज्ञा स्त्री० [सं० वरुथ] एक नदी जो सई और गोमती के बीच में है।
बरेंडा-संज्ञा पुं० [सं० वरण्डक] १. लकड़ी का वह मोटा गोल लट्ठा जो खपरैल या छाजन की लंबाई के बल रहता है। २. छाजन या खपरैल के बीचोबीच का सबसे ऊँचा भाग।
बरेआं†-क्रि० वि० [सं० बल] १. ज़ोर से। बलपूर्वक। २. जबरदस्ती से। ३. ऊँची आवाज से। ऊँचे स्वर से।
अव्य० [सं० बर्त] १. पलटे में। २. वास्ते।
बरेखी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह+रखना] स्त्रियों का भुजा पर पहनने का एक गहना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बर+देखना, बरदेखी] विवाह-संबंध के लिये वर या कन्या देखना। विवाह की ठहरौनी।
बरेषी-संज्ञा स्त्री० दे० "बरेखी"।
बरोक-संज्ञा पुं० [हिं० बर+रोक] वह द्रव्य जो कन्यापक्ष से वरपक्ष को संबंध पक्का करने के लिये दिया जाता है। बरच्छा। फलदान।
संज्ञा पुं० [सं० बलौक] सेना।
क्रि० वि० [सं० बलौक] बलपूर्वक।
बरोठा-संज्ञा पुं० [सं० द्वार+कोष्ठ, हिं० बार+कोठा] १. ड्योढ़ी। पौरी। २ बैठक। दीवानखाना।
मुहा०—बरोठे का चार=द्वारपूजा।
बरोरु-वि० दे० "वरोरु"।
बरोह-संज्ञा स्त्री० [सं० वट+रोह=उगनेवाला] बरगद के पेड़ के ऊपर की डालियों में टँगी हुई वह शाखा जो ज़मीन पर जाकर जम जाती है। बरगद की जटा।
बरौठा†-संज्ञा पुं० दे० "बरोठा"।
बरौनी†-संज्ञा स्त्री० दे० "बरुनी"।
बरौरी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० बड़ी, बरी] बड़ी या बरी नाम का पकवान।
बर्क़-संज्ञा स्त्री० [अ०] बिजली। विद्युत्।
वि० तेज़। चालाक।
बर्ज-वि० दे० "वर्य"।
बर्जना-क्रि० स० दे० "बरजना"।
बर्णना-क्रि० स० [हिं० वर्णन] वर्णन करना। बयान करना।
क्रि० स० दे० "बरतना"।

बर्न-संज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।
बर्फ़-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणुओं की तह जो वातावरण की ठंढक के कारण ज़मीन पर गिरती है। २. बहुत अधिक ठंढक के कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पारदर्शी होता है। ३. मशीनों आदि अथवा कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी जिससे पीने के लिये जल आदि ठंढा करते हैं। ४. कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों आदि का रस। ५. दे० "ओला"।
बर्फ़िस्तान-संज्ञा पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ बर्फ़ ही बर्फ़ हो।
बर्फ़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "बरफ़ी"।
बर्बर-संज्ञा पुं० [सं०] १ घुँघराले बाल। २ वर्णाश्रम-विहीन असभ्य मनुष्य। जंगली आदमी। ३. अस्त्रों की झनकार।
वि० १. जंगली। असभ्य। २. उद्दंड।
बर्बरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बनतुलसी। २. ईंगुर। ३. पीत चंदन।
बर्राक़-वि० [अ०] १. चमकीला। जगमगाता हुआ। २. तेज़। तीव्र। ३. चतुर। चालाक। ४. बहुत उजला। धवला। सफ़ेद। ५. पूर्ण रूप से अभ्यस्त।
बर्राना-क्रि० अ० [अनु० बर बर] १. व्यर्थ बोलना। फ़ज़ूल बकना। २. नींद या बेहोशी में बकना।
बर्रे†-संज्ञा पुं० [सं० वरट] भिड़ नाम का कीड़ा। ततैया।
बलंद-वि० [फा०] [संज्ञा बलंदी] ऊँचा।
बल-संज्ञा पुं० [सं०] १. शक्ति। सामर्थ्य। ताक़त। ज़ोर। बूता। २. भार उठाने की शक्ति। सँभार। ३. आश्रय। सहारा। ४. आसरा। भरोसा। बित्ता। ५. सेना। फ़ौज। ६. पार्श्व। पहलू।
संज्ञा पुं० [सं० वलि] १. ऐंठन। मरोड़। २. फेरा। लपेट। ३. लहरदार घुमाव।
मुहा०—बल खाना=घुमाव के साथ टेढ़ा होना। कुंचित होना।
४. टेढ़ापन। कज। ख़म। ५. सिकुड़न। शिकन। गुलझट। ६. लचक। झुकाव।
मुहा०—बल खाना=लचकना। झुकना।
७. कसर। कमी। अंतर।
मुहा०—बल खाना=घाटा सहना। हानि

सहना। बल पड़ना = अंतर होना। फ़र्क रहना।
बलकट-वि० [?] पेशगी। अगाऊ।
बलकना-क्रि० अ० [अनु०] १. उबलना। खौलना। २. उमगना। जोश में होना।
बलकारक-वि० [सं०] बलजनक।
बलकल‡-संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।
बलकाना‡-क्रि० स० [हिं० बलकना] १. उबालना। खौलाना। २. उभारना। उमगाना। उत्तेजित करना।
बलगम-संज्ञा पुं० [अ०] [वि० बलगमी] श्लेष्मा। कफ।
बलद-संज्ञा पुं० [सं०] बैल।
बलदाऊ, बलदेव-संज्ञा पुं० दे० "बलराम"।
बलना- क्रि० अ० [सं० दहन या ज्वलन] जलना। लपट फेंककर जलना। दहकना।
बलबलाना-क्रि० अ० [अनु०] १. ऊँट का बोलना। २. व्यर्थ बकना।
बलबलाहट-संज्ञा स्त्री० [हिं० बलबलाना] १. ऊँट की बोली। २. व्यर्थ अहंकार।
बलबीर-संज्ञा पुं० [हिं० बल = बलराम + बीर = भाई] बलराम के भाई श्रीकृष्ण।
बलभद्र-संज्ञा पुं० [सं०] बलदेवजी।
बलभी-संज्ञा स्त्री० [सं० वलभि] मकान में सबसे ऊपरवाली कोठरी। चौबारा।
बलम-संज्ञा पुं० [सं० वल्लभ] पति। नायक।
बलय-संज्ञा पुं० दे० "वलय"।
बलराम-संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचंद्र के बड़े भाई जो रोहिणी से उत्पन्न हुए थे।
बलवंड-वि० [सं० बलवतः] बली।
बलवंत-वि० [सं० बलवतः] बलवान्।
बलवा-संज्ञा पुं० [फा०] १. दंगा। हुल्लड़। खलबली। विप्लव। २. बगावत। विद्रोह।
बलवाई-संज्ञा पुं० [फा० बलवा + ई (प्रत्य०)] १. बलवा करनेवाला। विद्रोही। २. उपद्रवी।
बलवान्-वि० [सं०] [स्त्री० बलवती] १. मज़बूत। ताक़तवर। २. सामर्थ्यवान्।
बलशाली-वि० दे० "बलवान्"।
बलशील-वि० [सं०] बली। शक्तिवाला।
बला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बरियारा नामक क्षुप। २. वैद्यक के अनुसार पौधों की एक जाति। ३. पृथिवी। ४. लक्ष्मी।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपत्ति। विपत्ति। आफ़त। २. दुःख। कष्ट। ३. भूत-प्रेत या उसकी बाधा। ४. रोग। व्याधि।
मुहा०—बला का = घोर। अत्यंत।
बलाइ-संज्ञा स्त्री० दे० "बलाय"।
बलाक-संज्ञा पुं० [सं०] बक। बगला।
बलाका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बगली। २. बगलों की पंक्ति।
बलाग्र-संज्ञा पुं० [सं०] १ सेनापति। २. सेना का अगला भाग।
वि० बलशाली। बली।
बलाढ्य-वि० [सं०] बलवान्। बली।
बलात्-क्रि० वि० [सं०] १. बलपूर्वक। जबरदस्ती से। २. हठात्। हठ से।
बलात्कार-संज्ञा पुं० [सं०] १. ज़बरदस्ती कोई काम करना। २. किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध संभोग करना।
बलाध्यक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।
बलाय-संज्ञा स्त्री० दे० "बला"।
बलाह-संज्ञा पुं० [सं० वोल्लाह] बुलाह (घोड़ा)।
बलाहक-संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. एक दैत्य। ३. एक नाग। ४. शाल्मलि द्वीप का एक पर्वत। ५. एक प्रकार का बगला।
बलि-संज्ञा पुं० [सं०] १. मालगुज़ारी। कर। राजकर। २. उपहार। भेंट। ३. पूजा की सामग्री या उपकरण। ४. पंच-महायज्ञों में चौथा। भूतयज्ञ। ५. किसी देवता के उत्सर्ग किया हुआ कोई खाद्य पदार्थ। ६. भक्ष्य। अन्न। खाने की वस्तु। ७. चढ़ावा। नैवेद्य। भोग। ८. वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय।
मुहा०—बलि चढ़ना = मारा जाना। बलि चढ़ाना = देवता के उद्देश्य से घात करना। बलि जाना = निछावर होना। बलिहारी जाना।
मुहा०—बलि जाऊँ या बलि ! = मैं तुम पर निछावर हूँ।
९. प्रह्लाद का पौत्र जो दैत्यों का राजा था।
संज्ञा स्त्री० [सं० बला = छोटी बहिन] सखी।
बलित-वि० [हिं० बलि] १. बलिदान चढ़ाया हुआ। २ मारा हुआ। हत।
बलिदान-संज्ञा पुं० [सं०] १. देवता के उद्देश्य से नैवेद्यादि पूजा की सामग्री चढ़ाना। २. बकरे आदि पशु देवता के उद्देश्य से मारना।
बलिपशु-संज्ञा पुं० [हिं० बलि + पशु] वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय।

बलिप्रदान–संज्ञा पुं० [सं०] बलिदान।
बलिया–वि० [हिं० बल] बलवान्।
बलिवर्द–संज्ञा पुं० [सं०] १. साँड़। २. बैल।
बलिवैश्वदेव–संज्ञा पुं० [सं०] पाँच महा यज्ञों में से चौथा महायज्ञ। इसमें गृहस्थ पके हुए अन्न से एक एक ग्रास लेकर भिन्न भिन्न स्थानों पर रखता है।
बलिष्ठ–वि० [सं०] अधिक बलवान्।
बलिहारना –क्रि० स० [हिं० बलि + हारना] निछावर कर देना। कुर्बान कर देना।
बलिहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बलि + हारना] प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदि के कारण अपने को उत्सर्ग कर देना। निछावर। कुरबान।
मुहा०—बलिहारी जाना = निछावर होना। कुरबान जाना। बलैया लेना। बलिहारी लेना = बलैया लेना। प्रेम दिखाना।
बली–वि० [सं० बलिन्] बलवान्।
बलीमुख–संज्ञा पुं० [सं० बलिमुख] बंदर।
बलु–अव्य० "बरु"।
बलुआ–वि० [हिं० बालू] [स्त्री० बलुई] जिसमें बालू मिला हो। रेतीला।
बलूच–संज्ञा पुं० एक जाति जिसके नाम पर देश का नाम बलूचिस्तान पड़ा है।
बलूची–संज्ञा पुं० [देश०] बलूचिस्तान का निवासी।
बलूत–संज्ञा पुं० [अ०] माजूफल की जाति का एक पेड़।
बलैया–संज्ञा स्त्री० [अ० बला, हिं० बलाय।] बला। बलाय।
मुहा०—(किसी की) बलैया लेना = अर्थात् किसी का रोग, दुःख अपने ऊपर लेना। अत्यन्त कामना करते हुए प्यार करना।
बल्कि–अव्य० [फा०] १. अन्यथा। इसके विरुद्ध। प्रत्युत। २. और अच्छा है। बेहतर है।
बल्लम–संज्ञा पुं० [सं० बल०, हिं० बल्ला] १. छड़। बल्ला। २. सोंटा। डंडा। ३. वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसे चोबदार राजाओं के आगे लेकर चलते हैं। ४. बरछा।
बल्लमटेर–संज्ञा पुं० [अं० वालंटियर] १. स्वेच्छा पूर्वक सेना में भरती होनेवाला। स्वेच्छा-सेवक। स्वयंसेवक।
बल्लमबर्दार–संज्ञा पुं० [हिं० बल्लम + फा० बर्दार] वह जो सवारी या बरात के साथ बल्लम लेकर चलता है।
बल्ला–संज्ञा पुं० [सं० बल] [स्त्री० अल्पा० बल्ली] १. डंडे के आकार का लंबा मोटा टुकड़ा। शहतीर या डंडा। २. मोटा डंडा। दंड। ३. वह डंडा जिससे नाव खेते हैं। डाँड़ा। ४. गेंद मारने का लकड़ी का डंडा। बैट।
बल्ली–संज्ञा स्त्री० [हिं० बल्ला] छोटा बल्ला।
संज्ञा स्त्री० दे० "बल्ली"।
बवँडना†–क्रि० अ० [सं० व्यावर्तन] इधर-उधर घूमना। व्यर्थ फिरना।
बवंडर–संज्ञा पुं० [सं० वायु + मंडल] १. चक्र की तरह घूमती हुई वायु। चक्रवात। बगूला। २. आँधी। तूफान।
बवघूरा–संज्ञा पुं० दे० "बवंडर"।
बवन †–संज्ञा पुं० दे० "वमन"।
बवना–क्रि० स० [सं० वपन] १. दे० "बोना"। २. छितराना। बिखराना।
क्रि० अ० छितराना। बिखरना।
संज्ञा पुं० दे० "वामन"।
बवरना–क्रि० अ० दे० "बौरना"।
बवासीर–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं। अर्श।
बसंती–वि० [हिं० बसंत] १. बसंत का। बसंत ऋतु संबंधी। २. खुलते हुए पीले रंग का।
बसंदर–संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर] आग।
बस–वि० [फा०] प्रयोजन के लिये पूरा। पर्याप्त। भरपूर। बहुत। काफी।
अव्य० १. पर्याप्त। काफी। अलम्। २. सिर्फ। केवल। इतना मात्र।
संज्ञा पुं० दे० "वश"।
बसना–क्रि० अ० [सं० वसन] १. स्थायी रूप से स्थित होना। निवास करना। रहना। २. निवासियों से भरा पूरा होना। आबाद होना।
मुहा०—घर बसना = कुटुंब सहित सुख-पूर्वक स्थित होना। गृहस्थी का बनना। घर में बसना = सुखपूर्वक गृहस्थी में रहना।
३. टिकना। ठहरना। डेरा करना।
मुहा०—मन में बसना = ध्यान में बना रहना। स्मृति में रहना।
४. बैठना।
क्रि० अ० [हिं० बासना] बासा जाना। सुगंधित होना। महक से भर जाना।

संज्ञा पुं० [सं० वसन = कपड़ा] १. वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय। बेठन। बेटन। २. थैली।

बसनि०‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० बसना] रहन। निवास। वास।

बसवार–संज्ञा पुं० [हिं० बास] छौंक। बघार।

बसवास–संज्ञा पुं० [हिं० बसना + वास] १. निवास। रहना। २. रहने का ढंग। स्थिति। ३. रहने का सुभीता। निवास के योग्य परिस्थिति। ठिकाना।

बसर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] गुज़र। निर्वाह।

बसह–संज्ञा पुं० [सं० वृषभ] बैल।

बसा–संज्ञा स्त्री० दे० "वसा"।
संज्ञा स्त्री० [देश०] बरें। भिड़।

बसाना–क्रि० स० [हिं० बसना] १. बसने के लिये जगह देना। रहने को ठिकाना देना। २. जनपूर्ण करना। आबाद करना।
मुहा०—घर बसाना = गृहस्थी जमाना। सुखपूर्वक कुटुंब के साथ रहने का ठिकाना करना।
३. टिकाना। ठहराना।
०क्रि० अ० १. बसना। ठहरना। रहना। २. दुर्गंध देना। बदबू करना।
क्रि० स० [सं० वेशन] १. बैठाना। २. रखना।
०क्रि० अ० [हिं० बश] बश या ज़ोर चलना।
क्रि० अ० [हिं० बास] बास देना। महकना।

बसिऔरा–संज्ञा पुं० [हिं० बासी] १. वर्ष की कुछ तिथियाँ जिनमें स्त्रियाँ बासी भोजन खाती हैं। २. बासी भोजन।

बसीकत, बसीगत–संज्ञा स्त्री० [हिं० बसना] १. बस्ती। आबादी। २. बसने का भाव या क्रिया। रहन।

बसीकर–वि० [सं० वशीकर] वशीकर। वश में करनेवाला।

बसीकरन०–संज्ञा पुं० दे० "वशीकरण"।

बसीठ–संज्ञा पुं० [सं० अवसृष्ट] सँदेसा ले आनेवाला दूत।

बसीठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बसीठ] सँदेसा भुगताने का काम। दूतत्व।

बसीना‡०–संज्ञा पुं० [हिं० बसना] रहायस। रहन।

बसूला–संज्ञा पुं० [सं० वासि + ल (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बसूली] एक औज़ार जिससे बढ़ई लकड़ी छीलते और गढ़ते हैं।

बसेरा–वि० [हिं० बसना] बसनेवाला।
संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ रहकर यात्री रात बिताते हैं। टिकने की जगह। २. वह स्थान जहाँ चिड़ियाँ ठहरकर रात बिताती हैं।
मुहा०—बसेरा करना = १. डेरा करना। निवास करना। ठहरना। २. घर बनाना। बस जाना। बसेरा लेना = निवास करना। रहना। बसेरा देना = आश्रय देना।
३. टिकने या बसने का भाव। रहना।

बसेरी०–वि० [हिं० बसेरा] निवासी।

बसैया०†–वि० [हिं० बसना] बसनेवाला।

बसोबास–संज्ञा पुं० [हिं० बास + अवास] निवासस्थान। रहने की जगह।

बसौंधी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बास + औंधी] एक प्रकार की सुगंधित और लच्छेदार रबड़ी।

बस्ता–संज्ञा पुं० [फ़ा०] कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें काग़ज़, बही या पुस्तकादि बाँधकर रखते हैं। बेठन।

बस्ती–संज्ञा स्त्री० [सं० वसति] १. बहुत से मनुष्यों का घर बनाकर रहने का भाव। आबादी। निवास। २. जनपद।

बस्साना–क्रि० अ० [हिं० बास] दुर्गंध देना।

बहँगी–संज्ञा स्त्री० [सं० विहंगिका] बोझ ले चलने के लिये तराज़ू के आकार का एक ढाँचा। काँवर।

बहकना–क्रि० अ० [हिं० बहना] १. भूल से ठीक रास्ते से दूसरी ओर जा पड़ना। मार्गभ्रष्ट होना। भटकना। २. ठीक लक्ष्य या स्थान पर न जाकर दूसरी ओर जा पड़ना। चूकना। ३. किसी की बात या भुलावे में आ जाना। ४. किसी बात में लग जाने के कारण शांत होना। बहलना (बच्चों के लिये)। ५. आपे में न रहना। रस या मद से चूर होना।
मुहा०—बहकी बहकी बातें करना = १. मदोन्मत्त की सी बातें करना। २. बढ़ बढ़कर बातें करना।

बहकाना–क्रि० स० [हिं० बहकना] १. ठीक रास्ते से दूसरी ओर ले जाना या फेरना। रास्ता भुलवाना। भटकाना। २. ठीक लक्ष्य या स्थान से दूसरी ओर कर देना। लक्ष्यभ्रष्ट करना। ३. भुलावा देना। भरमाना। बातों से फुसलाना। ४. (बातों से) शांत करना।

बहकावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहकाना] बहकाने की क्रिया या भाव।

बहतोल†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहता+ल (प्रत्य०)] जल बहाने की नाली। बरहा।

बहन–संज्ञा स्त्री० दे० "बहिन"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बहना] बहने की क्रिया या भाव।

बहना–क्रि० अ० [सं० वहन] १. द्रव वस्तुओं का किसी ओर चलना। प्रवाहित होना। **मुहा०**—बहती गंगा में हाथ धोना = किसी ऐसी बात से लाभ उठाना जिससे सब लोग लाभ उठा रहे हैं।
२. पानी की धारा में पड़कर जाना। ३. स्रवित होना। लगातार बूँद या धार के रूप में निकलकर चलना। ४. वायु का संचरित होना। हवा का चलना। ५. हट जाना। दूर होना। ६. ठीक लक्ष्य या स्थान से सरक जाना। फिसल जाना। ७. मारा मारा फिरना। ८. कुमार्गी होना। आवारा होना। बिगड़ना। ९. अधम या बुरा होना। १०. गर्भपात होना। खड़ाना। (चौपायों के लिये) ११. बहुतायत से मिलना। सस्ता मिलना। १२. (रुपया आदि) डूब जाना। नष्ट हो जाना। १३. लाद कर ले चलना। वहन करना। १४. खींचकर ले चलना। (गाड़ी आदि) १५. धारण करना। १६. उठना। चलना। १७ निर्वाह करना। निबाह करना।

बहनापा–संज्ञा पुं० [हिं० बहिन+आपा (प्रत्य०)] बहिन का संबंध।

बहनी⊙–संज्ञा स्त्री० [सं० वह्नि] अग्नि। आग।

बहनु⊙–संज्ञा पुं० [सं० वहन] सवारी।

बहनेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहन] वह जिसके साथ बहन का सम्बन्ध स्थापित हो। (स्त्रियों)

बहनोई–संज्ञा पुं० [सं० भगिनीपति] बहिन का पति।

बहरा–वि० [सं० बधिर] [स्त्री० बहरी] जो कान से सुन न सके या कम सुने।

बहराना–क्रि० स० [हिं० भुराना] १. ऐसी बात कहना या करना जिससे दु:ख की बात भूल जाय और चित्त प्रसन्न हो जाय। २. बहकाना। भुलाना। फुसलाना।

बहरियाना†–क्रि० स० [हिं० बाहर+इयाना (प्रत्य०)] १. बाहर की ओर करना। निकालना। २. अलग करना। जुदा करना।
क्रि० अ० १. बाहर की ओर होना। २. अलग होना। जुदा होना।

बहरी–संज्ञा स्त्री० [अ०] बाज की तरह की एक शिकारी चिड़िया।

बहल–संज्ञा स्त्री० दे० "बहली"।

बहलना–क्रि० अ० [हिं० बहलाना] १. झंझट या दु:ख की बात भूलना और चित्त का दूसरी ओर लगना। २. मनोरंजन होना। चित्त प्रसन्न होना।

बहलाना–क्रि० स० [फा० बहाल] १. झंझट या दु:ख की बात भुलवाकर चित्त दूसरी ओर ले जाना। २ मनोरंजन करना। चित्त प्रसन्न करना। ३ भुलावा देना। बातों में लगाना। बहकाना।

बहलाव–संज्ञा पुं० [हिं० बहलना] बहलने की क्रिया या भाव। मनोरंजन। प्रसन्नता।

बहली–संज्ञा स्त्री० [सं० वहन] रथ के आकार की बैलगाड़ी। खड़खड़िया।

बहलाा†⊙–संज्ञा पुं० [हिं० बहलना] आनंद।

बहस–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वाद। दलील। तर्क। खंडन-मंडन की युक्ति। २. विवाद। झगड़ा। हुज्जत। ३. होड़। बाजी। बदाबदी।

बहसना⊙–क्रि० अ० [अ० बहस+ना] १. बहस करना। विवाद करना। तर्क-वितर्क करना। २. शर्त लगाना।

बहादुर–वि० [फा०] [संज्ञा बहादुरी] १. उत्साही। साहसी। २. शूरवीर। पराक्रमी।

बहाना–क्रि० स० [हिं० बहना] १. द्रव पदार्थों को निम्नतल की ओर छोड़ना या गमन कराना। प्रवाहित करना। २. पानी की धारा में डालना। प्रवाह के साथ छोड़ना। ३. लगातार बूँद या धार के रूप में छोड़ना। ढालना। लुढ़ाना। ४. वायु संचालित करना। हवा चलाना। ५. व्यर्थ व्यय करना। खोना। गँवाना। †६. फेंकना। डालना। ७. सस्ता बेचना।
संज्ञा पुं० [फा० बहानः] १. किसी बात से बचने या मतलब निकालने के लिये झूठ बात कहना। मिस। हीला। २. उक्त उद्देश्य से कही हुई झूठ बात। ३. कहने सुनने के लिये एक कारण। निमित्त।

बहार–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वसंत ऋतु। २ मौज। आनंद। ३. यौवन का

विकास। जवानी का रंग। ४. रमणीयता। सुहावनापन। रौनक। ५. विकास। प्रफुल्लता। ६. मज़ा। तमाशा। कौतुक।

बहाल–वि० [फा०] १. पूर्ववत् स्थित। ज्यों का त्यों। २. भला-चंगा। स्वस्थ। ३. प्रसन्न। खुश।

बहाली–संज्ञा स्त्री० [फा०] पुनर्नियुक्ति। फिर उसी जगह पर मुकर्रारी।

†संज्ञा स्त्री० [बहलाना] बहाना। मिस।

बहाव–संज्ञा पुं० [हिं० बहना] १. बहने का भाव या क्रिया। प्रवाह। २. बहता हुआ जल आदि।

बहिः–अव्य० [सं० बहिस्] बाहर।

बाहक्रमः–संज्ञा पुं० [सं० वयःक्रम] अवस्था। उम्र।

बहित्र–संज्ञा पुं० [सं० वहित्र] नाव।

बहिन–संज्ञा स्त्री० [सं० भगिनी] माता की कन्या। भगिनी। बहना।

बहियाँ‡–संज्ञा स्त्री० दे० "बाँह"।

बहिरंग–वि० [सं०] बाहरी। बाहरवाला। 'अंतरंग' का उलटा।

बहिरा†ः–वि० दे० "बहरा"।

बहिरता‡–अव्य० [सं० बहिः] बाहर।

बहिर्गत–वि० [सं०] बाहर आया या निकला हुआ।

बहिर्भूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] बस्ती से बाहरवाली भूमि।

बहिर्मुख–वि० [सं०] विमुख। विरुद्ध।

बहिर्लापिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य-रचना में एक प्रकार की पहेली जिसमें उसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दों के बाहर रहता है, भीतर नहीं। अंतर्लापिका का उलटा।

बहिष्कार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० बहिष्कृत] १. बाहर करना। निकालना। २. हटाना।

बहिष्कृत–वि० [सं०] बाहर किया हुआ। निकाला हुआ।

बही–संज्ञा स्त्री० [सं० बद्ध, हिं० बँधी?] हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक।

बहीर–संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़] १. भीड़। जन-समूह। २. सेना के साथ साथ चलनेवाली भीड़ जिसमें साईस, सेवक, दूकानदार आदि रहते हैं। फौज का लवाज़मा। ३. सेना की सामग्री।

ः‡अव्य० [सं० बहिस्] बाहर।

बहु–वि० [सं०] १. बहुत। अनेक। २. ज़्यादा। अधिक।

संज्ञा स्त्री० दे० "बहू"।

बहुगुना–संज्ञा पुं० [हिं० बहु+गुण] चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन।

बहुज्ञ–वि० [सं०] बहुत बातें जाननेवाला। अच्छा जानकार।

बहुटनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहुँटा] बाँह पर पहनने का एक गहना। छोटा बहुँटा।

बहुत–वि० [सं० बहुतर] १. एक दो से अधिक। अनेक। २. जो मात्रा में अधिक हो। ३. यथेष्ट। बस। काफी।

मुहा०—बहुत अच्छा = स्वीकृति-सूचक वाक्य। बहुत करके = १. अधिकतर। ज़्यादातर। बहुधा। प्रायः। २. अधिक संभव है। बीस बिस्वे। बहुत कुछ = कम नहीं। गिनती करने योग्य। बहुत खूब = १. वाह। क्या कहना है! २. बहुत अच्छा।

क्रि० वि० अधिक परिमाण में। ज़्यादा।

बहुतक†–वि० [हिं० बहुत+क] बहुत से। बहुतेरे।

बहुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अधिकता।

वि० बहुत। अधिक।

बहुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "बहुतायत"।

बहुतात, बहुतायत–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहुत] अधिकता। ज्यादती।

बहुतेरा–वि० [हिं० बहुत+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० बहुतेरी] बहुत सा। अधिक।

क्रि० वि० बहुत प्रकार से।

बहुतेरे–वि० [हिं० बहुतेरा] संख्या में अधिक। बहुत से। अनेक।

बहुत्व–संज्ञा पुं० [सं०] अधिकता।

बहुदर्शिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत सी बातों की समझ। बहुज्ञता।

बहुदर्शी–संज्ञा पुं० [सं० बहुदर्शिन्] जिसने बहुत कुछ देखा हो। जानकार। बहुज्ञ।

बहुधा–क्रि० वि० [सं०] १. अनेक प्रकार से। २. बहुत करके। प्रायः। अकसर।

बहुबाहु–संज्ञा पुं० [सं०] रावण।

बहुमत–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत से लोगों की अलग अलग राय। २. बहुत से लोगों की मिलकर एक राय।

बहुमूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग ... रोगी को मूत्र बहुत उतरता है।

बहुमूल्य-वि० [सं०] अधिक मूल्य का। कीमती। दामी।

बहुरंगा-वि० [हिं० बहु + रंग] १. कई रंगों का। चित्रविचित्र। २ बहुरूपधारी।

बहुरंगी-वि० [हिं० बहुरंगा + ई] १. बहु-रूपिया। २ अनेक प्रकार के करतब या चाल दिखानेवाला।

बहुरना|-क्रि० अ० [सं० प्रघूर्णन] १ लौटना। वापस आना। २. फिर मिलना।

बहुरि †-क्रि० वि० [हिं० बहुरना] १. पुन। फिर। २ इसके उपरांत। पीछे।

बहुरिया|-संज्ञा स्त्री० [सं० वधूटी] नई बहू।

बहुरी|-संज्ञा स्त्री० [हिं० भौरना = भूनना] भुना हुआ सूखा अन्न। चर्बेना। चबैना।

बहुरूपिया-संज्ञा पु० [हिं० बहु + रूप] वह जो तरह तरह के रूप बनाकर अपनी जीविका चलता हो।

बहुल-वि० [सं०] अधिक। ज्यादा।

बहुलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] अधिकता।

बहुली-संज्ञा स्त्री० [सं० बहुल] इलायची।

बहुवचन-संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण में वह शब्द जिससे एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है। जमा।

बहुव्रीहि-संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण में छ प्रकार के समासों म से एक जिसमें दो या अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है, वह एक अन्य पद का विशेषण होता है।

बहुश्रुत-वि० [सं०] जिसने बहुत सी बातें सुनी हों। अनेक विषयों का जानकार।

बहुसंख्यक-वि० [सं०] गिनती में बहुत। अधिक।

बहूँटा-संज्ञा पुं० [सं० बाहुस्थ] [स्त्री० अल्पा० बहूँटी] बाँह पर पहनने का एक गहना।

बहू-संज्ञा स्त्री० [सं० वधू] १. पुत्रवधू। पतोहू। २. पत्नी। स्त्री। ३. दुलहिन।

बहूपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जायँ।

बहेड़ा-संज्ञा पुं० [सं० विभीतक, प्रा० बहेड़अ] एक बड़ा और ऊँचा जंगली पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं।

बहेतू-वि० [हिं० बहना] इधर उधर मारा मारा फिरनेवाला।

बहेरी †-संज्ञा स्त्री० [हिं० बहराना] बहाना। हीला।

बहेलिया-संज्ञा पु० [सं० वध + हेला] पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करनेवाला। व्याध। चिड़ीमार।

बहोर †-संज्ञा पु० [हिं० बहुरना] फेरा। वापसी। पलटा।

क्रि० वि० दे० "बहोरि"।

बहोरना|-क्रि० स० [हिं० बहुरना] लौटाना। वापस करना। फेरना।

बहोरि|-अव्य० [हिं० बहोर] पुन.। फिर।

बाँ-संज्ञा पु० [अनु०] गाय के बोलने का शब्द।

† संज्ञा पु० [हिं० बेर] बार। दफा। बेर।

बाँक-संज्ञा स्त्री० [सं० वक] १ भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण। २ एक प्रकार का चाँदी का गहना जो पैरों में पहना जाता है। ३ हाथ में पहनने की एक प्रकार की पटरी या चौड़ी चूड़ी। ४. कमान। धनुष। ५. एक प्रकार की छुरी।

संज्ञा पु० टेढ़ापन। वक्रता।

वि० [सं० वक] १. टेढ़ा। घुमावदार। २. बाँका। तिरछा।

बाँकड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० वक + डी (प्रत्य०)] बादले और कलाबत्तू का बना हुआ एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फीता।

बाँकडोरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँक] एक प्रकार का शस्त्र।

बाँकना|-क्रि० स० [सं० वक] टेढ़ा करना।

|क्रि० अ० टेढ़ा होना।

बाँकपन-संज्ञा पु० [हिं० बाँका + पन (प्रत्य०)] १. टेढ़ापन। तिरछापन। २. छैलापन। अलबेलापन। ३ छवि। शोभा।

बाँका-वि० [सं० वक] १. टेढ़ा। तिरछा। २ बहादुर। वीर। ३. सुंदर और बना ठना। छैला।

बाँकिया-संज्ञा पु० [सं० वंक = टेढ़ा] नर-सिंहा नाम का टेढ़ा बाजा।

बाँकुर, बाँकुरा|-वि० [हिं० बाँका] १. बाँका। टेढ़ा। २ पैना। पतली धार का। ३ कुशल। चतुर।

बाँग-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. पुकार। चिल्लाहट। २. वह ऊँचा शब्द या मंत्रोच्चारण जो नमाज का समय बताने के लिए मुल्ला

मसजिद में करता है। अज़ान। ३. प्रातः-काल के समय मुर्गे के बोलने का शब्द।

बाँगड़–संज्ञा पुं० [देश०] हिसार, रोहतक और करनाल का प्रांत। हरियाना।

बाँगड़ू–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँगड़] बाँगड़ प्रांत के जाटों की भाषा। जाटू। हरियानी।

बाँगुर–संज्ञा पुं० [देश०] पशुओं या पक्षियों को फँसाने का जाल। फंदा।

बाँचना†–क्रि० स० [सं० वाचन] पढ़ना। †क्रि० स० दे० "बचना"।

क्रि० स० [हिं० बचाना] बचाना। छुड़ाना।

बाछना†–संज्ञा स्त्री० [सं० वाञ्छा] इच्छा। †क्रि० स० १. चाहना। इच्छा करना। २ चुनना। छाँटना।

बांछा–संज्ञा स्त्री० [सं० वाञ्छा] इच्छा।

बांछित–वि० [सं० वाञ्छित] अभिलषित। इच्छित। जिसकी इच्छा की जाय।

बाछी*–संज्ञा पुं० [सं० वाञ्छिन्] अभिलाषा करनेवाला। चाहनेवाला।

बाँझ–संज्ञा स्त्री० [सं० वन्ध्या] वह स्त्री या मादा जिसे संतान होती ही न हो। बंध्या।

बाँझपन, बाँझपना–संज्ञा पुं० [सं० वन्ध्या + पन (प्रत्य०)] बाँझ होने का भाव। वंध्यात्व।

बाँट–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँटना का भाव] १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग। मुहा०—बाँटे पड़ना = हिस्से में आना।

बाँटना–क्रि० स० [सं० वितरण] १. किसी चीज के कई भाग करके अलग अलग रखना। २. हिस्सा लगाना। विभाग करना। ३ थोड़ा थोड़ा सबको देना। वितरण करना।

बाँटा–संज्ञा पुं० [हिं० बाँटना] १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग। हिस्सा।

बाँदा†–संज्ञा पुं० [फा० बंदा] [स्त्री० बाँदी] सेवक। दास।

बाँदर–संज्ञा पुं० [सं० वानर] बंदर।

बाँदा–संज्ञा पुं० [सं० वंदाक] एक प्रकार की वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओं पर उगकर पुष्ट होती है।

बाँदी–संज्ञा स्त्री० [फा० बंदा] लौंडी। दासी।

बाँदू–संज्ञा पुं० [सं० बंदी] बँधुवा। क़ैदी।

बाँध–संज्ञा पुं० [हिं० बाँधना = रोकना] नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना धुस्स। बंद।

बाँधना–क्रि० स० [सं० बन्धन] १. कसने या जकड़ने के लिये किसी चीज के घेरे में लाकर गाँठ देना। २. कसने या जकड़ने के लिये रस्सी, कपड़ा आदि लपेटकर उसमें गाँठ लगाना। ३. क़ैद करना। पकड़कर बंद करना। ४. नियम, अधिकार, प्रतिज्ञा या शपथ आदि की सहायता से मर्यादित रखना। पाबंद करना। ५. मंत्र, तंत्र आदि की सहायता से शक्ति या गति आदि को रोकना। ६. प्रेम-पाश में बद्ध करना। ७ नियत करना। मुक़र्रर करना। ८. पानी का बहाव रोकने के लिये बाँध आदि बनाना। ९. चूर्ण आदि को हाथों से दबाकर पिंड के रूप में लाना। १०. मकान आदि बनाना। ११. उपक्रम करना। योजना करना। १२. क्रम या व्यवस्था आदि ठीक करना। १३. मन में बैठाना। स्थिर करना। १४. किसी प्रकार का अस्त्र या शस्त्र आदि साथ रखना।

बाँधनीपौरि†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँधना + पौरि] पशुओं के बाँधने का स्थान।

बाँधनूँ–संज्ञा पुं० [हिं० बाँधना] १. पहले से ठीक की हुई तरकीब या विचार। उपक्रम। मंसूबा। २. कोई बात होने-वाली मानकर पहले से ही उसके संबंध में तरह तरह के विचार। ख़याली पुलाव। ३ झूठा दोष। तोहमत। कलंक। ४. मन से गढ़ी हुई बात। ५. कपड़े की रँगाई में वह बंधन जो रँगरेज चुनरी या लहरियेदार रँगाई आदि रँगने के लिये कपड़े में बाँधते हैं। ६. चुनरी या और कोई ऐसा वस्त्र जो इस प्रकार बाँधकर रँगा गया हो।

बांधव–संज्ञा० पुं० [सं०] १. भाई। बंधु। २. नातेदार। रिश्तेदार। ३. मित्र। दोस्त।

बाँबी–संज्ञा स्त्री० [सं० वल्मीक] १. दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का भीटा। बँबीठा। २. साँप का बिल।

बाँबना†–क्रि० स० [?] रखना।

बाँस–संज्ञा पुं० [सं० वंश] १. तृण जाति की एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं और

गाँठों के बीच का स्थान प्रायः कुछ पोला होता है। इसकी छोटी-बड़ी अनेक जातियाँ होती हैं।

मुहा०—बाँस पर चढ़ना=बदनाम होना। बाँस पर चढ़ाना=१. बदनाम करना। २. बहुत बढ़ा देना। मिज़ाज बढ़ा देना। बहुत आदर करके धृष्ट या घमंडी बना देना। बाँसों उछलना=बहुत अधिक प्रसन्न होना।

२. एक नाप जो सवा तीन गज़ की होती है। लाठा। ३. नाव खेने की लग्गी। ४. पीठ के बीच की हड्डी। रीढ़।

बाँसपूर-संज्ञा पुं० [हिं० बाँस+पूरना] एक प्रकार का महीन कपड़ा।

बाँसली-संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँस+ली (प्रत्य०)] १. बाँसुरी। मुरली। २ जालीदार लंबी पतली थैली जिसमें रुपया पैसा रखकर कमर में बाँधते हैं। हिमयानी।

बाँसा†-संज्ञा पुं० [सं० वंश=रीढ़] नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनों नथनों के ऊपर बीचोंबीच रहती है।

संज्ञा पुं० [सं० वंश] पीठ की रीढ़।

बाँसुरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँस] बाँस का बना हुआ प्रसिद्ध बाजा जो मुँह से फूँक-कर बजाया जाता है। बाँसुरी।

बाँह-संज्ञा स्त्री० [सं० बाहु] १. कंधे से निकल-कर दंड के रूप में गया हुआ अंग जिसके छोर पर हथेली या पंजा होता है। भुजा। हाथ। बाहु।

मुहा०—बाँह गहना या पकड़ना=१. किसी की सहायता करने के लिये हाथ बढ़ाना। सहारा देना। अपनाना। २. विवाह करना। बाँह देना=सहारा देना।

यौ०—बाँह-बोल=रक्षा करने या सहायता देने का वचन।

२. बल। शक्ति। ३. सहायक।

मुहा०—बाँह टूटना=सहायक या रक्षक आदि का न रह जाना।

४. भरोसा। आसरा। सहारा। शरण। ५. एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते हैं। ६. कुरते कोट आदि में वह मोहरीदार टुकड़ा जिसमें बाँह डाली जाती है। आस्तीन।

बा-संज्ञा पुं० [सं० वा=जल] जल। पानी।

संज्ञा पुं० [फा० बार] बार। दफ़ा। मरतबा।

बाई-संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] त्रिदोषों में से वात दोष। दे० "वात"।

मुहा०—बाई की झोंक=१. वायु का प्रकोप। २. आवेश। बाई चढ़ना=१. वायु का प्रकोप होना। २. घमंड आदि के कारण व्यर्थ की बातें करना। बाई पचना=१. वायु का प्रकोप शांत होना। २ घमंड टूटना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बाबा, बाबी] १. स्त्रियों के लिये एक आदरसूचक शब्द। २. एक शब्द जो उत्तरी प्रांतों में प्रायः वेश्याओं के नाम के साथ लगाया जाता है।

बाईस-संज्ञा पुं० [सं० द्वाविंशति] बीस और दो की संख्या या अंक। २२।

वि० जो बीस और दो हो।

बाईसी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बाईस+ई (प्रत्य०)] बाईस वस्तुओं का समूह।

बाउ‡-संज्ञा पुं० [सं० वायु] हवा। पवन।

बाउर†-वि० [सं० वातुल] [स्त्री० बाउरी] १. बावला। पागल। २. सीधा-सादा। ३ मूर्ख। अज्ञान। ४. गूँगा।

बाएँ-क्रि० वि० [हिं० बायाँ] बाईं ओर। बाईं तरफ़।

बाकचाल-†वि० [सं० वाक्+चलना] बहुत अधिक बोलनेवाला। बकी। बातूनी।

बाकनाॐ‡-क्रि० अ० [सं० वाक्] बकना।

बाकल†-संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।

बाकला-संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार की बड़ी मटर।

बाकाॐ‡-संज्ञा स्त्री० [सं० वाक्] वाणी।

बाकी-वि० [अ०] जो बच रहा हो। अव-शिष्ट। शेष।

संज्ञा स्त्री० १. गणित में दो संख्याओं या मानों का अंतर निकालने की रीति। २. घटाने के पीछे बची हुई संख्या या मान।

अव्य० लेकिन। मगर। परंतु।

संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धान।

बाखरिॐ†-संज्ञा स्त्री० दे० "बखरी"।

बाग-संज्ञा पुं० [अ०] उद्यान। उपवन। वाटिका।

संज्ञा स्त्री० [सं० वल्गा] लगाम।

मुहा०—बाग मोड़ना=किसी ओर प्रवृत्त करना। किसी ओर घुमाना।

बागडोर-संज्ञा स्त्री० [हिं० बाग+डोर] लगाम

बागना†-क्रि० अ० [सं० वक=चलना] चलना। फिरना। घूमना। टहलना।

‡क्रि० अ० [सं० वाक्] बोलना।

बागवान–संज्ञा पुं० [फा०] माली।

बागवानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] माली का काम।

बागर–संज्ञा पुं० [देश०] नदी किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी कभी पहुँचता ही नहीं।

बागल †–संज्ञा पुं०[सं० वक] बगला। बक।

बागा–संज्ञा पुं० [फा० बाग] अंगे की तरह का पुराने समय का एक पहनावा। जामा।

बागी–संज्ञा पुं० [अ०] वह जो राज्य के विरुद्ध विद्रोह करे। राजद्रोही।

बागेसरी‡–संज्ञा स्त्री० [सं० वागीश्वरी] १. सरस्वती। २ एक प्रकार की रागिनी।

बाघंबर–संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रांबर] १. बाघ की खाल जिसे लोग बिछाने आदि के काम में लाते हैं। २. एक प्रकार का कंबल।

बाघ–संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्र] शेर नाम का प्रसिद्ध हिंसक जंतु।

बाघी–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की गिलटी जो अधिकतर गरमी के रोगियों के पेड़ू और जाँघ की संधि में होती है।

बाचना‡–क्रि० अ० [हिं० बचना] बचना। क्रि० स० बचाना। सुरक्षित रखना।

बाचा–संज्ञा स्त्री० [सं० वाचा] १. बोलने की शक्ति। २. वचन। बातचीत। वाक्य। ३ प्रतिज्ञा। प्रण।

बाचाबंधः–वि० [सं० वाचा+बद्ध] जिसने किसी प्रकार का प्रण किया हो। प्रतिज्ञा बद्ध।

बाछा–संज्ञा पुं० [सं० वत्स, प्रा० वच्छ] १. गाय का बच्चा। बछड़ा। २ लड़का।

बाज–संज्ञा पुं० [अ० बाज़] १. एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। २. तीर में लगा हुआ पर। प्रत्य० [फा०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर रखने, खेलने, करने या शौक रखनेवाले आदि का अर्थ देता है। जैसे–दगाबाज़, कबूतरबाज, नशेबाज़। वि० [फा०] वंचित। रहित। **मुहा०**—बाज आना =१. खोना। रहित होना। २ दूर होना। पास न जाना। बाज करना=रोकना। मना करना। बाज़ रखना = रोकना। मना करना। वि० [अ० बअज़] कोई कोई। कुछ। थोड़े कुछ। विशिष्ट।

क्रि० वि० बगैर। बिना। (क०) संज्ञा [सं० वाजिन्] घोड़ा। संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] १. वाद्य। बाजा। २. बजने या बाजे का शब्द।

बाजदावा–संज्ञा पुं० [फा०] अपने दावे या स्वत्व से बाज़ आना।

बाजन†–संज्ञा पुं० दे० "बाजा"।

बाजना—क्रि० अ० [हिं० बजना] १ बाजे आदि का बजना। २. लड़ना। झगड़ना। ३. प्रसिद्ध होना। पुकारा जाना। ४ लगना। आघात पहुँचना।

बाजरा–संज्ञा पुं० [सं० वर्जरी] एक प्रकार की बड़ी घास जिसकी बालों के दानों की गिनती मोटे अन्नों में होती है। जोंधरी।

बाजा–संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] कोई ऐसा यंत्र जो स्वर (विशेषतः राग रागिनी) उत्पन्न करने अथवा ताल देने के लिये बजाया जाता हो। बजाने का यंत्र। वाद्य। **यौ०**—बाजा-गाजा =अनेक प्रकार के बजते हुए बाजों का समूह।

बाज़ाब्ता–क्रि० वि० [फा०] जाब्ते के साथ। नियमानुसार। वि० जो नियमानुकूल हो।

बाज़ार–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थों की दूकानें हों। **मुहा०**—बाजार करना =चीजें खरीदने के लिये बाजार जाना। बाजार गर्म होना =१. बाजार में चीजों या ग्राहकों आदि की अधिकता होना। २. खूब काम चलना। बाजार तेज होना =१. बाजार में किसी चीज की माँग बहुत अधिक होना २. किसी चीज का मूल्य वृद्धि पर होना। ३. काम ज़ोरों पर होना। खूब काम चलना। बाजार उतरना या मंदा होना =१. बाजार में किसी चीज की माँग कम होना। २. दाम घटना। ३. कारबार कम चलना। २. वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय या अवसर पर सब तरह की दूकानें लगती हों। हाट। पैंठ।

बाज़ारी–वि० [फा०] १. बाजार-संबंधी। बाजार का। २. मामूली। साधारण। ३ अशिष्ट।

बाज़ारू–वि० दे० "बाजारी"।

बाजि*†–संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] १ घोड़ा। २. बाण। ३. पक्षी। ४. अड़ूसा। वि० चलनेवाला।

बाज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ऐसी शर्त जिसमें हार जीत के अनुसार कुछ लेन-देन भी हो। शर्त। दाँव। बदान।
मुहा०—बाज़ी मारना = बाज़ी जीतना। दाँव जीतना। बाज़ी ले जाना = किसी बात में आगे बढ़ जाना। श्रेष्ठ ठहरना।
२. आदि से अंत तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें शर्त या दाँव लगा हो।
संज्ञा पु० [सं० वाजिन्] घोड़ा।

बाज़ीगर–संज्ञा पु० [फा०] जादूगर।

बाजु–अव्य० [सं० वर्जन। मि० फा० बाज़] १. बिना। बग़ैर। २. अतिरिक्त। सिवा।

बाजू–संज्ञा पु० [फा० बाज़ू] १. भुजा। बाहु। बाँह। २. बाजूबंद नाम का गहना। ३. सेना या किसी श्रोर का एक पक्ष। ४. वह जो हर काम में बराबर साथ रहे और सहायता दे। ५. पक्षी का डैना।

बाजूबंद–संज्ञा पु० [फा०] बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। बाजू। बिजायठ। भुजबंद।

बाजूबीर†–संज्ञा पु० दे० "बाजूबंद"।

बाझन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बझना = फँसना] १ बझने या फँसने का भाव। फँसावट। २. उलझन। पेंच। ३. झंझट। बखेड़ा।

बाझना–क्रि० अ० दे० "बझना"।

बाट–संज्ञा पु० [सं० वाट] मार्ग। रास्ता।
मुहा०—बाट करना = रास्ता खोलना। मार्ग बनाना। बाट जोहना या देखना = प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। बाट पड़ना = तंग करना। पीछे पड़ना। बाट पड़ना = डाका पड़ना। बाट पारना = डाका मारना।
संज्ञा पु० [सं० वटक] १. बटखरा। २. पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई चीज़ पीसी जाय। बट्टा।

बाटना–क्रि० स० [हिं० बट्टा या बाट] सिल पर बट्टे आदि से पीसना। चूर्ण करना।
क्रि० स० दे० "बटना"।

बाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाग़। फुलवारी। २. वह गद्य जिसमें कुसुम और गुच्छ गद्य मिला हो।

बाटी–संज्ञा स्त्री० [सं० वटी] १. गोली। पिंड। २. अंगारों या उपलों आदि पर सेंकी हुई एक प्रकार की रोटी। अंगाकड़ी। लिट्टी।

संज्ञा स्त्री० [सं० वर्तुल। मि० हिं० बटुआ] चौड़ा और कम गहरा कटोरा।

बाड़व–संज्ञा पुं० [सं०] बड़वाग्नि।
वि० बड़वा-संबंधी।

बाड़वानल–संज्ञा पु० दे० "बड़वानल"।

बाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० वाट] १. चारों ओर से घिरा हुआ कुछ विस्तृत खाली स्थान। २. पशुशाला।

बाड़ी†–संज्ञा स्त्री० [सं० वारी] वाटिका।

बाढ़–संज्ञा स्त्री० [हिं० बढ़ना] १. बढ़ाव। वृद्धि। अधिकता। २. अधिक वर्षा आदि के कारण नदी या जलाशय के जल का बहुत अधिक मान में बढ़ना। जल-प्लावन। सैलाब। ३. व्यापार आदि से होनेवाला लाभ। ४ बंदूक या तोप आदि का लगातार छूटना।
मुहा०—बाढ़ दगना = तोप का लगातार छूटना।
संज्ञा स्त्री० [सं० वाट] [हिं० बारी] तलवार, छुरी आदि शस्त्रों की धार। सान।

बाढ़ना†–क्रि० अ० दे० "बढ़ना"।

बाढ़ि†–संज्ञा स्त्री० दे० "बाढ़"।

बाण–संज्ञा पुं० [सं०] १. तीर। सायक। शर। २. गाय का थन। ३. आग। ४. निशाना। लक्ष्य। ५. पाँच की संख्या। ६. शर का अगला भाग।

बाणासुर–संज्ञा पु० [सं०] राजा बलि के सौ पुत्रों में सब से बड़ा पुत्र जो बहुत गुणी और सहस्रबाहु था।

बाणिज्य–संज्ञा पु० [सं०] व्यापार। रोज़गार। सौदागरी।

बात–संज्ञा स्त्री० [सं० वार्ता] १. सार्थक शब्द या वाक्य। कथन। वचन। वाणी।
मुहा०—बात उठाना = १. कठोर वचन सहना। २. बात मानना। बात कहते = तुरंत। झट। फौरन। बात काटना = १. किसी के बोलते समय बीच में बोल उठना। २. कथन का खंडन करना। बात की बात में = झट। फौरन। तुरंत। बात खाली जाना = प्रार्थना या कथन का निष्फल होना। बात टलना = कथन का अन्यथा होना। बात टालना = १. सुनी अनसुनी करना। २. कही हुई बात पर न चलना। बात न पूछना = कुछ भी क़दर न करना। (किसी की) बात पर जाना = १. बात का खयाल करना। बात

पर ध्यान देना। २. कहने पर भरोसा करना। बात पूछना = १. खोज रखना। खबर लेना। २. कदर करना। बात बढ़ना = बात का विवाद के रूप में हो जाना। झगड़ा होना। बात बढ़ाना = विवाद करना। झगड़ा करना। बात बनाना = झूठ बोलना। बहाना करना। बातें बनाना = १. झूठमूठ इधर उधर की बातें कहना। २. बहाना करना। ३. खुशामद करना। बातों में उड़ाना = १. (किसी विषय को) हँसी में टालना। २. टालमटूल करना। बातों में लगाना = बातें कहकर उनमें लीन रखना।

२. चर्चा। जिक्र। प्रसंग।

मुहा०—बात उठाना = चर्चा चलाना। जिक्र करना। बात चलना या छिड़ना = प्रसंग आना। चर्चा छिड़ना। बात निकालना = बात चलाना। बात पड़ना = चर्चा छिड़ना।

३. खबर। अफ़वाह। किंवदंती। मवाद।

मुहा०—बात उड़ना = चारों ओर चर्चा फैलना। बात बहना = चारों ओर चर्चा फैलना।

४. माजरा। हाल। व्यवस्था।

मुहा०—बात का बतंगड़ करना = साधारण विषय या छोटे से मामले को व्यर्थ बहुत पेचीला या भारी बना देना। बात न पूछना = दशा पर ध्यान न देना। परवा न रखना। बात बढ़ना = किसी प्रसंग या घटना का घोर रूप धारण करना। बात बनना = १. काम बनना। प्रयोजन सिद्ध होना। २. अच्छी परिस्थिति होना। बोल बाला होना। बात बनाना या सँवारना = काम बनाना। कार्य्य सिद्ध करना। बात बात पर या बात बात में = प्रत्येक प्रसंग पर। हर काम में। बात बिगड़ना = १. काम चौपट होना। मामला खराब होना। विफलता होना।

५. घटित होनेवाली अवस्था। प्राप्त संयोग। परिस्थिति। ६. संदेश। सँदेसा। पैगाम। ७. वार्त्तालाप। गप-शप। वाग्विलास।

मुहा०—बातों बातों में = बातचीत करते हुए। कथोपकथन के बीच में।

८. कोई मामला तै करने के लिये उसके संबंध में चर्चा।

मुहा०—बात ठहरना = १. विवाह संबंध स्थिर होना। २. किसी प्रकार का निश्चय होना।

९. फँसाने या धोखा देने के लिये कहे हुए शब्द या किए हुए व्यवहार।

मुहा०—बातों में आना या जाना = कथन या व्यवहार से धोखा खाना।

१०. झूठ या बनावटी कथन। मिस। बहाना। ११. वचन। प्रतिज्ञा। वादा।

मुहा०—बात का धनी, पक्का या पूरा = प्रतिज्ञा का पालन करनेवाला। दृढ़प्रतिज्ञ। बात पक्की करना = १. दृढ़ निश्चय करना। २. प्रतिज्ञा या संकल्प पुष्ट करना। (अपनी) बात रखना = वचन पूरा करना। प्रतिज्ञा का पालन करना। बात हारना = वचन देना।

१२. साख। प्रतीति। विश्वास।

मुहा०—(किसी की) बात जाना = बात का प्रमाण न रहना (लोगों को)। एतबार न रह जाना। बात खोना = साख बिगाड़ना। बात बनना = साख रहना। विश्वास रहना।

१३. मानमर्यादा। प्रतिष्ठा। इज़्ज़त।

मुहा०—बात खोना = प्रतिष्ठा नष्ट करना। इज्जत गँवाना। बात जाना = इज्जत न रह जाना। बात बनना = प्रतिष्ठा प्राप्त होना।

१४. अपनी योग्यता, गुण इत्यादि के संबंध में कथन या वाक्य। १५. आदेश। उपदेश। सीख। नसीहत। १६. रहस्य। भेद। १७. तारीफ़ की बात। प्रशंसा का विषय। १८. चमत्कारपूर्ण कथन। उक्ति। १९. गूढ़ अर्थ। अभिप्राय। मानी।

मुहा०—बात पाना = छिपा हुआ अर्थ समझ जाना। गूढ़ार्थ जान जाना।

२०. गुण या विशेषता। ख़ूबी। २१. ढंग। ढब। तौर। २२. प्रश्न। सवाल। समस्या। २३. अभिप्राय। तात्पर्य्य। आशय। २४. कामना। इच्छा। चाह। २५. कथन का सार। तत्त्व। मर्म। २६. काम। कार्य्य। आचरण। व्यवहार। २७. संबंध। लगाव। तअल्लुक़। २८. स्वभाव। गुण। प्रकृति। लक्षण। २९. वस्तु। पदार्थ। चीज़। विषय। ३०. मूल्य। दाम। मोल। ३१. उचित पथ या उपाय। कर्त्तव्य।

संज्ञा पु० दे० "वात"।

बात-चीत-संज्ञा स्त्री० [हिं० बात + चितन] दो या कई मनुष्यों के बीच कथोपकथन। वार्त्तालाप।

बाती-संज्ञा स्त्री० दे० "बत्ती"।

बातुल-वि० [सं० वातुल] पागल। सनकी।

बातूनिया, बातूनी-वि० [हिं० बात

उन्नी (प्रत्य०)] बहुत बातें करनेवाला। बकवादी।
बाथा†–संज्ञा पु० [?] गोद। अंक।
बाद–संज्ञा पु० [सं० वाद] १. बहस। तर्क। २. विवाद। झगड़ा। हुज्जत। ३ झक-झक। तूल कलामी। ४ शर्त। बाजी।
मुहा०—बाद मेलना = बाजी लगाना।
अव्य० [सं० वाद] व्यर्थ। निष्प्रयोजन।
अव्य० [अ०] अनंतर। पीछे।
वि० १. अलग किया या छोड़ा हुआ। २. दस्तूरी या कमीशन जो दाम में से काटा जाय। ३. अतिरिक्त। सिवाय।
संज्ञा पु० [फा०] वात। हवा।
बादना–क्रि० [सं० वाद + ना (प्रत्य०)] १ बकवाद करना। तर्क वितर्क करना। २ हुज्जत करना। ३ ललकारना।
बादवान–संज्ञा पु० [फा०] पाल।
बादर†–संज्ञा पु० [सं० वारिद] बादल। मेघ।
वि० [देश०] आनंदित। प्रसन्न।
बादरायण–संज्ञा पु० [सं०] वेदव्यास।
बादरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"।
बादल–संज्ञा पु० [सं० वारिद, हिं० बादर] पृथ्वी पर के जल से उठी हुई वह भाप जो घनी हो कर आकाश में छा जाती है और फिर पानी की बूँदों के रूप में गिरती है। मेघ। घन।
मुहा०—बादल उठना या चढ़ना = बादलों का किसी ओर से समूह के रूप में बढ़ते हुए दिखाई पड़ना। बादल गरजना = मेघों के संघर्ष का घोर शब्द। बादल घिरना = मेघों का चारों ओर छाना। बादल छँटना = मेघों का तड़ तड़ होकर हट जाना।
बादला–संज्ञा पु० [हिं० पतला?] सोने या चाँदी का चिपटा चमकीला तार। कामदानी का तार।
बादशाह–संज्ञा पुं० [फा०] १. राजा। शासक। २. सबसे श्रेष्ठ पुरुष। सरदार। ३. स्वतंत्र। मनमाना करनेवाला। ४. शतरंज का एक मुहरा। ५. ताश का एक पत्ता।
बादशाहत–संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य। शासन।
बादशाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. राज्य। राज्याधिकार। २. शासन। हुकूमत। ३. मनमाना व्यवहार।
वि० बादशाह-संबंधी।
बादहवाई–क्रि० वि० [फा० बाद + अ० हवा] यों ही। व्यर्थ। फजूल।
बादाम–संज्ञा पु० [फा०] मझोले आकार का एक वृक्ष जिसके छोटे फल मेवों में गिने जाते हैं।
बादामी–वि० [फा० बादाम + ई (प्रत्य०)] १ बादाम के छिलके के रंग का। कुछ पीलापन लिए लाल। २. बादाम के आकार का। अंडाकार।
संज्ञा पु० १ एक प्रकार की छोटी डिबिया। २. किलकिला पक्षी। ३ बादाम के रंग का घोड़ा।
बादि–अव्य० [सं० वादि] व्यर्थ। फजूल।
बादी–वि० [फा०] १ वायु संबंधी। २. वायुविकार-संबंधी। ३. वायु या वात का विकार उत्पन्न करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० वातविकार। वायु का दोष।
बाध–संज्ञा पु० [सं०] १ बाधा। रुकावट। अड़चन। २. पीड़ा। कष्ट। ३. कठिनता। मुश्किल। ४. अर्थ की असंगति। व्याघात। ५. वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव सा हो। (न्याय)
†संज्ञा पुं० [सं० बद्ध] मूँज की रस्सी।
बाधक–संज्ञा पु० [सं०] १. रुकावट डालनेवाला। विघ्नकर्त्ता। २. दुःखदायी।
बाधकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बाधा।
बाधन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० बाधित, बाधनीय, बाध्य] १. रुकावट या विघ्न डालना। २. कष्ट देना।
बाधना–क्रि० स० [सं० बाधन] बाधा डालना। रुकावट डालना। रोकना।
बाधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विघ्न। रुकावट। रोक। अड़चन। २. संकट। कष्ट।
बाधित–वि० [सं०] १. जो रोका गया हो। बाधायुक्त। २. जिसके साधन में रुकावट पड़ी हो। ३ जो तर्क से ठीक न हो। असंगत। ४ ग्रस्त। गृहीत।
बाध्य–वि० [सं०] १. जो रोका या दबाया जानेवाला हो। २. मजबूर होनेवाला।
बान–संज्ञा पु० [सं० बाण] १. बाण। तीर। २. एक प्रकार की आतशबाजी। ३. समुद्र या नदी की ऊँची लहर।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] १. बनावट। सजधज। वेश-विन्यास। २. आदत।
संज्ञा पुं० [सं० वर्ण] आब। कांति।

संज्ञा पु० [सं० बाण] बाना। (हथियार)
संज्ञा पु० [?] गोला।
बानइत†–वि० दे० "बानैत"।
वि० [हिं० बाण] १ बाण चलानेवाला। २. योद्धा। वीर। बहादुर।
बानक–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनाना] वेश। भेस। सज-धज।
बानगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बयाना] नमूना।
बानर–संज्ञा पु० दे० "बंदर"।
बानरेंद्र–संज्ञा पु० [सं० वानरेंद्र] सुग्रीव।
बाना–संज्ञा पु० [हिं० बनाना] १. पहनावा। पोशाक। वेश विन्यास। भेस। २. रीति। चाल। स्वभाव।
संज्ञा पु० [सं० बाण] १ तलवार के आकार का सीधा और दुधारा एक हथियार। २ सांग या भाले के आकार का एक हथियार।
संज्ञा पु० [सं० वयन=बुनना] १. बुनावट। बुनन। बुनाई। २ कपड़े की बुनावट जो ताने में की जाती है। ३. कपड़े की बुनावट में वह तागा जो आड़े बल ताने में जाता है। भरनी। ४. बारीक महीन सूत जिससे पतंग उड़ाई जाती है।
क्रि० स० [सं० व्यापन] किसी सिकुड़ने और फैलनेवाले छेद को फैलाना।
बानावरी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० बान + आवरी (फा० प्रत्य०)] बाण चलाने की विद्या।
बानि–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना या बनाना] १. बनावट। सजधज। २ टेव। आदत।
संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ण] चमक। आभा।
*संज्ञा स्त्री [सं० वाणी] वाणी। वचन।
बानिक–संज्ञा स्त्री० [सं० वर्णक या हिं० बनना] वेश। भेस। सजधज। बनाव सिंगार।
बानिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० बनिया] बनिये की स्त्री।
बानिया–संज्ञा पु० दे० "बनिया"।
बानी–संज्ञा स्त्री० [सं० वाणी] १. वचन। मुँह से निकला हुआ शब्द। २ मनौती। प्रतिज्ञा। ३. सरस्वती। ४ साधु महात्मा का उपदेश। जैसे, कबीर की बानी। ५. बाना नामक हथियार। ६. गोला।
संज्ञा पुं० [सं० वणिक्] बनिया।
संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ण] दमक। आभा।
संज्ञा पु० [अ०] चलानेवाला। प्रवर्त्तक।
संज्ञा स्त्री० दे० "वाणिज्य"।
बानैत–संज्ञा पु० [हिं० बाना + ऐत (प्रत्य०)] १ बाना फेरनेवाला। २. बाण चलानेवाला। तीरंदाज। ३. योद्धा। सैनिक।
संज्ञा पु० [हिं० बाना] बाना धारण करनेवाला।
बाप–संज्ञा पु० [सं० वाप=बीज बोनेवाला] पिता। जनक।
मुहा०—बाप-दादा = पूर्वज। पूर्वपुरुष। बाप मां = रक्षक। पालन करनेवाला।
बापिका*–संज्ञा स्त्री० दे० "वापिका"।
बापुरा–वि० [सं० बर्बर=तुच्छ] [स्त्री० बापुरी] १ जिसकी कोई गिनती न हो। तुच्छ। २. दीन। बेचारा।
बापू–संज्ञा पु० १. दे० "बाप"। २. दे० "बाबू"।
बाफ†–संज्ञा स्त्री० दे० "भाप"।
बाफता–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।
बाब–संज्ञा पु० [अ०] परिच्छेद। अध्याय।
बाबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संबंध। २. विषय।
बाबा–संज्ञा पु० [तु०] १. पिता। २. पितामह। दादा। ३ साधु-संन्यासियों के लिये आदर सूचक शब्द। ४. बूढ़ा पुरुष।
संज्ञा पु० [अ०] लड़कों के लिये प्यार का शब्द।
बाबी*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाबा] १. साधु स्त्री। संन्यासिन। २. लड़कियों के लिये प्यार का शब्द।
बाबुल–संज्ञा पुं० [हिं० बाबू] बाबू।
बाबू–संज्ञा पुं० [हिं० बाबा] १. राजा के नीचे उनके बंधु-बांधवों या और क्षत्रिय जमींदारों के लिये प्रयुक्त शब्द। २. एक आदर सूचक शब्द। भलामानुस। † ३. पिता का संबोधन।
बाबूना–संज्ञा पु० [फा०] एक छोटा पौधा जिसके फूलों का तेल बनता है।
बाभन–संज्ञा पु० दे० १. "ब्राह्मण"। २. दे० "भूमिहार"।
बाम–वि० दे० "वाम"।

संज्ञा पुं० [फा०] १ अटारी। कोठा। २. मकान के ऊपर की छत।
संज्ञा स्त्री० दे० "बामा"।
बार्य-वि० [सं० वाम] १. बायाँ। २. चूका हुआ। दावँ या लक्ष्य पर न बैठा हुआ।
मुहा०—बायँ देना=१. बचा जाना। छोड़ना। २. तरह देना। कुछ ध्यान न देना। ३. फेरा देना। चक्कर देना।
बाय†-संज्ञा स्त्री० [सं० वायु] १. वायु। हवा। २. बाई। वात का दोष।
संज्ञा स्त्री० [सं० वापी] बावली। बेहर।
बायक-संज्ञा पुं० [सं० वाचक] १. कहनेवाला। बतलानेवाला। २ पढ़नेवाला। बाँचनेवाला। ३ दूत।
बायन-संज्ञा पुं० [सं० वायन] १. वह मिठाई आदि जो उत्सवादि के उपलक्ष में इष्ट मित्रों के यहाँ भेजते हैं। २. भेंट।
संज्ञा पुं० [अ० बयाना] बयाना। अगाऊ।
मुहा०—बायन देना = छेड़छाड़ करना।
बायबिडंग-संज्ञा पुं० [सं० विडंग] एक लता जिसमें मटर के बराबर गोल फल लगते हैं जो औषध के काम आते हैं।
बायवी-वि० [सं० वायवीय] १ बाहरी। अपरिचित। अजनबी। २ नया आया हुआ।
बायाँ-वि० [सं० वाम] [स्त्री० बाईं] १ किसी प्राणी के शरीर के उस पार्श्व में पड़नेवाला जो उसके पूर्वाभिमुख खड़े होने पर उत्तर की ओर हो। 'दहिना' का उलटा।
मुहा०—बायाँ देना=१. किनारे से निकल जाना। बचा जाना। २ जान बूझकर छोड़ना।
२. उलटा। ३. विरुद्ध। खिलाफ। अहित में प्रवृत्त।
संज्ञा पुं० वह तबला जो बायें हाथ से बजाया जाता है।
बायें-क्रि० वि० [हिं० बायाँ] १. बाईं ओर। २ विपरीत। विरुद्ध।
मुहा०—बाये होना=१. विरुद्ध होना। २ अप्रसन्न होना।
बारंबार-क्रि० वि० [सं० वारंवार] बारबार। पुनः पुनः। लगातार।
बार-संज्ञा पुं० [सं० द्वार] १ द्वार। दरवाज़ा। २ आश्रय-स्थान। ठिकाना। ३ दरबार।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काल। समय। २. देर। बेर। विलंब। ३. दफ़ा। मरतबा।
मुहा०—बार बार = फिर फिर।

संज्ञा पुं० [सं० वाट] १. घेरा या रोक जो किसी स्थान के चारों ओर हो। बाढ़। २. किनारा। छोर। ३. धार। बाढ़।
† संज्ञा पुं० दे० "बाल"।
संज्ञा पुं० [फा० मि० सं० भार] बोझ।
† वि० दे० "बाल" और "बाला"।
बारगह-संज्ञा स्त्री० [फा० बारगाह] १. डेवढ़ी। २ डेरा। खेमा। तंबू।
बारजा-संज्ञा पुं० [हिं० बार = द्वार] १ मकान के सामने दरवाजों के ऊपर पाट कर बढ़ाया हुआ बरामदा। २ कोठा। अटारी। ३ बरामदा। ४ कमरे के आगे का छोटा दालान।
बारतिय-संज्ञा स्त्री० दे० "बार स्त्री"।
बारदाना-संज्ञा पुं० [फा०] १. व्यापार की चीजों के रखने का बरतन या बेठन। २ फौज के खाने पीने का सामान। रसद।
बारन-संज्ञा पुं० दे० "वारण"।
बारना-क्रि० अ० [सं० वारण] निवारण करना। मना करना। रोकना।
क्रि० स० [हिं० बरना] बालना। जलाना।
क्रि० स० दे० "वारना"।
बारवधू-संज्ञा स्त्री० [सं० वारवधू] वेश्या।
बारबरदार-संज्ञा पुं० [फा०] वह जो सामान ढोता हो। बोझ ढोनेवाला।
बारबरदारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] सामान ढोने का काम या मजदूरी।
बारमुखी-संज्ञा स्त्री० [सं० वारमुख्या] वेश्या।
बारह-वि० [सं० द्वादश] [वि० बारहवाँ] जो संख्या में दस और दो हो।
मुहा०—बारह बाट करना या घालना= तितर बितर या छिन्न भिन्न करना। इधर उधर कर देना। बारह बाट जाना या होना= १ तितर बितर होना। २ नष्ट भ्रष्ट होना।
संज्ञा पुं० बारह की संख्या या अंक। १२।
बारहखड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० द्वादश+अक्षरी] वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः इन बारह स्वरों को, मात्रा के रूप में लगाकर, बोलते या लिखते हैं।
बारहदरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह+फा० दर] चारों ओर से खुली वह हवादार बैठक जिसमें बारह द्वार हो।

वारहवान–संज्ञा पुं० [सं० द्वादशवर्ण] एक प्रकार का बहुत अच्छा सोना।
वारहवाना–वि० दे० "वारहवानी"।
वारहवानी–वि० [सं० द्वादश (आदित्य)+वर्ण, पा० बारस वण्ण] १. सूर्य के समान दमकवाला। २. खरा। चोखा। (सोने के लिये) ३. निर्दोष। सच्चा। ४ पूरा। पूर्ण। पक्का।
संज्ञा स्त्री० सूर्य की सी चमक।
वारहमासा–संज्ञा पुं० [हिं० बारह+मास] वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन विरही के मुँह से कराया गया हो।
वारहमासी–वि० [हिं० बारह+मास] १. सब ऋतुओं में फलने या फूलनेवाला। सदाबहार। सदाफल। २. बारहों महीने होनेवाला।
वारहसिंगा–संज्ञा पुं० [हिं० बारह+सींग] हिरन की जाति का एक प्रसिद्ध पशु।
वारहा–क्रि० वि० [फा० बार] बार बार। कई बार। अक्सर।
वारहीँ–संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह] बच्चे के जन्म से बारहवाँ दिन, जिसमें उत्सव किया जाता है। बरही।
वारा–वि० [सं० बाल] बालक।
संज्ञा पुं० बालक। लड़का।
वारात–संज्ञा स्त्री० [सं० वरयात्रा] किसी के विवाह में उसके घर के लोगों और इष्ट मित्रों का मिलकर वधू के घर जाना। वरयात्रा।
वारानी–वि० [फा०] बरसाती।
संज्ञा स्त्री० १. वह भूमि जिसमें केवल बरसात के पानी से फसल उत्पन्न होती हो। २. वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिये बरसात में पहना या ओढ़ा जाता हो।
वारिगर–संज्ञा पुं० [हिं० बारी+गर] हथियारों पर बाढ़ रखनेवाला। सिकलीगर।
वारिधर–संज्ञा पुं० [सं० वारिधर] १. बादल। वारिद। मेघ। २. एक वर्णवृत्त।
वारिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वर्षा। वृष्टि। २. वर्षा ऋतु।
वारी–संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] १. किनारा। तट। २. छोर पर का भाग। हाशिया। ३. बगीचे, खेत आदि के चारों ओर रोकने के लिये बनाया हुआ घेरा। बाढ़। ४. बरतन के मुँह का घेरा। ओठ। ५. पैनी वस्तु का किनारा। धार। बाढ़।
संज्ञा स्त्री० [सं० वाटी] १. वह स्थान जहाँ पेड़ लगाए गए हों। बगीचा। २ मेड़ आदि से घिरा स्थान। क्यारी। ३. घर। मकान। ४. खिड़की। झरोखा। ५. जहाजों के ठहरने का स्थान। बंदरगाह।
संज्ञा पुं० एक जाति जो अब पत्तल, दोने बनाती और सेवा करती है।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बार] आगे पीछे के सिलसिले के मुताबिक आनेवाला मौका। अवसर। पारी।
मुहा०—बारी बारी से=काल-क्रम में एक के पीछे एक इस रीति से। बारी बँधना=आगे पीछे अलग अलग नियत समय होना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बार=लड़का] १. लड़की। कन्या। वह जो सयानी न हो। २ थोड़े वयस की स्त्री। नवयौवना।
†संज्ञा स्त्री० दे० "बाली"।
वारीक–वि० [फा०] [संज्ञा बारीकी] १. महीन। पतला। २. बहुत ही छोटा। सूक्ष्म। ३ जिसके अणु बहुत ही छोटे या सूक्ष्म हों। ४. जिसकी रचना में दृष्टि की सूक्ष्मता और कला की निपुणता प्रकट हो। ५. जो बिना अच्छी तरह ध्यान से सोचे समझ में न आवे।
वारीकी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. महीनपन। पतलापन। २. गुण। विशेषता। खूबी।
वारू–संज्ञा पुं० दे० "बालू"।
वारूद–संज्ञा स्त्री० [तु० बारूत] १. एक प्रकार का चूर्ण या बुकनी जिसमें आग लगने से तोप-बंदूक चलती है। दारू। २. एक प्रकार का धान।
मुहा०—गोली बारूद=लड़ाई की सामग्री।
वारे–क्रि० वि० [फा०] अंत को।
वारे में–अव्य० [फा० बार+हिं० में] प्रसंग में। विषय में। संबंध में।
वारोठा–संज्ञा पुं० [सं० द्वार] ब्याह की एक रस्म जो वर के द्वार पर आने पर होती है।
वाल–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० बाला] १ बालक। लड़का। २. नासमझ आदमी। ३ किसी पशु का बच्चा।
‡संज्ञा स्त्री० दे० "बाला"।
वि० १. जो सयाना न हो। जो पूरी बाढ़

को न पहुँचा हो। २. जिसे उगे या निकले हुए थोड़ी ही देर हुई हो।

संज्ञा पु० [स०] सूत की सी वह वस्तु जो जंतुओं के चमड़े के ऊपर निकली रहती है और जो अधिकतर जंतुओं में इतनी अधिक होती है कि उनका चमड़ा ढका रहता है। लोम और केश।

मुहा०—बाल बाँका न होना = कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। बाल न बाँकना = बाल बाँका न होना। नहाते बाल न खिसना = कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। (किसी काम में) बाल पकाना = (कोई काम करते करते) बुड्ढा हो जाना। बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त करना। बाल बाल बचना = कोई आपत्ति पड़ने या हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कसर रह जाना।

संज्ञा स्त्री० [?] कुछ अनाजों के पौधों के डंठल का वह अग्र भाग जिसके चारों ओर दाने गुछे रहते हैं।

बालक—संज्ञा पु० [स०] १. लड़का। पुत्र। २. थोड़ी उम्र का बच्चा। शिशु। ३. अनजान आदमी। ४. हाथी या घोड़े का बच्चा। ५. बाल। केश।

बालकता—संज्ञा स्त्री० [स०] लड़कपन।

बालकताई—संज्ञा स्त्री० [स० बालकता + ई (प्रत्य०)] १ बाल्यावस्था। २. नासमझी।

बालकपन†—संज्ञा पु० [सं० बालक + पन (प्रत्य०)] १ बालक होने का भाव। २. लड़कपन। नासमझी।

बालकृष्ण—संज्ञा पुं० [स०] बाल्यावस्था के कृष्ण।

बालखिल्य—संज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार ऋषियों का एक समूह जिसका प्रत्येक ऋषि अँगूठे के बराबर माना गया है।

बालगोविंद—संज्ञा पु० दे० "बालकृष्ण"।

बालग्रह—संज्ञा पु० [स०] बालकों के प्राणघातक नौ ग्रह।

बालछड़—संज्ञा स्त्री० [देश०] जटामासी।

बालटी—संज्ञा स्त्री० [अ० बकेट] एक प्रकार की डोलची जिसमें उठाने के लिये एक दस्ता लगा रहता है।

बालतन्त्र—संज्ञा पु० [स०] बालकों के लालन पालन आदि की विद्या। कौमारभृत्य। दायागिरी।

पु० [हिं० बाल + तोड़ना] बाल टूटने के कारण होनेवाला फोड़ा।

बालधि—संज्ञा पु० [स०] दुम। पूँछ।

बालना—क्रि० स० [स० ज्वलन] १ जलाना। २. रोशन करना। प्रज्वलित करना।

बालपन—संज्ञा पु० [स० बाल + पन (प्रत्य०)] १. बालक होने का भाव। २. लड़कपन।

बाल-बच्चे—संज्ञा पु० [स० बाल + हिं० बच्चा] लड़के बाले। संतान। औलाद।

बालबोध—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवनागरी लिपि।

बालभोग—संज्ञा पु० [स०] वह नैवेद्य जो देवताओं, विशेषत बालकृष्ण आदि की मूर्त्तियों के सामने प्रात:काल रखा जाता है।

बालम—संज्ञा पु० [स० वल्लभ] १ पति। स्वामी। २ प्रणयी। प्रेमी। जार।

बालम खीरा—संज्ञा पु० [हिं० बालम + खीरा] एक प्रकार का बड़ा खीरा।

बालमुकुंद—संज्ञा पु० [स०] बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण।

बाललीला—संज्ञा स्त्री० [स०] बालकों के खेल। बालकों की क्रीड़ा।

बालविधु—संज्ञा पु० [स०] शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चंद्रमा।

बालसूर्य—संज्ञा पु० [स०] प्रातःकाल के उगते हुए सूर्य।

बाला—संज्ञा स्त्री० [स०] १. जवान स्त्री। बारह-तेरह वर्ष से सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। २. पत्नी। भार्या। जोरू। ३. स्त्री। औरत। ४ दो वर्ष तक की अवस्था की लड़की। ५. पुत्री। कन्या। ६. हाथ में पहनने का कड़ा। ७ दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या का नाम। ८ एक वर्णवृत्त।

वि० [फा०] जो ऊपर की ओर हो। ऊँचा।

मुहा०—बोल बाला रहना = सम्मान और आदर का सदा बढ़ा रहना।

संज्ञा पु० [हिं० बाल] जो बालकों के समान हो। अज्ञान। सरल। निश्छल।

यौ०—बाला भोला = बहुत ही सीधा सादा।

बालाई—संज्ञा स्त्री० दे० "मलाई"।

वि० [फा०] १. ऊपरी। ऊपर का। २. वेतन या नियत आय के अतिरिक्त।

बालाखाना—संज्ञा पु० [फा०] कोठे के ऊपर की बैठक। मकान के ऊपर का कमरा।

बालापन†—संज्ञा पु० दे० "बालपन"।

वालावर-संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का अँगरखा।
वालार्क-संज्ञा पु० [सं०] १ प्रातःकाल का सूर्य्य। २. कन्या राशि में स्थित सूर्य्य।
वालि-संज्ञा पु० [सं०] पपा, किष्किंधा का बानर राजा जो अंगद का पिता और सुग्रीव का बड़ा भाई था।
वालिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटी लड़की। कन्या। २ पुत्री। बेटी।
वालिग़-संज्ञा पु० [अ०] वह जो वाल्यावस्था को पार कर चुका हो। जवान। प्राप्त वयस्क। नवालिग़ का उलटा।
वालिश-संज्ञा स्त्री० [फा०] तकिया।
वि० [सं०] अबोध। अज्ञान। नासमझ।
वालिश्त-संज्ञा पु० दे० "बित्ता"।
वाली-संज्ञा स्त्री० [सं० बालिका] कान में पहनने का एक प्रसिद्ध आभूषण।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बाल] जौ, गेहूँ आदि के पौधों की बाल।
संज्ञा पु० दे० "वालि"।
वालुका-संज्ञा स्त्री० [सं०] रेत। बालू।
वालू-संज्ञा पु० [सं० बालुका] चट्टानों आदि का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ों पर से बह आता है और नदियों के किनारों पर, अथवा ऊसर ज़मीन या रेगिस्तानों में बहुत पाया जाता है। रेणुका। रेत।
मुहा०—वालू की भीत=ऐसी वस्तु जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय अथवा जिसका भरोसा न हो।
वालूदानी-संज्ञा स्त्री [हिं० बालू+फा० दानी] एक प्रकार की झँझरीदार डिबिया जिसमें लोग बालू रखते हैं। इस बालू से स्याही सुखाने का काम लेते हैं।
वालूसाही-संज्ञा स्त्री० [हिं० बालू+शाही =अनुरूप] एक प्रकार की मिठाई।
वाल्य-संज्ञा पु० [सं०] १. बाल का भाव। लड़कपन। बचपन। २. बालक होने की अवस्था।
वि० १. बालक का। २. बचपन का।
वाल्यावस्था-संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रायः सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन।
वाव-संज्ञा पुं० [सं० वायु] १. वायु। हवा। २. बाई। ३. अपान वायु। पाद।
वावड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "बावली"।
वावन-संज्ञा पु० दे० "वामन"।
संज्ञा पु० [सं० द्विपंचाशत] पचास और दो की संख्या। ५२।
वि० पचास और दो।
मुहा०—बावन तोले पाव रत्ती=जो हर तरह से बिलकुल ठीक हो। बिलकुल दुरुस्त। बावन बीर=बड़ा बहादुर और चालाक।
वावर†-वि० दे० "बावला"।
संज्ञा पु० [फा०] यकीन। विश्वास।
वावरची-संज्ञा पु० [फा०] भोजन पकानेवाला। रसोइया। (मुसल०)
वावरचीखाना-संज्ञा पु० [फा०] भोजन पकने का स्थान। रसोईघर। (मुसल०)
वावरा-वि० दे० "बावला"।
वावला-वि० [सं० वातुल, प्रा० बाउल] १. पागल। विक्षिप्त। सनकी। २. मूर्ख।
वावलापन-संज्ञा पु० [हिं० बावला+पन (प्रत्य०)] पागलपन। सिड़ीपन। झक।
वावली-संज्ञा स्त्री० [सं० वाप+डी या ली (प्रत्य०)] १ चौड़े मुँह का कुआँ जिसमें पानी तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनी हों। २. छोटा गहरा तालाब।
वावाँ†-वि० [सं० वाम] १. बाईं ओर का। २. प्रतिकूल। विरुद्ध।
वाशिंदा-संज्ञा पु० [फा०] निवासी।
वाष्प-संज्ञा पु० [सं० वाष्प] १. भाप। २ लोहा। ३ अश्रु। आँसू।
वासंतिक-वि० [सं०] १ वसंत ऋतु संबंधी। २. वसंत ऋतु में होनेवाला।
वास-संज्ञा पुं० [सं० वास] १. रहने की क्रिया या भाव। निवास। २ रहने का स्थान। निवासस्थान। ३. बू। गंध। महक। ४ एक छंद का नाम। ५. वस्त्र। कपड़ा। पोशाक।
संज्ञा स्त्री० [सं० वासना] वासना। इच्छा।
संज्ञा पु० [सं० वसन] छोटा कपड़ा।
संज्ञा स्त्री० [सं० वाशि] १ अग्नि। आग। २ एक प्रकार का अस्त्र। ३. तेज धारवाली छुरी, चाकू, कैंची इत्यादि छोटे शस्त्र जो तोपों में भरकर फेंके जाते हैं।
वासकसज्जा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने पति या प्रियतम के आने के समय केलि सामग्री सज्जित करे।
वासन-संज्ञा पु० [?] बरतन। भाँड़ा।

बासना–संज्ञा स्त्री० दे० "वासना"। [सं० वास] गंध। महक। बू। क्रि० स० [सं० वास] सुगंधित करना। महकाना। सुवासित करना।

बासमती–संज्ञा पुं० [हिं० वास=महक+मती (प्रत्य०)] एक प्रकार का धान। इसका चावल पकने पर सुगंध देता है।

बासर–संज्ञा पुं० [सं० वासर] १. दिन। २. सवेरा। प्रातःकाल। सुबह। ३. वह राग जो सबेरे गाया जाता है।

बासव–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

बाससी–संज्ञा पुं० [सं० वासस] कपड़ा।

बासा–संज्ञा पुं० [सं० वास] वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी हुई रसोई मिलती है। संज्ञा पुं० दे० "बास"।

बासी–वि० [सं० वास=गंध] १. देर का बना हुआ। जो ताजा न हो। (खाद्य पदार्थ) २. जो कुछ समय तक रखा रहा हो। ३ सूखा या कुम्हलाया हुआ।

मुहा०—बासी कढ़ी में उबाल आना=१ बुढ़ापे में जवानी की उमंग उठना। २. किसी बात का समय बिलकुल बीत जाने पर उसके संबंध में कोई वासना उत्पन्न होना।

बाहकी–संज्ञा स्त्री० [सं० वाहक+ई (प्रत्य०)] पालकी ले चलनेवाली स्त्री। कहारिन।

बाहना–क्रि० स० [सं० वहन] १. ढोना, लादना या चढ़ाकर ले जाना। २. चलाना। फेंकना। (हथियार) ३. गाड़ी, घोड़े आदि को हाँकना। ४. धारण करना। लेना। पकड़ना। ५ बहना। प्रवाहित होना। ६. खेत जोतना।

बाहनी–संज्ञा स्त्री० [सं० वाहिनी] सेना।

बाहम–क्रि० वि० [फा०] आपस में।

बाहर–क्रि० वि० [सं० बाह्य] १. किसी निश्चित अथवा कल्पित सीमा या मर्यादा से हट कर, अलग या निकला हुआ। भीतर या अंदर का उलटा।

मुहा०—बाहर आना या होना=सामने आना। प्रकट होना। बाहर करना=दूर करना। हटाना। बाहर बाहर=अलग या दूर से। बिना किसी को जताए।

२. किसी दूसरी जगह। अन्य नगर में।

मुहा०—बाहर का=बेगाना। पराया।

३ प्रभाव, अधिकार या संबंध आदि से अलग। ४. बगैर। सिवा। (क्व०)

बाहरजामी †–संज्ञा पुं० [सं० बाह्ययामी] ईश्वर का सगुण रूप। राम, कृष्ण इत्यादि।

बाहरी–वि० [हिं० बाहर+ई (प्रत्य०)] १. बाहर का। बाहरवाला। २. पराया। गैर। ३. जो आपस का न हो। अजनबी। ४. जो केवल बाहर से देखने भर को हो। ऊपरी।

बाहाँजोरी–क्रि० वि० [हिं० बाँह+जोड़ना] भुजा से भुजा मिलाकर। हाथ से हाथ मिला कर।

बाहिज–संज्ञा पुं० [सं० बाह्य] ऊपर से। देखने में।

बाहिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "वाहिनी"।

बाहु–संज्ञा स्त्री० [सं०] भुजा। बाँह।

बाहुक–संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा नल का उस समय का नाम जब वे अयोध्या के राजा के सारथी बने थे। २ नकुल।

बाहुत्राण–संज्ञा पुं० [सं०] वह दस्ताना जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है।

बाहुबल–संज्ञा पुं० [सं०] पराक्रम। बहादुरी।

बाहुमूल–संज्ञा पुं० [सं०] कंधे और बाँह का जोड़।

बाहुयुद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] कुश्ती।

बाहुल्य–संज्ञा पुं० [सं०] बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

बाहुसहस्र–संज्ञा पुं० दे० "सहस्रबाहु"।

बाह्य–वि० [सं०] बाहरी। बाहर का। संज्ञा पुं० [सं०] १. भार ढोनेवाला पशु। २ सवारी। यान।

बाह्लीक–संज्ञा पुं० [सं०] कांबोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम। बलख।

बिंग †–संज्ञा पुं० दे० "व्यंग्य"।

बिंजन †–संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"।

बिंद †–संज्ञा पुं० [सं० बिंदु] १. पानी की बूँद। २. दोनों भौंहों के मध्य का स्थान। भ्रूमध्य। ३. वीर्य की बूँद। ४. बिंदी। माथे का गोल तिलक।

बिंदा–संज्ञा स्त्री० [सं० वृंदा] एक गोपी का नाम। संज्ञा पुं० [सं० बिंदु] माथे पर का गोल और बड़ा टीका। बेंदा। बुंदा।

बिंदी–संज्ञा स्त्री० [सं० बिन्दु] १. सुन्ना।

शून्य। सिफर। बिंदु। २. माथे पर का गोल छोटा टीका। बिंदुली। ३. इस आकार का कोई चिह्न।

बिंदुका–संज्ञा पुं० दे० "बिंदी"।

बिंदुली–संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु] बिंदी। टिकुली।

बिंध†–संज्ञा पुं० दे० "विंध्याचल"।

बिंधना–क्रि० अ० [सं० वेधन] १. बींधा जाना। छेदा जाना। २. फँसना।

बिंब–संज्ञा पुं० [सं०बिम्ब] १. प्रतिबिंब। छाया। अक्स। २. कमंडलु। ३. मूर्त्ति। ४. कुँदरू नामक फल। ५. सूर्य या चंद्रमा का मंडल। ६. कोई मंडल। ७. आभास। ८. एक प्रकार का छंद। संज्ञा पुं० दे० "बाँबी"।

बिंबा–संज्ञा पुं० [सं०] १. कुंदरू। २. बिंब। प्रतिच्छाया। ३. चंद्रमा या सूर्य का मंडल।

बिंबिसार–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन राजा जो अजातशत्रु के पिता और गौतम बुद्ध के समकालीन थे।

बिउ–वि० [सं० द्वि] दो। एक और एक।

बिअहुता†–वि० [सं० विवाहित] १ जिसके साथ विवाह संबंध हुआ हो। २. विवाह-संबंधी। विवाह का।

बिआधि–संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।

बिआधु†–संज्ञा पुं० दे० "व्याध"।

बिआना–क्रि० स० [हिं० ब्याह] बच्चा देना। जनना। (पशुओं के संबंध में)

बिकना–क्रि० अ० [सं० विक्रय]मूल्य लेकर दिया जाना। बेचा जाना। बिक्री होना। मुहा०—किसी के हाथ बिकना = किसी का अनुचर, सेवक या दास होना।

बिकरम†–संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादित्य"।

बिकरार†–वि० [फा० बेक़रार] व्याकुल। वि० [सं० विकराल] भयानक। डरावना।

बिकल†–वि० [सं० विकल] १. व्याकुल। घबराया हुआ। २. बेचैन।

बिकलाई†–संज्ञा स्त्री० [सं० विकल + आई (प्रत्य०)] व्याकुलता। बेचैनी।

बिकलाना†–क्रि० अ० [सं० विकल] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना। क्रि० स० व्याकुल करना। बेचैन करना।

बिकवाना–क्रि० स० [हिं० बिकना का प्रे०] बेचने का काम दूसरे से कराना।

बिकसना–क्रि०अ०[सं०विकसन]१. खिलना। फूलना। २. बहुत प्रसन्न होना।

बिकसाना–क्रि० अ० दे० "बिकसना"। क्रि० स० १. विकसित करना। खिलाना। २ प्रसन्न करना।

बिकाऊ–वि० [हिं० बिकना + आऊ (प्रत्य०)] जो बिकने के लिये हो। बिकनेवाला।

बिकाना†–क्रि० अ० दे० 'बिकना'।

बिकार†–संज्ञा पुं० दे० "विकार"। संज्ञा पुं० [सं० विकराल] विकट। भीषण।

बिकारी†–वि० [सं० विकार] १. जिसका रूप बिगड़कर और का और हो गया हो। २ बुरा। हानिकारक। संज्ञा स्त्री० [सं० विकृत या वक्र] एक प्रकार की टेढ़ी पाई जो अंकों आदि के आगे संख्या या मान सूचित करने के लिये लगाते हैं।

बिक्री–संज्ञा स्त्री० [सं० विक्रय] १ किसी पदार्थ के बेचे जाने की क्रिया या भाव। विक्रय। २. बेचने से मिलनेवाला धन।

बिख–†संज्ञा पुं० दे० "विष"।

बिखम–वि० दे० "विषम"।

बिखरना–क्रि० अ० [सं० विकीर्ण] छितराना। तितर बितर हो जाना।

बिखराना–क्रि० स० दे० "बिखेरना"।

बिखेरना–क्रि० स०[हिं० बिखरना का स० रूप] इधर उधर फैलाना। छितराना।

बिगड़ना–क्रि० अ० [सं० विकृत] १. किसी पदार्थ के गुण या रूप आदि में विकार होना। खराब हो जाना। २ किसी पदार्थ के बनते समय उसमें कोई ऐसा विकार होना जिससे वह ठीक न उतरे। ३ दुरवस्था को प्राप्त होना। खराब दशा में आना। ४. नीति-पथ से भ्रष्ट होना। बद चलन होना। ५. क्रुद्ध होना। अप्रसन्नता प्रकट करना। ६ विरोधी होना। विद्रोह करना। ७. (पशुओं आदि का) अपने स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना। ८ परस्पर विरोध या वैमनस्य होना। ९ बेफायदा खर्च होना।

बिगड़ेदिल–संज्ञा पुं० [हिं० बिगड़ना + फा० दिल] १. हर बात में लड़ने झगड़नेवाला। २. कुमार्ग पर चलनेवाला।

बिगड़ैल–वि० [हिं० बिगड़ना + ऐल (प्रत्य०) या बिगड़ेदिल] १. हर बात में बिगड़न या क्रोध करनेवाला। २. हठी। जिद्दी।

विगर†–क्रि० वि० दे० "बगैर"।
विगरना–क्रि० अ० दे० "बिगड़ना"।
विगराइल†–वि० दे० "बिगड़ैल"।
विगसना–क्रि० अ० दे० "विकसना"।
विगहा–संज्ञा पुं० दे० "बीघा"।
विगाड़–संज्ञा पुं० [हिं० बिगड़ना] १. बिगड़ने की क्रिया या भाव। २. खराबी। दोष। ३ वैमनस्य। झगड़ा। लड़ाई।
विगाड़ना–क्रि० स० [सं० विकार] १. किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट कर देना। २. किसी पदार्थ को बनाते समय उसमें ऐसा विकार उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न उतरे। ३. दुरवस्था को प्राप्त कराना। बुरी दशा में लाना। ४. नीति या कुमार्ग में लगाना। ५. स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ६. बुरी आदत लगाना। ७. बहकाना। ८. व्यर्थ व्यय करना।
विगाना†–वि० [फा० बेगाना] जिससे आपसदारी का कोई संबंध न हो। पराया। गैर।
विगार†–संज्ञा पुं० दे० "बिगाड़"।
विगारि†–संज्ञा स्त्री० दे० "बेगार"।
विगारी–संज्ञा स्त्री० दे० "बेगारी"।
विगास†–संज्ञा पुं० दे० "विकास"।
विगासना–क्रि० स० [हिं० विकास] विकसित करना।
विगिर†–क्रि० वि० दे० "बगैर"।
विगुन†–वि० [सं० विगुण] जिसमें कोई गुण न हो। गुण-रहित।
विगुर–वि० [हिं० वि० + गुरु] जिसने किसी गुरु से शिक्षा न ली हो। निगुरा।
विगुरचिन†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिगूचन"।
विगुरदा†–संज्ञा पुं० [देश०] प्राचीन काल का एक प्रकार का हथियार।
विगुल†–संज्ञा पुं० [अं०] अँगरेजी ढंग की एक प्रकार की तुरही जो प्रायः सैनिकों को एकत्र करने के लिये बजाई जाती है।
विगुलर†–संज्ञा पुं० [अं०] फौज में बिगुल बजानेवाला।
विगूचन–संज्ञा स्त्री० [सं० विकुंचन अथवा विवेचन] १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य किं-कर्त्तव्य विमूढ़ हो जाता है। असमंजस। अड़चन। २. कठिनता। दिक्कत।
विगूचना–क्रि० अ० [सं० विकुंचन] १. अड़चन या असमंजस में पड़ना। २. दबाया जाना। पकड़ा जाना।
क्रि० स० [सं० विकुंचन] दबोचना। धर दबाना। छोप लेना।
विगोना–क्रि० स० [सं० विगोपन] १. नष्ट करना। बिगाड़ना। २. छिपाना। दुराना। ३. तंग करना। दिक करना। ४. भ्रम में डालना। बहकाना। ५. बिताना।
विग्गाहा–संज्ञा पुं० [सं० विगाथा] आर्य्या छंद का एक भेद। उद्गीति।
विग्रह–संज्ञा पुं० दे० "विग्रह"।
विघटना–क्रि० स० [सं० विघटन] विनाश करना। बिगाड़ना। तोड़ना फोड़ना।
विघन–संज्ञा पुं० दे० "विघ्न"।
विघनहरन†–वि० [सं० विघ्नहरण] विघ्न या बाधा को हटानेवाला।
संज्ञा पुं० गणेश। गजानन।
विच†–क्रि० वि० दे० "बीच"।
विचकाना–क्रि० अ० [अनु०] १. बिराना। चिढ़ाना। (मुँह) २. (मुँह को, स्वाद बिगड़ने के कारण) टेढ़ा करना। (मुँह) बनाना।
विचच्छन†–वि० दे० "विचक्षण"।
विचरना–क्रि० अ० [सं० विचरण] १. इधर उधर घूमना। चलना फिरना। २. यात्रा करना। सफर करना।
विचलना–क्रि० अ० [सं० विचलन] १. विचलित होना। इधर उधर हटना। २. हिम्मत हारना। ३. कहकर मुकरना।
विचला–वि० [हिं० बीच + ला(प्रत्य०)] [स्त्री० बिचली] जो बीच में हो। बीच का।
विचलाना†–क्रि० स० [सं० विचलन] १. विचलित करना। डिगाना। २. हिला देना। ३. तितर बितर करना।
विचवान, विचवानी–संज्ञा पुं० [हिं० बीच + वान] बीच-बचाव करनेवाला। मध्यस्थ।
विचहुत–संज्ञा पुं० [हिं० बीच] अंतर। फरक। दुबधा। संदेह।
विचारना†–क्रि० अ० [सं० विचार + ना (प्रत्य०)] १. विचार करना। सोचना। गौर करना। २. पूछना। प्रश्न करना।
विचारमान–वि० [हिं० विचार] १. विचार करनेवाला। २. विचारने के योग्य।
विचारा–वि० दे० "बेचारा"।

विजोग†–संज्ञा पुं० दे० "वियोग"।
विजोर–वि० [सं० वि+फा० ज़ोर=ताक़त] कमज़ोर। अशक्त। निर्बल।
विजोहा–संज्ञा पुं० दे० "बिजूहा"।
विजौरा–संज्ञा पुं० [सं० बीजपूरक] नीबू की जाति का एक वृक्ष। इसके फल बड़ी नारंगी के बराबर होते हैं।
विज्जु†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।
विज्जुपात†–संज्ञा पुं० [सं० विद्युत्पात] बिजली गिरना। वज्रपात।
विज्जुल†–संज्ञा पुं० [सं० विज्जुल] त्वचा। छिलका।
संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्] बिजली। दामिनी।
विज्जू–संज्ञा पुं० [देश०] बिल्ली के आकार-प्रकार का एक जंगली जानवर। बीजू।
विज्जूहा–संज्ञा पुं० [?] एक वर्णिक वृत्त। विमोहा। बिजोहा।
विझुकना–क्रि० अ० [हिं० झोंका] १. भड़कना। २. डरना। भयभीत होना। ३. टेढ़ा होना। तनना।
विझुकाना–क्रि० स० [हिं० बिझुकना का स० रूप] १. भड़काना। २. डराना।
विट–संज्ञा पुं० [सं० विट्] १. साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में निपुण हो। २. वैश्य। ३. नीच। खल।
विटरना–क्रि० अ० [हिं० बिटारना का अ० रूप] १ घँघोला जाना। २. गंदा होना।
विटारना–क्रि० स० [सं० विलोडन] १. घँघोलना। २. गंदा करना।
विटिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "बेटी"।
विट्ठल–संज्ञा पुं० [सं० विष्णु] १. विष्णु का एक नाम। २ बंबई प्रांत में शोलापुर के अंतर्गत पंढरपुर की एक देवमूर्ति।
विठाना–क्रि० स० दे० "बैठाना"।
विडंब–संज्ञा पुं० [सं० विडंब] आडंबर।
विडंबना–क्रि० अ० [सं० विडंबन] १. नकल। स्वरूप बनाना। २. उपहास। हँसी। निंदा।
विड्–संज्ञा पुं० दे० "विट"।
विडर–वि० [हिं० बिडरना] छितराया हुआ। अलग अलग। दूर दूर।
†वि० [हिं० वि०=बिना+डर=भय] १. न डरनेवाला। निर्भय। २. ढीठ।
विडरना–क्रि० अ० [सं० विट्] १. इधर उधर होना। तितर बितर होना। २. पशुओं का भयभीत होना। बिचकना। बरबाद होना। नष्ट होना।
विडराना–क्रि० स० [सं० विट्] १. इधर-उधर या तितर बितर करना। २. भगाना।
विडवना†–क्रि० स० [सं० विट्] तोड़ना।
विडारना–क्रि० स० [हिं० बिडरना] १. भयभीत करके भगाना। २ नष्ट करना।
विडाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. बिल्ली। बिलाव। २. बिडालाक्ष नामक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. दोहे का बीसवाँ भेद।
विड़ौजा–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
विढ़ती†–संज्ञा पुं० [हिं० बढ़ना=अधिक होना] कमाई। नफा। लाभ।
विढ़वना†–क्रि० स० [हिं० बढ़ाना] १. कमाना। २. संचय करना। इकट्ठा करना।
विढ़ाना†–क्रि० स० दे० "बिढवना"।
वित†–संज्ञा पुं० [सं० वित्त] १. धन। द्रव्य। २. सामर्थ्य। शक्ति। ३. कद। आकार।
विततना–क्रि० अ० [हिं० बिलखना] बिलखाना। व्याकुल होना। संतप्त होना।
क्रि० स० संतप्त करना। सताना।
वितना†–संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।
वितरना†–क्रि० स० [सं० वितरण] बाँटना।
वितवना†–क्रि० स० दे० "बिताना"।
विताना–क्रि० स० [सं० व्यतीत] (समय) व्यतीत करना। गुज़ारना। काटना।
वितावना†–क्रि० स० दे० "बिताना"।
वितीतना–क्रि० अ० [सं० व्यतीत] व्यतीत होना। गुज़रना।
क्रि० स० बिताना। गुज़ारना।
वितु†–संज्ञा पुं० दे० "वित्त"।
वित्त–संज्ञा पुं० [सं० वित्त] १. धन। दौलत। २ हैसियत। औकात। ३. सामर्थ्य।
वित्ता–संज्ञा पुं० [?] हाथ की सब उँगलियाँ फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की दूरी। बालिश्त।
विथकना–क्रि० अ० [हिं० थकना] १. थकना। २. चकित होना। हैरान होना। ३. मोहित होना।
विथरना, विथुरना†–क्रि० अ० [सं० वितरण] १. छितराना। बिखरना। २. अलग अलग होना। खिल जाना।
विथा†–संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।

बिथारना–क्रि० स० [हिं० बिथरना] छितराना। छिटकाना। बिखेरना।

बिथित–वि० दे० "व्यथित"।

बिथोरना–क्रि० स० दे० "बिथराना"।

बिदकना–क्रि० अ० [सं० विदारण] १. फटना। चिरना। २. घायल होना। ज़ख्मी होना। ३. भड़कना।

बिदकाना–क्रि० स० [सं० विदारण] १. फाड़ना। विदीर्ण करना। २. घायल करना। ज़ख्मी करना।

बिदर–संज्ञा पुं० [सं० विदर्भ] १. विदर्भ देश। बरार। २. एक प्रकार की उपधातु जो ताँबे और जस्ते के मेल से बनती है।

बिदरन†–संज्ञा स्त्री० [सं० विदीर्ण] दरार। दरज। शिगाफ़।
वि० फाड़नेवाला। चीरनेवाला।

बिदरी–संज्ञा स्त्री० [सं० विदर्भ] १. जस्ते और ताँबे के मेल से बरतन आदि बनाने का काम जिसमें बीच बीच में सोने या चाँदी के तारों से नक्काशी की हुई होती है। २. बिदर की धातु का बना हुआ सामान।

बिदा–संज्ञा स्त्री० [अ० विदाअ] १. प्रस्थान। गमन। रवानगी। रुख़सत। २. जाने की आज्ञा। ३ द्विरागमन। गौना।

बिदाई–संज्ञा स्त्री० [अ० विदाअ] १. बिदा होने की क्रिया या भाव। २. बिदा होने की आज्ञा। ३. वह धन जो किसी को बिदा होने के समय दिया जाय।

बिदारना†–क्रि० स० [सं० विदारण] १. चीरना। फाड़ना। २. नष्ट करना।

बिदारीकंद–संज्ञा पुं० [सं० विदारीकंद] एक प्रकार का लाल कंद। बिलाई कंद।

बिदुराना†–क्रि० अ० [सं० विदुर = चतुर] मुस्कराना। धीरे धीरे हँसना।

बिदुरानी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बिदुराना] मुस्कराहट। मुसक्यान।

बिदूपना†–क्रि० अ० [सं० विदूषण] दोष लगाना। कलंक लगाना। बिगाड़ना।

बिदेश–संज्ञा पुं० [सं० विदेश] परदेश।

बिदोख†–संज्ञा पुं० [सं० विद्वेष] बैर। वैमनस्य।

बिद्दत–संज्ञा स्त्री० [अ० बिदअत] १. खराबी। बुराई। दोष। २. कष्ट। तकलीफ़। ३. विपत्ति। आफ़त। ४. अत्याचार। जुल्म। ५. दुर्दशा।

बिधँसना†–क्रि० स० [सं० विध्वंसन] नाश करना। विध्वंस करना। नष्ट करना।

बिध–संज्ञा स्त्री० [सं० विधि] १. प्रकार। तरह। भाँति। २. ब्रह्मा।
संज्ञा स्त्री० [सं० विधा = लाभ] जमा-खर्च का हिसाब। आय-व्यय का लेखा।
मुहा०—बिध मिलाना = यह देखना कि आय और व्यय की सब मदें ठीक लिखी गई हैं।

बिधना–संज्ञा पुं० [सं० विधि] ब्रह्मा। विधि। विधाता।
क्रि० अ० दे० "बिंधना"।

बिधाँसना†–क्रि० स० [सं० विध्वंसन] विध्वंस करना। नष्ट करना। नाश करना।

बिधाई–संज्ञा पुं० [सं० विधायक] वह जो विधान करता हो। विधायक।

बिधाना–क्रि० अ० दे० "बिँधाना"।

बिधानी†–संज्ञा पुं० [सं० विधान] विधान करनेवाला। बनानेवाला। रचनेवाला।

बिन†–अव्य० दे० "बिना"।

बिनई†–संज्ञा पुं० दे० "विनयी"।

बिनउ†–संज्ञा स्त्री० दे० "विनय"।

बिनति, बिनती–संज्ञा स्त्री० [सं० विनय] प्रार्थना। निवेदन। अर्ज़।

बिनन–संज्ञा स्त्री० [हिं० बिनना = चुनना] १. बिनने या चुनने की क्रिया या भाव। २. वह कूड़ा कर्कट आदि जो किसी चीज़ में से चुनकर निकाला जाय। चुनन।

बिनना–क्रि० स० [सं० वीक्षण] १. छोटी छोटी वस्तुओं को एक एक करके उठाना। चुनना। २. छाँट छाँटकर अलग करना।
क्रि० स० दे० "बुनना"।

बिनवना†–क्रि० स० [सं० विनय] विनय करना। विनती करना। प्रार्थना कर[illegible]

बिनसना†–क्रि० अ० [सं० विन[illegible]] [illegible] होना। बरबाद होना।
क्रि० स० विनष्ट करना। नष्ट कर[illegible]

बिनसाना–क्रि० स० [सं० वि[illegible]] [illegible] करना। बिगाड़ डालना। [illegible]
क्रि० अ० विनष्ट होना।

बिना–अव्य० [सं० विना] [illegible]

बिनाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० [illegible]
१ बीनने या चुनने [illegible]
२ बुनने की क्रिया [illegible]

बिनाती–[illegible]

२. एक ही जाति के लोगों का समूह।
बिरान, बिराना –वि० दे० "बेगाना"।
बिराना, बिरावना†–क्रि० स० [स० विरव =शब्द] किसी को चिढ़ाने के हेतु मुँह की कोई विलक्षण मुद्रा बनाना। मुँह चिढ़ाना।
बिरिख†–सज्ञा पुं० १. दे० "वृष"। २. दे० "वृक्ष"।
बिरिछ†–सज्ञा पु० दे० "वृक्ष"।
बिरियाँ–सज्ञा स्त्री० [हिं० वेला] समय।
सज्ञा स्त्री० [स० वार] बार। दफ़ा।
बिरी†–सज्ञा स्त्री० १. दे० "बीड़ी"। २. दे० "बीड़ा"।
बिरुझना†–क्रि० अ० [स० विरुद्ध] झगड़ना।
बिरोजा–सज्ञा पु० दे० "गधाबिरोज़ा"।
बिरोधना†–क्रि० अ० [स० विरोध] विरोध करना। बैर करना। द्वेष करना।
बिलंद–वि० [फ़ा० बुलंद] १. ऊँचा। २. बड़ा। ३ जो विफल हो गया हो। (व्यंग्य)
बिलंबना†–क्रि० अ० [स० विलंब] १. विलंब करना। देर करना। २. ठहरना। रुकना।
बिल–सज्ञा पु० [स० बिल] १. छेद। दरज। विवर। २. ज़मीन के अंदर खोदकर बनाया हुआ कुछ जंगली जीवों के रहने का स्थान।
बिलकुल–क्रि० वि० [अ०] १. पूरा पूरा। सब। २. आदि से अंत तक। निरा। निपट। ३ सब। पूरा पूरा।
बिलखना–क्रि० अ० [स० विलाप] १. विलाप करना। रोना। २. दुःखी होना। ३. संकुचित होना। सिकुड़ जाना।
बिलखाना–क्रि० स० [स० विकल] बिलखना का सकर्मक रूप।
क्रि० अ० दे० "बिलखना"।
बिलग–वि० [हिं० वि० (प्रत्य०)+लगना] अलग। पृथक्। जुदा।
सज्ञा पु० [हिं० वि० (प्रत्य०)+लगना] १. पार्थक्य। अलग होने का भाव। २. द्वेष या और कोई बुरा भाव। रंज।
बिलगाना–क्रि० अ० [हिं० बिलग+आना (प्रत्य०)] अलग होना। पृथक् होना। दूर होना।
क्रि० स० १. अलग करना। पृथक् करना। दूर करना। २. छाँटना। चुनना।
बिलच्छन–वि० दे० "विलक्षण"।
बिलछना–क्रि० अ० [सं० लक्ष] लख करना। ताड़ना।
बिलटी–सज्ञा स्त्री० [अ० बिलेट] रेल के द्वारा भेजे जानेवाले माल की रसीद।
बिलनी–सज्ञा स्त्री० [हिं० बिल] काली भौंरी जो दीवारों पर मिट्टी की बाँबी बनाती है। अमरी।
सज्ञा स्त्री० आँख की पलक पर होनेवाली एक छोटी फुंसी। गुहांजनी।
बिलपना†–क्रि० अ० [स० विलाप] रोना।
बिलफेल–क्रि० वि० [अ०] इस समय।
बिलबिलाना–क्रि० अ० [अनु०] १. छोटे छोटे कीड़ों का इधर उधर रेंगना। २. व्याकुल होकर बकना या रोना चिल्लाना।
बिलम†–सज्ञा पु० दे० "विलंब"।
बिलमना†–क्रि० अ० [स० विलंब] १. विलंब करना। देर करना। २. ठहर जाना। रुकना। ३. किसी के प्रेमपाश में फँसकर कहीं रुक रहना।
बिलमाना–क्रि० स० [हिं० बिलमना का सक० रूप] प्रेम के कारण रोक या ठहरा रखना।
बिललाना–क्रि० अ० दे० "बिलखना"।
बिलवाना†–क्रि० स० [स० वि+लय] १. खो देना। नष्ट करना। बरबाद करना। २. दूसरे के द्वारा नष्ट कराना। बरबाद कराना। ३ छिपाना। ४. छिपवाना।
बिलसना†–क्रि० अ० [स० विलसन] शोभा देना। भला जान पड़ना।
क्रि० स० भोग करना। भोगना।
बिलसाना†–क्रि० स० [हिं० बिलसना] १. भोग करना। बरतना। काम में लाना। २. दूसरे से भोगवाना।
बिलहरा–सज्ञा पुं० [हिं० बेल ?] बाँस की तीलियों का एक प्रकार का संपुट जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं।
बिला–अव्य [अ०] बिना। बगैर।
बिलाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० बिल्ली] १ बिल्ली। बिलारी। २. कुएँ में गिरा हुआ बरतन आदि निकालने का काँटा। ३. किवाड़ बंद करने की एक प्रकार की सिटकिनी।
बिलाईकंद–सज्ञा पु० दे० "बिदारीकंद"।
बिलाना–क्रि० अ० [स० विलयन] १. नष्ट होना। न रह जाना। २. अदृश्य होना।
बिलारी–सज्ञा स्त्री० दे० "बिल्ली।"
बिलारीकंद–सज्ञा पुं० दे० "बिदारीकंद"।
बिलावल–सज्ञा पु० [स०] एक राग।

विलासना–क्रि० स० [सं० विलसन] भोगना।

विलैया†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बिल्ली] १. बिल्ली। २. कद्दूकश।

विलोकना–क्रि० स० [सं० विलोकन] १. देखना। २. जाँच करना। परीक्षा करना।

विलोकनि–संज्ञा स्त्री० [सं० विलोकन] १. देखने की क्रिया। २. दृष्टिपात। कटाक्ष।

विलोड़ना–क्रि० स० [सं० विलोड़न] १. दूध आदि मथना। २. अस्त व्यस्त करना।

विलोन–वि० [सं० वि+लवण] १. बिना लवण का। २. कुरूप। बदसूरत।

विलोना–क्रि० स० [सं० विलोडन] १. दूध आदि मथना। किसी वस्तु विशेषतः पानी की सी वस्तु को खूब हिलाना। २. ढालना। गिराना।

विलोरना–क्रि० स० [सं० विलोडन] १. दे० "बिलोड़ना"। २. छिन्न भिन्न करना।

विलोलना–क्रि० स० [सं० विलोलन] हिलना।

विलोवना†–क्रि० स० दे० "बिलोना"।

विल्मुक्ता–वि० [अ०] जो घट बढ़ न सके। संज्ञा पुं० वह लगान जो घट बढ़ न सके।

विल्ला–संज्ञा पुं० [सं० विडाल] [स्त्री० बिल्ली] मार्जार। बिल्ली का नर। संज्ञा पुं० [सं० पटल, हिं० पल्ला, बल्ला] चपरास की तरह की पीतल की पतली पट्टी।

विल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं० विडाल, हिं० बिलार] १. एक प्रसिद्ध मांसाहारी पशु जो सिंह, व्याघ्र, चीते आदि की जाति का, पर इन सब से छोटा होता है। २. एक प्रकार की किवाड़ की सिटकिनी। बिलैया।

विल्लौर–संज्ञा पुं० [सं० वैदूर्य, मि० फा० बिल्लूर] १. एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पारदर्शक पत्थर। स्फटिक। २. बहुत स्वच्छ शीशा।

विल्लौरी–वि० [हिं० बिल्लौर] बिल्लौर का।

विवरना–क्रि० अ० दे "ब्योरना"।

विवराना–क्रि० स० [हिं० बिवरना का प्रे०] १. बालों को खुलवा कर सुलझवाना। २. बाल सुलझाना।

विसंच–संज्ञा पुं० [सं० वि+सचय] १. संचय का अभाव। वस्तुओं की सँभाल न रखना। बेपरवाई। २. कार्य की हानि। बाधा। ३. भय। डर।

विसंभर†–संज्ञा पु० दे० "विश्वंभर"।

†–वि [सं० उप० वि० + हिं० सँभार] १. ठीक और व्यवस्थित न रख सके। २. बेखबर। असावधान।

विसँभार†–वि० [सं० उप० वि+हिं०सँभार] जिसे तन-बदन की खबर न हो। बेखबर।

विस–संज्ञा पु० दे० "विष"।

विसखपरा–संज्ञा पुं० [सं० विष+खर्पर] १. गोह की जाति का एक विषैला सरीसृप जंतु। २. एक प्रकार की जंगली बूटी।

विसतरना–क्रि० अ० [सं० विस्तरण] विस्तार करना। बढ़ाना। फैलाना।

विसद–वि० दे० "विशद"।

विसन–संज्ञा पु० दे० "व्यसन"।

विसनी–वि० [सं० व्यसन] १. जिसे किसी बात का व्यसन या शौक हो। शौकीन। २. छैला। चिकनिया। शौकीन।

विसमउ†–संज्ञा पुं० दे० "विस्मय"।

विसमरना–क्रि० स० [सं० विस्मरण] भूल जाना।

विसमिल–वि० [फा० बिस्मिल] घायल।

विसयक†–संज्ञा पु० [सं० विषय] १. देश। प्रदेश। २. रियासत।

विसरना–क्रि० स० [सं० विस्मरण] भूलना।

विसरात†–संज्ञा पुं० [सं० वेसरः] खच्चर।

विसराना–क्रि० स० [हिं० बिसरना] भुलाना। विस्मृत करना। ध्यान में न रखना।

विसराम–संज्ञा पुं० दे० "विश्राम"।

विसरावना†–क्रि० स० दे० "बिसराना"।

विसवास–संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।

विसवासिनी–वि० स्त्री० [सं० विश्वासिन्] १. विश्वास करनेवाली। २. जिस पर विश्वास हो। –वि० स्त्री० [सं० अविश्वासिन्] १. जिस पर विश्वास न हो। २. विश्वासघातिनी।

विसवासी–वि० [सं० विश्वासिन्] १. जो विश्वास करे। २. जिस पर विश्वास हो। वि० [सं० अविश्वासिन्] जिस पर विश्वास न किया जा सके। बेएतबार।

विससना–क्रि० स० [सं० विश्वसन] विश्वास करना। एतबार करना। क्रि० स० [सं० विशसन] १. वध करना। मारना। घात करना। २. शरीर काटना।

विसहना†–क्रि० स० [हिं० बिसाह] १. मोल लेना। खरीदना। २. जान बूझकर अपने साथ लगाना।

बिसहर—संज्ञा पुं० [सं० विषधर] सर्प।
बिसायँध—वि० [सं० वसा=चरबी+गंध] जिसमें सड़ी मछली की सी गंध हो। संज्ञा स्त्री० सड़े मांस की सी गंध।
बिसाख—संज्ञा स्त्री० दे० "विशाखा"।
बिसात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हैसियत। समाई। वित्त। औक़ात। २. जमा। पूँजी। ३. सामर्थ्य। हक़ीक़त। स्थिति। ४. शतरंज या चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा जिस पर खाने बने होते हैं।
बिसाती—संज्ञा पुं० [अ०] सूई, तागा, चूड़ी, खिलौने इत्यादि वस्तुओं का बेचनेवाला।
बिसाना—क्रि० अ० [सं० वश] वश चलना। बल चलना। क़ाबू चलना। †क्रि० अ० [हिं० विष+ना (प्रत्य०)] विष का प्रभाव करना। ज़हर का असर करना।
बिसारद—संज्ञा पुं० दे० "विशारद"।
बिसारना—क्रि० स० [हिं० बिसरना] भुलाना। स्मरण न रखना। ध्यान में न रखना।
बिसारा—वि० [सं० विषालु] [स्त्री० बिसारी] विष भरा। विषाक्त। विषैला।
बिसास—संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।
बिसासिन—संज्ञा स्त्री० [सं० अविश्वासिनी] (स्त्री) जिस पर विश्वास न किया जा सके।
बिसासी—वि० [सं० अविश्वासी] [स्त्री० बिसासिन] जिस पर विश्वास न किया जा सके। दग़ाबाज़। छली। कपटी।
बिसाहना—क्रि० स० [हिं० बिसाह+ना (प्रत्य०)] १. ख़रीदना। मोल लेना। २. जान बूझकर अपने पीछे लगाना। संज्ञा पुं० १. काम की चीज जिसे ख़रीदें। सौदा। २. मोल लेने की क्रिया। ख़रीद।
बिसाहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिसाहना] सौदा। वह वस्तु जो मोल ली जाय।
बिसाहा—संज्ञा पुं० दे० "बिसाहनी"।
बिसिख—संज्ञा पुं० दे० "विशिख"।
बिसियर—वि० [सं० विषधर] विषैला।
बिसूरना—क्रि० अ० [सं० विसूरण=शोक] खेद करना। मन में दुःख मानना। संज्ञा स्त्री० चिंता। फ़िक्र। सोच।
बिसेस—वि० दे० "विशेष"।
बिसेखना—क्रि० अ० [सं० विशेष] १. विशेष प्रकार से या ब्योरेवार वर्णन करना। २. निर्णय करना। निश्चित करना। ३. विशेष रूप से होना या प्रतीत होना।
बिसेन—संज्ञा पुं० [?] क्षत्रियों की एक शाखा।
बिसेसर‡—संज्ञा पुं० दे० "विश्वेश्वर"।
बिस्तर—संज्ञा पुं० [फा० सं० विस्तर] १. बिछौना। बिछावन। २. विस्तार। बढ़ाव।
बिस्तरना—क्रि० अ० [सं० विस्तरण] फैलना। इधर-उधर बढ़ना। क्रि० स० १. फैलाना। बढ़ाना। २. बढ़ाकर वर्णन करना।
बिस्तारना—क्रि० स० [सं० विस्तारण] विस्तार करना। फैलाना।
बिस्तुइया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० विष+तूना=टपकना] छिपकली। गृहगोधा।
बिस्वा—संज्ञा पुं० [हिं० बीसवाँ] एक बीघे का बीसवाँ भाग।
मुहा०—बीस बिस्वा=निश्चय। निस्संदेह।
बिस्वास—संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।
बिहग—संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।
बिहंडना—क्रि० स० [सं० विखण्डन, प्रा० विहंडन] १. खंड खंड कर डालना। तोड़ना। २. नष्ट कर देना। मार डालना।
बिहसना—क्रि० अ० [सं० विहसन] मुस्कराना।
बिहँसाना—क्रि० अ० [सं० विहसन] १. दे० "बिहँसना"। २. प्रफुल्लित होना। खिलना। (फूल का) क्रि० स० हँसाना। हर्षित करना।
बिहग—संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।
बिहद्द—वि० [फा० बेहद] असीम। परिमाण से बहुत। अधिक।
बिहवल—वि० [सं० विह्वल] व्याकुल।
बिहरना—क्रि० अ० [सं० विहरण] घूमना फिरना। सैर करना। भ्रमण करना। †क्रि० स० [सं० विघटन] १. फटना। विदीर्ण होना। २. टूटना फूटना।
बिहराना†—क्रि० अ० [हिं० बिहरना] फटना।
बिहाग—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का राग।
बिहान—संज्ञा पुं० [सं० विभात] १. सबेरा। २. आनेवाला दूसरा दिन। कल।
बिहाना—क्रि० स० [सं० वि०+हा=छोड़ना] छोड़ना। त्यागना। क्रि० अ० व्यतीत होना। गुज़रना। बीतना।
बिहारना—क्रि० अ० [सं० विहरण] विहार करना। केलि या क्रीड़ा करना।
बिहाल—वि० [फा० बेहाल] व्याकुल। बेचैन।

बिहिश्त–संज्ञा पुं० [फा०] स्वर्ग। बैकुंठ।
बिही–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक पेड़ जिसके फल अमरूद से मिलते जुलते होते हैं।
बिहीदाना–संज्ञा पुं० [फा०] बिही नामक फल का बीज जो दवा के काम में आता है।
बिहीन–वि० [सं० विहीन] रहित। बिना।
बिहून–वि० [हिं० विहीन] बिना। रहित।
बिहोरना–क्रि० अ० [हिं० बिहरना] बिछुड़ना।
बींड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० बींड़ी + आ (प्रत्य०)] १ टहनियों से बनाया हुआ लंबा नाल जो कच्चे कूएँ में इसलिये दिया जाता है कि उसका भगाड़ न गिरे। २. घास आदि को लपेटकर बनाई हुई गेंडुरी। ३ बाँस आदि को बाँधकर बनाया हुआ बोझ।
बींधना†–क्रि० अ० [सं० विद्ध] फँसना। क्रि० स० विद्ध करना। छेदना। बेधना।
बी–संज्ञा स्त्री० दे० "बीबी"।
बीका†–वि० [सं० वक्र] टेढ़ा।
बीख† –संज्ञा पुं० [सं० बीखा] कदम। डग।
बीग†–संज्ञा पुं० [सं० वृक] (स्त्री० बीगिन] भेड़िया।
बीगना†–क्रि० स० [सं० किरीरण] १. छाँटना। छितराना। २. गिराना। फेंकना।
बीघा†–संज्ञा पुं० [सं० विग्रह] खेत नापने का बीस बिस्वे का एक वर्ग मान।
बीच†–संज्ञा पुं० [सं० विच = अलग करना] १. किसी पदार्थ का मध्य भाग। मध्य।
मुहा०—बीच खेत = १. खुले मैदान। सबके सामने। २. अवश्य। जरूर। बीच बीच में = १. थोड़ी थोड़ी देर में। २. थोड़े थोड़े अंतर पर।
२. भेद। अंतर। फरक।
मुहा०—बीच करना=१. लड़नेवालों को लड़ने से रोकने के लिये अलग अलग करना। २. झगड़ा निबटाना। झगड़ा मिटाना। बीच पड़ना = १. झगड़ा निपटने के लिये पंच बनना। २. मध्यस्थ होना। बीच पारना या डालना। = १. परिवर्तन करना। २. विभेद या पार्थक्य करना। बीच में पड़ना = १. मध्यस्थ होना। २. जिम्मेदार बनना। प्रतिभू बनना। बीच रखना = दुराव रखना। पराया समझना। बीच में कूदना = अनावश्यक हस्तक्षेप करना। व्यर्थ टाँग अड़ाना। (ईश्वर आदि को) बीच में रखकर कहना = (ईश्वर आदि को) शपथ खाना। कसम खाना।
बीच का अंतर। अवकाश। ४. अवसर। मौका। अवकाश।
क्रि० वि० दरमियान। अंदर। में।
संज्ञा स्त्री० [सं० वीचि] लहर। तरंग।
बीचु †–संज्ञा पुं० [हिं० बीच] १. अवसर। मौका। २. अंतर। फरक।
बीचोंबीच–क्रि० वि० [हिं० बीच] बिलकुल बीच में। ठीक मध्य में।
बीछना†–क्रि० स० [सं० विच या विचयन] चुनना। पसंद करके छाँटना।
बीछी†–संज्ञा स्त्री० [सं० वृश्चिक] बिच्छू।
बीछू†–संज्ञा पुं० १. दे० "बिच्छू"। २. दे० "बिछुआ"। (हथियार)
बीज–संज्ञा पुं० [सं०] १ फूलवाले वृक्षों का गर्भांड जिससे वृक्ष अंकुरित होकर उत्पन्न होता है। बीया। तुख्म। दाना। २. प्रधान कारण। मूल प्रकृति। ३. जड़। मूल। ४ हेतु। कारण। ५ शुक्र। वीर्य्य। ६ कोई अव्यक्त सांकेतिक वर्ण, समुदाय या शब्द। ७ दे० "बीजगणित"। ८ अव्यक्त-संख्या सूचक संकेत। ९. वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमें तंत्रानुसार किसी देवता को प्रसन्न करने की शक्ति मानी गई हो।
संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।
बीजक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूची। फेहरिस्त। २. वह सूची जिसमें माल का ब्योरा, दर और मूल्य आदि लिखा हो। ३. वह सूची जो किसी गड़े हुए धन की, उसके साथ, रहती है। ४. बीज। ५. कबीरदास के पदों के तीन संग्रहों में से एक।
बीजगणित–संज्ञा पुं० [सं०] गणित का वह भेद जिसके अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मानकर निश्चित युक्तियों के द्वारा अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं।
बीजत्व–संज्ञा पुं० [सं०] बीज का भाव।
बीजदर्शक–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो नाटक के अभिनय की व्यवस्था करता हो।
बीजन†–संज्ञा पुं० [सं० व्यजन] बेना। पंखा।
बीजपूर, बीजपूरक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बिजौरा नीबू। २ चकोतरा।
बीजबंद–संज्ञा पुं० [हिं० बीज + बाँधना] खिरेंटी या बरियारे के बीज। बला।
बीजमंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देवता के उद्देश्य से निश्चित मूल-मंत्र। २. गुर।
बीजरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजा–वि० [सं० द्वितीय] दूसरा ।
बीजाक्षर–संज्ञा पुं० [सं०] किसी बीजमंत्र का पहला अक्षर ।
बीजी–संज्ञा स्त्री० [सं० बीज+ई (प्रत्य०)] १. गिरी । मींगी । २. गुठली ।
बीजु बीजुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली" ।
बीजू–वि० [हिं० बीज+ऊ (प्रत्य०)] जो बीज बोने से उत्पन्न हो । कलमी का उलटा ।
संज्ञा पुं० दे० "बिज्जु" ।
बीझना॰†–क्रि० अ० [सं० विद्ध] लिप्त होना । फँसना ।
बीझा॰†–वि० [सं० विजन] निर्जन । एकांत ।
बीट–संज्ञा स्त्री० [सं० विट्] पक्षियों की विष्ठा । चिड़ियों का गुह ।
बीड–संज्ञा स्त्री० [हिं० बीड़ा] एक के ऊपर एक रखे हुए रुपए जो साधारणतः गुल्ली का आकार धारण कर लेते हैं ।
बीड़ा–संज्ञा पुं० [सं० वीटक] पान की साढ़ी गिलौरी । खीली ।
मुहा०—बीड़ा उठाना = १. कोई काम करने का संकल्प करना या भार लेना । २ उद्यत होना ।
बीड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बीड़ा] १. दे० "बीड़ा" । २. गड्डी । दे० "बीड़" । ३. मिस्सी जिसे स्त्रियाँ दाँत रँगने के लिये मुँह में मलती हैं । ४ पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जिसे लोग सिगरेट या चुरट आदि की तरह में सुलगाकर पीते हैं ।
बीतना–क्रि० अ० [सं० व्यतीत] १. समय का विगत होना । वक्त कटना । गुजरना । २. दूर होना । जाता रहना । छूट जाना । ३ संघटित होना । घटना । पड़ना ।
बीथित॰†–वि० [सं० व्यथित] दुःखित ।
बीधना॰†–क्रि० अ० [सं० विद्ध] फँसना ।
क्रि० स० दे० "बींधना" ।
बीन–संज्ञा स्त्री० [सं० वीणा] सितार की तरह का पर उससे बड़ा एक प्रसिद्ध बाजा । वीणा ।
बीनना†–क्रि० स० [सं० विनयन] १ छोटी छोटी चीजों को उठाना । चुनना । २. छाँटकर अलग करना । छाँटना ।
क्रि० स० दे० "बींधना" ।
क्रि० स० दे० "बुनना" ।
बीफे–संज्ञा पुं० [सं० बृहस्पति] बृहस्पतिवार ।
बीबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कुलवधू । कुलीन स्त्री । २ पत्नी । स्त्री ।
बीभत्स–वि० [सं०] १. जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो । घृणित । २. क्रूर । ३. पापी ।
संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों के अंतर्गत सातवाँ रस । इसमें रक्त मांस आदि ऐसी बातों का वर्णन होता है जिनसे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है ।
बीमा–संज्ञा पुं० [फा० बीम = भय] १. किसी प्रकार की विशेषतः आर्थिक हानि पूरी करने की जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में की जाती है । २ वह पत्र या पारसल आदि जिसका इस प्रकार बीमा हुआ हो ।
बीमार–वि० [फा०] वह जिसे कोई बीमारी हुई हो । रोगग्रस्त । रोगी ।
बीमारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. रोग । व्याधि । २ झंझट । ३. बुरी आदत । (बोलचाल)
बीय॰†–वि० दे० "बीजा" ।
बीया–वि० [सं० द्वितीय] दूसरा ।
संज्ञा पुं० [सं० बीज] बीज । दाना ।
बीर–वि० दे० "वीर" ।
संज्ञा पुं० [सं० वीर] भाई । भ्राता ।
संज्ञा स्त्री० १ सखी । सहेली । २. कान का एक आभूषण । तरना । बीरी । ३ कलाई में पहनने का एक प्रकार का गहना । ४. पशुओं के चरने का स्थान । चरागाह ।
बीरउ †–संज्ञा पुं० दे० "बिरवा" ।
बीरज–संज्ञा पुं० दे० "वीर्य्य" ।
बीरन–संज्ञा पुं० [सं० वीर] भाई ।
बीरबहूटी–संज्ञा स्त्री० [सं० वीर+वधूटी] गहरे लाल रंग का एक छोटा रेंगनेवाला बरसाती कीड़ा । इंद्रवधू ।
बीरा॰–संज्ञा पुं० [हिं० बीड़ा] १ पान का बीड़ा । वि० दे० "बीड़ा" । २. वह फूल, फल आदि जो देवता के प्रसाद स्वरूप भक्तों आदि को मिलता है ।
बीरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० वीटि या हिं० बीड़ा] १ पान का बीड़ा । २. कान में पहनने का एक गहना । तरना ।
बीरो†–संज्ञा पुं० [हिं० बिरवा] वृक्ष । पेड़ ।
बीस–वि० [सं० विंशति] १ जो संख्या में उन्नीस से एक अधिक हो ।
मुहा०—बीस बिस्वे = अधिक संभवतः ।
२ श्रेष्ठ । अच्छा । उत्तम ।
संज्ञा स्त्री० बीस की संख्या या अंक—२० ।
बीसी–संज्ञा स्त्री० [illegible]

का समूह। कोड़ी। २. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से कोई विभाग।

बीह:—वि० [सं० विंशति] बीस।

बीहड़—वि० [सं० विकट] १. ऊँचा नीचा। विषम। ऊबड़ खाबड़। २. जो सरल या सम न हो। विकट।

वि० [सं० विलग] अलग। जुदा।

बुंद—संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद"।

बुंदकी—संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु + की (प्रत्य०)] १. छोटी गोल बिंदी। २. छोटा गोल दाग या धब्बा।

बुंदा—संज्ञा पुं० [सं० बिंदु] १. बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना। लोलक। २. माथे पर लगाने की टिकली।

बुँदिया—संज्ञा स्त्री० दे० "बूँदी"।

बुंदीदार—वि० [हिं० बूँदी + फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ हों।

बुँदेलखंड—संज्ञा पुं० [हिं० बुँदेला] संयुक्त प्रांत का वह अंश जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा के जिले पड़ते हैं।

बुँदेलखंडी—वि० [हिं० बुँदेलखंड + ई (प्रत्य०)] बुँदेलखंड-संबंधी। बुँदेलखंड का।

संज्ञा पुं० बुँदेलखंड का निवासी।

संज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा।

बुँदेला—संज्ञा पुं० [हिं० बूँद + एला (प्रत्य०)] १. क्षत्रियों का एक वंश जो गहरवार वंश की एक शाखा माना जाता है। २. बुँदेलखंड का निवासी।

[illegible]

बुक—संज्ञा स्त्री० [अं० बकरम] एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कपड़ा।

बुकचा—संज्ञा पुं० [तु० बुकचः] गठरी।

बुकची—संज्ञा स्त्री० [हिं० बुकचा + ई (प्रत्य०)] १. छोटी गठरी। २. दर्जियों की वह थैली जिसमें वे सूई, डोरा रखते हैं।

बुकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० बूकना + ई (प्रत्य०)] किसी चीज़ का महीन पीसा हुआ चूर्ण।

बुकुना—संज्ञा पुं० [हिं० बूकना] १. बुकनी। २. किसी प्रकार का पाचक। चूर्ण।

बुक्का—संज्ञा पुं० [हिं० बूकना-पीसना] चूर्ण पाचक या चूर्ण।

बुखार—संज्ञा पुं० [अ०] १. वाष्प। भाप। २. ज्वर। ताप। ३. शोक, क्रोध, दुःख आदि का आवेग।

बुज़दिल—वि० [फा०] कायर। डरपोक।

बुज़ुर्ग—वि० [फा०] वृद्ध। बड़ा।

संज्ञा पुं० बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा।

बुझना—क्रि० अ० [?] १. अग्नि या अग्निशिखा का शांत होना। २. तपी हुई या गरम चीज़ का पानी में पड़कर ठंढा होना। ३. पानी का किसी गरम या तपाई हुई चीज़ से छौंका जाना। ४. पानी पड़ने या मिलने के कारण ठंढा होना। ५. चित्त का आवेग या उत्साह आदि मंद पड़ना।

बुझाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० बुझाना + ई (प्रत्य०)] बुझाने की क्रिया या भाव।

बुझाना—क्रि० स० [हिं० बुझना का सक० रूप] १. जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना या अधिक जलने से रोक देना। अग्नि शांत करना। २. तपी हुई चीज़ को पानी में डालकर ठंढा करना।

मुहा०—ज़हर में बुझाना = छुरी, बरछी, तलवार आदि शस्त्रों के फलों को तपाकर किसी ज़हरीले तरल पदार्थ में बुझाना जिसमें वह फल भी ज़हरीला हो जाय।

३. पानी को छौंकना। ४. पानी डालकर ठंढा करना। ५. चित्त का आवेग या उत्साह आदि शांत करना।

क्रि० स० [हिं० बूझना का प्रे० रूप] १. बूझने का काम दूसरे से कराना। २. बोध कराना। समझाना। ३. संतोष देना।

बुटना†—संज्ञा स्त्री० दे० "बूटी"।

बुटना†—क्रि० अ० [?] भागना।

बुड़ना†—क्रि० अ० दे० "बूड़ना"।

बुड़बुड़ाना—क्रि० अ० [अनु०] मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ करना।

बुड़ाना†—क्रि० स० दे० "डुबाना"।

बुड्ढा—वि० [सं० वृद्ध] ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध।

बुढ़वा†—वि० दे० "बुड्ढा"।

बुढ़ाई—संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।

बुढ़ाना—क्रि० अ० [हिं० बूढ़ा + ना (प्रत्य०)] वृद्धावस्था को प्राप्त होना। बुड्ढा होना।

बुढ़ापा—संज्ञा पुं० [हिं० बूढ़ा + पा (प्रत्य०)]

वृद्धावस्था। बुड्ढे होने की अवस्था।

बुढ़ौती†–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "बुढ़ापा"।

बुत–संज्ञा पु॰ [फा॰ मि॰ सं॰ बुद्ध] १. मूर्त्ति। प्रतिमा। पुतला। २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रियतम।
वि॰ मूर्त्ति की तरह चुपचाप बैठा रहनेवाला।

बुतना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ "बुझना"।

बुतपरस्त–संज्ञा पुं॰ [फा॰] मूर्त्तिपूजक।

बुताना†–क्रि॰ अ॰ दे॰ "बुझना"।
क्रि॰ स॰ दे॰ "बुझाना"।

बुत्ता–संज्ञा पु॰ [देश॰] १. धोखा। झाँसा। पट्टी। २. बहाना। हीला।

बुदबुद–संज्ञा पु॰ [सं॰] बुलबुला। बुल्ला।

बुद्ध–वि॰ [सं॰] १. जो जागा हुआ हो। जागरित। २. ज्ञानवान्। ज्ञानी। ३. पंडित। विद्वान्।
संज्ञा पु॰ बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक एक बड़े महात्मा जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व शाक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी महामाया के गर्भ से नेपाल की तराई के लुंबिनी नामक स्थान में हुआ था।

बुद्धि–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. विवेक या निश्चय करने की शक्ति। अक्ल। समझ। २. उपजाति वृत्त का चौदहवाँ भेद। सिद्धि। ३. एक प्रकार का छंद। लक्ष्मी। ४. छप्पय का ४२ वाँ भेद।

बुद्धिपर–वि॰ [सं॰] जिस तक बुद्धि न पहुँच सके।

बुद्धिमत्ता–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] बुद्धिमान् होने का भाव। समझदारी। अक्लमंदी।

बुद्धिमान्–वि॰ [सं॰] वह जो बहुत समझदार हो। अक्लमंद।

बुद्धिमानी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "बुद्धिमत्ता"।

बुद्धिवत–वि॰ दे॰ "बुद्धिमान्"।

बुद्धिहीन–वि॰ [सं॰] मूर्ख। बेवकूफ़।

बुध–संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य्य के सबसे अधिक समीप रहता है। २. भारतीय ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रहों में से चौथा ग्रह। ३. देवता। ४. बुद्धिमान् अथवा विद्वान्।

बुधजामी–संज्ञा पु॰ [सं॰ बुध + हिं॰ जन्म] बुध के पिता, चंद्रमा।

बुधवान*†–वि॰ दे॰ "बुद्धिमान्"।

बुधवार–संज्ञा पु॰ [सं॰] सात वारों में से एक जो मंगलवार के बाद और बृहस्पतिवार से पहले पड़ता है।

बुधि*†–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "बुद्धि"।

बुनना–क्रि॰ स॰ [सं॰ वयन] १. जुलाहों की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं। बिनना। २. बहुत से सीधे और बेड़े सूतों को मिलाकर उनको कुछ के ऊपर और कुछ के नीचे से निकालकर कोई चीज़ बनाना।

बुनाई–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बुनना + ई (प्रत्य॰)] १. बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २. बुनने की मज़दूरी।

बुनावट–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बुनना + आवट] बुनने में सूतों की मिलावट का ढंग।

बुनियाद–संज्ञा स्त्री॰ [फा॰] १. जड़। मूल। नींव। २. असलियत। वास्तविकता।

बुबुकना–क्रि॰ अ॰ [अनु॰] ज़ोर ज़ोर से रोना। बुक्का फाड़ना। ढाड़ मारना।

बुबुकारी–संज्ञा स्त्री॰ [अनु॰ बुबुक + आरी (प्रत्य॰)] बुक्का फाड़कर रोना। ज़ोर ज़ोर से रोना।

बुभुक्षा–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] क्षुधा। भूख।

बुभुक्षित–वि॰ [सं॰] भूखा। क्षुधित।

बुयाम–संज्ञा पुं॰ [अं॰ ?] चीनी मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का गोल और ऊँचा बड़ा पात्र। जार।

बुरकना–क्रि॰ स॰ [अनु॰] पिसी हुई या महीन चीज़ को किसी दूसरी चीज़ पर छिड़कना। भुरभुराना।

बुरका–संज्ञा पुं॰ [अ॰] मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।

बुरा–वि॰ [सं॰ विरूप] जो अच्छा या उत्तम न हो। खराब। निकृष्ट। मंदा।
मुहा॰—बुरा मानना = द्वेष रखना। खार खाना।
यौ॰—बुरा भला = १. हानि लाभ। अच्छा और खराब। २. गाली गलौज। लानत मलामत।

बुराई–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बुरा + ई (प्रत्य॰)] १. बुरे होने का भाव। बुरापन। खराबी। २. खोटापन। नीचता। ३. अवगुण। दोष। दुर्गुण। ४. शिकायत। निंदा।

बुरादा–संज्ञा पुं॰ [फा॰] वह चूर्ण जो लकड़ी चीरने से निकलता है। कुनाई।

बुर्ज-संज्ञा पुं० [अ०] १. किले आदि की दीवारों में बना हुआ गोल या पहलदार भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिये थोड़ा सा स्थान होता है। गरगज। २. मीनार का ऊपरी भाग अथवा उसके आकार का इमारत का कोई अंग। ३. गुंबद।

बुर्द-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. ऊपरी आमदनी। ऊपरी लाभ। नफा। २. शर्त। होड़। बाजी। ३ शतरंज के खेल में वह अवस्था जब सब मोहरे मर जाते हैं और केवल बादशाह रह जाता है।

बुलंद-वि० [फा० बलंद] [संज्ञा बुलंदी] १. भारी। उत्तम। २. बहुत ऊँचा।

बुलबुल-संज्ञा स्त्री० [अ० फा०] एक प्रसिद्ध गानेवाली काली छोटी चिड़िया।

बुलबुला-संज्ञा पुं० [सं० बुद्बुद] पानी का बुला। बुदबुदा।

बुलवाना-क्रि० स० [हिं० बुलाना का प्रे० रूप] बुलाने का काम दूसरे से कराना।

बुलाक-संज्ञा पुं० स्त्री० [तु०] वह लंबोतरा या सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं।

बुलाकी-संज्ञा पुं० [तु० बुलाक] घोड़े की एक जाति।

बुलाना-क्रि० स० [हिं० बोलना का सक० रूप] १. आवाज देना। पुकारना। २. अपने पास आने के लिये कहना। ३. किसी को बोलने में प्रवृत्त करना।

बुलावा-संज्ञा पुं० [हिं० बुलाना + आवा (प्रत्य०)] बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

बुलाह-संज्ञा पुं० [सं० वोल्लाह] वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूँछ के बाल पीले हों।

बुल्ला-संज्ञा पुं० दे० "बुलबुला"।

बुहारना-क्रि० स० [सं० बहुकर + ना (प्रत्य०)] झाड़ू से जगह साफ़ करना। झाड़ना।

बुहारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बुहारना + ई (प्रत्य०)] झाड़ू। बढ़नी। सोहनी।

बूँद-संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु] १. जल आदि का वह बहुत ही थोड़ा अंश जो गिरने आदि के समय प्रायः छोटी सी गोली का रूप धारण कर लेता है। कतरा। टोप। मुहा०—बूँदें गिरना या पड़ना = धीमी वर्षा होना। वीर्य। ३. एक प्रकार का कपड़ा।

बूँदाबाँदी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बूँद + अनु० बाँद] हलकी या थोड़ी वर्षा।

बूँदी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बूँद + ई (प्रत्य०)] १. एक प्रकार की मिठाई। बुँदिया। २. वर्षा के जल की बूँद।

बू-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बास। गंध। महक। २. दुर्गंध। बदबू।

बूआ-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पिता की बहन। फूफी। २. बड़ी बहन।
संज्ञा पुं० [हिं० बकोया] चंगुल। बकोटा।

बूकना-क्रि० स० [देश०] १. महीन पीसना। पीसकर चूर्ण करना। २ गढ़कर बातें करना। जैसे, अँगरेजी बूकना।

बूचड़-संज्ञा पुं० [अं० बुचर] कसाई।

बूचड़खाना-संज्ञा पुं० [हिं० बूचड़ + फा० खाना] वह स्थान जहाँ पशुओं की हत्या होती है। कसाई-बाड़ा।

बूचा-वि० [सं० बुस = विभाग करना] १. जिसके कान कटे हुए हों। कनकटा। २. जिसके ऐसे अंग कट गए हों अथवा न हों, जिनके कारण वह कुरूप जान पड़ता हो।

बूजना-क्रि० स० [?] धोखा देना।

बूझ-संज्ञा स्त्री० [सं० बुद्धि] १. समझ। बुद्धि। अक्ल। ज्ञान। २. पहेली।

बूझन†-संज्ञा स्त्री० दे० "बूझ"।

बूझना-क्रि० स० [हिं० बूझ (बुद्धि)] १ समझना। जानना। २ पूछना।

बूट-संज्ञा पुं० [सं० विटप, हिं० बूटा] १. चने का हरा पौधा। २. चने का हरा दाना। ३. बूटा। पेड़। पौधा।

बूटनि†-संज्ञा स्त्री० [हिं० बहूटी] वीरबहूटी नाम का कीड़ा।

बूटा-संज्ञा पुं० [सं० विटप] १. छोटा वृक्ष। पौधा। २. फूलों या वृक्षों आदि के आकार के चिह्न जो कपड़ों या दीवारों आदि पर बनाए जाते हैं। बड़ी बूटी।

बूटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बूटा का स्त्री० रूप] १. वनस्पति। वनौषधि। जड़ी। २. भाँग। भंग। ३. फूलों के छोटे चिह्न जो कपड़ों आदि पर बनाए जाते हैं। छोटा बूटा। ४. खेलने के ताश के पत्तों पर बनी हुई टिकी।

बूड़ना†-क्रि० स० [सं० बुड = डूबना] १. डूबना। निमज्जित होना। २. लीन होना। निमग्न होना।

बूड़ा†-संज्ञा पुं० [हिं० डूबना] वर्षा आदि के कारण होनेवाली जल की बाढ़।
बूढ़†-वि० दे० "बुड्ढा"।
संज्ञा पुं०[?] १. लाल रङ्ग। २. बीरबहूटी।
बूढ़ा-संज्ञा पुं० दे० "बुड्ढा"।
बूता-संज्ञा पुं० [हिं० वित्त] बल। शक्ति।
बूरना:†-क्रि० अ० दे० "डूबना"।
बूरा-संज्ञा पुं० [हिं० भूरा] १. कच्ची चीनी जो भूरे रंग की होती है। शक्कर। २. साफ़ की हुई चीनी। ३. सफूफ।
बृच्छ:†-संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।
बृहती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कटाई। बरहटा। वनभंटा। २. विश्वावसु गंधर्व की वीणा का नाम। ३. उत्तरीय वस्त्र। उपरना। ४. नौ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
बृहत्-वि० [सं०] १. बहुत बड़ा। विशाल। २. दृढ़। बलिष्ठ। ३. उच्च। ऊँचा। (स्वर आदि)
बृहदारण्यक-संज्ञा पुं० [सं०] शतपथ ब्राह्मण का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।
बृहद्-वि० दे० "बृहत्"।
बृहद्रथ-संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. शतधन्वा के पुत्र का नाम। ३. जरासंध के पिता का नाम।
बृहन्नल-संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्जुन का एक नाम। २. बाहु।
बृहन्नला-संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्जुन का उस समय का नाम जिस समय वे अज्ञातवास में स्त्री के वेश में रहकर राजा विराट की कन्या को नाच गाना सिखाते थे।
बृहस्पति-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अंगिरस के पुत्र और देवताओं के गुरु माने जाते हैं। २ सौर जगत् का पाँचवाँ ग्रह।
बेँग-संज्ञा पुं० [सं० भेक] मेंढक।
बेँट, बेँठ-संज्ञा स्त्री० [देश०] औज़ारों में लगा हुआ काठ का दस्ता। मूठ।
बेँड़†-संज्ञा स्त्री० [हिं० बेड़ा] टेक। चाँड़।
बेँड़ा†-वि० [हिं० आड़ा] १. आड़ा। तिरछा। २. कठिन। मुश्किल। टेढ़ा।
बेँत-संज्ञा पुं० [सं० वेतस्] १. एक प्रसिद्ध लता जिसके डंठल से छड़ियाँ और टोकरियाँ आदि बनती हैं। २. बेंत के डंठल की बनी हुई छड़ी।
मुहा०—बेंत की तरह काँपना=थर थर काँपना। बहुत अधिक डरना।
बेँदा-संज्ञा पुं० [सं० बिंदु] १ माथे पर लगाने का गोल तिलक। टीका। २. एक आभूषण। बंदी। बिंदी। ३ बड़ी गोल टिकली।
बेँदी-संज्ञा स्त्री० [सं० बिंदु, हिं० बिंदी] १ टिकली। बिंदी। २. शून्य। सुन्ना। ३. दावनी या बेंदी नाम का गहना।
बेँवड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० बेंड़ा=आड़ा] बंद किवाड़े के पीछे लगाने की लकड़ी। अरगल। गज। ब्योंड़ा।
बे-अव्य० [फा० बे मि० सं० वि] बिना। बगैर। जैसे, बेगैरत, बेइज़्ज़त।
अव्य० [हिं० हे] छोटों के लिये संबोधन।
बेअंत:†-क्रि० वि० [हिं० बे+सं० अंत] जिसका कोई अंत न हो। अनंत। बेहद।
बेअकल-वि० [फा० बे+अ० अक्ल] मूर्ख।
बेअदब-वि० [फा० बे+अ० अदब] [संज्ञा बेअदबी] जो बड़ों का आदर-सम्मान न करे।
बेआब-वि० [फा० बे+अ० आब] १. जिसमें आब (चमक) न हो। २. तुच्छ।
बेआबरू-वि० [फा०] बेइज़्ज़त।
बेइज़्ज़त-वि० [फा० बे+अ० इज़्ज़त] [संज्ञा बेइज़्ज़ती] १. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। अप्रतिष्ठित। २. अपमानित।
बेइलि†-संज्ञा पुं० दे० "बेला"।
बेईमान-वि० [फा०] [संज्ञा बेईमानी] १. जिसे धर्म्म का विचार न हो। अधर्म्मी। २ जो अन्याय, कपट या और किसी प्रकार का अनाचर करता हो।
बेउज़्र-वि०[फा० बे+अ० उज़्र] जो आज्ञा पालन करने में कोई आपत्ति न करे।
बेक़दर-वि० [फा०] बेइज़्ज़त। अप्रतिष्ठित।
बेक़रार-वि० [फा०] [संज्ञा बेक़रारी] जिसे शांति या चैन न हो। व्याकुल। विकल।
बेकल †-वि० [सं० विकल] व्याकुल।
बेकली-संज्ञा स्त्री० [हिं० बेकल+ई (प्रत्य०)] घबराहट। बेचैनी। व्याकुलता।
बेक़सूर-वि० [फा० बे+अ० क़सूर] जिसका कोई दोष या कसूर न हो। निरपराध।
बेकहा-वि० [हिं० बे+कहना] जो किसी का कहना न माने।
बेक़ाबू-वि० [फा० बे+अ० क़ाबू] १.

विवश। लाचार। २. जो किसी के वश में न हो।
बेकाम–वि० [हिं० बे+काम] १. जिसे कोई काम न हो। निकम्मा। निठल्ला। २. जो किसी काम में न आ सके।
बेकायदा–वि० [फा० बे+अ० कायदा] कायदे के खिलाफ़। नियमविरुद्ध।
बेकार–वि० [फा०] [संज्ञा बेकारी] १. निकम्मा। निठल्ला। २. निरर्थक। व्यर्थ।
बेकारी०†–संज्ञा पु० [हिं० बिकारी] बुलाने का शब्द। जैसे, अरे, हो आदि।
बेकुसूर–वि० [फा० बे+अ० क़ुसूर] जिसका कोई कुसूर न हो। निरपराध।
बेख०†–संज्ञा पु० [सं० वेष] १. भेस। स्वरूप। २. सर्वांग। नक़ल।
बेखटके–क्रि० वि० [हिं० बे+हिं० खटका] बिना किसी प्रकार की रुकावट या असमंजस के। निस्संकोच।
बेख़बर–वि० [फा०] १. अनजान। नावाक़िफ़। २. बेहोश। बेसुध।
बेग–संज्ञा पु० दे० "वेग"।
बेगम–संज्ञा स्त्री० [तु० बेग का स्त्री०] रानी। रानी। राजपत्नी।
बेगरज़–वि० [फा० बे+अ० ग़रज़] जिसे कोई गरज़ या परवा न हो।
बेगवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्द्ध वृत्त।
बेगाना–वि० [फा०] १. ग़ैर। दूसरा। पराया। २. नावाक़िफ़। अनजान।
बेगार–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. बिना मज़दूरी का ज़बरदस्ती लिया हुआ काम। २. वह काम जो चित्त लगाकर न किया जाय।
मुहा०—बेगार टालना = बिना चित्त लगाए कोई काम करना।
बेगारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बेगार में काम करनेवाला आदमी।
बेगि०†–क्रि० वि० [सं० वेग] १. जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक। २. चटपट। तुरंत।
बेगुनाह–वि० [फा०] जिसने कोई गुनाह या अपराध न किया हो। बेकुसूर। निर्दोष।
बेचना–क्रि० स० [सं० विक्रय] मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना। विक्रय करना।
मुहा०—बेच खाना = खो देना। गँवा देना।
बेचानाo†–क्रि० स० दे० "बिकवाना"।
बेचारा–वि० [फा०] [स्त्री० बेचारी] दीन और ..। ग़रीब। दीन।
बेचैन–वि० [फा०] [संज्ञा बेचैनी] जिसे चैन न पड़ता हो। व्याकुल। विकल। बेकल।
बेजड़–वि० [फा० बे+हिं० जड़] जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो।
बेज़बान–वि० [फा०] १. जिसमें बातचीत करने की शक्ति न हो। गूँगा। मूक। २. दीन। ग़रीब।
बेजा–वि० [फा०] १. बेठिकाने। बेमौक़े। २. अनुचित। नामुनासिब। ३. ख़राब।
बेजान–वि० [फा०] १. मुरदा। मृतक। २. जिसमें कुछ भी दम न हो। ३. मुरझाया हुआ। कुम्हलाया हुआ। ४. निर्बल। कमज़ोर।
बेज़ाब्ता–वि० [फा० बे+अ० ज़ाब्ता] क़ानून या नियम आदि के विरुद्ध।
बेजोड़–वि० [फा० बे+हिं० जोड़] १. जिसमें जोड़ न हो। अखंड। २. जिसकी समता न हो सके। अद्वितीय। निरुपम।
बेझना–क्रि० स० दे० "बेधना"।
बेझा०†–संज्ञा पु० [सं० वेध] निशाना। लक्ष्य।
बेटकी०†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेटा] बेटी।
बेटला०†–संज्ञा पु० दे० "बेटा"।
बेटा–संज्ञा पु० [सं० बटु = बालक] [स्त्री० बेटी] पुत्र। सुत। लड़का।
बेठन–संज्ञा पु० [सं० वेष्टन] वह कपड़ा जो किसी चीज़ को लपेटने के काम में आवे। बँधना।
बेठिकाने–वि० [फा० बे+हिं० ठिकाना] १. जो अपने उचित स्थान पर न हो। स्थानच्युत। २. ऊल-जलूल। ३. व्यर्थ। निरर्थक।
बेड़–संज्ञा पु० [हिं० बाड़] वृक्ष के चारों ओर लगाई हुई बाड़। मेंड़।
बेड़ना–क्रि० स० दे० "बेढ़ना"।
बेड़ा–संज्ञा पु० [सं० वेष्ट] १. बड़े बड़े लट्ठों या तख़्तों आदि से बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते हैं। तिरना।
मुहा०—बेड़ा पार करना या लगाना = किसी को संकट से पार लगाना या छुड़ाना।
२. बहुत सी नावों आदि का समूह।
वि० [हिं० आड़ा का अनु०] १. जो आँखों के समानांतर दाहिने बाएँ गया हो। आड़ा। २. कठिन। मुश्किल। विकट।

बेड़िन, बेड़िनी–संज्ञा स्त्री० [?] नट जाति की वह स्त्री जो नाचती-गाती हो।
बेड़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० वलय] १. लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो कैदियों को इसलिये पहनाई जाती है, जिसमें वे भाग न सकें। निगड़। २. बाँस की एक प्रकार की टोकरी।
बेडौल–वि० [हिं० बे+डौल=रूप] १. जिसका डौल या रूप अच्छा न हो। भद्दा। २. दे० "बेढंगा"।
बेढंगा–वि० [हिं० बे+हिं०ढंग+आ (प्रत्य०)] [संज्ञा बेढंगापन] १. जिसका ढंग ठीक न हो। बुरे ढंगवाला। २. जो ठीक तरह से लगाया, रखा या सजाया न गया हो। बेतरतीब। ३. भद्दा। कुरूप।
बेढ़–संज्ञा पु० [?] नाश। बरबादी।
बेढ़ई–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेढ़ना] कचौड़ी।
बेढ़ना–क्रि० स० [सं० वेष्टन] १ वृक्षों या खेतों आदि को, उनकी रक्षा के लिये, चारों ओर से किसी प्रकार घेरना। रूँधना। २. चौपायों को घेरकर हाँक ले जाना।
बेढब–वि० [हिं० बे+ढब] १. जिसका ढब अच्छा न हो। २. बेढंगा। भद्दा। क्रि० वि० बुरी तरह से। बेतरह।
बेढ़ा–संज्ञा पु० [हिं०बेढ़ना=घेरना] १. हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा (गहना)। २. घर के आसपास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें तरकारियाँ आदि बोई जाती हों।
बेणीफूल–संज्ञा पु० [सं० वेणी+हिं० फूल] फूल के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना। सीसफूल।
बेतकल्लुफ–वि० [फा० बे+अ० तकल्लुफ़] [संज्ञा बेतकल्लुफी] १. जिसे तकल्लुफ़ की कोई परवा न हो। २. जो अपने हृदय की बात साफ़ साफ़ कह दे।
क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के तकल्लुफ के। २. बेधड़क। निस्संकोच।
बेतना–क्रि० अ० [सं० वेतन] जान पड़ना।
बेतमीज़–वि० [फा० बे+अ० तमीज़] जिसे शऊर या तमीज़ न हो। बेहूदा। उजड्ड।
बेतरह–क्रि० वि० [फा० बे+अ० तरह] १. बुरी तरह से। अनुचित रूप से। २. असाधारण रूप से।
वि० बहुत अधिक। बहुत ज़्यादा।
बेतरीका–वि०, क्रि०वि० [फा० बे+अ० तरीक़ा] तरीके या नियम के विरुद्ध। अनुचित।
बेतहाशा–क्रि० वि० [फा० बे+अ० तहाशा] १. बहुत अधिक तेज़ी से। २. बहुत घबराकर। ३. बिना सोचे समझे।
बेताब–वि० [फा०] [संज्ञा बेताबी] १. दुर्बल। कमजोर। २. विकल। व्याकुल।
बेतार–वि० [हिं० बे+तार] बिना तार का। जिसमें तार न हो।
यौ०—बेतार का तार=विद्युत् की सहायता से भेजा हुआ वह समाचार जो साधारण तार की सहायता के बिना ही भेजा गया हो।
बेताल–संज्ञा पु० दे० "वेताल"।
संज्ञा पु० [सं० वैतालिक] भाट। बंदी।
बेतुका–वि० [फा० बे+हिं० तुक्का] १. जिसमें सामंजस्य न हो। बेमेल। २. बेढंगा। बेढब।
बेतुका छंद–संज्ञा पु० [हिं० बेतुका+सं० छंद] ऐसा छंद जिसके तुकांत आपस में न मिलते हों। अमिताक्षर छंद।
बेदखल–वि० [फा०] जिसका दखल, कब्ज़ा या अधिकार न हो। अधिकार-च्युत।
बेदखली–संज्ञा स्त्री० [फा०] संपत्ति पर से दखल या कब्ज़े का हटाया जाना अथवा न होना।
बेदम–वि० [फा०] १. मृतक। मुरदा। २. मृतप्राय। अधमरा। ३ जर्जर। बोदा।
बेदमजनूँ–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का वृक्ष। इसकी छाल और फलों आदि का व्यवहार औषध में होता है।
बेदमुश्क–संज्ञा पुं० [फा०] एक वृक्ष जिसमें कोमल और सुगंधित फूल लगते हैं।
बेदर्द–वि० [फा०] [संज्ञा बेदर्दी] जो किसी की व्यथा को न समझे। कठोरहृदय।
बेदाग़–वि० [फा०] १. जिसमें कोई दाग़ या धब्बा न हो। साफ। २. निर्दोष। शुद्ध। ३. निरपराध। बेकसूर।
बेदाना–संज्ञा पु० [हिं० बिहीदाना] १. एक प्रकार का बढ़िया काबुली अनार। २. बिहीदाना नामक फल का बीज। दारुहलदी। चित्रा।
वि० [हिं० बे (प्रत्य०)+फा० दाना=बुद्धिमान्] मूर्ख। बेवकूफ।
बेधड़क–क्रि० वि० [फा० बे+हिं०] १. बिना किसी प्रकार के

निःसंकोच। २. बे-खौफ़। निडर होकर। ३. बिना आगा पीछा किए।
वि० १. जिसे किसी प्रकार का संकोच या खटका न हो। निर्द्वंद्व। २. निर्भय।

बेधना–क्रि० स० [सं० वेधन] नुकीली चीज़ की सहायता से छेद करना। छेदना। भेदना।

बेधर्म–वि० [सं० विधर्म] जिसे अपने धर्म का ध्यान न हो। धर्मच्युत।

बेधिया†–संज्ञा पुं० [हिं० बेधना] अंकुश।

बेधीर–वि० [फ़ा० बे+हिं० धीर] अधीर।

बेन†–संज्ञा पुं० [सं० वेणु] १. वंशी। मुरली। २. बाँसुरी। ३. सँपेरों के बजाने की तूमड़ी। महुवर। ४. बाँस।

बेनसीब–वि० [फा० बे+अ० नसीब] अभागा। बदकिस्मत।

बेना†–संज्ञा पुं० [सं० वेणु] १. बाँस का बना हुआ छोटा पंखा। २. खस। उशीर। ३. बाँस।

बेनिमून–वि० [फा० बे+नमूना] अद्वितीय। अनुपम।

बेनी–संज्ञा स्त्री० [सं० वेणी] १. स्त्रियों की चोटी। २. गंगा, सरस्वती और यमुना का संगम। त्रिवेणी। ३. किवाड़ों के पल्ले में लगी हुई एक छोटी लकड़ी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है।

बेनु–संज्ञा पुं० [सं० वेणु] १. दे० "बेनु"। २. वंसी। मुरली। ३. बाँस।

बेपरद–वि० [फा० बे+परदा] १. जिसके आगे कोई ओट न हो। अनावृत। २. नंगा। नग्न।

बेपरवा, बेपरवाह–वि० [फा० बेपरवाह] [संज्ञा बेपरवाही] १. जिसे कोई परवा न हो। बेफ़िक्र। २. मन-मौजी। ३. उदार।

बेपाइ†–वि० [हिं० बे+सं० उपाय] जिसे कोई उपाय न सूझे। भौचक। हक्का-बक्का।

बेपीर–वि० [फा० बे+हि० पीर=पीड़ा] १. दूसरों के कष्ट को कुछ न समझनेवाला। २. निर्दय। बेदर्द।

बेपेंदी–वि० [हिं० बे+पेंदा] जिसमें ... न हो।

मुहा०–बेपेंदी का ... करने पर ... बिच ...

बेफ़ायदा–वि०, क्रि० ... निरर्थक।

बेफ़िक्र–वि० [फा०] [संज्ञा बेफ़िक्री] जिसे कोई फ़िक्र न हो। निश्चिंत। बेपरवा।

बेबस–वि० [सं० विवश] [संज्ञा बेबसी] १. जिसका कुछ वश न चले। लाचार। २. पराधीन। परवश।

बेबाक़–वि० [फा०] चुकता किया हुआ। चुकाया हुआ। (ऋण)

बेब्याहा–वि० [फा० बे+हिं० ब्याह] [स्त्री० बेब्याही] अविवाहित। कुँआरा।

बेभाव–क्रि० वि० [फा० बे+हिं० भाव] जिसकी कोई गिनती न हो। बेहद।

बेमालूम–क्रि० वि० [फा०] बिना किसी को पता लगे।
वि० जो मालूम न पड़ता हो।

बेमुरव्वत–वि० [फा०] [संज्ञा बेमुरव्वती] जिसमें मुरव्वत न हो। तोता चश्म।

बेमौक़ा–वि० [फा०] जो अपने उपयुक्त अवसर पर न हो।
संज्ञा पुं० मौके का न होना।

बेर–संज्ञा पुं० [सं० बदरी] १. एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके कई भेद होते हैं। २. इस वृक्ष का फल।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बार] १. बार। दफ़ा। २. विलंब। देर।

बेरजरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेर+झड़ी] झड़बेरी।

बेरहम–वि० [फा० बेरहम] [संज्ञा बेरहमी] निर्दय। निठुर। दयाशून्य।

बेरा†–संज्ञा पुं० [सं० वेला] १. समय। वक़्त। २. तड़का। प्रातःकाल।

बेरियाँ†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेर] समय। वक़्त।

बेरी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "बेर"। २. दे० "बेड़ी"।

बेरुख़–वि० [फा०] [संज्ञा बेरुख़ी] १. जो समय पड़ने पर रुख़ (मुँह) फेर ले। बेमुरव्वत। २. नाराज़। क्रुद्ध।

बेलंद–वि० [फा० बलंद] १. ऊँचा। २. जो ... -मनोरथ हुआ हो।
... दे० "विलंब"।
... [हिं० ...] मँझोले आकार ... वृक्ष। इसमें गोल ...

मुहा०—बेल मँढे चढ़ना = किसी कार्य का अंत तक ठीक ठीक पूरा उतरना।
२ संतान। वंश। ३ कपड़े या दीवार आदि पर बनी हुई फूल पत्तियाँ आदि। ४ फीते आदि पर बनी हुई इसी प्रकार की फूल पत्तियाँ। ५ नाव खेने का डाँड़।
संज्ञा पुं० [फा० बेलन] १ एक प्रकार की कुदाली। २ सड़क आदि बनाने में सीमा निर्धारित करने के लिये चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीर।
⊙† संज्ञा पुं० बेले का फूल।

बेलचा–संज्ञा पुं० [फा०] कुदाल। कुदारी।

बेलदार–संज्ञा पुं० [फा०] वह मजदूर जो फावड़ा चलाने का काम करता हो।

बेलन–संज्ञा पुं० [सं० वलन] १ वह भारी, गोल और दंडक आकार का खंड जिसे लुढ़का कर किसी स्थान को समतल करते अथवा कंकड़ पत्थर आदि कूटकर सड़कें बनाते हैं। रोलर। २ किसी यंत्र आदि में लगा हुआ इस आकार का कोई बड़ा पुरजा। ३ कोल्हू का जाठ। ४ रूई धुनकने की मुठिया या हत्था। ५ दे० "बेलना"।

बेलना–संज्ञा पुं० [सं० वेलन] काठ का एक प्रकार का लंबा दस्ता जो रोटी, पूरी आदि की लोई बेलने के काम आता है।
क्रि० स० १ रोटी, पूरी आदि को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बढ़ाकर बड़ा और पतला करना। २ चौपट करना। नष्ट करना।
मुहा०—पापड़ बेलना = काम बिगाड़ना।
३ विनोद के लिये पानी के छींटे उड़ाना।

बेलपत्र–संज्ञा पुं० [सं० बिल्वपत्र] बेल के वृक्ष की पत्तियाँ जो शिवजी पर चढ़ाई जाती हैं।

बेलसना†–क्रि० अ० [सं० विलास + ना (प्रत्य०)] भोग करना। सुख लूटना।

बेलहरा†–संज्ञा पुं० [हिं० बेल = पान + हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० बेलहरी] लगे हुए पान रखने के लिये एक लंबोतरी पिटारी।

बेला–संज्ञा पुं० [सं० मल्लिका ?] चमेली आदि की जाति का एक छोटा पौधा जिसमें सुगंधित सफेद फूल लगते हैं।
संज्ञा पुं० [सं० वेला] १ लहर। २ चमड़े की एक प्रकार की छोटी कुप्पिया जिससे तेल दूसरे पात्र में भरते हैं। ३ कटोरा। ४ समुद्र का किनारा। ५ समय। वक्त।

बेलाग–वि० [फा० बे + हिं० लाग = लगावट] १ बिलकुल अलग। २ साफ। खरा।

बेली–संज्ञा पुं० [सं० बल] संगी। साथी।

बेलौस–वि० [हिं० बे + फा० लौस] १ सच्चा। खरा। २ बेमुरव्वत। (क्व०)

बेवकूफ–वि० [फा०] [संज्ञा बेवकूफी] मूर्ख। निर्बुद्धि। नासमझ।

बेवक्त–क्रि० वि० [फा०] कुसमय में।

बेवपार°†–संज्ञा पुं० दे० "व्यापार"।

बेवफा–वि० [फा० बे + अ० वफ़ा] [संज्ञा बेवफ़ाई] १ जो मित्रता आदि का निर्वाह न करे। २ बेमुरव्वत। दुःशील।

बेवरा°†–संज्ञा पुं० [हिं० ब्योरा] विवरण।

बेवरेवार–वि० [हिं० बेवरा + वार (प्रत्य०)] तफसीलवार। विवरण सहित।

बेवसाय†–संज्ञा पुं० दे० "व्यवसाय"।

बेवहरना⊙†–क्रि० अ० [सं० व्यवहार] व्यवहार करना। बरताव करना। बरतना।

बेवहरिया*†–संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार + इया (प्रत्य०)] लेन-देन करनेवाला। महाजन।

बेवा–संज्ञा स्त्री० [फा०] विधवा। राँड़।

बेवान †–संज्ञा पुं० दे० 'विमान'।

बेशक–क्रि० वि० [फा० बे + अ० शक] अवश्य। निःसंदेह। जरूर।

बेशरम–वि० [फा० बेशर्म] निर्लज्ज। बेहया।

बेशी–संज्ञा स्त्री० [फा०] अधिकता।

बेशुमार–वि० [फा०] अगणित। असंख्य।

बेश्म–संज्ञा पुं० [सं० वेश्म] घर। गृह।

बेसंदर †–संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर] अग्नि।

बेसँभर° †–वि० [फा० बे + हिं० सँभाल] बेहोश।

बेसन–संज्ञा पुं० [देश०] चने की दाल का आटा। रेहन।

बेसनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेसन] बेसन की बनी या भरी हुई पूरी।

बेसबरा–वि० [फा० बे + अ० सब्र] जिसे सब्र या संतोष न हो। अधीर।

बेसर–संज्ञा पुं० [?] १ खच्चर। २ नाक में पहनने की नथ।

बेसरा–वि० [फा० बे + सरा = ठहरने का स्थान] जिसे ठहरने का स्थान न हो। आश्रयहीन।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

बेसवा–संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] रंडी

बेसा †–संज्ञा स्त्री० [सं० वेश्या] रंडी । संज्ञा पुं० दे० "भेष" ।
बेसारा‡†–वि० [हिं० बैठाना] १. बैठानेवाला । २. रखने या जमानेवाला ।
बेसाहना†–क्रि० अ० [देश०] १. मोल लेना । खरीदना । २ जान बूझकर अपने पीछे लगाना । (झगड़ा, विरोध आदि)
बेसाहनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बेसाहना] मोल लेने की क्रिया ।
बेसाहा†–संज्ञा पुं० [हिं० बेसाहना] खरीदी हुई चीज़ । सौदा । सामग्री ।
बेसुध–वि० [हिं० बे + सुध = होश] १ अचेत । बेहोश । २ बेखबर । बदहवास ।
बेसुर, बेसुरा–वि० [हिं० बे + सुर = स्वर] १. जो अपने नियत स्वर से हटा हुआ हो । (संगीत) २. बेमौका ।
बेहंगम–वि० [सं० विहंगम] १. भद्दा । बेढंगा । २. बेढब । विकट ।
बेहँसना‡†–क्रि० अ० [हिं० हँसना] ठठाकर हँसना । ज़ोर से हँसना ।
बेह †–संज्ञा पुं० [सं० वेध] छेद । छिद्र ।
बेहड़–वि०, संज्ञा पुं० दे० "बीहड़" ।
बेहतर–वि० [फ़ा०] किसी के मुकाबले में अच्छा । किसी से बढ़कर ।
अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द । अच्छा ।
बेहतरी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बेहतर का भाव । अच्छापन । भलाई ।
बेहद–वि० [फ़ा०] १. असीम । अपरिमित । अपार । २ बहुत अधिक ।
बेहना†–संज्ञा पुं० [देश०] १. जुलाहों की एक जाति । २. धुनिया ।
बेहया–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेहयाई] जिसे हया या लज्जा आदि बिलकुल न हो । निर्लज्ज । बेशर्म ।
बेहर–वि० [देश०] १ अचर । स्थावर । २ अलग । पृथक् । जुदा ।
बेहरा–वि० [देश०] अलग । पृथक् । जुदा ।
बेहराना–क्रि० अ० [?] फटना ।
बेहरी†–संज्ञा स्त्री० [?] बहुत से लोगों से चंदे के रूप में माँगकर एकत्र किया हुआ धन ।
बेहला–संज्ञा पुं० [अ० वायोलिन] सारंगी के आकार का एक प्रकार का अँगरेजी बाजा ।
बेहाल–वि० [फ़ा० बे + अ० हाल] [संज्ञा बेहाली] व्याकुल । विकल । बेचैन ।
बेहिसाब–क्रि० वि० [फ़ा० बे + अ० हिसाब] बहुत अधिक । बहुत ज़्यादा । बेहद ।
बेहुनरा–वि० [हिं० बे + फ़ा० हुनर] जिसे कोई हुनर न आता हो । सूम ।
बेहूदा–वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेहूदगी] १ जो शिष्टता या सभ्यता न जानता हो । बदतमीज़ । २. अशिष्टतापूर्ण ।
बेहूदापन–संज्ञा पुं० [फ़ा० बेहूदा + पन (प्रत्य०)] बेहूदगी । अशिष्टता । असभ्यता ।
बेहून ‡–क्रि० वि० [सं० विहीन] बिना । बगैर ।
बेहैफ़–वि० [फ़ा०] बेफ़िक्र । चिंता रहित ।
बेहोश–वि० [फ़ा०] मूच्छित । बेसुध ।
बेहोशी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मूर्च्छा । अचेतनता ।
बैंगन–संज्ञा पुं० [सं० वंगण] एक वार्षिक पौधा जिसके फल की तरकारी बनाई जाती है । भंटा ।
बैंगनी बैंजनी–वि० [हिं० बैंगन] जो ललाई लिए नीले रंग का हो ।
बैंडा*–वि० दे० "बेंड़ा" ।
बै–संज्ञा स्त्री० [सं० वाय] १. बैसर । कंघी । (जुलाहे) २ दे० "वय" ।
संज्ञा स्त्री० [अ०] बेचना । बिक्री ।
बैकल†–वि० [सं० विकल] पागल । उन्मत्त ।
बैकुंठ–संज्ञा पुं० दे० "वैकुंठ" ।
बैजंती–संज्ञा स्त्री० [सं० वैजयंती] १. एक प्रकार का पौधा, जिसके फूल लंबे होते और गुच्छों में लगते हैं । २ विष्णु की माला ।
बैजनाथ–संज्ञा पुं० दे० "वैद्यनाथ" ।
बैजयंती–[सं० वैजयंती] बैजंती माला ।
बैठक–संज्ञा स्त्री० [हिं० बैठना] १ बैठने का स्थान । २. वह स्थान जहाँ बहुत से लोग आकर बैठा करते हों । चौपाल । अथाई । ३. बैठने का आसन । पीठ । ४ किसी मूर्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी । आधार । पदस्थल । ५ बैठाई । जमावड़ा । ६. अधिवेशन । सभासदों का एकत्र होना । ७ बैठने की क्रिया या ढंग । ८ साथ उठना बैठना । संग । मेल । ९. दे० "बैठकी" ।
बैठका–संज्ञा पुं० [हिं० बैठक] वह कमरा जहाँ लोग बैठते हों । बैठक ।
बैठकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बैठक + ई (प्रत्य०)] १ बार बार बैठने और उठने की कसरत ।

बैठक। २. आसन। आधार। ३. धातु आदि का दीवट।

बैठन–संज्ञा स्त्री० [हिं० बैठना] १. बैठने की क्रिया, भाव, ढंग या दशा। २. बैठक। आसन।

बैठना–क्रि० अ० [सं० वेशन] १. स्थित होना। आसीन होना। आसन जमाना। **मुहा०**—बैठे बैठाए = १. अकारण। निरर्थक। २. अचानक। एकाएक। बैठे बैठे = १. निष्प्रयोजन। २. अचानक। ३. अकारण। बैठते उठते = सदा। सब अवस्था में। हर दम। २. किसी स्थान या अवकाश में ठीक रूप से जमना। ३. कंडे पर आना। अभ्यस्त होना। ४. जल आदि में घुली हुई वस्तु का नीचे आधार में जा लगना। ५. दबना या डूबना। ६. पचक जाना। धँसना। ७. (कारबार) चलता न रहना। बिगड़ना। ८. तौल में ठहरना या पता पड़ना। ९. लागत लगना। खर्च होना। १०. लक्ष्य पर पड़ना। निशाने पर लगना। ११. पौधे का ज़मीन में गाड़ा जाना। लगना। १२. किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी के समान रहना। घर में पड़ना। १३. पक्षियों का अंडे सेना। १४. काम से खाली रहना। बेरोज़गार रहना।

बैठवाना–क्रि० स० [हिं० बैठाना का प्रेरणा०] बैठाने का काम दूसरे से कराना।

बैठाना–क्रि० स० [हिं० बैठना] १. स्थित करना। आसीन करना। उपविष्ट करना। २. आसन पर विराजने को कहना। ३. पद पर स्थापित करना। नियत करना। ४. ठीक जमाना। अड़ाना या टिकाना। ५. किसी काम को बार बार करके हाथ को अभ्यस्त करना। माँजना। ६. पानी आदि में घुली हुई वस्तु को तल में ले जाकर जमाना। ७. धँसाना या डुबाना। ८. पचकाना या धँसाना। ९. (कारबार) चलता न रहने देना। बिगाड़ना। १०. फेंक या चलाकर कोई चीज़ ठीक जगह पर पहुँचाना। लक्ष्य पर जमाना। ११. पौधे को पालने के लिये ज़मीन में गाड़ना। जमाना। १२. किसी स्त्री को पत्नी के रूप में रख लेना। घर में डालना।

बैठारना†–क्रि० स० दे० "बैठाना"।

बैड़ना†–क्रि० स० [हिं० बाड़, बेड़] बंद करना। घेरना। (पशुओं को)

बैत–संज्ञा स्त्री० [अ०] पद्य। श्लोक।

बैतरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "वैतरणी"।

बैताल–संज्ञा पुं० दे० "बेताल"।

बैद–संज्ञा पुं० [सं० वैद्य] [स्त्री० बैदिन] चिकित्सा-शास्त्र जाननेवाला पुरुष। वैद्य।

बैदगी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बैद] वैद्य की विद्या या व्यवसाय। वैद्य का काम।

बैदेही–संज्ञा स्त्री० दे० "वैदेही"।

बैन–संज्ञा पुं० [सं० वचन] वचन। बात। **मुहा०**—बैन करना = मुँह से बात निकलना।

बैना–संज्ञा पुं० [सं० वायन] वह मिठाई आदि जो विवाहादि में इष्ट मित्रों के यहाँ भेजी जाती है।

क्रि० स० [सं० वपन] बोना।

बैपार–संज्ञा पुं० [सं० व्यापार] व्यवसाय।

बैपारी–संज्ञा पुं० [सं० व्यापारी] रोज़गारी।

बैयर†–संज्ञा स्त्री० [सं० वधूवर] औरत। स्त्री।

बैया†–संज्ञा पुं० [सं० वाय] बै। बैसर।

बैर–संज्ञा पुं० [सं० वैर] १. शत्रुता। विरोध। अदावत। दुश्मनी। २. वैमनस्य। द्वेष। **मुहा०**—बैर काढ़ना या निकालना = बदला लेना। बैर ठानना = दुश्मनी मान लेना। दुर्भाव रखना आरंभ करना। बैर पड़ना = शत्रु होकर कष्ट पहुँचाना। बैर बिसाहना या मोल लेना = किसी से दुश्मनी पैदा करना। बैर लेना = बदला लेना। कसर निकालना।

† संज्ञा पुं० [सं० बदरी] बेर का फल।

बैरख–संज्ञा पुं० [तु० बैरक] सेना का झंडा। ध्वजा। पताका। निशान।

बैराग–संज्ञा पुं० दे० "वैराग्य"।

बैरागी–संज्ञा पुं० [सं० विरागी] [स्त्री० बैरागिन] वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद।

बैराना†–क्रि० अ० [हिं० बायु] बायु के प्रकोप से बिगड़ना।

बैरी–वि० [सं० वैरी] [स्त्री बैरिन] १. बैर रखनेवाला। शत्रु। दुश्मन। २. विरोधी।

बैल–संज्ञा पुं० [सं० बलद] [स्त्री० गाय] १. एक चौपाया जिसकी मादा को गाय कहते हैं। यह हल में जोता जाता, बोझ ढोता और गाड़ियों को खींचता है। २. मूर्ख।

बैसंदर–संज्ञा पुं० [सं० वैश्वानर] अग्नि।

बैस–संज्ञा स्त्री० [सं० वयस्] १. आयु। उम्र। २. यौवन। जवानी।

संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

टाट का बना हुआ थैला जिसमें अनाज आदि रखते हैं।
संज्ञा पुं० दे० "बोर"।

बोरिया–संज्ञा पुं० [फ़ा०] चटाई। बिस्तर।
मुहा०—बोरिया बधना उठाना = चलने की तैयारी करना। प्रस्थान करना।

बोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोरा] टाट की छोटी थैली। छोटा बोरा।

बोरो–संज्ञा पुं० [हिं० बोरना] एक प्रकार का मोटा धान।

बोल–संज्ञा पुं० [हिं० बोलना] १. वचन। वाणी। २. ताना। व्यंग्य। लगती हुई बात। ३. बाजों का बँधा या गठा हुआ शब्द। ४. कथन या प्रतिज्ञा।
मुहा०—(किसी का) बोल बाला रहना या होना = १. बात की साख बनी रहना। २. मान मर्यादा का बना रहना।
५. गीत का टुकड़ा। अंतरा।

बोल चाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोल + चाल] १. बातचीत। कथनोपकथन। २. मेल-लाप। परस्पर सद्भाव। ३. छेड़छाड़। ४. चलती भाषा। नित्य के व्यवहार की बोली।

बोलता–संज्ञा पुं० [हिं० बोलना] १ ज्ञान कराने और बोलनेवाला तत्त्व। आत्मा। २. जीवन तत्त्व। प्राण। ३. खूब बोलनेवाला। वाचाल।

बोलनहारा–संज्ञा पुं० [हिं० बोलना + हारा (प्रत्य०)] क्षुद्र आत्मा। बोलता।

बोलना–क्रि० अ० [सं० ब्रू, ब्रूते] १. मुँह से शब्द उच्चारण करना।
यौ०—बोलना चालना = बातचीत करना।
मुहा०—बोल जाना = १. मर जाना। (अशिष्ट) २. बाकी न रह जाना। चुक जाना। ३. व्यवहार के योग्य न रह जाना।
२. किसी चीज का आवाज़ निकालना।
क्रि० स० १. कुछ कहना। कथन करना। २. आज्ञा देकर कोई बात स्थिर करना। ठहराना। बदना। ३. रोक-टोक करना। ४ छेड़-छाड़ करना। ५† ५. आवाज़ देना। बुलाना। पुकारना। ६† ६. पास आने के लिये कहना या कहलाना।
मुहा०—बोलि पठाना = बुला भेजना।

बोलवाना–क्रि० स० दे० "बुलवाना"।

बोलसरी†–संज्ञा पुं० दे० "मौलसिरी"।
संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

बोलाचाली–संज्ञा स्त्री० दे० "बोलचाल"।

बोली–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोलना] १. मुँह से निकली हुई आवाज। वाणी। २. अर्थ-युक्त शब्द या वाक्य। वचन। बात। ३. नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का जोर से दाम कहना। ४. वह शब्द-समूह जिसका व्यवहार किसी प्रदेश के निवासी अपने विचार प्रकट करने के लिये करते हैं। भाषा। ५. हँसी दिल्लगी। ठठोली।
मुहा०—बोली छोड़ना, बोलना या मारना = किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग्य के शब्द कहना।

बोल्लाह–संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।

बोवना†–क्रि० स० दे० "बोना"।

बोवाना–क्रि० स० [हिं० बोना का प्रे०] बोने का काम दूसरे से कराना।

बोह–संज्ञा स्त्री० [हिं० बोर] डुबकी। गोता।

बोहनी–संज्ञा स्त्री० [सं० बोधन = जगाना] किसी सौदे या दिन की पहली बिक्री।

बोहित–संज्ञा पुं० [सं० वोहित्थ] बड़ी नाव।

बौंड़†–संज्ञा स्त्री० [सं० वोण्ट = टहनी] १. टहनी जो दूर तक गई हो। २. लता।

बौंड़ना†–क्रि० अ० [हिं० बौंड़] लता की तरह बढ़ना। टहनी फेंकना।

बौंडर†–संज्ञा पुं० दे० "बवंडर"।

बौंड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० बौंड़] १ पौधों या लताओं के कच्चे फल। ढेंडी। ढोंढ़। †२. फली। छीमी। ३. दमड़ी। छदाम।

बौआना†–क्रि० अ० [हिं० बाउ + आना (प्रत्य०)] १. स्वप्नावस्था का प्रलाप। २. पागल या बाई चढ़े मनुष्य की भाँति अट्ट-सट्ट बक उठना। बर्राना।

बौखल–वि० [हिं० बाउ] पागल।

बौखलाना–क्रि० अ० [हिं० बाउ + सं० स्खलन] कुछ कुछ सनक जाना।

बौछाड़–संज्ञा स्त्री० [सं० वायु + क्षरण] १. बूँदों की झड़ी जो हवा के झोंके के साथ कहीं जा पड़े। झटास। २. वर्षा की बूँदों के समान किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या में कहीं आकर पड़ना। ३. बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना। झड़ी। ४. किसी के प्रति कहे हुए वाक्यों का तार। ५. ताना। कटाक्ष। बोली-ठोली।

बौछार†–संज्ञा स्त्री० दे० "

बौड़हा-वि० दे० "बावला"।
बौद्ध-वि० [सं०] बुद्ध द्वारा प्रचारित। संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का अनुयायी।
बौद्ध धर्म-संज्ञा पुं० [सं०] बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म। गौतम बुद्ध का चलाया मत। इसकी दो प्रधान शाखाएँ हैं—हीनयान और महायान।
बौना-संज्ञा पुं० [सं० वामन] [स्त्री० बौनी] अत्यंत ठिंगना या नाटा मनुष्य।
बौर†-संज्ञा पुं० [सं० मुकुल] आम की मंजरी। मौर।
बौरना-क्रि० अ० [हिं० बौर+ना (प्रत्य०)] आम के पेड़ में मंजरी निकलना। मौरना।
बौरहा†-वि० दे० "बावला"।
बौरा-वि० [सं० वातुल] [स्त्री० बौरी] १. बावला। पागल। २. नादान। मूर्ख।
बौराई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० बौरा+ई] पागलपन।
बौराना†-क्रि० अ० [हिं० बौरा+ना (प्रत्य०)] १. पागल हो जाना। सनक जाना। २. विवेक या बुद्धि से रहित हो जाना। क्रि० स० किसी को ऐसा कर देना कि वह भला बुरा न विचार सके।
बौरहा†-वि० [हिं० बौरा] बावला। पागल।
बौरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० बौरा] बावली स्त्री।
बौलसिरी-संज्ञा स्त्री० दे० "मौलसिरी"।
ब्यतीतना†-क्रि० अ० [सं० व्यतीत+हिं० ना (प्रत्य०)] गुजर जाना। बीत जाना।
ब्यवहर†-संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] व्यापार।
ब्यवहरिया-संज्ञा पुं० [हिं० व्यवहार] रुपए का लेन देन करनेवाला। महाजन।
ब्यवहार-संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] १. दे० "व्यवहार"। २. रुपए का लेन देन। ३. रुपए के लेन देन का संबंध। ४. सुख दुःख में परस्पर सम्मिलित होने का संबंध।
ब्यवहारी-संज्ञा पुं० [सं० व्यवहारिन्] १. कार्यकर्त्ता। काम करनेवाला। २. लेन देन करनेवाला। व्यापारी।
ब्याज-संज्ञा पुं० [सं० व्याज] १. दे० "व्याज"। २. सूद। मूद।
ब्याना-क्रि० स० [सं० विजन+ना (प्रत्य०)] जनना। उत्पन्न करना। गर्भ से निकालना।
ब्यापना†-क्रि० अ० [सं० व्यापन] १. किसी वस्तु या स्थान में इस प्रकार फैलना कि उसका कोई अंश बाकी न रह जाय। ओतप्रोत होना। २. चारों ओर जाना। फैलना। ३. घेरना। ग्रसना। ४. प्रभाव करना।
ब्यारी-संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"।
ब्याल-संज्ञा पुं० दे० "व्याल"।
ब्याली-संज्ञा स्त्री० [सं० व्याल] सर्पिणी। वि० [सं० व्यालिन्] सर्प धारण करनेवाला।
ब्यालू-संज्ञा पुं० [सं० विहार ?] रात का भोजन। ब्यारी।
ब्याह-संज्ञा पुं० [सं० विवाह] वह रीति या रस्म जिससे स्त्री और पुरुष में पति-पत्नी का संबंध स्थापित होता है। विवाह। परिणय। दारपरिग्रह। पाणिग्रहण।
ब्याहता-वि० [सं० विवाहित] जिसके साथ विवाह हुआ हो।
ब्याहना-क्रि० स० [सं० विवाह+ना (प्रत्य०)] [वि० ब्याहता] १. देश, काल और जाति की रीति के अनुसार पुरुष का किसी स्त्री को अपनी पत्नी या स्त्री का किसी पुरुष को अपना पति बनाना। २. किसी का किसी के साथ विवाह-संबंध कर देना।
ब्याहुला†-वि० [हिं० ब्याह] विवाह का।
ब्योंचना-क्रि० अ० [सं० विकुंचन] एक बारगी झोंके के साथ मुड़ जाने या टेढ़े हो जाने से नसों का स्थान से हट जाना, जिससे पीड़ा और सूजन होती है। मुरकना।
ब्योंत-संज्ञा स्त्री० [सं० व्यवस्था] १. व्यवस्था। आयोजना। सामान। २. ढब। तरीका। साधन-प्रणाली। ३. युक्ति। उपाय। ४. आयोजन। उपक्रम। तैयारी। ५. संयोग। अवसर। मौका। ६. प्रबंध। इंतजाम। व्यवस्था। ७. काम पूरा उतारने का हिसाब किताब। ८. साधन या सामग्री आदि की सीमा। समाई। ९. पहनावा बनाने के लिये कपड़े की काट छाँट। तराश। कता।
ब्योंतना-क्रि० स० [हिं० ब्योंत] कोई पहनावा बनाने के लिये कपड़े को नापकर काटना छाँटना।
ब्योंताना-क्रि० स० [हिं० ब्योंतना का प्रे०] शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटाना।
ब्योपार-संज्ञा पुं० दे० "व्यापार"।
ब्योरन-संज्ञा स्त्री० [हिं० ब्योरना] बालों को सँवारने की क्रिया या ढंग।

ब्योरना–क्रि० स० [सं० विवरण] गुथे या उलझे हुए बालों आदि को सुलझाना।

ब्योरा–संज्ञा पुं० [हिं० ब्योरना] १ किसी घटना के अंतर्गत एक एक बात का उल्लेख या कथन। विवरण। तफ़्सील।

यौ०—ब्योरेवार = विस्तार के साथ।

२. किसी एक विषय के भीतर की सारी बात। ३. वृत्त। वृत्तांत। हाल। समाचार। ४. अंतर। भेद। फ़र्क़।

ब्योहर–संज्ञा पुं० [हिं० व्यवहार] लेन देन या व्यापार। रुपया ऋण देना।

ब्योहरिया–संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] सूद पर रुपए के लेन-देन का व्यापार करनेवाला।

ब्योहार–संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार"।

ब्रज–संज्ञा पुं० दे० "व्रज"।

ब्रजना–क्रि० अ० [सं० व्रजन] चलना।

ब्रह्मंड–संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।

ब्रह्म–संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मन्] १. एक मात्र नित्य चेतन सत्ता जो जगत् का कारण और सत्, चित्, आनंद-स्वरूप है। २ ईश्वर। परमात्मा। ३ आत्मा। चैतन्य। ४. ब्राह्मण (विशेषतः समस्त पदों में)। ५. ब्रह्मा (समास में)। ६. ब्राह्मण जो मरकर प्रेत हुआ हो। ब्रह्मराक्षस। ७. वेद। ८. एक की संख्या।

ब्रह्मगाँठ–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मग्रंथि"।

ब्रह्मग्रंथि–संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञोपवीत या जनेऊ की मुख्य गाँठ।

ब्रह्मघोष–संज्ञा पुं० [सं०] वेदध्वनि।

ब्रह्मचर्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. योग में एक प्रकार का यम। वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध। २ चार आश्रमों में पहला आश्रम, जिसमें पुरुष को स्त्री-संभोग आदि व्यसनों से दूर रहकर केवल अध्ययन में लगा रहना चाहिए।

ब्रह्मचारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री। २. दुर्गा। पार्वती। ३ सरस्वती।

ब्रह्मचारी–संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मचारिन्] [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] १. ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करनेवाला। २. ब्रह्मचर्य आश्रम के अंतर्गत व्यक्ति। प्रथमाश्रमी।

ब्रह्मज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म, पारमार्थिक सत्ता या अद्वैत सिद्धांत का बोध।

ब्रह्मज्ञानी–वि० [सं० ब्रह्मज्ञानिन्] परमार्थ तत्त्व का बोध रखनेवाला। अद्वैतवादी।

ब्रह्मण्य–वि० [सं०] १. ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखनेवाला। २. ब्रह्म या ब्रह्मा-संबंधी।

ब्रह्मत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म का भाव। २. ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मदिन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा का एक दिन जो १००० चतुर्युगियों का माना जाता है।

ब्रह्मदोष–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ब्रह्मदोषी] ब्राह्मण को मारने का दोष या पाप।

ब्रह्मद्रोही–वि० [सं०] ब्राह्मणों से बैर रखनेवाला।

ब्रह्मद्वार–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मरंध्र।

ब्रह्मनिष्ठ–वि० [सं०] १. ब्राह्मण-भक्त। २. ब्रह्मज्ञान में रत।

ब्रह्मपद–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मत्व। २. ब्राह्मणत्व। ३ मोक्ष। मुक्ति।

ब्रह्मपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा का पुत्र। २. नारद। ३ वशिष्ठ। ४. मनु। ५. मरीचि। ६. सनकादिक। ७ एक नद जो मानसरोवर से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरता है।

ब्रह्मपुराण–संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक। पुराणों में इसका नाम पहले आने से कुछ लोग इसे आदि पुराण भी कहते हैं।

ब्रह्मभट्ट–संज्ञा पुं० [सं०] १. वेदों का ज्ञाता। २. ब्रह्मविद्। ३. एक प्रकार के ब्राह्मण।

ब्रह्मभोज–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण भोजन।

ब्रह्ममुहूर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] प्रभात। तड़का।

ब्रह्मयज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] १. विधिपूर्वक वेदाभ्यास। २. वेदाध्ययन। वेद पढ़ाना।

ब्रह्मरंध्र–संज्ञा पुं० [सं०] मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद जिससे होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मराक्षस–संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो मरकर भूत हुआ हो।

ब्रह्मरात्रि–संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की होती है।

ब्रह्मरूपक–संज्ञा पुं० [सं०] १६ अक्षरों का एक छंद। चंचला। चित्र।

ब्रह्मरेख–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मलेख"।

ब्रह्मलोक–संज्ञा पुं० [सं०] भाग्य का लेख

जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं।

ब्रह्मर्षि–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण ऋषि।

ब्रह्मलोक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। २. मोक्ष का एक भेद।

ब्रह्मवाद–संज्ञा पुं० [सं०] १ वेद का पढ़ना पढ़ाना। वेदपाठ। २ अद्वैतवाद।

ब्रह्मवादी–वि० [सं० ब्रह्मवादिन्] [स्त्री० ब्रह्मवादिनी] वेदांती। अद्वैतवादी।

ब्रह्मविद्–वि० [सं०] १. ब्रह्म को जानने या समझनेवाला। २. वेदार्थज्ञाता।

ब्रह्मविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्म को जानने की विद्या। उपनिषद् विद्या।

ब्रह्मवैवर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह प्रतीति मात्र जो ब्रह्म के कारण हो, जैसे—जगत् की। २. ब्रह्म के कारण प्रतीत होनेवाला जगत्। ३ श्रीकृष्ण। ४. अठारह पुराणों में से एक पुराण जो कृष्ण-भक्ति संबंधी है।

ब्रह्मसमाज–संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्म समाज"।

ब्रह्मसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ जनेऊ। यज्ञोपवीत। २ व्यासकृत शारीरिक सूत्र।

ब्रह्महत्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मण-वध। ब्राह्मण को मार डालना। (महापाप)

ब्रह्मांड–संज्ञा पुं० [सं०] १. चौदहों भुवनों का समूह। संपूर्ण विश्व जिसके भीतर अनंत लोक हैं। २. खोपड़ी। कपाल।

ब्रह्मा–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से सृष्टि की रचना करनेवाला रूप। विधाता। पितामह। २. यज्ञ का एक ऋत्विक्।

ब्रह्माणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ब्रह्मा की स्त्री या शक्ति। २. सरस्वती।

ब्रह्मानंद–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव से होनेवाला आनंद।

ब्रह्मावर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।

ब्रह्मास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र जो मंत्र से चलाया जाता था।

ब्रात–संज्ञा पुं० दे० "व्रात्य"।

ब्राह्म–वि० [सं०] ब्रह्म संबंधी। संज्ञा पुं० विवाह का एक भेद।

ब्राह्मण–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ब्राह्मणी] १ चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति जिसके प्रधान कर्म पठन पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि हैं। २ उक्त जाति या वर्ण का मनुष्य। ३ वेद का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता। ४. विष्णु। ५. शिव।

ब्राह्मणत्व–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण का भाव, अधिकार या धर्म। ब्राह्मण पन।

ब्राह्मणभोजन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मणों का भोजन। ब्राह्मणों को खिलाना।

ब्राह्मण्य–संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्मणत्व"।

ब्राह्ममुहूर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय।

ब्राह्मसमाज–संज्ञा पुं० [सं०] एक नया संप्रदाय जिसमें एक मात्र ब्रह्म की ही उपासना की जाती है।

ब्राह्मी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. शिव की अष्टमातृकाओं में से एक। ३. भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं। ४. एक प्रसिद्ध बूटी जो स्मरण शक्ति और बुद्धि बढ़ानेवाली है।

ब्रीड़ना०–क्रि० अ० [सं० ब्रीडन] लज्जित होना। लजाना।

भ

भ–हिंदी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

भंकार०–संज्ञा पुं० [अनु०] विकट शब्द। ...पुं० [सं०] १. तरंग। लहर। २. पराजय। हार। ३. खंड। टुकड़ा। ४. भेद। ५. कुटिलता। टेढ़ापन। ६. भय। ७. टूटने का भाव। विनाश। विध्वंस। ८. बाधा। अड़चन। रोक। ९. टेढ़े होने या झुकने का भाव।

संज्ञा स्त्री० दे० "भाँग"।

भंगड़–वि० [हिं० भाँग + अड़ (प्रत्य०)] बहुत भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगना|–क्रि० अ० [हिं० भग] १. टूटना। २. दबना। हार मानना।
क्रि० स० १. तोड़ना। २. दबाना।

भँगरा–संज्ञा पुं० [हिं० भाँग + रा = का] भाँग के रेशे से बुना हुआ एक कपड़ा।
संज्ञा पुं० [सं० भृंगराज] एक प्रकार की वनस्पति जो औषध के काम में आती है। भँगरैया। भंगराज।

भंगराज–संज्ञा पुं० [सं० भृंगराज] १. काले रंग की एक चिड़िया। २. दे० "भँगरा"।

भंगरैया|–संज्ञा स्त्री० दे० "भँगरा"।

भँगार–संज्ञा पुं० [सं० भग] १. वह गड्ढा जिसमें वर्षा का पानी समाता है। २ वह गड्ढा जो कूआँ बनाते समय खोदते हैं।
संज्ञा पुं० [हिं० भाँग] घास-फूस। कूड़ा।

भंगी–संज्ञा पुं० [सं० भंगिन्] [स्त्री० भगिनी] १. भंगशील। नष्ट होनेवाला। २. भंग करनेवाला। भंगकारी।
संज्ञा पुं० [सं० भक्ति] [स्त्री० भंगिन्] एक अस्पृश्य जाति जिसका काम मलमूत्र आदि उठाना है।
वि० [हिं० भाँग] भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगुर–वि० [सं०] १. भंग होनेवाला। नाशवान्। २. कुटिल। टेढ़ा।

भँगेड़ी–वि० दे० "भंगड़"।

भंजक–वि० [सं०] [स्त्री० भंजिका] भंगकारी। तोड़नेवाला।

भंजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. तोड़ना। भंग करना। २. भंग। ध्वंस। ३. नाश।
वि० भंजक। तोड़नेवाला।

भँजना–क्रि० अ० [सं० भंजन] १. टुकड़े टुकड़े होना। टूटना। २. किसी बड़े सिक्के का छोटे छोटे सिक्कों से बदला जाना। भुनना।
क्रि० अ० [हिं० भाँजना] १. बटा जाना। २. कागज के तख्तों का कई परतों में मोड़ा जाना। भाँजा जाना।

भँजाना–क्रि० स० [सं० भंजन] तोड़ना।

भँजाना|–क्रि० स० [हिं० भँजना] १. भँजने का सकर्मक रूप। तुड़वाना। २. बड़ा सिक्का आदि देकर उतने ही मूल्य के छोटे सिक्के लेना। भुनाना।
क्रि० स० [हिं० भाँजना] दूसरे को भाँजने के लिये प्रेरणा करना या नियुक्त करना।

भंटा|–संज्ञा पुं० [सं० वृंताक] बैंगन।

भंड–संज्ञा पुं० दे० "भाँड़"।
वि० [सं०] १. अश्लील या गंदी बातें बकनेवाला। २. धूर्त। पाखंडी।

भँड़ताल–संज्ञा पुं० [हिं० भाँड़ + ताल] एक प्रकार का गाना और नाच जिसमें तालियाँ पीटते हैं। भँड़तिल्ला।

भँड़तिल्ला–संज्ञा पुं० दे० "भँड़ताल"।

भंडना–क्रि० स० [सं० भंडन] १. हानि पहुँचाना। बिगाड़ना। २ तोड़ना। ३ नष्ट भ्रष्ट करना। ४. बदनाम करना।

भँड़फोड़|–संज्ञा पुं० [हिं० भाँड़ा + फोड़ना] १. मिट्टी के बरतनों को गिराना या तोड़ना-फोड़ना। २. मिट्टी के बरतनों का टूटना फूटना। ३ रहस्योद्घाटन। भंडाफोड़।

भँड़भाँड़–संज्ञा पुं० [सं० भांडीर] एक कँटीला क्षुप जिसकी पत्तियाँ और जड़ दवा के काम आती है। भड़भाँड़।

भँडरिया–संज्ञा पुं० [हिं० भड्डरि] एक जाति का नाम। इस जाति के लोग सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगों को भविष्य बताकर निर्वाह करते हैं। भड्डर।
वि० १. पाखंडी। २. धूर्त। मक्कार।
संज्ञा स्त्री० [हिं० भंडार + इया (प्रत्य०)] दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताख।

भँड़सार, भँड़साल|–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँड़ + शाला] वह गोदाम जहाँ अन्न इकट्ठा किया जाता है। खत्ती। खत्ता।

भंडा–संज्ञा पुं० [सं० भांड] १. बर्तन। पात्र। भाँड़ा। २ भँडारा। ३. भेद।
मुहा०—भंडा फूटना = भेद खुलना।

भँडाना–क्रि० स० [हिं० भाँड] १. उछल-कूद मचाना। उपद्रव करना। २. तोड़ना फोड़ना। नष्ट करना।

भंडार–संज्ञा पुं० [सं० भांडागार] १. कोष। खजाना। २ अन्नादि रखने का स्थान। कोठार। ३. पाकशाला। भंडारा। ४ पेट। उदर। ५. दे० "भंडारा"।

भंडारा–संज्ञा पुं० [हिं० भंडार] १. दे० "भंडार"। २. समूह। झुंड। ३. साधुओं का भोज। ४. पेट।

भंडारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भंडार + ई

१. छोटी कोठरी। २. कोश। खज़ाना।
संज्ञा पुं० [हिं० भंडार+ई (प्रत्य०)] १. खज़ानची। कोषाध्यक्ष। २. तोशाखाने का दारोगा। भंडारे का प्रधान अध्यक्ष। ३. रसोइया। रसोईदार।

भँड़ौआ–संज्ञा पुं० [हिं० भाँड़] १. भाँड़ों के गाने का गीत। ऐसा गीत जो सभ्य समाज में गाने के योग्य न हो। २. हास्य आदि रसों की साधारण अथवा निम्न कोटि की कविता।

भँभाना–क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

भँभीरी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] लाल रंग का एक बरसाती पतिंगा। जुलाहा।

भँभेरि†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भँभरना] भय।

भँवन–संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रमण] घूमना। फिरना।

भँवना–क्रि० अ० [सं० भ्रमर] १. घूमना। फिरना। २. चक्कर लगाना।

भँवर–संज्ञा पुं० [सं० भ्रमर] १ भौंरा। २. बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केंद्र पर चक्राकार घूमती है। ३. गड्ढा। गर्त।

भँवरकली–संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवर+कली] लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि वह जिधर चाहे, उधर सहज में घूम सकती है।

भँवरजाल–संज्ञा पुं० [हिं० भँवर+जाल] सांसारिक झगड़े बखेड़े। भ्रमजाल।

भँवरभीख–संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवर+भीख] वह भीख जो भौंरे के समान घूम फिरकर माँगी जाय।

भँवरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवर] १. पानी का चक्कर। भँवर। २. जंतुओं के शरीर के ऊपर वह स्थान जहाँ के रोएँ और बाल एक केंद्र पर घूमे हुए हों।
संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवरना या भँवना] १. दे० "भाँवर"। २. बनियों का सौदा लेकर घूम घूमकर बेचना। ३. फेरी। गश्त।

भँवाना–क्रि० स० [हिं० भँवना] १. घुमाना। चक्कर देना। २. भ्रम में डालना।

भँवारा–वि० [हिं० भँवना+आरा(प्रत्य०)] भ्रमणशील। घूमनेवाला। फिरनेवाला।

भँसना–क्रि० अ० [हिं० बहना] पानी में या फेंका जाना।

भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. नक्षत्र। २. ग्रह। ३. राशि। ४. शुक्राचार्य। ५. भ्रमर। भौंरा। ६. भूधर। पहाड़। ७. भ्रांति। ८. दे० "भगण"।

भइया–संज्ञा पुं० [हिं० भाई+इया (प्रत्य०)] १. भाई। २. बराबरवालों के लिये आदर-सूचक शब्द।

भक–संज्ञा स्त्री० [अनु०] सहसा अथवा रह रहकर आग के जल उठने का शब्द।

भकाऊँ–संज्ञा पुं० [अनु०] हौवा।

भकुआ†–वि० [सं० भेक] मूर्ख। मूढ़।

भकुआना–क्रि० अ० [हिं० भकुआ] चकपका जाना। घबरा जाना।
क्रि० स० १. चकपका देना। घबरा देना। २. मूर्ख बनाना।

भकोसना–क्रि० स० [सं० भक्षण] जल्दी या भद्देपन से खाना। निगलना।

भक्त–वि० [सं०] १. भागों में बाँटा हुआ। २. बाँटकर दिया हुआ। प्रदत्त। ३. अलग किया हुआ। ४. अनुयायी। ५. सेवा करनेवाला। भक्ति करनेवाला।

भक्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भक्ति।

भक्तवत्सल–वि० [सं०] [संज्ञा भक्तवत्सलता] १. जो भक्तों पर कृपा करता हो। २. विष्णु।

भक्ताई:‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० भक्त] भक्ति।

भक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनेक भागों में विभक्त करना। बाँटना। २. भाग। विभाग। ३. अंग। अवयव। ४. विभाग करनेवाली रेखा। ५. सेवा-शुश्रूषा। ६. पूजा। अर्चन। ७. श्रद्धा। ८. भक्ति सूत्र के अनुसार ईश्वर में अत्यंत अनुराग का होना। इसके नौ प्रकार ये हैं—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन। ९. एक वृत्त का ना ।

भक्तिसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] शांडिल्य मुनि-कृत वैष्णव संप्रदाय का एक सूत्र-ग्रंथ।

भक्ष–संज्ञा पुं० दे० "भक्षण"।

भक्षक–वि० [सं०] [स्त्री० भक्षिका] खाने-वाला। भोजन करनेवाला। खादक।

भक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय] १. भोजन करना। किसी वस्तु को दाँतों से काटकर खाना। २. भोजन।

भक्षना:–क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना।

भत्ती-वि० [सं० भक्तिन्] [स्त्री० भक्तिणी] खानेवाला। भक्षक।
भद्य-वि० [सं०] खाने के योग्य।
संज्ञा पुं० खाद्य। अन्न। आहार।
भख॰-संज्ञा पुं० [सं० भक्ष] आहार। भोजन।
भखना॰-क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना।
भगंदर-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का फोड़ा जो गुदावर्त्त के किनारे होता है।
भग-संज्ञा पुं० [सं०] १. योनि। २ सूर्य्य। ३ बारह आदित्यों में से एक। ४. ऐश्वर्य। ५. सौभाग्य। ६. धन। ७ गुदा।
भगण-संज्ञा पुं० [सं०] १ खगोल में ग्रहों का पूरा चक्कर जो ३६० अंश का होता है। २ छंद.शास्त्रानुसार एक गण जिसमें आदि का एक वर्ण गुरु और अंत के दो वर्ण लघु होते है।
भगत-वि० [सं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] १. सेवक। उपासक। २ वह साधु जो मांस आदि न खाता हो। सकट का उलटा।
संज्ञा पुं० १. वैष्णव या वह साधु जो तिलक लगाता और मांस आदि न खाता हो। २. दे० "भगतिया"। ३ होली में वह स्वांग जो भगत का किया जाता है। ४ भूत प्रेत उतारनेवाला पुरुष। ओझा।
भगतवछल॰-वि० दे० "भक्तवत्सल"।
भगति -संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति"।
भगतिया-संज्ञा पुं० [हिं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] राजपूताने की एक जाति। इस जाति के लोग गाने बजाने का काम करते हैं और इनकी कन्याएँ वेश्याओं की वृत्ति करती और भगतिन कहलाती हैं।
भगती-संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति"।
भगदर-संज्ञा स्त्री० [हिं० भागना] भागने की क्रिया या भाव।
भगन॰-वि० दे० "भग्न"।
भगना†-क्रि० अ० दे० "भागना"।
संज्ञा पुं० दे० "भानजा"।
भगर॰†-संज्ञा पुं० [देश०] छल। फरेब।
भगल-संज्ञा पुं० [देश०] १. छल। कपट। ढोंग। २. जादू। इंद्रजाल।
भगली-संज्ञा पुं० [हिं० भगल + ई (प्रत्य०)] १ ढोंगी। छली। २. बाजीगर।
भगवंत॰†-संज्ञा पुं० दे० "भगवत्"।
भगवती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवी। २. गौरी। ३ सरस्वती। दुर्गा।
भगवत्-संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। परमेश्वर। २. विष्णु। ३. शिव।
भगवद्गीता-संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के भीष्मपर्व के अंतर्गत एक प्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ प्रकरण। इसमें उन उपदेशों और प्रश्नोत्तरों का वर्णन है जो भगवान् कृष्णचंद्र ने अर्जुन का मोह छुड़ाने के लिये उससे युद्धस्थल में किए थे।
भगवान्, भगवान-वि० [सं० भगवत्] १. भगवत्। ऐश्वर्ययुक्त। २ पूज्य।
संज्ञा पुं० १ ईश्वर। परमेश्वर। २ विष्णु। ३ कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।
भगाना-क्रि० स० [सं० भज] १ किसी को भागने में प्रवृत्त करना। दौड़ाना। २ हटाना। दूर करना।
॰ क्रि० अ० दे० "भागना"।
भगिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] बहन।
भगीरथ-संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्य्यवंशी राजा जो राजा दिलीप के पुत्र थे। ये घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे।
वि० [सं०] भगीरथ की तपस्या के समान भारी। बहुत बड़ा।
भगोड़ा-वि० [हिं० भागना + ओड़ा (प्रत्य०)] १ भागा हुआ। २ भागनेवाला। कायर।
भगोल-संज्ञा पुं० दे० "खगोल"।
भगौती॰†-संज्ञा स्त्री० दे० "भगवती"।
भगौहाँ-वि० [हिं० भागना + औहाँ (प्रत्य०)] १ भागने को उद्यत। २ कायर।
वि० [हिं० भगवा] भगवा। गेरुआ।
भग्गुल॰†-वि० [हिं० भागना] १. रण से भागा हुआ। २. भगोड़ा। भग्गू।
भग्गू†-वि० [हिं० भागना + ऊ (प्रत्य०)] जो विपत्ति देखकर भागता हो। कायर।
भग्न-वि० [सं०] १ टूटा हुआ। २ जो हारा या हराया गया हो। पराजित।
भग्नावशेष-संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी टूटे फूटे मकान या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अंश। खँडहर। २ किसी टूटे हुए पदार्थ के बचे हुए टुकड़े।
भचक-संज्ञा स्त्री० [हिं० भचकना] भचककर चलने का भाव। लँगड़ापन।
भचकना-क्रि० अ० [हिं० भौचक] आश्चर्य में निमग्न होकर रह जाना।

क्रि० अ० [अनु० मच] चलने के समय पैर का इस प्रकार टेढ़ा पड़ना कि देखने में लँगड़ापन मालूम हो।

भचक्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. राशियों या ग्रहों के चलने का मार्ग। कक्षा। २ नक्षत्रों का समूह।

भच्छ*†-संज्ञा पुं० दे० "भक्ष्य"।

भच्छना*†-क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना।

भजन-संज्ञा पुं० [सं०] १. बार बार किसी पूज्य या देवता आदि का नाम लेना। स्मरण। जप। २. वह गीत जिसमें देवता आदि के गुणों का कीर्त्तन हो।

भजना-क्रि० स० [सं० भजन] १. सेवा करना। २. आश्रय लेना। आश्रित होना। ३ देवता आदि का नाम रटना। जपना। क्रि० अ० [सं० व्रजन, प्रा० वजन] १ भागना। भाग जाना। २. पहुँचना। प्राप्त होना।

भजनानंद-संज्ञा पुं० [सं०] भजन से मिलने वाला आनंद।

भजनानंदी-संज्ञा पुं० [सं० भजनानंद+ई] भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला।

भजनी-संज्ञा पुं० [हिं० भजन+ई (प्रत्य०)] भजन गानेवाला।

भजाना-क्रि० अ० [हिं० भजना=दौड़ना] दौड़ना। भागना।
क्रि० अ० [हिं० भजना का सक० रूप] भगाना। दूर कर देना।

भजियाउरा-संज्ञा स्त्री० [हिं० भाजी+चाउर (चावल)] चावल, दही, घीआ आदि एक साथ पकाकर बनाया हुआ भोजन। उभिया। भिजियाउर।

भट-संज्ञा पुं० [सं०] १. युद्ध करनेवाला। योद्धा। २ सिपाही। सैनिक।

भटकटाई, भटकटैया-संज्ञा स्त्री० [हिं० कटाई] एक छोटा और कांटेदार क्षुप।

भटकना-क्रि० अ० [सं० भ्रम ?] १. व्यर्थ इधर उधर घूमते फिरना। २. रास्ता भूल जाने के कारण इधर उधर घूमना। ३. भ्रम में पड़ना।

भटकाना-क्रि० स० [हिं० भटकना का सक० रूप] १. गलत रास्ता बताना। २ भ्रम में डालना।

भटकैया*†-संज्ञा पुं० [हिं० भटकना+ऐया (प्रत्य०)] १. भटकनेवाला। २. भटकानेवाला।
†-वि० [हिं० भटकना+औदा (प्रत्य०)] भटकानेवाला।

भटनास-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की लता। इसमें एक प्रकार की फलियाँ लगती हैं जिनके दानों की दाल बनती है।

भटभेरा*†-संज्ञा पुं० [हिं० भट+भिड़ना] १ दो वीरों का मुकाबला। भिड़ंत। २. धक्का। टक्कर। ठोकर। ३ ऐसी भेंट जो अनायास हो जाय।

भटा†-संज्ञा पुं० दे० "बैंगन"।

भट्टू†-संज्ञा स्त्री० [सं० वधू] स्त्रियों के संबोधन के लिये एक आदरसूचक शब्द।

भट्ट-संज्ञा पुं० [सं० भट] १ ब्राह्मणों की एक उपाधि। २ भाट। ३ योद्धा। सूर।

भट्ठा-संज्ञा पुं० [सं० भ्राष्ट्र] १ बड़ी भट्ठी। २. ईंटें या खपड़े इत्यादि पकाने का पजावा।

भट्ठी-संज्ञा स्त्री० [सं० भ्राष्ट्र, प्रा० भट्ठ] १ ईंटों आदि का बना हुआ बड़ा चूल्हा जिस पर हलवाई, लोहार और वैद्य आदि अनेक प्रकार के काम करते हैं। २. वह स्थान जहाँ देशी शराब बनती है।

भठियारपन-संज्ञा पुं० [हिं० भठियारा+पन (प्रत्य०)] १. भठियारे का काम। २ भठियारों की तरह लड़ना और गालियाँ बकना।

भठियारा-संज्ञा पुं० [हिं० भट्ठी+इयारा (प्रत्य०)] [स्त्री० भठियारी या भठियारिन] सराय का प्रबंध करनेवाला या रक्षक।

भड़ँवा-संज्ञा पुं० [सं० विडंब] आडंबर।

भड़क-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. दिखाऊ चमक-दमक। चमकीलापन। भड़कीले होने का भाव। २. भड़कने का भाव। सहम।

भड़कदार-वि० [हिं० भड़क+फा० दार] १. चमकीला। भड़कीला। २. रोबदार।

भड़कना-क्रि० अ० [भड़क (अनु०)+ना (प्रत्य०)] १. तेजी से जल उठना। २. झिझकना। चौंकना। डरकर पीछे हटना। (पशुओं के लिये) ३. क्रुद्ध होना।

भड़काना-क्रि० स० [हिं० भड़कना का स० रूप] १. प्रज्वलित करना। जलाना। २. उत्तेजित करना। उभारना। ३. भयभीत कर देना। चमकाना। (पशुओं के लिये)

भड़कीला-वि० दे० "भड़कदार"।

भड़भड़-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. भड़भड़ शब्द जो प्रायः आघातों से होता है। २. भीड़। भब्भड़। ३. व्यर्थ की और बहुत अधिक बातचीत।

भड़भड़ाना–क्रि० स० [अनु०] भड़-भड़ शब्द करना।

भड़भड़िया–वि० [हिं० भड़भड़] बहुत अधिक और व्यर्थ की बातें करनेवाला।

भड़भाँड़–संज्ञा पु० [सं० भाडीर] एक कँटीला पौधा। सत्यानासी। घमोय।

भड़भूँजा–संज्ञा पु० [हिं० भाड़+भूँजना] एक जाति जो भाड़ में अन्न भूनती है।

भड़ार*†–संज्ञा पु० दे० "भंडार"।

भड़िहाई*†–क्रि० वि० [हिं० भड़िहा] चोरों की तरह। लुक छिप या दबकर।

भड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भड़काना] झूठा बढ़ावा।

भड़ुआ–संज्ञा पु० [हिं० भाँड] १. वह जो वेश्याओं की दलाली करता हो। २. सफरदाई।

भड्डर–संज्ञा पु० [सं० भद्र] ब्राह्मणों में बहुत निम्न श्रेणी की एक जाति। भंडर।

भणना*†–क्रि० अ० [सं० भणन] कहना।

भणित–वि० [सं०] कहा हुआ।

भतार†–संज्ञा पु० [सं० भर्तार] पति। खसम।

भतीजा–संज्ञा पु० [सं० भ्रातृज] [स्त्री० भतीजी] भाई का पुत्र। भाई का लड़का।

भत्ता–संज्ञा पु० [सं० भरण] दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा के समय मिलता है।

भदई–संज्ञा स्त्री० [हिं० भादों] वह फसल जो भादों में तैयार होती है।

भदावर–संज्ञा पु० [सं० भद्रवर] एक प्रांत जो आजकल ग्वालियर राज्य में है।

भदेसिल†–वि० [हिं० भद्दा] भद्दा। भोंडा।

भदौंहा†–वि० [हिं० भादों] भादों मास में होनेवाला।

भदौरिया–वि० [हिं० भदावर] भदावर प्रांत का। भदावर संबंधी।

संज्ञा पु० [हिं० भदावर] क्षत्रियों की एक जाति।

भद्दा–वि० पु० [अनु० भद] [स्त्री० भद्दी] जो देखने में मनोहर न हो। कुरूप।

भद्दापन–संज्ञा पु० [हिं० भद्दा+पन (प्रत्य०)] भद्दे होने का भाव।

भद्र–वि० [सं०] १. सभ्य। सुशिक्षित। २ कल्याणकारी। ३. श्रेष्ठ। ४. साधु।

संज्ञा पु० [सं०] १. महादेव। २. उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम। ३ सुमेर पर्वत। ४. सोना। स्वर्ण।

संज्ञा पुं० [सं० भद्राकरण] सिर, दाढ़ी, मूछों आदि सबके बालों का मुंडन।

भद्रक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश। २ एक वर्ण वृत्त का नाम।

भद्रकाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा देवी की एक मूर्ति। २ कात्यायिनी।

भद्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भद्र होने का भाव। शिष्टता। सभ्यता। शराफत। भलमनसी।

भद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केकयराज की एक कन्या जो श्रीकृष्णजी को ब्याही थी। २ आकाश गंगा। ३ गाय। ४. दुर्गा। ५. पिंगल में उपजाति वृत्त का दसवाँ भेद। ६. पृथ्वी। ७ सुभद्रा का एक नाम। ८. फलित ज्योतिष के अनुसार एक अारंभ योग। ९ बाधा। (बोलचाल)

भद्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

भद्री–वि० [सं० भद्रिन्] भाग्यवान्।

भनक–संज्ञा स्त्री० [सं० भणन] १ धीमा शब्द। ध्वनि। २ उड़ती हुई खबर।

भनकना*†–क्रि० स० [सं० भणन] कहना।

भनना*–क्रि० स० [सं० भणन] कहना।

भनभनाना–क्रि० अ० [अनु०] भनभन शब्द करना। गुंजारना।

भनभनाहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० भनभनाना+आहट (प्रत्य०)] भनभनाने का शब्द। गुंजार।

भनित*–वि० दे० "भणित"।

भबका–संज्ञा पु० [हिं० भाप] अर्क आदि उतारने का एक प्रकार का बद बड़ा घड़ा।

भभकना–क्रि० अ० [अनु०] १ उबलना। २ गरमी पाकर किसी चीज का फूटना। ३. जोर से जलना। भड़कना।

भभकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भभक] घुड़की।

भभ्भड़, भभ्भड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़] भीड़भाड़। अव्यवस्थित जन समुदाय।

भभरना*†–क्रि० अ० [हिं० भय] १. भयभीत होना। डरना। २. घबरा जाना। ३. भ्रम में पड़ना।

भभूका–संज्ञा पु० [हिं० भभक] ज्वाला।

भभूत–संज्ञा स्त्री० [सं० विभूति] भस्म जिसे शैव लोग भुजाओं आदि पर लगाते हैं।

भयकर–वि० [सं०] जिसे देखने से भय लगता हो। डरावना। भयानक। भीषण।

भयंकरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भयंकर होने का भाव। डरावनपन। भीषणता।

भय–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रसिद्ध मनोविकार

जो किसी आनेवाली भीषण आपत्ति की आशंका से उत्पन्न होता है। डर। ख़ौफ़।
मुहा०—भय खाना = डरना।
वि० दे० "हुआ"।
भयप्रद-वि० [सं०] दे० "भयानक"।
भयभीत-वि० [सं०] डरा हुआ।
भयवाद-संज्ञा पुं० [हिं० भाई + आद (प्रत्य०)] एक ही गोत्र या वंश के लोग। भाई बंद।
भयहारी-वि० [सं० भयहारिन्] डर छुड़ानेवाला। डर दूर करनेवाला।
भया†-वि० दे० "हुआ"।
भयान†-वि० [सं० भयानक] डरावना।
भयानक-वि० [सं०] जिसे देखने से भय लगता हो। भीषण। भयंकर। डरावना।
संज्ञा पुं० साहित्य में नौ रसों में छठा रस जिसमें भीषण दृश्यों का वर्णन होता है।
भयाना†-क्रि० अ० [सं० भय] डरना।
क्रि० स० भयभीत करना। डराना।
भयावन†-वि० [हिं० भय] डरावना।
भयावह-वि० [सं०] भयंकर। डरावना।
भरन†-संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रांति] संदेह।
भर-वि० [हिं० भरना] कुल। पूरा। सब।
†क्रि० वि० [हिं० भार] बल से। द्वारा।
संज्ञा पुं० [सं० भार] १. भार। बोझ। वजन। २. पुष्टि। मोटाई।
संज्ञा पुं० [सं० भरत] एक छोटी और अस्पृश्य जाति।
भरकना*†-क्रि० अ० दे० "भड़कना"।
भरण-संज्ञा पुं० [सं०] पालन। पोषण।
भरणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र। तीन तारों के कारण इसकी आकृति त्रिकोण सी है।
वि० भरण या पालन करनेवाला।
भरत-संज्ञा पुं० [सं०] १ कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र और रामचंद्र के छोटे भाई जिनका विवाह माण्डवी के साथ हुआ था। २. दे० "जड़ भरत"। ३. शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र जिनका जन्म कण्व ऋषि के आश्रम में हुआ था। इस देश का "भारतवर्ष" नाम इन्हीं के नाम से पड़ा है। ४. एक प्रसिद्ध मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य माने जाते हैं। ५. संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम। ६. वह जो नाटकों में अभिनय करता हो। नट। ७. प्राचीन काल का उत्तर भारत का एक देश जिसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है।
संज्ञा पुं० [सं० भरद्वाज] लवा पक्षी का एक भेद।
संज्ञा पुं० [देश०] १ काँसा नामक धातु। कसकुट। काँसा। † २. ठठेरा।
भरतखंड-संज्ञा पुं० [सं०] राजा भरत के किए हुए पृथ्वी के नौ खंडों में से एक खंड। भारतवर्ष। हिंदुस्तान।
भरता-संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का नमकीन सालन जो बैंगन, आलू आदि को भूनकर बनाया जाता है। चोखा।
भरतार-संज्ञा पुं० [सं० भर्त्ता] पति। खसम।
भरती-संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना] १ किसी चीज़ में भरे जाने का भाव। भरा जाना।
मुहा०—भरती करना = किसी के बीच में रखना, लगाना या बैठाना। भरती का = बहुत ही साधारण या रद्दी।
२ दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव।
भरत्थ*†-संज्ञा पुं० दे० "भरत"।
भरथरी-संज्ञा पुं० दे० "भर्तृहरि"।
भरदूल-संज्ञा पुं० दे० "भरत" (पक्षी)।
भरद्वाज-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक ऋषि जो गोत्र प्रवर्त्तक और मंत्रकार थे। ये राजा दिवोदास के पुरोहित और सप्तर्षियों में से भी एक माने जाते हैं। २. इन ऋषि के वंशज या गोत्रापत्य।
भरना-क्रि० स० [सं० भरण] १. खाली जगह को पूरा करने के लिये कोई चीज़ डालना। पूर्ण करना। २ उँडेलना। उलटना। डालना। ३. तोप या बंदूक आदि में गोली बारूद आदि डालना। ४. पद पर नियुक्त करना। रिक्त पद की पूर्त्ति करना। ५. ऋण का परिशोध या हानि की पूर्त्ति करना। चुकाना। देना।
मुहा०—(किसी का) घर भरना = (किसी को) खूब धन देना।
६. गुप्त रूप से किसी की निंदा करना। ७. निर्वाह करना। निबाहना। ८. काटना। डसना। ९. सहना। झेलना। १०. सारे शरीर में लगाना। पोतना।
क्रि० अ० १. किसी रिक्त पात्र आदि का कोई और पदार्थ पड़ने के कारण पूर्ण होना। २. उँडेला या डाला जाना। ३. तोप या बंदूक आदि में गोली बारूद

आदि का होना। ४. ऋण आदि का परिशोध होना। ५. मन में क्रोध होना। असंतुष्ट या अप्रसन्न रहना। ६ घाव में अंगूर आना। घाव का ठीक और बराबर होना। ७. किसी अंग का बहुत काम करने के कारण दर्द करने लगना। ८. शरीर का हृष्ट पुष्ट होना।
संज्ञा पु० १. भरने की क्रिया या भाव। २. रिश्वत। घूस।
भरनि‡-संज्ञा स्त्री० [सं० भरण] पहनावा। पोशाक। कपड़े लत्ते।
भरनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना] करघे में की ढरकी। नार।
भरपाई-क्रि० वि० [हिं० भरना+पाना] पूर्ण रूप से। भली भांति।
संज्ञा स्त्री० जो कुछ बाकी हो, वह पूरा पूरा पा जाना।
भरपूर-वि० [हिं० भरना+पूरा] १ पूरी तरह से भरा हुआ। पूरा पूरा। २. जिसमें कोई कमी न हो। परिपूर्ण।
क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।
भरभराना-क्रि० अ० [अनु०] १. (रोआँ) खड़ा होना। २. घबराना।
भरभेंटा‡-संज्ञा पु० [हिं० भर+भेंटना] सामना। मुकाबला। मुठभेड़।
भरम‡-संज्ञा पु० [सं० भ्रम] १. संशय। संदेह। धोखा। २. भेद। रहस्य।
मुहा०—भरम गँवाना = भेद खोलना।
भरमना‡-क्रि० अ० [सं० भ्रमण] १. घूमना। चलना। फिरना। २ मारा-मारा फिरना। भटकना। ३ धोखे में पड़ना।
संज्ञा स्त्री [सं० भ्रम] १. भूल। गलती। २. धोखा। भ्रांति। भ्रम।
भरमाना-क्रि० स० [हिं० भरमना का सक० रूप] १. भ्रम में डालना। बहकाना। २. भटकाना। व्यर्थ इधर उधर घुमाना।
क्रि० अ० चकित होना। हैरान होना।
भरमार-संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना+मार = अधिकता] बहुत ज़्यादती। अत्यंत अधिकता।
भरराना-क्रि० अ० [अनु०] १. भरर शब्द के साथ गिरना। अरराना। २. टूट पड़ना।
भरवाना-क्रि० स० [हिं० भरना का प्रे० रूप] भरने का काम दूसरे से कराना।
भरसक-क्रि० वि० [हिं० भर = पूरा+सक = शक्ति] यथाशक्ति। जहाँ तक हो सके।
भरसना‡-संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"।
भरसाँई-संज्ञा पु० दे० "भाड़"।
भरहराना-क्रि० अ० दे० "भरभराना"।
भराँति‡-संज्ञा स्त्री० दे० "भ्रांति"।
भराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० भरना] भरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
भराव-संज्ञा पु० [हिं० भरना+आव (प्रत्य०)] भरने का काम या भाव। भरत।
भरित-वि० [सं०] भरा हुआ।
भरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० भर] दस माशे या एक रुपए के बराबर एक तौल।
भरु*-संज्ञा पुं० [सं० भार] बोझ। वज़न।
भरुआ-संज्ञा पु० दे० "भड़ुआ"।
भरुहाना‡-क्रि० अ० [हिं० भारी+होना (प्रत्य०)] घमंड करना। अभिमान करना।
क्रि० स० [हिं० भ्रम] १. बहकाना। धोखा देना। २. उत्तेजित करना। चढ़ावा देना।
भरैया‡-वि० [सं० भरण] पालन करनेवाला। पालक। रक्षक।
वि० [हिं० भरना] भरनेवाला।
भरोसा-संज्ञा पुं० [सं० वर+आशा] १. आश्रय। आसरा। २. सहारा। अवलंब। ३. आशा। उम्मेद। ४ दृढ़ विश्वास।
भर्ग-संज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव।
भर्त्ता-संज्ञा पुं० [सं० भर्तृ] १. अधिपति। स्वामी। २. मालिक। खाविंद। ३. विष्णु।
भर्त्तार-संज्ञा पु० [सं० भर्तृ] पति। स्वामी।
भर्तृहरि-संज्ञा पु० [सं०] एक प्रसिद्ध वैयाकरण और कवि जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के छोटे भाई थे।
भर्त्सना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निंदा। शिकायत। २ डाँट-डपट। फटकार।
भर्म‡-संज्ञा पुं० दे० "भ्रम"।
भर्मन‡-संज्ञा पु० दे० "भ्रमण"।
भर्राना-क्रि० अ० [भर से अनु०] भर्र भर्र शब्द होना।
भर्सन‡-संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"।
भलपति-संज्ञा पु० [हिं० भाला+सं० पति] भाला रखनेवाला। नेजेबरदार।
भलमनसत, भलमनसी-संज्ञा स्त्री० [हिं०

भला + मनुष्य] भलेमानस होने का भाव। सज्जनता। शराफ़त।

भला–वि० [सं० भद्र] १. अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। २. बढ़िया। अच्छा।

यौ०—भला-बुरा = १. उलटी सीधी बात। अनुचित बात। २. डाँट फटकार।

संज्ञा पुं० १. कल्याण। कुशल। भलाई। २. लाभ। नफ़ा।

यौ०—भला बुरा = हानि और लाभ।

अव्य० १. अच्छा। खैर। अस्तु। २. "नहीं" का सूचक अव्यय जो प्रायः वाक्यों के प्रारंभ अथवा मध्य में रखा जाता है।

मुहा०—भले ही = ऐसा हुआ करे। इससे कोई हानि नहीं। अच्छा ही है।

भलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० भला + ई (प्रत्य०)] १. भले होने का भाव। भलापन। २. उपकार। नेकी।

भले–क्रि० वि० [हिं० भला] भली भाँति। अच्छी तरह। पूर्ण रूप से।

अव्य० खूब। वाह।

भलेरा०†–संज्ञा पुं० दे० "भला"।

भवंग०–संज्ञा पुं० [सं० भुजंग] साँप।

भवत–वि० [सं० भवत्] भवत् का बहु-वचन। आप लोगों का। आपका।

भव–संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। २. शिव। ३. मेघ। बादल। ४. कुशल। ५. संसार। जगत्। ६ सत्ता। ७. काम-देव। ८. जन्म मरण का दुःख।

वि० १. शुभ। २. उत्पन्न।

संज्ञा पुं० [सं० भय] डर। भय।

भवदीय–सर्व० [सं०] आपका। तुम्हारा।

भवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मकान। २. महल। ३. छप्पय का एक भेद।

संज्ञा पुं० [सं० भुवन] जगत्। संसार।

भवना–०†–क्रि० अ० [सं० भ्रमण] घूमना।

भवनी–संज्ञा स्त्री० [सं० भवन] भार्या। स्त्री।

भवबंधन–संज्ञा पुं० [सं०] संसार की झंझट। सांसारिक दुःख और कष्ट।

भवभंजन–संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।

भवभय–संज्ञा पुं० [सं०] संसार में बार बार जन्म लेने और मरने का भय।

भवभामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

...–संज्ञा पुं० [सं०] संसार से ...

भवमोचन–वि० [सं०] संसार के बंधनों से छुड़ानेवाले, भगवान्।

भवविलास–संज्ञा पुं० [सं०] १. माया। २. संसार के सुख जो ज्ञान के अंधकार से उदित होते हैं।

भवसंभव–वि० [सं०] सांसारिक।

भवाँ†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भँवना] फेरी। चक्कर।

भवाँना–†क्रि० स० [सं० भ्रमण] घुमाना। फिराना।

भवानी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

भवितव्य–संज्ञा पुं० [सं०] होनहार।

भवितव्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. होनी। भावी। होनहार। २. भाग्य। किस्मत।

भविष्य–वि० [सं० भविष्यत्] वर्तमान काल के उपरांत आनेवाला काल।

भविष्यगुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गुप्त नायिका जो रति में प्रवृत्त होनेवाली हो और पहले से उसे छिपाने का उद्योग करे।

भविष्यत्–संज्ञा पुं० [सं०] भविष्य।

भविष्यद्वक्ता–संज्ञा पुं० [सं०] १. भविष्य-द्वाणी करनेवाला। २ ज्योतिषी।

भविष्यद्वाणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भविष्य में होनेवाली वह बात जो पहले से ही कह दी गई हो।

भवीला०†–वि० [हिं० भाव + ईला (प्रत्य०)] १. भावयुक्त। भावपूर्ण। २. बाँका तिरछा।

भवेश–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव। शिव।

भव्य–वि० [सं०] १. देखने में भारी और सुंदर। शानदार। २. शुभ। मंगल-सूचक। ३ सत्य। सच्चा। ४. भविष्य में होनेवाला।

भव्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भव्य होने का भाव।

भष०–संज्ञा पुं० [सं० भक्ष] भोजन।

भषना†–क्रि० स० [सं० भक्षण] खाना।

भसना†–क्रि० अ० [अं०] १. पानी के ऊपर तैरना। २. पानी में डूबना।

भसम–संज्ञा पुं० दे० "भस्म"।

भसमा–संज्ञा पुं० [फा० वस्मा का अनु०] एक प्रकार का खिजाब।

भसान†–संज्ञा पुं० [बं० भासान] काली आदि की मूर्ति को नदी में प्रवाहित करना।

...–क्रि० ... [...] ... किसी चीज

को पानी में तैरने के लिये छोड़ना। २. पानी में डालना।
भसौंड—संज्ञा स्त्री० [देश०] कमलनाल। मुरार। कमल की जड़।
भसुंड—संज्ञा पु० [सं० भुशुंड] हाथी। गज।
भसुर—संज्ञा पु० [हिं० ससुर का अनु०] पति का बड़ा भाई। जेठ।
भस्म—संज्ञा पु० [सं० भस्मन्] १. लकड़ी आदि के जलने पर बची हुई राख। २ अग्निहोत्र में की राख जिसे शिव के भक्त मस्तक तथा शरीर में लगाते हैं।
वि० जो जलकर राख हो गया हो।
भस्मक—संज्ञा पु० [सं०] एक रोग जिसमें भोजन तुरंत पच जाता है।
भस्मता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भस्म होने का धर्म्म या भाव।
भस्मासुर—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दैत्य।
भस्मीभूत—वि० [सं०] जो जलकर राख हो गया हो।
भहराना—क्रि० अ० [अनु०] १. टूट पड़ना। २. एकाएक गिरना।
भाँउ—संज्ञा पु० [सं० भाव] अभिप्राय।
भाँउर—संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।
भाँग—संज्ञा स्त्री० [सं० भृंगा या भृंगी] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ मादक होती हैं। भंग। विजया। बूटी। पत्ती।
मुहा०—भाँग खा जाना या पी जाना = नशा को सी या पागलपन की बातें करना। घर में भूँजी भाँग न होना = अत्यंत दरिद्र होना।
भाँज—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँजना] १. भाँजने या घुमाने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो रुपया, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाय। भुनाई।
भाँजना—क्रि० स० [सं० भंजन] १. तह करना। मोड़ना। २. मुगदर आदि घुमाना। (व्यायाम)
भाँजी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँजना = मोड़ना] वह बात जो किसी के होते हुए काम में बाधा डालने के लिये कही जाय। चुगली।
भाँटा†—संज्ञा पु० दे० "बैंगन"।
भाँड—संज्ञा पु० [सं० भंड] १ विदूषक। मसखरा। २. एक प्रकार के पेशेवर जो महफिलों आदि में जाकर नाचते गाते और हास्यपूर्ण नकलें उतारते हैं। ३. नंगा। बेहया। ४. सत्यानाश। बरबादी।
संज्ञा पु० [सं० भांड] १. बरतन। भाँड़ा। २ भंडाफोड़। रहस्योद्घाटन। ३. उपद्रव। उत्पात।
भाँडना‡†—क्रि० अ० [सं० भंड] व्यर्थ इधर उधर घूमना। मारे मारे फिरना।
क्रि० स० १. किसी को बहुत बदनाम करते फिरना। २. नष्ट भ्रष्ट करना। बिगाड़ना।
भाँडा—संज्ञा पु० [सं० भांड] बरतन। पात्र।
मुहा०—भाँड़े में जी देना = किसी पर दिल लगा होना। भाँड़े भरना = पश्चात्ताप करना।
भांडागार—संज्ञा पु० [सं०] भंडार। कोश।
भांडागारिक—संज्ञा पु० [सं०] भंडारी।
भांडार—संज्ञा पु० [सं०] १. वह स्थान जहाँ काम में आनेवाली बहुत सी चीजें रखी जाती हों। भंडार। २. वह जिसमें एक ही तरह की बहुत सी चीजें या बातें हों। ३ खजाना। कोश।
भाँत, भाँति—संज्ञा स्त्री० [सं० भेद] तरह। किस्म। प्रकार। रीति।
भाँपना†—क्रि० स० [?] १ ताड़ना। पहचानना। २. देखना। (बाजारू)
भाँय भाँय—संज्ञा पु० [अनु०] नितांत एकांत स्थान या सन्नाटे में होनेवाला शब्द।
भाँवँर‡—संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।
भाँवना†—क्रि० स० [सं० भ्रमण] १. खरादना। कुनना। २. अच्छी तरह गढ़कर सुंदरतापूर्वक बनाना।
भाँवर—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रमण] १. चारों ओर घूमना। परिक्रमा करना। २. अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय वर और वधू करते हैं।
संज्ञा पु० दे० "भौंरा"।
भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा। छटा। ३. किरण। रश्मि। ४ बिजली। विद्युत्।
‡† अव्य० चाहे। यदि इच्छा हो। वा।
भाइ‡†—संज्ञा पुं० [सं० भाव] १. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। २. स्वभाव। भाव। ३ विचार।
संज्ञा स्त्री० [हिं० भाँति] १. भाँति। प्रकार। २ चाल-ढाल। रंग-ढंग।
भाइप०†—संज्ञा पु० दे०
भाई—संज्ञा पुं० [सं० भ्रातृ]

सहोदर। भ्राता। भैया। २. किसी वंश की किसी एक पीढ़ी के किसी व्यक्ति के लिये उसी पीढ़ी का दूसरा पुरुष। जैसे—चचेरा या ममेरा भाई। ३. बराबरवालों के लिये एक प्रकार का संबोधन।

भाईचारा–संज्ञा पुं० [हिं० भाई+चारा (प्रत्य०)] भाई के समान परम मित्र होने का भाव।

भाई दूज–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाई+दूज] यमद्वितीया। कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भैया दूज।

भाईबंद–संज्ञा पु० [हिं० भाई+बंधु] भाई और मित्र-बंधु आदि।

भाई बिरादरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाई+बिरादरी] जाति या समाज के लोग।

भाउ*†–संज्ञा पु० [सं० भाव] १. चित्तवृत्ति। विचार। २. भाव। ३. प्रेम। संज्ञा पु० [सं० भव] उत्पत्ति। जन्म।

भाऊ*–संज्ञा पु० [सं० भाव] १. प्रेम। स्नेह। मुहब्बत। २. भावना। ३. स्वभाव। ४ हालत। अवस्था। ५. महत्व। महिमा। ६. शक्ल। स्वरूप। ७. सत्ता। ८. वृत्ति। विचार।

भाएँ*†–क्रि० वि० [सं० भाव] समझ में। बुद्धि के अनुसार।

भाकर–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य। भास्कर।

भाकसी–संज्ञा स्त्री० [सं० भस्त्री] भट्ठी।

भाख*†–संज्ञा पु० दे० "भाषण"।

भाखना*†–क्रि० स० [सं० भाषण] कहना।

भाखा†–संज्ञा स्त्री० दे० "भाषा"।

भाग–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिस्सा। खंड। अंश। २. पार्श्व। तरफ। ओर। ३. नसीब। भाग्य। किस्मत। ४. सौभाग्य। खुशनसीबी। ५. भाग्य का कल्पित स्थान, माथा। ललाट। ६. प्रात काल। भोर। ७. गणित में किसी राशि को अनेक अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया।

भागड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० भागना] बहुत से लोगों का एक साथ घबराकर भागना।

भागत्याग–संज्ञा पुं० दे० "जहदजहल्लक्षणा"।

भागना–क्रि० अ० [सं० भाज्] १. किसी स्थान से हटने के लिये दौड़कर निकल जाना। पलायन करना।

मुहा०—सिर पर पैर रखकर भागना= बहुत तेजी से भागना।

२. टल जाना। हट जाना। कोई काम करने से बचना। पीछा छुड़ाना।

भागनेय–संज्ञा पु [सं०] भानजा।

भागफल–संज्ञा पुं० [सं०] वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो। लब्धि।

भागवंत†–वि० दे० "भाग्यवान्"।

भागवत–संज्ञा पु० [सं०] १. अठारह पुराणों में से एक जिसमें १२ स्कंध, ३१२ अध्याय और १८००० श्लोक हैं। यह वेदांत का तिलक-स्वरूप माना जाता है। श्रीमद्भागवत। २ देवी भागवत। ३. ईश्वर का भक्त। ४. १३ मात्राओं का एक छंद।

वि० भागवत-संबंधी।

भागिनेय–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० भागिनेयी] बहिन का लड़का। भानजा।

भागी–संज्ञा पु० [सं० भागिन्] १. हिस्सेदार। शरीक। २. अधिकारी। हकदार।

भागीरथ–संज्ञा पुं० दे० "भगीरथ"।

भागीरथी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा नदी। जाह्नवी।

भाग्य–संज्ञा पु० [सं०] १. वह अवश्यंभावी दैवी विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य्य पहले ही से निश्चित रहते हैं। तकदीर। किस्मत। नसीब।

वि० हिस्सा करने के लायक।

भाचक्र–संज्ञा पु० [सं०] क्रांतिवृत्त।

भाजक–वि० [सं०] विभाग करनेवाला। संज्ञा पु० वह अंक जिससे किसी राशि को भाग दिया जाय। विभाजक। (गणित)

भाजन–संज्ञा पु० [सं०] १. बरतन। २. आधार। ३. योग्य। पात्र।

भाजना*–क्रि० अ० दे० "भागना"।

भाजी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माँड। पीच। २. तरकारी, साग आदि।

भाज्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह अंक जिसे भाजक अंक से भाग दिया जाता है।

वि० विभाग करने के योग्य।

भाट–संज्ञा पुं० [सं० भट्ट] [स्त्री० भाटिन] १. राजाओं का यश वर्णन करनेवाला। चारण। बंदी। २. खुशामदी।

भाटा–संज्ञा पुं० [हिं० भाट] १. पानी का उतार की ओर जाना। २. समुद्र के चढ़ाव का उतरना। ज्वार का उलटा।

भाटयौ ⁕†–संज्ञा पुं० [हिं० भाट] भाट का काम। भटई। यशकीर्तन।
भाठी⁕†–संज्ञा स्त्री० दे० "भट्टी"।
भाड़–संज्ञा पुं० [सं० भ्राष्ट्र] भड़भूँजे की भट्ठी जिसमें वे अनाज भूनते हैं।
मुहा०—भाड़ झोंकना = तुच्छ या अयोग्य काम। भाड़ में झोंकना या डालना = १. फेंकना। नष्ट करना। २. जाने देना।
भाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० भाट] किराया।
मुहा०—भाड़े का टट्टू = १. जो स्थायी न हो। क्षणिक। २. निकम्मा।
भाण–संज्ञा पुं० [सं०] १ हास्य-रस का एक प्रकार का दृश्यकाव्य-रूपक जो एक अंक का होता है। २. ब्याज। मिस।
भात–संज्ञा पुं० [सं० भक्त] १. पानी में उबाला हुआ चावल। २. विवाह की एक रसम। इसमें कन्यावाला समधी को भात खिलाता है।
संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रभात। २. प्रकाश।
भाति–संज्ञा स्त्री० [सं०] शोभा। कांति।
भाथा–संज्ञा पुं० [सं० भस्त्रा, पा० भत्था] १. तरकश। तूणीर। २ बड़ी भाथी।
भाथी–संज्ञा स्त्री० [सं० भस्त्री] वह धौंकनी जिससे भट्टी की आग सुलगाते हैं।
भादों–संज्ञा पुं० [सं० भाद्र, पा० भद्दो] सावन के बाद और क्वार के पहले का महीना। भाद्र। भाद्रपद।
भाद्र, भाद्रपद–संज्ञा पुं० दे० "भादों"।
भाद्रपदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र पुंज जिसके दो भाग हैं—पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा।
भान–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रकाश। रोशनी। २ दीप्ति। चमक। ३ ज्ञान। ४ प्रतीति। आभास।
भानजा–संज्ञा पुं० [हिं० बहिन + जा] [स्त्री० भानजी] बहिन का लड़का। भागिनेय।
भानना⁕†–क्रि० स० [सं० भंजन] १. तोड़ना। भंग करना। २. नष्ट करना। मिटाना। ३. दूर करना। ४. काटना।
क्रि० स० [हिं० भान] समझना।
भानमती–संज्ञा स्त्री० [सं० भानुमती] जादूगरनी।
भानवी⁕–संज्ञा स्त्री० [सं० मानवीया] जमुना।
भाना⁕†–क्रि० अ० [सं० भान = ज्ञान] १. जान पड़ना। मालूम होना। २. अच्छा लगना। पसंद आना। ३. शोभा देना।
क्रि० स० [सं० भा = प्रकाश] चमकाना।
भानु–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. विष्णु। ३ किरण। ४. राजा।
भानुज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भानुजा] १. यम। २. शनिश्चर। ३. कर्ण।
भानुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
भानुतनया–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
भानुमत्–वि० [सं०] प्रकाशमान्।
संज्ञा पुं० सूर्य्य।
भानुसुत–संज्ञा पुं० [सं०] १ यम। २. मनु। ३. शनिश्चर। ४. कर्ण।
भानुसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
भाप–संज्ञा स्त्री० [सं० वाष्प, पा० बप्प] १. पानी के बहुत छोटे छोटे कण जो उसके खौलने की दशा में ऊपर को उठते दिखाई पड़ते हैं। वाष्प। २. भौतिक शास्त्रानुसार घनीभूत या द्रवीभूत पदार्थों की वह अवस्था जो उनके पर्याप्त ताप पाने पर प्राप्त होती है।
भाभर–संज्ञा पुं० [सं० वप्र] वह जंगल जो पहाड़ों के नीचे तराई में होते हैं।
भाभरा⁕†–वि० [हिं० भा + भरना] लाल।
भाभी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भाई] भौजाई।
भाम–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त।
⁕ संज्ञा स्त्री० [सं० भामा] स्त्री।
भामा–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।
भामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।
भाय‡–संज्ञा पुं० [हिं० भाई] भाई।
⁕ संज्ञा पुं० [सं० भाव] १. अंतःकरण की वृत्ति। भाव। २. परिमाण। ३. दर। भाव। ४. भाँति। ढंग।
भायप–संज्ञा पुं० दे० "भाईचारा"।
भाया–वि० [हिं० भाना] प्रिय। प्यारा।
भारंगी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पौधा। इसकी पत्तियों का साग बनाकर खाते हैं। बँभनेटी। असबरग।
भार–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक परिमाण जो बीस पसेरी का होता है। २. बोझ। ३ वह बोझ जिसे बहँगी पर रखकर ले जाते हैं। ४. सँभाल। रक्षा। ५. किसी कर्त्तव्य के पालन का उत्तरदायित्व।
मुहा०—भार उठाना = उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। भार उतरना = कर्तव्य के भार से मुक्त होना।

६. आश्रय। सहारा। ७. २० तुला या २००० पल का एक मान या तौल।
†संज्ञा पु० दे० "भाड"।

भारत—संज्ञा पु० [सं०] १. महाभारत का पूर्व-रूप या मूल जो २४००० श्लोकों का था। २. दे० "भारतवर्ष"। ३. भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। ४. लंबी कथा। ५. घोर युद्ध। भारी लड़ाई।

भारतखंड—संज्ञा पु० दे० "भारतवर्ष"।

भारतवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह देश जो हिमालय के दक्षिण से लेकर कन्याकुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। आर्यावर्त्त। हिंदुस्तान।

भारती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वचन। वाणी। २. सरस्वती। ३. एक वृत्ति जिसके द्वारा रौद्र और बीभत्स रस का वर्णन किया जाता है। ४ ब्राह्मी। ५. दशनामी संन्यासियों में से एक।

भारतीय—वि० [सं०] भारत संबंधी। संज्ञा पु० भारत का निवासी।

भारथ†—संज्ञा पु० [हिं० भारत] १. दे० "भारत"। २. युद्ध। संग्राम।

भारथी—संज्ञा पु० [सं० भारत] सैनिक।

भारद्वाज—संज्ञा पु० [सं०] १. भरद्वाज के कुल में उत्पन्न पुरुष। २. द्रोणाचार्य। ३. भरदूल पक्षी। ४. एक ऋषि जिनका रचा हुआ श्रौत सूत्र और गृह्य सूत्र है।

भारना†—क्रि० स० [हिं० भार] १. बोझ लादना। भार डालना। २ दबाना।

भारवाहक—वि० [सं०] बोझ ढोनेवाला।

भारवि—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन कवि जो किरातार्जुनीय महाकाव्य के रचयिता थे।

भारा†—वि० दे० "भारी"।

भाराक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति।

भारावलंबकत्व—संज्ञा पु० [सं०] पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण।

भारी—वि० [हिं० भार] १. जिसमें बोझ हो। गुरु। बोझिल। २. कठिन। कराल। भीषण। ३. विशाल। बड़ा। मुहा०—भारी भरकम=बड़ा और भारी। ४. अधिक। अत्यंत। बहुत। ५. असह्य। दूभर। ६. सूजा हुआ। फूला हुआ। ७. प्रबल। ८. गंभीर। शांत। ...पु० [हिं० भारी+पन (प्रत्य०)] भारी होने का भाव। गुरुत्व।

भार्गव—संज्ञा पु० [सं०] १. भृगु के वंश में उत्पन्न पुरुष। २. परशुराम। ३ शुक्राचार्य। ४. मार्कंडेय। ५. एक उपपुराण का नाम। ६. जमदग्नि। ७ एक जाति जो संयुक्त प्रदेश के पश्चिम में पाई जाती है। वि० भृगु संबंधी। भृगु का।

भार्गवेश—संज्ञा पु० [सं० भार्गव+ईश] परशुराम।

भार्य्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। जोरू। स्त्री।

भाल—संज्ञा पु० [सं०] कपाल। ललाट। संज्ञा पु० [हिं० भाला] १. भाला। बरछा। २. तीर का फल। गाँसी। संज्ञा पु० [सं० भल्लुक] रीछ। भालू।

भालचंद्र—संज्ञा पु० [सं०] १. महादेव। २ गणेश।

भालना—क्रि० स० [?] १. अच्छी तरह देखना। † २. ढूँढना। तलाश करना।

भाललोचन—संज्ञा पु० [सं०] शिव।

भाला—संज्ञा पु० [सं० भल्ल] बरछा। नेजा।

भालाबरदार—संज्ञा पु० [हिं० भाला+फा० बरदार] बरछा चलानेवाला। बरछैत।

भालि†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाला] १. बरछी। साँग। २. शूल। काँटा।

भाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाला] १. भाले की गाँसी या नोक। २. शूल। काँटा।

भालुक—संज्ञा पु० [सं०] भालू। रीछ।

भालुनाथ—संज्ञा पु० दे० "जामवंत"।

भालू—संज्ञा पु० [सं० भल्लुक] एक प्रसिद्ध स्तनपायी भीषण चौपाया जो कई प्रकार का होता है। मदारी इसे पकड़कर नाचना और खेल करना सिखाते हैं। रीछ।

भावता†—संज्ञा पु० [हिं० भाना] प्रेमपात्र। प्रिय। प्रीतम। संज्ञा पु० [सं० भावी] होनहार। भावी।

भाव—संज्ञा पु० [सं०] १. सत्ता। अस्तित्व। अभाव का उलटा। २. मन में उत्पन्न होनेवाली प्रवृत्ति। विचार। ख्याल। ३. अभिप्राय। तात्पर्य। मतलब। ४. मुख की आकृति या चेष्टा। ५. आत्मा। ६. जन्म। ७. चित्त। ८ पदार्थ। चीज। ९. प्रेम। मुहब्बत। १०. कल्पना। ११. प्रकृति। स्वभाव। १२. ढंग। तरीका। १३. प्रकार। तरह। १४. दशा। अवस्था। हालत। १५. भावना। १६. विश्वास।

भरोसा। १७. आदर। प्रतिष्ठा। १८. बिक्री आदि का हिसाब। दर। निर्ख़।
मुहा०—भाव उतरना या गिरना = किसी चीज़ का दाम घट जाना। भाव चढ़ना = दाम बढ़ जाना।
१९. ईश्वर, देवता आदि के प्रति होनेवाली श्रद्धा या भक्ति। २०. नायक आदि को देखने के कारण अथवा और किसी प्रकार नायिका के मन में उत्पन्न होनेवाला विकार। २१. गीत के विषय के अनुसार शरीर या अंगों का संचालन।
मुहा०—भाव देना = आकृति आदि से अथवा अंग संचालित करके मन का भाव प्रकट करना।
२२. नाज़। नख़रा। चोचला।
भावइ†—अव्य० [हिं० भाना] जी चाहे। इच्छा हो तो।
भावक†—क्रि० वि० [सं० भाव] किंचित्। थोड़ा सा। ज़रा सा। कुछ एक।
वि० [सं०] भाव से भरा। भावपूर्ण।
संज्ञा पुं० [सं०] १ भावना करनेवाला। २. भाव संयुक्त। ३. भक्त। प्रेमी।
भावगति—संज्ञा स्त्री० [सं० भाव + गति] इरादा। इच्छा। विचार।
भावगम्य—वि० [सं०] भक्ति-भाव से जानने योग्य।
भावग्राह्य—वि० [सं०] भक्ति से ग्रहण करने योग्य।
भावज—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई की स्त्री। भाभी। भौजाई।
भावता—वि० [हिं० भावना] [स्त्री० भावती] जो भला लगे। प्रिय।
संज्ञा पुं० प्रेमपात्र। प्रियतम।
भाव ताव—संज्ञा पुं० [हिं० भाव + ताव] किसी चीज़ का मूल्य या भाव आदि। निर्ख़। दर।
भावन†—वि० [हिं० भावना] अच्छा या प्रिय लगनेवाला। जो भला लगे।
भावना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ध्यान। विचार। ख़याल। २. चित्त का एक संस्कार जो अनुभव और स्मृति से उत्पन्न होता है। ३. इच्छा। चाह। ४. साधारण विचार या कल्पना। ५. वैद्यक के अनुसार किसी चूर्ण आदि को किसी प्रकार के तरल पदार्थ में मिलाकर घोटना जिसमें उस औषध में तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जायँ। पुट।
क्रि० अ० अच्छा लगना। पसंद आना।
वि० [हिं० भावना] प्रिय। प्यारा।
भावनि†—संज्ञा स्त्री० [हिं० भाना] जो कुछ जी में आवे। इच्छानुसार बात।
भावनीय—वि० [सं०] भावना करने योग्य।
भावभक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० भाव + भक्ति] १. भक्ति भाव। २. आदर। सत्कार।
भावली—संज्ञा स्त्री० [देश०] ज़मींदार और असामी के बीच उपज की बँटाई।
भाववाचक—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित हो। जैसे—सज्जनता।
भाववाच्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाय कि वाक्य का उद्देश्य केवल कोई भाव है। इसमें तृतीया की विभक्ति रहती है। जैसे—मुझसे बोला नहीं जाता।
भावसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें दो विरुद्ध भावों की संधि का वर्णन होता है।
भावशबलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें कई एक भावों का एक साथ वर्णन किया जाता है।
भावाभास—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार।
भावार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह अर्थ जिसमें मूल का केवल भाव आ जाय। २. अभिप्राय। तात्पर्य।
भावालंकार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार।
भाविक—वि० [सं०] जाननेवाला। मर्मज्ञ।
भावी—संज्ञा स्त्री० [सं० भाविन्] १. भविष्यत् काल। आनेवाला समय। २ भविष्य में अवश्य होनेवाली बात। भवितव्यता। ३. भाग्य। तक़दीर।
भावुक—वि० [सं०] १. भावना करनेवाला। सोचनेवाला। २. जिस पर कोमल भावों का जल्दी प्रभाव पड़ता हो। ३. अच्छी बातें सोचनेवाला।
भावै†—अव्य० [हिं० भाना] चाहे।
भाषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. कथन। बातचीत। कहना। २. व्याख्यान। वक्तृता।
भाषना†—क्रि० अ० [सं० भाषण] बोलना।
क्रि० अ० [सं० भक्षण] भोजन

भाषांतर–संज्ञा पुं० [सं०] अनुवाद । उलथा ।
भाषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुख से उच्चरित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह जिसके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है । बोली । ज़बान । वाणी । २. किसी विशेष जन-समुदाय में प्रचलित बात-चीत करने का ढंग । बोली । ३. आधुनिक हिंदी । ४. वाक्य । ५. वाणी ।
भाषाबद्ध–वि० [सं०] साधारण देशभाषा में बना हुआ ।
भाषासम–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का शब्दालंकार । काव्य में केवल ऐसे शब्दों की योजना जो कई भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हों ।
भाषित–वि० [सं०] कथित । कहा हुआ ।
भाषी–संज्ञा पुं० [सं० भाषिन्] बोलनेवाला ।
भाष्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत्रों की की हुई व्याख्या या टीका । २. किसी गूढ़ बात या वाक्य की विस्तृत व्याख्या ।
भाष्यकार–संज्ञा पुं० [सं०] सूत्रों की व्याख्या करनेवाला । भाष्य बनानेवाला ।
भास–संज्ञा पुं० [सं०] १ दीप्ति । प्रकाश । चमक । २. मयूख । किरण । ३. इच्छा ।
भासना–क्रि० अ० [सं० भास] १. प्रकाशित होना । चमकना । २. मालूम होना । प्रतीत होना । ३. देख पड़ना । ४. फँसना । लिप्त होना ।
✿ †–क्रि० अ० [सं० भाषण] कहना ।
भासमान–वि० [सं०] जान पड़ता हुआ । भासता हुआ । दिखाई देता हुआ ।
भासित–वि० [सं०] चमकीला । प्रकाशित ।
भास्कर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवर्ण । सोना । २. सूर्य्य । ३. अग्नि । आग । ४. वीर । ५. महादेव । शिव । ६. पत्थर पर चित्र और बेल-बूटे आदि बनाना ।
भास्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन । २. सूर्य्य । वि० दीप्तियुक्त । चमकदार ।
भिगाना–क्रि० स० दे० "भिगोना" ।
भिजाना–क्रि० स० दे० "भिगोना" ।
भिंडी–संज्ञा स्त्री० [सं० भिंडा] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है ।
भिक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. याचना । माँगना । २. दीनता दिखलाते हुए अपने उदरनिर्वाह के लिये माँगने का । भीख । ३. इस प्रकार माँगने से मिली हुई वस्तु । भीख ।
भिक्षापात्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह पात्र जिसमें भिखमंगे भीख माँगते हैं ।
भिक्षु–संज्ञा पुं० [सं०] १. भीख माँगनेवाला । भिखारी । २. संन्यासी । [स्त्री० भिक्षुणी] ३. बौद्ध संन्यासी ।
भिक्षुक–संज्ञा पुं० [सं०] भिखमंगा ।
भिखमंगा–संज्ञा पुं० [हिं० भीख + माँगना] जो भीख माँगे । भिखारी । भिक्षुक ।
भिखारिणी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भिखारी] वह स्त्री जो भिक्षा माँगे । भिखमंगिन ।
भिखारिन–संज्ञा स्त्री० दे० "भिखारिणी" ।
भिखारी–संज्ञा पुं० [हिं० भीख + आरी (प्रत्य०)] [स्त्री० भिखारिन, भिखारिणी] भिक्षुक । भिखमंगा ।
भिगाना–क्रि० स० दे० "भिगोना" ।
भिगोना–क्रि० स० [सं० अभ्यज] किसी चीज को पानी से तर करना । भिगाना ।
भिच्छा–संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा" ।
भिच्छु–संज्ञा पुं० दे "भिक्षु" ।
भिजवना✿†–क्रि० स० [हिं० भिगोना] भिगोने में दूसरे को प्रवृत्त करना ।
भिजवाना–क्रि० स० [हिं० भेजना का प्रेर०] किसी को भेजने में प्रवृत्त करना ।
भिजाना–क्रि० स० [सं० अभ्यज] भिगोना । क्रि० स० दे० "भिजवाना" ।
भिजोना✿ †–क्रि० स० दे० "भिगोना" ।
भिज्ञ–वि० [सं०] जानकार । वाक़िफ़ ।
भिड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० बरैं ?] बरैं । ततैया ।
भिड़ना–क्रि० अ० [हिं० भड़ अनु० ?] १. टक्कर खाना । टकराना । २. लड़ना झगड़ना । लड़ाई करना । ३. सटना ।
भितल्ला–संज्ञा पुं० [हिं० भीतर + तल] दोहरे कपड़े में भीतरी ओर का पल्ला । अस्तर । वि० भीतर का । अंदर का ।
भिताना✿†–क्रि० स० [सं० भीति] डरना ।
भित्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीवार । २. डर । भय । भीति । ३. वह पदार्थ जिस पर चित्र बनाया जाय ।
भिद्–संज्ञा पुं० [सं० भिद्] भेद । अंतर ।
भिदना–क्रि० अ० [सं० भिद्] १. पैवस्त होना । घुस जाना । २. छेदा जाना । ३. घायल होना ।
भिदुर–संज्ञा पुं० [सं० भिदिर] वज्र ।
भिनकना–क्रि० अ० [अनु०] १. भिन

मिन शब्द करना। (मक्खियों का) २. घृणा उत्पन्न होना।
भिनभिनाना–क्रि० अ० [अनु०] भिन भिन शब्द करना।
भिनसार†–संज्ञा पुं० [सं० विनिशा] सवेरा।
भिन्न–वि० [सं०] १. अलग। पृथक्। जुदा। २. इतर। दूसरा। अन्य।
संज्ञा पुं० वह संख्या जो एकाई से कुछ कम हो। (गणित)
भिन्नता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भिन्न होने का भाव। अलगाव। भेद। अंतर।
भियना*†–क्रि० अ० [सं० भीत] डरना।
भिरना*†–क्रि० स० दे० "भिड़ना"।
भिरिंग*†–संज्ञा पुं० दे० "भृंग"।
भिलनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भील] भील जाति की स्त्री।
भिलावाँ–संज्ञा पुं० [सं० भल्लातक] एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष। इसका फल औषध के काम में आता है।
भिल्ल–संज्ञा पुं० दे० "भील"।
भिश्त*†–संज्ञा पुं० दे० "बिहिश्त"।
भिश्ती–संज्ञा पुं० [?] मशक द्वारा पानी ढोनेवाला व्यक्ति। सक्का।
भिषक्–संज्ञा पुं० [सं०] वैद्य।
भींगना–क्रि० अ० दे० "भीगना"।
भींचना†–क्रि० स० [हिं० खींचना] १. खींचना। कसना। २. दे० "मीचना"।
भींजना*†–क्रि० अ० [हिं० भीगना] १. गीला होना। तर होना। भीगना। २. पुलकित या गद्गद हो जाना। ३. मेल-मिलाप पैदा करना। ४. नहाना। ५. समा जाना।
भी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भय। डर।
अव्य० [हिं० ही] १. अवश्य। ज़रूर। २. अधिक। ज़्यादा। ३. तक। लौं।
भीउँ*–संज्ञा पुं० [सं० भीम] भीमसेन।
भीख–संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।
भीखन*–वि० दे० "भीषण"।
भीखम*†–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।
भीगना–क्रि० अ० [सं० अभ्यंज] पानी या और किसी तरल पदार्थ के संयोग के कारण तर होना। आर्द्र होना।
भीजना†–क्रि० अ० दे० "भींगना"।
भीटा–संज्ञा पुं० [देश०] १. ऊँची या टीलेदार ज़मीन। २. वह बनाई हुई ऊँची ज़मीन जिस पर पान की खेती होती है।
भीड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० भिड़ना] १. आदमियों का जमाव। जन-समूह। ठट।
मुहा०—भीड़ छँटना = भीड़ के लोगों का इधर उधर हो जाना। भीड़ न रह जाना।
२. संकट। आपत्ति। मुसीबत।
भीड़न*–संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़ना] मलने, लगाने या भरने की क्रिया।
भीड़ना*†–क्रि० स० [हिं० भिड़ाना] १. मिलाना। लगाना। २. मलना।
भीड़भड़क्का–संज्ञा पुं० दे० "भीड़-भाड़"।
भीड़भाड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़ + भाड़ (अनु०)] मनुष्यों का जमाव। जन-समूह। भीड़।
भीड़ा†–वि० [हिं० भिड़ना] संकुचित। तंग।
भीत–संज्ञा स्त्री० [सं० भित्ति] १. दीवार।
मुहा०—भीत में दौड़ना = अपनी सामर्थ्य से बाहर अथवा असंभव कार्य करना। भीत के बिना चित्र बनाना = बे सिर पैर की बात करना।
२. विभाग करनेवाला परदा। ३. चटाई। ४. छत। गच।
वि० [सं०] [स्त्री० भीता] डरा हुआ।
भीतर–क्रि० वि० [?] अंदर।
संज्ञा पुं० १. अंतःकरण। हृदय। २. रनिवास। ज़नानख़ाना।
भीतरी–वि० [हिं० भीतर + ई (प्रत्य०)] १. भीतरवाला। अंदर का। २. गुप्त।
भीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डर। भय। ख़ौफ़। २. कंप।
संज्ञा स्त्री० [सं० भित्ति] दीवार।
भीती*†–संज्ञा स्त्री० [सं० भित्ति] दीवार।
संज्ञा स्त्री० [सं० भीति] डर। भय।
भीन*†–संज्ञा पुं० [हिं० विहान] सवेरा।
भीनना–क्रि० अ० [हिं० भीगना] भर जाना। समा जाना। पैवस्त हो जाना।
भीम–संज्ञा पुं० [सं०] १. भयानक [illegible] २. शिव। ३. विष्णु। ४. [illegible] आठ मूर्तियों में से एक। [illegible] पांडवों में से एक जो वायु [illegible] कुंती के गर्भ से उत्पन्न हुए [illegible] बड़े वीर और बलवान [illegible]
मुहा०—भीम के हाथी [illegible] हुए हाथी। (कहा [illegible] भीमसेन ने सात [illegible]

दिए थे जो आज तक वायुमंडल में ही घूमते हैं।)

वि० १. भयानक। २ बहुत बड़ा।

भीमता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भयंकरता।

भीमराज–संज्ञा पु० [सं० भृंगराज] काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया।

भीमसेन–संज्ञा पु० [सं०] युधिष्ठिर के छोटे भाई। भीम।

भीमसेनी एकादशी–संज्ञा स्त्री० [हिं० भीमसेनी + एकादशी] १. ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। २ माघ शुक्ला एकादशी।

भीमसेनी कपूर–संज्ञा पु० [हिं० भीमसेन + कपूर] एक प्रकार का बढ़िया कपूर। बरास।

भीमाथली–संज्ञा पु० [देश०] घोड़ो की एक जाति।

भीर–संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़] १ दे० "भीड़"। २ कष्ट। दुःख। तकलीफ। ३ विपत्ति। आफत।

वि० [सं० भीरु] १ डरा हुआ। भयभीत। २ डरपोक। कायर।

भीरना–क्रि० अ० [हिं० भीरु] डरना।

भीरु–वि० [सं०] डरपोक। कायर।

भीरुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ डरपोकपन। कायरता। बुजदिली। २ डर। भय।

भीरुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "भीरुता"।

भीरे–क्रि० वि० [हिं० भिड़ना] समीप। नजदीक। पास।

भील–संज्ञा पुं० [सं० भिल्ल] [स्त्री० भीलनी] एक प्रसिद्ध जंगली जाति।

भीम–संज्ञा पु० [सं० भीम] भीमसेन।

भीष–संज्ञा स्त्री० [सं० भिक्षा] भीख।

भीषज*–संज्ञा पुं० [सं० भेषज] वैद्य।

भीषण–वि० [सं०] १ देखने में बहुत भयानक। डरावना। २ उग्र या दुष्ट।

संज्ञा पु० [सं०] भयानक रस।

भीषणता–संज्ञा स्त्री० [सं०] भीषण होने का भाव। डरावनापन। भयंकरता।

भीषन–वि० दे० "भीषण"।

भीषम–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।

भीष्म–संज्ञा पुं० [सं०] १. भयानक रस। (साहित्य) २. शिव। महादेव। ३. राक्षस। ४ राजा शांतनु के पुत्र जो गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। देवव्रत। गांगेय।

वि० भीषण। भयंकर।

–संज्ञा पुं० [सं०] विदर्भ देश के एक राजा जो रुक्मिणी के पिता थे।

भीष्मपंचक–संज्ञा पु० [सं०] कार्तिक शुक्ला एकादशी से पंचमी तक के पाँच दिन।

भीष्मपितामह–संज्ञा पु० दे० "भीष्म"।

भीसम–संज्ञा पु० दे० "भीष्म"।

भुँइ–संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] पृथिवी। भूमि।

भुँइफोर–संज्ञा पु० [हिं० भुइँ + फोड़ना] एक प्रकार की बरसाती खुभी। गरुआ।

भुइहरा–संज्ञा पु० [हिं० भुइँ + घर] १. वह स्थान जो भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया हो। २ तहखाना।

भुँजना–क्रि० अ० दे० "भुनना"।

भुअंग–संज्ञा पु० [सं० भुजंग] साँप।

भुअंगम–संज्ञा पु० [सं० भुजंगम्] साँप।

भुअन–संज्ञा पु० दे० 'भुवन'।

भुआर–संज्ञा पु० दे० "भुआल"।

भुआल–संज्ञा पु० [सं० भूपाल] राजा।

भुइँ–संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] भूमि। पृथ्वी।

भुइँआँवला–संज्ञा पु० [सं० भूम्यामलक] एक घास जो ओषधि के काम में आती है।

भुइँपाल–संज्ञा पु० दे० "भूकंप"।

भुँइडोल–संज्ञा पु० दे० "भूकंप"।

भुइँहार–संज्ञा पु० दे० "भूमिहार"।

भुक–संज्ञा पु० [सं० भुज्] १. भोजन। खाद्य। आहार। २ अग्नि। आग।

भुक्खड़–वि० [हिं० भूख + अड़ (प्रत्य०)] १. जिसे भूख लगी हो। भूखा। २. वह जो बहुत खाता हो। पेटू। ३ दरिद्र। कंगाल।

भुक्त–वि० [सं०] १ जो खाया गया हो। भक्षित। २. भोगा हुआ। उपभुक्त।

भुक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भोजन। आहार। २. लौकिक सुख। ३. कब्जा।

भुखमरा–वि० [हिं० भूख + मरना] १ जो भूखों मरता हो। भुक्खड़। २ पेटू।

भुखाना–क्रि० अ० [हिं० भूख] भूख से पीड़ित होना। भूखा होना।

भुखालू–वि० दे० "भूखा"।

भुगत–संज्ञा स्त्री० दे० "भुक्ति"।

भुगतना–क्रि० स० [सं० भुक्ति] सहना। झेलना। भोगना।

क्रि० अ० १. पूरा होना। निबटना। २. बीतना। चुकना।

भुगतान–संज्ञा पुं० [हिं० भुगतना] १.

निपटारा। फैसला। २. मूल्य या देन चुकाना। बेबाकी। ३ देना। देन।

भुगताना-क्रि० स० [हिं० भुगतना का स० रूप] १ भुगतने का सकर्मक रूप। पूरा करना। संपादन करना। २ बिताना। लगाना। ३ चुकाना। बेबाक करना। ४. भुगतना का प्रेरणार्थक रूप। झेलाना। भोग कराना। ५. दु:ख देना।

भुगुति*-संज्ञा स्त्री० दे० "भुक्ति"।

भुचड-वि० [हिं० भूत+चढ़ना] मूर्ख।

भुजग-संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

भुजगप्रयात-संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त।

भुजगविजृंभित-संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त।

भुजगसंगता-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त।

भुजगा-संज्ञा पुं० [हिं० भुजग] १ काले रंग का एक पक्षी। भुजेटा। २. दे० "भुजग"।

भुजगिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोपाल नामक छंद का दूसरा नाम। २ साँपिन।

भुजगी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साँपिन। नागिन। २ एक वर्णिक वृत्ति।

भुज-संज्ञा पुं० [सं०] १ बाहु। बाँह।
मुहा०—भुज में भरना = आलिंगन करना।
२ हाथ। ३ हाथी का सूँड़। ४ शाखा। डाली। ५ प्रांत। किनारा। ६. ज्यामिति में किसी क्षेत्र का किनारा या किनारे की रेखा। ७ त्रिभुज का आधार। ८ समकोणों का पूरक कोण। ९. दो की संख्या का बोधक शब्द या संकेत।

भुजग-संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

भुजगनिसृता-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्त।

भुजगशिशुभृता-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति। भुजगशिशुसुता।

भुजदंड-संज्ञा पुं० [सं०] बाहुदंड।

भुजपाश-संज्ञा पुं० [सं०] गलबाँही। गले में हाथ डालना।

भुजप्रतिभुज-संज्ञा पुं० [सं०] सरल क्षेत्र की आमने सामने की भुजाएँ।

भुजबंद-संज्ञा पुं० [सं० भुजबंध] बाजूबंद।

भुजबाथ२-संज्ञा पुं० [हिं० भुज+बाँधना] अँकवार।

भुजमूल-संज्ञा पुं० [सं०] १ खवा। पक्खा। मोढा। २. काँख।

भुजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँह। हाथ।
मुहा०—भुजा उठाना या टेकना = प्रतिज्ञा करना।

भुजाली-संज्ञा स्त्री० [हिं० भुज+आली (प्रत्य०)] १ एक प्रकार की बड़ी टेढ़ी छुरी। कुकरी। खुखरी। २ छोटी बरछी।

भुजिया-संज्ञा पुं० [हिं० भूनना=भूनना] १ उबाले हुए धान का चावल। २. सूखी भूनी हुई तरकारी।

भुजैल-संज्ञा पुं० [सं० भुजा] भुजंगा पक्षी।

भुजौना‡-संज्ञा पुं० [हिं० भूजना] १. भुना हुआ अन्न। भूना। भूजा। भुजेना। २. भूनने या भुनाने की मजदूरी।

भुट्टा-संज्ञा पुं० [सं० भृष्ट, प्रा० भुट्ठ] १. मक्के की हरी बाल। २ जुआर या बाजरे की बाल। ३. गुच्छा। घौद।

भुठार-संज्ञा पुं० [हिं० भूड़+ठौर] घोड़ों की एक जाति।

भुन-संज्ञा पुं० [अनु०] मक्खी आदि का शब्द। अव्यक्त गुंजार का शब्द।

भुनगा-संज्ञा पुं० [अनु०] [स्त्री० भुनगी] १. एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा। २. कीड़ा। पतिंगा।

भुनना-क्रि० अ० [हिं० भूनना] भूनने का अकर्मक रूप। भूना जाना।
क्रि० अ० भुनाने का अकर्मक रूप।

भुनभुनाना-क्रि० अ० [अनु०] १. भुन भुन शब्द करना। २ मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना। बड़बड़ाना।

भुनाना-क्रि० स० [हिं० भूनना] भूनने का प्रेरणार्थक रूप।
क्रि० स० [सं० भंजन] बड़े सिक्के आदि को छोटे सिक्कों आदि से बदलना।

भुवि*-संज्ञा स्त्री० [सं० भू] पृथ्वी। भूमि।

भुरकना-क्रि० अ० [सं० भुरण] १. सूख-कर भुरभुरा हो जाना। २ भूलना।
क्रि० स० भुरभुराना। बुरकना।

भुरकाना-क्रि० स० [हिं० भुरकना] १. भुरभुरा करना। २ छिड़कना। भुरभुराना। ३. भुलवाना। बहकाना।

भुरकुस-संज्ञा पुं० [हिं० भुरकना] चूर्ण।
मुहा०—भुरकुस निकलना = १. चूर चूर होना। २ इतनी मार खाना कि हड्डी पसली चूर चूर हो जाय। ३. नष्ट होना।

भुरता–संज्ञा पुं० [भुरकना या भुरभुरा] १. दबकर विकृतावस्था को प्राप्त पदार्थ। २. चोखा या भरता नाम का सालन।
भुरभुरा–वि० [अनु०] [स्त्री० भुरभुरी] जिसके कण थोड़ा आघात लगने पर भी अलग हो जायँ। बलुआ।
भुरवना†–क्रि० स० [सं० भ्रमण] भुलवाना। भ्रम में डालना। फुसलाना।
भुराई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० भोला] भोलापन। संज्ञा पुं० [हिं० भूरा] भूरापन।
भुराना†–क्रि० स० [हिं० भुलाना] १. भूलना। २. दे० "भुरवाना"।
भुलक्कड़–वि० [हिं० भूलना] जो बराबर भूल जाता हो। जिनका स्वभाव भूलने का हो।
भुलवाना–क्रि० स० [हिं० भूलना का प्रेर०] १. भूलना का प्रेरणार्थक रूप। भ्रम में डालना। २. दे० "भुलाना"।
भुलसना–क्रि० स० [हिं० भुलभुला] गरम राख में झुलसना।
भुलाना–क्रि० स० [हिं० भूलना] १. भूलने का प्रेरणार्थक रूप। भ्रम में डालना। २. भूलना। विस्मृत करना।
*† क्रि० अ० १. भ्रम में पड़ना। २. भटकना। भरमना। राह भूलना। ३. भूल जाना। विस्मरण होना।
भुलावा–संज्ञा पुं० [हिं० भूलना] धोखा।
भुवग–संज्ञा पुं० [सं० भुजग] साँप।
भुवगम–संज्ञा पुं० [सं० भुजगम] साँप।
भुवः–संज्ञा पुं० [सं०] वह आकाश या लोक जो भूमि और सूर्य के अंतर्गत है। अंतरिक्ष लोक।
भुव–संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि। आग। संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। *संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह। भ्रू।
भुवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. जगत्। २. जल। ३. जन। लोग। ४. लोक। पुराणानुसार लोक चौदह हैं। भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य ये सात स्वर्ग लोक हैं और अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत, महातल, रसातल और पाताल ये सात पाताल हैं। ५. चौदह की संख्या का द्योतक शब्द संकेत। ६. सृष्टि।
भुवनकोश–संज्ञा पुं० [सं०] १. भूमंडल। २. ब्रह्मांड।
भुवपाल*–संज्ञा पुं० दे० "भूपाल"।
भुवर्लोक–संज्ञा पुं० [सं०] सात लोकों में दूसरा लोक। अंतरिक्ष लोक।
भुवनपति–संज्ञा पुं० [सं०] भूपति। राजा।
भुवा–संज्ञा पुं० [हिं० घूआ] घूआ। रूई।
भुवार*–संज्ञा पुं० दे० "भुवाल"।
भुवाल*–संज्ञा पुं० [सं० भूपाल] राजा।
भुवि–संज्ञा स्त्री० [सं० भू] भूमि। पृथिवी।
भुशुंडी–संज्ञा पुं० दे० "काक भुशुंडी"। संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र।
भुस–संज्ञा पुं० [सं० तुष] भूसा।
भुसी*–संज्ञा स्त्री० [हिं० भूसा] भूसी।
भूँकना–क्रि० अ० [अनु०] १. भूँ भूँ या भों भों शब्द करना (कुत्तों का)। (कुत्तों की बोली) २. व्यर्थ बकना।
भूँचाल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भूँजना†–क्रि० स० [हिं० भूनना] १. दे० "भूनना"। २ दुःख देना। सताना। क्रि० स० [सं० भोग] भोगना।
भूँजा†–संज्ञा पुं० [हिं० भूनना] १. भूना हुआ। चबेना। २. भड़भूँजा।
भूँडोल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भू–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. स्थान। संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह।
भूई–संज्ञा स्त्री० [हिं० घूआ] रूई के समान मुलायम छोटा टुकड़ा।
भूकंप–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के ऊपरी भाग का सहसा कुछ प्राकृतिक कारणों से हिल उठना। भूचाल। भूडोल। जलजला।
भूख–संज्ञा स्त्री० [सं० बुभुक्षा] १. खाने की इच्छा। क्षुधा। २. आवश्यकता। जरूरत। (व्यापारी) ३. कामना।
भूखन*–संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।
भूखना*†–क्रि० स० [सं० भूषण] सजाना।
भूखा–वि० पुं० [हिं० भूख] [स्त्री० भूखी] १. जिसे भूख लगी हो। क्षुधित। २. चाहनेवाला। इच्छुक। ३. दरिद्र। गरीब।
भूगर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी का भीतरी भाग। २. विष्णु।
भूगर्भशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसके द्वारा इस बात का ज्ञान होता है कि पृथ्वी का ऊपरी और भीतरी भाग किन किन तत्वों का बना है और उसका वर्तमान रूप किन कारणों से हुआ है।

भूगोल—संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी। २. वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों आदि का ज्ञान होता है। ३. वह ग्रंथ जिसमें पृथ्वी के प्राकृतिक विभागों आदि का वर्णन हो।

भूचर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. भूमि पर रहनेवाला प्राणी। ३. तंत्र के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि।

भूचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] योग में समाधि अंग की एक मुद्रा।

भूचाल—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भूटान—संज्ञा पुं० [देश०] हिमालय का एक प्रदेश जो नेपाल के पूर्व में है।

भूटानी—वि० [हिं० भूटान+ई (प्रत्य०)] भूटान देश का। भूटान संबंधी।
संज्ञा पुं० १. भूटान देश का निवासी। २. भूटान देश का घोड़ा।
संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।

भूटिया बादाम—संज्ञा पुं० [हिं० भूटान+फा० बादाम] एक पहाड़ी वृक्ष। इस वृक्ष का फल खाया जाता है। कपासी।

भूडोल—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भूत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वे मूल द्रव्य जिनकी सहायता से सारी सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य। महाभूत। २. सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, अचर या चर पदार्थ या प्राणी।
यौ०—भूतदया = जड़ और चेतन सबके साथ की जानेवाली दया।
३. प्राणी। जीव। ४. सत्य। ५. बीता हुआ समय। ६ व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका। ७ पुराणानुसार एक प्रकार के पिशाच या देव जो रुद्र के अनुचर हैं। ८. मृत शरीर। शव। ९. मृत प्राणी की आत्मा। १०. प्रेत। जिन। शैतान।
मुहा०—भूत चढ़ना या सवार होना = १. बहुत अधिक आग्रह या हठ होना। २. बहुत अधिक क्रोध होना। भूत की मिठाई या पकवान = १. वह पदार्थ जो भ्रम से दिखाई दे, पर वास्तव में जिसका अस्तित्व न हो। २. सहज में मिला हुआ धन जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय।
वि० १. गत। बीता हुआ। गुजरा हुआ। भूत काल। २. युक्त। मिला हुआ। ३. समान। सदृश। ४. जो हो चुका हो।

भूतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. भूत होने का भाव। २. भूत का धर्म।

भूतत्वविद्या—संज्ञा स्त्री० दे० "भूगर्भशास्त्र"।

भूतनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

भूतपूर्व—वि० [सं०] वर्तमान से पहले का। इससे पहले का।

भूतभावन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

भूत भाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पैशाची भाषा।

भूत यज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] पंचयज्ञ में से एक यज्ञ। भूतबलि। बलिवैश्वा।

भूतल—संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी का ऊपरी तल। २. संसार। दुनिया। ३. पाताल।

भूतांकुश—संज्ञा पुं० [सं०] १. कश्यप ऋषि। २. गावजुबान।

भूतात्मा—संज्ञा पुं० [सं० भूतात्मन्] १. शरीर। २ परमेश्वर। ३ शिव। ४. जीवात्मा।

भूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वैभव। धन-संपत्ति। राज्यश्री। २. भस्म। राख। ३ उत्पत्ति। ४. वृद्धि। अधिकता। ५. अणिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियाँ।

भूतिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूत] १. भूत योनि में प्राप्त स्त्री। २ शाकिनी, डाकिनी

भूतृण—संज्ञा पुं० [सं०] रूसा घास।

भूतेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

भूतोन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] वह उन्माद जो पिशाचों के आक्रमण के कारण हो।

भूदेव—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।

भूधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़। २ शेषनाग। ३. विष्णु। ४ राजा।

भून†—संज्ञा पुं० दे० "भ्रूण"।

भूनना—क्रि० स० [सं० भर्जन] १. आग पर रखकर या गरम बालू में डालकर पकाना। २. गरम घी या तेल आदि में डालकर कुछ देर तक चलाना। ३. तलना। ४. बहुत अधिक कष्ट देना।

भूप, भूपति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

भूपाल—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

भूपाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।

भूभल—संज्ञा स्त्री० [सं० भू+उर्ज या अनु० ?] गर्म राख या धूल। गर्म रेत। तनूरी।

भूभुरि*—संज्ञा स्त्री० दे० "भूभल"।

भूमंडल-संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी।
भूमि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। जमीन। मुहा०—भूमि होना = पृथ्वी पर गिर पड़ना। २ स्थान। जगह। ३. आधार। जड़। बुनियाद। ४ देश। प्रदेश। प्रांत। ५. योगशास्त्र के अनुसार वे अवस्थाएँ जो क्रम क्रम से योगी को प्राप्त होती हैं। ६. क्षेत्र।
भूमिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रचना। २. भेस बदलना। ३. किसी ग्रंथ के आरंभ की वह सूचना जिससे उस ग्रंथ के संबंध की आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले। मुखबंध। दीबाचा। ४. वेदांत के अनुसार चित्त की ये पाँच अवस्थाएँ—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। संज्ञा स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी। ज़मीन।
भूमिज-वि० [सं०] भूमि से उत्पन्न।
भूमिजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता जी।
भूमिपुत्र-संज्ञा पुं० [सं०] मंगल ग्रह।
भूमिया-संज्ञा पुं० [सं० भूमि + इया (प्रत्य०)] १. ज़मींदार। २ ग्राम देवता।
भूमिसुत-संज्ञा पुं० [सं०] मंगल ग्रह।
भूमिसुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी जी।
भूमिहार-संज्ञा पुं० [सं०] एक जाति जो बिहार और संयुक्त प्रांत में पाई जाती है।
भूय-अव्य० [सं० भूयस्] पुनः। फिर।
भूर-वि० [सं० भूरि] बहुत। अधिक। संज्ञा पुं० [हिं० भुरभुरा] बालू।
भूरज-संज्ञा पुं० [सं० भूर्ज] भोजपत्र। संज्ञा पुं० [सं० भू + रज] धूल। गर्द। मिट्टी।
भूरजपत्र-संज्ञा पुं० दे० "भोजपत्र"।
भूरपूर†-वि०, क्रि० वि० दे० "भरपूर"।
भूरसी दक्षिणा-संज्ञा स्त्री० [सं० भूयसी + दक्षिणा] वह दक्षिणा जो किसी धर्मकृत्य के अंत में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।
भूरा-संज्ञा पुं० [सं० बभ्रु] १ मिट्टी का सा रंग। खाकी रंग। २ कच्ची चीनी। ३. चीनी। वि० मटमैले रंग का। खाकी।
भूरि-संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ शिव। ४. इंद्र। ५ स्वर्ण। सोना। वि० [सं०] १. अधिक। बहुत। २ भारी।
भूरितेज-संज्ञा पुं० [सं० भूरितेजस्] १. अग्नि। २. सोना।
भूर्जपत्र-संज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र।
भूल-संज्ञा स्त्री० [हिं० भूलना] १. भूलने का भाव। २ गलती। चूक। ३. कसूर। दोष। अपराध। ४. अशुद्धि। ग़लती।
भूलक†-संज्ञा पुं० [हिं० भूल + क (प्रत्य०)] भूल करनेवाला। जिससे भूल होती हो।
भूलना-क्रि० स० [सं० विह्वल ?] १. विस्मरण करना। याद न रखना। २ ग़लती करना। ३ खो देना। क्रि० अ० १. विस्मृत होना। याद न रहना। २. चूकना। गलती होना। ३ आसक्त होना। लुभाना। ४ घमंड में होना। इतराना। ५. खो जाना।
भूलभुलैयाँ-संज्ञा स्त्री० [हिं० भूल + भुलाना + ऐयाँ (प्रत्य०)] १. वह घुमावदार और चक्कर में डालनेवाली इमारत जिसमें जाकर आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि फिर बाहर नहीं निकल सकता। २ चक्कर। ३ बहुत घुमाव फिराव की बात या घटना।
भूलोक-संज्ञा पुं० [सं०] संसार। जगत्।
भूवा-संज्ञा पुं० [हिं० घूआ] रूई। वि० उजला। सफ़ेद।
भूशायी-वि० [सं० भूशायिन्] १. पृथ्वी पर सोनेवाला। २ पृथ्वी पर गिरा हुआ। ३ मृतक। मरा हुआ।
भूषण-संज्ञा पुं० [सं०] १. अलंकार। गहना। जेवर। २. वह जिससे किसी चीज की शोभा बढ़ती हो।
भूषन -संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।
भूषना†-क्रि० स० [सं० भूषण] भूषित करना। अलंकृत करना। सजाना।
भूषा-संज्ञा स्त्री० [सं० भूषण] १. गहना। जेवर। २ सजाने की क्रिया।
भूषित-वि० [सं०] १. गहना पहने हुआ। अलंकृत। २. सजाया हुआ। सँवारा हुआ।
भूसन†-संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।
भूसा-संज्ञा पुं० [सं० तुष] गेहूँ, जौ आदि की बालों का महीन और टुकडे टुकडे किया हुआ छिलका।
भूसी-संज्ञा स्त्री० [हिं० भूसा] १. भूसा। २. किसी अन्न या दाने के ऊपर का छिलका।
भूसुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सीता।
भूसुर-संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।
भृंग-संज्ञा पुं० [सं०] १ भौंरा। २ एक प्रकार का कीड़ा। बिलनी।
भृंगराज-संज्ञा पुं० [सं०] १. भँगरा नामक वनस्पति। भँगरैया। २ काले रंग का एक पक्षी। भीमराज।

भृंगी–संज्ञा पुं० [सं० भृंगिन्] शिव जी का एक पारिषद् या गण।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भौंरी। २. बिलनी।
भृकुटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] भौंह।
भृगु–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध मुनि। प्रसिद्ध है कि इन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी थी। २ परशुराम। ३. शुक्राचार्य। ४ शुक्रवार। ५. शिव।
भृगुकच्छ–संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक भड़ौच जो एक प्रसिद्ध तीर्थ था।
भृगुनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] परशुराम।
भृगुमुख्य–संज्ञा पुं० [सं०] परशुराम।
भृगुरेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु मुनि के लात मारने से हुआ था।
भृत–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भृता] दास।
वि० [सं०] १. भरा हुआ। पूरित। २. पाला हुआ। पोषण किया हुआ।
भृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नौकरी। २. मजदूरी। ३. वेतन। तनख्वाह। ४. मूल्य। दाम। ५. भरना। ६. पालन करना।
भृत्य–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० भृत्या] नौकर।
भृश–क्रि० वि० [सं०] बहुत। अधिक।
भेंगा–वि० [देश०] जिनकी आँखों की पुतलियाँ टेढ़ी तिरछी रहती हों। ढेरी।
भेंट–संज्ञा स्त्री० [हिं० भेंटना] १. मिलना। मुलाकात। २ उपहार। नजराना।
भेंटना†–क्रि० स० [हिं० भेंट] १. मुलाकात करना। २. गले लगाना।
भेंवना†–क्रि० स० [हिं० भिगोना] भिगोना।
भेउꕯ†–संज्ञा पुं० [सं० भेद] भेद। रहस्य।
भेक–संज्ञा पुं० दे० "मेंढक"।
भेख–संज्ञा पुं० दे० "वेष"।
भेखजꕯ–संज्ञा पुं० दे० "भेषज"।
भेजना–क्रि० स० [सं० व्रजन्] किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना।
भेजवाना–क्रि० स० [हिं० भेजना का प्रे०] भेजने का काम दूसरे से कराना।
भेजा–संज्ञा पुं० [?] खोपड़ी के भीतर का गूदा। मज्जा।
भेड़–संज्ञा स्त्री० [सं० मेष] [पुं० भेड़ा] बकरी की जाति का एक चौपाया। गाडर।
मुहा०—भेड़िया धसान = बिना परिणाम सोचे समझे दूसरों का अनुसरण करना।
भेड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० भेड़] भेड़ जाति का नर। मेढ़ा। मेष।
भेड़िया–संज्ञा पुं० [हिं० भेड़] कुत्ते की तरह का एक प्रसिद्ध जंगली मांसाहारी जंतु। सियार। शृगाल।
भेड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "भेड़"।
भेद–संज्ञा पुं० [सं०] १ भेदने या छेदने की क्रिया। २. शत्रु पक्ष के लोगों को बहकाकर अपनी ओर मिलाना अथवा उनमें द्वेष उत्पन्न करना। ३. भीतरी छिपा हुआ हाल। रहस्य। ४. मर्म। तात्पर्य। ५. फर्क। ६. प्रकार। किस्म।
भेदक–वि० [सं०] १. छेदनवाला। २ रेचक। दस्तावर। (वैद्यक)
भेदकातिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें "औरै" "और" शब्द द्वारा किसी वस्तु की 'अति' वर्णन की जाती है।
भेदड़ी–संज्ञा स्त्री० [देश०] रबड़ी। बसौंधी।
भेदन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० भेदनीय, भेद्य] भेदने की क्रिया। छेदना। वेधना।
भेदभाव–संज्ञा पुं० [सं०] अंतर। फ़रक।
भेदिया–संज्ञा पुं० [सं० भेद+इया (प्रत्य०)] १. जासूस। गुप्तचर। २ गुप्त रहस्य जाननेवाला।
भेदी–संज्ञा पुं० दे० "भेदिया"।
वि० [सं० भेदिन्] भेदन करनेवाला।
भेदीसार–संज्ञा पुं० [सं०] बढ़इयों का छेदने का औज़ार। बरमा।
भेद्य–वि० [सं०] जो भेदा या छेदा जा सके।
भेन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० बहिन] बहिन।
भेना†–क्रि० स० दे० "भेवना"।
भेराꕯ†–संज्ञा पुं० दे० "बेड़ा"।
भेरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा ढोल या नगाड़ा। ढक्का। दुंदुभी।
भेरीकार–संज्ञा पुं० [सं० भेरी+कार (प्रत्य०)] [स्त्री० भेरीकारी] भेरी बजानेवाला।
भेलाꕯ†–संज्ञा पुं० [हिं० भेंट] १. भिड़ंत। २. भेंट। मुलाकात।
संज्ञा पुं० दे० "भिलावाँ"।
संज्ञा पुं० [?] बड़ा गोला या पिंड।
भेली†–संज्ञा स्त्री० [?] गुड़ या और किसी चीज़ की गोल बट्टी या पिंडी।
भेवꕯ†–संज्ञा पुं० [सं० भेद] १. मर्म की बात। भेद। रहस्य। २. बारी' बारी

भेवना॰†-क्रि॰ स॰ [हिं॰ भिगोना] भिगोना।
भेष-संज्ञा पुं॰ दे॰ "वेष"।
भेषज-संज्ञा पुं॰ [सं॰] औषध। दवा।
भेषना॰-क्रि॰ स॰ [हिं॰ भेष] १. भेष बनाना। स्वांग बनाना। २. पहनना।
भेस-संज्ञा पुं॰ [सं॰ वेष] १. बाहरी रूप-रंग और पहनावा आदि। वेष। २. कृत्रिम रूप और वस्त्र आदि।
भेसज॰-संज्ञा पुं॰ दे॰ "भेषज"।
भेसना॰†क्रि॰ स॰ [सं॰ वेश, हिं॰ भेस] वेश धारण करना। वस्त्रादि पहनना।
भैंस-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ महिष] १. गाय की जाति और आकार-प्रकार का, पर उससे बड़ा, चौपाया (मादा) जिसे लोग दूध के लिये पालते हैं। २. एक प्रकार की मछली।
भैंसा-संज्ञा पुं॰ [हिं॰ भैंस] भैंस का नर।
भैंसासुर-संज्ञा पुं॰ दे॰ "महिषासुर"।
भै॰-संज्ञा पुं॰ दे॰ "भय"।
भैक्ष-संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव। २. भीख।
भैक्षचर्या, भैक्षवृत्ति-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] भिक्षा माँगने की क्रिया।
भैचक, भैचक्क†-वि॰ [हिं॰ भय + चक = चकित] चकपकाया हुआ। चकित।
भैजन॰-वि॰ [हिं॰ भय + जनक] भय प्रद।
भैदा॰-वि॰ सं॰ भय + दा (प्रत्य॰)] भयप्रद।
भैना-संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बहिन] बहिन।
भैयस†-संज्ञा पुं॰ [हिं॰ भाई + अंश] संपत्ति में भाइयों का हिस्सा या अंश।
भैया-संज्ञा पुं॰ [हिं॰ भाई] १ भाई। भ्राता। २ बराबरवालों या छोटों के लिये संबोधन शब्द।
भैयाचारी-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "भाईचारा"।
भैया दूज-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ भ्रातृ द्वितीया] कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया। भाईदूज। इस दिन बहनें भाइयों को टीका लगाती हैं।
भैरव-वि॰ [सं॰] १. देखने में भयंकर। भयानक। २. भीषण शब्दवाला।
संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. शंकर। महादेव। २. शिव के एक प्रकार के गण जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं। ३. साहित्य में भयानक रस। ४. एक राग जो छः रागों में से मुख्य है। ५. भयानक शब्द।
भैरवी-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. एक प्रकार की जो महाविद्या की एक मूर्त्ति मानी जाती हैं। चामुंडा। (तंत्र) २. एक रागिनी जो सबेरे गाई जाती है।
भैरवी चक्र-संज्ञा पुं॰ [सं॰] तांत्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट समयों में देवी का पूजन करने के लिए एकत्र होता है।
भैरवीयातना-संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ भैरवी + यातना] पुराणानुसार वह यातना जो प्राणियों को मरते समय भैरव जी देते हैं।
भैषज-संज्ञा पुं॰ [सं॰] औषध। दवा।
भैहा*†-संज्ञा पुं॰ [हिं॰ भय + हा (प्रत्य॰)] १. भयभीत। डरा हुआ। २ जिस पर भूत या किसी देव का आवेश आता हो।
भोंकना-क्रि॰ स॰ [भक से अनु॰] बरछी, तलवार आदि नुकीली चीज़ जोर से धँसाना। घुसेड़ना।
भोंडा-वि॰ [हिं॰ भद्दा या भों से अनु॰] [स्त्री॰ भोंडी] भद्दा। बदसूरत। कुरूप।
भोंडापन-संज्ञा पुं॰ [हिं॰ भोंडा + पन (प्रत्य॰)] १. भद्दापन। २ बेहूदगी।
भोंदू-वि॰ [हिं॰ बुद्धू] बेवकूफ़। मूर्ख।
भोंपू-संज्ञा पुं॰ [भों अनु॰ + पू (प्रत्य॰)] एक प्रकार का बाजा जो फूँककर बजाते हैं।
भोंसले-संज्ञा पुं॰ [देश॰] महाराष्ट्रों के एक राजकुल की उपाधि। (महाराज शिवाजी और रघुनाथराव आदि इसी कुल के थे।)
भो॰-क्रि॰ अ॰ [हिं॰ भया] भया। हुआ।
भोकस॰†-वि॰ [हिं॰ भूख] भुक्खड़।
संज्ञा पुं॰ [?] एक प्रकार के राक्षस।
भोकार-संज्ञा स्त्री॰ [भो से अनु॰ + कार (प्रत्य॰)] ज़ोर ज़ोर से रोना।
भोक्ता-वि॰ [सं॰ भोक्तृ] [संज्ञा भोक्तृत्व] १. भोजन करनेवाला। २. भोग करनेवाला। भोगनेवाला। ३. ऐयाश।
भोग-संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सुख या दुःख आदि का अनुभव करना। २. सुख। विलास। ३. दुःख। कष्ट। ४. स्त्री संभोग। विषय। ५. धन। ६. पालन। ७ भक्षण। आहार करना। ८. देह। ९. पाप या पुण्य का वह फल जो सहन किया या भोगा जाता है। प्रारब्ध। १०. फल। अर्थ। ११. देवता आदि के आगे रखे जानेवाले खाद्य पदार्थ। नैवेद्य। १२. सूर्य्य आदि ग्रहों के राशियों में रहने का समय।

भोगना-क्रि० अ० [सं० भोग] १. सुख दुःख या शुभाशुभ कर्मफलों का अनुभव करना। भुगतना। २. सहन करना। सहना।
भोगबंधक-संज्ञा पुं० [सं० भोग्य+हिं० बंधक=रेहन] बंधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमें ब्याज के बदले में रेहन रखी हुई भूमि या मकान आदि भोगने का अधिकार होता है। दृष्टबंधक का उलटा।
भोगली-संज्ञा स्त्री० [देश०] १ नाक में पहनने का लौंग। २ टेटका या तरकी नाम का कान में पहनने का गहना। ३ वह छोटी पतली पोली कील जो लौंग या कान के फूल आदि को अटकाने के लिये उसमें लगाई जाती है।
भोगवना-क्रि० अ० [सं० भोग] भोगना।
भोगवाना-क्रि० स० [हिं० भोगना का प्रेर० रूप] दूसरे से भोग कराना।
भोग विलास-संज्ञा पुं० [सं०] आमोद-प्रमोद। सुख चैन।
भोगाना-क्रि० स० दे० "भोगवाना"।
भोगी-संज्ञा पुं० [सं० भोगिन्] भोगनेवाला। वि० १. सुखी। २ इंद्रियों का सुख चाहनेवाला। ३. भुगतनेवाला। ४ विषयासक्त। ५. आनंद करनेवाला।
भोग्य-वि० [सं०] भोगने योग्य। काम में लाने योग्य।
भोग्यमान-वि० [सं०] जो भोगा जाने को हो, अभी भोगा न गया हो।
भोज-संज्ञा पुं० [सं० भोजन] १. बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना पीना। जेवनार। दावत। २ खाने की चीज। संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजकट नामक देश जिसे आजकल भोजपुर कहते हैं। २. चंद्रवंशियों के एक वंश का नाम। ३. श्रीकृष्ण के सखा एक ग्वाल का नाम। ४ कान्यकुब्ज के एक प्रसिद्ध राजा जो महाराज रामभद्र देव के पुत्र थे। ५ मालवे के परमार वंशी एक प्रसिद्ध राजा जो संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् कवि थे।
भोजक-संज्ञा पुं० [सं०] १ भोग करनेवाला। भोगी। २ ऐयाश। विलासी।
भोजदेव-संज्ञा पुं० [सं०] कान्यकुब्ज के महाराज भोज। वि० दे० "भोज" (५)
भोजन-संज्ञा पुं० [सं०] १. भक्षण करना। खाना। २. खाने की सामग्री।
भोजनखाना॰-संज्ञा स्त्री० [सं० भोजन+हिं० खाना] पाकशाला। रसोईघर।
भोजनशाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] रसोईघर।
भोजनालय-संज्ञा पुं० [सं०] रसोईघर।
भोजपत्र-संज्ञा पुं० [सं० भूर्जपत्र] एक प्रकार का मँझोले आकार का वृक्ष। इसकी छाल प्राचीन काल में ग्रंथ और लेख आदि लिखने में बहुत काम आती थी।
भोजपुरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० भोजपुर+ई (प्रत्य०)] भोजपुर की भाषा। संज्ञा पुं० भोजपुर का निवासी। वि० भोजपुर का। भोजपुर संबंधी।
भोजराज-संज्ञा पुं० दे० "भोज" (५)।
भोजविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं० भोज+विद्या] इंद्रजाल। बाजीगरी।
भोजी-संज्ञा पुं० [सं० भोजन] खानेवाला।
भोजू॰-संज्ञा पुं० [सं० भोजन] भोजन।
भोज्य-संज्ञा पुं० [सं०] खाद्य पदार्थ। वि० खाने योग्य। जो खाया जा सके।
भोट-संज्ञा पुं० [सं० भोटंग] १. भूटान देश। २. एक प्रकार का बड़ा पत्थर।
भोटिया-संज्ञा पुं० [हिं० भोट+इया (प्रत्य०)] भोट या भूटान देश का निवासी। संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा। वि० भूटान देश संबंधी। भूटान का।
भोटिया बादाम-संज्ञा पुं० [हिं० भोटिया+फा० बादाम] १. आलूबुखारा। २. मूँगफली।
भोडर†-संज्ञा पुं० [देश०] १. अभ्रक। अबरक। २. अभ्रक का चूर। बुक्का।
भोडल-संज्ञा पुं० दे० "अबरक"।
भोना॰-क्रि० अ० [हिं० भीनना] १. भीनना। संचरित होना। २. लिप्त होना। लीन होना। ३ आसक्त होना।
भोपा-संज्ञा पुं० [भों से अनु०] १. एक प्रकार की तुरही। भोंपू। २. मूर्ख।
भोर-संज्ञा पुं० [सं० विभावरी] तड़का। ॰†संज्ञा पुं० [सं० भ्रम] धोखा। भ्रम। वि० चकित। स्तंभित। ॰ वि० [हिं० भोला] भोला। सीधा।
भोरा॰†-संज्ञा पुं० दे० "भोर"। ॰†-वि० भोला। सीधा। सरल।
भोराई॰†-संज्ञा स्त्री० दे० "भोलापन"।
भोराना॰-क्रि० स० [हिं० भोर+आना (प्रत्य०)] भ्रम में डालना।

क्रि० अ० धोखे में आना।

भोरानाथ—संज्ञा पु० [हिं० भोलानाथ] शिव।

भोरु—संज्ञा पु० दे० "भोर"।

भोला—वि० [हिं० भूलना] १. सीधा-सादा। सरल। २. मूर्ख। बेवकूफ।

भोलानाथ—संज्ञा पु० [हिं० भोला + सं० नाथ] महादेव। शिव।

भोलापन—संज्ञा पु० [हिं० भोला + पन (प्रत्य०)] १. सिधाई। सरलता। सादगी। २. नादानी। मूर्खता।

भोला भाला—वि० [हिं० भोला + अनु० भाला] सीधा सादा। सरल चित्त का।

भौं—संज्ञा स्त्री० दे० "भौंह"।

भौंकना—क्रि० अ० [भौं भौं से अनु०] १. भौं भौं शब्द करना। कुत्तों का बोलना। भूँकना। २. बहुत बकवाद करना।

भौंचाल—संज्ञा पु० दे० "भूकंप"।

भौंतुवा—संज्ञा पु० [हिं० भ्रमना = घूमना] १. काले रंग का एक कीड़ा जो प्रायः वर्षा ऋतु में जलाशयों आदि में जल-तल के ऊपर चक्कर काटता हुआ चलता है। २. एक प्रकार का रोग जिसमें चाहुदंड के नीचे एक गिल्टी निकल आती है। ३. तेली का बैल जो सवेरे से ही कोल्हू में जोता जाता है और दिन भर घूमा करता है।

भौंर—संज्ञा पु० [सं० भ्रमर] १. भौंरा। २. तेज बहते हुए पानी में पड़नेवाला चक्कर। आवर्त्त। नांद। ३. मुश्की घोड़ा।

भौंरा—संज्ञा पु० [सं० भ्रमर] [स्त्री० भँवरी] १. काले रंग का उड़नेवाला एक पतंगा जो देखने में बहुत डरावना प्रतीत होता है। २. बड़ी मधुमक्खी। सारंग। डंगर। ३. *दाढ़ी पर लाल चिह्न। ४ एक प्रकार का* खिलौना। ५. हिंडोले की वह लकड़ी जिसमें डोरी बँधी रहती है। ६. वह कुत्ता जो गड़रियों की भेड़ों की रखवाली करता है। संज्ञा पु० [सं० भ्रमण] १. मकान के नीचे का घर। तहखाना। २. वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है। खात। खत्ता।

भौंराना—क्रि० स० [सं० भ्रमण] १. घुमाना। परिक्रमा कराना। २. विवाह की भाँवर दिलाना।

क्रि० अ० घूमना। चक्कर काटना।

भौंरी—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रमण] १. पशुओं के शरीर में बालों के घुमाव से बना हुआ वह चक्र जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुण दोष का निर्णय होता है। २. विवाह के समय वर-वधू का अग्नि की परिक्रमा करना। भाँवर। ३. तेज बहते हुए जल में पड़नेवाला चक्कर। आवर्त्त। ४. अंगाकड़ी। बाटी। (पकवान)

भौंह—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रू] आँख के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या बाल। भृकुटी। भौं।

मुहा०—भौंह चढ़ाना या तानना = १. नाराज होना। क्रुद्ध होना। २ त्योरी चढ़ाना। बिगड़ना। भौंह जोहना = खुशामद करना।

भौ—संज्ञा पु० [सं० भव] संसार। जगत्। संज्ञा पु० [सं० भय] डर। खौफ। भय।

भौगिया—संज्ञा पु० [हिं० भोग + इया (प्रत्य०)] संसार के सुखों को भोगनेवाला।

भौगोलिक—वि० [सं०] भूगोल का।

भौचक—वि० [हिं० भय + चकित] हक्का-बक्का। चकपकाया हुआ। स्तंभित।

भौज—संज्ञा स्त्री० दे० "भौजाई"।

भौजाई—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई की भार्या। भ्रातृवधू। भावज। भाभी।

भौज्य—संज्ञा पु० [सं०] वह राज्य जो केवल सुख-भोग के विचार से होता हो, प्रजा-पालन के विचार से नहीं।

भौतिक—वि० [सं०] १. पंच भूत संबंधी। २. पाँचों भूतों से बना हुआ। पार्थिव। ३. शरीर संबंधी। शरीर का। ४. भूतयोनि का।

भौतिक विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूतों-प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या।

भौतिक सृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की देव-योनि, पाँच प्रकार की तिर्यग् योनि और मनुष्ययोनि, इन सबकी समष्टि।

भौन—संज्ञा पु० [सं० भवन] घर। मकान।

भौना—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] घूमना।

भौम—वि० [सं०] १. भूमि-संबंधी। भूमि का। २. भूमि से उत्पन्न। पृथ्वी से उत्पन्न। संज्ञा पु० मंगल ग्रह।

भौमवार—संज्ञा पु० [सं०] मंगलवार।

भौमिक—संज्ञा पुं० [सं०] जमींदार। वि० भूमि-संबंधी। भूमि का।

भौर—संज्ञा पुं० [सं० भ्रमर] १. दे० "भौंरा"। २. घोड़ों का एक भेद। ३. दे० "भँवर"।

भौलिया—संज्ञा स्त्री० [सं० बहुला] एक प्रकार की छायादार नाव।

भैासा—संज्ञा पुं० [देश०] १. भीड़-भाड़। जन समूह। २. हो-हुल्लड़। गड़बड़।

भ्रंश—संज्ञा पुं० [सं०] १. अधःपतन। नीचे गिरना। २. नाश। ध्वंस। ३. भागना। वि० भ्रष्ट। खराब।

भ्रकुटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] भृकुटी। भैाह।

भ्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी चीज़ या बात को कुछ का कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्राति। धोखा। २. संशय। संदेह। शक। ३. एक प्रकार का रोग जिसमें चक्कर आता है। ४. मूर्छा। बेहोशी। ५. भ्रमण। संज्ञा पुं० [सं० सम्भ्रम] मान। प्रतिष्ठा। इज्ज़त।

भ्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १. घूमना-फिरना। विचरण। २ आना-जाना। ३. यात्रा। सफ़र। ४. मंडल। चक्कर। फेरी।

भ्रमना—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] घूमना। क्रि० अ० [सं० भ्रम] १. धोखा खाना। भूल करना। २. भटकना। भूलना।

भ्रममूलक—वि० [सं०] जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो।

भ्रमर—संज्ञा पुं० [सं०] १. भैारा।
यौ०—भ्रमर-गुफा = योगशास्त्र के अनुसार हृदय के अंदर का एक स्थान।
२ उद्धव का एक नाम।
यौ०—भ्रमरगीत = वह गीत या काव्य जिसमें उद्धव के प्रति ब्रज की गोपियों का उपालंभ हो।
३ दोहे का एक भेद। ४. छप्पय का तिरसठवाँ भेद।

भ्रमरविलासिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त।

भ्रमरावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भँवरों की श्रेणी। २. मनहरण वृत्त। नलिनी।

भ्रमवात—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश का वह वायुमंडल जो सर्वदा घूमा करता है।

भ्रमात्मक—वि० [सं०] जिससे अथवा जिसके संबंध में भ्रम होता हो। संदिग्ध।

भ्रमाना*†—क्रि० स० [हिं० भ्रमना का स०] १. घुमाना। फिराना। २. बहकाना।

भ्रमी—वि० [सं० भ्रमिन्] १. जिसे भ्रम हुआ हो। २. चकित। भैाचक।

भ्रष्ट—वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पतित। २. जो खराब हो गया हो। बहुत बिगड़ा हुआ। ३. दूषित। ४. बदचलन।

भ्रष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलटा। छिनाल।

भ्रांत—संज्ञा पुं० [सं०] तलवार के ३२ हाथों में से एक।
वि० [सं०] १. जिसे भ्रांति या भ्रम हुआ हो। भूला हुआ। २. व्याकुल। विकल। ३. उन्मत्त। ४. घुमाया हुआ।

भ्रांतापह्नुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें किसी भ्रांति को दूर करने के लिये सत्य वस्तु का वर्णन होता है।

भ्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भ्रम। धोखा। २. संदेह। शक। ३ भ्रमण। ४. पागलपन। ५. भँवरी। घुमेर। ६. भूल-चूक। ७ मोह। प्रमाद। ८. एक प्रकार का काव्यालंकार। इसमें किसी वस्तु को, दूसरी वस्तु के साथ उसकी समानता देखकर भ्रम से वह दूसरी वस्तु ही समझ लेना वर्णित होता है।

भ्राजना*—क्रि० अ० [सं० भ्राजन] १. शोभा पाना। शोभायमान होना।

भ्राजमान*—वि० [हिं० भ्राजना + मान (प्रत्य०)] शोभायमान।

भ्रात*—संज्ञा पुं० दे० "भ्राता"।

भ्राता—संज्ञा पुं० [सं० भ्रातृ] सगा भाई।

भ्रातृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] भाई होने का भाव या धर्म्म। भाईपन।

भ्रातृद्वितीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया। यमद्वितीया। भाई दूज।

भ्रातृपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] भतीजा।

भ्रातृभाव—संज्ञा पुं० [सं०] भाई का सा प्रेम या संबंध। भाई चारा। भाईपन।

भ्रामक—वि० [सं०] १. भ्रम में डालनेवाला। बहकानेवाला। २. घुमानेवाला। चक्कर दिलानेवाला।

भ्रामर—संज्ञा पुं० [सं०] १. मधु। शहद। २. दोहे का दूसरा भेद।
वि० भ्रमर-संबंधी। भ्रमर का।

भ्रू—संज्ञा स्त्री० [सं०] भैां। भैांह।

भ्रूण—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री का गर्भ। २. बालक की वह अवस्था जब कि वह गर्भ में रहता है।

भ्रूणहत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्भ के बालक की हत्या।

भ्रूभंग—संज्ञा पुं० [सं०] त्योरी चढ़ाना।

भ्वहरना*†—क्रि० अ० [हिं० भय + हरना (प्रत्य०)] भयभीत होना। डरना।

म

म–हिंदी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान होंठ और नासिका है।
मंग–संज्ञा स्त्री० [हिं० माँग] स्त्रियों के सिर की माँग।
मंगता–संज्ञा पुं० [हिं० माँगना + ता (प्रत्य०)] भिखमंगा। भिक्षुक।
मंगन–संज्ञा पुं० [हिं० माँगना] भिक्षुक।
मँगनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० माँगना + ई (प्रत्य०)] १. वह पदार्थ जो किसी से इस शर्त पर माँगकर लिया जाय कि कुछ समय के उपरांत लौटा दिया जायगा। २. इस प्रकार माँगने की क्रिया या भाव। ३. विवाह के पहले की वह रस्म जिसमें वर और कन्या का संबंध निश्चित होता है।
मंगल–संज्ञा पुं० [सं०] १. अभीष्ट की सिद्धि। मनोकामना का पूर्ण होना। २. कल्याण। कुशल। भलाई। ३. सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह जो पृथ्वी के उपरांत पहले-पहल पड़ता है और जो सूर्य से १४,१५,००,००० मील दूर है। भौम। कुज। ४. मंगलवार।
मंगलकलश (घट)–संज्ञा पुं० [सं०] जल से भरा हुआ वह घड़ा जो मंगल-अवसरों पर पूजा के लिये रखा जाता है।
मंगलवार–संज्ञा पुं० [सं०] वह वार जो सोमवार के उपरांत और बुधवार के पहले पड़ता है। भौमवार।
मंगलसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह तागा जो किसी देवता के प्रसाद रूप में कलाई में बाँधा जाता है।
मंगलस्नान–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्नान जो मंगल की कामना से किया जाता है।
मंगला–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।
मंगलाचरण–संज्ञा पुं० [सं०] वह श्लोक या पद आदि जो किसी शुभ कार्य्य के आरंभ में मंगल की कामना से पढ़ा, लिखा या कहा जाय।
मंगलामुखी–संज्ञा स्त्री० [सं० मंगल + मुखी] वेश्या। रंडी।
मंगली–वि० [सं० मंगल (ग्रह)] जिसकी जन्मकुंडली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो। (अशुभ)
मँगवाना–क्रि० स० [हिं० माँगना का प्रेर०] १. माँगने का काम दूसरे से कराना। २. किसी को कोई चीज मोल खरीदकर या किसी से माँगकर लाने में प्रवृत्त करना।
मँगाना–क्रि० स० [हिं० माँगना का प्रेर०] १. दे० "मँगवाना"। २. मँगनी का संबंध कराना।
मँगेतर–वि० [हिं० मँगनी + एतर (प्रत्य०)] जिसकी किसी के साथ मँगनी हुई हो।
मंगोल–संज्ञा पुं० [मंगोलिया प्रदेश से] मध्य एशिया और उसके पूरब की ओर (तातार, चीन, जापान में) बसनेवाली एक जाति।
मंच, मचक–संज्ञा पुं० [सं०] १. खाट। खटिया। २. छोटी पीढ़ी। मँचिया। ३. ऊँचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठकर सर्वसाधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य किया जाय।
मंजन–संज्ञा पुं० [सं० मज्जन] १. दाँत साफ करने का चूर्ण। २. स्नान।
मजना–क्रि० अ० [हिं० माँजना] १. माँजा जाना। २. अभ्यास होना। मश्क होना।
मंजरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नया निकला हुआ कल्ला। कोंपल। २. कुछ विशिष्ट पौधों में फूलों या फलों के स्थान पर एक सींके में लगे हुए बहुत से दानों का समूह। ३. बेल। लता।
मजाना–क्रि० स० [हिं० माँजना] १. माँजने का काम दूसरे से कराना। २. दे० "माँजना"।
मँजार–संज्ञा स्त्री० [सं० मार्जार] बिल्ली।
मंजिष्ठा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मजीठ।
मंजिल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. यात्रा में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २. मकान का खंड। मरातिब।
मंजीर–संज्ञा पुं० [सं०] नूपुर। घुँघरू।
मंजु–वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।
मंजुघोष–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य्य। मंजुश्री।
मंजुल–वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।
मंजुश्री–संज्ञा पुं० दे० "मंजुघोष"।

मंजूर—वि० [अ०] जो मान लिया गया हो। स्वीकृत।

मंजूरी—संज्ञा स्त्री० [अ० मंजूर+ई (प्रत्य०)] मंजूर होने का भाव। स्वीकृति।

मंजूषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी। २. पिंजड़ा।

मंझा*†—वि० [सं० मध्य] मध्य का। संज्ञा पु० [सं० मंच] पलंग। खाट। संज्ञा पु० दे० "माँझा"।

मँझार†—क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच में।

मँझियार†—वि० [सं० मध्य] बीच का।

मंड—संज्ञा पु० [सं०] भात का पानी। माँड़।

मंडन—संज्ञा पु० [सं०] १. शृंगार करना। सजाना। सँवारना। २. प्रमाण आदि द्वारा कोई बात सिद्ध करना। 'खंडन' का उलटा।

मंडना*—क्रि० स० [सं० मंडन] १. भूषित करना। शृंगार करना। २. युक्ति आदि देकर सिद्ध या प्रतिपादित करना। ३. भरना। क्रि० स० [सं० मर्दन] दलित करना।

मंडप—संज्ञा पु० [सं०] १. विश्राम-स्थान। २. बारहदरी। ३. किसी उत्सव या समारोह के लिये बाँस, फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। ४. देवमंदिर के ऊपर का गोल या गावदुम हिस्सा। ५. चँदोवा। शामियाना।

मंडर*—संज्ञा पु० दे० "मंडल"।

मँडरना—क्रि० अ० [सं० मंडन] मंडल बाँधकर छा जाना। चारों ओर से घेर लेना।

मँडराना—क्रि० अ० [सं० मंडल] १. किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उड़ना। २. किसी के चारों ओर घूमना। परिक्रमण करना। ३. किसी के आस पास ही घूम फिरकर रहना।

मंडल—संज्ञा पु० [सं०] १. परिधि। चक्र। गोलाई। वृत्त। २. गोल फैलाव। गोला। ३. चंद्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़नेवाला घेरा। परिवेश। ४. क्षितिज। ५. समाज। समूह। समुदाय। ६. ग्रह के घूमने की कक्षा। ७. ऋग्वेद का एक खंड। ८. बारह राज्यों का समूह।

मंडलाकार—वि० [सं०] गोल।

मँडलाना—क्रि० अ० दे० "मँडराना"।

मंडली—संज्ञा स्त्री० [सं०] समूह। समाज। संज्ञा पु० [सं० मंडलिन्] १. वट-वृक्ष। २. बिल्ली। बिड़ाल। ३. सूर्य।

मंडलीक—संज्ञा पु० [सं० मांडलीक] एक मंडल या १२ राजाओं का अधिपति।

मंडलेश्वर—संज्ञा पु० दे० "मंडलीक"।

मँड़वा—संज्ञा पु० [सं० मंडप] मंडप।

मँडार†—संज्ञा पु० [सं० मंडल] झाबा। डलिया।

मंडित—वि० [सं०] १. सजाया हुआ। २. छाया हुआ। ३. भरा हुआ।

मंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] बहुत भारी बाजार जहाँ व्यापार की चीजें बहुत आती हों। बड़ा हाट।

मँडुआ—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का कदन्न।

मंडूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेंढक। २. एक ऋषि। ३. दोहा छंद का पाँचवाँ भेद।

मंडूर—संज्ञा पु० [सं०] लोह-कीट। गलाए हुए लोहे की मैल। सिंघान।

मंत*†—संज्ञा पु० [सं० मंत्र] १. सलाह। यौ०—तंत मंत = उद्योग। प्रयत्न। २. मंत्र।

मंतव्य—संज्ञा पुं० [सं०] विचार। मत।

मंत्र—संज्ञा पु० [सं०] १. गोप्य या रहस्य-पूर्ण बात। सलाह। परामर्श। २. देवाधिसाधन गायत्री आदि वैदिक वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि किया करने का विधान हो। ३. वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है। संहिता। ४. तंत्र में वे शब्द या वाक्य जिनका जप देवताओं की प्रसन्नता या कामनाओं की सिद्धि के लिये करने का विधान है। यौ०—मंत्रयंत्र या यंत्रमंत्र = जादू-टोना।

मंत्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्र रचनेवाला ऋषि।

मंत्रणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परामर्श। सलाह। मशविरा। २. कई आदमियों की सलाह से स्थिर किया हुआ मत। मंतव्य।

मंत्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्रविद्या। बीजविद्या। मंत्रशास्त्र। तंत्र।

मंत्रसंहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदों का वह अंश जिसमें मंत्रों का संग्रह हो।

मंत्रित—वि० [सं०] मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमंत्रित।

मंत्रिता-संज्ञा स्त्री० दे० "मंत्रित्व"।
मंत्रित्व-संज्ञा पु० [सं०] मंत्री का कार्य्य या पद। मंत्रिता। मंत्री-पन।
मंत्री-संज्ञा पु० [सं० मन्त्रिन्] १. परामर्श देनेवाला। सलाह देनेवाला। २. वह पुरुष जिसके परामर्श से राज्य के काम-काज होते हों। सचिव। अमात्य।
मंथ-संज्ञा पु० [सं०] १. मथना। बिलोना। २. हिलाना। ३. मर्द्दन। मलना। ४ मारना। ध्वस्त करना। ५. मथानी।
मंथन-संज्ञा पु० [सं०] १. मथना। बिलोना। २. खूब डूब डूबकर तत्वों का पता लगाना। ३. मथानी।
मंथर-संज्ञा पु० [सं०] १. मथानी। २. एक प्रकार का ज्वर। मंथ ज्वर।
वि० १. मट्ठर। मंद। सुस्त। २. जड़। मंदबुद्धि। ३ भारी। ४. नीच।
मंथरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] कैकेयी की एक दासी। इसी के बहकाने पर कैकेयी ने रामचंद्र को वनवास और भरत को राज्य देने के लिये दशरथ से अनुरोध किया था।
मंथान-संज्ञा पु० [सं०] एक वर्णिक छंद।
मंद-वि० [सं०] १. धीमा। सुस्त। २. ढीला। शिथिल। ३. आलसी। ४. मूर्ख। कुबुद्धि। ५. खल। दुष्ट।
मंदभाग्य-वि० [सं०] दुर्भाग्य। अभाग्य।
मंदर-संज्ञा पु० [सं०] १. पुराणानुसार एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र को मथा था। २. मंदार। ३. स्वर्ग। ४. दर्पण। आईना। ५. एक वर्ण-वृत्त।
वि० मंद। धीमा।
मंदरगिरि-संज्ञा पु० [सं०] मंदराचल।
मँदरा-वि० [सं० मंदर] नाटा। ठिंगना।
मंदरा-संज्ञा पु० [सं० मंडल] एक प्रकार का बाजा।
मंदा-वि० [सं० मंद] [स्त्री० मंदी] १. धीमा। मंद। २ ढीला। शिथिल। ३ जिसका दाम थोड़ा हो। सस्ता। ४. खराब। निकृष्ट।
मंदाकिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणानुसार गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है। २. आकाशगंगा। ३ एक नदी जो चित्रकूट के पास है। पयस्विनी। ४ बारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति।
मंदाक्रांता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मंदाग्नि-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें अन्न नहीं पचता। बदहजमी। अपच।
मंदार-संज्ञा पु० [सं०] १. स्वर्ग का एक देववृक्ष। २. आक। मदार। ३. स्वर्ग। ४. हाथी। ५. मंदराचल पर्वत।
मंदारमाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] बाइस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
मंदिर-संज्ञा पु० [सं०] १. वासस्थान। २ घर। मकान। ३. देवालय।
मंदिल†-संज्ञा पु० दे० "मंदिर"।
मंदी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मंद] भाव का उतरना। महँगी का उलटा। सस्ती।
मंदोदरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] रावण की पटरानी का नाम। यह मय की कन्या थी।
मंद्र-संज्ञा पु० [सं०] १. गंभीर ध्वनि। २. संगीत में स्वरों के तीन भेदों में से एक।
वि० १ मनोहर। सुंदर। २. प्रसन्न। ३. गंभीर। ४. धीमा। (शब्द आदि)
मंसब-संज्ञा पु० [अ०] १. पद। स्थान। पदवी। २. काम। कर्त्तव्य। ३ अधिकार।
मंशा-संज्ञा स्त्री० [अ० मि० सं० मनस्] १. इच्छा। चाहना। अभिरुचि। २ आशय। अभिप्राय। मतलब।
मंसा-संज्ञा स्त्री० दे० "मंशा"।
मंसूख-वि० [अ०] खारिज किया हुआ। काटा हुआ। रद्द।
म-संज्ञा पु० [सं०] १. शिव। २. चंद्रमा। ३. ब्रह्मा। ४. यम। ५ मधुसूदन।
मइँ†-सर्व० दे० "मैं"।
मइमंत-वि० दे० "मैमंत"।
मकई†-संज्ञा स्त्री० दे० "ज्वार"। (अन्न)
मकड़ा-संज्ञा पु० [हिं० मकड़ी] बड़ी मकड़ी।
मकड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० मर्कटक] आठ पैरों और आठ आँखोंवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जिसकी सैकड़ों हज़ारों जातियाँ होती हैं।
मकतब-संज्ञा पु० [अ०] छोटे बालकों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मदरसा।
मकदूर-संज्ञा पु० [अ०] सामर्थ्य। शक्ति।
मकबरा-संज्ञा पु० [अ०] वह इमारत जिसमें किसी की लाश गाड़ी गई हो। रौज़ा। मज़ार।
मकरंद-संज्ञा पु० [सं०] १. फूलों का रस।

जिसे मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं। २. एक वृत्त का नाम। माधवी। मंजरी। राम। ३. फूल का केसर।

मकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मगर या घड़ियाल नामक जलजंतु। २ बारह राशियों में से दसवीं राशि। ३. फलित ज्योतिष के अनुसार एक लग्न। ४. सेना का एक प्रकार का व्यूह। ५ माघ मास। ६ मछली। ७. छप्पय के इकतालीसवें भेद का नाम।
संज्ञा पुं० [फा०] १ छल। कपट। फरेब। धोखा। २. नखरा।

मकरतार–संज्ञा पुं० [हिं० मुक्कैश] बादले का तार।

मकरध्वज–संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। कंदर्प। २ रससिंदूर। चंद्रोदय रस।

मकर संक्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समय जब कि सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है।

मकरा–संज्ञा पुं०[सं०वरक] मडुवा नामक अन्न। संज्ञा पुं० [हिं० मकड़ा] एक प्रकार का कीड़ा।

मकराकृत–वि० [सं०] मकर या मछली के आकारवाला।

मकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मगर की मादा।

मकान–संज्ञा पुं० [फा०] १ गृह। घर। २. निवासस्थान। रहने की जगह।

मकुंद–संज्ञा पुं० दे० "मुकुंद"।

मकु–अव्य० [सं० म] १. चाहे। २. बल्कि। ३. कदाचित्। क्या जाने। शायद।

मकुना–संज्ञा पुं० [सं० मनाक=हाथी] वह नर हाथी जिसके दाँत न हों।

मकुनी, मकूनी†–संज्ञा स्त्री० [देश०] आटे के भीतर बेसन भरकर बनाई हुई कचौरी। बेसनी रोटी।

मकोई–संज्ञा स्त्री०[हिं०मकोय] जंगली मकोय।

मकोड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० कीड़ा का अनु०] कोई छोटा कीड़ा।

मकोय–संज्ञा स्त्री० [सं० काकमाता] १. एक क्षुप जो दो प्रकार का होता है। एक में लाल रंग के और दूसरे में काले रंग के बहुत छोटे छोटे फल लगते हैं। २ इस क्षुप का फल। ३ एक कँटीला पौधा या उसका फल। रसभरी।

मकोरना†–क्रि० स० दे० "मरोड़ना"।

मक्का–संज्ञा पुं० [अ०] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है।
संज्ञा पुं० [देश०] ज्वार। मकई।

मक्कार–वि० [अ०] [संज्ञा मक्कारी] फरेबी। कपटी। छली।

मक्खन–संज्ञा पुं० [सं० मथज] दूध में का वह सार भाग जो दही या मठे को मथने पर निकलता है और जिसको तपाने से घी बनता है। नवनीत। नैनूँ।
मुहा०—कलेजे पर मक्खन मला जाना = शत्रु की हानि देखकर प्रसन्नता होना।

मक्खी–संज्ञा स्त्री० [सं० मक्षिका] १. एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो साधारणतः सब जगह उड़ता फिरता है। मक्षिका।
मुहा०—जीती मक्खी निगलना = १. जान बूझकर कोई ऐसा अनुचित कृत्य करना जिसके कारण पीछे से हानि हो। मक्खी की तरह निकाल या फेंक देना = किसी को किसी काम से बिलकुल अलग कर देना। मक्खी मारना या उड़ाना = बिलकुल निकम्मा रहना।
२ मधुमक्खी। मुमाखी।

मक्खीचूस–संज्ञा पुं० [हिं० मक्खी + चूसना] बहुत अधिक कृपण। भारी कंजूस।

मक्दूर–संज्ञा पुं० [अ०] १. सामर्थ्य। शक्ति। २. वश। काबू। ३ समाई। गुंजाइश।

मक्षिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] मक्खी।

मख–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।

मखतूल–संज्ञा पुं० [सं० मद्दर्य तूल] काला रेशम।

मखतूली–वि० [हिं० मखतूल + ई (प्रत्य०)] काले रेशम से बना हुआ। काले रेशम का।

मखन–संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।

मखनिया†–संज्ञा पुं० [हिं० मक्खन + इया (प्रत्य०)] मक्खन बनाने या बेचनेवाला। वि० जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

मखमल–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मखमली] एक प्रकार का बहुत बढ़िया रेशमी मुलायम कपड़ा।

मखशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञशाला।

मखाना–संज्ञा पुं० दे० "ताल मखाना"।

मखी–संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।

मखोना†–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा।

मखौल—संज्ञा पु० [देश०] हँसी ठट्ठा।
मग—संज्ञा पु० [सं० मार्ग] रास्ता। राह।
संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रकार के शाकद्वीपी ब्राह्मण। २. मगध देश। मगह।
मगज़—संज्ञा पु० [अ० मग्ज़] १. दिमाग़। मस्तिष्क।
मुहा०—मगज़ खाना या चाटना = बकवर तंग करना। मगज खाली करना या पचाना = बहुत अधिक दिमाग़ लड़ाना। सिर खपाना। २. गिरी। मींगी। गूदा।
मगज़पच्ची—संज्ञा स्त्री० [हिं० मगज़ + पचाना] किसी काम के लिये बहुत दिमाग़ लड़ाना। सिर खपाना।
मगज़ी—संज्ञा स्त्री० [देश०] कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।
मगण—संज्ञा पु० [सं०] कविता के आठ गणों में से एक जिसमें ३ गुरु वर्ण होते हैं।
मगदल—संज्ञा पु० [सं० मुद्ग] मूँग या उड़द का एक प्रकार का लड्डू।
मगदा—वि० [सं० मग + दा (प्रत्य०)] मार्ग-प्रदर्शक। रास्ता। दिखलानेवाला।
मगदूर:—संज्ञा पु० दे० "मकदूर"।
मगध—संज्ञा पु० [सं०] १, दक्षिणी विहार का प्राचीन नाम। कीकट। २. बंदीजन।
मगन—वि० [सं० मग्न] १. डूबा हुआ। समाया हुआ। २ प्रसन्न। ३. लीन।
मगना*†—क्रि० अ० [सं० मग्न] १. लीन होना। तन्मय होना। २ डूबना।
मगर—संज्ञा पु० [सं० मकर] १. घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जलजंतु। २ मीन। मछली।
संज्ञा पु० [सं० मग] अराकान प्रदेश जहाँ मग जाति बसती है।
अव्य० लेकिन। परंतु। पर।
मगरमच्छ—संज्ञा पु० [हिं० मगर + मछली] १. मगर या घड़ियाल नामक जल-जंतु। २. बड़ी मछली।
मगरूर—वि० [अ०] घमंडी। अभिमानी।
मगरूरी—संज्ञा स्त्री० [अ० मग़रूर + ई (प्रत्य०)] घमंड। अभिमान।
मगह†—संज्ञा पु० [सं० मगध] मगध देश।
मगहपति*—संज्ञा पुं० [सं० मगधपति] मगध देश का राजा, जरासंध।
मगहय*†—संज्ञा पु० [सं० मगध] मगध देश।
मगहर*†—संज्ञा पुं० [सं० मगध] मगध देश।
वि० [सं० मगह + ई (प्रत्य०)] १. मगध-संबंधी। मगध देश का। २. मगह में उत्पन्न।
मगु, मगु*†—संज्ञा पु० [सं० मार्ग] रास्ता।
मग़ज़—संज्ञा पु० [अ०] १. मस्तिष्क। दिमाग़। भेजा। २. गिरी। मींगी। गूदा।
मग्न—वि० [सं०] १. डूबा हुआ। निमज्जित। २. तन्मय। लीन। लिप्त। ३. प्रसन्न। हर्षित। खुश। ४ नशे आदि में चूर।
मघवा—संज्ञा पु० [सं० मघवन्] इंद्र।
मघवाप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रप्रस्थ।
मघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।
मघोनी*—संज्ञा स्त्री० [सं० मघवन्] इंद्राणी।
मघौना—संज्ञा पु० [सं० मेघ + वर्ण] नीले रंग का कपड़ा।
मचक—संज्ञा स्त्री० [हिं० मचकना] दबाव।
मचकना—क्रि० स० [मच मच से अनु०] किसी पदार्थ को इस प्रकार ज़ोर से दबाना कि मच मच शब्द निकले।
क्रि० अ० इस प्रकार दबना जिसमें मच मच शब्द हो। झटके से हिलना।
मचना—क्रि० अ० [अनु०] १. किसी ऐसे कार्य का आरंभ होना जिसमें शोर-गुल हो। २. छा जाना। फैलना।
क्रि० अ० दे० "मचकना"।
मचलना—क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा मचल] किसी चीज़ के लिये ज़िद बाँधना। हठ करना। अड़ना।
मचला—वि० [हिं० मचलना मि० पं० मचला] १. जो बोलने के अवसर पर जान बूझकर चुप रहे। २. मचलनेवाला।
मचलाना—क्रि० अ० [अनु०] कै मालूम होना। जी मतलाना। ओकाई आना।
क्रि० स० किसी को मचलने में प्रवृत्त करना।
*†क्रि० अ० दे० "मचलना"।
मचान—संज्ञा स्त्री० [सं० मंच + आन (प्रत्य०)] १. बाँस का टट्टर बाँधकर बनाया हुआ स्थान जिस पर बैठकर शिकार खेलते या खेत की रखवाली करते हैं। २. मंच। कोई ऊँची बैठक।
मचाना—क्रि० स० [हिं० मचना का स०] कोई ऐसा कार्य्य आरंभ करना जिसमें हुल्लड़ हो।
मचिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० मंच + इया (प्रत्य०)] छोटी चारपाई। पलँगड़ी। पीढ़ी।

मचिलई‡-संज्ञा स्त्री० [हिं० मचलना] १. मचलने का भाव। २. मचलापन।
मच्छ-संज्ञा पुं० [सं० मत्स्य, प्रा० मच्छ] १. बड़ी मछली। २. दोहे का सोलहवाँ भेद।
मच्छड़, मच्छर-संज्ञा पुं० [सं० मशक] एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती पतिंगा। इसकी मादा काटती और डंक से रक्त चूसती है।
मच्छरता‡-संज्ञा स्त्री० [सं० मत्सर+ता (प्रत्य०)] मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष।
मच्छी-संज्ञा स्त्री० दे० "मछली"।
मच्छोदरी‡-संज्ञा स्त्री० [सं० मत्स्योदरी] व्यास जी की माता और शांतनु की भार्या सत्यवती।
मछरंगा-संज्ञा पुं० [हिं० अनु०] एक प्रकार का जलपक्षी। रामचिड़िया।
मछली-संज्ञा स्त्री० [सं० मत्स्य] १. जल में रहनेवाला एक प्रसिद्ध जीव जिसकी छोटी बड़ी असंख्य जातियाँ होती हैं। मीन। २ मछली के आकार का कोई पदार्थ।
मछुआ, मछुवा-संज्ञा पुं० [हिं० मछली+उआ (प्रत्य०)] मछली मारनेवाला। मल्लाह।
मजदूर-संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मजदूरनी, मजदूरिन] १. बोझ ढोनेवाला। मजूरा। कुली। मोटिया। २. कल-कारखाने में छोटा-मोटा काम करनेवाला आदमी।
मजदूरी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मजदूर का काम। २. बोझ ढोने या और कोई छोटा-मोटा काम करने का पुरस्कार। ३. परिश्रम के बदले में मिला हुआ धन। उजरत। पारिश्रमिक।
मजना‡†-क्रि० अ० [सं० मज्जन] १. डूबना। निमज्जित होना। २ अनुरक्त होना।
मजनूँ-संज्ञा पुं० [अ०] १ पागल। सिड़ी। बावला। २ अरब के एक प्रसिद्ध सरदार का लड़का जिसका वास्तविक नाम कैस था और जो लैला नाम की एक कन्या पर आसक्त होकर उसके लिये पागल हो गया था। ३ आशिक। प्रेमी। आसक्त। ४ एक प्रकार का वृक्ष। बेद मजनूँ।
मजबूत-वि० [अ०] [संज्ञा मजबूती] १. दृढ़। पुष्ट। पक्का। २ बलवान्। सबल।
मजबूर-वि० [अ०] विवश। लाचार।
मजबूरी-संज्ञा स्त्री० [अ० मजबूर+ई (प्रत्य०)] असमर्थता। लाचारी। बे-बसी।
मजमा-संज्ञा पुं० [अ०] बहुत से लोगों का जमाव। भीड़भाड़। जमघट।
मजमून-संज्ञा पुं० [अ०] १. विषय, जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय। २ लेख।
मजल†-संज्ञा स्त्री० दे० "मंजिल"।
मजलिस-संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मजलिसी] १ सभा। समाज। जलसा। २. महफ़िल। नाच रंग का स्थान।
मजहब-संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मजहबी] धार्मिक संप्रदाय। पंथ। मत।
मज़ा-संज्ञा पुं० [फा०] १. स्वाद। लज्जत। मुहा०—मजा चखाना=किए हुए अपराध का दंड देना।
२ आनंद। सुख। ३ दिल्लगी। हँसी। मुहा०—मजा आ जाना=परिहास का साधन प्रस्तुत होना। दिल्लगी का सामान होना।
मज़ाक़-संज्ञा पुं० [अ०] हँसी। ठट्ठा।
मज़ार-संज्ञा पुं० [अ०] १. समाधि। मकबरा। २ कब्र।
मजारी-संज्ञा स्त्री० [सं० मार्जार] बिल्ली।
मजाल-संज्ञा स्त्री० [अ०] सामर्थ्य। शक्ति।
मजिल‡†-संज्ञा स्त्री० दे० "मंजिल"।
मजीठ-संज्ञा स्त्री० [सं० मंजिष्ठा] एक प्रकार की लता। इसकी जड़ और डंठलों से लाल रंग निकलता है।
मजीठी-संज्ञा पुं० [हिं० मजीठ] मजीठ के रंग का। लाल। सुर्ख।
मजीर‡-संज्ञा स्त्री० [सं० मंजरी] पौद।
मजीरा-संज्ञा पुं० [सं० मंजीर] बजाने के लिये काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी। जोड़ी। ताल।
मजूर‡-संज्ञा पुं० [सं० मयूर] मोर।
संज्ञा पुं० दे० "मजदूर"।
मजूरी-संज्ञा स्त्री० दे० "मजदूरी"।
मजेज‡†-वि० [फा० मिज़ाज] अहंकार।
मजेदार-वि० [फा०] १. स्वादिष्ट। जायकेदार। २. अच्छा। बढ़िया। ३. जिसमें आनंद आता हो।
मज्जा‡-संज्ञा स्त्री० दे० "मज़ा"।
मज्जन-संज्ञा पुं० [सं०] स्नान। नहाना।
मज्जना‡-क्रि० अ० [सं० मज्जन] १ गोता लगाना। नहाना। २. डूबना।
मज्जा-संज्ञा स्त्री० [सं०] नली की हड्डी के भीतर का गूदा।
मज्झ, मझा‡-क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच।
मझधार-संज्ञा स्त्री० [हिं० मझ=मध्य+धार]

१. नदी के मध्य की धारा। २. किसी काम का मध्य।

मझला-वि० [सं० मध्य] बीच का।

मझाना:†-क्रि० स० [सं० मध्य] प्रविष्ट करना। बीच में धँसाना।
क्रि० अ० प्रविष्ट होना। पैठना।

मझार:†-क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच में।

मझावना:†-क्रि० अ०, स० दे० "मझाना"।

मझियाना †-क्रि० अ० [हिं० माझी] नाव खेना। मल्लाही करना।
क्रि० अ० [सं० मध्य+इयाना (प्रत्य०)] बीच से होकर निकलना।

मझियारा:†-वि० [सं० मध्य] बीच का।

मझोला-वि० [सं० मध्य] १. मझला। बीच का। मध्य का। २. जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा। मध्यम आकार का।

मझोली-संज्ञा स्त्री० [हिं० मझोला] एक प्रकार की बैल-गाड़ी।

मट†-संज्ञा पु० [हिं० मटका] मटका। मटकी।

मटक-संज्ञा स्त्री० [सं० मट=चलना + क (प्रत्य०)] १. गति। चाल। २. मटकने की क्रिया या भाव।

मटकना-क्रि० अ० [सं० मट=चलना] १. अंग हिलाते हुए चलना। लचककर नखरे से चलना। २. अंगों का इस प्रकार संचालन जिसमें कुछ लचक या नखरा जान पड़े। ३. हटना। लौटना। फिरना। ४. विचलित होना। हिलना।

मटकनि:-संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकना] १. दे० "मटक"। २. नाचना। नृत्य। ३. नखरा। मटक।

मटका-संज्ञा पुं० [हिं० मिट्टी+क (प्रत्य०)] मिट्टी का बड़ा घड़ा। मट। माट।

मटकाना-क्रि० स० [हिं० मटकना का स०] नखरे के साथ अंगों का संचालन करना। चमकाना।
क्रि० स० दूसरे को मटकने में प्रवृत्त करना।

मटकी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मटका] छोटा मटका। संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकाना] मटकने या मटकाने का भाव। मटक।

मटकीला-वि० [हिं० मटकना+ईला (प्रत्य०)] मटकनेवाला। नखरे से हिलने डोलनेवाला।

मटकौअल-संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकाना] मट- [illegible] या भाव। मटक।

मटमैला-वि० [हिं० मिट्टी+मैला] मिट्टी के रंग का। खाकी। धूलिया।

मटर-संज्ञा पुं० [सं० मधुर] एक प्रसिद्ध मोटा अन्न। इसकी लंबी फलियों को छीमी या छींबी कहते हैं, जिनमें गोल दाने रहते हैं।

मटरगश्त-संज्ञा पु० [हिं० मट्ठर= मंद+ फा० गश्त] १. टहलना। २. सैर-सपाटा।

मटिआना†-क्रि० स० [हिं० मिट्टी+आना (प्रत्य०)] १. मिट्टी लगाकर मांजना। २. मिट्टी से ढांकना।

मटिया मसान-वि० [हिं० मटिया+मसान] गया बीता। नष्टप्राय।

मटियामेट-वि० दे० "मटिया मेट"।

मटियाला-वि० दे० "मटमैला"।

मटुका-संज्ञा पु० दे० "मटका"।

मटुकी †-संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।

मट्टी-संज्ञा स्त्री० दे० "मिट्टी"।

मट्ठर†-वि० [देश०] सुस्त। काहिल।

मट्ठा-संज्ञा पु० [सं० मंथन] मथा हुआ दही जिसमें से नैनूँ निकाल लिया गया हो। मही। छाछ। तक्र।

मट्ठी-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

मठ-संज्ञा पुं० [सं०] १. निवास-स्थान। रहने की जगह। २. वह मकान जिसमें साधु आदि रहते हों।

मठधारी-संज्ञा पु० [सं० मठधारिन्] वह साधु या महंत जिसके अधिकार में कोई मठ हो। मठाधीश।

मठरी-संज्ञा स्त्री० दे० "मट्ठी"।

मठा-संज्ञा पु० दे० "मट्ठा"।

मठाधीश-संज्ञा पु० दे० "मठधारी"।

मठिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० मठ+इया (प्रत्य०)] छोटी कुटी या मठ।
संज्ञा स्त्री० [देश०] फूल (धातु) की बनी हुई चूड़ियाँ।

मठी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मठ+ई(प्रत्य०)] १. छोटा मठ। २. मठ का महंत। मठधारी।

मठोर-संज्ञा स्त्री० [हिं० मट्ठा] दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।

मड़ई†-संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] १. छोटा मंडप। २. कुटिया। पर्णशाला।

मड़क–संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी बात का भीतरी रहस्य।

मड़वा–संज्ञा पुं० दे० "मंडप"।

मड़ाड़†–संज्ञा पुं० [देश०] छोटा कच्चा तालाब या गड्ढा।

मड़ुआ–संज्ञा पुं० [देश०] बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न।

मड़या†–संज्ञा स्त्री० दे० "मड़ई"।

मढ़–वि० [हिं० मट्ठर] अड़कर बैठनेवाला।

मढ़ना–क्रि० स० [सं० मंडन] १. आवेष्टित करना। चारों ओर से लपेट लेना। २. बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना। ३. किसी के गले लगाना। थोपना।

†क्रि० अ० आरंभ होना। मचना। (क्व०)

मढ़वाना–क्रि० स० [हिं० मढ़ना का प्रे०] मढ़ने का काम दूसरे से कराना।

मढ़ाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० मढ़ना] मढ़ने का भाव, काम या मज़दूरी।

मढ़ाना–क्रि० स० दे० "मढ़वाना"।

मढ़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० मठ] १. छोटा मठ। २. कुटी। झोंपड़ी। ३. छोटा घर।

मणि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २. सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति।

मणिगुण–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त। शशिकला। शरभ।

मणिगुणनिकर–संज्ञा पुं० [सं०] मणिगुण नामक छंद का एक रूप। चंद्रावती।

मणिधर–संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप।

मणिपुर–संज्ञा पुं० [सं०] एक चक्र जो नाभि के पास माना जाता है। (तंत्र)

मणिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] १. नवाक्षरी वृत्त। २. कलाई। गट्टा।

मणिमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बारह अक्षरों का एक वृत्त। २. मणियों की माला।

मणी–संज्ञा पुं० [सं० मणिन्] सर्प।

संज्ञा स्त्री० दे० "मणि"।

मतंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी। २. बादल। ३. एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे।

मतंगी–संज्ञा पुं० [सं० मतंगिन्] हाथी का सवार।

मत–संज्ञा पुं० [सं०] १. निश्चित सिद्धांत। सम्मति। राय।

मुहा०–मत उपाना = सम्मति स्थिर करना। २. धर्म। पंथ। मज़हब। संप्रदाय। ३. भाव। आशय।

क्रि० वि० [सं० मा] न। नहीं। (निषेध)

मतना*–क्रि० अ० [सं० मति+ना (प्रत्य०)] सम्मति निश्चित करना।

क्रि० अ० [सं० मत्त] मत्त होना।

मतरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।

*वि० [सं० मंत्र] १. मंत्री। सलाहकार। २. मंत्र से प्रभावित। मंत्रित।

मतलब–संज्ञा पुं० [अ०] १. तात्पर्य। अभिप्राय। आशय। २. अर्थ। मानी। ३. अपना हित। स्वार्थ। ४. उद्देश्य। विचार। ५. संबंध। वास्ता।

मतलबी–वि० [अ० मतलब] स्वार्थी।

मतली–संज्ञा स्त्री० दे० "मिचली"।

मतवार, मतवारा*–वि० दे० "मतवाला"।

मतवाला–वि० पुं० [सं० मत्त + वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० मतवाली] १. नशे आदि के कारण मस्त। मदमस्त। २. उन्मत्त। पागल।

संज्ञा पुं० १. वह भारी पत्थर जो क़िले या पहाड़ पर से नीचे के शत्रुओं को मारने के लिये लुढ़काया जाता है। २. एक प्रकार का गावदुमा खिलौना।

मता†–संज्ञा पुं० दे० "मत"।

संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।

मताधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] मत या वोट देने का अधिकार।

मतानुयायी–संज्ञा पुं० [सं०] किसी के मत को माननेवाला। मतावलंबी।

मतारी†–संज्ञा स्त्री० दे० "महतारी"।

मतावलंबी–संज्ञा पुं० [सं० मतावलंबिन्] किसी एक मत या संप्रदाय का अवलंबन करनेवाला।

मति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। समझ। अक्ल। २. राय। सलाह। सम्मति।

*† क्रि० वि० दे० "मत"।

अव्य० [सं० मत्] समान। सदृश।

मतिमंत–वि० [सं० मतिमत्] बुद्धिमान्।

मतिमान–वि० [सं०] बुद्धिमान्।

मतिमाह*–वि० दे० "मतिमान"।

मती–संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।

क्रि० वि० दे० "मति"।

मतीरा–संज्ञा पुं० [सं० मेट] तरबूज़। कलिंदा।

मतीस–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार

मतैई*†–संज्ञा स्त्री० [सं० विमातृ]

मत्कुण–संज्ञा पुं० [सं०]

मत्त–वि० [सं०] १. मस्त । २. मतवाला । ३. उन्मत्त । पागल । ४. प्रसन्न । खुश ।
✿† संज्ञा स्त्री० [सं० मात्रा] मात्रा ।
मत्तकाशिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी स्त्री ।
मत्तगयंद–संज्ञा पुं० [सं०] सवैया छंद का एक भेद । मालती इंदव ।
मत्तता✿–संज्ञा स्त्री० [सं०] मतवालापन ।
मत्तताई✿–संज्ञा स्त्री० दे० "मत्तता" ।
मत्तमयूर–संज्ञा पुं० [सं०] पंद्रह अक्षरों का एक वृत्त ।
मत्तमातंगलीलाकर–संज्ञा पुं० [सं०] एक दंडक वृत्त ।
मत्तसमक–संज्ञा पुं० [सं०] चौपाई छंद का एक भेद ।
मत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बारह अक्षरों का एक वृत्त । २. मदिरा । शराब ।
प्रत्य० भाववाचक प्रत्यय । पन । जैसे—बुद्धिमत्ता । नीतिमत्ता ।
† संज्ञा स्त्री० दे० "मात्रा" ।
मत्ताक्रीडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] तेईस अक्षरों का एक छंद ।
मत्था†–संज्ञा पुं० दे० "माथा" ।
मत्सर–संज्ञा पुं० [सं०] १. डाह । हसद । जलन । २. क्रोध । गुस्सा ।
मत्सरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] डाह । हसद ।
मत्सरी–संज्ञा पुं० [सं० मत्सरिन्] मत्सर-पूर्ण व्यक्ति ।
मत्स्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. मछली । २. प्राचीन विराट् देश का नाम । ३. छप्पय छंद के २३ वें भेद का नाम । ४. विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार ।
मत्स्यगंधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास की माता सत्यवती का एक नाम ।
मत्स्य पुराण–संज्ञा पुं० [सं०] अट्ठारह पुराणों में से एक महापुराण ।
मत्स्यावतार–संज्ञा पुं० दे० "मत्स्य" (४) ।
मत्स्येंद्रनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध साधु और हठ-योगी जो गोरखनाथ के गुरु थे ।
मथन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मथने का भाव या क्रिया । बिलोना । २. एक अस्त्र ।
वि० मारनेवाला । नाशक ।
मथना–क्रि० स० [सं० मथन] १. तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से हिलाना या चलाना । बिलोना । रिड़कना । २ चला-मिलाना । ३ नष्ट करना । ध्वंस करना । ४. घूम घूमकर पता लगाना । ५. किसी कार्य्य को बहुत अधिक बार करना ।
संज्ञा पुं० मथानी । रई ।
मथनियाँ✿†–संज्ञा स्त्री० दे० "मथनी" ।
मथनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मथना] १. वह मटका जिसमें दही मथा जाता है । २. दे० "मथानी" । ३. मथने की क्रिया ।
मथवाह✿–संज्ञा पुं० [हिं० माथा + वाह (प्रत्य०)] महावत ।
मथानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मथना] काठ का एक प्रकार का दंड जिससे दही से मथकर मक्खन निकाला जाता है ।
मुहा०—मथानी पड़ना या बहना = खल-बली मचना ।
मथुरा–संज्ञा स्त्री० [सं० मधुपुर = मथुरा] पुराणानुसार सात पुरियों में से एक पुरी जो व्रज में यमुना के किनारे पर है ।
मथुरिया–वि० [हिं० मथुरा + इया (प्रत्य०)] मथुरा से संबंध रखनेवाला । मथुरा का ।
मथौरा–संज्ञा पुं० [हिं० मथना] एक प्रकार का भद्दा रंदा ।
मथ्था†–संज्ञा पुं० दे० "माथा" ।
मदंध✿–वि० दे० "मदांध" ।
मद–संज्ञा पुं० [सं०] १. हर्ष । आनंद । २. वह गंधयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहता है । दान । ३ वीर्य्य । ४ कस्तूरी । ५. मद्य । ६. मतवालापन । नशा । ७. उन्मत्तता । पागलपन । ८ गर्व । अहंकार । घमंड ।
वि० मत्त । मतवाला । मस्त ।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १ विभाग । सीगा । सरिश्ता । २. खाता ।
मदक–संज्ञा स्त्री० [हिं० मद] एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत से बनता है । इसे चिलम पर रखकर पीते हैं ।
मदकची–वि० [हिं० मदक + ची (प्रत्य०)] जो मदक पीता हो । मदक पीनेवाला ।
मदकल–वि० [सं०] मस्त । मतवाला ।
मदगल–वि० [सं० मदकल] मस्त । मस्त ।
मदद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सहायता । सहारा । २. मजदूर और राज आदि जो किसी काम के ऊपर लगाए जाते हैं ।
मददगार–वि० [फा०] मदद करनेवाला ।
मदन–संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव । २. काम-क्रीड़ा । ३. मैनफल । ४. भ्रमर ।

५ मैना पक्षी। सारिका। ६ प्रेम। ७ रूपमाल छंद। ८ छप्पय का एक भेद।
मदनकदन–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
मदनगोपाल–संज्ञा पुं० [हिं० मदन+गोपाल] श्रीकृष्णचंद्र का एक नाम।
मदनफल–संज्ञा पुं० [सं०] मैनफल।
मदनबान–संज्ञा पुं० [हिं० मदन+बाण] एक प्रकार का बेला। (फूल)
मदनमनोरमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] केशव के अनुसार सवैया का एक भेद। दुर्मिल।
मदनमनोहर–संज्ञा पुं० [सं०] दंडक का एक भेद। मनहर।
मदनमल्लिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] मल्लिका वृत्ति का एक नाम।
मदनमस्त–संज्ञा पुं० [हिं० मदन+मस्त] चंपे की जाति का एक प्रकार का फूल।
मदन महोत्सव–संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत होता था।
मदनमोदक–संज्ञा पुं० [सं०] सवैया छंद का एक भेद। सुंदरी। (केशव)
मदनमोहन–संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचंद्र।
मदनललिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति।
मदनहरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चालीस मात्राओं का एक छंद।
मदनोत्सव–संज्ञा पुं० [सं०] मदनमहोत्सव।
मदमत्त–वि० [सं०] मस्त। मतवाला।
मदरः–संज्ञा पुं० [सं० मंडल] मँडराना।
मदरसा–संज्ञा पुं० [अ०] पाठशाला।
मदलेखा–संज्ञा स्त्री०[सं०] एक वर्णिक वृत्ति।
मदांध–वि० [सं०] मदमत्त। मदोन्मत्त।
मदानि~–वि० [?] मंगलकारक।
मदार–संज्ञा पुं० [सं० मदार] आक।
मदारी–संज्ञा पुं० [अ० मदार] १ एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो बंदर, भालू आदि नचाते और लोग के तमाशे दिखाते हैं। मदारिया। कलंदर। २. बाजीगर।
मदालसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार विश्वावसु गंधर्व की कन्या जिसे पातालकेतु दानव ने उठा ले जाकर पाताल में रखा था।
मदिया–संज्ञा स्त्री० दे० "मादा"।
मदिरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शराब। दारू। मद्य। २. बाईस अक्षरों का एक वर्णिक छंद। मालिनी। उमा। दिवा।
मदीय–वि० [सं०][स्त्री० मदीया] मेरा।
मदीला–वि० [हिं० मद] नशीला।
मदुकल–संज्ञा पुं० [?] दोहे का एक भेद।
मदोन्मत्त–वि० [सं०] मद में पागल। मदांध।
मदोवै~–संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी"।
मद्धिमः†–वि० [सं०] १. मध्यम। अपेक्षाकृत कम अच्छा। २. मंदा।
मद्धे–अव्य० [सं० मध्ये] १. बीच में। में। २. विषय में। बाबत। संबंध में। ३ लेखे में। बाबत।
मद्य–संज्ञा पुं० [सं०] मदिरा। शराब।
मद्यप–वि० [सं०] मद पीनेवाला। शराबी।
मद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश। उत्तर कुरु। २ पुराणानुसार रावी और झेलम नदियों के बीच का देश।
मध, मधिः–संज्ञा पुं० दे० "मध्य"। अव्य० [सं० मध्य] में।
मधिम~–वि० दे० "मध्यम"।
मधु–संज्ञा पुं० [सं०] १ पानी। जल। २ शहद। ३ मदिरा। शराब। ४ फूल का रस। मकरंद। ५ वसंत ऋतु। ६ चैत्र मास। ७ एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था। ८. दो लघु अक्षरों का एक छंद। ९ शिव। महादेव। १०. मुलेठी। ११. अमृत।
वि० [सं०] १. मीठा। २. स्वादिष्ट।
मधुकर–संज्ञा पुं० [सं०] भौंरा। भ्रमर।
मधुकरी–संज्ञा स्त्री० [सं० मधुकर] वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ अन्न लिया जाता हो। मधूकरी।
मधुकैटभ–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य जिन्हें विष्णु ने मारा था।
मधुचक्र–संज्ञा पुं० [सं०] शहद की मक्खी का छत्ता।
मधुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
मधुप–संज्ञा पुं० [सं०] १ भौंरा। २ उद्धव।
मधुपति–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मधुपर्क–संज्ञा पुं० [सं०] दही, घी, जल, शहद और चीनी का समूह जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।
मधुपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मथुरा नगरी।
मधुप्रमेह–संज्ञा पुं० दे० "मधुमेह"।
मधुवन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रज का एक वन

मधुभार-संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद।
मधुमक्खी-संज्ञा स्त्री० [सं० मधुमक्षिका] एक प्रकार की प्रसिद्ध मक्खी जो फूलों का रस चूसकर शहद एकत्र करती है। मुमाखी।
मधुमक्षिका-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।
मधुमती-संज्ञा स्त्री० [सं०] दो नगण और एक गुरु का एक वर्णवृत्त।
मधुमालती-संज्ञा स्त्री० [सं०] मालती लता।
मधुमेह-संज्ञा पुं० [सं०] प्रमेह का बढ़ा हुआ रूप जिसमें पेशाब बहुत अधिक और गाढ़ा आता है।
मधुयष्टि-संज्ञा स्त्री० [सं०] मुलेठी।
मधुर-वि० [सं०] १. जिसका स्वाद मधु के समान हो। मीठा। २ जो सुनने में भला जान पड़े। ३. सुंदर। मनोरंजक। ४. जो क्लेशप्रद न हो। हलका।
मधुरई-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।
मधुरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मधुर होने का भाव। २. मिठास। ३ सौंदर्य। सुंदरता। ४. सुकुमारता। कोमलता।
मधुरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मदरास प्रांत का एक प्राचीन नगर। महुरा। मदूरा। २. मथुरा नगर।
मधुराई-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।
मधुराज-संज्ञा पुं० [सं०] भौंरा।
मधुराम्ल-संज्ञा पुं० [सं०] मिठाई।
मधुराना†-क्रि० अ० [हिं० मधुर + आना (प्रत्य०)] १. मीठा होना। २. सुंदर होना।
मधुरिमा-संज्ञा स्त्री० [सं० मधुरिमन्] १. मिठास। मीठापन। २. सुंदरता। सौंदर्य।
मधुरी-संज्ञा स्त्री० [सं० माधुर्य] सौंदर्य।
मधुवन-संज्ञा पुं० [सं०] १. मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन। २. किष्किंधा के पास का सुग्रीव का वन।
मधुवामन-संज्ञा पुं० [सं०] भौंरा।
मधुशर्करा-संज्ञा स्त्री० [सं०] शहद से बनाई हुई चीनी।
मधुसख-संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
मधुसूदन-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मधूक-संज्ञा पुं० [सं०] महुआ।
मधूकरी-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुकरी"।
मध्य-संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ के बीच का भाग। दरमियानी हिस्सा। २. कटि। ३. सुश्रुत के अनुसार १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था। ४. अंतर। भेद। फ़रक़।
मध्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्य का भाव।
मध्यतापिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद्।
मध्य देश-संज्ञा पुं० [सं०] भारतवर्ष का वह प्रदेश जो हिमालय के दक्षिण, विंध्य पर्वत के उत्तर, कुरुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में है।
मध्यम-वि० [सं०] न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा। मध्य का। बीच का। संज्ञा पुं० १. संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर। २. वह उपपति जो नायिका के क्रोध करने पर अनुराग न प्रकट करे।
मध्यमपदलोपी-संज्ञा पुं० [सं० मध्यमपद लोपिन्] वह समास जिसमें पहले पद से दूसरे पद का संबंध बतलानेवाला शब्द लुप्त रहता है। लुप्त-पदसमास। (व्या०)
मध्यम पुरुष-संज्ञा पुं० [सं०] वह पुरुष जिससे बात की जाय। (व्या०)
मध्यमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बीच की उँगली। २. वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका आदर मान या अपमान करे।
मध्यवर्त्ती-वि० [सं०] बीच का।
मध्यस्थ-संज्ञा पुं० [सं०] १. बीच में पड़कर विवाद मिटानेवाला। २. तटस्थ।
मध्यस्थता-संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्यस्थ होने का भाव या धर्म्म।
मध्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काव्य में वह नायिका जिसमें लज्जा और काम समान हों। २. तीन अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।
मध्यान्ह-संज्ञा पुं० दे० "मध्याह्न"।
मध्याह्न-संज्ञा पुं० [सं०] ठीक दोपहर।
मध्ये-क्रि० वि० दे० "मद्धे"।
मध्वाचार्य्य-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य और माध्व या मध्वाचारि नामक संप्रदाय के प्रवर्त्तक जो बारहवीं शताब्दी में हुए थे।
मनःशिल-संज्ञा पुं० [सं०] मैनसिल।
मन-संज्ञा पुं० [सं० मनस्] १. प्राणियों में वह शक्ति जिसमें उनमें वेदना, संकल्प, इच्छा और विचार आदि होते हैं। अंतःकरण। चित्त। २. अंतःकरण की चार

वृत्तियों में से एक जिससे संकल्प-विकल्प होता है।

मुहा०—किसी से मन अटकना या उलझना = प्रीति होना। प्रेम होना। मन टूटना = साहस छूटना। हताश होना। मन बढ़ना = साहस बढ़ना। उत्साह बढ़ना। किसी का मन बूझना = किसी के मन की थाह लेना। मन हरा होना = चित्त प्रसन्न रहना। मन के लड्डू खाना = व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना। मन चलना = इच्छा होना। प्रवृत्ति होना। किसी का मन टटोलना = किसी के मन की थाह लेना। मन डोलना = १. मन का चंचल होना। २. लालच उत्पन्न होना। लोभ आना। मन देना = १. जी लगाना। मन लगाना। २. ध्यान देना। किसी पर मन धरना = ध्यान देना। मन लगाना। मन तोड़ना या हारना = साहस छोड़ना। मन फेरना = मन को किसी ओर से हटाना। मन बढ़ाना = साहस दिलाना। उत्साह बढ़ाना। मन में बसना = पसंद आना। अच्छा लगना। रुचना। मन बहलाना = खिन्न या दुःखी चित्त को किसी काम में लगाकर आनंदित करना। मन भरना = १. निश्चय या विश्वास होना। २. संतोष होना। मन भर जाना = १. अघा जाना। तृप्ति होना। २. अधिक प्रवृत्ति न रह जाना। मन भाना = भला लगना। पसंद होना। रुचना। मन मानना = १. संतोष होना। तसल्ली होना। २. निश्चय होना। प्रतीत होना। ३. अच्छा लगना। पसंद आना। ४. स्नेह होना। अनुराग होना। मन में रखना = १. गुप्त रखना। प्रकट न करना। २. स्मरण रखना। मन में लाना = विचार करना। सोचना। मन मिलना = दो मनुष्यों की प्रकृति या प्रवृत्तियों का अनुकूल अथवा एक समान होना। मन मारना = १. खिन्न चित्त होना। उदास होना। २. इच्छा को दबाना। मन मैला करना = अप्रसन्न या असंतुष्ट होना। मन मोटा होना = विराग होना। उदासीन होना। मन मोड़ना = प्रवृत्ति या विचार को दूसरी ओर लगाना। किसी का मन रखना = किसी की इच्छा पूर्ण करना। मन लगना = १. जी लगना। तबीयत लगना। २. चित्त विनोद होना। मन लाना$\circ$ = १. मन लगाना। जी लगाना। २. प्रेम करना। आसक्त होना। मन से उतरना = १. मन में आदर-भाव न रह जाना। २. याद न रहना। विस्मृत होना। मन ही मन = हृदय में। चुपचाप।

३. इच्छा। इरादा। विचार।

मुहा०—मनमाना = अपने मन के अनुसार। यथेच्छ।

$\circ$संज्ञा पु० [सं० मणि] १. मणि। बहुमूल्य पत्थर। २. चालिस सेर की एक तौल।

मनई—संज्ञा पुं० [सं० मानव] मनुष्य।

मनकना—क्रि० अ० [अनु०] हिलना डोलना।

मनकरा$\circ$—वि० [हिं० मणि + कर] चमकदार।

मनका—संज्ञा पु० [सं० मणिका] पत्थर, लकड़ी आदि का बेधा हुआ दाना जिसे पिरोकर माला बनाई जाती है। गुरिया।

संज्ञा पु० [सं० मन्यका] गरदन के पीछे की हड्डी जो रीढ़ के बिल्कुल ऊपर होती है।

मुहा०—मनका ढलना या ढलकना = मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

मनकामना—संज्ञा स्त्री० [हिं० मन + कामना] इच्छा।

मनक़ूला—वि० स्त्री० [अ०] स्थिर या स्थावर का उलटा। चर।

यौ०—जायदाद मनक़ूला = चर संपत्ति। ग़ैर-मनक़ूला = स्थिर। स्थायी। स्थावर।

मन-गढ़ंत—वि० [हिं० मन + गढ़ना] जिसकी वास्तविक सत्ता न हो, केवल कल्पना कर ली गई हो। कपोल-कल्पित।

संज्ञा स्त्री० कोरी कल्पना। कपोल-कल्पना।

मनचला—वि० [हिं० मन + चलना] १. धीर। निडर। २. साहसी। ३. रसिक।

मनचाहा—वि० [हिं० मन + चाहना] इच्छित।

मनचीता—वि० [हिं० मन + चेतना] [स्त्री० मनचीती] मनचाहा। मन में सोचा हुआ।

मनजात—संज्ञा पुं० [हिं० मन + सं० जात] कामदेव।

मनन—संज्ञा पु० [सं०] १. चिंतन सोचना। २ भली भाँति अध्ययन करना।

मननशील—वि० [सं० मनन + शील] विचारशील। विचारवान्।

मननाना—क्रि० अ० [अनु०] गुंजारना।

मनवांछित—वि० दे० "मनोवांछित"।

मनभाया—वि० [हिं० मन + भाना] [स्त्री० मनभाई] जो मन को भावे। मनोनुकूल।

मनभावता—वि० [हिं० मन + भाना] [स्त्री० मनभावती] १. जो भला लगता हो। २. प्रिय। प्यारा।

मनभावन-वि० [हिं० मन+भाना] मन को अच्छा लगनेवाला।
मनमत*†-वि० दे० "मैमंत"।
मनमति-वि० [हिं० मन+मति] अपने मन का काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।
मनमथ-संज्ञा पुं० दे० "मन्मथ"।
मनमानता-वि० दे० "मनमाना"।
मनमाना-वि० [हिं० मन+मानना] [स्त्री० मनमानी] १. जो मन को अच्छा लगे। २. मन के अनुकूल। पसंद। ३. यथेच्छ।
मनमुखी†-वि० [हिं० मन+मुख्य] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।
मनमुटाव-संज्ञा पुं० [हिं० मन+मोटा] मन में भेद पड़ना। वैमनस्य होना।
मनमोदक-संज्ञा पुं० [हिं० मन+मोदक] अपनी प्रसन्नता के लिये मन में बनाई हुई असंभव बात। मन का लड्डू।
मनमोहन-वि० [हिं० मन+मोहन] [स्त्री० मनमोहनी] १. मन को मोहनेवाला। चित्ताकर्षक। २. प्रिय। प्यारा।
संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. एक मात्रिक छंद।
मनमौजी-वि० [हिं० मन+मौज] मन की मौज के अनुसार काम करनेवाला।
मनरंज*-वि० दे० "मनोरंजक"।
मनरंजन-वि० संज्ञा पुं० दे० "मनोरंजन"।
मनरोचन-वि० [हिं० मन+रोचन] सुंदर।
मन-लाड्डू*-संज्ञा पुं० दे० "मनमोदक"।
मनवाना-क्रि० स० [हिं० मानना का प्रेर०] मानने का प्रेरणार्थक रूप। मनाना।
क्रि० स० [हिं० मनाना] दूसरे को मनाने में प्रवृत्त करना।
मनशा-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. इच्छा। विचार। इरादा। २. तात्पर्य। मतलब।
मनसना*-क्रि० स० [हिं० मानस] १. इच्छा करना। इरादा करना। २. संकल्प करना। दृढ़ निश्चय या विचार करना। ३. हाथ में जल लेकर संकल्प का मंत्र पढ़कर कोई चीज़ दान करना।
मनसब-संज्ञा पुं० [अ०] १. पद। स्थान। ओहदा। २. कर्म। काम। ३. अधिकार।
मनसबदार-संज्ञा पुं० [फा०] वह जो किसी मनसब पर हो। ओहदेदार।
मनसा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।
संज्ञा स्त्री० [अ० मनशा] १. कामना। इच्छा। संकल्प। इरादा। ३. अभिलाषा। मनोरथ। ४. मन। ५. बुद्धि। ६. अभिप्राय। तात्पर्य।
वि० १. मन से उत्पन्न। २. मन का।
क्रि० वि० मन से। मन के द्वारा।
मनसाकर-वि० [हिं० मनसा+कर] मनोरथ पूरा करनेवाला।
मनसाना-क्रि० अ० [हिं० मनसा] उमंग में आना। तरंग में आना।
क्रि० स० [हिं० मनसना का प्रेर०] मनसने का काम दूसरे से कराना।
मनसायन†-वि० [हिं० मानुस] १. वह स्थान जहाँ मन-बहलाव के लिये कुछ लोग हों। २. मनोरम स्थान। गुलज़ार।
मनसिज-संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
मनसूख-वि० [अ०] [संज्ञा मनसूखी] १. जो अप्रामाणिक ठहरा दिया गया हो। अतिवर्तित। २. परित्यक्त। त्यागा हुआ।
मनसूबा-संज्ञा पुं० [अ०] १. युक्ति। ढंग।
मुहा०—मनसूबा बाँधना=युक्ति सोचना।
२. इरादा। विचार।
मनस्क-संज्ञा पुं० [सं०] मन का अल्पार्थक रूप। (समस्त पदों में)
मनस्ताप-संज्ञा पुं० [सं०] १. मन पीड़ा। आंतरिक दुःख। २. पश्चात्ताप। पछतावा।
मनस्वी-वि० [सं० मनस्विन्] [स्त्री० मनस्विनी] १. बुद्धिमान्। २. स्वेच्छाचारी।
मनहंस-संज्ञा पुं० [हिं० मन+हंस] पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। मानसहंस।
मनहर-वि० दे० "मनोहर"।
संज्ञा पुं० घनाक्षरी छंद का एक नाम।
मनहरण-संज्ञा पुं० [हिं० मन+हरण] १. मन हरने की क्रिया या भाव। २. पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। नलिनी। भ्रमरावली।
वि० मनोहर। सुंदर।
मनहार, मनहारि-वि० दे० "मनोहारी"।
मनहुँ*-अव्य० [हिं० मानो] जैसे। यथा।
मनहूस-वि० [अ०] १. अशुभ। बुरा। २ अप्रिय दर्शन। देखने में बेरौनक।
मना-वि० [अ०] १. जिसके संबंध में निषेध हो। निषिद्ध। वर्जित। २. वारण किया हुआ। ३. अनुचित। नामुनासिब।
मनाक, मनाग-वि० [सं० मनाक्] थोड़ा।
मनाना-क्रि० स० [हिं० मानना का प्रेर०] १. स्वीकार कराना। सकरवाना। २. रूठे हुए

को प्रसन्न करना या करने का प्रयत्न करना। राज़ी करना। ३ देवता आदि से किसी काम के होने के लिये प्रार्थना करना। ४. प्रार्थना करना। स्तुति करना।
मनावन†-संज्ञा पुं० [हिं० मनाना] रूठे हुए को प्रसन्न करने का काम या भाव।
मनाही-संज्ञा स्त्री० [हिं० मना] न करने की आज्ञा। रोक। अवरोध। निषेध।
मनिधरः-संज्ञा पुं० दे० "मणिधर"।
मनिया-संज्ञा स्त्री० [सं० मणिक्य] १. गुरिया। मनिका। दाना जो माला में पिरोया हो। २. कंठी। माला।
मनियार†-वि० [हिं० मणि + आर (प्र०)] उज्ज्वल। चमकीला। २. दर्शनीय। शोभायुक्त। सुहावना।
मनिहार-संज्ञा पुं० [हिं० मणिकार] [स्त्री० मनिहारिन] चूड़ी बनानेवाला। चुड़िहारा।
मनीः-संज्ञा स्त्री० [हिं० मान] अहंकार। ः संज्ञा स्त्री० १. दे० "मणि"। २ वीर्य।
मनीषा-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धि। अक्ल।
मनीषि-वि० [सं०] १. पंडित। ज्ञानी। २. बुद्धिमान्। मेधावी। अक्लमंद।
मनु-संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं। यथा—स्वायंभू, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्म सावर्णि, धर्म सावर्णि, रुद्र सावर्णि, देव सावर्णि और इंद्र सावर्णि। २ विष्णु। ३. अंतःकरण। मन। ४. वैवस्वत मनु। ५. १४ की संख्या। ःअव्य० [हिं० मानना] मानों। जैसे।
मनुआँ†ः-संज्ञा पुं० [हिं० मन] मन। संज्ञा पुं० [हिं० मानव] मनुष्य।
मनुज-संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।
मनुष -संज्ञा पुं० [सं० मनुष्य] १. मनुष्य। आदमी। २. पति। खाविंद।
मनुष्य-संज्ञा पुं० [सं०] एक स्तनपायी प्राणी जो अपने मस्तिष्क या बुद्धि-बल की अधिकता के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ है। आदमी। नर।
मनुष्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मनुष्य का भाव। आदमीपन। २. दया-भाव। शील। ३ शिष्टता। तमीज।
मनुष्यत्व-संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्यता।
मनुष्यलोक-संज्ञा पुं० [सं०] मर्त्यलोक।
मनुसाईः†-संज्ञा स्त्री० [हिं० मनुस + आई] १ पुरुषार्थ। पराक्रम। बहादुरी। २. मनुष्यता। आदमीयत।
मनुस्मृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो मनु प्रणीत है। मानव-धर्मशास्त्र।
मनुहार-संज्ञा स्त्री [हिं० मान + हरना] १. वह विनती जो किसी का मान छुड़ाने या उसे प्रसन्न करने के लिये की जाती है। मनौआ। खुशामद। २. विनय। प्रार्थना। ३ सत्कार। आदर। ४. शांति। तृप्ति।
मनुहारनाः†-क्रि० स० [हिं० मान + हरना] १. मनाना। खुशामद करना। २ विनय करना। प्रार्थना करना। ३. सत्कार करना। आदर करना।
मनों†-अव्य० [हिं० मानना] मानो।
मनोकामना-संज्ञा स्त्री० [हिं० मन + कामना] इच्छा। अभिलाषा।
मनोगत-वि० [सं०] जो मन में हो। दिली। संज्ञा पुं० कामदेव। मदन।
मनोगति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मन की गति। चित्त-वृत्ति। २. इच्छा। ख़्वाहिश।
मनोज-संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव। मदन।
मनोजव-वि० [सं०] अत्यंत वेगवान्। संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. वायु का एक पुत्र।
मनोज्ञ-वि० [सं०] मनोहर। सुंदर।
मनोदेवता-संज्ञा पुं० [सं०] विवेक।
मनोनिग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] मन का निग्रह। मन को वश में रखना। मनोगुप्ति।
मनोनीत-वि० [सं०] १. जो मन के अनुकूल हो। पसंद। २. चुना हुआ।
मनोभूत-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
मनोमयकोश-संज्ञा पुं० [सं०] पाँच कोशों में से तीसरा। मन, अहंकार और कर्मेंद्रियाँ इसके अंतर्भूत मानी जाती हैं। (वेदांत)
मनोयोग-संज्ञा पुं० [सं०] मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना।
मनोरंजक-वि० [सं०] चित्त को प्रसन्न करनेवाला।
मनोरंजन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मनोरंजक] मन को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। मनोविनोद। दिल-बहलाव।
मनोरथ-संज्ञा पुं० [सं०]
मनोरम-वि० [सं०] [स्त्री० मनोहर। सुंदर।

संज्ञा पु० सखी छंद का एक भेद।
मनोरमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोरोचन। २. सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम। ३. एक प्रकार का छंद। ४. चंद्रशेखर के अनुसार आर्या के ५७ भेदों में से एक वर्णिक वृत्त। ५. दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त। ६. केशव के अनुसार चौदह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त। ७. केशव के मतानुसार दोधक छंद का एक नाम। ८. सूदन के अनुसार दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त।
मनोरा-संज्ञा पु० [सं० मनोहर] दीवार पर गोबर से बनाए हुए चित्र जो दिवाली के पीछे बनाकर पूजे जाते हे। झिंझिया।
यौ०—मनोरा झूमक = एक प्रकार का गीत।
मनोराज-संज्ञा पु० [सं० मनोराज्य] मानसिक कल्पना। मन की कल्पना।
मनोवांछित-वि० [सं०] इच्छित। मन-माँगा।
मनोविकार-संज्ञा पु० [सं०] मन की वह अवस्था जिसमें कोई भाव, विचार या विकार उत्पन्न होता है। जैसे क्रोध, दया।
मनोविज्ञान-संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का विवेचन होता है।
मनोवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] मनोविकार।
मनोवेग-संज्ञा पु० [सं०] मनोविकार।
मनोव्यापार-संज्ञा पु० [सं०] विचार।
मनोसर॰-संज्ञा पु० [सं० मन] मनोविकार।
मनोहर-वि० [सं०] [संज्ञा मनोहरता] १. मन को आकर्षित करनेवाला। २. सुंदर। संज्ञा पु० छप्पय छंद का एक भेद।
मनोहरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता।
मनोहरताई॰-संज्ञा स्त्री० दे० "मनोहरता"।
मनोहारी-वि० [स्त्री० मनोहारिणी] दे० "मनोहर"।
मनौती॰†-संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।
मन्नत-संज्ञा स्त्री० [हिं० मानना] किसी देवता की पूजा करने की वह प्रतिज्ञा जो किसी कामना विशेष की पूर्ति के लिये की जाती है। मानता। मनौती।
मुहा०—मन्नत उतारना या चढ़ाना = पूजा की प्रतिज्ञा पूरी करना। मन्नत मानना = यह प्रतिज्ञा करना कि अमुक कार्य्य के हो जाने पर अमुक पूजा की जायगी।
मन्वंतर-संज्ञा पु० [सं०] इकहत्तर चतुर्युगी का काल। ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग।
मम-सर्व० [सं० अहं का षष्ठी एक-वचन रूप] मेरा या मेरी।
ममता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'यह मेरा है' इस प्रकार का भाव। ममत्व। अपनापन। २. स्नेह। प्रेम। ३. वह स्नेह जो माता का पुत्र पर होता है। ४. मोह। लोभ।
ममत्व-संज्ञा पु० दे० "ममता"।
ममीरा-संज्ञा पु० [फ़ा० मामीरान] एक पौधे की जड़ जो आँख के रोगों की अपूर्व ओषधि है।
मयंक-संज्ञा पु० [सं० मृगांक] चंद्रमा।
मयंद-संज्ञा पु० [सं० मृगेंद्र] सिंह। शेर।
मय-संज्ञा पु० [सं०] १. एक देश का नाम। २ पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दानव जो बड़ा शिल्पी था। ३ अमेरिका देश के मेक्सिको नामक देश के प्राचीन अधिवासी। प्रत्य० [सं०] [स्त्री० मयी] एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार और प्राचुर्य के अर्थ में शब्दों के साथ लगाया जाता है। संज्ञा स्त्री० अव्य० दे० "मैं"।
मयगल-संज्ञा पुं० [सं० मदकल] मत्त हाथी।
मयन-संज्ञा पु० [सं० मदन] कामदेव।
मयमत, मयमत्त-वि० [सं० मदमत्त] मस्त।
मयसुता-संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी"।
मयस्सर-वि० [अ०] मिलता या मिला हुआ। प्राप्त। उपलब्ध। सुलभ।
मया ॰-संज्ञा स्त्री० दे० "माया"।
मयार-वि० [सं० माया] [स्त्री० मयारी] दयालु। कृपालु।
मयारी-संज्ञा स्त्री० [देश०] वह डंडा या धरन जिस पर हिंडोले की रस्सी लटकती है।
मयूख-संज्ञा पु० [सं०] १. किरण। रश्मि। २. दीप्ति। प्रकाश। ३. ज्वाला।
मयूर-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० मयूरी] मोर।
मयूरगति-संज्ञा स्त्री० [सं०] चौबीस अक्षरों की एक वृत्ति।
मयूरसारिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह अक्षरों के एक छंद का नाम।
मरंद॰-संज्ञा पु० [सं० मकरंद] मकरंद।
मरक-संज्ञा स्त्री० [हिं० मरकना = दबाना] १. दबाकर संकेत करना। संकेत। २. दे० "मड़क"।
मरकट-संज्ञा पुं० दे० "मर्कट"।
मरकत-संज्ञा पु० [सं०] पन्ना। (रत्न)

मरकना-क्रि० अ० [अनु०] १. दबाव के नीचे पड़कर टूटना। २. दे० "मुड़कना"।
मरकाना-क्रि० स० [हिं० मरकना] १. चूर करना। तोड़ना। २. दे० "मुड़काना"।
मरगजा*†-वि० [हिं० मलना + गींजना] मला-दला। मसला हुआ। गींजा हुआ।
मरघट-संज्ञा पुं० [स०] वह घाट या स्थान जहाँ मुर्दे फूँके जाते हैं। श्मशान।
मरज़-संज्ञा पुं० [अ० मर्ज़] १. रोग। बीमारी। २. बुरी लत। खराब आदत। कुटेव।
मरजाद, मरजादा*-संज्ञा स्त्री० [सं० मर्य्यादा] १. सीमा। हद। २. प्रतिष्ठा। आदर। महत्त्व। ३. रीति। परिपाटी। नियम।
मरजिया-वि० [हिं० मरना + जीना] १. मरकर जीनेवाला। जो मरने से बचा हो। २. जो मरने के समीप हो। मरणासन्न। ३. जो प्राण देने पर उतारू हो। ४. अधमरा। संज्ञा पुं० समुद्र में डूबकर उसके भीतर से मोती आदि निकालनेवाला। जिवकिया।
मरज़ी-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. इच्छा। कामना। चाह। २. प्रसन्नता। खुशी। ३. आज्ञा। स्वीकृति।
मरजीवा-संज्ञा पुं० दे० "मरजिया"।
मरण-संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।
मरत*-संज्ञा पुं० [सं० मृत्यु] मृत्यु।
मरतबा-संज्ञा पुं० [अ०] १. पद। पदवी। २. बार। दफ़ा।
मरद*-संज्ञा पुं० दे० "मर्द"।
मरदई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० मर्द + ई (प्रत्य०)] १. मनुष्यत्व। २. साहस। ३. वीरता।
मरदन*-संज्ञा पुं० दे० "मर्दन"।
मरदना*-क्रि० स० [सं० मर्दन] १. मसलना। मर्दन करना। मलना। २. ध्वंस करना। ३. माँड़ना। गूँधना।
मरदनिया†-संज्ञा पुं० [हिं० मर्दना] शरीर में तेल मलनेवाला सेवक।
मरदानगी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वीरता। शूरता। शौर्य। २. साहस।
मरदाना-वि० [फा०] १. पुरुष-संबंधी। २. पुरुषों का सा। ३. वीरोचित।
मरदूद-वि० [अ०] १. तिरस्कृत। २. नीच।
मरना-क्रि० अ० [सं० मरण] १. प्राणियों या वनस्पतियों के शरीर में ऐसा विकार होना जिससे उनकी सब शारीरिक क्रियाएँ बंद हो जायँ। मृत्यु को प्राप्त होना।
मुहा०—मरना जीना = शादी-गमी। शुभाशुभ अवसर। सुख-दुःख।
२. बहुत अधिक कष्ट उठाना।
मुहा०—किसी पर मरना = लुब्ध होना। आसक्त होना। मर मिटना = श्रम करते करते विनष्ट हो जाना। मरा जाना = व्याकुल होना।
३. मुरझाना। कुम्हलाना। सूखना। ४. लज्जा, संकोच आदि के कारण सिर न उठा सकना। ५. किसी काम का न रहना।
मुहा०—पानी मरना = १. पानी का दीवार की नींव में धँसना। २. किसी के सिर कोई कलंक आना।
६. किसी वेग का शांत होना। दबना। ७. झनझना। पछताना। ८. हारना।
मरनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मरना] १. मृत्यु। मौत। २. वह कृत्य या शोक जो किसी के मरने पर उसके संबंधियों को होता है। ३. कष्ट। हैरानी।
मरभुक्खा-वि० [हिं० मरना + भूखा] १. भुक्खड़। २. कंगाल। दरिद्र।
मरम-संज्ञा पुं० दे० "मर्म"।
मरमर-संज्ञा पुं० [यू०] एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर।
मरमराना-क्रि० अ० [अनु०] १. मरमर शब्द करना। २. अधिक दबाव पाकर लकड़ी आदि का मरमर शब्द करके दबना।
मरम्मत-संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी वस्तु के टूटे-फूटे अंगों को ठीक करना। दुरुस्ती। जीर्णोद्धार।
मरवाना-क्रि० स० [हिं० मारना का प्रे०] किसी को मारने के लिये प्रेरणा करना।
मरसा-संज्ञा पुं० [सं० मारिष] एक प्रकार का साग।
मरसिया-संज्ञा पुं० [अ०] १. उर्दू भाषा में शोकसूचक कविता जो किसी की मृत्यु के संबंध में बनाई जाती है। २. मरण-शोक। रोना-पीटना।
मरहट*†-संज्ञा पुं० [हिं० मरघट] मसान। *†-संज्ञा स्त्री० [देश०] मोट।
मरहटा-संज्ञा पुं० [सं० महाराष्ट्र] १. मरहठा। २. उन्तीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद।
मरहठा-संज्ञा पुं० [सं० महाराष्ट्र] [स्त्री० मरहठिन] महाराष्ट्र देश का महाराष्ट्र।

मरहठी-वि० [हिं० मरहठा] महाराष्ट्र या मरहठों से संबंध रखनेवाला। मरहठों का। संज्ञा स्त्री० मरहठों की बोली। दे० "मराठी"।

मरहम-संज्ञा पु० [अ०] ओषधियों का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव या पीड़ित स्थानों पर लगाया जाता है।

मरहला-संज्ञा पु० [अ०] १. ठिकाना। मंज़िल। पड़ाव। २. मरातिब।

मुहा०—मरहला तय करना = झमेला निबटाना। कठिन काम पूरा करना।

मरहूम-वि० [अ०] स्वर्गवासी। मृत।

मरातिब-संज्ञा पु० [अ०] १. दरजा। पद। २. उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थाएँ। ३. मकान का खंड। तल्ला। ४. ध्वजा। झंडा।

मराना-क्रि० स० [हिं० मारना का प्रेर०] मारने के लिये प्रेरणा करना। मरवाना।

मरायल†-वि० [हिं० मारना + आयल (प्रत्य०)] १. जो कई बार मार खा चुका हो। पीटा हुआ। २ निःसत्त्व। सत्त्वहीन। ३. निर्बल। निर्जीव। संज्ञा पु० घाटा। टोटा।

मराल-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० मराली] १. एक प्रकार का बत्तख। २. घोड़ा। ३. हाथी। ४. हंस।

मरिंद -संज्ञा पु० १. दे० "मलिंद"। २. दे० "मरंद"।

मरिच-संज्ञा पु० [सं०] मिरिच। मिर्च।

मरियम-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कुमारी। २. ईसा मसीह की माता का नाम।

मरियल-वि० [हिं० मरना] बहुत दुर्बल।

मरी-संज्ञा स्त्री० [सं० मारी] वह संक्रामक रोग जिसमें एक साथ बहुत से लोग मरते हैं। महामारी।

मरीचि-संज्ञा पु० [सं०] १. एक ऋषि जिन्हें पुराणों में ब्रह्मा का मानसिक पुत्र, एक प्रजापति और सप्तर्षियों में माना है। २. एक मरुत् का नाम। ३ एक ऋषि जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे। संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किरण। २. प्रभा। कांति। ३. मरीचिका। मृगतृष्णा।

मरीचिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृगतृष्णा। सिरोह। २. किरण।

मरीची-संज्ञा पु० [सं० मरीचिन्] १. सूर्य। २. चंद्रमा।

मरीज़-वि० [अ०] रोगी। बीमार।

मरीना-संज्ञा पु० [स्पेनी० मेरिनो] एक प्रकार का मुलायम ऊनी पतला कपड़ा।

मरु-संज्ञा पु० [सं०] १. मरुस्थल। निर्जल स्थान। रेगिस्तान। २. मारवाड़ और उसके आस-पास के देश का नाम।

मरुआ-संज्ञा पु० [सं० मरुव] बन-तुलसी या बबरी की जाति का एक पौधा। संज्ञा पु० [सं० मेरु] १. मकान की छाजन में सबसे ऊपर की बल्ली। बँड़ेर। २. वह लकड़ी जिसमें हिंडोला लटकाया जाता है।

मरुत्-संज्ञा पु० [सं०] १. एक देवगण का नाम। वेदों में इन्हें रुद्र और वृश्नि का पुत्र लिखा है, पर पुराणों में इन्हें कश्यप और दिति का पुत्र लिखा है। २ वायु। हवा। ३. प्राण। ४ दे० "मरुत्वान्"।

मरुतवान:-संज्ञा पु० दे० "मरुत्वान्"।

मरुत्वान्-संज्ञा पु० [सं० मरुत्वत्] १. इंद्र। २ देवताओं का एक गण जो धर्म के पुत्र माने जाते हैं। ३ हनुमान्।

मरुथल संज्ञा पुं० दे० "मरुस्थल"।

मरुद्वीप-संज्ञा पु० [सं०] वह उपजाऊ और सजल हरा भरा स्थान जो मरुस्थल में हो।

मरुधर-संज्ञा पु० [सं०] मारवाड़ देश।

मरुभूमि-संज्ञा स्त्री० [सं०] बालू क निर्जल मैदान। रेगिस्तान।

मरुरना:-क्रि० अ० [हिं० मरोड़ना] 'मरोरना' का अकर्मक रूप। ऐंठना।

मरुस्थल-संज्ञा पु० दे० "मरुभूमि"।

मरू:-वि० [हिं० मरना] कठिन। दुरूह

मुहा०—मरू करि के या मरू करि = ज्यों त्यों करके। बहुत मुश्किल से।

मरूरा†-संज्ञा पु० दे० "मरोड़"।

मरोड़-संज्ञा पु० [हिं० मरोड़ना] १. मरोड़ का भाव या क्रिया।

मुहा०—मरोड़ खाना = चक्कर खाना। म' में मरोड़ करना = कपट करना। मरोड़ क बात = घुमाव-फिराव की बात।

२ घुमाव। ऐंठन। बल। ३ व्यथा। क्षोभ

मुहा०—मरोड़ खाना = उलझन में पड़ना

४. पेट में ऐंठन और पीड़ा होना। ५ घमंड। गर्व। ६. क्रोध। गुस्सा।

मुहा०—मरोड़ गहना = क्रोध करना।

मरोड़ना-क्रि० स० [हिं० मोड़ना] १ बल डालना। ऐंठना।

मुहा०—अंग मरोड़ना = अँगड़ाई लेना

भौंह मरोड़ना या दृग (आदि) मरोड़ना = १. आँख से इशारा करना या कनखी मारना। २. नाक भौंह चढ़ाना। भौंह सिकोड़ना। ७. ऐंठकर नष्ट करना या मार डालना। ३. पीड़ा देना। दुःख देना। ४. मसलना। मुहा०—हाथ मरोड़ना = पछताना।

मरोड़फली–संज्ञा स्त्री० [हिं० मरोड़ + फली] एक प्रकार की फली। मुर्रा। अवतरनी।

मरोड़ा–संज्ञा पु० [हिं० मरोड़ना] १. ऐंठन। मरोड़। उमेठ। बल। २. पेट की वह पीड़ा जिसमें कुछ ऐंठन सी जान पड़ती हो।

मरोड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मरोड़ना] ऐंठन। मुहा०—मरोड़ी करना = खींचातानी करना।

मर्कट–संज्ञा पु० [सं०] १. बंदर। बानर। २. मकड़ा। ३ दोहे के एक भेद का नाम। ४. छप्पय का आठवाँ भेद।

मर्कटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बानरी। बँदरी। २. मकड़ी। ३. छंद के ६ प्रत्ययों में से अंतिम प्रत्यय। इसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छंद के लघु, गुरु, कला और वर्णों की संख्या का ज्ञान होता है।

मर्कत–संज्ञा पु० दे० "मरकत"।

मर्तबान–संज्ञा पु० [हिं० अमृतबान] रोगनी बर्तन जिसमें अचार, घी आदि रक्खा जाता है। अमृतबान।

मर्त्य–संज्ञा पु० [सं०] १. मनुष्य। २ भूलोक। ३. शरीर।

मर्त्यलोक–संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी।

मर्द–संज्ञा पु० [फा०, मि० सं० मर्त्त और मर्त्य] १. मनुष्य। आदमी। २. साहसी पुरुष। पुरुषार्थी। ३. वीर पुरुष। योद्धा। ४. पुरुष। नर। ५. पति। भर्ता।

मर्दना–क्रि० स० [सं० मर्दन] १. मालिश करना। मलना। २. तोड़-फोड़ डालना। ३. नाश करना। ४. कुचलना। रौंदना।

मर्दुम–संज्ञा पु० [फा०] मनुष्य।

मर्दुमशुमारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी देश में रहनेवाले मनुष्यों की गणना। मनुष्य-गणना। २. जनसंख्या। आबादी।

मर्दुमी–संज्ञा स्त्री० [फा०] मरदानगी। पौरुष।

मर्दन–संज्ञा पु० [सं०] [वि० मर्दित] १. कुचलना। रौंदना। २. मलना। मसलना। ३. तेल, उबटन आदि शरीर में लगाना। मलना। ४ द्वंद्व युद्ध में एक मल्ल का दूसरे मल्ल की गर्दन आदि पर हाथों से घस्सा लगाना। घस्सा। ५. ध्वंस। नाश। ६ पीसना। घोंटना। रगड़ना। वि० [स्त्री० मर्दिनी] नाशक। संहारकर्ता।

मर्दल–संज्ञा पु० [सं०] मृदंग की तरह का एक बाजा। इसका प्रचार बंगाल में है।

मर्दित–वि० [सं०] जो मर्दन किया गया हो।

मर्म–संज्ञा पु० [सं० मर्म्म] १. स्वरूप। २. रहस्य। तत्त्व। भेद। ३. संधिस्थान। ४. प्राणियों के शरीर में वह स्थान जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है।

मर्मज्ञ–वि० [सं०] १. जो किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जानता हो। तत्त्वज्ञ। २. रहस्य जाननेवाला।

मर्मभेदक–वि० दे० "मर्मभेदी"।

मर्मभेदी–वि० [सं० मर्मभेदिन्] हृदय पर आघात पहुँचानेवाला। आंतरिक कष्ट देनेवाला।

मर्मर–संज्ञा पु० दे० "मरमर"।

मर्मवचन–संज्ञा पु० [हिं० मर्म + वचन] वह बात जिससे सुननेवाले को आतंरिक कष्ट हो।

मर्मवाक्य–संज्ञा पु० [सं०] रहस्य की बात। भेद की या गूढ़ बात।

मर्मविद्–वि० [सं०] मर्म्मज्ञ।

मर्मांतक–वि० [सं०] मन में चुभनेवाला। मर्मभेदक। हृदयस्पर्शी।

मर्मी–वि० [हिं० मर्म] तत्त्वज्ञ। मर्मज्ञ।

मर्याद–संज्ञा स्त्री० [सं० मर्य्याद] १. दे० "मर्यादा"। २. रीति। रसम। प्रथा। ३. विवाह में बड़हार। चढ़ार।

मर्यादा–संज्ञा स्त्री [सं०] १. सीमा। हद। २. कूल। नदी का किनारा। ३. प्रतिज्ञा। मुआहिदा। करार। ४. नियम। ५. सदाचार। ६. मान। प्रतिष्ठा। ७ धर्म।

मलंग–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार के मुसलमान साधु।

मल–संज्ञा पु० [सं०] १. मैल। कीट। २ शरीर के अंगों से निकलनेवाली मैल या विकार। ३. विष्ठा। पुरीष। ४. दूषण। विकार। ५. पाप। ६. ऐब।

मलका–संज्ञा स्त्री० [अ० मलिकः] बादशाह की पटरानी। महारानी।

मलखंभ–संज्ञा पु० दे० "मलखम"।

मलखम–संज्ञा पुं० [सं० मल्ल+हिं० खभा] १. लकड़ी का एक प्रकार का खंभा जिस पर फुर्ती से चढ़ और उतरकर कसरत करते है। मालखंभ। २. वह कसरत जो मलखम पर की जाय।

मलखाना †–वि० [हिं० मल+खाना] मल खानेवाला।
संज्ञा पुं० [सं० मल्ल+सेन] पश्चिमी संयुक्त प्रांत में बसनेवाले एक प्रकार के राजपूत जो अब मुसलमान से हिंदू बन गए हैं।

मलगजा –वि० [हिं० मलना+गींजना] मला दला हुआ। गींजा हुआ। मरगजा।
संज्ञा पुं० बेसन में लपेटकर तेल या घी में छाने हुए बैंगन के पतले टुकड़े।

मलगिरी–संज्ञा पुं० [हिं० मलयगिरि] एक प्रकार का हलका कत्थई रंग।

मलद्वार–संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर की वे इंद्रियाँ जिनसे मल निकलते हैं। २. गुदा।

मलना–क्रि० स० [सं० मलन] १ हाथ या किसी और चीज़ से दबाते हुए घिसना। मर्दन। मींजना। मसलना।
मुहा०—दलना मलना=१. चूर्ण करना। पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। २. मसलना। घिसना। हाथ मलना=१. पछताना। पश्चात्ताप करना। २. क्रोध प्रकट करना।
२. मालिश करना। ३. मसलना। मींजना। ४. मरोड़ना। ऐंठना। ५. हाथ से बार बार रगड़ना या दबाना।

मलबा–संज्ञा पुं० [हिं० मल ?] १. कूड़ा कर्कट। कतवार। २. टूटी या गिराई हुई इमारत की ईंटें, पत्थर और चूना आदि।

मलमल–संज्ञा स्त्री० [सं० मलमल्लक] एक प्रकार का प्रसिद्ध पतला कपड़ा।

मलमलाना–क्रि० स० [हिं० मलना] १. बार बार स्पर्श कराना। २ बार बार खोलना और ढकना। ३. पुनः पुनः आलिंगन करना। ४. पश्चात्ताप करना।

मलमास–संज्ञा पुं० [सं०] वह अमांत मास जिसमें संक्रांति न पड़ती हो। अधिक मास। पुरुषोत्तम। अधिमास।

मलय–संज्ञा पुं० [सं० मलय=पर्वत] १. पश्चिमी घाट का वह भाग जो मैसूर राज्य के दक्षिण और ट्रावंकोर के पूर्व में है। २. मलाबार देश। ३. मलाबार देश के रहने-[illegible] ... सफेद चंदन। ५. नंदन वन। ६. छप्पय के एक भेद का नाम।

मलयगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] १. मलय नामक पर्वत जो दक्षिण में है। २. मलयगिरि में उत्पन्न चंदन। ३ हिमालय पर्वत का वह देश जहाँ आसाम है।

मलयज–संज्ञा पुं० [सं०] चंदन।

मलयागिरि–संज्ञा पुं० दे० "मलयगिरि"।

मलयाचल–संज्ञा पुं० [सं०] मलय पर्वत।

मलयानिल–संज्ञा पुं० [सं०] १. मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु। २. सुगंधित वायु। ३. वसंत काल की वायु।

मलयाली–वि० [ता० मलयालम] मलाबार देश का। मलाबार देश-संबंधी।
संज्ञा स्त्री० मलाबार देश की भाषा।

मलयुग–संज्ञा पुं० दे० "कलियुग"।

मलरुचि–वि० [सं०] दूषित रुचि का। पापी।

मलवाना–क्रि० स० [हिं० मलना का प्रेर० रूप] मलने का काम दूसरे से कराना।

मलहम–संज्ञा पुं० दे० "मरहम"।

मलाई–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. बहुत गरम किए हुए दूध का ऊपरी सार भाग। दूध की साढ़ी। २. सार। तत्त्व। रस।
संज्ञा स्त्री० [हिं० मलना] मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मलान*–वि० दे० "म्लान"।

मलानि*–संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानि"।

मलामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लानत। फटकार। दुतकार।
यौ०—लानत मलामत।
२. निकृष्ट या खराब अंश। गदगी।

मलार–संज्ञा पुं० [सं० मल्लार] एक राग जो वर्षा ऋतु में गाया जाता है।
मुहा०—मलार गाना=बहुत प्रसन्न होकर कुछ कहना, विशेषतः गाना।

मलाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. दुःख। रंज। २ उदासीनता। उदासी।

मलाह*–संज्ञा पुं० दे० "मल्लाह"।

मलिंद–संज्ञा पुं० [सं० मिलिंद] भौंरा।

मलिक–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मलिका] १. राजा। २. अधीश्वर।

मलिछ, मलिच्छ*–संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।

मलिन–वि० [सं०] [स्त्री० मलिना, मलिनी] १. मलयुक्त। मैला। गँदला। २. दूषित। खराब। ३ मटमैला। धूमिल। बदरंग। ४. पापात्मा। पापी। ५.

धीमा। फीका। ६. म्लान। उदासीन।
संज्ञा पुं० एक प्रकार के साधु जो मैला कुचैला कपड़ा पहनते हैं।
मलिनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] मैलापन।
मलिनाई -संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।
मलिनाना--क्रि० अ० [हिं० मलिन] मैला होना।
मलिया†-संज्ञा स्त्री० [सं० मल्लिका] १. तंग मुँह का मिट्टी का एक बर्तन। घेरा। २. चक्कर।
मलियामेट-संज्ञा पुं० [हिं० मलिया + मिटाना] सत्यानाश। तहस नहस।
मलीदा-संज्ञा पुं० [फा०] १. चूरमा। २. एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र।
मलीन-वि० [सं० मलिन] १. मैला। अस्वच्छ। २. उदास।
मलीनता-संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।
मलूक-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का कीड़ा। २. एक प्रकार का पक्षी। ३. दे० "अमलूक"।
वि० [देश०] सुंदर। मनोहर।
मलेच्छ-संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।
मलोला-संज्ञा पुं० [अ० मलूल या वलवला] १. मानसिक व्यथा। दुःख। रंज।
मुहा०—मलोला या मलोले आना = दुःख होना। पछतावा होना। मलोले खाना = मानसिक व्यथा सहना।
२. वह इच्छा जो मानसिक व्याकुलता उत्पन्न करे। अरमान।
मल्ल-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग द्वंद्व युद्ध में बड़े निपुण होते थे; इसी लिये कुश्ती लड़नेवाले का नाम मल्ल पड़ गया है। २. पहलवान। ३ एक प्राचीन देश जो विराट् देश के पास था। ४. दीप शिखा।
मल्लभूमि-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुश्ती लड़ने की जगह। अखाड़ा।
मल्लयुद्ध-संज्ञा पुं० [सं०] परस्पर द्वंद्व युद्ध जो बिना शस्त्र के केवल हाथों से किया जाय। बाहुयुद्ध। कुश्ती।
मल्लविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुश्ती की विद्या।
मल्लशाला-संज्ञा स्त्री० दे० "मल्लभूमि"।
मल्लार-संज्ञा पुं० दे० "मलार"।
मल्लाह-संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मल्लाहिन] एक अंत्यज जाति जो नाव चलाकर और मछलियाँ मारकर अपना निर्वाह करती है। केवट। धीवर। माझी।
मल्लिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का बेला। मोतिया। २ आठ अक्षरों का एक वर्णिक छंद। ३. सुमुखी वृत्ति।
मल्लिनाथ-संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम।
मल्ली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मल्लिका। २. सुंदरी वृत्ति का एक नाम।
मल्लू-संज्ञा पुं० [सं०] बंदर।
मल्हाना, मल्हारना†-क्रि० स० [सं० मल्ह = गोस्तन] चुमकारना। पुचकारना।
मवक्किल-संज्ञा पुं० [अ० मुवक्किल] मुकदमे में अपनी ओर से कचहरी में काम करने के लिये वकील नियत करनेवाला पुरुष।
मवाजिब-संज्ञा पुं० [अ०] नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ; जैसे, वेतन।
मवाद-संज्ञा पुं० [अ०] पीब।
मवास-संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षा का स्थान। आश्रयस्थल। आश्रय। शरण।
मुहा०—मवास करना = निवास करना।
२ किला। दुर्ग। गढ़। ३. वे पेड़ जो दुर्ग के प्राकार पर होते हैं।
मवासी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मवास] छोटा गढ़।
संज्ञा पुं० १. गढ़पति। किलेदार। २. प्रधान। मुखिया। अधिनायक।
मवेशी-संज्ञा पुं० [अ० मवाशी] पशु। ढोर।
मवेशीखाना-संज्ञा पुं० [फा०] वह बाड़ा जिसमें मवेशी रखे जाते हैं।
मशक-संज्ञा पुं० [सं०] १. मच्छड़। २. मसा नामक चर्म-रोग।
संज्ञा स्त्री० [फा०] चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर ले जाते हैं।
मशक्कत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेहनत। श्रम। परिश्रम। २. वह परिश्रम जो जेलखाने के कैदियों को करना पड़ता है।
मशगूल-वि० [अ०] काम में लगा हुआ।
मशरू-संज्ञा पुं० [अ० मशरूअ] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।
मशविरा-संज्ञा पुं० [अ०] सलाह। परामर्श।
मशहूर-वि० [अ०] प्रख्यात। प्रसिद्ध।
मशाल-संज्ञा स्त्री० [अ०] डंडे एक प्रकार की बहुत मोटी बत्ती
मुहा०—मशाल लेकर य

ढूँढना = अच्छी तरह ढूँढना। बहुत ढूँढना।

मशालची-संज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० मशालचिन] मशाल हाथ में लेकर दिखलानेवाला।

मश्क-संज्ञा पु० [अ०] अभ्यास।

मष-संज्ञा पु० दे० "मख"।

मष्ट-वि० [सं० मष्ट] १. संस्कार-शून्य। जो भूल गया हो। २. उदासीन। मौन।

मुहा०—मष्ट करना, धारना या मारना = चुप रहना। न बोलना।

मस:†-संज्ञा स्त्री० [सं० मसि] रोशनाई। संज्ञा स्त्री० [सं० श्मश्रु] मोछ निकलने से पहले उसके स्थान पर की रोमावली।

मुहा०—मस भींजना = मूछों का निकलना आरंभ होना।

मसक-संज्ञा पु० [सं० मशक] मसा। मच्छड़। संज्ञा स्त्री० [अनु०] मसकने की क्रिया।

मसकत:†-संज्ञा स्त्री० दे० "मशक्कत"।

मसकना-क्रि० स० [अनु०] १ कपड़े को इस प्रकार दबाना कि बुनावट के सब तंतु टूटकर अलग हो जायँ। २ इस प्रकार दबाना कि बीच में से फट जाय। ३. जोर से दबाना या मलना।

क्रि० अ० १ किसी पदार्थ का दबाव या खिंचाव आदि के कारण बीच में से फट जाना। २. (चित्त का) चिंतित होना।

मसकरा-संज्ञा पु० दे० "मसखरा"।

मसकला-संज्ञा पु० [अ०] १. सिकलीगरों का एक औजार। इससे रगड़ने से धातुओं पर चमक आ जाती है। २. सैकल या सिकली करने की क्रिया।

मसकली-संज्ञा स्त्री० दे० "मसकला"।

मसका-संज्ञा पु० [फा०]१.नवनीत। मक्खन। नैनूँ। २. ताज़ा निकला हुआ घी। ३. दही का पानी। ४. चूने की बरी का वह चूर्ण जो उस पर पानी छिड़कने से बने।

मसकीन:†-वि० [अ० मिसकीन] १. गरीब। दीन। बेचारा। २. साधु। ३. दरिद्र। ४. भोला। ५. सुशील।

मसखरा-संज्ञा पु० [अ०] बहुत हँसी मजाक करनेवाला। हँसोड़। ठट्ठेबाज।

मसखरापन-संज्ञा पु० [अ० मसखरा + पन (प्रत्य०)] दिल्लगी। ठठोली। हँसी। ठट्ठा।

मसखरी-संज्ञा स्त्री० [फा० मसखरा + ई (प्रत्य०)] दिल्लगी। हँसी। मज़ाक।

मसखवा†-संज्ञा पु० [हिं० मास + खाना] वह जो मांस खाता हो। मांसाहारी।

मसजिद-संज्ञा स्त्री० [फा० मस्जिद] मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज़ पढ़ने तथा ईश्वर-वंदना करने का स्थान या घर।

मसनद-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बड़ा तकिया। गाव तकिया। २. अमीरों के बैठने की गद्दी।

मसना†-क्रि० स० दे० "मसलना"।

मसमूंद:†-वि० [मस ? + मूँदना = बंद होना] कशमकश। ठेलमठेल। धक्कमधक्का।

मसयारा †-संज्ञा पु० [अ० मशअल] १. मशाल। २. मशालची।

मसरफ़-संज्ञा पु० [अ०] व्यवहार में आना। काम में आना। उपयोग।

मसल-संज्ञा स्त्री० [अ०] कहावत। लोकोक्ति।

मसलन्-वि० [अ०] उदाहरणार्थ। यथा। जैसे।

मसलना-क्रि० स० [हिं० मलना] १. हाथ से दबाते हुए रगड़ना। मलना। २ जोर से दबाना। ३. आटा गूँधना।

मसलहत-संज्ञा स्त्री० [अ०] ऐसी गुप्त युक्ति या भलाई जो सहसा जानी न जा सके। अप्रकट शुभ हेतु।

मसला-संज्ञा पु० [अ०] १. कहावत। लोकोक्ति। २. विचारणीय विषय।

मसवासी-संज्ञा पु० [सं० मासवासी] वह साधु आदि जो एक मास से अधिक किसी स्थान में न रहे।

संज्ञा स्त्री० गणिका। वेश्या।

मसविदा-संज्ञा पु० दे० "मसौदा"।

मसहरी-संज्ञा स्त्री० [सं० मशहरी] १. पलंग के ऊपर और चारों ओर लटकाया जानेवाला वह जालीदार कपड़ा जिसका उपयोग मच्छड़ों आदि से बचने के लिये होता है। २. ऐसा पलंग जिसमें मसहरी लग सके।

मसहार:—संज्ञा पु० दे० "मांसाहारी"।

मसा-संज्ञा पु० [सं० मांसकील] १. शरीर पर काले रंग का उभरा हुआ मांस का छोटा दाना। २. बवासीर रोग में मांस का दाना।

संज्ञा पु० [सं० मशक] मच्छड़।

मसान-संज्ञा पु० [सं० श्मशान] १. मरघट।

मुहा०—मसान जगाना = तंत्रशास्त्र के अनुसार श्मशान पर बैठकर शव को सिद्धि करना।

२. भूत, पिशाच आदि। ३. रणभूमि।

मसाना–संज्ञा पुं० [अ०] पेट की वह थैली जिसमें पेशाब रहता है। मूत्राशय।
‡संज्ञा पुं० दे० "मसान"।
मसानी–संज्ञा स्त्री० [सं० श्मशानी] श्मशान में रहनेवाली पिशाचिनी, डाकिनी इत्यादि।
मसाला–संज्ञा पुं० [फा० मसालह] १. वे चीज़ें जिनकी सहायता से कोई चीज़ तैयार होती हो। २. ओषधियों अथवा रासायनिक द्रव्यों का योग या समूह। ३. साधन। ४. तेल। ५. आतिशबाज़ी।
मसालेदार–वि० [अ० मसालह + फा० दार] जिसमें किसी प्रकार का मसाला हो।
मसि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लिखने की स्याही। रोशनाई। २. काजल। ३ कालिख।
मसिदानी–संज्ञा स्त्री० [सं० मसि + फा० दानी] दावात। मसिपात्र।
मसिपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] दावात।
मसिबुंदा–संज्ञा पुं० दे० "मसिबिंदु"।
मसिमुख–वि० [सं०] जिसके मुँह में स्याही लगी हो। दुष्कर्म करनेवाला।
मसियर*–संज्ञा स्त्री० दे० "मशाल"।
मसियाना–क्रि० अ० [?] भली भाँति भर आना। पूरा हो जाना।
मसियारा*–संज्ञा पुं० दे० "मशालची"।
मसिबिंदु–संज्ञा पुं० [सं०] काजल का बुंदा जो नजर से बचने के लिये बच्चों को लगाया जाता है। दिठौना।
मसी–संज्ञा स्त्री० दे० "मसि"।
मसीत, मसीद*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मसजिद"।
मसीह, मसीहा–संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मसीही] ईसाइयों के धर्मगुरु हज़रत ईसा।
मसू*†–संज्ञा स्त्री० [हिं० मस] कठिनाई।
मुहा०—मसू करके = बहुत कठिनता से।
मसूड़ा–संज्ञा पुं० [सं० श्मश्रु] मुँह के अंदर का वह मांस जिस पर दाँत जमे होते हैं।
मसूर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का द्विदल और चिपटा अन्न। मसुरी।
मसूरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मसूर की दाल। २. मसूर की बनी हुई बरी।
मसूरिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शीतला। माता। चेचक। २. छोटी माता।
मसूरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। चेचक। २. दे० "मसूर"।

मसूस, मसूसन–संज्ञा स्त्री० [हिं० मसूसना] मन मसूसने का भाव। आंतरिक व्यथा।
मसूसना–क्रि० अ० [फा० अफसोस ?] १. किसी मनोवेग को रोकना। अस्त करना। २. मन ही मन रंज करना। कुढ़ना। ३. ऐंठना। मरोड़ना। ४. निचोड़ना।
मसृण–वि० [सं०] चिकना और मुलायम।
मसेवरा†–संज्ञा पुं० [हिं० मास] मांस की बनी हुई खाने की चीजें।
मसोसना–क्रि० अ० दे० "मसूसना"।
मसौदा–संज्ञा पुं० [अ० मसविदा] १. काट-छाँट करने और साफ़ करने के उद्देश्य से पहली बार लिखा हुआ लेख। खर्रा। मसविदा। २. उपाय। युक्ति। तरकीब।
मुहा०—मसौदा गाँठना या बाँधना = कोई काम करने की युक्ति या उपाय सोचना।
मसौदेबाज़–संज्ञा पुं० [अ० मसौदा + फा० बाज़ (प्रत्य०)] १ अच्छी युक्ति सोचनेवाला। २. धूर्त। चालाक।
मस्खरा*–संज्ञा पुं० दे० "मसख़रा"।
मस्त–वि० [फा०, मि० सं० मत्त] १. जो नशे आदि के कारण मत्त हो। मतवाला। मदोन्मत्त। २. सदा प्रसन्न और निश्चिंत रहनेवाला। ३. यौवन मद से भरा हुआ। ४. जिसमें मद हो। मदपूर्ण। ५. परम प्रसन्न। मग्न। आनंदित।
मस्तक–संज्ञा पुं० [सं०] सिर।
मस्तगी–संज्ञा स्त्री० [अ० मस्तकी] एक प्रकार का बढ़िया गोंद।
मस्ताना–वि० [फा० मस्तानः] १. मस्तों का सा। मस्तों की तरह का। २. मस्त। क्रि० अ० [फा० मस्त] मस्त होना। क्रि० स० मस्ती पर लाना। मस्त करना।
मस्तिष्क–संज्ञा पुं० [सं०] १. मस्तक के अंदर का गूदा। भेजा। मग़ज़। २ बुद्धि के रहने का स्थान। दिमाग़।
मस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मस्त होने की क्रिया या भाव। मत्तता। मन... २. वह स्राव जो कुछ विशिष्ट... मस्तक, कान, आँख आदि के... मस्त होने के समय होता है... वह स्राव जो कुछ वि... पत्थरों आदि में से...
मस्तूल–संज्ञा पुं० [...

के बीच का वह बड़ा शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं।

मस्सा–संज्ञा पुं० दे० "मसा"।

महँ†–अव्य० [सं० मध्य] में।

महँई†–वि० [सं० महा] महान्। भारी। अव्य० दे० "महँ"।

महँगा–वि० [सं० महार्घ] जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो।

महँगाई†–संज्ञा स्त्री० दे० "महँगी"।

महँगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० महँगा + ई (प्रत्य०)] १. महँगे होने का भाव। महँगापन। २. महँगे होने की अवस्था। ३. दुर्भिक्ष। अकाल। कहत।

महंत–संज्ञा पुं० [सं० महत् = बड़ा] साधु-मंडली या मठ का अधिष्ठाता। वि० श्रेष्ठ। प्रधान। मुखिया।

महंती–संज्ञा स्त्री० [हिं० महंत + ई (प्रत्य०)] १. महंत का भाव। २. महंत का पद।

मह–अव्य० दे० "महँ"। वि० [सं० महत्] १. महा। अति। बहुत। २. महत्। श्रेष्ठ। बड़ा।

महक–संज्ञा स्त्री० [हिं० गमक] गंध। बास।

महकना–क्रि० अ० [हिं० महक + ना (प्रत्य०)] गंध देना। बास देना।

महकमा–संज्ञा पुं० [अ०] किसी विशिष्ट कार्य्य के लिये अलग किया हुआ विभाग। सीगा। सरिश्ता।

महकान–संज्ञा स्त्री० दे० "महक"।

महज़–वि० [अ०] १. शुद्ध। ख़ालिस। २. केवल। मात्र। सिर्फ़।

महत्–वि० [सं०] १. महान्। बृहत्। बड़ा। २. सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ। संज्ञा पुं० १. प्रकृति का पहला विकार, महत्तत्त्व। २. ब्रह्म।

महत–संज्ञा पुं० दे० "महत्त्व"।

महता–संज्ञा पुं० [सं० महत्] १. गाँव का मुखिया। महतो। २. मुहरिर। मुंशी। संज्ञा स्त्री० [सं० महत्ता] अभिमान।

महताब–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. दे० "महताबी"। संज्ञा पुं० [फा०] चाँद। चंद्रमा।

महताबी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मोटी बत्ती के आकार की एक प्रकार की आतिशबाज़ी। २. बाग आदि के बीच में बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चबूतरा।

महतारी†–संज्ञा स्त्री० [सं० माता] माँ। माता।

महती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नारद की वीणा का नाम। २. महिमा। महत्त्व। बड़ाई।

महतु†–संज्ञा पुं० दे० "महत्त्व"।

महत्तत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. सांख्य में प्रकृति का पहला कार्य्य या विकार जिससे अहंकार की उत्पत्ति होती है। बुद्धितत्त्व। २. जीवात्मा।

महत्तम–वि० [सं०] सबसे अधिक श्रेष्ठ।

महत्तर–वि० [सं०] दो पदार्थों में से बड़ा या श्रेष्ठ।

महत्त्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. महत् का भाव। बड़ाई। गुरुता। २. श्रेष्ठता। उत्तमता।

महन†–संज्ञा पुं० दे० "मथन"।

महना†–क्रि० स० दे० "मथना"।

महनु†–संज्ञा पुं० [सं० मथन] विनाशक।

महफ़िल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मजलिस। सभा। समाज। जलसा। २. नाच-गाना होने का स्थान।

महबूब–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० महबूबा] वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रिय।

महमंत†–वि० [सं० महा + मत्त] मस्त। मदमत्त।

महमद–संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद"।

मह मह–क्रि० वि० [हिं० महकना] सुगंधि के साथ। ख़ुशबू के साथ।

महमहा–वि० [हिं० मह मह] सुगंधित।

महमहाना–क्रि० अ० [हिं० मह मह अथवा महकना] गमकना। सुगंधि देना।

महमा†–संज्ञा स्त्री० दे० "महिमा"।

महमेज़–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की लोहे की नाल जो जूते में एँड़ी के पास लगाई जाती है और जिसकी सहायता से घोड़े के सवार उसे एड़ लगाते हैं।

महम्मद–संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद"।

महर–संज्ञा पुं० [सं० महत्] [स्त्री० महरि] १. एक आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार विशेषतः ज़मींदारों आदि के संबंध में होता है। (ब्रज) २. एक प्रकार का पक्षी। ३. दे० "महरा"। वि० [हिं० महक] महमहा। सुगंधित।

महरम–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों में किसी कन्या या स्त्री के लिये उसका कोई

ऐसा बहुत पास का संबंधी जिसके साथ उसका विवाह न हो सकता हो। जैसे—पिता, चाचा, नाना, भाई, मामा आदि। २. भेद का जाननेवाला।
संज्ञा स्त्री० १. अँगिया की कटोरी। २ अँगिया।

महरा—संज्ञा पु० [हिं० महता] [स्त्री० महरी] १. कहार। २. सरदार। नायक।

महराई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० महर+आई (प्रत्य०)] प्रधानता। श्रेष्ठता।

महराज—संज्ञा पु० दे० "महाराज"।

महराना—संज्ञा पु० [हिं० महर+आना (प्रत्य०)] महरों के रहने का स्थान।

महराब—संज्ञा स्त्री० दे० "मेहराब"।

महरि—संज्ञा स्त्री० [हिं० महर] १. एक प्रकार का आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार व्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के संबंध में होता है। २. मालकिन। घरवाली। ३ ग्वालिन नामक पक्षी। दहिंगल।

महरूम—वि० [अ०] जिसे न मिले। वंचित।

महरेटा—संज्ञा पु० [हिं० महर+एटा (प्रत्य०)] श्रीकृष्ण।

महरेटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० महरेटा] श्रीराधिका।

महर्लोक—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार चौदह लोकों में से ऊपर का चौथा लोक।

महर्षि—संज्ञा पु० [सं० महा+ऋषि] बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि। ऋषीश्वर।

महल—संज्ञा पु० [अ०] १ बहुत बड़ा और बढ़िया मकान। प्रासाद। २. रनिवास। अंतःपुर। ३ बड़ा कमरा। ४. अवसर।

महल्ला—संज्ञा पु० [अ०] शहर का कोई विभाग या टुकड़ा जिसमें बहुत से मकान हों।

महसिल—संज्ञा पुं० [अ० मुहस्सिल] महसूल आदि वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।

महसूल—संज्ञा पु० [अ०] १. वह धन जो राजा या कोई अधिकारी किसी विशिष्ट कार्य्य के लिये ले। कर। २. भाड़ा। किराया। ३. मालगुजारी। लगान।

महाँ~—अव्य० दे० "महँ"।

महा—वि० [सं०] १. अत्यंत। बहुत अधिक। २. सर्वश्रेष्ठ। सबसे बढ़कर। ३ बहुत बड़ा। भारी।
संज्ञा पु० [हिं० महना] मट्ठा। छाछ।

महाअरंभ—वि० [सं० महा+रंभ] बहुत शोर।

महाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० महना+आई (प्रत्य०)] मथने का काम या मजदूरी।

महाउत—संज्ञा पु० दे० "महावत"।

महाउर—संज्ञा पु० दे० "महावर"।

महाकल्प—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार उतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है। ब्रह्म-कल्प।

महाकाल—संज्ञा पु० [सं०] महादेव।

महाकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. महाकाल (शिव) की पत्नी। २. दुर्गा की एक मूर्त्ति।

महाकाव्य—संज्ञा पु० [सं०] वह बहुत बड़ा सर्गबद्ध काव्य जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृत दृश्यों तथा सामाजिक कृत्यों आदि का वर्णन हो।

महाखर्व—संज्ञा पु० [सं०] सौ खर्व की संख्या या अंक।

महागौरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

महाजन—संज्ञा पु० [सं०] १. बड़ा या श्रेष्ठ पुरुष। २ साधु। ३. धनवान्। दौलतमंद। ४ रुपए पैसे का लेन-देन करनेवाला। कोठीवाल। ५. बनिया। ६ भलामानुस।

महाजनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० महाजन+ई (प्रत्य०)] १. रुपए के लेने-देने का व्यवसाय। कोठीवाली। २. एक लिपि जो महाजनों के यहाँ बही खाता लिखने में काम आती है। मुड़िया।

महाजल—संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

महातत्त्व—संज्ञा पु० दे० "महत्तत्व"।

महातम*†—संज्ञा पु० दे० "माहात्म्य"।

महातल—संज्ञा पु० [सं०] चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का पाँचवाँ भुवन या तल।

महात्मा—संज्ञा पु० [सं० महात्मन्] १. वह जिसकी आत्मा या आशय बहुत उच्च हो। महानुभाव। २. बहुत बड़ा साधु या संन्यासी।

महादंडधारी—संज्ञा पु० [सं०] यमराज।

महादान—संज्ञा पु० [सं०] १. वे बहुत बड़े दान जिनसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। २. वह दान जो ग्रहण आदि के समय छोटी जातियों को दिया जाता है।

महादेव—संज्ञा पु० [सं०] शंकर। शिव।

महादेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा २. राजा की प्रधान पत्नी या

महाद्वीप-संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी का वह बड़ा भाग जिसमें अनेक देश हों।
महाधन-वि० [सं०] १. बहुमूल्य। अधिक मूल्य का। २. बहुत धनी।
महान्-वि० [सं०] बहुत बड़ा। विशाल।
महानंद-संज्ञा पुं० [सं०] मगध देश का एक प्रतापी राजा जिसके डर से सिकंदर पंजाब ही से लौट गया था।
महानाटक-संज्ञा पुं० [सं०] नाटक के लक्षणों से युक्त दस अंकोंवाला नाटक।
महानाम-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मंत्र जिससे शत्रु के शस्त्र व्यर्थ जाते हैं।
महानिद्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मरण।
महानिधान-संज्ञा पुं० [सं०] बुभुक्षित धातु-भेदी पारा जिसे "बावन तोला पाव रत्ती" भी कहते हैं।
महानिर्वाण-संज्ञा पुं० [सं०] परिनिर्वाण, जिसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्ध हैं।
महानिशा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आधी रात। २ कल्पांत या प्रलय की रात्रि।
महानुभाव-संज्ञा पुं० [सं०] कोई बड़ा और आदरणीय व्यक्ति। महापुरुष।
महानुभावता-संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़प्पन।
महापथ-संज्ञा पुं० [सं०] १. लंबा और चौड़ा रास्ता। राजपथ। २. मृत्यु।
महापद्म-संज्ञा पुं० [सं०] १. नौ निधियों में से एक। २. सफ़ेद कमल। ३. सौ पद्म की संख्या।
महापातक-संज्ञा पुं० [सं०] पाँच बहुत बड़े पाप—ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी के साथ व्यभिचार और ये सब पाप करनेवालों का साथ करना।
महापातकी-संज्ञा पुं० [सं० महापातकिन्] वह जिसने महापातक किया हो।
महापात्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ ब्राह्मण। (प्राचीन) २. महाब्राह्मण या कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक-कर्म का दान लेता है।
महापुरुष-संज्ञा पुं० [सं०] १. नारायण। २. श्रेष्ठ पुरुष। महात्मा। महानुभाव।
महाप्रभु-संज्ञा पुं० [सं०] १. वल्लभाचार्य जी की एक आदरसूचक पदवी। २. बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य चैतन्य की एक आदरसूचक पदवी। ३. ईश्वर।
महाप्रलय-संज्ञा पुं० [सं०] वह काल, जब संपूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाता है और अनंत जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता।
महाप्रसाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर या देवताओं का प्रसाद। २. जगन्नाथजी का चढ़ा हुआ भात। ३. मांस। (व्यंग्य)
महाप्रस्थान-संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर त्यागने की कामना से हिमालय की ओर जाना। २. मरण। देहांत।
महाप्राण-संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण में प्राण वायु का विशेष व्यवहार करना पड़ता है। हिंदी वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा अक्षर महाप्राण है।
महाबल-वि० [सं०] अत्यंत बलवान्।
महाबाहु-वि० [सं०] १. लंबी भुजावाला। २. बली। बलवान्।
महाब्राह्मण-संज्ञा पुं० दे० "महापात्र" २.
महाभागवत-संज्ञा पुं० [सं०] १. २६ मात्राओं के छंदों की संज्ञा। २. परम वैष्णव। ३. दे० "भागवत" (पुराण)।
महाभारत-संज्ञा पुं० [सं०] १. अठारह पर्वों का एक परम प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है। २. कोई बहुत बड़ा ग्रंथ। ३. कौरवों और पांडवों का प्रसिद्ध युद्ध। ४. कोई बड़ा युद्ध।
महाभाष्य-संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि के व्याकरण पर पतंजलि का लिखा भाष्य।
महाभूत-संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पंचतत्त्व।
महामंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत बड़ा और प्रभावशाली मंत्र। २. अच्छी सलाह।
महामंत्री-संज्ञा पुं० [सं०] प्रधान मंत्री।
महामति-वि० [सं०] बड़ा बुद्धिमान्।
महामहोपाध्याय-संज्ञा पुं० [सं०] १. गुरुओं का गुरु। २. एक प्रकार की उपाधि जो भारत में संस्कृत के विद्वानों को सरकार की ओर से मिलती है।
महामांस-संज्ञा पुं० [सं०] १. गोमांस। गौ का गोश्त। २. मनुष्य का मांस।
महामाई-संज्ञा स्त्री० [सं० महा + हिं० माई] १. दुर्गा। २. काली।
महामात्य-संज्ञा पुं० [सं०] महामंत्री।
महामाया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकृति।

२. दुर्गा। ३. गंगा। ४. आर्या छंद का तेरहवाँ भेद।
महामारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह संक्रामक भीषण रोग जिससे एक साथ ही बहुत से लोग मरें। वबा। मरी। जैसे—प्लेग।
महामालिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाराच छंद।
महामृत्युंजय–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
महामेदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का कंद।
महामोदकारी–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त। क्रीड़ाचक्र।
महाय–वि० [सं० महा] महान्। बहुत।
महायज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किए जानेवाले कर्म। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ।
महायात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मौत।
महायान–संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक संप्रदाय।
महायुग–संज्ञा पुं० [सं०] सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि इन चारों युगों का समूह।
महायौगिक–संज्ञा पुं० [सं०] २६ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।
महारंभ–वि० [सं०] बहुत बड़ा।
महारथ–संज्ञा पुं० [सं०] भारी योद्धा।
महारथी–संज्ञा पुं० दे० "महारथ"।
महाराज–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महारानी] १ बहुत बड़ा राजा। २ ब्राह्मण, गुरु आदि के लिये एक संबोधन।
महाराजाधिराज–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा राजा।
महाराणा–संज्ञा पुं० [सं० महा + हिं० राणा] मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि।
महारात्रि–संज्ञा स्त्री० [सं०] महाप्रलयवाली रात, जब कि ब्रह्मा का लय हो जाता है और दूसरा महाकल्प होता है।
महारावण–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थीं।
महारावल–संज्ञा पुं० [सं० महा + हिं० रावल] जैसलमेर, डूँगरपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।
महाराष्ट्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। २. इस देश के निवासी। ३ बहुत बड़ा राष्ट्र।
महाराष्ट्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की प्राकृत भाषा। २ दे० "मराठी"।
महारुद्र–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
महारोग–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा रोग। जैसे—दमा, भगंदर आदि।
महारौरव–संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक।
महार्घ–वि० [सं०] १. बहुमूल्य। बड़े मोल का। २ महँगा।
महाल–संज्ञा पुं० [अ० महल का बहु०] १ मुहल्ला। टोला। पाड़ा। २. बंदोबस्त में जमीन का एक विभाग, जिसमें कई गाँव होते हैं। ३ भाग। पट्टी। हिस्सा।
महालक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति। २ एक वर्णिक वृत्त।
महालय–संज्ञा पुं० [सं०] पितृपक्ष।
महालया–संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण अमावस्या, पितृविसर्जन की तिथि।
महावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० माह = माघ + वट] पूस माघ की वर्षा। जाड़े की झड़ी।
महावत–संज्ञा पुं० [सं० महामात्र] हाथी हाँकनेवाला। फीलवान। हाथीवान।
महावतारी–संज्ञा पुं० [सं० महावतारिन्] २४ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।
महावर–संज्ञा पुं० [सं० महावर्ण ?] एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पाँवों को चित्रित कराती हैं। यावक।
महावरी–संज्ञा पुं० [हिं० महावर] महावर की बनी हुई गोली या टिकिया।
महावारुणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा स्नान का एक योग।
महाविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ तंत्र में मानी हुई ये दस देवियाँ—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला त्मिका। २ दुर्गादेवी।
महावीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान जी। २ गौतम बुद्ध। ३ जैनियों के चौबीसवें और अंतिम जिन या तीर्थंकर। वि० बहुत बड़ा बहादुर।
महाव्याहृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] भू, भुव और स्व. ये तीन ऊपर के लोक।
महाशंख–संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बड़ी संख्या का नाम। सौ शंख।
महाशक्ति–संज्ञा पुं० [सं०]
महाशय–संज्ञा पुं० [सं०]

व्यक्ति। महानुभाव। महात्मा। सज्जन।
महाश्वेता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।
महिँ॰-अव्य० दे० "महँ"।
महि-संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
महिख॰-संज्ञा पुं० दे० "महिष"।
महिदेव-संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।
महिपाल॰-संज्ञा पुं० दे० "महीपाल"।
महिमा-संज्ञा स्त्री० [सं० महिमन्] १. महत्त्व। माहात्म्य। बड़ाई। गौरव। २. प्रभाव। प्रताप। ३. आठ प्रकार की सिद्धियों में से पाँचवीं जिससे सिद्ध योगी अपने आपको बहुत बड़ा बना लेता है।
महिम्न-संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक प्रधान स्तोत्र।
महियाँ॰-अव्य० [सं० मध्य] में।
महियाउर†-संज्ञा पुं० [मही=मट्ठा+चाउर] मट्ठे में पका हुआ चावल।
महिरावण-संज्ञा पुं० [सं० महि+रावण] एक राक्षस जो रावण का लड़का था।
महिला-संज्ञा स्त्री० [सं०] भली स्त्री।
महिष-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महिषी] १. भैंसा। २. वह राजा जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार किया गया हो। ३. एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मारा था।
महिषमर्दिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
महिषासुर-संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जो रंभ नामक दैत्य का पुत्र था। इसकी आकृति भैंसे की थी। इसे दुर्गाजी ने मारा था।
महिषी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भैंस। २. रानी, विशेषतः पटरानी। ३. सैरिंध्री।
महिषेश-संज्ञा पुं०[सं०] १. महिषासुर। २. यमराज।
महिसुर-संज्ञा पुं० दे० "महीसुर"।
मही-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. मिट्टी। ३. देश। स्थान। ४. नदी। ५. एक की संख्या। ६. एक लघु और एक गुरु मात्रा का एक छंद।
महीतल-संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी। संसार।
महीधर-संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। २. शेषनाग। ३ एक वर्णिक वृत्त।
महीन-वि० [सं० महा+मीन (सं० क्षीण)] १. जिसकी मोटाई बहुत कम हो "मोटा" का उलटा। पतला। २. बारीक। झीना। पतला। ३. कोमल। धीमा। मंद। (शब्द या स्वर)
महीना-संज्ञा पुं० [सं० मास] १. काल का एक परिमाण जो प्रायः साधारणतया तीस दिन का होता है। २. मासिक वेतन। दरमाहा। ३. स्त्रियों का मासिक धर्म।
महीप, महीपति-संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
महीसुर-संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।
महुँ॰-अव्य० दे० "महँ"।
महुअर-संज्ञा पुं० [सं० मधुकर] १ एक प्रकार का बाजा। तुमड़ी। तूँबी। २. एक प्रकार का इंद्रजाल का खेल जो महुअर बजाकर किया जाता है।
महुआ-संज्ञा पुं० [सं० मधूक प्रा० महुआ] एक प्रकार का वृक्ष जिसके छोटे, मीठे, गोल फलों से शराब बनती है।
महुछा॰†-संज्ञा पुं० दे० "महोच्छव"।
महुवरि-संज्ञा स्त्री० दे० "महुअर"।
महूख॰-संज्ञा पुं० [सं० मधूक] १. महुआ। २. जेठी मधु। मुलेठी।
महूरत॰-संज्ञा पुं० दे० "मुहूर्त्त"।
महेंद्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. इंद्र। ३. भारतवर्ष का एक पर्वत जो सात कुल पर्वतों में गिना जाता है।
महेंद्रवारुणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा इंद्रायण।
महेर†-संज्ञा पुं० दे० "महेरा"। संज्ञा पुं० [देश०] झगड़ा। बखेड़ा।
महेरा-संज्ञा पुं० [हिं० महेर या मही] एक प्रकार का व्यंजन या खाद्य पदार्थ। मट्ठा।
महेरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० महेरा] उबाली हुई ज्वार जिसे लोग नमक-मिर्च से खाते हैं। वि० [हिं० महेर] अड़चन डालनेवाला।
महेश-संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. ईश्वर।
महेशी-संज्ञा स्त्री० [सं० महेश] पार्वती।
महेश्वर-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महेश्वरी] १. ईश्वर। २ परमेश्वर।
महेस॰-संज्ञा पुं० दे० "महेश"।
महोखा-संज्ञा पुं० [सं० मधुक] एक पक्षी जो तेज दौड़ता है, पर उड़ नहीं सकता।
महोगनी-संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत ही अच्छी, दृढ़ और टिकाऊ होती है।

महोच्छव, महोछाॐ†–संज्ञा पुं० [सं० महोत्सव] बड़ा उत्सव। महोत्सव।
महोत्सव–संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा उत्सव।
महोदधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
महोदय–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महोदया] १. आधिपत्य। २ स्वर्ग। ३. स्वामी। ४ कान्यकुब्ज देश। ५. महाशय।
महोलाॐ†–संज्ञा पुं० [अ० मुहैल] १ हीला। बहाना। २. धोखा। चकमा।
माँ–संज्ञा स्त्री० [सं० अंबा या माता] जन्म देनेवाली माता।
यौ०—माँ जाया = सगा भाई। सहोदर।
‡ अव्य० [सं० मध्य] में।
माँखनाॐ†–क्रि० अ० दे० "माखना"।
माँखीॐ†–संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।
माँग–संज्ञा स्त्री० [हिं० माँगना] १. माँगने की क्रिया या भाव। २. बिक्री या खपत आदि के कारण किसी पदार्थ के लिये होनेवाली आवश्यकता या चाह।
संज्ञा स्त्री० [सं० मार्ग?] सिर के बालों के बीच की रेखा जो बालों को विभक्त करके बनाई जाती है। सीमंत।
मुहा०—माँग कोख से सुखी रहना या जुड़ाना = स्त्रियों का सौभाग्यवती और संतानवती रहना। माँग पट्टी करना = कंघी करना।
माँग टीका–संज्ञा पुं० [हिं० माँग+टीका] स्त्रियों का माँग पर का एक गहना।
माँगनॐ†–संज्ञा पुं० [हिं० माँगना] १. माँगने की क्रिया या भाव। २. भिक्षुक।
माँगना–क्रि० स० [सं० मार्गण = याचना] १. किसी से यह कहना कि तुम अमुक पदार्थ मुझे दो। याचना करना। २. कोई आकांक्षा पूरी करने के लिये कहना।
मांगलिक–वि० [सं०] मंगल करनेवाला। संज्ञा पुं० नाटक का वह पात्र जो मंगल-पाठ करता है।
मांगल्य–वि० [सं०] शुभ। मंगल-कारक। संज्ञा पुं० मंगल का भाव।
माँचनाॐ†–क्रि० अ० [हिं० मचना] १. आरंभ होना। जारी होना। २. प्रसिद्ध होना।
माँचा†–संज्ञा पुं० [सं० मंच] [स्त्री० अल्पा० माँची] १. पलंग। खाट। मचा। २. छोटी पीढ़ी। ३. मचान।
माँछ†–संज्ञा पुं० [सं० मत्स्य] मछली।
माँजना–क्रि० स० [सं० मज्जन] १. किसी वस्तु से रगड़कर मैल छुड़ाना। २ सरेस और शीशे की बुकनी आदि लगाकर पतंग की डोर को दृढ़ करना। माँझा देना।
क्रि० अ० अभ्यास करना।
माँजरॐ†–संज्ञा स्त्री० दे० "पंजर"।
माँजा–संज्ञा पुं० [देश०] पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिये मादक होता है।
माँझॐ†–अव्य० [सं० मध्य] में। भीतर।
ॐ† संज्ञा पुं० अंतर। फ़र्क़।
माँझा–संज्ञा पुं० [सं० मध्य] १ नदी में का टापू। २ एक प्रकार का आभूषण जो पगड़ी पर पहना जाता है। ३. वृक्ष का तना। ४. वे पीले कपड़े जो वर और कन्या को हलदी चढ़ने पर पहनाए जाते हैं।
संज्ञा पुं० [हिं० माँजना] पतंग या गुड्डी के डोरे या नख पर चढ़ाया जानेवाला कलफ़।
संज्ञा पुं० दे० "मंझा"।
माँझिलॐ†–क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच का।
माँझी–संज्ञा पुं० [सं० मध्य] १ नाव खेनेवाला। केवट। मल्लाह। २ झगड़ा या मामला तै करानेवाला।
माँटॐ†–संज्ञा पुं० [सं० मट्टक] १. मटका। कुंडा। २. घर का ऊपरी भाग। अटारी।
माँठ–संज्ञा पुं० [सं० मट्टक] मटका। कुँडा।
माँड–संज्ञा पुं० [सं० मंड] पकाए हुए चावलों में से निकला हुआ लसदार पानी। पीच।
माँडनाॐ†–क्रि० स० [सं० मंडन] १ मलना। सानना। गूँधना। २. पोतना। लेपन करना। ३ बनाना। सजाना। ४. अन्न की बाल में से दाने झाड़ना। ५. मचाना।
माँडनी–संज्ञा स्त्री० [सं० मंडन] मगजी। गोट।
माँड्योॐ†–संज्ञा पुं० [सं० मंडप] १. अतिथि-शाला। २ विवाह का मंडप। मँडवा।
मांडलिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी मंडल या प्रांत की रक्षा अथवा शासन करता हो। २. वह छोटा राजा जो किसी बड़े राजा को कर देता हो।
माँडव–संज्ञा पुं० [सं० मंडप] विवाह आदि शुभ कृत्यों के लिये छाया हुआ मंडप।
मांडवी–संज्ञा स्त्री० [सं० माण्डवी] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो भरत को ब्याही थी।
मांडव्य–संज्ञा पुं० [सं० माण्डव्य] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने यमराज को शाप दिया था कि तुम शूद्र हो जाओ।

मांडा–संज्ञा पु० [सं० मंड] आँख का एक रोग जिसमें उसके अंदर महीन झिल्ली सी पड़ जाती है।
संज्ञा पु० [सं० मंडप] मंडप। मँड़वा।
संज्ञा पु० [हिं० माँडना = गूँधना] १ मैदे की एक प्रकार की बहुत पतली रोटी। लुचई। २ एक प्रकार की रोटी। परांठा। उलटा।

माँडी–संज्ञा स्त्री० [सं० मंड] १. भात का पसावन। पीच। माँड़। २. कपड़े या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ़।

मांडूक्य–संज्ञा पु० [सं०] एक उपनिषद्।

माँडौ †–संज्ञा पु० दे० "माँड़व"।

मांढा–संज्ञा पु० दे० "माँड़व"।

माँत॰–वि० [सं० मत्त] उन्मत्त। मस्त।
वि० [हिं० मात-मद] बे-रौनक। उदास।

माँतना †–क्रि० अ० [सं० मत्त + ना (प्रत्य०)] उन्मत्त होना। पागल होना।

माँता॰†–वि० [सं० मत्त] मतवाला।

मांत्रिक–संज्ञा पु० [सं०] वह जो तंत्र मंत्र का काम करता हो।

माँद–वि० [सं० मद] १. बेरौनक। उदास। २ किसी के मुकाबले में खराब या हलका। ३ पराजित। हारा हुआ। मात।
संज्ञा स्त्री० [देश०] हिंसक जंतुओं के रहने का विवर। बिल। गुफा। चुर। खोह।

माँदगी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बीमारी। रोग।

माँदर–संज्ञा पु० [हिं० मर्दल] मर्दल। (बाजा)

माँदा–वि० [फा० माँद] १. थका हुआ। २ बचा हुआ। बाकी। ३. रोगी।

मांद्य–संज्ञा पु० [सं०] मंद होने का भाव।

मांधाता–संज्ञा पु० [सं० मांधातृ] एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा।

माँपना॰†–क्रि० अ० [हिं० माँतना] नशे में चूर होना। उन्मत्त होना।

माँयँ–अव्य० [सं० मध्य] में। बीच। मध्य।

मांस–संज्ञा पु० [सं०] १. शरीर का वह प्रसिद्ध, मुलायम, लचीला, लाल पदार्थ जो रेशेदार तथा चरबी मिला हुआ होता है। २ कुछ विशिष्ट पशुओं के शरीर का वक्त अंश जो प्रायः खाया जाता है। गोश्त

मांसपेशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के अंदर होनेवाला मांस-पिंड।

मांसभक्षी–संज्ञा पु० दे० "मांसाहारी"।

मांसल–वि० [सं०] [संज्ञा मांसलता] १. मांस से भरा हुआ। मांसपूर्ण। (अंग) २. मोटा-ताजा। पुष्ट।
संज्ञा पु० काव्य में गौड़ी रीति का एक गुण।

मांसाहारी–संज्ञा पु० [सं० मांसाहारिन्] मांसभक्षी। मांस भोजन करनेवाला।

माँसु –संज्ञा पु० दे० "मांस"।

माँह॰†–अव्य० [सं० मध्य] में। बीच। अंदर।

माँहा॰†–अव्य० दे० "माँह"।

माँहि, माँहीं॰†–अव्य० दे० "माँह"।

मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. माता। ३ दीप्ति। प्रकाश।

माइँ, माई–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] छोटा पूआ जिससे विवाह में मातृपूजन किया जाता है।
मुहा०—माइँन में थापना = पितरों के समान आदर करना।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] पुत्री। लड़की।

माइ †–संज्ञा स्त्री० दे० "माई"।

माइका–संज्ञा पु० दे० "मायका"।

माई–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] १. माता। माँ।
यौ०—माई का लाल = १ उदार चित्तवाला व्यक्ति। २. वीर। शूर। बली।
२. बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिये संबोधन।

माउल्लहम–संज्ञा पु० [अ०] हिकमत में मांस का बना हुआ एक प्रकार का पुष्टि-कारक अरक।

माकूल–वि० [अ०] १. उचित। वाजिब। ठीक। २. लायक। योग्य। ३. अच्छा। बढ़िया। ४. जिसने वाद विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ली हो।

माख –संज्ञा पु० [सं० मक्ष] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। रिस। २. अभिमान। घमंड। ३. पछतावा। ४. अपने दोष को ढकना।

माखन–संज्ञा पु० दे० "मक्खन"।
यौ०—माखनचोर = श्रीकृष्ण।

माखना॰ †–क्रि० अ० [हिं० माख] अप्रसन्न होना। नाराज होना। क्रोध करना।

माखी॰†–संज्ञा स्त्री० [सं० मक्षिका] १. मक्खी। २. सोनामक्खी।

मागध–संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग विरदावली का वर्णन करते हैं। भाट। २. जरासंध।
वि० [सं० मगध] मगध देश का।

मागधी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा।
माघ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह चांद्र मास जो पूस के बाद और फागुन से पहले पड़ता है। २. संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम। ३. उपर्युक्त कवि का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्यग्रंथ।
संज्ञा पुं० [सं० माघ्य] कुंद का फूल।
माघी—संज्ञा स्त्री० [सं० माघ+ई] माघ मास की पूर्णिमा।
वि० माघ का। जैसे—माघी मिर्च।
माचः†—संज्ञा पुं० दे० "मचान"।
माचनाः†—क्रि० स० दे० "मचना"।
माचलः†—वि० [हिं० मचलना] १. मचलनेवाला। जिद्दी। हठी। २. मनचला।
माचा†—संज्ञा पुं० [सं० मंच] खाट की तरह की बैठने की पीढ़ी। बड़ी मचिया।
माची—संज्ञा स्त्री० [सं० मंच] छोटा माचा।
माछ†—संज्ञा पुं० [सं० मत्स्य] मछली।
माछरः†—संज्ञा पुं० दे० "मच्छड़"।
संज्ञा पुं० [सं० मत्स्य] मछली।
माछी†—संज्ञा स्त्री० [सं० मक्षिका] मक्खी।
माजरा—संज्ञा पुं० [अ०] १. हाल। वृत्तांत। २. घटना।
माजून—संज्ञा स्त्री० [अ०] औषध के रूप में काम आनेवाला कोई मीठा अवलेह।
माजूफल—संज्ञा पुं० [फा० माजू+फल] माजू नामक झाड़ी का गोटा या गोंद जो ओषधि तथा रँगाई के काम में आता है।
माट—संज्ञा पुं० [हिं० मटका] १. मिट्टी का वह बरतन जिसमें रँगरेज रंग बनाते हैं। मठोर। २. बड़ी मटकी।
माटीः†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिट्टी] १. दे० "मिट्टी"। २. शव। लाश। ३. शरीर। ४. पृथ्वी नामक तत्त्व। ५. धूल। रज।
माठ—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा] एक प्रकार की मिठाई।
माड़नाः†—क्रि० अ० [सं० मंडन] ठानना। मचाना। करना।
क्रि० स० [सं० मंडन] १. मंडित करना। भूषित करना। २. धारण करना। पहनना। ३. आदर करना। पूजना।
क्रि० स० [सं० मर्दन] १. पैर या हाथ से मसलना। मलना। २. घूमना। फिरना।
माढ़ाः†—संज्ञा पुं० [सं० मंडप] अटारी पर का चौबारा।
माढ़ी†—संज्ञा स्त्री० दे० "मढ़ी"।
माणवक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोलह वर्ष की अवस्थावाला युवक। २. विद्यार्थी। बटु। ३. निंदित या नीच आदमी।
माणिक—संज्ञा पुं० दे० "माणिक्य"।
माणिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] लाल रंग का एक रत्न। लाल। पद्मराग। चुन्नी।
वि० सर्वश्रेष्ठ। परम आदरणीय।
मातंग—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी। २. श्वपच। चांडाल। ३. एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे। ४. अश्वत्थ।
मातंगी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओं में से नवीं महाविद्या। (तंत्र)
मात—संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।
संज्ञा स्त्री० [अ०] पराजय। हार।
वि० [अ०] पराजित।
* वि० [सं० मत्त] मदमस्त। मतवाला।
मातदिल—वि० [अ० मोतदिल] जो गुण के विचार से न बहुत ठंढा हो, न बहुत गरम।
मातनाः†—क्रि० अ० [सं० मत्त] मस्त होना। मदमत्त होना। नशे में हो जाना।
मातबर—वि० [अ० मोतबिर] विश्वसनीय।
मातबरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] विश्वसनीयता।
मातम—संज्ञा पुं० [अ०] वह रोना-पीटना आदि जो किसी के मरने पर होता है।
मातमपुर्सी—संज्ञा स्त्री० [फा०] मृतक के संबंधियों को सांत्वना देना।
मातमी—वि० [फा०] शोक-सूचक।
मातलि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का सारथी।
मातलिसुत—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
मातहत—वि० [अ०] [संज्ञा मातहती] किसी की अधीनता में काम करनेवाला।
माता—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] १. जन्म देनेवाली स्त्री। जननी। २. कोई पूज्य या आदरणीय स्त्री। बड़ी स्त्री। ३. गौ। ४. भूमि। ५. लक्ष्मी। ६. शीतला। चेचक।
वि० [सं० मत्त] [स्त्री माती] मतवाला।
मातामह—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मातामही] माता का पिता। नाना।
मातु*—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] माता। माँ।
मातुल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मातुला, मातुलानी] १. माता का भाई। मामा। २. धतूरा।

मातुली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मामा की स्त्री। मामी। २. भाँग।
मातृ-संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।
मातृक-वि० [सं०] माता संबंधी।
मातृका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दाई। धाय। २. माता। जननी। ३. तांत्रिकों की ये सात देवियाँ—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इंद्राणी और चामुंडा।
मातृपूजा-संज्ञा स्त्री० [सं० मातृपूजन] विवाह की एक रीति जिसमें पूजों से पितरों का पूजन किया जाता है। मातृकापूजन।
मातृभाषा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह भाषा जो बालक माता की गोद में रहते हुए बोलना सीखता है। मादरी ज़बान।
मात्र-अव्य० [सं०] केवल। भर। सिर्फ़।
मात्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परिमाण। मिक़दार। २. एक बार खाने योग्य औषध। ३. उतना काल जितना एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में लगता है। कल। कला। ४. वह स्वरसूचक रेखा जो अक्षर के ऊपर या आगे-पीछे लगाई जाती है।
मात्रासमक-संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद।
मात्रिक-वि० [सं०] १. मात्रा-संबंधी। २ जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।
मात्सर्य-संज्ञा पुं० [सं०] ईर्ष्या। डाह।
माथ*†-संज्ञा पुं० दे० "माथा"।
माथा-संज्ञा पुं० [सं० मस्तक] १. सिर का ऊपरी भाग। मस्तक।
मुहा०—माथा ठनकना=पहले से ही किसी दुर्घटना या विपरीत बात के होने की आशंका होना। माथे चढ़ाना या धरना=शिरोधार्य करना। सादर स्वीकार करना। माथे पर बल पड़ना=आकृति से क्रोध, दुःख या असंतोष आदि प्रकट होना। माथे मानना=सादर स्वीकार करना।
यौ०—माथा-पच्ची=बहुत अधिक बकना या समझाना। सिर खपाना।
२. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।
माथुर-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० माथुरानी] १. मथुरा का निवासी। २. ब्राह्मणों की एक जाति। चौबे। ३. कायस्थों की एक जाति।
माथे-क्रि० वि० [हिं० माथा] १. मस्तक पर। सिर पर। २. भरोसे। सहारे पर।
मादक-वि० [सं०] नशा उत्पन्न करनेवाला। जिससे नशा हो। नशीला।
मादकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] मादक होने का भाव। नशीलापन।
मादर-संज्ञा स्त्री० [फा०] माँ। माता।
मादरज़ाद-वि० [फा०] १. जन्म का। पैदाइशी। २ सहोदर (भाई)। ३. बिलकुल नंगा। दिगंबर।
मादरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "मादर"।
मादा-संज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्री जाति का प्राणी। नर का उलटा। (जीव जंतु)
माद्दा-संज्ञा पुं० [अ०] १. मूल तत्त्व। २. योग्यता। ३. मवाद। पीब।
माद्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] पांडु राजा की पत्नी और नकुल तथा सहदेव की माता।
माधव-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। नारायण। २ वैशाख मास। ३. वसंत ऋतु। ४ एक वृत्त। मुक्तहरा।
माधवी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध लता जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं। २. सवैया छंद का एक भेद। ३. एक प्रकार की शराब। ४. तुलसी। ५. दुर्गा। ६. माधव की पत्नी।
माधुरई*-संज्ञा स्त्री० [सं० माधुरी] मधुरता।
माधुरता*-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।
माधुरिया*-संज्ञा स्त्री० दे० "माधुरी"।
माधुरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मिठास। २. शोभा। सुंदरता। ३. मद्य। शराब।
माधुर्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. मधुरता। २. सुंदरता। ३. मिठास। मीठापन। ४. पांचाली रीति के अंतर्गत काव्य का एक गुण जिसके द्वारा चित्त बहुत प्रसन्न होता है।
माधैया*-संज्ञा पुं० दे० "माधव"।
माधो-संज्ञा पुं० [सं० माधव] १. श्रीकृष्ण। २. श्री रामचंद्रजी।
माध्यंदिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।
माध्यम-वि० [सं०] मध्य का। बीचवाला। संज्ञा पुं० कार्य्यसिद्धि का उपाय या साधन।
माध्यमिक-संज्ञा पुं० [सं०] १. बौद्धों का एक भेद। २. मध्य देश।
माध्याकर्षण-संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है।
माध्व-संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णवों के चार मुख्य

संप्रदायों में से एक जो मध्वाचार्य का चलाया हुआ है।

माध्वी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।

मान–संज्ञा पुं० [सं०] १. भार, तौल या नाप आदि। परिमाण। मिकदार। २. वह साधन जिसके द्वारा कोई चीज़ नापी या तौली जाय। पैमाना। ३. अभिमान। शेखी।

मुहा०—मान मथना = गर्व चूर्ण करना। ४. प्रतिष्ठा। इज़्ज़त। सम्मान।

मुहा०—मान रखना = प्रतिष्ठा करना।

यौ०—मान-महत = आदर-सत्कार। प्रतिष्ठा। ५. मन का वह विकार जो अपने प्रिय व्यक्ति को कोई दोष या अपराध करते देखकर होता है। (साहित्य)

मुहा०—मान मनाना = रूठे हुए को मनाना। मान मोरना = मान छोड़ देना।

६. सामर्थ्य। शक्ति।

मानकंद–संज्ञा पुं० [सं० मानक] १. एक प्रकार का मीठा कंद। २. सालिब मिस्री।

मानकच्चू–संज्ञा पुं० दे० "मानकंद"।

मानक्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सूदन के अनुसार एक प्रकार का छंद।

मानगृह–संज्ञा पुं० [सं०] कोप-भवन।

मानचित्र–संज्ञा पुं० [सं०] किसी स्थान का बना हुआ नक्शा।

मानता–संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।

मानना–क्रि० अ० [सं० मानन] १. अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. कल्पना करना। फ़र्ज़ करना। समझना। ३. ध्यान में लाना। समझना। ४. ठीक मार्ग पर आना।

क्रि० स० १. स्वीकृत करना। मंजूर करना। २. किसी को पूज्य, आदरणीय या योग्य समझना। आदर करना। ३. पारंगत समझना। उस्ताद समझना। ४. धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना। ५. देवता आदि की भेंट करने का प्रण करना। मन्नत करना। ६. ध्यान में लाना। समझना।

माननीय–वि० [सं०] [स्त्री० माननीया] जो मान करने के योग्य हो। पूजनीय।

मानमंदिर–संज्ञा पुं० [सं०] १. कोपभवन। २. वह स्थान जिसमें ग्रहों आदि का वेध करने के यंत्र तथा सामग्री हो। वेधशाला।

मान-मनौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० मान + मनौती] १. मन्नत। मनौती। २. रूठने और मानने की क्रिया।

मानमरोर०†–संज्ञा स्त्री० दे० "मनमुटाव"।

मानमोचन–संज्ञा पुं० [सं०] रूठे हुए प्रिय को मनाना।

मानव–संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य। आदमी। २. १४ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

मानवशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें मानव-जाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन होता है।

मानवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। नारी। वि० [सं० मानवीय] मानव-संबंधी।

मानस–संज्ञा पुं० [सं०] १. मन। हृदय। २. मान सरोवर। ३. कामदेव। ४. संकल्प-विकल्प। ५. मनुष्य। ६. दूत। वि० १. मन से उत्पन्न। मनोभव। २. मन का विचारा हुआ।

क्रि० वि० मन के द्वारा।

मानसपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छा मात्र से हो।

मानसर–संज्ञा पुं० दे० "मान सरोवर"।

मान सरोवर–संज्ञा पुं० [सं० मानस + सरोवर] हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध बड़ी झील।

मानस शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] मनोविज्ञान।

मानस हंस–संज्ञा पुं० [सं०] एक वृत्त का नाम। मानहंस। रणहंस।

मानसिक–वि० [सं०] १. मन की कल्पना से उत्पन्न। २. मन संबंधी। मन का।

मानसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह पूजा जो मन ही मन की जाय। २. एक विद्या देवी। वि० मन का। मन से उत्पन्न।

मानहंस–संज्ञा पुं० [सं०] मनहंस वृत्त।

मानहानि–संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रतिष्ठा। अपमान। बेइज़्ज़ती। हतक इज़्ज़त।

मानहुँ॰–अव्य० दे० "मानों"।

माना–संज्ञा पुं० [इब०] एक प्रकार का मीठा रेचक निर्यास।

॰† क्रि० स० [सं० मान] १. नापना। सालना। २. जाँचना।

क्रि० अ० दे० "समाना" या "[illegible]"

मानिंद–वि० [फ़ा०]

मानिक–संज्ञा पुं० [सं० [illegible] का एक मणि। [illegible]

मानिकचंदी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मानिकचंद] साधारण छोटी सुपारी।

मानिक रेत-संज्ञा स्त्री० [हिं० मानिक + रेत] मानिक का चूरा जिससे गहने साफ़ करते हैं।

मानित-वि० [सं०] सम्मानित। प्रतिष्ठित।

मानिनी-वि० स्त्री० [सं०] १. मानवती। गर्ववती। २ मान करनेवाली। रुष्टा। संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका जो नायक का दोष देखकर उससे रूठ गई हो।

मानी-वि० [सं० मानिन्] [स्त्री० मानिनी] १ अहंकारी। घमंडी। २. सम्मानित। संज्ञा पुं० वह नायक जो नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो।
संज्ञा स्त्री० [अ०] अर्थ। मतलब। तात्पर्य।

मानुख०-संज्ञा पुं० दे० "मनुष्य"।

मानुष-वि० [सं०] [स्त्री० मानुषी] मनुष्य का। संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।

मानुषिक-वि० [सं०] मनुष्य का।

मानुषी-वि० [सं० मानुषीय] मनुष्य-संबंधी।

मानुस-संज्ञा पुं० [सं० मानुष] मनुष्य।

माने-संज्ञा पुं० [अ० मानी] अर्थ। मतलब।

मानो-अव्य० [हिं० मानना] जैसे। गोया।

मान्य-वि० [सं०] [स्त्री० मान्या] १. मानने योग्य। माननीय। २. पूजनीय। पूज्य।

माप-संज्ञा स्त्री० [हिं० मापना] १ मापने की क्रिया या भाव। नाप। २. वह मान जिससे कोई पदार्थ मापा जाय। मान।

मापक-संज्ञा पुं० [सं०] १. मान। माप। पैमाना। २. वह जिससे कुछ मापा जाय। ३ वह जो मापता हो।

मापना-क्रि० स० [सं० मापन] १. किसी पदार्थ के विस्तार या घनत्व आदि का किसी नियत मान से परिमाण करना। नापना। २. किसी पदार्थ का परिमाण जानने के लिये कोई क्रिया करना। नापना।
क्रि० अ० [सं० मत्त] मतवाला होना।

माफ़-वि० [अ०] जो क्षमा कर दिया गया हो। क्षमित।

माफ़कत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनुकूलता। २. मेल। मैत्री।

माफ़क†-वि० [अ० मुआफ़िक] १. अनुकूल। अनुसार। २. योग्य।

माफ़ी-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. क्षमा। २. वह भूमि जिसका कर सरकार से माफ़ हो।
यौ०—माफ़ीदार = वह जिसकी भूमि की मालगुजारी सरकार ने माफ़ की हो।

माम०†-संज्ञा पुं० [सं० मम्] १. ममता। अहंकार। २. शक्ति। अधिकार।

मामता-संज्ञा स्त्री० [सं० ममता] १. अपनापन। आत्मीयता। २. प्रेम। मुहब्बत।

मामलत, मामलति०†-संज्ञा स्त्री० [अ० मुआमिलत] १ मामला। व्यवहार की बात। २. विवादास्पद विषय।

मामला-संज्ञा पुं० [अ० मुआमिला] १. व्यापार। काम। धंधा। उद्यम। २. पारस्परिक व्यवहार। ३ व्यावहारिक, व्यापारिक या विवादास्पद विषय। ४ झगड़ा। विवाद। ५. मुकदमा।

मामा-संज्ञा पुं० [अनु०] [स्त्री० मामी] माता का भाई। माँ का भाई।
संज्ञा स्त्री० [फा०] १ माता। माँ। २. रोटी पकानेवाली स्त्री। ३ नौकरानी।

मामी-संज्ञा स्त्री० [सं० मा = निषेधार्थक] अपने दोष पर ध्यान न देना।
मुहा०—मामी पीना = मुकर जाना।

मामूल-संज्ञा पुं० [अ०] रीति। रवाज।

मामूली-वि० [अ०] १ नियमित। नियत। २. सामान्य। साधारण।

माय०†-संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] १. माता। माँ। जननी। २. बड़ी या आदरणीय स्त्री। संज्ञा स्त्री० दे० "माया"।
अव्य० [सं० मध्य] दे० "माहिं"।

मायक-संज्ञा पुं० दे० "मायावी"।

मायका-संज्ञा पुं० [सं० मातृ] स्त्री के लिये उसके माता-पिता का घर। नैहर। पीहर।

मायन"†-संज्ञा पुं० [सं० मातृका + आनयन] १. वह दिन या तिथि जिसमें विवाह में मातृका पूजन और पितृ निमंत्रण होता है। २. उपर्युक्त दिन का कृत्य।

मायनी†-संज्ञा स्त्री० दे० "मायाविनी"।

मायल-वि० [फ़ा०] १. झुका हुआ। रजू। प्रवृत्त। २. मिश्रित। मिला हुआ। (रंग)

माया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २ द्रव्य। धन। संपत्ति। दौलत। ३. अविद्या। अज्ञानता। भ्रम। ४ छल। कपट। धोखा। ५. सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य कारण। प्रकृति। ६ ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जो उसकी आज्ञा से सब काम करती हुई मानी गई है। ७.

इंद्रजाल। जादू। ८. इंद्रवज्रा नामक वर्ण वृत्त का एक उपभेद। ९. एक वर्ण वृत्त। १० मय दानव की कन्या जिससे खर, दूषण, त्रिशिरा और शूर्पनखा पैदा हुए थे। ११ किसी देवता की कोई लीला, शक्ति या प्रेरणा। १२. दुर्गा। १३. बुद्धदेव (गौतम) की माता का नाम।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० माता] माँ। जननी।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० ममता] १. किसी को अपना समझने का भाव। ममत्व। २. कृपा। दया। अनुग्रह।

मायादेवी-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्ध की माता का नाम।

मायावाद-संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य और असत्य मानने का सिद्धांत।

मायावादी-संज्ञा पुं० [सं० मायावादिन्] वह जो सारी सृष्टि को माया या भ्रम समझे।

मायाविनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] छल या कपट करनेवाली स्त्री। ठगिनी।

मायावी-संज्ञा पुं० [सं० मायाविन्] [स्त्री० मायाविनी] १. बहुत बड़ा चालाक। धोखे-बाज। फरेबी। २. एक दानव जो मय का पुत्र था। परमात्मा। ३. जादूगर।

मायास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कल्पित अस्त्र। कहते हैं कि इसका प्रयोग विश्वामित्र ने श्रीरामचंद्रजी को सिखाया था।

मायिक-वि० [सं०] १. माया से बना हुआ। बनावटी। जाली। २. मायावी।

मार-संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव। २. विष। जहर। ३. धतूरा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना] १. मारने की क्रिया या भाव। २. आघात। चोट। ३. निशाना। ४ मार-पीट।
अव्य० [हिं० मारना] अत्यंत। बहुत।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० माला] माला।

मारकंडेय-संज्ञा पुं० दे० "मार्कंडेय"।

मारक-वि० [सं०] १. मार डालनेवाला। संहारक। २. किसी के प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला।

मारका-संज्ञा पुं० [अं० मार्क] १. चिह्न। निशान। २. विशेषता-सूचक चिह्न।
संज्ञा पुं० [अ०] १. युद्ध। लड़ाई। २. बहुत बड़ी या महत्त्वपूर्ण घटना।

मार-काट-संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना + काटना] १. युद्ध। लड़ाई। जंग। २. मारने काटने का काम या भाव।

मारकीन-संज्ञा पुं० [अं० नैनकिन्] एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा।

मारग†-संज्ञा पुं० [सं० मार्ग] रास्ता।
मुहा०—मारग मारना = रास्ते में पथिक को लूट लेना। मारग लगना = रास्ता लेना।

मारगन-संज्ञा पुं० [सं० मार्गण] १. बाण। तीर। २. भिक्षुक। भिखमंगा।

मारण-संज्ञा पुं० [सं०] १. मार डालना। हत्या करना। २. एक कल्पित तांत्रिक प्रयोग। प्रसिद्ध है कि जिस मनुष्य के मारने के लिये यह प्रयोग किया जाता है, वह मर जाता है।

मारतंड-संज्ञा पुं० दे० "मार्तंड"।

मारना-क्रि० स० [सं० मारण] १ वध करना। हनन करना। प्राण लेना। २. पीटना या आघात पहुँचाना। ३. दुरव लगाना। ४ दुःख देना। सताना। ५ कुश्ती या मल्लयुद्ध में विपक्षी को पछाड़ देना। ६ वद कर देना। ७. शस्त्र आदि चलाना। फेंकना।
मुहा०—गोली मारना = १. किसी पर बंदूक चलाना या छोड़ना। २. जाने देना।
८. किसी शारीरिक आवेग या मनोविकार आदि को रोकना। ९. नष्ट कर देना। न रहने देना। १०. शिकार करना। आखेट करना। ११. गुप्त रखना। छिपाना। १२. चलाना। संचालित करना।
मुहा०—कुछ पढ़कर मारना = मंत्र से फूँक-कर कोई चीज किसी पर फेंकना। जादू मारना = जादू का प्रयोग करना। मंत्र मारना = जादू करना।
१३. धातु आदि को जलाकर उसकी भस्म तयार करना। १४. बिना परिश्रम के अथवा बहुत अधिक प्राप्ति करना। १५. विजय प्राप्त करना। जीतना। १६. अनुचित रूप से रख लेना। १७ बढ़ प्रभाव कम करना। १८ निर्जीव कर देना। १९. लगाना। दे...

मारपेच-संज्ञा पुं० [हिं० ...] धूर्तता। चालबाजी।

मारफत-अव्य० [अ०] ...

मारवाड़-संज्ञा पुं० [हिं० ...

राज्य। दे० "मेवाड़"। २. राजपूताने में मेवाड़ के आस-पास का प्रांत।
मारवाड़ी–संज्ञा पुं० [हिं० मारवाड़] [स्त्री० मारवाड़िन] मारवाड़ देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० मारवाड़ देश की भाषा।
वि० [हिं० मारना] मारवाड़ देश का।
मारा–वि० [हिं० मारना] जो मार डाला गया हो। मारा हुआ। निहत।
मुहा०–मारा फिरना, मारा मारा फिरना = बुरी दशा में इधर उधर घूमना।
मारामार–क्रि० वि० [हिं० मारना] अत्यंत शीघ्रता से। बहुत जल्दी।
मारिच–संज्ञा पुं० दे० "मारीच"।
मारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना] महामारी।
मारीच–संज्ञा पुं० [सं०] वह राक्षस जिसने सोने का हिरन बनकर रामचंद्र को धोखा दिया था।
मारुत–संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा।
मारुति–संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान। २. भीम।
मारू–संज्ञा पुं० [हिं० मारना] १. एक राग जो युद्ध के समय बजाया और गाया जाता है। २ बहुत बड़ा डंका या धौंसा।
संज्ञा पुं० [सं० मरुभूमि] मरुदेश-निवासी।
वि० [हिं० मारना] १. मारनेवाला। २. हृदयवेधक। कटीला।
मारे–अव्य० [हिं० मारना] वजह से।
मार्कंडेय–संज्ञा पुं० [सं०] मर्कंड ऋषि के पुत्र। कहते हैं कि ये अपने तपोबल से सदा जीवित रहते हैं और रहेंगे।
मार्का–संज्ञा पुं० दे० "मारका"।
मार्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. रास्ता। पथ। २. अगहन का महीना। ३. मृगशिरा नक्षत्र।
मार्गण–संज्ञा पुं० [सं०] अन्वेषण। ढूँढ़ना।
मार्गन–संज्ञा पुं० [सं० मार्गण] बाण।
मार्गशीर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] अगहन मास। कार्त्तिक के बाद का महीना।
मार्गी–संज्ञा पुं० [सं० मार्गिन्] मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। यात्री। बटोही।
मार्जन–संज्ञा पुं० दे० "मार्जना"।
मार्जना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० मार्जनीय] १. सफ़ाई। २. क्षमा। माफ़ी।
मार्जनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] झाड़ू।
मार्जार–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मार्जारी] बिल्ली।
मार्जित–वि० [सं०] साफ़ किया हुआ।
मार्तंड–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।
मार्दव–संज्ञा पुं० [सं०] १. अहंकार का त्याग। २. दूसरे को दुःखी देखकर दुःखी होना। ३. सरलता।
मार्फ़त–अव्य० [अ०] द्वारा। ज़रिए से।
मार्मिक–वि० [सं०] जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े। विशेष प्रभावशाली।
मार्मिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मार्मिक होने का भाव। २ पूर्ण अभिज्ञता।
माल–संज्ञा पुं० [सं० मल्ल] पहलवान। कुश्ती लड़नेवाला।
† संज्ञा स्त्री० [सं० माला] १. माला। हार। २. वह रस्सी या सूत की डोरी जो चरखे में टेकुए को घुमाती है। ३ पंक्ति। पाँती।
संज्ञा पुं० [अ०] १. संपत्ति। धन।
मुहा०—माल चीरना या मारना = पराया धन हड़पना। दूसरे की संपत्ति दबा बैठना।
२ सामग्री। सामान। असबाब।
यौ०—माल टाल = धन संपत्ति। माल मत्ता = माल असबाब।
३. क्रय विक्रय का पदार्थ। ४. वह धन जो कर में मिलता है। ५ फ़सल की उपज। ६. उत्तम और सुस्वादु भोजन। ७. गणित में वर्ग का घात। वर्ग अंक। ८. वह द्रव्य जिससे कोई चीज़ बनी हो।
मालकँगनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० माल ? + कँगुनी] एक लता जिसके बीजों से तेल निकलता है।
मालकोश–संज्ञा पुं० [सं०] संपूर्ण जाति का एक राग। कौशिक राग। हनुमत ने इसे छः रागों के अंतर्गत माना है।
मालख़ाना–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह स्थान जहाँ माल-असबाब रहता हो। भंडार।
माल-गाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० माल + गाड़ी] रेल में वह गाड़ी जिसमें केवल माल लादा जाता है।
मालगुज़ार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] मालगुज़ारी देनेवाला पुरुष।
मालगुज़ारी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. वह भूमि-कर जो ज़मींदार से सरकार लेती है। २. लगान।

माल-गोदाम—संज्ञा पुं० [हिं० माल + गोदाम] स्टेशन पर वह स्थान जहाँ पर रेल से आया हुआ माल रखा जाता है।

मालती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध लता जो बड़े वृक्षों पर घटाटोप फैलती है। २. छः अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। ३. बारह अक्षरों की एक वर्णिक वृत्ति। ४. सवैया का मत्तगयंद नामक भेद। ५. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ६. रात्रि। रात।

मालदार—वि० [फा०] धनी। संपन्न।

मालद्वीप—संज्ञा पुं० [सं० मलयद्वीप] भारत-वर्ष के पश्चिम ओर का एक द्वीपपुंज।

मालपूआ—संज्ञा पुं० [सं० पूप] पूरी की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा पकवान।

मालव—संज्ञा पुं० [सं०] १. मालवा देश। २. एक राग जिसे भैरव भी कहते हैं। ३. मालव देश-वासी या मालव का पुरुष। वि० मालव देश-संबंधी। मालवे का।

मालवा—संज्ञा पुं० [सं० मालव] एक प्राचीन देश जो अब मध्य भारत में है।

मालवीय—वि० [सं०] १. मालवे का। २. मालव देश का निवासी।

माला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। अवली। २. फूलों का हार। गजरा।
मुहा०—माला फेरना = जपना। भजना।
३. समूह। झुंड। ४. दूब। ५. उपजाति छंद का एक भेद।

मालादीपक—संज्ञा पुं० [सं०] एक अलंकार जिससे पूर्व-कथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है।

मालाधर—संज्ञा पुं० [सं०] सत्रह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त।

मालामाल—वि० [फा०] बहुत संपन्न।

मालिक—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मालिका] १. ईश्वर। अधिपति। २. स्वामी। ३. पति। शौहर।

मालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। २. माला। ३. मालिन।

मालिकाना—संज्ञा पुं० [फा०] स्वामी का अधिकार या स्वत्व। मिलकियत। स्वामित्व। क्रि० वि० मालिक की तरह।

मालिकी—संज्ञा स्त्री० [फा० मालिक] १. मालिक होने का भाव। २. मालिक का स्वत्व।

मालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मालिन। २. चंपा नगरी का एक नाम। ३. स्कंद की सात माताओं में से एक। ४. गौरी। ५. एक वर्णिक वृत्त। ६. मदिरा नाम की एक वृत्ति।

मालिन्य—संज्ञा पुं० [सं०] मलिनता। मैलापन।

मालियत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. क़ीमत। मूल्य। २. संपत्ति। ३. क़ीमती चीज़।

मालिवान—संज्ञा पुं० दे० "माल्यवान्"।

मालिश—संज्ञा स्त्री० [फा०] मलने का भाव या क्रिया। मलाई। मर्दन।

माली—संज्ञा पुं० [सं० मालिक] [स्त्री० मालिन, मालन, मालिनी] १. बाग़ को सींचने और पौधों को ठीक स्थान पर लगानेवाला पुरुष। २. एक छोटी जाति। इस जाति के लोग बाग़ों में फूल और फल के वृक्ष लगाते हैं।
वि० [सं० मालिन्] [स्त्री० मालिनी] जो माला धारण किए हो। माला पहने हुए।
संज्ञा पुं० १. एक राक्षस जो माल्यवान् और सुमाली का भाई था। २. राजीवगण नामक छंद।
वि० [फा०] आर्थिक। धन-संबंधी।

मालीदा—संज्ञा पुं० [फा०] १. मलीदा। चूरमा। २. एक प्रकार का बहुत कोमल और गरम ऊनी कपड़ा।

मालूम—वि० [अ०] जाना हुआ। ज्ञात।

मालोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उपमालंकार जिसमें एक उपमेय के अनेक उपमान होते हैं और प्रत्येक उपमान के भिन्न भिन्न धर्म्म होते हैं।

माल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. फूल। २. माला।

माल्यवंत—संज्ञा पुं० दे० "माल्यवान्"।

माल्यवान्—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २. एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था।

मावत†—संज्ञा पुं० दे० "महावत"।

मावली—संज्ञा पुं० [देश०] दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति का नाम।

मावस—संज्ञा स्त्री० दे० "अमावस"।

मावा—संज्ञा पुं० [सं० मंड] १. माँड। २. सत्त। निष्कर्ष। ३. खोया।

माशा-संज्ञा पुं० [सं० माष] ८ रत्ती का एक बाट या मान।

माशी-संज्ञा पुं० [हिं० माष=उड़द] एक रंग जो कालापन लिए हरा होता है। वि० कालापन लिए हरे रंग का।

माष-संज्ञा पुं० [सं०] १. उड़द। २. माशा। ३. शरीर के ऊपर का काले रंगका मसा। *संज्ञा स्त्री० दे० "माख"।

माषपर्णी-संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली उड़द।

मास-संज्ञा पुं० [सं०] काल का एक विभाग जो वर्ष के बारहवें भाग के बराबर या प्राय ३० दिनों का होता है। महीना।
* संज्ञा पुं० दे० "मांस"।

मासना*†-क्रि० अ० [सं० मिश्रण] मिलना। क्रि० स० मिलाना।

मासांत-संज्ञा पुं० [सं०] १. महीने का अंत। २. अमावास्या। ३. संक्रांति।

मासा-संज्ञा पुं० दे० "माशा"।

मासिक-वि० [सं०] १. मास-संबंधी। महीने का। २. महीने में एक बार होनेवाला।

मासी-संज्ञा स्त्री० [सं० मातृष्वसा] माँ की बहिन। मौसी।

माह*-अव्य० [सं० मध्य] बीच। में।

माह*†-संज्ञा पुं० [सं० माघ] माघ मास। संज्ञा पुं० [सं० माष] माष। उड़द। संज्ञा पुं० [फ़ा०] मास। महीना।

माहत*-संज्ञा स्त्री० [सं० महत्ता] महत्त्व।

माहताब-संज्ञा पुं० [फ़ा०] चंद्रमा।

माहताबी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. दे० "महताबी"। २. एक प्रकार का कपड़ा।

माहना*-क्रि० अ० दे० "उमाहना"।

माहली-संज्ञा पुं० [हिं० महल] १. अंतः-पुर में जानेवाला सेवक। महली खोजा। २. सेवक। दास।

माहवार-क्रि० वि० [फ़ा०] प्रति मास। वि० हर महीने का। मासिक।

माहवारी-वि० [फ़ा०] हर महीने का।

माहाँ*†-अव्य० दे० "महँ"।

माहात्म्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. महिमा। गौरव। महत्त्व। बड़ाई। २. आदर। मान।

माहिं*-अव्य० [सं० मध्य] १. भीतर। अंदर। २. अधिकरण कारक का चिह्न। 'में' या 'पर'।

माहिलाः†-संज्ञा पुं० [अ० मल्लाह] माँझी।

माहिष्मती-संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर।

माहीं*-अव्य० दे० "माँहि"।

माही-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मछली।

माही मरातिब-संज्ञा पुं० [फ़ा०] राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदि की आकृतियाँ बनी होती हैं।

माहुर-संज्ञा पुं० [सं० मधुर] विष। ज़हर।

माहेंद्र-संज्ञा पुं० [सं०] एक अस्त्र का नाम।

माहेश्वर-वि० [सं०] महेश्वर-संबंधी। संज्ञा पुं० १ एक यज्ञ का नाम। २. एक उपपुराण का नाम। ३. पाणिनि के वे चौदह सूत्र जिनमें स्वर और व्यंजन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है। ४. शैव संप्रदाय का एक भेद। ५. एक अस्त्र।

माहेश्वरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. एक मातृका। ३. वैश्यों की एक जाति।

मिंड़ाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० मींड़ना] १. मींड़ने या मींजने की क्रिया या भाव। २. मींड़ने की मज़दूरी। ३. देशी छींट की छपाई में एक क्रिया जिससे छींट का रंग पक्का और चमकदार हो जाता है।

मिक़दार-संज्ञा स्त्री० [अ०] परिमाण। मात्रा।

मिचकना†-क्रि० अ० [हिं० मिचना] (आँखों का) बार बार खुलना और बंद होना।

मिचकाना†-क्रि० स० [हिं० मिचना] बार बार (आँखें) खोलना और बंद करना।

मिचना-क्रि० अ० [हिं० मीचना का अक० रूप] (आँखों का) बंद होना।

मिचलाना-क्रि० अ० [हिं० मतलाना] कै आने को होना। मतली आना।

मिछा*†-वि० दे० "मिथ्या"।

मिज़राब-संज्ञा स्त्री० [अ०] तार का एक प्रकार का छल्ला जिससे सितार आदि बजाते हैं। डंका। नाखुना।

मिज़ाज-संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी पदार्थ का वह मूल गुण जो सदा बना रहे। तासीर। २. प्रवृत्ति। स्वभाव। प्रकृति। ३. शरीर या मन की दशा। तबीयत। दिल। मुहा०—मिज़ाज ख़राब होना=१. मन में अप्रसन्नता आदि उत्पन्न होना। २. अस्वस्थता

होना। मिजाज बिगाड़ना = किसी के मन में क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न करना। मिजाज पाना = १. किसी के स्वभाव से परिचित होना। २. किसी को अनुकूल या प्रसन्न देखना। मिजाज पूछना = यह पूछना कि आपका शरीर तो अच्छा है।
४ अभिमान। घमंड। शेखी।
मुहा०—मिजाज न मिलना = घमंड के कारण किसी से बात न करना।
मिज़ाजदार-वि० [अ० मिज़ाज + फ़ा० दार (प्रत्य०)] जिसे बहुत अभिमान हो। घमंडी।
मिज़ाज शरीफ़?-[अ०] आप अच्छे तो हैं? आप सकुशल तो हैं?
मिटना-क्रि० अ० [सं० मृष्ट] १. किसी अंकित चिह्न आदि का न रह जाना। २. खराब या नष्ट हो जाना। न रह जाना।
मिटाना-क्रि० स० [हिं० मिटना का सक० रूप] १ रेखा, दाग, चिह्न आदि दूर करना। २ नष्ट करना। ३ खराब करना।
मिट्टी-संज्ञा स्त्री० [सं० मृत्तिका] १ पृथ्वी। भूमि। ज़मीन। २ वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी के ऊपरी तल की प्रधान वस्तु है। खाक। धूल।
मुहा०—मिट्टी करना = नष्ट करना। खराब करना। मिट्टी के मोल = बहुत सस्ता। मिट्टी डालना = १ किसी बात को जाने देना। २. किसी के दोष को छिपाना। मिट्टी देना = १ मुसलमानों में किसी के मरने पर सब लोगों का उसकी क़ब्र में तीन तीन मुट्ठी मिट्टी डालना। २ क़ब्र में गाड़ना। मिट्टी में मिलना = १. नष्ट होना। चौपट होना। २ मरना।
यौ०—मिट्टी का पुतला = मानव शरीर। मिट्टी खराबी = १ दुर्दशा। २.बरबादी। नाश।
३ राख। भस्म। ४. शरीर। बदन।
मुहा०—मिट्टी पलीद या बरबाद करना = दुर्दशा करना। खराबी करना।
५ शव। लाश। ६. शारीरिक गठन। बदन की बनावट। ७. बदन की ज़मीन जो इत्र में दी जाती है।
मिट्टी का तेल-संज्ञा पु० [हिं० मिट्टी + तेल] एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसका व्यवहार प्रायः दीपक आदि जलाने के लिये होता है।
मिट्ठी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा] चुंबन। चूमा।
मिट्ठू-संज्ञा पु० [हिं० मीठा + ऊ (प्रत्य०)] १. मीठा बोलनेवाला। २. तोता।
वि० १. चुप रहनेवाला। न बोलनेवाला। २. प्रिय बोलनेवाला।
मिठ-वि० [हिं० मीठा] मीठा का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में) जैसे—मिठबोला।
मिठबोला-संज्ञा पु० [हिं० मीठा + बोलना] १. मधुर-भाषी। २. वह जो मन में कपट रखकर ऊपर से मीठी बातें करता हो।
मिठलोना-संज्ञा पु० [हिं० मीठा = कम + नोन] थोड़े नमकवाला।
मिठाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा + आई (प्रत्य०)] १. मिठास। माधुरी। २ कोई मीठी खाने की चीज। ३ कोई अच्छा पदार्थ।
मिठास-संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठा + आस (प्रत्य०)] मीठे होने का भाव। मीठापन। माधुर्य।
मितंग-संज्ञा पु० [सं० मितंगम] हाथी।
मित-वि० [सं०] १ जो सीमा के अंदर हो। परिमित। २. थोड़ा। कम।
मितभाषी-संज्ञा पु० [सं० मितभाषिन्] कम या थोड़ा बोलनेवाला।
मितव्यय-संज्ञा पु० [सं०] कम खर्च करना। किफायत।
मितव्ययता-संज्ञा स्त्री० [सं०] कम खर्च करने का भाव।
मितव्ययी-संज्ञा पु० [सं० मितव्ययिन्] वह जो कम खर्च करता हो।
मिताई‡-संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।
मिताक्षरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] याज्ञवल्क्य स्मृति की विज्ञानेश्वर कृत टीका।
मितार्थ-संज्ञा पु० [सं०] वह दूत जो थोड़ी बातें कहकर अपना काम पूरा करे।
मिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मान। परिमाण। २. सीमा। हद। ३ काल की अवधि।
मिती-संज्ञा स्त्री० [सं० मिति] १ देशी महीने की तिथि या तारीख।
मुहा०—मिती पुगना या पूजना = हुंडी का नियत समय पूरा होना।
२ दिन। दिवस।
मित्र-संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो अपना साथी, सहायक और शुभचिंतक हो। बंधु। सखा। दोस्त। २ सूर्य का एक नाम। ३ बारह आदित्यों में से पहला। ४. पुराणानुसार मरुद्गण में से
आर्यों के एक प्राचीन देवता

वर्ष का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश जिसका राज्य उदुंबर और पांचाल आदि में था।
मित्रता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मित्र होने का भाव। दोस्ती। २. मित्र का धर्म्म।
मित्रत्व-संज्ञा पुं० दे० "मित्रता"।
मित्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मित्र नामक देवता की स्त्री। २. शत्रुघ्न की माता सुमित्रा।
मित्राई*†-संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।
मित्राक्षर-संज्ञा पुं० [सं०] छंद के रूप में बना हुआ पद।
मित्रावरुण-संज्ञा पुं० [सं०] मित्र और वरुण नामक देवता।
मिथिला-संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्त्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम।
मिथुन-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २. संयोग। समागम। ३. मेष आदि राशियों में से तीसरी राशि।
मिथ्या-वि० [सं०] असत्य। झूठ।
मिथ्यात्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. मिथ्या होने का भाव। २. माया।
मिथ्याध्यवसिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें कोई एक असंभव या मिथ्या बात निश्चित करके तब कोई दूसरी बात कही जाती है।
मिथ्यायोग-संज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य्य जो रूप, रस या प्रकृति आदि के विरुद्ध हो। (वैद्यक)
मिथ्यावादी-संज्ञा पुं० [सं० मिथ्यावादिन्] [स्त्री० मिथ्यावादिनी] वह जो झूठ बोलता हो। झूठा।
मिथ्याहार-संज्ञा पुं० [सं०] अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।
मिनती†-संज्ञा स्त्री० दे० "विनति"।
मिनहा-वि० [अ०] जो काट या घटा लिया गया हो। मुजरा किया हुआ।
मिन्नत-संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रार्थना। निवेदन।
मिमियाई†-संज्ञा स्त्री० दे० "मोमियाई"।
मिमियाना-क्रि० अ० [मिन मिन से अनु०] भेंड़ या बकरी का बोलना।
मियाँ-संज्ञा पुं० [फा०] १. स्वामी। मालिक। २. पति। खसम। ३. महाशय। (मुसल०) ४. मुसलमान।
मियाँ मिट्ठू-संज्ञा पुं० [हिं० मियाँ + मिट्ठू] १. मीठी बोली बोलनेवाला। मधुर-भाषी।
मुहा०—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना = अपने मुँह से अपनी प्रशंसा करना।
२. तोता। ३. मूर्ख। बेवकूफ़।
मियान-संज्ञा स्त्री० दे० "म्यान"।
मियाना-वि० [फा०] मध्यम आकार का। संज्ञा पुं० एक प्रकार की पालकी।
मिरग*†-संज्ञा पुं० [सं० मृग] मृग। हिरन।
मिरगी-संज्ञा स्त्री० [सं० मृगी] एक प्रसिद्ध मानसिक रोग जिसमें रोगी प्रायः मूर्च्छित होकर गिर पड़ता है। अपस्मार रोग।
मिरचा-संज्ञा पुं० [सं० मरिच] लाल मिर्च।
मिरजई-संज्ञा स्त्री० [फा० मिरज़ा] कमर तक का एक प्रकार का बंददार अंगा।
मिरज़ा-संज्ञा पुं० [फा०] १. मीर या अमीर का लड़का। अमीर-ज़ादा। २. राजकुमार। कुँवर। ३. मुग़लों की एक उपाधि।
मिर्च-संज्ञा स्त्री० [सं० मरिच] १. कुछ प्रसिद्ध तिक्त फलों और फलियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत काली मिर्च, लाल मिर्च आदि हैं। २. इस वर्ग की एक प्रसिद्ध तिक्त फली जिसका व्यवहार व्यंजनों में मसाले के रूप में होता है। लाल मिर्च। मिरचा। ३. एक प्रसिद्ध तिक्त, काला, छोटा दाना जिसका व्यवहार व्यंजनों में मसाले के रूप में होता है। गोल मिर्च।
मिलक†-संज्ञा स्त्री० [अ० मिल्क] १. ज़मीन-जायदाद। ज़मींदारी। २. जागीर।
मिलकी†-संज्ञा स्त्री०[हिं० मिलक + ई (प्रत्य०)] १. ज़मींदार। २. दौलतमंद। अमीर।
मिलन-संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। भेंट। २. मिश्रण। मिलावट।
मिलनसार-वि० [हिं० मिलन + सार (प्रत्य०)] [संज्ञा मिलनसारी] सद्व्यवहार रखनेवाला और सुशील।
मिलना-क्रि० स० [सं० मिलन] १. सम्मिलित होना। मिश्रित होना। २. दो भिन्न-भिन्न पदार्थों का एक होना। ३. समूह या समुदाय के भीतर होना।
यौ०—मिला जुला = १. सम्मिलित। २. मिश्रित।
४. सटना। जुड़ना। चिपकना। ५. बिलकुल या बहुत कुछ बराबर होना। ६. आलिंगन करना। गले लगाना।

७. भेंट होना। मुलाक़ात होना। ८. मेल-मिलाप होना। ९. लाभ होना। नफ़ा होना। १०. प्राप्त होना।

मिलनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलना + ई (प्रत्य०)] विवाह की एक रस्म। इसमें, कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलते और उन्हें कुछ नक़द देते हैं।

मिलवाना–क्रि० स० [हिं० मिलाना का प्रे० रूप] मिलने का काम दूसरे से कराना।
संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलाना + ई (प्रत्य०)] १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. विवाह की मिलनी नामक रस्म।

मिलान–संज्ञा पुं० [हिं० मिलाना] १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. तुलना। मुक़ाबला। ३. ठीक होने की जाँच।

मिलाना–क्रि० स० [स० मिलन] १. मिश्रण करना। २. दो भिन्न भिन्न पदार्थों को एक करना। ३. सम्मिलित करना। एक करना। ४. सटाना। जोड़ना। चिपकाना। ५. तुलना करना। मुक़ाबला करना। ६. ठीक होने की जाँच करना। ७. भेंट या परिचय कराना। ८. सुलह या संधि कराना। ९. अपना भेदिया या साथी बनाना। साँटना। १०. बजाने से पहले बाजों का सुर ठीक करना।

मिलाप–संज्ञा पुं० [हिं० मिलना + आप (प्रत्य०)] १. मिलने की क्रिया या भाव। २. मित्रता। ३. भेंट। मुलाक़ात।

मिलावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलाना + आवट (प्रत्य०)] १. मिलाए जाने का भाव। २. बढ़िया चीज़ में घटिया चीज़ का मेल। खोट।

मिलिक*|–संज्ञा स्त्री० [अ० मिल्क] १. ज़मींदारी। मिलिकियत। २. जागीर।

मिलित–वि० [सं०] मिला हुआ। युक्त।

मिलोना|–क्रि० स० [हिं० मिलाना] १. दे० "मिलाना"। २. गौ का दूध दुहना।

मिल्कियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ज़मींदारी। २. जागीर। माफ़ी। ३. धन-संपत्ति। जायदाद। ४. वह धन-संपत्ति जिस पर मालिकों का सा हक़ हो।

मिल्लत–संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलन + त (प्रत्य०)] १. मेल-जोल। घनिष्ठता। मिलाप। २. मिलनसारी।
संज्ञा स्त्री० [अ०] मज़हब। संप्रदाय। पंथ।

मिश्र–वि० [सं०] १. मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। संयुक्त। २. श्रेष्ठ। बड़ा। ३. जिसमें कई भिन्न भिन्न प्रकार की रक़मों की संख्या हो। (गणित)
संज्ञा पुं० [सं०] सरयूपारीण, कान्यकुब्ज और सारस्वत आदि ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि।

मिश्रण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मिश्रणीय] १. दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया। मेल। मिलावट। २. जोड़ लगाने की क्रिया। जोड़ना। (गणित)

मिश्रित–वि० [सं०] एक में मिलाया हुआ।

मिष–संज्ञा पुं० [सं०] १. छल। कपट। २. बहाना। हीला। मिस। ३. ईर्ष्या। डाह।

मिष्ट–वि० [सं०] मीठा। मधुर।

मिष्टभाषी–संज्ञा पुं० [सं० मिष्टभाषिन्] वह जो मीठा बोलता हो। मधुरभाषी।

मिष्टान्न–संज्ञा पुं० [सं०] मिठाई।

मिस–संज्ञा पुं० [सं० मिष] १. बहाना। हीला। २. नक़ल। पाखंड।

मिसकीन–वि० [अ० मिस्कीन] [संज्ञा मिसकीनी] १. बेचारा। दीन। २. ग़रीब। निर्धन।

मिसकीनता*–संज्ञा स्त्री० [अ० मिसकीन + ता (स० प्रत्य०)] दीनता। ग़रीबी।

मिसना*|–क्रि० अ० [सं० मिश्रण] मिश्रित होना। मिलना।
क्रि० अ० [हिं० मीसना का अक० रूप] मींजा या मला जाना। मीसा जाना।

मिसरा–संज्ञा पुं० [अ० मिसरअ्] उर्दू या फ़ारसी आदि की कविता का एक चरण। पद।

मिसरी–संज्ञा स्त्री० [मिस्र देश से] १. मिस्र देश का निवासी। २. मिस्र देश की भाषा। ३. दोबारा बहुत साफ़ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी।

मिसल–संज्ञा स्त्री० [अ० मिसिल] सिक्खों के अनेक समूह जो रणजीतसिंह के बाद स्वतंत्र हो गए थे।

मिसाल–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. उपमा। २. उदाहरण। नमूना। नज़ीर। ३. कहावत।

मिसिल–वि० दे० "मिस्ल"।
संज्ञा स्त्री० किसी एक मुक़दमे या विषय से संबंध रखनेवाले कुल काग़ज़-पत्र।

मिस्तर–संज्ञा पुं० [हिं० मिस्तरी ?] काठ का

वह औजार जिससे राज लोग छत पीटते हैं। पिटना।

संज्ञा पु० [अ०] डोरे में लपेटा हुआ दफ्ती का वह टुकड़ा जो लिखने के समय लकीरें सीधी रखने के लिये लिखे जानेवाले कागज़ के नीचे रख लिया जाता है।

संज्ञा पु० दे० "मेहतर"।

मिस्तरी-संज्ञा पु० [अ० मास्टर] वह जो हाथ का बहुत अच्छा कारीगर हो।

मिस्तरीखाना-संज्ञा पु० [हिं० मिस्तरी+फा० खाना] वह स्थान जहाँ लोहार, बढ़ई आदि काम करते हैं।

मिस्र-संज्ञा पु० [अ०=नगर] एक प्रसिद्ध देश जो अफ्रिका के उत्तर-पूर्वी भाग में समुद्र के तट पर है।

मिस्री-संज्ञा स्त्री० दे० "मिसरी"।

मिस्ल-वि० [अ०] समान। तुल्य।

मिस्सा-संज्ञा पु० [हिं० मिसना] कई तरह की दालों आदि को पीसकर तैयार किया हुआ आटा।

मिस्सी-संज्ञा स्त्री० [फा० मिसी=ताँबे का] एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो सधवा स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं।

मिहिर-संज्ञा पु० [सं०] १. सूर्य्य। २. आक का पौधा। ३. बादल। ४. चंद्रमा। ५ दे० "वराहमिहिर"।

मिहिरकुल-संज्ञा पु० [फा० महगुल का सं० रूप] शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध हूण राजा तोरमाण (तुरमान) के पुत्र का नाम।

मींगी-संज्ञा स्त्री० [सं० मुदग=दाल] बीज के अंदर का गूदा। गिरी।

मींजना†-क्रि० स० [हिं० मींडना] १. हाथों से मलना। मसलना। २. मर्दन करना।

मींड-संज्ञा स्त्री० [सं० मीड़म्] संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस सुंदरता से कहना जिसमें दोनों स्वरों का संबंध स्पष्ट हो जाय। गमक।

मींडना†-क्रि० स० [हिं० मींड़ना] हाथों से मलना। मसलना।

मीआद-संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी कार्य्य की समाप्ति आदि के लिये नियत समय। अवधि।

मीआदी-वि० [हिं० मीआद+ई (प्रत्य०)] जिसके लिये कोई अवधि नियत हो।

मीचना-क्रि० स० [सं० मिष=झपकना] (आँखें) बंद करना। मूँदना।

मिचु†-संज्ञा स्त्री० [सं० मृत्यु] मृत्यु।

मीज़ान-संज्ञा स्त्री० [अ०] कुल संख्याओं का योग। जोड़। (गणित)

मीठा-वि० [सं० मिष्ट] [स्त्री० मीठी] १. चीनी या शहद आदि के स्वादवाला। मधुर।

मुहा०—मीठा होना=किसी प्रकार के लाभ या आनंद आदि की प्राप्ति होना।

२. स्वादिष्ठ। ज़ायकेदार। ३ धीमा। सुस्त। ४ साधारण या मध्यम श्रेणी का। मामूली। ५. हलका। मद्धिम। मंद। ६. नामर्द। नपुंसक। ७. बहुत अधिक सीधा। ८. प्रिय। रुचिकर।

संज्ञा पु० १. मिठाई। २ गुड़।

मीठा ज़हर-संज्ञा पु० दे० "बछनाग"।

मीठा तेल-संज्ञा पु० [हिं० मीठा+तेल] तिल का तेल।

मीठा नीबू-संज्ञा पु० [हिं० मीठा+नीबू] जमीरी नीबू। चकोतरा।

मीठा पानी-संज्ञा पु० [हिं० मीठा+पानी] नीबू का अँगरेज़ी सत मिला हुआ पानी। लेमनेड।

मीठी छुरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मीठी+छुरी] १. वह जो देखने में मित्र, पर वास्तव में शत्रु हो। विश्वासघातक। २. कपटी।

मीन-संज्ञा पु० [सं०] १. मछली। २. मेष आदि १२ राशियों में से अंतिम राशि।

मीनकेतन-संज्ञा पु० [सं०] कामदेव।

मीना-संज्ञा पु० [देश०] राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति।

संज्ञा पु० [फा०] १. एक प्रकार का नीले रंग का कीमती पत्थर। २. सोने, चाँदी आदि पर किया जानेवाला रंग-बिरंग का काम। ३. शराब रखने का कंटर।

मीनाकारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] सोने या चाँदी पर होनेवाला रंगीन काम।

मीनार-संज्ञा स्त्री० [अ० मनार] वह इमारत जो प्रायः गोलाकार चलती है और ऊपर की ओर बहुत अधिक ऊँचाई तक चली जाती है। स्तंभ। लाठ।

मीमांसक-संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो किसी बात की मीमांसा करता हो। २. वह जो मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता हो।

मीमांसा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनुमान, तर्क

आदि द्वारा यह स्थिर करना कि कोई बात कैसी है। २. हिंदुओं के छः दर्शनों में से दो दर्शन जो पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा कहलाते हैं। ३. जैमिनि-कृत दर्शन जिसे पूर्व मीमांसा कहते हैं।

मीमांस्य–वि० [सं०] मीमांसा करने के योग्य।

मीर–संज्ञा पुं० [फा०] १. सरदार। प्रधान नेता। २. धार्मिक आचार्य। ३. सैयद जाति की उपाधि। ४. वह जो सबसे पहले कोई काम, विशेषतः प्रतियोगिता का काम, कर डाले।

मीर फ़र्श–संज्ञा पुं० [फा०] वे बड़े बड़े पत्थर आदि जो फ़र्शों आदि के कोनों पर उन्हें उड़ने से रोकने के लिये रखे जाते हैं।

मीरास–संज्ञा स्त्री० [अ०] तरका। बपौती।

मीरासी–संज्ञा पुं० [अ० मीरास] [स्त्री० मीरासिन] एक प्रकार के मुसलमान जो प्रायः गाने-बजाने का काम या मसखरापन करते हैं।

मील–संज्ञा पुं० [अ० माइल] दूरी की एक नाप जो १७६० गज की होती है।

मीलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मीलनीय, मीलित] १. बंद करना। २. संकुचित करना।

मीलित–वि० [सं०] १. बंद किया हुआ। २. सिकोड़ा हुआ।

संज्ञा पुं० एक अलंकार जिसमें यह कहा जाता है कि एक होने के कारण उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं जान पड़ता।

मुँगरा–संज्ञा पुं० [सं० मुद्गर] [स्त्री० मुँगरी] हथौड़े के आकार का काठ का एक औज़ार। †संज्ञा पुं० [हिं० मोगरा] नमकीन बुँदिया।

मुँगौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँग+बरी] मूँग की बनी हुई बरी।

मुंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. गरदन के ऊपर का भाग। सिर। २ शुंभ का सेनापति एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. राहु ग्रह। ४. वृक्ष का ठूँठ। ५. कटा हुआ सिर। ६. एक उपनिषद् का नाम।

वि० मुँड़ा हुआ। मुंडा।

मुँड़चिरा–संज्ञा पुं० [हिं० मूँड+चीरना] १. एक प्रकार के फ़क़ीर जो प्रायः अपना सिर, आँख या नाक आदि नुकीले हथियार से घायल करके भिक्षा माँगते हैं। २. वह जो लेन-देन में बहुत हुज्जत और हठ करे।

मुंडन–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर को उस्तरे से मूँड़ने की क्रिया। २. द्विजातियों के १६ संस्कारों में से एक जिसमें बालक का सिर मूँड़ा जाता है।

मुँड़ना–क्रि० अ० [सं० मुंडन] १. मूँड़ा जाना। सिर के बालों की सफ़ाई होना। २. लुटना। ३ ठगा जाना।

मुंडमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] कटे हुए सिरों या खोपड़ियों की माला जो शिव या काली देवी के गले में होती है।

मुंडमालिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] काली देवी।

मुंडमाली–संज्ञा पुं० [सं० मुण्डमालिन्] शिव।

मुँडा–संज्ञा पुं० [सं० मुंडी] [स्त्री० मुँडी] १. वह जिसके सिर के बाल न हों या मुँड़े हुए हों। २ वह जो किसी साधु या जोगी का शिष्य हो गया हो। ३. वह पशु जिसके सींग होने चाहिएँ, पर न हों। ४. वह जिसके ऊपरी अथवा इधर-उधर फैलनेवाले अंग न हों। ५ एक प्रकार की लिपि जिसमें मात्राएँ आदि नहीं होतीं। कोठीवाली। ६ एक प्रकार का जूता।

संज्ञा पुं० [देश०] छोटा नागपुर में रहनेवाली एक असभ्य जाति।

मुँड़ाई–संज्ञा स्त्री०[हिं० मुँड़ना+आई (प्रत्य०)] मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया या मज़दूरी।

मुँडासा†–संज्ञा पुं० [हिं० मुड=सिर+आसा (प्रत्य०)] सिर पर बाँधने का साफ़ा।

मुँडिया–संज्ञा पुं० [हिं० मूँड़ना+इया (प्रत्य०)] साधु या योगी आदि का शिष्य। संन्यासी।

मुंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँड़ना+ई (प्रत्य०)] १. वह स्त्री जिसका सिर मुँड़ा हो। २. विधवा। राँड़ (गाली)

संज्ञा स्त्री० [सं०] गोरखमुंडी।

मुंडेर–संज्ञा स्त्री० दे० "मुँडेरा"।

मुँडेरा–संज्ञा पुं० [हिं० मूँड़=सिर+एरा (प्रत्य०)] दीवार का वह ऊपरी उठा हुआ भाग जो सबसे ऊपर की छत पर होता है।

मुँदना–क्रि० अ० [सं० मुद्रण] १. खुली हुई वस्तु का ढक जाना। बंद होना। २. लुप्त होना। छिपना। ३. छेद, बिल आदि बंद होना।

मुँदरा–संज्ञा पुं० [हिं० मुँदरी] १. एक प्रकार का कुंडल जो जोगी लोग कान में पहनते हैं। २. कान का एक आभूषण।

मुँदरी–संज्ञा स्त्री० [सं० मुद्रा] छल्ला। अँगूठी।
मुंशी–संज्ञा पुं० [अ०] निबंध या लेख आदि लिखनेवाला। मुहर्रिर। लेखक।
मुंसरिम–संज्ञा पुं० [अ०] १. इंतज़ाम करनेवाला। २. कचहरी का वह कर्म्मचारी जो दफ़्तर का प्रधान होता है और जिसके सुपुर्द मिसलें आदि ठिकाने से रखना होता है।
मुंसिफ़–संज्ञा पुं० [अ०] १. इंसाफ़ करनेवाला। २. दीवानी विभाग का एक न्यायाधीश।
मुंसिफ़ी–संज्ञा स्त्री० [अ० मुंसिफ़+ई (प्रत्य०)] १. न्याय करने का काम। २. मुंसिफ़ का काम या पद। ३. मुंसिफ़ की कचहरी।
मुँह–संज्ञा पुं० [सं० मुख] १. प्राणी का वह अंग जिससे वह बोलता और भोजन करता है। मुख-विवर। २. मनुष्य का मुख-विवर।
मुहा०—**मुँह आना**=मुँह के अंदर छाले पड़ना और चेहरा सूजना। (प्रायः गरमी आदि के रोग में) **मुँह खराब करना**=ज़बान से गंदी बातें कहना। **मुँह खुलना**=उद्दंडतापूर्वक बातें करने की आदत पड़ना। **मुँह चलना**= १. भोजन होना। खाया जाना। २. मुँह से व्यर्थ की बातें या दुर्वचन निकलना। **मुँह चिढ़ाना**=किसी की आकृति, हाव-भाव या कथन की बहुत बिगाड़कर नकल करना। **मुँह छूना** [संज्ञा मुँह-छुआई]=नाम मात्र के लिये कहना। मन से नहीं, बल्कि ऊपर से कहना। **मुँह पर लाना**=मुँह से कहना। वर्णन करना। **मुँह पेट चलना**=कै दस्त होना। हैज़ा होना। **मुँह फाड़कर कहना**=बेहया बनकर ज़बान पर लाना। **मुँह बाँधकर बैठना**=चुपचाप बैठना। कुछ न बोलना। **मुँह भरना**= रिश्वत देना। घूस देना। **मुँह मीठा करना**= १. मिठाई खिलाना। २. देकर प्रसन्न करना। **मुँह में ख़ून या लहू लगना**=चसका पड़ना। चाट पड़ना। **मुँह में ज़बान होना**=कहने की सामर्थ्य होना। **मुँह में पानी भर आना**=कोई पदार्थ प्राप्त करने के लिये ललचना। **मुँह में लगाम न होना**= जो मुँह में आवे, सो कह देना। (**अपना**) **मुँह सीना**=बोलने से रुकना। मुँह से बात न निकालना। बिलकुल चुप रहना। **मुँह सूखना**=प्यास या रोग आदि के कारण गला खुश्क होना। गले और ज़बान में काँटे पड़ना। **मुँह से दूध टपकना**=बहुत ही अनजान या बालक होना। (परिहास) **मुँह से निकालना**=कहना। उच्चारण करना। **मुँह से फूल झड़ना**=मुँह से बहुत ही सुंदर और प्रिय बातें निकलना।
३. मनुष्य अथवा किसी और जीव के सिर का अगला भाग जिसमें माथा, आँखें, नाक, मुँह, कान, ठोढ़ी और गाल आदि अंग होते हैं। चेहरा।
मुहा०–**अपना सा मुँह लेकर रह जाना**= लज्जित होकर रह जाना। (**अपना**) **मुँह काला करना**=१. व्यभिचार करना। २. अपनी बदनामी करना। (**दूसरे का**) **मुँह काला करना**=उपेक्षा से हटाना। त्यागना। **मुँह की खाना**=१. बेइज़्ज़त होना। दुर्दशा कराना। २. मुँह-तोड़ उत्तर सुनना। **मुँह के बल गिरना**=ठोकर खाना। धोखा खाना। **मुँह छिपाना**=लज्जा के मारे सामने न होना। (**किसी का**) **मुँह ताकना**=१. किसी के मुँह की ओर, कुछ पाने आदि की आशा से, देखना। २. विवश या चकित होकर देखना। **मुँह ताकना**=अकर्मण्य होकर चुपचाप बैठे रहना। **मुँह दिखाना**= सामने आना। **मुँह देखकर बात कहना**= ख़ुशामद करना। (**किसी का**) **मुँह देखना** =१. सामना करना। किसी के सामने जाना। २. चकित होकर देखना। **मुँह धो रखना**= किसी पदार्थ की प्राप्ति की ओर से निराश हो जाना। **मुँह पर**=सामने। प्रत्यक्ष। **मुँह पर या से बरसना**=आकृति से प्रकट होना। चेहरे से ज़ाहिर होना। **मुँह फुलाना या फुलाकर बैठना**=आकृति से असंतोष या अप्रसन्नता प्रकट करना। **मुँह फूँकना**=१. मुँह में आग लगाना। मुँह झुलसना। (स्त्रि० गाली) २. दाह-कर्म करना। (**किसी के**) **मुँह लगना**=१. किसी के सामने बढ़-बढ़कर बातें करना। उद्दंड बनना। २. जवाब सवाल करना। **मुँह लगाना**=सिर चढ़ाना। उद्दंड बनाना। **मुँह सूखना**=भय या लज्जा आदि से चेहरे का तेज जाता रहना।
४. किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का विवर। ५. सूराख। छेद। छिद्र। ६. मुलाहज़ा। मुरव्वत। लिहाज़।
मुहा०—**मुँह देखे का**=जो हार्दिक न हो,

केवल ऊपरी या दिखौआ हो। मुँह पर जाना = किसी का ध्यान करना। लिहाज करना। मुँह मुलाहज़े का = जान पहचान का। परिचित। मुँह रखना = किसी का लिहाज रखना। ७. योग्यता। सामर्थ्य। शक्ति। ८. साहस। हिम्मत।

मुहा०—मुँह पड़ना = साहस होना। ६. ऊपर की सतह या किनारा।

मुहा०—मुँह तक आना या भरना = पूरे तरह से भर जाना। लबालब होना।

मुँहअखरी०†-वि० [हिं० मुँह + अक्षर] जबानी। शाब्दिक।

मुँहकाला-संज्ञा पुं० [हिं० मुँह + काला]। १. अप्रतिष्ठा। बेइज़्ज़ती। २. बदनामी।

मुँहज़ोर-वि० [हिं० मुँह + ज़ोर] १. वह जो बहुत अधिक बोलता हो। बकवादी। २. दे० "मुँहफट"। ३. तेज़। उद्दंड।

मुँहदिखाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० मुँह + दिखाना] १. नई वधू का मुँह देखने की रस्म। मुँह देखनी। २. वह धन जो मुँह देखने पर वधू को दिया जाय।

मुँहदेखा-वि० [हिं० मुँह + देखना] [स्त्री० मुँहदेखी] केवल सामना होने पर होनेवाला (काम या व्यवहार)।

मुँहनाल-संज्ञा स्त्री० [हिं० मुँह + नाल = नली] वह नली जो हुक्के की सटक या नैचे आदि में लगा देते हैं और जिसे मुँह में लगाकर धूआँ खींचते हैं।

मुँहफट-वि० [हिं० मुँह + फटना] ओछी या कटु बात कहने में संकोच न करनेवाला।

मुँहबोला-वि० [हिं० मुँह + बोलना] (संबंधी) जो वास्तविक न हो, केवल मुँह से कहकर बनाया गया हो।

मुँहभराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० मुँह + भरना + आई (प्रत्य०)] १. मुँह भरने की क्रिया या भाव। २. रिश्वत। घूस।

मुँहमाँगा-वि० [हिं० मुँह + माँगना] अपने माँगने के अनुसार। मनोनुकूल।

मुँहामुँह-क्रि० वि० [हिं० मुँह + मुँह] मुँह तक। लबालब। भरपूर।

मुँहासा-संज्ञा पुं० [हिं० मुँह + आसा (प्रत्य०)] मुँह पर के वे दाने या फुंसियाँ जो युवा अवस्था में निकलती हैं।

मुअत्तल-वि० [अ०] [संज्ञा मुअत्तली] जो काम से कुछ समय के लिये, दंड स्वरूप, अलग कर दिया गया हो।

मुआफ़िक़-वि० [अ०] [संज्ञा मुआफ़िक़त] १. जो विरुद्ध न हो। अनुकूल। २. सदृश। समान। ३. मनोनुकूल।

मुआयना-संज्ञा पुं० [अ०] देख-भाल करना। जाँच-पड़ताल। निरीक्षण।

मुआवज़ा-संज्ञा पुं० [अ०] १. बदला। पलटा। २. वह धन जो किसी कार्य्य अथवा हानि आदि के बदले में मिले।

मुकटा-संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की रेशमी धोती।

मुकता-संज्ञा पुं० दे० "मुक्त"।

वि० [हिं० (प्रत्य०) अ + मुकता = समाप्त होना] [स्त्री० मुकती] बहुत अधिक। यथेष्ट।

मुकदमा-संज्ञा पुं० [अ०] १. दो पक्षों के बीच का धन या अधिकार आदि से संबंध रखनेवाला अथवा किसी अपराध (जुर्म) का मामला जो विचार के लिये न्यायालय में जाय। अभियोग। २. दावा। नालिश।

मुकदमेबाज़-संज्ञा पुं० [अ० मुकदमा + फा० बाज़ (प्रत्य०)] [भाव० मुकदमेबाज़ी] वह जो प्रायः मुकदमे लड़ा करता हो।

मुकना-संज्ञा पुं० दे० "मकुना"।

०† क्रि० अ० [सं० मुक्त] १. मुक्त होना। छूटना। २. ख़तम होना। चुकना।

मुकरना-क्रि० अ० [सं० मा = नहीं + करना] कोई बात कहकर उससे फिर जाना। नटना।

मुकरनी-संज्ञा स्त्री० दे० "मुकरी"।

मुकरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मुकरना + ई (प्रत्य०)] एक प्रकार की कविता जिसमें कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही अभिप्राय प्रकट किया जाता है। कह-मुकरी।

मुकर्रर-क्रि० वि० [अ०] दोबारा। फिर से।

मुकर्रर-वि० [अ०] [संज्ञा मुकर्ररी] १. जिसका इक़रार किया गया हो। निश्चित। २. तैनात। नियुक्त।

मुकाबला-संज्ञा पुं० [अ०] १. आमना-सामना। २. मुठभेड़। ३. बराबरी। समानता। ४. तुलना। ५. मिलान। ६. विरोध। लड़ाई।

मुक़ाबिल-क्रि०वि०[अ०] सम्मुख। सामने। संज्ञा पु० १. प्रतिद्वंद्वी। २ शत्रु। दुश्मन।
मुक़ाम-संज्ञा पु० [अ०] १. ठहरने का स्थान। ठिकाना। पड़ाव। २. ठहरने की क्रिया। कूच का उलटा। विराम। ३. रहने का स्थान। घर। ४. अवसर।
मुकियाना-क्रि० स० [हिं० मुक्का+इयाना (प्रत्य०)] १ मुक्कियों से बार बार आघात करना। २. घूँसे लगाना।
मुकुंद-संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।
मुकुट-संज्ञा पु० [सं०] एक प्रसिद्ध शिरोभूषण जो प्राय: राजा आदि धारण किया करते थे।
मुकुर-संज्ञा पु० [सं०] १. शीशा। आईना। दर्पण। २ मौलसिरी। ३. कली।
मुकुल-संज्ञा पु० [सं०] १. कली। २ शरीर। ३. आत्मा। ४. एक प्रकार का छंद।
मुकुलित-वि० [सं०] १. जिसमें कलियाँ आई हों। २. कुछ खिली हुई। (कली) ३. आधा खुला, आधा बंद। ४. झपकता हुआ। (नेत्र)
मुक्का-संज्ञा पु० [सं० मुष्टिका] [स्त्री० अल्पा० मुक्की] बँधी मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय या जिससे मारा जाय।
मुक्की-संज्ञा पु० [हिं० मुक्का+ई (प्रत्य०)] १. मुक्का। घूँसा। २. वह लड़ाई जिसमें मुक्कों की मार हो। ३. मुट्ठियाँ बाँधकर उससे किसी के शरीर पर धीरे धीरे आघात करना, जिससे शरीर की शिथिलता और पीड़ा दूर होती है।
मुक्केबाज़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मुक्का+बाज़ी (प्रत्य०)] मुक्कों की लड़ाई। घूँसेबाज़ी।
मुक्त-वि० [सं०] १. जिसे मुक्ति मिल गई हो। २. जो बंधन से छूट गया हो। ३. चलने के लिये छूटा हुआ। फेंका हुआ।
मुक्तकंठ-वि० [सं०] १ चिल्लाकर बोलनेवाला। २ जिसे कहने में आगा-पीछा न हो।
मुक्तक-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर मारा जाता था। २. वह कविता जिसमें कोई एक कथा या प्रसंग कुछ दूर तक न चले। फुटकर कविता। उद्भट। 'प्रबंध' का उलटा।
मुक्तता-संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्ति"।
मुक्तहस्त-वि० [सं०] [संज्ञा मुक्तहस्तता] जो खुले हाथों दान करता हो।
मुक्ता-संज्ञा स्त्री० [सं०] मोती।
मुक्ताफल-संज्ञा पु० [सं०] मोती।
मुक्तिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद्।
मुख-संज्ञा पु० [सं०] १. मुँह। आनन। २. घर का द्वार। दरवाजा। ३ नाटक में एक प्रकार की संधि। ४ किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी खुला भाग। ५. आदि। आरंभ। ६ किसी वस्तु से पहले पड़नेवाली वस्तु। वि० प्रधान। मुख्य।
मुखचपला-संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।
मुखड़ा-संज्ञा पु० [सं० मुख+हिं० डा (प्रत्य०)] मुख। चेहरा। आनन।
मुख़तार-संज्ञा पु० [अ०] १. जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई काम करने का अधिकार दिया हो। २. एक प्रकार का क़ानूनी सलाहकार और काम करनेवाला।
मुख़्तारनामा-संज्ञा पु० [अ० मुख्तार+फा० नामा] वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने के लिये मुख्तार बनाया जाय।
मुख़तारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मुख़तार+ई (प्रत्य०)] १ मुख़तार होकर दूसरे के मुकदमे लड़ने का काम या पेशा। २. प्रतिनिधित्व।
मुखबंध-संज्ञा पु० [सं०] ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका।
मुख़बिर-संज्ञा पुं० [अ०] जासूस। गोइंदा।
मुख़बिरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मुख़बिर+ई (प्रत्य०)] खबर देने का काम। मुख़बिर का काम।
मुखर-वि० [सं०] १ जो अप्रिय बोलता हो। कटुभाषी। २. बकवादी।
मुखशुद्धि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुँह साफ़ करना। २. भोजन के उपरांत पान, सुपारी आदि खाकर मुँह शुद्ध करना।
मुखस्थ-वि० दे० "मुखाग्र"।
मुखाग्र-वि० [सं०] जो जबानी याद हो। कंठस्थ। बर ज़बान।
मुखापेक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] दूसरों का

मुँह ताकना। दूसरों के आश्रित रहना।
मुखापेक्षी-संज्ञा पुं० [सं० मुखापेक्षिन्] वह जो दूसरों का मुँह ताकता हो। आश्रित।
मुख़ालिफ़-वि० [अ०] [संज्ञा मुख़ालिफ़त] १. जो ख़िलाफ़ हो। विरोधी। २. शत्रु। दुश्मन। ३ प्रतिद्वंद्वी।
मुखिया-संज्ञा पुं० [सं० मुख्य+इया (प्रत्य०)] १. नेता। प्रधान। सरदार। २. वह जो किसी काम में सबसे आगे हो। अगुआ।
मुख़्तसर-वि० [अ०] १. जो थोड़े में हो। संक्षिप्त। २. छोटा। ३. अल्प। थोड़ा।
मुख्य-वि० [सं०] [संज्ञा मुख्यता] सबमें बड़ा। ऊपर या आगे रहनेवाला। प्रधान।
मुगदर-संज्ञा पुं० [सं० मुद्गर] एक प्रकार की गावदुमी, भारी मुँगरी जिसका प्रायः जोड़ा होता है और जिसका उपयोग व्यायाम के लिये किया जाता है। जोड़ी।
मुग़ल-संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० मुग़लानी] १. मंगोल देश का निवासी। २. तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग जो तातार देश का निवासी था। ३. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।
मुग़लई-वि० [फ़ा० मुग़ल+ई (प्रत्य०)] मुग़लों का सा। मुग़लों की तरह का।
मुग़लाई-वि० दे० "मुग़लई"।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मुग़ल+आई (प्रत्य०)] मुग़ल होने का भाव। मुग़लपन।
मुगवन-संज्ञा पुं० [सं० वनमुद्ग] मोठ।
मुग़ालता-संज्ञा पुं० [अ०] धोखा। छल।
मुग्घम-वि० [देश०] (बात) जो बहुत खोलकर या स्पष्ट करके न कही जाय।
मुग्ध-वि० [सं०] [संज्ञा मुग्धता] १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मूढ़। २. सुंदर। ख़ूबसूरत। ३. आसक्त। मोहित।
मुग्धा-संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो यौवन को तो प्राप्त हो चुकी हो, पर जिसमें काम-चेष्टा न हो।
मुचकुंद-संज्ञा पुं० [सं० मुचुकुंद] एक बड़ा पेड़।
मुचलका-संज्ञा पुं० [तु०] वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो।
मुछंदर-संज्ञा पुं० [हिं० मूछ] १. जिसकी मूछें बड़ी-बड़ी हों। २. कुरूप और मूर्ख।
मुज़क्कर-वि० [अ०] पुल्लिंग।
मुजरा-संज्ञा पुं० [अ०] १. वह जो जारी किया गया हो। २. वह रक़म जो किसी रक़म में से काट ली गई हो। ३ किसी बड़े या धनवान् के सामने जाकर उसे सलाम करना। अभिवादन। ४. वेश्या का बैठकर गाना।
मुजरिम-संज्ञा पुं० [अ०] जिस पर अभियोग लगाया गया हो। अभियुक्त।
मुजावर-संज्ञा पुं० [अ०] वह मुसलमान जो किसी रौज़े पर रहकर वहाँ का चढ़ावा आदि लेता हो।
मुझ-सर्व० [हिं० मुझे] मैं का वह रूप जो उसे कर्ता और संबंध कारक को छोड़कर शेष कारकों में, विभक्ति लगने से पहले, प्राप्त होता है। जैसे-मुझको, मुझमें।
मुझे-सर्व० [सं० मह्यम्] "मैं" का वह रूप जो उसे कर्म और संप्रदान कारक में प्राप्त होता है।
मुटकना-वि० [हिं मोटा+कना (प्रत्य०)] आकार में छोटा, पर सुंदर।
मुटका-संज्ञा पुं० [हिं० मोटा ?] एक प्रकार की रेशमी धोती। मुकटा।
मुटाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० मोटा+ई (प्रत्य०)] १. मोटापन। स्थूलता। २. पुष्टि। ३. अहंकार। घमंड। शेख़ी।
मुटाना-क्रि० अ० [हिं० मोटा+आना (प्रत्य०)] १. मोटा हो जाना। २. अहंकारी हो जाना।
मुटासा-वि० [हिं० मोटा+आसा (प्रत्य०)] वह जो कुछ धन कमा लेने से बेपरवा और घमंडी हो गया हो।
मुटिया-संज्ञा पुं० [हिं० मोट=गठरी+इया (प्रत्य०)] बोझ ढोनेवाला। मज़दूर।
मुट्ठा-संज्ञा पुं० [हिं० मूठ] १. घास, फूस, तृण या डंठल का उतना पूला जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके। २. चंगुल भर वस्तु। ३. पुलिंदा। ४. शस्त्र या यंत्र आदि की बेंट। दस्ता।
मुट्ठी-संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिका प्रा० मुट्ठिआ] १. हाथ की वह मुद्रा जो उँगलियों को मोड़कर हथेली पर दबा लेने से बनती है। बँधी हुई हथेली। २. उतनी वस्तु जितनी

उपर्युक्त मुद्रा के समय हाथ में आ सके। मुहा०—मुट्ठी में=कब्जे में। अधिकार में। मुट्ठी गरम करना=रुपया देना। धन देना। ३. बँधी हथेली के बराबर का विस्तार। ४. हाथों से किसी के अंगों को पकड़ पकड़कर दबाने की क्रिया जिससे शरीर की थकावट दूर होती है। चंपी।

मुठभेड़-संज्ञा स्त्री० [हिं० मूठ+भिड़ना] १. टक्कर। भिड़ंत। लड़ाई। २. भेंट। सामना।

मठिका-संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिक] १. मुट्ठी। २. घूँसा। मुक्का।

मुठिया-संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिका] औज़ारों का दस्ता। बेंट। संज्ञा स्त्री० भिखमंगों को मुट्ठी मुट्ठी भर अन्न बाँटने की क्रिया।

मुठी-संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

मुड़कना-क्रि० अ० दे० "मुरकना"।

मुड़ना-क्रि० अ० [सं० मुरण] १. सीधी वस्तु का कहीं से बल खाकर दूसरी ओर फिरना। घुमाव लेना। २. किसी धारदार किनारे या नोक का झुक जाना। ३. लकीर की तरह सीधे न जाकर घूमकर किसी ओर झुकना। ४. दाएँ अथवा बाएँ घूम जाना। ५. पलटना। लौटना। क्रि० अ० दे० "मुँड़ना"।

मुड़ला-वि० [सं० मुंड] [स्त्री० मुड़ली] जिसके सिर पर बाल न हों। मुंडा।

मुड़वाना-क्रि० स० [हिं० मूँड़ना का प्रेर० रूप] किसी को मूँड़ने में प्रवृत्त करना। क्रि० स० [हिं० मुड़ना का प्रेर० रूप] मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना।

मुड़वारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँड़+वारी (प्रत्य०)] १. अटारी की दीवार का सिरा। मुँड़ेरा। २. सिरहाना।

मुड़हर-संज्ञा पु० [हिं० मूँड़+हर (प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी या चादर का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है।

मुड़ाना-क्रि० स० दे० "मुँड़ाना"।

मुड़िया-संज्ञा पुं० [हिं० मूँड़ना+इया (प्रत्य०)] वह जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो।

मुतअल्लिक-वि० [अ०] १. संबंध रखनेवाला। संबद्ध। २. सम्मिलित। क्रि० वि० संबंध में। विषय में।

मुतका-संज्ञा पु० [हिं० मूँड़+टेक] १. कोठे के छज्जे या चौक के ऊपर पाटन के किनारे खड़ी की हुई पटिया या नीची दीवार। २. खंभा। ३. मीनार। लाट।

मुतबन्ना-संज्ञा पु० [अ०] दत्तक पुत्र।

मुतलक-क्रि० वि० [अ०] ज़रा भी। तनिक भी। रत्ती भर भी। वि० बिलकुल। निरा। निपट।

मुतसद्दी-संज्ञा पु० [अ०] १. लेखक। मुंशी। २. पेशकार। दीवान। ३. इंतजाम करनेवाला। प्रबंधकर्त्ता। ४. मुनीम।

मुतसिरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० मोती+सं० श्री] कंठ में पहनने की मोतियों की कंठी।

मुताबिक-क्रि० वि० [अ०] अनुसार। वि० अनुकूल।

मुतालबा-संज्ञा पु० [अ०] उतना धन जितना पाना वाजिब हो। बाकी रुपया।

मुताह-संज्ञा पु० [अ० मुताअ] मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

मुतिलाडू-संज्ञा पु० [हिं० मोती+लड्डू] मोतीचूर का लड्डू।

मुतेहरा-संज्ञा पुं० [हिं० मोती+हार] कलाई पर पहनने का एक आभूषण।

मुद-संज्ञा पु० [सं०] हर्ष। आनंद।

मुदगर-संज्ञा पु० दे० "मुगदर"।

मुदर्रिस-संज्ञा पु० [अ०] अध्यापक।

मुदा-अव्य० [अ० मुद्दआ=अभिप्राय] १. तात्पर्य यह कि। २. मगर। लेकिन। संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्ष। आनंद।

मुदाम-क्रि० वि० [फा०] १. सदा। हमेशा। सदैव। २. निरंतर। लगातार। †३. ठीक ठीक। हू-ब-हू। (क्व०)

मुदामी-वि० [फा०] जो सदा होता रहे

मुदित-वि० [सं०] प्रसन्न। खुश।

मुदिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परकीया के अंतर्गत एक प्रकार की नायिका। २. हर्ष।

मुदिर-संज्ञा पु० [सं०] बादल। मेघ।

मुद्ग-संज्ञा पु० [सं०] मूँग नामक अन्न।

मुद्गर-संज्ञा पु० [सं०] १. दे० "मुगदर"। २. प्राचीन काल का एक अस्त्र।

मुद्गल-संज्ञा पु० [सं०] एक उपनिषद्।

मुद्दई-संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० मुद्दइया] १. दावा

करनेवाला। दावादार। वादी। २. दुश्मन। वैरी। शत्रु।

मुद्दत–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मुद्दती] १. अवधि। २. बहुत दिन। अरसा।

मुद्दाअलेह, मुद्दालेह–संज्ञा पुं० [अ०] वह जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय। प्रतिवादी।

मुद्गर्†–वि० दे० "मुग्ध"।

मुद्रक–संज्ञा पुं० [सं०] छापनेवाला।

मुद्रण–संज्ञा पुं० [सं०] किसी चीज़ पर अक्षर आदि अंकित करना। छपाई।

मुद्रांकित–वि० [सं०] १. मोहर किया हुआ। २. जिसके शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न गरम लोहे से दागकर बनाए गए हों। (वैष्णव)

मुद्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी के नाम की छाप। मोहर। २. रुपया, अशरफ़ी आदि। सिक्का। ३. अँगूठी। छाप। छल्ला। ४. टाइप से छपे हुए अक्षर। ५. गोरखपंथी साधुओं के पहनने का एक कर्णभूषण। ६. हाथ, पाँव, आँख, मुँह, गर्दन आदि की कोई स्थिति। ७. बैठने, लेटने या खड़े होने का कोई ढंग। ८. मुख की आकृति या चेष्टा। ९. विष्णु के आयुधों के चिह्न जो प्रायः भक्त लोग अपने शरीर पर अंकित करते हैं या गरम लोहे से दगवाते हैं। छाप। १०. हठयोग में विशेष अंगविन्यास। ये मुद्राएँ पाँच होती हैं—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी। ११. वह अलंकार जिसमें प्रकृत या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त पद्य में कुछ और भी साभिप्राय नाम हों।

मुद्रातत्त्व–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं।

मुद्रायंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] छापने या मुद्रण करने का यंत्र। छापे आदि की कल।

मुद्राविज्ञान–संज्ञा पुं० दे० "मुद्रातत्त्व"।

मुद्राशास्त्र–संज्ञा पुं० दे० "मुद्रातत्त्व"।

मुद्रिक–संज्ञा स्त्री० दे० "मुद्रिका"।

मुद्रिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अँगूठी। २. कुश की बनी हुई अँगूठी जो पितृ-कार्य्य में अनामिका में पहनी जाती है। पवित्री। पैंती। ३. मुद्रा। सिक्का। रुपया।

मुद्रित–वि० [सं०] १. मुद्रण या अंकित किया हुआ। छपा हुआ। २. मुँदा हुआ। बंद।

मुधा–क्रि० वि० [सं०] व्यर्थ। वृथा। वि० १. व्यर्थ का। निष्प्रयोजन। २. असत्। मिथ्या। झूठ।
संज्ञा पुं० असत्य। मिथ्या।

मुनक्का–संज्ञा पुं० [अ० मि० सं० मृद्वीका] एक प्रकार की बड़ी किशमिश।

मुनादी–संज्ञा स्त्री० [अ०] वह घोषणा जो डुग्गी या ढोल आदि पीटते हुए सारे शहर में हो। ढिंढोरा। डुग्गी।

मुनाफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] लाभ। नफ़ा।

मुनार†–संज्ञा पुं० दे० "मीनार"।

मुनासिब–वि० [अ०] उचित। वाजिब।

मुनि–संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर, धर्म्म और सत्यासत्य आदि का सूक्ष्म विचार करनेवाला व्यक्ति। २. तपस्वी। त्यागी। ३. सात की संख्या।

मुनियाँ–संज्ञा स्त्री० [देश०] लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनीब, मुनीम–संज्ञा पुं० [अ० मुनीब] १. मददगार। सहायक। २. साहूकारों का हिसाब-किताब लिखनेवाला।

मुनीश, मुनीश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मुनियों में श्रेष्ठ। २. बुद्धदेव। ३. विष्णु।

मुन्ना–संज्ञा पुं० [देश०] छोटों के लिये प्रेमसूचक शब्द। प्रिय। प्यारा।

मुफ़लिस–वि० [अ०] निर्धन। दरिद्र।

मुफ़स्सल–वि० [अ०] ब्योरेवार। विस्तृत। संज्ञा पुं० किसी केंद्रस्थ नगर के चारों ओर के कुछ दूर के स्थान।

मुफ़ीद–वि० [अ०] फ़ायदेमंद। लाभकारी।

मुफ़्त–वि० [अ०] जिसमें कुछ मूल्य न लगे। बिना दाम का। सेंत का।
यौ०—मुफ़्तख़ोर=वह व्यक्ति जो दूसरों के धन पर सुख-भोग करे।
मुहा०—मुफ़्त में=१. बिना मूल्य दिए या लिए। २. व्यर्थ। बेफ़ायदा।

मुफ़्ती–संज्ञा पुं० [अ०] धर्म-शास्त्री। (मुस०)
वि० [हि० मुफ़्त+ई (प्रत्य०)] मुफ़्त का।

मुबारक–वि० [अ०] १. जिसके कारण बरकत हो। २. शुभ। मंगलप्रद। नेक।

मुबारकबाद-संज्ञा पुं० [अ० मुबारक+फ़ा० बाद] कोई शुभ बात होने पर यह कहना कि "मुबारक हो"। बधाई। धन्यवाद।
मुबारकी-संज्ञा स्त्री० दे० "मुबारकबाद"।
मुमकिन-वि० [अ०] संभव।
मुमुक्षु-वि० [सं०] मुक्ति पाने का इच्छुक। जो मुक्ति की कामना करता हो।
मुमूर्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] मरने की इच्छा।
मुमूर्षु-वि० [सं०] जो मरने के समीप हो।
मुरंडा-संज्ञा पुं० [देश०] भूने हुए गरमागरम गेहूँ में गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू। गुड़-धानी। वि० सूखा हुआ। शुष्क।
मुर-संज्ञा पुं० [सं०] १ वेष्टन। बेठन। २. एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था। अव्य० फिर। दोबारा।
मुरक-संज्ञा स्त्री० [हिं० मुरकना] मुरकने की क्रिया या भाव।
मुरकना-क्रि० अ० [हिं० मुड़ना] १ लचककर किसी ओर झुकना। मुड़ना। २ फिरना। घूमना। ३. लौटना। वापस होना। ४ किसी अंग का किसी ओर इस प्रकार मुड़ जाना कि जल्दी सीधा न हो। मोच खाना। ५. हिचकना। रुकना। ६ विनष्ट होना। चौपट होना।
मुरकाना-क्रि० स० [हिं० मुरकना का स० रूप] १ फेरना। घुमाना। २ लौटाना। वापस करना। ३ किसी अंग में मोच लाना। ४. नष्ट करना। चौपट करना।
मुरखाई*†-संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्खता"।
मुरगा-संज्ञा पुं० [फ़ा० मुर्ग़] [स्त्री० मुर्गी] एक प्रसिद्ध पक्षी जो कई रंगों का होता है। नर के सिर पर कलगी होती है।
मुरगाबी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मुरगे की जाति का एक पक्षी।
मुरचंग-संज्ञा पुं० [हिं० मुँहचंग] मुँह से बजाने का एक प्रकार का बाजा। मुँहचंग।
मुरछना, मुरछाना*-क्रि० अ० [सं० मूर्च्छन] १. शिथिल होना। २. अचेत होना।
मुरछावंत*-वि० [सं० मूर्च्छा+वंत (प्रत्य०)] मूर्च्छित। बेहोश। अचेत।
मुरछित*-वि० दे० "मूर्च्छित"।
मुरज-संज्ञा पुं० [सं०] मृदंग। पखावज।
मुरझाना-क्रि० अ० [सं० मूर्च्छन] १ फूल या पत्ती आदि का कुम्हलाना। २. सुस्त या उदास होना।
मुरदर-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरदा-संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं० मृतक] वह जो मर गया हो। मरा हुआ प्राणी। मृत। वि० १ मरा हुआ। मृत। २ जिसमें कुछ भी दम न हो। ३ मुरझाया हुआ।
मुरदार-वि० [फ़ा०] १ मरा हुआ। मृत। २. अपवित्र। ३. बेदम। बेजान।
मुरदासंख-संज्ञा पुं० [फ़ा० मुरदार संग] एक प्रकार का औषध जो फूँके हुए सीसे और सिंदूर से बनता है।
मुरदासन*-संज्ञा पुं० दे० "मुरदासंख"।
मुरधर-संज्ञा पुं० [सं० मरुधरा] मारवाड़।
मुरना-क्रि० अ० दे० "मुड़ना"।
मुरपरैना‡-संज्ञा पुं० [हिं० मूड़=सिर+पारना=रखना] फेरी करके सौदा बेचने वालों का झुकचा।
मुरब्बा-संज्ञा पुं० [अ० मुरब्बः] चीनी या मिसरी आदि की चाशनी में रक्षित किया हुआ फलों या मेवों आदि का पाक।
मुरमुराना-क्रि० अ० [मुरमुर से अनु०] चूर चूर हो जाना। मुरमुर होना।
मुररिपु-संज्ञा पुं० [सं०] मुरारि।
मुररिया†-संज्ञा स्त्री० दे० "मुर्री"।
मुरलिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] मुरली। वंशी।
मुरलिया†-संज्ञा स्त्री० दे० "मुरली"।
मुरली-संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँसुरी। वंशी।
मुरलीधर-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरलीमनोहर-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरवा-संज्ञा पुं० [देश०] एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारों ओर का घेरा। †संज्ञा पुं० दे० "मोर"।
मुरवी*-संज्ञा स्त्री० [सं० मौर्वी] धनुष की डोरी। चिल्ला।
मुरशिद-संज्ञा पुं० [अ०] १. गुरु। पथदर्शक। २. पूज्य।
मुरसुत-संज्ञा पुं० [सं०] वत्सासुर।
मुरहा-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण। †वि० [सं० मूल (नक्षत्र)+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० मुरही] १. (बालक) जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो। २. अनाथ। यतीम। ३. नटखट। उपद्रवी।

मुरहारी–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण ।
मुरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध गंध-द्रव्य । एकांगी । मुरामांसी । २. कथा-सरित्सागर के अनुसार उस नाइन का नाम जिसके गर्भ से महानंद का पुत्र चंद्रगुप्त उत्पन्न हुआ था ।
मुराड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] जलती लकड़ी ।
मुराद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अभिलाषा । मुहा०—मुराद पाना = मनोरथ पूर्ण होना । मुराद माँगना = मनोरथ पूरा होने की प्रार्थना करना ।
२. अभिप्राय । आशय । मतलब ।
मुराना०†–क्रि० स० [अनु० मुरमुर] मुँह में कोई चीज़ डालकर उसे मुलायम करना । चुभलाना ।
०†–क्रि० स० दे० "मोड़ना" ।
मुरार–संज्ञा पुं० [सं० मृणाल] कमल की जड़ । कमलनाल ।
०–संज्ञा पुं० दे० "मुरारि" ।
मुरारि–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण । २. डगण के तीसरे भेद (।ऽ।) की संज्ञा ।
मुरारी–संज्ञा पुं० दे० "मुरारि" ।
मुरारे–संज्ञा पुं० [सं०] हे मुरारि ! (संबो०)
मुरासा†–संज्ञा पुं० [हिं० मुरना] कर्णफूल ।
मुरीद–संज्ञा पुं० [अ०] १. शिष्य । चेला । २. अनुगामी । अनुयायी ।
मुरु०–संज्ञा पुं० दे० "मुर" ।
मुरुआ†–संज्ञा पुं० [देश०] एड़ी के ऊपर का घेरा । पैर का गट्टा ।
मुरुख०†–वि० दे० "मूर्ख" ।
मुरछना०–क्रि० अ० दे० "मुरझाना" । संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्च्छना" ।
मुरझना०†–क्रि० अ० दे० "मुरझाना" ।
मुरेठा–संज्ञा पुं० [हिं० मूँड़ = सिर + एठा (प्रत्य०)] पगड़ी । साफ़ा ।
मुरौवत–संज्ञा स्त्री० [अ० मुरव्वत] १. शील । संकोच । लिहाज़ । २. भलमनसी ।
मुर्ग़–संज्ञा पुं० दे० "मुरग़ा" ।
मुर्ग़केश–संज्ञा पुं० [फा० मुर्ग़ + केश (चोटी)] मरसे की जाति का एक पौधा । जटाधारी ।
मुर्दनी–संज्ञा स्त्री० [फा० मुर्दन = मरना] १. मुख पर प्रकट होनेवाले मृत्यु के चिह्न । २. शव के साथ उसकी अंत्येष्टि क्रिया के लिये जाना ।
मुर्दावली–संज्ञा स्त्री० दे० "मुर्दनी" । वि० मृतक के संबंध का । मुरदे का ।
मुर्रा–संज्ञा पुं० [हिं० मरोड़ या मुड़ना] १. मरोड़फली । २. पेट में ऐंठन होकर बार बार दस्त होना । मरोड़ ।
मुर्री–संज्ञा स्त्री० [हिं० मरोड़ना] १. दो डोरों के सिरों को आपस में जोड़ने की एक क्रिया जिसमें दोनों सिरों को मिलाकर मरोड़ या बट देते हैं । २. कपड़े आदि में लपेटकर डाली हुई ऐंठन या बल । ३. कपड़े आदि को मरोड़कर बटी हुई बत्ती ।
मुर्रीदार–वि० [हिं० मुर्री + फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें मुर्री पड़ी हो । ऐंठनदार ।
मुर्शिद–संज्ञा पुं०[अ०] १. मार्गदर्शक । गुरु । २. श्रेष्ठ । बड़ा । ३. चतुर ।
मुलकना०†–क्रि० अ० [सं० पुलकित ?] पुलकित होना । नेत्रों में हँसी प्रकट करना ।
मुलकित–वि०[सं० पुलकित?] मुस्कराता हुआ ।
मुलकी–वि० [अ० मुल्क] १. शासन या व्यवस्था संबंधी । २. देशी । विलायती का उलटा ।
मुलज़िम–वि० [अ०] जिस पर कोई अभियोग हो । अभियुक्त ।
मुलतवी–वि० [अ० मुल्तवी] जिसका समय टाल दिया गया हो । स्थगित ।
मुलतानी–वि० [हिं० मुलतान (नगर)] मुलतान का । मुलतान-संबंधी । संज्ञा स्त्री० १. एक रागिनी । २. एक प्रकार की बहुत कोमल और चिकनी मिट्टी ।
मुलना†–संज्ञा पुं० [अ० मौलाना] मौलवी ।
मुलमची–संज्ञा पुं० [हिं० मुलम्मा + ची (प्रत्य०) गिलट करनेवाला । मुलम्मासाज़ ।
मुलम्मा–संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी चीज पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली तह । गिलट । कलई । यौ०—मुलम्मासाज = मुलम्मा चढ़ानेवाला । मुलमची ।
२. ऊपरी तड़क-भड़क ।
मुलहा†–वि० [सं० मूल = नक्षत्र] १. जिसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ हो । २. उपद्रवी । शरारती ।

मुलाँ†—संज्ञा पुं० [अ० मुल्ला] मौलवी ।

मुलाकात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आपस में मिलना । भेंट । मिलन । २. मेल-मिलाप ।

मुलाकाती—संज्ञा पुं० [अ० मुलाकात] वह जिससे जान पहचान हो । परिचित ।

मुलाज़िम—संज्ञा पुं० [अ०] नौकर । सेवक ।

मुलायम—वि० [अ०] १. 'सख्त' का उलटा । जो कड़ा न हो । २. हलका । मंद । धीमा । ३. नाजुक । सुकुमार । ४. जिसमें किसी प्रकार की कठोरता या खिंचाव न हो ।

यौ०—मुलायम चारा = १ वह जो सहज में दूसरों की बातों में आ जाय । २. वह जो सहज में प्राप्त किया जा सके ।

मुलायमियत—संज्ञा स्त्री० [अ० मुलायमत] १. मुलायम होने का भाव । नर्मी । २. नजाकत ।

मुलायमी—संज्ञा स्त्री० दे० "मुलायमियत" ।

मुलाहज़ा—संज्ञा पुं० [अ०] १. निरीक्षण । देख भाल । २. संकोच । ३. रियायत ।

मुलेठी—संज्ञा स्त्री० [सं० मूलयष्टी] घुँघची नाम की लता की जड़ जो औषध के काम में आती है । जेठी मधु । मुलहठी ।

मुल्क—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मुल्की] १. देश । २. प्रांत । प्रदेश । ३. संसार ।

मुल्ला—संज्ञा पुं० दे० "मौलवी" ।

मुवक्किल—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो अपने किसी काम के लिये कोई वकील नियुक्त करे ।

मुवना †—क्रि० अ० [सं० मृत] मरना ।

मुवाना†—क्रि० स० [हिं० मुवना का स० रूप] हत्या करना । मार डालना ।

मुश्क—संज्ञा पुं० [फा०] १. कस्तूरी । मृग-मद । † २ गंध । बू ।

संज्ञा स्त्री० [देश०] कंधे और कोहनी के बीच का भाग । भुजा । बाँह ।

मुहा०—मुश्कें कसना या बाँधना = (अप-राधी आदि की) दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके बाँध देना ।

मुश्कदाना—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की लता का बीज जिससे कस्तूरी की सी सुगंध निकलती है ।

मुश्कनाफा—संज्ञा पुं० [फा०] कस्तूरी का नाफा जिसके अंदर कस्तूरी रहती है ।

मुश्कबिलाई—संज्ञा स्त्री० [फा० मुश्क + हिं० बिलाई = बिल्ली] एक प्रकार का जंगली बिलाव जिसके अंडकोशों का पसीना बहुत सुगंधित होता है । गंध-बिलाव ।

मुश्किल—वि० [अ०] कठिन । दुष्कर ।

संज्ञा स्त्री० १. कठिनता । दिक्कत । २. मुसीबत । विपत्ति ।

मुश्की—वि० [फा०] १. कस्तूरी के रंग का । काला । श्याम । २. जिसमें मुश्क या कस्तूरी पड़ी हो ।

संज्ञा पुं० काले रंग का घोड़ा ।

मुश्त—संज्ञा पुं० [फा०] मुट्ठी ।

यौ०—एकमुश्त = एक साथ । एक ही बार । (रुपयों के लेन देन में)

मुषुर†—संज्ञा स्त्री० [सं० मुखर] गूँजने का शब्द । गुंजार ।

मुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुट्ठी । २. मुक्का । घूँसा । ३. चोरी । ४. दुर्भिक्ष । अकाल । ५. मुष्टिक । मल्ल ।

मुष्टिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा कंस के पहलवानों में से एक जिसे बलदेवजी ने मारा था । २. मुक्का । घूँसा । ३ चार अंगुल की नाप । ४. मुट्ठी ।

मुष्टिका—संज्ञा स्त्री०[सं०] १. मुक्का । घूँसा । २. मुट्ठी ।

मुष्टियुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह लड़ाई जिसमें मुक्कों से प्रहार हो । घूँसेबाज़ी ।

मुष्टियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. हठयोग की कुछ क्रियाएँ जो शरीर की रक्षा करने, बल बढ़ाने और रोग दूर करनेवाली मानी जाती हैं । २. छोटा और सहज उपाय ।

मुसकनि†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट" ।

मुसकनिया†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकान" ।

मुसकराना—क्रि० अ० [सं० स्मय + क] बहुत ही मंद रूप से हँसना । मृदु हास ।

मुसकराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुसकराना + आहट (प्रत्य०)] मुसकराने की क्रिया या भाव । मंद हास ।

मुसकान—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट" ।

मुसक्यान—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट" ।

मुसजर—संज्ञा पुं० [अ० मुशज्जर] एक प्रकार का छपा कपड़ा ।

मुसना-क्रि० अ० [सं० मूषण] मूसा जाना। चुराया जाना। (धन आदि)
मुसन्ना-संज्ञा पुं० [अ०] १. असल काग़ज़ की दूसरी नकल। २. रसीद आदि का वह दूसरा भाग जो रसीद देनेवाले के पास रह जाता है।
मुसब्बर-संज्ञा पुं० [अ०] जमाया हुआ घीकुआँर का रस जिसका व्यवहार औषधि के रूप में होता है।
मुसमुद, मुसमुध†-वि० [देश०] ध्वस्त। नष्ट। बरबाद।
संज्ञा पुं० नाश। ध्वंस। बरबादी।
मुसम्मात-वि० स्त्री० [अ० मुसम्मा का स्त्री० रूप] मुसम्मा शब्द का स्त्रीलिंग रूप। नाम्नी। नामधारिणी।
संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।
मुसरा†-संज्ञा पुं० [हिं० मूसल] पेड़ की जड़ जिसमें एक ही मोटा पिंड हो, इधर उधर शाखाएँ न हों।
मुसलधार-क्रि० वि० दे० "मूसलधार"।
मुसलमान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० मुसलमानी] वह जो मुहम्मद साहब के चलाए हुए संप्रदाय में हो। मुहम्मदी।
मुसलमानी-वि० [फ़ा०] मुसलमान संबंधी। मुसलमान का।
संज्ञा स्त्री० मुसलमानों की एक रसम जिसमें छोटे बालक की इंद्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत।
मुसल्लम-वि० [फ़ा०] जिसके खंड न किए गए हों। साबुत। पूरा। अखंड।
संज्ञा पुं० दे० "मुसलमान"।
मुसल्ला-संज्ञा पुं० [अ०] नमाज़ पढ़ने की दरी या चटाई।
संज्ञा पुं० दे० "मुसलमान"।
मुसव्विर-संज्ञा पुं० [अ०] चित्रकार।
मुसहर-संज्ञा पुं० [हिं० मूस = चूहा + हर (प्रत्य०)] एक जंगली जाति जिसका व्यवसाय जंगली जड़ी-बूटी आदि बेचना है।
मुसहिल-वि० [अ०] दस्तावर। रेचक।
मुसाफ़िर-संज्ञा पुं० [अ०] यात्री। पथिक।
मुसाफ़िरख़ाना-संज्ञा पुं० [अ० मुसाफ़िर + फ़ा० ख़ाना] १. यात्रियों के, विशेषतः रेल के यात्रियों के, ठहरने का स्थान। २. धर्मशाला। सराय।
मुसाफ़िरी-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुसाफ़िर होने की दशा। २. यात्रा। प्रवास।
मुसाहब-संज्ञा पुं० [अ०] धनवान् या राजा आदि का पार्श्ववर्त्ती। सहवासी।
मुसाहबी-संज्ञा स्त्री० [अ० मुसाहब + ई (प्रत्य०)] मुसाहब का पद या काम।
मुसीबत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तकलीफ़। कष्ट। २. विपत्ति। संकट।
मुस्क्यान†-संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।
मुस्टंडा-वि० [सं० पुष्ट] १. मोटा-ताज़ा। हृष्ट-पुष्ट। २. बदमाश। गुंडा।
मुस्तक़िल-वि० [अ०] १. अटल। स्थिर। २ पक्का। मज़बूत। दृढ़।
मुस्तैद-वि० [अ० मुस्तअद] १. तत्पर। सन्नद्ध। २. चालाक। तेज़।
मुस्तैदी-संज्ञा स्त्री० [अ० मुस्तअद + ई (प्रत्य०)] १. सन्नद्धता। तत्परता। २. फुरती।
मुस्तौफ़ी-संज्ञा पुं० [अ०] हिसाब की जाँच-पड़ताल करनेवाला। आय-व्यय परीक्षक।
मुहकम-वि० [अ०] दृढ़। पक्का।
मुहकमा-संज्ञा पुं० [अ०] सरिश्ता। विभाग। सीग़ा।
मुहताज-वि० [अ०] १. दरिद्र। ग़रीब। कंगाल। २. चाहनेवाला। आकांक्षी।
मुहब्बत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रीति। प्रेम। प्यार। चाह। २. दोस्ती। मित्रता। ३. इश्क़। लगन। लौ।
मुहम्मद-संज्ञा पुं० [अ०] अरब के एक प्रसिद्ध धर्म्माचार्य्य जिन्होंने इसलाम या मुसलमानी धर्म्म का प्रवर्त्तन किया था।
मुहम्मदी-संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान।
मुहर-संज्ञा स्त्री० दे० "मोहर"।
मुहरा-संज्ञा पुं० [हिं० मुँह + रा (प्रत्य०)] १. सामने का भाग। आगा। सामना।
मुहा०—मुहरा लेना = मुक़ाबिला करना।
२. निशाना। ३. मुँह की आकृति। ४. शतरंज की कोई गोटी। ५ घोड़े का एक साज जो उसके मुँह पर रहता है।
मुहर्रम-संज्ञा पुं० [अ०] अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे।
मुहर्रमी-वि० [अ० मुहर्रम + ई (प्रत्य०)] १. मुहर्रम संबंधी। मुहर्रम का। २. शोक-व्यंजक। ३. मनहूस।

मुहर्रिर—संज्ञा पुं० [अ०] लेखक । मुंशी ।
मुहर्रिरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] मुहर्रिर का काम । लिखने का काम ।
मुहसिल—वि० [अ० मुहासिल] तहसील वसूल करनेवाला । उगाहनेवाला ।
संज्ञा पुं० प्यादा । फेरीदार ।
मुहाफ़िज़—वि० [अ०] हिफ़ाज़त करनेवाला । संरक्षक । रखवाला ।
मुहाल—वि० [अ०] १. असंभव । नामुमकिन । २. कठिन । दुष्कर । दुःसाध्य ।
संज्ञा पुं० १. दे० "महाल" । २. दे० "मदहा" ।
मुहाला—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह + आला (प्रत्य०)] पीतल की वह चूड़ी जो हाथी के दाँत में शोभा के लिये चढ़ाई जाती है ।
मुहावरा—संज्ञा पुं० [अ०] १. लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग जो किसी एक ही भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थ से विलक्षण हो । रोज़मर्रा । बोलचाल । २. अभ्यास । आदत ।
मुहासिब—संज्ञा पुं० [अ०] १. गणितज्ञ । २. जाँचने या हिसाब लेनेवाला ।
मुहासिबा—संज्ञा पुं० [अ०] १. हिसाब । लेखा । २. पूछ-ताछ ।
मुहासिरा—संज्ञा पुं० [अ०] किले या शत्रु-सेना को चारों ओर से घेरना । घेरा ।
मुहासिल—संज्ञा पुं० [अ०] १. आय । आमदनी । २. लाभ । मुनाफ़ा । नफ़ा ।
मुहिं—सर्व० दे० "मोहिं" ।
मुहिम—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कठिन या बड़ा काम । २. लड़ाई । युद्ध । ३. फ़ौज की चढ़ाई । आक्रमण ।
मुहुः—अव्य० [सं०] बार बार ।
मुहूर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन-रात का तीसवाँ भाग । २ निर्दिष्ट क्षण या काल । ३. फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ कोई समय जिस पर कोई शुभ काम किया जाय ।
मूँग—संज्ञा स्त्री० पुं० [सं० मुद्ग] एक अन्न जिसकी दाल बनती है ।
मूँगफली—संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँग + फली] १. एक प्रकार का क्षुप जिसकी खेती फलों के ... की जाती है । २. इस क्षुप का फल जो बादाम की तरह होता है । चिनिया बादाम ।
मूँगा—संज्ञा पुं० [हिं० मूँग] समुद्र में रहनेवाले एक प्रकार के कृमियों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में की जाती है । प्रवाल । विद्रुम ।
मूँगिया—वि० [हिं० मूँग + इया (प्रत्य०)] मूँग के रंग का । हरा ।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का हरा रंग ।
मूँछ—संज्ञा स्त्री० [सं० श्मश्रु] ऊपरी ओंठ के ऊपर के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं ।
मुहा०—मूँछ उखाड़ना = घमंड चूर करना । मूँछों पर ताव देना = अभिमान से मूँछ मरोड़ना । मूँछें नीची होना = १. घमंड दूर जाना । २. अप्रतिष्ठा होना । बेइज्जती होना ।
मूँछी—संज्ञा स्त्री० [देश०] बेसन की बनी हुई एक प्रकार की कढ़ी ।
मूँज—संज्ञा स्त्री० [सं० मुंज] एक प्रकार का तृण जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं और बहुत पतली लंबी पत्तियाँ चारों ओर रहती हैं ।
मूँड़ †—संज्ञा पुं० [सं० मुंड] सिर ।
मुहा०—मूँड़ मारना = बहुत हैरान होना । कोशिश करना । मूँड़ मुँड़ाना = संन्यासी होना ।
मूँड़न—संज्ञा पुं० [सं० मुंडन] चूड़ाकरण संस्कार । मुंडन ।
मूँड़ना—क्रि० स० [सं० मुंडन] १. सिर के बाल बनाना । हजामत करना । २ धोखा देकर माल उड़ाना । ठगना । ३. चेला बनाना ।
मूँड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० मुंड] १. सिर । २. किसी वस्तु का मूँड़ के आकार का भाग ।
मूँदना—क्रि० स० [सं० मुद्रण] १. ऊपर से कोई वस्तु फैलाकर छिपाना । आच्छादित करना । ढाँकना । २. द्वार, मुँह आदि पर कोई वस्तु रखकर उसे बंद करना ।
मूक—वि० [सं०] १. गूँगा । अवाक् । २. विवश । लाचार ।
मूकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गूँगापन ।
मूकनाꝰ—क्रि० स० [सं० मुक्त] १. दूर करना । छोड़ना । त्यागना । २. बंधन से छुड़ाना ।
मूका †—संज्ञा पुं० [सं० मूषा = गवाक्ष] छोटा गोल झरोखा । मोखा ।

संज्ञा पुं० दे० "मुक्का"।
मूखना*–क्रि० स० दे० "मूसना"।
मूचना*–क्रि० स० दे० "मोचना"।
मूजी–संज्ञा पुं० [अ०] १. कष्ट पहुँचानेवाला। २. दुष्ट। खल।
मूठ–संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टि] १. मुष्टि। मुट्ठी। २. किसी औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ में रहता है। मुठिया। दस्ता। कब्ज़ा। ३. उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके। ४. एक प्रकार का जूआ। ५. जादू। टोना।
मुहा०–मूठ चलाना या मारना = जादू करना। मूठ लगना = जादू या असर होना।
मूठना*–क्रि० अ० [सं० मुष्ट] नष्ट होना।
मूठी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।
मूड–संज्ञा पुं० दे० "मूँड़"।
मूढ़–वि० [सं०] १. मूर्ख। जड़बुद्धि। बेवकूफ। २. ठक। स्तब्ध। ३. जिसे आगा-पीछा न सूझता हो। ठगमारा।
मूढ़गर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] गर्भ का बिगड़ना जिससे गर्भ स्राव आदि होता है।
मूढ़ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्खता।
मूत–संज्ञा पुं० दे० "मूत्र"।
मूतना–क्रि० अ० [हिं० मूत+ना (प्रत्य०)] पेशाब करना।
मूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर के विषैले पदार्थ को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलनेवाला जल। पेशाब। मूत।
मूत्रकृच्छ्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें पेशाब बहुत कष्ट से या रुक रुककर होता है।
मूत्राघात–संज्ञा पुं० [सं०] पेशाब बंद होने का रोग। मूत्र का रुक जाना।
मूत्राशय–संज्ञा पुं० [सं०] नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है। मसाना। फुकना।
मूना†–क्रि० अ० दे० "मुवना"।
मूर*†–संज्ञा पुं० [सं० मूल] १. मूल। जड़। २. जड़ी। ३. मूलधन। ४. मूल नक्षत्र।
मूरख*†–वि० दे० "मूर्ख"।
मूरखताई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्खता"।
मूरचा–संज्ञा पुं० दे० "मोरचा"।
मूरछना*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "मूर्छना"। २. दे० "मूर्च्छा"।
क्रि० अ० मूर्च्छित या बेहोश होना।
मूरछा†*–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्च्छा"।
मूरत*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्ति"।
मूरतिवंत*–वि० [सं० मूर्ति+वत (प्रत्य०)] मूर्तिमान्। देहधारी। सशरीर।
मूरध–संज्ञा पुं० दे० "मूर्द्धा"।
मूरि, मूरी*–संज्ञा स्त्री० [सं० मूल] १. मूल। जड़। २. जड़ी। बूटी।
मूरुख*†–वि० दे० "मूर्ख"।
मूर्ख–वि० [सं०] बेवकूफ। अज्ञ। मूढ़।
मूर्खता–संज्ञा स्त्री० [सं०] मूढ़ता। नासमझी। बेवकूफी।
मूर्खत्व–संज्ञा पुं० दे० "मूर्खता"।
मूर्खिनी*–संज्ञा स्त्री० [सं० मूर्ख] मूढ़ा स्त्री।
मूर्च्छन–संज्ञा पुं० [सं०] १. संज्ञा लोप होना या करना। बेहोश करना। २. मूर्च्छित करने का मंत्र या प्रयोग। ३. पारे का तीसरा संस्कार। ४. कामदेव का एक बाण।
मूर्च्छना–संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह-अवरोह।
मूर्च्छा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अवस्था जिसमें प्राणी निश्चेष्ट पड़ा रहता है। संज्ञा का लोप। अचेत होना। बेहोशी।
मूर्छित, मूर्च्छित–वि० [सं०] १. जिसे मूर्च्छा आई हो। बेसुध। बेहोश। अचेत। २. मारा हुआ (पारा आदि। धातुओं के लिये)
मूर्त्त–वि० [सं०] १ जिसका कुछ रूप या आकार हो। साकार। २. ठोस।
मूर्त्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर। देह। २. आकृति। शकल। सूरत। ३ किसी के रूप या आकृति के सदृश गढ़ी हुई वस्तु। प्रतिमा। विग्रह। ४. चित्र। तसवीर।
मूर्त्तिकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. मूर्त्ति बनानेवाला। २. तसवीर बनानेवाला।
मूर्त्तिपूजक–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो मूर्त्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो।
मूर्त्तिपूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसकी पूजा करना।
मूर्त्तिमान्–वि० [सं०] [स्त्री० मूर्त्तिमती] १. जो रूप धारण किए हो। सशरीर। २. साक्षात्। प्रत्यक्ष।
मूर्द्ध–संज्ञा पुं० [सं० मूर्द्धन्] सिर।

मूर्द्धकर्णी–संज्ञा स्त्री० [सं०] छाया आदि के लिये सिर पर रखी हुई वस्तु ।
मूर्द्धकपारी*–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्द्धकर्णी" ।
मूर्द्धन्य–वि० [सं०] १ मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला । २ मस्तक में स्थित ।
मूर्द्धन्य वर्ण–संज्ञा पु० [सं०] वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है । यथा—ऋ, ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष ।
मूर्द्धा—संज्ञा पु० [सं० मूर्द्धन्] सिर ।
मूर्द्धाभिषेक–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मूर्द्धाभिषिक्त] सिर पर अभिषेक या जल सिंचन ।
मूर्वा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मरोड़फली ।
मूल–संज्ञा पु० [सं०] १ पेड़ों का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है । जड़ । २ खाने के योग्य मोटी जड़ । कंद । ३. आदि । आरंभ । शुरू । ४ आदि कारण । उत्पत्ति का हेतु । ५ असल जमा या धन । पूँजी । ६. आरंभ का भाग । ७. नींव । बुनियाद । ८ ग्रंथकार का निज का वाक्य या लेख जिस पर टीका आदि की जाय । ९. उन्नीसवाँ नक्षत्र ।
वि० [सं०] मुख्य । प्रधान ।
मूलक–संज्ञा पु० [सं०] १ मूली । २ मूल स्वरूप ।
वि० उत्पन्न करनेवाला । जनक ।
मूलद्रव्य–संज्ञा पु० [सं०] आदिम द्रव्य या भूत जिससे और द्रव्य बने हों ।
मूल धन–संज्ञा पु० [सं०] वह असल धन जो किसी व्यापार में लगाया जाय । पूँजी ।
मूलपुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] किसी वंश का आदि पुरुष जिससे वंश चला हो ।
मूलस्थली–संज्ञा स्त्री० [सं०] थाला । आलवाल ।
मूलस्थान–संज्ञा पु० [सं०] १ बाप दादा की जगह । पुरखों का स्थान । २ प्रधान स्थान । ३. मुलतान नगर ।
मूलाधार–संज्ञा पु० [सं०] मानव शरीर के भीतर के छ: चक्रों में से एक चक्र । (योग)
मूलिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] जड़ी ।
मूली–संज्ञा स्त्री० [सं० मूलक] १ एक पौधा जिसकी जड़ मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती और खाई जाती है ।
मुहा०-(किसी को) मूली गाजर समझना=अति तुच्छ समझना ।
२. जड़ी-बूटी । मूलिका ।
मूल्य–संज्ञा पु० [सं०] किसी वस्तु के बदले में मिलनेवाला धन । दाम । कीमत ।
मूल्यवान्–वि० [सं०] जिसका दाम अधिक हो । बड़े दाम का । कीमती ।
मूष, मूषक–संज्ञा पु० [सं०] चूहा ।
मूँस–संज्ञा पु० [सं० मूष] चूहा ।
मूँसदानी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मूस + दानी (सं० आधान)] चूहा फँसाने का पिंजड़ा ।
मूसना–क्रि० स० [सं० मूषण] चुराकर ले जाना ।
मूसर,मूसल–संज्ञा पु० [सं० मुशल] १ धान कूटने का लंबा मोटा डंडा । २ एक अस्त्र जिसे बलराम धारण करते थे ।
मूसलधार–क्रि० वि० [हिं० मूसल + धार] मूसले के समान मोटी धार से । (वृष्टि)
मूसला–संज्ञा पु० [हिं० मूसल] मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर-उधर सूत या शाखाएँ न फूटी हों । झकरा का उलटा ।
मूसली–संज्ञा स्त्री० [सं० मुशली] एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है ।
मूसा–संज्ञा पु० [सं० मूषक] चूहा ।
संज्ञा पु० [इबरानी] यहूदियों के एक पैगंबर जिनको ख़ुदा का नूर दिखाई पड़ा था ।
मूसाकानी–संज्ञा स्त्री० [सं० मूषाकर्णी] एक लता । इसके सब अंग ओषधि के काम में आते हैं ।
मृग–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मृगी] १. पशुमात्र, विशेषत: वन्य पशु । जंगली जानवर । २ हिरन । ३. हाथियों की एक जाति । ४ मार्गशीर्ष । अगहन का महीना । ५ मृगशिरा नक्षत्र । ६ मकर राशि । ७ कस्तूरी का नाफा । ८ पुरुष के चार भेदों में से एक । (कामशास्त्र)
मृगचर्म–संज्ञा पु० [सं०] हिरन का चमड़ा जो पवित्र माना जाता है ।
मृगछाला–संज्ञा स्त्री० दे० "मृगचर्म" ।
मृगजल–संज्ञा पु० [सं०] मृगतृष्णा की लहरें ।
मृगतृषा, मृगतृष्णा–संज्ञा स्त्री० [सं०] जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी कभी ऊसर मैदानों में कड़ी धूप पड़ने के समय होती है । मृगमरीचिका ।
मृगदाव–संज्ञा पु० [सं० मृग + दाव = भूमि

का वन] काशी के पास 'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन नाम।
मृगनाथ-संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।
मृगनाभि-संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी।
मृगनैनी-संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचनी"।
मृगभद्र-संज्ञा पुं० [सं०] हाथियों की एक जाति।
मृगमद-संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी।
मृगमरीचिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] मृगतृष्णा।
मृगमित्र-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
मृगमेद-संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी।
मृगया-संज्ञा पुं० [सं०] शिकार। आखेट।
मृगरोचन-संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी।
मृगलोचना-वि० स्त्री० [सं०] हरिण के समान सुंदर नेत्रोंवाली (स्त्री)।
मृगलोचनी-संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचना"।
मृगवारि-संज्ञा पुं० [सं०] मृगतृष्णा का जल।
मृगशिरा-संज्ञा पुं० [सं० मृगशिरस्] सत्ताइस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र।
मृगशीर्ष-संज्ञा पुं० दे० "मृगशिरा"।
मृगांक-संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. वैद्यक में एक प्रकार का रस।
मृगाक्षी-वि० स्त्री० [सं०] हरिण के से नेत्रोंवाली।
मृगाशन-संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।
मृगिनी:‡-संज्ञा स्त्री० [सं० मृग] हरिणी।
मृगी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हरिणी। हिरनी। २. एक वर्ण वृत्त। प्रिय वृत्त। ३ कश्यप ऋषि की दस कन्याओं में एक, जिससे मृगों की उत्पत्ति हुई है। ४. अपस्मार नामक रोग। ५. कस्तूरी।
मृगेंद्र-संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।
मृड़ा, मृडानी-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
मृणाल-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमल का डंठल। कमल-नाल। २. कमल की जड़। मुरार। भसींड़।
मृणालिका-संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।
मृणालिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। २. वह स्थान जहाँ कमल हो।
मृणाली-संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।
मृत-वि० [सं०] मरा हुआ। मुर्दा।
मृतक-संज्ञा पुं० [सं०] मरा हुआ प्राणी।
मृतक कर्म-संज्ञा पुं० [सं०] मृतक पुरुष की शुद्ध गति के लिये किया जानेवाला कृत्य। प्रेतकर्म। अंत्येष्टि।
मृतकधूम-संज्ञा पुं० [सं०] राख। भस्म।
मृतजीवनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे मुर्दे को जिलाया जाता है।
मृतसंजीवनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बूटी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुर्दा भी जी उठता है।
मृताशौच-संज्ञा पुं० [सं०] वह अशौच जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है।
मृत्तिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] मिट्टी। खाक।
मृत्युंजय-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने मृत्यु को जीता हो। २. शिव का एक रूप।
मृत्यु-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर से जीवात्मा का वियोग। प्राण छूटना। मरण। मौत। २ यमराज।
मृत्युलोक-संज्ञा पुं० [सं०] १. यमलोक। ‡२. मर्त्यलोक।
मृथा:‡-क्रि० वि० १. दे० "वृथा"। २. दे० "मृषा"।
मृदंग-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ लंबा होता है।
मृदव-संज्ञा पुं० [सं०] गुण के साथ दोष के वैषम्य का प्रदर्शन। (नाट्यशास्त्र)
मृदु-वि० [सं०] [स्त्री० मृद्वी] १. कोमल। मुलायम। नरम। २. जो सुनने में कर्कश या अप्रिय न हो। ३. सुकुमार। नाजुक। ४. धीमा। मंद।
मृदुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोमलता। मुलायमियत। २. धीमापन। मंदता।
मृदुल-वि० [सं०] १. कोमल। नरम। २. कोमल हृदय। दयामय। कृपालु। ३. नाजुक। सुकुमार।
मृनाल·-संज्ञा पुं० दे० "मृणाल"।
मृन्मय-वि० [सं०] मिट्टी का बना हुआ।
मृषा-अव्य० [सं०] झूठमूठ। व्यर्थ। वि० असत्य। झूठ।
मृषात्व-संज्ञा पुं० [सं०] मिथ्यात्व।
मृषाभाषी-वि० [सं० मृषाभाषिन्] झूठ बोलनेवाला। झूठा।
मृष्ट-वि० [सं०] शोधित।
मृष्टि-संज्ञा स्त्री० [सं०] शोधन।
में-अव्य० [सं० मध्य] अधिकरण कारक का चिह्न जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके भीतर या चारों ओर होना सूचित करता है। आधार या अवस्थान-सूचक शब्द।

मेंगनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मींगी ?] छोटी गोलियों के आकार की विष्ठा। लेंडी।

मेकल–संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत का एक भाग जिसमें अमरकंटक है।

मेख–संज्ञा पुं० दे० "मेष"।

संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गाड़ने के लिये एक ओर नुकीली गढ़ी हुई कील। खूँटी। २. कील। काँटा। ३. लकड़ी का पच्चड़।

मेखल–संज्ञा स्त्री० दे० "मेखला"।

मेखला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के मध्य के भाग में उसे चारों ओर से घेरे हुए पड़ी हो। २. करधनी। तागड़ी। किंकिणी। ३. मंडल। मेंडरा। ४. डंडे आदि के छोर पर लगा हुआ लोहे आदि का घेरदार बंद। सामी। साम। ५. पर्वत का मध्य भाग। ६ कपड़े का वह टुकड़ा जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं। कफनी। अलफी।

मेखली–संज्ञा स्त्री० [सं० मेखला] १. एक पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं। २. करधनी। कटिबंध।

मेघ–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश में घनीभूत जलवाष्प जिससे वर्षा होती है। बादल। २. संगीत में छः रागों में से एक।

मेघडंबर–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघगर्जन। २. बड़ा शामियाना। दल बादल।

मेघनाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ का गर्जन। २. वरुण। ३. रावण का पुत्र इंद्रजित्। ४ मयूर। मोर।

मेघपुष्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र का घोड़ा। २. श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।

मेघमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] बादलों की घटा। कादंबिनी।

मेघराज–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

मेघवर्त्त–संज्ञा पुं० [सं०] प्रलय काल के मेघों में से एक का नाम।

मेघवाई ‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० मेघ + वाई (प्रत्य०)] बादलों की घटा।

मेघविस्फूर्जिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

मेघा†–संज्ञा पुं० [सं० मेघ] मेढक।

मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित–वि० [सं०] बादलों से ढका या छाया हुआ।

...‡–संज्ञा स्त्री० [सं० मेघावलि] बादलों की घटा।

मेचकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कालापन।

मेचकताई‡–संज्ञा स्त्री० दे० "मेचकता"।

मेज–संज्ञा स्त्री० [फा०] लंबी चौड़ी ऊँची चौकी जो खाना खाने या लिखने पढ़ने के लिये रखी जाती है। टेबुल।

मेजवान–संज्ञा पुं० [फा०] आतिथ्य करनेवाला। मेहमानदार।

मेजा†–संज्ञा पुं० [सं० मण्डूक] मेढक। मंडूक।

मेट–संज्ञा पुं० [अं०] मजदूरों का अफसर या सरदार। टंडैल। जमादार।

मेटक‡–संज्ञा पुं० [हिं० मेटना] नाशक। मिटानेवाला।

मेटनहारा‡†–संज्ञा पुं० [हिं० मेटना + हार (प्रत्य०)] मिटानेवाला। दूर करनेवाला।

मेटना†–क्रि० स० दे० "मिटाना"।

मेटिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।

मेड़–संज्ञा पुं० [सं० मित्ति ?] १. मिट्टी डालकर बनाया हुआ खेत या जमीन का घेरा। छोटा बाँध। २. दो खेतों के बीच में हद या सीमा के रूप में बना हुआ रास्ता।

मेडरा†–संज्ञा पुं० [सं० मडल, हिं० मँडरा] [स्त्री० अल्पा० मेडरी] किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा या ढाँचा।

मेड़िया– संज्ञा स्त्री० [सं० मडप] मढी।

मेढक–संज्ञा पुं० [सं० मण्डूक] एक जलस्थलचारी जंतु जो एक बालिश्त तक लंबा होता है। मंडूक। दर्दुर।

मेढा–संज्ञा पुं० [सं० मेढ्र = भैंस की तरह का] [स्त्री० मेढ़] सींगवाला एक चौपाया जो घने रोयों से ढका होता है।

मेढासिंगी–संज्ञा स्त्री० [सं० मेढ्शृंगी] एक झाड़ीदार लता। इसकी जड़ ओषधि है।

मेढी†–संज्ञा स्त्री० [सं० वेणी] तीन लड़ियों में गूँथी हुई चोटी।

मेथी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ साग की तरह खाई जाती हैं।

मेथौरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मेथी + बरी] मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई बरी।

मेद–संज्ञा पुं० [सं० मेदस्, मेद] १ शरीर के अंदर की वसा नामक धातु। चरबी। २. मोटाई या चरबी बढ़ना। ३ कस्तूरी।

मेदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध ओषधि।

संज्ञा पुं० [अ०] पाकाशय। पेट।

मेदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। धरती।

मेघ–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ ।
मेधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बात को स्मरण रखने की मानसिक शक्ति । धारणावाली बुद्धि । २. षोडश मातृकाओं में से एक । ३. छप्पय छंद का एक भेद ।
मेधावी–वि० [सं० मेधाविन्] [स्त्री० मेधाविनी] १. जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो । २ बुद्धिमान् । चतुर । ३. पंडित । विद्वान् ।
मेनका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वर्ग की एक अप्सरा । २. उमा या पार्वती की माता ।
मेना–क्रि० स० [हिं० मोयन] पकवान में मोयन डालना ।
मेम–संज्ञा स्त्री० [अं० मैडम का संक्षिप्त रूप] १. यूरोप या अमेरिका आदि की स्त्री । २. ताश का एक पत्ता । बीबी । रानी ।
मेमना–संज्ञा पुं० [अनु० में में] १. भेड़ का बच्चा । २. घोड़े की एक जाति ।
मेमार–संज्ञा पुं० [अ०] इमारत बनानेवाला । थवई । राजगीर ।
मेय–वि० [सं०] जो नापा जा सके ।
मेर:†–संज्ञा पुं० दे० "मेल" ।
मेरवना†–क्रि० स० [सं० मेलन] १. मिश्रित करना । मिलाना । २. संयोग कराना ।
मेरा–सर्व० [हिं० मैं+रा] [स्त्री० मेरी]"मैं" के संबंधकारक का रूप । मदीय । मम ।
:†संज्ञा पुं० दे० "मेला" ।
मेराउ, मेराव†–संज्ञा पुं० [हिं० मेर=मेल] मेल । मिलाप । समागम ।
संज्ञा स्त्री० अहंकार ।
मेरु–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है । सुमेरु । हेमाद्रि । २. जपमाला के बीचका सबसे बड़ा दाना । सुमेरु । ३. छंद-शास्त्र की एक गणना जिससे यह पता लगता है कि कितने कितने लघु गुरु के कितने छंद हो सकते हैं ।
मेरुदंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. रीढ़ । २. पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा ।
मेरे–सर्व० [हिं० मेरा] १. 'मेरा' का बहुवचन । २. 'मेरा' का वह रूप जो उसे संबंधवान् शब्द के आगे विभक्ति लगने के कारण प्राप्त होता है ।
मेल–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया या भाव । संयोग । समागम । मिलाप । २. एकता । सुलह । ३. मैत्री । मित्रता । दोस्ती । ४. उपयुक्तता । संगति ।
मुहा०—मेल खाना, बैठना या मिलना = १. संगति या उपयुक्त होना । साथ निभना । २. दो चीजों का जोड़ ठीक बैठना ।
५. जोड़ । टक्कर । बराबरी । समता । ६. ढंग । प्रकार । चाल । तरह । ७. मिश्रण । मिलावट ।
मेलना:†–क्रि० स० [हिं० मेल+ना (प्रत्य०)] १.मिलाना । २. डालना । रखना । ३. पहनाना ।
क्रि० अ० इकट्ठा होना । एकत्र होना ।
मेला–संज्ञा पुं० [सं० मेलक] १. भीड़-भाड़ । २. देवदर्शन, उत्सव, तमाशे आदि के लिये बहुत से लोगों का जमावड़ा ।
मेलाना†–क्रि० स० दे० "मिलाना" ।
मेली–संज्ञा पुं० [हिं० मेल] मुलाकाती । वि० जल्दी हिल मिल जानेवाला ।
मेल्हना†–क्रि० अ० [?] १. छटपटाना । बेचैन होना । २. आनाकानी करके समय बिताना ।
मेव–संज्ञा पुं० [देश०] राजपूताने की ओर बसनेवाली एक लुटेरी जाति । मेवाती ।
मेवा–संज्ञा पुं० [फा०] किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए बढ़िया फल ।
मेवाटी–संज्ञा स्त्री० [फा० मेवा+बाटी] एक पकवान जिसके अंदर मेवे भरे रहते हैं ।
मेवाड़–संज्ञा पुं० [देश०] राजपूताने का एक प्रांत जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौर थी ।
मेवात–संज्ञा पुं० [सं०] राजपूताने और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम ।
मेवाती–संज्ञा पुं० [हिं०मेवात+ई (प्रत्य०)] मेवात का रहनेवाला ।
मेवाफ़रोश–संज्ञा पुं० [फा०] मेवे बेचनेवाला ।
मेवासा:†–संज्ञा पुं०[हिं० मवासा] १. किला । गढ़ । २. रक्षा का स्थान । ३. घर ।
मेवासी–संज्ञा पुं० [हिं० मेवासा] १. घर का मालिक । २. किले में रहनेवाला । ३. सुरक्षित और प्रबल ।
मेष–संज्ञा पुं० [सं०] १. भेड़ । २. बारह राशियों में से एक ।
:**मुहा०**—मेष करना = आगा-पीछा करना ।
मेषवृषण–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र ।
मेष संक्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] मेष राशि पर सूर्य के आने का योग या काल । (वर्ष)

मेहँदी–संज्ञा स्त्री० [सं० मेंधी] एक झाड़ी। इसकी पत्तियों को पीसकर लगाने से लाल रंग आता है। इसी से स्त्रियाँ इसे हाथ-पैर में लगाती हैं।

मेह–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रस्राव। मूत्र। २. प्रमेह रोग।
संज्ञा पुं० [सं० मेघ] १. मेघ। बादल। २. वर्षा। झड़ी। मेंह।

मेहतर–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मेहतरानी] मुसलमान भंगी। हलालखोर।

मेहनत–संज्ञा स्त्री० [अ०] श्रम। प्रयास।

मेहनताना–संज्ञा पुं० [अ० + फा०] किसी काम का पारिश्रमिक या मजदूरी।

मेहनती–वि० [हिं० मेहनत] मेहनत करनेवाला। परिश्रमी।

मेहमान–संज्ञा पुं० [फा०] अतिथि। पाहुना।

मेहमानदारी–संज्ञा स्त्री० [फा०] अतिथि-सत्कार। आतिथ्य।

मेहमानी–संज्ञा स्त्री० [फा० मेहमान + ई (प्रत्य०)] १. आतिथ्य। अतिथि-सत्कार। पहुनाई।
मुहा०—मेहमानी करना = खूब गत बनाना। मारना पीटना। दंड देना। (व्यंग्य)
† २ मेहमान बनकर रहने का भाव।

मेहर–संज्ञा स्त्री० [फा०] कृपा। दया।
संज्ञा स्त्री० दे० "मेहरी"।

मेहरबान–वि० [सं०] कृपालु। दयालु।

मेहरबानी–संज्ञा स्त्री० [फा०] दया। कृपा।

मेहरा–संज्ञा पुं० [हिं० मेहरी] स्त्रियों की सी चेष्टावाला। जनखा।

मेहराब–संज्ञा स्त्री० [अ०] द्वार के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग।

मेहरी–संज्ञा स्त्री० [सं० मेहना] १ स्त्री। औरत। २. पत्नी। जोरू।

मैं–सर्व० [सं० अहं] सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्ता का रूप। स्वयं। खुद।
अव्य० दे० "में"।

मैं–अव्य० दे० "मय"।

मैका–संज्ञा पुं० दे० "मायका"।

मैगल–संज्ञा पुं० [सं० मदकल] मस्त हाथी।
वि० मस्त। (हाथी के लिये)

मैजल †–संज्ञा स्त्री० [अ० मंजिल] १ पड़ाव। मंजिल। २ सफर। यात्रा।

मैत्रायणि–संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

मैत्रावरुणि–संज्ञा पुं० [सं०] मित्र और वरुण के पुत्र, अगस्त्य।

मैत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] मित्रता। दोस्ती।

मैत्रेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बुद्ध जो अभी होनेवाले हैं। २. भागवत के अनुसार एक ऋषि। ३. सूर्य्य।

मैत्रेयी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. याज्ञवल्क्य की स्त्री। २. अहल्या।

मैथिल–वि० [सं०] १. मिथिला देश का। २. मिथिला-संबंधी।
संज्ञा पुं० मिथिला देश का निवासी।

मैथिली–संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी। सीता।

मैथुन–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री के साथ पुरुष का समागम। संभोग। रति क्रीड़ा।

मैदा–संज्ञा पुं० [फा०] बहुत महीन आटा।

मैदान–संज्ञा पुं० [फा०] १ लंबा-चौड़ा समथल स्थान जिसमें पहाड़ी या घाटी आदि न हो। सपाट भूमि। २. वह लंबी चौड़ी भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय।
मुहा०–मैदान में आना = मुकाबले पर आना। मैदान साफ होना = मार्ग में कोई बाधा आदि न होना। मैदान मारना = खेल, बाजी आदि में जीतना।
३. युद्धक्षेत्र। रणक्षेत्र।
मुहा०–मैदान करना = लड़ना। युद्ध करना। मैदान मारना = विजय प्राप्त करना।

मैन–संज्ञा पुं० [सं० मदन] १. कामदेव। मदन। २. मोम।

मैनफल–संज्ञा पुं० [सं० मदनफल] १. मझोले आकार का एक कँटीला वृक्ष। २. इस वृक्ष का फल जो अखरोट की तरह होता है और औषध के काम में आता है।

मैनसिल–संज्ञा स्त्री० [सं० मनःशिला] एक प्रकार की पीली धातु।

मैना–संज्ञा स्त्री० [सं० मदना] काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखाने से मनुष्य की सी बोली बोलने लगता है। सारिका।
संज्ञा स्त्री० दे० "मेनका"।
संज्ञा पुं० [देश०] एक जाति जो राजपुताने में पाई जाती और "मीना" कहलाती है।

मैनाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र माना जाता है। २ हिमालय की एक ऊँची चोटी।

मैनावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

मैमंत †–वि० [सं० मदमत्त] १. मदोन्मत्त। मतवाला। २ अहंकारी। अभिमानी।

मैया–संज्ञा स्त्री० [सं० मातृका] माता । माँ ।

मैर†–संज्ञा स्त्री० [सं० मुद्गर प्रा० मिम्मर = चक्रिक] साँप के विष की लहर ।

मैल–संज्ञा स्त्री० [सं० मलिन] १ गर्द, धूल आदि जिसके पड़ने या जमने से किसी वस्तु की चमक-दमक नष्ट हो जाती है । मल । गंदगी ।
मुहा०–हाथ पैर की मैल = तुच्छ वस्तु ।
२. दोष । विकार ।

मैलखोरा–वि० [हिं० मैल + फा० खोर] (रंग आदि) जिस पर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे ।

मैला–वि० [सं० मलिन, प्रा० मइल] १. जिस पर मैल जमी हो । मलिन । अस्वच्छ । २. विकार-युक्त । दूषित । ३ गंदा । दुर्गंधयुक्त ।
संज्ञा पुं० गलीज । गू । कूड़ा-करकट ।

मैला-कुचैला–वि० [हिं० मैला + सं० कुचैल = गंदा वस्त्र] १. जो बहुत मैले कपड़े पहने हुए हो । २. बहुत मैला । गंदा ।

मैलापन–संज्ञा पुं० [हिं० मैला + पन (प्रत्य०)] मलिनता । गंदापन ।

मों*†–अव्य० दे० "में" ।
सर्व० दे० "मो" ।

मोंगरा–संज्ञा पुं० १. दे० "मोगरा" । २. दे० "मुँगरा" ।

मोंछ–संज्ञा स्त्री० दे० "मूँछ" ।

मोंढ़ा–संज्ञा पुं० [सं० मूर्द्धा] १. बाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन । २. कंधा ।

मो*–सर्व० [सं० मम] १. मेरा । २. अवधी और ब्रजभाषा में "मैं" का वह रूप जो उसे कर्त्ता कारक के अतिरिक्त और किसी कारक-चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है ।

मोकना*†–क्रि० स० [सं० मुक्त] १. छोड़ना । परित्याग करना । २. क्षिप्त करना । फेंकना ।

मोकल*†–वि० [सं० मुक्त] छूटा हुआ । जो बँधा न हो । आजाद । स्वच्छंद ।

मोकला†–वि० [हिं० मोकल] १. अधिक चौड़ा । कुशादा । २. छुटा हुआ । स्वच्छंद ।

मोक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन से छूट जाना । छुटकारा । २. शास्त्रों के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूट जाना । मुक्ति । ३. मृत्यु । मौत ।

मोक्षद–संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष देनेवाला ।

मोख*†–संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष" ।

मोखा–संज्ञा पुं० [सं० मुख] बहुत छोटी खिड़की । झरोखा ।

मोगरा–संज्ञा पुं० [सं० मुद्गर] १. एक प्रकार का बढ़िया बड़ा बेला (पुष्प) । २. दे० "मोंगरा" ।

मोगल–संज्ञा पुं० दे० "मुगल" ।

मोघ–वि० [सं०] निष्फल । चूकनेवाला ।

मोच–संज्ञा स्त्री० [सं० मुच्] शरीर के किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से इधर-उधर खिसक जाना ।

मोचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन आदि से छुड़ाना । मुक्त करना । २. दूर करना । हटाना । ३. रहित करना । ले लेना ।

मोचना–क्रि० स० [सं० मोचन] १. छोड़ना । २. गिराना । बहाना । ३. छुड़ाना ।
संज्ञा पुं० [सं० मोचन] हज्जामों का वह औज़ार जिससे वे बाल उखाड़ते हैं ।

मोचरस–संज्ञा पुं० [सं०] सेमल का गोंद ।

मोची–संज्ञा पुं० [सं० मोचन] वह जो जूते आदि बनाने का व्यवसाय करता हो ।
वि० [सं० मोचिन्] [स्त्री० मोचिनी] १. छुड़ानेवाला । २. दूर करनेवाला ।

मोच्छ*†–संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष" ।

मोछ–संज्ञा स्त्री० दे० "मूँछ" ।
*† संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष" ।

मोजा–संज्ञा पुं० [फा०] १. पैरों में पहनने का एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा । पायताबा । जुर्राब । २. पैर में पिंडली के नीचे का भाग ।

मोट–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोटरी] गठरी । मोटरी । संज्ञा पुं० चमड़े का बड़ा थैला जिससे खेत सींचने के लिये कुएँ से पानी निकालते हैं । चरसा । पुर ।
*†वि० [हिं० मोटा] १. दे० "मोटा" । २. कम मोल का । साधारण ।

मोटनक–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त ।

मोटरी–संज्ञा स्त्री० [तेलग० मूटा = गठरी] गठरी ।

मोटा–वि० [सं० मुष्ट] [स्त्री० मोटी] १. जिसका शरीर चरबी आदि के कारण बहुत फूल गया हो । दुबला का उलटा । स्थूल शरीरवाला । २. पतला का उलटा । दबीज । दलदार । गाढ़ा । ३. जिसका घेरा या मान आदि साधारण से अधिक हो ।

मुहा०—मोटा असामी = अमीर। मोटा भाग्य = सौभाग्य। खुशकिस्मती।
४. जिसके कण खूब महीन न हो गए हों। दरदरा। ५. घटिया। खराब।
मुहा०—मोटी बात = साधारण बात। मामूली बात। मोटे हिसाब से = अंदाज़ से। अटकल से।
६. भारी या कठिन।
मुहा०—मोटा दिखाई देना = आँख की ज्योति में कमी होना। कम दिखाई देना।
७. घमंडी। अहंकारी।

मोटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोटा + ई (प्रत्य०)] १. मोटे होने का भाव। स्थूलता। पीवरता। २. शरारत। पाजीपन।
मुहा०—मोटाई चढ़ना = बदमाश या घमंडी होना।

मोटाना—क्रि० अ० [हिं० मोटा + आना (प्रत्य०)] १. मोटा होना। स्थूलकाय हो जाना। २. अभिमानी होना। ३. धनवान् होना।
क्रि० स० दूसरे को मोटा करना।

मोटापा—संज्ञा पु० दे० "मोटाई"।

मोटिया—संज्ञा पु० [हिं० मोटा + इया (प्रत्य०)] मोटा और खुरखुरा देशी कपड़ा। गाढ़ा। खद्दड़। खादी।
संज्ञा पु० [हिं० मोट = बोझ] बोझ ढोनेवाला।

मोट्टायित—संज्ञा पु० [सं०] साहित्य में एक हाव जिसमें नायिका अपने आंतरिक प्रेम को वस्तु भाषण आदि द्वारा छिपाने की चेष्टा करने पर भी छिपा नहीं सकती।

मोठ—संज्ञा स्त्री० [सं० मकुष्ठ] मूँग की तरह का एक मोटा अन्न। मोट। मोथी। बन मूँग।

मोठस—वि० [?] मौन। चुप।

मोड़—संज्ञा पु० [हिं० मुड़ना] १. रास्ते आदि में घूम जाने का स्थान। २. घुमाव या मुड़ने की क्रिया या भाव।

मोड़ना—क्रि० स० [हिं० मुड़ना का प्रे०] १. फेरना। लौटाना।
मुहा०—मुँह मोड़ना = विमुख होना।
२ किसी फैली हुई सतह का कुछ अंश समेटकर एक तह के ऊपर दूसरी तह करना। ३. धार भुथरी करना। कुंठित करना। जैसे—धार मोड़ना।

मोतियदाम—संज्ञा पु० [सं० मौक्तिकदाम] चार जगण का एक वर्णवृत्त।

मोतिया—संज्ञा पु० [हिं० मोती + इया (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का बेला। २. एक प्रकार का सलमा।
वि० १. हलका गुलाबी या पीले और गुलाबी रंग के मेल का (रंग)। २. छोटे गोल दानों का।

मोतियाबिंद—संज्ञा पु० [हिं० मोतिया + सं० बिंदु] आँख का एक रोग जिसमें उसके एक परदे में गोल झिल्ली सी पड़ जाती है।

मोती—संज्ञा पु० [सं० मौक्तिक प्रा० मोत्तिअ] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में सीपी में से निकलता है।
मुहा०—मोती गरजना = मोती चटकना या कड़क जाना। मोती रोलना = बिना परिश्रम अथवा थोड़े परिश्रम से बहुत अधिक धन कमाना या प्राप्त करना। मोतियों से मुँह भरना = बहुत अधिक धन-संपत्ति देना।
संज्ञा स्त्री० बाली जिसमें मोती पड़े रहते हैं।

मोतीचूर—संज्ञा पुं० [हिं० मोती + चूर] छोटी बुँदियों का लड्डू।

मोतीझिरा—संज्ञा पुं० [हिं० मोती + झिरा ?] छोटी शीतला का रोग। मंथ ज्वर।

मोती बेल—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोतिया + बेल] मोतिया बेला। (फूल)

मोती भात—संज्ञा पु० [हिं० मोती + भात] एक विशेष प्रकार का भात।

मोतीसिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोती = सं० श्री] मोतियों की कंठी। मोतियों की माला।

मोथा—संज्ञा पु० [सं० मुस्तक] नागरमोथा नामक घास या उसकी जड़।

मोद—संज्ञा पु० [सं०] [वि० मोदी] १. आनंद। हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। २. एक वर्णवृत्त। ३. सुगंध। महक। खुशबू।

मोदक—संज्ञा पु० [सं०] १. लड्डू मिठाई। २. औषध आदि का बना हुआ लड्डू। ३. गुड़। ४ चार नगण का एक वर्णवृत्त।

मोदकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गदा।

मोदना—क्रि० अ० [सं० मोदन] १. प्रसन्न होना। खुश होना। २ सुगंधि फैलना।
क्रि० स० प्रसन्न करना। खुश करना।

मोदी—संज्ञा पु० [सं० मोदक = लड्डू] आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया। परचूनिया।

मोदीखाना—[illegible] [हिं० मोदी + फा० [illegible]] अन्न [illegible] भंडारा।

मोधुक–संज्ञा पुं० [सं० मोदक=एक जाति] मछली पकड़नेवाला। धीवर। मछुआ।
मोधू†–वि० [सं० मुग्ध] बेवकूफ। मूर्ख।
मोन–संज्ञा पुं० दे० "मौना"।
मोनाः†–क्रि० स० [हिं० मोयन] भिगोना।
संज्ञा० पुं० [सं० मोघ] झाबा। पिटारा।
मोम–संज्ञा पुं० [फा०] वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहद की मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं।
मोमजामा–संज्ञा पुं० [फा०] वह कपड़ा जिस पर मोम का रोगन चढ़ाया गया हो। तिरपाल।
मोमबत्ती–संज्ञा स्त्री० [फा० मोम + हिं० बत्ती] मोम या ऐसे ही किसी और पदार्थ की बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।
मोमियाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] नकली शिलाजीत।
मोमी–वि० [फा०] मोम का बना हुआ।
मोयन–संज्ञा पुं० [हिं० मैन=मोम] माँडे हुए आटे में घी या चिकना देना जिसमें उससे बनी वस्तु खसखसी और मुलायम हो।
मोरंग–संज्ञा पुं० [देश०] नैपाल का पूर्वी भाग।
मोर–संज्ञा पुं० [सं० मयूर] [स्त्री० मोरनी] १. एक अत्यंत सुंदर प्रसिद्ध बड़ा पक्षी। २. नीलम की आभा।
ः†सर्व० [स्त्री० मेरी] दे० "मेरा"।
मोरचंदा–संज्ञा पुं० दे० "मोरचंद्रिका"।
मोरचंद्रिका–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोर + चंद्रिका] मोर-पंख पर की चंद्राकार बूटी।
मोरचा–संज्ञा पुं० [फा०] १. लोहे की सतह पर चढ़नेवाली वह लाल या पीले रंग की बुकनी की सी तह जो वायु और नमी के योग से रासायनिक विकार होने से उत्पन्न होती है। जंग। २. दर्पण पर जमी मैल।
संज्ञा पुं० [फा० मोरचाल] १. वह गड्ढा जो गढ़ के चारों ओर रक्षा के लिये खोदा जाता है। २. वह स्थान जहाँ से सेना, गढ़ या नगर आदि की रक्षा की जाती है।
मुहा०—मोरचाबंदी करना=गढ़ के चारों ओर यथास्थान सेना नियुक्त करना। मोरचा जीतना या मारना=शत्रु के मोरचे पर अधिकार कर लेना। मोरचा बाँधना=दे० "मोरचाबंदी करना"=मोरचा लेना=युद्ध करना।
मोरछल–संज्ञा पुं० [हिं० मोर+छड़] मोर के परों से बनाया हुआ चँवर जो देवताओं और राजाओं आदि के मस्तक के पास डुलाया जाता है।
मोरछली–संज्ञा पुं० दे० "मौलसिरी"।
संज्ञा पुं० [हिं० मोरछल + ई (प्रत्य०)] मोरछल हिलानेवाला।
मोरछाँहः–संज्ञा स्त्री० दे० "मोरछल"।
मोरजुटना–संज्ञा पुं० [हिं० मोर + जुटना] एक प्रकार का आभूषण।
मोरनः–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोड़ना] मोड़ने की क्रिया या भाव। मोड़ना।
संज्ञा स्त्री० [सं० मोरट] बिलोया हुआ दही जिसमें मिठाई और सुगंधित वस्तुएँ डाली गई हों। शिखरन।
मोरनाः–क्रि० स० दे० "मोड़ना"।
क्रि० स० [हिं० मोरन] दही को मथकर मक्खन निकालना।
मोरनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोर का स्त्री० रूप] १. मोर पक्षी की मादा। २. मोर के आकार का टिकड़ा जो नथ में पिरोया जाता है।
मोरपंख–संज्ञा पुं० [हिं० मोर + पंख] मोर का पर।
मोरपंखी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोरपंख + ई(प्रत्य०)] वह नाव जिसका एक सिरा मोर के पर की तरह बना और रँगा हुआ हो।
संज्ञा पुं० मोर के पर से मिलता-जुलता गहरा चमकीला नीला रंग।
वि० मोर के पंख के रंग का।
मोरपंखाः†–संज्ञा पुं० [हिं० मोरपंख] १. मोर का पर। २. मोरपंख की कलगी।
मोरमुकुट–संज्ञा पुं० [हिं० मोर+मुकुट] मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।
मोरवाः†–संज्ञा पुं० दे० "मोर"।
मोरशिखा–संज्ञा स्त्री० [सं० मयूर-शिखा] एक प्रकार की जड़ी।
मोराः†–वि० दे० "मेरा"।
मोरानाः†–क्रि० स० [हिं० मोड़ना का प्रे०] चारों ओर घुमाना। फिराना।
मोरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोहरी] वह नाली जिसमें गंदा और मैला पानी बहता हो। पनाली।
ः†–संज्ञा स्त्री० [हिं० मोर] मोर की मादा।
मोल–संज्ञा पुं० [सं० मूल्य] कीमत दाम। मूल्य।

यौ०—मोल चाल = १. अधिक मूल्य। २. किसी चीज़ का दाम घटा बढ़ाकर ते करना।
मोलना—संज्ञा पु० [अ० मौलाना] मोलवी।
मोलाना—क्रि० स० [हिं० मोल] मोल पूछना या ते करना।
मोवना †—क्रि० स० दे० "मोना"।
मोष—संज्ञा पु० दे० "मोक्ष"।
मोषण—संज्ञा पु० [सं०] १. लूटना। २. चोरी करना। ३. वध करना।
मोह—संज्ञा पु० [सं०] १. अज्ञान। भ्रम। भ्रांति। २. शरीर और सांसारिक पदार्थों को अपना या सत्य समझने की दुःखदायिनी बुद्धि। ३. प्रेम। मुहब्बत। प्यार। ४. साहित्य में ३३ संचारी भावों में से एक। भय, दुःख, चिंता आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता। ५. दुःख। कष्ट। ६. मूर्च्छा। बेहोशी। ग़श।
मोहक—वि० [सं०] १. मोह उत्पन्न करनेवाला। २. लुभानेवाला। मनोहर।
मोहठा—संज्ञा पु० [सं०] दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। बाला।
मोहड़ा—संज्ञा पु० [हिं० मुँह+ड़ा (प्रत्य०)] १. किसी पात्र का मुँह या खुला भाग। २ किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।
मोहताज—वि० दे० "मुहताज"।
मोहन—संज्ञा पुं० [सं०] १. जिसे देखकर जी लुभा जाय। २. श्रीकृष्ण। ३. एक वर्णवृत्त। ४. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी को बेहोश या मूर्च्छित करते हैं। ५. एक अस्त्र जिससे शत्रु मूर्च्छित किया जाता था। ६. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
वि० [सं०] [स्त्री० मोहनी] मोह उत्पन्न करनेवाला।
मोहनभोग—संज्ञा पु० [हिं० मोहन+ भोग] १. एक प्रकार का हलुआ। २. एक प्रकार का आम।
मोहनमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने की गुरियों या दानों की बनी हुई माला।
मोहना—क्रि० अ० [सं० मोहन] १. मोहित होना। रीझना। २. मूर्च्छित होना।
क्रि० स० [सं० मोहन] १. अपने ऊपर अनुरक्त करना। मोहित करना। लुभा लेना। २. भ्रम में डालना। धोखा देना।
संज्ञा पुं० दे० "मोहन" २।
मोहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वर्णवृत्त। २. भगवान् का वह स्त्री-रूप जो उन्होंने समुद्र-मंथन के उपरांत अमृत बाँटते समय धारण किया था। ३. वशीकरण का मंत्र।
मुहा०—मोहनी डालना या लाना = माया के वश करना। जादू करना। मोहनी लगना = मोहित होना। लुभाना।
४. माया।
वि० स्त्री० [सं०] मोहित करनेवाली। अत्यंत सुंदरी।
मोहर—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अक्षर, चिह्न आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा। २ उपर्युक्त वस्तु की छाप जो कागज़ या कपड़े आदि पर ली गई हो। ३. अशरफ़ी।
मोहरा—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+रा (प्रत्य०)] [स्त्री० मोहरी] १. किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। २. किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग। ३. सेना की अगली पंक्ति। ४. फ़ौज की चढ़ाई का रख।
मुहा०—मोहरा लेना = १. सेना का मुकाबला करना। २. भिड़ जाना। प्रतिद्वंद्विता करना।
५. कोई छेद या द्वार जिससे कोई वस्तु बाहर निकले। ६. चोली आदि की तनी।
संज्ञा पु० [फा० मोहरः] १. शतरंज की कोई गोटी। २. मिट्टी का साँचा जिसमें चीज़ें ढालते हैं। ३. रेशमी वस्त्र घोटने का घोटना। ४. सिंगिया विष। ५. जहर-मोहरा।
मोहरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है।
मोहरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोहरा] १. बरतन आदि का छोटा मुँह। २. पाजामे का वह भाग जिसमें टाँगें रहती हैं। ३. दे० "मोरी"।
मोहर्रिर—संज्ञा पु० [अ०] लेखक। मुंशी।
मोहलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. फुरसत। अवकाश। छुट्टी। २. अवधि।
मोहार—संज्ञा पु० [हिं० मुँह+आर (प्रत्य०)] १. द्वार। दरवाजा। २. मुँहड़ा।
मोहिं—सर्व० [सं० मह्य] मुझको। मुझे। (ब्रज और अवधी)
मोहित—वि० [सं०] १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मुग्ध। २. मोहा हुआ। आसक्त।
मोहिनी—वि० स्त्री० [सं०] मोहनेवाली।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विष्णु के एक अवतार का नाम। २. माया। जादू। टोना।

३. एक अर्द्धसम वृत्ति। ४. पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद।
मोही-वि० [सं० मोहिन्] मोहित करनेवाला। वि० [हिं० मोह+ई (प्रत्य०)] १. मोह करनेवाला। प्रेम करनेवाला। २. लोभी। लालची। ३. अज्ञानी।
मोहोपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जो केशवदास के अनुसार उपमा का एक भेद है, पर और आचार्य जिसे 'भ्रांति' अलंकार कहते हैं।
मौंगी*-संज्ञा स्त्री० [सं० मौन] मौन। चुप।
मौंड़ा*†-संज्ञा पुं० [सं० माणवक] [स्त्री० मौंडी] लड़का। बालक।
मौका-संज्ञा पुं० [अ०] १. घटनास्थल। वारदात की जगह। २. देश। स्थान। जगह। ३. अवसर। समय।
मौकूफ-वि० [अ०] [संज्ञा मौकूफी] १. रोका हुआ। बंद किया हुआ। २. नौकरी से अलग किया गया। बरखास्त। ३. रद्द किया गया। ४. अवलंबित। निर्भर।
मौक्तिकदाम-संज्ञा पुं० [सं०] बारह अक्षरों का एक वर्णिक छंद।
मौक्तिकमाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह अक्षरों की एक वर्णिक वृत्ति।
मौख-संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मसाला।
मौखरी-संज्ञा पुं० [सं०] भारत का एक प्राचीन राजवंश।
मौखिक-वि० [सं०] १. मुख का। २. जबानी।
मौज-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लहर। तरंग। २. मन की उमंग। उद्वेग। जोश।
मुहा०—किसी की मौज पाना=मरजी जानना। इच्छा से अवगत होना।
३. धुन। ४. सुख। आनंद। मजा। ५. प्रभूति। विभव। विभूति।
मौजा-संज्ञा पुं० [अ०] गाँव। ग्राम।
मौजी-वि० [हिं० मौज+ई (प्रत्य०)] १. जो जी में आवे, वही करनेवाला। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनंदी।
मौजूद-वि० [अ०] १. उपस्थित। हाजिर। विद्यमान। २ प्रस्तुत। तैयार।
मौजूदगी-संज्ञा स्त्री० [फा०] उपस्थिति।
मौजूदा-वि० [अ०] वर्त्तमान काल का। प्रस्तुत।
मौड़ा*†-संज्ञा पुं० दे० "मौंड़ा"।

मौत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मरण। मृत्यु।
मुहा०—मौत का सिर पर खेलना=१. मरने को होना। २. आपत्ति समीप होना।
२. मरने का समय। काल। ३. अत्यंत कष्ट। आपत्ति।
मौताद-संज्ञा स्त्री० [अ०] मात्रा।
मौन-संज्ञा पुं० [सं०] १. चुप रहना। न बोलना। चुप्पी।
मुहा०—मौन ग्रहण या धारण करना=चुप रहना। न बोलना। मौन खोलना=चुप रहने के उपरांत बोलना। मौन तजना=चुप्पी छोड़ना। बोलने लगना। मौन बाँधना=चुप हो जाना। मौन लेना या साधना=चुप होना। न बोलना। मौन सँभारना*=मौन साधना। चुप होना।
२. मुनियों का व्रत। मुनिव्रत।
वि० [सं० मौनी] जो न बोले। चुप।
*†-संज्ञा पुं० [सं० मौण] १. बरतन। पात्र। २. डब्बा।
मौनव्रत-संज्ञा पुं० [सं०] मौन धारण करने का व्रत। चुप रहने का व्रत।
मौनी-वि० [सं० मौनिन्] १. चुप रहनेवाला। मौन धारण करनेवाला। २. मुनि।
मौर-संज्ञा पुं० [सं० मुकुट] [स्त्री० अल्पा० मौरी] १. विवाह के समय का एक शिरोभूषण जो ताड़पत्र या खुखड़ी आदि का बनाया जाता है। २. शिरोमणि। प्रधान।
संज्ञा पुं० [सं० मुकुल] मंजरी। बौर।
संज्ञा पुं० [सं० मौलि=सिर] गरदन।
मौरना-क्रि० स० [हिं० मौर+ना (प्रत्य०)] वृक्षों पर मंजरी लगना। बौर लगना।
मौरसिरी*-संज्ञा स्त्री० दे० "मौलसिरी"।
मौरूसी-वि० [अ०] बाप दादा के समय से चला आया हुआ। पैतृक।
मौर्य्य-संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों के एक वंश का नाम। सम्राट् चंद्रगुप्त और अशोक इसी वंश में हुए थे।
मौलवी-संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमान धर्म्म का आचार्य्य जो अरबी, फारसी आदि का पंडित होता है।
मौलसिरी-संज्ञा स्त्री० [सं० मौलि+श्री] एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। बकुल।
मौलि-संज्ञा पुं० [सं०] १. चोटी। सिरा। चूड़ा। २. मस्तक। सिर। ३. किरीट।

४. जूड़ा। जटाजूट। ५ प्रधान व्यक्ति। सरदार।

मौसर†-वि० दे० "मयस्सर"।

मौसा-संज्ञा पुं० [हिं० मौसी का पुं०] [स्त्री० मौसी] माता की बहिन का पति।

मौसिम-संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मौसिमी] १ उपयुक्त समय। २ ऋतु।

मौसी-संज्ञा स्त्री० [सं० मातृष्वसा] [वि० मौसेरा] माता की बहिन। मासी।

मौसेरा-वि० [हिं० मौसी+एरा (प्रत्य०)] मौसी के द्वारा संबद्ध। मौसी के संबंध का।

म्यांव-संज्ञा स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली। मुहा०-म्यांव म्यांव करना=भयभीत होकर धीमी आवाज़ से बोलना।

म्यान-संज्ञा पुं० [फ़ा० मियान] १ तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना। २ अन्नमय कोश। शरीर।

म्याना†-क्रि० स० [हिं० म्यान] म्यान में रखना। †‡ संज्ञा पुं० दे० "मियाना"।

म्यौ-संज्ञा स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली।

म्योंढ़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० निर्गुंडी] एक सदा बहार झाड़ जिसमें पीले छोटे फूलों की मंजरियाँ लगती हैं।

म्लान-वि० [सं०] [भाव० संज्ञा म्लानता] १ मलिन। कुम्हलाया हुआ। २. दुर्बल। ३ मैला। मलिन।

म्लेच्छ-संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्यों की वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म्म न हो। वि० १ नीच। २ पाप-रत। पापी।

म्हां†-सर्व० दे० "मुझ"।

म्हारा†-सर्व० दे० "हमारा"।

य

य-हिंदी वर्णमाला का २६वाँ अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

यंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशिष्ट प्रकार से बने हुए कोष्ठक आदि। जंतर। २. वह उपकरण, जो किसी विशेष कार्य के लिये प्रस्तुत किया जाय। औज़ार। ३. किसी खास काम के लिये बनाई हुई कल या औज़ार। ४. बंदूक। ५. बाजा। वाद्य। ६. ताला।

यंत्रण-संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षा करना। २. बाँधना। ३. नियम में रखना। निर्यत्रण।

यंत्रणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्लेश। तकलीफ़। २. दर्द। वेदना। पीड़ा।

यंत्र मंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] जादू टोना।

यंत्रविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] कलों के चलाने और बनाने की विद्या।

यंत्रशाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेधशाला। २ वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के यंत्र हों।

यंत्रालय-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कलें हों। २. छापाखाना।

यंत्रित-वि० [सं०] १. यंत्र आदि की सहायता से रोका या बंद किया हुआ। २. ताले में बंद।

यंत्री-संज्ञा पुं० [सं० यंत्रिन्] १. यंत्र-मंत्र करनेवाला। तांत्रिक। २ बाजा बजानेवाला।

य-संज्ञा पुं० [सं०] १ यश। २. योग। ३ सवारी। ४. संयम। ५ छंद शास्त्र में यगण का संक्षिप्त रूप।

यकअंगी-वि० दे० "एकांगी"।

यकता-वि० [फ़ा०] [संज्ञा यकताई] जो अपनी विद्या या विषय में एक ही हो। अद्वितीय।

यक वयक, यकबारगी-क्रि० वि० [फ़ा०] एकाएक। अचानक। एकाएक। सहसा।

यकसाँ-वि० [फ़ा०] एक समान। बराबर।

यकीन-संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास। एतबार।

यकृत-संज्ञा पुं० [सं०] १. पेट में दाहिनी ओर की एक थैली जिसकी क्रिया से भोजन पचता है। जिगर। कालखंड। २ वह रोग जिसमें यह अंग दूषित होकर बढ़ जाता है। बर्म जिगर।

यक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार के देवता जो कुबेर की निधियों के रक्षक माने जाते हैं। २. कुबेर।

यक्षकर्दम-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अंग लेप।

यक्षपति–संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।
यक्षपुर–संज्ञा पुं० [सं०] अलकापुरी।
यक्षिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. यक्ष की पत्नी। २ कुबेर की पत्नी।
यक्षी–संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"। संज्ञा पुं० [सं० यक्ष + ई (प्रत्य०)] वह जो यक्ष की साधना करता हो।
यक्षेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।
यक्ष्मा–संज्ञा पुं० [सं० यक्ष्मन्] क्षयी रोग। तपेदिक्।
यख़नी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] उबले हुए मांस का रसा। शोरबा।
यगण–संज्ञा पुं० [सं०] छंद शास्त्र में एक गण। यह एक लघु और दो गुरु मात्राओं का होता है (।ऽऽ)। संक्षिप्त रूप 'य'।
यच्छ्‌(ः)–संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।
यजन–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ करना।
यजमान–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो यज्ञ करता हो। यष्टा। २. वह जो ब्राह्मणों को दान देता हो।
यजमानी–संज्ञा स्त्री० [सं० यजमान + ई (प्रत्य०)] १ यजमान का भाव या धर्म्म। २. यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति।
यजु–संज्ञा पुं० दे० "यजुर्वेद"।
यजुर्वेद–संज्ञा पुं० [सं०] चार प्रसिद्ध वेदों में से एक वेद जिसमें विशेषत यज्ञ-कर्मों का विस्तृत विवरण है।
यजुर्वेदी–संज्ञा पुं० [सं० यजुर्वेदिन्] यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करनेवाला।
यज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य जिसमें प्रायः हवन और पूजन होता था। मख। याग।
यज्ञकुंड–संज्ञा पुं० [सं०] हवन करने की वेदी या कुंड।
यज्ञपति–संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २. वह जो यज्ञ करता हो। यजमान।
यज्ञपत्नी–संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा।
यज्ञपशु–संज्ञा पुं० [सं०] वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय।
यज्ञपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में काम आनेवाले काठ के बने हुए बरतन।
यज्ञपुरुष–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
यज्ञभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो। यज्ञक्षेत्र।
यज्ञमंडप–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ करने के लिये बनाया हुआ मंडप।
यज्ञशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञमंडप।
यज्ञसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत।
यज्ञेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
यज्ञोपवीत–संज्ञा पुं० [सं०] १. जनेऊ। यज्ञसूत्र। २ हिंदुओं में द्विजों का एक संस्कार। व्रतबंध। उपनयन। जनेऊ।
यति–संज्ञा पुं० [सं०] १. संन्यासी। त्यागी। योगी। २ ब्रह्मचारी। ३. छप्पय के ६६वें भेद का नाम। संज्ञा स्त्री० [सं० यती] छंदों के चरणों में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय, लय ठीक रखने के लिये, थोड़ा विश्राम हो। विरति। विराम।
यतिधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] संन्यास।
यतिभंग–संज्ञा पुं० [सं०] काव्य का वह दोष जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर कुछ आगे या पीछे पड़ती है।
यती–संज्ञा स्त्री० पुं० दे० "यति"।
यतीम–संज्ञा पुं० [अ०] जिसके माता-पिता न हों। अनाथ।
यत्किंचित्–क्रि० वि० [सं०] थोड़ा। कुछ।
यत्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. न्याय में रूप आदि २४ गुणों के अंतर्गत एक गुण। २. उद्योग। कोशिश। ३. उपाय। तदबीर। ४. रक्षा का आयोजन। हिफ़ाजत।
यत्नवान्–वि० [सं० यत्नवत्] यत्न करनेवाला।
यत्र–क्रि० वि० [सं०] जिस जगह। जहाँ।
यत्रतत्र–क्रि० वि० [सं०] १. जहाँ-तहाँ। इधर-उधर। २ जगह जगह।
यथा–अव्य० [सं०] जिस प्रकार। जैसे।
यथाक्रम–क्रि० वि० [सं०] तरतीबवार। क्रमशः। क्रमानुसार।
यथातथ्य–अव्य० [सं०] ज्यों का त्यों। हू ब-हू। जैसा हो, वैसा ही।
यथापूर्व–अव्य० [सं०] १. जैसा पहले था, वैसा ही। २. ज्यों का त्यों।
यथामति–अव्य० [सं०] बुद्धि के अनुसार। समझ के मुताबिक़।
यथायोग्य–अव्य० [सं०] जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त। मुनासिब।
यथारथ–अव्य० दे० "यथार्थ"।

यथार्थ-अव्य० [सं०] १. ठीक। वाजिब। उचित। २. जैसा होना चाहिए, वैसा।
यथार्थता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सचाई। सत्यता।
यथालाभ-वि० [सं०] जो कुछ प्राप्त हो, उसी पर निर्भर।
यथावत्-अव्य० [सं०] १. ज्यों का त्यों। जैसा था, वैसा ही। २ जैसा चाहिए, वैसा। ३. अच्छी तरह।
यथाशक्ति-अव्य० [सं०] सामर्थ्य के अनुसार। जितना हो सके। भरसक।
यथासंभव-अव्य० [सं०] जहाँ तक हो सके।
यथासाध्य-अव्य० दे० "यथाशक्ति"।
यथेच्छ-अव्य० [सं०] इच्छा के अनुसार। मनमाना।
यथेच्छाचार-संज्ञा पुं० [सं०] जो जी में आवे, वही करना। स्वेच्छाचार।
यथेष्ट-वि० [सं०] जितना इष्ट हो। जितना चाहिए, उतना। काफी। पूरा।
यथोक्त-अव्य० [सं०] जैसा कहा गया हो।
यथोचित-वि० [सं०] मुनासिब। ठीक।
यदपि-अव्य० दे० "यद्यपि"।
यदा-अव्य० [सं०] १. जिस समय। जिस वक्त। जब। २ जहाँ।
यदाकदा-अव्य० [सं०] कभी कभी।
यदि-अव्य० [सं०] अगर। जो।
यदिचेत-अव्य० [सं०] यद्यपि। अगरचे।
यदु-संज्ञा पुं० [सं०] देवयानी के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का बड़ा पुत्र।
यदुनंदन-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।
यदुपति-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
यदुराई-संज्ञा पुं० दे० "यदुराज"।
यदुराज-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
यदुवंश-संज्ञा पुं० [सं०] राजा यदु का कुल। यदु का खानदान।
यदुवंशमणि-संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।
यदुवंशी-संज्ञा पुं० [सं० यदुवंशिन्] यदुकुल में उत्पन्न। यदुकुल के लोग। यादव।
यद्यपि-अव्य० [सं०] अगरचे। हरचंद।
यदृच्छया-क्रि० वि० [सं०] १. अकस्मात्। २. दैवसंयोग से। ३. मनमाने तौर पर।
यदृच्छा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वेच्छाचार। २ आकस्मिक संयोग।
यम-संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "यमज"। २. भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध देवता जो मृत्यु के देवता माने जाते हैं। ३. मन, इंद्रिय आदि को वश या रोक में रखना। निग्रह। ४ चित्त को धर्म में स्थिर रखनेवाले कर्मों का साधन। ५. दो की संख्या।
यमक-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का शब्दालंकार या अनुप्रास जिसमें एक ही शब्द कई बार आता है, पर हर बार उसके अर्थ भिन्न भिन्न होते हैं। २ एक वृत्त।
यमकातर-संज्ञा पुं० [सं० यम + हिं० कातर] १. यम का छुरा या खाँडा। २. एक प्रकार की तलवार।
यमघंट-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक दुष्ट योग जो कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशेष नक्षत्र पड़ने पर होता है। २. दीपावली का दूसरा दिन।
यमज-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ जन्म लेनेवाले दो बच्चों का जोड़ा। जौआँ। २ अश्विनीकुमार।
यमदग्नि-संज्ञा पुं० दे० "जमदग्नि"।
यम द्वितीया-संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भाई दूज।
यमनाह-संज्ञा पुं० [सं० यमनाथ] धर्मराज।
यमपुर-संज्ञा पुं० दे० "यमलोक"।
यमपुरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] यमलोक।
यम यातना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नरक की पीड़ा। २. मृत्यु के समय की पीड़ा।
यमराज-संज्ञा पुं० [सं०] यमों के राजा धर्मराज, जो मरने पर प्राणी के कर्मों के अनुसार उसे दंड या उत्तम फल देते हैं।
यमल-संज्ञा पुं० [सं०] १. युग्म। जोड़ा। २. यमज।
यमलार्जुन-संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव जो नारद के शाप से पेड़ हो गए थे। श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।
यमलोक-संज्ञा पुं० [सं०] वह लोक जहाँ मरने पर मनुष्य जाते हैं। यमपुरी।
यमालय-संज्ञा पुं० [सं०] यमपुर।
यमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] यम की बहन, जो पीछे यमुना नदी होकर बही।
यमुना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. यम की बहन यमी। ३. उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध बड़ी नदी।
ययाति-संज्ञा पुं० [सं०] राजा नहुष के पुत्र जिनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था।

यव-संज्ञा पुं० [सं०] १. जौ नामक अन्न। २. १२ सरसों या एक जौ की तौल। ३. एक नाप जो एक इंच की एक तिहाई होती है। ४. सामुद्रिक के अनुसार जौ के आकार की एक प्रकार की रेखा जो उँगली में होती है। (शुभ)

यवद्वीप-संज्ञा पुं० [सं०] जावा द्वीप।

यवन-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० यवनी] १. यूनान देश का निवासी। यूनानी। २. मुसलमान। ३. कालयवन नामक राजा।

यवनानी-वि० [सं०] यवन देश-संबंधी।

यवनाल-संज्ञा स्त्री० [सं०] जुआर।

यवनिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक का परदा।

यवमती-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

यश-संज्ञा पुं० [सं० यशस्] १. नेकनामी। कीर्त्ति। सुख्याति। २. बड़ाई। प्रशंसा।

मुहा०—यश गाना = १. प्रशंसा करना। २. एहसान मानना। यश मानना = कृतज्ञ होना।

यशब, यशम-संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का हरा पत्थर जिसकी नादली बनती है।

यशस्वी-वि० [सं० यशस्विन्] [स्त्री० यशस्विनी] जिसका खूब यश हो। कीर्त्तिमान्।

यशी-वि० [सं० यश + ई(प्रत्य०)] यशस्वी।

यशील|-वि० दे० "यशस्वी"।

यशुमति-संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

यशोदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नंद की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था। २. एक वर्णवृत्त।

यशोधरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता।

यशोमति-संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

यष्टि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लाठी। छड़ी। लकड़ी। २. टहनी। शाखा। डाल। ३. जेठी मधु। मुलेठी।

यष्टिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] छड़ी। लकड़ी।

यह-सर्व० [सं० इदं] एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग वक्ता और श्रोता को छोड़कर निकट के और सब मनुष्यों तथा पदार्थों के लिये होता है।

यहाँ-क्रि० वि० [सं० इह] इस स्थान में। इस जगह पर।

यहि-सर्व० वि० [हिं० यह] १. 'यह' का वह रूप जो पुरानी हिंदी में उसे कोई विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। २. 'ए' का विभक्ति-युक्त रूप इसको।

यही-अव्य० [हिं० यह + ही (प्रत्य०)] निश्चित रूप से यह। यह ही।

यहूद-संज्ञा पुं० [इब्रानी] वह देश जहाँ हज़रत ईसा पैदा हुए थे।

यहूदी-संज्ञा पुं० [हिं० यहूद] [स्त्री० यहूदिन] यहूद देश का निवासी।

याँ|-क्रि० वि० दे० "यहाँ"।

या-अव्य० [फा०] अथवा। वा।
सर्व० वि० 'यह' का वह रूप जो उसे ब्रज-भाषा में कारक चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।

याकं|-वि० दे० "एक"।

याकूत-संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर। लाल।

याग-संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।

याचक-संज्ञा पुं० [सं०] १. जो माँगता हो। माँगनेवाला। २. भिक्षुक। भिखमंगा।

याचना-क्रि० स० [सं० याचन] [वि० याच्य, याचक] पाने के लिये विनती करना। माँगना।
संज्ञा स्त्री० माँगने की क्रिया।

याजक-संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ करनेवाला।

याजन-संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ की क्रिया।

याज्ञवल्क्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशंपायन के शिष्य थे। वाज-सनेय। २. एक ऋषि। योगीश्वर याज्ञ-वल्क्य। ३. योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वंशधर एक स्मृतिकार।

याज्ञिक-संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ करने या करानेवाला।

यातना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तकलीफ़। पीड़ा। २. वह पीड़ा जो यमलोक में भोगनी पड़ती है।

याता-संज्ञा स्त्री० [सं० यातृ] पति के भाई की स्त्री। जेठानी या देवरानी।

यातायात-संज्ञा पुं० [सं०] गमनागमन। आना-जाना। आमद-रफ़्त।

यातुधान-संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

यात्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। सफ़र। २. प्रयाण। प्रस्थान। ३. दर्शनार्थ देव-स्थानों को जाना। तीर्थाटन।

यात्रावाल-संज्ञा पुं० [सं० यात्रा + हिं० वाल (प्रत्य०)] वह पंडा जो यात्रियों को देव-दर्शन कराता हो।

यात्री-संज्ञा पुं० [सं० यात्रा] १. यात्रा करनेवाला। मुसाफ़िर। २. तीर्थाटन के लिये जानेवाला।
याद-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. स्मरणशक्ति। स्मृति। २ स्मरण करने की क्रिया।
यादगार-संज्ञा स्त्री० [फा०] स्मृति-चिह्न।
याददाश्त-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. स्मरण-शक्ति। स्मृति। २. स्मरण रखने के लिये लिखी हुई कोई बात।
यादव-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० यादवी] १. यदु के वंशज। २. श्रीकृष्ण।
यान-संज्ञा पुं० [सं०] १ गाड़ी, रथ आदि सवारी। वाहन। २ विमान। आकाश-यान। ३. शत्रु पर चढ़ाई करना।
यानी, याने-अव्य० [अ०] अर्थात्।
यापन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० यापित, याप्य] १ चलाना। वर्तन। २. व्यतीत करना। बिताना। ३. निबटाना।
याबू-संज्ञा पुं० [फा०] छोटा घोड़ा। टट्टू।
याम-संज्ञा पुं० [सं०] १. तीन घंटे का समय। पहर। २. एक प्रकार के देवगण। ३. काल। समय।
संज्ञा स्त्री० [सं० यामि] रात।
यामल-संज्ञा पुं० [सं०] १. यमज संतान। जोड़ा। २. एक प्रकार का तंत्र ग्रंथ।
यामिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।
याम्य-वि० [सं०] १. यम-संबंधी। यम का। २. दक्षिण का।
याम्योत्तर दिगंश-संज्ञा पुं० [सं०] लंबांश। दिगंश। (भूगोल, खगोल)
याम्योत्तर रेखा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर मानी गई है।
यार-संज्ञा पुं० [फा०] १. मित्र। दोस्त। २. उपपति। जार।
याराना-संज्ञा पुं० [फा०] मित्रता। मैत्री। वि० मित्र का सा। मित्रता का।
यारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मित्रता। २. स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम या संबंध।
यावनी-वि० [सं०] यवन-संबंधी।
यासु-सर्व० दे० "जासु"।
यास्क-संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक निरुक्त के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।
याहि†-सर्व० [हिं० या+हि] इसको। इसे।
...आन-संज्ञा पुं० [सं०] वह योगी जो अभ्यास कर रहा हो, पर मुक्त न हुआ हो।
युक्त-वि० [सं०] १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। २. मिलित। सम्मिलित। ३. नियुक्त। मुकर्रर। ४ संयुक्त। साथ। ५. उचित। ठीक। वाजिब।
युक्ता-संज्ञा स्त्री० [सं०] दो नगण और एक मगण का एक वृत्त।
युक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उपाय। ढंग। तरकीब। २. कौशल। चातुरी। ३. चाल। रीति। प्रथा। ४. न्याय। नीति। ५ तर्क। ऊहा। ६. उचित विचार। ठीक तर्क। ७ योग। मिलन। ८. एक अलंकार जिसमें अपने मर्म को छिपाने के लिये दूसरे को किसी क्रिया या युक्ति द्वारा वंचित करने का वर्णन होता है। ९. केशव के अनुसार स्वभावोक्ति।
युक्तियुक्त-वि० [सं०] उपयुक्त तर्क के अनुकूल। युक्ति-संगत। ठीक। वाजिब।
युगंधर-संज्ञा पुं० [सं०] १. कूबर। हरस। २. गाड़ी का बम। ३. एक पर्वत।
युग-संज्ञा पुं० [सं०] १. जोड़ा। युग्म। २. जुआ। जुआठा। ३. पाँसे के खेल की गोल गोटियाँ। ४. पाँसे के खेल की वे दो गोटियाँ जो एक घर में साथ आ बैठती हैं। ५. बारह वर्ष का काल। ६. समय। काल। ७ पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण। ये संख्या में चार माने गए हैं-सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग।
मुहा०—युग युग = बहुत दिनों तक। युग-धर्म = समय के अनुसार चाल या व्यवहार।
युगति †-संज्ञा स्त्री० दे० "युक्ति"।
युगपत्-अव्य० [सं०] साथ साथ।
युगम-संज्ञा पुं० दे० "युग्म"।
युगल-संज्ञा पुं० [सं०] युग्म। जोड़ा।
युगांतर-संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरा युग। २. दूसरा समय। और जमाना।
मुहा०—युगांतर उपस्थित करना = किसी पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलाना।
युगाद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जिससे किसी युग का आरंभ हुआ हो।
युग्म-संज्ञा पुं० [सं०] १ जोड़ा। युग। २. द्वंद्व। ३ मिथुन राशि।
युत-वि० [सं०] १. युक्त। सहित। २. मिला हुआ। मिलित।

युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] योग। मिलाप।
युद्ध—संज्ञा पु० [सं०] लड़ाई। संग्राम। रण।
मुहा०—युद्ध मांडना=लड़ाई ठनना।
युधिष्ठिर—संज्ञा पु० [सं०] पाँच पांडवों में एक जो सब से बड़े और बहुत धर्मपरायण थे।
युयुत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युद्ध करने की इच्छा। २. शत्रुता। विरोध।
युयुत्सु—वि० [सं०] लड़ने की इच्छा रखनेवाला। जो लड़ना चाहता हो।
युयुधान—संज्ञा पु० [सं०] १. इंद्र। २. क्षत्रिय। ३. योद्धा।
युवक—संज्ञा पु० [सं०] सोलह वर्ष से तीस वर्ष तक की अवस्था का मनुष्य। जवान। युवा।
युवति, युवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवान स्त्री।
युवनाश्व—संज्ञा पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा जो प्रसेनजित् का पुत्र था।
युवराई०—संज्ञा स्त्री० [हिं० युवराज] युवराज का पद।
युवराज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० युवराज्ञी] राजा का वह सब से बड़ा लड़का जिसे आगे चलकर राज्य मिलनेवाला हो।
युवराजी—संज्ञा स्त्री० [सं० युवराज+ई (प्रत्य०)] युवराज का पद। युवराज्य।
युवा—वि० [सं० युवन्] [स्त्री० युवती] जवान। युवक।
यूँ†—अव्य० दे० "यों"।
यूत—संज्ञा पु० [सं० यूति] मिलावट। मेल।
यूथ—संज्ञा पु० [सं०] १. समूह। झुंड। गरोह। २. दल। ३. सेना। फौज।
यूथप, यूथपति—संज्ञा पु० [सं०] सेनापति।
यूथिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जूही का फूल।
यूनान—संज्ञा पु० [ग्रीक आयोनिया] यूरोप का एक प्रदेश जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, साहित्य आदि के लिये प्रसिद्ध था।
यूनानी—वि० [यूनान+ई (प्रत्य०)] यूनान देश-संबंधी। यूनान का।
संज्ञा स्त्री० १. यूनान देश की भाषा। २. यूनान देश का निवासी। ३. यूनान देश की चिकित्सा-प्रणाली। हकीमी।
यूप—संज्ञा पु० [सं०] यज्ञ में वह खंभा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है।
यूपा†—संज्ञा पु० [सं० द्यूत] जूआ। द्यूतकर्म।
यूह०†—संज्ञा पुं० [सं० यूथ] समूह। झुंड।

ये—सर्व० [हिं० यह का बहु०] यह सब।
येई०†—सर्व० [हिं० यह+ई (प्रत्य०)] यही।
येऊ†—सर्व० [हिं० ये+ऊ (प्रत्य०)] यह भी।
येतो०†—वि० दे० "एतो"।
येहू०†—अव्य० [हिं० यह+हू] यह भी।
यों—अव्य० [सं० एवमेव] इस तरह पर। इस भाँति। ऐसे।
योंही—अव्य० [हिं० यों+ही] १. इसी प्रकार से। ऐसे ही। २. बिना काम। व्यर्थ ही। ३. बिना विशेष प्रयोजन या उद्देश्य के।
योग—संज्ञा पु० [सं०] १. मिलना। संयोग। मेल। २. उपाय। तरकीब। ३. ध्यान। ४. संगति। ५. प्रेम। ६. छल। धोखा। दगाबाज़ी। ७. प्रयोग। ८. औषध। दवा। ९. धन। दौलत। १०. लाभ। फायदा। ११. कोई शुभ काल। १२. नियम। कायदा। १३. साम, दाम, दंड और भेद ये चारों उपाय। १४. संधि। १५. धन और संपत्ति प्राप्त करना तथा बढ़ाना। १६. तप और ध्यान। वैराग्य। १७. गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़। १८. एक प्रकार का छंद। १९. सुभीता। जुगाड़। तार-घात। २०. फलित ज्योतिष में कुछ विशिष्ट काल या अवसर। २१. मुक्ति या मोक्ष का उपाय। २२. दर्शनकार पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना। २३. छः दर्शनों में से एक जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन होने का विधान है।
योगक्षेम—संज्ञा पु० [सं०] १. नया पदार्थ प्राप्त करना और मिले हुए पदार्थ की रक्षा करना। २. जीवन-निर्वाह। गुज़ारा। ३. कुशल-मंगल। खैरियत। ४. राष्ट्र की सुव्यवस्था। मुल्क का अच्छा इंतज़ाम।
योगतत्त्व—संज्ञा पु० [सं०] एक उपनिषद्।
योगत्व—संज्ञा पु० [सं०] योग का भाव।
योगदर्शन—संज्ञा पुं० दे० "योग" २३.।
योगनिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] युग के अंत में होनेवाली विष्णु की निद्रा, जो दुर्गा मानी जाती है।
योगफल—संज्ञा पु० [सं०] दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने से प्राप्त संख्या।
योगबल—संज्ञा पु० [सं०] वह शक्ति जो योग की साधना से प्राप्त हो। तपोबल।
योगमाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भगवती।

२. वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जिसे कंस ने मार डाला था।

योगरूढ़ि–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतावे।

योगवाशिष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत शास्त्र का वशिष्ठ-कृत एक प्रसिद्ध ग्रंथ।

योगशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] पतंजलि ऋषि-कृत योग-साधन पर एक दर्शन जिसमें चित्तवृत्ति को रोकने के उपाय बतलाए हैं।

योगसूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] महर्षि पतंजलि के बनाए हुए योग-संबंधी सूत्रों का संग्रह।

योगांजन–संज्ञा पुं० दे० "सिद्धांजन"।

योगात्मा–संज्ञा पुं० [सं० योगात्मन्] योगी।

योगाभ्यास–संज्ञा पुं० [सं०] योग शास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान।

योगाभ्यासी–संज्ञा पुं० [सं० योगाभ्यासिन्] योगी।

योगासन–संज्ञा पुं० [सं०] योग-साधन के आसन, अर्थात् बैठने के ढंग।

योगिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रण-पिशाचिनी। २. योगाभ्यासिनी। तपस्विनी। ३. ये आठ विशिष्ट देवियाँ–शैलपुत्री, चंद्रघंटा, स्कंदमाता, कालरात्रि, चंडिका, कूष्मांडी, कात्यायनी और महागौरी। ४. देवी। योगमाया।

योगिराज, योगींद्र–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा योगी।

योगी–संज्ञा पुं० [सं० योगिन्] १. आत्मज्ञानी। २. वह जिसने योगाभ्यास करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो। ३. महादेव। शिव।

योगीश, योगीश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुत बड़ा योगी। २. याज्ञवल्क्य।

योगीश्वरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

योगेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा योगी।

योगेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २. शिव। ३. बहुत बड़ा योगी। सिद्ध।

योगेश्वरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

योग्य–वि० [सं०] १ ठीक (पात्र)। काबिल। लायक। अधिकारी। २. श्रेष्ठ। अच्छा। ३ युक्ति भिड़ानेवाला। उपायी। ४. उचित। मुनासिब। ठीक। ५. आदरणीय। माननीय।

योग्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्षमता। लायकी। २. बड़ाई। ३. बुद्धिमानी। लियाकत। ४. सामर्थ्य। ५. अनुकूलता। मुनासिबत। ६. औकात। ७. गुण। ८. इज्जत। ९. उपयुक्तता।

योजक–वि० [सं०] मिलाने या जोड़नेवाला।

योजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. परमात्मा। २. योग। ३. संयोग। मिलान। योग। ४ दूरी की एक नाप जो किसी के मत से दो कोस की, किसी के मत से चार कोस की और किसी के मत से आठ कोस की होती है।

योजनगंधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यास की माता और शांतनु की भार्या, सत्यवती।

योजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० योजनीय, योजित] १. नियुक्त करने की क्रिया। नियुक्ति। २ प्रयोग। व्यवहार। ३. जोड़। मिलान। मेल। ४. बनावट। रचना। ५. भावी कार्यों की व्यवस्था। आयोजन।

योद्धा–संज्ञा पुं० [सं० योद्धृ] वह जो युद्ध करता हो। सिपाही।

योनि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आकर। खानि। २. उत्पत्ति-स्थान। उद्गम। ३. स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। ४. प्राणियों के विभाग, जातियाँ या वर्ग जिनकी संख्या ८४ लाख कही गई है। ५. देह। शरीर।

योनिज–संज्ञा पुं० [सं०] वह जीव जिसकी उत्पत्ति योनि से हुई हो।

यौं‡–अव्य० दे० "यों"।

यौ‡–सर्व० [हिं० यह] यह।

यौगंधर–संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रों को निष्फल करने का एक प्रकार का अस्त्र।

यौगिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिला हुआ। २ प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। ३. दो शब्दों से मिलकर बना हुआ शब्द। ४. अट्ठाइस मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

यौतक, यौतुक–संज्ञा पुं० [सं०] वह धन जो विवाह के समय वर और कन्या को मिलता हो। दाइजा। जहेज। दहेज।

यौधेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. योद्धा। २ एक प्राचीन देश का नाम। ३. प्राचीन काल की एक योद्धा जाति।

यौवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. अवस्था का वह मध्य भाग जो बाल्यावस्था के उपरांत और वृद्धावस्था के पहले होता है। २. युवा होने

का भाव। जवानी। ३. दे० "जोबन"।
यौवराज्य-संज्ञा पु० [सं०] १. युवराज होने का भाव। २. युवराज का पद।
यौवराज्याभिषेक-संज्ञा पु० [सं०] वह अभिषेक तथा उत्सव जो किसी के युवराज बनाए जाने के समय हो।

र

र-हिंदी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्द्धा के साथ कुछ स्पर्श कराने से होता है।
रंक-वि० [सं०] १. धनहीन। गरीब। दरिद्र। २. कृपण। कंजूस। ३. सुस्त।
रंग-संज्ञा पु० [सं०] १. राँगा नामक धातु। २. नृत्य-गीत आदि। नाचना-गाना। ३. वह स्थान जहाँ नृत्य या अभिनय होता हो। ४. युद्धस्थल। रणक्षेत्र। ५. आकार से भिन्न किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण जिसका अनुभव केवल आँखों से ही होता है। वर्ण। जैसे—लाल, काला। ६. वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी चीज़ को रँगने के लिये होता है। ७. बदन और चेहरे की रंगत। वर्ण।
मुहा०—(चेहरे का) रंग उड़ना या उतरना=भय या लज्जा से चेहरे की रौनक का जाता रहना। कांतिहीन होना। *रंग निखरना*=चेहरा साफ़ और चमकदार होना। रंग बदलना=क्रुद्ध होना। नाराज़ होना।
८. जवानी। युवावस्था।
मुहा०—रंग चूना या टपकना=युवावस्था का पूर्ण विकास होना। यौवन उमड़ना।
९. शोभा। सौंदर्य। १०. प्रभाव। असर।
मुहा०—रंग जमना=प्रभाव या असर पड़ना।
११. *गुण या महत्त्व का प्रभाव।* धाक।
मुहा०—रंग जमाना या बाँधना=प्रभाव डालना। रंग लाना=प्रभाव या गुण दिखलाना।
१२. क्रीड़ा। कौतुक। आनंद-उत्सव।
यौ०—रंग-रलियाँ=आमोद प्रमोद। मौज।
मुहा०—रंग रलना=आमोद-प्रमोद करना। रंग में भंग पड़ना=आनंद में विघ्न पड़ना।
१३. युद्ध। लड़ाई। समर।
मुहा०—*रंग मचाना*=रण में खूब युद्ध करना।
१४. मन की उमंग या तरंग। मौज।
१५. आनंद। मज़ा।
मुहा०—रंग जमना=आनंद का पूर्णता पर आना। खूब मज़ा होना। *रंग मचाना*=धूम मचाना। *रंग रचाना*=उत्सव करना।
१६. दशा। हालत। १७. अद्भुत व्यापार। कांड। दृश्य। १८. प्रसन्नता। कृपा। दया। १९. प्रेम। अनुराग। २०. ढंग। चाल। तर्ज़।
यौ०—रंग-ढंग=१. दशा। हालत। २. चाल-ढाल। तौर-तरीका। ३. व्यवहार। बरताव। ४. लक्षण।
मुहा०—रंग काछना=ढंग अख़्तियार करना। २१. भाँति। प्रकार। तरह। २२. चौपड़ की गोटियों के दो कृत्रिम विभागों में से एक।
मुहा०—रंग मारना=बाज़ी जीतना। विजय पाना।
रंगक्षेत्र-संज्ञा पु० दे० "रंगभूमि"।
रंगत-संज्ञा स्त्री० [हिं० रंग+त (प्रत्य०)] १. रंग का भाव। २. मज़ा। आनंद। ३. हालत। दशा। अवस्था।
रंगतरा-संज्ञा पु० [हिं० रंग] एक प्रकार की बड़ी और मीठी नारंगी। संगतरा।
रँगना-क्रि० स० [हिं० रंग+ना (प्रत्य०)] १. रंग में डुबाकर किसी चीज़ को रंगीन करना। २. किसी को अपने प्रेम में फँसाना। ३. अपने अनुकूल करना।
क्रि० अ० किसी पर आसक्त होना।
रंगबिरंगा-वि० [हिं० रंगबिरंग] १. अनेक रंगों का। चित्रित। २. तरह तरह का।
रंगभवन-संज्ञा पु० दे० "रंगमहल"।
रंगभूमि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कोई जलसा हो। २. खेल या तमाशे का स्थान। ३. *नाटक खेलने का स्थान।*

नाट्यशाला। रंगस्थल। ४. अखाड़ा। ५ रणभूमि। युद्धक्षेत्र।
रंगमहल–संज्ञा पुं० [हिं० रंग+अ० महल] भोग विलास करने का स्थान।
रंग-रली–संज्ञा स्त्री० [हिं० रंग+रलना] आमोद-प्रमोद। आनंद। क्रीड़ा। चैन।
रंगरस–संज्ञा पुं० दे० "रंगरली"।
रंगरसिया–संज्ञा पुं० [हिं० रंग+रसिया] भोग-विलास करनेवाला। विलासी पुरुष।
रँगराता–वि० [हिं० रंग+राता] अनुरागपूर्ण।
रँगरूट–संज्ञा पुं० [अं० रिक्रूट] १ सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला सिपाही। २. किसी काम में पहले-पहल हाथ डालनेवाला आदमी।
रँगरेज़–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० रँगरेजिन] वह जो कपड़े रँगने का काम करता हो।
रंगरेली†–संज्ञा स्त्री० दे० "रंगरली"।
रंगवाना–क्रि० स० [हिं० रँगना का प्रेर० रूप] रँगने का काम दूसरे से कराना।
रंगशाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक खेलने का स्थान। नाट्यशाला।
रंगसाज़–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह जो चीज़ों पर रंग चढ़ाता हो। २. रंग बनानेवाला।
रँगाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० रंग+आई (प्रत्य०)] रँगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
रँगाना–क्रि० स० दे० "रँगवाना"।
रंगी–वि० [हिं० रंग+ई (प्रत्य०)] आनंदी। मौजी। विनोदशील।
रंगीन–वि० [फा०] [भाव० संज्ञा रंगीनी] १ रँगा हुआ। रंगदार। २. विलासप्रिय। आमोद-प्रिय। ३. चमत्कारपूर्ण। मज़ेदार।
रँगीला–वि० [हिं० रंग+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रँगीली] १. आनंदी। रसिया। रसिक। २ सुंदर। खूबसूरत। ३. प्रेमी।
रंच, रंचक*–वि० [सं० न्यंच] थोड़ा। अल्प।
रंज–संज्ञा पुं० [फा०] [वि० रंजीदा] १. दुःख। खेद। २. शोक।
रंजक–वि० [सं०] १. रँगनेवाला। जो रँगे। २. प्रसन्न करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० [हिं० रंच=अल्प] १. थोड़ी सी बारूद जो बत्ती लगाने के वास्ते बंदूक की प्याली पर रखी जाती है। २. वह बात जो किसी को भड़काने के लिये कही जाय।
रंजन–संज्ञा पुं० [सं०] १. रँगने की क्रिया। चंदन। ४. छप्पय छंद का पचासवाँ भेद।
रंजना*–क्रि० स० [सं० रंजन] १. प्रसन्न करना। आनंदित करना। २. भजना। स्मरण करना। ३. रँगना।
रंजित–वि० [सं०] १. रँगा हुआ। २. आनंदित। प्रसन्न। ३. अनुरक्त।
रंजिश–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ रंज होने का भाव। २. मन-मुटाव। ३. शत्रुता।
रंजीदा–वि० [फा०] [भाव० संज्ञा रंजीदगी] १ जिसे रंज हो। दुःखित। २. नाराज़।
रँडापा–संज्ञा पुं० [हिं० राँड+आपा (प्रत्य०)] विधवा की दशा। वैधव्य। बेवापन।
रंडी–संज्ञा स्त्री० [सं० रंडा] वेश्या। कसबी।
रँडुआ, रँडुवा–संज्ञा पुं० [हिं० राँड+उआ (प्रत्य०)] वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो।
रंता*†–वि० [सं० रत] अनुरक्त।
रंद–संज्ञा पुं० [सं० रंध्र] १ रोशनदान। २ किले की दीवारों का वह मोखा जिसमें से बंदूक या तोप चलाई जाती है। मार।
रँदना–क्रि० स० [हिं० रंदा+ना (प्रत्य०)] रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी करना।
रंदा–संज्ञा पुं० [सं० रदन=काटना, चीरना]. एक औजार जिससे लकड़ी की सतह छील कर चिकनी की जाती है।
रंधन–संज्ञा पुं० [सं०] रसोई बनाना।
रंध्र–संज्ञा पुं० [सं०] छेद। सूराख।
रंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस। २. एक प्रकार का बाण। ३. भारी शब्द।
रंभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. केला। २. गौरी। ३ उत्तर दिशा। ४ वेश्या। ५. पुराणानुसार एक प्रसिद्ध अप्सरा।
संज्ञा पुं० [सं० रंभ] लोहे का वह मोटा भारी डंडा जिससे दीवारें आदि को खोदते हैं।
रँभाना–क्रि० अ० [सं० रंभण] गाय का बोलना। गाय का शब्द करना।
रँहचटा–संज्ञा पुं० [हिं० रहम+चाट] मनोरथ सिद्धि की लालसा। लालच। चस्का।
र–संज्ञा पुं० [सं०] १. पावक। अग्नि। २. कामाग्नि। ३ सितार का एक बोल।
रअय्यत–संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।
रइकौ*†–क्रि० वि० [हिं० रची+कौ (प्रत्य०)] जरा भी। तनिक भी। कुछ भी।
रइनि*†–संज्ञा स्त्री० [सं० रजनी] रात
... [सं० रव] मथानी। ग्वलर।

संज्ञा स्त्री० [हिं० रवा] १. दरदरा आटा। २. सूजी। ३. चूर्ण मात्र।
वि० स्त्री० [स० रंजन] १. डूबी हुई। पगी हुई। २. अनुरक्त। ३. युक्त। सहित। संयुक्त। ४. मिली हुई।

रईस–संज्ञा पुं० [अ०] १. जिसके पास रियासत या इलाका हो। तअल्लुकेदार। २. बड़ा आदमी। अमीर। धनी।

रउताई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० रावत + आई(प्रत्य०)] मालिक होने का भाव। स्वामित्व।

रउरे†–सर्व० [हिं० राव, रावल] मध्यम पुरुष के लिये आदर सूचक शब्द। आप। जनाब।

रकछा†–संज्ञा पु० [हिं० किवँच] पत्तों की पकौड़ी। पतौड़।

रकत–संज्ञा पु० [सं० रक्त] लहू। ख़ून।
वि० लाल। सुर्ख़।

रकतांक–संज्ञा पुं० [सं० रक्ताङ्क] १. प्रवाल। मूँगा। (डिं०) २. केसर। ३. लाल चंदन।

रकबा–संज्ञा पु० [अ०] क्षेत्रफल।

रकवाहा–संज्ञा पु० [देश०] घोड़ों का एक भेद।

रकम–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लिखने की क्रिया या भाव। २. छाप। मोहर। ३. धन। संपत्ति। दौलत। ४. गहना। ज़ेवर। ५. चालाक। धूर्त्त। ६. प्रकार। तरह।

रकाब–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] घोड़ों की काठी का पावदान जिससे बैठने में सहारा लेते हैं।
मुहा०–रकाब पर या में पैर रखना = चलने के लिये बिलकुल तैयार होना।

रकाबदार–संज्ञा पु० [फ़ा०] १. हलवाई। २. ख़ानसामाँ। ३. साईस।

रकाबी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार की छिछली छोटी थाली। तश्तरी।

रक़ीब–संज्ञा पु० [अ०] प्रेमिका का दूसरा प्रेमी। सपत्न।

रक्त–संज्ञा पु० [सं०] १. लाल रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो शरीर की नसों आदि में से होकर बहा करता है। लहू। रुधिर। ख़ून। २. कुंकुम। केसर। ३. ताँबा। ४. कमल। ५. सिंदूर। ६. शिंगरफ। ईंगुर। ७. लाल चंदन। ८. लाल रंग। ९. कुसुंभ।
वि० [सं०] १. रँगा हुआ। २. लाल। सुर्ख़।

रक्तकंठ–संज्ञा पु० [सं०] १. कोयल। २. भंटा। बैंगन।

रक्तकमल–संज्ञा पु० [सं०] लाल कमल।

रक्तचंदन–संज्ञा पु० [सं०] लाल चंदन।

रक्तज–वि० [सं०] रक्त के विकार के कारण उत्पन्न होनेवाला (रोग)।

रक्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्ख़ी।

रक्तपात–संज्ञा पु० [सं०] ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें लोग ज़ख़्मी हों। ख़ून ख़राबी।

रक्तपायी–वि० [सं० रक्तपायिन्] [स्त्री० रक्तपायिनी] रक्तपान करनेवाला। ख़ून पीनेवाला।

रक्तपित्त–संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह, नाक आदि इंद्रियों से रक्त गिरता है। २. नाक से लहू बहना। नकसीर।

रक्तबीज–संज्ञा पुं० [सं०] १. अनार। बीदाना। २. एक राक्षस जो शुंभ और निशुंभ का सेनापति था। कहते हैं कि युद्ध के समय इसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरती थीं, उतने ही नए राक्षस उत्पन्न हो जाते थे।

रक्तवृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश से रक्त या लाल रंग के पानी की वृष्टि होना।

रक्तस्राव–संज्ञा पु० [सं०] किसी अंग से रक्त का बहना या निकलना।

रक्तातिसार–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का अतिसार जिसमें लहू के दस्त आते हैं।

रक्तार्श–संज्ञा पु० [सं० रक्तार्शस्] वह बवासीर जिसमें मसों में से ख़ून भी निकलता है। ख़ूनी बवासीर।

रक्तिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] घुँघची। रत्ती।

रक्ष–संज्ञा पु० [सं०] १ रक्षक। रखवाला। २. रक्षा। हिफ़ाज़त। ३. छप्पय के साठवें भेद का नाम।
संज्ञा पु० [सं० रक्षस्] राक्षस।

रक्षक–संज्ञा पु० [सं०] १. रक्षा करनेवाला। बचानेवाला। २. पहरेदार।

रक्षण–संज्ञा पु० [सं०] १. रक्षा करना। हिफ़ाज़त करना। २. पालन पोषण।

रक्षन–संज्ञा पु० दे० "रक्षण"।

रक्षना–क्रि० स० [सं० रक्षण] रक्षा करना।

रक्षस–संज्ञा पु० दे० "राक्षस"।

रक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आपत्ति, कष्ट या नाश आदि से बचाना। रक्षण। बचाव। २. वह सूत्र आदि जो बालकों को भूत-प्रेत, नज़र आदि से बचाने के लिये बाँधा जाता है।

रक्षाइद–संज्ञा स्त्री० [हिं० रक्ष + आइद(प्रत्य०)]

राक्षसपन।

रक्षागृह-संज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ प्रसूता प्रसव करे। सूतिकागृह। जच्चाखाना।

रक्षाबंधन-संज्ञा पु० [सं०] हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होता है। सलोनो।

रक्षामंगल-संज्ञा पुं० [सं०] वह धार्मिक क्रिया जो भूत प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के लिये की जाय।

रक्षित-वि० [सं०] १. जिसकी रक्षा की गई हो। हिफ़ाज़त किया हुआ। २. पाला पोसा। ३. रखा हुआ।

रक्षी-संज्ञा पु० [सं० रक्षस्+ई (प्रत्य०)] राक्षसों के उपासक। राक्षस पूजनेवाले। संज्ञा पु० दे० "रक्षक"।

रक्ष्य-वि० [सं०] रक्षा करने के योग्य।

रखना-क्रि० स० [सं० रक्षण] १. एक वस्तु पर या दूसरी वस्तु में स्थित करना। ठहराना। टिकाना। धरना। २. रक्षा करना। हिफ़ाज़त करना। बचाना।

यौ०—रख रखाव=रक्षा। हिफाजत।

३. वृथा या नष्ट न होने देना। ४. संग्रह करना। जोड़ना। ५. सपुर्द करना। सौंपना। ६. रेहन करना। बंधक में देना। ७. अपने अधिकार में लेना। ८. मनोविनोद या व्यवहार आदि के लिये अपने अधिकार में करना। ९. मुक़र्रर करना। १०. व्यवहार करना। धारण करना। ११. ज़िम्मे लगाना। मढ़ना। १२. ऋणी होना। कर्ज़दार होना। १३. मन में अनुभव या धारण करना। १४. स्त्री (या पुरुष) से संबंध करना। उपपत्नी (या उपपति) बनाना।

रखनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना+ई (प्रत्य०)] रखी हुई स्त्री। उपपत्नी। रखेली। सुरैतिन।

रखया-वि० स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षा करनेवाली।

रखवाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना, या रखाना] १. खेतों की रखवाली। चौकीदारी। २. रखवाली की मजदूरी। ३. रखने या रखवाने की क्रिया या ढंग।

रखवाना-क्रि० स० [हिं० रखना का प्रेर०] रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखाना।

रखवार०†-संज्ञा पुं० दे० "रखवाला"।

रखवाला-संज्ञा पु० [हिं० रखना+वाला (प्रत्य०)] १. रक्षक। २. पहरेदार।

रखवाली-संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना+वाली (प्रत्य०)] रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफ़ाज़त।

रखाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना+आई (प्रत्य०)] १. हिफ़ाज़त। रखवाली। २. रक्षा करने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

रखाना-क्रि० स० [हिं० रखना का प्रेर०] रखने की क्रिया दूसरे से कराना।

क्रि० अ० रखवाली करना। रक्षा करना।

रखिया†-संज्ञा पु० [हिं० रखना+इया (प्रत्य०)] १. रक्षक। २. रखनेवाला।

रखेली-संज्ञा स्त्री० दे० "रखनी"।

रखैया†-संज्ञा पु० दे० "रक्षक"।

रग-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शरीर में की नस या नाड़ी।

मुहा०—रग दबना=दबाव मानना। किसी के प्रभाव या अधिकार में होना। रग रग फड़कना=शरीर में बहुत अधिक उत्साह या आवेश के लक्षण प्रकट होना। रग रग में=सारे शरीर में।

२. पत्तों में दिखाई पड़नेवाली नसें।

रगड़-संज्ञा स्त्री० [हिं० रगड़ना] १. रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। २. वह चिह्न जो रगड़ने से उत्पन्न हो। ३ हुज्जत। झगड़ा। ४ भारी श्रम।

रगड़ना-क्रि० स० [सं० घर्षण या अनु०] १. घर्षण करना। घिसना। जैसे—चंदन रगड़ना। २. पीसना। ३. किसी काम को जल्दी जल्दी और बहुत परिश्रमपूर्वक करना। ४. तंग करना।

क्रि० अ० बहुत मेहनत करना।

रगड़वाना-क्रि० स० [हिं० रगड़ना का प्रेर० रूप] रगड़ने का काम दूसरे से कराना।

रगड़ा-संज्ञा पु० [हिं० रगड़ना] १. रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। रगड़। २. अत्यंत परिश्रम। ३. वह झगड़ा जो बराबर होता रहे।

रगण-संज्ञा पु० [सं०] छंद:शास्त्र में एक गण या तीन वर्णों का समूह जिसका पहला वर्ण गुरु, दूसरा लघु और तीसरा फिर गुरु होता है (ऽ।ऽ)।

रगत०-संज्ञा पु० [सं० रक्त] रक्त। रुधिर

रग-पट्ठा-संज्ञा पु० [फा० रग+हिं० पट्ठा] शरीर के भीतरी भिन्न भिन्न अंग।

रगर०†-संज्ञा स्त्री० दे० "रगड़"।

ग रेशा–संज्ञा पुं० [फा० रग+रेशा] १. पत्तियों की नसें। २. शरीर के अंदर का प्रत्येक भाग।
रगवाना†–क्रि० स० [हिं० रगाना का प्रेर०] चुप कराना। शांत कराना।
रगाना†–क्रि० अ० [देश०] चुप होना।
क्रि० स० चुप करना। शांत करना।
रगेदना–क्रि० स० [सं० खेट, हि० खेदना] भगाना। खदेड़ना। दौड़ाना।
रघु–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र जो अयोध्या के बहुत प्रतापी राजा और श्री रामचंद्र के परदादा थे।
रघुकुल–संज्ञा पुं० [सं०] राजा रघु का वंश।
रघुनंदन–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।
रघुनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।
रघुनायक–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।
रघुपति–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।
रघुराई–संज्ञा पुं० [सं० रघुराज] श्रीरामचंद्र।
रघुराज–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।
रघुवंश–संज्ञा पुं० [सं०] १. महाराज रघु का वंश या खानदान। २. महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य।
रघुवंशी–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो। २. क्षत्रियों के अंतर्गत एक जाति।
रघुवर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।
रघुवीर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र जी।
रचक–संज्ञा पुं० [सं०] रचना करनेवाला। रचयिता।
वि० दे० "रंचक"।
रचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रचने या बनाने की क्रिया या भाव। बनावट। निर्माण। २. बनाने का ढंग या कौशल। ३. बनाई हुई वस्तु। निर्मित वस्तु। ४. वह गद्य या पद्य जिसमें कोई विशेष चमत्कार हो।
क्रि० स० [सं० रचन] १. हाथों से बनाकर तैयार करना। बनाना। सिरजना। २. विधान करना। निश्चित करना। ३. ग्रंथ आदि लिखना। ४. उत्पन्न करना। पैदा करना। ५. अनुष्ठान करना। ठानना। ६. काल्पनिक सृष्टि करना। कल्पना करना। ७. शृंगार करना। सँवारना। सजाना। ८. तरकीब या क्रम से रखना।
मुहा०—रचि रचि=बहुत होशियारी और कारीगरी के साथ (कोई काम करना)।
क्रि० स० [सं० रंजन] रँगना। रंजित करना।
क्रि० अ० [सं० रंजन] १. अनुरक्त होना। २. रंग चढ़ना। रँगा जाना।
रचयिता–संज्ञा पुं० [सं० रचयितृ] रचनेवाला। बनानेवाला।
रचवाना–क्रि० स० [हिं० रचना का प्रेर०] १. रचना कराना। बनवाना। २. मेहँदी या महावर लगवाना।
रचाना†–क्रि० स० [सं० रचन] १. अनुष्ठान करना या कराना। बनाना। २. दे० "रचवाना"।
क्रि० अ० [सं० रंजन] मेहँदी, महावर आदि से हाथ पैर रँगाना।
रचित–वि० [सं०] बनाया हुआ। रचा हुआ।
रच्छस–संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।
रच्छा–संज्ञा स्त्री० दे० "रक्षा"।
रज–संज्ञा पुं० [सं० रजस्] १. वह रक्त जो स्त्रियों और स्तनपायी जाति के मादा प्राणियों के योनि मार्ग से प्रति मास तीन चार दिन तक निकलता है। आर्त्तव। कुसुम। ऋतु। २. दे० "रजोगुण"। ३. पाप। ४. जल। पानी। ५. फूलों का पराग। ६. आठ परमाणुओं का एक मान।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धूल। गर्द। २. रात। ३. ज्योति। प्रकाश।
संज्ञा पुं० [सं० रजत] चाँदी।
संज्ञा पुं० [सं० रजक] रजक। धोबी।
रजक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० रजकी] धोबी।
रजगुण–संज्ञा पुं० दे० "रजोगुण"।
रजतत–संज्ञा स्त्री० [सं० राजतत्त्व] वीरता।
रजत–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाँदी। रूपा। २. सोना। ३. रक्त। लहू।
वि० १. सफेद। शुक्ल। २. लाल। सुर्ख।
रजताई–संज्ञा स्त्री० [हिं० रजत] सफेदी।
रजधानी–संज्ञा स्त्री० दे० "राजधानी"।
रजना–संज्ञा स्त्री० दे० "रात"।
रजना–क्रि० अ० [सं० रंजन] रँगा जाना।
क्रि० स० रंग में डुबाना। रँगना।
रजनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रात। २. हल्दी।
रजनीकर–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
रजनीचर–संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।
रजनीपति–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
रजनीमुख–संज्ञा पुं० [सं०] संध्या।
रजनीश–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
रजपूत†–संज्ञा पुं० [सं० राजपुत्र] १. दे०

"राजपूत"। २. वीर पुरुष। योद्धा।
रजपूती†–संज्ञा स्त्री० [हिं० राजपूत+ई(प्रत्य०)] १. क्षत्रियता। क्षत्रियत्व। २. वीरता।
रजवहा–संज्ञा पुं० [सं० राज=बड़ा+हिं० बहना] वह बड़ा नल जिससे और भी अनेक छोटे छोटे नल निकलते हैं।
रजवाड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० राज्य+वाड़ा] १. राज्य। देशी रियासत। २ राजा।
रजवार†–संज्ञा पुं० [सं० राजद्वार] दरबार।
रजस्वला–वि० स्त्री० [सं०] जिसका रज प्रवाहित होता हो। ऋतुमती। रजस्वला।
रजा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मरजी। इच्छा। २. रुखसत। छुट्टी। ३. अनुमति। आज्ञा। ४ स्वीकृति।
रजाइ, रजाइय–संज्ञा स्त्री० [अ० रजा] १ आज्ञा। हुक्म। २. दे० "रजा"।
रजाई–संज्ञा स्त्री० [सं० रजक=कपड़ा ?] एक प्रकार का रूईदार ओढ़ना। लिहाफ़।
संज्ञा स्त्री० [हिं० राजा+आई (प्रत्य०)] राजा होने का भाव। राजापन।
संज्ञा स्त्री० दे० "रजाइ"।
रजाना–क्रि० स० [सं० राज्य] राज्य सुख का भोग कराना।
रज़ामंद–वि० [फ़ा०] [संज्ञा रज़ामंदी] जो किसी बात पर राज़ी हो गया हो। सहमत।
रजाय, रजायसु†–संज्ञा स्त्री० [अ० रजा] १ आज्ञा। हुक्म। २. मरज़ी। इच्छा।
रज़ील–वि० [अ०] छोटी जाति का। नीच।
रजोकुल–संज्ञा पुं० [सं० राजकुल] राजवंश।
रजोगुण–संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति का वह स्वभाव जिससे जीवधारियों में भोग-विलास तथा दिखावे की रुचि होती है। राजस।
रजोदर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म। रजस्वला होना।
रजोधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म।
रज्जु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रस्सी। जेवरी। २. लगाम की डोरी। बाग-डोर।
रट–संज्ञा स्त्री० [हिं० रटना] किसी शब्द को बार बार उच्चारण करने की क्रिया।
रटना–क्रि० स० [अनु०] १. किसी शब्द को बार बार कहना। २. ज़बानी याद करने के लिये बार बार उच्चारण करना। ३. बार बार शब्द करना। बजना।
रट्ठा–वि० [?] सूखा। शुष्क।
रढ़ना–क्रि० स० दे० "रटना"।
रण–संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई। युद्ध। जंग।
रणक्षेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई का मैदान।
रणछोड़–संज्ञा पुं० [सं० रण+हिं० छोड़ना] श्रीकृष्ण का एक नाम।
रणखेत–संज्ञा पुं० दे० "रणक्षेत्र"।
रणभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] रणक्षेत्र।
रणरंग–संज्ञा पुं० [सं०] १ लड़ाई का उत्साह। २. युद्ध। लड़ाई। ३ युद्धक्षेत्र।
रणलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० दे० "विजय लक्ष्मी"।
रणसिंघा–संज्ञा पुं० [सं० रण+हिं० सिंघा] तुरही। नरसिंघा।
रणस्तंभ–संज्ञा पुं० [सं०] विजय के स्मारक में बनवाया हुआ स्तंभ।
रणस्थल–संज्ञा पुं० [सं०] रणभूमि।
रणहंस–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।
रणांगण–संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध-क्षेत्र।
रत–संज्ञा पुं० [सं०] १. मैथुन। २ प्रीति। वि० १. अनुरक्त। आसक्त। २. (कार्य आदि में) लगा हुआ। लिप्त।
–संज्ञा पुं० [सं० रक्त] रक्त। खून।
रतजगा–संज्ञा पुं० [हिं० रात+जागना] उत्सव या विहार आदि के लिये सारी रात जागना।
रतन–संज्ञा पुं० दे० "रत्न"।
रतनजोत–संज्ञा स्त्री० [सं० रत्न+ज्योति] १ एक प्रकार की मणि। २. एक प्रकार का बहुत छोटा क्षुप। इसकी जड़ से लाल रंग निकाला जाता है।
रतनागर–संज्ञा पुं० [सं० रत्नाकर] समुद्र।
रतनार, रतनारा–वि० [सं० रक्त] कुछ लाल। सुर्खी लिए हुए।
रतनारी–संज्ञा पुं० [हिं० रतनार+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का धान।
संज्ञा स्त्री० लाली। लालिमा। सुर्खी।
रतनालिया†–वि० दे० "रतनारा"।
रतमुँहाँ†–वि० [हिं० रत=लाल+मुँह] [स्त्री० रतमुँही] लाल मुँहवाला।
रताना†–क्रि० अ० [सं० रत] रत होना।
क्रि० स० किसी को अपनी ओर रत करना
रतालू–संज्ञा पुं० [सं० रक्तालु] १. पिंडा नामक कंद। २ वाराहीकंद। गेंठी।
रति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कामदेव की जो दक्ष प्रजापति की कन्या और सौंदर्य की साक्षात् मूर्ति मानी जाती है।

काम-क्रीड़ा । संभोग । मैथुन । ३. प्रीति । प्रेम । अनुराग । मुहब्बत । ४. शोभा । द्युति । ५. साहित्य में शृंगार रस का स्थायी भाव । ६. नायक और नायिका की परस्पर प्रीति या प्रेम ।
क्रि० वि० दे० "रत्ती" ।
*संज्ञा स्त्री० [हिं० रात] रात । रात्रि । रैन ।
तिक॰†–क्रि० वि० [हिं० रत्ती] बहुत थोड़ा । ज़रा सा ।
तिदान–संज्ञा पु० [सं०] संभोग । मैथुन ।
तिनायक–संज्ञा पु० [सं०] कामदेव ।
तिनाह॰–संज्ञा पु० [सं० रतिनाथ] कामदेव ।
तिपति–संज्ञा पु० [सं०] कामदेव ।
तिपद–संज्ञा पु० [सं०] एक वर्णवृत्त ।
तिप्रीता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका रति में प्रेम हो । कामिनी ।
तिबंध–संज्ञा पु० [सं०] मैथुन या संभोग करने का प्रकार, जिसे आसन भी कहते हैं ।
तिभवन–संज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका रतिक्रीड़ा करते हों ।
तिभौन॰–संज्ञा पु० दे० "रतिभवन" ।
तिमंदिर–संज्ञा पु० [सं०] रतिभवन ।
तियाना॰†–क्रि० अ० [हिं० रति] प्रेम करना ।
रतिरमण–संज्ञा पु० [सं०] १. कामदेव । २. मैथुन ।
रतिराइ॰–संज्ञा पु० दे० "रतिराज" ।
रतिराज–संज्ञा पु० [सं०] कामदेव ।
रतिवंत–वि० [सं० रति] सुंदर । खूबसूरत ।
रतिशास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] काम-शास्त्र ।
रती॰†–संज्ञा स्त्री० [सं० रति] १. कामदेव की पत्नी । रति । २. सौंदर्य । शोभा । ३. मैथुन । ४. कांति । ५. दे० "रति" ।
†॰–संज्ञा स्त्री० दे० "रत्ती" ।
क्रि० वि० ज़रा सा । रत्ती भर । किंचित् ।
रतोपल॰†–संज्ञा पु० [सं० रक्तोत्पल] लाल कमल ।
रतौंधी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रात+अंधा] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी को रात के समय बिलकुल दिखाई नहीं देता ।
रत्त॰–संज्ञा पु० दे० "रक्त" ।
रत्ती–संज्ञा स्त्री० [सं० रक्तिका] १. आठ चावल का मान या बाट । २. घुँघची का दाना । गुंजा ।
मुहा०–रत्ती भर=बहुत थोड़ा सा । ज़रा सा ।
वि० बहुत थोड़ा । किंचित् ।
॰संज्ञा स्त्री० [सं० रति] शोभा । छवि ।
रत्थी–संज्ञा स्त्री० [सं० रथ] वह ढाँचा या संदूक आदि जिसमें शव को रखकर अंतिम संस्कार के लिये ले जाते हैं । टिकठी । अरथी ।
रत्न–संज्ञा पु० [सं०] १. वे छोटे, चमकीले, बहुमूल्य खनिज पदार्थ, जिनका व्यवहार आभूषणों आदि में जड़ने के लिये होता है । मणि । जवाहिर । नगीना । २. मानिक । लाल । ३. सर्वश्रेष्ठ ।
रत्नगर्भा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी । भूमि ।
रत्ननिधि–संज्ञा पु० [सं०] समुद्र ।
रत्नपारखी–संज्ञा पु० [सं० रत्न+हिं० पारखी] जौहरी ।
रत्नाकर–संज्ञा पु० [सं०] १. समुद्र । २. खान । ३. रत्नों का समूह ।
रत्नावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मणियों की श्रेणी या माला । २ एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत अर्थ निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम से कुछ और वस्तु-समूह के नाम भी निकलते हैं ।
रथ–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की पुरानी सवारी जिसमें चार या दो पहिए हुआ करते थे । गाड़ी । बहल । २. शरीर । ३. चरण । पैर । ४. शतरंज में, ऊँट ।
रथयात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंदुओं का एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है ।
रथवाह–संज्ञा पु० [सं० रथवाह] १. रथ चलानेवाला । सारथी । २. घोड़ा ।
रथांगपाणि–संज्ञा पु० [सं०] विष्णु ।
रथिक–संज्ञा पु० [सं०] रथी ।
रथी–संज्ञा पु० [सं० रथिन्] १. रथ पर चढ़कर लड़नेवाला । २. एक हजार योद्धाओं से अकेला युद्ध करनेवाला योद्धा ।
वि० रथ पर चढ़ा हुआ ।
संज्ञा स्त्री० दे० "रत्थी" ।
रथोद्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।
रथ्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रास्ता । सड़क । २. नाली । नाबदान ।
रद–संज्ञा पु० [सं०] दंत । दाँत ।
वि० दे० "रद्द" ।
रदच्छद–संज्ञा पु० [सं०] ओंठ । ओष्ठ ।
रदछद॰–संज्ञा पु० [सं० रदच्छद] ओंठ ।

संज्ञा पु० [सं० रदक्षत] रति आदि के समय दाँतों के लगने का चिह्न।
रद्दान–संज्ञा पु० [सं० रद+दान] (रति के समय) दाँतों से ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय।
रदन–संज्ञा पु० [सं०] दशन। दाँत।
रदनी–वि० [सं० रदनिन्] दाँतवाला।
रदपट–संज्ञा पु० [सं०] ओष्ठ। ओंठ।
रद्द–वि० [अ०] १. जो काट, छाँट, तोड़ या बदल दिया गया हो।
यौ०—रद्द बदल=परिवर्त्तन। फेरफार।
२. जो खराब या निकम्मा हो गया हो।
संज्ञा स्त्री० कै। वमन।
रद्दा–संज्ञा पु० [देश०] १. ईंटों की, बेड़े बल की, एक पंक्ति जो दीवार पर चुनी जाती है। २. थाली में रसों के रूप में मिठाइयों का चुनाव। ३. नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह।
रद्दी–वि० [फा० रद] निकम्मा। निष्प्रयोजन। बेकार।
रन–संज्ञा पु० [सं० रण] युद्ध। लड़ाई।
संज्ञा पु० [सं० अरण्य] जंगल। वन।
संज्ञा पु० [?] १. झील। ताल। २. समुद्र का छोटा खंड।
रनकना–क्रि० अ० [सं० रणन=शब्द करना] घुँघुरू आदि का मंद शब्द होना।
रनना–क्रि० अ० [सं० रणन] बजना। शब्द करना। झनकार होना।
रनबंका, रनबाँकुरा–संज्ञा पु० [सं० रण+हिं० बाँका] शूरवीर। योद्धा।
रणवादी–संज्ञा पु० [सं० रण+वादी] योद्धा।
रनवास–संज्ञा पु० [हिं० रानी+वास] १. रानियों के रहने का महल। अंतःपुर। २. जनानखाना।
रनित–वि० [हिं० रनना] बजता हुआ। झनकार करता हुआ।
रनिवास–संज्ञा पु० दे० "रनवास"।
रनी–संज्ञा पु० [सं० रण+ई (प्रत्य०)] योद्धा।
रपट–संज्ञा स्त्री० [हिं० रपटना] १. रपटने की क्रिया या भाव। फिसलाहट। २. दौड़। ३. जमीन की ढाल।
संज्ञा स्त्री० [अं० रिपोर्ट] सूचना। इत्तला।
रपटना–क्रि० अ० [सं० रफन] १. नीचे या आगे की ओर फिसलना। २. बहुत जल्दी जल्दी चलना। झपटना।
रपटाना–क्रि० स० [हिं० रपटना] रपटने का काम दूसरे से कराना।
रपट्टा–संज्ञा पु० [हिं० रपटना] १. फिसलने की क्रिया। फिसलाव। २. दौड़-धूप। ३. झपट्टा। चपेट।
रफल–संज्ञा स्त्री० [अं० राइफल] विलायती ढंग की एक प्रकार की बंदूक।
संज्ञा पु० [अं० रैपर] जाड़े में ओढ़ने की मोटी गरम चादर।
रफा–वि० [अ०] १. दूर किया हुआ। २. निवृत्त। शांत। निवारित। दबाया हुआ।
रफा दफा–वि० दे० "रफा"।
रफू–संज्ञा पु० [अ०] फटे हुए कपड़े के छेद में तागे भरकर उसे बराबर करना।
रफूगर–संज्ञा पु० [फा०] रफू करने का व्यवसाय करनेवाला। रफू बनानेवाला।
रफूचक्कर–वि० [अ० रफू+हिं० चक्कर] चंपत। गायब।
रफ्तनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. जाने की क्रिया या भाव। २. माल का बाहर जाना।
रफ्ता रफ्ता–क्रि० वि० [फा०] धीरे धीरे। क्रम क्रम से।
रब–संज्ञा पु० [अ०] ईश्वर। परमेश्वर।
रबड़–संज्ञा पु० [अं० रबर] १. एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों के दूध से बनता है। २. एक वृक्ष जो वट वर्ग के अंतर्गत है। इसी के दूध से उपर्युक्त लचीला पदार्थ बनता है।
रबड़ना–क्रि० स० [हिं० रपटना] १. घुमाना। चलाना। २. फेटना।
रबड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रबड़ना] औटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध। बसौंधी।
रबदा–संज्ञा पु० [हिं० रबड़ना] १. चलने में होनेवाला श्रम। २. कीचड़।
मुहा०—रबदा पड़ना=खूब पानी बरसना
रबर–संज्ञा पु० दे० "रबड़"।
रबाना–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का डफ
रबाब–संज्ञा पु० [अ०] सारंगी की तरह एक प्रकार का बाजा।
रबी–संज्ञा स्त्री० [अ० रबीअ] १. वसंत ऋतु २. वह फसल जो वसंत ऋतु में काटी जाती है।

रब्त–संज्ञा पु० [अ०] १. अभ्यास। मश्क। मुहावरा। २. संबंध। मेल।
यौ०—रब्त ज़ब्त = मेलजोल। घनिष्ठता।
रब्ब–संज्ञा पु० दे० "रब"।
रमक–संज्ञा स्त्री० [हिं० रमना ?] १. झूले की पेंग। २. तरंग। झकोरा।
रमकना–क्रि० अ० [हिं० रमना] १. हिंडोले पर झूलना। २. झूमते या इतराते हुए चलना।
रमज़ान–संज्ञा पु० [अ०] एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोज़ा रखते हैं।
रमण–संज्ञा पु० [सं०] १. विलास। क्रीड़ा। केलि। २. मैथुन। ३. गमन। घूमना। ४. पति। ५. कामदेव। ६. एक वर्णिक छंद।
वि० १. मनोहर। सुंदर। २. प्रिय। ३ रमनेवाला।
रमणगमना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो यह समझकर दुःखी होती है कि संकेत स्थान पर नायक आया होगा, और मैं वहाँ उपस्थित न थी।
रमणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नारी। स्त्री।
रमणीक–वि० [सं० रमणीय] सुंदर।
रमणीय–वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।
रमणीयता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदरता। २. साहित्य दर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं में बना रहे।
रमता–वि० [हिं० रमना] एक जगह जमकर न रहनेवाला। घूमता फिरता। जैसे, रमता जोगी।
रमन०–संज्ञा पु० वि० दे० "रमण"।
रमना–क्रि० अ० [सं० रमण] १. भोग विलास के लिये कहीं रहना या ठहरना। २. आनंद करना। मज़ा उड़ाना। ३. व्याप्त होना। भीनना। ४. अनुरक्त होना। लग जाना। ५. फिरना। घूमना। ६. चलता होना। चल देना।
संज्ञा पुं० [सं० आराम या रमण] १ चरागाह। २. वह सुरक्षित स्थान या घेरा, जहाँ पशु शिकार के लिये या पालने के लिये छोड़ दिए जाते हैं। ३. बाग़। ४. कोई सुंदर और रमणीक स्थान।
रमनी०–संज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"।
रमनीक०–वि० दे० "रमणीक"।

रमल–संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पासे फेंककर शुभाशुभ फल जाना जाता है।
रमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
रमाकांत–संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।
रमानरेश*–संज्ञा पु० दे० "रमाकांत"।
रमाना–क्रि० स० [हिं० रमना का स० रूप] १. मोहित करना। लुभाना। २. अपने अनुकूल बनाना। ३. ठहराना। रोक रखना। ४. लगाना। जोड़ना।
मुहा०—रास रमाना = रास रचना।
रमानिवास–संज्ञा पु० [हिं० रमा + निवास] विष्णु।
रमारमण–संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।
रमित०–वि० [हिं० रमना] लुभाया हुआ। मुग्ध।
रमूज़–संज्ञा स्त्री० [अ० रम्ज़ का बहु०] १. कटाक्ष। २. सेन। इशारा। ३. पहेली। ४. श्लेष। ५. भेद। रहस्य।
रमैनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रामायण] कबीरदास के बीजक का एक भाग।
रमैया‡*–संज्ञा पु० [हिं० राम + ऐया (प्रत्य०)] १. राम। २. ईश्वर।
रम्माल–संज्ञा पु० [अ०] रमल फेंकनेवाला।
रम्य–वि० [सं०] [स्त्री० रम्या] १. मनोहर। सुंदर। २. मनोरम। रमणीय।
रम्हाना–क्रि० अ० दे० "रँभाना"।
रय*–संज्ञा पुं० [सं० रज] रज। धूल। गर्द।
संज्ञा पु० [सं०] १. वेग। तेज़ी। २. प्रवाह। ३ ऐल के छः पुत्रों में से चौथा।
रयन०†–संज्ञा स्त्री० [सं० रजनि] रात। रात्रि।
रयना०†–क्रि० स० [सं० रंजन] रंग से भिगोना। तराबोर करना।
क्रि० अ० १. अनुरक्त होना। २ संयुक्त होना। मिलना।
रय्यत†–संज्ञा स्त्री० [अ० रअय्यत] प्रजा।
ररकार–संज्ञा पु० [सं० रकार] रकार की ध्वनि।
ररन०†–संज्ञा स्त्री० [हिं० ररना] रटन। रट।
ररकना†–क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा ररक] कसकना। सालना। पीड़ा देना।
ररना†–क्रि० अ० [सं० रटन] लगातार एक ही बात कहना। रटना।
ररिहा०†–संज्ञा पु० [हिं० ररना + हा (प्रत्य०)]

१. रटनेवाला। २. रटुआ या रहचटा नामक पक्षी। ३. नारी संगम।

रटा-संज्ञा पुं० [हिं० रटना] १ बहुत गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला। २. अधम। नीच।

रलना†-क्रि० अ० [सं० ललन] एक में मिलना। सम्मिलित होना।

रलाना†-क्रि० स० [हिं० रलना का सक० रूप] एक में मिलाना। सम्मिलित करना।

रली-संज्ञा स्त्री० [सं० ललन = केलि, क्रीड़ा] १. विहार। क्रीड़ा। २. आनंद। प्रसन्नता।

रला†-संज्ञा पुं० [हिं० रेला] रेला। हल्ला।

रव-संज्ञा पुं० [सं०] १. गुंजार। नाद। २. आवाज। शब्द। ३. शोर। गुल।
संज्ञा पुं० ‡ [सं० रवि] सूर्य।

रवकना-क्रि० अ० [हिं० रमना = चलना] १. दौड़ना। २. उमगना। उछलना।

रवताई-संज्ञा स्त्री० [हिं० रावत + आई (प्रत्य०)] १. राजा या रावत होने का भाव। २. प्रभुत्व। स्वामित्व।

रवन-संज्ञा पुं० [सं० रमण] पति। स्वामी।
वि० रमण करनेवाला। क्रीड़ा करनेवाला।

रवना-क्रि० अ० [सं० रमण] क्रीड़ा करना।
क्रि० अ० [हिं० रव = शब्द] शब्द करना।
‡ संज्ञा पुं० दे० "रावण"।

रवनि, रवनी-संज्ञा स्त्री० [सं० रमणी] १. स्त्री। भार्या। पत्नी। २. रमणी। सुंदरी।

रवन्ना-संज्ञा पुं० [फा० रवाना] १. वह कागज जिस पर रवाना किए हुए माल का ब्योरा होता है। २. राहदारी का परवाना।

रवा-संज्ञा पुं० [सं०रज] १. बहुत छोटा टुकड़ा। कण। दाना। रेजा। २. सूजी। ३. बारूद का दाना।
वि० [फा०] १. उचित। ठीक। वाजिब। २. प्रचलित। चलनसार।

रवाज-संज्ञा स्त्री० [फा०] परिपाटी। चाल। प्रथा। रस्म। चलन। रीति।

रवादार-वि० [फा० रवा + दार (प्रत्य०)] संबंध या लगाव रखनेवाला।
वि० [हिं० रवा + फा० दार] जिसमें कण या दाने हों। रवेवाला।

रवानगी-संज्ञा स्त्री० [फा०] रवाना होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। यात्रा।

रवाना-वि० [फा०] १. जो कहीं से चल पड़ा हो। प्रस्थित। २ भेजा हुआ।

रवारवी-संज्ञा स्त्री० [फा० रवा + अनु० रवी] जल्दी। शीघ्रता।

रवि-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. मदार का पेड़। आक। ३. अग्नि। ४. नायक। सरदार।

रविकुल-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवंश।

रविचचल-संज्ञा पुं० [सं०] लोलार्क नामक तीर्थस्थल जो काशी में है।

रवितनय-संज्ञा पुं० [सं०] १. यमराज। २. शनैश्चर। ३. सुग्रीव। ४. कर्ण। ५ अश्विनीकुमार।

रवितनया-संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

रविनंदन-संज्ञा पुं० दे० "रवितनय"।

रविनंदिनी-संज्ञा स्त्री [सं०] यमुना।

रविपूत-संज्ञा पुं० दे० "रविनंदन"।

रविमंडल-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के चारों ओर का लाल मंडल या गोला। रविबिंब।

रविबाण-संज्ञा पुं० [सं०] वह बाण जिसके चलाने से सूर्य का सा प्रकाश हो।

रविवार-संज्ञा पुं० [सं०] एक वार जो शनिवार के बाद तथा सोमवार के पहले पड़ता है। आदित्यवार। एतवार।

रविश-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गति। चाल। २. तौर। तरीका। ढंग। ३. क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।

रविसुअन-संज्ञा पुं० दे० "रवितनय"।

रवैया‡-संज्ञा पुं० [फा० रविश या रवी] १. चलन। चाल चलन। २ तौर। ढंग।

रश्क-संज्ञा पुं० [फा०] ईर्ष्या। डाह।

रश्मि-संज्ञा पुं० [सं०] १. किरण। २. घोड़े की लगाम। बाग।

रस-संज्ञा पुं० [सं०] १. खाने की चीज का स्वाद। रसनेंद्रिय का संवेदन या ज्ञान। हमारे यहाँ वैद्यक में मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ये छः रस माने गए हैं। २. छः की संख्या। ३. वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर की सात धातुओं में से पहली धातु। ४. किसी पदार्थ का सार। तत्त्व। ५. मन में उत्पन्न होनेवाला वह भाव या आनंद जो काव्य पढ़ने अथवा अभिनय देखने से उत्पन्न होता है। (साहित्य) ६. नौ की संख्या। ७. आनंद। मजा।
मुहा०-रस भीजना या भीनना = यौवन का आरंभ या संचार होना।

८. प्रेम । प्रीति । मुहब्बत ।

यौ०—रस रंग=प्रेम-क्रीड़ा । केलि । रस रीति=प्रेम का व्यवहार।

९. काम-क्रीड़ा । केलि । विहार । १०. उमंग । जोश । वेग । ११. गुण । सिफ़त । १२. कोई तरल या द्रव पदार्थ । १३. जल । पानी । १४. वह पानी जिसमें चीनी घुली हुई हो । शरबत । १५. पारा । १६. धातुओं को फूँककर तैयार किया हुआ भस्म । १७. केशव के अनुसार रगण और सगण । १८. भाँति । तरह । प्रकार । १९. मन की तरंग । मौज । इच्छा ।

रसकपूर-संज्ञा पुं० [सं० रसकर्पूर] सफ़ेद रंग की एक प्रसिद्ध उपधातु ।

रसकेलि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विहार । क्रीड़ा । २. हँसी ठट्ठा । दिल्लगी ।

रसकोरा-संज्ञा पुं० दे० "रसगुल्ला" ।

रसगुनी†-संज्ञा पुं० [सं० रस+गुणी] काव्य या संगीत शास्त्र का ज्ञाता ।

रसगुल्ला-संज्ञा पुं० [हिं० रस+गोला] एक प्रकार की छेने की मिठाई ।

रसज्ञ-वि० [सं०] [भाव० रसज्ञता] १. वह जो रस का ज्ञाता हो । २. काव्य-मर्मज्ञ । ३. निपुण । कुशल।

रसता-संज्ञा स्त्री० [सं०] रस का भाव या धर्म । रसत्व ।

रसद-वि० [सं०] १. आनंददायक । सुखद । २ स्वादिष्ट । मज़ेदार।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बाँट । बखरा ।

मुहा०—हिस्सा रसद=बँटने पर अपने अपने हिस्से के अनुसार लाभ ।

२. कच्चा अनाज जो पकाया न गया हो।

रसदार-वि० [हिं० रस+दार (प्रत्य०)] १. जिसमें किसी प्रकार का रस हो । २. स्वादिष्ट । मज़ेदार।

रसन-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वाद लेना । चखना । २. ध्वनि । ३. जीभ । ज़बान ।

रसना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जिह्वा । जीभ ।

मुहा०—रसना खोलना=बोलना आरंभ करना। रसना तालू से लगाना=बोलना बंद करना ।

२. वह स्वाद, जिसका अनुभव जीभ से किया जाता है । ३. रस्सी । ४ लगाम ।

क्रि० अ० [हिं० रस+ना (प्रत्य०)] १. धीरे धीरे बहना या टपकना। २. गीला होकर जल या और कोई द्रव पदार्थ छोड़ना या टपकाना ।

मुहा०—रस रस या रसे रसे=धीरे धीरे।

३. रस में मग्न होना । प्रफुल्लित होना । ४. तन्मय होना। परिपूर्ण होना । ५. रस लेना । स्वाद लेना । ६. प्रेम में अनुरक्त होना ।

रसनेंद्रिय-संज्ञा स्त्री०[सं०] रसना । जीभ ।

रसनोपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की उपमा जिसमें उपमाओं की एक शृंखला बँधी होती है और पहले कहा हुआ उपमेय आगे चलकर उपमान होता जाता है । गमनोपमा।

रसपति-संज्ञा पुं० [सं०] १. चन्द्रमा । २. राजा । ३. पारा । ४. शृंगार रस ।

रसभरी-संज्ञा स्त्री० [अं० रैस्पबेरी] एक प्रकार का स्वादिष्ट फल ।

रसभीना-वि० [हिं० रस+भीनना] [स्त्री० रसभीनी] १. आनंद में मग्न । २. आर्द्र । तर । गीला ।

रसमसा-वि० [हिं० रस+मग्न (अनु०)] [स्त्री० रसमसी] १. आनंदमग्न । अनुरक्त । २. तर । गीला । ३. पसीने से भरा ।

रसमि⊕-संज्ञा स्त्री० [सं० रश्मि] १. किरण । २. आभा । प्रकाश । चमक ।

रसराज-संज्ञा पुं० [सं०] १. पारद । पारा । २. शृंगार रस।

रसराय⊕-संज्ञा पुं० दे० "रसराज" ।

रसरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "रस्सी" ।

रसल-वि० दे० "रसीला" ।

रसवंत-संज्ञा पुं० [सं० रसवत्] रसिक । प्रेमी । वि० जिसमें रस हो । रसीला ।

रसवंती-संज्ञा स्त्री० [सं० रसवती] रसौत ।

रसवत्-संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस अथवा भाव का अंग होकर आवे ।

रसवत-संज्ञा स्त्री० दे० "रसौत" ।

रसवाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम या आनंद की बात-चीत । २. मनोरंजन के लिये कहा-सुनी । छेड़छाड़ । ३. बकवाद।

रसविरोध-संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक ही पद्य में दो प्रतिकूल रसों की स्थिति । जैसे—शृंगार और रौद्र की ।

रसांजन-संज्ञा पुं०[सं०] रसौत।

रसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। ज़मीन। २ जीभ। रसना। ज़बान।
संज्ञा पुं० [हिं० रस] तरकारी आदि का झोल। शोरबा।

रसाइनीः—संज्ञा पु० [हिं० रसायन] रसायन विद्या जाननेवाला।

रसाई—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच।

रसातल—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीच के सात लोकों में से छठा लोक।
मुहा०—रसातल में पहुँचाना = मिट्टी में मिला देना। बरबाद कर देना।

रसाभास—संज्ञा पु० [सं०] १. साहित्य में किसी रस का अनुचित विषय में अथवा अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन। २. एक प्रकार का अलंकार जिसमें उक्त ढंग का वर्णन होता है।

रसायन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैद्यक के अनुसार वह औषध जिसके खाने से आदमी बुड्ढा या बीमार न हो। २. पदार्थों के तत्वों का ज्ञान। वि० दे० "रसायन शास्त्र"। ३. वह कल्पित योग जिसके द्वारा ताँबे से सोना बनना माना जाता है।

रसायन शास्त्र संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमें यह विवेचन हो कि पदार्थों में कौन कौन से तत्त्व होते हैं और उनके परमाणुओं में परिवर्त्तन होने पर पदार्थों में क्या परिवर्त्तन होता है।

रसायनिक—वि० दे० "रासायनिक"।

रसाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊख। गन्ना। २. आम। ३ कटहल। ४. गोधूम। गेहूँ।
वि० [स्त्री० रसाला] १. मधुर। मीठा। २. रसीला। ३. सुंदर। मनोहर।
संज्ञा पुं० [अ० इरसाल] कर। राजस्व।

रसालस—संज्ञा पुं० [हिं० रसाल] कौतुक।

रसालिका—वि० स्त्री० [सं० रसालक] मधुर।

रसावर, रसावल—संज्ञा पुं० दे० "रसौर"।

रसाव—संज्ञा पुं० [हिं०रसना] रसने की क्रिया या भाव।

रसिआउर†—संज्ञा पुं० [हिं० रस + चावल] १. रसौर। २. एक प्रकार का गीत जो विवाह की एक रीति में गाया जाता है।

रसिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो रस या स्वाद लेता हो। २. काव्य-मर्मज्ञ। सहृदय। ३. आनंदी। रसिया। ४ अच्छा ज्ञाता। मर्मज्ञ। ५. भावुक। सहृदय। ६. एक प्रकार का छंद।

रसिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रसिक होने का भाव या धर्म्म। २. हँसी ठट्ठा।

रसिकबिहारी—संज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

रसिकाईः—संज्ञा स्त्री० दे० "रसिकता"।

रसित—संज्ञा पु० [सं०] ध्वनि। शब्द।

रसिया—संज्ञा पु० [सं० रसिक] १. रसिक। २ एक प्रकार का गाना जो फागुन में ब्रज आदि में गाया जाता है।

रसियाव—संज्ञा पु० दे० "रसौर"।

रसीऽ†—संज्ञा पु० दे० "रसिक"।

रसीद—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. किसी चीज़ के पहुँचने या प्राप्त होने की क्रिया। प्राप्ति। पहुँच। २. किसी चीज़ के पहुँचने या मिलने के प्रमाण रूप में लिखा हुआ पत्र।

रसील—वि० दे० "रसीला।"

रसीला—वि० [हिं० रस + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रसीली] १. रस से भरा हुआ। रस-युक्त। २. स्वादिष्ट। मज़ेदार। ३ रस या आनंद लेनेवाला। ४ बाँका। सुंदर।

रसूम—संज्ञा पु० [अ०] १. रस्म का बहुवचन। २. नियम। क़ानून। ३ वह धन जो किसी को किसी प्रचलित प्रथा अनुसार दिया जाता हो। नेग। लाग।

रसूल—संज्ञा पु० [अ०] ईश्वर का दूत। पैगंबर।

रसेश्वर—संज्ञा पु० [सं०] १. पारा। २. एक दर्शन जो छः दर्शनों में नहीं है।

रसेसः—संज्ञा पु० [सं० रसेश] श्रीकृष्ण।

रसोइया—संज्ञा पुं० [हिं० रसोई + इया (प्रत्य०)] रसोई बनानेवाला। रसोईदार।

रसोई, रसोई—संज्ञा स्त्री० [हिं० रस + ओई (प्रत्य०)] १. पका हुआ खाद्य पदार्थ।
मुहा०—रसोई तपना = भोजन पकाना।
२. चौका। पाकशाला।

रसोईघर—संज्ञा पु० [हिं० रसोई + घर] खाना पकाने की जगह। पाकशाला। चौका।

रसोईदार—संज्ञा पुं० दे० "रसोइया"।

रसोयः†—संज्ञा स्त्री० दे० "रसोई"।

रसौत—संज्ञा स्त्री० [सं० रसोद्भूत] एक प्रसिद्ध औषध जो दारुहल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में औटाकर तैयार की जाती है।

रसौर–संज्ञा पुं० [हिं० रस+और (प्रत्य०)] ऊख के रस में पके हुए चावल।

रसौली–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में गिलटी निकल आती है।

रस्ता–संज्ञा पुं० दे० "रास्ता"।

रस्तोगी–संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

रस्म–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेल-जोल।

यौ०—राह-रस्म=मेलजोल। व्यवहार। २. रवाज। परिपाटी। चाल।

रस्मि०–संज्ञा स्त्री० दे० "रश्मि"।

रस्सा–संज्ञा पुं०[सं० रसना] [स्त्री० अल्पा० रस्सी] बहुत मोटी रस्सी।

रस्सी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रस्सा] रूई, सन आदि के रेशों या डोरों को बटकर बनाया हुआ लंबा खंड। डोरी। गुण। रज्जु।

रहँकला–संज्ञा पुं० [हिं०रथ+कल] १. एक प्रकार की हलकी गाड़ी। २. तोप लादने की गाड़ी। ३. रहँकले पर लदी हुई तोप।

रहँचटा–संज्ञा पुं० [हिं० रस+चाट] प्रीति की चाह। चसका। लिप्सा।

रहँट–संज्ञा पुं० [सं० आरघट्ट, प्रा० अरहट्ट] कूँए से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र।

रहँटा–संज्ञा पुं० [हिं० रहँट] सूत कातने का चर्खा।

रहचह–संज्ञा स्त्री० [अनु०] चिड़ियों का बोलना। चहचहाहट।

रहन–संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना] १. रहने की क्रिया या भाव। २. व्यवहार। आचार।

रहन सहन–संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना+सहना] जीवन निर्वाह का ढंग। तौर। चाल-ढाल।

रहना–क्रि० अ० [सं० राज=विराजना] १ स्थित होना। अवस्थान करना। ठहरना। २ न जाना। रुकना। थमना।

मुहा०—रह चलना या जाना=रुक जाना। ३ बिना किसी परिवर्तन या गति के एक ही स्थिति में अवस्थान करना। ४. निवास करना। बसना या टिकना। ५. कोई काम करना बंद करना। थमना। ६. चलना बंद करना। रुकना। ७ विद्यमान होना। उपस्थित होना। ८ चुपचाप समय बिताना।

मुहा०–रह जाना=१ कुछ कार्रवाई न करना। २. सफल न होना। लाभ न उठा सकना। ९ नौकरी करना। काम काज करना। १०. स्थित होना। स्थापित होना। ११. समागम करना। मैथुन करना। १२. जीवित रहना। जीना। १३. बचना। छूट जाना।

यौ०—रहा सहा=बचा बचाया। अवशिष्ट।

मुहा०—(अंग आदि का) रह जाना=थक जाना। शिथिल हो जाना। रह जाना=१. पीछे छूट जाना। २. अवशिष्ट होना। खर्च या व्यवहार से बचना।

रहनि‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना] १. दे० "रहन"। २. प्रेम। प्रीति।

रहम–संज्ञा पुं० [अ०] १. करुणा। दया। २. अनुकंपा। अनुग्रह।

यौ०—रहमदिल=दयालु। कृपालु। संज्ञा पुं० [अ० रहम] गर्भाशय।

रहमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] कृपा। दया।

रहल–संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की छोटी चौकी जिस पर पढ़ने के समय पुस्तक रखी जाती है।

रहलू‡†–संज्ञा स्त्री० दे० "रहरू"।

रहस–संज्ञा पुं० [सं० रहस्] १. गुप्त भेद। छिपी बात। २. आनंदमय लीला। क्रीडा। ३. आनंद। सुख। ४. गूढ़ तत्त्व। मर्म। ५. एकांत स्थान।

रहसना–क्रि० अ० [हिं० रहस+ना (प्रत्य०)] आनंदित होना। प्रसन्न होना।

रहसबधावा–संज्ञा पुं० [सं० रहस्+बधाई] विवाह की एक रीति।

रहसि*–संज्ञा स्त्री० [सं० रहस्] गुप्त स्थान। एकांत स्थान।

रहस्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ गुप्त भेद। गोप्य विषय। २ मर्म्म या भेद की बात। ३. वह जिसका तत्त्व सहज में समझ में न आ सके। ४. हँसी ठट्ठा। मजाक।

रहाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना] १. दे० "रहन"। २. कल। चैन। आराम।

रहाना –क्रि० अ० [हिं० रहना] १. होना। २. रहना।

रहावन†–संज्ञा स्त्री० [हिं० रहना+आवन (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ गाँव भर के सब पशु एकत्र होकर खड़े हों। रहुनिया।

रहित–वि० [सं०] बिना। बगैर। हीन।

रहिला–संज्ञा पुं० [?] चना।

रहीम-वि० [अ०] कृपालु। दयालु।
संज्ञा पुं० [अ०] १. रहीम खाँ खानखानाँ का उपनाम। २. ईश्वर।
रहुवा†-संज्ञा पुं० [हिं० रहना] रोटियों पर रहनेवाला मनुष्य। टुकड़हा। रोटी-तोड़।
राँक†-वि० दे० "रंक"।
राँगा-संज्ञा पुं० [सं० रंग] एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम और रंग में सफ़ेद होती है। रंग। बंग।
राँच‡†-अव्य० दे० "रंच"।
राँचना‡†-क्रि० अ० [सं० रंजन] १ अनुरक्त होना। प्रेम करना। चाहना। २. रंग पकड़ना।
क्रि० स० [सं० रंजन] रंग चढ़ाना। रँगना।
राँजना†-क्रि० अ० [सं० रंजन] काजल लगाना।
क्रि० स० रंजित करना। रँगना।
राँटा†-संज्ञा पुं० [देश०] टिटिहरी चिड़िया।
राँड़-वि० स्त्री० [सं० रंडा] १. विधवा। बेवा। २. रंडी। वेश्या।
राँढ़ना†-क्रि० स० [सं० रुदन] रोना।
राँध-संज्ञा पुं० [सं० परान्त] निकट। पास।
राँधना-क्रि० स० [सं० रंधन] (भोजन आदि) पकाना। पाक करना।
राँपी-संज्ञा स्त्री० [देश०] पतली खुरपी के आकार का मोचियों का एक औज़ार।
राँभना-क्रि० अ० [सं० रंभण] (गाय का) बोलना या चिल्लाना। बँबाना।
राआ०†-संज्ञा पुं० दे० "राजा"।
राइ-संज्ञा पुं० [सं० राजा] छोटा राजा। राय। सरदार।
राई-संज्ञा स्त्री० [सं० राजिका] १. एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों।
मुहा०—राई नोन उतारना = नज़र लगे हुए बच्चे पर उतारा करके राई और नमक को आग में डालना। राई से पर्वत करना = थोड़ी बात को बहुत बड़ा देना। राई काई करना = टुकड़े टुकड़े कर डालना।
२. बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।
संज्ञा पुं० १. राजा। २. सर्वश्रेष्ठ।
*†संज्ञा स्त्री० [हिं० राय] राजापन। राजसी।
राउ०-संज्ञा पुं० [सं० राजा] राजा। नरेश।
राउत†-संज्ञा पुं० [सं० राज+पुत्र] १. राजवंश का कोई व्यक्ति। २. क्षत्रिय। ३. वीर पुरुष। बहादुर।

राउर०†-संज्ञा पुं० [सं० राज+पुर] अंतःपुर। रनवास। जनानखाना।
वि० श्रीमान् का। आपका।
राउल०†-संज्ञा पुं० [सं० राजकुल] १. राज कुल में उत्पन्न पुरुष। २. राजा।
राकस†-संज्ञा पुं० [सं० राक्षस] [स्त्री० राकसिन] राक्षस।
राका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूर्णिमा की रात। २. पूर्णमासी।
राकेश-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
राक्षस-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राक्षसी] १. निशिचर। दैत्य। असुर। २. कुबेर के धन कोश के रक्षक। ३ कोई दुष्ट प्राणी। ४. एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या प्राप्त करने के लिये युद्ध करना पड़ता है।
राख-संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षा ?] भस्म। खाक।
राखना०†-क्रि० स० [सं० रक्षण] १. रक्षा करना। बचाना। २. रखवाली करना। ३. छिपाना। कपट करना। ४. रोक रखना। जाने न देना। ५. आरोप करना। बताना। ६. दे० "रखना"।
राखी-संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षाबंधन का डोरा। रक्षा।
संज्ञा स्त्री० दे० "राख"।
राग-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रिय या अभिमत वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा। सांसारिक सुखों की चाह। २. कष्ट। पीड़ा। तकलीफ़। ३. मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष। ४. अनुराग। प्रेम। प्रीति। ५. अंग में लगाने का सुगंधित लेप। अंगराग। ६. एक वर्णवृत्त। ७. रंग, विशेषतः लाल रंग। ८. पैर में लगाने का अलता। ९. किसी खास धुन में बैठाए हुए स्वर जिनके उच्चारण से गान होता है। भारतीय आचार्यों ने छः राग माने हैं; परंतु इन रागों के नामों के संबंध में कुछ मतभेद है।
मुहा०—अपना राग अलापना = अपनी ही बात कहना।
रागना०†-क्रि० अ० [सं० राग] १. अनुराग करना। अनुरक्त होना। २. रँग जाना। रंजित होना। ३. निमग्न होना।
८ क्रि० स० [सं० राग] गाना। अलापना।
रागिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री। प्रत्येक राग की पाँच या छः रागिनियाँ मानी गई हैं।

रागी-संज्ञा पुं० [सं० रागिन्] [स्त्री० रागिनी] १ अनुरागी। प्रेमी। २. छः मात्रावाले छंदों का नाम।
वि० १. रँगा हुआ। २. लाल। सुर्ख। ३. विषय वासना में फँसा हुआ। विरागी का उलटा। ४. रँगनेवाला।
‡संज्ञा स्त्री० [सं० राज्ञी] रानी।

राघव-संज्ञा पुं० [सं०] १. रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। २. श्रीरामचन्द्र।

राचना०-क्रि० स० दे० "रचना"।
क्रि० अ० रचा जाना। बनना।
क्रि० अ० [सं० रंजन] १. रँगा जाना। रंजित होना। २. अनुरक्त होना। प्रेम करना। ३. लीन होना। मग्न होना। डूबना। ४ प्रसन्न होना। ५. शोभा देना। भला जान पड़ना। ६. सोच या चिंता में पड़ना।

राछ-संज्ञा पुं० [सं० रक्ष] १. कारीगरों का औज़ार। २. जुलाहों के करघे में एक औज़ार जिससे ताने का तागा ऊपर नीचे उठता और गिरता है। ३ बरात। जलूस।

राछस०†-संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।

राज-संज्ञा पुं० [सं० राज्य] १. हुकूमत। राज्य। शासन।
मुहा०—राज काज=राज्य का प्रबंध।
राज पर बैठना=राज सिंहासन पर बैठना।
राज रजना = १. राज्य करना। २. बहुत सुख से रहना।
यौ०—राजपाट = १. राज सिंहासन। २. शासन।
२. एक राजा द्वारा शासित देश। जनपद। राज्य। ३. पूरा अधिकार। खूब चलती। ४. अधिकार काल। समय। ५ देश।
संज्ञा पुं० [सं० राजन्] १ राजा। २. दे० "राजगीर"।

राज़-संज्ञा पुं० [फा०] रहस्य। भेद।

राजकर-संज्ञा पुं० [सं०] वह कर जो प्रजा से राजा लेता है। खिराज।

राजकीय वि० [सं०] राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला।

राजकुँअर०†-संज्ञा पुं० दे० "राजकुमार"।

राजकुमार-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजकुमारी] राजा का पुत्र।

राजकुल-संज्ञा पुं० दे० "राजवंश"।

राजगद्दी-संज्ञा स्त्री० [हिं० राजा+गद्दी] १. राजसिंहासन। २ राज्याभिषेक। राज्यारोहण। ३ राज्याधिकार।

राजगिरि-संज्ञा पुं० [सं०] १. मगध देश के एक पर्वत का नाम। २. दे० "राजगृह"।

राजगीर-संज्ञा पुं० [सं० राज+गृह] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। थवई।

राजगृह-संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा का महल। २. एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है। प्राचीन गिरिव्रज जहाँ मगध की राजधानी थी।

राजतरंगिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्हण-कृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत इतिहास।

राजतिलक-संज्ञा पुं० दे० "राज्याभिषेक"।

राजत्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा का भाव या कर्म। २ राजा का पद।

राजदंड-संज्ञा पुं० [सं०] वह दंड जो राजा की आज्ञा से दिया जाय।

राजदंत-संज्ञा पुं० [सं०] बीच का वह दाँत जो और दाँतों से बड़ा और चौड़ा होता है।

राजदूत-संज्ञा पुं० [सं०] वह पुरुष जो एक राज्य की ओर से किसी अन्य राज्य में किसी प्रकार का सँदेशा देकर भेजा जाता है।

राजद्रोह-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० राजद्रोही] राजा या राज्य के प्रति द्रोह। बगावत।

राजद्वार-संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा की ड्योढ़ी। २. न्यायालय।

राजधर्म-संज्ञा पुं० [सं०] राजा का कर्त्तव्य या धर्म।

राजधानी-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो।

राजना०-क्रि० अ० [सं० राजन] १ उपस्थित होना। रहना। २. शोभित होना।

राजनीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नीति जिसका अवलंबन करके राजा अपने राज्य की रक्षा और शासन दृढ़ करता है।

राजनीतिक-वि० [सं०] राजनीति संबंधी।

राजन्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. क्षत्रिय। २. राजा।

राजपंखी-संज्ञा पुं० दे० "राजहंस"।

राजपंथ -संज्ञा पुं० दे० "राजपथ"।

राजपथ-संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी सड़क।

राजपुत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा का पुत्र। राजकुमार। २. एक वर्णसंकर

राजपूत-संज्ञा पु० [सं० राजपुत्र] १. दे० "राजपुत्र"। २ राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।

राजबाहा-संज्ञा पु० [हिं० राज+बहना] वह बड़ी नहर जिससे अनेक छोटी छोटी नहरें निकाली जाती हैं।

राजभक्त-वि० [सं०] [संज्ञा राजभक्ति] जिसमें राजा या राज्य के प्रति भक्ति हो।

राजभक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा या राज्य के प्रति भक्ति या प्रेम।

राजभवन-संज्ञा पु० [सं०] राजा का महल।

राजभोग-संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का महीन धान।

राजमहल-संज्ञा पु० [हिं० राज+महल] १. राजा का महल। राजप्रासाद। २ एक पर्वत जो संथाल परगने के पास है।

राजमार्ग-संज्ञा पु० [सं०] चौड़ी सड़क।

राजयक्ष्मा-संज्ञा पु० [सं० राजयक्ष्मन्] यक्ष्मा। क्षय रोग। तपेदिक।

राजयोग-संज्ञा पु० [सं०] १. वह प्राचीन योग जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है। २ ग्रहों का ऐसा योग जिसके जन्मकुंडली में पड़ने से मनुष्य राजा होता है।

राजराजेश्वर-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० राज-राजेश्वरी] राजाओं का राजा। अधिराज।

राजरोग-संज्ञा पु० [हिं० राजा+रोग] १. वह रोग जो असाध्य हो। २. क्षय रोग।

राजर्षि-संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋषि जो राज-वंश या क्षत्रिय कुल का हो।

राजलक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजश्री। राजवैभव। २. राजा की शोभा।

राजवत-वि० [हिं० राज+वत] राजा के कर्म से युक्त।

राजवंश-संज्ञा पुं० [सं०] राजा का कुल या वंश। राजकुल।

राजवार-संज्ञा पुं० दे० "राजद्वार"।

राजश्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] राजलक्ष्मी। राजा का ऐश्वर्य।

राजस-वि० [सं०] [स्त्री० राजसी] रजोगुण से उत्पन्न। रजोगुणी।
संज्ञा पुं० आवेश। क्रोध।

राजसत्ता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजशक्ति। २ राज्य की सत्ता।

राजसभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दरबार। २. राजाओं की सभा।

राजसमाज-संज्ञा पु० [सं०] राजाओं का दरबार या समाज। राजमंडली।

राजसिंहासन-संज्ञा पु० [सं०] राजा के बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।

राजसिक-वि० दे० "राजस"।

राजसिरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "राजश्री"।

राजसी-वि० [हिं० राजा] राजा के योग्य, बहुमूल्य या भड़कीला।
वि० स्त्री० [सं०] जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो। रजोगुणमयी।

राजसूय-संज्ञा पु० [सं०] एक यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल ऐसे राजा को होता है, जो सम्राट् पद का अधिकारी हो।

राजस्थान-संज्ञा पु० दे० "राजपूताना"।

राजस्व-संज्ञा पु० दे० "राजकर"।

राजहंस-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० राजहंसी] एक प्रकार का हंस। सोना पक्षी।

राजा-संज्ञा पुं० [सं० राजन्] [स्त्री० राज्ञी, रानी] १. किसी देश या जाति का प्रधान शासक जो उस देश या जाति की, दूसरों के आक्रमण से, रक्षा करता है। बादशाह। अधिराज। प्रभु। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३ एक उपाधि जो अँगरेज़ी सरकार बड़े रईसों को प्रदान करती है।

राजाज्ञा-संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा की आज्ञा।

राजाधिराज-संज्ञा पु० [सं०] राजाओं का राजा। शाहंशाह। बड़ा बादशाह।

राजावर्त्त-संज्ञा पुं० [सं०] लाजवर्द नामक उप-रत्न।

राजि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। कतार। २. रेखा। लकीर। ३ राई।

राजिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राई। २ राजि। पंक्ति। ३. रेखा। लकीर।

राजित-वि० [सं०] १ फबता हुआ। शोभित। २ विराजता हुआ।

राजिव*-संज्ञा पु० [सं० राजीव] कमल।

राजी-संज्ञा स्त्री० [सं०] पंक्ति। श्रेणी।

राज़ी-वि० [अ०] १ कही हुई बात मानने को तैयार। सम्मत। २. नीरोग। चंगा। ३ खुश। प्रसन्न। ४. सुखी।
यौ०—राजी खुशी = सही सलामत।
†संज्ञा स्त्री० रजामंदी। अनुकूलता।

राज़ीनामा-संज्ञा पुं० [फा०] वह लेख

जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें।
राजीव–संज्ञा पुं० [सं०] कमल। पद्म।
राजीवगण–संज्ञा पुं० [सं०] १८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।
राजुक–संज्ञा पुं० [सं०] मौर्य काल का एक राजकर्मचारी या सूबेदार।
राजेंद्र, राजेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजेश्वरी] राजाओं का राजा। महाराज।
राज्ञी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रानी। राजमहिषी। २. सूर्य्य की पत्नी, संज्ञा।
राज्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा का काम। शासन। २. वह देश जिसमें एक राजा का शासन हो। बादशाहत।
राज्यतंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] राज्य की शासन-प्रणाली।
राज्यव्यवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्यनियम। नीति। कानून।
राज्याभिषेक–संज्ञा पुं० [सं०] १. राज-सिंहासन पर बैठने के समय या राजसूय यज्ञ में राजा का अभिषेक। २ राजगद्दी पर बैठने की रीति। राज्यारोहण।
राट्–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। बादशाह। २. श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार।
राठ–संज्ञा पुं० [सं० राष्ट्र] १. राज्य। २. राजा।
राठौर–संज्ञा पुं० [सं० राष्ट्रकूट] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश।
राड़–वि० [हिं० राढ़?] १. नीच। निकम्मा। २ कायर। भगोड़ा।
राढ़‡–संज्ञा स्त्री० [सं० राटि] १ रार। झगड़ा। २. निकम्मा। ३. कायर।
राढ़ि–संज्ञा पुं० [सं०] बंग के उत्तरी भाग का नाम।
राणा–संज्ञा पुं० [सं० राट्] राजा।
रात–संज्ञा स्त्री० [सं० रात्रि] संध्या से प्रातःकाल तक का समय। रजनी। निशा।
मुहा०—रात दिन = सदा। हमेशा।
रातड़ी, रातरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "रात"।
रातना–क्रि० अ० [सं० रक्त] १. लाल रंग से रँग जाना। २ रँगा जाना। ३ अनुरक्त होना। आशिक होना।
राता–वि० [सं० रक्त] [स्त्री० राती] १. लाल। सुर्ख। २. रँगा हुआ।
रातिचर–संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।
रातिब–संज्ञा पुं० [अ०] पशुओं का भोजन।
रातुल–वि० [सं० रक्तालु] सुर्ख। लाल।
रात्रि–संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। निशा।
रात्रिचारी–संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस। वि० रात के समय विचरनेवाला।
राधन–संज्ञा पुं० [सं०] १. साधने की क्रिया। साधना। २. मिलना। प्राप्ति। ३ संतोष। तुष्टि। ४. साधन।
राधना‡–क्रि० स० [सं० आराधना] १. आराधना करना। पूजा करना। २. सिद्ध करना। पूरा करना। ३. काम निकालना।
राधा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वैशाख की पूर्णिमा। २. प्रीति। ३ वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी। ४. एक वर्णवृत्त। ५ बिजली।
राधारमण–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
राधावल्लभ–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
राधावल्लभी–संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय।
राधिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृषभानु गोप की कन्या, राधा। २ बाइस मात्राओं का एक छंद।
रान–संज्ञा स्त्री० [फा०] जंघा। जाँघ।
राना–संज्ञा पुं० दे० "राणा"।
‡ क्रि० अ० [हिं० राचना] अनुरक्त होना।
रानी–संज्ञा स्त्री० [सं० राज्ञी] १. राजा की स्त्री। २. स्वामिनी। मालकिन।
रानी काजर–संज्ञा पुं० [हिं० रानी = काजल] एक प्रकार का धान।
राब–संज्ञा स्त्री० [सं० द्रावक] औटाकर खूब गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।
राबड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "रबड़ी"।
राम–संज्ञा पुं० [सं०] १. परशुराम। २. बलराम। बलदेव। ३. सूर्य्यवंशी महाराज दशरथ के पुत्र जो दस अवतारों में से एक माने जाते हैं। रामचंद्र।
मुहा०—राम शरण होना = १. साधु होना। विरक्त होना। २. मर जाना। राम राम करना = १. अभिवादन करना। प्रणाम करना। २. भगवान् का नाम जपना। राम राम करके = बड़ी कठिनता से। राम राम हो जाना = मर जाना।
४ तीन की संख्या। ५. ईश्वर। भगवान्। ६. एक प्रकार का मात्रिक छंद।

रामगिरि–संज्ञा पुं० दे० "रामटेक"।

रामगीता–संज्ञा पुं० [सं०] ३६ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

रामचंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं।

रामजना–संज्ञा पुं० [हिं० राम+जना=उत्पन्न] [स्त्री० रामजनी] १. एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या वृत्ति करती हैं। २. वर्णसंकर।

रामटेक–संज्ञा पुं० [हिं०राम+टेक=पहाड़ी] नागपुर जिले की एक पहाड़ी।

रामतरोई–संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।

रामता–संज्ञा स्त्री० [सं०] राम का गुण। रामपन।

रामतारक–संज्ञा पुं० [सं०] रामजी का मंत्र जो इस प्रकार है —रां रामायनमः।

रामति°†–संज्ञा स्त्री० [हिं० रमत] भिक्षा के लिये इधर-उधर घूमना।

रामदल–संज्ञा पुं० [सं०] १. रामचंद्र जी की बंदरोंवाली सेना। २. कोई बड़ी और प्रबल सेना जिसका मुकाबला करना कठिन हो।

रामदाना–संज्ञा पुं० [सं० राम+हिं० दाना] मरसे या चौलाई की जाति का एक पौधा।

रामदास–संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान्। २. दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे।

रामदूत–संज्ञा पुं० [सं०] हनुमान् जी।

रामधाम–संज्ञा पुं० [सं०] साकेत लोक।

राम नवमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] चैत्र सुदी नौमी जिस दिन राम जी का जन्म हुआ था।

रामना°‡–क्रि० अ० दे० "रमना"।

रामनामी–संज्ञा पुं० [हिं० राम+नाम+ई (प्रत्य०)] १. वह कपड़ा जिस पर "राम राम" छपा रहता है। २. एक प्रकार का हार।

रामबाँस–संज्ञा पुं० [हिं० राम+बाँस] १. एक प्रकार का मोटा बाँस। २. केतकी या केवड़े की जाति का एक पौधा जिसके पत्तों के रेशे से रस्से बनते हैं।

रामरज–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक लगाते हैं।

रामरस–संज्ञा पुं० [हिं० राम+रस] नमक।

रामराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत सुखदायक शासन।

रामलीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राम के चरित्रों का अभिनय। २. एक मात्रिक छंद।

रामवाण–वि० [सं०] जो तुरंत उपयोगी सिद्ध हो। तुरत प्रभाव दिखानेवाला। (औषध)

रामशर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नरसल या सरकंडा।

रामसनेही–संज्ञा पुं० [हिं० राम+स्नेह] वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।
वि० राम से स्नेह रखनेवाला। रामभक्त।

रामसुंदर–संज्ञा स्त्री० [हिं० राम+सुंदर] एक प्रकार की नाव।

रामसेतु–संज्ञा पुं० [सं०] रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह।

रामा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदर स्त्री। २ नदी। ३. लक्ष्मी। ४. सीता। ५ रुक्मिणी। ६ राधा। ७. इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के मेल से बना हुआ एक उपजाति वृत्त। ८. आर्या छंद का १७वाँ भेद। ९. आठ अक्षरों का एक वृत्त।

रामानंद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य्य जिनका चलाया हुआ रामावत नामक संप्रदाय अब तक प्रचलित है। ये विक्रमीय १४वीं शताब्दी में हुए थे।

रामानंदी–वि० [हिं० रामानंद+ई (प्रत्य०)] रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी।

रामानुज–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीवैष्णव संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य्य। वेदान्त में इनका सिद्धांत विशिष्टाद्वैत कहलाता है।

रामायण–संज्ञा पुं० [सं०] रामचंद्र के चरित्र से संबंध रखनेवाला ग्रंथ। संस्कृत में रामायण नाम के बहुत से ग्रंथ हैं, जिनमें से वाल्मीकि कृत रामायण सब से प्राचीन और अधिक प्रसिद्ध है। यह आदि काव्य है।

रामायणी–वि० [सं०रामायणीय] रामायण का। संज्ञा पुं० [सं० रामायण+ई (प्रत्य०)] वह जो रामायण की कथा कहता हो।

रामावत–संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णव आचार्य्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय।

रामेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण भारत के समुद्र तट का एक शिवलिंग।

राय–संज्ञा पुं० [सं० राजा] १. राजा। २. सरदार। सामंत। ३. भाट। बंदीजन। संज्ञा स्त्री० [फा०] सम्मति। मत। सलाह

रायज-वि० [अ०] जिसका रवाज हो। प्रचलित। चलनसार।

रायता-संज्ञा पुं० [सं० राजिताक्त] दही में पड़ा हुआ नमकीन साग या बुँदिया आदि।

रायभोग-संज्ञा पुं० दे० "राजभोग"।

रायरासि#-संज्ञा स्त्री० [सं० राजराशि] राजा का कोष। शाही खजाना।

रायसा-संज्ञा पुं० दे० "रासो"।

रार-संज्ञा पुं० [सं० राटि] झगड़ा। टंटा। हुज्जत। तकरार।

राल-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का बड़ा पेड़। २. इसका निर्यास जो "राळ" नाम से प्रसिद्ध है। धूना। धूप।

संज्ञा स्त्री० [सं० लाला] १. पतला लसदार थूक। २. लार।

मुहा०-राल गिरना, चूना या टपकना = किसी पदार्थ को देखकर उसे पाने की बहुत इच्छा होना।

राव-संज्ञा पुं० दे० "राय"।

रावटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० रावट] १. कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का छोटा घर या डेरा। छोलदारी। २. कोई छोटा घर। ३. बारहदरी।

रावण-संज्ञा पुं० [सं०] लंका का प्रसिद्ध राजा जो राक्षसों का नायक था और जिसे युद्ध में भगवान् रामचंद्र ने मारा था। दशकंधर। दशानन।

रावत-संज्ञा पुं० [सं० राजपुत्र] १. छोटा राजा। २. शूर। वीर। बहादुर। ३. सामंत। सरदार।

रावनगढ़#-संज्ञा पुं० दे० "लंका"।

रावना#-क्रि० स० [सं० रावण] रुलाना।

रावर#-संज्ञा पुं० [सं० राजपुर] रनिवास। राजमहल। अंतःपुर।

वि० [हिं० राउर] [स्त्री० राउरी] आपका।

रावल-संज्ञा पुं० [सं० राजपुर] अंतःपुर। राजमहल। रनिवास।

संज्ञा पुं० [पा० राउल] [स्त्री० रावलि, रावली] १. राजा। २. राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि। ३. प्रधान। सरदार।

राशि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ढेर। पुंज। २. किसी का उत्तराधिकार। जानशीनी। ३. क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारा-समूह जो बारह हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन।

राशिचक्र-संज्ञा पुं० [सं०] मेष, वृष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मंडल। भचक्र।

राशिनाम-संज्ञा पुं० [सं० राशिनामन्] किसी व्यक्ति का वह नाम जो उसके जन्म समय की राशि के अनुसार और पुकारने के नाम से भिन्न होता है।

राष्ट्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. राज्य। २. देश। मुल्क। ३. प्रजा। ४. एक देश या राज्य में बसनेवाला जन-समुदाय।

राष्ट्रकूट-संज्ञा पुं० दे० "राठौर"।

राष्ट्रतंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का शासन करने की प्रणाली।

राष्ट्रपति-संज्ञा पुं०[सं०] आधुनिक प्रजातंत्र शासन-प्रणाली में वह सर्व-प्रधान शासक जो शासन करने के लिये चुना जाता है।

राष्ट्रीय-वि० [सं०] राष्ट्र-संबंधी। राष्ट्र का। विशेषतः अपने राष्ट्र या देश का।

रास-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोपों की प्राचीन काल की एक क्रीडा जिसमें वे सब घेरा बाँधकर नाचते थे। २. एक प्रकार का नाटक जिसमें श्रीकृष्ण की इस क्रीड़ा का अभिनय होता है।

संज्ञा स्त्री० [अ०] लगाम। बागडोर।

संज्ञा स्त्री० [सं० राशि] १. ढेर। समूह। २. दे० "राशि"। ३. एक प्रकार का छंद। ४. जोड़। ५. चौपायों का झुंड। ६. गोद। दत्तक। ७. सूद। ब्याज।

वि० [फा० रास्त] अनुकूल। ठीक।

रासक-संज्ञा पुं० [सं०]हास्य रस के नाटक का एक भेद जो केवल एक अंक का होता है।

रासधारी-संज्ञा पुं० [सं० रासधारिन्] वह व्यक्ति या समाज जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है।

रासना-संज्ञा पुं० दे० "रास्ना"।

रासभ-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० रासभी] १. गर्दभ। गधा। २. अश्वतर। खच्चर।

रासमंडल-संज्ञा पुं० [सं०] १. रास क्रीड़ा करनेवालों का समूह या मंडली। २. रासधारियों का अभिनय।

रासमंडली-संज्ञा स्त्री० [सं०] रासधारियों का समाज या टोली।

रासलीला-संज्ञा स्त्री० [सं०] रासधारियों का कृष्णलीला संबंधी अभिनय।

रासायनिक-वि० [सं०] १. रसायन शास्त्र-संबंधी। २. रसायन शास्त्र का ज्ञाता।

रुँदवाना-क्रि० स० [हिं० रौंदना का प्रेर०] पैरों से कुचलवाना। रौंदवाना।

रुंधती*-संज्ञा स्त्री० दे० "अरुंधती"।

रुँधना-क्रि० अ० [सं० रुद्ध] १. मार्ग न मिलने के कारण अटकना। रुकना। २. उलझना। फँस जाना। ३. किसी काम में लगना। ४. घेरा जाना।

रु -अव्य० [हिं० अरु] और।

रुआँ†-संज्ञा पुं० [सं० रोम] रोम। रोआँ।

रुआना*†-क्रि० स० दे० "रुलाना"।

रुआब-संज्ञा पुं० दे० "रोब"।

रुकना-क्रि० अ० [हिं० रोक] १. मार्ग आदि न मिलने के कारण ठहर जाना। अवरुद्ध होना। अटकना। २. अपनी इच्छा से ठहर जाना। ३. किसी कार्य्य का बीच में ही बंद हो जाना। ४. किसी चलते क्रम का बंद होना।

रुकमंगद-संज्ञा पुं० दे० "रुक्मांगद"।

रुकमिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "रुक्मिणी"।

रुकवाना-क्रि० स० [हिं० रुकना का प्रेर०] रोकने का काम दूसरे से कराना।

रुकाव- संज्ञा पुं० दे० "रुकावट"।

रुकुम*-संज्ञा पुं० दे० "रुक्म"।

रुकुमी*-संज्ञा पुं० दे० "रुक्मी"।

रुक्का-संज्ञा पुं० [अ० रुक्अः] छोटा पत्र या चिट्ठी। पुरज़ा। परचा।

रुक्ख*†-संज्ञा पुं० [सं० रुक्ष] पेड़। वृक्ष।

रुक्म-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ण। सोना। २. धत्तूर। धतूरा। ३. रुक्मिणी के एक भाई का नाम।

रुक्मवती-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त। रूपवती। चंपकमाला।

रुक्मसेन-संज्ञा पुं० [सं०] रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मांगद-संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा।

रुक्मिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की बड़ी पटरानी जो विदर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थी।

रुक्मी-संज्ञा पुं० [सं० रुक्मिन्] राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र और रुक्मिणी का भाई।

रुक्ष-वि० [सं० रूक्ष] १. जिसमें चिकनाहट न हो। २. ऊबड़-खाबड़। खुरदुरा। ३. नीरस। ४. सूखा। शुष्क।

रुखता-संज्ञा स्त्री० [सं० रुक्षता] रुखाई।

रुख़-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कपोल। गाल। २. मुख। मुँह। ३. आकृति। चेष्टा। ४. मन की इच्छा जो मुख की आकृति से प्रकट हो। ५. कृपादृष्टि। मेहरबानी की नज़र। ६. सामने या आगे का भाग। ७. शतरंज का एक मोहरा।

क्रि० वि० १ तरफ़। ओर। २. सामने।

रुख़सत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आज्ञा। परवानगी। (क्व०) २. रवानगी। कूच। प्रस्थान। ३. काम से छुट्टी। अवकाश।

वि० जो कहीं से चल पड़ा हो।

रुख़सती-संज्ञा स्त्री० [अ० रुख़सत] बिदाई, विशेषतः दुलहिन की बिदाई।

रुखाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० रूखा + आई (प्रत्य०)] १ रूखे होने की क्रिया या भाव। रूखापन। रुखावट। २ शुष्कता। ख़ुश्की। ३. शील का त्याग। बेमुरौवती।

रुखाना†-क्रि० अ० [हिं० रूखा] १. रूखा होना। २. नीरस होना। सूखना।

रुखानी-संज्ञा स्त्री० [सं० रोक + खनित्र] बढ़इयों का लोहे का एक औज़ार।

रुखिता*-संज्ञा स्त्री० [सं० रुषिता] मानवती नायिका।

रुखौंहाँ-वि० [हिं० रूखा + औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० रुखौंहीं] रुखाई लिए हुए। रूखा सा।

रुग्ण-वि० [सं०] रोगी। बीमार।

रुच†-संज्ञा स्त्री० दे० "रुचि"।

रुचना-क्रि० अ० [सं० रुच + ना (प्रत्य०)] रुचि के अनुकूल होना। भला होना।

मुहा० -रुच रुच = बहुत रुचि से।

रुचि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रवृत्ति। तबीयत। २. अनुराग। प्रेम। चाह। ३. किरण। ४. शोभा। सुंदरता। ५. खाने की इच्छा। भूख। ६. स्वाद। जायका। ७ एक अप्सरा का नाम।

वि० फबता हुआ। योग्य। मुनासिब।

रुचिकर-वि० [सं०] अच्छा लगनेवाला। रुचि उत्पन्न करनेवाला। दिलपसंद।

रुचिकारक-वि० दे० "रुचिकर"।

रुचिर-वि० [सं०] १. सुंदर। २. मीठा।

रुचिरवृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अस्त्र का एक प्रकार का संहार।

रुचिरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का छंद। २. एक वृत्त।

रुचिराई—संज्ञा स्त्री० [सं० रुचिर+आई (प्रत्य०)] सुंदरता। मनोहरता।

रुचिवर्द्धक—वि० [सं०] १. रुचि उत्पन्न करनेवाला। २ भूख बढ़ानेवाला।

रुच्छ—वि० दे० "रूखा"।

संज्ञा पुं० दे० "रूख"।

रुज—संज्ञा पुं० [सं०] १ भग। भाँग। २. वेदना। कष्ट। ३. घत। घाव।

रुजाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] रुजों का समूह।

रुजी—वि० [सं० रुज्] अस्वस्थ। बीमार।

रुजू—वि० [अ० रुजूअ=प्रवृत्त] जिसकी तबीयत किसी ओर लगी हो। प्रवृत्त।

रुझना—क्रि० अ० [सं० रुद्ध] घाव आदि का भरना या पूजना।

क्रि० अ० दे० "उलझना"। तुल्य।

रुठ—संज्ञा पुं० [सं० रुष्ट] क्रोध। आकार।

रुठाना—क्रि० स० [सं० रुष्ट रूपा।

रुणित—वि० [सं०] म . मूर्त्ति। प्रतिकृति। हुआ।

रुत—संज्ञा स्त्री० दे० ा अभिनय किया जाता

संज्ञा पुं० [सं०] इसके प्रधान दस भेद

कलरव। २. ,, भाण, व्यायोग, समव-

रुतबा—संज्ञा पुं० ईहामृग, अंक, वीथी और

२. इज्जत। क अर्थालंकार जिसमें उपमेय

रुदन—संज्ञा पुं साधर्म्य का आरोप करके

रुद्राच्छ—। उपमान के रूप से या अभेद-

रुदित—वि० जाता है। ४ रुपया।

रुद्ध—वि० ज्ञा पुं० [सं० रूप+करण] एक घोड़ा।

आवृत्त।

जिसकी रूपोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह

यौ०—क्ति जिसमें केवल उपमान का

बोलने करके उपमेयों का अर्थ समझाते हैं।

रुद्र—संज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्रह अक्षरों

देवता र्ण वृत्ति।

ग्यारह ग—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गर्विता

४. रौद्र जिसे अपने रूप का अभिमान हो।

वि० भयंकर—संज्ञा स्त्री० [सं०] ३२ वर्णों

रुद्रक। प्रकार का दंडक छंद।

रुद्रगण—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार

बहुत। २. एक प्रकार का धान।

रुद्रज—वि० [हिं० रूपमान] रूपवती।

रूप—वि० [हिं० रूप+मय] [स्त्री० रूप-

रुद्रट—प्रति सुंदर। बहुत खूबसूरत।

आचा—वि० दे० "रूपवान्"।

लंकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० रूप+माला]

रुद्रतेज—संज्ञा पुं० [सं० रुद्र छंद।

रुद्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] शि नौ दीर्घ वर्णों

रुद्रपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०

रुद्रयामल—संज्ञा पुं० [स रूप+रूपक] रूप-

एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें रूपक' भेद का

का संवाद है।

रुद्रलोक—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्त्री० रूपवती]

शिव का निवास माना जा सुंदर।

रुद्रवंती—संज्ञा स्त्री० [सं० सं०] १. गोरी नामक

वनौषधि जो विशे माला वृत्ति का एक नाम।

रुद्रविंशति— दरी। खूबसूरत। (स्त्री)

सा वान्, रूपवान—वि० [सं० रूपवत्] [स्त्री० रूपवती] सुंदर। रूपवाला। खूबसूरत।

रूपा—संज्ञा पुं० [सं० रूप्य] १. चाँदी। २. घटिया चाँदी। ३. स्वच्छ सफेद रंग का घोड़ा। नुकरा।

रूपित—संज्ञा पुं० [सं०] वह उपन्यास, जिसमें ज्ञान, वैराग्यादि पात्र हों।

रूपी—वि० [सं० रूपिन्] [स्त्री० रूपिणी] १. रूप-विशिष्ट। रूपवाला। रूपधारी। २. तुल्य। सदृश।

रूपोश—वि० [फा०] [संज्ञा रूपोशी] १. छिपा हुआ। गुप्त। २ भागा हुआ। फरार।

रूप्यक—संज्ञा पुं० [सं०] रुपया।

रूबकार—संज्ञा पुं० [फा०] १ सामने उपस्थित करने का भाव। पेशी। २. अदालत का हुक्म। ३. आज्ञापत्र।

रू बरू—क्रि० वि० [फा०] सम्मुख। सामने।

रूम—संज्ञा पुं० [फा०] टर्की या तुर्की देश का एक नाम।

रूमना—क्रि० स० [हिं० भूमना का अनु०] झूमना। झूलना।

रूमाल—संज्ञा पुं० [फा०] १. कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जिससे हाथ-मुँह पोंछते हैं। २ चौकोना शाल या दुपट्टा।

रूमाली—संज्ञा स्त्री० दे० "रुमाली"।

रूमी—वि० [फा०] १. रूम देश संबंधी। रूम का। २. रूम देश का निवासी।

रूरना—क्रि० अ० [सं० रोरवण] चिल्लाना।

रूरा—वि० [सं० रूढ=प्रशस्त] [स्त्री० रूरी] १ श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। २. सुंदर। ३ बहुत बड़ा।

रूष—संज्ञा पुं० दे० "रूख"।

रूसना—क्रि० अ० दे० "रूठना"।

रूसा–संज्ञा पु० [सं० रूपक] अडूसा। अरूसा।
संज्ञा पु० [सं० रोहिष] एक सुगंधित घास जिसका तेल निकाला जाता है।

रूसी–वि० [हिं० रूस] १. रूस देश का निवासी। २ रूस देश का।
संज्ञा स्त्री० रूस देश की भाषा।
संज्ञा स्त्री० [देश०] सिर के चमड़े पर जमा हुआ भूसी के समान छिलका।

रूह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आत्मा। जीवात्मा। २. सत्त। सार। ३. इत्र का एक भेद।

रूहना:–क्रि० अ० [सं० रोहण] चढ़ना। उमड़ना।
क्रि० अ० [हिं० रूँधना] आवेष्टित करना। घेरना।

रेंकना–क्रि० अ० [अनु०] १. गदहे का बोलना। २. बुरे ढंग से गाना।

रेंगना–क्रि० अ० [सं० रिंगण] १. च्यूँटी आदि कीड़ों का चलना। २ धीरे धीरे चलना।

रेंट–संज्ञा पु० [देश०] नाक का मल।

रेंड–संज्ञा पु० [सं० एरंड] एक पौधा जिसके बीजों का तेल दस्तावर होता है।

रेंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रेंड़] रेंड़ के बीज।

रे–अव्य० [सं०] एक तुच्छ संबोधन शब्द।
संज्ञा पुं० [सं० ऋषभ] ऋषभ स्वर।

रेख–संज्ञा स्त्री० [सं० रेखा] १. लकीर।
मुहा०–रेख काढ़ना, खींचना या खाँचना = १. लकीर बनाना। २. (कहने में) जोर देना। प्रतिज्ञा करना।
२ चिह्न। निशान।
यौ०—रूप रेख = स्वरूप। सूरत।
३ गिनती। गणना। शुमार। ४ नई निकलती हुई मूछें।
मुहा०—रेख भींजना या भीनना = निकलती हुई मूछों का दिखाई पड़ना।

रेखता–संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार की गजल।

रेखना:–क्रि० स० [सं० रेखन या लेखन] १. रेखा खींचना। लकीर खींचना। २ खरोंचना। खरोंच डालना।

रेखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूत के आकार का लंबा चिह्न। डाँड़ी। लकीर। २. किसी वस्तु का सूचक चिह्न।
यौ०—कर्मरेखा = भाग्य का लेख।
३ गणना। शुमार। गिनती। ४ आकृति। आकार। सूरत। ५. हथेली, तलवे आदि में पड़ी हुई लकीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का निर्णय होता है।

रेखागणित–संज्ञा पु० [सं०] गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धांत निर्द्धारित किए जाते हैं।

रेखित–वि० [सं० रेखा] १ जिस पर रेखा या लकीर पड़ी हो। २ फटा हुआ।

रेगिस्तान–संज्ञा पु०[फा०] बालू का मैदान। मरु देश।

रेचक–वि० [सं०] जिसके खाने से दस्त आवे। दस्तावर।
संज्ञा पु० प्राणायाम की तीसरी क्रिया, जिसमें खींचे हुए साँस को विधिपूर्वक बाहर निकाला जाता है।

रेचन–संज्ञा पु० [सं०] १. दस्त लाना। कोष्ठशुद्धि करना। २ जुलाब।

रेचना:–क्रि० स० [सं० रेचन] वायु या मल को बाहर निकालना।

रेजा–संज्ञा पु० [फा०] १. बहुत छोटा टुकड़ा। सूक्ष्म खंड। २. नग। थान। अदद।

रेणु–संज्ञा स्त्री०[सं०] १. धूल। २. बालू। ३ अत्यंत लघु परिमाण। कणिका।

रेणुका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बालू। रेत। २. रज। धूल। ३ पृथ्वी। ४. परशुराम की माता का नाम।

रेत–संज्ञा पु० [सं० रेतस्] १. वीर्य्य। शुक्र। २. पारा। ३. जल।
संज्ञा स्त्री० [सं० रेतजा] १. बालू। २. बलुआ मैदान। मरुभूमि।

रेतना–क्रि० स० [हिं० रेत] १. रेती से रगड़ कर किसी वस्तु में से छोटे छोटे कण गिराना। २. औजार से रगड़कर काटना।

रेता–संज्ञा पु० [हिं० रेत] १. बालू। २ मिट्टी। ३ बालू का मैदान।

रेती–संज्ञा स्त्री० [हिं० रेतना] एक औजार जिसे किसी वस्तु पर रगड़ने से उसके महीन कण छूटकर गिरते हैं।
संज्ञा स्त्री० [हिं० रेत + ई० (प्रत्य०)] नदी या समुद्र के किनारे पड़ी हुई बलुई जमीन बलुआ किनारा।

रेतीला–वि०[हिं० रेत + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रेतीली] बालूवाला। बलुआ।

रेनु –संज्ञा पु० दे० "रेणु"।

रेफ–संज्ञा पु० [सं०] १. हलंत रकार का व

रूप जो अन्य अक्षर के पहले आने पर उसके मस्तक पर रहता है। जैसे, सर्प, दर्प, हर्ष में। २. रकार (र)।

रेल-संज्ञा स्त्री० [अं०] भाप के ज़ोर से चलनेवाली गाड़ी। रेलगाड़ी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० रेलना] १. बहाव। धारा। २. आधिक्य। भरमार।

रेलठेल-संज्ञा स्त्री० दे० "रेलपेल"।

रेलना-क्रि० स० [देश०] १. आगे की ओर ढकेलना। धक्का देना। २. अधिक भोजन करना।
क्रि० अ० ठसाठस भरा होना।

रेलपेल-संज्ञा स्त्री० [हिं० रेलना + पेलना] १. भारी भीड़। २. भरमार। अधिकता।

रेला-संज्ञा पुं० [देश०] १. जल का प्रवाह। बहाव। तोड़। २. समूह में चढ़ाई। धावा। दौड़। ३. धक्कमधक्का। ४. अधिकता। बहुतायत।

रेवंद-संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक पहाड़ी पेड़ जिसकी जड़ और लकड़ी रेवंद चीनी के नाम से बिकती और औषध के काम में आती है।

रेवड़-संज्ञा पुं० [देश०] भेड़-बकरी का झुंड। लेंहड़ा। गल्ला।

रेवड़ी-संज्ञा स्त्री० [देश०] तिल और चीनी की बनी एक प्रसिद्ध मिठाई।

रेवती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताइसवाँ नक्षत्र जो ३२ तारों से मिलकर बना है। २. गाय। ३. दुर्गा। ४. बलराम की पत्नी जो राजा रेवत की कन्या थीं।

रेवतीरमण-संज्ञा पुं० [सं०] बलराम।

रेवा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नर्मदा नदी। २. काम की पत्नी रति। ३. दुर्गा। ४. रीवाँ राज्य। बघेलखंड।

रेशम-संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का महीन चमकीला और दृढ़ तंतु जिससे कपड़े बुने जाते हैं। यह तंतु कोश में रहनेवाले एक प्रकार के कीड़े तैयार करते हैं। कौशेय।

रेशमी-वि० [फ़ा०] रेशम का बना हुआ।

रेशा-संज्ञा पुं० [फ़ा०] तंतु या महीन सूत जो पौधों की छालों आदि से निकलता है।

रेह-संज्ञा स्त्री० [?] खार मिली हुई वह मिट्टी जो ऊसर मैदान में पाई जाती है।

रेहन-संज्ञा पुं० [फ़ा०] महाजन के पास माल या जायदाद इस शर्त पर रखना कि जब वह रुपया पा जाय, तब माल या जायदाद वापस कर दे। बंधक। गिरवी।

रेहनदार-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो।

रेहननामा-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह कागज़ जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों।

रेहल-संज्ञा स्त्री० दे० "रिहल"।

रैअति-संज्ञा स्त्री० दे० "रैयत"।

रैतुआ-संज्ञा पुं० दे० "रायता"।

रैदास-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध चमार भक्त जो रामानंद का शिष्य और कबीर का समकालीन था। २. चमार।

रैन, रैनि-संज्ञा स्त्री० [सं० रजनि] रात्रि।

रैनिचर-संज्ञा पुं० [सं० रजनिचर] राक्षस

रैयत-संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया

रैयाराव-संज्ञा पुं० [हिं० राजा + राव] छोटा राजा।

रैवतक-संज्ञा पुं०[सं०] गुजरात का एक पर्वत जो अब गिरनार कहलाता है।

रोंगटा-संज्ञा पुं० [सं० रोमक] सारे शरीर पर के बाल।
मुहा०-रोंगटे खड़े होना = किसी भयानक कार्य को देखकर शरीर में बहुत क्षोभ उत्पन्न होना।

रोंगटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० रोना] खेल में बुरा मानना या बेईमानी करना।

रोंवं-संज्ञा पुं० [सं० रोम] रोआँ। लोम

रोआँ-संज्ञा पुं० दे० "रोयाँ"।

रोआब-संज्ञा पुं०[अ० रोअब] रोब। आतंक

रोउँ-संज्ञा पुं० दे० "रोवँ"।

रोक-संज्ञा स्त्री० [सं० रोधक] १. गति में बाधा। अटकाव। छेंक। अवरोध २. मनाही। निषेध। ३ काम में बाधा ४ रोकनेवाली वस्तु।
संज्ञा पुं० दे० "रोकड़"।

रोक-टोक-संज्ञा स्त्री० [हिं० रोकना + टोकना] १. बाधा। प्रतिबंध। २. मनाही। निषेध

रोकड़-संज्ञा स्त्री० [सं० रोक = नक़द] १ नगद रुपया पैसा आदि। २. जमा। धन। पूँजी।

रोकड़िया-संज्ञा पुं० [हिं० रोकड़] खज़ानची।

रोकना-क्रि० स० [हिं० रोक] १ चलने या बढ़ने न देना। २. कहीं जाने से मना करना। ३ किसी चली आती हुई बात को बंद करना। ४. छेंकना। ५ अड़चन डालना। बाधा डालना। ६. ऊपर लेना ओढ़ना। ७. वश में रखना।

रोख़†‡–संज्ञा पुं० दे० "रोष"।

रोग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रोगी, रुग्ण] व्याधि। मर्ज़। बीमारी।

रोगदई, रोगदैया–संज्ञा स्त्री० [हिं० रोना ?] १. बेईमानी। २. अन्याय। (लड़के)

रोग़न–संज्ञा पुं० [फा० रोग़न] १. तेल। चिकनाई। २. वह पतला लेप जिसे किसी वस्तु पर पोतने से चमक आवे। पालिश। वारनिश। ३. वह मसाला जिसे मिट्टी के बरतनों आदि पर चढ़ाते हैं।

रोग़नी–वि० [फा०] रोग़न किया हुआ।

रोगिया–संज्ञा पुं० दे० "रोगी"।

रोगी–वि० [सं० रोगिन्] [स्त्री० रोगिनी] जो स्वस्थ न हो। व्याधिग्रस्त। बीमार।

रोचक–वि० [सं०] [संज्ञा रोचकता] १. रुचिकारक। अच्छा लगनेवाला। प्रिय। २. मनोरंजक। दिलचस्प।

रोचन–वि० [सं०] १. अच्छा लगनेवाला। रोचक। २. शोभा देनेवाला। ३. लाल। संज्ञा पुं० १. काला सेमर। प्याज। २. स्वारोचिष मन्वंतर के इंद्र। ३. कामदेव के पाँच वाणों में से एक। ४. रोली।

रोचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रक्त-कमल। २. गोरोचन। ३ वसुदेव की स्त्री।

रोचि–संज्ञा स्त्री [सं० रोचिस्] १. प्रभा। दीप्ति। २. प्रकट होती हुई शोभा। ३ किरण। रश्मि।

रोचित–वि० [सं० रोचना] शोभित।

रोज़ः–संज्ञा पुं० [सं० रोदन] रोना। रुदन।

रोज़–संज्ञा पुं० [फा०] दिन। दिवस। अव्य० प्रति दिन। नित्य।

रोज़गार–संज्ञा पुं० [फा०] १ जीविका या धन संचय के लिये हाथ में लिया हुआ काम। व्यवसाय। धंधा। पेशा। कारबार। २. व्यापार। तिजारत।

रोज़गारी–संज्ञा पुं० [फा०] व्यापारी।

रोज़नामचा–संज्ञा पुं० [फा०] वह किताब जिस पर रोज़ का किया हुआ काम लिखा जाता है।

रोज़मर्रा–अव्य० [फा०] प्रति दिन। नित्य। संज्ञा पुं० नित्य के व्यवहार में आनेवाली भाषा। बोलचाल। चलती बोली।

रोज़ा–संज्ञा पुं०[फा०] १. व्रत। उपवास। २. वह उपवास जो मुसलमान रमजान के महीने में करते हैं।

रोज़ी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नित्य का भोजन। २. जीवन निर्वाह का अवलंब। जीविका।

रोझ–संज्ञा स्त्री० [देश०] नील गाय।

रोट–संज्ञा पुं० [हिं० रोटी] १ बहुत मोटी रोटी। लिट्ट। २ मीठी मोटी रोटी।

रोटा†–वि० [हिं० रोटी] पिसा हुआ।

रोटिहा†–संज्ञा पुं० [हिं० रोटी + हा(प्रत्य०)] केवल भोजन पर रहनेवाला चाकर।

रोटी–संज्ञा स्त्री० [?] १ गुँधे हुए आटे की आँच पर सेंकी हुई लोई या टिकिया। चपाती। फुलका। २ भोजन। रसोई।

मुहा०—रोटी कपड़ा = भोजन वस्त्र। जीवन-निर्वाह की सामग्री। किसी बात की रोटी खाना = किसी बात से जीविका कमाना। किसी के यहाँ रोटियाँ तोड़ना = किसी के घर पड़ा रहकर पेट पालना। रोटी दाल चलना = जीवन निर्वाह होना।

रोटीफल–संज्ञा पुं० [हिं० रोटी + फल] एक वृक्ष का फल जो खाने में अच्छा होता है।

रोड़ा–संज्ञा पुं० [सं० लोष्ठ] ईंट या पत्थर का बड़ा ढेला। बड़ा कंकड़।

मुहा०—रोड़ा अटकाना या डालना = विघ्न या बाधा डालना।

रोदन–संज्ञा पुं० [सं०] क्रंदन। रोना।

रोदसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वर्ग। २. भूमि।

रोदा–संज्ञा पुं० [सं० रोध] कमान की डोरी। चिल्ला।

रोधन–संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। रुकावट। अवरोध। २. दमन।

रोधना*–क्रि० स० [सं० रोधन] रोकना।

रोना–क्रि० अ० [सं० रोदन] १. चिल्लाना और आँसू बहाना। रुदन करना।

मुहा०—रोना पीटना = बहुत विलाप करना। रो रोकर = १. ज्यों त्यों करके। कठिनता से। २. बहुत धीरे धीरे। रोना गाना = विनती करना। गिड़गिड़ाना।

२. बुरा मानना। चिढ़ना। ३. दु:ख करना। संज्ञा पुं० दु:ख। रंज। खेद।

वि० [स्त्री० रोनी] १. थोड़ी सी बात पर रोनेवाला। २. चिड़चिड़ा। ३ रोनेवाला का सा। मुहर्रमी। रोवाँसा।

रोपण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रोपित, रोप्य

१. ऊपर रखना या स्थापित करना। २. लगाना। जमाना। बैठाना। (बीज या पौधा) ३. मोहित करना। मोहन।

रोपना–क्रि० स० [स० रोपण] १. जमाना। लगाना। बैठाना। २. पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर जमाना। ३. अड़ाना। ठहराना। ४. बीज डालना। बोना। ५. लेने के लिये हथेली या कोई बरतन सामने करना। ६ रोकना।

रोपनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रोपना] धान आदि के पौधों को गाड़ने का काम। रोपाई।

रोपित–वि० [स०] १. लगाया हुआ। जमाया हुआ। २. स्थापित। रखा हुआ। ३. मोहित। भ्रांत।

रोब–संज्ञा पु० [अ० रुअब] [वि० रोबीला] बड़प्पन की धाक। आतंक। दबदबा।

मुहा०—रोब जमाना = आतंक उत्पन्न करना। रोब में आना = १. आतंक के कारण कोई ऐसी बात कर डालना जो यों न की जाती हो। २. भय मानना।

रोबदार–वि० [अ०] रोबदाबवाला। प्रभावशाली। तेजस्वी।

रोम–संज्ञा पु० [स० रोमन्] १. देह के बाल। रोयाँ। लोम।

मुहा०—रोम रोम में = शरीर भर में। रोम रोम से = तन मन से। पूर्ण हृदय से।

२. छेद। सूराख। ३. जल। ३. ऊन।

रोमक–संज्ञा पु० [स०] १. रोम नगर का वासी। रोमन। २. रोम नगर या देश।

रोमकूप–संज्ञा पु० [स०] शरीर के वे छिद्र जिनमें से रोएँ निकले हुए होते हैं।

रोमपाट–संज्ञा पु० [स०] ऊनी कपड़ा।

रोमपाद–संज्ञा पु० [स०] अंग देश के एक प्राचीन राजा।

रोमराजी–संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावलि"।

रोमलता–संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"।

रोमहर्षण–संज्ञा पु० [स०] रोयों का खड़ा होना जो अत्यंत आनंद के सहसा अनुभव से अथवा भय से होता है।

वि० भयंकर। भीषण।

रोमांच–संज्ञा पुं० [स०] [वि० रोमांचित] १. आनंद से रोयों का उभर आना। पुलक। २. भय से रोंगटे खड़े होना।

रोमावलि, रोमावली–संज्ञा स्त्री० [स०] रोयों की पंक्ति जो पेट के बीचोबीच नाभि से ऊपर की ओर गई होती है। रोमाली रोमराजी।

रोयाँ–संज्ञा पु० [स० रोमन्] वे बाल जो प्राणियों के शरीर पर थोड़े या बहुत उगते हैं। लोम। रोम।

मुहा०—रोयाँ खड़ा होना = हर्ष या भय से रोमकूपों का उभरना। रोयाँ पसीजना = हृदय में दया उत्पन्न होना। तरस आना।

रोर–संज्ञा स्त्री० [स० रवण] १. हल्ला। कोलाहल। शोर गुल। २. बहुत से लोगों के रोने चिल्लाने का शब्द। ३. उपद्रव। हलचल।

वि० १. प्रचंड। तेज़। दुर्दमनीय। २. उपद्रवी। उद्धत। दुष्ट।

रोरी–संज्ञा स्त्री० दे० "रोली"।

* संज्ञा स्त्री० [हिं० रोर] चहल पहल। धूम।

वि० स्त्री० [हिं० रुरा] सुंदर। रुचिर।

रोल*–संज्ञा स्त्री० [स० रवण] १. रोर। हल्ला। कोलाहल। २. शब्द। ध्वनि।

संज्ञा पु० पानी का तोड़। रेला। बहाव।

रोला–संज्ञा पुं० [स० रावण] १. रोर। शोर गुल। कोलाहल। २ घमासान युद्ध।

संज्ञा पु० [स०] २४ मात्राओं का एक छंद।

रोली–संज्ञा स्त्री० [स० रोचनी] चूने और हल्दी से बनी लाल बुकनी जिसका तिलक लगाते हैं। श्री।

रोवनहार*–संज्ञा पु० [हिं० रोवना + हारा (प्रत्य०)] १. रोनेवाला। २ किसी के मर जाने पर उसका शोक करनेवाला कुटुंबी।

रोवना–क्रि० अ० दे० "रोना"।

रोवनिहार*–वि० दे० "रोवनहार"।

रोवनी धोवनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० रोवना-धोवना] रोने धोने की वृत्ति। मनहूसी।

रोवासा–वि० [हिं० रोना] [स्त्री० रोवासी] जो रो देना चाहता हो।

रोशन–वि० [फा०] १. जलता हुआ। प्रदीप्त। प्रकाशित। २. प्रकाशमान। चमकदार। ३. प्रसिद्ध। मशहूर। ४ प्रकट। जाहिर।

रोशन चौकी–संज्ञा स्त्री० [फा०] शहनाई का बाजा। नफीरी।

रोशनदान–संज्ञा पु० [फा०] प्रकाश आने का छिद्र। गवाक्ष। मोखा।

रोशनाई–संज्ञा स्त्री० [फा०] १.

स्याही। मसि। २. प्रकाश। रोशनी।

रोशनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. उजाला। प्रकाश। २. दीपक। चिराग़। ३. दीपमाला का प्रकाश। ४. ज्ञान का प्रकाश।

रोष–संज्ञा पुं० [वि०रुष्ट] १. क्रोध। कोप। गुस्सा। २. चिढ़। कुढ़न। ३. वैर। विरोध। ४. लड़ाई की उमंग। जोश।

रोषी–वि० [सं० रोषिन्] क्रोधी। गुस्सावर।

रोस–संज्ञा पुं० दे० "रोष"।

रोह–संज्ञा पुं० [देश०] नील गाय।

रोहज –संज्ञा पुं० [?] नेत्र।

रोहण–संज्ञा पुं० [सं०] १. चढ़ना। चढ़ाई। २. ऊपर को बढ़ना। ३. पौधे का उगना।

रोहना‡–क्रि० अ० [सं० रोहण] १. चढ़ना। २. ऊपर की ओर जाना। ३. सवार होना। क्रि० स० १. चढ़ाना। ऊपर करना। २. सवार कराना। ३. धारण करना।

रोहिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गाय। २. बिजली। ३. वसुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थीं। ४. नौ वर्ष की कन्या की संज्ञा। (स्मृति) ५. सत्ताइस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र।

रोहित–वि० [सं०] लाल रंग का। लोहित। संज्ञा पुं० १. लाल रंग। २. रोहू मछली। ३. एक प्रकार का मृग। ४. इंद्र-धनुष। ५. केसर। कुंकुम। ६. रक्त। लहू। खून।

रोहिताश्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. राजा हरिश्चंद्र के पुत्र का नाम।

रोही–वि० [सं० रोहिन्] [स्त्री० रोहिणी] चढ़नेवाला।
संज्ञा पुं० [देश०] एक हथियार।

रोहू–संज्ञा स्त्री० [सं० रोहिष] एक प्रकार की बड़ी मछली।

रौंद–संज्ञा स्त्री० [हिं० रौंदना] रौंदने का भाव या क्रिया।
संज्ञा स्त्री० [अ० राउंड] चक्कर। गश्त।

रौंदना–क्रि० स० [सं० मर्दन] पैरों से कुचलना। मर्दित करना।

रौ–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गति। चाल। २. वेग। झोंक। ३. पानी का बहाव। तोड़। ४. किसी बात की धुन। झोंक। ५. चाल। ढंग।

रौ‡–संज्ञा पुं० दे० "रव"।

रौग़न–संज्ञा पुं० दे० "रोग़न"।

रौज़ा–संज्ञा पुं० [अ०] क़ब्र। समाधि।

रौताइन–संज्ञा स्त्री० [हिं० राव, रावत] राव या रावत की स्त्री। ठकुराइन।

रौताई–संज्ञा स्त्री० [हिं० रावत + आई (प्रत्य०)] १. राव या रावत होने का भाव। २. ठकुराई। सरदारी।

रौद्र–वि० [सं०] १ रुद्र-संबंधी। २. प्रचंड। भयंकर। डरावना। ३. क्रोधपूर्ण। संज्ञा पुं० १. काव्य के नौ रसों में से एक जिसमें क्रोधसूचक शब्दों और चेष्टाओं का वर्णन होता है। २. ग्यारह मात्राओं के छंदों की संज्ञा। ३. एक प्रकार का अस्त्र।

रौद्रार्क–संज्ञा पुं० [सं०] २३ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

रौन‡–संज्ञा पुं० दे० "रमण"।

रौनक़–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वर्ण और आकृति। रूप। २. चमक-दमक। दीप्ति। कांति। ३. प्रफुल्लता। विकास। ४. शोभा। छटा। सुहावनापन।

रौना†–संज्ञा पुं० दे० "रोना"।

रौनी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"।

रौप्य–संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी। रूपा। वि० चाँदी का बना हुआ। रूपे का।

रौरव–वि० [सं०] भयंकर। डरावना। संज्ञा पुं० एक भीषण नरक का नाम।

रौरा†–संज्ञा पुं० दे० "रौला"।
†सर्व० [हिं० रावरा] [स्त्री० रौरी] आपका।

रौराना†–क्रि० स० [हिं० रौरा] प्रलाप करना। बकना।

रौरे†–सर्व० [हिं० राव, रावल] आप। (संबोधन)

रौला–संज्ञा पुं०[सं० रवण] १. हल्ला। गुल। शोर। २. हुल्लड़। धूम।

रौलि†–संज्ञा स्त्री० [देश०] धौल। चपत।

रौशन–वि० दे० "रोशन"।

रौस–संज्ञा स्त्री० [फा० रविश] १. गति। चाल। २. रंग ढंग। तौर तरीका। ३. बाग़ की क्यारियों के बीच का मार्ग।

रौहाल–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. घोड़े की एक चाल। २. घोड़े की एक जाति।

ल

ल–व्यंजन वर्ण का अट्ठाईसवाँ वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंत होता है। यह अल्पप्राण है।

लंक–संज्ञा स्त्री० [सं०] कमर। कटि।
संज्ञा स्त्री० [सं० लंका] लंका नामक द्वीप।

लंकनाथ, लंकनायक–संज्ञा पुं० [हिं०लंक + सं०पति या नायक] १. रावण। २. विभीषण।

लंकलाट–संज्ञा पुं० [अं० लांग क्लाथ] एक प्रकार का मोटा बढ़िया कपड़ा।

लंका–संज्ञा स्त्री० [सं०] भारत के दक्षिण का एक टापू जहाँ रावण का राज्य था।

लंकापति–संज्ञा पुं० [सं०] १. रावण। २. विभीषण।

लंकेश, लंकेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] रावण।

लंग–संज्ञा स्त्री० दे० "लाँग"।
संज्ञा पुं० [फा०] लँगड़ापन।

लंगड़–वि० दे० "लँगड़ा"।
संज्ञा पुं० दे० "लंगर"।

लँगड़ा–वि० [फा० लंग] जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हो।

लँगड़ाना–क्रि० अ० [हिं० लँगड़ा] लंग करते हुए चलना। लँगड़े होकर चलना।

लॅंगड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लँगड़ा] एक प्रकार का छंद।

लंगर–संज्ञा पुं० [फा०] १. लोहे का एक प्रकार का बहुत बड़ा काँटा जिसका व्यवहार बड़ी बड़ी नावों या जहाजों को एक ही स्थान पर ठहराए रखने के लिये होता है। २. लकड़ी का वह कुंदा जो किसी हरहाई गाय के गले में बाँधा जाता है। ठेंगुर। ३. लटकती हुई कोई भारी चीज। ४. लोहे की मोटी और भारी जंजीर। ५. चाँदी का तोड़ा जो पैर में पहना जाता है। ६. पहलवानों का लँगोट। ७. कपड़े में के वे टाँके जो दूर दूर पर डाले जाते हैं। कच्ची सिलाई। ८. वह भोजन जो प्रायः नित्य दरिद्रों को बाँटा जाता है। ९. वह स्थान जहाँ दरिद्रों आदि को भोजन बाँटा जाता हो।
वि० १. भारी। वजनी। २. नटखट। ढीठ।
मुहा०—लंगर करना = शरारत करना।

लँगरई, लँगराई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लंगर + आई (प्रत्य०)] ढिठाई। शरारत।

लंगूर–संज्ञा पुं० [सं० लांगूली] १. बंदर। २. पूँछ। दुम। (बंदर की)। ३. एक प्रकार का बड़ा और काले मुँह का बंदर।

लंगूरफल–संज्ञा पुं० दे० "नारियल"।

लँगूल–संज्ञा पुं० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम

लॅंगोट, लँगोटा–संज्ञा पुं० [सं० लिंग + ओट] [स्त्री० लँगोटी] कमर पर बाँधने का एक प्रकार का बना हुआ वस्त्र जिससे केवल उपस्थ ढका जाता है। रूमाली।
यौ०—लँगोटबंद = ब्रह्मचारी। स्त्री त्यागी

लँगोटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लँगोट] कौपीन कछनी। भगई।
मुहा०—लँगोटिया यार = बचपन का मित्र
लँगोटी पर फाग खेलना = कम सामर्थ्य होने भी बहुत अधिक व्यय करना।

लंघन–संज्ञा पुं० [सं०] १. उपवास। अनाहार। फाका। २. लाँघने की क्रिया डाँकना। ३. अतिक्रमण।

लँघना*–क्रि० स० दे० "लाँघना"।

लंठ–वि० [हिं० लट्ठ] मूर्ख। उजड्ड।

लंडूरा–वि० [देश० या सं० लांगूल] जिसकी सब पूँछ कट गई हो। (पक्षी)

लंतरानी–संज्ञा स्त्री० [अ०] व्यर्थ की बड़ी बड़ी बातें। शेखी।

लंपट–वि० [सं०] व्यभिचारी। विषयी कामी। कामुक।

लंपटता–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुराचार। कुकर्म

लंब–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह रेखा जो किसी दूसरी रेखा पर इस भाँति गिरे कि उसके साथ समकोण बनावे। २. एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ३. अंग ४. पति।
संज्ञा स्त्री० दे० "विलंब"।
वि० [सं०] लंबा।

लंबकर्ण–वि० [सं०] जिसके कान लंबे हों।

लंबतड़ंग–वि० [सं० लंब + ताड़ + अंग] ताड़ के समान लंबा। बहुत लंबा।

लंबा–वि० [सं० लंब] [स्त्री० लंबी] १. जो किसी एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो। "चौड़ा" का उलटा।
मुहा०—लंबा करना = १. रवाना करना चलता करना। २. जमीन पर पटक या

२ जिसकी ऊँचाई अधिक हो। ३ (समय) जिसका विस्तार अधिक हो। ४ विशाल। दीर्घ। बड़ा।

लंबाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० लंबा] लंबा होने का भाव। लंबापन।

लंबान-संज्ञा स्त्री० [हिं० लंबा] लंबाई।

लंबित-वि० [सं०] लंबा।

लंबी-वि० स्त्री० [हिं० लंबा] लंबा का स्त्री लिंग रूप।

मुहा०—लंबी तानना=बेखबर सो जाना।

लंबोतरा-वि० [हिं० लंबा] लंबे आकार वाला। जो कुछ लंबा हो।

लंबोदर-संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

ल-संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ पृथ्वी।

लउटी-संज्ञा स्त्री० दे० "लकुटी"।

लकड़बग्घा-संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी+बाघ] एक मांसाहारी जंगली जंतु जो भेड़िए से कुछ बड़ा होता है। लग्घड़।

लकड़हारा-संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी+हारा] जंगल से लकड़ी तोड़कर बेचनेवाला।

लकड़ा-संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी] लकड़ी का मोटा कुंदा। लक्कड़।

लकड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० लगुड] १ पेड़ का कोई स्थूल अंग जो कटकर उससे अलग हो गया हो। काष्ठ। काठ। २ ईंधन। जलावन। ३ गतका। ४ छड़ी। लाठी।

मुहा०—लकड़ी होना=१ बहुत दुबला पतला होना। २ सूखकर बहुत कड़ा हो जाना।

लकब-संज्ञा पुं० [अ०] उपाधि। खिताब।

लकवा-संज्ञा पुं० [अ०] एक वात रोग जिसमें प्रायः चेहरा टेढ़ा हो जाता है।

लकीर-संज्ञा स्त्री० [सं० रेखा, हिं० लीक] १ वह सीधी आकृति जो बहुत दूर तक एक ही सीध में चली गई हो। रेखा। खत।

मुहा०—लकीर का फकीर=आँखें बंद करके पुराने ढंग पर चलनेवाला। लकीर पीटना=बिना समझे बूझे पुरानी प्रथा पर चले चलना।

२ धारी। ३ पंक्ति। सतर।

लकुच-संज्ञा पुं० [सं०] बड़हर।

संज्ञा पुं० दे० "लकुट"।

लकुट-संज्ञा स्त्री० [सं० लगुड] लाठी। छड़ी।

संज्ञा पुं० [सं० लकुच] १ एक प्रकार का फलदार वृक्ष। २. लुकाठ। लसोढ़।

लकुटी-संज्ञा स्त्री० [सं० लगुड] लाठी। छड़ी।

लक्कड़-संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी] काठ का बड़ा कुंदा।

लक्का-संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का कबूतर जिसकी पूँछ पंखे सी होती है।

लक्खी-वि० [हिं० लाख] लाख के रंग का। लाखी।

संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

संज्ञा पुं० [हिं० लाख (संख्या)] लखपती।

लक्ष-वि० [सं०] एक लाख। सौ हजार।

संज्ञा पुं० [सं०] १ वह अस्त्र जिससे एक लाख की संख्या का ज्ञान हो। २ अस्त्र का एक प्रकार का संहार। ३ दे० "लक्ष्य"।

लक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय। चिह्न। निशान। आसार। २ नाम। ३ परिभाषा। ४ शरीर में दिखाई पड़नेवाले वे चिह्न आदि जो किसी रोग के सूचक हों। ५ सामुद्रिक के अनुसार शरीर के अंगों में होनेवाले कुछ विशेष चिह्न जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं। ६ शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग। लच्छन। ७ चाल ढाल। तौर-तरीका। ८ दे० "लक्ष्मण"।

लक्षणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है।

लक्षना-क्रि० स० दे० "लखना।"

लक्षि-संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्य"।

लक्षित-वि० [सं०] १ बतलाया हुआ। निर्दिष्ट। २ देखा हुआ। ३ अनुमान से समझा या जाना हुआ।

संज्ञा पुं० वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा ज्ञात होता है।

लक्षित लक्षणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लक्षणा।

लक्षिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसका परपुरुष प्रेम दूसरों को ज्ञात हो।

लक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ रगण होते हैं। गंगाधर। खंजन।

लक्ष्मण-संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा दशरथ के दूसरे पुत्र, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और जो रामचंद्र के साथ वन में गए थे। ये शेषनाग के अवतार माने जाते हैं।

२. चिह्न। लक्षण।

लक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिंदुओं की एक प्रसिद्ध देवी जो विष्णु की पत्नी और धन की अधिष्ठात्री मानी जाती है। कमला। रमा। २. धन-संपत्ति। दौलत। ३. शोभा। सौंदर्य। छवि। ४. दुर्गा का एक नाम। ५ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण, एक गुरु और एक लघु अक्षर होता है। ६. आर्या छंद का पहला भेद। ७. घर की मालकिन। गृहस्वामिनी।

लक्ष्मीधर–संज्ञा पुं०[सं०] १. स्रग्विणी छंद का दूसरा नाम। २. विष्णु।

लक्ष्मीपति–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

लक्ष्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वस्तु जिस पर किसी प्रकार का निशाना लगाया जाय। निशाना। २. वह जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय। ३. अभिलषित पदार्थ। उद्देश्य। ४. अस्त्रों का एक प्रकार का संहार। ५. वह अर्थ जो किसी शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा निकलता हो।

लक्ष्यभेद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का निशाना जिसमें चलते या उड़ते हुए लक्ष्य को भेदते हैं।

लक्ष्यार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] वह अर्थ जो लक्षणा से निकले।

लखघर–संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह"।

लखन०†–संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० लखना] लखने की क्रिया या भाव।

लखना०†–क्रि० स० [सं० लक्ष] १. लक्षण देखकर अनुमान कर लेना। ताड़ना। २. देखना।

लखपती–संज्ञा पुं० [सं० लक्ष + पति] जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो।

लखलखा–संज्ञा पुं० [फा०] मूर्च्छा दूर करने का कोई सुगंधित द्रव्य।

लखलुट–वि० [हिं० लाख + लुटना] बहुत बड़ा अपव्ययी।

लखाउ०–संज्ञा पुं० [हिं० लखना] १. लक्षण। पहचान। चिह्न। २. चिह्न के रूप में दिया हुआ कोई पदार्थ।

लखाना०†–क्रि० अ० [हिं० लखना] दिखाई पड़ना।
क्रि० स० १. दिखलाना। २. अनुमान करा देना। समझा देना।

लखाव०–संज्ञा पुं० दे० "लखाउ"।

लखिमी०†–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लखिया०†–संज्ञा पुं० [हिं० लखना + इया (प्रत्य०)] लखनेवाला। जो लखता हो।

लखी–संज्ञा पुं० [हिं० लाखी] लाख के रंग का घोड़ा। लाखी।

लखेरा–संज्ञा पुं० [हिं० लाख + एरा (प्रत्य०)] वह जो लाख की चूड़ी आदि बनाता हो।

लखौट†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लाख + औट(प्रत्य०)] लाख की चूड़ी जो स्त्रियाँ हाथों में पहनती हैं।

लखौटा–संज्ञा पुं० [हिं० लाख + औटा (प्रत्य०)] १. चंदन, केसर आदि से बना हुआ अंगराग। २ एक प्रकार का छोटा डिब्बा जिसमें स्त्रियाँ प्रायः सिंदूर आदि रखती हैं।

लखौरी–संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा, हिं० लाखा + औरी (प्रत्य०)] १. एक प्रकार की भ्रमरी या भृंगी का घर। २. एक प्रकार की छोटी पतली ईंट। नौ तेरही ईंट। ककैया ईंट।
संज्ञा स्त्री० [सं० लक्ष] किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल आदि चढ़ाना।

लगंत–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना + अंत (प्रत्य०)] लगन या लगन होने की क्रिया या भाव।

लग–क्रि० वि० [हिं० लौ] १. तक। पर्यंत। ताईं। २. निकट। समीप। पास।
संज्ञा स्त्री० लगन। लाग। प्रेम।
अव्य० १. वास्ते। लिये। २. साथ। संग।

लगड़ग–क्रि० वि० दे० "लगभग"।

लगन–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १. किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया। लौ। २. प्रेम। स्नेह। मुहब्बत। प्यार। ३. लगाव। संबंध।
संज्ञा पुं० [सं० लग्न] १. ब्याह का मुहूर्त या साइत। २. वे दिन जिनमें विवाह आदि होते हों। सहालग। ३ दे० "लग्न"।
संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार की थाली।

लगनपत्री–संज्ञा स्त्री० [सं० लग्नपत्रिका] विवाह-समय के निर्णय की चिट्ठी जो कन्या का पिता वर के पिता को भेजता है।

लगनवट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगन] प्रेम। मुहब्बत।

लगना-क्रि० अ० [सं० लग्न] १. दो पदार्थों के तल आपस में मिलना। सटना। २. मिलना। जुड़ना। ३. एक चीज़ का दूसरी चीज़ पर सीया, जड़ा, टाँका या चिपकाया जाना। ४. सम्मिलित होना। शामिल होना। मिलना। ५. छोर या प्रांत आदि पर पहुँचकर टिकना या रुकना। ६. क्रम से रखा या सजाया जाना। ७. व्यय होना। खर्च होना। ८. जान पड़ना। मालूम होना। ९. स्थापित होना। कायम होना। १०. संबंध या रिश्ते में कुछ होना। ११. आघात पड़ना। चोट पहुँचना। १२. किसी पदार्थ का किसी प्रकार की जलन या चुनचुनाहट आदि उत्पन्न करना। १३. खाद्य पदार्थ का बरतन के तल में जम जाना। १४. आरंभ होना। शुरू होना। १५. जारी होना। चलना। १६. सड़ना। गलना। १७. प्रभाव पड़ना। असर होना।
मुहा०—लगती बात कहना = मर्मभेदी बात कहना। चुटकी लेना।
१८. आरोप होना। १९. हिसाब होना। गणित होना। २०. पीछे पीछे चलना। साथ होना। २१. गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं का दूहा जाना। २२. गड़ना। चुभना। धँसना। २३. छेड़खानी करना। छेड़छाड़ करना। २४. बंद होना। मुँदना। २५. दाँव पर रखा जाना। बदना। २६. घात में रहना। ताक में रहना। २७. होना।
विशेष—यह क्रिया बहुत से शब्दों के साथ लगकर भिन्न भिन्न अर्थ देती है।
संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का जंगली मृग।

लगनि-संज्ञा स्त्री० दे० "लगन"।

लगनी-संज्ञा स्त्री० [फा० लगन = थाली] १. छोटी थाली। रिकाबी। २. परात।

लगभग†-क्रि० वि० [हिं० लग = पास + भग अनु०] प्रायः। करीब करीब।

लगमात-संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना + सं० मात्रा] स्वरों के वे चिह्न जो उच्चारण के लिये व्यंजनों में जोड़े जाते हैं।

लगर०†-संज्ञा पुं० [देश०] लग्घड़ पक्षी।

लगलग-वि० [अ० लकलक] बहुत दुबला पतला। अति सुकुमार।

लगव०†-वि० [अ० लग्व] १. झूठ। मिथ्या। असत्य। २. व्यर्थ। बेकार।

लगवाना-क्रि० स० [हिं० लगाना का प्रेर०] लगाने का काम दूसरे से कराना।

लगवार†-संज्ञा पुं० [हिं० लगना] उपपति। यार। आशना।

लगातार-क्रि० वि० [हिं० लगना + तार = सिलसिला] एक के बाद एक। बराबर। निरंतर।

लगान-संज्ञा पुं० [हिं० लगना या लगाना] १. लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २. भूमि पर लगनेवाला कर। राजस्व। जमाबंदी। पोत।

लगाना-क्रि० स० [हिं० लगना का स० रूप] १. सतह पर सतह रखना। सटाना। २. मिलाना। जोड़ना। ३. किसी पदार्थ के तल पर कोई चीज डालना, फेंकना, रगड़ना, चिपकाना या गिराना। ४. सम्मिलित करना। शामिल करना। ५. वृक्ष आदि आरोपित करना। जमाना। ६. एक ओर या किसी उपयुक्त स्थान पर पहुँचाना। ७. क्रम से रखना या सजाना। सजाना। चुनना। ८. खर्च करना। व्यय करना। ९. अनुभव कराना। मालूम कराना। १०. आघात करना। चोट पहुँचाना। ११. किसी में कोई नई प्रवृत्ति आदि उत्पन्न करना। १२. उपयोग में लाना। काम में लाना। १३. आरोपित करना। अभियोग लगाना।
मुहा०—किसी को लगाकर कुछ कहना या गाली देना = बीच में किसी का संबंध स्थापित करके किसी प्रकार का आरोप करना।
१४. प्रज्वलित करना। जलाना। १५. ठीक स्थान पर बैठाना। जड़ना। संबद्ध करना। १६. गणित करना। हिसाब करना। १७. कान भरना। चुगली खाना।
यौ०—लगाना बुझाना = लड़ाई झगड़ा कराना। दो आदमियों में वैमनस्य उत्पन्न करना।
१८. नियुक्त करना। १९. गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं को दूहना। २०. गाड़ना। धँसाना। टाँकना। २१. स्पर्श कराना। छुआना। २२. जूए की बाज़ी पर रखना। दाँव पर रखना। २३. किसी बात का अभिमान करना। २४. अंग पर पहनना, ओढ़ना या रखना। २५. करना।

लगाम–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह ढाँचा जो घोड़े के मुँह में रखा जाता है और जिसके दोनों ओर रस्सा या चमड़े का तस्मा बँधा रहता है। २. इस ढाँचे के दोनों ओर बँधा हुआ रस्सा या चमड़े का तस्मा जो सवार या हाँकनेवाले के हाथ में रहता है। रास। बाग।

लगार॰†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना + आर (प्रत्य०)] १. नियमित रूप से कोई काम करना या कोई चीज देना। बधी। बँधेज। २. लगाव। संबंध। ३. तार। क्रम। सिलसिला। ४. लगन। प्रीति। मुहब्बत। ५. वह जो किसी की ओर से भेद लेने के लिये भेजा गया हो। ६. मेली। संबंधी।

लगालगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १. लाग। लगन। प्रेम। स्नेह। प्रीति। २ संबंध। मेल जोल।

लगाव– संज्ञा पुं० [हिं० लगना + आव (प्रत्य०)] लगे होने का भाव। संबंध। वास्ता।

लगावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना + आवट (प्रत्य०)] १. संबंध। वास्ता। लगाव। २. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत।

लगावन॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "लगाव"।

लगावना–क्रि० स० दे० "लगाना"।

लगि॰†–अव्य० दे० "लग"।
संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गी"।

लगी॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गी"।

लगु॰†–अव्य० दे० "लग"।

लगुड़–संज्ञा पुं० [सं०] डंडा। लाठी।

लगूर*–संज्ञा स्त्री० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।

लगूल॰–संज्ञा स्त्री० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।

लगे†–अव्य० दे० "लग"।

लगौंहाँ॰–वि० [हिं० लगना + औंहाँ (प्रत्य०)] जिसे लगन लगाने की कामना हो। रिझवार।

लग्गा–संज्ञा पुं० [सं० लगुड] १. लंबा बाँस। २. वृक्षों से फल आदि तोड़ने का लंबा बाँस। लकसी।
संज्ञा पुं० [हिं० लगना] कार्य्य आरंभ करना। काम में हाथ लगाना।

लग्गी–संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गा"।

लग्घड़–संज्ञा पुं० [देश०] १. बाज। शवान। २. एक प्रकार का चीता। लकड़बग्घा।

लग्घा–संज्ञा पुं० दे० "लग्गा"।

लग्न–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्योतिष में दिन का उतना अंश, जितने में किसी एक राशि का उदय रहता है। २. कोई शुभ कार्य्य करने का मुहूर्त्त। ३. विवाह का समय। ४. विवाह। शादी। ५. विवाह के दिन। सहालग।
वि० १. लगा हुआ। मिला हुआ। २. लज्जित। ३ आसक्त।
संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "लगन"।

लग्नपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्रिका जिसमें विवाह के कृत्यों का लग्न ब्योरेवार लिखा जाता है।

लघिमा–संज्ञा स्त्री० [सं० लघिमन्] १. एक सिद्धि जिसे प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है। २. लघु या ह्रस्व होने का भाव। लघुत्व।

लघु–वि० [सं०] १. शीघ्र। जल्दी। २. कनिष्ठ। छोटा। ३ सुंदर। बढ़िया। ४. निःसार। ५. थोड़ा। कम। ६. हलका।
संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है। जैसे—अ, इ। २ वह जिसमें एक ही मात्रा हो। इसका चिह्न "।" है।

लघुचेता–संज्ञा पुं० [सं० लघुचेतस्] वह जिसके विचार तुच्छ और बुरे हों। नीच।

लघुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लघु होने का भाव। छोटापन। २. हलकापन। तुच्छता।

लघुपाक–संज्ञा पुं० [सं०] वह खाद्य पदार्थ जो सहज में पच जाय।

लघुमति–वि० [सं०] कम-समझ। मूर्ख।

लघुमान–संज्ञा पुं० [सं०] नायिका का वह मान जो नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत करते देखकर उत्पन्न होता है।

लघुशंका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पेशाब करना।

लचक–संज्ञा स्त्री० [हिं० लचकाना] १. लचकने की क्रिया या भाव। लचन। झुकाव। २. वह गुण जिसके रहने से कोई वस्तु झुकती हो।

लचकना–क्रि० अ० [हिं० लच (अनु०)] १. लंबे पदार्थ का दबने आदि के कारण बीच से झुकना। लचना। २ स्त्रियों की कमर का कोमलता आदि के कारण झुकना।

लचकनि॰–संज्ञा स्त्री० [हिं० लचना] लचीलापन। २. लचक।

लचन–संज्ञा स्त्री० दे० "लचक"।
लचना–क्रि० अ० दे० "लचकना"।
लचार †–वि० दे० "लाचार"।
लचारी–संज्ञा स्त्री० दे० "लाचारी"।
संज्ञा स्त्री० [देश०] १. भेंट। नज़र। २. एक प्रकार का गीत।
लच्छ*–संज्ञा पुं० [सं० लक्ष्य] १. ब्याज। बहाना। मिस। २. निशाना। ताक। संज्ञा पुं० सौ हजार की संख्या। लाख। संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।
लच्छन*–संज्ञा पुं० दे० "लक्षण"।
लच्छना –क्रि० स० दे० "लखना"।
लच्छमी–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।
लच्छा–संज्ञा पुं० [अनु०] १ गुच्छे या झुप्पे आदि के रूप में लगाए हुए तार। २. किसी चीज के सूत की तरह लंबे और पतले कटे हुए टुकड़े। ३. हाथ या पैर का एक प्रकार का गहना।
लच्छि*–संज्ञा स्त्री० [सं० लक्ष्मी] लक्ष्मी। संज्ञा पुं० [सं० लक्ष] लाख की संख्या।
लच्छित*–वि० [सं० लक्षित] १. आलोचित। देखा हुआ। २ निशान किया हुआ। अंकित। ३. लक्षणवाला।
लच्छिनिवास –संज्ञा पुं० [सं० लक्ष्मीनिवास] विष्णु। नारायण।
लच्छी–वि० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा। संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"। संज्ञा स्त्री० [हिं० लच्छा] छोटा लच्छा। घटी।
लच्छेदार–वि० [हिं० लच्छा + फा० दार (प्रत्य०)] १. (खाद्य पदार्थ) जिसमें लच्छे पड़े हों। २ (बात चीत) मजेदार या श्रुतिमधुर।
लछन–संज्ञा पुं० [सं० लक्ष्मण] लक्ष्मण। संज्ञा पुं० दे० "लक्षण"।
लछना†–क्रि० अ० दे० "लखना"।
लछमन–संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।
लछमन झूला–संज्ञा पुं० [हिं० लछमन + झूला] रस्सों या तारों आदि से बना पुल।
लछमना–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मणा"।
लछमी–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।
लज*–संज्ञा स्त्री० दे० "लाज"।
लजना–क्रि० अ० दे० "लजाना"।
लजवाना–क्रि० स० [हिं० लजाना] दूसरे को लज्जित करना।
लजाधुर†–वि० [सं० लज्जाधर] जो बहुत लज्जा करे। लज्जावान्। शर्मीला। संज्ञा पुं० लजालू नाम का पौधा।
लजाना–क्रि० अ० [सं० लज्जा] लज्जित होना। शर्म में पड़ना। क्रि० स० लज्जित करना।
लजारू†–संज्ञा पुं० [सं० लज्जालु] लजालू पौधा।
लजालू–संज्ञा पुं० [सं० लज्जालु] एक कांटेदार छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ कर बंद हो जाती हैं।
लजावन*†–क्रि० स० दे० "लजाना"।
लजियाना*†–क्रि० अ० स० दे० "लजाना"।
लजीला–वि० दे० "लज्जाशील"।
लजुरी†–संज्ञा स्त्री० [सं० रज्जु] कूएँ से पानी भरने कि डोरी। रस्सी।
लजोर*†–वि० दे० "लज्जाशील"।
लजोहा,लजौहाँ–वि० [सं० लज्जावह] [स्त्री० लजौहीं] जिसमें लज्जा हो। लज्जाशील।
लज्जत–संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वाद। जायका।
लज्जा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० लज्जित] १ लाज। शर्म। हया। २. मान-मर्यादा। पत। इज्जत।
लज्जाप्राया–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक। (केशव)
लज्जावती–वि० स्त्री० [सं०] शर्मीली।
लज्जावान्–वि० [स्त्री० लज्जावती] दे० "लज्जाशील"।
लज्जाशील-वि० [सं०] जिसमें लज्जा हो। लजीला।
लज्जित–वि० [सं०] शर्म में पड़ा हुआ। शर्माया हुआ।
लट–संज्ञा स्त्री० [सं० लट्वा] १. बालों का गुच्छा। केशपाश। अलक। केशलता।
मुहा०—लट छिटकाना = सिर के बालों को खोलकर इधर-उधर बिखराना।
२. एक में उलझे हुए बालों का गुच्छा। संज्ञा स्त्री० [हिं० लपट] लपट। लौ।
लटक–संज्ञा स्त्री० [हिं० लटकना] १. लटकने की क्रिया या भाव। २ झुकाव। लचक। ३. अंगों की मनोहर चेष्टा। अंग-भंगी।
लटकन–संज्ञा पुं० [हिं० लटकना] १. दे० "लटक"। २. लटकनेवाली चीज। लटक। ३. नाक में पहनने का एक गहना। ४ कलँगी या सिरपेंच में लगे हुए रत्नों का गुच्छा।

संज्ञा पु० [?] एक पेड़ जिसके बीजों से बढ़िया गेरुआ रंग निकलता है ।

लटकना-क्रि० अ० [सं० लटन = झूलना] १. ऊँचे स्थान से लगकर नीचे की ओर कुछ दूर तक फैला रहना । झूलना । २. किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार टिकना कि सब भाग नीचे की ओर अधर में हों । टँगना । ३ किसी खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना । ४. लचकना । बल खाना । मुहा०—लटकती चाल = बल खाती हुई मनोहर चाल । ५. किसी काम का बिना पूरा हुए पड़ा रहना । देर होना ।

लटकवाना-क्रि० स० [हिं० लटकाना का प्रे०] लटकने का काम दूसरे से कराना ।

लटका-संज्ञा पु० [हिं० लटक] १. गति । चाल । ढब । २. बनावटी चेष्टा । हाव भाव । ३. बातचीत का बनावटी ढंग । ४. मंत्र-तंत्र या उपचार आदि की छोटी युक्ति । टोटका । संक्षिप्त उपचार ।

लटकाना-क्रि० स० [हिं० लटकना का सक० रूप] किसी को लटकने में प्रवृत्त करना ।

लटकीला-वि० [हिं० लटक] [स्त्री० लटकीली] लटकता या झूमता हुआ ।

लटकौवाँ-वि० [हिं० लटकाना] लटकनेवाला । जो लटकता हो ।

लटजीरा-संज्ञा पु० [लट ? + हिं० जीरा] १. अपामार्ग । चिचड़ा । २. एक प्रकार का जड़हन धान ।

लटना-क्रि० अ० [सं० लड] १. थककर गिर जाना । लड़खड़ाना । २. अशक्त होना । दुबला और कमजोर होना । ३. शक्ति और उत्साह से रहित या निकम्मा होना । ४. व्याकुल विकल होना । क्रि० अ० [सं० लल] १. ललचाना । चाह करना । लुभाना । २. प्रेमपूर्वक तत्पर होना । लीन होना ।

लटपटा-वि० [हिं० लटपटाना] [स्त्री० लटपटी] १. गिरता पड़ता । लड़खड़ाता हुआ । २. ढीला-ढाला । जो चुस्त और दुरुस्त न हो । अस्त-व्यस्त । ३. (शब्द) जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न निकले । टूटा-फूटा । ४. अव्यवस्थित । अडबड । ५. थककर गिरा हुआ । अशक्त । वि० १. जो न बहुत पतला हो और न बहुत गाढ़ा । लुटपुटा । २. गिंजा हुआ । मला दला हुआ । (कपड़ा आदि)

लटपटान-संज्ञा स्त्री० [हिं० लटपटाना] १. लड़खड़ाहट । २. लटक । लचक ।

लटपटाना-क्रि० अ० [सं० लड + पत] १. गिरना पड़ना । लड़खड़ाना । २ डिगना । चूक जाना । ठीक तरह से न चलना । क्रि० अ० [सं० लल] १. लुभाना । मोहित होना । २ लीन होना । अनुरक्त होना ।

लटा†-वि० [सं० लट्ट] [स्त्री० लटी] १. लोलुप । २. लंपट । लुच्चा । नीच । ३. तुच्छ । हीन । ४ बुरा । खराब ।

लटापटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० लटपटाना] १. लटपटाने की क्रिया या भाव । २. लड़ाई झगड़ा ।

लटापोट*†-वि० [हिं०लोट पोट] मोहित । मुग्ध ।

लटी-संज्ञा स्त्री० [हिं० लटा = बुरा] १. बुरी बात । २ झूठी बात । गप । ३. साधुनी । भक्तिन । ४ वेश्या । रंडी ।

लटुआ-संज्ञा पु० दे० "लट्टू" ।

लटुक-संज्ञा पु० दे० "लकुट" ।

लटुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "लटूरी" ।

लटू-संज्ञा पु० दे० "लट्टू" ।

लटूरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० लट] सिर के बालों का लटकता हुआ गुच्छा । केश । अलक ।

लटोरा-संज्ञा पु० [हिं०लस = चिपचिपाहट] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसके फलों में बहुत सा लसदार गूदा होता है ।

लट्टपट्ट†-वि० दे० "लथपथ" ।

लट्टू-संज्ञा पु० [सं० लुठन = लुढ़कना] एक गोल खिलौना जिसे सूत के द्वारा जमीन पर फेंककर नचाते हैं ।

मुहा०—(किसी पर) लट्टू होना = १. मोहित होना । आसक्त होना । २. प्राप्ति के लिये उत्कंठित होना ।

लट्ठ-संज्ञा पु० [सं० यष्टि] बड़ी लाठी ।

लट्ठबाज़-वि० [हिं० लट्ठ + फा० बाज] लाठी लड़नेवाला । लठैत ।

लट्ठमार-वि० [हिं० लट्ठ + मारना] १ लट्ठ मारनेवाला । २. अप्रिय और कठोर । कर्कश । कड़वा ।

लट्ठा-संज्ञा पु० [हिं० लट्ठ] १. लकड़ी का बहुत लंबा टुकड़ा । बल्ला । शहतीर ।

२ लकड़ी का बल्ला। धरन। कड़ी। ३ एक प्रकार का गाढ़ा मोटा कपड़ा।
लठैत–संज्ञा पु० दे० "लट्ठबाज़"।
लड़त–सज्ञा स्त्री० [हिं० लड़ना] १ लड़ाई। भिड़त। २ सामना। मुकाबला।
लड़–सज्ञा स्त्री० [सं० यष्टि] १ एक ही प्रकार की वस्तुओं की पंक्ति। माला। २ रस्सी का एक तार। पान। ३ पंक्ति। श्रेणी।
लड़कई†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।
लड़कखेल–सज्ञा पु० [हिं० लड़का+खेल] १ बालकों का खेल। २ सहज काम।
लड़कपन–सज्ञा पु० [हिं० लड़का+पन] १ वह अवस्था जिसमे मनुष्य बालक हो। बाल्यावस्था। २ चपलता। चचलता।
लड़कबुद्धि–सज्ञा स्त्री० [हिं० लड़का+बुद्धि] बालकों की सी समझ। नासमझी।
लड़का–सज्ञा पु० [सं० लट अथवा हिं० लाड़ = दुलार] [स्त्री० लड़की] १ थोड़ी अवस्था का मनुष्य। बालक। २ पुत्र। बेटा।
मुहा०—लड़कों का खेल = १ बिना महत्त्व की बात। २ सहज बात या काम।
लड़का वाला–सज्ञा पु० [हिं० लड़का+सं० वाल] १ संतान। औलाद। २ परिवार।
लड़कोरी–वि० स्त्री० [हिं० लड़का] (स्त्री) जिसकी गोद में लड़का हो।
लड़खड़ाना–क्रि० अ० [सं०लड़ = डोलना+खड़ा] १ पूर्ण रूप से स्थित न रहने के कारण इधर उधर झुक पड़ना। झोंका खाना। डगमगाना। २ डगमगाकर गिरना। विचलित होना। चूकना।
लड़ना–क्रि० अ० [सं० रणन] १ एक दूसरे को चोट पहुँचाना। युद्ध करना। भिड़ना। २ मल्ल युद्ध करना। ३ झगड़ा करना। हुज्जत करना। तकरार करना। ४ बहस करना। ५ टक्कर खाना। टकराना। भिड़ना। ६ व्यवहार आदि में सफलता के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न करना। ७ पूर्ण रूप से घटित होना। सटीक बैठना। ८ बिच्छू, भिड़ आदि का डंक मारना। ९ लक्ष्य पर पहुँचना। भिड़ना।
लड़बड़ाना–क्रि० अ० दे० "लड़खड़ाना"।
लड़बावला–वि० [सं०लड = लड़कों का सा+बावला] [स्त्री० लड़बावरी] १ अल्हड़। मूर्ख। नासमझ। अहमक। २ गँवार। ३. जिससे मूर्खता प्रकट हो।
लड़ाई–सज्ञा स्त्री० [हिं० लड़ना+आई(प्रत्य०)] १ एक दूसरे पर वार। भिड़त। युद्ध। २ संग्राम। जंग। युद्ध। ३ मल्लयुद्ध। कुश्ती। ४ झगड़ा। तकरार। हुज्जत। ५ वादविवाद। बहस। ६ टक्कर। ७ व्यवहार या मामले में सफलता के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न या चाल। ८ अनबन। विरोध। वैर।
लड़ाका–वि० [हिं०लड़ना+आका (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ाकी] १ योद्धा। सिपाही २ झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।
लड़ाना–क्रि० स० [हिं० लड़ना का प्रे०] १ दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना। २ झगड़े में प्रवृत्त करना। ३ टक्कर खिलाना। भिड़ाना। ४ लक्ष्य पर पहुँचाना। ५ परस्पर उलझाना। ६ सफलता के लिये व्यवहार में लाना।
क्रि० स० [हिं० लाड़ = प्यार] लाड़ प्यार करना। दुलार करना।
लड़ायता†–वि० दे० "लड़ैता"।
लड़ी–सज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।
लड़ुआ–सज्ञा पु० दे० "लड्डू"।
लड़ैता–वि० [हिं० लाड़ = प्यार+ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री०लड़ैती] १ लाडला। दुलारा। २ जो लाड प्यार के कारण बहुत इतराया हो। धृष्ट। शोख। ३ प्यारा। प्रिय। वि० [हिं० लड़ना] लड़नेवाला। योद्धा।
लड्डू–सज्ञा पु० [सं० लड्डुक] गोल बनी हुई मिठाई। मोदक।
मुहा०—ठग के लड्डू खाना = पागल होना। नासमझी करना। होश हवास में न रहना। मन के लड्डू खाना या फोड़ना = व्यर्थ किसी बड़े लाभ की कल्पना करना।
लड्याना †–क्रि० स० [हिं० लाड़ = प्यार] लाड प्यार करना। दुलार करना।
लढ़िया†–सज्ञा स्त्री०[हिं० लुढ़कना] बैल गाड़ी।
लत–संज्ञा स्त्री० [सं० रति] बुरी आदत। दुर्व्यसन। बुरी टेव।
लतखोर, लतखोरा–वि० [हिं० लात+फा० ख़ोर = खानेवाला] [स्त्री० लतखोरिन] १ सदा लात खानेवाला। २ नीच। कमीना। ३ दरवाजे पर पड़ा हुआ पैर पोंछने का कपड़ा। पायदाज। गुलमगदा।
लतर–सज्ञा स्त्री० [सं० लता] बेल। वल्ली।

लतरी-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पौधा जिसकी फलियों से दाल निकलती है।

लता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह पौधा जो डोरी के रूप में ज़मीन पर फैले अथवा वृक्ष के साथ लिपटकर ऊपर चढ़े। वल्ली। बेल। बौर। २ कोमल कांड या शाखा। ३. सुंदरी स्त्री।

लताकुंज, लतागृह-संज्ञा पु०[सं०] लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान।

लताड़ना-क्रि० स० [हिं० लात] १ पैरों से कुचलना। रौंदना। २ हैरान करना।

लता-पता-संज्ञा पु० [सं०लतापत्र] १. पेड़, पत्ते। २ जड़ी बूटी।

लताभवन-संज्ञा पु० [सं०] लतागृह।

लतामंडप-संज्ञा पु० [सं०] लतागृह।

लतिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी लता। बेल।

लतियाना†-क्रि० स० [हिं० लात+आना (प्रत्य०)] १. पैरों से दबाना या रौंदना। २. खूब लातें मारना।

लत्ता-संज्ञा पु० [सं० लक्तक] १. फटा पुराना कपड़ा। चीथड़ा। २. कपड़े का टुकड़ा।

यौ०—कपड़ा लत्ता = पहनने के वस्त्र।

लत्ती-संज्ञा स्त्री० [हिं० लात] पशुओं का पाद-प्रहार। लात।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लत्ता] कपड़े की लंबी धज्जी।

लथपथ-वि० [अनु०] १. भीगा हुआ। तरा-बोर। २. (कीचड़ आदि में) सना हुआ।

लथाड़-संज्ञा स्त्री० [अनु० लथपथ] १ ज़मीन पर पटक कर लोटाने या घसीटने की क्रिया। चपेट। २. पराजय। हार। ३ झिड़की।

लथाड़ना-क्रि० स० दे० "लथेड़ना"।

लथेड़ना-क्रि० स० [अनु० लथपथ] १. कीचड़ आदि से लपेटकर गंदा करना। २. पटककर इधर उधर लोटाना या घसीटना। ३. हैरान करना। थकाना। ४ डाँटना डपटना।

लदना-क्रि० अ० [सं० लद्द] १. भारयुक्त होना। बोझ ऊपर लेना। २ आच्छा-दित होना। पूर्ण होना। ३. सामान ढोनेवाली सवारी पर बोझ भरा जाना। ४ बोझ का डाला या रखा जाना। ५. जेल-खाने जाना। क़ैद होना।

लदवाना-क्रि० स० [हिं०लादना का प्रे०] लादने का काम दूसरे से कराना।

लदाऊ†-वि० दे० "लदाव"।

लदाव-संज्ञा पु० [हिं० लादना] १. लादने की क्रिया या भाव। २. भार। बोझ। ३. छत आदि का पटाव। ४. ईंटों की जड़ाई जो बिना धरन या कड़ी के अधर में ठहरी हो।

लदुआ, लद्दू-वि० [हिं० लादना] बोझ ढोनेवाला। जिस पर बोझ लादा जाय।

लद्धड़-वि० [हिं०लादना] सुस्त। आलसी।

लद्धना:-क्रि० स० [सं० लब्ध] प्राप्त करना।

लप-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ लचीली चीज़ को पकड़कर हिलाने का व्यापार। २. छुरी, तलवार आदि की चमक की गति।

संज्ञा पु० [देश०] अँजली।

लपक-संज्ञा स्त्री० [अनु० लप] १. ज्वाला। लपट। लौ। २. चमक। लपलपाहट। ३. तेजी। वेग।

लपकना-क्रि० अ० [हिं० लपक] १. झपट पड़ना। तुरंत दौड़ पड़ना।

मुहा०—लपककर = १. तुरंत तेजी से जाकर। २. तुरंत। झट से।

२. आक्रमण करने या लेने के लिये झपटना।

लपट-संज्ञा स्त्री० [हिं० लौ+पट] १. अग्नि। शिखा। ज्वाला। आग की लौ। २. तपी हुई वायु। आँच। ३. गंध से भरा वायु का झोंका। ४. गंध। महक। बू।

लपटना†-क्रि० अ० दे० "लिपटना"।

लपटाना†-क्रि० स० दे० १. "लिपटाना"। २. दे० "लपेटना"।

† क्रि० अ० १. संलग्न होना। सटना। २. उलझना। फँसना।

लपना†-क्रि० अ० [अनु० लप लप] १. झोंक के साथ इधर-उधर लचना। २. झुकना। लचना। ३. लपकना। ललचना। ४. हैरान होना।

लपलपाना-क्रि० अ० [अनु० लप लप] १. लपना। २. लंबी कोमल वस्तु का इधर उधर हिलना डोलना। ३ छुरी, तलवार आदि का चमकना। झलकना।

क्रि० स० १. दे० "लपाना"। २. छुरी, तलवार आदि को हिलाकर चमकाना।

लपसी-संज्ञा स्त्री० [सं० लप्सिका] १. थोड़े घी का हलुआ। २. गीली गाढ़ी वस्तु। ३. पानी में औटाया हुआ आटा जो क़ैदियों को दिया जाता है। लपटा।

लपाना-क्रि० स० [अनु० लपलप] १. लचीली

छड़ी आदि को इधर उधर लचाना। फट-कारना। २. आगे बढ़ाना।

लपेट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लपेटना] १. लपटने की क्रिया या भाव। २. बंधन का चक्कर। घुमाव। फेरा। ३. ऐंठन। बल। मरोड़। ४. घेरा। परिधि। ५. उल-झन। जाल या चक्कर।

लपेटन–संज्ञा स्त्री० दे० "लपेट"।
संज्ञा पु० १.[हिं० लपेटना] लपेटनेवाली वस्तु। २. बांधने का कपड़ा। वेष्टन। बेठन। ३. पैरों में उलझनेवाली वस्तु।

लपेटना–क्रि० स० [हिं० लिपटना] १. घुमाव या फेरे के साथ चारों ओर फँसाना। चक्कर देकर चारों ओर ले जाना। २. फैली हुई वस्तु को लच्छे या गट्ठर के रूप में करना। समेटना। ३. कपड़े आदि के अंदर बाँधना। ४. पकड़ लेना। ५. गति-विधि बंद करना। ६. उलझन में डालना। झंझट में फँसाना।

लपेटवाँ–वि० [हिं० लपेटना] १. जो लपेटा हो। २. जिसमें सोने चांदी के तार लपेटे गए हों। ३. जिसका अर्थ छिपा हो। गूढ़। व्यंग्य।

लफंगा–वि० [फा० लफंग] १. लंपट। दुश्च-रित्र। २. शोहदा। आवारा।

लफना*†–क्रि० अ० दे० "लपना"।

लफलफानि †–संज्ञा स्त्री० दे० "लपलपाना"।

लफाना†–क्रि० स० दे० "लपाना"।

लफ्ज़–संज्ञा पु० [अ०] शब्द।

लबझना*†–क्रि० अ० [देश०] उलझना।

लबड़-धोंधों–संज्ञा स्त्री० [हिं० लबाड़ + धूम] १. झूठ मूठ का हल्ला। २. गड़बड़ी। अंधेर। कुव्यवस्था। ३. बेईमानी की चाल।

लबड़ना*†–क्रि० अ० [सं० लप = बकना] १. झूठ बोलना। २ गप हाँकना।

लबरा†–वि० दे० "लबार"।

लबादा–संज्ञा पु० [फा०] १.रूईदार चोगा। दगला। २. अबा। चोग़ा।

लबार†–वि० [सं० लपन = बकना] १. झूठा। मिथ्यावादी। २. गप्पी। प्रपंची।

लबारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लबार] झूठ बोलने का काम।
वि० १ झूठा। २. चुगलखोर।

लबालब–क्रि० वि० [फा०] मुँह या किनारे तक। छलकता हुआ।

लबेदा–संज्ञा पु० [सं० लगुड] [स्त्री० अल्पा० लबेदी] मोटा बड़ा डंडा।

लब्ध–वि० [सं०] १. मिला हुआ। प्राप्त। २ भाग करने से आया हुआ फल। (गणित)

लब्धप्रतिष्ठ–वि० [सं०] प्रतिष्ठित।

लभ्य–वि० [सं०] १. पाने योग्य। जो मिल सके। २. उचित। मुनासिब।

लमकना†–क्रि० अ० [हिं० लपकना] १. लपकना। २ उत्कंठित होना।

लमतड़ंग–वि० [हिं० लंबा + ताड़ + अंग] [स्त्री० लमतड़ंगी] बहुत लंबा या ऊँचा।

लमधी†–संज्ञा पु० [देश०] समधी का बाप।

लमाना*†–क्रि०स० [हिं० लंबा + ना(प्रत्य०)] १. लंबा करना। २. दूर तक आगे बढ़ाना। क्रि० अ० दूर निकल जाना।

लय–संज्ञा० पु० [सं०] १. एक पदार्थ का दूसरे में मिलना। प्रवेश। २. विलीन होना। मग्नता। ३. ध्यान में डूबना। एकाग्रता। ४. अनुराग। प्रेम। ५. कार्य्य का फिर कारण के रूप में परिणत हो जाना। ६. जगत् का नाश। प्रलय। ७. विनाश। लोप। ८. मिल जाना। संश्लेष। ९. संगीत में नृत्य, गीत और वाद्य की समता।
संज्ञा स्त्री० १. गीत गाने का ढंग या तर्ज़। धुन। २. संगीत में, सम।

लर*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।

लरकई*–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लरकना*†–क्रि० अ० दे० "लटकना"।

लरकिनी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़की"।

लरखरना*†–क्रि० अ० दे० "लड़खड़ाना"।

लरजना–क्रि० अ० [फा० लरजा = कंप] १. काँपना। हिलना। २. दहल जाना। डरना।

लरझर*†–वि० [हिं० लड़ + झड़ना] बहुत अधिक। प्रचुर।

लरना*–क्रि० अ० दे० "लड़ना"।

लरनि*–संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़ना] लड़ाई।

लराई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ाई"।

लरिकई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लरिक-सलोरी†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लरिका + लोल = चपल] लड़कों का खेल। खेलवाड़।

लरिका*†–संज्ञा पुं० दे० "लड़का"।

लरिकाई*†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

लरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ी"।

ललक—संज्ञा स्त्री० [सं० ललन] प्रबल अभिलाषा। गहरी चाह।
ललकना—क्रि० अ० [हिं० ललक] १. पाने की गहरी इच्छा करना। लालसा करना। ललचना। २. चाह की उमंग से भरना।
ललकार—संज्ञा स्त्री० [हिं० ले ले अनु० + कार] ललकारने की क्रिया या भाव।
ललकारना—क्रि० स० [हिं० ललकार] १ युद्ध या प्रतिद्वंद्विता के लिये उच्च स्वर से आह्वान करना। प्रचारना। २. लड़ने के लिये उसकाना या बढ़ावा देना।
ललचना—क्रि० अ० [हिं० लालच] १. लालच करना। २ मोहित होना। लुब्ध होना। ३. अभिलाषा से अधीर होना।
ललचाना—क्रि० स० [हिं०ललचना] १ किसी के मन में लालच उत्पन्न करना। २. मोहित करना। लुभाना। ३. कोई वस्तु दिखाकर उसके पाने के लिये अधीर करना। मुहा०—जी या मन ललचाना = मन मोहित करना। मुग्ध करना। लुभाना।
†क्रि० अ० दे० "ललचना"।
ललचौहाँ—वि० [हिं०लालच + औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० ललचौहीं] लालच से भरा। ललचाया हुआ।
ललन—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्यारा बालक। २. प्रिय नायक या पति। ३. क्रीड़ा।
ललना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्री। कामिनी। २. जिह्वा। जीभ। ३. एक वर्णवृत्त।
लला—संज्ञा पुं० [हिं० लाल] [स्त्री० लली] १. प्यारा या दुलारा लड़का। २. प्रिय नायक या पति।
ललाई—संज्ञा स्त्री० दे० "लाली"।
ललाट—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाल। मस्तक। माथा। २ किस्मत का लिखा।
ललाट-पटल—संज्ञा पुं० [सं०] मस्तक का तल। माथे की सतह।
ललाट-रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपाल का लेख। भाग्यलेख।
ललाना †—क्रि० अ० [सं० ललन] लोभ करना। ललचना। लालायित होना।
ललाम—वि० [सं०] १. रमणीय। सुंदर। २ लाल। सुर्ख। ३. श्रेष्ठ। प्रधान। संज्ञा पुं० १ अलंकार। गहना। २. रत्न। ३ चिह्न। निशान। ४. घोड़ा।
ललित—वि० [सं०] १. सुंदर। मनोहर। २. मनचाहा। प्यारा। ३. हिलता डोलता हुआ।
संज्ञा पुं० १ शृंगार रस में एक कायिक हाव या अंग-चेष्टा जिसमें सुकुमारता (नज़ाकत) के साथ अंग हिलाए जाते हैं। २. एक विषम वर्णवृत्त। ३. एक अलंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु (बात) के स्थान पर उसके प्रतिबिंब का वर्णन किया जाता है।
ललितई *†—संज्ञा स्त्री० दे० "ललिताई"।
ललित कला—संज्ञा स्त्री० [सं० ललित + कला] वे कलाएँ जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौंदर्य की अपेक्षा हो। जैसे—संगीत, चित्रकला, वास्तुकला आदि।
ललितपद—संज्ञा पुं० [सं०] एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं। नरेंद्र। दोवै। सार।
ललिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में त, भ, ज, र होता है। २ राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक।
ललिताई*—संज्ञा स्त्री० [हिं० ललित] सुंदरता।
ललितोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान की समता जताने के लिये सम, तुल्य आदि के वाचक पद न रखकर ऐसे पद लाए जाते हैं, जिनसे बराबरी, मित्रता, निरादर, ईर्ष्या इत्यादि भाव प्रकट होते हैं।
लली—संज्ञा स्त्री० [हिं० लला] १. लड़की के लिये प्यार का शब्द। २. नायिका। प्रेयसी। प्रेमिका।
ललौहाँ—वि० [हिं० लाल] [स्त्री०ललौहीं] सुर्खी मायल। ललाई लिए हुए।
लल्ला—संज्ञा पुं० दे० "लला"।
लल्लो—संज्ञा स्त्री० [सं० ललना] जीभ। ज़बान।
लल्लो चप्पो—संज्ञा स्त्री० [सं०लल + अनु०चप] चिकनी चुपड़ी बात। ठकुरसोहाती।
लल्लो पत्तो†—संज्ञा स्त्री० दे० "लल्लो चप्पो"।
लवंग—संज्ञा पुं० [सं०] लौंग। (मसाला)
लव—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत थोड़ी मात्रा। २ दो काष्ठा अर्थात् छत्तीस निमेष का अल्प समय। ३. लवा नाम की चि[illegible] ४ लवंग। ५ श्री रामचंद्र के पुत्रों में से एक।

लवण–संज्ञा पुं० [सं०] १. नमक। नोन। २. दे० "लवणासुर"। ३ दे० "लवणसमुद्र"।

लवणसमुद्र–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणोक्त सात समुद्रों में से एक। खारे पानी का समुद्र।

लवणासुर–संज्ञा पुं० [सं०] मधु नामक असुर का पुत्र जिसे शत्रुघ्न ने मारा था।

लवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. काटना। छेदना। २. खेत की कटाई। लुनाई। लौनी।

लवना–क्रि० स० दे० "लुनना"।

लवनाईꣻ–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लवनि, लवनी–संज्ञा स्त्री० [सं० लवन] खेत में अनाज की पकी फ़सल की कटाई। लुनाई।
संज्ञा स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन।

लवर†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लपट] अग्नि की लपट। ज्वाला।

लवलासीꣻ†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लव=प्रेम+लासी=लसी, लगाव] प्रेम की लगावट।

लवली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हरफारेवरी नाम का पेड़ और उसका फल। २. एक विषम वर्णवृत्त।

लवलीन–वि० [हिं० लव+लीन] तन्मय। तल्लीन। मग्न।

लवलेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. अत्यंत अल्प मात्रा। २. अल्प संसर्ग।

लवा†–संज्ञा पुं० [सं० लाजा] भुने हुए धान या ज्वार की खील। लावा।
संज्ञा पुं० [सं० लव] तीतर की जाति का एक पक्षी।

लवाई–वि० [देश०] वह गाय जिसका बच्चा अभी बहुत ही छोटा हो।
संज्ञा स्त्री० [हिं० लवना+आई (प्रत्य०)] खेत की फसल की कटाई। लुनाई।

लवाज़मा–संज्ञा पुं० [अ० लवाज़िम] १. किसी के साथ रहनेवाला दल-बल और साज-सामान। २ आवश्यक सामग्री।

लवारा–संज्ञा पुं० [हिं० लवाई] गौ का बच्चा।

लवासीꣻ†–वि० [सं० लप=बकना+आसी (प्रत्य०)] १. गप्पी। बकवादी। २. लपट।

लशकर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ सेना। फ़ौज। २. भीड़भाड़। दल। ३ सेना का पड़ाव। छावनी। ४. जहाज़ में काम करनेवालों का दल।

लशकरी–वि० [फ़ा० लश्कर] १. फ़ौज का। सेना संबंधी। २. जहाज पर काम करनेवाला। खलासी। जहाजी।
संज्ञा स्त्री० जहाजियों या खलासियों की भाषा।

लषनꣻ–संज्ञा पुं० दे० "लखन"।

लस–संज्ञा पुं० [सं०] १. चिपकने या चिपकाने का गुण। चिपचिपाहट। २. वह जिसके लगाव से एक वस्तु दूसरी वस्तु से चिपक जाय। लासा। ३ चित्त लगने की बात। आकर्षण।

लसदार–वि० [हिं० लस+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें लस हो। लसीला।

लसना–क्रि० स० [सं० लसन] एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ सटाना। चिपकाना।
ꣻ क्रि० अ० १ शोभित होना। छजना। फबना। २. विराजना।

लसनिꣻ–संज्ञा स्त्री० [हिं० लसना] १. स्थिति। विद्यमानता। २ शोभा। छटा।

लसम–वि० [देश०] दूषित। खोटा।

लसलसा–वि० दे० "लसदार"।

लसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लस] १. लस। चिपचिपाहट। २. दिल लगने की वस्तु। आकर्षण। ३. लाभ का योग। फ़ायदे का डौल। ४ संबंध। लगाव। ५. दूध और पानी मिला शरबत।

लसीला–वि० [हिं० लस] [स्त्री० लसीली] १. लसदार। २. सुंदर। शोभायुक्त।

लसोड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० लस=चिपचिपाहट] एक प्रकार का पेड़ जिसके फल औषध के काम में आते हैं।

लस्टम-पस्टम‡–क्रि० वि० [देश०] किसी न किसी तरह से। ज्यों त्यों।

लस्त–वि० [हिं० लटना] १. थका हुआ। शिथिल। २. अशक्त।

लस्सी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लस] १. चिपचिपाहट। लसी। २. छाछ। मठा। तक्र।

लहँगा–संज्ञा पुं० [हिं० लंक=कमर+अंगा] कमर के नीचे का सारा अंग ढाँकने के लिये स्त्रियों का एक घेरदार पहनावा।

लहक–संज्ञा स्त्री० [हिं० लहकना] १. लहकने की क्रिया या भाव। २. आग की लपट। ३ शोभा। छवि। ४. चमक। द्युति।

लहकना–क्रि० अ० [अनु०] १. झोंके खाना। लहराना। २ हवा का बहना। ३ आग

का इधर-उधर लपट छोड़ना। दहकना। ४. लपकना। ५. उत्कंठित होना।

लहकाना, लहकारना–क्रि० स० [हिं० लहकना] लहकने में किसी को प्रवृत्त करना।

लहकौर, लहकौरि–संज्ञा स्त्री० [हिं० लहना + कौर (ग्रास)] विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा और दुलहिन एक दूसरे के मुँह में कौर (ग्रास) डालते हैं।

लहजा–संज्ञा पु० [अ० लहजः] गाने या बोलने का ढंग। स्वर। लय।

लहज़ा–संज्ञा पु० [अ०] पल। क्षण।

लहनदार–संज्ञा पु० [हिं० लहना + फा० दार] ऋण देनेवाला। महाजन।

लहना–क्रि० स० [सं० लभन] प्राप्त करना। संज्ञा पु० [सं० लभन] १. उधार दिया हुआ रुपया-पैसा। २. रुपया-पैसा जो किसी कारण किसी से मिलनेवाला हो।

लहनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लहना] १. प्राप्ति। २. फलभोग।

लहबर–संज्ञा पु० [हिं० लहर ?] १. एक प्रकार का लंबा पहनावा। लबादा। चोगा। २. झंडा। निशान।

लहमा–संज्ञा पु० [अ० लहमः] पल। क्षण।

लहर–संज्ञा स्त्री० [सं० लहरी] १. ऊँची उठती हुई जल की राशि। बड़ा हिलोरा। मौज। २. उमंग। जोश। ३. मन की मौज। ४. बेहोशी, पीड़ा आदि का वेग जो कुछ अंतर पर रह रहकर उत्पन्न हो। झोंका। मुहा०—साँप काटने की लहर = साँप के काटे गए आदमी की वह अवस्था जिसमें बेहोशी से बीच बीच में वह जाग उठता है। ५. आनंद की उमंग। मज़ा। मौज। यौ०—लहर बहर = आनंद और सुख। ६. इधर-उधर मुड़ती हुई टेढ़ी चाल। ७. चलते हुए सर्प की सी कुटिल रेखा। ८. हवा का झोंका। महक। लपट।

लहरदार–वि० [हिं० लहर + फा० दार (प्रत्य०)] जो सीधा न जाकर बल खाता हुआ गया हो।

लहरना–क्रि० अ० दे० "लहराना"।

लहर-पटोर–संज्ञा पुं० [हिं० लहर + पट] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

लहरा–संज्ञा पुं० [हिं० लहर] १. लहर। तरंग। २. मौज। आनंद। मज़ा।

लहराना–क्रि० अ० [हिं० लहर + आना (प्रत्य०)] १. हवा के झोंके से इधर-उधर हिलना-डोलना। लहरें खाना। २. पानी का हवा के झोंके से उठना और गिरना। बढ़ना या हिलोरा मारना। ३. इधर-उधर मुड़ते या झोंका खाते हुए चलना। ४. मन का उमंग में होना। ५. उत्कंठित होना। लपकना। ६. आग की लपट का हिलना। दहकना। भड़कना। ७. शोभित होना। लसना। विराजना।

क्रि० स० १. हवा के झोंके में इधर-उधर हिलाना। २. वक्र गति से ले जाना।

लहरिया–संज्ञा पु० [हिं० लहर] १. लहरदार चिह्न। टेढ़ी मेढ़ी गई हुई लकीरों की श्रेणी। २. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंग-बिरंगी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनी होती हैं। ३. उपर्युक्त प्रकार के कपड़े की साड़ी या धोती।

संज्ञा स्त्री० दे० "लहर"।

लहरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] लहर। तरंग। † वि० [हिं० लहर + ई (प्रत्य०)] मन की तरंग के अनुसार चलनेवाला। मनमौजी।

लहलहा–वि० [हिं० लहलहाना] [स्त्री० लहलही] १. लहलहाता हुआ। हरा-भरा। २. आनंद से पूर्ण। प्रफुल्ल। ३. हृष्ट पुष्ट।

लहलहाना–क्रि० अ० [हिं० लहरना (पत्तियों का)] १. हरी पत्तियों से भरना। हरा-भरा होना। २. प्रफुल्लित होना। खुशी से भरना। ३. सूखे पेड़ या पौधे में फिर से पत्तियाँ निकलना। पनपना।

लहसुन–संज्ञा पु० [सं० लशुन] एक पौधा जिसकी जड़ गोल गाँठ के रूप में होती और मसाले के काम में आती है।

लहसुनिया–संज्ञा पु० [हिं० लहसुन] धूमिल रंग का एक रत्न। रुद्राक्ष।

लहा†–संज्ञा पु० दे० "लाह"।

लहाछेह–संज्ञा पु० [?] १. नाच की एक गति। २. नाचने में तेज़ी और झपट।

लहालह†*–वि० दे० "लहलहा"।

लहालोट–वि० [हिं० लाभ, लाह + लोटना] १. हँसी से लोटता हुआ। २. खुशी से भरा हुआ। ३ प्रेम-मग्न। मोहित। लट्टू।

लहासी–संज्ञा स्त्री० [सं० लभस] मोटी रस्सी।

लहि†–अव्य० [हिं० लहना] पर्यंत। तक।

लहुँ†–अव्य० दे० "लौं"।

लहुरा†–वि० [सं० लघु] [स्त्री० लहुरी] छोटा।

लहू–संज्ञा पु० [सं० लोह] रक्त। खून।

मुहा०—लहू-लुहान होना = खून से भर जाना। अत्यंत लहू बहना।

लहेरा-संज्ञा पुं० [हिं० लाह = लाख + एरा (प्रत्य०)] लाह का पक्का रंग चढ़ानेवाला।

लाँक†-संज्ञा स्त्री० [हिं० लंक] कमर। कटि।

लाँग-संज्ञा स्त्री० [सं० लांगूल = पूँछ] धोती का वह भाग जो पीछे की ओर कमर में खोंस लिया जाता है। काछ।

लांगल-संज्ञा पुं० [सं०] खेत जोतने का हल।

लांगली-संज्ञा पुं० [सं० लांगलिन्] १. बल-राम। २. नारियल। ३ साँप।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणानुसार एक नदी का नाम। २. कलियारी। ३. मजीठ।

लांगूली-संज्ञा पुं० [सं० लांगूलिन्] बंदर।

लाँघना-क्रि० स० [सं० लंघन] इस पार से उस पार जाना। डाँकना। नाँघना।

लाँच-संज्ञा स्त्री०[देश०] रिशवत। घूस।

लांछन-संज्ञा पुं० [सं०] १. चिह्न। निशान। २. दाग। ३. दोष। कलंक।

लांछितः-वि० दे० "लांछित"।

लाँबा†ः-वि० दे० "लंबा"।

लाइः†-संज्ञा पुं० [सं० अलात = लुक] अग्नि।

लाइक-वि० दे० "लायक"।

लाई†-संज्ञा स्त्री०[सं० लाजा] धान का लावा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० लगाना] चुगली। निंदा।
यौ०—लाई लुतरी = १. चुगली। शिकायत। २. चुगलखोर। (स्त्री)

लाकड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "लकड़ी"।

लाक्षणिक-वि० [सं०] १. जिससे लक्षण प्रकट हो। २ लक्षण संबंधी।
संज्ञा पुं० [सं०] १ वह छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ हों। २. लक्षण जाननेवाला।

लाक्षा-संज्ञा स्त्री० [सं०] लाख। लाह।

लाक्षागृह-संज्ञा पुं० [सं०] लाख का वह घर जिसे दुर्योधन ने पांडवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था।

लाक्षारस-संज्ञा पुं० [सं०] महावर।

लाख-वि० [सं० लक्ष] १. सौ हजार। २. बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।
संज्ञा पुं० सौ हजार की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००००।
क्रि० वि० बहुत। अधिक।
मुहा०—लाख से लीख होना = सब कुछ से कुछ न रह जाना।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध लाल पदार्थ जो अनेक प्रकार के वृक्षों की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़े से बनता है। लाह। २. वे छोटे लाल कीड़े जिनसे उक्त द्रव्य निकलता है।

लाखना-क्रि० अ० [हिं० लाख + ना (प्रत्य०)] लाख लगाकर कोई छेद बंद करना।
ः† क्रि० स० [सं० लक्षण] जानना।

लाखागृह-संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह"।

लाखी-वि० [हिं० लाख + ई (प्रत्य०)] लाख के रंग का। मटमैला लाल।
संज्ञा पुं० लाख के रंग का घोड़ा।

लाग-संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १. संपर्क। संबंध। लगाव। २. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। ३ लगन। मन की तत्परता। ४. युक्ति। तरकीब। उपाय। ५. वह स्वाँग आदि जिसमें कोई विशेष कौशल हो। ६. प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी। ७. बैर। शत्रुता। दुश्मनी। ८. जादू। मंत्र। टोना। ९. वह नियत धन जो शुभ अवसरों पर ब्राह्मणों, भाटों आदि को दिया जाता है। १०. भूमि-कर। लगान। ११. एक प्रकार का नृत्य।
क्रि० वि० [हिं० लौं] पर्यंत। तक।

लाग-डाँट-संज्ञा स्त्री० [हिं० लाग = बैर + डाँट] १. शत्रुता। दुश्मनी। २. प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी।
संज्ञा स्त्री० [सं० लग्नदंड] नृत्य की एक क्रिया।

लागत-संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] वह खर्च जो किसी चीज़ की तैयारी या बनाने में लगे।

लागना -क्रि० अ० दे० "लगना"।

लागिः†-अव्य० [हिं० लगना] १. कारण। हेतु। २. निमित्त। लिये। ३. द्वारा।
क्रि० वि० [हिं० लौं] तक। पर्यंत।

लागू†-वि० [हिं० लगना] जो लगने योग्य हो। प्रयुक्त या चरितार्थ होनेवाला।

लागे†-अव्य० [हिं० लगना] वास्ते। लिये।

लाघव-संज्ञा पुं० [सं०] १. लघु होने का भाव। लघुता। २. कमी। अल्पता। ३. हाथ की सफ़ाई। फुर्ती। तेजी। ४. आरोग्य। तंदुरुस्ती।
अव्य० [सं०] फुर्ती से। सहज में।

लाघवीः-संज्ञा स्त्री० [सं० लाघव + ई (प्रत्य०)] फ़ुर्ती। शीघ्रता।

लाचार-वि० [फा०] जिसका कुछ वश न चलता हो। विवश। मजबूर।
क्रि० वि० विवश या मजबूर होकर।
लाचारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] मजबूरी। विवशता।
लाछन*-संज्ञा पु० दे० "लांछन"।
लाज-संज्ञा स्त्री० दे० "लज्जा"।
लाजक-संज्ञा पु० [सं० लाजा] धान का लावा।
लाजना*†-क्रि० अ० [हिं० लाज+ना(प्रत्य०)] लज्जित होना। शरमाना।
लाजवंत-वि० [हिं० लाज+वंत (प्रत्य०)] [स्त्री० लाजवती] जिसे लज्जा हो। शर्मदार।
लाजवंती-संज्ञा स्त्री० [हिं० लजालू] लजालू नाम का पौधा। छुई-मुई। लजाधुर।
लाजवर्द-संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का प्रसिद्ध कीमती पत्थर। राजवर्तक।
ला-जवाब-वि० [फा०] १. अनुपम। बेजोड़। २. निरुत्तर। चुप। खामोश।
लाजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चावल। २. भूनकर फुलाया हुआ धान। लावा।
लाज़िम-वि० [अ०] १. जो अवश्य कर्तव्य हो। २. उचित। मुनासिब। वाजिब।
लाज़िमी-वि० [अ० लाज़िम] जरूरी। आवश्यक।
लाट-संज्ञा स्त्री० [हिं० लट्ठा ?] मोटा और ऊँचा खंभा।
संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश जहाँ अब अहमदाबाद आदि नगर है। २. इस देश के निवासी। ३. दे० "लाटानुप्रास"।
लाटानुप्रास-संज्ञा पु० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है, परंतु अन्वय के हेर-फेर से तात्पर्य भिन्न हो जाता है।
लाटिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक प्रकार की रचना या रीति। इसमें छोटे छोटे पद और समास होते हैं।
लाटी†-संज्ञा स्त्री० [अनु० लट लट = गाढ़ा या चिपचिपा होना] वह अवस्था जिसमें मुँह का थूक और होठ सूख जाते हैं।
संज्ञा स्त्री० [सं०] लाटिका रीति।
लाठ-संज्ञा स्त्री० दे० "लाट"।
लाठी-संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टि] डंडा। लकड़ी।
मुहा०—लाठी चलना = लाठियों की मार-पीट होना।

लाड़-संज्ञा पु० [सं० लालन] बच्चों का लालन। प्यार। दुलार।
लाड़लड़ैता-वि० दे० "लाड़ला"।
लाड़ला-वि० [हिं० लाड] [स्त्री० लाड़ली] जिसका लाड किया जाय। प्यारा। दुलारा।
लात-संज्ञा स्त्री० [?] १. पैर। पाँव। पद। २ पैर से किया हुआ आघात। पाद-प्रहार।
मुहा०—लात खाना = पैरों की ठोकर या मार सहना। लात मारना = तुच्छ समझकर छोड़ देना। त्याग देना।
लाद-संज्ञा स्त्री० [हिं० लादना] १. लादने की क्रिया। २. पेट। उदर। ३. आँत। अँतड़ी।
लादना-क्रि० स० [सं० लब्ध] १. किसी चीज पर बहुत सी वस्तुएँ रखना। २. ढोने या ले जाने के लिये वस्तुओं को भरना। ३ किसी बात का भार रखना।
लादी-संज्ञा स्त्री० [हिं० लादना] वह गठरी जो किसी पशु पर लादी जाती है।
लाधना*†-क्रि० स० [सं० लब्ध] प्राप्त करना। पाना।
लानत-संज्ञा स्त्री० [अ० लअनत] धिक्कार। फिटकार। भर्त्सना।
लाना-क्रि० अ० [हिं० लेना+आना] १. कोई चीज उठाकर या अपने साथ लेकर आना। २. उपस्थित करना। सामने रखना।
क्रि० स० [हिं० लाय = आग] आग लगाना। जलाना।
*†क्रि० स० [हिं० लगाना] लगाना।
लाने*†-अव्य० [हिं० लाना] वास्ते। लिये
लापता-वि० [अ० ला = बिना + हिं० पता १ जिसका पता न लगे। २. गुप्त। गायब।
लापरवा, लापरवाह-वि० [अ० ला + फा० परवाह] १. जिसे किसी बात की परवा न हो। बेफिक्र। २. असावधान।
लापरवाही-संज्ञा स्त्री० [अ० ला+फा० परवाह] १. बेफ़िक्री। २. असावधानी।
लापसी†-संज्ञा स्त्री० दे० "लपसी"।
लाबर*†-वि० दे० "लबार"।
लाभ-संज्ञा पु० [सं०] १. मिलना। प्राप्ति। लब्धि। २. मुनाफा। नफा। ३. उपकार। भलाई।
लाभकारी, लाभदायक-वि० [सं० लाभकारिन्] फायदा करनेवाला। गुणकारक।
लाम-संज्ञा पु० [फा० लाम] १. सेना। फौज। २. बहुत से लोगों का समूह।

मज–संज्ञा पु० [सं० लामज्जक] खस की तरह का एक प्रकार का तृण। पीला वाला।
मा–संज्ञा पु० [ति०] तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य।
वि० दे० "लंबा"।
मे†–क्रि० वि० [हिं० लाम=लंबा] दूर। अंतर पर।
य॰–संज्ञा स्त्री० [सं० अलात] १. लपट। ज्वाला। २. आग। अग्नि।
यक–वि० [अ०] १. उचित। ठीक। वाजिब। २. उपयुक्त। मुनासिब। ३. सुयोग्य। गुणवान्। ४. समर्थ। सामर्थ्यवान्।
संज्ञा पु० [सं० लाजा] धान का लावा।
यकी–संज्ञा स्त्री० [अ० लायक] लायक होने का भाव या धर्म। योग्यता।
र–संज्ञा स्त्री० [सं० लाला] १. वह पतला लसदार थूक जो मुँह में से तार के रूप में निकलता है।
मुहा०—मुँह से लार टपकना=किसी चीज को देखकर उसके पाने की परम लालसा होना।
२. कतार। पंक्ति। ३. लासा। लुआब।
क्रि० वि० [फा० लैर=पीछे] साथ। पीछे।
मुहा०—लार लगाना=फँसाना। बझाना।
ल–संज्ञा पु० [सं० लालक] १. छोटा और प्रिय बालक। २. बेटा। पुत्र। लड़का।
३. प्यारा आदमी। ४. श्रीकृष्णचंद्र।
संज्ञा पु० [सं० लालन] दुलार। लाड़। प्यार।
संज्ञा पुं० दे० "लार"।
॰†संज्ञा स्त्री० [सं० लालसा] इच्छा। चाह।
संज्ञा पु० दे० "मानिक"।
वि० १. रक्तवर्ण। सुर्ख। २. बहुत अधिक क्रुद्ध।
मुहा०—लाल पड़ना या होना=क्रुद्ध होना। नाराज होना। लाल पीले होना=गुस्सा होना। क्रोध करना।
३. (खेलाड़ी) जो खेल में औरों से पहले जीत गया हो।
मुहा०—लाल होना=बहुत अधिक संपत्ति पाकर संपन्न होना।
संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया। इसकी मादा को "मुनियाँ" कहते हैं।
लाल चंदन–संज्ञा पुं० [हिं० लाल+चंदन] एक प्रकार का चंदन जिसे घिसने से लाल रंग और अच्छी सुगंध निकलती है। रक्त-चंदन। देवी चंदन।

लालच–संज्ञा पु० [सं० लालसा] [वि०लालची] १. कोई चीज़ पाने की बहुत बुरी तरह इच्छा करना। २. लोभ। लोलुपता।
लालचहा†–वि० दे० "लालची"।
लालची–वि० [हिं० लालच+ई (प्रत्य०)] जिसे बहुत अधिक लालच हो। लोभी।
लालटेन–संज्ञा स्त्री० [अं० लैंटर्न] किसी प्रकार का वह खाना आदि जिसमें तेल का खजाना और जलाने के लिये बत्ती लगी रहती है; और जिसके चारों ओर, शीशा या कोई पारदर्शी पदार्थ लगा रहता है। कंदील।
लालड़ी–संज्ञा पु० [हिं०लाल(रत्न) + ड़ी(प्रत्य०)] एक प्रकार का लाल नगीना।
लालन–संज्ञा पु० [सं०] प्रेमपूर्वक बालकों का आदर करना। लाड़। प्यार।
संज्ञा पु० [हिं० लाला] १. प्रिय पुत्र। प्यारा बच्चा। २. कुमार। बालक।
क्रि० अ० लाड करना। प्यार करना।
लालना॰–क्रि० स० [सं० लालन] दुलार करना। लाड़ करना। प्यार करना।
लाल-बुझक्कड़–संज्ञा पु०[हिं० लाल+बूझना] बातों का अटकलपच्चू मतलब लगानेवाला।
लालमन–संज्ञा पु० [हिं० लाल+मणि] १. श्रीकृष्ण। २. एक प्रकार का तोता।
लालमिर्च–संज्ञा स्त्री० दे० "मिर्च"।
लालरी–संज्ञा स्त्री० दे० "लालड़ी"।
लाल समुद्र–संज्ञा पु० दे० "लाल सागर"।
लालसा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुत अधिक इच्छा या चाह। लिप्सा। २. उत्सुकता।
लाल सागर–संज्ञा पु० [हिं० लाल+सागर] भारतीय महासागर का वह अंश जो अरब और अफ्रिका के मध्य में पड़ता है।
लालसिरी†–संज्ञा पु० [हिं०लाल+सिरा] सुर्खाब।
लालसी॰–वि० [सं० लालसा] अभिलाषा या इच्छा करनेवाला। उत्सुक।
लाला–संज्ञा पुं० [सं०लालक] १. एक प्रकार का संबोधन। महाशय। साहब। २. कायस्थ जाति का सूचक एक शब्द। ३. छोटे प्रिय बच्चे के लिये संबोधन।
संज्ञा स्त्री० [सं०] मुँह से निकलनेवाली लार। थूक।
संज्ञा पुं० [फा०] पोस्त या लाल रंग का फूल।
वि० [हिं० लाल] लाल रंग का।
लालायित–वि० [सं०] ललचाया हुआ।

ललित-वि० [सं०] १. दुलारा। प्यारा। २. जो पाला पोसा गया हो।
लालित्य-संज्ञा पुं० [सं०] ललित का भाव। सौंदर्य। सुंदरता। सरसता।
लालिमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।
लाली-संज्ञा स्त्री० [हिं० लाल+ई (प्रत्य०)] १. लाल होने का भाव। ललाई। ललपन। सुर्खी। २. इज्जत। पत। आबरू।
लाले-संज्ञा पुं० [सं० लाला] लालसा। अभिलाषा।
मुहा०—किसी चीज़ के लाले पड़ना= किसी चीज़ के लिये बहुत तरसना।
लावहा†-संज्ञा पुं० दे० "मासा"। (साग)
लावा†-संज्ञा स्त्री० [हिं० लाय] आग। संज्ञा स्त्री० [देश०] मोटा रस्सा।
लावक-संज्ञा पुं० [सं०] लवा पक्षी।
लावण्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. लवण का भाव या धर्म। नमकपन। २ अत्यंत सुंदरता।
लावदार-वि० [हिं० लाव=आग+फा० दार (प्रत्य०)] (तोप) जो छोड़ी जाने या रंजक देने के लिये तैयार हो।
संज्ञा पुं० तोप छोड़नेवाला। तोपची।
लावनता*-संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।
लावना*†-क्रि० स० दे० "लाना"।
क्रि० स० [हिं० लगाना] १. लगाना। स्पर्श कराना। २. जलाना। आग लगाना।
लावनि*-संज्ञा स्त्री० [सं० लावण्य] सौंदर्य।
लावनी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का छंद। २. इस छंद का एक प्रकार जो प्रायः चंग बजाकर गाया जाता है ख्याल।
लावल्द-वि० [फा०] निःसंतान।
लावा-संज्ञा पुं० [सं०] लवा नामक पक्षी।
संज्ञा पुं० [सं० लाजा] भूना हुआ धान, या रामदाना आदि जो भुनने के कारण फूटकर फूल जाता है। खील। लाई। फुल्ला।
लावा परछन-संज्ञा पुं० [हिं० लावा+परछना] विवाह के समय की एक रीति।
लावारिस-संज्ञा पुं० [अ०] [वि० लावारिसी] वह जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस न हो।
लाश-संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी प्राणी का मृतक देह। लोथ। मुरदा। शव।
लाप*-संज्ञा पुं० वि० दे० "लाख"।
लापना*†-क्रि० स० दे० "लखना"।
लास-संज्ञा पुं० [सं० लास्य] १. एक प्रकार का नाच। २. मटक।
लासा-संज्ञा पुं० [हिं० लस] १. कोई लसदार चीज। चेप। लुआब। २. एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ जो बहेलिये लोग चिड़ियों को फँसाने के लिये बनाते हैं।
लासानी-वि० [अ०] अद्वितीय। बेजोड़।
लासि-संज्ञा पुं० दे० "लास्य"।
लास्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. नृत्य। नाच। २. वह नृत्य जो कोमल अंगों के द्वारा हो और जिससे शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता हो।
लाह*-संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा] लाख। चपड़ा।
संज्ञा पुं० [सं० लाभ] लाभ। नफा।
संज्ञा स्त्री० [?] चमक। आभा। कांति।
लाहल-संज्ञा पुं० दे० "लाहौल"।
लाही-संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा] १. दे० "लाख"। २. लाख से मिलता जुलता एक कीड़ा जो फसल को प्रायः हानि पहुँचाता है।
वि० मटमैलापन लिए लाल।
लाहु*-संज्ञा पुं० [सं० लाभ] नफा। लाभ।
लाहौल-संज्ञा पुं० [अ०] एक अरबी वाक्य का पहला शब्द जिसका व्यवहार प्रायः भूत-प्रेत आदि को भगाने या घृणा प्रकट करने के लिये किया जाता है।
लिंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. चिह्न। लक्षण। निशान। २. वह जिससे किसी वस्तु का अनुमान हो। ३. सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति। ४. पुरुष की गुप्त इंद्रिय। शिश्न। ५ शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति। ६. व्याकरण में वह भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है। जैसे, पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग।
लिंगदेह-संज्ञा पुं० [सं०] वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मों के फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है। (अध्यात्म)
लिंगपुराण-संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक जिसमें शिव का माहात्म्य वर्णित है।
लिंगशरीर-संज्ञा पुं० दे० "लिंगदेह"।
लिंगायत-संज्ञा पुं० [सं०] एक शैव संप्रदाय जिसका प्रचार दक्षिण में बहुत है।
लिंगी-संज्ञा पुं० [सं० लिंगिन्] १. चिह्नवाला। निशानवाला। २. आडंबरी। धर्मध्वजी।
लिंगेंद्रिय-संज्ञा पुं० [सं०] पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।

लिए–हिंदी का एक कारक-चिह्न जो संप्रदान में आता है, और जिस शब्द के आगे लगता है, उसके अर्थ या निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित करता है। जैसे—उसके लिए।

लिक्खाड–संज्ञा पुं० [हिं० लिखना] बहुत लिखनेवाला। भारी लेखक। (व्यंग्य)

लिक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जूँ का अंडा। लीख। २ एक परिमाण जो कई प्रकार का कहा गया है।

लिखत–संज्ञा स्त्री० [सं० लिखित] १. लिखी हुई बात। लेख। २ दस्तावेज।

लिखधार–संज्ञा पुं० [हिं० लिखना + धार (प्रत्य०)] लिखनेवाला। मुहर्रिर या मुंशी।

लिखना–क्रि० स० [सं० लिखन] १ चिह्न करना। अंकित करना। २ स्याही में डूबी हुई कलम से अक्षरों की आकृति बनाना। लिपिबद्ध करना। ३ चित्रित करना। चित्र बनाना। ४ पुस्तक, लेख या काव्य आदि की रचना करना।

लिखाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखना] १ लेख। लिपि। २. लिखने का कार्य्य। ३ लिखने का ढंग। लिखावट। ४ लिखने की मजदूरी।

लिखाना– क्रि० स० [सं० लिखन] दूसरे के द्वारा लिखने का काम कराना।

लिखापढ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखना + पढ़ना] १. पत्र-व्यवहार। चिट्ठियों का आना जाना। २. किसी विषय को कागज पर लिखकर निश्चित या पक्का करना।

लिखावट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखना + आवट (प्रत्य०)] १ लेख। लिपि। २ लिखने का ढंग।

लिखित–वि० [सं०] लिखा हुआ। अंकित।

लिखितक–संज्ञा पुं० [सं० लिखित] एक प्रकार के प्राचीन चौखूँटे अक्षर।

लिख्या–संज्ञा स्त्री० दे० "लिक्षा"।

लिच्छवि–संज्ञा पुं० [सं०] एक इतिहास-प्रसिद्ध राजवंश जिसका राज्य नैपाल, मगध और कोशल में था।

लिटाना–क्रि० स० [हिं० लेटना] दूसरे को लेटने में प्रवृत्त कराना।

लिट्ट–संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० लिट्टी] मोटी रोटी। अँगाकड़ी। बाटी।

लिडार†–संज्ञा पुं० [देश०] शृगाल। गीदड़। वि० डरपोक। कायर। बुजदिल।

लिपटना–क्रि० अ० [सं० लिप्त] १ एक वस्तु का दूसरी को घेरकर उससे खूब सट जाना। चिमटना। २. गले लगना। आलिंगन करना। ३. किसी काम में जी जान से लग जाना।

लिपटाना–क्रि०स० [हिं०लिपटना का स० रूप] १ संलग्न करना। चिमटाना। २. आलिंगन करना। गले लगाना।

लिपड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] कपड़ा।
वि० [हिं० लेप] गीला और चिपचिपा।
संज्ञा स्त्री० दे० "लिबड़ी"।

लिपना–क्रि० अ० [सं० लिप] १ लीपा या पोता जाना। २ रंग या गीली वस्तु का फैल जाना।

लिपवाना–क्रि० स० [हिं० लीपना] लीपने का काम दूसरे से कराना।

लिपाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० लीपना] लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लिपाना–क्रि० स० [हिं० लीपना] १. रंग या किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना। पुताना। २. चूने, मिट्टी, गोबर आदि का लेप कराना।

लिपि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अक्षर या वर्ण के अंकित चिह्न। लिखावट। २ अक्षर लिखने की प्रणाली। जैसे—ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि। ३. लिखे हुए अक्षर या बात। लेख।

लिपिबद्ध–वि० [सं०] लिखा हुआ। लिखित।

लिप्त–वि० [सं०] १. लिपा हुआ। पुता हुआ। २ जिसकी पतली तह चढ़ी हो। ३ खूब तत्पर। लीन। अनुरक्त।

लिप्सा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लालच। लोभ।

लिफ़ाफ़ा–संज्ञा पुं० [अ०] १ कागज की बनी हुई वह चौकोर थैली जिसके अंदर कागज-पत्र रखकर भेजे जाते हैं। २. दिखावटी कपड़े लत्ते। ३. ऊपरी आडंबर। मुलम्मा। कलई। ४. जल्दी नष्ट हो जानेवाली वस्तु।

लिबड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लुगड़ी ?] कपड़ा-लत्ता।
यौ०—लिबड़ी बरतना या बारदाना = निर्वाह का मामूली सामान। असबाब।

लिबास–संज्ञा पुं० [अ०] पहनने का कपड़ा। आच्छादन। पहनावा। पोशाक।

लियाक़त–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता।

काबिलीयत। २. गुण। हुनर। ३. सामर्थ्य। ४. शील। शिष्टता।

लिलाट, लिलार†–संज्ञा पु० दे० "ललाट"।

लिलोहाँ†–वि० [सं० लल=चाह करना] लालची।

लिवाना–क्रि० स० [हिं० लेना या लाना] लेने या लाने का काम दूसरे से कराना।

लिवाल–संज्ञा पु० [हिं० लेना+वाल (प्रत्य०)] खरीदने या लेनेवाला।

लिसोड़ा–संज्ञा पु० [हिं०लस=चिपचिपाहट] एक मँझोला पेड़ जिसके फल छोटे बेर के बराबर होते हैं।

लिहाज़–संज्ञा पुं० [अ०] १. व्यवहार या बरताव में किसी बात का ध्यान। २. मेहरबानी का खयाल। कृपा-दृष्टि। ३ मुरव्वत। मुलाहज़ा। शील-संकोच। ४. पक्षपात। तरफदारी। ५. सम्मान या मर्यादा का ध्यान। ६. लज्जा। शर्म। हया।

लिहाड़ा–वि० [देश०] १. नीच। वाहियात। गिरा हुआ। २. खराब। निकम्मा।

लिहाड़ी†–संज्ञा स्त्री०[देश०] उपहास। निंदा।

लिहाफ़–संज्ञा पु० [अ०] रात को सोते समय ओढ़ने का रूईदार कपड़ा। भारी रज़ाई।

लिहित–वि० [सं० लिह] चाटता हुआ।

लीक–संज्ञा स्त्री०[सं०लिख्] १. लकीर। रेखा। मुहा०—लीक करके=दे० "लीक खींचकर"। लीक खिंचना=१. किसी बात का अटल और दृढ़ होना। २. मर्यादा बँधना। ३. सारा बँधना। प्रतिष्ठा स्थिर होना। लीक खींचकर=निश्चयपूर्वक। जोर देकर।
२. गहरी पड़ी हुई लकीर। मुहा०—लीक पीटना=चली आई हुई प्रथा का ही अनुसरण करना।
३. मर्यादा। नाम। यश। ४. बँधी हुई मर्यादा। लोक-नियम। ५ रीति। प्रथा। चाल। दस्तूर। ६. हद। प्रतिबंध। ७. धब्बा। बदनामी। लाञ्छन। ८. गिनती। गणना।

लीख–संज्ञा स्त्री० [सं०लिक्षा] १. जूँ का अंडा। लिक्षा नामक परिमाण।

लीचड़–वि० [देश०] १. सुस्त। काहिल। निकम्मा। २. जल्दी न छोड़नेवाला। ३. जिसका लेन-देन ठीक न हो।

लीची–संज्ञा स्त्री० [चीनी लीचू] एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसका फल मीठा होता है।

लीझी–वि० [देश०] १. नीरस। निस्सार। २. निकम्मा।

लीद–संज्ञा स्त्री० [देश०] घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओं का मल।

लीन–वि० [सं०] [भाव० लीनता] १. जो किसी वस्तु में समा गया हो। २. तन्मय। मग्न। ३ बिलकुल लगा हुआ। तत्पर।

लीपना–क्रि० स० [सं० लेपन] किसी गीली वस्तु की पतली तह चढ़ाना। पोतना। मुहा०—लीप पोतकर बराबर करना=चौपट करना। चौका लगाना।

लील†–संज्ञा पु० [सं० नील] नील। वि० नीला। नीले रंग का।

लीलना–क्रि० स० [सं० गिलन या लीन] गले के नीचे पेट में उतारना। निगलना।

लीलया–क्रि० वि० [सं०] १. खेल में। २. सहज में ही। बिना प्रयास।

लीला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह व्यापार जो केवल मनोरंजन के लिये किया जाय। केलि। क्रीड़ा। खेल। २. प्रेम का खेलवाड़। प्रेम-विनोद। ३. नायिकाओं का एक हाव जिसमें वे प्रिय के वेश, गति, वाणी आदि का अनुकरण करती हैं। ४. विचित्र काम। ५. मनुष्यों के मनोरंजन के लिये किए हुए ईश्वरावतारों का अभिनय। चरित्र। ६ बारह मात्राओं का एक छंद। ७. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, नगण और एक गुरु होता है। ८. एक छंद जिसमें २४ मात्राएँ और अंत में सगण होता है।
संज्ञा पु० [सं० नील] स्याह रंग का घोड़ा। वि० नीला।

लीलापुरुषोत्तम–संज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

लीलावती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी जिसने लीलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी। २. ३२ मात्राओं का एक छंद।

लुँगाड़ा–संज्ञा पु० [देश०] शोहदा। लुच्चा।

लुंगी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लँगोट या लाँग] धोती के स्थान पर कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा। तहमत।

लुचन-संज्ञा पुं० [सं०] चुटकी से पकड़कर उखाड़ना। नोचना। उत्पाटन।

लुंज-वि० [सं० लुंचन] १. बिना हाथ-पैर का। लँगड़ा लूला। २. बिना पत्ते का। ठूँठ। (पेड़)

लुंठन-क्रि० स० [सं०] [वि० लुंठित] १. लुढ़कना। २. लूटना। चुराना।

लुंड-संज्ञा पुं० [सं० रुंड] बिना सिर का धड़। कबंध। रुंड।

लुंड-मुंड-वि० [सं० रुंड+मुंड] १. जिसका सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों; केवल धड़ का लोथड़ा रह गया हो। २. बिना पत्तों का। ठूँठ।

लुंडा-वि० [सं० रुंड] [स्त्री० लुंडी] जिसकी पूँछ और पर झड़ गए हों। (पक्षी)

लुंबिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिलवस्तु के पास का एक वन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुआठा-संज्ञा पुं० [सं० लोक=काष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लुआठी] सुलगती हुई लकड़ी। लुआठी।

लुआब-संज्ञा पुं० [अ०] लसदार गूदा। चिपचिपा गूदा। लासा।

लुकंजन*†-संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।

लुक-संज्ञा पुं० [सं० लोक=चमकना] १. चमकदार रोगन। वार्निश। २. आग की लपट। लौ। ज्वाला।

लुकठी-संज्ञा स्त्री० [हिं० लुक] लुआठा।

लुकना-क्रि० अ० [सं० लुक=लोप] आड़ में होना। छिपना।

लुकमा-संज्ञा पुं० [अ०] ग्रास। कौर।

लुकाना-क्रि० स० [हिं० लुकना] आड़ में करना। छिपाना।

† क्रि० अ० लुकना। छिपना।

लुकेठा†-संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।

लुगड़ा-संज्ञा पुं० दे० "लूगड़ा"।

लुगदी-संज्ञा स्त्री० [देश०] गीली वस्तु का पिंड या गोला। छोटा लोंदा।

लुगरा†-संज्ञा पुं० [हिं० लूगा+रा (प्रत्य०)] १. कपड़ा। वस्त्र। २. ओढ़नी। छोटी चादर। फटा पुराना कपड़ा। लत्ता।

लुगरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० लुगरा] फटी पुरानी धोती।

लुगाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० लोग] स्त्री। औरत।

लुगी†-संज्ञा स्त्री० [हिं० लूगा] १. पुराना कपड़ा। २. लँहगे का संजाफ़ या फटा चौड़ा किनारा।

लुग्गा†-संज्ञा पुं० दे० "लूगा"।

लुचुई†-संज्ञा स्त्री० [सं० रुचि] मैदे की पतली पूरी। लूची।

लुच्चा-वि० [हिं० लुचकना] [स्त्री० लुच्ची] १. दुराचारी। कुमार्गी। कुचाली। २. शोहदा। बदमाश।

लुटत*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० लूट] लूट।

लुटकना-क्रि० अ० दे० "लटकना"।

लुटना-क्रि० अ० [सं० लुट्=लुठना] १. दूसरे के द्वारा लूटा जाना। २. तबाह होना। बरबाद होना।

*क्रि० अ० दे० "लुठना"।

लुटाना-क्रि० स० [हिं० लूटना का प्रेर०] १. दूसरे को लूटने देना। २. मुफ़्त में बिना पूरा मूल्य लिए देना। ३. व्यर्थ फेंकना या व्यय करना। ४. बहुतायत से बाँटना। अधाधुंध दान करना।

लुटावना*†-क्रि० स० दे० "लुटाना"।

लुटिया-संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटा] छोटा लोटा।

लुटेरा-संज्ञा पुं० [हिं० लूटना+एरा (प्रत्य०)] लूटनेवाला। डाकू। दस्यु।

लुठना*-क्रि० अ० [सं० लुंठन] १. भूमि पर पड़ना। लोटना। २. लुढ़कना।

लुठाना*-क्रि० स० [हिं० लुठना] १. भूमि पर डालना। लोटाना। २ लुढ़काना।

लुढ़कना-क्रि० अ० [सं० लुंठन] गेंद की तरह नीचे ऊपर चक्कर खाते हुए गमन करना। ढुलकना।

लुढ़काना-क्रि० स० [हिं० लुढ़कना] इस प्रकार फेंकना या छोड़ना कि चक्कर खाते हुए कुछ दूर चला जाय। ढुलकाना।

लुढ़ना*†-क्रि० अ० दे० "लुढ़कना"।

लुढ़ाना*-क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।

लुतरा-वि० [देश०] [स्त्री० लुतरी] १. चुगलखोर। २. नटखट। शरारती।

लुत्थ*-संज्ञा स्त्री० दे० "लोथ"।

लुत्फ़-संज्ञा पुं० [अ०] १. कृपा। मेहरबानी। २. ख़ूबी। उत्तमता। ३. मज़ा। आनंद। ४. रोचकता।

लुनना-क्रि० स० [सं० लवन] १. खेत की तैयार फ़सल काटना। २. नष्ट करना।

लुनाई*-संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लुनेरा-संज्ञा पुं० [हिं० लुनना] खेत की फ़सल काटनेवाला। लुननेवाला।

लुपना॰—क्रि॰ अ॰ [सं॰ लुप] छिपना।
लुप्त—वि॰ [सं॰] १. छिपा हुआ। गुप्त। अंतर्हित। २. गायब। अदृश्य।
लुप्तोपमा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वह उपमा अलंकार जिसमें उसका कोई अंग लुप्त हो, अर्थात् न कहा गया हो।
लुबुधः॰†—वि॰ दे॰ "लुब्ध"।
लुबुधना†—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ लुबुध+ना (प्रत्य॰)] लुब्ध होना। लुभाना।
संज्ञा पुं॰ [सं॰ लुब्धक] अहेरी। बहेलिया।
लुबुधा॰—वि॰ [सं॰ लुब्ध] १. लोभी। लालची। २. चाहनेवाला। इच्छुक। ३. प्रेमी।
लुब्ध—वि॰ [सं॰] १. लुभाया हुआ। ललचाया हुआ। २. तन-मन की सुध भूला हुआ। मोहित।
लुब्धक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १.व्याध। बहेलिया। शिकारी। २. उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत तेजवान् तारा। (आधुनिक)
लुब्धना॰—क्रि॰ अ॰ दे॰ "लुबुधना"।
लुब्धापति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वह प्रौढ़ा नायिका जो पति और कुल के लोगों की लज्जा करे।
लुब्बलुबाब—संज्ञा पुं॰ [अ॰] किसी बात का तत्त्व। सारांश।
लुभाना—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ लोभ] १. लुब्ध होना। मोहित होना। रीझना। २. लालच में पड़ना। ३. तन मन की सुध भूलना।
क्रि॰ स॰ १. लुब्ध करना। मोहित करना। रिझाना। २. प्राप्त करने की गहरी चाह उत्पन्न करना। ललचाना। ३. सुध-बुध भुलाना। मोह में डालना।
लुरकी—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लुरकना = लटकना] कान में पहनने की बाली। मुरकी।
लुरना॰†—क्रि॰अ॰ [सं॰ लुलन] १. झूलना। लहराना। २. ढल पड़ना। झुक पड़ना। ३. कहीं से एकबारगी आ जाना। ४. आकर्षित होना। प्रवृत्त होना।
लुरी—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लेरुआ = बछड़ा ?] वह गाय जिसे बच्चा दिए थोड़े ही दिन हुए हों।
लुलना॰—क्रि॰ अ॰ दे॰ "लुरना"।
लुवार†—वि॰ दे॰ "लू"।
लुहना॰—क्रि॰ अ॰ दे॰ "लुभाना"।
लुहार—संज्ञा पुं॰ [सं॰ लौहकार] [स्त्री॰ लुहारिन, लुहारी] १. लोहे की चीजें बनानेवाला। २. वह जाति जो लोहे की चीजें बनाती है।
लुहारी—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लुहार] १. लुहार जाति की स्त्री। २. लोहे की वस्तु बनाने का काम।
लू—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ लुक = जलना या हिं॰ लौ = लपट] गरमी के दिनों की तपी हुई हवा।
मुहा॰—लू मारना या लगना = शरीर में तपी हवा लगने से ज्वर आदि उत्पन्न होना।
लूक—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ लुक] १. आग की लपट। २. जलती हुई लकड़ी। लुकी।
मुहा॰—लूक लगाना = जलती लकड़ी या बत्ती छुलाना। आग लगाना।
३. गरमी के दिनों की तपी हवा। ४. टूटा हुआ तारा। उल्का।
लूकना॰—क्रि॰ स॰ [हिं॰ लूक+ना] आग लगाना। जलाना।
॰† क्रि॰ अ॰ दे॰ "लुकना"।
लूका—संज्ञा पुं॰ [सं॰ लुक] [स्त्री॰ अल्पा॰ लूकी] १. आग की लौ या लपट। २. लुआठा।
लूकी†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लूका] १. आग की चिनगारी। स्फुलिंग। २. लूका।
लूखा॰—वि॰ [सं॰ रूक्ष] रूखा।
लूगा†—संज्ञा पुं॰ [देश॰] १. वस्त्र। कपड़ा। २. धोती।
लूट—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लूटना] १. किसी के माल का ज़बरदस्ती छीना जाना। डकैती।
यौ॰—लूटमार, लूटपाट = लोगों को मारना पीटना और उनका धन छीनना।
२. लूटने से मिला हुआ माल।
लूटक—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ लूट] १. लूटनेवाला। लुटेरा। २. कांति हरनेवाला।
लूटना—क्रि॰ स॰ [सं॰ लुट् = लूटना] १ मार-पीटकर या छीन-झपटकर ले लेना। २. अनुचित रीति से किसी का माल लेना। ३. वाजिब से बहुत ज़्यादा दाम लेना। ठगना। ४. मोहित करना। मुग्ध करना।
लूटि॰†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लूट"।
लूत—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ लूता] मकड़ी।
लूता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] मकड़ी।
संज्ञा पुं॰ [हिं॰ लूका] लूका। लुआठा।
लूनना॰†—क्रि॰ स॰ दे॰ "लुनना"।
लूमना॰—क्रि॰ अ॰ [सं॰ लंबन] लटकना।
लूरना॰—क्रि॰ अ॰ दे॰ "लुरना"।

लूला–वि० [सं० लून=कटा हुआ] [स्त्री० लूली] १. जिसका हाथ कट गया हो। लुंजा। टुंडा। २. बेकाम। असमर्थ।

लूह, लूहर†–संज्ञा स्त्री० दे० "लू"।

लेंड–संज्ञा पुं० दे० "लेंड़ी"।

लेंड़ी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. मल की बत्ती। बँधा मल। २ बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़, लेंहड़ा–संज्ञा पुं० [देश०] झुंड। दल। समूह। गल्ला। (चौपायों के लिये)

ले–अव्य० [हिं० लेकर] आरंभ होकर। † [सं० लग्न हिं० लगा, लगि] तक। पर्यंत।

लेखिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लिखनेवाली। २. ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली।

लेख्य–वि० [सं०] १. लिखने योग्य। २. जो लिखा जाने को हो।

संज्ञा पुं० १. लेख। २. दस्तावेज़।

लेजम–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. एक प्रकार की नरम और लचकदार कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है। २. वह कमान जिसमें लोहे की जंजीर लगी रहती है और जिससे कसरत करते हैं।

लेजुर, लेजुरी–संज्ञा स्त्री० [सं० रज्जु] १. डोरी। २. कूएँ से पानी खींचने की रस्सी।

करना। चौपट करना। २. पराजित करना। हराना। ३. पूरा करना। समाप्त करना। ले दे करना=हुज्जत करना। तकरार करना। लेना एक न देना दो=कुछ मतलब नहीं। कुछ सरोकार नहीं। ले मरना=अपने साथ नष्ट या बरबाद करना। कान में लेना=सुनना।

लेप–संज्ञा पुं० [सं०] १ लेई के समान पोतने, छोपने या चुपड़ने की चीज़। २. गाढ़ी गीली वस्तु की वह तह जो किसी वस्तु के ऊपर फैलाई जाय।

लेपना–क्रि० स० [सं० लेपन] गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना। छोपना।

ले-पालक–संज्ञा पुं० [हिं० लेना+पालना] गोद लिया हुआ पुत्र। दत्तक। पालट।

लेरुआ–संज्ञा पुं० [सं० लेरु] बछड़ा।

लेव–संज्ञा पुं० [सं० लेप] १. लेप। २. मिट्टी का लेप जो बरतनों की पेंदी पर उन्हें आग पर चढ़ाने से पहले किया जाता है। ३ दे० "लेवा"।

लेवा–संज्ञा पुं० [सं० लेप्य] १. गिलावा। २. मिट्टी का गिलावा। कहगिल। ३ लेप। वि० [हिं० लेना] लेनेवाला।

यौ०—लेवा देई=लेन-देन।

लेवाल–संज्ञा पुं० [हिं० लेना+वाल (प्रत्य०)] लेने या खरीदनेवाला।

लेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. अणु। २. छोटाई। सूक्ष्मता। ३ चिह्न। निशान। ४. संसर्ग। लगाव। संबंध। ५. एक अलङ्कार, जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंश में रोचकता आती है।

वि० अल्प। थोड़ा।

लेश्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जैनियों के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण कर्म जीव को बाँधता है। २ जीव।

लेषनाः–क्रि० स० १. दे० "लखना"। २. दे० "लिखना"

लेसना–क्रि० स० [सं० लेश्या] जलाना। क्रि० स० [हिं० लस] १. किसी चीज़ पर लेस लगाना। पोतना। २ दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना। कहगिल करना। ३. चिपकाना। सटाना। ४. चुगली खाना।

लेहन–संज्ञा पुं० [सं० लेहक] चाटना।

लेहना–संज्ञा पुं० दे० "लहना"।

लेहाज़ा–क्रि० वि० [अ०] इसलिए। इस वास्ते।

लेह्य–वि० [सं०] चाटने के योग्य।

लैंगिक–संज्ञा पुं० [सं०] वैशेषिक दर्शन के अनुसार वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन द्वारा प्राप्त हो। अनुमान।

लैंः–अव्य० [हिं० लगना] तक। पर्यंत।

लैस–वि० [अ० लेस] वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। कटिबद्ध। तैयार।

संज्ञा पुं० कपड़े पर चढ़ाने का फीता।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाण।

लों–अव्य० दे० "लौं"।

लोंदा–संज्ञा पुं० [सं० लुंठन] किसी गीले पदार्थ का डले की तरह बँधा अंश।

लोइः–संज्ञा पुं० [सं० लोक] लोग।

संज्ञा स्त्री० [सं० रुचि] १. प्रभा। दीप्ति। २. लव। शिखा।

लोइनः–संज्ञा पुं० दे० १. "लावण्य"। २. दे० "लोचन"।

लोई–संज्ञा स्त्री० [सं० लोप्ती] गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं।

संज्ञा स्त्री० [सं० लोमीय] एक प्रकार का कम्मल।

लोकंजनः–संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।

लोकंदा–संज्ञा पुं० [हिं० लोकना ?] [स्त्री० लोकंदी] विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।

लोकंदी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोकना ?] वह दासी जो कन्या के ससुराल जाते समय उसके साथ भेजी जाती है।

लोक–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थान-विशेष जिसका बोध प्राणी को हो।

विशेष—उपनिषदों में दो लोक माने गए हैं—इहलोक और परलोक। निरुक्त में तीन लोकों का उल्लेख है—पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक। पौराणिक काल में इन सात लोकों की कल्पना हुई–भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपर्लोक और सत्यलोक। फिर पीछे इनके साथ सात पाताल—अतल, नितल, वितल, गभस्तिमान, तल, सुतल और पाताल मिलाकर चौदह लोक किए गए।

२. संसार। जगत। ३. स्थान। निवास-स्थान। ४ प्रदेश। दिशा। ५. लोग। जन। ६. समाज। ७. प्राणी। ८. यश। कीर्ति।

लोकधुनि–संज्ञा स्त्री० [सं० लोकध्वनि] प्रफवाह।
लोकना–क्रि० स० [सं० लोपन] १ ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथों से पकड़ लेना। २ बीच में से ही उड़ा लेना।
लोकप, लोकपति–संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २ लोकपाल। ३ राजा।
लोकपाल–संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी दिशा का स्वामी। दिक्पाल। २ राजा।
लोकलीक*–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोक+लीक] लोक की मर्यादा।
लोकसंग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १ संसार के लोगों को प्रसन्न करना। २ सबकी भलाई।
लोकहार–वि० [सं० लोक हरण] लोक या संसार को नष्ट करनेवाला।
लोकांतर–संज्ञा पुं० [सं०] वह लोक जहाँ मरने पर जीव जाता है।
लोकांतरित–वि० [सं०] मरा हुआ। मृत।
लोकाचार–संज्ञा पुं० [सं०] संसार में बरता जानेवाला व्यवहार। लोकव्यवहार।
लोकाट–संज्ञा पुं० [चीनी लु+क्यू] एक पौधा जिसमें बड़े बेर के बराबर मीठे गुदार फल लगते हैं।
लोकाना†–क्रि० स० [हिं० लोकना का प्रे०] अधर में फेंकना। उछालना।
लोकायत–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। २ चार्वाक दर्शन। ३ दुर्मिल नामक छंद।
लोकोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कहावत। मसल। २ काव्य में वह अलंकार जिसमें किसी लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ रोचकता या चमत्कार लाया जाय।
लोकोत्तर–वि० [सं०] बहुत ही अद्भुत और विस्मयप्रद। अलौकिक।
लोखर–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोह+खड] १ नाई के औजार। २ लोहारों या बढ़इयों आदि के औजार।
लोग–संज्ञा पुं० बहु० [सं० लोक] [स्त्री० लुगाई] जन। मनुष्य। आदमी।
लोगाई†–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोग] स्त्री।
लोच–संज्ञा स्त्री० [हिं० लचक] १ लचलचाहट। लचक। २ कोमलता।
संज्ञा पुं० [सं० रुचि] अभिलाषा।
लोचन–संज्ञा पुं० [सं०] आँख। नेत्र।
लोचना†–क्रि० स० [हिं० लोचन] १ प्रकाशित करना। २ रुचि उत्पन्न करना। ३ अभिलाषा करना।
क्रि० अ० शोभित होना
क्रि० अ० १ अभिलाषा करना। कामना करना। २ ललचना। तरसना।
लोट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटना] लोटने का भाव। लुढ़कना।
संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] १ उतार। घाट।
* २ त्रिवली।
लोटन–संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] १ एक प्रकार का कबूतर। २ राह में की छोटी कँकड़ियाँ।
लोटना–क्रि० अ० [सं० लुठन] १ सीधे और उलटे लेटते हुए किसी ओर को जाना। २ लुढ़कना। ३ कष्ट से करवट बदलना। तड़पना।
मुहा०—लोट जाना=१ बेसुध होना। बेहोश हो जाना। २ मर जाना।
४ विश्राम करना। लेटना। ५ सुध होना। चकित होना।
लोटपटा†–संज्ञा पुं० [हिं० लोटना+पाटा] १ विवाह के समय पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति। २ दाँव का उलट फेर।
लोटा–संज्ञा पुं० [हिं० लोटना] [स्त्री० अल्पा० लुटिया] धातु का एक गोल पात्र जो पानी रखने के काम में आता है।
लोटिया–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोटा] छोटा लोटा।
लोडना†–क्रि० स० [प० लोड़=आवश्यकता] आवश्यकता होना। दरकार होना।
लोढ़ना–क्रि० स० [सं० लुंचन] १ चुनना। तोड़ना। २ ओटना।
लोढ़ा–संज्ञा पुं० [सं० लोष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लोढ़िया] पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर किसी चीज को रखकर पीसते हैं। बट्टा।
मुहा०—लोढ़ा डालना=बराबर करना। लोढ़ाढाल=चौपट। सत्यानाश।
लोढ़िया–संज्ञा स्त्री० [हिं०लोढ़ा] छोटा लोढ़ा।
लोथ, लोथि–संज्ञा स्त्री० [सं० लोष्ठ] मृत-शरीर। लाश। शव।
मुहा०—लोथ गिरना=मारा जाना। लोथ डालना=मार गिराना। हत्या करना।
लोथड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० लोथ] मांसपिंड।
लोध–संज्ञा स्त्री० [सं०लोध्र] एक प्रकार का वृक्ष। वैद्यक में इसकी छाल और लकड़ी दोनों का प्रयोग होता है।

लोध्र—संज्ञा पुं० दे० "लोध"।

लोध्रतिलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जो उपमा का एक भेद है।

लोन:†—संज्ञा पुं० [सं० लवण] १. लवण। नमक।

मुहा०—किसी का लोन खाना=अन्न खाना। पाला जाना। किसी का लोन निकलना=नमकहरामी का फल मिलना। लोन न मानना=उपकार न मानना। जले पर लोन लगाना या देना=दुःख पर दुःख देना। किसी बात का लोन सा लगना=अरुचिकर होना। अप्रिय होना।

२. सौंदर्य। लावण्य। वि० दे० "नमक"।

लोनहरामी†—वि० दे० "नमकहराम"।

लोना—वि० [हिं० लोन] [भाव० लोनाई] १. नमकीन। सलोना। २. सुंदर। संज्ञा पुं० [हिं० लोन] १. दीवारों का एक प्रकार का रोग जिसमें वह झड़ने लगती और कमजोर हो जाती है। २. वह धूल या मिट्टी जो लोना लगने पर दीवार से झड़कर गिरती है। ३. नमकीन मिट्टी, जिससे शोरा बनाया जाता है। ४. अमलोनी। संज्ञा स्त्री० [देश०] एक कल्पित चमारी जो जादू-टोने में प्रवीण मानी जाती है। क्रि० स० [सं० लवन] फसल काटना।

लोनाई—संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लोनार†—संज्ञा पुं० [हिं० लोन] वह स्थान जहाँ नमक होता है।

लोनिका—संज्ञा स्त्री० दे० "लोनी"।

लोनिया—संज्ञा पुं० [हिं० लोन] एक जाति जो लोन या नमक बनाने का व्यवसाय करती है। नोनियाँ।

लोनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० लवण, लोन] कुलफे की जाति का एक प्रकार का साग।

लोप—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा लोपन] [वि० लुप्त, लोपक लोपा, लोप्य] १. नाश। क्षय। २. विच्छेद। ३. अदर्शन। अभाव। ४ व्याकरण में वह नियम जिसके अनुसार शब्द के साधन में किसी वर्ण को उड़ा देते हैं। ५. छिपना। अंतर्धान होना।

लोपन—संज्ञा पुं० [सं०] १. लुप्त करना। तिरोहित करना। २. नष्ट करना।

लोपना:†—क्रि० स० [सं० लोपन] १. लुप्त करना। मिटाना। २. छिपाना। क्रि० अ० लुप्त होना। मिटना।

लोपांजन—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है।

लोपामुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अगस्त्य ऋषि की स्त्री का नाम। २. एक तारा जो अगस्त्य-मंडल के पास उदय होता है।

लोबा—संज्ञा स्त्री [हिं० लोमड़ी] लोमड़ी।

लोबान—संज्ञा पुं० [अ०] एक वृक्ष का सुगंधित गोंद जो जलाने और दवा के काम में लाया जाता है।

लोबिया—संज्ञा पुं० [सं० लोभ्य] एक प्रकार का बड़ा बोड़ा। (फली)

लोभ—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० लुब्ध, लोभी] दूसरे के पदार्थ को लेने की कामना। लालच। लिप्सा।

लोभना, लोभाना:†—क्रि० स० [हिं० लोभना का सक०] मोहित करना। मुग्ध करना। क्रि० अ० मोहित होना। मुग्ध होना।

लोभार:†—वि० [हिं० लोभ] लुभानेवाला।

लोभित—वि० [हिं० लोभ] लुब्ध। मुग्ध।

लोभी—वि० [सं० लोभिन्] १. जिसे किसी बात का लोभ हो। लालची। २. लुब्ध। लुभाया हुआ।

लोम—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर पर के छोटे छोटे बाल। रोवाँ। रोम। २. बाल। संज्ञा पुं० [सं० लोमश] लोमड़ी।

लोमड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० लोमश] गीदड़ की जाति का एक प्रसिद्ध जंतु।

लोमपाद—संज्ञा पुं० [सं०] अंग देश के एक राजा जो दशरथ के मित्र थे।

लोमश—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जिनको पुराणों में अमर माना गया है। वि० अधिक और बड़े बड़े रोएँवाला।

लोमहर्षण—वि० [सं०] ऐसा भीषण जिससे रोएँ खड़े हो जायँ। बहुत भयानक।

लोय:†—संज्ञा पुं० [सं० लोक] लोग। संज्ञा स्त्री० [हिं० लव या लाव] लौ। लपट। संज्ञा पुं० [सं० लोचन] आँख। नेत्र। अव्य० दे० "लौं"।

लोयन:—संज्ञा पुं० [सं० लोचन] आँख।

लोर†—वि० [सं० लोल] १. लोल। चंचल। २. उत्सुक। इच्छुक।

लोरना:—क्रि० अ० [सं० लोल] १. चंचल

होना। २ लपकना। ललकना। ३ लिपटना। ४ झुकना। ५. लोटना।

लोरी–संज्ञा स्त्री० [सं० लोल] एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिये गाती हैं।

लोल–वि० [सं०] १ हिलता डोलता। कंपायमान। २ परिवर्तनशील। ३ क्षणिक। क्षणभंगुर। ४ उत्सुक।

लोलक–संज्ञा पुं० [सं०] १ लटकन जो बालियों में पहना जाता है। २ कान की लव। लोलकी।

लोलदिनेश–संज्ञा पुं० दे० "लोलार्क"।

लोलना –क्रि० अ० [सं० लोल] हिलना।

लोला– संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जिह्वा। जीभ। २ लक्ष्मी। ३ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, मगण, भगण और अंत में दो गुरु होते हैं।

लोलार्क–संज्ञा पुं० [सं०] काशी के एक प्रसिद्ध तीर्थ का नाम।

लोलिनी–वि० स्त्री० [सं० लोल] चंचल प्रकृतिवाली।

लोलुप–वि० [सं०] १. लोभी। लालची। २ चटोरा। चटू। ३ परम उत्सुक।

लोंघा–संज्ञा स्त्री० [सं० लोमश] लोमड़ी।

लोष्ट–संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्थर। २ ढेला।

लोहंडा–संज्ञा पुं० [सं० लौहभांड] [स्त्री० लोहंडी] १. लोहे का एक प्रकार का पात्र। २ तसला।

लोह–संज्ञा पुं० [सं०] लोहा। (धातु)

लोहसार–संज्ञा पुं० [सं०] १ फौलाद। २ फौलाद की बनी हुई जंजीर।

लोहा–संज्ञा पुं० [सं० लोह] १ काले रंग की एक प्रसिद्ध धातु जिसके बरतन, शस्त्र और मशीनें आदि बनती हैं।

मुहा०—लोहे के चने = अत्यंत कठिन काम। २ अस्त्र। हथियार।

मुहा०—लोहा गहना = हथियार उठाना। युद्ध करना। लोहा बजना = युद्ध होना। किसी का लोहा मानना = १ किसी विषय में किसी का प्रभुत्व स्वीकार करना। २ पराजित होना। हार जाना। लोहा लेना = लड़ना। युद्ध करना। ३ लोहे की बनाई हुई कोई चीज या उपकरण। ४ लाल रंग का बैल।

लोहाना–क्रि० अ० [हिं० लोहा + आना (प्रत्य०)] किसी पदार्थ में लोहे का रंग या स्वाद आ जाना।

लोहार–संज्ञा पुं० [सं० लौहकार] [स्त्री० लोहारिन, लोहाइन] एक जाति जो लोहे की चीजें बनाती है।

लोहारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लोहार + ई (प्रत्य०)] लोहारी का काम।

लोहित–वि० [सं०] रक्त। लाल। संज्ञा पुं० [सं० लोहितक] मंगल ग्रह।

लोहित्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मपुत्र नद। २ एक समुद्र का नाम।

लोहिया–संज्ञा पुं० [हिं० लोहा + इया (प्रत्य०)] १ लोहे की चीजों का व्यापार करनेवाला। २ बनियों और मारवाड़ियों की एक जाति। ३ लाल रंग का बैल।

लोहू–संज्ञा पुं० दे० "लहू"।

लौं †–अव्य० [हिं० लग] १ तक। पर्यंत। २ समान। तुल्य। बराबर।

लौंकना †–क्रि० अ० [हिं० लौकना] १ दृष्टिगोचर होना। दिखाई देना। २ चमकना।

लौंग–संज्ञा पुं० [सं० लवंग] १ एक झाड़ की कली जो खिलने के पहले ही तोड़कर सुखा ली जाती है। यह मसाले और दवा के काम में आती है। २. लौंग के आकार का एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ नाक या कान में पहनती हैं।

लौंडा–संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० लौंडी लौंडिया] छोकरा। बालक। लड़का।

लौंडी–संज्ञा स्त्री० [हिं० लौंडा] दासी।

लौंद–संज्ञा पुं० [?] अधिमास। मलमास।

लौंदा–संज्ञा पुं० दे० "लोंदा"।

लौ–संज्ञा स्त्री० [सं० दावा] १ आग की लपट। ज्वाला। २ दीपक की टेम। संज्ञा स्त्री० [हिं० लाग] १ लाग। चाह। २ चित्त की वृत्ति।

यौ०—लौलीन = किसी के ध्यान में डूबा हुआ। ३ आशा। कामना।

लौआ†–संज्ञा पुं० [सं० लाबुक] कद्दू।

लौकना–क्रि० अ० [हिं० लौ]. दूर से दिखाई पड़ना।

लौकिक–वि० [सं०] १. लोक संबंधी। सांसारिक। २. व्यावहारिक। संज्ञा पुं० सात मात्राओं के छंदों का नाम।

लौकी–संज्ञा स्त्री० दे० "कद्दू"।

लौंजोरा*†–संज्ञा पुं० [हिं० लौ + जोड़ना] धातु गलानेवाला कारीगर ।

लौंट–संज्ञा स्त्री० [हिं० लौटना] लौटने की क्रिया, भाव या ढंग ।

लौटना–क्रि० अ० [हिं० उलटना] १. वापस आना । पलटना । २. पीछे की ओर मुड़ना । क्रि० स० पलटना । उलटना ।

लौट फेर–संज्ञा पुं० [हिं० लौट + फेर] उलट-फेर । हेर-फेर । भारी परिवर्तन ।

लौटाना–क्रि० स० [हिं० लौटना का सक०] १. फेरना । पलटाना । २. वापस करना । ३. ऊपर-नीचे करना ।

लौन*–संज्ञा पुं० [सं० लवण] नमक ।

लौना†–संज्ञा पुं० दे० "लौनी" ।
* वि० [सं० लावण्य = लोन] [स्त्री० लौनी] लावण्ययुक्त । सुंदर ।

लौनी‡–संज्ञा स्त्री० [हिं० लौना] फसल की कटनी । कटाई ।
*संज्ञा स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन । नैनूं ।

लौह–संज्ञा पुं० [सं०] लोहा ।

लौहित्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मपुत्र नद । २. लाल सागर ।

ल्याना*–क्रि० स० दे० "लाना" ।

ल्यारी†–संज्ञा पुं० [देश०] भेड़िया ।

ल्यावना*–क्रि० स० दे० "लाना" ।

ल्वारि †–संज्ञा स्त्री० दे० "लूह" ।

व

व–हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यंजन वर्ण, जो उकार का विकार और अंतस्थ अर्द्धव्यंजन माना जाता है ।

वंक–वि० [सं०] टेढ़ा । वक्र ।

वंकट–वि० [सं० वंक] १. टेढ़ा । बाँका । कुटिल । २. विकट । दुर्गम ।

वंकनाली–संज्ञा स्त्री० [सं० वंक + नाडी] सुषुम्ना नामक नाड़ी ।

वंकिम–वि०[सं०] टेढ़ा । झुका हुआ । बाँका ।

वंक्षु–संज्ञा स्त्री० [सं०] आक्सस नदी जो हिंदू-कुश पर्वत से निकलकर आरल समुद्र में गिरती है ।

वंग–संज्ञा पुं०[सं०] १. बंगाल प्रदेश । २. राँगा नाम की धातु । ३. राँगे का भस्म ।

वंगज–संज्ञा पुं०[सं०] १. सिंदूर । २. पीतल । वि० बंगाल में उत्पन्न होनेवाला ।

वंचक–वि० [सं०] १. धूर्त । धोखेबाज । ठग । २. खल ।

वंचना–संज्ञा स्त्री० [सं०] धोखा । छल ।
* क्रि० स० [सं० वंचन] धोखा देना । ठगना ।
† क्रि० स० [सं० वाचन] पढ़ना । बाँचना ।

वंचित–वि० [सं०] १. जो ठगा गया हो । २. अलग किया हुआ । ३. अलग । हीन । रहित ।

वंदन–संज्ञा पुं० [सं०] स्तुति और प्रणाम । पूजन ।

वंदनमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] बंदनवार ।

वंदना–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वंदित, वंदनीय] १. स्तुति । २. प्रणाम । वंदन ।

वंदनीय–वि० [सं०] वंदना करने योग्य । आदर करने योग्य ।

वंदित–वि० [सं०] पूज्य । आदरणीय ।

वंदी–संज्ञा पुं० दे० "बंदी" ।

वंदीजन–संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति ।

वंद्य–वि० [सं०] वंदनीय । पूजनीय ।

वंश–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस । २. पीठ की हड्डी । ३. नाक के ऊपर की हड्डी । बाँसा । ४. बाँसुरी । ५. बाहु आदि की लंबी हड्डियाँ ।

वंशज–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस का चावल । २. संतान । संतति । औलाद ।

वंशतिलक–संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद ।

वंशधर–संज्ञा पुं० [सं०] कुल में उत्पन्न । वंशज । संतति । संतान ।

वंशलोचन–संज्ञा पुं० [सं०] बंसलोचन ।

वंशस्थ–संज्ञा पुं० [सं०] बारह वर्णों का एक

वंशावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वापर क्रम से सूची।
वंशी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। मुरली।
वंशीधर–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
वंशीय–वि० [सं०] कुल में उत्पन्न।
वंशीवट–संज्ञा पुं० [सं०] वृंदावन में वह बरगद का पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे।
व–संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। २. वाण। ३. वरुण। ४. बाहु। ५. कल्याण। ६. समुद्र। ७ वस्त्र। ८. वंदन। अव्य० [फा०] और। जैसे—राजा व रईस।
वक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बगला पक्षी। २ अगस्त का पेड़ या फूल। ३ एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ४. एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था।
वकवृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] धोखा देकर काम निकालने की घात में रहना।
वकालत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दूत-कर्म। २. दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बात-चीत करना। ३. मुकदमे में किसी फ़रीक़ की तरफ़ से बहस करने का पेशा।
वकालतनामा–संज्ञा पुं० [अ० + फा०] वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ़ से मुकदमे में बहस करने के लिये मुकर्रर करता है।
वकासुर–संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस।
वकील–संज्ञा पुं० [अ०] १. दूत। २. राजदूत। एलची। ३. प्रतिनिधि। ४. दूसरे का पक्ष मंडन करनेवाला। ५. वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतों में मुद्दई या मुद्दालय की ओर से बहस करे।
वकुल–संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त का पेड़ या फूल।
वक्त–संज्ञा पुं० [अ०] १. समय। काल। २. अवसर। मौका। ३. अवकाश। फ़ुरसत।
वक्तव्य–वि० [सं०] कहने योग्य। वाच्य। संज्ञा पुं० [सं०] १. कथन। वचन। २. वह बात जो किसी विषय में कहनी हो।
वक्ता–वि० [सं० वक्तृ] १. वाग्मी। बोलने-वाला। २. भाषण-पटु। संज्ञा पुं० कथा कहनेवाला पुरुष। व्यास।
वक्तृता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाक्पटुता। २. व्याख्यान। ३. कथन। भाषण।
वक्तृत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. वक्तृता। वाग्मिता। २. व्याख्यान। ३. कथन।
वक्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. मुख। २. एक प्रकार का छंद।
वक्फ़–संज्ञा पुं० [अ०] १ वह संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो। २. किसी के लिये कोई चीज छोड़ देना। (क०)
वक्र–वि० [सं०] १. टेढ़ा। बाँका। २ झुका हुआ। तिरछा। ३ कुटिल।
वक्रगामी–वि० [सं० वक्रगामिन्] १. टेढ़ी चाल चलनेवाला। २ शठ। कुटिल।
वक्रतुंड–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
वक्रदृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़ी दृष्टि। २. क्रोध की दृष्टि।
वक्री–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह प्राणी जिसके अंग जन्म से टेढ़े हों। २ बुद्धदेव।
वक्रोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है। २. काकूक्ति। ३ बढ़िया उक्ति।
वक्ष–संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्] छाती। उरस्थल।
वक्षःस्थल–संज्ञा पुं० [सं०] उर। छाती।
वक्षु–संज्ञा पुं० दे० "वंक्षु"।
वगलामुखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक महाविद्या।
वग़ैरह–अव्य० [अ०] इत्यादि। आदि।
वच–संज्ञा पुं० [सं० वचन] वाक्य।
वचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द। वाणी। वाक्य। २. कथन। उक्ति। ३. व्याकरण में शब्द के रूप में वह विधान जिससे एकत्व या बहुत्व का बोध होता है। हिंदी में दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन।
वचनलक्षिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसकी बात-चीत से उसके उपपति से प्रेम लक्षित या प्रकट होता हो।
वचनविदग्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती हो।
वचा–संज्ञा स्त्री० [सं०] बच नाम की ओषधि।
वच्छ–संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्] उर। छाती।
वज़न–संज्ञा पुं० [अ०] १. भार। बोझ। २. तौल। ३. मान। मर्यादा। गौरव।

वजनी—वि० [अ० वज़न + ई] जिसका बहुत बोझ हो। भारी।

वजह—संज्ञा स्त्री० [अ०] कारण। हेतु।

वज़ा—संज्ञा स्त्री० [अ० वज़अ] १ बनावट। रचना। २ सज धज। ३ दशा। अवस्था। ४ रीति। प्रणाली। ५ मुजरा। मिनहा।

वज़ादार—वि० [अ० वज़ा + फा० दार] जिसकी बनावट आदि बहुत अच्छी हो। तरहदार।

वज़ीफ़ा—संज्ञा पु० [अ०] १ वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वानों, छात्रों, संन्यासियों आदि को दी जाती है। २ जप या पाठ। (मुसलमान)

वज़ीर—संज्ञा पु० [अ०] १ मंत्री। अमात्य। दीवान। २ शतरंज की एक गोटी।

वज़ीरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] वज़ीर का काम या पद। संज्ञा पु० घोड़ों की एक जाति।

वज़ू—संज्ञा पु० [अ० वुज़ू] नमाज पढ़ने के पूर्व शौच के लिये हाथ पाँव आदि धोना।

वज्र—संज्ञा पु० [सं०] १ पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इंद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है। कुलिश। पवि। २ विद्युत्। बिजली। ३ हीरा। ४ फौलाद। ५ भाला। बरछा। वि० १ बहुत कड़ा या मजबूत। २ घोर। दारुण। भीषण।

वज्रलेप—संज्ञा पु० [सं०] एक मसाला जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि मजबूत हो जाती हैं।

वज्रसार—संज्ञा पु० [सं०] हीरा।

वज्रावर्त—संज्ञा पु० [सं०] एक मेघ का नाम।

वज्रासन—संज्ञा पु० [सं०] हठ योग के चौरासी आसनों में से एक।

वज्री—संज्ञा पु० [सं० वज्रिन्] इंद्र।

वज्रोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० वज्र] हठ योग की एक मुद्रा का नाम।

वट—संज्ञा पु० [सं०] बरगद का पेड़।

वटक—संज्ञा पु० [सं०] १ बड़ी टिकिया या गोला। बट्टा। २ बड़ा। पकौड़ा।

वटसावित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक व्रत का नाम जिसमें स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं।

वटिका, वटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोली या टिकिया। बटी।

वटु—संज्ञा पु० [सं०] १ बालक। २ ब्रह्मचारी। माणवक।

वटुक—संज्ञा पु० [सं०] १ बालक। २ ब्रह्मचारी। ३ एक भैरव।

वणिक्—संज्ञा पु० [सं०] १ रोजगार करनेवाला। २ वैश्य। बनिया।

वतस—संज्ञा पु० दे० "अवतंस"।

वतन—संज्ञा पु० [अ०] जन्मभूमि।

वत्—संज्ञा पु० [सं०] समान। तुल्य।

वत्स—संज्ञा पु० [सं०] १ गाय का बच्चा। बछड़ा। २ बालक। ३ वत्सासुर।

वत्सनाभ—संज्ञा पु० [सं०] एक विष जिसे 'बछनाग' या 'बच्छनाग' भी कहते हैं। यह एक पौधे की जड़ है। मीठा जहर।

वत्सर—संज्ञा पु० [सं०] वर्ष। साल।

वत्सल—वि० [सं०] [स्त्री० वत्सला] १ बच्चे के प्रेम से भरा हुआ। २ अपने से छोटों के प्रति अत्यंत स्नेहवान् या कृपालु। संज्ञा पु० साहित्य में कुछ लोगों के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस जिसमें माता पिता का संतान के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है।

वदतोव्याघात—संज्ञा पु० [सं०] कथन का एक दोष जिसमें कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।

वदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुख। मुँह। २ अगला भाग। ३ कथन। बात कहना।

वदान्य—वि० [सं०] १ अतिशय दाता। उदार। २ मधुरभाषी।

वदि—संज्ञा पु० [सं० अवदिन] कृष्ण पक्ष। जैसे—जेठ वदि ४।

वदूसना‡—क्रि० स० [सं० विदूषण] दोष देना। भला बुरा कहना। इलजाम लगाना।

वध—संज्ञा पु० [सं०] जान से मार डालना। घात। हत्या।

वधक—संज्ञा पु० [सं०] १ घातक। हिंसक। २ व्याध। ३ मृत्यु।

वधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नव विवाहिता स्त्री। दुलहिन। २ पत्नी। भार्या। ३ पुत्र की बहू। पतोहू।

वधूटी—संज्ञा स्त्री० दे० "वधू"।

वधूत—संज्ञा पु० दे० "अवधूत"।

वध्य—वि० [सं०] मार डालने योग्य।

वन—संज्ञा पु० [सं०] १ वन। जंगल। २ वाटिका। ३ जल। ४ घर। ५ शंकराचार्य के अनुयायी एक उपाधि।

वनचर–वि० [सं०] वन में भ्रमण करने या रहनेवाला।

वनज–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो। २. कमल।

वनदेव–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वनदेवी] वन का अधिष्ठाता देवता।

वनमाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वन के फूलों की माला। २. एक विशेष प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण धारण करते थे।

वनमाली–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

वनराज–संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।

वनरुह–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

वनलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वन की शोभा। वनश्री।

वनवास–संज्ञा पुं० [सं०] १. जंगल में रहना। २. बस्ती छोड़कर जंगल में रहने की व्यवस्था या विधान।

वनवासी–वि० [सं० वनवासिन्] [स्त्री० वन-वासिनी] बस्ती छोड़कर जंगल में निवास करनेवाला।

वनस्थली–संज्ञा स्त्री० [सं०] वनभूमि।

वनस्पति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वृक्ष मात्र। पेड़-पौधे।

वनस्पति शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें पौधों और वृक्षों आदि के रूपों, जातियों और भिन्न भिन्न अंगों का विवेचन होता है। वनस्पति विज्ञान।

वनिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रिया। प्रियतमा। २. स्त्री। औरत। ३. छः वर्ण की एक वृत्ति। तिलका। डिल्ला।

वनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा वन।

वनौषध–संज्ञा स्त्री० [सं०] वन की ओष-धियाँ। जंगली जड़ी बूटी।

वन्य–वि० [सं०] १. वन में उत्पन्न होने-वाला। वनोद्भव। २. जंगली।

वपन–संज्ञा पुं० [सं०] बीज बोना।

वपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चरबी। मेद।

वपु–संज्ञा पुं० [सं० वपुस्] शरीर। देह।

वपुष्मा–संज्ञा स्त्री० [सं०] काशीराज की एक कन्या, जो जनमेजय से ब्याही थी।

वफ़ा–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वादा पूरा करना। बात निबाहना। २. निर्वाह। पूर्णता। ३. मुरौवत। सुशीलता।

वफ़ादार–वि० [अ० वफ़ा + फा० दार] [संज्ञा वफ़ादारी] वचन या कर्त्तव्य का पालन करनेवाला।

वबा–संज्ञा स्त्री० [अ०] फैलनेवाला भयंकर रोग। मरी। जैसे—हैज़ा, प्लेग आदि।

वबाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. बोझ। भार। २. आपत्ति। कठिनाई। आफ़त।

वभ्रु–संज्ञा पुं० दे० "बभ्रु"।

वमन–संज्ञा पुं० [सं०] १. कै करना। उलटी करना। २. वमन किया हुआ पदार्थ।

वमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] वमन का रोग।

वयः–सर्व० [सं० प्र] हम।

वयःक्रम–संज्ञा पुं० [सं०] अवस्था। उम्र।

वयःसंधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति।

वय–संज्ञा स्त्री० [सं० वयस] अवस्था। उम्र।

वयस्क–वि० [सं०] [स्त्री० वयस्का] १. उमर का। अवस्थावाला। (यौ० में) २. पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ। सयाना। बालिग़।

वयोवृद्ध–वि० [सं०] बड़ा-बूढ़ा।

वरंच–अव्य० [सं०] १. ऐसा न होकर ऐसा। बल्कि। २. परंतु। लेकिन।

वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देवता या बड़े से माँगा हुआ मनोरथ। २. किसी देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। ३. पति या दूल्हा।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम। जैसे—मित्रवर।

वरक़–संज्ञा पुं० [अ०] १. पत्र। २. पुस्तकों का पन्ना। पत्रा। ३. सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर।

वरज़िश–संज्ञा स्त्री० [फा०] व्यायाम।

वरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना। २. मंगल कार्य्य के विधान में होता आदि कार्य्य-कर्त्ताओं को नियत करके उनका सत्कार करना। ३. मंगल-कार्य्य में नियत किए हुए होता आदि के सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान। ४. कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने की रीति। ५. पूजा। अर्चना। सत्कार।

वरणी–संज्ञा स्त्री० दे० "वरण" ३।

वरद–वि० [सं०] [स्त्री० वरदा] वर देनेवाला।

वरदाता–वि० [सं०] वर देनेवाला।

वरदान–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देवता या

चढ़े का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना। २ किसी फल का लाभ जो किसी की प्रसन्नता से हो।

वरदानी-संज्ञा पुं० [सं०] वर देनेवाला।

वरदी-संज्ञा स्त्री० [अं०] वह पहनावा जो किसी खास महकमे के अफसरों और नौकरों के लिये मुकर्रर हो।

वरन्-अव्य० [सं० वरन्] ऐसा नहीं। बल्कि।

वरना-संज्ञा पुं० [सं० वरण] ऊँट।
अव्य० [अ०] नहीं तो। यदि ऐसा न होगा तो।

वरम-संज्ञा पुं० दे० "वर्म"।

वरयात्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] दूल्हे का बाजे-गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना। बारात।

वररुचि-संज्ञा पुं० [सं०] एक अत्यंत प्रसिद्ध प्राचीन पंडित, वैयाकरण और कवि।

वरही-संज्ञा पुं० दे० "बर्ही"।

वराटिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] कौड़ी। कपर्दिका।

वरानना-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री।

वराह-संज्ञा पुं० [सं०] १. शूकर। सूअर। २ विष्णु। ३. अठारह द्वीपों में से एक।

वराहक्रांता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाराही। २. लज्जालु। लजालू।

वराहमिहिर-संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य जिनके बनाए बृहत्संहिता आदि ग्रंथ प्रचलित हैं।

वरिष्ठ-वि० [सं०] श्रेष्ठ। पूजनीय।

वरुण-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति, दस्युओं का नाशक और देवताओं का रक्षक कहा गया है। इसका अस्त्र पाश है। २. वरना का पेड़। ३. जल। पानी। ४ सूर्य। ५ एक ग्रह जिसे अँगरेजी में "नेपचून" कहते हैं।

वरुणपाश-संज्ञा पुं० [सं०] वरुण का अस्त्र-पाश या फंदा।

वरुणानी-संज्ञा स्त्री० [सं०] वरुण की स्त्री।

वरुणालय-संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वरूथिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना।

वर्ग-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह। जाति। कोटि। श्रेणी। २. एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह। ३ शब्द शास्त्र में एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यंजन-वर्णों का समूह। ४ परिच्छेद। प्रकरण। अध्याय। ५ दो समान अंकों या राशियों का घात या गुणन फल। ६ वह चौखूँटा क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर और चारों कोण समकोण हों। (रेखा गणित)

वर्गफल-संज्ञा पुं० [सं०] वह गुणन फल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो।

वर्गमूल-संज्ञा पुं० [सं०] किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन वही वर्गांक हो। जैसे—२५ का वर्गमूल ५ होगा।

वर्गलाना-क्रि० स० [फा० 'वरग़लानीदन' से] १. कोई काम करने के लिये उभारना। बहकाना। २. बहकाना। फुसलाना।

वर्जन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] १ त्याग। छोड़ना। २ मनाही। मुमानियत।

वर्जित-वि० [सं०] १. त्यागा हुआ। त्यक्त। २ जो ग्रहण के अयोग्य ठहराया गया हो। निषिद्ध।

वर्ज्य-वि० [सं०] १ छोड़ने योग्य। त्याज्य। २ जो मना हो।

वर्ण-संज्ञा पुं० [सं०] १. पदार्थों के लाल, पीले आदि भेदों का नाम। रंग। २ जन समुदाय के चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—जो प्राचीन आर्यों ने किए थे। जाति। ३ भेद। प्रकार। किस्म। ४ अकारादि शब्दों के चिह्न या संकेत। अक्षर। ५ रूप।

वर्णखंड मेरु-संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए यह ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं।

वर्णन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित] १. चित्रण। रँगना। २. सविस्तर कहना। कथन। बयान। ३ गुण-कथन। तारीफ़।

वर्णनष्ट-संज्ञा पुं० [सं०] छंद शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के वृत्तों के अमुक संख्यक भेद का रूप लघु गुरु के हिसाब से कैसा होगा।

वर्णपताका-संज्ञा स्त्री० [सं०] छंद-शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों के भेदों में से कौन सा ऐसा है, जिसमें इतने लघु और इतने गुरु होंगे।

वर्णप्रस्तार-संज्ञा पुं० [सं०] छंद शास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तों के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे।

वर्णमाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] अक्षरों के रूपों की यथा-श्रेणी लिखित सूची।

वर्णविचार-संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का वर्णन हो। प्राचीन वेदांग में यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था।

वर्णवृत्त-संज्ञा पुं० [सं०] वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु गुरु के क्रमों में समानता हो।

वर्णसंकर-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो। २ व्यभिचार से उत्पन्न मनुष्य। दोगला।

वर्णसूची-संज्ञा स्त्री० [सं०] छंद शास्त्र या पिंगल में एक क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तों की संख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आदि अंत लघु और आदि अंत गुरु की संख्या जानी जाती है।

वर्णिक वृत्त-संज्ञा पुं० दे० "वर्णवृत्त"।

वर्णित-वि० [सं०] १. कथित। कहा हुआ। २. जिसका वर्णन हो चुका हो।

वर्ण्य-वि० [सं०] १. वर्णन के योग्य। २. जो वर्णन का विषय हो।

वर्त्तन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्त्तित] १. बरताव। व्यवहार। २. व्यवसाय। वृत्ति। रोजी। ३. फेरना। घुमाना। ४. परिवर्त्तन। फेर-फार। ५. स्थापन। रखना। ६. सिल बट्टे से पीसना। ७ पात्र। बरतन।

वर्त्तमान-वि० [सं०] १. चलता हुआ। जो जारी हो। २. उपस्थित। मौजूद। विद्यमान। ३. आधुनिक। हाल का। संज्ञा पुं० १. व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है, समाप्त नहीं हुई है। २. वृत्तांत। समाचार। ३. चलता व्यवहार।

वर्त्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बत्ती। २. अंजन। ३ गोली। बटी।

वर्त्तिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बत्ती। २. शलाका। सलाई।

वर्त्तित-वि० [सं०] १. संपादित किया हुआ। २. चलाया हुआ। जारी किया हुआ।

वर्त्ती-वि० [सं० वर्तिन्] [स्त्री० वर्तिनी] १. वर्त्तनशील। बरतनेवाला। २ स्थित रहनेवाला।

वर्त्तुल-वि० [सं०] गोल। वृत्ताकार।

वर्त्म-संज्ञा पुं० [सं०] १. मार्ग। पथ। २ किनारा। औंठ। बारी। ३ आँख की पलक। ४. आधार। आश्रय।

वर्दी-संज्ञा स्त्री० दे० "वरदी"।

वर्द्धक-वि० [सं०] बढ़ानेवाला। पूरक।

वर्द्धन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्द्धित] १. बढ़ाना। २. वृद्धि। बढ़ती। उन्नति। ३. काटना। तराशना।

वर्द्धमान-वि० [सं०] १. जो बढ़ता जा रहा हो। २. बढ़नेवाला। वर्द्धनशील। संज्ञा पुं० १. एक वर्णवृत्त जिसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न अर्थात् १४,१३,१८ और १५ होती है। २. जैनियों के २४ वें जिन महावीर।

वर्द्धित-वि० [सं०] १. बढ़ा हुआ। २. पूर्ण। ३. छिन्न। कटा हुआ।

वर्म-संज्ञा पुं० [सं० वर्मन्] १. कवच। बकतर। २. घर।

वर्मा-संज्ञा पुं० [सं० वर्मन्] क्षत्रियों आदि की उपाधि जो उनके नाम के अंत में लगाई जाती है।

वर्य्य-वि० [सं०] श्रेष्ठ। जैसे—विद्वद्वर्य्य।

वर्वर-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देश का नाम। २. इस देश के असभ्य निवासी जिनके बाल घुँघराले कहे गए हैं। ३ पामर। नीच।

वर्ष-संज्ञा पुं० [सं०] १. वृष्टि। जलवर्षण। २. काल का एक मान जिसमें बारह महीने होते हैं। संवत्सर। साल। वर्ष चार प्रकार के होते हैं—सौर, चांद्र, सावन और नाक्षत्र। ३. पुराणों में माने हुए सात द्वीपों का कुछ विभाग। ४. किसी द्वीप का प्रधान भाग। ५. मेघ। बादल।

वर्षगाँठ–संज्ञा स्त्री० दे० "बरस गाँठ"।
वर्षण–संज्ञा पु० [सं०] [वि० वर्षित] वृष्टि। बरसना।
वर्षफल–संज्ञा पु० [सं०] फलित ज्योतिष में वह कुंडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण जाना जाता है।
वर्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है। २. पानी बरसने की क्रिया या भाव। वृष्टि।
मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना = १ बहुत अधिक परिमाण में ऊपर से गिरना। २. बहुत अधिक संख्या में मिलना।
वर्षाकाल–संज्ञा पुं० [सं०] बरसात।
वर्ही–संज्ञा पु० [सं० वर्हिन्] मयूर। मोर।
वल–संज्ञा पु० [सं०] १. मेघ। २ एक असुर जो बृहस्पति के हाथ से मारा गया।
वलन–संज्ञा पु० [सं०] ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्रह, नक्षत्रादि का सायनांश से हटकर चलना। विचलन।
वलभी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पुरानी नगरी जो काठियावाड़ में थी।
वलय–संज्ञा पु० [सं०] १. मंडल। २. कड़ा। ३. चूड़ी। ४ वेष्टन।
वलवला–संज्ञा पु० [अ०] उमंग। आवेश।
वलाहक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. पर्वत। ३. एक दैत्य का नाम।
वलि–संज्ञा पु० [सं०] १. रेखा। लकीर। २ पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा। बल। ३. देवता को चढ़ाने की वस्तु। ४. एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था। ५ श्रेणी। पंक्ति।
वलित–वि० [सं०] १. बल खाया हुआ। २. झुकाया या मोड़ा हुआ। ३ घेरा हुआ। ४. जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हों। ५. लिपटा हुआ। लगा हुआ। ६. ढका हुआ। ७. युक्त। सहित।
वली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ झुर्री। शिकन। २ अवली। श्रेणी। ३ रेखा। लकीर।
संज्ञा पु० [अ०] १. मालिक। स्वामी। २. शासक। हाकिम। ३ साधू। फकीर।
वल्कल–संज्ञा पु० [सं०] १. वृक्ष की छाल। त्वक्। २. वृक्ष की छाल का वस्त्र, जिसे तपस्वी पहना करते थे।

वल्द–संज्ञा पु० [अ०] औरस बेटा। पुत्र। जैसे—"गोकुल वल्द बलदेव" अर्थात् 'गोकुल, बेटा बलदेव का'।
वल्दियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] पिता के नाम का परिचय।
वल्मीक–संज्ञा पु० [सं०] १. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। बाँबी। बिमौट। २ वाल्मीकि मुनि।
वल्लभ–वि० [सं०] प्रियतम। प्यारा।
संज्ञा पु० १ प्रिय मित्र। नायक। २ पति। स्वामी। ३ अध्यक्ष। मालिक। ४. वैष्णव-संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य्य।
वल्लभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रिय स्त्री।
वल्लभाचार्य्य–संज्ञा पु० दे० "वल्लभ" ४.।
वल्लभी–संज्ञा पु० दे० "वलभी"।
वल्लरि, वल्लरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वल्ली। लता। २. मंजरी।
वल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं०] लता। बेल।
वल्वल–संज्ञा पु० [सं०] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था। इल्वल।
वश–संज्ञा पु० [सं०] १ इच्छा। चाह। २ काबू। इख्तियार। अधिकार।
मुहा०—वश का = जिस पर अधिकार हो।
३ शक्ति की पहुँच। काबू।
मुहा०—वश चलना = शक्ति काम करना।
४. अधिकार। कब्जा। प्रभुत्व।
वशवर्त्ती–वि० [सं० वशवर्त्तिन्] जो दूसरे के वश में रहे। अधीन। ताबे।
वशिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अधीनता। ताबेदारी। २ मोहने की क्रिया या भाव।
वशित्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. वशता। २. योग के अणिमादि आठ ऐश्वर्यों में से एक।
वशिष्ठ–संज्ञा पु० दे० "वसिष्ठ"।
वशी–वि० [सं० वशिन्] [स्त्री० वशिनी] १. अपने को वश में रखनेवाला। २. अधीन।
वशीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वशीकृत] १. वश में लाने की क्रिया। २. मणि, मंत्र आदि के द्वारा किसी को वश में करना।
वशीभूत–वि० [सं०] १ अधीन। ताबे। २. दूसरे की इच्छा के अधीन।
वश्य–वि० [सं०] वश में आनेवाला।
वश्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] अधीनता।
वसंत–संज्ञा पु० [सं०] [वि० वासंत, वासंतक,

वासतिर, वसती] १. वर्ष की छः ऋतुओं में से प्रधान और प्रथम ऋतु जिसके अंतर्गत चैत और वैसाख के महीने माने गए हैं। बहार का मौसिम। २ शीतला रोग। चेचक। ३ छः रागों में से दूसरा राग।

वसंततिलक-संज्ञा पुं० [सं०] चौदह वर्णों का एक वर्णवृत्त।

वसंततिलका-संज्ञा स्त्री० दे० "वसंत-तिलक"।

वसंतदूत-संज्ञा पुं० [सं०] १ आम का वृक्ष। २. कोयल। ३ चैत्र मास।

वसंतदूती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोकिला। कोयल। २ माधवी लता।

वसंत पंचमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने की शुक्ल पंचमी। श्रीपंचमी।

वसंती-संज्ञा पुं० दे० "बसंती"।

वसंतोत्सव-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता था। मदनोत्सव। २ होली का उत्सव।

वसअत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ विस्तार। फैलाव। २. समाई। अँटने की जगह। ३. चौड़ाई। ४. सामर्थ्य। शक्ति।

वसन-संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्त्र। २ ढकने की वस्तु। आवरण। ३. निवास।

वसमा-संज्ञा पुं० [अ०] १. खिजाब। २ उबटन। ३. एक प्रकार का छपा कपड़ा।

वसवास-संज्ञा पुं० [अ०] [वि० वसवासी] १ भ्रम। संदेह। २ प्रलोभन या मोह।

वसह*-संज्ञा पुं० [सं० वृषभ] बैल।

वसा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेद। २ चरबी।

वसिष्ठ-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि जिनका उल्लेख वेदों से लेकर रामायण, महाभारत और पुराणों आदि तक में है। २ सप्तर्षि-मंडल का एक तारा।

वसिष्ठ पुराण-संज्ञा पुं० [सं०] एक उप-पुराण। कुछ लोग कहते हैं कि लिंग पुराण ही वसिष्ठ पुराण है।

वसीका-संज्ञा पुं० [अ०] १. वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी खजाने में [illegible] किया जाय कि उसका सूद जमा करने के संबंधियों को मिला करे। २ ऐसे [illegible] से आया हुआ सूद। वृत्ति।

वसीयत-संज्ञा स्त्री० [अ०] अपनी संप[illegible] के विभाग और प्रबंध आदि के संबंध में [illegible] हुई वह व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है।

वसीयतनामा-संज्ञा पुं० [अ० वसीयत + फा० नामा] वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी संपत्ति का विभाग और प्रबंध मेरे मरने के पीछे किस प्रकार हो।

वसीला-संज्ञा पुं० [अ०] १ संबंध। २. आश्रय। सहायता। ३ जरिया। द्वार।

वसुंधरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

वसु-संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं का एक गण जिसके अंतर्गत आठ देवता हैं। २ आठ की संख्या। ३ रत्न। ४ धन। ५ अग्नि। ६ रश्मि। किरण। ७ जल। ८ सुवर्ण। सोना। ९ कुबेर। १० शिव। ११ सूर्य्य। १२. विष्णु। १३. साधु पुरुष। सज्जन। १४ सरोवर। तालाब। १५ छप्पय का ६६वाँ भेद।

वसुदा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। २. माली राक्षस की पत्नी। इसके अनल, निल, हर और संपाति नामक चार पुत्र थे।

वसुदेव-संज्ञा पुं० [सं०] यदुवंशियों के शूर कुल के एक राजा जो श्रीकृष्ण के पिता थे।

वसुधा-संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

वसुधारा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जैनों की एक देवी। २ कुबेर की पुरी, अलका।

वसुमती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। २. छः वर्णों का एक वृत्त।

वसुहंस-संज्ञा पुं० [सं०] वसुदेव के पुत्र एक यादव का नाम।

वसूल-वि० [अ०] १. मिला हुआ। प्राप्त। २ जो चुका लिया गया हो। लब्ध।

वसूली-संज्ञा स्त्री० [अ० वसूल] दूसरे से रुपया-पैसा या वस्तु लेने का काम। प्राप्ति।

वस्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पेड़ू। २. मूत्राशय। ३ पिचकारी।

वस्तिकर्म-संज्ञा पुं० [सं०] लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देना।

वस्तु-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वास्तव, वास्[illegible] जिसका अस्तित्व या सत्ता [illegible] सचमुच हो। २ सत्य। [illegible] चीज। ४. नाटक का [illegible] कथावस्तु [illegible] मुच।

का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है।

स्तुवाद-संज्ञा पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है। जैसे—न्याय और वैशेषिक।

स्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] कपड़ा।

स्त्र भवन-संज्ञा पुं० [सं०] कपड़े का बना घर। जैसे—खेमा, रावटी आदि।

स्फ़-संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रशंसा। स्तुति। २. गुण। सिफ़त। ३. विशेषता।

स्ल-संज्ञा पुं० [अ०] १. दो चीज़ों का मेल। मिलन। २. संयोग। मिलाप।

ह-सर्व० [सं० सः] १. एक शब्द जिसके द्वारा किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है। कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम। २. एक निर्देशकारक शब्द जिससे दूर की या परोक्ष वस्तुओं का संकेत करते हैं। वि० वाहक। (समास में)

हन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वहनीय, वहमान, वहित] १. बेड़ा। तरेंदा। २. खींचकर अथवा सिर या कंधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। ३. ऊपर लेना। उठाना।

हम-संज्ञा पुं० [अ०] १. मिथ्या धारणा। झूठा ख़याल। २. भ्रम। ३. व्यर्थ की शंका। मिथ्या संदेह।

हमी-वि० [अ० वहम] वहम करनेवाला। जो व्यर्थ संदेह में पड़े।

हशत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जंगलीपन। असभ्यता। २. उजड्डपन। ३. पागलपन। ४. चित्त की चंचलता। अधीरता।

हशी-वि० [अ०] १. जंगल में रहनेवाला। २. जो पालतू न हो। ३. असभ्य।

हाँ-अव्य० [हिं० वह] उस जगह।

हाबी-संज्ञा पुं० [अ०] १. अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ मुसलमानों का एक संप्रदाय। २. इस संप्रदाय का अनुयायी।

हिः-अव्य० [सं०] जो अंदर न हो। बाहर।

हित्र-संज्ञा पुं० [सं० बोहित्थ] जहाज़।

हिरंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर का बाहरी भाग। २. बाहरी भाग। अंतरंग का उलटा। ३. कहीं बाहर से आया हुआ आदमी। बाहरी आदमी।

वि० ऊपर ऊपर का। बाहरी।

बहिर्गत-वि० [सं०] जो बाहर गया हो। निकला हुआ। बाहर का।

बहिर्द्वार-संज्ञा पुं० [सं०] बाहरी फाटक। सदर फाटक। तोरण।

बहिर्भूत-वि० [सं०] बहिर्गत।

बहिर्मुख-वि० [सं०] विमुख।

बहिर्लापिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] पहेली।

बहिष्कृत-वि० [सं०] १. बाहर निकाला हुआ। २. त्यागा हुआ। त्यक्त।

वहीं-अव्य० [हिं० वहाँ+ही] उसी जगह।

वही-सर्व० [हिं० वह+ही] १. उस तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो। पूर्वोक्त व्यक्ति। २. निर्दिष्ट व्यक्ति। अन्य नहीं।

वह्नि-संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वांछनीय-वि० [सं०] १. चाहने योग्य। २. जिसकी इच्छा हो।

वांछा-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वांछित, वांछनीय] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

वांछित-वि० [सं०] इच्छित। चाहा हुआ।

वा-अव्य० [सं०] विकल्प या संदेहवाचक शब्द। या। अथवा।

*। सर्व० [हिं० वह] व्रज भाषा में प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप जो कारक चिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है। जैसे—वाको, वासों।

वाह*।-सर्व० दे० "वाहि"।

वाक्-संज्ञा पुं० [सं०] १. वाणी। २. सरस्वती। ३. बोलने की इंद्रिय।

वाक़ई-वि० [अ०] सच। वास्तव। अव्य० सचमुच। यथार्थ में। वास्तव में।

वाक़फ़ियत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जानकारी। ज्ञान। २. परिचय। जान-पहचान।

वाक़या-संज्ञा पुं० [अ०] १. घटना। २. वृत्तांत। समाचार।

वाक़ा-वि० [अ०] १. होने या घटनेवाला। २. स्थित। खड़ा।

वाक़िफ़-वि० [अ०] १. जानकार। ज्ञाता। २. जानकारी रखनेवाला। अनुभवी।

वाक्छल-संज्ञा पुं० [सं०] न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक।

वाक्पटु–वि० [सं०] बात करने में चतुर।

वाक्पति–संज्ञा पुं० [सं०] १. बृहस्पति। २ विष्णु।

वाकफियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] जानकारी।

वाक्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह पद समूह जिससे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो। जुमला।

वाक्सिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे।

वागीश–संज्ञा पुं० [सं०] १ बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३ वाग्मी। कवि।
वि० अच्छा बोलनेवाला। वक्ता।

वागीश्वरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वाग्जाल–संज्ञा पुं० [सं०] बातों की लपेट। बातों का आडंबर या भरमार।

वाग्दंड–संज्ञा पुं० [सं०] भला बुरा कहने का दंड। डाँट डपट। झिड़की।

वाग्दत्त–वि० [सं०] जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हों।

वाग्दत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो।

वाग्दान–संज्ञा पुं० [सं०] कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें ब्याहूँगा।

वाग्देवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती। वाणी।

वाग्भट–संज्ञा पुं० [सं०] १. अष्टांगहृदय संहिता नामक वैद्यक के ग्रंथ के रचयिता। २ भावप्रकाश, शास्त्रदर्पण आदि के रचयिता। ३. वैद्यक निघंटु के रचयिता।

वाग्मी–संज्ञा पुं० [सं०] १ वाचाल। अच्छा वक्ता। २. पंडित। ३ बृहस्पति।

वाग्विलास–संज्ञा पुं० [सं०] आनंदपूर्वक परस्पर बात चीत करना।

वाङ्मय–वि० [सं०] १ वचन-संबंधी। २. वचन द्वारा किया हुआ।
संज्ञा पुं० गद्य पद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन पाठन का विषय हो। साहित्य।

वाङ्मुख–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गद्य-काव्य। उपन्यास।

वाच्–संज्ञा स्त्री० [सं०] वाचा। वाणी।

वाच–संज्ञा स्त्री० दे० "वाच्"।

वाचक–वि० [सं०] बतानेवाला। सूचक।
संज्ञा पुं० नाम। संज्ञा। संकेत।

वाचकधर्मलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो।

वाचकलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें उपमावाचक शब्द का लोप हो।

वाचकोपमानधर्मलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनों लुप्त हों, केवल उपमेय हो।

वाचकोपमानलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें वाचक और उपमान का लोप होता है।

वाचकोपमेयलुप्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है।

वाचक्नवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] गार्गी। वाचक्नवी।

वाचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. पढ़ना। पठन। बाँचना। २. कहना। ३. प्रतिपादन।

वाचनालय–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बैठकर लोग समाचारपत्र या पुस्तकें आदि पढ़ते हों।

वाचसांपति–संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

वाचस्पति–संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

वाचा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणी। २ वाक्य। वचन। शब्द।

वाचाबंध–वि० [सं० वाचाबद्ध] प्रतिज्ञाबद्ध।

वाचाल–वि० [सं०] [संज्ञा वाचालता] १. बोलने में तेज। वाक्पटु। २ बकवादी।

वाचिक–वि० [सं०] १. वचन संबंधी। २ वाणी से किया हुआ।
संज्ञा पुं० अभिनय का एक भेद जिसमें केवल वाक्य विन्यास द्वारा अभिनय का कार्य्य संपन्न होता है।

वाची–वि० [सं० वाचिन्] प्रकट करनेवाला। सूचक।

वाच्य–वि० [सं०] १ कहने योग्य। २. शब्द-संकेत द्वारा जिसका बोध हो। अभिधेय।
संज्ञा पुं० १ अभिधेयार्थ। २ दे० "वाच्यार्थ"।

वाच्यार्थ–संज्ञा पुं० [सं०] वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो। मूल शब्दार्थ

...०] भली-बुरी या

न क ।

वाज़–संज्ञा पुं० [अ०] १. उपदेश। शिक्षा। २. धार्मिक उपदेश। कथा।

वाजपेई–संज्ञा पुं० दे० "वाजपेयी"।

वाजपेय–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञों में पाँचवाँ है।

वाजपेयी–संज्ञा पुं०[सं०] १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। २. ब्राह्मणों की एक उपाधि। ३. अत्यंत कुलीन पुरुष।

वाजसनेय–संज्ञा पुं० [सं०] १ यजुर्वेद की एक शाखा। २. याज्ञवल्क्य ऋषि।

वाजिब–वि० [अ०] उचित। ठीक।

वाजिबी–वि० [अ०] उचित। ठीक।

वाजी–संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] १. घोड़ा। २. फटे हुए दूध का पानी।

वाजीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य की वृद्धि हो।

वाट—संज्ञा पुं० [सं०] मार्ग। रास्ता।

वाटधान–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक जनपद जो काश्मीर के नैऋत्य कोण में कहा गया है। २. एक वर्णसंकर जाति।

वाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] बाग। बगीचा।

वाड़वाग्नि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समुद्र के अंदर की आग। २. समुद्री आग।

वाण–संज्ञा पुं० [सं०] धारदार फल लगा हुआ एक छोटा अस्त्र जो धनुष की डोरी पर खींचकर छोड़ा जाता है। तीर।

वाणावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वाणों की अवली। २. तीरों की लगातार वर्षा। ३ एक साथ बने हुए पाँच श्लोक।

वाणिज्य–संज्ञा पुं० दे० "वाणिज्य"।

वाणिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

वाणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती। २. मुँह से निकले हुए सार्थक शब्द। वचन। मुहा०—वाणी फुरना = मुँह से शब्द निकलना। ३. वाक्शक्ति। ४. जीभ। रसना।

वात–संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर पक्वाशय में रहनेवाली वह वायु जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातज–वि० [सं०] वायु द्वारा उत्पन्न।

वातजात–संज्ञा पुं० [सं० वात + जात] हनुमान्।

वात-प्रकोप–संज्ञा पुं० [सं०] वायु का बढ़ जाना जिससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातापि–संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम जो आतापि का भाई था और जिसे अगस्त्य ऋषि ने खा डाला था।

वातायन–संज्ञा पुं० [सं०] १. झरोखा। छोटी खिड़की। २. रामायण के अनुसार एक जनपद।

वातुल–संज्ञा पुं० [सं०] बावला। उन्मत्त।

वातोर्मी–संज्ञा पुं० [सं०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

वात्सल्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम। स्नेह। २ माता पिता का संतति के प्रति प्रेम।

वात्स्यायन–संज्ञा पुं० [सं०] १. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। २ कामसूत्र प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।

वाद–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह बात चीत जो किसी तत्त्व के निर्णय के लिये हो। तर्क। शास्त्रार्थ। दलील। २ किसी पक्ष के तत्त्वज्ञों द्वारा निश्चित सिद्धांत। उसूल। जैसे—अद्वैतवाद। ३. बहस। झगड़ा।

वादक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाजा बजानेवाला। २ वक्ता। ३ तर्क या शास्त्रार्थ करनेवाला।

वादन–संज्ञा पुं० [सं०] बाजा बजाना।

वाद प्रतिवाद–संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रीय विषयों में होनेवाला कथोपकथन। बहस।

वादरायण–संज्ञा पुं० [सं०] वेदव्यास।

वाद-विवाद–संज्ञा पुं० [सं०] बहस।

वादा–संज्ञा पुं० [अ० वाद्दा] वचन। प्रतिज्ञा। इकरार।

मुहा०—वादाखिलाफी करना = वचन के विरुद्ध कार्य करना। वादा रखाना = वचन लेना। प्रतिज्ञा कराना।

वादानुवाद–संज्ञा पुं० दे० "वाद विवाद"।

वादी–संज्ञा पुं० [सं० वादिन्] १. वक्ता। बोलनेवाला। २ मुकदमा लानेवाला। फरियादी। मुद्दई। ३. पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।

वाद्य–संज्ञा पुं० [सं०] बाजा।

वानप्रस्थ–संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय आर्यों के अनुसार मनुष्य जीवन के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम।

वानर–संज्ञा पुं० [सं०] १. बंदर। २. दोहे का एक भेद।

वानवासिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] सोलह मात्राओं के छंदों या चौपाई का एक भेद।

वापस-वि० [फा०] लौटा हुआ। फिरता।
वापसी-वि० [फा० वापस] लौटा हुआ या फेरा हुआ। वापस होने के सम्बन्ध का। संज्ञा स्त्री० लौटने की क्रिया या भाव। प्रत्यावर्तन।
वापिका, वापी-संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा जलाशय। बावली।
वाम-वि० [सं०] १. बायाँ। दक्षिण या दाहिने का उलटा। २. प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ़। ३. टेढ़ा। कुटिल। ४ दुष्ट। संज्ञा पु० १. कामदेव। २. एक रुद्र का नाम। वामदेव। ३. वरुण। ४. धन। ५. २४ अक्षरों का एक वर्णवृत्त। मंजरी। मकरंद। माधवी।
वामकी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिनकी पूजा जादूगर करते हैं।
वामदेव-संज्ञा पु० [सं०] १. शिव। महादेव। २. एक वैदिक ऋषि।
वामन-वि० [सं०] १. बौना। छोटे डील का। २. ह्रस्व। खर्व।
संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २. शिव। ३. एक दिग्गज का नाम। ४. विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिये हुआ था। ५. अठारह पुराणों में से एक।
वाम-मार्ग-संज्ञा पु० [सं०] तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस आदि का विधान है।
वामा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। २. दुर्गा। ३ दस अक्षरों का एक वृत्त...
वामावर्त-वि० [सं०] १... का उलटा। (वह फेरी) जो ... की ...

सर। दफ़ा। मरतबः। ५. चण। ६. सप्ताह का दिन। जैसे—आज कौन वार है? ७. दाँव। बारी।
संज्ञा पु० [सं० वार] चोट। आघात। आक्रमण। हमला।
वारण-संज्ञा पु० [सं०] [वि० वारक] १. किसी बात को न करने की आज्ञा। निषेध। मनाही। २ रुकावट। बाधा। ३. कवच। बकतर। ४. छप्पय छंद का एक भेद।
वारणावत-संज्ञा पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक जनपद जो गंगा के किनारे था।
वारतिय:-संज्ञा स्त्री० [सं० वारस्त्री] वेश्या।
वारद:-संज्ञा पु० [सं० वारिद] बादल।
वारदात-संज्ञा स्त्री [अ०] १. कोई भीषण कांड। दुर्घटना। २ मार-पीट। दंगा-फसाद।
वारन:-संज्ञा स्त्री० [हिं० वारना] निछावर। बलि।
संज्ञा पु० [सं० वंदन] बंदनवार। वंदनमाला।
वारना-क्रि० स० [हिं० उतारना] निछावर करना। उत्सर्ग करना।
संज्ञा पु० निछावर। उत्सर्ग।
मुहा०—वारने जाना=निछावर होना।
वार पार-संज्ञा पु० [सं० अवार+पार] १. (नदी आदि का) यह किनारा और वह किनारा। पूरा विस्तार। २. यह छोर और वह छोर। अंत।
अव्य० १. इस किनारे से उस किनारे तक। एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक।
...-संज्ञा पु० [हिं० वारना+फेर] निछा-...
...स्त्री० [सं०] वेश्या।

वाराहीकंद–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का महाकंद जो गेंठी कहलाता है।
वारि–संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।
वारिज–संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। २. शंख। ३. घोंघा। ४. कौड़ी। ५. खरा सोना।
वारित–वि० [सं०] जो मना किया गया हो। निवारित।
वारिद–संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।
वारिधि–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वारियाँ–संज्ञा स्त्री० [हिं०वारी] निछावर। बलि।
वारिवर्त–संज्ञा पुं० [सं० वारि+आवर्त्त] एक मेघ का नाम।
वारिस–संज्ञा पुं० [अ०] वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी हो। उत्तराधिकारी।
वारींद्र–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।
वारी फेरी–संज्ञा स्त्री० दे० "वारफेर"।
वारुणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा। शराब। २ वरुण की स्त्री। वरुणानी। ३ उप-निषद् विद्या। ४. पश्चिम दिशा। ५. एक पर्व जिसमें गंगा-स्नान करते हैं।
वारेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद जहाँ आजकल का राजशाही जिला है।
वार्त्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जनश्रुति। अफवाह। २ संवाद। वृत्तांत। हाल। ३. विषय। मामला। ४. बात चीत। ५. वैश्य-वृत्ति जिसके अंतर्गत कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा और कुसीद है।
वार्त्तालाप–संज्ञा पुं० [सं०] बात-चीत।
वार्त्तिक–संज्ञा पुं० [सं०] किसी ग्रंथ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों को स्पष्ट करने-वाला वाक्य या ग्रंथ।
वार्द्धक्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुढ़ापा। २. वृद्धि। बढ़ती।
वार्षिक–वि० [सं०] १. वर्ष संबंधी। २. जो प्रति वर्ष होता हो। सालाना।
वार्ष्णेय–संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णचंद्र।
वाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उप-जाति वृत्त।
प्रत्य० [स्त्री० वाली] एक संबंध-सूचक प्रत्यय। जैसे—मकानवाला।
वालिद–संज्ञा पुं० [अ०] पिता। बाप।
वालिदा–संज्ञा स्त्री० [अ०] माता। माँ।
वाल्मीकि–संज्ञा पुं० [सं०] एक भृगुवंशी मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि कवि कहे जाते हैं।
वाल्मीकीय–वि० [सं०] १. वाल्मीकि-संबंधी। २. वाल्मीकि का बनाया हुआ।
वावैला–संज्ञा पुं० [अ०] १. विलाप। रोना-पीटना। २ शोर-गुल। हल्ला।
वाशिष्ठ–संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण। वि० [सं०] वशिष्ठ संबंधी। वशिष्ठ का।
वाष्प–संज्ञा पुं० [सं०] १ आँसू। २. भाप।
वासंतिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. भाँड़। विदू-षक। २. नाचनेवाला। नर्त्तक। वि० वसंत-संबंधी।
वासंती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माधवी लता। २. जूही। ३. मदनोत्सव। ४. दुर्गा। ५. चौदह वर्णों का एक वृत्त।
वास–संज्ञा पुं० [सं०] १. रहना। निवास। २ गृह। घर। मकान। ३ सुगंध। बू।
वासक–संज्ञा पुं० [सं०] अडूसा।
वासकसज्जा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक से मिलने की तैयारी किए हुए घर आदि सजाकर और आप भी सजकर बैठी हो।
वासन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वासित] १ सुगंधित करना। २. वस्त्र। ३. वास।
वासना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रत्याशा। २. ज्ञान। ३. भावना। संस्कार। स्मृति-हेतु। ४. इच्छा। कामना।
वासर–संज्ञा पुं० [सं०] दिन। दिवस।
वासव–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
वासित–वि० [सं०] १. सुगंधित किया हुआ। २. कपड़े से ढका हुआ। ३. बासी।
वासिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। २. आर्या छंद का एक भेद।
वासिल–वि० [अ०] १. पहुँचाया हुआ। प्राप्त। २. जो वसूल हुआ हो।
यौ०—वासिल बाकी = वसूल और बाकी रकम।
वासिष्ठ–वि० [सं०] वसिष्ठ संबंधी।
वासी–संज्ञा पुं० [सं० वासिन्] रहनेवाला।
वासुकी–संज्ञा पुं० [सं०] आठ नागों में से दूसरा नागराज।
वासुदेव–संज्ञा पुं० [सं०] १. वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्णचंद्र। २. पीपल का पेड़।
वास्तव–वि० [सं०] प्रकृत। यथार्थ।
वास्तविक–वि० [सं०] यथार्थ। ठीक।

वास्तव्य-वि० [सं०] रहने या बसने योग्य। संज्ञा पुं० बस्ती। आबादी।
वास्ता-संज्ञा पुं० [अ०] संबंध। लगाव।
वास्तु-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जिस पर घर उठाया जाय। डीह। २. घर। मकान। ३. इमारत।
वास्तु पूजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वास्तु पुरुष की पूजा जो नवीन घर में गृह प्रवेश के आरंभ में की जाती है।
वास्तुविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे इमारत के संबंध की सारी बातों का परिज्ञान होता है।
वास्तुशास्त्र-संज्ञा पुं० दे० "वास्तुविद्या"।
वास्ते-अव्य० [अ०] १. लिये। निमित्त। २. हेतु। सबब।
वाह-अव्य० [फा०] १ प्रशंसासूचक शब्द। धन्य। २. आश्चर्यसूचक शब्द। ३. घृणाद्योतक शब्द।
वाहक-संज्ञा पुं० [सं०] १. बोझ ढोने या खींचनेवाला। २ सारथी।
वाहन-संज्ञा पुं० [सं०] सवारी।
वाह-वाही-संज्ञा स्त्री० [फा०] लोगों की प्रशंसा। स्तुति। साधुवाद।
वाहिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेना। २. सेना का एक भेद जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते थे।
वाहियात-वि० [अ० वाही+फा० यात] १. व्यर्थ। फजूल। २. बुरा। खराब।
वाही-वि० [अ०] १. सुस्त। ढीला। २. निकम्मा। ३. मूर्ख। ४. आवारा।
वाही तबाही-वि० [अ० वाही+तबाही] १. बेहूदा। २ आवारा। ३ अंडबंड। बे सिर पैर का।
संज्ञा स्त्री० अंडबंड बातें। गाली गलौज।
वाह्य-क्रि० वि० [सं०] बाहर। अलग।
वाह्यांतर-वि० [सं०] भीतर और बाहर का।
वाह्येंद्रिय-संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँचों ज्ञानेंद्रियाँ जिनका काम बाह्य विषयों का ग्रहण करना है। आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।
वाह्लीक-संज्ञा पुं० [सं०] १. गांधार के पास का एक प्रदेश। २. वाह्लीक देश का घोड़ा।
विंजन-संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"।
विंद-संज्ञा पुं० दे० "वृंद" और "विंदु"।
विंदक-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राप्त करनेवाला। २. जाननेवाला। ज्ञाता।
विंदु-संज्ञा पुं० [सं० विंदु] १. जलकण। बूँद। २ बुँदकी। बिंदी। ३ अनुस्वार। ४ शून्य। ५ एक बूँद परिमाण। ६. रेखा गणित के अनुसार वह जिसका स्थान नियत हो, पर विभाग न हो सके। ७. बहुत छोटा टुकड़ा।
विंदुमाधव-संज्ञा पुं० [सं०] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णुमूर्ति का नाम।
विंदुर-संज्ञा पुं० [सं० विंदु] बुँदकी।
विंदुसार-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रगुप्त के एक पुत्र का नाम। सम्राट् अशोक इसी का पुत्र था।
विंध-संज्ञा पुं० [सं० विंध्य] विंध्य पर्वत।
विंध्य-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैली है।
विंध्यकूट-संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत।
विंध्यवासिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो मिर्जापुर ज़िले में है।
विंध्याचल-संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत।
विंशोत्तरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष में मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।
वि-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर इस प्रकार अर्थ देता है— १. विशेष, जैसे—विकराल। २. वैरूप्य; जैसे-विविध। ३. निषेध; जैसे—विक्रय।
विकंकत-संज्ञा पुं० [सं०] एक जंगली वृक्ष जिसे कँटाई, किंकिणी और बंज कहते हैं।
विकट-वि० [सं०] १. विशाल। २. भयंकर। भीषण। ३. वक्र। टेढ़ा। ४. कठिन। मुश्किल। ५. दुर्गम। ६. दुस्साध्य।
विकर-संज्ञा पुं० [सं०] १. रोग। व्याधि। २. तलवार के ३२ हाथों में से एक।
विकरार-वि० दे० "विकराल"।
वि० [अ० फा० बेकरार] विकल। बेचैन।
विकराल-वि० [सं०] भीषण। डरावना।
विकर्षण-संज्ञा पुं० [सं०] १. आकर्षण। २. एक शास्त्र जिसमें आकर्षण करने की विद्या का वर्णन है।
विकल-वि० [सं०] १ विह्वल। व्याकुल। बेचैन। २. कलाहीन। ३. खंडित। अपूर्ण।
विकलांग-वि० [सं०] जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो। न्यूनांग। अंगहीन।

विकला–सज्ञा स्त्री० [स०] १ कला का साठवाँ अंश । २ समय का एक बहुत छोटा भाग ।

विकलाना–क्रि० अ० [स० विकल] व्याकुल होना । घबराना । बेचैन होना ।

विकल्प–सज्ञा पु० [सं०] १ भ्रांति । भ्रम । धोखा । २ एक बात मन में बैठाकर फिर उसके विरुद्ध सोच विचार । ३ किसी विषय में कई प्रकार की विधियों का मिलना । ४ योगशास्त्रानुसार पचविध चित्तवृत्तियों में एक । ५ अवातर कल्प । ६ एक काव्यालंकार जिसमें दो विरुद्ध बातों को लेकर कहा जाता है कि या ता यही होगा या वही । ७ समाधि का एक भेद । सविकल्प । ८ व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमों में से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण ।

विकसन–सज्ञा पु० [सं०] [वि० विकसित] प्रस्फुटन । फूटना । खिलना ।

विकसना–क्रि० अ० दे० "विकसना" ।

विकस्वर–सज्ञा पु० [स०] एक काव्यालकार जिसमे पहले कोई विशेष बात कहकर उसकी पुष्टि सामान्य बात से की जाती है ।

विकार–सज्ञा पु० [स०] १ किसी वस्तु का रूप, रग आदि बदल जाना । २ बिगड़ना । खराबी । ३ दोष । बुराई । अवगुण । ४ *मनोवेग या प्रवृत्ति* । वासना । ५ किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना । परिणाम ।

विकारी–वि० [स० विकारिन्] १ जिसमें विकार या परिवर्त्तन हुआ हो । युक्त । २ क्रोधादि मनोविकारो से युक्त ।

विकाश–सज्ञा पु० [स०] १ प्रकाश । २ प्रसार । फैलाव । ३ एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु का बिना निज का आधार छोड़े अत्यंत विकसित होना वर्णन किया जाता है । ४ दे० "विकास" ।

विकास–सज्ञा पु० [स०] १ प्रसार । फैलाव । २ खिलना । प्रस्फुटित होना । ३ किसी पदार्थ का उत्पन्न होकर भिन्न भिन्न रूप धारण करते हुए उत्तरोत्तर बढ़ना । ... होना । ४ एक प्रसिद्ध सिद्धांत जिसमे यह माना जाता है कि समस्त सृष्टि और जीव जतु एक ही मूल तत्त्व से उत्पन्न हुए है ।

विकासना–क्रि० स० [स० विकास] १ प्रकट करना । निकालना । २ विकसित करना । खिलने में प्रवृत्त करना ।

क्रि० अ० १ खिलना । २ प्रकट होना ।

विकिर–सज्ञा पु० [स०] पक्षी । चिड़िया ।

विकीर्ण–वि० [स०] १ चारों ओर फैला या छितराया हुआ । २ प्रसिद्ध । मशहूर ।

विकुंठ –सज्ञा पु० [स० वैकुंठ] वैकुंठ ।

विकृत–वि० [स०] १ जिसमे किसी प्रकार का विकार आ गया हो । बिगड़ा हुआ । २ जो भद्दा या कुरूप हो गया हो । ३ असाधारण । अस्वाभाविक ।

विकृति–सज्ञा स्त्री० [स०] १. विकार । खराबी । बिगाड़ । २ बिगड़ा हुआ रूप । ३ रोग । बीमारी । ४ साख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है । विकार । परिणाम । ५ परिवर्त्तन । ६ मन में होने वाला क्षोभ । ७ *मूल धातु से बिगड़कर बना हुआ शब्द का रूप* । ८ २३ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा ।

विकृष्ट–वि० [स०] खींचा हुआ । आकृष्ट ।

विक्रम–सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु । २ बहादुरी । पराक्रम । ३ ताकत । बल । ४ गति । ५ दे० "विक्रमादित्य" ।

वि० श्रेष्ठ । उत्तम ।

विक्रमाजीत–सज्ञा पु० दे० "*विक्रमादित्य*" ।

विक्रमादित्य–सज्ञा पु० [स०] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनके संबंध में अनेक प्रकार के प्रवाद प्रचलित हैं । विक्रमी संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है ।

विक्रमाब्द सज्ञा पु० [स०] *विक्रमादित्य के नाम से चला हुआ संवत्* । विक्रम संवत् ।

विक्रमी सज्ञा पु० [स० विक्रमिन्] १ विक्रमवाला । पराक्रमी । २ विष्णु ।

वि० विक्रम का । विक्रम ।

विक्रय–सज्ञा पु० [स०]

विक्रांत–सज्ञा पु० [स०]
२ शूर । वीर ।
में एक प्रकार की संधि
कृत ही रहता है ।

विक्रियोपमा–सज्ञा स्त्री०
लकार जिसमें किसी वि
का अवलबन कहा

विक्रेता–संज्ञा पुं० [सं०] बेचनेवाला।

विक्षिप्त–वि० [सं०] १. फेंका या छितराया हुआ। २. जिसका दिमाग ठिकाने न हो। पागल। ३. विकल। व्याकुल।
संज्ञा पुं० [सं०] योग में चित्त की एक अवस्था जिसमें चित्त कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहता है।

विक्षिप्तता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पागलपन।

विक्षुब्ध–वि० [सं०] जिसमें क्षोभ उत्पन्न हुआ हो।

विक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर की ओर अथवा इधर-उधर फेंकना। डालना। २. इधर उधर हिलाना। झटका देना। ३. (धनुष की डोरी) खींचना। चिल्ला चढ़ाना। ४. मन को इधर-उधर भटकाना। संयम का उलटा। ५. एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर चलाया जाता था। ६ बाधा। विघ्न।

विक्षोभ–संज्ञा पुं० [सं०] मन की चंचलता या उद्विग्नता। क्षोभ।

विखान–संज्ञा पुं० [सं० विषाण] सींग।

विख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।

विख्याति–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत।

विगंध–वि० [सं०] १. जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। २. बदबूदार।

विगत–वि० [सं०] १. जो गत हो गया हो। जो बीत चुका हो। २. अंतिम या बीते हुए से पहले का। ३. रहित। विहीन।

विगर्हणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] डाँट। फटकार।

विगर्हित–वि० [सं०] १. जिसे डाँट या फटकार बतलाई गई हो। २. बुरा। खराब।

विगलित–वि० [सं०] १. जो गल या गिर गया हो। २. ढीला पड़ा हुआ। शिथिल। ३. बिगड़ा हुआ।

विगाथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद। विग्गाहा। उद्गीति।

विगुण–वि० [सं०] गुण रहित। निर्गुण।

विग्गाहा–संज्ञा स्त्री० दे० "विगाथा"।

विग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १. दूर या अलग करना। २. विभाग। ३ यौगिक श[illegible] अथवा समस्त पदों के किसी एक प्रत्येक शब्द को अलग करना। (व्या[illegible]) ४. कलह। लड़ाई। झगड़ा। ५. [illegible] वि[illegible]मर। ६. विपक्षियों में फूट या वि[illegible] करना। ७. आकृति। शक्ल। शरीर। ८. मूर्त्ति।

विग्रही–संज्ञा पुं० [सं० विग्रहिन्] १. लड़ाई झगड़ा करनेवाला। २. युद्ध करनेवाला।

विघटन–संज्ञा पुं० [सं०] १. तोड़ना-फोड़ना। २ नष्ट करना।

विघटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] समय का एक छोटा मान। घड़ी का २३ वाँ भाग।

विघ्न–संज्ञा पुं० [सं०] अड़चन। बाधा।

विघ्नविनाशक–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विघ्नविनायक–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

विचक्षण–वि० [सं०] १. चमकता हुआ। २ निपुण। पारदर्शी। ३. पंडित। विद्वान्। ४ बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान्।

विचच्छन–संज्ञा पुं० दे० 'विचक्षण'।

विचरण–संज्ञा पुं० [सं०] १ चलना। २. घूमना-फिरना। पर्य्यटन करना।

विचरन–संज्ञा पुं० दे० 'विचरण'।

विचरना–क्रि० अ० [सं० विचरण] चलना-फिरना।

विचल–वि० [सं०] १. जो स्थिर न हो। अस्थिर। २. स्थान से हटा हुआ।

विचलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंचलता। अस्थिरता। २. घबराहट।

विचलना–क्रि० अ० [सं० विचलन] १. अपने स्थान से हट जाना या चल पड़ना। २. अधीर होना। घबराना। ३. प्रतिज्ञा या संकल्प पर दृढ़ न रहना।

विचलाना–क्रि० स० [सं० विचलन] विचलित करना।

विचलित–वि० [सं०] १. अस्थिर। चंचल[illegible] २. प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।

विचार–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो मन से सोचा जाय अथवा सोचकर निश्चि[illegible] किया जाय। २. मन में उठनेवाली कोई बात। भावना। खयाल। ३. मुकद्द[illegible] की सुनवाई और फैसला।

विचारक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विचारिका] १. विचार करनेवाला। २. फैसला क[illegible] वाला। न्यायकर्त्ता।

[illegible] स्त्री० [सं०] विचार[illegible]

[illegible] सं०] १. [illegible] व्याकुल। [illegible] अपूर्व। [illegible]

विचारना-क्रि० अ० [सं० विचार+ना (प्रत्य०)] १. विचार करना। सोचना। समझना। २. पूछना। ३. ढूँढना। पता लगाना।
विचारपति-संज्ञा पु० [सं० विचार+पति] विचारक। न्यायाधीश।
विचारवान्-संज्ञा पु० दे० "विचारशील"।
विचारशक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] सोचने या भला-बुरा पहचानने की शक्ति।
विचारशील-संज्ञा पु० [सं०] वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारवान्।
विचारशीलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमत्ता।
विचारालय-संज्ञा पु० [सं०] न्यायालय।
विचारी-संज्ञा पु० [सं० विचारिन्] वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला।
विचार्य्य-वि० दे० "विचारणीय"।
विचिकित्सा-संज्ञा स्त्री० [सं०] संदेह। शक।
विचित्र-वि० [सं०] १. कई तरह के रंगों या वर्णोंवाला। २. अद्भुत। विलक्षण। ३ विस्मित या चकित करनेवाला। संज्ञा पु० साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय होता है, जब किसी फल की सिद्धि के लिये किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख हो।
विचित्रता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रंग-बिरंगे होने का भाव। २. विलक्षण होने का भाव।
विचित्रवीर्य्य-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रवंशी राजा शांतनु के पुत्र का नाम।
विच्छित्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विच्छेद। अलगाव। २. कमी। त्रुटि। ३ रंगों आदि से शरीर को चित्रित करना। ४. कविता में की यति। ५ साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्री थोड़े शृंगार से पुरुष को विमोहित करने की चेष्टा करती है।
विच्छिन्न-वि० [सं०] १. जो काट या छेदकर अलग कर दिया गया हो। विभक्त। २. जुदा। अलग। संज्ञा पु० योग में चारों क्लेशों की वह अवस्था जिसमें बीच में उनका विच्छेद हो जाता है।
विच्छेद-संज्ञा पु० [सं०] [वि० विच्छेदक] १. काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। [illegible] क्रम का बीच से टूट जाना। ३ टुकड़े [illegible] करना। ४ नाश। ५. विरह। [illegible] ६. कविता में की यति।
[illegible]त-संज्ञा पु० [सं०] १ काट या छेद [illegible] करना। २. नष्ट करना।

विछलना†-क्रि० अ० दे० "फिसलना"।
विछेद*-संज्ञा पुं० दे० "विच्छेद"।
विछोई*†-संज्ञा पुं० दे० "वियोगी"।
विछोह*†-संज्ञा पु० [सं० विच्छेद] प्रिय से अलग या दूर होना। वियोग।
विजन-वि० [सं०] एकांत। निराला। संज्ञा पु० [सं० व्यजन] पंखा। बीजन।
विजना*†-संज्ञा पु० [सं० विजन] पंखा।
विजय-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युद्ध या विवाद आदि में होनेवाली जीत। जय। २ एक प्रकार का छंद जो केशव के अनुसार सवैया का मत्तगयंद नामक भेद है।
विजय पताका-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है।
विजय यात्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह यात्रा जो किसी पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।
विजयलक्ष्मी, विजयश्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।
विजया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. भाँग। सिद्धि। भंग। ३ श्रीकृष्ण की माला का नाम। ४. दस मात्राओं का एक मात्रिक छंद। ५. आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त। ६ दे० "विजया दशमी"।
विजया दशमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिंदुओं का बहुत बड़ा त्योहार है।
विजयी-संज्ञा पु० [सं० विजयिन्] [स्त्री० विजयिनी] वह जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। विजेता।
विजयोत्सव-संज्ञा पुं० [सं०] १. विजया दशमी का उत्सव। २ वह उत्सव जो विजय प्राप्त करने पर होता है।
विजोग*-संज्ञा पु० [सं० वियोग] वियोग।
विजात-संज्ञा पु० [सं०] सखी छंद का एक भेद।
विजातीय-वि० [सं०] दूसरी जाति का।
विजायु-संज्ञा पु० [सं०] तलवार [illegible] के ३२ हाथों में से एक हाथ या [illegible]
विजारत-संज्ञा स्त्री० [अ०] व[illegible] धर्म या भाव। मंत्रित्व।
विजित-संज्ञा पु० [सं० [illegible] लिया गया हो। २.

वितस्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] झेलम नदी।
वितान–संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ। २. विस्तार। फैलाव। ३. बड़ा चँदोवा या खेमा। ४. समूह। संघ। जमाव। ५. शून्य। खाली स्थान। ६. एक प्रकार का छंद। ७. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण और दो गुरु होते हैं।
वितानना॰†–क्रि० स० [सं० वितान] शामियाना आदि तानना।
वितिक्रम॰–संज्ञा पुं० दे० "व्यतिक्रम"।
वितीत॰†–वि० दे० "व्यतीत"।
वितुंड–संज्ञा पुं० [सं० वि+तुंड] हाथी।
वितु॰†–संज्ञा पुं० [सं० वित्] धन। संपत्ति।
वित्त–संज्ञा पुं० [सं०] धन। संपत्ति।
वित्तपति–संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।
वित्तहीन–संज्ञा पुं० [सं०] दरिद्र। गरीब।
विथक–संज्ञा पुं० [हिं० थकना] पवन।
विथकना॰†–क्रि० अ० [हिं० थकना] १. थकना। शिथिल होना। २. मोहित या चकित होकर चुप हो जाना।
विथकित॰–वि० [हिं० विथकना] १. थका हुआ। शिथिल। २. जो आश्चर्य या मोह आदि के कारण चुप हो।
विथराना॰–क्रि० स० [सं० वितरण] १. फैलाना। २. इधर-उधर करना।
विथा॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।
विथारना॰–क्रि० स० [सं० वितरण] फैलाना।
विथित॰–वि० [सं० व्यथित] दुःखी।
विदग्ध–संज्ञा पुं० [सं०] १. रसिक पुरुष। २. पंडित। विद्वान्। ३. चतुर। चालाक।
विदग्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्वत्ता।
विदग्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो होशियारी के साथ पर पुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।
विदमान॰–अव्य० दे० "विद्यमान"।
विदरना॰–क्रि० अ० [सं० विदरण] फटना। क्रि० स० विदीर्ण करना। फाड़ना।
विदर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक बरार प्रदेश का प्राचीन नाम।
विदर्भराज–संज्ञा पुं० [सं०] दमयंती के पिता राजा भीष्म जो विदर्भ के राजा थे।
विदलन–संज्ञा पुं० [सं०] १. मलने-दलने या दबाने आदि की क्रिया। २. फाड़ना।
विदलना॰–क्रि० स० [सं० विदलन] दलित करना। नष्ट करना।
विदा–संज्ञा स्त्री० [सं० विदाय] १. प्रस्थान। रवाना होना। २. कहीं से चलने की अनुमति।
विदाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० विदा+ई (प्रत्य०)] १. रुखसती। प्रस्थान। २. विदा होने की आज्ञा या अनुमति। ३. वह धन जो विदा होते के समय दिया जाय।
विदारक–वि० [सं०] फाड़ डालनेवाला।
विदारण–संज्ञा पुं० [सं०] १. फाड़ना। २. मार डालना।
विदारना॰–क्रि० स० [हिं० विदरना] फाड़ना।
विदारी–वि० [सं० विदारिन्] फाड़नेवाला।
विदारीकंद–संज्ञा पुं० [सं०] भुइँ कुम्हड़ा।
विदाही–संज्ञा पुं० [सं० विदाहिन्] वह पदार्थ जिससे जलन पैदा हो।
विदित–वि० [सं०] जाना हुआ। ज्ञात।
विदिशा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २. दे० "विदिश्"।
विदिश्–संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच का कोना। कोण।
विदीर्ण–वि० [सं०] १. बीच से फाड़ा हुआ। २. मार डाला हुआ। निहत।
विदुर–संज्ञा पुं० [सं०] १. जानकार। ज्ञाता। २. पंडित। ज्ञानी। ३. कौरवों के सुप्रसिद्ध मंत्री जो राजनीति और धर्म-नीति में बहुत निपुण थे।
विदुष–संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।
विदुषी–संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्वान् स्त्री।
विदूर–वि० [सं०] जो बहुत दूर हो। संज्ञा पुं० दे० "वैदूर्य" (मणि)।
विदूषक–संज्ञा पुं० [सं०] १. विषयी। कामुक। २. वह जो तरह तरह की नकलें अथवा बात चीत करके दूसरों को हँसाता हो। मसखरा। ३. एक प्रकार का न॰ जो अपने परिहास आदि के केलि में सहायक होता है
विदूषना–क्रि० स० [सं० ... दुःख देना। २. दोष ... क्रि० अ० दुःखी होना
विदेश–संज्ञा पुं० [सं० ... छोड़कर दूसरा देश।
विदेह–संज्ञा पुं० [सं० ... से रहित हो। २.

पिता से न हो। ३. राजा जनक। ४ प्राचीन मिथिला।
वि० [सं०] संज्ञा रहित। बेसुध। अचेत।

विदेह कुमारी-संज्ञा स्त्री [सं०] जानकी। सीता।

विदेहपुर-संज्ञा पुं० [सं०] जनकपुर।

विदेही संज्ञा पुं० [सं० विदेहिन्] ब्रह्म।

विद्-संज्ञा पुं० [सं०]१ जानकार। २. पंडित। विद्वान्। ३ बुध ग्रह।

विद्ध-वि० [सं०] १ बीच में से छेद किया हुआ। २ फेंका हुआ। ३ जिसको चोट लगी हो। ४ टेढ़ा। ५ सटा हुआ।

विद्यमान-वि० [सं०] उपस्थित। मौजूद।

विद्यमानता-संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।

विद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह ज्ञान जो शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया जाता है। इल्म। २ वे शास्त्र आदि जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यथा—चारों वेद, छओं अंग, मीमांसा, न्याय, धर्म्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और अर्थशास्त्र। ३ दुर्गा। ४ आर्य्या छंद का पाँचवाँ भेद।

विद्यागुरु-संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षक।

विद्यादान-संज्ञा पुं० [सं०] विद्या पढ़ाना।

विद्याधर-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की देवयोनि जिसके अंतर्गत खेचर, गंधर्व, किंनर आदि माने जाते हैं। २ एक प्रकार का अस्त्र। ३ विद्वान्। पंडित।

विद्याधरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्याधर नामक देवता की स्त्री।

विद्याधारी-संज्ञा पुं० [सं० विद्याधारिन्] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते हैं।

विद्यारंभ-संज्ञा पुं० [सं०] वह संस्कार जिसमें विद्या की पढ़ाई आरंभ होती है।

विद्यार्थी-संज्ञा पुं० [सं० विद्यार्थिन्] वह जो विद्या पढ़ता हो। छात्र। शिष्य।

विद्यालय-संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। पाठशाला।

विद्यावान्-संज्ञा पुं० दे० "विद्वान्"

द्युत्-संज्ञा स्त्री० [

न्मापक-संज्ञा

व० यंत्र जिस

कि विद्युत् का बल कितना और प्रवाह किस ओर है।

विद्युन्माला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली का समूह या सिलसिला। २ आठ गुरु वर्णों का एक छंद।

विद्युन्माली-संज्ञा पुं० [सं० विद्युन्मालिन्] १ पुराणानुसार एक राक्षस। २ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में मगण, मगण और दो गुरु होते हैं।

विद्युल्लेखा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दो मगणों का एक वृत्त। शेषराज। २ विद्युत्।

विद्रधि-संज्ञा पुं० स्त्री० [सं०] पेट के अंदर का एक प्रकार का घातक फोड़ा।

विद्रावण-संज्ञा पुं० [सं०] १ भागना। २ पिघलना। ३ उड़ना। ४ फाड़ना। ५. वह जो नष्ट करता हो।

विद्रुम-संज्ञा पुं० [सं०] प्रवाल। मूँगा।

विद्रोह-संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वेष। २ वह भारी उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से हो। बलवा। बगावत।

विद्रोही-संज्ञा पुं० [सं० विद्रोहिन्] १ विद्रोह या द्वेष करनेवाला। २ राज्य का अनिष्ट करनेवाला। बागी।

विद्वत्ता-संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव। पांडित्य।

विद्वान्-संज्ञा पुं० [सं० विद्वस्] वह जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो। पंडित।

विद्वेष-संज्ञा पुं० [सं०] शत्रुता। वैर।

विद्वेषण-संज्ञा पुं० [सं०] १ शत्रुता। वैर। २ एक क्रिया जिससे दो व्यक्तियों में द्वेष या शत्रुता उत्पन्न की जाती है। (तंत्र) ३ शत्रु। वैरी। ४ दुष्टता।

विधंस-संज्ञा पुं० [सं० विध्वंस] नाश। वि० विध्वस्त। नष्ट। विनष्ट।

विधंसना*-क्रि० स० [सं० विध्वंसन] नष्ट करना। बरबाद करना।

विध*-संज्ञा पुं० [सं० विधि] विधि। ब्रह्मा।

विधना-क्रि० स० [सं० विधि] ग्राह्य करना। अपने साथ लगाना। ऊपर लेना।
संज्ञा स्त्री० [सं० विधि] वह जो कुछ होने को हो। भवितव्यता। होनी।

पु० [

"ऊधर"।

विधर्म्म-संज्ञा पुं० [सं०] दूसरे किसी का धर्म्म। पराया धर्म्म।

विधर्म्मी-संज्ञा पुं० [सं० विधर्म्मिन्] १. वह जो धर्म्म के विपरीत आचरण करता हो। धर्म्म-भ्रष्ट। २. किसी दूसरे धर्म्म का अनुयायी।

विधवा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति मर गया हो। राँड़। बेवा।

विधवापन-संज्ञा पुं० [सं० विधवा + हिं० पन] विधवा होने की अवस्था। रँड़ापा। वैधव्य।

विधवाश्रम-संज्ञा पुं० [सं० विधवा + आश्रम] वह स्थान जहाँ विधवाओं के पालन-पोषण आदि का प्रबंध किया जाता है।

विधँसना*†-क्रि० स० दे० "विधंसना"।

विधाता-संज्ञा पुं० [सं० विधातृ] [स्त्री० विधात्री] १. विधान करनेवाला। २. उत्पन्न करनेवाला। ३. प्रबंध करनेवाला। ४. सृष्टि बनानेवाला। ब्रह्मा या ईश्वर।

विधान-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी कार्य्य का आयोजन। अनुष्ठान। २. व्यवस्था। प्रबंध। इंतज़ाम। ३. विधि। प्रणाली। पद्धति। ४. रचना। निर्माण। ५. ढंग। उपाय। युक्ति। ६. आज्ञा करना। ७. नाटक में वह स्थल जहाँ किसी वाक्य द्वारा एक साथ सुख और दुःख दोनों प्रकट किए जाते हैं।

विधायक-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विधायिका] १. विधान करनेवाला। २. बनानेवाला। ३ प्रबंध करनेवाला।

विधि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कार्य्य करने की रीति। प्रणाली। ढंग। २. व्यवस्था। योजना। करीना।

मुहा०—विधि बैठना = १. परस्पर अनुकूलता होना। मेल बैठना। २. इच्छानुकूल व्यवस्था होना।

३. किसी शास्त्र या ग्रंथ में लिखी हुई व्यवस्था। शास्त्रोक्त विधान। ४. शास्त्र में इस प्रकार का कथन कि मनुष्य यह काम करे। ५. व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है। ६. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। ७. आचार व्यवहार। चाल-ढाल।

यौ०—गतिविधि = चेष्टा और कार्रवाई।

८. भाँति। प्रकार। किस्म।

संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

विधिपुर-संज्ञा पुं० [सं० विधि = पुर] ब्रह्मलोक

विधिरानी*-संज्ञा स्त्री० [सं० विधि + हिं० रानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिवत्-क्रि० वि० [सं०] १. विधिपूर्वक विधि या पद्धति के अनुसार। २. जैसे चाहिए। उचित रूप से।

विधुंतुद-संज्ञा पुं० [सं० विधु + तुद] राहु।

विधु-संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु।

विधुदार-संज्ञा पुं० [सं० विधु + दार] चंद्रमा की स्त्री, रोहिणी।

विधुबंधु-संज्ञा पुं० [सं०] कुमुद का फूल।

विधुबैनी*-संज्ञा स्त्री० दे० "विधु-वदनी"।

विधुर-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विधुरा] १. दुःखी। २. घबराया हुआ। व्याकुल। ३. असमर्थ। अशक्त।

विधुवदनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।

विधेय-वि० [सं०] १. जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो। कर्त्तव्य। २. जिसका विधान होनेवाला हो। ३. जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय। ४. वशीभूत। अधीन। ५. वह (शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाय। (व्या०)

विधेयाविमर्ष-संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक वाक्य-दोष। जो बात प्रधानतः कहनी है, उसका वाक्यरचना के बीच दबा रहना।

विध्याभास-संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें घोर अनिष्ट की संभावना दिखाते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बात की अनुमति दी जाती है।

विध्वंस-संज्ञा पुं० [सं०] नाश। बरबादी।

विध्वंसी-संज्ञा पुं० [सं० विध्वंसिन्] [स्त्री० विध्वंसिनी] नाश या बरबाद करनेवाला।

विध्वस्त-वि० [सं०] नष्ट किया हुआ।

विन†-सर्व० [हिं० उस] "उस" का बहु-वचन। उन।

विनत-वि० [सं०] १. झुका हुआ। २. विनीत। नम्र। ३. शिष्ट।

विनतड़ी*†-संज्ञा स्त्री० दे०

विनता-संज्ञा स्त्री० [

की एक कन्या जो

की माता थी।

विनति–सज्ञा स्त्री० [सं०] १. झुकाव । २. नम्रता । विनय । शिष्टता । सुशीलता । ३ प्रार्थना । विनती ।

विनती–सज्ञा स्त्री० दे० "विनति" ।

विनम्र–वि० [सं०] १. झुका हुआ । २. विनीत । सुशील ।

विनय–सज्ञा स्त्री० [सं०] १. नम्रता । आजिजी । २. शिक्षा । ३. प्रार्थना । विनती । ४ शासन । तंबीह । ५. नीति ।

विनय पिटक–सज्ञा पु० [सं०] आदि बौद्ध शास्त्रों में से एक ।

विनयशील–वि० [सं०] नम्र । सुशील ।

विनयी–वि० [सं० विनयिन्] विनययुक्त । नम्र ।

विनशन–सज्ञा पु० [सं०] [वि० विनष्ट, विनश्वर] नष्ट होना । नाश । बरबादी ।

विनश्वर–वि० [सं०] सब दिन या बहुत दिन न रहनेवाला । अनित्य ।

विनष्ट–वि० [सं०] १ जो बरबाद हो गया हो । ध्वस्त । २. मृत । मरा हुआ । ३. बिगड़ा हुआ । ४. भ्रष्ट । पतित ।

विनसना०–क्रि० अ० [सं० विनशन] नष्ट होना ।

विनसाना०–क्रि० स० [हिं० विनसना का स० रूप] १. नष्ट करना । २. बिगाड़ना । क्रि० अ० दे० "विनसना" ।

विना–अव्य [सं०] १. अभाव में । न रहने की अवस्था में । बगैर । २. छोड़कर । अतिरिक्त । सिवा ।

विनाती०‡–सज्ञा स्त्री० [सं० विनति] विनय ।

विनाथ–वि० दे० "अनाथ" ।

विनायक–सज्ञा पुं० [सं०] गणेश ।

विनाश–सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनाशक] १. नाश । ध्वंस । बरबादी । २. लोप । ३. बिगड़ जाने का भाव । खराबी ।

विनाशन–सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विनाशी, विनाश्य] १. नष्ट करना । बरबाद करना । २. संहार करना । वध करना । ३ खराब करना ।

विनास०‡–सज्ञा पुं० दे० "विनाश" ।

विनासन०–सज्ञा पु० दे० "विनाशन" ।

विनासना०–क्रि० स० [सं० विनाशन] नष्ट करना । बरबाद करना । २. [illegible] करना । ३. बिगाड़ना । क्रि० अ० नष्ट होना । बरबाद होना ।

विनिमय–सज्ञा पु० [सं०] एक वस्तु [illegible] वस्तु देना [illegible]

विनियोग–सज्ञा पु० [सं०] १. किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग । प्रयोग । २. वैदिक कृत्य में मंत्र का प्रयोग । ३. प्रेषण । भेजना ।

विनीत–वि० [सं०] १. विनययुक्त । सुशील । २. शिष्ट । नम्र । ३. नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला । धार्मिक ।

विनु०†–अव्य० दे० "विना" ।

विनूठा†–वि० [हिं० अनूठा] अनूठा । सुंदर ।

विनोक्ति–सज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता वर्णन की जाती है ।

विनोद–सज्ञा पु० [सं०] १. कुतूहल । तमाशा । २. क्रीडा । खेल कूद । ३ हँसी-दिल्लगी । परिहास । ४ हर्ष । आनंद । प्रसन्नता ।

विनोदी–वि० [सं० विनोदिन्] [स्त्री० विनोदिनी] १. आमोद-प्रमोद करनेवाला । २. चुहलबाज़ । ३. आनंदी । ४. खेलकूद या हँसी ठट्ठे में रहनेवाला ।

विन्यास–सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विन्यस्त] १. स्थापन । रखना । धरना । २. यथास्थान स्थापन । सजाना । ३. जड़ना ।

विपंची–सज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की वीणा । २. क्रीड़ा । खेल ।

विपक्ष–सज्ञा पु० [सं०] १. विरुद्ध पक्ष । २. विरोधी । प्रतिद्वंद्वी । ३. प्रतिवादी या शत्रु । ४. विरोध । खंडन । ५. व्याकरण में बाधक नियम । अपवाद ।

विपक्षी–सज्ञा पु० [सं० विपक्षिन्] १ विरुद्ध पक्ष का । दूसरी तरफ़ का । २. शत्रु । प्रतिद्वंद्वी । प्रतिवादी । ३. बिना पक्ष का । बगैर डैने का ।

विपत्ति–सज्ञा स्त्री० [सं०] १. कष्ट, दुःख या शोक की प्राप्ति । आफत । २. संकट की अवस्था । बुरे दिन ।

मुहा०—(किसी पर) विपत्ति ढहना = सहसा कोई दुःख या शोक उपस्थित होना ।

३ [illegible] । झंझट । बखेड़ा ।

[illegible] [सं०] विपत्ति । आफत ।

[illegible] [सं०] विपत्ति । आफत के [illegible] [illegible]

में तत्पर। रद्द। ४. हितसाधन के अनुपयुक्त।
संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें कार्य्य की सिद्धि में स्वयं साधक का बाधक होना दिखाया जाता है। (केशव)

विपरीतोपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें कोई भाग्यवान् व्यक्ति अति हीन दशा में दिखाया जाय। (केशव)

विपर्यय-संज्ञा पुं० [सं०] १. उलट-पलट। इधर का उधर। २. और का और। व्यतिक्रम। ३. और का और समझना। ४. भूल। ग़लती। ५. गड़बड़ी। अव्यवस्था।

विपर्य्यस्त-वि० [सं०] १. जिसका विपर्यय हुआ हो। २. अस्त-व्यस्त। गड़बड़।

विपर्य्यास-संज्ञा पुं० दे० "विपर्य्यय"।

विपल-संज्ञा पुं० [सं०] एक पल का साठवाँ भाग।

विपाक-संज्ञा पुं० [सं०] १. परिपक्व होना। पकना। २. पूर्ण दशा को पहुँचना। ३. फल। परिणाम। ४. कर्म का फल। ५. पचना। ६. दुर्गति। दुर्दशा।

विपादिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिवाई नामक रोग। २. प्रहेलिका। पहेली।

विपाशा-संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्यास नदी।

विपिन-संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. उपवन। वाटिका।

विपिनतिलका-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्ति। जिसके प्रत्येक चरण में नगण, सगण, नगण और दो रगण होते हैं।

विपिनपति-संज्ञा पुं० [सं०] सिंह।

विपिनविहारी-संज्ञा पुं० [सं०] १. वन में विहार करनेवाला। २. श्रीकृष्ण।

विपुल-वि० [सं०] [स्त्री० विपुला] १. विस्तार, संख्या या परिणाम में बहुत अधिक। २. वृहत्। बड़ा। अगाध।

विपुलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] आधिक्य।

विपुला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। वसुंधरा। २. एक प्रकार का छंद, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते हैं। ३. आर्य्या छंद के तीन भेदों में से एक।

विपुलाई:-संज्ञा स्त्री० दे० "विपुलता"।

विपोहना:-क्रि० स० [सं० वि० + प्रोत] १. पोतना। लीपना। २. नाश करना। ३. दे० "पोहना"।

विप्र-संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्राह्मण। २. पुरोहित।

विप्रचरण-संज्ञा पुं० [सं०] [सं० विप्र + चरण] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।

विप्रचित्ति-संज्ञा पुं० [सं०] एक दानव जिसकी पत्नी सिंहिका के गर्भ से राहु हुआ था।

विप्रपद-संज्ञा पुं० दे० "विप्रचरण"।

विप्रराम-संज्ञा पुं० [सं०] परशुराम।

विप्रलंभ-संज्ञा पुं० [सं०] १. चाही हुई वस्तु का न मिलना। २. प्रिय का न मिलना। वियोग। विरह। ३. अलग होना। विच्छेद। ४. धोखा। छल। धूर्त्तता।

विप्रलब्ध-वि० [सं०] १. जिसे चाही हुई वस्तु न प्राप्त हुई हो। रहित। वंचित। २. वियोग-दशा को प्राप्त।

विप्रलब्धा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो संकेत स्थान में प्रिय को न पाकर दुःखी हो।

विप्लव-संज्ञा पुं० [सं०] १. उपद्रव। अशांति और हलचल। २. विद्रोह। बलवा। ३. उथल-पुथल। अव्यवस्था। ४. आफ़त। विपत्ति। ५. जल की बाढ़।

विफल-वि० [सं०] [संज्ञा विफलता] १. जिसमें फल न लगा हो। २ निष्फल। व्यर्थ। बेफ़ायदा। ३. जिसके प्रयत्न का कुछ परिणाम न हुआ हो। नाकामयाब।

विबुध-संज्ञा पुं० [सं० वि० + बुध] १. पंडित। बुद्धिमान्। २. देवता। ३. चंद्रमा।

विबुधविलासिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवांगना। देवता की स्त्री। २ अप्सरा।

विबुधवेलि-संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्पलता।

विबोध-संज्ञा पुं० [सं०] १. जागरण। जागना। २. सम्यक् बोध। अच्छा ज्ञान। ३. सचेत होना। सावधान होना।

विभंग-संज्ञा पुं० [सं०] उपल।

विभक्त-वि० [सं० वि० + भज्] १. बँटा हुआ। विभाजित। २. अलग किया हुआ।

विभक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विभक्त होने की क्रिया या भाव। विभाग। बाँट। २. अलगाव। पार्थक्य। ३. शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिससे यह पता लगता है कि उस शब्द का क्रिया-पद से क्या संबंध है। (व्याकरण)

विभव–संज्ञा पुं० [सं०] १. धन। संपत्ति। २. ऐश्वर्य्य। ३. बहुतायत। ४. मोक्ष।

विभवशाली–वि० [सं०] १. विभववाला। २. प्रतापवाला। ऐश्वर्य्यवाला।

विभांडक–संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो ऋष्यशृंग के पिता थे।

विभाँति–संज्ञा स्त्री० [सं० वि० + हिं० भाँति] प्रकार। भेद। किस्म।
वि० अनेक प्रकार का।
अव्य० अनेक प्रकार से।

विभाग–संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँटने की क्रिया या भाव। बँटवारा। तकसीम। २. भाग। अंश। हिस्सा। बखरा। ३. प्रकरण। अध्याय। ४. कार्य्य क्षेत्र। मुहकमा।

विभाजित–वि० [सं०] जिसका विभाग किया गया हो। विभक्त।

विभाज्य–वि० [सं०] १. विभाग करने योग्य। २. जिसका विभाग करना हो।

विभाति–संज्ञा स्त्री० [सं० विभा] शोभा।

विभाना–क्रि० अ० [सं० विभा + ना (प्रत्य०)] १. चमकना। झलकना। २. शोभित होना

विभारना–क्रि० अ० दे० "विभाना"।

विभाव–संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में वह वस्तु जो रति आदि भावों को आश्रय में उत्पन्न करनेवाली या उद्दीप्त करनेवाली हो।

विभावना–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कारण के बिना कार्य्य की उत्पत्ति, अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य्य की उत्पत्ति दिखाई जाती है।

विभावरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात्रि। रात। २. वह रात जिसमें तारे चमकते हों। ३ कुटनी। कुटनी। दूती।

विभावसु–संज्ञा पुं० [सं०] १. वसुओं के एक पुत्र। २. सूर्य्य। ३. अग्नि। ४. चंद्रमा।

विभासना–क्रि० अ० [सं० विभास = ना (हिं० प्रत्य०)] चमकना। झलकना।

विभिन्न–वि० [सं०] १. बिलकुल अलग। पृथक्। जुदा। २. अनेक प्रकार का।

विभीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डर। भय। २. शंका। संदेह।

विभीषण–संज्ञा पुं० [सं०] रावण का भाई एक राक्षस जो रावण के मारे जाने पर लंका का राजा बनाया गया था।
[illegible]० [सं०] १. डर दिखाना।

२. भयानक कांड या दृश्य।

विभु–वि० [सं०] १. जो सर्वत्र वर्तमान हो। सर्वव्यापक। २. जो सब जगह जा सकता हो। जैसे, मन। ३. बहुत बड़ा। महान्। ४. सर्वकाल-व्यापी। नित्य। ५. दृढ़। अचल। ६. शक्तिमान्।
संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. जीवात्मा। ३. प्रभु। ४. ईश्वर। ५. शिव। ६. विष्णु।

विभूति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुतायत। वृद्धि। बढ़ती। २. विभव। ऐश्वर्य्य। ३ संपत्ति। धन। ४ दिव्य या अलौकिक शक्ति जिसके अंतर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं। ५. शिव के अंग में चढ़ाने की राख या भस्म। ६. लक्ष्मी। ७. एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। ८. सृष्टि।

विभूषना–क्रि० स० [सं० विभूषण] १. गहने आदि से सजाना। २. सुशोभित करना। ३. आगमन से सुशोभित करना।

विभूषित–वि० [सं०] १. गहनों आदि से सजाया हुआ। अलंकृत। २. (अच्छी वस्तु, गुण आदि से) युक्त। सहित। ३. शोभित।

विभेंटना–संज्ञा पुं० [हिं० भेंट] गले मिलना।

विभेद–संज्ञा पुं० [सं०] १. विभिन्नता। फ़रक। अंतर। २. अनेक भेद। कई प्रकार। ३. छेदकर घुसना। धँसना।

विभेदना–क्रि० स० [सं० विभेदन] १. भेदन करना। छेदना। २. घुसना। ३. भेद या फ़र्क़ डालना।

विभो–संज्ञा पुं० दे० "विभव"।

विभ्रम–संज्ञा पुं० [सं०] १. भ्रमण। चक्कर। फेरा। २. भ्रांति। धोखा। ३. संदेह। संशय। ४. घबराहट। ५. स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे भ्रम से उलटे-पलटे भूषण वस्त्र पहनकर कभी क्रोध, कभी हर्ष आदि भाव प्रकट करती हैं।

विभ्राट्–संज्ञा पुं० [सं०] १. आपत्ति। विपत्ति। संकट। २. उपद्रव। बखेड़ा।

विमंडन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमंडित] सजाना। शृंगार करना। सँवारना।

विमंडित–वि० [सं०] १. अलंकृत। सजा

हुआ। २. सुशोभित। ३. सहित। युक्त। (अच्छी वस्तु से)

विमत-संज्ञा पुं० [सं०] १. विरुद्ध मत। विपरीत सिद्धांत। २. प्रतिकूल सम्मति।

विमत्सर-संज्ञा पुं० [सं०] अधिक अहंकार।

विमन-वि० [सं० विमनस्] अनमना। उदास।

विमर्दन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमर्दनीय, विमर्दित] १. अच्छी तरह मलना-दलना। २. नष्ट करना। ३. मार डालना।

विमर्श-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी बात का विवेचन या विचार। २. आलोचना। समीक्षा। ३. परीक्षा। ४. परामर्श।

विमर्ष-संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "विमर्श"। २. नाटक का एक अंग जिसके अंतर्गत अपवाद, व्यवसाय, शक्ति, प्रसंग, खेद, विरोध और आदान आदि का वर्णन होता है।

विमल-वि० [सं०] [संज्ञा विमलता] [स्त्री० विमला] १. निर्मल। स्वच्छ। साफ। २. निर्दोष। शुद्ध। ३. सुंदर। मनोहर।

विमलध्वनि-संज्ञा पुं० [सं०] छः चरणों का एक छंद।

विमलापति-संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

विमाता-संज्ञा स्त्री० [सं० विमातृ] सौतेली माँ।

विमान-संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश-मार्ग से गमन करनेवाला रथ। वायुयान। उड़नखटोला। २. मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी जो समधज के साथ निकाली जाती है। ३. रथ। गाड़ी। ४. घोड़ा।

विमुक्त-वि० [सं०] १. अच्छी तरह मुक्त। छूटा हुआ। २. स्वतंत्र। स्वच्छंद। ३. (हानि, दंड आदि से) बचा हुआ। ४. अलग किया हुआ। बरी। ५. फेंका हुआ। छोड़ा हुआ।

विमुक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छुटकारा। रिहाई। २. मुक्ति। मोक्ष।

विमुख-वि० [सं०] [भाव० विमुखता] १. मुख रहित। जिसके मुँह न हो। २. जिसने किसी बात से मुँह फेर लिया हो। विरत। निवृत्त। ३. जिसे परवाह न हो। उदासीन। ४. विरुद्ध। खिलाफ। अप्रसन्न। ५. अप्राप्त-मनोरथ। निराश।

विमुद-वि० [सं०] उदास। खिन्न।

विमुग्ध-वि० [सं०] [स्त्री० विमुग्धा] १. विशेष रूप से मुग्ध। अत्यंत विमोहित। २. भ्रम में पड़ा हुआ। ३. बेसुध। अचेत। ४. ज्ञान रहित। मूर्ख। नासमझ।

विमूढ़गर्भ-संज्ञा पुं० [सं०] वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या बेहोश हो और प्रसव में बड़ी कठिनता हो।

विमोचन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोचनीय, विमोचित, विमोच्य] १. बंधन, गाँठ आदि खोलना। २. बंधन से छुड़ाना। मुक्त करना। ३. निकालना। ४. छोड़ना। फेंकना।

विमोचना०-क्रि० स० [सं० विमोचन] १. बंधन आदि खोलना। मुक्त करना। छोड़ना। २. निकालना। बाहर करना।

विमोह-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोहक] १. मोह। अज्ञान। भ्रम। २. बेसुध होना। बेहोशी। ३. मोहित होना। आसक्ति।

विमोहन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोहित, विमोही] १. मोहित करना। मन लुभाना। २. सुध-बुध भुलाना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

विमोहना०-क्रि० अ० [सं० विमोहन] १. मोहित होना। लुभा जाना। २. बेसुध होना। ३. धोखा खाना।

क्रि० स० १. मोहित करना। लुभाना। २. बेसुध करना। ३. धोखे में डालना।

विमोहा-संज्ञा स्त्री० दे० "विजोहा"।

विमोहित-वि० [सं०] १. लुभाया हुआ। मुग्ध। २. तन मन की सुध भूला हुआ। ३ मूर्छित।

विमोही-वि० [सं० विमोहिन्] [स्त्री० विमोहिनी] १. मोहित करनेवाला। जी लुभानेवाला। २. सुध-बुध भुलानेवाला। ३. मूर्छित या बेहोश करनेवाला। ४. भ्रम में डालनेवाला। ५. निष्ठुर। कठोर हृदय।

विमौट-संज्ञा पुं० [सं० वल्मीक] दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का ढूह। बाँबी।

वियंग*-संज्ञा पुं० [हिं० वि+ अंग] महादेव।

विय०-वि० [सं० द्वि] १. दो। जोड़ा। २. दूसरा।

वियुक्त-वि० [सं०] १. बिछुड़ा हुआ। वियोग प्राप्त। २. जुदा। अलग। ३. रहित। हीन।

वियो०-वि० [सं० द्वितीय] दूसरा। अन्य।

वियोग*-संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलाप का न होना। विच्छेद। २. अलगाव। ३. विरह। जुदाई।

वियोगांत–वि०[सं०] (नाटक या उपन्यास आदि) जिसकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो ।

वियोगिनी–वि० स्त्री० [सं०] जो अपने पति या प्रिय से अलग हो।

वियोगी–वि० [सं० वियोगिन्] [स्त्री० वियोगिनी] जो प्रिया से दूर या वियुक्त हो ।

वियोजक–संज्ञा पुं० [सं०] १. दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक करनेवाला । २. गणित में वह संख्या जिसे किसी दूसरी बड़ी संख्या में से घटाना हो।

विरंग–वि० [सं०] १. बुरे रंग का। बदरंग। फीका। २. अनेक रंगों का।

विरंचि–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा। विधाता।

विरंचिसुत–संज्ञा पुं० [सं०] नारद ।

विरक्त–वि० [सं०] १. जिसका जी हटा हो। विमुख। २. उदासीन। ३. अप्रसन्न।

विरक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनुराग का अभाव। २. उदासीनता। ३ अप्रसन्नता।

विरचन–संज्ञा पुं० [सं०] निर्माण। बनाना।

विरचना॰–क्रि० स० [सं०विरचन] १.रचना। बनाना। निर्माण करना। २. सजाना। क्रि० अ० [सं० वि+रंजन] विरक्त होना।

विरचित–वि० [सं०] १. बनाया हुआ। निर्मित। २. रचा हुआ। लिखित।

विरत–वि० [सं०] १. जो अनुरक्त न हो। विमुख। २. जो लीन या तत्पर न हो। निवृत्त। ३. विरक्त। वैरागी। ४. विशेष रूप से रत। बहुत लीन।

विरति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाह का न होना। २. उदासीनता। ३. वैराग्य।

विरथ–वि० [सं०] १. जिसके पास रथ या सवारी न हो। २. पैदल।

विरद–संज्ञा पुं० [सं० विरुद] १. ख्याति। प्रसिद्धि। २. यश। कीर्ति। दे० "विरुद"।

विरदावली–संज्ञा स्त्री० [सं० विरुदावली] यश की कथा। कीर्ति की गाथा।

विरदैत॰–वि० [हिं० विरद+ऐत (प्रत्य०)] बड़े विरदवाला। कीर्ति या यशवाला।

विरमना॰†–क्रि० अ०[सं०विरमण] १. रम जाना। मन लगाना। २. विराम करना। ठहरना। ३. मोहित होकर रुक जाना। ४. वेग आदि का थमना या कम होना। क्रि० स० दे० "[illegible]"।

विरमाना॰†–क्रि० स० [हिं० विरमना का स० रूप] दूसरे को विरमने में प्रवृत्त करना।

विरल–वि० [सं०] १. जो घना न हो। 'सघन' का उलटा। २. जो दूर दूर पर हो। ३. दुर्लभ। ४. पतला। ५. शून्य। निर्जन। ६. अल्प। थोड़ा।

विरस–वि० [सं०] [संज्ञा विरसता] १ रसहीन। फीका। नीरस। २. जो अच्छा न लगे। अप्रिय। अरुचिकर। ३ (काव्य) जिसमें रस का निर्वाह न हो सका हो।

विरह–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वस्तु से रहित होने का भाव। २. किसी प्रिय व्यक्ति का पास से अलग होना। विच्छेद। वियोग। जुदाई। ३. वियोग का दुःख।

विरहिणी–वि० स्त्री० दे० "वियोगिनी"।

विरहित–वि० [सं०] रहित। शून्य। बिना।

विरही–वि० [सं० विरहिन्] [स्त्री० विरहिणी] *जो प्रियतमा से अलग होने के कारण दुःखी हो।* वियोगी।

विरहोत्कंठिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दुःखी नायिका जिसके मन में पूरा विश्वास हो कि पति या नायक आवेगा, पर फिर भी वह किसी कारणवश न आवे।

विराग–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरागी] १. अनुराग का अभाव। चाह का न होना। २ विषय भोग आदि से निवृत्ति। वैराग्य।

विराजना–क्रि० अ० [सं० विराजन] १. शोभित होना। सोहना। फबना। २. मौजूद रहना। उपस्थित होना। ३. बैठना।

विराजमान–वि० [सं०] १. चमकता हुआ। २. उपस्थित। मौजूद। ३. बैठा हुआ।

विराट्–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म का वह स्थूल स्वरूप, जिसका शरीर संपूर्ण विश्व है। २ क्षत्रिय। ३. कांति। दीप्ति। *वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।*

विराट–संज्ञा पुं० [सं०] १. मत्स्य देश। २. मत्स्य देश का राजा जिसके यहाँ अज्ञातवास के समय पांडव नौकर रहे थे।

विराध–संज्ञा पुं० [सं०] १. पीड़ा। तकलीफ। २. सतानेवाला। ३. एक राक्षस जिसे दंडकारण्य में लक्ष्मण ने मारा था।

विराम–संज्ञा पुं० [[illegible]] १. रुकना या थमना। ठहरना। २. [illegible] करना। [illegible]

समय ठहरना पड़ता हो। ४. छंद के चरण में यति।

विराव–संज्ञा पुं० [सं०] १ शब्द। बोली। कलरव। २. हल्ला-गुल्ला। शोर गुल।

विरासी–वि० दे० "विलासी"।

विरुझना–क्रि० अ० दे० "उलझना"।

विरुद–संज्ञा पुं० [सं०] १. राजाओं की स्तुति या प्रशंसा जो सुंदर भाषा में की गई हो। यशकीर्तन। प्रशस्ति। २. यश या प्रशंसासूचक पदवी जो राजा लोग प्राचीन काल में धारण करते थे। ३ यश।

विरदावली–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी के गुण, प्रताप, पराक्रम आदि का सविस्तर कथन। यश वर्णन। प्रशंसा।

विरुद्ध–वि० [सं०] १. जो हित के अनुकूल न हो। प्रतिकूल। खिलाफ़। २. अप्रसन्न। ३ विपरीत। ४. अनुचित। क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति में। खिलाफ़।

विरुद्धकर्मा–संज्ञा पुं० [सं० विरुद्धकर्मन्] १ बुरे चलन का आदमी। २ श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही क्रिया के कई परस्पर विरुद्ध फल दिखाए जाते हैं।

विरुद्धता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विरुद्ध होने का भाव। २. प्रतिकूलता। विपरीतता।

विरुद्धरूपक–संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार रूपक अलंकार का एक भेद जो "रूपकातिशयोक्ति" ही है।

विरुद्धार्थ दीपक–संज्ञा पुं० [सं०] दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखाया जाता है।

विरूप–वि० [सं०] [स्त्री० विरूपा] १ कई रंग रूप का। २ कुरूप। बदसूरत। भद्दा। ३ बदला हुआ। परिवर्तित। ४ शोभाहीन। ५ विरुद्ध। उलटा।

विरूपाक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। शंकर। २. शिव के एक गण का नाम। ३. रावण का एक सेनानायक। ४ एक दिग्गज।

विरेचक–वि० [सं०] दस्त लानेवाला। मलभेदक। दस्तावर।

विरेचन–संज्ञा पुं० [सं०] १. दस्त लानेवाली दवा। जुलाब। २ दस्त लाना।

विरोचन–संज्ञा पुं० [सं०] १ चमकना। प्रकाशित होना। २. प्रकाशमान। ३ सूर्य की किरण। ४ सूर्य। ५ चंद्रमा। ६. अग्नि। ७. विष्णु। ८. प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता।

विरोध–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरोधक] १. मेल में न होना। विपरीत भाव। अनैक्य। २. बैर। शत्रुता। बिगाड़। अनबन। ३ दो बातों का एक साथ न हो सकना। व्याघात। ४. उलटी स्थिति। ५. नाश। ६. नाटक का एक अंग जिसमें किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। ७. एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य में से किसी एक का दूसरी जाति, गुण, क्रिया या द्रव्य में से किसी एक के साथ विरोध होता है।

विरोधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विरोधी, विरोधित, विरोध्य] १. विरोध करना। बैर करना। २. नाश। बरबादी। ३ नाटक में विमर्श का एक अंग जो उस समय होता है, जब किसी कारणवश कार्यध्वंस का उपक्रम (सामान) होता है।

विरोधना–क्रि० स० [सं० विरोधन] विरोध करना। शत्रुता या झगड़ा करना।

विरोधाभास–संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का विरोध दिखाई पड़ता है।

विरोधी–वि० [सं० विरोधिन्] [स्त्री० विरोधिनी] १ विरोध करनेवाला। बाधा डालनेवाला। २ विपक्षी। शत्रु। बैरी।

विरोधी श्लेष–संज्ञा पुं० [सं०] श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें श्लिष्ट शब्दों द्वारा दो पदार्थों में भेद, विरोध या न्यूनाधिकता दिखाई जाती है। (केशव)

विरोधोपमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती है।

विलंब–वि० [सं० विलंब] आवश्यकता, अनुमान आदि से अधिक समय (जो किसी बात में लगे)। अतिकाल। देर।

विलंबना–क्रि० अ० [सं० विलंबन] १ देर करना। विलंब करना। २ मन लगने के कारण बस जाना। ३ लटकना। ४ सहारा लेना।

विलंबित–वि० [सं०] १ लटकता हुआ। झूलता हुआ। २. जिसमें देर हुई हो।

विलक्षण–वि० [सं०] [संज्ञा विलक्षणता] १. असाधारण। अनोखा। अनूठा।

विलखना–क्रि० अ० दे० "बिलखना"।

ः–क्रि० अ० [सं० लक्ष] ताड़ना। पता पाना।

विलग–वि० [हिं० वि (उप०)+लगना] अलग।

विलगाना–क्रि० अ० [हिं० विलग+ना(प्रत्य०)] १. अलग होना। पृथक होना। २. विभक्त या अलग दिखाई देना।

क्रि० स० पृथक् करना। अलग करना।

विलच्छन–वि० दे० "विलक्षण"।

विलपनाः–क्रि० अ० [सं० विलाप] रोना।

विलपानाः–क्रि० स० [हिं० विलपना का स०] दूसरे को विलाप में प्रवृत्त करना। रुलाना।

विलम–संज्ञा पु० [सं० विलंब] देर। अबेर।

विलमनाः–क्रि० अ० दे० "बिलमना"।

विलसन–संज्ञा पु० [सं०] १ चमकने की क्रिया। २. क्रीड़ा। प्रमोद।

विलसनाः–क्रि० अ० [सं० विलस] १. शोभा पाना। २. विलास करना। ३. आनंद मनाना।

विलाप–संज्ञा पु० [सं०] रोकर दुःख प्रकट करने की क्रिया। क्रंदन। रुदन।

विलापनाः–क्रि० अ० [सं० विलापन] शोक करना। विलाप करना।

विलायत–संज्ञा पु० [अ०] १. पराया देश। दूसरों का देश। २. दूर का देश।

विलायती–वि० [अ०] १. विलायत का। विदेशी। २. दूसरे देश में बना हुआ।

विलास–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रसन्न या प्रफुल्लित करनेवाली क्रिया। २ मनोरंजन। मनोविनोद। ३ आनंद। हर्ष। ४. वे प्रेमसूचक क्रियाएँ जिनसे स्त्रियाँ पुरुषों को अपनी ओर अनुरक्त करती हैं। हाव-भाव। नाज नखरा। ५ किसी अंग की मनोहर चेष्टा। कर-विलास। ६ किसी चीज का हिलना डोलना। ७ अतिशय सुख भोग।

विलासिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का रूपक जिसमें एक ही अंक होता है।

विलासिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदरी स्त्री। कामिनी। २ वेश्या। गणिका। ३. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण और दो गुरु होते हैं।

विलासी–संज्ञा पुं० [सं० विलासिन्] [स्त्री० विलासिनी] १ सुख भोग में अनुरक्त पुरुष। कामी। २. क्रीड़ाशील। हँसोड़। कौतुकशील। ३. आराम तलब।

विलीकः–वि० पु० [सं० व्यलीक] अनुचित।

विलीन–वि० [सं०] १. जो अदृश्य हो गया हो। लुप्त। २. जो किसी दूसरे में मिल गया हो। ३. छिपा हुआ।

विलेशय–संज्ञा पु० [सं०] १. बिल या दरार में रहनेवाले जीव। २ सर्प। साँप।

विलोकना–क्रि० स० [सं० विलोकन] देखना।

विलोचन–संज्ञा पु० [सं०] १. नेत्र। नयन। आँख। २. आँख फोड़ने की क्रिया।

विलोम–वि० [सं०] विपरीत। उलटा। संज्ञा पु० ऊँचे से नीचे की ओर आना।

विलोल–वि० [सं०] १ चंचल। २. सुंदर।

विल्व–संज्ञा पु० [सं०] बेल का पेड़।

विल्वपत्र–संज्ञा पु० [सं०] बेल का पत्ता, जो शिव पर चढ़ाते हैं। बेलपत्र।

विल्वमंगल–संज्ञा पु० [सं०] महाकवि सूरदास का अंधे होने से पूर्व का नाम।

विवक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोई बात कहने की इच्छा। २. अर्थ। तात्पर्य। ३ अनिश्चय। शक।

विवक्षित–वि० [सं०] जिसकी आवश्यकता या इच्छा हो। अपेक्षित।

विवदनाः–क्रि० अ० [सं० विवाद+हिं० ना] शास्त्रार्थ करना। विवाद करना।

विवर–संज्ञा पु० [सं०] १. छिद्र। बिल। २. गड्ढा। दरार। गर्त। ३. गुफा। कंदरा।

विवरण–संज्ञा पु० [सं०] १. विवेचन। व्याख्या। २. वृत्तांत। बयान। हाल। ३ भाष्य। टीका।

विवर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में एक भाव जिसमें भय, मोह, क्रोध आदि के कारण मुख का रंग बदल जाता है।

वि० [सं०] १. नीच। कमीना। २. कुजाति। ३. बदरंग। बुरे रंग का। ४. जिसके चेहरे का रंग उतरा हुआ हो। कांतिहीन।

विवर्त–संज्ञा पुं० [सं०] १. समुदाय। समूह। २. आकाश। ३. भ्रांति। भ्रम।

विवर्तन–संज्ञा पु० [सं०] घूमना। फिरना।

विवर्तवाद–संज्ञा पु० [सं०] वेदांत में एक सिद्धांत जिसके अनुसार ब्रह्म को सृष्टि का मुख्य उत्पत्ति-स्थान और संसार को माया मानते हैं। परिणामवाद।

विवश-वि० [सं०] १. जिसका कुछ वश न चले। लाचार। बेबस। २ पराधीन।
विवस्त्र-वि० [सं०] नग्न। नंगा।
विवस्वत्-संज्ञा पु० [सं०] १ सूर्य। २. सूर्य का सारथी, अरुण।
विवाद-संज्ञा पु० [सं०] १. किसी बात पर जबानी झगड़ा। वाक् युद्ध। २ झगड़ा। कलह। ३. मुकदमेबाजी।
विवादास्पद-वि० [सं०] जिस पर विवाद या झगड़ा हो। विवाद योग्य। विवादयुक्त।
विवादी-संज्ञा पु० [सं० विवादिन्] १. कहा-सुनी या झगड़ा करनेवाला। २. मुकदमा लड़नेवालों में से कोई एक पक्ष।
विवाह-संज्ञा पु० [सं०] एक प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस में दांपत्य सूत्र में बँधते हैं। शादी। ब्याह। हमारे यहाँ विवाह आठ प्रकार के माने गए हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच। पर आजकल केवल ब्राह्म-विवाह प्रचलित है। परिणय। पाणिग्रहण।
विवाहना-क्रि० स० दे० "ब्याहना"।
विवाहित-वि० पु० [सं०] [स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो गया हो। ब्याहा हुआ।
विवाही-वि० स्त्री० [सं० विवाहिता] जिसका विवाह हो चुका हो।
विविद-वि० [सं० द्वि] १. दो। २. दूसरा।
विविचार-वि० [सं०] १. विचार-रहित। विवेक रहित। २ आचार-रहित।
विविध-वि० [सं०] बहुत प्रकार का। अनेक तरह का।
विविर-संज्ञा पु० [सं०] १. खोह। गुफा। २. बिल। ३. दरार।
विवृत-वि० [सं०] १. विस्तृत। फैला हुआ। २ खुला हुआ।
संज्ञा पु० उष्म स्वरों के उच्चारण करने का एक प्रयत्न। (व्या०)
विवृतोक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वयं अपने शब्दों द्वारा प्रकट कर देता है।
विवेक-संज्ञा पु० [सं०] १. भली बुरी वस्तु का ज्ञान। २. मन की वह शक्ति जिससे भले बुरे का ज्ञान होता है। ३. बुद्धि।
विवेकी-संज्ञा पु० [सं० विवेकिन्] १ वह जिसे विवेक हो। भले बुरे का ज्ञान रखने वाला। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३. ज्ञानी। ४. न्यायशील। ५. न्यायाधीश।
विवेचन-संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति परीक्षा करना। जाँचना। २. यह देखना कि कौन सी बात ठीक है और कौन नहीं। निर्णय। तर्क वितर्क। ४. मीमांसा।
विवेचनीय-वि० [सं०] विवेचन करने योग्य। विचार करने लायक।
विव्वोक-संज्ञा पु० [सं०] साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्रियाँ संयोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।
विशद-वि० [सं०] १. स्वच्छ। निर्मल। २ साफ़। स्पष्ट। ३. जो दिखाई पड़ता हो। व्यक्त। ४. सफ़ेद। ५ सुंदर। खूबसूरत।
विशांपति-संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
विशाख-संज्ञा पु० [सं०] १. कार्त्तिकेय। २. एक देवता जिनका जन्म कार्त्तिकेय के वज्र चलाने से हुआ था। ३. शिव।
विशाखा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र जिसे राधा भी कहते हैं। २. एक प्राचीन जनपद जो कौशांबी के पास था।
विशारद-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान् हो। २ कुशल। दक्ष।
विशाल-वि० [सं०] [संज्ञा विशालता] १. बहुत बड़ा और विस्तृत। लंबा-चौड़ा। २ सुंदर और भव्य। ३. प्रसिद्ध। मशहूर।
विशालाक्ष-संज्ञा पु० [सं०] १. महादेव। शिव। २ विष्णु। ३ गरुड़।
विशालाक्षी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसकी आँखें बड़ी और सुंदर हों। २ पार्वती। ३ देवी की एक मूर्त्ति।
विशिख-संज्ञा पु० [सं०] बाण।
विशिष्ट-वि० [सं०] [संज्ञा विशिष्टता] १. मिला हुआ। युक्त। २. जिसमें किसी प्रकार की विशेषता हो। ३ विलक्षण।
विशिष्टाद्वैत-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध दार्शनिक सिद्धांत जिसके अनुसार यह माना जाता है कि जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव में भिन्न नहीं हैं।

विशुद्ध–वि० [सं०] [भाव० विशुद्धता] १ जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो। २ सत्य। सच्चा।

विशुद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] शुद्धता।

विशूचिका–संज्ञा स्त्री० दे० "विसूचिका"।

विशृंखल–वि० [सं०] जिसमें क्रम या शृंखला न हो।

विशेष–संज्ञा पुं० [सं०] १ भेद। अंतर। २ वह जो साधारण के अतिरिक्त और उससे अधिक हो। अधिकता। ज्यादती। ३ वस्तु। पदार्थ। ४ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें (क) बिना आधार के आधेय या (ख) थोड़ा काम करने पर बहुत सी प्राप्ति या (ग) एक ही चीज का अनेक स्थानों में होना वर्णित होता है। ५ सात प्रकार के पदार्थों में से एक। (वैशेषिक)

विशेषज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो।

विशेषण–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो। २ व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी संज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है, अथवा उसकी व्याप्ति मर्यादित होती है। विशेषण तीन प्रकार के होते हैं—सार्वनामिक, गुणवाचक और संख्या वाचक

विशेषता–संज्ञा स्त्री० [सं०] विशेष का भाव या धर्म। खसूसियत। खासपन।

विशेषना–क्रि० अ० [सं० विशेष] १ निश्चय या निर्णय करना। २ विशेष रूप देना।

विशेषोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें पूर्ण कारण के रहते हुए भी कार्य के न होने का वर्णन रहता है।

विशेष्य–संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा होता हो।

विश्–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रजा।

विशपति–संज्ञा पुं० [सं०] राजा

विश्रंभ–संज्ञा पुं० [सं०] १ विश्वास। एतबार। २ प्रेमी और प्रेमिका में रति के समय होनेवाला झगड़ा। ३ प्रेम।

विश्रब्ध–वि० [सं०] १ शांत। २ विश्वसनीय। ३ निर्भय। निडर।

विश्रब्ध नवोढा–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नवोढ़ा नायिका जिसका अपने पति पर कुछ कुछ अनुराग और कुछ कुछ विश्वास होने लगा हो।

विश्रवा–संज्ञा पुं० [सं० विश्रवस] एक प्राचीन ऋषि जो कुबेर के पिता थे।

विश्रांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] विश्राम। आराम।

विश्राम–संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। आराम करना। २ ठहरने का स्थान। ३ आराम। चैन। सुख।

विश्रुत–वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।

विश्लिष्ट–वि० [सं०] १ जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २ विकसित। खिला हुआ। ३ प्रकट। प्रकाशित।

विश्लेषण–संज्ञा पुं० [सं०] किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को अलग अलग करना।

विश्वंभर–संज्ञा पुं० [सं०] १ परमेश्वर। २ विष्णु। ३ एक उपनिषद् का नाम।

विश्वंभरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

विश्व–संज्ञा पुं० [सं०] १ चौदहों भुवनों का समूह। समस्त ब्रह्मांड। २ संसार। जगत्। दुनिया। ३ देवताओं का एक गण जिसमें ये दस देवता हैं—वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा और माद्रवा। ४ विष्णु। ५ शरीर। वि० १ समस्त। सब। २ बहुत।

विश्वकर्मा–संज्ञा पुं० [सं० विश्वकर्म्मन्] १ ईश्वर। २ ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४ एक प्रसिद्ध देवता जो सब प्रकार के शिल्पशास्त्र के आविष्कर्त्ता माने जाते हैं। काष्ठ। तक्षक। देववर्द्धन। ५ शिव। ६ बढ़ई। ७ मेमार। राज। ८ लोहार।

विश्वकोश–संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो।

विश्वनाथ–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

विश्वरूप–संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ शिव। ३ श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था।

विश्वलोचन–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य और चंद्रमा।

विश्वविद्यालय–संज्ञा पुं० [सं०] वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती हो। यूनिवर्सिटी।

विश्वव्यापी–संज्ञा पुं० [सं० विश्वव्यापिन्] ईश्वर।
वि० जो सारे विश्व में व्याप्त हो।
विश्वश्रवा– संज्ञा पुं० [सं० विश्वश्रवस्] एक मुनि जो कुबेर और रावण आदि के पिता थे।
विश्वसनीय–वि० [सं०] विश्वास करने के योग्य। जिसका एतबार किया जा सके।
विश्वस्त–वि० [सं०] विश्वसनीय।
विश्वात्मा–संज्ञा पुं० [सं० विश्वात्मन्] १. १. विष्णु। २ शिव। ३ ब्रह्मा।
विश्वाधार–संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर।
विश्वामित्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो गाधिज, गाधेय और कौशिक भी कहे जाते हैं। कहा जाता है कि ये बहुत बड़े क्रोधी थे और प्रायः लोगों को शाप दे दिया करते थे।
विश्वास–संज्ञा पुं० [सं०] एतबार। यकीन।
विश्वासघात–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विश्वासघातक] अपने पर विश्वास करनेवाले के साथ ऐसा कार्य्य करना जो उसके विश्वास के बिल्कुल विपरीत हो। धोखा।
विश्वासपात्र–संज्ञा पुं० [सं०] विश्वसनीय।
विश्वासी–संज्ञा पुं० [सं० विश्वासिन्] १ विश्वास करनेवाला। २. विश्वसनीय।
विश्वेदेव–संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २. देवताओं का एक गण जिसमें इन्द्र, अग्नि आदि नौ देवता माने जाते हैं।
विश्वेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. शिव की एक मूर्ति का नाम।
विष–संज्ञा पुं० [सं०] १. गरल। जहर। २. वह जो किसी की सुख-शांति आदि में बाधक हो।
मुहा०—विष की गाँठ = वह जो अनेक प्रकार के उपद्रव और अपकार आदि करता हो।
३ बछनाग। ४ कलिहारी।
विषकन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके शरीर में इस आशय से कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हों कि जो उसके साथ संभोग करे, वह मर जाय।
विषण्ण–वि० [सं०] दुःखी। विषादयुक्त।
विषदंड–संज्ञा पुं० [सं०] कमल की नाल।
विषधर–संज्ञा पुं० [सं०] साँप।
विषमंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। २ सँपेरा।
विषम–वि० [सं०] १. जो सम या समान न हो। असमान। २ (वह संख्या) जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे। ताक़। ३. बहुत कठिन। ४ बहुत तीव्र। बहुत तेज। ५ भीषण। विकट।
संज्ञा पुं० १ वह वृत्त जिसके चारों चरणों में बराबर बराबर अक्षर न हों, बल्कि कम और ज्यादा अक्षर हों। २. एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का संबंध वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का अभाव कहा जाता है।
विषम ज्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का ज्वर जो होता तो नित्य है, पर जिसके आने का कोई समय नियत नहीं होता। जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।
विषमता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विषम होने का भाव। २ वैर। विरोध।
विषमबाण–संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।
विषमवृत्त–संज्ञा पुं० [सं०] वह वृत्त या छंद जिसके चरण या पद समान न हों।
विषय–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिस पर कुछ विचार किया जाय। २. मज़मून। ३ स्त्री-संभोग। ४. संपत्ति। ५. बड़ा प्रदेश या राज्य।
विषयक–अव्य० [सं०] विषय का। संबंधी।
विषयी–संज्ञा पुं० [सं० विषयिन्] १ वह जो भोग विलास में बहुत आसक्त हो। विलासी। कामी। २ कामदेव। ३ धनवान्। अमीर।
विषविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] मंत्र आदि की सहायता से विष उतारने की विद्या।
विषवैद्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो मंत्र तंत्र आदि की सहायता से विष उतारता हो।
विषांगना–संज्ञा स्त्री० दे० "विषकन्या"।
विषाक्त–वि० [सं०] जिसमें विष मिला हो। विष युक्त। विषपूर्ण। जहरीला।
विषाण–संज्ञा पुं० [सं०] १. पशु का सींग। २ सूअर का दाँत।
विषाद–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विषादी] १. खेद। दुःख। रंज। २. जड़ या निश्चेष्ट होने का भाव।
विषुव–संज्ञा पुं० [सं०] वह समय जब कि सूर्य्य विषुवत रेखा पर पहुँचता है और दिन तथा रात दोनों बराबर होते हैं। ऐसा समय वर्ष में दो बार आता है।

विहारी–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विहारिणी] १. विहार करनेवाला। २. श्रीकृष्ण।

विहित–वि० [सं०] जिसका विधान किया गया हो।

विहीन–वि० [सं०] [संज्ञा विहीनता] १. बगैर। बिना। २ त्यागा हुआ।

विह्वल–वि० [सं०] [संज्ञा विह्वलता] घबराया हुआ। व्याकुल।

वीक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] देखना।

वीचि–संज्ञा स्त्री० [सं०] लहर। तरंग।

वीचिमाली–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वीची–संज्ञा स्त्री० [सं०] तरंग। लहर।

वीज–संज्ञा पुं० [सं०] १. मूल कारण। २. शुक्र। वीर्य। ३. तेज। ४. अन्न आदि का बीज। बीया। ५. अंकुर। ६. तत्त्व। ७ तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार के मंत्र। ८. बीज गणित।

वीज गणित–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गणित जिसमें अज्ञात राशियों को जानने के लिये कुछ सांकेतिक चिह्नों आदि की सहायता से गणना की जाती है।

वीणा–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा। बीन।

वीणापाणि–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वीत–वि० [सं०] १. जो छोड़ दिया गया हो। २ जो छूट गया हो। मुक्त। ३. जो बीत गया हो। ४. जो निवृत्त हो चुका हो।

वीतराग–संज्ञा पुं० [सं०] १. ज— जिसने राग या आसक्ति आदि छ— [illegible] १. ईश्वर [illegible] दिया हो। २. — [illegible] का नाम।

वीि— [illegible] पुं० [सं०] १ गरल। जो [illegible] २. वह जो किसी की सुख-शांति आदि [illegible] बाधक हो।

मुहा०—विष की गाँठ = वह जो अनेक प्रकार क उपद्रव और अपराध आदि करता हो।

३ वत्सनाग। ४ कलिहारी।

विषकन्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके शरीर में इस आशय से कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हों कि जो उसके साथ संभोग करे, वह मर जाय।

विषण्ण–वि० [सं०] दु:खी। विषादयुक्त।

विषदंड–संज्ञा पुं० [सं०] कमल की नाल।

विषधर–संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

विषमंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। २. सँपेरा।

सिपाही। ३. वह जो किसी काम में और लोगों से बहुत बढ़कर हो। ४. पुत्र। लड़का। ५. पति। खसम। ६. भाई। (स्त्री०) ७. साहित्य में एक रस जिसमें उत्साह और वीरता आदि की परिपुष्टि होती है। ८ तांत्रिकों के अनुसार साधना के तीन भावों में से एक भाव।

वीरकेशरी–संज्ञा पुं० [सं० वीरकेशरिन्] वह जो वीरों में सिंह के समान श्रेष्ठ हो।

वीरगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने से प्राप्त होती है।

वीरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] शूरता। बहादुरी।

वीरभद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। २. उशीर। खस। ३. शिव के एक प्रसिद्ध गण जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं।

वीरमाता–संज्ञा स्त्री० [सं० वीरमातृ] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करे। वीर-जननी।

वीरललित–संज्ञा पुं० [सं०] वीरों का सा, पर साथ ही कोमल स्वभाव।

वीरशय्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] रणभूमि।

वीरशैव–संज्ञा पुं० [सं०] शैवों का एक भेद।

वीरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मदिरा। शराब। २. वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों।

वीराचारी–संज्ञा पुं० [सं० वीराचारिन्] एक प्रकार के वाममार्गी जो देवताओं की वीर भाव से उपासना करते हैं।

वीरान–वि० [फा०] १. उजड़ा हुआ। जिसमें आबादी न रह गई हो। २. श्रीहीन।

वीरासन–संज्ञा पुं० [सं०] बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा।

[illegible]र्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर के सात वि[illegible]पों में से एक धातु जिसके कारण

विपा[illegible] बल और कांति आती है। शुक्र। विप युक्त।। २. दे० "रज"। ३ पराक्रम।

विपाण–संज्ञा। ४. बीज। बीआ।

२ सूअर का [सं०] १. स्तन का अगला

विपाद–संज्ञा पुं०डी। ढेंडी।

खेद। दुःप [सं०] समूह। झुंड।

होने का भाव। [सं०] १ तुलसी। २.

विपुव–संज्ञा पु [सं०भ।

सूर्य विपुवत रेखा पसं०] मथुरा जिले का तथा रात दोनों बराः तीर्थ जो भगवान् समय वर्ष मे दो बार -क्षेत्र माना जाता है।

विपुवत रेखा-सज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष के कार्य्य के लिये कल्पित एक रेखा जो पृथ्वी तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व-पश्चिम पृथ्वी के चारों ओर मानी जाती है।
विपूचिका-सज्ञा स्त्री० दे० "विसूचिका"।
विष्कंभ-सज्ञा पुं० [सं०] १. ज्योतिष में एक प्रकार का योग। २ विस्तार। ३ बाधा। विघ्न। ४ नाटक का एक प्रकार का अंक। जो कथा पहले हो चुकी हो अथवा जो अभी होनेवाली हो, उसकी इसमें मध्यम पात्रों द्वारा सूचना दी जाती है।
विष्कंभक-सज्ञा पुं० दे० "विष्कंभ"।
विष्कीर-सज्ञा पु० [सं०] पक्षी। चिड़िया।
विष्टंभ-सज्ञा पुं० [सं०] १. बाधा। रुकावट। २. पेट फूलने का रोग। अनाह।
विष्टंभन-सज्ञा पु० [सं०] रोकने या संकुचित करने की क्रिया।
विष्ठा-सज्ञा स्त्री० [सं०] मल। मैला। गुह। पाखाना।
विष्णु-सज्ञा पु० [सं०] १ हिंदुओं के एक प्रधान और बहुत बड़े देवता जो सृष्टि का भरण पोषण और पालन करनेवाले तथा ब्रह्मा का एक विशेष रूप माने जाते हैं। २ बारह आदित्यों में से एक।
विष्णुकांता-सज्ञा स्त्री० [सं०] नीली अपराजिता। नीली कोयल लता।
विष्णुगुप्त-सज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रसिद्ध ऋषि और वैयाकरण जो कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध थे। २. प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम।
विष्णुपदी-सज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा
विष्णुलोक-सज्ञा पु० [सं०]
विष्वक्सेन-सज्ञा पु० [सं०] १
२. एक मनु का नाम। ३. शि
विसदृश-वि० [सं०] १. विपरीत। उलटा। २. विलक्षण। अद्भुत।
विसर्ग-सज्ञा पु० [सं०]
त्याग। ३. व्याकरण में ए
ऊपर नीचे दो बिंदु होते
उच्चारण प्राय. अर्ध ह के
४ मोक्ष। ५ मृत्यु
वियोग। विछोह।
विसर्जन-सज्ञा पु० [
छोड़ना। २ विदा

[दत्त-
ति के
प्रेम।
विश्वस]

३ षोडशोपचार पूजन में अंतिम उपचार। आवाहन किए हुए देवता से पुन स्वस्थान गमन की प्रार्थना करना। ४ समाप्ति।
विसर्प-सज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें ज्वर के साथ फुंसियाँ हो जाती हैं।
विसर्पी-वि० [सं० विसर्पिन्] फैलनेवाला।
विसाल-सज्ञा पुं० [अ०] १ संयोग। मिलाप। २ मृत्यु।
विसूचिका-सज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक रोग जिसे कुछ लोग "हैजा" मानते हैं।
विस्तार-सज्ञा पु० [सं०] लंबे या चौड़े होने का भाव। फैलाव।
विस्तीर्ण-वि० [सं०] १. विस्तृत। २ विशाल। बहुत बड़ा। ३ बहुत अधिक।
विस्तृत-वि० [सं०] [सज्ञा विस्तार, विस्तृति] १ लंबा-चौड़ा। विस्तारवाला। २ यथेष्ट विवरणवाला। ३. बहुत बड़ा या लंबा चौड़ा। विशाल।
विस्फोट-सज्ञा पु० [सं०] १ किसी पदार्थ का गरमी आदि के कारण उबल या फूट पड़ना। २ जहरीला और खराब फोड़ा।
विस्फोटक-सज्ञा पुं० [सं०] जहरीला फोड़ा। २. वह पदार्थ जो गरमी या आघात ‧ कारण भभक उठे। भभकनेवाला पदार्थ ३ शीतला का रोग। चेचक।
विस्मय-सज्ञा पु० [सं०] १ आश्चर्य ...साहित्य में अद्भुत रस
... देवता जो सब प्रकार
आविष्कर्त्ता माने जाते हैं। ... ज्ञान
...चक। देववर्द्धन। ५ शिव। ६ बढ़ई। ७ मेमार। राज। ८ लोहार।
विश्वकोश-सज्ञा पु० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो।
विश्वनाथ-सज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव।
विश्वरूप-सज्ञा पु० [सं०] १ विष्णु। २ शिव। ३ श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था।
विश्वलोचन-सज्ञा पु० [सं०] सूर्य और चंद्रमा।
विश्वविद्यालय-सज्ञा पुं० [सं०] वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती है। युनिवर्सिटी।

वृषण–संज्ञा पु० [सं०] १. इंद्र। २. कर्ण। ३. विष्णु। ४. साँड़। ५. घोड़ा। ६. अंडकोश। पोता।
वृषध्वज–संज्ञा पु० [सं०] १. शिव। महादेव। २. गणेश। ३. पुराणानुसार एक पर्वत।
वृषभ–संज्ञा पु० [सं०] १ बैल या साँड़। २. साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद। ३. कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुष।
वृषभधुज–संज्ञा पु० दे० "वृषभध्वज"।
वृषभध्वज–संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
वृषभानु–संज्ञा पु० [सं०] श्री राधिकाजी के पिता जो नारायण के अंश से उत्पन्न माने जाते हैं।
वृषल–संज्ञा पु० [सं०] १. शूद्र। २. पापी और दुष्कर्मी। ३. घोड़ा। ४. सम्राट् चंद्रगुप्त का एक नाम।
वृषली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्मृतियों के अनुसार वह कुँआरी कन्या जो रजस्वला हो गई हो। २. कुलटा। दुराचारिणी। ३. नीच जाति की स्त्री। ४ रजस्वला स्त्री।
वृषवामी–संज्ञा पु० [सं०] शिव जी।
वृषासुर–संज्ञा पु० दे० "भस्मासुर"।
वृषोत्सर्ग–संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें लोग अपने मृत पिता आदि के नाम पर साँड़ पर चक्र दागकर उसे छोड़ देते हैं।
वृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वर्षा। बारिश। मेह। २. ऊपर से बहुत सी चीजों का एक साथ गिरना या गिराया जाना। ३ किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना।
वृष्टिमान–संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि कितनी वृष्टि हुई।
वृष्णि–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. यादववंश। ३. श्रीकृष्ण। ४ इंद्र। ५ अग्नि। ६. वायु।
वृष्य–संज्ञा पु० [सं०] वह चीज जिससे वीर्य, बल और आनंद बढ़ता है।
वृहती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कंटकारी। २. वनभंटा। बड़ी कटाई। ३. बैंगन। ४. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और सगण होता है।
वृहत्–वि० [सं०] बड़ा। भारी। महान्।
वृहद्रथ–संज्ञा पु० [सं०] १. इंद्र। २. यज्ञ-पात्र। ३. सामवेद।
वृहन्नला–संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्जुन का उस समय का नाम जब वे अज्ञातवास में राजा विराट के यहाँ स्त्री के वेश में रहते थे।
वृहस्पति–संज्ञा पुं० दे० "बृहस्पति"।
वेंकटगिरि–संज्ञा पु० [सं०] दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।
वेग–संज्ञा पु० [सं०] १. प्रवाह। बहाव। २ शरीर में से मल मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति। ३. किसी ओर प्रवृत्त होने का ज़ोर। तेज़ी। ४. शीघ्रता। जल्दी। ५. आनंद। प्रसन्नता। खुशी।
वेगवान्–वि० [सं०] तेज चलनेवाला।
वेगी–संज्ञा पु० [सं० वेगिन्] वह जिसमें बहुत अधिक वेग हो। वेगवान्।
वेण–संज्ञा पु० [सं०] १. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति। २ राजा पृथु के पिता का नाम।
वेणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी।
वेणु–संज्ञा पु० [सं०] १. बाँस। २. बाँस की बनी हुई वंशी। ३. दे० "वेण"।
वेतन–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले में दिया जाय। पारिश्रमिक। उजरत। २. तनखाह। दर-माहा। महीना।
वेतनभोगी–संज्ञा पु० [सं० वेतनभोगिन्] वह जो वेतन लेकर काम करता हो।
वेताल–संज्ञा पु० [सं०] १. द्वारपाल। संतरी। २. शिव के एक गणाधिप। ३. पुराणों के अनुसार भूतों की एक प्रकार की योनि। ४. वह शव जिस पर भूतों ने अधिकार कर लिया हो। ५. छप्पय का छठा भेद।
वेत्ता–वि० [सं०] जाननेवाला। ज्ञाता।
वेत्र–संज्ञा पु० [सं०] बेंत।
वेत्रधर–संज्ञा पु० [सं०] द्वारपाल। संतरी।
वेत्रवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] बेतवा नदी।
वेत्रासुर–संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध असुर जो प्राग्ज्योतिष का राजा था।
वेद–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी विषय का, विशेषतः धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का सच्चा और वास्तविक ज्ञान। २. वृत्त। ३. वित्त। ४. यज्ञाग। ५ भारतीय आर्यों के सर्वप्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ जिनकी संख्या चार है। आम्नाय। श्रुति। आरंभ में वेद केवल तीन ही थे—ऋग्वेद, यजुर्वेद और साम-

[वृ]क—संज्ञा पु० [सं०] १ भेड़िया। २. शृगाल। गीदड़। ३. कौवा। ४. क्षत्रिय।

[वृ]कोदर—संज्ञा पु० [सं०] भीमसेन।

[वृक्ष]—संज्ञा पु० [सं०] १. पेड़। दरख्त। द्रुम। विटप। २ वृक्ष से मिलती जुलती वह आकृति जिसमें किसी चीज का मूल अथवा उद्गम और उसकी अनेक शाखाएँ आदि दी गई हो। जैसे—वंशवृक्ष।

[वृक्ष]ायुर्वेद—संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों के रोगों आदि की चिकित्सा का वर्णन हो।

[वृ]ज—संज्ञा पु० दे० "व्रज"।

[वृ]जिन—संज्ञा पु० [सं०] १. पाप। गुनाह। २. दु:ख। कष्ट। तकलीफ। ३. खाल।

वृत्त—संज्ञा पु० [सं०] १. चरित्र। चरित। २. आचार। चाल-चलन। ३. समाचार। वृत्तांत। हाल। ४. जीविका का साधन। वृत्ति। ५. वह छंद जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु गुरु के क्रम का नियम हो। वर्णिक छंद। ६. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बीस वर्ण होते हैं। गंडका। दंडिका। ७ वह क्षेत्र जिसका घेरा या परिधि गोल हो। मंडल। ८. वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक बिंदु उसके अंदर के मध्यबिंदु से समान अंतर पर हो।

वृत्तखंड—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी वृत्त या गोलाई का कोई अंश। २. मेहराब।

वृत्तांत—संज्ञा पु० [सं०] घटना का विवरण। समाचार। हाल।

वृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह कार्य्य जिसके द्वारा जीविका का निर्वाह होता हो। जीविका। रोजी। २. वह धन जो किसी दीन या छात्र आदि को बराबर उसके सहायतार्थ दिया जाय। ३ सूत्रों आदि का वह विवरण या व्याख्या जो उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिये की जाती है। ४. नाटकों में विषय के विचार से वर्णन करने की शैली जो चार प्रकार की कही गई है। ५. योग के अनुसार चित्त की अवस्था जो पाँच प्रकार की मानी गई है—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ६. व्यापार। [का]र्य्य। ७. स्वभाव। प्रकृति। ८. [प्र]हार करने का एक प्रकार का शस्त्र।

वृत्त्यनुप्रास—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का अनुप्रास या शब्दालंकार। इसमें एक या कई व्यंजन वर्ण एक ही या भिन्न भिन्न रूपों में बार बार आते हैं।

वृत्र—संज्ञा पु० [सं०] १ अँधेरा। २. मेघ। बादल। ३. शत्रु। दुश्मन। ४. पुराणानुसार त्वष्टा का पुत्र एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था। इसी को मारने के लिये दधीचि ऋषि की हड्डियों का वज्र बना था।

वृत्रासुर—संज्ञा पु० दे० "वृत्र" ४।

वृथा—वि० [सं०] [भाव० वृथात्व] बिना मतलब का। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। फ़जूल। क्रि० वि० बिना मतलब के। बेफायदा।

वृद्ध—संज्ञा पु० [सं०] १ मनुष्य की एक अवस्था जो सबके अंत में प्रायः ६० वर्ष के उपरांत आती है। बुढापा। जरा। २. वह जो इस अवस्था में पहुँच गया हो। बुड्ढा। ३. पंडित। विद्वान्।

वृद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृद्ध का भाव या धर्म। बुढापा। २. पांडित्य।

वृद्धश्रवा—संज्ञा पु० [सं० वृद्धश्रवस्] इंद्र।

वृद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अवस्था में वृद्ध हो गई हो। बुड्ढी।

वृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बढने या अधिक होने की क्रिया या भाव। बढ़ती। ज्यादती। अधिकता। २. ब्याज। सूद। ३. वह अशौच जो घर में संतान उत्पन्न होने पर होता है। ४. अभ्युदय। समृद्धि। ५. अष्टवर्ग के अंतर्गत एक प्रसिद्ध लता।

वृश्चिक—संज्ञा पु० [सं०] १ बिच्छू नामक प्रसिद्ध कीड़ा। २. वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। ३. मेष आदि बारह राशियों में से आठवीं राशि जिसके सब तारों से बिच्छू का आकार बनता है।

वृश्चिकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिच्छू नाम की लता जिसके रोएँ शरीर में लगने से बहुत तेज जलन होती है।

वृष—संज्ञा पु० [सं०] १. गौ का नर। साँड़। २. कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक। ३. श्रीकृष्ण। ४. बारह राशियों में से दूसरी राशि।

वृषकेतन—संज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव।

वृषकेतु—संज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव।

वैजयत–संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र की पुरी का नाम। २ इंद्र।

वैजयती–संज्ञा स्त्री०[सं०] १ पताका। झंडी। २ पाँच रंगों की एक प्रकार की माला।

वैज्ञानिक–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। २ निपुण। दक्ष। वि० विज्ञान-संबंधी। विज्ञान का।

वैतनिक–संज्ञा पुं० [सं०] तनख़ाह लेकर काम करनेवाला। नौकर। भृत्य।

वैतरणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर है।

वैतालिक–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्तुति-पाठक जो राजाओं को स्तुति करके जगाता था।

वैतालीय–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त। वि० वेताल-संबंधी। वेताल का।

वैदर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १ विदर्भ देश का राजा या शासक। २ दमयंती के पिता भीमसेन। ३. रुक्मिणी के पिता भीष्मक। वि० विदर्भ देश का।

वैदर्भी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काव्य की वह रीति या शैली जिसमें मधुर वर्णों के द्वारा मधुर रचना होती है। २ दमयंती। ३ रुक्मिणी।

वैदिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। २. वेदों का पंडित। वि० वेद संबंधी। वेद का।

वैदूर्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रत्न जिसे "लहसुनिया" कहते हैं।

वैदेशिक–वि० [सं०] विदेश-संबंधी।

वैदेही–संज्ञा स्त्री० [सं०] विदेह राजा जनक की कन्या, सीता।

वैद्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. पंडित। विद्वान्। २. वह जो आयुर्वेद के अनुसार रोगियों की चिकित्सा आदि करता हो। भिषक्। चिकित्सक।

वैद्यक–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्सा शास्त्र। आयुर्वेद।

वैद्युत–वि० [सं०] विद्युत् संबंधी।

वैध–वि० [सं०] जो विधि के अनुसार हो। कायदे या क़ानून के मुताबिक़। ठीक।

वैधर्म्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. विधर्मी होने का भाव। २. नास्तिकता।

वैधव्य–संज्ञा पुं० [सं०] विधवा होने का भाव। रँडापा।

वैधेय–वि० [सं०] विधि-संबंधी। विधि का।

वैनतेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. विनता की संतान। २. गरुड़। ३ अरुण।

वैभव–संज्ञा पुं० [सं०] १. धन-संपत्ति। दौलत। विभव। २ महत्त्व। बड़प्पन।

वैभवशाली–संज्ञा पुं० [सं०] जिसके पास बहुत धन संपत्ति हो। मालदार।

वैमनस्य–संज्ञा पुं० [सं०] वैर। दुश्मनी।

वैमात्रेय–वि० [सं०] [स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

वैयाकरण–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो व्याकरण का अच्छा ज्ञाता हो। व्याकरण का पंडित।

वैर–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वैरी] शत्रुता। दुश्मनी। द्वेष। विरोध।

वैरशुद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी से वैर का बदला चुकाना।

वैरागी–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके मन में विराग उत्पन्न हुआ हो। विरक्त। २. उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

वैराग्य–संज्ञा पुं० [सं०] मन की वह वृत्ति जिससे लोग संसार की झंझटें छोड़कर एकांत में ईश्वर का भजन करते हैं। विरक्ति।

वैराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही देश में दो राजाओं का शासन। २ वह देश जहाँ इस प्रकार की शासन प्रणाली हो।

वैलक्षण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. विलक्षणता। २. विभिन्न होने का भाव। विभिन्नता।

वैवस्वत–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य के एक पुत्र का नाम। २. एक रुद्र। ३. एक मनु। ४. वर्तमान मन्वंतर का नाम।

वैवाहिक–संज्ञा पुं० [सं०] कन्या अथवा वर का श्वशुर। समधी। वि० विवाह-संबंधी। विवाह का।

वैशंपायन–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।

वैशाख–संज्ञा पुं० [सं०] चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना।

वैशाखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध नगरी। विशाल नगरी। विशालपुरी। (मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले का बसाढ़ नामक गाँव।)

वेद। चौथा अथर्ववेद पीछे से वेदों में सम्मिलित हुआ था।

वेदज्ञ-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वेदों का ज्ञाता हो। २. ब्रह्मज्ञानी।

वेदना-संज्ञा स्त्री० [सं०] पीड़ा। व्यथा।

वेदनिंदक-संज्ञा पुं० [सं०] १. वेदों की बुराई करनेवाला। २. नास्तिक।

वेदमंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] वेदों में के मंत्र।

वेदमाता-संज्ञा स्त्री० [सं० वेदमातृ] १. गायत्री। सावित्री। २. दुर्गा। ३. सरस्वती।

वेदवाक्य-संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण रूप से प्रामाणिक बात जिसका खंडन न हो सकता हो।

वेदव्यास-संज्ञा पुं० दे० "व्यास" (१)।

वेदांग-संज्ञा पुं० [सं०] वेदों के अंग या शास्त्र जो छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद।

वेदांत-संज्ञा पुं० [सं०] १ उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा, जगत् आदि के संबंध में निरूपण है। ब्रह्म विद्या। अध्यात्म। ज्ञानकांड। २ छः दर्शनों में से प्रधान दर्शन जिसमें चैतन्य या ब्रह्म ही एक मात्र पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है। उत्तर मीमांसा। अद्वैतवाद।

वेदांतसूत्र-संज्ञा पुं० [सं०] महर्षि बादरायण कृत सूत्र जो वेदांत शास्त्र के मूल माने जाते हैं।

वेदांती-संज्ञा पुं० [सं० वेदांतिन्] वह जो वेदांत का अच्छा ज्ञाता हो। ब्रह्मवादी।

वेदी-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी शुभ कार्य, विशेषतः धार्मिक कार्य के लिये तैयार की हुई ऊँची भूमि।

वेध-संज्ञा पुं० [सं०] १. छेदना। बेधना। विद्ध करना। २ यंत्रों आदि की सहायता से नक्षत्रों और तारों आदि को देखना।

वेधशाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ ग्रहों और नक्षत्रों आदि के वेध करने के यंत्र आदि रखे हों।

वेधा-संज्ञा पुं० [सं० वेधस्] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. सूर्य।

वेधी-संज्ञा पुं० [सं० वेधिन्] [स्त्री० वेधिनी] वह जो वेध करता हो। वेध करनेवाला।

वेपथु-संज्ञा पुं० [सं०] कँपकँपी। कंप।

• -संज्ञा पुं० [सं०] काँपना। कंप।

वेला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काल। समय। वक्त। २ दिन और रात का चौबीसवाँ भाग। ३. समुद्र की लहर।

वेश-संज्ञा पुं० [सं०] १. कपड़े लत्ते आदि से अपने आपको सजाना। २ किसी के कपड़े लत्ते आदि पहनने का ढंग।

मुहा०—किसी का वेश धारण करना = किसी के रूप रंग और पहनावे की नक़ल करना।

३ पहनने के वस्त्र। पोशाक।

यौ०—वेशभूषा = पहनने के कपड़े आदि।

४. खेमा। तंबू। ५ घर। मकान।

वेशधारी-संज्ञा पुं० [सं० वेशधारिन्] वेश धारण करनेवाला।

वेश्म-संज्ञा पुं० [सं०] घर। मकान।

वेश्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] गाने और कसब कमानेवाली औरत। रंडी। गणिका।

वेष-संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० "वेश"। २. रंगमंच में नेपथ्य।

वेष्टन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वेष्टित] १. वह कपड़ा आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाय। बेठन। २. घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव। ३. उष्णीष। पगड़ी।

वैकल्पिक-वि० [सं०] १ जो किसी एक पक्ष में हो। एकांगी। २. संदिग्ध। ३. जो अपने इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके।

वैकुंठ-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. पुराणानुसार वह स्थान जहाँ भगवान् या विष्णु रहते हैं। ३. स्वर्ग। (क्व०)

वैकृत-संज्ञा पुं० [सं०] १. विकार। खराबी। २. बीभत्स रस। ३. बीभत्स रस का आलंबन। जैसे—खून, गोश्त।

वि० १ जो विकार से उत्पन्न हुआ हो। २. जो जल्दी ठीक न हो सके। दुःसाध्य।

वैक्रमीय-वि० [सं०] विक्रम का। विक्रम-संबंधी।

वैक्रांत-संज्ञा पुं० [सं०] चुन्नी नामक मणि।

वैखरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्वर जो उच्च और गंभीर हो और बहुत स्पष्ट सुनाई पड़े। २. वाक्-शक्ति। ३. वाग्देवी।

वैखानस-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वान प्रस्थ आश्रम में हो। २. एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो वन में रहते थे।

वैचित्र्य-संज्ञा पुं० दे० "विचित्रता"।

वैजयत–संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र की पुरी का नाम। २ इंद्र।

वैजयंती–संज्ञा स्त्री०[सं०] १ पताका। झंडी। २ पाँच रंगों की एक प्रकार की माला।

वैज्ञानिक–संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। २ निपुण। दक्ष। वि० विज्ञान-संबंधी। विज्ञान का।

वैतनिक–संज्ञा पुं० [सं०] तनख्वाह लेकर काम करनेवाला। नौकर। भृत्य।

वैतरणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर है।

वैतालिक–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्तुति-पाठक जो राजाओं को स्तुति करके जगाता था।

वैतालीय–संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त। वि० वेताल-संबंधी। वेताल का।

वैदर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १ विदर्भ देश का राजा या शासक। २ दमयंती के पिता भीमसेन। ३ रुक्मिणी के पिता भीष्मक। वि० विदर्भ देश का।

वैदर्भी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काव्य की वह रीति या शैली जिसमें मधुर वर्णों के द्वारा मधुर रचना होती है। २ दमयंती। ३ रुक्मिणी।

वैदिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। २. वेदों का पंडित। वि० वेद संबंधी। वेद का।

वैदूर्य–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रत्न जिसे "लहसुनिया" कहते हैं।

वैदेशिक–वि० [सं०] विदेश-संबंधी।

वैदेही–संज्ञा स्त्री० [सं०] विदेह राजा जनक की कन्या, सीता।

वैद्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. पंडित। विद्वान्। २ वह जो आयुर्वेद के अनुसार रोगियों की चिकित्सा आदि करता हो। भिषक्। चिकित्सक।

वैद्यक–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्सा शास्त्र। आयुर्वेद।

वैद्युत–वि० [सं०] विद्युत् संबंधी।

वैध–वि० [सं०] जो विधि के अनुसार हो। कायदे या कानून के मुताबिक। ठीक।

वैधर्म्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. विधर्मी होने का भाव। २. नास्तिकता।

वैधव्य–संज्ञा पुं० [सं०] विधवा होने का भाव। रँडापा।

वैधेय–वि० [सं०] विधि-संबंधी। विधि का।

वैनतेय–संज्ञा पुं० [सं०] १. विनता की संतान। २ गरुड़। ३ अरुण।

वैभव–संज्ञा पुं० [सं०] १. धन-संपत्ति। दौलत। विभव। २ महत्त्व। बड़प्पन।

वैभवशाली–संज्ञा पुं० [सं०] जिसके पास बहुत धन-संपत्ति हो। मालदार।

वैमनस्य–संज्ञा पुं० [सं०] वैर। दुश्मनी।

वैमात्रेय–वि० [सं०] [स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

वैयाकरण–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो व्याकरण का अच्छा ज्ञाता हो। व्याकरण का पंडित।

वैर–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० वैरता] शत्रुता। दुश्मनी। द्वेष। विरोध।

वैरशुद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी से वैर का बदला चुकाना।

वैरागी–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके मन में विराग उत्पन्न हुआ हो। विरक्त। २. उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

वैराग्य–संज्ञा पुं० [सं०] मन की वह वृत्ति जिससे लोग संसार की झंझटें छोड़कर एकांत में ईश्वर का भजन करते हैं। विरक्ति।

वैराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ही देश में दो राजाओं का शासन। २. वह देश जहाँ इस प्रकार की शासन-प्रणाली हो।

वैलक्षण्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. विलक्षणता। २. विभिन्न होने का भाव। विभिन्नता।

वैवस्वत–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य के एक पुत्र का नाम। २. एक रुद्र। ३ एक मनु। ४. वर्त्तमान मन्वंतर का नाम।

वैवाहिक–संज्ञा पुं० [सं०] कन्या अथवा वर का श्वशुर। समधी। वि० विवाह-संबंधी। विवाह का।

वैशंपायन–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।

वैशाख–संज्ञा पुं० [सं०] चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना।

वैशाखी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशाली–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध नगरी। विशाल नगरी। विशालपुरी। (मुजफ्फरपुर जिले का बसाढ़ नामक गाँव।)

वैशिक-संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य के अनुसार वेश्यागामी नायक।

वैशेषिक-संज्ञा पुं० [सं०] १ छः दर्शनों में से एक जो महर्षि कणाद कृत है और जिसमें पदार्थों का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है। पदार्थ विद्या। औलूक्य दर्शन। २ वैशेषिक दर्शन का माननेवाला।

वैश्य-संज्ञा पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण। इनका धर्म यजन, अध्ययन और पशुपालन तथा वृत्ति कृषि और वाणिज्य है।

वैश्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] वैश्य का भाव या धर्म। वैश्यत्व।

वैश्वजनीन-वि० [सं०] विश्व भर के लोगों से संबंध रखनेवाला। सब लोगों का।

वैश्वदेव-संज्ञा पुं० [सं०] वह होम या यज्ञ आदि जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय।

वैश्वानर-संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २ परमात्मा। ३ चेतन।

वैषम्य-संज्ञा पुं० [सं०] विषमता।

वैषयिक-वि० [सं०] विषय संबंधी। विषय का।

संज्ञा पुं० विषयी। लंपट।

वैष्णव-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वैष्णवी] १. विष्णु की उपासना करनेवाला। २ हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय। इस [illegible] लोग [illegible] उपासना करते

व्यंजना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकट करने की क्रिया। २. शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता हो।

व्यक्त-वि० [सं०] [भाव० व्यक्तता] १. प्रकट। जाहिर। २. साफ़। स्पष्ट।

व्यक्तगणित-संज्ञा पुं० दे० "अंकगणित"।

व्यक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यक्त होने की क्रिया या भाव। प्रकट होना। २. मनुष्य या किसी और शरीरधारी का शरीर, जिसकी पृथक् सत्ता मानी जाती है। समष्टि का उलटा। व्यष्टि। ३ मनुष्य। आदमी।

व्यग्र-वि० [सं०] [भाव० व्यग्रता] १ घबराया हुआ। व्याकुल। २ डरा हुआ। भयभीत। ३ काम में फँसा हुआ।

व्यतिक्रम-संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रम में होनेवाला उलट फेर। २. बाधा। विघ्न।

व्यतिरिक्त-क्रि० वि० [सं०] अतिरिक्त। सिवा। अलावा।

व्यतिरेक-संज्ञा पुं० [सं०] १. अभाव। २ भेद। अंतर। ३. अतिक्रम। ४ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन होता है।

व्यतिरेकी-संज्ञा पुं० [सं० व्यतिरेकिन्] वह जो किसी को अतिक्र[illegible] करके जाता हो।

व्यय–संज्ञा पुं० [सं०] १. खर्च। सरफ़। २. खपत। ३. नाश। बरबादी।

व्यर्थ–वि० [सं०] १. बिना माने का। अर्थ-रहित। २. जिसमें कोई लाभ न हो। निरर्थक।

क्रि० वि० फ़ज़ूल। योंही।

व्यलीक–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपराध। कसूर। २. डाँट-डपट। ३. दुःख। ४. विट।

व्यवकलन–संज्ञा पुं० [सं०] एक रकम में से दूसरी रकम घटाना। बाकी निकालना।

व्यवच्छेद–संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथकता। पार्थक्य। अलगाव। २. विभाग। हिस्सा। ३. विराम। ठहरना।

व्यवधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह चीज जो बीच में पड़कर आड़ करती हो। परदा। २. भेद। विभाग। खंड। ३. विच्छेद।

व्यवसाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. जीविका। २. रोजगार। व्यापार। ३. काम धंधा।

व्यवसायी–संज्ञा पुं० [सं० व्यवसायिन्] १. व्यवसाय करनेवाला। २. रोज़गारी।

व्यवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी कार्य्य का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो।

मुहा०—व्यवस्था देना = पंडितों आदि का किसी विषय में शास्त्रों का विधान बतलाना।

२. चीज़ों को सजाकर या ठिकाने से रखना। ३. प्रबंध। इंतज़ाम। ४. स्थिरता। स्थिति।

व्यवस्थापक–संज्ञा पुं० [सं०] १. शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला। २. वह जो किसी कार्य्य आदि को नियमपूर्वक चलाता हो। ३. प्रबंधकर्त्ता। इंतज़ामकार।

व्यवस्थापत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था हो।

व्यवस्थित–वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो। कायदे का।

व्यवहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रिया। कार्य्य। काम। २. आपस में एक दूसरे के साथ बरतना। बरताव। ३. व्यापार। रोज़गार। ४. लेन-देन का काम। महाजनी। ५. झगड़ा। विवाद। ६. मुकदमा।

व्यवहार-शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें यह बतलाया गया हो कि विवाद का किस प्रकार निर्णय करना चाहिए और किस अपराध के लिये कितना दंड देना चाहिए आदि। धर्मशास्त्र।

व्यवहृत–वि० [सं०] [संज्ञा व्यवहृति] १. जिसका आचरण या अनुष्ठान किया गया हो। २. जो काम में लाया गया हो।

व्यष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] समष्टि का एक विशिष्ट और पृथक् अंश। समष्टि का उलटा।

व्यसन–संज्ञा पुं० [सं०] १. विपत्ति। आफ़त। २. कोई बुरी या अमंगल बात। ३. विषयों के प्रति आसक्ति। ४. वह दोष जो काम या क्रोध आदि विकारों से उत्पन्न हुआ हो। ५. किसी प्रकार का शौक़।

व्यसनी–संज्ञा पुं० [सं० व्यसनिन्] वह जिसे किसी प्रकार का व्यसन या शौक़ हो।

व्यस्त–वि० [सं०] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २. काम में लगा या फँसा हुआ। ३. व्याप्त।

व्याकरण–संज्ञा पुं० [सं०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूपों और वाक्यों के प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है।

व्याकुल–संज्ञा पुं०[सं०] [भाव० व्याकुलता] १. घबराया हुआ। विकल। २. बहुत अधिक उत्कंठित।

व्याक्रोश–संज्ञा पुं० [सं०] १. तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना। २. चिल्लाना।

व्याख्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह वाक्य आदि जो किसी जटिल वाक्य आदि का अर्थ स्पष्ट करता हो। टीका। व्याख्यान। २ कहना। वर्णन।

व्याख्याता–संज्ञा पुं० [सं० व्याख्यातृ] १. व्याख्या करनेवाला। २. भाषण करनेवाला।

व्याख्यान–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी विषय की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण बतलाने का काम। २. वक्तृता। भाषण।

व्याघात–संज्ञा पुं० [सं०] १. विघ्न। ख़लल। बाधा। २ आघात। प्रहार। मार। ३. ज्योतिष में एक अशुभ योग। ४. एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही उपाय या साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है।

व्याघ्र–संज्ञा पुं० [सं०] बाघ। शेर।

व्याघ्रचर्म्म–संज्ञा पुं० [सं०] बाघ या शेर की खाल जिस पर प्रायः लोग बैठते हैं।

व्याघ्रनख–संज्ञा पुं० [सं०] १. शेर का नाखून जो प्रायः बच्चों के गले में, उन्हें

नज़र से बचाने के लिये, पहनाया जाता है। २. नख नामक गंध-द्रव्य।
व्याज–संज्ञा पुं० [सं०] १. कपट। छल। फ़रेब। २. बाधा। विघ्न। खलल। ३. विलंब। देर।
संज्ञा पुं० दे० "ब्याज"।
व्याजनिंदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐसी निंदा जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निंदा न जान पड़े। २. एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार की निंदा की जाती है।
व्याजस्तुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्तुति जो व्याज अथवा किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े। २. एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें उक्त प्रकार से स्तुति की जाती है।
व्याजोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कपट भरी बात। २. एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी स्पष्ट या प्रकट बात को छिपाने के लिये किसी प्रकार का बहाना किया जाता है।
व्याडि–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने एक व्याकरण बनाया था।
व्याध–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो जंगली पशुओं आदि का शिकार करता हो। शिकारी। २. एक प्राचीन जाति जो जंगली पशुओं को मारकर निर्वाह करती थी।
व्याधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रोग। बीमारी। २. आफ़त। झंझट। ३. विरह या काम आदि के कारण शरीर में किसी प्रकार का रोग होना। (साहित्य)
व्यान–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर की पाँच वायुओं में से एक जो सारे शरीर में संचार करनेवाली मानी जाती है।
व्यापक–वि० [सं०] १. चारों ओर फैला हुआ। २. घेरने या ढकनेवाला। आच्छादक।
व्यापना–क्रि० अ० [सं० व्यापन] किसी चीज़ के अंदर फैलना। व्याप्त होना।
व्यापार–संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्म। कार्य। काम। २. क्रय-विक्रय का कार्य। रोज़गार। व्यवसाय।
व्यापारी–संज्ञा पुं० [सं० व्यापारिन्] व्यवसाय या रोज़गार करनेवाला। व्यवसायी। रोज़गारी।
वि० [सं० व्यापार] व्यापार-संबंधी।
व्याप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. व्याप्त होने की भाव। २. न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना। ३. आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक।
व्यामोह–संज्ञा पुं० [सं०] मोह। अज्ञान।
व्यायाम–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शारीरिक श्रम जो बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जाता है। कसरत। ज़ोर। २. परिश्रम।
व्यायोग–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य।
व्याल–संज्ञा पुं० [सं०] १. साँप। २. बाघ। शेर। ३. राजा। ४. विष्णु। ५. दंडक छंद का एक भेद।
व्यालि–संज्ञा पुं० दे० "व्याडि"।
व्यालू†–संज्ञा स्त्री० पुं० [सं० वेला] रात के समय का भोजन। रात का खाना।
व्यावहारिक–वि० [सं०] १. व्यवहार-संबंधी। व्यवहार या बरताव का। २. व्यवहारशास्त्र-संबंधी।
व्यासंग–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग।
व्यास–संज्ञा पुं० [सं०] १. पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदों का संग्रह, विभाग और संपादन किया था। कहा जाता है कि अठारहों पुराणों, महाभारत, भागवत और वेदांत आदि की रचना भी इन्होंने की थी। २. वह ब्राह्मण जो रामायण, महाभारत या पुराणों आदि की कथाएँ लोगों को सुनाता हो। कथावाचक। ३. वह रेखा जो किसी बिलकुल गोल रेखा या वृत्त के किसी एक स्थान से बिलकुल सीधी चलकर दूसरे सिरे तक पहुँची हो। ४. विस्तार। फैलाव।
व्याहार–संज्ञा पुं० [सं०] वाक्य। जुमला।
व्याहृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कथन। उक्ति। २. भूः, भुवः, स्वः इन तीनों का मंत्र।
व्युत्पत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी चीज़ का मूल उद्गम या उत्पत्ति-स्थान। २. शब्द का वह मूल रूप, जिससे वह शब्द निकला हो। ३. किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान।
व्युत्पन्न–वि० [सं०] जो किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो।
व्यूह–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। जमघट। २. निर्माण। रचना। ३. शरीर। बदन।

४. सेना। फौज। ५. युद्ध के समय की जानेवाली सेना की स्थापना। सेना का विन्यास।

व्योम–संज्ञा पुं० [सं० व्योमन्] १. आकाश। आसमान। २. जल। ३. बादल।

व्योमचारी–संज्ञा पुं० [सं० व्योमचारिन्] १ देवता। २. पक्षी। चिड़िया। ३. वह जो आकाश में विचरण करता हो।

व्योमयान–संज्ञा पुं० [सं०] वह यान या सवारी जिस पर चढकर मनुष्य आकाश में उड़ सकता हो। विमान। हवाई जहाज।

व्रज–संज्ञा पुं० [सं०] १. जाना या चलना। गमन। २. समूह। झुंड। ३. मथुरा और वृंदावन के आसपास का प्रांत जो भगवान् श्रीकृष्ण का लीला क्षेत्र है।

व्रजन–संज्ञा पुं० [सं०] चलना। जाना।

व्रजभाषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मथुरा, आगरा और इसके आस पास के प्रदेशों में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा। इधर चार पाँच सौ वर्षों के उत्तर भारत के अधिकांश कवियों ने प्रायः इसी भाषा में कविताएँ की हैं, जिनमें से सूर, तुलसी, बिहारी आदि बहुत अधिक प्रसिद्ध हैं।

व्रज-मंडल–संज्ञा पुं० [सं०] व्रज और उसके आस-पास का प्रदेश।

व्रजराज–संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रज्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घूमना। फिरना। पर्य्यटन। २ गमन। जाना। ३. आक्रमण। चढ़ाई।

व्रण–संज्ञा पुं० [सं०] शरीर में का फोड़ा।

व्रत–संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजन करना। भक्षण। खाना। २. किसी पुण्यतिथि को अथवा पुण्य की प्राप्ति के विचार से नियमपूर्वक उपवास करना। ३. संकल्प।

व्रती–संज्ञा पुं० [सं० व्रतिन्] १. वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। २. यजमान। ३. ब्रह्मचारी।

व्राचड–संज्ञा स्त्री० [अप०] १. अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिसका व्यवहार आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रांत में था। २. पैशाचिक भाषा का एक भेद।

व्रात्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके दस संस्कार न हुए हों। २. वह जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो। ऐसा मनुष्य पतित या अनार्य्य समझा जाता है। ३. दोगला। वर्ण संकर।

व्रीडा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लज्जा। शरम।

व्रीहि–संज्ञा पुं० [सं०] धान। चावल।

श

श–हिंदी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण। इसका उच्चारण प्रधानतया तालू की सहायता से होता है, इससे इसे तालव्य श कहते हैं।

शं–संज्ञा पुं० [सं०] १. कल्याण। मंगल। २ सुख। ३. शांति। ४ वैराग्य। वि० शुभ।

शंक–संज्ञा पुं० [सं०] भय। डर। आशंका।

शंकना–क्रि० अ० [सं० शंका] १. शंका करना। संदेह करना। २. डरना।

शंकर–वि० [सं०] १ मंगल करनेवाला। २. शुभ। ३. लाभदायक।
संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। शंभु। २ दे० "शंकराचार्य्य"। ३. छब्बीस मात्राओं का एक छंद।

संज्ञा पुं० दे० "संकर"।

शंकर-शैल–संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

शंकरस्वामी–संज्ञा पुं० दे० "शंकराचार्य्य"।

शंकराचार्य्य–संज्ञा पुं० [सं०] अद्वैत मत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य्य जिनका जन्म सन् ७८८ ई० में केरल देश में हुआ था और जो ३२ वर्ष की अल्प आयु में स्वर्गवासी हुए थे।

शंका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनिष्ट का भय। डर। खौफ। खटक। २. संदेह। आशंका। संशय। शक। ३. अपने किसी अनुचित व्यवहार आदि से होनेवाली इष्ट हानि की चिंता। साहित्य का एक संचारी भाव।

शंकित–वि० [सं०] [स्त्री० शंकिता] १.

डरा हुआ। २. जिसे संदेह हुआ हो। ३. अनिश्चित। संदेहयुक्त।

शंकु-संज्ञा पुं० [सं०] १. कोई नुकीली वस्तु। २. मेख। कील। ३ खूँटी। ४. भाला। बरछा। ५ गाँसी। फल। ६. लीलावती के अनुसार दस लक्ष कोटि की एक संख्या। शंख। ७.कामदेव। ८ शिव। ९ वह खूँटी जिसका व्यवहार प्राचीन काल में सूर्य या दीए की छाया आदि नापने में होता था।

शंख-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है। इसका कोष बहुत पवित्र समझा जाता और देवताओं के आगे बाजे की भाँति बजाया जाता है। कंबु। २ दस खर्व की एक संख्या। ३. हाथी का गंडस्थल। ४. एक दैत्य। शंखासुर। ५. एक निधि। ६. छप्पय का एक भेद। ७. दंडक वृत्त के अंतर्गत प्रावृत्त का एक भेद।

शंखचूड़-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक राक्षस जो कृष्ण द्वारा मारा गया था। २. कुबेर के दूत और सखा का नाम।

शंखद्राव-संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का अर्क जिसमें शंख भी गल जाता है।

शंखधर-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शंखनारी-संज्ञा स्त्री० [सं०] छ. वर्णों का एक वृत्त। सोमराजी।

शंखपाणि-संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

शंखासुर-संज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था। इसी को मारने के लिये विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया था।

शंखाहुली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शंखपुष्पी। दे० "कौड़ियाला"। २. सफेद अपराजिता।

शंखिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की वनौषधि। २. पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद।

शंखिनी-डंकिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उन्माद।

शंजरफ-संज्ञा पुं० दे० "शिंगरफ"।

शंड-संज्ञा पुं० [सं०] १ नपुंसक। हीजड़ा। २. मूर्ख। बेवकूफ।

शंड-संज्ञा पुं० [सं०] १. नपुंसक। हीजड़ा। २ वह जिसे संतान न होती हो। ३. साँड़।

शंडामर्क-संज्ञा पुं० [सं०] शंड और मर्क नाम के दो दैत्य।

शंतनु-संज्ञा पुं० दे० "शांतनु"।

शंतनु सुत-संज्ञा पुं० दे० "भीष्म पितामह"।

शंबर-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक दैत्य जो इंद्र के हाथ से मारा गया था। २. प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ३. युद्ध। लड़ाई।

शंबरारि-संज्ञा पुं० [सं०] १. शंबर का शत्रु, कामदेव। मदन। २. प्रद्युम्न।

शंबुक-संज्ञा पुं० [सं०] घोंघा।

शंबूक-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक तपस्वी शूद्र, जिसकी तपस्या के कारण राम राज्य में एक ब्राह्मण का पुत्र अकाल-मृत्यु को प्राप्त हुआ था। इसे राम ने मारकर मृत ब्राह्मण-पुत्र को जिलाया था। २ घोंघा। ३ शंख।

शंभु-संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. ग्यारह रुद्रों में से एक। ३. एक दैत्य का नाम। ४. उन्नीस वर्णों का एक वृत्त। संज्ञा पुं० दे० "स्वायंभुव"।

शंभुगिरि-संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

शंभुबीज-संज्ञा पुं० [सं०] पारा। पारद।

शंभुभूषण-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

शंभुलोक-संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

शं-संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. कल्याण। मंगल। ३. शस्त्र। हथियार।

शऊर-संज्ञा पुं० [अ०] १. काम करने की योग्यता। ढंग। २. बुद्धि। अक्ल।

शऊरदार-संज्ञा पुं० [अ० शऊर+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें शऊर हो। हुनरमंद।

शक-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। पुराणों में इस जाति की उत्पत्ति सूर्यवंशी राजा नरिष्यंत से कही गई है, पर पीछे यह म्लेच्छों में गिनी जाने लगी थी। २. वह राजा या शासक जिसके नाम से कोई संवत् चले। ३. राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत् जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था।
संज्ञा पुं० [अ] शक। संदेह।

शकट-संज्ञा पुं० [सं०] १. छकड़ा। बैल-गाड़ी। २ भार। बोझ। ३. शकटासुर नामक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था। ४ शरीर। देह।

शकटासुर-संज्ञा पुं० दे० "शकट" ३।

शकठ-संज्ञा पुं० [सं० शकट] मचान।

शकर–संज्ञा स्त्री० दे० "शक्कर"।

शकरकंद–संज्ञा पुं० [हिं० शकर+सं० कंद] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।

शकरपारा–संज्ञा पुं० [फा०] १ एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बड़ा होता है। २. चौकोर कटा हुआ एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान। ३. शकरपारे के आकार की चौकोर सिलाई।

शकल–संज्ञा स्त्री० [अ० शक्ल] १ मुख की बनावट। आकृति। चेहरा। रूप। २. मुख का भाव। चेष्टा। ३. बनावट। गढ़न। ढाँचा। ४. आकृति। स्वरूप। ५. उपाय। तरकीब। ढब।

शकाब्द–संज्ञा पुं० [सं०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत्। (ईसवी संवत् में से ७८, ७९ घटाने से शकाब्द निकल आता है।)

शकार–संज्ञा पुं० [सं०] शक वंशीय व्यक्ति।

शकारि–संज्ञा पुं० [सं०] विक्रमादित्य।

शकुंत–संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २. विश्वामित्र के लड़के का नाम।

शकुंतला–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा दुष्यंत की स्त्री जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका की कन्या थी।

शकुन–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के संबंध में शुभ या अशुभ माने जाते हैं। मुहा०—शकुन विचारना या देखना=कोई कार्य्य करने से पहले लक्षण आदि देखकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं। २. शुभ मुहूर्त्त या उसमें होनेवाला कार्य्य। ३. पक्षी। चिड़िया।

शकुनशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो।

शकुनि–संज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षी। चिड़िया। २. एक दैत्य जो हिरण्याक्ष का पुत्र था। ३. कौरवों का मामा जो दुर्योधन का मंत्री और कौरवों के नाश का मुख्य कारण था।

शक्कर–संज्ञा स्त्री० [सं० शर्करा, मि० फा० शकर] १. चीनी। २. कच्ची चीनी। खाँड़।

शक्करी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्ण वृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरोंवाले छंदों की संज्ञा।

शक्की–वि० [अ० शक+ई (प्रत्य०)] जिसे हर बात में संदेह हो। शक करनेवाला।

शक्त–संज्ञा पुं० [सं०] शक्तिसंपन्न। समर्थ।

शक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बल। पराक्रम। ताकत। जोर। २. दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालनेवाला बल। ३. वश। अधिकार। ४ राज्य के वे साधन जिनसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाती है। ५. बड़ा और पराक्रमी राज्य जिसमें यथेष्ट धन और सेना आदि हो। ६. न्याय के अनुसार वह संबंध जो किसी पदार्थ और उसका बोध करानेवाले शब्द में होता है। ७. प्रकृति। माया। ८. तंत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते हैं। ९ दुर्गा। भगवती। १०. गौरी। ११. लक्ष्मी। १२. एक प्रकार का शस्त्र। साँग। १३. तलवार।

शक्तिधर–संज्ञा पुं० [सं०] कार्त्तिकेय।

शक्तिपूजक–संज्ञा पुं० [सं०] १. शाक्त। २. तांत्रिक। वाममार्गी।

शक्तिपूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्ति का शाक्त द्वारा होनेवाला पूजन।

शक्तिमान्–वि० [सं० शक्तिमत्] [स्त्री० शक्तिमती] बलवान्। बलिष्ठ। ताकतवर।

शक्तिहीन–वि० [सं०] १. बलहीन। निर्बल। असमर्थ। २ नामर्द। नपुंसक।

शक्ती–संज्ञा पुं० [सं० शक्ति] अठारह मात्राओं के एक मात्रिक छंद का नाम।

शक्तु–संज्ञा पुं० [सं०] सत्तू।

शक्य–वि० [सं०] १. किया जाने योग्य। संभव। क्रियात्मक। २. जिसमें शक्ति हो। संज्ञा पुं० शब्द-शक्ति के द्वारा प्रकट होनेवाला अर्थ। (व्याकरण)

शक्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्य होने का भाव या धर्म्म। क्रियात्मकता।

शक्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. टगण का चौथा भेद जिसमें छः मात्राएँ होती हैं।

शक्रप्रस्थ–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रप्रस्थ।

शक्ल–संज्ञा स्त्री० दे० "शकल"।

शख्स–संज्ञा पुं० [अ०] व्यक्ति। जन।

शगल–संज्ञा पुं० [अ०] १. व्यापार। कामधंधा। २. मनोविनोद।

शगुन–संज्ञा पुं० [सं० शकुन] १. दे० "शकुन"। २. एक प्रकार की ... विवाह की बात चीत पक्की ... तिलक। टीका।

शगुनियाँ–संज्ञा पुं० [हिं० शगुन + इयाँ (प्रत्य०)] साधारण कोटि का ज्योतिषी।

शगूफा–संज्ञा पुं० [फा०] १ बिना खिला हुआ फूल। कली। २ पुष्प। फूल। ३ कोई नई और विलक्षण घटना।

शचि, शची–संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की पत्नी, इंद्राणी जो पुलोमा की कन्या थी।

शचीपति–संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

शजरा–संज्ञा पुं० [अ०] १ वंशवृक्ष। कुर्सीनामा। वंशावली। २ पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नकशा।

शठ–वि० [सं०] १ धूर्त्त। चालाक। धोखेबाज। २ पाजी। लुच्चा। बदमाश। ३ मूर्ख। बेवकूफ।
संज्ञा पुं० साहित्य में वह पति या नायक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर हो।

शठता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शठ का भाव या धर्म्म। धूर्त्तता। २ बदमाशी।

शत–वि० [सं०] दस का दस गुना। सौ।
संज्ञा पुं० सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००।

शतक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शतिका] १ सौ का समूह। २ एक ही तरह की सौ चीजों का संग्रह। ३. शताब्दी।

शतघ्नी–संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र।

शतदल–संज्ञा पुं० [सं०] पद्म।

शतद्रु–संज्ञा स्त्री० [सं०] सतलज नदी।

शतपत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २ मयूरी। शतपत्री। ३ मोर नामक पक्षी।

शतपथ ब्राह्मण–संज्ञा पुं० [सं०] यजुर्वेद का एक ब्राह्मण। इसके कर्त्ता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।

शतपद–संज्ञा पुं० [सं०] १ कनखजूरा। गोजर। २ च्यूँटी।

शतभिषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] चौबीसवाँ नक्षत्र जो सौ तारों का समूह है और जिसकी आकृति मंडलाकार है।

शतरंज–संज्ञा स्त्री० [फा० मि० सं० चतुरंग] एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है।

शतरंजी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह दरी जो कई प्रकार के रंग बिरंगे सूतों से बनी हो। २ शतरंज खेलने की बिसात। ३ वह जो शतरंज का अच्छा खिलाड़ी हो।

शतरूपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की मानसी कन्या तथा पत्नी जिसके गर्भ से स्वायंभुव मनु की उत्पत्ति हुई थी।

शतानंद–संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. कृष्ण। ४ गौतम मुनि। ५. राजा जनक के एक पुरोहित।

शतानीक–संज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्ध पुरुष। २ पुराणानुसार चंद्रवंश का द्वितीय राजा। इसका पिता जनमेजय और पुत्र सहस्रानीक था। ३ सौ सिपाहियों का नायक।

शताब्दी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौ वर्षों का समय। २ किसी संवत् के सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय।

शतायुध–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सौ अस्त्र धारण करता हो। सौ अस्त्रोंवाला।

शतायु–संज्ञा पुं० [सं० शतायुस्] वह जिसकी आयु सौ वर्षों की हो।

शतावधान–संज्ञा पुं० [सं०] वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उन्हें सिलसिलेवार याद रख सकता हो और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो। श्रुतिधर।

शतावर–संज्ञा स्त्री० [सं० शतावरी] सतावर नाम की ओषधि। सफेद मुसली।

शती–संज्ञा स्त्री० [सं० शतिन्] सौ का समूह। सैकड़ा। जैसे—दुर्गा सप्तशती।

शत्रु–संज्ञा पुं० [सं०] रिपु। अरि। दुश्मन।

शत्रुघ्न–संज्ञा पुं० [सं०] राम के एक भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

शत्रुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] शत्रु का भाव या धर्म्म। दुश्मनी। वैर भाव।

शत्रुताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "शत्रुता"।

शत्रुदमन–संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।

शत्रुमर्द्दन–संज्ञा पुं० [सं०] शत्रुघ्न।

शत्रुसाल–वि० [सं० शत्रु + हिं० सालना] शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करनेवाला।

शदीद–वि० [अ०] बहुत ज्यादह। भारी। सख्त। जैसे—शदीद चोट।

शनि–संज्ञा पुं० [सं०] १ सौर जगत् का सातवाँ ग्रह। सूर्य से इसका अंतर ८८६०००००० मील है और सूर्य की परिक्रमा में इसको २९ वर्ष और १६७ दिन

लगते हैं। २. दुर्भाग्य। अभाग्य। बदकिस्मती।

शनिवार-संज्ञा पुं० [सं०] रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद का वार।

शनिश्चर-संज्ञा पुं० दे० "शनि"।

शनैः-अव्य० [सं०] धीरे। आहिस्ता।

शनैश्चर-संज्ञा पु० दे० "शनि"।

शपथ-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कसम। सौगंद। २. दे० "दिव्य"। ३. प्रतिज्ञा या दृढ़ता-पूर्वक कोई काम करने या न करने के संबंध में कथन। कौल। वचन।

शफ़तालू-संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का बड़ा आड़ू। सतालू।

शफ़ा-संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीर का स्वस्थ होना। आरोग्य। तंदुरुस्ती।

'**शफ़ाखाना**-संज्ञा पुं० [अ० शफ़ा+फ़ा० ख़ाना] चिकित्सालय। अस्पताल।

शब-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रात। रात्रि।

शबनम-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. ओस। तुषार। २. एक प्रकार का बहुत बारीक कपड़ा।

शबाब-संज्ञा पुं० [अ०] १. यौवन-काल। जवानी। २. बहुत अधिक सौंदर्य।

शबीह-संज्ञा स्त्री० [अ०] चित्र। तसवीर।

शब्द-संज्ञा पुं० [सं०] १. ध्वनि। आवाज़। २. वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव आदि का बोध हो। लफ़्ज़। ३. किसी साधु या महात्मा के बनाए हुए पद।

शब्दचित्र-संज्ञा पुं० [सं०] अनुप्रास नामक अलंकार।

शब्द-प्रमाण-संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के ही आधार पर हो।

शब्दब्रह्म-संज्ञा पुं० [सं०] वेद।

शब्दभेदी-संज्ञा पु० दे० "शब्दवेधी"।

शब्दवेधी-संज्ञा पु० [सं० शब्दवेधिन्] १. वह जो बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारता हो। २. अर्जुन। ३. दशरथ।

शब्दशक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है। यह तीन प्रकार की है—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

शब्दशास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण।

शब्दसाधन-संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण का शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद और रूपांतर आदि का विवेचन होता है।

शब्दाडंबर-संज्ञा पुं० [सं०] बड़े-बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव की बहुत ही न्यूनता हो। शब्दजाल।

शब्दानुशासन-संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण।

शब्दालंकार-संज्ञा पु० [सं०] वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से लालित्य उत्पन्न किया जाय। जैसे—अनुप्रास आदि।

शम-संज्ञा पुं० [सं०][भाव० शमता] १. शांति। २. मोक्ष। ३. उपचार। ४. अंतःकरण तथा बाह्य इंद्रियों का निग्रह। ५. साहित्य में शांत रस का स्थायी भाव। ६. क्षमा।

शमन-संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ में पशुओं का बलिदान। २. यम। ३. हिंसा। ४. शांति। ५. दमन।

शमशेर-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तलवार।

शमा-संज्ञा स्त्री० [अ० शमअ] मोमबत्ती।

शमादान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह आधार जिसमें मोम की बत्ती लगाकर जलाते हैं।

शमित-वि० [सं०] १. जिसका शमन किया गया हो। २. शांत। ठहरा हुआ।

शमी-संज्ञा स्त्री० [सं० शिवा ?] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। विजयादशमी पर इसका पूजन भी करते हैं। सफ़ेद कीकर। छिकुर। छोंकर।

शमीक-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध क्षमा-शील ऋषि। परीक्षित ने इनके गले में एक बार मरा हुआ साँप डाल दिया था, परंतु ये कुछ न बोले।

शयन-संज्ञा पुं० [सं०] १. निद्रा लेना। सोना। २. शय्या। बिछौना।

शयन आरती-संज्ञा स्त्री० [सं० शयन+आरती] देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है।

शयनगृह-संज्ञा पुं० दे० "शयनागार"।

शयनबोधिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] अगहन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

शयनागार-संज्ञा पुं० [सं०] सोने का स्थान। शयन-मंदिर। शयनगृह।

शय्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिस्तर। बिछौना। बिछावन। २. पलंग। खाट। खटिया।

शय्यादान-संज्ञा पुं० [सं०] मृतक के

से महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना। सज्जा-दान।

शर-संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। नाराच। २. सरकंडा। सरई। ३. सरपत। रामशर। ४. दूध या दही की मलाई। ५. भाले का फल। ६. चिता। ७. पाँच की संख्या। ८. एक असुर का नाम।

शरअ-संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शरई] १. कुरान में दी हुई आज्ञा। २. दीन। मज़हब। ३. दस्तूर। तौर। तरीक़ा। ४. मुसलमानों का धर्मशास्त्र।

शरण-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रक्षा। आड़। आश्रय। पनाह। २. बचाव की जगह। ३. घर। मकान। ४. अधीन। मातहत।

शरणागत-संज्ञा पुं० [सं०] १.शरण में आया हुआ व्यक्ति। २. शिष्य। चेला।

शरणी-वि० [सं० शरण] शरण देनेवाली।

शरण्य-वि० [सं०] शरण में आए हुए की रक्षा करनेवाला।

शरत-संज्ञा स्त्री० दे० "शर्त" और "शरत्"।

शरत्-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वर्ष। साल। २. एक ऋतु जो आजकल आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है।

शरत्काल-संज्ञा पुं० दे० "शरत्" २.।

शरद-संज्ञा स्त्री० दे० "शरत्"।

शरद पूर्णिमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] कुआर मास की पूर्णमासी। शरद पूनो।

शरदचंद्र-संज्ञा पुं० [सं० शरच्चंद्र] शरद् ऋतु का चंद्रमा।

शरद्वत्-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।

शरपट्टा-संज्ञा पुं० [सं० शर+हिं० पट्टा] एक प्रकार का शस्त्र।

शरपुंख-संज्ञा पुं० [सं०] १. सरफोंका। २. तीर में लगा हुआ पंख।

शरबत-संज्ञा पुं० [अ०] १. पीने की मीठी वस्तु। रस। २. चीनी आदि में पका हुआ किसी ओषधि का अर्क। ३. पानी में घोली हुई शक्कर या खाँड़।

शरबती-संज्ञा पुं० [हिं०शरबत+ई (प्रत्य०)] १. एक प्रकार हलका पीला रंग। २. एक प्रकार का नगीना। ३. एक प्रकार का नीबू। ४. एक प्रकार का घड़िया कपड़ा।

शरभंग-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन महर्षि। वनवास के समय रामचंद्र इनके दर्शन करने गए थे।

शरभ-संज्ञा पुं० [सं०] १. राम की सेना का एक बंदर। २. टिड्डी। ३. हाथी का बच्चा। ४. विष्णु। ५. एक प्रकार का पक्षी। ६. आठ पैरोंवाला एक कल्पित मृग। ७. एक वृत्त का नाम। शशिकला। मणिगुण। ८. दोहे का एक भेद। ९. शेर।

शरम-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शर्म] १.लज्जा। हया। मुहा०—शरम से गड़ना या पानी पानी होना = बहुत लज्जित होना। २. लिहाज़। संकोच। ३. प्रतिष्ठा। इज़्ज़त।

शरमाना-क्रि० अ० [अ० शर्म+आना (प्रत्य०)] शर्मिंदा होना। लज्जित होना। क्रि० स० शर्मिंदा करना। लज्जित करना।

शरमिंदगी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] शरमिंदा होने का भाव। नदामत। लाज।

शरमिंदा-वि० [फ़ा०] लज्जित।

शरमीला-वि० [फ़ा० शर्म+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० शरमीली] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे। लज्जालु।

शरह-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. टीका। भाष्य। व्याख्या। २. दर। भाव।

शराकत-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. शरीक होने का भाव। २. साझा। हिस्सेदारी।

शराफ़त-संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीफ़ होने का भाव। भलमनसी। सज्जनता।

शराब-संज्ञा स्त्री० [अ०] मदिरा। मद्य।

शराबखाना-संज्ञा पुं० [अ० शराब+फ़ा० खाना] वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

शराबखोरी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मदिरा-पान।

शराबी-संज्ञा पुं० [हिं०शराब+ई (प्रत्य०)] वह जो शराब पीता हो। मद्यप।

शराबोर-वि० [फ़ा०] जल आदि से बिलकुल भीगा हुआ। लथपथ। तर-बतर।

शरारत-संज्ञा स्त्री० [अ०] पाजीपन। दुष्टता।

शरासन-संज्ञा पुं० [सं०] धनुष। कमान।

शरिष्ठ*-वि० दे० "श्रेष्ठ"।

शरीअत-संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का धर्म-शास्त्र।

शरीक-वि० [अ०] शामिल। सम्मिलित। मिला हुआ। संज्ञा पुं० १. साथी। २. साझी। हिस्सेदार। ३. सहायक। मददगार।

शरीफ़-संज्ञा पुं० [अ०] १. कुलीन मनुष्य। २. सभ्य पुरुष। भला मानुस।

वि० पाक। पवित्र।

शरीफा—संज्ञा पुं० [सं० श्रीफल या सीताफल] १. मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष। २. इस वृक्ष का खाकी रंग का फल जो गोल होता है। श्रीफल। सीताफल।

शरीर—संज्ञा पुं० [सं०] देह। तन। बदन। जिस्म। काया।
वि० [अ०] [संज्ञा शरारत] दुष्ट। नटखट।

शरीरत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

शरीरपात—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

शरीररक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो राजा आदि के साथ उसकी रक्षा के लिये रहता हो। अंगरक्षक।

शरीर शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिससे यह जाना जाता है कि शरीर का कौन सा अंग कैसा है और क्या काम करता है। शरीर-विज्ञान।

शरीरांत—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

शरीरार्पण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी कार्य्य के निमित्त अपने शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना।

शरीरी—संज्ञा पुं० [सं० शरीरिन्] १. शरीर-वाला। शरीरवान्। २. आत्मा। जीव। ३. प्राणी। जीवधारी।

शर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शक्कर। चीनी। खाँड़। २ बालू का कण।

शर्करी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों की एक वृत्ति।

शर्त्त—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह बाजी जिसमें हार-जीत के अनुसार कुछ लेन देन भी हो। दाँव। बदान। २. किसी कार्य्य की सिद्धि के लिये आवश्यक या अपेक्षित बात या कार्य्य।

शर्तिया—क्रि० वि० [अ०] शर्त्त बदकर। बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक।
वि० बिलकुल ठीक। निश्चित।

शर्म—संज्ञा स्त्री० दे० "शरम"।

शर्म्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख। आनंद। २. गृह। घर।

शर्म्मद—वि० [सं०] [स्त्री० शर्म्मदा] आनंद देनेवाला। सुखदायक।

शर्म्मा—संज्ञा पुं० [सं० शर्म्मन्] ब्राह्मणों की उपाधि।

शर्मिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या जो देवयानी की सखी थी।

शर्य्यणावत्—संज्ञा पुं० [सं०] शर्य्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर।

शर्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात। रात्रि। निशा। २ संध्या। शाम। ३. स्त्री।

शल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कंस के एक मल्ल का नाम। २. ब्रह्मा। ३. भाला।

शलगम—संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

शलजम—संज्ञा पुं० [फा०] गाजर की तरह का एक कंद।

शलभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. टीड़ी। टिड्डी। शरभ। २. पतंग। फतिंगा। ३ छप्पय के ३१वें भेद का नाम।

शलाका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लोहे आदि की लंबी सलाई। सलाख। सीख। २. बाण। तीर। ३. जूआ खेलने का पासा।

शलातुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जन-पद जो पाणिनि का निवास स्थान था।

शलूका—संज्ञा पुं० [फा०] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।

शल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. मद्र देश के एक राजा जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय मल्ल-युद्ध में भीमसेन से हार गए थे। २. अस्त्र चिकित्सा। ३. छप्पय के २६वें भेद का नाम। ४. हड्डी। अस्थि। ५. शलाका। ६ साँग नामक अस्त्र। ७ दुर्वाक्य।

शल्यकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] साही। (जंतु)

शल्यक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] चीर-फाड़ का इलाज। शस्त्र चिकित्सा।

शल्व—संज्ञा पुं० दे० "शाल्व"।

शव—संज्ञा पुं० [सं०] मृत शरीर। लाश।

शवदाह—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया या भाव।

शवभस्म—संज्ञा पुं० [सं०] चिता की भस्म।

शवरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शवर जाति की श्रमणा नाम की एक तपस्विनी। २. शवर जाति की स्त्री।

शश—संज्ञा पुं० [सं०] १. खरहा। खरगोश। २. चंद्रमा का लांछन या कलंक। ३ कामशास्त्र में मनुष्य के चार भेदों में से एक।

शशक—संज्ञा पुं० [सं०] खरगोश।

शशधर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

शशश्टंग—संज्ञा पुं० [सं०] वैसा ही असंभव कार्य जैसा खरगोश को सींग होना होता है।
शशांक—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
शशा—संज्ञा पुं० दे० "शश"।
शशि—संज्ञा पुं० [सं० शशिन्] १. चंद्रमा। इंदु। २ छप्पय के ५४वें भेद का नाम। रगण के दूसरे भेद (।ऽऽ) की संज्ञा। ३ छः की संख्या।
शशिकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंद्रमा की कला। २ एक प्रकार का वृत्त।
शशिकुल—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रवंश।
शशिज—संज्ञा पुं० [सं०] बुध ग्रह।
शशिधर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
शशिभाल—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
शशिभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।
शशिमंडल—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का घेरा या मंडल। चंद्रमंडल।
शशिमुख—वि० [सं०] [स्त्री० शशिमुखी] (वह) जिसका मुख चंद्रमा के सदृश सुंदर हो।
शशिवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त। चौवंसा। चंडरसा। पादांकुलक। वि० स्त्री० शशिमुखी।
शशिशाला—संज्ञा स्त्री० [फा०शीशा + सं० शाला] वह घर जिसमें बहुत से शीशे लगे हुए हों। शीशमहल।
शशिशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।
शशिहीरा—संज्ञा पुं० [सं० शशि + हिं० हीरा] चंद्रकांत मणि।
शसा*—संज्ञा पुं० [सं०शश] खरगोश। खरहा।
शसि,शसी*—संज्ञा पुं० दे० "शशि"।
शस्त—संज्ञा पुं० [फा०] वह जिस पर तीर आदि चलाया जाता है। लक्ष्य। निशाना।
शस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वे उपकरण जिनसे किसी को काटा या मारा जाय। हथियार। २ कार्य्य सिद्धि का अच्छा उपाय।
शस्त्रक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] फोड़ों आदि की चीर फाड़। नश्तर लगाने की क्रिया।
शस्त्रधारी—वि० [सं० शस्त्रधारिन्] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियारबंद।
शस्त्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हथियार चलाने की विद्या। २. धनुर्वेद का उपवेद, धनुर्वेद, जिसमें युद्ध करने और शस्त्र चलाने की विधियाँ हैं।
शस्त्रशाला—संज्ञा स्त्री० दे० "शस्त्रागार"।
शस्त्रागार—संज्ञा पुं० [सं०] शस्त्रों के रखने का स्थान। शस्त्रशाला। सिलहखाना।
शस्य—संज्ञा पुं० [सं०]१ नई घास। २ वृक्षों का फल। ३ खेती। फसल। ४ अन्न।
शहशाह—संज्ञा पुं० दे० "शाहंशाह"।
शह—संज्ञा पुं० [फा० शाह का संक्षिप्त रूप] १ बादशाह। २ वर। दूल्हा।
वि० बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठतर।
संज्ञा स्त्री० १ शतरंज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो। किश्त। २ गुप्त रूप से किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव।
शहज़ादा—संज्ञा पुं० दे० "शाहजादा"।
शहज़ोर—वि० [फा०] बली। बलवान्।
शहतीर—संज्ञा पुं० [फा०] लकड़ी का बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा।
शहतूत—संज्ञा पुं० दे० "तूत"।
शहद—संज्ञा पुं० [अ०] शीरे की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा, तरल पदार्थ जो मधुमक्खियाँ फूलों के मकरंद से संग्रह करके अपने छत्ते में रखती हैं।
मुहा०—शहद लगाकर चाटना = किसी निरर्थक पदार्थ को व्यर्थ लिए रहना। (व्यंग्य)
शहनाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ नफीरी नामक बाजा। २. दे० 'रौशनचौकी'।
शहबाला—संज्ञा पुं० [फा०] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ जाता है।
शह-मात—संज्ञा स्त्री० [फा०] शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।
शहर—संज्ञा पुं० [फा०] मनुष्यों की बड़ी बस्ती। नगर। पुर।
शहरपनाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] शहर की चार-दीवारी। प्राचीर। नगर कोटा।
शहरी—वि० [फा०] १ शहर का। २. नगर-निवासी। नागरिक।
शहादत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ गवाही। साक्षी। २ सबूत। प्रमाण। ३ शहीद होना।
शहाना—संज्ञा पुं० [देश० या फा० शाह ?] संपूर्ण जाति का एक राग।
वि० [फा०] १ शाही। राजसी। २. बहुत बढ़िया। उत्तम।
शहाब—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का गहरा लाल रंग।

शहिज़दा—संज्ञा पुं० दे० "शाहज़ादा"।
शहीद—संज्ञा पुं० [अ०] धर्म्म आदि के लिये बलिदान होनेवाला व्यक्ति। (मुसल०)
शांकर—वि० [सं०] १. शंकर संबंधी। २. शंकराचार्य का।
संज्ञा पुं० एक छंद का नाम।
शांडिल्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक स्मृतिकार मुनि जो भक्तिसूत्र के कर्त्ता माने जाते हैं।
शांत—वि० [सं०] १. जिसमें वेग, क्षोभ या क्रिया न हो। रुका हुआ। बंद। २ नष्ट। मिटा हुआ। ३ जिसमें क्रोध आदि न रह गया हो। स्थिर। ४. मृत। मरा हुआ। ५. धीर। सौम्य। गंभीर। ६. मौन। चुप। ख़ामोश। ७. रागादि शून्य। जितेंद्रिय। ८. उत्साह या तत्परता रहित। शिथिल। ढीला। ९. विघ्न बाधा रहित। १०. स्वस्थ चित्त।
संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में से एक जिसका स्थायी भाव "निर्वेद" है। इस रस में संसार की दुःखपूर्णता, असारता आदि का ज्ञान अथवा परमात्मा का स्वरूप आलंबन होता है।
शांतता—संज्ञा स्त्री० दे० "शांति"।
शांतनु—संज्ञा पुं० [सं०] द्वापर युग के इक्कीसवें चंद्रवंशी राजा।
शांता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा दशरथ की कन्या और महर्षि ऋष्यशृंग की पत्नी। २ रेणुका।
शांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव। २. स्तब्धता। सन्नाटा। ३ चित्त का ठिकाने होना। स्वस्थता। ४. रोग आदि का दूर होना। ५. मृत्यु। मरण। ६. धीरता। गंभीरता। ७. वासनाओं से छुटकारा। विराग। ८. दुर्गा। ९. अमंगल दूर करने का उपचार।
शांतिकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] बुरे ग्रह आदि से होनेवाले अमंगल के निवारण का उपचार।
शाइस्तगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. शिष्टता। सभ्यता। २. भलमनसी। आदमियत।
शाइस्ता—वि० [फ़ा० शाइस्तः] १. शिष्ट। सभ्य। तहज़ीबवाला। २ विनीत। नम्र।
शाक—संज्ञा पुं० [सं०] भाजी। तरकारी।
वि० [सं०] शक जाति-संबंधी।
शाकटायन—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बहुत प्राचीन वैयाकरण जिनका उल्लेख पाणिनि ने किया है। २. एक अर्वाचीन वैयाकरण।
शाकद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप। २. ईरान और तुर्किस्तान के बीच में पड़नेवाला वह प्रदेश जिसमें आर्य और शक बसते थे।
शाकद्वीपीय—वि० [सं०] शाकद्वीप का।
संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद। मग ब्राह्मण।
शाकल—संज्ञा पुं० [सं०] १ खंड। टुकड़ा। २ ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ३ मद्र देश का एक नगर।
शाकाहार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शाकाहारी] अनाज का भोजन। मांसाहार का उलटा।
शाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] डाइन। चुड़ैल।
शाक्त—वि० [सं०] शक्ति संबंधी।
संज्ञा पुं० शक्ति का उपासक। तंत्र पद्धति से देवी की पूजा करनेवाला।
शाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो नैपाल की तराई में बसती थी।
शाक्य मुनि, शाक्यसिंह—संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध।
शाख़—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. टहनी। डाल।
मुहा०—शाख निकालना = दोष निकालना।
२. लगा हुआ टुकड़ा। खंड। फाँक।
३. दे० "शाखा"।
शाखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पेड़ की टहनी। डाल। २. हाथ और पैर। ३. किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद। प्रकार। ४ विभाग। हिस्सा। ५ अंग। ६. वेद की संहिताओं के पाठ और क्रमभेद।
शाखामृग—संज्ञा पुं० [सं०] वानर। बंदर।
शाखोच्चार—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के समय वंशावली का कथन।
शागिर्द—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [भाव० शागिर्दगी] किसी से विद्या प्राप्त करनेवाला। शिष्य।
शातवाहन—संज्ञा पुं० दे० "शालिवाहन"।
शाद—वि० [फ़ा०] ख़ुश। प्रसन्न।
शादियाना—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. ख़ुशी का बाजा। आनंद और मंगल सूचक बाद्य। २ बधावा। बधाई।
शादी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ ख़ुशी। आनंद। २ आनंदोत्सव। ३. विवाह। ब्याह।
शाद्वल—वि० [सं०] हरी हरी घास से ढका हुआ। हराभरा।

संज्ञा पुं० १. हरी घास। दूब। २. बैल। ३. रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती।

शान–संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शानदार] १. तड़क भड़क। ठाट-बाट। सजावट। २. गर्वीली चेष्टा। ठसक। ३. भव्यता। विशालता। ४. शक्ति। करामात। विभूति। ५ प्रतिष्ठा। इज्ज़त।
मुहा०—किसी की शान में=किसी बड़े के संबंध में।

शान शौकत–संज्ञा स्त्री० [अ०] तड़क-भड़क। ठाट-बाट। तैयारी। सजावट।

शाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. अहित-कामना-सूचक शब्द। कोसना। बददुआ। २. धिक्कार। फटकारना। भर्त्सना।

शापग्रस्त–वि० दे० "शापित"।

शापित–वि० [सं०] जिसे शाप दिया गया हो। शाप-ग्रस्त।

शाबर भाष्य–संज्ञा पुं० [सं०] मीमांसा सूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्यवस्था।

शाबरी–संज्ञा पुं० [सं०] शबरों की भाषा। एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

शाबाश–अव्य० [फा०] [संज्ञा शाबाशी] एक प्रशंसा सूचक शब्द। ख़ुश रहो। वाह वाह। धन्य हो।

शाब्द–वि० [सं०] [स्त्री० शाब्दी] १. शब्द-संबंधी। शब्द का। २. शब्द विशेष पर निर्भर।

शाब्दिक–वि० [सं०] शब्द-संबंधी।

शाब्दी–वि० स्त्री० [सं०] १. शब्द-संबंधिनी। २. केवल शब्द विशेष पर निर्भर रहनेवाली।

शाब्दी व्यंजना–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यंजना जो शब्द विशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो; अर्थात् उसका पर्यायवाची शब्द रखने पर न रह जाय। आर्थी व्यंजना का उलटा।

शाम–संज्ञा स्त्री० [फा०] साँझ। संध्या।
॰ वि० संज्ञा पुं० दे० "श्याम"।
संज्ञा स्त्री० दे० "शामी"।
संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध-प्राचीन देश जो अरब के उत्तर में है। सीरिया।

शामकर्ण–संज्ञा पुं० [सं० श्यामकर्ण] वह घोड़ा जिसके कान श्याम रंग के हों।

शामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दुर्भाग्य। २. विपत्ति। आफत। ३. दुर्दशा। दुरवस्था।
मुहा०—शामत का घेरा या मारा=जिसकी दुर्दशा का समय आया हुआ हो। शामत सवार होना या सिर पर खेलना=दुर्दशा का समय आना।

शामियाना–संज्ञा पुं० [फा० शाम ?] एक प्रकार का बड़ा तंबू।

शामिल–वि० [फा०] जो साथ में हो। मिला हुआ। सम्मिलित।

शामी–संज्ञा स्त्री० [देश०] धातु का वह छल्ला जो लकड़ियों या औजारों के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिये लगाया जाता है। शाम।
वि० [शाम (देश)] शाम देश का।

शायक–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। शर। २ खड्ग। तलवार।

शायक़–वि० [अ०] १. शौकीन। २. इच्छुक।

शायद–अव्य० [फा०] कदाचित्। संभव है।

शायर–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शायरा] कवि।

शायी–वि० [सं० शायिन्] सोनेवाला।

शारंग–संज्ञा पुं० दे० "सारंग"।

शारंगपाणि–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २ कृष्ण। ३. राम।

शारद–वि० [सं०] शरद् काल का।

शारदा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती। २. दुर्गा। ३. प्राचीन काल की एक लिपि।

शारदीय–वि० [सं०] शरद् काल का।

शारदीय महापूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] शरत्काल में होनेवाली नवरात्रि की दुर्गा-पूजा।

शारिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना। (चिड़िया)

शारिवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनंतमूल। सालसा। २. जवासा। धमासा।

शारीर–वि० [सं०] शरीर संबंधी।

शारीरक भाष्य–संज्ञा पुं० [सं०] शंकराचार्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

शारीरक सूत्र–संज्ञा पुं० [सं०] वेदांत सूत्र।

शारीर विज्ञान (शास्त्र)–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार उत्पन्न होते और बढ़ते हैं। २. दे० "शरीर शास्त्र"।

शारीरिक–वि० [सं०] शरीर संबंधी।

शार्ङ्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। २. विष्णु के हाथ में रहनेवाला धनुष।

शार्ङ्गधर, शार्ङ्गपाणि–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शार्दूल–संज्ञा पुं० [सं०] १. चीता। बाघ।

२ राक्षस । ३. शरभ नामक जंतु । ४ एक प्रकार का पक्षी । ५. दोहे का एक भेद । ६. सिंह ।
वि० सर्वश्रेष्ठ । सर्वोत्तम ।

शार्दूल ललित–संज्ञा पुं० [सं०] अठारह अक्षरों का एक प्रकार का वर्णवृत्त ।

शार्दूलविक्रीडित–संज्ञा पुं० [सं०] उन्नीस अक्षरों का एक प्रकार का वर्णवृत्त।

शालकि–संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि ऋषि ।

शाल–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बहुत बड़ा और विशाल प्रसिद्ध वृक्ष । साखू ।
संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर । दुशाला ।

शालग्राम–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु की एक प्रकार की पत्थर की मूर्त्ति ।

शालपर्णी–संज्ञा स्त्री० दे० "सरिवन" ।

शाला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घर । गृह । मकान । २. जगह । स्थान । जैसे—पाठशाला । ३ इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बननेवाला एक वृत्त ।

शालातुरीय–संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि ऋषि ।

शालि–संज्ञा पुं० [सं०] १ जड़हन धान । २ बासमती चावल । ३. गन्ना । पौंढ़ा ।

शालिधान–संज्ञा पुं० [सं० शालिधान्य] बासमती चावल ।

शालिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त ।

शालिवाहन–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध शक राजा जिसने "शक" नामक संवत् चलाया था ।

शालिहोत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा । २ शालिहोत्री की विद्या । अश्व-वैद्य ।

शालिहोत्री–संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्र + ई (प्रत्य०)] वह जो पशुओं आदि की चिकित्सा करता हो । अश्व वैद्य ।

शालीन–वि० [सं०] [भाव० शालीनता] १. विनीत । नम्र । २ जिसे लज्जा आती हो । ३. सदृश । समान । तुल्य । ४. अच्छे आचार-विचारवाला । ५ धनवान् । अमीर । ६. दक्ष । चतुर ।

शाल्मलि–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेमल का पेड़ । २. पुराणानुसार एक द्वीप का नाम । ३. एक नरक का नाम ।

शाल्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. सौभराज्य के एक राजा जो श्रीकृष्ण द्वारा मारे गए थे । २. एक प्राचीन देश का नाम ।

शावक–संज्ञा पुं० [सं०] बच्चा; विशेषतः पशु या पक्षी का बच्चा ।

शाश्वत–वि० [सं०] जो सदा स्थायी रहे । कभी नष्ट न हो । नित्य ।

शासक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शासिका] १. वह जो शासन करता हो । २. हाकिम ।

शासन–संज्ञा पुं० [सं०] १. आज्ञा । आदेश । हुकम । २. अधिकार या वश में रखना । ३. लिखित प्रतिज्ञा । पट्टा । ठीका । ४. राजा की दान की हुई भूमि । मुआफ़ी । ५. वह परवाना या फरमान जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय । ६. शास्त्र । ७. इंद्रिय-निग्रह । ८. हुकूमत । ९. दंड । सजा ।

शासित–वि० [सं०] [स्त्री० शासिता] १. जिसका शासन किया जाय । २. जिसे दंड दिया जाय ।

शास्ता–संज्ञा पुं० [सं० शास्तृ] १. शासक । २. राजा । ३ पिता । ४. उपाध्याय । गुरु ।

शास्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शासन । २. दंड । सज़ा ।

शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वे धार्मिक ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए हैं । इनकी संख्या १८ कही गई है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और अर्थशास्त्र । २. किसी विशिष्ट विषय के संबंध का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह करके रखा गया हो । विज्ञान ।

शास्त्रकार–संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने शास्त्रों की रचना की हो । शास्त्र बनानेवाला ।

शास्त्रज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रवेत्ता ।

शास्त्री–संज्ञा पुं० [सं० शास्त्रिन्] १. शास्त्रज्ञ । २ वह जो धर्म्म शास्त्र का ज्ञाता हो ।

शास्त्रीय–वि० [सं०] शास्त्र संबंधी ।

शास्त्रोक्त–वि० [सं०] शास्त्रों में कहा हुआ ।

शाहंशाह–संज्ञा पुं० [फा०] बादशाहों का बादशाह । महाराजाधिराज ।

शाहंशाही–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शाहंशाह

का कार्य या भाव। २. व्यवहार का खरापन। (बोलचाल)
शाह–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. महाराज। बादशाह। २. मुसलमान फ़कीरों की उपाधि।
वि० बड़ा। भारी। महान्।
शाहज़ादा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० शाहज़ादी] बादशाह का लड़का। महाराजकुमार।
शाहाना–वि० [फ़ा०] राजसी।
संज्ञा पुं० १. विवाह का जोड़ा जो दूल्हे को पहनाया जाता है। जामा। २. दे० "शहाना" (राग)।
शाही–वि० [फ़ा०] शाहों या बादशाहों का।
शिंगरफ़–संज्ञा पुं० दे० "ईंगुर"।
शिंबी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छीमी। फली। बौड़ी। २. सेम। ३. कौंछ। केवाँच।
शिंबी धान्य–संज्ञा पुं० [सं०] द्विदल अन्न। दाल।
शिंशपा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शीशम का पेड़। २. अशोक वृक्ष।
शिशुपा॰–संज्ञा स्त्री० दे० "शिंशपा"।
शिशुमार–संज्ञा पुं० [सं०] सूँस। (जलजंतु)
शिकंजा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र। २. एक यंत्र जिससे जिल्दबंद किताबें दबाते और उसके पन्ने काटते हैं। ३. अपराधियों को कठोर दंड देने के लिये एक प्राचीन यंत्र जिसमें उनकी टाँगें कस दी जाती थीं।
मुहा०—शिकंजे में खिंचवाना = घोर यंत्रणा दिलाना। साँसत कराना।
शिकन–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सिकुड़ने से पड़ी हुई धारी। सिलवट। बल।
शिकम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] पेट। उदर।
शिकमी काश्तकार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।
शिकरा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का बाज पक्षी।
शिकायत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुराई करना। गिला। चुगली। २. उपालंभ। उलाहना। ३. रोग। बीमारी।
शिकार–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. जंगली पशुओं को मारने का कार्य या क्रीड़ा। आखेट। मृगया। अहेर। २ वह जानवर जो मारा गया हो। ३. गोश्त। मांस। ४. आहार। भक्ष्य। ५ कोई ऐसा आदमी जिसके फँसने से बहुत लाभ हो। असामी।
मुहा०—शिकार खेलना = शिकार करना। किसी का शिकार होना = १. किसी के द्वारा मारा जाना। २. वश में आना। फँसना।
शिकारगाह–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] शिकार खेलने का स्थान।
शिकारी–वि० [फ़ा०] १. शिकार करनेवाला। २ शिकार में काम आनेवाला।
शिक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा देनेवाला। सिखानेवाला। गुरु। उस्ताद।
शिक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] तालीम। शिक्षा।
शिक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया। सीख। तालीम। २. गुरु के निकट विद्या का अभ्यास। ३ उपदेश। मंत्र। सलाह। ४ छ वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण है। ५ शासन। दबाव। ६. सबक़। दंड।
शिक्षाक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमन स्वरूप कार्य रोका जाता है। (केशव)
शिक्षागुरु–संज्ञा पुं० [सं०] विद्या पढ़ानेवाला गुरु।
शिक्षार्थी–संज्ञा पुं० [सं० शिक्षार्थिन्] विद्यार्थी।
शिक्षालय–संज्ञा पुं० [सं०] विद्यालय।
शिक्षा विभाग–संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + विभाग] वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है।
शिक्षित–वि० पुं० [सं०] [स्त्री० शिक्षिता] १ जिसने शिक्षा पाई हो। २. विद्वान्।
शिखंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ। २. चोटी। शिखा। चुटिया। ३. काकपक्ष। काकुल।
शिखंडिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मोरनी। मयूरी। २. द्रुपदराज की एक कन्या जो पीछे पुरुष के रूप में होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी थी।
शिखंडी–संज्ञा पुं० [सं० शिखंडिन्] १. मोर। मयूर पक्षी। २. मुर्गा। ३. बाण। ४. विष्णु। ५. कृष्ण। ६ शिव। ७. शिखा। ८. दे० "शिखंडिनी"।
शिख॰–संज्ञा स्त्री० दे० 'शिखा'।
शिखर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिरा। चोटी। २. पहाड़ की चोटी। ३. मकान के ऊपर

का निकला हुआ नुकीला सिरा। कँगूरा। कलश। ४. मंडप। गुंबद। ५ जैनियों का एक तीर्थ। ६. एक अस्त्र का नाम।

शिखरन—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखरिणी] दही और चीनी का बनाया हुआ शरबत।

शिखरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रसाल। २. नारी-रत्न। स्त्रियों में श्रेष्ठ। ३. रोमावली। ४. दही और चीनी का रस। शिखरन। ५. सत्रह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति।

शिखरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखरा] एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचंद्र को दी थी।

शिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चोटी। चुटैया। यौ०—शिखासूत्र=चोटी और जनेऊ जो द्विजों के चिह्न हैं।
२. पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी। कलगी। ३. आग की लपट। ज्वाला। ४. दीपक की लौ। टेम। ५. प्रकाश की किरन। ६. नुकीला छोर या सिरा। नोक। ७. चोटी। शिखर। ८. शाखा। डाली। ९. एक विषम वृत्त।

शिखि—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोर। मयूर। २ कामदेव। ३. अग्नि। ४. तीन की संख्या।

शिखिध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १. धूम्र। धूआँ। २. कार्त्तिकेय। ३. मयूरध्वज।

शिखी—वि० [सं० शिखिन्] [स्त्री० शिखिनी] शिखावाला। चोटीवाला।
संज्ञा पुं० १. मोर। मयूर। २. मुर्गा। ३. बैल। साँड़। ४. घोड़ा। ५. अग्नि। ६. तीन की संख्या। ७. पुच्छल तारा। केतु। ८. योधा। वीर।

शिगाफ—संज्ञा पुं० [फा०] १ चीरा। नश्तर। २. दरार। दर्ज। ३. छेद। सूराख।

शिगूफा—संज्ञा पुं० दे० "शगूफा"।

शित—वि० दे० "सित"।

शिताब—क्रि० वि० [फा०] [संज्ञा शिताबी] जल्द। शीघ्र।

शिति—वि० [सं०] १. सफ़ेद। शुक्ल। श्वेत। २. काला। कृष्ण।

शितिकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. मुर्गाबी। जलकाक। २. पपीहा। चातक। ३. मोर। मयूर। ४. शिव। महादेव।

शिथिल—वि० [सं०] १. जो कसा या जकड़ा न हो। ढीला। २. सुस्त। मंद। धीमा। ३. थका हुआ। श्रांत। ४. जो पूरा मुस्तैद न हो। आलस्ययुक्त। ५. जिसकी पूरी पाबंदी न हो।

शिथिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ढीलापन। ढिलाई। २. थकावट। थकान। ३. मुस्तैदी का न होना। आलस्य। ४. नियम-पालन की कड़ाई का न होना। ५. वाक्यों में शब्दों का परस्पर गठा हुआ अर्थ-संबंध न होना।

शिथिलाई‡—संज्ञा स्त्री० दे० "शिथिलता"।

शिथिलाना‡—क्रि० अ० [सं० शिथिल+आना (प्रत्य०)] १. शिथिल होना। २ थकना।

शिद्दत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तेज़ी। ज़ोर। प्रबलता। २. अधिकता। ज़्यादती।

शिनाख्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है। पहचान। २. परख। तमीज़।

शिफर‡—संज्ञा पुं० [फा० सिपर] ढाल।

शिया—संज्ञा पुं० [अ० शीया] हज़रत अली को पैगंबर का ठीक उत्तराधिकारी माननेवाला एक मुसलमान संप्रदाय।

शिर—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्] १. सिर। कपाल। खोपड़ा। २ मस्तक। माथा। ३. सिरा। चोटी। ४. शिखर।

शिरकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी वस्तु के अधिकार में भाग। साझा। हिस्सा। २. किसी काम में शामिल होना।

शिरत्रान—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।

शिरनेत—संज्ञा पुं० [देश०] १. गढ़वाल या श्रीनगर के आस-पास का प्रदेश। २. क्षत्रियों की एक शाखा।

शिरफूल—संज्ञा पुं० दे० "सीसफूल"।

शिरमौर—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्+सं० मुकुट] १. शिरोभूषण। मुकुट। २. प्रधान।

शिरस्त्राण—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध में पहनी जानेवाली लोहे की टोपी। कूँड़। खोद।

शिरहन‡—संज्ञा पुं० [हिं० शिर+आधान] १. उसीसा। तकिया। २. सिरहाना।

शिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रक्त की छोटी नाड़ी। २. पानी का सोता या धारा।

शिरीष—संज्ञा पुं० [सं०] सिरस। (पेड़)

शिरोधार्य्य—वि० [सं०] सिर पर धरने या आदरपूर्वक मानने के योग्य।

शिरोभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर पर

पहनने का गहना। २. मुकुट। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोमणि–संज्ञा पु० [सं०] १. सिर पर का रत्न। चूड़ामणि। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिल–संज्ञा पु० दे० "उंछ"। संज्ञा स्त्री० दे० "शिला"।

शिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाषाण। पत्थर। २. पत्थर का बड़ा चौड़ा टुकड़ा। चट्टान। ३. शिलाजीत। ४ पत्थर की कंकड़ी अथवा बटिया। ५ उंछ वृत्ति।

शिलाजतु–संज्ञा पु० [सं०] शिलाजीत।

शिलाजीत–संज्ञा पु० स्त्री० [सं० शिलाजतु] काले रंग की एक प्रसिद्ध पौष्टिक औषधि जो शिलाओं का रस है। मोमियाई।

शिलादित्य–संज्ञा पु० दे० "हर्षवर्धन"।

शिलापट्ट–संज्ञा पु० [सं०] पत्थर की चट्टान।

शिलारस–संज्ञा पु० [सं०] लोहबान की तरह का एक प्रकार का सुगंधित गोंद।

शिलालेख–संज्ञा पु० [सं०] पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख।

शिलाहरि–संज्ञा पु० [सं०] शालिग्राम।

शिलीमुख–संज्ञा पु० [सं०] भ्रमर। भौंरा।

शिल्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ से कोई चीज़ बनाकर तैयार करने का काम। दस्तकारी। कारीगरी। २ कला-संबंधी व्यवसाय।

शिल्पकला–संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ से चीजें बनाने की कला। कारीगरी। दस्तकारी।

शिल्पकार–संज्ञा पु० [सं०] १. शिल्पी। कारीगर। २. राज। मेमार।

शिल्प विद्या–संज्ञा स्त्री० दे० "शिल्पकला"।

शिल्प शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिल्प संबंधी शास्त्र। २. गृह-निर्माण का शास्त्र।

शिल्पी–संज्ञा पु० [सं० शिल्पिन्] १. शिल्पकार। कारीगर। २. राज। थवई।

शिव–संज्ञा पु० [सं०] १. मंगल। कल्याण। क्षेम। २. जल। पानी। ३. पारा। ४. मोक्ष। ५. वेद। ६ देव। ७. रुद्र। काल। ८. वसु। ९ लिंग। १०. ग्यारह मात्राओं का एक छंद। ११. परमेश्वर। भगवान्। १२. हिंदुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करनेवाले और पौराणिक त्रिमूर्त्ति के अंतिम देवता हैं।

शिवता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिव का भाव या धर्म्म। २. मोक्ष।

शिवनंदन–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश जी।

शिव-निर्माल्य–संज्ञा पु० [सं०] १. वह पदार्थ जो शिवजी को अर्पित किया गया हो। (ऐसी चीजों के ग्रहण करने का निषेध है।) २. परम त्याज्य वस्तु।

शिवपुराण–संज्ञा पु० [सं०] अठारह पुराणों में से एक। यह शिव-प्रोक्त माना जाता है और इसमें शिव का माहात्म्य है।

शिवपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी।

शिवरात्रि–संज्ञा स्त्री० [सं०] फाल्गुन बदी चतुर्दशी। शिव चतुर्दशी।

शिवरानी–संज्ञा स्त्री० [सं० शिव + हिं० रानी] पार्वती।

शिवलिंग–संज्ञा पु० [सं०] महादेव का लिंग या पिंडी जिसका पूजन होता है।

शिवलिंगी–संज्ञा स्त्री० [सं० लिंगिनी] एक प्रसिद्ध लता जिसका व्यवहार औषधि के रूप में होता है।

शिवलोक–संज्ञा पु० [सं०] कैलास।

शिववृषभ–संज्ञा पु० [सं०] शिवजी की सवारी का बैल।

शिवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. पार्वती। गिरिजा। ३. मुक्ति। मोक्ष। ४. श्रृगाली। सियारिन।

शिवालय–संज्ञा पु० [सं०] १. शिवजी का मंदिर। २. कोई देव मंदिर। (क्व०)

शिवाला–संज्ञा पु० [सं० शिवालय] १. शिव-जी का मंदिर। शिवालय। २. देव मंदिर।

शिवि–संज्ञा पु० [सं०] राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा जो अपनी दानशीलता के लिये प्रसिद्ध हैं।

शिविका–संज्ञा स्त्री० [सं०] पालकी। डोली।

शिविर–संज्ञा पु० [सं०] १. डेरा। खेमा। निवेश। २. फौज के ठहरने का पड़ाव। छावनी। ३. किला। कोट।

शिशिर–संज्ञा पु० [सं०] १. एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास में होती है। २. जाड़ा। शीतकाल। ३. हिम।

शिशिरांत–संज्ञा पुं० [सं०] वसंत ऋतु।

शिशु–संज्ञा पु० [सं०] छोटा बच्चा, विशेषतः आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा।

शिशुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बचपन। शिशुत्व।

शिशुताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "शिशुता"।

शिशुनाग–संज्ञा पु० दे० "शैशुनाग"।

शिशुपन*–संज्ञा पु० दे० "शिशुता"।

शिशुपाल–संज्ञा पुं० [सं०] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

शिशुमार–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूँस नामक जलजंतु। २ नक्षत्र-मंडल। ३. कृष्ण।

शिशुमार चक्र–संज्ञा पुं० [सं०] सब ग्रहों सहित सूर्य। सौर जगत्।

शिश्न–संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष का लिंग।

शिष–संज्ञा पुं० दे० "शिष्य"।
संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख। शिक्षा।
संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। चोटी।

शिषरी–वि० [सं० शिखर] शिखरवाला।

शिषा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"।

शिषि–संज्ञा पुं० दे० "शिष्य"।

शिषी–संज्ञा पुं० दे० "शिखी"।

शिष्ट–वि० पुं० [सं०] १. धर्मशील। २ शांत। धीर। ३ अच्छे स्वभाव और आचरणवाला। सुशील। ४. बुद्धिमान्। ५. सभ्य। सज्जन। ६ भला। उत्तम।

शिष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिष्ट होने का भाव या धर्म। २. सभ्यता। सज्जनता। ३ उत्तमता। ४ छटा।

शिष्टाचार–संज्ञा पुं० [सं०] १. सभ्य पुरुषों के योग्य आचरण। साधु व्यवहार। २. आदर। सम्मान। खातिरदारी। ३ विनय। नम्रता। ४. दिखावटी सभ्य व्यवहार। ५ आव भगत।

शिष्य–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिष्या] [भाव० शिष्यता] १. वह जो शिक्षा या उपदेश देने के योग्य हो। २ विद्यार्थी। अंतेवासी। ३ शागिर्द। चेला। ४ मुरीद। चेला।

शिष्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] सात गुरु अक्षरों का एक वृत्त। शीर्षरूपक।

शिस्त–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मछली पकड़ने का काँटा। २. निशाना। लक्ष्य।

शीघ्र–क्रि० वि० [सं०] बिना विलंब। बिना देर के। चटपट। तुरंत। जल्द।

शीघ्रगामी–वि० [सं० शीघ्रगामिन्] जल्दी या तेज चलनेवाला।

शीघ्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] जल्दी। फुरती।

शीत–वि० [सं०] ठंढा। सर्द। शीतल।
संज्ञा पुं० १. जाड़ा। सर्दी। ठंढ। २. ओस। तुषार। ३. जाड़े का मौसिम। ४ जुकाम। सरदी। प्रतिश्याय।

शीत कटिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमिखंड के कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद माने गए हैं।

शीतकाल–संज्ञा पुं० [सं०] १. अगहन और पूस के महीने। २ जाड़े का मौसिम।

शीतल–वि० [सं०] १. ठंढा। सर्द। गरम का उलटा। २ क्षोभ या उद्वेग रहित। शांत।

शीतल चीनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल + चीन देश] कबाब चीनी।

***शीतलता**–संज्ञा स्त्री० [सं०] ठंढापन।*

शीतलताई–संज्ञा स्त्री० दे० "शीतलता"।

शीतला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विस्फोटक रोग। चेचक। २ एक देवी जो विस्फोटक की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं।

शीतलाष्टमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] चैत्र कृष्ण-पक्ष की अष्टमी।

शीरा–संज्ञा पुं० [फा०] चीनी या गुड़ को पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चाशनी

शीरीं–वि० [फा०] १. मीठा। मधुर। २ प्रिय। प्यारा।

शीरीनी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मिठास। मीठापन। २. मिठाई। मिष्टान्न।

शीर्ण–वि० [सं०] १ टूटा-फूटा हुआ। २. जीर्ण। फटा पुराना। ३. मुरझाया हुआ। ४. कृश। दुबला। पतला।

शीर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] १ सिर। कपाल। २ माथा। ३ सिरा। चोटी। ४. सामना। अग्र भाग।

शीर्षक–संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "शीर्ष"। २ वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख के ऊपर हो।

शीर्षबिंदु–संज्ञा पुं० [सं०] सिर के ऊपर और ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।

शील–संज्ञा पुं० [सं०] १. चाल। व्यवहार। आचरण। चरित्र। २. स्वभाव। प्रवृत्ति। मिजाज। ३ उत्तम आचरण। सद्वृत्ति। ४ उत्तम स्वभाव। अच्छा मिजाज। ५. संकोच का स्वभाव। मुरौवत।
वि० प्रवृत्त। तत्पर। (यौ० में)

शीलवान्–वि० [सं० शीलवत्] [स्त्री० शीलवती] १ अच्छे आचरण का। २. सुशील।

शीश †–संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।

शीशम–संज्ञा पुं० [फा०] एक पेड़ जिसका तना भारी, सुंदर और मजबूत होता है।

शीशमहल—संज्ञा पुं० [फा० शीशः + अ० महल] वह कोठरी जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।
शीशा—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक पारदर्शी मिश्र धातु, जो बालू या रेह या खारी मिट्टी को आग में गलाने से बनती है। काँच। २. दर्पण। आइना। ३. झाड़, फ़ानूस आदि काँच के बने सामान।
शीशी—संज्ञा स्त्री० [फा० शीशा] शीशे का छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं।
मुहा०—शीशी सुँघाना = दवा सुँघाकर बेहोश करना। (शस्त्र चिकित्सा आदि में)
शुंग—संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षत्रिय वंश जो मौर्यों के पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था।
शुंठि, शुंठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोंठ।
शुंड—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी की सूँड़।
शुंडी—संज्ञा पुं० [सं० शुंडिन्] १. हाथी। २. मद्य बनानेवाला। कलवार।
शुंभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।
शुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. तोता। सुग्गा। २. शुकदेव। ३ वस्त्र। कपड़ा।
शुकदेव—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्णद्वैपायन के पुत्र जो पुराणों के वक्ता और ज्ञानी थे।
शुकराना—संज्ञा पुं० [अ० शुक्र] १ शुक्रिया। कृतज्ञता। २. वह धन जो कार्य्य हो जाने पर धन्यवाद के रूप में दिया जाय।
शुक्त—वि० [सं०] १. सड़ाकर खट्टा किया हुआ। २. खट्टा। अम्ल। ३ कड़ा। कठोर। ४. अप्रिय। नापसंद। ५. सुनसान। उजाड़।
शुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीप। सीपी।
शुक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. एक बहुत चमकीला ग्रह जो पुराणानुसार दैत्यों का गुरु कहा गया है। ३. वीर्य्य। मनी। ४ बल। सामर्थ्य। शक्ति। ५. सप्ताह का छठा दिन जो बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार से पहले पड़ता है।
संज्ञा पुं० [अ०] धन्यवाद।
शुक्रगुजार—वि० [अ० शुक्र + फा० गुज़ार] एहसान माननेवाला। आभारी। कृतज्ञ।
शुक्राचार्य्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो दैत्यों के गुरु थे।
शुक्रिया—संज्ञा पुं० [फा०] धन्यवाद। कृतज्ञता-प्रकाश।
शुक्ल—वि० [सं०] सफ़ेद। उजला। धवल। संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक पदवी।
शुक्ल पक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] अमावस्या के उपरांत प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष।
शुक्ला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।
शुचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] [भाव० शुचिता] पवित्रता। स्वच्छता। शुद्धता।
वि० १. शुद्ध। पवित्र। २. स्वच्छ। साफ़। ३. निर्दोष। ४ स्वच्छ हृदयवाला।
शुचिकर्म्मा—वि० [सं० शुचिकर्म्मन्] पवित्र कार्य्य करनेवाला। सदाचारी। कर्मनिष्ठ।
शुतुर-मुर्ग—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह बहुत लंबी होती है।
शुदनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] भावी। होनी। होनहार। नियति।
शुद्ध—वि० [सं०] [भाव० शुद्धता] १. पवित्र। साफ़। स्वच्छ। २. सफ़ेद। उज्ज्वल। ३. जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धि न हो। ठीक। सही। ४ निर्दोष। बे-ऐब। ५. जिसमें मिलावट न हो। ख़ालिस।
शुद्ध पक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्ल पक्ष।
शुद्धापह्नुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें उपमेय को झूठ ठहराकर या उसका निषेध करके उपमान की सत्यता स्थापित की जाती है।
शुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शुद्ध होने का कार्य्य। २. सफ़ाई। स्वच्छता। ३. वह कृत्य या संस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुचि व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है।
शुद्धिपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।
शुद्धोदन—संज्ञा पुं० [सं०] एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा जो बुद्धदेव के पिता थे।
शुनःशेफ—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।
शुनासीर—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
शुनि—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।
शुबहा—संज्ञा पुं० [अ०] १. संदेह। शक। २. धोखा। वहम। भ्रम।
शुभ—वि० [सं०] १. अच्छा। भला। उत्तम। २. कल्याणकारी। मंगलप्रद।
संज्ञा पुं० मंगल। कल्याण। भलाई।
शुभचिंतक—वि० [सं०] शुभ या भला चाहनेवाला। हितैषी। ख़ैरख़्वाह।

शुभदर्शन–वि० [सं०] सुंदर। खूबसूरत।
शुभ्र–वि० [सं०] सफेद। श्वेत। उजला।
शुभ्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। श्वेतता।
शुरू–संज्ञा पुं० [अ० शुरूअ] १. आरंभ। प्रारंभ। २. वह स्थान जहाँ से किसी वस्तु का आरंभ हो। उठान।
शुल्क–संज्ञा पु० [सं०] १. वह महसूल जो घाटों आदि पर वसूल किया जाता है। २. दहेज। दायजा। ३ बाज़ी। शर्त्त। ४. किराया। भाड़ा। ५ मूल्य। दाम। ६. वह धन जो किसी कार्य के बदले में लिया या दिया जाय। फीस।
शुश्रूषा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० शुश्रूष्य] १. सेवा। टहल। परिचर्या। २. खुशामद।
शुष्क–वि० [सं०] [भाव० शुष्कता] १. आर्द्रता-रहित। सूखा। खुश्क। २. नीरस। रसहीन। ३. जिसमें मन न लगता हो। ४. निरर्थक। व्यर्थ। ५. स्नेह आदि से रहित। निर्मोही।
शूक–संज्ञा पु० [सं०] १. अन्न की बाल या सींका। २. यव। जौ। ३. एक प्रकार का कीड़ा।
शूकर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शूकरी] १. सूअर। वाराह। २. विष्णु का तीसरा अवतार। वाराह अवतार।
शूकरक्षेत्र–संज्ञा पु० [सं०] एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है। (आज-कल का सोरों।)
शूची–संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] सूई।
शूद्र–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० शूद्रा, शूद्री] १. आर्यों के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण। इनका कार्य अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना माना गया है। २. शूद्र जाति का पुरुष। ३. ख़राब। निकृष्ट।
शूद्रक–संज्ञा पु० [सं०] १. विदिशा नगरी का एक राजा और 'मृच्छकटिक' का रचयिता महाकवि। २. शूद्र जाति का एक राजा। शंबूक।
शूद्रता–संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र का भाव या धर्म्म। शूद्रत्व। शूद्रपन।
शूद्रद्युति–संज्ञा पुं० [सं०] नीला रंग।
शूद्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] शूद्र की स्त्री।
शूना–संज्ञा स्त्री० [सं०] गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में अनेक जीवों की हत्या हुआ करती है। जैसे—चूल्हा, चक्की, पानी का बरतन आदि।
शून्य–संज्ञा पु० [सं०] [भाव शून्यता] १. ख़ाली स्थान। २. आकाश। ३. एकांत स्थान। ४. बिंदु। बिंदी। सिफ़र। ५. अभाव। कुछ न होना। ६. स्वर्ग। ७. विष्णु। ८. ईश्वर।
वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। खाली। २ निराकार। ३. विहीन। रहित।
शून्यवाद–संज्ञा पु० [सं०] बौद्धों का एक सिद्धांत।
शून्यवादी–संज्ञा पु० [सं० शून्यवादिन्] १. वह व्यक्ति जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व में विश्वास न करता हो। २. बौद्ध। ३. नास्तिक।
शूप–संज्ञा पु० [सं० शूर्प] सूप जिसमें अन्न आदि पछोरा जाता है। फटकनी।
शूर–संज्ञा पु० [सं०] १. वीर। बहादुर। *सूरमा। २. योद्धा। सिपाही। ३. सूर्य।* ४. सिंह। *५. कृष्ण के पितामह का नाम।* ६. विष्णु।
शूरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहादुरी। वीरता।
शूरताई–संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता"।
शूरवीर–संज्ञा पु० [सं०] वह जो अच्छा वीर और योद्धा हो। सूरमा।
शूरसेन–संज्ञा पुं० [सं०] १ मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह थे। २. मथुरा प्रदेश का प्राचीन नाम।
शूरा†–संज्ञा पु० [सं० शूर] सामंत। वीर।
संज्ञा पु० [सं० सूर्य] सूर्य।
शूर्प–संज्ञा पु० दे० "सूप"।
शूर्पणखा–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहन थी। वन में लक्ष्मण ने इसके नाक और कान काटे थे।
शूर्पनखा–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।
शूर्पारक–संज्ञा पु० [सं०] बंबई प्रांत के सोपारा नाम स्थान का प्राचीन नाम।
शूल–संज्ञा पु० [सं०] १. प्राचीन काल का बरछे के आकार का एक अस्त्र। २. सूली, *जिससे प्राचीन काल में प्राण-दंड दिया जाता था। ३. दे० "त्रिशूल"। ४. बड़ा, लंबा और नुकीला काँटा।* ५. वायु के *प्रकोप से होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज़ दर्द।* ६. कोंच। टीस। ७. पीड़ा। दुःख। दर्द। ८. ज्योतिष में एक

योग। ९. दर्द। सलाय। सींक। १०. मृत्यु। मात। ११. झंडा। पताका। वि० काँटे की तरह नोकवाला। नुकीला।
शूलधारी–संज्ञा पुं० [सं० शूलधारिन्] महादेव।
शूलना०–क्रि० अ० [हिं० शूल + ना (प्रत्य०)] १. शूल के समान गड़ना। २. दुःख देना।
शूलपाणि–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
शूलहस्त–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
शूलि–संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।
शूलिक–संज्ञा पुं० [सं०] सूली देनेवाला।
शूली–संज्ञा पुं० [सं० शूलिन्] १. शिव। महादेव। २. वह जिसे शूल रोग हुआ हो। ३. एक नरक का नाम।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।
संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] पीड़ा। शूल।
शृंखल–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेखला। २. हाथी आदि के बाँधने की लोहे की जंजीर। साँकल। सिकड़। ३. हथकड़ी-बेड़ी।
शृंखलता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।
शृंखला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रम। सिलसिला। २. जंजीर। साँकल। ३. कटिबंध। मेखला। ४. करधनी। तागड़ी। ५. श्रेणी। कतार। ६. एक प्रकार का अलंकार जिसमें कथित पदार्थों का वर्णन सिलसिलेवार किया जाता है।
शृंखलाबद्ध–वि० [सं०] १. सिलसिलेवार। २. जो शृंखला से बाँधा हुआ हो।
शृंग–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत का ऊपरी भाग। शिखर। चोटी। २. गौ, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग। ३. कँगूरा। ४. सिंगी बाजा। ५. कमल। पद्म। दे० "ऋष्यशृंग"।
शृंगपुर–संज्ञा पुं० दे० "शृंगवेरपुर"।
शृंगवेरपुर–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन नगर जहाँ रामचंद्र के समय निषाद राजा गुह की राजधानी थी।
शृंगार–संज्ञा पुं० [सं०] १. नौ रसों में से एक रस जो सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान है। इसमें नायक-नायिका के परस्पर मिलन के कारण होनेवाले सुख की परिपुष्टता दिखलाई जाती है। यह दो प्रकार का होता है—एक संयोग और दूसरा वियोग या विप्रलंभ। २. स्त्रियों का वस्त्राभूषण आदि से शरीर को सुशोभित करना। ३. सजावट। बनाव-चुनाव। ४. भक्ति का एक भाव या प्रकार जिसमें भक्त अपने आप को पत्नी के रूप में और अपने इष्टदेव को पति के रूप में मानते हैं। ५. वह जिससे किसी चीज़ की शोभा हो।
शृंगारना–क्रि० स० [हिं० शृंगार + ना (प्रत्य०)] शृंगार करना। सजाना। सँवारना।
शृंगार हाट–संज्ञा स्त्री० [सं० शृंगार + हिं० हाट] वह बाज़ार जहाँ वेश्याएँ रहती हों।
शृंगारिक–वि० [सं०] शृंगार-संबंधी।
शृंगारिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्रग्विणी छंद।
शृंगारित–वि० [सं०] जिसका शृंगार किया गया हो। सजाया हुआ।
शृंगारिया–संज्ञा पुं० [सं० शृंगार + इया (प्रत्य०)] १. वह जो देवताओं आदि का शृंगार करता हो। २. बहुरूपिया।
शृंगि–संज्ञा पुं० [सं०] सिंगी मछली।
संज्ञा पुं० [सं० शृंगिन्] सींगवाला जानवर।
शृंगी–संज्ञा पुं० [सं० शृंगिन्] १. हाथी। हस्ती। २. वृक्ष। पेड़। ३. पर्वत। पहाड़। ४. एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। इन्हीं के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित् को तक्षक ने डसा था। ५. ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ६. सींगवाला पशु। ७. सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, जिसे कनफटे बजाते हैं। ८. महादेव। शिव।
शृंगीगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन पर्वत जिस पर शृंगी ऋषि तप करते थे।
शृगा०–संज्ञा पुं० दे० "शृगाल"।
शृगाल–संज्ञा पुं० [सं०] गीदड़। सियार।
शेष–संज्ञा पुं० [सं०] कैन के एक भाई।
शेख–संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शेखानी] १. पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से सबसे पहला वर्ग। ३. इसलाम धर्म का आचार्य।
शेख०–संज्ञा पुं० दे० "शेष"।
शेख चिल्ली–संज्ञा पुं० [अ० + हिं०] १. एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति। २. बड़े बड़े मंसूबे बाँधनेवाला।
शेखर–संज्ञा पुं० [सं०] १. शीर्ष। सिर।

माथा। २. मुकुट। किरीट। ३ सिरा। चोटी। शिखर। (पर्वत आदि का) ४. सबसे श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति या वस्तु। ५. टगण के पाँचवें भेद की संज्ञा। (॥ऽ।)

शेखावत–संज्ञा पुं० [अ० शेख] कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।

शेखी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. गर्व। अहंकार। घमंड। २ शान। ऐंठ। अकड़। ३. डींग। मुहा०—शेखी बघारना, हाँकना या मारना=बढ़ बढ़कर बातें करना। डींग मारना।

शेखीबाज़–वि० [फा० शेखी+फा० बाज़] १. अभिमानी। २. डींग मारनेवाला व्यक्ति।

शेर–संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० शेरनी] १ बिल्ली की जाति का एक भयंकर प्रसिद्ध हिंसक पशु। व्याघ्र। नाहर। मुहा०—शेर होना=निर्भय और धृष्ट होना। २. अत्यंत वीर और साहसी पुरुष।

संज्ञा पुं० [अ०] उर्दू कविता के दो चरण।

शेर-दहाँ–वि० [फा०] १. जिसका मुँह शेर का सा हो। २. जिसके छोरों पर शेर का मुँह बना हो।

संज्ञा पुं० १. वह जिसकी घुंडी शेर के मुँह के आकार की बनी हो। २. वह मकान जो आगे चौड़ा और पीछे सँकरा हो।

शेर-पंजा–संज्ञा पुं० [फा०शेर+हिं० पंजा] शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघनहा।

शेर बबर–संज्ञा पुं० [फा०] सिंह। केसरी।

शेरवानी–संज्ञा स्त्री० [देश०] अँगरेजी ढंग की काट का एक प्रकार का अंगा।

शेष–संज्ञा पुं० [सं०] १. बची हुई वस्तु। बाकी। २ वह शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय। अध्याहार। ३. घटाने से बची हुई संख्या। बाकी। ४. समाप्ति। अंत। खातमा। ५. पुराणानुसार सहस्र फनों के सर्पराज जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है। ६. लक्ष्मण। ७. बलराम। ८ दिग्गजों में से एक। ९. परमेश्वर। १०. पिंगल में टगण के पाँचवें भेद का नाम। ११. छप्पय छंद के पचीसवें भेद का नाम।

वि० १. बचा हुआ। बाकी। २ अंत को पहुँचा हुआ। समाप्त। खतम।

शेषधर–संज्ञा पुं० [सं०] शिवजी।

शेषनाग–संज्ञा पुं० दे० "शेष" ५।

शेषर*–संज्ञा पुं० दे० "शेखर"।

शेषराज–संज्ञा पुं० [सं०] दो मगण का एक वर्णवृत्त। विद्युल्लेखा।

शेषवत–संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में कार्य्य को देखकर कारण का निश्चय।

शेषशायी–संज्ञा पुं० [सं० शेषशायिन्] विष्णु।

शेषांश–संज्ञा पुं० [सं०] १. बचा हुआ अंश। अवशिष्ट भाग। २. अंतिम अंश।

शेषाचल–संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का एक पर्वत।

शेषोक्त–वि० [सं०] अंत में कहा हुआ।

शैतान–संज्ञा पुं० [अ०] १. तमोगुण-मय देवता जो मनुष्यों को बहकाकर धर्म-मार्ग से भ्रष्ट करता है। मुहा०—शैतान की आँत=बहुत लंबी वस्तु। २. दुष्ट देवयोनि। भूत। प्रेत। ३. दुष्ट।

शैतानी–संज्ञा स्त्री० [अ० शैतान] दुष्टता। शरारत। पाजीपन।

वि० १. शैतान-संबंधी। शैतान का। २. नटखटी से भरा। दुष्टतापूर्ण।

शैथिल्य–संज्ञा पुं० [सं०] शिथिलता।

शैल–संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। पहाड़। २. चट्टान। ३. शिलाजीत।

शैलकुमारी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैलगंगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी।

शैलजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती। दुर्गा।

शैलतटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पहाड़ की तराई।

शैलनंदिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैलपुत्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. नौ दुर्गाओं में से एक। ३ गंगा नदी।

शैलसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैली–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाल। ढब। ढंग। २ प्रणाली। तर्ज। तरीका। ३. रीति। प्रथा। रस्म। रवाज। ४. वाक्य-रचना का प्रकार।

शैलूष–संज्ञा पुं० [सं०] १. नाटक खेलने-वाला। नट। २. धूर्त।

शैलेंद्र–संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

शैलेय–वि० [सं०] १. पत्थर का। पथरीला। २ पहाड़ी।

संज्ञा पुं० १. छरीला। २ शिलाजीत।

शैव–वि० [सं०] शिव-संबंधी। शिव का।

संज्ञा पुं० १. शिव का अनन्य उपासक। २. पाशुपत अस्त्र। ३. धतूरा।

शलिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
शाल–संज्ञा पुं० [सं०] सिवार। सेवार।
शैव्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] अयोध्या के सत्यव्रती राजा हरिश्चंद्र की रानी का नाम।
शैशव–वि० [सं०] १ शिशु संबंधी। बच्चों का। २. बाल्यावस्था संबंधी।
संज्ञा पुं० १. बचपन। २. बच्चों का सा व्यवहार। लड़कपन।
शैशुनाग–संज्ञा पुं० [सं०] मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग का वंशज।
शोक–संज्ञा पुं० [सं०] प्रिय व्यक्ति के अभाव या पीड़ा से उत्पन्न क्षोभ। रंज। गम।
शोकहार–संज्ञा पुं० [सं०] तीन मात्राओं के एक छंद का नाम। शुभगी।
शोख़–वि० [फ़ा०] [संज्ञा शोख़ी] १. ढीठ। धृष्ट। २ शरीर। नटखट। ३. चंचल। चपल। ४ गहरा और चमकदार। (रंग)
शोच–संज्ञा पुं० [सं० शोचन] १ दुःख। रंज। अफसोस। २ चिंता। फ़िक्र।
शोचनीय–वि० [सं०] १ जिसकी दशा देखकर दुःख हो। २. बहुत हीन या बुरा।
शोण–संज्ञा पुं० [सं०] १ लाल रंग। २. लाली। अरुणता। ३. अग्नि। आग। ४ रक्त। ५ एक नद का नाम। सोन।
शोणित–वि० [सं०] लाल। रक्त वर्ण का।
संज्ञा पुं० रक्त। रुधिर। खून।
शोथ–संज्ञा पुं० [सं०] किसी अंग का फूलना। सूजन। वरम।
शोध–संज्ञा पुं० [सं०] १. शुद्धि संस्कार। सफाई। २ ठीक किया जाना। दुरुस्ती। ३ चुकता होना। अदा होना। ४. जाँच। परीक्षा। ५ खोज। ढूँढ़। तलाश।
शोधक–संज्ञा पुं० [सं०] १. शोधनवाला। २ सुधार करनेवाला। सुधारक। ३ ढूँढ़नेवाला। खोजनेवाला।
शोधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शोधित, शोधनीय, शोध्य] १. शुद्ध करना। साफ़ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३ धातुओं का औषध रूप में व्यवहार करने के लिये संस्कार। ४. छान बीन। जाँच। ५ ढूँढ़ना। तलाश करना। ६. ऋण चुकाना। ७ प्रायश्चित। ८. साफ़ करना। ६ दस्त लाकर कोठा साफ़ करना। विरेचन।
शोधना–क्रि० स० [सं० शोधन] १. शुद्ध करना। साफ करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३ औषध के लिये धातु का संस्कार करना। ४ ढूँढ़ना।
शोधवाना–क्रि० स० [सं० शोधना का प्रे०] १ शुद्ध कराना। २ तलाश कराना।
शोबदा–संज्ञा पुं० [अ०] जादू। इंद्रजाल।
शोभन–वि० [सं०] १ शोभायुक्त। सुंदर। २ सुहावना। ३. उत्तम। ४ शुभ।
संज्ञा पुं० १ अग्नि। २. शिव। ३ इष्टि योग। ४ २४ मात्राओं का एक छंद। सिंहिका। ५ आभूषण। गहना। ६ मंगल। कल्याण। ७ दीप्ति। सौंदर्य।
शोभना–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदरी स्त्री। २. हलदी। हरिद्रा।
क्रि० स० [सं० शोभन] शोभित होना।
शोभांजन–संज्ञा पुं० [सं०] सहिंजन।
शोभा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दीप्ति। कांति। चमक। २. छवि। सुंदरता। छटा। ३ सजावट। ४. वर्ण। रंग। ५. बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
शोभायमान–वि० [सं०] सोहता हुआ। सुंदर।
शोभित–वि० [सं०] १ सुंदर। सजीला। २ अच्छा लगता हुआ।
शोर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ जोर की आवाज। गुल गपाड़ा। कोलाहल। २ धूम। प्रसिद्धि।
शोरबा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] किसी उबाली हुई वस्तु का पानी। जूस। रसा।
शोरा–संज्ञा पुं० [फ़ा० शोर] एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में निकलता है।
शोला–संज्ञा पुं० [अ०] आग की लपट।
शोशा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. निकली हुई नोक। २. अद्भुत या अनोखी बात।
शोष–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूखने का भाव। खुश्क होना। २ शरीर का घुलना या क्षीण होना। ३ राजयक्ष्मा का भेद। क्षयी। ४. बच्चों का सुखंडी रोग।
शोषक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शोषिका] १. जल, रस या तरी खींचनेवाला। सोखनेवाला। २. सुखानेवाला। ३. शोषण करनेवाला।
शोषण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शोषी, शोषित, शोषणीय] १, जल या रस खींचना। सोखना। २. सुखाना। खुश्क करना। ३.

घुलाना। क्षीण करना। ४ नाश करना। ५ कामदेव के एक बाण का नाम।

शोहदा–संज्ञा पुं० [अ०] १ व्यभिचारी। लंपट। २ गुंडा। बदमाश।

शोहरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नामवरी। ख्याति। प्रसिद्धि। २. धूम। जनरव।

शोहरा–संज्ञा पुं० दे० "शोहरत"।

शौंडिक–संज्ञा पुं० [सं०] कलवार।

शौक़–संज्ञा पुं० [अ०] १ किसी वस्तु की *प्राप्ति या भोग के लिये होनेवाली तीव्र अभिलाषा। प्रबल लालसा।*

मुहा०—शौक़ करना=किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। शौक़ से=प्रसन्नतापूर्वक। २ आकांक्षा। लालसा। हौसला। ३ व्यसन। चसका। ४ प्रवृत्ति। झुकाव।

शौकत–संज्ञा स्त्री० दे० "शान"।

शौक़ीन–संज्ञा पुं० [अ० शौक़ + ईन (प्रत्य०)] १. वह जिसे किसी बात का बहुत शौक हो। शौक़ करनेवाला। २ सदा बना-ठना रहनेवाला।

शौक़ीनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० शौक़ीन + ई (प्रत्य०)] शौक़ीन होने का भाव या काम।

शौच–संज्ञा पुं० [सं०] १. शुद्धता। पवित्रता। २ शास्त्रीय परिभाषा में, सब प्रकार से शुद्धतापूर्वक जीवन व्यतीत करना। ३. वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किए जाते हैं। ४. पाखाने जाना। टट्टी जाना। ५. दे० "अशौच"।

शौत–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

शौध*–वि० [सं० शुद्ध] निर्मल। पवित्र।

शौनक–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।

शौरसेन–संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक व्रजमंडल का प्राचीन नाम।

शौरसेनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध प्राचीन प्राकृत भाषा जो शौरसेन प्रदेश में बोली जाती थी। २. एक प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो नागर भी कहलाती थी।

शौर्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. शूर का भाव। शूरता। वीरता। बहादुरी। २. नाटक में आरभटी नाम की वृत्ति।

शौहर–संज्ञा पुं० [फ़ा०] स्त्री का पति। स्वामी। खाविंद। मालिक।

श्मशान–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हों। मसान। मरघट।

श्मशानपति–संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

श्मश्रु–संज्ञा पुं० [सं०] मुँह पर के बाल। दाढ़ी मूछ।

श्याम–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. मेघ। बादल। ३. प्राचीन काल का एक देश जो कन्नौज के पश्चिम ओर था। ४. स्याम नामक देश।

वि० १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। २. काला। साँवला।

श्यामकर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफेद और एक कान काला हो।

श्याम-जीरा–संज्ञा पुं० [सं० श्याम + जीरक] १. एक प्रकार का धान। २. काला जीरा।

श्याम टीका–संज्ञा पुं० [सं० श्याम + हिं० टीका] वह काला टीका जो बच्चों को नजर से बचाने के लिये लगाया जाता है।

श्यामता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ श्याम का भाव या धर्म्म। २. कालापन। साँवलापन। ३. मलिनता। उदासी।

श्यामल–वि० [सं०] [भाव० श्यामलता] जिसका वर्ण कृष्ण हो। काला। साँवला।

श्यामसुंदर–संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २ एक प्रकार का वृक्ष।

श्यामा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राधा। राधिका। २. एक गोपी का नाम। ३. एक प्रसिद्ध काला पक्षी। इसका स्वर बहुत ही मधुर और कोमल होता है। ४. सोलह वर्ष की तरुणी। ५. काले रंग की गाय। ६. तुलसी। सुरसा क्षुप। ७. कोयल नामक पक्षी। ८. यमुना। ९. रात। रात्रि। १० स्त्री। औरत।

वि० श्याम रंगवाली। काली।

श्याल–संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्नी का भाई। साला। २. बहन का पति। बहनोई।

संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] गीदड़। सियार।

श्येन–संज्ञा पुं० [सं०] १. शिकरा या बाज पक्षी। २. दोहे के चौथे भेद का नाम।

श्येनिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] ११ अक्षरों का एक प्रकार का वृत्त। श्येनी।

श्येनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० "श्येनिका"। २. मार्कंडेय पुराण के अनुसार कश्यप की एक कन्या जो पक्षियों की जननी थी।

श्योनाक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सोनापाढा वृक्ष। २. लोध्र। लोध।

श्रद्धा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बड़े के प्रति

मन में होनेवाला आदर और पूज्य भाव। २. वेदादि शास्त्रों और आप्त पुरुषों के वचनों पर विश्वास। भक्ति। आस्था। ३ कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि की पत्नी थीं।

श्रद्धालु-वि० [सं०] जिसके मन में श्रद्धा हो। श्रद्धायुक्त। श्रद्धावान्।

श्रद्धावान्-संज्ञा पु० [सं०श्रद्धावत्] १. श्रद्धा-युक्त। श्रद्धालु पुरुष। २. धर्म्मनिष्ठ।

श्रद्धास्पद-वि० [सं०] जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके। श्रद्धेय। पूजनीय।

श्रद्धेय-वि० [सं०] श्रद्धास्पद।

श्रम-संज्ञा पु० [सं०] १. परिश्रम। मेहनत। मशक्कत। २. थकावट। क्लांति। ३ साहित्य में संचारी भावों में से एक। कोई कार्य करते करते संतुष्ट और शिथिल हो जाना। ४. क्लेश। दु:ख। तकलीफ। ५. दौड़-धूप। परेशानी। ६. पसीना। स्वेद। ७. व्यायाम। कसरत। ८ प्रयास।

श्रमकण-संज्ञा पु० [सं०] पसीने की बूँदें।

श्रमजल-संज्ञा पु० [सं०] पसीना। स्वेद।

श्रमजित-वि० [सं० श्रम+ जित्] जो बहुत परिश्रम करने पर भी न थके।

श्रमजीवी-वि० [सं० श्रमजीविन्] मेहनत करके पेट पालनेवाला।

श्रमण-संज्ञा पु० [सं०] १. बौद्ध मतावलंबी संन्यासी। २ यति। मुनि। ३. मजदूर।

श्रमबिंदु-संज्ञा पु० [सं०] पसीना।

श्रमवारि-संज्ञा पु० [सं०] पसीना।

श्रम विभाग-[illegible] [सं०] किसी कार्य [illegible]

जिसका आकार तीर का सा है।

श्रवन-संज्ञा पु० [सं० श्रवण] श्रवण। कान।

श्रवना-क्रि० स० [सं० स्राव] बहना। चूना। रसना।

क्रि० स० गिराना। बहाना।

श्रवित-वि० [सं० स्राव] बहा हुआ।

श्रव्य-वि० [सं०] जो सुना जा सके। सुनने योग्य। जैसे—संगीत।

यौ०—श्रव्य काव्य=वह काव्य जो केवल सुना जा सके, अभिनय आदि के रूप में देखा न जा सके।

श्रांत-वि० [सं०] १. जितेंद्रिय। २. शांत। ३ परिश्रम से थका हुआ। ४ दु:खी।

श्रांति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिश्रम। मेहनत। २ थकावट। ३. विश्राम।

श्राद्ध-संज्ञा पु० [सं०] १. वह कार्य्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। २. वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। जैसे—तर्पण, पिंडदान तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना। ३ पितृ-पक्ष।

श्राप-संज्ञा पु० दे० "शाप"।

श्रावक-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० श्राविका] १ बौद्ध साधु या संन्यासी। २. जैन धर्म्म का अनुयायी। जैनी। ३. नास्तिक। वि० श्रवण करनेवाला। सुननेवाला।

श्रावग-संज्ञा पुं० दे० "श्रावक"।

श्रावगी-संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] जैनी।

श्रावण-संज्ञा पु० [सं०] आषाढ़ के बाद और भादों के पहले का महीना। सावन।

५. धर्म्म, अर्थ और काम। त्रिवर्ग। ६. संपत्ति। धन। दौलत। ७. विभूति। ऐश्वर्य्य। ८. कीर्त्ति। यश। ६. प्रभा। शोभा। १०. कांति। चमक। ११. एक प्रकार का पद चिह्न। १२. स्त्रियों का बेंदी नामक आभूषण। १३ आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। संज्ञा पु० १. वैष्णवों का एक संप्रदाय। २. एक एकाक्षरा वृत्त का नाम। ३. संपूर्ण जाति का एक राग।

श्रीकंठ–संज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव।

श्रीकांत–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

श्रीकृष्ण–संज्ञा पु० दे० "कृष्ण" १.।

श्रीक्षेत्र–संज्ञा पु० [सं०] जगन्नाथ पुरी।

श्रीखंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. हरि-चंदन। मलयागिरि चंदन। २ दे० "शिखरन"।

श्रीखंड शैल–संज्ञा पु० [सं०] मलय पर्वत।

श्रीगदित–संज्ञा पु० [सं०] उपरूपक के अठारह भेदों में से एक। श्रीरासिका।

श्रीदाम–संज्ञा पु० [सं० श्रीदामन्] श्रीकृष्ण के एक बाल-सखा का नाम। सुदामा।

श्रीधर–संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

श्रीनिकेतन–संज्ञा पु० [सं०] १. वैकुंठ। २. लाल कमल। ३. स्वर्ण। सोना।

श्रीनिवास–संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २. वैकुंठ।

श्रीपंचमी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वसंत पंचमी।

श्रीपति–संज्ञा पु० [सं०] १ विष्णु। नारायण। हरि। २. रामचंद्र। ३ कृष्ण। ४. कुबेर। ५. नृप। राजा।

श्रीपाद–संज्ञा पु० [सं०] पूज्य। श्रेष्ठ।

श्रीफल–संज्ञा पु० [सं०] १. बेल। २. नारियल। ३. खिरनी। ४. आँवला। ५. धन संपत्ति।

श्रीमंत–संज्ञा पु० [सं० सीमंत] १. एक प्रकार का शिरोभूषण। २. स्त्रियों के सिर के बीच की माँग।

वि० श्रीमान्। धनवान्। धनी।

श्रीमत्–वि० [सं०] १ धनवान्। अमीर। २. जिसमें श्री या शोभा हो। ३. सुंदर।

श्रीमती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. "श्रीमान्" का स्त्रीलिंग। २. लक्ष्मी। ३. राधा।

श्रीमान्–संज्ञा पु० [सं० श्रीमत्] १. आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। श्रीयुत। २. धनवान्। अमीर।

श्रीमाल–संज्ञा स्त्री० [सं०श्री + माला] गले में पहनने का एक आभूषण। कंठ-श्री।

श्रीमुख–संज्ञा पु० [सं०] १. शोभित या सुंदर मुख। २. वेद। ३ सूर्य।

श्रीयुक्त–वि० [सं०] १. जिसमें श्री या शोभा हो। २. बड़े आदमियों के लिये एक आदरसूचक विशेषण।

श्रीयुत–वि० दे० "श्रीयुक्त"।

श्रीरंग–संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

श्रीरमण–संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

श्रीवत्स–संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु। २. विष्णु के वक्षस्थल पर का एक चिह्न, जो भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न माना जाता है।

श्रीवास, श्रीवासक–संज्ञा पु० [सं०] १. गंधा बिरोजा। २. देवदारु। ३ चंदन। ४. कमल। ५. विष्णु। ६. शिव।

श्रीहत–वि० [सं०] १. शोभा रहित। २. निस्तेज। निष्प्रभ। प्रभाहीन।

श्रीहर्ष–संज्ञा पु० [सं०] १. नैषध काव्य के रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित और कवि। २. रत्नावली, नागानंद और प्रिय दर्शिका नाटकों के रचयिता जो संभवतः कान्यकुब्ज के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन थे।

श्रुत–वि० [सं०] १. सुना हुआ। २. जिसे परंपरा से सुनते आते हों। ३. प्रसिद्ध।

श्रुतकीर्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो शत्रुघ्न को ब्याही थी।

श्रुति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रवण करना। सुनना। २. सुनने की इंद्रिय। कान। ३. सुनी हुई बात। ४. शब्द। ध्वनि। आवाज़। ५. खबर। शुहरत। किंवदंती। ६. वह पवित्र ज्ञान जो सृष्टि के आदि में ब्रह्मा या कुछ महर्षियों द्वारा सुना गया और जिसे परंपरा से ऋषि सुनते आए। वेद। निगम। ७. चार की संख्या (वेद चार होने से)। ८. अनुप्रास का एक भेद। ९ त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा। १०. नाम। ११ विद्या।

श्रुतिकटु–संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का व्यवहार। (दोष)

श्रुतिपथ–संज्ञा पु० [सं०] १. श्रवण-मार्ग श्रवणेंद्रिय। २. वेद-विहित मार्ग। सन्मार्ग

श्रुत्यनुप्रास-संज्ञा पुं० [सं०] वह अनुप्रास जिसमें एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले व्यंजन दो या अधिक बार आवें।

श्रुवा-संज्ञा पुं० दे० "स्रुवा"।

श्रेणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। पाँती। कतार। २. क्रम। शृंखला। परंपरा। सिलसिला। ३ दल। समूह। ४. सेना। फौज। ५. एक ही कारबार करनेवालों की मंडली। कंपनी। ६. सिकड़ी। जंजीर। ७. सीढ़ी। ज़ीना।

श्रेणीबद्ध-वि० [सं०] पंक्ति के रूप में स्थित। कतार बाँधे हुए।

श्रेय-वि० [सं० श्रेयस्] [स्त्री० श्रेयसी] १ अधिक अच्छा। बेहतर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। बहुत अच्छा। ३ मंगलदायक। शुभ। संज्ञा पुं० १. अच्छापन। २. कल्याण। मंगल। ३. धर्म। पुण्य। सदाचार।

श्रेयस्कर-वि० [सं०] शुभदायक।

श्रेष्ठ-वि० [सं०] [स्त्री० श्रेष्ठा] १. सर्वोत्तम। उत्कृष्ट। बहुत अच्छा। २. मुख्य। प्रधान। ३. पूज्य। बड़ा। ४. वृद्ध।

श्रेष्ठता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्तमता। २ गुरुता। बड़ाई। बड़प्पन।

श्रेष्ठी-संज्ञा पुं० [सं०] व्यापारियों या वणिकों का मुखिया। महाजन। सेठ।

श्रोत-संज्ञा पुं०[सं०श्रोतस्] श्रवणेंद्रिय। कान।

श्रोता-संज्ञा पुं० [सं० श्रोतृ] सुननेवाला।

श्रोत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रवणेंद्रिय। कान। २. वेदज्ञान।

श्रोत्रिय-संज्ञा पुं० [सं०] १. वेद वेदांग में पारंगत। २. ब्राह्मणों का एक भेद।

श्रोत्री-संज्ञा पुं० दे० "श्रोत्रिय"।

श्रोन*-संज्ञा पुं० दे० "शोण"।

श्रोनित*-संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।

श्रौत-वि० [सं०] १. श्रवण-संबंधी। २. श्रुति-संबंधी। ३. जो वेद के अनुसार हो। ४. यज्ञ संबंधी।

[श्र]ौतसूत्र-संज्ञा पुं० [सं०] कल्प ग्रंथ का वह [अ]ंश जिसमें यज्ञों का विधान है।

[श्र]ौन*-संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।

[श्ल]थ-वि० [सं०] १. शिथिल। ढीला। २. मंद। धीमा। ३. दुर्बल। अशक्त।

[श्ल]ाघनीय-वि० [सं०] १. प्रशंसनीय। [त]ारीफ़ के लायक़। २. उत्तम। श्रेष्ठ।

श्लाघा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रशंसा। तारीफ़। २. स्तुति। बड़ाई। ३. ख़ुशामद। चापलूसी। ४. इच्छा। चाह।

श्लाघ्य-वि० [सं०] १. प्रशंसनीय। तारीफ़ के लायक़। २. श्रेष्ठ। अच्छा।

श्लिष्ट-वि० [सं०] १. मिला हुआ। एक में जुड़ा हुआ। २. (साहित्य में) श्लेष-युक्त। जिसके दोहरे अर्थ हों।

श्लीपद-संज्ञा पुं० [सं०] टाँग फूलने का रोग। फ़ीलपाव।

श्लील-वि० [सं०] १. उत्तम। नफ़ीस। जो भद्दा न हो। २. शुभ।

श्लेष-संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलना। जुड़ना। २. संयोग। जोड़। मिलान। ३. साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं।

श्लेषक-वि० [सं०] जोड़नेवाला। संज्ञा पुं० दे० "श्लेष"।

श्लेषण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि०श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट] १. मिलाना। जोड़ना। २. आलिंगन।

श्लेषोपमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनों में लग जाते हैं।

श्लेष्मा-संज्ञा पुं० [सं० श्लेष्मन्] १. शरीर की तीन धातुओं में से एक। कफ। बलग़म। २. लिसोड़े का फल। लभेरा।

श्लोक-संज्ञा पुं० [सं०] १. शब्द। आवाज़। २. पुकार। आह्वान। ३. स्तुति। प्रशंसा। ४. कीर्ति। यश। ५. अनुष्टुप् छंद। ६. संस्कृत का कोई पद्य।

श्वन्-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।

श्वपच-संज्ञा पुं० [सं०] चांडाल। डोम।

श्वफल्क-संज्ञा पुं० [सं०] यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।

श्वशुर-संज्ञा पुं० [सं०] ससुर।

श्वश्रू-संज्ञा स्त्री० [सं०] सास।

श्वान-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्वानी] १. कुत्ता। कुक्कुर। २. दोहे का इक्कीसवाँ भेद। ३. छप्पय का पंद्रहवाँ भेद।

श्वास-संज्ञा पुं० [सं०] १. नाक से हवा खींचने और बाहर निकालने का व्यापार। साँस। दम। २. जल्दी जल्दी साँस

लेना। हाँफना। ३. दम फूलने का रोग। दमा।

श्वासा–संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] १. साँस। दम। २. प्राण। प्राणवायु।

श्वासोच्छ्वास–संज्ञा पुं० [सं०] वेग से साँस खींचना और निकालना।

श्वेत–वि० [सं०] १. सफ़ेद। धौला। चिट्टा। २. उज्ज्वल। साफ़। ३. निर्दोष। निष्कलंक। ४. *गोरा*।

संज्ञा पुं० १. सफ़ेद रंग। २. चाँदी। रजत। ३. पुराणानुसार एक द्वीप। ४. शिव का एक अवतार। ५. श्वेत वराह।

श्वेत-कृष्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सफ़ेद और काला। २ यह और वह पक्ष। एक बात और दूसरी बात।

श्वेतकेतु–संज्ञा पुं० [सं०] १. महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २. एक केतु ग्रह।

श्वेतगज–संज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत हाथी।

श्वेतता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सफ़ेदी।

श्वेतद्वीप–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक उज्ज्वल द्वीप जहाँ विष्णु रहते हैं।

श्वेतप्रदर–संज्ञा पुं० [सं०] *वह प्रदर रोग* जिसमें स्त्रियों को सफ़ेद रंग की धातु *गिरती है*।

श्वेतवाराह–संज्ञा पुं० [सं०] १. वराह भगवान् की एक मूर्ति। २. एक कल्प का नाम जो ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन माना गया है।

श्वेतांबर–संज्ञा पुं० [सं०] *जैनों के दो प्रधान* संप्रदायों में से एक।

श्वेता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २. कौड़ी। ३. श्वेत या शंख नामक हस्ती की माता। शंखिनी। ४ चीनी। शक्कर।

श्वेताश्वतर–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कृष्ण *यजुर्वेद की एक शाखा*। २. *कृष्ण यजुर्वेद* का एक उपनिषद्।

ष

ष–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में ३१ वाँ वर्ण या अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है, इससे यह मूर्द्धन्य वर्णों में कहा गया है। इसका उच्चारण दो प्रकार से होता है—'श' के समान और 'ख' के समान।

षंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. हीजड़ा। नपुंसक। नामर्द। २. शिव का एक नाम।

षंडत्व–संज्ञा पुं० [सं०] नामर्दी। हीजड़ापन।

षंडामर्क–संज्ञा पुं० [सं०] शुक्राचार्य के पुत्र का नाम।

षट्–वि० [सं०] गिनती में ६। छः।

संज्ञा पुं० छः की संख्या।

षट्क–संज्ञा पुं० [सं०] १. ६ की संख्या। २. ६ वस्तुओं का समूह।

षट्कर्म–संज्ञा पुं० [सं० षट्कर्मन्] ब्राह्मणों के छः कर्म—*यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना और दान लेना*।

षट्कोण–वि० [सं०] छः कोनोंवाला। छः-कोना। छःपहला।

षट्चक्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. हठ योग में माने हुए कुंडलिनी के ऊपर पड़नेवाले छः चक्र। २. भीतरी चाल। षड्यंत्र।

षट्तिला–संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

षट्पद–वि० [सं०] [स्त्री० षट्पदी] छः पैरोंवाला।

संज्ञा पुं० भ्रमर। भौंरा।

षट्पदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भ्रमरी। २. छप्पय।

षट्मुख–संज्ञा पुं० [सं०] कार्त्तिकेय।

षट्राग–संज्ञा पुं० [सं० षट्+राग] १. संगीत के छः राग—*भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक*। २. बखेड़ा।

षट्रिपु–संज्ञा पुं० दे० "षड्रिपु"।

षट्शास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] हिंदुओं के छः दर्शन।

षट्वांग–संज्ञा पुं० [सं०] खट्वांग नामक

राजर्षि जिन्हें केवल दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।
षडंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. वेद के छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। २. शरीर के छः अवयव—दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़।
वि० जिसके छः अंग या अवयव हों।
षडानन-वि० [सं०] जिसके छः मुँह हों।
संज्ञा पुं० कार्तिकेय।
षड्गुण-संज्ञा पुं० [सं०] छः गुणों का समूह।
षड्ज-संज्ञा पुं० [सं०] संगीत के सात स्वरों में से पहला स्वर।
षड्दर्शन-संज्ञा पुं० [सं०] न्याय, मीमांसा आदि हिंदुओं के छः दर्शन।
षड्दर्शनी-संज्ञा पुं० [सं० षट्दर्शन+ई(प्रत्य०)] दर्शनों को जाननेवाला। ज्ञानी।
षड्यंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कार्रवाई। भीतरी चाल। २. जाल। कपटपूर्ण आयोजन।
षड्रस-संज्ञा पुं० [सं०] छः प्रकार के रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।
षड्रिपु-संज्ञा पुं० [सं०] काम, क्रोध आदि मनुष्य के छः विकार।
षष्ठ-वि० [सं०] जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो। छठा।
षष्ठी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २. षोडश मातृकाओं में से एक। ३. कात्यायनी। दुर्गा। ४. संबंधकारक। (व्याकरण) ५. बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा उक्त दिन का उत्सव।

षाड़व-संज्ञा पुं० [सं०] वह राग जिसमें केवल छः स्वर लगते हों।
षाण्मातुर-संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।
षाण्मासिक-वि० [सं०] छः महीने का छठे महीने में पड़नेवाला।
षोडश-वि० [सं०] सोलहवाँ।
वि० [सं० षोडशन्] जो गिनती में दस से छः अधिक हो। सोलह।
संज्ञा पुं० सोलह की संख्या।
षोडश कला-संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा के सोलह भाग जो क्रम से एक एक करके निकलते और क्षीण होते हैं।
षोडश पूजन-संज्ञा पुं० दे० "षोडशोपचार"
षोडश मातृका-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह मानी गई हैं—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातरः और आत्म-देवता।
षोडश शृंगार-संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण शृंगार जो सोलह प्रकार का है।
षोड़शी-वि० स्त्री० [सं०] १. सोलहवीं २. सोलह वर्ष की (लड़की या स्त्री)।
संज्ञा स्त्री० १. दस महाविद्याओं में से एक। २. मृतक-संबंधी एक कर्म जो मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है।
षोडशोपचार-संज्ञा पुं० [सं०] पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह माने गए हैं—आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना।
षोडश संस्कार-संज्ञा पुं० [सं०] गर्भाधान से लेकर मृतक कर्म तक के १६ संस्कार।
ष्ठीवन-संज्ञा पुं० [सं०] थूकना।

स

स-हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान दंत है, इसलिये यह दंती या दंत्य स कहा जाता है।
सं-अव्य० [सं० सम्] १. एक अव्यय जिसका व्यवहार शोभा, समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरंतरता आदि सूचित करने के लिये शब्द के आरंभ में होता है। जैसे—संयोग, संताप, संतुष्ट आदि। २. से।
सँड़तना†-क्रि० स० [सं० संचय] १. लीपना। पोतना। २. संचय करना। ३. सहेजना।

सँउपना०†–क्रि० स० दे० "सौंपना"।
संक०†–संज्ञा स्त्री० दे० "शंका"।
संकट–वि० [सं० सम+कृत] सँकरा। तंग।
संज्ञा पुं० १ विपत्ति। आफ़त। मुसीबत।
२. दुःख। कष्ट। तकलीफ़। ३.
दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता।
संकटा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध
देवी। २. ज्योतिष में एक योगिनी दशा।
संकत०–संज्ञा पुं० दे० "संकेत"।
संकना०†–क्रि० अ० [सं० शंका] १. शंका
करना। संदेह करना। २. डरना।
संकर–संज्ञा पुं० [सं०] १. दो चीजों का
आपस में मिलना। २. वह जिसकी
उत्पत्ति भिन्न वर्ण या जाति के पिता और
माता से हुई हो। दोगला।
संज्ञा पुं० दे० "शंकर"।
संकर-घरनी०–संज्ञा स्त्री० [सं० शंकर×
गृहिणी] शंकर की पत्नी, पार्वती।
संकरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] संकर होने का
भाव या धर्म। मिलावट। घाल-मेल।
सँकरा†–वि० [सं० संकीर्ण] [स्त्री० सँकरी]
पतला और तंग।
संज्ञा पुं० कष्ट। दुःख। विपत्ति।
०†–संज्ञा स्त्री०[सं० शृंखला] साँकल। जंजीर।
संकर्षण–संज्ञा पुं० [सं०] १. खींचने की
क्रिया। २. हल से जोतने की क्रिया। ३.
कृष्ण के भाई बलराम। ४. वैष्णवों का
एक संप्रदाय।
संकल†–संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] १. सिकड़ी।
जंजीर। २. पशुओं को बाँधने का सिक्कड़।
संकलन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संकलित]
१. संग्रह करना। जमा करना। २. संग्रह।
ढेर। ३. गणित की योग नाम की क्रिया।
जोड़। ४. अनेक ग्रंथों से अच्छे अच्छे
विषय चुनने की क्रिया।
संकलपना०†–क्रि० स० [सं० संकल्प] १.
किसी बात का दृढ़ निश्चय करना। २.
किसी धार्मिक कार्य के निमित्त कुछ दान
देना। संकल्प करना।
क्रि० अ० विचार करना। इच्छा करना।
संकलित–वि० [सं०] १ चुना हुआ। संगृ-
हीत। २. इकट्ठा किया हुआ।
संकल्प–संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्य्य करने की
इच्छा। विचार। इरादा। २.कोई देवकार्य
करने से पहले एक निश्चित मंत्र का उच्चारण
करते हुए अपना दृढ़ निश्चय या विचार
प्रकट करना। ३. ऐसे समय पढ़ा जानेवाला
मंत्र। ४. दृढ़ निश्चय। पक्का विचार।
सँकाना०†–क्रि० अ० [सं० शंक] डरना।
संकार†–संज्ञा स्त्री० [सं० संकेत] इशारा।
संकारना†–क्रि० [हिं० संकार] संकेत करना।
संकाश–अव्य० [सं०] १. समान। सदृश।
२. समीप। निकट। पास।
संज्ञा पुं० [?] प्रकाश। चमक।
संकीर्ण–वि० [सं०] [भाव० संकीर्णता] १.
संकुचित। तंग। सँकरा। २. मिश्रित।
मिला हुआ। ३. क्षुद्र। छोटा।
संज्ञा पुं० १. वह राग जो दो अन्य रागों
को मिलाकर बने। २. संकट। विपत्ति।
संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गद्य जिसमें
कुछ वृत्तगंधि और कुछ अवृत्तगंधि का
मेल होता है।
संकीर्त्तन–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी की
कीर्त्ति का वर्णन करना। २. देवता की
वंदना या भजन आदि।
सँकुचना–क्रि० अ० दे० "सकुचना"।
संकुचित–वि० [सं०] १. संकोचयुक्त।
लज्जित। २. सिकुड़ा हुआ। ३. तंग।
सँकरा। ४. क्षुद्र। उदार का उलटा।
संकुल–वि० [सं०] १. संकीर्ण। घना। २.
भरा हुआ। परिपूर्ण।
संज्ञा पुं० १. युद्ध। लड़ाई। २. समूह।
झुंड। ३. भीड़। जनता। ४. परस्पर
विरोधी वाक्य।
संकेत–संज्ञा पुं० [सं०] १. भाव प्रकट करने
के लिये कायिक चेष्टा। इशारा। इंगित।
२. वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका
मिलना निश्चित करें। सहेट। ३. चिह्न।
निशान। ४. पते की बातें।
सँकेत†–वि० दे० "सँकरा"।
संकेतना–क्रि० स० [सं० संकेत] संकट में
डालना। कष्ट में डालना।
संकोच–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिकुड़ने की
क्रिया। खिंचाव। तनाव। २. लज्जा। शर्म।
३ भय। ४. आगा-पीछा। हिचकिचा-
हट। ५. एक अलंकार जिसमें 'विकास
अलंकार' से विरुद्ध वर्णन होता है या

किसी वस्तु का अतिशय संकोच वर्णन किया जाता है।

सँकोचना–क्रि० स० [स० संकोच] १. संकुचित करना। २. सँकोच करना।

संकोचित–सज्ञा पु० [स०] तलवार चलाने का एक ढंग या प्रकार।

संकोची–सज्ञा पुं० [स० सकोचिन्] १. सिकुड़नेवाला। २. शर्म करनेवाला।

संकोपना:–क्रि० अ० [स० सकोप] क्रोध करना।

संक्रंदन–सज्ञा पु० [स०] शक्र। इंद्र।

संक्रमण–सज्ञा पु० [स०] १ गमन। चलना। २. सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करना।

संक्रांति–सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना या प्रवेश करने का समय।

संक्रामक–वि० [स०] जो संसर्ग या छूत आदि के कारण फैलता हो।

संक्रोन:†–सज्ञा स्त्री० दे० "संक्रांति"।

संक्षिप्त–वि० [स०] १ जो संक्षेप में हो। खुलासा। २. थोड़ा। अल्प।

संक्षिप्त लिपि–सज्ञा स्त्री० [स०] एक लेखन-प्रणाली जिसमें थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं।

संक्षिप्ति–संज्ञा स्त्री० [स०] नाटक में एक आरभटी जिसमें क्रोध आदि उग्र भावों की निवृत्ति होती है।

संक्षेप–सज्ञा पु० [स०] १. थोड़े में कोई बात कहना। २. घटाना। कम करना।

संक्षेपतः–अव्य० [स०] संक्षेप में। थोड़े में।

संखनारी–सज्ञा स्त्री० [स० शखनारी] छः वर्ण का एक छंद। सोमराजी।

संखिया–सज्ञा पु० [सं० शृगिका] १. एक बहुत जहरीली प्रसिद्ध सफेद उपधातु या पत्थर। २. उक्त धातु का तैयार किया हुआ भस्म जो दवा के काम में आता है।

संख्यक–वि० [स०] संख्यावाला।

संख्या–सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक, दो, तीन, चार आदि की गिनती। तादाद। शुमार। २. गणित में वह अंक जो किसी वस्तु का, गिनती में, परिमाण बतलावे। अदद।

संग–सज्ञा पु० [सं० सङ्ग] १. मिलना। मिलन। २. सहवास। सोहबत।

मुहा०—(किसी के) संग लगना = साथ हो लेना। पीछे लगना।

३. विषयों के प्रति होनेवाला अनुराग। ४ वासना। आसक्ति।

क्रि० वि० साथ। हमराह। सहित।

सज्ञा पु० [फा०] पत्थर। जैसे संगमरमर।

वि० पत्थर की तरह कठोर। बहुत कड़ा।

संग जराहत–सज्ञा पु० [फा० संग + अ० जराहत] एक सफेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी होता है।

संगठन–सज्ञा पु० [स० स + हिं० गठना] १ बिखरी हुई शक्तियों या लोगों आदि को इस प्रकार मिलाकर एक करना कि उनमें नवीन बल आ जाय। २. वह संस्था जो इस प्रकार की व्यवस्था से तैयार हो।

संगठित–वि० [हिं० संगठन] जो भली भाँति व्यवस्था करके एक में मिलाया हुआ हो।

संगत–सज्ञा स्त्री० [स० सगति] १ संग रहना। सोहबत। संगति। २. संग रहनेवाला। साथी। ३. वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले साधु रहते हैं। ४. संबंध। संसर्ग।

संग-तराश–सज्ञा पु० [फा०] पत्थर काटने या गढ़नेवाला मजदूर। पत्थर-कट।

संगति–सज्ञा स्त्री० [स०] १. मिलने की क्रिया। मेल। मिलाप। २. संग। साथ। सगत। ३. प्रसंग। मैथुन। ४. संबंध। ताल्लुक। ५. ज्ञान। ६ आगे-पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का मिलान।

संग दिल–वि० [फा०] [सज्ञा संगदिली] कठोर-हृदय। निर्दय। दयाहीन।

संगम–सज्ञा पु० [सं०] १. मिलाप। सम्मेलन। संयोग। मेल। २ दो नदियों के मिलने का स्थान। ३. साथ। संग।

संग मर्मर–सज्ञा पुं० [फा० संग + अ० मर्मर] एक प्रकार का बहुत चिकना, मुलायम और सफेद प्रसिद्ध कीमती पत्थर।

संग मूसा–सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का काला चिकना कीमती पत्थर।

संग यशब–सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का हरा कीमती पत्थर। हौल-दिली।

संगाती–सज्ञा पु० [हिं० संग + आती (प्रत्य०)] १ साथी। संगी। २ दोस्त। मित्र।

संगिनी–सज्ञा स्त्री० [हिं० संगी का स्त्री० रूप]

संगी–सज्ञा पुं० [हिं० संग + ई (प्रत्य०)] १. संग रहने[illegible]। साथी। २. मित्र। बंधु।

संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा। वि० [फा० संग = पत्थर] पत्थर का। संगीन।

संगीत-संज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हों।

संगीत शास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें संगीत का विवेचन हो।

संगीन-संज्ञा पुं० [फा०] लोहे का एक नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है। वि० १ पत्थर का बना हुआ। २. मोटा। ३. टिकाऊ। मजबूत। ४. विकट।

संगृहीत-वि० [सं०] संग्रह किया हुआ। एकत्र किया हुआ। सङ्कलित।

संग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] १. एकत्र करना। जमा करना। संचय। २. वह ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों। ३ रक्षा। हिफाज़त। ४. पाणिग्रहण। विवाह। ५ ग्रहण करने की क्रिया।

संग्रहणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें खाद्य पदार्थ बराबर पाखाने के रास्ते निकल जाता है।

संग्रहना-क्रि० स० [सं० संग्रहण] संग्रह करना। संचय करना। जमा करना।

संग्राम-संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

संग्राह्य-वि० [सं०] संग्रह करने योग्य।

संघ-संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह। समुदाय। दल। २. समिति। सभा। समाज। ३ प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य। ४ बौद्ध श्रमणों आदि का धार्मिक समाज। ५. साधुओं आदि के रहने का मठ। संगत।

संघट-संज्ञा पुं० [सं०] १. संघटन। २. युद्ध। ३. समूह। ढेर। राशि।

संघटन-संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। संयोग। २. नायक-नायिका का संयोग। मिलाप। ३. रचना। ४ बनावट। ५. दे० "संगठन"।

संघट्ट, संघट्टन-संज्ञा पुं० [सं०] १ बनावट। रचना। २. मिलन। संयोग। ३. दे० "संघटन"।

संघती-संज्ञा पुं० दे० "संघाती"।

संघरना-क्रि० स० [सं० संहार] १. संहार या नाश करना। २. मार डालना।

संघर्ष, संघर्षण-संज्ञा पुं० [सं०] १ रगड़ खाना। रगड़। घिस्सा। २. प्रतियोगिता। स्पर्धा। ३. रगड़ना। घिसना।

संघात-संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। समष्टि। २. आघात। चोट। ३. हत्या। वध। ४ नाटक में एक प्रकार की गति। ५. शरीर। ६. निवासस्थान।

संघाती-संज्ञा पुं० [सं० संघ] १. साथी। सहचर। २ मित्र।

संघार†-संज्ञा पुं० दे० "संहार"।

संघारना*-क्रि० स० [सं० संहार] १. संहार करना। नाश करना। २ मार डालना।

संघाराम-संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध भिक्षुओं आदि के रहने का मठ। विहार।

संच*†-संज्ञा पुं० [सं० संचय] १. संग्रह करना। संचय। २ रक्षा। देखभाल।

संचकर*-संज्ञा पुं० [सं० संचय + कर] १. संचय करनेवाला। २. कंजूस।

संचना*†-क्रि० स० [सं० संचयन] १. संग्रह करना। संचय करना। २. रक्षा करना।

संचय-संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। ढेर। २. एकत्र या संग्रह करना। जमा करना।

संचरण-संज्ञा पुं० [सं०] संचार करने की क्रिया। चलना। गमन।

संचरना*†-क्रि० अ० [सं० संचरण] १. घूमना। फिरना। चलना। २. फैलना। प्रसारित होना। ३. प्रचलित होना।

संचार-संज्ञा पुं० [सं०] [कर्त्ता संचारक, वि० संचारित] १ गमन। चलना। २. फैलना। ३ चलना।

संचारना*†-क्रि० स० [सं० संचारण] १. किसी वस्तु का संचार करना। २ प्रचार करना। फैलाना। ३. जन्म देना।

संचारिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] दूती। कुटनी।

संचारी-संज्ञा पुं० [सं० संचारिन्] १. वायु। हवा। २ साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं। ३. व्यभिचारी भाव। वि० संचरण करनेवाला। गतिशील।

संचालक-संज्ञा पुं० [सं०] चलाने या गति देनेवाला। परिचालक।

संचालन-संज्ञा पुं० [सं०] १ चलाने की क्रिया। परिचालन। २. काम जारी रखना।

संचित-वि० [सं०] संचय या जमा किया हुआ।

संजम*-संज्ञा पुं० दे० "संयम"।

संजय-संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र का मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय धृतराष्ट्र को उस युद्ध का विवरण सुनाता था।

संजात–वि० [सं०] १. उत्पन्न। २. प्राप्त।
संजाफ–संज्ञा स्त्री० [फा० संजफ या संजाफ] १. झालर। किनारा। २. चौड़ी और आड़ी गोट जो रजाइयों आदि में लगाई जाती है। गोट। मगजी।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा जिसका रंग आधा लाल और आधा सफेद या आधा हरा होता है।
संजाफी–संज्ञा पुं०[हिं० संजाफ] आधा लाल और आधा हरा घोड़ा।
संजाब–संज्ञा पुं० दे० "संजाफ"।
संजीदा–वि० [फा०] [संज्ञा संजीदगी] १. गंभीर। शांत। २ समझदार। बुद्धिमान्।
संजीवन–संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति जीवन व्यतीत करना। २ जीवन देनेवाला।
संजीवनी–वि० स्त्री० [सं०] जीवन देनेवाली। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कल्पित ओषधि। कहते हैं कि इसके सेवन से मरा हुआ मनुष्य जी उठता है।
संजीवनी विद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की कल्पित विद्या। कहते हैं कि मरे हुए व्यक्ति को इस विद्या के द्वारा जिलाया जा सकता है।
संजुक्त०–वि० दे० "संयुक्त"।
संजुग०–संज्ञा पुं० [सं० संयुग] संग्राम। युद्ध।
संजुत०–वि० दे० "संयुक्त"।
संजुता–संज्ञा स्त्री० दे० "संयुत"। (छंद)
सँजोइ०–क्रि० वि० [सं० संयोग] साथ में।
सँजोइल*–वि० [सं० सज्जित, हिं० सँजोना] १. अच्छी तरह सजाया हुआ। सुसज्जित। २. जमा किया हुआ। एकत्र।
सँजोऊ०–संज्ञा पुं० [हिं० सँजोना] १. तैयारी। उपक्रम। २. सामान। सामग्री।
सँजोग–संज्ञा पुं० दे० "संयोग"।
सँजोगी–संज्ञा पुं० दे० "संयोगी"।
सँजोना†–क्रि० स० [सं० सज्जा] सजाना।
सँजोयल०†–वि० [हिं० सँजोना] १. सुसज्जित। २. सेना-सहित। ३. सावधान।
संज्ञक–वि० [सं०] संज्ञावाला। जिसकी संज्ञा हो। (यौगिक में)
संज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चेतना। होश। २ बुद्धि। ज्ञान। ३. ज्ञान। ४. नाम। आख्या। ५. व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु का बोध होता है। जैसे—मकान, नदी। ६ सूर्य की पत्नी जो विश्वकर्मा की कन्या थी।
संज्ञाहीन–वि० [सं०] बेहोश। बेसुध।
सँझला‡–वि० [सं० संध्या] संध्या का।
सँझवाती–संज्ञा स्त्री० [सं० संध्या + वती] १. संध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। २. वह गीत जो संध्या समय गाया जाता है।
सँझा†–संज्ञा स्त्री० [सं०संध्या] संध्या। शाम।
सँझोखे–संज्ञा स्त्री० [सं० संध्या] संध्या का समय। शाम का वक्त।
संड–संज्ञा पुं० [सं० शंड] साँड़।
संड मुसंड–वि० [हिं० संड + मुसंड अनु०] हट्टा कट्टा। मोटा-ताजा। बहुत मोटा।
संडसा–संज्ञा पुं० [सं० संदंश] [स्त्री० अल्पा० संड़सी] लोहे का एक औजार। इससे गरम चीजें पकड़ते हैं। गहुआ। जँबूरा।
संडा–वि० [सं० शंड] मोटा-ताजा। हृष्ट पुष्ट।
संडास–संज्ञा पुं० [?] कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना। शौच-कूप।
संत–संज्ञा पुं० [सं० सत्] १ साधु, संन्यासी या त्यागी पुरुष। महात्मा। २ ईश्वर-भक्त। धार्मिक पुरुष। ३. २१ मात्राओं का एक छंद।
संतत–अव्य० [सं०] सदा। निरंतर। बराबर।
संतति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाल-बच्चे। संतान। औलाद। २ प्रजा। रिआया।
संतपन–संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह तपना। २ बहुत दुःख देना।
संतप्त–वि० [सं०] १ बहुत तपा हुआ। जला हुआ। दग्ध। २ दुखी। पीड़ित।
संतरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह से तरना या पार होना। २ तारनेवाला।
संतरा–संज्ञा पुं० [पुर्त० संगतरा] एक प्रकार का बड़ा और मीठा नीबू।
संतरी–संज्ञा पुं० [अं० सेंट्री] १. पहरा देनेवाला। पहरेदार। २ द्वारपाल।
संतान–संज्ञा पुं० [सं०] १ बाल बच्चे। संतति। औलाद। २ कल्पवृक्ष।
संताप–संज्ञा पुं० [सं०] १. ताप। जलन। आँच। २ दुःख। कष्ट। ३ मानसिक कष्ट।
संतापन–संज्ञा पुं० [सं०] १. संताप देना। जलाना। २. बहुत दुःख या कष्ट देना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

संतापना:†–क्रि० स० [सं० संतापन] संताप देना। दुःख देना। कष्ट पहुँचाना।
संतापित–वि० दे० "संतप्त"।
संतापी–संज्ञा पुं० [सं० संतापिन्] संताप देनेवाला।
सांती†–अव्य० [सं० संति ?] १. बदले में। एवज में। स्थान में। २. द्वारा। से।
संतुष्ट–वि० [सं०] १. जिसका संतोष हो गया हो। तृप्त। २. जो मान गया हो।
संतोख–संज्ञा पुं० दे० "संतोष"।
संतोष–संज्ञा पुं० [सं०] १. हर हालत में प्रसन्न रहना। संतुष्टि। सब्र। कनायत। २. तृप्ति। शांति। इतमीनान। ३. प्रसन्नता। सुख। आनंद।
संतोषना:†–क्रि० स० [सं० संतोष+ना (प्रत्य०)] संतोष दिलाना। संतुष्ट करना। क्रि० अ० संतुष्ट होना। प्रसन्न होना।
संतोषित–वि० दे० "संतुष्ट"।
संतोषी–संज्ञा पुं० [सं० संतोषिन्] वह जो सदा संतोष रखता हो। सब्र करनेवाला।
संथा–संज्ञा पुं० [सं० संहिता ?] एक बार में पढ़ाया हुआ अंश। पाठ। सबक।
संद†–संज्ञा पुं० [?] दबाव।
संदर्भ–संज्ञा पुं० [सं०] १. रचना। बनावट। २. निबंध। लेख। ३. कोई छोटी पुस्तक।
संदल–संज्ञा पुं० [फा०] श्रीखंड। चंदन।
संदली–वि० [फा० संदल] १. संदल के रंग का। हलका पीला (रंग)। २. चंदन का। संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका पीला रंग। २. एक प्रकार का हाथी। ३. घोड़े की एक जाति।
संदि–संज्ञा स्त्री० [सं० संधि] मेल। संधि।
संदिग्ध–वि० [सं०] १. जिसमें संदेह हो। संदेहपूर्ण। २. जिसपर संदेह हो।
संदिग्धत्व–संज्ञा पुं० [सं०] १. संदिग्ध होने का भाव या धर्म। संदिग्धता। २. अलंकार-शास्त्रानुसार एक दोष। किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट न होना।
संदीपन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संदीपक] १. उद्दीप्त करने की क्रिया। उद्दीपन। २. कृष्ण के गुरु का नाम। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। वि० उद्दीपन या उत्तेजन करनेवाला।
संदूक–संज्ञा पुं० [अ० संदूक़] [अल्पा० संदूकचा] लकड़ी, लोहे आदि का बना हुआ चौकोर पिटारा। पेटी। बक्स।
संदूकड़ी–संज्ञा स्त्री० [अ० संदूक] छोटा संदूक।
संदूर–संज्ञा पुं० दे० "सिंदूर"।
संदेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. समाचार। हाल। खबर। २. एक प्रकार की बँगला मिठाई।
सँदेसा–संज्ञा पुं० [सं० संदेश] जबानी कहलाया हुआ समाचार। खबर। हाल।
सँदेसी–संज्ञा पुं० [हिं० सँदेसा] सँदेसा ले जानेवाला। दूत। बसीठ।
संदेह–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी विषय में निश्चित न होनेवाला विश्वास। संशय। शंका। शक। २. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी चीज को देखकर संदेह बना रहता है।
संदोह–संज्ञा पुं० [सं०] समूह। झुंड।
संध:†–संज्ञा स्त्री० दे० "संधि"।
संधना–क्रि० अ० [सं० संधि] संयुक्त होना।
संधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. लक्ष्य करने का व्यापार। निशाना लगाना। २. योजन। मिलाना। ३. अन्वेषण। खोज। ४. काठियावाड़ का एक नाम। ५. संधि। ६. काँजी।
संधानना†–क्रि० स० [सं० संधान+ना(प्रत्य०)] १. निशाना लगाना। २. बाण छोड़ना।
संधाना–संज्ञा पुं० [सं० संधानिका] अचार।
संधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मेल। संयोग। २. मिलने की जगह। जोड़। ३. राजाओं आदि में होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार युद्ध बंद किया जाता है अथवा मित्रता या व्यापार-संबंध स्थापित किया जाता है। ४. सुलह। मित्रता। मैत्री। ५. शरीर में का कोई जोड़। गाँठ। ६. व्याकरण में वह विकार जो दो अक्षरों के पास पास आने के कारण उनके मेल से होता है। ७. नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। ८. चोरी आदि करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ९. एक अवस्था के अंत और दूसरी अवस्था के आरंभ के बीच का समय। वयःसंधि १०. बीच की खाली जगह। अवकाश।
संध्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिन और रात दोनों के मिलने का समय। संधिकाल २. शाम। सायंकाल। ३. आर्यों

एक विशिष्ट उपासना जो प्रतिदिन प्रातः-काल, मध्याह्न और संध्या के समय होती है।

संन्यास-संज्ञा पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम। इसमें काम्य और नित्य आदि कर्म निष्काम भाव से किए जाते हैं।

संन्यासी-संज्ञा पुं० [सं० संन्यासिन्] संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला।

संपति-संज्ञा स्त्री० दे० "संपत्ति"।

संपत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐश्वर्य्य। वैभव। २. धन। दौलत। जायदाद।

संपद्-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्धि। पूर्णता। २. ऐश्वर्य्य। वैभव। गौरव। ३. सौभाग्य।

संपदा-संज्ञा स्त्री० [सं० संपद्] १. धन। दौलत। २. ऐश्वर्य्य। वैभव।

संपन्न-वि० [सं०] १. पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। २. सहित। युक्त। ३. धनी। दौलतमंद।

संपर्क-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संपृक्त] १. मिश्रण। मिलावट। २. लगाव। संसर्ग। वास्ता। ३. स्पर्श। सटना।

संपा-संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्युत्। बिजली।

संपात-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. संसर्ग। मेल। ३. संगम। समागम। ४. वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े या मिले।

संपाति-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गीध जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २. माली नाम राक्षस का एक पुत्र।

संपाती-संज्ञा पुं० दे० "संपाति"।

संपादक-संज्ञा पुं० [सं०] १. कोई काम संपन्न या पूरा करनेवाला। २. तैयार करनेवाला। ३. किसी समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम आदि लगाकर निकालनेवाला।

संपादकत्व-संज्ञा पुं० [सं०] संपादक करने का भाव या अवस्था।

संपादकीय-वि० [सं०] संपादक का।

संपादन-संज्ञा पुं० [सं०] १. काम को पूरा करना। २. प्रदान करना। ३. ठीक करना। दुरुस्त करना। ४. किसी पुस्तक या संवाद-पत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना।

संपादित-वि० [सं०] १. पूरा किया हुआ। २. क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ। (पत्र, पुस्तक आदि)

संपुट-संज्ञा पुं० [सं०] १. पात्र के आकार की कोई वस्तु। २. खप्पर। ठीकरा। कपाल। ३. दोना। ४ डिब्बा। ५. अंजली। ६. फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच में खाली जगह हो। कोश। ७. कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या ओषधि फूँकते हैं।

संपूर्ण-वि० [सं०] १. खूब भरा हुआ। २. सब। बिलकुल। ३. समाप्त। खतम। संज्ञा पुं० १. वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों। २. आकाश भूत।

संपूर्णतः-क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से।

संपूर्णतया-क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से।

संपूर्णता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संपूर्ण होने का भाव। पूरापन। २. समाप्ति।

सँपेरा-संज्ञा पुं० [हिं० साँप + एरा (हिं० प्रत्य०)] [स्त्री० सँपेरिन्] साँप पालनेवाला। मदारी।

सँपोला-संज्ञा पुं० [हिं० साँप] साँप का बच्चा।

संप्रज्ञात-संज्ञा पुं० [सं०] योग में वह समाधि जिसमें आत्मा अपने स्वरूप के बोध तक न पहुँची हो।

संप्रति-अव्य० [सं०] १. इस समय। अभी। आजकल। २. मुकाबले में।

संप्रदान-संज्ञा पुं० [सं०] १. दान देने की क्रिया या भाव। २. दीक्षा। मंत्रोपदेश। ३. व्याकरण में एक कारक जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है। इसका चिह्न "को" है।

संप्रदाय-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सांप्रदायिक] १. गुरुमंत्र। २. कोई विशेष धर्म-संबंधी मत। ३. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। फ़िरका। ४. परिपाटी। रीति। चाल।

संप्राप्त-वि० [सं०] [संज्ञा संप्राप्ति] १. पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. पाया हुआ। ३. घटित। जो हुआ हो।

संबंध-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। २. लगाव। संपर्क। वास्ता। ३. नाता। रिश्ता। ४. संयोग। मेल। ५. विवाह। सगाई। ६. व्याकरण में एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध सूचित होता है। जैसे—राम का घोड़ा।

संबंधातिशयोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें असंबंध में संबंध दिखाया जाता है ।

संबंधी–वि० [सं० संबंधिन्] [स्त्री० संबंधिनी] १.संबंध या लगाव रखनेवाला । २.विषयक। संज्ञा पुं० १. रिश्तेदार । २. समधी ।

संबत्–संज्ञा पुं० दे० "संवत्" ।

संबद्ध–वि० [सं०] १. बँधा हुआ । जुड़ा हुआ । २. संबंध-युक्त । ३. बंद ।

संबल–संज्ञा पु० [सं०] रास्ते का भोजन । सफर-खर्च ।

संबुद्ध–संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा संबुद्धि] १. ज्ञानी । ज्ञानवान् । २. जागा हुआ । ज्ञात । ३. बुद्ध । ४. जिन ।

संबोधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि०संबोधित,संबोध्य] १. जगाना । नींद से उठाना । २. पुकारना । ३. व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिये प्रयोग सूचित होता है । जैसे—हे राम ! ४. जताना । विदित कराना । ५. नाटक में आकाश-भाषित । ६. समझाना-बुझाना ।

संबोधना–क्रि० स० [सं०] समझाना-बुझाना ।

सँभरना–क्रि० अ० दे० "सँभलना" ।

सँभलना–क्रि० अ० [हिं० सँभालना] १. किसी बोझ आदि का थामा जा सकना । २. किसी सहारे पर रुका रह सकना । ३. होशियार होना । सावधान होना । ४. चोट या हानि से बचाव करना । ५. कार्य का भार उठाया जाना । ६. स्वस्थता प्राप्त करना । चंगा होना ।

संभव–संज्ञा पुं० [सं० संभव] १. उत्पत्ति । जन्म । २. मेल । संयोग । ३. होना । ४. हो सकने के योग्य होना ।

संभवतः–अव्य० [सं०] हो सकता है । मुमकिन है । ग़ालिबन् ।

संभवना–क्रि० स० [सं० संभव] उत्पन्न करना ।
क्रि० अ० १. उत्पन्न होना । पैदा होना । २. संभव होना । हो सकना ।

संभार–संज्ञा पुं० [सं०] १. संचय । एकत्र करना । २. तैयारी । साज सामान । ३. धन । संपत्ति । ४. पालन । पोषण ।

सँभार–संज्ञा पुं० [हिं०सँभालना] १. देख-रेख । खबरदारी । २. पालन-पोषण ।
यौ०—सार सँभार = पालन-पोषण और निरीक्षण का भार ।
३. वश में रखने का भाव । रोक । निरोध । ४. तन-बदन की सुध ।

सँभारना–क्रि० स० [सं० संभार] १. दे० "सँभालना" । २. याद करना ।

सँभाल–संज्ञा स्त्री० [सं० संभार] १. रक्षा । हिफ़ाज़त । २. पोषण का भार । ३. देख-रेख । निगरानी । ४. तन-बदन की सुध ।

सँभालना–क्रि० स० [सं० संभार] १. भार ऊपर ले सकना । २. रोके रहना । काबू में रखना । ३. गिरने न देना । थामना । ४. रक्षा करना । हिफ़ाज़त करना । ५. बुरी दशा को प्राप्त होने से बचाना । उद्धार करना । ६. पालन-पोषण करना । ७. देख-रेख करना । निगरानी करना । ८. निर्वाह करना । चलाना । ९. कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना । महेजना । १०. किसी मनोवेग को रोकना ।

सँभालू–संज्ञा पुं० [हिं०सिंधुवार] श्वेत सिंधुवार वृक्ष । मेवड़ी ।

संभावना–संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भावना] १. कल्पना । अनुमान । २. हो सकना । मुमकिन होना । ३. प्रतिष्ठा । मान । इज़्ज़त । ४. एक अलंकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी का होना निर्भर होता है ।

संभावित–वि० [सं० सम्भावित] १. कल्पित । मन में माना हुआ । २. जुटाया हुआ । ३. संभव । मुमकिन ।

संभाव्य–वि० [सं०सम्भाव्य] संभव । मुमकिन ।

संभाषण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सम्भाषणीय, संभाषित, संभाष्य] कथोपकथन । बातचीत ।

संभाषी–वि० [सं०] [स्त्री० संभाषिणी] कहनेवाला । बोलनेवाला ।

संभाष्य–वि० [सं० सम्भाष्य] जिससे बातचीत करना उचित हो ।

संभूत–वि० [सं० सम्भूत] [संज्ञा संभूति] १. एक साथ उत्पन्न । २. उत्पन्न । उद्भूत । पैदा । ३. युक्त । सहित ।

संभूय–अव्य० [सं०] साझे में ।

संभूय समुत्थान–संज्ञा पुं० [सं०] साझे का कारबार ।

संभोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुखपूर्वक व्यवहार ।

२. रति-क्रीड़ा। मैथुन। ३. संयोग शृंगार। मिलाप की दशा।

संभ्रम–संज्ञा पुं० [सं० सम्भ्रम] १. घबराहट। व्याकुलता। २. सहम। सिटपिटाना। ३. आदर। मान। गौरव।

संभ्रांत–वि० [सं० सम्भ्रान्त] १. घबराया हुआ। उद्विग्न। २. सम्मानित। प्रतिष्ठित।

संभ्राजना–क्रि० अ० [सं० सम्भ्राज्] पूर्णतः सुशोभित होना।

समत–वि० दे० "सम्मत"।

सयत–वि० [सं०] १. बद्ध। बँधा हुआ। २. दबाव में रखा हुआ। ३. दमन किया हुआ। वशीभूत। ४. बंद किया हुआ। कैद। ५. क्रमबद्ध। व्यवस्थित। ६. जिसने इंद्रियों और मन को वश में किया हो। निग्रही। ७. उचित सीमा के भीतर रोका हुआ।

संयम–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सयमी, सयमित, सयत] १. रोक। दाब। २. इंद्रियनिग्रह। चित्तवृत्ति का निरोध। ३. हानिकारक या बुरी वस्तुओं से बचने की क्रिया। परहेज। ४. बाँधना। बंधन। ५. बंद करना। मूँदना। ६. योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।

सयमनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमपुरी।

संयमी–वि० [सं० संयमिन्] १. रोक या दबाव में रखनेवाला। २. मन और इंद्रियों को वश में रखनेवाला। आत्मनिग्रही। योगी। ३. परहेजगार।

संयुक्त–वि० [सं०] १. जुड़ा हुआ। लगा हुआ। २. मिला हुआ। ३. संबद्ध। लगाव रखता हुआ। ४. सहित। साथ।

संयुक्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद का नाम।

संयुग–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। मिलाप। संयोग। २. युद्ध। लड़ाई।

सयुत–वि० [सं०] १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। २. सहित। साथ।
संज्ञा पुं० एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है।

सयोग–संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। मिलान। मिलावट। मिश्रण। २. समागम। मिलाप। ३. लगाव। संबंध। ४ सहवास। स्त्री-पुरुष का प्रसंग। ५. विवाह संबंध। ... जोड़। योग। मीजान। ७. दे... बातों का एकत्र होना। इत्तफाक

मुहा०—संयोग से = बिना पहले से निश्चित हुए। इत्तफाक से। दैववशात्।

संयोगी–संज्ञा पुं० [सं० संयोगिन्] [स्त्री० संयोगिनी] १. संयोग करनेवाला। २. वह पुरुष जो अपनी प्रिया के साथ हो।

संयोजक–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलानेवाला। २ व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों के बीच केवल जोड़ने के लिये आता है।

संयोजन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित] जोड़ने या मिलाने की क्रिया।

सँयोना–क्रि० स० दे० "सँजोना"।

संरक्षक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संरक्षिका] १. रक्षा करनेवाला। रक्षक। २. देख-रेख और पालन-पोषण करनेवाला। ३. आश्रय देनेवाला।

संरक्षण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य, संरक्षणीय] १. हानि या नाश आदि से बचाने का काम। हिफाजत। २ देख-रेख। निगरानी। ३. अधिकार। कब्ज़ा।

संरक्षित–वि० [सं०] १ हिफाजत से रखा हुआ। २. अच्छी तरह से बचाया हुआ।

संलक्ष्य–वि० [सं०] जो लखा जाय।

संलक्ष्य-क्रम व्यंग्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो। (साहित्य)

संलग्न–वि० [सं०] १. सटा हुआ। २. संबद्ध। ३. लड़ाई में गुथा हुआ।

संलाप–संज्ञा पुं० [सं०] १. वार्तालाप। बात-चीत। २. नाटक में एक प्रकार का संवाद जिसमें धीरता होती है।

संवत्–संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २. वर्ष विशेष जो किसी संख्या द्वारा सूचित किया जाता है। सन्। ३. महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई मानी जानेवाली वर्ष-गणना।

संवत्सर–संज्ञा पुं० [सं०] वर्ष। साल।

सँवर–संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] १. स्मरण। याद। २ ... २. हाल।

संवरण–... [वि० संवरणीय, संवृत] १. ... रखना। २. बंद करना। छिपाना। ... छिपाना ... ५. वि

चित्तवृत्ति को दबाना या रोकना। निग्रह। ६ पसद करना। चुनना। ७ कन्या का विवाह के लिये वर या पति चुनना।

सँवरना क्रि० अ० [स० सवर्णन] १ दुरुस्त होना। २ सजना। अलंकृत होना।
क्रि० स० [हिं० सुमिरना] स्मरण करना।

सँवरिया–वि० दे० "साँवला"।

संवर्द्धक–सज्ञा पु० [स०] बढ़ानेवाला।

संवर्द्धन–सज्ञा पु० [सं०] [वि० सवर्द्धनीय, सवर्द्धित, सवृद्ध] १ बढ़ना। २ पालना। पोसना। ३ बढाना।

संवाद–सज्ञा पु० [स०] [कर्ता० सवादक] १ बात चीत। कथोपकथन। २ खबर। हाल। समाचार। ३ प्रसंग। चर्चा। ४ मामला। मुकदमा।

संवादी–वि० [स० सवादिन्] [स्त्री०सवादिनी] १ सवाद या बात चीत करनेवाला। २ सहमत या अनुकूल होनेवाला।
सज्ञा पु० सगीत में वह स्वर जो वादी के साथ सब स्वरो के साथ मिलता और सहा यक होता है।

संवार–सज्ञा पुं० [स०] १ ढाँकना। छिपाना। २ शब्दो के उच्चारण म बाह्य प्रयत्नों में से एक जिसमें कठ का आकुंचन होता है।

सँवार–सज्ञा स्त्री० [स०स्मृति] हाल। खबर।
सज्ञा स्त्री० सँवारने की क्रिया या भाव।

सँवारना–क्रि० स० [स० सवर्णन] १ सजाना। अलंकृत करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। ३ क्रम से रखना। ४ काम ठीक करना।

संवाहन–सज्ञा पु० [स०] [वि० सवाहनीय सवाहित, सवाही, सवाह्य] १ उठाकर ले चलना। ढोना। २ ले जाना। पहुँचाना। ३ चलाना। परिचालन।

संविद्–सज्ञा स्त्री० [सं०] १ चेतना। ज्ञान-शक्ति। २ बोध। समझ। ३ बुद्धि। महत्तत्त्व। ४ संवेदन। अनुभूति। ५ मिलन का स्थान जो पहले से ठहराया हो। ६ वृत्तांत। हाल। संवाद। ७ नाम। ८ युद्ध। लड़ाई। ९ संपत्ति। जायदाद।

संविद–वि० [सं०] चेतन। चेतनायुक्त।

संवेद–सज्ञा पुं० [सं०] १ अनुभव। वेदना। २ ज्ञान। बोध।

संवेदन–सज्ञा पु० [स०] [वि० संवेदनीय, संवेदित, सवेद्य] १ अनुभव करना। सुख दुःख आदि की प्रतीति करना। २ जताना। प्रकट करना।

संवेद्य–वि० [स०] १ अनुभव करने योग्य। २ जताने योग्य। बताने लायक।

संशय–सज्ञा पु० [सं०] १ अनिश्चयात्मक ज्ञान। संदेह। शक। शुबहा। २ आशंका। डर। ३ संदेह नामक काव्यालंकार।

संशयात्मक–वि० [स०] जिसमें संदेह हो। संदिग्ध। शुबहे का।

संशयात्मा–सज्ञा पु० [स० सशयात्मन्] जो किसी बात पर विश्वास न करे।

संशयी–वि० [स० सशयिन्] १ संशय या संदेह करनेवाला। २ शक्की।

संशयोपमा–सज्ञा स्त्री० [स०] एक उपमा अलं कार जिसमें कई वस्तुओं के साथ समानता संशय के रूप म कही जाती है।

संशोधक–सज्ञा पु० [स०] १ सुधारनेवाला। ठीक करनेवाला। २ बुरी स अच्छी दशा में लानेवाला।

संशोधन–सज्ञा पु० [स०] [वि० संशोधनीय, संशोधित, सशुद्ध, संशोध्य] १ शुद्ध करना। साफ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३ चुकता करना। अदा करना। (ऋण आदि)

संशोधित–वि० [स०] १ शुद्ध किया हुआ। २ सुधारा हुआ।

संश्रय–सज्ञा पु० [स०] १ संयोग। मेल। २ संबंध। लगाव। ३ आश्रय। शरण। ४ सहारा। अवलंब। ५ मकान। घर।

संश्रयण–सज्ञा पु० [सं०] [वि० संश्रयणीय, संश्रयी, संश्रित] १ सहारा लेना। २ शरण लेना।

संश्लिष्ट–वि० [स०] १ मिला हुआ। सम्मिलित। २ आलिंगित। परिरंभित।

संश्लेषण–सज्ञा पु० [स०] [वि० संश्लेषणीय, संश्लेषित, संश्लिष्ट] १ एक में मिलाना। सटाना। २ अँटकाना। टाँगना।

संस, संसइ–सज्ञा पु० [स० संशय] आशंका।

संसरण–सज्ञा पु० [स०] [वि० संसरणीय, संसरित, संसृत] १ चलना। गमन करना। २ संसार। जगत्। ३ सड़क। रास्ता।

संसर्ग–सज्ञा पुं० [सं०] १ संबंध। लगाव।

२. मेल। मिलाप। ३. संग। साथ। ४. स्त्री-पुरुष का सहवास।

संसर्ग दोष–संज्ञा पुं० [सं०] वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे।

संसर्गी–वि० [सं० संसर्गिन्] [स्त्री० संसर्गिणी] संसर्ग या लगाव रखनेवाला।

संसा॰–संज्ञा पुं० दे० "संशय"।

संसार–संज्ञा पुं० [सं०] १. लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाता रहना। २. बार बार जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। ३. जगत्। दुनिया। सृष्टि। ४. इहलोक। मर्त्यलोक। ५. गृहस्थी।

संसार तिलक–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उत्तम चावल।

संसारी–वि० [सं० संसारिन्] [स्त्री० संसारिणी] १. *संसार-संबंधी। लौकिक।* २ संसार की माया में फँसा हुआ। लोक-*व्यवहार में कुशल।* ३. *बार बार जन्म* लेनेवाला।

संसृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जन्म पर जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। २. संसार।

संसृष्ट–वि० [सं०] १. एक में मिला-जुला। मिश्रित। २ संबद्ध। परस्पर लगा हुआ। ३ अंतर्गत। शामिल।

संसृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक साथ उत्पत्ति या आविर्भाव। २. मिलावट। मिश्रण। ३ संबंध। लगाव। ४. हेलमेल। घनिष्ठता। ५. इकट्ठा करना। संग्रह। ६ दो *या अधिक काव्यालंकारों का ऐसा* मेल जिसमें सब अलग अलग हों।

संस्करण–संज्ञा पुं० [सं०] १. ठीक करना। दुरुस्त करना। २. शुद्ध करना। सुधारना। ३ द्विजातियों के लिये विहित संस्कार करना। ४ पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति। (आधुनिक)

संस्कर्ता–संज्ञा पुं० [सं०] संस्कार करनेवाला।

संस्कार–संज्ञा पुं० [सं०] १. ठीक करना। दुरुस्ती। सुधार। २. सजाना। ३ साफ़ करना। परिष्कार। ४. शिक्षा, उपदेश, संगत आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। ५. पिछले जन्म की बातों का असर जो आत्मा के साथ लगा रहता है। ६. धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। ७ वे १६ कृत्य जो जन्म से लेकर मरण काल तक द्विजातियों के संबंध में आवश्यक होते हैं। मृतक की क्रिया। ९. इंद्रियों के विषयों के ग्रहण से मन में उत्पन्न प्रभाव।

संस्कारहीन–वि० [सं०] जिसका संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कृत–वि० [सं०] १. संस्कार किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २. परिमार्जित। परिष्कृत। ३. साफ़ किया हुआ। ४. सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। ५. सँवारा हुआ। सजाया हुआ। ६. जिसका उपनयन आदि संस्कार हुआ हो।

संज्ञा स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा जिसमें उनके धर्मग्रंथ आदि हैं। देववाणी।

संस्कृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुद्धि। सफ़ाई। २. संस्कार। सुधार। ३. सजावट। ४ *सभ्यता। शाइस्तगी।* ५. २४ *वर्णों के वृत्तों* की संज्ञा।

संस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ठहरने की क्रिया या भाव। स्थिति। २. व्यवस्था। विधि। मर्यादा। ३. जत्था। गरोह। ४. संघटित समुदाय। समाज। मंडल। सभा।

संस्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. ठहराव। स्थिति। २. खड़ा रहना। डटा रहना। ३. बैठाना। स्थापन। ४. अस्तित्व। जीवन। ५. डेरा। घर। ६. बस्ती। जनपद। सार्वजनिक स्थान। सर्वसाधारण के इकट्ठे होने की जगह। ७. समष्टि। योग। जोड़। ८. नाश। मृत्यु।

संस्थापक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्थापिका] संस्थापन करनेवाला।

संस्थापन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य] १. खड़ा करना। उठाना। (भवन आदि) २. जमाना। बैठाना। ३. कोई नई बात चलाना।

संस्मरण–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्मरणीय, संस्मृत] १. पूर्ण स्मरण। खूब याद। २. अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना।

संहत–वि० [सं०] १. खूब मिला हुआ। जुड़ा या सटा हुआ। २. संयुक्त। सहित। ३. कड़ा। सख़्त। ४. गठा हुआ। घना। ५. मज़बूत। ६. एकत्र। इकट्ठा।

संहति–संज्ञा स्त्री० [illegible] मिलाव। मेल। २. जुटाव। [illegible] राशि। ढेर। समूह। झुं[illegible]। घनत्व। [illegible]ध। जोड़[illegible]

संहरना–क्रि० अ० [सं० संहार] नष्ट होना। संहार होना।
क्रि० स० संहार करना।

संहार–संज्ञा पुं० [सं०] १. इकट्ठा करना। बटोरना। २. समेटकर बाँधना। गूँथना। (केशों का) ३. छोड़े हुए बाण को फिर वापस लेना। ४. नाश। ध्वंस। ५. समाप्ति। अंत। ६. निवारण। परिहार।

संहारक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संहारिका] संहार करनेवाला। नाशक।

संहार-काल–संज्ञा पुं० [सं०] प्रलय-काल।

संहारनाः–क्रि० स० [सं० संहरण] १. मार डालना। २. नाश करना। ध्वंस करना।

संहित–वि० [सं०] १. एकत्र किया हुआ। २. मिलाया हुआ। ३. जुड़ा हुआ।

संहिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मेल। मिलावट। २. व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का मिलकर एक होना। संधि। ३. वह ग्रंथ जिसमें पद, पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। जैसे—धर्म-संहिताएँ या स्मृतियाँ।

स–संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर। २ शिव। महादेव। ३ साँप। पक्षी। चिड़िया। ४ वायु। हवा। ५ जीवात्मा। ६. चंद्रमा। ७. ज्ञान। ८. संगीत में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर। ९ छंदःशास्त्र में "सगण" शब्द का संक्षिप्त रूप।
उप० एक उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दों के आरंभ में, कुछ विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करने के लिये, होता है। जैसे—(क) सजीव= सह+जीव। (ख) सगोत्र। (ग) सपूत।

सइः–अव्य० [सं० सह] से। साथ।
ः अव्य० [प्रा० सुंतो] एक विभक्ति जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

सइयोः†–संज्ञा स्त्री० [सं०सखी] सखी।

सई–संज्ञा स्त्री० [?] वृद्धि। बढ़ती।

सउँः–अव्य० दे० "सों"।

सक†–संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति" या "सकत"।
संज्ञा पुं० [हिं० साका] साका। धाक।

सकट–संज्ञा पुं० [सं० शकट] गाड़ी। छकड़ा।

सकत†–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. बल। शक्ति। सामर्थ्य। २. वैभव। संपत्ति।
क्रि० वि० जहाँ तक हो सके। भरसक।

सकता–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. शक्ति। ताकत। बल। २. सामर्थ्य।
संज्ञा पुं० [अ० सकतः] १. बेहोशी की बीमारी। २. विराम। यति।
मुहा०—सकता पड़ना=छंद में यति-भंग दोष होना।

सकती–संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।

सकना–क्रि० अ० [सं० शक् या शक्य] कोई काम करने में समर्थ होना। करने योग्य होना।

सकपकाना–क्रि० अ० [अनु० सक-पक] १. आश्चर्ययुक्त होना। २. हिचकना। ३. लज्जित होना। ४. प्रेम, लज्जा या शंका के कारण उद्भूत एक प्रकार की चेष्टा। ५. हिलना-डोलना।

सकरना–क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १. सकारा जाना। मंजूर होना। २. कबूला जाना।

सकरपाला–संज्ञा पुं० दे० "शकरपारा"।

सकर्मक क्रिया–संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिसका कार्य्य उसके कर्म पर समाप्त हो। जैसे—खाना, देना, लेना।

सकल–वि० [सं०] सब। समस्त। कुल।
संज्ञा पुं० निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति।

सकलात–संज्ञा पुं० [?] १. ओढ़ने की रजाई। दुलाई। २. सौगात। उपहार।

सकसकाना, सकसानाः†–क्रि० अ० [अनु०] डर के मारे काँपना।

सकानाः†–क्रि० अ० [सं० शंका] १. शंका करना। संदेह करना। २. भय के कारण संकोच करना। हिचकना। ३. दुःखी होना।
क्रि० स० "सकना" का प्रेरणार्थक। (क्व०)

सकाम–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २. वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। ३ काम-वासना-युक्त व्यक्ति। कामी। ४. वह जो कोई कार्य फल मिलने की इच्छा से करे।

सकारना–क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. महाजनों का हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले उस पर हस्ताक्षर करना।

सकारे–क्रि० वि० [सं० सकाल] सबेरे।

सकिलना†–क्रि० अ० [हिं०फिसलना या अनु०] १. फिसलना। सरकना। २. सिमटना।

सकुचः†–संज्ञा स्त्री० [सं० संकोच] लाज। शर्म।

सकुचना

सकुचना-क्रि० अ० [सं० संकोच] १. लज्जा करना। शरमाना। २. (फूलों का) संकुचित होना। बंद होना।

सकुचाई-संज्ञा स्त्री० [सं० संकोच] लज्जा।

सकुचाना-क्रि० अ० [सं० संकोच] संकोच करना।

क्रि० स० १. सिकोड़ना। २. किसी को संकुचित या लज्जित करना।

सकुची-संज्ञा स्त्री० [सं० शकुल मत्स्य] कछुए के आकार की एक प्रकार की मछली।

सकुचौहाँ-वि० [हिं० संकोच] संकोच करनेवाला। लजीला।

सकुन०-संज्ञा पुं० [सं०शकुन] पक्षी। चिड़िया। संज्ञा पुं० दे० "शकुन"।

सकुनी०†-संज्ञा स्त्री० [सं० शकुंत] चिड़िया।

सकुपना०-क्रि० अ० दे० "सकोपना"।

सकूनत-संज्ञा स्त्री० [अ०] निवास-स्थान।

सकृत्-अव्य० [सं०] १. एक बार। एक मरतबा। २. सदा। ३. साथ। सह।

सकेत०†-संज्ञा पुं० [सं० संकेत] १. संकेत। इशारा। २. प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान।

वि० [सं० संकीर्ण] तंग। संकुचित।

संज्ञा पुं० विपत्ति। दुःख। कष्ट।

सकेतना०†-क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

सकेलना†-क्रि० स० [सं० संकल ?] एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना।

सकेला-संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] एक प्रकार की तलवार।

सकोच-संज्ञा पुं० दे० "संकोच"।

सकोचना-क्रि० [illegible] सिकोड़ [illegible] [सं० [illegible]]

सकोपना० [illegible] करना। [illegible]

सकोरा-संज्ञा [illegible] पुं० [illegible]

सखरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० निखरा या निखरी] कच्ची रसोई। जैसे—दाल भात।

सखा-संज्ञा पुं० [सं०सखिन्] १. साथी। संगी। २. मित्र। दोस्त। ३. सहयोगी। सहचर। ४. साहित्य में 'नायक' का सहचर। ये चार प्रकार के होते हैं—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

सखावत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दानशीलता। २. उदारता। फैयाज़ी।

सखी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सहेली। सहचरी। २. संगिनी। ३. साहित्य में वह स्त्री जो नायिका के साथ रहती हो और जिससे वह अपनी कोई बात न छिपावे। ४. १४ मात्राओं का एक छंद।

वि० [अ० सखी] दाता। दानी। दानशील।

सखी भाव-संज्ञा पुं० [सं०] भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट देवता की पत्नी या सखी मानकर उपासना करते हैं।

सखुआ-संज्ञा पुं० दे० "शाल"। (वृक्ष)

सखुन-संज्ञा पुं० [फा०सखुन] १. बात चीत। वार्तालाप। २. कविता। काव्य। ३. कौल। वचन। ४. कथन। उक्ति।

सखुन-तकिया-संज्ञा पुं० [फा०] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों के मुँह से प्रायः निकला करता है। तकिया कलाम।

सख्य-संज्ञा पुं० [सं०] १ सखा का भाव। सखापन। २. मित्रता। दोस्ती। ३. वैष्णव मतानुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमें ईश्वरावतार को भक्त अपना [illegible] मानता है।

सख्यता-संज्ञा स्त्री० दे० "सख्य"।

सगण-संज्ञा पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं। इसका रूप ॥ऽ है।

सगर–संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो बड़े धर्मात्मा तथा प्रजा-रंजक थे। इन्हें ६० हजार पुत्र हुए थे। राजा भगीरथ इन्हीं के वंश के थे।
सगरा†–वि० [सं० सकल] [स्त्री० सगरी] सब। तमाम। सकल। कुल।
सगल‡†–वि० दे० "सकल"।
सगा–वि० [सं० स्वक] [स्त्री० सगी] १. एक माता से उत्पन्न। सहोदर। २ जो संबंध में अपने ही कुल का हो।
सगाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सगा + आई (प्रत्य०)] १. विवाह संबंधी निश्चय। मँगनी। २. स्त्री पुरुष का वह संबंध जो छोटी जातियों में विवाह के तुल्य माना जाता है। ३ संबंध। नाता। रिश्ता।
सगापन–संज्ञा पुं० [हिं० सगा + पन] सगा होने का भाव। संबंध की आत्मीयता।
सगुण–संज्ञा पुं० [सं०] १. परमात्मा का वह रूप जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त है। साकार ब्रह्म। २ वह संप्रदाय जिसमें ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारों की पूजा होती है।
सगुन–संज्ञा पुं० १. दे० "शकुन"। २. दे० "सगुण"।
सगुनाना–क्रि० स० [सं० शकुन + आना (प्रत्य०)] १. शकुन बतलाना। २. शकुन निकालना या देखना।
सगुनिया–संज्ञा पुं० [सं० शकुन + इया (प्र०)] शकुन विचारने और बतलानेवाला।
सगुनौती–संज्ञा स्त्री० [हिं० सगुन + औती (प्रत्य०)] शकुन विचारने की क्रिया।
सगोती–संज्ञा पुं० [सं० सगोत्र] १. एक गोत्र के लोग। सगोत्र। २. भाई बंधु।
सगोत्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गोत्र के लोग। सजातीय। २. कुल। जाति।
सघन–वि० [सं०] [भाव० सघनता] १. घना। गझिन। अविरल। गझान। २. ठोस। ठस।
सच– वि० [सं० सत्य] जो यथार्थ हो। सत्य। वास्तविक। ठीक। दे० "सत्य"।
सचना‡†–क्रि० स० [सं० संचयन] १. संचय करना। एकत्र करना। २. पूरा करना। क्रि० अ०, स० दे० "सजना"।
सचमुच–अव्य० [हिं० सच + मुच (अनु०)] १. यथार्थतः। ठीक ठीक। वास्तव में। २. अवश्य। निश्चय।
सचरना‡–क्रि० अ० [सं० संचरण] १. सचरित होना। फैलना। २ बहुत प्रचलित होना। ३ संचार करना। प्रवेश करना।
सचराचर–संज्ञा पुं० [सं०] संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ।
सचाई–संज्ञा स्त्री० [सं० सत्य, प्रा० सच + आई (प्रत्य०)] १. सत्यता। सचापन। २ वास्तविकता। यथार्थता।
सचान–संज्ञा पुं० [सं० सचान = श्येन] श्येन पक्षी। बाज।
सचारना‡†–क्रि० स० [सं० संचारण] सचरना का सकर्मक रूप। फैलाना।
सचिंत–वि० [सं०] जिसे चिंता हो।
सचिक्कण–वि० [सं०] अत्यंत चिकना।
सचिव–संज्ञा पुं० [सं०] १. मित्र। दोस्त। २ मंत्री। वज़ीर। ३. सहायक।
सची–संज्ञा स्त्री० दे० "शची"।
सचु †–संज्ञा पुं० [?] १. सुख। आनंद। २ प्रसन्नता। ख़ुशी।
सचेत–वि० दे० "सचेतन"।
सचेतन–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसमें चेतना हो। २. वह जो जड़ न हो। चेतन। वि० १. चेतनायुक्त। २. सावधान। होशियार। ३. समझदार। चतुर।
सचेष्ट–वि० [सं०] १ जिसमें चेष्टा हो। २ जो चेष्टा करे।
सच्चा–वि० [सं० सत्य] [स्त्री० सच्ची] १. सच बोलनेवाला। सत्यवादी। २ यथार्थ। ठीक। वास्तविक। ३. असली। विशुद्ध। ४. बिलकुल ठीक और पूरा।
सच्चाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा + आई (प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सचापन। सत्यता।
सच्चापन–संज्ञा पुं० दे० "सचाई"।
सच्चिक्कन‡–वि० दे० "सचिक्कण"।
सच्चिदानंद–संज्ञा पुं० [सं०] (सत्, चित् और आनंद से युक्त) परमात्मा। ईश्वर।
सच्छत –वि० [सं० सक्षत] घायल। जख़्मी।
सच्छंद‡–वि० दे० "स्वच्छंद"।
सच्छी‡–संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "साक्षी"।
सज–संज्ञा स्त्री० [हिं० सजावट] १. सजने की क्रिया या भाव। २. डौल। शकल। ३ शोभा। सौंदर्य। सजावट। संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

सजग–वि० [सं० जागरण] सावधान। सचेत। सतर्क। होशियार।
सजदार–वि० [हिं० सज+फा०दार (प्रत्य०)] जिसकी श्राकृति अच्छी हो। सुंदर।
सज धज–सज्ञा स्त्री० [हिं० सज+धज अनु०] बनाव-सिंगार। सजावट।
सजन–सज्ञा पु० [सं० सद्+जन=सज्जन] [स्त्री० सजनी] १. भला आदमी। सज्जन। शरीफ़। २.पति। भर्ता। ३.प्रियतम। यार।
सजना–क्रि० स० [सं० सज्जा] १. सज्जित करना। अलंकृत करना। शृंगार करना। २. शोभा देना। भला जान पड़ना। क्रि० अ० सुसज्जित होना।
सजल–वि० [सं०] १. जल से युक्त या पूर्ण। २. आँसुओं से पूर्ण (आँख)।
सजवल–सज्ञा पु० [हिं० सजना] तैयारी।
सजवाई–सज्ञा स्त्री० [हिं०सजना+वाई(प्रत्य०)] सजवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
सजवाना–क्रि० स० [हिं० सजाना का प्रे०] किसी के द्वारा सुसज्जित कराना।
सज़ा–सज्ञा स्त्री० [फा०] १. दंड। २. जेल में रखने का दंड।
सजाइ*†–सज्ञा स्त्री० [फा० सजा] सजा। दंड।
सजाई–सज्ञा स्त्री० [फा० सजाना] सजाने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
सजातीय–वि० [सं०] एक जाति या गोत्र का।
सजान*–सज्ञा पु० [सं० सज्ञान] १ जानकार। जाननेवाला। २ चतुर। होशियार।
सजाना–क्रि० स० [सं० सज्जा] १. वस्तुओं को यथास्थान रखना। तरतीब लगाना। २. अलंकृत करना। शृंगार करना।
सजाय*†–सज्ञा स्त्री० दे० "सजा"।
सज़ायाफ़्ता, सज़ायाब–सज्ञा पु० [फा०] वह जो क़ैद की सजा भोग चुका हो।
सजाव–सज्ञा पु० [हिं० सजाना ?] एक प्रकार का दही।
सजावट–सज्ञा स्त्री० [हिं० सजाना+आवट (प्रत्य०)] सज्जित होने का भाव या धर्म।
सजावन*†–सज्ञा पु० [हिं० सजाना] सजाने

सजीला–वि० [हिं० सजना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सजीली] १. सजधज के साथ रहनेवाला। छैला। २. सुंदर। मनोहर।
सजीव–वि० [सं०] १. जिसमें प्राण हों। २. फुरतीला। तेज। ३ ओजयुक्त।
सजीवन–सज्ञा पु० दे० "संजीवनी"।
सजीवन मूल*–सज्ञा पु० दे० "संजीवनी"।
सजीवनी मंत्र–सज्ञा पु० [सं० सजीवन+मंत्र] वह कल्पित मंत्र जिसके संबंध में लोगों का विश्वास है कि मरे हुए को जिलाने की शक्ति रखता है।
सजुग*†–वि० [हिं० सजग] सचेत।
सजुता–सज्ञा स्त्री० दे० संयुता। (छंद)
सजूरी–सज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की मिठाई।
सजोना†–क्रि० स० दे० "सजाना"।
सज्ज*–सज्ञा पु० "साज"।
सज्जन–सज्ञा पु० [सं० सद्+जन] १. भला आदमी। शरीफ़। २. प्रिय मनुष्य। प्रियतम। ३. सजाने की क्रिया या भाव।
सज्जनता–सज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जन होने का भाव। भलमंसाहत। सौजन्य।
सज्जनताई*–सज्ञा स्त्री० दे० "सज्जनता"।
सज्जा–सज्ञा स्त्री० [सं०] १. सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २. वेष भूषा। सज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] १. सोने की चारपाई। शय्या। २. दे० "शय्यादान"।
सज्जित–वि० [सं०] १. सजा हुआ। अलंकृत। २. आवश्यक वस्तुओं से युक्त।
सज्जी–सज्ञा स्त्री० [सं० सर्जिका] भूरे रंग का एक प्रसिद्ध क्षार।
सज्जीखार–सज्ञा पु० दे० "सज्जी"।
सज्जुता–सज्ञा स्त्री० दे० "संयुता" (छंद)।
सज्ञान–वि० [सं०] १. ज्ञान-युक्त। २. चतुर। बुद्धिमान्। ३. सावधान।
सटक–सज्ञा स्त्री० [अनु० सट से] १ सटकने की क्रिया। धीरे से चंपत होना। २. तंबाकू पीने का लंबा [illegible] नैचा। ३. पतली लचनेवाली

काने की क्रिया या भाव। २. गौ आदि को हाँकने की क्रिया। हटकार।
सटकारना-क्रि० स० [अनु० सट से] छड़ी या कोड़े से मारना। सट सट मारना।
सटकारा-वि० [अनु०] चिकना और लंबा। (बाल)
सटकारी-सज्ञा स्त्री० [अनु०] पतली छड़ी।
सटना-क्रि० अ० [स० स+स्था] १. दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। २. चिपकना। ३. मार-पीट होना।
सटपट-सज्ञा स्त्री० [अनु०] १. सिटपिटाने की क्रिया। चकपकाहट। २. शील। सँकोच। ३. दुविधा। असमंजस।
सटपटाना-क्रि० अ० दे० "सिटपिटाना"।
सटर पटर-वि० [अनु०] छोटा मोटा। तुच्छ। मामूली।
सज्ञा स्त्री० बखेड़े का या तुच्छ काम।
सट सट-क्रि० वि० [अनु०] १. सट शब्द के साथ। सटासट। २. शीघ्र। जल्दी।
सटाना-क्रि० स० [सं० स+स्था या स+ निष्ट] १. दो चीजों के पार्श्वों को आपस में मिलाना। मिलाना। २. लाठी डंडे आदि से लड़ाई करना। (बदमाश)
सटीक-वि० [सं०] जिसमें मूल के साथ टीका भी हो। व्याख्या सहित।
वि० [हिं० ठीक] बिलकुल ठीक।
सट्टक-सज्ञा पुं० [स०] प्राकृत भाषा में प्रणीत छोटा रूपक।
सट्टा-सज्ञा पु० [देश०] इकरारनामा।
सट्टा बट्टा-सज्ञा पु० [हिं० सटना + अनु० बट्टा] १. मेल-मिलाप। हेल-मेल। २. धूर्तता-पूर्ण युक्ति। चालबाज़ी।
सट्टी-संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट या हट्टी] वह बाज़ार जिसमें एक ही मेल की चीज़ें लोग लाकर बेचते हों। हाट।
सठ-सज्ञा पु० दे० "शठ"।
सठता-सज्ञा स्त्री० [सं० शठ] १. शठ होने का भाव। शठता। २. मूर्खता। बेवकूफ़ी।
सठियाना-क्रि० अ० [हिं० साठ+इयाना (प्रत्य०)] १. साठ बरस का होना। २. बुड्ढा होना। वृद्धावस्था के कारण बुद्धि का कम हो जाना।
सड़क-संज्ञा स्त्री० [अ० शरक़] आने-जाने का चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। राजपथ।
सड़ना-क्रि० अ० [स० सरण] १. किसी पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसके अंग अलग हो जायँ और उसमें दुर्गंध आने लगे। २. किसी पदार्थ में खमीर उठना या आना। ३. दुर्दशा में पड़ा रहना।
सड़ाना-क्रि० स० [हिं० सड़ना या स०] किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।
सड़ायँध-सज्ञा स्त्री० [हिं० सड़ना + गंध] सड़ी हुई चीज़ की गंध।
सड़ासड़-अव्य० [अनु० सड़ से] सड़ शब्द के साथ। जिसमें सड़ शब्द हो।
सड़ियल-वि० [हिं० सड़ना + इयल (प्रत्य०)] १. सड़ा हुआ। गला हुआ। २. रद्दी। ख़राब। ३. नीच। तुच्छ।
सत-सज्ञा पुं० [स०] मद्य।
वि० १. सत्य। २. साधु। सज्जन। ३. धीर। ४. नित्य। स्थायी। ५. विद्वान्। पंडित। ६. शुद्ध। पवित्र। ७. श्रेष्ठ।
सत-वि० दे० "सत्"।
सज्ञा पुं० [स० सत्] सम्यतापूर्ण धर्म।
मुहा०—सत पर चढ़ना = पति के मृत शरीर के साथ सती होना। सत पर रहना = पतिव्रता रहना।
वि० दे० "शत"।
सज्ञा पुं० [स० सत्त्व] १. मूल तत्त्व। सार भाग। २. जीवनी शक्ति। ताक़त।
वि० "सात" (संख्या) का संक्षिप्त रूप। (यौगिक)
सतकार-संज्ञा पुं० दे० "सत्कार"।
सतकारना-क्रि० स० [स० सत्कार+ना (प्रत्य०)] सत्कार करना। सम्मान करना।
सतगुरु-सज्ञा पु० [हिं० सत = सच्चा + गुरु] १. अच्छा गुरु। २. परमात्मा। परमेश्वर।
सतजुग-सज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।
सतत-अव्य० [स०] सदा। हमेशा।
सतनजा-सज्ञा पु० [हिं० सात + अनाज] सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल।
सतपुतिया-सज्ञा स्त्री० [स० सप्तपुत्रिका] एक प्रकार की तरोई।
सतफेरा-सज्ञा पुं० [हिं० सात + फेरा] विवाह के समय का सप्तपदी कर्म।
सतमासा-सज्ञा पुं० [हिं० सात + मास] वह बच्चा जो गर्भ के सातवें महीने उत्पन्न हो।
सतयुग-संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।

सतर–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लकीर। रेखा। २. पंक्ति। अवली। कतार।
वि० १. टेढ़ा। वक्र। २. कुपित। क्रुद्ध।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मनुष्य की गुह्य इंद्रिय। २. ओट। आड़ परदा

सतराना–क्रि० अ० [हिं० सतर या सं० संतर्जन] १. क्रोध करना। २. चिढ़ना।

सतरौहाँ†–वि० [हिं० सतराना] १ कुपित। क्रोधयुक्त। २. कोपसूचक।

सतर्क–वि० [सं०] [भाव० सतर्कता] १. तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट। २. सावधान।

सतर्पना–क्रि० स० [सं० संतर्पण] अच्छी तरह संतुष्ट या तृप्त करना।

सतलज–संज्ञा स्त्री० [सं० शतद्रु] पंजाब की पाँच नदियों में से एक। शतद्रु नदी।

सतवंती–वि० स्त्री० [हिं० सत्य+वंती (प्रत्य०)] सतवाली। सती। पतिव्रता।

सतसंग–संज्ञा पु० दे० "सत्संग"।

सतसई–संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तशती] वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सप्तशती।

सतह–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी वस्तु का ऊपरी भाग। तल। २. वह विस्तार जिसमें केवल लंबाई और चौड़ाई हो।

सतांग–संज्ञा पु० [सं० शतांग] रथ। यान।

सतानंद–संज्ञा पु० [सं०] गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सताना–क्रि० स० [सं० संतापन] १. संताप देना। दुःख देना। २ हैरान करना।

सतालू–संज्ञा पु० [सं० सप्तालुक] शफ़तालू। आड़ू।

सतावनाॐ†–क्रि० स० दे० "सताना"।

सतावर–संज्ञा स्त्री० [सं० शतावरी] एक बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते है। शतमूली।

सतिॐ–संज्ञा पु० दे० "सत्य"।

सतिवन–संज्ञा पुं० [सं० सप्तपर्ण] छतिवन।

सती–वि० स्त्री० [सं०] साध्वी। पतिव्रता। संज्ञा स्त्री० १. दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को ब्याही थी। २. पतिव्रता स्त्री। ३. वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले। ४ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है।

सतीत्व–संज्ञा पुं० [सं०] सती होने का भाव। पातिव्रत्य।

सतीत्व-हरण–संज्ञा पु० [सं०] पर-स्त्री के साथ बलात्कार। सतीत्व बिगाड़ना।

सतीपन–संज्ञा पु० दे० "सतीत्व"।

सतुआ†–संज्ञा पु० दे० "सत्तू"।

सतुआ संक्रांति–संज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ+ संक्रांति] मेष की संक्रांति।

सतून–संज्ञा पु० [फा०] स्तंभ। खंभा।

सतूना–संज्ञा पुं० [फा० सतून] बाज़ की एक प्रकार की झपट।

सतोखना †–क्रि० स० [सं० संतोषण] १. संतुष्ट करना। २. ढारस देना।

सतोगुण–संज्ञा पु० दे० "सत्त्व गुण"।

सतोगुणी–संज्ञा पु० [हिं० सतोगुण+ई (प्रत्य०)] सत्त्वगुणवाला। सात्त्विक।

सत्कर्म–संज्ञा पु० [सं० सत्कर्मन्] १ अच्छा काम। २. धर्म का काम। पुण्य।

सत्कार–संज्ञा पु० [सं०] १. आदर। सम्मान। खातिरदारी। २. आतिथ्य।

सत्कार्य्य–वि० [सं०] सत्कार करने योग्य। संज्ञा पु० उत्तम कार्य्य। अच्छा काम।

सत्कीर्त्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] यश। नेकनामी।

सत्कुल–संज्ञा पु० [सं०] उत्तम कुल। अच्छा या बड़ा खानदान।

सत्त–संज्ञा पु० [सं० सत्त्व] १. सार भाग। असली जुज़। २. तत्त्व। काम की वस्तु। †ॐ संज्ञा पु० [सं० सत्य] १. सत्य। सच बात। २. सतीत्व। पातिव्रत्य।

सत्ता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। २. शक्ति। दम। ३ अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत। संज्ञा पुं० [हिं० सात] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।

सत्ताधारी–संज्ञा पु० [सं० सत्ताधारिन्] अधिकारी। अफ़सर। हाकिम।

सत्ताशास्त्र–संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।

सत्तू–संज्ञा पु० [सं० सक्तुक] भुने हुए जौ और चने का चूर्ण। सतुआ।

सत्पथ–संज्ञा पु० [सं०] १. उत्तम मार्ग। २. सदाचार। अच्छी चाल।

सत्पात्र–संज्ञा पु० [सं०] १. दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २. श्रेष्ठ और सदाचारी

सत्पुरुष–[illegible] [सं०] भला आदमी।

सत्य-वि० [सं०] १ यथार्थ। ठीक। वास्तविक। सही। २ असल।
संज्ञा पु० १. ठीक बात। यथार्थ तत्त्व। २. उचित पक्ष। धर्म की बात। ३. वह वस्तु जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो। (वेदांत) ४. ऊपर के सात लोकों में से सब से ऊपर का लोक। ५ विष्णु। ६. चार युगों में से पहला युग। कृतयुग।
सत्यकाम-वि० [सं०] सत्य का प्रेमी।
सत्यतः-अव्य० [सं०] वास्तव में। सचमुच।
सत्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्य होने का भाव। वास्तविकता। सचाई।
सत्यनारायण-संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।
सत्यभामा-संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक।
सत्ययुग-संज्ञा पु० [सं०] चार युगों में से पहला जो सबसे उत्तम माना जाता है।
सत्यवती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मत्स्यगंधा नामक धीवर कन्या जिसके गर्भ से कृष्ण द्वैपायन या व्यास की उत्पत्ति हुई थी। २ गाधि की पुत्री और ऋचीक की पत्नी।
सत्यवादी-वि० [सं० सत्यवादिन्] [स्त्री० सत्यवादिनी] १ सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २ वचन को पूरा करनेवाला।
सत्यवान-संज्ञा पु० [सं० सत्यवत्] शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य की कथा प्रसिद्ध है।
सत्यव्रत-संज्ञा पु० [सं०] सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम।
सत्यसंध-वि० [सं०] [स्त्री० सत्यसंधा] सत्यप्रतिज्ञ। वचन को पूरा करनेवाला।
संज्ञा पु० १. रामचंद्र। २ जनमेजय।
सत्याग्रह-संज्ञा पु० [सं०] किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिये शांतिपूर्वक निरंतर हठ करना।
सत्यानास-संज्ञा पु० [सं० सत्ता+नाश] सर्वनाश। मटियामेट। ध्वंस। बरबादी।
सत्यानासी-वि० [हिं० सत्यानास] सत्यानास करनेवाला। चौपट करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० एक कँटीला पौधा। भड़भाँड़।
सत्र-संज्ञा पु० [सं०] १ यज्ञ। २. एक सोमयाग। ३ घर। मकान। ४ धन। ५. वह स्थान जहाँ असहायों को भोजन बाँटा जाता है। क्षेत्र। सदावर्त।
सत्रुहन†-संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।

सत्व-संज्ञा पु० [सं०] १ सत्ता। अस्तित्व। हस्ती। २ सार। तत्त्व। ३ चित्त की प्रवृत्ति। ४ आत्म-तत्त्व। चैतन्य। चित्तत्व। ५. प्राण। जीव। तत्त्व।
सत्वगुण-संज्ञा पु० [सं०] अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण।
सत्वर-अव्य० [सं०] शीघ्र। जल्द।
सत्संग-संज्ञा पु० [सं०] साधुओं या सज्जनों के साथ उठना-बैठना। भली संगत।
सत्संगति-संज्ञा स्त्री० दे० "सत्संग"।
सत्संगी-वि० [सं० सत्संगिन्] [स्त्री० सत्संगिनी] १ अच्छी सोहबत में रहनेवाला। २. मेल जोल रखनेवाला।
सथर†-संज्ञा स्त्री० [सं० स्थल] भूमि।
सथिया-संज्ञा पु० [सं० स्वस्तिक] १. एक प्रकार का मंगल-सूचक या सिद्धिदायक चिह्न। स्वस्तिक चिह्न 卐। २. फोड़े आदि की चीरफाड़ करनेवाला। जर्राह।
सद्-संज्ञा स्त्री० [सं० सत्व] प्रकृति। आदत।
सदई-अव्य० [सं० सदैव] सदा।
सदका-संज्ञा पु० [अ० सदक़ा] १. खैरात। दान। २ निछावर। उतारा।
सदन-संज्ञा पु० [सं०] १ घर। मकान। २ विराम। स्थिरता। ३ एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त कसाई।
सदमा-संज्ञा पु० [अ० सदमः] १ आघात। धक्का। चोट। २ रंज। दुःख।
सदय-वि० [सं०] दयायुक्त। दयालु।
सदर-वि० [अ०] प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पु० वह स्थान जहाँ कोई बड़ा हाकिम रहता हो। केंद्र स्थल।
सदर आला-संज्ञा पु० [अ०] अदालत या वह हाकिम जो जज के नीचे का हो। छोटा जज।
सदरी-संज्ञा स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।
सदर्थना†-क्रि० स० [सं० सदर्थ या समर्थन] समर्थन करना। पुष्टि करना।
सदसद्विवेक-संज्ञा पुं० [सं०] अच्छे और बुरे की पहचान। भले बुरे का ज्ञान।
सदस्य-संज्ञा पु० [सं०] १ यज्ञ करनेवाला। २ सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। सभासद। मेंबर।
सदा-अव्य० [सं०] १. नित्य। हमेशा। सर्वदा। २ निरंतर। लगातार।

सतर-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लकीर। रेखा। २ पंक्ति। अवली। कतार।
वि० १ टेढ़ा। वक्र। २ कुपित। क्रुद्ध।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मनुष्य की गुह्य इंद्रिय। २ ओट। आड़ परदा
सतराना-क्रि० अ० [हिं० सतर या स० सतर्जन] १ क्रोध करना। २ चिढ़ना।
सतरौहाँ†-वि० [हिं० सतराना] १ कुपित। क्रोधयुक्त। २ कोपसूचक।
सतर्क-वि० [स०] [भाव० सतर्कता] १ तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट। २ सावधान।
सतर्पना-क्रि० स० [स० सतर्पण] अच्छी तरह संतुष्ट या तृप्त करना।
सतलज-संज्ञा स्त्री० [सं० शतद्रु] पंजाब की पाँच नदियों में से एक। शतद्रु नदी।
सतवती-वि० स्त्री० [हिं० सत्य + वंती (प्रत्य०)] सतवाली। सती। पतिव्रता।
सतसंग-संज्ञा पु० दे० "सत्संग"।
सतसई-संज्ञा स्त्री० [स० सप्तशती] वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सप्तशती।
सतह-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु का ऊपरी भाग। तल। २ वह विस्तार जिसमें केवल लंबाई और चौड़ाई हो।
सतांग-संज्ञा पुं० [स० शतांग] रथ। यान।
सतानंद-संज्ञा पु० [स०] गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।
सताना-क्रि० स० [स० संतापन] १ संताप देना। दुःख देना। २ हैरान करना।
सतालू-संज्ञा पुं० [स० सप्तालुक] शफ़तालू। आड़ू।
सतावना‡†-क्रि० स० दे० "सताना"।
सतावर-संज्ञा स्त्री० [स० शतावरी] एक बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली।
सति०-संज्ञा पु० दे० "सत्य"।
सतिवन-संज्ञा पु० [सं० सप्तपर्ण] छतिवन।
सती-वि० स्त्री० [स०] साध्वी। पतिव्रता।
संज्ञा स्त्री० १ दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को ब्याही थी। २ पतिव्रता स्त्री। ३ वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले। ४ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है।
सतीत्व-संज्ञा पुं० [स०] सती होने का भाव। पातिव्रत्य।

सतीत्व हरण-संज्ञा पु० [स०] प... साथ बलात्कार। सतीत्व बिगाड़...
सतीपन-संज्ञा पु० दे० "सतीत्व"।
सतुआ†-संज्ञा पुं० दे० "सत्तू"।
सतुआ संक्रांति-संज्ञा स्त्री० [हिं० स... संक्रांति] मेष की संक्रांति।
सतून-संज्ञा पु० [फा०] स्तंभ। ख...
सतूना-संज्ञा पु० [फा० सतून] एक प्रकार की झपट।
सतोखना†-क्रि० स० [स० संतो... संतुष्ट करना। २ ढारस देना।
सतोगुण-संज्ञा पुं० दे० "सत्त्व गु...
सतोगुणी-संज्ञा पुं० [हिं० (प्रत्य०)] सत्त्वगुणवाला। सा...
सत्कर्म-संज्ञा पु० [स० सत्कर्मन्] ... काम। २ धर्म का काम।
सत्कार-संज्ञा पुं० [स०] सम्मान। खातिरदारी।
सत्कार्य-वि० [स०] सत्का...
संज्ञा पु० उत्तम कार्य। अच्...
सत्कीर्ति-संज्ञा स्त्री० [स०]
सत्कुल-संज्ञा पु० [स०] उत्त... या बड़ा खानदान।
सत्त-संज्ञा पु० [स० सत्त्व] ... असली जुज़। २ तत्त्व...
‡... संज्ञा पुं० [स० सत्य... बात। २ सतीत्व। ...
सत्ता-संज्ञा स्त्री० [स०] अस्तित्व। हस्ती। ... २ अधिकार। प्र...
संज्ञा पु० [हिं० सात] वह पत्ता जिसमें सा...
सत्ताधारी-संज्ञा पुं०... कारी। अफसर।
सत्ताशास्त्र-संज्ञा ... मूल या पारमार्थि...
सत्तू-संज्ञा पुं० [... और चने का घ...
सत्पथ-संज्ञा पुं०... २. सदाचार।
सत्पात्र-संज्ञा पु... देने के योग्य... सदाचारी।
सत्पुरुष-संज्ञा...

सनत्कुमार–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। वैधात्र।

सनद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रमाण। सबूत। दलील। २. प्रमाण-पत्र। सर्टिफ़िकेट।

सनदयाफ़्ता–वि० [अ० सनद + फ़ा० याफ़्तः] जिसे किसी बात की सनद मिली हो।

सनना–क्रि० अ० [सं० सधम्] १. गीला होकर लेई के रूप में मिलना। २. एक में मिलना। लीन होना।

सनम–संज्ञा पुं० [अ०] प्रिय। प्यारा।

सनमान–संज्ञा पुं० दे० "सम्मान"।

सनमानना–क्रि० स० [सं० सम्मान] खातिर करना। सत्कार करना।

सनमुख–अव्य० दे० "सम्मुख"।

सनसनी–संज्ञा स्त्री० [अनु० सन-सन] १. संवेदन-सूत्रों का एक प्रकार का स्पंदन। झनझनाहट। झुनझुनी। २. भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। ३ उद्वेग। घबराहट।

सनहकी–संज्ञा स्त्री० [अ० सनहक] मिट्टी का एक बरतन। (मुसलमान)

सनाढ्य–संज्ञा पुं० [सं० सन] ब्राह्मणों की एक शाखा जो गौड़ों के अंतर्गत है।

सनातन–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल। अत्यंत पुराना समय। २. प्राचीन परंपरा। बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु।
वि० १. अत्यंत प्राचीन। बहुत पुराना। २. जो बहुत दिनों से चला आता हो। परंपरागत। ३. नित्य। शाश्वत।

सनातन धर्म–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन या परंपरागत धर्म। २. वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जिसमें पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ-माहात्म्य आदि सब समान रूप से माननीय हैं।

सनातन पुरुष–संज्ञा [सं०] विष्णु भगवान्।

सनातनी–संज्ञा पुं० [सं० सनातन + ई(प्रत्य०)] १. जो बहुत दिनों से चला आता हो। २. सनातन धर्म का अनुयायी।

सनाथ–वि० [सं०] [स्त्री० सनाथा] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो।

सनाय–संज्ञा स्त्री० [अ० सनाए] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं। सोनामुखी।

सनाह–संज्ञा पुं० [सं० सन्नाह] कवच। बकतर।

सनीचर–संज्ञा पुं० दे० "शनैश्चर"।

सनीचरी–संज्ञा पुं० [हिं० सनीचर] शनि की दशा, जिसमें अधिक दुःख होता है।

सनेह†–संज्ञा पुं० दे० "स्नेह"।

सनेहिया†–संज्ञा पुं० दे० "सनेही"।

सनेही–वि० [सं० स्नेही, स्नेहिन्] स्नेह या प्रेम रखनेवाला। प्रेमी।

सनोवर–संज्ञा पुं० [अ०] चीड़ (पेड़)।

सन्न–वि० [सं० शून्य] १. संज्ञा-शून्य। स्तब्ध। जड़। २. भौचक। टक। ३. डर से चुप।

सन्नद्ध–वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २ तैयार। उद्यत। ३. लगा हुआ। जुड़ा हुआ।

सन्नाटा–संज्ञा पुं० [सं० शून्य] १. निःशब्दता। नीरवता। निस्तब्धता। २. निर्जनता। निरालापन। एकांतता। ३. ठक रह जाने का भाव। स्तब्धता।
मुहा०—सन्नाटे में आना = ठक रह जाना। कुछ कहते-सुनते न बनना।
४. एकदम खामोशी। चुप्पी।
मुहा०—सन्नाटा खींचना या मारना = एकबारगी चुप हो जाना।
५. चहल-पहल का अभाव। उदासी। ६. काम-धंधे से गुलज़ार न रहना।
वि० १. नीरव। स्तब्ध। २. निर्जन।
संज्ञा पुं० [अनु० सन सन] १. हवा के ज़ोर से चलने की आवाज़। २. हवा चीरते हुए तेज़ी से निकल जाने का शब्द।

सन्नाह–संज्ञा पुं० [सं०] कवच। बकतर।

सन्निकट–अव्य० [सं०] समीप। पास।

सन्निकर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सन्निकृष्ट] १. संबंध। लगाव। २. नाता। रिश्ता। ३. सामीप्य। समीपता।

सन्निधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकटता। समीपता। २. स्थापित करना।

सन्निधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समीपता। निकटता। २. आमने-सामने की स्थिति।

सन्निपात–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. संयोग। मेल। ३. इकट्ठा होना। एक साथ जुटना। ४. कफ, वात और पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना। त्रिदोष। सरसाम।

सन्निविष्ट–वि० [सं०] १. एक साथ बैठा हुआ। जमा हुआ। २. रखा हुआ। धरा हुआ। ३. स्थापित। प्रतिष्ठित। ४. पास का। समीप का।

संज्ञा स्त्री०[अ०] १ गूँज। प्रतिध्वनि। २ आवाज। शब्द। ३. पुकार।

सदाचरण, सदाचार-संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा आचरण। २. भल मनसाहत।

सदाचारी-संज्ञा पुं० [सं० सदाचारिन्] [स्त्री० सदाचारिणी] १. अच्छे आचरणवाला पुरुष। २. धर्मात्मा।

सदाफल-वि० [सं०] सदा फलनेवाला। संज्ञा पुं० १ गूलर। ऊमर। २. श्रीफल। बेल। ३. नारियल। ४ एक प्रकार का नीबू।

सदाबरत-संज्ञा पुं० दे० "सदावर्त"।

सदावर्त-संज्ञा पुं० [सं० सदाव्रत] १. नित्य भूखों और दीनों को भोजन बाँटना। २. वह भोजन जो नित्य गरीबोंको बाँटा जाय। खैरात।

सदा बहार-वि० [हिं० सदा + फा० बहार] १. जो सदा फूले। २ जो सदा हरा रहे। (वृक्ष)

सदाशय-वि० [सं०] जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो। सज्जन। भला-मानस।

सदाशिव-संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

सदा सुहागिन-संज्ञा स्त्री० [हिं० सदा + सुहागिन] वेश्या। रंडी। (विनोद)

सदिया-संज्ञा स्त्री० [फा० साद] वह लाल पक्षी जिसका शरीर भूरे रंग का होता है। लाल पक्षी की मादा।

सदी-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। २. सैकड़ा।

सदुपदेश-संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २ अच्छी सलाह।

सदूर-संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल।

सदृश-वि० [सं०] १. समान। अनुरूप। २ तुल्य। बराबर।

सदेह-क्रि० वि० [सं०] १. इसी शरीर से। बिना शरीर त्याग किए। २. मूर्त्तिमान्। सशरीर।

सदैव-अव्य० [सं०] सदा। हमेशा।

सद्गति-संज्ञा स्त्री० [सं०] मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति।

सद्गुण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सद्गुणी] अच्छा गुण। अच्छी सिफत।

सद्गुरु-संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा गुरु। उत्तम शिक्षक। २. परमात्मा।

सद्ग्रंथ-संज्ञा पुं० [सं० सत् + ग्रंथ] अच्छा ग्रंथ। सन्मार्ग बतानेवाली पुस्तक।

सद्द†-संज्ञा पुं० [सं० शब्द] शब्द। ध्वनि। अव्य० [सं० सद्य] तुरंत। तत्काल।

सद्भाव-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम और हित का भाव। २. मेल जोल। मैत्री। ३. सच्चा भाव। अच्छी नीयत।

सद्म-संज्ञा पुं० [सं० सद्मन्] १. घर। मकान। २. संग्राम। युद्ध। ३. पृथ्वी और आकाश।

सद्य-अव्य० [सं०] १. आज ही। २ इसी समय। अभी। ३ तुरंत। शीघ्र।

सद्य-अव्य० दे० "सद्य"।

सधना-क्रि० अ० [हिं० साधना] १ सिद्ध होना। पूरा होना। काम होना। २. काम चलना। मतलब निकलना। ३. अभ्यस्त होना। मँजना। ४ प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल होना। गौ पर चढ़ना। ५. निशाना ठीक होना।

सधवा-संज्ञा स्त्री० [हिं० विधवा का अनु०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सुहागिन।

सधाना-क्रि० स० [हिं० सधना का प्रे०] साधने का काम दूसरे से कराना।

सनंदन-संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक मानस पुत्र।

सन्-संज्ञा पुं० [अ०] १. वर्ष। साल। संवत्सर। २. कोई विशेष वर्ष। संवत्।

सन-संज्ञा पुं० [सं० शण] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से रस्सियाँ आदि बनती है।
*†प्रत्य० [सं० सग] अवधी में करण-कारक का चिह्न। से। साथ।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] वेग से निकलने का शब्द।
वि० [अनु० सुन] १ सन्नाटे में आया हुआ। स्तब्ध। ठक। २ मौन। चुप।

सनई-संज्ञा स्त्री० [हिं० सन] छोटी जाति का सन।

सनक-संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्क=खटका] १. किसी बात की धुन। मन की झोक। वेग के साथ मन की प्रवृत्ति।
मुहा०—सनक सवार होना = धुन होना।
२. खब्त। जुनून।
संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

सनकना-क्रि० अ० [हिं० सनक] पागल हो जाना। पगलाना।

सनकारना*†-क्रि० स० [हिं० सैन + करना] संकेत करना। इशारा करना।

सनत्-संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

सनत्कुमार–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। वैधात्र।

सनद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रमाण। सबूत। दलील। २. प्रमाण-पत्र। सर्टिफिकेट।

सनदयाफ्ता–वि० [अ० सनद+फा० याफ्त.] जिसे किसी बात की सनद मिली हो।

सनना–क्रि० अ० [सं० सधम्] १. गीला होकर लेई के रूप में मिलना। २ एक में मिलना। लीन होना।

सनम–संज्ञा पुं० [अ०] प्रिय। प्यारा।

सनमान–संज्ञा पुं० दे० "सम्मान"।

सनमानना†–क्रि० स० [सं० सम्मान] खातिर करना। सत्कार करना।

सनमुख†–अव्य० दे० "सम्मुख"।

सनसनी–संज्ञा स्त्री० [अनु० सन-सन] १. *संवेदन सूत्रों का एक प्रकार का स्पंदन।* झनझनाहट। झुनझुनी। २. भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। ३ उद्वेग। घबराहट।

सनहकी–संज्ञा स्त्री० [अ० सनहक] मिट्टी का एक बरतन। (मुसलमान)

सनाढ्य–संज्ञा पुं० [सं० सन] ब्राह्मणों की एक शाखा जो गौडों के अंतर्गत है।

सनातन–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल। अत्यंत पुराना समय। २. प्राचीन परंपरा। बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु।
वि० १. अत्यंत प्राचीन। बहुत पुराना। २. जो बहुत दिनों से चला आता हो। परंपरागत। ३ नित्य। शाश्वत।

सनातन धर्म–संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन या परंपरागत धर्म। २ वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जिसमें पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ माहात्म्य आदि सब समान रूप से माननीय हैं।

सनातन पुरुष–संज्ञा [सं०] विष्णु *भगवान्*।

सनातनी–संज्ञा पुं० [सं० सनातन+ई(प्रत्य०)] १. जो बहुत दिनों से चला आता हो। २. सनातन धर्म का अनुयायी।

सनाथ–वि० [सं०] [स्त्री० सनाथा] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो।

सनाय–संज्ञा स्त्री० [अ० सनाऽ] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं। सोनामुखी।

सनाह–संज्ञा पुं० [सं०संनाह] कवच। बकतर।

सनीचर–संज्ञा पुं० दे० "शनैश्चर"।

सनीचरी–संज्ञा पुं० [हिं० सनीचर] शनि की दशा, जिसमें अधिक दुःख होता है।

सनेह†–संज्ञा पुं० दे० "स्नेह"।

सनेहिया†–संज्ञा पुं० दे० "सनेही"।

सनेही–वि० [सं० स्नेही, स्नेहिन्] स्नेह या प्रेम रखनेवाला। प्रेमी।

सनोबर–संज्ञा पुं० [अ०] चीड़ (पेड़)।

सन्न–वि० [सं० शून्य] १. संज्ञा शून्य। स्तब्ध। जड़। २. भौचक। ठक। ३. डर से चुप।

सन्नद्ध–वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २ तैयार। उद्यत। ३. लगा हुआ। जुड़ा हुआ।

सन्नाटा–संज्ञा पुं० [सं० शून्य] १. निःशब्दता। नीरवता। निस्तब्धता। २. निर्जनता। निरालापन। एकांतता। ३. ठक रह *जाने का भाव।* स्तब्धता।
मुहा०—सन्नाटे में आना = ठक रह जाना। कुछ कहते-सुनते न बनना।
४. एकदम खामोशी। चुप्पी।
मुहा०—सन्नाटा खींचना या मारना = एक-बारगी चुप हो जाना।
५. चहल-पहल का अभाव। उदासी। ६. काम-धंधे से गुलजार न रहना।
वि० १ नीरव। स्तब्ध। २. निर्जन।
संज्ञा पुं० [अनु० सन सन] १ हवा के जोर से चलने की आवाज। २ हवा चीरते हुए तेजी से निकल जाने का शब्द।

सन्नाह–संज्ञा पुं० [सं०] कवच। बकतर।

सन्निकट–अव्य० [सं०] समीप। पास।

सन्निकर्ष–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सन्निकृष्ट] १. संबंध। लगाव। २. नाता। रिश्ता। ३. सामीप्य। समीपता।

सन्निधान–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकटता। समीपता। २ स्थापित करना।

सन्निधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समीपता। निकटता। २ सामने सामने की स्थिति।

सन्निपात–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. संयोग। मेल। ३ इकट्ठा होना। एक साथ जुटना। ४. कफ, वात और पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना। त्रिदोष। सरसाम।

सन्निविष्ट–वि० [सं०] १. एक साथ बैठा हुआ। जमा हुआ। २. रखा हुआ। धरा हुआ। ३ स्थापित। प्रतिष्ठित। ४. पास का। समीप का।

सन्निवेश–संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साथ बैठना। २. जमना। स्थित होना। ३. रखना। धरना। ४. लगाना। जड़ना। ५. अँटना। समाना। ६ निवास। घर। ७. एकत्र होना। जुटना। ८ समूह। समाज। ९. गढ़न। गठन। बनावट।

सन्निहित–वि० [सं०] १. एक साथ या पास रखा हुआ। २. समीपस्थ। निकटस्थ। ३ ठहराया हुआ। टिकाया हुआ।

सन्मान–संज्ञा पुं० दे० "सम्मान"।

सन्मुख–अव्य० दे० "सम्मुख"।

सन्यास–संज्ञा पुं० [सं० संन्यास] १ छोड़ना। त्याग। २. दुनिया के जंजाल से अलग होने की अवस्था। वैराग्य। ३ चतुर्थ आश्रम। यति धर्म।

सन्यासी–संज्ञा पुं० [सं० सन्यासिन्] [स्त्री० सन्यासिनी, संन्यासिन] १ वह पुरुष जिसने संन्यास धारण किया हो। चतुर्थ आश्रमी। २ विरागी। त्यागी।

सपक्ष–वि० [सं०] १ जो अपने पक्ष में हो। तरफ़दार। २ समर्थक। पोषक। संज्ञा पुं० १ तरफ़दार। मित्र। सहायक। २. न्याय में वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो।

सपत्नी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही पति की दूसरी स्त्री। सौत। सौतिन।

सपत्नीक–वि० [सं०] पत्नी के सहित।

सपना–संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न] वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े। स्वप्न।

सपरदाई–संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदायी] तवायफ के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला। भँडुआ। समाजी।

सपरना–क्रि० अ० [सं० संपादन] १. काम का पूरा होना। समाप्त होना। निबटना। २ काम का किया जा सकना। हो सकना।

सपरिकर–वि० [सं०] अनुचर वर्ग के साथ। ठाट बाट के साथ।

सपाट–वि० [सं० स+पट्ट] १ बराबर। समतल। २ जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो। चिकना।

सपाटा–संज्ञा पुं० [सं० सर्पण] १. चलने या दौड़ने का वेग। झोंक। तेजी। २. शीघ्र गति। दौड़। झपट।

यौ०—सैर सपाटा = घूमना फिरना।

सपाद–वि० [सं०] १. चरण सहित। २. जिसमें एक का चौथाई और मिला हो। सवाया।

सपिंड–संज्ञा पुं० [सं०] एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंडदान करता हो।

सपिंडी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक के निमित्त वह कर्म जिसमें वह और पितरों के साथ मिलाया जाता है।

सपूत–संज्ञा पुं० [सं० सत्पुत्र] वह पुत्र जो अपने कर्त्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र।

सपूती–संज्ञा स्त्री० [हिं० सपूत+ई (प्रत्य०)] १ सपूत होने का भाव। लायकी। २. योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।

सपेद†–वि० दे० "सफ़ेद"।

सपोला–संज्ञा पुं० [हिं० साँप+ओला (प्रत्य०)] साँप का छोटा बच्चा।

सप्त–वि० [सं०] गिनती में सात।

सप्तऋषि–संज्ञा पुं० दे० "सप्तर्षि"।

सप्तक–संज्ञा पुं० [सं०] १ सात वस्तुओं का समूह। २ सात स्वरों का समूह।

सप्तद्वीप–संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग। जम्बू, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप।

सप्तपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर ७ परिक्रमाएँ करते हैं। भाँवर। भँवरी।

सप्तपर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन (पेड़)।

सप्तपर्णी–संज्ञा स्त्री० [सं०] लज्जावती लता।

सप्त पाताल–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के नीचे के ये सातों लोक–अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

सप्तपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं— अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार) काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका।

सप्तम–वि० [सं०] [स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमी–वि० स्त्री० [सं०] सातवीं। संज्ञा स्त्री० १ किसी पक्ष की सातवीं तिथि। २ अधिकरण कारक की विभक्ति। (व्याकरण)

सप्तर्षि–संज्ञा पुं० [सं०] १. सात ऋषियों का समूह या मंडल। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार–गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि। महाभारत के अनुसार—मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ। २. उत्तर दिशा

के सात तारे जो ध्रुव के चारों ओर फिरते हुए दिखाई पड़ते हैं।
सप्तशती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सात सौ का समूह। २. सात सौ पद्यों का समूह। सतसई।
सप्ताह-संज्ञा पु० [सं०] १. सात दिनों का काल। हफ्ता। २. भागवत की कथा जो सात ही दिनों में सब पढ़ी या सुनी जाय।
सफ़-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पंक्ति। क़तार। २. लंबी चटाई। सीतल पाटी।
सफ़र-संज्ञा पु० [अ०] १. प्रस्थान। यात्रा। २. रास्ते में चलने का समय या दशा।
सफ़र मैना-संज्ञा स्त्री० [अ० सैपर माइनर] सेना के वे सिपाही जो खाई आदि खोदने को आगे चलते हैं।
सफ़री-वि० [अ० सफ़र] सफ़र में का। सफ़र में काम आनेवाला।
संज्ञा पुं० १. राह-खर्च। २. अमरूद।
सफरी-संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] सौरी मछली।
सफल-वि० [सं०] १. जिसमें फल लगा हो। २. जिसका कुछ परिणाम हो। सार्थक। ३. कृतकार्य्य। कामयाब।
सफलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफल होने का भाव। कामयाबी। सिद्धि। २. पूर्णता।
सफलीभूत-वि० [सं०] जो सफल हुआ हो। जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।
सफ़हा-संज्ञा पु० [अ०] पृष्ठ। पन्ना।
सफ़ा-वि० [अ०] १. साफ़। स्वच्छ। २. पाक। पवित्र। ३. चिकना। बराबर।
सफ़ाई-संज्ञा स्त्री० [अ० सफ़ा+ई (प्रत्य०)] १. स्वच्छता। निर्मलता। २. मैल या कूड़ा-करकट आदि हटाने की क्रिया। ३. स्पष्टता। मन में मैल न रहना। ४ कपट या कुटिलता का अभाव। ५. दोषारोप का हटना। निर्दोषता। ६. मामले का निबटेरा। निर्णय।
सफ़ाचट-वि० [हिं० सफ़ा] एकदम स्वच्छ। बिलकुल साफ़ या चिकना।
सफ़ीना-संज्ञा पुं० [अ० सफ़ीनः] अदालती परवाना। इत्तलानामा। समन।
सफ़ीर-संज्ञा पु० [अ०] एलची। राजदूत।
सफ़ेद-वि० [फ़ा० सुफ़ेद] १. चूने के रंग का। धौला। श्वेत। चिट्टा। २. जिस पर कुछ लिखा न हो। कोरा। सादा।
मुहा०—स्याह सफ़ेद = भला-बुरा। इष्ट अनिष्ट।
सफ़ेदपोश-संज्ञा पु० [फ़ा०] १. साफ़ कपड़े पहननेवाला। २. भलामानस। शिष्ट।
सफ़ेदा-संज्ञा पु० [फ़ा० सुफ़ेदा] १ जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा रँगाई के काम में आता है। २. आम का एक भेद। ३. खरबूजे का एक भेद।
सफ़ेदी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुफ़ेदी] १. सफ़ेद होने का भाव। श्वेतता। धवलता।
मुहा०—सफ़ेदी आना = बुढ़ापा आना।
२. दीवार आदि पर सफ़ेद रंग या चूने की पोताई। चूनाकारी।
सब-वि० [सं० सर्व] १. जितने हों, वे कुल। समस्त। २. पूरा। सारा।
सबक़-संज्ञा पु० [फ़ा०] १. पाठ। २. शिक्षा।
सबज़-वि० दे० "सब्ज़"।
सबद-संज्ञा पु० [सं० शब्द] १. दे० "शब्द"। २. किसी महात्मा के वचन।
सबब-संज्ञा पु० [अ०] १. कारण। वजह। हेतु। २. द्वार। साधन।
सबर-संज्ञा पुं० दे० "सब्र"।
सबल-वि० [सं०] १. बलवान्। ताक़तवर। २. जिसके साथ सेना हो।
सबार-क्रि० वि० [हिं० सवेरा] शीघ्र।
सबील-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मार्ग। सड़क। २. उपाय। तरकीब। ३. प्याऊ। पौसला।
सब्ज़-वि० [फ़ा०] १. कच्चा और ताज़ा (फल फूल आदि)।
मुहा०—सब्ज़ बाग़ दिखलाना = काम निकालने के लिये बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना।
२. हरा। हरित। (रंग) ३ शुभ। उत्तम।
सब्ज़ा-संज्ञा पु० [फ़ा० सब्ज़ः] १. हरियाली। २. भंग। भाँग। विजया। ३ पन्ना नामक रत्न। ४. घोड़े का एक रंग जिसमें सफ़ेदी के साथ कुछ कालापन होता है।
सब्ज़ी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. वनस्पति आदि। हरियाली। २. हरी तरकारी। ३. भाँग।
सब्र-संज्ञा पुं० [अ०] संतोष। धैर्य्य।
मुहा०—किसी का सब्र पड़ना = किसी के धैर्यपूर्वक सहन किए हुए कष्ट का प्रतिफल होना।
सभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिषद्। गोष्ठी। समिति। मजलिस। २. वह संस्था जो किसी विषय पर विचार करने के लिये संघटित हो।
सभागा-वि० [सं० सौभाग्य] १. भाग्यवान्।

२. सुंदर। खूबसूरत।
सभागृह–संज्ञा पुं० [सं०] बहुत से लोगों के एक साथ बैठने का स्थान। मजलिस की जगह।
सभापति–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सभा का प्रधान या नेता हो। सभा का मुखिया।
सभासद–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी सभा में सम्मिलित हो। सदस्य। सामाजिक।
सभ्य–संज्ञा पुं० [सं०] १ सभासद। सदस्य। २ वह जिसका आचार-व्यवहार उत्तम हो। भला आदमी।
सभ्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सभ्य होने का भाव। २ सदस्यता। ३. सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ४ भलमनसाहत। शराफत।
समंजस–वि० [सं०] उचित। ठीक।
समंत–संज्ञा पुं० [सं०] सीमा। सिरा।
समंद–संज्ञा पुं० [फा०] घोड़ा।
सम–वि० [सं०] १. समान। तुल्य। बराबर। २. सब। कुल। तमाम। ३. जिसका तल ऊबड़ खाबड़ न हो। चौरस। ४. (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस।
संज्ञा पुं० १. संगीत में वह स्थान जहाँ गाने-बजानेवालों का सिर या हाथ आपसे आप हिल जाता है। २. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंध का वर्णन होता है।
संज्ञा पुं० [अ०] विष। जहर।
समकक्ष–वि० [सं०] समान। तुल्य।
समकालीन–वि० [सं०] जो (दो या कई) एक ही समय में हों।
समकोण–वि० [सं०] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दो कोण समान हों।
समक्ष–अव्य० [सं०] सामने।
समग्र–वि० [सं०] कुल। पूरा। सब।
सम चतुर्भुज–संज्ञा पुं० [सं०] वह चतुर्भुज जिसके चारों भुज समान हों।
समचर–वि० [सं०] समान आचरण करनेवाला।
समझ–संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बुद्धि] बुद्धि। अक्ल।
समझदार–वि० [हिं० समझ+फा० दार] बुद्धिमान्।
समझना–क्रि० स० [हिं० समझ] किसी बात को [illegible] तरह ध्यान में लाना।

समझाना–क्रि० स० [हिं० समझना] ... को समझने में प्रवृत्त करना।
समझौता–संज्ञा पुं० [हिं० समझ] ... का निपटारा।
समतल–वि० [सं०] जिसकी सतह बराबर हो। हमवार।
समता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता।
समत्रिभुज–संज्ञा पुं० [सं०] वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज समान हों।
समदन–संज्ञा स्त्री० [?] भेंट। नजर।
समदना–क्रि० अ० [?] प्रेमपूर्वक मिलना।
समदर्शी–संज्ञा पुं० [सं० समदर्शिन्] सबको एक सा देखनेवाला।
समधियाना–संज्ञा पुं० [हिं० समधी] समधी का घर।
समधी–संज्ञा पुं० [सं० संबंधी] पुत्र या पुत्री का ससुर।
समन्वय–संज्ञा पुं० [सं०] १ संयोग। मिलन। मिलाप। २. विरोध का न होना। ३. कार्य्य कारण का प्रवाह या निर्वाह।
समन्वित–वि० [सं०] मिला हुआ। संयुक्त।
समपाद–संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद या कविता जिसके चारों चरण समान हों।
समय–संज्ञा पुं० [सं०] १. वक्त। काल। २. अवसर। मौका। ३. अवकाश। फुरसत। ४ अंतिम काल।
समर–संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।
समरथ–वि० दे० "समर्थ"।
समरभूमि–संज्ञा स्त्री० [सं०] युद्ध क्षेत्र। लड़ाई का मैदान।
समरांगण–संज्ञा पुं० दे० "समरभूमि"।
समर्थ–वि० [सं०] जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य हो। उपयुक्त। योग्य।
समर्थक–वि० [सं०] जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला।
समर्थता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सामर्थ्य। शक्ति।
समर्थन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समर्थनीय समर्थक, समर्थ्य] १. यह निश्चय करना कि अमुक बात उचित है या अनुचित। २. यह कहना कि अमुक बात ठीक है। किसी के मत का पोषण करना। ३. विवेचन।
... [सं०] समर्पण करनेवाला।

के सा र्पण–संज्ञा पुं० [सं०] १. आदरपूर्वक भेंट हुए ना। प्रतिष्ठापूर्वक देना। २. दान देना।
समर्पित–वि० [सं०] जो समर्पण किया गया समूह। समर्पण किया हुआ।
समल–वि० [सं०] मलीन। मैला। गंदा।
समवकार–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वीर-रस-प्रधान नाटक जिसमें किसी देवता या असुर आदि के जीवन की कोई घटना होती है।
समवर्त्ती–वि० [सं० समवर्त्तिन्] १. जो समान रूप से स्थित हो। २. जो पास में स्थित हो।
समवाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २ न्यायशास्त्र के अनुसार वह संबंध जो अवयवी के साथ अवयव का या गुणी के साथ गुण का होता है।
समवायी–वि० [सं० समवायिन्] जिसमें समवाय या नित्य संबंध हो।
समवृत्त–संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद जिसके चारों चरण समान हों।
समवेत–वि० [सं०] १. इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २ जमा किया हुआ। संचित।
समशीतोष्ण कटिबंध–संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबंध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण में मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक हैं।
समष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] सब का समूह। कुल। व्यष्टि का उलटा।
समस्त–वि० [सं०] १. सब। कुल। समग्र। २ एक में मिलाया हुआ। संयुक्त। ३. जो समास द्वारा मिलाया गया हो। समासयुक्त।
समस्थली–संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा और यमुना के बीच का देश। अंतर्वेद।
समस्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संघटन। २ मिलाने की क्रिया। मिश्रण। ३. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिये तैयार करके दूसरों को दिया जाता है। ४. कठिन अवसर या प्रसंग।
समस्यापूर्त्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी समस्या के आधार पर छंद आदि बनाना।
समाँ–संज्ञा पुं० [सं० समय] समय। वक्त।
मुहा०—समाँ बँधना=(संगीत आदि का) इतनी उत्तमता से होना कि लोग स्तब्ध हो जायँ।
समागत–वि० [सं०] जिसका आगमन हुआ हो। आया हुआ।
समागम–संज्ञा पुं० [सं०] १. आगमन। आना। २. मिलना। भेंट। ३. मैथुन।
समाचार–संज्ञा पुं० [सं०] संवाद। खबर। हाल।
समाचारपत्र–संज्ञा पुं० [सं० समाचार + पत्र] वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हों। अखबार।
समाज–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। गरोह। दल। २ सभा। ३. एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले लोगों का समूह। स. दाय। ४. वह संस्था जो बहुत से ''गों ने मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य से .थापित की हो। सभा।
समादर–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समादृत, समादरणीय] आदर। सम्मान। खातिर।
समाधान–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समाधानीय] १. चित्त को सब ओर से हटाकर ब्रह्म की ओर लगाना। समाधि। २. किसी के मन का संदेह दूर करनेवाली बात या काम। ३. किसी प्रकार का विरोध दूर करना। ४. निष्पत्ति। निराकरण। ५. बीज को ऐसे रूप में पुनः प्रदर्शित करना जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत हो। (नाटक)
समाधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समर्थन। २. ग्रहण करना। अंगीकार। ३ ध्यान। ४. प्रतिज्ञा। ५ निद्रा। नींद। ६ योग। ७ योग का चरम फल। इस अवस्था.ऐक मनुष्य सब प्रकार के क्लेशों से म
जाता है और उसे अनेक प्रकार [१ सिद्धी प्राप्त हो जाती हैं। ८ कि। २ अपने
की अस्थियाँ या शव जमीन
९. वह स्थान जहाँ इस प्र मिला हुआ।
अस्थियाँ आदि गाड़ी।
काव्य का एक गुण सम + उमरिया] बराबर
घटनाओं का दैव संयोग मवयस्क।
होना प्रकट होता है। सकी राय मिलती हो।
अर्थालंकार जिसमें किसी
से कोई कार्य बहुत ही सुग।. सलाह। राय।
बतलाया जाता है। अनुज्ञा। ३.
संज्ञा स्त्री० दे० "समाधान"।

जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था। ३. किसी विशिष्ट कार्य्य के लिये नियुक्त की हुई सभा।

समिध–संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

समिधा–संज्ञा स्त्री० [सं० समिधि] हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी।

समीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. समान या बराबर करना। २. गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि का पता लगाते हैं।

समीक्षा–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० समीक्षित, समीक्ष्य] १. अच्छी तरह देखना। २. आलोचना। समालोचना। ३. बुद्धि। ४ यत्न। कोशिश। ५. मीमांसा शास्त्र।

समीचीन–वि० [सं०] [भाव० समीचीनता] १. यथार्थ। ठीक। २. उचित। वाजिब।

समीति–संज्ञा स्त्री० दे० "समिति"।

समीप–वि० [सं०] [भाव० समीपता] दूर का उलटा। पास। निकट। नजदीक।

समीपवर्त्ती–वि० [सं० समीपवर्त्तिन्] समीप का। पास का।

समीर–संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. प्राण वायु।

समीरण–संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा।

समुदर–संज्ञा पुं० दे० "समुद्र"।

समुदरफूल–संज्ञा पुं० [हिं० समुंदर+फूल] एक प्रकार का विधारा।

समुचित–वि० [सं०] १. उचित। ठीक। वाजिब। २ जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।

समुच्चय–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलान। समाहार। मिलन। २. समूह। राशि। ढेर। ३. साहित्य में एक अलंकार जिसके दो भेद हैं। एक तो वह जहाँ आश्चर्य्य, हर्ष, विषाद आदि बहुत से भावों के एक साथ उदित होने का वर्णन हो। दूसरा वह जहाँ किसी एक ही कार्य्य के लिये बहुत से कारणों का वर्णन हो।

समुझना–संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"।

समुत्थान–संज्ञा पुं० [सं०] १. उठने की क्रिया। २ उत्पत्ति। ३ आरंभ।

समुदाय–संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। ढेर। २. झुंड। गरोह।

समुदाव–संज्ञा पुं० दे० "समुदाय"।

समुद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जल राशि जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है और जो इस पृथ्वी-तल के प्रायः तीन चतुर्थांश में व्याप्त है। सागर। अंबुधि। उदधि। २. किसी विषय या गुण आदि का बहुत बड़ा आगार।

समुद्रफेन–संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र के पानी का फेन या झाग जिसका व्यवहार औषधि के रूप में होता है। समुंदर-फेन।

समुद्रयात्रा–संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा।

समुद्रयान–संज्ञा पुं० [सं०] जहाज।

समुद्रलवण–संज्ञा पुं० [सं०] करकच लवण जो समुद्र के जल से बनता है।

समुन्नति–संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० समुन्नत] १. यथेष्ट उन्नति। काफी तरक्की। २. महत्त्व। बड़ाई। ३ उच्चता।

समुल्लास–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समुल्लसित] १. उल्लास। आनंद। खुशी। २. ग्रंथ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

समुहा–वि० [सं० सम्मुख] सामने का। क्रि० वि० सामने। आगे।

समुहाना–क्रि० अ० [सं० सम्मुख] सामने आना।

समूर–संज्ञा पुं० [सं०] शंबर या साबर नामक हिरन।

समूल–वि० [सं०] १. जिसमें मूल या जड़ हो। २. जिसका कोई हेतु हो। कारण सहित।

क्रि० वि० जड़ से। मूल सहित।

समूह–संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत सी चीज़ों का ढेर। राशि। २. समुदाय। झुंड। गरोह।

समृद्ध–वि० [सं०] संपन्न। धनवान्।

समृद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक संपन्नता। अमीरी।

समेटना–क्रि० स० [हिं० सिमटना] १. बिखरी हुई चीज़ों को इकट्ठा करना। २. अपने ऊपर लेना।

समेत–वि० [सं०] संयुक्त। मिला हुआ। अव्य० सहित। साथ।

समौरिया–वि० [हिं० सम+उमरिया] बराबर की उमरवाला। समवयस्क।

सम्मत–वि० [सं०] जिसकी राय मिलती हो। सहमत। अनुमत।

सम्मति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सलाह। राय। २. अनुमति। आदेश। आज्ञा। ३. मत। अभिप्राय।

समाधि-क्षेत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ योगियों आदि के मृत शरीर गाड़े जाते हों। २. कृब्रिस्तान।

समाधित-वि० [सं०] जिसने समाधि लगाई या ली हो।

समाधिस्थ-वि० [सं०] जो समाधि लगाए हुए हो।

समान-वि० [सं०] जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्त्व आदि में एक से हों। बराबर। तुल्य।

समानता-संज्ञा स्त्री० [सं०] समान होने का भाव। तुल्यता। बराबरी।

समाना-क्रि० अ० [सं० समावेश] अंदर आना। भरना। अटना।
क्रि० स० अंदर करना। भरना।

समानाधिकरण-संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है।

समानार्थ-संज्ञा पुं० [सं०] वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्य्याय।

समानिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण जगण और एक गुरु होता है। समानी।

समापक-संज्ञा पुं० [सं०] समाप्त करनेवाला। पूरा करनेवाला।

समापन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समाप्य, समापनीय] १. समाप्त करना। पूरा करना। २. मार डालना। वध।

समापिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है।

स[illegible]**प्ति**-[illegible] [[illegible]] समाप्त, [illegible] आ
जिस[illegible] हुआ।
समान हो। [सं०] जो उत्तम या पूरा हो

समक्ष-अव्य
समग्र-वि०
सम चतुर्भु[illegible] स्त्री० [सं०] किसी कार्य्य या
जिसके चारों भुज[illegible]म या पूरा होना।

समचर-वि० [[सं०] १. संयोग। २.
करनेवाला। होना।

समझ-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अच्छी तरह
समझदार-वि २. समारोह। (क्व०)
बुद्धिमान्। पुं० [सं०] १. ताड़क-भड़क।
समझना-२. कोई ऐसा कार्य या उत्सव
[illegible] धूमधाम हो।

समालोचक-संज्ञा पुं० [सं०] समालोचना करनेवाला।

समालोचन-संज्ञा पुं० दे० "समालोचना"।

समालोचना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खूब देखना भालना। २. किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना। ३. वह कथन या लेख आदि जिसमें इस प्रकार गुणों और दोषों की विवेचना हो। आलोचना।

समावर्त्तन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समावर्त्तनीय] १. वापस आना। लौटना। २. वैदिक काल का एक संस्कार जो उस समय होता था, जब ब्रह्मचारी नियत समय तक गुरु-कुल में रहकर और विद्याओं का अध्ययन करके स्नातक बनकर घर लौटता था।

समाविष्ट-वि० [सं०] जिसका समावेश हुआ हो। समाया हुआ।

समावेश-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ या एक जगह रहना। २. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना। ३. मनोनिवेश।

समास-संज्ञा पुं० [सं०] १. संक्षेप। २. समर्थन। ३. संग्रह। ४. सम्मिलन। ५. व्याकरण में शब्दों का कुछ नियमों के अनुसार मिलकर एक होना। यह चार प्रकार का होता है—अव्ययीभाव, समानाधिकरण, तत्पुरुष और द्वंद्व।

समासोक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें समान कार्य्य और समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है।

समाहरण-संज्ञा पुं० दे० "समाहार"।

समाहर्त्ता-संज्ञा पुं० [सं० समाहर्तृ] १. समाहार करनेवाला। मिलानेवाला। २. प्राचीन काल का राज-कर एकत्र करनेवाला एक कर्मचारी।

समाहार-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत सी चीज़ों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २. समूह। राशि। ढेर। ३. मिलना।

समाहार द्वंद्व-संज्ञा पुं० [सं०] वह द्वंद्व समास जिससे उसके पदों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता हो। जैसे—सेठ साहूकार।

समिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सभा। समाज। २. प्राचीन वैदिक काल की एक संस्था

सम्मन–संज्ञा पुं० [अ० समन] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को हाजिर होने का हुकुम दिया जाता है।
सम्मान–संज्ञा पुं० [सं०] समादर। इज्जत। मान। गौरव। प्रतिष्ठा।
सम्मानना–संज्ञा स्त्री० दे० "सम्मान"। ❀ क्रि० स० सम्मान या आदर करना।
सम्मानित–वि० [सं०] जिसका सम्मान हुआ हो। प्रतिष्ठित। इज्जतदार।
सम्मिलन–संज्ञा पुं० [सं०] मिलाप। मेल।
सम्मिलित–वि० [सं०] मिला हुआ। मिश्रित। युक्त।
सम्मिश्रण–संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया। २. मेल। मिलावट।
सम्मुख–अव्य० [सं०] सामने। समक्ष।
सम्मेलन–संज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्यों का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज। सभा। समाज। २ जमावड़ा। जमघट। ३. मिलाप। संगम।
सम्मोहन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सम्मोहक] १ मोहित या मुग्ध करना। २ मोह उत्पन्न करनेवाला। ३ एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। ४ कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
सम्यक्–वि० [सं०] पूरा। सब।
क्रि० वि० १. सब प्रकार से। २. अच्छी तरह। भली भाँति।
सम्राज्ञी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सम्राट् की पत्नी। २ साम्राज्य की अधीश्वरी।
सम्राट्–संज्ञा पुं० [सं० सम्राज्] बहुत बड़ा राजा। महाराजाधिराज। शाहंशाह।
सयन॰–संज्ञा पुं० [सं० शयन] दे० "शयन"।
सयानपत–संज्ञा स्त्री० दे० "सयानपन"।
सयानपन–संज्ञा पुं० [हिं० सयाना+पन] चालाकी।
सयाना–संज्ञा पुं० [सं० सज्ञान] १ अधिक अवस्थावाला। वयस्क। २. बुद्धिमान्। होशियार। ३ चालाक। धूर्त।
सर–संज्ञा पुं० [सं० सरस्] ताल। तालाब।
॰ संज्ञा पुं० दे० "शर"।
संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता।
संज्ञा पुं० [फा०] १ सिर। २ सिरा। ...
वि० १. दमन किया हुआ। २ जीता ... पराजित। अभिभूत।
सरअंजाम–संज्ञा पुं० [फा०] सामग्री।
सरकंडा–संज्ञा पुं० [सं० शरकांड] सरपत की जाति का एक पौधा।
सरक–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकना] १. सरकने की क्रिया या भाव। २. शराब की खुमारी।
सरकना–क्रि० अ० [सं० सरक सरण] १. जमीन से लगे हुए किसी ओर धीरे से बढ़ना। खिसकना। २ नियत काल से और आगे जाना। टलना। ३. काम चलना। निर्वाह होना।
सरकश–वि० [फा०] [संज्ञा सरकशी] १ उद्धत। उद्दंड। २. विरोध में सिर उठानेवाला।
सरकार–संज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० सरकारी] १ मालिक। प्रभु। २. राज्य संस्था। शासन सत्ता। ३. रियासत।
सरकारी–वि० [फा०] १. सरकार या मालिक का। २. राज्य का। राजकीय।
यौ०—सरकारी कागज = १ राज्य के दफ्तर का कागज। २. प्रामिसरी नोट।
सरखत–संज्ञा पुं० [फा०] १. वह दस्तावेज जिस पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं। २ दिए और चुकाए हुए रुपए आदि का ब्योरा। ३. आज्ञापत्र। परवाना।
सरग॰–संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।
सरगना–संज्ञा पुं० [फा०] सरदार। अगुआ।
सरगम–संज्ञा पुं० [हिं० सा, रे, ग, म] संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव उतार का क्रम। स्वरग्राम।
सरगर्म–वि० [फा०] [संज्ञा सरगर्मी] १. जोशीला। आवेशपूर्ण। २ उमंग से भरा हुआ। उत्साही।
सरधर–संज्ञा पुं० [सं० शर+हिं० धर] तीर रखने का खाना। तरकश।
सरघा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मधुमक्खी।
सरजना–क्रि० स० [सं० सृजन] १ सृष्टि करना। २ रचना। बनाना।
सरजा–संज्ञा पुं० [फा० सरनाह] १. श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार। २. सिंह।
सरजीवन॰–... [सं० सजीवन] १. जिलानेवाला। ...रा। उपजाऊ।
सरणी–... १. मार्ग। रास्ता। २. ढर्रा।

सरद्-वि० दे० "सर्द"।
सरदई-वि० [फा० सरद] सरदे के रंग का। हरापन लिए पीला।
सर दर-क्रि० वि० [फा० सर+दर=भाव] १. एक सिरे से। २. सब एक साथ मिलाकर। औसत में।
सरदा-संज्ञा पुं० [फा० सर्दः] एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा।
सरदार-संज्ञा पुं० [फा०] १. नायक। अगुवा। श्रेष्ठ व्यक्ति। २. शासक। ३. अमीर। रईस।
सरदारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] सरदार का पद या भाव।
सरन॰‡-संज्ञा स्त्री० दे० "शरण"।
सरनदीप-संज्ञा पुं० दे० "सिंहल द्वीप"।
सरना-क्रि० अ० [सं० सरण] १. सरकना। खिसकना। २. हिलना। डोलना। ३. काम चलना। पूरा पड़ना। ४. किया जाना। निबटना।
सरनाम-वि० [फा०] प्रसिद्ध। मशहूर।
सरनामा-संज्ञा पुं० [फा०] १ शीर्षक। २. पत्र का आरंभ या संबोधन। ३. पत्र पर लिखा जानेवाला पता।
सरपंच-संज्ञा पुं० [फा० सर+हिं० पंच] पंचों में बड़ा व्यक्ति। पंचायत का सभापति।
सरपट-क्रि० वि० [सं० सर्पण] घोड़े की बहुत तेज़ दौड़ जिसमें वह दोनों अगले पैर साथ साथ आगे फेंकता है।
सरपत-संज्ञा पुं० [सं० शरपत्र] कुश की तरह की एक घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है।
सर-परस्त-संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० सरपरस्ती] अभिभावक। संरक्षक।
सरपेच-संज्ञा पुं० [फा०] पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।
सरपोश-संज्ञा पुं० [फा०] थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।
सरफोंका-संज्ञा पुं० दे० "सरकंडा"।
सरबंधी॰-संज्ञा पुं० [सं० शरबंध] तीरंदाज। धनुर्धर।
सरब॰‡-वि० दे० "सर्व"।
सर-बराह-संज्ञा पुं० [फा०] १. प्रबंधकर्त्ता। कारिंदा। २ मजदूरों आदि का सरदार।
सरबराहकार-संज्ञा पुं० [फा० सरबराह+कार] किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला। कारिंदा।
सरबस॰‡-संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व"।
सरमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया। (वैदिक) २. कुतिया।
सरयू-संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी।
सरराना‡-क्रि० अ० [अनु० सर सर] हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना।
सरल-वि० [सं०] [स्त्री० सरला] १. जो टेढ़ा न हो। सीधा। २. निष्कपट। सीधा-सादा। ३. सहज। आसान।
संज्ञा पुं० १. चीड़ का पेड़। २. सरल का गोंद। गंधा बिरोजा।
सरलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़ा न होने का भाव। सीधापन। २. निष्कपटता। सिधाई। ३. सुगमता। आसानी। ४. सादगी। भोलापन।
सरल निर्यास-संज्ञा पुं० [सं०] १. गंधाबिरोजा। २. तारपीन का तेल।
सरवन-संज्ञा पुं० [सं० श्रमण] अंधक मुनि के पुत्र जो अपने पिता को एक बहँगी में बैठाकर ढोया करते थे।
॰‡ संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
सरवर-संज्ञा पुं० दे० "सरोवर"।
सरवरि॰‡-संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश] बराबरी। तुलना। समता।
सरवाक-संज्ञा पुं० [सं० शरावक] १. संपुट। प्याला। २. दीया। कसोरा।
सरवान-संज्ञा पुं० [?] तंबू। खेमा।
सरस-वि० [सं०] १. रसयुक्त। रसीला। २. गीला। भीगा। सजल। ३. हरा। ताजा। ४. सुंदर। मनोहर। ५. मधुर। मीठा। ६. जिसमें भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण। ७. बढ़कर। उत्तम। ८. रसिक। सहृदय।
संज्ञा पुं० छप्पय छंद के ३५वें भेद का नाम।
सरसई॰-संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] सरस्वती नदी या देवी।
॰संज्ञा स्त्री० [सं० सरस] १. सरसता। रसपूर्णता। २. हरापन। ताजापन।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसों] फल के छोटे अंकुर या दाने जो पहले दिखाई पड़ते हैं।
सरसना-क्रि० अ० [सं
१. हरा होना। पनप

प्राप्त होना। बढ़ना। ३. शोभित होना। सोहाना। ४. रसपूर्ण होना। ५. भाव की उमंग से भरना।

सरसब्ज़–वि० [फ़ा०] १. हरा-भरा। लहलहाता हुआ। २. जहाँ हरियाली हो।

सर-सर–संज्ञा पुं० [अनु०] १. जमीन पर रेंगने का शब्द। २. वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि।

सरसराना–क्रि० अ० [अनु०सर सर] १. वायु का सर सर की ध्वनि करते हुए बहना। सनसनाना। २. साँप आदि का रेंगना।

सरसराहट–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसर+आहट (प्रत्य०)] १. साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २. खुजली। सुरसुराहट। ३. वायु बहने का शब्द।

सरसरी–वि० [फ़ा० सरासरी] १. जमकर या अच्छी तरह नहीं। जल्दी में। २. स्थूल रूप से। मोटे तौर पर।

सरसाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरस+आई(प्रत्य०)] १. सरसता। २. शोभा। सुंदरता। ३. अधिकता।

सरसाना–क्रि० स० [हिं० सरसना] १. रसपूर्ण करना। २ हरा भरा करना। ❀ क्रि० अ० दे० "सरसना"। ❀ क्रि० अ० शोभा देना। सजना।

सरसाम–संज्ञा पुं० [फ़ा०] सन्निपात।

सरसार–वि० [फ़ा० सरशार] १ डूबा हुआ। मग्न। २. चूर। मदमस्त। (नशे में)

सरसिज–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो ताल में होता हो। २. कमल।

सरसिरुह–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

सरसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा सरोवर। तलैया। २. पुष्करिणी। बावली। ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, ज, ज, ज और र होते हैं।

सरसीरुह–संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

सरसेटना–क्रि० स० [अनु०] खरी खोटी सुनाना। फटकारना।

सरसों–संज्ञा स्त्री० [सं० सर्षप] एक पौधा जिसके छोटे गोल बीजों से तेल निकलता है।

सरसौंहाँ–वि० [हिं० सरस] सरस बनाया हुआ।

सरस्वती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंजाब की एक प्राचीन नदी। २. विद्या या वाणी की देवी। वाग्देवी। भारती। शारदा। ३. विद्या। इल्म। ४. ब्राह्मी बूटी। ५ सोमलता। ६. एक छंद का नाम।

सरस्वती-पूजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती का उत्सव जो कहीं वसंतपंचमी को और कहीं आश्विन में होता है।

सरह–संज्ञा पुं० [सं० शलभ] १. पतंग। फतिंगा। २ टिड्डी।

सरहज–संज्ञा स्त्री० [सं० श्यालजाया] साले की स्त्री। पत्नी के भाई की स्त्री।

सरहटी–संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पाक्षी] सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुलकंद।

सरहद–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सर+अ० हद] १ सीमा। २. किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न।

सरहदी–वि० [फ़ा० सरहद+ई (प्रत्य०)] सरहद संबंधी। सीमा-संबंधी।

सरहरी–संज्ञा स्त्री० [सं० शर] मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा।

सरा❀–संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता। संज्ञा स्त्री० दे० "सराय"।

सराई†–संज्ञा स्त्री० [सं०शलाका] १. शलाका। सलाई। २. सरकंडे की पतली छड़ी। संज्ञा स्त्री० [सं० शराव] दीया। सकोरा।

सराग†–संज्ञा पुं० [सं० शलाका] लोहे की सीख। सीखचा। छड़।

सराध❀†–संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध"।

सराना❀†–क्रि० स० [हिं० सारना का प्रेर०] १. पूर्ण करना। संपादित कराना। (काम) २. कराना।

सराप–संज्ञा पुं० दे० "शाप"।

सरापना ❀†–क्रि० स० [सं० शाप+हिं० ना (प्रत्य०)] शाप देना। बद दुआ देना।

सराफ़–संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ़] १. सोने-चाँदी का व्यापारी। २. बदले के लिये रुपए पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार।

सराफ़ा–संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ़] १. सराफ़ी काम। रुपए-पैसे या सोने-चाँदी के लेन-देन का काम। २. सराफ़ों का बाज़ार। ३ कोठी। बंक।

सराफ़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सराफ़+ई (प्रत्य०)] १. चाँदी सोने या रुपए-पैसे के लेन देन का रोजगार। २. महाजनी लिपि। मुंडा।

सराबोर–वि [सं० स्राव+हिं० बोर] बिलकुल

भीगा हुआ। तरपतर। आप्लावित।

सराय–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. घर। मकान। २ यात्रियों के ठहरने का स्थान। मुसाफिरखाना।

सराव॰†–संज्ञा पु० [सं० शराव] १. मद्य-पात्र। प्याला (शराब पीने का)। २. कसोरा। कटोरा। ३. दीया।

सरावग, सरावगी–संज्ञा पु० [सं० श्रावक] जैन धर्म माननेवाला। जैन।

सरासन॰–संज्ञा पु० दे० "शरासन"।

सरासर–अव्य० [फा०] १. एक सिरे से दूसरे सिरे तक। २. बिलकुल। पूर्णतया। ३. साक्षात्। प्रत्यक्ष।

सरासरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आसानी। फुरती। २. शीघ्रता। जल्दी। ३. मोटा अंदाज।

क्रि० वि० १. जल्दी में। हड़बड़ी में। २. मोटे तौर पर।

सराह॰–संज्ञा स्त्री० [सं० श्लाघा] प्रशंसा।

सराहना–क्रि० स० [सं० श्लाघन] तारीफ करना। बड़ाई करना। प्रशंसा करना। संज्ञा स्त्री० प्रशंसा। तारीफ।

सराहनीय॰–वि० [हिं० सराहना] १. प्रशंसा के योग्य। २ अच्छा। बढ़िया।

सरि॰–संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी। ॰ संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश] बराबरी। समता। वि० सदृश। समान। बराबर।

सरित्–संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

सरिता–संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] १. धारा। २. नदी। दरिया।

सरित्पति–संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

सरियाना†–क्रि० स० [?] १. तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना। २. मारना। लगाना। (बाज़ारू)

सरिवन–संज्ञा पु० [सं० शालपर्णी] शालपर्णी नाम का पौधा। त्रिपर्णी।

सरिवरि॰†–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरि + सं०प्रति] बराबरी। समता।

सरिश्ता–संज्ञा पु० [फा० सरिश्तः] १. अदालत। कचहरी। २ कार्यालय का विभाग। महकमा। दफ्तर।

सरिश्तेदार–संज्ञा पु० [फा० सरिश्तःदार] १. किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। २. अदालतों में देशी भाषाओं में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिस॰–वि० [सं० सदृश] सदृश। समान।

सरीकता॰–संज्ञा स्त्री० [अ० शरीक + सं० ता (प्रत्य०)] साझा। हिस्सा। शिरकत।

सरीखा–वि० [सं० सदृश] समान। तुल्य।

सरीफा–संज्ञा पु० [सं० श्रीफल] एक छोटा पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं।

सरीर॰†–संज्ञा पु० दे० "शरीर"।

सरीसृप–संज्ञा पु० [सं०] १. रेंगनेवाला जंतु। २ सर्प। साँप।

सरुज–वि० [सं०] रोगी। रोग-युक्त।

सरुष–वि० [सं०] क्रोध-युक्त। कुपित।

सरुहाना–क्रि० स० [?] रोगमुक्त करना।

सरूप–वि० [सं०] १. रूप युक्त। आकार-वाला। २ सदृश। समान। ३ रूप-वान्। सुंदर।

‡संज्ञा पु० दे० "स्वरूप"।

सरूर–संज्ञा पु० [फा० सुरूर] १. खुशी। प्रसन्नता। २. हलका नशा।

सरेख॰†–वि० [सं० श्रेष्ठ] [स्त्री० सरेखी] बड़ा और समझदार। चालाक। सयाना।

सरेखना–क्रि० स० दे० "सहेजना"।

सरे दस्त–क्रि० वि० [फा०] १. इस समय। अभी। २. इस समय के लिये।

सरे बाज़ार–क्रि० वि० [फा०] १ बाजार में। जनता के सामने। २ सबके सामने।

सरेस–संज्ञा पुं० [फा० सरेश] एक लसदार वस्तु जो ऊँट, भैंस आदि के चमड़े या मछली के पेटे को पकाकर निकालते हैं। सहरेस। सरेश।

सरोट॰†–संज्ञा पु० [हिं० सिलवट] कपड़ों में पड़ी हुई सिलवट। शिकन। बली।

सरो–संज्ञा पु० [फा० सर्व] एक सीधा पेड़ जो बगीचों में शोभा के लिये लगाया जाता है। बनझाऊ।

सरोकार–संज्ञा पु० [फा०] १. परस्पर व्यव-हार का संबंध। २. लगाव। वास्ता।

सरोज–संज्ञा पु० [सं०] कमल।

सरोजना–क्रि० स० [?] पाना।

सरोजिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलों से भरा हुआ ताल। २. कमलों का समूह। ३ कमल का फूल।

सरोद–संज्ञा पु० [फा०] बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सरोरुह–संज्ञा पुं० [सं०]

सरोवर–संज्ञा पुं० [सं०] १. तालाब। पोखरा। २. झील। ताल।

सरोष–वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित।

सरो सामान–संज्ञा पुं० [फा०सर+व+सामान] सामग्री। उपकरण। असबाब।

सरौता–संज्ञा पुं० [सं० सार=लोहा+पत्र] [स्त्री० अल्पा० सरौती] सुपारी काटने का एक प्रसिद्ध औज़ार।

सर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन। गति। चलना या बढ़ना। २. संसार। सृष्टि। ३. बहाव। प्रवाह। ४. छोड़ना। चलाना। फेंकना। ५ उद्गम। उत्पत्ति-स्थान। ६. प्राणी। जीव। ७. संतान। औलाद। ८. स्वभाव। प्रकृति। ९. किसी ग्रंथ (विशेषतः काव्य) का अध्याय। प्रकरण।

सर्गबंध–वि० [सं०] जो कई अध्यायों में विभक्त हो। जैसे—सर्गबंध काव्य।

सर्गुन‡–वि० दे० "सगुण"।

सर्ज–संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। २. राल। धूना। ३. सलई का पेड़।

सर्जन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १. छोड़ना। फेंकना। २. निकालना। ३. सृष्टि।

सर्जू–संज्ञा स्त्री० दे० "सरयू"।

सर्द–वि० [फा०] १. ठंढा। शीतल। २. सुस्त। काहिल। ढीला। ३. मंद। धीमा। ४. नपुंसक। नामर्द।

सर्दी–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सर्द होने का भाव। ठंढ। शीतलता। २. जाड़ा। शीत। ३. ज़ुकाम। नज़ला।

सर्प–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] १. रेंगना। २. साँप। ३. एक म्लेच्छ जाति।

सर्पकाल–संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

सर्पयज्ञ, सर्पयाग–संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो नागों के संहार के लिये जनमेजय ने किया था।

सर्पराज–संज्ञा पुं० [सं०] १. सर्पों के राजा, शेषनाग। २. वासुकि।

सर्पविद्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप को पकड़ने या वश में करने की विद्या।

सर्पिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साँपिन। मादा साँप। २. भुजंगी लता।

सर्फ–संज्ञा पुं० [अ०] व्यय किया हुआ। खर्च किया हुआ।

सर्फा–संज्ञा पुं० [अ० सर्फः] खर्च। व्यय।

सर्वस–संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व"।

सर्राफ–संज्ञा पुं० दे० "सराफ"।

सर्व–वि० [सं०] सब। तमाम। कुल।
संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. पारा।

सर्वकाम–संज्ञा पुं० [सं०] १ सब इच्छाएँ रखनेवाला। २ सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला। ३. शिव।

सर्वगत–वि० [सं०] सर्वव्यापक।

सर्वग्रास–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्र या सूर्य्य का पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण।

सर्वज्ञ–वि० [सं०] [स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे कुछ अज्ञात न हो।
संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २ देवता। ३. बुद्ध या अर्हत्। ४ शिव।

सर्वज्ञता–संज्ञा स्त्री० [सं०] 'सर्वज्ञ' का भाव।

सर्वतंत्र–संज्ञा पुं० [सं०] सब प्रकार के शास्त्र-सिद्धांत।
वि० जिसे सब शास्त्र मानते हों।

सर्वतः–अव्य० [सं०] १. सब ओर। चारों तरफ़। २. सब प्रकार से।

सर्वतोभद्र–वि० [सं०] १. सब ओर से मंगल। २. जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुँड़े हों।
संज्ञा पुं० १. वह चौखूँटा मंदिर जिसके चारों ओर दरवाज़े हों। २. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। ३. एक प्रकार का चित्रकाव्य। ४. एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खंडाक्षरों के भी अलग अलग अर्थ लिए जाते हैं। ५. विष्णु का रथ।

सर्वतोभाव–अव्य० [सं०] सब प्रकार से। अच्छी तरह। भली भाँति।

सर्वतोमुख–वि० [सं०] १. जिसका मुँह चारों ओर हो। २. पूर्ण। व्यापक।

सर्वत्र–अव्य० [सं०] सब कहीं। सब जगह।

सर्वथा–अव्य० [सं०] १. सब प्रकार से। सब तरह से। २. बिलकुल। सब।

सर्वदर्शी–संज्ञा पुं० [सं० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिनी] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वदा–अव्य० [सं०] हमेशा। सदा।

सर्वनाम–संज्ञा पुं० [सं० सर्वनामन्] व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होता है। जैसे—मैं, तू, वह।

सर्वनाश–संज्ञा पुं० [सं०] सत्यानाश। विध्वंस। पूरी बरबादी।

सर्वप्रिय–वि० [सं०] सब को प्यारा। जो सब को अच्छा लगे।

सर्वभक्षी–संज्ञा पुं० [सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला। संज्ञा पुं० अग्नि।

सर्वभोगी–वि० [सं० सर्वभोगिन्] [स्त्री०सर्वभोगिनी] १. सब का आनंद लेनेवाला। २. सब कुछ खानेवाला।

सर्वमंगला–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २ लक्ष्मी।

सर्वरी–संज्ञा स्त्री० दे० "शर्वरी"।

सर्वव्यापक–संज्ञा पुं० दे० "सर्वव्यापी"।

सर्वव्यापी–वि० [सं० सर्वव्यापिन्] [स्त्री० सर्वव्यापिनी] सब में रहनेवाला। सब पदार्थों में रमणशील।

सर्वशक्तिमान्–वि० [सं० सर्वशक्तिमत् [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला। संज्ञा पुं० ईश्वर।

सर्वश्रेष्ठ–वि० [सं०] सब से उत्तम।

सर्व-साधारण–संज्ञा पुं० [सं०] साधारण लोग। जनता। आम लोग। वि० जो सबमें पाया जाय। आम।

सर्व-सामान्य–वि० [सं०] जो सब में एक सा पाया जाय। मामूली।

सर्वस्व–संज्ञा पुं० [सं०] सारी संपत्ति। सब कुछ। कुल माल मता।

सर्वहर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सब कुछ हर लेनेवाला। २. महादेव। शंकर। ३. यमराज। ४ काल।

सर्वांग–संज्ञा पुं० [सं०] १. संपूर्ण शरीर। सारा बदन। २. सब अवयव या अंश।

सर्वात्मा–संज्ञा पुं० [सं० सर्वात्मन्] १ सारे विश्व की आत्मा। ब्रह्म। २. शिव।

सर्वाधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ करने का अधिकार। पूरा इख्तियार।

सर्वाधिकारी–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके हाथ में पूरा इख्तियार हो। २. हाकिम।

सर्वाशी–वि० [सं० सर्वाशिन्] [स्त्री०सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। सर्वभक्षी।

सर्वास्तिवाद–संज्ञा पुं० [सं०] यह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तव में सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।

सर्वेश, सर्वेश्वर–संज्ञा पुं० [सं०] १. सब का स्वामी। २. ईश्वर। ३. चक्रवर्ती राजा।

सर्वौषधि–संज्ञा स्त्री० [सं०] आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी बूटियाँ हैं।

सर्षप–संज्ञा पुं० [सं०] १. सरसों। २. सरसों भर का मान या तौल।

सलई–संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] १. शल्लकी वृक्ष। चीड़। २. चीड़ का गोंद। कुंदुर।

सलगम–संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

सलज्ज–वि० [सं०] जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावाला। लज्जाशील।

सलतनत–संज्ञा स्त्री० [अ० सल्तनत] १. राज्य। बादशाहत। २. साम्राज्य। ३. इंतज़ाम। प्रबंध। ४. सुभीता। आराम।

सलना–क्रि० अ० [सं० शल्य] १. साला जाना। छिदना। भिदना। ३. छेद में डाला या पहनाया जाना।

सलब–वि० [अ० सल्ब] नष्ट। बरबाद।

सलमा–संज्ञा पुं० [अ० सलम ?] सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलवट–संज्ञा स्त्री० दे० "सिलवट"।

सलहज–संज्ञा स्त्री० [हिं० साला] सरहज।

सलाई–संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] धातु का बना हुआ कोई पतला छोटा छड़।
मुहा०—सलाई फेरना=सलाई गरम करके अंधा करने के लिये आँखों में लगाना।
संज्ञा स्त्री० [हिं०सालना] सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सलाक–संज्ञा पुं० [सं० शलाका] तीर।

सलाख–संज्ञा स्त्री० [फा० मि० सं० शलाका] धातु का बना हुआ छड़। शलाका। सलाई।

सलाद–संज्ञा पुं० [अ० सैलाड] १. मूली, प्याज आदि के पत्तों का अँगरेजी ढंग से डाला हुआ अचार। २. एक प्रकार के कन्द के पत्ते जो प्रायः कच्चे खाए जाते हैं।

सलाम–संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम करने की क्रिया। प्रणाम। बंदगी। आदाब।
मुहा०—दूर से सलाम करना=किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। सलाम लेना=सलाम

सरोवर-संज्ञा पुं० [सं०] १. तालाब। पोखरा। २. झील। ताल।
सरोष-वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित।
सरो सामान-संज्ञा पुं० [फा०सर+ओ+सामान] सामग्री। उपकरण। असबाब।
सरौता-संज्ञा पुं० [सं० सार=लोहा+पत्र] [स्त्री० अल्पा० सरौती] सुपारी काटने का एक प्रसिद्ध औज़ार।
सर्ग-संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन। गति। चलना या बढ़ना। २. संसार। सृष्टि। ३. बहाव। प्रवाह। ४. छोड़ना। चलाना। फेंकना। ५ उद्गम। उत्पत्ति-स्थान। ६. प्राणी। जीव। ७. संतान। औलाद। ८. स्वभाव। प्रकृति। ९. किसी ग्रंथ (विशेषतः काव्य) का अध्याय। प्रकरण।
सर्गबंध-वि० [सं०] जो कई अध्यायों में विभक्त हो। जैसे—सर्गबंध काव्य।
सर्गुन‡-वि० दे० "सगुण"।
सर्ज-संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। २. राल। धूना। ३. सलई का पेड़।
सर्जन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १. छोड़ना। फेंकना। २. निकालना। ३. सृष्टि।
सर्जू-संज्ञा स्त्री० दे० "सरयू"।
सर्द-वि० [फा०] १. ठंढा। शीतल। २. सुस्त। काहिल। ढीला। ३. मंद। धीमा। ४. नपुंसक। नामर्द।
सर्दी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सर्द होने का भाव। ठंढ। शीतलता। २. जाड़ा। शीत। ३. जुकाम। नज़ला।
सर्प-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] १. रेंगना। २. साँप। ३. एक म्लेच्छ जाति।
सर्पकाल-संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।
सर्पयज्ञ, सर्पयाग-संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो नागों के संहार के लिये जनमेजय ने किया था।
सर्पराज-संज्ञा पुं० [सं०] १. साँपों के राजा, शेषनाग। २ वासुकि।
सर्पविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप को पकड़ने या वश में करने की विद्या।
सर्पिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साँपिन। मादा साँप। २. भुजगी लता।
सर्फ़-संज्ञा पुं० [अ०] व्यय किया हुआ। खर्च किया हुआ।
सर्फा-संज्ञा पुं० [अ० सर्फ़] खर्च। व्यय।
सर्रस-संज्ञा पुं० दे० "सर्वस"।
सर्राफ-संज्ञा पुं० दे० "सराफ़"।
सर्व-वि० [सं०] सब। तमाम। कुल। संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. पारा।
सर्वकाम-संज्ञा पुं० [सं०] १ सब इच्छाएँ रखनेवाला। २ सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला। ३. शिव।
सर्वगत-वि० [सं०] सर्वव्यापक।
सर्वग्रास-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्र या सूर्य का पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण।
सर्वज्ञ-वि० [सं०] [स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे कुछ अज्ञात न हो। संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २ देवता। ३. बुद्ध या अर्हत्। ४ शिव।
सर्वज्ञता-संज्ञा स्त्री० [सं०] 'सर्वज्ञ' का भाव।
सर्वतंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] सब प्रकार के शास्त्र-सिद्धांत। वि० जिसे सब शास्त्र मानते हों।
सर्वतः-अव्य० [सं०] १. सब ओर। चारों तरफ़। २. सब प्रकार से।
सर्वतोभद्र-वि० [सं०] १. सब ओर से मंगल। २. जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुँड़े हों। संज्ञा पुं० १. वह चौखूँटा मंदिर जिसके चारों ओर दरवाजे हों। २. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। ३. एक प्रकार का चित्रकाव्य। ४ एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खंडाक्षरों के भी अलग अलग अर्थ लिए जाते हैं। ५. विष्णु का रथ।
सर्वतोभाव-अव्य० [सं०] सब प्रकार से। अच्छी तरह। भली भाँति।
सर्वतोमुख-वि० [सं०] १. जिसका मुँह चारों ओर हो। २. पूर्ण। व्यापक।
सर्वत्र-अव्य० [सं०] सब कहीं। सब जगह।
सर्वथा-अव्य० [सं०] १. सब प्रकार से। सब तरह से। २. बिलकुल। सब।
सर्वदर्शी-संज्ञा पुं० [सं० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिनी] सब कुछ देखनेवाला।
सर्वदा-अव्य० [सं०] हमेशा। सदा।

सर्वनाम—संज्ञा पुं० [सं० सर्वनामन्] व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होता है। जैसे—मैं, तू, वह।

सर्वनाश—संज्ञा पुं० [सं०] सत्यानाश। विध्वंस। पूरी बरबादी।

सर्वप्रिय—वि० [सं०] सब को प्यारा। जो सब को अच्छा लगे।

सर्वभक्षी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला।
संज्ञा पुं० अग्नि।

सर्वभोगी—वि० [सं० सर्वभोगिन्] [स्त्री० सर्वभोगिनी] १. सब का आनंद लेनेवाला। २. सब कुछ खानेवाला।

सर्वमंगला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २ लक्ष्मी।

सर्वरी—संज्ञा स्त्री० दे० "शर्वरी"।

सर्वव्यापक—संज्ञा पुं० दे० "सर्वव्यापी"।

सर्वव्यापी—वि० [सं० सर्वव्यापिन्] [स्त्री० सर्वव्यापिनी] सब में रहनेवाला। सब पदार्थों में रमणशील।

सर्वशक्तिमान्—वि० [सं० सर्वशक्तिमत्] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर।

सर्वश्रेष्ठ—वि० [सं०] सब से उत्तम।

सर्व-साधारण—संज्ञा पुं० [सं०] साधारण लोग। जनता। आम लोग।
वि० जो सबमें पाया जाय। आम।

सर्व-सामान्य—वि० [सं०] जो सब में एक सा पाया जाय। मामूली।

सर्वस्व—संज्ञा पुं० [सं०] सारी संपत्ति। सब कुछ। कुल माल-मता।

सर्वहर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सब कुछ हर लेनेवाला। २. महादेव। शंकर। ३. यमराज। ४. काल।

सर्वांग—संज्ञा पुं० [सं०] १. संपूर्ण शरीर। सारा बदन। २. सब अवयव या अंश।

सर्वात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सर्वात्मन्] १. सारे विश्व की आत्मा। ब्रह्म। २. शिव।

सर्वाधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ करने का अधिकार। पूरा इख्तियार।

सर्वाधिकारी—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके हाथ में पूरा इख्तियार हो। २. हाकिम।

सर्वाशी—वि० [सं० सर्वाशिन्] [स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। सर्वभक्षी।

सर्वास्तिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] यह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तव में सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।

सर्वेश, सर्वेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सब का स्वामी। २. ईश्वर। ३. चक्रवर्ती राजा।

सर्वौषधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी बूटियाँ हैं।

सर्षप—संज्ञा पुं० [सं०] १. सरसों। २. सरसों भर का मान या तौल।

सलई—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] १. शल्लकी वृक्ष। चीड़। २. चीड़ का गोंद। कुंदुर।

सलगम—संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

सलज्ज—वि० [सं०] जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावाला। लज्जाशील।

सलतनत—संज्ञा स्त्री० [अ० सल्तनत] १. राज्य। बादशाहत। २. साम्राज्य। ३. इंतज़ाम। प्रबंध। ४. सुभीता। आराम।

सलना—क्रि० अ० [सं० शल्य] १. साला जाना। छिदना। भिदना। २. छेद में डाला या पहनाया जाना।

सलब—वि० [अ० सल्ब] नष्ट। बरबाद।

सलमा—संज्ञा पुं० [अ० सल्म?] सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलवट—संज्ञा स्त्री० दे० "सिलवट"।

सलहज—संज्ञा स्त्री० [हिं० साला] सरहज।

सलाई—संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] धातु का बना हुआ कोई पतला छोटा छड़।
मुहा०—सलाई फेरना=सलाई गरम करके अंधा करने के लिये आँखों में लगाना।
संज्ञा स्त्री० [हिं०सालना] सालने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

सलाक—संज्ञा पुं० [सं० शलाका] तीर।

सलाख—संज्ञा स्त्री० [फा० मि० सं० शलाका] धातु का बना हुआ छड़। शलाका। सलाई।

सलाद—संज्ञा पुं० [अं० सैलाड] १. मूली, प्याज़ आदि के पत्तों का अँगरेज़ी ढंग से डाला हुआ अचार। २. एक प्रकार के कन्द के पत्ते जो प्रायः कच्चे खाए जाते हैं।

सलाम—संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम करने की क्रिया। प्रणाम। बंदगी। आदाब।
मुहा०—दूर से सलाम करना=किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। सलाम लेना=सलाम

सरोवर-संज्ञा पुं० [सं०] १. तालाब। पोखरा। २. झील। ताल।
सरोष-वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित।
सरो सामान-संज्ञा पुं० [फा०सर+व+सामान] सामग्री। उपकरण। असबाब।
सरोता-संज्ञा पुं० [सं० सार=लोहा+पत्र] [स्त्री० अल्पा० सरौती] सुपारी काटने का एक प्रसिद्ध औजार।
सर्ग-संज्ञा पु० [सं०] १. गमन। गति। चलना या बढ़ना। २. संसार। सृष्टि। ३. बहाव। प्रवाह। ४. छोड़ना। चलाना। फेंकना। ५ उद्गम। उत्पत्ति स्थान। ६. प्राणी। जीव। ७ संतान। औलाद। ८. स्वभाव। प्रकृति। ९. किसी ग्रंथ (विशेषत काव्य) का अध्याय। प्रकरण।
सर्गबंध-वि० [सं०] जो कई अध्यायों में विभक्त हो। जैसे—सर्गबंध काव्य।
सर्गुन-वि० दे० "सगुण"।
सर्ज-संज्ञा पु० [सं०] १. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। २. राल। धूना। ३. सलई का पेड़।
सर्जन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १. छोड़ना। फेंकना। २. निकालना। ३. सृष्टि।
सर्जू-संज्ञा स्त्री० दे० "सरयू"।
सर्द-वि० [फा०] १. ठंढा। शीतल। २. सुस्त। काहिल। ढीला। ३. मंद। धीमा। ४ नपुंसक। नामर्द।
सर्दी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. सर्द होने का भाव। ठंढ। शीतलता। २. जाड़ा। शीत। ३. जुकाम। नजला।
सर्प-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] १. रेंगना। २ साँप। ३ एक म्लेच्छ जाति।
सर्पकाल-संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।
सर्पयज्ञ, सर्पयाग-संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो नागों के संहार के लिये जनमेजय ने किया था।
सर्पराज-संज्ञा पु० [सं०] १ सर्पों के राजा, शेषनाग। २ वासुकि।
सर्पविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप को पकड़ने या वश में करने की विद्या।
सर्पिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साँपिन। मादा साँप। २. भुजगी लता।
सर्फ़-संज्ञा पुं० [अ०] व्यय किया हुआ। खर्च किया हुआ।
सर्फा-संज्ञा पु० [अ० सर्फ] खर्च। व्यय।
सर्बस-संज्ञा पु० दे० "सर्वस्व"।
सर्राफ-संज्ञा पुं० दे० "सराफ़"।
सर्व-वि० [सं०] सब। तमाम। कुल।
संज्ञा पु० १. शिव। २. विष्णु। ३. पारा।
सर्वकाम-संज्ञा पु० [सं०] १ सब इच्छाएँ रखनेवाला। २ सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला। ३. शिव।
सर्वगत-वि० [सं०] सर्वव्यापक।
सर्वग्रास-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्र या सूर्य्य का पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण।
सर्वज्ञ-वि० [सं०][स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे कुछ अज्ञात न हो।
संज्ञा पु० १ ईश्वर। २ देवता। ३. बुद्ध या अर्हत्। ४ शिव।
सर्वज्ञता-संज्ञा स्त्री० [सं०] 'सर्वज्ञ' का भाव।
सर्वतंत्र-संज्ञा पु० [सं०] सब प्रकार के शास्त्र-सिद्धांत।
वि० जिसे सब शास्त्र मानते हों।
सर्वतः-अव्य० [सं०] १. सब ओर। चारों तरफ़। २. सब प्रकार से।
सर्वतोभद्र-वि० [सं०] १. सब ओर से मंगल। २. जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुँड़े हों।
संज्ञा पुं० १. वह चौखूँटा मंदिर जिसके चारों ओर दरवाजे हों। २. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। ३. एक प्रकार का चित्रकाव्य। ४ एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खंडाक्षरों के भी अलग अलग अर्थ लिए जाते हैं। ५ विष्णु का रथ।
सर्वतोभाव-अव्य० [सं०] सब प्रकार से। अच्छी तरह। भली भाँति।
सर्वतोमुख-वि० [सं०] १. जिसका मुँह चारों ओर हो। २ पूर्ण। व्यापक।
सर्वत्र-अव्य० [सं०] सब कहीं। सब जगह।
सर्वथा-अव्य० [सं०] १ सब प्रकार से। सब तरह से। २. बिलकुल। सब।
सर्वदर्शी-संज्ञा पु० [सं० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिणी] सब कुछ देखनेवाला।
सर्वदा-अव्य० [सं०] हमेशा। सदा।

सर्वनाम-संज्ञा पुं०[सं० सर्वनामन्] व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होता है। जैसे—मैं, तू, वह।

सर्वनाश-संज्ञा पुं० [सं०] सत्यानाश। विध्वंस। पूरी बरबादी।

सर्वप्रिय-वि० [सं०] सब को प्यारा। जो सब को अच्छा लगे।

सर्वभक्षी-संज्ञा पुं० [सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला।
संज्ञा पुं० अग्नि।

सर्वभोगी-वि० [सं० सर्वभोगिन्] [स्त्री०सर्वभोगिनी] १. सब का आनंद लेनेवाला। २. सब कुछ खानेवाला।

सर्वमंगला-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २ लक्ष्मी।

सर्वरी-संज्ञा स्त्री० दे० "शर्वरी"।

सर्वव्यापक-संज्ञा पुं० दे० "सर्वव्यापी"।

सर्वव्यापी-वि० [सं० सर्वव्यापिन्] [स्त्री० सर्वव्यापिनी] सब में रहनेवाला। सब पदार्थों में रमणशील।

सर्वशक्तिमान्-वि० [सं० सर्वशक्तिमत्] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर।

सर्वश्रेष्ठ-वि० [सं०] सब से उत्तम।

सर्व-साधारण-संज्ञा पुं० [सं०] साधारण लोग। जनता। आम लोग।
वि० जो सबमें पाया जाय। आम।

सर्व-सामान्य-वि० [सं०] जो सब में एक सा पाया जाय। मामूली।

सर्वस्व-संज्ञा पुं० [सं०] सारी संपत्ति। सब कुछ। कुल माल मता।

सर्वहर-संज्ञा पुं० [सं०] १. सब कुछ हर लेनेवाला। २. महादेव। शंकर। ३. यमराज। ४ काल।

सर्वांग-संज्ञा पुं० [सं०] १. संपूर्ण शरीर। सारा बदन। २. सब अवयव या अंश।

सर्वात्मा-संज्ञा पुं० [सं० सर्वात्मन्] १ सारे विश्व की आत्मा। ब्रह्म। २ शिव।

सर्वाधिकार-संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ करने का अधिकार। पूरा इख्तियार।

सर्वाधिकारी-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके हाथ में पूरा इख्तियार हो। २. हाकिम।

सर्वाशी-वि० [सं० सर्वाशिन्] [स्त्री०सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। सर्वभक्षी।

सर्वास्तिवाद-संज्ञा पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तव में सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।

सर्वेश, सर्वेश्वर-संज्ञा पुं० [सं०] १. सब का स्वामी। २. ईश्वर। ३. चक्रवर्त्ती राजा।

सर्वौषधि-संज्ञा स्त्री० [सं०] आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी बूटियाँ हैं।

सर्षप-संज्ञा पुं० [सं०] १ सरसों। २. सरसों भर का मान या तौल।

सलई-संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] १. शल्लकी वृक्ष। चीड़। २ चीड़ का गोंद। कुंदुर।

सलगम-संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

सलज्ज-वि० [सं०] जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावाला। लज्जाशील।

सलतनत-संज्ञा स्त्री० [अ० सल्तनत] १. राज्य। बादशाहत। २. साम्राज्य। ३. इंतज़ाम। प्रबंध। ४. सुभीता। आराम।

सलना-क्रि० अ० [सं० शल्य] १. साला जाना। छिदना। भिदना। २. छेद में डाला या पहनाया जाना।

सलफ-वि० [अ० तल्फ़] नष्ट। बरबाद।

सलमा-संज्ञा पुं० [अ० सल्म ?] सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलवट-संज्ञा स्त्री० दे० "सिलवट"।

सलहज-संज्ञा स्त्री० [हिं० साला] सरहज।

सलाई-संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] धातु का बना हुआ कोई पतला छोटा छड़।
मुहा०—सलाई फेरना=सलाई गरम करके अंधा करने के लिये आँखों में लगाना।
संज्ञा स्त्री० [हिं०सालना] सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सलाक-संज्ञा पुं० [सं० शलाका] तीर।

सलाख-संज्ञा स्त्री० [फा० मि० सं० शलाका] धातु का बना हुआ छड़। शलाका। सलाई।

सलाद-संज्ञा पुं० [अं० सैलड] १. मूली, प्याज आदि के पत्तों का अँगरेजी ढंग से डाला हुआ अचार। २. एक प्रकार के कन्द के पत्ते जो प्रायः कच्चे खाए जाते हैं।

सलाम-संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम करने की क्रिया। प्रणाम। बंदगी। आदाब।
मुहा०—दूर से सलाम करना=किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। सलाम लेना=सलाम

का जवाब देना। सलाम देना = सलाम करना।

सलामत-वि० [अ०] १. सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ। रक्षित। २. जीवित और स्वस्थ। तंदुरुस्त और जिंदा। ३. कायम। बर-करार।
क्रि० वि० कुशलपूर्वक। खैरियत से।

सलामती-संज्ञा स्त्री० [अ० सलामत+ई (प्रत्य०)] १. तंदुरुस्ती। स्वस्थता। २. कुशल। क्षेम।

सलामी-संज्ञा स्त्री० [अ० सलाम+ई (प्रत्य०)] १. प्रणाम करने की क्रिया। सलाम करना। २. सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली। ३. तोपों या बन्दूकों की बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है।
मुहा०—सलामी उतारना = किसी के स्वागतार्थ बन्दूकों या तोपों की बाढ़ दागना।

सलार-संज्ञा पु० [?] एक प्रकार का पक्षी।

सलाह-संज्ञा स्त्री० [अ०] सम्मति। परामर्श। राय। मशवरा।

सलाहकार-संज्ञा पु० [अ० सलाह+फा० कार (प्रत्य०)] वह जो परामर्श देता हो। राय देनेवाला।

सलाही-संज्ञा पुं० दे० "सलाहकार"।

सलिल-संज्ञा पु० [सं०] जल। पानी।

सलिलपति-संज्ञा पु० [सं०] १. वरुण। २. समुद्र।

सलीका-संज्ञा पु० [अ०] १. काम करने का अच्छा ढंग। शऊर। तमीज। २. हुनर। लियाकत। ३. चाल-चलन। बरताव। ४. तहज़ीब। सभ्यता।

सलीकामंद-वि० [अ० सलीका+फा० मंद (प्रत्य०)] १. शऊरदार। तमीज़दार। २ हुनरमंद। ३. सभ्य।

सलीता-संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा।

सलीस-वि० [अ०] १. सहज। सुगम। २. मुहावरेदार और चलती हुई (भाषा)।

सलूक-संज्ञा पु० [अ०] १. बरताव। व्यवहार। आचरण। २. मिलाप। मेल। ३. भलाई। नेकी। उपकार।

सलोतर-संज्ञा पु० [सं० शालिहोत्र] पशुओं विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा का विज्ञान।

सलोतरी-संज्ञा पु० [सं० शालिहोत्री] पशुओं विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला। शालिहोत्री।

सलोना-वि० [हिं० स+लोन = नमक] [स्त्री० सलोनी] १. जिसमें नमक पड़ा हो। नमकीन। २. रसीला। सुंदर।

सलोनापन-संज्ञा पु० [हिं० सलोना+पन (प्रत्य०)] सलोना होने का भाव।

सलोनो-संज्ञा पु० [सं० श्रावणी?] हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण मास में पूर्णिमा को पड़ता है। रक्षा-बंधन। राखी पूनो।

सल्लम-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा। गजी। गाढ़ा।

सवत-संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

सवत्स-वि० [सं०] बच्चे के सहित। जिसके साथ बच्चा हो।

सवन-संज्ञा पु० [सं०] १ प्रसव। बच्चा जनना। २. यज्ञस्नान। ३. यज्ञ। ४. चंद्रमा। ५. अग्नि।

सवर्ण-वि० [सं०] १. समान। सदृश। २ समान वर्ण या जाति का।

सवाँग-संज्ञा पु० दे० "स्वाँग"।

सवा-संज्ञा स्त्री० [सं० स+पाद] चौथाई सहित। संपूर्ण और एक का चतुर्थांश।

सवाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० सवा+ई (प्रत्य०)] १. ऋण का एक प्रकार जिसमें मूल धन का चतुर्थांश ब्याज में देना पड़ता है। २. जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि।
वि० एक और चौथाई। सवा।

सवाद-संज्ञा पु० दे० "स्वाद"।

सवादिक†-वि० [हिं० सवाद+इक (प्रत्य०)] स्वाद देनेवाला। स्वादिष्ट।

सवाब-संज्ञा पु० [अ०] १. शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग में मिलेगा। पुण्य। २. भलाई। नेकी।

सवार-संज्ञा पु० [फा०] १. वह जो घोड़े पर चढ़ा हो। अश्वारोही। २. अश्वारोही सैनिक। ३. वह जो किसी चीज़ पर चढ़ा हो।
वि० किसी चीज़ पर चढ़ा या बैठा हुआ।

सवारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी चीज़ पर विशेषतः चलने के लिये चढ़ने की क्रिया। २. सवार होने की वस्तु। चढ़ने की चीज़। ३. वह व्यक्ति जो सवार हो। ४. जलूस।

सवाल-संज्ञा पु० [अ०] १. पूछने की क्रिया। २. वह जो कुछ पूछा जाय। प्रश्न। ३.

दरख्वास्त। माँग। ४. निवेदन। प्रार्थना। ५ गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है।

सवाल-जवाब–संज्ञा पुं० [अ०] १. बहस। वादविवाद। २. तकरार। हुज्जत। झगड़ा।

सविकल्प–वि० [सं०] १. विकल्प सहित। संदेह-युक्त। संदिग्ध। २. जो किसी विषय के दोनों पक्षों या मतों आदि को, कुछ निर्णय न कर सकने के कारण, मानता हो।
संज्ञा पुं० वह समाधि जो किसी आलंबन की सहायता से होती है।

सविता–संज्ञा पुं० [सं० सवितृ] १. सूर्य। २ बारह की संख्या। ३. आक। मदार।

सवितापुत्र–संज्ञा पुं० [सं० सवितृपुत्र] सूर्य के पुत्र, हिरण्यपाणि।

सवितासुत–संज्ञा पुं० [सं० सवितृसुत] शनैश्चर।

सविनय अवज्ञा–संज्ञा स्त्री० [सं० सविनय+अवज्ञा] राज्य की किसी आज्ञा या क़ानून को न मानना।

सवेरा–संज्ञा पुं० [हिं० स+सं० वेला] १. प्रातःकाल। सुबह। २. निश्चित समय के पूर्व का समय। (क्व०)

सवैया–संज्ञा पुं० [हिं० सवा+ऐया (प्रत्य०)] १ तौलने का सवा सेर का बाट। २. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। मालिनी। दिवा। ३ वह पहाड़ा जिसमें एक, दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया रहता है।

सव्य–वि० [सं०] १. वाम। बायाँ। २. दक्षिण। दाहिना। ३ प्रतिकूल। विरुद्ध। संज्ञा पुं० १. यज्ञोपवीत। २ विष्णु।

सव्यसाची–संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन।

सशंक–वि० [सं०] १. जिसे शंका हो। शंकित। भयभीत। २. भयानक।

सशंकना*–क्रि० अ० [सं०सशंक+ना,प्रत्य०)] १. शंका करना। २. भयभीत होना।

सस*–संज्ञा पुं० [सं० शशि] चंद्रमा।
संज्ञा पुं० [सं० शस्य] खेती-बारी।

ससक†–संज्ञा पुं० [सं० शशक] खरगोश।

ससि*–संज्ञा पुं० [सं० शशि] चंद्रमा।

ससिधर*–संज्ञा पुं० [सं०शशिधर] चंद्रमा।

सची*–संज्ञा स्त्री० दे० "शची"।

ससहर–संज्ञा पुं० दे० "ससिधर"।

ससुर–संज्ञा पुं० [सं० श्वशुर] पति या पत्नी का पिता। श्वशुर।

ससुरा–संज्ञा पुं० [सं० श्वशुर] १. श्वशुर। ससुर। २. एक प्रकार की गाली। ३. दे० "ससुराल"।

ससुराल–संज्ञा स्त्री० [सं० श्वशुरालय] श्वशुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर।

सस्ता–वि० [सं० स्वस्थ] [स्त्री० सस्ती] १. जो महँगा न हो। थोड़े मूल्य का। २. जिसका भाव बहुत उतर गया हो।
मुहा०—सस्ते छूटना = थोड़े व्यय, परिश्रम या कष्ट में कोई काम हो जाना।
३. घटिया। साधारण। मामूली। (क्व०)

सस्ताना†–क्रि० अ० [हिं०सस्ता+ना(प्रत्य०)] किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना। क्रि० स० सस्ते दामों पर बेचना।

सस्ती–संज्ञा स्त्री० [हिं० सस्ता] १. सस्ता होने का भाव। सस्तापन। २. वह समय जब कि सब चीजें सस्ती मिलें।

सस्त्रीक–वि० [सं०] जिसके साथ स्त्री हो। स्त्री या पत्नी के सहित।

सह–अव्य० [सं०] सहित। समेत।
वि० [सं०] १. उपस्थित। मौजूद। २. सहनशील। ३ समर्थ। योग्य।

सहकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंधित पदार्थ। २. आम का पेड़। ३. सहायक। ४. सहयोग।

सहकारता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सहायता।

सहकारिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहकारी या सहायक होने का भाव। २. सहायता।

सहकारी–संज्ञा पुं० [सं० सहकारिन्] [स्त्री० सहकारिणी] १. एक साथ काम करनेवाला। साथी। सहयोगी। २. सहायक। मददगार।

सहगमन–संज्ञा पुं० [सं०] पति के शव के साथ पत्नी का सती होना।

सहगामिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो। २. स्त्री। पत्नी। ३ सहचरी। साथिन।

सहगामी–संज्ञा पुं० [सं० सहगामिन्] [स्त्री० सहगामिनी] साथ चलनेवाला। साथी।

सहगौन*–संज्ञा पुं० दे० "सहगमन"।

सहचर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहचरी] १. साथ चलनेवाला। साथी। २ सेवक। नौकर। ३ दोस्त। मित्र।

साँझा-संज्ञा पुं० दे० "साझा"।

साँझी-संज्ञा स्त्री० [?] देव-मंदिरों में जमीन पर की हुई फूल-पत्तों आदि की सजावट जो प्रायः सावन में होती है।

साँट-संज्ञा स्त्री० [सट से अनु०] १. छड़ी। पतली कमची। २. कोड़ा। ३ शरीर पर का वह दाग जो कोड़े आदि का आघात पड़ने से होता है।

साँटा-संज्ञा पुं० [हिं० साँट=छड़ी] १. कोड़ा। २. ईख। गन्ना।

साँटिया-संज्ञा पुं० [हिं० साँटी] डौंड़ी या डुग्गी पीटनेवाला।

साँटी-संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिका या सट से अनु०] पतली छोटी छड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १. मेल-मिलाप। २. बदला। प्रतिकार। प्रतिहिंसा।

साँठ-संज्ञा पुं० [देश०] १. दे० "साँकड़ा"। २. ईख। गन्ना। ३. सरकंडा।

यौ०—साँठ गाँठ = १. मेल-मिलाप। २. गुप्त और अनुचित संबंध।

साँठना-क्रि० स० [हिं० साँठ] पकड़े रहना।

साँठी-संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ ?] पूँजी। धन।

साँड़-संज्ञा पुं० [सं० षंड] १. वह बैल (या घोड़ा) जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं। २ वह बैल जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ देते हैं।

साँड़नी-संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड़िया] ऊँटनी या मादा ऊँट जो बहुत तेज चलता है।

साँडा-संज्ञा पुं० [हिं० साँड़] एक प्रकार का जंगली जानवर जिसकी चरबी दवा के काम में आती है।

साँड़िया-संज्ञा पुं० [हिं० साँड़ ?] १ बहुत तेज चलनेवाला एक प्रकार का ऊँट। २ साड़नी पर सवारी करनेवाला।

सांत-वि० [सं०] जिसका अंत होता हो। अंतयुक्त।

सांत्वना-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुःखी व्यक्ति को उसका दुःख हलका करने के लिये शांति देना। ढारस। आश्वासन।

सांदीपनि-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी।

साँधना-क्रि० स० [सं० संधान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। संधान करना।

क्रि० स० [सं० साधन] पूरा करना। साधना।

क्रि० स० [सं० संधि] मिलाना। मिश्रण।

सांध्य-वि० [सं०] संध्या-संबंधी। संध्या का।

साँप-संज्ञा पुं० [सं० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० साँपिन] एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लंबा कीड़ा जिसकी सैकड़ों जातियाँ होती हैं। कुछ जातियाँ जहरीली और बहुत ही घातक होती हैं। भुजंग। विषधर।

मुहा०—कलेजे पर साँप लोटना = अत्यंत दुःख होना (ईर्ष्या आदि के कारण)। साँप सूँघ जाना = मर जाना। निर्जीव हो जाना। साँप छछूँदर की दशा = भारी असमंजस की दशा।

सांपत्तिक-वि० [सं० साम्पत्तिक] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। आर्थिक। माली।

साँपधरन-संज्ञा पुं० [हिं० साँप+धारण] शिव। महादेव।

साँपिन-संज्ञा स्त्री० [हिं० साँप+इन (प्रत्य०)] साँप की मादा।

सांप्रत-अव्य० [सं० साम्प्रत] इसी समय। अब। अभी। तत्काल।

सांप्रदायिक-वि० [सं० साम्प्रदायिक] किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। संप्रदाय का।

सांब-संज्ञा पुं० [सं० साम्ब] जांबवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ये बहुत सुंदर थे, पर दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी हो गए थे।

साँभर-संज्ञा पुं० [सं० सम्भल या साम्भल] १ राजपूताने की एक झील जिसके पानी से साँभर नमक बनता है। २. उक्त झील के जल से बना हुआ नमक। ३. भारतीय मृगों की एक जाति।

संज्ञा पुं० [सं० संबल] रास्ते का जलपान। संबल। पाथेय।

साँमुहे†-अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।

संज्ञा पुं० [सं० श्यामक] साँवाँ नामक अन्न।

साँवत†-संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

साँवर†-वि० दे० "साँवला"।

साँवलताई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवला] साँवला होने का भाव। श्यामता।

साँवला-वि० [सं० श्यामल] [स्त्री० साँवली] जिसका रंग कुछ कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम (गीतों में)

सहिदानी†–संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] चिह्न। पहचान। निशान।
सहिष्णु–वि० [सं०] सहनशील।
सहिष्णुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सहनशीलता।
सही–वि० [फ़ा० सहीह] १. सत्य। सच। २. प्रामाणिक। यथार्थ। ३. शुद्ध। ठीक। **मुहा०**—सही भरना = मान लेना। ४ हस्ताक्षर। दस्तख़त।
सही सलामत–वि० [फ़ा० + अ०] १. आरोग्य। भला-चंगा। तंदुरुस्त। २. जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो।
सहुँ–अव्य० [सं० सम्मुख] १. सन्मुख। सामने। २. ओर। तरफ़।
सहूलियत–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. आसानी। सुगमता। २. अदब। क़ायदा। शऊर।
सहृदय–वि० [सं०] [भाव० सहृदयता] १. जो दूसरे के दुःख सुख आदि समझता हो। २. दयालु। दयावान्। ३. रसिक। ४. सज्जन। भला आदमी।
सहेजना–क्रि० स० [अ० सही ?] १ भली भाँति जाँचना। सँभालना। २. अच्छी तरह कह-सुनकर सपुर्द करना।
सहेजवाना–क्रि० स० [हिं०सहेजना का प्रे०] सहेजने का काम दूसरे से कराना।
सहेट–संज्ञा पु० दे० "सहेत"।
सहेतꣳ†–संज्ञा पु० [सं० संकेत] वह निर्दिष्ट स्थान जहाँ प्रेमी-प्रेमिका मिलते हैं।
सहेतुक–वि० [सं०] जिसका कुछ हेतु, उद्देश्य या मतलब हो।
सहेली–संज्ञा स्त्री० [सं०सह = हिं०एली (प्रत्य०)] १. साथ में रहनेवाली स्त्री। संगिनी। २. परिचारिका। दासी।
सहैयाꣳ†–संज्ञा पु० [हिं० सहाय] सहायक। वि० [सं० सहन] सहन करनेवाला।
सहोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें 'सह' 'संग' 'साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है और अनेक कार्य्य साथ ही होते हुए दिखाए जाते हैं।
सहोदर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सहोदरा] एक ही माता के उदर से उत्पन्न संतान। वि० सगा। अपना। खास। (क्व०)
सह्य–संज्ञा पु० दे० "सह्याद्रि"। वि० [सं०] सहने योग्य। बर्दाश्त करने योग्य।
सह्याद्रि–संज्ञा पु० [सं०] बंबई प्रांत का एक प्रसिद्ध पर्वत।
साँई–संज्ञा पु० [सं० स्वामी] १. स्वामी। मालिक। २. ईश्वर। परमेश्वर। ३ पति। शौहर। भर्ता। ४. मुसलमान फ़क़ीरों की एक उपाधि।
साँकड़ा–संज्ञा पु० [सं० शृंखला] पैरों में पहनने का एक आभूषण।
साँकरꣳ†–संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखल] शृंखला। जंजीर। सीकड़। संज्ञा पु० [सं० संकीर्ण] संकट। कष्ट। वि० १. संकीर्ण। तंग। सँकरा। २. दुःखमय। कष्टमय।
साँकरा†–वि० दे० "सँकरा"।
सांख्य–संज्ञा पु० [सं०] महर्षि कपिल-कृत एक प्रसिद्ध दर्शन। इसमें प्रकृति को ही जगत् का मूल माना है और कहा है कि सत्त्व, रज और तम के योग से सृष्टि और उसके सब पदार्थों का विकास हुआ है।
साँग–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] एक प्रकार की बरछी जो फेंककर मारी जाती है। शक्ति।
सांग–वि० [सं० साङ्ग] संपूर्ण। पूरा।
साँगी–संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कु] बरछी। साँग।
सांगोपांग–अव्य० [सं० साङ्गोपाङ्ग] अंगों और उपांगों सहित। संपूर्ण। समस्त।
साँचꣳ†–वि० पु० [सं० सत्य] [स्त्री० साँची] सत्य। यथार्थ। ठीक।
साँचला†–वि० [हिं० साँच + ला (प्रत्य०)] [स्त्री० साँचली] सच्चा। सत्यवादी।
साँचा–संज्ञा पु० [सं० स्थाता] १. वह उपकरण जिसमें कोई गीली चीज़ रखकर किसी विशिष्ट आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। फरमा। **मुहा०**—साँचे में ढला होना = अंग प्रत्यंग से बहुत ही सुंदर होना। २. वह छोटी आकृति जो कोई बड़ी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है। ३. कपड़े पर बेल-बूटा छापने का ठप्पा। छापा।
साँची–संज्ञा पु० [साँची नगर ?] एक प्रकार का पान जो खाने में ठंढा होता है। संज्ञा पु० [?] पुस्तकों की वह छपाई जिसमें पंक्तियाँ बेड़े बल में होती हैं।
साँझ†–संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या] संध्या।

साँझा–संज्ञा पुं० दे० "साझा"।

साँझी–संज्ञा स्त्री० [?] देव-मंदिरों में जमीन पर की हुई फूल-पत्तों आदि की सजावट जो प्रायः सावन में होती है।

साँट–संज्ञा स्त्री० [सट से अनु०] १. छड़ी। पतली कमची। २. कोड़ा। ३ शरीर पर का वह दाग जो कोड़े आदि का आघात पड़ने से होता है।

साँटा–संज्ञा पुं० [हिं० साँट=छड़ी] १. कोड़ा। २. ईख। गन्ना।

साँटिया–संज्ञा पुं० [हिं० साँटी] डौंड़ी या डुग्गी पीटनेवाला।

साँटी–संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिका या सट से अनु०] पतली छोटी छड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १. मेल-मिलाप। २. बदला। प्रतिकार। प्रतिहिंसा।

साँठ–संज्ञा पुं० [देश०] १. दे० "साँकड़ा"। २. ईख। गन्ना। ३. सरकंडा।

यौ०—साँठ-गाँठ= १. मेल मिलाप। २. गुप्त और अनुचित संबंध।

साँठना–क्रि० स० [हिं० साँठ] पकड़े रहना।

साँठी–संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ ?] पूँजी। धन।

साँड़–संज्ञा पुं० [सं० षंड] १. वह बैल (या घोड़ा) जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं। २. वह बैल जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ देते हैं।

साँड़नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड़िया] ऊँटनी या मादा ऊँट जो बहुत तेज चलता है।

साँड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० साँड] एक प्रकार का जंगली जानवर जिसकी चरबी दवा के काम में आती है।

साँड़िया–संज्ञा पुं० [हिं० साँड़ ?] १. बहुत तेज चलनेवाला एक प्रकार का ऊँट। २. साँड़नी पर सवारी करनेवाला।

सांत–वि० [सं०] जिसका अंत होता हो। अंतयुक्त।

सांत्वना–संज्ञा स्त्री० [सं०] दुःखी व्यक्ति को उसका दुःख हलका करने के लिये शांति देना। ढारस। आश्वासन।

सांदीपनि–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी।

साँधना–क्रि० स० [सं० संधान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। संधान करना।

क्रि० स० [सं० साधन] पूरा करना। साधना।

क्रि० स० [सं० संधि] मिलाना। मिश्रण।

सांध्य–वि० [सं०] संध्या-संबंधी। संध्या का।

साँप–संज्ञा पुं० [सं० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० साँपिन] एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लंबा कीड़ा जिसकी सैकड़ों जातियाँ होती हैं। कुछ जातियाँ जहरीली और बहुत ही घातक होती हैं। भुजंग। विषधर।

मुहा०—कलेजे पर साँप लोटना=अत्यंत दुःख होना (ईर्ष्या आदि के कारण)। साँप सूँघ जाना=मर जाना। निर्जीव हो जाना। साँप छछूँदर की दशा=भारी असमंजस की दशा।

सांपत्तिक–वि० [सं० साम्पत्तिक] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। आर्थिक। माली।

साँपधरन–संज्ञा पुं० [हिं० साँप+धारण] शिव। महादेव।

साँपिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० साँप+इन (प्रत्य०)] साँप की मादा।

सांप्रत–अव्य० [सं० साम्प्रत] इसी समय। अब। अभी। तत्काल।

सांप्रदायिक–वि० [सं० साम्प्रदायिक] किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। संप्रदाय का।

सांब–संज्ञा पुं० [सं० साम्ब] जांबवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ये बहुत सुंदर थे, पर दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी हो गए थे।

साँभर–संज्ञा पुं० [सं० सम्भल या साम्भल] १. राजपूताने की एक झील जिसके पानी से साँभर नमक बनता है। २. उक्त झील के जल से बना हुआ नमक। ३. भारतीय मृगों की एक जाति।

संज्ञा पुं० [सं० संबल] रास्ते का जलपान। संबल। पाथेय।

साँमुहें–अव्य० [सं० सम्मुखे] सामने।

संज्ञा पुं० [सं० श्यामक] साँवाँ नामक अन्न।

साँवत–संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

साँवरा–वि० दे० "साँवला"।

साँवलताई–संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवला] साँवला होने का भाव। श्यामता।

साँवला–वि० [सं० श्यामल] [स्त्री० साँवली] जिसका रंग कुछ कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम। ३. [illegible]

साँवलापन–संज्ञा पुं० [हिं० साँवला + पन (प्रत्य०)] साँवला होने का भाव। वर्ण की श्यामता।

सावाँ–संज्ञा पुं० [सं० श्यामक] कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न।

साँस–संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] १. नाक या मुँह के द्वारा बाहर से हवा खींचकर अंदर फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम।

मुहा०—साँस उखड़ना = मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से साँस लेना। साँस टूटना। साँस ऊपर नीचे होना = साँस का ठीक तरह से ऊपर नीचे न आना। साँस रुकना। साँस चढ़ना = बहुत परिश्रम करने के कारण साँस का जल्दी जल्दी आना और जाना। साँस टूटना = दे० "साँस उखड़ना"। साँस तक न लेना = बिलकुल चुपचाप रहना। कुछ न बोलना। साँस फूलना = बार बार साँस आना और जाना। साँस चढ़ना। साँस रहते = जीते जी। उलटी साँस लेना = १. दे० "गहरी साँस लेना"। २. मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से अंतिम साँस लेना। गहरी-ठंढी या लंबी साँस लेना = बहुत अधिक दुःख आदि के कारण बहुत देर तक अंदर की ओर वायु खींचते रहना और उसे कुछ देर तक रोककर बाहर निकालना।

२. अवकाश। फुरसत।

मुहा०—साँस लेना = विश्राम लेना। ठहरना।

३. गुंजाइश। दम। ४. संधि या दरार जिसमें से हवा जा या आ सकती हो। ५. किसी अवकाश के अंदर भरी हुई हवा।

मुहा०—साँस भरना = किसी चीज के अंदर हवा भरना।

६. *दम फूलने का रोग। श्वास। दमा।*

साँसत–संज्ञा स्त्री० [हिं० साँस + त (प्रत्य०)] १. दम घुटने का सा कष्ट। २. बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा। ३. झंझट। बखेड़ा।

साँसतघर–संज्ञा पु० [हिं० साँसत + घर] वह तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें अपराधियों को विशेष दंड देने के लिये रखा जाता है। काल-कोठरी।

साँसना*†–क्रि० स० [सं० शासन] १. शासन करना। [illegible] देना। २. डाँटना। डपटना। ३. [illegible]ना। दुःख देना।

साँसा†–संज्ञा [illegible] [illegible]] १. साँस। [illegible]

संज्ञा पु० [सं० संशय] १. संशय। संदेह। शक। २. डर। भय। दहशत।

सांसारिक–वि० [सं०] इस संसार का। लौकिक। ऐहिक।

सा–अव्य० [सं० सदृश] १. समान। तुल्य। सदृश। बराबर। २. एक मानसूचक शब्द जैसे—थोड़ा सा।

साइक*–संज्ञा पुं० दे० "शायक"।

साइत–संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. पल। लहमा। ३ मुहूर्त। शुभ लग्न।

साइयाँ–संज्ञा पु० दे० "साईं"।

साइर†–संज्ञा पु० दे० "सायर"।

साइँ–संज्ञा पु० [सं० स्वामी] १. स्वामी। मालिक। २. ईश्वर। ३. पति। खाविंद।

साई–संज्ञा स्त्री० [हिं० साइत ?] वह धन जो पेशेकारों को, किसी अवसर के लिये उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है। पेशगी। बयाना।

साईस–संज्ञा पु०[हिं० रईस का अनु०] वह नौकर जो घोड़े की खबरदारी और सेवा करता है।

साईसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० साईस + ई (प्रत्य०)] साईस का काम, भाव या पद।

साकंभरी–संज्ञा पु० [सं० शाकंभरी] साँभर झील या उसके आस-पास का प्रांत।

साकचेरी†–संज्ञा स्त्री० [?] मेहँदी।

साकट–संज्ञा पु० [सं० शाक्त] १. शाक्त मत का अनुयायी। २. वह जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। ३. दुष्ट। पाजी।

साकर†–वि० दे० "सँकरा"।

साका–संज्ञा पुं० [सं० शाका] १. संवत्। शाका। २. ख्याति। प्रसिद्धि। ३. यश। कीर्ति। ४. कीर्ति का स्मारक। ५. धाक। रोब। ६. अवसर। मौका।

मुहा०—साका चलाना = रोब जमाना। साका बाँधना = दे० "साका चलाना"।

७. कोई ऐसा बड़ा काम जिससे कर्ता की कीर्ति हो।

साकार–वि० [सं०] १. जिसका कोई आकार या स्वरूप हो। २. मूर्तिमान्। साक्षात्। ३. स्थूल।

संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर का साकार रूप।

साकारोपासना–संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर [illegible]

साक़िन-वि० [अ०] निवासी। रहनेवाला।
साक़ी-संज्ञा पुं० [अ०] १. शराब पिलाने-वाला। २. माशूक़।
साकेत-संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या नगरी।
साक्षर-वि० [सं०] जो पढ़ना-लिखना जानता हो। शिक्षित।
साक्षात्-अव्य० [सं०] सामने। सम्मुख। वि० मूर्त्तिमान्। साकार। संज्ञा पुं० भेंट। मुलाक़ात। देखा-देखी।
साक्षात्कार-संज्ञा पुं० [सं०] १. भेंट। मुलाक़ात। २. पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।
साक्षी-संज्ञा पुं० [सं०साक्षिन्] [स्त्री० साक्षिणी] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को अपनी आँखों देखा हो। चश्मदीद गवाह। २. देखनेवाला। दर्शक। संज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया। गवाही। शहादत।
साक्ष्य-संज्ञा पुं० [सं०] गवाही। शहादत।
साख-संज्ञा पुं० [हिं० साखी] १. साक्षी। गवाह। २. गवाही। प्रमाण। शहादत। संज्ञा पुं० [सं० शाखा] १. धाक। रोब। २. मर्यादा। ३. लेन-देन की प्रामाणिकता।
साखना०-क्रि० स० [सं० साक्षि] साक्षी देना। गवाही देना। शहादत देना।
साखर०†-वि० दे० "साक्षर"।
साखा०†-संज्ञा स्त्री० दे० "शाखा"।
साखी-संज्ञा पुं० [सं० साक्षिन्]। गवाह। संज्ञा स्त्री० १. साक्षी। गवाही।
मुहा०—साखी पुकारना = गवाही देना।
२. ज्ञान-संबंधी पद या कविता।
संज्ञा पुं० [सं०शाखिन्] वृक्ष। पेड़।
साखू-संज्ञा पुं० [सं० शाख] शाल वृक्ष।
साखोचारन०†-संज्ञा पुं० [सं०शाखोच्चारण] विवाह के अवसर पर वर और वधू के वंश-गोत्रादि का चिल्ला-चिल्लाकर परिचय देने की क्रिया। गोत्रोच्चार।
साग-संज्ञा पुं० [सं० शाक] १. पौधों की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। २. पकाई हुई भाजी। तरकारी।
यौ०—साग-पात = रूखा-सूखा भोजन।
सागर-संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। उदधि। २. बड़ा तालाब। झील। ३. संन्यासियों का एक भेद।
सागू-संज्ञा पुं० [अं० सैगो] १. ताड़ की जाति का एक पेड़। २. दे० "सागूदाना"।
सागूदाना-संज्ञा पुं० [हिं० सागू + दाना] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो कूट-कर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। यह बहुत जल्दी पच जाता है। साबूदाना।
सागौन-संज्ञा पुं० दे० "शाल" (१)।
साग्निक-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बराबर अग्निहोत्र आदि किया करता हो।
साग्र-वि० [सं०] समस्त। कुल। सब।
साज़-संज्ञा पुं० [फ़ा०, मि० सं० सज्जा] १. सजावट का काम। ठाठ-बाट। २. सजावट का सामान। उपकरण। सामग्री। जैसे—घोड़े का साज़। नाव का साज। ३. वाद्य। बाजा। ४. लड़ाई में काम आनेवाले हथियार। ५. मेल-जोल। वि० मरम्मत या तैयार करनेवाला। बनाने-वाला। (यौगिक में, अंत में)
साजन-संज्ञा पुं० [सं० सज्जन] १. पति। स्वामी। २. प्रेमी। वल्लभ। ३. ईश्वर। ४. सज्जन। भला आदमी।
साजना०†-क्रि० स० दे० "सजाना"। संज्ञा पुं० दे० "साजन"।
साज-बाज-संज्ञा पुं० [सं० साज + बाज (अनु०)] १. तैयारी। २. मेल-जोल।
साज-सामान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सामग्री। उपकरण। असबाब। २. ठाठ-बाट।
साज़िंदा-संज्ञा पुं० [फ़ा० साज़िन्द:] १. 'साज़ या बाजा' बजानेवाला। २. सपर-दाई। समाजी।
साज़िश-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. मेल। मिलाप। २. किसी के विरुद्ध कोई काम करने में सहायक होना। षड्यंत्र।
साजुज्य०-संज्ञा पुं० दे० "सायुज्य"।
साझा-संज्ञा पुं० [सं० सहार्घ्य] १. शराकत। हिस्सेदारी। २. हिस्सा। भाग। बाँट।
साझी-संज्ञा पुं० दे० "साझेदार"।
साझेदार-संज्ञा पुं० [हिं० साझा + दार (प्रत्य०)] शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी।
साटक-संज्ञा पुं० [?] १ भूसी। छिलका। २. तुच्छ और निकम्मी चीज़। ३. एक प्रकार का छंद।
साटन-संज्ञा पुं० [अं० सैटिन] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।
साटना०†-क्रि० स० दे० "सटाना"

साठ-वि० [सं० षष्टि] पचास और दस।
संज्ञा पुं० पचास और दस के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

साठ-नाठ-वि० [हिं० साँठि+नाट (नष्ट)] १. निर्धन। दरिद्र। २. नीरस। रूखा। ३. इधर-उधर। तितर-बितर।

साठसाती-संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ेसाती"।

साठा-संज्ञा पुं० [देश०] १. ईख। गन्ना। ऊख। २. साठी धान।
वि० [हिं० साठ] साठ वर्ष की उम्रवाला।

साठी-संज्ञा पुं० [सं० षष्टिक] एक प्रकार का धान।

साड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० शाटिका] स्त्रियों के पहनने की चौड़े किनारे की या बेलदार धोती। सारी।
संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ी"।

साढ़सानी-संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ेसाती"।

साढ़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० असाढ़] वह फ़सल जो असाढ़ में बोई जाती है। असाढ़ी।
संज्ञा स्त्री० [सं० सार ?] दूध के ऊपर जमनेवाली मलाई। मलाई।
संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ी"।

साढू-संज्ञा पुं० [सं० स्यालिवोढ़ृ] साली का पति। पत्नी की बहन का पति।

साढ़ेसाती-संज्ञा स्त्री० [हिं० साढ़े+सात+ई (प्रत्य०)] शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात मास या साढ़े सात दिन आदि की दशा। (अशुभ)

सात-वि० [सं० सप्त] पाँच और दो।
संज्ञा पुं० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७।
मुहा०—सात पाँच = चालाकी। मक्कारी। धूर्तता। सात समुद्र पार = बहुत दूर। सात राजाओं की साखी देना = किसी बात की सत्यता पर बहुत ज़ोर देना। सात सींकें बनाना = शिशु के जन्म के छठे दिन की एक रीति जिसमें सात सींकें रखी जाती हैं।

सात-फेरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सात+फेरा] विवाह की भाँवर नामक रीति।

सातला-संज्ञा पुं० [सं० सप्तला] एक प्रकार का थूहर। सप्तला। स्वर्णपुष्पी।

सात्मक-वि० [सं०] आत्मा के सहित।

सात्म्य-संज्ञा पुं० [सं०] सारूप्य। सरूपता।

सात्यकि-संज्ञा पुं० [सं०] एक यादव जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया था। युयुधान।

सात्वत-संज्ञा पुं० [सं०] १. बलराम। २. श्रीकृष्ण। ३. विष्णु। ४. यदुवंशी।

सात्वती-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिशुपाल की माता का नाम। २. सुभद्रा।

सात्वती वृत्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक प्रकार की वृत्ति जिसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है।

सात्विक-वि० [सं०] १. सत्त्वगुणवाला। सतोगुणी। २. सत्त्वगुण से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्गजात अंग-विकार। यथा—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय। २. सात्वती वृत्ति। (साहित्य)

साथ-संज्ञा पुं० [सं० सहित] १. मिलकर या संग रहने का भाव। संगत। सहचार। २. बराबर पास रहनेवाला। साथी। संगी। ३. मेल मिलाप। घनिष्ठता।
अव्य० १. संबंधसूचक अव्यय जिससे सहचार का बोध होता है। सहित। से।
मुहा०—साथ ही = सिवा। अतिरिक्त। साथ ही साथ = एक साथ। एक सिलसिले में। एक साथ = एक सिलसिले में।
२. विरुद्ध। ३. प्रति। से। ४. द्वारा।

साथरा-संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० साथरी] १. बिछौना। बिस्तर। २. कुश की बनी चटाई।

साथी-संज्ञा पुं० [हिं० साथ] [स्त्री० साथिन] १ साथ रहनेवाला। हमराही। संगी। २. दोस्त। मित्र।

सादगी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सादापन। सरलता। २ सीधापन। निष्कपटता।

सादा-वि० [फ़ा० सादः] [स्त्री० सादी] १. जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। २. जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। ३. बिना मिलावट का। ख़ालिस। ४. जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। ५. जो कुछ छल-कपट न जानता हो। सरल हृदय। सीधा। ६. मूर्ख।

सादापन-संज्ञा पुं० [फ़ा० सादा+पन (प्रत्य०)] सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।

सादी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सादः] १. लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी

चिड़िया। सदिया। २. यह पूरी जिसमें पीठी आदि नहीं भरी होती।
संज्ञा पुं० १. शिकारी। २. घोड़ा।

सादूर-संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] १. शार्दूल। सिंह। २. कोई हिंसक पशु।

सादृश्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. समानता। एक-रूपता। २. बराबरी। तुलना।

साध-संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. साधु। महात्मा। २. योगी। ३. सज्जन।
संज्ञा स्त्री० [सं० उत्साह] १. इच्छा। ख्वाहिश। कामना। २. गर्भ धारण करने के सातवें मास में होनेवाला एक प्रकार का उत्सव।
संज्ञा पुं० फ़रुखाबाद और कन्नौज के आस-पास पाई जानेवाली एक जाति।
वि० [सं० साधु] उत्तम। अच्छा।

साधक-संज्ञा पुं० [सं०] १. साधना करनेवाला। साधनेवाला। २ योगी। तपस्वी। ३. करण। वसीला। जरिया। ४. वह जो किसी दूसरे के स्वार्थ साधन में सहायक हो।

साधन-संज्ञा पुं० [सं०] १. काम को सिद्ध करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २. सामग्री। सामान। उपकरण। ३. उपाय। युक्ति। हिकमत। ४. उपासना। साधना। ५. धातुओं को शोधने की क्रिया। शोधन। ६. कारण। हेतु।

साधनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साधन का भाव या धर्म्म। २. साधना।

साधनहार%-संज्ञा पुं० [सं० साधन+हार] १. साधनेवाला। २ जो साधा जा सके।

साधना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोई कार्य्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया। सिद्धि। २. देवता आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी उपासना। ३. दे० "साधन"।
क्रि० स० [सं० साधन] १. कोई कार्य्य सिद्ध करना। पूरा करना। २. निशाना लगाना। संधान करना। ३. नापना। पैमाइश करना। ४. अभ्यास करना। आदत डालना। ५. शोधना। शुद्ध करना। ६. पक्का करना। ठहराना। ७. एकत्र करना। इकट्ठा करना। ८. वश में करना।

साधर्म्य-संज्ञा पुं० [सं०] समान धर्म होने का भाव। एक-धर्मता।

साधारण-वि० [सं०] १. मामूली। सामान्य। २. सरल। सहज। ३. सार्वजनिक। आम। ४. समान। सदृश।

साधारणतः-अव्य० [सं०] १. मामूली तौर पर। सामान्यतः। २. बहुधा। प्रायः।

साधित-वि० [सं०] जो सिद्ध किया या साधा गया हो।

साधु-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुलीन। आर्य्य। २. धार्मिक पुरुष। महात्मा। संत। ३. भला आदमी। सज्जन।
मुहा०—साधु साधु कहना=किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा करना।
वि० १. अच्छा। उत्तम। भला। २. सच्चा। ३. प्रशंसनीय। ४. उचित।

साधुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साधु होने का भाव या धर्म्म। २ सज्जनता। भलमनसाहत। ३. सीधापन। सिधाई।

साधुवाद-संज्ञा पुं० [सं०] किसी के कोई उत्तम कार्य्य करने पर "साधु साधु" कहकर उसकी प्रशंसा करना।

साधु साधु-अव्य० [सं०] धन्य धन्य। वाह वाह। बहुत खूब।

साधू-संज्ञा पुं० दे० "साधु"।

साधो-संज्ञा पुं० [सं० साधु] संत। साधु।

साध्य-वि० [सं०] १. सिद्ध करने योग्य। २. जो सिद्ध हो सके। ३. सहज। सरल। आसान। ४. जो प्रमाणित करना हो।
संज्ञा पुं० १. देवता। २ न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। ३. शक्ति। सामर्थ्य।

साध्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] साध्य का भाव या धर्म्म। साध्यत्व।

साध्यवसानिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लक्षणा। (सा० द०)

साध्यसम-संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में वह हेतु जिसका साधन साध्य की भाँति करना पड़े।

साध्वी-वि० स्त्री० [सं०] १. पतिव्रता। (स्त्री) २. शुद्ध चरित्रवाली। (स्त्री)

सानंद-वि० [सं०] आनंद के साथ। आनंदपूर्वक।

सान-संज्ञा पुं० [सं० शाण] वह पत्थर जिस पर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं। कुरंड।
मुहा०—सान देना या धरना=धार तेज करना।

सानना†–क्रि० स० [हिं० सनना का सक०] १. चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। गूँधना। २. उत्तरदायी बनाना। ३. मिलाना। मिश्रित करना।

सानी–संज्ञा स्त्री० [हिं०सानना] वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को देते हैं। वि० [अ०] १. दूसरा। द्वितीय। २. बराबरी का। मुकाबले का।

यौ०—लासानी = अद्वितीय।

सानु–संज्ञा पु० [सं०] १. पर्वत की चोटी। शिखर। २. अंत। सिरा। ३. चौरस ज़मीन। ४. वन। जंगल।

सान्निध्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. समीपता। सामीप्य। सन्निकटता। २. एक प्रकार की मुक्ति। मोक्ष।

साप†–संज्ञा पु० दे० "शाप"।

सापत्न्य–संज्ञा पु० [सं०] १. सपत्नी का भाव या धर्म्म। सौतपन। २. सौत का लड़का।

सापना†–क्रि० स० [सं० शाप] १.शाप देना। बददुआ देना। २. गाली देना। कोसना।

साफ़–वि० [अ०] १. जिसमें किसी प्रकार की मल आदि न हो। स्वच्छ। निर्मल। २. शुद्ध। खालिस। ३. निर्दोष। बे-ऐब। ४. स्पष्ट। ५. उज्ज्वल। ६. जिसमें कोई बखेड़ा या झंझट न हो। ७. स्वच्छ। चमकीला। ८. जिसमें छल-कपट न हो। निष्कपट। ९. समतल। हमवार। १०. सादा। कोरा। ११. जिसमें से अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो। १२. जिसमें कुछ तत्त्व न रह गया हो।

मुहा०—साफ़ करना = १. मार डालना। हत्या करना। २. नष्ट करना। बरबाद करना। १३. लेन-देन आदि का निपटना। चुकती। क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के दोष, कलंक या अपवाद आदि के। २. बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए हुए। ३. इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे। ४. बिलकुल। नितांत।

साफल्य–संज्ञा पुं० दे० "सफलता"।

साफा–संज्ञा पु० [अ० साफ़] १. पगड़ी। २. मुरेठा। मुँड़ासा। ३. नित्य के पहनने के वस्त्रों को साबुन लगाकर साफ़ करना। कपड़े धोना।

साफ़ी–संज्ञा स्त्री० [अ० साफ़] १. रूमाल। दस्ती। २. वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। ३. भाँग छानने का कपड़ा। छनना।

साबर–संज्ञा पु० [सं० शबर] १. दे० "साँभर"। २ साँभर मृग का चमड़ा। ३ मिट्टी खोदने का एक औज़ार। सबरी। ४. शिव कृत एक प्रकार का सिद्ध मंत्र।

साबस†–संज्ञा पु० दे० "शाबाश"।

साबिक़–वि० [अ०] पूर्व का। पहले का।

यौ०—साबिक़ दस्तूर = जैसा पहले था, वैसा ही। पहले की ही तरह।

साबिक़ा–संज्ञा पु० [अ०] १. मुलाक़ात। भेंट। २. संबंध। सरोकार।

साबित–वि० [फ़ा०] जिसका सबूत दिया गया हो। प्रमाणित। सिद्ध। वि० [अ० सबूत] १. साबूत। पूरा। २. दुरुस्त। ठीक।

साबुत–वि० [फ़ा० सबूत] १. साबूत। संपूर्ण। २. दुरुस्त।

साबुन–संज्ञा पु० [अ०] रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ़ किए जाते हैं।

साबूदाना–संज्ञा पु० दे० "सागूदाना"।

सामंजस्य–संज्ञा पु० [सं०] १. औचित्य। २. उपयुक्तता। ३. अनुकूलता।

सामंत–संज्ञा पुं० [सं०] १. वीर। योद्धा। २. बड़ा ज़मींदार या सरदार।

साम–संज्ञा पु० [सं० सामन्] १. वे वेद मंत्र जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। २. दे० "सामवेद"। ३. मधुर भाषण। ४. राजनीति में अपने वैरी या विरोधी को मीठी बातें करके अपनी ओर मिला लेना। ५. सामान। संज्ञा पु० दे० "श्याम" और "शाम"। संज्ञा स्त्री० दे० "शाम" और "शामी"।

सामग–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सामगी] वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो।

सामग्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य्य में उपयोग होता हो। २. असबाब। सामान। ३. आवश्यक द्रव्य। ज़रूरी चीज़। ४. साधन।

सामना-संज्ञा पुं० [हिं० सामने] १. किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव।
मुहा०—सामने होना=(स्त्रियों का) परदा न करके समक्ष आना।
२. भेंट। मुलाकात। ३. किसी पदार्थ का अगला भाग। ४. विरोध। मुकाबला।
मुहा०—सामना करना=धृष्टता करना। सामने होकर जवाब देना।

सामने-क्रि० वि० [सं० सम्मुख] १. सम्मुख। समक्ष। आगे। २. उपस्थिति में। मौजूदगी में। ३. सीधे। आगे। ४ मुकाबले में। विरुद्ध।

सामयिक-वि० [सं०] १. समय-संबंधी। २. वर्त्तमान समय से संबंध रखनेवाला। ३. समय के अनुसार।
यौ०—सामयिक पत्र=समाचार पत्र।

सामरथ†-संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।

सामरिक-वि० [सं०] समर-संबंधी। युद्ध का।

सामर्थ-संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।

सामर्थी-संज्ञा पुं० [सं० सामर्थ्य] १. सामर्थ्य रखनेवाला। २. पराक्रमी। बलवान्।

सामर्थ्य-संज्ञा पुं० स्त्री० [सं० सामर्थ्य] १. समर्थ होने का भाव। २. शक्ति। ताकत। ३. योग्यता। ४. शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है।

सामवायिक-वि० [सं०] १. समवाय-संबंधी। २. समूह या झुंड-संबंधी।

सामवेद-संज्ञा पुं० [सं० सामन्] भारतीय आर्यों के चार वेदों में से तीसरा। यज्ञों के समय जो स्तोत्र आदि गाए जाते थे, उन्हीं स्तोत्रों का इस वेद में संग्रह है।

सामवेदीय-वि० [सं०] सामवेद संबंधी। संज्ञा पुं० सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी।

सामसाली-संज्ञा पुं० [सं० साम+शाली] राजनीतिज्ञ।

सामहि०-अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।

सामाजिक-वि० [सं०] १. समाज से संबंध रखनेवाला। समाज का। २. सभा से संबंध रखनेवाला।

सामाजिकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सामाजिक का भाव। लौकिकता।

सामान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. किसी कार्य्य के साधन की आवश्यक वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। २. माल। असबाब। ३. बंदोबस्त। इंतज़ाम।

सामान्य-वि० [सं०] जिसमें कोई विशेषता न हो। साधारण। मामूली।
संज्ञा पुं० [सं०] १. समानता। बराबरी। २. वह गुण जो किसी जाति की सब चीज़ों में समान रूप से पाया जाय। जैसे—मनुष्यों में मनुष्यत्व। ३. साहित्य में एक अलंकार। एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन जिनमें देखने में कुछ भी अंतर नहीं जान पड़ता।

सामान्यतः, सामान्यतया-अव्य० [सं०] सामान्य या साधारण रीति से। साधारणतः।

सामान्यतोदृष्ट-संज्ञा पुं० [सं०] १. तर्क में अनुमान संबंधी एक प्रकार की भूल। किसी ऐसे पदार्थ के द्वारा अनुमान करना जो न कार्य्य हो और न कारण। २. दो वस्तुओं या बातों में ऐसा साधर्म्य जो कार्य्य कारण संबंध से भिन्न हो।

सामान्य भविष्यत्-संज्ञा पुं० [सं०] भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है। (व्या०)

सामान्य भूत-संज्ञा पुं० [सं०] भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूत काल की विशेषता नहीं पाई जाती। जैसे—खाया।

सामान्य लक्षणा-संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब पदार्थों का बोध करानेवाली शक्ति।

सामान्य वर्तमान-संज्ञा पुं० [सं०] वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्त्ता का उसी समय कोई कार्य्य करते रहना सूचित होता है। जैसे—खाता है।

सामान्य विधि-संज्ञा स्त्री० [सं०] साधारण विधि या आज्ञा। आम हुक्म। जैसे-हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो।

सामान्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो धन लेकर प्रेम करती है। गणिका।

सामासिक-वि० [सं०] समास से संबंध रखनेवाला। समास का।

सामिग्री-संज्ञा स्त्री० दे० "सामग्री"।

सामिष-वि० [सं०] मांस, मत्स्य आदि के सहित। निरामिष का उलटा।

सामी ३†-संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।
संज्ञा स्त्री० दे० "शामी"।

सामीप्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. निकटता। २. वह मुक्ति जिसमें मुक्त जीव का भगवान् के समीप पहुँच जाना माना जाता है।

सामुहिं†-संज्ञा स्त्री० दे० "समक्ष"।

सामुदायिक-वि० [सं०] समुदाय का।

सामुद्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र से निकला हुआ नमक॥ २. समुद्रफेन। ३. दे० "सामुद्रिक"।
वि० १. समुद्र से उत्पन्न। २. समुद्र संबंधी। समुद्र का।

सामुद्रिक-वि० [सं०] सागर-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. फलित ज्योतिष का एक अंग जिसमें हथेली की रेखाओं और शरीर पर के तिलों आदि को देखकर मनुष्य के जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते हैं। २ वह जो इस शास्त्र का ज्ञाता हो।

सामुहाँ†-अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।

सामुहें†-अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।

साम्य-संज्ञा पुं० [सं०] समान होने का भाव। तुल्यता। समानता।

साम्यता-संज्ञा स्त्री० दे० "साम्य"।

साम्यवाद-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पाश्चात्य सामाजिक सिद्धांत। इसके प्रचारक समाज में बहुत अधिक साम्य स्थापित करना चाहते हैं और उसका वर्तमान वैषम्य दूर करना चाहते हैं।

साम्यावस्था-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अवस्था जिसमें सत्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों। प्रकृति।

साम्राज्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट् का शासन हो। सार्वभौम राज्य। सल्तनत। २ आधिपत्य। पूर्ण अधिकार।

साम्राज्यवाद-संज्ञा पुं० [सं०] साम्राज्य को बराबर बढ़ाते रहने का सिद्धांत।

सायं-वि० [सं०] संध्या-संबंधी।
संज्ञा पुं० संध्या। शाम।

सायंकाल-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सायंकालीन] दिन का अंतिम भाग। संध्या। शाम।

सायंसंध्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह संध्या (उपासना) जो सायंकाल में की जाती है।

सायक-संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। शर। २. खड्ग। ३. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक पाद में सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है। ४. पाँच की संख्या।

सायण-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने वेदों के प्रसिद्ध भाष्य लिखे हैं।

सायत-संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. दंड। पल। ३. शुभ मुहूर्त। अच्छा समय।

सायन-संज्ञा पुं० दे० "सायण"।
वि० [सं०] अयनयुक्त। जिसमें अयन हो। (ग्रह आदि)
संज्ञा पुं० सूर्य की एक प्रकार की गति।

सायवान-संज्ञा पुं० [फा० सायःबान] मकान के आगे की वह छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिये बनाई गई हो।

सायर†-संज्ञा पुं० [सं० सागर] १. सागर। समुद्र। २. ऊपरी भाग। शीर्ष।
संज्ञा पुं० [अ०] १. वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २ मुतफ़र्रकात। फुटकर।

सायल-संज्ञा पुं० [अ०] १ सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २. माँगनेवाला। ३. भिखारी। फकीर। ४. प्रार्थना करनेवाला। ५. उम्मीदवार। आकांक्षी।

साया-संज्ञा पुं० [फा० साय] १. छाया।
मुहा०—साये में रहना = शरण में रहना।
२. परछाईं। ३ जिन, भूत, प्रेत, परी आदि। ४. असर। प्रभाव।
संज्ञा पुं० [अ० शेमीज़] घाँघरे की तरह का एक जनाना पहनावा।

सायाह्न-संज्ञा पुं० [सं०] संध्या। शाम।

सायुज्य-संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सायुज्यता] १ ऐसा मिलना कि कोई भेद न रह जाय। २. वह मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है।

सारंग-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का मृग। २. कोकिल। कोयल। ३. श्येन। बाज़। ४. सूर्य। ५. सिंह। ६. हंस पक्षी। ७. मयूर। मोर। ८. चातक। ९. हाथी। १०. घोड़ा। अश्व। ११. छाता। छत्र। १२. शंख। १३ कमल। कंज। १४. स्वर्ण। सोना। १५. आभूषण। गहना। १६ सर। तालाब। १७ भ्रमर। भौंरा। १८ एक प्रकार की मधुमक्खी। १९. विष्णु का धनुष। २०. कपूर। कपूर।

२१. श्रीकृष्ण। २२. चंद्रमा। शशि। २३. समुद्र। सागर। २४ जल। पानी। २५. बाण। तीर। २६ दीपक। दीया। २७. पपीहा। २८ शंभु। शिव। २६. सर्प। साँप। ३०. चंदन। ३१. भूमि। जमीन। ३२. केश। बाल। अलक। ३३. शोभा। सुंदरता। ३४. स्त्री। नारी। ३५. रात्रि। रात। ३६. दिन। ३७. तलवार। खड्ग। (डिं०) ३८ एक प्रकार का छंद जिसमें चार सगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ३६. छप्पय के २६ वें भेद का नाम। ४०. मृग। हिरन। ४१. मेघ। बादल। ४२. हाथ। कर। ४३. ग्रह। नक्षत्र। ४४. खंजन पक्षी। सोनचिड़ी। ४५. मेंढक। ४६ गगन। आकाश। ४७. पक्षी। चिड़िया। ४८. सारंगी नामक वाद्य यंत्र। ४६. ईश्वर। भगवान्। ५० कामदेव। मन्मथ। ५१. विद्युत्। बिजली। ५२. पुष्प। फूल। ५३ संपूर्ण जाति का एक राग।

वि० १. रँगा हुआ। रंगीन। २. सुंदर। सुहावना। ३. सरस।

सारंगपाणि–संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सारंगिक–संज्ञा पुं० [सं०] १ चिड़ीमार। बहेलिया। २. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पद में न, य, स होते हैं।

सारंगिया–संज्ञा पुं० [हिं० सारंगी + इया (प्रत्य०)] सारंगी बजानेवाला। साजिंदा।

सारंगी–संज्ञा स्त्री० [सं० सारंग] एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध तारवाला बाजा। इसका स्वर बहुत ही मधुर और प्रिय होता है।

सार–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ में का मूल या असली भाग। तत्त्व। सत्त। २. मुख्य अभिप्राय। निष्कर्ष। ३. निर्यास या अर्क आदि। रस। ४ जल। पानी। ५. गूदा। मग्ज। ६. दूध पर की साढ़ी। मलाई। ७ लकड़ी का हीर। ८. परिणाम। फल। नतीजा। ६ धन। दौलत। १० नवनीत। मक्खन। ११. अमृत। १२. बल। शक्ति। ताकत। १३. मज्जा। १४ जूआ खेलने का पासा। १५ तलवार। (डिं०) १६. २८ मात्राओं का एक छंद। १७. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। वि० दे० "श्याल"। १८ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है। उदार।

वि० १. उत्तम। श्रेष्ठ। २ दृढ़। मजबूत।

*संज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना।

संज्ञा पुं० [हिं० सारना] १. पालन पोषण। २. देख रेख। ३ शय्या। पलंग।

†संज्ञा पुं० [सं० श्याल] पत्नी का भाई। साला।

सारगर्भित–वि० [सं०] जिसमें तत्त्व भरा हो। सार युक्त। तत्त्वपूर्ण।

सारता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सार का भाव या धर्म। सारत्व।

सारथि–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सारथ्य] १. रथादि का चलानेवाला। सूत। २. समुद्र। सागर।

सारद–संज्ञा स्त्री० [सं० शारदा] सरस्वती। वि० शारद। शरद संबंधी।

संज्ञा पुं० [सं० शरद्] शरद ऋतु।

सारदा–संज्ञा स्त्री० दे० "शारदा"।

सारदी–वि० दे० "शारदीय"।

सारदूल–संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

सारना–क्रि० स० [हिं० सरना का सक०] १ पूर्ण करना। समाप्त करना। २. साधना। बनाना। दुरुस्त करना। ३. सुशोभित करना। सुंदर बनाना। ४ रक्षा करना। सँभालना। ५. आँखों में अंजन आदि लगाना। ६ अस्त्र चलाना।

सारभाटा–संज्ञा पुं० [हिं० ज्वार का अनु० + भाटा] ज्वारभाटा का उलटा। समुद्र की वह बाढ़ जिसमें पानी पहले समुद्र के तट से आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है।

सारमेय–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारमेयी] १. सरमा की संतान। २. कुत्ता।

सारल्य–संज्ञा पुं० [सं०] सरलता।

सारवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन भगण और एक गुरु का एक छंद।

***सारस**–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारसी] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध सुंदर बड़ा पक्षी। २ हंस। ३. चंद्रमा। ४. कमल। जलज। ५. छप्पय का ३७वाँ भेद।

सारसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आर्या छंद का २३ वाँ भेद। २. मादा सारस।

सारसुता–संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसुता

सारसुती†–संज्ञा स्त्री० दे०

सारस्वत-संज्ञा पुं० [सं०] १. दिल्ली के उत्तर पश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है और जिसमें पंजाब का कुछ भाग सम्मिलित है। २ इस देश के ब्राह्मण। ३. एक प्रसिद्ध व्याकरण। वि० १. सरस्वती संबंधी। २ सारस्वत देश का।

सारांश-संज्ञा पुं० [सं०] १. खुलासा। संक्षेप। सार। २ तात्पर्य। मतलब। ३. नतीजा। परिणाम।

सारा-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी से बढ़कर कही जाती है।
† संज्ञा पुं० दे० "साला"।
वि० [स्त्री० सारी] समस्त। संपूर्ण। पूरा।

सारावली-संज्ञा स्त्री० [सं०] सारावली छंद।

सारि-संज्ञा पुं० [सं०] १ पासा या चौपड़ खेलनेवाला। २ जूआ खेलने का पासा।

सारिक-संज्ञा पुं० दे० "सारिका"।

सारिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना पक्षी।

सारिखा †-वि० दे० "सरीखा"।

सारिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहदेई। नागबला। २. कुशाग्र। ३. गंधप्रसारिणी। ४ रक्त पुनर्नवा।

सारिवा-संज्ञा स्त्री० [सं०] अनंतमूल।

सारी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सारिका पक्षी। मैना। २. पासा। गोटी। ३. थूहर।
संज्ञा स्त्री० दे० "साड़ी"।
संज्ञा पुं० [सं० सारिन्] अनुकरण करनेवाला।

सारु†-संज्ञा पुं० दे० "सार"।

सारूप्य-संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सारूप्यता] १. एक प्रकार की मुक्ति जिसमें उपासक अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है। २. समान रूप होने का भाव। एकरूपता। सरूपता।

सारूप्यता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सारूप्य का भाव या धर्म।

सारो†-संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।

सारोपा-संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक लक्षणा जो वहाँ होती है जहाँ एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने पर कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है।

सार्थ-वि० [सं०] अर्थ सहित।

-क-वि० [सं०] [भाव० सार्थकता] १. अर्थ सहित। २. सफल। पूर्ण-मनोरथ। ३. उपकारी। गुणकारी।

सार्दूल-संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

सार्द्ध-वि० [सं०] जिसमें पूरे के साथ आधा भी मिला हो। अर्धयुक्त।

सार्व-वि० [सं०] सबसे संबंध रखनेवाला।

सार्वकालिक-वि० [सं०] जो सब कालों में होता हो। सब समयों का।

सार्वजनिक, सार्वजनीन-वि० [सं०] सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सर्व साधारण-संबंधी।

सार्वत्रिक-वि० [सं०] सर्वत्र व्यापी।

सार्वदेशिक-वि० [सं०] संपूर्ण देशों का। सर्वदेश-संबंधी।

सार्वभौम-संज्ञा पुं० [सं०] १. चक्रवर्ती राजा। २. हाथी।
वि० समस्त भूमि संबंधी।

सार्वराष्ट्रीय-वि० [सं०] जिसका संबंध अनेक राष्ट्रों में हो।

सालक-संज्ञा पुं० [सं०] वह राग जिसमें किसी और राग का मेल न हो, पर फिर भी किसी राग का आभास जान पड़ता हो।

साल-संज्ञा स्त्री० [हिं० सालना] १. सालने या सलने की क्रिया या भाव। २ छेद। सूराख। ३. चारपाई के पावों में किया हुआ चौकोर छेद। ४. घाव। जख्म। ५ दुःख। पीड़ा। वेदना।
संज्ञा पुं० [सं०] १ जड़। २ राल। ३. वृक्ष।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] वर्ष। बरस।
संज्ञा पुं० दे० "शालि" और "शाल"।
संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।

सालक-वि० [हिं० सालना] सालनेवाला। दुःख देनेवाला।

सालगिरह-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बरस-गाँठ। जन्म दिन।

सालग्रामी-संज्ञा स्त्री० [सं० शालग्राम] गंडक नदी।

सालन-संज्ञा पुं० [सं० सलवण] मांस, मछली या साग सब्जी की मसालेदार तरकारी।

सालना-क्रि० अ० [सं० शल्य] १ दुःख देना। खटकना। कसकना। २. चुभना।
क्रि० स० १. दुःख पहुँचाना। २. चुभाना।

सालनिर्यास-संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

सालम मिश्री–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सालब+मिस्री] एक प्रकार का क्षुप जिसका कंद पौष्टिक होता है। सुधामूली। बीरकंदा।

सालरस–संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

सालस–संज्ञा पुं० [अ०] वह जो दो पक्षों के झगड़े का निपटारा करे। पंच।

सालसा–संज्ञा पुं० [अं०] खून साफ़ करने का एक प्रकार का अँगरेजी ढंग का काढ़ा।

सालसी–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सालस होने की क्रिया या भाव। २ पंचायत।

साला–संज्ञा पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली] १. पत्नी का भाई। २. एक प्रकार की गाली।

संज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना।

संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।

सालाना–वि० [फ़ा०] साल का। वार्षिक।

सालिब मिश्री–संज्ञा स्त्री० दे० "सालम मिस्री"।

सालिम–वि० [अ०] संपूर्ण। पूरा।

सालियाना–वि० दे० 'सालाना'।

सालु०†–संज्ञा पुं० [हिं० सालना] १. ईर्ष्या। २. कष्ट।

सालू–संज्ञा पुं० [देश०] १. एक प्रकार का लाल कपड़ा (मांगलिक)। २. सारी।

सालोक्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह मुक्ति जिसमें मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है। सलोकता।

सावंत–संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

साव–संज्ञा पुं० दे० "साहु"।

सावकाश–संज्ञा पुं० [सं०] १. अवकाश। फुर्सत। छुट्टी। २. मौका। अवसर।

सावचेत०†–वि० दे० "सावधान"।

सावज–संज्ञा पुं० [?] वह जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाय।

सावत–संज्ञा पुं० [हिं० सौत] १. सौतों का पारस्परिक द्वेष। २. ईर्ष्या। डाह।

सावधान–वि० [सं०] सचेत। सतर्क। होशियार। खबरदार। सजग।

सावधानता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सावधान होने का भाव। सतर्कता। होशियारी।

सावन–संज्ञा पुं० [सं० श्रावण] १. आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण। २. एक प्रकार का गीत जो श्रावण महीने में गाया जाता है। (पूरब)

संज्ञा पुं० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंड।

सावनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सावन+ई (प्रत्य०)] १. वह सामान जो सावन महीने में वर पक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है। २. दे० "श्रावणी"।

वि० सावन संबंधी। सावन का।

सावर–संज्ञा पुं० [सं० शाबर] १. शिव कृत एक प्रसिद्ध तंत्र। २. एक प्रकार का लोहे का लंबा औजार।

संज्ञा पुं० [सं० शंबर] एक प्रकार का हिरन।

सावर्णि–संज्ञा पुं० [सं०] १. आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र थे। २. एक मन्वंतर का नाम।

सावित्र–संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २. शिव। ३ वसु। ४. ब्राह्मण। ५. यज्ञोपवीत। ६. एक प्रकार का अस्त्र।

वि० १. सविता संबंधी। सविता का। २ सूर्यवंशी।

सावित्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेदमाता गायत्री। २. सरस्वती। ३ ब्रह्मा की पत्नी। ४. वह संस्कार जो उपनयन के समय होता है। ५ धर्म की पत्नी और दक्ष की कन्या। ६. मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान् की सती पत्नी। ७. यमुना नदी। ८. सरस्वती नदी। ९. सधवा स्त्री।

साष्टांग–वि० [सं०] आठों अंग सहित।

यौ०–साष्टांग प्रणाम = मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन से भूमि पर लेटकर प्रणाम करना।

मुहा०–साष्टांग प्रणाम करना = बहुत बचना। दूर रहना। (व्यंग्य)

सास–संज्ञा स्त्री० [सं० श्वश्रू] पति या पत्नी की माँ।

सासनलेट–संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का सफ़ेद जालीदार कपड़ा।

सासना–संज्ञा स्त्री० दे० "शासन"।

सासरा†–संज्ञा पुं० दे० "ससुराल"।

सासा*†–संज्ञा स्त्री० [सं० संशय] संदेह।

संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "श्वास" या "साँस"।

सासुर†–संज्ञा पुं० [हिं० ससुर] १. ससुर। २. ससुराल।

साहु–संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. साधु। भला आदमी। २ व्यापारी। ३ धनी। महाजन। सेठ। ४.

साहचर्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. सहचर होने का भाव। सहचरता। २. संग। साथ।
साहनी–संज्ञा स्त्री० [सं० सेनानी ?] १. सेना। फौज। २. साथी। संगी। ३. पारिषद।
साहब–संज्ञा पुं० [अ० साहिब] [स्त्री० साहिबा] १. मित्र। दोस्त। २. मालिक। स्वामी। ३. परमेश्वर। ४ एक सम्मानसूचक शब्द। महाशय। ५. गोरी जाति का कोई व्यक्ति।
साहबजादा–संज्ञा पुं० [अ० साहिब + फा० ज़ादा] [स्त्री० साहबज़ादी] १ भले आदमी का लड़का। २. पुत्र। बेटा।
साहब सलामत–संज्ञा स्त्री० [अ०] परस्पर अभिवादन। बंदगी। सलाम।
साहबी–वि० [अ० साहिब] साहब का। संज्ञा स्त्री० १ साहब होने का भाव। २ प्रभुता। मालिकपन। ३ बड़ाई। बड़प्पन।
साहस–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य दृढ़तापूर्वक विपत्तियों आदि का सामना करता है। हिम्मत। हियाव। २. जबरदस्ती दूसरे का धन लेना। लूटना। ३ कोई बुरा काम। ४ दंड। सजा। ५. जुर्माना।
साहसिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसमें साहस हो। हिम्मतवर। पराक्रमी। २. डाकू। चोर। ३ निर्भीक। निर्भय। निडर।
साहसी–वि० [सं० साहसिन्] वह जो साहस करता हो। हिम्मती। दिलेर।
साहस्र, साहस्रिक–वि० [सं०] सहस्र संबंधी। हजार का।
साहा–संज्ञा पुं० [सं० साहित्य] विवाह आदि शुभ कार्यों के लिये निश्चित लग्न या मुहूर्त्त।
साहाय्य–संज्ञा पुं० [सं०] सहायता।
साहि‡–संज्ञा पुं० [फा० शाह] १. राजा। २. दे० "साहु"।
साहित्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. एकत्र होना। मिलना। २. वाक्य में पदों का एक प्रकार का संबंध जिसमें इनका एक ही क्रिया से अन्वय होता है। ३. गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रन्थों का समूह जिनमें सार्वजनीन हित संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं। वाङ्मय।
साहित्यिक–वि० [सं०] साहित्य-संबंधी। संज्ञा पुं० वह जो साहित्य सेवा करता हो।
साहिब–संज्ञा पुं० दे० "साहब"।
साहियाँ‡–संज्ञा पुं० दे० "साँई"।
साही–संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] एक प्रसिद्ध जंतु जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं। इन काँटों से लिखने की कलम बनती है।
साहु–संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. सज्जन। २ महाजन। साहूकार। चोर का उलटा।
साहुल–संज्ञा पुं० [फा० शाकूल] दीवार की सीध नापने का एक प्रकार का यंत्र।
साहू–संज्ञा पुं० दे० "साहु"।
साहूकार–संज्ञा पुं० [हिं० साहु + कार (प्रत्य०)] बड़ा महाजन या व्यापारी। कोठीवाल।
साहूकारा–संज्ञा पुं० [हिं० साहूकार + आ (प्रत्य०)] १ रुपये का लेन देन। महाजनी। २ वह बाजार जहाँ बहुत से साहूकार कारबार करते हों। वि० साहूकारों का।
साहूकारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० साहूकार + ई] साहूकार होने का भाव। साहूकारपन।
साहेब–संज्ञा पुं० दे० "साहब"।
साहैं †–संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह] भुजदंड। बाजू। अव्य० [हिं० सामुहें] सामने। सम्मुख।
सिउँ‡–प्रत्य० दे० "स्यों"।
सिकना–क्रि० अ० [हिं० सेंकना] आँच पर गरम होना या पकना। सेंका जाना।
सिंगा–संज्ञा पुं० [हिं० सींग] फूँककर बजाया जानेवाला सींग या लोहे का एक बाजा। तुरही। रणसिंगा।
सिंगार–संज्ञा पुं० [सं० शृंगार] १ सजावट। सज्जा। बनाव। २. शोभा। ३ शृंगार रस।
सिंगारदान–संज्ञा पुं० [हिं० सिंगार + फा० दान] वह छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि शृंगार की सामग्री रखी जाती है।
सिंगारना–क्रि० स० [हिं० सिंगार] सुसज्जित करना। सजाना। सँवारना।
सिंगारहाट–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार + हाट] वेश्याओं के रहने का स्थान। चकला।
सिंगारहार–संज्ञा पुं० [सं० हारशृंगार] हरसिंगार नामक फूल। परजाता।
सिंगारिया–वि० [सं० शृंगार] देवमूर्त्ति का सिंगार करनेवाला पुजारी।
सिंगारी–वि० पुं० [हिं० सिंगार + ई] शृंगार करनेवाला। सजानेवाला।

सिंगिया–संज्ञा पुं० [सं० शृंगिक] एक प्रसिद्ध स्थावर विष।
सिंगी–संज्ञा पुं० [हिं० सींग] फूँककर बजाया जानेवाला सींग का एक बाजा।
संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मछली। २. सींग की नली जिससे देहाती जर्राह शरीर का रक्त चूसकर निकालते हैं।
सिंगोटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार+औटी] सिंदूर, कंघी आदि रखने की स्त्रियों की पिटारी।
सिंघ†–संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।
सिंघल–संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।
सिंघाड़ा–संज्ञा पुं० [सं० शृंगाटक] १. पानी में फैलनेवाली एक लता जिसके तिकोने फल खाए जाते हैं। पानीफल। २. इस आकार की सिलाई या बेल बूटा। ३. समोसा नाम का नमकीन पकवान।
सिंघासन–संज्ञा पुं० दे० "सिंहासन"।
सिंघी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १. एक प्रकार की छोटी मछली। २. सोंठ। शुंठी।
सिंघेला–संज्ञा पुं० [सं० सिंह] शेर का बच्चा।
सिंचन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सिंचित] १. जल छिड़कना। २. सींचना।
सिंचना–क्रि० अ० [हिं० सींचना] सींचा जाना।
सिंचाई–संज्ञा स्त्री० [सं० सिंचन] १. पानी छिड़कने का काम। २. सींचने का काम। ३. सींचने का कर या मजदूरी।
सिंचाना–क्रि० स० [हिं० सींचना का प्रे०] सींचने का काम दूसरे से कराना।
सिंजा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिंजा"।
सिंजित–संज्ञा स्त्री० [सं० सिंजा] शब्द। ध्वनि। झनक। झंकार।
सिंदन‡–संज्ञा पुं० दे० "स्यंदन"।
सिंदुवार–संज्ञा पुं० [सं०] सँभालू वृक्ष। निर्गुंडी।
सिंदूर–संज्ञा पुं० [सं०] ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माँग में भरती हैं।
सिंदूरदान–संज्ञा पुं० [सं०] विवाह में वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना।
सिंदूरपुष्पी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं। वीरपुष्पी।
सिंदूरवंदन–संज्ञा पुं० दे० "सिंदूरदान"।
सिंदूरिया–वि० [सं० सिंदूर+इया (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग का। खूब लाल।
सिंदूरी–वि० [सं० सिंदूर+ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग का।
सिंदोरा–संज्ञा पुं० दे० "सिंधोरा"।
सिंध–संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु] भारत के पश्चिम का एक प्रदेश जो अब बंबई प्रांत में है।
संज्ञा स्त्री० १. पंजाब की एक प्रधान नदी। २. भैरव राग की एक रागिनी।
सिंधव–संज्ञा पुं० दे० "सैंधव"।
सिंधी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंध+ई (प्रत्य०)] सिंध देश की बोली।
वि० सिंध देश का।
संज्ञा पुं० १. सिंध देश का निवासी। २. सिंध देश का घोड़ा।
सिंधु–संज्ञा पुं० [सं०] १. नद। नदी। २. एक प्रसिद्ध नद जो पंजाब के पश्चिमी भाग में है। ३. समुद्र। सागर। ४. चार की संख्या। ५. सात की संख्या। ६. सिंध प्रदेश। ७. एक राग।
सिंधुज–संज्ञा पुं० [सं०] सेंधा नमक।
सिंधुजा–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
सिंधुपुत्र–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सिंधुमाता–संज्ञा स्त्री० [सं० सिंधुमातृ] सरस्वती।
सिंधुर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिंधुरा] १. हस्ती। हाथी। २. आठ की संख्या।
सिंधुरमणि–संज्ञा पुं० [सं०] गजमुक्ता।
सिंधुरवदन–संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।
सिंधुरागामिनी–वि० स्त्री० [सं०] गजगामिनी। हाथी की सी चालवाली।
सिंधुविष–संज्ञा पुं० [सं०] हलाहल विष।
सिंधुसुत–संज्ञा पुं० [सं०] जलंधर राक्षस।
सिंधुसुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
सिंधुसुतासुत–संज्ञा पुं० [सं०] मोती।
सिंधूरा–संज्ञा पुं० [सं० सिंधुर] संपूर्ण जाति का एक राग।
सिंधोरा–संज्ञा पुं० [हिं० सिंदूर] सिंदूर रखने का लकड़ी का पात्र।
सिंह–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिंहनी] १. बिल्ली की जाति का सबसे बलवान् हिंसक और भव्य जंगली जंतु ...

की गरदन पर बड़े बड़े बाल होते हैं। शेर बबर। मृगराज। मृगेंद्र। केसरी। २. ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से पाँचवीं राशि। ३ वीरता या श्रेष्ठता-वाचक शब्द। जैसे—पुरुष सिंह। ४. छप्पय छंद का सोलहवाँ भेद।

सिंहद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] सदर फाटक।

सिंहनाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह की गरज। २ युद्ध में वीरों की ललकार। ३. जोर देकर कहना। ललकारकर कहना। ४. एक वर्णवृत्त। कलहंस। नंदिनी।

सिंहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सिंह की मादा। शेरनी। २. एक छंद जिसके चारों पदों में क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं। इसका उलटा गाहिनी है।

सिंहपौर—संज्ञा पुं० दे० "सिंहद्वार"।

सिंहल—संज्ञा पुं० [सं०] एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग रामायणवाली लंका अनुमान करते हैं।

सिंहलद्वीप—संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।

सिंहलद्वीपी—वि० दे० "सिंहली"।

सिंहली—वि० [हिं० सिंहल] १. सिंहल द्वीप का। २. सिंहल द्वीप का निवासी। संज्ञा स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।

सिंहवाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी।

सिंहस्थ—वि० [सं०] सिंह राशि में स्थित (बृहस्पति)।

सिंहावलोकन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन। ३. पद्य रचना की एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अंत के कुछ शब्द लेकर अगला चरण चलता है।

सिंहासन—संज्ञा पुं० [सं०] राजा या देवता के बैठने का आसन या चौकी।

सिंहिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक राक्षसी जो राहु की माता थी। इसको लंका जाते समय हनुमान् ने मारा था। २ शोभन छंद का एक नाम।

सिंहिकासूनु—संज्ञा पुं० [सं०] राहु।

सिंहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शेरनी।

सिंही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिंह की मादा। शेरनी। २. आर्या का पचीसवाँ भेद। इसमें ३ गुरु और २१ लघु होते हैं।

सिंहोदरी—वि० स्त्री० [सं०] सिंह के समान पतली कमरवाली।

सिअरा—वि० [सं० शीतल] ठंढा। संज्ञा पुं० छाया। छाहँ।

सिआना—क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिआर—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] [स्त्री० सिआरी] शृगाल। गीदड़।

सिकंजबीन—संज्ञा स्त्री० [फा०] सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

सिकंदरा—संज्ञा पुं० [फा० सिकंदर] रेल की लाइन के किनारे ऊँचे खंभे पर लगा हुआ हाथ या डंडा जो झुककर आती हुई गाड़ी की सूचना देता है। सिगनल।

सिकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] १ किवाड़ की कुंडी। साँकल। जंजीर। २ जंजीर के आकार का सोने का गले में पहनने का गहना। ३. करधनी। तागड़ी।

सिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बालू। रेत। २. बलुई जमीन। ३. चीनी। शर्करा।

सिकत्तर—संज्ञा पुं० [अं० सेक्रेटरी] किसी संस्था या सभा का मंत्री। सेक्रेटरी।

सिकरवार—संज्ञा पुं० [देश०] क्षत्रियों की एक शाखा।

सिकली—संज्ञा स्त्री० [अ० सैक़ल] धारदार हथियारों को माँजने और उन पर सान चढ़ाने की क्रिया।

सिकलीगर—संज्ञा पुं० [अ० सैक़ल + फा० गर] तलवार आदि पर सान धरनेवाला।

सिकहर—संज्ञा पुं० [सं० शिक्य + धर] छींका।

सिकुड़न—संज्ञा स्त्री० [सं० संकुचन] १. संकोच। आकुंचन। २. बल। शिकन।

सिकुड़ना—क्रि० अ० [सं० संकुचन] १. सिमटकर थोड़े स्थान में होना। सिकुड़ना। आकुंचित होना। बटुरना। २ संकीर्ण होना। ३. बल पड़ना। शिकन पड़ना।

सिकुरना†—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"

सिकोड़ना—क्रि० स० [हिं० सिकुड़ना] १ समेटकर थोड़े स्थान में करना। संकुचित करना। २ समेटना। बटोरना।

सिकोरना†—क्रि० स० दे० "सिकोड़ना"

सिकोरा—संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"।

सिकोली—संज्ञा स्त्री० [देश०] कास, मूँज बेंत आदि की बनी डलिया।

सिकोही—वि० [फा० शिकोह] १. आन-बान

वाला। गर्वीला। २. वीर। बहादुर।
सिघाड़–संज्ञा पुं० दे० "सीकड़"।
सिक्का–संज्ञा पुं० [अ० सिक] १ मुहर। छाप। ठप्पा। २. रुपए, पैसे आदि पर की राजकीय छाप। मुद्रित चिह्न। ३. टकसाल में ढला हुआ धातु का टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है। रुपया, पैसा आदि। मुद्रा।
मुहा०—सिक्का बैठना या जमना=१. अधिकार स्थापित होना। प्रभुत्व होना। २. आतंक जमना। रोब जमना।
४. पदक। तमगा। ५. मुहर पर अक्षर बनाने का ठप्पा।
सिक्ख–संज्ञा पुं० दे० "सिख"।
सिक्त–वि० [सं०] १. सींचा हुआ। २. भीगा हुआ। तर। गीला।
सिखंड–संज्ञा पुं० दे० "शिखंड"।
सिख–संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख। ⊙ संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। चोटी। संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] १. शिष्य। चेला। २. गुरु नानक आदि दस गुरुओं का अनुयायी। नानकपंथी।
सिखना†⊙–क्रि० स० दे० "सीखना"।
सिखर–संज्ञा पुं० दे० "शिखर"।
सिखरन–संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीखंड] दही मिला हुआ चीनी का शरबत।
सिखलाना–क्रि० स० दे० "सिखाना"।
सिखा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"।
सिखाना–क्रि० स० [सं० शिक्षण] १. शिक्षा देना। उपदेश देना। २. पढ़ाना।
यौ०—सिखाना पढ़ाना = चालाकी सिखाना।
सिखापन–संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + हिं० पन] १. शिक्षा। उपदेश। २. सिखाने का काम।
सिखावन–संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण] शिक्षा। उपदेश।
सिखावना⊙†–क्रि० स० दे० "सिखाना"।
सिखिर*–संज्ञा पुं० दे० "शिखर"।
सिखी–संज्ञा पुं० दे० "शिखी"।
सिगरा, सिगरो⊙†–वि० [सं० समग्र] [स्त्री० सिगरी] सब। संपूर्ण। सारा।
सिचान⊙–संज्ञा पुं० [सं० सचान] बाज पक्षी।
सिच्छा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिक्षा"।
सिजदा–संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम। दंडवत।
सिझना–क्रि० अ० [सं० सिद्ध] आँच पर पकना। सिझाया जाना।
सिझाना–क्रि० स० [सं० सिद्ध] १. आँच पर पकाकर गलाना। २ तपस्या करना।
सिटकिनी–संज्ञा स्त्री० [अनु०] किवाड़ों को बंद करने के लिये लोहे या पीतल का छड़ अगरी। चटकनी। चटखनी।
सिटपिटाना–क्रि० अ० [अनु०] १. दब जाना। मंद पड़ जाना। २. किंकर्तव्यविमूढ़ होना। ३ सकुचाना।
सिट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] बहुत बढ़-बढ़कर बोलना। वाक्पटुता।
मुहा०—सिट्टी भूलना=सिटपिटा जाना।
सिठनी–संज्ञा स्त्री० [सं० अशिष्ट] विवाह अवसर पर गाई जानेवाली गाली। सीठना।
सिठाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठी] १. फीकापन। नीरसता। २. मंदता।
सिड़–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिड़ी] १. पागलपन। उन्माद। २. सनक। धुन।
सिड़ी–वि० [सं० श्रृणीक] [स्त्री० सिड़िन] १. पागल। बावला। उन्मत्त। २. सनकी। धुनवाला।
सित–वि० [सं०] १ श्वेत। सफेद। २. उज्ज्वल। चमकीला। ३ साफ। संज्ञा पुं० १. शुक्ल पक्ष। उजाला पाख। २. चीनी। शक्कर। ३ चाँदी।
सितकंठ–वि० [सं०] सफेद गर्दनवाला। संज्ञा पुं० [सं० शितिकंठ] महादेव।
सितता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। श्वेतता।
सितपक्ष–संज्ञा पुं० [सं०] हंस।
सितभानु–संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।
सितम–संज्ञा पुं० [फा०] १. गजब। अनर्थ। २. जुल्म। अत्याचार।
सितमगर–संज्ञा पुं० [फा०] जालिम। अन्यायी। दुखदायी।
सितवराह–संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत वराह।
सितवराहपत्नी–संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
सितसागर–संज्ञा पुं० [सं०] क्षीर सागर।
सिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चीनी। शक्कर। २. शुक्ल पक्ष। ३. मल्लिका। मोतिया। ४. मद्य। शराब।
सिताखंड–संज्ञा पुं० [सं०] १. शहद से बनाई हुई शक्कर। २. मिस्री।
सिताब†⊙–क्रि० वि० [फा० शिताब] जल्दी। तुरंत। झटपट।

सितार-संज्ञा पुं० [सं० सप्त+तार, फा० सेह-तार] एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जो तारों को उँगली से झनकारने से बजता है।

सितारा-संज्ञा पुं० [फा० सितारः] १. तारा। नक्षत्र। २. भाग्य। प्रारब्ध। नसीब।
मुहा०—सितारा चमकना या बलंद होना =भाग्योदय होना। अच्छी क़िस्मत होना।
३. चाँदी या सोने के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी जो शोभा के लिये चीज़ों पर लगाई जाती है। चमकी।
संज्ञा पुं० दे० "सितार"।

सितारिया-संज्ञा पुं० [हिं० सितार+इया] सितार बजानेवाला।

सितारेहिंद-संज्ञा पुं० [फा०] एक उपाधि जो सरकार की ओर से दी जाती है।

सितासित-संज्ञा पुं० [सं०] १. श्वेत और श्याम। सफ़ेद और काला। २. बलदेव।

सिति-वि० दे० "शिति"।

सितिकंठ-संज्ञा पुं० [सं० शितिकंठ] महादेव।

सिथिल:-वि० दे० "शिथिल"।

सिदरी-संज्ञा स्त्री० [फा० सेहदरी] तीन दर-वाजोंवाला कमरा या बरामदा।

सिदिक-वि० [अ० सिद्क] सच्चा। सत्य।

सिद्ध-वि० [सं०] १. जिसका साधन हो चुका हो। संपन्न। संपादित। २. प्राप्त। हासिल। उपलब्ध। ३. प्रयत्न में सफल। कृतकार्य्य। ४ जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो। ५. योग की विभूतियाँ दिखानेवाला। ६. मोक्ष का अधिकारी। ७. जिस (कथन) के अनुसार कोई बात हुई हो। ८. जो तर्क या प्रमाण द्वारा निश्चित हो। प्रमा-णित। साबित। निरूपित। ९ जो अनु-कूल किया गया हो। कार्य्य-साधन के उपयुक्त बनाया हुआ। १०. आँच पर पका हुआ। उबला हुआ।
संज्ञा पुं० १. वह जिसने योग या तप में सिद्धि प्राप्त की हो। २. ज्ञानी या भक्त महात्मा। ३ एक प्रकार के देवता। ४. ज्योतिष में एक योग।

सिद्धकाम-वि० [सं०] १. जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। २. सफल। कृतार्थ।

सिद्धगुटिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मंत्र-सिद्ध गोली जिसे मुँह में रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत शक्ति आ जाती है।

सिद्धता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्ध होने की अवस्था। २. प्रामाणिकता। सिद्धि। ३. पूर्णता।

सिद्धत्व-संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धता।

सिद्धपीठ-संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ योग, तप या तांत्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो।

सिद्धरस-संज्ञा पुं० [सं०] पारा।

सिद्ध रसायन-संज्ञा पुं० [सं०] वह रसौषध जिससे दीर्घ जीवन और प्रभूत शक्ति प्राप्त हो।

सिद्धहस्त-वि० [सं०] १. जिसका हाथ किसी काम में मँजा हो। २. निपुण।

सिद्धांजन-संज्ञा पुं० [सं०] वह अंजन जिसे आँख में लगा लेने से भूमि में गड़ी वस्तुएँ भी दिखाई देती हैं।

सिद्धांत-संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति सोच विचारकर स्थिर किया हुआ मत। उसूल। २ मुख्य उद्देश्य या अभिप्राय। ३. वह बात जो विद्वानों या उनके किसी वर्ग या संप्रदाय द्वारा सत्य मानी जाती हो। मत। ४. निर्णीत अर्थ या विषय। तत्त्व की बात। ५. पूर्व पक्ष के खंडन के उपरांत स्थिर मत। ६. किसी शास्त्र (ज्योतिष, गणित आदि) पर लिखी हुई कोई विशेष पुस्तक।

सिद्धा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्ध की स्त्री। देवांगना। २. आर्य्या छंद का १५वाँ भेद, जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।

सिद्धाई-संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्ध+हिं० आई] सिद्धपन। सिद्ध होने की अवस्था।

सिद्धार्थ-वि० [सं०] जिसकी कामनाएँ पूर्ण हो गई हों। पूर्णकाम।
संज्ञा पुं० १. गौतम बुद्ध। २. जैनों के २४वें अर्हत् महावीर के पिता का नाम।

सिद्धि-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काम का पूरा होना। प्रयोजन निकलना। २. सफलता। कामयाबी। ३. प्रमाणित होना। साबित होना। ४ किसी बात का ठहराया जाना। निश्चय। ५. निर्णय। फ़ैसला। ६. पकना। सीझना। ७. तप या योग के पूरे होने का अलौकिक फल। विभूति। योग की अष्ट-सिद्धियाँ प्रसिद्ध हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। ८. मुक्ति। मोक्ष। ९.

कौशल। निपुणता। दक्षता। १० दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। ११ गणेश की दो स्त्रियों में से एक। १२. भाँग। विजया। १३. छप्पय छंद के ४१वें भेद का नाम जिसमें ३० गुरु और ४२ लघु वर्ण होते हैं।

सिद्धि गुटिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] रसायन आदि बनाने की गुटिका।

सिद्धिदाता-संज्ञा पु० [सं० सिद्धिदातृ] गणेश।

सिद्धेश्वर-संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १. बड़ा सिद्ध। महायोगी। २. महादेव।

सिधाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] सीधापन।

सिधाना‡-क्रि० अ० दे० "सिधारना"।

सिधारना-क्रि० अ० [हिं० सिधाना] १. जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। २. मरना। स्वर्गवास होना।

†‡ क्रि० स० दे० "सुधारना"।

सिधि०‡-संज्ञा स्त्री० दे० "सिद्धि"।

सिन-संज्ञा पुं० [अ०] वय। अवस्था।

सिनकना-क्रि० अ० [सं० सिंघाणक+ना] जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।

सिनि-संज्ञा पु० [सं० शिनि] १. एक यादव जो सात्यकि का पिता था। २. क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा।

सिनी-संज्ञा पु० दे० "शिनि"।

सिनीवाली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक देवी। २. शुक्ल-पक्ष की प्रतिपदा।

सिन्नी†-संज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] १. मिठाई। २. वह मिठाई जो किसी पीर या देवता को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाय।

सिपर-संज्ञा स्त्री० [फा०] ढाल।

सिपहगरी-संज्ञा स्त्री० [फा०] सिपाही का काम। युद्ध-व्यवसाय।

सिपहसालार-संज्ञा पु० [फा०] सेनापति।

सिपाह-संज्ञा स्त्री० [फा०] फौज। सेना।

सिपाहगिरी-संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "सिपहगरी"।

सिपाहियाना-वि० [फा०] सिपाहियों या सैनिकों का सा।

सिपाही-संज्ञा पु० [फा०] १. सैनिक। शूर। योद्धा। २. कांस्टेबिल। तिलंगा।

सिपुर्द‡-संज्ञा पु० दे० "सुपुर्द"।

सिप्पर-संज्ञा स्त्री० दे० "सिपर"।

सिप्पा-संज्ञा पु० [देश०] १. निशाने पर किया हुआ वार। २ कार्य-साधन का उपाय। तदबीर। ३. सूत्रपात।

मुहा०—सिप्पा जमाना = किसी कार्य्य के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना। भूमिका बाँधना।

४. रंग। प्रभाव। धाक।

सिप्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ महिषी। भैंस। २. मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन बसा है।

सिफ़त-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विशेषता। गुण। २. लक्षण। ३. स्वभाव।

सिफर-संज्ञा पुं० [अ० साइफर] शून्य। सुन्ना।

सिफ़ला-वि० [अ०] [भाव० सिफ़लापन] १. नीच। कमीना। २. छिछोरा। ओछा।

सिफ़ारिश-संज्ञा स्त्री० [फा०] किसी के दोष क्षमा करने के लिये या किसी के पक्ष में कुछ कहना सुनना। अनुरोध।

सिफ़ारिशी-वि० [फा०] १. जिसमें सिफ़ारिश हो। २. जिसकी सिफ़ारिश की गई हो।

सिफ़ारिशी टट्टू-संज्ञा पु० [फा० सिफ़ारिशी + हिं० टट्टू] वह जो केवल सिफारिश से किसी पद पर पहुँचा हो।

सिबिका‡-संज्ञा स्त्री० दे० "शिविका"।

सिमंत-संज्ञा पु० दे० "सिमंत"।

सिमटना-क्रि० अ० [सं० समित+ना] १. सिकुड़ना। संकुचित होना। २ शिकन पड़ना। सलवट पड़ना। ३. बटुरना। इकट्ठा होना। ४ व्यवस्थित होना। तरतीब से लगना। ५ पूरा होना। निबटना। ६ लज्जित होना। ७ सहमना।

सिमरना†-क्रि० स० दे० "सुमिरना"।

सिमाना†-संज्ञा पु० [सं० सीमान्त] सिवाना। हद।

‡† क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिमिटना‡-क्रि० अ० दे० "सिमटना"।

सिमृति०‡-संज्ञा स्त्री० दे० "स्मृति"।

सिमेटना †-क्रि० स० दे० "समेटना"।

सिय‡-संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] जानकी।

सियना‡-क्रि० अ० [सं० सृजन] उत्पन्न करना। रचना।

सियरा‡-वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सियरी] १. ठंढा। शीतल। २. क

सियराई‡-संज्ञा स्त्री० [हिं०सि

सियराना–क्रि० अ० [हिं० सियरा + ना] ठंढा होना। जुड़ाना। शीतल होना।
सिया–संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] जानकी।
सियापा–संज्ञा पुं० [फा० सियाहपोश] मरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति।
सियार–संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड़। जंबुक।
सियाल–संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] गीदड़।
सियाला–संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] शीत-काल। जाड़े का मौसिम।
सियाह–वि० दे० "स्याह"।
सियाहगोश–संज्ञा पुं० [फा०] बिल्ली की जाति का एक जंगली जानवर। बन-बिलाव।
सियाहा–संज्ञा पुं० [फा०] १. आय व्यय की बही। रोज़नामचा। २. सरकारी खज़ाने का वह रजिस्टर जिसमें ज़मींदारों से प्राप्त मालगुज़ारी लिखी जाती है।
सियाहानवीस–संज्ञा पुं० [फा०] सरकारी खज़ाने में सियाहा लिखनेवाला।
सियाही–संज्ञा स्त्री० दे० "स्याही"।
सिर–संज्ञा पुं० [सं० शिरस्] १. शरीर के सब से अगले या ऊपरी भाग का गोल तल। कपाल। खोपड़ी। २. शरीर का सब से अगला या ऊपर का गोल या लंबोतरा अंग जिसमें आँख, कान, नाक आदि होते हैं। **मुहा०**—**सिर-आँखों पर होना** = सहर्ष स्वीकार होना। माननीय होना। **सिर-आँखों पर बैठाना** = बहुत आदर सत्कार करना। **(भूत प्रेत या देवी देवता का) सिर पर आना** = आवेश होना। प्रभाव होना। खेलना। **सिर उठाना** = १. विरोध में खड़ा होना। २. ऊधम मचाना। ३. सामने मुँह करना। लज्जित न होना। ४. प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना। **(अपना) सिर ऊँचा करना** = प्रतिष्ठा के साथ लोगों के बीच खड़ा होना। **सिर करना** = (स्त्रियों के) बाल सँवारना। चोटी गूँथना। **सिर के बल जाना** = बहुत अधिक आदरपूर्वक किसी के पास जाना। **सिर खाली करना** = १. बकवाद करना। २. माथा-पच्ची करना। सोच विचार में हैरान होना। **सिर खाना** = बकवाद करके जी उबाना। **सिर खपाना** = १. सोचने विचारने में हैरान होना। २. कार्य्य में व्यग्र होना। **सिर चकराना** = दे० "सिर घूमना"। **सिर चढ़ाना** = १. माथे से लगाना। पूज्य भाव दिखाना। २. बहुत बढ़ा देना। मुँह लगाना। **सिर घूमना** = १. सिर में दर्द होना। २. घबराहट या मोह होना। बेहोशी होना। **सिर झुकाना** = १. सिर नवाना। नमस्कार करना। २. लज्जा से गरदन नीची करना। **सिर देना** = प्राण निछावर करना। जान देना। **सिर धरना** = सादर स्वीकार करना। अंगीकार करना। **सिर धुनना** = शोक या पछतावे से सिर पीटना। पछताना। **सिर नीचा करना** = लज्जा से सिर झुकाना। शर्माना। **सिर पटकना** = १. सिर फोड़ना। सिर धुनना। २. बहुत परिश्रम करना। ३. अफ़सोस करना। हाथ मलना। **सिर पर पाँव रखना** = बहुत जल्द भाग जाना। हवा होना। **सिर पर पड़ना** = १. जिम्मे पड़ना। २. अपने ऊपर घटित होना। गुज़रना। **सिर पर खून चढ़ना या सवार होना** = १. जान लेने पर उतारू होना। २ हत्या के कारण आपे में न रहना। **सिर पर होना** = थोड़े ही दिन रह जाना। बहुत निकट होना। **सिर पड़ना** = १ जिम्मे पड़ना। भार ऊपर दिया जाना। २. हिस्से में आना। **सिर फिरना** = १. सिर घूमना। सिर चकराना। २. पागल हो जाना। उन्माद होना। **सिर मारना** = १. समझाते समझाते हैरान होना। २. सोचने विचारने में हैरान होना। सिर खपाना। **सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना** = प्रारंभ में ही कार्य्य बिगड़ना। कार्य्यारंभ होते ही विघ्न पड़ना। **सिर पर सेहरा होना** = किसी कार्य्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। **सिर से पैर तक** = आरंभ से अंत तक। सर्वांग में। पूर्णतया। **सिर से पैर तक आग लगना** = अत्यंत क्रोध चढ़ना। **सिर से कफ़न बाँधना** = मरने के लिये उद्यत होना। **सिर से खेल जाना** = प्राण दे देना। **सिर पर सींग होना** = कोई विशेषता होना। खसूसियत होना। **सिर होना** = १. पीछे पड़ना। पीछा न छोड़ना। २. बार बार किसी बात का आग्रह करके तंग करना। ३ उलझ पड़ना। झगड़ा करना। **(किसी बात के) सिर होना** = ताड़ लेना। समझ लेना। ३. ऊपर का छोर। सिरा। चोटी।
सिरकटा–वि० [हिं० सिर + कटना] [स्त्री० सिरकटी] १. जिसका सिर कट गया हो। २. दूसरों का अनिष्ट करनेवाला।
सिरका–संज्ञा पुं० [फा०] धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ ईख आदि का रस।
सिरकी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकंडा] १. सर-

कंडा। सरई। २. सरकंडे की बनी हुई टट्टी जो प्रायः दीवार या गाड़ियों पर धूप और वर्षा से बचाव के लिये डालते हैं।

सिरगा-संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।

सिरचंद-संज्ञा पुं० [हिं० सिर + चंद] हाथी का एक प्रकार का अर्द्ध चंद्राकार गहना।

सिरजकः-संज्ञा पुं० [हिं० सिरजना] बनानेवाला। रचनेवाला। सृष्टिकर्ता।

सिरजनहारः-संज्ञा पुं० [सं० सृजन + हिं० हार] १. रचनेवाला। २. परमेश्वर।

सिरजनाः-क्रि० स० [सं० सृजन] रचना। उत्पन्न करना। सृष्टि करना।
क्रि० स० [सं० संचय] संचय करना।

सिरजितः-वि० [सं० सर्जित] रचा हुआ।

सिरताज-संज्ञा पुं० [सं० सिर + फा० ताज] १ मुकुट। २. शिरोमणि। ३. सरदार।

सिर ता पा-क्रि० वि० [फा० सर + ता + पा = पैर] १ सिर से पाँव तक। २. आदि से अंत तक।

सिरत्राण-संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।

सिरदारः†-संज्ञा पुं० दे० "सरदार"।

सिरनामा-संज्ञा पुं० [फा० सर + नाम = पत्र] १. लिफ़ाफ़ पर लिखा जानेवाला पता। २. किसी लेख के विषय का निर्देश करनेवाला शब्द या वाक्य। शीर्षक। सुर्खी।

सिरनेत-संज्ञा पुं० [हिं० सिर + सं० नेत्री] १ पगड़ी। पटा। चीरा। २. क्षत्रियों की एक शाखा।

सिरपाव-संज्ञा पुं० दे० "सिरोपाव"।

सिरपेच-संज्ञा पुं० [फा० सर + पेच] १ पगड़ी। २ पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण।

सिरपोश-संज्ञा पुं० [फा० सरपोश] १. सिर पर का आवरण। २. टोप। कुलाह।

सिरफूल-संज्ञा पुं० [हिं० सिर + फूल] सिर पर पहना जानेवाला एक आभूषण।

सिरफेंटा-संज्ञा पुं० दे० "सिरबंद"।

सिरबंद-संज्ञा पुं० [हिं० सिर + फा० बंद] साफ़ा।

सिरबंदी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + फा० बंदी] माथे पर पहनने का एक आभूषण।

सिरमनिः-संज्ञा पुं० दे० "शिरोमणि"।

सिरमौर-संज्ञा पुं० [हिं० सिर + मौर] १. सिर का मुकुट। २ सिरताज। शिरोमणि।

सिररुह-संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।

सिरस-संज्ञा पुं० [सं० शिरीष] शीशम की तरह का लंबा एक प्रकार का ऊँचा पेड़।

सिरहाना-संज्ञा पुं० [सं० शिरस् + आधान] चारपाई में सिर की ओर का भाग।

सिरा-संज्ञा पुं० [हिं० सिर] १. लंबाई का अंत। छोर। टोंक। २. ऊपर का भाग। ३. अंतिम भाग। आखिरी हिस्सा। ४ आरंभ का भाग। ५ नोक। अनी।
मुहा०—सिरे का = अव्वल दरजे का।
संज्ञा स्त्री० [सं० शिरा] १. रक्त नाड़ी। २. सिंचाई की नाली।

सिराजी-संज्ञा पुं० [फा० शीराज़ (नगर)] १. शीराज़ का घोड़ा। २. शीराज़ का कबूतर।

सिरानाः†-क्रि० अ० [हिं० सीरा + ना] १. ठंढा होना। शीतल होना। २. मंद पड़ना। हतोत्साह होना। ३ समाप्त होना। ख़तम होना। ४ मिटना। दूर होना। ५. बीत जाना। गुज़र जाना। † ६. काम से फ़ुरसत मिलना।
क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना। २ समाप्त करना। ३. बिताना।

सिरावनाः-क्रि० स० दे० "सिराना"।

सिरिश्ता-संज्ञा पुं० [फा० सरिश्त] विभाग।

सिरिश्तेदार-संज्ञा पुं० [फा०] अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमे के काग़ज़-पत्र रखता है।

सिरिस-संज्ञा पुं० दे० "सिरस"।

सिरीः†-संज्ञा स्त्री० [सं० श्री] १. लक्ष्मी। २. शोभा। कांति। ३ रोली। रोचना। ४. माथे पर का एक गहना।

सिरोपाव-संज्ञा पुं० [हिं० सिर + पाँव] सिर से पैर तक का पहनावा जो राज-दरबार से सम्मान के रूप में दिया जाता है। ख़िलअत।

सिरोमनि-संज्ञा पुं० दे० "शिरोमणि"।

सिरोरुह-संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।

सिरोही-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की काली चिड़िया।
संज्ञा पुं० १. राजपूताने में एक स्थान जहाँ की तलवार बहुत बढ़िया होती है। २. तलवार।

सिफ़्–क्रि० वि० [अ०] केवल। मात्र। वि० १. एकमात्र। अकेला। २. शुद्ध।

सिल–संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] १. पत्थर। चट्टान। शिला। २. पत्थर की चौकोर पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं। ३. पत्थर की चौकोर पटिया। संज्ञा पुं० दे० "शिल", "शिलोंछ"। संज्ञा पुं० [अ०] राजयक्ष्मा। क्षयरोग।

सिलकी–संज्ञा पुं० [देश०] बेल।

सिलखड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+खड़िया] १. एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर। २. खरिया मिट्टी। दुद्धी।

सिलगना–क्रि० अ० दे० "सुलगना"।

सिलप‡–संज्ञा पुं० दे० "शिल्प"।

सिलपट–वि० [सं० शिलापट्ट] १ साफ़। बराबर। चौरस। २. घिसा हुआ। ३ चौपट। सत्तानाश।

सिलपोहनी–संज्ञा स्त्री० [हिं०सिल+पोहना] विवाह की एक रीति।

सिलवट–संज्ञा स्त्री० [देश०] सिकुड़ने से पड़ी हुई लकीर। शिकन। सिकुड़न।

सिलवाना–क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिलसिला–संज्ञा पुं० [अ०] १. बँधा हुआ तार। क्रम। परंपरा। २. श्रेणी। पंक्ति। ३. शृंखला। जंजीर। लड़ी। ४ व्यवस्था। तरतीब। वि० [सं० सिक्त] १. भींगा हुआ। गीला। २. जिस पर पैर फिसले। ३. चिकना।

सिलसिलेवार–वि० [अ० + फा०] तरतीबवार। क्रमानुसार।

सिलह–संज्ञा पुं० [अ० सिलाह] हथियार।

सिलहखाना–संज्ञा पुं० [अ० सिलाह+फा० खानः] अस्त्रागार। हथियार रखने का घर।

सिलहारा–संज्ञा पुं० [सं० शिलकार] खेत में गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।

सिलहिला–वि० [हिं० सीड़+हीला = कीचड़] [स्त्री० सिलहिली] जिस पर पैर फिसले। कीचड़ से चिकना।

सिला–संज्ञा स्त्री० दे० "शिला"। संज्ञा पुं० [सं० शिल] १. कटे खेत में से चुना हुआ दाना। २. कटे हुए खेत में गिरे अनाज के दाने चुनना। शिलवृत्ति। संज्ञा पुं० [अ० सिलहः] बदला। एवज़।

सिलाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सीना+आई (प्रत्य०)] १. सीने का काम या ढंग। २. सीने की मजदूरी। ३. टाँका। सीवन।

सिलाजीत–संज्ञा पुं० दे० "शिलाजतु"।

सिलाना–क्रि० स० [हिं० सीना का प्रे०] सीने का काम दूसरे से कराना। सिलवाना। ‡क्रि० स० दे० "सिराना"।

सिलारस–संज्ञा पुं० [सं० शिलारस] १. सिल्हक वृक्ष। २. सिल्हक वृक्ष का गोंद।

सिलावट–संज्ञा पुं० [सं० शिला + पट] पत्थर काटने और गढ़नेवाला। संगतराश।

सिलाह–संज्ञा पुं० [अ०] १. जिरह बक्तर। कवच। २. अस्त्र-शस्त्र। हथियार।

सिलाहबंद–वि० [अ० + फा०] सशस्त्र। हथियारबंद। शस्त्रों से सुसज्जित।

सिलाहर–संज्ञा पुं० दे० "सिलहार"।

सिलाही–संज्ञा पुं० [अ० सिलाह] सैनिक।

सिलिप‡–संज्ञा पुं० दे० "शिल्प"।

सिलीमुख–संज्ञा पुं० दे० "शिलीमुख"।

सिलेरुच–संज्ञा पुं० [सं० शिलोच] एक प्राचीन पर्वत।

सिलौट, सिलौटा–संज्ञा पुं० [हिं० सिल+बट्टा] [स्त्री० अल्पा० सिलौटी] १. सिल। २. सिल तथा बट्टा।

सिल्ला–संज्ञा पुं० [सं० शिल] अनाज की बालियाँ या दाने जो फसल कट जाने पर खेत में पड़े रह जाते हैं।

सिल्ली–संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] १. हथियार की धार चोखी करने का पत्थर। सान। २ पत्थर की छोटी पतली पटिया।

सिल्हक–संज्ञा पुं० [सं०] सिलारस।

सिव‡–संज्ञा पुं० दे० "शिव"।

सिवई–संज्ञा स्त्री० [सं० समिता] गुँधे हुए आटे के सूत से सूखे लच्छे जो दूध में पका कर खाये जाते हैं। सिवैयाँ।

सिवा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिवा"। अव्य० [अ०] अतिरिक्त। अलावा। वि० अधिक। ज्यादा। फालतू।

सिवाइ–अव्य० दे० "सिवाय", "सिवा"।

सिवाई–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिट्टी।

सिवान–संज्ञा पुं० [सं० सीमांत] हद। सीमा।

सिवाय–क्रि० वि० [अ० सिवा] अतिरिक्त। अलावा। छोड़कर। बाद देकर। वि० १. अधिक। ज्यादा। २. ऊपरी।

सिवार-संज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] पानी में लच्छों की तरह फैलनेवाला एक तृण।
सिवाल-संज्ञा स्त्री० पु० दे० "सिवार"।
सिवाला-संज्ञा पु० दे० "शिवालय"।
सिविर-संज्ञा पुं० दे० "शिविर"।
सिष्ट-संज्ञा स्त्री० [फा० शिस्त] वंसी की डोरी। ८ ‡ वि० दे० "शिष्ट"।
सिसकना-क्रि० अ० [अनु०] १. रोने में रुक रुककर निकलती हुई साँस छोड़ना। २. भीतर ही भीतर रोना। खुलकर न रोना। ३. जी धड़कना। ४. उलटी साँस लेना। मरने के निकट होना। ५ तरसना।
सिसकारना-क्रि० अ० [अनु० सी सी + करना] १ सीटी का सा शब्द मुँह से निकालना। सुसकारना। २. अत्यंत पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से साँस खींचना। सीत्कार करना।
सिसकारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सिसकारना] १. सिसकारने का शब्द। सीटी का सा शब्द। २ पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से निकला हुआ 'सी सी' शब्द। सीत्कार।
सिसकी-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. खुलकर न रोने का शब्द। २ सिसकारी। शीत्कार।
सिसिर⊙-संज्ञा पु० दे० "शिशिर"।
सिसु⊙-संज्ञा पुं० दे० "शिशु"।
सिसोदिया-संज्ञा पु० [सिसोद (स्थान)] गुह-लौत राजपूतों की एक शाखा।
सिहरना†-क्रि० अ० [सं० शीत + ना] १. ठंढ से काँपना। २. काँपना। ३ डरना।
सिहराना†-क्रि० स० [हिं० सिहरना] १. सर्दी से कँपाना। २. डराना।
सिहरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सिहरना] १ कँप-कँपी। कंप। २. भय से दहलना। ३ जूड़ी का बुखार। ४ रोंगटे खड़े होना। लोमहर्ष।
सिहाना†-क्रि० अ० [सं० ईर्ष्या] १. ईर्ष्या करना। डाह करना। २ स्पर्द्धा करना। ३. पाने के लिये ललचना। लुभाना। ४ मुग्ध होना। मोहित होना।
क्रि० स० १. ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। २. अभिलाष की दृष्टि से देखना। ललचना।
सिहारना‡†-क्रि० स० [देश०] १. तलाश करना। ढूँढ़ना। २ जुटाना।
सिहोड़, सिहोर-संज्ञा पु० दे० "सेहुँड़"।
सींक-संज्ञा स्त्री० [सं० इषीका] १ मूँज आदि की पतली तीली। २. किसी घास का महीन डंठल। ३. तिनका। ४. शंकु। ५. नाक का एक गहना। लौंग। कील।
सींका-संज्ञा पु० [हिं० सींक] पेड़ पौधों की बहुत पतली उपशाखा या टहनी। डाँड़ी।
सींकिया-संज्ञा पु० [हिं० सींक] एक प्रकार का रंगीन धारीदार कपड़ा।
वि० सींक सा पतला।
सींग-संज्ञा पुं० [सं० शृंग] १. खुरवाले कुछ पशुओं के सिर के दोनों ओर निकले हुए कड़े नुकीले अवयव। विषाण।
मुहा०—(किसी के सिर पर) सींग होना = कोई विशेषता होना। (व्यंग्य) सींग कटाकर बछड़ों में मिलना = बूढ़े होकर भी बच्चों में मिलना। कहीं सींग समाना = कहीं ठिकाना मिलना।
२ सींग का बना फूँककर बजाया जानेवाला एक बाजा। सिंगी।
सींगरी-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का लोबिया या फली। मोगरे की फली।
सींगी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १ हिरन के सींग का बना बाजा। सिंगी। २ वह पोला सींग जिससे जर्राह शरीर से दूषित रक्त खींचते हैं। ३. एक प्रकार की मछली।
सींचना-क्रि० स० [सं० सिंचन] १ पानी देना। आबपाशी करना। २ पानी छिड़क-कर तर करना। भिगोना। ३ छिड़कना।
सींव⊙-संज्ञा पु० [सं० सीमा] सीमा। हद।
मुहा०—सींव चरना या काँड़ना = अधिकार दिखाना। जबरदस्ती करना।
सी-वि० स्त्री० [सं० सम] समान। तुल्य। सदृश। जैसे, वह स्त्री बावली सी है।
मुहा०—अपनी सी = अपने भरसक। जहाँ तक अपने से हो सके, वहाँ तक।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] सीत्कार। सिसकारी।
सीउ⊙-संज्ञा पु० [सं० शीत] शीत। ठंढ।
सीकर-संज्ञा पु० [सं०] १ जल-कण। पानी की बूँद। छींट। २. पसीना।
⊙†-संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] जंजीर।
सीकल-संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] हथियारों का मोरचा छुड़ाने की क्रिया।
सीकस-संज्ञा पु० [देश०] ऊसर।
सीकुर-संज्ञा पु० [सं० शूक] गेहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर के कड़े सूत। शूक।

सीख–संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] १. शिक्षा। तालीम। २. वह बात जो सिखाई जाय। ३. परामर्श। सलाह। मंत्रणा।

सीख–संज्ञा स्त्री० [फा०] लोहे की लंबी पतली छड़। शलाका। तीली।

सीखचा–संज्ञा पु० [फा०] १. लोहे की सींक जिस पर मांस लपेटकर भूनते हैं। २ लोहे का छड़।

सीखन†–संज्ञा स्त्री० [हिं०सीखना] शिक्षा।

सीखना–क्रि० स० [सं० शिक्षण] १. ज्ञान प्राप्त करना। किसी से कोई बात जानना। २. काम करने का ढंग आदि जानना।

सीग़ा–संज्ञा पु० [अ०] विभाग। महकमा।

सीझ–संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि] सीझने की क्रिया या भाव। गरमी से गलाव।

सीझना–क्रि० अ० [सं० सिद्ध] १. आँच या गरमी पाकर गलना। पकना। चुरना। २. आँच या गरमी से मुलायम पड़ना। ३. सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि में भीगकर मुलायम होना। ४. कष्ट सहना। क्लेश झेलना। ५ तपस्या करना। ६. मिलने के योग्य होना।

सीटना–क्रि० स० [अनु०] डींग मारना। शेखी मारना। बढ़ बढ़कर बातें करना।

सीटपटाँग–संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना + (उट) पटाँग] घमंड भरी बात।

सीटी–संज्ञा स्त्री० [सं० शीट्] १ वह महीन शब्द जो ओठों को सिकोड़कर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है। २. इसी प्रकार का शब्द जो किसी बाजे या यंत्र आदि से होता है। ३. वह बाजा या खिलौना जिसे फूँकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले।

सीठना–संज्ञा पु०[सं० अशिष्ट] वह अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर गाती हैं। सीठनी।

सीठनी–संज्ञा स्त्री० दे० "सीठना"।

सीठा–वि० [सं० शिष्ट] नीरस। फीका।

सीठी–संज्ञा स्त्री० [सं०शिष्ट] १. किसी फल, पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अंश। खूद। २. सारहीन पदार्थ। ३ फीकी चीज़।

सीड़–संज्ञा स्त्री० [सं० शीत] तरी। नमी।

सीढ़ी–संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] १. ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिए एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान। निसेनी। ज़ीना। पैड़ी। २. धीरे धीरे आगे बढ़ने की परंपरा।

सीत⊙†–संज्ञा पु० दे० "शीत"।

सीतल†⊙–वि० दे० "शीतल"।

सीतलपाटी–संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० पाटी] एक प्रकार की बढ़िया चटाई।

सीतला–संज्ञा स्त्री० दे० "शीतला"।

सीता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह रेखा जो ज़मीन जोतते समय हलकी फाल से पड़ती जाती है। कूँड़। २. मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो श्रीरामचंद्र जी की पत्नी थीं। वैदेही। जानकी। ३. एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण मगण, यगण और रगण होते हैं।

सीताध्यक्ष–संज्ञा पु० [सं०] वह राज कर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेतीबारी आदि का प्रबंध करता हो।

सीतापति–संज्ञा पु० [सं०] श्रीरामचंद्र।

सीताफल–संज्ञा पु० [सं०] १. शरीफ़ा। २. कुम्हड़ा।

सीत्कार–संज्ञा पु० [सं०] वह सी सी शब्द जो पीड़ा या आनंद के समय मुँह से निकलता है। सिसकारी।

सीथ–संज्ञा पु०[सं० सिक्थ] पके हुए अन्न का दाना। भात का दाना।

सीद–संज्ञा पु० [सं०] सूदखोरी। कुसीद।

सीदना–क्रि०अ० [सं०सीदति] दुःख पाना।

सीध–संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] १. वह लंबाई जो बिना इधर उधर मुड़े एक-तार चली गई हो। २. लक्ष्य। निशाना।

सीधा–वि० [सं० शुद्ध] [स्त्री० सीधी] १. जो टेढ़ा न हो। अवक्र। सरल। ऋजु। २. जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। ३. सरल प्रकृति का। भोला भाला। ४. शांत और सुशील।

मुहा०—सीधी तरह = शिष्ट व्यवहार से।

यौ०—सीधा सादा = भोला भाला।

मुहा०—(किसी को) सीधा करना = दंड देकर ठीक करना।

५. सुकर। आसान। सहज। ६. दहिना। क्रि० वि० ठीक सामने की ओर। सम्मुख। संज्ञा पु० [सं०असिद्ध] बिना पका हुआ अन्न।

सीधापन–संज्ञा पु० [हिं० सीधा + पन (प्रत्य०)] सीधा होने का भाव। सिधाई।

सीधे–क्रि० वि० [हिं० सीधा] १ बराबर सामने की ओर। सम्मुख। २ बिना कहीं मुड़े या रुके। ३. नरमी से। शिष्ट व्यवहार से।

सीना–क्रि० स० [सं० सीवन] १. कपड़े, चमड़े आदि के दो टुकड़ों को सूई तागे से जोड़ना। २. टाँका मारना।

संज्ञा पुं० [फा० सीन] छाती। वक्षःस्थल।

सीनाबंद–संज्ञा पु० [फा०] अँगिया। चोली।

सीप–संज्ञा पु० [सं० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] १. कड़े आवरण के भीतर रहनेवाला शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलजंतु। सीपी। सितुही। २. इस समुद्री जलजंतु का सफ़ेद, कड़ा, चमकीला आवरण जो बटन आदि बनाने के काम में आता है। ३. ताल के सीप का संपुट जो चम्मच आदि के समान काम में लाया जाता है।

सीपति–संज्ञा पु० [सं० श्रीपति] विष्णु।

सीपरः†–संज्ञा पु० [फा० सिपर] ढाल।

सीपसुत–संज्ञा पु० [हिं० सीप + सुत] मोती।

सीपिज–संज्ञा पुं० [हिं० सीपी] मोती।

सीपी–संज्ञा स्त्री० दे० "सीप"।

सीबी–संज्ञा स्त्री० [अनु० सी सी] सी सी शब्द। सिसकारी। सीत्कार।

सीमंत–संज्ञा पु० [सं०] १. स्त्रियों की माँग। २. हड्डियों का संधि स्थान। ३. दे० "सीमंतोन्नयन"।

सीमंतिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। नारी।

सीमंतोन्नयन–संज्ञा पु० [सं०] द्विजों के दस संस्कारों में से तीसरा संस्कार जो प्रथम गर्भ के चौथे, छठे या आठवें महीने होता है।

सीम–संज्ञा पु० [सं० सीमा] सीमा। हद्द।

मुहा०—सीम चरना या काँड़ना = अधिकार जताना। दबाना। जबरदस्ती करना।

सीमांत–संज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ सीमा का अंत होता हो। सरहद।

सीमा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माँग। २. किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान। हद। सरहद। मर्यादा।

मुहा०—सीमा से बाहर जाना = उचित से अधिक बढ़ जाना।

सीमाब–संज्ञा पु० [फा०] पारा।

सीमाबद्ध–संज्ञा पु० [सं०] रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ।

सीमोल्लंघन–संज्ञा पु० [सं०] १. सीमा का उल्लंघन करना। २ विजय यात्रा। सीमातिक्रमणोत्सव। ३ मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना।

सीय–संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] जानकी।

सीयन†–संज्ञा स्त्री० दे० "सीवन"।

सीर–संज्ञा पु० [सं०] १. हल। २. हल जोतनेवाले बैल। ३ सूर्य।

संज्ञा स्त्री० [सं० सीर = हल] १ वह जमीन जिसे भू-स्वामी या जमींदार स्वयं जोतता आ रहा हो। २. वह जमीन जिसकी उपज कई हिस्सेदारों में बँटती हो।

संज्ञा पु० [सं० शिरा] रक्त की नाड़ी।

ः† वि० [सं० शीतल] ठंढा। शीतल।

सीरकः–संज्ञा पु० [हिं० सीरा] ठंढा करनेवाला।

सीरखः–संज्ञा पु० दे० "शीर्ष"।

सीरध्वज–संज्ञा पु० [सं०] राजा जनक।

सीरनी–संज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई।

सीरपः–संज्ञा पु० दे० "शीर्ष"।

सीरा–संज्ञा पु० [फा० शीर] १. पकाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस। चाशनी। २. हलवा।

ः† वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीरी] १. ठंढा। शीतल। २. शांत। मौन। चुपचाप।

सील–संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल] भूमि में जल की आर्द्रता। सीड़। नमी। तरी।

ः‡ संज्ञा पु० दे० "शील"।

सीला–संज्ञा पु० [सं० शिल] १. अनाज के वे दाने जो खेत में से तपस्वी या ग़रीब चुनते हैं। सिला। २ खेत में गिरे दानों से निर्वाह करने की मुनियों की वृत्ति।

वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीली] गीला।

सीवन–संज्ञा पु० स्त्री० [सं०] १ सीने का काम। सिलाई। २ सीने से पड़ी हुई लकीर। ३. दरार। संधि। दराज़।

सीवना–संज्ञा पु० दे० "सिवाना"।

क्रि० स० दे० "सीना"।

सीस–संज्ञा पु० [सं० शीर्ष] सिर।

सीसक–संज्ञा पु० [सं०] सीसा।

सीसताज–संज्ञा पुं० [हिं० सीस ... वह टोपी जो शिकारी ज...

रहती और शिकार के समय खोली जाती है। कुलहा।
सीसत्रान-संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।
सीसफूल-संज्ञा पुं० [हिं० सीस+फूल] सिर पर पहनने का फूल। (गहना)
सीसमहल-संज्ञा पुं० [फा० शीशा+अ०महल] वह मकान जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।
सीसा-संज्ञा पुं० [सं० सीसक] नीलापन लिये काले रंग की एक मूल धातु।
‡संज्ञा पुं० दे० "शीशा"।
सीसी-संज्ञा स्त्री० [अनु०] शीत, पीड़ा या आनंद के समय मुँह से निकला हुआ शब्द। सीत्कार। सिसकारी।
‡संज्ञा स्त्री० दे० "शीशी"।
सीसौदिया-संज्ञा पुं० दे० "सिसोदिया"।
सीहु-संज्ञा स्त्री० [सं० सीधु] महक। गंध।
संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।
सीहगोस-संज्ञा पुं० [फा० सियहगोश] एक प्रकार का जंतु जिसके कान काले होते हैं।
सुँ†-प्रत्य० दे० "सों"।
सुँघनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सूँघना] तंबाकू के पत्ते की बारीक बुकनी जो सूँघी जाती है। हुलास। नस्य। नासगोशन।
सुँघाना-क्रि० स० [हिं० सूँघना] आघ्राण कराना। सूँघने की क्रिया कराना।
सुंडभुसुंड-संज्ञा पुं० [सं० शुंडभुशुंडि] हाथी जिसकी अग्र सूँड़ है।
सुंडा-संज्ञा स्त्री० [हिं०सूँड] सूँड़। शुंड।
सुंडाल-संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।
सुंद-संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जो निसुंद का पुत्र और उपसुंद का भाई था।
सुंदर-वि० [सं०] [स्त्री० सुंदरी] १ जो देखने में अच्छा लगे। रूपवान्। खूबसूरत। मनोहर। २ अच्छा। बढ़िया।
सुंदरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर होने का भाव। सौंदर्य। खूबसूरती।
सुंदरताई-संज्ञा स्त्री० दे० "सुंदरता"।
सुंदरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर स्त्री। २ त्रिपुर-सुंदरी देवी। ३. एक योगिनी का नाम। ४. सवैया नामक छंद का एक भेद जिसमें आठ सगण और एक गुरु होता है। ५. बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। द्रुतविलंबित। ६ तेईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
सुँवा-संज्ञा पुं० [देश०] १ दुर्गंज। २. तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये गीला कपड़ा। पुचारा।
सु-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर श्रेष्ठ, सुंदर, बढ़िया आदि का अर्थ देता है। जैसे—सुनाम, सुशील आदि।
वि० १ सुंदर। अच्छा। २. उत्तम। श्रेष्ठ। ३ शुभ। भला।
अव्य० [सं० सह] तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति का चिह्न।
सर्व० [सं० स] सो। वह।
सुअटा-संज्ञा पुं० [सं० शुक] सुग्गा। तोता।
सुअन-संज्ञा पुं० [सं० सुत] पुत्र। बेटा।
सुअनजर्द-संज्ञा पुं० दे० "नानजर्द"।
सुअना-क्रि० अ० [हिं० सुअन] उत्पन्न होना। उगना। उदय होना।
संज्ञा पुं० दे० "सुअटा"।
सुआ-संज्ञा पुं० दे० "सूआ"।
सुआउ-वि० [सं० सु+आयु] बड़ी उम्र वाला। दीर्घजीवी।
सुआन-संज्ञा पुं० दे० "श्वान"।
सुआना†-क्रि० स० [हिं० सूना का प्रेरणा०] उत्पन्न कराना। पैदा कराना।
सुआमी-संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।
सुआर†-संज्ञा पुं० [सं०सूपकार] रसोइया।
सुआरव-वि० [सं०] मीठे स्वर से बोलने या बजनेवाला।
सुआसिनी†-संज्ञा स्त्री० [सं० सुवासिनी?] १. स्त्री, विशेषतः पास रहनेवाली स्त्री। २. सौभाग्यवती स्त्री। सधवा।
सुआहित-संज्ञा पुं० [सं० सु+आहत ?] तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ।
सुकंठ-वि० [सं०] १. जिसका कंठ सुंदर हो। २. सुरीला।
संज्ञा पुं० [सं०] सुग्रीव।
सुक-संज्ञा पुं० दे० "शुक"।
सुकचाना-क्रि० अ० दे० "सकुचाना"।
सुकड़ना-क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।
सुकनासा-वि० [सं० शुक+नासिका] जिसकी नाक शुक पक्षी की ठोर के समान सुंदर हो।
सुकर-वि० [सं०] सुसाध्य। सहज।
सुकरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहज में होने

का भाव। सौकर्य। २ सुंदरता।

सुकराना-संज्ञा पुं० दे० "शुकाना"।

सुकरित-वि० [सं० सुकृति] शुभ। अच्छा।

सुकर्म-संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा काम। सत्कर्म।

सुकर्मी-वि० [सं० सुकर्मिन्] १. अच्छा काम करनेवाला। २. धार्मिक। ३. सदाचारी।

सुकल-संज्ञा पुं० दे० "शुक्ल"।

सुकवाना-क्रि० अ० [?] अचंभे में आना।

सुकवि-संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा कवि।

सुकाना-क्रि० स० दे० "सुखाना"।

सुकाल-संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम समय। २ वह समय जिसमें अन्न आदि की उपज अच्छी हो। अकाल का उलटा।

सुकावना-क्रि० स० दे० "सुखाना"।

सुकिज-संज्ञा पुं० [सं० सुकृत] शुभ कर्म।

सुकिया-संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"।

सुकी-संज्ञा स्त्री० [सं० शुक] तोते की मादा। सुग्गी। सारिका। तोती।

सुकीउ-संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"। (नायिका)

सुकुआर-वि० दे० "सुकुमार"।

सुकुति-संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] सीप।

सुकुमार-वि० [सं०] [स्त्री० सुकुमारी] जिसके अंग बहुत कोमल हों। नाजुक।
संज्ञा पुं० १ कोमलांग बालक। २. काव्य का कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त होना।

सुकुमारता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुकुमार का भाव या धर्म। कोमलता। नजाकत।

सुकुमारी-वि० [सं०] कोमल अंगोंवाली। कोमलांगी।

सुकुरना-क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

सुकुल-संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम कुल। २ वह जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो। कुलीन।
संज्ञा पुं० दे० "शुक्ल"।

सुकुवाँर, सुकुवार-वि० दे० "सुकुमार"।

सुकृत्-वि० [सं०] १ उत्तम और शुभ कार्य्य करनेवाला। २ धार्मिक।

सुकृत-संज्ञा पुं० [सं०] १ पुण्य। २. दान।

सुकृतात्मा-वि० [सं० सुकृतात्मन्] धर्म्मात्मा।

सुकृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] [भाव० सुकृतित्व] शुभ कार्य्य। अच्छा काम। पुण्य। सत्कर्म।

सुकृती-वि० [सं० सुकृतिन्] १ धार्मिक। पुण्यवान्। २. भाग्यवान्। ३ बुद्धिमान्।

सुकृत्य-संज्ञा पुं० [सं०] पुण्य। धर्मकार्य।

सुकेशि-संज्ञा पुं० [सं०] विद्युत्केश राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान्, सुमाली और माली नामक राक्षसों का पिता।

सुकेशी-संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम केशोंवाली स्त्री।
संज्ञा पुं० [सं० सुकेशिन्] [स्त्री० सुकेशिनी] वह जिसके बाल बहुत सुंदर हों।

सुक्ख-संज्ञा पुं० दे० "सुख"।

सुक्ति-संज्ञा स्त्री० दे० "शुक्ति"।

सुक्रित-संज्ञा पुं० दे० "सुकृत"।

सुक्षम-वि० दे० "सूक्ष्म"।

सुखंडी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सूखना] बच्चों का एक रोग जिसमें शरीर सूख जाता है।
वि० बहुत दुबला पतला।

सुखद-वि० [सं० सुखद] सुखदायी।

सुख-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सब को अभिलाषा रहती है। दुःख का उलटा। आराम।
मुहा०—सुख मानना = परिस्थिति आदि की अनुकूलता के कारण ठीक अवस्था में रहना। सुख की नींद सोना = निश्चिंत होकर रहना।
२ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८ सगण और २ लघु होते हैं। ३ आरोग्य। तंदुरुस्ती। ४ स्वर्ग। ५. जल। पानी।
क्रि० वि० १ स्वभावतः। २ सुखपूर्वक।

सुखआसन-संज्ञा पुं० [सं० सुख+आसन] पालकी।

सुखकंद-वि० [सं० सुख+कंद] सुखद।

सुखकंदन-वि० दे० "सुखकंद"।

सुखकंदर-वि० [सं० सुख+कंदरा] सुख का घर। सुख का आकर।

सुखका-वि० [हिं० सूखा] सूखा। शुष्क।

सुखकर-वि० [सं०] १. सुख देनेवाला। २ जो सहज में किया जाय। सुकर।

सुखकरण-वि० [सं० सुख+कारण] सुखद।

सुखकारक-वि० [सं०] सुखदायक।

सुखकारी-वि० दे० "सुखकारक"।
सुखजननी-वि० स्त्री०[सं०] सुख देनेवाली।
सुखज्ञ-वि० [सं०सुख+ज्ञ] सुख का ज्ञाता।
सुखढरन-वि० दे० "सुखद"।
सुखथर †-संज्ञा पुं० [सं० सुख +स्थल] सुख का स्थल। सुख देनेवाला स्थान।
सुखद-वि० [सं०] [स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। सुखदायी।
सुखद गीत-वि० [सं० सुखद+गीत] प्रशंसनीय।
सुखदनियाँ -वि० दे० "सुखदानी"।
सुखदा-वि० स्त्री० [सं०] सुख देनेवाली। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद।
सुखदाइन-वि० दे० "सुखदायिनी"।
सुखदाई-वि० दे० "सुखदायी"।
सुखदाता-वि० [सं० सुखदातृ] सुखद।
सुखदान-वि० दे० "सुखदाता"।
सुखदानी-वि० स्त्री० [हिं० सुखदान] सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली। संज्ञा स्त्री० ८ सगण और १ गुरु का एक वृत्त। सुंदरी। मल्ली। चंद्रकला।
सुखदायक-वि० [सं०] सुख देनेवाला। संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद।
सुखदायी-वि० [सं० सुखदायिन्] [स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला। सुखद।
सुखदायो -वि० दे० "सुखदायी"।
सुखदास-संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का अगहनी चढ़िया धान।
सुखदेनी-वि० दे० "सुखदायिनी"।
सुखदेन-वि० दे० "सुखदायी"।
सुखदैनी-वि० [सं०सुखदायिनी] सुख देनेवाली।
सुखधाम-संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख का घर। आनंद-सदन। २. बैकुंठ। स्वर्ग।
सुखना -क्रि० अ० दे० "सूखना"।
सुखपाल-संज्ञा पुं० [सं० सुख+पाल (की)] एक प्रकार की पालकी।
सुखपूर्वक-क्रि० वि० [सं०] ... से। आनंद से। ... साथ ...
सुखप्रद-वि० ...
सुखमन †- ...
सुखमा-संज्ञा ... छवि। २ एक ...
... स...

+राशि] जो सर्वथा सुखमय हो।
सुखलाना-क्रि० स० दे० "सुखाना"।
सुखवत-वि० [सं० सुखवत्] १ सुखी। प्रसन्न। खुश। २ सुखदायक।
सुखवन†-संज्ञा पुं० [हिं० सूखना] वह कमी जो किसी चीज के सूखने के कारण होती है। संज्ञा पुं० [हिं० सूखना] वह बालू जिससे लिखे हुए अक्षरों आदि पर की स्याही सुखाते हैं।
सुखवार-वि० [सं० सुख] [स्त्री० सुखवारी] सुखी। प्रसन्न। खुश।
सुखसाध्य-वि० [सं०] सुकर। सहज।
सुखसार-संज्ञा पुं० [सं० सुख+सार] मोक्ष।
सुखांत-संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसका अंत सुखमय हो। २ वह नाटक जिसके अंत में कोई सुखपूर्ण घटना (जैसे संयोग) हो।
सुखाना-क्रि० स० [हिं० सूखना का प्रे०] १ गीली या नम चीज को धूप आदि में इस प्रकार रखना जिससे उसकी नमी दूर हो। २ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे आर्द्रता दूर हो। †क्रि० अ० दे० "सूखना"।
सुखारा, सुखारी †-वि० [हिं० सुख+आरा (प्रत्य०)] १ सुखी। प्रसन्न। २ सुखद।
सुखाला-वि० [सं० सुख] [स्त्री० सुखाली] १ सुखदायक। आनंददायक। २. सहज।
सुखावह-वि० [सं०] सुख देनेवाला।
सुखासन-संज्ञा पुं० [सं०] १. सुखद आसन। २. पालकी। डोली।
सुखिआ-वि० दे० "सुखिया"।
सुखित-वि० [हिं० सूखना] सूखा हुआ। वि० [हिं० सुखी] सुखी। प्रसन्न। खुश।
सुखिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख। आनंद।
सुखिया-वि० दे० "सुखी"।
सुखिर-संज्ञा पुं० [देश०] साँप का बिल।
सुखी-वि० [सं० सुखिन्] जिसे सब प्रकार का सुख हो। आनंदित। खुश।
सुखेन-संज्ञा पुं० दे० 'सुषेण"।
सुखेलक-संज्ञा पुं० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, र आता है। प्रभद्रिका। प्रभद्रक।
... [सं० सुख] सुख देनेवाला।
[सं०] प्रसिद्धि। शोहरत। बड़ाई।

सुगंध-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अच्छी और प्रिय महक। सुवास। खुशबू। २. वह जिससे अच्छी महक निकलती हो। ३. श्रीखंड। चंदन।
वि० सुगंधित। खुशबूदार।

सुगंधबाला-संज्ञा स्त्री० [सं० सुगंध+हिं० वाला] एक प्रकार की सुगंधित वनौषधि।

सुगंधि-संज्ञा स्त्री० [सं० सुगंध] १. अच्छी महक। सौरभ। सुगंध। सुवास। खुशबू। २. परमात्मा। ३. आम।

सुगंधित-वि० [सं० सुगंधि] जिसमें अच्छी गंध हो। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

सुगत-संज्ञा पुं० [सं०] १ बुद्धदेव। २ बौद्ध।

सुगति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है।

सुगना†-संज्ञा पुं० [सं० शुक] तोता।

सुगम-वि० [सं०] १ जिसमें गमन करने में कठिनता न हो। २ सरल। सहज।

सुगमता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुगम होने का भाव। सरलता। आसानी।

सुगम्य-वि० [सं०] जिसमें सहज में प्रवेश हो सके।

सुगल-संज्ञा पुं० [सं० सु+हिं०गल = गला] बालि का भाई सुग्रीव।

सुगानाः-क्रि० अ० [सं० शोक] १ दुःखित होना। २. बिगड़ना। नाराज़ होना।
क्रि० अ० [?] संदेह करना। शक करना।

सुगीतिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २५ मात्राएँ और आदि में लघु और अंत में गुरु लघु होते हैं।

सुगुरा-संज्ञा पुं० [सं० सुगुरु] वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो।

सुगैया†-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुग्गा] चोली।

सुग्गा†-संज्ञा पुं० [सं०शुक] तोता। सूआ।

सुग्रीव-संज्ञा पुं० [सं०] १. बालि का भाई, बानरों का राजा और श्रीरामचंद्र का सखा। २ इंद्र। ३. शंख।
वि० जिसकी ग्रीवा सुंदर हो।

सुघट-वि० [सं०] १. सुंदर। सुडौल। २ जो सहज में बन सकता हो।

सुघटित-वि० [सं० सुघट] अच्छी तरह से बना या गढ़ा हुआ।

सुघड़-वि० [सं०सुघट] १ सुंदर। सुडौल। २. निपुण। कुशल। प्रवीण।

सुघड़ई-संज्ञा स्त्री० [हिं०सुघड़] १. सुंदरता। सुडौलपन। २. चतुरता। निपुणता।

सुघड़ता-संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़पन"।

सुघड़पन-संज्ञा पुं० [हिं० सुघड़+पन(प्रत्य०)] १. सुंदरता। २ निपुणता। कुशलता।

सुघड़ाई-संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़ई"।

सुघड़ापा-संज्ञा पुं० दे० "सुघड़पन"।

सुघर-वि० दे० "सुघड़"।

सुघरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी घड़ी। शुभ समय।
वि० स्त्री० [हिं० सुघड़] सुंदर। सुडौल।

सुचः-वि० दे० "शुचि"।

सुचना-क्रि०स० [सं० संचय] संचय करना। एकत्र करना। इकट्ठा करना।

सुचरित, सुचरित्र-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुचरित्रा] उत्तम आचरणवाला। नेक-चलन।

सुचा-वि० दे० "शुचि"।
संज्ञा स्त्री० [सं० सूचना] ज्ञान। चेतना

सुचाना-क्रि० स० [हिं० सोचना का प्रे०] १. किसी को सोचने या समझने में प्रवृत्त करना। २ दिखलाना। ३. किसी बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना।

सुचारः-संज्ञा स्त्री० दे० "सुचाल"।
वि० [सं० सुचारु] सुंदर। मनोहर।

सुचारु-वि० [सं०] अत्यंत सुंदर।

सुचाल-संज्ञा स्त्री० [सं० सु+हिं० चाल] उत्तम आचरण। अच्छी चाल। सदाचार।

सुचाली-वि० [हिं० सु+चाल] अच्छे चाल-चलनवाला। सदाचारी।

सुचि-वि० दे० "शुचि"।

सुचित-वि० [सं० सु+चित्त] १. जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। २ निश्चिंत। बेफिक्र। ३ एकाग्र। स्थिर। सावधान।

सुचितई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुचित+ई (प्रत्य०)] १ निश्चितता। बेफिक्री। २. एकाग्रता। शांति। ३ छुट्टी। फुरसत।

सुचिती†-वि० दे० "सुचित"।

सुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री। बेटी।
सुतार-संज्ञा पु० [सं० सूत्रकार] १ बढ़ई। २ शिल्पकार। कारीगर।
वि० [सं० सु+तार] अच्छा। उत्तम।
संज्ञा पु० दे० "सुभीता"।
सुतारी-संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] १ मोचियों का सूआ जिससे वे जूता सीते हैं। २. सुतार या बढ़ई का काम।
संज्ञा पु० [हिं० सुतार] शिल्पकार। कारीगर।
सुतिन:-संज्ञा स्त्री० [सं० सुतनु] रूपवती स्त्री।
सुतिहार।-संज्ञा पु० दे० "सुतार"।
सुतीक्ष्ण-संज्ञा पु० [सं०] अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास में श्रीरामचंद्र से मिले थे।
सुतीच्छन:-संज्ञा पु० दे० "सुतीक्ष्ण"।
सुतुही।-संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] १ सीपी, जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। २ वह सीप जिससे अचार के लिये कच्चा आम छीला जाता है। सीपी।
सुतून-संज्ञा पु० [फा०] खंभा। स्तंभ।
सुत्रामा-संज्ञा पु० [सं० सुत्रामन्] इंद्र।
सुथना-संज्ञा पु० दे० "सूथन"।
सुथनी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा। सूथन। २ पिंडालू। रतालू।
सुथरा-वि० [सं० स्वच्छ] [स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ़।
सुथराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुथरा] सुथरापन।
सुथरापन-संज्ञा पु० [हिं० सुथरा+पन (प्रत्य०)] स्वच्छता। निर्मलता। सफाई।
सुथरेशाही-संज्ञा पु० [सुथराशाह (महात्मा)] १. गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया संप्रदाय। २. इस संप्रदाय के अनुयायी।
सुदती-वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाली स्त्री।
सुदर्शन-संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु भगवान् के चक्र का नाम। २. शिव। ३ सुमेरु।
वि० जो देखने में सुंदर हो। मनोरम।
सुदामा-संज्ञा पु० [सं० सुदामन्] एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सखा था और जिसे पीछे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था।
सुदावन-संज्ञा पु० दे० "सुदामा"।
सुदास-संज्ञा पु० [सं०] १ दिवोदास का पुत्र। २ एक प्राचीन जनपद।
सुदि-संज्ञा स्त्री० दे० "सुदी"।
सुदिन-संज्ञा पु० [सं० सु+दिन] शुभ दिन।
सुदी-संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ल या शुद्ध] किसी मास का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष।
सुदीपति:-संज्ञा स्त्री० दे० "सुदीप्ति"।
सुदीप्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक प्रकाश। खूब उजाला।
सुदूर-वि० [सं०] बहुत दूर। अति दूर।
सुदृढ़-वि० [सं०] बहुत दृढ़। खूब मजबूत।
सुदेव-संज्ञा पु० [सं०] देवता।
सुदेश-संज्ञा पु० [सं०] १ सुंदर देश। उत्तम देश। २ उपयुक्त स्थान।
वि० सुंदर। खूबसूरत।
सुदेह-वि० [सं०] सुंदर। कमनीय।
सुद्दा-संज्ञा स्त्री० [अ० सुद्द] पेट का जमा हुआ सूखा मल।
सुद्ध:-वि० दे० "शुद्ध"।
सुद्धां।-अव्य० [सं० सह] सहित। समेत।
सुद्धि-संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।
सुधंग-संज्ञा पु० [हिं० सु+ढंग?] अच्छा ढंग।
सुध-संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि)] १. स्मृति। स्मरण। याद। चेत।
मुहा०—सुध दिलाना=याद दिलाना। सुध न रहना=भूल जाना। याद न रहना। सुध बिसरना=भूल जाना। सुध बिसराना या बिसारना=किसी को भूल जाना। सुध भूलना=दे० "सुध बिसरना"।
२. चेतना। होश।
यौ०—सुध-बुध=होश हवास।
मुहा०—सुध बिसरना=होश में न रहना। सुध बिसराना=अचेत करना।
३ खबर। पता।
वि० दे० "शुद्ध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुधा"।
सुधन्वा-संज्ञा पु० [सं० सुधन्वन्] १ अच्छा धनुर्धर। २ विष्णु। ३. विश्वकर्मा। ४ अंगिरस।
सुधमना।-वि० [हिं० सुध=होश+मन] [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत।

हो। शांत। २. जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो।

सुचिमंत–वि० [सं० शुचि+मत] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी। शुद्धाचारी।

सुची–संज्ञा स्त्री० दे० "शुची"।

सुचेत–वि० [सं० सुचेतस्] चौकन्ना। सावधान। सतर्क। होशियार।

सुच्छंद†–वि० दे० "स्वच्छंद"।

सुच्छ†–वि० दे० "स्वच्छ"।

सुच्छम†–वि० दे० "सूक्ष्म"।

सुजन–संज्ञा पु० [सं०] सज्जन। सत्पुरुष। भला आदमी। शरीफ़।
संज्ञा पु० [सं० स्वजन] परिवार के लोग।

सुजनता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुजन का भाव। सौजन्य। भद्रता। भलमनसत।

सुजनी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सोज़नी] एक प्रकार की बिछाने की बड़ी चादर।

सुजस–संज्ञा पु० दे० "सुयश"।

सुजागर–वि० [सं० सु+जागर] देखने में बहुत सुंदर। प्रकाशमान। सुशोभित।

सुजात–वि० [सं०] [स्त्री० सुजाता] १. विवाहित स्त्री पुरुष से उत्पन्न। २. अच्छे कुल में उत्पन्न। ३. सुंदर।

सुजाति–संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम जाति।
वि० उत्तम जाति या कुल का।

सुजातिया–वि० [हिं० सुजाति+इया (प्रत्य०)] उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।
वि० [सं० स्व+जाति] अपनी जाति का।

सुजान–वि० [सं० सज्ञान] १. समझदार। चतुर। सयाना। २. निपुण। कुशल। प्रवीण। ३. विज्ञ। पंडित। ४. सज्जन।
संज्ञा पु० १. पति या प्रेमी। २. ईश्वर।

सुजानता–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुजान+ता (प्रत्य०)] सुजान होने का भाव या धर्म।

सुजानी–वि० [हिं० सुजान] पंडित। ज्ञानी।

सुजोग†–संज्ञा पुं० [सं० सु+योग] १. अच्छा अवसर। सुयोग। २. अच्छा संयोग।

सुजोधन–संज्ञा पुं० दे० "सुयोधन"।

सुजोर–वि० [सं० सु+फा० ज़ोर] दृढ़।

सुझाना–क्रि० स० [हिं० सूझना का प्रेर०] दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना। दिखाना।

सुटुकना–क्रि० अ० १. दे० "सुड़कना"। २. दे० "सिकुड़ना"।
क्रि० स० [अनु०] चाबुक लगाना।

सुठ–वि० दे० "सुठि"।

सुठहर†–संज्ञा पु० [सं० सु+हिं० ठहर=जगह] अच्छा स्थान। बढ़िया जगह।

सुठार†–वि० [सं० सुष्ठु] सुडौल। सुंदर।

सुठि†–वि० [सं० सुष्ठु] १. सुंदर। बढ़िया। अच्छा। २. अत्यंत। बहुत।
अव्य० [सं० सुष्ठु] पूरा पूरा। बिलकुल।

सुठोना†–वि० दे० "सुठि"।

सुड़सुड़ाना–क्रि० स० [अनु०] सुड़सुड़ शब्द उत्पन्न करना।

सुडौल–वि० [सं० सु+हिं० डौल] सुंदर डौल या आकार का। सुंदर।

सुढंग–संज्ञा पु० [सं० सु+हिं० ढंग] १. अच्छा ढंग। अच्छी रीति। २. सुघड़।

सुढर–वि० [सं० सु+हिं० ढलना] प्रसन्न और दयालु। जिसकी अनुकंपा हो।
वि० [हिं० सुघड़] सुंदर। सुडौल।

सुढार, सुढारु†–वि० [सं० सु+हिं० ढलना] [स्त्री० सुढारी] सुंदर। सुडौल।

सुतंत, सुतंतर–वि० दे० "स्वतंत्र"।

सुतंत्र–वि० दे० "स्वतंत्र"।
क्रि० वि० स्वतंत्रतापूर्वक।

सुत–संज्ञा पु० [सं०] पुत्र। बेटा। लड़का।
वि० १. पार्थिव। २. उत्पन्न। जात।

सुतनु–वि० [सं०] सुंदर शरीरवाला।
संज्ञा स्त्री० सुंदर शरीरवाली स्त्री। कृशांगी।

सुतर†–संज्ञा पुं० दे० "शुतुर"।

सुतरनाल–संज्ञा स्त्री० दे० "शुतुरनाल"।

सुतरां–अव्य० [सं० सुतराम्] १. अतः। इसलिये। २. और भी। किं बहुना।

सुतरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुतली] सुतली।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुतली"।

सुतल–संज्ञा पुं० [सं०] सात पाताल लोकों में से एक लोक।

सुतली–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूत+ली (प्रत्य०)] रस्सी। डोरी। सुतरी।

सुतवाना†–क्रि० स० दे० "सुलवाना"।

सुतहर, सुतहार†–संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।

सुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री। बेटी।

सुतार–संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकार] १. बढ़ई। २. शिल्पकार। कारीगर।
वि० [सं० सु+तार] अच्छा। उत्तम।
संज्ञा पुं० दे० "सुभीता"।

सुतारी–संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] १. मोचियों का सूआ जिससे वे जूता सीते हैं। २. सुतार या बढ़ई का काम।
संज्ञा पुं० [हिं० सुतार] शिल्पकार। कारीगर।

सुतिन–संज्ञा स्त्री० [सं०सुतनु] रूपवती स्त्री।

सुतिहार†–संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।

सुतीक्ष्ण–संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि के भाई जो बनवास में श्रीरामचंद्र से मिले थे।

सुतीच्छन–संज्ञा पुं० दे० "सुतीक्ष्ण"।

सुतुही†–संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] १. सीपी, जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। २. वह सीप जिससे अचार के लिये कच्चा आम छीला जाता है। सीपी।

सुतून–संज्ञा पुं० [फा०] खंभा। स्तंभ।

सुत्रामा–संज्ञा पुं० [सं० सुत्रामन्] इंद्र।

सुथना–संज्ञा पुं० दे० "सूथन"।

सुथनी–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा। सूथन। २. पिंडालू। रतालू।

सुथरा–वि० [सं० स्वच्छ] [स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ़।

सुथराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुथरा] सुथरापन।

सुथरापन–संज्ञा पुं० [हिं० सुथरा+पन (प्रत्य०)] स्वच्छता। निर्मलता। सफ़ाई।

सुथरेशाही–संज्ञा पुं० [सुथराशाह (महात्मा)] १. गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया संप्रदाय। २. इस संप्रदाय के अनुयायी।

सुदती–वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाली स्त्री।

सुदर्शन–संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु भगवान् के चक्र का नाम। २. शिव। ३. सुमेरु।
वि० जो देखने में सुंदर हो। मनोरम।

सुदामा–संज्ञा पुं० [सं० सुदामन्] एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सखा था और जिसे पीछे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था।

सुदावन–संज्ञा पुं० दे० "सुदामा"।

सुदास–संज्ञा पुं० [सं०] १. दिवोदास का पुत्र। २. एक प्राचीन जनपद।

सुदि–संज्ञा स्त्री० दे० "सुदी"।

सुदिन–संज्ञा पुं० [सं० सु+दिन] शुभ दिन।

सुदी–संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ल या शुद्ध] किसी मास का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष।

सुदीपति–संज्ञा स्त्री० दे० "सुदीप्ति"।

सुदीप्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक प्रकाश। खूब उजाला।

सुदूर–वि० [सं०] बहुत दूर। अति दूर।

सुदृढ़–वि० [सं०] बहुत दृढ़। खूब मज़बूत।

सुदेव–संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

सुदेश–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर देश। उत्तम देश। २. उपयुक्त स्थान।
वि० सुंदर। खूबसूरत।

सुदेह–वि० [सं०] सुंदर। कमनीय।

सुद्दो–संज्ञा स्त्री० [अ० सुद्दः] पेट का जमा हुआ सूखा मल।

सुद्ध–वि० दे० "शुद्ध"।

सुद्धाँ†–अव्य० [सं० सह] सहित। समेत।

सुद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।

सुधंग–संज्ञा पुं० [हिं० सु+ढंग?] अच्छा ढंग।

सुध–संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि)] १. स्मृति। स्मरण। याद। चेत।
मुहा०—सुध दिलाना = याद दिलाना। सुध न रहना = भूल जाना। याद न रहना। सुध बिसरना = भूल जाना। सुध बिसराना या बिसारना = किसी को भूल जाना। सुध भूलना = दे० "सुध बिसरना"।
२. चेतना। होश।
यौ०—सुध-बुध = होश-हवास।
मुहा०—सुध बिसरना = होश में न रहना। सुध बिसराना = अचेत करना।
३. खबर। पता।
वि० दे० "शुद्ध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुधा"।

सुधन्वा–संज्ञा पुं० [सं० सुधन्वन्] १. अच्छा धनुर्धर। २. विष्णु। ३. विश्वकर्मा। ४. आंगिरस।

सुधमना†–वि० [हिं० सुध=होश+म-] [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो।

सुधरना-क्रि० अ० [सं० शोधन] बिगड़े हुए का बनना। संशोधन होना।

सुधराई-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुधरना] १. सुधरने की क्रिया। सुधार। २. सुधारने की मजदूरी।

सुधर्म-संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम धर्म। पुण्य कर्तव्य।

सुधर्मी-वि० [सं० सुधर्मिन्] धर्मनिष्ठ।

सुधवाना-क्रि० स० [हिं० सुधरना का प्रेर० रूप] दोष या त्रुटि दूर कराना। शोधन कराना। दुरुस्त कराना।

सुधाँ-अव्य० दे० "सुद्धाँ"।

सुधांग-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधांशु-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमृत। पीयूष। २. मकरंद। ३. गंगा। ४. जल। ५. दूध। ६. रस। अर्क। ७. पृथ्वी। धरती। ८. विष। जहर। ९. एक प्रकार का वृत्त।

सुधाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० सूधा = सीधा] सीधापन। सिधाई। सरलता।

सुधाकर-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधागेह-संज्ञा पुं० [सं० सुधा + हिं० गेह] चंद्रमा।

सुधाधर-संज्ञा पुं० [सं० सुधा + धर] चंद्रमा।

सुधाधर-संज्ञा पुं० [सं० सुधा + धर] चंद्रमा।
वि० [सं० सुधा + अधर] जिसके अधरों में अमृत हो।

सुधाधाम-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधाधार-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधाधी-वि० [सं० सुधा] सुधा के समान।

सुधाना*-क्रि० स० [हिं० सुध] सुध कराना। स्मरण कराना। याद दिलाना।
क्रि० स० १. शोधन का काम दूसरे से कराना। दुरुस्त कराना। २. (लग्न या कुंडली आदि) ठीक कराना।

सुधानिधि-संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. समुद्र। ३. दंडक वृत्त का एक भेद। इसमें १६ बार क्रम से गुरु लघु आते हैं।

सुधापाणि-संज्ञा पुं० [सं०] धन्वंतरि।

सुधार-संज्ञा पुं० [हिं० सुधरना] सुधरने की क्रिया या भाव। संशोधन। संस्कार।

सुधारक-संज्ञा पुं० [हिं० सुधार + क (प्रत्य०)] १. वह जो दोषों या त्रुटियों का सुधार करता हो। संशोधक। २. वह जो धार्मिक, या सामाजिक सुधार के लिये प्रयत्न करता हो।

सुधारना-क्रि० स० [हिं० सुधरना] दोष या बुराई दूर करना। संशोधन करना।
वि० [स्त्री० सुधारनी] सुधारनेवाला।

सुधारा-वि० [हिं० सूधा] सीधा। निष्कपट।

सुधाश्रवा-संज्ञा पुं० [सं० सुधा + स्रव] अमृत बरसानेवाला।

सुधासदन-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधि-संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।

सुधी-संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।
वि० १. बुद्धिमान्। चतुर। २. धार्मिक।

सुनंदिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में स ज स ज ग रहते हैं। प्रबोधिता। मंजुभाषिणी।

सुनकिरवा-संज्ञा पुं० [हिं० सोना + किरवा = कीड़ा] एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर पन्ने के रंग के होते हैं।

सुनगुन-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + अनु० गुन] १. भेद। टोह। सुराग। २. कानाफूसी।

सुनत सुनति*†-संज्ञा स्त्री० दे० "सुन्नत"।

सुनना-क्रि० स० [सं० श्रवण] १. कानों के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना। श्रवण करना।
मुहा०—सुनी अनसुनी कर देना=कोई बात सुनकर भी उस पर ध्यान न देना।
२. किसी के कथन पर ध्यान देना। ३. भली बुरी बातें श्रवण करना।

सुनबहरी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुन + बहरी ?] फीलपा। (रोग)

सुनय-संज्ञा पुं० [सं०] सुनीति। उत्तम नीति।

सुनवाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + वाई (प्रत्य०)] १. सुनने की क्रिया या भाव। २ मुकदमे या शिकायत आदि का सुना जाना।

सुनवैया-वि० [हिं० सुनना + वैया (प्रत्य०)] १ सुननेवाला। २. सुनानेवाला।

सुनसान-वि० [सं० शून्य + स्थान] १. जहाँ कोई न हो। सूना। निर्जन। जनहीन। २. उजाड़। वीरान।
संज्ञा पुं० सन्नाटा।

सुनहरा-वि० दे० "सुनहला"।

सुनहला-वि० [हिं० सोना + हला (प्रत्य०)

[स्त्री० सुनहली] सोने के रंग का।
सुनाई-संज्ञा स्त्री० दे० "सुनवाई"।
सुनाना-क्रि० स० [हिं० सुनना का प्रेर०] १. दूसरे को सुनने में प्रवृत्त करना। श्रवण कराना। २. खरी खोटी कहना।
सुनाम-संज्ञा पुं० [सं०] यश। कीर्त्ति।
सुनार-संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, सुनारी] सोने, चाँदी के गहने आदि बनानेवाली जाति। स्वर्णकार।
सुनारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनार + ई (प्रत्य०)] १. सुनार का काम। २. सुनार की स्त्री।
सुनावनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + आवनी (प्रत्य०)] १. कहीं विदेश से किसी संबंधी आदि की मृत्यु का समाचार आना। २. वह स्नान आदि कृत्य जो ऐसा समाचार आने पर होता है।
सुनाहक-क्रि० वि० दे० "नाहक"।
सुनीति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्तम नीति। २. उत्तानपाद की पत्नी और ध्रुव की माता।
सुनैया-वि० [हिं० सुनना + ऐया (प्रत्य०)] सुननेवाला।
सुनौची-संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।
सुन्न-वि० [सं० शून्य] निर्जीव। स्पंदन-हीन। निःस्तब्ध। निश्चेष्ट।
संज्ञा पुं० शून्य। सिफर।
सुन्नत-संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों की एक रस्म जिसमें लड़के की लिंगेंद्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है। खतना। मुसलमानी।
सुन्ना-संज्ञा पुं० [सं० शून्य] बिंदी। सिफर।
सुन्नी-संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का एक भेद जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है। चारयारी।
सुपक्व-वि० [सं०] अच्छी तरह पका हुआ।
सुपच-संज्ञा पुं० [सं० श्वपच] चांडाल। डोम।
सुपत-वि० [सं० + सु हिं० पत = प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठायुक्त।
सुपथ-संज्ञा पुं० दे० "सुपथ"।
सुपथ-संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम पथ। अच्छा रास्ता। सदाचार। २. एक वृत्त जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरु का होता है।
वि० [सं० सु + पथ] समतल। हमवार।
सुपन, सुपना-संज्ञा पुं० दे० "स्वप्न"।
सुपनाना*-क्रि० स० [हिं० सुपना] स्वप्न दिखाना।
सुपरस-*संज्ञा पुं० दे० "स्पर्श"।
सुपर्ण-संज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड़। २. पक्षी। चिड़िया। ३. किरण। ४. विष्णु। ५. घोड़ा। अश्व।
सुपर्णी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गरुड़ की माता। सुपर्णा। २. कमलिनी। पद्मिनी।
सुपात्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी कार्य के लिये योग्य या उपयुक्त हो। अच्छा पात्र।
सुपारी-संज्ञा स्त्री० [सं० सुप्रिय] नारियल की जाति का एक पेड़। इसके फल टुकड़े करके पान के साथ खाए जाते हैं। पूग। गुवाक।
मुहा०—सुपारी लगना = खाने में सुपारी का कलेजे में अटकना जो कष्टप्रद होता है।
सुपार्श्व-संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के २४ तीर्थंकरों में से सातवें तीर्थंकर।
सुपास-संज्ञा पुं० [देश०] सुख। आराम।
सुपासी-वि० [हिं० सुपास] सुख देनेवाला।
सुपुर्द-संज्ञा पुं० दे० "सपुर्द"।
सुपूत-संज्ञा पुं० दे० "सपूत"।
सुपूती-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुपूत + ई (प्रत्य०)] सुपूत होने का भाव। सुपूतपन।
सुपेती*†-संज्ञा स्त्री० दे० "सपेदी"।
सुपेद†-वि० दे० "सफेद"।
सुपेदी*†-संज्ञा स्त्री० [फा० सफ़ेदी] १. सफेदी। उज्ज्वलता। २. ओढ़ने की रजाई। ३. बिछाने की तोशक। ४. बिछौना। बिस्तर।
सुपैली-संज्ञा स्त्री० [हिं० सूप] छोटा सूप।
सुप्त-वि० [सं०] १. सोया हुआ। निद्रित। २. ठिठुरा हुआ। ३. बंद। मुँदा हुआ।
सुप्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निद्रा। नींद। २. निंदास। ऊँघाई।
सुप्रज्ञ-वि० [सं०] बहुत बुद्धिमान्।
सुप्रतिष्ठ-वि० [सं०] १. उत्तम प्रतिष्ठावाला। २. बहुत प्रसिद्ध। मशहूर।
सुप्रतिष्ठा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं। २. प्रसिद्धि। शोहरत।

सुप्रतिष्ठित-वि० [सं०] उत्तम रूप से प्रतिष्ठित। विशेष माननीय।

सुप्रसिद्ध-वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। बहुत मशहूर।

सुप्रिया-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चौपाई जिसमें अन्तिम वर्ण के अतिरिक्त और सब वर्ण लघु होते हैं।

सुफल-संज्ञा पु० [सं०] १. सुंदर फल। २. अच्छा परिणाम।
वि० १. सुंदर फलवाला। (अन्न) २. सफल। कृतकार्य्य। कृतार्थ। कामयाब।

सुबल-संज्ञा पु० [सं०] १ शिवजी। २. गंधार का एक राजा और शकुनि का पिता।
वि० अत्यंत बलवान्। बहुत मजबूत।

सुबह-संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रातःकाल। सवेरा।

सुबहान-संज्ञा पु० दे० "सुभान"।

सुबहान अल्ला-अव्य० [अ०] अरबी का एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य होने पर होता है।

सुबास-संज्ञा स्त्री० [सं० सु+वास] अच्छी महक। सुगंध।
संज्ञा पु० एक प्रकार का धान।

सुबासना-संज्ञा स्त्री० [सं० सु+वास] सुगंध। ख़ुशबू।
क्रि० स० सुगंधित करना। महकाना।

सुबासिक-वि० [सं० सु+वास] सुगंधित।

सुबाहु-संज्ञा पु० [सं०] १ धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि का राजा। २. सेना। फौज।
वि० दृढ़ या सुंदर बाहोंवाला।

सुबिस्ता, सुबीता-संज्ञा पु० दे० "सुभीता"।

सुबुक-वि० [फा०] १. हलका। भारी का उलटा। २ सुंदर। ख़ूबसूरत।
संज्ञा पु० घोड़े की एक जाति।

सुबुद्धि-वि० [सं०] बुद्धिमान्।
संज्ञा स्त्री० उत्तम बुद्धि। अच्छी अक्ल़।

सुबू-संज्ञा पुं० दे० "सुबह"।

सुबूत-संज्ञा पु० दे० "सबूत"।
संज्ञा पुं०[अ०] वह जिससे कोई बात साबित हो। प्रमाण।

सुबोध-वि० [सं०] १ अच्छी बुद्धिवाला। २. जो कोई बात सहज में समझ सके।

सुब्रह्मण्य-संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। २. विष्णु। ३. दक्षिण का एक प्राचीन प्रांत।

सुभ-वि० दे० "शुभ"।

सुभग-वि० [सं०] [भाव० संज्ञा सुभगता] १. सुंदर। मनोहर। २. भाग्यवान्। ख़ुशकिस्मत। ३. प्रिय। प्रियतम। ४. सुखद।

सुभगा-वि० [स्त्री०] १. सुंदरी। ख़ूबसूरत (स्त्री)। २. (स्त्री) सौभाग्यवती। सुहागिन।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। २. पाँच वर्ष की कुमारी।

सुभग्ग-वि० दे० "सुभग"।

सुभट-संज्ञा पु० [सं०] भारी योद्धा।

सुभटवंत-वि० [सं० सुभट] अच्छा योद्धा।

सुभद्र-संज्ञा पु०[सं०] १ विष्णु। २ सनत्कुमार। ३ श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ४. सौभाग्य। ५. कल्याण। मंगल।
वि० १. भाग्यवान्। २ सज्जन।

सुभद्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी। २ दुर्गा।

सुभद्रिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न न र ल ग होता है।

सुभर-वि० दे० "शुभ्र"।

सुभा-संज्ञा स्त्री० [सं० शुभा] १. सुधा। २. शोभा। ३. पर-नारी। ४. हरीतकी। हड़।

सुभाइ, सुभाउ-संज्ञा पु० दे० "स्वभाव"।
क्रि० वि० सहज भाव से। स्वभावतः।

सुभाग-संज्ञा पु० दे० "सौभाग्य"।

सुभागी-वि० [सं० सुभाग] भाग्यवान्।

सुभागीन-संज्ञा पु० [सं० सौभाग्य] [स्त्री० सुभागिनी] भाग्यवान्। सुभग।

सुभान-अव्य० दे० "सुबहान"।

सुभाना-क्रि० अ० [हिं० शोभना] शोभित होना। देखने में भला जान पड़ना।

सुभाय-संज्ञा पु० दे० "स्वभाव"।

सुभायक-वि० दे० "स्वाभाविक"।

सुभाव-संज्ञा पु० दे० "स्वभाव"।

सुभाषित-वि० [सं०] सुंदर रूप से कहा हुआ। अच्छी तरह कहा हुआ।

सुभाषी-वि० [सं० सुभाषिन्] [स्त्री० सुभाषिणी] उत्तम रूप से बोलनेवाला। मिष्टभाषी।

सुभिक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें अन्न खूब हो। सुकाल।

सुभी-वि० स्त्री० [सं० शुभ] शुभकारक।

सुभीता-संज्ञा पुं० [देश०] १. सुगमता। सहूलियत। २. सुअवसर। सुयोग।

सुभीटी, †-संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा] शोभा।

सुभ्र-वि० दे० "शुभ्र"।

सुमंगली-संज्ञा स्त्री० [सं० सुमंगल] विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।

सुमंत-संज्ञा पुं० दे० "सुमंत्र"।

सुमंत्र-संज्ञा पुं० [सं०] राजा दशरथ का मंत्री और सारथि।

सुमंथन-संज्ञा पुं० दे० "मंदर"। (पर्वत)

सुमंद्र-संज्ञा पुं० [सं०] २७ मात्राओं का एक वृत्त जिसके अंत में गुरु लघु होते हैं। सरसी।

सुम-संज्ञा पुं० [फ़ा०] घोड़े या दूसरे चौपायों के खुर। टाप।

सुमत-संज्ञा स्त्री० दे० "सुमति"।

सुमति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सगर की पत्नी। २. सुंदर मति। सुबुद्धि। अच्छी बुद्धि। ३. मेल जोल। ४ भक्ति। प्रार्थना।
वि० अच्छी बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।

सुमन-संज्ञा पुं० [सं० सुमनस्] १. देवता। २ पंडित। विद्वान्। ३. पुष्प। फूल।
वि० १. सहृदय। दयालु। २. सुंदर।

सुमनचाप-संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

सुमनस-संज्ञा पुं० [सं० सुमनस्] १. देवता। २ पुष्प। फूल।
वि० प्रसन्न-चित्त।

सुमनित-वि० [सं० सुमणि+त (प्रत्य०)] उत्तम मणियों से जड़ा हुआ।

सुमरन-संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।

सुमरना*†-क्रि० स० [सं० स्मरण] १. स्मरण करना। ध्यान करना। २. जपना।

सुमरनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुमरना] नाम जपने की सत्ताइस दानों की छोटी माला।

सुमानिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] सात अक्षरों का एक वृत्त।

सुमार्ग-संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सुपथ। सन्मार्ग।

सुमालिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं।

सुमाली-संज्ञा पुं० [सं० सुमालिन्] एक राक्षस, जिसकी कन्या कैकसी के गर्भ से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण हुए थे।

सुमित्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थीं।

सुमित्रानंदन-संज्ञा पुं० [सं०] लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

सुमिरण*-संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।

सुमिरना*†-क्रि० स० दे० "सुमरना"।

सुमिरनी-संज्ञा स्त्री० दे० "सुमरनी"।

सुमुख-संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. गणेश। ३ पंडित। आचार्य।
वि० १ सुंदर मुखवाला। २. सुंदर। मनोहर। ३. प्रसन्न। ४ कृपालु।

सुमुखी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुंदर मुखवाली स्त्री। २. दर्पण। आइना। ३ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं।

सुमृत, सुमृति*-संज्ञा स्त्री० दे० "स्मृति"।

सुमेध-वि० दे० "सुमेधा"।

सुमेधा-वि० [सं० सुमेधस्] बुद्धिमान्।

सुमेर-संज्ञा पुं० [सं० सुमेरु] सुमेरु पर्वत।

सुमेरु-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक पुराणोक्त पर्वत जो सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है। २ शिवजी। ३ जप-माला के बीच का बड़ा और ऊपरवाला दाना। ४. उत्तर ध्रुव। ५. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती हैं।
वि० १. बहुत ऊँचा। २. सुंदर।

सुमेरुवृत्त-संज्ञा पुं० [सं०] वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

सुयश-संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी कीर्त्ति सुख्याति। सुकीर्ति। सुनाम।
वि० [सं० सुयशस्] यशस्वी। कीर्त्तिमान्।

सुयोग-संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर योग। संयोग। सुअवसर। अच्छा मौका।

सुयोग्य-वि० [सं०] बहुत योग्य। लायक।

सुयोधन-संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।

सुरंग-वि० [सं०] १. सुंदर रंग का। २. सुंदर। सुडौल। ३. रसपूर्ण। ४. लाल रंग का। ५. निर्मल। स्वच्छ। साफ़।
संज्ञा पुं० १. शिंगरफ़। २. नारंगी। ३. रंग के अनुसार घोड़ों का एक भेद।
संज्ञा स्त्री० [सं० सुरंगा] १. ज़मीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता। २. किले या दीवार आदि के नीचे खोदकर बनाया हुआ वह रास्ता जिसमें बारूद भरकर और आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। ३. एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिससे शत्रुओं के जहाज़ नष्ट किए जाते हैं। सेंध।

सुर-संज्ञा पुं० [सं०] १. देवता। २. सूर्य। ३. पंडित। विद्वान्। ४. मुनि। ऋषि।
संज्ञा पुं० [सं० स्वर] स्वर। ध्वनि।
मुहा०—सुर में सुर मिलाना = हाँ में हाँ मिलाना। चापलूसी करना।

सुरकंत-संज्ञा पुं० [सं० सुर + कान्त] इंद्र।

सुरक-संज्ञा पुं० [सं० सुर] नाक पर का वह तिलक जो नाक की आकृति का होता है।

सुरकना-क्रि० स० [अनु०] हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खींचना।

सुरकरी-संज्ञा पुं० [सं० सुरकरिन्] देवताओं का हाथी। दिग्गज। सुरराज।

सुर-कुदाव-संज्ञा पुं० [सं० स्वर, सं० कु + हिं० दाँव = धोखा] धोखा देने के लिये स्वर बदलकर बोलना।

सुरकेतु-संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं या इंद्र की ध्वजा। २. इंद्र।

सुरक्षण-संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम रूप से रक्षा करना। रखवाली। हिफ़ाज़त।

सुरक्षित-वि० [सं०] जिसकी भली-भाँति रक्षा की गई हो। उत्तम रूप से रक्षित।

सुरख, सुरखा-वि० दे० "सुर्ख़"।

सुरख़ाब-संज्ञा पुं० [फ़ा०] चकवा।
मुहा०—सुरख़ाब का पर लगना = विलक्षणता या विशेषता होना। अनोखापन होना।

सुरख़ी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुर्ख़] १. ईंटों का महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम में आता है। २. दे० "सुर्ख़ी"।

सुरखुरू-वि० दे० "सुर्ख़रू"।

सुरग-संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

सुरगिरि-संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।

सुरगुरु-संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

सुरगैया-संज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु"।

सुरचाप-संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरज-संज्ञा पुं० दे० "सूर्य"।

सुरजन-संज्ञा पुं० [सं०] देव-समूह।
वि० १. सज्जन। सुजन। २. चतुर।

सुरझना-क्रि० अ० दे० "सुलझना"।

सुरझाना-क्रि० स० दे० "सुलझाना"।

सुरत-संज्ञा पुं० [सं०] संभोग। मैथुन।
संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] ध्यान। याद। सुध।
मुहा०—सुरत बिसारना = भूल जाना।

सुरतरंगिणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरतरु-संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

सुरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुर या देवता का भाव या कार्य। देवत्व। २. देव-समूह।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरत] १. चिंता। ध्यान। २. चेत। सुध।
वि० सयाना। होशियार। चतुर।

सुरतान-संज्ञा पुं० दे० "सुलतान"।

सुरति-संज्ञा स्त्री० [सं० सु + रति] भोग-विलास। कामकेलि। संभोग।
संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] स्मरण। सुधि।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूरत"।

सुरतिगोपना-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो रति-क्रीड़ा करके अपनी सखियों आदि से छिपाती हो।

सुरतिवंत-वि० [सं० सुरत + वान्] कामातुर।

सुरतिविचित्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मध्या जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।

सुरती-संज्ञा स्त्री० [सूरत (नगर)] तंबाकू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ या योंही खाया जाता है। खैनी।

सुरत्राण-संज्ञा पुं० दे० "सुरत्राता"।

सुरत्राता-संज्ञा पुं० [सं० सुर + त्रातृ] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. इंद्र।

सुरथ-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक चंद्रवंशी राजा, पुराणों के अनुसार, जिन्होंने पहले-पहल दुर्गा की आराधना की थी। २. जय-

मेय के एक पुत्र का नाम। २. एक पर्वत।

सुरदार-वि० [हिं० सुर+फा० दार] जिसके गले का स्वर सुंदर हो। सुस्वर। सुरीला।

सुरदीर्घिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश-गंगा।

सुरद्रुम-संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

सुरधाम-संज्ञा पुं० [सं० सुरधामन्] स्वर्ग।

सुरधुनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरधेनु-संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

सुरनदी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंगा। २. आकाश-गंगा।

सुरनारी-संज्ञा स्त्री० [सं०] देववधू।

सुरनाह-संज्ञा पुं० [सं० सुरनाथ] इंद्र।

सुरनिलय-संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

सु[illegible]-संज्ञा पुं० [सं० सुरपति] इंद्र।

सुरपति-संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २. विष्णु।

सुरपथ-संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

सुरपाल-संज्ञा पुं० [सं० सुर+पालक] इंद्र।

सुरपुर-संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरबहार-संज्ञा पुं० [हिं० सुर+फा० बहार] सितार की तरह का एक बाजा।

सुरबाला-संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।

सुरबृच्छ*-संज्ञा पुं० दे० "सुरवृक्ष"।

सुरबेल-संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+वल्ली] कल्प लता।

सुरभंग-संज्ञा पुं० [सं० स्वरभंग] प्रेम, भय आदि से होनेवाला स्वर का विपर्यास जो सात्विक भावों के अंतर्गत है।

सुरभवन-संज्ञा पुं० [सं०] १. मंदिर। २. सुरपुरी। अमरावती।

सुरभान-संज्ञा पुं० [सं० सुर+भानु] १. इंद्र। २. सूर्य।

सुरभि-संज्ञा पुं० [सं०] १. वसंत काल। २ चैत्र मास। ३. सोना। स्वर्ण।

संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. गौ। ३. गायों की अधिष्ठात्री देवी तथा गो जाति की आदि जननी। ४. सुरा। शराब। ५. तुलसी। ६. सुगंधि। खुशबू।

वि० १. सुगंधित। सुवासित। २. मनोरम। सुंदर। ३ उत्तम। श्रेष्ठ।

सुरभित-वि० [सं०] सुगंधित।

सुरभी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुगंधि। खुशबू। २. गाय। ३. चंदन।

सुरभीपुर-संज्ञा पुं० [सं०] गोलोक।

सुरभूप-संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. विष्णु।

सुरभोग-संज्ञा पुं० [सं०] अमृत।

सुरभौन*-संज्ञा पुं० दे० "सुरभवन"।

सुरमंडल-संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं का मंडल। २. एक प्रकार का बाजा।

सुरमई-वि० [फा०] सुरमे के रंग का। हलका नीला।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका नीला रंग। २. इस रंग में रँगा हुआ कपड़ा।

सुरमचू-संज्ञा पुं० [फा० सुरमः+चू (प्रत्य०)] सुरमा लगाने की सलाई।

सुरमणि-संज्ञा पुं० [सं०] चिंतामणि।

सुरमा-संज्ञा पुं० [फा० सुरमः] नीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण स्त्रियाँ आँखों में लगाती हैं।

सुरमादानी-संज्ञा स्त्री० [फा० सुरमः+दान (प्रत्य०)] वह शीशीनुमा पात्र जिसमें सुरमा रखते हैं।

सुरमै -वि० दे० "सुरमई"।

सुरमौर-संज्ञा पुं० [सं० सुर+हिं० मौर] विष्णु।

सुरम्य-वि० [सं०] अत्यंत मनोरम। सुंदर।

सुरराई*-संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।

सुरराज-संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. विष्णु।

सुरराय*-संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।

सुररिपु-संज्ञा पुं० [सं०] असुर। राक्षस।

सुररूख-संज्ञा पुं० दे० "सुरतरु"।

सुरली-संज्ञा स्त्री० [सं० सु+हिं० रली] सुंदर क्रीड़ा।

सुरलोक-संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरवधू-संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।

सुरवृक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] कल्पतरु।

सुरश्रेष्ठ-संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं में श्रेष्ठ। २. विष्णु। ३. शिव। ४. इंद्र।

सुरस-वि० [सं०] १. सरस। रसीला। २. स्वादिष्ट। मधुर। ३. सुंदर।

सुरसती*†-संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।

सुरसदन-संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरसर-संज्ञा पुं० [सं०] मानसरोवर।

संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरि"।

सुरसरसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरयू नदी।
सुरसरि, सुरसरी—संज्ञा स्त्री० [सं०सुरसरित] १ गंगा। २. गोदावरी।
सुरसरिता—संज्ञा स्त्री० दे० "गंगा"।
सुरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध नागमाता जिसने हनुमानजी को समुद्र पार करने के समय रोका था। २. एक अप्सरा। ३. तुलसी ४ ब्राह्मी। ५. दुर्गा। ६. एक वृत्त का नाम।
सुरसाईं—संज्ञा पुं० [सं० सुर+हिं० साईं] १ इंद्र। २. शिव।
सुरसारी॰—संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरी"।
सुरसालु॰—वि० [सं० सुर+हिं० सालना] देवताओं को सतानेवाला।
सुरसाहब—संज्ञा पुं० [सं० सुर+फा० साहब] देवताओं के स्वामी।
सुरसुंदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अप्सरा। २. दुर्गा। ३. देवकन्या। ४ एक योगिनी।
सुरसुरभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।
सुरसुराना—क्रि० अ० [अनु०] [भाव० सुरसुराहट, सुरसुरी] १. कीड़ों आदि का रेंगना। २ खुजली होना।
सुरसैयाँ॰—संज्ञा पुं० [सं० सुर+हिं० सैयाँ] इंद्र।
सुरस्वामी—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
सुरहरा—वि० [अनु०] जिसमें सुरसुर शब्द हो। सुरसुर शब्द से युक्त।
सुरही†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह] १ एक प्रकार की सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। २. इन कौड़ियों से होनेवाला जूआ।
सुरांगना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवपत्नी। देवांगना। २. अप्सरा।
सुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।
सुराई॰—संज्ञा स्त्री० [सं० शूर+आई (प्रत्य०)] शूरता। वीरता। बहादुरी।
सुराख—संज्ञा पुं० [फा० सूराख] छेद। संज्ञा पुं० दे० "सुराग़"।
सुराग—संज्ञा पुं० [सं० सु+राग] १. अत्यंत प्रेम। अत्यंत अनुराग। २. सुंदर राग। संज्ञा पुं० [अ० सुराग़] टोह। पता।
सुरागाय—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+गाय] एक प्रकार की दो-नस्ली गाय जिसकी पूँछ से चँवर बनता है।
सुराज—संज्ञा पुं० १. दे० "सुराज्य"। २. दे० "स्वराज्य"।
सुराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य या शासन जिसमें सुख और शांति विराजती हो। संज्ञा पुं० दे० "स्वराज्य"।
सुराधिप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।
सुरानीक—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की सेना।
सुरापगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।
सुरापान—संज्ञा पुं० [सं०] शराब पीना।
सुरापात्र—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरा रखने या पीने का पात्र।
सुरारि—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस। असुर।
सुरालय—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. सुमेरु। ३. देवमंदिर। ४. शराबखाना।
सुरावती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरावनि] कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता, अदिति।
सुराष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन देश। किसी के मत से यह सूरत और किसी के मत से काठियावाड़ है।
सुरासुर—संज्ञा पुं० [सं०] सुर और असुर। देवता और दानव।
सुरासुरगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २. कश्यप।
सुराही—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र। २ बाजू, जोशन आदि में घुंडी के ऊपर लगनेवाला सुराही के आकार का छोटा टुकड़ा।
सुराहीदार—वि० [अ० सुराही+फा० दार] सुराही की तरह का गोल और लंबोतरा।
सुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।
सुरीला—वि० [हिं० सुर+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुरीली] मीठे सुरवाला। सुस्वर सुकंठ।
सुरुख—वि० [सं० सु+फा० रुख] अनुकूल। सदय। प्रसन्न। वि० दे० "सुर्ख"।
सुरुखुरू—वि० [फा० सुर्ख़रू] जिसे किसी काम में यश मिला हो। यशस्वी।
सुरुचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा उत्तानपाद की एक पत्नी जो उत्तम की माता और ध्रुव की ' १ । २. उत्तम रुचि।

वि० जिसकी रुचि उत्तम हो।
सुरुज०‡-संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्य"।
सुरुजमुखी‡-संज्ञा पुं० दे० "सूर्यमुखी"।
सुरूप-वि० [सं०] [स्त्री० सुरूपा] सुंदर रूपवाला। खूबसूरत।
संज्ञा पुं० कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति। यथा कामदेव, दोनों अश्विनीकुमार, नकुल, पुरूरवा, नलकूबर और साव।
‡संज्ञा पुं० दे० "स्वरूप"।
सुरूपता-संज्ञा स्त्री [सं०] सुंदरता।
सुरूपा-वि० स्त्री० [सं०] सुंदरी।
सुरेंद्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. राजा।
सुरेंद्रचाप-संज्ञा पुं० [सं] इंद्रधनुष।
सुरेंद्रवज्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण वृत्त जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं। इंद्रवज्रा।
सुरेथ-संज्ञा पुं० [?] सूँस। शिंशुमार।
सुरेश-संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २ शिव। विष्णु। ४. कृष्ण। ५ लोकपाल।
सुरेश्वर-संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. ३. ब्रह्मा। ३ शिव। ४. रुद्र।
सुरेश्वरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. स्वर्गगंगा।
सुरैत-संज्ञा स्त्री० [सं० सुरति] उपपत्नी। रखनी। रखेली। सुरैतिन।
सुरैतिन-संज्ञा स्त्री० दे० "सुरैत"।
सुरोचि-वि० [सं० सुरुचि] सुंदर।
सुर्ख-वि० [फ़ा०] रक्त वर्ण का। लाल।
संज्ञा पुं० गहरा लाल रंग।
सुर्खरू-वि० [फ़ा०] [भाव० सुर्खरूई] १. तेजस्वी। कांतिवान्। २. प्रतिष्ठित। ३. सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो।
सुर्खी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. लाली। अरुणता। २. लेख आदि का शीर्षक। ३. रक्त। लहू। खून। ४. दे० "सुरखी"।
सुर्ता-वि० [हिं० सुरति=स्मृति] समझदार। होशियार। बुद्धिमान्।
सुलंक-संज्ञा पुं० दे० "सोलंक"।
सुलंकी-संज्ञा पुं० दे० "सोलंकी"।
सुलक्षण-वि० [सं०] १. अच्छे लक्षणोंवाला। २. भाग्यवान्। किस्मतवर।
संज्ञा पुं० १. शुभ लक्षण। शुभ चिह्न। २. १४ मात्राओं का एक छंद जिसमें सात मात्राओं के बाद एक गुरु, एक लघु और तब विराम होता है।
सुलक्षणा-वि० स्त्री० [सं०] अच्छे लक्षणों-वाली।
सुलक्षणी-वि० स्त्री० दे० "सुलक्षणा"।
सुलग-अव्य० [हिं० सु०+लगना] पास। निकट।
सुलगना-क्रि० अ० [सं० सु+हिं० लगना] १. (लकड़ी आदि का) जलना। दहकना। २ बहुत संताप होना।
सुलगाना-क्रि० स० [हिं० सुलगना का स० रूप] १. जलाना। प्रज्वलित करना। २. दुःखी करना।
सुलच्छन-वि० दे० "सुलक्षण"।
सुलच्छनी-वि० दे० "सुलक्षणा"।
सुलछ-वि० [सं० सुलक्ष] सुंदर।
सुलझन-संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव।
सुलझना-क्रि० अ० [हिं० उलझना] १. उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। २. जटिलताओं का दूर होना।
सुलझाना-क्रि० स० [हिं० सुलझना का स० रूप] उलझन या गुत्थी खोलना। जटिल-ताओं को दूर करना।
सुलझाव-संज्ञा पुं० दे० "सुलझन"।
सुलटा-वि० [हिं० उलटा] [स्त्री० सुलटी] सीधा। उलटा का विपरीत।
सुलतान-संज्ञा पुं० [फ़ा०] बादशाह।
सुलताना चंपा-संज्ञा पुं० [फ़ा० सुलतान+हिं० चंपा] एक प्रकार का पेड़। पुन्नाग।
सुलतानी-संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुलतान] १. बादशाही। बादशाहत। राज्य। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
वि० लाल रंग का।
सुलप‡-वि० दे० "स्वल्प"।
संज्ञा पुं० [सं० सु+आलाप] सुंदर आलाप।
सुलफ-वि० [सं० सु+हिं० लपना] १. लचीला। लचनेवाला। २. नाजुक। कोमल।
सुलफा-संज्ञा पुं० [फ़ा० सुल्फ] १. वह तमाकू जो चिलम में बिना तवा रखे भर कर पिया जाता है। २. चरस।

सुलफ़ेबाज़-वि० [हिं० सुलफा+फा० बाज़] गाँजा या चरस पीनेवाला।
सुलभ-वि० [सं०] [भाव० सुलभता, सुलभत्व] १. सहज में मिलनेवाला। २. सहज। सुगम। आसान। ३. साधारण। मामूली।
सुलह-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेल। मिलाप। २. वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई समाप्त होने पर हो।
सुलहनामा-संज्ञा पुं० [अ० सुलह+फा० नामः] वह काग़ज़ जिस पर परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्तें लिखी रहती हैं। संधिपत्र। २. वह काग़ज़ जिस पर लड़नेवाले व्यक्तियों या दलों की ओर से समझौते की शर्तें लिखी रहती हैं।
सुलागना०†-क्रि० अ० दे० "सुलगना"।
सुलाना-क्रि० स० [हिं० सोना का प्रेर०] १. सोने में प्रवृत्त करना। शयन कराना। २ लिटाना। डाल देना।
सुलेखक-संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा लेख या निबंध लिखनेवाला। लेखक।
सुलेमान-संज्ञा पुं० [फा०] १. यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगंबर माना जाता है। २. एक पहाड़ जो बलोचिस्तान और पंजाब के बीच में है।
सुलेमानी-संज्ञा पुं० [फा०] १. वह घोड़ा जिसकी आँखें सफ़ेद हों। २. एक प्रकार का दोरंगा पत्थर।
वि० सुलेमान का। सुलेमान संबंधी।
सुलोचन-वि० [सं०] [स्त्री० सुलोचना] सुंदर आँखोंवाला। सुनेत्र। सुनयन।
सुलोचना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा। २. राजा माधव की पत्नी। ३ मेघनाद की पत्नी।
सुलोचनी-वि० स्त्री० [सं० सुलोचना] सुंदर नेत्रोंवाली। जिसके नेत्र सुंदर हों।
सुल्तान-संज्ञा पुं० दे० "सुलतान"।
सुवन-संज्ञा पुं० दे० "सुवन"।
सुवक्ता-वि० [सं०सु+वक्तृ] उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाक्पटु। वाग्मी।
सुवचन-वि० [सं०] [स्त्री०सुवचनी] १. सुंदर बोलनेवाला। २. मितभाषी।
सुवटा-संज्ञा पुं० दे० "सुग्गा"।
सुवन-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. अग्नि। ३. चंद्रमा।
संज्ञा पुं० १. दे० "सुग्रन"। २. दे० "सुमन"।
सुवनारा-संज्ञा पुं० दे० "सुअन"।
सुवर्ण-संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २. धन। संपत्ति। ३. एक प्राचीन स्वर्ण-मुद्रा जो दस माशे की होती थी। ४. सोलह माशे का एक मान। ५. धतूरा। ६. एक वृत्त का नाम।
वि० १ सुंदर वर्ण या रंग का। उज्ज्वल। २. सोने के रंग का। पीला।
सुवर्णकरणी-संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्ण+करण] शरीर के वर्ण को सुंदर करनेवाली एक प्रकार की जड़ी।
सुवर्णरेखा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो बिहार के राँची ज़िले से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
सुवश०-वि० [सं० सु+वश] जो अपने वश या अधिकार में हो।
सुवाँग†-संज्ञा पुं० दे० "स्वाँग"।
सुवा-संज्ञा पुं० दे० "सुआ"।
सुवाना०†-क्रि० स० दे० "सुलाना"।
सुवार०†-संज्ञा पुं० [सं० सूपकार] रसोइया।
संज्ञा पुं० [सं० सु+वार] अच्छा दिन।
सुवाल०†-संज्ञा पुं० दे० "सवाल"।
सुवास-संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंध। अच्छी महक। खुशबू। २. सुंदर घर। ३. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, ल (।।।, ।ऽ।, ।) होता है।
सुवासिका-वि० स्त्री० [सं० सुवासिक] सुवास करनेवाली। सुगंध करनेवाली।
सुवासित-वि० [सं०] खुशबूदार।
सुवासिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युवावस्था में भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री। चिरंटी। २. सधवा स्त्री।
सुविचार-संज्ञा पुं० [स०] १. सूक्ष्म या उत्तम विचार। २. अच्छा फैसला। सुंदर न्याय।
सुविज्ञ-वि० [सं०] बहुत चतुर।
सुविधा-संज्ञा स्त्री० दे० "सुभीता"।
सुवृत्ता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम। २. १४ अक्षरों का एक वृत्त।

सुवेल-संज्ञा पुं० [सं०] त्रिकूट पर्वत जो रामायण के अनुसार लंका में था।
सुवेश-वि० [सं०] १. वस्त्रादि से सुसज्जित। सुंदर वेशयुक्त। २. सुंदर। रूपवान्।
सुवेष-वि० दे० "सुवेश"।
सुवेषित-वि० दे० "सुवेश"।
सुवेसउ-वि० [सं०सुवेश] सुंदर। मनोहर।
सुव्रत-वि० [सं०] दृढ़ता से व्रत पालन करनेवाला।
सुशिक्षित-वि० [सं०] उत्तम रूप से शिक्षित। अच्छी तरह शिक्षा पाया हुआ।
सुशील-वि० [सं०] [स्त्री० सुशीला] [भाव० सुशीलता] १. उत्तम शील या स्वभाववाला। २. सच्चरित्र। साधु। ३. विनीत। नम्र।
सुशृंग-संज्ञा पुं० [सं०] शृंगी ऋषि।
सुशोभन-वि० [सं०] १. अत्यंत शोभायुक्त। दिव्य। २ बहुत सुंदर।
सुशोभित-वि० [सं०] उत्तम रूप से शोभित। अत्यंत शोभायमान।
सुश्राव्य-वि०[सं०] जो सुनने में अच्छा लगे।
सुश्री-वि० [सं०] १ बहुत सुंदर। शोभायुक्त। २. बहुत धनी।
सुश्रुत-संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेदीय चिकित्साशास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य्य जिनका रचा हुआ "सुश्रुत संहिता" ग्रंथ बहुत मान्य है।
सुश्रूखा॰-संज्ञा स्त्री० दे० "शुश्रूषा"।
सुष॰-संज्ञा पुं० दे० "सुख"।
सुषमना॰-संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।
सुषमनि-संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।
सुषमा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परम शोभा। अत्यंत सुंदरता। २. दस अक्षरों का एक वृत्त।
सुषाना॰-क्रि० अ० दे० "सुखाना"।
सुषारा॰-वि० दे० "सुखारा"।
सुषिर-संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस। २. बेत। ३. अग्नि। आग। ४. संगीत में वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो।
वि० छिद्रयुक्त। छेदवाला। पोला।
सुषुप्त-वि० [सं०] गहरी नींद में सोया हुआ घोर निद्रित।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।
सुषुप्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोर निद्रा। गहरी नींद। २ अज्ञान। (वेदांत) ३. पातंजल दर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति जिसमें जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है, परंतु उसे उसका ज्ञान नहीं होता।
सुषुम्ना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित है। २ वैद्यक में चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक जो नाभि के मध्य में है।
सुषेण-संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २. परीक्षित के एक पुत्र का नाम। ३. एक वानर जो वरुण का पुत्र, बालि का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था।
सुषोपति॰-संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।
सुष्टु-वि० [सं० दुष्ट का अनु०] अच्छा। भला। दुष्ट का उलटा।
सुष्ठु-क्रि० वि० [सं०] अच्छी तरह।
वि० सुंदर। उत्तम।
सुष्ठुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौभाग्य। २. सुंदरता।
सुष्मना॰-संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।
सुसंग-संज्ञा पुं० दे० "सुसंगति"।
सुसंगति-संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० संगत] अच्छी संगत। अच्छी सोहबत। सत्संग।
सुसा-संज्ञा स्त्री० दे० "सुसा"।
सुसकना-क्रि० अ० दे० "सिसकना"।
सुसज्जित-वि० [सं०] भली भाँति सजाया हुआ। शोभायमान।
सुसताना-क्रि० अ० [फा० सुस्त + आना (प्रत्य०)] थकावट दूर करना। विश्राम करना।
सुसमय-संज्ञा पुं० [सं०] वे दिन जिनमें अकाल न हो। सुकाल। सुभिक्ष।
सुसमा-संज्ञा स्त्री० दे० "सुषमा"।
सुसमुझि॰-वि० दे० "समझदार"।
सुसर सुसरा-संज्ञापुं० दे० "ससुर"।
सुसराल-संज्ञा स्त्री० [सं० श्वसुरालय] ससुर का घर। ससुराल।
सुसरित-संज्ञा स्त्री० [सं० सु + सरित्] गंगा।
सुसरी-संज्ञा स्त्री० १. दे० "ससुरी"। २. दे० "सुरसुरी"।

सुसा०†–संज्ञा स्त्री० [स० स्वसृ] बहन। संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।
सुसाध्य–वि० [सं०] [संज्ञा सुसाधन] जो सहज में किया जा सके। सुखसाध्य।
सुसाना–क्रि० अ० [हिं० साँस] सिसकना।
सुसिद्धि–संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अलंकार। जहाँ परिश्रम एक मनुष्य करता है, पर उसका फल दूसरा भोगता है, वहाँ यह अलंकार माना जाता है।
सुसीतलाई०–संज्ञा स्त्री० दे० "सुशीतलता"।
सुसुकना–क्रि० अ० दे० "सिसकना"।
सुसुप्ति०–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।
सुसेन–संज्ञा पुं० दे० "सुषेण"।
सुस्त–वि० [फा०] १. दुर्बल। कमजोर। २. चिंता आदि के कारण निस्तेज। उदास। हतप्रभ। ३. जिसकी प्रबलता या गति आदि घट गई हो। ४. जिसमें तत्परता न हो। आलसी। ५. धीमी चालवाला।
सुस्तना–संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्तनों से युक्त स्त्री।
सुस्ताई–संज्ञा स्त्री० दे० "सुस्ती"।
सुस्ताना–क्रि० अ० दे० "सुसताना"।
सुस्ती–संज्ञा स्त्री० [फा० सुस्त] १. सुस्त होने का भाव। २. आलस्य। शिथिलता।
सुस्तैन–संज्ञा पुं० दे० "स्वस्त्ययन"।
सुस्थ–वि० [सं०] [भाव० सुस्थता, सुस्थत्व] १. भला चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त। २. प्रसन्न। सुखी। ३. भली भाँति स्थित।
सुस्थिर–वि० [सं०] [स्त्री० सुस्थिरा] अत्यंत स्थिर या दृढ़। अविचल।
सुस्वर–वि०[सं०] [स्त्री०सुस्वरा] [भाव०सुस्वरता] जिसका सुर मधुर हो। सुकंठ। सुरीला।
सुस्वादु–वि० [सं०] अत्यंत स्वाद-युक्त। बहुत स्वादिष्ट।
सुहंग०–वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता।
सुहंगम०–वि० [सं० सुगम] सहज।
सुहटा०–वि० [हिं० सुहावना] [स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुंदर।
सुहनी०–संज्ञा स्त्री० दे० "सोहनी"।
सुहराना†–क्रि० स० दे० "सहलाना"।
सुहव–संज्ञा पुं० दे० "सूहा" (राग)।
सुहवी०–संज्ञा स्त्री० दे० "सूहा"। (राग)
सुहाग–संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] १. स्त्री की सधवा रहने की अवस्था। अहिवात। सौभाग्य। २. वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। ३. मांगलिक गीत जो वर पक्ष की स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं।
सुहागा–संज्ञा पुं० [सं० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधकी सोतों से निकलता है।
सुहागिन–संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा स्त्री। सौभाग्यवती।
सुहागिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सुहागिल –संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सुहाता–वि०[हिं० सहना] सहने योग्य। सह्य।
सुहाना–क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभायमान होना। शोभा देना। २. अच्छा लगना। भला मालूम होना। वि० दे० "सुहावना"।
सुहाया०–वि० दे० "सुहावना"।
सुहारी–संज्ञा स्त्री० [सं० सु + आहार] सादी पूरी।
सुहाल–संज्ञा पुं० [सं० सु + आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव०–वि० दे० "सुहावना"। संज्ञा पुं० [सं० सु + हाव] सुंदर हाव।
सुहावता†–वि० दे० "सुहावना"।
सुहावन०–वि० दे० "सुहावना"।
सुहावना–वि० [हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावनी] देखने में भला। सुंदर। प्रियदर्शन। क्रि० अ० दे० "सुहाना"।
सुहावला०–वि० दे० "सुहावना"।
सुहास–वि० [सं०] [स्त्री० सुहासा] सुंदर या मधुर मुसकानवाला।
सुहासी–वि० [सं०सुहासिन्] [स्त्री० सुहासिनी] मधुर मुसकानवाला। चारुहासी।
सुहृत्–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सुहृत्ता] १. अच्छे हृदयवाला। २ मित्र। सखा। दोस्त।
सुहृद्–संज्ञा पुं० दे० "सुहृत्"।
सुहेल–संज्ञा पुं० [अ०] एक चमकीला तारा जिसका उदय शुभ माना जाता है।
सुहेलरा०–वि० दे० "सुहेला"।

सुहेला–वि० [सं० शुभ ?] १. सुहावना। सुंदर। २ सुखदायक। सुखद।
संज्ञा पु० १. मंगल गीत। २ स्तुति।

सूँ†–अव्य० [सं० सह] करण और अपादान का चिह्न। सो। से।

सूँघना–क्रि० स० [सं० स+घ्राण] १. नाक द्वारा गंध का अनुभव करना। बास लेना।
मुहा०—सिर सूँघना = बड़ों का मंगल-कामना के लिये छोटों का मस्तक सूँघना।
२. बहुत कम भोजन करना। (व्यंग्य) ३ (साँप का) काटना।

सूँघा–संज्ञा पु० [हिं०सूँघना] १. वह जो केवल सूँघकर बतलाता हो कि अमुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना है। २. भेदिया। जासूस।

सूँड–संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ड] हाथी की लंबी नाक जो प्रायः जमीन तक लटकती है। शुंड। शुंडादंड।

सूँडी–संज्ञा स्त्री० [सं० शुंडी] एक प्रकार का सफेद कीड़ा जो पौधों को हानि पहुँचाता है।

सूँस–संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जंतु। सूस। सूसमार।

सूँह†–अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।

सूअर–संज्ञा पु० [सं० शूकर] [स्त्री० सूअरी] १. एक प्रसिद्ध स्तन्यपायी जंतु जो मुख्यतः दो प्रकार का होता है—जंगली और पालतू। २. एक प्रकार की गाली।

सूआ†–संज्ञा पु० [सं० शुक] सुग्गा। तोता।
संज्ञा पु० [हिं० सूई] बड़ी सूई। सूजा।

सूई–संज्ञा स्त्री० [सं०सूची] १ एक छोटा पतला तार जिसके छेद में तागा पिरोकर कपड़ा सिया जाता है। सूची। २ वह तार या काँटा जिससे कोई बात सूचित होती हो। ३. अनाज, कपास आदि का अँखुआ।

सूक†–संज्ञा पुं० दे० "शुक"।
संज्ञा पु० दे० "शुक्र" (नक्षत्र)।

सूकना†–क्रि० अ० दे० "सूखना"।

सूकर–संज्ञा पु० [सं०] सूअर। शूकर।

सूकरक्षेत्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ जो मथुरा जिले में है। सोरों।

सूकरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] मादा सूअर।

सूका†–संज्ञा पु० [सं० सपादक] चार आने के मूल्य का सिक्का। चवन्नी।

सूक्त–संज्ञा पु० [सं०] १. वेदमंत्रों या ऋचाओं का समूह। २. उत्तम कथन।
वि० भली भाँति कहा हुआ।

सूक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम उक्ति या कथन। सुंदर पद या वाक्य आदि।

सूक्षम–वि० संज्ञा पु० दे० "सूक्ष्म"।

सूक्ष्म–वि० [सं०] [स्त्री० सूक्ष्मा] १. बहुत छोटा। २. बारीक या महीन।
संज्ञा पु० १. परमाणु। २. परब्रह्म। ३. लिंग शरीर। ४. एक काव्यालंकार जिसमें चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है।

सूक्ष्मता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्म होने का भाव। बारीकी। महीनपन। सूक्ष्मत्व।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र–संज्ञा पु० [सं०] एक यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते है। खुर्दबीन।

सूक्ष्मदर्शिता–संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्म या बारीक बात सोचने-समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी–वि० [सं० सूक्ष्मदर्शिन्] बारीक बात को सोचने समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि।

सूक्ष्मदृष्टि संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी समझ में आ जायँ।
संज्ञा पु० दे० "सूक्ष्मदर्शी"।

सूक्ष्म शरीर–संज्ञा पु० [सं०] पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्त्वों का समूह।

सूख†–वि० दे० "सूखा"।

सूखना–क्रि० अ० [सं० शुष्क] १ नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। २. जल का न रहना या कम हो जाना। ३ उदास होना। तेज नष्ट होना। ४. नष्ट होना। बरबाद होना। ५. डरना। सन्न होना। ६ दुबला होना।

सूखा–वि० [सं० शुष्क] [स्त्री० सूखी] १.जिसका पानी निकल, उड़ या जल गया हो। २. जिसकी आर्द्रता निकल गई हो। ३. उदास। तेज-रहित। ४ हृदयहीन। कठोर। ५. कोरा। ६ केवल। निरा।
मुहा०—सूखा जवाब देना = साफ इनकार करना।
संज्ञा पु० १. पानी न बरसना। अनावृष्टि। २. नदी का किनारा। जहाँ पानी न हो। ३. ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। ४. सूखा

हुआ तंबाकू का पत्ता। ५. एक प्रकार की खाँसी। हब्बा-डब्बा। ६. दे० "सुखंडी"।

सूघर‡-वि० दे० "सुघड़"।

सूचक-वि० [सं०] [स्त्री० सूचिका] सूचना देनेवाला। बतानेवाला। ज्ञापक। बोधक। संज्ञा पुं० १. सूई। सूची। २. सीनेवाला। दरजी। ३. नाटककार। सूत्रधार। ४.कुत्ता।

सूचना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय। विज्ञापन। विज्ञप्ति। २. वह पत्र आदि जिस पर किसी को सूचित करने के लिये कोई बात लिखी हो। विज्ञापन। इश्तहार। ३. बेधना। छेदना। ‡क्रि० अ० [सं० सूचन] बतलाना।

सूचनापत्र-संज्ञा पुं० [सं०] विज्ञापन। विज्ञप्ति। इश्तहार।

सूचा-संज्ञा स्त्री० दे० "सूचना"।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० सुचित] जो होश में हो। सावधान।

सूचिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूई। २. हाथी की सूँड़। हस्तिशुंड।

सूचिकाभरण-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की औषध जो सन्निपात आदि प्राणनाशक रोगों की अंतिम औषध मानी गई है।

सूचित-वि० [सं०] जिसकी सूचना दी गई हो। जताया हुआ। ज्ञापित। प्रकाशित।

सूची-संज्ञा पुं० [सं० सूचिन्] १. चर। भेदिया। २. चुगलखोर। ३. खल। दुष्ट। संज्ञा स्त्री० १.कपड़ा सीने की सूई। २. दृष्टि। नज़र। ३. सेना का एक प्रकार का व्यूह। ४. दे० "सूचीपत्र"। पिंगल के अनुसार एक रीति जिसके द्वारा मात्रिक छंदों के भेदों में आदि अंत लघु या आदि-अंत गुरु की संख्या जानी जाती है।

सूचीकर्म-संज्ञा पुं० [सं० सूचीकर्मन्] सिलाई या सूई का काम।

सूचीपत्र-संज्ञा पुं० [सं०] वह पुस्तिका आदि जिसमें एक ही प्रकार की बहुत सी चीज़ों अथवा उनके अंगों की नामावली हो। तालिका। फेहरिस्त। सूची।

सूच्छम‡-वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूच्यार्थ-संज्ञा पुं० [सं०] वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना शक्ति से जाना जाता हो।

सूछम‡†-वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूच्छिम‡†-वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूजन-संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १. सूजने की क्रिया या भाव। २. फुलाव। शोथ।

सूजना-क्रि० अ० [फा० सोज़िश] रोग, चोट आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना। शोथ होना।

सूजनी-संज्ञा स्त्री० दे० "सुजनी"।

सूजा-संज्ञा पुं० [सं० सूची] बड़ी मोटी सूई। सूआ।

सूज़ाक-संज्ञा पुं० [फा०] मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग। औपसर्गिक प्रमेह।

सूजी-संज्ञा स्त्री० [सं० शुचि] गेहूँ का दरदरा आटा जिससे पक्वान बनाते हैं।
संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] सूई।
संज्ञा पुं० [सं० सूची] दरज़ी। सूचिक।

सूझ-संज्ञा स्त्री० [हिं० सूझना] १. सूझने का भाव। २. दृष्टि। नज़र।
यौ०—सूझ-बूझ = समझ। अक़्ल।
३. अनूठी कल्पना। उद्भावना। उपज।

सूझना-क्रि० अ० [सं० संज्ञान] १. दिखाई देना। नज़र आना। २. ध्यान में आना। ख़याल में आना। ३. छुट्टी पाना।

सूटा†-संज्ञा पुं० [अनु०] मुँह से तंबाकू या गाँजे का धूँआँ ज़ोर से खींचना।

सूत-संज्ञा पुं० [सं० सूत्र] १. रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है। तंतु। सूता। २. तागा। धागा। डोरा। सूत्र। ३. नापने का एक मान। ४. संगतराशों और बढ़इयों की पत्थर या लकड़ी पर निशान डालने की डोरी।
मुहा०—सूत धरना = निशान लगाना।
संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूती] १. एक वर्ण-संकर जाति। २. रथ हाँकनेवाला। सारथि। ३. बंदी। भाट। चारण। ४. पुराण-वक्ता। पौराणिक। ५. बढ़ई। ६. सूत्रकार। सूत्रधार। ७. सूर्य्य।
वि० [सं०] प्रसूत। उत्पन्न।
संज्ञा पुं० [सं० सूत्र] थोड़े शब्दों में ऐसा पद या वचन जिसमें बहुत अर्थ हो।
वि० [सं० सूत्र = सूत] भला। अच्छा।
संज्ञा पुं० दे० "सुत"।

सूतक-संज्ञा पुं० [सं०] १. जन्म। २.

यह अशौच जो संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को होता है।

सूतक-गेह-संज्ञा पुं० दे० "सूतिकागार"।

सूतकी-वि० [सं० सूतकिन्] परिवार में किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण जिसे सूतक लगा हो।

सूतधार-संज्ञा पुं० [सं० सूत्रधार] बढ़ई।

सूतना-क्रि० अ० दे० "सोना"।

सूतपुत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. सारथि। २. कर्ण।

सूता-संज्ञा पुं० [सं० सूत्र] तंतु। सूत। संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसूता।

सूति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जन्म। २. प्रसव। जनन। ३. उत्पत्ति का स्थान। उद्गम।

सूतिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो। जच्चा।

सूतिकागार, सूतिकागृह-संज्ञा पुं० [सं०] सौरी। प्रसव-गृह।

सूती-वि० [हिं० सूत] सूत का बना हुआ। संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] सीपी।

सूतीघर-संज्ञा पुं० दे० "सूतिकागार"।

सूत्र-संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत। तागा। डोरा। २. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३. रेखा। लकीर। ४. करधनी। कटि-भूषण। ५. नियम। व्यवस्था। ६. थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करे। ७. पता। सुराग।

सूत्रकार-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने सूत्रों की रचना की हो। सूत्र-रचयिता। २. बढ़ई। ३. जुलाहा।

सूत्रग्रंथ-संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो। जैसे—सांख्यसूत्र।

सूत्रधर, सूत्रधार-संज्ञा पुं० [सं०] १. नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट। २. बढ़ई। काष्ठशिल्पी। ३. पुराणानुसार एक वर्णसंकर जाति।

सूत्रपात-संज्ञा पुं० [सं०] प्रारंभ। शुरू।

सूत्रपिटक-संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह।

सूत्रात्मा-संज्ञा पुं० [सं० सूत्रात्मन्] जीवात्मा।

सूथन-संज्ञा स्त्री० [देश०] पायजामा। सुथना।

सूथनी-संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पायजामा। सुथना। २. एक प्रकार का कंद।

सूद-संज्ञा पुं० [फा०] १. लाभ। फ़ायदा। २. ब्याज। वृद्धि।

मुहा०—सूद दर सूद = ब्याज पर ब्याज।

सूदन-वि० [सं०] विनाश करनेवाला। संज्ञा पुं० [सं०] १. वध करने की क्रिया। हनन। २. अंगीकरण। ३. फेंकने की क्रिया।

सूदना-क्रि० स० [सं० सूदन] नाश करना।

सूदी-वि० [फा० सूद] (पूँजी या रक़म) जो सूद या ब्याज पर हो। ब्याजू।

सूध०-वि० १. दे० "सीधा"। २. दे० "शुद्ध"।

सूधना०-क्रि० अ० [सं० शुद्ध] सिद्ध होना। सत्य होना। ठीक होना।

सूधरा†-वि० दे० "सूधा"।

सूधा-वि० दे० "सीधा"।

सूधे-क्रि० वि० [हिं० सूधा] सीधे से।

सून-संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसव। जनन। २. कली। कलिका। ३. फूल। पुष्प। ४. फल। ५. पुत्र।

०†संज्ञा पुं० वि० दे० "शून्य"।

सूना-वि० [सं० शून्य] [स्त्री० सूनी] जिसमें या जिस पर कोई न हो। निर्जन। सुनसान। संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान। संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुत्री। बेटी। २. कसाईखाना। ३. गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की आदि चीज़ जिनसे जीवहिंसा की संभावना रहती है। ४. हत्या। घात।

सूनापन-संज्ञा पुं० [हिं० सूना+पन (प्रत्य०)] १. सूना होने का भाव। २. सन्नाटा।

सूनु-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुत्र। संतान। २. छोटा भाई। ३. नाती। दौहित्र। ४. सूर्य।

सूप-संज्ञा पुं० [सं०] १. पकी हुई दाल या उसका रसा। २. रसे की तरकारी आदि व्यंजन। ३. रसोइया। पाचक। ४. बाण। संज्ञा पुं० [सं० सूर्प] अनाज फटकने का सरई या सींक का छाज।

सूपक-संज्ञा पुं० [सं० सूप] रसोइया।

सूपकार-संज्ञा पुं० [सं०] रसोइया। पाचक।

सूपच०†-संज्ञा पुं० दे० "श्वपच"।

सूपनखा-संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।

सूपशास्त्र-संज्ञा पुं० [सं०] पाकशास्त्र।

सूफ़-संज्ञा पुं० [अ०] १. पशम। ऊन। २.

सृही–वि० स्त्री० दे० "सूहा"।
सृंखला–संज्ञा स्त्री० दे० "शृंखला"।
सृंग–संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।
सृंगवेरपुर–संज्ञा पुं० दे० "शृंगवेरपुर"।
सृंगी–संज्ञा पुं० दे० "शृंगी"।
सृंजय–संज्ञा पुं० [सं०] १.मनु के एक पुत्र का नाम। २. एक वंश जिसमें धृष्टद्युम्न हुए थे।
सृक–संज्ञा पुं० [सं०] १. शूल। भाला। २. वाण। तीर। ३. वायु। हवा।
संज्ञा पुं० [सं० स्रज्, स्रक्] माला।
सृकाल–संज्ञा पुं० दे० "शृगाल"।
सृग–संज्ञा पुं० [सं० सृक] १. बरछा। भाला। २. वाण। तीर।
संज्ञा पुं० [सं० स्रज, स्रक] माला। गजरा।
सृग्विनी–संज्ञा स्त्री० दे० "स्रग्विणी"।
सृजक–संज्ञा पुं० [सं० सृज्] सृष्टि करने-करनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। सर्जक।
सृजन–संज्ञा पुं० [सं० सृज्, सर्जन] सृष्टि करने की क्रिया। उत्पादन। सृष्टि।
सृजनहार–संज्ञा पुं० [सं० सृज्, सर्जन+हिं० हार] सृष्टिकर्त्ता।
सृजना–क्रि० स० [सं० सृज्+हिं० ना (प्रत्य०)] सृष्टि करना। उत्पन्न करना। बनाना।
सृष्ट–वि० [सं०] १. उत्पन्न। पैदा। २. निर्मित। रचित। ३. मुक्त। ४. छोड़ा हुआ।
सृष्टि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। पैदाइश। २. निर्माण। रचना। बनावट। ३. संसार की उत्पत्ति। दुनिया की पैदाइश। ४. संसार। दुनिया। ५. प्रकृति। निसर्ग।
सृष्टिकर्त्ता–संज्ञा पुं० [सं० सृष्टिकर्तृ] १. संसार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा। २. ईश्वर।
सृष्टिविज्ञान–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार हो।
सेंक–संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंकना] सेंकने की क्रिया या भाव।
सेंकना–क्रि० स० [सं० श्रेपण] १. आँच के पास या आग पर रखकर भूनना। २. आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना।
मुहा०—आँख सेंकना = सुंदर रूप देखना। धूप सेंकना = धूप में रहकर शरीर में गरमी पहुँचना।
सेंगर–संज्ञा पुं० [सं० शृंगार] १. एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। २. एक प्रकार का अगहनी धान।
संज्ञा पुं० [सं० शृंगीवर] क्षत्रियों की एक जाति।
सेंत–संज्ञा स्त्री० [सं० संहति] १. पास का कुछ न लगना। कुछ खर्च न होना।
मुहा०—सेंत का = १. जिसमें कुछ दाम न लगा हो। मुफ्त का। २. बहुत। ढेर का ढेर। सेंत में = १. बिना कुछ दाम दिए। मुफ्त में। २. व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।
सेंतना–क्रि० स० दे० "सैंतना"।
सेंत मेंत–क्रि० वि० [हिं० सेंत+मेंत (अनु०)] १ बिना दाम दिए। मुफ्त में। २. व्यर्थ।
सेंति, सेंती–संज्ञा स्त्री० दे० "सेंत"।
प्रत्य० [प्रा० सुंतो] पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति।
सेंथी–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी। भाला।
सेंदुर–संज्ञा पुं० [सं० सिंदुर] ईंगुर की बुकनी। सिंदुर।
मुहा०—सेंदुर चढ़ना = स्त्री का विवाह होना। सेंदुर देना = विवाह के समय पति का पत्नी की माँग भरना।
सेंदुरिया–संज्ञा पुं० [सं० सिंदुर] एक सदा-बहार पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं।
वि० सिंदूर के रंग का। खूब लाल।
सेंदुरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर] लाल गाय।
सेंद्रिय–वि० [सं०] जिसमें इंद्रियाँ हों।
सेंध–संज्ञा स्त्री० [सं० संधि] चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ बड़ा छेद। संधि। सुरंग। सेन। नकब।
सेंधना–क्रि० स० [हिं० सेंध] सेंध या सुरंग लगाना।
सेंधा–संज्ञा पुं० [सं० सैंधव] एक प्रकार का खनिज नमक। सैंधव। लाहौरी नमक।
सेंधिया–वि० [हिं० सेंध] दीवार में सेंध लगा कर चोरी करनेवाला।
संज्ञा पुं० [मरा० शिंदे] ग्वालियर के प्रसिद्ध मराठा राजवंश की उपाधि।
सेंधुर–संज्ञा पुं० दे० "सेंदुर"।
सेंवई–संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] मैदे के सुखाए हुए सूत के से लच्छे जो दूध में पका कर खाए जाते हैं।
सेंवर–संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।
सेंहुड़–संज्ञा पुं० दे० "थूहर"।
से–प्रत्य० [प्रा० सुंतो] करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पंचमी की विभक्ति।

वि० [हिं० 'सा' का बहुवचन] समान। सदृश।
० सर्व० [हिं० 'सो' का बहुवचन] वे।

उ०†-संज्ञा पुं० दे० "सेव"।

(क-संज्ञा पुं० [सं०] १. जल-सिंचन। सिंचाई। २. जल-प्रक्षेप। छिड़काव।

(खर०-संज्ञा पुं० दे० "शेष" और "शेख़"।

(खर०-संज्ञा पुं० दे० "शेखर"।

(ग़ा-संज्ञा पुं० [अ०] १. विभाग। महकमा। २. विषय। क्षेत्र।

सेचक-वि० [सं०] सींचनेवाला।

सेचन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेचनीय, सेचित, सेच्य] १. जल सिंचन। सिंचाई। २. मार्जन। छिड़काव। ३. अभिषेक।

सेज-संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] शय्या। पलंग।

सेजपाल-संज्ञा पुं० [हिं० सेज+पाल] राजा की सेज पर पहरा देनेवाला। 'शयनागार-रक्षक।

सेजरिया०†-संज्ञा स्त्री० दे० "सेज"।

सेज्या -संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या"।

सेझद्राद्रि०-संज्ञा पुं० दे० "सह्याद्रि"।

सेझना-क्रि० अ० [सं० सेधन] दूर होना।

सेटना०†-क्रि० अ० [सं० श्रन] १. समझना। मानना। २. कुछ समझना। महत्व स्वीकार करना।

सेठ-संज्ञा पुं० [सं० श्रेष्ठी] [स्त्री० सेठानी] १. बड़ा साहूकार। महाजन। कोठीवाल। २. बड़ा या थोक व्यापारी। ३. मालदार आदमी। ४. सुनार।

सेत०-संज्ञा पुं० दे० "सेतु" और "श्वेत"।

सेतकुली-संज्ञा पुं० [सं० श्वेतकुलीय] सफेद जाति के नाग।

सेतद्युति०-संज्ञा पुं० [सं० श्वेतद्युति] चंद्रमा।

सेतवाह०-संज्ञा पुं० [सं० श्वेतवाहन] १. अर्जुन। २. चंद्रमा। (डिं०)

सेतिका-संज्ञा स्त्री० [सं० साकेत ?] अयोध्या।

सेतु-संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। बँधाव। २. बाँध। धुस्स। ३. मेंड़। डाँड़। ४. नदी आदि के आर-पार जाने का रास्ता जो लकड़ी आदि बिछाकर या पक्की जोड़ाई करके बना हो। पुल। ५. सीमा। हदबंदी। ६. मर्यादा। नियम या व्यवस्था। ७ प्रणव। ओंकार। ८. व्याख्या।

सेतुबंध-संज्ञा पुं० [सं०] १. पुल की बँधाई। २. वह पुल जो लंका पर चढ़ाई के समय रामचंद्रजी ने समुद्र पर बँधवाया था।

सेतुवा†-संज्ञा पुं० दे० "सूस"।

सेथिया-संज्ञा पुं० [तेलगू० चेट्टि] आँखों का इलाज करनेवाला।

सेद०-संज्ञा पुं० दे० "स्वेद"।

सेदज०-वि० दे० "स्वेदज"।

सेन-संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर। २. जीवन। ३. एक भक्त नाई।
संज्ञा पुं० [सं० श्येन] बाज़ पक्षी।
० संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।

सेनजित्-वि० [सं०] सेना को जीतनेवाला।
संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सेनप, सेनपति०-संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।

सेन वंश-संज्ञा पुं० [सं०] बंगाल का एक हिंदू राजवंश जिसने ११वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक राज्य किया था।

सेना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र शस्त्र से सजे हुए मनुष्यों का बड़ा समूह। फौज। पलटन। २. भाला। बरछी। ३. इंद्र का वज्र। ४. इंद्राणी।
क्रि० स० [सं० सेवन] १. सेवा करना। खिदमत करना। टहल करना।
मुहा०—चरण सेना = तुच्छ चाकरी बजाना।
२. आराधना करना। पूजना। ३. नियम-पूर्वक व्यवहार करना। ४. पड़ा रहना। निरंतर वास करना। ५. लिए बैठे रहना। दूर न करना। ६. मादा चिड़िया का गरमी पहुँचाने के लिये अपने अंडों पर बैठना।

सेनाजीवी-संज्ञा पुं० [सं० सेनाजीविन्] सैनिक। सिपाही। योद्धा।

सेनादार-संज्ञा पुं० दे० "सेनानायक"।

सेनाध्यक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

सेनानायक-संज्ञा पुं० [सं०] सेना का अफ़सर। फौजदार।

सेनानी-संज्ञा पुं० [सं०] १. सेनापति। २. कार्त्तिकेय। ३. एक रुद्र का नाम।

सेनापति-संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना का नायक। फौज का अफ़सर। २. कार्तिकेय। ३. शिव।

सेनापत्य-संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का कार्य, पद या अधिकार।

सेनापाल-संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।

सेनामुख-संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना का अग्रभाग। २. सेना का एक खंड जिसमें

३ या ६ हाथी, ३ या ६ रथ, ६ या २७ घोड़े और १५ या ४५ पैदल होते थे।
सेनावास–संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी। २. खेमा।
सेनाव्यूह–संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अंगों की स्थापना या नियुक्ति। सैन्य विन्यास।
सेनि॰–संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।
सेनिका–संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] मादा बाज पक्षी। २. एक छंद। दे० "श्येनिका"
सेनी–संज्ञा स्त्री० [फा० सीनी] तश्तरी।
॰संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनी] मादा बाज पक्षी।
॰संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] १. पंक्ति। कतार। २. सीढ़ी। जीना।
संज्ञा पुं० विराट के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का रखा हुआ नाम।
सेव–संज्ञा पुं० [फा०] नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड़ जिसका फल मेवों में गिना जाता है।
सेम–संज्ञा स्त्री० [सं० शिंबा] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।
सेमई॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "सेंवई"।
सेमल–संज्ञा पुं० [सं० शाल्मली] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसमें बड़े लाल फूल लगते हैं, और जिसके फलों में केवल रूई होती है।
सेर–संज्ञा पुं० [सं० सेटक] सोलह छटाँक या अस्सी तोले की एक तौल।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान।
संज्ञा पुं० दे० "शेर"।
वि० [फा०] तृप्त।
सेरसाहि–संज्ञा पुं० [फा० शेरशाह] दिल्ली का बादशाह शेर शाह।
सेरा–संज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती हैं।
संज्ञा पुं० [फा० सेराब] सींची हुई जमीन।
सेराना॰†–क्रि० अ० [सं० शीतल] १ ठंढा होना। शीतल होना। २. तृप्त होना। तुष्ट होना। ३. जीवित न रहना। ४. समाप्त होना। ५. चुकना। तै होना।
क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना। २. मूर्त्ति आदि जल में प्रवाह करना।
सेराब–वि० [फा०] १. पानी से भरा हुआ। २. सिंचा हुआ। तरावोर।
सेल–संज्ञा पुं० [सं० शल] बरछा। भाला।
संज्ञा स्त्री० [देश०] बद्धी। माला।
सेलखड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।
सेलना–क्रि० अ० [सं० शैल] मर जाना।
सेला–संज्ञा पुं० [सं० शल्लक] रेशमी चादर।
सेलिया–संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।
सेली–संज्ञा स्त्री० [हिं० सेल] छोटा भाला।
संज्ञा स्त्री० [हिं० सेला] १. छोटा दुपट्टा। २. गाँती। ३. वह बद्धी या माला जिसे योगी यती लोग गले में डालते या सिर में लपेटते हैं। ४. स्त्रियों का एक गहना।
सेल्ला–संज्ञा पुं० [सं० शल] भाला। सेल।
सेल्ह–संज्ञा पुं० दे० "सेल"।
सेल्हा†–संज्ञा पुं० दे० "सेला"।
सेवई–संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] गुँधे हुए मैदे के सूत के से लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।
सेवर॰†–संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।
सेव–संज्ञा पुं० [सं० सेविका] सूत या डोरी के रूप में बेसन का एक पकवान।
॰ संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा"।
संज्ञा पुं० दे० "सेब"।
सेवक–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सेविका, सेवकी, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी] १. सेवा करनेवाला। नौकर। चाकर। २. भक्त। आराधक। उपासक। ३. काम में लानेवाला। इस्तेमाल करनेवाला। ४. छोड़कर कहीं न जानेवाला। वास करनेवाला। ५. सीनेवाला। दरजी।
सेवकाई–संज्ञा स्त्री० [सं० सेवक + आई(प्रत्य०)] सेवा। टहल। ख़िदमत।
सेवड़ा–संज्ञा पुं० [?] जैन साधुओं का एक भेद।
संज्ञा पुं० [हिं० सेव] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान।
सेवति॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
सेवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद गुलाब।
सेवन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवितव्य] १. परिचर्या। ख़िदमत। २. उपासना। आराधना। ३ प्रयोग। उपयोग। नियमित व्यवहार। इस्तेमाल। ४. छोड़कर न जाना। वास करना। ५. उपभोग। ६. सीना। ७. गूँथना।

सेवनाःं†–क्रि० स० दे० "सेना"।
सेवनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सेवकिनी] दासी।
सेवनीय–वि० [सं०] १. सेवा योग्य। २. पूजा के योग्य। ३. व्यवहार के योग्य। ४. सीने के योग्य।
सेवर–संज्ञा पुं० दे० "शबर"।
सेवराः†–संज्ञा पुं० दे० "सेवड़ा"।
सेवरीः†–संज्ञा स्त्री० दे० "शवरी"।
सेवल–संज्ञा पुं० [देश०] व्याह की एक रस्म।
सेवा–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। ख़िदमत। टहल। परिचर्या। २. नौकरी। चाकरी। ३. आराधना। उपासना। पूजा।
मुहा०—सेवा में = समीप। सामने।
४. आश्रय। शरण। ५. रक्षा। हिफ़ाज़त। ६. संभोग। मैथुन।
सेवा-टहल–संज्ञा स्त्री० [सं० सेवा + हिं० टहल] परिचर्या। खिदमत। सेवा-शुश्रूषा।
सेवाती–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
सेवाधारी–संज्ञा पुं० दे० "पुजारी"।
सेवापन–संज्ञा पुं० [सं० सेवा + हिं० पन] दासत्व। सेवावृत्ति। नौकरी।
सेवा-बंदगी–संज्ञा स्त्री० [सेवा + फ़ा० बंदगी] आराधना। पूजा।
सेवार, सेवाल–संज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] पानी में फैलनेवाली एक घास।
सेवावृत्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] नौकरी। दासत्व। चाकरी की जीविका।
सेवि–संज्ञा पुं० [सं०] 'सेवी' का वह रूप जो समास में होता है।
ः वि० दे० "सेव्य", "सेवित"।
सेविका–संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली। दासी। नौकरानी।
सेवित–वि० [सं०] १. जिसकी सेवा की गई हो। २. जिसकी पूजा की गई हो। पूजित। ३. जिसका प्रयोग किया गया हो। व्यवहृत। ४. उपभोग किया हुआ।
सेवी–वि० [सं० सेविन्] १. सेवा करनेवाला। २. पूजा करनेवाला। ३. संभोग करनेवाला।
सेव्य–वि० [सं०] [स्त्री० सेव्या] १. जिसकी सेवा करना उचित हो। २. जिसकी सेवा करनी हो या जिसकी सेवा की जाय। ३. पूजा या आराधना के योग्य। ४. काम में लाने लायक। ५. रक्षा के योग्य। ६. संभोग के योग्य।
संज्ञा पुं० १. स्वामी। मालिक। २. अश्वत्थ। पीपल का पेड़। ३. जल। पानी।
सेव्य-सेवक–संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी और सेवक।
यौ०—सेव्य-सेवक भाव = उपास्य को स्वामी या मालिक के रूप में समझना। (भक्ति मार्ग में उपासना का एक भाव)
सेश्वर–वि० [सं०] १. ईश्वर युक्त। २. जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।
सेषः–संज्ञा पुं० दे० "शेष", "शेख"।
सेसः–संज्ञा पुं० वि० दे० "शेष"।
सेसनागः†–संज्ञा पुं० दे० "शेषनाग"।
सेस रंगः–संज्ञा पुं० [सं० शेष + रंग] सफ़ेद रंग।
सेसर–संज्ञा पुं० [फ़ा० सेह = तीन + सर = बाज़ी] १. ताश एक खेल। २. जाल-साज़ी। ३. जाल।
सेसरिया–वि० [हिं० सेसर + इया (प्रत्य०)] छल-कपट कर दूसरों का माल मारनेवाला। जालिया।
सेहत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सुख। चैन। २. रोग से छुटकारा। रोगमुक्ति।
सेहतखाना–संज्ञा पुं० [अ० सेहत + फ़ा० खाना] पाखाने-पेशाब आदि की कोठरी।
सेहरा–संज्ञा पुं० [हिं० सिर + हार] १. फूल की या तार और गोटों की बनी मालाओं की पंक्ति जो दूल्हे के मौर के नीचे रहती है। २. विवाह का मुकुट। मौर।
मुहा०—किसी के सिर सेहरा बँधना = किसी का कृतकार्य्य होना।
३. वे मांगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर वर के यहाँ गाए जाते हैं।
सेही–संज्ञा स्त्री० [सं० सेधा] साही। (जंतु)
सेहुँड़ः†–संज्ञा पुं० [सं० सेहुंड] थूहर
सेहुआँ–संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का चर्म-रोग।
सैंतना–क्रि० स० [सं० संचय] १. संचित करना। बटोरना। इकट्ठा करना। २. हाथों से समेटना। बटोरना। ३. सहेजना। सँभालकर रखना।
सैंधव–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेंधा नमक। २. सिंध देश का घोड़ा। ३. सिंध देश का निवासी।
वि० १. सिंध देश का। २. समुद्र-संबंधी।

सैंधवपति–संज्ञा पुं० [सं० सैंधव + पति = राजा] सिंध-वासियों के राजा जयद्रथ।
सैंधवी–संज्ञा स्त्री० [सं०] संपूर्ण जाति की एक रागिनी।
सैंधू–संज्ञा स्त्री० दे० "सैंधवी"।
सैंभर†–संज्ञा पुं० दे० "सांभर"।
सैंह०†–क्रि० वि० दे० "सौंह"।
सैं†–वि०,संज्ञा पुं० [सं० शत] सौ।
संज्ञा स्त्री० [सं० सत्व] १ तत्त्व। सार। २ वीर्य। शक्ति। ३. बढ़ती। बरकत।
सैकड़ा–संज्ञा पुं० [सं० शतकांड] सौ का समूह। शत-समष्टि।
सैकड़े–क्रि० वि० [हिं० सैकड़ा] प्रति सौ के हिसाब से। प्रति शत। फ़ी सदी।
सैकड़ों–वि० [हिं० सैकड़ा] १. कई सौ। २. बहु-संख्यक। गिनती में बहुत।
सैकत–वि० [सं०] [स्त्री० सैकती] १. रेतीला। बलुआ। २ बालू का बना।
सैकल–संज्ञा पुं० [अ०] हथियारों को साफ़ करने और उन पर सान चढ़ाने का काम।
सैकलगर–संज्ञा पुं० [अ० सैकल + फा० गर] तलवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला।
सैथी–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी।
सैद०†–संज्ञा पुं० दे० "सैयद"।
सैद्धांतिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सिद्धांत को जाननेवाला। विद्वान्। २. तांत्रिक।
वि० सिद्धांत-संबंधी। तत्त्व संबंधी।
सैन–संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञपन] १. संकेत। इंगित। इशारा। २. चिह्न। निशान।
०†संज्ञा पुं० १. दे० "शयन"। २. दे० "श्येन"।
०†संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।
०†संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बगला।
सैनपति०–संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।
सैनभोग–संज्ञा पुं० [सं० शयन + भोग] रात्रि का नैवेद्य जो मंदिरों में चढ़ता है।
सैना०†–संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।
सैनापत्य–संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का पद या कार्य। सेनापतित्व।
वि० सेनापति संबंधी।
सैनिक–संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना या फ़ौज का आदमी। सिपाही। २. संतरी।
वि० सेना संबंधी। सेना का।
सैनिकता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेना या सैनिक का कार्य। २. युद्ध। लड़ाई।
सैनिका–संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] एक छंद
सैनी–संज्ञा पुं० [सेना भगत] हज्जाम।
०†संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"
सैनू–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा। नैनू।
सैनेय०–वि० [सं० सेना] लड़ने के योग्य।
सैनेश–संज्ञा पुं० [सं० सैन्येश] सेनापति।
सैन्य–संज्ञा पुं०[सं०] १. सैनिक। सिपाही। २. सेना। फौज। ३ शिविर। छावनी।
वि० सेना संबंधी। फौज का।
सैफ़–संज्ञा स्त्री० [अ०] तलवार।
सैफ़ी–वि० [अ० सैफ़ = तलवार] तिरछा।
सैमंतिक–संज्ञा पुं० [सं०] सिंदूर। सेंदुर।
सैयद–संज्ञा पुं० [अ०] १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।
सैयाँ०†–संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] पति।
सैया०–संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या"।
सैरंध्र–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सैरंध्री] १. घर का नौकर। २. एक संकर जाति।
सैरंध्री–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सैरंध्र नामक संकर जाति की स्त्री। २. अंतःपुर या जनाने में रहनेवाली दासी। ३ द्रौपदी।
सैर–संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मन बहलाने के लिये घूमना फिरना। २. बहार। मौज। आनंद। ३ मित्र मंडली का कहीं बगीचे आदि में खान पान और नाच रंग। ४. मनोरंजक दृश्य। कौतुक। तमाशा।
सैल†–संज्ञा स्त्री० दे० "सैर"।
संज्ञा पुं० दे० "शैल"।
संज्ञा स्त्री० [फा० सैलाब] १. बाढ़। जल-प्लावन। २. स्रोत। बहाव।
सैलजा०–संज्ञा स्त्री० दे० "शैलजा"।
सैलसुता०–संज्ञा स्त्री० दे० "शैलसुता"।
सैलात्मजा०–संज्ञा स्त्री० [सं० शैलात्मजा] पार्वती।
सैलानी–वि० [फा० सैर] १. सैर करनेवाला। मनमाना घूमनेवाला। २. आनंदी। मनमौजी।
सैलाब–संज्ञा पुं० [फा०] बाढ़। जलप्लावन।
सैलाबी–वि० [फा०] [जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो। बाढ़वाला।

संज्ञा स्त्री० तरी। सील। सीड़।
सैलूख०–संज्ञा पुं० दे० "शैलूष"।
सैव०†–संज्ञा पुं० दे० "शैव"।
सैवल०–संज्ञा पुं० दे० "शैवाल"।
सैवलिनी०–संज्ञा स्त्री० दे० "शैवलिनी"।
सैव्य०–संज्ञा पुं० दे० "शैव्य"।
सैसव०–संज्ञा पुं० दे० "शैशव"।
सैहथी–संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी।
सों०†–प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। से।
वि० दे० "सा"।
अव्य० दे० "सौंह"।
क्रि० वि० संग। साथ।
सर्व० दे० "सो"।
संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह"।
सोंच–संज्ञा पुं० दे० "सोच"।
सोंचर नमक–संज्ञा पुं० दे० "काला नमक"।
सोंटा–संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड या हिं० सटना] १. मोटी छड़ी। डंडा। लाठी। २. भंग घोटने का मोटा डंडा।
सोंटा-बरदार–संज्ञा पुं० [हिं० सोंटा+फा० बरदार] आसाबरदार। बल्लमदार।
सोंठ–संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठी] सुखाया हुआ अदरक। शुंठि।
सोंठौरा†–संज्ञा पुं० [हिं० सोंठ+औरा (प्रत्य०)] एक प्रकार का लड्डू जिसमें मेवों के सिवा सोंठ भी पड़ती है। (प्रसूती स्त्री के लिये)
सोंध०–अव्य० दे० "सौंह"।
सोंधा–वि० [सं० सुगंध] [स्त्री० सोंधी] १. सुगंधित। खुशबूदार। महकनेवाला। २. मिट्टी के नए बरतन में पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगंध के समान।
संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं। २. एक सुगंधित मसाला जो नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिये मिलाते हैं।
संज्ञा पुं० सुगंध।
सोंधु०–वि० दे० "सोंधा"।
सोंपना–क्रि० स० दे० "सौंपना"।
सोंवनिया–संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] एक आभूषण जो नाक में पहना जाता है।
सोंह०†–संज्ञा स्त्री० अव्य० दे० "सौंह"।
सोंहीं०–अव्य० दे० "सौंह"।

सो–सर्व० [सं० स] वह।
० वि० दे० "सा"।
अव्य० अतः। इसलिये। निदान।
सोऽहम् [सं० सः+अहम्] वही मैं हूँ–अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ। (वेदांत का सिद्धांत है कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं। इसी सिद्धांत का प्रतिपादन करने के लिये वेदांती लोग कहा करते हैं—सोऽहम्; अर्थात् मैं वही ब्रह्म हूँ। उपनिषदों में यह बात "अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्त्वमसि" रूप में कही गई है।)
सोऽहमस्मि दे० "सोऽहम्"।
सोअना०–क्रि० अ० दे० "सोना"।
सोआ–संज्ञा पुं० [सं० मिश्रेया] एक प्रकार का साग।
सोई–सर्व० दे० "वही"।
अव्य० दे० "सो"।
सोकन–संज्ञा पुं० दे० "सोखन"।
सोकना०–क्रि० स० [सं० शोक] शोक करना। रंज करना।
सोकित–*वि० [सं० शोक] शोकयुक्त।
सोखन–संज्ञा पुं० दे० "सोखन"।
सोखक*–वि० [सं० शोषक] १. शोषण करनेवाला। २. नाश करनेवाला।
सोखता–वि० संज्ञा पुं० दे० "सोख्ता"।
सोखन–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जंगली धान।
सोखना–क्रि० स० [सं० शोषण] शोषण करना। चूस लेना। सुखा डालना।
सोख्ता–संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का खुरदुरा कागज़ जो स्याही सोख लेता है।
वि० जला हुआ।
सोग०–संज्ञा पुं० [सं० शोक] दुःख। रंज।
सोगिनी०–वि० स्त्री० [हिं० सोग] शोक करनेवाली। शोकार्त्ता। शोकाकुला।
सोगी–वि० [सं० शोक] [स्त्री० सोगिनी] शोक मनानेवाला। शोकाकुल। दुखित।
सोच–संज्ञा पुं० [सं० शोच] १. सोचने की क्रिया या भाव। २. चिंता। फिक्र। ३. शोक। दुःख। रंज। ४. पछतावा।
सोचना–क्रि० अ० [सं० शोचन] १. मन में किसी बात पर विचार करना। गौर करना। २. चिंता करना। फिक्र करना। ३. खेद करना। दुःख करना।
सोच-विचार–संज्ञा पुं० [हिं० सोच+सं० विचार] समझ-बूझ। गौर।

सोचाना–क्रि० स० दे० "सुचाना"।
सोचु–संज्ञा पु० दे० "सोच"।
सोज–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १. सूजन। शोथ। २. दे० "सौंज"।
सोज़न–संज्ञा पु० [फा०] सूई।
सोज़िश–संज्ञा स्त्री० [फा०] सूजन। शोथ।
सोझ, सोझा–वि० [सं० सम्मुख] [स्त्री० सोझी] १. सीधा। सरल। २. सामने की ओर गया हुआ। सीधा।
सोटा–संज्ञा पु० दे० "सुअटा"।
सोढर–वि० [देश०] भोंदू। बेवकूफ़।
सोत–संज्ञा पु० दे० "स्रोत" या "सोता"।
सोता–संज्ञा पु० [सं० स्रोत] १. जल की बराबर बहनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। २ नदी की शाखा। नहर।
सोति–संज्ञा स्त्री० [हिं०सोता] स्रोत। धारा।
संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
संज्ञा पु० दे० "श्रोत्रिय"।
सोदर–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० सोदरा, सोदरी] सहोदर भ्राता। सगा भाई।
वि० एक गर्भ से उत्पन्न।
सोध–संज्ञा पु० [सं० शोध] १. खोज। खबर। पता। टोह। २. संशोधन। सुधारना। ३. चुकता होना। अदा होना।
संज्ञा पु० [सं० सौध] महल। प्रासाद।
सोधन–संज्ञा पु० [सं०शोधन] ढूँढ़। खोज।
सोधना–क्रि० स० [सं० शोधन] १ शुद्ध करना। साफ़ करना। २. गलती या दोष दूर करना। ३. निश्चित करना। निर्णय करना। ४. खोजना। ढूँढ़ना। ५. धातुओं का औषध रूप में व्यवहार करने के लिये संस्कार। ६. ठीक करना। दुरुस्त करना। ७. ऋण चुकाना। अदा करना।
सोधाना–क्रि० स० [हिं० सोधना] सोधने का काम दूसरे से कराना।
सोन–संज्ञा पु० [सं० शोण] एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिला है।
संज्ञा पुं० दे० "सोना"।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जलपक्षी।
वि० [सं० शोण] लाल। अरुण।
सोनकीकर–संज्ञा पुं० [हिं० सोना+कीकर] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।
सोनकेला–संज्ञा पुं० [हिं० सोना+केला] चंपा केला। सुवर्ण-कदली। पीला केला।
सोनचिरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना+चिड़िया] नटी।
सोनज़र्द–संज्ञा स्त्री० दे० "सोनजूही"।
सोनजूही–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना+जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल पीले होते हैं। पीली जूही। स्वर्ण यूथिका।
सोनभद्र–संज्ञा पु० दे० "सोन"।
सोनचाना–वि० दे० "सुनहला"।
सोनहला–वि० दे० "सुनहला"।
सोनहा–संज्ञा पु० [सं० शुन=कुत्ता] कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जानवर।
सोनहार–संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी।
सोना–संज्ञा पु० [सं० स्वर्ण] १. सुंदर उज्ज्वल पीले रंग की एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके सिक्के और गहने बनते हैं। स्वर्ण। कनक। कांचन। हेम।
मुहा०–सोने का घर मिट्टी होना=सब कुछ नष्ट होना। सोने में घुन लगना=असंभव या अनहोनी बात होना। सोने में सुगंध=किसी बहुत बढ़िया चीज़ में और अधिक विशेषता होना।
२. बहुत सुंदर वस्तु। ३. राजहंस।
संज्ञा पुं० मझोले कद का एक वृक्ष।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली।
क्रि० अ० [सं० शयन] १. नींद लेना। शयन करना। आँख लगना।
मुहा०—सोते जागते=हर समय।
२. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना।
सोनागेरू–संज्ञा पु० [हिं० सोना+गेरू] गेरू का एक भेद।
सोनापाठा–संज्ञा पुं० [सं० शोण+हिं० पाठा] १. एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष। इसकी छाल, फल और बीज औषध के काम में आते हैं। २. इसी वृक्ष का एक और भेद।
सोनामक्खी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्णमाक्षिक] एक खनिज पदार्थ जिसकी गणना उप-धातुओं में है।
सोनार–संज्ञा पु० दे० "सुनार"।
सोनित–संज्ञा पु० दे० "शोणित"।
सोनी–संज्ञा पुं० [हिं० सोना] सुनार।
सोपत–संज्ञा पुं० [सं० सूपपत्ति] सुबीता। सुपास। आराम का प्रबंध।
सोपान–संज्ञा पुं० [सं०] सीढ़ी। जीना।
सोपानित–वि० [सं०] सोपान से युक्त।

सोपि-वि० [स० स+अपि] १ वही। २. वह भी।

सोफता-सज्ञा पु० [हिं० सुभीता] १ एकांत स्थान। निराली जगह। २. रोग आदि में कुछ कमी होना।

सोफियाना-वि० [अ० सूफी + इयाना (फा० प्रत्य०)] १. सूफियों का। सूफी संबधी। २. जो देखने में सादा, पर बहुत भला लगे।

सोफी-सज्ञा पुं० दे० "सूफी"।

सोभा-सज्ञा स्त्री० दे० "शोभा"।

सोभना-क्रि० अ० [सं० शोभन] सोहना। शोभित होना।

सोभाकारी- वि० [स० शोभाकर] सुंदर।

सोभित-वि० दे० "शोभित"।

सोम-सज्ञा पु० [स०] १ प्राचीन काल की एक लता जिसका रस मादक होता था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। २. एक प्रकार की लता जो वैदिक काल के सोम से भिन्न है। ३. वैदिक काल के एक प्राचीन देवता। ४ चंद्रमा। ५. सोमवार। ६. कुबेर। ७. यम। ८. वायु। ९. अमृत। १०. जल। ११ सोमयज्ञ। १२. स्वर्ग। आकाश।

सोमकर-सज्ञा पुं० [स० सोम + कर] चंद्रमा की किरण।

सोमजाजी-सज्ञा पु० दे० "सोमयाजी"।

सोमन-सज्ञा पु० [स० सौमन] एक प्रकार का अस्त्र।

सोमनस-सज्ञा पु० दे० "सौमनस्य"।

सोमनाथ-सज्ञा पु० [स०] १ प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २ काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग है।

सोमपान-सज्ञा पु० [स०] सोम पीना।

सोमपायी-वि० [स० सोमपायिन्] [स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला।

सोमप्रदोष-सज्ञा पु० [स०] सोमवार को किया जानेवाला एक व्रत।

सोमयाग-सज्ञा पु० [स०] एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोम रस पान किया जाता था।

सोमयाजी-सज्ञा पुं० [स० सोमयाजिन्] वह जो सोमयाग करता हो।

सोमरस-सज्ञा पु० [सं०] सोमलता का रस।

सोमराज-सज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सोमराजी-सज्ञा पुं० [स० सोमराजिन्] १. बकुची। २. दो यगण का एक वृत्त।

सोमवंश-सज्ञा पु० [सं०] चंद्रवंश।

सोमवंशीय-वि० [स०] १. चंद्रवंश में उत्पन्न। २ चंद्रवंश संबधी।

सोमवती अमावस्या-सज्ञा स्त्री० [स०] सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्य तिथि मानी जाती है।

सोमवल्लरी-संज्ञा स्त्री० [स०] १. ब्राह्मी। २. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं। चामर। तूण।

सोमवल्ली-सज्ञा स्त्री० दे० "सोम" १।

सोमवार-सज्ञा पु० [स०] एक वार जो सोम अर्थात् चंद्रमा का माना जाता और रविवार के बाद पड़ता है। चंद्रवार।

सोमवारी-सज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती अमावस्या"।
वि० सोमवार संबधी।

सोमसुत-सज्ञा पु० [स०] बुध।

सोमावती-सज्ञा स्त्री०[स०] चंद्रमा की माता।

सोमास्त्र-सज्ञा पु० [स०] एक अस्त्र जो चंद्रमा का अस्त्र माना जाता है।

सोमेश्वर-सज्ञा पु० [स०] १. दे० "सोमनाथ" १.। २. संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम।

सोय -सर्व० [हिं० सो + ही, ई] वही। सर्व० दे० "सो"।

सोया-सज्ञा पुं० दे० "सोआ"।

सोर-सज्ञा पु० [फा० शोर] १ शोर। हल्ला। कोलाहल। २. प्रसिद्धि। नाम। सज्ञा स्त्री० [सं० शटा] जड़। मूल।

सोरठ-सज्ञा पु० [स० सौराष्ट्र] १ गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २. सोरठ देश की राजधानी, सूरत। सज्ञा पुं० एक ओड़व राग।

सोरठा-सज्ञा पुं० [स० सौराष्ट्र] अड़तालीस मात्राओं का एक छंद जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह तेरह मात्राएँ होती हैं। दोहे को उलट देने से सोरठा हो जाता है।

सोरनी-सज्ञा स्त्री० [हिं०
१. झाड़ू। बुहारी।
का त्रिरात्रि नामक

सोरह‡०-वि० संज्ञा पुं० दे० "सोलह"।

सोरही‡-संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह] १ जूआ खेलने के लिये सोलह चित्ती कौड़ियाँ। २. वह जूआ जो सोलह कौड़ियों से खेलते हैं।

सोरा‡०-संज्ञा पुं० दे० "शोरा"।

सोलंकी-संज्ञा पुं० [देश०] क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश जिसका अधिकार गुजरात पर बहुत दिनों तक था।

सोलह-वि० [सं० षोडस] जो गिनती में दस से छः अधिक हो। षोडश।
संज्ञा पुं० दस और छः की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।
मुहा०—सोलहो आने = संपूर्ण। पूरा पूरा।

सोला-संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा झाड़ जिसकी डालियों के छिलके से अँगरेजी ढंग की टोपी बनती है।

सोवज-संज्ञा पुं० दे० "सावज"।

सोवन०‡-संज्ञा पुं० [हिं० सोवना] सोने की क्रिया या भाव

सोवना०‡-क्रि० अ० दे० "सोना"।

सोवा-संज्ञा पुं० दे० "सोआ"।

सोवाना-क्रि० स० दे० "सुलाना"।

सोवैया०‡-संज्ञा पुं० [हिं० सोवना] सोनेवाला।

सोषण०-संज्ञा पुं० दे० "शोषण"।

सोषना*-क्रि० अ० दे० "सोखना"।

सोषु, सोसु०-वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला।

सोसन-संज्ञा पुं० [फा० सौसन] फारस की ओर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा।

सोसनी-वि० [फा० सौसन] सोसन के फूल के रंग का। लाली लिए नीला।

सोस्मि०- दे० "सोऽहम्"।

सोहं‡०-क्रि० वि० दे० "सौंह"।

सोहं, सोहंग- दे० "सोऽहम्"।

सोहगी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग] १. तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमें लड़की के लिये कपड़े, गहने आदि जाते हैं। २. सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की वस्तुएँ।

सोहन-वि० [सं० शोभन] [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुंदर। सुहावना।
संज्ञा पुं० सुंदर पुरुष। नायक।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।

सोहन पपड़ी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहन + पपड़ी] एक प्रकार की मिठाई।

सोहन हलवा-संज्ञा पुं० [हिं० सोहन + अ० हलवा] एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई।

सोहना-क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभित होना। सजना। २. अच्छा लगना।
†वि० [स्त्री० सोहनी] सुंदर। मनोहर।

सोहनी-संज्ञा स्त्री० [सं० शोधनी] झाड़ू।
वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुंदर। सुहावनी।

सोहबत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ संग-साथ। संगत। २. संभोग। स्त्री प्रसंग।

सोहमस्मि- दे० "सोऽहम्।"

सोहर-संज्ञा पुं० दे० "सोहला"।
संज्ञा स्त्री० [सं० सूतका] सूतिकागृह। सौरी।

सोहराना-क्रि० स० दे० "सहलाना"।

सोहला-संज्ञा पुं० [हिं० सोहना] १ वह गीत जो घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। २. मांगलिक गीत।

सोहावन*‡-वि० दे० "सुहावना"।

सोहाग‡-संज्ञा पुं० दे० "सुहाग"।

सोहागिन-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सोहागिल-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सोहाता-वि० [हिं० सोहना] [स्त्री० सोहाती] सुहावना। शोभित। सुंदर। अच्छा।

सोहाना-क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभित होना। सजना। २. रुचिकर होना। अच्छा लगना। फबना।

सोहाया-वि० [हिं० सोहाना] [स्त्री० सोहाई] शोभित। शोभायमान। सुंदर।

सोहरद‡०-संज्ञा पुं० दे० "सौहार्द"।

सोहारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाना] पूरी।

सोहावना-वि० दे० "सुहावना"।
क्रि० अ० दे० "सोहाना"।

सोहासित०‡-वि० [हिं० सोहना] १. प्रिय लगनेवाला। रुचिकर। २. ठकुर-सोहाती।

सोहिं‡-क्रि० वि० दे० "सौंह"।

सोहिनी-वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुहावनी।
संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।

सोहिल-संज्ञा पुं० [अ० सुहेल] अगस्त्य तारा।

सोहिला-संज्ञा पुं० दे० "सोहला"।

सोहैं‡०-क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने।

सोहैं०-क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने। आगे।

सौं*-संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह"।
अव्य० प्रत्य० दे० "सो" या "सा"।

सौंघा-वि० [हिं० मँहगा का उलटा] १. अच्छा। उत्तम। २. उचित। ठीक।
सौंघाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंघा] अधिकता।
सौंचना†-क्रि० स० [सं० शौच] मल त्याग करना या उसके बाद हाथ पैर धोना।
सौंचर-संज्ञा पुं० दे० "सोंचर नमक"।
सौंचाना†-क्रि० स० [हिं० सौंचना] शौच कराना। मल त्याग कराना। हगाना।
सौंज*-संज्ञा स्त्री० दे० "सौज"।
सौंड़, सौंडा†-संज्ञा पुं० [हिं० सौना+ ओढ़ना] ओढ़न का भारी कपड़ा।
सौंतुख*-संज्ञा पुं० [सं० सम्मुख] सामने। क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।
सौंदन-संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंदना] धोबियों का कपड़ों को धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना।
सौंदना-क्रि० स० [सं० संधम्] आपस में मिलाना। सानना। ओतप्रोत करना।
सौंदर्ज-संज्ञा पुं० दे० "सौंदर्य"।
सौंदर्य-संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर होने का भाव या धर्म। सुंदरता। खूबसूरती।
सौंदर्यता-संज्ञा स्त्री० दे० "सौंदर्य"।
सौंध*-संज्ञा पुं० दे० "सौध"।
संज्ञा स्त्री० [सं० सुगंध] सुगंध। खुशबू।
सौंधना-क्रि० स० [सं० सुगंधि] सुगंधित करना। सुवासित करना। बासना।
सौंधा-वि० [हिं० सौंधा] १. दे० "सोंधा"। २ रुचिकर। अच्छा।
सौंनमक्खी-संज्ञा स्त्री० दे० "सोनामक्खी"।
सौंपना-क्रि० स० [सं० समर्पण] १. सपुर्द करना। हवाले करना। २. सहेजना।
सौंफ-संज्ञा स्त्री० [सं० शतपुष्पा] एक छोटा पौधा जिसके बीजों का औषध के अतिरिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं।
सौंफिया, सौंफी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ+ इया (प्रत्य०)] सौंफ की बनी हुई शराब।
सौंभरि-संज्ञा पुं० दे० "सौभरि"।
सौंर-संज्ञा स्त्री० दे० "सौरी"।
सौंरई†-संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवर] साँवलापन।
सौंरना*-क्रि० स० [सं० स्मरण] स्मरण करना।
क्रि० अ० दे० "सँवारना"।
सौंह*†-संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगंद] शपथ। कसम।
संज्ञा पुं० क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने।
सौंहन-संज्ञा पुं० दे० "सोहन"।
सौंही-संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का हथियार।
सौ-वि० [सं० शत] जो गिनती में पचास का दूना हो। नब्बे और दस। शत।
संज्ञा पुं० नब्बे और दस की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।
मुहा०—सौ बात की एक बात=सारांश। तात्पर्य। निचोड़।
वि० दे० "सा"।
सौक-संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] सौत। सपत्नी। वि० [हिं० सौ+एक] एक सौ।
सौकन†-संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
सौकर्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. सुकरता। सुसाध्यता। २ सुविधा। सुभीता। ३. सूकरता। सुअरपन।
सौकुमार्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. सुकुमारता। कोमलता। नाजुकपन। २ यौवन। जवानी। ३ काव्य का एक गुण जिसमें ग्राम्य और श्रुति कटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य माना गया है।
सौख*†-संज्ञा पुं० दे० "शौक"।
सौख्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख का भाव। सुखता। सुखत्व। २. सुख। आराम।
सौगंद-संज्ञा स्त्री० [सं० सौगंध] शपथ। कसम।
सौगंध-संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंधित तेल, इत्र आदि का व्यापार करनेवाला। गंधी। २. सुगंध। खुशबू।
संज्ञा स्त्री० दे० "सौगंद"।
सौगरिया-संज्ञा पुं० [?] क्षत्रियों की एक जाति।
सौगात-संज्ञा स्त्री० [तु०] वह वस्तु जो परदेश से इष्ट मित्रों को देने के लिये लाई जाय। भेंट। उपहार। तोहफ़ा।
सौघा†-वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। कम दाम का। महँगा का उलटा।
सौच*-संज्ञा पुं० दे० "शौच"।
सौज-संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] उपकरण। सामग्री। साज-समान।
सौजना-क्रि० अ० दे० "सजना"।
सौजन्य-संज्ञा पुं० [सं०] सुजन का भाव। सुजनता। भलमनसत।
सौजन्यता-संज्ञा स्त्री० दे० "सौजन्य"।
सौजा-संज्ञा पुं० [हिं० सावज]

पक्षी जिसका शिकार किया जाय।
सौत–संज्ञा स्त्री० [सं० सपत्नी] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। सपत्नी। सवत।
मुहा०—सौतिया डाह=१. दो सौतों में होनेवाली डाह या ईर्ष्या। २. द्वेष। जलन।
सौतन, सौतिन–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
सौतुक, सौतुख–संज्ञा पु० दे० "सौंतुख"।
सौतेला–वि० [हिं० सौत] [स्त्री० सौतेली] १. सौत से उत्पन्न। सौत का। २. जिसका संबंध सौत के रिश्ते से हो।
सौत्रामणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।
सौदा–संज्ञा पु० [सं०] १. क्रय विक्रय की वस्तु। चीज़। माल। २ लेन-देन। व्यवहार। ३. क्रय विक्रय। व्यापार।
यौ०—सौदा सुलुफ=खरीदने की चीज-वस्तु। सौदासूत=व्यवहार।
संज्ञा पु० [फा०] पागलपन। उन्माद।
सौदाई–संज्ञा पु० [अ०सौदा] पागल। बावला।
सौदागर–संज्ञा पुं० [फा०] व्यापारी। व्यवसायी। तिजारत करनेवाला।
सौदागरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] व्यापार। व्यवसाय। तिजारत। रोज़गार।
सौदामनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली। विद्युत्।
सौदामिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "सौदामनी"।
सौध–संज्ञा पु० [सं०] १. भवन। प्रासाद। २. चाँदी। रजत। ३. दूधिया पत्थर।
सौधना–क्रि० स० दे० "सोधना"।
सौन–क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने।
सौनक–संज्ञा पुं० दे० "शौनक"।
सौनन–संज्ञा स्त्री० दे० "सौदन"।
सौना–संज्ञा पु० दे० "सोना"।
सौपना–क्रि० स० दे० "सौंपना"।
सौबल–संज्ञा पुं० [सं०] गांधार देश के राजा सुबल का पुत्र, शकुनि।
सौभ–संज्ञा पु० [सं०] १. राजा हरिश्चंद्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश में मानी गई है। कामचारिपुर। २. एक प्राचीन जनपद। ३. उक्त जनपद के राजा।
सौभग–संज्ञा पुं० [सं०] १. सौभाग्य। खुशकिस्मती। २. सुख। आनंद। ३. ऐश्वर्य। धन दौलत। ४ सुंदरता। सौंदर्य।
सौभद्र–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २. वह युद्ध जो सुभद्रा के कारण हुआ था।
वि० सुभद्रा संबंधी।
सौभरि–संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मान्धाता की पचास कन्याओं से विवाह करके ५००० पुत्र उत्पन्न किए थे।
सौभागिनी–संज्ञा स्त्री० [सं० सौभाग्य] सधवा स्त्री। सोहागिन।
सौभाग्य–संज्ञा पु० [सं०] १. अच्छा भाग्य। २. खुशकिस्मती। २. सुख। आनंद। ३. कल्याण। कुशल क्षेम। ४. स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। सुहाग। अहिवात। ५ ऐश्वर्य। वैभव। ६ सुंदरता। सौंदर्य।
सौभाग्यवती–वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसका सोभाग्य या सुहाग बना हो। सधवा। सुहागिन।
सौभाग्यवान्–वि० [सं० सौभाग्यवत्] [स्त्री० सौभाग्यवती] १. अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। २. सुखी और संपन्न।
सौम–वि० दे० "सौम्य"।
सौमन–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र।
सौमनस–वि० [सं०] १. फूलों का। २. मनोहर। रुचिकर। प्रिय।
संज्ञा पुं० १.प्रफुल्लता। आनंद। २. पश्चिम दिशा का हाथी। (पुराण) ३. अस्त्र निष्फल करने का एक अस्त्र।
सौमनस्य–संज्ञा पु० [सं०] प्रसन्नता।
सौमित्र–संज्ञा पु० [सं०] १. सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। २. मित्रता। दोस्ती।
सौमित्रा–संज्ञा स्त्री० दे० "सुमित्रा"।
सौम्य–वि० [सं०] [स्त्री० सौम्या] १. सोम लता-संबंधी। २ चंद्रमा संबंधी। ३. शीतल और स्निग्ध। ४. सुशील। शांत। ५. मांगलिक। शुभ। ६. मनोहर। सुंदर।
संज्ञा पु० १. सोम यज्ञ। २. चंद्रमा के पुत्र, बुध। ३. ब्राह्मण। ४. मार्गशीर्ष मास। अगहन। ५. साठ संवत्सरों में से एक। ६. सज्जनता। ७. एक दिव्यास्त्र।
सौम्यकृच्छ्र–संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत।
सौम्यता–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौम्य होने का भाव या धर्म। २. सुशीलता। शान्तता। ३ सुंदरता। सौंदर्य।
सौम्यदर्शन–वि० [सं०] सुंदर। प्रियदर्शन।

सौम्यशिखा-सज्ञा स्त्री० [स०] मुक्तक विषम वृत्त के दो भेदों में से एक।

सौम्या-सज्ञा स्त्री० [स०] आर्या छंद का एक भेद।

सौर-वि० [स०] १. सूर्य संबंधी। सूर्य का। २. सूर्य से उत्पन्न।
सज्ञा पु० १ शनि। २ सूर्य का उपासक।
सज्ञा स्त्री० [हिं० सौड़] चादर। ओढ़ना।

सौरज-सज्ञा पु० दे० "शौर्य्य"।

सौर दिवस-सज्ञा पु० [स०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।

सौरभ-सज्ञा पु० [स०] १ सुगध। .खुशबू। महक। २ केसर। ३. आम। आम्र।

सौरभक-सज्ञा पु० [स०] एक वर्ण वृत्त।

सौरभित-वि० [स० सौरभ] सौरभ युक्त। सुगंधित। .खुशबूदार।

सौर मास-सज्ञा पु० [सं०] एक संक्राति से दूसरी संक्राति तक का समय।

सौर वर्ष-सज्ञा पु० [स०] एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्राति तक का समय।

सौरसेन-सज्ञा पु० दे० "शौरसेन"।

सौराष्ट्र-सज्ञा पु० [स०] १. गुजरात काठिया वाड़ का प्राचीन नाम। सोरठ देश। २ उक्त प्रदेश का निवासी। ३ एक वर्णवृत्त।

सौराष्ट्र मृत्तिका-सज्ञा स्त्री० [स०] गोपी चदन।

सौराष्ट्रिक-वि० [सं०] सौराष्ट्र देश सबधी।

सौरास्त्र-सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

सौरि-सज्ञा पु० दे० "शौरि"।

सौरी-सज्ञा स्त्री० [स० सूतिका] वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जने। सूतिकागार। जच्चाखाना।
सज्ञा स्त्री० [स० शफरी] एक प्रकार की मछली।

सौर्य-वि० [स०] सूर्य संबंधी। सूर्य का।

सौवर्चल-सज्ञा पु० [सं०] सोंचर नमक।

सौवीर-सज्ञा पुं० [स०] १ सिंधु नद के आस पास का प्राचीन प्रदेश। २. उक्त प्रदेश का निवासी या राजा।

सौवीरांजन-सज्ञा पु० [स०] सुरमा।

सौष्ठव-सज्ञा पुं० [स०] १. सुडौलपन। उपयुक्तता। २. सुदरता। सौंदर्य। ३. नाटक का एक अंग।

सौसन-सज्ञा पु० दे० "सोसन"।

सौसनी-वि० सज्ञा पु० दे० "सोसनी"।

सौहँ-सज्ञा स्त्री० [सं० शपथ] शपथ। कसम।
क्रि० वि० [स० सम्मुख] सामने। आगे।

सौहार्द, सौहार्द्य-सज्ञा पुं० [स०] सुहृद् का भाव। मित्रता। मैत्री।

सौहीं-क्रि० वि० [हिं० सौंह] सामने। आगे।

सौहृद-सज्ञा पुं० [स०] [भाव० सौहृद्य] १. मित्रता। दोस्ती। २ मित्र। दोस्त।

स्कंद-सज्ञा पु० [स०] १. निकलना। बहना गिरना। २. विनाश। ध्वंस। ३ कार्त्तिकेय जो शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। ४ शिव। ५. शरीर। देह। ६ बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक।

स्कंदगुप्त-सज्ञा पु० [स०] गुप्त वश के एक प्रसिद्ध सम्राट्। (ई० ४५० से ४६७ तक)

स्कंदन-सज्ञा पु० [स०] १ कोठा साफ होना। रेचन। २ निकलना। बहना। गिरना।

स्कंदपुराण-सज्ञा पु० [स०] अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण।

स्कंदित-वि० [स०] निकला हुआ। गिरा हुआ। स्खलित। पतित।

स्कंध-सज्ञा पु० [स०] १ कंधा। मोढ़ा। २ वृक्ष के तने का वह भाग जहाँ से डालियाँ निकलती हैं। काड। दंड। ३ डाल। शाखा। ४. समूह। गरोह। झुंड। ५ सेना का अग। व्यूह। ६. ग्रथ का विभाग जिसमें कोई पूरा प्रसंग हो। खंड। ७ शरीर। देह। ८ मुनि। आचार्य। ९ युद्ध। संग्राम। १० आर्या छंद का एक भेद। ११ बौद्धों के अनुसार रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार ये पाँचो पदार्थ। १२ दर्शन शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध।

स्कंधावार-सज्ञा पु० [स०] १ राजा का डेरा या शिविर। कटक। २ छावनी। सेनानिवास। ३ सेना। फ़ौज।

स्कंभ-सज्ञा पु० [स०] १. खंभा। स्तंभ। २ परमेश्वर। ईश्वर।

स्खलित-वि० [स०] १. गिरा हुआ। पतित। च्युत। २ फिसला हुआ। लड़खड़ाया हुआ। विचलित। ३ चूका हुआ।

स्तंभ-सज्ञा पु० [स०] १. खभा। थभा।

स्त्रीलिंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. भग। योनि। २. हिंदी व्याकरण के अनुसार दो लिंगों में से एक जो स्त्री वाचक होता है। जैसे—घोड़ा शब्द पुलिंग और घोड़ी स्त्रीलिंग है।

स्त्रीव्रत-संज्ञा पुं० [सं०] अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना। पत्नीव्रत।

स्त्रीसमागम-संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन। प्रसंग।

स्त्रैण-वि० [सं०] १. स्त्री संबंधी। स्त्रियों का। २. स्त्रियों के कहने के अनुसार चलनेवाला। औरत।

स्थ-प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लग कर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) स्थित। कायम। (ख) उपस्थित। वर्तमान। (ग) रहनेवाला। निवासी। (घ) लीन। रत।

स्थकित-वि० [हिं० थकित] थका हुआ।

स्थगित-वि० [सं०] १ ढका हुआ। आच्छादित। २. रोका हुआ। अवरुद्ध। ३ जो कुछ समय के लिये रोक दिया गया हो। मुलतवी।

स्थल-संज्ञा पुं० [सं०] १. भूमि। भूभाग। जमीन। २. जल-शून्य भूभाग। ख़ुश्की। ३. स्थान। जगह। ४. अवसर। मौका। ५ निर्जल और मरु भूमि। कर।

स्थलकमल-संज्ञा पुं० [सं०]कमल की आकृति का एक पुष्प जो स्थल में होता है।

स्थलचर, स्थलचारी-वि० [सं०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।

स्थलज-वि० [सं०] स्थल या भूमि में उत्पन्न। स्थल में उत्पन्न होनेवाला।

स्थलपद्म-संज्ञा पुं० [सं०] स्थलकमल।

स्थलयुद्ध-संज्ञा पुं० [सं०] वह युद्ध या संग्राम जो स्थल या भूभाग पर होता है।

स्थली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ख़ुश्क जमीन। भूमि। २. स्थान। जगह।

स्थलीय-वि० [सं०] १. स्थल या भूमि संबंधी। स्थल का। २. किसी स्थान का। स्थानीय।

स्थविर-संज्ञा पुं० [सं०] १. वृद्ध। बुड्ढा। २. ब्रह्मा। ३ वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु।

स्थाई-वि० दे० "स्थायी"।

स्थाणु-संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभा। थूनी। स्तंभ। २. पेड़ का वह धड़ जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गए हों। ठूँठ। ३ शिव।

वि० स्थिर। अचल।

स्थान-संज्ञा पुं० [सं०] १ ठहराव। टिकाव। स्थिति। २ भूमिभाग। जमीन। मैदान। ३ जगह। ठाम। स्थल। ४ डेरा। घर। आवास। ५ काम करने की जगह। पद। ओहदा। ६ मंदिर। देवालय। ७. अवसर। मौका।

स्थानच्युत-वि० [सं०] जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो।

स्थानभ्रष्ट-वि० दे० "स्थानच्युत"।

स्थानांतर-संज्ञा पुं० [सं०] दूसरा स्थान। प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न स्थान।

स्थानांतरित-वि० [सं०] जो एक स्थान से हट या उठकर दूसरे स्थान पर गया हो।

स्थानापन्न-वि० [सं०] दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला। क़ायम-मुक़ाम। एवज़ी।

स्थानिक-वि० [सं०] उस स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो।

स्थानीय-वि० [सं०] उस स्थान का जिसके संबंध में कोई उल्लेख हो। स्थानिक।

स्थापक-वि० [सं०] १. रखने या कायम करनेवाला। स्थापनकर्त्ता। २ मूर्त्ति बनानेवाला। ३ सूत्रधार का सहकारी। (नाटक) ४. कोई संस्था खोलने या खड़ी करनेवाला। संस्थापक।

स्थापत्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. भवन निर्माण। राजगीरी। मेमारी। २. वह विद्या जिसमें भवन निर्माण-संबंधी सिद्धांतों आदि का विवेचन होता है।

स्थापत्य वेद-संज्ञा पुं० [सं०] चार उपवेदों में से एक जिसमें वास्तुशिल्प या भवन निर्माण का विषय वर्णित है।

स्थापन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्थापनीय] १ खड़ा करना। उठाना। २ रखना। जमाना। ३. नया काम जारी करना। ४. (प्रमाणपूर्वक किसी विषय को) सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन। ५ निरूपण।

स्थापना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रतिष्ठित या स्थित करना। बैठाना। थापना। २. जमा कर रखना। ३. सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन करना।

थूनी। २ पेड़ का तना। तरुस्कंध। ३. साहित्य में एक प्रकार का सात्विक भाव। किसी कारण से संपूर्ण अंगों की गति का अवरोध। जड़ता। अचलता। ४. प्रतिबंध। रुकावट। ५. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी शक्ति के। रोकते हैं।

स्तंभक-वि० [सं०] १. रोकनेवाला। रोधक। २ कब्ज़ करनेवाला। ३. वीर्य रोकनेवाला।

स्तंभन-संज्ञा पुं० [सं०] १ रुकावट। अवरोध। निवारण। २ वीर्य आदि के स्खलन में बाधा या विलंब। ३. वीर्य पात रोकने की दवा। ४. जड़ या निश्चेष्ट करना। जड़ीकरण। ५. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी की चेष्टा या शक्ति के। रोकते हैं। ६. कब्ज। मलावरोध। ७. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

स्तंभित-वि० [सं०] १. जो जड़ या अचल हो गया हो। निश्चल। निःस्तब्ध। सुन्न। २. रुका या रोका हुआ। अवरुद्ध।

स्तन-संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें दूध रहता है। मुहा०—स्तन पीना = स्तन में मुँह लगाकर उसका दूध पीना।

स्तनपान-संज्ञा पुं० [सं०] स्तन में के दूध का पीना। स्तन्यपान।

स्तनपायी-वि० [सं० स्तनपायिन्] जो माता के स्तन से दूध पीता हो।

स्तब्ध-वि० [सं०] १. जो जड़ या अचल हो गया हो। जड़ीभूत। स्तंभित। निश्चेष्ट। २. दृढ़। स्थिर। ३. मंद। धीमा।

स्तब्धता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तब्ध का भाव। जड़ता। २. स्थिरता। दृढ़ता।

स्तर-संज्ञा पुं० [सं०] १. तह। परत। तबक। थर। २. सेज। शय्या। तल्प। ३. भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो उसकी भिन्न भिन्न कालों में बनी हुई तहों के आधार पर होता है।

स्तरण-संज्ञा पुं० [सं०] फैलाने या बिखेरने। की क्रिया।

स्तव-संज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूप-कथन या गुण-गान। स्तुति। स्तोत्र।

स्तबक-संज्ञा पुं० [सं०] १. फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। २. समूह। ढेर। ३. पुस्तक का कोई अध्याय या परिच्छेद। ३. वह जो किसी की स्तुति या स्तव करता हो।

स्तवन-संज्ञा पुं० [सं०] स्तुति करने की क्रिया। गुण-कीर्त्तन। स्तव। स्तुति।

स्तीर्ण-वि० [सं०] फैलाया, बिखेरा या छितराया हुआ। विस्तृत। विकीर्ण।

स्तुत-वि० [सं०] जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो। प्रशंसित।

स्तुति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुणकीर्तन। स्तव। प्रशंसा। तारीफ़। बड़ाई। २ दुर्गा।

स्तुतिपाठक-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्तुतिपाठ करनेवाला। २ चारण। भाट। मागध। सूत।

स्तुतिवाचक-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्तुति या प्रशंसा करनेवाला। २. खुशामदी।

स्तुत्य-वि० [सं०] स्तुति या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय।

स्तूप-संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊँचा ढूह या टीला। २ वह ढूह या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति-चिह्न संरक्षित हों।

स्तेय-संज्ञा पुं० [सं०] चोरी। चौर्य्य।

स्तोक-संज्ञा पुं० [सं०] १. बूँद। बिंदु। २. पपीहा। चातक।

स्तोता-वि० [सं० स्तोतृ] स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र-संज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूप कथन या गुणकीर्तन। स्तव। स्तुति।

स्तोम-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्तुति। प्रार्थना। २. यज्ञ। ३. एक विशेष प्रकार का यज्ञ। ४. समूह। राशि।

स्त्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नारी। औरत। २. पत्नी। जोरू। ३. मादा। ४. एक वृत्त जिसके प्रति चरण में दो गुरु होते हैं। संज्ञा स्त्री० दे० "इस्तिरी"।

स्त्रीत्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री का भाव या धर्म। स्त्रीपन। जनानपन। २. व्याकरण में वह प्रत्यय जो स्त्री-लिंग का सूचक होता है।

स्त्रीधन-संज्ञा पुं० [सं०] वह धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो।

स्त्रीधर्म-संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का रजस्वला होना। रजोदर्शन।

स्त्रीप्रसंग-संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन। संभोग।

स्त्रीलिंग-संज्ञा पुं० [सं०] १. भग । योनि । २. हिंदी व्याकरण के अनुसार दो लिंगों में से एक जो स्त्री-वाचक होता है । जैसे—घोड़ा शब्द पुंलिंग और घोड़ी स्त्रीलिंग है ।

स्त्रीव्रत-संज्ञा पुं० [सं०] अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना । पत्नीव्रत ।

स्त्रीसमागम-संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन । प्रसंग ।

स्त्रैण-वि० [सं०] १. स्त्री संबंधी । स्त्रियों का । २. स्त्रियों के कहने के अनुसार चलनेवाला । स्त्रीरत ।

स्थ-प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लग कर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) स्थित । कायम । (ख) उपस्थित । वर्तमान । (ग) रहनेवाला । निवासी । (घ) लीन । रत ।

स्थकित-वि० [हिं० थकित] थका हुआ ।

स्थगित-वि० [सं०] १. ढका हुआ । आच्छादित । २. रोका हुआ । अवरुद्ध । ३. जो कुछ समय के लिये रोक दिया गया हो । मुलतवी ।

स्थल-संज्ञा पुं० [सं०] १. भूमि । भूभाग । ज़मीन । २. जल-शून्य भूभाग । खुश्की । ३. स्थान । जगह । ४. अवसर । मौका । ५. निर्जल और मरु भूमि । कर ।

स्थलकमल-संज्ञा पुं० [सं०] कमल की आकृति का एक पुष्प जो स्थल में होता है ।

स्थलचर, स्थलचारी-वि० [सं०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला ।

स्थलज-वि० [सं०] स्थल या भूमि में उत्पन्न । स्थल में उत्पन्न होनेवाला ।

स्थलपद्म-संज्ञा पुं० [सं०] स्थलकमल ।

स्थलयुद्ध-संज्ञा पुं० [सं०] वह युद्ध या संग्राम जो स्थल या भूभाग पर होता है ।

स्थली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खुश्क ज़मीन । भूमि । २. स्थान । जगह ।

स्थलीय-वि० [सं०] १. स्थल या भूमि संबंधी । स्थल का । २. किसी स्थान का । स्थानीय ।

स्थविर-संज्ञा पुं० [सं०] १. वृद्ध । बुड्ढा । २. ब्रह्मा । ३. वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु ।

स्थाई-वि० दे० "स्थायी" ।

स्थाणु-संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभ । थूनी । स्तंभ । २. पेड़ का वह धड़ जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गए हों । ठूँठ । ३. शिव ।

वि० स्थिर । अचल ।

स्थान-संज्ञा पुं० [सं०] १. ठहराव । टिकाव । स्थिति । २. भूमिभाग । ज़मीन । मैदान । ३. जगह । ठाम । स्थल । ४. डेरा । घर । आवास । ५. काम करने की जगह । पद । ओहदा । ६. मंदिर । देवालय । ७. अवसर । मौका ।

स्थानच्युत-वि० [सं०] जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो ।

स्थानभ्रष्ट-वि० दे० "स्थानच्युत" ।

स्थानांतर-संज्ञा पुं० [सं०] दूसरा स्थान । प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न स्थान ।

स्थानांतरित-वि० [सं०] जो एक स्थान से हट या उठकर दूसरे स्थान पर गया हो ।

स्थानापन्न-वि० [सं०] दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला । कायम-मुक़ाम । एवज़ी ।

स्थानिक-वि० [सं०] उस स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो ।

स्थानीय-वि० [सं०] उस स्थान का जिसके संबंध में कोई उल्लेख हो । स्थानिक ।

स्थापक-वि० [सं०] १. रखने या कायम करनेवाला । स्थापनकर्ता । २. मूर्त्ति बनानेवाला । ३. सूत्रधार का सहकारी । (नाटक) ४. कोई संस्था खोलने या खड़ी करनेवाला । संस्थापक ।

स्थापत्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. भवन-निर्माण । राजगीरी । मेमारी । २. वह विद्या जिसमें भवन-निर्माण-संबंधी सिद्धांतों आदि का विवेचन होता है ।

स्थापत्य वेद-संज्ञा पुं० [सं०] चार उपवेदों में से एक जिसमें वास्तुशिल्प या भवन-निर्माण का विषय वर्णित है ।

स्थापन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्थापनीय] १. खड़ा करना । उठाना । २. रखना । जमाना । ३. नया काम जारी करना । ४. (प्रमाणपूर्वक किसी विषय को) सिद्ध करना । साबित करना । प्रतिपादन । ५. निरूपण ।

स्थापना-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रतिष्ठित या स्थित करना । बैठाना । धरना । २. जमा कर रखना । ३. सिद्ध करना । साबित करना । प्रतिपादन करना ।

स्थापित-वि० [सं०] १. जिसकी स्थापना की गई हो। प्रतिष्ठित। २. व्यवस्थित। निर्दिष्ट। ३. निश्चित।

स्थायित्व-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थायी होने का भाव। २. स्थिरता। दृढ़ता। मज़बूती।

स्थायी-वि० [सं०स्थायिन्] १. ठहरनेवाला। जो स्थिर रहे। २. बहुत दिन चलनेवाला। टिकाऊ।

स्थायी भाव-संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक जिसकी सदा रस में स्थिति रहती है। ये विभाव आदि में अभिव्यक्त होकर रसत्व को प्राप्त होते हैं। ये संख्या में नौ हैं; यथा—रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निंदा, विस्मय और निर्वेद।

स्थायी समिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समिति जो किसी सभा या सम्मेलन के दो अधिवेशनों के मध्य के काल में उसके कार्यों का संचालन करती है।

स्थाली-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंडी। हँडिया। २. मिट्टी की रिकाबी।

स्थालीपुलाक न्याय-संज्ञा पुं० [सं०] एक बात को देखकर उस संबंध की और सब बातों का मालूम होना।

स्थावर-वि० [सं०] [भाव० संज्ञा स्थावरता] १. अचल। स्थिर। २. जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया न जा सके। जंगम का उलटा। अचल। ग़ैर-मनकूला। संज्ञा पुं० १. पहाड़। पर्वत। २. अचल संपत्ति। ग़ैर-मनकूला जायदाद।

स्थावर विष-संज्ञा पुं० [सं०] स्थावर पदार्थों में होनेवाला जहर।

स्थित-वि० [सं०] १. अपने स्थान पर ठहरा हुआ। अवलंबित। २ बैठा हुआ। आसीन। ३. अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ। ४ विद्यमान। मौजूद। ५. रहनेवाला। निवासी। अवस्थित। ७. खड़ा हुआ। ऊर्ध्व।

स्थितता-संज्ञा स्त्री० [सं०] ठहराव। स्थिति।

स्थितप्रज्ञ-वि० [सं०] १. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २. समस्त मनोविकारों से रहित। आत्म संतोषी।

स्थिति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रहना। ठहरना। टिकाव। ठहराव। २. निवास। अवस्थान। ३. अवस्था। दशा। ४. पद। दर्जा। ५. एक स्थान या अवस्था में रहना। अवस्थान। ६. निरंतर बना रहना। अस्तित्व। ७. पालन। ८ स्थिरता।

स्थितिस्थापक-संज्ञा पुं० [सं०] वह गुण जिससे कोई वस्तु नवीन स्थिति में आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय। वि० १. किसी वस्तु को उसकी पूर्व अवस्था में प्राप्त करानेवाला। २. लचीला।

स्थितिस्थापकता-संज्ञा स्त्री० [सं०] लचीलापन।

स्थिर-वि० [सं०] १. निश्चल। ठहरा हुआ। २. निश्चित। ३. शांत। ४. दृढ़। अटल। ५ स्थायी। सदा बना रहनेवाला। ६. नियत। मुकर्रर। संज्ञा पुं० १. शिव। २ ज्योतिष में एक योग। ३. देवता। ४. पहाड़। पर्वत। ५ एक प्रकार का छंद।

स्थिरचित्त-वि० [सं०] जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो। दृढ़चित्त।

स्थिरता-संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थिर होने का भाव। ठहराव। निश्चलता। २. दृढ़ता। मज़बूती। ३. स्थायित्व। ४. धैर्य।

स्थिरबुद्धि-वि० [सं०] जिसकी बुद्धि स्थिर हो। दृढ़चित्त।

स्थूल-वि० [सं०] १. मोटा। पीन। २. सहज में दिखाई देने या समझ में आने योग्य। सूक्ष्म का उलटा। संज्ञा पुं० वह पदार्थ जिसका इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके। गोचर पिंड।

स्थूलता-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थूल होने का भाव। २. मोटापन। मोटाई। ३ भारीपन।

स्थैर्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थिरता। २ दृढ़ता।

स्नात-वि० [सं०] जिसने स्नान किया हो। नहाया हुआ।

स्नातक-संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत की समाप्ति पर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया हो।

स्नान-संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर को स्वच्छ करने के लिये उसे जल से धोना। अवगाहन। नहाना। २. शरीर के अंगों को धूप या वायु के सामने इस प्रकार

करना कि उसके ऊपर उसका पूरा प्रभाव पड़े। जैसे—*वायु-स्नान।*

स्नानागार—संज्ञा पुं० [सं०] वह कमरा जिसमें स्नान किया जाता है।

स्नायविक—*वि०* [सं०] स्नायु संबंधी।

स्नायु—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के अंदर की वह नसें जिनसे स्पर्श और वेदना आदि का ज्ञान होता है।

स्निग्ध—*वि०* [सं०] *जिसमें स्नेह या तेल हो।*

स्निग्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्निग्ध या चिकना होने का भाव। चिकनापन। २. *प्रिय होने का भाव।*

स्नेह—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम। प्यार। मुहब्बत। २. चिकना पदार्थ। चिकनाहटवाली चीज़; विशेषतः तेल। ३. कोमलता।

स्नेहपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपात्र। प्यारा।

स्नेहपान—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक की एक क्रिया जिसमें कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीते हैं।

स्नेही—संज्ञा पुं० [सं० स्नेहिन्] वह जिसके साथ स्नेह *या प्रेम हो। प्रेमी। मित्र।*

स्पंदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ धीरे धीरे हिलना। काँपना। २. (अंगों आदि का) फड़कना।

स्पर्द्धा—*संज्ञा स्त्री०* [सं०] [*वि०* स्पर्द्धिन्] १ संघर्ष। रगड़। २. किसी के मुकाबिले में आगे बढ़ने की इच्छा। होड़। ३ साहस। हौसला। ४. साम्य। बराबरी।

स्पर्द्धी—वि० [सं०] स्पर्द्धा करनेवाला।

स्पर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १. दो वस्तुओं का आपस में इतना पास पहुँचना कि उनके तलों का कुछ अंश आपस में सट जाय। छूना। २ त्वगिंद्रिय का वह गुण जिसके कारण ऊपर पड़नेवाले दबाव का ज्ञान होता है। ३ त्वगिंद्रिय का विषय। ४. व्याकरण में उच्चारण के आभ्यंतर प्रयत्न के चार भेदों में से "स्पृष्ट" नामक भेद के अनुसार "क" से लेकर "म" तक के २५ व्यंजन जिनके उच्चारण में वागिंद्रिय का द्वार बंद रहता है। ५. ग्रहण या उपराग में सूर्य्य अथवा चंद्रमा पर छाया पड़ने का आरंभ।

स्पर्शजन्य—वि० [सं०] १. जो स्पर्श के *कारण उत्पन्न हो। २. संक्रामक। छुतहा।*

स्पर्शनेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] छूने की इंद्रिय। *त्वगिंद्रिय। त्वचा।*

स्पर्शमणि—संज्ञा पुं० [सं०] पारस पत्थर।

स्पर्शास्पर्श—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श + अस्पर्श] छूने या न छूने का भाव या विचार।

स्पर्शी—वि० [सं० स्पर्शिन्] छूनेवाला।

स्पर्शेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह इंद्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है। त्वगिंद्रिय। त्वचा।

स्पष्ट वि० [सं०] साफ दिखाई देने या समझ में आनेवाला।

संज्ञा पुं० व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे से छू जाते हैं।

स्पष्ट कथन—संज्ञा पुं० [सं०] वह कथन जिसमें किसी की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है, जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हुई होती है।

स्पष्टतया—क्रि० वि० [सं०] स्पष्ट रूप से। साफ साफ।

स्पष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्पष्ट होने का भाव। सफाई।

स्पष्टवक्ता—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो कहने में किसी का मुलाहज़ा न करता हो।

स्पष्टवादी—संज्ञा पुं० दे० "स्पष्टवक्ता"।

स्पष्टीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्पष्ट करने की क्रिया। किसी बात को स्पष्ट या साफ करना।

स्पृक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. असबरग। २. लजालू। लाजवंती। ३. ब्राह्मी बूटी।

स्पृश—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला।

स्पृश्य—वि० [सं०] जो स्पर्श करने के योग्य हो। छूने लायक।

स्पृष्ट—वि० [सं०] छूआ हुआ।

स्पृहणीय—वि० [सं०] १. जिसके लिये अभिलाषा या कामना की जा सके। वांछनीय। २ गौरवशाली।

स्पृहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। कामना।

स्पृही—वि० [सं०] इच्छा करनेवाला।

स्फटिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पत्थर जो काँच के समान पारदर्शी होता है। २. सूर्य्यकांत मणि। ३. शीशा। काँच। ४ फिटकिरी।

स्फार—वि० [सं०] १. प्रचुर। विपुल। बहुत। २. विकट।

स्फाल–संज्ञा पु० दे० "स्फूर्त्ति"।

स्फीत–वि० [सं०] १ बढ़ा हुआ। वर्द्धित। २. फूला हुआ। ३. समृद्ध।

स्फुट–वि० [सं०] १. जो सामने दिखाई देता हो। प्रकाशित। व्यक्त। २. खिला हुआ। विकसित। ३ स्पष्ट। साफ़। ४. फुटकर। अलग अलग।

स्फुटित–वि० [सं०] १. विकसित। खिला हुआ। २. जो स्पष्ट किया गया हो। ३ हँसता हुआ।

स्फुरण–संज्ञा पु० [सं०] १ किसी पदार्थ का ज़रा ज़रा हिलना। २. अंग का फड़कना। ३ दे० "स्फूर्त्ति"।

स्फुरति–संज्ञा स्त्री० दे० "स्फूर्त्ति"।

स्फुरित–वि० [सं०] जिसमें स्फुरण हो।

स्फुलिंग–संज्ञा पुं० [सं०] चिनगारी।

स्फूर्त्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धीरे धीरे हिलना। फड़कना। स्फुरण। २ कोई काम करने के लिये मन में उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना। ३. फुरती। तेज़ी।

स्फोट–संज्ञा पु० [सं०] १. किसी पदार्थ का अपने ऊपरी आवरण को भेदकर बाहर निकलना। फूटना। २. शरीर में होनेवाला फोड़ा, फुंसी आदि।

स्फोटक–संज्ञा पु० [सं०] फोड़ा। फुंसी।

स्फोटन–संज्ञा पु० [सं०] १ अंदर से फोड़ना। २. विदारण। फाड़ना।

स्मर–संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव। मदन। २ स्मरण। स्मृति। याद।

स्मरण–संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देखी, सुनी या अनुभव में आई हुई बात का फिर से मन में आना। याद आना। २. नौ प्रकार की भक्तियों में से एक जिसमें उपासक अपने उपास्य देव को बराबर याद किया करता है। ३ एक अलंकार जिसमें कोई बात या पदार्थ देखकर किसी विशिष्ट पदार्थ या बात का स्मरण हो आने का वर्णन होता है।

स्मरणपत्र–संज्ञा पु० [सं०] वह पत्र जो किसी को कोई बात स्मरण दिलाने के लिये लिखा जाय।

स्मरण शक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मानसिक शक्ति जो अपने सामने होनेवाली घटनाओं और सुनी जानेवाली बातों को ग्रहण करके रख छोड़ती है। याद रखने की शक्ति। याददाश्त।

स्मरणीय–वि० [सं०] स्मरण रखने योग्य। याद रखने लायक।

स्मरना*–क्रि० स० [सं० स्मरण] स्मरण करना। याद करना।

स्मरारि–संज्ञा पु० [सं०] महादेव।

स्मर्ण*–संज्ञा पु० दे० "स्मरण"।

स्मशान–संज्ञा पु० दे० "श्मशान"।

स्मारक–वि० [सं०] स्मरण करानेवाला। संज्ञा पु० १ वह कृत्य या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाए रखने के लिये प्रस्तुत की जाय। यादगार। २ वह चीज़ जो किसी को अपना स्मरण रखने के लिये दी जाय। यादगार।

स्मार्त्त–संज्ञा पु० [सं०] १. वे कृत्य आदि जो स्मृतियों में लिखे हुए हैं। २. वह जो स्मृतियों में लिखे अनुसार सब कृत्य करता हो। ३. स्मृतिशास्त्र का पंडित। वि० स्मृति संबंधी। स्मृति का।

स्मित–संज्ञा पु० [सं०] धीमी हँसी। वि० खिला हुआ। विकसित। प्रस्फुटित।

स्मृत–वि० [सं०] याद किया हुआ। जो स्मरण में आया हो।

स्मृति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्मरण शक्ति के द्वारा संचित होनेवाला ज्ञान। स्मरण। याद। २ हिंदुओं के धर्म्मशास्त्र जिनमें धर्म्म, दर्शन, आचार-व्यवहार, शासन-नीति आदि के विवेचन हैं। ३. १८ की संख्या। ४. एक प्रकार का छंद।

स्मृतिकार–संज्ञा पु० [सं०] स्मृति या धर्म-शास्त्र जाननेवाला।

स्यंदन–संज्ञा पु० [सं०] १. चूना। टपकना। रसना। २. गलना। ३ जाना। चलना। ४. रथ, विशेषतः युद्ध में काम आनेवाला रथ। ५. वायु। हवा।

स्यमंतक–संज्ञा पु० [सं०] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्णचंद्र पर लगा था।

स्यात्–अव्य० [सं०] कदाचित्। शायद।

स्याद्वाद–संज्ञा पु० [सं०] जैन दर्शन जिसमें किसी वस्तु के संबंध में कहा जाता है कि स्यात् यह भी है, स्यात् वह भी है आदि। अनेकांतवाद।

स्यान०–वि० दे० "स्याना"।

स्यानप-संज्ञा पुं० दे० "स्यानपन"।
स्यानपन-संज्ञा पुं० [हिं० स्याना + पन(प्रत्य०)] १. चतुरता। बुद्धिमानी। २. चालाकी।
स्याना-वि० [सं० सज्ञान] [स्त्री० स्यानी] १. चतुर। बुद्धिमान्। होशियार। २. चालाक। धूर्त। ३. वयस्क। बालिग़।
संज्ञा पुं० १. बड़ा बूढ़ा। वृद्ध पुरुष। २. ओझा। ३. चिकित्सक। हकीम।
स्यानापन-संज्ञा पुं० [हिं० स्याना + पन (प्रत्य०)] १. स्याना होने की अवस्था। युवावस्था। २ चतुराई। होशियारी। ३. चालाकी। धूर्तता।
स्यापा-संज्ञा पुं० [फा० स्याहपोश] मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों के प्रतिदिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति।
मुहा०—स्यापा पड़ना = १ रोना चिल्लाना मचना। २ बिलकुल उजाड़ या सुनसान होना।
स्याबास-अव्य० दे० "शाबास"।
स्याम-संज्ञा पुं० वि० दे० "श्याम"।
संज्ञा पुं० भारतवर्ष के पूर्व का एक देश।
स्यामक-संज्ञा पुं० दे० "श्यामक"।
स्यामकरन-संज्ञा पुं० दे० "श्यामकर्ण"।
स्यामता-संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामता"।
स्यामल-वि० दे० "श्यामल"।
स्यामलिया-संज्ञा पुं० दे० "साँवला"।
स्यामा-संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामा"।
स्यार†-संज्ञा पुं० [हिं० सियार] [स्त्री० स्यारनी] सियार। गीदड़। शृगाल।
स्यारपन-संज्ञा पुं० [हिं० सियार + पन(प्रत्य०)] सियार या गीदड़ का सा स्वभाव।
स्यारी-संज्ञा स्त्री० [हिं० सियार] सियार की मादा। गीदड़ी।
स्याल-संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी का भाई। साला। स्याल। श्यालक।
संज्ञा पुं० दे० "सियार" या "स्यार"।
स्यालिया†-संज्ञा पुं० [हिं० सियार] गीदड़।
स्याह-वि० [फा०] काला। कृष्ण वर्ण का।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
स्याहगोस-संज्ञा पुं० दे० "सियाहगोश"।
स्याहा-संज्ञा पुं० दे० "सियाहा"।
स्याही-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक प्रसिद्ध रंगीन तरल पदार्थ जो लिखने के काम में आता है। रोशनाई। मसि। २. कालापन। कालिमा।
मुहा०—स्याही जाना = बालों का कालापन जाना। जवानी का बीत जाना।
३. कालिख। कालिमा।
संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] साही। (जंतु)
स्यों, स्यो:-अव्य० [सं० सह] १. सह। सहित। २. पास। समीप।
स्रंग-संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।
स्रक्-संज्ञा स्त्री० पुं० [सं०] १. फूलों की माला। २. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है।
स्रग-संज्ञा स्त्री० पुं० दे० "स्रक्"।
स्रग्धरा-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में म र भ न य य य होता है।
स्रग्विणी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं।
स्रज-संज्ञा स्त्री० [सं०] माला।
स्रजना-क्रि० स० दे० "सृजना"।
स्रद्धा-संज्ञा स्त्री० दे० "श्रद्धा"।
स्रम-संज्ञा पुं० दे० "श्रम"।
स्रमित-वि० दे० "श्रमित"।
स्रवण-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहना। बहाव। प्रवाह। २ कच्चे गर्भ का गिरना। गर्भपात। ३ मूत्र। पेशाब। ४ पसीना।
स्रवन:-संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
स्रवना -क्रि० अ० [सं० स्रवण] १. बहना। चूना। टपकना। २. गिरना।
क्रि० स० १ बहाना। टपकाना। २. गिराना।
स्रष्टा-संज्ञा पुं० [सं० स्रष्टृ] १. सृष्टि या विश्व की रचना करनेवाले, ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव।
वि० सृष्टि रचनेवाला। जगत् का रचयिता।
स्राप-संज्ञा पुं० दे० "शाप"।
स्रापित:-वि० दे० "शापित"।
स्राव-संज्ञा पुं० [सं०] १. बहना। झरना। क्षरण। २. गर्भपात। गर्भस्राव। ३ निर्यास। रस।
स्रावक-वि० [सं०] बहाने, चुआने या टपकानेवाला। स्राव करानेवाला।
स्रावी-वि० [सं० स्राविन्] बहानेवाला।
स्रिंग-संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।
स्रिजन:-संज्ञा पुं० दे० "सृजन"।
स्रिय -संज्ञा स्त्री० दे० "श्रिय"।
स्रुत-वि० दे० "श्रुत"।
स्रुति-संज्ञा स्त्री० दे० "श्रुति"।

स्तुतिमाथ*-संज्ञा पुं० [सं० श्रुति + मस्तक] विष्णु।
स्तुधा-संज्ञा स्त्री० [सं०] लकड़ी की एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि में घी की आहुति देते हैं। सुरवा।
स्त्रेनी*-संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।
स्रोत-संज्ञा पुं० [सं० स्रोतस्] १. पानी का बहाव या झरना। धारा। २. नदी।
स्रोतस्विनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
स्रोता*-संज्ञा पुं० दे० "श्रोता"।
स्रोन*-संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
स्रोनित*-संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।
स्वः-संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
स्व-वि० [सं०] अपना। निज का।
स्वकीया-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने ही पति में अनुराग रखनेवाली स्त्री। (साहित्य)
स्वच्छ*-वि० दे० "स्वच्छ"।
स्वगत-संज्ञा पुं० दे० "स्वगत कथन"।
क्रि० वि० [सं०] आप ही आप। अपने आप से। (कहना या बोलना)
स्वगत कथन-संज्ञा पुं० [सं०] नाटक में पात्र का आप ही आप इस प्रकार बोलना कि मानों वह किसी को सुनाना नहीं चाहता और न कोई उसकी बात सुनता ही है। आत्मगत। अश्राव्य।
स्वच्छंद-वि० [सं०] १. जो अपनी इच्छा के अनुसार सब कार्य्य करे। स्वाधीन। स्वतंत्र। आजाद। २. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।
क्रि० वि० मनमाना। बेधड़क। निर्द्वंद्व।
स्वच्छंदता-संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वतंत्रता।
स्वच्छ-वि० [सं०] १. जिसमें किसी प्रकार की गंदगी न हो। निर्मल। साफ़। २. उज्ज्वल। शुभ्र। ३. स्पष्ट। साफ़। ४. शुद्ध। पवित्र।
स्वच्छता-संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वच्छ होने का भाव। निर्मलता। विशुद्धता। सफाई।
स्वच्छना*-क्रि० स० [सं० स्वच्छ] निर्मल करना। शुद्ध करना। साफ़ करना।
स्वच्छी-वि० दे० "स्वच्छ"।
स्वजन-संज्ञा पुं० [सं०] १. अपने परिवार के लोग। आत्मीय जन। २. रिश्तेदार।
स्वजन्मा-वि० [सं० स्वजन्मन्] अपने आप से उत्पन्न (ईश्वर आदि)।
स्वजात-वि० [सं०] अपने से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।
स्वजाति-संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी जाति।
वि० अपनी जाति या कौम का।
स्वजातीय-वि० [सं०] १. अपनी जाति का। अपने वर्ग का।
स्वतंत्र-वि० [सं०] १. जो किसी के अधीन न हो। स्वाधीन। मुक्त। आजाद। २. मनमानी करनेवाला। स्वेच्छाचारी। निरंकुश। ३ अलग। जुदा। पृथक्। ४. किसी प्रकार के बंधन या नियम आदि से रहित।
स्वतंत्रता-संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वतंत्र होने का भाव। स्वाधीनता। आज़ादी।
स्वतः-अव्य० [सं० स्वतस्] अपने आप। आप ही।
स्वतोविरोधी-संज्ञा पुं० [सं० स्वतः + विरोधी] अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला।
स्वत्व-संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु को अपने अधिकार में रखने, या लेने का अधिकार। अधिकार। हक़।
संज्ञा पुं० "स्व" या अपने होने का भाव।
स्वत्वाधिकारी-संज्ञा पुं० [सं० स्वत्वाधिकारिन्] १. वह जिसके हाथ में किसी विषय का पूरा स्वत्व हो। २. स्वामी। मालिक।
स्वदेश-संज्ञा पुं० [सं०] अपना और अपने पुरखों का देश। मातृ-भूमि। वतन।
स्वदेशी-वि० [सं० स्वदेशीय] अपने देश का। अपने देश संबंधी।
स्वधर्म-संज्ञा पुं० [सं०] अपना धर्म।
स्वधा-अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देने के समय किया जाता है।
संज्ञा स्त्री० १. पितरों को दिया जानेवाला अन्न या भोजन। पितृ अन्न। २. दक्ष की एक कन्या।
स्वन-संज्ञा पुं० [सं०] शब्द। आवाज।
स्वनामधन्य-वि० [सं०] जो अपने नाम के कारण धन्य हो।
स्वपच*-संज्ञा पुं० दे० "श्वपच"।
स्वपन, स्वपना*†-संज्ञा पुं० दे० "स्वप्न"।
स्वप्न-संज्ञा पुं० [सं०] १. सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। २. निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना। ३.

वह घटना आदि जो इस प्रकार निद्रित अवस्था में दिखाई दे अथवा मन में आवे। ४. मन में उठनेवाली ऊँची या असंभव कल्पना या विचार।

स्वप्नगृह–संज्ञा पु० [सं०] शयनागार।

स्वप्नदोष–संज्ञा पु० [सं०] निद्रावस्था में वीर्यपात होना जो एक प्रकार का रोग है।

स्वप्नाना–क्रि० स० [सं० स्वप्न + आना(प्रत्य०)] स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना।

स्वयरन:–संज्ञा पु० दे० "सुवर्ण"।

स्वभाउ:–संज्ञा पु० दे० "स्वभाव"।

स्वभाव–संज्ञा पु० [सं०] १. सदा रहनेवाला मूल या प्रधान गुण। तासीर। २. मन की प्रवृत्ति। मिजाज। प्रकृति। ३. आदत। बान।

स्वभावज–वि० [सं०] प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

स्वभावतः–अव्य० [सं० स्वभावतस्] स्वभाव से। प्राकृतिक रूप से। सहज ही।

स्वभावसिद्ध–वि० [सं०] सहज। प्राकृतिक। स्वाभाविक।

स्वभावोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी जाति या अवस्था आदि के अनुसार यथावत् और प्राकृतिक स्वरूप का वर्णन होता है।

स्वभू–संज्ञा पु० [सं०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। वि० आप से आप होनेवाला।

स्वयं–अव्य० [सं० स्वयम्] १. खुद। आप। २. आप से आप। खुद बखुद।

स्वयंदूत–संज्ञा पु० [सं०] नायिका पर अपनी कामवासना स्वयं ही प्रकट करनेवाला नायक।

स्वयंदूती–संज्ञा स्त्री० [सं०] नायक पर स्वयं ही वासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका।

स्वयंप्रकाश–संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो बिना किसी दूसरे की सहायता के प्रकाशित हो। २. परमात्मा। परमेश्वर।

स्वयंभू–संज्ञा पु० [सं० स्वयंभू] १ ब्रह्मा। २. काल। ३ कामदेव। ४. विष्णु। ५ शिव। ६ दे० 'स्वायंभुव'। वि० जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वयंवर–संज्ञा पु० [सं०] १. प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध विधान जिसमें कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से अपने लिये स्वयं वर चुनती थी। २ वह स्थान जहाँ इस प्रकार कन्या अपने लिये वर चुने।

स्वयंवरण–संज्ञा पु० दे० "स्वयंवर"।

स्वयंवरा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने इच्छानुसार अपना पति नियत करनेवाली स्त्री। पतिंवरा। वर्या।

स्वयंसिद्ध–वि० [सं०] (बात) जिसकी सिद्धि के लिये किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता न हो।

स्वयंसेवक–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० स्वयंसेविका] वह जो बिना किसी पुरस्कार के किसी कार्य में अपनी इच्छा से योग दे। स्वेच्छासेवक।

स्वयमेव–क्रि०वि० [सं०] खुद ही। स्वयं ही।

स्वर्–संज्ञा पु० [सं०] १. स्वर्ग। २. परलोक। आकाश।

स्वर–संज्ञा पु० [सं०] १. प्राणी के कंठ से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द, जिसमें कोमलता, तीव्रता, उदात्तता, अनुदात्तता आदि गुण हों। २ संगीत में वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो और जिसके उतार-चढ़ाव आदि का, सुनते ही, सहज में अनुमान हो सके। सुर। सुभीते के लिये सात स्वर नियत किए गए हैं। इन सातों स्वरों के नाम क्रम से षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद रखे गए हैं जिनके संक्षिप्त रूप सा, रे, ग, म, प, ध और नि हैं।

मुहा०—स्वर उतारना = स्वर नीचा या धीमा करना। स्वर चढ़ाना = स्वर ऊँचा करना।

३ व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आपसे आप स्वतंत्रतापूर्वक होता है और जो किसी व्यंजन के उच्चारण में सहायक होता है। हिंदी वर्णमाला में ११ स्वर हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ ओ और औ। ४ वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार-चढ़ाव।

संज्ञा पु० [सं० स्वर] आकाश।

स्वरग~–संज्ञा पु० दे० "स्वर्ग"।

स्वरभंग–संज्ञा पु० [सं०] आवाज का बैठना जो एक रोग माना गया है।

स्वरमंडल–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का वाद्य जिसमें तार लगे होते हैं।

स्वरवेधी–संज्ञा पु० दे० "शब्दवेधी"।

स्वरशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें स्वर संबंधी बातों का विवेचन हो। स्वर-विज्ञान।

स्वरस–संज्ञा पुं० [सं०] पत्ती आदि को कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस।

स्वरांत–वि० [सं०] (शब्द) जिसके अंत में कोई स्वर हो। जैसे—माला, टोपी।

स्वराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी स्वयं ही अपने देश का सब प्रबंध करते हों। अपना राज्य।

स्वराट्–संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. ईश्वर। ३. वह राजा जो किसी ऐसे राज्य का स्वामी हो जिसमें स्वराज्य शासन-प्रणाली प्रचलित हो।
वि० जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।

स्वरित–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत ज़ोर से हो और न बहुत धीरे से हो।
वि० १. स्वर से युक्त। २. गूँजता हुआ।

स्वरूप–संज्ञा पुं० [सं०] १. आकार। आकृति। शक्ल। २. मूर्त्ति या चित्र आदि। ३. देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप। ४. वह जो किसी देवता का रूप धारण किए हो।
वि० १. खूबसूरत। २. तुल्य। समान।
अव्य० रूप में। तौर पर।
संज्ञा पुं० दे० "सारूप्य"।

स्वरूपज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो परमात्मा और आत्मा का स्वरूप पहचानता हो। तत्वज्ञ।

स्वरूपमान०–संज्ञा पुं० दे० "स्वरूपवान्"।

स्वरूपवान्–वि० [सं० स्वरूपवत्] [स्त्री० स्वरूपवती] जिसका स्वरूप अच्छा हो। सुंदर। खूबसूरत।

स्वरूपी–वि० [सं० स्वरूपिन्] १. स्वरूपवाला। स्वरूपयुक्त। २. जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो।
० संज्ञा पुं० दे० "सारूप्य"।

स्वरोचिस्–संज्ञा पुं० [सं०] स्वारोचिष् मनु के पिता जो कलि नामक गंधर्व के पुत्र थे।

स्वरोद–संज्ञा पुं० [सं० स्वरोदय] एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते हैं।
–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं।

स्वर्गंगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मंदाकिनी।

स्वर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंदुओं के सात लोकों में से तीसरा लोक। कहा गया है कि जो लोग पुण्य और सत्कर्म करके मरते हैं, उनकी आत्माएँ इसी लोक में जाकर निवास करती हैं। नाक। देवलोक।
मुहा०—स्वर्ग के पंथ पर पैर देना = १. मरना। २. जान जोखिम में डालना। स्वर्ग जाना या सिधारना = मरना। देहांत होना।
यौ०—स्वर्ग-सुख = बहुत अधिक और उच्च कोटि का सुख। स्वर्ग की धार = आकाश गंगा।
२. ईश्वर। ३. सुख। ४. वह स्थान जहाँ स्वर्ग का सा सुख मिले। ५. आकाश।

स्वर्गगमन–संज्ञा पुं० [सं०] मरना।

स्वर्गगामी–वि० [सं० स्वर्गगामिन्] १. स्वर्ग जानेवाला। २. मरा हुआ। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गतरु–संज्ञा पुं० [सं०] कल्पतरु वृक्ष।

स्वर्गद–वि० [सं०] स्वर्ग देनेवाला।

स्वर्गनदी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ग + नदी] आकाशगंगा।

स्वर्गपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अमरावती।

स्वर्गलोक–संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

स्वर्गवधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्गवाणी–संज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवाणी"।

स्वर्गवास–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग को प्रस्थान करना। मरना।

स्वर्गवासी–वि० [सं० स्वर्गवासिन्] [स्त्री० स्वर्गवासिनी] १. स्वर्ग में रहनेवाला। २. जो मर गया हो। मृत।

स्वर्गारोहण–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग की ओर जाना। २. स्वर्ग सिधारना। मरना।

स्वर्गीय–वि० [सं०] [स्त्री० स्वर्गीया] १. स्वर्ग-संबंधी। स्वर्ग का। २. जो मर गया हो। मृत।

स्वर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु। २. धतूरा।

स्वर्णकमल–संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

स्वर्णकार–संज्ञा पुं० [सं०] सुनार।

स्वर्णगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

स्वर्णपर्पटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रसिद्ध औषध जो संग्रहणी के लिये बहुत गुणकारी मानी जाती है।

स्वर्णमय-वि० [सं०] जो बिलकुल सोने का हो।
स्वर्णमाक्षिक-संज्ञा पुं० दे० "सोनामक्खी"।
स्वर्णमुद्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] अशरफ़ी।
स्वर्णयूथिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जूही।
स्वर्धुनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।
स्वर्नगरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] अमरावती।
स्वर्नदी-संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्गंगा।
स्वर्लोक-संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।
स्ववेश्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।
स्ववैद्य-संज्ञा पुं० [सं०] अश्विनी-कुमार।
स्वल्प-वि० [सं०] बहुत थोड़ा।
स्ववरन-संज्ञा पुं० दे० "सुवर्ण"।
स्वसा-संज्ञा स्त्री० [सं० स्वसृ] बहिन।
स्वस्ति-अव्य० [सं०] कल्याण हो। मंगल हो। (आशीर्वाद)
संज्ञा स्त्री० १. कल्याण। मंगल। २. ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक। ३. सुख।
स्वस्तिक-संज्ञा पुं० [सं०] १. हठ योग में एक प्रकार का आसन। २ चावल पीसकर और पानी में मिलाकर बनाया हुआ एक मंगल द्रव्य जिसमें देवताओं का निवास माना जाता है। ३. प्राचीन काल का एक मंगल चिह्न जो शुभ अवसरों पर मांगलिक द्रव्यों से अंकित किया जाता था। आज-कल इसका मुख्य आकार यह प्रचलित है 卐। ४. शरीर के विशिष्ट अंगों में होनेवाला उक्त आकार का एक चिह्न। (शुभ)
स्वस्तिवाचन-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वस्तिवाचक] कर्मकांड के अनुसार मंगल कार्यों के आरंभ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें पूजन और मंगल-सूचक मंत्रों का पाठ किया जाता है।
स्वस्त्ययन-संज्ञा पुं० [सं०] एक धार्मिक कृत्य जो किसी विशिष्ट कार्य में शुभ की स्थापना के विचार से किया जाता है।
स्वस्थ-वि० [सं०] [संज्ञा स्वस्थता] १. नीरोग। तंदुरुस्त। भला। चंगा। २ जिसका चित्त ठिकाने हो। सावधान।
स्वहाना*-क्रि० अ० दे० "सोहाना"।
स्वांग-संज्ञा पुं० [सं० सु+अंग] १. बनावटी वेष जो दूसरे का रूप बनने के लिये धारण किया जाय। भेस। रूप। २. मज़ाक़ का खेल या तमाशा। नकल। ३. धोखा देने को बनाया हुआ कोई रूप।
स्वांगना*-क्रि० स० [हिं० स्वाँग] स्वाँग बनाना। बनावटी वेष धारण करना।
स्वाँगी-संज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] १. वह जो स्वाँग सजकर जीविका उपार्जन करता हो। २. अनेक रूप धारण करनेवाला। बहुरूपिया। वि० रूप धारण करनेवाला।
स्वांत-संज्ञा पुं० [सं०] अंतःकरण। मन।
स्वाँस-संज्ञा स्त्री० दे० "साँस"।
स्वाँसा-संज्ञा पुं० दे० "साँस"।
स्वाक्षर-संज्ञा पुं० [सं०] हस्ताक्षर। दस्तख़त।
स्वाक्षरित-वि० [सं०] अपने हस्ताक्षर से युक्त। अपना दस्तख़त किया हुआ।
स्वागत-संज्ञा पुं० [सं०] अतिथि आदि के पधारने पर उसका सादर अभिनंदन करना। अगवानी। अभ्यर्थना। पेशवाई।
स्वागतकारिणी सभा-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह सभा जो किसी विराट् सभा या सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों के स्वागत आदि की व्यवस्था करने के लिये संघटित हो।
स्वागतपतिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न हो। आगत-पतिका।
स्वागतप्रिया-संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो।
स्वागता-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (र, न, भ, ग, ग) ऽ।ऽ+ ।।।+ ऽ।।+ऽऽ होता है।
स्वातंत्र्य-संज्ञा पुं० दे० "स्वतंत्रता"।
स्वात-संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
स्वाति-संज्ञा स्त्री० [सं०] पंद्रहवाँ नक्षत्र जो फलित में शुभ माना गया है।
स्वातिपंथ-संज्ञा पुं० [सं० स्वाति+पंथ] आकाश-गंगा।
स्वातिसुत-संज्ञा पुं० [सं०] मोती। मुक्ता।
स्वातिसुवन-संज्ञा पुं० दे० "स्वातिसुत"।
स्वाती-संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
स्वाद-संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ के खाने या पीने से रसनेंद्रिय को होनेवाला अनुभव। ज़ायक़ा। २. रसानुभूति। आनंद। मुहा०—स्वाद चखाना = किसी को उसके किए हुए अपराध का दंड देना।

स्वरशास्त्र–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें स्वर संबंधी बातों का विवेचन हो। स्वर विज्ञान।

स्वरस–संज्ञा पुं० [सं०] पत्ती आदि को कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस।

स्वरांत–वि० [सं०] (शब्द) जिसके अंत में कोई स्वर हो। जैसे—माला, टोपी।

स्वराज्य–संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी स्वयं ही अपने देश का सब प्रबंध करते हों। अपना राज्य।

स्वराट्–संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २ ईश्वर। ३. वह राजा जो किसी ऐसे राज्य का स्वामी हो जिसमें स्वराज्य शासन-प्रणाली प्रचलित हो।
वि० जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।

स्वरित–संज्ञा पुं० [सं०] वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत ज़ोर से हो और न बहुत धीरे से हो।
वि० १. स्वर से युक्त। २. गूँजता हुआ।

स्वरूप–संज्ञा पुं० [सं०] १ आकार। आकृति। शक्ल। २. मूर्त्ति या चित्र आदि। ३. देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप। ४. वह जो किसी देवता का रूप धारण किए हो।
वि० १ ख़ूबसूरत। २. तुल्य। समान।
अव्य० रूप में। तौर पर।
संज्ञा पुं० दे० "सारूप्य"।

स्वरूपज्ञ–संज्ञा पुं० [सं०] वह जो परमात्मा और आत्मा का स्वरूप पहचानता हो। तत्त्वज्ञ।

स्वरूपमान०–संज्ञा पुं० दे० "स्वरूपवान्"।

स्वरूपवान्–वि० [सं० स्वरूपवत्] [स्त्री० स्वरूपवती] जिसका स्वरूप अच्छा हो। सुंदर। ख़ूबसूरत।

स्वरूपी–वि० [सं० स्वरूपिन्] १. स्वरूपवाला। स्वरूपयुक्त। २. जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो।
० संज्ञा पुं० दे० "सारूप्य"।

स्वरोचिस्–संज्ञा पुं० [सं०] स्वारोचिष् मनु के पिता जो कलि नामक गंधर्व के पुत्र थे।

स्वरोद–संज्ञा पुं० [सं० स्वरोदय] एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते हैं।

स्वरोदय–संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं।

स्वर्गंगा–संज्ञा स्त्री० [सं०] मंदाकिनी।

स्वर्ग–संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंदुओं के सात लोकों में से तीसरा लोक। कहा गया है कि जो लोग पुण्य और सत्कर्म करके मरते हैं, उनकी आत्माएँ इसी लोक में जाकर निवास करती हैं। नाक। देवलोक।
मुहा०—स्वर्ग के पंथ पर पैर देना = १ मरना। २ जान जोखिम में डालना। स्वर्ग जाना या सिधारना = मरना। देहांत होना।
यौ०—स्वर्ग सुख=बहुत अधिक और उच्च कोटि का सुख। स्वर्ग की धार = आकाश गंगा।
२. ईश्वर। ३ सुख। ४ वह स्थान जहाँ स्वर्ग का सा सुख मिले। ५. आकाश।

स्वर्गगमन–संज्ञा पुं० [सं०] मरना।

स्वर्गगामी–वि० [सं० स्वर्गगामिन्] १ स्वर्ग जानेवाला। २ मरा हुआ। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गतरु–संज्ञा पुं० [सं०] कल्पतरु वृक्ष।

स्वर्गद–वि० [सं०] स्वर्ग देनेवाला।

स्वर्गनदी–संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ग+नदी] आकाशगंगा।

स्वर्गपुरी–संज्ञा स्त्री० [सं०] अमरावती।

स्वर्गलोक–संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

स्वर्गवधू–संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्गवाणी–संज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवाणी"

स्वर्गवास–संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग को प्रस्थान करना। मरना।

स्वर्गवासी–वि० [सं० स्वर्गवासिन्] [स्त्री० स्वर्गवासिनी] १ स्वर्ग में रहनेवाला। २ जो मर गया हो। मृत।

स्वर्गारोहण–संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग की ओर जाना। २. स्वर्ग सिधारना। मरना।

स्वर्गीय–वि० [सं०] [स्त्री० स्वर्गीया] १. स्वर्ग संबंधी। स्वर्ग का। २. जो मर गया हो। मृत।

स्वर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु। २. धतूरा।

स्वर्णकमल–संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

स्वर्णकार–संज्ञा पुं० [सं०] सुनार।

स्वर्णगिरि–संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

स्वर्णपर्पटी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रसिद्ध औषध जो संग्रहणी के लिये बहुत गुणकारी मानी जाती है।

. ३. चाह। इच्छा। कामना।
स्वादक-संज्ञा पुं० [सं० स्वाद] वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर चखता है। स्वादु-विवेकी।
स्वादन-संज्ञा पुं० [सं०] १. चखना। स्वाद लेना। २ मज़ा लेना। आनंद लेना।
स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ-वि० [सं० स्वादिष्ठ] जिसका स्वाद अच्छा हो। जायकेदार। सुस्वादु।
स्वादी-वि० [सं० स्वादिन्] १. स्वाद चखनेवाला। २. मज़ा लेनेवाला। रसिक।
स्वादीला†-वि० दे० "स्वादिष्ठ"।
स्वादु-संज्ञा पुं० [सं०] १. मीठा रस। मधुरता। २. गुड़। ३. दूध। दुग्ध। वि० १. मीठा। मधुर। मिष्ट। २. ज़ायकेदार। स्वादिष्ट। ३. सुंदर।
स्वाद्य-वि० [सं०] स्वाद लेने योग्य।
स्वाधीन-वि० [सं०] १. जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र। आज़ाद। २. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। संज्ञा पुं० समर्पण। हवाला। सपुर्द।
स्वाधीनता-संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वाधीन होने का भाव। स्वतंत्रता। आज़ादी।
स्वाधीनपतिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो।
स्वाधीनभर्तृका-संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाधीनपतिका"।
स्वाधीनी-संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाधीनता"।
स्वाध्याय-संज्ञा पुं० [सं०] १. वेदों का निरंतर और नियमपूर्वक अभ्यास करना। वेदाध्ययन। २. अनुशीलन। अध्ययन। ३. वेद।
स्वान-संज्ञा पुं० दे० "श्वान"।
स्वाना†-क्रि० स० दे० "सुलाना"।
स्वापन-संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किए जाते थे। वि० नींद लानेवाला। निद्राकारक।
स्वाभाविक-वि० [सं०] १. जो आप ही आप हो। २. स्वभावसिद्ध। प्राकृतिक। नैसर्गिक। कुदरती।
स्वाभाविकी-वि० दे० "स्वाभाविक"।
स्वामिः-संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।
स्वामिकार्त्तिक-संज्ञा पुं० [सं०] शिव के पुत्र कार्त्तिकेय। स्कंद।
स्वामिता-संज्ञा स्त्री० दे० "स्वामित्व"।
स्वामित्व-संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी होने का भाव। प्रभुत्व। मालिकपन।
स्वामिन-संज्ञा स्त्री० दे० "स्वामिनी"।
स्वामिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मालकिन। स्वत्वाधिकारिणी। २. घर की मालकिन। गृहिणी। ३. श्रीराधिका।
स्वामी-संज्ञा पुं० [सं० स्वामिन्] [स्त्री० स्वामिनी] १ मालिक। प्रभु। अन्नदाता। २. घर का प्रधान पुरुष। ३. स्वत्वाधिकारी। मालिक। ४. पति। शौहर। ५. भगवान्। ६. राजा। नरपति। ७. कार्त्तिकेय। ८. साधु, संन्यासी और धर्माचार्यों की उपाधि।
स्वायंभुव-संज्ञा पुं० [सं०] चौदह मनुओं में से पहले मनु जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।
स्वायंभू-संज्ञा पुं० दे० "स्वायंभुव"।
स्वायत्त-वि० [सं०] जो अपने अधीन हो। जिस पर अपना ही अधिकार हो।
स्वायत्त शासन-संज्ञा पुं० [सं०] वह शासन जो अपने अधिकार में हो। स्थानिक स्वराज्य।
स्वारथः†-संज्ञा पुं० दे० "स्वार्थ"। वि० [सं० सार्थ] सफल। सिद्ध। सार्थक।
स्वारथी-वि० दे० "स्वार्थी"।
स्वारस्य-वि० [सं०] १. सरसता। रसीलापन। २ स्वाभाविकता।
स्वाराज्य-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वाधीन राज्य। २ स्वर्ग का राज्य। स्वर्गलोक।
स्वारीः†-संज्ञा स्त्री० दे० "सवारी"।
स्वारोचिष-संज्ञा पुं० [सं०] (स्वरोचिष के पुत्र) दूसरे मनु का नाम।
स्वार्थ-संज्ञा पुं० [सं०] १. अपना उद्देश्य या मतलब। २. अपना लाभ। अपनी भलाई। अपना हित।
मुहा०—(किसी बात में) स्वार्थ लेना = दिलचस्पी लेना। अनुराग रखना। (आधुनिक) वि० [सं० सार्थक] सार्थक। सफल।
स्वार्थता-संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वार्थ का भाव या धर्म। ख़ुदग़र्ज़ी।
स्वार्थत्याग-संज्ञा पुं० [सं०] किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना।

[स्वार्थत्यागी–वि० [सं० स्वार्थत्यागिन्] दूसरे के भले के लिये अपने लाभ का विचार न रखनेवाला।

स्वार्थपर–वि० [सं०] स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थपरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वार्थपर होने का भाव। खुदगरजी।

स्वार्थपरायण–वि० [सं०] [संज्ञा स्वार्थ परायणता] स्वार्थपर। स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थसाधन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्वार्थसाधक] अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम निकालना।

स्वार्थांध–वि० [सं०] जो अपने स्वार्थ के वश होकर अंधा हो जाता हो।

स्वार्थी–वि० [सं० स्वार्थिन्] अपना ही मतलब देखनेवाला। मतलबी। खुदगरज।

स्वाल*–संज्ञा पुं० दे० "सवाल"।

स्वास*–संज्ञा पुं० [सं० श्वास] साँस। श्वास।

स्वासा–संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] साँस। श्वास।

स्वास्थ्य–संज्ञा पुं० [सं०] नीरोग या स्वस्थ होने की अवस्था। आरोग्य। तंदुरुस्ती।

स्वास्थ्यकर–वि० [सं०] तंदुरुस्त करनेवाला। आरोग्यवर्द्धक।

स्वाहा–अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय किया जाता है।

मुहा०—स्वाहा करना = नष्ट करना।

संज्ञा स्त्री० अग्नि की पत्नी का नाम।

स्वीकरण–संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनाना। अंगीकार करना। २. मानना। राजी होना।

स्वीकारोक्ति–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह बयान जिसमें अभियुक्त अपना अपराध स्वयं ही स्वीकृत कर ले।

स्वीकार–संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनाने की क्रिया। अंगीकार। कबूल। २. लेना।

स्वीकार्य–वि० [सं०] स्वीकार करने या मानने के योग्य।

स्वीकृत–वि० [सं०] स्वीकार किया हुआ। माना हुआ। मंजूर।

स्वीकृति–संज्ञा स्त्री०[सं०] स्वीकार का भाव। मंजूरी। सम्मति। रजामंदी।

स्वीय–वि० [सं०] अपना। निज का। संज्ञा पुं० स्वजन। आत्मीय। संबंधी।

स्वे*–वि० दे० "स्व"।

स्वेच्छा–संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा।

स्वेच्छाचार–संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० स्वेच्छाचारिता] जो जी में आवे, वही करना। यथेच्छाचार।

स्वेच्छाचारी–वि० [सं०स्वेच्छाचारिन्] [स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। अबाध्य।

स्वेच्छासेवक–संज्ञा पुं० दे० "स्वयंसेवक"।

स्वेत*–वि० दे० "श्वेत"।

स्वेद–संज्ञा पुं० [सं०] १. पसीना। प्रस्वेद। २. भाप। वाष्प। ३. ताप। गरमी।

स्वेदक–वि० [सं०] पसीना लानेवाला।

स्वेदज–वि० [सं०] पसीने से उत्पन्न होनेवाला। (जूँ, खटमल, मच्छर आदि)

स्वेदन–संज्ञा पुं० [सं०] पसीना निकलना।

स्वेदित–वि० [सं०] १ पसीने से युक्त। २. भपारा दिया हुआ। सेंका हुआ।

स्वै*–वि० [सं० स्वीय] अपना। निज का। सर्व० दे० "सो"।

स्वैर–वि० [सं०] १. मनमाना काम करनेवाला। स्वच्छंद। स्वतंत्र। २. धीमा। मंद। ३. यथेच्छ। मनमाना।

स्वैरचारी–वि० [सं० स्वैरचारिन्] [स्त्री० स्वैरचारिणी] १. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। २. व्यभिचारी।

स्वैरता–संज्ञा स्त्री० [सं०] यथेच्छाचारिता।

स्वैरिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी स्त्री।

स्वैरिता–संज्ञा स्त्री० दे० 'स्वैरता"।

स्वोपार्जित–वि० [सं०] अपना उपार्जन किया या कमाया हुआ।

हँसता-मुखी–संज्ञा पुं० [हिं० हँसना + मुख] हँसते चेहरेवाला। प्रसन्नमुख।

हँसन–संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] हँसने की क्रिया, भाव या ढंग।

हँसना–क्रि० अ० [सं० हसन] १. ख़ुशी के मारे मुँह फैलाकर एक तरह की आवाज़ करना। खिलखिलाना। हास करना। क़हक़हा लगाना।

यौ०—हँसना बोलना = आनंद की बातचीत करना। हँसना खेलना = आनंद करना।

मुहा०—किसी पर हँसना = विनोद की बात कहकर तुच्छ या मूर्ख ठहराना। उपहास करना। हँसते हँसते = प्रसन्नता से। ख़ुशी से। ठठाकर हँसना = ज़ोर से हँसना। अट्टहास करना। बात हँसकर उड़ाना = तुच्छ या साधारण समझकर विनोद में टाल देना।

२. रमणीय लगना। गुलज़ार या रौनक़ होना। ३. दिल्लगी करना। हँसी करना। ४. प्रसन्न या ख़ुश होना। ख़ुशी मनाना। क्रि० स० किसी का उपहास करना। अनादर करना। हँसी उड़ाना।

हँसनि†–संज्ञा स्त्री० दे० "हँसन"।

हंसनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

हंसपदी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता।

हँसमुख–वि० [हिं० हँसना + मुख] १. प्रसन्नवदन। जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट होती हो। विनोदशील। हास्यप्रिय।

हंसराज–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की पहाड़ी बूटी। समलपत्ती। २. एक प्रकार का अगहनी धान।

हँसली–संज्ञा स्त्री० [सं० अंसली] १. गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी। २. गले में पहनने का स्त्रियों का एक मंडलाकार गहना।

हंसवंश–संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य वंश।

हंसवाहन–संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

हंसवाहिनी–संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

हंससुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

हंसाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १. हँसने की क्रिया या भाव। २. निंदा। बदनामी।

हँसाना–क्रि० स० [हिं० हँसना] दूसरे को हँसने में प्रवृत्त करना।

हसाय†–संज्ञा स्त्री० दे० "हँसाई"।

हंसालि–संज्ञा स्त्री० [सं०] ३७ मात्राओं का एक छंद।

हंसिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

हँसिया–संज्ञा स्त्री० [देश०] एक औज़ार जिससे खेत की फ़सल या तरकारी आदि काटी जाती है।

हंसी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंस की मादा। २. बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

हँसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १. हँसने की क्रिया या भाव। हास।

यौ०—हँसी ख़ुशी = प्रसन्नता। हँसी ठट्ठा = आनंद-क्रीड़ा। मज़ाक़।

मुहा०—हँसी छूटना = हँसी आना।

२. मज़ाक़। दिल्लगी। विनोद।

यौ०—हँसी खेल = १. विनोद और क्रीड़ा। २. साधारण या सहज बात।

मुहा०—हँसी समझना या हँसी-खेल समझना = साधारण बात समझना। आसान बात समझना। हँसी में उड़ाना = परिहास की बात कहकर टाल देना। हँसी में ले जाना = किसी बात को मज़ाक़ समझना।

३. अनादर-सूचक हास। उपहास।

मुहा०—हँसी उड़ाना = व्यंगपूर्ण निंदा करना। उपहास करना।

४. लोक-निंदा। बदनामी। अनादर।

हँसुआ, हँसुवा†–संज्ञा पुं० दे० "हँसिया"।

हँसोड़–वि० [हिं० हँसना + ओड़ (प्रत्य०)] हँसी-ठट्ठा करनेवाला। दिल्लगीबाज़। मसख़रा।

हँसोर*–वि० दे० "हँसोड़"।

हँसौहाँ*–वि० [हिं० हँसना] [स्त्री० हँसौहीं] १. ईषद् हासयुक्त। कुछ हँसी लिए। २. हँसने का स्वभाव रखनेवाला। ३. दिल्लगी का। मज़ाक़ से भरा।

ह–संज्ञा पुं० [सं०] १. हास। हँसी। २. शिव। महादेव। ३. जल। पानी। ४. शून्य। सिफ़र। ५. शुभ। मंगल। ६. आकाश। ७. ज्ञान। ८. घोड़ा। अश्व।

हई–संज्ञा पुं० [सं० हयिद्] घुड़सवार। संज्ञा स्त्री० [हिं० ह !] आश्चर्य।

हउँ*–क्रि० अ० सर्व० दे० "हौं"।

हक़–वि० [अ०] १. सच। सत्य। २. वाजिब। ठीक। उचित। न्याय्य।

ह–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यंजन जो उच्चारण विभाग के अनुसार ऊष्म वर्ण कहलाता है।

हँक–संज्ञा स्त्री० दे० "हाँक"।

हँकड़ना–क्रि० अ० [हिं० हाँक] दर्प के साथ बोलना। ललकारना।

हकरना–क्रि० अ० दे० "हँकड़ना"।

हँकारना†–क्रि० स० [हिं० हाँक] १. हाँक देकर बुलाना। २. बुलाना। पुकारना। ३. पुकारने का काम दूसरे से कराना। बुलवाना।

हँकवा–संज्ञा पुं० [हिं० हाँक] शेर के शिकार का एक ढंग जिसमें बहुत से लोग शेर को हाँककर शिकारी की ओर ले जाते हैं।

हँकवाना–क्रि० स० [हिं० हाँकना का प्रे०] १. हाँक लगवाना। बुलवाना। २. हाँकने का काम दूसरे से कराना।

हँकवैया†–संज्ञा पुं० [हिं० हाँकना + वैया (प्रत्य०)] हाँकनेवाला।

हुंका–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँक] ललकार।

हँकाई–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँकना] हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

हकाना–क्रि० स० [हिं० हाँक] १. दे० "हाँकना"। २. पुकारना। बुलाना। ३. हँकवाना।

हँकार–संज्ञा स्त्री० [सं० हक्कार] १. आवाज़ लगाकर बुलाना। पुकार। २. वह ऊँचा शब्द जो किसी को बुलाने या संबोधन करने के लिये किया जाय। पुकार।

मुहा०—हँकार पड़ना = बुलाने के लिये आवाज लगना।

हंकार†–संज्ञा पुं० दे० "अहंकार"।
संज्ञा पुं० [सं० हुंकार] ललकार। दपट।

हँकारना–क्रि० स० [हिं० हँकार] १. ज़ोर से पुकारना। टेरना। २. बुलाना। पुकारना। ३. युद्ध के लिये आह्वान करना। ललकारना।

हुंकारना–क्रि० अ० [हिं० हुंकार] हुंकार शब्द करना। दपटना।

हँकारा–संज्ञा पुं० [हिं० हँकारना] १. पुकार। २. निमंत्रण। बुलौवा। न्योता।

हँकारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हँकार] १. वह जो लोगों को बुलाकर लाता हो। २. दूत।

हंगामा–संज्ञा पुं० [फा० हंगामः] १. उपद्रव। दंगा। लड़ाई-झगड़ा। २. शोरगुल। कलकल। हल्ला।

हंडना–क्रि० अ० [सं० अभ्यटन] १. घूमना फिरना। २. व्यर्थ इधर उधर फिरना। ३. इधर उधर ढूँढ़ना। ३. वस्त्र आदि का पहना या ओढ़ा जाना।

हंडा–संज्ञा पुं० [सं० भाण्ड] पीतल या ताँबे का बहुत बड़ा बरतन जिसमें पानी रखते हैं।

हँडाना–क्रि० स० [हिं० हँटना] १. घुमाना। फिराना। २. काम में लाना।

हँडिया–संज्ञा स्त्री० [सं० भांडिका] १. बड़े लोटे के आकार का मिट्टी का बरतन। हाँडी। २. इस प्रकार का शीशे का पात्र जो शोभा के लिये लटकाया जाता है।

हंडी–संज्ञा स्त्री० दे० "हँड़िया", "हाँडी"।

हंत–अव्य० [सं०] खेद या शोकसूचक शब्द।

हंता–संज्ञा पुं० [सं० हंतृ] [स्त्री० हंत्री] मारनेवाला। वध करनेवाला।

हँफनि–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव।

मुहा०—हँफनि मिटाना = सुस्ताना।

हंस–संज्ञा पुं० [सं०] १. बत्तख के आकार का एक जलपक्षी जो बड़ी बड़ी झीलों में रहता है। २. सूर्य। ३. ब्रह्म। परमात्मा। ४. माया से निर्लिप्त आत्मा। ५. जीवात्मा। जीव। ६ विष्णु। ७. संन्यासियों का एक भेद। ८. प्राणवायु। ९. घोड़ा। १०. शिव। महादेव। ११. दोहे के नवें भेद का नाम जिसमें १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं। (पिंगल) १२. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और दो गुरु होते हैं। पंक्ति।

हंसक–संज्ञा पुं० [सं०] १.हंस पक्षी। २. पै[illegible] की उँगलियों में पहनने का बिछुआ।

हंसगति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंस के समान सुंदर धीमी चाल। २. सायुज्य मुक्ति ३ बीस मात्राओं का एक छंद।

हंसगामिनी–वि० स्त्री० [सं०] हंस समान सुंदर मंद गति से चलनेवाली।

हँसता-मुखी-संज्ञा पुं० [हिं० हँसना + मुख] हँसते चेहरेवाला। प्रसन्नमुख।

हँसन-संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] हँसने की क्रिया, भाव या ढंग।

हँसना-क्रि० अ० [सं० हसन] १. खुशी के मारे मुँह फैलाकर एक तरह की आवाज़ करना। खिलखिलाना। हास करना। कहकहा लगाना।

यौ०—हँसना बोलना = आनंद की बात-चीत करना। हँसना खेलना = आनंद करना।

मुहा०—किसी पर हँसना = विनोद की बात कहकर तुच्छ या मूर्ख ठहराना। उपहास करना। हँसते हँसते = प्रसन्नता से। खुशी से। ठठाकर हँसना = ज़ोर से हँसना। अट्टहास करना। बात हँसकर उड़ाना = तुच्छ या साधारण समझकर विनोद में टाल देना।

२. रमणीय लगना। गुलज़ार या रौनक होना। ३. दिल्लगी करना। हँसी करना। ४. प्रसन्न या खुश होना। खुशी मनाना। क्रि० स० किसी का उपहास करना। अनादर करना। हँसी उड़ाना।

हँसनि:†-संज्ञा स्त्री० दे० "हँसन"।

हँसनी-संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

हंसपदी-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता।

हँसमुख-वि० [हिं० हँसना + मुख] १. प्रसन्नवदन। जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट होती हो। विनोदशील। हास्यप्रिय।

हंसराज-संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की पहाड़ी बूटी। समलपत्ती। २. एक प्रकार का अगहनी धान।

हँसली-संज्ञा स्त्री० [सं० अंसली] १. गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी। २. गले में पहनने का स्त्रियों का एक मंडलाकार गहना।

हंसवंश-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य वंश।

हंसवाहन-संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

हंसवाहिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

हंससुता-संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

हंसाई-संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १. हँसने की क्रिया या भाव। २. निंदा। बदनामी।

हँसाना-क्रि० स० [हिं० हँसना] दूसरे को हँसने में प्रवृत्त करना।

हसाय०†-संज्ञा स्त्री० दे० "हँसाई"।

हंसालि-संज्ञा स्त्री० [सं०] ३७ मात्राओं का एक छंद।

हंसिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

हँसिया-संज्ञा स्त्री० [देश०] एक औज़ार जिससे खेत की फ़सल या तरकारी आदि काटी जाती है।

हंसी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंस की मादा। २. बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

हँसी-संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १. हँसने की क्रिया या भाव। हास।

यौ०—हँसी खुशी = प्रसन्नता। हँसी ठट्ठा = आनंद-क्रीड़ा। मज़ाक।

मुहा०—हँसी छूटना = हँसी आना।

२. मज़ाक। दिल्लगी। विनोद।

यौ०—हँसी खेल = १. विनोद और क्रीड़ा। २. साधारण या सहज बात।

मुहा०—हँसी समझना या हँसी-खेल समझना = साधारण बात समझना। आसान बात समझना। हँसी में उड़ाना = परिहास की बात कहकर टाल देना। हँसी में ले जाना = किसी बात को मज़ाक समझना।

३. अनादर-सूचक हास। उपहास।

मुहा०—हँसी उड़ाना = व्यंगपूर्ण निंदा करना। उपहास करना।

४. लोक-निंदा। बदनामी। अनादर।

हँसुआ, हँसुवा†-संज्ञा पुं० दे० "हँसिया"।

हँसोड़-वि० [हिं० हँसना + ओड़ (प्रत्य०)] हँसी-ठट्ठा करनेवाला। दिल्लगीबाज़। मसख़रा।

हँसोर*-वि० दे० "हँसोड़"।

हँसौहाँ:-वि० [हिं० हँसना] [स्त्री० हँसौहीं] १. ईषद् हासयुक्त। कुछ हँसी लिए। २. हँसने का स्वभाव रखनेवाला। ३. दिल्लगी का। मज़ाक से भरा।

ह-संज्ञा पुं० [सं०] १. हास। हँसी। २. शिव। महादेव। ३. जल। पानी। ४. शून्य। सिफ़र। ५. शुभ। मंगल। ६. आकाश। ७. ज्ञान। ८. घोड़ा। अश्व।

हई -संज्ञा पुं० [सं० हयिन्] घुड़सवार। संज्ञा स्त्री० [हिं० ह !] आश्चर्य।

हउँ:-क्रि० अ० सर्व० दे० "हौं"।

हक्-वि० [अ०] १. सच। सत्य। २. वाजिब। ठीक।

संज्ञा पु० १. किसी वस्तु को अपने कब्जे में रखने, काम में लाने या लेने का अधिकार। स्वत्व। २. कोई काम करने या किसी से कराने का अधिकार। इख्तियार।
मुहा०—हक में-विषय में। पक्ष में।
३. कर्त्तव्य। फ़र्ज़।
मुहा०—हक अदा करना=कर्त्तव्य पालन करना।
४. वह वस्तु जिसे पाने, पास रखने या काम में लाने का न्याय से अधिकार प्राप्त हो। ५. किसी मामले में दस्तूर के मुताबिक मिलनेवाली कुछ रकम। दस्तूरी। ६ ठीक या वाजिब बात। ७ उचित पक्ष। न्याय्य पक्ष।
मुहा०—हक़ पर होना=उचित बात का आग्रह करना।
८ ख़ुदा। ईश्वर। (मुसलमान)
हक़दार-संज्ञा पु० [अ० हक + फा० दार] स्वत्व या अधिकार रखनेवाला।
हक नाहक़-अव्य० [अ० + फा०] १ जबरदस्ती। धींगा धींगी से। २. विना कारण या प्रयोजन। व्यर्थ। फजूल।
हकबकाना-क्रि० अ० [अनु० हका बका] हका बका हो जाना। घबरा जाना।
हकला-वि० [हि० हकलाना] रुकरुक कर बोलनेवाला। हकलानेवाला।
हकलाना-क्रि० अ० [अनु० हक] बोलने में अटकना। रुक रुककर बोलना।
हक सफा-संज्ञा पु० [अ०] किसी जमीन को खरीदने का औरों से ऊपर या अधिक वह हक जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को प्राप्त होता है।
हक़ीक़त-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तत्त्व। सचाई। असलियत। २ तथ्य। ठीक बात। ३. असल हाल। सत्य वृत्त।
मुहा०—हकीक़त में=वास्तव में। सचमुच। हक़ीक़त खुलना=असल बात का पता लगना।
हकीम-संज्ञा पु०[अ०]१ विद्वान्। आचार्य्य। २. यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला। वैद्य। चिकित्सक।
हकीमी-संज्ञा स्त्री० [अ० हकीम + ई (प्रत्य०)] १. यूनानी चिकित्सा शास्त्र। २. हकीम का पेशा या काम।
हकूमत‡-संज्ञा स्त्री० दे० "हुकूमत"।
हक्काक-संज्ञा पु० [?] नग को काटने, सान पर चढ़ाने, जड़ने आदि का काम करनेवाला।
हक्का बक्का-वि० [अनु० हक, बक] भौचक। घबराया हुआ। ठक।
हगना-क्रि० अ० [सं० भग ?] १. मल त्याग करना। झाड़ा फिरना। पाखाना फिरना। २. झख मारकर अदा कर देना।
हगाना-क्रि० स० [हिं० हगना] हगने की क्रिया कराना।
हगास-संज्ञा स्त्री० [हिं० हगना + आस(प्रत्य०)] मलत्याग का वेग या इच्छा।
हचकोला-संज्ञा पुं० [हिं० हचकना] वह धक्का जो गाड़ी, चारपाई आदि पर हिलने-डोलने से लगे। धचका।
हचनाना‡-क्रि० अ० दे० "हिचकना"।
हज-संज्ञा पु० [अ०] मुसलमानों का काबे के दर्शन के लिये मक्के जाना।
हज़म-संज्ञा पुं० [अ०] पेट में पचने की क्रिया या भाव। पाचन।
वि० १ पेट में पचा हुआ। २. बेईमानी या अनुचित रीति से अधिकार किया हुआ।
हज़रत-संज्ञा पुं० [अ०] १ महात्मा। महापुरुष। २. महाशय। ३ नटखट या खोटा आदमी। (व्यंग्य)
हजामत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हज्जाम का काम। बाल बनाने का काम। क्षौर। २. बाल बनाने की मजदूरी। ३ सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल जिन्हें कटाना या मुड़ाना हो।
मुहा०—हजामत बनाना=१ दाढ़ी या सिर के बाल साफ करना या काटना। २ लूटना। धन हरण करना। ३. मारना पीटना।
हजार-वि० [फा०] १. जो गिनती में दस सौ हो। सहस्र। २. बहुत से। अनेक। संज्ञा पु० दस सौ की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०००।
क्रि० वि० कितना ही। चाहे जितना अधिक।
हज़ारा-वि० [फा०] (फूल) जिसमें हजार या बहुत अधिक पखड़ियाँ हों। सहस्रदल। संज्ञा पु० फुहारा। फौवारा।
हज़ारी-संज्ञा पु० [फा०] १. एक हज़ार सिपाहियों का सरदार। २. दोगला। वर्ण संकर।
हज़ूर-संज्ञा पु० दे० "हुज़ूर"।

हजूरी–संज्ञा पुं० [अ० हजूर] [स्त्री० हजूरी] बादशाह या राजा के सदा पास रहनेवाला सेवक।
हजो–संज्ञा स्त्री० [अ० हज्व] निंदा। बुराई।
हज्ज–संज्ञा पुं० दे० "हज"।
हज्जाम–संज्ञा पुं० [अ०] हजामत बनानेवाला। नाई। नापित।
हटक†–संज्ञा स्त्री० [हिं० हटकना] १. वारण। वर्जन।
मुहा०—हटक मानना = मना करने पर किसी काम से रुकना।
२. गायों को हाँकने की क्रिया या भाव।
हटकन–संज्ञा स्त्री० [हिं० हटकना] १. दे० "हटक"। २. चौपायों को हाँकने की छड़ी या लाठी।
हटकना–क्रि० स० [हिं० हट = दूर होना + करना] १. मना करना। निषेध करना। रोकना। २. चौपायों को किसी ओर जाने से रोक कर दूसरी तरफ हाँकना।
मुहा०—हटकि = १. जबरदस्ती। २. बिना कारण।
हटतार†–संज्ञा पुं० दे० "हरताल"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० हठतार] माला का सूत।
हटना–क्रि० अ० [सं० घट्टन] १. एक जगह से दूसरी जगह पर जा रहना। खिसकना। सरकना। टलना। २. पीछे सरकना। ३. जी चुराना। भागना। ४. सामने से दूर होना। सामने से चला जाना। ५. टलना। ६. न रह जाना। दूर होना। ७. बात पर दृढ़ न रहना।
†[हिं० हटकना] मना या निषेध करना।
हटवा–संज्ञा पुं० [हिं० हाट] दूकानदार।
हटवाई †–संज्ञा स्त्री०[हिं० हाट + वाई(प्रत्य०)] सौदा लेना या बेचना। क्रय-विक्रय।
हटवाना–क्रि० स० [हिं० हटाना] हटाने का काम दूसरे से कराना।
हटवार†–संज्ञा पुं० [हिं० हाट + वार (वाला)] हाट में सौदा बेचनेवाला। दूकानदार।
हटाना– क्रि० स० [हिं० हटना का स०] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना। सरकाना। खिसकाना। २ किसी स्थान पर न रहने देना। दूर करना। ३. आक्रमण द्वारा भगाना। ४. जाने देना।
हट्ट–संज्ञा पुं० [सं०] १. बाजार। २ दूकान।
यौ०—चौहट्ट = बाजार का चौक।
हट्टा कट्टा– वि० [सं० हृष्ट + काष्ठ] [स्त्री० हट्टी कट्टी] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।
हट्टी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट] दूकान।
हठ–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० हठी, हठीला] १. किसी बात के लिये अड़ना। टेक। ज़िद। आग्रह।
मुहा०—हठ पकड़ना = ज़िद करना। हठ रखना = जिस बात के लिये कोई अड़े, उसे पूरा करना। हठ में पड़ना = हठ करना। हठ माँड़ना = हठ ठानना।
२. दृढ़ प्रतिज्ञा। अटल संकल्प। ३. बलात्कार। जबरदस्ती।
हठधर्म–संज्ञा पुं० [सं०] अपने मत पर, सत्य असत्य का विचार छोड़कर, जमा रहना। दुराग्रह। कट्टरपन।
हठधर्मी–संज्ञा स्त्री० [सं० हठ + धर्म] १. उचित अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। दुराग्रह। २ अपने मत या संप्रदाय की बात लेकर अड़ने की क्रिया या प्रवृत्ति। कट्टरपन।
हठना–क्रि० अ० [हिं० हठ] १ हठ करना। जिद पकड़ना। दुराग्रह करना।
मुहा०—हठ कर = बलात्। जबरदस्ती।
२. प्रतिज्ञा करना। दृढ़ संकल्प करना।
हठयोग–संज्ञा पुं० [सं०] वह योग जिसमें शरीर को साधने के लिये बड़ी कठिन कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है। नेती, धौती आदि क्रियाएँ इसी में हैं।
हठात्–अव्य० [सं०] १. हठपूर्वक। दुराग्रह के साथ। २. जबरदस्ती से। ३. अवश्य।
हठी–वि० [सं० हठिन्] हठ करनेवाला। जिद्दी। टेकी।
हठीला–वि० [सं० हठ + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हठीली] १. हठ करनेवाला। हठी। जिद्दी। २. दृढ़ प्रतिज्ञ। बात का पक्का। ३. लड़ाई में जमा रहनेवाला। धीर।
हड़–संज्ञा स्त्री० [सं० हरीतकी] १. एक बड़ा पेड़ जिसका फल औषध के रूप में काम में लाया जाता है। २. हड़ के आकार का एक प्रकार का गहना। लटकन।
हड़कंप–संज्ञा पुं० [हिं० हाड़ + काँपना] भारी हलचल। तहलका।
हड़क–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ पागल कुत्ते के

काटने पर पानी के लिये गहरी आकुलता। २. किसी वस्तु को पाने की गहरी झक। उत्कट इच्छा। रट। धुन।

हुड़कना-क्रि० अ० [हिं० हुड़क] किसी वस्तु के अभाव से दुःखी होना। तरसना।

हुड़काना-क्रि० स० [देश०] १. आक्रमण करने या तंग करने आदि के लिये पीछे लगा देना। लहकारना। २. किसी वस्तु के अभाव का दुःख देना। तरसाना। ३. कोई वस्तु माँगनेवाले को न देकर भगाना।

हुड़काया-वि० [हिं० हुड़क] पागल। (कुत्ता)

हड़गीला-संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+गिलना ?] बगले की जाति का एक पक्षी।

हड़जोड़-संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+जोड़ना] एक प्रकार की लता। कहते हैं कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

हड़ताल-संज्ञा स्त्री० [सं० हट्ट=दूकान+ताला] किसी बात से असंतोष प्रकट करने के लिये दूकानदारों का दूकानें बंद कर देना। संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल"।

हड़ना-क्रि० अ० [हिं० घड़ा] तौल में जाँचा जाना।

हड़प-वि० [अनु०] १. पेट में डाला हुआ। निगला हुआ। २. गायब किया हुआ।

हड़पना-क्रि० स० [अनु० हड़प] १. मुँह में डाल लेना। खा जाना। २. अनुचित रीति से ले लेना। उड़ा लेना।

हड़बड़-संज्ञा स्त्री० [अनु०] जल्दबाज़ी प्रकट करनेवाली गति-विधि।

हड़बड़ाना-क्रि० अ० [अनु०] जल्दी करना। उतावलापन करना। आतुर होना। क्रि० स० किसी को जल्दी करने के लिये कहना।

हड़बड़िया-वि० [हिं० हड़बड़ी+इया० (प्रत्य०)] हड़बड़ी करनेवाला। जल्दबाज़। उतावला।

हड़बड़ी-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. जल्दी। उतावली। २. जल्दी के कारण घबराहट।

हड़हड़ाना-क्रि० स० [अनु०] जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना।

हड़ावरि, हड़ावल-संज्ञा स्त्री० [हिं० हाड़+सं० आवलि] १. हड्डियों का ढाँचा। ठटरी। २. हड्डियों की माला।

हड्डा-संज्ञा पुं० [सं० हड्डाचिरा?] मधुमक्खियों की तरह का एक कीड़ा। भिड़। बर्रे।

हड्डी-संज्ञा स्त्री० [सं० अस्थि] शरीर के अन्दर की वह कठोर वस्तु जो भीतरी ढाँचे के रूप में होती है। अस्थि।

मुहा०—हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना=खूब मारना। खूब पीटना। हड्डियाँ निकल आना=शरीर बहुत दुबला होना। पुरानी हड्डी=पुराने आदमी का दृढ़ शरीर।

२. कुल। वंश। खानदान।

हत-वि० [सं०] १. वध किया हुआ। मारा हुआ। २. पीटा हुआ। ताड़ित। ३. खोया हुआ। गँवाया हुआ। विहीन। ४. जिसमें या जिस पर ठोकर लगी हो। ५. नष्ट किया हुआ। बिगाड़ा हुआ। ६ पीड़ित। ग्रस्त। ७. गुणा किया हुआ। गुणित। (गणित)

हतक-संज्ञा स्त्री० [अ० हतक=फाड़ना] हेठी। बेइज़्ज़ती। अप्रतिष्ठा।

हतक इज़्ज़ती-संज्ञा स्त्री० [अ० हतक+इज़्ज़त] अप्रतिष्ठा। मानहानि। बेइज़्ज़ती।

हतदैव-वि० [सं०] अभागा।

हतना-क्रि० स० [सं० हत+ना (हिं० प्रत्य०)] १. वध करना। मार डालना। २. मारना। पीटना। ३. पालन न करना। न मानना।

हतबुद्धि-वि० [सं०] बुद्धिशून्य। मूर्ख।

हतभागा, हतभागी-वि० [सं० हत+हिं० भाग्य] [स्त्री० हतभागिन, हतभागिनी] अभागा। भाग्यहीन। बदकिस्मत।

हतभाग्य-वि० [सं०] भाग्यहीन। बद-किस्मत।

हतवाना-क्रि० स० [हिं० हतना का प्रेरणा०] वध कराना। मरवाना।

हता-क्रि० स० [होना का भूतकाल] था।

हताना-क्रि० स० दे० "हतवाना"।

हताश-वि० [सं०] जिसे आशा न रह गई हो। निराश। नाउम्मीद।

हताहत-वि० [सं०] मारे गए और घायल।

हतोत्साह-वि० [सं०] जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।

हत्थ-संज्ञा पुं० दे० "हाथ"।

हत्था-संज्ञा पुं० [हिं० हत्थ, हाथ] १. औज़ार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है। दस्ता। मूठ। २. लकड़ी का वह पल्ला जिससे खेत की नालियों का पानी चारों ओर उलीचा जाता है। हाथा। हथेरा। ३. केले के फलों का घौद।

हत्थी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हत्था, हाथ] औज़ार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है। दस्ता। मूँठ।

हत्थे–क्रि० वि० [हिं० हाथ, हत्थ] हाथ में। मुहा०—हत्थे चढ़ना = १. हाथ में आना। प्राप्त होना। २. वश में होना।

हत्या–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मार डालने की क्रिया। वध। ख़ून। मुहा०—हत्या लगना=हत्या का पाप लगना। किसी के वध का दोष ऊपर आना। २. संझट। बखेड़ा।

हत्यारा–संज्ञा पुं० [सं० हत्या + कार] [स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] हत्या करनेवाला। जान लेनेवाला।

हत्यारी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हत्यारा] १. हत्या करनेवाली। २ हत्या का पाप। प्राण-वध का दोष।

हथ–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] 'हाथ' का संक्षिप्त रूप (समस्त पदों में)।

हथकंडा–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + सं० कांड] १. हाथ की सफ़ाई। हस्तलाघव हस्त-कौशल। २. गुप्त चाल। चालाकी का ढंग।

हथकड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + कड़ी] लोहे का वह कड़ा जो कैदी के हाथ में पहनाया जाता है।

हथनाल–संज्ञा पुं० [हिं० हाथी + नाल] वह तोप जो हाथी पर चलती थी। गजनाल।

हथनी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी + नी (प्रत्य०)] हाथी की मादा।

हथफूल–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का एक जड़ाऊ गहना। हथसाँकर। हथसंकर।

हथफेर–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + फेरना] १. प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। २. दूसरे के माल को सफ़ाई से उड़ा लेना। ३. थोड़े दिनों के लिये लिया या दिया हुआ क़र्ज़। हाथ-उधार।

हथलेवा–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + लेना] विवाह में वर का कन्या का हाथ अपने हाथ में लेने की रीति। पाणिग्रहण।

हथवाँस–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] नाव चलाने के सामान। जैसे—पतवार, डाँड़।

हथसाँकर–संज्ञा पुं० दे० "हथफूल"।

हथसार–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी + सं० शाला] वह घर जिसमें हाथी रखे जाते हैं। फ़ील-ख़ाना।

हथाहथी॰†–अव्य० [हिं० हाथ] १ हाथों-हाथ। २. शीघ्र। तुरंत।

हथिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हथनी"।

हथिया–संज्ञा पुं० [सं० हस्त] हस्त नक्षत्र।

हथियाना–क्रि० स० [हिं० हाथ + आना (प्रत्य०)] १. हाथ में करना। ले लेना। २. धोखा देकर ले लेना। उड़ा लेना। ३. हाथ में पकड़ना।

हथियार–संज्ञा पुं० [हिं० हथियाना] १. हाथ से पकड़कर काम में लाने की साधन-वस्तु। औज़ार। २. तलवार, भाला आदि आक्र-मण करने का साधन। अस्त्र-शस्त्र। मुहा० = १. मारने के लिये अस्त्र हाथ में लेना। २ लड़ाई के लिये तैयार होना।

हथियारबंद–वि० [हिं० हथियार + फा० बंद] जो हथियार बाँधे हो। सशस्त्र।

हथेरी॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।

हथेली–संज्ञा स्त्री० [सं० हस्ततल] हाथ की कलाई का चौड़ा सिरा जिसमें उँगलियाँ लगी होती हैं। करतल। मुहा०—हथेली में आना = १. मिलना। प्राप्त होना। २. वश में होना। हथेली पर जान होना = ऐसी स्थिति में पड़ना जिसमें जान जाने का भय हो।

हथेव–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] हथौड़ा।

हथोरी॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।

हथौटी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + औटी (प्रत्य०)] १. किसी काम में हाथ लगाने का ढंग। हस्तकौशल। २. किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव।

हथौड़ा–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + औड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हथौड़ी] वह औज़ार जिससे कारीगर किसी धातुखंड को तोड़ते, पीटते या गढ़ते हैं। मारतौल। २ कील ठोंकने, खूँटे गाड़ने आदि का औज़ार।

हथौड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हथौड़ा] छोटा हथौड़ा।

हथ्यार॰†–संज्ञा पुं० दे० "हथियार"।

हद–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी चीज़ की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई की सब से अधिक पहुँच। सीमा। मर्यादा। मुहा०—हद बाँधना = सीमा निर्धारित करना।

२. किसी वस्तु या बात का सबसे अधिक परिमाण जो ठहराया गया हो।
मुहा०—हद से ज़्यादा = बहुत अधिक। अत्यंत। हद व हिसाब नहीं = बहुत ही ज़्यादा। अत्यंत।
३. किसी बात की उचित सीमा। मर्य्यादा।
हदीस–संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का वह धर्मग्रंथ जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का संग्रह है और जिसका व्यवहार बहुत कुछ स्मृति के रूप में होता है।
हनन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० हननीय, हनित] १ मार डालना। बध करना। २. आघात करना। पीटना। गुणा करना। (गणित)
हनना†–क्रि० स० [सं० हनन] १. मार डालना। बध करना। २ आघात करना। प्रहार करना। ३. पीटना। ठोंकना। ४. लकड़ी से पीट या ठोक कर बजाना।
हनवाना–क्रि० स० [हिं० हनना का प्रेरणा०] हनने का कार्य्य दूसरे से कराना।
हनिवत–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।
हनुंव–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।
हनु–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। २. ठुड्डी। चिबुक।
हनुमंत–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।
हनुमान्–वि० [सं० हनुमत्] १. दाढ़ या जबड़ेवाला। २. भारी दाढ़ या जबड़ेवाला। ३. बहुत बड़ा वीर या बहादुर। संज्ञा पुं० पंपा के एक वीर बंदर जिन्होंने सीता हरण के उपरांत रामचंद्र की बड़ी सेवा और सहायता की थी। महावीर।
हनूफाल–संज्ञा पुं० [सं० हनु + हिं० फाल] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्राएँ और अंत में गुरु लघु होते हैं।
हनूमान्–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।
हनोज़–अव्य० [फा०] अभी। अभी तक।
हप–संज्ञा पुं० [अनु०] मुँह में चट से लेकर ओंठ बंद करने का शब्द।
मुहा०—हप कर जाना = मट से मुँह में डालकर खा जाना।
हफ़्ता–संज्ञा पुं० [फा०] सप्ताह।
हबकना†–क्रि० अ० [अनु० हप] खाने या दाँत काटने के लिये झट से मुँह खोलना। क्रि० स० दाँत काटना।
हबर हबर–क्रि० वि० [अनु० हड़बड़] १. जल्दी जल्दी। उतावली से। २. जल्दी के कारण ठीक तौर से नहीं। हड़बड़ी से।
हबराना†–क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।
हबशी–संज्ञा पुं० [फा०] हबश देश का निवासी जो बहुत काला होता है।
हबूब–संज्ञा पुं० [अ० हबाब] १. पानी का बबूला। बुल्ला। २ झूठ मूठ की बात।
हब्बा डब्बा–संज्ञा पुं० [हिं० हाँफ + अनु० डब्बा] जोर जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चों को होती है।
हब्स–संज्ञा पुं० [अ०] क़ैद।
हम–सर्व० [सं० अहम्] उत्तम पुरुष बहुवचन-सूचक सर्वनाम शब्द। "मैं" का बहुवचन। संज्ञा पुं० अहंकार। 'हम' का भाव। अव्य० [फा०] १. साथ। संग। २. समान। तुल्य।
हमजोली–संज्ञा पुं० [फा० हम + हिं० जोड़ी ?] साथी। संगी। सहयोगी। सखा।
हमता–संज्ञा स्त्री० [हिं० हम + ता (प्रत्य०)] अहंभाव। अहंकार।
हमदर्द–संज्ञा पुं० [फा०] दुःख में सहानुभूति रखनेवाला।
हमदर्दी–संज्ञा स्त्री० [फा०] सहानुभूति।
हमरा†–सर्व० दे० "हमारा"।
हमराह–अव्य० [फा०] (कहीं जाने में किसी के) साथ। संग में।
हमल–संज्ञा पुं० [अ०] स्त्री के पेट में बच्चे का होना। गर्भ। वि० दे० "गर्भ"।
हमला–संज्ञा पुं० [अ०] १. लड़ाई करने के लिये चढ़ दौड़ना। युद्ध-यात्रा। चढ़ाई। धावा। २. मारने के लिये झपटना। आक्रमण। ३. प्रहार। वार। ४. विरोध में कही हुई बात।
हमवार–वि० [फा०] जिसकी सतह बराबर हो। समतल। सपाट।
हमसर–संज्ञा पुं० [फा०] गुण, बल या पद में समान व्यक्ति।
हमसरी–संज्ञा स्त्री० [फा०] बराबरी।
हमहमी–संज्ञा स्त्री० दे० "हमाहमी"।
हमाम–संज्ञा पुं० दे० "हम्माम"।
हमारा–सर्व० [हिं० हम + आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० हमारी] 'हम' का संबंधकारक रूप।
हमाल–संज्ञा पुं० [अ० हम्माल] १. बोझ

उठानेवाला। २. रक्षक। रखवाला। ३. मज़दूर। कुली।

हमाहमी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हम] १. अपने अपने लाभ का आतुर प्रयत्न। स्वार्थपरता। २. अहंकार।

हमीर–संज्ञा पु० दे० "हम्मीर"।

हमें–सर्व० [हिं० हम] 'हम' का कर्म और संप्रदान कारक का रूप। हमको।

हमेल–संज्ञा स्त्री० [अ० हमायल] सिक्कों आदि की माला जो गले में पहनी जाती है।

हमेव†–संज्ञा पुं० [सं० अहम्] अहंकार।

हमेशा–अव्य० [फा०] सब दिन या सब समय। सदा। सर्वदा। सदैव।

हमेस–अव्य० दे० "हमेशा"।

हमें–अव्य० दे० "हमें"।

हम्माम–संज्ञा पु० [अ०] नहाने की वह कोठरी जिसमें गरम पानी रखा रहता है। स्नानागार।

हम्मीर–संज्ञा पु० [सं०] १. एक संकर राग। २. रणथंभोरगढ़ का एक अत्यंत वीर चौहान राजा जो सन् १३०० ई० में अलाउद्दीन खिलजी के साथ लड़कर मरा था।

हयंद–संज्ञा पु० [सं० हयेंद्र] घड़ा या अच्छा घोड़ा।

हय–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० हया, हयी] १. घोड़ा। अश्व। २. कविता में सात की मात्रा सूचित करने का शब्द। ३. चार मात्राओं का एक छंद। ४. इंद्र।

हयग्रीव–संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक अवतार। २. एक राक्षस जो कल्पांत में ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था।

हयना–क्रि० स० [सं० हत + ना (प्रत्य०)] १. वध करना। मार डालना। २. मारना-पीटना। ३. ठोंककर बजाना। ४. नष्ट करना। न रहने देना।

हयनाल–संज्ञा स्त्री [सं० हय + हिं० नाल] वह तोप जिसे घोड़े खींचते हैं।

हयमेध–संज्ञा पु० [सं०] अश्वमेध यज्ञ।

हया–संज्ञा स्त्री० [अ०] लज्जा। शर्म।

हयात–संज्ञा स्त्री० [अ०] जिंदगी। जीवन।

यौ०—हीन हयात में = जीवन काल में।

हयादार–संज्ञा पु० [अ० हया + फा० दार] [भाव० हयादारी] वह जिसे हया हो। लज्जाशील। शर्मदार।

हर–वि० [सं०] १. हरण करनेवाला। छीनने या लूटनेवाला। २. दूर करनेवाला। मिटानेवाला। ३. वध या नाश करनेवाला। ४. ले जानेवाला। वाहक।

संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. एक राक्षस जो विभीषण का मंत्री था। ३. वह संख्या जिससे भाग दें। भाजक। (गणित) ४. अग्नि। आग। ५. छप्पय के दसवें भेद का नाम। ६. टगण के पहले भेद का नाम।

† संज्ञा पुं० [सं० हल] हल।

वि० [फा०] प्रत्येक। एक एक।

मुहा०—हर एक = प्रत्येक। एक एक। हर रोज़ = प्रति दिन। हर दम = सदा।

हरएँ–अव्य० [हिं० हरुआ] धीरे धीरे।

हरकत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गति। चाल। हिलना डोलना। २. चेष्टा। क्रिया। ३. दुष्ट व्यवहार। नटखटी।

हरकना†–क्रि० स० दे० "हटकना"।

हरकारा–संज्ञा पु० [फा०] १. चिट्ठी पत्री ले जानेवाला। २. चिट्ठीरसाँ। डाकिया।

हरख‡–संज्ञा पु० दे० "हर्ष"।

हरखना–क्रि० अ० [सं० हर्ष, हिं० हरख] हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना।

हरखाना–क्रि० अ० दे० "हरखना"।

क्रि० स० [हिं० हरखना] प्रसन्न करना। खुश करना। आनंदित करना।

हरगिज़–अव्य० [फा०] किसी दशा में भी। कदापि। कभी।

हरचंद–अव्य० [फा०] १. कितना ही। बहुत या बहुत बार। २. यद्यपि। अगरचे।

हरज–संज्ञा पुं० दे० "हर्ज"।

हरजा–संज्ञा पुं० दे० "हर्ज" व "हरजाना"।

हरजाई–संज्ञा पुं० [फा०] १. हर जगह घूमनेवाला। २ बहल्ला। आवारा।

संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

हरजाना–संज्ञा पु० [फा०] हानि का बदला। क्षतिपूर्ति।

हरट्ट–वि० [सं० हृष्ट] हृष्ट पुष्ट। मजबूत।

हरण–संज्ञा पु० [सं०] १. छीनना, लूटना या चुराना। २. दूर करना। हटाना। मिटाना। ३. नाश। संहार। ४. ले जाना। वहन। ५. भाग देना। तक़सीम करना। (गणित)

र्ता-संज्ञा पु० दे० "हर्त्ता"।

र्ता धर्ता-संज्ञा पु० [सं० हर्त्ता+धर्त्ता (वैदिक)] सब बातों का अधिकार रखने-वाला। पूर्ण अधिकारी।

रतार-संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल"।

रताल-संज्ञा स्त्री० [सं० हरिताल] पीले रंग का एक खनिज पदार्थ जो खानों में मिलता है और बनाया भी जा सकता है।

मुहा०—(किसी बात पर) हरताल लगाना = नष्ट करना। रद करना।

हरद०-संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी"।

हरदौल-संज्ञा पु० [सं० हरदत्त] ओरछा के राजा जुझारसिंह (सन् १६२६-३२ई०) के छोटे भाई जो बड़े आत्मभक्त थे। इन्हें 'हरदिया देव' भी कहते हैं।

हरद्वान-संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन स्थान जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरद्वार-संज्ञा पु० दे० "हरिद्वार"।

हरना-क्रि० स० [सं० हरण] १. छीनना, लूटना या चुराना। २. दूर करना। हटाना। ३. मिटाना। नाश करना। ४. उठाकर ले जाना।

मुहा०—मन हरना = मन आकर्षित करना। लुभाना। प्राण हरना = १. मार डालना। २. बहुत संताप या दुःख देना।

०क्रि० अ० दे० "हारना"।

०संज्ञा पुं० दे० "हिरन"।

हरनाकस०†-संज्ञा पु० दे० "हिरण्य-कशिपु"।

हरनाच्छ†०-संज्ञा पु० "हिरण्याक्ष"।

हरनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० हिरन] हिरन की मादा। मृगी।

हरनौटा-संज्ञा पु० [हिं० हिरन] हिरन का बच्चा।

हरफ-संज्ञा पुं० [अ०] अक्षर। वर्ण।

मुहा०—किसी पर हरफ़ आना = दोष लगना। कलंक लगना। हरफ़ उठाना = अक्षर पहचानकर पढ़ लेना।

हरफा रेवड़ी-संज्ञा स्त्री० [सं० हरिपर्णी] १. कमरख की जाति का एक पेड़। २. उक्त पेड़ का फल।

हरबराना०†-क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

हरबा-संज्ञा पुं० [अ० हरबः] हथियार।

हरबोंग-पुं० [हिं० हल+बोंग] १. गँवार। उद्दंड। अक्खड़। २. मूर्ख। जड़।

संज्ञा पु० १. अंधेर। कुशासन। २. उपद्रव।

हरम-संज्ञा पुं० [अ०] अंतःपुर। जनान-खाना।

संज्ञा स्त्री० १. सुताही। रखेली स्त्री। २. दासी। ३. पत्नी।

यौ०—हरमसरा = अंतःपुर। जनानखाना।

हरमजदगी-संज्ञा स्त्री० [फा० हरामज़ादः] शरारत। नटखटी। बदमाशी।

हरयें-अव्य० दे० "हरएँ"।

हरवल-संज्ञा पु० दे० "हरावल"।

हरवली-संज्ञा स्त्री० [तु० हरावल] सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

हरवा†-संज्ञा पु० दे० "हार"।

वि० दे० "हलुआ"।

हरवाना-क्रि० अ० [हिं० हड़बड़] जल्दी करना। शीघ्रता करना। उतावली करना।

क्रि० स० [हिं० हारना] 'हारना' का प्रेरणार्थक रूप।

हरवाहा-संज्ञा पु० दे० "हलवाही"।

हरष०†-संज्ञा पु० दे० "हर्ष"।

हरखना०-क्रि० अ० [हिं० हर्ष+ना (प्रत्य०)] १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २. पुल-कित होना। रोमांच से प्रफुल्ल होना।

हरषाना०-क्रि० अ० [हिं० हरष+आना (प्रत्य०)] १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २. रोमांच से प्रफुल्ल होना।

क्रि० स० हर्षित करना। प्रसन्न करना।

हरषित०-वि० दे० "हर्षित"।

हरसना०-क्रि० अ० दे० "हरषना"।

हरसिंगार-संज्ञा पु० [सं० हार+सिंगार] एक पेड़ जिसके फूल में पाँच दल और नारंगी रंग की डाँड़ी होती है। परजाता।

हरहाई-वि० स्त्री० [?] नटखट (गाय)।

हरहार-संज्ञा पु० [सं०] १. (शिव का हार) सर्प। साँप। २. शेषनाग।

हरा-वि० [सं० हरित] [स्त्री० हरी] १. घास या पत्ती के रंग का। हरित। सब्ज़। २. प्रफुल्ल। प्रसन्न। ताज़ा। ३. जो मुर-झाया न हो। ताज़ा। ४. (घाव) जो सूखा या भरा न हो। ५. दाना या फल जो पका न हो।

मुहा०—हरा बाग़ = व्यर्थ आशा बँधानेवाली बात। हरा भरा = १. जो सूखा या मुरझाया न हो। २. जो हरे पेड़-पौधों से भरा हो।

संज्ञा पु० घास या पत्ती का सा रंग। हरित वर्ण।
†[संज्ञा पुं० [हिं० हार] हार। माला।
संज्ञा स्त्री० [सं०] हर की स्त्री। पार्वती।

हराई–संज्ञा स्त्री० [हिं० हारना] हारने की क्रिया या भाव। हार।

हराना–क्रि० स० [हिं० हारना] १. युद्ध में प्रतिद्वंद्वी को पीछे हटाना। परास्त करना। पराजित करना। २. शत्रु को विफल-मनोरथ करना। ३. प्रयत्न में शिथिल करना। थकाना।

हरापन–संज्ञा पु० [हिं० हरा + पन (प्रत्य०)] हरे होने का भाव। हरितता। सब्ज़ी।

हराम–वि० [अ०] निषिद्ध। विधि विरुद्ध। बुरा। अनुचित। दूषित।
संज्ञा पु० १. वह वस्तु या बात जिसका धर्म-शास्त्र में निषेध हो। २. सूअर। (मुसल०)
मुहा०—(कोई बात) हराम करना = किसी बात का करना मुश्किल कर देना। (कोई बात) हराम होना = किसी बात का मुश्किल हो जाना।
३. बेईमानी। अधर्म। पाप।
मुहा०—हराम का = १. जो बेईमानी से प्राप्त हो। २. मुफ्त का।
४. स्त्री पुरुष का अनुचित संबंध। व्यभिचार।

हरामखोर–संज्ञा पु० [अ० + फ़ा०] १. पाप की कमाई खानेवाला। २. मुफ्त-खोर। ३. आलसी। निकम्मा।

हरामज़ादा–संज्ञा पु० [अ० + फ़ा०] [स्त्री० हरामज़ादी] १. दोगला। वर्णसंकर। २. दुष्ट। पाजी। बदमाश।

हरामी–वि० [अ० हराम + ई (प्रत्य०)] १. व्यभिचार से उत्पन्न। २. दुष्ट। पाजी।

हरारत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गर्मी। ताप। २. हलका ज्वर। ज्वरांश।

हरावरि‡–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़ावरि"।
संज्ञा पु० दे० "हरावल"।

हरावल–संज्ञा पुं० [तु०] सिपाहियों का वह दल जो सबके आगे रहता है।

हरास–संज्ञा पुं० [फ़ा० हिरास] १. भय। डर। २. आशंका। खटका। ३. दुःख। रंज। ४. नैराश्य। नाउम्मेदी।

हराहर‡–संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।

हरि–वि० [सं०] १. भूरा या बादामी। २. पीला। हरा। हरित्।
संज्ञा पु० १. विष्णु। २. इंद्र। ३. घोड़ा। ४. बंदर। ५. सिंह। ६. सूर्य्य। ७. चंद्रमा। ८. मोर। मयूर। ९. सर्प। साँप। १०. अग्नि। आग। ११. वायु। १२. विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण। १३. श्रीराम। १४. शिव। १५. एक पर्वत का नाम। १६. एक वर्ष या भू-भाग का नाम। १७. अठारह वर्णों का एक छंद।
अव्य० [हिं० हरुए] धीरे। आहिस्ते।

हरिअर†‡–वि० [सं० हरित्] हरा। सब्ज।

हरिअरी†‡–संज्ञा स्त्री० दे० "हरिआली"।

हरिआली–संज्ञा स्त्री० [सं० हरित् + आलि] १. हरेपन का विस्तार। २. घास और पेड़-पौधों का फैला हुआ समूह।

हरिकथा–संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवान् या उनके अवतारों का चरित्र-वर्णन।

हरिकीर्त्तन–संज्ञा पु० [सं०] भगवान् या उनके अवतारों की स्तुति का गान।

हरिगीतिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] अट्ठाईस मात्राओं एक छंद जिसकी पाँचवीं, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्रा लघु और अंत में लघु गुरु होता है।

हरिचंद–संज्ञा पु० दे० "हरिश्चंद्र"१।

हरिचंदन–संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का चंदन।

हरिजन–संज्ञा पु० [सं०] ईश्वर का भक्त।

हरिजान‡–संज्ञा पु० दे० "हरियान"।

हरिण–संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० हरिणी] १. मृग। हिरन। २. हिरन की एक जाति। ३. हंस। ४. सूर्य्य।

हरिणप्लुता–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्द्धसम वृत्त जिसके विषम चरणों में ३ सगण, दो भगण और एक रगण होता है।

हरिणाक्षी–वि० स्त्री० [सं०] हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखोंवाली। सुंदरी।

हरिणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिरन की मादा। २. स्त्रियों के चार भेदों में से एक जिसे चित्रिणी भी कहते हैं। (कामशास्त्र) ३. एक वर्णवृत्त का नाम जिसमें सत्रह वर्ण होते हैं। ४. दस वर्णों का एक वृत्त।

हरित्–वि० [सं०] १. भूरे या बादामी रंग का। कपिश। २. हरा। सब्ज।
संज्ञा पुं० १. सूर्य्य के घोड़े का नाम। २.

मरकत। पन्ना। ३. सिंह। ४. सूर्य।
हरित-वि० [सं०] १. भूरे या बादामी रंग का। २. पीला। ज़र्द। ३. हरा। सब्ज़।
हरितमणि-संज्ञा पुं० [सं०] मरकत। पन्ना।
हरितालिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया। तीज। (स्त्रियों का व्रत)
हरिद्रा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हलदी। २. वन। जंगल। ३. मंगल। ४. सीसा धातु। (अनेकार्थ०)
हरिद्रा राग-संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में वह पूर्व राग जो स्थायी या पक्का न हो।
हरिद्वार-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है।
हरिधाम-संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
हरिन-संज्ञा पुं० [सं० हरिण] [स्त्री० हरिनी] खुर और सींगवाला एक चौपाया जो प्रायः सुनसान मैदानों, जंगलों और पहाड़ों में रहता है। मृग।
हरिनग-संज्ञा पुं० [सं०] सर्प का मणि।
हरिनाकुस-संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।
हरिनाच्छ-संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।
हरिनाथ-संज्ञा पुं० [सं०] हनुमान्।
हरिनाम-संज्ञा पुं० [सं० हरिनामन्] भगवान् का नाम।
हरिनी-संज्ञा स्त्री० [हिं० हरिन] मादा हिरन। स्त्री जाति का मृग।
हरिपद-संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का लोक। वैकुंठ। २. एक छंद जिसके विषम चरणों में १६ तथा सम चरणों में ११ मात्राएँ तथा अंत में गुरु लघु होता है।
हरिपुर-संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
हरिप्रिया-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ४६ मात्राएँ और अंत में गुरु होता है। चंचरी। ३. तुलसी। ४. लाल चंदन।
हरिप्रीता-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का शुभ मुहूर्त। (ज्योतिष)
हरिभक्त-संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर का प्रेमी। ईश्वर का भजन करनेवाला।
हरिभक्ति-संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर-प्रेम।
हरियरा-वि० दे० "हरा"।
हरियाना-संज्ञा पुं० [?] हिसार और रोहतक तक के आस पास का प्रांत।
हरियाई-संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।
हरियाली-संज्ञा स्त्री० [सं० हरित+आलि] १. हरे रंग का फैलाव। २. हरे हरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार। ३. दूब।
मुहा०-हरियाली सूझना = चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई पड़ना।
हरियाली तीज-संज्ञा स्त्री० [हिं० हरियाली+तीज] सावन बदी तीज।
हरिलीला-संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।
हरिलोक-संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।
हरिवंश-संज्ञा पुं० [सं०] १. कृष्ण का कुल। २. एक ग्रंथ जिसमें कृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का वृत्तांत है।
हरिवासर-संज्ञा पुं० [सं०] १. रविवार। २. विष्णु का दिन, एकादशी।
हरिशयनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ़ शुक्ल एकादशी।
हरिश्चंद्र-संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य वंश का अट्ठाईसवाँ राजा जो त्रिशंकु का पुत्र था। यह बड़ा दानी और सत्यव्रती प्रसिद्ध है।
हरिस-संज्ञा स्त्री० [सं० हलीषा] हल का वह लट्ठा जिसके एक छोर पर फालवाली लकड़ी और दूसरे छोर पर जूआ रहता है। ईषा।
हरिहर क्षेत्र-संज्ञा पुं० [सं०] बिहार में एक तीर्थस्थान जहाँ कार्तिक पूर्णिमा को भारी मेला होता है।
हरिहाई-वि० स्त्री० दे० "हरहाई"।
हरी-संज्ञा स्त्री० [सं०] १४ वर्णों का एक वृत्त। अनंद।
संज्ञा पुं० दे० "हरि"।
हरीतकी-संज्ञा स्त्री० [सं०] हड़। हर्रे।
हरीरा-संज्ञा पुं० [अ० हरीर] एक प्रकार का पेय पदार्थ जो दूध में मसाले और मेवे डालकर औटाने से बनता है।
†वि० [हिं० हरिअर] [स्त्री० हरीरी] १. हरा। सब्ज़। २. हर्षित। प्रसन्न। प्रफुल्ल।
हरीस-संज्ञा स्त्री० दे० "हरिस"।
हरुअ-वि० [सं० लघुक] हलका।
हरुआ-वि० दे० "हलका"।

हरुआई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरुआ] १. हलका-पन। २. फुरती।
हरुआना†—क्रि० अ० [हिं० हरुआ] १. हलका होना। लघु होना। २. फुरती करना।
हरुए†ः—क्रि० वि० [हिं० हरुआ] १. धीरे धीरे। आहिस्ता से। २. इस प्रकार जिसमें आहट न मिले। चुपचाप।
हरूफ़—संज्ञा पुं० [अ० हरफ़ का बहु०] अक्षर।
हरेःः—क्रि० वि० [हिं० हरुए] १. धीरे से। आहिस्ता से। मंद। २. (शब्द) जो ऊँचा या ज़ोर का न हो। ३. हलका। कोमल। (आघात, स्पर्श आदि)
हरेव—संज्ञा पुं० [देश०] १. मंगोलों का देश। २. मंगोल जाति।
हरेवा—संज्ञा पुं० [हिं० हरा] हरे रंग की एक चिड़िया। हरी बुलबुल।
हरैंःः—क्रि० वि० दे० "हरे"।
हरैया†ः—संज्ञा पुं० [हिं० हरना] हरनेवाला। दूर करनेवाला।
हरौल—संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।
हर्ज—संज्ञा पुं० [अ०] १. काम में रुकावट। बाधा। अड़चन। २ हानि। नुक़सान।
हर्त्ता—संज्ञा पुं० [सं० हर्तृ] [स्त्री० हर्त्री] १. हरण करनेवाला। २. नाश करनेवाला।
हर्त्तार—संज्ञा पुं० [सं०] हर्त्ता।
हर्फ़—संज्ञा पुं० दे० "हरफ़"।
हर्र—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।
हर्रा—संज्ञा पुं० [सं० हरीतकी] बड़ी जाति की हड़।
हर्रे—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।
हर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रफुल्लता या भय के कारण रोंगटों का खड़ा होना। २. प्रफुल्लता। आनंद। खुशी।
हर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रफुल्लता या भय से रोंगटों का खड़ा होना। २. प्रफुल्लित करना या होना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
हर्षना—क्रि० अ० [सं० हर्षण] प्रसन्न होना।
हर्षवर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] भारत का वैस क्षत्रिय-वंशी एक बौद्ध सम्राट् जिसकी सभा में बाण कवि रहते थे।
हर्षानाःः—क्रि० अ० [सं० हर्ष] आनंदित होना। प्रसन्न होना। प्रफुल्ल होना।
क्रि० स० हर्षित करना। आनंदित करना।
हर्षित—वि० [सं०] आनंदित। प्रसन्न।
हल्—संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो।
हलंत—संज्ञा पुं० दे० "हल्"।
हल—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह औज़ार जिससे ज़मीन जोती जाती है। सीर। लांगल।
मुहा०—हल जोतना=१. खेत में हल चलाना। २. खेती करना।
२. एक अस्त्र का नाम।
संज्ञा पुं० [अ०] १. हिसाब लगाना। गणित करना। २. किसी समस्या का समाधान या उत्तर निकालना।
हलकंप—संज्ञा पुं० [हिं० हलना (हिलना)+कंप] १. हलचल। हड़कंप। २. चारों ओर फैली हुई घबराहट।
हलक़—संज्ञा पुं० [अ०] गले की नली। कंठ।
मुहा०—हलक़ के नीचे उतरना=१. पेट में जाना। २. (किसी बात का) मन में बैठना।
हलकई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलका+ई (प्रत्य०)] १. हलकापन। २. ओछापन। तुच्छता। ३. हेठी। अप्रतिष्ठा।
हलकना†ः—क्रि० अ० [सं० हल्लन] १. किसी वस्तु में भरे हुए जल का हिलाने से हिलना-डोलना या शब्द करना। २. हिलोरें लेना। लहराना। ३. बत्ती की लौ का झिलमिलाना। ४. हिलना। डोलना।
हलका—वि० [सं० लघुक] [स्त्री० हलकी] १. जो तौल में भारी न हो। २. जो गाढ़ा न हो। पतला। ३. जो गहरा या चटकीला न हो। ४. जो गहरा न हो। उथला। ५. जो उपजाऊ न हो। ६. कम। थोड़ा। ७. जो ज़ोर का न हो। मंद। ८. ओछा। तुच्छ। टुच्चा। ९. आसान। सुख-साध्य। १०. जिसे किसी बात के करने की फ़िक्र न रह गई हो। निश्चिंत। ११. प्रफुल्ल। ताज़ा। १२. पतला। महीन। १३. कम अच्छा। घटिया। १४. खाली। छूँछा।
मुहा०—हलका करना=अपमानित करना। तुच्छ ठहराना। हलके हलके=धीरे धीरे।
† संज्ञा पुं० [अनु० हलहल] तरंग। लहर।
हलक़ा—संज्ञा पुं० [अ०] १. वृत्त। मंडल। गोलाई। २. घेरा। परिधि। ३. मंडली।

झुंड। दल। ४. हाथियों का झुंड। ५. कई गाँवों या कसबों का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो।

हलकाई†-संज्ञा स्त्री० दे० "हलकापन"।

हलकान†-वि० दे० "हैरान"।

हलकाना†-क्रि० अ० [हिं० हलका+ना (प्रत्य०)] हलका होना। बोझ कम होना। क्रि० स० [हिं० हलकना] हिलोरा देना। क्रि० स० दे० "हिलगाना"।

हलकापन-संज्ञा पु० [हिं० हलका+पन(प्रत्य०)] १ हलका होने का भाव। लघुता। २. ओछापन। नीचता। तुच्छ बुद्धि। ३. अप्रतिष्ठा। हेठी।

हलकारा†-संज्ञा पु० दे० "हरकारा"।

हलकोरा†-संज्ञा पु० [अनु०] तरंग। लहर।

हलचल-संज्ञा स्त्री० [हिं० हलना+चलना] १. लोगों के बीच फैली हुई अधीरता, घबराहट, दौड़ धूप, शोर गुल आदि। खलबली। धूम। २ उपद्रव। दंगा। कंप। विचलन। वि० डगमगाता हुआ। कंपायमान।

हलद हात-संज्ञा स्त्री० [हिं० हलदी+हाथ] विवाह म हल्दी चढ़ने की रस्म।

हलदी-संज्ञा स्त्री० [स० हरिद्रा] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी जड़, जो गाँठ के रूप में होती है, मसाले के रूप में और रँगाई के काम में भी आती है। २. उक्त पौधे की गाँठ जो मसाले आदि के काम में आती है।

मुहा०—हलदी उठना या चढ़ना = विवाह के पहले दूल्हे और दुलहन के शरीर में हल्दी और तेल लगाने की रस्म होना। हलदी लगना = विवाह होना। हल्दी लगे न फिटकरी = बिना कुछ खर्च किए। मुफ्त में।

हलदू-संज्ञा पु० [देश०] एक बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़। करम।

हलधर-संज्ञा पु० [सं०] बलरामजी।

हलना† -क्रि० अ० [स०हल्लन] १. हिलना डोलना। २ घुसना। पैठना।

हलफ-संज्ञा पु० [अ०] किसी पवित्र वस्तु की शपथ। कसम। सौगंध।

मुहा०—हलफ उठाना = कसम खाना।

हलफनामा-संज्ञा पु० [अ०+फा०] वह कागज जिस पर कोई बात ईश्वर को साक्षी मानकर अथवा शपथपूर्वक लिखी गई हो।

हलफा-संज्ञा पुं० [अनु०हल हल] लहर। तरंग।

हलवल†०-संज्ञा पुं० [हिं० हल+बल] खलबली। हलचल। धूम।

हलबी, हलब्बी-वि० [हलब देश] हलब देश का (शीशा)। बढ़िया (शीशा)।

हलमुखी-संज्ञा पुं० [स०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं।

हलराना-क्रि० स० [हिं० हिलोरा] (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर उधर हिलाना।

हलवा-संज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा भोजन। मोहनभोग।

मुहा०—हलवे माँडे से काम = केवल स्वार्थ-साधन से प्रयोजन। अपने लाभ ही से मतलब।

हलवाई-संज्ञा पुं० [अ० हलवा+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० हलवाइन] मिठाई बनाने और बेचने-वाला।

हलवाह, हलवाहा-संज्ञा पु० [स० हलवाह] वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो।

हलहलाना†-क्रि० स० [अनु० हलहल] खूब जोर से हिलाना डुलाना। झकझोरना। क्रि० अ० काँपना। थरथराना।

हलाक-वि० [अ० हलाकत] मारा हुआ।

हलाकान†-वि० [अ० हलाक] [संज्ञा हला-कानी] परेशान। हैरान। तंग।

हलाकी-वि० [अ० हलाक] मार डालने-वाला। मारू। घातक।

हलाकू-वि० [हलाक] हलाक करनेवाला। संज्ञा पु० एक तुर्क सरदार जो चंगेज खाँ का पोता और उसी के समान हत्याकारी था।

हला भला-संज्ञा पुं० [हिं० भला+हला अनु०] १. निबटारा। निर्णय। २. परिणाम।

हलायुध-संज्ञा पु० [स०] बलराम।

हलाल-वि० [अ०] जो शरअ या मुसल-मानी धर्मपुस्तक के अनुकूल हो। जायज। संज्ञा पु० वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म पुस्तक में आज्ञा हो।

मुहा०—हलाल करना = खाने के लिये पशुओं को मुसलमानी शरअ के मुताबिक (धीरे धीरे गला रेतकर) मारना। वध करना। हलाल का = ईमानदारी से पाया हुआ।

हलालखोर-संज्ञा पु० [अ०+फा०] [स्त्री० हलालखोरी, हलालखोरिन] १. मिहनत करके जीविका करनेवाला। २. मेहतर। भंगी।

हलाहल-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह प्रचंड विष जो समुद्र मथन के समय निकला था। २. भारी जहर। ३ एक जहरीला पौधा।

हलीम-वि० [अ०] सीधा। शांत।

हलुका†-वि० दे० "हलका"।

हलूक-संज्ञा स्त्री० [अनु०] वमन। कै।

हलोरा हलोर†-संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

हलोरना-क्रि० स० [हिं० हिलोर] १ पानी में हाथ डालकर उसे हिलाना डुलाना। २. मथना। ३. अनाज फटकना। ४ बहुत अधिक मान में किसी पदार्थ का संग्रह करना।

हलोरा†-संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

हल्दी-संज्ञा स्त्री० दे० "हलदी"।

हल्ला-संज्ञा पुं० [अनु०] १ चिल्लाहट। शोर गुल। कोलाहल। २. लड़ाई के समय की ललकार। हाँक। ३ आक्रमण। धावा। हमला।

हल्लीश-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उप रूपक जिसमें एक ही अंक होता है और नृत्य की प्रधानता रहती है।

हवन-संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देवता के निमित्त मंत्र पढ़कर घी, जौं, तिल आदि अग्नि में डालने का कृत्य। होम। २ अग्नि। आग। ३. हवन करने का चमचा। स्रुवा।

हवनीय-वि० [सं०] हवन के योग्य।
संज्ञा पुं० वह पदार्थ जो हवन करने के समय अग्नि में डाला जाता है।

हवलदार-संज्ञा पुं० [अ० हवाल+फा० दार] १. बादशाही जमाने का वह अफ़सर जो राजकर की ठीक ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिये तैनात रहता था। २ फ़ौज में एक सब से छोटा अफ़सर।

हवस-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लालसा। कामना। चाह। २ तृष्णा।

हवा-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह सूक्ष्म प्रवाह रूप पदार्थ जो भूमंडल को चारों ओर से घेरे हुए है और जो प्राणियों के जीवन के लिये सबसे अधिक आवश्यक है। वायु। पवन।
मुहा०—हवा उड़ना = खबर फैलना। हवा करना = पंखे से हवा का झोंका लाना। पंखा डोलना। हवा के घोड़े पर सवार = बहुत उतावली में। बहुत जल्दी में। हवा खाना = १. शुद्ध वायु के सेवन के लिये बाहर निकलना। टहलना। २. प्रयोजन सिद्धि तक न पहुँचना। अकृत-कार्य्य होना। हवा पीकर रहना = बिना आहार के रहना। (व्यंग्य) हवा बताना = किसी वस्तु से वंचित रखना। टाल देना। हवा बाँधना = १ लंबी चौड़ी बातें कहना। शेखी हाँकना। २. गप हाँकना। हवा पलटना, फिरना या बदलना = १. दूसरी ओर की हवा चलने लगना। २. दूसरी स्थिति या अवस्था होना। हालत बदलना। हवा बिगड़ना = १ संक्रामक रोग फैलना। २ रीति या चाल बिगड़ना। बुरे विचार फैलना। हवा सा = बिल्कुल महीन या हलका। हवा से लड़ना = किसी से अकारण लड़ना। हवा से बातें करना = १ बहुत तेज दौड़ना या चलना। २ आप ही आप या व्यर्थ बहुत बोलना। किसी की हवा लगना = किसी की संगत का प्रभाव पड़ना। हवा हो जाना = १ झटपट चल देना। भाग जाना। २ न रह जाना। एक-बारगी गायब हो जाना। २. भूत। प्रेत। ३ अच्छा नाम। प्रसिद्धि। ख्याति। ४ बड़प्पन या उत्तम व्यवहार का विश्वास। साख।
मुहा०—हवा बँधना = १ अच्छा नाम हो जाना। २ बाजार में साख होना।
५ किसी बात की सनक। धुन।

हवाई-वि० [अ० हवा] १. हवा का। वायु संबंधी। २. हवा में चलनेवाला। ३. कल्पित या झूठ। निर्मूल।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतिशबाजी। बान। आसमानी।
मुहा०—(मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना = चेहरे का रंग फीका पड़ जाना। विवर्णता होना।

हवाचक्की-संज्ञा स्त्री० [हिं० हवा + चक्की] आटा पीसने की वह चक्की जो हवा के जोर से चलती हो।

हवादार-वि० [फ़ा०] *जिसमें हवा आने जाने* के लिये खिड़कियाँ या दरवाजे हों।
संज्ञा पुं० बादशाहों की सवारी का एक प्रकार का हलका तख़्त।

हवाल-संज्ञा पुं० [अ० अहवाल] १ हाल। दशा। अवस्था। २ गति। परिणाम। ३ समाचार। वृत्तांत।

हवालदार-संज्ञा पुं० दे० "हवलदार"।

हवाला-संज्ञा पुं० [अ०] १ प्रमाण का

उल्लेख। २. उदाहरण। दृष्टांत। मिसाल। ३. सुपुर्दगी। जिम्मेदारी।
मुहा०—(किसी के) हवाले करना=किसी के सुपुर्द करना। सौंपना।

हवालात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पहरे के भीतर रखे जाने की क्रिया या भाव। नज़रबंदी। २. अभियुक्त की वह साधारण क़ैद जो मुक़दमे के फ़ैसले के पहले उसे भागने से रोकने के लिये दी जाती है। हाजत। ३. वह मकान जिसमें ऐसे अभियुक्त रखे जाते हैं।

हवास—संज्ञा पुं० [अ०] १ इंद्रियाँ। २. संवेदन। ३. चेतना। संज्ञा। होश।
मुहा०—हवास गुम होना=होश ठिकाने न रहना। भय आदि से स्तंभित होना।

हवि—संज्ञा पुं० [सं० हविस्] वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय। हवन की वस्तु।

हविष्य—वि० [सं०] हवन करने योग्य। संज्ञा पुं० वह वस्तु जो किसी देवता के निमित्त अग्नि में डाली जाय। बलि। हवि।

हविष्यान्न—संज्ञा पुं० [सं०] वह आहार जो यज्ञ के समय किया जाय।

हवेली—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. पक्का बड़ा मकान। प्रासाद। २. पत्नी। स्त्री।

हव्य—संज्ञा पुं० [सं०] हवन की सामग्री।

हशमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गौरव। बड़ाई। २. वैभव। ऐश्वर्य्य।

हसद—संज्ञा पुं० [अ०] ईर्ष्या। डाह।

हसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हँसना। २. परिहास। दिल्लगी। ३. विनोद।

हसब—अव्य० [अ०] अनुसार। मुताबिक़।

हसरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रंज। अफ़सोस। २. हार्दिक कामना।

हसित—वि० [सं०] १. जिस पर लोग हँसते हों। २. जो हँसा हो।
संज्ञा पुं० १. हँसना। २ हँसी-ठट्ठा। ३. कामदेव का धनुष।

हसीन—वि० [अ०] सुंदर। खूबसूरत।

हस्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ। २. हाथी की सूँड़। ३. एक नाप जो २४ अंगुल की होती है। हाथ। ४. हाथ का लिखा हुआ लेख। लिखावट। ५. एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है।

हस्तकौशल—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम में हाथ चलाने की निपुणता।

हस्तक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हाथ का काम। दस्तकारी। २. हाथ से इंद्रिय-संचालन। सरका कूटना।

हस्तक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] किसी होते हुए काम में कुछ कार्रवाई कर बैठना। दखल देना।

हस्तगत—वि० [सं०] हाथ में आया हुआ। प्राप्त। लब्ध। हासिल।

हस्तत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रों के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहना जानेवाला दस्ताना।

हस्तमैथुन—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ के द्वारा इंद्रिय-संचालन। सरका कूटना।

हस्तरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हथेली में पड़ी हुई लकीरें जिनके अनुसार सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार किया जाता है।

हस्तलाघव—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ की फुरती। हाथ की सफ़ाई।

हस्तलिखित—वि० [सं०] हाथ का लिखा हुआ। (ग्रंथ आदि)

हस्तलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ की लिखावट। लेख।

हस्ताक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] अपना नाम जो किसी लेख आदि के नीचे अपने हाथ से लिखा जाय। दस्तखत।

हस्तामलक—संज्ञा पुं० [सं०] वह चीज़ या बात जिसका हर एक पहलू साफ़ साफ़ जाहिर हो गया हो।

हस्ति—संज्ञा पुं० दे० "हस्ती"।

हस्तिकंद—संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।

हस्तिनापुर—संज्ञा पुं० [सं०] कौरवों की राजधानी जो वर्त्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूरी पर थी।

हस्तिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मादा हाथी। हथिनी। २. काम शास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदों में से सबसे निकृष्ट भेद।

हस्ती—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिन्] [स्त्री० हस्तिनी] हाथी। संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अस्तित्व। होने का भाव।

हस्ते—अव्य० [सं०] हाथ से। मारफ़त।

हहर—संज्ञा स्त्री० [हिं० हहरना] १. थरथरी। कँपकँपी। २. भय। डर।

हहरना—क्रि० अ० [अनु०] १. काँपना। थरथराना। २. डर के मारे काँप उठना। दहलना। थर्राना। ३ दंग रह जाना।

चकित रह जाना। ४. डाह करना। सिहाना। ५. अधिकता देखकर चकपकाना।

हहराना-क्रि० अ० [अनु०] १. काँपना। थरथराना। २ डरना। भयभीत होना। ३. दे० "हरहराना"।
क्रि० स० दहलाना। भयभीत करना।

हहा-संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हँसने का शब्द। ठट्ठा। २. दीनतासूचक शब्द। गिड़गिड़ाने का शब्द।
मुहा०—हहा खाना = बहुत गिड़गिड़ाना।
३. हाहाकार।

हाँ-अव्य० [सं० आम्] १. स्वीकृति सूचक शब्द। सम्मति-सूचक शब्द। २. एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि वह बात जो पूछी जा रही है, ठीक है।
मुहा०—हाँ करना = सम्मत होना। राजी होना। हाँ जी हाँ जी करना = खुशामद करना।
२. वह शब्द जिसके द्वारा किसी बात का दूसरे रूप में, या अंशतः, माना जाना प्रकट किया जाता है। ३. दे० "यहाँ"।

हाँक-संज्ञा स्त्री० [सं० हुङ्कार] १. किसी को बुलाने के लिये जोर से निकाला हुआ शब्द।
मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना = जोर से पुकारना। हाँक मारना = दे० "हाँक लगाना"। हाँक पुकार कर कहना = सबके सामने निर्भय और निस्संकोच कहना।
२. ललकार। हुंकार। गर्जन। ३. उत्साह दिलाने का शब्द। बढ़ावा। ४. सहायता के लिये की हुई पुकार। दुहाई।

हाँकना-क्रि० स० [हिं० हाँक] १. जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २. लड़ाई या धावे के समय गर्व से चिल्लाना। हुंकार करना। ३. बढ़ बढ़कर बोलना। सीटना। ४. मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरों को आगे बढ़ाना। जानवरों को चलाना। ५. खींचनेवाले जानवर को चलाकर गाड़ी, रथ आदि चलाना। ६. मारकर या बोलकर चौपायों को भगाना। ७. पंखे से हवा पहुँचाना।

हाँगी-संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँ] हामी। स्वीकृति।
मुहा०—हाँगी भरना = स्वीकार करना।

हाँडना-क्रि० स० [सं० मंडन] व्यर्थ इधर उधर फिरना। आवारा घूमना।
वि० [स्त्री० हाँड़नी] आवारा फिरनेवाला।

हाँडी-संज्ञा स्त्री० [सं० भांड] १. मिट्टी का मँझोला बरतन जो बटलोई के आकार का हो। हँड़िया।
मुहा०—हाँडी पकना = १. हाँड़ी में पकाई जानेवाली चीज़ का पकना। २. भीतर ही भीतर कोई युक्ति खड़ी होना। कोई षड्यंत्र रचा जाना। हाँड़ी चढ़ना = कोई चीज़ पकाने के लिये हाँडी का आग पर रखा जाना।
२. इसी आकार का शीशे का वह पात्र जो सजावट के लिये कमरे में टाँगा जाता है।

हाँता*-वि० [सं० हात] [स्त्री० हाँती] १. अलग किया हुआ। छोड़ा हुआ। २. दूर किया हुआ। हटाया हुआ।

हाँपना, हाँफना-क्रि० अ० [अनु० हँफ हँफ] कड़ी मिहनत करने, दौड़ने या रोग आदि के कारण ज़ोर ज़ोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना। तीव्र श्वास लेना।

हाँफा-संज्ञा पुं० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव। तीव्र और क्षिप्र श्वास।

हाँसना*-क्रि० अ० दे० "हँसना"।

हाँसल-संज्ञा पुं० [हिं० हाँस] वह घोड़ा जिसका रंग मेंहदी सा लाल और चारों पैर कुछ काले हों। कुम्मैत हिनाई।

हाँसी-संज्ञा स्त्री० [सं० हास] १. हँसी। हँसने की क्रिया या भाव। २. परिहास। हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी। मज़ाक़। ३. उपहास। निंदा।

हाँ हाँ-अव्य० [हिं० आँ = नहीं] निषेध या वारण करने का शब्द।

हा-अव्य० [सं०] १. शोक या दुःखसूचक शब्द। २. आश्चर्य या आह्लादसूचक शब्द। ३. भयसूचक शब्द।
संज्ञा पुं० हनन करनेवाला। मारनेवाला।

हाइ*-अव्य० दे० "हाय"।

हाई-संज्ञा स्त्री० [सं० घात] १. दशा। हालत। अवस्था। २. ढंग। घात। तौर। ढब।

हाऊ-संज्ञा पुं० [अनु०] हौवा। भकाऊँ।

हाकल-संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १५ मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है।

हाकलिका-संज्ञा स्त्री० [सं०] पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

हाकली-संज्ञा स्त्री० [सं०] दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

हाकिम-संज्ञा पुं० [अ०] १. हुकूमत करनेवाला। शासक। २. बड़ा अफसर।

हाकिमी-संज्ञा स्त्री० [अ० हाकिम] हाकिम का काम। हुकूमत। प्रभुत्व। शासन। वि० हाकिम का। हाकिम-संबंधी।

हाजत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. जरूरत। आवश्यकता। २. चाह। ३. पहरे के भीतर रखा जाना। हिरासत।

मुहा०—हाजत में देना या रखना = पहरे के भीतर देना। हवालात में डालना।

हाजमा-संज्ञा पुं० [अ०] पाचन-क्रिया। पाचन शक्ति। भोजन पचने की क्रिया।

हाज़िम-वि० [अ०] हज़म करनेवाला। भोजन पचानेवाला। पाचक।

हाज़िर-वि० [अ०] १. सम्मुख। उपस्थित। २ मौजूद। विद्यमान।

हाज़िर जवाब-वि० [अ०] [संज्ञा हाज़िर जवाबी] बात का चटपट अच्छा जवाब देने में होशियार। प्रत्युत्पन्न मति।

हाज़िरात-संज्ञा स्त्री० [अ०] दंदना आदि के द्वारा किसी के ऊपर कोई आत्मा बुलाना जिससे वह अनेक प्रकार की बातें कहने लगता है।

हाजी-संज्ञा पुं० [अ०] वह जो हज कर आया हो। (मुसल०)

हाट-संज्ञा स्त्री० [सं० हट्ट] १. दूकान। २. बाजार।

मुहा०—हाट करना = १. दूकान रखकर बैठना। २. सौदा लेने के लिये बाजार जाना। हाट लगना = दूकान या बाजार में बिक्री की चीजें रखी जाना। हाट चढ़ना = बाजार में बिकने के लिये आना।

३ बाजार लगने का दिन।

हाटक-संज्ञा पुं० [सं०] सोना। स्वर्ण।

हाटकपुर-संज्ञा पुं० [सं०] लंका।

हाटकलोचन-संज्ञा पुं० [सं०] हिरण्याक्ष।

हाड़-संज्ञा पुं० [सं० हड्ड] १ हड्डी। अस्थि। २ कुल या जाति की मर्य्यादा। कुलीनता।

हाता-संज्ञा पुं० [अ० इहातः] १ घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। २. दश विभाग। हलका या सूबा। प्रांत। ३ सीमा। हद। वि० [सं० हात] [स्त्री० हाती] १. अलग। दूर किया हुआ। २. नष्ट। बरबाद। [illegible] [सं० हंता] मारनेवाला।

हातिम-संज्ञा पुं० [अ०] १. निपुण। चतुर। कुशल। २. किसी काम में पक्का आदमी। उस्ताद। ३. एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार प्रसिद्ध है।

मुहा०—हातिम की कब्र पर लात मारना = बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना। (व्यंग्य)

४. अत्यंत दानी मनुष्य।

हाथ-संज्ञा पुं० [सं० हस्त] १. बाहु से लेकर पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली या पंजा। कर। हस्त।

मुहा०—हाथ में आना या पड़ना = अधिकार या वश में आना। मिलना। (किसी को) हाथ उठाना = सलाम करना। प्रणाम करना। (किसी पर) हाथ उठाना = किसी को मारने के लिये थप्पड़ या घूँसा तानना। मारना। हाथ ऊँचा होना = १. दान देने में प्रवृत्त होना। २. संपन्न होना। हाथ कट जाना = १. कुछ करने लायक न रह जाना। २ प्रतिज्ञा आदि से बद्ध हो जाना। हाथ की मैल = तुच्छ वस्तु। हाथ खाली होना = पास में कुछ द्रव्य न रह जाना। हाथ खुजलाना = १. मारने को जी करना। २ प्राप्ति के लक्षण दिखाई पड़ना। हाथ खींचना = १. किसी काम से अलग हो जाना। योग न देना। २. देना बंद कर देना। हाथ चलाना = मारने के लिये थप्पड़ तानना। मारना। हाथ चूमना = किसी की कारीगरी पर इतना खुश होना कि उसके हाथों को प्रेम की दृष्टि से देखना। हाथ छोड़ना = मारना। प्रहार करना। हाथ जोड़ना = १. प्रणाम करना। नमस्कार करना। २. अनुनय विनय करना। (दूर से) हाथ जोड़ना = संसर्ग या संबंध न रखना। किनारे रहना। हाथ डालना = किसी काम में हाथ लगाना। योग देना। हाथ तंग होना = खर्च करने लिये रुपया पैसा न रहना। (किसी वस्तु या बात से) हाथ धोना = खो देना। प्राप्ति संभावना न रखना। नष्ट करना। हाथ धोकर पीछे पड़ना = १. किसी काम में जी जान से लग जाना। हाथ पकड़ना = १. किसी को रोकना। २. आश्रय देना। शरण में लेना। ३. पाणिग्रहण करना। विवाह करना। हाथ पत्थर तले दबना = १ संकट या कठिनता की स्थिति में पड़ना। २. लाचार होना। [illegible] होना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना = बैठे रहना। कुछ काम धंधा न करना।

पसारना या फैलाना = कुछ माँगना। याचना करना। *हाथ पाँव चलना = काम धंधे के लिये* सामर्थ्य होना। कार्य्य करने की योग्यता होना। **हाथ पाँव ठंढे होना** = १ मरणासन्न होना। २. भय या आशंका से स्तब्ध हो जाना। **हाथ पाँव निकालना** = १. मोटा ताजा होना। २ सीमा का अतिक्रमण करना। ३ शरारत करना। **हाथ पाँव फूलना** = डर या शोक से घबरा जाना। **हाथ पाँव पटकना** = छटपटाना। **हाथ पाँव मारना या हिलाना** = १. प्रयत्न करना। कोशिश करना। २ बहुत परिश्रम करना। **हाथ पैर जोड़ना** = *विनती करना। अनुनय विनय करना।* (किसी वस्तु पर) **हाथ फेरना** = किसी वस्तु को उड़ा लेना। ले लेना। (किसी काम में) **हाथ बँटाना** = शामिल होना। शरीक होना। **हाथ बाँधे खड़ा रहना** = सेवा में बराबर उपस्थित रहना। **हाथ मलना** = १. बहुत पछताना। २ निराश और दुखी होना। (किसी वस्तु पर) **हाथ मारना** = उड़ा लेना। गायब कर लेना। **हाथ में करना** = वश में करना। ले लेना। (मन) **हाथ में करना** = मोहित करना। लुभाना। **हाथ में होना** = १. अधिकार में होना। २ वश में होना। **हाथ रँगना** = घूस लेना। **हाथ रोपना या ओड़ना** = हाथ फैलाना। माँगना। (कोई वस्तु) **हाथ लगना** = हाथ में आना मिलना। प्राप्त होना। (किसी काम में) **हाथ लगना** = १ आरंभ होना। शुरू किया जाना। २. *किसी के द्वारा किया जाना।* (किसी वस्तु में) **हाथ लगना** = छू जाना। स्पर्श होना। (किसी काम में) **हाथ लगाना** = १ आरंभ करना। शुरू करना। २ योग देना। **हाथ लगाना** = *छूना। स्पर्श करना।* **हाथ लगे मैला होना** = इतना स्वच्छ और पवित्र होना कि हाथ से छूने से मैला होना। **हाथों हाथ** = एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुए। **हाथों हाथ लेना** = बड़े आदर और सम्मान से स्वागत करना। २ लंबाई की एक नाप जो मनुष्य की कुहनी से लेकर पंजे के छोर तक की मानी जाती है। ३ ताश, जूए आदि के खेल में एक एक आदमी के खेलने की बारी। दाँव।

हाथपान–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + पान] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथफूल–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथा–संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] १ मुठिया। दस्ता। २. पंजे की छाप या चिह्न जो गीले पिसे चावल और हल्दी आदि पोत कर दीवार पर छापने से बनता है। छापा।

हाथाजोड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + जोड़ना] एक पौधा जो औषध के काम में आता है।

हाथापाई, हाथाबाँही–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + पाँव या बाँह] वह लड़ाई जिसमें हाथ पैर चलाए जायँ। भिड़ंत। धौल धप्पड़।

हाथी–संज्ञा पुं० [सं० हस्तिन्] [स्त्री० हथिनी] एक बहुत बड़ा स्तनपायी चौपाया जो सूँड़ के रूप में बढ़ी हुई नाक के कारण और सब जानवरों से विलक्षण दिखाई पड़ता है।

मुहा०—**हाथी की राह** = आकाश गंगा। डहर। **हाथी पर चढ़ना** = बहुत अमीर होना। **हाथी बाँधना** = बहुत अमीर होना। **हाथी के संग गाँड़े खाना** = बहुत बड़े बलवान की बराबरी करना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ] हाथ का सहारा। करावलंब।

हाथीखाना–संज्ञा पुं० [हिं० हाथी + फा० खान] वह घर जिसमें हाथी रखा जाय। फीलखाना।

हाथीदाँत–संज्ञा पुं० [हिं० हाथी + दाँत] हाथी के मुँह के दोनों छोरों पर निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं।

हाथीनाल–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी + नाल] हाथी पर चलनेवाली तोप। हयनाल। गजनाल।

हाथीवान–संज्ञा पुं० [हिं० हाथी + वान (प्रत्य०)] हाथी को चलाने के लिये नियुक्त पुरुष। फीलवान। महावत।

हादसा–संज्ञा पुं० [अ०] दुर्घटना।

हान*†–संज्ञा स्त्री० दे० "हानि"।

हानि–संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाश। अभाव। क्षय। २ नुकसान। क्षति। लाभ का उलटा। घाटा। टोटा। ३ स्वास्थ्य में बाधा। ४. अनिष्ट। अपकार। बुराई।

हानिकर–वि० [सं०] हानि करनेवाला। जिससे नुकसान पहुँचे। २. बुरा परिणाम उपस्थित करनेवाला। ३. तंदुरुस्ती बिगाड़नेवाला।

हानिकारक–वि० दे० "हानिकर"।

हानिकारी–वि० दे० "हानिकर"।

हाफ़िज़–संज्ञा पुं० [अ०] वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कंठ हो।

हामी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँ] 'हाँ' करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। स्वीकार।
मुहा०—हामी भरना = मंजूर करना।
संज्ञा पुं० १. वह जो हिमायत करता हो। २. सहायता करनेवाला। सहायक।

हाय–अव्य० [सं० हा] शोक, दुःख या कष्ट सूचित करनेवाला शब्द।
संज्ञा स्त्री० कष्ट। पीड़ा। दुःख।
मुहा०—(किसी की) हाय पड़ना = पहुँचाए हुए दुःख या कष्ट का बुरा फल मिलना।

हायल⁂–वि० [हिं० घायल] १. घायल। २. शिथिल। मूर्च्छित। बेकाम।
वि० [अ०] दो वस्तुओं के बीच में पड़नेवाला। रोकनेवाला। अंतरवर्त्ती।

हाय हाय–अव्य० [सं० हा हा] शोक, दुःख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द। दे० "हाय"।
संज्ञा स्त्री० १. कष्ट। दुःख। शोक। २. घबराहट। परेशानी। झंझट।

हार–संज्ञा स्त्री० [सं० हारि] १. लड़ाई, खेल, बाज़ी या चढ़ा-ऊपरी में जोड़ या प्रतिद्वंद्वी के सामने न जीत सकने का भाव। पराजय। शिकस्त।
मुहा०—हार खाना = हारना।
२. शिथिलता। थकावट। ३. हानि। क्षति। ४. ज़ब्ती। राज्य द्वारा हरण। ५. विरह। वियोग।
संज्ञा पुं० [सं०] १. सोने, चाँदी या मोतियों आदि की माला जो गले में पहनी जाय। २. ले जानेवाले। वहन करनेवाला। ३. मनोहर। सुंदर। ४. अंकगणित में भाजक। ५. पिंगल या छंद:शास्त्र में गुरु मात्रा। ६. नाश करनेवाला। नाशक।
प्रत्य० दे० "हारा"।

हारक–संज्ञा पुं० [सं०] १. हरण करनेवाला। २. मनोहर। सुंदर। ३. चोर। लुटेरा। ४. गणित में भाजक। ५. हार। माला।

हारद⁂–वि० दे० "हार्दिक"।

हारना–क्रि० अ० [सं० हार] १. प्रतिद्वंद्विता आदि में शत्रु के सामने विफल होना। पराजित होना। शिकस्त खाना। २. शिथिल होना। थक जाना। ३. प्रयत्न में निराश होना। असमर्थ होना।
मुहा०—हारे दर्जे = १. लाचार होकर। विवश होकर। हारकर = १. असमर्थ होकर। २. लाचार होकर।
क्रि० स० १. लड़ाई, बाज़ी आदि को सफलता के साथ न पूरा करना। २. गँवाना। खोना। ३. छोड़ देना। न रख सकना। ४. दे देना।

हारबंध–संज्ञा पुं० [सं०] एक चित्र-काव्य जिसमें पद्य हार के आकार में रखे जाते हैं।

हारबार⁂–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़बड़ी"।

हारसिंगार–संज्ञा पुं० दे० "परजाता"।

हारा–प्रत्य० [सं० धार = रखनेवाला] [स्त्री० हारी] एक पुराना प्रत्यय जो किसी शब्द के आगे लगकर कर्त्तव्य, धारण या संयोग आदि सूचित करता है। वाला।

हारिल–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुल में कोई लकड़ी या तिनका लिए रहती है।

हारी–वि० [सं० हारिन्] [स्त्री० हारिणी] १. हरण करनेवाला। २. ले जानेवाला। पहुँचानेवाला। ३. चुरानेवाला। ४. दूर करनेवाला। ५. नाश करनेवाला। ६. मोहित करनेवाला।
संज्ञा पुं० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और दो गुरु होते हैं।

हारीत–संज्ञा पुं० [सं०] १. चोर। लुटेरा। २. चोरी। लुटेरापन। ३. कण्व ऋषि के एक शिष्य।

हार्दिक–वि० [सं०] १. हृदय संबंधी। २. हृदय से निकला हुआ। सच्चा।

हाल–संज्ञा पुं० [अ०] १. दशा। अवस्था। २. परिस्थिति। ३. माजरा। संवाद। समाचार। वृत्तांत। ४. ब्योरा। विवरण। कैफ़ियत। ५. कथा। आख्यान। चरित्र। ६. ईश्वर में तन्मयता। लीनता। (मुसल०)
वि० वर्त्तमान। चलता। उपस्थित।
मुहा०—हाल में = थोड़े ही दिन हुए। हाल का = नया। ताजा।
अव्य० १. इस समय। अभी। २. तुरंत।
संज्ञा स्त्री० [हिं० हालना] १. हिलने की क्रिया या भाव। कंप। २. लोहे का वह बंद जो पहिए के चारों ओर घेरे में चढ़ाया जाता है।

हालगोला–संज्ञा पुं० [हिं० हाल ? + गोला] गेंद।

हालडोल–संज्ञा पुं० [हिं० हालना + डोलना]

१. हिलने की क्रिया या भाव। गति। २. हलकंप। हलचल।
हालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दशा। अवस्था। २. आर्थिक दशा। सांपत्तिक स्थिति। ३. संयोग। परिस्थिति।
हालना—†क्रि० अ० [सं० ह्लान] १. हिलना। डोलना। हरकत करना। २. काँपना। झूमना।
हालरा—संज्ञा पु० [हिं० हालना] १. बच्चों को लेकर हिलाना डुलाना। २. झोंका। ३. हलर। हिलोर।
हालाँकि—अव्य० [फा०] यद्यपि। गो कि। ऐसी बात है, फिर भी।
हालाहल—संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।
हालिम—संज्ञा पु० [देश०] एक पौधा जिसके बीज औषध के काम में आते हैं। चंसुर।
हाली—अव्य० [अ० हाल] जल्दी। शीघ्र।
हालों—संज्ञा पु० दे० "हालिम"।
हाव—संज्ञा पुं० [सं०] संयोग समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं। इनकी संख्या ११ है— लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, विब्बोक, विहृत, कुट्टमित, ललित और हेला। भाव विधान में "हाव" अनुभाव के ही अंतर्गत है।
हावनदस्ता—संज्ञा पुं० [फा०] खरल और बट्टा। खल और लोढ़ा।
हावभाव—संज्ञा पु० [सं०] स्त्रियों की वह मनोहर चेष्टा जिससे पुरुषों का चित्त आकर्षित होता है। नाज नखरा।
हाशिया—संज्ञा पु० [अ० हाशिय] १. किनारा। कोर। पाड़। २ गोट। मगजी। ३. हाशिए या किनारे पर का लेख। नोट।
मुहा०—हाशिए का गवाह = वह गवाह जिसका नाम किसी दस्तावेज के किनारे दर्ज हो। हाशिया चढ़ाना = किसी बात में मनोरंजन आदि के लिये कुछ और बात जोड़ना।
हास—संज्ञा पु० [सं०] १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक। ३. उपहास।
हासिल—वि० [अ०] प्राप्त। लब्ध। पाया हुआ। मिला हुआ।
संज्ञा पुं० १. गणित करने में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बच रहे। २. उपज। पैदावार। ३. लाभ। नफा। ४. गणित की क्रिया का फल। ५ जमा। लगान
हासी—वि० [सं० हासिन्] [स्त्री० हासिनी] हँसनेवाला।
हास्य—वि० [सं०] १. जिस पर लोग हँसें। २. उपहास के योग्य।
संज्ञा पु० १ हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २ नौ स्थायी भावों और रसों में से एक। ३. उपहास। निंदापूर्ण हँसी। ४. दिल्लगी। मज़ाक़।
हास्यास्पद—संज्ञा पु० [सं०] वह जिसके बेढंगेपन पर लोग हँसी उड़ावें।
हा हंत—अव्य० [सं०] अत्यंत शोकसूचक शब्द।
हा हा—संज्ञा पु० [अनु०] १. हँसने का शब्द।
यौ०—हाहा हीही, हाहा ठीठी = हँसी ठट्ठा। २ बहुत विनती की पुकार। दुहाई।
मुहा०—हाहा करना या खाना = गिड़गिड़ाना। बहुत विनती करना।
हाहाकार—संज्ञा पु० [सं०] घबराहट की चिल्लाहट। कुहराम।
हाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाय] कुछ पाने के लिये 'हाय हाय' करते रहना।
हाहू†—संज्ञा पुं० [अनु०] १. हल्लागुल्ला। कोलाहल। २. हलचल। धूम।
हाहूबेर—संज्ञा पु० [हाहू ?+हिं० बेर] जंगली बेर। मकोय।
हिंकरना—क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।
हिंकार—संज्ञा पु० [सं०] गाय के रँभाने का शब्द।
हिंगलाज—संज्ञा स्त्री० [सं० हिंगुलाजा] दुर्गा या देवी की एक मूर्त्ति जो सिंध में है।
हिंगु—संज्ञा पु० [सं०] हींग।
हिंगोट—संज्ञा पु० [सं० हिंगुपत्र] एक कँटीला जंगली पेड़। इसके गोल छोटे फलों से तेल निकलता है। इंगुदी।
हिंछा‡—संज्ञा स्त्री० दे० "इच्छा"।
हिंडन—संज्ञा पु० [सं०] घूमना। फिरना।
हिंडोरा—संज्ञा पु० दे० "हिंडोला"।
हिंडोल—संज्ञा पु० [सं० हिन्दोल] १. हिंडोला। २. एक प्रकार का राग।
हिंडोलना‡—संज्ञा पुं० दे० "हिंडोला"।
हिंडोला—संज्ञा पु० [सं० हिन्दोल] १ नीचे ऊपर घूमनेवाला एक चक्कर जिसमें लोगों

के बैठने के लिये छोटे छोटे मंच बने रहते हैं। २. फालसा। ३. झूला।
हिंताल-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का खजूर।
हिंद-संज्ञा पुं० [फा०] हिंदोस्तान। भारतवर्ष।
हिंदवाना-संज्ञा पुं० [फा० हिंद+वान] तरबूज। कलींदा।
हिंदवी-संज्ञा स्त्री० [फा०] हिंदी भाषा।
हिंदी-वि० [फा०] हिंदुस्तान का। भारतीय। संज्ञा पुं० हिंद का रहनेवाला। भारतवासी। संज्ञा स्त्री० १. हिंदुस्तान की भाषा। २. हिंदुस्तान के उत्तरी या प्रधान भाग की भाषा जिसके अंतर्गत कई बोलियाँ हैं और जो बहुत से अंशों में सारे देश की एक सामान्य भाषा मानी जाती है।
हिंदुस्तान-संज्ञा पुं० [फा० हिंदोस्तान] १. भारतवर्ष। २. भारतवर्ष का उत्तरीय मध्य भाग जो दिल्ली से पटने तक है।
हिंदुस्तानी-वि० [फा०] हिंदुस्तान का। संज्ञा पुं० हिंदुस्तान का निवासी। भारतवासी।
संज्ञा स्त्री० १. हिंदुस्तान की भाषा। २. बोल-चाल या व्यवहार की वह हिंदी जिसमें न तो बहुत अरबी, फ़ारसी के शब्द हों, न संस्कृत के।
हिंदुस्थान-संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।
हिंदू-संज्ञा पुं० [फा०] भारतवर्ष में बसनेवाली आर्य्य जाति के वंशज। वेद, स्मृति, पुराण आदि अथवा इनमें से किसी एक के अनुसार चलनेवाला।
हिंदूपन-संज्ञा पुं० [फा० हिंदू+पन (प्रत्य०)] हिंदू होने का भाव या गुण।
हिंदोस्तान-संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।
हिंयाँ*-अव्य० दे० "यहाँ"।
हिंव-संज्ञा पुं० दे० "हिम"।
हिंवार-संज्ञा पुं० [सं० हिमालि] हिम। बर्फ़। पाला।
हिंस-संज्ञा स्त्री० [अनु० हि हि] घोड़ों के बोलने का शब्द। हिनहिनाहट।
हिंसक-संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंसा करनेवाला। हत्यारा। घातक। २. बुराई या हानि करनेवाला। ३. जीवों को मारनेवाला पशु। ४. शत्रु। दुश्मन।
हिंसन-संज्ञा पुं० [सं०] [हिंसनीय, हिंसित, हिंस्य] १. जीवों का वध करना। जान मारना। २. पीड़ा पहुँचाना। सताना। ३. अनिष्ट करना या चाहना।
हिंसा-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राण मारना या कष्ट देना। २. हानि पहुँचाना।
हिंसात्मक-वि० [सं०] जिसमें हिंसा हो।
हिंसालु-वि० [सं०] हिंसा करनेवाला।
हिंस्र-वि० [सं०] हिंसा करनेवाला। खूँखार।
हि-एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले तो सब कारकों में होता था, पर पीछे कर्म और संप्रदान में ही ('को' के अर्थ में) रह गया।
‡*अव्य० दे० "ही"।
हिअ, हिआ-संज्ञा पुं० दे० "हृदय"।
हिआव-संज्ञा पुं० दे० "हियाव"।
हिकमत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. विद्या। तत्वज्ञान। २. कला-कौशल। निर्माण की युक्ति। ३ युक्ति। तदबीर। उपाय। ४. चतुराई का ढंग। चाल। ५. हकीम का काम या पेशा। हकीमी। वैद्यक।
हिकमती-वि० [अ० हिकमत] १. कार्य-साधन की युक्ति निकालनेवाला। तदबीर सोचनेवाला। कार्य्य-पटु। २. चतुर। चालाक। ३. किफ़ायती।
हिकायत-संज्ञा स्त्री० [अ०] कथा। कहानी।
हिक्का-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिचकी। २. बहुत हिचकी आने का रोग।
हिचक-संज्ञा स्त्री० [हिं० हिचकना] किसी काम के करने में वह रुकावट जो मन में मालूम हो। आगा-पीछा।
हिचकना-क्रि० अ० [सं० हिक्का] १. हिचकी लेना। २. किसी काम के करने में कुछ अनिच्छा, भय या संकोच के कारण प्रवृत्त न होना। आगा-पीछा करना।
हिचकिचाना-क्रि० अ० दे० "हिचकना"।
हिचकी-संज्ञा स्त्री० [अनु० हिच या सं० हिक्का] १. पेट की वायु का झोंक के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना।
मुहा०—हिचकियाँ लगना = मरने के निकट होना।
२. रह रहकर सिसकने का शब्द।
हिजड़ा-संज्ञा पुं० दे० "हीजड़ा"।
हिजरी-संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी सन् या संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से

मदीने भागने की तारीख़ (१६ जुलाई सन् ६२२ ई०)।

हिज्जे-संज्ञा पु० [अ० हिज्ज़] किसी शब्द में आए हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना।

हिज्र-संज्ञा पु० [अ०] जुदाई। वियोग।

हिडिंब-संज्ञा पु० [सं०] एक राक्षस जिसे भीम ने पांडवों के वनवास के समय मारा था।

हिडिंबा-संज्ञा स्त्री० [सं०] हिडिंब राक्षस की बहिन जिसके साथ भीम ने विवाह किया था।

हित-वि० [सं०] भलाई करने या चाहने-वाला। खैरख़ाह।

संज्ञा पु० १. लाभ। फायदा। २ कल्याण। मंगल। भलाई। उपकार। बेहतरी। ३. स्वास्थ्य के लिये लाभ। ४. प्रेम। स्नेह। अनुराग। ५. मित्रता। ख़ैरख़ाही। ६ भला चाहने-वाला आदमी। मित्र। ७ संबंधी। नातेदार।

अव्य० १. (किसी के) लाभ के हेतु। खातिर या प्रसन्नता के लिये। २. हेतु। लिये। वास्ते।

हितकर, हितकारक-संज्ञा पु० [सं०] १. भलाई करनेवाला। २. लाभ पहुँचाने वाला। फायदेमंद। ३ स्वास्थ्यकर।

हितकारी-वि० दे० "हितकर"।

हितचिंतक-संज्ञा पु० [सं०] भला चाहने-वाला। खैरख़ाह।

हितचिंतन-संज्ञा पुं० [सं०] किसी की भलाई की कामना या इच्छा। खैरख़ाही।

हितता॰-संज्ञा स्त्री० [सं० हित + ता] भलाई।

हितवना॰†-क्रि० अ० दे० "हिताना"।

हितवादी-वि० [सं० हितवादिन्] [स्त्री० हितवादिनी] हित की बात कहनेवाला।

हिताई-संज्ञा स्त्री० [सं० हित] नाता। रिश्ता।

हिताना॰-क्रि० अ० [सं० हित] १. हित-कारी होना। अनुकूल होना। २. प्रेम-युक्त होना। ३. प्यारा या अच्छा लगना।

हितावह-वि० दे० "हितकारी"।

हिताहित-संज्ञा पु० [सं०] भलाई-बुराई। लाभ हानि। नफ़ा-नुकसान।

हितू, हितु-संज्ञा पु० [सं० हित] १. भलाई करने या चाहनेवाला। खैरख़ाह। २. संबंधी। नातेदार। ३. सुहृद। स्नेही।

हितैषिता-संज्ञा स्त्री० [सं०] भलाई चाहने की वृत्ति। खैरख़ाही।

हितैषी-वि० [सं० हितैषिन्] [स्त्री० हितैषिणी] भला चाहनेवाला। खैरख़ाह।

हितौना॰†-क्रि० अ० दे० "हिताना"।

हिदायत-संज्ञा स्त्री० [अ०] अधिकारी की शिक्षा। आदेश। निर्देश।

हिनती॰†-संज्ञा स्त्री० दे० "हीनता"।

हिनहिनाना-क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा हिन-हिनाहट] घोड़े का बोलना। हींसना।

हिना-संज्ञा स्त्री० [अ०] मेंहदी।

हिफ़ाज़त-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी वस्तु को इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे। रक्षा। २ देख-रेख। एपरदारी।

हिब्बा-संज्ञा पु० [अ० हिब्ब] १. दान। २. दान।

हिब्बानामा-संज्ञा पुं० [अ० + फा०] दानपत्र।

हिमंचल॰†-संज्ञा पुं० दे० "हिमाचल"।

हिमंत॰†-संज्ञा पु० दे० "हेमंत"।

हिम-संज्ञा पुं० [सं०] १. पाला। बर्फ। तुषार। २. जाड़ा। ठंढ। ३ जाड़े की ऋतु। ४. चंद्रमा। ५. चंदन। ६. कपूर। ७. मोती। ८ कमल।

वि० ठंढा। सर्द।

हिम-उपल-संज्ञा पु० [सं०] ओला। पत्थर।

हिमकण-संज्ञा पु० [सं०] बर्फ या पाले के महीन टुकड़े।

हिमकर-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमकिरण-संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

हिमभानु-संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

हिमयानी-संज्ञा स्त्री० [फा०] रुपया पैसा रखने की जालीदार लंबी थैली जो कमर में बाँधी जाती है।

हिमवत्-संज्ञा पुं० दे० "हिमवान्"।

हिमवान-वि० [सं० हिमवत्] [स्त्री० हिमवती] बर्फवाला। जिसमें बर्फ या पाला हो।

संज्ञा पु० १. हिमालय। २. कैलाश पर्वत। ३ चंद्रमा।

हिमांशु-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमाक़त-संज्ञा स्त्री० [अ०] बेवकूफी।

हिमाचल-संज्ञा पु० [सं०] हिमालय।

हिमाद्रि-संज्ञा पु० [सं०] हिमालय पहाड़।

हिमामदस्ता-संज्ञा पु० [फा० हावनदस्त:] खरल और बट्टा।

हिसाव किताव—सज्ञा पु० [अ०] १. आमदनी, खर्च आदि का ब्योरा जो लिखा हो। २. ढंग। चाल। रीति। क़ायदा।

हिसिपा†—सज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १ स्पर्द्धा। बराबरी करने का भाव। होड़। २. समता। तुल्य भावना।

हिस्सा—सज्ञा पु० [अ० हिस्सः] १. भाग। अंश। २. टुकड़ा। खंड। ३ उतना अंश जितना प्रत्येक को विभाग करने पर मिले। बखरा। विभाग। तक़सीम। ५. विभाग। खंड। ६. अंग। अवयव। अंतभूत वस्तु। ७ साझा।

हिस्सेदार—सज्ञा पु० [अ० हिस्सः + फा०दार (प्रत्य०)] १. वह जिसे कुछ हिस्सा मिला हो। २. रोजगार में शरीक। साझेदार।

हिहिनाना—क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।

हींग—सज्ञा स्त्री० [स० हिंगु] १. एक छोटा पौधा जो अफ़्ग़ानिस्तान और फ़ारस में आप से आप और बहुत होता है। २. उस पौधे का जमाया हुआ दूध या गोंद जिसमें बड़ी तीक्ष्ण गंध होती है और जिसका व्यवहार दवा और मसाले में होता है।

[हीं]स—सज्ञा स्त्री० [स० हेष] घोड़े या गधे के बोलने का शब्द। रेंक या हिनहिनाहट।

[हीं]सना—क्रि० अ० [अनु०] १. दे० "हिनहिनाना"। २. गदहे का बोलना। रेंकना।

[ही]हीं—संज्ञा स्त्री० [अनु०] हँसने का शब्द।

[ही]—अव्य० [स० हि (निश्चयार्थक)] एक अव्यय जिसका व्यवहार जोर देने के लिये या निश्चय, अल्पता, परिमिति तथा स्वीकृति आदि सूचित करने के लिये होता है।
सज्ञा पु० दे० "हिय", "हृदय"।
क्रि० अ० व्रजभाषा के 'होना' (=होना) क्रिया के भूतकाल 'हो' (=था) का स्त्री० रूप। थी।

[ही]श्र—सज्ञा पु० दे० "हिय"।

[ही]क—सज्ञा स्त्री० [स० हिक्का] १. हिचकी। २. हलकी अरुचिकर गंध।

[ही]चना†—क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

[ही]ठना—क्रि० अ० [स० अधिष्ठा] १ पास जाना। समीप होना। फटकना। २. जाना। पहुँचना।

हीन—वि० [स०] १. परित्यक्त। छोड़ा हुआ। रहित। शून्य। वंचित। ३. निम्न कोटि का। निकृष्ट। घटिया। ४. ओछा। नीच। बुरा। ४. तुच्छ। नाचीज़। ५ सुख समृद्धि रहित। दीन। ६ अल्प। कम। थोड़ा। ७. दीन। नम्र।
सज्ञा पु० १. प्रमाण के अयोग्य साक्षी। बुरा गवाह। २. अधम नायक। (साहित्य)

हीनकुल—वि० [स०] नीच कुल का।

हीनक्रम—सज्ञा पु० [सं०] काव्य में एक दोष जो उस स्थान पर माना जाता है जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाए गए हों, उसी क्रम से गुणी न गिनाए जायँ।

हीनचरित—वि० [स०] बुरे आचरणवाला।

हीनता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कमी। त्रुटि। २. क्षुद्रता। तुच्छता। ३ ओछापन। ४ बुराई। निकृष्टता।

हीनत्व—सज्ञा पुं० [स०] हीनता।

हीनबल—वि० [स०] कमजोर।

हीनबुद्धि—वि० [स०] दुर्बुद्धि। मूर्ख।

हीनयान—सज्ञा पु० [स०] बौद्ध सिद्धांत की आदि और प्राचीन शाखा जिसके ग्रंथ पाली भाषा में है। इसकी रचना बरमा और स्याम आदि में हुई है।

हीनरस—सज्ञा पुं० [स०] काव्य में एक दोष जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध प्रसंग लाने से होता है। यह वास्तव में रस-विरोध ही है।

हीनवीर्य्य—सज्ञा पुं० [स०] कमज़ोर।

हीन-हयात—सज्ञा स्त्री० [अ०] जीवन-काल।
अव्य० जब तक जीवन रहे, तब तक।

हीनांग—वि० [सं०] १. जिसका कोई अंग न हो। खंडित अंगवाला। २. अधूरा।

हीनोपमा—सज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य में वह उपमा जिसमें बड़े उपमेय के लिये छोटा उपमान लाया जाय।

हीय, हीया*—सज्ञा पु० दे० "हिय"।

हीर—संज्ञा पुं० [स०] १ हीरा नामक रत्न। २ वज्र। बिजली। ३ सर्प। साँप। ४. छप्पय के ६२वें भेद का नाम। ५ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, सगण, नगण, जगण और रगण होते हैं। ६. एक मात्रिक छंद जिसमें ६, ६ और ११ के विराम से २३ मात्राएँ होती हैं।
सज्ञा पु० [हिं० हीरा] १. किसी वस्तु के भीतर का सार भाग। गूदा या सत। सार। २. लकड़ी के भीतर का सार भाग।

३. शरीर की सार वस्तु। धातु। वीर्य। ४. शक्ति। बल।

हीरक–संज्ञा पुं० [सं०] १. हीरा नामक रत्न। २. हीर छंद।

हीरा–संज्ञा पुं० [सं० हीरक] एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो अपनी चमक और कड़ाई के लिये प्रसिद्ध है। वज्रमणि।

मुहा०—हीरे की कनी चाटना = हीरे का चूर खाकर आत्म हत्या करना।

हीरा कसीस–संज्ञा पुं० [हिं० हीर + सं० कसीस] लोहे का वह विकार जो देखने में कुछ हरापन लिए मटमैले रंग का होता है।

हीरामन–संज्ञा पुं० [हिं० हीरा + मणि] तोते की एक कल्पित जाति जिसका रंग सोने का सा माना जाता है।

हीलना†C–क्रि० अ० दे० "हिलना"।

हीला–संज्ञा पुं० [अ० हीलः] १. बहाना। मिस।

यौ०—हीला हवाला = बहाना।

२. निमित्त। द्वार। वसीला। व्याज।

ही ही–संज्ञा स्त्री० [अनु०] ही ही शब्द के साथ हँसने की क्रिया।

हुँ–अव्य० दे० "हूँ"।

अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द। हाँ।

हुँकरना–क्रि० अ० दे० "हुंकारना"।

हुंकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. ललकार। डाँटने का शब्द। २. गर्जन। गरज। ३. चीत्कार। चिल्लाहट।

हुंकारना–क्रि० अ० [सं० हुंकार + ना (प्रत्य०)] १. डपटना। डाँटना। २. गरजना। ३. चिग्घाड़ना। चिल्लाना।

हुँकारी–संज्ञा स्त्री० [अनु० हुँहुँ + करना] १. 'हुँ' करने की क्रिया। २. स्वीकृति सूचक शब्द। हामी।

संज्ञा स्त्री० दे० "चिकारी"।

हुँडार–संज्ञा पुं० दे० "भेड़िया"।

हुंडी–संज्ञा स्त्री० [?] १. वह कागज़ जिस पर एक महाजन दूसरे महाजन को, कुछ रुपया देने के लिये लिखकर किसी को रुपए के बदले में देता है। निधिपत्र। लोटपत्र। चेक।

मुहा०—हुंडी सकारना = हुंडी के रुपए का देना स्वीकार करना। दर्शनी हुंडी = वह हुंडी जिसके दिखाते ही रुपए चुकता कर देने का नियम हो।

२. उधार रुपए देने की एक रीति जिसमें लेनेवाले को साल भर में २०) का २५) या १५) का २०) देना पड़ता है।

हुँत–प्रत्य० [प्रा० विभक्ति 'हिंतो'] १. पुरानी हिंदी की पंचमी और तृतीया की विभक्ति। से। २. लिये। निमित्त। वास्ते। खातिर। ३. द्वारा। ज़रिए से।

हुत†–अ० [सं० उप] अतिरेक-सूचक शब्द। कथित के अतिरिक्त और भी।

हुआना–क्रि० अ० [अनु० हुआँ] 'हुआँ हुआँ' करना। गीदड़ों का बोलना।

हुकरना–क्रि० अ० दे० "हुँकारना"।

हुकारना–क्रि० अ० दे० "हुँकारना"।

हुकुम†–संज्ञा पुं० दे० "हुक्म"।

हुकूमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रभुत्व। *शासन। आधिपत्य। अधिकार।*

मुहा०—हुकूमत चलाना = प्रभुत्व या अधिकार से काम लेना। हुकूमत जताना = अधिकार या बड़प्पन प्रकट करना। रोब दिखाना।

२. राज्य। शासन। राजनीतिक आधिपत्य।

हुक्का–संज्ञा पुं० [अ०] तंबाकू का धुआँ खींचने या तंबाकू पीने के लिये विशेष रूप से बना एक नल-यंत्र। गड़गड़ा। फरशी।

हुक्का-पानी–संज्ञा पुं० [अ० हुक्का + हिं० पानी] एक दूसरे के हाथ से हुक्का तंबाकू, जल आदि पीने और पिलाने का व्यवहार। बिरादरी की राह-रस्म।

मुहा०—*हुक्का पानी बंद करना = बिरादरी से अलग करना।*

हुक्काम–*संज्ञा पुं० [अ० 'हाकिम' का बहुवचन रूप]* हाकिम लोग। अधिकारीवर्ग।

हुक्म–संज्ञा पुं० [अ०] १. बड़े का वचन जिसका पालन कर्त्तव्य हो। आज्ञा। आदेश।

मुहा०—हुक्म उठाना = १. हुक्म रद करना। २. आज्ञा पालन करना। हुक्म की तामील = आज्ञा का पालन। हुक्म चलाना या जारी करना = आज्ञा देना। हुक्म तोड़ना = आज्ञा भंग करना। हुक्म देना = आज्ञा करना। हुक्म बजाना या बजा लाना = आज्ञा पालन करना। हुक्म मानना = आज्ञा पालन करना।

२. स्वीकृति। अनुमति। इजाज़त। ३.

अधिकार। प्रभुत्व। शासन। ४. विधि। नियम। शिक्षा। ५ ताश का एक रंग।

हुक्मनामा–संज्ञा पु० [अ० + फा०] वह कागज जिस पर हुक्म लिखा हो। आज्ञा पत्र।

हुक्मबरदार–संज्ञा पु० [अ० + फा०] आज्ञाकारी। सेवक। अधीन।

हुक्मी–वि० [अ० हुक्म] १. दूसरे की आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। पराधीन। २ जरूर असर करनेवाला। अचूक। अव्यर्थ। ३ विवश्य कर्तव्य। लाजिमी। जरूरी।

हुजूम–संज्ञा पु० [अ०] भीड़।

हुजूर–संज्ञा पु० [अ०] १. किसी बड़े का सामीप्य। समक्षता। २ बादशाह या हाकिम का दरबार। कचहरी। ३. बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द।

हुजूरी–संज्ञा पु० [अ० हुजूर] १. खास सेवा में रहनेवाला नौकर। २. दरबारी। मुसाहब।

वि० हुजूर का। सरकारी।

हुज्जत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. व्यर्थ का तर्क। २ विवाद। झगड़ा। तकरार।

हुज्जती–वि० [हिं० हुज्जत] हुज्जत करनेवाला।

हुड़काना–क्रि० स० [हिं० हुड़क] १. भयभीत और दुःखी करना। २. तरसाना।

हुड़दंग–संज्ञा पु० [अनु० हुड़ + हिं० दंगा] धमाचौकड़ी। उपद्रव। उत्पात।

हुडुक–संज्ञा पु० [सं० हुडुक] एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल।

हुड़क्का–संज्ञा पु० दे० "हुडुक"।

हुत–वि० [सं०] हवन किया हुआ। आहुति दिया हुआ।

* क्रि० अ० 'होना' क्रिया का प्राचीन भूत कालिक रूप। था।

हुता*–क्रि० अ० [हिं० हुत] 'होना' क्रिया का पुरानी अवधी हिंदी का भूतकालिक रूप। था।

हुताशन–संज्ञा पु० [सं०] अग्नि। आग।

हुति*–अव्य० [प्रा० हितो] १. अपादान और करण कारक का चिह्न। द्वारा। २. ओर से। तरफ से।

हुँते–अव्य० [प्रा० हितो] १ से। द्वारा। २ तरफ से।

हुतो–क्रि० अ० ['होना' क्रि० का व्रज० भूत-कालिक रूप] था।

हुदकाना*–क्रि० स० [देश०] उमकाना उभारना।

हुदना*–क्रि० अ० [सं० हुंडन] स्तब्ध होना। रुकना।

हुदहुद–संज्ञा पु० [अ०] एक चिड़िया।

हुन–संज्ञा पु० [सं० हूण] १ मोहर। अशरफी। २ सोना। सुवर्ण।

मुहा०—हुन बरसना = धन को बहुत अधिकता होना।

हुनर–संज्ञा पु० [फा०] १. कला। कारी गरी। २ गुण। करतब। ३ कौशल। युक्ति। चतुराई।

हुनरमंद–वि० [फा०] कला कुशल। निपुण।

हुमकना–क्रि० अ० [अनु० हुँ] १. उछलना कूदना। २ पैरों से जोर लगाना। ३. पैरों को आघात के लिये जोर से उठाना। ४ चलने का प्रयत्न करना। ठुमकना। (बच्चों का) ५ दबाने के लिये जोर लगाना।

हुमगना–क्रि० अ० दे० "हुमकना"।

हुमा–संज्ञा स्त्री० [फा०] एक कल्पित पक्षी जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि जिसके ऊपर उसकी छाया पड़ जाय, वह बादशाह हो जाता है।

हुमेल–संज्ञा स्त्री० [अ० हमायल] अशर्फियों को गूँथकर बनी हुई एक प्रकार की माला।

हुरदंगा–संज्ञा पु० दे० "हुड़दंग"।

हुरमत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आबरू। इज्जत। मान। मर्यादा।

हुरुमयी–संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नृत्य।

हुलसना–क्रि० अ० [हिं० हुलास] १. आनंद से फूलना। खुशी से भरना। २. उभरना। उठना। ३ उमड़ना। बढ़ना।

* क्रि० स० आनंदित करना।

हुलसाना–क्रि० स० [हिं० हुलसना] आनंदित करना।

क्रि० अ० दे० "हुलसना"।

हुलसी–संज्ञा स्त्री० [हिं० हुलसना] १. हुलास। उल्लास। आनंद की उमंग। २. किसी किसी के मत से तुलसीदासजी की माता का नाम।

हुलहुल–संज्ञा पु० [?] एक छोटा पौधा।

हुलास-संज्ञा पुं० [सं० उल्लास] १ आनंद की उमंग । उल्लास । आह्लाद । २ उत्साह । हौसला । ३ उमगना । बढ़ना । संज्ञा स्त्री० सुँघनी । नास्यरोशन ।

हुलिया-संज्ञा पुं० [अ० हुलिय] १ शकल । आकृति । २ किसी मनुष्य के रूप रंग आदि का विवरण ।

मुहा०—हुलिया कराना या लिखाना = किसी आदमी का पता लगाने के लिये उसकी शकल सूरत आदि पुलिस में दर्ज कराना ।

हुल्लड़-संज्ञा पुं० [अनु०] १ शोरगुल । हल्ला । कोलाहल । २ उपद्रव । ऊधम । धूम । ३ हलचल । आंदोलन ।

हुल्लास-संज्ञा पुं० [सं० उल्लास] चौपाई और त्रिभंगी के मेल से बना एक छंद ।

हुश-अव्य० [अनु०] अनुचित बात मुँह से निकालने पर रोकने का शब्द ।

हुसियार†-वि० दे० "होशियार" ।

हुसैन-संज्ञा पुं० [अ०] मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गए थे । मुहर्रम इन्हीं के शोक में मनाया जाता है ।

हुस्न-संज्ञा पुं० [अ०] १ सौंदर्य । सुंदरता । लावण्य । २ तारीफ़ की बात । खूबी ।

हुस्यार†-वि० दे० "होशियार" ।

हूँ-अव्य० [अनु०] स्वीकार-सूचक शब्द । अव्य० दे० "हू" ।

सर्व० वर्तमान कालिक क्रिया "है" का उत्तम पुरुष एकवचन का रूप ।

हूँकना-क्रि० अ० [अनु०] १ गाय का दुःख सूचित करने के लिये धीरे धीरे बोलना । हुँकरना । २ हुंकार शब्द करना । वीरों का ललकारना या डपटना ।

हूँठा-संज्ञा पुं० [हिं० हूँठ] साढ़े तीन का पहाड़ा ।

हूँस-संज्ञा स्त्री० [सं० हिंस] १ ईर्ष्या । डाह । २ बुरी नजर । टोक । ३ कोसना । फटकार ।

हूँसना-क्रि० स० [हिं० हूँस] नजर लगाना । क्रि० अ० १ ईर्ष्या से ललचाना । २ ललचाना । ३ कोसना ।

हू†-अव्य० [सं० उप = आगे] एक अतिरेक बोधक शब्द । भी ।

हूक-संज्ञा स्त्री० [सं० हिक्का] १ छाती या कलेजे का दर्द । साल । २ दर्द । पीड़ा । कसक । ३ संताप । दुःख । ४ आशंका । खटका ।

हूकना-क्रि० अ० [हिं० हूक] १ सालना । दुखना । दर्द करना । २ पीड़ा से चौंक उठना ।

हूटना†-क्रि० अ० [सं० हुड = चलना] १ हटना । टलना । २ मुड़ना । पीठ फेरना ।

हूठा-संज्ञा पुं० [हिं० अँगूठा] १ अंगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा । ठेंगा । २ भद्दी या गँवारू चेष्टा ।

मुहा०—हूठा देना = ठेंगा दिखाना । अशिष्टता से हाथ मटकाना ।

हूण-संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन मंगोल जाति जो प्रबल होकर एशिया और योरप के सभ्य देशों पर आक्रमण करती हुई फैली थी ।

हूबहू-वि० [अ०] ज्यों का त्यों । ठीक वैसा ही । बिलकुल समान ।

हूर-संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों के स्वर्ग की अप्सरा ।

हूल-संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] १ भाले, डंडे आदि की नोक को जोर से ठेलना अथवा भोंकना । २ हूक । शूल । पीड़ा । संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ कोलाहल । हल्ला । धूम । २ हर्षध्वनि । ३ ललकार । ४ खुशी । आनंद ।

हूलना-क्रि० स० [हिं० हूल] १ लाठी, भाला आदि की नोक को जोर से ठेलना या घुसाना । गड़ाना । २ शूल उत्पन्न करना ।

हूला-संज्ञा पुं० [हिं० हूलना] हूलने की क्रिया या भाव ।

हूश-वि० [हिं० हूड] १ असभ्य । उजड्ड । २ अशिष्ट । बेहूदा ।

हूह-संज्ञा स्त्री० [अनु०] हुंकार । कोलाहल । युद्धनाद ।

हूहू-संज्ञा पुं० [अनु०] अग्नि के जलने का शब्द । धायँ धायँ ।

हृत-वि० [सं०] १ पहुँचाया हुआ । २ हरण किया हुआ । लिया हुआ ।

हृति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ले जाना । हरण । २ नाश । ३ लूट ।

हृत्कंप-संज्ञा पुं० [सं०] १ हृदय की कँपकँपी । २ अत्यंत भय । दहशत ।

हैफ़–अव्य० [अ०] अफ़सोस। हाय। हा।
हैबत–संज्ञा स्त्री० [अ०] भय। दहशत।
हैवर¹–संज्ञा पुं० [सं० हयवर] अच्छा घोड़ा।
हैम–वि० [सं०] [स्त्री० हैमी] १. सोने का। स्वर्णमय। २. सुनहरे रंग का।
वि० [सं०] १. हिम-संबंधी। २. जाड़े या वर्फ़ में होनेवाला।
हैमवत–वि० [सं०] [स्त्री० हैमवती] हिमालय का। हिमालय-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. हिमालय का निवासी। २ एक राक्षस। ३. एक संप्रदाय का नाम।
हैमवती–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. गंगा।
हैरत–संज्ञा स्त्री० [अ०] आश्चर्य्य। अचंभा।
हैरान–वि० [अ०] [संज्ञा हैरानी] १. आश्चर्य्य से स्तब्ध। चकित। भौचक्का। २. परेशान। व्यग्र। तंग।
हैवान–संज्ञा पुं० [अ०] १. पशु। जानवर। २. बेवकूफ़ या गँवार आदमी।
हैवानी–वि० [अ० हैवान] १. पशु का। २. पशु के करने के योग्य।
हैसियत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता। सामर्थ्य। शक्ति। २ वित्त। बिसात। आर्थिक दशा। ३. श्रेणी। दरजा। ४. धन। दौलत।
हैहय–संज्ञा पुं० [सं०] १. एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है और कलचुरि के नाम से प्रसिद्ध है। २. हैहयवंशी कार्त्तवीर्य्य सहस्रार्जुन।
हैहयराज, हैहयाधिराज–संज्ञा पुं० [सं०] हैहयवंशी कार्त्तवीर्य्य सहस्रार्जुन।
हैहै–अव्य० [हा हा!] शोक या दुःख-सूचक शब्द। हाय। अफ़सोस।
हों–क्रि० अ० सत्तार्थक क्रिया 'होना' का बहुवचन संभाव्य काल का रूप।
होंठ–संज्ञा पुं० [सं० ओष्ठ] मुख-विवर का उभरा हुआ किनारा जिससे दाँत ढँके रहते हैं। ओष्ठ। रदच्छद।
मुहा०—होंठ काटना या चबाना = भीतरी क्रोध या क्षोभ प्रकट करना।
हो–संज्ञा पुं० [सं०] पुकारने का शब्द या संबोधन।
क्रि० अ० सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्यपुरुष संभाव्य काल तथा मध्यमपुरुष बहुवचन के वर्तमान-काल का रूप।
अ० ब्रज की वर्तमान-कालिक क्रिया का सामान्य भूत का रूप। था।
होई–संज्ञा स्त्री० [हिं० होना] एक पूजन दीवाली के आठ दिन पहले होता है।
होड़–संज्ञा स्त्री० [सं० हार = विवाद] शर्त। बाज़ी। २. एक दूसरे से आगे जाने का प्रयत्न। स्पर्द्धा। ३. [illegible] समान का प्रयास। बराबरी। ४. [illegible]
होड़ावादी–संज्ञा स्त्री० दे० "होड़ा-होड़ी"
होड़ाहोड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० होड़] १. [illegible] होड़। चढ़ा ऊपरी। २. शर्त [illegible]
होता–संज्ञा स्त्री० [हिं० होना] १. पास में धन होने की दशा। संपन्नता। २. वित्त। सामर्थ्य। समाई।
होतव, होतव्य–संज्ञा पुं० दे० "होनहार"।
होतव्यता–संज्ञा स्त्री० दे० "होनहार"।
होता–संज्ञा पुं० [सं० होतृ] [स्त्री० होत्री] यज्ञ में आहुति देनेवाला।
होनहार–वि० [हिं० होना + हार (प्रत्य०)] १. जो अवश्य होगा। जो होने को है भावी। २. जिसके बढ़ने या श्रेष्ठ होने की आशा हो। अच्छे लक्षणोंवाला।
संज्ञा पुं० वह बात जो होने को हो। व बात जो अवश्य हो। होनी। भविष्यता
होना–क्रि० अ० [सं० भवन] १. प्रधान सत्तार्थक क्रिया। अस्तित्व रखना। उपस्थित या मौजूद रहना।
मुहा०—किसी का होना = १. किसी अधिकार में, अधीन या आज्ञावर्त्ती होना। किसी का प्रेमी या प्रेमपात्र होना। ३ किसी आत्मीय, कुटुंबी या संबंधी होना। सगा होना कहीं का हो रहना = (कहीं से) न लौटना बहुत रुक या ठहर जाना। (कहीं से) होते या होते हुए = १. गुज़रते हुए। बीच से मध्य से। २. बीच में ठहरते हुए। ३. पहुँचना। जाना। मिलना। हो आना = करने के लिये जाना। मिल आना। होते पर = पास में धन होने की दशा में। संपन्नता में।
२. एक रूप से दूसरे रूप में आना। अ दशा, स्वरूप या गुण प्राप्त करना।
मुहा०—हो बैठना = १. बन जाना। अ वे को समझने लगना या प्रकट करने लगना। मासिक धर्म्म से होना।
३. साधित किया जाना। कार्य्य का संप किया जाना। भुगतना। सरना।

०—हो जाना या चुकना = समाप्ति पर
ा। पूरा होना।
नना। निर्माण किया जाना। २.
ी घटना या व्यवहार का प्रस्तुत रूप में
। घटित किया जाना।
०—होकर रहना = अवश्य घटित होना।
ना। जरूर होना।
ैसी रोग, व्याधि, अस्वस्थता, प्रेतबाधा
ा का थाना। ७. बीतना। गुज़रना।
परिणाम निकलना। फल देखने में
ा। ६. प्रभाव या गुण दिखाई
ा। जन्म लेना। १०. काम निकल-
प्रयोजन या कार्य्य सधना। ११.
बिगड़ना। हानि पहुँचना।
—संज्ञा स्त्री० [हिं० होना] १. उत्पत्ति।
ादुर्भाव। २. हाल। वृत्तांत। ३. होने-
ली बात या घटना। वह बात जिसका
ना ध्रुव हो। भावी। भवितव्यता।
. वह बात जिसका होना संभव हो।
म—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के उद्देश्य
। अग्नि में घृत, जौ आदि डालना।
वन। यज्ञ।
मुहा०—होम कर देना = १. जला डालना।
स्म कर देना। २. नष्ट करना। बरबाद
रना। ३. उत्सर्ग करना। छोड़ देना।
मकुंड—संज्ञा पुं० [सं०] होम की अग्नि
रखने का गड्ढा।
मना—क्रि० स० [सं० होम + ना (प्रत्य०)]
१. देवता के उद्देश्य से अग्नि में डालना।
हवन करना। २. उत्सर्ग करना। छोड़
देना। ३. नष्ट करना। बरबाद करना।
ामीय—वि० [सं०] होम-संबंधी। होम का।
रसा—संज्ञा पुं० [सं० घर्ष = घिसना] पत्थर
की गोल छोटी चौकी जिस पर चंदन घिसते
या रोटी बेलते हैं। चौका।
ोरहा—संज्ञा पुं० [सं० होलक] चने का पौधा।
ोरा—संज्ञा पुं० दे० "होला"।
संज्ञा स्त्री० [सं० (यूनानी भाषा से गृहीत)] १.
एक अहोरात्र का २४वाँ भाग। घंटा।
ढाई घड़ी का समय। २. एक राशि या
लग्न का आधा भाग। ३. जन्मकुंडली।
होरिल—संज्ञा पुं० [देश०] नवजात बालक।
होरिहार*†—संज्ञा पुं० [हिं० होरी]
खेलनेवाला।
होरी—संज्ञा स्त्री० दे० "होली"।

होला—संज्ञा स्त्री० [सं०] होली का त्योहार।
संज्ञा पुं० सिखों की होली जो होली के
दूसरे दिन होती है।
संज्ञा पुं० [सं० होलक] १. आग में भूनी
हुई हरे चने या मटर की फलियाँ। २. चने
का हरा दाना। होरहा।
होलाष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] होली के पहले
के आठ दिन जिनमें विवाह-कृत्य नहीं
किया जाता। जरता-बरता।
होलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. होली का
त्योहार। २. लकड़ी, घास-फूस आदि का
वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता
है। ३. एक राक्षसी का नाम।
होली—संज्ञा स्त्री० [सं० होलिका] १. हिंदुओं
का एक बड़ा त्योहार जो फाल्गुन के अंत
में मनाया जाता है और जिसमें लोग एक
दूसरे पर रंग-अबीर आदि डालते हैं।
मुहा०—होली खेलना = एक दूसरे पर रंग,
अबीर आदि डालना।
२. लकड़ी, घास-फूस आदि का वह ढेर जो
होली के दिन जलाया जाता है। ३. एक
प्रकार का गीत जो होली के उत्सव में
गाया जाता है।
होश—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बोध या ज्ञान
वृत्ति। संज्ञा। चेतना। चेत।
यौ०—होश व हवास = चेतना और बुद्धि
मुहा०—होश उड़ना या जाता रह
भय या आशंका से चित्त व्याकुल होना।
भूल जाना। होश करना = सचेत
बुद्धि ठीक करना। होश दंग होना
चकित होना। आश्चर्य से स्तब्ध होना।
सँभालना = अवस्था बढ़ने पर सब बातें सम
बूझने लगना। सयाना होना। होश
आना = चेतना प्राप्त करना। बोध या ज्ञान की
वृत्ति फिर लाभ करना। होश की दवा करो =
बुद्धि ठीक करो। समझ-बूझकर बोलो। होश
ठिकाने होना = १. बुद्धि ठीक होना। भ्रांति
या मोह दूर होना। २. चित्त की अधीरता या
व्याकुलता मिटना। ३. दंड पाकर भूल का
पछतावा होना।
२. स्मरण। सुध। याद।
मुहा०—होश [illegible] = याद दिलाना।
बुद्धि। समझ [illegible] अक़्ल।
[illegible]र—वि० [[illegible]] १. चतुर। समझ-
२. दक्ष। निपुण।

कुशल। ३. सचेत। सावधान। खबरदार। ४. जिसने होश सँभाला हो। सयाना। ५. चालाक। धूर्त।

होशियारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. समझदारी। बुद्धिमानी। चतुराई। २. निपुणता। कौशल। ३. सावधानी।

हौंस ‡-संज्ञा पुं० दे० "हौश" व "हौस"।

हौं †-सर्व० [सं० अहम्] ब्रजभाषा का उत्तम पुरुष एक वचन सर्वनाम। मैं।
क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्त्तमान-कालिक उत्तम पुरुष एक वचन रूप। हूँ।

हौंकना †-क्रि० अ० [हिं० हुंकार] १. गरजना। हुंकार करना। २. हाँफना।

हौंस-संज्ञा स्त्री० दे० "हौस"।

हौं-अव्य० [हिं० हाँ] स्वीकृति सूचक शब्द। हाँ। (मध्य प्रदेश)
क्रि० अ० १. होना क्रिया का मध्यम पुरुष एक-वचन या वर्त्तमानकालिक रूप। हो। २ होना का भूत काल। था।

हौआ-संज्ञा पुं० [अनु० हौ] लड़कों को डराने के लिये एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम। हाऊ। भकाऊँ।
संज्ञा स्त्री० दे० "हौवा"।

हौज-संज्ञा पुं० [अ०] पानी जमा रहने का बच्चा। कुंड।

हौद-संज्ञा पुं० दे० "हौज़"।

हौदा-संज्ञा पुं० [फा० हौज] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला आसन जिसके चारों ओर रोक रहती है।

हौहयरा-संज्ञा पुं० [अनु० हाव, हाव] शोर। हौहुल। हल्ला। कोलाहल।

हौल-संज्ञा पुं० [अ०] डर। भय।
मुहा०—हौल पैठना या बैठना = जी में डर समाना।

हौलदिल-संज्ञा पुं० [फा०] १. कलेजा धड़कना। दिल की धड़कन। २. दिल धड़कने का रोग।
वि० १. जिसका दिल धड़कता हो। २ दहशत में पड़ा हुआ। डरा हुआ।

हौलदिला-वि० [फा० हौलदिल] डरपोक।

हौलनाक-वि० [अ०+फा०] भयानक।

हौली-संज्ञा स्त्री० [सं० हाला = मद्य] वह स्थान जहाँ मद्य उतरता और बिकता है। आबकारी। कलवरिया।

हौले-वि० [हिं० हौल] जिसके मन में जल्दी हौल या भय उत्पन्न हो।

हौले-क्रि० वि० [हिं० हलका] १. धीरे। आहिस्ता। मंद गति से। शिथिलता के साथ नहीं। २. हलके हाथ से। ज़ोर से नहीं।

हौवा-संज्ञा स्त्री० [अ०] पैगंबरी मतों के अनुसार सबसे पहली स्त्री जो मनुष्य-जाति की आदि माता मानी जाती है।
संज्ञा पुं० दे० "हौआ"।

हौस-संज्ञा स्त्री० [अ० हवस] १. चाह। प्रबल इच्छा। लालसा। कामना। २ उमंग। हर्षोत्कंठा। ३ हौसला। उत्साह। साहसपूर्ण इच्छा।

हौसला-संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी काम को करने की आनंदपूर्ण इच्छा। उत्कंठा। लालसा।
मुहा०—हौसला निकालना = इच्छा पूर्ण होना। अरमान निकलना।
२ उत्साह। जोश और हिम्मत।
मुहा०—हौसला पस्त होना = उत्साह न रह जाना। जोश ठंढा पड़ना।
३. प्रफुल्लता। उमंग। बढ़ी हुई तबीयत।

हौसलामंद-वि० [फा०] १. लालसा रखनेवाला। २. बढ़ी हुई तबीयत का। ३. उत्साही। साहसी।

ह्याँ †-अव्य० दे० "यहाँ"।

ह्यो ‡-संज्ञा पुं० दे० "हियो", "हिया"।

ह्रद-संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा ताल। झील। २ सरोवर। तालाब। ३. ध्वनि। आवाज। ४. किरण।

ह्रदिनी-संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

ह्रस्व-वि० [सं०] १. छोटा। जो बड़ा न हो। २ नाटा। छोटे आकार का। ३. कम। थोड़ा। ४. नीचा। ५. तुच्छ। नाचीज।
संज्ञा पुं० १. वामन। बौना। २. दीर्घ की अपेक्षा कम खींचकर बोला जानेवाला स्वर। जैसे—अ, इ, उ।

ह्रस्वता-संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटाई। लघुता।

ह्रास-संज्ञा पुं० [सं०] १. कमी। घटती। घटाव। क्षीणता। अवनति। २ शक्ति, वैभव, गुण आदि की कमी। ३. ध्वनि। आवाज़।

ह्री-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लज्जा। शर्म। हया। २. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी मानी जाती है।

ह्वाँ †-अव्य० दे० "वहाँ"।